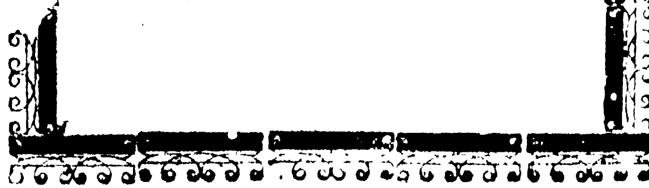


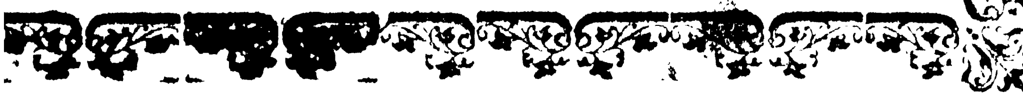


ओम्

स्वस्तिश्रीमन्महारा
जाधिराजजम्बूकाश्मीराति
व्रताद्यनेकदेशाधीशप्र
भुवररणवीरसिंहकारि
तधर्म्मशास्त्रमहानिबन्धे
प्रायश्चित्तभागःटी० भा०







उंनमोऽभिमहर्त्रे दोहरा मूकनकोवाचालता निर्धनकोआधार भक्तनकीरक्षाग
१ प्रायश्चित्त विधानमें संस्कृत भयो जुग्रंथ सर्वदेशमें मिलतहै कठि
नृपत आज्ञाकरी विशेष अल्पबुद्धिकेहेतमें भाषाकरोंअशेष २
प्रायश्चित्त पंडित प्रवीननके चित्तमध्य घनोहै पापके विनाशनः
सें विधि नाहि बनेंहैं गणपत गौरीपत देवनके देवपत इनकोंि
मनमें विचारकरे बारबार महाराज जम्बुपत अच्छीबात गिरीहै
ताहे नानेति अब इसीका अर्थ लिखतेहैं अथेति वडे प्रताप क
तादिदेशोंकास्वामी तिनोंककें आज्ञप्त कविगंगाराम धर्मशा
स्यादि जो पुराणसंबंधी वचनहैं तिनोंकी प्रामाण्यतासें इसका ए

उंस्वस्तिश्रीगणेशायनमः नानायद्भृतमाययाजग
यत्सत्येनविवर्त्तमानमखिलंसत्यंमुहुर्ज्ञायते आनं
भातंमाहिम्नास्वतो नित्यंसर्वगतंसदाश्रुतिशिरोवेद्यं
अथमहानुभावजंबूभूपालाज्ञप्त कविगंगारामः २
शंमंगलंचरेदित्यादिवचनप्रामाण्यात् तदभीष्टस्यधः
न्धस्य सर्वत्र प्रचयसमाप्त्यर्थं सर्वनियंतारं परमेश्वरमे
षेचनेनेत्यादिवचनान्नमस्करोति नानेति आदौ नानेत्यठः
निर्देशेनच अव्ययलाभः कल्याणं चाभिप्रेतं तं सदा सदे
वेदने साधनांतराभावात् श्रुतिशिरोवेद्यं वेदान्

तिसको तैसाहि मंगल करणे योग्य है तादिति तिसकों अभिलषित जो ध
तिसकी सब जगह प्रवृत्ति और समाप्ति तिसके लिये संपूर्णका प्रेरक जो ‥मेश्व
आदमें नमस्कार करतेहैं प्रश्न उौर देवतोंको छोडकर परमेश्वरको नमस्कार क्यो
परमेश्वरकों नमस्कार करणेसें सब देवतोंको नमस्कार होजातेहै यथातरोर्मूलनिषेच
जो वचन हैं तिनकोप्रामाण्यतासें नानेति आदमें नानाऽव्ययके निर्देश करके उौर मः
निर्देशककें दो २ लाभहोयें एक तो अव्ययलाभ उौर कल्याणकी प्राप्ति होइ
परमेश्वरकों सर्वदाकाल नमस्कार करे क्यों कि तिसके जाननेमें होरी
अभावहोनेसें कैसेनू श्रुतियोंका शिर जो वेदांतशास्त्र तिस करके जो जानणे र

3849

लिखतेहैं श्रेष्ठ कर्म्मोंके अनुष्ठान कर्के पवित्र हुयेहैं अंतःकरण जिनकेऐसें मोक्षकरने हैं तिनोंकों) और संततं निरंतर जैसें होवे तैसें नमः क्या नमस्कार करतेहैं तसकों जो नित्य है कालत्रयमें भी जो नष्ट नहि होणेवाला ऐसेकों इसमें यह अभिप्राय है नित्यत्वकी इच्छा करणेवाले जो पुरुषहैं तिनोंकर्के जो सेवा करणेयोग्यहै तिनोंकी अभिलाषाके पूरण करणेवालाहै यह ध्वनि है फेर कैसेकों सर्वगत मिति संपूर्ण देश और कालमें जो प्राप्त हैं ऐसेकों गम्धातुका गति अर्थ होणेसें कर्त्तामें क प्रत्यय होताहै संपूर्ण वांछाकों पूरणकर्ताहै यहध्वनि है अथवा इसमें और विचार है जिस निमित्त कारण कर्के ब्रह्मादिक ने यह जगत उत्पन्न करीदाहै उस परमेश्वरकों वारंवार असी नमस्कार करते हां इसीमें प्रमाण

सत्कर्म्मानुष्ठानेनशुद्धान्तःकरणानांमुमुक्षूणामितिध्वनिः संततं निरंतरं यथा स्यात्तथानुमानमनंकुर्म्मः कथंभूतं नित्यं कालत्रयानपायिनं नित्यत्वाकांक्षिभिःसेव्यं तदभिलाषापूरकमितिध्वनिः सर्वगतं सर्वस्मिन्देशे काले च प्राप्तं गत्यर्थात् क र्तरिक्तः सर्ववांछापूरकमितिध्वनिः यद्वा संतन्यतेजगत् येन निमित्तकारणेन ब्रह्मादिभिरिति संततः परमेश्वरस्तं यद्वा संसमीचीनस्ततस्तात :संततः त्वांमसाध्यास्तताभांक्षुरितिभागवतात् ब्रह्मादेरप्युत्पादकस्तं न तुशुद्धं नमस्कारानर्हत्वात् नमस्कारमृते तत्सेवाऽभावात् स्वेष्टासिद्धये नमस्कुर्म्म एव वस्तुतोनित्यं सर्वगतं च तं कं यद्धृतेति येन शुद्धेन धृता सत्ताप्रदानमात्रेण न तु स्वेच्छया यद्वा येन धृता इवेत्यर्थः एवंभूता माया अघटनघटनापटीयसी तया यद्वा एकोहं बहुस्यां प्रजायेयतिवचनात् धृतया मायया इदं जगत् दृश्यमानवस्तुजातं नाना बहुप्रकारं

[illegible]र है सम्यक् समीचीनस्ततोनाम पिता संततः इसमें प्रमाण कहते हैं त्वांममायांस्तता क्षुरिति इस कारणसें ब्रह्मादिकोंका भी जो उत्पन्न करणेवाला है तिसकों र जो शुद्ध है तिसको नहि क्योंकि वोह नमस्कारके योग्य नहि है मायाशबलकों तिनमारके योग्य होणेसें तिसमें और हेतु कहतेहैं नमस्कारसें विना तिस ईश्वरकी सेवाके अभाव होने और असी अपणे इष्टकी सिद्धि वास्ते नमस्कार करतेहि हां और वास्तवसें नित्य है और सर्वगत है तिस किसकों यद्धृतेति जिस शुद्ध स्वरूप ने धारण करी सत्ताप्रदानमात्र कर्के कोई अपनी [illegible] नहि इस प्रकारवाली जो माया कैसी है अघटन घटनाम

निपुण है तिस माया करके ईश्वर ने जगत् निर्म्माण करीदाहै यद्वा इसीमें और भी विचार है कि ए क हि मैं प्रजाके निर्माणवास्ते वहुत प्रकारका होवां इसतरांभी अपणी माया करके दृश्यमान जो जगत् सोभीवहुत प्रकारका होता है ॥ भित्तिमिति कुड्य जो आश्रय है तिससें विनांहि यह जगत् चित्र मानो मूर्त्तिदी न्याईं स्थापित करीदा भया तैसेंही मेरे ग्रंथका ईश्वरने स्थापन करिये किंचेति जिस सत्यस्वरूपककें संपूर्ण जो जगत् विवर्त्तमान क्या कि जो और विषें औ की प्रतीति असत्य भी है परंतु सत्यकी न्याईं प्रतीत होताहै इसमे दृष्टांत कहतेहैं जैसें रज्जुविषें सर्पकी प्रतीति होतीहै पर तु वारं वार वुद्धिमानोने वोधितैं कीयाहोया भी नेदंसत्यं ...

भित्तिं चित्राश्रयंविना चित्रितं चित्रमिव स्थापितमित्यर्थः ता. यग्रंथस्थापनं क्रियेतेतिध्वनिः किंच यत्सत्येन यदीयसत्यस्वरूपेण लं तत् रज्जौ सर्प्पवत् विवर्त्तमानं मुहुः सुज्ञैर्वोधितमपि नेदंसत्य... त्यादिना सत्यमेव ज्ञायतें तादृशमदीयग्रंथसत्यतापादनं क्रियेतेति ध्वनिः पुनः कथंभूतं आनंदाब्धि अत्राब्धिपदं स्वरूपे लाक्षणिकं आनन्दस्वरूपमित्यर्थः अखंडवोधं सजातिविजातिस्वगतभेदशून्यज्ञा नरूपं अमलं निरुपाधिं स्वतोमहिम्ना भांतं नतु घटादिवत्प्रकाश्यमित्य र्थः भांतमिति कर्त्तरिशता यद्वा भातमिति कर्त्तरिक्तः यद्वा अयत्नज गुणोदीप्तिरितिशब्दस्तोमः तथाच भा दीप्तौ भातं अयत्नजगुणाश्रयं स्वतःसिद्धैश्वर्य्यवन्तमित्यर्थः अत्र हि नमनविषयं मायाशवलं तात्पर्य विषयं शुद्धं शुद्धिहेतुग्रंथ प्रचयश्चाभिप्रेतः ॥

करके सत्य ही जाणीदा है तैसा जो मेरा ग्रंथ है तिसकी सत्यताका प्रतिपादन करे फेर केसा व्रह्म है आनन्दका मानो समुद्र है इसमे जो अब्धिपद है तिसके स्वरूपमें लाक्षणिक है फेर केसा है अखंड क्या अपरिच्छिन्न है वोध जिसका सजाति और अपरजाति और स्वरू इनका जो भेद उससें शून्य ज्ञानरूपहै और उपाधिसें वाह्य है और अपनी महिमा करे जो प्रकाशमान है घटादिवत् नहि है भांतं इस स्थानमें कर्त्तामें शतृप्रत्ययकी प्रतीती है यद्वा भा मितिपाठः इसमें कर्त्ताविषें क्तप्रत्यय होता है अथवाशब्दस्तोममेंलिखाहै अयत्नजगुणोदीप्ति सदाकाल ऐश्वर्यवाला है इसविषें जो नमनाविषय है सोतो मायाशवलहिहै औ तात्पर्य्यका विषय शुद्धहै और शुद्धिहेतुग्रंथकी सभजगह प्रवृत्ति होणी अभिप्रेतहै

अथ पंचविषय प्रतिरूपक ग्रंथ बनाणाहै इस अभिप्रायमें पांचदेवतोंको नमस्कारकर्के मंगलार्थ अनुकूल करीदाहै तिसमें प्रथम श्रीरामचंद्रजीकों आश्रय करतेहैं गर्भइति करुणाकारण जो श्रीरामचंद्र हैं सो हमनें ग्रंथकी समाप्तिके लिये आश्रयकरीदेहैं सो कैसेहैं जो श्रीरामचंद्र सत्हैं और अपरिच्छिन्न क्या त्रिलोकीके आधारभीहैं तथापि कौशल्याने गर्भमें धारेथे इस अर्थमें अपरिच्छिन्नका परिच्छिन्नहोणा विरोधाभास अलंकारहै और तिसकाप्रकार यह है क्या कृपाविशेष कर्के अपरिच्छिन्नभी परिच्छिन्नहुए तांते इसमें यह ध्वनिहै जैसे अल्पबुद्धिवाली स्त्रीपर कृपालु हुएथे तैसे मैंभी अल्पबुद्धिहां मेरे परभी कृपालुहोवें ऐसेंभागेभी जाणणा फेर कैसे हैं दीन वचनो वाला जो नीच गुह था तिसके ऊपरम्म

अस्यैवानुकरणश्लोकः यन्मायैकवशंवदं जगदिदंभित्तिंविनाचित्रितं यत्सत्येनविवर्तमानमखिलंसत्यंमुहुर्ज्ञायते आनन्दाब्धिमखण्डबोधममलं भातंमाहिम्नास्वतो नित्यंसर्वगतंसदाश्रुतिशिरोवंद्यंनुमस्तन्महः ॥ १ गर्भेयःसुधृतःस्वयंसदपरिच्छिन्नोपिकौशल्यया नीचेनापिगुहेनदीनवचसा शुद्धोऽपिमैत्रींगतः ब्रह्मेन्द्रादिसुसेवितोहनुमतावन्येनवश्यीकृतः श्रीरामोऽल्पजनैःस्तुतोऽपिकृपया पातासदाश्रीयते ॥ २ अस्यैवानुकरणश्लोकः कौशल्योदरमध्युवासकिलयोब्रह्माण्डकोट्याश्रयः दासंयश्चगुहंसुनिन्दितमपिप्रेम्णा समन्वग्रहीत् ब्रह्मेन्द्रादिभिरर्चितोप्यनिलजंयश्चाखिलिंगेश्वरः श्रीरामोल्पजनान् स्तुतोतिकृपयापातासदाश्रीयते ॥ २ त्रैलोक्यंयदिकालकूटदहनाद्दह्यमानंधृतं नित्यंसत्रिपुरोऽपिलोककुटिलोनिर्मूलमुत्पाटितः ध्वस्तोऽपिप्रतिपक्षभावमतितोदक्षस्ययज्ञोभृतः

कृपाकर्के आप शुद्धभी थे तथापि उसके साथ मैत्रीकों करते भये फेर कैसेहैं ब्रह्मा और इन्द्र इत्यादि जो देवताहैं तिनोंकर्के सेवित कीतेहुए भी परंतु वनमें रहनेवालाजो वानरस्वरूप हनुमान् तिसने वशकरीदेहुये और जो अल्पबुद्धि वालोंकरके स्तुतकीये हुएरक्षाकरतेहैं सो श्रीरामचंद्र अल्पबुद्धिवाला जोमैहां मेरेपरभी स्तुतकीतेहुये पालनेहोण अब तृतीयश्लोककर्के शिवजीकों आश्रयकरतेहैं त्रैलोक्यमिति सो श्रीमहादेव हमने आश्रय करीदेहैं सो कैसेहैं जिनोने कालकूट विष कर्के दग्ध हुंदी त्रिलोकी धारण करीदी हुई और जिनोने संपूर्णलोकोंको क्लेशदेणेवाले त्रिपुर दैत्यकों मूलसें उखेडदिया और जिनोने शत्रुबुद्धिकर्के

दक्षप्रजापतिकायज्ञ नष्टकीयाथा परंतु कृपाकरकें फेर उसका समाधान करीदाभया फेर केसेहैंमहा देवप्रणत अर्थात् जो नम्र पुरुषहैं तिनकी संपूर्णपीडाकों दूरकरणेवालेहैं इसमेंभी यह ध्वनिहै कि संपूर्णके दुःखदूरकरणेवालेशंभुका जो स्मरणहै सो मेरेग्रंथमे चितारूप जो दुःखहै तिसकों दूर करेगा ३ अब गणपति जी की लीलाका स्मरणकरतेहै कल्पेंनि सो विघ्नेश्वर सर्वदाकाल हमारी-रक्षाकों क्या करतेहुये सहितआनंदके वनविषे फिरतेहोंये इसमें कथा कारणहै एक तिनकी बाललीला कहतेहै एकदिन हस्ति और घोडे और पियादे इत्यादिक क्रीडाके योग्य जो वस्तुहैं तिनकों मिट्टीसेंवनाकर माताको कहनेलगे हेमाता मेरी सेना बहुत

श्रीशंभुःप्रणतार्त्तिहाप्रतिपदंप्रीत्यासमाश्रीयताम् ३ अस्यैवानुकरणश्लोकः ॥ ३ ॥ त्रैलोक्यंगरलाग्निनाकवलितप्रायंयआर्द्रव्यधात् दग्धंयेनपुरत्रयंनिमिषतोदृष्ट्यैवभीतिप्रदम् ध्वस्तोपिप्रतिपक्षभावमतितोदक्षाध्वरःपूरितः श्रीशम्भुःप्रणतार्त्तिहाप्रतिपदंप्रीत्यासमाश्रीयताम् ॥ ३ ॥ कृत्वाक्रीडनकानिहास्तितुरगादीनिस्वमात्रेऽवदत् जातामातरियंमदीयमहतीसेनासमालोक्यताम् श्रुत्वाहर्षवतीत्वयाविहरतामेवंसजीवाऽभवत् सानंदंविपिनेभ्रमन्वहुतयाविघ्नेश्वरस्त्रायताम् ४ अस्यैवानुकरणश्लोकः कृत्वाक्रीडनकानिहस्तितुरगादीनिस्वमात्रेऽवदत् जातामातरियंममातिमहतीसेनासमालोक्यताम् ॥ श्रुत्वावाचमुवाचयंगिरिसुतासाकंत्वयाक्रीडतात् जीवन्तीमवलोक्यतत्क्षणमिमांप्रीतोगजास्योऽवतु ॥ ४ ॥

अच्छीवनीहै इससेनाकों तुसीं भी अच्छीतरह देखो ऐसेंहि सुनकर माता तत्काल हीं-देखनेसेंविना हीं कहणेलगी हेपुत्र यह संपूर्णसेना तेरेसाथ विचरे ऐसावचनकहनेसे वो संपूर्ण मिट्टीकीवणीहोईसेना चेतन अर्थात् जीवित होकर तिस गणपतिके साथ क्रीडाकरते भई और संपूर्णसेनाकू देखकर बहुत प्रसन्न होतेभये और तिसी सेनाकों साथलेकर विहार करतेभये इसमेंभी यह आशयहै कि अचेतनवस्तुकों सचेतन करणेवाली लीलाके स्मरणतें मेरा प्रारब्धग्रंथ रचनाकीअयोग्यतासें अचेतनप्रायभीहै तथापि सचेतनतुल्य उनकी कृपासें होवेगा ४

अब पंचमश्लोक करके सूर्य भगवान्की प्रार्थना करते हैं यइति सो सूर्य भगवान् मेरेसं पूर्णमनोरथोंका विस्तारकरो जो सूर्य भगवान अंधकारमें मग्न अर्थात् डुबे हुये जगतको अतिशयकरके चेतन करताहै इसकारणसे मेरा जो मग्नप्राय ग्रंथहै तिसकोभी सूर्यदेवता उद्धारणकरेगा और जिस सूर्यके उदयकालमेंतीन ३ नेत्रोंवाला जो महादेवहै सोभी अंजलीको करताहै और जो उदयादि समयविषे ब्रह्मा और विष्णु और रुद्र अर्थात् महादेव इनतीनोंकी तुल्यता कोधारण करताहै उदयकालमें ब्रह्माके रूपको धारण करताहै और मध्यान्हमें ईशके रूपको धारण करताहै और अस्तसमयमे विष्णु केरूपको धारणकरताहै यह सूर्यभगवान् देवत्रय ३ रूपीहै एक इसमें औरभी वृत्तांतहैकि अंधकार दूरकरण अर्थसे अज्ञान दूरकरणेकी संभावना करीदीहै ५ अब भगवतीजीकी प्रार्थनाकरतेहैं चिन्तेति अम्बिकाकापद मेरीअतिशयकरके जो ग्रंथनिर्माणविषे चिंताहै

यश्चेतयत्यतितरांजगदांध्यमग्नंयस्योदयेऽजलिमसौकुरुतेत्रिनेत्रः ब्रह्मेशाविष्णुतनुतांसमयेबिभर्त्ति ॥ सोयंरविर्वितनुतांसकलार्थसिद्धिम् ॥ ५ ॥ चिन्तामणिग्रथितपीठविरामकक्षं कल्पद्रुमोपवनपंक्तिविहारदक्षम् सिद्धेश्वरादिनयनाब्जसहस्त्रलक्ष्यं चिन्तांहरत्वतितरांपदमाम्बिकाख्यम् ॥ ६ ॥ स्वतोमित्वातत्त्वंश्रुतिरपियदीयंभगवती गुह्यागूढं प्रोचेसकलपुरुषार्थाद्यइहयः विचारेस्वेसक्तान्विशदमतिदानेनसदयः सधर्मोऽस्मान्दीनान्बहुलमनुगृह्णातुभगवान् ॥ ७ ॥

तिसको दूरकरे तिसीके विशेषणहैं कैसाहै देवीकापद चिन्तामणिकरके युक्त और प्रसिद्ध जो पादपीठ सोईहै विरामकक्षा विश्रामभूमि जिसकी फेर कैसाहै कल्पवृक्षों वाली बगीचीविषे विहारकरणेमे चतुरहै फेर कैसाहै सिद्धेश्वर आदिकोंके जो हजारोंनेत्रहैं तिनका एक बशाना है इसमेंभी भगवतीके पदके विशेषणोंसे चिन्तामणिआदिकोंके स्मरणसे स्वाभीष्ट सिद्धिकी संभावनाहै ॥ ६ ॥ अब धर्मजीकी प्रार्थना करतेहैं स्वत इति सो धर्म्म असो दीनोंपर क्या दुःखियोंपर बहुतसा अनुग्रहकरे सहितदयाके जैसे होवे तैसे) कैसेहो असी अपने विचारविषे लगेहुए हों किसकरके विशदेति विशदमति क्या बिशालबुद्धितिसकेदेनेकरके कैसा धर्म्महै इस को कहतेहैं कि जिसके तत्त्वको श्रुति जोवेदहै सोभी आपहीसे मानकरके क्या अतिशयकरके गुप्तको कहिताहै कैसी श्रुतिहै सर्वोत्कृष्टहै और जोधर्म्म चारों पुरुषार्थोंकाआदिहै ७

अब श्रीमहाराजकी प्रशंसा अर्थात् स्तुतिकरतेहैं एकदिन श्रीमहाराजजम्बूकाश्मीर ति
ब्बतादि जो अनेकदेश तिनकेस्वामी संपूर्ण ऐश्वर्यकरकें संपन्न विद्याविनोदविषें रसिक तिस २
शास्त्रविषें जो परिचय तिसवाले विद्वज्जनोंकीजोगोष्ठी अर्थात् सभा तिसकरकें संभावित यथा
तद्वासनावासित अंतःकरणवालेऔर अपनी २ बुद्धिकरकें परिकल्पित अर्थात् अध्ययनकीये जो
शास्त्रकारोंसें पूर्वपक्षादि तिसकेनिर्णयकरणवालेऔर तिनोंकरकेंकहेहुएजो नानाकोटिरहस्य
तिनकेपरिचयकरकें विकसित अर्थात् प्रफुल्लितहैं सर्वदाकाल मुखारविन्द जिनोंका और
बहुतप्रकारके नैयायिकादिविषयोंमें पंडितजनोंतें करवाये जो निर्णय और विवादशांति

अथैकदास्वस्तिश्रीमन्महाराजाधिराज जम्बूकाश्मीरतिब्बताद्यनेकदेशा
धिपति सकलैश्वर्यसंपन्नविद्याविनोदरसिकतत्तच्छास्त्रपरिचितविद्वज्जनगोष्ठी
संभावितान्तःकरण स्वस्वबुद्धिपरिकल्पितपूर्वपक्षादिनिर्णायक कथितना
नाकोटिरहस्यपरिचयविकसितवदनारविंद बहुविधनैयायिकादिनिर्णयका
रितविवादशांतिश्रवणगीयमाननानादेशीयराजसभ्यन्यायकौशल्य सर्व
मतादिसाधारणपाठशालापठनपाठनाभ्यासपाटवदर्शनोत्सुकमनोदीयमा
नयथायोग्यप्रसादधन कालान्तरजातकाचित्कशास्त्रवैकल्योद्धारकान्यमहारा
जानुपलंभसंभावना तत्प्रचित्युपचितगुणिजनसमुदायदेशदेशान्तरलिख्य
मानमहानुभावपदवीकल्पलतापरिपालक समस्तराजकमलवनोद्घाटन
दिनमणिर्विराजमानोहि श्रीरणवीरसिंहः

तिनोंके श्रवणकरणेकरकें गायनकरीदीहै अनेकदेशोंविषे और राजसभाविषें न्यायकरणेमेंचतुराईजि
नकी और सम्पूर्ण मतोंवालोंकीभी पाठशाला बनाकर तिन्होंमें पठनादिजो अभ्यास तिसमेंचतुरलो
कोंके देखनेमें उत्साह है जिसाकों ऐसीतरेंहि देतेहैं यथायोग्य प्रसादधन बगशीशांको और काल
के वशसें किसीस्थानमें आयाजो शास्त्रविरोधादि तिसका परिहारऔर राजाओंमें नहिंदेखया तिस
[illegible] उपचितगुणीजनोंके समुदाय तिन्होंकरकें देशदेशांतरमें जो लिखीदीहै महानु
भावपदवी [illegible] कल्पलता तिसके पालक और समस्त राजाहैंकमलोंकावन तिसकेविकाशवास्तें
सूर्यकी न्याईं प्रकाशमानहैं श्रीरणवीरसिंहराजा।

तिनों तिनो देशोंसे आयेहुवे पंडितजनोकरके मंडित अर्थात् भूषित और श्रीरघुनाथजीके पूजनविषे तत्पर जो महाराज तिनो करके परिष्कृत क्या सनाथ और जोराजे और मंडलेशहैं इत्यादिकों करके शोभायमान और विद्यारूपगंगाके तुल्य ऐसी जो सभा तिसविषवेठे हुवेसो महाराज पंडितोका प्रेणारूपी सत्कारकरतेभये(प्रश्न:)धर्म्मसाधन क्या है तिसका उत्तर सबपंडित विचारकरके धर्मशास्त्रकेविस्तारकों शब्दादि विषयके प्रतिनिधि जानकर और श्रीसरकारकीउपभोगकी योग्यताकरके एकधर्म्मशास्त्र नामहानिबंध बनायकरके तिस ग्रंथकेपांचभाग रचतेभये जिसमें प्रथमभाग आह्निक है ॥ १ ॥ और दूसरा प्रायश्चित्त है ॥ २ ॥ तीसरा संस्कार है ॥ ३ ॥

तत्तज्जनपदागतकविजनमंडितायां श्रीरघुनाथपूजनसमासक्तमहाराजपरिष्कृतायामन्यभूपतिमण्डलेशादिशोभमानायां विद्यागंगानदीकल्पायां सभायां तावत्किंधर्म्मसाधनमितिविचार्यतामिति प्रण्यसत्कारंकृतवांस्तत श्चयथामतिविद्वांसःकल्पनेस्म तत्रविद्वद्भिःप्रभुवराभिप्रायानुगुणतयाधर्म्मशास्त्रप्रपंचस्य शब्दस्पर्शरूपरसगंधविषयप्रतिरूपकतया महाराजोपभोगक्षमतयाच आह्निकप्रायश्चित्तसंस्कारदानश्राद्धात्मकोऽयं श्रीनृपवररणवीरसिंहनिर्म्मापितधर्म्मशास्त्रप्रपंचाख्योमहाग्रंथोनिर्मितः. तस्य प्रथमोविषयः आह्निकम् ॥ १ ॥ द्वितीयः प्रायश्चित्तम् ॥ २ ॥ तृतीयः संस्कार. ॥ ३ ॥ चतुर्थोदानम् ४ पंचमः श्राद्धम् ५ ॥ शब्दादिगुणग्रामकल्पना ● तत्रादौसंक्षेपतोमहाराजवंशवर्णनम् पृथ्वीयंबहुरत्नसंचयवतीयानिर्मिताब्रह्मणा तस्यांश्रीरविवंशरूढिरमलाख्यातगुणैःसद्वृतैः

चतुर्थ दानहै ४ पांचमा श्राद्ध ५ है इसप्रकारग्रंथमें धर्मसाधन स्थापन करतेहुये और तिसका महाराजभी सत्कारकरतेभये और [illegible] जो श्री[illegible]स्मार्त है सो [illegible] और [illegible]

● अब श्रीमहाराजजीकी संक्षेपसें वंश परंपरा [illegible] जिसकरके ईसकानाम वसुन्धरा है ऐसेही [illegible] श्री[illegible] वंशभी [illegible] है जिस जिस वस्तु विषे जो जो एक उत्तम है सो [illegible] तिस वंश की वृद्धि अमल है और सत्पुरुषोंकरके धारण जो गुण हैं तिन्होंकरके ख्यात है.

तिसविषे गजसिंहनामकरके राजाहुआ जैसे क्षीरसमुद्रविषे चन्द्रमा हुवाभया जिसराजाने गजासिंहनामकरके पुरी बनाई जो उत्तमजनोंकी वसतिहै १ तिसकापुत्र ध्रुवदेवनामा हुवाहोआ जो महा राजेयों को मान और जिसकी निर्म्मलकीर्त्ति ध्रुवा क्या स्थिरहै सो राजा मानो पृथ्वीमे दूसरा ध्रुव प्रतीतहोता भया ॥ २ ॥ तिसका पुत्र सूरतसिंहनाम राजा तेजोनिधि क्या बडातेजस्वी सूर्यकीनांई हुआ तिसकापुत्र जरावरसिंह नामराजाहोआ सो बडाबलवान होआ किसकीनांई जैसे बडेहस्तियोंके समुदायविषे सिंहहोवे जैसे सिंह हस्तियोंका मर्दनकरताहै तैसे शत्रुओंका मर्दन करताहोआ यह अर्थहै ३ तिसकापुत्र किशोर सिंह नामकरके राजाहुआ सो बाल्यावस्थाविषे क्या बालक्रीडाविषे बडाबलीहोआ इसतेही तिस

जातस्तद्गजसिंहवंशनृपतिःक्षीरोदधौचन्द्रमा येनाकारिपुरीप्रवीणवसति
र्यौगजासिंहिका ॥ १ ॥ जातस्ततःश्रीध्रुवदेववर्म्मा श्रीमन्महीपाल
गणाग्रगण्यः पृथ्व्यांहिकीर्त्तिर्विमलायदीया ध्रुवोऽपरोभूमिगतःप्रतीतः ॥ २
ततोऽस्यजज्ञेसूरतसिंहनामातेजोनिधिःसूरसमावनीशः जरावरसिंहसुतस्त
दीयःसिंहोयथोन्मत्तगजेन्द्रवृन्दे ॥३ ॥ किशोरसिंहस्तनयस्तदीयोमहाब
लोऽभूच्चकिशोरभूपे यःशत्रुभूपद्रुवनाश्रयाणामुत्पाटयामाससुबुद्धिहृद्ये ४
जातस्ततोभूपशिरःकिरीटनीराजितांघ्रिर्न्नुनरांमहौजाःजेतारिपूणांमतिमान्म
हीन्द्रःश्रीमन्महाराजगुलाबसिंहः ५ सूनुस्तदीयोजगतीप्रसिद्धो भूपाग्रणीः
श्रीरणवीरसिंहः श्रीरामचन्द्रोहिनयप्रवृद्धौविद्योदधेमंथनकृत्सुरेशः ६

कानामकिशोरसिंह होताभया जो राजा शत्रुराजारूप जो वृक्ष तिनका जो वन तिसके जो आश्रय तिनके उखेडनेवाला किसप्रकारेत सुंदरमतिवाले जो पुरुष तिन्होंकी बुद्धिवारने ॥ ४ ॥ तिसकिशोरसिंहसे श्रीमन्महाराज गुलाबसिंह होताभया कैसाहै राजयोंकेसिरमे जो मुकुट तिनकरके आरतीसाकरोआहुआ चरण जिनका फिर कैसा बडाबलवान् और शत्रुयोंकाजो जीतनेवाला और मतिवालाहोआ और पृथ्वीविषे इंद्रकीनांई होताभया ५ सूनुरिति तिसकापुत्र श्रीरणवीरसिंहहोआ सो कैसाहै जगतविषे प्रसिद्धहै और राजयोंविषेअग्रणीहै और नीतिकी बुद्धिविषे श्रीरामचंद्रकीन्यांई है विद्यारूपी समुद्रके मंथनकरणेवाला मानो विष्णुहै ६ ॥

महीति इसश्लोककरकैभी तिसी की स्तुति करते हैं कैसा है श्रीरणवीरसिंह नामराजा अच्छी तरह प्रजाकी रक्षा करणी और दान यही है धर्म्मजिसका और दुष्टोंका नाशकरणा और सज्जनोंका रक्षाकरणी फेरकैसाहै श्रीरामचंद्रजीका जो श्रवण तिससे उत्पन्नहुआ है कल्याण जिसको ऐसाहै ॥ ७ ॥ ॐ अब इसग्रथमे प्रायश्चित्तविषय जो प्रकरणहैं तिनकी अनुक्रमणिका लिखीदीहै प्रथमप्रकरणमें आदमें मंगलाचरणहै फेर इसीप्रकरण मे श्रीमन्महाराजवर्णनपूर्वकवंशवर्णनहै और इसीप्रकरणमें प्रायश्चित्तशब्दार्थ भी है १ इसके आगे दूसरा अधिकारी प्रकरणहै और इसीप्रकरणमें प्रायश्चित्तकी प्रशंसाभीहै २ तिसकेआगे तीसरा पर्षद्प्रकरणहै अर्थात् सभाका लक्षणहै और इसीप्रकरणमें सर्वप्रायश्चित्तकेविधान को विधिभी लिखीहै और दशविध स्नानकी विधि भी सनंतक लिखी है ३ और इसकेआगे

महीपतिःश्रीरणवीरवर्म्मा सम्यक्प्रजारक्षणदानधर्म्मा दुष्टक्रियासज्जन धारकर्म्मा श्रीरामचन्द्रश्रुतिजातशर्म्मा ७ ॐ तत्र प्रायश्चित्तविषयप्रकरणानुक्रमणिकालिख्यते मंगलाचरणन्तावत्प्रायश्चित्तार्थवाचनम् १ ज्ञेयंततोऽधिकारित्वं प्रायश्चित्तप्रशंसनम् २ पर्षदोलक्षणञ्चैव ३ ॥ तथाकर्म्मविपाककम् ४ कृच्छ्रचान्द्रायणादीनां वर्णनंतदनंतरम् ५ साधारणं ६ ततःप्रोक्तं प्रायश्चित्तनिबन्धनं जातिभ्रंशकरञ्चैव ७ संकरीकरण ८ न्ततः अपात्रीकरणं ९ तद्वन्मलिनीकरण १० ततःप्रकीर्णकप्रसंगो ११ ह्युपपातकनिर्णयः १२ महापातकसंज्ञं १३ ह्रितत्संसर्गभवं १४तथा

चतुर्थ कर्म्मविपाक प्रकरणहै जिसमें पूर्वकर्म्मोंके फलका वर्णनहै ४ और तिसकेआगे पंचम व्रतप्रकरणहै जिसमें कृच्छ्र प्राजापत्य चांद्रायणादि व्रतोंका वर्णनहै और उसीप्रकरणमें व्रतोंके प्रत्याम्नाय भी हैं ॥ ५ ॥ और तिसकेआगे षष्ठ साधारणप्रकरणहै जिसका सर्वत्र उपयोगहै ६ और तिसकेआगे सप्तम जाति भ्रंशकरनामक प्रकरणहै ७ और तदनंतरअष्टमसंकरीकरणप्रकरणहै ८ और तिसके उपरंत नवम अपात्रीकरण प्रकरणहै ९ तिसके आगे दशमा मलिनीकरण प्रकरण है ॥ १० ॥ और तिसके उपरंत एकादश प्रकीर्णक प्रकरणहै ॥ ११ और तिसके उपरंत द्वादश उपपातक प्रकरणहै ॥ १२ ॥ और तिसके आगे त्रयोदश महापातक प्रकरणहै ॥ १३ ॥ और तिसके आगे चतुर्दश महापातकिसंसर्गि प्रकरणहै १४

और तिसकेआगे सामान्यसंसर्ग पंचदश प्रकरणहै ॥ १५ ॥ और तिसके आगे षोडश महापातकोंका सामान्य प्रायश्चित्तप्रकरणहै ॥ १६ ॥ और तिसके आगे सप्तदश अनुपातक प्रकरणहै ॥ १७ ॥ और तिसतें उपरंत अष्टादश शुद्धिप्रकरणहै जिसमें संपूर्णोंकीशुद्धि लिखीहै ॥ १८ ॥ और तिसके आगे एकोनविंश रहस्यप्रकरणहै ॥ १९ ॥ और तिसके आगे विंशति अपविद्धपुत्रकी विचारणा का प्रकरणहै ॥ २० ॥ और तिसतेंआगे एकविंशति परिशिष्ट प्रकरणहै ॥ २१ ॥ प्रायश्चित्तविधानमे यहएकविंशति प्रक्रियाहैं ॐ अब वर्णाश्रम केविभागपूर्वक धर्म्मोंको कहकर प्रायश्चित्तभागका प्रारंभ करीदाहै सो कैसाहै विहिताकरणादि जो पाप अर्थात् जो वेदमेंकिहाहैं सन्ध्यावन्दनादि तिसका नहि करणा १

साधारणंचसंसर्गि १५ महापातसमानकं १६ महापातकसामान्यामित्यर्थःअनुपातकसन्धानं १७ वस्तूनांशुद्धिवेदनम् १८ प्रायश्चित्तरहस्यं १९ चअपविद्धवि २० चारणापुराणपरिशिष्टं २१ हिततःप्रकरणंमतम् प्रायश्चित्तविधौचैकविंशतिः प्रक्रियाइमाः ॐ अथवर्णाश्रमधर्मान्निरूप्य विहिताकरणादिजन्यपातित्यादिपरिहारोपायनिरूपणात्मकःप्रायश्चित्तभागःप्रारभ्यते भवति चास्य प्रकरणस्यवर्णाश्रमधर्मनिरूपणोत्तरं निरूपणेप्रसंगसंगतिः एतत्प्रकरणनिरूपणीयप्रायश्चित्तनाश्यपातकानां पूर्वप्रकरणप्रतिपाद्यवर्णाश्रमधर्मस्वरूपक्रमोल्लंघनजन्यतया प्रसंगस्यसंभवात् विहिताकरणादिजनितपातकाभावश्च द्वेधा वर्णाश्रमधर्मस्वरूपक्रमाज्ञानेन संभावितेभ्यस्तथाविधधर्मानुष्ठानजन्यपापेभ्योवर्णाश्रमधर्मस्वरूपक्रमज्ञानेन निवृत्त्या

और जो निषिद्धकीतेहैं लसुनभक्षणादि तिनकात्यागकरणा ॥ २ ॥ और इन्द्रियोंकानिग्रहनकरणा ॥ ३ ॥ इनते उत्पन्न होएजो पातित्यादिपाप तिनके परिहारोपायकानिरूपणहै स्वरूप जिसका ॐ अब आन्हिकभागके पीछे प्रायश्चित्तभागकी निरूपणाविषे संगतिका विचारकरतेहैं इस प्रकरणके वर्णाश्रमधर्म्मनिरूपणके पीछे प्रसंगकीसंगतिहै किसतें कि इसप्रकरणविषे कहे जोहैं प्रायश्चित्त सो तिन्होंपापोंको दूरकरैहै सो पाप पूर्वकिधर्म्मकाजोउल्लंघन अर्थात् त्याग तिसतेंहि होएहैं और पूर्वोक्तहेतुकरकेही होए जो पाप तिन्होंका अभाव दया ना श होनेकाकारहै एकतोवर्णाश्रमधर्म्मका जो स्वरूपज्ञान तिसके नाहोणेकरके १ और जापैं जोहै पाप तिन्हा ते वर्णाश्रमधर्म्म स्वरूपके ज्ञान करके निवृत्ति सें बचा हटणे सें २

और जानकर्के भी प्रमाद और आलस्य आदिक कर्के तिस तिस विधि कर्के प्रतिपाद्य धर्मोंके अनाचरण कर्के संभावित जो पाप तिन्होंका प्रायश्चित्त कर्के जो नाश तिसकर्के तिनविषे जो पहला पापनाश है तिसका तथाविध क्या तैसाहि धर्मस्वरूपका जो क्रम है तिसके ज्ञानको प्रथम कहणेकी योग्यताकर्के और दूसरेको तैसेहि पाप नाशके हेतुहोंके इस प्रायश्चित्त प्रकरणविषे प्रतिपादनकी योग्यताकर्के दोआं प्रकरणोंको पापनाशकी प्रयोजकता कर्के एकहि कार्य्यके करणवाले यह दोए प्रकरण होए तांते एककार्य्यकारित्व यथा एकहि पातकाभावरूप

ज्ञात्वाऽपि च प्रमादालस्यादिना तत्तद्विधिप्रतिपाद्यधर्मानाचरणेन संभावितानां पापानां प्रायश्चित्तेन नाशेन च तत्राद्यस्य तथाविधधर्मस्वरूपक्रमज्ञानस्य पूर्वप्रकरणसंपादनीयतया द्वितीयस्य च तथाविधपापाभावप्रयोजकहेतोरेतत्प्रकरणप्रतिपाद्यतया द्वयोरपि प्रकरणयोः प्रदर्शितपातकाभावप्रयोजकत्वेनैककार्यकारित्वादनयोरेककार्यकारित्वमपि संगतिः। तत्र धर्मस्य श्रुतिस्मृतीतिहासपुराणमूलकतया श्रुत्यादिषु च शतशो भिन्नभिन्नशाखादिषु विलसत्सु बहुत्र परस्परात्यन्तविरुद्धार्थकानां वचनानामुपलम्भेन कुत्र धर्मसमास्थितिः तथाहि श्रुतौ तावदेकत्र योऽग्निंहोतारमृतुथा इतिपठेदित्यादिना योऽग्निंहोतारमित्यादिमंत्रपाठो विधीयते अपरत्र च यदब्रूयादग्निंहोतारमृतुथाइत्यग्निनोभयतोयजमानं परिगृह्णीयात्प्रमायुकः स्यादिति निन्दार्थवादपुरस्सरं तस्मिन्नेव क्रतौ तन्मंत्रपाठः प्रतिषिध्यते

कार्य्यकरणरूप भी संगति होई (प्रश्न) धर्म जो है सो वेद और स्मृति तिनके जाननेवाले ऋषियोंके बनाए ग्रंथ और इतिहास पुराणोंके कारणें तांके महाभारतादिग्रंथ अरु पुराण भागवतादि १८ तांकिका इनके उपर मूल है और तांतिविषे तिस तिस जगह सोईहै और परस्परविरोधि वचनभी देखीदेहैं किस जगह धर्मकी स्थिति जाणीए सो दिखाते हैं प्रथम वेदकों दिखाईदाहै योऽग्निमिति इनमंत्रके पाठको विधि एक जगह विधान कीताहै और दूसरी जगह तिस मंत्रके पाठका तिसी यज्ञविषे निषेध है

एवमित्यादि इसीतरां अतिरात्र यज्ञविषे षोडशीका एक जगह ग्रहण है और दूसरी जगह निषेध है तिनदोनोंविषे इकदा ग्रहण कीतेहोएआं अवश्यकरके विधि का लंघन अथवा निषेधका लंघन होताहै अर्थात् विधिके ग्रहणविषे निषेधका लंघनहै और निषेध के ग्रहणविषे विधिका लंघनहोताहै इसीप्रकार एक वचन है उदितेति एककहताहै सूर्यके उदयहोएआं हवनकरना दूसरा कहताहै सूर्यके अनुदयहोएआं हवनकरना और तीसराकहताहै अर्धसूर्यके उदयहोएआं हवनकरना इसतेइक वचनकरके बहुतथोड़े कालकरके जो साध्यकर्म तिसको वेदकरके कहे जो तीनकाल तिनोंविषे करनेकूं नासमर्थहै ऐसा प्रधान कर्मजोहै हवनरूप तिसमें तीनकाल विधान करेहैं तिनोंविषे अवश्यकरके इककालदे ग्रहण कीतेहोएआं और कालोंकी जो विधि तिस

एवमतिरात्रे षोडशिनं गृह्णाति नातिरात्रे षोडशिनं गृह्णातीति वाक्याभ्यामतिरात्रक्रतौ षोडशिनो ग्रहणं विधीयते प्रतिषिध्यते च तत्रैकतरानुष्ठानेऽवश्यं विध्युल्लंघनं निषेधोल्लंघनं वा प्रसज्यते एवमुदिते जुहोति अनुदिते जुहोति समयाध्युषिते जुहोतीति श्रुतिवाक्यैरल्पकालसाध्यस्य श्रुत्युदितकालत्रये कर्तुमशक्यस्य हवनरूपस्य प्रधानकर्मणः कालत्रयमभिधीयते तत्रावश्यमेककाले तदनुष्ठाने कालान्तरविध्युल्लंघनजन्यदुरितप्रसंगः ॥ एवं स्मृतिवचनेष्वपि अपुत्रधनं पत्न्यभिगामीति वचनं सर्वेभ्यःप्रथमंपत्न्या अपुत्रधनाधिकारं बोधयति अपुत्रधनं भ्रातृगामीति तु भ्रातुरधिकारंब्रूते एवमादीनां परःशतानां परस्परात्यन्तविरुद्धार्थानां मुनिवचनानामुपलम्भे तत्रान्यतरानुष्ठाने कुत्रचिद् विध्युल्लंघनं कुत्रचिच्च निषेधोल्लंघनं प्रसज्यत इति पापभीरुभिः कुत्रावस्थेयमित्यपेक्ष्यते ॥ कुत्रचित्परस्परविरुद्धवचनानां

का जो लंघनकरणा तिसतें उत्पनहोया जो पाप तिसका प्रसंगहै ॥ इसीप्रकार स्मृतिवचनांविषे भी कहाहै अपुत्रका जो धन सो पत्नीको प्राप्तहोताहै इसवचनते सभनांतें पहले पत्नीकांहि अपुत्रधनका अधिकार कहाहै दूसरा कहताहै अपुत्रका जो धन सो भ्राताको प्राप्त होताहै इत्यादि जो सैकड़े वचन परस्परविरोधि हैं तिनमुनिवचनांते तिस तिस जगाएकके करणेते दूसरेका निषेध अवश्यकरके उल्लंघन हुंदाहै तांते पापसे भयभीत जो पुरुष हैं तिन्हांनेकिस जगह स्थितहोनाहै यह पूर्वपक्ष सुनकर कहतेहैं ॥ (उत्तर)जो विरोधिवचन किसे किसे जगहके तुल्य लिहे हैं

तिन्होंको शाखाभेदकरके व्यवस्था जानणी और किसे किसे जगह करणे विषे बहुत प्रयासदेखणे . तिस विधिका नहि करणा ऐसी व्यवस्था है अथवा अभावानुष्ठान जो है नहि करणा तिसकी अपेक्षा करके भावानुष्ठानविषे बहुतप्रयास भी है परंतु फलविशेषके अनुमानकरके व्यवस्था है जैसे सूर्यग्रहणविषे वृष्टिकी संभावना हुंदी है और किसेजगह फलविशेषकरके व्यवस्था है और किसे जगह कालविशेषविधिमे प्रथमारंभकरके व्यवस्थाहै और किसे जगह एकजैसे दोए पक्षहै तद इच्छाकरके व्यवस्थाहै और किसे जगह वचनान्तरकरके संवादानुकूल जो तर्कहै तिसकरके व्यवस्थाहै इसकरके तिन्हांविरोधिवचनाकी

शाखाभेदेन परिग्रहस्य व्यवस्थया कुत्रचिच्च अभावानुष्ठानपक्षस्य भावानुष्ठानस्याऽधिकप्रयाससाध्यतया विध्यनुष्ठाने आदित्यग्रहणे वृष्टेरिव क स्याप्यान्तरालिकफलविशेषस्याऽनुमानेन कुत्रचिच्च कालविशेषपरिग्रहादौ प्रथमारम्भपरिगृहीतकालादिनैवतत्तद्व्यवस्थया कुत्रचिच्च यत्रान्यतरपक्षप रिग्रहे फलविशेषः कथमपि नसंभवति तत्रेच्छिकत्वस्यव्यवस्थया कुत्रचिद्वच नान्तरसंवादानुकूलतर्कादिना तेषां तेषां विरुद्धार्थकानां विषयविशेषविषयक त्वस्य व्यवस्थापनेन च सर्वेषां सिद्धार्थप्रतिपादकानां वचनानां परस्परमविरोधे संभवति विरोधाभासशंकया तेषु तेषु धर्मेषु प्रेक्षावन्तः पापभीरवो नकथमप्युपेक्षां कर्तुमर्हन्ति तथाहि प्रथमं तावत् योसिंहोऽस्मीत्यादि मंत्रपाठप्रतिषेधवचनस्य यजुर्वेदे पाठो [illegible] यजुःशाखिनां प्रतिषिद्धो [illegible] पाठः करणीयइति शाखाभेदेन [illegible] न तयोर्वैदिकवाक्ययोः परस्परविरोधः [illegible]

विन्यव्यवस्था जानणी इसतें समन्त [illegible] हिंद काइ यथा [illegible] नहि इसतें पापभीरु जो पंडित लोक [illegible] उपेक्षा नहि करते तथाहि जिसतरह विधिका परिहार हुंदाहै सो [illegible] योसिंहोऽस्मीत्यादि मंत्रपाठका जो निषेधवचनहै सो यजुर्वेदविषे है [illegible] और ॥ आश्वलायनसूत्रविषे इसकी विधि है इसकरके तिन्होंको और [illegible] तिस मंत्रका पाठकरणा उचित है यह शाखाभेदकरके व्यवस्था होई इसतरह [illegible] पाठकरणा और नाकरणा यह सुगम हि व्यवस्था है इसतें वेदवाक्यका विरोध नहि आया

इसीतरह षोडशिग्रहणरूप जो कर्म सो है प्रयत्नसाध्य तिस करके षोडशीका ग्रहण करणा और ना [illegible] दोनों ना होते अतिरात्र [illegible] सिद्धि [illegible] तिसके करणविषे अङ्गका अनुष्ठान है और तिस [illegible] पूर्वतिसका अधिक कल्पना करीदाहै और जब षोडशिका ग्रहण ना होवे तब तिस यज्ञका [illegible] फल [illegible] अधिक नहि [illegible] इसकरके भी कोई विरोध नहि आया और उदितेजुहो ति इत्यादिविषे अग्निके आधानके अनन्तर अग्निहोत्रके प्रथमारंभविषे जिसने जिस तरहका काल ग्रहण कीताहै तिसने [illegible] जीवणा तबतक तिसी कालमे हवनकरणा चाहिए यहव्यवस्था है

एवं षोडशिग्रहणाग्रहणरूपस्य कर्मणः प्रयाससाध्यतया षोडशिग्रहणाग्रहणयो रुभयथाप्यतिरात्रक्रतुनिष्पत्तावपि तदनुष्ठानेऽङ्गानुष्ठानजन्यमपि किमप्य पूर्वमधिकं कल्प्यते षोडशिनोऽग्रहणे त्वतिरात्रक्रत्वनुष्ठानजन्यमात्रमपूर्वं जननान्न्येनेति न कथमपि विधिप्रतिषेधयोर्विरोधस्यावसरः उदितेजुहो तीत्यादौ तु आधानानन्तरमग्निहोत्रस्य प्रथमारम्भे येन यादृशः कालः परि गृहीतस्तेन यावज्जीवं प्रतिदिनं तस्मिन्नेव होतव्यमित्येषा व्यवस्था एवं व्रीहिभिर्यवैर्वा यजेतेत्यत्रापि प्रथमदर्शपूर्णमासयागे यो येन द्रव्येण प्रयागानुष्ठानं तेनैव द्रव्येण प्रतीतिं यजेतेति व्यवस्थितो विकल्पः यत्र च व्यव स्थितविकल्पे [illegible] कल्पानुष्ठाने [illegible] न किमप्यनुकूलं तर्कादिकमु पलभ्यते [illegible] कुतोऽव्यव स्थितविकल्पो [illegible] कुत्ता [illegible] कल्पमेवान्यतरपाठस्य

एवं [illegible] अथवा यद्योंकरके यज्ञ कर [illegible] यज्ञ करदाहोआ [illegible] एकके अनुष्ठान [illegible] अवघातेति अवघात जो है [illegible] और [illegible] तिनों यत्नोंविषे असंवपंती इत्यादिक [illegible] विकल्प है [illegible] जिस पर [illegible] तिसको पडे

और अपुत्रकाधन पत्नीको मिले इसविषे जो है यज्ञवल्क्य जीका वचन तिस करके विभागको कह करके फेर संसृष्टिका विभाग अगेकहणा अर्थात् जो सांझा धन है तिसका विभाग कहणाहै तिस विषे निर्णय होआ कि जो वक्खराहै और धनभी सांझा नहि इस अपुत्रका धन स्त्रीको प्राप्तहोवे यह वचन इसपर है और अपुत्रका धन भ्राताको प्राप्तहोवे यह वचन जो कहा भ्राताहै तिसपर है ऐसी व्यवस्था होणेते कोई परस्पर विरोध नहि आया एवमिति इसीतरह और जगा भी आपसमे विरोधि वचन प्रतीत होवे उस जगा विरोधका परिहार दखाएहोए प्रकारविषे जो युक्तिविशेष है उसी करके बुद्ध मानोने हटाणे योग्य है॥ सो मनुजीने भी किहाहै श्रुतीति जिस जगह श्रुतिद्वैध होवे क्या दो वेदके वचन विरोधी होवें तिस जगादोनो धर्म्म कहेहैं क्या पूर्वोक्तव्यवस्थासे दोनो

अपुत्रधनं पत्न्यभिगामि तथाऽपुत्रधनंभ्रातृगामीत्यत्र तु पत्नीदुहितरइतियाज्ञवल्कयवचनस्य विभागस्य पूर्वमुक्तत्वादग्रे संसृष्टिनामधिकारस्य वक्ष्यमाणत्वाच्च विभक्तासंसृष्टिविषयत्वे निर्णीते तद्वचनविसंवादादपुत्रधनं पत्न्याभिगामीत्यपि विभक्तासंसृष्टिपरं भ्रातृगामीति त्वविभक्तसंसृष्टिपरमिति व्यवस्थाया आस्थानान्न परस्परविरोधावसरः एवमन्यत्रापि परस्परविरुद्धत्वेन प्रतीयमानानां वचनानां विरोधपरिहारः प्रदर्शितान्तर्गतैकतरप्रकारेण युक्त्यन्तरेण वा सुधीभिःस्वयमुन्नेयः उक्तंच ॥ मनुना ॥ श्रुतिद्वैधंतुयत्रस्यात्तत्रधर्मावुभावपि उदितानुदितेचैवसमयाध्युषितेतथा सर्वथावर्ततेयज्ञइतीयंवैदिकीश्रुतिरिति तथा तत्त्वेविप्रतिपन्नानांवाक्यानामितरेतरम् विरोधपरिहारेणनिर्णयस्तत्त्वदर्शनमिति ततश्च न क्वापि दुःस्थितिरित्येषा दिक् ॥
तत्रादौ प्रायश्चित्तशब्दार्थः प्रदर्श्यते अत्रमाधवः प्रायश्चित्तशब्दश्च रूढ्या योगेन च पापनिवर्त्तनक्षधर्मविशेषमाचष्टे

स्थापन करणे सोई पूर्वोक्तवचन लिखकर व्यवस्थाकरतेहैं उदितेति सूर्य्यके उदयविषे और अनुदयविषे और अद्दे उदयविषे भी सर्वथा यज्ञ हुंदाहै यहि वेदकी आज्ञा है तैसेहि होर वचनहै तत्त्वइति जो कोई वाक्य तत्त्वविषे क्या यथार्थ अर्थविषे परस्परविरोधिहैं तिन्होके विरोधपरिहार करके जो निर्णयआयाहै तिसते यथार्थ अर्थ जानणा तिसते तिसजग्याभी कठिनता नहि है यहि मार्ग सभको स्वीकार करणेयोग्यहै ॥ तिसके आदविषे पहले प्रायश्चित्त शब्दका अर्थ लिखदेहैं इसमै माधवजीका अभिप्राय ऐसा है प्रायश्चित्तशब्द रूढिवृत्ति करके क्या समुदाय शक्तिकरके और अवयवशक्तिरूपयोगकरके पापकेदूरकरणेको समर्थ जो कोई धर्म्मविशेष है

3849

तिसको कहता है और संप्रदायके जान्नणे वाले पंडित पापके नाशकरणेमें समर्थ जो कोई नैमित्तिक कर्मविशेषहैं प्रायश्चित्तशब्द तिस विषे प्रसिद्ध है ऐसा कहते हैं ॥ इसअर्थका योग अंगिरा जीने दिखाया है प्रायइति प्रायनाम तपकाहै और चित्त नाम है निश्चयका सो तपनिश्चयकर्के मिलया होया प्रायश्चित्त किहाहै १ और अर्थकहतेहैं प्राय इति वाहुल्यतासे चित्तकोसमकर्के जो पाप खंडनके अर्थ देईदाहै और सभाने जो करवाईदा है सो प्रायश्चित्त कहीदाहै २ यहअर्थ युक्तहै कि १२ वारांवर्षके व्रत आदिकके करणेसें अवश्य कर्के पाप दूर होताहै इस विश्वासका नाम निश्चयहै तिस कर्के युक्त

प्रायश्चित्तशब्दश्चायं पापक्षयार्थेकर्मविशेषे नैमित्तिके रूढ इत्याहुः संप्रदायविदो निवन्धकारादयः ॥ योगस्त्वंगिरसादर्शितः ॥ प्रायोनामतपः प्रोक्तंचित्तंनिश्चयउच्यते तपोनिश्चयसंयुक्तंप्रायश्चित्तंतदुच्यते १ प्रायशश्चसमंचित्तं चारयित्वाप्रदीयते पर्षदाकार्यतेयत्तुप्रायश्चित्तमितिस्मृतमिति २ अनुष्ठितेनद्वादशवार्षिकादिनाऽवश्यंपाप निवर्त्ततइति विश्वासो निश्चयः तेनसंयुक्तं व्रतानुष्ठानलक्षणं तपःप्रायश्चित्तं पापिनोऽनुतापिनश्चित्तं व्याकुलं सद्विषमंभवति तच्च परिषदादिष्टेन व्रतानुष्ठानेन प्रायशोऽवश्यं समंकार्यते तद्व्रतं प्रायश्चित्तं चित्तसमीकरणोपपादनं कारयित्वा प्रदीयतइति व्रतं चारयित्वा चित्तवैषम्यनिमित्तं पापंप्रदीयतेखंड्यतेविनाश्यतइत्यर्थः यद्वा परिषद्युपविष्टानां सर्वेषां चित्तंयथा समं भवतितथा चारयित्वैकसत्येनविचार्य प्रदीयते विधीयते कार्यतेऽनुष्ठाप्यतइत्यर्थः

व्रतका आरंभ करणा यहि प्रायश्चित्त शब्दका अर्थहैया इसीको प्रकट कर्के कहतेहैं पापीका चित्त पापके चितन करणसें विषम क्या पहले व्याकुलहुंदाहै सो विद्यावानोंकी सभाने व्रतकेउपदेशकर्के सम करीदा है तिसव्रतका नाम प्रायश्चित्तहैं इसी अर्थको स्पष्टकर्के कहतेहैं चित्तेवि कि चित्तको समकर्के पापं प्रदीयते क्या खंडनकरीदाहै अर्थात् विनाशकरीदाहै ऐसा जानना यद्वेति अथवा ऐसाअर्थहै परिषद् जो सभा तिसविषे वैठेहोए सब लोकोंका चित्त जिस तरह सम होवे क्या इसको इतना प्रायश्चित्त देना उचित है ऐसे सवकाचित्त एक जैसा होवे तिसतरहे विचार कर्के जो विधान करीदाहै क्या जो कृत्य करवाईदाहै सो प्रायश्चित्तहै-

शूलपाणी जीनें तो ऐसा किहाहै कि प्रायो नाम इत्यादि अंगिराका वचन कहकर प्रयत. होणेसे उपचित क्या प्रवृद्ध जो है अशुभ तिसको नाशकरे सो प्रायश्चित्त है यह हारीतजीका वचन आधिककल्पकर तिससे पापक्षयमात्रका साधन जो कर्म सो प्रायश्चित्तहै ऐसा स्थापनाकियाहै परन्तु इसजगा ऐसा विचारहै कि तुलापुरुषदान और अश्वमेध यज्ञ इत्यादिकोंकी व्यावृत्तिके लिये मात्रशब्दका प्रयोगहै क्या यहभी पापको दूरकरणेवालेहैं परन्तु इनको प्रायश्चित्त नाहि कहते और नागेश जो हैं प्रायश्चित्तेंदु• ग्रंथकेकर्त्ता सो ऐसा विचार कर्तेहैं यथाविध ना अनुष्ठान करणेसें प्रवृद्धहोये पापोंका नाश करणेवाला जो कर्म्म सो प्राय श्चित्तहै इसलक्षणकी अतिव्याप्ति तुलापुरुषदानादिविषे है तिसके हटाणेवास्ते (एव) इसशब्द-

* शूलपाणिना * तु प्रायोनाम तपःप्रोक्तमित्यंगिरोवचनमभि धाय प्रयतत्वाद्वोपचितमशुभंनाशयतीति प्रायश्चित्तमिति हारीतवचन मप्यधिकमुपन्यस्य तेन पापक्षयमात्रसाधनं कर्मप्रायश्चित्तमिति प्राय श्चित्तलक्षणं मात्रशब्दात्तुलापुरुषाश्वमेधादिव्यावृत्तिरित्युक्तं *नागेशेन* तु यद्यथाविध्यननुष्ठानाद्युपचिताशुभनाशकमेव तत्प्रायश्चित्तम् तुला पुरुषादावतिव्याप्तिवारणायैवेति नतु फलान्तरजनकमित्यर्थः पापनि वर्त्तनक्षमधर्मविशेषे योगरूढोऽयंशब्दइति तत्त्वम् संकेतविशेषसं वन्धेन प्रायश्चित्तशब्दवत्त्वमेवप्रायश्चित्तत्त्वम् अतएव क्रत्वंगक्षेपप्राय श्चित्तेतद्व्यवहारइत्यन्येइत्यभिहितम् * काश्यपेन * तुलापुरुषस्यापि आत्मतुल्यं सुवर्णं वा दद्याद्वैविप्रतुष्टिकृदित्यनेन प्रायश्चित्तत्वमभ्यधायि• एवं यजेद्वाश्वमेधेनेत्यादिनाऽश्वमेधस्यापियाज्ञवल्क्येनप्रायश्चित्ततोक्ता

काप्रयोगहै इसते होरकोई फलकाकरणेवाला नहि यह अर्थहै पापनिवृत्तिकरणेवाला कोई धर्म्म विशेषहै तिसविषे योगरूढहै यहशब्द यहयथार्थ अर्थहै अथवा संकेतविशेषकर्के प्रायश्चित्तशब्द वाला जो है सो प्रायश्चित्त है इसी वास्ते यज्ञकाअंगजहांविकृत होजावे तिसके प्रायश्चित्तविषे भी सो व्यवहार है ऐसाभी कईकहते हैं ऐसा नागेशने किहा है अब काश्यप जीका मत कहतेहैं काश्यपेनेति काश्यपजीनें आत्माकेतुल्य सुवर्णदेवे कैसा सुवर्णहै जो ब्राह्मणकी प्रसन्नताकरणे वालाहै इत्यादिविषे तुलापुरुषको भी प्रायश्चित्तत्व किहाहै इसी तरह अश्व मेधकर्के अथवा यज्ञकरे इत्यादिवचनकर्के याज्ञवल्क्यजीने अश्वमेधकोभी प्रायश्चित्तत्व किहाहै

और संवर्त्तजीभी अनादिष्ट पापोंविषे प्रायश्चित्त कहते हैं दानों कर्के होमो कर्के और जपों कर्के और नित्य प्राणायामों कर्के और वेदाभ्यास कर्के द्विजोत्तम पातकोंसे छूटजाताहै इसमे संशयनहिहै १ सुवर्णदान और गोदान तैसेंहि भूमिदान जो है यह सभ शीघ्रहि पापोंको दूर करतेहैं जो पाप और जन्मविषे कीते होएहैं इस जन्मकी क्या बात है २ जोकोई तिलधेनुका दान संयमवाले ब्राह्मणकेतांयीं देताहै सोभी ब्रह्महत्यादिपापोंसे छूट जाताहै इसमे संशय कोई नाहिहै ३ अब और दानका प्रकार कहतेहैं मासइति महीनेके महीने यद पूर्णमासी आवे तिसविषे विशेष कर्के ब्राह्मणोकेतांयीं तिलदान यथाशक्तिसे देवे तदभी सभ पापोसें मुक्त होजाताहै ४ इसमे और विशेष है पापी पुरुष कार्त्तिकमहीनेकी पूर्णमा

* संवर्त्तेनच * अनादिष्टेषुपापेषुप्रायश्चित्तमथोच्यते दानैर्होमैर्जपैर्नित्यं प्राणायामैर्द्विजोत्तमः पातकेभ्यः प्रमुच्येतवेदाभ्यासान्नसंशयः १ सुवर्णदानंगोदानं भूमिदानंतथैवच नाशयन्त्याशुपापानि ह्यन्य जन्मकृतानिच २ तिलधेनुंचयोदद्यात्संयतायद्विजन्मने ब्रह्महत्यादिभिः पापैर्मुच्यतेनात्रसंशयः ३ मासेमासेतुसंप्राप्तेपौर्णमास्यांविशेषतः ब्राह्मणेभ्यस्तिलान्दत्त्वासर्वपापैःप्रमुच्यते ४ उपवासीनरोभूत्वापौर्णमास्यांचकार्त्तिके हिरण्यंवस्त्रमन्नंचदत्त्वामुच्येतदुष्कृतैः ५ अमावास्याद्वादशीचसंक्रांतिश्चविशेषतः एताःप्रशस्तास्तिथयोभानुवारस्तथैवच ६ तत्रस्नानंजपोहोमोब्राह्मणानांचभोजनम् उपवासस्तथादानमेकैकंपावयेन्नरम् ७ स्नातः शुचिर्धौतवस्त्रःकृतकार्योहितात्माभिः उपपातकशुध्यर्थंसहस्रपरिसंख्यया ८

सीवाले दिन उपवासी क्या निराहार व्रतकर्के सुवर्ण और. वस्त्र और अन्न देकर्के सभपापोंसें मुक्त होताहै ५ अब शुभ तिथि वारका योग कहतेहैं अमेति अमावास्या द्वादशी संक्रांति यहतिथिआं शुभहैं और सूर्यवार ६ इसयोगविषे स्नानकरणा तीर्थविषे और जप. गायत्रीका और हवन समस्त व्यस्त भावसे महाव्याहृतियोंका और ब्राह्मणोंको भोजन और उपवास क्या व्रत और दान इतनेपदार्थोविचों कोईभीकरे तोभी सभ पापोंसे मुक्त होजाताहै अर्थात् यह सभ मनुष्यको पवित्र करतेहैं ॥ ७ ॥ अब जपका प्रकार कहतेहैं स्नात इति प्रथम स्नानकर्के पवित्रहोवे और वस्त्र प्रक्षालन करे और हितात्मा जोहैं उपदेष्टा तिन्हांते कीताह कार्य जिसने असा होकर उपपातककी शुद्धिकेवास्ते एक १००० हजार गायत्रीका जपकरे

श्रीर जेकर महापापी होवे तद लक्षभोजं क्या पूर्वोक्तरीतिसें लक्ष ब्राह्मणकों भोजन देवे श्रौर गायत्रीका जपकरे तद शुद्ध होताहै ९ श्रौर जपका प्रकार कहतेहैं अभ्यसेदिति महापुण्य क्या अतिपवित्र श्रौर वेदकी माता जो गायत्री ॐतत्सवितुः इत्यादि सूर्यकी ऋचा इसका संपूर्णपापांकी शुद्धिके वास्ते अभ्यासकरे परंतु वनविषे नदीके किनारे बैठकर १० इसीका होर प्रकार कहतेहैं स्नात्वेति तहांजाकर विधिसें स्नानकर्के प्राणायामका अभ्यासकरे तिसकी विधि आगे आवेगी तीनो प्राणायामोकर्के पवित्र होकर गायत्रीका जप करे द्विजशब्दकर्के पहले वर्णत्रय जानणे ११ गायत्री जपके आरंभकी विधि कहतेहैं अछिन्नेति धोकर्के सुकाया जो वस्त्र तिसको पैहरकर स्थलमैं जपकरे जेकर जलमै जप करणा हो तद गिल्लाहि वस्त्र धारणकरे

महापातकसंयुक्तोलक्षभोजंसदाद्विजः मुच्यतेसर्वपापेभ्योगायत्र्याश्चैव जापनात् ९ अभ्यसेच्चमहापुण्यांगायत्रींवेदमातरं गत्वाऽरण्यंनदीतीरेसर्वपापविशुद्धये १० स्नात्वाचविधिवत्तत्रप्राणायाममथाभ्यसेत् प्राणायामैस्त्रिभिःपूतोगायत्रींतुजपेद्द्विजः ११ आच्छिन्नवासाः स्थलगः शुचौ देशेसमाहितः पवित्रपाणिराचांतोगायत्र्याजपमारभेत् १२ ऐहिकामुष्मिकंपापंपापंसर्वंविशेषतः पंचरात्रेणगायत्रींजपमानोव्यपोहति १३ गायत्र्यास्तुपरंनास्तिशोधनंपापकर्मणाम् महाव्याहृतिसंयुक्तांप्राणायामेनसंयुताम् १४

श्रौर जिसस्थानमै बैठाहै सोस्थान पवित्रहोवै श्रौर समाहित क्या स्थिरचित्तवाला श्रौर पवित्रहैं हाथविषे जिसके श्रौर आचांत क्या जो आचमन करचुकाहै सो गयत्रीके जपका आरंभ करे १२ इसका विशेषकर्के फल कहतेहैं ऐहिकेति ऐहिक क्या इसलोकविषे फल देणेवाले श्रौर परलोकविषे फलदेणेवाले जो पापहैं श्रौर विशेषतः क्या दोनों लोकोंविषे फल देणेवाले जो पाप जैसे लोकनिन्दा १ नरकवास २ नरकवासते अनंतर दारिद्र्यादियोग ३ इनको पूर्वोक्त विधिसे पंच दिनरात्र गायत्रीके जप करणेवाला दूरकर्ताहै परंतु यह फल प्रकीर्णकादि पापों विषे जानणा १३ इसीको विशेषकर्के कहतेहैं गायेति महाव्याहृतियोंकेसाथ औैर प्राणायामके सहित गायत्री जपके तुल्य औैर कोई भी पापको दूरकरणेवाला नाहिहै १४ ॥

इसीका और विशेष कहतेहैं ब्रह्मेति ब्रह्मचारी और मिताहार क्या थोड़ा भोजन करणेवाला और सभजीवोंपर दयावान् ऐसा होकर गायत्रीका लक्ष जप करे तद सभपापोंसे छूटजाताहै १५ और इसीका विशेषकहतेहैं अयाज्येति जिसको यज्ञ नहि कराणा तिसको यज्ञ करावे और निंदितजो है पतितादियोंका अन्न तिसको खावे तो आठ हजार गायत्रीके जपकरणेंसे शुद्ध होताहै १६ और भी विशेषहै अहेति प्रतिदिन जो द्विजोत्तम एक महीनाभर गायत्री का जप करे तो पापोंसे मुक्त होजाताहै जैसे सर्प अपनी कंचुकसे अलग होजाताहै यहां द्विजोत्तम पदसे वर्णत्रयका ग्रहण करणा ॥ १७ ॥ और गायत्रीको जो ब्राह्मणादि पवित्र होकर नित्य जपे सो परम स्थानविषे जाताहै वायुभूतः क्या वायुके वेगवाला

ब्रह्मचारीमिताहारःसर्वभूतहितेरतः गायत्र्यालक्षजप्येनसर्वपापैःप्रमुच्यते १५ अयाज्ययाजनंकृत्वाभुक्त्वाचान्नंविगर्हितम् गायत्र्यष्टसहस्रंतु जपंकृत्वाविमुच्यते १६ अहन्यहनियोऽधीतेगायत्रींवैद्विजोत्तमः मासे नमुच्यतेपापादुरगःकंचुकाद्यथा १७ गायत्रींयः सदाविप्रोजपते नियतःशुचिः सयातिपरमंस्थानं वायुभूतःखमूर्त्तिमान् ॥ १८ इत्यादिनोपचिताघमाशकत्वमुक्तं गोहिरण्यदानादीनाम् तत्रतुलापुरुषाश्वमेधादिषु पापनाशकत्वसाधर्म्येण प्रवर्त्तमानः प्रायश्चित्तशब्दोगौण एव न मुख्यइतिनागेशशूलपाण्योराशयः यद्वा यस्यकर्मणः पापनाशउत्पत्तिशिष्टस्तत्प्रायश्चित्तं यथा शिरःकपालीध्वजवान्भिक्षाशीकर्मवेदयन् ब्रह्महाद्वादशाब्दानिमितभुक्शुद्धिमाप्नुयात् इतिवचनेन द्वादशवार्षिक ब्रह्मचर्यं ब्रह्मघातजनितपापनाशेन सहैव बोधितम्

खमूर्त्तिमान् क्या ब्रह्मस्वरूपी होया २ इत्यादिग्रंथो विषे गोहिरण्यादि दानोंको प्रवृद्ध पापोंका नाशकत्व किहा है १८ और तिन्होंविषे तुलापुरुष और अश्वमेधादियों विषे पापनाशकत्व समान धर्म करके वर्त्तमान जो प्रायश्चितशब्द है सो गौण है यह नागेश और शूलपाणि जीका अभिप्राय है अथवा इसमे होर अभिप्राय है यद्वेति जिस कर्मका पापनाश उत्पत्ति करके शेष रहे अर्थात् जिसते पाप नष्ट होवें सो प्रायश्चित्तहै जैसे शिरः कपाली इससेलेकर १२ वारां वर्षका व्रत ब्राह्मणके मारणेवालेवास्ते लिखाहै इस बचनकरके बारांवर्षका ब्रह्मचर्य ब्राह्मणमारणेते होआ जो पाप तिसकेनाशके साथ हि जनायाहै

ततइति अपणी नाशकता करके बोधन करणा और अपणे नाशके इच्छाके अधीन जो इच्छाते सकाविषय होणा असेदोनोंकेसंबंधसे पापसंबंधिहोणा यहि प्रायश्चित्तत्वहै इहां (स्व)पदसे पापका ग्रहणहै तिसते असा सिद्ध होआ कि स्वर्गादिओंके निमित्त किये जो अश्वमेधादियज्ञ तिनको पापनाश करणेकी योग्यता तो है परन्तु प्रायश्चित्तता नहि है क्योंकि पापनाशके उद्देशकरके अप्रवृत्ति होणेसे जिस जगा ब्रह्मवधते उत्पन्नहोये पापके नाशके उद्देशसे अश्वमेधादियों विषे प्रवृत्ति होवे तिसजगा याज्ञवल्क्य और काश्यपजीके वचनोविषे पापनाशक होणेसे तिन्हको भी प्रायश्चित्तत्व है यहि नागेश और शूलपाणि जीका अभिप्रायहै और जिसजगा संध्यावं

ततश्च स्वनाशकतया बोधितत्वस्वनाशेच्छाधीनेच्छाविषयत्वोभयसंवन्धेन पापविशिष्टत्वमेव प्रायश्चित्तत्वम् ततश्च स्वर्गाद्यर्थविधीयमानाश्वमेधादौ पापनाशं प्रति स्वरूपयोग्यत्वेऽपि नप्रायश्चित्तत्वम् तत्र पापनाशोद्देशेनाप्रवृत्तेः यत्रतु ब्रह्मवधजनितपापनाशोद्देशेनैवप्रवृत्तिरश्वमेधादेस्तत्र याज्ञवल्क्यकाश्यपवचनयोरुत्पत्तिशिष्टपापनाशवैशिष्ट्यात्तदुद्देशेन प्रवृत्तेश्च प्रायश्चित्तत्वमिष्टमेवेति नागेशशूलपाण्योराशयः यत्र च सन्ध्यावन्दनाद्यर्थवादवाक्ये विधूतपापास्तेयान्तिब्रह्मलोकमनामयमित्यादिषु पापनाशोऽपिबोधितो ब्रह्मलोकप्राप्तिश्च तत्र संध्यावंदनादीनां मुख्यफलतायां ब्रह्मलोकावाप्तावेव सत्वेन न प्रायश्चित्तत्वं केवलं तत्र पापनाशो यदन्हापापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यामिति यदन्हाकुरुतेपापं तदन्हात्प्रतिमुच्यत इतिमान्त्रवर्णिकत्वेनाऽऽनुषंगिकएव वस्तुतो विविधेषु कर्मसु प्रवर्त्तमानं प्रायश्चित्तपदं नानार्थकमेव

दनादिओंके जो अर्थवाद वचन हैं विधूतेति जो संध्यावंदनकरदेहैं सो पापसे रहितहोंकर अनामय ब्रह्मलोकको जाते हैं इन्हो वचनो विषे पापनाशभी किहा है और ब्रह्मलोककी प्राप्ति भी कहीहै तिसजगा संध्यावंदनादिकर्मोंका मुख्यफल ब्रह्मलोककी प्राप्ति है इसते उनको प्रायश्चित्तत्व नहिहै तिस जगा यदन्हापापमकार्षंइत्यादि पापनाशकवचनोंको प्रासंगिक रूपहि किहाहै सिद्धांतकरदेहैं वस्तुतइति विचार करके देखिए तो प्रायश्चित्तपदार्थ अनेककर्मोंविषे वर्त्तमान है इसते नानार्थहि है

क्रतु जो : यज्ञ है तिसकी अंगवैगुण्यमें जो प्रायश्चित्त है सो और है सोई कहतेहैं प्रायइति प्राययहनाम अंगके विनाशका और चित्तनाम तिसके जोडनेका है इस वचनसे अंगवैकल्य करके स्वर्गादिककी उत्पत्तिविषे असमर्थ जो यज्ञादि है फेर उसको तिसविषै सामर्थ्यबोधन करके पापनाशादि अर्थकी संभावनामात्रके भी नाहोनेसे एवंचेति इसते यह सिद्ध हुआ कि प्रायश्चित्तशब्दकी तुल्यताहै भी परंतु अर्थकीतुल्यता नहि है और संकेतविशेष संबंधकके प्रायश्चित्तपदवाला होणा यहिअर्थ है ऐसा नहि कहणेयोग्य तैसे संकेतको जनाणेवाला कोई प्रमाण नहि मिलता इससे और साडेसंकेतके संबंधको और कर्म्मोविषे ना होने करके

क्रत्वंगवैगुण्यादौ विधीयमाने कर्मविशेषे प्रवर्तमानः प्रायश्चित्तशब्दस्त्वन्य एव प्रायोविनाशपर्यायश्चित्तंसंधानमुच्यतइति वचनेनांगवैकल्येन स्वर्गादिजननाक्षमस्य यज्ञादेः पुनस्तत्क्षमतामात्रबोधनेन तत्र पापनाशादेरुक्तिसंभवस्याप्यभावात् एवंच प्रायश्चित्तशब्दसाम्येऽपि न तत्राऽर्थसाम्यम् संकेतविशेषसंबन्धेन प्रायश्चित्तपदवत्त्वमेव तत्त्वमिति त्वयुक्तमेव तथाविधसंकेतग्राहकप्रमाणानुपलम्भात् अस्मदादिसंकेतस्यच संबंधतायाः कर्मान्तरेषु व्यभिचारेणाविनिगमनाविरहेणचासिद्धेरितिदिक् ॥ अथ पापस्वरूपं तन्निमित्तं च निरूप्यते तत्रादौ किंनाम पापत्वम् न तावत्तज्जातिविशेषः तस्य जातित्वसाधकस्य प्रमाणस्याऽभावात् नचनिषिद्धाचरणजन्यतावच्छेदकतया तत्सिद्धिः विहितानाचरणेनाऽपितदुत्पत्ते विहितस्याननुष्ठानादित्यनेनबोधनात्

और विनिगमक जो है एकका पक्षकरणेवाला तिसके ना होणेसे भी असिद्ध है यह मार्गदिखाया है इतीपर चलो ॥ अथेति अब पापकास्वरूप और तिसका निमित्त निरूपण करतेहैं तिसके आदिविषे क्या है पाप यह विचार होणा चाहिए सो कोईजातिविशेष भी नहि है तिसके साधकके अभावहोणेने(प्रश्न)निषिद्ध जो आचरण तिसकी जन्यताके अवच्छेदककरके जाति की सिद्धि होवे अर्थात् जो वेदमें निषेध कीयाहै तिसके करणेसे पाप होताहै इससे पापत्वजाती की सिद्धि होवेगी (उत्तर) ऐसा मत कहो विहित जो है संध्यावंदनादि तिसके नाकरणे से भी तिसकी अर्थात् पापकी उत्पत्ति होणेसे इसका बोधक वचन है विहितस्येति

इसमें और विचार कर्तेहैं विहितेति विहितका नाकरणा और निषिद्धका करणा इन्हो दोनो विषे अनुगतरूपकर्के पापजनकताके कहणेको अशक्य होनेतें और इसमै पापजनकत्वरूप कर्के अनुगम होवेगा ऐसा कहने वालेको आत्माश्रय दोष आवताहै इसते यह अर्थ भी उचित नहि अपणी उत्पत्ति जहां अपणेते होवे सो आत्माश्रयहै जैसें पापत्व क्या है कि पाप जनकत्व और इसमे और भी विचारहै क्या विहितानाचरण है अभाव और निषिद्धाचरण है भाव इनदोनोकी एकरूप कर्के कारणताके असंभवहोणेते अर्थात् भाव अभावका एकरूप कदे भी नहि हुंदा अभावतेंभी भावरूप पापकी उत्पत्ति कहीजावे गी आगे (प्रश्ण) दुःखजनकतावच्छेदक कोई धर्म्म विशेष है सोई पापत्व है (उत्तर) कुठारत्व जो है कुहाडेमें

विहितानाचरणनिषिद्धाचरणयोरनुमतरूपेण जनकतायाः दुर्वचस्त्वात् पापजनकत्वेनैवानुगमस्यात्माश्रयापत्त्याऽवाच्यत्वात् विहितानाचरणस्या भावरूपतयो भावाभावयोरेकरूपकारणताया असंभवाच्च अभावादपि भावरूपपापोत्पत्तिस्तूपपादयिष्यते (नच) दुःखजनकतावच्छेदकधर्म्म एवतत् कुठारत्वादावतिप्रसक्तेः अथ यस्यव्यापाराद्वारिका दुःखोत्पादकता तद्वृत्तिधर्म्मएवतत् कुठारादेस्त्वाघातादिद्वारिकैव तदुत्पादकतेति नाति प्रसक्तिःअतएव गोवधादिजन्येऽपूर्वएव पापत्वं न गोवधादौ तस्य पापद्वा रैवदुःखजनकत्वात् पापस्य तु न तथा पापस्यैवव्यापारतायास्तंत्रकारा भिप्रेतत्वाद्व्यापारे च व्यापारान्तरस्यानभ्युपगमात्

कोई धर्म्म इत्यादिविषे अतिव्याप्ति होवेगी इसते यह नहि मनना चाहिए (प्रश्ण) जिसके व्यापारविना दुःख होवे तिसविषे रहणेवाला जो धर्म्म है सोई पापत्व है जेडे कुठारादि. कहेहैं सो घातरूप व्यापार द्वारा दुःखको पैदे कर्ते हैं तिसतें तिन्हांविषे अतिव्याप्ति नहि आवेगी इसी कर्के गोवधादिसे होआ जो अपूर्व है उसीको पापत्व है कोई गोवधको नहि है क्योंकि तिस को पापद्वारा दुःखका जनक होणेते और पापको तैसे नहि पापकोहि व्यापारताको तंत्रकार जो शास्त्रकारहैं तिनको अभिप्रेतहोणेते अर्थात् शास्त्रकार पापकोहि दुःखजनकताको व्यापार मानते हैं और व्यापारविषे होर कोई. व्यापार नहि इसके स्वीकारते ❀

इसमें मतांतर क्या होरमतकहतेहैं केषामिति केइओंकेमतविषे गोवधतें आदिलेकर जो प्रहारादि हैं तिन्हा विषेहि पापपदका व्यवहारहै सो जैसे घृतको आयु कहतेहैं तैसा उपचारमात्रहै कोई यथार्थ नहि इसका खंडन कर्त्तेहैं मैवं ऐसा मतकहो कि गोवध परंपरा सें दुःखकोल्यावेगा परंतु आघातजो ताडना और चर्म्मका वेधनायहसाक्षात्हि दुःखके हेतुहैं इनविषे जो अतिव्याप्ति है तिसको कदी भी नहिदूरहोणेते और जिस जगा प्रायश्चित्त करके पाप दूर होगयाहै उस जगा दुःख जनकताके ना होणेते अव्याप्तिको कोन दूर करेगा इसते जो दुःखको उत्पन्न करे तिसी कानाम पाप है यहभी किसीका कहणा दूरहोआ जो पिच्छे किहाहै चर्म्मभेदादिस्थल तिसविषें अतिव्याप्तिके ना दूरहोणेतें ❀ इसविषें कोई विचारकरके कहतेहैं अत्रेति दुःखकरके नाश्य होकर और दुःखजनकतावच्छेदक धर्म्मवत्त्व जो है सोई पापका लक्षण है कुठारा

केषांचिद्गोवधादावेवपापपदव्यवहारस्त्वायुर्वैघृतमितिवदौपचारिक एवेति चेन्मैवं एवमप्याघाते त्वग्भेदे वा साक्षादेवदुःखजनकतयाऽव्यभिचारतादवस्थ्यात् यत्रप्रायश्चित्तेन नष्टंपापं तत्रदुःखजनकतायाअसत्त्वेनाऽव्याप्तेश्च एतेन दुःखजनकत्वयोग्यत्वमेव तत्त्वमित्यपिनिरस्तं उक्तस्थलेऽतिव्याप्तेरवारणात् अत्राहुः दुःखनाश्यत्वेसतिदुःखजनकतावच्छेदकधर्म्मवत्त्वं पापलक्षणम् कुठारादौ व्यभिचारवारणाय विशेषणम् इच्छादौव्यभिचारवारणाय विशेष्यं आत्मविशेषगुणानां स्वोत्तरोत्पन्नविशेषगुणनाश्यत्वनियमात् प्रायश्चित्ताचरणेन नष्टेऽव्याप्तिवारणाय स्वनाशकदुःखंप्रति स्वरूपयोग्यत्वमिति वा परिष्कार्य्यम् यदितु प्रसिध्यति तादृशीच्छा यया दुःखंनियतमुत्पद्यते यथा स्वमरणविषयिणी स्वेष्टतमवस्त्वंतरनाशविषयिणी वा तर्ह्ययोग्यत्वे सतीति विशेषणं देयं इच्छायाश्च प्रत्यक्षयोग्यत्वान्नदोषः

दिविषे दोषके दूरकरणवास्ते विशेषणहै और इच्छादिविषे व्यभिचार दूरकरणवास्ते यहै आत्माके विशेषगुणोको [illegible] णेतें उत्तर क्षणविषे उत्पन्न होए जो गुणहैं तिन्हाकरके नाश्यत्व क्या नाश[illegible] तिसका नियम होणेतें ❀ और जो पाप [illegible]त्तके करणेतें नष्ट होआ है तिसमें अव्या[illegible] रूप दोषहटाणे वास्ते अपणा नाशकरणेवाले [illegible]ति स्वरूपयोग्यत्व पद देणेतें भी परिष्कार्य्य क्या दोषदूरकरणे योग्यहै स्वरूपयोग्यत्व नाम [illegible]है जो कारणतावच्छेदक धर्म्म होवे ❀ अर्थान्तर इसमें ल्याउंदे हैन यदीति जेकर यह बात है कि ऐसी भीइच्छा है जिसते नियत दुःख पैदे होवे जैसें किसेको अपणे मरणेकी है और दूसरी कोई इष्टतम वस्तुके वियोगकी अथवा इच्छाहै तो अयोग्यत्वे सति यह [illegible] देणा इसतें दोष दूर होवेगा इच्छाको प्रत्यक्षके योग्य होणेतें

कश्चिदिति और किते २ महा पापादिकी इच्छाका भी निषेध होणेतें तिस बिषे पापत्व निश्चित हि है सो इसलक्षण करके संगृहीत नहि हो सक्ता तिसका मानस प्रत्यक्ष होणेतें इसमें नहि भ्रम करणा योग्य तिसविषे भी तैसी इच्छातें अपूर्व जो है पाप तिसकी उत्पत्ति को इष्ट होणेते अन्यथा ऐसा नहि स्वीकारकरो तो इस इच्छातें होर देहविषे जो किसे दिन होनेवालाहै उसविषे दुःखोत्पत्तिका अयोग होवे जिसतें कारण जो है सो कार्यके पूर्वक्षणविषे हुंदा है इसका नियम होणेतें ॥ अब लक्षण कहलेते अनंतर पापके निमित्त कहते हैं इसविषे मनुजीका वचन है अकुर्वन्निति वेदाविहितको नहि करणा और वेदविषे जो निंदित है तिसको करणा २ और इन्द्रियोंके विषयविषे प्रीती होणा

कश्चित्काचिन्महापापादीच्छाया अपि निषेधात्तत्र पापत्वमिष्टं तन्नैतल्लक्षणेन न संगृह्यते तस्या मानसप्रत्यक्षग्राह्यत्वादिति तु न भ्रमितव्यम् तत्रापि तादृशेच्छातोऽपूर्वोत्पत्तेरेवेष्टव्यत्वात् अन्यथा इदानींतनेच्छातः शरीरान्तरे विप्रकृष्टतमकालभाविनि दुःखोत्पत्तेरयोगात् कारणस्य कार्याव्यवहितप्राक्क्षणस्थायित्वनियमात् ॥ तन्निमित्तं च किंकिमत्राह (मनुः) अकुर्वन्विहितंकर्म्म निंदितंचसमाचरन् प्रसक्तश्चेंद्रियार्थेषु प्रायश्चित्तीयतेनरइति विहितं कर्म नित्यं संध्योपासनादि नैमित्तिकं शवस्पर्शादौ स्नानादि तदकुर्वन् निषिद्धं हिंसादि तदनुतिष्ठन् इन्द्रियार्थेषु स्रक्चन्दनादिष्वत्यन्तासक्तिं कुर्वन् नरो मनुष्यमात्रमिति कुल्लूकभट्टः शूलपाणिश्च नरउपनीतोऽनुपनीतो वेत्यपरार्कः

इन्द्रांक मनुष्य प्रायश्चित्तका अधिकारी हुंदाहैं इसीतें अर्थको प्रकटकरके कहदे हैं विहित जो है विहितहैं नित्यकर्म्म संध्योपासनादि और नैमित्तिकहैं मृतक स्पर्शादिहोयां स्नानादि कर्म मुरदे के साथ छोकके फेर स्नान करणा तिन्हको तो नहिं करणा और निषिद्ध कौशल हिंसादि तिनको करणा और इन्द्रियोंके अर्थ जो माला पुष्प और चन्दनादि इन्द्रां अत्यंत आसक्तिनवा प्रीति तिसको करदाहोआ नर कहणेते कोई मनुष्य होवे सबको प्रायश्चित्तका अधिकार है यह कुल्लूकभट्ट और शूलपाणिजीका आशय है और नर कहणेते जनेऊवाला होवे अथवा तिस विनाहोवे यह अपरार्कआदिका मत है

प्रायश्चित्तीयते क्या तिस कर्के दूर करणे योग्य जो पाप तिसका भागी हुंदा है सो याज्ञवल्क्यजी कहते हैं विहितस्येति स्पष्टार्थहै इन्हांते पुरुष पतित हुंदाहै ❀ अब पापविशेष कर्के प्राप्त हुंदिआं योनिआंका जो विशेष क्या भेदहै तिसको कहतेहैं मनुजी शरीरजैरिति शरीरते पैदे होए कर्म्मोंके दोषोंकर्के पुरुष स्थावरताको प्राप्तहुंदाहै और वाणीकर्के होए २ पापोंकर्के पक्षियोंदीआं और मृगोंकीआं योनियां विषें प्राप्तहुंदाहै और मानस जो हैं मनतें कीते होए पाप तिन्हां कर्के अंत्यजाति जो है नीचजाति तिस विषें जन्मपांदाहै ॥ इसमें विचार कर्देहैं कि यद्यपि

प्रायश्चित्तीयते तदपनोद्यपापभाग्भवति तथा याज्ञवल्क्यः ❀ विहितस्याननुष्ठानान्निंदितस्यचसेवनात् अनिग्रहाच्चेन्द्रियाणांनरः पतनमृच्छतीति पापविशेषेणयोनिविशेषमाह(मनुः)शरीरजैःकर्मदोषैर्य्यातिस्थावरतांनरः वाचिकैःपक्षिमृगताम्मानसैरन्त्यजातिताम् १ यद्यपि नराधर्म्ममधर्म्मंचोभयमेवसेवंते तथापिवाहुल्याभिप्रायणपापफलमुक्तम् किञ्चपापिष्ठानांशारिरवाचीकमानसिकान्येवत्रीणि पापानि संभवंति तथापि वाहुल्याभिप्रायेण इति व्याख्यातंवाहुल्येन शरीरकर्मजपापैर्युक्तः स्थावरत्वं मानुषः प्राप्नोति वाहुल्येनवाकृतैः पक्षित्वं मृगत्वं वा वाहुल्येन मनसाकृतैश्चांडालादित्वं प्राप्नोति १ तथाच इहदुश्चरितैः केचित्केचित्पूर्वकृतैस्तथा प्राप्नुवंतिदुरात्मानोनरारूपविपर्य्ययम् २ केचिन्नरा ऐहिकैः पापैः केचित्तु पूर्वजन्मभवैः रूपविपर्य्ययं क्षयरोगादिकृतम्

पापिआं के पूर्वोक्त प्रकार कर्के दोनो तहांके कर्महैं तथापि लोक वहुत अधर्म हि कर्देहैं और पुण्य थोडा कर्दे हैं इसतें पापका हिफल दिखाया है ॥ इसमें असा भी विचार है कि पापियोंके पाप सभजगा त्रयप्रकारके हि हैं परंतु शारीरिक क्या देहवाले पाप बहुते होण तां स्थावरयोनि और वाणीवाले वहुतहोण तां पक्षिमृगादियोनि और मनके कीते होये वहुत होण तां चांडालादियोनि प्राप्त हुंदीहैं १ तैसेहि होर कहतेहैं इहेति ईहां कीते होए पापोंकर्के और पूर्व जन्ममें कीते होये पापों कर्के कै दुरात्मा पुरुष रूपविपर्य्यय क्या क्षयरोगादि कर्के रूपांतरको पहुत्तदे हैन इसीको स्पष्टकर्के लिखतेहैं केचिदिति

विष्णुपुराणके वचनको लिखदेहैं नरेति नरक जो फल इस को महर्षिलोक कर्मादि लोपका अर्थात् पुण्यके नाशका कहतेहैं इसीमें यमजीका वाक्यहै सुरेति मदि रापीणवाला १ और ब्राह्मण और गौके मारणे वाला २ और सुवर्णके चुराणेवाला ३ और पतितके साथ व्यवहारकरणवाला ५ और कृतघ्न क्या जो किसेका उपकार नहि जाणे ६ और गुरुकीस्त्रीको स्वीकार करणेवाला ७ एह सभ नरकोंविषे क्रमकर्के पैदेहैं तिन्होंविषे जो वेदविहित का नहि करणा इसको पापकी उत्पत्तिकरणे विषे विशेष माधव जीने कियाहै तथाहीति (प्रष्ण) निंदितका सेवन है भाव तिसते भावरूप पापकी उत्पत्ति जो कहीहै सो उचित है परंतु विहितका नहि करणा सो है अभाव इसते भावरूपकी उत्पत्ति

विष्णुपुराणम् ● नरकंकर्मणांलोपात्फलमाहुर्महर्षयः ● यमः ● सुरापो ब्रह्महागोघ्नः सुवर्णस्तेयकृन्नरः पतितैस्संप्रयुक्तश्चकृतघ्नोगुरुतल्पगः एतेप तंतिसर्वेपुनरकेष्वनुपूर्वशइति तत्र विहितानुष्ठानाभावस्य पापोत्पादकत्वे विशेषो माधवीये तथाहि (ननु) निन्दितसेवनाद्भावरूपाद्दुरितोत्पत्ता वपि विहिताकरणादभावात्कथंदुरितोत्पत्तिः नह्यभावाद्भावउत्पद्यमानः क्वचिदृष्टः अत्रकेचिदाहुः संध्यावन्दनादिविहितानंनुष्ठानमग्निहोत्राद्य नधिकाररूपाशुचित्वद्योतकम् अयमेवार्थोऽकुर्वन् प्रत्यवैतीत्यनेनाभिधी यते नत्वनुष्ठानाभावाद्भावरूपस्य दुरितस्योत्पत्तिरभिधीयते सचाऽनधि कारः प्रायश्चित्तेन निवर्त्ततइति अपरे पुनराहुः अकुर्वन्निति लक्षणार्थे शतृप्रत्ययः यदेतद्विहिताकरणं तदेतत्प्रागभवीयनिषिद्धाचरणजन्यदुरि तापूर्वसद्भावस्य लिंगम् तदेवदुरितंप्रायश्चित्तेन निवर्त्ततइति

क्यों होई किसे जगा भी अभावसे भावकी उत्पत्ति नहि देखी इसमे कोई ऐसा विचार करतेहैं संध्या वंदनादि जो हैं विहितकर्म इनका नहि करणा यह अग्निहोत्रादि शुभकर्मों विषे अनधि काररूप अपवित्रताको द्योतन करदाहै एहि अर्थ अकुर्वन्प्रत्यवैति इसकर्के कहीदाहै और अनुष्ठानके अभावसे भावरूपकी उत्पत्ति नहि है सोई अनधिकार प्रायश्चित्तकर्के दूर हुंदाहै और विद्वान् ऐसा कहतेहैं अकुर्वन् इत्थं लक्षणाविषे शतृप्रत्यय है तिसका ऐसा अर्थ है जो यह विहितका नहि करणा सो एह पूर्वजन्मकर्के निषिद्धाचरण ते होआ जो पाप तिस के होणेका चिन्हहै सोई पाप प्रायश्चित्त कर्के दूर हुंदाहै

होर कोई ऐसा भी कहदेंहैं अभावसे भाव नहि पैदे हुंदा यह कोई सार्वत्रिक वार्ता नहि किंतु न्यायमत विषे प्रागभाव सभका कारण है और मीमांसकोनें और भट्टजीने भी अभावसे भावकी उत्पत्ति कहीहै क्यों कि योग्यानुपलब्धिहै स्वरूप जिसका ऐसा अभाव जो है प्रमाण तिसते घटादियोंके अभाव विषे विषय प्रमिति क्या विषयबोधरूप जो भाव तिसकी उत्पत्ति कहणाते और प्रभाकर के मतवाले कहतेहैं कि भावहि किसे कारणते अभाव किहा जाताहै कोई अभाव पदार्थ वक्खरा नहि तिसते यह सिद्ध होआ कि विहिताऽकरण भी एक भाव हि है जेकर तिसतेप्रत्यवाय उत्पन्न होवे तद तेरेको कौणसी हानी है॥ अब इसमे अपणा विचार कहतेहैं (अथेति) प्रत्यवाय नाम पापरूप अपूर्वका है सो कृतिका साध्य हो करके कृतिका

अन्येप्येवंसमादधते ॥ अभावाद्भावोनोत्पद्यतइति नायमेकान्तः तार्किकमतेप्रागभावस्य कारणत्वात् मीमांसकमते भट्टैस्तावदभावाद्भावोत्पत्तिरभ्युपगता योग्यानुपलब्धिलक्षणादभावात्प्रमाणाद् घटाद्यभावे विषयप्रमितेर्भावरूपायाजननात् प्राभाकरैश्च भावएवाऽभ्युपगम्यते भावान्तरमभावोहिकयाचिद्व्यपेक्षयेत्युदीरणात् तथाच सति विहिताकरणमपिभावान्तरमितिकृत्वा तस्मात्प्रत्यवाय उत्पद्यतां का तव हानिः ॥ अथोच्यते ॥ प्रत्यवायो नाम दुरितापूर्वं तच्च कृतिसाध्यत्वेसति कृत्युद्देश्यं तथाच विहिताकरणस्य कृतिरूपत्वाभावादपूर्वजनकत्वं नास्तीति नाऽयंदोषः तस्य लक्षणस्य विहितप्रतिषिद्धजन्यापूर्वविषयत्वेन संकोचनीयत्वात् अन्यथा उपेक्षालस्याभ्यामकृतिरूपाभ्यांदुरितापूर्वानुत्पादप्रसंगात् उपेक्षाजन्यं च दुरितापूर्वं स्कंदपुराणे दर्शितम् नाभिरक्षंतियेशक्ता दीनंचातुरमाश्रितंआर्त्तनचानुकम्पंते तेवैनिरयगामिन इति

उद्देश्यहै अर्थात् किसेके नामपर प्रयत्न करणेका विषयहै और जो है विहितका नहिकरणा तिसको कृतिरूपत्वके ना होणेते अपूर्वजनकत्व नहि है इसते यह दोष नहिहै तिसलक्षणको विहित और निषिद्ध जो कर्म्महि तिसतें पैदे होआ जो अपूर्व तिस विषयत्व करके संकोचकरणेके योग्य होणेते अर्थात् विहितनिषिद्धको हि ओह लक्षणविषयकर्दाहै कोई विहितके ना करणेमे नाहि जेकर इसको नहि मानो तो उपेक्षाजाणके कर्म्म नहि करणा और आलस्य एहदोनोकृतिरूपवाले जो नहि इनकर्के पापकोउत्पत्ति हुंदीहै परंतु नाहोणी चाहिए उपेक्षाकर्के पाप होताहै सो स्कंदपुराणविषे लिखयाहै नाभीति जो पुरुष समर्थहोण और उनको दुःखी और दारिद्री जो आश्रित होआहै उसकी रक्षा नहि करण और आतुरपर कृपा ना करण सो नरक को जातेहैं

आलसककें जो पाप है सो मनुजीनें किहाहै अनेति वेदोंका आलसतें अभ्यास ना करणा और आचारका उलंघनकरणा आलसहोणतें और अन्नदोषतें ब्राह्मणकों मृत्यु मारयाचांदाहै ॥ अब पुछदेहें कि तिस जगाभी किसे तहाँ कृति है इस बातको मनदे हो तो इत्थे भी विहितको उलंघनरूप कृति है इसते यह सिद्ध होआ कि वहुतरस्मृतिवचन ना करणाविषे प्रत्यवायपर हैं सो सभ सार्थक होजानगे ॥ मतांतरकहतेहैं ईश्वरेति ईश्वरवादी जो हैं आस्तिकलोक तिनके मतविषे विहितका नहि करणा यह परमेश्वरकी आज्ञाका उलंघनहै इसतें इनकोभी कृतिरूपता स्पष्टहोई इसमे स्मृतिवचन भी है श्रुतीति ईश्वर कहतेहैं श्रुति और स्मृति यह

आलस्यजन्यं चाऽपमृत्युनिमित्तं दुरितापूर्वं मनुना ॥ अनभ्यासाच्चवेदाना माचारस्यचलंघनात् आलस्यादन्नदोषाच्चमृत्युर्विप्रान्जिघांसतीति ॥ अथ कथंचित्तत्रकृतिः संपद्यते तर्ह्यत्रापि विहितोल्लंघनलक्षणा कृतिरस्तु एवं च सति वहूनिस्मृतिवचनान्यकरणे प्रत्यवायपराणि स्वारस्येनाऽर्थवंति भविष्यन्ति ईश्वरवादिनां तु विहिताकरणस्याज्ञोल्लंघनरूपत्वात्कृतिरूपत्वं विस्पष्टम् अतएव स्मर्य्यते श्रुतिस्मृतीममैवाज्ञेयस्तेउल्लंघ्यवर्त्तते आज्ञाच्छेदीममद्वेषीनसभक्तोनवैष्णवइति सर्वथा विहितमकुर्वतः प्रायश्चित्तनिमित्तं दुरितापूर्वमस्त्येव निन्दितसेवनेत्वऽविवादं दुरितापूर्वं(ननु) अनिग्रहाच्चेन्द्रियाणामिति पृथगुपादानमयुक्तं विहिताकरणानिंदितसेवनाभ्यान्यस्य तृतीयस्य दुरितहेतोरभावात् मैवम् अस्याभयात्मकत्वेन तृती यत्वोपपत्तेः

दोनो मेरी आज्ञाहैं जो कोई इनका उ[illegible]घन करकें वर्तदाहै सो पुरुष मेरी आज्ञाका छेदन करदाहै और मेरा द्वेषीहै क्या मेरा विरोधीहै और अभक्तहै और वैष्णव भी नहिं इति इसते कहतेहैं कि सर्वप्रकारसें जो वेदविहित नही करे [illegible] उसकोप्रायश्चित्तका निमित्त दुरितापूर्व क्या पाप है और निन्दितसेवनविषे पापहोणेमे कोई [illegible] विवाद नहि(प्रश्न)इंद्रियांकें नहि रोकणेतें पाप हुंदाहै यह तीसरा हेतु जुदें करकें क्यों किहाहै नाहि कहणाचाहिए(उत्तर)ऐसामत कहो इसके दोनो स्वरूपहैन विहिताकरण और निंदितकासेवन इसककें तीसरा रूपहोणा योग्यहै सोईकहतेहैं

तयेति समनाहि इंद्रियोंके अर्थविषे प्रसक्त ना होवे इस विषे इंद्रियके विषयमें प्रीति को निंदा है सो शब्दसे कही है और स्नातक व्रतप्रकरणके मध्यविषे इसका पाठहै तिसविषे इंद्रियप्रसंगके निषेधका संकल्प विधेय है इस अर्थसे भी निषेध आया तिसते अनिग्रह तीसरा हेतु पापका हैं यहि विहिताकरणादि हेतुत्रय पापके पैदे करण वाले प्रश्नोत्तर करके दृढ कीतेहैं मदनपारिजातविषे ॥ सो कहतेहैं (प्रश्न) अकुर्वन् विहितं इत्यादि जो किहाहै इस वचनकरके पाप तो प्रायश्चित्तविषे निमित्त है और पाप विषे विहिताकरणादि हेतुत्रय हैं यह किहा है तैसे जो पुंश्चली व्यभिचारिणी स्त्री और वानर

तथाहि इन्द्रियार्थेषु सर्वेषु न प्रसज्येतकामतइति इन्द्रियप्रसक्तेर्निन्दितत्वं शाब्दम् स्नातकव्रतप्रकरणमध्ये पाठात्प्रसक्तिप्रकरणानिषेधसंकल्पस्य तत्र विधेयत्वेनाऽवगमात् विहितत्वमार्थिकम् तथाचाऽनिग्रहस्योभयोल्लंघनरूपत्वात्तृतीयनिमित्तत्वेन पृथगुपादानम् विहिताकरणादित्रितयस्यैव पापोत्पादकत्वमाक्षेपसमाधानाभ्यां पुनर्दृढीकृतं मदनपारिजाते तथाहि (ननु) अनेन वचनेन पापं प्रायश्चित्ते निमित्तं पापे च विहिताकरणादित्रयमेव हेतु रित्युक्तम् तथाच पुंश्चलीवानरखरादिदष्टस्य मिथ्याभिशप्तादेश्च विहिताकरणादिष्वन्यतमस्याऽपिहेतोरभावेन पापाभावात्कथं पुंश्चलीवानरखरैर्दष्टःश्वोष्ट्रादिवायसैः प्राणायामंजलेकृत्वाघृतंप्राश्यविशुद्ध्यतीत्यादिभिर्याज्ञवल्क्यादिवाक्यैस्तस्य प्रायश्चित्तं विधीयते ॥ उच्यते एतत्प्रायश्चित्तविधानात्पापे च हेतुत्रयस्यैवकथनाज्जन्मांतराचरितनिंदितसेवनादिजन्यं मिथ्याभिशापादिलिंगाक्षेप्यमेतत्प्रायश्चित्तविनाश्यं तस्य पापमस्तीति गम्यते तथाच तत्क्षयार्थं प्रायश्चित्तविधानमिति युक्तमेवपापे हेतुत्रयकथनम्

और गधा इनका दंशहोणा और मिथ्या किसीको दूषण लगाणा इत्यादि जो पापहैं सो इन्हो तीनो हेतुओं विचों किसे करके भी नहि होते तो किसकरके उनके वास्ते प्रायश्चित्त किहाहै क्या पुंश्चलीआदिकका जिनको दंदलगे सो प्राणायाम जलविषे करके घृतपीने से शुद्धहुंदाहै इत्यादि याज्ञवल्क्यादि मुनियों ने सो प्रायश्चित्त नहिं कहणा था(उत्तर)उच्यते इति इस प्रायश्चित्तके विधान होणेते और पापविषे हेतुत्रयको हि दिखाणेंनि जन्मांतर विषे क्या और किसे जन्मविषे कीते होए पापोंका प्रायश्चित्त उक्तविषयविषेमिथ्याभिशापादि निमित्त द्वारा किहाहै ऐसा प्रतीत हुंदाहै तिसते जन्मांतरके कीते होए पापके क्षयवास्ते प्रायश्चित्त करणायोग्य है

और पापविषे तीन हेतु किहेहैं सोभी योग्य हैं ॥ और इसमे मनुजीभी पापद्वारा विहिताकरणादि त्रयकों हि प्रायश्चित्तका प्रयोजक कहतेहैं प्रयोजकनाम परंपरा कारणदा है सो वचन लिखोदा है अकुर्वन्निति इसका अर्थ पिच्छे होचुकाहै तिसतें प्राय श्चित्त मे पाप हि निमित्त है और पापविषे हेतु तीनहैं एह वात सिद्धहोई अब कहते हैं कि पाप तो सिद्ध होआ ❀ परंतु तिसकी संख्या कितनी है इसवास्ते प्रायश्चित्तक दंवादि जो ग्रंथहैं तिन्हांविषे कही जो पापकी गणना सो लिखीदीहै सो गणना पृष्टाकोटि न्यायकर्के नहि होसकदी यथा जिसको पुच्छयाहोये तिसका थोडा वहुत कर्के सभका उत्तरकहणा इसकानाम पृष्टाकोटिन्यायहै जैसे चोरीके दंडवास्ते पुच्छया

मनुरपि पापद्वारा विहिताकरणादित्रयस्यैव प्रायश्चित्तप्रयोजकत्व माह अकुर्वन्विहितं कर्मनिन्दितंच समाचरन् प्रसक्तश्चेन्द्रियार्थे षुप्रायश्चित्तीयतेनरइति तस्मात्प्रायश्चित्ते पापमेव निमित्तं पापे ष हेतुत्रयमेवेति सिद्धम् ❀ अथ सिद्धे दुरिते का तत्संख्येति प्रायश्चित्तकदंवाद्युक्ता गणना लिख्यते सा च पृष्टाकोटिन्यायेन वक्तुमशक्याऽपि स्थूलोपाधिविषयत्वेन शक्या यथा महापातकम् १ अतिपातकम् २ पातकम् ३ इदमेवाऽनुपातकम् ३ उपपातकम् ४ इमानि पातित्यहेतूनि तथा जातिभ्रंशकराणि ५ संकरी करणानि ६ मलिनीकरणानि ७ अपात्रीकरणानि ८ प्रकीर्णकानि ९

होआ वस्त्र भूषण भाजन काष्ठकुद्दालादि गणना से कहणा होवे तो अनंतहै कह नहि सकीदा सो स्थूल २ उपाधि कर्के हि कहणेको शक्य है जैसे सुवर्णका चोर और होर किसे वस्तुका चोर इसरीतीसे गणना करीदीहै यथेति प्रथम महापातक १ और अतिपातक २ और पातक ३ इसीकों अनुपातकभी कहते हैं उपपातक ४ यह चार पातित्यके हेतु हैं अर्थात् इन्हों पापोंके करणवाला पतित हुंदाहै पहले त्रयपापके करणेवाला एकवारी करणेते भी पतित होताहै और चतुर्थके करणेवाला वहुतवार करणेसे पतित हुंदाहै यह विचार आगे आवेगा जातीति यह अर्थ स्पष्ट है

अवकीर्ण का नाम दूसरा (अवकीर्ण) है अथेति इनके उद्देश क्रमकर्के भेद दिखायी देहैं ब्राह्मणकामारणा १ मदिराकापीणा २ ब्राह्मणके सुवर्णका १६ मासेतें अधिक चुराणा ३ और गुरु स्त्रीकों भोगणा ४ और इनके संसर्गवाला ५ यह पंज महापाप कहेहैं और माताविषे गमन करणा १ और कन्याविषे २ और स्नुषा क्या नोआंविषे ३ और भगिनीविषे गमन ४ यहचारे अतिपातक हैं तैसेहि यज्ञ विषे स्थित क्षत्रियकावध १ और यज्ञविषे स्थित वैश्यका वध २ और रजस्वला स्त्रीका वध ३ और गर्भवतीस्त्रीका.४ और समानगोत्रवाली स्त्रीका क्या अपने गोत्रवाली स्त्रीका.५ और ब्राह्मणका अविज्ञात जो गर्भ तिसका, ६ और शरणागतका जो मारणाहै ७ और गुरुओंका अनादर

अवकीर्णानीतिकेचित् अथैपामुद्देशक्रमानुसारेण भेदाः ब्रह्महत्या १ सुरापानं २ स्तेयम् ३ गुर्वंगनागमः ४ एतत्संसर्गश्चेति ५ पंच महापातकानि मातृगमनं १ दुहितृगमनम् २ स्नुषागमनम् ३ भगिनीगमनंचेति ४ चत्वार्य्यतिपातकानि ॥ यागस्थक्षत्रियवधः १ यागस्थवैश्यवधः २ रजस्वलायावधः ०३ अन्तर्वत्न्याव ४ सगोत्राव- ५ ब्राह्मणस्याविज्ञातगर्भस्य ६ शरणागतस्यघातनम् ७ गुर्वधिक्षेपः सतु वहुविधः गुरुप्रतिकूलता ८ गुरूपरोधः ९ गुरुणासहवाग्विरोधः १० गुरुप्रत्यर्थिता ११ गुरुस्पर्द्धालुता १२ गुरोरनृताभिशंसनम् १३ वेदनिंदा १४ सुहृद्वधः १५ अधीतवेदविस्मरणं १६ विश्वस्तविपदानं १७ ब्राह्मणश्वासरोधश्चेति १८ ब्रह्महत्यासमानि ॐ निषिद्धभक्षणं १ कौटिल्यंराजविपये २ स्वोत्कर्पार्थंराजकुलादावनृतभापणं ३

सो वहुत तरांकाहै एक गुरुयोंकी प्रतिकूलता क्या विरोधीहोणा ८ और दूसरा गुरुका रोकणा जो बातसे अथवा वादार्थसे ९ और गुरुओंके साथ वाग्विरोध १० और गुरुकी प्रत्यर्थिता क्या जीविकाका विघात ११ और गुरुओंके साथ स्पर्द्धा क्या परोक्षनिंदा १२ और गुरुके अर्थ झूठकहणा अथवा उनके साथ झूठ कहणा १३ और वेदकी निंदा १४ मित्रका मारणा १५ और पडेहोए वेदका विस्मरण १६ विश्वासपर रहणवाले को विपदेणी १७ और ब्राह्मणका श्वास रोकणा १८ यह पाप ब्रह्महत्याके तुल्यहैं ॐ निषिद्ध जो लसुनादि तिनका भक्षणकरणा १ राजा विषे कुटिलता करणी २ और अपनी वडयाई वास्ते राजकुलादि विषे झूठ कहणा ३

और रजस्वला स्त्री का मुख चुंबन करणा ४ और झूठी उगाही देणी ५ और मित्रका वध करणा ६ इनकी ब्रह्महत्याके तुल्य और सुरापानके तुल्य इन्हां दोआं विषे जो गणनाहै सो प्रायश्चित्तके विकल्प वास्ते है यह संपूर्ण पाप मदिरा पानके तुल्य हैं ❀ घोडेका चुराणा १ और रत्नका चुराणा २ और मनुष्य का चुराणा ३ और स्त्रीका चुराणा ४ और पृथ्वीका चुराणा ५ और गौका चुराणा ६ और सभतर्हांकी ब्राह्मणकी छोडी होई अमानत नहिदेणी यह संपूर्ण सुवर्ण चुराणेके तुल्य जानणे ❀ मित्र की स्त्री और उत्तमवर्णकी कन्या और भयण और चांडाली और हीनजाति की स्त्री। और समान गोत्र की स्त्री और नुंह और माता की भयण और पिता की भयण और मामी और माता की सौकण माताकी भयण और आचार्य की कन्या

रजस्वलामुखास्वादः४ कौटसाक्ष्यं ५ सुहृद्वधः६ उभयत्रगणना प्रायश्चित्तविकल्पार्था इतिसुरापानसमानि ❀ अश्वहरणं १ रत्नहरणं २ मनुष्यहरणं ३ स्त्रीहरणम् ४ भूहरणम् ५ धेनुहरणम् ६ सर्वनिक्षेपहरणम् ७ तच्च ब्राह्मणसंबंधि इतिसुवर्णस्तेयसमानि ❀ मित्रभार्य्या उत्तमवर्णाकुमारी भगिनी चांडाली हीनजातिः समानगोत्रा स्नुषा मातृष्वसा पितृष्वसा मातुलानी मातृसपत्नी मातृभगिनी आचार्य्यतनया आचार्य्यपत्नी ऋत्विगुपाध्यायश्रोत्रियपत्नी रजस्वला निक्षिप्ता स्वसुताआसुगमनम् तथाश्वश्रूः पितृव्यपत्नी शिष्यपत्नी भगिनीसखी शरणागता राज्ञी प्रव्रजिता धात्री साध्वी वर्णोत्तमा आसुगमनम् गुरुतल्पसमानि ३० इमान्यनुपातकानि ❀

और आचार्य की स्त्री और ऋत्विग् और गुरु और वेदपाठी इनों की स्त्री और रजस्वला स्त्री और निक्षिप्त क्यां कोई रक्षावास्ते छोडीगिआहै किसे स्त्रीको सो स्त्री और अपणी कन्या इनों विषे गमन करणेवाला तैसेहि श्वश्रू क्या अपनी स्त्रीकी माता और पितृव्यपत्नी क्या चाचेकी स्त्री और अपने शिष्यकी स्त्री और भगिनीकी सखी क्या सहेली और शरणागता क्या किसेके भयसे अपनी रक्षाके अर्थ आई होई और राजाकी स्त्री और संन्यस्त होई जो स्त्री और धात्री क्या उपमाता दुद्धपिआणे वाली और साध्वी क्या सच्चरित्रा और वर्णोत्तमा क्या ब्राह्मणी इन्हांविषे जो गमनहै सो गुरुतल्पग पापके तुल्यहै १० यह अनुपातक किहेहैं ॥

और गोवध क्या गौ का मारणा १ और व्रात्यता क्या जो यज्ञोपवीतादि संस्कारहैं तिन्हते हीनहोणा २ और स्तेय क्या ब्राह्मण के तोला सुवर्णते उरे सुवर्णकी अर होर सभवस्तुकी चोरी ३ और करज नामुकाणा ४ और जिसको अग्निके स्थापन का अधिकार है तिसने अग्निका स्वीकार नहि करणा ५ और जो वस्तु नहि वेचणे योग्य तिसका वेचणा ६ और परिवेदन क्या बड़ेको छोडकर छोटेको विआणा

गोवधः १ व्रात्यता २ स्तेयम् ३ ऋणानपाकरणम् ४ अनाहिताग्निता ५ अपण्यविक्रयः ६ परिवेदनम् ७ भृतादध्ययनादानम् ८ भृतकाध्यापनम् ९ पारदार्यं १० पारिवित्त्यम् ११ वार्द्धुष्यम् १२ लवणक्रिया १३ स्त्रीवधः १४ शूद्रवधः १५ वैश्यवधः १६ क्षत्रवधः १७ निंदितार्थोपजीवनम् १८ नास्तिक्यम् १९ व्रतलोपः २० सुतविक्रयः २१ धान्यस्तेयम् २२ कुप्यस्तेयम् २३ पशुस्तेयम् २४ अयाज्ययाजनम् २५ पितृत्यागः २६ भ्रातृत्यागः २७ सुतत्यागः २८ तडागविक्रयः २९ आरामविक्रयः ३० कन्यासंदूषणम् ३१ परिनिंदकयाजनम् ३२ परिनिंदकस्यकन्याप्रदानम् ३३ कौटिल्यम् ३४ व्रतलोपनम् ३५ आत्मार्थेक्रियारंभः ३६ मद्यपस्त्रीनिषेवणम् ३७ स्वाध्यायत्यागः ३८ अग्नित्यागः ३९ सुतत्यागः ४० बांधवत्यागः ४१ इन्धनार्थंद्रुमच्छेदः ४२ स्त्रियाजीवनम् ४३ हिंसयाजीवनम् ४४ औषध्याजीवनम् ४५ हिंस्रयंत्रविधानम् ४६ व्यसनानि ४७ आत्मविक्रयः ४८ शूद्रप्रेष्यं ४९ हीनसख्यम् ५० हीनयोनिनिषेवणम् ५१ अनाश्रमेवासः ५२ परान्नपरिपुष्टता ५३ असच्छास्त्राधिगमनम् ५४ आकरेष्वधिकारिता ५५ भार्याविक्रयः ५६ असत्प्रतिग्रहः ५७ भार्यात्यागः ५८ मिथ्याभिशंसनं ५९ नित्यानिशंसनता ६० इत्युपपातकानि ●

एकः सुतत्यागोगृहान्निष्कासनम् अन्यत्रसुतत्यागःसंस्काराद्यकरणम्

७ और मजूरी मककर पढना ८ अथवा पढाना ९ और पारदार्य्य क्या परस्त्रीका सेवनकरणा १० इत्यादि ६० सठउपपातक हैं सो मूलविषे स्पष्ट हैं ● इनकेअर्थ उपपातक प्रकरणके आदिविषे लिखेहैं उसीजगाते देखलेने इसगणनामे एकजगा सुतत्यागका अर्थ यह है कि पुत्रत्यागदेना दूसरी जगा यह अर्थ है कि पुत्रका संस्कार नहि करणा-

ऐसेहि एकजगा व्रतलोपहै ब्रह्मचारिको स्त्रीसंभोग और दूसरीजगा व्रतलोप है व्रतका नहिकरणा क्या एकादश्यादि व्रतका लोप ॥ अब होर पाप दिखाईदेहैं ब्राह्मेति ब्राह्मणको पीडाकरणी १ और दुर्गन्धि जो लसुनादि और मद्य तिसका आघ्राण क्या सिंघणा २ और कुटिलस्वभावहोणा ३ पुरुषके साथमैथुन ४ मुखआदिमे मैथुन ५ पशुके साथ मैथुन ६ एह छे जाति भ्रंशकरनामक पाप हैं ॥ और गधा १ घोडा २ ऊठ ३ मृग ४ हाथी ५ छाग क्या बकरा६ मेप क्या भिड्ड ७ मछ ८ सर्प्प ९ महिष १० इनका एक एकका जो मारणाहै एहसंकरीकरणपहैं ॥ और निन्दित जो हैं म्लेच्छ पतितादि तिन्हाते प्रतिग्रह क्या दानलैणा १ और वाणिज्य क्या निन्दित वस्तुका व्यापार करणा २ शूद्रसेवा द्विजातियोंने करणी ३ एहत्रय पाप अपात्रीकरण कहेहैं ॥ और छोटेजीवोंकी हत्या १ और मोटेजीवोंकी हत्या २ और पक्षिओंकी हत्या ३ और मद्यकर्के मिलीहोई वस्तुका भोजन ४ और फलोंकी ५ और

एकत्रव्रतलोपो ब्रह्मचारिणः स्त्रीसंभोगः अन्यत्रव्रतलोपो व्रताऽकरणम् एकादश्याद्यननुष्ठानम् ॥ ब्राह्मणपीडाकरणम् १ दुर्गंधेर्लशुनादेर्मद्यस्यचाघ्राणम् २ कुटिलत्वम् ३ पुंसिमैथुनम् ४ मुखादौमैथुनम् ५ पशुमैथुनम् ६ इमानि जातिभ्रंशकराणि ॥ गर्द्दभ १ तुरग २ उष्ट्र ३ मृग ४ हस्ति ५ छाग ६ मेष ७ मत्स्य ८ सर्प्प ९ महिषाणांप्रत्येकंवधः १० इमानि संकरीकरणानि ॥ निन्दितेभ्यःप्रतिग्रहः १ वाणिज्यम् २ शूद्रसेवनम् ३ इमान्यपात्रीकरणानि ॥ क्षुद्रजंतुहत्या १ स्थूलजंतुहत्या २ पक्षिहत्या ३ मद्यसंस्पृष्टभोजनम् ४ फल ५ समिधा ६ कुसुमानांचौर्य्यम् ७ अल्पद्रव्यनाशेऽप्यत्यन्तवैक्लव्यम् ८ इमानिमलिनीकरणानि ॥ राजाज्ञाप्रतीघातः १ राजाज्ञप्तकर्माऽकरणम् २ पुनःप्रदानम् ३ प्रकृतिसंभेदः ४ पाषंडिसंबंधेनवैदिकानांश्रेणीनांगणानां च धर्मविपर्ययाः ५ पितापुत्रविवादः ६ प्रायश्चित्तविपर्ययः ७ प्रतिग्रहविलोपः ८

समिधांकी ६ और पुष्पोंकीचोरी ७ और थोडीभी वस्तुकानाश देखकर व्याकुल होणा ८ एह अठ पाप मलिनीकरणनाम करके किहेहैं ॥ अब प्रकीर्णकपापोंकी गणना करतेहैं राजाकी आज्ञाका भंगकरणा १ राजाकी आज्ञासे प्राप्त जो कार्य तिसका नाकरणा २ एक वेर दान कीतेका दूसरी वेर दान करणा ३ राजाके साथ प्रजाकाभेदकराणा ४ पाखंडियोंके संबंधकर्के वैदिक अर्थात् वेदपढनेवाले लोक और पंच और जातिसमूह इनांका धर्म्म विपरीत कराणा ५ पिताकेसाथ पुत्रका संवादहोणा ६ और किहाहै जो प्रायश्चित्त तिसमे होर प्रायश्चित्त कराणा ७ दानलेकर मुकर जाणा ८

आश्रमीति आश्रमी जो ब्रह्मचारी आदिक हैं इनांको कोप कराणा ९ वर्ण संकरकादोष १० उत्तमपुरुषनें वर्णसंकरोंकी वृत्तिधारणी ११ वर्णसंकरका नियम करणा १२ उष्ट्रयान क्या ऊठके ऊपर चढना १३ और खोतेके ऊपर चढके जाना १४ और तुंकार हुंकार कर्के गुरोंको जीतना १५ और वादकर्के ब्राह्मणोंकी पराजय करणी १६ और ब्राह्मणकों वस्त्रकर्केबांधना १७ और ब्राह्मणकेतांई दंडका गूरणा १८ और दंडादिकर्के ब्राह्मणका रुधिर निकासना १९ और ब्राह्मणकों मारमार अंदरल हु पादेणा २० और काष्ठर्थी आदिलेकर जो शस्त्रहैं तिनोंकर्के ब्राह्मणकी त्वचाका भेदनकर णा २१ और ब्राह्मणकी अस्थिका भेदनकरणा २२ और पाणीकी सन्निधि क्या जलकी

आश्रमिणांकोपः ९ वर्णसंकरदोषः १० वर्णसंकरवृत्तिः ११ वर्णसंकरानियमः १२ उष्ट्रयानम् १३ खरयानम् १४ तुंकारहुंकाराभ्यांगुरुजयः १५ वादेन विप्रपराजयः १६ विप्रस्यवाससावंधः १७ विप्रायदंडोद्गूरणम् १८ दंडादिनाविप्रस्याऽसृक्पातनम् १९ तथाविप्रस्याऽभ्यंतरशोणता २० काष्ठादिनाविप्रत्वग्भेदनम् २१ विप्रास्थिभेदनंवा २२ जलसन्निधिंविनामलमू त्रोत्सर्गः २३ जलेवाअग्नौमलमूत्रादित्यागः २४ वेदोदितंनित्यकर्मत्यागः २५ स्नातकव्रतलोपः २६ पंचमहायज्ञानऽकृत्वाभोजनम् २७ आहिताग्ने रग्न्युपस्थानाभावः २८ अन्यस्मैइंद्रचापदर्शनम् २९ वाअन्यस्मैपला शाग्निदर्शनम् ३० ब्राह्मणेननीलवस्त्रधारणम् ३१ क्षत्रियवैश्याभ्यां पर्वसुनीलीवस्त्रधारणम् ३२

समीपता विना विष्टा और मूत्रका त्याग २३ जलमें वा अग्निमें विष्ठा मूत्रादिका त्याग २४ और वेदकर्के कथन किया जो नित्यकर्म्म सन्ध्यावन्दनादि तिसका त्याग २५ और स्नातक व्रतका लोप २६ और पंचजो हैं महायज्ञ क्या पाठकरणा १ और हवनकरणा २ और अति थिका पूजन ३ और तर्प्पण ४ और वलिवैश्व देव ५ इनके करणे विना भोजन करणा २७ और साग्निककों अग्निकीसेवातें रहित होणा २८ और दूसरे मनुष्यकेतांई इन्द्रधनुषका दिखाणा २९ अथवा दूसरे मनुष्यके तांई अकस्मात् लगा जो पत्रोंकोंअग्नि तिसका दिखाणा ३० और ब्राह्मणने नीलकर्के रंगया जो कपडा तिसका धारणाकरणा ३१ क्षत्री और वैश्य जो हैं तिनोंने पर्वोंमे नीले वस्त्रका धारणा ३२

द्विजस्येतिद्विज जो हैं ब्राह्मण क्षत्री वैश्य इनोंने पळाशवृक्षके काष्ठकके वने जो हैं यान और शय्याश्रौर पादुकादि तिनमें स्थित होणा ३३ श्रौर क्षत्रि जो हैं तिनकों रणते पराङ्मुखहोना ३४ फळके देनेवाले वृक्षका छेदन ३५ श्रौर दोब्राह्मण जो हैं तिनके मध्यविषे गमन ३६ श्रौर ब्राह्मण श्रौर अग्निके मध्यविषे गमन ३७ श्रौर स्त्रीपुरुष जो हैं तिनके मध्यविषे गमन ३८ श्रौर गौ श्रौर वृषभ इनके मध्यविषे गमन ३९ श्रौर होमके समयमें होमके करणे वाला. जो है श्रौर श्रग्नि जो हैं तिनके मध्यविषे गमन ४० गौ. श्रौर महिषीके दोहकालमें मध्य विषे गमन ४१ श्रौर पठन पाठन समयमें मध्य विषे गमन ४२ श्रौर दार संग्रह क्या स्त्री संग्रह समयमे मध्यविषे गमन ४३ श्रौर नख. केश रुधिर इनका भक्षण ४४ श्रौर मूत्र वा विष्टा

द्विजस्यपलाशवृक्षयानशय्यापादुकादौस्थितिः ३३ क्षात्रियस्यरणात्पराङ्मुखत्वम् ३४ फलप्रदवृक्षच्छेदनम् ३५ ब्राह्मणद्वयोरंतरेणगमनम् ३६ ब्राह्मणाऽग्न्योर्वा ३७ दंपत्योर्वा- ३८ गोवृषयोर्वा ३९ होमकालेऽन्तरेणगमनम् ४० दोहेऽन्तरेणगमनम् ४१ स्वाध्याये ४२ दारसंग्रहेऽन्तरेणगमनं ४३ नखकेशरुधिरभक्षणम् ४४ कृते मूत्रेपुरीषे वा शौचंविनास्नानकरणम् ४५ गर्भिणीपतेः समुद्रस्नानम् ४६ केशश्मश्र्वादिकर्त्तनं वा ४७ तथाश्राद्धभोजनम् ४८ शरणागतपरित्यागः ४९ वेदविप्लवः ५० चांडालश्रोत्रावकाशेश्रुतिस्मृतिपाठः ५१ सर्पनकुलयोः ५२ तथाऽजमार्जारयोः ५३ मूषकोष्ट्रयोः ५४ मंडूकयोषितोः ५५ पुरुषैडकयोः ५६ अश्वशुनोः ५७ अश्वखरयोरंतरागमनम् ५८ क्रोधात्स्वभार्य्यायाअगम्येतिकथनम् ५९

त्यागके पीछे शौचके किये विना स्नान करणा ४५ श्रौर गर्भिणीके स्वामीकों समुद्रस्नान ४६ अथवा गर्भिणीके पतिकों शिरकेवाल श्रौर श्मश्रुश्रादिका मुंडन ४७ श्रौर गर्भिणीपतिकों श्राद्धका भोजन ४८ श्रौर शरणागत .का त्याग ४९ श्रौर .वेदोंका विनाश करणा ५० श्रौर चांडालकेसुनतेहोयांवेद श्रौर.स्मृतियोंका पडना ५१ सर्प श्रौर नकुलके मध्यमें गमन करणा ५२ श्रौर तैसेंहि बकरे श्रौर बिल्लेके मध्यमें गमन ५३ चूहे श्रौर उष्ट्रकेमध्यमे गमन ५४ श्रौर मंडूक क्या. डड्डूँ श्रौर स्त्रीके मध्यमें गमन ५५ श्रौर पुरुष. तथा भेडके मध्यमें गमन ५६ घोडे श्रौर कुत्तेके मध्यविषे.गमन ५७ घोडे श्रौर खोतेके मध्यमें गमन ५८ श्रौर क्रोधतें अपनी स्त्रीकों अगम्या कथन क्या तूं मेरी माताहैं वा भगिनीहैं ऐसा कथन ५९

अस्नानइति और स्नानकियेविना भोजनकरणा ६० पंक्तिजोहै भोजनकरणवालयोंकी तिसमें वैषम्यप रिवेषण क्या किसीकों अन्नादिदेणा और किसीको नाहिदेणा वा किसीको वहुतदेणा किसीकों थोडादेणा ६१ और नदीके जलके उतरणेका जो मार्गहै तिसकों तोडदेणा ६२ और कन्या दानमें विघ्नकरणा ६३ और सममें विषमहोणा ६४ और पतितादि जो है तिसकेसाथ वार्ता करणेयां ६५ और पतितादिजो हैं तिनोंवें अन्नधनादिका ग्रहणकरणा ६६ और स्त्रीके धनका विनाश० ६७ और चौरादि जो हैं तिनको दंड नाहि करणा ६८ और चौरादियों की पंक्तिमें भोजनकरणा ६९ और द्विजाति जो हैं ब्राह्मणादि तिनकों नीलीविषे केशरंजन अर्थात् तिनकों वसमा लाणा ७० और नीली काष्ट करके द्विजका रुधिर निकालणा ७१ ॥

अस्नानेभोजनम् ६० पंक्तौवैषम्यपारिवेषणम् ६१ नदीजलावतरणमार्गभं जनम् ६२ कन्यादानेविघ्नः ६३ समेवैषम्यम् ६४ पतितादिसंभाषणम् ६५ पतितादिभ्योऽन्नधनादिग्रहणम् ६६ भार्याधनविनाशः ६७ चौरादेर्द डाभावः ६८ चौरादिपंक्तिभोजनम् ६९ द्विजातेर्नील्याकेशरंजनम् ७० नीलीकाष्ठेनद्विजस्यरुधिरनिष्कासनम् ७१ दुःस्वप्नदर्शनम् ७२ सिंधुसौ वीरादिदेशगमनम् ७३ सूर्याभिमुखंपुरीषाद्युत्सर्गः ७४ स्वकीयपुरीषद र्शनम् ७५ आहवनीयाद्यग्नौपादप्रतापनम् ७६ ब्राह्मणस्यक्षत्रियाद्यभि वादनम् ७७ तथाक्षत्रियादेर्वैश्यादौ ७८ शय्यापादुकाद्यारूढस्याभिवाद नम् ७९ अन्यत्रनिमंत्रितस्यान्यत्रगमनम् ८० समित्पुष्पादिहस्तस्याऽ भिवादनम् एतच्चाभिवाद्याभिवादकयोः ८१

और माडे स्वप्नकादर्शन होणा ७२ और सिंधु. सौवीरादि जो देशहैं तिनमें गमन ७३ और सूर्यादिसन्मुख विष्ठादिका त्याग करणा ७४ और अपणी विष्टाका देखणा ७५ आहवनीय आदि जो अग्निहै तिसमें पैरोंका तपाना ७६ ब्राह्मणने क्षत्रियादियोंकों अभिवादन क्या प्रणाम करणा ७७ तिसीप्रकार क्षत्रीकों वैश्यादि को अभिवादनमें है ७८ शय्या और पादुकादिमें आरूढ जो है तिसकों प्रणामकरणा ७९ और स्थानमें जो निमंत्रितहै उसका दूसरे स्थानमें गमन ८० और समिधा और पुष्प जिसके हाथमें हैं उसकों प्रणामक रणा एह पाप जिसकों प्रणामकरणा उसकों और जिसनें प्रणामकीतीहै उसको भी तुल्य प्रायश्चित्तहै ८१

उदकुंभेति जलका कलश हाथमें लेकर्के प्रणामकरणी ८२ और तैसांहि अपवित्र होकर्के प्रणामकरणी ८३ जपकरतेहोत्रां प्रणामकरणी ८४ पितृकार्य जो है श्राद्धादि और देवकार्य जो है पूजनादि तिनके करतेहोत्रां प्रणामकरणी ८५ शयनकरतेहुवे मनुष्यने प्रणामकरणी ८६ और यज्ञोपवीतके विना विष्टा. और मूत्रका त्याग करणा ८७ और तैसेंहि यज्ञोपवीत विना भोजनकरणा ८८ ऊर्द्ध्वोच्छिष्ट क्या भोजनकर्के आचमनकाअभाव ८९ और अधोच्छिष्ट क्या बिष्टा और मूत्र त्याग कर्के शौचकाअभाव ९० और भोजनके आरंभ और समाप्तिमें आचमन नहिकरणा ९१ दर्श और पौर्णमास और नित्ययज्ञका नहि करणा ९२ यज्ञके प्रारंभकरते होत्रां

उदकुंभादिहस्तेनाभिवादनम् ८२ तथाऽशुचिनाअभि- ८३ जपताअ- ८४ पितृदेवकार्यकुर्वताअ- ८५ शयानेनअ-८६ ब्रह्मसूत्रंविनाविण्मूत्रोत्सर्गः ८७ भोजनंवा ८८ ऊर्द्ध्वोच्छिष्टता ८९ अधोच्छिष्टता ९० भोजनस्याऽऽदावंतेचाचमनाभावः ९१ दर्शपौर्णमासादिनित्ययज्ञाऽकरणम् ९२ प्रारब्धेयज्ञेहविर्लोपः ९३ संध्यादिलोपः ९४ पितृयज्ञलोपः ९५ यज्ञंविनानवान्नप्राशनम् ९६ नैमित्तिककर्मलोपः ९७ ऋतौस्वपत्न्यगमनम् ९८ ऋतुस्नानांते पत्यौस्त्रियोऽपिगमनाऽभावः ९९ गृहिणोऽनापदिभिक्षाचरणम् १०० देवादीनामाभिमुख्येष्ठीवनम् १०१ मंडपोद्यानदेवागारादिभंजनम् १०२ स्वस्थानात्प्रतिमोत्थापनम् १०३

हवनद्रव्यका लोपहोणा ९३ और संध्यादिकर्मका लोप ९४ और पितृयज्ञ जो श्राद्ध तिसका लोप ९५ यज्ञकिये विना नवीन अन्नका भोजनकरणा ९६ और नैमित्तिक कर्मोका लोप ९७ और ऋतुस्नानके पीछे अपणीस्त्रीमें गमन नहिकरणा ९८ ऋतुस्नानके पीछे स्वामीकेपास स्त्रीको जाणेका अभाव अर्थात् नहि जाणा ९९ और, गृहस्थीकों आपदातें विना भिक्षाका मांगणा १०० और देवतायों आदिलेकर जो श्रेष्ठहैं उनके सन्मुख थूकणा १०१ मंडप और बागऔर देवताके मंदिरादि जो हैं तिनका तोडदेणा १०२ और अपने स्थानतें प्रतिमांका उठाणा १०३

पर्वेति पर्वोमें स्त्री- तैल. मांसका सेवनकरणा १०४ द्विजाती जो हैं ब्राह्मण क्षत्रि वैश्य इनकों वमन कर्के भोजनकरणा १०५ और भग्नभांड जो है भज्ञा होआ पात्र तिसमें भोजन करणा १०६ और मांसादिकर्के वमनमें भोजनकरणा १०७ यज्ञोपवीतके नाश होआं भोजन करणा १०८ शयनमे सूर्य्यका उदय होणा १०९ और शयनमें हि सूर्य्यका अस्त हो जाणा ११० और वमनके होआं दिनमें शयन करणा १११ नग्नस्त्रीका दर्शन करणा ११२ और नग्न होकर शयन करणा ११३ और श्मशानमें पैरदेकर लंघ जाणा ११४ और घोडेयों आदिलेकर जो वाहन हैं तिनकें ऊपर चडकर्के पूज्य जो हैं गुरोंथी आदलेकर तिनका उल्लंघन करणा ११५ अजगरादि

पर्वसुस्त्रीतैलमांससेवनम् १०४ द्विजातीनांविच्छर्दनेभोजनम् १०५ भिन्नभांडभोजनम् १०६ मांसादिवमनेभोजनम् १०७ यज्ञोपवीतादिनाशे भोजनम् १०८ सुप्तेसूर्य्योदयः १०९ सुप्तेसूर्य्यास्तम् ११० वांतेदिवाशयनम् १११ नग्नस्त्रीदर्शनम् ११२ नग्नस्वापः ११३ श्मशानाक्रमणम् ११४हयादीनारूह्यपूज्यातिक्रमः ११५ अजगरादीनांवधः ११६ मणिवस्त्रगवादिप्रतिग्रहः११७ अजीर्णेभोजनम् ११८ गर्भाधानादिसंस्काराभावः ११९ गर्भाधानाकरणम् १२० क्षुत्करणम् १२१ निष्ठीवनम् १२२ अनृतभाषणम् १२३ पतितैस्सहभाषणम् १२४ वासःपरिधायाचमनाभावः १२५ संवत्सरंक्रियाहीनस्यदर्शनस्पर्शनसंभाषणानि १२६ स्वीकृत्यनिमंत्रणत्यागः १२७ निमंत्रिताऽनाव्हानम् १२८ वधफलकानृतभाषणम् १२९

जो हैं सर्प तिनका मारणा ११६ मणि वस्त्र आदिक जो वस्तु हैं तिनका दानलेणा ११७ अजीर्णमें भोजनकरणा ११८ गर्भाधानादि जो स्त्रीके संस्कार हैं तिनका नहि करणा ११९ गर्भाधान जो है तिसका नहि करणा १२० छिक्कका मारणा १२१ और थुक्कणा १२२ झूट बोलणा १२३ पतित जो हैं तिनके साथ वार्ता करणियां १२४ वस्त्रधारकर्के आचमनका नाहिं करणा १२५ वर्षपर्यंत क्रियाहीन जो मनुष्य है तिसके साथ दर्शन और स्पर्श और संभाषण करणा १२६ और अंगीकार किया. जो निमंत्रण भोजन करणेके निमित्त तिसका त्याग करणा १२७ निमंत्रणकर्के नाहिं बुला लेणा १२८ मरणहै फल जिसका ऐसा झूठ बोलणा १२९

व्रणेति व्रण जो है घा तिसमें कीडयों का पडना १३० दिनमें स्त्रीका संगम करणा १३१ और नग्न होयकर स्नानकरणा १३२ निषिद्ध काष्टकर्के दंतधावन करणा १३३ ब्रह्मचारीकों शौच और आचमनथीं आदिलेकर जो धर्म्म हैं तिनका लोपकरणा १३४ ग्रहणाकिया जो व्रत तिसका भंगकरणा १३५ और झूठी सुगंद खाणी १३६ और अपणी वृत्तिकों छोडकर दूसरेकी वृत्ति कर्के धनकों पैदेकरणा १३७ शूद्रने ब्राह्मण क्षत्रि वैश्य जोहें तिनका जो कर्म्महे वेदाध्ययनादि तिसका करणा १३८ स्त्रीधनकर्के जीविका करणी १३९ स्त्रीके मुखमे मैथुनकरणा १४० वृषभकर्के युक्त जो है गड्डा तिसमें स्थितहोकर मैथुन करणा १४१ स्त्रीकों भगिन्यादिशब्दकर्के कथनकर्के फेर उसके साथ भोग करणा १४२

व्रणमध्येक्रिमिपातः १३० दिवामैथुनम् १३१ नग्नस्नानम् १३२ निषिद्धकाष्ठेनदंतधावनम् १३३ ब्रह्मचारिणःशौचाचमनादिधर्मलोपः १३४ गृहीतव्रतभंगः १३५ मिथ्याशपथः १३६ अन्यवृत्त्याधनार्जनम् १३७ शूद्रस्यद्विजकर्म्मकरणम्. १३८ स्त्रीधनोपजीवनम् १३९ भार्यामुखमैथुनम् १४० गोयुक्तयानस्थमैथुनम् १४१ भार्याभगिन्यादिशब्देनाकृत्वापुनर्मैथुनम् १४२ वस्तिकर्मप्रच्छर्दनविरेचनानि १४३ देवागारशिलादिनास्वगृहकरणम् १४४ वानप्रस्थयत्योर्व्रतभंगः १४५ दीक्षाभेदः १४६ यमनियमातिक्रमः १४७ क्रोधाऽहंकारपिशुनानि १४८ जलेप्रतिबिंबदर्शनम् १४९ अशुचौमूत्रपुरीषादौचापलम् १५० वृथाचेष्टा १५१

वस्तिकर्म- प्रच्छर्दन विरेचन कर्म्मका. करणा वस्तिकर्म मूत्रवृद्धि १ प्रच्छर्दन उलटी २ विरेचनदस्त ३ ॥ १४३ देवताके मंदिरके पत्थर चूनेथीं आदिलेकर जो वस्तु हैं तिनोकर्के अपने घरको बनाणा १४४ वानप्रस्थ और यतिके व्रतका भंगकरणा १४५ दीक्षामें भेदकरणा १४६ नित्य और नैमितिकका त्याग करणा १४७ क्रोध और अहंकार और चुगली इनका करणा १४८ जलमें अपने प्रतिबिंबकादेखणा १४९ अशुचि क्या अपवित्र जो हैं मूत्र और विष्टातिसके त्यागमें चापल क्या वातां करणीआं और इधर उधरकी चेष्टाकरणी १५० वृथा चेष्टाकरणी १५१

प्रतिज्ञेति प्रतिज्ञाकर्के झूठवोलणा १५२ मौनविना भोजनकरणा १५३ अर्धभुक भोजन पात्रमें जलपानकरणा १५४ केवल मुखकर्के जलका पीणा १५५ और जो अपणे सापिंडी क्या समीप कुलके नाहिंहैं उनके साथ रोदन करणा १५६ प्रेतको अलंकरण क्या तिसको स्नानादिक कराणा १५७ आत्मघातीका संस्कार करणा १५८ नहिअपणे वरावर और अपणेसें श्रेष्ट जातीका जो प्रेत तिसके साथ गनम १५९ ब्राह्मणने शूद्रप्रेतके साथ दाह निमित्त जाणा १६० स्निग्ध क्या गिल्ली जो मनुष्यकी अस्थि है उसके साथ स्पर्श करणा १६१ क्षत्रीको वैश्य और शूद्रजातिके प्रेतकेसाथ दाहनिमित्त जाणा १६२ रजस्वला होती जो कन्या तिसको

प्रतिज्ञायाऽनृतकथनम् १५२ मौनंबिनाभोजनम् १५३ अर्धभुक्तेभोजन पात्रेजलपानम् १५४ मुखेनजलपानम् १५५ असपिंडैःसहरोदनम् १५६ प्रेतालंकरणम् १५७ आत्मघातिनःसंस्कारः १५८ असमानोत्कृष्टजाति प्रेतानुगमनम् १५९ ब्राह्मणेनशूद्रप्रेतानुगमनम् १६० स्निग्धमनुष्यास्थिस्पर्शः १६१ क्षत्रियस्यवैश्यशूद्रप्रेतानुगमनम् १६२ ऋतुमतीकन्यारक्षणम् १६३ ब्राह्मणेनचैत्यवृक्षस्पर्शः १६४ इत्यादीनिप्रकीर्णकानि इमान्युद्दिष्टपापानि ❁ अनुद्दिष्टान्यपि ❁ अस्थिमत्सहस्रवधः १ अनस्थिमदनोवधः २ पतितेनसंस्पर्शः १ तेनसंलापः २ तन्निःश्वासादानम् ३ तेनसहैकयानावस्थानम् ४ तेनसहैकासनावस्थानम् ५ तेनस्वस्ययागः ६ स्वयंतस्ययागोवा ७ ततोऽध्ययनम् ८ तस्याध्यापनंवा ९

नहि विवाह देणा १६३ और ब्राह्मणनें चैत्यवृक्षके साथ स्पर्शकरणा १६४ इसर्थीआदिलेकर प्रकीर्ण पाप कहेहैं ❁ यह उद्दिष्ट पाप हैंन और अनुद्दिष्ट पापभीहैंन सो कहतेहैं ॥ अस्थियोंवाले जो हजारों जीव हैं तिनका मारणा १ और विनाअस्थियोंतें जो जीव हैं तिनकर्के भरेहोएगड्डेकामारणा २ पतितके साथ स्पर्शकरणा १ और पतितके साथ वार्ता करणीआं २ और पतितकें जो श्वासहैं तिनका लेणा ३ पतितके साथ एकयानमें वैठणा ४ पतितके साथ एक आसनमें वैठणा ५ पतितकर्के अपणा यज्ञ कराणा ६ अथवा आप पतितको यज्ञ कराणा और पतितसें पढना ८ और पतितको पढाना ९

पतितके ताईं कन्या देणी १० और पतितथें कन्यादान लैणा ११ और पतितके साथ एकपंक्तिमें भोजन करणा १२ पतितका पक्वान्न खाणा १३ पतितके पात्रमें भोजन करणा १४ पतितका और अपणा पक्का होया अन्न किट्ठा करणा अर्थात् रलाणा १५ पतितके पात्रकर्के अथवा पतितके पात्रतें जलपीणा १६ और पतितके धूमयंत्रकर्के धूमपान करणा १७ पतितने स्पृष्ट किया जो पक्वान्न तिसका भोजनकरणा १८ पतितके साथ एक सेजेमें शयन करणा १९ पतितकीस्त्रीके साथ संभोग करणा २० पतितनें धारया जो वस्त्र तिसका धारणा २१ पतितनें अपणी स्त्री क्या शुद्धपुरुषकी जो स्त्री है तिसके साथ भोगकरणा २२ पतितका जूठा अन्न भक्षणकरणा २३ और पतितते दानलैणा २४ इन्होंते लेकर अनेक

तस्मैकन्यादानम् १० ततोग्रहणंवा ११ तेनसहैकपंक्तयांभोजनम् १२ तदीयान्नभोजनम् १३ तद्भांडभोजनम् १४ तदीयस्वकीयपक्वान्नमिश्रणम् १५ तदीयभांडेन वा तद्भांडाद्वा जलपानम् १६ तदीयधूमयंत्रेणधूमपानम् १७ तत्स्पृष्टपक्वान्नभोजनम् १८ तेनसहैकशय्यायांशयनम् १९ तत्स्त्रीसंभोगः २० तत्परिहितवस्त्रपरिधानम् २१ तेनस्वकीयस्त्रीसंभोगः २२ तदुच्छिष्टान्नभोजनम् ३२ तत्प्रतिग्रहः २४ इत्याद्यनेकविधं संसर्गजम् ॥ संसृज्यते इतिसंसर्ग इतिव्युत्पत्तेः ॥ प्रायश्चित्तंतुउत्तममध्यमाधमभेदेन नवधा विभज्य दर्शितम् तत्र यौनादयउत्कृष्टाः १ सहभोजनाद्योमध्यमाः २ संलापादयोऽधमाःसंसर्गाः ३ परंपरास्पर्शेपि ४ ❀ वृहद्विष्णुना तु सर्वाणि प्रायश्चित्तनिमित्तानि उत्तरोत्तरलघीयांसि पृथक् २ संज्ञाभेदाभिन्नानि गणितानि तद्यथा ब्रह्महत्या. सुरापानम्

प्रकारके संसर्गते उत्पन्नभये पाप हैं ❀ संसर्ग शब्दका अर्थ कहतेहैं सामिति अच्छी प्रकार जो उत्पन्नकरीदाहै एकत्र होयकर्के सो कहिये संसर्ग ❀ अब प्रायश्चित्त उत्तम-मध्यम- अधम एह जो भेदहै इस कर्के नव ९ प्रकारका विभागकर्के दिखाआहे तिसमें यौनादि जो संसर्ग हैं सो श्रेष्ठ हैं १ और साथ भोजनकरणा इत्यादिक मध्यमहैं २ और संलापादि जो हैं पतितोंके साथ वार्ता करणीआं सो अधमहैं ३ परंपरास्पर्शमें भीअधमजानणा ४ ❀ अब वृहद्विष्णु जो ऋषि है तिसनें संपूर्ण जो प्रायश्चित्तों के निमित्त हैं सो उत्तरोत्तर लघु क्या उसतें अगला छोटा और उसतें बो छोटा इसतरह भिन्न भिन्न संज्ञा भेदकर्के गिणेहैं सो कहिनेहैं ब्राह्मणकामारणा १ सरावकापीणा २

वाहेति ब्राह्मणका सुवर्णचुराणा ३ गुरोंकी स्त्रीसें संग करणा ४ एह महापातक हैं श्रीर एहं जो महापातकी हैं उनके साथ संयोगकरणा श्रोह वो उनके बराबर है ५ माताके साथ संयोगकरणा १ कन्यामें संगकरणा २ स्नुषा जो है पुत्रकी स्त्री तिसमें संगकरणा ३ एह अतिपातक हैं ॥ यज्ञमेंस्थित जो क्षत्री तिसका मारणा वैश्य श्रीर रजस्वला श्रीर गर्भिणी स्त्री श्रोर अपणी गोत्रकी स्त्री श्रीर अविज्ञातगर्भ जो है श्रीर शरणागत जो है इनके मारणेसे ब्रह्महत्याके बराबर पाप होताहै ॥ झूठी उगाई देणी श्रीर मित्रका मारणा एह दोनो सुरापानक तुल्य हैं ॥ श्रीर ब्राह्मणकी भूमिका जो हरणाहै सो सुवर्णकी चोरीके तुल्यहै ॥ पिताके भ्राताकी जो स्त्री है श्रोर नानी जो है श्रीर मामी जो है श्रीर राजाकी स्त्री जो है इनमें जो

ब्राह्मणसुवर्णापहरणं गुरुदारगमनमिति महापातकानि तत्संयोगश्च ॥ मातृगमनम् दुहितृगमनम् स्नुषागमनमित्यतिपातकानि ॥ यागस्थक्षत्रियवधो वैश्यस्य च रजस्वलायाश्चान्तर्वल्न्याश्च सगोत्रायाश्चाऽविज्ञातस्य गर्भस्य शरणागतस्य च घातनं ब्रह्महत्यासमानि ॥ कौटसाक्ष्यं सुहृद्वध इत्येतौ सुरापानसमौ ब्राह्मणभूमिहरणं सुवर्णस्तेयसमम् ॥ पितृव्य मातामह मातुल नृपपत्न्यभिगमनं गुरुदारगमनसमम् ॥ पितृष्वसुर्मातृष्वसुर्गमनं श्रोत्रियर्त्विगुपाध्यायमित्रपत्न्यभिगमनं च स्वसुःसख्याः सगोत्राया उत्तमवर्णाया रजस्वलायाः शरणागतायाः प्रव्रजिताया निक्षिप्तायाश्च गमनमित्येतान्यनुपातकानि ॥ अनृतं च समुत्कर्षे राजगामि च पैशुनम् गुरोश्चालीकनिर्बंधो वेदनिंदा

संगमकरणा सो गुरोंकी स्त्रीके संगके बराबरहै ॥ श्रीर पिताकी जो भगिनी श्रोर माता की जो भगिनी श्रीर श्रोत्रिय जो है वेदपाठी तिसकी स्त्री श्रीर ऋत्विक् जो है यज्ञ करावणेवाला तिसकी स्त्री श्रीर उपाध्याय जो है पढावणेवाला तिसकी स्त्री श्रीर मित्रकी स्त्री इन स्त्रियों में जो संगम करणा श्रीर भगिनीकी जो सहेलीहै श्रीर सगोत्रा जो स्त्री श्रीर उत्तम वर्णकी जो स्त्री श्रीर रजस्वला जो स्त्री श्रोर अपणी शरणको प्राप्त जो स्त्री श्रीर संन्यास धारया है जिसने सो जो स्त्री श्रीर निक्षिप्ता यथा किसीनें अमानतरी जो स्त्री इनमें जो गमनहै एह सब अनुपातक कहे हैं ॥ अनृतमिति अपणी वडआई निमित्त जो झूठ दालणा श्रोर राजाके कणमें प्राप्तहोणे वाली चुगलीकरणी श्रोर गुरोंमें झूठा हठकरणा श्रोर वेदोंकीनिंदा करणी

अधीति और पठनाकिया जो शास्त्र तिसका त्याग और अग्नि- पिता- माता- पुत्र- स्त्री- इनका जो त्याग ॥ और अभोज्य जो हैं जिनका अन्न नाहिं भक्षण करणा उनका अन्नभक्षण करणा ॥ पराये धनका चुराणा। परस्त्री गमन करणा। जिनको यज्ञका अधिकार नाहि है तिनकों यज्ञकराणा और व्रात्यता अर्थात् व्रतकालमें यज्ञोपवीतका नाहि धारणा और मूल्यलेकर पढाणा। और मूल्यदेकर्के पढना। और सपूर्णखाणोंमें अधिकार होणा ॥ जीवमारणके निमित्त महायंत्रका प्रवर्त्तन करणा। वृक्ष-गुल्म-वेलां-ओषधिआं इनकी हिंसाकर्के जीविका करणी। अभिचार जो है हिंसाकर्म और मूलकर्म जो है जादू तिसमें वर्त्तना। अपने निमित्त क्रिया का आरंभ करणा। अग्नि को नाहिं सेवणा। देवता-ऋषि-पितरों का जो ऋण तिसका नाहिं दूरकरणा। माडे

अधीतस्यत्यागोऽग्निपितृमातृसुतदाराणांच अभोज्यान्नभक्षणं परस्वापहरणं परदाराभिगमनं अयाज्यानांचयाजनं व्रात्यता भृतकाध्यापनं भृतादध्ययनादानं सर्वाकरेष्वधिकारो महायंत्रप्रवर्त्तनं द्रुमगुल्मलतौषधीनां हिंसाजीवनम् अभिचारमूलकर्म्मसुच प्रवृत्तिः आत्मार्थक्रियारंभोऽनाहिताग्निता देवर्षिपितृणामृणस्याऽनपक्रिया असच्छास्त्राभिगमनं नास्तिकता कुशीलता मद्यपस्त्रीनिषेवणमित्युपपातकानि ॥ ब्राह्मणस्यरुजःकरणम् अघ्रेयमद्ययोर्घ्रातिः जैह्म्यं पशुषु पुंसि च मैथुनाचरणमित्येतानि जातिभ्रंशकराणि ⊛ ग्राम्याऽरण्यपशूनां हिंसनं संकरीकरणम् ⊛ निन्दितेभ्यो धनादानम् वाणिज्यं कुसीदजीवनं असत्यभाषणं शूद्रसेवनमित्यपात्रीकरणानि ⊛ पक्षिणां जलचराणां जलजातानां च घातनं

शास्त्रमें अभिगमन करणा नास्तिक होणा। माडे स्वभाव वाला होणा। और मद्य पान करणे वाली स्त्रीका सेवन करणा। यह सभ उपपातक हैं ⊛ ब्राह्मणको रोगवान करणा और जो नाहिं सिंगणे योग्यवस्तु और सराव इनको सिंगणा और कुटिल होणा पशुओं में और पुरुषमें मैथुनकरणा यह जातिभ्रंशकर पापहैं ⊛ ग्राम्य और वनके पशुओंका जो मारणाहे सो संकरीकरण पाप होताहै ⊛ निंदित जो हैं पुरुष तिनों तें धनका लैणा व्यापार करणा व्याजकर्के जीविका करणी-झूठ बोलणा शूद्रकी सेवा करणी यह अपात्रीकरण पाप हैं ⊛ पक्षी और जलचर और जलतें उत्पन्न भये जो जीव तिनका मारणा ॥

कृमीति कीडयोंका मारणा मद्य करके युक्त भोजन करणा एह मलावह पापहैं ● और जो नहिकथ नकिया सो प्रकीर्णक पापहै ❀ अवपापकी गणनाके प्रसंगतें पतित भी गिणादे हैं सकृदिति द्विज जो है ब्राह्मण-क्षत्री-वैश्य-सो एकवार अज्ञानतें सरावके पीणेकरके सद्यःपतित होताहै इत्यादि करके ब्रह्महत्येति ब्रह्महत्या-सरावकापीणा.चोरी.गुरोंकीस्त्रीके साथ संग करणा इनकों महापातक कहते हैं और जो मनुष्य महापातकियोंके साथ वसें इत्यादिश्लोक करके कथनकिये जो महापातक करणेवाले सो पतित होतेहैं और इसीप्रकार कन्यागामियोंतें आदिलेकर अतिपापी जो हैं सो सद्यः वचा तात्कालिक पतित होतेहैं सोई (यम) कहिताहै माताकी भगिनी- और

कृमिकीटघातनं मद्यानुगतभोजनमिति मलावहानि ● यदऽनुक्तं तत्प्रकीर्णकमिति ❀ अथपापगणनाप्रसंगात्पतिताअपिगण्यन्ते सकृत्पीत्वासुरांमोहात्सद्यःपततिवैद्विजइत्यादिना ब्रह्महत्या सुरापानं स्तेयं गुर्वंगनागमः महान्तिपातकान्याहुर्यश्चतैःसहसंवसेदित्याद्युक्तमहत्पापकर्त्तारः पतिता इतिगम्यते एवंकन्यागाम्यादयोऽप्यतिपापिनःसद्यःपतिताभवन्ति तथाच (यमः) मातृष्वसा मातृसखी दुहिताच पितृष्वसा मातुलानी स्वसा श्वश्रूर्गत्वासद्यःपतेन्नरइति नरइत्यनेनाद्विजेतराणामपिशूद्रप्रभृतीनां ग्रहणम् गौतमेनाऽन्येऽपि पतिताउक्ताः❀मातृपितृयोनिसंबंधागः स्तेन नास्तिक निन्दितकर्म्माभ्यासि पतितात्यागिअपतितत्यागिनःपतिताः पातकसंप्रयोजकाश्चेति ❀ पातकेति मिथ्यापातकप्रयोगेणाऽन्यदूषकाः

माताकी सहेली. कन्या. पिताकी भगिनी. मामेकीस्त्री. भगिनी. सस्स इनके साथ संग करणेसें मनुष्य उसीसमय पतित होजाताहै नर इसपदके ग्रहण करणेसें जो ब्राह्मणोंतें भिन्न भी- शूद्रप्रभृति हैं तिनका ग्रहणहोताहै● और गौतमजीने औरभी पतित कहेहैं माता पिताकी योनि संबंधी स्त्री विषे गमनकरणे वाला जो पाप. चोर. नास्तिक. और वहुतवार निंदित कर्म्मोंको करणेवाला और पतित जो हैं तिनकों नहीं त्यागणे वाला और अपतित जो हैं-शुद्ध तिनकों त्यागने वाला इतने पतित होतेहैं और-पातकोंके संप्रयोजक भी पतित होतेहैं अर्थात् जो मिथ्यापातक प्रयोगकरके अन्यदूषक वचा औरकों दूषण लगाणे वाले हैं

एवमिति इसीप्रकार महापातकोंके बराबर जो पाप कहेहैं उनकोही पातकसंज्ञा है और उनोंतें छोटे जो पाप हैं सो उपपातक हैं इत्यादिकर्के और गुरूणामिति गुरु जो हैं तिनका अत्यंत तिरस्कारकरणा और वेदोंकी निंदाकरणी सुहृद् जो मित्र हैं तिनकों मारणा और पढआ जो शास्त्र तिसकों भुलादेणा एह ब्रह्महत्याके बराबर पाप जानने योग्यहैं इत्यादि कर्के कहे जो पातकोंके करणेवाले सोबी पतितहैं और उपपातकी जो हैं सोबी कितनेक बहुतवार उपपातकके करणे करके पतित हो जातेहैं ॥ इसमें कितनेक पंडित ऐसा विचारकर्तेहैं ॥ जिस अर्थवादमें प्रत्यवायका विशेष श्रवण करीदाहै अथवा प्राय-

एवं महापातकतुल्यानिपापान्युक्तानियानितु तानिपातकसंज्ञानितन्न्यू नमुपपातकमित्यादिना गुरूणामध्यधिक्षेपो वेदनिंदा सुहृद्वधःब्रह्महत्यास मंज्ञयमधीतस्यचनाशनमित्यादिना चोक्ताःपातककर्त्तारोऽपिपतिताःउपपा तकिनस्तु केचिदभ्यासेन पतिता भवंति अत्रोच्यते ॰ यत्रार्थवादे प्रत्यवा यविशेषः श्रूयते प्रायश्चित्तवहुत्वं वा तस्मिन्निंदितकर्म्मणि यावत्यभ्यस्य माने महापातकतुल्यत्वंभवति तावानऽभ्यासः पातित्यहेतुः एवंच सकृद्गो घ्नादयस्तु पतिताभासाएव शास्त्रत आचारात्तु पतिताः अतएवोक्तं तन्न्यूनमु पपातकमिति दिवास्वप्नादौ तु सहस्रकृत्वोऽप्यभ्यस्यमानेपि न महापातक तुल्यत्वं भवतीति न पातित्यमतोयुक्तमुपपातकादेरभ्यासापेक्षया पतनहे तुत्वम् निन्दितकर्म्माभ्यासीति पूर्वोक्तगौतमोक्तेः

श्चित्तका बहुत्व श्रवण करीदा सो जो निंदित कर्म्महै तिसके बहुतवार करणेमें महापातककी तुल्य ताकों प्राप्त होंदाहै इतना जो अभ्यास है सो पातित्यका कारण है इसीप्रकार एकवार गोहत्याके करणेवाले पतिताभास हि हैं शास्त्रकर्के और आचारतें पतित होतेहैं इसीते किहाहै महा पातकोंतें जो छोटा है सो उपपातक है और दिवाशयनादिमे हजार वार अभ्यास कर्के भी महापातकादि तुल्यताकों नहिं प्राप्त होता और पतितभावको नहिं प्राप्तहोता इसतें उपपातकादि जो हें उनके बहुतवार करणेतें पतनहेतुत्व योग्य है ॥ निंदितकर्म्माभ्यासी जो है सो पतित होताहै एह पूर्वकिहा जो गौतमजीका बचन तिसतें

तेनेति तिसकर्के ब्रह्महत्यादि अतिदिष्ट प्रायश्चित्ती क्या जिनोंनें ब्रह्महत्या नहिं करी और गुरुद्रोहादि कियाहै उनका नाम हैं अतिदिष्ट प्रायश्चित्ती सो पापी हि हैं पतित नहि हैं ॥ एह जो है गर्भ तिसका नहि जाणआं एह आपस्तंवीयवचनकी व्याख्यामें ॥ तिस ब्राह्मणका गर्भ स्त्री पुरुषभावकर्के जो नहि जाणया तिसकों मारकर्के ब्रह्महत्याके व्रतकों करे इसप्रकारकी जो ब्रह्महत्या तिसमें व्रतका अतिदेश हि है पातित्यादिका अतिदेश नाहिं है तिसकर्के अतिदिष्ट प्रायश्चित्तमें अपतितभावके होणेतें द्विजातिकर्म जो हैं संध्यावंदनादि तिनोंकर्के अधिकारी करिदाहि है ॥ पतितत्व जो है सो द्विजातिकर्मका अनर्हत्वहै एह अपरार्कमें स्पष्ट कियाहै ॥ और तिसीप्रकार

तेन ब्रह्महत्याद्यतिदिष्टप्रायश्चित्तिनः पापा एव न पतिताः एतच्च गर्भंच तस्याऽविज्ञातमित्यापस्तंवीयवचनव्याख्यायां तस्यब्राह्मणस्य गर्भं स्त्रीपुरुषभावेनाऽविज्ञातंहत्वा ब्रह्महव्रतंचरेदित्येवंरूपायां अत्र व्रतातिदेशएव न पातित्यातिदेशःतेनाऽतिदिष्टप्रायश्चित्तेऽपतितत्वाद्द्विजातिकर्म्माभिरधिक्रियतएव पातित्यंच द्विजातिकर्म्मानर्हत्वमित्यपरार्के स्पष्टीकृतम् ॥ तथाच जातिभ्रंशकरादिपंचपापकर्तारस्तत्तन्नाम्नैव व्यवह्रियंते न पतिता इतिविवेकः द्विजातिकर्म्मणामपि अध्ययनेज्यादानाध्यापनयाजनप्रतिग्रहाणामेवाऽनाधिकारो न स्नानसंध्यादीनाम् खट्वांगकपालपाणिर्द्वादशसंवत्सरान्ब्रह्मचारीत्यादिसंवर्त्तस्मरणे ब्रह्मचारिपदस्य ब्रह्मचारिप्रकरणोक्तसन्ध्यावंदनादि वर्जयेन्मधुमांसेत्यादि यावद्धर्म्मप्राप्त्यर्थावगमात्

जातिभ्रंशकरादि जो पंच पापहैं तिनके करणेवाले तिस तिस नाम कर्के व्यवहार करीदेहैं पतित नहि होते एह विवेक है और द्विजातिकर्म जोहैं पढना पूजाकरणी,दानकरणा.पढाउना यज्ञकराणा, दानलैणा इनका हि उनकों अधिकार नाहि है और स्नानसंध्यादिका निषेध नहिं है अर्थात् स्नानादिकरन ॥ खट्वांगेति खट्वांग और कपाल हाथमें जिसके सो वारांवर्ष पर्यंत ब्रह्मचर्य धारकर्के वर्ते इत्यादि संवर्त्तऋपिके स्मरणविषे जो ब्रह्मचारीपदहै तिसते ब्रह्मचारी प्रकरणमें उक्तिहे जो संध्यावंदनादिकर्म्म तिनकोंकरे और सराव,मांस.इत्यादि जो हैं तिनकों त्यागे इसते आदिलेकर्के कहे जो संपूर्ण ब्रह्मचर्य धर्म तिनकी प्राप्तिकी प्रतीति होणेते अर्थात् प्राप्तहोणेतें

स्थान और आसन इनोंकर्के विहार करदा २ प्रातः १ संध्या. सायंकालमें स्नान करताहुआ शुद्ध होताहै एह गौत्तमस्मरणमें है अर्थात् गौत्तमस्मृतिमें है सवनेषूदकस्पर्शी इसपदकर्के स्नान विधिकर्के तदंगभूत जो संध्यावंदनादि तिनकोंभी उक्तहोणेतें किंचेति इसकर्के इसीकों फेर कहितेहैं पवित्र होयकर्के कर्म्म करणे योग्यहै इसकों सर्वकर्म्मसाधारण होणेतें ब्रह्मचर्यांगभूत जो शौच तिसकी संपादके निमित्त स्नानकीन्याईं संध्योपासन भी करणेयोग्यहै तिसकों शौचका जो संपादन तिस द्वारा सर्वकर्म्मोंके होणेतें अर्थात् सर्वकर्मोंका अंग होणेतें ॥ तथाचेति सोई दक्ष कहिताहै ॥ संध्याहीन जो है सो नित्यं प्रति अपवित्र होताहै और संपूर्ण

स्थानासनाभ्यांविहरन्सवनेषूदकोपस्पर्शी शुध्येदिति गौत्तमस्मरणे सवने षूदकस्पर्शीत्यनेनस्नानविधिना तदंगभूतानां सन्ध्यादीनामप्युक्तत्वात् किंच शुचिनाकर्म्मकर्त्तव्यमित्यस्य सर्वकर्मसाधारणत्वात् ब्रह्मचर्य्यांगभूतशौच संपत्त्यर्थं स्नानवत्संध्योपासनमपि कार्य्यं तस्याऽपिशौचापादनद्वारेण सर्व कर्म्मशेषत्वात् तथाच दक्षः ॥ सन्ध्याहीनोऽशुचिर्नित्यमनर्हः सर्वकर्म्मसु य त्किंचित्कुरुतेकर्म्मनतस्यफलभाग्भवेदिति नच द्विजातिकर्म्मभ्योहानिःपतन मितिवचनात् संध्योपासनायाश्च द्विजातिकर्म्मत्वादप्राप्तिरितिशंकनीयम् यस्मात्पतितस्यैव व्रतचर्य्योपदेशात्तदंगतयैव संध्योपासनादिप्राप्तिरतोऽ ध्ययनादीनामेव द्विजातिकर्म्मणां हानि न सर्वेषां तावन्मात्रबाधेनाऽपि हानिवचनस्य चरितार्थत्वादिति विदांकुर्वन्तुविद्वांसः

कर्म्मोंमें अनर्ह क्या योग्य नहि होता. जिस २ कर्म्मको कर्त्ताहै तिस २ कर्म्मके फलका भागी नहि होता (प्रश्न) नचेति द्विजाति जो हैं ब्राह्मण क्षत्री वैश्य इनके कर्म्मोंते हा निका हि नाम पतनहै इसवचनतें संध्योपासन जो है तिसकों द्विजातिकर्म्महोणेते अप्रा प्ति क्या संध्योपासनादिको नहि करणा (उत्तर) एह शंका नहि करणेयोग्य जिसतें पतितकोंहि व्रतचर्य्याके उपदेशहोणेते तिसका अंग हि संध्योपासनादिप्राप्ति है और इसीतें एह प्रतीत होआ कि वेदाध्ययनादि जो द्विजातिकर्म्महैं तिनकी हि द्विजातिपतितोंको हानि है कोई सभकी नहि क्योंके तिनकी हानिकर्के भी हानिवचनकों चरितार्थहोणेते इस बातकों पंडितलोक जाणें

अत्रेति इसमें जो पुरुषोंको पतन निमित्त हैं स्त्रियोंको बी सोई जानणे योग्य हैं और याज्ञवल्क्यनें इसमें विशेष भी कथन कियाहै नीचमें संगमकरणा गर्भका पातनकरणा भर्त्ताको मारणा एह स्त्रियोंकों विशेष कर्के पतनीय हैं ब्राह्मणजातीतें भिन्नजातीकी जो स्त्रीहै तिसकों भी पतितकामारणा और ब्राह्मणजातीते भिन्न जो भर्त्ताहै तिसकाभी जो मारणा एह भर्तृहिंसन पदका अर्थहै एह तीन कर्म हैं स्त्रियोंकों असाधारण क्या निश्शेषपतनके निमित्तहैं इहां अपिश ब्दकर्के महापातकाऽतिपातकाऽनुपातकभीहैं और बहुतवार किये जो उपपातक सो स्त्रियोंको नि श्चित पतनके कारणहैं इह हि शौनकजीनेकहेहैं ॥ और वसिष्ठजी कहतेहैं स्त्रीको तीनहि पातक लोकमे धर्मके जाणने वाले कहितेहैं स्वामीका मारणा १ दूसरेका गर्भ पातन २ और अपणे

अत्र यानि पुरुषाणां पतननिमित्तानि स्त्रीणामपि तानि ज्ञातव्यानि याज्ञव ल्क्येनतु विशेषोप्यऽभिहितः नीचाभिगमनं गर्भपातनं भर्तृहिंसनम् विशे षपतनीयानि स्त्रीणामेतान्यपिध्रुवम् १ अब्राह्मण्याअपिभर्तुःअब्राह्मणस्या ऽपिहिंसनमित्येतानि त्रीणि स्त्रीणामसाधारणानि पतननिमित्तानि ॥ अपि शब्देन महापातकातिपातकानुपातकानि अभ्यस्तान्युपपातकान्यपि स्त्रीणां ध्रुवं निश्चितं पतनहेतूनि इमान्येव शौनकेनोक्तानि ॥ वसिष्ठेन तु ॥ त्रीणिस्त्रियाःपातकानिलोकेधर्म्मविदोविदुः भर्तुर्वधो भ्रूणहत्या स्वस्य गर्भस्यपातनमिति इदमपिविशेषार्थं नतु पुरुषपतननिमित्तनिरासार्थम् किंच चतस्रस्तुपरित्याज्याः शिष्यगागुरुगाचया पतिघ्नीचाविशेषेण जुंगितोपगताचया इत्येतास्तु पतितास्त्यागार्थं गणिताः

गर्भका पातन३ एहभी स्त्रीयोंको विशेषार्थ है और पुरुषपतननिमित्त जो हैं तिनके दूरकरणके निमित्त नहिहैं अर्थात् पुरुषको जो पतननिमित्तहैं सोभी सभ और उनमे स्वामीका मारणा भ्रूणहत्याका कराणा- और अपणे गर्भका पातनकरणा ३-एह तीन कर्म विशेष पतनकारण हैं किंचेति इसकर्केभी पूर्वोक्त अभिप्रायकों हि कहतेहैं चार स्त्रियां त्यागदेणे योग्यहैं ॥ अब तिनकों कहितेहैं एकतो शिष्यके साथ संग करणेवाली १ और दूसरी गुरुकेसाथ संग करणेवाली २ और तीसरी स्वामीकों मारणेवाली ३ और चौथी जुंगित जो है प्रतिलोमज तिसके साथ संग करणेवाली ४ एह पतित स्त्रियां त्यागके निमित्त गिणिआं हैं

ऐह लेकर प्रायश्चित्तके करणेकी इच्छानहि करें तवइनका परित्याग करणे योग्यहै.और जो पतित स्त्रियांहैं तिनकी वस्त्र.अन्न गृहमें वास देणा इत्यादि कर्के रक्षाकरणी एह तात्पर्य है और प्रतिलोमज जो मनुष्य है तिसका नाम जुंगितहै जैसें ब्राह्मणीमें क्षत्रीतें जन्म जिसका इत्यादि नान्विति (प्रश्णः) पतिततें जन्मभयाहै जिसका तिसकों पतित कहतेहैं परंतु स्त्रीतें विना सो स्त्री पर गामिनी है केवल तिस स्त्रीकों ग्रहणकरे अरिक्था क्या केवल वस्त्रमात्र कर्के युक्तकों अर्थात् तिसकोपतितके घरसे विवाहलेवे परंतु शुद्धस्नान होईकों अपना वस्त्रदेकर्के और धन. उसका साथ न लेवे एह कहिता जो वसिष्ट और हारीत तिनका क्या अभिप्रायहै (उत्तर)

एतासां प्रायश्चित्तमनिच्छन्तीनां परित्यागोविधेयः अन्यासां तु पतितानां चैलान्नगृहवासादिना रक्षणमेवेति तात्पर्य्यम् ॥ जुंगितः प्रतिलोमजः।(ननु) पतितेनोत्पन्नःपतित इत्याहुः अन्यत्रस्त्रियाः साहिपरगामिनी तामरिक्था मुपादेयादिति वदतो वशिष्ठस्य हारीतस्य च को ऽभिप्रायः॥ पतितोत्पन्न कन्यायाग्रहणं प्रायश्चित्तेन युक्तं चेत्तदा तत्पुत्रस्यापि संततित्वाविशेषात् कुतो न ग्रहणम् स्त्रीणामर्द्धंप्रदातव्यमित्यादिवचमविशेषेण कन्यायाः स्वल्पेन प्रायश्चित्तेन पुत्रस्य त्वऽधिकेन शुभाचारिभिर्ग्राह्यता युक्तैव प्रतिभाति व्रात्योत्पन्नंवत् पतितोत्पन्नोऽपि प्रायश्चित्तार्होभवेत् ततश्च संस्कारानंतरं स्वस्ववर्णैर्व्यवहार्य्योभवेत् नहि व्रात्यपतितयोर्गुणद्रव्ययोरिव वास्तवोभेदः

पतिततें जन्मी जो कन्या तिसका ग्रहण प्रायश्चित्त कर्के जद योग्यहै तद पतितका जो पुत्रहै तिसकों भी संततीका अविशेष होणेतें क्या कन्याके तुल्य होणेते ग्रहण किसतें नहिं होना स्त्रियोंकों अर्ध प्रायश्चित्त देणे योग्यहै इत्यादि वचन विशेष कर्के कन्याकों थोडे प्रायश्चित्त कर्के और पुत्रकों बहुत प्रायश्चित्त कर्के शुभाचारि जो हैं शुभके आचरण करणवाळे तिनोंनें ग्राहाता कहीहै इह वार्त प्रतीत हुंदी है (प्रश्ण) व्रात्यतें उत्पन्नभया जो है तिसकी न्यांई पतितोत्पन्न वी प्रायश्चित्त योग्यहोवे तिसतें संस्कारतें उपरंत अपणे अपणे वर्णोंकर्के व्यवहारयोग्य होना चाहिए (उत्तर) व्रात्य और पतितका गुणद्रव्यकी न्यांई वास्तव भेद नाहिं है

किंतु धूम्र.कृष्ण जो रंग हैं तिनकी न्याईं दोषतारतम्यकृत भेद है इसतें इहां एह अर्थहै पतित पुरुष करके उत्पन्न भया जो पुत्र सोवी पतित होता है अपणे पिताके पातित्याऽनुसारकरके सो प्रायश्चित्त योग्यहै और कन्या पतिता नाहि हुंदी॰ अब इसीकों वौधायन ऋषिकहिताहै अशुचीति पतितके वीर्य्यतें जन्मे जो हैं और प्रायश्चित्तोंकी इच्छा करते हैं तिनकों पतितोंसें तीसरा हिस्सा प्रायश्चित्तहै और स्त्रियोंकों तीसरे हिसेका तृतीयांश प्रायश्चित्त है इसका एह अर्थहै पतित जो पिता तिसके जो पतनीय कर्म हैं तिनके प्रायश्चित्तोंका तृतीयांश पतितोत्पन्न पुरुषोंको प्रायश्चित्तहै तिसका वी तृतीयांश प्रायश्चित्त पतितोत्पन्न स्त्रियोंकोंहै तिसतें पतितोत्पन्न कन्या अथवा पतितोत्पन्न पुत्र

किंतु धूम्रकृष्णयोरिव दोषतारतम्यकृत एव भेदोऽस्ति अतश्चाऽयमत्रार्थः पतितेन पुरुषेणोत्पन्नः पुत्रोऽपि पतितः स्वजनकपातित्यानुसारेण प्रायश्चित्तार्हः कन्यातु न पतितेत्यर्थः ॰ इदमेवाह वौधायनः ॰ अशुचिशुक्रोत्पन्नानामिच्छतां प्रायश्चित्तानि पतनीयानां तृतीयांशः स्त्रीणामंशास्तृतीयः अयमर्थः जनकस्यपतितस्य यानि कर्माणि पतनीयानि तत्प्रायश्चित्तानां तृतीयांशः पतितोत्पन्नानां पुंसां प्रायश्चित्तं तस्यापि तृतीयोभागः पतितोत्पन्नानां स्त्रीणामिति ततश्च पतितोत्पन्ना कन्या पुत्रो वा सदाचारिभिः प्रायश्चित्ततारतम्येन मेलनीयः ॰ अथेदानींतनाः केचनजनाः॰ प्रागऽतीव वलवद्भिर्भारतवर्षीयधर्माध्वविध्वंसनाय कृतावतारैरिव म्लेच्छापसदैरकारणं वलादेव स्वकीयान्नभोजनेन स्वकन्या
दिसंबन्धसंविधानेन चैवंविधेनाऽन्येनापि सद्यःपातित्यहेतुना स्वैःसाकं शयनासनपानादिव्यवहारप्रवर्त्तनेनाऽवशतया स्वधर्मात्प्रच्याविताना

होवे सो श्रेष्ठ आचार करणे वालेयोंने प्रायश्चित्त की तारतम्यता करके मेलने योग्य है ॰ अथेति इसमे औरभी विचार है ॰ इसकालविषे होणवाले जो कोईकलोक सो पिच्छे बहुत वलवाले और भारतवर्षके धर्मरूपमार्गके नाश करणेवास्ते किया है अवतार जिनोंने ऐसे जो म्लेच्छोंके समान हैं तिनोंकरके कारणते विना वलतेंही अपणे अन्नके भोजनकराणे करके और अपनी कन्याकेदेनकरके भी उनको अपने धर्ममे लेआउना इसप्रकारके होर कर्म करके भी केस कर्महैं शीघ्र हि पातित्यके हेतुहैं और आपणे साथ शयन और आसन और पानादि व्यवहारके वर्त्तनकराणे करके अवशतातेंअपणे धर्मतें दूरहोए जो वर्णाश्रमी लोक

रहेति तिनांकों तिस कालविषें म्लेच्छोंको आज्ञादेहोत्रां होयां तिस आज्ञादे ना पालनेतें सता बाही सदूणे वंशके नाशनूं निश्चयकर्के कालांतरविषें उचित जो प्रायश्चित्त तिसके आचरणकर्के बहुतपापको दूरकरणेको संभावनाकर्के तथाविध जो बहुत आपदा तिसके विषें प्राणांको रक्षा करणो हि परम धर्म है एह जो मन्न रहेहैं और चिरकाल तिनांकी बलीयता कर्के तिनांते आपणे आपनूं छुडाने वास्ते अवसरभूं ना प्राप्त होकर्के पुत्रपौत्रादि परंपराकर्के तैसेंही अर्थात् म्लेच्छ हि जो स्थितहैं उसीतें लेकर जो म्लेच्छीभूतहै ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र इनांके कुलविषें उत्पन्न होएथे और पीछे जेडे होएहैं म्लेच्छ और अपणी नास्तिकतानूं रौरवादि नरकका साधन जाणकर्के कोईकभी पूर्वजन्मका सुकृतलेश था तिसका जो परिपाकहै पकणा तिसके

तदात्वे तन्निदेशातिक्रमे सद्यएव सकलस्वान्वयनाशं निश्चित्य कालान्तरसमुचितप्रायश्चित्ताचरणेन गुरुतरदुरितनिष्कृतिसंभावनया तथाविधायां गरीयस्यामापदि प्राणत्राणमेव परमं धर्मं मन्यमानानां चिरं तेषां बलीयस्तया तेभ्यः स्वात्मानं मोचयितुमवकाशमलब्ध्वा पुत्रपौत्रादिपारम्पर्येण तथैवावस्थितानां ततएव च म्लेच्छीभूतानां विप्रक्षत्रियविट्शूद्राणां कुलेषु प्रसूना म्लेच्छा वा स्वां नास्तिकतां विविधरौरवादि निरयं साधनतया कुतश्चिदपि प्राग्भवीयसुकृतलेशपरिपाकोदितेन शिष्टवाक्यादिना दृढमवधार्य भृशमनुशयानाश्चेत्प्रणिपातमात्रपरितुष्टेभ्यो दीनजनानुकम्पया तदुद्धारार्थैव भगवता विधिना सृष्टेभ्यः स्वप्रार्थनांजलिशताकृष्टेभ्यः शिष्टेभ्यः कथंचिदपि साध्वनुष्ठेन प्रायश्चित्तादिना नरकतरणोपायं स्वोचितनिगमानुमतदेवतासमाराधनाद्युपदेशं च वारं वारंप्रणिपत्यप्रार्थयेरन्

उदय होणे कर्के और शिष्टपुरुषांके वाक्यादिकर्के निश्चयसे जानकर अतिशयकर्के अनुशयानाः क्या नरकदुःखकेदूरकरणे वास्ते चिताग्रस्त होए २ जेकर नमस्कारमात्रतें प्रसन्नहोणवाले और दीनपुरुषोंपर दयाकरणवाले और दुःखिओंके उद्धारवास्ते मानो ब्रह्माजीने रचे होएहैं और पापीकी सहितअंजलिके प्रार्थना सुणकर दयार्द्रचित्तवालेहैं ऐसे शिष्टपुरुषांतें कदाचित् अच्छीतरां कीतेहोए प्रायश्चित्ततें नरकतरणेके उपायको और अपणे योग्य शास्त्रानुसार देवताके आराधनादि उपदेशको वार वार प्रणिपातकर्के क्या प्रणामकर्के प्रार्थना करें

तर्हीति : तद सो किसेक प्रकारसे नास्तिक्यबुद्धिते हटाएनुं अथवा सदाचारांके उपदेश करणेनुं योग्य हैन अथवा नहि ॐ पहले पक्षकोंलेकर कहतेहैं (प्रश्न) जेकर उह म्लेच्छाभास भी उपदेश के योग्यहैं तदकहो कउन प्रायश्चित्त उनको देणा चाहिए कि जो जन्मतेलेकर उनके आश्रित ना स्तिक्य बुद्धिको हरे और उनकेयोग्य कोनसे आचारहैं(उत्तर)इहिविचार अब करतेहैं तत्रेति तिस विषे जिनोको अपना उचित संस्कार प्राप्त होगयाहै ऐसे चारोंवर्णों विचों जिस वर्णको अपणी इच्छा ते अथवा म्लेच्छोंके वलसे म्लेच्छभाव प्राप्त होआहै और नास्तिक भाव हुआहै तिसको अपणा समुचितसंस्कारहि करणा चाहिए जो याज्ञवल्क्यादिमुनिओंने किहाहै परंतु पहिलेप्रायश्चित्त कर्के पापको हटाकर और पीच्छे संस्कार कराणा तिसते अनंतर अपने वर्णके उचितधर्मकी प्राप्ति

तर्हिते कथंचिदपि नास्तिक्यतो मुक्तिं स्वोचिताचारांश्चोपदेष्टुमर्हा नवा ॐ अर्हाश्चेत् कीदृशं प्रायश्चित्तं जन्मतःप्रभृत्याश्रितनास्तिक्यदोषमोषकं केच तदुचिता आचारा इतिविमृश्यते तत्र येषांचातुर्वर्णिकानां प्राप्तस्वो चितसंस्काराणां वलात्स्वेच्छया वा म्लेच्छादिहीनजातिभिः संसर्गो ना स्तिक्याद्याश्रयणं च तेषां मनुयाज्ञवल्क्याद्युक्तप्रायश्चित्तै स्तत्संसर्गनास्ति क्यजपापविनाशेन पुनःस्वस्ववर्णोचितधर्मप्राप्तिस्तुस्पष्टैव अयं तु विशेषः तेषां संसर्गकालतारतम्यपर्यालोचनया लघु लघीयो गुरु गरीयः प्राय श्चित्तप्राप्तिः नास्तिक्यस्य तु वेदादिप्रामाण्याविश्वासरूपस्य नास्तिक्यं व्रतलोपश्चेत्युपपातकप्रकरणे पाठेनोपपातकशुद्धिःस्यादेवं चान्द्रायणे न वा पयसा वा ऽपि मासेन पराकेणाथवा पुनरित्युक्तेषु प्रायश्चित्तेष्व न्यतमेन पापानुरूपेणोपदिष्टेन निष्कृतिः

होवेगी एह बात स्पष्टहै इतना इसविषे विशेषहै कि जो वर्णाश्रमी म्लेच्छ होएदेहैं तिनके संसर्गकालके न्यूनाधिकभावके विचारकर्के कि इनका कितना चिर भोजनादिमें संसर्ग रिहा है इसविचारकर्के छोटेसे छोटा वडेसे वडा प्रायश्चित्त आवेगा और जो उनको वेदादिविषे अविश्वासरूप नास्तिक्य भाव रिहाहै तिसपापके दूरकरणेवास्ते वेदादिविषे प्रामाण्यबु द्धि होणी अर्थात् वेदहि प्रमाणहै ऐसा विश्वासहोणा इसकर्के और (नास्तिक्यं व्रत लोपश्च) ऐसा उपपातकप्रकरणविषे पाठ है तिसका प्रायश्चित्तभी उसी जगाहै (उपपातक शुद्धिः स्यात्) इत्यादिवचनाविषे कहे जो प्रकारहैं तिन्हां विचों किसे एक कर्के शुद्धि होवेगी

येषामिति और जेडे अकृतसंस्कार हैं क्या जिनके यज्ञोपवीतादि संस्कार नहि होए और म्लेच्छादि संसर्ग उनको होआहे और नास्तिक भाव भी होआहे तिनको आपत्तिकर्के संस्कारके लोप होणेते इतऊर्ध्वंत्रयोप्येते इत्यादिवचनकर्के व्रात्यदोषको कहकर पीछे व्रात्यस्तोमयज्ञते विना उनकीशुद्धि नहि होती ऐसाकिहाहै तिसते ब्राह्मणादिचारवर्णको क्रमकर्के १६। २२। २४ वर्षादे अंदर व्रात्यतादोषके दूर करणेवास्ते व्रात्यस्तोम यज्ञका विधानहै तिस प्रायश्चित्त कर्के नष्ट होएहैं पाप जिनांदे तिनको भी यज्ञोपवीतादि संस्कारपूर्वक अपणे धर्मकी प्राप्ति होवेगी तिसपूर्वोक्त वचनका अर्थ एह है त्रय वर्ण ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य यथाकाल क्या जि

येषां त्वऽकृतसंस्काराणामेव तैःसंसर्गो नास्तिक्याश्रयणं च तेषामापदाऽप्राप्तसंस्काराणामित ऊर्ध्वं त्रयोऽप्येते यथाकालमसंस्कृताः सावित्रीपतिता व्रात्या भवन्त्याऽऽर्यविगर्हिता इतिमनूक्तेरापद्यपि व्रात्यत्वस्याऽपरिहार्यतयाऽतऊर्ध्वंत्रयोऽप्येते यथाकालमसंस्कृताः सावित्रीपतिताव्रात्या व्रात्यस्तोमादृतेक्रतोरिति विप्रक्षत्रियविशां क्रमेण षोडशद्वाविंशतिचतुर्विंशतिसंवत्सराभ्यन्तरेऽनुपनीतानां व्रात्यतायाः. पर्युदासमुखेन व्रात्यस्तोमरूपप्रायश्चित्ताऽपनोद्यत्वोक्तेः तेन नास्तिक्यप्रायश्चित्तेन च नष्टपापानामस्त्येवोपनयनपूर्वकं स्वस्वधर्मप्राप्तिः ❀ शूद्राणांतु सावित्रीप्राप्तेरेवाऽभावेन तदभावप्रयोज्यत्वस्यैव व्रात्यत्वे प्रागुक्तवचनतोऽलाभाद्व्रात्यत्वप्रयुक्तप्रायश्चित्ताऽप्राप्तावप्यऽव्यवहार्य म्लेच्छादि स्पृष्टान्नभोजनादिमात्रप्रयुक्तप्रायश्चित्तस्य दिनगणनया कल्पितावृत्त्या नास्तिक्यस्य च चातुर्वर्णिकैःसर्वैरपि परिहार्यतया

स कालमें उनको संस्कार करणा था उस कालमे जेकर उपवीतादिसंस्कार ना होवे तद उनकी व्रात्यसंज्ञा है सो व्रात्य श्रेष्टपुरुषोंमे विगर्हित है अर्थात् भलेलोक उनके साथ वर्त्तन नहि करदे ❀ शूद्रोंके अर्थ कहतेहैं शूद्राणामिति शूद्रोंको सावित्रीका विधान नहि तिस कर्के तिनको सावित्रीके नाहोणेते व्रात्यता नहि होती और तत्प्रयुक्त प्रायश्चित्तभी नहि होता किंतु नहि जिनके साथ व्यवहार करणा तिन्हों म्लेच्छोंके स्पर्श कीतेहोए अन्नका जो भक्षण है तिसका हि प्रायश्चित्त है तिसविषे भी दिनोंके गिणने कर्के कल्पित होई जो आवृत्ति तिस कर्के और तिनको जो रिहा नास्तिकभाव तिसका निषेध चारोंवर्णोंको है

तदिति इसतें शूद्रोंकोभी नास्तिक्यका प्रायश्चित्त करणा चाहिए तिसके पीछे शूद्रोंकोउचित जो धर्म्म है तिसकीप्राप्ति योग्य है ⊛ और ब्राह्मणादिवर्णत्रयको १५ वर्षतेपीछे गौणकाल हैं तिस तेभी पीछे संस्कार अनापदविषे क्या स्वस्थताविषे नहि होवे अथवा थोडाकालभी अनापद्विषे संस्कार नहिहोवे तद पतित इसतें आदिलेकर जो मिताक्षरामें वसिष्ठजीका वचनहैं. तिसकर्के उद्दालक व्रत और व्रात्यस्तोम अथवा तिनों विषे एक अथवा मनुप्रोक्त त्रैमासिक व्रत जो है तिसको जो क्रमकर्के करणवाले हैं तिनका यज्ञोपवीत होवे एह मिताक्षरामें स्पष्टहै ॥ और इस स्मृतिका अर्थ एह है कि जिसकी सावित्री पतितहो जावे सो उद्दालकव्रत करे और दो २ महीने यावक क्या यवांके काढेकर्के वर्त्ते और १ महीना दूधकर्के और १५ दिन आमिक्षाहै

तदाश्रयणप्रयुक्तपापनाशक प्रायश्चित्तस्याचरणेन च स्वोचितधर्मप्राप्तिरुचितैव ⊛ त्रैवर्णिकानां पंचदशवर्षाधिककालं गौणकालादूर्ध्वमनापद्यनुपनीतानां किंचित्कालमपिवाऽनापद्यनुपनीतानां ॥ पतितसावित्रीकउद्दालकव्रतंचरेद् द्वौ मासौयावकेनवर्त्तयेत् मासं पयसा पक्षमामिक्षयाऽष्टरात्रं घृतेन षड्रात्रंमयाचितेन त्रिरात्रमब्भक्षोऽहोरात्रमुपवसेदश्वमेधावभृथं गच्छेद्व्रात्यस्तोमेन वा यजेतेति मिताक्षराधृतवसिष्ठवचनेनोद्दालकव्रतव्रात्यस्तोमयोरन्यतरन्मनूक्तंत्रैमासिकं च क्रमेण कृतवतामुपनेयता मिताक्षरादौ स्पष्टैव ॥ येषां तु पिता पितृपितामहौ पितृपितामहप्रपितामहाश्चाऽनुपनीताः सवर्णास्ववच व्रात्यजासु पुत्रानुत्पादितवन्त स्ते भृज्जकण्टकादिसंज्ञकाः

जो दूधविषे दहींमिलाकर वणे तिसकर्के और ८ रातां घृतकर्के और दो २ रातां अयाचित कर्के और ३ रात्र जल भक्षणकर्के और दिनरात्र उपवास करे अथवा अश्वमेध जिस स्थानमे होता है तहां जावे अथवा व्रात्यस्तोम करे इति ॥ और जिनका पिता अथवा जिनका पिता और पितामह दादा अथवा जिनका पिताभी और पितामह दादाभी और प्रपितामह पड़दादाभी अनुपनीत हैं क्या यज्ञोपवीतसे हीन है सो अपने वर्णकीयां स्त्रियां विषे अर्थात् ब्राह्मणव्रात्य ब्राह्मणीविषे और क्षत्रियव्रात्य क्षत्रियाणी विषे इत्यादि क्रमसे अथवा स्त्रियांभी व्रात्यजा होण तिनांविषे पुत्रोंको पैदे करदेहोए सो उत्पन्नहोए पुत्र भृज्जकंटकादि नामवाले हुंदेहैं

न्नदिति सोई शूद्रकमलाकरग्रंथ विषे मनुजीने कहाहै व्रात्येति व्रात्य क्या संस्कारहीन ब्राह्मणते उत्पन्नहोआ जो पुत्र है सो पापात्मा है और भृज्ज कंटक तिसका नाम है और आवंत्य और वाटधान और पुष्पशेखर एह सभ उसीके नामहैं एह व्रात्यब्राह्मणते ब्राह्मणीविषे उत्पन्नहोएके नामहैं एह कैककहतेहैं ॥ होर कोई ऐसा अर्थ करदेहैं कि व्रात्यब्राह्मणने ब्राह्मणीविषे भृज्जकण्टक और तिसते ब्राह्मणीविषे आवन्त्य और तिसते ब्राह्मणीविषे वाटधान और तिसते ब्राह्मणीविषे पुष्पशेखर इति ऐसेहि व्रात्यक्षत्रियते क्षत्रियाणीविषे झल्ल मल्ल लिच्छिवि नट करण खस द्रविड इति और व्रात्यवैश्यते वैश्याविषे सुधन्वा आचार्य कारूष विजन्मा मैत्र सात्वत इनानामांवाले उत्पन्न होतेहैं एह सभ शूद्रकमला

तदुक्तं (मनुना) व्रात्यात्तुजायते विप्रात्पापात्मा भृज्जकण्टकःआवन्त्यवाटधानौच पुष्पशेखरएवच विप्रायांजायतेव्रात्यविप्रजोभृज्जकण्टकइति अत्र यंव्यवस्था आवन्त्याद्यास्तस्यैव संज्ञा इतिमेधातिथिः अन्येतु भृज्जकण्टका द्विप्रायामावन्त्यः तस्मात्तस्यां वाटधानः तस्माच्च तस्यां पुष्पशेखर एवव्रात्यक्षत्रियात्क्षत्रियायां झल्लोमल्लश्चराजन्याद्व्रात्याल्लिच्छिविरेवच नटश्चकरणश्चैवखसोद्रविडएवचेतिझल्लादयः॥ वैश्यात्तुजायतेव्रात्यात्सुधन्वाऽऽचार्यएवच कारूषश्चविजन्माच मैत्रः सात्वतएवचेति सुधन्वादयोवैश्याजा एव इदंच शूद्रकमलाकरे स्पष्टम् एषांच व्रात्यत्वेऽपि विप्रत्वादिकं नहीयते विप्रत्वादेर्जातिरूपतया विप्रजातीयपुरुषाद्विप्रजातीयकन्यायामुत्पन्नापत्यमात्रस्य विप्रत्वात्तत्र चाद्दुष्टत्वस्याप्रयोजकत्वात् अतश्च तेषां विप्रत्वादे रनपगमात् ॥ अतिक्रान्ते तु सावित्र्याः काल ऋतुं

करग्रंथविषे स्पष्टहैं प्रयोजन एह है कि इनांको व्रात्यत्वके होआंभी ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य एह संज्ञा दूर नहि हुंदी क्यों कि विप्रत्वादिक जाति जिसके पुरुषभी विप्र और स्त्री तैसी तिनते जो होवेगा सो सभ विप्री जातिकाहि केवल उस जातिमे दुष्ट अदुष्टतना हि विचारहै और ऐसा नहि कि दुष्ट होवे सोई जातिका प्रयोजक है ऐसा विचार होणेते ॥ अतएव इसी कारणते इनाका विप्रत्वादि जातिके नहि दुरहोणेते एहांको प्रायश्चित्तके अर्थ लिखतेहै अतिक्रांतेइति ॥ इसका अर्थ एहहै कि सावित्रीका काल जद लंघ जावे अर्थात् जिससमय यज्ञोपवीत पाणा था तिस समयके व्यतीतहोआं दो महीने पर्यन्त

त्रैविद्यक क्या जिसमे वेदत्रयका विचार होवे ऐसे ब्रह्मचर्यको करे तिसके अनंतर यज्ञोपवीत पावें और तदनंतर वर्षपर्यंत जलका उपस्पर्शनरूप एक कर्महै तिसकों करे पीछे साविञी पढाणी चाहिए और जिनका पिता और पितामह अनुपनीत होण क्या पतितसावित्रीक होण सो ब्रह्महसंस्तुत हैं अर्थात् ब्राह्मणमारणवालेओंकी पंक्तिमे हैं उनके गमनको क्या संबंधको और भोजनको और विवाहको वर्जना चाहिए उह जेकर प्रायश्चित्तकी इच्छा करें तो पहले अतिक्रमविषे जो ऊपर विधान लिखयाहै सो करके पीछे यज्ञोपवीत तदनंतर उदकोपस्पर्शन कर्म करें तदनंतर जितने पुरुष अनुपनीत रिहेहैं तितनी संख्याकके वर्षाविच्च (यावन्तोऽनुपनीताः) इत्यादि ऋचांकर्के और यज्ञपवित्र नामा यज्ञ कर्के और साम पवित्र नामकर्के आंगिरसेन क्या अंगिरा कर्के कहे

त्रैविद्यकं ब्रह्मचर्यं चरेदथोपनयनं ततःसंवत्सरमुदकोपस्पर्शनमऽथाध्याप्यो यस्य पिता पितामह इत्यनुपनीतौ स्यातां ते ब्रह्महसंस्तुताः तेषां गमनं भोजनं विवाहमिति वर्जयत् तेषामिच्छतां प्रायश्चित्तंयथा प्रथमेऽतिक्रम ऋतुरेवं संवत्सरोऽथोपनयनं तत उदकोपस्पर्शनं प्रतिपुरुषसंख्यया संवत्सरान् यावन्तोऽनुपनीताःस्युःसप्तभिः पावमानीभि र्यदन्ति यच्च दूरक इत्येताभिर्यज्ञपवित्रेण सामपवित्रेणांगिरसेनेत्यपि वा व्याहृतिभिरेव मथाध्याप्योऽथयस्य प्रपितामहादीनां नानुस्मर्यत उपनयनं ते श्मशान संस्तुताः तेषामभ्यागमं भोजनं विवाहमिति वर्जयेत् तेषामिच्छतां प्रायश्चितं द्वादशवर्षाणि त्रैविद्यं ब्रह्मचर्यं चरेदथोपनयनं तत उदकोपस्पर्शनं पावमान्यादिभिरथ गृहमेधेनाऽध्यापनं ततोऽभिनिवर्त्तते तस्य यथा प्रथमेऽतिक्रमे ततऊर्ध्वं प्रकृतिवदिति ॥

होए कर्के और व्याहृतिआं जो हैं ॐ भूःइत्यादि तिनांकर्के शुद्धहोआं गायत्रीका उपदेश ग्रहण करे और जिनके पडदादेते आदलेकर यज्ञोपवीतको वार्ता भी नहि सुणी सो श्मशानसंस्तुत हैं क्या श्मशानकीन्याईं अपवित्र हैं तिनांके स्थानमै जाणा आउणा और तिनका भोजन और विवाह एह सभ वर्जितहै जेकर उह प्रायश्चित्तकी इच्छाकरें तद १२ वर्ष त्रैविद्यनामक ब्रह्म चर्यको करें तिसते अनंतर यज्ञोपवीत तदनंतर उदकोपस्पर्शन और पावमानोसें आदि लेकर जो ऋचाईं तिनाकर्के गृहमेध करणेते अनंतर अध्यापन क्या गायत्रीका उपदेश होवे और तिसतें अनंतर फेरभी कोई सावित्री त्यागे तद तिसको जैसे पहले अतिक्रमविषे प्रायश्चित्त किहाहै तैसाकरे और उसके आगे फेरभी पूर्ववत् अतिक्रमहोवे तो पूर्ववत् प्रायश्चित्त करे

प्रायइति एह पूर्वोक्तव्यवस्थापक प्रायश्चित्तमयूख और प्रायश्चित्तोद्योत और प्रायश्चित्तमुक्तावली आदिक बहुत प्राचीनग्रंथोंविषे लिखेहोए आपस्तंबजीके वचनके अनुसार प्रायश्चित्तकरणकरके दूरहोए हैं पाप जिनोंके उनका उपनयनकरके पीछे आपोआपणे धर्मकी प्राप्तिहै और शूद्रोंको जिस तरहां अपणे धर्मकी प्राप्ति हुंदीहै सो पीछे कहचुकेहैं इनका व्रात्यत्वदोष नही है इसीकरके तिस के अर्थ कोई प्रायश्चित्त भी नहीहै और इसकेआगे जेकर वृद्धप्रपितामहको आरंभकरके अग के जनकोंका उपनयन नहि सुणया तद तिनांकीयां आपोआपणे वर्णोंकीयां स्त्रियांविषे उत्पन्न होए जो पुरुष तिनांको बहुत प्रायश्चित्त करणे करके भी उपनयनादि संस्कारकी योग्यता नहि है

प्रायश्चित्तमयूख प्रायश्चित्तोद्योत प्रायश्चित्त मुक्तावल्यादि बहुतर प्राचीनग्रन्थ निबन्धधृतापस्तम्बवचनानुसारि प्रायश्चित्ताचरणेन निर्णिक्तपातकाना मुपनयनपूर्वकं स्वस्ववर्णोचितधर्म्म प्राप्तिरस्त्येव शूद्राणां तु पूर्ववदेव तेषां व्रात्यत्व प्रयुक्तस्य पापविशेषस्याऽभावात् अतः परं च वृद्धप्रपितामहमारभ्य येषां जनकाना मुपनयनाभावः तेषां सवर्णास्वेवोत्पादितानामपि न प्रायश्चित्तस्य गुरुतरस्याऽप्याचरणेनोपनयनप्रभृति वैदिक संस्कारयोग्यताऽऽपस्तम्बेन चतुर्थ पुरुषावध्येवव्रात्यत्वे प्रायश्चित्ताभिधानात् ॥ नचाऽऽपस्तम्बेन यस्य प्रपितामहादीनां नाऽनुस्मर्यत उपनयनमित्युपक्रम्य प्रायश्चित्ताभिधानात् तत्र चादिग्रहणेन ततः प्राचामप्यनुपनीतत्वे प्रायश्चित्तेन व्रात्यत्वनाशो युक्त एवेति वाच्यम् ॥ उक्तवचनं व्याचक्षाणेन भाष्यकृता हरदत्तेन प्रपितामहादि प्रपितामहादारभ्य प्रपितामहः पितामहः पिता स्वयं च यथाकालमिति ते तथाविधाः समाएवकाः

क्योंकि आपस्तंबजीने चौथे पुरुष तक हि व्रात्यत्वका प्रायश्चित्त विधान कीताहै (प्रश्न) आपस्तंबजीने यस्य प्रपितामहादीनां इत्यादिवचनकरके आरंभ जद कीता और प्रायश्चित्तविधान कीता उसजगा चकारके ग्रहण करणेते तिनांते अगलयांकाभी ग्रहण हुंदाहै तोभी जेकर अनुपनीत होण तोभी उनको प्रायश्चित्त करणा चाहिए (उत्तर) एह पीछेकिहा जो है आपस्तंबजीका वचन इसकी व्याख्याकरणवाले जो हैं भाष्यकार हरदत्त तिनांने प्रपितामहादि इसका एह अर्थ कीताहै किप्रपितामह और पितामह और पिता एह सभे अनुपनीत होण तो बालकके सहिततथाविध हैं

इसेति और श्मशानतुल्य हैं इतनाहिं किहा है और जिसके प्रपितामहके पिताका उपनयन नहिं हैं वह तिनांविषे प्रायश्चित्तका अर्थ नाहे किया तथापि तिनांकी एक वार्ता है कि आपो आप के वर्णोविषे उत्पन्न होणे करके पूर्वोक्त रीतिसें विप्रत्वादिजातिकों न दूर होणेतें शूद्रकी अपेक्षातें उह श्रेष्ट हैं ॥ कुच्छ होर कहते हैं किंचेति अध्ययन जो है वेदकापढना तिसका अंग है उपनयन तिसकी प्राप्तिके नहिं होयां उपनीय गुरुः इत्यादि वचनकर्के शौचाचारों की शिक्षाकों उपनयनके अंगिताकी सिद्धीतें तिसका अंग जो उपनयन तिसकी भी प्राप्ति होई सो उपनयन अपणे समीप होणा इसीका ज्ञापक वचा प्राप्तिके करणवालाहे कोई यथार्थ रूप

इमशानतुल्या इत्यादि व्याख्याय यस्य तु प्रपितामहस्य पितुराऽरभ्य नाऽनुस्मर्यत उपनयनं तत्र प्रायश्चित्तं नोक्तमित्युपसंहारात् परंत्वेतषां सवर्णाजत्वेन प्रागुक्तरीत्या विप्रत्वाद्यनपायाच्छूद्राऽपेक्षयोत्कृष्टत्वमस्तीति युक्तम् किंचैषामध्ययनांगोपनयनप्राप्त्यभावेऽपि उपनीय गुरुःशिष्यं महाव्याहृतिपूर्वकम् वेदमध्यापयेच्चैनंशौचाचारांश्चशिक्षयेदितिवचनेन शौचाचारशिक्षणस्याऽप्युपनयनांगितायाःसिद्धेस्तदंगोपनयनप्राप्तिरस्त्येव तच्चस्वसमीप प्रापणमात्ररूपमितिबोध्यम् ० नच निषेकादिःश्मशानान्तो मंत्रैर्यस्योदितोविधिः तस्यशास्त्रेऽधिकारोऽस्मिन् ज्ञेयोनान्यस्यकस्यचिदिति मनुना समंत्रकश्मशानान्तविधिमतामेव शास्त्रोक्तानुष्ठानाधिकारो बोधितः व्रात्यजानां पुनः संकरजातीयप्रकरणमध्ये पाठात्तत्समानधर्मत्वप्रतिपादनेतात्पर्यावगमात्

की नहि करदा एह वार्त्ता जाणणे योग्य है और इसवचनका अर्थ एह है कि गुरु शिष्यकों यज्ञोपवीत देकर महाव्याहृतिपूर्वक वेदको पढावे और शौचाचारोंको सिखावे (प्रश्न) निषेकादीति मनुजीका वचन हे इसका एह अर्थ है कि जिस पुरुषकी निषेक जो है गर्भाधान तिसते आदि लेकर श्मशानपर्यंत मंत्रोंकर्के विधि कही है तिसका इस शास्त्रमे अधिकारहे और किसेका नाहि हे १ इसवचनते जिनांके संस्कार मंत्रांकर्के होएहैं तिनांकाहि शास्त्रोक्तविधिमे अधिकार है एह प्रतीत हुंदाहै और जो व्रात्योंके पुत्र हैं उनका संकरजातिके प्रकरणविषे पाठहोणेते तिसते जापयाहै कि तिनांसंकरोंके हि समान हैं ऐसा तात्पर्य्यहोणेवं

और जो संकरजातिहैं सो सभ शूद्रोंके तुल्य हैं इनवचनसें शूद्रोंकी तुल्यताका बोध होणेते और स्त्रीयोंको और शूद्रोंको अमंत्रक संस्कार है इसवचनकर्के तिनव्रात्यसंकरोंको मंत्रका अधिकार हि नहि है इसते कैसे उपनयनपूर्वक शौचोंका और सदाचारोंका शिक्षण होवे (उत्तर) ऐसा मत कहो कि मंत्रपदकर्के नाममंत्रका भी ग्रहण होणेते द्विजानामिति द्विज जो हैं ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इनके १६ सोला संस्कारहैं शूद्रोंके १२ और संकरोंके ५ संस्कार कुलधर्मते हैं १ वेदव्रत उपनयन महानाम महाव्रत इनकेविना शूद्रोंके १२ संस्कार हैं परन्तु सभ नाममंत्रो हि हुंदेहैं २ एइ शूद्रकमलाकर ग्रंथ विषे लिखा

तेषांच शूद्राणांचसधर्माणः सर्वेपध्वंसजाः स्मृताइत्यनेन शूद्रसधर्मत्वबोधनात् स्त्रीशूद्राणाममंत्रकमितिवचनेन तेषां मन्त्राधिकाराभावबोधनात् कथमुपनयनपूर्वकशौचाचारशिक्षणप्राप्तिरिति वाच्यम् ॥ निषेकादिवाक्ये मंत्रपदेननाममंत्रस्याऽपिग्रहणात् द्विजानांषोडशैवस्युः शूद्रस्रद्वादशैवहि पंचैवमिश्रजातीनांसंस्काराःकुलधर्मतः वेदव्रतोपनयनमहानाम्नीमहाव्रतम् विनाद्वादशशूद्राणांसंस्कारानाममन्त्रतइति शूद्रकमलाकरधृतवचनेन तेषां नाममंत्राधिकारित्वबोधनात् अत्र चोपनयनशब्देनाऽध्ययनांगमेवोपनयनं विवक्षितं पूर्वोत्तरसाहचर्यात् अतएव महामहोपाध्यायगागाभट्ट कृत निबन्धे व्रात्यादीनां शौचाचारशिक्षणांगोपनयनप्राप्त्युक्तिः संगच्छते तत्र निषेकादिवचनेन शास्त्रोक्तसकलधर्माधिकारस्यैव नियमाच्च विप्रस्याप्यापत्तारतम्येन हीनजातिधर्माश्रयणास्याभिधानात् अतएव

जो वचनहै तिसकर्के नाममंत्रके अधिकारका बोध होणेते और व्रात्योंको उपनयन किहाहै सो भी अध्ययनका अंग है कोई यथार्थ नहिहै इसीकर्के महा महोपाध्याय गागाभट्ट जीने बनाएहोए निबंधविषे व्रात्योंको शौच और आचार की शिक्षाका अंग जो उपनयनहै तिसकी प्राप्तिका वचन संगत हुंदाहै और तिसस्मृतिविषे जो निषेकादि वचनहै तिसकर्के शास्त्रकेकहे होए सभधर्म्मके अधिकारका नियम होणेते और ब्राह्मणको भी आपत्तिके थोडे बहुतहोणे कर्के हीन जातिके धर्म्म जो हैं कृष्यादि तिनके स्वीकार विषे आज्ञा होणी इसते एहि प्रतीत होआ कि जो धर्म्म देश कालानुसारिजिसको उचित होवे तिसको आज्ञा होणी चाहिए इसीका श्लोकहै

देशोतिं मनुजो देशोंके धर्म और जातियोंके और कुलोंके सनातन धर्म और पाषंडियोंके धर्म इसशास्त्रविषे कहते भये इसते एह वार्ता संगत होई जेकर ऐसा नहि मानो तो पाषंडियोंको मंत्रपूर्वक संस्कार के नाहोणेकर्के ग्रंथके आरंभका विरोध स्पष्ट हि है जो एह वचनहै कि स्त्रियोंको और शूद्रोंके संस्कार मंत्रते विना कहे हैं सो वैदिक मंत्रका निषेधहै औरका नहि इसते विरोध नहि आवेगा और किहा जो शास्त्रविषे अधिकार उनककर्मा शास्त्राध्ययनके हि अधिकार विषे विवक्षा होणेते दोषका लेशभी नहि आवेगा अतइति इसी कारणते तिनांके प्रपितामहते पहले जो अनुपनीत थे तिनांका व्रात्यत्व कदेभी

देशधर्मान् जातिधर्मान् कुलधर्मांश्चशाश्वतान् पापण्डगणधर्मांश्चशास्त्रेस्मिन्नुक्तवान्मनुरितिसंगच्छते अन्यथा पापण्डानां मंत्रपूर्वकसंस्काराभावे नोपक्रमविरोधः स्पष्टएव स्त्रीशूद्राणाममंत्रकमित्यस्य च वैदिकमंत्ररहितमित्यर्थेन विरोधाभावात् शास्त्रेऽधिकार इत्यनेन शास्त्राध्यापनाधिकारस्य विवक्षणे दोषलेशस्याप्यऽभावाच्च. अतश्च तेषां प्रपितामहप्राक्कालप्रभृत्यनुपनीतानां व्रात्यत्वानपगमेऽपि शूद्रसमानधर्मतया नास्तिक्यम्लेच्छसंसर्गपरिहारपूर्वकमुचित प्रायश्चित्तेन शुद्धानामस्ति प्रागुक्तद्वादशसंस्कारप्राप्तिः येषां पुनश्चातुर्वर्णिकजत्वनिश्चयोऽपि नास्ति चिरं म्लेच्छादिभिःसंसर्गात् तेषामप्यस्ति पश्चात्तप्यमानानां नास्तिक्यपरिहारपूर्वकमास्तिक्याश्रयणेन भक्तिशास्त्राद्यधिकारोऽहिंसादि सामान्यधर्मप्राप्तिश्च

नहि दूर होवेगा परंतु शूद्रको समानधर्मता अर्थात् शूद्रतुल्यताकर्के नास्तिक्यदोष और म्लेच्छ संसर्गदोषका परिहार पूर्वक किहे होए उचित प्रायश्चित्त कर्के शुद्ध और उक्त १२ संस्कारकी प्राप्ति होवेगी और जिनांका चारवर्ण विषों एहहै ऐसा निश्चय नहि है क्योंकि चिरकालते म्लेच्छोंके संसर्गते म्लेच्छ होए होए हैं और किसीकभाग्यसे सत्संगपाकर अनुतापको जो प्राप्तहोएहैं तिनकों भी नास्तिक्यपरिहार पूर्वक आस्तिक्यमतके आश्रयकर्के भक्तिशास्त्रका अधिकार है और अहिंसादि सामान्यधर्मकी प्राप्ति हुंदीहै.

तेयेति सोई दिखाईदी है सूत्र करके (आनिन्द्ययोनोति) एह भक्ति सूत्रके दूसरे अध्याय विषे और दूसरे आह्निक विषे ७८ सूत्रहै इसका अर्थ भाष्यकार स्वप्नेश्वरजीने इस तहीं कीताहै कि निन्दित चांडालादि योनिपर्य्यंत भक्तिका अधिकारहै क्यों कि संसारसागरमे जो दुःखहै तिसको सभकोई दूर कीयाचांदाहै इसविषे किसी भेदके नहि होणेते ? प्रश्न ? वेदाध्यायनका जिनको नहि अधिकार तिनांको द्विजाति भावसे दूरहों आंको किसककै भक्तिमे अधिकारहै ? उत्तर ? ऐसा मत कहो परंपराते इस मार्गका स्थापन होणेते नोदनारूपधर्म्म शास्त्रयोनिहै क्या शास्त्रसे उत्पन्नहै इस न्यायते अलौकिक जो अर्थहै

तथाहि आनिंद्ययोन्यधिक्रियते पारंपर्यात् सामान्यवदिति भक्तिसूत्रे द्वितीयाध्याये द्वितीयाह्निकेऽष्टसप्ततितमं सूत्रम् अस्यचार्थो भाष्यकृता स्वप्नेश्वरेणएवंविवृतः निन्दितचाण्डालादियोनिपर्यन्तं भक्तावधिक्रियते संसार दुःखजिहासाया अविशेषात् अथ वेदाध्ययनानधिकारात् कथ मत्रैवर्णिकानां स इतिचेत्तत्राह पारंपर्यादिति चोदनालक्षणोऽर्थोधर्मः शास्त्रयोनित्वादितिन्यायादलौकिकोऽर्थः श्रुत्यैकसमधिगम्य इत्यत्र न विप्रतिपद्यामहे किंतु स्त्रीशूद्रादीनामितिहासपुराणादिद्वारा चाण्डाला दीनां च स्मृत्याचारवदुपदेशपारंपर्येण ज्ञानमपि श्रुतिमूलमेव भवति यथा तेषां सामान्याऽहिंसाधर्मादिज्ञानं अन्यथा तदसिद्धिप्रसंगादिति अनेनच सूत्रभाष्यसंदर्भेणस्पष्टएव मनुष्यमात्रस्य भक्तिशास्त्राधिकारःएवं प्रत्यभिज्ञाशास्त्रेऽपिजनस्येत्युक्त्या जन्ममरण प्रयुक्तक्लेशजिहासावतः प्राणिमात्रस्य ग्रहणमित्युक्तेः तत्राप्यधिकारः

सो केवल श्रुतितेही जाणीदाहै इसमे किसीके भी विप्रतिपत्ति क्या विरोध नाहिहै किंतु स्त्रियों को और शूद्रोंको और जो इनके तुल्यहैं तिनको इतिहासपुराणादिद्वाराहै और चांडालादि योंको स्मृति और आचार वालयोंके उपदेशकी परंपरासे जो है सो सभ श्रुतिमूल हिहै तिस तहीं तिनको सामान्य अहिंसादि धर्म्मादिओंका ज्ञानहै जेकर ऐसा नहि स्वीकार होवे तद सभ को उसधर्म्मकी असिद्धिका प्रसंग होवेगा इससूत्रके भाष्यके संदर्भसे स्पष्टहि मनुष्यमात्रको भक्ति शास्त्रका अधिकार प्रतीतहोआ और इसीप्रकार प्रत्यभिज्ञाशास्त्र विषेभी जनस्यइसवचनसे जन्ममर णके क्लेशको दूरकरणेकी इच्छावाले प्राणिमात्रके ग्रहणते भक्तिकाअधिकार सभको प्रतीत होआ

तथेति तैसेहि मंद २ क्रिया जो है वर्णाश्रमके योग्य तिसके लोपहोणेते एह जो हैं क्षत्रियजातियां क्या राजकुलके लोक वृषलत्व को क्या शूद्रभावको लोक विषे प्राप्त होर हीआंईं और ब्राह्मणके ना मिलनेसेभी इनको शूद्रत्व होआ ॥ १ ॥ तिनकानाम कहतेहैं पौंड्रेति पौंड्रकनामा इक जातिहै १ और चौड्र २ और द्रविड ३ और काम्बोज ४ और यवन ५ और शक ६ और पारद ७ और पल्हव ८ और चीन ९ और किरात और दरद १० और खश ११ ॥ २ ॥ मुखति एह सभ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र इनांते हि उत्पन्न होएदे हैव और जो बाहर जातिहैं म्लेच्छोंकीयां वाणिआं और आर्य्य जो श्रेष्ठ हैं तिनकीयां वाणिआं वालेभी एह सभ दस्यु क्या चोर नाम करके व्यवहृतहैं॥ ३ ॥ एह मनुजीने दस्यु शब्द करके किहे

तथा शनकैस्तुक्रियालोपादिमाःक्षत्रियजातयः वृषलत्वंगतालोके ब्राह्मणादर्शनेनच १ पौण्ड्रकाश्चौण्ड्रद्रविडाःकाम्बोजायवनाःशकाः॥ पारदाःपल्हवाश्चीनाः किरातादरदाःखशाः २ मुखबाहूरुपज्जानांयालोकेजातयोबहिः॥ म्लेच्छवाचश्चार्यवाचःसर्वेतेदस्यवः स्मृताः ३ इतिमनुना दस्युशब्देन व्यवहृतानां व्रात्यक्षत्रियादीनां धर्मे व्यवस्थापनं कथं स्यादिति * राजधर्मेषुपञ्चपष्टितमाध्याये ॥ यवनाः किरातागांधाराश्चीनाःशबरबर्बराः शकास्तुषाराः कंकाश्च पल्हवाश्चान्ध्रमद्रकाः १ पौण्ड्राःपुलिन्दा रमठाःकाम्बोजाश्चैवसर्वशः ब्रह्मक्षत्रप्रसूताश्च वैश्याः शूद्राश्चमानवाः २ कथंधर्मांश्चरिष्यन्तिसर्वेविषयवासिनः मद्विधैश्चकथंस्थाप्याः सर्वेवैदस्युजीविनः ३ एतदिच्छाम्यहंश्रोतुंभगवं स्तद्ब्रवीहिमे त्वंबंधुभूतोह्यस्माकं क्षत्रियाणांसुरेश्वरेति ४ मांधातुरिन्द्रंप्रतिप्रश्नः

होए व्रात्यक्षत्रियादियोंका धर्म्म विषे स्थापन किस तरां होवे इस ते प्रतीत हुंदाहै कि सभको धर्म्म विषे स्थापनकरणा चाहिए * और राजधर्म्म विषे ६५ अध्यायविषे भी किहाहै यवन १ किरात २ गांधार ३ चीन ४ शबर ५ बर्बर ६ शक ७ तुषार ८ कंक ९ पल्हव १० अंध्र ११ मद्र १२॥ १ ॥ पौंड्र १३ पुलिंद १४ रमठ १५ कंबोज १६ एह सभ चार वर्णकेहि पहलेथे॥ २ ॥ एह अब किस्मतरां धर्म्मको करणगे सभदेशोंके वस्सणेवाले और मेरे जैसे करके किस तरां एह दस्युलोक धर्म्मविषे स्थापित होणगे ॥ ३ ॥ एतदिति एह मैं सुणनेदी इच्छा करनाहां भगवन् तुं कहो मेरे तांईं तुं बंधुरूप हैं असाक्षत्रियांका हे इन्द्र ॥ ४ ॥ एह राजे मांधाताका इंद्रके प्रति (प्रश्न) होयां कहते हैं ॥

मंतोति मातापिताकी सेवा संपूर्ण पूर्वोक्त दस्युयोने करणी चाहिए और आचार्यको और गुरुकी सेवा और तैसेहि आश्रमवासियोंकी १ और भूमि पति जो हैं राजा तिनकी सेवा करणी चाहिए और वेदके धर्मों की क्रिया जो अगले श्लोकमें है सो सभ इनका धर्म्महै २ पितरोंके यज्ञ और खूह और बाउलीयां और शयन शय्या और दान यथाकाल ब्राह्मणके तांई सदा एह दस्युलोकदेण ३ और अहिंसा क्या किसे को मारणा नहि और सत्य कहणा और क्रोध नहि करणा और जीवका देणेवालेकी रक्षा करणी और पुत्र और स्त्रियोंकी पालना करणी शौच क्या पवित्र रहणा और द्रोह नहि किसे साथ करणा ४ और यज्ञोंकी दक्षिणा दुआणी और आपदेणी ऐश्वर्यकी इच्छा वालन

मातापित्रोर्हिशुश्रूषाकर्त्तव्या सर्वदस्युभिः आचार्यगुरु शुश्रुषातथैवा श्रमवासिनाम् १ भूमिपानांचशुश्रूषाकर्तव्यासर्वदस्युभिः वेदधर्म क्रियाश्चैव तेषांधर्मोविधीयते २ पितृयज्ञास्तथाकूपाः प्रपाश्चश यनानिच॥ दानानिचयथाकालं द्विजेभ्योविसृजेत्सदा ३ अहिंसासत्यमक्रो धोवृत्तिदायानुपालनम् भरणंपुत्रदाराणां शौचमद्रोहएवच ४ दक्षिणास र्वयज्ञानांदातव्याभूतिमिच्छता पाकयज्ञामहार्हाश्च दातव्याःसर्वदस्युभिः ५ एतान्येवप्रकाराणिविहितानिपुराऽनघ सर्वलोकस्यकर्माणिकर्त्तव्यानी हपार्थिवे ६ तीन्द्रस्योत्तरेण मातापितृशुश्रूषादेर्लिङ्तव्याभ्यां विधानादि मेधर्मा इतिस्पष्टमेव तत्र उपनीय तु यः शिष्यंवेदमध्यापयेद्बुधः सांगं चसरहस्यंचतमाचार्यंप्रचक्षत इति लक्षितस्य वेदाध्यापकस्याचार्यस्या संभवेऽपिउपनयनपूर्वकशौचाचारशिक्षकर्त्तवाऽचार्यपदेनाभिधीयते

और अनेक प्रकार के बहुत मूल्यवाले अन्नाद संपूर्ण दस्युओंने दुआणे चाहिए ५ एह इसप्रकार विधियां कहियां हैं हे निष्पापराजन् सर्व लोकके एह साधारण कर्म हैं ६ एह(उत्तर) इंद्रका है मातापिताकी सेवा आदि लिङ् प्रत्यय करके और तव्य प्रत्यय करके विधान होणेते एह धर्म्म इना दस्युलोकांके स्पष्ट प्रतीत हुंदे हैन॥ तबेतें जिसविषे आचार्यादिकांकी सेवाकरे ऐसा अद किहा तद आकांक्षा होई किसको आचार्य कहते हैं तिसवास्ते स्मृति है उपनीय जो शि ष्यको यज्ञोपवीत देकर पीछे भडावे सांग वेदको तिसको आचार्य कहते हैं इस लक्षणवाला अध्यापक जेकर नहि मिले तथापि शौचआचारकी शिक्षाकरणवाला आचार्य जाणणा॥

एवमिति इसीतर्हां गुरुपद कर्के वी निषेकादि इस लक्षण कर्के किहा होआ गुरु न मिले इस स्मृतिका अर्थ एह है कि निषेकते आदलेकर यथा विधि- जो संस्कारकरे और अन्नकर्के पालना करे सोब्राह्मणादि गुरु किहाहै इस विना कहतेहैं गुशब्द इविगुशब्दकर्के अंधकारकिहाहै तिसका निरोधक क्या अंधकारका निरोध करणवाला जो है सो गुरु किहाहै इस लक्षण वाला योग्यमंत्रादि दान कर्के नरकको निवृत्ति करणवाला गुरु इसजगा ग्रहण करना इनांकी सेवा करणीदस्यु लोकोंका धर्म्महै एह पूर्व साथ संबंध करणा(प्रश्न)जो पिच्छे कहे हैंदस्यु आदिलोक तिनांको किसेवी मंत्रका अधिकार नहि है किसतर्हां इनको अधिकार कहते हो(उत्तर) अगस्त्य संहिता विषे लिखयाहै शुचीति पवित्रव्रत है अतिशयकर्के जिनांका ऐसे जो हैं शूद्र धार्मिक और ब्राह्मणोंके सेवक और पतिव्रता स्त्रियां और प्रतिलोमज और अनुलोमज संकरजाति

एवं गुरुपदेनापि निषेकादीनिकर्माणियःकरोतियथाविधिसंभावयति चान्नेनसविप्रोगुरुरुच्यत इति पारिभाषिकस्य गुरोरऽसंभवेऽपि गुशब्दस्त्वन्धकारः स्याद्रुशब्दस्तन्निरोधकः अंधकारविरोधित्वाद्गुरुरित्यभिधीयत इतिलक्षितो योग्यमंत्रादिदानेन निरयरूपांधकारनिवर्त्तको गुरुरिह गृह्यते ॥ नचैषां कस्मिन्नपि मंत्रे नाधिकार इतिवाच्यम् ॥ अगस्त्यसंहितायाम् शुचिव्रततमाःशूद्राधार्मिकाद्विजसेवकाः स्त्रियःपतिव्रताश्चान्ये प्रतिलोमानुलोमजाः लोकाश्चाण्डालपर्यन्तंसर्वेऽप्यत्राधिकारिणइत्यादिना राममंत्रे मनुष्यमात्रस्याधिकार बोधनात् तथा श्रुतिर्ब्रह्माहषड्वर्णंस्मृतिर्वर्णद्वयात्मकम् षड्वर्णंब्राह्मणादीनां त्रयाणां यद्द्विवर्णकम् १ तदन्येषांदेशिकेन वक्तव्यं तारकंपरम्

और चांडाल पर्य्यंत जो लोक हैं सो सभ इस भक्तिमें अधिकारी हैं इत्यादि कर्के श्रीरामजीके मंत्रविषे मनुष्यमात्रके अधिकारका बोध होणेतें तथेति तैसेहि दिखाईदाहै श्रुति जो है वेद सो छे ६ अक्षरां वाले ब्रह्मको कहता है अर्थात् वक्ष्यमाण जो षडक्षर मंत्र है सोई ब्रह्म है ऐसा बोध करदा है और स्मृति जो है सो दो २ अक्षरके मंत्रको ॥ राम ॥ इसको ब्रह्मकहती है इसमें विवेक कहते हैं कि ६ अक्षरके मंत्रका अधिकार ब्राह्मणादि तीन वर्णोंको है और दो २ अक्षर वालेका अधिकार शूद्र और तिन्नांते होर जो हैं संकर जाति और म्लेच्छ तिन्हांको देशिकने क्या गुरुने कहणा चाहिए कैसा इह मंत्र है परम तारकहै क्या उद्धारकरणे वाला है इसी का अर्थ प्रगटकर्के कहते हैं

॥ ॐरामायनमः ॥ एहि षडक्षर मंत्र जान्नणा पूर्व वाक्यके साथ एकवाक्यता होणेते श्रौर होरणा सभना को रामनाम मंत्रके हि अधिकार की प्रतीति होणते एवमिति इसीप्रकार ब्रह्मोत्तरखण्डविषे शिवजीके पंचाक्षर का प्रसंग ल्याकर कहते हाए कि महापातक रूप शुष्कवन है तिसविषे एह मंत्र अग्नि की न्याई है श्रौर बिना ॐका रके सो एह मंत्र पंचाक्षर बनया है इसके अधिकारियोंको कहते हैं स्त्रियोंने १ शूद्रोंने २ संकरोंने ३ मुक्तिकी इच्छावालेयोंने धारिदाहैं इसकी कोई दीक्षा नहि श्रौर होम श्रोर संस्कार श्रौर तर्पण भी नहि २ कोई कालका नियम भी नहि एह सभनोंने जपणा चाहि

इत्यनेन त्रैवर्णिकानामोंरामायनमइति षड्वर्णे पूर्ववाक्यैकवाक्यतया तदन्येषां सर्वेषामपि मनुष्याणां रामनाममंत्रेऽधिकारावगमाच्च एवंब्रह्मो त्तरखण्डे शिवपंचाक्षरं प्रक्रम्य महापातकदावाग्निः सोऽयंमंत्रः षडक्षरः प्रणवेनविनामंत्रः सोऽयंपंचाक्षरोमतः १ स्त्रीभिः शूद्रैश्चसंकीर्णैर्धार्यतेमु क्तिकांक्षिभिः नास्यदीक्षानहोमश्च नसंस्कारोनतर्पणम् २ नकालनियम श्चात्र जप्यः सर्वैरयंमनुः वैश्यैःशूद्रैर्भक्तियुक्तैर्म्लेच्छैरन्यैश्चमानवैरित्यनेन शिवपंचाक्षरमंत्रे म्लेच्छादीनामप्यधिकारस्य विस्पष्टमवगतेश्च वेदधर्म क्रियाइत्यनेन वेदमूलकस्मृत्याद्युक्त शिवविष्ण्वादिभक्तिसमाश्रयणमुच्यते मांहिपार्थव्यपाश्रित्ययेऽपिस्युः पापयोनयः स्त्रियोवैश्यास्तथाशूद्रास्तेऽ पियान्तिपरांगतिमिति भगवद्गीतासु भगवता स्वसमाश्रयणाभिधानात्

।

ए वैश्य शूद्र म्लेच्छ श्रौर इनाते होर जो मनुष्य हैं भक्तिवाले इना सभनाने जपना चाहिए इसकर्के सभना म्लेच्छादिंयोंको अधिकारकी स्पष्ट प्रतीति होणेते श्रौर वेद धर्म क्रिया जो कहीहे इसकर्के वेदमूलक स्मृत्यादिविषे कही जो है शिव विष्ण्वादि भक्ति तिसका स्वीकार करणा चाहिए श्रौर भगवद्गीता विषे भी श्रीमहाराज कृष्णचन्द्रजीका वचनहै मामिति हे अर्जुन मेरेको आश्रय होकर जेडीयां पापयोनियांहैं अर्थात् जो नीचलोकहैं श्रौर स्त्रीयां वैश्य श्रौर शूद्र सोभी परम गतिको प्राप्तहुंदेहैं इसते भी अपणे आश्रयकाकथन होणेते

अतइति इसी कर्के स्कंदपुराण विषेभीकिहाहै विष्णुकी भाक्ति कर्के युक्तहोआ २ भामे मिथ्या चारीभी होवे और अनाश्रमी भी होवे तथापि उह सभ लोकोंको पवित्र कर्ताहै जैसे उदयको प्राप्तहोआ सहस्रांशु सूर्य्य होवे १ और ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र अथवा इनते इतर होर संकरादि जेकर विष्णुकी भक्ति कर्के युक्त होवे तद सभसे उत्तमो विषे भी उत्तम जानणा २ दुराचारी क्या हिंसादि कर्मभी करणवाला होवे होर सभका अन्न खाणेवाला होवे और कृतघ्न होवे क्या किसेका कीताहोआ उपकार नहि जाणे और नास्तिक होवे पहले ऐसा भीहै परन्तु जो पीछे आदिदेव नारायणजीको आश्रय करे श्रद्धाकर्के युक्तहोआ ३ तद उसको निर्दोष होएको जाण परमात्माके प्रभावते ऐसा उसजगा पढ्याहै ॥ इसीतर्हां देवीपुराण विषे लिखयाहै ॥ वर्णाश्रमके विभागकर्के देवता स्थापन करणेचाहिए अन्यथा नहि और

अतएव स्कन्दपुराणेऽपि विष्णुभक्तिसमायुक्तोमिथ्याचारोप्यनाश्रमी पुनातिसकलान्लोकान् सहस्रांशुरिवोदितः १ ब्राह्मणःक्षत्रियोवैश्यः शूद्रोवायदिवेतरः विष्णुभक्तिसमायुक्तोज्ञेयःसर्वोत्तमोत्तमः २ दुराचारोऽपि सर्वाशीकृतघ्नोनास्तिकःपुरा समाश्रयेदादिदेवंश्रद्धयाशरणंहियः ३ निर्दोषंविद्धितंजन्तुंप्रभावात्परमात्मनइतिपठ्यते एवंदेवीपुराणे वर्णाश्रम विभागेनदेवाःस्थाप्यास्तुनान्यथा ब्रह्मातुब्राह्मणैःस्थाप्योगायत्रीसहितः प्रभुः १ चतुर्वर्णैस्तथाविष्णुःप्रतिष्ठाप्यः सुखार्थिभिः भैरवोऽपिचतुर्वर्णै रन्त्यजानांतथामत इतिवचनेनान्त्यजादीनामपि भैरवप्रतिष्ठाधिकारः स्पष्टमुच्यते भगवद्भक्तेःसर्वमानुपेष्वनुमतत्वादेवच किरातहूणान्ध्रपुलिन्द पुक्कसाआभीरकंकायवनाः खसादयः

ब्राह्मणोंने गायत्रीकेसाथ ब्रह्मा स्थापनकरणा ॥ इसीमे कुछ होर कहतेहैं चतुरिति चारवर्णों ने विष्णु प्रतिष्ठापन करणेयोग्यहै अर्थात् इन्होंने सुखकी इच्छावालेउने विष्णुकी सेवा करणी और भैरवजी भी चारवर्णों कर्के क्या ब्रह्म क्षत्रि वैश्य शूद्र कर्के पूजने योग्यहै और तैसेहि अंत्यज जो हैं म्लेच्छ नीचजाति तिन्होंने भी भैरवजीकी उपासना करणी इस बचन कर्के नीचोंको भी भैरवजीकी प्रतिष्ठाका अधिकार स्पष्ट प्रतीत हुंदाहै और परमेश्वरकी भक्ति विषे सभ को अनुमती होणेतेहि भागवतके चउथे अध्यायविषे (श्लोक) किरातेति किरात १ हूण २ अन्ध्र ३ पुलिंद ४ पुक्कस ५ आभीर ६ कंक ७ यवन ८ खस ९ एह सभ नीच जातीहैं

और इनतें भिन्नभी जो नीचहैं जिस परमेश्वरके भक्तोंके भी आश्रित होए तांभी शुद्ध हुंदेहैं तिस प्रभाववाले विष्णुके तांई नमस्कार होवे इस वचनते भी भगवत्की भक्ति करके शुद्धिका कहणा संगत हुंदाहै और राममंत्र और पंचाक्षर मंत्र विषे सभका अधिकारहै एह पीच्छे कह चुकेहैं पितृयज्ञ जो हैं श्राद्धादि तिन विषे भी नास्तिक्य और म्लेच्छ संसर्गके परिहार करणेते पिच्छे किहे होए प्रायश्चित्तके अनुष्टान करके शुद्धहोआं कों शूद्रकमलाकर ग्रंथके अनुसार वेणजानगे तेषामिति तिन्हां कों शूद्रके तुल्य होणेते एवं इसी तर्हां किहा जो संदर्भ क्या ग्रंथ तिस करके मूलते क्या पहलेतेहि जो म्लेच्छहैं कोई पीछेते नहि बणे तिन्हांकेभी अपणे नास्तिक्यादिके त्याग पूर्वक राममंत्रादि विषे अधिकार सिद्ध होया

येऽन्येचपापायदुपाश्रयाश्रयाःशुध्यन्तितस्मैप्रभविष्णवेनम इतिभागवते चतुर्थाध्याये सर्वेषांभगवद्भक्त्या शुद्ध्यभिधानंसंगच्छते राममंत्रपंचाक्षरमंत्रयोःसर्वेषामधिकारःप्राङ्निरूपितएव पितृयज्ञादयश्च नास्तिक्यम्लेच्छसंसर्गपरिहारपूर्वकमुचितप्रायश्चित्तानुष्ठानेन शुद्धानां शूद्रकमलाकरोक्तप्रयोगानुसारिणःप्राप्नुवन्ति तेषां शूद्रसधर्मत्वात् एवं चोपपादितसंदर्भेणमूलतो म्लेच्छादीनामपि स्वनास्तिक्यादित्यागपूर्वकराममंत्राद्यधिकारःसिद्धातिकिं पुनर्बलान्म्लेच्छीकृतानाम् ॥ माभून्नामचिरकालनास्तिकम्लेच्छसंसर्गाद निश्चीयमानस्वस्वजातिकानां प्रायश्चित्तादिभिःसद्यएववर्णाश्रमान्तर्गतत्वं साक्षात्परंपरया वा मुक्तिसाधनतया सकलसंसारदावदाहशमकं भगवद्भक्त्याद्याश्रयणं तु कथंनिवार्यताम् किंच श्रद्दधानःशुभांविद्यामाददीतावरादपि

किमिति और पहले म्लेच्छ नहि थे किंतु तिन्हिांके संबधते पिच्छे म्लेच्छ होए तिन्हांकी क्या वार्त्ता कहणी तिनकों इसी अर्थसे अधिकार सिद्ध होगया ॥ परंतु ऐसा मनहो कि चिर काल के नास्तिक और म्लेच्छ संसर्गते नहि निश्चय करसकीदीहै अपणी जाति जिन्हांकी जो तिन्हांका लहि प्रायश्चित्तादिते अपणी जातिमें आजाए ॥ तथापि साक्षात् अथवा परंपराते मुक्ति की साधनतासे और सारे संसारके दुःखोंके दूरकरणेवाली भगवतकी भक्तोंका आश्रय करणा किसतर्हां दूरहोवे अर्थात् कउण कहे कि म्लेच्छादि भगवतकी भक्ति ना करए ॥ अब और मनुजीका वचन कहतेहैं श्रद्दधेति । श्रद्धावाला पुरुष शुभविद्याको अर्थात् लोकों पर उपकार करणे वाली गारुडादि विद्या को नीचतेभी ग्रहणकरे

श्रौर परम धर्म्म जो है जिसते किसेके प्राण बच रहण तिसको नीचते भी ग्रहण करे श्रौर स्त्रीरत्नको दुष्कुल जो है नीचकुल तिसते भी ग्रहण करे इसवचनको कहंदे होए मनुजीनें श्रेष्ट धर्म्मका ग्रहण नीचते भी किहाहै इसीते दंडापूपन्यायतें जैसे दंडके खिचणेतें तिसके साथ लगेहोए पूडेकाभी खिचणा हुंदा है इसनीतिते श्रेष्ट पुरुषते नीचोंको भी उचितधर्म्मको प्राप्ति सिद्ध होई ॥ श्रौर मनुवचनहै ॥ गार्भै रिति गर्भके जो हवनादिहैं श्रौर जातकर्म्मादि संस्कारहैं इन्हांकर्के बीजणेवाले पिताका पाप श्रौर गार्भिक क्या माताके कीतेहोए जो पापहैं सो सभ ब्राह्मणादिकें दूर हुंदेहैं इसवचनकर्के

अन्त्यादपिपरंधर्मंस्त्रीरत्नंदुष्कुलादपि इतिवदतामनुना नीचादपिसमी चीनधर्मग्रहणमनुमतं तेन दण्डापूपिकनीत्यैवश्रेष्ठात्स्वोचितधर्मप्राप्तिर्नी चानामपिसिद्ध्यति गार्भैर्होमैर्जातकर्मचौलमौंजीनिबन्धनैः बैजिकंगा र्भिकंचैनोद्विजानामपमृज्यत इतिवचनेनाऽभक्ष्यभक्षणजनितत्वादिनिषि द्धकालगमनादिवत्प्रायश्चित्ततारतम्येन क्रमायातदोषाणामपि नाशस्योप लक्षणविधयाबोधनाच्च अतएव पातकविशेषेण पतितानामपि पुनः संस्का रविधानमुपपद्यते तेन पातकेन ब्राह्मणत्वादेर्नाशेहि संस्कारविध्युद्देश्यता वच्छेदकस्यैवाभावेन तद्विधानानुपपत्तिः किंच मलादिभिश्चिरंसंसृष्टस्यापि सुवर्णस्य संस्कारसंख्यातारतम्येन शुद्धितारतम्यदर्शनात्

अभक्ष्यभक्षणादि पाप श्रौर निषिद्धकाल विषे जो स्त्री गमनादि पापके दूर होणेकी न्याई प्रायश्चित्तकें थोडे वहुते के करणेते क्रमकर्के आएहोए पापोंके भी नाशहोणेकी विधि का बोधहोणेते ॥ अतइति इसी कर्के पातकविशेष कर्के जो पतित होंएहैं तिन्हांको संस्कारका विधान करणा उचितहै तिसकर्के पातक करणेते ब्राह्मणत्वजातिका नाशहोआं संस्कार विधि जिसते होणीथी सो नहि होई तो संस्कार भी नहि होणाचाहिए सो पूर्वोक्त युक्तिसेहि हुंदाहै ॥ इसमै श्रौर युक्ति कहतेहैं किंचेति मलादिकर्के लित जो सुवर्णादि हैं तिनको संस्कार कथोडे वहुते होए कर्के थोडी वहुती शुद्धि देखीदीहै

पापोति तैसेहि प्रायश्चित्तके थोडे बहुते होणेकर्के पापिओंकी भी शुद्धि थोडी बहुती होणी युक्तहै तिसते ऐसा विचारहोआ कि उक्तविधि कर्के पापिओंकाशीघ्रहि पाप दूर होकर चार वर्णं विच्चों जो जिस वर्णमे जाणेके तिसकी प्राप्ति तो नहि हुंदी परंतु शुद्धिरूप सोपानकी परंपरा विषे जाणे का अधिकार सिद्ध होआ सो यथार्थहै इसी कर्के श्लोकहै गोमूत्रमिति गोमूत्र और गोमय गांया और दुग्ध और दहिं और घृत और कुशाका जल और एकरात्रका उपवास क्या निराहार व्रत एह सत्तांदिनांदा व्रतहै सो श्वपाक जो चांडालहै तिसकोभी शुद्ध करदाहै औरोंकी क्या वार्त्ता कहणीहै एह हारीतजीका वचनहै यद्यपी ति यद्यपि एह जो पिच्छे किहा है प्रायश्चित्त सो स्वार्थ विषे तात्पर्य्य वाला

पापिनामपिप्रायश्चित्ततारतम्येन शुद्धितारतम्यस्य यौक्तिकतया निर्दिष्टपापिनामपिसकलपापत्यागपूर्वकं चातुर्वर्णिकत्वाद्यसिद्धावपि शुद्धिसोपानारोहाधिकारो युक्तएव अतएव गोमूत्रंगोमयंक्षीरंदधिसर्पिःकुशोदकम् एकरात्रोपवासश्चश्वपाकमपिशोधयेदिति हारीतेनोक्तम् यद्यपि नेदं स्वार्थेतात्पर्यंयदपिघटितत्वात् तथापिशुद्धिःसर्वेषामपि भवत्युचितप्रायश्चित्तैरित्युपलक्षणविधया बोधयत्येव एतेन नहिशतशोध्मायमानोऽपिलोहः सुवर्णंभवति एवं म्लेच्छीभूतानां न कथमपि प्रायश्चित्तैःपापनाशइति प्रत्युक्तम् सद्यस्तदभावेऽपि क्रमेण चातुर्वर्णिकधर्मयोग्यतासंभवेनैव प्रकृतार्थसिद्धेः

नहि किंतु एह व्रतकी प्रशंसाहै कोई यथार्थ चांडालकी शुद्धि नहि करसकता अपिशब्दकर्के घटितहोणेते यथा अपिशब्दका हि ठीक अर्थहै होर नहि तथापि सभकी शुद्धि प्रायश्चित्तसें हुंदीहै आपो आपणे प्रायश्चित्तसें इस उपलक्षण विधि कर्के बोध करांदाहै ऐसा जाणना इतने कर्के एहशंका दूर होई कि सैकडेवार धोता अथवा तपाया होया भीहै लोहा परंतु सुवर्ण नहि हुंदा इसी तरहाँ अनेक प्रायश्चित्तों कर्के भी जेडे म्लेच्छ होगयेहैं ब्राह्मणादि सो शुद्धकर ब्राह्मणादि नहि हुंदे- इतनी शंकाका निरास समझणा इसमै उत्तर कहतेहैं कि शीघ्र पापदूर नहि हुंदा परंतु क्रम कर्के चारवर्णके धर्मको योग्यता के होणे कर्के पाप नाश हुंदाहिहै पूर्वोक्त दृष्टांत इसमै तुल्य नहिहै जिसकर्के लोहा जन्मसेहि लोहा हि है

म्लेछीति ओर एह पीछेते म्लेच्छ होएदेहैं इनांको म्लेच्छ होआं भी ब्राह्मणत्वादिकी प्राप्ति है एह पिच्छे कहआएहैं इसते दृष्टांत दार्ष्टांतिक की विषमता जांणणी ॥ इसी करके भविष्य पुराण विषे रहस्यके प्रसंग विषे किहाहै॥ तथेति तैसेहि विधान करके ब्राह्मण तांई मधु और घृत देवे सो तारदाहै सभनानुं पिचले और अगलेआंनुं और आपणे आपको भी तारदाहै हे नराधिप हेराजन् एह दानरूप प्रायश्चित्तहै १ अब चर्म दान कहतेहैं गोभिरिति चारबैल करके युक्त और पृथ्वी करके युक्त जो है अजिन क्या हरिणका चर्म्म तिसके प्रतिग्रह उठाणेमें जो समर्थ होवे तिसके तांई और अग्निहोत्र करण वालेके तांई देवे २ परंतु कतयाले महीनेकी पूर्णमासीकों अथवा वैशाखकी पूर्णमासीकों अथवा विशेष करके विषुव मेष संक्रांति और तुलसंक्रांति तैसेहि चन्द्र और सूर्यके ग्रहण विषे ३ एह दान

म्लेच्छीभूतानामपि ब्राह्मणत्वाद्यनपगमस्याधस्तादुपपादनेन दृष्टान्तदार्ष्टांतिकयोर्वैषम्याच्च ॥ अतएव भविष्ये रहस्यप्रसंगे॥ तथादद्याद्विधानेनद्विजायमधुसर्पिषी तारयत्यखिलान्पूर्वानात्मानंचनराधिप १ गोभिश्चतमृभिर्युक्तंतथाभूमिसमन्वितम् प्रतिग्रहसमर्थायविदुषेत्वाहिताग्नये २ दद्यादजिनंतुकार्त्तिक्यांवैशाख्यांवाविशेषतः विषुवत्ययनेचैवग्रहणेचन्द्रसूर्ययोः ३ कृच्छ्रात्तुतमसोघोरान्मुच्यतेसर्वतोभयात् अतीतान्सप्तपुरुषांस्तथाचान्याननागतान् ४ उद्धृत्यसनरोयातिब्रह्मलोकंसनातनमित्यादिनाऽतीतसकलस्ववंशीयानामात्मनश्च तारणाभिधानं दृश्यते एवं एकादशगुणाम्वापिरुद्रानावार्यधर्मवित् महापापैरुपस्पृष्टोमुच्यतेनाऽत्रसंशय १ इत्यंगिरोवचनम् एवं ॥ तीर्थप्रत्याम्नाये विष्णुपुराणम् ज्ञानतोऽज्ञानतोवापिभक्त्याभक्त्यापिवाकृतम् गंगास्नानंसर्वविधंसर्वपापप्रणाशनम् १

करणे वाला बडे घोर पापते और सभ भयते भी मुक्त हुंदाहै पिचले सत्त पुरुष जो पतित होए हैं और सत्त ७ अग्गे आउणे जो हैं तिनका उद्धार करके और साथ आपणे आपका उद्धार करके सनातन ब्रह्मलोक को जंदाहै ४ इत्यादि वचनां करके पिचले अगले आपणे वंशके लोकोंका और अपणे आपका तारणा प्रतीत हुंदाहै एवमिति इसी प्रकार ११ जारां रुद्रोंका आवर्तनकरे अर्थात् जारांवार रुद्रोंका पाठ करे सो पुरुष महापाप करके युक्तभीहै तांभी मुक्त हुंदा है इसमे कुछ संशय नहि १ इस अंगिराके वचनते पाप नाशका निश्चयहै इसमें ऐसा विचारहै कि ११ पाठकानामरुद्रीहै इसका ११ वारआवर्त्तनमें १२१ होणगे ॥ एवमिति ॥ इसी प्रकार तीर्थप्रत्याम्नाय विषे विष्णुपुराणका वचनहै ॥ श्रीगंगाजीका जो स्नानहै सो सभ तरांकीवेहोए सभनां पापांनु दूर करदाहै १

इसीका होर वचनहै चान्द्रेति १००० हजारों चान्द्रायणों कर्के जो कोई देह शोधन करे और जो कोई श्रीगंगाजीका जल पान करे एह दो २ बराबर होण अथवा ना होण अर्थात् श्रीगंगा जलकी महिमा हजारों चांद्रायणोंते भी अधिकहै २ इसमे दृष्टांतहै जिसप्रकार तार्क्ष्य जो गरुडहै तिसके दर्शनते सर्प्प निर्विष हुंदेहैं क्या विषरहित हो जांदेहैं तैसे हि श्रीगंगाजीके देखणेते मनुष्य सभ पापते मुक्त हुंदेहैं ३ और पुण्यक्षेत्र विषे जो गमनहै सो सभ पापके दूर करणवालाहै और देवताका पूजन पुरुषोंके सभ पापको हरदाहै एह किहाहै ४ और भविष्यपुराण विषे भी किहाहै ॥ स्नानमात्रकर्के भी गंगा विषे ब्रह्महत्यादि पाप दूर हुंदे हैं इस विषे जो संशय करे अथवा मुखसे जो किहे कि ऐसे पाप गंगा के स्नानमात्रसे किस तरहीं दूर होणगे ऐसे पुरुषका जो पाप है तिसको कहताहुं तिसको किरोड ब्राह्मणके मारणेका

चान्द्रायणसहस्रैस्तुयश्चरेत्कायशोधनम् पिबेद्यश्चापिगंगाम्भःसमौस्यातां नवासमौ २ भवन्तिनिर्विषाःसर्पायथातार्क्ष्यस्यदर्शनात् गंगायादर्शनात्त द्वत्सर्वपापैःप्रमुच्यते ३ पुण्यक्षेत्राभिगमनंसर्वपापप्रणाशनम् देवताभ्यर्चनं पुंसामशेषाघविनाशनमिति ४ भविष्येऽपि॥ स्नानमात्रेणगंगायाःपापंब्रह्म बधोद्भवम् दुरांधर्षंकथंयातिचिन्तयेद्योवदेदपि १ तस्याहंप्रवदेपापंब्रह्म कोटिवधोद्भवम् स्तुतिवादमिमंमत्वाकुम्भीपाकेपुजायते २ आकल्पंनरकंभु क्त्वाततोजायेतगर्दभ इत्यादिवचनैः श्रीगंगातीर्थस्नानादेः सकलपापना शकता सिध्यति ॥ एवं वृहन्नारदीये॥ सर्वसाधारणप्रायश्चित्तानिप्रोक्तानि प्रायश्चित्तानियःकुर्यान्नारायणपरायणः तस्यपापानिनश्यन्तिअन्यथापति तोभवेत् १ यस्तुरागादिनिर्मुक्तअनुतापसमन्वितः सर्वभूतदयायुक्तोविष्णु स्मरणतत्परः २

पाप लगदाहै और जो कोई पूर्वोक्तादि वचनोंको स्तुतिवाद मनदेहैं सो कुंभी पाक नरक विषे जांदेहैन २ और कल्प पर्यंत नरकभोग कर्के पिछे गर्दभ होंदेहैं इत्यादि वचनों कर्के श्री गंगास्नानादिते सभ पापका नाश कल्पना विषे आया सो यथार्थ जाणणेयोग्यहै ॥ एवमिति ऐसेहि वृहन्नारद पुराणविषे सर्वसाधारण प्रायश्चित्त किहेहैं अब तिनका फल कहतेहैं ॥ प्राय इति जो मनुष्य नारायण की सेवामे तत्परहोया २ प्रायश्चित्त करदाहै तिसके सभ पाप दूर हुंदे हैं अन्यथा क्या प्रायश्चित्त ना करे तद पतित हुंदाहै १ और जो पुरुष रागादि क्या प्रीति और द्वेष इसते रहित है और पश्चात्ताप वालाहै और सभ जीवोंपर दया करणेवालाहै और विष्णुके स्मरण विषे तत्परहै २

सो पुरुष महापातक करकेयुक्त होवे अथवा उपपातक जो हैं गोवधादि तिनकर्के युक्त होवे तथापि सभनां तो छोड़के मुक्त हुंदाहै जिस कारणते मन उसका विष्णुपरायणहै ३ इत्यादिवचनो कर्के विष्णुके भक्तका जिस किस मनुष्य मात्रके सभ पापोंका नाश विधान कीताहै ॥ इसतें एह सिद्धहोआ कि बहुत जगा प्रायश्चित्तके विधायक जो वाक्य हैं तिना विषे नर एह सामान्य पदका ग्रहण होणेते कहेहोए वचनां कर्के म्लेच्छादियोंको भी परमेश्वरकी भक्तिका अधिकार सिद्धहोणेते सभको आपो अपणे अधिकारकी योग्यताके अनुसार वैदिक मार्गके उन्मुख होणा उचितहै एह सिद्धहोआ ॥ इत्थमिति इसप्रकार तिन्नां पुरुषां वक क्या त्रयपीढीतक निश्चित है समान वर्णकी उत्पत्ति जिनकी जैसे अमुके

महापातकयुक्तोवायुक्तोवाप्युपपातकैः सर्वैःप्रमुच्यतेसद्योयतोविष्णुरतंमनः ३ इत्यादिना विष्णुभक्तस्य नरमात्रस्य सकलपापनाशोऽभिहितः॥ इत्थंच बहुत्र प्रायश्चित्तविधायकवचनेषु नरइति सामान्यपदोपादानादुदाहृतवचनैर्म्लेच्छादीनामपि भगवद्भक्त्यधिकारसिद्धेश्च सर्वेषामपिस्वाधिकारस्वयोग्यतानुसारेण वैदिकमार्गोन्मुखत्वं निराबाधं सिध्यति ॥ इत्थंच त्रिपुरुषावधि निश्चितसवर्णोत्पत्तिकानां कामतोऽकामतो वा म्लेच्छैःसंसृष्टानां प्रायश्चित्ताचरणेन पुनः स्वस्ववर्णांतर्गतत्वपूर्वकधर्मप्राप्तिः तदन्येषामपि व्रात्यतमानां मूलतो म्लेच्छादीनां वा सत्यामिच्छायां नास्तिक्यत्यागेन भक्तिशास्त्र प्रत्यभिज्ञाशास्त्ररामंमंत्राद्युपदेश्यताधिकारः शूद्रकमलाकरोक्तसंस्कारादिप्राप्तिश्च सिध्यतीत्यत्र न कस्यचित्कटाक्षावसरइति

ब्राह्मणका अथवा अमुकक्षत्रीका प्रपौत्र है एह म्लेच्छ इसतरहीं निश्चयवालेयोंको कामतें अथवा अकामतें म्लेच्छों के साथ मिले होएको प्रायश्चित्तके करणेते फेर आपो आपणे वर्णके अंतर्गत होकर धर्म प्राप्ति हुंदीहै ॥ तैसेहि होर जो व्रात्यतम क्या बडेव्रात्य अर्थात् बहुत दिनोंके व्रात्यहैं फिर म्लेच्छ होएहैं तिनकोभी लेकर अपणे धर्म विषे जानेकी इच्छा होवे तां नास्तिक्यका प्रथमत्याग कर्के भक्ति शास्त्रका क्या प्रत्यभिज्ञा शास्त्रका और रामचन्द्रजीके मंत्रोंका अधिकार सिद्ध होआ और शूद्रकमलाकर ग्रंथोक्तसंस्कारादि प्राप्ति भी सिद्धहोई इसजगा किसे का भी कटाक्ष नहि अर्थात् ऐसा कोई नहि कहसक्ता कि एह पुरुष भक्तिका अधिकारी नहि ऐसे औरभी जानणे

॥ अब कहेहोए शास्त्रार्थका संक्षेप अर्थ कहते हैं सकलेति बहुत श्रुतियां और बहुत स्मृतियां और पुराण और इतिहास इनके विचारणे तें निकलया जो विमर्शहै सो पक्षपातको छोड़कर बुद्धिवाले जो लोकहैं तिनोंने चित्तविषे धारणे योग्यहै इतिदिक् क्या एहविचार इक्कमार्गभूतहै कोई ऐसें नहि कि संपूर्ण इतनाहि विषय है क्योंकि होर भी विचार इसमें है सो आप करलेना चाहिए ॥ अब इसमें काम्य और नैमित्तिकका विचार करते हैं इदमिति एहप्रायश्चित्त नैमित्तिक है और काम्य संज्ञा वालाभी है जिसकर्के पाप निमित्तकेहोयां करीदा है इसतें नैमित्तिक है और पापनाशकी कामनातें करीदा है इसकर्के काम्य है सोई प्रायश्चित्त मयूखविषे किहाहै इसकर्के बृहस्पतिजीका वचनहै प्रायइति जो प्रायश्चित्त करीदा है सो नैमित्तिक जाणणा इसीमें जाबालजीका वचनहै इसीकारणतें काम्य है और नैमित्तिक भी है प्राय

सकलश्रुतिस्मृतिपुराणेतिहासपर्यालोचननिर्गलितो विमर्शो निष्पक्षपातधीभिः सुधीभिर्निपुणंविचारणीय इतिदिक् ॥ इदंच प्रायश्चित्तं नैमित्तिकं काम्यं च निमित्ते विधानान्नैमित्तिकं पाप नाशकतया काम्यं चेति प्रायश्चित्तमयूखे ॥ अतएव बृहस्पतिः ॥ प्रायश्चित्तं यत्क्रियते तन्नैमित्तिकमुच्यते ॥ जाबालः ॥ अतःकाम्यं नैमित्तिकं प्रायश्चित्तमिति स्थितिरिति ॥ पापिनः प्रायश्चित्तं नित्यं नैमित्तिकं वेत्यतो विकलांगादपि पापस्यनाशः किंत्वल्पस्यैव नतुसमग्रस्य एवंच काम्यमप्येतत् एवंच प्रधान निष्पत्ता वपि नप्रधानावृत्तिरिति बोध्यमिति नागेशः नित्यत्वंचाऽकरणेदोषश्रवणात् तथाच स्मृतिः चरितव्यमतोनित्यं प्रायश्चित्तं विशुद्धये निन्द्यैर्हिलक्षणैर्युक्ताजायंतेऽनिष्कृतैनसइति

श्चित्त एह धर्मशास्त्रियोंकी स्थिति है ॥ इसमें होर स्मृति कहते हैं पापिन इति पापीका प्रायश्चित्त नित्यहै और नैमित्तिक भी है और इस प्रायश्चित्ततें विकलांगते भी पापका नाश हुंदाहै परंतु थोडे पापका नाश हुंदाहै सारेका नहि एवंचक्या पापनाश होणेतें काम्यभी एह होआ एवंचेति इसतेक्या सिद्ध होआ कि पापनाशके विषे इसको प्रधानता की सिद्धिहोई कोई प्रधान की आवृत्ति नहि सिद्ध होई ऐसा नागेशजीका मतहै ॥ और इसको नित्यता सिद्धहोई नाकरतां दोषहै इसते जाणीदी है एहीनित्योंकालक्षणहै ॥ तैसेहि स्मृति भी इसमें है चरीति इसकारणतें एहप्रायश्चित्त विशुद्धिके अर्थ नित्यहि करणांचाहिए क्योंकि जो अनिष्कृतैनसहैं क्याप्रायश्चित्तहीन हैं सो निन्दित लक्षण जो हैं कुष्टादियोग तिनोंकर्के युक्तहोए २ उत्पन्नहुंदेहैं इसतें नाकरणेमें दोषआया

एहि याज्ञवल्क्यजीका मत है सो कहतेहैं प्रायइतिजो प्रायश्चित्त नहि करें और पापोंमें रत होए और पीछे पश्चात्ताप भी ना करन सो पुरुष दारुण जो नरक हैं तिनां विषे जांदे हैन ॥ इसीस्थान तिना नरकां का भी वर्णन करतेहैं तामिस्र इसतें आदि लेकर कहे होए उसीग्रंथसे जाणणे सो २१ हैं ॐ और ग्रंथों विषे भी किहाहै कि विहिताकरणादि निमित्तवाले प्रतिप्रेरणा होणेतें नैमित्तिक है प्रायश्चित्त (प्रश्न) गौतमस्मृतिविषे उसको क्यों काम्यत्वकी प्रतीति हुंदीहै फलका होणा और नाहोणा इसको कारण रक्खकर पूर्वपक्ष और उत्तरपक्ष करके तिसको कर्त्तव्यताकानिर्णय होणेतें तिसका वचन एहहै उक इति ॥ वर्णधर्म्म जो हैं ब्राह्मणादिकोंके धर्म्म और आश्रम धर्म्म जो हैं ब्रह्मचारीआदिकोंके धर्म सो सभ किहेहैं अथेति एहपुरुष

याज्ञवल्क्योपि प्रायश्चित्तमकुर्वाणाःपापेषुनिरतानराः अपश्चात्तापिनः कष्टान्नरकान्यांतिदारुणानिति नरकास्तु तामिस्रंलोहशंकुंचेत्यादिना तत एव वोध्याः ग्रंथांतरेऽपि तदेवं विहिताकरणादिनिमित्तयंतंप्रति चोदनान्नैमित्तिकंप्रायश्चित्तम्(ननु)गौतमस्मृतावस्य काम्यत्वं प्रतीयते फलभावाभावावुपजीव्यपूर्वोत्तरपक्षाभ्यां तस्य कर्त्तव्यतानिर्णयात् तद्वचनं चोक्तोवर्णधर्म्मश्चाश्रमधर्म्मश्च अथ खल्वयं पुरुषोयाप्येनकर्मणालिप्यते यथैतदयाज्ययाजनमभक्ष्यभक्षणमवंद्यवन्दनंशिष्टस्याक्रिया प्रतिषिद्धसेवनमिति ॐ तत्र प्रायश्चित्तंकुर्यान्नकुर्य्यादितिमीमांसंते न कुर्यादित्याहुः नहिकर्म्मक्षीयतइति कुर्यादित्यपरे

याप्यकर्म्म करके अर्थात् निंदित कर्म्म करके लिप्तहुंदाहै ऐसाकहकर कहतेहैं कि जैसा एह अयाज्ययाजन है ऐसाहि अभक्ष्यभक्षण और अवंद्यवंदन और शिष्टोंकीक्रियाका ना करणा और प्रतिषिद्ध जो हैं द्यूतादि तिनका सेवनकरणा एहसभ असत्कर्म्म हैं पूर्वोक्तरीतिसे इत्थेभी काम्यता और नैमित्तिकता जाणणी(उत्तर) अर्थात् फलकेअर्थहोआं तो काम्यहोआ और तिसविना नैमित्तिक होआ ॥ तत्रेति तिस विषे प्रायश्चित्त करे अथवा नाकरे इसका विचारकरेहैं केईओंका मत एह है कि प्रायश्चित्त ना करे क्योंकि कर्म्म जो कीता है सो नष्ट नहि हुंदा अर्थात् कीताहोआ पाप प्रायश्चित्त करके नहि दूर हुंदा ॥ और कहतेहैं कि प्रायश्चित्त अवश्य करणाचाहिए

जिसते ऐसा बेदमै देखयाहै कि यज्ञविषे विघ्नहोश्रां फेर स्तोम यज्ञकर्के अर्थात् प्रायश्चित्त कर्के सवन क्या यज्ञ विषे आउंदेहैं एह जाणीदा है अर्थात् जैसें प्रायश्चित्त कर्के यज्ञविघ्न दूर होआ ऐसे होर पाप भीं दूर होवेगा व्रात्यस्तोमकर्के पूजन कर्के सभ पापको तरजांदाहै ब्रह्मह त्याको तरदाहै जो अश्वमेध यज्ञ करदाहै इतनी स्मृति है ॥ अबइसका अर्थ कहतेहैं याप्यनाम निंदित कर्म्मका अयाज्ययाजनादिका है तिसके कीतेहोए लेपको दूरकरणेनुं नहि शक्य होणेते तिसके हटाणेवास्ते प्रायश्चित्त नहि करणा चाहिए जो कीता होआ कर्म्महै सो विनाभोगतेकदे भी नहि दूर हुंदा इसीवास्ते होर स्मृतिहै नेति नहि भोगिया होयाकर्म्म किरोडांकल्पांदे व्यतीतहोया

पुनः स्तोमेनेष्ट्वा पुनः सवनमायान्तीति विज्ञायते व्रात्यस्तोमेनेष्ट्वातर तिसर्वंपाप्मानं तरतिब्रह्महत्यां योऽश्वमेधेन यजतइति अयमर्थः याप्यं गर्हितमयाज्ययाजनादि तत्कृतस्य लेपस्य निवर्त्तयितुमशक्यत्वात् तन्नि वृत्तये प्रायश्चित्तं न कर्त्तव्यम् नहि कृतं कर्म्म भोगमन्तरेण क्षपयितुं शक्यते अतएव स्मृत्यन्तरम् नाऽभुक्तंक्षीयतेकर्म्म कल्पकोटिशतैरपि अव श्यमेवभोक्तव्यंकृतंकर्म्मशुभाशुभमिति १ शंखोपि यथापृथिव्यांबीजानि अन्नान्योषधयोयथा एवमात्मनिकर्म्माणितिष्ठन्तिप्रभवन्तिचेति १ यद्यन्त रेणापिभोगं दुरितलेपः क्षीयते तदा सुकृतलेपोपि क्षीयेतेत्यतिप्रसंगः तस्मात्प्रायश्चित्तन्नकर्त्तव्यमितिपूर्वपक्षिणआहुः कुर्यादेवप्रायश्चित्तमिति प्रामाणिकानांदर्शनम् तेहिश्रुतिमुदाहरन्ति पुनः स्तोमेनेष्ट्वापुनः सवनमायान्तीति

वी नाशको प्राप्त नहि हुंदाहै जो कीताहै शुभअशुभ कर्म सो अवश्य भोगणे योग्यहै १ शंखजी भी कहंदेहैं यथेति जैसे पृथिवीविषे बीजहै और अन्नहै ओषधिहैं एह यद्यपि त्रये पर्यायआपसमैंहैं तथापि थोडाभेद लईकरो किहाहै एह जिसतहीं उत्पन्नहुंदेहैं तैसेहि आत्मा विषे कर्म है जो बीज पृथिवी विच पिआहै सो अवश्यकर्के फलानुदिंदाहै ऐसा जानणा १ यदीति कहतेहैं किजद कीतेहोए पाप भोगणेविना वी नष्ट होजाण तद पुण्यभी नष्टहोण तिसकारणते प्रायश्चित्त नहीं करणा एह पूर्वपक्षहोआ ॥ अब जिनका मत प्रमाणहै सो कहतेहैं कि प्रायश्चित्त अवश्यकर्के करणा एह श्रुतिका उदाहरण दिंदेहैं पुनरिति इसका अर्थ पिच्छे होचुकाहै

एहि याज्ञवल्क्यजीका मत है सो कहतेहैं प्रायइतिजो प्रायश्चित्त नहि करें और पापोंमें रत होए और पीछे पश्चात्ताप भी ना करन सो पुरुष दारुण जो नरक हैं तिनां विषे जांदे हैन ॥ इसीस्थान तिना नरकां का भी वर्णन करतेहैं तामिस्र इसतें आदि लेकर कहे होए उसीग्रंथसे जाणणे सो २१ हैं ॥ और ग्रंथों विषे भी किहाहै कि विहिताकरणादि निमित्तवाळे प्रतिप्रेरणा होणेते नैमित्तिक है प्रायश्चित्त (प्रश्न) गौतमस्मृतिविषे उसको क्यों काम्यत्वकी प्रतीति हुंदीहै फलका होणा और नाहोणा इसको कारण रकूखकर पूर्वपक्ष और उत्तरपक्ष करके तिसकी कर्तव्यताकानिर्णय होणेतें तिसका बचन एहहै उक्त इति ॥ वर्णधर्म जो हैं ब्राह्मणादिकोंके धर्म और आश्रम धर्म जो हैं ब्रह्मचारीआदिकोंके धर्म सो सभ किहेहैं अथेति एहपुरुष

याज्ञवल्क्योपि प्रायश्चित्तमकुर्वाणाःपापेषुनिरतानराः अपश्चात्तापिनः कष्टान्नरकान्यांतिदारुणानिति नरकास्तु तामिस्रंलोहशंकुंचेत्यादिना तत एव बोध्याः ग्रंथांतरेऽपि तदेवं विहिताकरणादिनिमित्तयंतंप्रति चोदनान्नैमित्तिकंप्रायश्चित्तम्(ननु)गौतमस्मृतावस्य काम्यत्वं प्रतीयते फलभावाभावावुपजीव्यपूर्वोत्तरपक्षाभ्यां तस्य कर्त्तव्यतानिर्णयात् तद्वचनं चोक्तोवर्णधर्मश्चाश्रमधर्म्मश्च अथ खल्वयं पुरुषोयाप्येनकर्मणालिप्यते यथैतदयाज्ययाजनमभक्ष्यभक्षणमवंद्यवन्दनंशिष्टस्याक्रिया प्रतिषिद्धसेवनमिति ॥ तत्र प्रायश्चित्तंकुर्यान्नकुर्य्यादितिमीमांसंते न कुर्यादित्याहुः नहिकर्म्मक्षीयतइति कुर्यादित्यपरे

याप्यकर्म्म करके अर्थात् निंदित कर्म्म करके लिप्तहुंदाहै ऐसाकहकर कहतेहैं कि जैसा एह अयाज्ययाजन है ऐसाहि अभक्ष्यभक्षण और अवंद्यवंदन और शिष्टोंकीक्रियाका ना करणा और प्रतिषिद्ध जो हैं द्यूतादि तिनका सेवनकरणा एहसभ असत्कर्म्म हैं पूर्वोक्तरीतिसे इत्थेभी काम्यता और नैमित्तिकता जाणणी(उत्तर) अर्थात् फलकेअर्थहोआं तो काम्यहोआ और तिसविना नैमित्तिक होआ ॥ तत्रेति तिस विषे प्रायश्चित्त करे अथवा नाकरे इसका विचारकरेहैं केईओंका मत एह है कि प्रायश्चित्त ना करे क्योंकि कर्म्म जो कीता है सो नष्ट नहि हुंदा अर्थात् कीताहोआ पाप प्रायश्चित्त करके नहि दूर हुंदा ॥ और कहतेहैं कि प्रायश्चित्त अवश्य करणाचाहिए

जिसते ऐसा बेदमै देखयाहै कि यज्ञविषे विघ्नहोआं फेर स्तोम यज्ञकर्के अर्थात् प्रायश्चित्त कर्के सवन क्या यज्ञ विषे आउंदेहैं एह जाणीदा है अर्थात् जैसें प्रायश्चित्त कर्के यज्ञविघ्न दूर होआ ऐसे होर पाप भी दूर होवेगा व्रात्यस्तोमकर्के पूजन कर्के सभ पापको तरजांदाहै ब्रह्महत्याको तरदाहै जो अश्वमेध यज्ञ करदाहै इतनी स्मृति है ॥ अबइसका अर्थ कहतेहैं याप्यनाम निंदित कर्म्मका अयाज्ययाजनादिका है तिसके कीतेहोए लेपको दूरकरणेनुं नहि शक्य होणेते तिसके हटाणेवास्ते प्रायश्चित्त नहि करणा चाहिए जो कीता होआ कर्म्म है सो विनाभोगतेकर्दे भी नहि दूर हुंदा इसीवास्ते होर स्मृतिहै नेति नाहि भोगिया होयाकर्म्म किरोडांकल्पांदे व्यतीतहोया

पुनः स्तोमेनेष्ट्वा पुनः सवनमायान्तीति विज्ञायते व्रात्यस्तोमेनेष्ट्वातरतिसर्वैपाप्मानं तरतिब्रह्महत्यां योऽश्वमेधेन यजतइति अयमर्थः याप्यं गर्हितमयाज्ययाजनादि तत्कृतस्य लेपस्य निवर्त्तयितुमशक्यत्वात् तन्निवृत्तये प्रायश्चित्तं न कर्त्तव्यम् नहि कृतं कर्म्म भोगमन्तरेण क्षपयितुं शक्यते अतएव स्मृत्यन्तरम् नाऽभुक्तंक्षीयतेकर्म्म कल्पकोटिशतैरपि अवश्यमेवभोक्तव्यंकृतंकर्म्मशुभाशुभमिति १ शंखोपि यथापृथिव्यांबीजानि अन्नान्योषधयोयथा एवमात्मनिकर्म्माणितिष्ठन्तिप्रभवन्तिचेति १ यद्यन्तरेणापिभोगं दुरितलेपः क्षीयते तदा सुकृतलेपोपि क्षीयेतेत्यतिप्रसंगः तस्मात्प्रायश्चित्तन्नकर्त्तव्यमितिपूर्वपक्षिणआहुः कुर्यादेवप्रायश्चित्तमिति प्रामाणिकानांदर्शनम् तेहिश्रुतिमुदाहरन्ति पुनः स्तोमेनेष्ट्वापुनः सवनमायान्तीति

बी नाशको प्राप्त नहि हुंदाहै जो कीताहै शुभअशुभ कर्म सो अवश्य भोगणे योग्यहै १ शंखजी भी कहंदेहैं यथेति जैसे पृथिवीविषे बीजहै और अन्नहै औषधिहैं एह यद्यपि अये पर्यायआपसमें हैं तथापि थोडाभेद लईकरो किहाहै एह जिसतरहां उत्पन्नहुंदेहैं तैसेहि आत्मा विषे कर्म है जो बीज पृथिवी विच पिआहै सो अवश्यकर्के फलांनुदिंदाहै ऐसा जानणा १ यदीति कहतेहैं किजेकर कीतेहोए पाप भोगणेविना बी नष्ट होजाण तद पुण्यभी नष्टहोण तिसकारणते प्रायश्चित्त नहीं करणा एह पूर्वपक्षहोआ ॥ अब जिनका मत प्रमाणहै सो कहतेहैं कि प्रायश्चित्त अवश्यकर्के करणा एह श्रुतिका उदाहरण दिंदेहैं पुनरिति इसका अर्थ पिच्छे होचुकाहै

अयाज्येति अयाज्य याजनादिरूप पापतें नित्य कर्मदे अधिकारते भ्रष्टहोए २ एक दिनसाध्य कर्म करकेंपूजा करके फेर उसी सवनसाध्य कर्म्मकों प्राप्त हुंदेहैं क्या तिसके अधिकारी हुंदेहैं इसते प्रतीत होआ कि प्रायश्चित्तसेंपापदूर हुंदाहै और जोपिच्छेकिहाथा कि कीता होआ कर्म कदेबी नष्ट नहिहुंदा सो जिसनें प्रायश्चित्त नहि कीता तिसपर है क्या विना प्रायश्चित्तसे पाप नहि दूर हुदा एह अर्थहै अथवा पुण्य कर्म्मपर है क्या भोगेविना पुण्य कदीवी दूर नहिहुंदा एहअर्थहै तैसेही और स्मृति विषे किहाहै कदेति एह सुकृतकर्मकदाचित् कूटस्थकी न्याईं स्थित है संसारविषे जो डुबा होआहै उसकों सभ दुःखतें दूरकरदाहै इसतेजाणया कि सुकृत निश्चलहै यदीति जद नाऽभुक्तमि त्यादि शास्त्र निरंकुश होवे अर्थात् पूर्वोक्त व्यवस्थाकर्के नहि स्थापन कीता जावे तद पापके क्षयकों

अयाज्ययाजनादिभिर्नित्यकर्माधिकाराद्भ्रष्टाएैकाहिकेनेष्ट्वा सवनं सवन साध्यं कर्म्म पुनः प्राप्नुवंति तत्राधिक्रियन्त इतियावत् नाऽभुक्तंक्षीयतइति अकृतप्रायश्चित्तदुरितविषयम् सुकृतविषयंच तथाच स्मृत्यन्तरम् कदाचि त्सुकृतंकर्मकूटस्थमिवतिष्ठति मज्जमानस्यसंसारेयावद्दुःखात्प्रमुच्यतइति यदि नाऽभुक्तमितिशास्त्रं निरंकुशं प्रवर्त्तेत तदा पापक्षयप्रतिपादकाः सर्वाःश्रुतयः स्मृतयश्च कुप्येरन् तस्मात्पापक्षयायप्रायश्चित्तं कर्त्तव्य मितिसिद्धान्ताभिधानात् प्रायश्चित्तं काम्यं ननु नैमित्तिकमिति नैषदोषः जातेष्टिदृष्टान्तेन दत्तोत्तरत्वात् अन्यथा पूर्वोदाहृतबृहस्पतिवचनविरोधात् ननु नैमित्तिकत्वे ग्रहणस्नानस्येव प्रायश्चित्तस्याकरणे दुरितान्तरमुत्पद्ये तातस्तस्यापि प्रायश्चित्तान्तरन्तस्याप्यकरणे दुरितान्तरं ततः प्रायश्चि त्तान्तरमित्येव मनवस्था स्यात्

कहक वालिआं श्रुतिआं और स्मृतीयां कुपित होणगीयें तिसकारणते पापक्षयके वास्ते प्रायश्चित्त करणा चाहिए इस सिद्धांतके कथनहोंणेते और इस स्मृतिमे जो होर अर्थथा उसको कहकर प्रसंग विषे कहतेहैं । प्रायश्चित्त काम्यहै और नैमित्तिक नही असे किसेके वचनको खंडित कर देहैं नेति एहदोष नहि कहणा जातेष्टिदृष्टांतकर्के उसका उत्तरहोणेते जैसे इष्टिकर्म नैमित्तिकहै तैसेहि प्रायश्चित्तभी नैमित्तिकहै अन्यथा इसकों नामन्नो तो पिच्छे आया जो बृहस्पतिजीकाव चन प्रायश्चित्तं यत्क्रियतेइत्यादि इसकेसाथ विरोधआवेगा (प्रश्न) इसको यद नैमित्तिक मन्निये तद ग्रहणस्नानकी न्याईं कोई प्रायश्चित्त नहि करेगा तद उसको होर पाप लगेगा और उस काभी प्रायश्चित्त जद नहि होवा तो होरपापलगा असे लगदे २ अनवस्थाआवेगी

अत्रेति इसमे कोई ऐसा विचारकर्देहें किप्रायश्चित्त केवल नैमित्तिक हि नही किंतु पापकेनाशकेअर्थ भी हैं इसीकर्के आपस्तंबजीका वचनहै प्रायइति प्रायश्चित्तोंको प्रसंगविषे ल्याकर्के एहप्रायश्चित्त दोष विघातकहै अर्थ जिनांका ऐसेहैं और दोषते पिच्छे करणेयोग्यहैं एवंच इसते एह निश्चितहोआ किप्रायश्चित्त जद नहि होआ तो इसकर्के होणा जो दोषविघात सोभी नहि होआ तदपूर्वसिद्ध जो पापथा सोई रिहा होर दूसरा पाप नहि होया अथवा जैसेग्रहणका स्नान नहि कीता तदउस कों दोषलगा तैसेहि प्रायश्चित्त नही कीता इसनिमित्तको लयकर होर प्रायश्चित्त करणाऐसेविधानका अदर्शनहोणेते किसेजगा ऐसा नहि लिखया कि प्रायश्चित्तको नाकरेगा तो इकहोरप्रायश्चि

अत्रकेचिदाहुः॥प्रायश्चित्तानि न केवलं नैमित्तिकान्येव किंतु दुरितक्षयार्थान्यपि अतएवापस्तम्वः॥प्रायश्चित्तानिप्रक्रम्य एतानि दोषविघातार्थानिभवन्ति अनन्तरंदोषात् कर्त्तव्यानीत्याह एवंचसति प्रायश्चित्ताकरणेदोषविघाताभावेन पूर्वसिद्धदोषस्तदवस्थ इत्येतावन्मात्रं नतु दोषान्तरमुत्पद्यतइति यद्वा ग्रहणस्नानाद्यकरणमिव प्रायश्चित्ताकरणं निमित्तीकृत्यप्रायश्चित्तान्तरविधानस्यादर्शनात् न तन्निमित्तं दुरितान्तरं कल्पयितुंशक्यम् तस्मान्नैमित्तिकत्वेपि नाऽनवस्था॥ ननु॥ दोषविघातोनैकान्तिकः तथाहि द्विविधं पापं कामकृतमकामकृतंच॥ तथाचवृहस्पतिः॥ कामाकामकृतंतेषांमहापापंद्विधास्मृतामिति तयोरकामकृतस्य प्रायश्चित्तेन विघातेपि न कामकृतस्यसोस्ति॥ तथाचमनुः॥ इयंविशुद्धिरुदिताप्रमाप्याकामतोद्विजम् कामतो
ब्राह्मणवधेनिष्कृतिर्नविधीयतइति

सहोवे तो पूर्वोक्त अनवस्था दोष नहि लगेगा (प्रश्न) जोआप कहते हो कि प्रायश्चित्त दोष विघातकहै जैसे॥ प्रायश्चित्तं कर्त्तव्यं दोष विघातकत्वात्॥ इसजगा हेतु नैकान्तिकहै सोई कहतेहैं द्विविधमिति किदोप्रकारका पापहै कामकृत और अकामकृत सोई वृहस्पतिजीकहतेहैं कामेति तिनांका पाप कामाकामकेभेदसे दोप्रकारकाहै इसकी उपपत्ती प्रकट कर्के कहतेहैं॥ तयोरिति तिनांदोआंविषो अकामकृत पापका अर्थात् जो पाप कामनाते विना कीताहै तिसका प्रायश्चित्त कर्के विघातहै भी परंतु जो पाप कामनाते कीताहै तिसका विघात नहिहै इसकर्के दोष विघात नैकान्तिकहै सोई मनुजीकहतेहैं इयमिति एह विशुद्धि कहीहै उसकी जिसने विना कामनाते ब्राह्मण मारयाहै और कामनाते ब्राह्मण मारणवालेकी निष्कृति क्या प्रायश्चित्त कोई नहिहै

बौधायनजीकाभीवचनहै ॥ अमेति ना जाणके ब्राह्मणको मारणवाला दुष्ट हुंदाहै धर्म्मते ऋषी उसकी निष्कृतिको कहतेहैं कि इसने अज्ञानसें मारयाहै और जो मतिपूर्व कया जान कर्के मारणवाला होवे तद उसको कोई प्रायश्चित्त नहि इह दोष स्पष्टहोआ (उत्तर) एहदोष कदेभी नहि लगेगा उसकाअर्थ अन्यथाहोणेते क्याजो १२ वर्षका प्रायश्चित्त कीयाहै तिसकर्के उहपाप दूर नहीं हुंदा असाअर्थहोणेते किंतु मरणांतादि जो दिखायेहैं प्रायश्चित्त तिन कर्के कामकृत पाप दूर हुंदाहै सोई अर्थ स्मृतीमें किहाहै जो पुरुष काम नातें महा पापकरे कदाचित् तिसकी निष्कृति भृग्वग्निपतनते विना नहिहै भृग्वग्नि जोहै हिमालयमें स्थानविशेष बदरिकाश्रमके समीप एक जो गत्त और दूसरा कोई अग्निकुंडहै तिसविषे पत

बौधायनोऽपि ॥ अमत्याब्राह्मणंहत्वादुष्टोभवतिधर्म्मतः ऋषयोनिष्कृतिन्तस्यवदन्त्यमतिपूर्वकम् १ मतिपूर्वेहतेतस्मिन्निष्कृतिर्नोपलभ्यतइति॥ नायंदोषः द्वादशाब्दादिना निष्कृत्यभावेऽपि भृगुपतनादिना तत्संभवात् तथाच स्मर्य्यते यः कामतोनरःकुर्यान्महापापंकथंचन नतस्यनिष्कृतिर्दृष्टा भृग्वग्निपतनादृतइति १ शातातपोपि॥ अकामावाप्तौ प्रायश्चित्तं कामकारकृतेत्वात्मानमवसादयेदिति ॥ अतः प्रायश्चित्तेन दोषविघातो ना नैकान्तिकः तस्मान्निर्हंतव्यदोषाख्यनिमित्तवानऽत्रप्रायश्चित्तेऽधिक्रियतइति सिद्धम्॥ तेच दोषाअनेकविधाःतत्रविष्णुः ॥ अथ पुरुषस्य कामक्रोधलोभाख्यं रिपुत्रयं सुघोरं भवतितेन समाक्रान्तोऽतिपातकमहापातकानुपातकोपपातकेषु प्रवर्त्तते

नहोणा अर्थात् उसजगा मरणा एही उसका प्रायश्चित्तहै ॥ शातातपभी कहतेहैं अकाम कर्के पाप होवे तद प्रायश्चित्त करे और कामनातें करे तद आत्माको अवसादन करे अर्थात् पूर्वोक्तस्थान विषे मृत होवे तद शुद्ध हुंदाहै अतइति इसते जाणो कि प्रायश्चित्त कर्के दोषविघात नैकान्तिक नहि है तिसते एह निश्चयहोआ कि जिसने मरकर्के शुद्धहोणाहै सो इस प्रायश्चित्तका अधिकारीहै एह सिद्ध होआ जिनांका विघात किहाहै सो दोष अनेकतरहांके हैं इसमें विष्णुजीका वचनहै अथेति पुरुषके काम क्रोध लोभ रूप वडे भयानक तीन शत्रु हैं तिना कर्के आक्रांत क्या दवायाहोया अतिपातक १ महापातक २ अनुपातक ३ उपपातकों ४ विषे प्रवृत्तिवाला हुंदाहै

और तैसेहि जातिभ्रंशकर जो पापहैं १ और संकरीकरण २ और अपात्रीकरण ३ और मलावह ४ और प्रकीर्णक ५ इनांविषे प्रवृत्तिवाला हुंदाहै इनोंपापों के स्वरूप भेद पिछे कहेहैं और लक्षण आगे आवणगे ॥ अबप्रकरणकी समाप्ति विषे ग्रंथकार श्लोक २ कहताहै श्रीमदिति काश्मीरादिदेशोंके स्वामी महाराज रणवीरसिंह जीकी आज्ञा लेकर एह विचार कीताहै कैसा महाराजहै प्रौढतर क्या सभसे वडा जो प्रताप तिसते त्रासको प्राप्त होएहैं सभ शत्रुयोंकेगण जिसते और जम्बू काश्मीर और तिब्बत इत्यादि

जातिभ्रंशकरेषु संकरीकरणेषु अपात्रीकरणेषु मलावहेषु प्रकीर्णकेषुचेति श्रीमत्प्रौढतरप्रतापतपनत्रस्ताखिलारिव्रजात् जम्बूपत्तनतिब्बतक्षितिपतेर्धर्मस्यसाक्षात्तनोः भूपालावलिमौलिलालयचरणात्काश्मीरदेशेश्वरादाज्ञांश्रीरणवीरसिंहनृपतेः प्राप्यार्थिचिन्तामणेः १ पर्यालोचितधर्मशास्त्रनिवहैरेतत्सभासंगतैर्गंगारामकवीशमुख्यविबुधैर्यः संगृहीतः श्रमात् प्रायश्चित्तविनिर्णयेप्रकरणंतस्मिन्बुधानन्ददे प्रायश्चित्तपदार्थवर्णनमुखंसिद्धिंययावादिमम् २ इतिश्री० गंगारामसंगृहीते धर्म्मशास्त्रमहानिबन्धे प्रायश्चित्तभागेप्रायश्चित्तार्थकथनंनाम प्रथमंप्रकरणम्

देशोंका जो अधिपतिहै और धर्मकी साक्षात् मूर्त्ति है फेर कैसाहै भूपाल जो राजा तिनकी मस्तकमणि करके नीराजित है चरण जिसका फेर कैसाहै कि जो गुणिजनोंको चिंतामणिके तुल्यहै १ जो धर्मशास्त्रका ग्रंथ पंडितगंगारामादिकोंने श्रमसे संग्रह कीता कैसे ओह पंडितहैं पर्य्यालोचित विचारेहैं बहुत धर्म्मशास्त्रके ग्रंथ जिनोंने और शुभसभा जो है काशीकी इसमें भी संगतिवालेहैं तिस बुद्धिमानोंको आनंदके देणवाले ग्रंथविषे जो प्रायश्चित्त शब्दका अर्थ तिसका निर्णयरूप पहला प्रकरणसमाप्तहोया इतिश्रीभाषाटीकायांप्रथमंप्रकरणम् ॥

॥ प्रथमंप्रकरणम् ॥ १



स्वेति इसकी टीका पीछे लिखीहै अथेति अब प्रायश्चित्तके अधिकारियोंको कहतेहैं सोसंपूर्ण पापीहैं चपुनः तिनके भेदहैं विहित जो कर्म अर्थात् वेद करके कहे जो कर्म तिनको न करणा और निंदित कर्मोंको करणा इत्यादि मानवीयादि वचनोंसें दिखायेहैं सो प्रथम प्रकरणमें लिखेहैं तिनोंमें प्रायश्चित्तकादेणा उक्त विषय अर अनुक्त विषय अर उक्ताऽनुक्त विषयहैं तिनमें पहिला उक्तविषय जो प्रायश्चित्तहै सोकहतेहैं लोहेति लोहा कांस्य इनके चुराणेमें बारांदिन पर्यंत पृथ्वीमेंसे अन्नचुणकर भोंजन करे इत्यादि कथन कियाहै अनुक्त विषयमें विष्णुजी कहतेहैं नहीं कहा प्रायश्चित्त जिसका ऐसे जो पाप उनके दूर करणे वास्ते पापी पुरुषको शक्तिकों देखकरके अर पापकी न्यूनाधिक्यताकों देखकर प्रायश्चित्तकोंदेवे १ उनकों प्रायश्चित्तका देणा साधा

श्रीरघुनाथोजयति ॥ स्वतोमित्वातत्त्वं श्रुतिरपि यदीयंभगवती गुहागूढंप्रोचे सकलपुरुषार्थाप्यइहयः विचारैस्वैस्तान् विशदमतिदानेनसदयं सधर्मोऽस्मान्दीनान् बहुलमनुगृह्णातुभगवान् १ अथप्रायश्चित्ताधिकारिणः॥ तेच सर्वे पापाः तद्भेदाश्च अकुर्वन्विहितंकर्म निंदितंच समाचरन्नित्यादि मानवीयादि वचोभ्यः प्रदर्शिताः पूर्वप्रकरणे ॥ तत्र प्रायश्चित्तदानमुक्तविषय मनुक्तविषय मुक्तानुक्तविषयंच तत्राद्यं लोहकांस्यापहारेच द्वादशाहंकणान्नतेत्यादि अनुक्तविषये ॥ विष्णुः ॥ अनुक्तनिष्कृतीनांतु पापानामपनुत्तये शक्तिंचावेक्ष्यपापंच प्रायश्चित्तंप्रकल्पयेदिति १ तत्प्रकल्पनंच साधारणप्रकरणादौवक्ष्यते उक्तानुक्तविषयंच यत्रोक्तं यत्र वानोक्तमिह पातकनाशनम् प्राजापत्येन शुद्ध्येदित्यादि तत्र प्रायश्चित्त तारतम्यार्थं वाल्यादि ॥ निर्णीतं ॥ नागेशेन ॥ यथा षोडशवर्षन्यूनोबालः अशीतिवर्षाधिको वृद्धः पूर्णषोडशवर्षस्यपूर्णं प्रायश्चित्तम् ऊनैकादशवर्षस्य पंचवर्षादूर्ध्वं पादं प्रायश्चित्तम्

रण प्रकरणादिमें कहाजायेगा अर उक्तानुक्त विषय प्रायश्चित्त कहतेहैं यत्रेति जिस पापमें प्रायश्चित्त कहाहै अथवा जिसमें नहीं कहाहै तहां पापोंके नाश करणे वाला प्राजापत्य जो व्रत बारांदिनकाहै तिस करके शुद्धि होतीहै अब जिसमें प्रायश्चित्तकी तारतम्यताके निमित्त अर्थात् थोडा अथवा बहुत प्रायश्चित्त देणा इसके वास्ते बाल्यादिजोहैं बालक युवा वृद्ध इनका निर्णय नागेशने कियाहै यथेति जिसप्रकार सोलां १६ वर्षसें छोटा बालक कहाहै अस्सी ८० वर्षसें बडा वृद्ध कहाहै बराबर १६ वर्षका जो मनुष्यहै सो पूर्ण क्या बराबर प्रायश्चित्त करे औरएकादश ११ वर्षसें छोटा पांच ५ वर्षसें वडा जो बालकहै सो एक पाद क्या चतुर्थांश प्रायश्चित्त करे

और बारां १२ बर्ष सें लेकर सोलां १६ बर्ष पर्य्यंत अर्ध प्रायश्चित्त करे सो प्रायश्चित्तभी तिस बालकके पित्रादिकोंने करणे योग्यहै इस तरह जो अतिरोगीहै और जो अतिवृद्धहै तिसका प्रायश्चित्त पुत्रादिकोंने करणे योग्यहै पांच ५ वर्षसें छोटे बालकको पाप नहीं होताहै अब वर्णोंके क्रमकर्के प्रायश्चित्त कहतेहैं शास्त्रेति शास्त्रोपदिष्ट पूर्ण प्रायश्चित्त ब्राह्मणको कथन कियाहै क्षत्री अर वैश्य शूद्र जो हैं तिनको पाद पाद हीन कहाहै अर्थात् क्षत्रीको तीन ३ पाद वैश्यको दो २ पाद शूद्रको एक १ पाद प्रायश्चित्त कहाहै और किसी जगामें विशेष जो प्रायश्चित्तहै तिसमें वचनहै तिसमें शूद्रको प्रायश्चित्त जप होमादिसें रहितहै और विनामंत्र प्राणायामकहाहै और यागादि अनुष्ठानशील जो हैं तिनको जपादिक प्रायश्चित्तहैं इतेति और जो यागादिक नहीं करसकते तिनको तपआदि क्या प्राजापत्य चांद्रायणादि प्रायश्चित्तहै

द्वादशादापोडशमर्द्धम् तदपि तत्पित्रादिभिः कार्य्यम् एवमतिरोग्यतिवृद्ध योरपि पुत्रादिभिःकार्य्यम् पंचवर्षन्यूनस्य न पापम् ॥ अथवर्णतः शास्त्रोप दिष्टं पूर्णप्रायश्चित्तं विप्रस्यैव क्षत्रिय विट् शूद्राणांतु पाद पाद हानिः क्वचिद्विशेषस्तु वाचनिकः तत्र जपहोमादिरहितमेव शूद्रस्य अमंत्रक प्राणायामश्च यागाद्यनुष्ठानशीलानां जपादिकम् इतरेषां तपआदि नाम धारक मूर्ख निर्धनानां तपः अनधीतानांच ॥ अथाश्रमतः षोडशवर्षाधिक ब्रह्मचारिणोद्विगुणम् वानप्रस्थस्य त्रिगुणं यतेश्चतुर्गुणम् स्वयमशक्तौ प्रतिनिधिद्वारा प्रायश्चित्तं कार्यमिति ॥ इत्थमेव प्रायश्चित्तमयूखे अंगिराः अशीतिर्यस्यवर्षाणि बालोवाप्यूनषोडशः प्रायश्चित्तार्द्धमर्हति स्त्रियोरो गिणएवचेति १

नामधारक अर्थात् नाममात्र जो ब्राह्मणादिहैं मूर्ख और धनरहित तिनकोभी पूर्वोक्त तपकहाहै नहीं पढे जो ब्राह्मणहैं तिनकोभी तपकरणाही प्रायश्चित्त कहाहै अब आश्रमियोंको प्रायश्चित्त कहतेहैं सोलां १६ वर्षसें वडा जो ब्रह्मचारीहै तिसको द्विगुण प्रायश्चित्त कहाहै और वानप्रस्थको त्रिगुण संन्यासीको चतुर्गुण कहाहै जो आप प्रायश्चित्त करणेको नहीं समर्थ होवे उसने प्रतिनिधिद्वारा प्रायश्चित्त कराणे योग्यहै अर्थात् और किसीसें करवालेवे ॥ इत्थमेवेति इसी प्रकार प्रायश्चित्तमयूखमें अंगिराजी कहतेहैं असी ८० वर्ष जिसकी अवस्थाहै सो वृद्ध होताहै और सोलां १६ वर्षसें जो छोटाहै सो वालक होताहै सो एह वृद्ध और बालक अर स्त्रियो और रोगी मनुष्य आधे प्रायश्चित्तके योग्य होतेहैं १

महाभारतके आदिपर्वमें कहाहै मनुष्यों को चोदां १४ वर्षकी आयुपा पर्यंत पाप नहीं होता और चोदां वर्षसें उपरंत जो पाप करतेहैं तिनको दोष होताहै ॥ १ ॥ अंगिराजीका वचनहै अर्वेति बारां १२ वर्षसें उरे अर अस्सी ८० वर्षसें उपरंत आधाही प्रायश्चित्त पुरुषोंको होताहै और तिसमें चोथा हिस्सा स्त्रियोंको होताहै इन दोनों वचनोंमें जो न्यूनाधिक भावहै सो शक्तिसें जानने योग्यहै जो विष्णुजी कहतेहैं ॥ स्त्रीणामिति स्त्रियोंको आधा प्रायश्चित्त देणे योग्यहै और तिसी प्रकार वृद्ध और रोगियोंको भी आधा प्रायश्चित्त देणे योग्यहै और बालकोंको चतुर्थांश देणे योग्यहै संपूर्ण पापोंमें इह विधिहै १ एह जो प्रकारहै सो यज्ञोपवीत पाउणेसे उरें जानने योग्यहै शंखका वचनहै ऊनेति ग्यारां ११ वर्षसें छोटा और पांच ५ वर्षसें बडा जो बालक पाप करे उसपापका प्रायश्चित्त बालकका भ्राताकरे अथवा पिता अथवा और कोई संबंधी करे १ इससें

महाभारते आदिपर्वण्यपि आचतुर्दशकाद्वर्षान्नभविष्यतिपातकम् परतःकुर्वतामेव दोषएवभविष्यति १ ॥ अंगिराः । अर्वाकुद्वादशाद्वर्षादशीतेरूर्ध्वमेव वा अर्द्धमेवभवेत्पुंसां तुरीयंतत्रयोषितामिति १ अत्रोच्चावचावधि तारतम्यं शक्तितोज्ञेयम् ॥ यत्तुविष्णुः ॥ स्त्रीणामर्द्धंप्रदातव्यं वृद्धानांरोगिणांतथा पादोबालेषुदातव्यः सर्वपापेष्वयंविधिः १ एतच्चोपनयनादर्वाग्ज्ञेयम् ॥ शंखः ॥ ऊनैकादशवर्षस्य पंचवर्षात्परस्यच प्रायश्चित्तंचरेद्भ्राता पितावान्यः सुहृज्जनः ॥ १ ॥ अतोबालतरस्यास्य नाऽपराधोनपातकम् राजदंडोनदातव्यः प्रायश्चित्तंनविद्यतइति २ ॥ कुमारः ॥ मद्यमूत्रपुरीषाणां भक्षणेनास्तिकश्चन दोषस्त्वापंचमाद्वर्षादूर्ध्वंपित्रोःसुहृद्गुरोरिति १ ॥ गौतमः ॥ प्रागुपनयनात्कामचार कामवाद कामभक्ष्या इति सुरापाननिषेधस्तु. जात्याश्रयइतिस्थितिरितिकुमारवाक्यात्

अत्यंत छोटा जो बालकहै तिसको अपराध नहींहै और पातकभी नहींहै राजदंड भी उसको नहीं देणे योग्यहै और प्रायश्चित्तभी उसको नहीं देणे योग्यहै २ कुमारजीका वचनहै ॥ मद्येति पांच ५ वर्षसें छोटे बालकको शराब और मूत्र विष्ठाके खाणेमें कोई दोष नहींहै और जो पांचवर्षसें उपरंतहै तिसके मद्यादिकोंके पापका दोष मातापिताको वा और संबंधियोंको वा गुरूको होताहै १ इसीको गौतमजी भी कहतेहैं प्रेति यज्ञोपवीतसें प्रथम बालक अपनी इच्छा करके विचरे और वार्ताकरे और अपनी इच्छासें जलको पीवे वा भोजन करे तिसको दोष नहीं और मदिराका जो निषेधहै सो जातिके आश्रयहै यह कुमारजीके वाक्यसे जानना

अनुपेतइति नहीं भयाहै यज्ञोपवीत जिस बालकका वोह बालक अज्ञानसें जेकर मदिरापानकरे तब उस बालकका प्रायश्चित्त तीन ३ कृच्छ गुरु करे अथवा माता वा भ्राता वा पिता करे इस स्मृति करके जिस बालकने यज्ञोपवीत नहीं धारण किया होवे उसकों भी दोषहै ॥ विज्ञानेश्वरकावाक्यहै ॥ एतेति एहजो दो बचनहैं इनको पंचम वर्षकी प्रवृत्तिसे उपरांतभी लगाणेसे अर्थात् पंचम वर्षका प्रारंभही हुवाहै अभी व्यतीत नहीं भया तिसविषे सार्थक होणेसे तहां अनुपेतकों दोषहै और चार वर्ष पर्यंत बालककों दोष नहीं एह योग्यहै ॥ एह स्मृत्यंतरमें कहतेहैं जातेति ॥ जबतक बालक आठ ८ वर्षका होताहै तबतक जातमात्रही होताहै सोनिश्चय करके गर्भके तुल्य जानने योग्यहै सो केवल स्वरूपमात्रहि दिखायाहै १ तिस बालकों आठ८ वर्ष पर्यंत भक्ष्य अभक्ष्यमें और वाच्यावाच्यमें असत्य बोलनेमें जबतक उसका उपनयन नहीं किया तिसकाल पर्य्यंत उसकोदोषनहीं २ तन्मद्येतर विषय मिति एह जो पूर्वलिखाहै कि आठ ८

अनुपेतस्तुयोबालो मद्यंमोहात्पिवेद्यदि कृच्छ्रत्रयंगुरुःकुर्य्यान्माताभ्राता पितातथेतिस्मृतेश्चाऽनुपेतस्यदोषोस्त्येवेति ॥ विज्ञानेश्वरः ॥ एतद्वचनद्वयस्य पंचवर्षप्रवृत्त्युत्तरपरतयाप्युपपत्तेस्तत्राऽनुपेतस्यदोषः वर्षचतुष्टयपर्य्यंतं न दोषइनितद्युक्तम् ॥ स्मृत्यंतरे ॥ जातमात्रः शिशुस्तावद्यावदष्टौसमावयः सहिगर्भसमाज्ञेयो व्यक्तिमात्रप्रदर्शितः१ भक्ष्याभक्ष्येतथा ज्ञेयोवाच्यावाच्येतथाऽनृते तस्मिन्कालेनदोषःस्यात्सयावन्नोपनीयतइति२ तन्मद्येतरविषयम्॥ इदंचार्द्धपादादि परिमाणमुद्दिष्टमौलिकद्वादशाब्दिकाद्येवाऽऽदायप्रवर्त्तते नतुक्षत्रियादिनैमित्तिक द्वैगुण्यापेक्षया ब्रह्मचारित्वादि निमित्तकं द्वैगुण्याद्यप्येवं अर्धपादद्वैगुण्य त्रैगुण्यादि विधीना मुपजीव्योपजीवकभावाभावेन परस्परालोचनया मौलिकविधिमात्रालोचनेनैवप्रवृत्तेः

वर्ष पर्यंत बालककों दोषनहीं सो मदिरासेंविना और भक्ष्याभक्ष्यादिका विषयहै ॥ अब इसीमें और विशेष कहतेहैं एहजो अर्द्धपादादिपरिमाण कहाहै सो मूलकाजो द्वादश वर्षादिहै तिसीमें वर्तमानहै क्षत्रियादि नैमित्तिक द्वैगुण्यादि अपेक्षा करके नहीं ग्रहण करणा और ब्रह्मचारित्वादि निमित्तक द्वैगुण्यादि भी इसी प्रकारहै अर्धपाद द्वैगुण्य त्रैगुण्यादि जो विधिशाहैं तिनकों कार्य्य कारणके भावकों जो अभाव तिसके विचार करके मौलिक जो विधिहै द्वादशाब्द व्रत उसीके विचार करके प्रवृत्त होणेसें अर्थात् १२ वर्षका व्रतहै तिससें १ पाद बालक कों करणा सो बालक क्षत्रियका होवे तो सो व्रत पादोनक्या ३ वर्षकाहै तो कहो इस बालककों जो पादोन देणाहे सो १२ का वा ३ का इसमें सिद्धांतकियाहै कि मौलिक व्रतहै १२ दिनका इसीका पाददेणा इसी प्रकार सर्वत्र जाणो

अथेति अब कामाकाम कर्के कियेहुवे पापविषे प्रायश्चित्तकी व्यवस्था कहतेहैं तिसमें मनुजीकहते हैं अकामेति अकाम कर्के कियाजो पाप तिसमें बुद्धिमान् पंडित लोक प्रायश्चित्त कहतेहैं और कामना कर्के किया जो पाप उसमे बी एकऋषि श्रुतिके उदाहरणसेंकहतेहैं १ और कामनासें विना कियाजो पाप सो वेदाभ्यास कर्के शुद्धहोताहै और कामनासे और मोहसें किया जो पाप सो पृथक् विध जो नानाविध प्रायश्चित्तहैं तिनों कर्के शुद्ध होताहै २ एह इन दोनों श्लोकोंका अर्थ कहाहै अनयोरिति. और श्रुतिके देखणेसें कामकृत पापविषे भी प्रायश्चित्त कहाहै एह जो कथनकियाहै सो प्रायश्चित्तको गौरवताके निमित्तहै ॥सो श्रुति लिखतेहैं इंद्र इति इंद्र संन्यासियोंको अपनी इच्छा कर्के वृकोंके तांई देताभया लोकउसकी

अथकामाकामकृतप्रायश्चित्तव्यवस्था ॥ अकामतःकृतेपापे प्रायश्चित्तंविदुर्बुधाः ॥ कामकारकृतेप्याहुरेकेश्रुतिनिदर्शनात् १ अकामतःकृतंपापं वेदाभ्यासेनशुध्यति कामतस्तुकृतंमोहात् प्रायश्चित्तैः पृथग्विधैः २ अनयोरर्थः अकामतोअनिच्छातः कृतेपापे प्रायश्चित्तंभवतीतिपण्डिताः कामतःकृतेऽपिभवतीत्येके अत्रहेतुः श्रुतिनिदर्शनात् एतच्च प्रायश्चित्तगौरवार्थम् श्रुतिश्च इंद्रो यतीन् सालावृकेभ्यः प्रायच्छत् तमश्लीलावागेत्यावदत् सतुप्रजापतिमुपाधावत्तमुपहव्यं प्रायच्छदिति अस्याअर्थःइंद्रो यतीन् बुद्धिपूर्वकं श्वभ्योदत्तवान् ततोलोकास्तमनिंदंस्ततः स प्रायश्चित्तार्थं प्रजापतिसमीपमगमत् तस्मै प्रजापतिरुपहव्याख्यंकर्म्मप्रायच्छत् दत्तवान् अतः कामतःकृतेप्यस्तिप्रायश्चित्तम् तत्प्रायश्चित्तमपिदर्शयति उपहव्यंहि प्रायश्चित्तार्थकर्म तच्चापस्तंबीयब्रह्महप्रकरणेज्ञेयम् अकामत इति अनिच्छातःकृतेवेदाभ्यासेन प्रतिदिनंक्रियमाणेनापि पापी पुरुषः शुध्यति एतच्च कामकृतेपापेगुरुतरप्रायश्चित्तापेक्षयाऽल्पतरविधानार्थम् ॥

निंदाकरतेभये पुनः सो इंद्र प्रायश्चित्तके निमित्त ब्रह्माके समीप जाताभया तिस इंद्रके तांई ब्रह्मा उपहव्याख्यजो कर्महै सो देताभया उपहव्य नाम प्रायश्चित्तकाहै इसर्थे काम कर्के किया जो पाप तिसमें भी प्रायश्चित्तहै तिस प्रायश्चित्तको भी दिखातेहैं उपहव्य जोहै सो प्रायश्चित्तके निमित्त कर्महै सो आपस्तंबजीके कहेहुवे ब्रह्महत्या प्रकरणमें जानने योग्यहै अकाम इति अनिच्छासें क्रियाजो पाप तिस निमित्त दिन दिन विषे किया जो वेदाभ्यास तिस कर्के पापी पुरुष शुद्ध होता है एह वेदाभ्यासरूप प्रायश्चित्त काम कर्के किया जो पाप तिस में अत्यंत बहुत प्रायश्चित्तकी अपेक्षा कर्के अत्यंत थोडे प्रायश्चित्तके विधानके निमित्तहै ॥

त्रेति तिसमें मोहादि व्यामूढता करके किया जो पाप तिसमें अनेक प्रकारका विद्याऔर धन और तपस्वरूप गुरुतरही प्रायश्चित्त कहाहै और इसमें शंकानिवृत्तिके वास्ते कहतेहैं अका म पापमें लघु प्रायश्चित्तका अधिकारी होताहै और सकाम पापमें बडे प्रायश्चित्तका अधि कारी होताहै इससे अधिकारी प्रकरणमें प्रायश्चित्तका कहना अयोग्यहै इह शंका नहीं कर णेयोग्य क्योंकि अधिकार विना अधिकारी नही कहसकतेहैं अतएवेति अब इसीकारणसें बृहस्पतिजी कहतेहैं कामेति इसी प्रकार पातक दोप्रकारका कहाहै एक कामकृत पातकहै और दूसरा अकामकृत है और पाप करणे वाले पुरुषकी अपेक्षा करके उसमें प्रायश्चित्तबी दो प्रकारकाही कहाहै १ अब कामना करके किया जो पाप तिसमें अंगिराऋषि प्रायश्चित्तकी आ धिक्यता कहतेहैं विहितमिति अकाम पापोंको विहित जो प्रायश्चित्तहै सो कामना करके पा

तत्रहिमोहादिव्यामूढतयाकृते नानाविधं विद्याधनतपःस्वरूपं गुरुतरमेव प्रायश्चित्तमुक्तम् अकामेलघुप्रायश्चित्ताधिकारी सकामे गुरुप्रायश्चित्ता धिकारीत्यधिकारि प्रकरणे प्रायश्चित्तकथनमयुक्तमितिनाशंकनीयं अतएवबृहस्पतिः कामाकामकृतंत्वेवंपातकंद्विविधंस्मृतम् पुरुषापेक्षया चैव निष्कृतिर्द्विविधास्मृतेति १ कामकृतेप्रायश्चित्ताधिक्यमाहांगिराः ॥ विहितंयदकामानांकामात्तद्द्विगुणंभवेदिति कामकृते महापापे तु मरण मेव प्रायश्चित्तमुक्तं तेनैव यःकामतोमहापापंनरःकुर्य्यात्कथंचन नतस्य निष्कृतिर्दृष्टा भृग्वग्निपतनादृते १ इति यत्तु इयंविशुद्धिरुदिता प्रमा प्याकामतोद्विजम् कामतोब्राह्मणवधेनिष्कृतिर्नविधीयते इतिमानवीयं तदियमितिसर्वनामपरामृष्टद्वादशवार्षिक व्रतमेवनिषेधति नप्रायश्चित्त मात्रं पूर्वोक्तांगिरोवचनात्

करणेसें द्विगुण होताहै और कामना करके किया जो महापाप ब्रह्महत्यादि तिस पापों मरणही प्रायश्चित्त कहाहै तिसी अंगिराजीने यइति जोमनुष्य कदाचित् कामनाकरके महापाप को करे तिस मनुष्यकी निष्कृति क्या प्रायश्चित्त पर्वतसें गिर करके मरणेके विना और अग्नि में पड करके मरणे विना नहीं देखा १ इसीमें और विचार करतेहैं यत्त्विति एहप्रायश्चित्त कामनासें विना ब्राह्मणको मारकरके कहाहै और कामनाकरके ब्राह्मणके मारणेमें प्रायश्चित्त विधान नहीं कहाहै एह जो मानवीय क्या मनुजीका वचनहै सो सर्वनाम होणेसें परामर्श कियाजो द्वादशवार्षिक व्रत तिसकों निषेध कर्ताहै प्रायश्चित्तमात्रकों नहीं निषेध कर्ता पूर्व कहा जो अंगिराजीका वचन तिससें जानणा

अब इसमें और कहतेहैं अथेति जान करके कियाहै ब्रह्महत्यादि जिसने सो पुरुष शास्त्रविहित जो प्रायश्चित्तहै तिससे द्विगुण प्रायश्चित्तके करणे करके इस लोकमें व्यवहारको प्राप्तहोताहै अथवा नहीं, ऐसे संदेहके होयां कितन्योंका मत विधिकोटिहै अर्थात् कितने कहतेहैं कि व्यवहारको प्राप्तहोताहै और कितन्योंकामत निषेधकोटिहै अर्थात् कितनेकहतेहैं कि नहींप्राप्तहोता इसमें अपणा मत पहिले मतके साथहै प्रथम पक्षमें कहतेहैं प्रायइति अज्ञान करके किया जो पाप सो प्रायश्चित्तों करके दूर होताहै और जान करके किया जो पाप तिसमें वचनसें व्यवहार्य्य होताहै याज्ञवल्क्यके इसवचन करके जानकरके किया जो ब्रह्मवधतिसविषें प्रायश्चित्तकरके व्यवहार्य्यतामात्र होतीहै अर्थात् लोक विषें बर्त्तमान होताहै और पापकानाश नहीं होता (प्रश्ण) जेकर पापका नाश नहीं होता

अथबुद्धिपूर्वकृतब्रह्मबधादिर्यथाशास्त्रं द्विगुणप्रायश्चित्ताचरणेनेहव्यवहार्य्यतामापद्यते नवेति विप्रतिपत्तौ केषांचिद्विधिकोटिः केषांचिच्चप्रतिषेधकोटिः तत्रप्रथमे प्रायश्चित्तैरपैत्येनोयदज्ञानकृतंभवेत् कामतोव्यवहार्य्यस्तुवचनादिहजायत इतियाज्ञवल्क्यवचनेन बुद्धिपूर्वे ब्रह्मवधे प्रायश्चित्तेन व्यवहार्यतामात्रं नत्वेनसोऽपगमः ॥ नचैनसोऽनपगमेव्यवहार्यतापिन संभवतीतिवाच्यम् ॥ वचनादेवतादृशपातकिसंसर्गस्य दोषप्रयोजकत्वाऽभावकल्पनात् किंकिंहिवचनंनकुर्य्यात् नहिवचनस्यातिभारइति न्यायात् स्पष्टंचैतन्मिताक्षराप्रभृतिनिबंधेष्वित्याहुः अन्येतुप्रदर्शितवचनेऽव्यवहार्य्य इतिच्छेदः कामतइत्यस्य कामतः कृतमपीत्यर्थः तथाचकामतोब्राह्मणवधे प्रायश्चित्ताचरणेन नरकनिवृत्तावपि इहलोकेऽव्यवहार्य्योजायत इतिपर्य्यवसितोर्थः वचनंत्वत्रमानवम्

अब व्यवहार्य्यता अर्थात् वर्त्तनभी नहीं होना चाहिये (उत्तर) एहशंका मतकर क्योंकि वचनसें ही तैसेपातकीके संसर्गको दोषके प्रयोजकका अभाव कल्पनसें क्या क्या वचन नहीं करता अर्थात् वचन सबकुछ करताहै क्योंकि वचनको कोई अतिभार नहीं इस न्यायसें स्पष्टहै एह मिताक्षरादि ग्रंथोंमें कहाहै ❀ अब दूसरा मत कहतेहैं और कामतो व्यवहार्य्यः इस वचनमे अव्यवहार्यः एह पदच्छेद करतेहैं और कामतः इस पदका कामसेंबी किया जो है एह अर्थ करतेहैं तिस प्रकार कामसें जो ब्रह्महत्यी है तिसविषे प्रायश्चित्तके करणे करके नरककी निवृत्तिके होयां भी इस लोक विषे अव्यवहार्य्यता होतीहै अर्थात् नरकप्राप्तिका अभावभी होवे तदभी इस लोक विषें बर्त्तमान नहीं होता एह सिद्धांत अर्थहै इस विषे मनुजीका वचनहै

सो कहतेहैं बालेति बालकोंको मारणे वाले और कृतघ्न जो धर्मसें विशुद्धभीहैं अर्थात् कृत प्रायश्चित्तभीहैं और जो शरणागत होवे तिसको और स्त्रीको मारें तिन्होंके साथ व्यवहार नहीं करणा इति वहिष्क्यादि सूत्रोंमेंभी ब्रह्ममीमांसा भाष्यादि विखे भी अव्यवहार्यता आरूढहै और मिताक्षराकी व्याख्या इहां युक्त नहीं तिसके मतविषे कामसें किया जो पाप सो नहीं दूरहोता इस अर्थ करके तिसमें नञ्के अध्याहारका जो स्वीकार तिसकी आवश्यकता करके गौरवापत्तिसें ॥ और कहतेहैं क्या हमारे व्याख्यानमें वचनादिहजायतेइति इसस्थानमें अव्यवहारके विषे अव्यवहारके कहणे वाले बालादिकों बालघ्नान् इत्यादि मनुका वचन प्राप्तहोताहै और मिताक्षराव्याख्याके अनुसारि व्यवहा

बालघ्नांश्चकृतघ्नांश्चविशुद्धानपिधर्मतःशरणागतहन्तृंश्चस्त्रीहन्तृंश्चनसंवसेदिति वहिस्तुभयथापिस्मृतेराचाराच्चेत्यधिकरणस्थब्रह्ममीमांसाभाष्यवाचस्पत्याद्यारूढंचाव्यवहार्यत्वम् मिताक्षराव्याख्यातुनाऽत्रयुक्तातन्मते कामतइत्यस्य कामतः कृतं नापैतीत्यर्थकतया तत्रनञोऽध्याहारस्वीकारस्यावश्यकतया गौरवापत्तेः। किंचास्मदीयव्याख्याने वचनादिहजायतइत्यत्राऽव्यवहारेसंवादिबालघ्नांश्चेत्यादिमनुवचनमुपलभ्यते नतुमिताक्षराव्याख्यानानुसारिण्यवहार्यत्वे किमपिवचनमुपलभ्यते॥ किंचप्रायश्चित्तैरपैत्येनइत्यतः पूर्वस्मिन्महापातकजैर्घोरैरुपपातकजैस्तथा अन्विताअचरितप्रायश्चित्तानराधमाइति वचनेनाऽनाचरितप्रायश्चित्तानामेव नरकप्राप्तिर्बोध्यते यदिचकामकृतमहापातकस्य प्रायश्चित्ताचरणेऽपि नरकप्राप्तिःस्यात्तर्हि तद्विरोधः स्पष्टएव तस्माद्दशाहोर्ध्वंस्नानमात्रमित्याशौचप्रकरणस्थमिताक्षरोक्तेर्माधवविरोधादुपेक्षावत् ॥

र्यमें कोईभी वचन नहीं मिलसकता॥ इसमें और भी कहतेहैं क्या (प्रायश्चित्तैरपैत्येनः) इस वाक्यसे पूर्वविषे जो वचनहै क्या महांत घोर जो महापातक और उपपातक तिनोंसे उत्पन्न जो पाप तिन करके युक्त जो पुरुषहैं और नहीं किया प्रायश्चित्त जिन्होंने सो मनुष्योंमें अधम हैं और नरकको प्राप्तहोतेहैं इति इसवचन करके नहींकिया प्रायश्चित्त जिनोंने तिन्होंको नरककी प्राप्ति जाननी चाहिये इसमें औरभी वचनहै क्या कामसें किया जो महापातक तिसके प्रायश्चित्त करणे करके भी जेकर नरक प्राप्तिहोवे तद तिसका विरोध बनाही रहा तिस कारणसें दशाहित्यादि जो अशौचप्रकरणमें मिताक्षराका वचनहै सो माधवके विरोधसें उपेक्षाके तुल्यहै अर्थात् तिसप्रकार जिस जगा माधव विरोधसें मिताक्षराकीउपेक्षाकीहै तैसेहीइस स्थानमें भीहै

पुराणेत्यादि वचनके विरोधसें प्रकृतभी व्याख्यान मिताक्षरका त्यागणे योग्यहै इसी कारणसें इसमें वाक्यकहतेहैं यइति जो पुरुष काममें कदाचित् महापापको करे तिसकी निष्कृति अर्थात् प्रायश्चित्त पर्वतसें गिरकरके मरणेसें वा अग्निमें पडकरके मरणेसें विना नहीं देखी इस वचन करके कामादिति इसवचनका तुल्य फलहै जेकर दोनों वचनोंका तुल्य फल न मानियें तब दोष आवताहै क्या (यःकामतः) इस वाक्यको परलोककी शुद्धिबोधकनाहै अर्थात् इस वचन करके परलोककी शुद्धि जानी जातीहै अर इस लोकमे व्यवहार नहीं होता और (कामात्) इस वचन करके इस लोककी शुद्धि जाणी जातीहै एह भिन्न अर्थ दोषहै नेति (व्रीहिभिर्यजेत) इत्यादि वचनोंमें भिन्नफल नहीं देखा तिसकारणसें अव्यवहारही

पुराणप्रथित साक्षाद्भगवदवतार श्रीमदाचार्य्यभाष्यवाचस्पत्यादिविरोधात् प्रकृतमपि व्याख्यानमुपेक्षामेवार्हति अतएव यः कामतोमहापापं नरः कुर्य्यात्कथंचन नतस्यनिष्कृतिर्दृष्टाभृग्वग्निपतनादृते इतिवचनेन कामात्तद्द्विगुणंभवेदिति वचनस्य समानफलकताभवति अन्यथा तस्यपारलौकिकशुद्धिबोधकत्वमस्य त्वैहिकशुद्धिबोधकत्व मिति वैरूप्यं स्यात् नहिव्रीहिभिर्यजेतयवैर्वेत्यादौ विभिन्नफलकत्वं दृष्टं तस्मादव्यवहार्य्यतैव विचारसहा नेत रेतिसंगिरन्ते ॥ अत्रब्रूमः कृतद्विगुणप्रायश्चित्तानां महापातकिनां पातकनाशाभावकल्पनमेवयुक्तियुक्तं सतिहितन्नाशे तत्संसर्गस्य पापजनकतायाःकथमपिवक्तुमशक्यत्वात् तथाहि चेतनविशेषगुणसामान्यस्यस्वसमभिव्याहृतचेतनान्तरसंक्रामित्वं तावदौत्सर्गिकं नियतम् प्रसिद्धमत्रान्वयव्यतिरेकानुविधानम्

विचारको सहारताहै और इतर जो है व्यवहार सो नहीं युक्तिको सहारता अर्थात् इस लोकमें वर्त्तना नहीं होता एह कहतेहैं ॥ इसमें ग्रंथकर्त्ता कथन करताहै कृतेति कियाहै द्विगुण प्रायश्चित्त जिन महापापियोंने तिनके पापके नाशकी अभावकल्पना युक्ति करके युक्तहै अर्थात् तिनके पापका नाश नहीं होता जेकर तिनके पापका नाश होवे तद तिनके संसर्गको कैसे पाप जनकता होवे अर्थात् तिनके संग करके पाप न होणा चाहियें सो दिखातेहैं चेतनेति कोई चेतनभेदहै तिसके गुणोंकी सामान्यता व्यवहार करणे करके और चेतनमें चली जातीहै एह स्वभाव करकेही नियतहै इस लोकमें प्रसिद्धहै यह अन्वय क्या मिलना और व्यतिरेक क्या पृथक् होजाणा इनका विधान

येति इच्छित वस्तुका वियोग और अनिच्छित वस्तुकी प्राप्ति तिसतें उत्पन्न जो दुःख तिस करके बहुत लोकोंके रुदन करते होयां तादृश दुःखसें रहित बी कोई पुरुष तिस स्थानमें प्राप्तहुवाहै सो तिनकेसाथही रुदनकरताहै और कोई खिन्नचित्तवालाभी अर्थात् शोककरके युक्तभी पुरुषज्ञानी पुरुषोंके साथस्थित हुवा हुवा सुखकोप्राप्त होताहै उदेति कोई पुरुषविषय भेदमें उदासीनभीहै सो कामियोंके मंडलके साथ विचरता हुवा तिस विषय भेदको अतिशय करके इच्छा करताहै क्याहै बहुत कथन करणे करके और कहतेहैं जडबी जो शरीरादिहैं तिन विषेभी संसृष्ट क्या संगकरके शरीरके अंतर विचरण वाले रोग विशेषोंका संक्रमन क्या एकजगासे दूसरीजगाजाणा देखनेमें आवताहै इस प्रकार गुणविशेष जो अधर्म तिसको अधिकारके संसर्गको लोकसें

यद्बहुष्विष्टविशेषवियोगानिष्टविशेषप्राप्तिहेतुकदुःखेनरुदत्सुतादृशदुःखहेतुशून्योपि तत्रोपगतस्तैःसहैवरोदिति उद्विग्नमनाअपिशांतैर्धीरैः सहासीनः सुखमुपलभते उदासीनोपि.विषयविशेषे तत्कामुकमण्डली सहचरितस्तमेवविषयविशेषं निर्भरेणकामयते किंबहुना जडेष्वपि शरीरादिषु संसृष्टशरीरान्तरसंचारिरोगविशेषाणां संक्रमोदृश्यते इत्थंचसंसर्गस्य लोकतः प्रसिद्धमेव विशेषगुणसंक्रांतिहेतुत्वं. गुणविशेषमधर्ममधिकृत्य संसर्गश्चापितैःसहेति प्रभृतिवचनजातेनावयुत्यानूद्यतइत्येव लाघवात् कल्पयितुंयुक्तम् कृतप्रायश्चित्तापापसंसर्गेपि पापजनकत्वस्य विनैवपापसंक्रांतिं स्वातंत्र्येण पापजनकत्वस्यच तत्तद्वचनाभिप्रायविषयत्वकल्पनायां प्रसिद्धकार्यकारणभावाननुगृहीत पूर्वार्थ प्रतिपादकत्वप्रयुक्तं महद्वगौरवम् अतएव पतितैःसंप्रयुक्तानामिमांशृणुतानिष्कृतिं योयेन पतितेनैषां संसर्गयातिमानवः १

प्रसिद्धहीहै विशेष गुणकी प्राप्तिका कारण होना अर संसर्गश्चापि इत्यादि वचनके समूह करके लोक प्रसिद्धका अनुवाद करीदाहै लाघवर्थ एही कल्पना करणेको युक्तहै ॥ और कथन करतेहैं कृतेति कियाहै प्रायश्चित्त जिसनें ऐसा जो अपापी तिसके संगके विषे बी पापके उत्पन्न करणे वाला जो संग तिसको पापसंक्रमसे विना और पाप जनकता स्वातंत्र्यता करके मानोगे-अर तिस २ बचनके अभिप्राय विषयकी कल्पना विषें प्रसिद्ध जो कार्य कारण भाव तिसका नहीं ग्रहण विषें जो नवीन अर्थ तिसके प्रतिपादन करणें विषे बहुत गौरवहै इति ॥ इस कारणसेही मनुजीने कहाहै कि पापियोंकेसाथ संगकरणे वालोंके इस प्रायश्चित्तको श्रवण करो क्या इन संसर्गियोंके मध्यमें जो पुरुष जिसपापी करके संगको करताहै

स्मृति सो संगकरणेवाला पुरुष तिस संसर्गकी शुद्धीके वास्ते तिस पापीके ही व्रतकों करे इति और कथन करतेहैं कि जिसके साथ संगकरे सोसंसर्गी तिसकेही व्रतकों करे एह जाबालजीने तिस २ पापका प्रायश्चित्तही तिस २ संसर्गीको कहाहै सो सभहमारे कहेहुवे अर्थसेही संगत होताहै (प्रश्न ? नन्विति कियाहै प्रायश्चित्त जिसपुरुषने तिसके संगकोंबी पापसंक्रांतिकी प्राप्ति क्यों न होवे अर्थात् उसकेभी संग करणे करके पापहोना चाहिये क्योंकि तुम्हारे मत विषें पापके सद्भावथें क्या उस जगा पापके विद्यमानहोणेसें ? उत्तर ? रसायन भेदके उपयोगको रोग भेदकी संक्रांतिके प्रतिबंधककी न्यांई और ज्ञानादिकोंको दुःखा दि संक्रांतिके प्रतिबंधककी न्यांई प्रायश्चित्ताचरणको पापसंक्रांतिके प्रति प्रति बंधकत्वकी कल्पनासें अर्थात् सो प्रायश्चित्त पापकों दूसरे स्थानमे नहीं जानेदेता ऐसी कल्पना हो

सतस्यैवव्रतंकुर्य्यात्तत्संसर्गविशुद्धयेइतिमनुना ॥ संसर्गीयेनसंसर्गंकुर्य्यात्तद्व्रतमाचरेदितिजाबालेनचतत्तत्पापप्रायश्चित्तमेव तत्तत्संसर्गिणउक्तंसंच्छते। ननु। कृतप्रायश्चित्तसंसर्गस्यापि पापसंक्रान्त्युपधायकत्वं कस्मान्न स्यात् भवन्मतेपापस्यसद्भावादितिचेन्न ॥ रसायनविशेषोपयोगस्य रोगविशेषसंक्रांतिप्रतिबंधकत्ववदतिशयितविवेकवत्त्वादेर्दुःखादिसंक्रांतिप्रतिबन्धकत्ववच्च प्रायश्चित्ताचरणस्य पापसंक्रांतिंप्रतिप्रतिबंधकत्वकल्पनात् ननु तत्तत्संक्रांतिंप्रतितस्यतस्यविवेकादेरनुगतानतिप्रसक्तस्यप्रातिबन्धकतावच्छेदकस्यासंभवेनप्रातिस्विकरूपेणैवप्रतिबंधकत्ववक्तव्यं ततश्च प्रक्रतदुरितसंक्रांतिप्रायश्चित्ताचरणयोस्तादृशप्रतिबध्यप्रतिबंधकभावावच्छेदकानाक्रांततयाऽपूर्वएवप्रतिबध्यप्रतिबंधकभावोवचनबलादेवकल्पनीयस्तत्किंगौरवम् कृतप्रायश्चित्ताचरणस्यनिष्पापस्यापितस्यसंसर्गेपापजनकत्वकल्पनायामितिचेन्न ॥

सकतीहै नेति ¿ प्रश्न ¿ तिस २ संक्रांतिके प्रति तिस २ ज्ञानादिका अनुगतकया सर्वत्रही एक जैसी गतिवाला और अनतिप्रसक्तकया दोषरहित जोप्रतिबंधकतावच्छेदक तिसके अभावकरके अर्थात् तिसके न होनेसे एक २ केप्रति एक २ प्रतिबंधक कथन करणे योग्यहै तिस कारणसे प्रसंगमें प्राप्तहुया जो पाप तिसका संक्रमण और प्रायश्चित्तका आचरण तिनदोनों काजो तैसाहि प्रतिबध्य प्रतिबंधकभाव तिसके धर्म्म विशेष करके अनाक्रांतता करके अर्थात् तैसे अवच्छेदकके नहोणे करके नवीनही एक प्रतिबध्य प्रतिबंधकभाव वचनके बलसेंही कल्पना करणे योग्यहै और कियाहै प्रायश्चित्तका आचरण जिसपुरुषने सो तिसकारणसे ही पापसे रहितहै तिसके संगविषे जो पापकी उत्पत्ति तिसकी कल्पना विषे क्या गौरवता है ¿ उत्तर ¿ जेकर ऐसे कथन करो तब मतकहो

भवेति क्योंकि तुम्हारे मतमें तैसा जो प्रायश्चित्तका आचरण तिसको पाप नाशकता और तैसा जो प्रायश्चित्तका आचरण तिस करके मिलाहुआ जो नाश तिसके संसर्गविषें पापकी उत्पत्ति एह दो कल्पना आतीहैं अस्मेति अर हमारे मतमें तैसे प्रायश्चित्ताचरणका एकही संक्रांतिका प्रतिबंधकहै इससे लाघवको सुंदर कथन करणेसें ॥ अर औरभी कुछ कथन करतेहां कियाहै द्विगुण प्रायश्चित्त जिसने इसकारणसे पाप रहितहै तिसके संसर्गको तुमने क्या प्रायश्चित्त कल्पन करनाहै जेकर कथन करो कि जैसा प्रायश्चित्त पापीने कियाहै तैसा तिस ब्रह्मवधादि पापका प्रायश्चित्त तिससंसर्गीको तीन पाद करणा उचितहै एभी न बणसकेगा क्योंकि तैसे पाप करके युक्त जो पापीहै अर्थात् ब्रह्मवधादि पापकरके युक्त जो पुरुषहै तिसके देहमें संगकरणेके समयमें पापके अभावकरके तैसे प्रायश्चित्तकी अप्राप्तिसें अर्थात् संसर्ग समेमें वोह पुरुष

भवन्मते तादृश प्रायश्चित्ताचरणस्य पापनाशकत्वं तादृशप्रायश्चित्ताचरणविशिष्टनाशस्य च संसर्गिपापजनकत्वमिति कल्पनाद्वयम् अस्माकं तु संक्रांतिप्रतिबंधकत्वमेकमेव तादृशप्रायश्चित्ताचरणस्येति लाघवस्य सुवक्तव्यत्वात् किंच ॥ कृतद्विगुणप्रायश्चित्तनिष्पापसंसर्गिणः किं प्रायश्चित्तं भवद्भिः कल्प्यतां न तावद्यादृशपापापनोदकं प्रायश्चित्तं तेनाचरितं तस्य ब्रह्मवधादेः पापस्योनतुरीयांशम् तादृशपापवैशिष्ट्यस्य तस्यांऽयक्तौ संसर्गकालावच्छेदेनासत्त्वेन तादृश प्रायश्चित्ताप्राप्तेः तत्पापोपलक्षितत्वस्य तादृश प्रायश्चित्तप्रयोजकतावच्छेदकत्वे भूतभविष्यत्कालवृत्तिनोऽमतिपूर्वकस्यापि पापस्य तत्प्रयोजकतावच्छेदकत्वापत्तेः॥ भवन्नये तदानीं तस्मिन्पुरुषे पापाभावेन पतितत्वस्य कथमपि वक्तुमशक्यतया योयेनपतितेनैषामित्यादिशास्त्रीयप्रायश्चित्तविधेरुद्देश्यतावच्छेदकाक्रांतत्वस्य तत्संसर्गिणि कथमपि वक्तुमशक्यत्वात् ॥

शुद्ध था तब तिस पापीके किये हुवे पापका पादोन प्रायश्चित्त किसे आवेगा जेकर कथनकरो कि तिस ब्रह्मवधादि पाप करके उपलक्षितत्वको तादृश प्रायश्चित्तकी प्रयोजकताके अवच्छेदकको स्वीकार करेंगे ऐसा मतकहो व्यतीत हुवा और आगेको होनेवाला बुद्धिकरके किया जो पाप तिसकोभी तिससंसर्गी पुरुषको प्रयोजकताके अवच्छेदककी प्राप्तिसें अर्थात् भूतभविष्यत्पापभी तिसप्रायश्चित्तमें प्रयोजकहोणे चाहिये ॥ भवेति तुमारे मतमें तब तिस पुरुषमें पापके अभावकरके अरपा को बहुत कष्ट करकेभी न कथन करणे योग्यता करके अर योयेनपतितेनैषां इत्यादि शास्त्रमें होने वाली जो प्रायश्चित्त विधीहै तिसका जो उद्देश्यतावच्छेदकत्व तिसकी आक्रांतिकों तिससंसर्गीके विषे बहुत कष्टकरके भी कथन करणेको न समर्थहोनेसें अर्थात् पाप करणे वालेमें जब पाप न हुवा तो तिसके संसर्गीमे कैसे कथन किया जावेगा

ततइतितिस कारणथें नयाहि प्रायश्चित्त अनुक्तन्यायककेंक्या नहींकथनकियाजो न्याय तिसकरके अर्थात् किसी नवीन रीतीकरके कोई कल्पना करणेयोग्यहै तब लौकिक और शास्त्रीयव्यवहार काबहुत विरोध आवेगा (प्रश्न) हमकहतेहैं कि प्रायश्चित्त करके पापका नाश नहो अर्थात् पापरहै तदभी तुम्हारे मतमे प्रायश्चित्ताचरणको और पुरुषकी संक्रांतिके प्रतिबंधककीन्याई अर्थात् और पुरुषके प्रति जो पापसंक्रमण है तिसके प्रति प्रायश्चित्ताचरण प्रतिबंधकहै तिस तरां हमनें नरक का प्रतिबंधक कल्पित करीदाहै अर तिस पापका संक्रम क्या प्राप्ति और संसर्गी पुरुषमें अंगीकार करीदाहै एह संपूर्ण दोषसें रहितहै (उत्तर) चेदिति हेवादिन् तिसका संसर्ग क्यों वर्जने योग्यहै जेकर कहैं कि पाप कारण करके वर्जनें योग्यहै तब कहतेहैं कि पापको किस

ततश्चापूर्वमेव प्रायश्चित्तमनुक्तन्यायेन किमपिकल्प्यम् तथाच महान् लौकिक शास्त्रीयव्यवहारव्याकोपः।ननु।अस्तुप्रायश्चित्तनपापनाशाभाव स्तथापिभवन्नये प्रायश्चित्ताचरणस्यपुरुषांतरसंक्रांतिप्रतिवन्धकत्ववदस्मा भिर्नरकंप्रत्येवप्रतिबंधकत्वंकल्प्यते स्वीक्रियतेच तस्यसंसर्गिणिपुरुषांतरे संक्रमइतिसर्वमवदातामिति चेत् हन्तभोस्तत्संसर्गस्यकिमितिवर्जनीयत्वं स्यात् पापहेतुत्वेनेतिचेत् पापस्यापिकेनहेतुनावर्जनीयत्वं यतस्तदनर्थं प्रसोष्यतीतिचेन्नहि मूलएव प्रायश्चित्ताचरणेनपण्डापूर्वतांप्राप्तस्य तस्यान्यत्रापि तादृशस्यैवसंक्रांतस्य नरकोत्पादकतायाअसंभवात् अ तोऽन्यदेवस्वतंत्रंकिमपिदुरितमुत्पद्यतइतिवक्तव्यम् ततश्चपुनरायातः प्र दर्शितदूषणगणग्रासइतिनाकिंचिदेतत्॥ अपिच यः कामतोमहापापं नरः कुर्य्यात्कथंचन नतस्यनिष्कृतिर्दृष्टाभृग्वग्निपतनादृते इत्यनेन कामतः कृतस्यमहापापस्य निष्कृतिः प्राणांतप्रायश्चित्तेतरेणप्रायश्चित्तेननसं भवतीतिस्पष्टंप्रतिपाद्यते ॥

हेतुसें वर्जनीयताहै यदि ? यतस्तदनर्थंप्रसोष्यति ? सोपाप अनर्थको करताहै इस वाक्य करके वर्जने योग्यहै तद मत कहो क्योंकि मूलमेंही कहाहै प्रायश्चित्तके करणे करके वुद्धिरूप अपूर्वताकों प्राप्तहोरहा जो पाप तिसकों और स्थानमें जाणेको भी तैसेही रहणा संभावित है तिसथें नरक प्राप्तिका असंभव होणेथें इसथें एह कहो औरही कोई स्वतंत्र पाप उत्पन्न होवेगा तब पूर्व दिखायाजो दूषण समूहथा सो प्राप्तहुवा यह अच्छानहीं ॥ अब और कुछ कथन करतेहैं यइति जोपुरुष कामना करके महापाप करे तिसकी निष्कृति क्या शुद्धि भृग्वग्निपतनसें विना क्या हिमालय समीप विषें मरणके अर्थ गिडनेके विना नहींदेखी अर्थात् मरणांत प्रायश्चित्त करके ही तिसकी शुद्धिहै और प्रायश्चित्त करके नहीं होती एह प्रकट प्रतिपादन कियाहै

निष्कृतिरिति निष्कृति पदकरके इस स्थानमें पापकानाश ग्रहण करणा क्योंकि औरके असंभव होनेयें तिसका एने द्विगुण प्रायश्चित्तकों तिसके नाशविषें कल्पनमें (नतस्येत्यादि) जो विरो. ध सोप्रकटही वना रहाहै जेकर ऐसे कथन करो कि(भृग्वग्निपतन) इस पद करके द्विगुण प्राय श्चित्तभो लक्षित होताहै तब तिस पापके नाशकर्के संभावना करीदे जो संपूर्ण प्रायश्चित्तहैं सोभी तुल्य न्यायसे उपलक्षण किये जायेंगे तब फेर तिसमें त्यागणे योग्य क्या शेषरहा अर्थात् त्याग णे वाला कोई प्रायश्चित्तका अंश न रहा जिस अंश कर्के (नतस्येत्यादि) पदकी सार्थक्यता होवे तुमारे मतमें भी विरोध बनाही रहताहै इसमें कहतेहां क्या हमारे मतमें द्विगुणजो प्राय. श्चित्ताचरणहै सो प्रसंगमें पापके संक्रमका जो नाश तिसका प्रयोजकहै अर्थात् पापके संक्र. मको दूर करताहै क्या दूसरीजगा संसर्गसे पापकों नहीं जाणदेता अर पापके नाशका प्रयो.

निष्कृतिश्चात्रनाशः अन्यस्यासंभवात् ततश्च द्विगुणप्रायश्चित्तस्य तन्नाश कत्वकल्पनेन तस्येत्यादिविरोधःस्पष्टएव ॥ अथोच्येत भृग्वग्निपतनपदेन द्विगुणंप्रायश्चित्तमप्युपलक्ष्यत इति तर्हितत्पापनाशकत्वेन संभाव्यमाना निसर्वाण्येव तुल्यन्यायादुपलक्षणीयानिस्युरिति किमवशिष्यते तत्रव्युद सनीयं येनन्नतस्येत्यादेःसार्थक्यंस्यात् अस्माकं द्विगुणप्रायाश्चित्ताचर णं प्रकृते पापसंक्रमाभावमात्रप्रयोजकं नतु पापनाशप्रयोजकमिति न त द्विरोधगंधोपि ॥ एतेनाऽव्यवहार्य्यइतिच्छेदे वचनादिहेत्यत्रवचनं वालघ्नां श्चेत्यादि मानवमुपलभ्यते व्यवहार्य्यइतिच्छेदेतु न किमपीतिपरास्तम् व्यवहार्य्यतायांविहितंयदकामानांकामात्तद्द्विगुणंभवेदित्यस्यैव वचनस्य सद्भावात् ।ननु। इदंपापसामान्यविषयकंनतु महापापान्यत्रप्रातिस्विकरूपे णानिर्दिश्यंतेइतिचेद्वालघ्नांश्चेत्यत्रापि क्व निर्दिश्यंते प्रत्युताऽत्रसामान्यध र्मपुरस्कारेणनिर्देशाद्वाच्यवृत्त्यैव तानि प्रतिपाद्यंते

जक नहीं इस कारणसें तिसमें विरोधका गंधभी नहीं अर्थात् विरोधका नामभी नहीं इस कर्के (अव्यवहार्यः) ऐसे पदच्छेदमें (वचनादिह) इसमे वचन ?बालघ्नांश्चेत्या? इत्या दि मनुका बचन देखीदाहै अर व्यवहार्य्यः ऐसे पदच्छेदमेंसे कुछभी नहीं एह कहने वालोंका मत परास्तहुवा क्या अनादृत हुवा अर ?व्यवहार्य्यता ? इस पदमे !विहितंय दकामानां इस वचनके सद्भावहोणेसे अर्थात् व्यवहार्य्यतामे एह वचन प्रमाणहै ; प्रश्न । क्या विहितंयदकामानां एहजो वाक्यहै सो संपूर्ण पापोंके प्रतिहैं कोईइस वचनमे एक २ कर्के महापाप नहीं दिखाईदे जेकर एह कहोतो हमकहतेहां कि ! बालघ्नान् ? इस विषे भी महापाप किस्थे दिखाएहै सगो विहितं यद कामानां इस वचनमें सामान्यधर्मको मुख्य जाण करके दिखाणेसे अक्षरार्थ करकेही सो महापाप प्रतिपादन करीदेहैं

घ्नेति और बालघ्नान् इस वचनमें बी किसीके भी महापापके नं दिखाणे करके किसीक प्रकारसे उपलक्षण भाव कर्के महापापपर ल्याउगे तो परम जघन्य वृत्तिकर्के क्या गौणीवृत्तिकर्के क्या अत्यंत न्यूनवृत्तिकरके तुम्हारे मतमें एह वाक्य विप्रकृष्टहै अर्थात् एह वचन अत्यंत दूर है और कामतोद्विगुणंप्रोक्तं पूर्वेषुचयदुच्यते एह केशव वैजयंती नाम ग्रंथमें नंदपंडितने लिखा है जो व्यासजीका बचन तिसकरके महापाप परायण पूर्वपद लभ्यीदाहै इसका अर्थ एहहै कि कामसे दूणा प्रायश्चित्तहै जो पहिले पापोंविषे कहाहै सो इनका अभिप्रायहै कि प्रथम इसस्थानमें महापापहै इससे विहितं यदकामानां एह वचन महापापपर हुवा किंचवि कुछ औरभी कहतेहैं स्मृति घटक जो एह वचनहै इस जगा वचनात् इसका अर्थ वेदवचनात् एहीहै कोई स्मृति वचनात् ऐसा नहीं क्योंकि स्मृतियोंको वेदमूलकत्व कर्के ही

बालघ्नांश्चेत्यत्रतुकस्यापिमहापापस्याऽनिर्देशेनकथंचिदुपलक्षणभावेनपरमजघन्ययात्त्येत्यतीवविप्रकृष्टंवचनमिदंभवन्नये कामतोद्विगुणंप्रोक्तंपूर्वेषुचयदुच्यते इतिकेशववैजयंत्यांनंदपंडितधृतव्यासवचनेनमहापापपरंपूर्वपदमुपलभ्यतेपि किंच स्मृतिघटकस्यास्यवचनादित्यस्य वेदवचनादित्येवार्थोनतुस्मृतिवचनादिति स्मृतीनांवेदमूलकत्वेनैवप्रामाण्यात् ततश्च वचनोपलंभोपिनातीवात्रोपयुज्यते ॥ वस्तुतस्तु ॥ बालघ्नांश्चकृतघ्नांश्चेत्यादिवचनमकामतः कामतोवाकृतैतच्चतुष्टयान्यतमपापकेनसहसंसर्गं प्रतिषेधतीत्येवयुक्तम् कामतइत्यनुपक्रमात् एनस्विभिरनिर्णिक्तैर्नार्थंकिंचित्सहाचरेत् कृतनिर्णेजनांश्चैवनजुगुप्सेतकर्हिचिदितिपापिसामान्यस्यैवोपक्रमात्

प्रामाण्यहोणेसे तिसथे ऐसा प्रतीत हुवा कि इस बचनकाभी लभ्भणा कोई बहुत उपयोगी क्या बडा सहायक नहींहै विचार करके देखिये तो बालघ्नांश्च इत्यादि जो वचनहै सो अकामसे अथवा कामसे किये हुवे जो एह चार पाप अर्थात् बालघ्न १ कृतघ्न २ स्त्रीघ्न ३ सुहृद्घ्न ४ इनमेंसे कोई एक पापीके साथभी संसर्गको निषेध करताहै इसका एही अर्थ यथार्थहै कामत इसका प्रकरण नहीं होणेसे किंतु एनस्विभिरिति जिनोंने प्रायश्चित्त न किया तिनों पापियोंके साथ कुछभी अर्थ न करे अर्थात् कोई व्यवहारभी न करे और कृतनिर्णेजकान् क्या जिनोंने प्रायश्चित्त कियाहै तिनके साथ न जुगुप्सेत क्या चित्तमें कभीभी ग्लानि न करे एह जो पापीका सामान्य संसर्गहै इसीके निषेधका प्रकरण होणेसे

विशिष्टवति विष्णुस्मृतिके भाष्यविषे और केशव वैजयंती नाम ग्रंथविषे भी पूर्वोक्त चार पापियोंके विषयमेंही इस करके वाचनिक संसर्गका प्रतिषेधहै एही व्यवस्था करणेसे एह जानने योग्यहै यदिति जो कथनकरीदाहै कि मिताक्षराके व्याख्यानाविषें कामत इसस्थानमे नञ् जो निषेध वाचक अव्ययहै तिसके अध्याहारकरके किया हुवा गौरवहै इसमें हम कहतेहैं कि इसमें नञ् के अध्याहारकी शंकाभी नहींहै (तथाहि) सो दिखातेहैं जो निषेधहैं सो अपनी सफलताके वास्ते निषेध्यके प्राप्तिकी इच्छा करतेहैं सो प्राप्ति धर्म्माधर्म्मकी है तिनको अलौकिक होनेसे प्रसंग बिषे केवल शास्त्रही तिसके जनाने वालाहै अर्थात् शास्त्रकोही तिसके जीवनकी

विष्णुस्मृतिभाष्ये केशववैजयंत्यामपि पापचतुष्टयमात्रविषयकोयंवाचनिकः संसर्गप्रतिषेधइत्येवव्यवस्थापनाच्चेतिबोध्यम् ॥ यदुच्यते मिताक्षराकारव्याख्याने ॥ कामतइत्यत्र नञध्याहारप्रयुक्तं गौरवमिति तत्प्रत्युच्यते नात्रनञोऽध्याहारस्य शंकापिसंभवमर्हति तथाहि प्रतिषेधाहिस्वसाफल्यायावश्यंप्रतिषेध्यप्राप्तिमपेक्षंते प्राप्तिश्च धर्माधर्मयोरलौकिकत्वात्प्रकृते शास्त्रैकप्राणिता वाच्या शास्त्रंतु प्रायश्चित्तैरपैत्येनइतिश्लोकार्धमज्ञानकृतत्वेनैव दुरितं विषयीकरोति न ज्ञानकृतम् इत्थंच प्रकृतप्रतिषेध्यस्य प्रापकप्रमाणोद्देश्यतावच्छेदकस्पर्शस्याप्यसंभवे न केन हेतुना भावत्क गौरवोद्भावनमात्रप्रयोजनकं नञध्याहारं मिताक्षराकारउररीकुर्य्यात् प्रत्युत भवद्भिरेव कामतइति कामतःकृतमपीत्यर्थकतया व्याचक्षाणैरपिशब्दस्याध्याहारः पूर्ववाक्यघटकस्य प्रायश्चित्तैरपैत्येनइत्यस्याध्याहारविशेषात्मा ऽनुषंगः

कारणताहै और सो शास्त्र प्रायश्चित्तैः इत्यादि अर्धश्लोकहै सो अज्ञान करके किये हुवे पापको विषय करताहै ज्ञानसें किये हुवेको नहीं इस प्रकार प्रसंग विषे प्रतिषेध्यके योग्यकी प्राप्ति करणा वाले प्रमाणका स्पर्शभी नहींहै तो किस हेतु करके जिसको तुमलोक गौरव तर्कमात्र प्रयोजन वाले नञ्के अध्याहारको कहतेहो तिसको मिताक्षरा कार अंगीकारकरे सगों तुसाने कामतः इस जगा ? कामतः कृतमपि ? इस अर्थके करण वालोंने अपिशब्दका अध्याहार किया है और जब कृतमपि असा कहा तब पूर्व वाक्य जोहै प्रायश्चित्तैरपैत्येन इत्यादि इसकाभी अध्याहार विशेष होवेगा ॥

सो मिताक्षराकारका व्याख्यानयहहै (प्रायश्चित्तैर्वक्ष्यमाणैरज्ञानाद्यदेनःपापंकृतंतदपैतिगच्छति नकामतः कृतम् किंतु तत्र प्रायश्चित्त विधानायकवचनबलादिहलोके व्यवहार्य्योजायते) पूर्वोंते और पहिलेवाक्यमें उद्देश्यतावच्छेदक अर्थात् प्रथमस्वीकृतकीइच्छाकाविषय अज्ञानकृतत्व तिसकी अपेक्षा करके कामतः कृतत्वका अत्यंत विरोधी होणे करके अर्थात् कामतः कृतत्व करके उद्देश्यताके भेदसे विधेयका भेद ३ और वाक्यभेद ४ और व्यवहार्य्य इस जगानञ्का प्रश्लेष ५ इत्यादि मिताक्षराके अनुसारियोंने उठायाजो तुम्हारे व्याख्यान विषे गौरवका गण सो किसप्रकार प्रत्याख्यात होवे अर्थात् हटाया जावेगा इसमें कुछ औरभी कहतेहैं जेकर कामकृत पापका भी प्रायश्चित्त करके नाशहोताहै तद योगीश्वरजीने यद ज्ञानकृतंभवेत् इसको न कहकर सामान्यसेंही दोनोंप्रकारका क्या कामकृत और अकामकृतका संग्रहकरणाथा सो किसवास्ते मुनियाज्ञवल्क्यजी दोपक्ष करके निर्देश करते भये ऐसे पूछेहुवे क्या कहोंगे

पूर्ववाक्यीयोद्देश्यतावच्छेदकाज्ञानकृतत्वापेक्षया कामतः कृतत्वस्यात्यंत विरुद्धत्वेनतदवच्छिन्नोद्देश्यताभेदाद्विधेयभेदो अथच वाक्यभेदोऽव्यव हार्य्य इत्यत्र नञःप्रश्लेष इत्यादिर्मिताक्षरानुसारिभिरुद्भाव्यमानोभवद्व्या ख्याने गौरवगणः कथं प्रत्याख्यायताम् कामतः कृतस्यापिप्रायश्चित्तेन नाशे योगीश्वरेण यदज्ञानकृतंभवेदित्यनुक्त्वैव सामान्यरूपेणैवोभयसंग्रा ह्यमासीत्तत् किमर्थं मुनिःकोटिद्वयपुरस्कारेणनिरदिशदितिपर्यनुयुक्तेश्च किमुच्यताम् अस्माभिस्तु नतस्यनिष्कृतिरित्याद्युदाहतवचनानुरोधेन प्रकृतवचनमज्ञानकृतस्य पापस्यनाशः प्रायश्चित्ताचरणेन जीवच्छरीरा विरोधेन भवति कामतः कृतेतु इहव्यवहार्य्यतावचनाद्भवतीतिव्याख्यायत इतिसकलमकलंकम् यदपि महापातकजैर्घोरैरित्यादिपूर्ववचनेनानाचरि तप्रायश्चित्तानामेव नरकप्राप्तिर्बोध्यते कामकृते कृतप्रायश्चित्तस्यापि नरक स्वीकारे तद्विरोधः स्पष्टएवेति ॥

ऐसाविचारकरणा चाहिये ॐ अब अपनामतकहतेहैं अस्माभिरिति हमने(नतस्यनिष्कृति(रित्यादि) कथित वचनेकी अनुसारतासे प्रकृत वचनक्या प्रायश्चित्तैःइत्यादिजोवचनहै सो अज्ञानकृतपापका नाश प्रायश्चित्तके करण करके जीवते शरीरके अविरोधकरके होताहै अर्थात् प्रायश्चित्तके किंयेहोये सुख पूर्वक वोह रहे और कामकृत पापके होयां प्रायश्चित्तकरकेलोकोंकेसाथ व्यवहार मात्रही वचनसे होताहै कोईपापनाश नहींहोता ऐसा व्याख्यान करीदाहै इसमे सभ कलंकहीनहै ॥ अब और विचार करतेहैं यदपि(महापातकजैर्घोरैर्नरकान्प्राप्यदारुणान्)इत्यादि वचन करके नहीं किया प्रायश्चित्त जिनोंने तिनकोही नरक प्राप्तिकहीहै और कामकृत पापविषे कृत प्रायश्चित्तकोंभी अर्थात् जिसने प्रायश्चित्तकियाभीहै तिसकों नरकस्वीकार कीतेहोयां तिसके साथ विरोध स्पष्टही होवेगा

तत्रेति तिसमें एह विचारहै कि जो पापीहैं श्रौर प्रायश्चित्तनहीं करचुके सो नरककोजातेहैं श्रौर प्रायश्चित्त करणेवाले नहीं जाते इस जगा प्रायश्चित्त पदकर्के जोकोई जिस किस प्रायश्चित्त को करे तदशुद्ध होताहे श्रैसा नही कह सकतेहैं कि इसके स्वीकार कीतेयां होयां ब्राह्मण मारणवाले को पलांडुभक्षणका प्रायश्चित्त कराणेसे भी नरक न होणाचाहिये किंतु क्याहै कि जैसा पाप नाशकत्व करके जो प्रायश्चित्त कहाहै तिसका श्राचरण न होवे तब तिस पापसें प्रेरितहुवा नरकहोताहै श्रैसा व्याख्या करणी चाहिये इस पापका नाशक क्या नाशकरणे वाला भृग्वाग्निपतन क्या बदरिकाश्रमके समीप हिमालय बिषे गिडना श्रौर तिसीस्थान श्रग्निविषे गिडना एह मरणांत प्रायश्चित्तहै सो(नतस्य निष्कृतिः) इस वचन करके जणायाहै तांते तिसके नाशकत्वकरके नही किया केवल इसजगत्में व्यवहारमात्रका सहायक जो दूणा प्रायश्चित्त तिसके होयां नरक प्रातिकी व्यवस्था में कौणसा विरोधहै अर्थात् कोई नहीं जिस करके तादृश प्रायश्चित्त उोह नहींहै प्रत्युतेति स्वर्गो तिसपापका नहीं नाशक जो द्विगुण प्रायश्चित्त तिसकेकरणवाल्लेको जो नरक नहींहै श्रैसी कल्पना करण वाले तुमकोंही तिसके साथ विरोध प्राप्तभया ※ अब श्रौर विचारहै किंचेति (महापातकजैर्घोरैः) एह वाक्य कियाहै पाप जिन्होंने श्रौर पीछे प्रायश्चित्त नहीं किया तिनोंका उद्देश करके अर्थात् तिनके नाम पर नरक प्रातिको कहताहै सो तिसबिषे उद्देश्यता जो कृतदुरित अकृत प्रायश्चित्तत्व है तिसके अवच्छेदककरके क्या जिस २ स्थान एह पूर्वोक्त होवेगा उसी स्थान नरकभी होवेगा इस अन्वयके स्वीकार कीते होयांभी सो जोहै कृतपाप अकृत प्रायश्चित्त तिस विषे नरक प्राप्तिका अभाव दूर करणाहै अर्थात् नरकस्थापन करणाहै श्रौर उद्देश्यतावच्छेदकहै कृतपाप अकृतप्राय श्चित्तत्व सो जिस जगा नहींहै अर्थात् कृतपाप कृत प्रायश्चित्तत्वहै तिस जगा विधेयक्या नरक नहींहै श्रैसा कहना उचित नहीं क्योंकि तिस अर्थका वाच्यमर्य्यादाकर्के नहीं लाभ होणेसे

तत्रेदंविचार्य्यताम् दुरितैरन्विताअकृतप्रायश्चित्तानरकंयान्तीत्यत्र प्रायश्चित्तपदेन यत् किमपि प्रायश्चित्तं विवक्षितुमशक्यम् तथासतिब्रह्मघ्नः कृतपलांडुभक्षणप्रायश्चित्तस्य नरकबोधकत्वानुपपत्तेः किंतु यादृशपापनाशकत्वेन यत्प्रायश्चित्तं विहितं तदाचरणकर्तृत्वाभाववतस्तत्पापप्रयोज्योनरकोभवतीतिव्याख्येयम् प्रकृत पापस्य तु भृग्वग्निपतनमेवनाशकमितिनतस्यनिष्कृतिरित्यादिना बोधितमिति तन्नाशकत्वेनाविहितेकेवलमैहिकव्यवहारमात्रोपयोगिनि द्विगुणप्रायश्चित्तेकृतेपि नरकप्राप्तौव्यवस्थाप्यमानायांकस्तद्विरोधः प्रत्युत तत्पापानाशकद्विगुणप्रायश्चित्तमाचरितवतोनरकाभावं कल्पयतांभवतामेतद्विरोधः किंचेदं वाक्यं कृतदुरिताकृतप्रायश्चित्तानुद्दिश्यनरकप्राप्तिंविधत्ते तत्रोद्देश्यतावच्छेदकावच्छेदेन विधेयान्वयस्वीकारेपितादृशोद्देश्यवृत्तिर्विधेयभूतनरकप्राप्त्यभावएवव्युदसनीयोनतूद्देश्यतावच्छेदकाभावसमानाधिकरणविधेयमपि तस्यवाच्यमर्य्यादयाऽलाभात्

किंतु मर्गो (नतस्य निष्कृति) इत्यादि वचनके साथ विरोध आवेगा इसथें तुल्यफलका बाधाहीहै. एह एक २ पदमें कहचुकेहैं अकामकृत पापकी जगा प्रायश्चित्तसे पापकियां पूर्वोक्त दोनों. शक्तियां दूरहोतियांहैं और कामकृतके स्थलबिषे तैसे द्विगुण प्रायश्चित्तसे एकही दूरहोतीहै तुल्य फल कैसेहोवे ॥ विषयांतर दिखाकरके खंडन करतेहैं यत्त्विति जोव्यवहार्य्य अर्थविषे ब्रह्ममीमांसा भाष्यका विरोध केयोंने दिखायाहै सो वहुतशीघ्रतासेहै अर्थात् यथार्थ नहीं सो कथन करीदाहै इत्थंहि ऐसाहै वहिस्तू इत्यादि सूत्रविषें श्रीमदाचार्य्यजीकाभाष्य तिस भाष्यको कहतेहैं यदीति जद ऊर्ध्वरेताओंकी अर्थात् संन्यासियोंकी अपणे आश्रमसे प्रच्युति होवे वा उपपातक होवे तद दोनों प्रकारसे शिष्टोंने सो वाहर करणे चाहिये (श्लोक आरूढइति) नैष्ठिक धर्म्मजो संन्यासहै तिसको आरूढ होकर फेर तिससें जो हटजावे तिसके प्रायश्चित्तको मैं नहीं. देखता जिसकरके सो शुद्ध होवे अर्थात् तिसका कोई प्रायश्चित्त नहीं एह स्मृतिकारकथन कर

प्रत्युत नतस्यनिष्कृतिरित्यादिविरोधाद्बाधितमेवेत्यनुपदमेवोपपादितम् यत्तु॥ व्यवहार्य्यत्वे ब्रह्ममीमांसाभाष्य विरोधोद्भावनं तद्रभसात् इत्थंहि वहिस्तूभयथापिस्मृते राचाराच्चेतिसूत्रे श्री ६ मदाचार्य्यभाष्यम् यद्यूर्ध्व रेतसां स्वाश्रमेभ्यः प्रच्यवनंमहापातकं यदिवोपपातकमुभयथापि शिष्टै स्तेवहिष्कर्तव्याः आरूढोनैष्ठिकंधर्म्मं यस्तुप्रच्यवतेपुनः प्रायश्चित्तंनप श्यामि येनशुद्ध्येत्सआत्महाइति १ आरूढपतितंविप्रं मंडलाच्चविनिःसृतंउ द्बद्धकृमिदष्टंचस्पृष्ट्वाचांद्रायणंचरेदितिच २ एवमादिनिंदातिशयस्मृतिभ्यः शिष्टाचाराच्च नहि यज्ञाध्ययनविवाहादीनितैःसहाचरंतिशिष्टा इति अत्र तेतैरित्याभ्यामूर्ध्वरेतसएवप्रतिपाद्यंतेइति स्पष्टमेव उपक्रमाच्च इत्थंचैत त्संदर्भगतभाष्यग्रंथीयेनकेनाप्यंशेन सार्धं मिताक्षराग्रंथस्य नविरोध गंधसंभावनापीति केयंविभीषिका पुराणप्रथितसाक्षाद्भगवदवतारश्रीम दाचार्य्यभाष्यविरोधारोपरूपा

नहै (और स्मृतिवचनहै) आरूढेति आरूढहोकर पतित हुवा जो ब्राह्मणहै और मंडलसें क्या अपणे जातिके समूहसें.जो निकला होवे अथवा मंडल नाम १०० योजन देशकाहै तिस से किसे दूषणथे निकला होवे. और फांसी लगा होवे और कीडे करके दष्ट होवे इसको स्पर्श करके चांद्रायण व्रतकरे इत्यादि निंदा करण वालियां स्मृतियोंसें और शिष्टाचारसेभी तिन पूर्वोक्तोंके साथ यज्ञाध्ययन विवाहादि सत्पुरुष नहीं करते इस भाष्यविषें (ते)(तैः) इनदोनों पदों करके ऊर्ध्वरेता पूर्वोक्त संन्यासीही कहीदेहैं एह बात स्पष्टहै और प्रकरणभी संन्यासियोंका हीहै.इससें यह प्रतीत हुआकि इस पूर्वोक्त भाष्यविषें एहीदो (ते तैः) ग्रंथीहैंनसो उनमेंसे किसे अंशके साथ भी मिताक्षराका विरोधनहीं क्योंकि एहसंन्यासि परहै और वोह कामकृत महापापी कोई होवे उस परहै सो मिताक्षरा साथ विरोध गंधकी संभावना भीनहीं इस करके कौन भयेहै जो पुराणों विषें प्रसिद्ध साक्षात् भगवान्का अवतार श्रीमदाचार्य्यतिनके साथ विरोध रूप होवे

श्रौर तैसें शाब्दबोध बिखे तिस वाक्यकी व्युत्पात्तिके अभावहोणेसे श्रौर प्रकृत वाक्य जो है काम तो अव्यवहार्य्यस्तु इसके अर्थके बनानेवाला जो अर्थ तिसकी शत्रुरूपता करकें जिहोंनेंप्रायश्चित्ताकि याहै तिन्हों बिखे नरकके अभावका आक्षेपक्यानरकहोणाकिसी बाधककेनहोणेसे पाक्षिकहै क्या किसी स्थानमेंहै श्रौर किसी स्थानमें नहिंहै सो प्रसंग बिषे बाधककेहोयां किस प्रकार अवका शकों प्राप्तहोवे अर्थात् इसमे विकल्प नहीं?दृष्टांत?नहीति जैसे अपक्व आम्रफल खट्टाही होताहै इस वचनके कथनकीतेयांहोयां श्रौर पक्काहुवा खट्टानहींहै ऐसानहीं कहाजाताहै सो श्रौर जगा प्रायश्चित्तवाला नरकनहींजाता श्रौर कामनाके स्थान मरणांत प्रायश्चित्तके विनानरकको प्राप्तहोता है ● अब श्रौर विचार करतेहैं यद्यपि भृग्वाग्नि बिषे पढना श्रौर द्विगुण प्रायश्चित्त करणा इनदोनोंका अव्यवहार्य्यरूप एकही फलहै इसके अनुरोधसे व्यवस्था करणेको इच्छा करो तो सोभी

तादृशबोधेनद्वाक्यस्यव्युत्पात्तिविरहाच्च प्रकृतवाक्यार्थघटकार्थप्रतिद्वंद्विभावेनकृतप्रायश्चित्तपुनरकाभावाक्षेपोऽपिबाधकविरहापेक्षत्वात्पाक्षिक इतिप्रकृतसतिबाधकेकथमवकाशंलभेत नह्यपक्वोरसालोऽम्लोभवत्येवेत्युक्तेपक्वोऽम्लोनैवभवतीतिशक्यतेप्रतिपत्तुमिति यदपिभृग्वाग्निपतनाद्विगुणप्रायश्चित्तयोः समानफलकत्वानुरोधेनाव्यवहार्य्यत्वंव्यवस्थापयितुमिष्यतेतदपिन समीचीनं व्रीहिभिर्यवैर्वेत्यादौहिविभिन्नफलकत्वकल्पनेव्रीहियागेनस्वर्गंभावयेद्यवयागेन प्रजांभावयेदित्यादिशाब्दबोधेसकृत्श्रुतेनयजत्युत्तरलिङा तादृशभावनाद्वयबोधानुपपत्त्यावाक्यभेदापत्तिरितिसमानफलकत्वमावश्यकम् परं यत्रहवनीयद्रव्यप्रतिपादकानिनानैववाक्यानितत्रविभिन्नफलकत्वेकादोषःसमानफलकत्वे कावा वाचोयुक्तिः यथादध्नेंद्रियकामस्य आज्येनजुहुयात्तेजस्कामस्येत्यादौ इत्थंच प्रकृते तयोः प्रायश्चित्तयोः समानवाक्यप्रतिपादितत्वाभावेन समानफलकत्वं नावश्यकम् ॥

अच्छीनहीं व्रीहीति व्रीहि करकेक्या धान्यांकरके अथवा यवों करके यज्ञकरे इस वाक्यमे पृथक् २ फल कल्पना होवे व्रीहि याग करकें स्वर्गकी भावना श्रौर यवयाग करकें पुत्रकी भावनाकरे इस शाब्दबोध बिषें एक वार श्रवण कराया जो है यज धातुके उत्तर लिङ् लकार तिस करकें तैसी भावना दोके बोधकी अनुपपत्ति करकें वाक्य भेद दोष होवेगा इससे समान फलकत्व क्या एकही फलकी कल्पना अवश्य करकें हुई परंतु जिस जगा हवनीय द्रव्यके कहने वालें बहुत वाक्य होवें उस जगा भिन्न २ फल माननेमें कौन दोषहै श्रौर समानफलकत्व बिषें कौनसी वाणीकी युक्तिहै जैसे दधी करकें इंद्रिय कामना वालेका श्रौर आज्य करके तेजकी कामना वाले का हवन होवे इत्यादि स्थलबिषें अब कहतेहैंकि इसी तरां प्रकृतविषे क्या कामाकाम कृत पाप के प्रायश्चित्त बिषें तिन दोनों प्रायश्चित्तोंको तुल्य वाक्य करकें प्रति पादनके नहोणेसे एकही फल नहींहोसकता

(प्रश्न) अथेति वाचस्पति और कल्पतरु के विरोधसें मिताक्षराको अप्रामाण्य आवेगा जिससे मिताक्षरामें अर्थ है कि कामकृत पापनहीं निवृत्त होता व्यवहार्य्यताहि होतीहै और इनके मत विषे कामकृत भी पाप प्रायश्चित्तसें दूरहोताहै ? उत्तर ! अब इसमें हमकहतेहैंकि मिताक्षराके विरोधसे वाचस्पति और कल्पतरुको अप्रामाण्य क्यों नहीं होवे तुल्य युक्तिहै और इनको अ प्रमाणताविषेभी एक युक्तिहै कि एहदोनो ब्रह्मविचारके लिये प्रवृत्तहुवेथे सो तिस अंशमें क्या ब्रह्मके निरूपणमें उनका उत्कर्षहो परंतु जिसमें मिताक्षराकार प्रवृत्त होएहैं सो धर्म्मशास्त्रहै और एही प्रस्तुतहै क्या प्रसंगमें है इसमें मिताक्षराकारको प्रामाण्य और तिनको अप्रामाण्य उचितहै धर्म्म निरूपणके उद्देशकरके प्रवृत्तको प्राप्ततमहोणेसें क्या उनसे श्रेष्ठ होणेथें इसमें भी

अथ वाचस्पतिकल्पतरु विरोधान्मिताक्षरायाश्चेदप्रामाण्यं तर्हि मिताक्षरा विरोधाद्वाचस्पतिकल्पतर्वोरेवाऽप्रामाण्यंकस्मान्नस्यात् युक्तंतुतयोरेवाऽप्रा माण्यम् तयोर्ब्रह्मविचारार्थंप्रवृत्तयोस्तदंशे आप्ततमत्वेपि प्रकृतविषयेतद् ग्रंथस्यप्रासंगिकत्वान्मिताक्षराकारस्यतु धर्मविचारमात्रोद्देशेनप्रवृत्तस्यैवा त्राप्ततमत्वात् यत्परःशब्दःसशब्दार्थइतिन्यायात् ॥ अथमिताक्षराग्रंथएक स्तौतुद्वाविति संख्याधिक्यप्रयुक्तं प्राबल्यमितिचेद्धेतुविधयायुक्तत्वव्यवस्था पने संख्याधिक्यंकेनप्रकारेणापयुज्यताम् संख्याधिक्ये एवचेत्परितोपस्त र्हिदृश्यंतां नृसिंहप्रसादमदनरत्नादयः परमप्राचीनानिबंधाः ॥

युक्ति कहतेहैं यदिति जिसपर शब्दहै वोही शब्दका अर्थहै इस न्यायसे इहां धर्म्मपर शब्दहै ब्र ह्मपर नहि सो धर्म्मही इसका अर्थहै ? प्रश्न? मिताक्षरा ग्रंथ एकहै और वोहदोहैं अधिक संख्या वाला प्रवल होणाचाहिये ? उत्तर; ऐसाकहो तो कहतेहां जो हेतु विधिकरके व्यवस्थामे आवे सोई बलवान्हे हेतुविना चाहें कितने बहुतभी होवें सो संपूर्ण निर्बलहैं सो संख्याधिक्य किसत रह बलदेवेगा ॥ अब उनके पक्षको स्वीकारकर्के तिनके पक्षको हटातेहैं जेकर आपकोसंख्याधि क्यही अभिमत है तब तुमदेखो नृसिंहप्रसाद और मदनरत्न आदि वडे प्राचीनग्रंथ एहसभ इस जगा मिताक्षराके ही मतवालेहैं

अब इसीमें कहतेहैं कि माधवाचार्य्यजीके मत विषेभी व्यवहार्य्यहै और नरक नहीहुव होता इसीमें निश्चय प्रतीत होताहै जिसकारणसे तिनका मत जैसे युक्तियों करके विश द क्या प्रकट कर्के प्रतिपादन कियाहै तैसेहीहै (नापरं केचित्) इससे आरंभ करके प्रति पादन जो है सोउनकी अनिच्छाका चिन्ह नहीं किंतु उसमेभी उनकी इच्छाहै क्योंकि केचित् इतना कहकर जनायाहै कि एह सिद्धांतभी बहुत निबंधोंमें देखाहै इसर्थ और मतां तरों को कहकर वस्तुत इत्यादि करके जो विषय कहाहै तिसी विषे कैयोंके मतको कहणे विषे अनभिमत क्या अनिच्छाविषयके देखणेसे और प्रसंग विषे (अपरे) ऐसा कह कर

माधवाचार्य्याणामपि व्यवहार्य्यत्वएव निर्भरोलक्ष्यते यतस्तन्मतं यथो पपत्तिभिर्विशदं प्रतिपादितं तैस्तथांनापरं केचिदित्युपक्रम्य प्रतिपादनं तु नानभिमतत्वेलिंगम् केचिदित्यादिनापि सिद्धांत प्रतिपादनस्य बहुशो निबंधेषुदृष्टत्वात् मतांतरस्य वस्तुतस्तु सिद्धांतास्त्वित्यादिना प्रतिपादनएव केचित्त्वित्यादिना प्रतिपादिते ऽनभिमतत्वदर्शनात् प्रकृतेचापरेत्वित्यादि ना मतांतरस्य प्रदर्शनेन तत्र निर्भरस्यानुमातुमशक्यत्वादित्यलमनया निस्सारचर्चया ॥ तस्मात्कामकृतब्रह्मवधोप्यत्यंतपश्चात्तापादिरूपां प्रायश्चित्तार्हतांसम्यग्विभाव्य रागद्वेषौविहायात्यंतिककायक्लेशकरचतु र्विंशत्यब्दप्रत्याम्नायोपदेशेनचेदनुगृह्येत

मतांतर दिखाणे करके तिस विषे तिनका अभिप्रायहै इसके कहणेको अशक्य होणेसें अब कहतेहैं अलंहै इस असार चर्चाको इसको जितना वधाओ उतनी वढसकतीहै तिस कारणसे कामना कर्केभी किसीने ब्राह्मणका बधकियाहै और पीछे अत्यंत पश्चात्ताप कर्के प्रायश्चित्तकी योग्यताको वनाकर और रागद्वेषको छोड़ कर तिसमे प्रवृत्त हुवा २ अत्यंत देहके क्लेशको करणवाला जो द्विगुण प्रायश्चित्त २४ वर्षकाहै तिसको जो नहीं सहार सके तिसकेंताई प्रत्याम्नायके उपदेश करके लेकर अनुग्रह वाला होवे अर्थात् अनुग्रह करे

तब जैसा उपदेश शास्त्रकारोंकाहै तैसे उसको कहे और वोह तैसेही अनुतिष्ठित क्या अनुष्ठान करें तब तिसका पापनाश नहींभीहै तदभी इस लोकका व्यवहार उसका सिद्ध होवेगा एह इतने शास्त्रार्थसे सिद्धहुआ इस कारण थे कामकृत पापके स्थलविषेभी प्रायश्चित्तकरणा चाहिये ❀ अब दो श्लोक करके राज प्रशंसा पूर्वक प्रकरण की समाप्तिको कहतेहैं श्रीमदिति जोग्रंथ धर्म्मशास्त्रका कवियों विषे श्रेष्ट गंगारामहैं मुख्यजिनोविषे ऐसे पंडितोंने परिश्रमसे संग्रहकियाहै तिस विषे एह दूसराप्रकरण सिद्धिसंप्राप्नोतु क्या पूर्णहोताहुआ कैसा एह प्रकरणहै कि जो शुद्धहै फेर कैसाहै कि बुद्धिमानोंको आनंददेने वाला जो प्रायश्चित्तका निर्णय तिसका संबंधिहै फेरकैसाहै अधिकारिका वर्णनहै पहले जिसके क्या कर्के श्रीरणवीरसिंह महाराजकी आज्ञाको लेक

सचयथोपदिष्टंतद्धर्मतोनुतिष्ठेत्तर्हि स पापनाशाभावेप्यैहिकव्यवहारार्हः संपद्येतैव इतिसिद्धम् ॥ श्रीमत्प्रौढलरप्रतापतपनत्रस्ताखिलारिव्रजाज् जम्बूपत्तनतिब्बतक्षितिपतेर्धर्मस्यसाक्षात्तनोः भूपालावलिमौलिलाल्यचर णात्काश्मीरदेशेश्वरा दाज्ञांश्रीरणवीरसिंहनृपतेः प्राप्यार्थिचिंतामणेः १ पर्य्यालोचितधर्म्मशास्त्रनिवहै रेतत्सभासंगतै र्गंगारामकवीशमुख्यविबुधै र्यस्संगृहीतःश्रमात् प्रायश्चित्तविनिर्णयेप्रकरणंतास्मिन्बुधानन्ददे संप्राप्नो दधिकारिवर्णनमुखं सिद्धिंद्वितीयंशुभम् इतिश्रीमन्महाराजाधिराजजम्बू काश्मीरतिब्बताद्यनेकदेशाधीश प्रभुवररणवीरसिंहाज्ञप्तकविगंगारामसं गृहीतेधर्मशास्त्रमहानिबंधे प्रायश्चित्तभागेऽधिकारिप्रकरणं द्वितीयम् २

रके कैसा महाराजहै श्रीमदिति श्रीकरके युक्त जो अतिप्रताप सो भयासूर्य तिस करके त्रासको प्राप्तकियाहै शत्रुसमूह जिसने फेर कैसाहै जंब्विति जम्बूसे लेकर तिब्बत देश पर्य्यंत पृथ्वीका पतिहै और साक्षाद्धर्म्मकी मूर्त्तिहै और राजेयोंकी पंक्तिकी मौलि कर्के क्या मस्तक मणिकर्के लालितहैं चरण कमल जिसके और काश्मीरदेशका ईश्वरहै और चिंतामणिके तुल्यहै १ और कैसेहैं कविगंगाराम प्रभृति पर्य्यैति विचारित कियेहैं शास्त्रके समूह जिन्होंने फेर कैसेहैं कि एतदिति इस राजाकी सभा विषे संगतहैं ॥ ❀ ॥ इतिश्रीप्रायश्चित्तभागे भाषाटीकायामधिकारिप्रकरणंद्वितीयम् २ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

॥ द्वितीयंप्रकरणम् ॥ २

प्रकरणके आदिविषे मंगलाचरण करतेहैं स्वेति इसका अर्थपिच्छेहोचुकाहै तिस विषेकर्त्तव्यको प्रतिज्ञाकरतेहैं अथेति अधिकारी प्रकरण कहणेते अनंतर अधिकारिकों करणे योग्यजो प्रायश्चित्ततिसकै करणेकी इच्छाविषें सभाप्रकरण लिखीदाहै ॥ तो तिसप्रकरणके आदिविषें इसलोकके और परलोककेकल्याणका देणीजो महापातकादि तिसके नाशकरणे योग्यप्रायश्चित्त के उपदेशके निमित्त तिसका माहात्म्य वर्णन करतेहैं ॥ तिसविषे अंगिराऋषिका वचनहै उद्येति जैसे उदयको प्राप्तहोताही सूर्य संपूर्ण अंधकारको दूरकरताहै तैसेहि प्रायश्चित्तको करताहुआ

॥ श्रीरघुनाथोजयति स्वतोमित्वातत्त्वंश्रुतिरपियदीयंभगवतीगुहारूढंप्रो
चे सकलपुरुपार्थाद्यइहयःविचारेस्वेसक्तान् बिशदमतिदानेनसदयम् सध
र्म्मोस्मान्दीनानूवहुलमनुगृह्णातुभगवान् १ अथाधिकारिकर्त्तव्यताकां
क्षायां परिपत्प्रकरणं लिख्यते ॥ तत्रादावैहिकामुष्मिक भद्रप्रातिद्वंद्विमहा
पातकादिनाशकप्रायश्चित्तोपदेशाय तन्माहात्म्यंवर्ण्यते ॥ अंगिराः ॥ उद्य
च्छन्यद्वदादित्यस्तमः सर्वंव्यपोहति तद्वत्कल्याणमातिष्ठन्सर्वंपापंव्यपोहति
१ पापंचेत्पुरुषः कृत्वाकल्याणमभिपद्यते ॥ मुच्यतेपातकैःसर्वैर्महाभ्रैरिवचं
द्रमाः २ कल्याणं प्रायश्चित्तंतस्यावश्यकर्त्तव्यत्वमाह ॥ यमः ॥ तपसांतेवि
शुध्यंतिकर्मणांचपरिक्षयात् तस्मात्कर्त्तव्यमेतैस्तुप्रायश्चित्तंविशुद्धये १ कर्म
णांभोगेनपरिक्षयादित्यर्थः

संपूर्ण पापोंको दूरकरताहै १ पापमिति जेकरपुरुष पापको करके प्रायश्चित्तकोंकरे तो संपूर्णपापों से रहितहोताहै और निर्म्मलहोकर शोभताहै जैसेमहामेघोंसे रहितहुवा२ चंद्रमा शुद्ध प्रकाशताहै एह अभिप्रायहै चंद्रमावत् शुद्धहोताहै २ कल्याणनाम प्रायश्चित्तकाहै तस्येति तिसकी अवश्य कर्त्तव्यता कों कहतेहैं यमजीतपेति तपकर्के अंतविषें शुद्धहोतेहैं तप कर्के क्या प्रायश्चित्त कर्के दुष्कृत कर्मोंके नाशहोणेसें अर्थात् प्रायश्चित्त करणेसें उपरंत पुरुष शुद्धिकों प्राप्तहोतेहैं तिसकारणथें प्रायश्चित्त करणेयोग्यहै निष्पापहोणेके लिये इसीका अर्थ कहते हैं भोगकर्के कर्मोंका क्षय होणेथेंएह अर्थहै १

इसीको दृष्टांत कर्के कहतेहैं यथेति जैसे पाषाणविषें स्थितजो जलसो वायुकर्केऔर सूर्यके तेज कर्के सूखताहै तैसे सभाविषे स्थितजो बुद्धिमान् तिनूहोंकी आज्ञासें पुछणवालेपापिका पाप नष्ट होताहै २ इसीका अर्थस्पष्टकर्के कहतेहैं नैवेति सो पाप पापकरणे वालेकोंनहींप्राप्तहोता और न सभाकोप्राप्तहोताहै वोहपाप वायुसूर्यके संयोगसे जलकी न्याई नष्ट होताहै ३ ※ इसीकोंचतुर्विंशतिके मतविर्षे कहतेहैं जैसे सूर्यके तेजहोयां २ पृथ्वीमें जल सूकताहै तैसे सभाकर्के कर्णोके द्वारा श्रवण कियाहुवा पापीका पाप नष्टहोताहै १ इसीको प्रष्णोत्तरकर्के कहतेहैं ? प्रश्न ? प्रायश्चित्तके कीतयांहोयां ब्राह्मणकों निष्पापहोणेसें तबमैं संपूर्णकों पूछताहुं सो पाप स्वरूपकर्के कहांरहताहै २ ? उत्तर ? नैवेति पापनहीं कर्ताकों

यथाश्मनिस्थितंतोयं मारुतार्केणशुष्यति एवंपरिषदादेशान्नाशयेत्तत्रदुष्कृतम् २ नैवगच्छतिकर्त्तारं नैवगच्छतिपरिषदं मारुतार्कादिसंयोगात्पापंनश्यतितोयवदिति ३ चतुर्विंशतिमते॥यथाभूमिगतंतोयंघर्मपातेविनश्यतिएवंहि परिषद्दष्टंनश्यत्येतस्यदुष्कृतामिति १ एतदेव प्रष्णोत्तराभ्यांविशदीकरोतिप्रेति प्रायश्चित्तेयदाचीर्णेब्राह्मणेदग्धकिल्विषे सर्वंपृच्छामितत्त्वेनतत्पापंक्वनुतिष्ठति २ नैवगच्छतिकर्त्तारंनैवगच्छति परिषदम् मारुतार्कसमायोगात् जलवत्संप्रलीयते ३ यथाश्मनिस्थितंतोयं नाशयेतेऽर्कमारुतौ तद्वत्कर्त्तरितत्पापंनाशयेत्परिषद्विधिः ४ तेषांनेत्राग्निदग्धंतत्पापंतस्यतुधीमतःनश्यतेनात्रसंदेहः सूर्य्यदृष्टंहिमंयथेति ५ प्रायश्चित्तानंतरं पुनःपापरतिर्नस्यादित्याह।मनुः। अज्ञानाद्यदिवाज्ञानात्कृत्वाकर्मविगर्हितम् ॥ तस्माद्विमुक्तिमन्विच्छन् द्वितीयंनसमाचरेदिति

प्राप्त होता और न सभाकोंप्राप्तहोताहै वायु और सूर्यके तेजकर्के जलकीन्याईं नष्टहोताहै ३ पूर्वअर्थकोही स्पष्टकरके कहतेहैं यथेति जैसे पाषाण विषे स्थितजोजलहै तिसकों सूर्य और वायु नाशकरतेहैं तिसीप्रकार कर्त्ताविषे स्थितपापको सभाकी कहीहुई विधीदूरकरतीहै ४ तेषामिति तिन सभास्थित बुद्धिमानोंके नेत्रोंकी अग्निकर्केदग्धहुवा २ तिसबुद्धि मानकासोपाप दूरहोताहै इसविषें संशय नहीं तिसविषें दृष्टांतहै सूर्यकरके देखीहुईबर्फजेसेनष्टहोतीहै ५ इत्थेपापिको बुद्धिमान् इसकर्के किहाहै किपापके हटाणे वास्ते उसने यत्नकीताहै प्रायश्चित्तकरणेसे पीछे पाप करणे विषेरुचि न करे ऐसे मनुजी कहतेहैं अज्ञानेति अज्ञानसें वा ज्ञानसेंपापकर्मको करके पीछे तिस पापके दूरकरणेकी इच्छा वालाजो पुरुषहै सो फेरदूसरी वार पापकोनकरे इति

प्रायश्चित्तके करणेकी इच्छावाले जोपुरुषहैं तिन्हकों सभाविषे प्राप्तहोणा इसको अंगिराजी कहतेहैं अतइति इसथें उपरंत उपस्थानके लक्षणको कहतेहैं न्याय करके क्यानम्रता नमस्कारादि करके उपस्थितक्या सभाविषे प्राप्त हुवा हुवा व्रतके ग्रहण करणेके योग्य होताहै १ सद्यः क्या शीघ्रही पापका संशय दूर करणा चाहिये संशयसे रहित पापके होयां २ अनुपास्थितक्या सभाविषे पाप कहनेके विना तात्काले न भक्षण करे जेकर भक्षण करे तां पापकों अधिक कर्ताहै क्या अधिक पापको प्राप्तहोताहै और जेकर सभा उहांन होवे तद विना उपस्थितिके भी भोजनकरे उपस्थिति अर्थात् सभाको श्रवण कराणा २ सभा विषे असत्यको कहताहुवा पापको वधाताहै एह पाठ विद्वन्मनोहरा विषे कहाहै॥ संशेति पापके संशय होयां २ पापनिश्चय करणेसे विना नहीं भक्षण करणे योग्य और जैसे निःसंशय पाप विषे

प्रायश्चित्तकामानांपरिषदुपसर्पणमाहांगिराः ॥ अतऊर्ध्वंप्रवक्ष्यामिउपस्थानस्यलक्षणं उपस्थितोहिन्यायेनव्रतादेशनमर्हति १ सद्योनिःसंशयेपापेनभुंजीतानुपस्थितः भुंजानोवर्धयेत्पापं पर्षद्यत्रनविद्यते २ असत्यंपर्षदिब्रुवन्निति विद्वन्मनोहरास्थः पाठः ॥ संशयेतुनभोक्तव्यं यावत्कार्यविनिश्चयः प्रसादश्चनकर्तव्योयथैवासंशयेतथा ३ कृत्वापापंनगूहेत गूह्यमानंविवर्धते स्वल्पंवाथप्रभूतंवा धर्मविद्भ्योनिवेदयेत् ४ अयमर्थः यत्पापंप्रकाशकृतं तत्साकल्येनैव सभायां प्रकाशनीयं नतुकिंचिदपि ततोगोपनीयं यत्तुकर्तृव्यतिरिक्तेन केनाप्यदृष्टं रहस्यंपापं रहस्यप्रायश्चित्तार्हं तस्याप्रकाशनेपि न दोषः तेहिपापकृतोवैद्याहंतारश्चैवपाप्मनां व्याधितस्ययथावैद्याबुद्धिमंतोरुजापहाः १ प्रायश्चित्तेसमुत्पन्ने धीमान्सत्यपरायणः

दया करणे योग्य नहीं तैसे संशय युक्त विषेभी दया नहीं करणे योग्य ३ पापकों करके गुप्त न करे क्यों कि छपाया हुवा पाप, वृद्ध होताहै थोडा वा बहुत जो पाप कियाहै सो धर्मवेत्ताओंके ताईं कथनकरे ४ इसका अर्थ विस्तार करके कहतेहां जोपाप प्रकट करके कीताहै सो संपूर्ण सभाविषे प्रकट कथन करे किंचित्भी तिस पापकोंन छपावे ४ और जो पाप करणवाले से विना किसे नहीं देखया गुप्त होयाहै तिसका प्रायश्चित्त गुप्त करणे योग्यहै तिसके न प्रकट करणे विषे दोष नहीं इति अब सभास्थित विद्वानोंकी प्रशंसा करतेहां त इति जो पुरुष पापोंके नाशकरणे वाले हैं सोही पापकरणे वालोंके वैद्यकहेहैं जैसे रोगके दूर करणे वाले बुद्धिमान् रोगियांके वैद्यहैं १ अब तिस पापांको जैसा उचितहै तैसा कहतेहैं प्रायइति पापके होयां २ बुद्धिमान् सदा सत्य कहणे वाला

मृद्विति नम्र और निश्छलहुवा २ शुद्धिकीयाचनाकरेपुरुष २ और मौनकोंधारकरवस्त्रोंके सहितस्नान करके आर्द्रवस्त्रोंके साथ अर्थात् गिलेवस्त्रोंकेसाथ भलेप्रकारस्थितहोवे क्षत्री अथवा वैश्यतिसंपें अनंतरसभाकोप्राप्तहोवें ३ सर्वेति सबही ब्राह्मण धर्मके निश्चय करणवाले और रक्षाकरणे वाले द्विजश्रेष्टमेरेदेहकी शुद्धीकोकरें ४ मयेतिमैंने जानकर्के वा नजानकर्के महापाप कियाहै सोमेरे पर कृपाकरो और शुभजो शुद्धिकीआज्ञाहै सोदेवो ५ पूजने योग्यजो तुमहोआपके अनुग्रहसे मैं पवित्रकियाहुवाहोयों इसप्रकारसभाकोप्राप्तहोकर ऐसाकहकर पीछे शीघ्रही पापके भय कर्के पीडितहुवा २ पृथ्वीपरसंपूर्ण अंगोंको लगाकर ६ और सिरकर्केनमस्कारकरेवाणीकरकेउचारण

मृदुतार्जवसंपन्नः शुद्धिंयाचेतमानवः २ सचैलंवाग्यतःस्नात्वाक्लिन्नवासाः समाहितः क्षत्रियोवाथवैश्योवाततःपर्षदमाव्रजेत् ३ सर्वेधर्मविवेक्तारो गोप्तारस्सकलाद्विजाः ममदेहस्यसंशुद्धिंकुर्वंतुद्विजसत्तमाः ४ मयाकृतंमहा घोरं ज्ञातमज्ञातकिल्विषं प्रसादःक्रियतांमह्यं शुभानुज्ञांप्रयच्छथ ५ पूज्यैः कृतःपवित्रोहंभवेयंद्विजसत्तमैः उपस्थायततःशीघ्रमार्त्तिमान्धर णींव्रजेत् ६ गात्रैश्चशिरसाचैव नचकिंचिदुदाहरेदिति क्षत्रियवैश्यग्रहणं प्रायश्चित्ताधिकारिमात्रोपलक्षणम् वक्ष्यमाणलक्षणरहितानांपरिषद्योग्य त्वाभावबोधनाय ते ब्राह्मणाःकैश्चिद्विशेषणैर्विशेष्यंतेपराशरेण ॥ वेदवेदां गविदुषांधर्मशास्त्रंविजानताम् ॥स्वकर्मरतविप्राणांस्वकंपापंनिवेदयेदिति ॥

कुछ न करे इति ॥ इसमें क्षत्रिय वैश्यकाग्रहण इसकर्केहै कि ब्राह्मणलोक पठन पाठनके व्यव हारकरके प्रायश्चित्ती थोडेहैं और शूद्रोंको प्रायश्चित्तही थोडाहै वहुधा क्षत्रिय वैश्य विषें प्रायश्चि त्तका प्रयोगहै अथवा इसविषें क्षत्रिय वैश्यका ग्रहण कियाहै सो प्रायश्चित्तके अधिकारिमात्रके कथनकेलियेहै ॥ वक्ष्यमाणेति आगेजोकथनकरेंहैं लक्षण तिन्होंसें रहितजोहैं तिन्होंकोसभावि षें अयोग्यता जनानेंवास्तें कुछक विशेषणों करके ब्राह्मणोंको कहतेहैं पराशरजी वेदेति वे दांगके जाननेंवाले और धर्मशास्त्रके और अपनें कर्मोविषें युक्तजो ब्राह्मणहैं तिन्होंके आ गे अपने पापको कथन करे इति

यद्यपीति यद्यपि मन्वादिकों करके कहे जो धर्मशास्त्र तिन्हों के जानने मात्रकर्के ब्राह्मण प्राय-श्चित्तके करवाणेको समर्थहैं तथापि श्वानकर्के उच्छिष्ट हविः जैसे त्यागोदीहै इस न्यायसे तै-से नहि अध्ययन किया बेद जिनोंने और अपने धर्म कर्मके करणेसें जो रहितहैं तिन्होंने क-हा जो प्रायश्चित्त सो पापके दूर करणेविषें नहीं समर्थहोता तिसकारणसें धर्म कर्मके करणे विषें जो. युक्तहैं और वेदके पारको जो प्राप्त हुवेहैं तिनके समीप प्राप्तहोकर करणे योग्य जो प्रायश्चित्त ति-सका निमित्त जो पाप तिसको संपूर्णता कर्के निवेदन करे सो एह सभाविषें प्राप्तहोणेकी वि. धीहै ऐसे माधव और नंद पंडितोंने कहाहै॥ परिषदिति सभाके योग्यजोहैं तिन्होंके परिशेष क, रणे वास्ते अर्थात् योसभाकेयोग्यहै तिनेस्वीकारके अर्थ सभाके अयोग्यजोब्राह्मणहै तिनको पराशरजी कहतेहैं सेति श्रीसूर्य नारायणका मंत्रजो गायत्रीहै और संध्याका

यद्यपि मन्वादिधर्मशास्त्रज्ञानमात्रेण ब्राह्मणाःप्रायश्चित्तंविधातुं समर्था स्तथापि शुनालीढंहविर्यथेतिन्यायेनाऽनधीतवेदैः स्वधर्मानुष्ठानरहितै र्निर्दिष्टं प्रायश्चित्तं न पापापमोदनक्षमं तस्माद्धर्मनिष्ठान्वेदपारंगतानुपेत्य तेषामग्रेचिकीर्षितप्रायश्चित्तनिमित्तं पापमशेषेण निवेदयेत् सेयंपरिषदु पसत्तिरिति माधवनंदपंडितौ परिषद्योग्यानांपरिशेषयितुंपरिषदयो ग्यानाह पराशरः सावित्र्याश्चापिगायत्र्यास्संध्योपास्त्याग्निकार्ययोः अ ज्ञानात्कृषिकर्त्तारो ब्राह्मणानामधारका इति १ सवितुःसूर्यस्येयंसावित्री वरेण्यमित्यत्र णकारयकारविश्लेषेण चतुर्विंशत्यक्षरत्वाद्गायत्री चतुर्विं शत्यक्षरागायत्रीतिश्रुतेरितिमाधवः नंदपंडितास्तु पुनरुपनयने उप देश्या तत्सवितुर्वृणीमहे इतिसावित्रीविवक्षिता ॥

उपासन और अग्निहोत्र कर्म इनके न जाननेसें और खेतीके करणेवाले जो ब्राह्मणहैं सो केवल नाम कर्केहैं कोई यथार्थब्राह्मणनहि १ इसीका अर्थ स्पष्टकरके कहतेहैं सवितुरिति सविता-जो सूर्यहै तिसकी जो होवे सो सावित्री कहीहै सूर्यसावित्री विषे वरेण्य जो पदहै तिस विषे ण-कार और यकारको भिन्नगिणने कर्के चौवी २४ अक्षर होणेसें तिसका नाम गायत्री कहाहै श्रुति विषेभी कहाहै चौवीहैं अक्षर जिस विषे सो गायत्री कथन कीहै असे माधवजी कहतेहैं और जो नंदपंडितहैं सो दूसरी वार उपनयन विषे सावित्री उपदेश करणे योग्यहै तिस सावित्रीका स्वरूप (तत्सवितुर्वृणीमहे) इति इह सावित्री कथनकीहै ॥

तदिति और तत्सवितुर्वरेण्यं एह गायत्री कहीहै भेद करके उपन्यास होणेथे ऐसें कहतेहैं प्रथम उपनयन विषेभी क्षत्रियादिकों त्रिष्टुभादिसावित्रीकों पक्षभेदकर्के विधान होणेसें तिनके ग्रहणके वास्ते सावित्रीका भिन्न ग्रहणहै एहभी जाणलेणा परंतु एभी ध्यान रक्खोकि (तत्सावितुर्वृणीमहे) (तत्सवितुर्वरेण्यं) एहदोनो प्रतीकहै कांईसारामंत्रनहि अगलेके साथ-सारा जन्नणा ॥ ॥ गायत्रीति जो ब्राह्मण गायत्री आदिककों नहि जाणते सो केवल नाम कर्के ब्राह्मण हैं क्या सो अमुख्यहैं अतइति इसकारणसे तिनको जो विकावारते कृषिकर्महै यज्ञ किसेकों कराणा इत्यादिकर्म्ममे न समर्थ होणेसें यथेति जैसें काष्ठका हस्ती चर्मका मृग विद्यासें रहित ब्राह्मण एहत्रयही केवल नाममात्र कर्केहें १ यथेति जैसें स्त्रियों

तत्सवितुर्वरेण्यमितिचगायत्रीविवक्षिता भेदेनोपन्यासादित्याहुः प्रथमोप नयनेपिक्षत्रियादेस्त्रिष्टुभादिसावित्र्याः पक्षभेदेनविधानात्तत्संग्रहाय सावित्र्याः पृथगुपादानमित्यपिबोध्यम् गायत्र्यादीनामज्ञानात्तेब्राह्मणानामधारका अमुख्याइत्यर्थः अतस्तेषां याजनादेरसंभवाज्जीवनार्थंकृषिकर्तृत्वमिति यथाकाष्ठमयोहस्तीयथाचर्ममयोमृगः ब्राह्मणस्त्वनधीयानस्त्रयस्तेनामधारकाः १ यथापंढोऽफलःस्त्रीषुयथागौरूषराऽफला॥ यथाचाज्ञेऽफलंदानं तथाविप्रोऽनृचोऽफलः २ ग्रामस्थानंयथाशून्यंयथाकूपस्तुनिर्जलः यथाहुतमनग्नौचअमंत्रोब्राह्मणस्तथा ३ व्यासः॥ ब्रह्मबीजसमुत्पन्नोब्रह्मसंस्कारवर्जितःजातिमात्रोपजीवीयः सभवेन्नामधारकः १ ब्राह्मणब्रुवसंज्ञा चतुर्विंशतिमते॥गर्भाधानादिसंस्कारैर्वेदोपनयनैर्युतः नाध्यापयतिनाधीते सभवेद्ब्राह्मणब्रुवइति इमे न पारिषद्योग्या इत्याह पराशरः

विषे नपुंसक और कल्लरवालीपृथ्वी और अज्ञकों त्या मूर्खकों दानदेणा एह जैसे निष्फलहैं तैसे वेदसेंरहित ब्राह्मणभी निष्फलहै २ ग्रामेति जैसे ग्रामस्थान धर्मसें शून्यहै और जलसें रहित खूवा अग्निसे विना हवन निष्फलहै तैसे मंत्रसें रहित ब्राह्मण अफल कहाहै ३ इसमे व्यासजीका वचनहै ब्रह्मेति जो ब्रह्म बीजसें उत्पन्नहुवाहै और ब्रह्म संस्कारसें रहितहै सो केवल जातिमात्रकर्के उपजीविका कर्ताहै सो नामधारक कहाहै १ ब्राह्मणब्रुवसंज्ञा चतुर्विंशतिके मतविषें कहीहै गर्भेति गर्भाधानादि संस्कारोंकरके वेद और उपनयनकर्के जोयुक्तहै और न किसीकों विद्यापढाताहै औरन आप पढताहै सो ब्राह्मणब्रुव कहीदाहै एह सभाके योग्य नहिहैं ऐसे पराशरजी कहतेहैं

अव्रतेति प्राजापत्यादि व्रतोंसे हीन और वेदसेंभी रहित केवल ब्राह्मणजातिकके उपजीविका करणे वाले जो हजारोंभी एकत्र होण तथापि तिनकोधर्मसभा बिषे अधिकारनहींकहा १ अध्य यनादिसें रहित पुरुषोंकीन्यांई नास्तिकोंकोभी सभाधिकारनहीं॥ तैसे चतुर्विंशतिमतविषेकहाहै वे देतिवेदपठनसें रहित और जोधर्मशास्त्रसेंभीरहितहैं तिनोंकोसभाकाअधिकार नहींकहा और नास्तिकोंको विशेषकर्केनहीं १ अनाहितेतिअग्निहोत्रसें रहित और अज्ञानीकेवल वेदपाठकेजानने वाले और पीछेनिंदा करणेवाले और क्रूरकर्मोकेकरणेवाले जोहैं तिनको परिषत् काअधिकार नहींकहा २ अब और सभाकेअनधिकारियोंकोकहतेहैं शास्त्रेति शास्त्रकेजाननेवालेभीहैं परंतु दुष्टकर्मोकेकरणे वाले और प्रतिकूल क्या उलटेस्वभाववाले और असूयककया निंदक और हेतुक

अव्रतानाममंत्राणांजातिमात्रोपजीविनां सहस्रशःसमेतानां परिषत्त्वंनविद्यते इति १ अव्रताःप्राजापत्यादिव्रतहीना अमंत्रा वेदरहिताःअध्ययनादिहीनवन्नास्तिकादीनामपि परिषत्त्वंनास्ति॥ तथाचतुर्विंशतिमते॥ वेदपारमतीतायेधर्मशास्त्रविवर्जिताःपरिषत्त्वंनतेषांस्यान्नास्तिकानांविशेषतः १ अनाहिताग्नयोऽज्ञानाःकेवलोवेदपारगाः॥ पिशुनाःक्रूरकर्माणःपरिषत्त्वंनविद्यते २ शास्त्रज्ञादुष्टकर्माणःप्रतिकूलास्त्वसूयकाः॥ हैतुकाभिन्नमर्यादास्तेचपरिषद्विवर्जिता इति ३ हैतुकाहेतुवादेनसद्धर्मनिंदकाः॥ पाराशरोपि॥ शत्रवोदुष्टकर्म्माणः प्रतिकूलाःसदैवतु हिंसकाभिन्नमर्य्यादास्तेवैपर्षद्विवर्जिता इति१ एवंपूर्वोक्तानांप्रायश्चित्तकथने दोषमाह। पराशरः। यद्वदंतितमोमूढामूर्खाधर्ममतद्विदः तत्पापंशतधाभूत्वातद्वक्तृृन्नधिगच्छति १ अज्ञात्वाधर्म्मशास्त्राणि प्रायश्चित्तंददातियः प्रायश्चित्तीभवेत्पूतः किल्विषंपरिषद्व्रजे दिति २

क्याहेतुओंकरके शास्त्रकी निंदा करणे वाले और धर्ममर्यादाके दूरकरण वाले जोहैं सो सभामें वर्जितकहेहैं इति ३ इसीअर्थकोपाराशरजीस्पष्टकरकेकहतेहैं शत्रवइतिहिंसाकरणेवाले असेयोंने जो प्रायश्चित कथन करणाहै तिसविषे दोषको पराशरजीकहतेहैं यदिति जो कहतेहैं अज्ञानी मूर्ख धर्मको और आपकैसेहैं अतद्विदः क्या धर्म्मको नहीं जाणते किंतु अधर्मजानने वाले हैं सो पाप शतप्रकारका होकर असे कथनकरणेवाले अज्ञानियोंको प्राप्त होताहै १ अज्ञात्वेति धर्मशास्त्रोंको नजान कर्के जो प्रायश्चित्तको देताहै तिससेभी प्रायश्चित्ती शुद्धहोताहै और सभा पापको प्राप्तहोतीहै इति २

अनेति इन वचनोंके अर्थको माधवजी कहतेहैं सतीति हैभी धर्मशास्त्रके पाठका और तिसके अर्थकाज्ञान तथापितिसकीन्यायकर्के निर्णय विषे चातुर्य्यताके अभावकर्के प्रसंगविषे प्राप्तहुवाजो सूक्ष्म प्रायश्चित्तविशेष तिसका नजानणा एह एकवचनहै और धर्मशास्त्रके परिज्ञानके होयां २ धर्मशास्त्रका भलीप्रकार न विचारणा एह दूसरा बचनहै तत्रेति तिनदोनोंमेंसे एकभी जिसजगा जो प्रायश्चित्त उपदेशकरीदाहै तदसो पाप सौप्रकारका होकर प्रायश्चित्तकेकहणे वालोंको प्राप्तहोताहै ॥ अब इसमें और विचारकरतेहैं तत्रेति तहां पूर्व कहाजो आपका अज्ञान तिसके होयां २ पापीभी विधि पूर्वक प्रायश्चित्तके नकरणेसें नहींशुद्धहोता इसपक्षमें दोनोंको दोषहै दूसरे अज्ञान विषे पापीने यथाविधि प्रायश्चित्तके विधान करणेसें शुद्धहोवीदाहै और कहनेवाला दो

अनयोश्चवचनयोरेवमर्थमाह माधवः सत्यपि धर्मशास्त्रपाठेन्यायनिर्णये कौशलाभावेन प्रकृतस्य सूक्ष्मस्य प्रायश्चित्तविशेषस्याज्ञानमेकं सत्यपि परिज्ञानेधर्मशास्त्रापरिशीलनमपरं तत्रान्यतरवतापि यत्रप्रायश्चित्तमुपदिश्यते तत्र तत्पापंशतधाभूत्वावक्तृनेवप्राप्नोति तत्राद्यज्ञानेकिल्विषिणोऽपि यथाविधिप्रायश्चित्ताननुष्ठानात्सनपूयते परत्राज्ञानेच किल्विषिणायथाविधिप्रायश्चित्तविधानात्पूयते वक्तातुदुष्यति पाठपूर्वकज्ञानेसतितदुपदेशस्यैव पापनाशकत्वेनस्मरणात् ऋषिवक्त्रोद्गतान्धर्मान् गायंतोवेदवित्तमाइति वचःपूर्वमुदाहार्य्ययथोक्तंधर्मवक्तृभिः पश्चात्कार्यानुसारेण शक्ताः कुर्युरनुग्रहमितिच १ विद्वन्मनोहरायांतुपूर्वोक्तद्विविधाज्ञानवताप्युपदिष्टेनप्रायश्चित्तेन किल्विषी न पूयतेयद्विनाधर्मशास्त्रेणप्रायश्चित्तंविधीयते नैवशुद्धिमवाप्नोतिप्रायश्चित्तकृतेऽपिसइति २ वृद्धशातातपस्मरणात्

षको प्राप्तहोताहै इतना भेदहै अबइसमें हेतु कहतेहां पाठेति पाठपूर्वक ज्ञानके होयां २ तिस प्रायश्चित्तके उपदेशको हि पापनाशकता कर्के स्मरणहोणेसें तिनवचनोंको कहतेहैं ऋषीति ऋषियोंके मुखसे उच्चारणहुवे जो धर्म तिनको गायन कर्तेहुवे वेदवेत्ता एक एह वचनहै और ऐसे वचनपूर्वक कथनकरे जैसे धर्मवेत्ताओंने कहाहै और पीछे कर्मानुसार कर्के समर्थहैं प्रायश्चित्त करवाणेको एह ओर वचनहै १ ॥ विद्वन्मनोहरा ग्रंथविषे इनवचनोंको औसेलगायाहै पूर्व कहा जो दोप्रकारका अज्ञान तिसवालेकर्के उपदिष्ट हुवा जो प्रायश्चित्त तिसकर्के पापीनहीं शुद्धिको प्राप्तहोता इसमें हेतुदिखातेहैं यदिति जोधर्मशास्त्रसे बिना प्रायश्चित्त विधान करीदा है सो पुरुष प्रायश्चित्तके कीतेहोयांभी शुद्धिकोंनहीं प्राप्तहोता २ इसवृद्धशातातपजीकेस्मरणसें

अन्वति अनुवादककोंक्या प्रायश्चित्तकेसुनाणे वालेकोंपाठपूर्वकज्ञानआवश्यकहै एह प्रयोजन अज्ञात्वाधर्मशास्त्राणि)इत्यादिश्लोककर्केकहाहै क्याधर्मशास्त्रकों न जानकर जो प्रायश्चित्तकहता हैं सो पाप कहनेवालेकोप्राप्तहोताहै और पापीशुद्धहोताहै धर्मशास्त्र पाठ और न्यायकर्के निर्णय एहदोनों सभाविषे स्थित होनेवालोंको उचितहैं एह प्रयोजन पहिले कहेहुवे श्लोककर्के अर्थात् यद्वदंतीत्यादिश्लोककर्केग्रहणकीताहै एहनिर्णयहै ॥अब विचारांतरकहतेहैं धर्म्मेतिधर्म्मशास्त्रके ज्ञान होयां २ और न्यायनिर्णयक्या चतुराईके भी होयां २ ननिश्चयहोणाइत्यादिक चित्तविषे प्राप्तहुई जो दोषकी आशंका तिसके दूर करणेवास्ते अपने तुल्यजो चार बुद्धिमान्हैं तिनके साथ संवाद

अनुवादकस्यापि पाठपूर्वकज्ञानवत्त्वमावश्यकमितित्वज्ञात्वाधर्मशास्त्राणी तिवचनेनाभिधीयते पाठन्यायनिर्णयोभयवत्त्वंचपर्षदः पूर्वश्लोकेनैवसंगृ ह्यतेइत्युक्तं धर्मशास्त्रपरिज्ञानस्य न्यायनिर्णयकौशलस्य सद्भावेप्यन वधानादिचित्तदोषाशंकाव्युदासायस्वसमानैश्चतुरैःसहसंवादोऽपेक्षित इ त्याहपाराशरः ॥ चत्वारोवात्रयोवापियंब्रूयुर्वेदपारगाःसधर्मइतिविज्ञेयोने तरैस्तुसहस्रशइति १ सत्यपि त्रिचतुराणांपरस्परसंवादेविप्रकीर्णेष्वनेके षु धर्मशास्त्रेषुक्वापिकस्यचिद्विशेषस्य संभवात्प्रायश्चित्तनिर्देशवेलायांपुनः शास्त्राणिपर्य्यालोच्यैव निर्देष्टव्यमित्याह पाराशरः प्रमाणमार्गंमार्गंतो यंधर्मंप्रवदंतिवै तेषामुद्विजतेपापंसद्भूतगुणवादिनामिति २

करणे योग्यहै असेहीपाराशरजी कहतेहैं चत्वार इति चार वा तीन वेदकेजानने वाले मिलक र्के जिसधर्म्मको कहैं सोही धर्म्म जानने योग्यहै इससे इतर हजार भी मिलकर्के कहैं सो नहीं धर्म्म जानणा १ सत्यीति सभाविषेहोणेवालेजो तीन वा चारहैं तिनकेआपसविषे संवादके हो यां२ भी विवादवाले जो अनेकधर्म्मशास्त्र तिनोंमें से किसे स्थानविषे किसीप्रायश्चित्तविशेषकर्के तिस पापके दूर करणे वास्ते विद्यमान होणेसे प्रायश्चित्तके कथनसमयविषे फेर शास्त्रोंको विचा रकर्केदिखाने योग्यहै इसीको पाराशरजी कहतेहैं प्रमेति पापको निवृत्तकरणेवाला जो प्रायश्चित्त असेप्रमाण मार्गको ढूंडतेहुवे जो धर्मकोंकहतेहैं तिन श्रेष्ठगुणवादियोंका पाप दूर होताहै इति२

विद्वन्मनोहराविषें तुपुनः प्रायश्चित्तके विधान करणे वाले जो शास्त्र तिनकर्के सभाविषें निर्णीत हुवा जो अर्थ तिसविषें विवाद कैसे करणे योग्यहै इहप्रमाणमार्गमित्यादिआकांक्षा वाक्य कर्के दूरहुई एह कहागया ॥ अब कथन करणेवालोंको उत्साहदेतेहैं उक्तेति कहाहै लक्षण जिनका ऐसे जो सभा विषें रहणेवाले तिनकर्के कथन किया जो प्रायश्चित्ततिस कर्के पाप दूर होताहै फे रसभाको नही प्राप्तहोता ऐसे पराशरजी कहतेहैं यथेति जैसेपृथ्वी विषें जल सूर्यकी किरणोंसें शुद्धहोताहै अर्थात् नष्ट होताहै इसजगा शुद्धि अभावका नामहै तिसप्रकार पुरुषका पाप सभाके देखनेसें नष्ट होताहै १ नेतिसोपाप न कर्त्ताको और न सभाको प्राप्त होताहै वायु और सूर्यकीकिरणोंके संयोगकर्के जलकी न्याई नष्टहोताहै २ अब प्रायश्चित्त कहणे वालोंको भी प्रायश्चित्त कहतेहैं आत्मेति तिसथें उपरंत आत्मकृच्छ्रको करे

विद्वन्मनोहरायांतु विधायकैरपिपर्षन्निर्णीतेऽर्थेसंवादःकथंकार्य इत्याकांक्षा ऽनेनशाम्यत इत्युक्तं उक्तलक्षणैःसभ्यैरुपदिष्टेनप्रायश्चित्तेनपापंनश्यत्ये वनपुनःसभ्यादीन् प्रति संक्रामतीत्याहपराशरः॥ यथाभूमिगतंतोयमर्कपा तेनशुध्यति एवंहिपरिषद्दृष्टं नश्यत्येतस्यदुष्कृतम् १ नैवगच्छतिकर्त्तारं नै वगच्छतिपर्षदं मारुतार्कादिसंयोगात्पापंनश्यतितोयवदिति २ आत्मकृच्छ्रं ततःकुर्य्यात् जपेद्वावेदमातरमिति पर्षत्प्रायश्चित्तविधानंतु प्रायश्चित्तोपदे शनिमित्तकपापांतरनाशायेति नतेनाऽस्यविरोधः ॥ कार्य्यतारतम्येन पर्ष दोमुख्यानुकल्पभेदानाह।पराशरः।चत्वारोवात्रयोवापिवेदवंतोऽग्निहोत्रिणः ब्राह्मणानांसमर्थायेपरिषत्साविधीयते १ अनाहिताग्नयोयेऽन्ये वेदवेदांग पारगाः पंचत्रयोवाधर्मज्ञाःपरिषत्साप्रकीर्त्तिता २ मुनीनामात्मविद्यानां द्विजानांयज्ञयाजिनाम् ॥ वेदव्रतेषुस्नातानामेकोपिपरिषद्भवेत् ३

अथवा गायत्रीको जपे इति पर्षत्को जो प्रायश्चित्तका विधानहै सो प्रायश्चित्तके उपदेशके निमित्तकर्के हुवा जो पापांतर तिसके नाशवास्तेकहाहै तिसकर्के प्रायश्चित्त विधानका (नैवगच्छतिपर्षदं) इसके साथ कोई विरोधनहींहै ॥ ● ॥ अबकार्य्यकी न्यूनता और अधिकता होणे कर्के पर्षत्के मुख्य और अनुकल्प भेदोंको पराशरजी कहतेहैं चत्वारइति चार वा तीन वेदके जानने वाले अग्निहोत्री होंण तिनोंकर्के परिषत् कहीहै परंतु इसमे ऐसा विचार है कि जो तीन कहेहैं सो कर्म कांड कर्के युक्त होवें तद पर्षत् केयोग्यहोतेहैं १ अनेति और जो निरग्निक वेदवेदांगके जाननेवाले पंच वा त्रय धर्मज्ञहैं तिनोंकर्के भी सभाकथन कीहै २ मुनीति मुनीजो आत्मविद्याविषें और यज्ञके करणे वाले ब्राह्मण वेदव्रत विषें संपन्न तिनमेंसे एकभी परिषत् होताहै क्या सभाके योग्यहोताहै ३

पञ्चेति पूर्वमैने पंच कथनकियेहैं और पांचोंकेअभावविषे तीनकहेहैं जो श्रेष्टजीविका करकेयुक्तहैं ऐसे तीनककेभी सभाकहीहै ४ (स्ववृत्तिपरितुष्टाये) एह विद्वन्मनोहराविषे पाठकहाहै इसका अर्थ एह है ॥ किजो अपणी वृत्ति जिसको विहितहै तिसककेपरितुष्टहैं ॥ और पूर्वोक्तकाहि अर्थ कहतेहैं ग्रामेति जो ग्रामादिकों विषे वेदविद्यादिक गुणोंककै युक्त हैं ब्राह्मण तिनोंविषेभी अत्यंत जो समर्थहैं ऐसे चारभी होवेंतो तिनों ककै भी सभाकहीहै चारके अभाव बिषे तीनकी परिषत् कहीहै एह पक्ष दो २ साग्निकके विषे कहेहैं साग्निकोंके अभाव विषे निरग्निक ब्राह्मणोंकी सभाग्रहण करणो निरग्निकोंविषे पंच ग्रहण करणेएह मुख्यपक्षहै और तीनभी जानने इनदोनोंपक्षोंके अभावविषे मुनियोंके विषे एककोभी

पंचपूर्वमयाप्रोक्तास्तेषांचाऽसंभवेत्रयः सुवृत्तिपरिपुष्टायेपरिपत्साप्रकीर्तिता ४ अत्रस्ववृत्तिपरितुष्टाये इति विद्वन्मनोहराधृतःपाठः ग्रामादौवेदविद्यादिगुणसंपन्नायेब्राह्मणास्तत्रापि येऽत्यंतंसमर्थास्ते चत्वारो मुख्या परिषत् तदभावे त्रयोवा परिषत् पक्षद्वयमेतदाहिताग्निष्वभिहितं तदसंभवेऽनाहिताग्नयोवा ग्राह्याः तत्रापि पंचेतिमुख्यः कल्पः त्रयइत्यनुकल्पः एतत्पक्षद्वयासंभवे एकस्यापिपरिषत्त्वंमुनीनामित्यादिनोक्तम् आत्मनि ब्रह्मणि विद्यानुभवोयेषां तेआत्मविद्याः यज्ञैरिष्टवंतोयज्ञयाजिनः वेदानामृगादीनां चतुर्णामध्ययनादावनुष्ठितानि वेदव्रतानि तद्व्रतसहितेषु वेदेषु समाप्तेषु यथाविधिस्नाताः यद्वा शिरोव्रतेषु स्नातानामिति पाठः ॥ आथर्वणिकानांहिवेदव्रतेषु शिरोव्रतमेव मुख्यंव्रतं तथाचाथर्वणिका आमनंति ॥ क्रियावन्तः श्रोत्रिया ब्रह्मनिष्ठाः

सभाका अधिकार इसककेकहागया ॥ आत्माविषेक्या ब्रह्मविषे अनुभवहै जिनोंकोसो आत्मविद्य कहेहैं औरयज्ञोंककै जो पूजितेहुवे सो यज्ञयाजीहैं औरऋग्वेदसे आदिलेके जो चार वेदहैं तिनके अध्ययन करणेविषे अनुष्ठान करणे योग्य जो व्रत तिनव्रतोंके साथ वेदोंके समाप्त होयां विधिपूर्वक कियाहै स्नान जिनोंने यद्वा(शिरोव्रतेषुस्नातानां)एहपाठ जानना शिरोव्रतेष्विति शिरोव्रतविषे कियाहै स्नानजिनोंने और अथर्ववेदके जानने वाले जो ऋषीहैं तिनको वेदव्रतों विषे शिरोव्रत ही मुख्यव्रतहै तैसेही अथर्ववेदके जानने वाले शिरोव्रतको मानतेहैं औरकर्मोंके करणे वाले और श्रोत्रियक्या वेदविद्याके जानने वाले और ब्रह्मविषेहैंश्रुतिस्मृतिके अनुसार स्थितिजिनोंकी

स्वेति आपही औसेजो एकऋषिनामअग्निकों श्रद्धयन्तः क्या श्रद्धाकर्केहुवे हवनकर्तेहैं तिनकेताई इस ब्रह्मविद्याको कहे जिनोने विधिपूर्वक शिरोव्रत कियाहै औरोंको नहीं कहणा इति पूर्व जैसे कहेहैं संपूर्णगुण तिनकर्के युक्त जो ब्राह्मणहैं तिनब्राह्मणोंमेंसे एकभीहोवे तो सभाके योग्यहै औसे चपुनः पंचपक्षकहेहैं दो दो पक्ष साग्नि औौर निरग्नियां विषे जानणे और एकपक्ष अध्यात्म विद्याविषे जो युक्तहै तिसविषेजानणाइसप्रकार पंचपक्ष जानणे एनां संपूर्णांके अभाव विषे जो कोई अपनीजिविकाकर्केसंतोषीहैं और विपत् कालविषे भीनिषिद्धजीविकाकेनाग्रहणकरणे कर्के

स्वयंजुह्वंत एकऋषिं श्रद्धयंतस्तेषामेवैतांब्रह्मविद्यांवदेत शिरोव्रतं विधिवद्यैस्तुचीर्णामिति यथोक्तगुणसंपन्नब्राह्मणेष्वेकोपि परिषद्भवति एवं चपंचपक्षाःप्रोक्ताः साग्न्यनग्निकानां द्वौ द्वौ अध्यात्मविदस्त्वेकइति एषां सर्वेषामभावे ये वा के वा स्ववृत्तिपरितुष्टा आपत्कालेप्यापद्वृत्त्यनाश्रय णेनयथाकथंचिद्विहितप्रतिग्रहादिभिरेवकृतनिर्वाहास्तेत्रयोऽपिपर्षत्संज्ञांल भंते। बृहस्पतिरपि। लोकवेदांगतत्त्वज्ञाःसप्तपंचत्रयोपिवा यत्रोपविष्टावि प्रास्स्युःसायज्ञसदृशीसभेति अंगिरसाप्यत्रप्रदर्शिताविकल्पाः॥ चत्वारो वात्रयोवापिवेदवंतोऽग्निहोत्रिणः॥ हेतौसम्यक्श्रिताविप्राःकार्य्याकार्य्य विनिश्चिताः १ प्रायश्चित्तप्रणेतारःसप्ततेचप्रकीर्तिताः एकविंशतिभि श्चान्यैःपरिषत्त्वंसमागतैः २

जैसे कैसे श्रेष्ठप्रतिग्रहकर्केकीता है निर्वाहजिनोंनें अयसे त्रयभी सभाकीयोग्यताकों प्राप्तहोतेहैं बृहस्पतिजीका भीवचनहै लोकेति लोकमर्यादा और वेद और वेदांगकों जो यथार्थजानतेहैं सप्त वापंचवा त्रय जिस सभा विषेहोंण सो सभा यज्ञकेतुल्य जानणी॥ अंगिराऋषिनेंभी इस विषे वि कल्पदिखायाहै चेति चार वात्रयकहेहैं जो वेदविद्या और अग्निहोत्र विषे युक्त सो पापकेदूरकरणे वाले कारण विषे भली प्रकार युक्तहें और कार्य अकार्यके निर्णयकरणे वाले १ अयसे प्रायश्चि त्तकेकहनवाले सप्तकहेहैं इनां लक्षणोंतें अन्य जो ब्राह्मणहैं तिनां इकीयां २१ कर्के सभाकहीहै२

सेतिकेवल सावित्रीके जानणे वाले और कीताहैवेदव्रतजिनोंनें अयसें इक्कीयां २१ ब्राह्मणोंकर्के सभाहोतीहै एहपिचले श्लोककेसाथ जान्नणा और यति और अग्र्यूविद्यकयामीमांसाकेपढेहोए और वेदकेपढाणेवाले और आत्माके पूजनेवाले २ और शिरोव्रतोंकर्केकीता हैस्नान जिनांन तिनांके मध्यविषे एककर्के भी सभा होतीहै एहसभा लघुकार्य्यविषे जानणी और मध्यमकार्यं विषे मध्यमजानणी और महापातकांके चितनकरणेविषे वहुतयांके मिलनेकर्के सभाहोतीहै सो भी वहुतवार करणी चाहिए ४ अवमनुजीका वाक्यहै त्रैविद्यइति वेदत्रयके संवंधि जो शाखात्रय तिनांके जानणे वाले तीन १ और हेतुक क्या मीमांसाके जानणेवाले ४ और नैयायिक ५ और यास्कादि कर्केरचयाजोशास्त्र जिसके पाठक

सावित्रीमात्रसारैस्तुचीर्णवेदव्रतैर्द्विजैः यतीनामग्र्यविद्यानांध्यायिनामात्म याजिनाम् ३ शिरोव्रतैश्चस्नातानामेकोपिपरिषद्भवेत् एषालाघवकार्येषु मध्यमेषुतुमध्यमा महापातकचिंतासु शतशोभूयएवचेतिशतशःपूर्वोक्ताब्रा ह्मणाःपर्षत् तत्रापि भूयःपर्षदनंतरंपर्षदित्यर्थः ४ मनुः।त्रैविद्योहैतुकस्तर्की नैरुक्तोधर्मपाठकः। त्रयश्चाश्रमिणःपूर्वे पर्षदेषादशावरा १ त्रैविद्यइतिवेद त्रयसंवंधिशाखात्रयाध्येतारः३ हैतुकोमीमांसकः४तर्की ५ नैरुक्तोयास्कादि प्रणीतशास्त्रपाठी ६ धर्मपाठकोमानवादिधर्मशास्त्रवेदी ७त्रयश्चाश्रमिणो व्रह्मचारिगृहस्थवानप्रस्थाः१०अंगिरःपराशरौ चातुर्विद्योविकल्पीच अंग विद्धर्मपाठकः॥ त्रयश्चाश्रमिणोवृद्धाःपर्षदेषादशावरा १ अंगिराः॥ एकविं शतिसंख्यातैर्मीमांसान्यायपारगैः वेदांतकुशलैरेवपर्षदेवंतुप्रकल्पयेत् १ यमः॥ एकोद्वौवात्रयोवापियद्ब्रूयुर्धर्मपाठकाः सधर्मइतिविज्ञेयोनेतरेषांसह स्रशइति १ इतरेषांधर्म्मपाठहीनानांसहस्रशःसमेतानामपिकथनान्नध र्म्मसिद्धिरित्यर्थः

रुपवाले ६ और मनुआदिकोकर्के कहेजोधर्मशास्त्र तिनांके जानणेवाले ७ चपुनः त्रय आश्रमी एक व्रह्मचारी और दूसरा गृहस्थ और तीसरावानप्रस्थ इनांकी सभादससा १० कोहोई इसी कर्के अवराक्याछोटोहे १ अवअंगिरा और पराशरजी कहतेहैं चारवेदकेजानणेवाला और नैयायिक और वेदांगके जानणेवाला और धर्मशास्त्रकापाठक और त्रय आश्रमी एहदससा १० की पर्षत् कहीहै १ अवअंगिरऋषिकहतेहैं मीमांसा न्यायके जानणे वाले और वेदांतशास्त्र विषे चतुर अयसे इक्कीयां कर्के सभाकोंकल्पनकरे एह वडेकार्य्यविषे जानणी १ यमजीकावचनहै एक १ वा दो २ वात्रय धर्मशास्त्र के जानणेवाले जो कहण सोधर्म जानणेयोग्यहै इनांते इतर हजार भी एकत्र होकरकहण तदभी सोधर्म्म नहिजान्नणा १

मनुजीने त्र्यवरा क्या तीन तक भी सभाकहीहै धर्म संशयके निर्णयकरण विषेभी दिखाईदीहै इस जगा आद्यशब्द कर्के चार पांच आदिभी सभा होतीहै ऋगिति ऋग्वेदके जानणे वाला और यजुर्वेद और सामवेदके जानणे वाला इनां कर्के त्र्यवरानाम सभाजानणे योग्य है १ अब होर छोटा पक्ष कहतेहैं एक इाते एक भी वेदके जानणेवाला उत्तमब्राह्मण जिस धर्मनूं निश्चयकरे सोहि परमधर्म जानणे योग्य है अज्ञ क्या मूर्ख हजारोंभी होण तिनांकर्के कहेहोयेको यथार्थ नहि जानणा २ अव्रतेतिजोव्रत और मंत्रतेरहित केवल जातिमात्रकर्के उपजीविकाकेकरणेवाले हजारांभी एकत्र होण तथापि तिनांकी सभानहिकही ३ धर्मविवृतिग्रंथविषेकहाहै पातकविषेसौ १०० कर्के और महापापविषे

त्र्यवराद्यापिपर्षन्मनुनाप्रोक्ता ऋग्वेदविद्यजुर्विच्चसामवेदविदेवच त्र्यवरापरिषद्ज्ञेयाधर्मसंशयनिर्णये १ एकोपिवेदविद्धर्मंयंव्यवस्येद्द्विजोत्तमः सविज्ञेयःपरोधर्मोनाज्ञानामुदितोयुतैः २ अव्रतानाममंत्राणांजातिमात्रोपजीविनाम् सहस्रशःसमेतानांपरिषत्त्वंनविद्यते ३ धर्मविवृतौ ॥ पातकेपुशतंपर्षत्सहस्रंमहदादिषु॥ उपपापेषुपंचाशत्स्वल्पेस्वल्पातथाभवेत् १ क्षत्रियवैश्ययोः प्रायश्चित्तेत्वेविशेषमाहांगिराः॥ पर्षद्याब्राह्मणानांतुसाराज्ञांद्विगुणामता वैश्यानांत्रिगुणाप्रोक्तापर्षद्वत्तु व्रतंस्मृतम् १ ब्राह्मणो ब्राह्मणानांतु क्षत्रियाणांपुरोहितः वैश्यानांयाजकश्चैवतएवव्रतदाःस्मृताः २ अगुरुः क्षत्रियाणांचवैश्यानांचाप्ययाजकः प्रायश्चित्तंसमादिश्य तप्तकृच्छ्रंसमाचरेदिति ३

सहस्र १०००कर्के और उपपातकविषे पजा ५० कर्के और अल्पपापविषेअल्पकर्केसभाकहीहै १ क्षत्री औरवैश्यकेतांई प्रायश्चितकहनेविषेविशेषकोअंगिरसऋषिकहताहै पर्षेति जो सभाब्राह्मणोंकेतांई प्रायश्चितकहणाविषेकहीहै सो क्षत्रियांकेतांई दूणीजानणी और वैश्यांकेतांई त्रीणीकहीहै और सभाकी न्यांई व्रतभी कहाहै १ ब्राह्मणांतांई प्रायश्चित्तकी ब्राह्मण कहे और क्षत्रियांकेतांई पुरोहित और वैश्यांकेतांई याजक व्रतकी कहण २ अग्विति क्षत्रीयांका नहि जो पुरोहित और वैश्यांकाजो अयाजकहै क्यानहियज्ञकरवाणेवालासोप्रायश्चित्तकोकथनकरेतांतप्तकृच्छ्रव्रतकोकरे ३

भविष्यपुराण विषे कहाहै चेति शूद्रांके तांइ महात्माऋषियांनें चतुर्गुण सभाकहीहै और व्रतभी पापकर्मांकी शुद्धि वास्ते चतुर्गुण कहाहै १ इसमै व्यवस्थाकरेहैं एह द्विगुणआदिक व्रतकाविधान उत्तमजातिकी हत्याविषे जान्नणा इतरजातिविषे व्रतकों थोडाकहणं तें तैसे चतुर्विंशतिके मत विषे दिखायाहै प्रेति जो प्रायश्चित्त ऋषियांनें ब्राह्मणकों कथनकीताहै क्षत्री तिसके त्रयपादकरे और वैश्य दो पाद औरशूद्रएकपाद करे संपूर्णपापविषे इति १ चतुर्विंशति मतविषे सभाकालक्षण कहाहै श्रौतेति श्रुति प्रोक्त अग्निके धारणवाले औरवेदके पठनविषे युक्त औरपंचयज्ञोंके करणे वाले असेब्राह्मणसभाके योग्यकहेहैं १ स्वेति औरअपनेसंबंधियांविषे औरदूसरे

भविष्ये चतुर्गुणातुशूद्राणांपर्षत्प्रोक्तामहात्मभिः पर्षद्वच्चव्रतंप्रोक्तं शुद्धये पापकर्मणामिति १ इयंचव्रतवृद्धिरुत्तमजातिहननेद्रष्टव्या इतरवधेव्रतह्रासस्यविधानात् तथाचचतुर्विंशतिमतेदर्शितम् प्रायश्चित्तंयदाम्नातं ब्राह्मणस्यमहर्षिभिः ॥ पादोनंक्षत्रियःकुर्यादर्धंवैश्यःसमाचरेत् १ शूद्रःसमाचरेत्पादमशेषेष्वपिपाप्मस्विति श्रौताग्निधारकाविप्राःश्रुताध्ययनशालिनः पंचयज्ञपरायेचपार्षदास्तेप्रकीर्त्तिताः १ स्वजनेपरजनेवापिसमाः सर्वेषु जंतुषु शत्रुष्वपिसमायेच तेषुपर्षत्प्रशस्यते २ वेदपूर्णमुखाविप्राधर्मशास्त्रसमन्विताः ज्ञानिनःकृतकर्माणस्तेषांपर्षत्प्रशस्यते ३ गायत्रीसारमात्रायेधर्मशास्त्रवहुश्रुताः मुनिमार्गानुयातारोज्ञानिनोयाज्ञिकास्तथा ४ वेदव्रतेषुयेस्नाताधर्मशास्त्रानुयायिनः गोब्राह्मणहितायेचतेषांपर्षत्प्रशस्यते ५

विषे जो समहैं और संपूर्ण जीवांविषे औरशत्रुयोंविषेभी जो सम हैं तिनांकी सभाश्रेष्ठकहीहै २ वेदेति वेदकर्के पूर्णहै मुखजिनांका और धर्मशास्त्रके जानणेवाले और ज्ञानीऔर शुभ कर्मोंके करणेवाले जोहैं तिनांकी सभाश्रेष्ठकहीहै ३ गायेति और गायत्री सारके जानणे वाले और वहुत श्रवणकीताहै धर्मशास्त्रजिनोंनें और मुनियोंकी न्याईं धर्मके करणे वाले और ज्ञानी और यज्ञके करवाणवाले ४ वेदेति वेदव्रतां विषे स्नात और धर्मशास्त्रकेअनुसार वर्त्तनवाले और गौयों और ब्राह्मणांकेहितकरणे विषे युक्त जो ब्राह्मणहैं तिनकी सभा श्रेष्ठ कहीहै ५

पंचेति पंचपक्षमैंने पूर्व कहेहैं और जो अन्यपक्षहैं वा अपरहैं अर्थात् तिन पांचोंमें से जो, और मतकहेहैं तिनसभनांमेंसे जोपुरुष नहीं प्रवृत्ति विषे मुक्त क्या सर्व वस्तुके त्यागकरके ही प्रसन्नहैं सा सभाविषें कथन करनें चाहिये अथवा पंचपक्षप्रोक्तगुणसे हीन यो होरहें सो जेकर निवृत्तिपर होण तां उनकीभी सभा जाणणी ६ क्षत्रियादिकों सभाकाअधिकारनहींहै एह कहा है धर्मविवृतिविषें क्षत्रेति क्षत्रिय और वैश्य और शूद्र कदाचित् भी प्रायश्चित्तके विधानको न करे अर्थात् ब्राह्मण विना उपदेष्टा नहोवे असा बुद्धिमान् कहतेहैं १ अव्रतेति जो पुरुष व्रतोंसे रहितहैं और मंत्रोंसे रहितहैं और जातिमात्र करके उपजीविका करणे वालेहैं असे हजारांभी एकत्र होवें तिनको सभाका अधिकार नहींकहा अव्रतानां इत्यादिकों विषे ब्राह्मण पदका अध्याहार करलेना २ शूद्रको निषेध चतुर्विंशतिमतविषेंभी कहाहै श्वेति जैसे श्वानचर्मस्थित दु

पंचपूर्वमयाप्रोक्तायेचान्येवापरेपरे निवृत्तिपरितुष्टायेपार्षदास्तेप्रकीर्तिताः ६ क्षत्रियादीनांपरिषत्त्वंनास्तीत्युक्तंधर्मविवृतौ क्षत्रियोह्यथवैश्योवा शूद्रोवानकथंचन प्रायश्चित्तविधानंहिकुर्वीतेतिविदुर्बुधाः १ अव्रतानाममंत्राणांजातिमात्रोपजीविनां सहस्रशःसमेतानां परिषत्त्वंनविद्यतइति २ अव्रतानामित्यादिषु ब्राह्मणानामितिशेषः ॥ शूद्रस्यनिषेधश्चतुर्विंशतिमतेपि श्वचर्मणियथाक्षीरमपेयंब्राह्मणादिभिः तद्वत्शूद्रमुखाद्वाक्यं नश्रोतव्यंकथंचन १ पंडितस्यापिशूद्रस्य शास्त्रज्ञानरतस्यच वचनंतस्यनग्राह्यं शुनोच्छिष्टंहविर्यथा २ शूद्रोज्ञानावलेपेन ब्राह्मणान्भाषतेयदि सयाति नरकंघोरं यावदाभूतसंप्लवमिति ३ पाराशरेणापि दुःशीलोऽपिद्विजः पूज्योनतुशूद्राजितेंद्रियः ॥ कःपरित्यज्यगांदुष्टांदुहेच्छीलवतींखरी मिति १

ग्धहोवे सो ब्राह्मणादिकोंको पानकरने योग्यनहीं तिसी प्रकार शूद्रके मुखसें वाक्य कदाचित्भी श्रवणकरणेयोग्य नहीं अर्थात् धर्मका उपदेश शूद्रसे नहीं श्रवण करना चाहिये १ पंडितेति पंडितभी होवे और शास्त्र ज्ञान विषेभी युक्तहोवे तोभी तिस शूद्रका वचन नहींग्रहणकरणेयोग्य जैसे श्वानका उच्छिष्ट हवि ग्रहण करणे योग्य नहीं२ शूद्रेतिजो शूद्र ज्ञानके मदकरके ब्राह्मणोंकोवचनकहे सोप्रलयपर्यंतघोरनरकको प्राप्तहोताहै इति ३ पाराशरजीनेभीकहाहै दुश्शीलेति ब्राह्मणदुष्टस्वभाव वालाभीपूजने योग्यहै और शूद्र जितेंद्रियभी अपूज्यहै इसमें दृष्टांत कहतेहैं कइति कौण पुरुष दुष्ट गोको त्यागकर उत्तम शीलवाली गधीको दोहदाहै इति १

इमेति एह ब्राह्मण प्रायश्चित्तके अर्थवाले ने पूजने योग्यहैं उपस्थानके अर्थ ब्राह्मणोंको वस्त्रादि कों करके प्रसन्नकरे इसप्रकार प्रायश्चित्तकरणे योग्यहै और महापापों बिषें राजाभी पूजनेयोग्यहै तैसही देवलजीका वाक्यहै स्वयमिति अल्पदोष बिषे ब्रह्मणोंने आपही प्रायश्चित्त कहणा और महापापोंविषें राजाने ब्राह्मणोंकेसाथ परीक्षाकरके तिनों पापोंविषें कृच्छ्रव्रत करवाणे योग्यहै इसी मेपराशरजीका वचनहै पापमितिपापीपुरुष गौ और वृषकोंदेकरपापकोंकथनकरे १ इदमितिएह गौ और वृषभकादान प्राजापत्यव्रतसें अधिक प्रायश्चित्तविषे जानणा प्राजापत्य व्रततक प्रायश्चित्त विषें दानकों विष्णुजीकहतेहैं पादेति पादव्रतविषेंवस्त्रदान और कृच्छ्रकेदोपाद व्रत विषे तिल और स्वर्णदान और तीनपाद व्रतविषे एक गोदान और संपूर्ण कृच्छ्रव्रतविषें गौ और बैल

इमेहि प्रायश्चित्तार्थिनोपस्थेयाः उपस्थानंचब्राह्मणान् वस्त्रादिनासंतोष्य कर्तव्यम् महापापेषु राजाप्युपस्थेयः तथाचदेवलः स्वयंवाब्राह्मणैःकृच्छ्र मल्पदोषेविधीयते ॥ राज्ञाचब्राह्मणैश्चैवमहत्सुसुपरीक्ष्यचेति १ कृच्छ्रंतत्त त्पापेषुक्रियमाणंव्रतं।पराशरः। पापंप्रख्यापयेत्पापी दत्त्वाधेनुंतथावृषमिति इदंगोवृषदानं प्राजापत्याधिकप्रायश्चित्तविषयम् प्राजापत्यपर्यंतं॥ विष्णुराह ॥ पादव्रतेवस्त्रदानंकृच्छ्रार्धेतिलकांचनं पादहीनेतुगामेकां कृच्छ्रेगोमिथुनंस्मृतमिति १ इदंगोवृषदानमुपपातकविषयम् महापापादिष्वधिकंकल्प्यमितिमिताक्षरायां अल्पपापेष्वपितत्रैव तस्माद्द्विजः प्रत्यवायी प्रायःसंकल्प्यवारिणा विख्याप्यपापंवक्तृभ्यः किंचिद्दत्त्वाव्रतंचरेत् १ किंचिद्दत्त्वापापंविख्याप्यव्रतंचरेदित्यन्वयः एतत्प्रकीर्णकविषयमिति मदनरत्ने ज्ञात्वाप्रायश्चित्ताकथने दोषश्चाप्तानामित्यादिना प्रथमप्रकरणांते प्रोक्तः

दान कहतेहैं इति १ एह गौ और बैलका दान उपपातकके प्रायश्चित्त विषें जानना और महापापों विषे अधिकदान करणे योग्यहैं एंह मिताक्षराविषेंकहाहै और अल्पपापों विषें जो व्रतका प्रकारहै सो मिताक्षराविषेंहीकहाहै तस्मेति तिसकारणसें पापके करणेवाला प्रायश्चित्तकेकहणे वालोंको कुछदेकर पापकों प्रकटकरे और जलसाथ संकल्प करके देवे पीछे व्रतको करे एह प्रकीर्णक प्रायश्चित्त विषे जानना ऐसे मदन रत्नविषे कहाहै जो धर्मशास्त्रको जाणकर प्रायश्चित्त के पूछणेको आयेहुवे दुःखीको प्रायश्चित्तकों न कहैं तिनको दोषहै सो प्रथम प्रकरणाके अंतबिषेंकहाहै

प्रायश्चित्तेति प्रायश्चित्तके उपदेशको विधिको अंगिरस ऋषिकहतेहैं वचइति धर्मवेत्ताओंने प्रथम प्रायश्चित्तका धर्मशास्त्रोक्त वचन कहनेयोग्यहै पीछेसमर्थताको देखकर पापकीन्यूनता अधिकताके अनुसार अनुग्रहको करें क्या प्रायश्चित्तकी न्यूनताको करें १ और सभाका वचन सभको प्रमाण करणा चाहिये एह कहतेहैं नहीति तिन महात्माओंके वचनोंको उल्लंघन करके अतिशय करके है एहज्ञान जिनको औसेविद्वानोंनेभी और कथनकरणा उचित नहीं २ फेर अंगिरस ऋषिका वचनहै ततइति तिसकारणसे सो महात्मा वृद्ध आगे नमस्कारकर्के और हाथ जोडकर नम्रता पूर्वक वैठेहुवे को पूछतेहैं हमारे साथ तेरा क्या प्रयोजनहै ३ कहो क्यों

प्रायश्चित्तोपदेशविधिमाहांगिराः वचःपूर्वमुदाहार्यं यथोक्तंधर्मवक्तृभिः पश्चात्कार्यानुसारेण शक्त्याकुर्युरनुग्रहम् १ वचःप्रायश्चित्तविधायकं अनुग्रहः प्रायश्चित्तन्यूनता नहितेषामतिक्रम्यवचनानिमहात्मनां प्रज्ञानैरपिविद्वद्भिः शक्यमन्यत्प्रभाषितुमिति २ पुनःसएव ॥ ततस्तैप्राणिपातेनदृष्ट्वातंसमुपास्थितम् वृद्धाःपृच्छंतिकिंकार्य्यमुपविश्याग्रतःस्थितम् ३ किंतेकार्य्यंवदास्माभिःकिंवामृगयसेद्विजान् तत्त्वतोब्रूहितत्सर्वंसत्यंहिगतिरात्मनः ४ सत्येनद्योततेराजासत्येनद्योततेरविः सत्येनद्योततेवह्निः सर्वंसत्येप्रतिष्ठितम् ५ भूर्भुवःस्वस्त्रयोलोकास्तेपिसत्येप्रतिष्ठिताः अस्माकंचैवसर्वेषां सत्यमेवपरंबलम् ६ यदिचेद्वक्ष्यसेसत्यंनियतंप्राप्स्यसेशुभम् यद्यागतोस्यसत्येननत्वंशुद्ध्यसिकर्हिचित् ७ एवंतैःसमनुज्ञातःसर्वंब्रूयादशेषतइति ८ उपदेशस्तुपरिषदंतर्गतैनैकेनैवकार्य्यः

ब्राह्मणोंको ढूंडताहैं यथार्थता करके संपूर्णसत्यकरकेकहो सत्यहीआत्माकास्वरूपहै ४ सत्यकर्के चंद्रमा और सूर्य्य और अग्नि प्रकाशते हैं सभकुछ सत्यविषे स्थितहै ५ भूर्भुवेति पृथ्वी लोक और आकाश और स्वर्ग एह तीनलोकभी सत्यकर्के ही स्थितहैं हमारे संपूर्णोंका भी उत्कृष्टवल सत्यहीहै ६ जद तूं सत्यकहेंगा तो निश्चयकरके शुभको प्राप्तहोवेंगा जेकर असत्यका अंगीकार करके आयाहैं तबतूं कदाचितभी शुद्धीको न प्राप्त होवेंगा ७ इस प्रकार तिनब्राह्मणोंकी आज्ञाको प्राप्तहुवा २ सभाविषे संपूर्ण सत्यही कहे ८ अब कहतेहैं कि चाहे सभामें कितने होण परंतु एकब्राह्मणने ही प्रायश्चित्तका उपदेश कथन करणे योग्यहै

इस विषे अंगिरस ऋषिकाबचनहै आहूयेति जो ब्राह्मण प्रायश्चित्त उपदेशके कथनवास्तेसभाने नियत कियाहै सोब्राह्मण प्रायश्चित्तीको बुलाकर कथन करे क्या हे ब्राह्मण श्रवण कर जो व्रत मैनेतेरेको कथन करीदाहै सो तैंने यत्न करके करणेयोग्यहै जेकर न करेंगा तो तेरा सभकृत्य वृथाहिहै २ अब असमर्थविषेदेवलजीकावाक्यहै प्रेति शास्त्रानुसार किहा जो प्रायश्चित्त तिसके करणे विषे असमर्थ होवे तो तिसकी सामर्थ्यके अनुसार अनुग्रह करे क्योंकि तिसने किया जो पूजा इत्यादि तिसकोअनुग्रहका कारण होणेसें १ प्रायश्चित्त देशकालादिक देखकर देणेयोग्यहै तैसेही बौधायन ऋषि भी कहतेहैं शरीरमिति शरीरकी कृशता स्थूलतादि और कृशता आदिविषेभी बल निर्बलको और वय जो बाल्यादिअवस्था तिसविषे भी सोलां वर्षा तक बाल कहाहै सोकितने वर्षांका है ऐसे कहकर निर्णय करे और काल शीतादि और क्या कर्म कर

अंगिराः ॥आहूयश्रावयेदेकःपर्षदायोनियोजितः शृणुष्वभोइदंविप्रयत्नआदिश्यतेव्रतम् १ तत्तद्यत्नेनकर्त्तव्यमन्यथातवृथाभवेदिति २ देवलः॥प्रायश्चित्तं यथोद्दिष्टमशक्त्यातद्दशात्पुनः इष्यतेनुग्रहश्चापिपूजानुग्रहकारणात् १ प्रायश्चित्तंदेशकालादिपूर्वकंदातव्यम् तथाह ॥बौधायनः ॥ शरीरंबलमायुश्चवयःकालंचकर्म्मच समीक्ष्यंधर्म्मविद्बुध्याप्रायश्चित्तंप्रकल्पयेदिति १ इदंचार्चितैर्ब्राह्मणैर्देयमित्याह सएव अनर्चितैरनाहूतैरपृष्टैश्चैवसंसदि प्रायश्चित्तंनवक्तव्यं जानद्भिरपिचद्विजैः २ न्यायतोमार्गमाणस्य क्षत्रियादेः प्रणामिनः अंतराब्राह्मणंकृत्वाव्रतमेतत्समादिशेत् ३ हारीतः ॥ यथावयोयथाकालं यथाप्राणंचब्राह्मणे ॥ प्रायश्चित्तंप्रदातव्यंब्राह्मणैर्वेदपाठकैः १ वयोबाल्यादि कालः शीतादिः प्राणः कार्श्यमांसलत्वादिर्बोध्यः तदनतिक्रमेणदातव्यमित्यर्थः

ताहै इस संपूर्णको धर्म वेत्ता बुद्धिपूर्बक विचार कर प्रायश्चित्तको कथनकरे १ पूजाको प्राप्तहुये जो ब्राह्मण तिनोंने इह प्रायश्चित्तदेणे योग्यहै इसको बौधायनजी कहतेहैं अनर्चितेति प्रायश्चित्तको जाणते जो ब्राह्मण सो सभाविषे नहीं पूजे और बुलायेभी नहीं और पूछेभीनाहितिनोंने प्रायश्चित्त नहीं कहने योग्य २ अब क्षत्रियादि विषे कहतेहैं न्यायेति तिस कारणसें नीतिपूर्वक पापके दूर करणे लिये ढूंडते और नमस्कारकरते जो क्षत्रियादि तिनको मध्यविषे ब्राह्मण बैठाकर प्रायश्चित्त कथन करे अर्थात् क्षत्रियादि ब्राह्मणको साथ लेकर व्रतको पूछे और तैसे ही करे ३ अबहारीत ऋषिका वचनहै यथेति वेदपाठी ब्राह्मणोंने ब्राह्मणके तांई प्रायश्चित्त वय बाल्यादिअवस्था काल शीतादि प्राण कृशस्थूलादि एह सब देखकरदेणे योग्यहै १

तस्मेति तिसकारणर्थे सामर्थ्यको देखकर कृच्छ्रका अर्ध वा पाद क्या कृच्छ्रका चतुर्थांश विधिसें बलनिर्बलकों और शीतादि कालकों जानकर प्रायश्चित्तकों कथनकरे २ असमर्थ पुरुष विषे अनुग्रहकोंपराशरजीकहतेहैं दुर्बलेति निर्बलपुरुषविषे तैसे बाल और वृद्धाविषे अनुग्रहकरणेयोग्यहै इसीतें अन्यविषे अनुग्रहकरे तो दोषहोताहै तिसकारणसें और विषे अनुग्रहक्या प्रायश्चित्तकोन्यून नानकरे १ सोई कहतेहैं वृद्धेति वृद्धादिकों विषें अर्ध प्रायश्चित्तकहाहै जो असीं ८० वर्षकाहै सो वृद्धजानणा और बाल सोलां १६ वर्षसेन्यूनजानना और स्त्रियां और रोगीइनकोअर्द्धप्रायश्चित्तकहाहै २ अबप्रायश्चित्तकेदेशकोंपराशरजी कहतेहैं प्रेति सर्वदाही देवताके मंदिरकेसन्मुख प्रायश्चित्तकोदेव देवतायतनकहणे करके पवित्रक्षेत्र और तीर्थादिकोंका भी ग्रहणकरणा प्रायश्चित्तदा

तस्मात्कृच्छ्रमथाप्यर्द्धंपादंवापिविधानतः ज्ञात्वाबलाबलंकालं प्रायश्चित्तंप्रकल्पयेत् २ अशक्तावनुग्रहमाहपराशरः॥ दुर्बलेऽनुग्रहः कार्यस्तथैवशिशुवृद्धयोः अतोऽन्यथाभवेदोषस्तस्मान्नानुग्रहोभवेत् १ वृद्धादौत्वर्धंप्रायश्चित्तं अशीतिर्यस्यवर्षाणि बालोवाप्यूनषोडशः प्रायश्चित्तार्द्धमर्हंतिस्त्रियोरोगिणएवच २ प्रायश्चित्तदेशमुपदिशतिपराशरः। प्रायश्चित्तंसदादद्याद्देवतायतनाग्रतः॥ इदंपुण्यक्षेत्रतीर्थादेरुपलक्षणम् प्रायश्चित्तदानोत्तरंप्रायश्चित्तनिर्देष्टणां जप्यमाह हारीतः॥ प्रायश्चित्तंतुनिर्दिश्यकथंपापात्प्रमुच्यते यत्पवित्रंविजानीयाज्जपेद्वावेदमातरम् १ वेदमाता गायत्री अनुग्राहकस्वरूपमाहांगिराः॥ कृत्वापूर्वमुदाहारं यथोक्तंधर्मकर्त्तृभिः पश्चात्कार्य्यानुसारेणशक्तयाकुर्युरनुग्रहम् १ प्रायश्चित्तंयथोद्दिष्टमशक्यंदुर्बलादिभिः इष्यतेनुग्रहस्तेषां लोकसंग्रहकारणात् २

नसें पीछे प्रायश्चित्तके कहनेवालोंकों जो जपने योग्यहै तिसकोंहारीत ऋषिकहतेहैं प्रेति प्रायश्चित्तकों कहकर आप कैसें पापसें रहितहोताहै सो कथन करतेहैं जिसकों पवित्रजाने तिसकोंजपे वा वेदमाता जो गायत्री तिसकोंजपे १ अनुग्रहकरणे योग्यजोहै तिसके अर्थ अंगिरस ऋषि कहतेहैं कृत्वेति धर्मकरणवाले अथवाधर्मकहणेवाले ऋषियोंने जैसे पापके दूरकरणे वास्ते प्रायश्चित्त चांद्रायणादि कहाहै तिसकों प्रायश्चित्ती कों पूर्वकहकर पीछे पापके अनुसार तिसकी सामर्थ्यकों देखकरअनुग्रहकोंकरें (धर्मवक्तृभिः) ऐसाभी किसे पुस्तकमैपाठहै १ निर्बल पुरुषोंने यथोक्त प्रायश्चित्तकरणे को अशक्यहै तो तिनोंपर अनुग्रह करणे योग्यहै जिसप्रकार लोक प्रायश्चित्तकों करें भय करके त्याग न करें इसी कारणर्थे २

एकइति और अनुग्रह करणे को एकब्राह्मण योग्यनहींहै चाहें सहित अंगोंके वेदके जाननेवा लाभीहोवे धर्मके जाननेवाले बहुत ब्राह्मण इकठेहोकर अनुग्रहकरणेको योग्यहैन ३ जिसस्था नमें अनुग्रह कहाहै तिस जगासें विना जो अनुग्रहकरतेहैं तिनके वास्ते पराशरजी दोषकहतेहैं स्नेहति प्रीतिसें लोभसें और भयसें और अज्ञानसें प्रायश्चित्तीके ऊपर जो अनुग्रह करतेहैं तिस पापीका पाप अनुग्रह करणेवालों विषे प्राप्तहोताहै १ जैसे समर्थकेऊपर अनुग्रहकिये होयां दो षहै इसीप्रकार असमर्थके ऊपरनही अनुग्रहमे दोषहोताहै एहवाक्य पराशरजी कहतेहैं शरीरस्ये ति शरीरका नाश प्राप्तहोयां २ असमर्थको जो नियमकहतेहैं और समर्थके वडे पापविषे जो नियम नहीं कहते सो तिनोंके पापके भागी होतेहैं २ अथेति प्रायश्चित्त करणेको समर्थ जो पुरु

एकोनार्हतितत्कर्त्तुमनूचानोप्यनुग्रहम् धर्मज्ञाबहवोविप्राःकर्त्तुमर्हत्यनुग्रह मिति ३ उक्तातिरेकेणानुग्रहे प्रत्यवायं विशदयति ॥ पराशरः ॥ स्नेहा द्वायदिवालोभाद्भयादज्ञानतोपिवा कुर्वंत्यनुग्रहंयेतु तत्पापंतेषुगच्छति १ यथा समर्थानुग्रहे प्रत्यवायस्तथा दुर्बलाननुग्रहेऽपीत्याह ॥ पराशरः ॥ श रीरस्यात्ययेप्राप्ते वदंतिनियमंतुये महाकार्योपरोधेच नस्वस्थस्यकदाच नेति २ पतंतिनरकेशुचौ इत्यनेनसंबंधः अथप्रायश्चित्ताचरणक्षमस्य प्रतिनिधिर्नकारयितव्य इत्याह ॥ पराशरः ॥ स्वस्थस्यमूढाः कुर्वंतिवदं तिनियमंचये ॥ तेतस्यविघ्नकर्त्तारःपतंतिनरकेऽशुचौ ३ प्रतिनिधिनियामकं शास्त्ररहस्यमजानंतो ये स्वस्थस्यापिप्रतिनिधिंकुर्वंति यश्चप्रातिनिध्येन प्रायश्चित्तंकरोति सर्वेपि तेतस्यनिमित्ततः पापनिवृत्तौ विघ्नंकुर्वंतीत्यशुचौ नरकेपतंतीत्यर्थः ३

ष तिसका प्रतिनिधि अर्थात् प्रायश्चित्त करणे वास्ते दूसरा पुरुष नहीं स्वीकारकरणा एहपराशर जीकावाक्यहै स्वस्थस्येति स्वस्थकया समर्थ पुरुषके प्रायश्चित्तके वास्ते प्रतिनिधिको जो मूढ अ र्थात् शास्त्ररहित पुरुष करतेहैं और असमर्थको नियमहीकहतेहैं अर्थात् प्रतिनिधि को नहींकरते सो तिसके विघ्न कर्त्ताहैं और अतिशोक युक्तहुवे २ नरकमे पडतेहैं ३ प्रतिनिधीति इसीका अर्थमूलमें स्पष्टकर्के कहाहै जो पुरुष समर्थ पुरुषके प्रायश्चित्तके वास्ते प्रतिनिधिको स्वीकार करते हैं सोप्रतिनिधिके नियमकरणे वाला जो शास्त्रकारहस्य तिसको नही जानतेहैं और जो प्रतिनिधि करकेप्रायश्चित्त करताहै सो सभ अर्थात् दो २ निमित्तसें पाप निवृत्तिके विषे विघ्नकरते हैं और अशुचि नरकके विषे पडतेहैं ३

अथेति अब प्रायश्चित्त करणे वालेको जो योग्यहै सो विष्णु ऋषिकहताहै सर्वेति प्रायश्चित्त करणेकी इच्छा होवे तो संपूर्ण पापोंके निमित्त संपूर्णव्रतोंका विधिपूर्वक ग्रहणकरणा तिसको कथनकरताहूं १ दिनेतिक्या दिनांते अर्थात् सायंकाल विषे नखरोमोंको कटवा करके स्नान करे भस्म गोमय मृत्तिका और जल और पंचगव्य इनोंकरके मलको दूरकरे शरीरकी शुद्धिवास्ते २ दंतधावनेति दंतधावनकरके और पंचगव्य पान करके सायंकालविषे तारयोंका दर्शन करके व्रत ग्रहण करणेयोग्यहै ३ आचम्येति आचमनकरके मौन धारकर अपने पापका चिंतनकरे और मनके संताप करणे वाला जो शोक तिसकोंकरे अंतःकरणसे ४ रोमेति रोमशब्दकरके श्मश्रु अर्थात् दाढीका ग्रहणहै और आदिशब्दकरके केशोंका ग्रहण करणा बाह्यशौच अर्थात् पाप

अथेतिकर्त्तव्यतामाहविष्णुः॥ सर्वपापेषुसर्वेषांव्रतानांविधिपूर्वकम् ग्रहणंसंप्रवक्ष्यामिप्रायश्चित्तेचिकीर्षिते १ दिनांतेनखरोमादीन् प्रवाप्यस्नानमाचरेत् भस्मगोमयमृद्वारि पंचगव्यादिकल्पितैः ॥ मलापकर्षणंकार्यं बाह्यशौचविशुद्धये २ दंतधावनपूर्वेणपंचगव्येनसंयुतम् व्रतंनिशामुखेग्राह्यं बहिस्तारकदर्शने ३ आचम्यातःपरंमौनीध्यायन्दुष्कृतमात्मनः मनःसंतापनंतीव्रमुद्वहेच्छोकमंततइति ४ रोम श्मश्रु आदिना केशग्रहणं बाह्यशौचं पापनिर्हरणं॥ व्रतं होमशेषरूपमिति महार्णवे व्रतंनाम प्रायश्चित्तसंकल्पः॥ इतिमाधवः ४ मनुरप्याह॥ ख्यापनेनाऽनुतापेनतपसाऽध्ययनेनच पापकृन्मुच्यतेपापात्तथादानेनचापदि १ अध्ययनंश्रवणोपलक्षणं आपदीत्यनेनाऽध्ययनतपसोर्दानमनुकल्प्यमित्युक्तं हिंसातिरिक्तविषयकमिदम्

का दूरकरणा और व्रतशब्दकरके हवनकरणा एह महार्णव ग्रंथका मतहै और व्रतनाम प्रायश्चित्तका संकल्प करणा एह माधवजीका मतहै ४ और मनुजीभी इसी मतको पुष्ट करतेहैं ख्यापनेति पापकरणे वाला जो पुरुष सो महात्माओंके पास तिस पापको कथनकरके और अनुताप और तप और वेदके पडने करके पापसे रहित होताहै और आपित् कालविषे दान करके पापसे रहित होताहै १ और अध्ययनशब्दकरके श्रवणकाभी ग्रहणहै और आपदकालविषे अध्ययन और तपका संभव नहीं होताहै इसवास्ते तिनकी जगा दानकरे एहअनुकल्प अर्थात् लघुपक्षहै और सोदान हिंसासे अतिरिक्त विषयक करणे विषे लघुपक्षहोताहै

और हिंसा स्वरूप पापकी निवृत्तिके वास्ते दानही मुख्यपक्षहै सो कहाहै भविष्य पुराण वि षे हिंसेति हिंसात्मक अर्थात् हिंसास्वरूप सभप्रायश्चित्तोंके समूहजो ऋषिओंने कहेहैं तिनांके दूर करणे वास्ते दान करणा प्रथम कल्पहै अर्थात् मुख्य कहीदाहै १ तैसे ही मनुजीने कहाहै बधमिति सर्पादिकोंके वधसे उत्पन्नहुवा जो पाप तिसको दानकर्के दूरकरणेको असमर्थहोवे जो द्विज सो पापकी निवृत्तिके वास्ते एक २ वधके प्रति एक २ कृच्छ्रकरे अर्थात् जितने सर्पा दि मारे होन उतनेही कृच्छ्र करे १ और इस श्लोककी व्याख्या क्या अर्थ उपपातक प्रकरण विषे करदियाहै और संवर्तजीने कहा जो सामान्य प्रायश्चित्त तिसमें जैसे कहाहै सो कहतेहैं हिरण्येति हिरण्यदान अर्थात् सुवर्णदान और गोदान भूमिदान एह जो दानहैं सो सामान्य पापों को और महापातकीकेसंसर्गसें उत्पन्न हुवे जो पाप तिनकोभी दूरकरतेहैं १ और यमजीभी इसी

हिंसायांतुदानंमुख्यं तदुक्तंभविष्ये हिंसात्मकानांसर्वेषां कीर्त्तितानांमनीषि भिः प्रायश्चित्तकदंबानां दानंप्रथमउच्यते १ तथाचमनुः॥ वधंदानेननिर्णे क्तुं सर्पादीनामशक्नुवन् एकैकशश्चरेत्कृच्छ्रंद्विजःपापापनुत्तये १ व्याख्या तोऽयंश्लोक उपपातकप्रकरणे ॥ संवर्त्तप्रोक्ते सामान्यप्रायश्चित्तेयथा ॥ हिर ण्यदानंगोदानं भूमिदानंतथैवच नाशयंत्याशुपापानि महापातकजान्यपि १ यमोपि ॥ शोषणेनशरीरस्य तपसाध्ययनेनच पापकृन्मुच्यतेपापाद्दानेनच दमेनच १ तथाचमनुः॥ कृत्वापापंहिसंतप्यतस्मात्पापात्प्रमुच्यते ॥ नैतत्कु र्यांपुनरिति निवृत्यापूयतेतुसः १ विष्णुपुराणे ॥ प्रायश्चित्तान्यशेषाणितपः कर्मात्मकानिवै ॥ यानितेषामशेषाणां कृष्णानुस्मरणंपरम् १

पक्षको पुष्टकरतेहैं शोषणेति पापके करणे वाला जो पुरुष सोशरीरके सुकाणे करके अर्थात् व्रत करणेकरके और तपकरणे करके और वेदपढने करके और दानकरणेसे और दमन करके अर्था त् इंद्रियोंके जीतने करके पापोंसे रहित होताहै १ और मनुजीभी इसीपक्षको दृढकरतेहैं कृत्वे ति जोपुरुष पापको करके फेर मनमें बहुतसताप करे तो पापसे रहित होताहै फेरमें ऐसा पाप नहीं करूंगा इसनिवृत्तिसें वोह पुरुष पवित्र होजाताहै १ और विष्णुपुराण विषे पाप निवृत्तिके वास्ते औरप्रकार कहाहै प्रायश्चित्तानीति संपूर्ण पापोंकी निवृत्तिकेवास्ते जो सभ तपस्वरूप और कर्मस्वरूप प्रायश्चित्तहैं तिनके मध्यविषे विष्णुका स्मरणरूप प्रायश्चित्त परहै अर्थात् श्रेष्ठहै १ इसीका अर्थ मूलमें स्पष्ट करके कहाहै ।

यानीति और इसके अर्थका बिस्तार साधारण प्रकरणविषें जान लेणा और एह साधारण प्रकरणविषें कहेजो प्रायश्चित्त सो अनादेश विषें अर्थात् जिस पापके वास्ते प्रायश्चित्त नहीं कहा उसपापकी लाघवता और गौरवताकी तारतम्यताको देख करके अर्थात् वोह पाप थोडा होवे वा वडाहोवे इसवातको देखकर कहने योग्यहैं जैसे अल्प पाप होवें तो कुछ थोडाजैसा सुवर्णदानकरवाणा उससें अधिकहोवें तो गोदान करे ॥ फेर यहीप्रकार विष्णुपुराणविषें भी कहा है एवमिति हेपुत्र ऐसेही विषय भेदसें संपूर्ण छोटे वडे जो प्रायश्चित्तहैं तिनोकी व्यवस्था क्या स्थिति करवाणीयोग्यहै सो कहतेहैं थोडे पापके वास्ते थोडा प्रायश्चित्त कथनकरणा और वडे पापके वास्ते वडाप्रायश्चित्तकथनकरणा १ जेकर हे महावाहो ऐसा नकरे तो थोडे पापकेवास्ते जो वडे पापका करणाहै सो निष्फलताको प्राप्तहोताहै २ विषयेति और जिस

यानि तपःप्रभृतीनि प्रायश्चित्तानि तेषांसर्वेषांमध्येविष्णुस्मरणं श्रेष्ठमित्यर्थः विस्तरस्तुसाधारणप्रकरणेबोध्यः एतान्यनादेशविषय एनसो लाघवगौरवतारतम्यपर्यालोचनयाविकल्पेन योज्यानि। तत्रैव एवंविषयभेदाद्व्यवस्थाप्यानिपुत्रक प्रायश्चित्तानिसर्वाणिगुरूणिचलघूनिच १ अन्यथाहि महाबाहोलघूनामुपदेशतः॥ गुरूणामुपदेशोहिनिष्प्रयोजनतांव्रजेदिति २ विषयविवेकाभावेसाधारणं प्रायश्चित्तं प्रयोज्यं ॥ महाभारते ॥ यद्यकार्यशतंकृत्वाकृतंगंगाभिषेचनम् सर्वंदहतिगंगांभस्तूलराशिमिवानलः १ तथा शुद्धिकराणिव्रतानिविश्वामित्रप्रोक्तानिविषयव्यवस्थार्थं साधारणप्रकरणतोऽवगंतव्यानि ॥ जाबालिः ॥ आरंभेसर्वकृच्छ्राणांसमाप्तौचविशेषतः आज्येनैवहिशालाग्नौ जुहुयाद्व्याहृतीःपृथक् १ विष्णुः॥ श्राद्धंकुर्याद्व्रतांतेच गांहिरण्यादिदक्षिणामिति

पापका विषय ज्ञान नहींहै उस पापके वास्तेसाधारण प्रायश्चित्त कहणायोग्यहै ॥ महाभारत विषेंभी पापकी निवृत्ति वास्ते और प्रकार कहाहै यद्येति जो पुरुष सैकडे पाप करके फेर गंगाजीका स्नान करे सो गंगाजीका जल उसके संपूर्ण पापोंको दग्धकरताहै जैसे रूके समूहको अग्नि दग्धकरताहै १ तथेति तैसेही शुद्धीके करणे वाले व्रत जो विश्वामित्रजीने कहेहैं सो विषय व्यवस्थाके वास्ते साधारण प्रकरणसे जानने योग्यहैं ॥ अब जावालि ऋषि प्रायश्चित्तके प्रारंभका प्रकार कहतेहैं आरंभेति संपूर्ण व्रतोंके आरंभमे और समाप्तिमें विशेषतासें घृतकरके अग्निशालाविषे व्याहृतियोंके अधिष्ठाता जो देवताहैं तिनोंकेवास्तेभिन्न २ हवन करे १ विष्णुजी कहतेहैं श्रेति श्राद्ध और व्रतकेअंतमें गो और सुवर्णसेआदलेकर आचार्यकेताईं दक्षिणादेवे

और इसी वाक्यका अर्थ मूलमें स्पष्ट करके कहाहै आदिना इति आदिशब्दकरके दशदानों का ग्रहण करणा और चकार पठनसें क्या जानतेहैं कि व्रतके आदविषे भी श्राद्धका ग्रहणहै ॥ विष्णुजीने ऐसे कहाहै वीति अपनी कामनाकरके संकल्पविधीकरके वैष्णवश्राद्धकरे और पिण्डदान नकरे यह स्वरूपवैष्णवश्राद्धकाहै और कैयोंके मतविषे सपिंडभी एहश्राद्धहै फेर ब्राह्मणोंके ताईं गोदान देवे और यथाशक्तिसें दक्षिणाभी देवे १ और संकल्प श्राद्धविषे कितनेक पदार्थ त्यागेहैं जो श्राद्धचंद्रिका विषेकहेहैं सो तिसी श्राद्धचंद्रिकासें जानलेने ॥ और वपन विषे अर्थात् मुंडनविषे वसिष्ठजीने विशेष कहाहै कृच्छ्राणामिति और व्रतरूप जो प्रायश्चित्त तिनके वास्ते श्मश्रुक्या दाढी और केश तिनको कटावे परंतु नेत्रोंके रोम और शिखाको वर्जक

आदिना दशदानानि ग्राह्याणि चकाराद्व्रतादावपि श्राद्धं विष्णुदेवताकंकार्य्यमित्याह । विष्णुःविधायवैष्णवंश्राद्धं सांकल्प्यंनिजकाम्यया धेनुंदद्याद्द्विजेभ्योऽपिदक्षिणांचस्वशक्तितइति १ सांकल्प्यश्राद्धेकेचित्पदार्थास्त्यक्ताः श्राद्धचंद्रिकायां ततएवबोध्याः वपनेविशेषोवसिष्ठेनोक्तः।कृच्छ्राणांव्रतरूपाणांश्मश्रुकेशादिवापयेत् अक्षिरोमशिखावर्ज्जमितिस्मृत्यंतरमपि १ उपपक्षश्मश्रुकेशान्वापयेतक्रमात्सदा ॥शिखाप्रकोष्ठभ्रूपस्थान्वर्जयित्वाद्विजोत्तमइति २ कृच्छ्राणांप्रायश्चित्तरूपाणां प्रारंभे वपनं विधेयं पुण्यार्थंकरणेतुनाविधेयमितिभावः अतएवगोवधे पराशरः ॥ प्राजापत्यंचरेत्कृच्छ्रं गोघातीव्रतमुत्तमम् सशिखंवपनंकुर्य्यात् त्रिसंध्यमवगाहनमिति १

रके और इसी पक्षकोपुष्टकरणे वाली औरभी स्मृतिहै सो कहतेहैं १ उपपक्षेति ब्राह्मण उपपक्ष क्या शिरके दोनों पार्श्वोंके रोम श्मश्रुक्या दाढी और केश तिनको क्रमसे सदाकटवावे शिखा और प्रकोष्ठ क्या हाथका उपरिभाग अर्थात् बांहां और भ्रूक्या नेत्रोंके भवहे उपस्थ क्या लिंग तिनोंके रोमोंकोवर्जकरके अर्थात् इनकेरोम मुंडन विषे न कटवावे २ कृच्छ्राणामिति और प्रायश्चित्तरूप जो व्रत तिनके प्रारंभमें वपन अर्थात् मुंडन करणायोग्यहै. और पुण्यवास्ते जो व्रत करणाहै तिस विषे मुंडन न करवावे ३ इसी कारणसें गोवधमें पराशरजीने कहाहै प्राजापत्यमिति घासादिनका प्राजापत्य जो अत्युत्तमव्रतहै तिस व्रतको गोघाती अर्थात् गोहत्या करणे वाला जो पुरुष सो करे और सहित शिखाके मुंडन करवावे और तीन काल स्नानकरे १

और संवर्त्तजीके स्मरण विषे विशेष कहाहै पादइति और पादविषे अर्थात् तीन दिनकेव्रतविषे अंगोके रोमही कटवावे और किसी जगासें न कटवावे और किसी जगामें पाद करकेचा रदिनका व्रतभी कहाहै और द्विपाद विषे अर्थात् छे दिनके व्रत विषे श्मश्रु अर्थात् दाढी भी कटवावे और त्रिपादव्रत विषे शिखाको वर्ज करके मुंडन करवावे और निपात विषे अ र्थात् संपूर्ण व्रतविषे साशिख मुंडनकरवावे अर्थात् सहित शिखाके १ और इसजगा कृच्छ्रग्रहण करणे करके बारांदिनोंकरके साध्यजो व्रत तिसके अधिकारी जो पुरुष तिनको वपन क्या सारा मुंडन कहाहै और बारां दिनसे न्यून होवें तो संपूर्ण मुंडन न करवावे २ और हारीतजीने केशोंके न वपन करवाणे विषे विशेष कहाहै राजेति राजा और राजाका पुत्र और बहुतशास्त्रोंको पडाहुवा जो ब्राह्मण एह सब केशोका वपन करवा करके फेर व्रत करण १ और जबकेश रहनेदेनेहोवें तो केशोंकीरक्षा वास्ते द्विगुण व्रत अर्थात् चौवीं दिनका

संवर्त्तस्मरणेविशेषः ॥ पादेंगरोमवपनंद्विपादेश्मश्रुणोपिच त्रिपादेतु शिखावर्ज्जंसशिखंतुनिपातन इति ॥ १ ॥ अत्र कृच्छ्रग्रहणाद् द्वादशा हसाध्यप्रायश्चित्ताधिकारिणां वपनं भवति न तन्न्यूने ॥ २ ॥ हारीतः राजावाराजपुत्रोवाब्राह्मणोवाबहुश्रुतः॥ केशानांवपनंकृत्वा प्राय श्चित्तंसमाचरेत् ॥ १ ॥ केशानांरक्षणार्थंतु द्विगुणंव्रतमाचरेत् द्विगुणेव्रत आचीर्णे दक्षिणाद्विगुणाभवेत् २ अत्र राजादय उपलक्षणार्थाः यत्रराजा दीनामप्येवमन्येषां किमुवक्तव्यमिति कैमुतिकन्यायात् ३ एतच्च ॥ द्विगु णव्रतादिकं महापातक्यादिव्यतिरिक्तस्थलेवपनानिच्छोः॥ विद्वद्विप्रनृ पस्त्रीणांनेष्यतेकेशवापनम् ऋतेमहापातकिनोनिहंतुश्चावकीर्णिनइति विशेषस्मरणात् ॥ १ ॥

व्रत करण और द्विगुण व्रतको करके फेर आचार्यकोंदक्षिणाभी द्विगुण देणी चाहिये इसमें राजपुत्र करके राजा की अविवाहितस्त्रीका पुत्रजानणा २ अत्रेति इस जगा राजादिक सब के उपलक्षणहैं कैसेकि जिस पाप विषे राजादिकोंको भी मुंडन कहाहै तो औरोंकी क्या वा तहै एह कैमुतिकन्यायहै कैमुतिक न्याय उसकोंकहतेहैं जहां बडोकोंकहाहोवे उहां नदनोंकों जान लेना एतच्चेति एह द्विगुण जो व्रतहै सो नहीं मुंडन करणेकी इच्छा जिसको उस पुरुष को महापातकके विना कहाहै और महापातकविषे तो अवश्य करके मुंडन करवावे ३ विद्व द्विप्रेति और विद्वद्विप्रअर्थात् विद्वान् जो ब्राह्मण और राजा और स्त्रीइनको मुंडन नहीं कहाहै (ऋतेमहापातकिनः) अर्थात् महापातकियोंसे विना जेकर महापातकी होवे तो मुंडन अ वश्य कराणा (निहंतुः) क्या गवादिवधकरणे वाला जो पुरुष तिसको और (अवकीर्णिनः) क्या ब्रह्मचारी होकर स्त्रीसंग करणे वाला जो पुरुष तिनको मुंडन करवाणा उचितहै १

एहविशेषवाधेय प्रायश्चित्त मुक्तावली कारोंकाहै ॥ और विज्ञानेश्वर इसबात विषे विशेषकहतेहें महेति महापातकोंसे विना एहजो महाराजादिहैं तिनकोमुण्डननहीं कहाहै और महापातकेविषे तो तिनको अवश्यहीकहाहै और तिनकोनहीं मुंडनकीइच्छाविषे द्विगुणदक्षिणा सहित द्विगुण व्रतकहाहै १ अन्येत्विति और ऋषि ऐसाकहतेहैं कि महापातकादिकोंविषे राजादियोंकोनित्य वपनक्या मुण्डनकिहाहै और अन्यत्रक्या उपपातकादिकोंविषे मुण्डनको न इच्छाविषे पूर्ववत दूणीदक्षिणा सहित दूणाव्रत करणा उचितहै ऐसाकिहाहै १ विद्वन्मनोहरेति और विद्वन् मनो हरा वणाने वाले आदिककाभी एही पक्ष स्वीकारहै इयंचेति एह वपनादिकोंकी इतिकर्त्तव्यता सो प्राजापत्यसेंलेकर जो व्रततिनके विषे होतीहै और उससें उरें होणेवाले जो व्रत तिनकेवि

इतिप्रायश्चित्तमुक्तावलीकाराः ॥ विज्ञानेश्वरस्तु महापातकादिव्यति रिक्ते राजादीनां वपनं नास्त्येव महापातकादौतु तेषांवपनानिच्छायां द्विगुणदक्षिणासहितं व्रतद्वैगुण्यमिति ॥ १ ॥ अन्येतु महापातका दौ नित्यं राजादेरपिवपनमेवान्यत्र तु वपनानिच्छायांव्रतद्वैगुण्यवि धिरित्याहुः ॥ १ ॥ विद्वन्मनोहराकारादीनामप्येतदेवानुमतम् ॥ इयंचवपनादेरितिकर्त्तव्यता प्राजापत्यप्रभृतिष्वेवभवति न ततोल्प इत्युक्तमेव। तथाचपैठीनसिः॥ द्वादशाहेसंपूर्णेवपनमिति ॥ वपनग्रहणंचे तिकर्त्तव्यतांतरस्याप्युपलक्षणं तथाच। याज्ञवल्क्यः । कुर्यात्त्रिषवणस्ना यीकृच्छ्रंचांद्रायणंतथा पवित्राणिजपेत्पिंडान्गायत्र्याचाभिमंत्रयेदिति १

षे नहि होतीहै और महापातकसें अल्प अर्थात् कम जो पाप तिसके व्रतविषे एह इति कर्त्त व्यता नहिजाननी एहपिच्छे कहचुकेहैं १ तथाचेति इसी तरह पैठीनसी ऋषिकहतेहैं द्वादशे ति पूर्णबारांदिनके व्रतविषे एहवपनउचितहै और वपन ग्रहण इसइतिकर्त्तव्यतासें और दूसरी कर्त्तव्यताकाभी उपलक्षणहै अर्थात् बोधकहै सोयाज्ञवल्क्यजीकहतेहैं कुर्यादिति तीनकालमें स्नानकरणेवालाजो पुरुष सो कृच्छ्र और चांद्रायणव्रतकरे और तथातैसेहिपवित्रजो सहस्रशीर्षा सें आदलेकर सूक्त तिनको जपे और भोजनकालमें जितने ग्रास कहेहैं तिनकोंगायत्रीके मंत्र करके अभिमंत्रणकरे अर्थात् एक एक मंत्रको पढकरके एकएकग्रास वनाये फेरतिनका भक्षण करे अथवा एकएक ग्रासके प्रति एकएक मंत्र पडताहूआ एक एक ग्रासको भक्षण करे ऐसाभी कहतेहैं १

ओर जिसजगामें मुण्डनकी निवृत्तिविषे दूणाव्रतकिहाहै उसजगामुण्डनकीसहचर्याकरके पंचगव्या, दिकोंकीभीनिवृत्ति जाननी इसीकारणसें न्यूनविषे अर्थात् पादोनविषे ओर पादविषे वस्त्रमात्रदा नाकेहाहै ओर कुच्छ नही किहा ओर सौभाग्यवालियां जो स्त्रियां तिनको वशिष्टजीने विशेष किहाहै केशानामिति स्त्रीयोंको व्रतविषे ओर यज्ञ विषे केशोंकावपन नहि किहाहै ओर गो वधादिक जो पाप तिनके विषे दोअंगुलीमात्र अग्र भागसें केशोंकावपन करणा उचितहै १ सधवानामिति ओर सौभाग्यवालियां जो स्त्रिआं तिनको सदाही अलंकारकेवास्ते प्रायश्चित्तके विषेभी ऋषियोंने केशधारण कहेहैण २ अंगुलित्रयमिति अंगुलित्रयं एसाभीपाठ किसीजगामेंहै उसका अर्थस्पष्टहै अत्रेति ओर इस जगामे सधवास्त्री कहनेकरके विधवास्त्रियोंको व्रतविषे सारा मुण्डन उचितहै ॥ ओर पाराशरजीभी इसीपक्षको पुष्टकरतेहैं वपनमिति स्त्रियोंकोमुण्डन और अनुव्रज्या क्या गौके पिच्छे पिच्छे विचरणा अर्थात् जिस तर्फको गौ जाए उसीतर्फको जाना

साहचर्य्यात् पंचगव्यादेरपिनिवृत्तिः ॥ अतएवन्यूनेपादव्रतेवस्त्रमिति वस्त्रादिमात्रदानोक्तिः सधवानां ॥ विशेषमाह वासिष्ठः ॥ केशानांनास्ति वपनं नारीणां व्रतयज्ञयोः ॥ गोवधादिषुसर्वेषुच्छेदयेदंगुलिद्वयम् १ ॥ सधवानांतुनारीणामलंकारायसर्वदा ॥ केशसंधारणंप्रोक्तंप्रायश्चित्तेद्विजो त्तमैरिति अंगुलित्रयमितिक्वचित्पाठः अत्र सधवापदाद्विधवानांसर्ववपनम् पराशरोपि ॥ वपनंनैवनारीणांनानुव्रज्याजपादिकं नगोष्ठेशयनंतासां नव सीरन्गवाजिनम् १ सर्वान्केशान्समुद्धृत्यच्छेदयेदंगुलिद्वयम् सर्वत्रैवंहिना रीणां शिरसोमुण्डनंस्मृतम् २ नदीषुसंगमेचैवअरण्येषुविशेषतः ॥ नस्त्रीणामाजिनंवासोव्रतमेवंसमाचरेत् ३ त्रिसंध्यं स्नानमित्युक्तं सुराणा मर्चनंतथा वंधुमध्येव्रतंतासांकृच्छ्रंचांद्रायणादिकम् ४ गृहेषुसंततंतिष्ठेच्छु चिर्नियममाचरेत् वाशिष्ठ आदिपदं प्रायश्चित्तांतरपरम् ॥

उसकोरोकनानहि ओर जपादिक ओर गोष्ठ क्या गौशालाविषेशयन ओर गवाजिनका अर्थात् गौचर्मकाधारणा एह सभ उचित नहिहैन १ सर्वानिति इसवास्तेक्याकरणाचाहिये किसभनांकेशां कोहाथसें पकडकरके अग्रभागसे दो अंगुलींछेदनकरणे उचितहैन २ नदी ष्विति ओर नदिओं विषे ओर संगम विषे ओर वनविषे क्या वनसंवंधितीर्थविषे जाणानहिकिहा ओरचर्मकाधा रणा नहिकिहाहै स्त्रियां इसतरहकी विधि करके करण ३ ओर स्त्रीयोंकी जो कर्त्तव्यताव्रतविषेहै सो कहतेहैं त्रिसंध्यमिति तीनकालका स्नान करणा किहाहै ओर देवतयोंका पूजन किहाहै ओर वंधुओंके वीचमे रह करके तिनको व्रत करणे कहेहैन ४ गृहेष्विति ओर गृहमें सर्वदा काल निरंतर स्थित रहे ओर शुची रहे नियम जो व्रतादिक तिनको करे ॥ ओर वशिष्ठ जीके कहे होवे धर्मशास्त्र विषे किहाहै कि इसजगामें आदिपद ओर प्रायश्चित्तका भी वोधक है

तेनेति तिसकारणसें प्रयागादिको विषे (मुण्डनंचोपवासश्च) इत्यादि देवलके वचनते प्रयागादिको विषे सारे शिरका मुण्डन करणाचाहिए वेण्यामिति और वेणीनदीविषे (वेण्यांवेणीप्रदानेन) इस वचनकरके वेणीकाहि प्रदानकरणाचाहिए इसलिंगसे अर्थात् प्रमाणसे और आचारसे क्याजानतेहैं कि तीर्थांतर विषे क्या होणे तीर्थ विषे एहविधि नहिहै तिस कारणसे एहहोरही किसीकामतहै ५ ॥ अपरार्क विषे जो मुंडनका प्रकारहै सो कहतेहैं उदङ्मुखइति बुद्धिमान् जो पुरुष सो उत्तरमुख होकरके अथवा पूर्वमुखहोकर्के मुण्डनकरवावे और केश श्मश्रुक्या दाढा और लोम क्या बाहोकेवाल नख तिनको जलसें गिलेकरके कटवावे १ दाक्षिणमिति सपिंडनादि कर्म विषे दक्षिण कर्णते आरंभ कर्के शिखा विना शिरका मुंडनहै और

तेनप्रयागादौ मुण्डनंचोपवासश्चसर्वतीर्थेष्वयंविधिरिति देवलाद्युक्तेः सर्वमुण्डनमेव वेण्यांवेणीप्रदानेनेति लिंगादाचाराच्च तीर्थांतरेनभवतीत्यन्यदेतत् ५ अपरार्के उदङ्मुखः पूर्वमुखोवा वपनंकारयेद्बुधः केशश्मश्रुलोमनखान्युदकसंस्थानिवापयेत् १ दक्षिणंकर्णमारभ्यकर्मार्थेपापसंचये शिखाद्यंनवसंस्कारे शिखाद्यंतंशिरोवपेत् २ पापसंचयेतन्निमित्ते प्रायश्चित्ते शिखाद्यं सशिखं शिखाद्यंतं शिखायामादावंतेचेत्यर्थः तैत्तिरीयके ब्राह्मणे प्रथमकांडे पंचमप्रपाठके चातुर्मास्यप्रकरणे देवावै यद्यज्ञेऽकुर्वत तदसुरा अकुर्वत तेसुराऊर्ध्वं पृष्ठेभ्यो नापश्यन्

पापसंचयके विषे अर्थात् पाप संचयके निमित्त जो प्रायश्चित्तहै तिसके विषे सज्जेकर्णसे लेकर शिखाद्यक्या शिखासहित मुंडन किहाहै और नवीन संस्कार विषे शिखाद्यंत मुण्डन करवावे अर्थात् शिखाके आद और अन्तसे करवावे २ एहि अर्थ मूलमे स्पष्टकरके किहाहै पाप इति॥ और तैत्तिरीयसंज्ञावाला जो ब्राह्मण तिसके प्रथम कांड विषे जो पंचम प्रपाठक तिस विषे भी जो चातुर्मास्य प्रकरणहै तिसविषे ऐसाकिहाहै इसका अर्थभाष्यमे स्पष्टहै कुछक लिखीदाभीहै देवाइति देवता जो यज्ञमे करतेभये सो असुर भी करते भये सो असुर पृष्ठके ऊर्ध्वभागको नहि देखतेभये

सो पहलें केशोंकोउतारतेभये तिसके अनन्तर दाडीको तिसके अनन्तर उपपक्षोंकों तिसके अनन्तर अवांच होतेभये क्या नीमे मुखवाले होतेभये अधिकारसें भ्रष्टहुंदे होए और पराभवन् दूसरेते अनादृत होतेभये जोकोई ऐसामुण्डनकरेगा सोभी ऐसाही होवेगा इसके अनन्तर देवता पृष्ठतें ऊर्ध्व भागको देखतेभये सो पहले उपपक्षोंका मुण्डन करतेभये फेर दाडीका फेर केशोंका तिसकेअनन्तर सुखीहोतेभये और स्वर्गलोकको प्राप्त होतेभये जो ऐसे करवातेहैंन सो स्वर्गलोकमें प्राप्तहोतेहैंन तिसके अनन्तर मनुजी मुण्डनके विषे मिथुनको देखतेभये और दाडीका मुण्डनपहले करवातेभये फेरउपपक्षोंका फेरकेशोंका तिसके अनन्तर प्रजा और पशु-

ते केशानग्रेवपंत अथ श्मश्रूणि अथोपपक्षौ ततस्तेऽवांचआयन् पराभवन् ॥ अधोपतन् स्वाधिकाराद्भ्रष्टाअभवन् ॥ यस्यैवंवपंति अवाङेति(अधः पतति) अथोपरैवभवति अथदेवाऊर्ध्वेपृष्ठेभ्योपश्यन् तउपपक्षावग्रे वपंत अथश्मश्रूणि अथकेशान् ततस्तेभवन् सुवर्गलोकमायन् यस्यै वंवपंति भवत्यात्मना अथोसुवर्गलोकमेति अथैतन्मनुर्वप्तेमिथुनमपश्यत् सश्मश्रूण्यग्रेवपत अथोपपक्षौ अथकेशान् ततोवैसप्राजायत प्रजयापशु भिः यस्यैवंवपंति सप्रजया पशुभिर्मिथुनैर्जायत इति तैत्तिरीयकेआसुरंवप मनिंदित्वादैवेक्रमउक्तः मनुनापि तत्रैव मनुष्यं प्रक्रम्य श्मश्रूण्यग्रेवपंत अथोपपक्षावथकेशानिति अत्राधानेष्टिसोमेषुदैवं तत्रतस्यविधानात् ॥

ओं करके युक्त होतेभये जो ऐसेंकरवातेहैंन सो पशु और मिथुनकरके युक्तहोतेहैंन ऐसें तैत्तिरीयशाखा विषेआसुरीयमुण्डनकों निंदकरके दैवमुण्डनविषे क्रम किहाहै और मनुजीनेभी तिस स्थानविषेकिहाहै मनुष्य प्रसंगकोलेकरक्या कि मनुष्यकर्म विषे पहलेदाडीका मुण्डनकरते हैंन तिसके अनन्तर उपपक्ष अर्थात् शिरके दोनोंकनारे वाम और दक्षिण तिसके अनन्तर केश अत्रेति अग्निके आधान विषे और इष्टियोंविषे और सोमयज्ञविषे देव मुण्डनकाहि योग्यताहै तिसकेविषे दैवमुंडनका विधान होणेतें

प्रायश्चित्तेमें और प्रायश्चित्तविषेंतो दैवही मुंडनउचितहै और मनुष्य निमित्त जो मुण्डन तिसके विषेविकल्पकरकेयोग्यताहै तिसविषेभी विशेषकहतेहैं तत्रेति उदकसंस्था नामकोई यज्ञहै तिसके अर्थ पहिले दक्षिण श्मश्रु और उपपक्ष पीछे वाम श्मश्रु और वाम उपपक्षइनकाहि मु नेहै इसीकाअर्थ प्रकटकरकेकहतेहैं अत्रेति इसमें एहजाननेयोग्यहै कि पहलेकेशोंकामुण्डनकरने है तिसके अनन्तर दाडी तिसके अनन्तर उपपक्ष क्या शिरके दोनो पार्श्व० एह असुर संब धि मुण्डनहै अब उपपक्षादिशब्दोंका अर्थ कहतेहैं तत्रेति उपपक्षक्या शिरके दोनो पार्श्व वा म और दक्षिण० केशक्या शिरका मध्यभाग श्मश्रु क्या दाडी ॥ अब वपनकासमय विशेष क हतेहैं इदमिति एह जो वपनहै सोनिषिद्धकाल विषे भी अर्थात् मुहूर्तके विनाभी करणेयोग्यहै इ सविषे स्मृतिकहतेहैं क्षौरमिति नेमित्तक जो क्षौर सो निषिद्धदिनविषेभी करणा चाहिए पित्रा

प्रायश्चित्तेतुदैवं मानुषेविकल्पेन तत्राप्युदक संस्थायेदक्षिणश्मश्रूपपक्षानु प्त्वावामाविति अत्रेदंवोध्यम् अग्रेकेशान् वपंतेततःश्मश्रूणिततउपपक्षावि त्यासुरंवपनं तत्रोपपक्षौशिरसउभयपार्श्ववर्तिनौकेशाःशिरोमध्यभागाःश्म श्रुप्रासिद्धम् इदंवपनं निषिद्धकालेपिकार्य्यं ॥ क्षौरंनैमित्तकंकार्य्यंनिषेधेसत्य पिध्रुवम् पित्रादिमृतियात्रासु प्रायश्चित्तेचतीर्थक इतिस्मृतेः १ क्षौरनिषे धांश्चाह वृद्धगार्ग्यः ॥ रव्यारसौरिवारेषु रात्रौपातिव्रतेहनि श्राद्धाहप्रतिप द्रिक्ताभद्राःक्षौरेषुवर्जयेत् १ भद्राद्वितीयाद्या नविष्टिकरणं तिथिसाहचर्यात् व्यासः ॥ नक्षत्रेतुनकुर्वीत यस्मिन् जातोभवेन्नरः ॥

दिकोंके मरण कालमें और तिनकेउद्धारकरणे वास्ते जो यात्रा तिसविषे और प्रायश्चित्तविषे और तीर्थविषे इसस्मृतितें १ सो क्षौरकेनिषेध कौनमेंहैन इसविषे वृद्धगार्ग्यजीकहतेहें रव्यारेति रविवार और आरक्यामंगल और शौरिक्या.शनि इनावारांविषे और रात्रिव्यतीपात औरव्रतदिन अर्थात् एकादश्यादि इनाविषे भी क्षौरनहिकरावे और श्राद्धदिन और प्रतिपदा और रिक्ता और भद्रा इनांसवनांनूं क्षौरविषे पुरुष त्यागे १ अथवा इस श्लोककेपूर्वार्द्धमें सप्तमीयांजोहैन सोद्वितीयाके अर्थमे हैन)भद्राक्या।२।७।१२ इह तिथिआं और भद्रा करके विष्टि करणका ग्रहण नहिकरणा क्योंकि तिथियोंकी सहचर्यता होणेतें ॥ और व्यासदेवजी नक्षत्र द्वारा क्षौरकेनिषेध कहतेहैं नक्षत्र ति कि जिसनक्षत्र विषे पुरुषउत्पन्नहोआहै तिसविषे भी क्षौर न करावे

और पूर्वा भाद्रपदा और उत्तरा भाद्रपदा और कृत्तिका इनमेंभी नकरणाचाहिए १ और दारुण संज्ञावाले जो सब नक्षत्र और दुष्टतारा पहली १ पंचमी ५ सप्तमी ७ इह दुष्टताराहै इसीं वर्जकरके और दारुणसंज्ञावाले नक्षत्रांको कहतेहैं मूलइति मूला और ज्येष्ठा और आर्द्रा और श्लेषा और शनिवार इनकी तीक्ष्ण संज्ञाभीहै इनके विषेंभी क्षौरको त्यागे २ और व्यासदेवजी इसविषेविशेष कहतेहैं सिंहेति जब सिंह ५ और धन ९ और मीन १२ राशियोंविषे सूर्य्यस्थित होवे तो पुरुष यात्रा और विवाह और गृहारंभ और क्षौर इनकोत्यागे १ सप्ततुरंगम नामसूर्य्यकाहै ॥ अब इसविषे औरभीविशेष व्यासदेवजी कहतेहैं वीति विवाहके पिच्छे एक वर्ष यज्ञोपवीतके पीछे छे महीने और मुंडनके पिच्छे तीनमहीने मुण्डन नहिकरणा उचितहै और

नप्रौष्ठपदयोःकार्य्यंनैवाग्नेयेतुभारत १ दारुणेषुतुसर्वेषुदुष्टतारांतुवर्जयेत् मूलेंद्राद्रार्हिभंशौरिस्तीक्ष्णंदारुणसंज्ञकमित्युक्तेषु दारुणेष्वित्यर्थः २ वादरायणः॥ सिंहेधनुषिमीनेचास्थितेसप्ततुरंगमे यात्रोद्वाहगृहारंभक्षौरकार्य्याणिवर्जयेत् १ सप्ततुरंगमःसूर्य्यः ॥ व्यासः ॥विवाहमौंजीचूडासुवर्षमर्द्धंतदर्द्धकं अन्तर्वत्न्यांचजायायांनेष्यतेकेशवापनमित्याद्यनेकनिषेधाःसमयमयूखेउक्ताः १ तथाजीवत्पितृकेणापिनकार्य्यम् मुण्डनंपिंडदानंचप्रेतकर्मचसर्वशः ॥ नजीवत्पितृकःकुर्याद्गुर्विणीपतिरेवचेति १ अथस्त्रीशूद्रोपयोगिकिंचिदुच्यते ॥ स्त्रीणांहोमोनकर्त्तव्यः पंचगव्यंतथैवचेति जावालेन स्त्रीणांहोमःपंचगव्यंचनिषिध्यते

जिसकालो गर्भवती होवे तदभि नाहिकरणा उचितहै परंतु गर्भ विषे सप्तमते लेकर तीनमहीनेका हि निषेधहै इत्यादिक अनेक निषेध समय मयूख ग्रन्थ विषेकहेहैंन १ और तैसेंहि जीवत्पितृकजो पुरुष तिसने भी मुण्डन नहि करणा चाहिए इस विषें वचन कहतेहैं मुण्डनमिति मुण्डन और पिंडदान और प्रेतकर्म तिनां नू जीवत्पितृक अर्थात् जिसका पिताजीताहै और गुर्विणीपति अर्थात् गर्भवतीस्त्रीका पतिनकरे १ अब इसके अनन्तर स्त्री शूद्रोंकी कर्तव्यताविषे कुछ कहतेहैं स्त्रीणामिति स्त्रियोंको हवन और पंचगव्यका पान नहिकरणेयोग्यहै और जावालऋषिजी इसी पक्षको पुष्ट करतेहैं जावालेनेति

अयमिति यह जो होमकानिषेधहै सो आग्येनैव इत्यादिपूर्वोक्तवचनतें अग्निशालाविषेहिंजानना होरथे नहि तिसकारणसें लौकिक अग्निविषे ब्राह्मणद्वाराहवनहोताहै ऐसा केकहतेहैं अग्निशाला वोहै जिसमे नित्य हवन होताहै और लौकिक अग्निवो है जिसमे कदाचित् हवनहोताहै मदन रत्न विषे ऐसीव्यवस्थाकहीहै ॥ और प्रायश्चित्तमयूखकार इसको केयोंऋषियोंकेमतको मानताहै अब इसीमे और कहतेहैं स्त्रीणामिति स्त्रीयोंकोकृताकृतद्रव्यका अर्थात् तंडुलोंका हवन उचित है कृताकृत शब्दका अर्थ ग्रंथांतर मे लिखाहै (कृतमोदन सक्त्वादि तंडुलादि कृताकृतं ब्री-ह्यादिखकृतंज्ञेयं) इसका अर्थ स्पष्टहै इसकहणेते तंडुलोका हवन करणा सिद्ध भया और ह-वनकेकरणेवास्ते आचार्यका वरण करके तिसके द्वारा करणा उचितहै यह विचार प्रायश्चित्तेंदु-शेखरमे कहाहै ॥ और शूलपाणिजीसें आदिलेकर बहुते ग्रंथकार पिछेदिखाया जोहै ? स्त्रीणां

अयंचहोमनिषेधआग्येनैव हि शालाग्नौ जुहुयाद्व्याहृतीः पृथगित्युपक्रमा च्छालाग्नावेव तेन लौकिकाग्नौब्राह्मणद्वाराभवतीतिकेचिदाहुरिति मदन रत्ने ॥ मयूखकारोपीदं केषांचिन्मतमेवानुमन्यते स्त्रीणांहोमः कृताकृतः क रणपक्षे आचार्यं तदर्थं ॥ वृत्वा तद्द्वाराकर्त्तव्यइतिप्रायश्चित्तेंदुशेखरे शूलपाणिप्रभृतयोबहवोनिबंधकाराःप्रदर्शितजाबालवचनस्याधिकार्य्यंतर स्यप्रक्रमेणोपक्रमस्य विच्छेदाद्विशेषपरतामनभ्युपगच्छंतःस्त्रीणांहोमं नेच्छंतीतिबहुसमत्वात्तदेवयुक्तम् । यत्तुपराशरेण । उपवासोव्रतंहोमतीर्थस्नान जपादिकम् विप्रैस्संपादितंयस्यसंपन्नंतस्यतत्फलमिति १ विप्रद्वारोपवास व्रतहोमादिकमुक्तम् तस्याविधिप्राप्तेषुजपहोमादिषु विप्ररूपप्रतिनिधिनि यामकत्वंनपुनर्विप्रद्वाराहोमस्यविधायकत्वम्

होमोनकर्तव्य इत्यादि जाबालजीका वचन इसको दूसरे अधिकारिको स्थापन करणे करके पहले अधिकारिके हटाणेते अर्थविशेषको नहि स्वीकार करते होये अर्थात् इस वचनमें वि शेष नहि ऐसा जानदे होए स्त्रीओं को होम नहि करणे योग्य इसी बात को बहु संमत जाण कर होमके निषेधको हि स्थापनकरदेहोए एहि अर्थ उचितहै ॥ और जो पराशरजीने किहाहै उपेति उपवासहै निराहार व्रत और व्रत क्या नक्तादि और होम और तीर्थस्नान और जपा दि जो हैं सो ब्राह्मणद्वारा जिसमनुष्यके कराए जाण तिस करवाणेवालेको तिसका फलहोताहै इसवचनकरके ब्राह्मणद्वारा उपवासव्रतादिकरणेकहेहैं तिसवचनकोविधिकरके प्राप्तहोए जो जप होमादि तिनां विषे ब्राह्मणप्रतिनिधि द्वारा. करवाणेके अर्थ नियामकत्वहै अर्थात् इस नियम वा स्ते एह वचन है कोई ऐसा नहि कि ब्राह्मण द्वारा यथेष्ट हवन करणका विधान होवे.

एवमिति मंत्र हीन शूद्रके जपादि ब्राह्मणके मंत्र करके ग्रहण करणे एह वराहजीकावचन भी किसी प्रमाणकरके प्राप्त होया जो शूद्रकोपौराणिक मंत्रादि जप तिसविषे ब्राह्मण प्रतिनिधि द्वारा करवाणेके अर्थहै कोई यथेष्टाचरण मंत्र जपादिकके अर्थ नहि है इसकहणे करके क्या जानतेहैंकि इन दोनों वचनोंकरके स्त्रीशूद्रादिकोंको प्रायश्चित्तविषे ब्राह्मण द्वारा होमकी प्राप्ति जो कहदे होये परास्तहोये अर्थात् अनादृतभये अब स्त्रीयों को पंचगव्य प्राशन विषे वचन कहतेहैं स्त्रीणामिति स्त्रीयोंको और शूद्रोंकोहवणकरणा और पंचगव्यकापानकरणा उचित नहिहै तिस कारणतें स्त्री और शूद्र शुद्धीके वास्ते प्राजापत्य व्रत करण इक एहवचनहै १ पंचगव्यमिति स्त्री और शूद्र पंचगव्यको बणावें और तिसकेस्नान और पान करके शुद्धहोवें एह दूसरावचनहै २

एवममंत्रस्यतुशूद्रस्यविप्रमंत्रेणगृह्यते ॥ इति वराहवचनमपि मानप्राप्तमंत्र जपादौविप्ररूपकरणविधायकमेव एतेनैतद्वचनाभ्यां स्त्रीशूद्रादेर्विप्रद्वाराप्रा यश्चित्ते होमप्राप्तिंवदंतः परास्ताः ॥ स्त्रीणांपंचगव्यप्राशने ॥ स्त्रीणां होमो नकर्त्तव्यःपंचगव्यंतथैवच । स्त्रीशूद्रश्चविशुद्ध्यर्थं प्राजापत्यंसमाचरेत् पंचग व्यंतुकुर्वीत स्नात्वापीत्वाशुचिर्भवेत् १ इतिदेवलपराशरवचनाभ्यां विहित प्रतिषिद्धत्वाद्विकल्पः शूद्रस्यतु कपिलातिरिक्तायाःपंचगव्यप्राशनमस्त्येव यत्तुपंचगव्यंपिवन् शूद्रोब्राह्मणस्तुसुरांपिवन् उभौतौतुल्यकर्म्माणौ पूयाख्येनरकेवसेदित्यत्रिवचनं ॥ तत्प्रायश्चित्तानंगपंचगव्यप्राशनविषयम् स्पष्टंचेदंमदनरत्नप्रायश्चित्तेन्दुशूलपाण्यादिनिबंधेषु

एहदेवल पराशरजीके दोनों वचनहैंन एक हवनका निषेधकरताहै और दूसरा विधान करता है इन दोनोंको प्रमाण होणेतें विकल्प सिद्ध भया और शूद्र को कपिला गौके अतिरिक्त जो गौ तिसके पंचगव्यका विधानहै और जो किहाहै कि पंच गव्य नूं शूद्र पीवे और ब्राह्मण मदिरानूं पीवे सो दोनो एक जैसे हैन और पूयाख्य नाम नरक विषे निवास करते हैन एह अत्रिजीकावचन प्रायश्चित्तसें विना जो पंचगव्य प्राशन तिसका निषेध करताहै एहवात स्पष्टहै मदनरत्न और प्रायश्चित्तेन्दुशेखर और शूलपाणिसें आदलेकर जो ग्रन्थोंके करता हैन तिनके निबंधोंविषे भी स्पष्टहै

अथेति अर्थ इसतें अनन्तर स्नानविधि कहतेहैं सो बहुत प्रकारकीहै जोकहीहै प्रायश्चित्त मयूख विषे तिसजगा भस्म स्नानके निमित्त इतिकर्त्तव्यताकहीहै लिंगपुराणविषे ईशेति ईशानेनेत्यादि मंत्र करके अथवा ईशानायनमः इतने करकेही प्रतीपुरुष शिरमेंभस्म लगाए और तत्पुरुषेनेत्यादि मंत्रकरके मुखमें और अघोरेणेत्यादि मंत्रकरके हृदयमें और वामेनेत्यादि मंत्र करके गुह्यमें लगाए १ और सद्येनेत्यादिमंत्र करकेपैरोंमें लगाए और ओंकारायनमः इसमंत्र करके सभनां अंगानूं भस्मकरके शुद्धकरे इहविशेषहै ॥ इसमें व्यवस्था कहतेहैं तत्रेति तिसविषे ईशान पदकरके ईशानः सर्वविद्यानां इत्यादिक जो मंत्र तिनका ग्रहणकरणा सो मंत्र यजुर्वेदकी शाखाविषे प्रसिद्ध हैंन कैओंकेमतमें ईशानायनमः ऐसेंहिमंत्रका प्रयोगहै तिसतें अनन्तर गोमय

अथ स्नानविधिः प्रायश्चित्तमयूखे॥तत्रभस्मस्नाने इतिकर्त्तव्यता।लिंगपुराणे ईशानेन शिरोदेशं मुखंतत्पुरुषेणतु हृदोदेशमघोरेण गुह्यंवामेनसुव्रतः १ सद्येनपादौसर्वांगं प्रणवेनतुशोधयेदिति विशेषः ॥ तत्रेशानपदेन ईशानःसर्वविद्यानामित्यादयोमंत्राग्राह्याः तेच यजुः शाखायांप्रसिद्धाः केचित्तु ईशानायनमइतिप्रयोज्यमितिब्रुवते। ततोगोमयस्नानम्।तस्यविधिमाह विष्णुः। अग्रमग्रमितिस्मृत्वा मानस्तोकेतिवापुनः ॥ गोमयैर्लेपयेत्प्राज्ञःसोदकैर्भानुदर्शितैरिति १ कूर्म्मपुराणे गोमयस्यप्रमाणंतुयेनांगंलेपयेत्तत इति ⊛ अथमृत्स्नानविधिः शिवपुराणे अश्वक्रांतइतिस्मृत्वामंत्रेणामंत्र्यमृत्तिकां उद्धरेदुद्धृतासीति मंत्रेणसुसमाहितः १ नमोमित्रस्येतिऋचा दर्शयित्वा चभानवे आरुह्यममगात्राणि समालभ्यद्विराचमेत् २

करके स्नानकरणा तिसकीविधि विष्णुजी कहतेहैं अग्रमिति अग्रमग्रमित्यादिमंत्रका अथवा मानस्तोके इत्यादि मंत्रका स्मरणकरकेगोमय जो है जलकेसहित और सूर्य्य करके दखाया होया तिस करके लेपनकरे बुद्धिमान् पुरुष १ कूर्म्मपुराणविषे गोमयकाप्रमाण किहाहै कि जितने गोवर करके अंगोंमें लेपण होजावे उतना हिलैणा ॥ अब मृत्तिका स्नानकीविधि कहतेहैं जो शिवपुराणविषे कहीहै ॥ अश्वक्रान्तेत्यादिमंत्रका स्मरणकरके आमंत्रणकरके क्या मंत्रसुणा करके उरउद्धेनू ॥ उद्धृतासीत्यादि मंत्रकरके ।मृत्तिकादाग्रहणकरे सावधान होयाहोया १ नमोमित्रस्येत्यादिऋचा करके मृत्तिकाको सूर्य्यकेताईं दखाकरके (आरुह्यममगात्राणि) ऐसेंपढकरके पुरुष अंगोंमें मृत्तिका लगाए फेर दो आचमनकरे २

याज्ञवल्क्यजी अनुलेपनके निमित्त और मंत्रकहतेहैं अलाभ इति जेकर पूर्वोक्तमंत्र न मिलें तौ संपूर्णअंगोंमे इदं विष्णुः इत्यादि ऋचापढकर्के मृत्तिका लगावे १ और जमदग्निजी भी इसी पक्षकोपुष्टकरतेहैं अश्वक्रान्तेइत्यादिऋचाको पढकर्के हौली हौली शुद्ध मृत्तिका को उठावे १ और नमोमित्रस्येत्यादि ऋचाको पढ कर्के दोनों हाथोंमें लगावे फेर दोदोनों हाथ सूर्यको दिखावे और गंधद्वारामित्यादि मंत्रको पढ कर्के खानि जोहैन नेत्रोंसे आदलेकर इंद्रिय तिनमें लगावे और अंग जो हैन पैरोंसे आदलेकर तिनमें भी लगावे २ और मृत्तिकादा परिमाण कूर्म्म पुराण विषे किहाहै मृत्तिकेति ॥ मृत्तिका गिल्लेआमलेके परिमाण कहीहै और मृत्तिकाके

अनुलेपनेमंत्रांतरमाह योगी० अलाभेतुमृदांगानि इदंविष्णुरितिऋचा १ जमदग्निरपि अश्वक्रांतेतिवैशुद्धांमृत्तिकामाहरेच्छनैः १ नमोमित्रस्येत्यादित्यायदर्शयेत्समृदौकरौ गंधद्वारामितिजप्त्वाखान्यंगान्यनुलेपयेत् २ खानिनेत्रादीनींद्रियाणि अंगानिपादादीनि मृत्तिकापरिमाणं कूर्म्मपुराणे। मृत्तिकाचसमुद्दिष्टात्वार्द्रामलकमात्रिकेति ॥ क्रमउक्तोब्राह्मे आयुष्कामः शिरोलेपंमृदाकुर्य्याद्द्विजःपुरा श्रीकामःपादयोःशौचंमृदापूर्वंसमाचरेत् ॥ १ ॥ पारस्करः ॥ एकयातुशिरःक्षाल्यंद्वाभ्यांनाभेस्तथोपरि मृद्भिश्चतसृभिःकार्यंषड्भिःपायुंतथैवच १ कटिवस्त्यूरुजंघाश्चपादौचातिसृभिस्ततः तथाहस्तौपरिक्षाल्यद्विराचामेत्समाहितः २

अनुलेपनमें क्रम ब्रह्मपुराणविषेकिहाहै आयुष्कामइति आयुष्काम जो द्विज अर्थात् बहुत आयुकी कामनावाला सो मृत्तिकाकर्के पहले शिरमें अनुलेपनकरे पीछेपादपर्य्यन्तसवनां अंगाका अनुलेपनकरे और श्रीकाम जो द्विज अर्थात् श्रीकीकामनावाला सो मृत्तिकाकर्के पहले चरणोंमें फेर शिरपर्य्यन्तसवनां अंगोंमे अनुलेपनकरे १ पारस्करजी इस विषे विशेष कहतेहैं एकयेति एक मृत्तिका कर्के शिरको धोवे अर्थात् एकवार लगा कर्के और नाभी को दोवार लगाकर्के धोवे और नाभीके उपरिभागकोचारवेर लगाकर्केधोवे और गुदाकोछवार लगाकर्के धोवे १ और कटि कपाल और वस्तिक्या मूत्राशय और उरु जंघा पाद इनको चार चार वेर लगाकर्के शोधे और तैसेहि हाथोंको भी चारवेर लगाकर्के शोधे और सावधान होया होयादोवारआचमनकरे २

श्रोर इसविषे योगी याज्ञवल्क्यजी कहतेहैं मृद्भिरिति पुरुष निर्विकार विष्णुकास्मरणकरताहोया क्रमकरकेशिरसे आदलेकर नाभिपर्यंत सबनां अंगानूं मृत्तिका करके श्रोर अद्भिः क्या जलों करके शोढे १ इसीकोकहतेहैं कटीति कटि श्रोर वस्ति क्या मूत्राशय ऊरु जंघा श्रोर चरण तिनानुं तीनवार मृत्तिका लगाकरके धोवे तैसेंही हार्थोकोभी तीनवार लगाकरके धोवे फेर आचमन करके जलकों नमस्कारकरे २ फेर यत्किंचेदमित्यादि मंत्र पडकरके दूसरी वार नमस्कार करे॥ इस जगामें पारस्करजीने जो कहेहैं मृत्तिका संख्यादि वाक्य श्रोर योगी याज्ञवल्क्यजीने जो कहेहैं तिनके विरोधे दूर करणेकेवास्ते शाखोंके ऊपरव्यवस्था समझनी अर्थात् शाखा के अनुसार व्यवस्थालगानी एह हेमाद्रिने किहाहै॥ एह मृत्स्नानविधि होचुकी॥ श्रोर तिसके अनन्तर चौथास्नान जलकाकिहाहै तिसकाप्रकारब्रह्माण्डपुराण विषे हैं आपइति पुरुष आपो

योगी० मृद्भिरद्भिश्चगात्राणिक्रमशस्त्ववनेजयेत् शीर्षाद्यानाभिसर्वाणिस्मरन्विष्णुमनामयम् १ कटिवस्त्यूरुजंघेचचरणौचत्रिभिस्त्रिभिः॥ तथैवहस्तावाचम्यनमस्कृत्यजलंततः२ यत्किंचेदमितिमंत्रेणनमस्येत्प्रयतांजलिः अत्रविरुद्धानांमृत्संख्यादिवाक्यानां यथाशाखं। व्यवस्थेतिहेमाद्रिः॥इतिमृत्स्नानविधिः॥ अनंतरंचतुर्थंवारिस्नानम् तत्प्रकारश्चब्रह्मांडपुराणे॥ आपोअस्मानितिह्युक्त्वाभास्कराभिमुखःस्थितःइदंविष्णुर्जपित्वाच प्रतिस्रोतोनिमज्जति १ महार्णवेतु वैकल्पिकौद्वौमंत्रावुक्तौ इदमापः प्रवहेतिऋक् आपोहिष्ठेतिऋचावेति॥ प्रायश्चित्तेन्दुशेखरेअनंतरं पंचगव्यस्नानान्युक्तानि तत्र तद्ग्रहणमंत्रामात्स्ये॥ सावित्र्यादायगोमूत्रंगंधद्वारेतिगोमयम् आप्यायस्वेतिचक्षीरं दधिक्राव्णेतिवैदधि १ तेजोसीतिघृतंतद्वदेवस्यत्वेतिचोदकम्

कुशमिश्रंक्षिपेद्विद्वान्पंचगव्यंभवेत्तुतदिति २॥

ऽस्मानित्यादि मंत्रको पडकरके सूर्यके सन्मुख स्थित हूया २ इदं विष्णुरित्यादि मंत्रको पडकरके प्रतिस्रोतमें निमज्जित होवे अर्थात्प्रवाहके सन्मुखहोकरके गोतालगावे श्रोर निमज्जति नो प्रयोगहै सो लेट् लकारका जानना १ श्रोर महार्णव ग्रन्थमें निमज्जनके वास्ते विकल्प करके दोमंत्र कहेहैन एक इदमापः प्रवहेत्यादि ऋचाहै श्रोर दूसरी आपोहिष्ठेत्यादि ऋचाहै एह जलका स्नान होचुका ॥ तिसके अनन्तर प्रायश्चित्तेन्दु शेखर विषे पंच गव्यके स्नान कहेहैं श्रोर तिसके ग्रहण करणे वाले मंत्र मत्स्य पुराणमें कहे हैन सो कहतेहैं सेति साविड्यादि मंत्र करके गोमूत्रलैणा श्रोर गंधद्वारेत्यादि मंत्रकरके गोमयलैणा आप्यायस्वेत्यादिमंत्राकरके दूधलैणा दधिक्राव्णेत्यादिमंत्रकरके दहि लैणा १ तेजोसीत्यादिमंत्राकरके घृत लैणा देवस्यत्वेत्यादि मंत्रकरके कुशाकाजल कुशाके साथहि पाणा तद पंचगव्य होताहै २

श्रौर पराशरप्रोक्तधर्म्म शास्त्रमें तेजोसिशुक्रमसीत्यादि मंत्रकरके घृत लैणा श्रौर देवस्यत्वेत्यादि मंत्र करके कुशाकाजलपाणा ऐसा जो ऋचाकरके पवित्र होयाहोया पंचगव्य तिसको पुरुष अग्निके समीप स्थापनकरे एह पराशरका दूसरा श्लोकहै अर्थात् पिछे मत्स्यपुराणकेकहे जो दो श्लोक तिनका पहला श्लोक इसकेबराबरहै श्रौर दूसरेमे विशेषहै श्रौर देवस्यत्वेत्यादिमंत्र पडकरके तिसके अनन्तर (जल मभिषिंचामि) ऐसें पडकरके सारा वाक्य पूरा करणा एह निबंध कारोंका मत है इसमें ग्रंथान्तरकामत दिखाकरके समाधान करतेहैं ॥ यद्यपीति यद्यपि मत्स्यपुराण विषे देवप्रतिष्ठाके निमित्त देवस्नानके वास्ते पंचगव्यके ग्रहणमें मंत्र कहे हैंन श्रौर पराशर जीनें ब्रह्मकूर्चव्रतके प्रकरणमें एहीमंत्र कहेहैं तिस वास्ते दोनों जगामें कुशोदक सहित जो गोमूत्रादि ६ तिनका ग्रहणहै एह बात प्रमाण जाननी सोभी पंचगव्यं पिबेत्तत इसजगा पंचगव्य शब्दकरके छे जो हैंन गोमूत्रादि तिनका ग्रहणहै श्रौर (पंचगव्यमृचापूत

पाराशर्य्येतु ॥ तेजोसिशुक्रमित्याज्यंदेवस्यत्वाकुशोदकम् पंचगव्यमृचापूतं स्थापयेदग्निसन्निधाविति द्वितीयश्लोकउक्तः देवस्यत्वेत्यनन्तरमभिषिंचामीतिवाक्यशेषपूरणीयमितिनिबन्धकाराः ॥ यद्यपिमात्स्ये देवप्रतिष्ठायां देवस्नानार्थं पञ्चगव्यग्रहणे मंत्राउक्ताःपराशरेणच ब्रह्मकूर्चप्रकरणे तथाप्युभयत्रापि कुशोदकसहितानांषण्णांगोमूत्रादीनां पंचगव्यंपिबेत्तत इति पंचगव्यमृचापूतमिति पंचगव्यमितिपरिभाषितगम्यते तस्माच्च प्रकरणेन नियमाभावाद्यत्र पंचगव्यमिति प्रयोगस्तत्रैतदेवमंत्राद्यवगंतव्यम् अन्यथागव्यमिति तद्धितस्य गव्यशृंगतक्रादिसाधारण्येन तेनापिस्नानं स्यात् केचित्तु मलापकर्षणंकार्यं वाह्यशौचोपसिद्धये इति वाह्यशरीरमलशोधनमात्रार्थत्वादमंत्रकाण्येवतानीत्याहुः

इसजगामें भी छेयांका ६ ग्रहणहै इसवास्ते पंचगव्य जो शब्दहै सो परिभाषा शब्द जानना एह व्युत्पत्ति शब्द नहिहै तिसकारणतें प्रकरण करके नियमके अभाव होणेतें जहां पंचगव्य शब्दका प्रयोगहै उस जगा इन छेयोंकाहि ग्रहण करणा कोई ऐसा भ्रम मत करे कि देवप्रतिष्ठामेंहि पंचगव्यकाग्रहण मंत्रों करके छेकाहै श्रौर जगामेंनहि क्योंकि ब्रह्मकूर्चमें बिधानहोणेतें प्रायश्चित्तोंमे भी इन मंत्रोंकाउपयोगहै तिसतेंपंचगव्य एह परिभाषाशब्दसिद्ध भया ॥ अन्यथेति जेकर ऐसा नहि मानोंतो गोका जो विकार होवे तिसको गव्यकहिये इस तद्धितप्रयोग कर के शृंगतक्रादि जो हैंन तिन करके भी स्नानहोणा चाहिए ॥ इसमें होरमतकहतेहैं केचिदिति मलका अपकर्षण करणा चाहिए अर्थात् मल उतारणा चाहिए वाह्य शरीरकी शुद्धिके वास्ते इसवचनको वाह्यशरीरका मलशोधनमात्रहि प्रयोजन होणेतें मंत्रोंके विनाहि स्नानादिकरणे चाहिए के ऐसा कहतेहैं

इसमें जमदग्निजीभी कहतेहैं हिरण्येति हिरण्य शृंग वरुण मित्यादि मंत्र करके पुरुष जलमेंप्राप्तहोवे सुमित्रा इत्यादि मंत्रकरके जलोंका स्पर्शकरे दुर्मित्रासु इत्यादि मंत्रकरके जलनूं वाहर फैंके क्या करके यदपांकूट मित्यादि मंत्रकरके तीनवार जलकाहाथसे आलोडनकरके अर्थात् वीचमें हाथको अंगुल फेरकरके १ अब प्रायश्चित्तपर्य्यंत जितने धर्म्म करणे योग्यहैं सो शंखजी कहतेहैंन ॥ प्रायश्चित्तमिति प्रायश्चित्तकरणेवाला जो पुरुष सो मौनीहोया २ तीनवार जलका उपस्पर्श करे अर्थात् स्नानकरे एक वस्त्र धारे अथवा अर्धवस्त्र धारे और कीता है थोडा भोजन जिसने ऐसा होया २ पृथिवीमें शयन करे १ और रात्रि में स्थितरहे और दिनमें वीरासनी होवे और मौनीरहे मुंजकी तडागी धारे और दंड कमंडलूकाधारणकरे और भिक्षाकरके निर्वाहकरे और अग्निहोत्र करे फेर कूष्मांडादि मंत्रों करके घृतकाहवनकरे २ इत्थं उपस्पर्श शब्द करके स्नानका ग्रहणहै यह अपरार्कमें कहाहै ॥ और दिनमें अतिथि क्या अभ्यागतोंकी वृत्तिधारणवाला होकरके रहे फेर रात्रिमें वैठारहे यह वीरासनशब्दका अर्थ विज्ञानेश्वर जीने कहाहै ॥ और शूलपाणिजी तिसका और अर्थ कहतेहैं ॥ कुड्येति ॥ दिनरात कुड्यादि जो आधार हैन अर्थात् कंदसें लेकर जो आश्रय हैन तिनकेविना वैठारहे अर्थात् तिनकेआश्रयमें न वैठे और कूष्मांड शब्दकरके यद्देवदिवहेडनमित्यादिमंत्रोंकाग्रहणहै। और इसीमें मनुजीभीकहतेहैं स्थानेति किस्थानासनकरकेव्यवहार करे अर्थात् दिनमें खडारहे और रात्रिमें वैठारहे जेकर इसमें अशक्तहोवे तो भूमिशयन करे ॥ और वसिष्ठजी इसमें विशेषकहतेहैं महाति कि महाव्याहृतियोंकरके घृत और तिलों करके पवित्र हवनदिन २ प्रति करे परंतु सावित्री और महाव्याहृतिमंत्रकरके हवन करे सो महाव्याहृतियां ओंभूः ओंभुवः ओंस्वः यहहैंन और तत्सवितुः सें लेकर प्रचोदयात् इहांतक सावित्रीहै

जमदग्निः हिरण्यशृंगवरुणमित्यापोभिप्रपद्यते सुमित्राइत्यपःस्पृष्ट्वा दुर्मित्रासुवहिःक्षिपेत् यदपांकूटमित्यापस्त्रिरालोडयतुपाणिना १ प्रायश्चित्ताचरणपर्य्यंतंधर्म्मानाह शंखः ॥ प्रायश्चित्तमुपासीनोवाग्यतास्त्रिरुपस्पृशेत् एकवासार्द्धवासावा लघ्वाशीस्थंडिलेशयः १ स्थानवीरासनीमौनी मौंजीदंडकमंडलुः भैक्षचर्य्याग्निकार्य्यंच कूष्मांडैर्जुहुयाद्घृतम् २ उपस्पर्शः स्नानमित्यपरार्के दिवातिथीरात्रौचोपवेशनं वीरासनमिति विज्ञानेश्वरः॥ कुड्याद्यनाश्रयेणाऽहोरात्रमुपवेशनमेवेति शूलपाणिः ॥ कूष्माण्डैर्यद्देवादेवहेडनमित्याद्यैः ।मनुः। स्थानासनाभ्यांविहरेदशक्तोऽधःशयीतवा ॥ वसिष्ठः ॥ महाव्याहृतिभिर्होमःसावित्र्याचान्वहंस्वयम् कर्त्तव्यः पावनःसम्यक् सर्प्पिषाचतिलैस्तथा १

अत्रेति इसजगा घृत और तिलोंका व्याहृतियोंका और गायत्रीका विकल्प जानणा विकल्प क्या घृतकरके अथवा तिलोंकरके हवन करे गायत्री मंत्र करके अथवा, महाव्याहृतियों करके करे एह अपरार्कमें कहाहै मत्स्यपुराणविषे विशेष कहाहै ॥ आपइति आपोहिष्ठा इत्यादि जो सूक्त और शुद्धवतियां जो ऋचा हैन फेर तिनके आगे जो अघमर्षण है और शंवतिआं और स्वस्तिमतियां और पावमानियां जो ऋचा हैन और तिनके आगे जो अघमर्षणहै तिनांसवनांनूं कृच्छ्रादिको विषे जोडे और पुरुष कृच्छ्रादिकांनूं करे १ वैशंपायन भी एहिबातक हनेहैं ऋषभमिति ऋषभ जो सूक्त और विरज जो सूक्त और शुद्ध वतिआं जो ऋचा और तिनकेआगे जो अघमर्षण और अतिपवित्रवेदोंकीमाता जो गायत्रीतिनां सवनानूं पुरुषजपे ॥ और गायत्रीके जपनेकी संख्या कहतेहैं एकसउ १०० अथवा आठ सउ ८०० अथवा एकहजार १००० अथवा अधिकभी जपे १ और वैशंपायनजीने और भी कहाहै स्नात्वेति स्नान करके सूर्य्यके सन्मुख खडा होवे और सूर्य्यके उपस्थानके जो मंत्र तिनों करके हाथजोडे

अत्रद्रव्याणांव्याहृतिगायत्र्योश्चविकल्पइत्यपरार्के तत्रैव पुराणे आपोहिष्ठेति सूक्तंतु शुद्धवत्योघमर्षणं शंवत्यःस्वस्तिमत्यश्च पावमान्योऽघमर्षणा सर्वत्रैवप्रयुंजीतकृच्छ्रादिव्रतमाचरेत् १ वैशंपायनः । ऋषभंविरजंचैव शुद्धवत्योऽघमर्षणम् गायत्रींवाजपेद्देवीं पवित्रांवेदमातरम् शतमष्टशतंवापि सहस्रमथवापरम् १ सएव ।स्नात्वोपतिष्ठेदादित्यं सौराग्भिस्तुकृतांजलिः गौतमः। रौरवयौधाजयेनित्यंप्रयुंजीत रौरवयौधाजये सामनी ।षट्त्रिंशन्मते। जपहोमादियत्किंचित्कृच्छ्रोक्तंसंभवेजपेत् सर्वंव्याहृतिभिःकुर्य्याद्गायत्र्याप्रणवेनवा १ हारीतः ॥ सूर्य्यायदेवताभ्योवैनिवेद्यव्रतमाचरेत् निवेदनमग्रेव्रतमित्यादिमंत्रेणेत्यपरार्के। पराशरः।प्रायश्चित्तेषु सर्वेषुकुर्य्याद्ब्राह्मणभोजनम् शक्त्यावित्तानुसारेणप्रायश्चित्तानुरूपतः १

और गौतम जो विशेष कहतेहैं रौरवनूं और यौधा जयनूं पुरुष नित्यप्रति जोडे अर्थात् जपकरे और रौरव और यौधाजय एह दोनो सामवेदके मंत्रहैन ॥ और षट्त्रिंशत्केमतमें विशेषकहाहै ॥ जपेति जपहोमादिक जितनेककृच्छ्रमेंकहेहैन तिनांनूंपुरुष जपे जेकर सब नामिले तो जो संभव होवे अर्थात् जो मिले तिसनूं जपे और मंत्रकोई न मिलेतो व्याहृतियां अथवा गायत्री अथवा ओंकार करके करे ॥ १ ॥ हारीतजीभी विशेष कहतेहैं सूर्य्येति सूर्यके ताईं और देवतयोंकेताईं निवेदन करके व्रतकों करे और निवेदन अग्रेव्रतमित्यादि मंत्र करके करे एह अपरार्कमें कहाहै इसमें पराशरजी भी कहतेहैं ॥ प्रायश्चित्तेति सवनों प्रायश्चित्तोंके विषे प्रायश्चित्तके अनुरूपतें अर्थात् जैसा प्रायश्चितहोवे तिसके अनुसार यथाशक्ति करके और वित्तानुसारतों करके ब्राह्मण भोजन करें १

आलहोति और पुरुषगायत्रीनूं एकहजारपर्यंत १००० अथवा शतपर्यन्त १०० अथवा दशमात्रपर्य्यंत जपे और ओंकारकेसहित अथवा और कोई अष्टाक्षरादिमंत्र जपे अथवा दशहजार १०००० गायत्रीनूं जपे १ और प्रायश्चित्त करणेकी समर्थनाहोवेंतांदूसरे पुरुष पासों करवाणा योग्यहै एह बात प्रायश्चित्त विवेकमें कहीहै ॥ ब्रह्मपुराणके वचनविषे कहतेहैं रोगीति रोगी पुरुष और वृद्ध और पौगंड क्या आठवर्षसे उपरन्त दश वर्ष पर्यन्त एहजो हैन सो दूसरे पासों सदा प्रायश्चित्त करवाण और इसी पक्षको पराशरजीभी पुष्ट करतेहैं ॥ व्याधीति ॥ व्याधि क्या रोग और व्यसन क्या जूया और मद्यपान और विभ्रान्त क्या उपद्रव और दुर्भिक्ष और डामर क्या एक राजाकेऊपर दूसरे राजानेचढकरके आवणा एहबातां जद होण तां निराहार व्रत होम ब्राह्मणांपासों करवाए होए शुद्धि करणेवाले हुन्दे हैन १ अब व्रतकेअन्तमें जो कर्तव्यताहै सोपरा

आसहस्रादाशताद्वादशांतमथवाजपेत् ओंकाराद्यंतथान्यद्वागायत्रीमथवायुतं १ अशक्तौ ॥ प्रायश्चित्तमन्यद्वारापिकार्य्यमिति प्रायश्चित्तविवेके ब्राह्मे। रोगीवृद्धस्तुपौगंडःकुर्य्यादन्यैर्व्रतंसदेति। पराशरः। व्याधिव्यसनविभ्रांते दुर्भिक्षडामरेतथा उपवासोव्रतंहोमोद्विजसंपादितानिवै १ शुद्धिकाराणीतिशेषः। डामरंपरचक्रादि व्रतांतेकर्तव्यतामाह पराशरः। पंचगव्यंपिबेच्छूद्रोब्रह्मकूर्चंपिबेद्द्विजः एकद्वित्रिचतुर्गावोदद्याद्विप्राद्यनुक्रमात् ब्रह्मकूर्चप्रकारोव्रतप्रकरणे वक्ष्यते ॥ शिष्टास्तुपूर्वमेव ब्रह्मकूर्चं कुर्वीयमः ॥ प्रायश्चित्तेव्यवसितेकर्त्तायदिविपद्यते शुद्धस्तदहरेवासाविहलोके परत्रचेति १ अंगिराअपि ॥ यदर्थमाचरेद्धर्ममप्राप्यंम्रियतेव्रतम् सत्पुण्यफलंप्रेत्यप्राप्नुयान्मनुरब्रवीत् १ ॥

शरजी कहते हैं ॥ पंचगव्यमिति कि व्रतके अंतमें शूद्र पंचगव्यनू पीवे और द्विज क्या ब्राह्मण क्षत्री और वैश्य ब्रह्म कूर्चनू पानकरे और क्रमतें एक १ दो २ तीन ३ चार ४ गौआं दान करण अर्थात् ब्राह्मण एकगौ दान करे और क्षत्री दो करे और वैश्य तीनकरे और शूद्र चारगौआंदान करे १ और ब्रह्म कूर्चके बनानेका प्रकार व्रतप्रकरण विषे कहेंगे ॥ और उत्तम पुरुष जो हैन सो ब्रह्म कूर्चनू व्रतके पहले हि करते हैन ॥ अब धर्म राजजी प्रकारांतर कहतेहैं प्रायश्चित्त इति प्रायश्चित्तके प्रारंभके कीते यां हाथों करणे वाला जेकर मरजावे तां उसी रोज इसी लोक विषे और परलोक विषे शुद्ध होजाता है १ और एहीबात अंगिरसजी कहदेहैं यदिति ॥ जिसके वास्ते पुरुष धर्म्मनू करे और व्रतकी समाप्तिके पहिले ही मरजाए तां भी पुरुष उसके तिसं व्रतके पुण्यनू प्राप्त होजाताहै एहमनुजीने कहाहै १

अब छागलेय ऋषिजी और प्रकारकहतेहैं पूर्वमिति जो पुरुष पहलें व्रतनूं ग्रहण करके फेर काम करकेमोहितहोया २ नाकरे सो जीन्दाहीचाण्डाल होजाबाहै और मरकरकेकुत्ते की यूनमें प्राप्त होताहै १ और एहि प्रकारवायुपुराणविषेभी कहाहि लोभादिति लोभतें और मोहतें और प्रमादसें जेकर व्रतकाभंग होजावे तां पुरुष तीन ३ निराहार व्रत करे और केशोंका मुण्डन करवावे १ प्रति ऐसा प्रायश्चित्त करके फेर उसीव्रतकोधारे और इसजगा वाशब्द जोहै सो समुच्चय वोधकहै अर्थात् तीनव्रतकरणे और साथहि मुंडनकरवाणा और जुदानहि करवाणा एहि समुच्चय किहाहै ❀ अब सबनों पापोंके प्रायश्चित्तका विधानकहतेहैं ॥ इस विष अब पूर्वोक्त हि विधि वाक्यसारे प्रयोगकी सुगमता करके अनुष्ठा नकेवास्ते दिखाई दे हैन ॥ उरसेति छातिकरके और शिर और दृष्टि और मन और स्तुति कर्म और पाद और हाथ और जानु इन्हां सबनां करके

छागलेयः॥ पूर्वंव्रतंगृहीत्वातुनाचरेत्काममोहितः जीवन्भवतिचांडालोमृतः श्वाचाभिजायते १ वायवीये॥ लोभान्मोहात्प्रमादाद्वाव्रतभंगोभवेद्यदि उपवासत्रयंकुर्य्याद्वाकेशमुंडनंतथा १ प्रायश्चित्तमिदंकृत्वापुनरेवव्रतीभवेत् वा शब्दःसमुच्चयइति ❀ अथसर्वप्रायाश्चित्तविधानं ❀ अत्रपूर्वोक्तानिसकलानिविधिवाक्यानिसकलप्रयोगस्यसौकर्य्यायनुष्ठानप्रकारायप्रदर्श्यंते उरसा शिरसादृष्ट्यामनसास्तुतिकर्म्मणा। पद्भ्यांकराभ्यांजानुभ्यांप्रणामोष्टांगउच्यते १ ततःसभ्यैर्वाच्यं। विप्राःपृच्छंतिकिंकार्यमुपविश्याग्रतःस्थितं किंतेकार्यंवदास्माभिःकिंवामृगयसेद्विजान् १ तत्त्वतोब्रूहितत्सर्वंसत्यंहिगतिरात्मनः॥ सत्येनद्योततेराजासत्येनद्योततेरविः२ सत्येनद्योततेवन्हिः सर्वंसत्येप्रतिष्ठितम् ॥ भूर्भुवःस्वस्त्रयोलोकास्तेपिसत्येप्रतिष्ठिताः ३ अस्माकंचैवसर्वेषांसत्यमेवपरंवलम् यदिचेद्वक्ष्यसेसत्यंनियतंप्राप्स्यसेशुभम् ४ यद्यागतोस्यऽसत्येननत्वंशुद्ध्यसिकर्हिचित् ब्राह्मणवचनंश्रुत्वा वद्धांजलिपुटश्चाग्रभूमावेवोपविश्यौपायनस्यसंकल्पंकुर्यात्

सभामें ब्राह्मणोंकेताईं नमस्कारकरे इसकोअष्टांग प्रणाम कहतेहैं १ तिसतें अनन्तरसभावालयानि ऐसें कहना चाहिए आगे स्थित होये २ नूं ॥ ब्राह्मणपूछदे हैन कि भोपुरुष क्याकामहै तुमारा असां द्वारा अथवा क्याढूंढतेहो १ ब्राह्मणांसें सब सचकरकेकहो सत्यआत्माकी गतिहै अर्थात् सत्यकरके आत्माप्राप्तहोताहै और सत्यकरकेराजा और सूर्य्य और अग्नि एहसबप्रकाशतेहैं और सारासंसार और भूर्भुवःस्वः इह तीनों लोक एह सब सत्यकरके हि स्थितहैन ३ अस्मेति असां सबनांकों सत्यही परम वलहै और जेकर तुमसत्य कहोगे तां शुभको प्राप्त होजावोगे ४ और जेकर झूठ कहनेकेनिमित्त आए हो तब तुम शुद्ध न होवोगे ऐसा जो ब्राह्मणोंकावाक्य तिसनूं सुनकरके वद्धांजलि होया २ भूमिमे वैठकरके ब्राह्मणोंके वास्ते भेट्टाका संकल्पकरे १

गोमिथुनस्येति किएकगौ और एकबैल अथवा तिनकामुक्तसंकल्पकरे सो मुक्तकहतेहैं बत्तीसपैसेगौ कामुक्तहै और सोलांपैसेंबैलका और पराशरजीकहतेहैं पापमिति और पापीजोपुरुषहै सोपापनू गौ दान और बैलकेदानकरकेदूरकरे अथवा तिनकेमुक्तकादानकरकेपापांनू दूरकरेप्रायश्चित्तमे प्रवृत्तहोंके पापीकों सुधीकिहाहै १ और कैं ६४ ढौए गौका मुक्तकहतेहैं और बैलका तिसतें अद्धा और तिसके अनन्तर आचमन और प्राणायाम करके तिल और कुशाकों जलके सहित हाथमें लये और संकल्प पडे ॐतत्सदद्यब्रह्मणोद्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेत वाराहकल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशतमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जंबू द्वीपे भारतखंडे आर्य्यावर्त्तान्तर्गत ब्रह्मावर्त्तदेशे कुमारिकाक्षेत्रे वर्तमान संवत्सरे अमुकायनेऽमुकर्त्तौ अमुकराशिगते सूर्य्येऽमुकराशिगते चंद्रे अमुक मासे अमुकपक्षे अमुक नक्षत्र योग करण मुहूर्त्तयुक्तायां तिथौ अमुकवासरे अमुकगोत्रोत्पन्नोऽ

गोमिथुनस्यच द्वात्रिंशत्पणिकागावोवृषभस्तुतदर्द्धकः ॥ पराशरः ॥ पापंप्रक्षालयेत्पापीदत्त्वाधेनुंतथावृषम् ॥ तन्मूल्यंवानिधायाथपापंप्रक्षालयेत्सुधीः १ निष्क्रयढब्बुकाः ६४ इतिकेचित् आचम्य प्राणानायम्य ततस्तिल कुशान्गृहीत्वा ॐमद्येत्यादिशास्त्रोक्तफलप्राप्त्यर्थंप्रायश्चित्तग्रहणनिमित्तं इदंप्राजापत्यंगोमिथुनं वार्हस्पत्ये वाससी वारुणं कमंडलुं आंगिरोदैवते उपानहौ कुंडलमुद्रिकाप्रत्याम्नायमाग्नेयंहिरण्यम् अथवा तन्निष्क्रयंयथाशक्तिपरिमितं द्रव्यंसभोपविष्टब्राह्मणेभ्योऽहंसंप्रददे॥ तेन पापापहाश्रीभगवान् विष्णुःप्रीयताम् ॥ किंचित्पापंनगूहेतकृत्वास्वल्पमपिद्विजः तस्मात्साधुसमाख्येयंतेनतत्समयेद्विजेतिवचनानुसारेणपदपिपापमगोपयन् फलंगृहीत्वा कृतांजलिर्भूत्वा आब्रह्मस्तंबपर्य्यंतंभवद्वशमिदंजगत् यक्ष रक्षःपिशाचादिसदेवासुरमानुषम् १ ॥

मुक शर्म्माहं शास्त्रोक्त फल प्राप्त्यर्थं मित्यादि पठित्वा सभोपविष्ट ब्राह्मणेभ्योऽहंसंप्रददे ऐसें संकल्प करे तेनेति तिस संकल्पकरणे करके पापांके दूरकरणें वाला जो भगवान् विष्णु सो प्रसन्न होवे ॥ अब पराशरजी और प्रकार कहतेहैं किंचिदिति पुरुष थोडा भी पाप करके किंचित् मात्र भी गुप्त न रक्खे जिस कारण तें साधु जैसें होवे तैसें तिसी कालमें कहदेवे इसवाक्य के अनुसारथोडाभी पाप होवे सोभी गुप्तनरक्खे अर्थात् पापनू सभाकेआगे प्रकट करे और हाथमें कोई फल लय करके और हाथ जोड करके ऐसें कहे । आब्रह्मेति कि हेब्राह्मणो ब्रह्मासें लेकर स्तंब पर्यन्त जितना संसार है सो सब तुमारे अधीन है और यक्ष और राक्षस पिशाचादिं सब और देवताअसुर मनुष्य एभीतुमारे अधीनहैन [illegible] बहुत छोटे [illegible] है १

संस्कृति और सर्वधर्मकेविवेकजाननेवाले जो तुम ब्राह्मणही और समनाधर्मोकी सेवाकरनेवाले सो तुम सर्व मेरेदेहकी शुद्धिकरो २ पुराकृतमिति और पूर्वकालविषेजो घोरपापजानकरके अथवा अजानकरके मैनेकीताहै जन्मसेंलेकरआजदिनपर्यन्ततिसपापसें हे ब्राह्मणोमेरेको पवित्रकरो ३ और पूजनीयजो आपहो तुमारेकरके पवित्रहोया २में पापसेंरहित होजावांगा और मेरे ऊपर आप कृपाकरो और मेरेतांई शुभआज्ञा करो (प्रयच्छथ) यह प्रयोगलेट्काहै ४ ऐसे कहकरके फेर ब्राह्मणोंकी प्रदक्षिणा करके फेर नमस्कार करे तिसतें अनन्तर संकल्प करे ॐमद्येत्यादि ममजो मेरेजन्मसें आज दिन पर्यंत मन वाणी देह करके बुद्धिपूर्वक अथवा न बुद्धिपूर्वककीते होवे जो पाप अपनी इच्छाकरके अथवा किसीके प्रेरयां होवा अथवा अनुमन्ताहाकिरके अर्थात् अपनी वडआई करके और सलाह देकरके कीते जो कर्त्ता भेदसें भिन्न महापातक अतिपातक उपपा

सर्वधर्म्मविवेक्तारोगोप्तारः सकलाद्विजाः ॥ ममदेहस्यसंशुद्धिंकुर्वंतु द्विज सत्तमाः २ पुराकृतंमयाघोरंज्ञातमज्ञातकिल्विषं जन्मतोद्यदिनं यावत् । तस्मात्पापात्पुनंतुमाम् ३ पूज्यैःकृतपवित्रोह्यभविष्यमनघस्तथा प्रसादः क्रियतांमह्यं शुभानुज्ञांप्रयच्छथ ४ इत्युच्चार्य्य प्रदक्षिणीकृत्य नमस्कारं कृत्वा ॥ ॐमद्यपुण्यकालेदेशेच ममजन्मनोद्यदिनंयावत् वाङ्मनः काय कृतानांबुद्धिपूर्वकाणामबुद्धिपूर्वकाणां सकृदभ्यासविषयाणां स्वतंत्रप्रयो जकानुमंतृनिमित्तकर्त्तृभेदभिन्नानां महापातकातिपातकोपपातक तत्स मरहस्यसंज्ञितानां गुरुलघुपापानां शोधनार्थं तथा शय्यास्थित भक्ष्यपा नादिरसौषधी कंदमूलादि निषिद्धवस्तु प्राशनादि पापविशुद्ध्यर्थं तथा मा ता पितृ गुर्वाज्ञालंघनाऽसकृत्स्नानसंध्योपासनतर्प्पण सुरार्चन वैश्वदे वादिकर्मराहित्य कुत्सितान्न भोजन म्लेच्छसेवा इतरजाति चांडालादिसं सर्ग संभाषणगमन प्रेतक्रिया एकादशाहे तथा सीमंतोन्नयने जातश्राद्धे

तक और तत्सम और रहस्य एह संज्ञा वाले जो पाप और गुरु लघु जो पाप तिनकी शुद्धि के वास्ते और तैसेंही शय्याके उप्पर बैठ करके जो भक्ष्याभक्ष अन्न पान इत्यादिक करके उत्पन्न होआ जो पाप तिसकी शुद्धि के वास्ते और तैसेंही माता और पिता और गुरु इनकी नहिआज्ञामाननेसें उत्पन्न होया जो पाप और वारंवार स्नान संध्या तर्पण सुरार्चन वैश्वदेवादि कर्म इनसे रहित होणा और कुत्सित अन्नका भक्षणकरणा और म्लेच्छ सेवा और इतर जाति चांडालादिकोंके साथ संबंध क्या स्पर्श और संभाषण और गमन इनसें उ त्पन्न होया जो पाप और प्रेतक्रिया एकादश दिनमे प्रेतके निमित्त अन्न भक्षण करणे करके उत्पन्न होया जो पाप और तैसेंहि सीमंत जो गर्भसे लेकर अष्टम मास तिस विषे और ज त श्राद्ध विषे अर्थात् बालकके जन्मकालमे नाडुछेदनके पहले जो श्राद्ध तिस विषे

नवेति और नव श्राद्ध विषे नवश्राद्ध क्या प्रथममासकसें लेकर तीन वर्ष पर्यंत और प्रेत श्राद्ध विषे प्रेतश्राद्ध क्या मरणदिनसें लेकर एकादश दिनपर्यन्त तिनकेविषे भोजन करणेसें उत्पन्न होए जो पाप और एकादशीसें आद लेकर जो व्रतदिन तिनके विषे भोजनकरणेतें उत्पन्न होये जो पाप और अगम्यागमन और व्रतभंग और अनृतभाषण अर्थात् झूठकथन और कूट-साक्षिप्रदानचंचुत्व अर्थात् झूठी उगाहि देणे विषे चातुर्यता और मत्कुण और यूका और कीट और पतंगादि और अंडज और जरायुज और उद्भिज्ज क्या वृक्षादि एह जो सभ प्राणी तिनकी हिंसासें उत्पन्न होये जो पाप और अभक्ष्य भक्षण और अस्पृश्य स्पर्शन और अपेय पान क्या मदिरादिककापान और पिशुनता क्या चुगली और गोविक्रय और कन्याविक्रय और अश्वविक्रय इनसेंउत्पन्न होये जो पाप और रजक और चर्मकार इनसें आदलेकर और नीच जाति तिनोंका प्रतिग्रह क्या दानलेना और धान्यादिकोंका चुराणा और दूसरेकेधनादिकका

नवश्राद्ध प्रेतश्राद्धादिषु भोजनोत्पन्नोपपातकानां एकादश्यादिव्रततिथौ भोजनादुत्पन्नानां अगम्यागमन व्रतभंगानृतभाषण कूटसाक्षिप्रदानचंचुत्वमत्कुणयूकाकीटपतंगाद्यंडजजरायुजोद्भिज्जादिसमस्तप्राणिहिंसोत्पन्नपातकानां अभक्ष्यभक्षणास्पृश्यस्पर्शनापेयपानपैशुन्यगोविक्रयकन्याविक्रय हयविक्रय रजकचर्म्मकारादि प्रतिग्रह धान्यादिहरण परद्रव्यादिहरण देवद्रव्यब्राह्मणानाथविधवादीनां छलाद् द्रव्यहरण श्वमार्जार कुक्कुटादिव्रणस्पर्शादि परविघ्नकरण कटुवचन सुवर्ण रूप्य ताम्र कांस्य पित्तल सीस लोहादि हरण दुग्ध दधि मधु घृत तैल विद्या पुस्तक मूर्त्ति वस्त्र पटोर्णा सूत्र प्रवाल मौक्तिक मणि चामर रत्नादि हरण मित्र भार्य्या गमन रजस्वलादि गमन संभाषणायोनिगमन पशुयोन्यादि गमनांगुल्यायोनिपिधानकरणाद्वीर्य्योत्पादन नग्नस्त्र्यवलोकन स्वप्नविषयक परस्त्रीगमन ऋतुस्नातस्वभार्य्याऽगमन

चुराणा और देवता और ब्राह्मण और अनाथ और विधवा इनोंका छलकरके धन चुराणाइन कर्म्मोंसें उत्पन्न होये जो पाप और श्वे क्या कुत्ता और मार्जार क्या बिडाल और कुक्कुट इनका बड्डणा और इनकेसाथ स्पर्शादि होणा और दूसरेके कार्यमें विघ्नकरणा और कुत्सित वाक्य कहणा इन सबनोंसें उत्पन्नहोये जो पाप और सुवर्ण और चांदी और ताम्र और कांस्य और पित्तल और सिक्का और लोहा और दूध और दधि और मधु और घृत और तेल और विद्या पुस्तक और मूर्त्ति वस्त्र- पट ऊर्ण और सूत्र और प्रवाल क्या मुंगा और मोती मणि चोरी रत्न इन वस्तुवोंकाचुराणा और मित्रकी स्त्रीकेसाथगमन और रजस्वलादिगमन और संभाषण और अयोनिगमन क्या गुदामें गमन और पशुयोन्यादिगमन और अंगुलि करके योनिभिधान करणेतें वीर्योत् पादन और नग्नस्त्रीका देखणा और परस्त्रीका स्वप्न विषे आलिंगन करणा और ऋतु विषें स्नात होई २ स्त्रीकेसाथ प्रमादसें मैथुन नहि करणा

निषिद्धेति और निषिद्धतिथिवारनक्षत्र योगादिकोंमें मैथुनकरणा और दूसरेकेविवाहमें भंगकरणा और तृषातुर धेनु और पशु तिनको न जलपल्याकर्केआप जलपीलयणा और तीर्थ यात्रा विषे विघ्नकरणा और पंच महायज्ञकात्यागकरणा पंच महायज्ञ क्या पाठ १ होम २ अतिथिपूजन३ तर्पण ४ बलिदान ५ एहहैन और पंच महापापियोंके साथ संभाषण और स्पर्शन और तिनसें दानलयणा पंच महापातकी क्या ब्रह्महत्या १ सुरापान २ गुरु की स्त्रीके साथ गमन ३ सुवर्ण चुराणा ४ पंचमा इनके साथ संसर्ग करणेवाला ५ एह पंच महापातकी हैन और चांडालादिकोंका गीत सुनना इनसभनोंकर्म्मोसें उत्पन्नहोये जो पाप और काम क्रोध लोभसें उत्पन्न होए जो पाप तिनके दूर करणेकेवास्ते इसलोकविषे श्रुति स्मृतिकरके प्रतिपाद्य जो धर्म्माधिकार तिनके नष्टहोयां २ अतितीव्र पीडाकर्के युक्त जो कुम्भीपाकादि नरकतिनका भय दूर करणे वास्ते स्वर्णादिमुद्रिकाद्वारा अथवा यथाशक्ति करके मैं प्रायश्चित्तकीयाचना करताहुं और आप कृपाकरके

निषिद्धतिथिवारनक्षत्रयोगादिगमन कृतपरविवाहभंजनतृषार्त्तधेनुपशुविस्मृतिपूर्वकोदपानतीर्थयात्राविघ्नानुकरण पंचमहायज्ञाकरण पंचमहापातकिसंभाषणस्पर्शप्रतिग्रह। चांडालादिगीतश्रवणादि।एतेषां तथामदनमत्सरमोहाद्यनेकपापानां परिहारार्थं इहलोकेश्रौतस्मार्त्त धर्म्माधिकारलोपेषु अतितीव्रवेदनादिमत्कुंभीपाकादिनरकभयनिवृत्त्यर्थं निष्कादिद्वारावा यथाशक्त्याप्रायश्चित्तमहंयाचे तदनुग्रहंकृत्वा प्रायश्चित्तमुपदिशंतुभवंत इतित्रिर्वाच्यम् पर्षदग्रे तूष्णींतिष्ठेत् ❀ अथसभ्यपादप्रक्षालनम् अत्रचंदनादिनापूजा सभानुज्ञातस्य किंचित्ततोऽपसर्पणम् निर्णयपर्य्यालोचिते साति सभायामाकारितस्य तत्र तथोपवेशनम् बद्धांजलिना सभावाक्यश्रवणम् आलोकितंप्रायश्चित्तंतेवक्ष्याम इतिसभ्यैरुक्तेमहान् प्रसादइत्युक्त्वा यावदनुग्रहंकुर्वंति तावच्छिरोंजलिना स्थेयम्

प्रायश्चित्त उपदेश करो ऐसें तीनवार कहणा चाहिये तिससें अनन्तर सभाके आगे मौनहोकरके खडारहे ॥ अथेति अब और प्रकार कहतेहैं कि सभावालयोंके पादोंकोधोवे और चन्दनादिकों करके पूजन करे तिससें अनन्तर सभा करके आज्ञप्त होए २ को यत्किंचित् पिछडे हटनाचाहिये और तिससें अनन्तर पापके निर्णय कीतयां होयां फेर सभाविषे बुलाएहोएको उसी जगामें बहानाचाहिये और बद्धांजलिहोकरके तिसीने सभावालयोंकावाक्य श्रवणकरणाचाहिये तिससें अनन्तरसभावाले असेकहन कि असांने प्रायश्चित्तविचारयाहै सो तेरेप्रति कहेंगे तूं सावधान होकरके सुन ऐसें कहेयां होयां फेर प्रायश्चित्ती कहे कि आपने बड़ी कृपा कीतीहै ऐसें कहकरके जितना काल अनुग्रह करते रहण अर्थात् शास्त्रका कथन करते रहण उतना काल शिर के साथ हाथ जोडकरके स्थितहोणा चाहिये

तबइति श्रोर तिसतें अनन्तर सभा वालयोंनें तीनवार ऐसांकहणा चाहिए कि ब्रह्महत्यादि जो बहुत अनेकप्रकारके श्रोर जो साधारणपाप हैन तिनांनू करके पुरुष वारांवर्ष व्रतकरे १ जन्मेति श्रोर पुरुष जन्मसें लेकर ब्रह्महत्यासें उरें २ वहुत अनेक प्रकारके पापोंकोंकरके छे वर्षका व्रत करे २ जन्मेति श्रोर पुरुष जन्मकालसें लेकर पातक श्रोर उपपातक जो पाप महापापसें वि नाहैन तिनांनू करके छे वरसके व्रतकरके शुद्धहुंदाहै ३ उपपातकेति श्रोर उपपातक पाप कर के युक्तभी पुरुषहै जेकर फेर प्रकीर्ण पापनू करे तां वरस भरके व्रतकरके शुद्ध हुंदा हैं ऐसेस्वा यंभुव मनुजीकहते भये ४ यद्यपीति जेकर आपही वहुतवार वुद्धि करके कीताहै वडा पाप जि सपुरुषनें सो तीन वरसके व्रतकरकें शुद्धहुंदाहै परंतु महापापसें विना महापापवाला तीनवरस के व्रतकरके शुद्ध नहि हुंदा ५ अज्ञात्वेति श्रोर जिस पुरुषनें ना जानकरके कामनातें विनाही पापकीताहै सोअद्धा प्रायश्चित्तकरे श्रोर जेकर कामनातें कीताहोवे तां समग्र प्रायश्चित्त करे श्रोर

ततःसभ्यैस्त्रिर्वाच्यम् ब्रह्महत्यादिपापानिवहूनिविविधानिच कृत्वानरोऽन्य पापानिद्वादशाब्दंचरेद्व्रतम् १ जन्मप्रभृतिपापानिवहूनिविविधानिच कृत्वा वाग्ब्रह्महत्यायाःपडब्दंकृच्छ्रमाचरेत् २ जन्मप्रभृतियत्किंचित्पातकंचोप पातकम् पडब्देनैवशुद्ध्येतमहतःपातकादृते ३ उपपातकयुक्तोपिप्रकीर्णपा पमाचरेत् अब्देनैवतुशुद्ध्येतमनुःस्वायंभुवोऽब्रवीत् ४ यद्यपिस्वयमभ्यस्तं वुद्धिपूर्वमघंमहत् तच्छुद्धंत्र्यब्दकृच्छ्रेणमहतःपातकादृते ५ अज्ञात्वार्द्धप्रकु र्वीत प्रायश्चित्तमकामतः संपूर्णंकामतःकुर्याच्छलात्तुद्विगुणंभवेत् ६ पति व्रताचरोगीचवृद्धश्चैवविशेषतः अकामतश्चकर्तारःप्रायश्चित्तार्द्धकारिणः ७ कृच्छ्रशब्देनप्राजापत्यमुच्यते।अतिकृच्छ्रो।द्विगुणं प्रायश्चित्तंशक्त्यनुसारेण पापानुसारेणवा एकाब्दंद्व्यब्दं त्र्यब्दं पडब्दं द्वादशाब्दकं पर्षदोऽनुमतंवा १ प्राजापत्यप्रत्याम्नायाःसंहितापारायणम् गायत्र्ययुतजपःतिलहोमसहस्रम् द्वादशब्राह्मणभोजनम् शतद्वयंघृतहोमः होमोऽत्रगायत्र्या व्याहृतिभिर्वा

छलतें पाप कीता होवे तां दूना प्रायश्चित्तकरे तो शुद्ध हुंदाहै ६ पतिव्रतेति श्रोर पतिव्रता स्त्री श्रोर रोगी श्रोर वृद्ध कामनातेंविना हि जेकरपापके करणे वालेहोण तां अर्द्धप्रायश्चित्तकरण ७ श्रोर कृच्छ्र शब्द करके प्राजापत्यका ग्रहणहै श्रोर अतिकृच्छ्रशब्दकरके दोप्राजापत्यकाग्रहण है श्रोर श्रोर प्रायश्चित्त शक्तिके अनुसार करके पापके अनुसारतें एकवरस अथवा दो वरस अथवा तीनवरस अथवा छेवरस अथवा वारां वरस व्रतकरणा अथवा जो सभा वालयोंकी आज्ञा होवे सो करणा श्रोर प्राजापत्यकी बदली विषे जो हैं तिनको कहतेहैं संहितेति संहिता का पारायण करणा श्रोर दश १०००० हजार गायत्री का जपकरणा श्रोर तिलोंका एक हजार १०००हवनकरणा श्रोर वारां १२ ब्राह्मणोंको भोजन देणा श्रोर दोसउँ २०० घृतका होम करणा परंतु इसमें होम गायत्री करके अथवा व्याहृतियोंकरके करणा

रुद्रेति और रुद्रीकेजारांपाठकरणे और समुद्रमेजानेवालीजोनदीहै तिसमेंस्नानकरणा और चार कोसपर जो तीर्थ तिसकी यात्राकरणी और एकगौकादान करणा सुवर्णेति सुवर्णक्या एकमोहर अथवा एकरुपैया अथवा आठआन्ना अथवा चारआन्ना गौका मुल्ल दानकरके देणा और बारां स्नान करणे परंतु एकस्नानकरके केश सुकालयणे फेर दूसरा स्नानकरणा इसीतरह तीसरेसेंलेकर बारांस्नान करणे और चौव्वीसीधें कच्चे अन्नके संकल्पकरणे एह सभ एक प्राजापत्यके बराबर हैंन इसवास्ते जो प्राजापत्यको न करसके सो इनांविचों इककों करे इनमे मुख्य सुवर्ण दानहै और सुवर्णदेनेकी सामर्थ्य न होवे तां चांदीकादान करे इसवास्ते इनां प्रकारां विचों एक प्रकार नु कर ऐसा सभावालयांका वचन सुनकरके अपनी शक्ति कहदेवे और तिसतें अनन्तर अपनेकोस्वीकृत और सभा वालयोंकरके आज्ञत कीताहोया जो पक्ष तिसनूं अंगीकार करके ऐसें कहे कि आपकी आज्ञा मुजको प्रमाणहै तिसतें अनन्तर शिरकेसाथ हाथ जोडकरके मास

रुद्रैकादशिनी समुद्रगनदीस्नानं योजनतीर्थयात्रा एकगोदानम् सुवर्णरूप्यनिष्कतदर्द्धतदर्द्धानां गोमूल्यानांदानं शुष्ककेशस्य द्वादश स्नानानि द्विगुणद्वादशामान्नदानंचैकप्राजापत्यसमामिति मुख्यं सुवर्णम् तदशक्तौ रजतं एतेषांमध्येएकंप्रकारंकुरु इतिसभ्यानां वचनंश्रुत्वा स्वशक्तिंनिवेदयेत् ततःस्वाभिमतं परिषदनुज्ञातं पक्षमंगीकृत्यादेशः प्रमाणमित्युक्त्वा बद्धांजलिंशिरसिकृत्वा कर्त्ता मासपक्षाद्युच्चार्य्य करिष्यमाणप्रायश्चित्ताङ्गत्वेन निबन्धपूजामनुवादकपूजांच करिष्येइतिसंकल्प्य चन्दनादिना संपूज्य निबंधपूजात्वेन यथाशक्तिद्रव्यं संकल्प्यानुवादकाय पापानुसारेण दक्षिणां भृतिरूपां दद्यात् ॥ ततःसभ्याःपुस्तकवाचनपूर्वकमनुवादकस्याग्रेकथयेयुः अनुवादकश्च कर्त्तारं वदेत् तद्यथा सभ्यैरुपदिष्टोऽनुवादकोऽमुकस्य ते जन्मप्रभृतिअद्य यावत्

पक्षादिकोंका उच्चारणकरके करणे योग्य जो प्रायश्चित्त तिसके अंगकरके निबंधक्या पुस्तक तिसकीपूजा और अनुवादकक्या उपदेश करणे वाला जो पण्डित तिसकीपूजा में करताहूं ऐसें संकल्प करके चन्दनादिकों करके पूजन करके तिसके अनन्तर निबन्ध पूजाङ्गत्वकरके यथा शक्तिके अनुसार द्रव्यका संकल्प करके अनुवादकके ताईं पापकी अनुसारता करके भृतिरूपा जो दक्षिणा अर्थात् पंडितकीपरिश्रमकेयोग्य जो दक्षिणा सो देवे और तिसके अनन्तर सभावाले जो हैंन सो पुस्तक बाचन पूर्वक अनुवादककों ऐसे कहदेण और तिसके अनन्तर अनुवादक प्रायश्चित्त करणे वालेनूंकहे और सो अनुवादक सभा वालयां करके आज्ञप्तहोया २ ऐसें कहे कि अमुक शर्म्मा जो आपहो तुमारेजन्म कालसें लेकर आज पर्यन्त

ज्ञातेति ज्ञात और अज्ञात पाप जो हैन और कामना करके अथवा नाकामना करके कीतेहोए जो हैन एकवार अथवा वार वार और देह करके अथवा वाणी करके अथवा मन करके अथवा पापियोंके संबंध करके अथवा स्पर्शाऽस्पर्शी करके क्या नीचके साथस्पर्श और गुरुचरणोंके साथअस्पर्श इत्यादि करके अथवा भक्ष्याभक्ष्य क्या लसुनादिके भक्षण करके और नैवेद्यादिके अभक्षण करके और पीताऽपीत क्या मदिरादिके पानकरके और चरणोदकादिके अपान करके और संपूर्ण जो पातक और उपपातक और लघु पातक और संकरीकरण और मलिनीकरण और अपात्रीकरण और जाति भ्रंशकर इत्यादिक जो पाप हैन तिनके मध्यविषे कीते होए जो पाप तिनकी निवृत्तिके वास्ते सभा वालयों करके कथन कीता हुआ जो प्रायश्चित्त अमुक प्रत्याम्नायद्वारा अर्थात् वदलीकरके प्राचीन मत

ज्ञाताज्ञात कामाकामसकृदभ्यासकृतकायिकवाचिकमानसिकसांसर्गिक स्पृष्टास्पृष्ट भुक्ताभुक्तपीतापीत सकलपातकातिपातकोपपातक लघुपातकसंकरीकरणमलिनीकरणाऽपात्रीकरणजातिभ्रंशकरेत्यादिमध्येसंभावितपापानां निरासार्थपर्षदुपदिष्टं प्रायश्चित्तममुकप्रत्याम्नायद्वारा प्राच्योदीच्यांगसहितं त्वयाचरितव्यं तेन तेशुद्धिर्भविष्यतित्वं कृतार्थोभविष्यासि इतित्रिरुपादिशेत् कर्त्ताओमित्युक्त्वाप्रणम्यपर्षदंविसृजेत् ततोरिक्तायां सायाह्ने देशकालौसंकीर्त्यामुकशर्म्मणोमम जन्मप्रभृतिअद्ययावत् ज्ञाताज्ञातादिमध्येसंभावितानांपापानांनिरासार्थं पर्षदुपदिष्टं प्राच्योदीच्यांगसहितममुकप्रत्याम्नायेनाहमाचरिष्य इतिसंकल्पइतिप्रायश्चित्तेन्दुशेखर प्रायश्चित्तमुक्तावल्यादौ॥

और नवीनमतकरके सहित तैंने करणा चाहिए तिस करके तेरी शुद्धि होवेगी तिसके अनन्तर अनुवादक तीनवार ऐसें कहेक्या तूकृतार्थहोवेंगा और प्रायश्चित्त करणेवाला अंगीकार करके फेर नमस्कार करे फेर सभाकोत्यागदेवे तिसतें अनन्तर चतुर्थ्यादि ४। ९।१४। एह जो रिक्ता तिथि आं हैन तिनोंमें सायंकालविषे देशकालादिकोंका उच्चारण करके ऐसाकहे अमुकशर्म्मणोमम जन्म प्रभृति अद्य यावत् ज्ञाता ज्ञात जो पाप तिनके मध्यमें मेरे करके कीते होये जो पाप तिनकी निवृत्तिके वास्ते सभावालयों करके दिखाया होया जो प्रायश्चित्त प्राचीन और नवीनं मत के सहित इस प्रत्याम्नाय करके अर्थात् वदली करके मैं कर्त्ताहुं ऐसें संकल्पकरे एह वात प्रायश्चित्तेन्दुशेखरमें और प्रायश्चित्तमुक्तावलीआदिकमें कहीहै ॥

यानीति श्रौर तिसकेअनन्तर ऐसें कहे क्या जितनेकपाप हैंन थोडे वहुते श्रौर ब्रह्महत्याके सम सो सब केशांके आश्रय होकरके स्थित रहतेहैं इसवास्ते मैं केशों का मुण्डन करवाताहुं एहसं कल्पकरे ❀ अब विशेषकहतेहैं सभर्तृकाणामिति कि सहित भर्त्ताके जो स्त्रीयां हैंन श्रौर राज्यके ऐश्वर्य्य करके युक्त जो पुरुष तिनकोमुण्डन करवाणा योग्य नहिहै तिसवास्ते केशोंके अग्रभागसें दोअंगुलीप्रमाणकटवाये १ श्रौर दण्ड जो है सो दूणादेणा चाहिए एहअंगिरसजीका वचन है कक्षेति कच्छ श्रौर लिंगके रोमोंको वर्जकरके नख श्रौर रोमानुं कटवाये ॥ अब पापोंकीआधिक्यताविषे श्रौर प्रकार कहतेहैं कक्षेति कि कच्छ श्रौर गुह्यस्थान श्रौर शिर इनके रोम श्रौर दाडि श्रौर भवटयोंके रोम श्रौर हाथ पैरोंके नख श्रौर रोम तिनांको कट वाय करके पुरुष शुचि क्या पवित्र हुंदाहै १ एवमिति इसप्रकार मुण्डनकरणेसें पीछे बारां कुलिआं करे

यानिकानिचपापानिब्रह्महत्यासमानिच केशानाश्रित्यतिष्ठन्तितस्मात्केशान्वपाम्यहमितिसंकल्प्य सभर्तृकाणांस्त्रीणांचराज्यैश्वर्य्ययुतस्यच वपनंनैवकर्त्तव्यं द्व्यंगुलंछेदयेत्ततः १ दंडस्तुद्विगुणोदाप्यइत्यंगिरोवचनम् कक्षोपस्थवर्जितनखरोमाणिवापयेत् ॥ कक्षाकुह्याशिरःश्मश्रुभ्रूलोमपरिकर्त्तनं प्रहृत्यपाणिपादानां नखलोमततःशुचिः १ एवं वपनकरणानन्तरं द्वादशगंडूपान्कृत्वा ॥ आयुर्बलंयशोवर्चः प्रजापशुवसूनिच ब्रह्मप्रज्ञांचमेधांच त्वन्नोदेहिवनस्पते इति मंत्रेणाऽभिमंत्रितेन द्वादशांगुलप्रमाणेनापामार्गादिदन्तकाष्ठेन प्राङ्मुखउदङ्मुखोवा। मुखदुर्गंधिनाशायदंतानांचविशुद्धये ष्ठीवनायचगात्राणांकुर्वेहंदन्तधावनमितिमंत्रेणदन्तान् धावयित्वा काष्ठान्तरेण जिव्हामुल्लिख्य अप्सुनिमज्ज्यभस्मादिस्नानानिकुर्य्यात्

आयुरिति आयु श्रौर बल यश वर्च क्या ओज श्रौर प्रजा क्या पुत्रादि श्रौर पशु श्रौर संपूर्ण वस्तु श्रौर ब्रह्म श्रौर प्रज्ञा क्या तीक्ष्ण बुद्धि श्रौर मेधा क्या सामान्यबुद्धि तिना सबनानूं हे वनस्पते तु देह इस मंत्र करके बारां अंगुली प्रमाण करके युक्त जो अपामार्ग क्या पुठकंडा तिससें लेकर काष्टकी जो दन्तधावन तिस करके पूर्वाभिमुख होया २ अथवा उत्तराभिमुख होया २ मुखकी दुर्गंधी दूर करणेकेवास्ते श्रौर दन्तोंकी शुद्धिके वास्ते श्रौर गात्र क्या इंद्रियोंके स्थान तिनका जो ष्ठीवन क्या मल दूर करणेके वास्ते दन्तधावन मैं करांहूं इस मंत्र करके दंदानु धोकरके श्रौर दूसरे काष्टकरके जिव्हाका शोधन करके श्रौर तिस दन्त धावनको जलमें डोवकरके फेर भस्मादि स्नान करे

जिसप्रकार प्रायश्चित्तका अङ्गहै तिस कर्के भस्म स्नानकों करांगा ऐसें संकल्प कर्के इससें उपरंत भस्मकों ग्रहणकरे फेर (ईशानः सर्वविद्यानां) इस मंत्र कर्के शिरविषें भस्मलगावे (अथवा) ईशानायनमः) इसी करके शिरमें लगावे ॥ तत्पुरुषायनमः ॥ इस कर्के भस्म कों मुखमें लगावे ॥ अघोरायनमः (इस कर्के हृदयमें लगावे) वामदेवायनमः) इस कर्के गुह्यमें लगावे(सद्योजातायनमः) इस कर्के पादोंमें लगावे ॥ ॐकारकर्के संपूर्ण अंगोंमें लगावे तिससें उपरंत जलकर्के स्नान करे इसप्रकार भस्म स्नान कहाहै ॥ अथेति इससें उपरंत गोमय कर्के स्नानकों करांगा ऐसेंही संकल्पकरे गोमय कों ग्रहण कर्के (ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः इस

तच्चेत्थंप्रायश्चित्तांगं भस्मस्नानं करिष्ये इति संकल्प्य भस्मगृहीत्वा॥ ईशानः सर्वविद्यानामित्यादिमंत्रैरथवा ईशानायनमइति शिरसि तत्पुरुपायनमोमुखे। अघोरायनमोहृदये । वामदेवाय नमोगुह्ये । सद्योजातायनमः पादयोः प्रणवेनसर्वांगे ततोजलस्नानम् इतिभस्मस्नानम् अथगोमयस्नानं करिष्येइतिसंकल्प्य गोमयमादाय व्याहृत्या त्रिधा विभज्यादित्यायप्रदर्श्य अग्रमग्रंचरतीनामोषधीनांवनेवने तासामृषभपत्नीनां पवित्रंकायशोधनम् तन्मेरोगांश्चशोकांश्चनुदगोमयसर्वदेतिमंत्रेण गंधद्वारामितिमंत्रेणच सर्वांगे विलिप्यउदकस्नानंकुर्य्यात्॥ अथमृदास्नानं ॥ वलिस्थापर्वतानां क्षुद्रं विभर्षि पृथ्वीप्रजाभूमीःप्रहृष्वती महनाजिनोपिमाहिनी इतिभूमिंप्रार्थ्य

महा व्याहृति कर्के गोमयकें तीन ३ भाग कर्के सूर्यके तांई दिखा कर्के मंत्र पडे मंत्रको दिखातेहैं ?अग्रमिति? आगे आगे बनविषे औषधियोंकों भक्षण करदीआं जो वैलकीयां स्त्रीयांहैं तिनका जो पवित्र गोमयहै सो शरीरके शोधनमें योग्यहै तिसकारणसें हेगोमय मेरे रोगोंको और शोकांको दूर कर ? गंधद्वारां ¿ इसमंत्रकर्के संपूर्णअंगोमें लेपकर्के पीछे जलकर्के स्नान करे अथमृत्तिकादास्नानकहतेहैं तिसमै पहले पृथिवीकीप्रार्थनाकरतेहैं वलिस्थेति, इसमंत्रका अर्थलिखतेहैं हेपृथिवि तूं वलिस्थाहै अर्थात् वलियोंमे प्रधानहै और पर्वतांकों तूं क्षुद्र जानकर्के धारतीहैं और प्यारे जो निवासस्थानहैं तिनकों तुं पुष्ट करतीहैं और दिनकर्के पुण्या कों उत्पन्न करतीहैं और पूजनेके योग्यहैं ऐसें पृथिवीकी प्राथना कर्के

यानीति और तिसकेअनन्तर ऐसें कहे क्या जितनेकपाप हैंन थोडे वहुते और ब्रह्महत्याके सम सो सब केशांके आश्रय होकरके स्थित रहतेहैं इसवास्ते मैं केशों का मुण्डन करवाताहुं एहसं कल्पकरे ॐ अब विशेषकहतेहैं सभर्तृकाणामिति कि सहित भर्त्ताके जो स्त्रीयां हैन और राज्यके ऐश्वर्य्य करके युक्त जो पुरुष तिनकोमुण्डन करवाणा योग्य नहिहै तिसवास्ते केशोंके अग्रभागसें दोअंगुलीप्रमाणकटवाये १ और दण्ड जो है सो दूणादेणा चाहिए एहअंगिरसजीका वचन है कक्षेति कच्छ और लिंगके रोमोंको वर्जकरके नख और रोमानुं कटवाये ॥ अब पापींकीआ धिक्यताविषे और प्रकार कहतेहैं कक्षेति कि कच्छ और गुह्यस्थान और शिर इनके रोम और दाढि और भवद्दयोंके रोम और हाथ पैरोंके नख और रोम तिनांको कट वाय करके पुरुष शुचि क्या पवित्र हुंदाहै १ एवमिति इसप्रकार मुण्डनकरणेसें पीछे बारां चुल्लिआं करे

यानिकानिचपापानिब्रह्महत्यासमानिच केशानाश्रित्यतिष्ठन्तितस्मात्के शान्वपाम्यहमितिसंकल्प्य सभर्तृकाणांस्त्रीणांचराज्यैश्वर्य्ययुतस्यच वप नंनैवकर्त्तव्यं द्व्यंगुलंछेदयेत्ततः १ दंडस्तुद्विगुणोदाप्यइत्यंगिरोवचनम् कक्षोपस्थवर्जितनखरोमाणिवापयेत् ॥ कक्षाकुह्यशिरःश्मश्रुभ्रूलोमपरिकृ तनं प्रहृत्यपाणिपादानां नखलोमततःशुचिः १ एवं वपनकरणानन्तरं द्वादशगंडूषान्कृत्वा ॥ आयुर्वलंयशोवर्चः प्रजापशुवसूनिच ब्रह्मप्रज्ञां चमेधांच त्वन्नोदेहिवनस्पते इति मंत्रेणाऽभिमंत्रितेन द्वादशांगुलप्रमाणे नापामार्गादिदन्तकाष्ठेन प्राङ्मुखउदङ्मुखोवा। मुखदुर्गंधिनाशायदंतानां चविशुद्धये ष्ठीवनायचगात्राणांकुर्वेहंदन्तधावनमितिमंत्रेणदन्तान् धावयि त्वा काष्ठान्तरेण जिव्हामुल्लिख्य अप्सुनिमज्ज्यभस्मादिस्नानानिकुर्य्यात्

आयुरिति आयु और वल यश वर्च क्या ओज और प्रजा क्या पुत्रादि और पशु और संपूर्ण वस्तु और ब्रह्म और प्रज्ञा क्या तीक्ष्ण वुद्धि और मेधा क्या सामान्यवुद्धि तिना सबनानुं हे वनस्पते तु देह इस मंत्र करके बारां अंगुली प्रमाण करके युक्त जो अपामार्ग क्या पुठकंडा तिससें लेकर काष्टकी जो दन्तधावन तिस करके पूर्वाभिमुख होया २ अथवा उत्तराभिमुख होया २ मुखकी दुर्गंधी दूर करणेकेवास्ते और दन्तोंकी शुद्धिके वास्ते और गात्र क्या इंद्रियोंके स्थान तिनका जो ष्ठीवन क्या मल दूर करणेके वास्ते दन्तधावन मैं करताहुं इस मंत्र करके दंदानु धोकरके और दूसरे काष्टकरके जिव्हाका शोधन करके और तिस दन्त धावनको जलमें डोवकरके फेर भस्मादि स्नान करे

जिसप्रकार प्रायश्चित्तका अङ्गहै तिस कर्के भस्म स्नानकों करांगा ऐसें संकल्प कर्के इससें उपरंत भस्मकों ग्रहणकरे फेर (ईशानः सर्वविद्यानां) इस मंत्र कर्के शिरविषें भस्मलगावे (अथवा) ईशानायनमः) इसी करके शिरमें लगावे ॥ तत्पुरुषायनमः ॥ इस कर्के भस्म कों मुखमें लगावे ॥ अघोरायनमः (इस कर्के हृदयमें लगावे) वामदेवायनमः) इस कर्के गुह्यमें लगावे(सद्योजातायनमः) इस कर्के पादोंमें लगावे ॥ ओंकारकर्के संपूर्ण अंगोंमें लगावे तिससें उपरंत जलकर्के स्नान करे इसप्रकार भस्म स्नान कहाहै ॥ अथेति इससें उपरंत गोमय कर्के स्नानकों करांगा ऐसेंही संकल्पकरे गोमय कों ग्रहण कर्के (ओं भूः ओं भुवः ओं स्वः इस

तच्चेत्थंप्रायश्चित्तांगं भस्मस्नानं करिष्ये इति संकल्प्य भस्मगृहीत्वा॥ ईशानः सर्वविद्यानामित्यादिमंत्रैरथवा ईशानायनमइति शिरसि तत्पुरुषायनमोमुखे। अघोरायनमोहृदये। वामदेवाय नमोगुह्ये। सद्योजातायनमः पादयोः प्रणवेनसर्वांगे ततोजलस्नानम् इतिभस्मस्नानम् अथगोमयस्नानं करिष्येइतिसंकल्प्य गोमयमादाय व्याहृत्या त्रिधा विभज्यादित्यायप्रदर्श्य अग्रमग्रंचरतीनामोषधीनांवनेवने तासामृषभपत्नीनां पवित्रंकायशोधनम् तन्मेरोगांश्चशोकांश्चनुदगोमयसर्वदेतिमंत्रेण गंधद्वारामितिमंत्रेणच सर्वांगे विलिप्यउदकस्नानंकुर्यात्॥ अथमृदास्नानं ॥ बलिस्थापर्वतानां क्षुद्रं बिभर्षि पृथ्वीप्रजाभूमीःप्रवृएवती महनाजिनोपिमहिनी इतिभूमिंप्रार्थ्य

महा व्याहृति कर्के गोमयके तीन ३ भाग कर्के सूर्यके तांई दिखा कर्के मंत्र पडे मंत्रको दिखातेहैं ?अग्रमिति? आगे आगे बनविषे औषधियोंकों भक्षण करदीआं जो बैलकीयां स्त्रीयांहैं तिनका जो पवित्र गोमयहै सो शरीरके शोधनमें योग्यहै तिसकारणसें हेगोमय मेरे रोगोंको और शोकांको दूर कर ? गंधद्वारां ¿ इसमंत्रकर्के संपूर्णअंगोमें लेपकर्के पीछे जलकर्के स्नान करे अथमृत्तिकादास्नानकहतेहैं तिसमै पहले पृथिवीकीप्रार्थनाकरतेहैं बलिस्थेति, इसमंत्रका अर्थलिखतेहैं हेपृथिवि तूं बलिस्थाहै अर्थात् बलियोंमे प्रधानहै और पर्वतांकों तूं क्षुद्र जानकर्के धारतीहैं और प्यारे जो निवासस्थानहैं तिनकों तुं पुष्ट करतीहैं और दिनकर्के पुण्या कों उत्पन्न करतीहैं और पूजनेके योग्यहै ऐसें पृथिवीकी प्राथना कर्के

(मावोरिषत्) इत्यादिमंत्रकरके पृथिवीकों पुट्टे इहपुट्टनका मंत्रहै स्योनापृथिवी नोभवा इत्यादिमंत्रकर्के पृथिवीकों अभिमंत्रण करे अथवा अश्वेति हेपृथिवी जो मैंनें पूर्वजन्ममें पापकीयाहै तिसको तूं दूरकर कैसी तूंहैं घोडेकर्के आक्रांतहैं और रथां कर्के वी आक्रांतहैं और विष्णु कर्के आक्रान्तहैं १ और शूकर स्वरूप होकरके कृष्णजीने पातालसें उद्धारण कीतीहैं और ब्रह्मा कर्के दित्ती होई काश्यप ऋषिजीने अभिमंत्रित कीतीहैं २ इसकारणसें हेमृत्तिके मेरेतांई पुष्टि कों देह हे पृथिवि तैंने मेरे पापके दूर कीतियां होयां परम

मावोरिषत् वनितोतिखनित्वा २ स्योनापृथिवीनोभवेति अश्वक्रान्तेरथक्रान्तेविष्णुक्रान्तेवसुन्धरे मृत्तिकेहरमेपापंयन्मयापूर्वसंचितम् १ उद्धृतासिवराहेणकृष्णेनशतवाहुना मृत्तिकेब्रह्मदत्तासिकाश्यपेनाभिमंत्रिता २ मृत्तिकेदेहिमेपुष्टिंत्वयिसर्वंप्रतिष्ठितं ॥ त्वयाहतेनपापेनगच्छामिपरमांगतिम् ३ इतिमंत्रैरभिमंत्र्य आयनेतेपरायणेदूर्वामे इतिदूर्वामादाय मृदंगृहीत्वा त्रातारमितिमंत्रेण पूर्वस्याम् यमायमधुमत्तममितिदक्षिणस्याम् तत्त्वायामीतिपश्चिमायाम् वयंसोमइत्युत्तरस्याम् तत्सूर्यैरोदसीत्यूर्ध्वायामधःपश्यसीत्यधरायांदिशिमृदंनिक्षिप्य ततः सहस्रशीर्षेतिशिरसि अक्षिभ्यांतेनासिकाभ्यांकर्णाभ्यांचिवुकादधि शीर्षण्यंपक्ष्ममस्तिष्काजिव्हाया विवृहामितेइतिमुखे

गतिकों मै प्राप्त होवांगा ३ इना तिन्ना मंत्रां कर्के पृथ्वी का पूजन करे ॥ फेर आयनेति इस मंत्र कर्के दूर्वाकों लेकर्के और मृत्तिकाकोले कर्के त्रातार इसमंत्रकर्के पूर्वदिशामें मृत्तिकाकों फेंके यमायेति इस मंत्रकर्के दक्षिण दिशामें तत्त्वायामीति इस मंत्र कर्के पश्चिम दिशामें ? वयंसोमेति इसमंत्रकर्के उत्तर दिशामे ? तत्सूर्यैरोदसीति इसमंत्रकर्के मृत्तिकाकों आकाशविषे फेंके अधः पश्यसीति ! इसमंत्रकर्के पातालविषें फेंककर्के तिससें उपरंत सहस्रशीर्षेति इसमंत्र कर्के शिरमे लगावे अक्षिभ्यामिति ? इसमंत्रकर्के मृत्तिकाकों मुखमे लगावे

ग्रीवाभ्य इति इसमंत्रकर्के ग्रीवाविषे मृत्तिकाकों लगावे (आंत्रेभ्यइति) इसमंत्रकर्के हृदयमें लगावे (नाभ्यानाभीति) इसमंत्रकर्के नाभिस्थानमें लगावे (त्वमिंद्र सजोषेति) इसमंत्रकर्के बाहूमे लगावे (सोमानं स्वर्णज) इति इसमंत्रकर्के कक्षामें अर्थात् कछमे लगावे (यःकुक्षिः सोमयातमइति) इसमंत्रकर्के कुक्षिमें लगावे अर्थात् वक्षीमे लगावे (वह्हीनांपितातइति) इस मंत्रकर्के पृष्टमें लगावे (ऊरूभ्यांते) इति इसमंत्रकर्के मट्टीकों ऊर्वोमें अर्थात् पट्टोंमे लगावे (मेहनाद्वनं करणा लोमेति)इसमंत्रकर्के जानूमें अर्थात् गोट्यामें लगावे(आमावाजस्येति इसमंत्रकर्के

ग्रीवाभ्यस्तउष्णिहाभ्यःकीकसाभ्यो अनूक्यात् ॥ यक्ष्मंदोषण्या मंसाभ्यां बाहुभ्यांविवृहामिते इतिग्रीवायां ॥ आंत्रेभ्यस्तेगुदाभ्योवावनिष्ठो हृदयादधि ॥ यक्ष्ममतस्नाभ्यां यक्नः प्लाशिभ्योविवृहामिते इति हृदये नाभ्यानाभिन्नआददे चक्षुश्चित्सूर्येसचा ॥ कवेरपत्यमाशुदुहे इति नाभौ त्वमिन्द्रसजोषसमर्के विभर्षि बाव्होर्वज्रं शिशान ओजसा इतिबाव्होः सोमानं स्वर्णंज इति कक्षयोः ॥ यः कुक्षिः सोमयातमः समुद्रइवपिन्वते उर्वीरायोनकाकुदः इतिकुक्ष्योः वव्हीनांपिता त-इतिपृष्ठे ॥ ऊरूभ्यांते अष्ठीवद्भ्यां पार्ष्णिभ्यां प्रपदाभ्यां यक्ष्मंश्रोणिभ्यां भासंसाद्भससोविवृहामिते इत्यूर्वोः मेहनाद्वनंकरणाल्लोमभ्यस्तेनखेभ्यः यक्ष्मं सर्वस्मादात्मनस्तमिदं विवृहामिते इतिजान्वोः ॥ आमावाजस्येति पादयोः । यस्मिन्विश्वानि हस्तयोरूचुर्वसूनिनिहिता विरस्य पृतनावहः इतिहस्तयोः अंगादंगाल्लोम्नोलोम्नोजातं पर्व्वणि पर्व्वणि यक्ष्मंसर्वस्मादात्मनस्तमिदंविवृहामिते इत्यनेन पुरुषसूक्तेनच सर्वांगोद्वर्त्तनम् इदंविष्णुरिति मृदं शिरसिनिधाय अशक्तौतु अश्वक्रान्तेइत्यादिमंत्रैर्मृदंसर्वांगेविलिप्य मृत्तिकास्थलंप्रक्षाल्य मृत्तिकेहरमेपापमित्यादिमंत्रेण स्नायात् इतिमृत्तिकास्नानम्

पादोमें लगावे ? यस्मिन्विश्वानि हस्तयोरिति ? इसमंत्रकर्केहाथोंमें लगावे ! अंगादंगाल्लोम्नोलोम्न इति इसमंत्रकर्के संपूर्ण अंगोमें मृत्तिकाकों उद्वर्त्तन करे अर्थात् मले ? इदंविष्णुरिति इस मंत्रकर्के मृत्तिकाको शिरमे स्थापनकर्के असमर्थहोवेतो ? अश्वक्रान्त इति ॥ इससे आदलेकर जो मंत्र हैं तिनामंत्रांकर्के संपर्णअंगोमें लेपकर्के फेर मृत्तिकाके स्थलका प्रक्षालन कर्के ? अर्थात् जिसजगाते मृत्तिकालईहै उसजगाको धुयांकर्के मृत्तिके इति इसमंत्रकर्के मृत्तिकासे स्नानकरे

ततइति तिससे उपरंत जलकास्नानहै इमंमेगंगे इति इसमंत्रककेंजलकामथनकरे ऋतंचेति?इसमंत्रको जपाहोयाअघमर्पणकोंकरे आपोहिष्ठेति)इसमंत्रकर्के अथवा इदमाप इसककेंउदकनाल स्नानकरे तिससे अनंतर आचमनकरे अथेति इससें उपरंत पंचगव्यकास्नानहै और तिसके आदमें गोमूत्रककें स्नानकोंकरांगा ऐसेंही संकल्पककें गायत्री मंत्रकोंपडकर गोमूत्रनाल स्नान कर्के पुनः गोमूत्रका आचमन कर्के गंधद्वारामिति इसमंत्रककें गोमयनाल स्नानकरे पुनः आचमनकरे आप्यायस्वेति इसमंत्र कर्के दुग्धनाल स्नान करे पुनः आचमन करे दधिक्राव्णेति इसमंत्र कर्के दधिनाल स्नान करे पुनः आचमनकरे (घृतमिमिक्षिरे।इसमंत्रककें अथवा? तेजोसि!इसमंत्रककें घृतनालस्नानकरे

ततउदकस्नानम् ॥ इमंमे गंगे यमुने सरस्वति शतद्रु स्तोमंसचतापरुष्ण्या आसिक्न्या मरुद्वृधे वितस्तयार्जिकीये शृणुह्याशिषोमया इत्युदकमालोड्य ऋतंचेति ऋतंजपन्नघमर्षणंकुर्यात् ॥ तत्रमंत्राः आपोहिष्ठामयोभुवः ॥ इदमापः प्रवहत० इत्युदकस्नानम् ततआचमनम् अथपंचगव्यस्नानम् तत्रादौ गोमूत्रस्नानंकरिष्ये इतिसंकल्प्य गायत्र्यागोमूत्रेणस्नात्वाऽऽचम्य गन्धद्वारामिति गोमयेनस्नात्वाऽऽचम्य आप्यायस्वेतिक्षीरेण स्नात्वाऽऽचम्यदधिक्राव्णेति दध्नास्नात्वाऽऽचम्य घृतंमिमिक्षिरे तेजोसीति वा घृतेन स्नात्वाऽऽचम्य देवस्यत्वासवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यांपूष्णोहस्ताभ्यामग्नेस्तेजसासूर्यस्यवर्चसेन्द्रेणाभिषिंचामीतिकुशोदकेन यद्वा एतानि दशाप्यमंत्रकाण्येवस्नानानिकार्य्याणि अथपयःस्नानम् ।कपिलायाः क्षीरमाप्यायस्वेत्यादायप्रणवेनपात्रेनिक्षिप्य आप्यायस्वेति मंत्रेणवा सोमाय नमः इतिपयःस्नानम् ततोजलस्नानम् ततआचमनम् ॥ अथदधिस्नानम् दधिक्राव्णइत्यनेनदधिआदायप्रणवेनपात्रेनिक्षिप्य दधिक्राव्ण इतिमंत्रेण वा वायवेनमःइतिदधिस्नानम्

पुनःआचमन करे! देवस्यत्वेति इसमंत्र कर्के कुशाके जलसाथ स्नान करे इसमें और विचारहै एहजो दश १० स्नानहैं सो मंत्रोंसे रहितभीहोतेहैं इससें उपरंतदुग्धस्नानहै कपिलागौके दुग्धको आप्यायस्वेति? इस मंत्रकोपडकर्के लेकर ओंकारकर्के पात्रमे पाकर्के आप्यायस्वेति इसमंत्र कर्के वा० सोमायनमःइसककें दुग्धनालस्नानकरे तिससे उपरंत जलस्नानकरे पुनः आचमनकरे इससें उपरंत दधिका स्नानहै दधिक्राव्णेति इसमंत्र कर्के दधिको ग्रहण कर्के ओंकार कर्के पात्रमें पायकर्के दधिक्राव्ण इसमंत्र कर्के अथवा वायवे नमः इस मंत्रकर्के दधिनाल स्नानकरे

तिससेंउपरंतशुद्धस्नानहै फेर आचमनकरे तिससें उपरंत घृतस्नानहै ! तेजोसीति ! इसमंत्र करके घृतकोंग्रहणकरके प्रणवकरके पात्रमें पायकरके ! तेजोसीति ! इसमंत्र करके वा ! रवयेनमः ! इस करके घृतनालस्नान करे उपरंत शुद्धस्नान करे पुनः आचमन करे तिससें उपरंत मधुस्नानहै ! मधुवातेति ! इसमंत्र करके मखीर नाल स्नान करे उपरत शुद्धस्नान करे तिससें उपरंत संपूर्ण ओषधी करके स्नानहै ! ओषधीरिति ! इस मंत्र करके संपूर्ण ओषधीयांकोंअभिमंत्रणकरे याओषधीरिति इस मंत्रकरके संपूर्ण ओषधीयांकों ग्रहणकरके और प्रणव करके पात्रमे पायकरके वा याओषधीरिति इस मंत्र करके वा ओषधीभ्योनमः इसमंत्रकरके संपूर्ण ओषधीयांनाल स्नान करे उपरंत शुद्धस्नान करे ॥ मुरा १ शिलाजित २ वचं ३ कुठ ४ मुसक कपूर ५ दोनोहरिद्रा ७

ततःशुद्धस्नानम् ततआचमनम् ततोघृतस्नानम् तेजोसीत्यनेनघृतमादायप्रणवेनपात्रेनिक्षिप्य तेजोसीत्यनेनैव मंत्रेण वा रवयेनमःइतिघृतस्नानम् ततः शुद्धस्नानम् आचमनम् ततोमधुस्नानम् मधुवाताऋतायते ततःसर्वौषधीस्नानम् ओषधीःसर्ववृक्षाणांतृणगुल्मलतास्थिताम् दूर्वासर्षपसंयुक्तांसर्वौषध्यः पुनंतुमामित्यभिमंत्र्य याओषधीरितिमंत्रेणौपधीरादायप्रणवेनपात्रेनिक्षिप्य याओषधीरिति मंत्रेणवा ओषधीभ्योनमःइतिसर्वौषधीस्नानम् ततःशुद्धस्नानम् अथसप्तधान्यस्नानम् धान्यौषधीमनुष्याणांजीवनंपरमंस्मृतम् तेन स्नातोऽस्मिदेवेश ममपापंव्यपोहतु इत्यभिमंत्र्य धान्यमसीत्यनेनाधान्यमादाय प्रणवेन पात्रे निक्षिप्य धान्यमसीति मंत्रेण वा सर्वधान्येभ्योनमः इति सप्तधान्यस्नानम् ततः शुद्धस्नानम् ततआचम्य अथकुशोदकस्नानम् देवस्यत्वेति कुशोदकमादाय प्रणवेन पात्रे निक्षिप्य देवस्यत्वाभिषिंचामीतिमंत्रेण स्नानम् ततः शुद्धस्नानम्

कचूर ८ चंवा ९ मुस्था १० इनोंदस्सों वस्तुयोंका नाम सर्वौषधिहै ॥ इससें उपरंत सप्त ७ अन्नसें स्नानहै ॥ धान्यौषधीति इस मंत्र करके सप्त ७ अन्नकों अभिमंत्रण करे (धान्यमसीति) इस मंत्र करके अन्नकों ग्रहण करके ओंकारकरके पात्रमें पाकरके ॥ धान्यमसीति इस मंत्र करके वा । सर्वधान्येभ्योनमः । इसमंत्रकरके सप्त प्रकारके अन्नके साथ स्नानकरें उपरंत शुद्धस्नान करें तिससें उपरंत आचमन करें अथेति इससें उपरंत कुशाके जलसाथ स्नानहै देवस्यत्वेति इस मंत्र करके कुशावालेजलकों ग्रहण करके प्रणवकरके पात्रमें पायकरके ॥ देवस्यत्वेति ॥ इस मंत्र करके स्नान करे तिससें उपरंत शुद्धस्नान करे

स्त्रीति इसमें विशेष कहतेहैं स्त्री अर शूद्रकों विष्णुकास्मरणहै वा पौराणिक मंत्रोंका उच्चारणहै अवतीर्थकेआवाहनपूर्वक स्नानविधि कर्के स्नानहै इसप्रकार कर्के दश १० प्रकारके स्नानों कों कर्के आचमन करे उपरंत प्राणायामकों कर्के स्नानका अंग जो तर्प्पणहै तिसकों करे फेर आचमन कर्के नवीन वस्त्रकों धारणकरे फेर तिलककों कर्के मध्यान्ह समयमे संध्यावंदन करे फेर सूर्यका उपस्थान करे नमस्कार करे तिसतें उपरंत सभाकों प्राप्त होवे आचार्य अर ऋत्विग् इनकों वरण करे क्या वरणी देवे तिसतें उपरंत षोडश १६ उपचारों कर्के विष्णुकापूजनहै अष्टदलके मध्यमें इन्द्रसें आदलेकर दिक्पालांका और रुक्मिणी और सत्यभामासें आदलेकर जो हैं तिनका स्थापन करे सो इह प्रकार जानणा पूर्व दलमें इन्द्र १ अग्निमे अग्नि२दक्षिणमे यम ३ नैर्ऋतमें निर्ऋति ४ पश्चिममे वरुण ५ वायव में वायु ६ उत्तरमे

स्त्रीशूद्रयोश्च विष्णुस्मरणम् पौराणिकमंत्रोच्चारणंवा अथतीर्थोदकेनस्नान विधिनास्नानम् एवं दशविधस्नानानि कृत्वा आचमनम् प्राणायामं कृत्वा स्नानांगतर्प्पणम् आचम्य अहतवस्त्रपरिधानम् तिलकंकृत्वामध्यान्हसंध्यावंदनम् सूर्योपस्थानम् नमस्कारः ततःसभांगच्छेत् आचार्यऋत्विग्वरणम् ततःषोडशोपचारैर्विष्णुपूजनम् अष्टदलमध्ये इन्द्रादिदिक्पालान् रुक्मिणीं सत्यभामां जांववतीं नाग्नजितीं मित्रविंदां कालिंदीं भद्रां लक्ष्मणां च स्थापयेत् ॥ तत्रप्रथमंकलशस्थापनम् तत्रविष्णोः सत्यमूर्त्तिं सौवर्णमयीं स्थापयेत् अग्न्युत्तारणम् समुद्रस्येत्यादिभिर्मंत्रैः। ततःप्रायश्चित्तार्थं सत्येशपूजनम् सत्येशायगोमिथुनदानम् ॐमद्येत्यादि सत्येशस्यषोडशोपचारैःपूजनमहंकरिष्ये इतिसंकल्प्य

कुवेर ७ ईशानमे शिव ८ तैसेंहि पूर्वमें रुक्मिणी १ अग्निमें सत्यभामा २ दक्षिणमे जांववती ३ नैर्ऋत मे नाग्नजिती ४ पश्चिममे मित्रविंदा ५ वायव्मे कालिंदी ६ उत्तरमे भद्रा ७ ईशानमे लक्ष्मणा ८ इनकास्थापन करे तिसके आदमें कलशकास्थापनहै तिस कलशमें सुवर्णमयी विष्णुकीमूर्त्तिकास्थापन करे तिसते उपरंत अग्निकाउत्तारण करे अर्थात् घटन समयमे जो उसमे अग्निहै तिसको मंत्रांकर्के उतारे सो मंत्रदिखाईदेहैं(समुद्रस्येति)इत्यादिमंत्रोंकर्के ॥ तिसतें उपरंत प्रायश्चित्त के अर्थ नारायणका पूजन है सत्यनारायणके निमित्त गौवां दो २ दानकर्के फेर संकल्प करे (ॐमद्येत्यादिमासेऽमुकपक्षेऽमुकतिथावमुकवासरे ॥ इस संकल्प कर्के नारायण के पूजनकों १६ षोडशोपचारों कर्के मैं करांगा

तिनके आदमें अंगन्यासांकोंकर्के सोलां १६ मंत्रोंकर्केतिसते उपरंत देवन्यासकोंकर्के फेर पूजा कों करे नारायणके अंगांका पूजन करे हस्तोमें अर पादांमें अर जानूंमें कटिमें अर नाभिमें गलमें हृदयमें वाहांमें मुखमें अक्षिमें शिरमें ॥ सहस्रशीर्षेति ॥ इसमंत्र कर्के आवाहन करे १ पुरुषति इसकर्के आसनदेवे २ ?एतावानिति? इसकर्के पाद्यदेवे ३ इसक्रमकर्के अर्घ ४ आचमनीय५स्नान ६वस्त्र ७यज्ञोपवीत८गंध९पुष्प १० इन संपूर्णांकों नारायणकेतांई देवे मंत्रोकीआं प्रतीकां मूलमेंहें तिनां तिनां मंत्रांकर्के इनां वस्तुओंको देवे और ब्राह्मणोस्येत्यादिमंत्रकर्के धूप देणा ११ और चंद्रमा मनसोजात इत्यादिमंत्रकर्के दीप देणा १२ और नाभ्याआसीदित्यादि मंत्र

तत्र प्रथमं अंगन्यासंकृत्वा षोडशभिर्मंत्रैः ततोदेवन्यासं कृत्वा पूजांकुर्यात् वामदक्षिणयोः पाण्योः पादयोः जान्वोः कटिद्वये नाभौ गले हृदि बाह्वोः मुखे चक्षुषि शिरसि वा सहस्रशीर्षेत्यावाहनम् १ पुरुषेत्यासनम् २ एतावानितिपाद्यम् ३ त्रिपादूर्ध्व इत्यर्घम् ४ततोविराडित्याचमनीयम् ५ तस्माद्यज्ञादितिस्नानम् ६ तस्माद्यज्ञात्सर्वेतिवस्त्रम् ७ तस्मादश्वाइति यज्ञोपवीतम् ८ तंयज्ञमिति गंधम् ९ यत्पुरुषमिति पुष्पम् १० ब्राह्मणोस्येतिधूपम् ११ चंद्रमामनसोजातइतिदीपः१२ नाभ्याआसीदिति नैवेद्यम् १३ यत्पुरुषमिति तांबूलम् १४ सप्तास्यासन्निति नमस्कारम् १५ यज्ञेनेतिस्तुतिंप्रदक्षिणाम् १६ ततःषोडशभिर्मंत्रैर्दद्यात्पुष्पाणिषोडश ततःपुरुषसूक्तेनस्तुतिः अनेन यथाशक्तिकृतेन पूजनाख्येन कर्म्मणा पापापहा विष्णुःप्रीयताम् नमोऽस्त्वनंताय मंत्रहीनंक्रियाहीनंभक्तिहीनंसुरेश्वर भगवंस्त्वत्प्रसादेनपरिपूर्णंनमोस्तुते १ सत्येशस्य पूजनकर्म्मणा सर्वपरिपूर्णम् ततोवैष्णवश्राद्धम् ॥

कर्के नैवेद्य देणा १३ और यत्पुरुषम् इसमंत्रकर्केतांबूल कया पानपत्र देणा १४ और सप्तास्यासन्नित्यादि मंत्र कर्के नमस्कार करणी १५ यज्ञेनेत्यादि मंत्र कर्के स्तुति और प्रदक्षिणा करणीयां १६ तिसके अनन्तर १६ सोलांमंत्रोंकर्के १६ सोलां पुष्पदेवे तिसके अनन्तर पुरुष सूक्त कर्के स्तुति करे एह जो यथाशक्ति कर्के कीताहै पूजनाख्यकर्म तिस कर्के पापां के दूर करणेवाला जो विष्णु सो प्रसन्नहोवे ऐसाकहकर और नमोस्त्वनंताय इसमंत्रकों पढे और मंत्रहीनमित्यादि मंत्रकों पढे और सत्येशके पूजनाख्यं कर्म कर्के सब परिपूर्ण होवे ॥ तिसके अनन्तर वैष्णव श्राद्धकरे

तिसके अनन्तर विष्णुके उद्देश करके अर्थात् विष्णुके निमित्त तीनोंसे अधिक जो ब्राह्मण तिनानू मैं भोजनकरके तृप्तकरताहुं ऐसे संकल्प करे और अभोजनपक्षमें तिनके तांई सुवर्ण देणेयोग्यहै तिसके अनन्तर पूर्वाङ्गगोदानका संकल्प करे अब गोदानका मंत्र कहतेहैं गवामिति जिसकारणतें गौओंके अंगोंमें चौदां १४ भुवन स्थित रहतें हैन तिसीकारणतें मेरे तांई कल्याण होवे इसलोक और परलोकविषे इसमें १४ भुवनकीस्थितिइसप्रकारहैं कि गव्यघृत करके यज्ञहोंताहै और यज्ञसें १४ भुवनपुष्टहोतेहैं ऐसे पडकरणरूप सहित दक्षिणाके गोदानकरे १ तिसमें ऐसा प्रकारहै प्रत्यक्षगोदान करे अथवा गौका मुल्ल देवे तिसके अनन्तर घृतकरके अग्नि विषे व्याहृतीयों द्वारा अष्टोत्तरशत अर्थात् एकसौ आठ १०८ आहुतिआंदेवे तिसके अनन्तर पंचगव्यका हवनकरे। अब पंचगव्यकेहवनकाप्रकार कहतेहैं कि कपिला गौका मूत्र एक पल

विष्णूद्देशेन त्रिभ्योऽधिकान् ब्राह्मणान् अहं तर्प्पयिष्ये इतिसंकल्प्य अभोजनपक्षे तेषांहिरण्यंदातव्यम् ततःपूर्वांगगोदानसंकल्पंकुर्य्यात् गोदानमंत्रः गवामंगेषुतिष्ठतिभुवनानिचतुर्दश यस्मात्तस्माच्छिवंमेस्यादिहलोकेपरत्रच इतिगोदानं सदक्षिणं प्रत्यक्षं वा मूल्यंदद्यात् ततआज्येनाग्नौव्याहृतिभिः अष्टोत्तरशतमाज्याहुतीर्हुत्वा ततःपंचगव्यंजुहुयात् ॥ तत्रपंचगव्यहोमप्रकारः। कपिलायागोमूत्रं पलमितं गायत्र्यादाय प्रणवेन ताम्रपात्रेनिक्षिप्य ततोगोमयं पलद्वयमितं गन्धद्वारामित्यनेनादाय यस्मिन्पात्रेगोमूत्रंनिहितं तस्मिन्नेवपात्रे प्रणवेन निक्षिपेत् ॥ ततःक्षीरं सप्तपलपरिमितमाप्यायस्वेत्यादाय प्रणवेन तत्रनिक्षिपेत् ॥ ततोदधि सप्तपलं दशपलं वा दधिक्राव्ण इत्यनेनादाय प्रणवेन पूर्वोक्तपात्रे निक्षिपेत् ॥ ततोघृतमेकपलमितं तेजोसीत्यनेनादाय प्रणवेन तत्रैवनिक्षिपेत् तदनन्तरं कुशोदकं एकपलमितं देवस्यत्वाऽभिषिंचामीत्यादाय

कया चोसठ मासे ६४ गायत्रीकरके लए और ओंकारकरके ताम्रपात्रविषे पावे तिसके अनन्तर दोपल गोबर गंधद्वारामित्यादिमंत्रकरके जिसपात्र विषे गोमूत्र पायाथा उसीपात्रविषे ओंकार करके पावे तिसके अनन्तर सातपल दूध आप्यायस्वेत्यादि मंत्रकरके लेकर उसीपात्रविषे ओंकार करके पावे तिसके अनन्तर दधिसात ७ पल अथवा दश १० पल दधिक्राव्ण इस मंत्रकरके ले करके प्रणव करके उसी पात्रविषे पावे तिसके अनन्तर एकपल घृत तेजोसीत्यादि मंत्र करके उसीपात्र विषे ओंकारकरके पावे तिसके अनन्तर एकपल कुशाका जल देवस्यत्वाऽभिषिंचामीत्यादिमंत्र करके लेणा

श्रौर ॐकार कर्के हाथसें श्रालोडन करणा तिसके श्रनन्तर श्रग्नि श्रौर वायु श्रौर सूर्य श्रौर प्रजापति इनको क्रमकर्के श्रठाई घृतकीश्रां श्राहुतीश्रां देवे फेर ॐकारका उच्चारण कर्के श्रौर यज्ञिय काष्ठ जो खंवल तिसकर्के छोले श्रौर ॐकार कर्के श्रभिमंत्रण कर्के श्रौर कुशाके सहित जो हरितरंग वाले सात ७ पत्तेहैं तिनकर्के पंचगव्यकों उठावे इरावत्यादि मंत्रोंकर्के दशश्राहुतियां देवे श्रौर इस जगामें स्रुवके स्थान हरित कुशाका ग्रहणहै श्रव इराव त्यादि मंत्र कहतेहैं इरावती १ इदंविष्णुः २ मानस्तोके ३ शन्नइन्द्राग्नी ४ श्रग्नये ५ सोमाय६ तत्सवितुः ७ प्रणवश्च ८ ॐभूर्भुवःस्वःस्वाहा ९ श्रग्नयेस्विष्टकृतेस्वाहा १० एहदशश्राहुतीयांका हवन कर्के हुत शेष जो है पंचगव्य तिसनूं ॐकारका उच्चारण करके हाथकर्के श्रर्थात् तिसमे

प्रणवमुच्चार्य्य हस्तेनाऽऽलोड्यश्रग्निवायुसूर्य्यप्रजापतिक्रमेण श्रष्टाविंशति मितमाज्येनहोमंकुर्य्यात्पुनःप्रणवमुच्चार्य्य यज्ञिय काष्ठेन निर्मथ्य प्रण वेनैवाभिमंत्र्य सप्तपत्रैर्हरितैःकुशैः पंचगव्यमुद्धृत्य इरावत्यादिमंत्रै र्दशा हुतीर्जुहुयात् श्रत्र स्रुवस्थानेहरितः कुशाएव इरावती१इदंविष्णुः२मान स्तोके३शन्नइंद्राग्नी४श्रग्नये५सोमाय६तत्सवितुः७प्रणवश्च८ॐभूर्भुवःस्वः स्वाहा९ श्रग्नयेस्विष्टकृते स्वाहा १० इतिदशाहुतीर्हुत्वा हुतशेषंपंचगव्यं प्रणवमुच्चार्य्य हस्तेनाऽऽलोड्य प्रणवेन निर्मथ्य प्रणवेनैव पिवेत् हुतशेषं सर्वं पेयम् नोच्छेषणीयम् ॥ मौनीभूत्वाऽऽत्मनोदुष्कृतंमनसाचिं तयन् श्राचमनम् प्राणायामंचकुर्यात् ॐमद्येत्यादिप्रयोगमुच्चार्य्य एवंगुण विशिष्टेपुण्यकालेदेशेचममजन्मप्रभृतीत्यादिपूर्वोक्तमुच्चार्य्य ॥ नरकभीति निवृत्त्यर्थंव्यवहारसुवृत्तये ममदेहविशुद्धिंहिदद्ध्वंद्विजसत्तमाः ॥ १ ॥

हाथ फेरे श्रौर ॐकारकर्के छोले श्रौर ॐकारकर्के ही पान करे श्रौर हुत शेष क्या हवनका शेष संपूर्ण पान करणा योग्यहै बचाना ना चाहिए श्रौर तिसतें श्रनन्तर मौन धार कर्के श्रौर श्रपने कर्के कीता जो पाप तिसनूं मन कर्के चिन्तन करता हुश्रा श्राचमन श्रौर प्राणायाम करे तिसके श्रनन्तर ॐमद्येत्यादि प्रयोगका उच्चारणकर्के, ऐसे गुणोंक र्के युक्त जो पुण्य काल श्रौर देश मम जन्म प्रभृतीत्यादि संकल्प को पढ़ कर्के एह प्रार्थनाका श्लोक पडे नरकेंति कि हेब्राह्मणों नरकभयकी निवृत्तिके वास्ते श्रौर लोक व्यवहारकी सिद्धि के वास्ते मेरेदेहकी शुद्धि तूं देवो १

येचेति और जिना पुरुषांदा पापही आचारहै ऐसे जो अशुद्ध और पापोंके करणे वाले तिनांका प्रायश्चित करणेसे विना धर्ममें अधिकार नहिहै २ उपस्थितेत्विति और प्रायश्चित्त के प्राप्त होयां २ जेडे थोडी बुद्धिवाले प्रायश्चित्त नहि करदे जैसे विभूति विषे हवन कीता होया निष्फल हुंदाहै तैसें तिन्हांका सभ कर्म प्रायश्चित्तके बिना निष्फल हुंदाहै ३ और जेकर गौ न मिले तो तिसके अर्थ जो रजतादि दान करणा तिस पक्ष विषे पंचगव्य प्राशन के अन्त्यमें एह जो डूढ वर्षादिकों के विषे अमुकाऽमुक संख्या वाले जो कृच्छ्र तिनके स्थान विषे एक एक कृच्छ्रके निमित्त सामर्थ्य पुरुषके वास्ते एक रुपैया और असामर्थ्यके वास्ते आठ आने और अतिअसामर्थ्यके वास्ते चार आने इन्हां विचों एक रजत द्रव्य नानानामोवाले और नानागोत्रों वाले जो ब्राह्मण तिन्हांके

येचपापसमाचारा अशुद्धाःपापकारिणः नचधर्मेऽधिकारोस्तिप्रायश्चित्ता दृतेतुवै २ उपस्थितेप्रायश्चित्तेनकुर्वन्त्यल्पचेतसः ॥ तेषांतुतादृशंसर्वंयथाभस्महुतंहविः ३ गोनिष्क्रयरजतादिदानपक्षे पंचगव्यप्राशनान्ते इदंसार्धाब्दादिष्वमुकामुकसंख्याककृच्छ्रप्रत्याम्नायभूतं प्रतिकृच्छ्रंनिष्कतदर्धतदर्धान्यतमाणां रजतद्रव्यं नानानामगोत्रेभ्योब्राह्मणेभ्योदातुमहमुत्सृजे इति द्रव्यदानसंकल्पंकृत्वा तदैव द्रव्यंविभज्य दत्त्वाच उत्तरांगानि कुर्यात् अद्येत्यादि मम हननस्तेनपानगमन तत्संसर्गादि सर्वपापक्षयार्थं ॥ श्रीगुरूपदिष्ट कृतप्रायश्चित्तस्य साद्गुण्यार्थं उत्तरांगानिकरिष्यइति कुरुष्वेत्यनुज्ञातः ततश्चीर्णप्रायश्चित्तनिमित्तंहोमः ॥ उक्तंच आरंभेसर्वकृच्छ्राणांसमाप्तौचविशेषतः आज्येनैवतुशालाग्नौजुहुयाद्व्याहृतीःपृथक् १

तांई में देताहुं ऐसें रजत द्रव्यका संकल्प करके उसी द्रव्यको वांट कर्के देवे तिसके अनन्तर जो उत्तरांगकीकृत्यहै तिसको करे उत्तरांगपूजन उसको कहतेहैं कि जिसतरां आदिविषे पूजनहै उसीतरांकर्म्मके अन्तविषे भी स्थापितदेवताका पूजनहुंदाहै ? पहलें तिस का संकल्प करे अद्यतत्सत् इत्यादिकोंका उच्चारणकरे और मेरे कर्के कीती होई जो हिंसा और चोरी और मदिरापान और अगम्यागमन और तिनके संबंधकर्के उत्पन्नहोये जो सबपाप तिनके दूर करणेके वास्ते श्रीगुरुजीने उपदेशकीत्ता जो प्रायश्चित्त तिसकी संपूर्णताके वास्ते उत्तरांगपूजन में करुंगा और आचार्य कहे कि तूं कर, ऐसे आज्ञत होया २ करे तिसके अनन्तर कीता जो प्रायश्चित्त तिसकेनिमित्त हवनकरे सो कहाहै आरंभेति कि सबनां व्रतांकेआरंभ विषे और समाप्तिमें घृतकर्के अग्निशाला विषे हवन करे ॥ १ ॥

तिसके अनन्तर व्याहृतीयोंकर्के अष्टोत्तरशतघृतकीयांआहुतीयांकाहवनकरेएहअर्थहै और हवनके अभावपक्षमें ब्राह्मणरूपी अग्निविषे व्याहृतियों द्वारा एकसउआठ १०८आहुतीयां परिमित घृत ताम्रपात्रविषे पाकरके आचार्यके तांई देवे तिसके अनन्तर वैष्णव श्राद्ध करे और श्राद्धविषे निमंत्रित जो ब्राह्मण तिन्हांके तांई सुवर्ण देवे फेर गोदान करे गोदानके मंत्र कहतेहैं गवामिति इसका अर्थ कहचुकेहैं १ ऐसेअंतविषे गोदान करके तिसतें अनंतर आचार्य्य क्या उपदेश करणेवाला और ऋत्विक् क्या आचार्य्यकके कृत्यविषे प्रेरे होए जो हैन तिनांके तांई व्रतके अंतविषे गौ और सुवर्णादि दक्षिणा यथाशक्ति करके देवे और आचार्य्यके

ततोव्याहृतिभिरष्टोत्तरशतमाज्याहुतीर्जुहुयात् अथवाअहोमपक्षे ब्राह्मणाग्नौ व्याहृतिभिराज्यमष्टोत्तरशताहुतिपरिमितंताम्रपात्रेकृत्वाऽऽचार्य्यायनिवेदयेत् ततोवैष्णवश्राद्धम् श्राद्धविप्राणांचसुवर्णंदेयम् पुनर्गोदानं तत्रमंत्रः गवामंगेषुतिष्ठंति भुवनानिचसर्वशः यस्मात्तस्माच्छिवंमेस्यादिहलोकेपरत्रच १ एवमन्ते गोदानंकृत्वा ततआचार्य्यर्त्विग्भ्यश्चव्रतान्तेतु गोहिरण्यादिदक्षिणा यथाशक्त्या देयाः ॥ आचार्यायवरदानम् एवंवरदानादिनागुरुंसंतोष्य तस्मिन्नेवावसरे भूतशुद्धिं विधाय प्राणप्रतिष्ठांकुर्यात् प्रायश्चित्तप्रकर्त्तव्यंचतुर्वर्गफलायवै तस्मात्त्वत्प्रसादाच्च कृताशुद्धिर्मयाविभो १ नमोनमस्तेविप्रेन्द्रभूदेवपंक्तिपावन तारितोऽस्मिमहादेव पापसंसारसागरात् २ ॥

तांई वरदानभी देवे ऐसे वरदानादिक द्वारा गुरुजीको प्रसन्न करके उसी काल विषे भूतशुद्धिको क्या देहशुद्धिको करके प्राणप्रतिष्ठा करे क्या प्राणायाम करे फेर प्रार्थना करे प्रति हेविभो प्रायश्चित्त करणा योग्यहै धर्म और अर्थ और काम और मोक्ष इनके वास्ते तिस कारणसें मैनें तुसांदी कृपातें देह शुद्धि कीतीहै १ नम इति और हेविप्रेन्द्र क्या ब्राह्मणांविषे इन्द्ररूप हेभूदेव क्या पृथ्वीके देवता हेपांक्ते पावन क्या ब्राह्मणांकी पंक्तिको पवित्र करणे वाले हेमहादेव तुसाने मेरेको पापरूपी संसार सागरते तारयाहै २

नमस्तुभ्यमिति कि हेविप्रेन्द्र आपके तांई वारंवार नमस्कार होवे और आपकीकृपातें मेरीनिर्मलबुद्धिहोईहै ३ ऐसें गुरुजी नू नमस्कारकर्के और विदयाकरणेके वास्ते साथ जाकरके विसर्जन कया विदया करे । एवमिति ऐसें जो ब्राह्मण भलो प्रकार कर्के प्रायश्चित्तकरे सो इसलोक और परलोक विषे पवित्रदेहवाला होजाताहै १ एवमिति और जो ब्राह्मण ऐसें प्रायश्चित्तकरे सो संपूर्ण

नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमोनमः त्वत्प्रसादाद्धिविप्रेन्द्रमम जाताऽमलामतिः ३ एवंकृत्वागुरुंनत्वाकिंचिदनुव्रज्य विसर्जयेत् एवंकरोति यःसम्यक् प्रायश्चित्तंद्विजोत्तमः सर्वैभवतिपूतात्माइहलोकेपरत्रच १ एवं करोतियःसम्यक् प्रायश्चित्तंनरोत्तमः सर्वधर्माधिकारीस्यात्कृतार्थोहिभवेद्धसः २ इतिबहुग्रंथावलोकनपूर्वसाधारणप्रायश्चित्तम् श्रीमत्प्रौढतरप्रतापतपनग्रस्ताखिलारिव्रजात् जंवूपत्तनतिव्वताक्षितिपतेर्धर्म्मस्यसाक्षात्तनोः भूपालावलिमौलिलाल्यचरणात् काश्मीरदेशेश्वरादाज्ञांश्रीरणवीरसिंहनृपतेः प्राप्यार्थिचिन्तामणेः ॥ १ ॥ पर्यालोचितधर्म्मशास्त्रनिवहैरेतत्सभापंडितै गंगारामकवीशमुख्यविबुधैर्यःसंगृहीतःक्रमात् प्रायश्चित्तविनिर्णयेप्रकरणं तस्मिन्बुधानन्ददे ॥ पर्षल्लक्षणवर्णनादिरुचिरं सिद्धिंतृतीयंयषौ ॥ २ ॥ इतिश्रीमन्महाराजाधिराजजम्बूकाश्मीराद्यनेकदेशाधीशप्रभुवर रणवीरसिंहाज्ञप्त देविकोपकंठवासिपण्डितवरदेवीदत्तसुत कविगंगारामादिसंगृहीते पंचविषयात्मकप्रतिरूपके धर्मशास्त्रमहानिबन्धे प्रायश्चित्तभागे परिषल्लक्षणं प्रकरणंतृतीयम् ३ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

धर्मोंका अधिकारी और कृतार्थ होजाताहै २ एह बहुत ग्रंथोंका अवलोकनकर्के साधारण प्रायश्चित कहेहैन ॥ इतिश्रीमन्महाराजाधिराजजम्बूकाश्मीराद्यनेकदेशाधिपति प्रभुवर रणवीरसिंहजी की आज्ञा कर्के कविगंगारामने संग्रहकीता जो धर्मशास्त्रविषे प्रायश्चित्तभाग तिसके तीसरे प्रकरणकीभाषाटीका संपूर्ण होई ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

तृतीयप्रकरणेयत्रयत्रमंत्रप्रतीकाणिकृतानितत्पूर्त्यर्थंमंत्रसंग्रहोलिख्यते ।

पृ०	पं०	प्रतीक	
१४३	२	ईशानः०	ईशानःसर्वविद्यानां ईश्वरःसर्वभूतानांब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोधिपतिर्ब्रह्माशिवोमेस्तुसदाशिवः१ यजुःतैत्तिरीयशाखायांरुद्रपाठे १
१४३।	२।	तत्पुरुषाय०	ॐतत्पुरुषायविद्महेमहादेवायधीमहि तन्नोरुद्रःप्रचोदयात् ॥२॥ यजुः तै० शा० रु-१
१४३॥	२॥	अघोरेति०	ॐअघोरेभ्योथघोरेभ्योघोरघोरतरेभ्यः सर्वतः सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेस्तुरुद्ररूपेभ्यः ॥ ३ ॥ यजुः तै० शा० रु- १
१४३॥	२॥	वामेति०	ॐवामदेवायनमोज्येष्ठायनमः श्रेष्ठायनमः रुद्रायनमः कालायनमः कलविकरणायनमोवलविकरणायनमोवलप्रमथनायनमःसर्वभूतदमनायनमोमन्मथायनमः ४
१४३॥	३॥	सद्योजातम्०	ॐसद्योजातंप्रपद्यामिसद्योजातायवैनमः भवेभवेनातिभवेभजस्वमांभवोद्भवःभवोद्भवायनमः ॥ ५ ॥ यजुःतै-शा.रु. १
१४३॥	८॥	अश्वक्रांते.	अश्वक्रान्तेरथक्रान्तेविष्णुक्रान्तेवसुंधरे मृत्तिकेहरमेपापंयन्मयादुष्कृतंकृतम् ॥ ६
१४३॥	९॥	उद्धृतासि-	ॐउद्धृतासिवराहेणकृष्णेनशतवाहुना दंष्ट्राग्रेलीलयादेवि यज्ञार्थंप्रणमाम्यहम् ॥
१४४॥	१॥	इदंविष्णुः-	ॐइदंविष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदंसमूढमस्यपांसुरेस्वाहा ॥ ८ ॥ यजुः सं ॥५॥

तृतीयप्रकरणे यत्र यत्र मंत्रप्रतीकाणि कृतानि तत्पूर्त्यर्थं मंत्रसंग्रहो लिख्यते

पृ-	पं-	प्रतीक	
१४४	२	नमोमित्रस्य-	ॐ नमोमित्रस्यव्वरुणस्यचक्षसेमहादेवायतदृतळंसपर्य्यतदूरेदृशेदेवजातायकेतवेदिवस्पुत्रायसूर्य्यायशळंसत ॥ ९ ॥ यजुः सं. ४
१४४	३	गंधद्वाराम्	ॐ गन्धद्वारांदुराधर्षांनित्यपुष्टांकरीषिणीम् ईश्वरींसर्वभूतानांतामिहोपव्हयेश्रियम् १० ऋग्वेदसं.
१४५	३	यत्किंचेदम्	ॐ यत्किंचेदंपतपतियत्किंचेदंसरीसृपं यत्किंचपर्व्वताइमेध्रुवोराजाविशमयम् ११ अथर्व-सं-
१४५	५	आपोअस्मान्-	ॐ आपोऽअस्मान्मातरःशुन्धयन्तुघृतेननोघृतश्वःपुनन्तु ॥ व्विश्वळंहिरिप्प्रवहन्तिदेवीरुदीदाभ्व्यःशुचिरापूतऽरामि । दीक्षातपसोस्तनूरसितान्त्वाशिवळंशग्माम्परिदधेभद्रम्व्वर्णम्पुष्प्यन् १२ यजुः सं. ४
१४५	७	इदमापः प्रवह०	ॐ इदमापःप्रवहतावद्यंचमलंचयतयच्चाभिदुद्रोहानृतंयच्चशेपेऽअभीरुणम् । आपोमातस्मादेनसःपवमानश्चमुंचतु १३ यजुः सं ६
१४५	७	आपोहिष्ठा-	ॐ आपोहिष्ठामयोभुवस्तानऊर्जेदधातन महेरणायचक्षसेयोवःशिवतमोरसस्तस्यभाजयतेहनःउशतीरिवमातरःतस्माअरंगमामवोयस्यक्षयायजिन्विथआपोजनयथाचनःईशानावर्य्याणांक्षयन्तीश्चर्षणीनांअपोयाचामिभेषजम् ॥ १४ यजुः सं- ११

तृतीयप्रकरणेयत्रयत्रमंत्रप्रतीकानिकृतानितत्पूर्त्यर्थंमंत्रसंग्रहोलिख्यते

पृ-	पं-	प्रतीक	
१४५	९	तत्सवितुः	तत्सवितुर्वरेण्यंभर्गोदेवस्यधीमहिधियोयोनःप्रचोदयात् १५ यजुः सं- अ- ३
१४५	९	आप्यायस्व	ॐआप्यायस्वसमेतुतेविश्वतःसोमवृष्ण्यम्भवाव्वाजस्यसङ्गथे १६ यजुः सं- अ. १२
१४५	१०	दधिक्राव्णः	दधिक्राव्णोऽअकारिषंजिष्णोरश्वस्यव्वाजिनःसुरभिनोमुखाकरतप्राणआयुंषितारिषत १७ यजुः सं.अ. २३
१४५	१०	तेजासि	ॐतेजोसिशुक्रमस्यमृतमसिधामनामासिप्रियंदेवानामनाधृष्टंदेवयजनमसि १८ यजुः सं-अ.२२
१४५।	१०	देवस्यत्वा	ॐदेवस्यत्वासवितुःप्रसवेऽश्विनोर्वाहुभ्यांपूष्णोहस्ताभ्यां १९ यजुःसं-अ. १ सुमित्रियानऽआपऽओषधयःसन्तुदुर्मित्रियास्तस्मैसन्तुयोऽअस्मान्द्वेष्टियंचव्वयंद्विष्मः २० यजुः। सं- अ. ६
१४७।	१	हिरण्यशृंगवरुणम्	ॐहिरण्यशृंगवरुणम्प्रपद्येतीर्थंमेदेहियाचतंयन्मयाभुक्तमसाधूनांपापेभ्यश्चप्रतिग्रहःयन्मयामनसावाचाकर्म्मणादुष्कृतंतन्नइन्द्रोवरुणोवृहस्पतिस्सवितावापुनातुपुनःपुनः २१ ऋग्वेद- सं-अ. १९ केचित्तुहिरण्यशृंगोयोऽस्यपादामनोजवाअवरइन्द्रऽआसीत् देवइदस्यहविरद्यमायन्योऽअर्व्वन्तम्प्रथमोऽअध्यतिष्ठत् २२ यजुः सं- अ. २९
१४७।२।		यदपांकूटम्	ॐयदाकूतात्समसुस्रोद्धृदोवामनसोवासंभृतंचक्षुषोवांतदनुप्रेतसुकृतामुलोकंय्यत्रऽऋषयोजग्मुःप्रथमजाःपुराणाः २३ यजुः सं- अ- १८

तृतीयप्रकरणेयत्रयत्रमंत्रप्रतीकानि कृतानितत्पूर्त्यर्थंमंत्रसंग्रहोलिख्यते

पृ० पं० प्रतीक०

१४७ ५ कूष्माण्ड ओंयद्देवादेवहेडनंदेवासश्चकृमाव्वयम् ॥ अग्निर्म्मा
तस्म्मादेनसोविश्वान्म्मुंचत्वंहसः २४ यदिदिवाय
दिनक्तमेनांसिचकृमाव्वयम् ॥ व्वायुर्म्मातस्मादे
नसोव्विश्वान्म्मुंचत्वंहसः २५ यजुःसं-अ-२०

ओंयादिजाग्रद्यदिस्वप्नऽएनांसिचकृमाव्वयम् ॥
सूर्य्योमातस्मादेनसोव्विश्वान्मुञ्चत्वंहसः २६
यद्ग्रामेयदरण्येयत्सभायांयदिंद्रियेयच्छूद्रेयदर्य्येयदे
नश्चकृमाव्वयम् यदेकस्याधिधर्म्माणितस्यावयजन
मासि २७ यदापोऽअघ्न्याऽइतिवरुणेतिशपामहेततो
वरुणनोमुञ्च अवभृथनिचुम्पुणनिचेरुरसिनिचुम्पु
णः अवदेवैर्द्देवकृतमेनोयक्ष्यवमर्त्यैर्म्मर्त्यकृतम्पु
रुराव्णोदेवरिषस्पाहि २८ समुद्रेतेहृदयमप्स्वन्तः
सन्त्वाविशन्त्वोषधीरुतापः सुमित्रियानऽआपओष
धयः संतुदुर्म्मित्रियास्तस्मैसन्तुयोऽस्मान्द्वेष्टियञ्च
व्वयंद्विष्मः २९ इदंवायुसूक्तंयजुः सं० अ- २०

१४७ । ९ महाव्याहृतिःसावित्रीच ॥ ओंभूःओंभुवःओंस्वःओंभूर्भुवःस्वःस्वाहा
तत्सवितुर्व्वरेण्यंभर्गोदेवस्यधीमहिधियोयोनःप्रचोदयात्स्वाहा ३० यजुःसं

१४८ । २ शुद्धवती. ओंशुद्धवालःसर्व्वशुद्धवालोमणिवालस्ताऽआश्विनाःश्येतः
श्येताक्षोरणस्तेरुद्रायपशुपतयेकर्ण्णयामाऽअव
लिप्तारौद्रानभोरूपाःपार्ज्जन्याः ३१ यजुः. सं

१४८ । २ अघमर्षणम् ओंऋतंचसत्यंचाभीद्धात्तपसोध्यजायत ततोरात्र्यजा
यत ततःसमुद्रोअर्णवः सुमुद्रादर्णवादधिसंवत्सरो
ऽजायतअहोरात्राणिविदधद्विश्वस्यमिषतोवशी सूर्य्या
चंद्रमसौधातायथापूर्वमकल्पयत् दिवंचपृथिवींचान्त
रिक्षमथोस्वः ३२ ऋग्वेदसं ८ अष्टके

तृतीयप्रकरणेयत्रयत्रमंत्रप्रतीकानिकृतानितत्पूर्त्यर्थंमंत्रसंग्रहोलिख्यते

पृ०	पं०	प्रतीक	
८	२	शंवती.	ॐशंवतीपारयंत्येतेतंपृच्छांतिवचोयुजा अभ्यारन्तंयमाकेतुंयऽएवेदमितिब्रवत् ४१ ऋग्वेदसं०अष्टमाष्टके
१४८	२	स्वस्तिमती.	ॐस्वस्तिनइंद्रोवृद्धश्रवाः स्वस्तिनःपूषाविश्ववेदाः स्वस्तिनस्तार्क्ष्योअरिष्टनेमिःस्वस्तिनोवृहस्पतिर्दधातुपयःपृथिव्यां पयऽओषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षेपयोधाः पयस्वतीःप्रदिशःसन्तुमह्यम् ० शांतिरेधिसुशांतिर्भवतु एतदन्तं पठनीयम् यजुःषडंगपाठेऽयम् ३४
१४८	२	पावमान्यः.	ॐस्वादिष्ठयामदिष्ठयापवस्वसोमधारया इंद्रायपातवेसुतः रक्षोहाविश्वचर्षणिरभियोनिमयोहतम् द्रुणासधस्थमासदत् वरिवोत्तमोभववमंहिष्ठोवृत्रहंतमः पर्षिराधोमघोनाम् अभ्यर्षमहानांदेवानांवीतिमंधसा अभिवाजमुतश्रवः त्वामच्छाचरामसितदिदर्थंदिवेदिवेइंद्रोत्वेनआशसः १ पुनातितेपरिस्रुतंसोमं सूर्यस्यदुहितावारेणशश्वतातना तमीमण्वीःसमर्यआगृह्णंतियोषणोदश स्वसारःपार्ये दिवित्वमींहिन्वंत्यग्रवोधमंतिवाकुरंदृतिम् त्रिधातुवारणंमधु अभीइममघ्न्याउतश्रीणंतिधेनवःशिशुम् सोममिंद्रायपातवे अस्येदिंद्रोमदेष्वाविश्वावृत्राणिजिघ्नते शूरोमघाचमंहते२ पवस्वदेववीरतिपवित्रंसोमरंह्या इंद्रमिंद्रोवृषाविश आवच्यस्वमहिप्सरोवृषेंदोद्युम्नवत्तमः आयोनिंधर्णसिःसदः अधुक्षतप्रियंमधुधारासुतस्यवेधसः आपोवसिष्टसुक्रतुः महांतंत्वामहीरन्वापोअर्षतिसिंधवः यद्गोभिर्वासयिष्यसेसमुद्रोऽप्सुमामृजे विष्टंभोधरुणोदिवः सोमःपवित्रेऽस्मयुः३ ॥

तृतीयप्रकरणेयत्रयत्रमंत्रप्रतीकानि कृतानितत्पूर्त्यर्थंमंत्रसंग्रहोलिख्यते

पृ०	पं०	प्रतीक०	
१४८	२	पावमान्यः	अचिक्रदद्वृषाहरिर्महान्मित्रोनदर्शतः संसूर्य्येणरोचते गिरस्तइंदओजसामर्मृज्यंतेअपस्युवः याभिर्मदायशुंभसे तंत्वामदायघृष्वयउलोककृत्नुमीमहे तवप्रशस्तयोमहीः अस्मभ्यमिंदविंद्रयुर्मध्वः पवस्वधारया ॥ पर्जन्योवृष्टिमांइव ॥ गोषाइन्दोनृषाअस्यश्वसावाजसाउत आत्मायज्ञस्यपूर्व्यः ४ एषदेवोऽमर्त्यः पर्णवीरिवदीयति ॥ अभिद्रोणान्यासदम् ॥ एषदेवोविपाकृतोतिह्वरांसिधावति ॥ पवमानोऽअदाभ्यः ॥ एषदेवोविपन्युभिःपवमानऋतायुभिः । हरिर्वाजायमृज्यते ॥ एषविश्वानिवार्याशूरोयांनिवसत्वभिः । पवमानःसिषासत्ति ॥ एषदेवोरथर्यतिपवमानोदशस्यति ॥ आविष्कृणोतिवग्वनु ५ एषविप्रैरभिष्टुतोपोदेवोविगाहते ॥ दधद्रत्नानिदाशुषे एषदिवंविधावतितिरोरजांसिधारया ॥ पवमानःकनिक्रदत् ॥ एषदिवंव्यासरतिरोरजांस्यस्पृतः ॥ पवमानःसध्वरः । एषप्रत्नेनजन्मनादेवोदेवेभ्यः सुतःहरिः पवित्रेअर्षति ॥ एषउस्यपुरुव्रतोजज्ञानोजनयंनिषः ॥ धारयापवते सुतः ६ सनाचसोमजेषिचपवमानमहिश्रवः । अथानोवस्यसस्कृधि ॥ सनाज्योतिःसनास्व१ र्विश्वाचसोमसौभगा ॥ अथानो०सनादक्षमुतक्रतुमपसोममृधोजहि । अथा० परीतारःपुनीतनसोममिंद्रायपातवे अथानो० त्वंसूर्येनआभज तवक्रत्वातवोतिभिः ॥ अथानो० ७ तवक्रत्वातवोतिभिर्ज्योक्पश्येमसूर्यम्०

तृतीयप्रकरणेयत्रयत्रमंत्रप्रतीकानिकृतानितत्पूर्त्यर्थंमंत्रसंग्रहोलिख्यते

पृ-	पं-	प्रतीक
१४८	२	पावमान्यः अथा० अभ्यर्षस्वायुधसोमद्विवर्हसंरयिं ॥ अथा० अभ्य १ र्षानपच्युतोरयिंसुमत्सुसासहिः अथानो त्वांयज्ञैरवीवृधन्पवमानविधर्म्मणि ॥ अथानो० ॥ रयिंनश्चित्रमश्विनमिन्दोविश्वायुमाभर अथानो० ८ समिद्धोविश्वतस्पतिः पवमानोविराजति प्रीणन्वृषा कनिक्रदत् तनून्पात्पवमानः शृंगेशिशानोअर्षति अंतारक्षेणरारजत् । ईळेन्यः पवमानोरयिर्विराजतिद्यु मान् मधोर्धाराभिरोजसा वर्हिःप्राचीनमोजसापव मानःस्तृणन्हरिः देवेषुदेवईयते उदातैर्जिहतेवृहद्वारो देवीर्हिरण्ययीः पवमानेनसुष्टुताः ९ सुशिल्पेवृहती मही पवमानोवृषण्यति नक्तोषासानदर्शते उभादेवा नृचक्षसाहोतारादैव्याहुवये पचमानइंद्रोवृषा भार तीपवमानस्यसरस्वतीळामही इमंनोयज्ञभागमंति स्त्रोदेवीःसुपेशसः त्वष्टारमग्रजांगोपांपुरोयावान माहुवे इंदुरिंद्रोवृषाहरिःपवमानःप्रजापतिःवनस्प तिंपवमानमध्वासमंग्धिधारया सहस्रवल्शंहरितंभ्रा जमानं हिरिएययं विश्वेदेवाःस्वाहाकृतिंपवमानस्याग त. वायुर्वृहस्पतिःसूर्योग्निरिंद्रःसजोपसः १० मंद्र यासोमधारयावृषापवस्वदेवयुः अव्योवारेष्वस्मयुः अभित्यंमधंमदमिंदविंद्रइतिक्षरा । अभिवाजिनोअर्व तः अभिप्यंपूर्व्यंमदंसुवानोअर्षपवित्रआ भवाजमु तश्रवः अनुद्रप्सासइंदवआपोनप्रवतासरन्

तृतीयप्रकरणेयत्रयत्रमंत्रप्रतीकानि कृतानितत्पूर्त्यर्थंमंत्रसंग्रहोलिख्यते

पृ०	पं०	प्रतीक०	
		पावमान्यः०	पुनानाइंद्रमाशत यमत्यामिववाजिनंमृजंतिपोषणो दश वनेक्रीळतमत्यविं ११ तंगोभिर्वृषणं रसंमदाय देववीतये सुतंभरापसंसृज देवोदेवायधारयेंद्राय पवतेसुतः पयोयदस्यपीपयत् आत्मायज्ञस्यरंह्यासुष्याणः पवतेसुतः प्रत्नंनिपातिकाव्यं एवापुनानइंद्रयुर्मदंमदिष्ठवीतये गुहाचिद्दधिषेगिरः १२ ऋग्वे-सं- अ- ७ पष्टाष्टके
१४८	२	ऋषभम्	ऋषभंमासमानानांसपत्नानांविपासहिं हंतारंशत्रूणांकृधिविराजंगोपतिंगवाम् ॥ अहमस्मिसपत्नहेन्द्रइवारिष्टोअक्षतः अधःसपत्नामपदोरिमेसर्वेअभिष्ठिताः अत्रैववोपिनह्याम्युभे आर्त्नीइवज्ययावाचस्पतेनिषेधमान्यथामदधरंवदान् अभिभूरहमागमंविश्वकर्म्मेणधाम्ना आवश्चित्तमावोव्रतमावोहंसमितिंददे योगक्षेमंवआदायाहं भूयासमुत्तमआवोमूर्द्धानमक्रमीं अधस्पदान्मउद्वदत्तमंडूकाइवोदकान्मंडूकाउदकादिव ऋषभसूक्तमिदम ऋग्वेदसंहितायां ८ अष्टके
१४८	४	विरजम्	प्रतद्विष्णुस्तवतेवीर्येण मृगानभीमः कुचरोगिरिष्ठाः यस्योरुपुत्रिपुविक्रम्मणेष्ष्वधिक्षियंति भुवनानिविश्वा यजुः- सं- अ० ५ तेजोसितेजोमयिधहिवीर्य्यमसिवीर्य्यमयिधेहिवलमसिवलंमयिधेह्योजोस्योजोमयिधेहि मन्न्युरसिमन्न्युम्मयिधेहि सहोसिसहोमयिधेहि १ एकोनविंशतितमेयजुर्वेदसंहितायांविरजसूक्तम्

तृतीयप्रकरणेयत्रयत्रमंत्रप्रतीकानिकृतानितत्पूर्त्यर्थंमंत्रसंग्रहोलिख्यते

पृ-	पं-	प्रतीक	
१४८	५	सौरर्चः	उदुत्यंजातवेदसंदेवंवहंतिकेतवः दृशेविश्वायसूर्य्यम् पडंगेचतुर्थाध्यायमंत्रः॥ उद्वयन्तमसस्पारिस्वःपश्य न्तउत्तरम् देवंदेवत्रासूर्य्यमगन्मज्योतिरुत्तमम् २ यजुःसंहिता अ. ३५ चित्रंदेवानामुदगाद नीकंचक्षुर्मित्रस्यवरुणस्याग्नेः आप्राद्यावापृथिवी अन्तरिक्षꣳसूर्य्यऽआत्माजगतस्तस्थुषश्च३ यजुः सं. अ. ७ तच्चक्षुर्देवहितम्पुरस्ताच्छुक्रमु च्चरत् पश्येमशरदःशतंजीवेमशरदःशतꣳशृणुयाम शरदःशतंप्रब्रवामशरदः शतमदीनाःस्यामशरदः शतंभूयश्चशरदः शतात् ४ पडंगेऽष्टमाध्यायमंत्रः८
१४८॥	६	रौरव॥	रौरवंरुरुवृहतीसोमः ० २ र र १ ५ १ र र र पुनानःसोमा ३ धारा २३४ या आपो वसा नो र र र ^ ३ र अर्षस्या रत्नधा योनिमृतस्यसार इद सा ३ १ २ २ १र रर २ १ २ उं हा३ उवा उत्सो देवो हिरा २३ हाई।उं हा ३ २ १ २ ४ ५ ४ उवा एष या।ऊ ३ हो वाहो ५ ।इ।डा।५ सामवेद वेजगायन अ- १४
१४८॥	६ ॥	यौधाजयं	३ २ २ ४ ५ २ १ युधाजय्यवृहतीसोमः ०पु ना ३१ना ३ः सो म धा २ ५ १ २ १ ^ ३ २ ३ रा २३४ या।आ पो ३वसा २ ।न आ ३४५। षा ५ २र १ २ १२र १ ३ २ २३४ सी।आ रा त्नधा।यो । निमृता २ । स्यसा

तृतीयप्रकरणेयत्रयत्रमंत्रप्रतीकानि कृतानितत्पूर्त्यर्थंमंत्रसंग्रहोलिख्यते

पृ०	पं०	प्रतीक०	
			३ ५ २ १ ३ ३४५ इादा २३४ सी।उत्सारः। २।दा इ वो २।हि २ ५ र।३४५।एया२३४याः।६ सामवेदवेजगायनश्र.१४
१४८	९	अग्नेर्व्रतम्	अग्नेर्व्रतंशुक्रियसामान्युच्यंते ० अग्निर्गायत्र्याग्निः २र २ ३र २र ३र र २ र हा उ२ हा उ। श्रा जा उ वा ।३। अग्निर्मू र १ २ र र्द्धा दी ३ वाः का१ कुरत्।पतिः पृथिवी ३ १ २ २ र र र या श्रा १ यारम्। श्र पा ठ- रे ता ठ-सी३ १ २ र ३र २र ३ जा इन्वा १ ती २३।हा उ २ हा उ। श्रा जा उ र र २ ४ २र १ वा ।२। श्रा जा इउ ५ वा६ ५६।ए। वि श्व २ १ २र १र २ स्य जगतो ज्यो ती २ ३ ४ ५ः॥ ७ ॥ सामवे श्रारण्य गायन ॥ श्र० ५।
१५६	१	रुद्रैकादशिनी	॥ नमस्तेरुद्रमन्न्यव इत्यादि एकादशपाठाः ८ ॥
१६०	१	मावोरिपत्	मावोरिपत्खनितायस्मैचाहंखनामिवः द्विपाच्चतु ष्पादस्माकछंसर्व्वमस्त्वनातुरम्९यजुःसं.श्र.१२
१६०	१	स्योनापृथिविनो	स्योनापृथिविनोभवान्नृक्षरानिवेशनी यच्छानः शर्म्मसप्रथाः१० यजुःसं.श्र. ३६

तृतीयप्रकरणेयत्रयत्रमंत्रप्रतीकानिकृतानितत्पूर्त्यर्थंमंत्रसंग्रहोलिख्यते

पृ-	पं-	प्रतीक	
१६०	५	आयनेते	आयनेतेपरायणेदूर्वारोहतुपुष्पणी उत्सोवातत्रजायतांह्रदोवापुंडरीकवान् ११ । अथर्वणवेदसंहितायां पष्ठकाण्डे. अ. ११ ॥
१६०	६	त्रातारमिन्द्रम्	त्रातारमिंद्रमवितारमिन्द्रꣳ हवेहवेसुहवꣳशूरमिन्द्रं ह्वयामिशक्रंपुरुहूतमिन्द्रꣳस्वस्तिनोमघवाधात्विन्द्रः १२ ॥ यजुः ० सं- अ- २०
१६०	६	यमायमधु .	ॐयमायत्वामखायत्वासूर्य्यस्यत्वा तपसेदेवस्त्वा सवितामद्ध्वानक्तुपृथिव्याःसꣳस्पृशस्पाहिअर्चिरसिशोचिरसितपोसि १३यजुः सं- अ- ३७
१६०	७	तत्वायामीति	ॐतत्त्वायामिब्रह्मणावन्दमानस्तदाशास्तेयजमानोहविर्भिःअहेडमानोव्वरुणेहवोद्ध्युरुशꣳसमानऽआयुःप्रमोषीः १४ यजुः सं- अ- २१
१६०	७	वयꣳसोमव्रते	ॐवयꣳसोमव्रतेतवमनस्तनूषुविभ्रतःप्रजावन्तः सचेमहि १५ षडंगपाठे. अ- ६
१६०	७	तत्सूर्य्यम्	ॐतत्सूर्य्यस्यदेवत्वंतन्महित्वम्मद्ध्याकर्त्तोर्विततꣳसञ्जभार यदेदयुक्तहरितःसधस्थादाद्रात्रीव्वासस्तनुतेसिमस्मै १६ यजुः सं- अ- ३३
१६०	८	अधःपश्यति	ॐअधःपश्यस्वमोपरिसंतरांपादकौहर मतेकशप्लकौदृशन्स्त्राहिब्रह्माबभूविथ १७ ऋग्वे० सं- पष्ठाष्टके अ- ३ ॥

तृतीयप्रकरणेयत्रयत्रमंत्रप्रतीकानि कृतानितत्पूर्त्त्यर्थंमंत्रसंग्रहोलिख्यते

पृ०	पं०	प्रतीक०	
१६०	८	सहस्रशीर्षेति	सहस्रशीर्षापुरुषःसहस्राक्षःसहस्रपात् सभूमिꣳसर्वतस्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् १८ रुद्रपाठे अ- २
१६१	६	सोमानꣳस्वरणम्	ॐसोमानꣳस्वरणङ्कृणुहि०ब्रह्मणस्प्पतेकक्षीवंतंय्यऽऔशिजः १९ यजुः० सं० अ० ३
१६१	६	यःकुक्षिः	यःकुक्षिःसोमपातमः ॥ समुद्रइवपिन्वते उर्वीरापोनकाकुदः एवाह्यस्यसूनृता विरप्शीगोमती महीपक्वाशाखानदाशुषे २० ऋग्वेदसंहितायाम्. अ- १॥
१६१	७	वह्व्वीनांपिता	वह्व्वीनांपितावहुरस्यपुत्रश्चिश्चाकृणोति समनावगत्यइपुधिः सङ्काःपृतनाश्चसर्व्वाः पृष्ठेनिनद्धोजयतिप्प्रसूतः २१ ॥ यजुः. सं- अ. १९
१६१	१०	आमाव्वाजस्येति	आमाव्वाजस्यप्प्रसवोजगम्म्यादेमेद्यावापृथिवीविश्वरूपे आमागन्तांपितरामातराचामासोमोऽअमृतत्त्वेनगम्म्यात् व्वाजिनोव्वाजजितोव्वाजꣳससृवाꣳसोवृहस्प्पतेर्भागमवजिघ्रतनिमृजानाः २२ यजुः - सं- अ. ९ ॥
१६१	१४	अश्वक्रांते	अश्वक्रान्तेरथक्रान्तेविष्णुक्रान्तेवसुन्धरे ॥ मृत्तिके हरमेपापंयन्मयादुष्कृतंकृतम् २३

तृतीयप्रकरणेयत्रयत्रमंत्रप्रतीकानिकृतानितत्पूर्त्त्यर्थंमंत्रसंग्रहोलिख्यते

पृ- पं-	प्रतीक	
१६३।३	मधुवाताइति-	ओंमधुव्वाताऽऋतायतेमधुक्षरन्तिसिन्धवःमाध्वीर्न्नःसंत्वोषधीःमधुनक्तमुतोषसोमधुमत्पार्थिवꣳरजः मधुद्यौरस्तुनःपितामधुमान्नोवनस्पतिर्म्मधुमाँऽअस्तु सूर्य्यःमाध्वीर्गावोभवन्तुनः २४ यजुः० सं-अ- १३
१६३।५	याओषधीरिति	ओंयाओषधीःपूर्व्वाजातादेवेभ्यस्त्रियुगंपुरामनैनुवभ्रूणामहꣳशतन्धामानिसप्तच २५यजुः-सं-अ-१२
१६३।९	धान्यमसीति	ओंधान्न्यमसिधिनुहिदेवान्न्प्राणायत्त्वोदानायत्त्वाव्व्यानायत्त्वादीर्घामनुप्प्रसितिमायुषेधान्देवोवः सविताहिरण्यपाणिःप्प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेणपाणिनाचक्षुषेत्वामहीनाम्पयोसि २६ यजुः ०सं- अ० १
१६४।८	समुद्रस्येत्यादिमंत्राः	समुद्रस्यत्त्वाावकयाग्नेपरिव्व्ययामासि पावकोऽअस्म्मभ्यꣳशिवोभव ॥ २७ ॥ हिमस्यत्त्वाजरायुणाग्नेपरिव्वयामसि ॥ पावकोऽअस्म्मभ्यꣳशिवोभव ॥ २८ उपज्ज्मन्नुपवेतसेवतरन्नदीष्ष्वाअग्नेपित्तमपामसिमण्डूकिताभिरागहिसेमन्न्वोयज्ञम्पावकवर्णꣳशिवङ्कृधि । २९ ॥ अपामिदन्न्ययनꣳसमुद्रस्यनिवेशनम् ॥ अन्न्याँस्तेऽअस्म्मत्तपन्तुहेतयःपावकोऽअस्म्मभ्यꣳशिवोभव ३० अग्नेपावक रोचिषामन्द्रयादेवजिव्ह्वया आदेवान्न्वक्षियक्षिच ३१ सनःपावकदीदिवोग्नेदेवाँ२ ॥ ऽइहावह ॥ उपयज्ञꣳहविश्चनः ३२.॥. पावकयायाश्चितयन्त्याकृपाक्षामन्न्रुरुचऽउषसोनभानुना तूर्व्वन्नयामन्नेतशस्यनूरणऽआयोघृणेनततृषाणोऽअजरः ॥ ३३ ॥

तृतीयप्रकरणेयत्रयत्रमंत्रप्रतीकानि कृतानितत्पूर्त्त्यर्थंमंत्रसंग्रहोऽलिख्यते
पृ० पं० प्रतीक०

१६४।८ समुद्र- नमस्ते हरसेशोचिषे नमस्तेऽअस्त्वर्चिषे अन्न्यां स्तेऽअस्स्मत्तपन्तुहेतयः पावकोऽअस्स्मब्भ्यꣳशिवोभव ३४ नृषदेवेडप्सुषदेव्वेडबर्हिषदेव्वेड्वनसदेव्वेड्स्वर्व्विदेव्वेट् ३५ येदेवादेवानांय्यज्ञियायज्ञियानाꣳसंवत्सरीणमुपभागमासते अहुतादोहविषोयज्ञे अस्मिन्न्स्वयम्पिबन्तुमधुनोघृतस्य ३६ येदेवादेवेष्ष्वधिदेवत्त्वमायन्न्येव्ब्रह्मणःपुरऽएतारोऽअस्स्य येब्भ्योनऽऋतेपवतेधामकिंचननतेदिवोनपृथिव्व्याऽअधिस्न्नुषु ३७ प्राणदाऽअपानदाव्व्यानदावर्च्चोदाव्वरिवोदाः अन्न्यांस्तेऽअस्स्मत्तपन्तुहेतयःपावकोऽस्स्मब्भ्यꣳशिवोभव ३८ यजुः-सं०अ० १७

१६५।३ सहस्रशीर्षेति सहस्रशीर्षापुरुषःसहस्राक्षःसहस्रपात् सभूमिꣳ सर्वतस्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् इत्यावाहनम् ३९

१६५।३ एतावानिति एतावानस्यमहिमातोज्यायांश्चपूरुषः पादोस्यव्विश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि इतिपाद्यम् ४०

१६५।३ पुरुषऽएवेति पुरुषऽएवेदꣳसर्व्वंयद्भूतंय्यच्चभाव्यम् उतामृतत्त्वस्येशानोयदन्नेनातिरोहति इत्यासनम् ४१

१६५।४ त्रिपादूर्ध्वइति त्रिपादूर्ध्वऽउदैत्पुरुषः पादोस्येहाभवत्पुनः ॥ ततोविष्वङ्व्यक्रमत्साशनानशनेऽअभि इत्यर्घम् ४२

१६५।४ ततोविराडिति ततोव्विराडजायतव्विराजोऽअधिपूरुषः सजातोऽअत्यरिच्यतपश्चाद्भूमिमथोपुरः इत्याचमनीयम् ४३

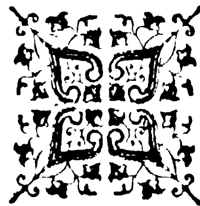
तृतीयप्रकरणयत्रयत्रमंत्रप्रतीकानिकृतानितत्पूर्त्यर्थंमंत्रसंग्रहोलिख्यते

पृ-	पं-	प्रतीक
१६५	४	तस्माद्यज्ञादिति तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतःसम्भृतम्पृषदाज्यम् पशूँस्तांश्चक्रेव्वायव्यानारण्याग्राम्याश्चये इतिस्नानम्४४
१६५	५	तस्माद्यज्ञात् तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतऽऋचःसामानिजज्ञिरे छन्दाᳬंसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत इतिवस्त्रम् ४५
१६५	५	तस्मादश्वाइति तस्मादश्वाऽअजायन्तयकेचोभयादतः गावोहयज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाताऽअजावयः इतियज्ञोपवीतम् ४६
१६५	६	तंयज्ञमिति तंयज्ञम्बर्हिषिप्रौक्षन्पुरुषंजातमग्रतः ॥ तेनदेवाऽअयजन्तसाध्याऽऋषयश्चये ॥ इतिगंधम् ॥ ४७
१६५	६	यत्पुरुषमिति यत्पुरुषम्व्यदधुःकतिधाव्यकल्पयन् मुखङ्किमस्यासीत्किम्बाहूकिमूरूपादाऽ उच्येते इतिपुष्पम् ४८
१६५	६	ब्राह्मणोस्येति ब्राह्मणोस्यमुखमासीद्‌बाहूराजन्यःकृतःऊरूतदस्य यद्वैश्यःपद्भ्याᳬंशूद्रोऽअजायत ॥ इतिधूपम् ॥ ४९
१६५	७	चंद्रमामनसोजातः चंद्रमामनसोजातश्चक्षोःसूर्य्योऽअजायतश्रोत्राद्वायुश्चप्प्राणश्चमुखादग्निरजायत इतिदीपः ॥ ५०
१६५	७	नाभ्याऽआसीत् नाभ्याऽआसीदन्तरिक्षᳬंशीर्ष्णोद्यौःसमवर्त्तत पद्भ्याम्भूमिर्दिशःश्रोत्रात्तथालोकांर॥ ऽअकल्पयन् इतिनैवेद्यम् ॥ ५१ ॥
१६५	७	यत्पुरुषेणेति यत्पुरुषेणहविषादेवायज्ञमतन्वत ॥वसन्तोस्यासीदाज्यङ्ग्रीष्मऽइध्मःशरद्धविः इतिताम्बूलम् ॥ ५२
१६५	८	सप्तास्यासन् सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिःसप्तसमिधःकृताः देवायद्यज्ञन्तन्वानाऽअबध्नन्पुरुषम्पशुम् इतिनमस्कारः५३

तृतीयप्रकरणेयत्रयत्रमंत्रप्रतीकानि कृतानितत्पूर्त्यर्थंमंत्रसंग्रहो।लिख्यते

पृ०	पं०	प्रतीक०	
१६५	८	यज्ञेनयज्ञम्	यज्ञेनयज्ञमयजन्तदेवास्तानिधर्म्माणिप्रथमान्न्यासन् तेहनाकम्महिमानःसचन्तयत्रपूर्व्वेसाध्याःसन्तिदेवाःइतिस्तुतिःप्रदक्षिणाच ५४
१६५	१०	नमोस्त्वनंतायेति	नमोस्त्वनंतायसस्त्रहमूर्त्तयेसहस्त्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे सहस्त्रनाम्नेपुरुषायशाश्वतेसहस्त्रकोटीयुगधारिणेनमः नमःकमलनाभायनमस्तेजलशायिने नमस्तेकेशवानंतवासुदेवनमोस्तुते ५५
१६७	४	इरावती	इरावतीधेनुमतीहिभूतᳩंसूयवसिनीमनवेदशस्यव्यस्कभ्नारोदसीविष्णवेतदाधर्थपृथिवीमभितामयूखैःस्वाहा ५६ यजुः- सं- अ- ५
१६७	५	शन्नऽइन्द्राग्नी	अहानिशम्भवन्तुनःशᳩंरात्रीःप्रतिधीयतां शन्नऽइन्द्राव्वरुणारातहव्यापान्नऽइन्द्रापूषणाव्वाजसातौ शमिन्द्रासोमासुवितायशंय्योः ५७ यजुः-सं-अ- ३६

अस्तुसतांमुदेमंत्रसंग्रहोयम्



॥ स्वतोमीति इसका अर्थ पिछेहोचुकाहै में कविगंगारामने श्रीमहाराजाधिराज श्रीरणवीरसिंह जीकी आज्ञासें एह कर्मविपाक क्या कर्म्मोकाहै फल जिस विषे ऐसा प्रकरण प्रारंभकरीदाहै कैसाएहप्रकरणहै जिसके विचारणविषे गुणिपुरुषांको दोष क्या पापविषे प्रवृत्ति नहि होनी और पापांविषें जो प्रीतियुक्तहै तिसके हृदयविषे अतिशयकर्के कंप होताहै और दुष्टजनकावेष क्या काणत्व बधिरत्वादि जिसते प्रतीतहुंदाहै १ और तिसके आदविषें कर्म्मविपाकशब्दका अर्थ कहीदाहै कर्मेति शुभ और अशुभ कर्मोकाविपाक क्या फल परिणामिकाल सो कर्म विपाक कहीदाहै इसव्युत्पत्तिते यद्यपि शुभकर्म्मका फल विद्वत्ता आदि और पापकर्म्मकाफल क्षयरोगादि इनांविषें कर्मविपाक शब्दकी प्रवृत्ति कहीहै तथापि प्रसंगतें पापीपुरुषांके मनविषें पश्चात्तापके करणे वाला होनेसें अशुभकर्मोका

ॐश्रीगणेशायनमः ॥ स्वतोमित्वातत्त्वमित्यादि० यस्मिन्विमृष्टेगुणिनांन दोषः पापाभिसक्तस्यहृदिप्रदोषः प्रज्ञायतेदुष्टजनस्यवेषःप्रारभ्यतेकर्म्म विपाकएषः १ तत्रादौकर्म्मविपाकशब्दार्थः कर्म्मणांशुभाशुभानांविपाकः फलदानकालः सइतिव्युत्पत्त्या विद्वत्ता क्षयरोगादौ कर्म्मविपाकशब्दप्रवृत्तिः तथापि प्रकृतत्वात्पापिजनमनोऽनुतापापादकत्वाच्च दुष्कर्म्मजनित एवकर्म्मविपाकःप्रस्तूयते। अत्रमाधवः पतंजलिसूत्रानुमत्या विशेषेणपचनं विपाकः सच जन्मायुर्भोगभेदात्त्रिविधः तन्मूलं अविद्याऽस्मितारागद्वेषाभिनिवेशाःपंचक्लेशाः। अविद्या ममता अस्मिताअहंता रागद्वेषौप्रसिद्धौ अभिनिवेशस्तयोर्दार्ढ्यं एभिरेवज्ञानोपलब्धियावत् कर्म्माणिजायंते तानि चाऽत्र जन्मादिरूपेणविपच्यंते ॥ पतितंयाजयित्वातुकृमियोनौप्रजायतइत्यादिना जन्म १ तत्रजीवतिवर्षाणिदशपंचचवाद्विजत्यादिना आयुः २

परिणाम है जिसविषें ऐसा कर्मविपाक प्रसंगमे ल्याईदाहै इसविषे माधवजीका वाक्यहै पतंजलि सूत्रके अनुमतिकर्के विशेषकर्के जो पचनक्रियाहै सो विपाक कहाहै सो विपाक जन्म १ और आयु २ और भोग ३ इसभेदतें त्रयप्रकारकाहै तिसकामूल अविद्या क्या म्मता १ और अहंकारता २ और राग ३ और द्वेष ४ और रागद्वेषदृढता ५ एनांकर्के ज्ञान कीप्राप्तिके पर्य्यंत छे कर्म संपूर्ण जन्मादिरूपकर्के फलदेणवालेहोतेहै सो कहितेहां पतितमिति पतितको यज्ञकरवाणे कर्के कृमिजन्मको प्राप्तहोताहै इत्यादिकर्के जन्मकहाहै १ और तिसमे पंद्रावर्ष जीवताहै इसकर्के आयु २

यमेति सो पापी यमलोकविषे बहुतपीडाको प्राप्तहोतेहैं इसकर्के भोग कहाहै स्मृतिकर्के प्रसिद्ध ३ एह माधवजी कहतेभये इसमें होर विचार करतेहैं त्रयप्रकारकाभी विपाक कहाहै प्रेतत्वगति और नारकीयदेहत्वगति और अधमयोनित्वगति और कीटादियोनित्व इनां भेदांतें बहुत प्रकारकाहै (प्रश्न) प्रायश्चित्तके प्रसंगविषे इसको क्यों कहतेहो (उत्तर) प्रति इस पाप युक्त पुरुष विषे पापके विधान करणेको और पाप फलके दूरकरणेको असमर्थके होयां होयां भी अर्थवादकर्के प्रायश्चित्तकी उपयोगिता कर्म्मविपाककोंजानणी सो दिखाया जावेगा अब अर्थवादका अर्थ कहतेहैं विहित कर्म विषे प्रवर्त्तक होणेतें और निषिद्धकर्मसें निव र्त्तकहोणेतें विधि और प्रतिषेध विषे एह अर्थवाद एकवाक्यताको अंगीकार करतेहैं ऐसे न्यायवेत्ताके वचनतें ॥ तथाच क्लेशकर्के होणवाला जो प्राजापत्य आदिव्रत तिसके अनुष्ठान

यमलोकेतुतैर्घोरांल्लभंतेपरियातनामित्यादिना भोगः स्मृतिसिद्ध ३ इत्याद्य भिदधेत्रिविधोऽपिप्रेतत्वनारकीयदेहत्वाधमयोनित्वकीटादियोनित्वादिभे दाद्बहुविधःप्रायश्चित्तोपयोगित्वंचास्यविधातुंप्रतिषेद्धुमशक्यत्वेपि अर्थवा दत्वेन बोध्यम् अर्थवादास्तु विहिते प्रवर्त्तकत्वेन प्रतिषिद्धान्निवर्त्तकत्वे नच विधिप्रतिषेधैकवाक्यतांभजंतइतिन्यायविदुक्तेः तथाच क्लेशात्मक प्राजापत्याद्यनुष्ठानेप्ररोचनां विना प्रवृत्त्यभावात्तदर्थं काचित्प्ररोचनावि धेया साच यागादावनुकूलफलश्रवणेन क्षयरोगादिहेतुश्रवणादुद्वेजनद्वा रा प्राजापत्यादौ तन्निवृत्तिहेतुत्वेनच जायते उद्वेजनंतु इयंब्रह्महत्याऽ वश्यंमह्यंक्षयरोगंदास्यतीतिनिश्चयहेतुकम् ततश्चेदं प्राजापत्याद्यनुष्ठानं तन्निवृत्तिहेतुरतोऽवश्यमनुष्ठेयमितिप्ररोचना तत्तद्विपाकजन्येत्यवश्यं कर्म्मविपाकप्रस्तावना प्रायश्चित्तादौवक्तव्या

विषे रुचितें विना प्रवृत्तिके अभाव होणेतें तिसकारणतें रुचिकी प्रवृत्ति वास्तें कर्मविपाककहाहै तिसके अर्थ कोईक प्ररोचना विधानकरणेयोग्यहै सो प्ररोचना कहीदीहै यागेति यज्ञादिकांविषे अनुकूल फलके श्रवणकर्के और क्षयरोगआदिकांके हेतु जो पाप तिनके श्रवणतें होया जो हृदयकंप तिसद्वारा प्राजापत्यादिव्रतविषे पापके निवृत्तिहेतुहोणे कर्के प्ररोचना उत्पन्नहो तीहै ॥ उद्वेजनका अर्थ कहतेहां एह ब्रह्महत्या अवश्यहि मेरेतांई क्षयरोग आदिकांको देवेगी एहनिश्चय जानणा तिसकारणतें एह प्राजापत्यादिव्रतका अनुष्ठान अवश्यहि करणेयोग्यहै तिस क्षयरोगकी निवृत्तिहेतुतें ऐसें प्ररोचना तिसतिसविपाकफलतें उत्पन्नहोतीहै तातें कर्मविपा ककी प्रस्तावना प्रायश्चित्तके आदि विषे अवश्यहि कहणे योग्यहै

सेति फेर सो कर्मविपाक सामान्य और विशेष भेदतें दोप्रकारकाहै सामान्यतें जो कर्म विपाक
कारूपहै सो शिवधर्मोत्तर विषे कहाहै अथेति इसतें अनंतर पतित पुरुषांकों अधर्मकहाहै
पापशब्दका अर्थ कहतेहैं नरेति महाघोर नरकादि विषे पातन करणेतें पाप कहाहै १
विष्णुधर्मोत्तरविषेभीकहाहै हेभार्गव पुरुषांकों मृत्युके प्राप्त होयांहोयां आतिवाहिक संज्ञाकर्के देह
होताहै सो केवल मनुष्योंकाहिहै होरकानहि १ तिसका अर्थ कहतेहैं वाहमिति पापकेकरणे
वालै देहको छोडकर्के जो होवे सो कहिए आतिवाहक सोई यमपीडाके भोगका हेतुहै
याम्येरिति हेभृगूत्तम मनुष्यांका आतिवाहक देह यममार्गकर्के यमदूतांने लैजाईदाहै हेद्विज
अन्यजीवांका नहि २ तैसेहि और स्मृति विषे कहा है। मनुष्या इति ॥ एह जो मनुष्य हैं

सपुनःसामान्यविशेषभेदाद्द्विविधः॥सामन्यतःकर्मविपाकःशिवधर्मोत्तरे॥
अथातःपततांपुंसामधर्म्मःपरिकीर्त्तितः नरकादौमहाघोरपातनात्पापमु
च्यते १ विष्णुधर्मोत्तरेऽपि॥आतिवाहकसंज्ञस्तुदेहोभवतिभार्गव केवलं
तन्मनुष्याणांमृत्युकालउपस्थिते १ वाहं पापोपार्ज्जकंदेहमतिक्रम्यजायते
आतिवाहकोयमयातनाभोगहेतुः ॥ याम्यैर्नरैर्मनुष्याणांतच्छरीरंभृगूत्तम
नीयतेयाम्यमार्गेणनान्येषांप्राणिनांद्विज २ तथा मनुष्याः प्रतिपद्यंतस्वर्गं
नरकमेववा नैवान्येप्राणिनःकेचित्सर्वेतेफलभोगिनः१ शुभानामशुभानांच
कर्म्मणांभृगुनंदन संचयःक्रियतेलोकेमनुष्यैरेवकेवलम् २ तस्मान्मनु
ष्यश्चमृतोयमलोकंप्रपद्यते नान्यःप्राणीमहाभागफलयोनौव्यवस्थितः ३

सोई स्वर्ग और नरक मे जातेहैं और, जो पशु पक्षी आदिक प्राणी हैं तिनको स्वर्गा
दिगति नहिहै किंतु पूर्वजन्ममें मनुष्य देह करके कीते होए जो कर्म तिनके फल
को भोगतेहैं इस जन्मके कर्मोंका फल उनको आगे नहि होता १ इसीको स्पष्ट
करके कहते हैं शुभेति हे भृगुनंदन शुभ और अशुभ जो कर्म, तिनका संचय इस
लोकविषे केवल मनुष्योंने करीदाहै औरोंने नहि २ तस्मेति तिस कारणसे मृतहोया २
मनुष्य यमलोकको जाताहै और प्राणी नहि जाता हेमहाभाग जिस करके होर पशुपक्षी
आदि प्राणी फलयोनिविषे व्यवस्थित है इसका अर्थ स्पष्ट पिच्छेहोचुका ॥ ३ ॥

याम्येति यमलोकको प्राप्त होया जो पुरुष तिसकों राजा धर्म नरकादियोनिमें पापके अनुसार प्राप्त करताहै ४ ब्रह्मपुराणविषे कहाहै कर्मेति कर्म करके और मनकर्के और वाणी कर्के जो पुरुष धर्मतें रहितहैं सो यमलोक विषे बहुत पीडाकों प्राप्तहोतेहैं १ इहेति इसदेहविषे पुरुष अल्पभी अशुभकर्म करे तां यमलोकविषे जो नरक तिसविषे जो घोरपीडा तिसकों प्राप्तहोताहै २ विष्णुपुराणविषे भी किहाहै पापेति जो पापके करणेवाला पुरुष जेकर प्रायश्चित्तसें पराङ्मुखहोवे अर्थात् प्रायश्चित्तकों न करे तां नरककों प्राप्तहोताहै और पापोंके दूरकरणेवास्ते जो जैसे प्रायश्चित्तहैं तैसे तैसे स्मरण कर्के परमऋषियोंनें कहेहैं १ तैसेंभविष्योत्तरपुराणविषे कहाहै देवेति । देवता और तिर्यङ् जो पशुआदि और जो मनुष्य अधर्मविषे निरंतरयुक्तहैं तिनांकोंघोर

याम्यलोकंप्रपन्नस्यपुरुषस्यतथायमः ॥ योनीश्चनरकांश्चैवनिरूपयति कर्म्मणेति ॥ ४ ॥ ब्रह्मपुराणे कर्म्मणामनसावाचायेधर्म्मविमुखानराः यमलोकेतुतेघोरांलभंतेपरियातनाम् ॥ १ ॥ इहाल्पमपिकृत्वातुनरः ॥ कर्म्माशुभात्मकं प्राप्नोतिनरकेघोरांयमलोकेषुयातनाम् २ विष्णुपुराणेऽपि ॐ पापकृत्यातिनरकान् प्रायश्चित्तपराङ्मुखः पापानामनुरूपाणि प्रायश्चित्तानियद्यथा १ तथातथैवसंस्मृत्यप्रोक्तानिपरमर्षिभिरितितथा भविष्योत्तरे ॥ देवतिर्यङ्मनुष्याणामधर्म्मनिरतात्मनाम् ॥ धर्म्मराजः स्मृतःशास्तासुघोरैर्विविधैर्वधैः १ नियमाचारसक्तानांप्रमादात्स्खालितात्मनाम् प्रायश्चित्तैर्गुरुःशास्तानतुतैरिष्यतेयमः २ पारदारिकचोराणामन्यायव्यवहारिणाम् नृपतिःशासकःप्रोक्तःप्रच्छन्नानांचधर्म्मराट् । ३ तस्मात्कृतस्यपापस्यप्रायश्चित्तंसमाचरेदिति ब्रह्मपुराणे ततश्चयातनादेहंक्लेशनप्रतिपद्यते तत्कर्म्मजंयातनार्थममातापितृसंभवम् १

विविधवधोंकर्के धर्मराजहि शिक्षादेणेवालाकिहाहै १ नियमेति जो नियम और आचरविषे युक्त हैं और प्रमादतें नियम और आचारतेंरहितहोयेहैं तिनोंकों प्रायश्चित्तांकर्के शिक्षादेणेवाला गुरु किहाहै और यम नहि तिनांकोंदंडदेणवालाकहा २ पारेति जो पुरुष परस्त्रीकों चुरातेहैं और नीतिसें विना जो व्यवहारकर्तेहैं तिनोंका शास्ता क्या शिक्षादेणेवालाराजाकहाहै और गुप्तपाप केकरणेवालेजो पुरुष तिनांकाशास्ता धर्मराज कहाहै ३ तस्मादिति तिसकारणतेंकीताजो पाप तिसके प्रायश्चित्तकोंकरे ॥ और ब्रह्मपुराणविषेकहाहै ततश्चेति तिसकारणतें यातनादेहकों क्लेशकर्के प्राप्तहोताहै सो अतिवाहकदेह पीडाके वास्ते माता पितातेंविना कर्म्मातें उत्पन्न होवाहै १

पुरुष पूर्व जो आकृति और आयु और अवस्थासंस्थान क्या बाल्यादिस्थिति इनाकर्के युक्त और सौंदर्यनाकर्के युक्तबहुत यत्नकर्के रक्षित जो प्राचीन पांच भौतिकदेह तिसकोंत्यागके २ औरजो अपणे कर्मोंते उत्पन्नहोया पीडाकेंवास्ते तन्मात्रागुणांकर्केयुक्त नानास्वरूपकर्मोंतें शरीर तिसकोंग्रहण कर्ताहै ३ पापांकें करणेवालासुखदुखांके भोगणेवास्ते दृढशरीरकों प्राप्तहोताहै अतिशयकर्के तिसदेहकर्केस्वकर्म्मांकेफलकोंभोगताहै और धर्मीपुरुषयमलोकसेस्वर्गमें जाकर सुखकोंभोगताहै ४ किंचेति इसमें होर विचारहै कि कर्म्मांका फल कर्म्म विपाक है इसजगा कर्म केवल देहव्यापारतें उत्पन्नहोये विषे नहि जानणे किंतु देह और वाणी और मनके व्यापारसें उत्पन्न होयेहोयेजानणे सो मनुजी कहतेहैं शुभेति शुभ और अशुभहै फल जिसका ऐसाजो कर्म उसकोंमन औरवाणी और देहसें उत्पन्नहोयाहोया जानणा और कर्मांकी

तत्प्रमाणवयोऽवस्थासंस्थानैःप्राक्तनंतथा विहायसुमहद्गुप्तंशरीरंपांचभौतिकम् २ सुमहत्गुप्तम् सौंदर्य्यापादनपूर्वकं महता प्रयासेनरक्षितम् ॥ अन्यच्छरीरमादत्तेयातनार्थंस्वकर्म्मजम् तन्मात्रगुणसंपन्ननानात्मीयंस्वकर्म्मजम् ३ दृढंशरीरमाप्नोतिसुखदुःखोपभुक्तये तेनभुक्त्वास्वकर्म्माणि पापकर्त्तानरोभृशम् सुखानिधार्म्मिकोदृष्टरतदानीतोयमक्षयादिति ४ किंच कर्म्मणांविपाकइत्यत्र कर्म्माणिनकेवलंकायव्यापारमात्रपराणि किन्तुकायवाङ्मनोव्यापारपराणि तदाह मनुः। शुभाशुभफलंकर्म्ममनोवाग्देहसंभवम् कर्म्मजागतयोन्दृणामुत्तमाधममध्यमाः १ उत्तमाधममध्यमागतयोहि देवमनुष्यतिर्य्यगादिरूपाजन्मांतरप्राप्तयो मानसवाचिककायिककर्म्मभिः प्रत्येकंयोज्याःएषांयागादिविषयत्वेउत्तमाः स्तेयादिनिवृत्तिविषयत्वेमध्यमाः स्तेयादिविषयत्वेऽधमाः ॥ प्रकृतत्वान्निकृष्टकर्म्मणोदशविधत्वकथनपूर्वकंमनसस्तन्नियंतृत्वमाह तस्येहत्रिविधस्यापित्र्यधिष्ठानस्यदेहिनः दशलक्षणयुक्तस्यमनोविद्यात्प्रवर्त्तकम् १

यांगतियां पुरुषांकों उत्तम मध्यम अधमकर्केहोयांहैं १ सो उत्तम मध्यम अधमगतियां देवता और मनुष्य और तिर्यगादि क्या पशुपक्ष्यादिरूप जाननीयां और इसजगा उत्तमाधममध्यमा एहछेदकर्केहै और वास्तवपाठ उत्तममध्यमाधमा एहहै और अन्यजन्मकों प्राप्तकरणे वालियां जानणीयां एक एक क्रमकर्केमानस वाचिक कायिककर्मांकर्के कहीयांहैं और इनाकर्मांकों यागादि विषयमें उत्तम और स्तेयादिकांकी निवृत्तिविषयमेंमध्यम स्तेयादिजो चोरीआदिकहै उसके करणे विषे अधमजानणीयां॥ अब मंदकर्मांकों प्रसंगविषेहोणेसें दशप्रकारके कथनपूर्वकमनके नियंतृत्व कों कहतेहैं॥ तस्येति तीनगुणहैं अधिष्ठानजिसके ऐसा जो दशलक्षणकर्के युक्त देहिसंबंधीक मेंहै तिसका प्रवर्त्तकमनकोंजाने १

जो दस लक्षणकहेहें सो तीनश्लोककर्के दखातेहैं परद्रव्येति पराए धनोविषे चारओरसें खोटा ध्यान करणा अर्थात् किसीके धनस्त्रीआदिविषें अभिलाषाकरणी और मनकर्केदुष्टकामोकाक्यामै इसकेघरविषेकुछविघ्नकरांऐसा चिंतनकरणा और झूठा हठकरणाक्यापरलोकनहिदेहहि आत्माहै ऐसाकहणा यहत्रयप्रकारकामानसकर्मकहाहै १ पारुष्यमिति कठोरवाक्य और असत्यवाक्यकहना और सर्वथा चुगलीकरणी और परोक्षविषे दूसरेके दोषकहणे एहचार प्रकारका वाङ्मय कर्महै अर्थात्एहकर्म्मवाणीसे होताहै २ और स्वामिकर्के नहि दिते जो द्रव्यतिनोकाग्रहण करणा और अशास्त्रविधिकर्केपशुआदिकोंको हिंसाकरणी और परस्त्रियोंकेसाथ विषयभोगणा यहत्रयप्रकारका शारीरिककर्म किहाहै ३ अबइसमैकुछ और विशेषहै कि जिस मनआदिकर्के पापइकठाकर्तेहैं

परद्रव्येष्वभिध्यानंमनसानिष्टचिंतनम् ॥ वितथाभिनिवेशश्चत्रिविधंकर्म्म मानसम् १ पारुष्यमनृतंचैवपैशुन्यंचापिसर्वशः असंबद्धप्रलापश्चवाङ्मयंस्याच्चतुर्विधम् २ अदत्तानामुपादानंहिंसाचैवाविधानतःपरदारोपसेवाच शारीरंत्रिविधंस्मृतम् ३ अभिनिवेशःपरलोकोनास्तिदेहएवात्माएवमित्याद्यसदाग्रहःत्रिविधंत्रिप्रकारंमानसमशुभमित्यर्थः एवमग्रेपि असंबद्धप्रलापः परोक्षपरदूषणकथनम् अदत्तानांस्वामिनाऽदत्तानामपिद्रव्यादीनांग्रहणम् अविधानतःअशास्त्रविधिना पश्वादिहिंसनम् येनोपार्ज्यतेतेनैवोपभोग्यं दर्शयति। मानसंमनसैवायमुपभुंक्तेशुभाशुभम् वाचावाचाकृतंकर्म्मकायेनैवतुकायिकम् १ मनसाऽऽध्याश्रयेणमानसं मनःकृतंपापमुपभुंक्ते एवमन्यदपिबोध्यम्। इदंचत्रिविधस्यैवसमत्वेतत्तद्भोगपरम् एकैकस्यप्राधान्येनाह ॥ शरीरजैःकर्म्मदोषैर्यातिस्थावरतांनरः

तिसी मनआदियोंकर्के हिभोगनूं दिखातेहैं मानसमिति मनकर्केकीते जो पापउनकोंमनकर्के ही पुरुषभोगताहै और वाणीकर्केकीते जोपाप तिनानू वाणीकर्केहीभोगताहै और देहकर्केकीते जो पाप तिनांकोंदेहकर्केहि भोगताहै १ इसीकाअर्थस्पष्टकर्के कहतेहैं मनसेति आधीका आश्रय जो मन तिसकर्के कीते जोपापतिनाकों मनकर्केहीं पुरुषभोगताहै आधिःमानसीपीडाहै परंतु एह जो पापहैं तिसको तीनोंपापोंके बराबरहोनेसें तिनांपापोंके भोगोंको भोगताहै और तीनोपापों केमध्यमेएक पापकर्मकोप्राधान्यताहोवे तो तिनोंकेफलकोंपृथक् पृथक् कर्के कहतेहैं शरीरजैरिति शरीरकर्के कीतिजोपाप तिनोंकर्के पुरुष वृक्षयोनिकों प्राप्तहोताहै

श्रौर वाणीकर्के कीते जो पाप तिनोंकर्के पक्षियोनिकों श्रौर मृगयोनिकों प्राप्तहोताहै श्रौर मन कर्के कीते जो पाप तिनोकर्के चांडालजातिकों प्राप्तहोताहै १ इसका अभिप्राय कहतेहैं शरीरकर्के कीते जो पापतिनाके बहुतहोनें कर्के वृक्षयोनिकों प्राप्तहोताहै श्रैसे होरभी जाणो इस विषयमे विशेषकर्के अर्थकथनकरणे वास्ते श्रौर स्मृति कथन करतेहैं सामान्येति सामान्य श्रौर विशेष भेदकर्के कर्मोंकाफल दोप्रकारकाभीहै तथापि शरी रकर्के श्रौर वाणीकर्के श्रौर मनकर्के तीन प्रकारकाकर्मोंकाफल है अब आत्माको ईश्वररूपप्रतिपादनकर्के याज्ञवल्क्यजी कहतेहै यद्येवमिति हेब्रह्मन् यदवो ईश्वरऐसाहै तव कैसे पापयोनियों विषे उत्पन्न होताहै श्रौर फेर खोटे जो भाव स्त्रीसंयोगादि उनोके साथकर्केसंयुक्तहो ताहै १ करणैरिति फेर वो ईश्वर इंद्रियोंकर्केयुक्तभीहै परंतु पूर्वज्ञानकों क्योंनहि जानताहै श्रौरवो

वाचिकैःपक्षिमृगतांमानसैरंत्यजातिताम् १ शारीरिकपापबाहुल्येन स्थाव रत्वं प्राप्नोतीति अत्रैवविशेषाभिधानार्थंस्मृत्यन्तरमुपन्यस्यते सामान्य विशेषभेदेनाद्विविधोऽपिकायिकवाचिकमानसभेदात्त्रिविधः कर्म्मविपाकः आत्मनईश्वरस्वरूपत्वंप्रतिपाद्याहयाज्ञवल्क्यः॥यद्येवंसकथंब्रह्मन्पापयो निषुजायते ईश्वरःसकथंभावैरनिष्टैःसंप्रयुज्यते १ करणैरन्वितस्यापिपूर्वं ज्ञानंकथंचन वेत्तिसर्वगतांकस्मात्सर्वगोऽपिनवेदनाम् २ अन्त्यपक्षिस्था वरतांमनोवाक्कायकर्मजैः दोषैःप्रयातिजीवोऽयं भवयोनिशतेषुच ३ अन न्ताश्चतथाभावाः शरीरेषुशरीरिणाम् रूपाण्यपितथैवेहसर्वयोनिषुदेहि नाम् ४ विपाकःकर्मणांप्रेत्यकेषांचिदिहजायते इहवामुत्रवैकेषांभव स्तत्रप्रयोजनम् ५

ईश्वर संपूर्ण लोकोंके हृदयविषे स्थितभीहै परंतु संपूर्ण पुरुषोंकीपीडाकों क्योंनहि जानताहै२ अन्त्येति श्रौर मन कर्के कीते जो पापकर्म्म, उनोंके फलकर्के संसारविषे शतजातियोंके मध्यविषे एह जीव चांडाल जातिकों प्राप्तहोताहै श्रौर इसीप्रकार वाणीकर्के कीते जो पापकर्म्म तिनो कर्के पक्षियोनिकों प्राप्तहोताहै श्रौर शरीरकर्के कीते जो पापकर्म तिनो कर्के स्थावर क्या वृक्षादियोनिकों प्राप्तहोताहै ३ अनन्ताइति ऐसेहि बहुततरोंके जन्मादिक शरीरोंविषे शरी रियोंकोंहोतेहै श्रौर इसी प्रकार संपूर्ण योनियोंविषे देहियोंके स्वरूपभी बहुतप्रकारके होतेहैं ४ विपाकइति श्रौर कैयों कर्म्मोंकाफल इसलोकमे श्रौर कैयोंका मरकर्के परलोकमे प्राप्तहोताहै इसलोकविषे अथवा परलोकविषे कैयोंजीवोंका उत्पन्नहोणा एही केवल प्रयोजनहै ५

इसीकारस्पष्टार्थहै परद्रव्याणीति और जो पुरुष परपुरुषोंके धनकों लैणेवास्ते ध्यानकरताहै और दुःखहेतुका चिंतनकरताहै और जो झूठकहकर उसीकों सत्यप्रतिपादनकरताहै सो पुरुष चांडालयोनियोंकों प्राप्तहोताहै ६ पुरुष इति जोपुरुष झूठबोलताहै और चुगलीकरताहै और अनुचितवार्ताकाकथनकरताहै सो मरकर्के पक्षियोंकीयोनिकोंप्राप्तहोताहै ७ अदत्तादानेति आपहि किसीको वस्तुके उठालैणेविषे प्रीतिवाला और परस्त्रीयोंमे संगकरणे वाला और विधिकेविना हिंसाकरणे वाला जोपुरुषहै सो मरकर्के वृक्षयोनिकों प्राप्तहोताहै ८ और सत्व और रज और तम यह तीनोगुणजबविशेषहोवेंतो तिनोंका जोफल सोपृथक् पृथक्कर्के याज्ञवल्क्यजी कथन करतेंहैं आत्मज्ञइतिआत्माके जानणेवाला और पवित्ररहिणेवाला और मनकेरोकणेवाला और तप क्या चान्द्रायणादि व्रत तिसकेकरणेवाला बाह्येंद्रियके रोकणे वाला और धर्म करणे वाला और वेदकेजानने वाला ऐसा जो सत्वगुण विशिष्ट पुरुष सो मरकर्केदेवयोनिकोंप्राप्तहोताहै १

परद्रव्याण्यभिध्यायंस्तथानिष्टानिचिंतयन् वितथाभिनिवेशीचजायतेन्त्यासुयोनिषु ६ पुरुषोऽनृतवादीचपिशुनःपुरुषस्तथा अनिबद्धप्रलापीचमृतः पक्षिषुजायते ७ अदत्तादाननिरतःपरदारोपसेवकः हिंसकश्चाविधानेनस्थावरेष्वभिजायते ८ सत्वादिगुणविशेषेणविपाकविशेषंसएवाह । आत्मज्ञः शौचवान्दान्तस्तपस्वीनिर्जितेन्द्रियः धर्मकृद्वेदविद्यातिसात्विकोदेवयोनिताम् १ असत्कार्य्यरतोऽधीरआरम्भीविषयीचयः सराजसोमनुष्येषुमृतोजन्माधिगच्छति २ निद्रालुःक्रूरकृल्लुब्धो नास्तिकोयाचकस्तथा प्रमादवान् भिन्नवृत्तोभवेत्तिर्यक्षुतामसः ३ रजसातमसाचैवसमाविष्टोभ्रमन्निह भावैरनिष्टैःसंयुक्तःसंसारंप्रतिपद्यते ४ मनुरपि सत्वंरजस्तमश्चेतित्रीन्विद्यादात्मनोगुणान् यैर्व्याप्येतान्स्थितोभावान्महान्सर्वानशेषतः १

असत्कार्य्येति जोअसत्कार्य्योंकेकरणेवालाहै औरधैर्यतासे रहितहै और कार्य्योंकेआरंभविषे युक्त है और विषयोंकभोगनेवालाहै ऐसा जो रजोगुणकर्के युक्त पुरुषहै सो मरकर्केमनुष्योंविषे जन्म कों प्राप्तहोताहै २ निद्रालुरिति निद्राहै प्यारीजिसकों और क्रूरकर्म्मोंके करणेवाला और जीवोंके फगड़ने वाला और ईश्वरकी निंदाकरणेवाला और याचनाकरणेवाला और प्रमादकर्के युक्त और दुष्टस्वभाव वाला ऐसा जो तमोगुणकर्के युक्त पुरुष सो मरकर्के तिर्यग्योनियोंविषें उत्पन्न होताहै ३ रजसेति रजोगुणकर्के और तमोगुणकर्के बद्धाहुया जो पुरुष सो इस संसार विषे भ्रमताहुया और खोटेभावोंकर्के युक्त हुया हुया अर्थात् रोगादि विपत्तिकर्केयुक्त होया होया फेर संसारकोंही प्राप्तहोताहै ४ मनुजीभीकहतेहैं सत्वमिति सत्व और रज और तम यह तीनगुण आत्माकेहैं जो महान् आत्मा इनाभावों विषे संपूर्णता कर्के स्थितहै १

यइति जिसके देहविषे जो गुण सत्व अथवा रज अथवातम अधिकहोजावे तद तिस देहीको पूर्वोक्तव्यवस्थाकर्के तिसीसात्विकादि नामवालेकोंकर्ताहै २ इसीको कहतेहैं सत्वमिति सत्वगुण ज्ञानकोंकहतेहै और तमोगुणअज्ञानकोकहतेहैं राग और द्वेष रजोगुणकोंकहतेहैं और इनातीनो गुणोका जो वपु सो संपूर्ण भूतोंका अर्थात् पृथिव्यादियोंकाआश्रयहै ३ तत्रेति जो चित्तवृत्त प्रीति कर्के युक्तहै और आत्मामे कुछक शांतिवालाहै और शुद्ध शोभा वाल्हाहै उसकों सत्वगुण जान ४ यत्त्विति जो दुःखकर्के युक्त और आत्माको अप्रसन्न करणेवालाहै उसकों रजो गुण जान जो रजोगुण निरंतर क्रियाकों करवाताहै और देहि योंकों उद्यमदेताहै ५ यत्त्विति जो मोहकर्के संयुक्त और अव्यक्त विषयों कर्के युक्तहै और

योयदेषांगुणोदेहेसाकल्येनातिरिच्यते सतदातद्गुणप्रायंतंकरोतिशरीरिणम् २ सत्वंज्ञानंतमोऽज्ञानं रागद्वेषौरजःस्मृतम् एतद्व्यापितदेतेषांसर्वभूताश्रितंवपुः३ तत्रयत्प्रीतिसंयुक्तंकिंचिदात्मनिलक्षयेत् प्रशांतमिवशुद्धाभंसत्त्वंतदुपधारयेत् ४ यत्तुदुःखसमायुक्तमप्रीतिकरमात्मनः तद्रजोऽप्रतिघंविद्यात्सततोंहर्तिदेहिनाम् ५ यत्तुस्यान्मोहसंयुक्तमव्यक्तंविषयात्मकम् अप्रतर्क्यमविज्ञेयंतमस्तदुपधारयेत् ६ त्रयाणामपिचैतेषांगुणानांयःफलोदयः अग्र्योमध्योजघन्यश्चतंप्रवक्ष्याम्यशेषतः ७ वेदाभ्यासस्तपोज्ञानं शौचमिंद्रियनिग्रहः धर्मक्रियात्मचिन्ताचसात्त्विकंगुणलक्षणम् ८ आरम्भरुचिताऽधैर्यमसत्कार्यपरिग्रहः विषयोपसेवाचाजस्त्रंराजसंगुणलक्षणम् ९

तर्कसें रहितहै और पदार्थोंके जाननेमे असमर्थहैं तिसकों तमोगुण जान ६ त्रयाणामिति सत्व और रज और तम यह जो तीन गुणहैं इनोंका जो फल उत्तम और मध्यम और अधम है उसकों विशेषकर्के कहतेहैं ७ वेदाभ्यासइति वेदकाअभ्यासकरणा और पूर्वोक्ततपकरणा और ज्ञान और पवित्रता और इंद्रियोंका रोकना और धर्मोंका करणा और आत्मविचार करणी एह सत्वगुणका फलहै ८ आरंभेति कार्योंके आरंभविषे रुचिकरणी और धैर्यता नहोणी और चोरीआदि खोटेकार्योंका करणा और निरंतर विषयोंकीसेवाकरणी एह रजो गुणकेफलहैं ९

लोभइति बहुतलोभकरणा औरसोणा और धैर्यतासें रहितहोणा और क्रूरताकरणी और ईश्वरकी निंदाकरणी और अपणीजीविकाछोडकरदूसरेकीजीवकाकर्के जीविकाकरणी और बहुतयाचना करणी और प्रमादकरणा एहपुरुषाकोंतमोगुणकेलक्षणहैं १० अबइनकी स्थितिमे व्यवस्थाकहतेहैं त्रयेति यह जो पीछे तीनगुणकहेहैं सो तीनोंमेहि स्थितहैं अर्थात् जिसजगा एकहै उसजगा दो भीहैं और यहजो तीनोके लक्षणकहेहैं सोभी क्रमकर्के एकमे हि होणवालेहैं कभी सात्विक कभीराजसादि ११ अब जिसजगा दोनोंगुणोंको दबाकर एक बढगयाहै उसकालक्षणकहतेहैं यत्कर्मेति जिसकर्मकोंकर्केअथवाकर्ता हुआ और करणेकीइच्छावाला हुआ हुआ लज्जाकोंनहि प्राप्तहोताहै सो विद्वानने संपूर्णतमोगुणकेलक्षणजानने १२ येनेति जिसकर्म कर्के पुरुष इसलोक विषे दृढतरप्रसिद्धीकी इच्छाकरताहै और असंपत्तिकेविषे शोककर्ताहै सो रजोगुणकालक्षणजाण

लोभःस्वप्नोऽधृतिःक्रौर्यंनास्तिक्यंभिन्नवृत्तिता । याचिष्णुताप्रमादश्चता मसंगुणलक्षणम् १० त्रयाणामपिचैतेषांगुणानांत्रिषुतिष्ठताम् इदंसामा सिकंज्ञेयंक्रमशोगुणलक्षणम् ११ यत्कर्मकृत्वाकुर्वंश्चकरिष्यंश्चनलज्जते तद्ज्ञेयंविदुषासर्वंतामसंगुणलक्षणम् १२ येनास्मिन्कर्मणालोकेख्याति मिच्छतिपुष्कलाम् यस्तुशोचत्यसंपत्तौतद्विज्ञेयंतुराजसम् १३ यत्सर्वेणे च्छतिज्ञातुंयन्नलज्जतिचाचरन् येनतुष्यतिचास्यात्मातत्सत्त्वगुणलक्षणम् १४ तमसोलक्षणंकामोरजसस्त्वर्थउच्यते सत्वस्यलक्षणंधर्मःश्रैष्ठ्यमेषांयथाक्र मम् १५ येनयांस्तुगुणेनैषांसंसारान्प्रतिपद्यते तत्समासेनवक्ष्यामिसर्व स्यास्ययथाक्रमम् १६ देवत्वंसात्विकायान्तिमनुष्यत्वंचराजसाः तिर्यक्त्वं तामसानित्यमित्येषात्रिविधागतिः १७

१३ यत्सेति जो पुरुष संपूर्णपदार्थोंके जाननेकी इच्छाकर्ताहै और आचरण करताहुआलज्जाकों प्राप्तहोताहै और जिसकर्केइसकाआत्माप्रसन्नहोताहै सो सत्वगुणकालक्षणहै १४ तमोगुणकालक्ष णएहहै क्या काम बहुतहोणा और रजोगुणकाएहलक्षणहै क्याअर्थमे इच्छाहोणी और सत्वगु णका एहलक्षणहै क्या धर्महोणाऔर इनोगुणोंका एहयथाक्रम श्रेष्ठ्यकथनकिआहै अर्थात् तमो गुणसें रजोगुण और रजोगुणतेसत्वगुणश्रेष्ठहै १५ येनेति इन्हीगुणाविषेजिसगुणकर्केजो २ जन्म प्राप्त होताहै सोसंक्षेपकर्के संपूर्णकोयथाक्रमकर्केकहताहुं १६ देवत्वमिति सत्वगुणवालेपुरुष देव योनिको प्राप्तहोतेहे और रजोगुणवालेपुरुष मनुष्ययोनिको प्राप्तहोतेहैं और तमोगुणवाले पुरुष तिर्यग्योनिको प्राप्तहोतेहैं इह तीन प्रकारकी तिनोकी गति है १७

त्रिविधेति इनोंतीनोगुणोंकी तीन तीनप्रकारकी कर्मविद्याविशेष कर्के गौणगतिहै एक अधम और दूसरीमध्यम और तीसरीउत्तम १८ स्थावराइति वृक्ष और क्रिमि और कीट और मत्स्य और सर्प और कच्छप और पशु और गिदड एहतमोगुणकी अधमगतिहै अर्थात् तमोगुणबाले इनजन्मों को प्राप्तहोतेहें १९ हस्तिनइति हस्ती और तुरंग क्या घोडेऔरशूद्र और म्लेछ जो निंदितऔर सिंह व्याघ्र और शूकर इहतमोगुणकीमध्यमगतिहै २० चारणाइति चारण और पक्षि और दंभकेकरणेवाले पुरुष औरराक्षस और पिशाच इहतमोगुणकीउत्तमगतिहै २१ झल्लाइति झल्लजाति और पहलवान और नट और शस्त्रकर्के जीविकाकरणे वालेपुरुष और जूआखेलनेवाले और मदिरापानकरणेवाले इह अधम रजोगुणकीगतिहै इस जगा प्रथम शब्द श्लोकके क्रमकर्के अधम अर्थका

त्रिविधात्रिविधैषांतुविज्ञेयागौणिकीगतिः अधमामध्यमाग्र्याचकर्मविद्याविशेषतः १८ स्थावराः क्रिमिकीटाश्चमत्स्याःसर्पाःसकच्छपाः पशवश्च सृगालाश्चजघन्यातामसीगतिः १९ हस्तिनश्चतुरङ्गाश्चशूद्राम्लेछाश्चगर्हिताः सिंहव्याघ्रवराहाश्चमध्यमातामसीगतिः २० चारणाश्चसुपर्णाश्च पुरुषाश्चैवदाम्भिकाःरक्षांसिचपिशाचाश्चतामसीषूत्तमागतिः २१ झल्लामल्लानटाश्चैवपुरुषाःशस्त्रवृत्तयःद्यूतपानप्रसक्ताश्चप्रथमाराजसीगतिः २२ राजानः क्षत्रियाश्चैवराज्ञांचैवपुरोहिताः वादयुद्धप्रसक्ताश्चमध्यमाराजसीगतिः २३ गंधर्वागुह्यकायक्षाविबुधानुचराश्चये तथैवाप्सरसःसर्वाराजसीषूत्तमागतिः २४ तापसायतयोविप्रायेचवैमानिकागणाः नक्षत्राणिचदेवाश्चप्रथमासात्विकीगतिः २५ यज्वानऋषयोदेवावेदाज्योतींषिवत्सराः पितरश्चैवसाध्याश्चमध्यमासात्विकीगतिः २६ ब्रह्माविश्वसृजोधर्मोमहानव्यक्तमेवच उत्तमांसात्विकीमेतांगतिमाहुर्मनीषिणः २७ ॥

वाचीहै ऐसे अगेभी जाणो २२ राजानइति राजा और क्षत्री और राजोंकेपुरोहित और वाद कर्केयुद्धकरणेवाले इहमध्यम रजो गुणकीगतिहै २३ गंधर्वाइति गंधर्वऔरगुह्यक और यक्ष और देवतोंकेअनुचर और संपूर्णअप्सरांइहरजोगुणकीउत्तमगतिहै २४ तापसाइति तपकेकरणेवाले और यतिक्या जितेंद्रियो और ब्राह्मण और विमानोंके उपरगमिनहोकरविचरणेवाले जो देवतयांकेगण और नक्षत्र एह अधम सत्वगुणकी गति है २५ यज्वानइति यज्ञके करणेवाले और ऋषि और देवता और वेद और ग्रहगण और वरसोंके देवता और पितर औरसाध्य एह मध्यम सत्वगुणकीगतिहै २६ ब्रह्मेति ब्रह्माऔर जो दक्षसे आद लेकर्के विश्वकेरचने वाले प्रजापति और धर्म और महत्तत्व और माया इह उत्तम सत्वगुणकीगतिकोंमनीषीकहतेहैं २७

एषइति तीनहैं प्रकाराजिसके ऐसा जो कर्म उसका संपूर्णताकर्के तीन प्रकारका सार्वभौतिक संसार कथन कियाहै २८ तैसें हारीतजीकहतेहै सर्वेति संपूर्ण जो लशुनादि अभक्ष्यचीजांउनो काभक्षणकरणा और जो नहिभोजनके योग्य चांडालस्पृष्ठछोलिआदि उनकाभोजनकरणा और जोगमनकेयोग्य नहिहैं गुरुपत्नीआदिक उनोकेसाथ गमन करणा और जो नहि यज्ञ कराणके योग्य शूद्रादि उनकायज्ञकरवाणा और असत्पुरुषोंसें दानलेणा और परस्त्रीकेसाथगमन करणा और अपणे संबधियोंके और परपुरुषोंके धनका हरणा और प्राणियोंकी हिंसाकरणी इह शरीरकृत कर्महैं और कठोरहोणा और झूठकहिना और विवाद करणा और वेदनिंदा करणी इह वाणीकृतकर्महैं और दूसरेको दुःखदेणा और दूसरेके साथ द्रोहकरणा और क्रोधकरणा और लोभकरणा और मोहकरणा और अहंकारकरणा इहमानसकर्महै इहअठारां कर्म

एषसर्वःसमुद्दिष्टस्त्रिप्रकारस्यकर्मणः त्रिविधस्त्रिविधःकृत्स्नःसंसारःसार्वभौतिकः२८तथाचहारीतः। सर्वाभक्ष्यभक्षणमभोज्यभोजनमगम्यागमनमयज्ययाजनमसत्प्रतिग्रहणम् परदाराभिगमनम् स्वपरद्रव्यापहरणम् प्राणिहिंसाचेतिशारीराणि। पारुष्यमनृतंविवादःश्रुतिनिंदाचेतिवाचिकानि परोपतापनम् पराभिद्रोहः क्रोधोलोभोमोहोऽहंकारश्चेतिमानसानि। तदेतान्यष्टादशनैरयाणिकर्म्माणि यस्मिन्यस्मिन्करोतियः सतस्मिंस्तस्मिन्वयसि शारीरवाचिकमानसंप्राप्नोति तथाच सएव यस्यांयस्यामवस्थायांयत्करोतिशुभाशुभम् तस्यांतस्यामवस्थायांतत्तत्फलमवाप्नुयात् १ शरीरेणैवशारीरंवाङ्मयेनतुवाचिकम् मानसंमनसैवायमुपभुंक्तेशुभाशुभम् २ अथविशेषतःकर्म्मविपाकस्तत्रप्रेतत्वहेतुर्कोविष्णुधर्मोत्तरे ॥ असहिष्णुतयाऽन्यस्यगुणानांकारणंविना महत्पापंसमुत्पन्नं तदस्यप्रेतकारणम् १ प्रेतकारणभावप्रधानत्वात्प्रेतत्वकारणमित्यर्थः ॥

पुरुषांकों नरककेदेणेवाल्हेहैं । यस्मिन्निति । जिस जिस अवस्था विषे पुरुष शरीरकर्के और वाणी कर्के और मन कर्के कर्मांकों कर्ताहै उसीउसी अवस्थाविषे शारीर और वाचिक और मानसकर्मांके फलकों प्राप्तहोताहै ॥ तैसेहि हारीतजी कहतेहैं यस्यामिति इस श्लोककी टीका पूर्वकहीहै १ शरीरेति शरीरकर्के कीते जो शुभ और अशुभ कर्म उनाकों शरीर कर्के भोगता है और वाणी कर्के कीते जो शुभ और अशुभ कर्म उनाकों वाणी कर्के भोक्ताहैं और मन कर्के कीते जो शुभ और अशुभकर्म उनाकोंमनकर्केभोक्ताहै २ अब पुरुषांकों प्रेतयोनियोंविषे प्राप्तकरणेवाल्या जो कर्मफल सोभीकथनकियाहै विष्णुधर्मोत्तरपुराणविषे असेति कारणकेबिनाजो दूसरेके गुणोंको न सहारणा क्या निंदाकरणी उसकर्के उत्पन्नहोया जो महापाप सो पुरुषांकों प्रेतयोनिमें प्राप्तकर्दाहै १

ब्रह्मस्वेति जो पापी पुरुष ब्राह्मणके धनकों हरलेतेहैं सोभी प्रेतयोनिकों प्राप्त होतेहैं तैसेहि पर स्त्रियोंविषे रत और अपणेस्वामीकेसाथ द्रोहकरणेवाले २ और मित्रोंके साथद्रोहकरणेवाले और अपणे कर्मसें पतित अर्थात् विमुख जो पुरुषहैं सो निर्जलदेशविषे प्रेतयोनिकोंप्राप्त होतेहैं ३ सो कहाहै अग्निपुराणविषे मातरमिति ॥ माता और पिता और वृद्ध औरअपनेकुटुंबी और साधु इनों कों लोभकरके जो पुरुषत्यागताहै सो प्रेतयोनिकोंप्राप्तहोताहै १ कुज्योतिरिति कुत्सितज्योतिषी और कुत्सितवैद्य और कुत्सितज्ञानी और कुत्सितदेशमे रहिणे वाला अर्थात् जिसमें वेदाचार नहि उसजगा रहिणे वाला अथवा कुबुद्धिदेणे वाले कानामकुदेशकहै और शूद्रोंके ऊपरकृपाकरणे वाला इसमें एहअभिप्रायहै कि शूद्रपरकृपाकरणेका कोई दोष नहि परंतु सज्जनके समीप उसको त्याग कर शूद्रपर अनुग्रह करे तद दोषहै इह संपूर्ण प्रेतयोनिकों प्राप्तहोतेहैं २

ब्रह्मस्वहारिणश्चैतेपापाःप्रेतत्वमागताः परदाररताःकेचित्स्वामिद्रोहरताः परे २ मित्रद्रोहरताःकेचिद्देशेऽस्मिन्भृशदारुणे स्वकर्म्मविच्युताःसर्वेजायं तेप्रेतयोनिषु ३ अग्निपुराणे मातरंपितरंवृद्धंज्ञातिंसाधुजनंतथा लोभात्त्य जतियस्त्वेतान्सप्रेतोजायतेनरः १ कुज्योतिःकुत्सितोवैद्यः कुज्ञानीचकुदे शिकः शूद्रानुग्रहकर्ताचसप्रेतो- २ निंदकोद्विजदेवानांगीतवाद्यरतःसदा वृद्धबालगुरुविप्रान्योवमन्यभुनक्तिवै कन्यांददातिशुल्केनस० ३ न्यासा पहर्तामित्रध्रुकपरपाकरतःसदा निर्दोषांसुहृदांभार्यामृतुकालेनयातियः नवहेतयदातेषांसप्रेतो० ४ हस्त्यश्वरथयानानिमृतशय्यासनानिच मृगाजिनंतुगृह्णाति अनापदितुयोद्विजः ५

निंदकइति जो पुरुष ब्राह्मण और देवताकों निंदा कर्ताहै और गीतोंके गानेमें और बाजेयोंकि बजानेमें सदा युक्तहै और वृद्ध और बालक और गुरु और ब्राह्मण इनका अपमानकरके अर्थात् इनकों न देकर भोजन कर्ताहै और मोल लेकरके कन्याकोंदेताहै सोभी प्रेतयोनिकों प्राप्तहोताहै ३ न्यासेति जो पुरुष अमानको हर्ताहै और मित्रोंकेसाथ द्रोह कर्ताहै और जो सर्वदाकाल परपाकविषेयुक्तहै अर्थात् दूसरेकोपकीहुई रोटीकों खाताहै और दो षरहित जो सुंदर अपनी स्त्रीउसकों जो ऋतुकाल विषे नहि प्राप्तहोताहै जो यह पूर्वोक्तचारहैं अोकर इनका पालनपोषणादि नकरे तोभी प्रेतयोनिकों प्राप्तहोताहै ४ हस्तीति हस्ती और घोड़ा और रथ और जो वाहनहै और मृतपुरुषकी शय्या और आसन और मृगचर्म इनाकों आप दाके विना जो ब्राह्मण लेताहै ५

नयेति तैसेंहि अद्धावलावाहरनिकसेआहै जिसका ऐसीगोकों और सहितवनपर्वतोंके पृथिवीकों लेताहैं और कुरुक्षेत्रविषे और चांडालसें और पतितपुरुषसेंदानलेताहैं ६ और मासिकश्राद्धविषे और नवश्राद्धविषे भोजनकर्ताहै सो प्रेतहोताहै और भूमि पृथ्वी और कन्या और अन्न इनको जोहरताहैं सोभी प्रेतयोनिकों प्राप्तहोताहै ७ अब पिशाच योनिमे प्राप्तकरणेवाला जो कर्म सो पार्वती और शिवजीके संवादकर्केकहतेहैं अपहृत्येति और जो पुरुष किसीकेसंपूर्णधनकों और तैसेंहि देवतयोंके धनकों हरलेताहै और तैसेंहि दानकों देकर हरलेताहै और फेरदेताहै सोभी पिशाचयोनिकों प्राप्तहोताहै १ योनीति हेदेवि जो पुरुष जिसजगाकन्या नहि देणे योग्य उसजगा कन्या दानकों करवाताहैं और अपणे स्वामीके साथ द्रोहकर्ताहै सो

तथोभयमुखींदोगर्ग्रासशैलांमेदिनींद्विज कुरुक्षेत्रेचयद्दानंचांडालात्पतितात्तथा६ मासिकेपिनवश्राद्धेभुजन्प्रेतोनरोभृशम् भूमिकन्यान्नहर्त्ताचसप्रेतोजायतेभृशम् ७ पिशाचयोनिहेतुकमुमामहेश्वरसंवादे ॥ अपहृत्यचसर्वस्वंदेवस्वंचतथापरम् दत्तापहारदानाच्चपैशाच्यंयातिवैनरः १ योनिकार्येचयोदेविअहितेनतुकारयेत् सोऽपियातिपिशाचत्वंस्वामिद्रोहेणमानवः २ योनिकार्य्ये कन्यादानादि योवृत्तीश्वरःअहितेन स्वाम्यनिष्टनकारयेदित्यर्थः॥ स्वामिद्रव्यंगृहीत्वातुनचयोऽन्नंददातिच आत्मनःपोषकोमूढःपिशाचत्वंसगच्छति ३ ब्रह्मराक्षसत्वहेतुर्कगारुडादौ ॥ माठाधिपत्यंयोदेविकुरुतेमदमोहितः विनाशयेन्मठद्रव्यंनिर्माल्यंयश्चभक्षति १ परस्ययोषितंहृत्वाब्रह्मस्वमपहृत्यच अरण्येनिर्जलेदेशेभवतिब्रह्मराक्षसः २ ॥

भी पिशाचयोनिकों प्राप्तहोताहै २ स्वामीति जो पुरुष अपणे स्वामीसें धर्मार्थके वास्ते धनलेकर अभ्यागतोंकों अन्न नहिदेताहैं और अपणे आपकोंहिपालताहै सोभी पिशाच योनिकों प्राप्तहोताहै ३ अब ब्रह्मराक्षसयोनिकों प्राप्तकरणेवाला जो कर्म गरुडपुराण आदिविषे कहाहै सोकहतेहैं माठेति ॥ जोपुरुष मदकर्के मोहकोंप्राप्तहुआहुआ देवताके मंदिरकी महंती अंगीकार कर्त्ताहै और तिस देवताके धनका नाशकर्त्ताहैं और तिसीका नैवेद्य आपहि भक्षण कर्ताहैं १ परस्येति और परस्त्री और ब्राह्मणके धनकों चुरालेताहै सो वनविषे जलसेरहित जो देशउस विषे ब्रह्मराक्षसयोनिकों प्राप्तहोताहै इसमें यहव्यवस्थाहै कि इनपांचोंदोषोंसें एक दोषवाला अथवा दो अथवा तीनवालाहै तोभी ब्रह्मराक्षसयोनिकों प्राप्तहोताहै २

अधर्ममिति जो पुरुष मोहकर्के युक्त हुएहुए अधर्मकोधर्मकहतेहैं और परस्त्रियोंकोचोरीकर्के अथवा बलकर्के हरलेतेहैं सोभी वनविषे जलसें रहित जो देश उसविषे ब्रह्मराक्षस योनिको प्राप्तहोतेहैं ३ और कहतेहैं मनुजी संयोगमिति और जो पुरुष पतित पुरुषोंके साथ संयोग कर्त्तेहैं और परस्त्री कों हरलेतेहैं और ब्राह्मणके धनकोंहरलेतेहैं सोभी ब्रह्मराक्षसयोनिको प्राप्तहोतेहैं १ गुरुमिति जो पुरुष गुरुयोंकोंतुंकर्के और हुंकर्केबोलतेहैं और विवादकर्केब्राह्मणकोंजीततेहैं सोभी वनविषेजल से रहित जो देश उसविषे ब्रह्मराक्षसहोतेहैं २ आचार्यमिति आचार्य्य और ऋत्विक् और तपस्वी और मुनि इनोंका जो पुरुष अवमानकर्तेहैं सोभी राक्षसयोनिकोंप्राप्तहोतेहैं जो संस्कार करावे सो आचार्य्य और जो यजमानकेअर्थ हवनकरे सो ऋत्विक्है ३ अबनरकविषे होनेवाला जो देह

अधर्मंधर्ममित्याहुर्येतुमोहवशंगताः हर्त्तारःपरदाराणांचौर्येणबलतोपिवा ३ अरण्येनिर्जलेदेशेभवन्तिब्रह्मराक्षसाइतिमनुः संयोगंपतितैःकृत्वापरस्यैव चयोषितम् अपहृत्यचविप्रस्वंभवंतिब्रह्मराक्षसाः १ गुरुंतुंकृत्यहुंकृत्यवि प्रंनिर्जित्यवादतः अरण्येनिर्जलेदेशेभवंति- २ आचार्यमृत्विजश्चैवगुरुंचै वतपस्विनम् मुनीनप्यवमन्यंतेतेभवंतीहराक्षसाः ३ नारकीयदेहहेतुकं ब्रह्मपुराणे। कृतघ्नस्तुमृतोविप्रोयमस्याविषयंगतः यमस्यविनयैःक्रूरैर्वधंप्रा प्नोतिदारुणम् १ यातनाःप्राप्यतत्रस्थास्ततोबह्वीश्चसद्विजः ततागतःकृत घ्नश्चसंसारंप्रतिपद्यते२ अथाधमयोनित्वहेतुकंवामनपुराणे। बुभुक्षितेषुदेवे ष्वयएकोऽश्नातिमानवः श्वयोनिंससमासाद्यचंडालोजायतेनरः १ वेदोक्तंयः परित्यज्यधर्ममन्यंसमाचरत् दशवर्षसहस्राणिश्वयोनौजायतेध्रुवम् २

उसकोप्राप्तकरणेवालाजो कर्महै सो ब्रह्मपुराणविषे कहाहै कृतघ्नइति जो ब्राह्मणकृतघ्नहै सो म कर्के यमके मंदिरकों प्राप्तहोताहै फेर सो यमकेजो दूत बडेभयकेदेणवाले उनोंकरके दारुणजो वध उसकों प्राप्तहोताहै विनयनाम सेवककाभीहै १ येतिफेरउसजगाविषे बहुत जो यातनाउनकोंभोगताहै फेर उसजगासे निकलकर्के इस संसारविषे उत्पन्नहोताहै २ अबअधमयोनियोंकोंप्राप्तकरणेवाला जो कर्म वामनपुराणविषेहै सोकहतेहैं बुभुक्षिति जो पुरुष देवताको अन्नअर्पणनाकर्के आपही भक्षणकर्ताहै सो प्रथम श्वानयोनिकों भोगकर फेर चांडालयोनिकों प्राप्तहोताहै १ वेदोक्तमिति जो पुरुष वेदोक्तधर्मकोंत्यागकरविरुद्धधर्मकों कर्ताहै सो दशहजारवर्षकुत्तेकीयोनिकोंप्राप्तहोताहै २

वेदेति जो पुरुष वेदोंको और ब्राह्मणोंकी निंदाकर्तेहैं सो इसजन्ममें शूद्रहोतेहैं और मरकर्के श्वानयोनिकोंप्राप्तहोतेहैं ३ पद्मपुराणविषे कहाहै लभेदिति हेराजन् जो ब्राह्मण द्रव्यलेकर मंदिरको पूजाकर्ताहै सोचांडाल संज्ञकयोनिको प्राप्तहोताहै और जो मुएहोए पुरुषोंके एकादश दिनविषे भोजनकर्ताहै सोभी श्वानयोनिकों प्राप्तहोताहै १ यदीति जो गुरु पुत्रके तुल्य जो शिष्य उसको कारणके विना अपनी इच्छाकर्के त्यागताहै सोभी हिंस्रअर्थात् व्याघ्रादियोनिकों प्राप्तहोताहै २ पितरमिति जो पुत्र पिता और माताका अपमानकर्ताहै सो मरकर्के पहिले गर्दभयोनिको प्राप्तहोताहै उसको भोगकर फेर मनुष्ययोनिकों प्राप्त होताहै इत्थं मनुष्ययोनिभी नीचादिजानणी ३ ज्येष्ठमिति जो पुरुष ज्येष्ठभ्राताको पिताके समाननहि मानताहै वेदमे लिखाहै (ज्येष्ठभ्रातापितृसमइति) सो मरकर्के क्रौंचयोनिकों

वेदार्थनिंदकायेचयेचब्राह्मणनिंदकाः इहजन्मनिशूद्रास्तेमृताःश्वानोभवंतिहीति ३ ब्रह्मपुराणे लभेद्देवलकोराजन्योनिंचांडालसंज्ञिताम् मृतस्यैकादशाहेतुभुंजन्श्वानोभिजायते १ यदिपुत्रसमंशिष्यंगुरुर्जह्यादकारणम् आत्मनःकामचारेणसोऽपिहिंस्रःप्रजायते हिंस्रोवृकादिः २ पितरंमातरंचैवयस्तुपुत्रोऽवमन्यते ॥ सोऽपिविप्रोमृतोजंतुःपूर्वंजायेतगर्दभः गर्दभत्वंतुसंप्राप्यततोजायेतमानवः ३ ज्येष्ठंपितृसमंवापिभ्रातरंयोऽवमन्यते सोऽपिमृत्युवशंप्राप्यक्रौंचयोनौप्रजायते ४ पद्मपुराणे ॥ अयाज्ययाजकश्चैवयाज्यानांचविवर्जकः विरक्तोविष्णुविद्यासुसप्रेतोजायतेनरः १ ॥ विष्णुविद्या भगवद्गीताभागवताद्याः ॥ सामान्यदक्षिणांलब्ध्वा ग्रहणात्स्येकोविमोहितः नास्तिक्यभावनिरतःसप्रेतोजायतेनरः ॥ २ ॥ स्कान्देयचमत्कारखण्डे योमवेन्मानवःक्षुद्रस्तथापैशुन्यकारकः ब्राह्मणान्यसंसनोकृथामांसाशकश्चयः प्राणिनांहिंसकोनित्यं सप्रेतोजायतेनरः१

प्राप्तहोताहै ४ और पद्मपुराणविषेकहाहै अयाज्येति जो नहि यज्ञकराणेकेलायक उनको यज्ञ करवाणे वाला और जो यज्ञके अधिकारीहैं उनोकात्यागकरणेवाला और जो विष्णुविद्याविषे अर्थात् भगवद्गीतादिम विरक्तहै सो पुरुषप्रेतयोनिकों प्राप्तहोताहै १ सामान्येति जो ब्राह्मण मोहकरिके हुया २ सभको साझी दक्षिणाकोएकलाहि ग्रहण करताहै अर्थात् औरोंको नहिदेता और जो नास्तिकहै अर्थात् ईश्वरकी निंदाकरताहै सोभी प्रेतयोनिकोंप्राप्तहोताहै २ और कहाहै स्कन्दपुराणके चमत्कार खण्डविषे। योमेति जो पुरुषं खोटे काम क्याचोरीआदिकर्ताहै और चुगली कर्ताहै और ब्राह्मणोंके धनविषे उपद्रवोंकर्के वृथाहिक्या देवताकेनिमित्तनहि अपने स्वादवास्ते मांसभक्षणकर्ताहै और नित्यहि प्राणियोंकी हिंसाकर्ताहै सोभी प्रेतयोनिकों प्राप्तहोताहै १

अकृत्वेति और देवकार्य जो बलिवैश्वविधि उसकों और तैसेंहि पितरोंका जो तर्पण उसकोंनहि करके और अपणे संबंधि और नौकरोंकोंनहि देकर जो पुरुष भोजनकर्त्ताहै सोभी प्रेतयोनिकों प्राप्तहोताहै २ परेति जो पुरुषपरस्त्रियोंविषे प्रीतिकर्त्ताहै और दूसरेके धनकोंहरलेताहै और दूसरे की निंदाकर्के प्रसन्नहोताहै सोभी प्रेतयोनिकोंप्राप्तहोताहै ३ कन्यामिति जो पुरुषधनकेलोभकर्के वृद्धकों और नीचकों और खोटाहै रूप जिसका और खोटाहै स्वभाव जिसका उसकों कन्या देताहै सोभी प्रेतयोनिकों प्राप्तहोताहै ४ देवेति जो पुरुष देवता और स्त्री और गुरु इनोंके धनकों और ब्राह्मणों विषे जो श्रेष्ठ उनके धनको लेकर नहि देताहै सोभी प्रेतयोनिकों प्राप्तहो

अकृत्वा देवकार्यं च बलिवैश्वादिकार्यं तथा च पितृतर्पणम् योऽश्नाति भृत्यवर्गेभ्यो दत्वा प्रेतः स जायते २ परदाररतश्चैव परवित्तापहारकः परापवादसंतुष्टः स प्रेतो- ३ कन्यां यच्छति वृद्धाय नीचाय धनलिप्सया कुरूपाय कुशीलाय स प्रेतो- ४ देवस्त्रीगुरुवित्तानि गृहीत्वा यो न यच्छति विशेषाद्ब्राह्मणेन्द्राणां स प्रेतो- ५ शास्त्रकर्ताग्रन्थकर्ता यश्चापि स्यात्षडंगवित् कुलदेशोचितं कर्म्म यस्त्यक्त्वान्यत्समाचरेत् कामाल्लोभादिवा मोहात् स प्रेतो- ६ उच्छिष्टस्य विशेषेण भोजनं च करोति यः अंतरिक्षे मृतो यस्तु स प्रेतो- ७ विषाग्निजलमृत्यूनां तथा चैवात्मघातिनाम् प्रेतत्वं जायते तेन सत्यमेव न संशय इति ८

ताहै ५ शास्त्रेति जो पुरुष शास्त्रोंके करणे वालाहै और ग्रंथोंके करणे वालाहै और षडंगवेदके जानणे वालाभीहै परंतु कामकर्के अथवा लोभकर्के कुल और देशके उचित कर्मकों त्यागकर्के औरों कार्योंकों कर्त्ताहै सोभी प्रेतयोनिकों प्राप्तहोताहै ६ उच्छिष्टेति उच्छिष्ट पदार्थकों जो पुरुष विशेषकर्के भक्षण कर्त्ताहै और जो छतके ऊपर मृत्युकों प्राप्तहोताहै सोभी प्रेतयोनिकों प्राप्तहोताहै ७ विषेति और जो पुरुष विषकर्के मरताहै और जो अग्निविषे मरताहै और जो जलविषे डूबकर मरताहै और जो अपने आपकाहि घात कर्त्ताहै सोभी प्रेतयोनिकों प्राप्तहोताहै इसमें संशय नहिहै ८

और कहाहै गरुडपुराणविषें चंद्रार्केति चंद्र और सूर्यके ग्रहणविषें जो पुरुष भोजन करताहै सो हाथीकी योनिकों प्राप्त होताहै इसमे एहअभिप्रायहै कि ग्रहण विषे गजच्छायाका योगहै इ. सतें तैसाहि फलहोआ १ और जो ब्राह्मण नित्य पंचमहायज्ञोंको नाकरके अन्नकों भक्षणकरताहै सो ग्राम शूकरकी योनिकों प्राप्तहोताहै और कच्चेमांसके भक्षणकरणेवाले व्याघ्रयोनिकों प्राप्त होताहै २ और किहाहै वायु संहिताविषें खरइति और वहुत यज्ञकराणेसें अर्थात् विचारके बिना यज्ञकराणेसें खरयोनिकों प्राप्त होताहै और विना निमंत्रणके भोजनकरणेवाला ब्राह्मण काक योनिकोंप्राप्तहोताहै और जो पुरुष विनापरीक्षाकीते भोजनकरताहै सो निर्जन वनविषें वानरयो निकोंप्राप्तहोताहै १ अविद्यामिति और जो अविद्यापढाताहै अर्थात् जिसके पड़ेसें पुरुष विष

गरुडपुराणे चंद्रार्कग्रहणेभोक्ताजायतेकुंजरोनरः विप्रःपंचमहायज्ञानकृत्वा योऽन्नमश्नुते विड्वराहोभवेन्नित्यंक्रव्याशीव्याघ्रएवच २ वायुसंहितायाम् खरोयैवहुयाजित्वात्काकोनिमंत्रभोजनात् अपरीक्षितभोजीस्यात्वानरोवि जनेवने १ अविद्यांयःप्रयच्छेत्वलीवर्दोभवेत्तुसः२ उमामहेश्वरसंवादे। अग्नि होत्रंभवेद्यस्यनकुर्यात्तस्यरक्षणम् पर्वातिक्रमकारीतुमृगत्वंयातिब्राह्मणः १ वेदोपजीविकाःपापाःस्त्रीलोलास्सततंचये भवंतिचेहकाकाःस्युश्चिरंवि ड्भुजएवच २ पायसंकृसरंचैवहवींषिमधुराणिच अदत्वाचाग्निविप्रेभ्यः प्राशनाद्भुजगोभवेत् ३

यांमें सक होवे सोवलीवर्द अर्थात् वैल वनताहै १ अब और कर्मविपाककहतेहैं जो किहाहै पार्व्वती और शिवजीके संवाद विषें अग्निहोत्रमिति जिसब्राह्मणके गृहाविषें अग्निहोत्र होताहै उसअग्निकी रक्षा न करे और पर्वोविषें न हवनकरे सो ब्राह्मण मृगयोनिकोंप्राप्तहोताहै १ वेदेति और जो वेदकरके जीवका करणे वाले पापीहैं और जो निरंतर स्त्रीयोंविषें आसक्तहैं सो इस संसारविषें चिरकाल विष्टाभक्षणकरणे वाली काकयोनिकों प्राप्तहोतेहैं २ पायसमिति और जो तस्मै और खिचड़ी और हवनवस्तु घृतादि और मिठा इनोंकाभक्षण ब्राह्मण और अग्निकों ना देकर करताहै सो सर्प योनिकों प्राप्तहोताहै ३

नेति और जो पुरुष स्वामीके कार्य्यनुं नहि करतेहैं और खोटेहैं चित्तजिनके और जो वेतन अर्थात् तलबलेतेहैं सो पृथिवीके उपरविचरणे वालियां जो लतां अर्थात् जो वृक्षोंपर नहि चडसकदीयां उनकीयोनिकों प्राप्तहोंतेहैं अथवा भूलता नाम वृक्षविशेषकाहै ४ ॥ अब और कर्म विपाक कहतेहैं जो किहाहै वृद्धगौतमजीने मौल्यादिति जो पुरुष वेदको मूलकरकेवेचताहै ,सो व्याघ्रयोनिकों प्राप्तहोताहै और जो पुरुष विनापढे वेद पढाताहै सोगिद्दडयोनिकों प्राप्तहोताहै १ और जोपुरुषशूद्रतेंविद्यापडताहै सोचांडालयोनिकों प्राप्तहोताहै इसमें असाअभिप्रायहै किजिसस्थानविषें ब्राह्मण वा क्षत्रीपाठकहोवे उसजगाशूद्रसे नहिपढना

नसाधयंतिकार्याणिप्रभूणांयेविचेतसः भृत्यावेतनभोक्तारोजायन्तेभूलताहि तेइति ४ अथवृद्धगौतमः । मौल्याद्वेदोपदेष्टाचव्याघ्रोभवतिमानवः जंबुको जायतेजन्तुरननुज्ञातपाठकः १ शूद्रात्पठतिचांडालोब्रह्मद्रव्योपजीविकः अथकीटादियोनिहेतुकोवामनपुराणे ॥ चांडालादंत्यजाद्वापिप्रतिगृह्णा तिदक्षिणाम् याचकोयाजमानस्तुसःस्याद्दुःस्थलकीटकः ॥ १ ॥

चाहिए तिनां विनाशूद्रसेभी पढनेका दोषनाहि और जोब्राह्मणांके द्रव्यकरके (अर्थात्तिसकें पुछेविना) जीविकाकरताहै सोभीचांडालयोनिकों प्राप्तहोताहै ॥ अबकीटयोनिमें प्राप्तकरणे वालाजोकर्म्मविपाकसो कहतेहैं जोकहाहै वामनपुराणविषे चांडालादिति जो पुरुष चांडालसें और म्लेच्छसें दक्षिणांको लेताहै और जो तिनसे द्विजहोकर याचनाकरताहै उसजगा याचना नाम दानयाचनाकाहै किसे और निमित्त क्या उपकारार्थ स्थानादिबनानेमें तिनसे भी लैणेकादोष नहि और जो तिनसें यज्ञकरवाताहै सोखोटेस्थलकेविषें अर्थात् मलविषे कीट योनिकों प्राप्तहोताहै १

और किहाहै ब्रह्मपुराणविषे आशेति जोपुरुष किसेकी लगीहोई आशाकोदूरकरताहै सो कृमि योनिको प्राप्तहोताहै और जो पुरुष विश्वासहर्ताहै क्यामै केवल तुम्हाराहिहां ऐसा कहकर जो किसीका धन लेलेताहै सोदुर्मति मीन क्या मछयोनिको प्राप्तहोताहै इसमे ऐसाअभिप्रायहै कि जैसे विश्वासकर्के उसने परधनकोग्रहणकीताहै तैसेहितिसको विश्वासदेकर मत्स्यवेधीमारेगा १ उपेति और जोपुरुष विवाहकेविषे और यज्ञकेविषे और दानकेविषे और, उत्सवोंकेविषे मोह करके विघ्नकोकरताहै सो मृतहुया २ कोडयोंकी योनिकोप्राप्तहोताहै २ और किहाहै गरुड पुराणविषे कूटेति जोपुरुष झूठीउगाहीदेनेवालेपापीहैंसो और विष्टाकेकीडेहोकर फेरसर्पहोतेहैं फेरउसकेपिच्छेपिशाचयोनिको प्राप्तहोतेहैं १ और जोपुरुष गुरुयोंके साथ और मित्रोंकेसाथद्रो

ब्रह्मपुराणे आशाच्छेत्ता तु नरः कृमियोनौ प्रजायते विश्वासहर्ता तु नरो मीनो जायेत दुर्मतिः १ उपस्थितविवाहे तु यज्ञदाने महोत्सवे मोहात्करोति यो विघ्नं स मृतो जायते कृमिः २ गरुडपुराणे । कूटसाक्ष्यप्रदाः पापा अमेध्यकृमय श्चिरं भूत्वा भवंति सर्पास्ते पिशाचास्तदनंतरम् १ गुरुमित्रद्रुह पापाये च स्वामिद्रुहो जनाः द्विजशिष्यद्रुहश्चैव कृतघ्ना नास्तिकास्तथा २ त्यागिनो वां धवानां च त्यागिनः शरणार्थिनाम् अमेध्यकृमयः सर्वे मृगव्याधा भवन्ति च ३ द्विजस्तिकन्याविक्रयाज्जायते मृगः मत्सरी विट्कृमिश्चैव अवज्ञाका र्यथ कृमिरिति ४

हकरतेहैं और अपनेस्वामीकेसाथ और ब्राह्मणोंकेसाथ और शिष्योंकेसाथ द्रोहकरतेहैं और कीतेहोए उपकारको नहि जानतेहैं और ईश्वरकीनिंदाकर्तेहैं २ त्यागिनइति और जो बान्धवों कात्यागकरतेहैं और जोशरणागतहोएहोएपुरुषकोत्यागतेहैं सो अमेध्य क्याविष्टाविषे कृमिहोतेहैं फेरमृगोंके मारणेवाले व्याधहोतेहैं अथवा जो मृगोंके मारणेवालेहैं सो विष्टाके कीडेहोतेहैं ३ द्विजइति और जो ब्राह्मण और क्षत्रीघोडयोंको वेचताहै सो मृगयोनिको प्राप्तहोताहै और जो पुरुष किसेके ऐश्वर्यको देखकर मनमें क्रोधकर्ताहै सो विष्टाका कीडाहोताहै और जो पुरुष अवज्ञा क्या भले पुरुषका अपराधकरताहै सो सामान्यकीडाहोताहै ४

अब जो और कर्म्मविपाक गौतमजीनेकिहाहै तिसकों कहतेहैं अनृतेति और जो पुरुष झूठकहणे वालाहै सो उल्वण क्या खोटेरूपवाला होताहै फेर संलग्नवाक्होताहै अर्थात् थथला होताहै ॥ और स्त्रीकों त्यागणेवाला जलोदररोगकर्केयुक्तहोताहै ॥ इसमें एहअभिप्रायहै कि दुष्ट स्त्रीके त्यागका दोषनहि जेकरनिर्दोषकोत्यागे उसका एहकर्म्मविपाकहै ॥ और झूठीरगाहीदेणे वाला पादरोगकर्के युक्तहोताहै इसीकाअर्थकहतेहैं उच्छेति शिथिलहैं जंघा और चरण जिसके ऐसाहोताहै ॥ और जो पुरुष विवाह विषे विघ्नकरताहै सो कटे गएहैं ओठ जिसके ऐसाहोताहै इसमें एह अभिप्रायहै कि विवाहमे उपहासकरतेहैं और छिन्नोष्ठको उपहासकीहानिहै॥ और जो पुरुष गुरुआदिकोंमुष्टिकर्के प्रहारकीइच्छाकरताहै अर्थात् मुक्कामारणेकों उद्यतहोताहै सोकटेगयेहैं

कर्म्मविपाकविशेषोगौतमीयेयथा ॥ अनृतवागुल्वणोमुहुर्मुहुः संलग्नवाक् ॥ दारत्यागीजलोदरी ॥ कूटसाक्षीश्लीपदीः० उच्छूनजंघाचरणः ॥ विवाहविघ्नकर्त्ताछिन्नोष्ठः० अवगूरणः छिन्नहस्तः० अनृतवाक्पुरुषः उल्वणोविकृतरूपः मुहुरितिसागिलजिव्हश्चभवतीति फलद्वयनिर्देशः ॥ श्लीपदं पादशोफस्तद्वान्कूटसाक्षीभवति उच्छूनेति शिथिलजंघादिकश्चेत्यपिफलद्वयम् अवगूरणः गुर्वादिभ्योमुष्ट्यादिप्रहारायसमुद्यतइत्यर्थः ॥ मातृघ्नोऽन्धः० स्नुषागामीवालवृकणः० क्वचित्तुवातवृकणइतिपाठःतत्रवातेनवृकणंलिंगंयस्यसइत्यर्थः अंतपदलोपीसमासःयद्वावलवृकणःवलंवृकणंयस्यसइत्यर्थः

हाथजिसके ऐसाहोताहै ॥ पूर्वोक्त काहि अर्थमूलविषे स्पष्टकीताहै अनृतेति इहांपाप निर्देशएकहै और फल निर्देश दोहैं और तैसेंहि कूटसाक्षीके स्थानविषे जानणा अव गूरणका अर्थकहतेहैं गुर्वेति और जो पुरुष माताकों हत करताहै सो अन्धाहोताहै इहां माताने पुत्रकाप्रकाश कीया सो तिसके मारणे वाला प्रकाशहीनहोआ एह अभिप्रायहै और पुत्रकीस्त्रीके साथ भोगकर्त्ताहै सोवालवृकणक्या छिन्नलिङ्ग होताहै और किसेजगा वातवृकणा ऐसापाठहै तिसजगावात कर्के कटयागयाहै लिंगजिसका एह अर्थहै इहां अंतपदलोपीसमासहै अथवा वलवृकण ऐसापाठहै कटयागयाहै वलजिसका असाहोताहै क्या नपुंसकहोताहै

चेति और जो पुरुष चुरस्तेमें विष्टा और मूत्रसुटताहै सो मूत्रकृच्छ्रीक्या दखोंतरेरोगकर्के युक्तहोताहै ॥ और जो कन्याके साथभोगकर्त्ताहै सो व्यंडक्या छिन्नवृषणहोताहै ॥ और जो दूसरे पुरुषकी ईर्ष्या क्या द्वेषकर्त्ताहै सो मछरहोताहै ॥ और जो मातापिताके साथ विवादकरताहै सो मिरगी रोगकर्के युक्तहोताहै ॥ और जो अमानतकोचुगताहै सो संततिसें रहित होताहै ॥ और जो रत्नोंको चुगताहै सो अत्यंत दरिद्रीहोताहै ॥ और जो विद्याकोंवेचताहै सो मूर्खहोताहै ॥ और जोवेदकोंवेचताहै सोगेंडाक्यामृगविशेषहोताहै इसमैएहअभिप्रायहै किजैसेवेदकेअंगोकोतिसने आपत्यागियाहैतेसेतिसके अंगोकोंअवश्यकरकेलोकत्यागकरावेंगे और जो वहुतमांगनेवालाहै सो जलविषेंरहणेवाला पक्षीहोताहै ॥ और जो यज्ञकरवाणेके योग्यनाहिहै उसको यज्ञकराताहै सो सूकरहोताहै ॥ और जो पुरुष विनाकहनेसें भोजनखानेंको चलाजाताहै सो काकहोताहै ॥ एह

चतुष्पथेविण्मूत्रविसर्जनेमूत्रकृच्छ्री०कन्यादूषकोव्यण्डः०ईर्ष्यालुर्मशकः०
पित्रोर्विवदमानोऽपस्मारी ० न्यासापहार्यनपत्यः ० रत्नापहार्य्यत्यन्त
दरिद्रः० विद्याविक्रयीपुरुषमृगः पुरुषाकारोमृगः मूढइत्यर्थः ॥ वेदाविक्र
यीद्वीपी ० वहुयाचकोजलप्लवः ० अयाज्ययाजकोवराहः ० अनिमंत्रित
भोजीवायसः ० मिष्टैकभोजीवानरः ० यतस्ततोऽश्नन्मार्जारः० कक्षवन
दहनात् खद्योतः० दारकाचार्य्योमुखविगंधिः०दारकाचार्य्यः कन्यापाठकः
पर्युषितभोजीक्रिमिः ० अदत्तादायीवलीवर्द्दः ० मत्सरीभ्रमरः ०

नारदपुराणका वाक्यहै और पीछे जो कहचुकेहैं सो वायु संहिताकावचनथा इसवास्ते पुनरुक्तिनाहिजाननी ॥ और जोपुरुष मिष्टान्न इकल्लाहि भक्षणकरताहै सो वानर होताहै ॥ और जो सभजगामें भोजनकरताहै सोविल्लाहोताहै ॥ और जो पुरुषकक्षवनकोंजालणेवालाहै सोटिटाणा होताहै ॥ और जोकन्याकों अथवा वालकांकोंविद्यासखालताहै सोदुर्गंधियुक्तमुखवालाहोताहै ॥ इसमैएहअभिप्रायहै कि परमार्थवुद्धिसें वालकोंको न भढावे तददोषहै अन्यथानहि और जो पुरुष वेहाभोजनकरताहै सोजन्मांतरविषें कीडाहोताहै ॥ और जो विनादिते वलादिकरके धनको उठालेताहै सो जन्मांतरविषें वैलहोताहै ॥ और जो दूसरेकी उत्कृष्टताकोनाहि सहारता सो भ्रमरहोताहै ॥

अग्नीति और हवनकी अग्निकाजो पुरुष नाशकरताहै सो मंडलकुष्ठी क्या सारेशरीरमे कुष्टवाला होताहै मंडलकुष्ठ उसकोकहतेहैं किजिसकरकेमंडलाकार चिन्ह देहाविषे रक्तके होजाए ॥ और जो शूद्रकोसंस्कारकराताहै सोनीचहोताहै ॥ और गौकेचुराणेवालासर्प्पहोताहै ॥ और घृत और तेलके चुराणेवाला क्षयरोगकरके युक्तहोताहै ॥ और अन्नके चुराणेवाला अजीर्णरोगकरके दुखी होताहै और ज्ञानक्या पुस्तकतिसके चुराणेवाला मूर्खहोताहै और चांडालकी और पुष्कसकी स्त्रीकेसाथ गमनकरणेवाला अजगर क्या वडासर्पहोताहै ॥ और संन्यासीकीस्त्रीके साथ गमन करणेवाला मरु क्या निर्जल देशमे पिशाच होताहै ॥ और शूद्रीके साथ गमन करणे वाला वडालंबाकीडाहोताहै ॥ और अपणी जातिकी स्त्रीके साथ गमन करणे वाला दरिद्रीहोताहै और राजाकी स्त्रीकेसाथ गमनकरणेवाला नपुंसकहोताहै और गौकेसाथ गमन करणेवाला डडूरहोताहै और जलके चुराणेवाला मत्स्यहोताहै ॥ और दूधकेचुराणेवाला वगुलाहोताहै ॥ और

अग्न्युत्सादीमंडलकुष्ठी० शूद्राचार्यः श्वपाकः० गोहर्त्तासर्प्पः० स्नेहापहारीक्षयी० अन्नापहार्य्यजीर्णी० ज्ञानापहारीमूर्खः। ज्ञानपदेनपुस्तकंगृह्यते चांडालीपुष्कसीगमनेऽजगरः० प्रव्रजितागमनेमरुपिशाचः० शूद्रागमनेदीर्घकीटः० सवर्णाभिगामीदरिद्रः० राजमहिषीगामीनपुंसकः० गोगामीमंडूकः० जलहारीमत्स्यः० क्षीरहारीबलाकः० वार्धुषिकोऽगहीनः० अविक्रेयविक्रयीगृध्रः० राजाक्रोशकोगर्दभः० अनध्यायाध्येतासृगालः० परद्रव्यापहारीपरप्रेष्यः० मत्स्यवधगर्भवासी० इत्येतेऽनूर्ध्वगमनाइति अनूर्ध्वगमनाअस्वर्गगामिनः॥ देवद्रव्योपजीवीहृद्रोगी० प्रतिज्ञायब्राह्मणस्यादाताअल्पायुः०

ब्याजलेकर जीविका करणे वाला अंगहीन होताहै इसमें दोषपण सैकडेपर जो बयाजहै तिसते अधिकलेणेमे दोषहै ॥ और जो नहिवेचने योग्य गौमें आदलेकर उनको वेचणेवाला गृध्र क्या इलयोनिको प्राप्त होताहै और राजाकी निंदाकरणे वाला गधा होताहै और अनध्यायमे पढनेवाला गिदड होताहै और परधन हरणे वाला जन्मांतरमे नौकर होताहै अर्थात् दूसरेकी सेवाकरणे वाला होताहै ॥ और मत्स्यके मारणे वाला गर्भमें निवास करणेवाला होताहै इसमे एह अभिप्रायहै किजन्मपाकर शीघ्रहिमृत्युको प्राप्त होताहै एह सभस्वर्गमें नहि प्राप्तहोतेहैं ॥ इसविषे वृद्धगौतमजीकहतेहै देवद्रव्यनि जो देवताके द्रव्यकरके जीविका करताहै सो हृदयविषे रोगवाला होताहै और जो ब्राह्मणकेसाथ दानको प्रतिज्ञा करके नहि देताहै सो थोडीआयुवाला होताहै

पत्नीति और बहुतस्त्रियोंकेहोयांहोयां जोएकस्त्रीके साथ प्रीतिकरताहै सो नपुंसकहोताहै ॥ और स्वामीकर्के धर्मविषे जोडयाहोया जोतिसधर्म्मविषेंअसक्तहै अर्थात् तिसको नहिकर्ताहै सोजलोदर रोगकर्के युक्तहोताहै ॥ और दुर्बलदेमारणेमें अर्थात् दूसरे पुरुषदे मारदयांहोयां जो पासोंबलवालेसहायनानहिंकरतेहैं सोजन्मांतरमें अंगहीन होतेहैं ॥ और जोव्यवहारमें पक्षपातकरताहै सो जिह्वामें रोगवाला होताहै अर्थात्जल्लाहोताहै ॥ और जो अपने कर्के स्थापनकीते धर्म्मके अनुष्टानको छेदनकर्त्ताहै सो जन्मांतरमें प्राप्त इष्टकावियोगीहोताहै ॥ जो आपहि पहिले भोजन करताहै अर्थात् बालवृद्धादिको ना देकर्के खाताहै सो शूलरोगवालाहोताहै ॥ और संपदासें रहित जो मित्र और बंधु और स्वामी और अपणी भार्या इनका

पत्नीवहुत्वेसत्येकारामःक्लीवः ॥ स्वामिनाधर्म्मेनियुक्तःतदननुष्ठानासक्तोजलोदरी ० दुर्व्वलबाधेवलवतामुपेक्षायामंगहीनता ० व्यवहारपक्षपाती जिव्हारोगी-स्वयंप्रवर्त्तितधर्म्मानुष्ठानच्छेदकःप्रतिपन्नेष्टवियोगी-स्वयमग्रभुक् शूलरोगी॰परिक्षीणमित्रवंधुस्वामिस्वजायावमंता परवृत्तिः- अतिथिंपश्यन्नश्नतः कपालपट्टिका॥कपालपट्टिकारोगविशेषः॥सूर्य्याप्रकाशेप्रतिश्रयादानादिष्टवियोगी- सूर्य्याप्रकाशोरात्रिः तत्रातिथयेप्रतिश्रयस्याश्रयस्याप्रदानादित्यर्थः ॥ छद्मनागुरुस्वामिमित्रमुपचरतः प्राप्तार्थपरिभ्रंशः विस्रंभापहारीसर्वदुःखाश्रयी- दुःखकारीगोनायकोनिर्दयश्चिपिटनासः चिपिटनासोविकृतनासः॥

जो अपमानकरताहै सो परवृत्ति अर्थात् पराधीनहोताहै ॥ और जो अतिथिको देखकर आपहि भोजनकरताहै अर्थात् तिसकोनहिदेना उसको कपालपट्टिकारोग होताहै और जो रात्रीविषे किसीको रहणेकेवास्ते जगा नहिदेता सो इष्टवियोगीहोताहै ॥ और जोछलकर्के गुरुअरस्वामी अर मित्रको पूजाकरताहै उसका प्राप्तहोयाहोयाअर्थ नष्ट होताहै ॥ और जो विश्वासदेकर हरणे वालाहै सो सम्पूर्णदुःखोंका आश्रयहोताहै ॥ और दुःखकरणेवाला गौयोंकाचरवालहोताहै और जो दयासेरहितहै सो फीनेनक्कवालाहोताहै इसमें एहअभिप्रायहै किनासिकाइष्टिकजुईएहोताहै जिसकरके ऐसानहिहोया

शिष्टेति जो शिष्टाचरण धर्मक्या महात्माकरके स्थापितकीयाहोया जोधर्म तिसकीनिन्दाकरणे
वालाहै सो कांचराहोताहै । और जो साधुपुरुषकेसाथ और तपस्वी अरदेवता अरब्राह्मणअर गुरु अर
ज्ञान अर योग ० इनसवनोंकेसाथ द्वेषकरणेवालाहै सो नक्रास्यहोताहै अर्थात् मछाकार मुखवाला
होताहै । और ताल और वगीचेके नाशकरणेवाला नेत्रासे अर अंगासे हीनहोताहै अथवा नेत्ररूप
जो अंगहै तिससे हीन क्या एकनेत्र करके हीन होताहै और जो कृतघ्न है सो संपूर्ण आरंभोमें वि
फल होताहै क्या उसकाकीताहोया आरंभ कोई नहि सिद्धहोताहै ॥ और पर धनकी अभिलाषा
करणे वाला क्षयरोगकरके युक्तहोताहै ॥ व्यवहारेति और जो पुरुषव्यवहारके मध्यमें स्थितहोया २

शिष्टाचरणधर्म्मदूषकः केकराक्षः० साधुजनतपस्वि देवद्विजगुरुज्ञानयोग
द्वेष्टा नक्रास्यः ० तटाकारामभेत्ता नेत्रांगहीनः ० कृतघ्नः सर्वारंभविकलः ०
परस्वाभिलाषीक्षयीस्यात् ० व्यवहारेपुम्मध्यस्थश्चौरवृत्तिपरस्तुयः वा
णिज्यलाभोनोतस्य देशांतरगतस्यच व्याधिःस्यात् प्राणसंदेहो मृतिस्त
त्रैवपापिनइति १ । अथमाधवीयउमामहेश्वरसंवादादावन्योविशेषोयथा ।
श्वपाकपुष्कसादीनांकुत्सितानामचेतसाम् कुलेषुतेहिजायंतेगुरुवृद्धावमा
निनः १ गुरुणाह्यननुज्ञातोयोवेदाभ्यासमाचरेत् सअजातिविहीनेषुजायते
भुविमानवः २ अजातिःउत्कृष्टजातिर्ब्राह्मणत्वादिका तद्धीनेषुनीचेष्वित्यर्थः

चोरी कर्मविषे तत्परहै उसकोजन्मांतरविषे व्यापारसे लाभ नहि होता जेकर वो पापी देशांतरमें
जावे तोभी व्यापारसें लाभनहिहोता और तिसको जिससें प्राणोंकासंदेहहोताहै ऐसी व्याधिहो
तीहै और मरणभीउहांहोताहै १ अवमाधवजीके वनाए होए ग्रन्थविषे शिव और पार्वतीजीके
संवादमें और प्रकारका कर्मविपाककहाहै श्वपाकेति और जो पुरुष गुरुका और वृद्धका
अपमान करतेहैं सोचांडाल और पुष्कस और खोटे जो जड़जंतु तिनकेकुलोंमें जन्मपातेहैं १
गुरुणेति और जो पुरुष गुरुकरके अनाज्ञत होया २ वेदको पढताहै अर्थात् आज्ञासें विना
पढताहै सो जन्मांतरमें इससंसारविषे ब्राह्मणोंसें हीन जो जाति तिनकेविषे जन्मपाताहै २

अधर्म्ममिति और जो पुरुष मोहवशतें स्त्रीके धर्म्मनूं धर्म्म कहतेहैं सोकालकृत योगसें अर्थात् मरणें
सेंपीछें इसमनुष्यलोकमें जन्मपातेहैं परंतु हवन और देवतानिमित्त जो वषट्कार तिसतें रहि
त होतेहैं ॥ स्कन्दपुराणकेनागरखंडमेंभीकिहाहै। प्राप्नुवंतीति जो पुरुष हेतुवादक क्या उत्तरोत्तर
हेतुप्रमाणसे सतमतका खंडनकरतेहैं सो कुत्सितदेशकेविषें जन्मकोंपातेहैं॥ और जो अपणेस्वामी
के साथ द्रोहकरतेहैं सो कुत्सित कुलविषें अर्थात् कुष्टादियुक्तकुलविषें जन्मपातेहैं १ अदत्वेति और
जोपुरुष पितर और देवता और ब्राह्मणोंकों ना देकरके भोजन करतेहैं सो सदाहै दुर्भिक्ष
और पीडाआपसमें जिसविषें ऐसा जो कुत्सितदेश तिसविषें जन्मपातेहैं २ और जो पुरुष स्त्री

अधर्म्मं धर्म्ममित्याहुर्येतुमोहवशंगताःतेचकालकृताद्योगात्संभवंतीहमानुषे
३ निर्होमानिर्वषट्कारास्तेभवंतिनराधमाइति ॥ स्कान्देनागरखंडे ॥
प्राप्नुवंतिकुदेशेचजन्मयेहेतुवादकाः स्वामिद्रोहरतायेचकुकुलेजन्मचाप्नुयुः
१ अदत्वायेतथाश्नन्तिपितृदेवद्विजातिषु दुर्भिक्षेजनतापेचकुदेशेजन्मचा
प्नुयुः २ यत्रदुर्भिक्षंजनतापोवास्ति तत्रकुदेशइत्यर्थः॥ येतुकुर्वंतिदंपत्यो
र्विवादंसानुरागयोः विरूपाभ्रममाणाश्चसर्वलोकविवर्जिताः ३ दरिद्रा
जाययाभ्रष्टाभवंतिविगतायुषः कन्यादानेचविघ्नंयोविक्रयंयः करोतिवा ४
सकन्यांकेवलांसूतेनपुत्रंकेवलंक्वचित् जायंतेताश्चवंधक्योविधवादुर्भगाः
क्वचित् ५

और भर्ता सहित अनुरागकेहैं अर्थात् प्रीतिकरके युक्तहैं तिनका आपसमें विवाद क्या वियोग
करवातेहैं सो खोटेरूपवालेक्या जले गिलडे कुबे अर्थात् इनांतिनां रूपाकरके युक्त हुएहुए और
सभनां लोकांकरके वर्जेहोएक्या तिरस्कृतकीतेहोएभ्रमतेहैं ३ इसीकाऔरफलकहतेहैं॥ दरिद्राइति
सोपुरुष दरिद्रीहोतेहैं और स्त्रीकरकेहीनहोतेहैं और थोडीआयुषावालेहोतेहैं ॥ अब औरकर्म्म वि
पाककहतेहैं ॥ जो पुरुषकन्या दानाविषें विघ्नकरताहै अथवा कन्याकोंवेचताहै सो जन्मांतरविषें
कन्याहिकोंउत्पन्नकरताहै अरतिसकेगृहमेंपुत्रनाहिहोता ४ और सोकन्यावन्धकीयां अर्थात् व्यभि
चारिणियां अर विधवा अर दुर्भगा अर्थात् ऐश्वर्य्यसेंहीन होतियांहैं ५ ॥

अब और प्रकारका कर्म्मविपाक किहाहै प्रभास खंडविषें यैरिति जिनोंपुरुषोंनें किंचित्मात्रभी कृष्णार्प्पण नहिंदित्ताहै उनका दरिद्रताहिचिन्हहोताहै और सो रोगीहोतेहैं क्रूरहोतेहैं और हिंसा करणेवाले और कुब्बेहोतेहैं और वामनहोतेहैं १ अपुत्राइति परस्त्रीकोंसेवनेवाले और कलहक्या लडाइके करणेवाले पुत्रसें रहितहोतेहैं और जो पुरुषमहाराजक क्या उपदेवता तिनकेकर्म्माको करतेहैं अर्थात् तिनाका मंत्रसिद्धकरतेहैं सो कुत्सितवस्त्रोंवाले और कुत्सितरूपवालेहोतेहैं २ और इसी पदका दूसरा अर्थहैं महाराजकनामहै राजयोंकारोकणा उसविषेंहै कर्म्म जिनकावो भी ऐसेहोतेहैं २ किति जो पुरुष और खोटे दंभके करणेवाले और फलकेविषें लुब्ध और मूर्ख

प्रभासखण्डे। येर्नदत्तंनरैःकिंचित्तेषांचिन्हंदरिद्रता जायंतेरोगिणोरौद्राहिंस्राःकुब्जाश्चवामनाः १ अपुत्राःकलहाक्रान्ताःपरदारोपसेवकाः महाराजककर्म्माणः कुचैलाःकुशरीरिणः २ महाराजकाउपदेवविशेषास्तत्कर्म्माणस्तन्मंत्रसाधकाः कुशरीरिणःकुरूपाभवंति यद्वा महाराजकंमहाराजनिरोधस्तत्रकर्म्मयेषांते २ कुदंभाश्चफलेलुब्धामूर्खानिष्ठुरभाषिणः दानहीनाभवंत्येतेदेवब्रह्मस्वभक्षकाः ३ रेवाखंडे। पितामातागुरुर्भ्राताअन्योवाविकलेंद्रियः भवंत्यनादृतायैस्तुतेभवंतिनराधमाः १ इहमानुषलोकेहिदीनांधास्तेभवंतिवै येत्यजन्तिस्वकांभार्य्यांमूढाःपंडितमानिनः २ तेयांतिनरकंघोरंतामिस्त्रंनात्रसंशयः तत्रवर्षशतस्यांतेइहमानुषतांगताः ३

और खोटे वचनोंके भाषण करणे वाले और ब्राह्मणके धनकों भक्षण करतेहैं सो दान करके हीनहोतेहैं ३ और प्रकारकाकर्मविपाककिहाहै रेवाखंडविषे ॥ पितेति पिता और माता और गुरु और भ्राता और शिथिलहैं इंद्रियां क्या गुणहीन जिसकीयां ऐसा जोहै उनका जो पुरुष अनादरकरतेहैं सो अधम होतेहैं १ इहेति और इसमानुष लोकविषें दीन और अंधे होतेहैं जो मूढ अपणे आपकों विनापढे पंडित मानणेवाले हैं और अपणी स्त्रीकों त्यागदेतेहैं २ तइति सो पुरुष तामिस्त्र नाम घोर नरकविषें प्राप्तहोतेहैं इसमें संशय नहि है और उसविषें शतवर्ष १०० पर्य्यंत पीडाकों भोगकर इसलोकविषें मनुष्य होतेहैं ३

दुश्चर्मेति और जो पुरुष परस्त्रीकेसेवनेवालाहै सोदुष्टचर्मवाला और विद्यासेरहित और धनसे रहित और गृध्र क्या अंडवृद्धिरोग तिसकरकेयुक्तहोताहै अर पूर्व जो परभार्य्योपसेवक पद आया है सोप्रभासखंडकामतहै अरइहांजो आयाहै सेरेवाखंडकामतहै इसवास्तेपुनरुक्तिनहिजाणणी ४ गद्गदइति और अनृतवादीक्या झूठकहणेवालापुरुषथथलाहोताहै और गौयोंकेअर्थ झूठकहणेवाला क्या कोई पुरुष गौयोंकी सेवाकरणे वास्ते आयाहै अर किसीने कहदियाकि इहां कोई गौ नहिहै ऐसा कहणेवाला मूक होताहै और जो विना अन्नब्राह्मणको देताहै सो विकृतकंठवाला होताहै अर्थात् उसका कंठ किसीको अच्छा नहि लगता ५ मेति और जो किसीके ऐश्वर्य्यको नहिसहारसकताहै सोजातिकरके अन्धाहोताहै अर्थात् जिनजीवजातियोंमें नेत्रोंसेहीनहोतेहैं उन जातियोंमेंजन्मपाताहै जैसे विसकलादिकहैं और जोपुरुषद्वेषकरणेवालाहै सो वधिरहोताहै और

दुश्चर्म्मादुर्भगश्चैवदरिद्रःसंप्रजायते जायतेगृध्रसंयुक्तःपरभार्य्योपसेवकः४ गद्गदोऽनृतवादीस्यान्मूकश्चैवगवानृते अन्नंपर्युषितंविप्रेददद्वैकंठतांव्रजेत्५ मात्सर्य्यादपिजात्यन्धोद्वेषात्तुवधिरोभवेत् अदत्वाभक्ष्यमश्नातिह्यनपत्यो भवेच्चसइति ६ भक्ष्यमत्रापूपादि दोषवाहुल्यात् । गरुडपुराणे । अधमत्यच येयांतिभगवत्कीर्त्तनेनराःवार्धिक्यमुपयांत्याशु तेयेंजन्मनिजन्मनि १ पश्य न्तोभगवद्द्वारंतामसास्तत्परिच्छदम् अकृत्वातत्प्रणामादियेयांतिपुरुषाध माःजात्यन्धास्तेभिजायंतेप्यंगहीनपरिग्रहाः २ अंगहीनःपरिग्रहःस्त्रीयेषां ते ॥ पंगवः पादहीनाश्चकुष्ठिनोभुवियेनराः विष्णुच्छायाध्रुवंतैस्तुलंघिता स्यान्नसंशयः ३ विष्णुच्छायाविष्णुप्रतिमाप्रतिविंवः ॥

जो इकलाहिमधुभोजनकरताहै अरकिसीकोनहिदेता सो संततिसेरहितहोताहै परंतुइसजगा भक्ष्यकरके पूडेआदिभोजनजानना दोषवहुतहोणेतें ६ अब और प्रकारका कर्म्मविपाक किहाहै गरुडपुराणविषे ० अधमत्येति जो पुरुष ईश्वरके कीर्तनकोत्यागकर पराङ्मुख होतेहैं सो जन्मजन्मके विषे तत्कालहि वृद्धभावको प्राप्तहोतेहैं अर्थात् अल्पआयुषावालेहोतेहैं १ पश्यन्तिति जो तमोगुणी अधमपुरुष हैं अर ईश्वरके द्वार अर सामग्रीकोदेखकर नमस्कारके विनाहि चलेजातेहैं सो पूर्वोक्तजाति करके अन्धेहोतेहैं और अंगहीनस्त्रियोंके पतिहोतेहैं २ पंगवइति और जिनोंपुरुषोंने विष्णुकीमूर्त्तिकीछायाकाउलंघनकीताहै सोपंगु क्या शिथिलजंघावाले अर पादहीन अर कुष्ठी होतेहैं इसविषेसंशयनहिं जानणा ३

वथेति और तैसेंही जो पुरुष ईश्वरके मंदिरकी छायाको अर्थात् मंदिरके कलशाकी छायाको उल्लंघन करताहै सो वनविषेपंगुहोताहै और रोगकर्के पीडितहोताहै इसजन्मामंपंगुशब्दकर्के वनवासीकोइ औविशेषहै कोइ ऐसाभीकहतेहैं ४ ॥ अब और प्रकारकाकर्म विपाकविष्णुधर्मोत्तरमेंकिहा है पिशुन इति जो पुरुष पिशुन क्या दूसरेका केवल दोष प्रकाश करणेवालाहै सो खोटीगंधी करकेयुक्तहै नासिकाजिसकी ऐसाहोताहै और जो पुरुष सूचक क्या दूसरेपुरुषके गुणमिश्रितदोषों काप्रकाश करताहै सोदुर्गंधि विशिष्ट मुखवाला होताहै और दूसरेके गुणोंको देखकर जो

तथाचभगवद्धामच्छायायांक्रमतेतुयः अरण्येजायतेपंगुःसर्वैरोगादिपीडित इति ४ विष्णुधर्मोत्तरे ॥ पिशुनःपूतिनासःस्यात्सूचकःपूतिवक्त्रकः केवलदोषप्रकाशकः सूचकोगुणमिश्रितदोषप्रकाशकः अथवा पिशुनोराजपार्श्वेदोषप्रकाशकः सूचकोन्यइत्यर्थः ॥ भूत्वाब्रह्मणस्ततोनास्तिकः घाणिकस्ततो लिकश्चैवअन्धोभवतिमानवः २ घाणिकोनीचजातिविशेषः प्रतिकूलंगुरो यस्तुसोऽपस्मारीचजायते यस्तुगुरोःप्रतिकूलकार्यंकरोतिसइत्यर्थः

[illegible]

[illegible]

नहिं सहारता सो गंजाहोताहै और वेदकी निंदाकरणेवाला ग्रामकानाई होताहै १ मूलमें पिशुनशब्दका अर्थ स्पष्टकर्के किहाहि पिशुन इति भूयइति फेर मरणेसे पीछे ब्राह्मण जन्म पाकर्के नास्तिक भावकों प्राप्त होताहै फेर घाणिक नाम कर्के नीच होताहै और फेर तेली होताहै फेर पीछेसें वोहि अंधाहोताहै २ घाणिक क्या नीच जाति कर्के जो प्रसिद्धहै और जो पुरुष गुरुयोंके अनुकूल नहि रहताहै सो मिरगीरोगकर्के युक्त होताहै जो जिसको अच्छानाहिहै उसको प्रतिकूल कहतेहैं

और हेमहाभाग जोपुरुष इकल्लाही मधुर वस्तुकोभक्षण करताहै सो वातगुल्मरोगकर्केयुक्त होताहै अर्थात् वातके गोलेकर्के युक्तहोताहै ३ भगेति और जो कुंडामार्गियोंके साथ भोजनकरताहै सो भगभक्षनामक कीडाहोताहै और जो दूसरे पुरुषको पीडादेताहै सो चिरस्थायिज्वरादिरोगकर्के युक्तहोताहै गुरु और स्वामि और वेदकी निंदाको सुनकरके ४ जन्मांतरमें दुर्बुद्धि और वोला और पुरुषोमें अधमहोताहै और देवताके अर्पण कीया जो दीपक तिसकर्के जो दुर्बुद्धि पुरुष गृहका कार्य करताहै ५ सो जन्मांतरमें बुद्बुदाक्ष अर्थात् वाहर निकस गियाहै नेत्र जिसका ऐसाहोताहै और नेत्ररोग कर्के भी युक्तहोताहै और तिस पापकर्म कर्के दीनरूप वाला

मिष्टाश्येकोमहाभागवातगुल्मीप्रजायते ३ भगभक्षस्तुकुंडाशीदीर्घरोगी चपीडकः गुरुस्वामिद्विजाक्रोशवेदनिंदातथैवच ४ श्रुत्वाभवतिदुर्बुद्धिर्वधिरोमानवाधमः देवदत्तेनदीपेनकृत्वाकर्म्मसुदुर्म्मतिः ५ जायतेवैबुद्बुदाक्षो नेत्ररोगगतोपिवा तथैवदीनरूपश्चतेनपापेनकर्म्मणा ६ बुद्बुदाक्षोवहिर्निस्सृताक्षिगोलकः ॥ हीनवर्णस्तदालोकेभवत्यत्यंतदुर्म्मतिः विरूपीएव भवतितथाऽविक्रेयविक्रयी ७ विनाऽपराधेनतथाकृत्वापत्न्याधिवेदनम् सराजामयमाप्नोतिव्यवहारेतथैवच ८ पत्न्यधिवेदनं पत्न्यंतरग्रहणम् राजामयोराजयक्ष्मा

अर्थात् कनकालोमेरूपजैसारूपउसकाहोताहै ६ हीनेति और लोकमें हीनवर्णअर्थात्शूद्रहोताहै और अतिशयकर्के दुष्टबुद्धिवालाहोताहै और तैसेहि नहि वेचने लायक जोवस्तु उसके वेचनेवाला खोटेरूप वाला अर्थात् कुरूपी होताहै ७ विनेति और जो पुरुष अपराधके विना अपनी स्त्रीको त्यागकर्के और स्त्रीको ग्रहण करताहै सो राजयक्ष्मरोग कर्के युक्तहोताहै तैसेही व्यवहार विषे भी जिस पुरुषकेसाथ व्यवहार कर्ताहै उसको अपराधके विना छोडकर्के जो दूसरेके साथव्यवहार कर्ताहै सोभीराजयक्ष्मकोंप्राप्तहोताहै ८ इसीका अर्थ स्पष्टकर्के मूलमें कहाहै पत्न्येति

मूलेति और जो पुरुष वशीकरणके कारण औषधी अर मंत्रादिकों कर्के पुरुषकों मारदेताहै सो जगतमे द्वेषकरणेके योग्यहोताहै इसमें संशय नहिंजाणणा ९ अयाज्येति और जो पुरुष यज्ञके अधिकारीनहिंहैं तिनकों जो यज्ञकरवाताहै सो वर्णसंकरहोताहै और जो पुरुष वेदको वेचताहै सो मूर्ख और धूर्तहोताहै धूर्तउसकोकहतेहैं कि जो विना विचारे कार्य्यको कर्ताहै १० नास्ति कइति जो नास्तिकहै अर्थात् ईश्वरको जगत् कर्त्ता नहि मानता सो दरिद्री होताहै और सं पूर्णधर्मोंसें रहितहोताहै और जो अभिमान विषे प्रवृत्तहै कया अपणेकों वडामानताहै और दूसरे कों तुछमानताहै सो खोटे कुलविषें उत्पन्नहोताहै ११ श्वपाकेति और जो पुरुषगुरुयोंका और

मूलकर्म्मतथाकृत्वावशीकरणकारणात् द्वेष्योभवतिलोकेऽस्मिन्जगतोनाऽ
त्रसंशयः ९ मूलकर्म्मऔषध्यादिनामारणं वशीकरणायप्रवृत्तोपिमारितवा
न्यदीत्यर्थः अयाज्ययाजकश्चैवजायतेवर्णसंकरः वेदविक्रयकोमूर्खःकित
वश्चैवजायते १० नास्तिकस्तुदरिद्रस्स्यात् सर्वधर्म्मविवर्जितः आतमान
प्रवृत्तस्तुजायतेकुत्सितेकुले ११ श्वपाकपुल्कसादीनांकुत्सितानामचेतसाम्
कुलेषुतेभिजायंतेगुरुवृद्धापवादकाः १२ श्वघेतुमरणंलोकेविषैःस्थावरज
गमैः दंष्ट्रिभ्यश्चनखिभ्यश्चचांडालाद्ब्राह्मणात्तथा १३ गृहाधःपतनाच्चैवद्रु
माधःपतनात्तथा गोभ्यश्चमरणंलोकेविज्ञेयंपापकर्म्मणाम् १४

वृद्धोंका अपमानकरतेहैं सोचांडाल और पुष्कस और खोटे और जडोंकीकुलमें जन्मपातेहैं १२ जन्मलक्षण कर्म्म विपाक कहकरके, अब मरणलक्षण कर्म विपाक कहतेहैं श्वभ्रइति जो पुरुष लोकविषें टोएमें गिड कर्के मरताहै और स्थावरजंगमविषकर्के मरताहै स्थावर कया संखियेसें आदलेकरहै और जंगम कया सर्पादिकोंसेंलेकरहै और दंष्ट्री कया श्वान अर व्याघ्रादिकोंसें लेकर अर नखवालयोंकर्के अर्थात् सिंहादिकों कर्के मर्ताहै और चांडाल सें और ब्राह्मणसे १३ गृहेति गृहसेंकयाघरसें गिडकर और द्रुमकया वृक्षसें गिडकर और गौयों सें जो मरताहै सो मरण पापकर्म्मवालयोंका जाणणा १४

ताडितेति जो पुरुष किसीकी ताडना करताहै सो आपभी जन्मांतरमें ताडनाकों प्राप्तहोताहै. जो किसीके धनादिकों हरताहै सो आपभी धनादिककें हरयाजाताहै और दूसरेकों मारकर्के आपत्तिकों प्राप्तहोताहै अर्थात् आपभी मारयाजाताहै इसमें विचार नहिं करणेयोग्यहै । १५ कोई कहतेहैं यद्यदिति जो पुरुष दूसरेकों सुख अथवा दुःख देताहै सो सो उसकों जन्मांतरमें प्राप्त होताहै और अपणे कीये होए कामकर्के दूसरा पुरुष जैसी पीडाकों प्राप्तहोताहै । १६ तस्येति तिसकोंभी तैसीहि पीडा जन्मजन्ममें होतीहै तिसकारणसें पुरुष संपूर्ण यत्नकर्के पर पीडाकों त्यागे । १७ अब और प्रकारका कर्मविपाक किहाहै महाभारतविषे * नास्तिकाः सो

ताडितास्ताडयन्तीह लोके हर्त्ता ह्रियते तथा । कृत्वाऽऽपद्यते ... विचारणा १५ यद्यत्परस्य ... ... दर्शितः कर्मणां स्वकृतेनेयः १६ तस्यापि तादृशी ... ... स्सर्वप्रयत्नेन परस्याबाधां ... विवर्जयेदिति १७ महाभारते * नास्तिका निरि याश्च गुरुशास्त्रातिलंघिनः अधर्मज्ञा गताचारास्ते भवंति गतायुषः १ कुशीला भिन्नमर्य्यादा नित्यं संकीर्णमैथुनाः अल्पायुषो भवंतीह नरकगामिनः २

पुरुष नास्तिकहैं अर्थात् ईश्वरकों जगत्का कर्त्ता नहिं मानतेहैं और जो निष्क्रियहैं अर्थात् संध्योपासनादिसे रहितहैं और गुरु और शास्त्रका उलंघनकर्के वर्त्ततेहैं और जो धर्म कों नहिं जानतेहैं और नष्ट होगयाहै आचार जिनका ऐसे जो हैं सो अल्पआयुषा वाले होतेहैं १ कुशीलेति और जो पुरुष खोटे स्वभाववाले हैं अर्थात् वृथा वार्त्तालापमें झूठ और परकी निंदा करतेहैं और जो भिन्नमर्यादावालेहैं कथा किसे मतपर भी नहीं चलते और जो संकीर्णमैथुनीहैं अर्थात् संपूर्णवर्णोंकी स्त्रियोंके साथ मैथुन करतेहैं सो पुरुष थोडी आयुषावाले होतेहैं और नरकगामी होतेहैं २

लोष्टेति और जो पुरुष मृत्तिकादीढीमकोंहाथसें वारंवारभोरदेताहै और तैसेहि जो तृणका छेदनकरताहै और जो नखोंकोखाताहै अर्थात् नखोंकोमुखमें पाताहै और जो नित्यकर्मकों त्यागताहै और जो चुगली करताहै सो इसलोकमें वडीआयुषाको नहि प्राप्तहोताहै अर्थात् अल्पआयुषावालाहोताहै ३ प्रज्ञामिति और जो पुरुषउच्छिष्टहोया २ वातांकर्त्ताहै और ईश्वरजीके मंदिरामें जूठाहिचलाजाताहै उसकीबुद्धिको देवताहरलेताहै और आयुषाकाभीनष्टकरताहै ४ यश्चेति जो ब्राह्मण मोहवशतें अनध्यायकालमें पढताहै और जो सूर्य्यके और अग्निके और गौके और ब्राह्मणके सन्मुख होकरके विष्टाकरतेहैं सो अल्पआयुषावाले होतेहैं ५ और शिवधर्मोत्तरविषेंभी

लोष्टमर्दीतृणच्छेदीनखखादीचयोनरः नित्योच्छेदीसूचकश्चनेहायुर्विंदतेमहत् ३ प्रज्ञामस्याददेदेवोह्यायुरस्यनिकृंतति उच्छिष्टश्चप्रवदतिवाधिगच्छतिमंदिरे ४ अस्यायुर्देवोनिकृंतति खंडयति तथा प्रज्ञामाददे। यश्चानध्यायकालेपिमोहादभ्यसतेद्विजः प्रत्यादित्यंप्रत्यनलंप्रतिगांच प्रतिद्विजम् येमेहयंतिचनरास्तेभवंतिगतायुषइति ५ शिवधर्म्मोत्तरे॥ देवद्रव्योपजीवीचसर्वेदेवचवार्द्धकः देवद्रव्यंस्वयंयेनभुक्तंसहिसदाभवेत् १ रसा ज्ञोवधिरःकुंठः कंडूसर्वांगदुःखितः देवस्पर्शंनरःकृत्वापरप्रत्ययकारणात् २ मिथ्याचारंचरेत्पश्चादर्बुदस्थोवनेचरः देवदासोवनंभुक्त्वावृहद्गुल्मीचवैक्रमात् ३ अर्बुदःपर्वतविशेषः

किहाहै देवेति जोपुरुष सर्वदाकालदेवताके द्रव्यकरके क्या सामग्रीकरके जीविका करताहै और जो रुपैयोंका व्याजलेकर जीविकाकरताहै और जिसने देवताकाद्रव्य आपहीभक्षणकीताहै १ सो सदा रस विषे अज्ञ होताहै अर्थात् तिसको जिह्वारसकोंनहिजानसकती और वोलाहोताहै और कुंठहोताहै अर्थात् दुष्टस्वभाववालाहोताहै और तिसके संपूर्ण अंगकंडूकरके दुःखितहोतेहै और जो पुरुष दूसरेकी प्रतीति वास्ते अर्थात् निश्चयवास्ते देवताकी शपथंकरताहै २ अर पीछेसें मिथ्याचार क्या कपट करताहै सो पर्वतमें रहने वाला वनचर होताहै फेर वनको भोगकर मूर्खहोताहै फेर वडे गुल्मरोगकरके क्या वातगोलेकरकेयुक्तहोताहै अर्बुदनामकिसे पर्वतकाहै ३

सर्वांगेति और जो पुरुष पापकर्त्ताहै सोसंपूर्ण अंगोमें कुष्टरोगवालाहोताहै और तिमिरी होताहै अर्थात् नेत्र उसके अंधकारकरकेयुक्तहोतेहैं तिसको नरहाता रोग कहतेहैं और पापकरके इहांगोव धादि पाप जाणणा क्योंकि दोषवहुतहोणेते और जो देवताके मंदिरसे दीपकको उठाकके घरका कामकर्त्ताहै सो जन्मांतरमें पंगु और नेत्रोंसेहीन होताहै औरपीछे जो देवताके दीपकउठानेका दोषकिहाहै सो विष्णुधर्मोत्तरकामतहै अर इहांजो किहाहै सोशिवधर्मोत्तरकामतहै इसवास्ते पुनरु क्तिनहिजाननी ४ मूर्छेति और देवतयोंके साथ द्वेषकरणेवाला मूर्छा क्या मिरगीरोगकरके युक्त होताहै और भ्रमी क्या सुदाई होताहै अथवामूर्छाकरकेहै भ्रमण क्या भौणां जिसमें ऐसा होताहै और न्यायमें पक्षपातकरणेवालाज्वररोगकरकेयुक्त होताहै और देवताके तिरस्कारकरणे वाला

सर्वांगकुष्ठीतिमिरीनरोभवतिपापतः दीपंदेवगृहाद्धृत्वापंगुश्चांधोभवेन्नरः पापमत्रगोवधादि दोषवाहुल्यात् ४ मूर्छाभ्रमीसुरद्वेष्टापक्षपातीज्वरी भवेत् देवावमंताभवतिसर्वदामैथुनेरतः ५ सदापहृतसर्वस्वः कुत्सितःका ममोहितः मुखेकृष्णव्रणीश्वित्रीगरदोमसकोभवेत् जिह्वावहुव्रणीह्यन्यदुः खकारीभवेन्नरः ६ अपकारंतुयःकुर्य्यादुपकर्त्तुर्भवेन्नरः श्वासकासीज्वरी सर्वगात्ररोगीमृतप्रजाः ७

और सदाहि स्त्रीभोगमें प्रीति वाला ५ सदाहि हरयागयाहै धन जिसका ऐसा होताहै और कुटिलहोताहै और कामकरके मोहितहोताहै मुखइति और जो मदान्धपुरुष दूसरोंको बिष देताहै सो मुखमे कृष्णव्रणीहोताहै अर्थात् उसके मुखमें काले २ छिद्रहोतेहैं और श्वित्री क्या श्वेतकुष्टकरके युक्तहोताहै और अन्यदुःखकारीजोपुरुष अर्थात् भलेपुरुषोंको दुर्वाक्यकहणेवाला सो जिह्वामें वहुव्रणी होताहै अर्थात् उसकी जिह्वामें वहुत छिद्रहोतेहैं ६ अपकारमिति जो पुरुष उपकारकरणे वाले पर अपकार करताहै अर्थात् भलीकरणेवाले साथ माडीकर्त्ताहै सो श्वासकास क्या दम रोग तिसकरके युक्त होताहै और ज्वरकरके युक्त होताहै और सवनां गांम रोगवाला होताहै और मृतप्रजाक्या तिसके पुत्र उत्पन्न होकरकेमरजातेहैं ७

मृतपुत्रइति जो पुरुष दूसरेकी संततीकेसाथ द्वेष करताहै सो पुत्रसें हीन होताहै अथवा अंधाहो ताहै और जो दूसरेका नाशकरताहै सो बिसर्पवान् होताहै अर्थात् रक्त विकार जो रोग तिस करके युक्त होताहै ८ अकारणेति और जो पुरुष कारणसें विना अपणी स्त्रीका त्यागक रताहै सो जलोदरी यथा जलोदररोगकरके युक्तहोताहै अर्थात् उसका पेटरोगकरके फुल्लजाताहै और जो अधम पुरुष वेश्यानूं अपणी स्त्री बणाकरके वर्तदाहै ९ सो जन्मान्तरमें भक्तखाणेनूं असमर्थ होताहै और पिछपान करके जीवन करताहै और दूसरेके चित्तको क्लेशदेणेवा

मृतपुत्रोथवांधःस्यात्योद्वेष्टिपरसंततिम् परस्यतुविनाशंयः करोतिसवि सर्प्पवान् ॥ ८ ॥ विसर्प्पोरक्तविकृतिकोरोगविशेषः अकारणाद्धर्म्मप त्नीत्यागीस्याज्जलोदरी वेश्यांकुलवधूकृत्वावर्ततेयोनराधमः ९ भक्तंभो क्तुमशक्तश्चमंडपानेनजीवति ॥ परेषांचेतसः क्लेशकारीभवतिमानवः १० क्षयीज्वरीप्रमेहीचगुल्मीदाहीभगंदरी रजस्वलायाःसंपर्कात्चांडालपति तैःसह ॥ ११ ॥ व्यवहारीपुष्पवत्या भुक्त्वाकुष्ठीज्वरीभवेत् अनपत्यो दरिद्रश्चविश्वस्तस्यविषप्रदः ॥ १२ ॥

ला १० क्षयरोगकरके युक्त होताहै और ज्वरकरके और प्रमेह रोगकरके और गुल्म रोगकरके और दाहरोगकरके और भगंदररोगकरके युक्तहोताहै परंतु चांडाल और पतितके साथ रलकरके रजस्वलास्त्रीकासंबन्धहोणेते ११ इसीका अर्थ विशेष करके कहतेहैं व्यवेति रजस्वलाके साथ व्यवहारकरणे वाला जो पुरुष अर्थात् क्रीडाकरणे वाला सो विना सचैल स्नानसें भोजनकरे तो ज्वर रोग वाला होताहै और कुष्टी होताहै और जो विश्वस्त पुरुषको विषदेताहै सो विश्वासघाती पुत्रसें रहित होताहै औरदरिद्री होताहै १२

सर्वांगेति और जो पुरुष पापकर्त्ताहै सोसंपूर्ण अंगोमें कुष्टरोगवालाहोताहै और तिमिरी होताहै अर्थात् नेत्र उसके अंधकारककेंयुक्तहोतेहैं तिसको नरहाता रोग कहतेहैं और पापकर्के इहांगोवधादि पाप जाणणा क्योंकि दोषवहुतहोणेतें औरजो देवताके मंदिरसे दीपककों उठाकके घरका कामकर्त्ताहै सो जन्मांतरमें पंगु और नेत्रांसेंहीन होताहै औरपीछे जो देवताके दीपकउठानेका दोषकिहाहै सो विष्णुधर्मोत्तरकामतहै अर इहांजो किहाहै सोशिवधर्मोत्तरकामतहै इसवास्ते पुनरुक्तिनहिजानणी ४ मूर्छेति और देवतयोंके साथ द्वेषकरणेवाला मूर्च्छा क्या मिरगीरोगकर्के युक्त होताहै और भ्रमी क्या सुदाई होताहै अथवामूर्छाकर्केहै भ्रमण क्या भौणां जिसमें ऐसा होताहै और न्यायमें पक्षपातकरणेवालाज्वररोगकरकेंयुक्त होताहै और देवताके तिरस्कारकरणे वाला

सर्वांगकुष्ठीतिमिरीनरोभवतिपापतः दीपंदेवगृहाद्धृत्वापंगुश्चांधोभवेन्नरः
पापमत्रगोवधादि दोषवाहुल्यात् ४ मूर्छीभ्रमीसुरद्वेष्टापक्षपातीज्वरी
भवेत् देवावमंताभवतिसर्वदामैथुनेरतः ५ सदापहृतसर्वस्वः कुत्सितःका
ममोहितः मुखेकृष्णव्रणीश्वित्रीगरदोमलकोभवेत् जिन्हाबहुव्रणीह्यन्यदुः
खकारीभवेन्नरः ६ अपकारंतुयःकुर्य्यादुपकर्त्तुर्भवेन्नरः श्वासकासीज्वरी
सर्वगात्ररोगीमृतप्रजाः ७

और सदाहि स्त्रीभोगमें प्रीति वाला ५ सदाहि हरयागयाहै धन जिसका ऐसा होताहै और कुटिलहोताहै और कामकर्के मोहितहोताहै मुखइति और जो मदान्धपुरुष दूसरेंको बिष देताहै सो मुखमे कृष्णव्रणीहोताहै अर्थात् उसके मुखमें काले २ छिद्रहोतेहैं और श्वित्री क्या श्वेतकुष्टकरके युक्तहोताहै और अन्यदुःखकारीजोपुरुष अर्थात् भलेपुरुषोंकों दुर्वाक्यकहणेवाला सो जिव्हामें वहुव्रणी होताहै अर्थात् उसकी जिव्हामें वहुत छिद्रहोतेहैं ६ अपकारमिति जो पुरुष उपकारकरणे वाले पर अपकार करताहै अर्थात् भलेकरणेवाले साथ माडेकर्त्ताहै सो श्वासकास क्या दम रोग तिसकरके युक्त होताहै और ज्वरकरके युक्त होताहै और सवनां अंगांमे रोगवाला होताहै और मृतप्रजाक्या तिसकें पुत्र उत्पन्न होकरकेंमरजातेहैं ७

मृतपुत्रइति जो पुरुष दूसरेकी संततीकेसाथ द्वेष करताहै सो पुत्रसें हीन होताहै अथवा अंधाहो ताहै और जो दूसरेका नाशकरताहै सो बिसर्पवान् होताहै अर्थात् रक्त विकार जो रोग तिस करके युक्त होताहै ८ अकारणेति और जो पुरुष कारणसें विना अपणी स्त्रीका त्यागक रताहै सो जलोदरी क्या जलोदररोगकरके युक्तहोताहै अर्थात् उसका पेटरोगकरके फुलजाताहै और जो अधम पुरुष वेश्याकूं अपणी स्त्री बणाकरके वर्त्तताहै ९ सो जन्मान्तरमें भक्षखाणेंकूं असमर्थ होताहै और पिछपान करके जीवन करताहै और दूसरेके चित्तकों क्लेशदेणेंवा

मृतपुत्रोथवांधःस्यात्पुत्रोद्विष्टिपरसंततिम् परस्यतुविनाशंयः करोतिसवि सर्प्पवान् ॥ ८ ॥ विसर्प्पोरक्तविकृतिकोरोगविशेषः अकारणाद्धर्म्मप त्नीत्यागीस्याञ्जलोदरी वेश्यांकुलवधूंकृत्वावर्त्ततेयोनराधमः ९ भक्तंभो क्तुमशक्तश्चमंडपानेनजीवति ॥ परेषांचेतसः क्लेशकारीभवतिमानवः १० क्षयीज्वरीप्रमेहीचगुल्मीदाहीभगंदरी रजस्वलायाःसंपर्कात्चांडालपति तैःसह ॥ ११ ॥ व्यवहारीपुष्पवत्या भुक्त्वाकुष्टीज्वरीभवेत् अनपत्यो दरिद्रश्चविश्वस्तस्यविषप्रदः ॥ १२ ॥

ला १० क्षयरोगकरके युक्त होताहै और ज्वरकरके और प्रमेह रोगकरके और गुल्म रोगकरके और दाहरोगकरके और भगंदररोगकरके युक्तहोताहै परंतु चांडाल और पतितके साथ रलकरके रजस्वलास्त्रीकासंबन्धहोणेंते ११ इसीका अर्थ विशेष करके कहतेहैं व्यवेति रजस्वलाके साथ व्यवहारकरणे वाला जो पुरुष अर्थात् क्रीडाकरणे वाला सो विना संचैल स्नानसें भोजनकरे तो ज्वर रोग वाला होताहै और कुष्टी होताहै और जो विश्वस्त पुरुषकों विषदेताहै सो विश्वासघाती पुत्रसें रहित होताहै औरदरिद्री होताहै १२

निषिद्धेति और जो पुरुषनिषिद्धवस्तु क्या चांडालककें स्पर्शित जो भोजनातिसकें खुलाणेकर्के अ थवा परोपदिष्ट ज्ञान क्या कि मेरेको किसेवडे महात्मासिद्धसें प्राप्तहोया २ हैउपदेश कि मदिरासें पूजनकरणाबहुतअच्छाहै और मदिरापानकरणाभीअच्छाहै इसज्ञानकर्कें जोदूसरयांपुरुषांनू मोहलें ताहै अर्थात् भुलादेताहै सोउन्मत्तकक्या सुदाई होताहै ॥ १३ ॥ ऋणमिति और जो पुरुषदूसरे कों ऋणदेकर्के अधिकवृद्धिग्रहणकरताहै अर्थात् व्याजके समेत फेर नवीनखत लिखाकर्के उसके पासोंरुपेय्ये लेताहै सो धनवानोंके कुलमें जन्मपाकर्के देशान्तरमें चलाजाताहै १४ ॥ वाणीति देशान्तरमेंभी उसको व्यापारकालाभ नहि होताहै और जो पुरुष गुरुशिष्यदेवेठयांहोयां गुरुको छोडकर्के शिष्यकासन्मानकर्ताहै सोज्वरकर्के अरस्वासकास क्या दम तिसकर्के युक्तहोताहै १५

निषिद्धवस्तुभोगेनमोहयेद्यःपरान्पुमान् परोपदिष्टज्ञानेनभवेदुन्मत्तको पिवा ॥ १३ ऋणंदत्वाधिकांवृद्धिंयोग्रहणातीहमानवः सभूत्वाधनिनां वंशेव्रजेद्देशांतरंततः ॥ १४ ॥ वाणिज्यलाभस्तत्रैवनास्तितस्यनरस्यवै अमुख्येमुख्यकारीयःसज्वरोश्वासकासवान् १५ सर्वांगरोगीपापोन्नद्वेष्टा मृतसमांगभागिति ॥ उमामहेश्वरसंवादे ॥ अकृत्वाखलुयज्ञंतुयस्तुधान्यं प्रवेशयेत् मरुदेशेभवेद्वृक्षःफलपुष्पविवर्जितः १ दिव्यंवर्षसहस्रंतुदुरा त्माकर्षितोभवेत् तस्यांतेमानुषोभूत्वाकदाचित्कल्पपर्ययात् दरिद्रोव्या धितोमूर्खोह्यकुलीनस्तुजायते २ ॥

सर्वांगेति और जो पुरुष अन्नकेसाथ द्वेषकरताहै अर्थात् अन्नकोंवृथाहि सुटदेताहै सो पापीमृतपु रुषकी न्याई है अंगजिसके ऐसाहोताहै अर्थात् अतिकृच्छ्रोअररोगीहोताहै ● अब और प्रकारका कर्म्म विपाककहाहै उमामहेश्वरसंवादमें अकृत्वेति जो पुरुष नवान्नेष्टियज्ञको न करके नवीन अन्नका अपने घरमें प्रवेशकरताहै सो निजेलदेशमें फलपुष्पसें रहित वृक्ष होताहै १ दिव्यमिति और दिव्यहजार वर्ष सोदुरात्माजन्मजन्मविषे कर्षित क्या रोगीहोताहै और तिसकेपीछे कल्प केव्यत्ययहोणेतें मनुष्यहोकर्के दरिद्रीहोताहै फेरव्याधिकर्के युक्तहोताहै फेर मूर्ख होताहै फेर खोटे कुलमें जन्मपाताहै २

यस्त्विति जो पुरुष क्षुद्रभावककें अर्थात् खोटेस्वभावककें प्रीतिवाले पुरुषकेसाथ भेद क्या कपटक रताहै सोजन्मांतरमें संततिकोंनहिप्राप्तहोताहै तिसपापकेकारणसें ३ नशृण्वंतीति जेडेपुरुष गुरुके और वेदके वाक्यकोंनहिंश्रवणाकरतेहैं और संपूर्णमतोंकेमध्यमें नास्तिक मतकों स्वोकारकरतेहैं सो जन्मान्तरमें तिसपापककें मूढभावकोंप्राप्तहोतेहैं ४ प्रार्थेति और जो पुरुष दूधवाली और स बच्छा क्याबच्छेवाली जोगौ तिसकोप्रार्थना करके अर्थात् किसीयजमानसें मांगककें फेरउसकादू धआपही पानकरताहै और किसीकोंनहिदेता अथवाप्रार्थनाककें क्याकि गौकेआगे कुछखाने वालीवस्तुकों रखककेंफेरवच्छाछोडताहै तिसकेपिच्छेउसदूधकोंआपहीपानकरलेताहै अरवच्छेकों

यस्तुक्षुद्रेणभावेन स्नेहवद्भेदकारकः सोनपत्यत्वमाप्नोतितस्यपापस्यकारणात् ३ नशृण्वंतिगुरोर्वाक्यंवेदवाक्यंचयेनराः सर्वेषांचैवनास्तिक्यंतेननते यांतिमूढतां ४ प्रार्थयित्वातुयोगांवैसवत्सांक्षीरसंयुतां आत्मनापिवतेक्षीरंतेनासौयातिचांधतां ५ प्रसवंष्टीवनंवह्नौकृत्वासर्वांगदाहरुक् उदरेशूलसंयुक्तोजायतेमनुजाधमइति ६ मिष्टान्नेनयआत्मानं पोषयंतिनराधमाः वालानांवीक्षमाणानामदत्वाऽदन्तिनिःस्पृहम् ७ नहुतंनतपस्तप्तंनदत्तंकिंचब्राह्मणे आत्मैवपोषितोयैस्तुतत्पापंकथयामिते ८

भीनहिपीनेदेता ऐसाकामकरणेवाला अधाहोताहै ५ प्रेति अग्निमेंमलमूत्रशंकाककें और थूकककेंपुरुष सर्वांगदाहरुक्होताहै अर्थात् सवनांअंगांमें दाहरोगककेंयुक्तहोताहै और उदरविषे शूलरोगककेंयुक्त होताहै औरसवनांपुरुषांविषे अधमहोताहै ६ मिष्टान्नेति और जेडेअधमपुरुषमिष्टान्नककें अपने देहकोंपुष्टकरतेहैं और देखरहेपासमें जो वालक तिनकोंनदेकर दयासेंविना आपही भक्षणकरतेहैं ७ नेति और नहि कीताहै हवनाजिनोंनें और नहिकीताहै तपजिनोंने और नहि दिताहै दानब्राह्मणके ताईं जिनोंनें और जिनोंनें आत्माहि पुष्ट कियाहै तिनां पुरुषांदे पापका कर्म विपाक हेराजन् मैं तेरेताईं कथन करताहु ८

यत्रेति जिस देशमें वर्षा नहिं होवी और जिसदेशविषें वायुकी उत्पत्तिहै तिस देशमें क्षुधा करके पीडित होए होए तिसपापकर्म्मकरकेउत्पन्नहोवेहै ९ यस्त्विति जो ब्राह्मण अपनी जातिकात्याग करके क्षत्रीके धर्म्म कों सेवन करताहै सो ब्राह्मण जातिसें भ्रष्ट होया होया जन्मांतरमेक्षत्रयोनिमें उत्पन्नहोताहै इसमे ऐसाविचारहै कि संपत्तिमें ब्राह्मणने क्षत्रियधर्म्म नहि सेवनकरणा परंतु विपत्तिमे दोषनहि १० वैश्येति जो ब्राह्मण लोभ और मोह करके युक्तहोया होया वैश्यके कर्म्मांकों करताहै सो द्विज जन्मांतरमें वैश्य जातिकों प्राप्तहोताहै ११ स्वधर्म्मेति जो ब्राह्मण अपणे धर्मसें रहित होयाहोया शूद्रके कर्म कों करताहै सो जन्मांतरमें शूद्रताकों प्राप्तहोताहै तैसेहि शुद्धवंशी जो क्षत्रयहै और वैश्यहै सोभी अपणे धर्म्मको छोडकर वर्त्ते तद शूद्रत्वकों

यत्रदेशेत्वनावृष्टिर्यत्रवायुसमुद्भवः तस्मिन्देशेक्षुधार्त्ताश्चजायंतेपापकर्म्मणा ९ यस्तुविप्रत्वमुत्सृज्यक्षत्त्रधर्म्मंनिषेवते ब्राह्मण्यात्सपरिभ्रष्टःक्षत्त्रयोनौप्रजायते १० वैश्यकर्माचयोविप्रोलोभमोहव्यपाश्रयः सद्विजोवैश्यतामेतिशूद्रकर्मकरोतियः ११ स्वधर्म्मप्रच्युतोविप्रः सहिशूद्रत्वमाप्नुयात् क्षत्रियोवामहावाहुर्वैश्योवाधर्म्मचारिणि १२ स्वानिकर्म्माण्यपाकृत्यशूद्रकर्म्मनिषेवते स्वस्थानाच्चपरिभ्रष्टोजायतेवर्णसंकरः १३ ब्राह्मणःक्षत्रियोवैश्यःशूद्रत्वंयातितादृशः शूद्रान्नेनोदरस्थेनम्रियतेगिरिपुत्रिके १४ ब्राह्मणःशूद्रतामेतिनास्तितत्रविचारणेति १५

प्राप्तहोताहै महेश्वरजी कहतेहैं हेधर्मचारिणि हेदेवि १२ इसीको स्पष्टकरके कहतेहैं स्वानीति अपणेयां कर्म्मोंको त्यागकरके शूद्रकेकर्म्मको कर्ताहै सो अपणे स्थानसें भ्रष्ट होया होया क्षत्री वा वैश्य जन्मांतरमें वर्ण संकरहोताहै १३ फेर स्पष्टके अर्थ कहतेहैं ब्राह्मणइति अथवा एह अधाश्लोक अधिकहै ब्राह्मणइति ब्राह्मण और क्षत्री और वैश्य तादृश होवे अर्थात् आपो अपणे कर्मको त्याग करके वर्त्ते सो सो शूद्रताकों प्राप्तहोताहै और महेश्वरजी कहतेहैं हेगिरिपुत्रिके हेपार्वति १४ जेकर उदरस्थ शूद्रके अन्न करके ब्राह्मण मरजावे तो जन्मांतरमें शूद्रताकों प्राप्त होताहै इसमें विचार नहिं करणा १५

अवश्रौरप्रकारकाकर्मविपाककिहाहै मार्कण्डेयपुराणमें १ ब्राह्मणइति जो ब्राह्मण. अथवा क्षत्रिय अथवा वैश्य अपणे गोत्रकी कन्याकापाणिग्रहणकरे अर्थात् उसकों विवाहलए अथवा अन्यजा क्या जारसें उत्पन्नहोई २ जों कन्या उसकों विवाहलए तो ऐसाविवाह करणेसें वो जातिसें पतित होतेहैं १ यश्चेति श्रौर जो पुरुष हीनजातिकी कन्याका पाणिग्रहण करताहै कैसा वोपाणिग्रहणहै जिसकरके वर्ण क्या जातिका संयोग होवाहै अर्थात् ऐसी कन्या विवाहणेवाला जो वर्णकन्याकाहै उसीवर्णकों प्राप्तहोताहै २ अत्रेति श्रौर इस संसारमें निषिद्धवस्तुका जो आचरणकरणा क्या सेवना जैसें मांसभक्षणादिकर्म श्रौर विहिताऽकरण

मार्कण्डेयपुराणे ब्राह्मणः क्षत्रियोवैश्यः स्ववर्णेपाणिसंग्रहं कृत्वाचह्यन्यजापाणेः पततिनृपसंग्रहात् १ अन्यजा जारजा. ॥ यश्चयस्यास्तुहीनायाःकुरुतेपाणिसंग्रहम् कृत्वाचवर्णसंयोगंसोऽपितद्वर्णभाग्भवेत् २ ※ अत्रनिषिद्धाचरणविहिताकरणेंद्रियाऽनिग्रहरूपं हेतुत्रयं पापस्योक्तंतत्र निषिद्धाचरणविपाकविशेषोमानवे धान्यंहृत्वाभवत्याखुः कांस्यंहंसोजलंप्लवः मधुदंशःपयःकाकोरसंश्वानकुलोघृतम् १ प्लवःजलपक्षिविशेषः दंशोवनमक्षिका रसं इक्ष्वादि तच्च गुडव्यतिरिक्तंबोध्यम् कांस्यंहृत्वा हंसःमधुहृत्वादंश एवंसर्वत्रसंबंधः

क्या शास्त्रविहितकर्म्म संध्या श्रौर यज्ञादि तिसका त्यागकरणा श्रौर इंद्रियोंकानहिरोकणा एहतीनही पापके कारणहैं तिनके मध्यमें निषिद्धाचरणसें उत्पन्नहोया जो पाप तिसकाकर्मविपाक विशेषकर्केकिहाहै मनुकेग्रंथमें ※ धान्यमिति धान्यकों हरके अर्थात् चुराके पुरुष आखु क्या चूआहोताहै श्रौर कांस्यकों चुराके हंसहोताहै श्रौर जलनूं चुराके प्लवहोताहै क्याजलका पक्षीहोताहै श्रौर मखीरकोंचुराकरके दंशहोताहै अर्थात् मच्छरहोताहै श्रौर जलकों हरके काक होताहै श्रौर रस क्या गुडकोछोडकरके गंन्योंकों श्रौर सोंफादिककों चुरा करके श्वान क्या कुत्ताहोताहै श्रौर घृतकों हरके नकुलहोताहै अर्थात् नौलहोताहै १

मांसमिति मांसकोंचुराकर्के पुरुष गृध्र क्या इल्ल होताहै और वपा क्या मिज्जातिसकोंचुराकर्के मद्गुहोताहै अर्थात् जलचरपक्षीवगुलेकाभेदहोताहै और तेलकोंचुराकर्के तैलपायकनामकर्के पक्षीहोताहै और लवणकों चुराकर्के चींगीवाक् क्या विडानाम कर्कपक्षी होताहै और दहिकों चुराकर्के वगुलाहोताहै ॥ २ ॥ कौशेयमिति और पुरुष रेशमीवस्त्र चुराकर्के तित्तिरहोताहै और क्षौमकों क्या अलसीवस्त्रकों चुराकर्के डड्डुहोताहै और कर्पासकावस्त्र चुराकर्के कूंज नामा पक्षीहोताहै और अग्निकों चुराकर्के गोधा क्या घोनामकर्के तिर्यक्जीवहोताहै और गुड

मांसंगृध्रोवपांमद्गुःतैलंतैलपकःखगः चींगीवाकस्तुलवणंवलाकःशकुनिर्द धि २ वपांहृत्वामद्गुनामाजलचरोभवति तैलंहृत्वातैलपावकाख्यः पक्षी लवणंहृत्वा उच्चैःस्वरः कीटः। अन्यत्सुगमम् ॥ कौशेयंतित्तिरिर्हृत्वाक्षौ मंहृत्वातुदर्दुरः कर्पासतांतवंक्रौंचोगोधाग्निंवाग्गुदोगुडम् ३ कीटकोशनि र्मितंवस्त्रं हृत्वातित्तिरिनामापक्षीस्यात् क्षौमंहृत्वामंडूकःअग्निंहृत्वागोधाभव ति गुडंहृत्वा वाग्गुदनामाशकुनिर्भवति॥ छुच्छुंदरिः शुभान्गन्धान्पत्रशाकं तुवर्हिणः श्वावित्हृत्वातुसिद्धान्नमकृतान्नंतुशल्यकः ४ सुगंधिद्रव्याणि हृत्वाछुच्छुंदरिर्भवति वास्तुकादिपत्रशाकंहृत्वा वार्हिणःसिद्धान्नमोदना दिकं हृत्वा शशकःअकृतान्नंव्रीहियवादिकंहृत्वाशल्यकोभवति

चुराकर्के वाग्गुदक्या खड्डूकनामा पक्षीहोताहै ३ छुच्छुंदरिरिति सुगंधिवाले द्रव्यकोंचुराकर्केछुछुं दरिक्या घीसनामा जीवहोताहै और पत्रशाक क्या बाथुसेंआदलेकर पत्रोंवालाशाकतिसके चुरा णे कर्के मोरहोताहै और सिद्धान्नक्या पकाया हुयाअन्न भत्तसें आदलेकर तिसके चुराणे वाला श्वावित् होताहै अर्थात् सिहाहोताहै औरअकृतान्न क्या जो नहि सिद्धकीताहुआ क्या धान्यय वादिक तिसके चुराणे वाला शल्यकहोताहै अर्थात व्रकलें वाला सिहा होताहै ४ इसीको मूलमें स्पष्टकर्के किहाहै सुगंधीति॥

वक इति और पुरुष अग्निकों चुराकरके वक क्या वगुला होताहै और पीछे जो किहाहै कि अग्निकों चुराके गोधा होताहै इसवास्ते विकल्प सिद्धहुया अर्थात् अग्निकेचुराणेंकर्के यह दोनों योनियां पुरुषकोंहोतीयांहैं इसकारणतें पुनरुक्ति नहिजानणी और उपस्कर क्या गृहकेउपयोगि जो वहारिआदक हैं.तिनकं चुराणे वाला गृहकारी कीटहोताहै अर्थात् भडारण होताहै और रक्तवस्त्र क्या कुसुंभेकेसाथ रंगेहोए तिनकों चुरा कर्के जीवजीवक होताहै अर्थात् चुकोरनाम कर्के पक्षी होताहै ५ वृक इति और पुरुष मृगनुं क्या हरणादिकांनुं और हाथीनुं चुराकर्के वृक क्या भगहाड होताहै और घोडेनुंचुराके चित्रा होताहै और फलमूलनुं चुराकर्के मर्कट क्या

वकोभवतिहत्वाग्निंगृहकारीह्युपस्करं रक्तानिहत्वावासांसिजायतेजीवजीवकः ५ अग्निंहत्वावकाख्यःपक्षीजायते गृहोपयोगि मार्जन्यादिकंहत्वागृहकारीकीटः ⊛ कुसुंभादिरक्तवस्त्राणि हत्वाचकोराख्यःपक्षीजायते। वृकोमृगेभव्याघ्रोश्वंफलमूलंतुमर्कटः स्त्रीमृक्षःस्तोककोवारिपानान्युष्ट्रःपशूनजः ६ मृगंवाहस्तिनंहत्वावृकाख्योहिंस्रपशुर्भवति अश्वादिकंहत्वा व्याघ्रोभवति फलमूलंहत्वामर्कटः स्त्रींहत्वाऋक्षः स्तोककःचातकाख्यःपक्षी अजःछागः यद्वातद्वापरद्रव्यमपहृत्यवलान्नरः अवश्यंयातितिर्यक्त्वंजग्ध्वाचैवाहुतंहविः ७ नरोवलात् यत्किंच परद्रव्यादिकमपहृत्य अग्नौपुरोडाशादिकंहविरहुतंभुक्त्वाचतिर्यक्त्वंयाति

वानर होताहै और स्त्रीकों चुराकर्के ऋक्ष क्यां ऋच्छहोताहै और जलकों चुराकर्के स्तोककक्या ववीया होताहै और पानानि क्या सर्वतादिक तिनकों चुराकर्के उष्ट्र क्या ऊट होताहै और पशुयोंकों चुराकर्के वकरा होताहै ६ यद्वेति और पुरुष जिस किसीकाधन चुराकर्के तिर्यग् योनि जो पशु पक्षीसें आदलेकरहैं तिनांकों प्राप्तकोंहोताहै और पुरोडाशादिक जो है हविः अग्निभाग तिसकों चुराकर्के भी तिर्यग् योनिको प्राप्त होताहै ७ इसमें एह अभि प्रायहै कि प्रथम अग्नि विषे पाकर्के पीछे शेष भोजन करणें योग्यंथा ऐसा तिसने नहि किया

स्त्रियइति और स्त्रियांभी पूर्वकहा जो प्रकार तिसी करके धान्यादिकांनूं चुराणे वालीयां धान्यादिकांनूं चुराणे वाले जो पुरुष जेडे चुएसें आदलेकर कहेहैं तिनां जीवादीयां स्त्रीयां होतीयांहैं जैसें धान्यकों चुराकर्के पुरुष चूआ होताहै इसी प्रकार धान्यकों चुराकर्के स्त्री चुई होतीहै इसीप्रकार आगेभी जाणलेणा ॥ एवमिति निषिद्धाचरणक्या मांसभक्षणादि तिनका कर्मविपाककहकर्के अब विहिताकरणक्या शास्त्रविहितकर्म्मोकात्याग तिस पापका कर्मविपाककहतेहैं ८ स्वेभ्यइति और आपदकालसें विना अपणे २ धर्मसें वर्ण पतित होजाण तां ऐसे पापी संसारानूं क्या जन्मानूं प्राप्त होकरके शत्रूयांके दासहोतेहैं अर्थात् शत्रूयांकी सेवाकरणे

स्त्रियोप्येतेनकल्पेनहृत्वादोषमवाप्नुयुः एतेषामेवजंतूनांभार्यात्वमुपयांति ताः ८ स्त्रियोपिएतेनपूर्वोक्तप्रकारेण पूर्वोक्तधान्यादिकमपहृत्य पूर्वोक्तानां आखुवादिजंतूनांभार्यात्वंप्राप्नुवंति ताःस्त्रियः ॥ एवं निषिद्धाचरणफलान्यभिधायाऽधुनाविहिताकरणफलविपाकमाह । स्वेभ्यःस्वेभ्यस्तुकर्मभ्यश्च्युता वर्णाविनापदम् पापास्संसृत्यसंसारान्दासतांयांतिशत्रुषु ९ ब्राह्मणादयो वर्णाआपदंविना स्वस्वपंचयज्ञादिकर्माणित्यक्त्वापापिनः कुत्सितयोनीःसंप्राप्यपुनर्जन्मांतरेशत्रुषुदासतांयांति। वांताश्युल्कामुखःप्रेतोविप्रोधर्मात्स्वकाच्च्युतः अमेध्यकुणपाशीचक्षत्रियःकटपूतनः १० विप्रःस्वधर्मात्च्युतः छर्दितभुक्ज्वालामुखः प्रेतविशेषोजायते एवंक्षत्रियःकटपूतनाख्यःप्रेतः ॥

वाले होतेहैं ९ ब्राह्मणादय इति और ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य और शूद्र इह चारोवर्ण- आपणेयां आपणेयां पंचयज्ञांनूं आपदसे विनाहि त्यागदेणा तां सो पापी खोटीयांयोनीयांनूंप्राप्त होकरके जन्मान्तरमें शत्रुयांदी सेवाकरणेवाले होतेहैं ॥ वांतेति और जो ब्राह्मण अपणे धर्मसें पतित होताहै सोभी वांताशी प्रेत होताहै अर्थात् उद्वमनके भक्षण करणे वाला प्रेतहोताहै और उल्कामुखहोताहै अर्थात् अग्निकी तरह उसका मुख होताहै और इसीतरह जो क्षत्रिय अपणे धर्मसें पतित होताहै सो जन्मांतरमें कटपूतन नाम करके प्रेतहोताहै अर्थात् दुर्गंधि विशिष्ट प्रेतहोताहै १०

अब जो मार्कण्डेयपुराणविषें विशेषकिहाहै सो कहतेहैं न्यासेति जो पुरुष न्यास क्या अमानत तिसके चुराणे वाला नरकमें प्राप्तहोताहै फेर नरककोंभोगकर क्रिमि क्या कीटयोनिकों प्राप्तहोताहै और धान्यक्या व्रीह्यादि और यव और तिल और माष और कुलत्थ और सरषां औरचणे १ सस्येति और सस्यक्या खेतीयोंमें होणेवाले कें तरहांके अन्न तिनां सबनांकों चुरा करके बडा जंतु क्या जीव चैतन्यतासें रहित अर्थात् थोडी चैतन्यता वाला और बडाहै मुखजिसका और वज्रकी न्याई कठोर चूया होताहै २ भोजनमिति और जो पुरुष भोजनकों चुराताहै सो माक्षिकाहोताहै और दूधकोंचुराकरके नरकमें प्राप्तहोताहै फेर नरकभोगकरके बिल्लाहोताहै ३ * ति

अथमार्कण्डेयपुराणेविशेषः न्यासापहर्त्तानरकाद्विमुक्तोजायतेक्रिमिः धान्यंयवांस्तिलान्माषान्कुलत्थान्सर्षपांश्चणान् १ सस्यान्यन्यानिवाहृत्वा महाजंतुरचेतनः संजायतेमहावक्रोमूषकोवज्रसन्निभः २ भोजनंचोरयित्वातुमाक्षिकाजायतेनरः हृत्वादुग्धंतुमार्जारोजायतेनरकाच्च्युतः ३ तिलपिण्याकसंमिश्रमन्नंहृत्वातुमूषकः घृतंहृत्वातुनकुलः काकोमद्गुरजामिषं ४ श्येनोमार्गामिषंहृत्वाचीरीलवणहारकः चोरयित्वापयश्चापिवलाकासंप्रजायते ५

लेति और तिलोंकीपिण्याक क्या खलकरकेंयुक्त जो अन्न तिसनूंचुराके पुरुष चूआ होताहै और घृतकों चुराकरकें नकुल होताहै और पिछे' जोकिहाहैं कि घृतके चुराणे वाला नकुलहोताहै सोमनुजीका मतहै और इसजगामें मार्कण्डेयजीका मतहै इसवास्ते पुनरुक्ति नहि जाननी और मद्गुरक्या जलचरपक्षी तिसकेकच्चे मांसकों चुराकरके पुरुष काक होताहै ४ श्येनइति और मृगक्या हरणादिक तिसकाकच्चामांस चुराणे वाला बाजहोताहै और लवणके चुराणे वाला चीरीहोताहै अर्थात् बिंडानामक एक जीवहोताहै और दूधकोंचुराकरके बलाकाहोताहै बलाका क्या बगुलेदाभेद एकपक्षी होताहै ५

यस्त्विति और जो पुरुष तैलकों चुराताहै सो तैलपायीनामकर्के पक्षी होताहै और मखीरकों चुराणेवाला दंश क्या मच्छर होताहै और घृतकों चुराकर्के पिपीलिका क्या कीडी होताहै इस जगा स्त्री लिंग विवक्षित नहि क्योंकि पुरुषका कर्म्म विपाकहै ६ घृतमिति घृतकर्के इसजगामें वहुत सुगंधिकर्के युक्त और वहुत स्नेहकर्के युक्त द्रव्य लेणा क्योंकि गव्यघृतपीछे कह चुकेहैं इसकारणतें • चोरयित्वेति ० और पुरुष निष्पाव क्या सेण और मटर तिनकों चुराकर्के गलगंडुक क्या गिछडवाला होताहै और आसनकों चुराकर्के तित्तिर होताहै ७ अपइति और पुरुष जलकों चुराकर्के काक होताहै और कांस्यकों चुराकर्के हारीत नामक पक्षीहोताहै और पीछेकहचुकेहैं कि कांस्यकों चुराणेवाला हंसहोताहै सो मनुजीकामत

यस्तुचोरयतेतैलंतैलपायीसजायते मधुहत्वानरोदंशोघृतंहत्वापिपीलिका ६ घृतमत्रगंधवहुलस्नेहपरम् गव्यादिघृतस्यपूर्वमुक्तत्वात् ॥ चोरयित्वातु निष्पावान्जायतेगलगंडुकः आसनंचोरयित्वातुतित्तिरित्वमवाप्नुयात् ७ अपोहत्वातुपापात्मावायसःसंप्रजायते हृतेकांस्येचहारीतःकपोतोरौप्यजे हृते ८ जीवजीवकतांयाति रक्तवस्त्रापहन्नरः छुच्छुंदरिःशुभान्गंधान् सस्यंहत्वाशशोभवेत् ९ पंढःपालालहारीणःकाष्ठहृद्घुणकीटकः पुष्पापहृ दरिद्रश्चपंगुर्यानापहारकः १०

है • इसजगामें मार्कंडेयजीकामतहै इसवास्तें पुनरुक्ति नहि जाणणी और चांदीके पात्र चुराणेमें कपोत क्या कवूतरहोताहै ८ जीवेति और रक्तवस्त्र क्या कुसुंभे कर्के रंगे होए वस्त्रके चुराणे वाला पुरुष जीवजीवकताकों प्राप्तहोताहै अर्थात् चकोरहोताहै इसजगाभी विरोध पूर्वोक्त रीतिसें दूरहोताहै • और सुंदर गंधिवाले द्रव्यके चुराणेवाला छुछुंदरि क्या घीसहोता है और सस्यक्या पकीहोई खेतीतिसकेचुराणेवाला शशहोताहै अर्थात् सेहाहोताहै ९ पंढइति और पालाल क्या परालो तिसके चुराणे वाला षंढहोताहै• अर्थात् नपुंसक होताहै और काष्ठके चुराणे वाला घुणनामकर्के काष्टका कीडाहोताहै • और पुष्पोंके चुराणेवाला दरिद्री होताहै और यान क्या पालकी तिसके चुराणेवाला पंगुहोताहै अर्थात् लूलाहोताहै १०

शाकेति और शाक चुराणेवाला हारीतनामकर्के पक्षीहोताहै और जलके चुराणेवाला ववीया पक्षी होताहै• और भू क्या पृथिवी तिसकोंचुराणेवाला रौरवसें आदलेकर जो नरक वडेभया नक तिनानूं प्राप्तहोताहै ११ तृणेति फेर तृणयोनिकोप्राप्तहोताहै फेर गुल्महोताहै गुल्म उसकों कहतेहैं कि जो शाखा और वेलसें रहित पृथिवीसें उत्पन्नहुया २ होवे फेर लताहोताहै लता क्या पुष्पों कर्के युक्त और फलसे रहित जैसें खनटालुआदिक और फेर वल्ली होताहै वल्ली उसकों कहतेहैं कि जो फल पुष्पों कर्के युक्त होतीहै फेर त्वक्सारहोताहै अर्थात् वंज होताहै• फेर सामान्य वृक्ष होताहै १२ अव शंख और लिखित जी और प्रकारकाकर्म विपाककहतेहैं- वेश्मापहारीति कि दूसरेदें घरकेहरणेवाला पुरुष अद्रि होताहै - अर्थात् पर्वतोंमे रहणेवाला इक स्थूल जीव होताहै- और जलकें चुराणेवाला शिशुमारनामकर्के एक जलचर जीवहोताहै

शाकहर्त्ताचहारीतस्तोयहर्त्ताचचातकः भूहर्त्तानरकान्गत्वारौरवादीन्सुदारुणान् ११ तृणगुल्मलतावल्लीत्वक्सारतरुतांगतइति १२ शंख लिखितौ वेश्मापहारीअद्रिः०परजलापहारी शिशुमारः ०सस्यापहारीकपोतः- क्रव्यापहारीवायसः - ताम्रापहारीवल्गुलः • अपूपहारीं प्रेतः - शास्त्रापहारीजडः-छत्रापहारी कारंडः. गंधापहारीपतंगः-ध्वजापहारीकृकलासः शाकापहारीपशुः ॥ छागविडालाखूनामन्यतमइत्यर्थः ॥ शय्यापहार्य्यशयनः- पुष्पापहारीदुर्गंधी•

और सस्यक्या पक्कीहोई खेतीके चुराणेवाला कवूतर होताहै • और मांसकें चुराणेवाला काक होताहै और ताम्रके चुराणेवाला वल्गुलक्या तैल पायी नामकर्के पक्षी होताहै • और अपूप क्या पूडे तिनके चुराणेवाला प्रेत होताहै • और शास्त्रकें चुराणेवाला जड क्या मूर्ख होताहै • और छत्रक्या छतडी तिसके चुराणेवाला कारंड क्या वगुलेकाभेद होताहै • और सुगंधिविशिष्ट द्रव्यके चुराणेवाला पतंग होताहै और ध्वजाके चुराणेवाला किरला होताहै और शाकदे चुराणे वाला पशुहोताहै पशुकर्के इसजगामे वक्करा और विल्ला और चूया इनतीन्मेंकायहणहै अर्थात् इनांविचो एकहोताहै और शय्याकेचुराणे वाला अशयनहोताहै अर्थात् निद्रासेरहित होताहै • और पुष्पोंके चुराणेवाला दुर्गंधिविशिष्ट जीवहोताहै

फलेति और फलके चुराणे वाला अफलीहोताहै अर्थात् संततिसें रहित होताहै और दीपकके चुराणे वाला कौशिकहोताहै अर्थात् उल्लू होताहै • और भूमीके चुराणे वाला नकुल होताहै• यद्वेति और दूसरेका जो कुछ थोडा अथवा वहुत चुराकर्के उसी उसी योनिको प्राप्त होताहै भोगानुरूपते अर्थात् जो जो उनकाभोगहै उसी २ भोगकी सादृश्यतासें १ और जो वैश्य अपणे धर्मसें पतित होताहै सो पाकनूं भक्षण करणे वाला मैत्राक्षज्योतिक नामकर्के प्रेतहोताहै और जो शूद्र अपणे धर्म्मसें पतित होताहै सो चैलाशक नामकर्के प्रेतहोताहै २ और इसीका अर्थ मूलमें स्पष्टकर्के किहाहै वैश्य इत्यादि ● इसर्के आगे विहिता

फलापहार्य्यफली-दीपापहारीकौशिकः-भूम्यपहारीनकुलःयद्वातद्वापिपारक्यंस्वल्पंवायदिवावहु हृत्वावैयोनिमाप्नोतितत्तद्भोगानुरूपतइति १ मैत्राक्षज्योतिकःप्रेतोवैश्योभवतिपूयभुक् ० चैलाशकश्चभवतिशूद्रोधर्मात्स्वकाच्च्युतः २. वैश्यःस्वकर्मभ्रष्टश्चेत्ताहैंमैत्राक्षज्योतिकनामापूयभक्षःप्रेतोभवतिशूद्रश्चैलाशकःप्रेतोभवति पृषोदरादित्वाज्ज्योतिषष्पकारलोपः ● अथेंद्रियानिग्रहहेतुकःकर्म्मविपाकः। यथायथानिषेवंतेविषयान्विषयात्मिकाः तथातथाऽकुशलतातेषांतेषूपजायते १ तेषुविषयेषु अकुशलता उपजायतेऽन्यत्सुगमम् ॥ तेऽभ्यासात्कर्मणांतेपांपापानामल्पबुद्धयः संप्राप्नुवंतिदुःखानितासुतास्विहयोनिषु २ तेऽल्पवुद्धयःपापानांकर्मणामभ्यासात् तास्विति तामिस्रादिनारकीयासु दुःखानुभवं संप्राप्नुवंति

करण और निषिद्धाचरण जो दोनो पाप तिनको कहकर अव जो इंद्रियोंके नारोकणे कर्के जो पाप उत्पन्न होताहै तिसका कर्मविपाक कहवेहैं • यथेति विषयोंमें आसक्त हैं आत्मा जिनोंका ऐसे जो पुरुष अतिशयकर्के विषयांकोसेवतेहैं तिनां कों तिनां विषयां विखों अकुशलता क्या दुर्बुद्धि प्राप्तहोतीहै अर्थात् कल्याणनूं नाहिं प्राप्तहोतेहैं १ तइति और सोई पुरुष अल्पवुद्धियोंवाले तिनों पापकर्म्मोंके अभ्यासकरणेसें अर्थात् वारंवार करणेसें तिनांतिनां नारकीययोनियां विषे प्राप्तहोएहोए दुःखानुभवनूं क्या दुःखके साक्षात्कारनूं प्राप्तहोतेहैं ॥ २ ॥

तामिस्रादिष्विति और वो जोपूर्वोक्तपुरुषहैं सोतामिस्रादिनरकोंविषे निवर्त्तननूं प्राप्तहोतेहैं अर्थात् अतिशयकरके स्थितिनूं प्राप्तहोतेहैं और असिपत्रवनसें आदलेकर जो नरक तिनकेविषेभी वन्धन पूर्वकछेदनको प्राप्तहोतेहैं ३ विविधाइति और वोईपुरुष नानाप्रकारकीयां जो पीढा तिनको प्राप्त होतेहैं और काक और उल्लूयों करके भक्षणनूं प्राप्तहोतेहैं कुत्सित जो जल और वालुका क्या रेत तिनसंबंधि जो तापक्या दुःखतिनांनूं प्राप्तहोतेहैं और दारुणजो कुंभीपाकादिनरकतिनानूं प्राप्त होतेहैं ४ संभवांश्चेति और सोई पुरुष नित्यप्रतिहैं वहुतदुःखजिनांविषे ऐसीयां जो तिर्यग्योनियां तिनकेविषे जो नानाप्रकारके जन्म तिनांको प्राप्तहोतेहैं और शीतकरके और धुप्पकरके जो

तामिस्रादिषुचोग्रेपुनरकेषुनिवर्त्तनम् असिपत्रवनादौचवंधनच्छेदनानिच ३ तामिस्रादिषु असिपत्रवनादौच नितरांस्थितिं वंधनच्छेदनादीनिच प्राप्नुवंतीत्यर्थः विविधाश्चैवसंपीडाःकाकोलूकैश्चभक्षणं कर्दभवालुकातापान् कुंभीपाकांश्चदारुणान् ४ काकाद्यैःभक्षणंकुत्सितमंभोवालुकाचतत्संवंधि तापांश्च प्राप्नुवंति ॥ संभवांश्चवियोनीषुदुःखप्रायासुनित्यशः शीतातपाभिघातांश्च विविधानाभियांतिच ५ नित्यंदुःखवहुलासुतिर्यगादिजातिषु नानाविधान्संभवान् जन्मानि अभियांतिप्राप्नुवंति ॥ असकृद्गर्भवासेषु वासंजन्मचदारुणं वन्धनानिचकष्टानि परप्रेष्यत्वमेवच ६ गर्भस्थानेपुनः पुनर्वासं जन्म दारुणं चसंप्राप्नुवंतीत्यर्थः ॥ वंधुप्रियवियोगांश्च संवासंचैवदुर्जनैः द्रव्यार्जनंचनाशंच मित्रामित्रस्यचार्जनम् ७ ॥

नानाप्रकारके अभिघात क्याआघातिनांनूं प्राप्तहोतेहैं ५ असकृदिति और वारंवार गर्भ विषे निवास करतेहैं और दारुण क्या भयानकजन्मको प्राप्तहोतेहैं और वन्धनको प्राप्तहोतेहैं और परप्रेष्यताको प्राप्तहोतेहैं अर्थात् दूसरेके दूतहोतेहैं ६ बंध्विति फेर अपणे संबंधि उौर जो प्यारे तिनके वियोगको प्राप्तहोतेहैं फेर खोटे पुरुषोंके साथ निवासनुं प्राप्तहोतेहैं फेर जो द्रव्य जोडयाहै तिसीका नाश होताहै फेर तैसेंहि मित्र उौर अमित्रका अर्जन होताहै अर्थात् जो मित्रहै सोभी अमित्र होजाताहै ७

जरामिति फेर नहिहै हटानेमे उपाय जिसका ऐसी जराकों और व्याधियों करके पीडाकों प्राप्त होताहै फेर अनेक प्रकारके क्लेशांनु प्राप्तहोताहै फेर दुर्निवार जो मृत्यु उसकों प्राप्तहोताहै ८ अब और प्रकारका कर्मोका फलकहतेहैं जो किहाहै ब्रह्मांडपुराणविषे ॥ धर्मेति जो पुरुष धर्म शास्त्रकों नहि जानता और लोकोंको प्रायश्चित्त दसताहै सो राजयक्ष्मरोग करके और वडी पीडाकरके युक्त होताहै १ और किहाहै चतुर्वर्गचिंतामणीविषे अर्थात् हेमाद्रिकृतग्रंथविषे शूलेनेति जो पुरुष शूल करके पुरुषांको मारताहै सो शूलरोग वाला होताहै और जो गोगामीहै क्या

जरांचैवाप्रतीकारांव्याधिभिश्चोपपीडनम् क्लेशांश्चविविधांस्तांस्तान्मृत्युमेवचदुर्जयम् ८ अप्रतिकारांअविद्यमानतद्दूरीकरणप्रकारांप्राप्नुवंति ॥ दुर्निवारंमृत्युंच ॥ ॥ अथान्यप्रकारेणकर्मविपाकउच्यते ब्रह्माण्डपुराणे ॥ धर्मशास्त्राण्यविज्ञायप्रायश्चित्तंददातियः राजयक्ष्माभवेत्तस्यरोगपीडातिदारुणा ॥ १ ॥ चतुर्वर्गचिंतामणौ ॥ शूलेनशूलीभवति मनुष्याणांचहिंसकः गोगामीःकटिशूलीस्यात् जन्मजन्मनिमानवः १ ॥ वृद्धशातातपः ॥ शूद्रस्यैवतुभुक्त्वान्नं अव्रतस्यद्विजस्यच शूलव्याधिर्भवेन्नित्यमजीर्णान्नेनपीडितः १ कर्मविपाकसंग्रहे ॥ विश्वस्तविषदाताच प्लीहवान्जायतेनरः चशब्दाच्छूलीच ॥

गौकेसाथ गमनकरताहै सो जन्मजन्मविषे कटिशूल कर्के युक्तहोताहै १ और वृद्धशातातप जोभी कहतेहैं शूद्रस्येति जो पुरुष शूद्रके अन्नकोंभक्षण करताहै व्रतसें क्या यज्ञोपवीतसें रहित जो द्विज उसके अन्नकोंभक्षण करताहै सो शूल व्याधि वाला होताहै और अजीर्ण अन्नकरके पीडित होताहै अर्थात् उसकों भक्षण कीता हुया अन्न पचता नहिहै १ और किहाहै कर्मविपाक संग्रह विषे ॥ विश्वस्तेति जो पुरुष विश्वास देकर विषदेताहै सो लिप्फ और शूलरोग वाला होताहै और चकारसें क्या जानतेहैं कि शूल रोगवालाभी होताहै ॥

अब और प्रकारका कर्म विपाक कहतेहैं जो किहाहै कर्म विपाक संग्रहमें. श्रुतेति जो ब्राह्मण वेदाध्ययन कर्के युक्तहै और निर्धनहै और याचनाकररिहाहै ऐसे ब्राह्मणनू दानके वास्ते बुलाकर्के जो पुरुष फेर दान नहि देताहै १ सइति सो उदरविषें शूलरोग कर्के युक्त होताहै और तैसेंही उन्मादी क्या भूतावेशवालाभीहोताहै २ मैथुनमिति और जो पुरुष माता पिताके मैथुनकों श्रवण करताहै सो कानोंमें शूल रोगकर्केयुक्तहोताहै और वधिर क्या बोला होताहै और कपाल विषें किंचित् असह्यशब्दवान् होताहै अर्थात् थोडाशब्दसुनसेंभी उसकेकपालमें वडीपीडा होतीहै ३ नग्नामिति और सूर्यके अस्तकालमे और उदयकालमें नग्नस्त्रीकों देखकर्के पुरुष नेत्र शूली-होताहै अर्थात् उसके नेत्र शूलरोगकर्के युक्त होताहै और दृष्टिकर्के देखणेंनूंभी समर्थ नहि

कर्म्मविपाकसंग्रहे॥ श्रुताध्ययनसंपन्नंयाचितारमकिंचनम् ब्राह्मणंदातुमाहूयदानार्थेनददातियः १ संभवेज्जठरेशूलीतथोन्मादीचकर्हिचित् २ मैथुनंशृणुयात्पित्रोःकर्णशूलीभवेन्नरः स्याच्चैववधिरःकिंचित्कपालेऽसह्यशब्दवान् ३ नग्नांपरस्त्रियंदृष्ट्वासूर्य्यस्यास्तमयोदये नेत्रशूलीभवेत्सोपिनेक्षितुंक्षमतेदृशा ४ कर्म०॥ मंगलेषुचकार्येषुसततंकोपयान्नरः उष्णज्वराभिभूतःस्यात् दारहीनश्चजायते १ उमामहेश्वरसंवादे॥ कृतघ्नोजायतेमर्त्यः कफवान्श्वासकासवान् उष्णज्वरीचनित्यंहिपित्तरोगसमन्वितः १

होताहै ४ अब और प्रकारकाकर्म विपाक कहतेहैं ॥ मंगलेष्विति जो पुरुष मंगलकार्यों विषें क्या विवाहादि विषें निरंतर विघ्न करताहै सो उष्ण रोगकर्के अर्थात् गरमीके रोगकर्के युक्त होताहै और स्त्रीसें हीन होताहै १ अब और प्रकारकाकर्म विपाक कहतेहैं जो किहाहै उमामहेश्वरके संवादमें ॥ कृतघ्नइति जो कृतघ्न पुरुषहै अर्थात् दूसरेके उपकारकों नहि जानताहै सो कफ और दम और गरमीका ज्वर और पित्तरोग इनां कर्के नित्यहि युक्त होताहै इसमें एह विचार. है कि उपकार करणे वाले कों जो जानताहै तिसका हृदय शीतलहै निष्कपटहोणे कर्के और जो ऐसा नहिहै उसको हृदयमें तापहै अथवा उपकार वालेका हृदय उसनें तपायाहै इस कर्के पित्तज्वरहोणा उसको उचितहै १

अब और प्रकारकाकर्मविपाककहतेहैं जो किहाहै कर्म संग्रहाविषें. कुरुक्षेत्रेति. जो पुरुष कुरुक्षेत्रदेशविषें और ग्रहणकालविषें अर्थात् ग्रहणकेलगेहुये महादानलेताहै अर्थात् हाथी और घोडे और सुवर्णइत्यादिलेताहै अथवा निषिद्धवस्तुलेताहै १ अपात्रेति जो आप दानकापात्रनाहिहै और निषिद्धदातासें दानलेताहै सो पापिश्वासकासरोगकर्के और वक्षिविषेंस्थित जो कीडे उनोंकर्के पीडाकों प्राप्तहोताहै फेरकंडूसेंआदलेकर्के जो रोग उनोंकर्के पीडाकों प्राप्तहोताहै.२ अवइसीकोंफेरकहतेहैं जो किहाहै पद्मपुराणविषें ॥ श्वासेति जो अपराधसेंविना किसीको कैदकरणेसें पुरुष श्वासकासरोगवालाहोताहै. और इसीकाअर्थस्पष्टकरके मूलमेंलिखाहै ॥ बंद्यामिति अब और कर्म विपाककहतेहैं अद्राविति. पर्वतविषे और पुण्यजगाविषें और रस्तेविषे और,

कर्म-॥ कुरुक्षेत्रादिदेशेषुकालेषुग्रहणादिषु महादानानिगृह्णीयान्निषिद्धान्यथवास्वयम् १ अपात्रभूतोदातृभ्योनिषिद्धेभ्यश्चमानवः सपापःश्वासकासैश्चकुक्षिस्थक्रिमिभिस्तथा २ पीड्यतेबहुशोरोगैःकंडूस्याद्यैश्चपीडितः

पद्मपुराणे-॥ श्वासकासयुतोमर्त्योवंदिग्रहणतोभवेत्. वंद्यांकारायांकस्यचिदपराधहीनस्यपातनात्भवेदित्यर्थः ॥ कर्म-॥ अद्रौमार्गेनदीतीरे छायायां पुलिनेनरः मूत्रपुरीषंवल्मीकेयःप्रमुंचेज्जलेपिवा १ श्वयथुव्याधिमाप्नोतीत्येवमाहसदाशिवः ॥ छायायामितिवृक्षदेवालयच्छायायां मूत्रपुरीषग्रहणंष्ठीवनादेरुपलक्षणम्- अद्र्यादिग्रहणंच पुण्यस्थानोपलक्षणार्थम् ॥ तत्रवृद्ध बोधायनः ॥ विघ्नकर्त्ताचभोक्तृणांशोफीभवतिमानवः

नदीके तीरविषें और वृक्ष और देवताके मंदिरकीछायाविषें और तडागकेकनारे.और वरमीविषें. और जलविषें जो पुरुष मूत्र और विष्ठाकरताहै सो श्वयथुव्याधिकोंप्राप्तहोताहै अर्थात् उसकोंसोजा रोगहोताहै एहशिवजीकहतेहैं और इसीकाअर्थस्पष्टकर्के मूलमे लिखाहै. छायायामिति,॥ १ और कर्मोंकाफल वृद्ध बोधायनजीकहतेहैं. विघ्नेति.जो पुरुषभोजनकर्तयोंमे विघ्नकरताहै सो सोजे रोगवालाहोताहै. इसमेंभी योग्यताविचरऐसाहै कि मूत्रपुरीषके परित्यागसें और दूसरेकेभोजनके विघ्नकरणेसें अपणेभोजनकीसिद्धिसेंपेहपुष्टिकी संभावनाहोई तिसपापकाफल सोजारोगहोणाउचित है जिसकर्के उहदेहकी पुष्टिस्वरूपहै

अब और प्रकार कहतेहैं जो किहाहै कर्मविपाक संग्रहमें० देवेति देवता और ब्राह्मण तिनके द्रव्य चुराणेवाला पांडुरोगकर्के युक्तहोताहै ॥ सोई किहाहै शौनक जीने।० अन्त्यजेति- कि अन्त्यजा क्या चांडालकी स्त्री तिसके साथ गमन करणे वाला पांडु रोगकर्के युक्तहोताहै० ॥ इसीमें वृद्धशातातपजी कहतेहैं ॥ तरक्षेति कि तरखदे मारयांहोयांभी पुरुष पांडुरोगकर्के युक्तहोताहै० ॥ अब ब्रह्माजी और प्रकारकहतेहैं यज्ञेति यज्ञविषे विघ्न करणेवाला पुरुष अंडवृद्धिरोग कर्केयुक्तहोताहै० ॥ अब और प्रकार कहतेहैं शातातपजी ॥ जात्युत्तमेति कि जो पुरुष उत्तमजातिकी स्त्रीके साथ गमन करताहै सो मस्तकव्रणी होताहै अर्थात् उसके मस्तकविषेछिद्र होतेहैं और श्रोत्रिय जो वेदपाठी तिसकी स्त्रीके साथ गमन करणे कर्के पुरुष नासिका व्रणी

कर्म ॥ देवद्विजद्रव्यहारी पांडुरोगीभवेन्नरः ॥ तत्रशौनकः- अंत्यजागमनेमर्त्यः पांडुरोगीप्रजायते ॥ अथशातातपोक्तम् ॥ तरक्षेनिहतेचैव। पांडुरोगी प्रजायते ॥ ब्रह्मणोक्तम् ॥ यज्ञविघ्नकरोनित्यंजायतेचांडवृद्धिमान् ॥ तत्रशातातपोक्तम् ॥ जात्युत्तमस्त्रीगमनाज्जायतेमस्तकव्रणी श्रोत्रियस्त्रीप्रसंगेन. जायतेनासिकाव्रणी १ कर्म. ॥ कर्मकालेकुक्कुटंचखरादीन्वायईक्षते सनासिकाव्रणीचस्यादार्द्रनेत्रश्चजायते १ शातातपोक्तम् . ॥ पितृस्वसाभिगमनेदक्षिणांगव्रणीभवेत् मातृस्वसाभिगमनेवामांगोत्थव्रणीभवेत् १

होताहै अर्थात् उसकीनासिकामें छिद्रहोताहै० १ सोईकिहाहै कर्मविपाकसंग्रहविषे ॥ कर्मेति जो पुरुष कर्मकाल विषे अर्थात् संध्योपासनादिक जो कर्म तिनके प्रारंभसमयविषे कुक्कुट और गधेसें आदलेकर और जो खोटे जीव तिनको देखताहै सो नासिका व्रणी होताहै और आर्द्र नेत्र होताहै अर्थात् उसके नेत्रोंसे सदाहि जल वगताहै १ अबशातातपजी और प्रकारकहतेहैं पितृस्वसेति जो पुरुष पिताकी भगिनीके साथ गमनकरताहै सो दक्षिणांगव्रणी होताहै अर्थात् उसके सज्जे अंगमें छिद्रहोतेहैं और माताकी भगिनीके साथ गमन करणे वाला पुरुष वामे अंगमें हैं छिद्र जिसके ऐसा होताहै १

इसीका प्रकारकहतेहैं शातातपजी स्वगोत्रेति कि पुरुष अपने गोत्रकी स्त्रीके साथ गमनकरण कर्के भगंदरीहोताहै क्या भगंदर रोगकर्के युक्त होताहै० ॥ अव और किहाहै कर्म विपाक संग्रहविषे अतिमानादिति ॥ जो पुरुष अतिमानसें क्या वडे मानसें और वडे क्रोधसें और वडे स्नेहसें और वडे भयसें धर्मके निश्चयको जानदाहुयाभी अन्यथा करताहै अर्थात् धर्मको त्यागदेताहै सो पूय और शोणितकर्के युक्त व्रणी क्या छिद्रोंवाला होताहै इह वातनिश्चितहै १ अध्यापेति जो गुरु शिष्योंको कुटिलताकर्के भढाताहै और जो शिष्य गुरुकोंठगकर्के पडताहै तिसगुरुको और शिष्यको जन्मांतरमें गंडमालाख्यनामरोगहोताहै-अर्थात् हजीरांतिनको होतीयांहैं इसमें संशयनहींहै २ अभक्ष्येति जो पुरुष अभक्ष्य अर्थात् नाहिं जोखाणेयोग्यतिसकोंभक्षण करताहै और जोपापीहै इहदोनों जन्मांतरमें हजीरांरोगकर्के युक्तहोतेहैं अव और प्रकारकिहाहै

शातातपे स्वगोत्रस्त्रीप्रसंगेनजायतेचभगंदरी। कर्म.। अतिमानादतिक्रोधा दतिस्नेहाद्भयादपि योधर्मनिश्चयंज्ञानन्नन्यथाकुरुतेनरः सपूयशोणितवह व्रणीजायतेनिश्चितम् १ अध्यापयतिशिष्यांस्तुयःप्रतार्यगुरुस्तथा शिष्योगुरुंवंचयित्वायोऽधीतेतस्यतस्यच जायतेगंडमालास्योरोगस्त्वत्रनसंशयः २ तथा अभक्ष्यभक्षःपापीवागंडमालीभवेन्नरः॥ कर्मसं- ॥ चांडाल कृतवापीपुतडागेकूपकादिपु स्नात्वापीत्वाचसर्वांगेदाहवान्हस्तपादयोः स्फोटयुक्तस्तुसभवेदित्यपिप्रतिजन्मनि १ अनिर्दशायागोःपीत्वापयः स्फोटकवान्भवेत् २ ॥ कर्मसं- ॥ देवानांब्राह्मणानांचधनापहरणात्तथा स्वामिद्रोहाद्वातरोगीपुरुषःसततंभवेत् ३ ॥ कर्मसं-॥ मोहयित्वापरान्यस्तु यंस्वभुंक्तेविगर्हितम् सोन्मादवातयुक्तःस्यात्त्रीणिजन्मानिमानवः ॥ ४ ॥

कर्मसंग्रहविषे चांडालेति चांडालनेकीत्तियां जोवाउलीयां और कूप और तडागादिइनोंविषे स्नानकर्के और इनोंकाजलपानकर्के पुरुष जन्मांतरमें संपूर्णअंगोंविषे दाहवालाहोताहै और तिसके हाथों और पादोंमें फोडेहोतेहैं और किहाहै कर्मसंग्रहविषे १ अनिर्दशेति अनिर्दशा अर्थात् दश १० दिनके अंतरहि गौकादुग्धपानकर्के पुरुषजन्मांतरविषे स्फोटकरोग वाला होताहै २ और किहाहै कर्मसंग्रहविषे देवानामिति तैसेंही देवता और ब्राह्मणकेधनचुराणेसे भीस्फोटकरोगवाला होताहै और स्वामीकेसाथ द्रोहकरणेसे पुरुष निरंतरवातरोगकर्के युक्तहोताहै॥ ३ ॥ अव और प्रकार किहाहै कर्मसंग्रहविषे मोहेति जो पुरुष होरनानूं मोहकर्के आप विगर्हित क्या निंदितवस्तुको भक्षणकरताहै सो तीनजन्मतक उन्माद और वातरोगकर्के युक्त होताहै ४

अनिच्छतीमिति• नहि है भोगकी इच्छा जिसकों ऐसी जो नवीन परस्त्री अर्थात् जिसने पतिके साथभी गमन नहिकीत्ता उसके साथ जो पुरुष वलसें गमन करताहै सो संपूर्ण जोडो विषें वडीपीडाकों प्राप्त होताहै• फेर रुचिसें रहितहोताहै अर्थात् जन्मांतर विषें भोगकी इच्छासें रहित होताहै• फेर वात रोगवाला और ज्वर वालाभीहोताहै ५ यइति• और जो ब्राह्मण स्नानकेविना संध्या और जप और हवनकोंमदसें करताहै सोनित्यही हिडकी रोगवालाहोताहै• ६ रक्तेति और जो रक्त वस्त्र और मुंगोंकों चुराताहै सो रक्त वात वाला होताहै• और इसीको वृद्धवौधायनजीकहतेहैं० सवर्णेति० जो अपणी जातीकी स्त्रीके साथ गमन करताहै सो वात पित्त वाला और रक्त वाला भी होताहै इस जगासवर्णाकर्के सजाति स्त्रीलयणी सोभी आधुनिक जातिविषे जाणणी जैसे अवस्थीब्राह्मणने अवस्थी स्त्रीविषे गमन करणा पापहै और

अनिच्छतीमक्षतांयउपभुंक्तेपरास्त्रियं वलादाक्रम्यसनरःसर्वसंधिषुवेदनाम्
५ तीव्रामाप्नोत्यरुचिमान् पुनर्वातयुतोभवेत् ॥ ज्वरीच. ॥ योऽकृत्वाब्राह्मणःस्नानंसंध्याहोमजपादिकं कुरुतेचमदान्नित्यं सहिक्कारोगवान्भवेत् ६
रक्तवस्त्रप्रवालानांहारीस्याद्रक्तवातवान् ॥ वृद्धवौधायनः ॥ सवर्णागमने वातरक्तवान्जायतेनरः ॥ सवर्णागमनेवातपित्तवानपिजायते १ कर्म- ॥ लशुनंगृंजनंतालफलंचाश्नातियोद्विजः सवातपित्तरोगीच भवेज्जन्मत्रयं नरः १ औषधार्थभक्षणेतुनदोषः ॥ कर्मसं- ॥ वैद्यशास्त्रमदाद्यस्तुकृत्वौषधमथान्यथा प्रयोजयन्नरःसोयंरक्तपित्तयुतोभवेत् ॥ १ ॥

ऐसा अर्थ नहि कि ब्राह्मण ब्राह्मणी विषे गमन ना करे किंतु सो उचितहैं १ और इसीका फल कहतेहैं जोकिहाहै कर्मसंग्रह विषें• लशुनमिति० जो द्विज लसुन क्या थोम और गाजरां और तालफल इनाकाभक्षण करताहै सो तीनों जन्मों विषें वात पित्त रोगवालाहोताहै इसमे कोइ गृंजनशब्दका अर्थ गाजराको नहि कहते किंतु थोमके भेदको अथवा विषवाले वाण कर्के मारेहोएमृगके मांसकों कहतेहैं १ और इनकों ओषधीके निमित्त भक्षणकरे तो दोष नहि है• और इसी फलकों कहतेहैं ० वैद्येति ॥ जो पुरुष वैद्यशास्त्रकें मदसे कीतीहोई ओषधकों अन्यथा प्रयोजन कहताहै अर्थात् एह दिवाई कुछनहिहैं ऐसें कहताहै सो रक्त पित्त रोगवालाहोताहै १ ॥

अब और प्रकारयमजीकहतेहैं नित्येति जो पुरुष नित्यअनुष्ठानकया संध्यावंदनादि तिनाकोंनहि करता सो जन्मांतरमें कफरोगवालाहोताहै और निरादरकों प्राप्तहोताहै इह भगवान् यमजीने किहाहे १ और किहाहै कर्म्मसंग्रहविषे गुरुमिति जो पुरुषवादोंसें गुरुकोंजीतकर्के प्रतिकूलताको करताहै अर्थात् गुरुकेसाथ द्वेष करताहै सो नित्यही दुःखकर्के व्याकुलमनवालाहोया २ मिरगी रोगवाला होताहै १ इसविषे बौधायनजी कहतेहैं ब्राह्मेति जो ब्राह्मणके श्वासांकोंरोकताहै सो जन्मांतर विषे मिरगी रोगकर्के युक्त होताहै और जो हाथीके चुराणेवालाहै सोशीर्षरोगी होता है अर्थात् शिर विषे रोगवाला होताहै १ सोई किहाहै कर्म्मसंग्रहविषें गुर्विति जो पुरुष गुरुकों रोकणेवालाहै सो शिर विषे रोगवालाहोताहै॰ इसी फलवाला होरकर्म्मकहतेहैं प्रेति बहुत यज्ञा

यमः ॥ नित्यानुष्ठानरहितःकफरोगीभवेन्नरः पराभवंसमाप्नोतिचेत्याहभग वान्यमः १ कर्म- ॥ गुरुंविजित्यवादैस्तुप्रातिकूलंसमाचरेत् सोऽपस्मारी भवेन्नित्यंदुःखव्याकुलमानसः १ तत्रबौधायनः ॥ ब्राह्मणश्वासरोधेनह्यप स्मारीभवेन्नरः ॥ नागहारीचसततंपुरुषः शीर्षरोगवान् १ ॥ कर्म. ॥ गुरूप रोधीशिरसिरोगवान्जायतेनरः ॥ अन्यच्च ॥ प्रायोपवेशनादीनांव्रतानांत्या गकारणात् ॥ शिरोरोगयुतोभूयात् यावत्तत्कर्म्मयोग्यता १ ॥ नारदः ॥ ब्रह्मचारीयदाश्नीयाद्भिन्नपात्रेविशेषतः । एकांशेनशिरोरोगीभवतीत्या हनारदः १ पद्मपुराणे ॥ ब्राह्मणद्विट्शिरोरोगीभवेज्जन्मत्रयंनरः ॥

दियों विषे जो दीक्षादि व्रत तिनांके त्यागकरणेसें शिरविषेरोगकर्के युक्त होताहै जितनाकाल तिस कर्म्मकी योग्यताहै १ सोई नारदजीकहतेहैं ब्रह्मेति जो ब्रह्मचारीभिन्नहोये पात्रमे भोजनकरताहै सो आधे शिर विषे रोगकर्के युक्तहोताहै अर्थात् अर्धशिरपीडा उसकोसदाहोतीहै १ और किहाहै पद्मपुराणविषें जो पुरुषब्राह्मणके साथ द्वेषकरताहै सो तीन जन्माविषे शिर रोगवाला होताहै • इसमें द्वेष कर्के धर्म्म द्वेषऔरजीवकाका द्वेषजाणना जैसेंकिब्राह्मणोंका धर्म्म वेदपाठादि कुछ अच्छानहि क्योंकि पीछें याचना करणे पडतीहैं इत्यादि कहकर इसकी प्रवृत्ति दूरकराणी एह बहुतपापहै वास्तव एह कर्म्म सर्वोत्तमतहै

अब और किहाहै कर्मसंग्रह विषे परवाचामिति जो पुरुष पर पुरुषोंकियो वार्ता विषे विघ्नकरताहै सो मुखरोगी होताहै अर्थात् मुख उसका पक जाताहै परवार्ता विषेविघ्न इसतहीं जानणा किसभामे दूसरेकी वात सतीहो अथवा असतीहो उसकी खंडन येनकेन उपायकर्के करणा और दूसरयां पुरुषांकेमर्मस्थान जो हैं जोड तिन विषे मारणेतें अथवा दूसरेके दोषप्रकट करणेतें मुखरोगी होताहै १ ॥ अब और किहाहै शातातपजीने ॥ श्वेति जो पुरुष श्वान और बिल्लीयोंसें लेकर जो कुत्सितजीव तिनका स्पर्शकीता होया अन्नभक्षणकरताहै सो दुर्गंधवान् होताहै अर्थात् उसके पासों दुर्गंधिआवतीहै ० और किहाहै कर्म संग्रह विषे कि झूठी उगाई देणेवाला मुखरोगी होताहै और शोणितपित्तवान् होताहै अर्थात् उसकों रुधिर करके युक्त पित्त रोगहोताहै • इसीको वोधायनजीकहतेहैं ॥ कि

॥ कर्म. सं. ॥ परवाचांविघ्नकर्त्ता मुखरोगीभवेन्नरः मर्मोद्घाटनतोऽन्येषां मुखरोगीप्रजायते १ शातातपप्रोक्ते- श्वमार्जारादिभिःस्पृष्टंभुक्त्वादुर्गंधवान्भवेत् ॥ कर्मसं. ॥कूटसाक्षीभवेद्वक्ररोगीशोणितपित्तवान् ॥ बौधायनः वाग्विरोधंगुरोःकृत्वामुखरोगीभवेन्नरः ॥ शातातपप्रोक्ते- ॥ मूकोन्नहरणेनैवजिव्हारोगःप्रजायते ॥ कर्मसं. ॥ परेषांदुःखकरणात्सर्वदानृतभाषणात् जिव्हाच्छेदात्तथान्येषां पक्षपाताच्चसंसदि १ ॥ जिव्हारोगीभवेदास्ये व्रणीचैवाभिजायते. ॥ शातातपप्रोक्ते ॥ विषप्रदश्छर्दिरोगीभवेज्जन्मनि जन्मनि २ ॥ शातातपप्रोक्ते ॥ आमान्नहरणेनैवदंतपीडाप्रजायते, ॥

गुरुके साथ वाक् विरोध करके अर्थात् गुरुकों खोटे वाक्य कह करके पुरुष मुखरोगी होताहै सोई किहाहै ॥ शातातपजीने ॥ कि अन्न,चुराणे करके पुरुष मूक क्या जल्हा होताहै और उसको जिव्हा विषे रोग होताहै ॥ इसीको कर्मसंग्रह विषे किहाहै ॥ कि दूसरेकों दुःखदेणेनें और सदाही झूठकहनेसें और दूसरेकी जिव्हा काटनेसें और सभामें पक्षपात करणेसें पुरुष जिव्हाविषे रोग वाला होताहै और मुख विषे छिद्रों वाला होताहै १ ॥ अब और किहाहै शातातपजीने ॥ कि विषदेणे वाला पुरुष जन्मजन्मविषे छर्दी रोग क्या वमनव्याधि करके युक्त होताहै ॥ २ ॥ और किहाहै शातातपजीनें ॥ कि आमान्न क्या आटा तिसके चुराणे करके पुरुष दन्तों विषे पीडा वाला होताहै ॥

अब और प्रकार कहतेहैं जो किहाहै कर्मसंग्रहविषें वेदमिति कि जो ब्राह्मण वेदको और धर्म शास्त्रकों वेचताहै अर्थात् धनलेकरके पढनेंकाफलदेदेताहै तिसकर्के जन्मांतर विषें तिसकी जिव्हाका स्खलन होताहै अर्थात् तिसकी जिव्हागिडजातीहै १ अपरीति और अपरिस्फुटवक्ता जो पुरुष अर्थात् राजाकेताई व्यंगदारवाक्य कहणे वाला सो जिव्हाविषें छिद्रोंवाला होताहै॥ अब और किहाहै शातातपजीने कुक्कुटेति कुक्कुटके मारणेंहोयां पुरुष वक्रनासः क्या टेडीयें नासें वाला होताहै॥ और जो पुरुष विद्यापुस्तकहारीहै अर्थात् ज्ञानवाले जो पंचरत्नादिक पुस्तक तिनके चुराणे वाला अनेडमूक होताहै अर्थात् जड्डा और बोला होताहै॥ ऐसेहि तोते और मेना के मारणेतें पुरुष थथलाहोताहै १ और प्रकार किहाहै कर्मसंग्रहविषें

कर्मसं-॥ वेदंवाधर्मशास्त्रंवाविक्रीणीयाद्धियोनरः पुनर्जन्मनितेनास्याजिव्हायाःस्खलनंभवेत्॥ अपरिस्फुटवक्तावाजिव्हायांव्रणवानपि-॥ १॥ शातातपप्रोक्ते-॥ कुक्कुटेनिहतेचैववक्रनासःप्रजायते विद्यापुस्तकहारीचानेडमूकःप्रजायते॥ शुकशारिकयोःघातान्नरः स्खलितवाग्भवेत् १ कर्मसं.॥ लवणस्यापहर्त्ताचशीर्णघ्राणांघ्रिपाणिकः घुर्घुरस्वरवांश्चैवजायतेभुविमानवः १ परदृष्टिविघातेनभिषक्मिथ्याचरेणच कामात्परस्त्रियंगत्वानेत्ररोगीभवेन्नरः २ दंपतीभ्यांप्रवृत्तंतुमैथुनंयोनिरीक्षते सनेत्रपूययुक्तःस्यात्स्त्रवद्रक्तश्चजायते ३॥

लवणेति कि लवणके चुराणे वाला जो पुरुष टूटगएहैं अंघ्रिक्या पाद और घ्राणक्या नासिका और पाणि क्या हाथजिसके ऐसापृथिवीविषें होताहै और घुर घुर स्वर वाला होताहै अर्थात् उसकास्वर किसीको अच्छा नहि लगता १ परेति दूसरेकी दृष्टिविषें चोट लगाणे कर्के और वैद्यके मिथ्याचरणकरणे कर्के और अपनी इच्छासें परस्त्रीके साथ गमन कर्के पुरुष नेत्ररोगी होताहै २ और किहाहै दंपतीभ्यामिति कि जो पुरुष स्त्रीके साथ पतिके मैथुनकों देखताहै सो नेत्र पूय युक्तहोताहै अर्थात् तिसके नेत्र पाककरके युक्तहोतेहैं और स्त्रवद्रक्तभी होताहै अर्थात् नेत्रोंसें रुधिरभी चलताहै इसते ऐसा अभिप्रायहै कि अपनी स्त्रीकें साथ गमन कर्तेको नहि देखणा और परस्त्री साथ गमन कर्तेको दंडवास्तेदेखणेकादोषनहि

और शातातपजीकहतेहैं घृतेति जोपुरुष घृतकोचुराताहै सोनेत्रोंकेरोगवालाहोताहै और पिताके मारणेवाला चेतनासें हीन होताहै और माताकेमारणेवाला अंधाहोताहै १ शाकेति और शाक के चुराणेवाला नीले नेत्रों वालाहोताहै और पित्तलके चुराणे वाला कापिलीएं अक्षिएं वाला होताहै और तरामें के चुराणेवाला रक्तविकारवाला होताहै २ और किहाहै कर्म्मसंग्र हविषे उच्छिष्टइति जोपुरुष उच्छिष्टहिक्या मुखशुद्धिकेविना उदय होतेसूर्यको और मध्या ह्नविषे प्राप्तहोएको अथवा सायंकालविषे प्राप्तहोएको देखताहै तैसेही नक्षत्रोंको और चंद्रमाको देखताहै सोमंददृष्टि वाला होताहै इसमें एह अभिप्रायहै कि घृतनेत्रादि विषेचेतना करताहै सो तिसके चोरको अंधाहोणा योग्यहै और जोपुरुष देवताके गृहविषे और ब्राह्म

शातातपः । घृतचौरस्तुपुरुषोजायतेनेत्ररोगवान् पितृहाचेतनाहीनोमातृ हांधःप्रजायते १ शाकहारीचपुरुषोजायतेनीललोचनः रीतिहाकापलाक्षः स्यात्ताम्रहारीचरक्तकः २ ॥ कर्मसं- ॥ उच्छिष्टःसन्यआदित्यंपश्येदुद्यंतमं वरे ॥ मध्यंगतमथाप्यस्तंमायांतमुच्छिष्टएवसन् १ नक्षत्राण्यथवाचंद्रंसभ वेन्मंददृष्टियुक्देवद्विजगृहेतीर्थेपुण्यस्थानेचसंस्थितम् २ प्रदीपंभंजयित्वा तुतिमिरव्याधिमान्भवेत् ३ पद्मपुराणे ॥ परेषामाक्षेरोधेनजायतेअक्षिरोग वान् ब्राह्मे ॥ नक्तांध्यंजायतेतस्ययोगवांनयनद्वये करोतिवालुकाक्षेपंप्रक्षेपं तृणभस्मनोः कर्म्म- ॥ मातापितृगुरूणांहिदेवब्राह्मणयोस्तथाशृणोतिनिंदां बुद्ध्यायःकर्णाभ्यांतस्यशोणितम् १ पूयंचप्रस्रवतितरांवधिरत्वगतिस्तथा २

णके गृहविषें और पुण्यस्थानाविषे और तीर्थविषें स्थितजो दीपक तिसको भनताहै सोनेत्रों विषेहै तिमरे जिसकोऐसाहोताहै ॥ ३ सो किहाहै पद्मपुराणविषे परेषामिति जोपुरुष किसकी अक्षियोंमे रोधकरताहै सोअक्षियोंके रोगवाला होताहै ॥ सोई ब्रह्मपुराणविषे कहाहै नक्तमिति जोपुरुष गौयोंके अक्षियों उप्पर रेतर अथवा कक्ष ठेर भस्म सुटताहै सो रात्रिमें अंधाहो ताहै ॥ अब और प्रकारकर्म संग्रह विषे किहाहै मातेति जोपुरुष माता और पिता और गु रु और देवता और ब्राह्मणोंकी निंदानू बुद्धिकर्के कया जाणकर्के श्रवणकरताहै सोकपाल णरोगवाला होताहै क्या उसके कन्नाते रक्त और पाक चलती रहतीहै ॥ १ ॥ और बोला भी होताहै ॥ २ ॥

अब और प्रकारकाकर्म विपाककहतेहैं जोकिहाहै ब्रह्मांडपुराणविषे.अभक्ष्येति.किजो नहि भक्ष णकरणेकेयोग्यचांडालस्पृष्टअन्नादि चीज उसके भक्षणकरणेसे कंठरोगीहोताहै अर्थात् उसके कंठ विषे रोगहोताहै ॥ अब और प्रकारका कर्म विपाक कहतेहैं जोकिहाहै शातातपजीने ॥ स्वस्रि ति ॥ किजो पुरुष भगिनीकों मारताहै सोनरककोंभोगकर फेर जन्मान्तर विषें बधिरहोताहै ॥ अर्थात् बोलाहोताहै इसमें (दयापा भगिनीमूर्त्तिः) इसवचनतेभगिनीहै दयाकीमूर्त्ति तिसकेप्रि यवचनणनेके त्यागसे उसका श्रवणेन्द्रिय दूरहाणा उचितहै ॥ और बगुलेकोंमारणे वाला लंबे गलवालाहोताहै और लंबेमुखवालाभी होताहै १ ॥ उष्ट्रइति ॥ ऊंटके मारयां होयां पुरुष विरुतस्वरवाला होवाहै अर्थात् अप्रियस्वरवाला होताहै ॥ और कबूतरके मारयांहोयां पीले हथेंवालाहोताहै २ ॥ और कंदमूलकेचुराणेसें पुरुषछोटेहथेंवाला होताहै ॥ और दुग्धके चुराणे वाला पुरुष स्विन्न हथें वाला होताहै ॥ अर्थात् हाथउसके परसीने वाले होतेहैं ३ ॥ औ

ब्रह्मांडपुराणे ॥ अभक्ष्यभक्षदोषाच्चकंठरोगीप्रजायते ॥ शातातपप्रोक्ते ॥
स्वसृघातीचवधिरोनरकांतेप्रजायते वकघातीदीर्घगलोभवेद्देमुखदीर्घकः १
उष्ट्रेविनिहतेचैवजायतेविकृतस्वरः पारावतेचनिहतेपीतपाणिःप्रजायते २
कंदमूलस्यहरणाद्ध्रस्वपाणिःप्रजायते॥ क्षीरहारीचपुरुषःस्विन्नपाणिःप्रजा
यते ३ अगम्यागमनाच्चैवभुजस्तंभःप्रजायते ॥ कुनखीनरकस्यांते जायते
विप्रहेमहृत् ४ उदक्यावीक्षितंभुक्त्वा जायतेक्रिमिलोचनः ॥ अभक्ष्यभ
क्षणाच्चैवजायंतेक्रिमयोहृदि ५ ॥

किजो नहिंगमनकरणेके योग्यस्त्री अधम जातिकी अथवा अपनी जातिकी उसके साथ गमन करणेसें पुरुष भुजस्तंभ होताहै अर्थात् उसकियां भुजा कार्यविषें अशक्तहोतियांहैं और किजो पुरुष ब्राह्मणके सुवर्णकों चुराताहै ॥ सोनरककों भोगकरके फेर खोटे नखोंवाला होताहै ४ और जो पुरुष रजस्वलास्त्री करके देखयाहुया अन्नभक्षण करताहैसो क्रिमिलोचन होताहै ॥ अर्थात् उसकेनेत्रोंविषें क्रिमि क्याकीडे होतेहैं ॥ और किजो नहिभक्षण करणे केयोग्यवस्तु उस केभक्षण करणेते हृदे विषेंक्रिमि होतेहैं ॥ पिच्छे जो किहाहै कि अभक्ष्यके भक्षणकीतयांहोयां कंठरोगीहोताहै और इसजगाकिहाहै किअभक्ष्यभक्षणतेहृदेविषे कीडेयोंवाला होताहै इसवास्ते दोनोफलहोतेहैं कोई कहतेहैं किएह अभक्ष्यभक्षणका अलग फल उसी पुराण विषे किहाहै और कोई कहतेहैं किएह वचन होर किसेकाहै जेकर ब्रह्मांड पुराणकाहुंदा तद पहले वचनके साथहि हुंदा ॥ ५ ॥

इसीकाप्रकार किहाहै कर्म संग्रहविषें ॥ गजइतिकि हाथी और घोडेके मारयां होयां पुरुष कुक्षिविषें कीडयों कर्के युक्तहोताहै० ॥ और शातातपजीकहतेहैं ॥ गन्यौंका जो विकार क्या गुडादिक तिसकै चुराणें वाला गुल्मवान् होताहै अर्थात् उसके उदरमें गोला रोगहोताहै १ गुर्विति और जो पुरुष गुरुका प्रत्यर्थीहोताहै अर्थात् गुरुकेसाथ शत्रुभावकरताहै सो गुल्मवान् होताहै अर्थात् उसके उदरमेंभीगोलारोगहोताहै ॥ और प्रकारकिहाहै कर्मसंग्रहविषें ॥ भृतकेति जोब्राह्मण नौकरी द्वारा भडाताहै तिसदोषते और कन्याकेदूषणकरणेते अर्थात् कुमारी कन्याके साथ भोगकरणेतें सो एकजन्म प्लीहवान् होताहै अर्थात् लिप्फ रोगकर्के युक्त होताहै इसमैं नौकरी उहजानणी कि जिसको भढाणाहै उसीसेंनियत द्रव्या को लेणा जीसेंकि

कर्मविपाकसंग्रहे-॥ गजेविनिहतेचाश्वेक्रिमिकुक्षिःप्रजायते-॥ शातातपः॥ इक्षोर्विकारहारीचभवेदुदरगुल्मवान्- १ गुरुप्रत्यर्थितांयातोगुल्मवान्जायतेनरः-॥ कर्मसं-॥ भृतकाध्यापकोयस्तुकन्यायादूषणान्नरः. प्लीहवान्सभवेद्विप्रः जन्मैकंतस्यदूषणात् १ योब्रह्मविष्णुरुद्राणांभेदंमोहमदावृतः ॥ साधयेदुदरव्याधियुक्तोभवतिमानवः २ राज्ञावातन्नियुक्तेननियुक्तोधर्मनिश्चये पुरोहितःप्राड्विवाकःसचिवोवान्यथाचरेत् जलोदरंसंप्राप्नोतिपापोजन्मत्रयंपुनः ॥ ३ ॥

५००) रुपययेसें सारस्वतको भढामोगा औसे संकेतसे दोषहै और योग्यांऽर्थशालाके भढाणे वास्ते राजादियोंने नियुक्तकीतेहे तिनको दोपनहि १ यइतिकि ब्रह्मा और विष्णु और शिव इह तीनो एकमूर्तिहैं .तिनौंका जो पुरुष मोह और मद कर्के युक्तहुआ २ भेदकरताहैं अर्थात् तिनको भिन्न २ कहताहै सो उदरकी व्याधि कर्के युक्तहोताहैं २ राज्ञेति और राजाकर्के और राजाके नौकरी कर्के धर्मके निश्चयविषें जोडगा होया जोपुरुष अथवा पुरोहित और प्राड्विवाक क्या व्यवहारका द्रष्टा न्यायकरणे वाला अथवा वजीर जे कर अन्यथा करे अर्थात् जो करणे योग्यहै तिसकोंनकरे तां सो पापी तीनजन्म जलोदर रोगकों प्राप्तहोताहै ३

सोई किहाहै पद्मपुराणविषे जो पुरुष गुरुकी स्त्रीकेसाथ गमनकरताहै सो जन्मांतरमें उदरव्याधि करके युक्त होताहै उदरव्याधि क्या जलोदर रोगकरके युक्त होताहै ॥ अब और प्रकारकाकर्म्म विपाकशातातपजी कहतेहैं ॥ जो पुरुष द्रव्यकेहोयांहोयां निंदित अन्नको भक्षणकरताहै अथवा माडे अन्नकोदेताहै सो जन्मांतरमें मंदाग्नि वाळा होताहै अर्थात् तिसको खादा होया अन्नपचतानहिं ॥ सोई वृद्धपराशरजी कहतेहैं ॥ जो पुरुष गौके मांसकोभक्षणकरताहै सो जन्मांतरविषे मंद होगयाहै जठराग्नि जिसका ऐसाहोताहै इसजगा मंदाग्नि पद सभनां उदर व्याधियांका उपलक्षणहै दोपके अधिकहोणेते ॥ सोई कर्म्म संग्रह विषेहै ॥ जो पुरुष कारणसे विना हिंविपदे करके फेर तिसकोप्रसन्नकरताहै सो जन्मांतरविषे मंदाग्निहोताहै और अल्पमृत्यु क्या थोडेकालमें मृत्युको प्राप्तहोताहै १ सोई बौधायनजी कहतेहैं ॥ जो पुरुष त्रेता अग्निको नष्ट करताहै

पद्मपुराणे ॥ उदरव्याधियुक्तस्तुभवेद्गुर्वंगनागमे ॥ उदरव्याधिर्जलोदरव्याधिरित्यर्थः ० शातातपः ० नरोभवतिमंदाग्निःसतिद्रव्येकदन्नभुग्- ॥ कदन्नदः इत्यपिपाठः । वृद्धपराशरः । गोमांसखादकोमंदजठराग्निर्भवेन्नरः । कर्मसं- । अकारणंगरंदत्वाप्रसादयतियःपुनः समंदाग्निर्भवेदेवमल्पमृत्युश्चजायते । बौधायनः । अग्नेर्मांद्यंभवेतस्ययस्त्रेताग्निविनाशकः । शातातपः । गुरुजायाभिगमनान्मूत्रकृच्छ्रःप्रजायते पशुयोनौचगमनान्मूत्रकृच्छ्रोप्रजायते. १ ॥ वायुपुराणे ॥ सुरापोमूत्रकृच्छ्रीस्यादश्मरीरोगवांश्चवा । शातातपः ॥ मातुः सपत्नीगमनेजायतेचाश्मरीगदः ॥

अर्थात् दक्षिणाग्नि और गार्हपत्याग्नि और आहवनीय अग्नि इनको नष्ट करताहै तिसको जन्मांतर विषे अग्निकी मंदता होतीहै ॥ अब और प्रकारका कर्म्मविपाककहतेहैं शातातपजी ॥ गुरुकी स्त्रीकेसाथ गमनकरणेसे जन्मांतरविषे मूत्र कृछ रोगकरके युक्तहोताहै और पशुयोनिविषे गमन करणेसेभी मूत्रकृछ रोगकरके युक्त होताहै इसजगा दोवार जो मूत्रकृछ्र पदआयाहै इसते जनाणाकि मूत्रकृछ रोग दो प्रकारकाहै इकमधुमेहहै और दूसरा जलमेहनामककेहै ॥ १ ॥ सोई वायुपुराणमें कहाहै ॥ मदिराके पानकरणेवाला मूत्र कृछ रोगकरके युक्त होताहै और पथरी रोगवाला होताहै ॥ इसको शातातपजीभी कहतेहैं माताकीसोकणके साथ गमन कीतयांहोयां पथरी रोगवाला होताहै० ॥

दुग्धके चुराणे वालापुरुष वहुतमूत्रणे वालाहोताहै ॥ सोई कहाहै कर्मसंग्रहविषे ॥ सौंदर्य्ये ति ॥ किजोपुरुष एहसुंदरस्त्रीहै इसअभिलापावालाहै सो वहुते मूत्रणेवालाहोताहे और चांडालीकेसाथ गमनकरणेतें प्रमेहव्याधि वालाहोताहै १ और जो तिर्यग्गामीहै अर्थात् पशुयोनिके साथ गमनकरताहै सो सूल और प्रमेह रोगकर्के युक्तहोताहै ॥ पर्वणीति कि जो पुरुष पर्वविषेगमनकरताहै और कन्याके साथगमनकरताहै सो वातप्रमेहरोगकर्के युक्त होताहै तिन्नोजन्मोंविषे ॥ २ मधिवति कि जोमाताकेसाथ गमनकरताहै सो निरंतर मधुमेही रोगवालाहोताहै और जो माताकी साकनके साथ गमनकरताहै सोअधमनर अर्थात् खोटा पुरुष जलमेही रोग वाला होता है ॥ ३ ॥ और जो पुरुष नित्यहि भगिनीके साथ गमनकरताहै अर्थात् भयनके साथ सो पुरुष इक्षु मेही रोगवाला होताहै इक्षु मेहकर्के मूत्रगन्नेके रसके वरावरहोताहै ॥

दुग्धचौरस्तुपुरुषोजायतेवहुमूत्रवान् ० कर्म सं ० सौंदर्य्यगामिनेरोगोजायतेवहुमूत्रता ० इयंसुंदरीइयंसुंदरीत्यभिलापीसौंदर्य्यगामी यद्वा सोदर्य्यागामीतिपाठः०चांडालीगमनात्सर्वप्रमेहव्याधिमान्भवेत् १ तिर्य्यग्गामीसशूलेनप्रमेहेनयुतोभवेत् ० पर्वणियायीचमनुजः कन्यागामी तथैवच वातप्रमेहयुक्तःस्यात्त्रीणिजन्मानिमानवः २ मधुमेहीमातृगामी सततंजायतेनरः ॥ पितृभार्य्यादिगामीच जलमेहीनराधमः ३ योगच्छेद्भगिनींनित्यमिक्षुमेहीतिनिश्चयः०पितृभार्य्यासपत्नीजननीत्यभिधीयते ४ वायुपुराणे ० ब्राह्मणस्वर्णहारीच प्रमेही जायतेनरः ० शातातपः ० मातृगामीभवेद्यस्तु तस्यलिंगंविनश्यति ० चांडालीगमनेचैव हीनहर्पः प्रजायते १ दुष्टवीर्यस्तुपंडःस्यात् व्रणीगुह्यांडकेसदा २ ॥

४ ॥ इसीका प्रकार वायुपुराणविषे किहाहै ॥ ब्राह्मणेति ॥ कि जो ब्राह्मणके सुवर्ण को चुराताहै सो प्रमेह रोग वालाहोताहै ॥ अत्र और प्रकारका कर्म विपाक शातातपजी कहतेहैं ॥ मात्रिति ॥ कि जो माताके साथ गमनकरताहै उसपुरुषका लिंगनष्ट होताहै और जो चांडालीके साथगमनकरताहै सो हर्पसेहीन होताहै १ और खोटे वीर्य्यवाला होताहै अर्थात् उसका वीर्य्य पुत्रके उत्पन्नकरणेमें समर्थ नहिं होताहै पंडः अर्थात् नपुंसक होताहै फेरगुदा और वृषण उसके छिद्रोंवाले होतेहैं • इसजगा चांडाली गमनके फल ४ है और कोइ कहतेहैं कि दुष्टवीर्य जो पुरुषहै अर्थात् जिसनेकिसेकावीर्य्य औषध्यादि कर्के दुष्टकीताहै सो पुरुषनपुंसकहोताहै इत्यादिअर्थहै २

अब और प्रकारका कर्मविपाक किहाहै कर्मसंग्रहविषें ॥ नृपइति किजोराजा भृत्यादिकोंके हाथोंसें आदलेकर जोअगहैं तिनकों अपराधके विनाही कटदेताहै तिसकामुख जन्मान्तरविषें अग्नीकरके दग्धकीतिहोएकीन्याई होताहै १॥ अब और कहतेहैं शातातपजी सुरालयइति कि जो पुरुष देवताके मंदरमें और जलमें और मार्ग क्या रस्ते में विष्टाकरताहै तिसको दारुणक्या वडाकठन पापरूपएकगुदामें रोगहोताहै १ सोई किहाहै कर्मसंग्रहविषें ॥ विएमूत्रेति जोपुरुष विष्टा अर मूत्रकोंकरके अर शौचके विनाहि भोजन करताहै सोजन्मान्तरविषें प्रस्रवद्गुदहोताहै अर्थात् उसकी गुदासदाही वगदीरहतीहै १ और उसकोंजन्मान्तरविषें क्लेशदेणे वालीजोपीडा सोहोतीहै इस अर्द्ध श्लोकका संबन्ध पिछले श्लोकदेसाथजान्नणा॥ दत्वेति और

कर्म्मसं- ॥ नृपोभृत्यादिहस्तादानिपराधंविनैवयःच्छेदयेत्तस्यलपनंभवेत् दग्धमिवाग्निना १ शातातपः॥ सुरालयेजलेवापि मार्गेविष्टांकरोतियः गुदरोगोभवेत्तस्य पापरूपःसुदारुणः १ कर्म्मसं.॥ विएमूत्रोत्सर्जनंकृत्वा योऽकृत्वाशौचकर्मतत् भुंक्तेजन्मान्तरेमर्त्यः भवेत्सप्रस्रवद्गुदः १ भवेच्चदा रुणापीडातत्रकृच्छ्रातिकृच्छ्रदा दत्वायोवेतनंधीयात्प्रादायापिचवेतनम् २ ॥ अध्यापयेच्चजुहुयांज्जपेच्चार्शोयुतोभवेत् ॥ स्मार्ताग्निंशमयेद्यस्तुसोऽती सारयुतोभवेत् ३ पद्मपुराणे॥ अतीसारीचभवतियस्त्रेताग्निविनाशकः॥ शातातपः॥ स्त्रीहंताचातिसारीस्यात् दारनाशयुतोपिवा दावाग्निदायकश्चै वरक्तातीसारवान्भवेत्॥ १

जो मुल्ल देकरकेपडताहै २ और जो मुल्ल लेकरके भडाताहै और जो मुल्ल लेकरके हवणकरताहै और जपकरताहै सोआर्शस् करके युक्तहोताहै अर्थात् बवासीर करके युक्तहोताहै॥ और जोस्मा र्ताग्निकों बुझाताहै सोअतीसारकरकेयुक्तहोताहै ३ इसीकाप्रकारकिहाहै पद्मपुराणविषें॥ अतीति किजो त्रेताअग्निके नष्टकरणेवाला अर्थात् दक्षिणाग्नि और गार्हपत्याग्नि और आहवनीयाग्नि इन तीनों केनष्टकरणे वालाहै सो अतीसार रोगकरके युक्तहोताहै॥ इसीकाप्रकारांतर शातातपजी कहतेहैं॥ स्त्रीहंतेति किजो पुरुष स्त्रीकोंमारताहै सो अतीसार करके युक्तहोताहै फेर जन्मान्तर विषें स्त्रीउसकीनष्टहोजातीहै और दावाग्निदायक अर्थात् जो पुरुष वनको अग्निलगाणे वाला सो रुधिरकरके युक्तजो अतीसाररोग तिसकरके युक्तहोताहै १

आपसे पुत्रकीस्त्रीके साथ गमनकर्तिहोयां जन्मांतरविषें पुरुषकृष्ण कुष्टीहोताहै अर्थात् तिसकों कृष्णकुष्ट क्या कालाकुष्टहोताहै जिससें कालेकाले दागसारेदेहविषें हुंदेहैं ॥ पितृव्येति कि चाचे कोस्त्रीके साथ गमनकरणेतें पुरुष जन्मांतरविषें कटिकुष्टी क्या लक विषें कुष्टवालाहोताहै २ ॥ मातुलान्याइति और मामिके साथ गमन करणेतें पुरुष जन्मांतर विषें दृष्टीकुष्टवालाहोता है अर्थात् तिसके नेत्रों विषें कुष्टहोताहै ॥ और कर्म्म विपाक संग्रहका वचनहै ॥ मात्रेति जो पुरुष शास्त्रके निर्णे विषें माताके साथ और गुरुयोंके साथ क्या पिताके साथ सपर्द्धा करके प्रातहोताहै अर्थात् तिनके मतपर नहि चलना सो जन्मांतर विषें प्रदर व्याधि क्या गुदा विषें व्याधि वाला होताहै १ ज्येष्ठेति ज्येष्ठभ्राता क्या वडेभ्राताके नविवा

स्नुषागमनेचैवकृष्णकुष्टीप्रजायते। स्नुषाःस्वपुत्रभार्य्या। पितृव्यपत्नीगमनात्कटिकुष्टीप्रजायते २ मातुलान्यास्तुगमनात्दृष्टिकुष्टीप्रजायते। कर्म.। मात्रावागुरुणावापित्रोनरःशास्त्रनिर्णये स्पर्धयासौप्रजायेत प्रदरव्याधिमान्भुवि १ प्रदरोऽत्रगुदव्याधिः। ज्येष्ठभ्रातर्यनूढतुयोनुजोद्वहतिस्वयम् समवेन्मृतपत्नीकउष्णज्वरसमन्वितः २ संधिरार्षः। शातातपः॥ मित्रभार्याभिगामीचमृतभार्य्याप्रजायते॥ विप्ररत्नापहारीयःसोनपत्यःप्रजायते १

हुकीयां होयां जो कनिष्ट भ्राता अर्थात् छोटाभाई आपहींविवाहकरलेताहै सो जन्मांतरमें मृतस्त्रीवालाहोताहै क्या उसकीस्त्री मरजातिहै और उष्णतापकर्के युक्तहोताहै २ सोई कर्मविपाक शातातपजी कहतेहैं मित्रभार्य्येति कि जो पुरुष मित्रकीस्त्रीके साथ गमनकरणेवाला सोजन्मांतरविषें मृतस्त्रीवालाहोताहै अर्थात् उसकीस्त्रीमरजातिहै विप्ररत्नेति जो पुरुष ब्राह्मणोंकेरत्नोंको चुराताहै सो जन्मांतरविषे संतानसे रहित होताहै इसमेंऐसाअभिप्रायहै कि रत्नना[illegible] मणिआदि हीरकादिकाहै और संततिकोभी रत्नके तुल्यहि कहतेहैं सो तिसके चुराणेका ऐसाफलहोणाउचितहै [illegible] पहलेभी आयाहै परंतु स्त्रीमरणप्रसंगसें संततिमरणकाप्रसंगफेर किहाहै १ ॥

और इसीकाप्रकार किहाहै कर्मसंग्रहविषें अनन्येति किजोपुरुष अनन्यगामि भार्य्या नूं अर्थात् पतिव्रता भार्यानूं फेर दुष्टभावमें रहित जोहै तिसनूं कारणके विनाहीं त्याग देताहै सो संग्रहणीरोग वाला होताहै १ अतीति जोपुरुष पूर्वजन्मविषें होरनां लोकोंके विशयानूं अर्थात् देशानूं नष्टकरताहै सोदूसरे जन्मविषें पामारोगवाला होताहै अर्थात् तिसकों तुकी खुरक होतीहै और सहितपाकके तिसकोंरुधिर भी वगताहै २ और इसीकाप्रकार शातातपजी कहतेहैं तैलेति कि तैलके चुराणें करके पुरुष कण्डू रोगवाला होताहै० और वस्त्रों केचुराणें वाला शीर्णांगी होताहै अर्थात् कहे गएहैं अंगजिसके ऐसाहोताहै और दूसरे जन्मविषें नग्नहोंताहै

कर्म. ॥ अनन्यगतिकांभार्य्यामदुष्टांकारणंविना परित्यजतियःसोथग्रहणीरोगवान्भवेत् १ अतिलुम्पतियोन्येषांविषयान्पूर्वजन्मनि अन्यजन्मनि पामावान्सपूयंस्रवतिशोणितम् २ शातातपः। तैलचौर्य्येणभवतिनरःकंडूतिरोगवान् वस्त्रहारीचशीर्णांगीभवेन्नग्नोन्यजन्मनि १ स्वाम्यंगनाभिगमनेजायतेदद्रुमंडलम् सौगंधिकस्यहरणाद्दुर्गंधांगःप्रजायते २ कुष्टीगोवधकारीचनरकांतेभवेन्नरः ॥ स्वसुतागमनेनैवरक्तकुष्टंप्रजायते ३ भ्रातृजायाभिगमनेगुल्मकुष्टीप्रजायते ॥ शिवगीतायां॥ यस्तुहन्तिवहून्जंतून्कुष्टरोगीभवेतुसः ॥

१ स्वाम्यंगेति और स्वामीकीस्त्रीके साथ गमन कीतयां होयां पुरुषसरीरदेह विषें दद्रुवालाहोताहै० और सुगंधि विशिष्टजो द्रव्य तिसके चुराणेंतें दुर्गंधि विशिष्ट अंगो वाला होताहै २ और गोवधकरणें वाला नरकभोगकरकुष्टी होताहै० और आपणी कन्याके साथ गमन करणें करके पुरुष जन्मांतरमें रक्तकुष्टरोग वाला होताहै ३ और भ्राता की स्त्रीके साथ गमनकीतयां होयां पुरुष गुल्मकुष्टी होताहै ० अर्थात् तिसको फोडयां वाला कुष्ट होताहै ० सोई किहाहै शिवगीता विषें ॥ यस्त्विति जो पुरुष वहोतयां जीवांनूं मारताहै सोकुष्टरोगकरके युक्तहोताहै ॥

अब और प्रकारकाकर्मविपाक कहतेहैं श्रुतिरिति कि श्रुति और स्मृति तिनकर्केविरुद्ध जोअजा क्या वकरि और अश्व क्या घोडा और महिषी इनसेंआदलेकर जो खोटेदान तिनकाप्रतिग्रह उठाणेतें अर्थात् इसदानकोंलेनेतें १ और निषिद्धस्त्रीक्या चांडालादिकोंकीस्त्री तिसके साथगमन करणेतें और उत्तमब्राह्मणकेनाशकरणेतें और वेदकीपरीक्षाके कीत्तयां होयां और चोर और व्याघ्रादिकोंकरके मृत्युहोणेतें २ और द्वन्द्वयुद्धविषें मरणेतें और गुरुके धिकारसें अर्थात् तिरसकारसें और तडागादिकोंके नष्टकरणेतें और बाह्यशास्त्र करके जीविकाकरणेतें अर्थात् नास्तकोंकेशास्त्रकर्के जीविका करणेतें ३ और ब्राह्मणकाधन चुराणेतें पुरुषसबनांअंगां विषें बडीपीडाकर्के युक्तहोताहै और तप्तज्वरवालाभीहोताहै ४ सर्वदेति ॥ और जो पुरुष दूसरेदेचित्तनूंक्लेशदिंदाहैं सो आपसदादुःखकर्के युक्तचित्तवाला होताहै अर्थात् तिसके मनविषें पुत्रस्त्रीआदि सभतर्हांकी पीडारहतीहै एह अर्थ (परचित्तविनाशकः) इसकाहै ॥ और (परवित्तावित्तशकः)

कर्मसं०श्रुतिस्मृतिविरुद्धानियानिदानानिसंतिवै अजाश्वमहिषादीनांतत् प्रतिग्रहकारणात् १ निषिद्धयोषिद्गमनाद् द्विजाग्र्यस्यवधादपिवेदस्यचपरीक्षायांदस्युव्याघ्रादिभिर्मृतौ २ द्वन्द्वयुद्धादिमरणात्करणाद्गुरुधिकृतेः तडागादेश्चभंगाच्चबाह्यशास्त्रोपजीवनात् ३ ब्राह्मणस्वापहरणात्सर्वांगेपुप्रजायते वेदनादारुणातप्तज्वरश्चैवभवेत्सदा ४ सर्वदादुःखचित्तःस्यात्परवित्तविनाशकः ॥ भयभीतान्नरक्षेद्यःक्षुत्पिपासातुरान्स्वयम् शक्तःसन्सर्वदाजंतून् कम्पनोवधवृत्तिकः ५ निषिद्धवृत्तिर्जीवीचजातोपिश्रीमतांकुले देशाद्देशांतरंयातिक्लेशयुक्तोभवेत्सदा ६

जिस जगा ऐसा पाठहै तिस जाग दूसरा अर्थ करणा ॥ भयभीतानिति ॥ और भयकर्के डरयां होयां जीवांनूं और क्षुधातृषाकर्के आतुरहोयेहोयांनूं जो पुरुष समर्थवानहै भी परंतु नहि रखदाहै सो जन्मांतर विषें कंपितहोताहै अर्थात् उसका देहकमदाहै और जो पुरुष जीवांकों मारकर जीविकाकरताहै सोभी कंपतरोगकर्के युक्त होताहै इसमें ऐसाअभिप्रायहै कि जो धनादि नाशभावना कर्के भयभीत अथवा क्षुधातुर अथवा शस्त्रधारीके आगे स्थित होयाहोयाहै सो कंपमानहोताहै जिससमर्थनें तिसकी रक्षानहिकी तोसोभी तैसाहोणायोग्यहै ५ निषिद्धेति और जो पुरुष निषिद्धवृत्तिकर्के जीविकाकरताहै सो धनवाले कुलविषें जन्मपाताहै फेरआपणेंदेशतें देशांतरकों अर्थात् अन्यदेशकोंजाताहै और सदाही क्लेश करके युक्त होताहै ६

अब शातातपजी और प्रकार कहतेहैं प्रतिमाया इति कि प्रतिमा जो ईस्वरकी मूर्ति तिसके न ष्टकरणें वाला पुरुष अप्रतिष्टनहोताहै अर्थात् प्रतिष्ठासें रहित होताहै और जो विश्णु और शिव और देवता और अतिथि और पुत्रादिक तिनकों नैवेद्य ल्वाए सेंविना क्याइनको ना खुयाए कर्के आप भोजन करताहै सोअधरहोताहै० अर्थात् दरिद्री होताहै० १ और जोजपका नष्टकरताहै सो सवना कार्यविषें असिद्धार्थ होताहै अर्थात् तिसके सर्वकार्य नष्टहोतेहैं जप इसजगा सकाम अथवा अकाम हो तथापि कार्य्य सिद्धिके अर्थहै सकाम त्रिवर्गके अर्थहै और निष्काम मोक्षार्थहैं तिसके दूरकरणे वालेको ऐसाफलहोणा समुचितहैं और जोदानविषें विघ्नककरताहैसोदरिद्री होताहै २ और जोपुरुष होरणां जीवानूं पाषाण

शातातपः ॥ प्रतिमायाभंगकारीन्वप्रतिष्टः प्रजायते अनिवेद्यसुरादिभ्यो भुंजानोजायतेऽधरः १ ॥ सुरादिभ्योहरिहरादिभ्योविश्वदेवताभ्यश्चआदि शब्दादतिथिपुत्रादिभ्यश्च ॥ अधरः निकृष्टोदरिद्रइतियावत् ॥ सर्वकार्य्ये ष्वासिद्धार्थोजपघातीभवेन्नरः ॥ दरिद्रोजायतेमर्त्योदानविघ्नंकरोतियः २ ॥ उत्पादयतियोन्येषांपाषाणेनप्रहारदः तलप्रहारकश्चैवजातोपिधनिनांकुले ३ धनेनरहितश्चापिदेशांतरगतोभवेत् ॥ महाक्लेशीचहृद्रोगीउदावर्तीभवे न्नरः ॥ ४ ॥ रजस्वलागामिनंचतदुच्छिष्टस्यभोजिनंप्रजाग्रहःप्रगृह्णाति ततस्सज्वरवान्भवेत् ॥ ५ ॥

कर्केमारताहै और हाथकर्के प्रहार करण वाला जोहै क्यापीडा देणेंवालाहै सो धनवालेयोंके कुलविषें जन्म पाताहै ३ फेरधनसें हीनहोताहै फेरदेशान्तरविषें चलेजाताहै और वडे क्लेशकर्के युक्तहोताहै और हृदयविषें रोगवाला होताहै फेरउदासी कर्के युक्तहोताहै अर्थात् तिसकाचित्त स्थिरनहि रहता० इहां उदावर्त्त नाम उलटीकाभीहै ४ रजस्वलेति और रजस्वला स्त्रीके साथ गमनकरणें वाले पुरुषनूं और तिसीका उच्छिष्टभोजन करणे वाले पुरुषनूं प्रजाग्रह नामकर्के जोग्रहहोताहै सोग्रहण करताहै ० इसीकारणतें ज्वररोगवालाहोताहै इसमेंभी ऐसे योग्यता जानणी किकाम रूप ज्वरके दूर करणेंवाले जिसने रजस्वला गमनकीताहैं तिसकों ज्वरहोणा योग्यहै ५

और अतीसार रोगकर्के युक्तहोताहै और कुष्टी होताहै और सबनां अंगाविषें वातरोगकर्के युक्तहोताहै और स्त्रीजेकर ऐसा काम करे अर्थात् अपना धर्म्म छपाकर पुरुषकों प्रलोभनकरतीहुई तिसके साथगमे तां तिसके गर्भकानाश होताहै और प्रदर रोगकर्के युक्तहोतीहै अर्थात् पैतरोगे गकर्के युक्तहोतीहै ६ रजस्वलेति और जोपुरुष रजस्वलास्त्रीनूं अथवा चांडाल कीस्त्रीनूं गमनकरताहै . तिसपुरुषनूं ज्वर नामाग्रह ग्रहण करलेताहै तिसीकारणतें संताप कर्के युक्तहो ताहै फेर ज्वररोगकर्के युक्तहोजाताहै ७ तस्करइति और जोपुरुष चोर और दयासें रहितहोया २ वृथाही जीवोंकों मारताहै और जो आचारसें रहितहै और जोधर्मकी निंदाकरणे वालाहै ८ और अधर्म क्या पाप तिसविषें प्रीतीवालाहै तिनांसबनानूं ज्वरनामकरके जो ग्रहहै

अतीसारीचकुष्टीचगात्रेसर्वत्रवातवान् स्त्रीचेद्गर्भस्यनाशःस्यात् प्रदरश्चप्र जायते ६ रजस्वलांवाचांडालींयोगच्छेत्तंनरंज्वरः गृह्णातितेनसंतापीज्व रीभवतिमानवः ७ तस्करोयोवृथाप्राणिहिंसकोनिर्दयश्चयः आचाररहि तोयश्चपरधर्मस्यनिंदकः ८ अधर्मनिरतोयश्चतानेतान्ज्वरसंज्ञकःग्रहोगृ ह्णातितन्मात्रादेकरात्रज्वरीभवेत् ९ द्विरात्रेणत्रिरात्रेणचतूरात्रज्वरेणच शीतज्वरेणसततंज्वरेणोष्णज्वरेणच १० युतोभवति ॥ अशुचिर्यःस्पृश द्देवंब्राह्मणंबुद्धिपूर्वकम् तंगृह्णातिप्रचंडाख्योज्वरस्तद्ग्रहणात्ततः ११ अप्रक्षालितपादोयः अप्रक्षालितपद्युगः भुंक्तेपराह्णे तंकालग्रहोगृह्णा तिमानवम् १२

सोग्रहण करताहै तिसकेस्पर्शहोणेसें एकरात्र ज्वरी होताहै अर्थात् प्रतिदिन उसकोंज्वरआवताहै ९ और जेकर जादे पाप होवेतां दोरात्र अथवा तीनरात्र अथवा चाररात्र [illegible] ज्वरकर्के युक्तहोता[illegible] ऐद्विरात्रादिज्वरदीर्घ कालकर्के जाद्रेहे और शीत ज्वर कर्के और सा[illegible] ज्वरकर्के अथवा उष्णज्वर कर्के युक्तहोताहै १० अशुचिरिति ० किजोपुरुष अशु[illegible] अपवित्र हुया हु[illegible] देवताकों और ब्राह्मणाकों बुद्धिपूर्वक स्पर्शकरताहै तिसपुरुषनूं [illegible] नाम जिसका [illegible]ज्वर ग्रहण करताहै तिसके ग्रहण करणेतेंपूर्वोक्तफलहोताहै [illegible] करणा ११ अप्र[illegible]लेतेति कि जो द्विजपुरुष अनमांजे पात्र विषें और पयरांकों [illegible] धोकर्के और सायंकाल [illegible] भोजनकरताहै उसकों कालनामाग्रहहै सो ग्रहणकरताहै० १२

तिसके ग्रहण करणेते अनंतर फलकहतेहैं अंतरिति किसोपुरुष अंतर्दाहवाला होताहै और पीतनेत्र वाला भीहोताहै अर्थात् नेत्रउसके पीले होतेहैं इसीकर्के पीलीहै विष्टा और मूत्र जिसका ऐसाहोताहै १३ आदित्यादीति कि जोपुरुष सूर्य्यसें आदलेकर्के अष्टमस्थानविषें स्थितजोग्रह उनोंके ग्रहयज्ञनुं नाहिकरताहै उसकोकाल नायकनामाग्रहग्रहणकरताहै १४ और उसविषें एहचिन्ह होतेहैं क्या वारंवार मुखसुकना और वडेभय केदेणवाला ज्वरहोणा १५ परस्येति किजोपुरुष मृषाकहता हुया अर्थात् झूठ कथनकरता हुयापरपुरुषोंके मनकों संतापनुं करता है सोपितृग्रहकर्के गृहीत होताहै अर्थात् उसकोंपितृग्रहग्रहण करताहै० और तिसकों जो चिह्नहैं सो मेरे तें श्रवणकर १६ सोपुरुष प्राणोंकाहै संदेह जिसविषें ऐसी व्याधि क्या रोग उसकर्के प

अंतर्दाहीपीतनेत्रः पीतविण्मूत्रकोभवेत् १३ आदित्यादिग्रहेष्वष्टमादिस्थानस्थितेषुयः नकुर्य्याद्ग्रहयज्ञंतंकालनायकसंज्ञकः १४ ग्रहोगृह्णातिचिह्नानितत्रेमानिभवंतिच मुहुर्मुहुर्वक्त्रशोषोज्वरोभवतिदारुणः १५ परस्यमनसस्तापंकुर्य्याद्व्यवहरन्मृषा पितृग्रहगृहीतःस्यात्तस्याचिह्नानिमेशृणु १६ व्याधिनापरिभूतस्स्यात्प्राणसंदेहकारिणा दरिद्रश्चभवेत्तस्ययावज्जीवंनसंशयः १७ पुण्यंशिलांतरुंदेवालयंवारुह्यमूत्रति मूत्रपुरीषमापिवातंगृह्णातिग्रहोपिचे १८ लोकायताभिधस्तत्रचिह्नानिस्युरमून्यथ ॥ अतिमूत्रपुरीषीस्याद्रक्तनेत्रस्तथापुनः १९ पित्तोद्रिक्तोचवदनेदेहेचैवव्रणी भवेत् २०

रिभूत होताहै अर्थात् युक्तहोताहै फेरउसकोंदरिद्र होताहै जितना पर्यंत जीवताहै इसविषें संशय नहिंहै १७ पु०यमिति० किजो पुरुष पुण्यशिला और पुण्यवृक्ष और देवताका मंदर इनोंके ऊपर आरुह्य क्या चढकर्के मूत्र और पुरीष क्या विष्टाकरताहै उसपुरुषनुं लोकायतहै नामजिसका ऐसा ग्रह ग्रहण करताहै १८ और तिसविषें एहचिह्न होतेहैं बहोतमूत्र और विष्टवाला होताहै अर्थात् उसकों मूत्र और विष्टा बहोतआतीहै फेर रक्तनेत्रहोताहै अर्थात् नेत्रउसके रुधिरवाले होतेहै १९ और मुखउसके ऊपर पित्तकी अधिकता होतीहै और देहविषें व्रणी होताहै अर्थात् उसके देहविषें छिद्रहोतेहैं २०

अनर्ह इति किजोआप अनर्हहै क्या प्रथमभोजन के योग्यनहिहै और गर्वतें अग्रभाजनकोग्रह णकरताहै अर्थात् पंक्तीविषें सभनोंके प्रथमवयठाताहै और पंक्तीविषें विशेषभोजीहै अर्थात् औरनांसे यादय पायसादि कोखाताहै तिसपुरुषको आपस्तंभकहै नामजिसका २१ ऐसा ग्रह ग्रहणं करताहै और तिसके स्पर्शमात्रसें सुकगयाहै हृदय और उदरजिसका ऐसाहोताहै इसवि षेसंदेहनहिहै एहबौधायनकावचनहै २२ अबकात्यायनजी और प्रकारका कर्मविपाक कहतेहै अंत्यजेति ॥ चांडालीके साथ गमनकरणेवालेनूं और परस्त्री गमनकरणे वालेपुरुषनूं कुम्मिकग्रह ग्रहणकरताहै और तिसीकालविषें ज्वरवालाहोताहै १ और असृग्वद्ध प्रलापीहोताहै अर्थात् रुधिरका वमन और रोदन करणेवाला होताहै फेर खांसी और दम रोग वाला होताहै ॥ २

अनर्हःसन्स्वयंगर्वा दादायत्वग्रभाजनम् पंक्तौविशेषभोजीय स्तमापस्तं भसंज्ञकः ॥ २१ ॥ ग्रहोगृह्णाति तन्मात्राद्धृदयोदरशोषवान् जायतेना त्रसंदेहो बौधायनवचोयथा ॥ २२ ॥ कात्यायनः ॥ अंत्यजागामिनंचैव परस्त्रीगामिनंग्रहः कुम्भिकाख्यःप्रगृह्णाति ततस्तुज्वरवान्भवेत् ॥ १ असृग्वद्धप्रलापीच श्वासकासश्चजायते ॥ २ ॥ ब्रह्मांडपुराणेत्वन्येन प्रकारेण कर्म्मविपाकउक्तः ॥ स्त्रीघातीगर्भघातीच पुलिंदोजायतेभुवि ॥ स्त्रीति ॥ दुष्टायाअपिस्त्रियो निस्सारणमेव विहितंनतुघात इतिभावः अरण्यवासीनीचजातिविशेषः पुलिंदः स्त्रियोधर्मार्थकामसाधकत्वात्पुलिं दानांतत्त्रितयशून्यत्वात्

ब्रह्मांडपुराणविषें और प्रकार करके कर्म्मोंका विपाक कहाहै ॥ स्त्रीति कि जो पुरुष स्त्री घाती और गर्भघातीहै अर्थात् स्त्रीकोंमारताहै और गर्भकों घातकरताहै सो पृथ्वी विषें पुलिंद होताहै सो पुलिंदवनविषें रहणेवाली नीचजातिकोंकहतेहै स्त्री घातके पापका तात्पर्य्यकहतेहै स्त्रीति जेकरस्त्रीदुष्टभीहोवे तबभी उसकोंघरसें निकालदेणा एहि कथन कीताहै और मारणा नहि विधानकीताहै इसकरकें स्त्रीघात पाप बडाहै अरइसफलकी योग्यतादिखानेहै स्त्रियइति ॥ स्त्रीकेमारणे वाला पुलिंद क्यों होताहै कि स्त्रीकों धर्म और अर्थ और काम का साधन होनेसें और पुलिंद कों धर्म और अर्थ और काम इनोंसें शून्यहोनेसें अर्थात् रहित होणेसें एह कर्म्म फल यथार्थहै

गुर्विति. जोपुरुष अन्यजात क्या कुंड और गोलकादि इनकोंगुरुधारताहै सोजन्मांतरतिषें कुत्ता दी योनिविषें उत्पन्नहोंताहै १ क्योंकि ब्राह्मणसें विना गुरु धारणका निषेधहोणेसें संपूर्णवर्णोंकों ब्राह्मणहीं गुरु कथनकीताहै इसवचनतें इहां गुरुलको निंदत जातिकासेवकहोंणेतें और श्वानकों निंदतवस्तुकाभक्षणकरणेतें फलविषेंयोग्यताहै ॥ १ ॥ अब और कहतेहैं ॥ मांसेति किमांसके चुरा णेवाला ब्राह्मण जन्मान्तरविषे गिद्दड होताहै और वेदके वेचनेवाला ब्राह्मण शूद्रयोनिको प्राप्त होताहै २ पतित जोब्राह्मणहै तिनकोभी मांसऔर मद्यविषें अधिकार नाहींहै इसवातका विचा

गुरुलोप्यन्यजातेषु जायतेश्वानयोनिषु १ योजनोऽन्यजातेषु कुंडगोलका दिषु गुरुलोगुरुधारकः ब्राह्मणादिशुद्धवंश्यातिरिक्तगुरुधारणनिषेधात् सर्वेषामेववर्णानांब्राह्मणोहिगुरुःस्मृतः॥ इतिवचनादितिभावः ॥ गुरुलस्य निंद्यसेवकत्वात् शुनश्चानिंद्यभोजकत्वात् ॥ १ ॥ मांसहारीभवेद्विप्रःशृगा लोजायतेध्रुवम् ब्राह्मणोवेदविक्रेताशूद्रयोनिषुजायते २ मांसेति ब्राह्मणा नां पतितानामपिमद्येमांसेचनाधिकार इति निजगात्रासृगुक्षितमित्यत्र नागोजीभट्टटीका ॥ मांसाशीविप्रः शृगालोजायते शृगालस्यपश्वादिभ क्षकत्वात् ॥ वेदविक्रेताद्रव्यंगृहीत्वावेदफलंददाति सशूद्रोभवति शूद्रस्य वेदानधिकारित्वात् ॥

रनिजगात्रासृगुक्षितं इसश्लोकमें नागोजी भट्टकृत जो चंडीकीटीका तिसमेंलिखाहै ॥ और गिद्दडकों पश्वादिकों काभक्षण करणेतें फलविषें योग्यताहै ॥ और वेदविक्रेता उसकों कहतेहैं किजो ब्राह्मण किसीसें द्रव्यकों लेकर वेदपढने काफल देंदेवे सोशूद्र होताहै क्योंकि शू द्रकोंवेदकानहीं अधिकार होंणेते ॥ इसप्रकार फलविषें योग्यताहै ॥ इसमें किसे जगा मांसाहारी ऐसा पाठहै तिसका अर्थमांस भक्षण करणेवाला ब्राह्मण ऐसा अर्थकरणा इसका तात्पर्य्य कहतेहैं मांसेति

अब और कहतेहैं विश्वासेति कि जो पुरुष विश्वासदेंकर्के मित्रकों मारताहे अथवा विश्वासदेकर्के मारणे वाला जों हैं और मित्रको मारण वाला सो जन्मांतर विषें पाप योनि यांजोहैं गर्द्धभादिक् तिनमें उत्पन्नहोताहै क्योंकि गर्द्धभादिको सहायता शून्य होणेंते अर्थात् जैसें मित्रके मारणेंहोयां सहायताकरणे वाला कोई नहि रहता इसी प्रकार गर्द्धभादिकोंमें सहायताका अभावहै ॥ और जो पुरुष प्रश्नद्वारा गर्भवती स्त्रीको जानकर फेर मैथुनकरताहै सो पांण्डु रोग कर्के युक होताहै और मूक और जलेहोए किन्याई उसका मुखहोताहै

विश्वासमित्रघातीच पापयोनिषुजायते ॥ भावित्वागर्भिणींनारीं संक्रीडयतियोनरः ॥ ३ ॥ पांडुरोगीभवेन्मूको ज्वलदास्यःसदाचसः ॥ विश्वासेति ॥ विश्वासंदत्वामित्रहंता यद्वा विश्वासहंता मित्रहंताचेत्यर्थः सपापयोनिषुगर्द्दभादिषु तेषांसहायशून्यत्वात् ॥ योगर्भिणींभावित्वा प्रश्नेनगर्भंनिश्चित्य मैथुनंकरोतिसपांडुरोगादिमान्भवति ज्वलदास्यःमुखदाहरोगीतत्रापिसदेतिसार्द्धान्वयः सगर्भस्त्रीमुखचुंबकत्वात् ॥ ३ ॥ कन्याघातीमहापापीशवरेषुप्रजायते ॥ ४ ॥ कन्याहंतामहापापीनरकभोगावसाने वहुषुजन्मसुशवरेषुनीचयोनिष्वेवजायते ॥ तस्मिन्पापेक्षयंयाते पुनर्जन्मांतरेभवेत् पूर्वजन्मप्रभावेनदरिद्रश्चकुरूपधृक् ॥ ५ ॥ तस्यैव कन्याघातिनःदुःफलांतरमाह ॥ तस्मिन्निति ॥ पापेपापदेहेक्षयंयातिसति कुरूपधृक्केकरकुण्यादिरूपः ५ ॥

और मुखमें दाहरोगवालाभी सदाहोताहै क्योंकि गर्भवालीस्त्रीका मुखचुंबनेतें ३ इसजागामेंडेढ श्लोकका अन्वय जाणना और इसीकाअर्थमूलमेंस्पष्टकर्केलिखाहै ॥ विश्वासंदत्वेति कन्याघातीति और कन्याकेंमारणेवाला महापापी पुरुषनरककों भोगकर वहोतवार शवरयोनिओं क्यानीचयोनियांतिनमें उत्पन्नहोताहै ४ इसीकाअर्थ मूलमें स्पष्ट कर्के लिखाहै कन्याहंतेति ॥ और तिसपापके नष्टहोयां २ फेरजन्मांतरमें पूर्वजन्मके पापद्वारा दरिद्रीहोताहै, और खोटे रूपवाला होताहै इसीका अर्थ मूलमें स्पष्ट करके लिखाहै ॥ तस्यैवेति ५

गुर्विति. जोपुरुष अन्यजात क्या कुंड और गोलकादि इनकोंगुरुधारताहै सोजन्मांतरतिषं कुत्ता दी योनिविषं उत्पन्नहोताहै १ क्योंकि ब्राह्मणसें विना गुरु धारणका निषेधहोणेसें संपूर्णवर्णोंकों ब्राह्मणहीं गुरु कथनकीताहे इसवचनतें इहां गुरुलको निंदत जातिकासेवकहोणेतें और श्वानकों निंदतवस्तुकाभक्षणकरणेतें फलविषेयोग्यताहै ॥ १ ॥ अन ओर कहतेहैं ॥ मांसेति किमांसके चुरा णेवाला ब्राह्मण जन्मान्तरविषे गिद्दड होताहै और वेदके वेचनेवाला ब्राह्मण शूद्रयोनिको प्राप्त होताहै २ पतित जोब्राह्मणहै तिनकोभी मांसऔर मद्यविषें अधिकार नाहींहै इसवातका विचा

गुरुलोप्यन्यजातेषु जायतेश्वानयोनिषु १ योजनोऽन्यजातेषु कुंडगोलकादिषु गुरुलोगुरुधारकः ब्राह्मणादिशुद्धवंश्यातिरिक्तगुरुधारणानिषेधात् सर्वेषामेववर्णानांब्राह्मणोहिगुरुःस्मृतः॥ इतिवचनादितिभावः ॥ गुरुलस्य निंद्यसेवकत्वात् शुनश्चनिंद्यभोजकत्वात् ॥ १ ॥ मांसहारीभवेद्विप्रःशृगालोजायतेध्रुवम् ब्राह्मणोवेदविक्रेताशूद्रयोनिषुजायते २ मांसेति ब्राह्मणानां पतितानामपिमद्येमांसेचनाधिकार इति निजगात्रासृगुक्षितमित्यत्र नागोजीभट्टटीका ॥ मांसाशीविप्रः शृगालोजायते शृगालस्यपश्वादिभक्षकत्वात् ॥ वेदविक्रेताद्रव्यंगृहीत्वावेदफलंददाति सशूद्रोभवति शूद्रस्य वेदानधिकारित्वात् ॥

रनिजगात्रासृगुक्षितें इसश्लोकमें नागोजी भट्टकृत जो चंडीकीटीका तिसमेंलिखाहै ॥ और गिद्दडकों पश्वादिकों काभक्षण करणेतें फलविषें योग्यताहै ॥ और वेदविक्रेता उसकों कहतेहैं किजो ब्राह्मण किसीसें द्रव्यकों लेकर वेदपढने काफल देदेवे सोशूद्र होताहै क्योंकि शूद्रकोंवेदकानहीं अधिकार होणेते ॥ इसप्रकार फलविषें योग्यताहै ॥ इसमें किसे जगा मांसाहारी ऐसा पाठहै तिसका अर्थमांस भक्षण करणेवाला ब्राह्मण ऐसा अर्थकरणा इसका तात्पर्य्य कहतेहैं मांसेति

अब और कहतेहैं विश्वासेति कि जो पुरुष विश्वासदेंकर्के मित्रकों मारताहै अथवा विश्वासदेकर्के मारणे वाला जों हैं और मित्रको मारण वाला सो जन्मांतर विषें पाप योनि यांजोहैं गर्द्धभादिक् तिनमें उत्पन्नहोताहै क्योंकि गर्द्धभादिको सहायता शून्य होणेते अर्थात् जैसें मित्रके मारणेहोयां सहायताकरणे वाला कोई नहि रहता इसी प्रकार गर्द्धभादिकोंमें सहायताका अभावहै ॥ और जो पुरुष प्रश्नद्वारा गर्भवती स्त्रीको जानकर फेर मैथुनकरताहै सो पांण्डु रोग कर्के युक्त होताहै और मूक और जलेहोए किन्याई उसका मुखहोताहै

विश्वासमित्रघातीच पापयोनिषुजायते ॥ भावित्वागर्भिणींनारीं संक्रीडयतियोनरः ॥ ३ ॥ पांडुरोगीभवेन्मूको ज्वलदास्यःसदाचसः ॥ विश्वासेति ॥ विश्वासंदत्वामित्रहंता यद्वा विश्वासहंता मित्रहंताचेत्यर्थः सपापयोनिषुगर्द्दभादिषु तेषांसहायशून्यत्वात् ॥ योगर्भिणींभावित्वा प्रश्नेनगर्भंनिश्चित्य मैथुनंकरोतिसपांडुरोगादिमान्भवति ज्वलदास्यःमुखदाहरोगीतत्रापिसदेतिसार्द्धान्वयः सगर्भस्त्रीमुखचुंबकत्वात् ॥ ३ ॥ कन्याघातीमहापापीशबरेषुप्रजायते ॥ ४ ॥ कन्याहंतामहापापीनरकभोगावसाने वहुषुजन्मसुशबरेषुनीचयोनिष्वेवजायते ॥ तस्मिन्पापेक्षयंयाते पुनर्जन्मांतरेभवेत् पूर्वजन्मप्रभावेनदरिद्रश्चकुरूपधृक् ॥ ५ ॥ तस्यैव कन्याघातिनःदुःफलांतरमाह ॥ तस्मिन्निति ॥ पापेपापदेहेक्षयंयातेसति कुरूपधृक्केकरकुण्यादिरूपः ५ ॥

और मुखमें दाहरोगवालाभी सदाहोताहै क्योंकि गर्भवालीस्त्रीका मुखचुंबनेतें ३ इसजगामेंडेढ श्लोकका अन्वय जाणना और इसीकाअर्थमूलमेंस्पष्टकर्केलिखाहै ॥ विश्वासंदत्वेति कन्याघातीति और कन्याकेंमारणेवाला महापापी पुरुषनरककों भोगकर वहोतवार शबरयोनियां क्यानीचयोनियांतिनमें उत्पन्नहोताहै ४ इसीकाअर्थ मूलमें स्पष्ट कर्के लिखाहै कन्याहंतेति ॥ और तिसपापके नष्टहोयां २ फेरजन्मांतरमें पूर्वजन्मके पापद्वारा दरिद्रीहोताहै, और खोटे रूपवाला होताहै इसीका अर्थ मूलमें स्पष्ट करके लिखाहै ॥ तस्यैवेति ५

अब कन्याके मारण वाले पुरुषकों और खोटाफलकहतेहैं सदेति किकन्याके मारण वाला पुरुष वटक नामककें पक्षीहोताहै और चकारसें क्या जानतेहैं कि जन्मांतर में श्वासकासरोगककें युक्तभी होताहै और पापकी बाहुलता द्योतनकरणे केवास्ते ध्रुवं यिहप दकिहाहै और आम्रक्या अंब्ब और श्रीफल क्या नरेलादि के फल तिससें आदलेकरजोफलहैं तिनके चुराणे वालेका जन्म कहतेहैं फलेति किफलके चुराणे वाला जोपुरुष जिसफलको चुराताहै तिसी फलका कीडाहोताहै इस श्लोकका अर्थमूलमे भीस्पष्ट करके लिखाहै चकारा दिति ६ ॥ अब वृक्षछेदन करणे वाले पुरुषकाकर्मविपाककहतेहैं वृक्षेति किवृक्षछेदनकरणेवाला महापापी कृमियोनिविषे प्राप्तहोकर वारंवार मृत्युकों प्राप्तहोताहै क्योंकिवृक्षकों नाना जीवों

कन्याघातीचपुरुषः वटकोजायतेध्रुवम् फलहारीचदुष्टात्मा फलेतस्मिन्भवे त्कृमिः ॥ ६ ॥ कन्याघातिनएवदुःफलान्तरमाह सदेति चकाराज्जन्मान्तरे श्वासकासरोगी पापातिशयद्योतनाय ध्रुवमिति ॥ सएवजन्मान्तरेवटकः पक्षीभवति आम्रश्रीफलादिचौरस्य फलमाह. फलेति यस्यफलस्यचौरः तस्मिन्नेवफलेकृमिर्भवति ६ ॥ वृक्षच्छेदेभवेन्मृत्युः कृमियोनिषुजायते शा स्त्राचारैः परद्वेषीरजकोजायतेभुवि ॥ ७ स्वामिघातीमहापापः पाषाणेकी टकोभवेत् धनहर्त्तान्धवधिरः श्मशानेगृध्रकोभवेत् ॥ ८ फलवत्घनछाया दिवत् वृक्षच्छेदिनोजन्माह वृक्षेति कृमियोनिषुगतस्यशीघ्रमेवमृत्युर्जा यतेवारंवारमितिभावः ॥ वृक्षस्यनानाजीवाश्रयत्वात् शास्त्राचारैरल्पज्ञो ह्मेवमहाशास्त्रीतिभावनया वहुज्ञंयोद्वेष्टि स रजको मलनिर्णेजकः सम लान्तःकरणत्वादितिभावः । स्वामीति पाषाणकीटस्यसर्वभोगशून्यत्वात् धनेति रूपादिलोभेन धनहर्त्तुरूपादि भोगहीनान्धादियोनियुक्ता ॥

का आश्रय होणेतें और कमियोनिको वहोतहोणे करकें योग्यता होईहै और जोपुरुष शास्त्र केआचारों करकें अल्पज्ञहै अर्थात् शास्त्राचारां कोथोडाही जानताहै और कहताहै किमेही बडाशास्त्रीहुं इसभावनाकरकें विद्वानके साथ द्वेषकरताहै सोजन्मांतरमें रजकक्या धुब्बाहोताहै अर्थात् मलके दूरकरणे वाला होताहै क्योंकि मलवाला अंतःकरण होणेतें और इसश्लोक का अर्थ मूलमें स्पष्टकरकें लिखाहै कर्मेति ७ अब स्वामी घातकाफलकहतेहैं स्वामीति किस्वा मीक मारणे वाला पाषाणका कीडाहोताहै सवनाभोगांसें रहित होणेतें फलविषे योग्यताहोईहै और रूपादिकोंके लोभतें धनचुराणे वाला जोपुरुष सोअंधाहोताहै और वधिरहोताहै फेर जन्मांतरमें श्मशानविषेगिद्धहोताहै ८ इसश्लोकका अर्थभीमूलमे स्पष्टकरकेंलिखाहै पाषाणेति

अब धनके चुराणे वाले पुरुषकों और योनि कहतेहैं ॥ वधादिति कि धनके चुराणेवाला गृध्र क्या इल्लकी योनिमे प्राप्तहोताहै फेर किसीके वधकरणेते मरकर्के और गृध्रयोनिकों त्याग कर्के बिल्लेको योनिमें प्राप्तहोताहै ॥ इसका अर्थ मूलमे स्पष्टकर्के लिखाहै ॥ कस्यचिदिति ॥ और प्रजाकों पीडादेणेवाला राजा कुक्कुट योनिकों पाताहै ॥ प्रजाकों पीडादेणेवाला क्या प्रजासे अनीतिकर्के धनहरणेवाला इहां कुक्कुटयोनिषु इसबहुवचन कर्के काकादिक योनियां भी होतीहैं ॥ और इहजो कुक्कुटादिकहैं सोमलहित मलके यौतृणादिक तिनके शोधने वालेहैं इस वास्ते प्रजाकों पीडादेणे वाले राजाकों एह योनि होणी योग्यहै ॥ ९ ॥ सूत्रेति जो पुरुष सूत्रको चुराताहै अर्थात् कर्पासादि निर्मिततंतुको चुरांदाहै सो पृथ्वीके

वधान्मृत्युवशेयातिमार्जारोजायतेपुनः ॥ प्रजापीडनकोराजाभवेत्कुक्कुटयोनिषु ९ धनहर्तुरेवयोन्यंतरमाह ॥ वधादिति कस्यचिद्वधान्मृत्वागृध्रयोनिंत्यक्त्वामार्जारोजायते प्रजापीडकोराजाअन्यायोपार्जितद्रव्यःकक्कुटयोनिषुवहुवचनेनकाकादिपरिग्रहः इमेतुसमलकक्षादिशोधकाः९ सूत्रहारीमहीमध्येकीटोभवतिपीडितः ॥ कीटःरोमपक्षादिहीनः ॥ कर्पासशणहारीचब्रह्मवस्तुहरश्चयः उपानहोश्चयश्चौरःसमत्स्योजायतेजले १० कर्पासेति उपानहोरितिकर्पासादेः शीतनिवारकत्वात् मत्स्यस्यजलमध्येसदाशीतलत्वादितिभावः १० घृतहारीभवेत्कुष्ठीतस्माद्भ्रष्टःकृमिर्भवेत् ॥ घृतस्यसर्वशरीरपोषकत्वात्कुष्टस्यचसर्वशरीरदाहकत्वात् ११ ॥

मध्यविषे रोमपक्षादि हीन कीट विशेष हुंदाहै ॥ कर्पासेति और कर्पास क्या कपाह और शण और ब्राह्मणों कीयांवस्तु तिनके चुराणेवाला और उपानह क्या जोडा तिसके चुराणे वाला पुरुष जलविषे मत्स्य योनिकों प्राप्तहोताहै ॥ क्योंकि कर्पासादिकांकों शीतक वारण करणेते और मत्स्यकों सदाही जलविषे शीतलताको प्राप्तहोणेतें तिसकों मत्स्ययोनि होणी योग्यहै और इसका अर्थ मूलमेभी स्पष्टकर्के लिखाहै १० ॥ घृतहारीति और घृतके चुराणेवाला कुष्टी होताहै फेर कुष्टको भोगकर कृमिहोताहै क्योंकि घृत कोसारे शरीरकी पुष्टी करणेते और कुष्टकोंसारे शरीरमें दाहकरणेते फल विषे योग्यताहै ॥ ११ ॥

अब और कहतेहैं मांसेति किमांसकेचुराणे वाला पुरुष पिशाचहोताहै क्योंकि पिशाचादिकांको कच्चा मांसखाणेकर्के मांसके स्वादका अभावहोणेतें इसवास्ते पिशाच योनि होणीयोग्यहै और अन्नक्या गोधूमादिक तिसके चुराणे वाला सूचिवक्त्र होताहै अर्थात् तिसके मुखमे मांसरूपी अथवा अस्थिरूपी एकसूई होतीहै और तिसके नहिनिवारणहोणेतें वोसदादुखी रहताहै इसमे ऐसाभावहै किअन्नकेस्वादवास्ते अन्नचुराणे कर्के जन्मांतरमे सूचिवक्त्र होणेते अन्नकास्वाद नहि लगताहै तिसको एह फल होणा योग्यहै॥ और तेलके चुराणेवाला तेलीहोताहै अथवा तेलकेपीड़नेविषे जोड़या होया जो बैल सोहोताहै ॥ क्योंकि तैल चुराणेकरके एहफल होणा योग्यहै॥ और मधु क्या मखीर अथवा मद्य तिसकेचुराणे वाला गर्द्दभ योनिको प्राप्तहोताहै और इसश्लोकका

मांसहारीपिशाचःस्यात्सूचिवक्त्रोऽन्नहारकः, तैलहारीभवेत्तैलीमधुहारीतु गर्द्दभः १२ मांसेति मांसहारीमांसचौरः पिशाचः पिशाचानामाममांस भक्षकत्वेनमांसास्वादहीनत्वात्० सूचीति अन्नस्यगोधूमादेश्चौरः सूची मांसमयीवास्थिमयीमुखेयस्यसः तस्याअनिवार्य्यत्वात्सदादुःखीत्यर्थः तैलेति तैलचौरःतैलोत्पादकः तैलनिष्पीडनेप्रयुक्तस्तैलीवृषभोमनुष्योवा मध्विति मधुचौरः मदांधसदृशोगर्द्दभः १२ गंधपुष्पादिहारीच दुर्गंधोजायतेमुखे दुग्धहारीतुकूर्म्मः स्याज्जलवासीजितेंद्रियाः १३ गंधेति गंधादिचौरः मुखेदुर्गंधः गंधादिनावशीकृतलोकस्य दुर्गंधेन लोकतस्त्याजनं दुग्धचौरःउष्णताकामः जलवासीतिस्थलवासिव्यावृत्यर्थं जलस्योष्णप्रातिकूलत्वात् हेजितेंद्रियाः ऐहिकसर्ववस्तुतोव्यावृत्तमनस्काः १३

अर्थमूलमे स्पष्टलिखाहै मध्विति १२ गंधेति सुगंधिविशिष्ट जोद्रव्य पुष्पादिक तिनके चुराणे वाला जोपुरुष सोमुखमे दुर्गंधिवाला होताहै और दूधके चुराणे वाला जल वासीकछोपड होताहै क्योंकि गंधादि कों करके लोक वशहोतेहैं और दुर्गन्धि करके लोकांसें त्यागहोताहै और दुग्धचौर गर्माईकी कामनावाला होताहै इसीवास्ते जन्मान्तरमें जलवासी कछोप्ड होताहै इहांजलवासी कहणे कर्के स्थलवासीकी व्यावृत्ति जान्नणी इसमे न चकेता काऋपियों प्रतिसंबोधनहै हेजितेन्द्रयाःइसका अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं किइस लोक में होणे वालीयां जोसववस्तु तिनसें तुसां व्यावृत मन वाले हो १३

प्रच्छन्नेति किजोपुरुष गुप्तहिपाप करताहै सो सप्तजन्मोंविषें अंधाहोताहै फेर उसपापदेहतें भ्रष्टहुया २ अर्थात् उसपापदेहको त्यागकर जन्मांतरविषें लोमशहोताहै अर्थात् वणमानुक्या वनमनुष्यहोताहै ॥ और इसीकाअर्थ स्पष्टकरके मूलमेंलिखाहै ॥ प्रच्छन्नेति ॥ १४ ॥ नित्यमिति ॥ किजोपुरुष कारणकेविनाहि कठोरवचन कहताहै और दूसरेके मतमय विक्षेपकरताहै सासर्पोंके भक्षणकरणेवाला नकुलहोताहै अर्थात् नौलहोताहै ॥ और किजोपुरुष परद्वेषीहैं अर्थात् परपुरुषोंको दुखदेताहै आपणे अधीनहोयांहियां भी परक्रोधीहै सो चिरकाल और जन्मांतरों विषे जलौका होताहै अर्थात् जुक होताहै इसमें योग्यता कहवेहैं क्रोधी रक्तसुकाने वाले सुभाववाला होताहै और जुकरुधिरको भक्षण करणे वाली होतीहै इसकारणसें फल विषे तुल्यताहै ॥ और जलौका शब्द इहां आकारांत समझणा और इसीका अर्थ स्पष्ट करके मूलमें लिखाहै ॥ नित्यमिति ॥ १५ ॥ अकृत्वेति कि जो

प्रच्छन्नपापकर्तुस्तुसप्तजन्मांधताभवेत् ततःपापात्परिभ्रष्टोलोमशोजायते नरः १४ प्रच्छन्नेति गुप्तपापिनोंधता भोगगोपनायेति ततःपापात्पापदेहात्परिभ्रष्टोजन्मांतरेलोमशः सकलशरीरलोमा वनमनुष्योजायते १४ नित्यंक्रूरोविकारीयोनकुलोजायतेनरः परद्वेषीपरंक्रोधीजलौकाजायते चिरम् ॥ १५॥ नित्यमिति क्रूरःअकारणेपिकटुभाषी विकारीविक्षेपकारी नकुलःसर्पादिभक्षकः अनुकूलेपिपरस्मिन्योद्वेष्टिअतएवक्रोधी रक्तशोषकस्वभावा जलौकारक्तपाचिरम् वहुपुजन्मसुजायते ॥ १५। अकृत्वा वैश्वदेवंतु भुंजतेयेद्विजातयः तेवृथाभोजिनः पापाजायंतेपापयोनिषु १६ अकृत्वेति वैश्वदेवलोपिनोद्विजास्त्रयोवर्णाः देवांशभोक्तृत्वात्तेमलभोक्तृश्वादियोनिषुजायंते १६ ॥ पश्चात्तापकरोदानेकोकिलोजायतेवने

द्विजसें आदलेकर्के तीनो वर्ण अर्थात् ब्राह्मण और क्षत्रि और वैश्य वलवैश्वदेव विधिकों नाकर्के भोजनकरतेहैं सो तिनों पापीओंका भोजन करणावृथाहिहै फेर सो पापयोनियां विषे प्राप्तहोतेहैं अर्थात् मलके भक्षण करणे वालीयां जो कुत्तेसे आदले कर्के योनियांहैं उनांकों प्राप्त होतेहै क्योंकितिनांको देवांश भक्षणकरणेते फलविषे योग्यताआईहै और इसीका अर्थ स्पष्टकर्के मूलमे लिखाहै अकृत्वेति १६ ॥ अब और प्रकार कहतेहैं पश्चादिति कि जो पुरुष दानके अंतमें पश्चात्तापकरताहै सो वनके विषे कोकिला नामकर्के पक्षी होताहै क्योंकि पुरुष दानकर्के फेर किसीसें न कथनकरे इस वचनतें और वोहि पश्चात्तापकरणे कर्के उग्रस्वर वाला होताहै और पूर्व जन्म विषें दाता होणेतें मधुरस्वर वाला होताहै

श्रौर पिता श्रोर माता श्रौर सुहृत् इत्यादिकों केसाथ द्वेषकरणे वाला पुरुष जन्मांतरमें आकाश विषें विचरणे वाला वगुला नामकर्के पक्षी होताहै क्योंकि कुटिल अन्तः करण होणेतें श्रौर इसवास्ते उसकों वकयोनि होणी योग्यहै श्रौर इसकाअर्थमूलमें स्पष्टकर्के लिखाहै १७ य इति श्रौर जो पुरुष शिवस्वोपजीवीहै अर्थात् शिवजीकेताईं अर्पण कीता हुआ जो द्रव्य तिसकर्के आपणी जीविकाकरताहै सो वनमें ससक क्या सिहानामकर्के मृग होताहै श्रौर शिवांश भक्षण करणेते उसकोंभी लुब्धक क्या छकार खेलणे वाले पुरुष यत्नों द्वारा मारदेहै ॥ श्रौर देवता श्रौर ब्राह्मण तिनके द्रव्यकों चुराणे वाला पुरुष जन्मान्तरमें वनविषे कालासर्प होताहै श्रौर वो पवनसें इतर जो भोग तिससें रहित होताहै श्रौर इसका अर्थ मूलमें स्पष्ट कर्के लिखाहै देवेति ॥ १८ ॥ ताम्रेति श्रौर जो पुरुष

पितृमातृसुहृद्द्रोहाद्बकोभवतिखेचरः ॥ १७ ॥ पश्चादिति ॥ दानान्ते पश्चात्तापकरः नदत्वापरिकीर्त्तयेदितिनिषेधात् ॥ कोकिलः पश्चात्ता पेनोच्चैर्भाषी दातृत्वान्मधुरस्वरः ॥ पित्रिति ॥ पित्रादिद्रोहिणोन्तः कुटिलत्वात्तादृशीवकयोनिः खेचरइति भूचरव्यावृत्यर्थम् १७ यःशि वस्वोपजीवीस्यात्सभवेत्ससकोवने देवब्रह्मस्वहारीचकृष्णसर्पोभवेद्वने १८ यइति शिवस्वंशिवायार्पितंद्रव्यंतद्भोजी ससकः मृगविशेषः सतुलुब्धकैः प्रयत्नेनापिमारयित्वाभक्ष्यते । देवब्राह्मणद्रव्यचौरः कृष्णसर्पः पवनेत रभोगरहितः । १८ । ताम्रकांस्यापहारीचमेषयोनिपुजायते फलहारीच विंध्याद्रौकुंजरोजायतेवने ॥ १९ ॥ ताम्रादिहारीमेषः दृढतरशिरस्कः परस्परकलहेन ताम्रादिशब्दकारी पक्कापक्कभेदेनफलानांद्वैविध्यात्तद्ध रणपापफलस्यापिद्वैविध्यंदर्शयति फलहारीति पूर्वपक्कफलहारीइहत्वपक्क फलहारीतिभेदः विंध्याद्रौसिंहयहुलेतत्रहिसिंहाः फलवद्धस्तिशिरस्त्रोटयं तीतिभावः ॥ १९ ॥

ताम्रेकों श्रौर कांस्यकों चुराताहै सो जन्मान्तरमें मेषयोनिकों अर्थात् भिड्डूकी योनिको प्राप्त होताहै श्रौर तिसपापद्वारा वडे दृढकर्के युक्त जो शिर तिसवाला होताहै श्रौर आपसमय कलहकर्के ताम्रेकी न्यांईं शब्द करणे वाला होताहै इसमे एभी विचारहै फलांकों कच्चे श्रौर पक्के भेदकर्के यह दोप्रकार होणेतें तिनके चुराणेदा जो पाप सोभी दो प्रकारकाहै सोई कहतेहैं पूर्वमिति कि पहलें जो किहाहै सो पक्के होए फलकाकर्म विपाक किहाहै श्रौर इस जगामें कच्चे फलका कर्म विपाक कहतेहैं कि कच्चे फलके चुराणे वाला विंध्याद्रि नाम पर्वत विषे कुंजरकीयोनिको प्राप्तहोताहै अर्थात् हाथीहोताहै श्रौर एहि अर्थ मूलमे स्पष्टकर्केलिखाहै विंध्येति तिसजगावहुत सिंहरहतेहैं सोहस्तियांके शिरकों फलकीन्यांईंतोडदेहैं एहभावहै १९ ॥

अब और प्रकारकहतेहैं घंटेति कि जो पुरुष घंटेकों और बाजयोकों चुरांताहै सो घंठकेवना से वाला ठठिआर होताहै अथवा घंटेकी न्याई शब्द करणे वाला पक्षीहोताहै और शास्त्रके चुराणेवाला पुरुष कुत्तयोंकी योनिमे प्राप्तहोताहै क्योंकि शास्त्रकों उत्तमभोगसाधनहोणेतें और कुत्तयोंकोंनिंदित भोजनकरणेतें एह गति होणीयोग्यहै और इसका अर्थ मूलमे स्पष्टकर्के लिखाहै २० ॥ पादेनेति और जो पुरुष पादकर्के ब्राह्मणकों और अग्निकों स्पर्शकरताहै सो तीनजन्म पंगु क्या लूला होताहै और जो ब्राह्मण होकरके सुरापानकरताहै अर्थात् मद्यपानकरताहै सो श्वानयोनिकोंप्राप्तहोताहै क्योंकि ब्राह्मणकों मदिरापान मलभोजनके तुल्यहै और श्वानको मलभोजन नियतहै इसवास्ते तिसकोश्वानयोनियोग्यहै और इसका अर्थमूलमें स्पष्टकर्केलिखा

घंटावादित्रहारीचघंटाघंटोपिजायते शास्त्रचौरोनरोनित्यंशुनांयोनिपुजायते २० घंटादिवादित्रचौरः घंटांघटतइत्येवंशीलोघंटाघंटःघंटाघटकःघंटावच्छब्दनःपक्षिविशेषोवा शास्त्रेति शास्त्रस्योत्तमभोगसाधनत्वात् शुनांचनिंद्यभोजित्वात् २० पादेनाग्निंद्विजस्पर्शीपंगुर्जन्मत्रयंभवेत् सुरापानकरोविप्रःश्वयोनिंसमवाप्नुयात् २१ पादेनेति अग्निंद्विजंवायः पादेन स्पृशतिसतुजन्मत्रयपर्य्यंतंपंगुःपादहीनोभवति सुरेति योविप्रोभूत्वासुरांमद्यंपिबतिसश्वयोनिंगच्छति विप्रस्यसुरायामलतुल्यत्वात् शुनश्चमलभाजित्वात् २१ परवस्तुहरायेचसर्वभक्ष्याश्चयेनराः शृगालयोनिंगत्वाथकाकयोनिंव्रजंतिते २२ परेति यत्किंचित्परवस्तुहरणशीलाये येच भक्ष्याभक्ष्यविचारशून्यायस्यकस्यचिदपि कुलालरजकादेर्दत्तमन्नमश्नंतितेतादृशींपरमारितपश्वादिग्राहकां शृगालयोनिं भक्ष्याभक्ष्यविचारहीनां काकयोनिंचगच्छंतियोग्यत्वात् २२ मंत्रदीक्षाविहीनायेदीक्षांदद्युर्द्विजोत्तमाः तेनदोषेणविप्रास्तेमार्जारत्वंव्रजंतिहि २३ ॥

है पादेनेत्यादि ॥ २१ ॥ परेति और जो पुरुष दूसरेकी वस्तुकों चुरातेहैं और जो सर्वभक्षीहैं सो सृगालयोनिकों प्राप्तहोतेहैं अर्थात् गिदड योनिकों प्राप्त होकरके तिसके अनंतर काकयोनिकों प्राप्तहोतेहैं शृगालादिकोंकों भक्ष्याभक्ष्य विचारतें रहितहोणेतें और परवस्तुके चुराणेवालेकोंभी भक्ष्याभक्ष्य विचारतें हीनहोणेतें गिदडादिक योनिकी योग्यताहै २२ ॥ अब और कहतेहैं मंत्रेति कि जेडेब्राह्मण आप मंत्र और दीक्षासें रहितहैं और दूसरयां पुरुषां को धन और प्रतिष्ठाके लोभी होए २ दीक्षाका उपदेशकरतेहैं ॥ दीक्षानाम धर्म विशेषको बोधकरणे वाला जो चिह्नक्या चक्राकारादिक तिलक सोईहै पूर्वजिसके ऐसी जो उपासना क्या शैवी और वैष्णवी इत्यादिक तिनका स्वीकार करणा तिसको कहतेहैं तिस दोष कर्के

सो मार्जारक्या बिल्लेकी योनिको प्राप्त होतेहैं अर्थात् चूहेके घरमे आसकहै चित्त जिनका ऐसे होतेहैं क्योंकि शिष्यादिकोंके ग्रहणकी जो चिंता तिसकी योग्यता होणेते बिल्लेकी योनिहोणी तिनकोयोग्यहै और इसीका अर्थ मूलमे स्पष्टकर्के लिखाहै २३ अब और कहतेहैं छेदयेदिति कि जो पुरुष रस्तेके बीचमे घणी छायाकर्के युक्त जो वडावृक्ष वटआदि और जीवोंके उपर उपकार करणे वाला पुष्पितहोया २ अथवा फलयाहोया तिसकोकटताहै सो वृक्षके आश्रय रहणे वाला वनकाचूहा होताहै अर्थात् गाछडचूहा नामकर्के होताहै फेर तिसके अनन्तर सुगंधिका प्रति कूल जोदुर्गन्धि तिसका शोधन करणे वाला कुक्कुटहोवाहै

मंत्रेति ॥ धर्मविशेषबोधकचिह्नपूर्वमुपासनाविशेषग्रहणं दीक्षा स्वयं तद्विहीनाएवान्येभ्योधनप्रतिष्ठादिलोभिनोद्विजादीक्षां ददति ते मार्जाराः मूषकग्रहचित्तासक्ताभवंति ॥ शिष्यादिग्रहणचिंतायोग्यत्वात् २३ ॥ छेदयेद्योमहावृक्षंपुष्पितंफलितंतथा सजाहकोभवेत्सम्यक् पश्चाद्भवति कुक्कुटः ॥ २४ ॥ छेदयेदिति ॥ महावृक्षं ॥ मार्गमध्ये घनच्छायं वटादिकं पुष्पितंफलितं यं कंचिद्वा प्राण्युपकारकं छेदयेत् सजाहकः वनमूषको वृक्षाश्रितपक्ष्यादिभक्षःजन्मान्तरेच सुगंधप्रतिकूलदुर्गन्धशोधकः कुक्कुटो भवति २४ स्वगोत्रघातिनोयेचस्वगोत्रीपुचलंपटाः ऋक्षयोनिषुजायंते यावच्चंद्रदिवाकरौ २५ स्वगोत्रेति ॥ स्ववंशनाशकः स्वगोत्रीभोगीच तादृशीमृक्षयोनिंकल्पपर्यंतंयाति २५ दानेषुदीयमानेषुतत्रविघ्नंकरोति यः अन्धकूपेभवेत्सर्पोनेत्रहीनोनसंशयः २६ दानेष्विति दानेविघ्नकरो दातुःस्यात्तत्प्रतिकूलेऽन्धकूपेऽन्धोऽहिर्भवति २६ चक्रवाकोभवेत्सोपिस्नेहच्छेदंकरोतियः मातृपितृगुरुद्वेषीधर्मशास्त्रस्यनिंदकः २७ चक्रेति यःस्नेहभंजकः सतुस्नेहदुःखदांचक्रवाकयोनिंयाति चक्रवाकाहि. नदीपार्श्वेवसंति रात्रौच स्त्रीवियुक्ताभवंतीतिभावः ॥

और इसका अर्थ मूलमे स्पष्टकर्के लिखाहै महावृक्षमिति २४ और कहतेहैं स्वगोत्रेति कि जो पुरुष अपनेवंशका नाशकरताहै और अपणे गोत्रकीस्त्रीके साथ मैथुनकरताहै सो कल्पपर्यंत तैसीही ऋक्षयोनिको प्राप्तहोताहै २५ अब और कर्मफल कहतेहैं दानेष्विति कि जो पुरुष दानमें विघ्नकरताहै सो दाताके प्रतिकूल जो अन्धकूपहै तिसमें अन्धासर्प्पहोता है २६ चक्रवाकइति और जोपुरुष दूसरेकी प्रीतिकाछेदनक्या नाशकरताहै सो स्नेहकर्के दुःख देणे वाली जोचक्रवाकयोनि तिसमें प्राप्त होताहै और चक्रवाकातिनको कहतेहैं जो रात्रिसमय स्त्रीकर्के वियोगीहोए २ नदीके तीरमें पक्षी रहतेहैं २७

मात्रिति और जो माता और पिता और गुरु तिनके साथ द्वेष करणेवाला और जो परस्त्रीगम नादिकोंके करणेवाले धर्म शास्त्रको निन्दाकरणेवाला यह सभ हजारजन्म पर्यन्त गर्भमें नाशकोंप्राप्तहोतेहैं यह दूसरे अर्द्धश्लोकके साथ अन्वयजानणा २७ अब मात्रादिद्वेषीयोंका अभिप्राय कहतेहैं कि गर्भसें लेकर वाल्यादिक जो दुःखतिनके सहारणे वाले और सुख देणेवाले जो मात्रादिक तिनके साथ जो द्वेषकरताहै और पहले जो कहचुकेहैं सो मात्रादिकोंका द्रोहीकिहाहै द्रोही उसको कहतेहैं जो केवल अन्तःकरणमें कुटिलतावाला होवे और द्वेषी इसको कहतेहैं जो वाह्य और अन्तःकरणमें कुटिलता वाला होवे इसवास्ते पुनरुक्ती नहि जानणी ॥ एकाकीति और जो पुरुष इकल्लाही परिवार जो वालवृद्धादिक तिनको नादेकर मिष्टान्न भक्षण करताहै सो निर्जलदेशविषे जो सुक्का होयावृक्ष सहित छिद्रके अर्थात् सहित पुगरके तिसविषे जलकी

मात्रिति गर्भवाल्यादिदुःखसहनपूर्वसुखदात्रमात्रादिद्वेषी पूर्वंतुमात्रादि द्रोहीप्रोक्तः तयोरंतःकौटिल्यंद्रोहः वाह्यांतःकौटिल्यंद्वेषइतिभेदः धर्म शास्त्रस्यपरस्त्रीगमनादिवारकस्यनिंदकः एतेसर्वेऽपि जन्मसहस्त्रंयावद्गर्भ एवविनश्यंति इतिसार्द्धान्वयः ॥ २७ ॥ एतेगर्भेविनश्यंतियावज्जन्मसह स्त्रकम् एकाकीमिष्टमश्नातिपरिवारंविनातुयः ॥ २८ ॥ परिवारंवाल वृद्धादिकंविना स्वयं मिष्टभोगी सतु मरुदेशे निर्जलदेशे तत्रापि शुष्कवृ क्षेयत्कोटरंसछिद्रस्थानं तत्रसर्पोजलाभिलाषीतिभावः ॥ २८ ॥ नाराधि तंचयैःशैवंलिंगंविष्णुस्तथात्मभूः २९ शिवादिपूजाहीनान्निंदति ॥ नाराधि तमिति आत्मभूःब्रह्मा तत्पूजनंमानसं नतु विष्ण्वादिवत् यद्वातत्पूजनं ब्राह्मणपूजनम् २९ नपूजितातथादुर्गानतीर्थगमनंकृतम् नहुतंनैवजप्तंच नदत्तंब्राह्मणेगुरौ ३० दुर्गानवरात्रादावपिनपूजिता तेषामालस्यवश्यानां नरकेपतनंध्रुवम् तेषामिति आलस्येनत्यक्तकर्मणांनरके एव पतनम् ३०

अभिलाषावाला सर्प होताहै २८ इहां फल भेदहोणेतें मिष्टान्नभोगीका कर्मविपाक बहुतवारकिहाहै पुनरुक्ती नहिजानणी अब शिवादिकोंकी पूजासें हीन जो पुरुष तिनका कर्मविपाक कहतेहैं नाराधितमिति कि जिनोंने शिवलिंग नहि पूजयाहै और विष्णु और ब्रह्मा नहि पूजयाहै परंतु इसजगा ब्रह्माका पूजन मानसी जानणा कोई विष्णु और शिव जीकी न्याई नहि जानणा अथवा ब्रह्माके पूजनकरके ब्राह्मणोंके पूजनकाग्रहणहै २९ और जिनोंने दुर्गा भगवती नहि पूजीहै और तीर्थयात्राभी नहिकीतीहै और हवन और जप और ब्राह्मण और गुरुकेताई दान यहसव शुभकाम जिनोंनें नहिकीतेहैं और दुर्गापूजन नवरात्रयोंमेंभी नहि कीताहै ऐसे जो आलसकरके शुभकर्म त्यागने वाले पुरुष तिनासवनाका नरकमें गमन होताहै ३०

दुष्कर्मो का फल कह करके अब शुभकर्मोका फल भी संक्षेपते दिखातेहैं ॥ देवेति किजो पुरुष देवतयोंके पूजनविषे और तीर्थोंके स्नान विषे युक्त हैं और सत्यवचा यथार्थ कथनकरणा जो है तिसधर्मविषे युक्त हैं अर्थात् दूसरेको नहिभी जो प्यारा उसकोभी सत्यहिक थनकरतेहैं और शूरवीरहैं अर्थात् क्षत्रियादिहोकर युद्धविषे मरतेहैं और तपकरणा और इंद्रि योंकारोकना तिसकरके युक्तहैं सो अनेकजन्मोंविषे देवतयोंके मंदिरविषे क्रीडाकरतेहैं ३१ और इसीका अर्थ स्पष्टकरके मूलमें लिखाहै सत्येति ॥ • अब महापापियोंका कर्मविपाक कहतेहैं मनुजी॰सुवर्णेति॰ सुवर्णके चुराणे वाला खोटे नखोंवाला होताहै और मदिरापानकरणे वाला काले दंताको प्राप्तहोताहै अर्थात् दंदउसके काले होतेहैं और ब्राह्मणके मारणेवाला पुरुष क्षयरोगको प्राप्तहोताहै और गुरुकी शय्याविषे शयन करणेवाला दुश्चर्म्मताको प्राप्तहोताहै अर्थात् उसका चर्म खोटाहोताहै परंतु इसमै ऐसा समझणा कि बहोत काल नरक

देवार्चनरतायेच तीर्थस्नानपराश्चये सत्यधर्मरताःशूराःतपःसंयमसंयुताः तेतुजन्मान्यनेकानिक्रीडंत्यमरमंदिरे ३१ शुभकर्म्मणांतुस्वर्गगमनमि त्याह देवेति सत्येति सत्यंयथार्थभाषणं तद्धर्मरताः अप्रियमपि सत्य मेवभाषंतइत्यर्थः तादृशाअमरमंदिरेक्रीडंति ३१ अथमहापापिनां कर्म्मविपाकः ॥ मनुः ॥ सुवर्णचौरःकौनख्यंसुरापःश्यावदंतताां ब्रह्महाक्ष यरोगित्वंदौश्चर्म्यंगुरुतल्पगः १ ॥ यमः ॥ पतितःसंप्रयुक्तश्चकृतघ्नोगुरुत ल्पगः एतेपतंतिसर्वेपुनरकेष्वनुपूर्वशः महापातकसंयुक्तायुगंतिष्ठंत्यधो मुखाः १ मनुः ॥ श्वसूकरखरोष्ट्राणांगोजाविमृगपक्षिणां चांडालपुष्कसा नांचब्रह्महायोनिमृच्छति १ ॥

भोगके अंतविषे एह महापापी ऐसे फल को प्राप्तहोतेहैं कोई तत्काल हि नहि १ और कहतेहैं यमजी • पतितइति • कि जो पुरुष पतितहै और जो पतितका संपर्कीहै अर्थात् उसके साथ मिलाहुयाहै और जो कृतघ्नहै और जा गुरुकी शय्या विषे शयन करणे वालाहै इह सभ संपूर्ण नरकोंको प्राप्तहोतेहैं अर्थात् क्रमकरके सभनां नरकोंको भोगतेहैं और महापातककरके युक्त हुयेहुये युगपर्यंत अधोमुख होकर स्थित होतेहैं इहां केवल नरकभोगमात्रकिहाहै इसका जो भाविकर्म्म फलहै सो पूर्वोक्त मनुवचनसेहि जान णा १ और मनुजी कहतेहैं• श्वेति॰ श्वान और सूकर और गधा और ऊठ और गौ और बकरी और भिड्डु और मृग और पक्षी और चांडाल और पुष्कस क्या वनविषे राहिणे वाले नीच इनांयोनियांको ब्राह्मणके मारणे वाला प्राप्त होताहै १

कृमीति॰ कि जो ब्राह्मण मदिरापानकरताहै सोकृमि और कीट और पतंग और विड्भुज अर्थात् सूकरादि और पक्षी जो हैं काकादि और जीवोंके मारणेवाले जो जीवहैं व्याघ्रादि इनोंकीयांनो नियोंकोप्राप्तहोताहै॰ २ लूतेति॰ कि जो सुवर्णको चुराताहै सो पुरुष लूता अर्थात् उर्णनाभिजीव और किरला और तरेडेचलने वाले और जलविषें विचरणेवाले और हिंसाकरणेवाले जो जीव और पिशाच इनोंकी योनीकोंहजारवार प्राप्तहोताहै ३ तृणेति॰ किजोगुरुतल्पगहै अर्थात् गुरुकी शय्याके ऊपर शयन करताहै सो तृण क्या घास और गुल्म क्याविनाटाणेते वृक्ष और लता क्या वेल और क्रव्याद अर्थात् राक्षस और दाडों वाले और क्रूरकर्मोके करणे वाले जो जीव उनोंकी योनिकों सौवार प्राप्त होताहै ४ एहफल ज्ञानकर्के करणे वाले महापापियोंको कहाहै और अज्ञानतें इसीका प्रकार याज्ञवल्क्यजी कहतेहैं॰ महेति॰ कि अज्ञानकर्के पूर्वोक्तपापोंके

कृमिकीटपतंगानां विड्भुजांचैवपक्षिणाम् हिंस्राणांचैवसत्वानांसुरापोब्रा ह्मणोव्रजेत् २ लूताहिसरटानांच तिरश्चांचांबुचारिणां हिंस्राणांचपिशा चानांस्तेनोविप्रःसहस्रशः ३ स्तेनःस्वर्णस्तेनामहापापप्रसंगात् लूतोर्णा नाभिःसरटः कृकलासः। तृणगुल्मलतानांच क्रव्याददंष्ट्रिणामपि क्रूरकर्म कृतांचैव शतशोगुरुतल्पगइति ४ एतत्ज्ञानिनः अज्ञानकृतेतु याज्ञव ल्क्यः॥ महापातकजान्घोरान्नरकान्प्राप्यदारुणान् कर्मक्षयात्प्रजायंते महापातकिनास्त्विह १ मृगश्वसूकरोष्ट्राणांब्रह्महायोनिमृच्छति। खरपुष्क सवेनानांसुरापोनाऽत्रसंशयः २ कृमिकीटपतंगत्वंस्वर्णहारीसमाप्नुयात् तृणगुल्मलतात्वंच क्रमशोगुरुतल्पगः ३ योयेनसंवसत्येषांसतल्लिंगोभि जायते ४ एतेषांब्रह्महादीनांमध्येयेनपतितेनयः पुरुषः संवसति सत ल्लिंगोऽभिजायते

कीतयांहोंयां महापातकसे प्राप्त होणेवाले जोवडेघोर और दारुण नरक उनाकों प्राप्त होकर्के और कर्मक्षयसें पीछे सो पापी इस संसारविषें उत्पन्न होतेहैं १ मृगेति॰ब्राह्मणके मारणे वाला मृग और कुत्ता और सूकर और उष्ट्र इनोंकी योनिको प्राप्त होताहै॥ और खर क्या खोता और पुष्कस क्या चांडाल और वेनक्या नीचविशेष इनोंकी योनिकों मदिरा पानकरणे वाला प्राप्तहोताहै इसमेंसंशय नहिंहै २ कृमीति॰कृमिऔर कीट और पतंग इनांकीयोनिको सुवर्णके चुरा णेवाला प्राप्तहोताहै और गुरुतल्पग जो पापीहै सो तृण और लता और गुल्म इनाकों क्रमकर्के प्राप्तहोताहै ३यइति कि जो पुरुष जिस पतितके साथ निवासकरताहै सो तिसके लिंगकोंहि प्राप्तहोताहै अर्थात् ब्रह्महादिको जैसा फलहै तैसे फलको प्राप्त होताहै इसीका अर्थ स्पष्टकर्के मूलमेंलिखाहै॰ एतेषामिति ४

अब शंखजीनेविशेष किहाहै ब्रह्महेति किजो पुरुष ब्राह्मणको मारताहै सोकुष्टीहोताहै और तैजस क्या सुवर्ण तिसके चुराणेवाला मंडलीहोताहै अर्थात् उसके देहमे दद्रुके चिन्ह होतेहैं और गुरुके मारणे वाला अपस्मारी होताहै अर्थात् मिरगीरोगवाला होताहै ॥ अब सूर्यारुण कर्मविपाकमें और कहतेहैं गोस्त्रीति गौ और स्त्री और पुत्र तिनके मारणेवाले जो पापीहैं सो जन्मान्तरमें पुत्र नाशवाले होतेहैं एह ब्रह्महत्याका पुत्रनाशरूप फल प्रसिद्धहै और ब्रह्महत्याके कारण बहुतसारे सूर्यारुणमेंहैं सो उसीजगा जाणणे यइति जोकोई ज्ञानकरके रहित पूर्वजन्म विषे ब्राह्मणको मारताहै सो इसीजन्ममें कुष्टरोगकरके युक्तहोताहै १ अब प्रसंगतें ब्रह्महत्याके सम राजाके मारणेका जो पापतिसका कर्मविपाक कहतेहैं ॥ इसमें शाातातपजीका वचन है राजहेति कि राजाके मारणे वाला राजयक्ष्मरोग करके युक्तहोताहै ॥ अब वैश्यके मारणे वाले

शंखेनविशेषोदर्शितः ॥ ब्रह्महाकुष्टी तैजसापहारीमंडली गुरुप्रतिहंताऽप स्मारी । सूर्यारुणकर्मविपाके । गोस्त्रीपुत्रवधाःपापाः पुत्रनाशकरामताइति । ब्रह्महत्यायाः पुत्रनाशरूपफलाभिव्यक्तिता ॥ विशेषान्तरंसूर्यारुणे । यः कश्चिद्घातयेत्पूर्वंब्राह्मणंज्ञानवर्जितः । कुष्टरोगान्वितःसोपिजायतेऽत्रैवज न्मनि १ अथप्रसंगात् ब्रह्महत्यासमनृपवधकर्मविपाकः ॥ तत्रशातातपः ॥ राजहाराजयक्ष्मीस्यादिति ॥ वैश्यहंतुरपिब्रह्महत्यामहापातकसमतया तत्कर्मविपाकः । कर्मविपाकसमुच्चये ॥ छिन्नान्यंगानिजायंतेवैश्यहंतुस्ततः परम् ज्वरोशीतोष्णकोदाहश्रयानस्तन्निवृत्तये १ वैश्योऽत्रयागस्थोवोध्यः सूर्यारुणकर्मविपाकेतु अन्यथोक्तं यथा । योमोहाद्घातयेद्वैश्यमन्यजन्मनि मानवः सोऽत्रजन्मनिविज्ञेयोरक्तार्बुदसमन्वितः १ इति शरणागतवधेकेव लंनरकस्थितिः निंद्यतिर्यग्योनिश्चसर्वमुनिमतेन ॥

को ब्रह्महत्यासें उत्पन्नभयाजो पाप तिसके समहोणें करके तिसवैश्यहन्ताका कर्मविपाककहतेहैं सो किहाहै कर्मविपाक समुच्चय विषे छिन्नानीति ॥ कि वैश्यके मारणे वाला जन्मान्तरमें कटेहोए अंगों वाला होताहै और उसको शीतज्वर और उष्ण और दाह इहरोग भी होतेहैं और तिनके दूरकरणे विषे अयान क्या असमर्थहोताहै और वैश्यकरके. ईहांयज्ञमें स्थितजो वैश्य तिसकाग्रह णहै १ सूर्यारुणमें और किहाहै सो कहतेहैं जैसें ॥ यइति जो पुरुषमोहतेंपूर्वजन्मविषे वैश्यकोमार ताहै सो रक्तार्बुदरोगकरकेयुक्तहोताहै अर्थात् रक्तार्बुदनामकके जो कुष्टहै तिसवालाहोताहै १ अब प्रसंगसे शरणागतवधपापकाफलदिखातेहैं शरणागतकेमारयांहोयां केवलअर्थात् बहुतकालनरकमें स्थितिहोतीहै और निंदित जो तिर्यक्क्यापश्वादियोनि सो भी पीछे सबनाऋषियांकमतकरकेहोतीहै

अब गर्भघातीको ब्रह्महत्याके समहोणे करके तिसका कर्मविपाक कहतेहैं सो किहाहै सूर्यारुण विषें ॥ पुरेति कि जो पुरुष ज्ञानरहित पूर्वजन्ममें गर्भघात करताहै सो इसजन्ममें निरन्तरही जलोदररोग क्या उदर वृद्धि रोग तिस करके पीडितहोताहै ॥ १ ॥ और सुहृद्वधको भी ब्रह्महत्याके समहोणेतें तिसका कर्म विपाककहतेहैं सूर्यारुण विषे ॥ पूर्वेति पूर्वजन्म विषे जो पुरुष अज्ञानतें पुत्रकों और मित्रकों मारताहै सो इसी जन्ममें वायुरोगकर्के पीडितहोताहै १ और विश्वस्त क्या अपणाकर्के जाननेवाला तिसको विषदान करणेके पापको ब्रह्महत्याके समहोणेकर्के तिसका कर्मविपाक कर्मविपाकसमुच्चयतें कहतेहैं ॥ विश्वस्तेति कि जो पुरुष विश्वस्तपुरुष कों विष देताहै सो प्लीह क्या लिप्फरोगवाला होताहै और चशब्द कर्के शूल रोग वालाभी होताहै ॥ और तिसीकर्मविपाकसमुच्चयविषे नास्तिकता कर्के संध्यादित्यागकोभी

गर्भघातस्यापिब्रह्महत्यासमतया तत्कर्मविपाकः सूर्यारुणे ॥ पुरागर्भंतु यःकश्चिद्घातयेद्ज्ञानवर्जितः जलोदरेणसततंरोगेणात्रप्रपीड्यते १ ॥ सुहृद्वधस्यापितत्समत्वात्तत्कर्मविपाकः । सूर्यारुणे । पूर्वजन्मनियोऽज्ञानात् नरोवैघातयेत्सुतं मित्रंवावायुरोगेणपीड्यतेसोऽत्रजन्मनि १ इति विश्वस्त विषदानस्यापि ब्रह्महत्यासमतया तत्कर्मविपाकः ॥ कर्मविपाकसमुच्चये विश्वस्तविषदाताचप्लीहवान् जायतेनरः चशब्दाच्छूलीच । तत्रैव । नास्तिक्यात्संध्यादित्यागस्यापितत्समत्वात्तत्कर्मविपाकः ॥ पूर्वजन्मनिनास्तिक्यात्संध्यादिरहितोद्विजः हस्तशूलीच भवति इति ॥ गुरुप्रातिकूल्यस्यापि तत्समत्वात्तत्कर्म विपाकः तत्रैव ॥ गुरोर्निर्बंधतोयस्तु प्रातिकूल्यंसमाचरेत् सोऽपस्मारी भवेत्तत्रेति । गुरूपरोधस्यापि तत्समतया कर्मविपाकः तत्रैव । गुरूपरोधीशिरसिरोगवान्जायतेनरः एतत्साम्येन गुरुणावाग्विरोधस्यकर्मविपाकमाह । बौधायनः । वाग्विरोधं गुरोः कृत्वामुखरोगीभवेन्नरः १

ब्रह्महत्याके समहोणेकर्के तिसका कर्मविपाककहतेहैं ॥ पूर्वेति कि नास्तिकता कर्के पूर्वजन्मविषे जो पुरुष संध्यादिकोंसें रहितहै सोहाथोंमे शूलरोगवालाहोताहै और गुरुके साथ जो प्रतिकूलता तिसकोंभी ब्रह्महत्याके समहोणेकर्के तिसकाकर्मविपाककहतेहैं गुर्विति कि जो पुरुष हठ कर्के गुरुके साथ प्रतिकूलरहताहै अर्थात् शत्रुभावकरताहै सो अपस्मारी क्या मिरगी तिस कर्के युक्त होताहै ॥ और गुरुको हरकिसीकाममें हठकर रोकणा तिसकोभी ब्रह्महत्याके समहोणे कर्के तिसका कर्म विपाक कहतेहैं कि जो पुरुष हठ कर्के गुरुयोंको सबनां कर्मोंसें रोकताहै सो शिरविषे रोगवाला होताहै ॥ और इसी पापकी साम्यता कर्के गुरुके साथ वाणी कर्के विरोध करणे वाला जो पुरुष तिसका कर्म विपाक कहतेहैं ॥ वाग्विरोधमिति कि जो पुरुष गुरुयोंके साथ वाणी कर्के भी विरोध करताहै सो मुखरोगी होताहै अर्थात् थथला होताहै १

अब गुरुद्वेषकोंभीस्पर्धाके समहोणेतें तिसके करणेवालेकाकर्मविपाककहतेहैं ॥ गुर्विति गुरुद्वेषीजैसेंहै तैसेंहि अपरक्या स्पर्धाकरणेवालाजानणासोई इस वाक्यके अनन्तरकिहाहै दुरिति किंगुरुद्वेषीनरक भोगकर दूसरे जन्ममें दुर्मन क्या खोटे मनवालाहोताहै फेर मृतपुत्र होताहै फेर चर्मकील व्याधि करके युक्त होताहै अर्थात् उसके मुखमे एकचर्मदाकिछा होताहै २ और वेदसेंवहिर्भूत जो शास्त्र तिसके पढनेकोभी गुरुद्वेषके समहोणेतें तिसकाकर्मविपाक कहतेहैं दंष्ट्रीति कि दंष्ट्री जो सर्पा दिक और पशु तिनसें गुरुनिंदा करके और वाह्यशास्त्रके पढने करके मृत्युको प्राप्त होताहै सोई निर्जलदेशमें वनविषे ब्रह्मराक्षस होताहै अर्थात् मरणेसें पछि ब्रह्मराक्षस भावको प्राप्तहोताहै ३

गुरुद्वेषस्याप्येतत्समत्वात्तत्कर्त्तुःकर्मविपाकः तत्रैव ॥ गुरुद्वेषीतथापरइतिकथनानंतरं। दुर्म्मनाश्चैवजायेत नरकांतेन्यजन्मानि मृतपुत्रश्चर्मकीलव्याधियुक्तोभवेच्चसः २ वेदवाह्यशास्त्राध्ययनस्यैतत्समत्वात्तत्कर्मविपाकोऽपितत्रैव यथा ॥ दंष्ट्रिभ्यश्चपशुभ्यश्चमरणंगुरुनिंदया वेदेभ्योवाह्यशास्त्रस्यपठनादपिजायते अरण्येनिर्जलेदेशेजायतेब्रह्मराक्षसः ३ मरणानंतरंब्रह्मराक्षसत्वावाप्तिरित्यर्थः। गर्वेणगुर्ववज्ञाकर्त्तुरपितत्समतयातत्कर्मविपाकः। मातापित्रोर्देवतायागुरोरपिचगर्वतः अवज्ञांकुरुतेयस्तुशिवपादाभिधोग्रहः ४ गृह्णातितत्क्षणान्मूर्ध्निजठरेरोगवान्भवेत् पाददाहीज्वरीचैवजायतेनात्रसंशयः ५ अत्रैवप्रकारान्तरम्। देवब्राह्मणगुर्वार्ययोगेशाद्यवमानिनाम् शिशुग्रहःसंक्रमतेततोज्वरयुतोभवेत् अतीसारीचाथशोफीहस्तपादप्रकंपवान् १

और गर्वक्या अहंकार तिसकरके जो गुरुयोंकी अवज्ञा करताहै तिसकोंभी पूर्वोक्त पापके समहोणेकरके तिसकाकर्मविपाककहतेहैं ॥ मातेति किजो माता और पिता और देवता तिनोंकोगर्वकर्के अवज्ञाकरताहै तिसकों शिवपादनामाग्रहमस्तकविषेग्रहणाकरताहै ४ और वो पुरुष उदरविषे रोगवाला और पादोंमें दाहरोगवाला और ज्वरवालाभी होताहै इसमे संशय नहिहै ५ इसमे और प्रकारकहतेहैं देवेति जो देवता और ब्राह्मण और गुरु और आर्य्य क्या श्रेष्ठ और योगेशादिक क्या योगाभ्यासके वेत्ता तिनका तिरस्कारकरणेवालेहैं तिनकों शिशुग्रह रोग होताहै तिसकें अनन्तर ज्वर और अतीसार और मुखमें और पादोंमे कंपन यह रोगहोतेहैं १

अथ पुरुषका कर्म विपाककहकर्के स्त्रीका कर्म विपाक कहतेहैं जो किहाहै ॥ कर्मविपाक संग्रहविषे भर्त्रेति कि जो नारी पतिके सुखकर्के सौख्य युक्तनहिहोतीहै सोस्त्री तीन वर्ष अथवा पांचवर्ष जन्मान्तरमें श्येनीहोतीहै अर्थात् बाजकीस्त्री होतीहै इसजगा पुस्तकांतरमे (त्रीणि जन्मानिपंचच) एहपाठहै इसका अर्थ स्पष्टहै ॥ इसते योग्यताएहहै कि बाजकी स्त्रीका पतिके साथ स्नेह बहुतहै और वियोगभीबहुतहै इसमै ऐसाअभिप्रायहै किजिसमै स्नेह अधिकहै उसके वियोगमेंभीदुःखअधिकहै १ वाचेति और जो स्त्रीवडाकठोर शब्दकरणेवाली वाणीद्वारा पतिनूं रोककर अकार्य क्याखोटाकामकरातीहै सोनारीवडेपापण जन्मान्तरमें वल्गुली होतीहै अर्थात्

अथस्त्रीकर्म्मविपाकः॥ भर्तृसौख्येनयानारीसौख्ययुक्तानजायते साश्येनी जायतेराजन्त्रीणिवर्षाणिपंचच १ वाचाचाक्रोशकाभर्तुःसंनिरुध्यपतिं हियाअकार्यंकारयेत्पापासानारीवल्गुलीभवेत् २ भर्तुरर्थेह्यियावित्तंविद्य मानंनयच्छति जीवितंवावरारोहेविष्टायांजायतेक्रिमिः॥ क्रिमियोनिविनि मुक्ताकाष्ठकीटाभवेत्तुसा ३ ॥

किरली होतीहे इसमें एह योग्यताहै कि वाणीसें दुर्वचनकहनवालीको वल्गुलीकीयोनि वाणी के विलासका सुखदूरकरणे वाली उचितहै २ भर्तुरिति और जो नारी विद्यमान जो वित्त क्या धनजीवनरूप तिसको पतिके अर्थवास्ते नहि देतीहै सो जन्मान्तरमें विष्टाविषे क्रिमियोनिको प्राप्तहोतीहे ३ क्रिमिरिति और क्रिमियोनिकोंभोगकर फेर काष्टविषेकीडीहोतीहै जिसकर्केपति काहिधनहै तिसको पतिके अर्थ लगाणा अच्छाहै परंतु जिसदुष्टानेनहिंदित्ता तिसको ऐसीनिंदि तयोनि धनके भोगसेहीन होणीयोग्यहै ३

और कर्म संग्रहविषे किहाहै ॥ अवमत्येति कि जो स्त्रीपतिका अपमानकर्के जारकों आलिंगन कर्के तिसीकेसाथक्रीडाकरतीहै और तिसीकों स्वीकारकरतीहै १ तस्याइति फेर जन्मान्तरमें तिसकेकुचोंमें शोथक्या सोजाउत्पन्नहोताहै फेर तिसकीभगसें जन्म २ में रक्त क्या रुधिर वगदा है २ मृतइति और जो नारी पतिके मरणेसे पीछे नीलवस्त्र धारतीहै सो मरकर नरककों प्राप्तहो तीहै फेर नरक भोगकर मनुष्यशरीरमें प्राप्त होकर्के क्रिमिकुक्षि होतीहै अर्थात् तिसकी कुक्षिमें कीडे उत्पन्नहोतेहैं ३ इसीका और प्रकार शिवगीतामें किहाहै ॥ क्षुदिति किजो नारी क्षुधातृषाकर्के आतुरहोए २ पतिका अपमानकर्के मिष्टान्नकों आपही भक्षणकरतीहै सो जन्मान्तरमें गर्भसें रहित

कर्मसंग्रहे ॥ अवमत्यचभर्त्तारंजारमालिंग्यतेनच साधंक्रीडतियानारी तमेवानुसरत्यपि ॥ १ ॥ तस्यास्तुस्तनयोःशोथोजायतेजन्मांतरे भगंरक्तं चस्त्रवति नित्यंजन्मनिजन्मनि ॥ २ ॥ मृतेभर्त्तरियानारी नीलवस्त्रंप्रधार येत् सामृतानरकंयातिक्रमिकुक्षिस्ततःपरम् ॥ ३ ॥ ततःपरं नरकभोगानं तरंमानुष्यशरीरमासाद्येत्यर्थः ॥ ३ ॥ शिवगीतायाम् ॥ क्षुत्पिपासातुरं नारीभर्त्तारमवमत्यया मिष्टान्नंस्वयमश्नातिनसापुष्पवतीभवेत् ॥ १ ॥ वृद्धगौतमः ॥ स्रवद्गर्भाभवेत्सातुबालकंहंतियाविषैः ॥ कर्मविपाकसंग्रहे ॥ क्षीरंमुष्णातियानारी पूर्वजन्मनिसुव्रता जन्मांतरेतुतस्याविक्षीरंनक्षरते स्तनात् १ ब्रह्मांडपुराणे ॥ नित्यंसकलहानारीजायतेवनमक्षिका भर्त्ता रंवंचयेद्यातुजलौकाजायतेवधूः १ नित्यमिति कलहकर्त्रीस्त्रीसशब्दाव नमक्षिकाभवति भर्तृवंचिकातुजलौका पुरुषसंगसुखरहिता निंद्यरुधिरा दिभोक्त्री ॥ १ ॥

होतीहै १ और इसीका कर्मांतर वृद्धगौतमजीकहतेहैं ॥ स्रवद्गर्भेति जो नारी विषदेकरकेबालककों मारतीहै सो जन्मान्तरमें स्रवद्गर्भाहोतीहै अर्थात् तिसका गर्भ गिडजाताहै १ अब और किहाहै कर्मविपाकसंग्रह विषे क्षीरमिति जो नारी पूर्वजन्मविषे दुग्धको चुरातीहै तिसके स्तनोंसें जन्मा न्तरमें दुग्ध नाहि उत्पन्न होताहै १ ब्रह्मांडपुराणविषें और प्रकार किहाहै ॥ नित्यमिति जो नारी नित्यदिसकलहाक्या लडाई करणेवालीहै सो शब्दकरणेवाली वनमें मक्षी होतीहै ॥ और जोपति कों वंचन करतीहै अर्थात् पतिको ठगतीहै सो जन्मान्तरमें पतिसंगसुखसें रहित और निंदित रुधिरादिकोंका भक्षणकरणेवाली जलौका क्या जुकहोतीहै १

श्रोर स्त्रीयोंकोभी ब्रह्महत्याकाफल क्षयरोग प्राप्तिहोतीहै सोई किहाहै सूर्यारुण कर्म विपाक विषे ॥ येति जो नारी निश्चयकरके अपनी इच्छासें पूर्वजन्मविषे ब्रह्महत्याको करतीहै सो इसजन्ममें क्षयरोग वाली होतीहै १ नेति हेपक्षिसत्तम तिसके पापका शमन क्या शान्ति मैंने नहि कही श्रोर महापापसें उत्पन्न हुया जो रोग तिसकरके मृत्युको प्राप्तहोतीहै इसमें संशय नहि जानणा २ पूर्वेति श्रोर जो पूर्वजन्ममें ब्राह्मणको श्रोर पुत्रको मारतीहै अथवा ब्राह्मणकेपुत्रको मारतीहै सो जन्मांतरविषे श्रोर जिस अवस्थामे ब्राह्मणपुत्र मारयाहै तिसी अवस्थामे कुष्टरोगकरके युक्तहोतीहै ३ इसीका श्रोर फलकहतेहैं ॥ जायतइवि फेर जन्मधारकर गलत्कुष्टकरकेही अर्थात् जो सदाहि वगता रहताहै ऐसे कुष्ट करके मृत्युको प्राप्त होतीहै मैंने यह ज्ञानकृत पापका

स्त्रीणामपि ब्रह्महत्याफलं क्षयरोगावाप्तिः॥ सूर्यारुणकर्मविपाके ॥ यायापिदाचरेत्कामात्पूर्वजन्मनिनिश्चयात् ॥ ब्रह्महत्यामथात्रैवसाज्ञेयाक्षयरुग्युता १ नतस्याःपापशमनंमयोक्तंपक्षिसत्तम महापापकृताद्रोगान्मृत्युरेवनसंशयः २ पापाल्पतयास्वल्परोगवत्त्वम् ॥ पूर्वजन्मनियाकाचित्घातयेद्ब्राह्मणंसुतं सान्यजन्मनिकुष्टेनतस्मिन्वयसिपीडिता ३ जायतेम्रियतेचापिगलत्कुष्टेनचांडज पापादज्ञानकृतात्पूर्वान्नचोक्तंतन्मतंमया ४ गर्भघातिन्यानार्य्याअपि तत्रैव ॥ यानारीघातयेत्काचित्परगर्भंतुकाश्यपे जलोदरेणरोगेणपीड्यतेसाऽन्यजन्मनि ५ श्रीमदिति ॥ पर्य्यालोचितेति ॥ पूर्वोक्तमनुसंधेयम् ॥

फल नहि कहा किंतु अज्ञानकृत पापका कहाहै यह मेरामतहै श्रोर ज्ञान करके जो कदाचित् ऐसा पापकरे तद अधिक दोष जानणा ४ येति जो कोई नारी दूसरेके गर्भका घात करतीहै सो जलोदर रोग करके दूसरे जन्ममे पीडाको प्राप्तहोतीहै ॥ ५ इसजगा गर्भघातयेत् ऐसाहि कहणाथा परंतु परगर्भ करके इस जगाजारजगर्भजानणा क्योंकि तिनकीभी रक्षाकरणी उचितहै श्रोर पतिके गर्भको कोइ स्त्रीघात नहि करती इसकरके परगर्भ ऐसा किहाहै ५ श्रीति एह दोनोश्लोकापिछे प्रकरणके अंतविषे आए हैंन इस जगा सो स्मरणकरलेणे श्रीमदिति पर्य्यालोचितेति इनका अर्थ पीछे कहदियाहै

इति श्रीमन्महाराजाधिराजजम्बूकाश्मीराद्यनेकदे
शाधीशप्रभुवरश्रीरणवीरसिंहाज्ञप्तसारस्वतपं
डितोपनामदेवीदत्तसुत कविगंगारा
मसंगृहीतेधर्मशास्त्रमहानिबंधे
प्रायश्चित्तभागे कर्मविपाक
नामकंचतुर्थप्रकरणम्

इतिभाषाटीकायांचतुर्थ
प्रकरणम्

शुभं भवतुसर्वत्र

॥ श्रीरणवीरकारितप्रायश्चित्तसूचीपत्रमिदम् ॥

॥ श्रीरा[illegible]सूचीपत्रमिदम् ॥



पृ.	पं.		अशुद्ध	शुद्ध
१२	८	टी०	धम्म	धर्म्म
१३	१	म०	ततोद्विधि	ततोद्विधि
१७	१२	मू०	क्षधर्म्म	क्षमधर्म्म
१७	३	टी०	वक्वरा	वक्खरी
२१	२	टी०	गयत्री	गायत्री
२८	५	मू०	प्रायण	प्रायेण
२८	६	मू०	रिरवार्षीक	रीरवार्षिक
५०	९	मू०	राग्वह्म	राङ्ब्रह्म
५७	२	टी०	गार्हित	गर्हित
५८	६	टी०	ब्रह्म	ब्राह्म
६०	६	मू०	णागि	णांगि
६२	८	मू०	मन	मान

द्वितीयप्रकरणम्

पृ.	पं.		अशुद्ध	शुद्ध
९३	५	मू०		
९३	१	टी०	क्षरका	क्षराका
९९	१	म०	कस्वापि	कस्यापि
१०१	२	टी०	विधानायक	विधायक
१०४	१	मू०	कादोषः	कोदोषः

॥ ऊँश्रीः ॥

श्रीमन्महाराजाधिराजजम्बूकाश्मीरातिब्वताद्य नेकदेशाधीश श्रीयुत श्री १०८ महाराजरण वीरसिंह वहादुर जी की आज्ञानुसार यह धर्म्मशास्त्र महानिवंधसर्वलोकोपकारके वास्ते मुद्रित हो रहाहै इसके दो भाग मुद्रित हो चुकेहैं वो दोनों भाग सुज्ञ पुरुषों के पास भेजे जाते हैं उनकों उचित है कि इस पुस्तक को देखें और विचारें और आगे के भाग मुद्रित हो जावें गे तो वो भी उनकों भेजे जावेंगे पर न्तु जिसके पास यह पुस्तक पहुंचे उसकों चाहिए कि अपना नाम लिख कर भेज देवे उ सका नाम प्राति दैनिक पुस्तकमें लिखाजावेगा



अथ पांचमा व्रत प्रकरण कहीदाहै इसका उपयोग सारे ग्रंथमे है और पूर्वोक्त (स्वतेमिरंत्रा) इत्यादि श्लोकका स्मरण करलेणा और भी मंगलार्थ श्लोक कहीदाहै स्मृतीति मै जो गंगारामशर्मा हां सो मन और वाणि और देह इनां कर्के गुरांके चरणांनू नमस्कार कर्के प्राजापत्य कृच्छ्रादि जो व्रत तिनांके समूह नूं कहताहां पापांके दूरकरणे वास्ते ॥ कैसा व्र तांका समूहहे जानयाहै पुण्यका सतत्व क्या प्रकाश साधन जिनांने तिनां कर्के जो निरंतर अंगीकार करीदाहै ॥ फेर कैसाहे स्मृतियां जो संपूर्ण तिनांके रचनेकी जो प्रक्रिया तिसविषे जो शिरोमणिहै अर्थात् राजाहै फेर कैसाहै दोषनें रहितहै ॥ १ ॥ तिस व्रत प्रकरणविषे पहि ले व्रत शब्दका अर्थ भिन्न कर्के कहीदाहै इस विषे जो व्रत शब्द है सो करणे योग्य विषय कर्के युक्त और काल क्या समयकर्के संकुचित क्या इतना काल व्रत है ऐसा नियम करणा सो

ॐस्वस्तिश्रीगणेशायनमः स्मृतिसकलनिबन्धप्रक्रियासार्वभौमं विदित सुकृतसत्त्वैः सेव्यमानंनितान्तम् निचयममलमंहःक्षालनायाभिधास्येगुरु पदमभिवंद्यव्रह्मकृच्छ्रादिकानाम् १ तत्र तावद्व्रतशब्दार्थोविविच्यते व्र तंचात्र करणीयविषयतयानुवद्धःकालविशेषावछिन्नश्च नियमविशेषएव सचरामनवमीश्रीकृष्णजन्माष्टमी प्रभृतिनियमेपि यद्यप्यस्ति तथापि कृ च्छ्रचान्द्रायणादिनियमविशेषएव प्रायश्चित्तप्रणेतृभिःप्रयुज्यतेऽतःसएवा त्रानुसंधेयः ॥ एतदपिव्यवह्मारनिरोधकनरकानुकूलपापशक्तिद्वयनिरासा भिप्रायेणैव वोध्यम् नियमांतराणां पापनाशकत्वमात्रएव प्रयोगान्न तत्र मुख्ययावृत्त्या व्रतशब्दप्रवृत्तिः ॥ तथाच ॥ प्रायश्चित्तापरपर्य्याये कृच्छ्रचांद्रायणादावेवायंरूढः

जैसा है तैसे कथन करतेहां जैसे रामनवमीका व्रत और श्रीकृष्णजन्माष्टमीका व्रत इत्यादि नियम विषे भी यद्यपिहै तदभी प्रायश्चित्तके कहन वालयां ऋषियांनें कृच्छ्र चांद्रायणादिनियम विशेष विषे ग्रहणकीयाहै इसकारणतें सोई इसप्रकरणविषे जानणेयोग्यहै ॥ एभी व्यवहार निरोध क्या सवकार्यंते संवंधियांनें वाहर करदेणा और नरक विषे प्राप्त करणा एह दो २ पापकियां श क्तियांके दूर करणे तें व्रत शब्द कृच्छ्रादि विषे जानणा और जो रामनवमी आदिक व्रतहैं सो एकपापशक्तिकों दूरकरतेहैं व्यवहारनिरोधकों नहि दूर करते ॥ जिसकर्के रामनवमी आदि जो नियम तिनांका पापांके नाशविषे हि योजना होणेतें नहि तिस विषे मुख्यवृत्तिकर्के व्रतशब्दकी प्रवृत्तिः हुंदीहै तांते प्रायश्चित्त भी कृच्छ्र चांद्रायणादिशब्दकाहि दूसरा नामांतरहै

और व्रतशब्द नियमविषे कहाहै एह अमरका वचन उपवासादिपुण्यक सामान्य व्रतके अर्थ विषें जानणा योग्यहै इसीकारणतें पंडितांने मानया जो व्रतका प्रसिद्धविषय सो संकल्पविशेषहि ग्रहण कीताहै ऐसे व्रतकी व्याख्या व्रतार्कविषें कथनकरीहै ॥ औरभी अपनेविषें करणे योग्य कार्य विशेष जो संकल्प विशेषहै सो व्रत किहाहै सो ऐसे व्रतकी व्याख्या देह और वाणी और मन इनांके व्यापार विषे न युक्त होणेंतें नहि अंगीकार कीती क्योंकि मन कर्के जो कर्म कियाहै सो संकल्प कहीदाहै ऐसे कहणेंते ॥ इसविषें असांने व्रत ग्रहण कियाहै जो देह और वाणी और मन इनांकर्के होवे ॥ सो कहतेहां अत्रेति इस विषे व्रत जोहै रात्रिके मुख क्या संध्या-समय विषे ग्रहण करणे योग्यहै बाहर आकाश विषे नक्षत्रके दर्शन कों करके इस कहणेंते देहका व्यापार सिद्ध हुया नक्षत्रांकादर्शन देहकर्के हि सिद्ध होताहै इस अभिप्रायसें ॥ और

नियमोव्रतमस्त्रीतच्चोपवासादिपुण्यकमित्यमरवचनंतु सामान्यव्रताभ प्रायेण बोध्यम् ॥ अतएवाभियुक्तव्रतप्रसिद्धविषयः संकल्पविशेष एव व्रतमितिव्रतार्केभिहितम् ॥ यत्तु ॥ स्वकर्त्तव्यविषयकसंकल्पविशेषोव्रत मिति तत्कायवाङ्मनोव्यापारेऽशक्तत्वादुपेक्षितम् ॥ संकल्पः कर्ममान समित्यभिधानात् ॥ अत्रहि व्रतंनिशामुखेग्राह्यं वहिस्तारकदर्शनइत्या दिना कायव्यापारस्य रौरवयौधाजपेन्नित्यमित्यनेनच वाग्व्यापारस्या प्यपेक्षितत्वेन प्रायश्चित्तार्थकथनप्रस्तावे तेषां नित्यस्थापनेन नि यमस्तु स यत्कर्मनित्यमागंतुसाधनमित्यनेन तत्र शक्तत्वाभ्युपगमात् ॥ मनुस्तु यैरभ्युपायैरेनांसिमानवोव्यपकर्षति तान्वोभ्युपायान्वक्ष्यामि देव र्षिपितृसेवितानित्यनेन देवर्षिपितृसेवितत्वे सति पापापायजनककर्मविशे षत्वंव्रतत्वमितिलक्षणमित्यभिप्रायात् ॥

रौरव यौधा एह जो ऋचा तिनांकों नित्य पठन करे इस कहणेंतें वाणीके व्यापार कों भी सिद्ध होणेंते प्रायश्चित्तके अर्थके कथन करणेके प्रसंग विषे तिनां देहआदि व्यवहारांको नित्य ग्रहण करणे कर्के ॥ नियम सो कहीदाहै जो कर्म नित्य होवें और प्राप्त होणा जो पुण्य फल तिसका साधन होवे इस कहणे कर्के तिसविषे योग्य होणेंतें ॥ इसीमे मनुजीका वचनहै यैरिति जिनां उपायों कर्के पापांको मनुष्य दूरकर्त्ताहै तिनांको कथन करताहां जो देवताऋषि और पितरां कर्के सेवित हैं इस कथन करणेंतें एह लक्षण व्रतका हुआ कि देवताऋषि और पितर इनां कर्के अंगीकारके होयांहोयां पापके दूर करण विषे जो कर्म विशेष है सो व्रत कहीदा है इस अभिप्रायसें ॥

तानीति प्राजापत्य और सांतपन और पराक चांद्रायण और ब्रह्मकूर्च इतनेहि है होरजो व्रतहैं सो तिनां प्राजापत्यादिके अंतर्गत क्या मध्य विषे हिहोणेते ॥ इत्थे जो कृच्छ्र शब्दहै सो द्विजादिशब्द कीन्याई है जैसें एक द्विज शब्द ब्राह्मणवर्णविषे है और ब्राह्मणक्षत्रि वैश्य तिनांवर्णांविषे भी वर्त्तताहै तैसेहि कृच्छ्रशब्द सामान्यकरकेव्रत मात्रविषे किहाहै और विशेषकरके प्राजापत्यविषे कहा है ॥ और शूलपाणिका ऐसा बचनहै जो दूसरे पदतें रहित केवलकृच्छ्रहै सो प्राजापत्यका हि नामहै जो दूसरे शब्दके साथ है जैसे पर्णकृच्छ्र आदि सो तिस तिस व्रतका वाचकहै इसके लक्षण और भेद अगे कहांगे ॥ किंचेति कुछक होर कहाहै कविसंप्रदायविषे जैसें हथकीया अंगुलीयां पंच हैं और पंच महाकाव्य और पंच व्रत और पंच पांडुके पुत्र और पंच इंद्रिय इत्यादिक पंचादि की गिणती विषे कथन करणे वाले प्रसंग विषे गिणतीतें पंच हि व्रत हैं

तानितु ॥ प्राजापत्य सांतपन पराकचांद्रायण ब्रह्मकूर्चाख्यानि व्रतांतराणामेतदंतःपातित्वात् कृच्छ्रशब्दोहिद्विजादिशब्दवत्सामान्यविशेषवचनः॥ शूलपाणिस्तु निरुपपदःकृच्छ्रःप्राजापत्यापरपर्यायः। सोपपदस्तु तत्तद्वाचक इत्याह एतल्लक्षणानि भेदाश्चवक्ष्यंते किंच कविसंप्रदाये करांगुलिमहाकाव्यव्रतपांडुसुतेंद्रियमित्यादिपंचसंख्याबोधकप्रस्तावे गणनात्पंचैव व्रतानिभवंति तानि एकभक्तनक्तायाचितोपवासनिषेधपालनरूपाणिज्ञेयानि सर्वेषां तदंतर्गतत्वात् ॥ अथादौकृच्छ्रादिव्रतप्रत्याम्नायाद्युपयोगितया मानपरिभाषालिख्यते। तथाचयाज्ञवल्क्यः। जालसूर्यमरीचिस्थंत्रसरेणुरजः स्मृतम् तेऽष्टौलिक्षास्तुतास्तिस्रोराजसर्षपउच्यते १

सो दिन विषे एक वार भोजन करणा १ और नक्त भोजन २ और अयाचित भोजन ३ और उपवास ४ क्या कुछना भक्षण करणा और निषेध का पालना ५ जैसे श्रावण मासविषे शाककों त्याग ऐसे जानणे॥ होर संपूर्ण व्रतांको तिनांकेहि मध्यविषे प्राप्तहोणेते ॥ अथेति इसतें उपरंत आदविषें कृच्छ्र आदिव्रतंकेहि पुण्य फलके देण वाला होर उपायादि तिसके उपकारी होणेते मान परिभाषा लिखीदी है ॥ तथेते याज्ञवल्क्यजी का वचनहै झरोखेके रस्ते जो सूर्यकीआं किरणा विषे धूळिका किणका प्रतीतहै तिसका नामं त्रसरेणु कहीदाहै और त्रसरेणु अठ ८ होण तिसका नाम लिक्षाहै लिक्षा त्रय होण तो राज सर्षप कहीदाहै तिनां की गणना करीदी है १

राज सर्षप त्रय होण तिसका नाम गौर सर्षप है गौर छे होण तिसका नाम यवहै सो त्रय होंण तां तिसका नाम कृष्णल होताहै क्या रत्ती कहीदीहै सो पंच होण तिसका नाम मासा है सो सालां होण तां तिसका नाम सुवर्णहै सो चार होण वा पंच होण तिसका नामपल क्या छटा क होताहै २ जो यवमध्य कहाहै सो छोटा और वडा जो यव तिसके दूर करण वास्ते कहाहै अव होर मतकर्के कहतेहैं स्मृत्यंतरविषे नौ मासे १ परिमाणहै जिसका ऐसा जो स्वर्ण तिसका नाम वराह है ऐसेभी जानणा ॥ दोवराह होण तिसका नाम निष्कहै ॥ मार्कंडेय ऐसे कहता है झरोखेके रस्त सूर्यकायां किरणों विषे जो पर ब्रह्मस्वरूप वायुकर्के प्रतीत होताहै तिसका नाम

गौरस्तुतेत्रयः पट्तेयवोमध्यस्तुतेत्रयः कृष्णलःपंचतेमापस्तेसुवर्णश्चषोडश २ पलंसुवर्णाश्चत्वारःपंचवापिप्रकीर्त्तितम् यवोमध्यइतिलघुगुरुव्यवनिरासार्थम् ॥ नवमापमितंस्वर्णंवराहइतिकीर्त्तितइतिस्मृत्यंतरे। द्विवराहस्तुनिष्कःस्यादित्यपिबोध्यम् मार्कंडेयस्तु गवाक्षांतर्गतोयत्रवायुनासंप्रदृश्यते परब्रह्मस्वरूपंयत्त्रसरेणुउदाहृतं १ त्रसरेणवष्टकंलिक्षातत्त्रयंयवउच्यते तत्त्रयंगुंजमात्रंस्याद्रक्तंवाश्वेतमेववा २ पंचगुंजात्मकोमापोरूपकंतदुदाहृतम् रूपकाणांनवानांतुवराहइतिगद्यते स्वर्णंकृच्छ्रंवराहःस्याद्ब्रह्महत्यादिपावनमित्याह ॥ शब्दकल्पद्रुमराजवल्लभः यवपरिमाणमाह यवःपरिमाणविशेषः सतु चतुर्धान्यमानरूपइति ॥ शुभंकरः पट्सर्षपपरिमाणात्मकश्च

त्रसरेणु कहाहै ॥ १ ॥ त्रसरेणु अठ होण तिसका नाम लिक्षाहै सो त्रय होणतो यव कहीदाहै सो त्रय होण तिसका नाम गुंजा क्या रत्तीहै रक्त वाश्वेत तुल्यहै ॥ २ ॥ पंचरत्तीयांका नाम मासा तिन्हीका नाम रूपक भी कहीदाहै नवां १ रूपकांका नाम वराह कहीदाहै ॥ अव इसको फल परतासे कहतेहैं स्वर्णमिति स्वर्ण दान और कृच्छ्र व्रत और वराह परिमाण स्वर्णका दान करणा एह तीन ब्रह्महत्यादिपापके नाशकरणे वालेहै ३ शब्दकल्पद्रुम विषे राजवल्लभजीका वचनहै यवपरिमाण विशेष चारधान्यका तोलरूपहै ॥ अव शुभं करका वचनहै छे ६ सरोंका तोल जो है तिसका नाम यवपरिमान कहाहै

जैसे झरोखे करके अंदर प्राप्त होई जो सूर्य की किरण तिस विषे देखीदी जो धूलि तिस की अणु संज्ञा है ॥ चार अणु होण तिसका नाम लिख्याहै लिख्या छे६ करके एक १ सर्षप होताहै ॥ छे ६ सर्षप करके एक यव होताहै ॥ तीन यव होण तिसका नाम रत्तीहै १ ॥ एहवाक्य शब्द चंद्रिका बिषे किहा है इस विषे जो परिमाण भेद है सो समर्थ और असमर्थ मनुष्यको देख कर जोडना ॥ एह स्वर्णका उन्मान किहा है ॥ अब रजतके उन्मान को कहता हुं ॥ दो रत्तीका नाम रूप्य माष है यह सोलां १६ होण तिसका नाम धरणहै और दश धरणहोण तिसको पल कहतेहैं ॥ १ ॥ और चार सुवर्ण होण तिसका नाम निष्कहै

यथा जालांतर्गतेभानौयत्त्वाणुदृश्यतेरजः तैश्चतुर्भिर्भवेल्लिख्यालिख्याषड्भिश्चसर्षपः षट्सर्षपैर्यवस्त्वेकोगुंजैकातुयवैस्त्रिभिः १ इतिशब्दचंद्रिका अत्रपरिमाणभेदोहिशक्ताशक्तादिव्यवस्थयायोज्यः ॥ इतिस्वर्णोन्मानम् अथरजतोन्मानम् ॥ द्वेकृष्णलेरूप्यमाषोधरणंषोडशैवते शतमानंतुदशभिर्द्धरणैःपलमेवतु ॥ १ ॥ निष्कंसुवर्णाश्चत्वारः कार्षिकस्ताम्रिकःपणः २ शतमानपलशब्दौपर्यायौ ॥ निष्कंसुवर्णाश्चत्वारइति अस्यार्थमाहविज्ञानेश्वरः पूर्वोक्ताश्चत्वारःसुवर्णारौप्यनिष्कइति तथाच सुवर्णचतुष्टयसमानं रजतनिष्कमित्यर्थः ॥ ज्योतिश्शास्त्रेप्रकारांतरेणनिष्कमुक्तम् वराटकानांदशकद्वयंयत्साकाकिनीताश्चपणश्चतस्रः तेषोडशद्रम्मइहावगम्योद्रम्मैस्तथाषोडशभिश्चनिष्कइति ॥ १ ॥

और तांबेका जो पणहै सो कार्षिक कहीदाहै ॥ २ ॥ और पलका दूसरा नाम शतमान भी कहीदाहै ॥ निष्कमिति इसके अर्थनुं विज्ञानेश्वर कहता है पूर्व कहे जो चार सुवर्ण तिस चार सुवर्णके परिमाण जो रजतहै तिसका नाम रौप्यनिष्क कहिदाहै ॥ ज्योतिःशास्त्रविषे प्रकारांतर करके निष्क किहाहै वराटेति वराटकाके जो दश दो हैं क्या वीस २० वराटका होण तिसका नाम काकिनीहै चार काकिनी होण तिसका नाम पण है सोलां १६ पणका नाम द्रम्म है और सोलां द्रम्म होण तिसका नाम निष्क किहाहै और वराटिका नाम कउडीकाहै ॥ १

धेनुका मूल शूलपाणि कृतग्रंथविषे संग्रह कीता जो षट्त्रिंशन्मत तिसविषे किहाहै॥ जो पुरुषधन वाले हैं तिनांकों धेनुका मूल्य पंचकार्षापण किहाहै जो मध्यम पुरुष हैं तिनांकों त्रय पुरा णक किहाहै और पवित्र पुरुषांकों एक कार्षापण कहाहै॥ १ ॥ किसे स्थानविषे पवित्राणां इस जगा दरिद्राणां ऐसा भी पाठहै ॥ पुराणमिति बत्ती रत्तीयांके तुल्य जो तोल होवे चांदी तिसका नाम पुराणक किहाहै और दो रत्तीके सम जो तोल है तिसका नाम रूप्य मासा किहाहै ऐसे सोलां मासे होण तिसका नाम धरण किहाहै २ जो पुराणक किहाहै सो रुप्ये विषे जानणा एहै विज्ञानेश्वरजीके ग्रंथ विषे और स्मृति वचन विषे है ॥ बत्ती रत्तीयां करके जो सम तोल रुप्यहै तिसका नाम कार्षापण किहाहै । अब भट्ट सोमेश्वरका वचन है ॥ पू

धेनुमूल्यमानंशूलपाणौ षट्त्रिंशन्मते । धेनुः पंचभिराढ्यानांमध्यानांत्रि पुराणिका कार्षापणैकमूल्याहिपवित्राणांप्रकीर्त्तितेति १ दरिद्राणामि त्यपिक्कचित्पाठः ॥ पुराणंनामद्वात्रिंशत्कृष्णलसमतोलिरूप्यम् ॥ द्विकृष्ण लेसमधृतेविज्ञेयोरूप्यमाषकः तेषोडशस्याद्धरणंपुराणंचैवराजतमिति विज्ञानेश्वरपरधृतस्मृतेः कार्षापणोनामद्वात्रिंशत्कृष्णलपरिमितंराजतमि ति भट्टसोमेश्वरः ॥ कर्षकृत आपणो व्यवहारःकार्षापणः अन्येषामपीति दीर्घतायां कार्षापणःकार्षः षोडशमाषकः ॥ तेषोडशास्याकर्षइतिकोशात् तथाच धरणपुराणकार्षापणशब्दाअन्योन्यपर्यायाभासंते यत्तु हेमाद्या दिलिखितनारदवचनम् ॥ कार्षापणोदक्षिणस्यांदिशिरौप्यः प्रवर्त्तते पणै र्निबद्धःपूर्वस्यांषोडशैवपणाःसत्विति १ तत्राप्येतावदेवराजतंबोध्यम् ॥

र्व किहा जो कर्ष तिस करके कीया जो व्यवहार है तिसका नाम कार्षापण किहाहै॥ अन्ये षामपि इस सूत्र करके दीर्घके होयां होयां कार्ष किहाहै सोलां माषका नाम कोश विषे कर्ष है इस वचनतें ॥ तांते धरण और पुराण और कार्षापण यह जो शब्द तोल वाचक हैं सो आपस विषे पर्याय क्या एक रूप हैं. जो फेर हेमाद्यादि लिखित नारद वचन है सो कहते हां दक्षिण दिशा विषे कार्षापण व्यवहार रुप्येकें व्यवहार विषे है और पूर्व दिशा विषे पणां करके व्यवहार विषे जानणा सो फेर पण सोलां जानणें ॥ १ ॥ तिस वचन विषे भी इतनाहिपरिमाणक (राजत) है क्या पूर्वोक्त रजतका भी इतनाहि परिमाण है ॥

अब प्रायश्चित्तेंदुशेखर विषे कहते हैं गुंजेति गुंजा क्या रत्तीके प्रमाण है कृष्णल और पंच कृष्णल क्या पंच रत्ती प्रमाण स्वर्णका मासा जानणा इस जगा ८ चावलके परिमाणकी रत्ती जानणी ॥ और अक्षशब्द कर्के सुवर्ण शब्द कर्के और कर्ष शब्द कर्के और निष्क शब्द कर्के एक हि अर्थ कहाहै क्या सोलां १६ मासयांका हि नाम है ॥ और चार ४ सुवर्ण का नाम पल है और दश १० पल का नाम धरण किहाहै ॥ अब मनुस्मृति विषे कहतेहैं निष्क जो शब्द है सो एकसौ अठ १०८ जो सुवर्ण तोल कर्के है तिस विषे और छातीके भूषण विषे और छटांकविषे और मोहरविषे किहाहै एह अमरका वाक्य है। और राजत जो पुराणहै तिसीका नाम धरण कहींदा है और दश १० धरणका नाम राजतहै और इसीका

प्रायश्चित्तेंदुशेखरे। गुंजापरिमितकृष्णलपंचकंस्वर्णमाषः। षोडशमाषा अक्षशब्देन सुवर्णशब्देन कर्षशब्देन निष्कशब्देन प्रोच्यंते सुवर्णाश्चत्वारः पलम् दशपलानिधरणमिति। मनुस्मृतौ। साष्टेशतेसुवर्णानांहेम्न्युरोभूषणेपलेदीनारेपिचनिष्कोऽस्त्रीत्यमरः राजतःपुराणोधरणइत्युच्यते। दशभिर्धरणैराजतंशतमानमित्युच्यते तदेवराजतंपलमप्युच्यत इति पलशतं तुला तुलाविंशतिर्भारआचितोदशभाराःस एव शाकट इत्युच्यते। मूल्याध्यायेकात्यायनः॥ द्वात्रिंशत्पणिकागावश्चतुःकार्षापणोऽवरः। रूपेषट्कार्षापणका अष्टावनडुहिस्मृताः दशकार्षापणाधेनुरश्वेपंचदशैवत्विति १ ॥

दूसरा नाम शतमान भी है सोइ राजत पलभी कहींदाहै ॥ और पल १००होवें तिसका नाम तुला है और वीस २० तुलाका भार होताहै और दस १० भारका आचित होता है तिसीका नाम शाकट भी जानणा ॥ अब मूल्याध्यायविषे कात्यायनजीका वचन है जिसमें गोदानका प्रत्याम्नाय दिखाया है बत्तीस ३२ पणिकके दान कर्के एक गोदान होताहै और इसीतरां छोटे वच्छेके स्थान चार ४ कार्षापण दान किहा है और वृलद विषे छे ६ कार्षापण दान किहा हैं और गाडीवाले बलद विषे अठ ८ कार्षापण दान किहा है और वच्छेके साथ जो गौ है तिस विषे दश १० कार्षापण दान कहा है और घोडें विषे पंदरां १५ कार्षापण दान कहा है १ ॥

एह जो मूल्यविषे भेदहैं तिनांकी मर्य्यादा समर्थ और असमर्थ पुरुषकों देषकर्के कहणी ॥ अब व्रतार्कविषे अन्नका मान भविष्य पुराणके वचनसें कहतेहां पलेति दो २ छटांकका नाम प्रसृतहै और दो २ प्रसृतका कुडव होता है और चार ४ कुडव का प्रस्थ होता है और चार ४ प्रस्थका आढक होताहै ॥ १ ॥ और चार ४ आढकका बुद्धिमानोंनें द्रोण किहाहै और दो २ द्रोणका कुंभ किहा हैं और इसी का दूसरा नाम सूर्प भी है ॥ २ ॥ पल और कुडव और प्रस्थ आढक और द्रोण एह संज्ञा धान्यमान विषे क्रम कर्के चार चार ४ गुणां अधिक जानणी ॥ ३ ॥ और सोलां १६ द्रोणकी खारी कही है और वीस २० खारीका कुंभ होता है और दश १० कुंभ का वाह होताहै ऐसें धान्यकी संख्या कथन कीत्तीहै ॥ ४ ॥

एतेषांचमूल्यपक्षाणांशक्ताशक्तभेदेनव्यवस्था। अथव्रतार्के धान्यमानं। भविष्ये पलद्वयंतुप्रसृतंद्विगुणंकुडवंस्मृतं चतुर्भिःकुडवैःप्रस्थः प्रस्थाश्चत्वार-आढकाः १ आढकैस्तैश्चतुर्भिश्चद्रोणस्तुकथितोबुधैः कुंभोद्रोणद्वयंसूर्प्पः खारीद्रोणास्तुषोडश २ द्रोणद्वयस्यैव सूर्प्पइतिसंज्ञा। पलंचकुडवःप्रस्थ आढकोद्रोणएवच धान्यमानेषुवोद्धव्याःक्रमशोऽमीचतुर्गुणाः ३ द्रोणैःषोडशभिःखारीविंशत्याकुंभउच्यते कुंभैस्तुदशभिर्वाहोधान्यसंख्याप्रकीर्त्तिता ४ विंशत्येत्यत्रापिद्रोणैरितिसंवध्यते तथाच कुंभोद्रोणद्वयमितिपक्षाद्विंशतिद्रोणमितः कुंभइतिपक्षांतरम् एतेषांन्यूनाधिकपक्षयोः परिमानांतरमुक्तंपराशरेण। पुस्तकांतरतुश्लोकद्वयमुपलभ्यते पादोनगद्यानकतुल्यटंकैर्द्विसप्त ७२ तुल्यैःकथितोऽत्रसेरः। मणाभिधानंखयुगै ४० श्चसेरैर्धान्यादितौल्येषुतुरुष्कसंज्ञा १ द्वयंकेंदु १९२ संख्यैर्धटकैश्चसेरस्तैःपंचभिःस्याद्धटिकाचताभिः मणोऽष्टभिस्त्वालमगीरशाहकृतात्रसंज्ञानिजराज्यपूर्षु २

इस विषे विंशति द्रोणकर्के कुंभ संख्या ग्रहण कीत्ती है तिसतें (कुंभोद्रोणद्वयं) इस पक्षमें वीस २० द्रोण कर्के कुंभ किहा हैं एह दूसरा भेद जानणा ॥ इनांविषे न्यून और अधिक जो पक्षहैं तिनांविषे परिमाणका भेद पराशरनें किहाहै ॥ इसमें और भी दो २ श्लोक देखीदेहैं पादोन जो गद्यानक क्या १६ रत्तीयां इनके तुल्य जो टंक क्या परिमाण विशेष तिनां ७२ बहत्तरां कर्के १ सेर होता है और ४० चाली सेर मण होता है एह धान्यादितोल विषे तुरकोंकी कीतीहोई संज्ञाहै ॥ १ ॥ अब और मत कहते हैं धटक नाम ४२ रत्तीयां का है और १९२ एकसउ बानवें धटकां कर्के १ सेर होता है और पांच ५ सेरकी १ वटी होती है और ८ अठ वटी का १ मण होता है एह आलम गीरशाहकी मान परिभाषा अपने राज्य मे नगरोंके लिए बनाई होई जानणी ॥ २ ॥

पराशरजीने वेद और वेदांगोंके जानणेवाले और धर्म शास्त्रके पालक जो ब्राह्मण तिनोंने बाई २२ प्रस्थका द्रोण किहाहै दो२ प्रस्थहोण तिसका नाम आढक किहाहै ॥ १ ॥ यह जो पूर्वोक्त न्यून और अधिकपक्षहै तिनोंका ग्रहण पुरुषोंकी शक्ति और हिमालयादि देश और वसंत ऋतु आदि समयकों देख करके किहाहै ॥ विष्णु धर्म्मोत्तरविषेभी किहाहै कि किसे जगा मान करके व्यवहार और किसे जगा उन्मान करके व्यवहार किसे जगा परिमाण करके किसे जगा संख्या करके किसेजगा समनाकरके व्यवहारहोताहै ॥ १ ॥ इसकों स्पष्टकरके कहतेहैं ॥ अंगुलाद्यमिति २ ॥ अत्र शब्दकल्प द्रुमविषे कहतेहैं अठमुष्टि अन्नहोवे तिसका नाम कुंचिहै अठ कुंचि होण तिसका नाम पुष्कलहै इति ॥ और कोई २॥ मुष्टि मानकरके जो अन्न है तिसको अन्नमात्र कह

पराशरमतेन वेदवेदांगविद्भिर्धर्मशास्त्रानुपालकैः प्रस्थाद्वाविंशतिर्द्रोणः स्मृतोद्विप्रस्थआढकः । १ । इत्येषांच न्यूनाधिकपक्षाणां शक्तिदेशकालाद्य पेक्षया व्यवस्थाज्ञेया । विष्णुधर्म्मोत्तरे । क्वचित्संख्याक्वचिन्मानमुन्मान परिमाणकम् ॥ समाहारः क्वचिच्चेष्टोव्यवहारायताद्विदाम् ॥ १ ॥ अंगुलाद्यं स्मृतंमानमुन्मानंतुतुलास्मृता परिमाणंपात्रमानंसंख्यैपाद्यादिसंज्ञिका २ । शब्दकल्पद्रुमेतु ॥ अष्टमुष्टिर्भवेत्कुंचिःकुंचयोष्टौचपुष्कलइति ॥ सार्द्धमुष्टि द्वयमितमन्नमन्नमात्रमुच्यते इतिकेचित् । अथ मानवीयप्राजापत्यलक्षणो पयोगितयादौ याज्ञवल्क्यीयपादकृच्छ्रमुच्यते ॥ एकभक्तेननक्तेनतथैवाया चितेनच उपवासेनचैवायंपादकृच्छ्रःप्रकीर्त्तितः ॥ १ ॥ अत्रच ग्राससंख्या नियमः पराशरेणदर्शितः । सायंतुद्वादशग्रासाः प्रातर्द्वाविंशतिःस्मृताः चतुर्विंशतिरायाच्याः परंनिरशनंस्मृतम् ॥ १ ॥

तेहै ॥ इसतें उपरंतमानवीय जो प्राजापत्यलक्षण तिसका उपकारी होणेतें आदविषे याज्ञवल्क्य प्रोक्त जो पाद कृच्छ्र सो कहिदा है चार दिनका जो व्रत सो पाद कृच्छ्र किहा है सो कहताहूं एक दिन दिन विषे एक वार भोजन खाणा दूसरे दिन रात्रि विषे भोजन खाणा और तीसरे दिन याचनातें विना भोजन खाणा । और चौथे दिन उपवास करणा क्या कुछनहिखाणा ऐसे पाद कृच्छ्र किहाहै ॥ १ ॥ इसविषे ग्रासोंकी संख्याका नियम पराशरजीनें दखायाहै । संध्या काल विषे बारां १२ ग्रास भक्षण करे और प्रातःकालविषे बत्ती २२ ग्रास भक्षण करे और चौथी २४ ग्रास याचनातें विना भोजनमें भक्षण करे तिसतें परे चौथे दिनविषे कुछ न भक्षण करे ॥ १ ॥

अब ग्रासका प्रमाण कहताहुं कुकुडके अंडेके प्रमाण क्या इतनाहि स्थूलग्रास कहाहै अथवा जो ग्रास सुख करके मुख विषे भक्षणकों प्राप्त होवे इनां दोहां २ प्रमानोका सामर्थ्यादि देख कर भेद है ॥ अब ग्रास संख्या का दूसरा भेद चतुर्विंशति २४ मतविषे किहाहै ॥ प्रातःकाल विषे १२ बारां ग्रास और संध्या कालविषे पंदरां १५ ग्रास और अयाचितविषे सोलां १६ ग्रासभक्षण करे तिसतें आगें वायु भक्षण करे अर्थात् निराहारव्रत करे । १ । यह प्रकार अतिसमर्थ पुरुषविषे जानणा ॥ अब आपस्तंब ने ॥ प्राजापत्य प्रायश्चित्तनूं चार प्रकारका विभाग करके चार पाद कृच्छ्रांकों दखा कर ब्राह्मणादि वर्णांकी योग्यता करके मर्यादा दखाई है ॥ त्र्यहमिति त्रय दिन

कुक्कुटांडप्रमाणस्तुयथावास्यंविशेत्सुखमिति तयोश्चकल्पयोः शक्त्याद्यपेक्ष याविकल्पः ॥ ग्राससंख्यायाः प्रकारांतरंचतुर्विंशतिमते ॥ प्रातस्तुद्वादश ग्रासाःसायंपंचदशैवतु अयाचितेचद्वावष्टौपरंवैमारुताशन इत्यतिशक्तवि षयमेतत् । आपस्तंबेनतु । प्राजापत्यप्रायश्चित्तंचतुर्धाविभज्य चतुरः पाद कृच्छ्रान्कृत्वा वर्णानुरूपेणव्यवस्थादर्शिता ॥ त्र्यहंनिरशनंपादःपादश्चा याचितंत्र्यहम् सायंत्र्यहंतथापादःपादःप्रातस्तथात्र्यहम् ॥ १ ॥ प्रातः पादंचरेच्छूद्रःसायंवैश्यस्यदापयेत् अयाचितंतुराजन्येनिरन्नंब्राह्मणेस्मृत मिति ॥ २ ॥

कुछ न खावे एक पाद कहा है और त्रय दिन मंगणेते विना भोजन करणा एभी पादहै और त्रयदिन संध्या काल में भोजन करणा एक एभी पादहै और त्रयदिन प्रातःकाल विषे भोजन करणा इह चार प्रकारके पाद कहेहैं ॥ १ ॥ अब इनकों वर्णांको क्रम करके कहतेहां शूद्रवर्ण प्रातः काल के पादकों करे और वैश्य संध्या कालके पादकों करे और क्षत्री अयाचित पाद कों करे ॥ और ब्राह्मण निराहार पादको करे क्या कुछ न भक्षण करे ॥ २ ॥

यदेति जेकर तु पुनः मंगणेतें विना त्रय दिन भोजन करे और त्रय दिन उपवास करे. तां अर्द्ध कृच्छ्र व्रत होताहै ॥ और सायं कालके दिन त्रय तें विना अगले त्रंय त्रय दिनां विषे जो अनुष्ठान करणा तिसका नाम पादोन कृच्छ्र जानणा । इसमे वचन कहते हैं सायमिति एह तिसी आपस्तंव ऋषि कर्के कथन होणेंने । और अर्द्ध कृच्छ्रका दूसरा भेदभी आपस्तंबने दखाया है एक दिन संध्या काल विषे भोजन करे और एक दिन प्रातः काल विषे और दो दिन अयाचित क्या कहणेतें विना कोई पुरुष भोजन ले आवे तां भक्षण करे और दो दिन कुछ न भक्षण करे सो दूसरा भेदवाला कृच्छ्रार्द्ध कहाहै १ अवकुक्कुटांडप्रमाण ग्रासविषे शंकाहै(प्रश्न)

यदात्वयाचितोपवासात्मकत्र्यहद्वयानुष्ठानं तदार्द्धकृच्छ्रः सायंव्यतिरिक्तापरत्र्यहानुष्ठानंतुपादोनमितिविज्ञेयम् । सायंप्रातर्विनार्द्धस्यात्पादोनंनक्तवर्जितमितितेनोक्तत्वात् । अर्द्धकृच्छ्रस्यप्रकारांतरमपि तेनैव दर्शितम् । सायंप्रातस्तथैकैकंदिनद्वयमयाचितम् दिनद्वयंचनाश्नीयात्कृच्छ्रार्द्धंतद्विधीयते १ नन्वार्द्रामलकाद्यफलादीनां ग्रासोपमानतासंभवे किमर्थं मुनिभिः कुक्कुटमयूरांडीयवीभत्सोपमानं ग्रासस्य स्वीकृतमिति चेदेवंप्रतिभाति क्रमशः प्रवर्द्धमानानांफलानामुत्पत्तिसमकालग्रासाकारभाकुक्कुटांडाद्यपेक्षयोपमानता न युक्ता ॥

हरे जो आंवले और अवर्थी लेकर फल हैं तिनांकों ग्रासकी उपमा देणे योग्यथी किस कारण वास्ते मुनियांने कुकुड और मोरके आंडड़ेकी निंदित उपमा दित्तीहै ग्रासके ग्रहण करण विषे (उत्तर) तांते ऐसे जाणीदाहै कि फल जो हैं सो क्रम कर्के वृद्धिकों प्राप्त होते हैं और कुक्कडके आंडेको उत्पत्तिके समकालहि स्थूल होणेंतें ग्रासकी उपमा वण सकती है फलांकों वडा छोटा होणेतें उपमा विषे योग्यता नहि है एह तात्पर्य्य होवेगा आगे विचार वुद्धि मान् करें ॥

किंतु भक्ष्यत्व करके गिणे जो वनके कुक्कुड और मोर तिनांके आंडियांकी न्याई ग्रासकी उपमाहै सो ग्लानिकों नहि प्राप्त करती ॥ जैसे भगिनी शब्द और भगवती शब्द और शिवालिंग आदि शब्द और गोधूम आदि शब्द लज्जादिके देणेवाले भी हैं तथापि जगत्में प्रसिद्ध होणे करके लज्जाकों नहि देते जैसे भगिनी उसको कहते हैं कि जिसको भग क्या योनि होवे इस अर्थसे लज्जा आउतीहै परंतु कोई नहि करता तैसे कुक्कुटांडादिकी तुल्यता दिखाणेतें वीभत्सा नहि करणेयोग्य ॥ अब प्राजापत्य व्रत मनुजीनेभी कहाहै त्र्यहमिति त्रयदिन प्रातःकाल विषे भोजन खावे और त्रय दिन सायंकाल और त्रयदिन मांगणेतें विना क्या कोई पुरुष अन्न

किंतुभक्ष्यत्वेन गणितानांवनकुक्कुटमयूरादीनामंडस्य ग्रासोपमानता भगिनीभगवतीशिवालिंगादिगोधूमादिशब्दवन्नाश्लीलतामावहतीतिसर्वमनवद्यम् ॥ अथप्राजापत्यं । मनौ। त्र्यहंप्रातस्त्र्यहंसायंत्र्यहमद्यादयाचितम् त्र्यहंपरंचनाश्णीयात्प्राजापत्यंचरेद्द्विजः १ याज्ञवल्क्यः॥ यथाकथंचित् त्रिगुणः प्राजापत्योयमुच्यते॥ देवलः॥ त्रिदिनंचदिवाश्णीयात्त्रिदिनंरात्रिभोजनम् अयाचितंस्यात्त्रिदिनंनिराहारोदिनत्रयम् १ कृच्छ्रमेतद्विजानीयाद्गोदानंगव्यभक्षणम् ब्रह्महत्यादिपापानामेतत्कृच्छ्रंविशोधनम् २ ॥

देजावे तां भक्षण करे और त्रय दिन कुछ न भक्षण करे ऐसा जो प्राजापत्य तिसकों ब्राह्मणादि वर्ण करें ॥ १ ॥ अब याज्ञवल्क्यजीका वचन है जिसकिसे उपाय करके लघु कृच्छ्र जेकर त्रिगुण होवे तां प्राजापत्य कृच्छ्र किहाई ॥ अब देवलजीका वचन है त्रीति त्रयदिन दिन विषे अन्न भक्षण करे और त्रय दिन रात्रि विषे भोजन करें और त्रय दिन अयाचित भोजन करे, और त्रय दिन निराहार करे ॥ १ ॥ तो इसकों कृच्छ्र जाने और पीछे पंचगव्य भक्षण करके गोदान करे एह ब्रह्महत्यादि पापांके दूर करणे वाला कृच्छ्र है ॥ २ ॥

इस विषे जो निवृत्तिवास्ते ब्रह्महत्या शब्द कहाहै सो आतिदेशिक ब्रह्महत्याके दूरकरणे वास्ते है आतिदेशिक हत्या क्या है जैसे ब्राह्मणकी निंदा और अधीत विद्याका विसारदेणा एह ब्रह्म हत्याके तुल्य है और पारिभाषिक हत्या क्या है जैसे गुरु विषे द्रोह करण वालेको ब्रह्महत्या का प्रायश्चित देणा और रहस्यानुष्ठानहत्या रहस्याऽनुष्ठान प्रकरण विषे कहीहै तिस हत्याकी नि वृत्ति विषे प्राजापत्यका विधानहै क्योंकि यथार्थहत्या विषे प्रायश्चित्त को अधिकहोणेतें ॥ और निराहार जो कहाहै सो उपवास जानणा केवल भोजनका निषेध नहि है तिसका स्वरूप दिखातेहैं उपेति दोषांते रहितको और गुणांककें युक्त होककें संपूर्ण विषयभोगतें वर्जितहोणेका नाम उपवासकहाहै ॥एह होरस्मृतिविषे लक्षणवाला जानणा ॥ १ ॥ और जैसे कैसे इत्यादिवचन को व्याख्या ऋषियोंनें कहीहै सो कहतेहैं अयमिति एही पादकृच्छ्र जिसकिसे उपायककें दंडका

अत्र ब्रह्महत्याऽऽतिदेशिकपारिभाषिकरहस्यानुष्ठानादिविषया बोध्या।ता त्त्विकायां प्रायश्चित्ताधिक्यश्रवणात्। निराहारोऽत्रोपवासएव नतु भोजन निवृत्तिमात्रम्। सच उपारतस्यदोषेभ्योयस्तुवासोगुणैःसह उपवासःसवि ज्ञेयःसर्वभोगविवर्जितइति स्मृत्यन्तरलक्षणोबोध्यः १ यथाकथंचिदित्या दिव्याख्यातमभियुक्तैः ॥ अयमेवपादकृच्छ्रोयथाकथंचिद्दंडकालितवदावृ त्त्या स्वस्थानविवृद्ध्यावाज्ञेयः ॥ अत्राप्यानुलोम्येन प्रातिलोम्येन वा तथा वक्ष्यमाणजपादियुक्तं तद्रहितंवात्रिरभ्यस्तः प्राजापत्यंविधीयते ॥ तत्र दंडकालितवदावृत्तिपक्षोवशिष्ठेनदर्शितः। अहः प्रातरहर्नक्तमहरेकम याचितम् अहःपराकंतत्रैकमेवंचतुरहौपरौ १ अनुग्रहार्थंविप्राणांमनुर्ध र्मभृतांवरः बालवृद्धातुरेष्वेवं शिशुकृच्छ्रमुवाचहेति २ ॥

लितकी न्याईं आवृत्तिककें अथवा स्वस्थानकी विवृद्धिककें जानणा ॥ इसविषे भी रात्रि और दिन ऐसे अनुलोम और प्रतिलोमककें जानणा ॥ और तांते आगे कहणे जो जप आदिक तिनांककें युक्त वा रहित त्रयवार अभ्यासकिया जो लघु कृच्छ्रव्रत सो प्राजापत्यकहाहै एह अर्थ है तत्रेति तिसविषे दंडकालितवत् जो आवृत्तिपक्षहै सो वशिष्ठजीने दखाया है एकदिनप्रातःकाल और एक दिन संध्याकाल विषे और एकदिन अयाचित और एकदिन पराक एह चारदिनएक वार होए ऐसेंहि दोरवार चारदिन फेर करणे ॥ १ ॥ जैसे दंडेककें इकठियां गोयांलिजाईदीयां हैं और लेआवीदीयां हैं इसतरां एह ब्राह्मणांके उपर अनुग्रह करणवास्ते धर्म धारणवालयां विषे श्रेष्ठ जो मनुजीहैं सो बालक और वृद्ध और आतुर एनां विषे शिशुकृच्छ्र व्रतको कहतेभये २

अनुलोम क्रम करके स्वस्थान वृद्धिका अर्थ जैसे त्रय दिन प्रातः काल विषे अन्न भक्षण करणा इत्यादि मनुने दिखायाहै सो पूर्व कहदियाहै ॥ प्रातिलोम्या वृत्ति भी वशिष्ट जीने दखाईहै प्रातीति चांद्रायण पीछे जो कृच्छ्र है सो प्रातिलोम्यहै तिसव्रतकों ब्राह्मण करे और कृच्छ्र है पहले जिसके असा चांद्रायण अनुलोम क्रम करके होताहै ॥ जद चांद्रायण है पीछे जिसके असा कृच्छ्र होवे तां प्रतिलोम करके जानणा एह अर्थ है ॥ जप आदिकांते रहित जो पक्षहै सो स्त्री शूद्र आदियोंविषे अंगिराऋषिनें दखाहै तस्मादिति तिसका रणतें सदाहि धर्ममार्गविषे स्थित जो शूद्र तिसकों प्राप्त होकर जपहोमादितें रहित प्रायश्चित्तदे णे योग्यहै १ और जपादियोंकरके युक्त जो पक्षहै सो शूद्रतें भिन्न ब्राह्मण क्षत्रि वैश्य इन्हां

आनुलोम्येन स्वस्थानवृद्धिपक्षस्तु मनुनादर्शितः ॥ सतुप्रागभिहितः । प्रातिलोम्यावृत्तिरपि वशिष्ठेनदर्शिता ॥ प्रातिलोम्यंचरेद्विप्रःकृच्छ्रंचांद्रा यणोत्तरमिति कृच्छ्रोत्तरं चांद्रायणमानुलोम्येनभवति ॥ यदातु चांद्राय णोत्तरंकृच्छ्रंक्रियते तदा प्रातिलोम्येन ज्ञेयमित्यर्थः ॥ जपादिरहितप क्षस्तु स्त्रीशूद्रादिविषयेंगिरसादर्शितः तस्माच्छूद्रंसमासाद्यसदाधर्मपदे स्थितम् प्रायश्चित्तंप्रदातव्यंजपहोमादिवर्जितमिति ॥ १ ॥ जपादियुक्त पक्षस्तु परिशेषाद्योग्यतयाच त्रैवर्णिकविषयः सच गौत्तमादिभिर्दर्शितः ॥तथाचगौत्तमः ॥ हविष्यान्प्रातराशान् भुक्त्वा तिस्रोरात्रीर्नाश्नीयाद थापरम् त्र्यहंनक्तंभुंजीत अपरंत्र्यहमुपवसेत्तिष्ठेदहनिरात्रावासीतक्षिप्र कामः सत्यंवदेदनार्यैः सह न भाषेत रौरवयौधाजयेनित्यंप्रयुंजीतानुस वनमुदकोपस्पर्शनमापोहिष्ठेतितिसृभिःपवित्रवतीभिर्मार्जयेत ॥

तिन्हा वर्णा विषे योग्यता करके गौत्तमादि ऋषियांने दखायाहै ॥ तैसे गौत्तमजीका वचनहै ॥ प्रातःकालविषे हविष्यअन्न कणक चावल मुंगीआदि त्रयदिन भक्षण करे फेर त्रय रात्रिविषे(नाश्णी यात्)क्या भोजन न करे त्रयदिन रात्रिमे खावे दिने नहि खावे और तिसके आगे किसेतें याचना न करे याचना बिना मिले तां भक्षणकरे और त्रयदिन कुछ न भक्षण करे और दिनविषे खलोवे रात्रिविषे बैठा रहे क्षिप्रकामना वाला हुआ २ और सत्य वचन कहे और दुष्टांके साथ संभाषण न करे और रौरव यौधाजय जो साम हैं तिनां कों नित्य जपे और त्रयकाल स्नान करे और आचमन करे और आपोहिष्ठातें लेकर त्रय जो ऋचाहैं पवित्र तिनां करके पुरुष मार्जन करे तो तिनका पाप शीघ्रहिदूर होताहै ॥

और हिरण्य वर्णा इसथीं आद लेके अठां पवित्रवतियां ऋचां कर्के मार्ज्जन करे ॥ अर्थेति इस तें उपरंत जलकर्के तर्पण करे तर्प्पण के मंत्रोंको कहतेहैं नमोहमाय इत्यादि और इहां हि मंत्रोंकर्के सूर्य्य भगवान् जीका उपस्थान भी करतेहैं इस मंत्रका अर्थ वहुत है तथापि तिसका कोई उपयोग नहि इसकर्के कुछक दिखाईदा हैं (अहमाय) क्या अहंकारके अभिमानी क्या प्रवर्त्तक जो शिवजी तिनके ताई नमस्कार होवे कैसे शिवजी हैं (मोहमाय) मोहके स्थापक हैं अथवा नाशक हैं फेर कैसे हे मंहमाय कामकेनाशक हैं

हिरण्यवर्णाः शुचयःपावकाइत्यष्टाभिः। अथोदकतर्पणम् नमोहमायमोह मायमंहमायधन्वने तापनाय पुनर्वसवेनमो मौंज्याय ऊर्म्याय वसुविंदाय सर्ववर्णविंदायनमः पाराय महापाराय पारदाय पारयिष्णवे नमोरुद्राय पशुपतयेमहते देवायत्र्यंवकायैकचरायाधिपतये हराय शर्वायईशानाय उग्रायवज्रिणेघृणिने कपर्दिनेनमःसूर्य्यायादित्यायनमो नीलग्रीवायशिति कंठायनमःकृष्णायपिंगलायनमः ज्येष्ठायश्रेष्ठायवृद्धायेंद्रियायहरिकेशाय ऊर्द्ध्वरेतसेनमःसत्यायपावकाय पावकवर्णायैकवर्णायकामायकामरूपिणेन मोदीप्तायदीप्तरूपिणेनमः तीक्ष्णायतीक्ष्णरूपिणेनमःसौम्यायपुरुषायम हापुरुषायनमो मध्यमपुरुषाय नमउत्तमपुरुषाय नमो ब्रह्मचारिणेनमः चंद्रललाटायनमःकृत्तिवाससेनमइति एतदेवादित्योपस्थानमेताएवा ज्याहुतयोद्वादशरात्रस्यांते चरुं श्रपयित्वा एताभ्यो देवताभ्यो जुहुयात् अग्नयेस्वाहा सोमायस्वाहाअग्नीषोमाभ्यां इंद्राग्निभ्यां इंद्राय विश्वेभ्यो देवेभ्योब्रह्मणे प्रजापतये अग्नयेस्विष्टकृते इति

फेर कैसेहैं कि (धन्वने) त्रिपुर दैत्यके विनाश वास्ते तैसे वडे विलक्षण धनुषके धारणवाले है और जो तापनाय क्या तापक हैं और जो पुनर्वसु हैं इनके ताई नमस्कार होवे इत्यादि नमोहमाय इसथीं आदलेके एनां कर्के सूर्यका उपस्थान करणा और इतनीयांहि घृतकी यां आहुतियां करणीयां और वारां दिनांके अंत विषे चरुको पकाकर इनां देवतयांके ताई आहुतियां देवे (ॐअग्नयेस्वाहा इसतें आदलेके अग्नये स्विष्टकृते इस तक) नउ ९ आहुतियां देवे १

श्रोर अंत विषे ब्राह्मणोंके ताईं भोजनदेवे ॥ कुछ श्रौर कहतेहैं तत्रेति जो पुरुष मन करके कीया जो पाप तिसके शीघ्रहि एक कृच्छ्र करके दूर करणेकी इच्छा करे तिसका नाम क्षिप्रकाम है सो क्षिप्रकामना वाला पुरुष दिन विषे खलोवे श्रौर रात्रि विषे वैठा रहे ॥ एही अर्थ विशद करके कहीदाहै सो एह पुरुष दिन विषे कर्मोके नहि जो विरोधि काल क्या खलोणे करके कार्य दूर न होवे तिस विषे स्थित होवे क्या खलोवे श्रौर रात्रि विषे वैठे इसी प्रकार रौरव और योधा जय नाम करके जो २ सामवेदकीयां ऋचा तिनांका जप करे नमोहमाय इत्यादिकां करके तर्पण श्रौर सूर्यका उपस्थान श्रौर चरुका पकाणा श्रादि

श्रंतेब्राह्मण भोजनम्। तत्रतिष्ठेदहनि रात्रावासीतक्षिप्रकामइति श्रस्यार्थः यस्तुमनसोप्येनसःक्षिप्रमेकेनैवकृच्छ्रेणमुच्येयमित्येवंकामयते सक्षिप्रकामः असावहनि कर्माविरुद्धेषुकालेषु तिष्ठेद्रात्रावासीत एवंरौरवयोधाजयाख्यसामजपं नमोहमायेत्यादिभिस्तर्पणादित्योपस्थानादिकं चरुश्रपणादिकंच योगीश्वराद्यनुक्तमपि क्षिप्रकामःकुर्वीत श्रतश्च योगीश्वराद्युक्तप्राजापत्यद्वयस्थाने गौतमीयमनेकेतिकर्त्तव्यतासहितमेकमेवप्राजापत्यंद्रष्टव्यम् ॥ एवमन्यान्यपि स्मृत्यन्तरोक्तानि व्रतविशेषणान्यन्वेषणीयानि ॥ मार्कंडेयः एकभक्तेननक्तेनतथैवायाचितेनच उपवासेनचैकेनगोदानंगव्यभक्षणम् ब्रह्महत्यादिपापानामितरेषांविशोधनम् १ ॥

जो कृत्य इसनूं योगीश्वरश्रादिकोंके न कहें होयेनूं भी शीघ्रकामना वाला करे ॥ इसकारणतें योगीश्वर करके पापके दूर करणे वास्ते कहे जो प्राजापत्य दो २ हैं तिनां दोनोंके स्थान विषे गौतम ऋषि ने अनेक श्रैसी कर्त्तव्यताके साथ एकहि प्राजापत्य दखायाहै ॥ एवमिति श्रैसेहि होर भी स्मृतियांकरके कहे जो विशेष व्रत सो देखणे योग्यहैं ॥ अब मार्कंडेयजीकाव चनहै एक दिन एक वार भोजन करणा श्रौर दूसरे दिन संध्याकाल विषे श्रौर तीसरे दिन विषे मांगणेतें विना श्रौर चौथे दिन विषे उपवास करणा श्रौर पीछे पंचगव्यकों भक्षण करके गोदान करणा एह व्रत संपूर्ण जो ब्रह्महत्यादिक पापहैं तिनांके दूर करणे वालाहै १ ॥

अब गौतमजीकावचन है एह जो प्राजापत्य कृच्छ्र सो संपूर्णपापांको दूरकरणे वाला है तिसका स्वरूप एह है कि त्रय दिन दिनविषे और त्रय दिन रात्रि विषे अन्न खाणा ॥ १ ॥ और त्रय दिन याचनातें विना और त्रय दिन वायुभक्षण करणा और पीछे पंचगव्यको वया दुग्धादिको भक्षण करके गोदानकरे तो अनुत्तमशुद्धि वया जिससे उत्तम और कोई शुद्धिनहि तिसको प्राप्त होताहै ॥ २ ॥ अब आपस्तंब ऋषिका वचनहै त्रय दिन न संध्या कालविषे भक्षण करणा अर्थात् दिनविषे भक्षण करणा और त्रयदिन रात्रि विषे और त्रयदिन मांगणे तें विना भोजन करणा और त्रय दिन कुछ न भक्षणकरणा इति ॥ १ ॥ अब इसीविषे जाबालि ऋषिका वचनहै प्रजा

गौतमः। प्राजापत्यंकृच्छ्रमिदंसर्वपापप्रणाशनम् त्रिदिनंस्याद्दिवाभुक्तिस्त्रि दिनंरात्रिभोजनम् १ अयाचितंचत्रिदिनंत्रिदिनंवायुभक्षणम् गोदानंपंच गव्यांतेशुद्धिमाप्नोत्यनुत्तमाम् २ आपस्तंबः। त्र्यहमनाक्काशनं त्र्यहंरात्रि भोजनम् त्र्यहमयाचितव्रतस्त्र्यहंनाश्नातिकिंचनेति १ जाबालिः ॥ प्रजाप तिरिदंसाक्षात्सृष्टवान्देवसन्निधौ सर्वलोकोपकारायसर्वपापापनुत्तये १ ॥ दिनत्रयंदिवाभुक्तेतथारात्र्यांदिनत्रयम् अयाचितंस्यात्त्रिदिनंनिराहारोदि नत्रयम् २ पंचगव्यंततःपश्चाद्गोरेकाचविशोधने एवंकुर्याद्द्विजोयस्तुसर्व पापविमुक्तिमान् ३ कृच्छ्राणांनामान्याहमार्कंडेयः ॥ यवमध्यंचमंदस्याद्य तिशिशुर्महद्व्रतम् महाचान्द्रमितिप्रोक्तंपंचधापरिकीर्त्तितम् ॥ १ ॥

प्रजापति जो ब्रह्मा सो साक्षात् विष्णुके समीपविषे इस प्राजापत्य व्रतको सबलोकोंके उपकार वास्ते और सबपापोंके दूर करणेवास्ते रचिताभया सोकहतेहो १ ॥ त्रय दिन दिनविषे अन्नको भक्षण करे और त्रय दिन रात्रि विषे और त्रय दिन याचनातें विना और त्रय दिन निराहार रहे २ ॥ और पीछे पंचगव्यको भक्षणकरके एक गोदानकरे शुद्धिवास्ते इसप्रकार जो द्विजव्रतकरता है सो संपूर्ण पापों रहित होताहै ॥ ३ ॥ अब कृच्छ्रोंके नामोंको मार्कंडेयजी कहतेहैं एक यव मध्य १ और मंद वया पिपीलिका मध्य २ और यति महद्व्रत ३ और शिशुमहद्व्रत ४ और महा चांद्र ५ एहपंच प्रकारका चांद्रायण व्रत कहाहै ॥ १ ॥

श्रोर तेरां १३ प्रकारका कृच्छ्र व्रत कहाहै सो कहतेहां ॥ प्राजापत्य १ श्रौर तप्त कृच्छ्र २ श्रोर पराक ३ श्रौर यावक ४ श्रौर सांतपन कृच्छ्र ५ श्रौर महासांतपन ६ श्रौर श्रौदुम्बर ७ श्रौर पर्ण कृच्छ्र ८ श्रोर फलकृच्छ्र ९ श्रोर माहेश्वर कृच्छ्र १० श्रौर ब्रह्म कृच्छ्र ११ श्रोर धान्य कृच्छ्र १२ श्रोर स्वर्णमय कृच्छ्र १३ एह तेरां प्रकारका कृच्छ्र कहाहै ॥ ३ ॥ अथेति अथवन्या इसतें अनंतर याज्ञवल्क्यजी कर्के कही जो कृच्छ्र चांद्रायण की साधारण इति कर्त्तव्यता क्या सामान्य विधि करणेकी योग्यता एहहि है ॥ इस विषे कोईक पदार्थ पाछे दूसरे श्रोर तीसरे प्रकरण विषे कहेहैं फेर इहां प्रसंगतें कहीदेहैं । तिस विषे भी पूर्व कहा जो पाठ तिसतें भिन्न होगी ग्रंथका है सो बाहुल्यता कर्के जिनांपाठां विषे लोकांकी श्रद्धा है तिनके बधाणे वास्ते स्थापन कीताहै इसतें नवीन करन विषे वैकल्य दोषकी संभा

प्राजापत्यंततकृच्छ्रंपराकंयावकंतथा। ततःसांतपनंकृच्छ्रं महासांतपनंतथा २ औदुम्बरंचपर्णंचफलकृच्छ्रमतःपरं कृच्छ्रंमाहेश्वरंचैवब्रह्मकृच्छ्रंतथैवच धान्यंस्वर्णमयकृच्छ्रंदशत्रेधाप्रकीर्तितम् ३ दशत्रेधा त्रयोदशधाइत्यर्थः अथयाज्ञवल्क्योक्तकृच्छ्रचांद्रायणसाधारणीतिकर्तव्यता अत्रकानिचित्पदार्थानिप्राग्द्वितीयतृतीयप्रकरणयोरभिहितान्यपि पुनरत्र प्रसंगादुच्यते तत्रापिग्रंथांतरीयएवात्रपाठःप्रायेण प्रचरितश्रद्धानार्थंस्थापित इति न नवीकरणवैकल्यसंभावनाविधेया।कुर्यात्त्रिषवणस्नायीकृच्छ्रंचांद्रायणंतथा पवित्राणिजपेत्पिंडान्गायत्र्याचाभिमंत्रयेत् १ एतच्चतप्तकृच्छ्रव्यतिरेकेण। तत्र सकृत्स्नायीसमाहितइति मनुना विशेषाभिधानात्। यत्तु। पुनःस्मृत्यन्तरे। तप्तकृच्छ्रेषु अहोरात्रं त्रिषवणस्नानमभिहितम्। त्रिरह्निस्त्रिर्निशायांतुसवासाजलमाविशदिति तदतिशक्तविषयम्॥ यत्पुनर्वैशंपायनेन द्विकालिकस्नानमुक्तम् स्नानंद्विकालमेवस्यात्त्रिकालंवाद्विजन्मनइति

वना नहि करणे योग्य है ॥ कुर्यादिति त्रयकाल स्नानकरता हुआ कृच्छ्र चांद्रायण व्रतकों करै श्रौर पवित्र जो मंत्र हैं तिनांकों पडे श्रोर पिंड जो ग्रासहैं तिनांकों गायत्री कर्के अभिमंत्रण करे ॥ १ ॥ एह विधि तप्त कृच्छ्रतें भिन्न कर्के जानणी तिस विषे एक बार स्नान इंद्रियांकों रोक कर्के स्थित होया २ करे एह मनुजीकर्के विशेष कहणेतें ॥ यत्त्विति जो फेर श्रोर स्मृति विषे तप्त कृच्छ्र व्रत विषे दिन विषे त्रय स्नान श्रौर रात्रि विषे भी त्रय स्नान कहेहैं सो स्मृति दिखाउंदे ॥ त्रिरिति त्रय स्नान दिनविषे श्रौर त्रय स्नान रात्रिविषे सहितवस्त्रांदे जल विषे करे सो बहुत समर्थ पुरुषकेविषे जानणी । फेर जो वैशंपायन ऋषिनें दिनविषे दो काल हि स्नान कहाहै स्नानमिति ब्राह्मण आदिवर्णकों स्नान दोकाल अथवा त्रय कालकरणा चाहिए

एह विधि तिस पुरुषकों कहीहे जो दिन रात्र त्राय कालके स्नान विषे सामर्थ्यतें रहित है ऐसे जानणे योग्यहै ॥ जो फेर गार्ग्यजीनें कहाहे कि एक वस्त्र धार कर्के स्नान करे और वस्त्रका निपीडन न करे यथा भिजोहोये वस्त्र कर्के युक्त होया होया भिक्षाकों मागे और थोडाखावे और पृथिवी विषे शयन करे एह एक वस्त्रता जो कहीहै सो शंखजीने एक पक्ष विष कहणेतें अर्थात् शंखनें विकल्पकर्के एक वस्त्र धारण किहाहे तिसी के मतकर्के इसनेभी किहाहै एभी सामर्थ्य विषे जानणे योग्यहै ॥ स्नान विष हारीत ऋषिनें विशेष किहाहै त्राय स्नाननें पीछे शुद्धवती ऋचां कर्के स्नान करके जल विषे स्थित होयाहोया अघमर्षणकों जपे और पीछे शुद्ध वस्त्रकों धारके सामवेदके विषे सोमहै देवता जिसका

तत्त्रिषवणस्नानाशकस्य वेदितव्यम् ॥ यत्पुनर्गार्ग्येण ॥ एकवासा श्चरेद्भैक्ष्यंस्नात्वावासोनपीडयेत् ॥ तदपिशक्तस्यैव ॥ एकवासाश्चार्द्र वासा लघ्वाशी स्थंडिलेशयः ॥इत्येकवस्त्रताया अपि शंखेन पाक्षिकत्वा भिधानात्। स्नानेचहारीतेनाविशेषउक्तः ॥ त्र्यवरंशुद्धवतीभिःस्नात्वाऽघमर्ष णमंतर्जले जपित्वा धौतमहतंवासःपरिधाय साम्नासौम्येनादित्यमुपतिष्ठ दिति ॥ त्र्यवरंत्रिभ्य परमित्यर्थः ॥ स्नानानंतरं पवित्राणिचजपेत्। पवित्राणिच अघमर्षणंदेवकृतःशुद्धवत्यस्तरत्समाइत्यादिवासिष्ठादिप्रति- पादितानागम्यतनामर्थानिरुद्धेषु कालेषु जपेत् सावित्रीं वा ॥ सावित्रीं वाजपेन्नित्यं पवित्राणिचशक्तित इति मनुस्मरणात् ॥

तिस मंत्र कर्के सूर्यके उपस्थानकों करे त्र्यवर शब्दका अर्थ करतेहैं कि तिनसे आगे जो है सो त्र्यवर किहाहै चार वार स्नान करे एह अर्थ है ॥ स्नाननें पीछे पवित्र मंत्रांकों जपे सो कहतेहां ॥ अघमर्षण मंत्र और देवकृत और शुद्धवत्यः और तरत्समा इसतें आद लेके वसिष्ठआदिकोंनें कथन कीते जो मंत्र तिनाकों पढे ॥ और कर्मके नहि दूर करणे वाला जो समा तिस विषे जपे अर्थात् जिस जिस काल विषे प्रातः संध्यादिके विषे जपने योग्य जो मंत्र है तिस विषे हि जपे अथवा सावित्रीको जपे ॥ सो मनुजी कहतेहैं गायत्री कों जपे नित वा कर्म करणेके वेलेमें पवित्र जो मंत्र तिनांको जपे ॥

जो फेर गोतमजीने कहाहै रौरवयोधा जय ऋचा कों जपविषे नित्यहि ग्रहण करे सो पवित्रादि इस कहणें कर्के हि कथा किया गया कोई फेर नियमके वास्ते नहि किहा तैसें होयां होयां श्रुति मूलकी कल्पनाका प्रसंग होणेंते यथा ऐसी कोई श्रुति नहि जिस विषे नियम कहाहै होर श्रुतिकों मूल विषे कल्पना करणी चाहिये तां कल्पना दोषका प्रसंग होवेगा ॥ इसीकारणतें नही पढनकीया सामवेद जिसनें तिस पुरुषनें गायत्री आदिक हि जपनें योग्यहै और जो नमो हमाय मोहमाय एह पठन करे घृत कियां आहुतियां देवे ऐसे कहाहै एभी नियम नहि जानणा यथा अवश्य करणे योग्य नहिहै किंतु महाव्याहृतियां कर्के ब्राह्मणक्षत्री वैश्यने तिलांका हवन करणे योग्यहै एह मनुने महा व्याहृतियांकर्केभी हवनका विधान कहणेंते ॥ इसविषे घृतकर्के हवन और दूसरे स्थान विषे तिलां कर्के हवन इन दोनों

यत्तु गौतमेनोक्तम् रौरवयोधाजयेनित्यंप्रयुंजीतेति तदपि पवित्रादेवोक्तम् न पुनर्नियमाय तथासति श्रुत्यंतरमूलत्वकल्पनाप्रसंगात् अतोनधीतसाम वेदेन गायत्र्यादिकमेवजप्तव्यम् ॥ यदपिनमोहमाय मोहमाय इत्यादिप ठित्वा एताएवाज्याहुतय इत्युक्तं तदपि न नैयमिकं किंतु महाव्याहृतिभिर्हो मास्तिलैःकार्योद्विजन्मनेति मनुनामहाव्याहृतिभिर्होमविधानात् ॥ तथापड् विंशतिमतेप्युक्तम् ॥ जपहोमादियत्किंचित्कृच्छ्रोक्तंसंभवोनचेत् सर्वव्याहृ तिभिःकुर्याद् गायत्र्याप्रणवेनवेति १ आदिग्रहणादुदकतर्पणादित्योपस्था नादेर्ग्रहणम् ॥ अतएववैशंपायनः॥स्नात्वोपतिष्ठेदादित्यंसौरैर्मंत्रैस्तुकृतांज लिरिति एवमन्येष्वपि पदार्थविरोधिषु विकल्प आश्रयणीयः ॥

पक्षोंते जाणीदा है कि नियम नहि किंतु विकल्पहै ॥ तैसेंहि षड्विंशति मतविषेभी कहाहै ॥ जो कृच्छ्र व्रत विषे कहाहै जप होमादि तिसके करणेका संभव न होवे तां संपूर्ण व्याहृतियां कर्के करे अथवा गायत्री कर्के वा ओंकारकर्के करे १ इस श्लोक विषे जो आदिग्रहण कीताहै तिसतें जलतर्पण और सूर्य्यके उपस्थानादिका ग्रहण होताहै इसी कारणतें वैशंपायन ऋषिका वचनहै स्नानकरणेंते पीछे हथ जोडकर्के सूर्य्य जीके मंत्रांकर्के सूर्य्यका उपस्थान करे इति ॥ इसी प्रकार होर जो पदार्थ विरोधि हैं जैसे कहाहै व्याहृतियां कर्के वा गायत्री वा ओंकारकर्के करे तिनां पदार्थ विरोधियां विषे विकल्पहै भावें जिस किस कर्के कीता होया आश्रय करणे योग्यहै

श्रौर जो नहि विरोधी तिनांविषे संपूर्ण करणे योग्य हैं शाखांतराधिकरण न्याय करकें ॥ कर्मको संपूर्ण स्मृतियांकरकें प्रतीतहोणेतें ॥ न्यायनाम युक्तिकाहै तिसको दिखावे हैं न्यायइति जो अपणी शाखाविषे नहि कहा सो दूसरी शाखासे लेलेणा श्रौर वो अपणी शाखाका विरोधि नहि हो इत्यादिक कहाहूया जानणें योग्यहै ॥ जपकी संख्या विषे विशेष तिसी वैशंपायननें हि दिखायाहै ऋषभ मंत्र श्रौर विरजमंत्र श्रौर अघमर्षणमंत्र एनांको जपे अथवा गायत्री जो पवित्रवेदांकी मातातिसकों जपे १ ॥ एकशत१००वा अठसौ८००अथवा अठांते अधिकसो१०८वा एकहजार१०००जपकरे वा अधिककरे श्रौर उपांशुक्या मंत्रकों अप्रकट उच्चारणकरे श्रौर मनकर्के पितरोंका श्रौर देवतोंको श्रोर मनुष्य जो सनकादि श्रौर भूतोंका तर्पणकरे तिसतै उपरंत शिरकर्के नमस्कारकरे ॥ २ ॥ एह जो कृच्छ्रादि व्रतहैं जद पापांके दूर करणे वास्ते अनुष्ठान

अविरोधिषुसमुच्चयः शाखान्तराधिकरणन्यायेन ॥ कर्मणःसर्वस्मृतिप्रत्ययत्वात् ॥ न्यायस्तु यन्नाम्नातंस्वशाखायां पारक्यमविरोधियदित्यायुक्तोबोध्यः ॥ जपसंख्यायांचविशेषस्तेनैवदर्शितः ॥ ऋषभंविरजंचैवतथाचैवाघमर्षणं गायत्रींवाजपेद्देवीं पवित्रांवेदमातरम् ॥ १ ॥ शतमष्टशतंवापिसहस्रमथवापरं उपांशुमनसाचापितर्पयेत्पितृदेवताः ॥ मनुष्यांश्चवभूतानि प्रणम्यशिरसाततइति ॥ २ ॥ एतानिच कृच्छ्रादिव्रतानि यदा प्रायश्चित्तार्थमनुष्ठीयंते तदा केशादिवपनपूर्वकं परिगृहीतव्यानि । वपनाद्यव्रतंचरेदिति गौतमस्मरणात् ॥ अभ्युदयार्थेतु नैववपनम् । वशिष्ठेनाप्यत्र विशेषउक्तः । कृच्छ्राणांव्रतरूपाणां श्मश्रुकेशादिवापयेत् अक्षिरोमशिखावर्ज्जमिति कृच्छ्राणांव्रतरूपाणां व्रतरूपाणि वपनादीन्यंगानिवक्ष्यंतइति ॥ शेषः ॥ अक्षिरोमेत्यादि कक्षोपस्थरोमोपलक्षणम् ॥ पर्षदुपदिष्टव्रतग्रहणंमुंडनादिकंच व्रतानुष्ठानदिवसात् पूर्वेद्युःसायाह्निकार्यम् ॥

करणेहोण तां केशआदिकांके मुंडनकों करवाकर ग्रहण करणे योग्यहैं(वपनाद्यव्रतंचरेत्)इस गौतमजीकेस्मरणतें ॥ श्रौर ऐश्वर्य आदिकों वृद्धिके निमित्त प्रायश्चित्तविषे मुंडन नहिकहा ॥ वशिष्ठजीनेभी इस विषे विशेष कहाहै । कृच्छ्र जो व्रतरूप हैं तिनांके ग्रहण विषे दाडी श्रौर केशआदिका मुंडन करे परंतु अक्षिरोम श्रौर शिखातें विना इति ॥ इसको स्पष्ट करतेहैं कृच्छ्रेति कृच्छ्र जो व्रत रूपहैं तिनांके व्रतरूप जो मुंडन करवाणे योग्य जो अगले सो कहैंगे इतना इसजगा लगालेणा कि अक्षिरोम इत्यादि कहणाकरके कच्छके श्रौर लिंगके रोमोंकाभी मुंडन न करवावे ॥ इसमे श्रौर विशेषहै पर्षदिति पर्षद् क्या सभा करकें उपदेश कीया जो व्रतका ग्रहण श्रौर मुंडनादि व्रतके ग्रहण करण वाले दिनतें पहले दिन संध्या कालविषेकरणे योग्यहै

जैसे वशिष्टजी कहतेहे सर्वेति संपूर्ण पापांविषे संपूर्ण व्रतांके ग्रहणकों विधिपूर्वक कहताहां प्रायश्चित्तके करणकी इच्छाहोयाहोयां ॥ १ ॥ दिनके अंतविषे नख और रोमादिकोंकों कटाकर स्नान करे और जो स्नान कहाहै सो इसप्रकार जानणा कि प्रथम मुखकी शुद्धि वास्ते दातन करे पीछे भस्मकर्के और गौके गोहे कर्के और मृत्तिका कर्के और जल कर्के और पंचगव्यादिक जो रचेहोये हैं तिनों कर्के स्नानकरे ॥ २ ॥ अभिप्राय कहतेहैं मलेति बाह्यदेहकी शुद्धि वास्ते देहकी मल दूर करणे योग्यहै और पंचगव्यकर्केयुक्त व्रत करे एह व्रतका विशेषणहै ३ ॥ ऐसे स्नानतें पीछे पंचगव्यको पीकर्के संध्याकालविषे नगरतें बाहर नक्षत्रांके दर्शनहोयां २ व्रत ग्रहणकरणे योग्यहै और पीछे आचमनकों करके मौनधारण करे अपने पापका अंतष्करण विषे ध्यानकरता हांआ मनकों क्लेशदेणेवाला वडा जो शोकहै तिसकों संपूर्णता कर्के करे४ ॥

यथाहवसिष्ठः ॥ सर्वपापेषु सर्वेषांव्रतानांविधिपूर्वकम् ग्रहणंसंप्रवक्ष्यामि प्रायश्चित्तेचिकीर्षिते ॥ १ ॥ दिनांतेनखरोमादीन्प्रवाप्यस्नानमाचरेत् ॥ भस्मगोमयमृद्वारिपंचगव्यादिकल्पितैः ॥ २ ॥ मलापकर्षणंकार्य्यंवाह्य शौचोपसिद्धये दंतधावनपूर्वेणपंचगव्येनसंयुतम् ॥ ३ ॥व्रतंनिशामुखे ग्राह्यंवहिस्तारकदर्शने आचम्यांतःपरंमौनंध्यायन्दुष्कृतमात्मनः मनस्संतापनंतीव्रमुद्वहेच्छोकमंततइति ॥ ४ ॥ वहिरितिग्रामाद्वहिर्निष्क्रम्य ॥ स्त्रियाअप्येवमेवपरिग्रहःकार्य्यः ॥ केशश्मश्रुलोमनखवपनंतुनास्ति चांद्रायणादिषु ॥ एतदेव स्त्रियाः ॥ श्मश्रुकेशवपनवर्जमिति वौधायनस्मरणात् ॥ एतदेवेति मलापकर्षणाद्येव नतु केशवपनादीत्यर्थः ॥ वपनादिष्वत्रहारीतेनविशेषउक्तः॥ राजावाराजपुत्रोवाब्राह्मणोवावहुश्रुतः केशानां वपनंकृत्वाप्रायश्चित्तंसमाचरेत् १ ॥ केशानांरक्षणार्थंहिद्विगुणंव्रतमाचरेत्

अव स्त्रियोंके व्रत विषे कुछक विलक्षणता कहतेहां स्त्रियाइति स्त्रीनेंभी ऐसेहि व्रत ग्रहण करणे योग्यहै ॥ और चांद्रायणादि व्रत विषे केश और श्मश्रु और रोम और नख एनांका कटाणा नाहि कहा ॥ वचन कहतेहैं एतादिति एतदेव इस कहने कर्के एह जानणा क्या श्मश्रु केशादिके मुंडनतें विना जो व्रतविधि पुरुषोंकों कहीहै सोई स्त्रीकों भी कराणी चाहिए एह वौधायनजीके कथनतें ॥ इसीका अर्थ स्पष्टकर्के दिखातेहैं एतदेवेति ॥ मुंडनादिकां विषे इहां हारीतनें विशेष कहाहै ॥ राजेति राजा अथवा राजाका पुत्र राजपुत्र इस जगा और जातिकी स्त्री विषे राजासे उत्पन्न होआ जानणा अथवा ब्राह्मण विद्वान् एह सब केशांके मुंडनकों करवाके प्रायश्चित्तकों करें ॥ १ ॥ और केशांकी रक्षावास्ते दूणे व्रतकों करें ॥ एह विचार पिच्छे भी होचुका है प्रसंगतें फेर इस जगा किहा है

दूणे व्रतके कीतयां होयां दक्षिणाभी दूणी कहीहै ॥ २ ॥ राजा आदिक जेकर प्रायश्चित्त करणे कों उद्यतहोवे तां मुंडनकों करवा कर प्रायश्चित्तकों करे अन्यथा न करे ॥ एह मुंडनादि विधि महापातकआदि दोषके होयांहोयां राजा आदिको विषे कहीहै ॥ होरणां दोषां विषे पंडित और ब्राह्मण और राजा और स्त्री एनांकों केशाका मुंडन नहि कहा और जेकर एह विद्वान विप्र आदिक महापापीहोवें और गोहत्यारा होवे और ब्रह्मचारीका वीर्य्य स्खलित होवे तिनकों प्रायश्चित्तके करण विषे मुंडन कहाहै ॥ १ ॥ ऐसे मनुजीके स्मरणतें ॥ (प्रश्न) ननु इति गौकीहत्या करणे वाला उत्तम जो प्राजापत्य कृच्छ्र व्रत तिसकों करे और पहले सहित शिखाके मुंडनकों करे और त्रयकाल स्नान करे इत्यादिक पराशर आदिकों के वचनां विषे सहित शिखाके मुंडन कहाहै ॥ १ ॥ और दूसरे स्थान विषे कहाहै कि सदा

द्विगुणेतुव्रतेचीर्णेदक्षिणाद्विगुणाभवेदिति ॥ २ ॥ राजादिर्यदाप्रायश्चित्तंकर्तुमुद्यतोभवेत्तदा वपनंकृत्वैवसमाचरेत् नान्यथेत्यर्थः ॥ एतच्च महापातकादिदोषविशेषाभिप्रायेण द्रष्टव्यम् ॥ विद्वद्विप्रनृपस्त्रीणांनेष्यतेकेशवापनम् ॥ ऋतेमहापातकिनोगोहंतुश्चावकीर्णिनइतिमनुस्मरणात् ॥ ननु)प्राजापत्यंचरेत्कृच्छ्रंगोघातीव्रतमुत्तमम् सशिखंवपनंकुर्य्यात्त्रिसंध्यमवगाहनमित्यादिपराशरादिवचने सशिखवपनं विहितम् ॥ सदापर्वातिनःभाव्यं सदाबद्धशिखेनहीत्यादिना निषिद्धंतदिति चेदेवंनिर्णयः ॥ अस्यनैमित्तिकत्वेन बलवत्वान्नविरोधः संभाव्यः। अत्रविशेषोद्वितीयप्रकरणेद्रष्टव्यः ॥ जाबालेनाप्यत्रविशेषउक्तः ॥ आरंभेसर्वकृच्छ्राणांसमाप्तौचविशेषतः ॥ आज्यंनैवहिशालाग्नौजुहुयाद्व्याहृतीःपृथक् ॥ श्राद्धंकुर्य्याद्व्रतांतेतुगोगोहिरण्यादिदक्षिणाइति ॥ श्राद्धमत्रवैष्णवंबोध्यम् ॥

हि यज्ञोपवीत धारे सदाहि शिखाकों बन्न करके रहे इस जगा मुंडनका निषेध कहाहै कैसे करणा चाहिए (उत्तर) इस विषे ऐसे निर्णय है ॥ इसपूर्वोक्त पराशरादि वचनकों नैमित्तिक होणेकरके बल वाला होणेते विरोधकी संभावना नहि करणी अर्थात् जिसमे सदा शिखा धारणी कहीहै सो नित्यहै और नित्यसे नैमित्तिक बलवान है ॥ इसविषे विशेष दूसरे प्रकरण विषे देखणे योग्यहे ॥ जाबालऋषिनेंभी इसविषे विशेष कहाहै ॥ संपूर्ण कृच्छ्रव्रतांके आरंभविषे और समाप्ति विषे शालाग्निविषें क्या जिस अग्निमे सदाहि हवनहोतारहताहै तिसमे अथवा शाल वृक्षकियां समिधांकरके जो अग्नि तिसविषे भिन्नभिन्नव्याहृतीनूं पठनकरके घृतकरके हवनकरे । श्राद्धमिति व्रतके अंतविषे श्राद्धकों करे और गौ सुवर्ण आदिक दक्षिणा देवे और श्राद्ध इहां वैष्णव जानणा

विधा येति ॥ विष्णु निमित्त श्राद्धको विधान कर्के प्रायश्चित्त करे इस वाक्य कहणे करके वैष्णव श्राद्धको हि व्रत के अंग कर्के विधान होवेंते ॥ यमनेभी इसविषे विशेष कहाहै पश्चात्ताप कर्के पापोंतें हटरहणा और स्नान करणा इह व्रतके अंग कहेहैं और निमित्तिक जो पाप हैं तिनों संपूर्णोंको कथन करदयां रहणाएभी अंगहै इति ॥ १ ॥ अब निषेधको कहतेहां अंगोंविषे बुटनामलणा और शिरधोणा और तांबूल भक्षण करणा और सुगंधि वालें तिलक आदिक जो हे चपुनःहारवल क्या पुष्टिके देणे वाली वस्तु और प्रीतिके देणेवालि वस्तु इस संपूर्णको व्रत विषे स्थित जो पुरुषहै सो त्यागे । १ । इसतें आदलेके जो कर्त्तव्यताक्या कर्म सो और हिस्मृतितेंदेखणे योग्यहै ॥ निमित्तिकानामिति इसका अर्थ प्रायश्चित्तके निमित्त जो पापतिनोंको दूर करणे वास्ते उच्चारण करता रहे एहहै इति इसप्रकार इसविधि कर्के व्रतको ग्रहण करके अवश्य

विधायवैष्णवंश्राद्धमित्यादिना वैष्णवश्राद्धस्यैव व्रतांगत्वेन विधानात्। यमेनाप्यत्रविशेषउक्तः। पश्चात्तापान्निवृत्तिश्चस्नानंचांगतयोदितं निमित्तिकानां सर्वेषांतथाचैवानुकीर्त्तनमिति १ तथा गात्राभ्यंगंशिरोभ्यंगंतांबूलमनुलेपनम् व्रतस्थोवर्जयेत्सर्वंयच्चान्यद्बलरागकृदिति १ ॥ एवमादिकर्त्तव्यताजातंस्मृत्यंतरादवगन्तव्यम्। निमित्तिकानांप्रायश्चित्तनिमितानांपापानामित्यर्थः एवमनेनविधिनाव्रतंगृहीत्वावश्यंपरिसमापनीयम् ॥ अन्यथातु प्रत्यवायः पूर्वंव्रतंगृहीत्वातुनाचरेत्काममोहितः जीवन्भवतिचांडालोमृतः श्वाचैवजायते इति छागलेयस्मरणात् ॥ प्रारब्धेप्रायश्चत्तादिव्रतेऽसमाप्तेपिमृतेफलमाह यमः प्रायश्चित्तमयूखे ॥ प्रायश्चित्तेव्यवसितकर्त्तायदिविपद्यते शुद्धस्तदहरेवासाविहलोकेपरत्रचेति ॥ १ ॥ अंगिराअपि ॥ यदर्थमाचरेद्धर्ममप्राप्यम्रियतेयदि ॥ सतत्पुण्यफलंप्रेत्यप्राप्नुयान्मनुरब्रवीत् ॥ १ ॥ त्यक्तस्यपुनर्ग्रहणार्थंप्रायश्चित्तम् ॥

समाप्त करणे योग्यहै नकरे तांदोषहै ॥ पूर्वमिति ॥ पहले व्रतको ग्रहणकर्के फेर अपणी इच्छातें हि न ग्रहण करे क्या व्रतको न करे तो जीवता हि चांडालहै और मृतहोकर्के कुत्तेके जन्मको प्राप्तहोता है ॥ १ ॥ एह छागलेय ऋषिके स्मरणतें कहाहै ॥ प्रारंभ जिसका कीता ऐसा जो प्रायश्चित्तादि व्रत तिसके असमाप्त होयां होयां मृत्युको प्राप्तहोवे तिसके फलको धर्मराज प्रायश्चित्त मयूष विषे कहताहै ॥ प्रायश्चित्तके करदयां होयां करणे वाला जेकर मृत होवे तां तिस दिनविषेहि शुद्धहोजाताहै इस लोकविषे और परलोक विषेभी १ ॥ अब अंगिरस ऋषिका वचनहै जिसवास्ते धर्मको कर्ता है तिस धर्मके पूर्ण करणेते पहलें मृत्युको प्राप्त होवे सो पुरुष परलोक विषे तिस धर्मके संपूर्ण फलको प्राप्त होताहै एहमनु कहता भया ॥ १ ॥ और जेकर व्रतको ग्रहण कर्के त्यागया जो व्रत तिसकूं फेर ग्रहण वास्ते प्रायश्चित्त है ॥

सो प्रायश्चित्त वायुपुराणविषे कहाहै लोभादिति लोभतें वा मोहतें वा प्रमादतें व्रतका भंग होवे तथा व्रत जेकर पूर्ण न होवे तां त्रय उपवास करे अथवा केशोंका मुंडन करे इस प्राय श्चित्तको करके फेर व्रतकों धारणकरे तां शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ अब कृच्छ्र व्रतों करकेदूर होणे वाले और न दूर होणे वाले पापों कों देवल जी कहतेहैं ब्रह्मेति ब्राह्मणके मारणे वाला और मदिराके पीणे वाला और सुवर्णके चुराणेवाला और गुरुकी स्त्रीविषे गमन करणे वाला और इनां चारोंका संसर्गी एह पंच महापापी कहेहैं इन पांचोंका प्रायश्चित्त मरण है अत जिसके असा कहाहै और इनां के दूर करणे विषे कृच्छ्रादिव्रत नहिं कहे ॥ १ ॥ और

वायवीये लोभान्मोहात्प्रमादाद्वाव्रतभंगोभवेद्यदि उपवासत्रयंकुर्यात्कुर्या द्वाकेशमुंडनम् प्रायश्चित्तमिदंकृत्वापुनरेवव्रतीभवेत् १ कृच्छ्राणांसाध्या साध्यानिपापान्याह देवलः ॥ ब्रह्महत्यासुरापानंस्तेयंगुर्वंगनागमः तत्सं योगीचपंचैते महापातकिनस्त्विमे १ एतेषांपंचानां मरणान्तं प्रायश्चित्तं न कृच्छ्रादिकम् ॥ गोवधोगुर्वधिक्षेपोभृतकाध्यापनादिकम् कृच्छ्रचांद्रायणा द्यैस्तुपरिशुद्धप्रकीर्त्तितम् २ तिलानांधान्यराशीनांविक्रयस्त्वन्यवस्तुनः एतत्संकरीकरणं कृच्छ्रसाध्यंवदंतिहि ॥ ३ ॥ कन्यापहरणंचैवधेनुभूहरणा दिकम् मलिनीकरणंत्वेतत्कृच्छ्रसाध्यंप्रयत्नतः ॥ ४ ॥ चाडालीगमनादी नि अपात्रीकरणानिच ॥ कृच्छ्रैर्विशोधनीयानिविप्रैर्दोषपराङ्मुखैः ५ ॥

जो पुरुष गौका वध करणे वाला और गुरोंका निरादर करणे वाला और मजूरी लेके विद्या र्थियांको पढाणे वाला है इनकी शुद्धि कृच्छ्रचांद्रायणादिव्रतों करके कहीहै ॥ २ ॥ और तिलांके वेचणे वाला और धान्य राशिके तथा मुंजीआदिके वेचणेवाला और रस आदिके वेचणे वाला है इनांके जो पापहै सो संकरीकरण नाम करके कहाहै तिसका कृच्छ्र व्रत करके शुद्धि कहीहै ॥ ३ ॥ कन्याका हरणा और गौ और पृथ्वीआदि का हरणा एह मलिनी करण पाप हैं इनांका भी कृच्छ्रव्रतकरके वडे यत्नसें शुद्धि कहीहै ॥ ४ ॥ चांडाली गमनआदिक जो अपात्री करण पाप हैं सो दोषतें रहित जो ब्राह्मण तिनांने कृच्छ्र व्रतांकरके शुद्ध करणे योग्यहैं ॥ ५ ॥

दुरीरति और निंदित अन्न क्या मसर आदिका भक्षण करणा और दुष्टपुरुषके अन्नका भक्षणकरणा और जिस अन्नविषे असी शंकाहोवे कि एह अन्न पातकी पुरुषकर्के छोतादाहै तिसका भक्षण करणा एह जाति से भ्रष्ट करणे वाला वडा पाप कहाहै एह भी कृच्छ्र व्रत कर्के शुद्ध होताहै ६ ॥ और पंचक आदि दोष कर्के जो मृत होवे तिसकी दुर्गतिके दूर करणे वास्ते एह प्रकीर्ण पाप पुत्रोंने कृच्छ्र व्रत कर्के दूर करणे योग्यहै ॥ और गर्भाधानादिकके अभाव होयां होयां व्रात्यतादि दोष होताहै तिसके दूरकरणे वास्ते कृच्छ्र व्रत करणे योग्यहै ॥ और तुला आदिक प्रतिग्रहके लेणे वाले जो पुरुष हैं तिनां को ब्रह्मराक्षस जो गति है तिसका कृच्छ्र व्रतां कर्के किसे स्थान विषे निवारण कहा है ॥ पूर्वोक्तफलासे औरभी संपूर्ण कृच्छ्रोंके फल हैं सोई व्यासजी कहतेहैं श्रीति जो पुरुष लक्ष्मीकी इच्छा वाला और देहकी

दुरन्नभोजनंचैवदुष्टभक्षणमेवच दुष्टशंकादिकंचैवजातिभ्रंशकरंमहत् ६ ॥ एतदपिकृच्छ्रसाध्यम् ॥ दुर्मरणादिकंप्रकीर्णं कृच्छ्रसाध्यम् ॥ गर्भाधानादिकर्मणां तत्कालातिक्रमे व्रात्यतादिकं कृच्छ्रैः साध्यम् ॥ तुलादिप्रतिगृहीतॄणां ब्रह्मराक्षसत्वस्य कृच्छ्रैः कुत्रचिन्निवारणम् ॥ सर्वेषां कृच्छ्राणां फलार्थत्वमप्याह । व्यासः । श्रीकामःपुष्टिकामश्चस्वर्गकामस्तथैवच देवताराधनपरस्तथाकृच्छ्रंसमाचरेत् ॥ १ ॥ रसायनानिमंत्राश्चतथाचैवौषधानिच तस्यसर्वाणिसिध्यंतियोनरःकृच्छ्रकृद्भवेत् ॥ २ ॥ वैदिकानिचसर्वाणि यानिकाम्यानिकानिचित् सिद्ध्यंतिसर्वदानानिकृच्छ्रकर्त्तुर्नसंशयइति ३ ॥ याज्ञवल्क्यः ॥ कृच्छ्रकृद्धर्मकामस्तुमहतींश्रियमाप्नुयात् तथागुरुक्रतुफलमाप्नोतिसुसमाहितः ॥ १ ॥ अत्रमिताक्षरा ॥ यस्त्वभ्युदयकामःप्राजापत्यादिकृच्छ्राननुतिष्ठति स महतीं राज्यादिलक्षणांश्रियमनुभवति ॥

पुष्टिकी कामनावाला और स्वर्गकी कामनावाला और तैसे जो देवताके पूजन विषे युक्त पुरुषहै सो कृच्छ्र व्रतकों करे ॥ १ ॥ और रसायन सब और मंत्र और औषधीयां एह सब तिसके सिद्धहोतेहैं जो कृच्छ्र व्रतकों कर्ताहै ॥ २ ॥ और वेदकर्के कथनकीये जो संपूर्ण कर्म और जो काम्य कर्म और संपूर्णदान एह सब कृच्छ्र व्रतके करणे वालेकों सिद्धहोतेहैं इसविषे संशय नहि है ॥ ३ ॥ याज्ञवल्क्यजीकावचनहै कृच्छ्रेति धर्मकी इच्छा वाला जो पुरुष है सो समाधानहुआ २ कृच्छ्र व्रतकों करे तो वडीश्रीकों प्राप्त होताहै तैसे वडे यज्ञके फलकों प्राप्त होताहै ॥ १ ॥ इस विषे मिताक्षराका वचन है जो पुरुष ऐश्वर्यकी इच्छाकर्के प्राजापत्य आदिकृच्छ्रांकों करताहै सो महाराज्य आदि लक्षण वाली लक्ष्मीको प्राप्त होताहै ॥

यथेति जैसेवडे जो यज्ञहैं राजसूय आदितिनांके करणेवाला तिनायज्ञांका जो फलहै स्वाराज्य आदि क्या स्वर्गराज्यादिलक्षण महाफल तिसको प्राप्तहोताहै तैसे एह पुरुषभी इंद्रियांको रोक के संपूर्ण अंगाके क्या विधिके साथ कृच्छ्र व्रतको करताहोया राज्य आदि लक्षण महाफलको प्राप्त होताहै ❀ अथेति इसते उपरंत प्राजापत्य कृच्छ्र व्रतके प्रत्याम्नाय कहतेहां प्रत्याम्नाय क्या बदलाजैसे प्राजापत्य व्रतकी सामर्थ्य न होवे तिस प्राजापत्य फलकी प्राप्ति वास्ते बदला धेनुदानादि कहाहै तिस विषे देवलजीकहतेहैं ॥ धेनुरिति एक धेनु क्या नवी प्रसूतहुई गौ और महानदी क्या जो समुद्रमे गमन करणे वाला हैं अथवा गंगाआदि तिस विषे स्नान और बारां ब्राह्मणांका पूजन और संहिताका सारा पाठ करणा और दो सउ २०० प्राणायाम

यथा गुरुक्रतूनां राजसूयादीनां कर्ता तत्फलं स्वाराज्यादिलक्षणं महत्फलं लभते तथायमपि समाहितः सकलांगकलापमविकलमनुतिष्ठन्निति ॥ अथ प्राजापत्यकृच्छ्रप्रत्याम्नायाः ❀ तत्राह देवलः धेनुर्महानदीस्नानंद्वाद शब्राह्मणार्चनम् संहितामात्रपठनंद्विशतंवायुरोधनम् ॥ १ ॥ तिलहोमस हस्रंस्यादयुतंजपउच्यतेइति ॥ द्विशतंवायुरोधनंप्राणायामशतद्वयम् ॥ लिंगपुराणे ईश्वरः ॥ प्राजापत्येतुगौरेकाद्वादशब्राह्मणार्चनम् समुद्रगन दीस्नानंसंहितापाठउच्यते प्राणायामश्चद्विशतमयुतंजपउच्यते ॥ १ ॥ पराशरः ॥ अकामतःकृतंपापंवेदाभ्यासेनशुध्यति कामतस्तुकृतेपापेप्रा जापत्यंसमाचरेत् ॥ १ ॥

गायत्री मंत्र करके करणा और हजार आहुति तिलांकी व्याहृति करके और दशहजार१०००० गायत्रीका जप करणा एह प्राजापत्यके फलदेणवालेहैं ॥ १ ॥ इसीको प्रत्याम्नाय कहतेहैं । अब लिंगपुराणविषे शिवांका वचनहै प्रेति प्राजापत्य कृच्छ्रविषे एक गौ दान करणी और बारांब्राह्म णांकी पूजा करणी और समुद्र विषे प्राप्त होणे वाली नदी विषे स्नान करणा और संहिताका सारा पाठ करणा और दो सउ २०० प्राणायाम करणा गायत्री मंत्र करके और दश हजार १०००० जप करणा गायत्रीका एह प्राजापत्य कृच्छ्र व्रत विषे प्रत्याम्नायहै १ ॥ अब पराशरजी कहतेहैं अकामतइति इच्छाते विना कीया जो पाप सो संहिताके पाठ करणे करके दूरहोताहै और जो इच्छासे कीयाहै पाप सो प्राजापत्य व्रतकर्के दूर होताहै ॥ १ ॥

अब इसके प्रत्याम्नायकों क्या बदलो करणेकी विधिकों देवलऋषि कहताहै विप्रइति ब्राह्मण मध्याह्नों पहलेनदी विषे स्नानकरे वा होरी उत्तम जलाशयविषे करे अथवा और किसे जल विषे करे पोछके शुद्ध वस्त्रकों धारके त्रिपुंड्रक तिलककोंकर फेर नित्यकर्म जो संध्या वंदनादि तिसकों समाप्तकरे ॥ १ ॥ फेर देवताकी उपासना आदि कर्म कों करे अर्थात् ध्यान करे और उपासनातें पोछे देवताका पूजन इच्छो तरहसें करे तिसतें उपरंत चार ब्राह्मणांकेसाथ स्वस्त्ययनको वाचे २ ॥ और संकल्प इसतरह करे कि जिसदेश और काल विषे प्रत्याम्नायको करताहै तिस देश कालका उच्चारण करके अपणे नामका भी उच्चारण करे कि जो पाप मनें इच्छातें विना कीताहै तिसकी शुद्धि वास्ते ॥ ३ ॥ मैं प्राजापत्य कृच्छ्रक करणे विषे सामर्थ्यते रहित हो

प्रत्याम्नायसमाचरणमाह देवलः ॥ विप्रःस्नात्वातुपूर्वाह्णेनद्यांवान्यत्रवाजले वस्त्रादिपुंड्रकंकृत्वानित्यकर्मसमापयेत् ॥ १ ॥ औपासनादिकंकृत्वा ततोदेवार्चनंपरम् चतुर्भिर्ब्राह्मणैःसाकं पुण्याहंवाचयेत्ततः ॥ २ ॥ देशकालौचसंकीर्त्यस्वनामाप्यनुसंवदेत् एतत्पापविशुद्ध्यर्थमयाकृतमकामतः ॥ ३ ॥ प्राजापत्यस्यकृच्छ्रस्यसाक्षात्कर्तुमशक्नुवन् प्रत्याम्नायमहंकुर्व्वे भवंतः क्षंतुमर्हथ ॥ ४ ॥ इत्युक्त्वागांसवत्सांचसुशीलांचपयस्विनीं पूजयित्वाविधानेनब्राह्मणंचयथार्थतः ॥ ५ ॥ हेहेगौःसर्वलोकानांत्वंमातापरिकीर्तिता अतस्त्वांपूजयिष्यामि सर्वपापापनुत्तये ॥ ६ ॥ इतिसर्वप्रत्याम्नायकृच्छ्रगोदानेपुपूजामंत्रः ॥ वेदाध्यायिन्सदापूज्योदानेष्वेतेषुपावन अतस्त्वांपूजयिष्यामिसर्वपापापनुत्तये । १ । इतिविप्रपूजामंत्रः।

इस कारणतें प्राजापत्यके बदलेकों कर्त्ताहां हे ऋषियांहो तुसीं क्षमा करो ॥ ४ ॥ ऐसे कहके सहित वच्छेके जो गौ है चंगे स्वभाव वाली और दुग्ध देणे वाली तिसकों विधि करकें तैसे पूजे फेर ब्राह्मण के ताईं देवे ॥ ५ ॥ अब पूजनके मंत्र कहतेहां हेइति हे गौ तूं संपूर्ण लोकांकी माता कही हैं इस कारणतें संपूर्ण पापांके दूरकरणे वास्ते तेरेकों मैं पूजताहां ॥ ६ ॥ एह मंत्र संपूर्ण प्रत्याम्नाय और कृच्छ्र व्रत और गोदान विषे गौकी पूजा विषे पढणेयोग्यहै अब उपदेश करणे वाले ब्राह्मणकी प्रार्थनाकों कहतेहैं वेदाति हे वेदके पढने विषे युक्त ह पवित्र एनां दानां विषे तूं सदाहि पूजने योग्यहैं इसकारणतें संपूर्ण पापांके दूरकरणे वास्ते तेरेकों मैं पूजताहां एह ब्राह्मणकी पूजा का मंत्र कहाहै ॥ १ ॥

गवामिति गौयांके अंगां विषे चौदां भुवन स्थित हैं जिसकारणतें तिस कारण तें मेरेकों कल्याण होवे और इसकारण तें मेरे ताईं शांतिकों देवो ॥ २ ॥ यज्ञेति और जो यज्ञका साधन रूप और जगत् के पाप दूर करणे वाली है तातें इस गौ करके मेरे उपर विश्वरूपके धारणे वाला देवता प्रसन्नहोवे ॥ ३ ॥ एह मंत्र संपूर्ण गोदान विषे और प्रत्याम्नाय गोदानों विषे पढने योग्यहैं ॥ अब और कहतेहैं तत्रेति तिसविषेभी दक्षिणादेणेयोग्यहै जैसें धनहोवे तिसके अनुसारतें करे इस प्रकार प्राजापत्य कृच्छ्रके प्रत्याम्नायकों भलो प्रकार करणे करके प्राजापत्यका जो संपूर्ण फलहै तिसकों प्राप्तहोताहै ॥ १ ॥ और प्राजापत्यकृच्छ्रके प्रत्याम्नाय रूपा करके क ही जो गौहै तिसके अभाव विषे तिसके मुल्लकों देवल ऋषि कहता है गवामिति गौयांके

गवामंगेपुतिष्ठंतिभुवनानिचतुर्दश यस्मात्तस्माच्छिवंमेस्यादतःशांतिंप्रयच्छमे ॥ २ ॥ यज्ञसाधनभूतायाविश्वस्याघप्रणाशिनी विश्वरूपधरोदेवः प्रीयतामनयागवा ॥ ३ ॥ इतिसर्वगोदाने प्रत्याम्नायगोदानेपुचमंत्रौ ॥ तत्रापिदक्षिणादेयायथावित्तानुसारतः एवंकृत्वानरःसम्यक् प्रत्याम्नायमनुत्तमम् । संपूर्णफलमाप्नोतिप्राजापत्यस्यकृच्छ्रतः । १ । प्राजापत्यकृच्छ्रप्रत्याम्नायत्वेन गोरभावे तन्मूल्यमाह देवलः ॥ गवामभावेनिष्कंस्यात्तदर्द्धंपादमेववा दरिद्रःकुरुतेपादंधनिकः पूर्णमाचरेत् अन्यथातत्फलंनास्तिप्राजापत्यंनसिध्यति ॥ १ ॥ निष्कशब्दोद्विवराहस्तदर्द्धमेकवराहपक्षोमध्यः वराहार्द्धपक्षः कनीयान् तत्त्रयमप्यंगीकृतमस्माभिः ॥

अभाव विषें क्या गौ न होवे तिस एक गौका मुल्ल एक निष्क देवे वा निष्कका अर्द्ध देवे वा तिसका अर्द्ध पाद अर्थात् चौथा हिस्सा देवे परंतु धनतें रहित जो पुरुषहै सो निष्कका चौथा हिस्सा देवे और धनवाला होवे तां संपूर्ण निष्कदेवे जेकर ऐसें न करे तिसको फल नहि होता और प्राजापत्यभी सिद्ध नहि होता ॥ १ ॥ और इस जगा निष्क नाम दो वराहका है और एक वराहका नाम जो निष्कहै सो मध्यम पक्ष कहाहै और वराहका अर्द्ध जो निष्क कहाहै सो कनीयान् पक्ष है क्या लघुपक्षहै असानें त्राहि पक्ष अंगी कार कीतेहैं इसमे शक्ति के अनुसार व्यवस्था जानणी और वराह शब्दका अर्थ मान परिभाषा सें जानणा ॥

सोई कहताहै मार्कंडेय ऋषि देति प्रभुञ्ओंको अर्थात् जो धन करके युक्त हैं तिनोंको निष्क सुवर्णका दान करणे योग्यहै एह उत्तम पक्ष कहाहै निष्कका अर्द्ध जो एक वराह रूप है सो सामर्थ्य वालेको नहि क्योंकि उत्तम पुरुषको मध्यम दानका फल नहि होता ॥ १ ॥ मध्यमेति ॥ मध्यम जो पुरुष हैं तिनोंको सर्वदा काल मध्यम पक्ष निष्कका अर्द्ध वराह परिमाण दान करणा श्रेष्ठहै तां मध्यम पुरुष मध्यम पक्षको करे उत्तम पक्षको त्यागके जेकर मध्यम पक्षको करे तिसको भी फल नहि होता और इस करके उत्तम जो धनि पुरुष है सो मध्यम जो वराह परिमाण तिसका दान न करे ॥ २ ॥ और कनीयान् जो वराहका अर्द्धहै सो पक्ष निर्धन

तदाह मार्कंडेयः ॥ प्रभूणां पूर्वपक्षः स्यादुत्तमः परिकीर्त्तितः ॥ मध्यमाचरणंनास्तिप्रभूणांतत्फलंनवा ॥ १ ॥ मध्यमानांवराहःस्यात्पक्षः सर्वत्रशोभनः ॥ उत्तमंयःपरित्यज्यमध्यमंचेदुपाश्रितः ॥ नदानफलमस्यास्तिनोत्तमोमध्यमंचरेत् ॥ २ ॥ कनीयांस्तुवराहार्द्धमुत्तमंसंप्रकीर्त्तितं ततस्यमध्यमंनास्तिनतत्कृच्छ्रफलंलभेत् ॥ ३ ॥ आकिंचनानांसर्वेषांधरणंगौरुदाहृता अतोहीनंनकर्त्तव्यंगोमूल्येष्विहसर्वदा एवंकुर्युर्हितदानंचोत्तमाधममध्यमाः ॥ ४ ॥ किंचिद्धनाढ्योपि कनीयांसंकुर्य्यात् ॥ आकिंचनस्य कनीयान्पक्षएवोत्तमः ॥

को उत्तम कहाहै निर्धनको मध्यम पक्ष नहि कहा जेकर करे तिसको कृच्छ्रका फल नहि होता अथ॥ जिसको उत्तम पक्ष किहा है तिसने मध्यम नहि करणा एह अर्थ है ॥ ३ ॥ आकिंचेति ॥ निर्धन जो सबई तिनोंको धरण परिमाण सुवर्णका दान गोदान कहा है इस कारणसे गौवांके मुल्लविषे थोडा दान न करे ॥ ४ ॥ इसप्रकार अपने २ अधिकारकरके उत्तम और मध्यम और अधम पुरुष दानको करे एहि शास्त्रकी आज्ञा है एहि अर्थ स्पष्ट करके किहा है ॥ कुछक धनकरके युक्त जो पुरुष है सोभी अल्पदानको करे और निर्धन पुरुष उत्तम दानको न करे तिसको कनीयान् पक्ष हि उत्तम है ॥

अतइति इस कारणतें अपणी सामर्थ्य करकें पुरुष प्राजापत्यकें प्रत्याम्नायकों करे जेकर सामर्थ्य कों लंघ करकें करे तां तिसकों फल नहि होता ॥ एवमिति असे महापापांविषे भी कयाहै कि महापापके करणे वाला पुरुष बारां वर्षके व्रतकों करे कि बारां दिनां करकें साध्य जो प्राजापत्य व्रत सो त्रय सौ सठ ३६० करणे योग्यहैं तदिति और जेकर तिनां व्रतांके करणेविषे सामर्थ्य न होवे तां त्रय सौ ३६० सहित वछयांके गौयां देवे ॥ और गौयांका भी अभावहोवें तां त्रय सौ सठ ३६० मोहर देणे योग्यहै ॥ तैसे हारीस्मृतिका वाक्यहै प्राजापत्यव्रतके करणे विषे सामर्थ्य न होवे तां बुद्धिमान् पुरुष प्रसून होइ जो गौ तिसका दान करे और गौ दानकी भी सामर्थ्य न होवे तां तिसकें तुल्य मुल्लकोंदेवे इसमे संशयनहि है ॥ १ ॥ मुल्लकी व्यवस्था करतेहैं

अतः स्वशक्तिपुरःसरतया प्रत्याम्नायं कुर्यादन्यथा निष्फलत्वमवाप्नोतीत्यर्थः ॥ एवंमहापातकेऽपि द्वादशवार्षिकव्रतस्य द्वादश दिनसाध्यतया प्राजापत्यानि ॥ ३६० ॥ पष्ट्यधिकशतत्रयं कल्पयित्वा कार्याणि ॥ तदशक्तौच तावत्योवा धेनवोदातव्याः । तदसंभवेनिष्काणांषष्ट्यधिकशतत्रयं दातव्यम् ॥ तथास्मृत्यंतरम् ॥ प्राजापत्यक्रियाऽशक्तौधेनुंदद्याद्विचक्षणः धेनोरभावेदातव्यंमूल्यंतुल्यमसंशयम् १ निष्कंवा तदर्द्धं पादं वा शक्त्यपेक्षयादातव्यम् ॥ गवामभावेनिष्कंस्यात्तदर्द्धंपादमेवचेतिस्मरणात् ॥ मूल्यदानस्याप्यशक्तौ तावंतोवोपवासाःकर्त्तव्याः ॥ कृच्छ्रउपवासोऽहोरात्र निति महार्णवे

निष्कमिति अपणी सामर्थ्यकरके निष्कदानकरे वा तिसका अर्द्धदान करे या तिसदा चौथा हिस्सादान करे ॥ गवामिति गौयांके दानकी सामर्थ्य न होवे तां निष्कका दान करे वा अद्धाकरे वा चौथा हिस्सा करे इसवास्ते ॥ और मुल्लदेणेकीभी समर्थ्य न होवे तां तिसपापांविषे जितनें कृच्छ्र व्रत करणे योग्यहैं तित संख्या करकें उपवास व्रतांकों करावे परंतु इसमें ऐसा अभिप्रायहै कि निरंतर उपवास नहि होसके एक उपवास करकें दूसरे दिन भोजन करे और फेर उपवास करे इस रीतिसे जो दिन रात्र उपवास व्रत करणाहै तिसका नाम कृच्छ्रहै एह महार्णव विषे कहाहै ।

तत्रेति तिस त्रय सो सठ १६० उपवास व्रत विषे भी जो सामर्थ्यतें रहितहै तिस पुरुषनें छत्ती लक्ष ३६०००००० गिणती कर्के गायत्रीका जप करणे योग्यहै एह प्रत्याम्नाय कहाहै इसमें वचन कहतेहैं कृच्छ्रादि कृच्छ्रव्रत और गायत्रीका दश हजार १०००० जप और उपवास व्रत और ब्राह्मणके तांई प्रसूत होईहोई गौका दान देणा एह चारे सम हैं इनां उपायां विषे पापके दूर करणे वालेकिसे उपायकों करे इस पराशरजीके वचनतें १ ॥ फेर जो चतुर्विंशतिके मत विषे कहाहै जो पुरुष गायत्रीका एक कोड जप१०००००००० कर्ताहै सो ब्रह्महत्या पापों रहित भया शुद्धिकों प्राप्तहोताहै और अस्सी लक्ष ८०००००० गायत्रीके जपकों कर्ताहै सो पुरुष मदिरा पीणका जो पापहै तिसतें शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ और सत्तर लक्ष७०००००० जो गायत्रीका जपहै सो सुवर्णके चुराणे वालेकों शुद्ध कर्ताहै और गुरुकी स्त्री साथ जो गमन करणे वालाहै सो पुरुष गायत्रीके सठ लक्ष ६००००००जपकर्के शुद्ध होताहै ॥ २ ॥ एह बारय वारां वर्षका जो व्रतहै तिसके तुल्य फलकों प्रतिपादन कर्ताहै प्राजापत्यको प्रत्याम्नाय विधि विषे नहि जानणा तां कहा जो विषय प्रत्याम्नाय तिसतें भिन्न होणेंते एह कोई विरोधी वाक्य नहि है ॥ और वाक्य कहतेहैं कृच्छ्रइति कृच्छ्र व्रत और देवी गायत्रीका दश हजार १००००जप और दो सो २००प्राणायाम गायत्रीकर्के और एक हजार १०००तिलांका हवन मृत्युंजय मंत्र कर्के वा आहुति कर्के और सारी संहिताका पाठ एह कृच्छ्र व्रतके प्रत्याम्नाय भया एक एक के अभाव विषे दूसरा दूसरा करणा ॥ सो चतुर्विंशति और मनु आदि कर्के कथन कीते होए एक सो सठ १६० संख्या कर्के महापातकपापों विषे जानने योग्यहैं ॥

तत्राप्यशक्तोगायत्रीजपः षट्त्रिंशल्लक्षसंख्याकःकार्य्यः ॥ कृच्छ्रोयुतं तु गायत्र्याउपवासस्तथैवच ॥ धेनुप्रदानंविप्रायसममेतच्चतुष्टयमिति पराशरस्मरणात् । यत्तुचतुर्विंशतिमतेभिहितम् ॥ गायत्र्यास्तुजपन्कोटिं ब्रह्महत्यांव्यपोहति लक्षाशीतिंजपेद्यस्तुसुरापानाद्विमुच्यते॥ १ ॥ पुनातिहेमहर्तारंगायत्र्यालक्षसप्ततिः गायत्र्याःषष्टिकैर्लक्षैर्मुच्यतेगुरुतल्पगइति२ । तद्द्वादशवार्षिकतुल्यविधानतयोक्तं न पुनरुक्तविषयमिति न विरोधः । कृच्छ्रोदेव्ययुतंचैवप्राणायामशतद्वयम् ॥ तिलहोमसहस्रंतुवेदपारायणंतथेत्यादयः प्रत्याम्नायाश्चतुर्विंशति मन्वादिशास्त्रेऽभिहिताः षष्ठ्यधिकशतत्रयगुणितामहापातकेषु बोद्धव्याः ॥

अतीति अतिपातक पापों विषे प्राजापत्य व्रतां की संख्या दो सौ सत्तर २७० कहीहै सो करणे योग्यहै वा तिसका प्रत्याम्नाय दोसौ सत्तर २७० धेनुदानतें लेकर होरभी जानणे ॥ पातकेष्विति पातक जो पाप हैं तिनां विषे एकसौ अस्सी १८० प्राजापत्य व्रत कहेहैं तिस विषे प्रत्याम्नाय प्रसू तहोई गौयांते आदिलेके एक सौ अस्सी संख्याहि कही है ॥ तैसे चतुर्विंशतिके मतविषे कहाहै जन्मेति जन्मतें लेके ब्रह्महत्या तें विना जो बहुत अनेक तरांके पाप कीतेहैं तिनांके दूर करणे वास्ते छे ६ वर्ष के प्राजापत्य व्रत को करे और ब्रह्महत्या पापके दूर करणे विषे बारां वर्ष का व्रतहि कहाहै ॥ १ ॥ तिस छे वर्ष के प्रत्याम्नाय विषे धनवाले पुरुषकों एक सौ अस्सी गौ

अतिपातकेषु सप्तत्यधिकशतद्वयं प्राजापत्यानांकर्त्तव्यंतावंतोवाधेन्वादयः प्रत्याम्नायाः ॥ पातकेषुसाशीतिशतंप्राजापत्याः प्रत्याम्नायधेन्वादय स्तावंतएववा ॥ तथाचतुर्विंशतिमतेऽभिहितम् । जन्मप्रभृतिपापानिबहूनि विविधानिच कृत्वार्वाग्ब्रह्महत्यायाः षडब्दंव्रतमाचरेत् ॥ १ ॥ प्रत्या म्नायेगवांदेयं साशीतिधनिनांशतम् ॥ तथाष्टादशलक्षाणिगायत्र्यावा जपेद्बुध इति ॥ २ ॥ इदमेवचद्वादशवार्षिकेव्रतेद्वादशद्वादशदिनैरेकै कप्राजापत्यकल्पनायां लिंगम् ॥ एवमुपपातकेषु त्रैवार्षिक प्रायश्चित्त विषयभूतेषु नवतिःप्राजापत्यास्तावंतएवप्रत्याम्नायाः ॥

यांकादान करणे योग्यहै तिसकी सामर्थ्य न होवे तां बुद्धिमान् पुरुष अठारांलक्ष १८००००० गायत्री का जप करे ॥ २ ॥ एहजो पूर्व. कथन कीताहै प्रायश्चित्त सो बारां वर्ष केव्रत विषे बारां बारां दिनां करके एक एक प्राजापत्यकी कल्पना विषेचिन्ह जानणा ॥ जैसे पूर्व कहा है इसी प्रकार उपपातक जो पाप हैं त्रय ३ वर्षके प्रायश्चित्त व्रत करके दूर होणे वाले तिनां विषे नव्वे ९० प्राजापत्य व्रत कहेहैं बारां दिनांकरके एक प्राजापत्य व्रतहोताहै तांते त्रय ३ वर्षां विषे नव्वे ९० होतेहैं जेकर उपपातक पापांके दूर करणे वाले जो नव्वे ९० प्राजापत्य व्रत तिनांके करणे विषे सामर्थ्य न होवे तां तिसको प्रत्याम्नाय नव्वे ९० कहेहैं ।

त्रैमासिकेति त्रय ३ महीने करके हुंदा जो प्रायश्चित्त तिसविषे साडे सत्त ७॥ प्राजापत्य व्रत कहेहैं तिसके प्रत्याम्नाय जप और गौ और उपवास व्रत आदि साडे सत्त ७॥हि कहेहैं परंतु इसजगा अर्द्धके स्थानमुल्ल देवे जो गौका कहाहै तिसतें अर्द्ध व्रत हो जावेगा ॥ मासिकेति महीनेके व्रत विषे ढाई२॥ प्राजापत्य व्रत कहेहैं तिसकों असामर्थ्य विषे प्रत्याम्नाय भी ढाई २॥ कहेहैं चांद्रायणेति और एक चांद्रायण व्रत करके दूर होनेवाले जो उपपातक पाप तिनांकें दूर करणे वास्ते प्राजापत्यव्रत त्रय ३ कहेहैं ॥ तिस प्राजापत्य त्रय ३ के करणे विषे जो असमर्थ पुरुष है तिसकों प्रत्याम्नायभी तावान् कहाहै ॥ जो फेर चतुर्विंशति मत विषे कहाहै कि चांद्रायण व्रतके प्रत्याम्नायके करण विषे अठ धेनु ८ का दान कहाहै सो एह धन वाले पुरुष विषे पिपीलिका मध्यादि नाम चांद्रायण व्रत के प्रत्याम्नाय क्या वदले विषे जानणा ॥

त्रैमासिकविषये पुनः सार्द्ध सप्त प्राजापत्याः प्रत्याम्नायाश्च धेनूपवासादयस्तावंतएव ॥ मासिकव्रतविषये तु सार्द्धं प्राजापत्यद्वयम् ॥ तावानेवप्रत्याम्नायः॥ चांद्रायणविषयभूतेषु पुनरुपपातकेषु प्राजापत्यत्रयम् ॥ तदशक्तस्यप्रत्याम्नायस्तावानेव ॥ यत्पुनश्चतुर्विंशतिमतेऽभिहितम् ॥ अष्टौचांद्रायणेदेयाः प्रत्याम्नायविधौसदेति अष्टौधेनवइत्यर्थः तदपि धानिनः पिपीलिकामध्यादिचांद्रायणप्रत्याम्नायविषयम् ॥ एतच्चैकैकंग्रासमश्नीयादित्यामलकपरिमितैकैकग्रासपक्षे वेदितव्यम् ॥ पाणिपूरान्नपक्षेतु पुनर्धेनुद्वयमेव । प्राजापत्यस्य षडुपवासतुल्यत्वात् । द्विगुणत्वाच्चातिकृच्छ्रस्य

एतदिति एह जो पूर्वोक्त विधि है सो (एकैकं) इत्यादि वचनकरके कही जो प्रतिदिन एक एक ग्रास के भक्षण वाली चांद्रायण विधि तिस विषे जानणे योग्यहै और इस विधि विषे ग्रासभी आमलेके तुल्यहै इसकरके कठिन चांद्रायणहै और तिसका प्रात्यम्नायभी अधिकहै॥ और जिसपक्ष विषे पाणि पूरान्न भोजन किहाहै क्या जितने अन्न करके एक हत्थ पूरण होवे तितना अन्न प्रतिदिन भक्षण करे इसपक्षविषे कष्ट थोडाहै इसकरके दो२धेनु प्रत्याम्नायहै॥ अव फेर पूर्वोक्त मे अभिप्राय कहतेहैं कि प्राजापत्यकों ६ छे उपवासकी तुल्यताहै ॥ और अति कृच्छ्र कों इससे द्विगुण होणेतें अर्थात् अति कृच्छ्र इससे दूणाहै

अब और विचार करते हैं यद्यपीति जो पाणि पूरान्न भोजन किहाहै सो ९ नौ दिनमे हि हुंदाहै वारां १२ दिनमे नहि तथापि निरंतर जो १२ वारांदिनका व्रत करणा सो बहुत क्लेशदेणे वाला हैं इसकर्के ६ छे उपवासके तुल्य जो प्राजापत्य दो २ तिसकी तुल्यता पाणि पूरान्न वाले व्रतको है ॥ अब प्राजापत्यको जिस तरहां ६ छे उपवासकी तुल्यताहै सो कहते हैं तथाहीति पहले त्रय दिनविषे सायं कालके भोजनकी निवृत्ति होयां एक १ उपवास होआ और दूसरे त्रय दिनविषे प्रातः काल भोजनकी निवृत्ति होयां एक १ उपवास होर होया ॥ और अगले दिन त्राय विषे अयाचित व्रत विषे भी सायं कालके भोजन की निवृत्ति करणेतें एक उपवास हुंदाहै इसरीतिसें नो ९ दिनोंकर्के ३ त्रय उपवास होए ॥ और इसते

॥ यद्यपि नवसु दिवसेषु पाणिपूरान्नभोजनम् तथापि नैरंतर्य्येण द्वादशदिवसानुष्ठाने क्लेशातिशयेन षडहोपवाससमानप्राजापत्यद्वयतुल्यत्वमेव ॥ प्राजापत्यस्यषडुपवासतुल्यत्वंयुक्तमेव ॥ तथाहि प्रथमेत्र्यहेसायंतनभोजनत्रयनिवृत्तावेकोपवासस्यसंपत्तिः । द्वितीयेत्र्यहेप्रातः कालभोजन त्रयवर्जनेऽपरस्य तथाऽयाचित त्र्यहेपि सायंतनभोजनवर्जनेऽन्यस्यैवंनवाभिर्दिनैरुपवासत्रयम् ॥ तत श्चांत्यत्र्यहोपवासत्रयमितियुक्तं षडुपवासतुल्यत्वम् ॥ ऋषभैकादशगोदानसहितत्रिरात्रोपवासात्मक गोव्रतेतु सार्द्धैकादशप्राजापत्यास्तावत्संख्याकाश्चोपवासादयः प्रत्याम्नायाः मासपयोव्रतेतु सार्द्धं प्राजापत्यद्वयम् ॥ पराकात्मकेतूपपातकव्रतेप्राजापत्यत्रयम् ।

आगे त्रय उपवास करणे ते ६ उपवासकी तुल्यता प्राजा पत्य को उचितहै ऋषभेति बैलहै यारवां जिनां विषे ऐसीयां दशां १० गौयांके दानके साथ जो त्रय ३ उपवास व्रत हैं ऐसे गोव्रतविषे प्रत्याम्नाय कहतेहां ॥ सार्द्धइति साढे यारां प्राजापत्य व्रत अथवा साढे यार ११ ॥ उपवास अर्थात् साढे यारां दिन ११॥ निराहार स्थित रहणा इत्यादिजानणे ॥ मासेति एक मास तक जो दुधका व्रत तिस विषे प्रत्याम्नाय ढाई २॥ प्राजापत्य कहने ॥ पराक व्रत कर्के दूर होता जो उपपातक पाप तिस व्रत विषे प्राजापत्य त्रय ३ करणे चाहिए एह प्रत्या म्नाय है ॥

और कहतेहैं पराकेति और पराकव्रत और तप्तकृच्छ्र और अतिकृच्छ्र इनां विषे एक एक की जगा त्रय ३ प्राजापत्य व्रत करे और १ प्राजापत्य व्रतां विषे जो असमर्थ है सो सांतपन व्रत के अर्द्धनूं करे ऐसे षड्त्रिंशत् मत विषे कथन करणेतें ॥ चांद्रायणेति चांद्रायण और पराक कृच्छ्र और अतिकृच्छ्र एह व्रत एक एक त्रय ३ प्राजापत्य व्रतांके तुल्यहै.तातें बारांवर्षके व्रत विषे एक सौ बीस १२० अनुष्ठान करणे योग्य हैं ॥ तदिति और तिनां चांद्रायणादि व्रतांके प्रत्याम्नाय धेनु आदिक अर्थात् धेनु उपवास और गायत्रीका १०००० जप एह सब त्रय गुणां अधिक जानणे तातें प्राजापत्य व्रत त्रय सौ सठ ३६० कहनें तिस विषे चांद्रायण एकसौ बीस १२० तिस एक सौ बीस विषें धेनु आदिक त्रय सौ सठ ३६० कहनें ॥ अतीति अतिपातक पापविषे नव्वे९० संख्याकर्के चांद्रायण आदि कहने ॥ और अति पातक पापांके तुल्य जो पातक संज्ञाकर्के पापहैं तिनां विषे सठ ६० चांद्रायणादि कहने ॥ और त्रय

पराकतप्तातिकृच्छ्रस्थाने कृच्छ्रत्रयंचरेत् सांतपनस्यतत्त्वार्द्धमशक्तौव्रतमाचरेदिति षड्त्रिंशन्मतेऽभिधानात् ॥ चांद्रायण पराककृच्छ्रातिकृच्छ्रास्तुप्राजापत्यत्रयात्मकाद्वादशवार्षिकव्रतस्थाने विंशत्युत्तरंशतसंख्याअनुष्ठेयाः तत्प्रत्याम्नायास्तुधेन्वादयस्त्रिगुणाः । अतिपातके नवतिसंख्याकाश्चांद्रायणादयः तत्समपुनःपातकपदाभिधेयेषु षष्टिसंख्याः । उपपातकेषु त्रैवार्षिकविषयेषु त्रिंशत्संख्याः त्रैमासिकेषुव्रतस्थानेषु गोमूत्रस्नानादीतिकर्त्तव्यताबाहुल्याच्चांद्रायणादित्रयम् मासिकव्रतेषु योगीश्वरोक्तमेकमेवचांद्रायणम् धेनूपवासादिप्रत्याम्नायस्तु सर्वत्र त्रिगुणएव। प्रकीर्णकेषु पुनःप्रतिपदोक्तप्रायश्चित्तानुसारेण प्राजापत्यं पादादिकं वा योजनीयम्। आवृत्तौ पुनश्चांद्रायणादिकमिति । एतद्दिगवलम्बनेनान्यत्रापि कल्पनाकार्य्या ॥

वर्षांके प्राजापत्यकर्के दूर होणें वाले जो उपपातक पाप तिनांविषे चांद्रायणादितीस ३० कहनें ॥ त्रैमासिकेष्विति त्रय३महीनेंके व्रतांविषे गोमूत्र स्नान आदि कर्मकी बाहुल्यतासें करणा कठिन है इसकर्के यथायोग्यताको जाणकर्के चांद्रायण आदिव्रत त्रय ३ कहेहैं ॥ और एकमहीनेके व्रतां विषे योगीश्वरनें एकहि चांद्रायण कहाहै सो करणा ॥ और धेनु और उपवास और जप इत्यादि प्रत्याम्नाय संपूर्ण चांद्रायणादि स्थानविषे त्रय गुणां जानणा । प्रकीर्णेति प्रकीर्ण नाम कर्के जो पाप तिनांविषे एकएक पापके दूरकरणे वास्ते प्रायश्चित्तके अनुसार कर्के प्राजापत्यव्रत करणा वा पादादिक जानणा ॥ और प्राजापत्यकी आवृत्ति विषे अर्थात् जिसजगा बहुत प्राजापत्य करणे होण तिसजगा चांद्रायण आदि कहाहै इसरस्तेके अनुसार कर्के होर स्थानविषे भी व्यवस्था जानणी ॥

जो फेर बृहस्पतिनें कहाहै ॥ जन्मतें लेकर जो कुछक पातक वा उपपातक है तिनांके दूर करणे विषे संख्या कर्के एकतें लेके १ ॥ ६० ताईं प्राजापत्य करणा ॥ १ ॥ सो परस्त्रीके संभोगके पाप विषे दो वर्षतक व्रत करे एह गौतम जीके कहेहोए वचनतें दो वर्षके व्रतकी तुल्य ताकों विषय करताहै ॥ तैसेंहि ३ त्रय महीनेके जो उपपातकके व्रत तिनकी आवृत्तिको क्या बहुत वार करणेकों विषय करताहै जो परस्त्रीका अभ्यास तिस विषे जानणा वा और फेर पातक नाम कर्के जो चांडालादि स्त्रीके विषे दो २ वार अभ्यास करणा तिसविषे जानणा वचन कहतेहैं तत्रेति इच्छा कर्के संभोग करे तां तिस पुरुषकों पापके दूर करणे वास्ते एक वर्षका प्राजापत्य व्रत कहाहै और इच्छातें विना परस्त्री विषे संभोगका अभ्यास होवे तिस पापके दूर करणे वास्ते दो चांद्रायण व्रत कहेहैं इति ॥ इसका तात्पर्य कहतेहैं सकृदिति एकवार इच्छा कर्के चांडालादि स्त्रीके संभोग विषे पापके दूर करणे वास्ते एक वर्षके प्राजापत्य कृच्छ्रके विधान होणेतें ॥ और बहुत वार अभ्यास विषे दो वर्षके तुल्य सठां प्राजापत्य व्रतांका विधान युक्तहै ॥ जो फेर सुमंतुऋषिनें कहाहै कि जो वारंवार इच्छा कर्के बहुत पाप कीयाहै सो एक वर्षके प्राजापत्य व्रत कर्के दूर होताहै परंतु महापातकतें विना ॥ १ ॥ सोभी उपपातक आदिके अभ्यास विषे जानणा ॥

यत्पुनर्बृहस्पतिनोक्तम् जन्मप्रभृतियत्किंचित्पातकंचोपपातकम् तावदावर्तयेत्कृच्छ्रंयावत्षष्टिगुणंभवेत् ॥ १ ॥ तद्द्वेपरदारइति गौतमोक्तद्वैवार्षिकसमानविषयम् ॥ तथा त्रैमासिकादिविषयभूतोपपातकावृत्तिविषयं वा पातकपदाभिधेयेचांडालादिस्त्रीगमे द्विरभ्यासविषयंच ॥ तत्र ज्ञानात् कृच्छ्राब्दमुद्दिष्टमज्ञानादैन्दवद्वयमिति सकृद्बुद्धिपूर्वगमे कृच्छ्राब्दविधानात् ॥ तदभ्यासे द्विवर्षतुल्यषष्टिकृच्छ्रविधानंयुक्तमेव । यत्तु सुमंतुनोक्तम् ॥ यदप्यसकृदभ्यस्तंबुद्धिपूर्वमघंमहत् तच्छुध्यत्यब्दकृच्छ्रेणमहतःपातकादृतइति ॥ १ ॥ तदप्युपपातकाद्यावृत्तिविषयम् ॥

थेति तैसे अज्ञानतें चांडाली गमनरूप पापकों करे तां दो चांद्रायण व्रत करे एह धर्मराजन कहे जो चांद्रायण व्रत दो २ तिनां करकें दूरकरी दे जो पातकतिनकी आवृत्ति विषे अथवा जानणा ॥ यइति जो पुरुष तप करणेविषे सामर्थ्यते रहित है और अन्नककें समृद्धहै सो कृच्छ्र आदि व्रतांनू उत्तम ब्राह्मणों तांई भोजनदानसें संपादन करे अर्थात् भोजनकों देवे ॥ तैसे होरी स्मृतिका वाक्य है इस भोजनके प्रकार विषे कृच्छ्रइति प्राजापत्य कृच्छ्र व्रत जो वारां दिनाका है तिसके एक एक दिनविषे पंच पंच विद्वान् ब्राह्मणांके तांई भोजनदेवे तिस पुरुषकों प्राजापत्य व्रतका फल होताहै तैसे अति कृच्छ्रके अर्थ एक एक दिन विषे पंदरां १५ ब्राह्मणांके तांई भोजन देवे और तृतीय जो कृच्छ्राति कृच्छ्रहै तिस विषे तीस ३० ब्राह्मण और तप्त

तथाऽज्ञानादैन्दवद्वयमिति यमोक्तैन्दवद्वयविषयभूतपातकावृत्तिविषयं वा यस्तु तपस्यसमर्थो धान्यसमृद्धश्च सकृच्छ्रादिव्रतानि द्विजाग्र्येभ्योभोजन दानेन संपादयेत्। तथाऽस्मृत्यंतरम्। कृच्छ्रेपंचातिकृच्छ्रेत्रिगुणमहरहस्त्रिंश देवतृतीये चत्वारिंशत्तप्तेत्रिगुणितगुणिताविंशतिःस्यात्पराके कृच्छ्रेसांता पनाख्येभवतिषडधिकाविंशतिः सैवहीना द्वाभ्यांचांद्रायणेस्यात्तपसिकृश बलेभोजयेद्विप्रमुख्यानिति ॥ १ ॥ अहरहरिति सर्वत्र संबंधनीयम् ॥ तृतीयःकृच्छ्रातिकृच्छ्रः त्रिगुणितेनएकेनगुणिताविंशतिःषष्टिः ॥ अत्र प्राजापत्यदिवसकल्पनया षष्टिविद्वद्विप्राणांभोजनंभवति ॥ यत्तु चतुर्विंशतिमतेऽभिहितम् विप्राद्वादशवाभोज्यापावकेष्टिस्तथैवच अन्यावापावनीकाचित्समान्याहुर्मनीषिणइति ॥ १ ॥

कृच्छ्र विषे चाली ४० और पराक कृच्छ्र विषे सठ ६० ब्राह्मण और सांतपन कृच्छ्र व्रत विषे छब्बी २६ ब्राह्मण और चांद्रायण व्रत विषे बाई २२ ब्राह्मण इस विधि करके तप करणे विषे जेकर असमर्थ होवे तो भोजन देवे इति ॥ १ ॥ दिन दिन इस पदका संपूर्ण स्थानविषे संबंध करलेणा ॥ इस विषे प्राजापत्य व्रतके दिनांकी कल्पना करकें सठां बुद्धिमानां ब्राह्मणां तांई भोजन कहाहै ॥ जो फेर चतुर्विंशति मत विषे कहाहै कि वारां ब्राह्मणांके तांई भोजन देणा तैसे पावकेष्टि यज्ञकरणा अथवा को इक पावनीइष्टि करणी इनांकों बुद्धिमान् सम कहतेहैं इति अर्थात् इनां सभनोंका तुल्यहि फलहै ॥ १ ॥

एह जो प्राजापत्य व्रतके स्थान प्रत्याम्नाय वारां ब्राह्मणांकों भोजन कहाहै सो निर्धन पुरुषके विषे जानणा ॥ और जो चांद्रायण व्रतके प्रत्याम्नाय करके कहाहै कि चांद्रायण और मृगारेष्टिः और पावनेष्टि और मित्रविंदा और पशुयाग और मास त्रय कृच्छ्र व्रत ॥ १ ॥ और नित्य कर्म और नैमितिक और काम्य कर्म और पशु बंध इष्टि इनांके अभाव विषे क्या करणे विषे असामर्थ्यके होयां होयां इनों विषे जिस प्रत्याम्नाय करणे विषे सामर्थ्य होवे सोहि अनुष्ठाने करणे योग्यहै ॥ २ ॥ एहि अर्थ स्पष्ट करके किहाहै एतदिति ॥ सोभी चांद्रायण व्रत करणे विषे जो असमर्थ है तिसपुरुषनें मृगारेष्टि आदि विचों एक करणा चाहिये ॥ अब चतुर्थ पादका अर्थ कहतेहैं कृच्छ्रमिति इसका एह अर्थ है कि त्रय ३ प्राजापत्य

प्राजापत्यस्थाने द्वादश विप्राणां भोजनमुक्तं तन्निर्धनविषयम् ॥ यच्चां द्रायणस्यापि तत्रैव प्रत्याम्नायेनोक्तम् ॥ चांद्रायणंमृगारेष्टिः पावने ष्टिस्तथैवच ॥ मित्रविंदापशुश्चैवकृच्छ्रंमासत्रयंतथा १ ॥ नित्यनैमित्तिका नांचकाम्यानांचैवकर्मणां इष्टीनांपशुबंधानामभावेचवरः स्मृतइति ॥ २ ॥ एतदभावे कर्तुमशक्येवरोऽभीष्टः प्रत्याम्नायः कर्तुंशक्यएवानुष्ठेयइत्यर्थः तदपि चांद्रायणाशक्तस्य कृच्छ्रंमासत्रयं एकैकस्मिन्मासेएकैककृच्छ्रमित्य र्थः ॥ यत्तु कृच्छ्रंमासत्रयंतथेति कृच्छ्राष्टकंप्रत्याम्नातं तदतिजरठमूर्खवि षयम् ॥ चांद्रायणंत्रिभिःकृच्छ्रैरितिदर्शितत्वादलमतिप्रसंगेन । अपरार्के । अथातोऽनुग्रहान्वक्ष्येदुर्बलस्यात्मशालिनः ॥ यत्कृत्वामुच्यतेपापात्उरगः कंचुकाद्यथा ॥ १ ॥

कृच्छ्र व्रत तीन महीनयां विषे एक एक महीने विषे एक एक व्रत करणा ॥ जो फेर किसेका मतहै कि कृच्छ्रंमासत्रयं इसका अर्थ प्राजापत्य व्रत त्रयमास तक जानणा तां तिनां तीन महीनयां विषे साडे सत्त ७॥ प्राजापत्यहै सो अतिशयकरके वृद्ध और मूर्ख पुरुषकों कहतेहैं अर्थात् ऐसा कहण वाला मूर्ख है अर्थको नाह जानदा क्योंकि तीन प्राजापत्यव्रतांके करणे करके चांद्रायण व्रतका फलप्राप्त होताहै ऐसे दखाणेतें ॥ इसमे बहुत प्रसंग करणेकरके प्रयोजन नहि और मूलमे जो ८ कृच्छ्र कहेहैं सोइ महीनेतें ६ दिन अधिकको संभावनातें ॥ अब अपरार्क विषे कहतेहैं अथेति वलतें रहित जो पुरुष और अपनी शुद्धिकी इच्छा वाला तिसको उपाय कहताहां जिनां उपायांके करणे करके पुरुष पापांतें रहित होताहै जैसे सर्प सर्वकुंजतें रहित होताहै ॥ १ ॥

तिस विषे पराशरजी कहतेहे कृच्छ्र इति कृच्छ्र प्राजापत्य और दश हजार १०००० गायत्रीका जप और भोजन विना जलविषे दिन रात्र स्थित रहणा और ब्राह्मणके तांई नवीनप्रसूत होई होई गौकादान देणा एहचारे सम हैं अर्थात् इनमेंसे कोईभी उपाय करे तौभी शुद्ध होजाताहै ॥ १ ॥ समिधा और घृत और हविः और धान्य और तिल इनांमेसें किसे वस्तुकरके गायत्री मंत्रसें एक हजार बारां अधिक १०१२ आहुतियांदेवे और उपवास व्रतको करे तां प्राजापत्य कृच्छ्रके फलको प्राप्तहोताहै बारांते अधिक जो सहस्र सो कहिये द्वादश सहस्र ॥ २ ॥ पाराशर जी कहतेहैं ॥ कृच्छ्रइति प्राजापत्य और गायत्रीका दशहजार १०००० जप और दो सो २००

पराशरः ॥ कृच्छ्रोयुतंतुगायत्र्याउपवासस्तथैवच ॥ धेनुप्रदानंविप्राय सममेतच्चतुष्टयम् ॥ १ ॥ समिद्घृतंहविर्धान्यंतिलान्वामरुताशनः हुत्वा द्वादशसाहस्रंगायत्र्याकृच्छ्रमाप्नुयात् २ ॥ द्वादशभिरधिकंसाहस्रंद्वादश साहस्रम् ॥ पाराशरः ॥ कृच्छ्रोदेव्ययुतंचैवप्राणायामशतद्वयम् पुण्यतीर्थे नार्द्रशिरःस्नानंद्वादशसंख्यया ॥ १ ॥ यत्त्वपरार्के ॥ द्वादशैवसहस्राणिज पेद्दवीमुपोषितः जलांतेविधिवन्मौनीप्राजापत्योयमुच्यते इति ॥ १ ॥ जलांते जलसमीपे ॥ तथा तत्रैवचचतुर्विंशतिमते अतिकृच्छ्रेपराकेचाशक्तः प्राजापत्यत्रयं कुर्य्यात् कृच्छ्रेगोमिथुनमिति ॥

प्राणायाम और पुण्य तीर्थ विषे बारां वार १२ सहित शिरके स्नान करणा अर्थात् जलमे निमग्न होकर स्नान करणा एह चारभी प्राजापत्य के सम हैं १ ॥ जो अपरार्क विषे कहाहै ॥ बारां हजार १२००० गायत्रीके जपको उपवास व्रत करके जलके समीप विधि करके मौन व्रतको धारके करे तां प्राजापत्य कहतेहैं ॥ १ ॥ तैसेहि प्रसंग विषे चतुर्विंशति मत विषे कहाहै अति कृच्छ्र व्रत विषे और पराक विषे जेकर असमर्थ होवे तां तिसका बदला त्रय प्राजापत्यव्रत करे और कृच्छ्र व्रतविषे भी असमर्थ होवे तां तिसका बदला एक बलदके सहित एक गौका दान करे ॥

अत्रेति इस विषोंहि बाराहजार १२००० गायत्रीके जप विषे वदला एक गौ और एक बलद दानकरे एह गौतम आदिक ऋषियांकर्के कहा जो प्राजापत्य व्रत तिसविषे जानणा ॥ अथवा समर्थ पुरुषविषे जानणा ॥ तिसी स्थानमे एह वाक्यहै अन्नेति सुवर्णके साथ अन्नदेकर्के शुद्ध जो वेदपाठी वारां ब्राह्मण तिनांको तृप्त करे और आप निराहारव्रत करे सो ऐसा व्रत प्राजापत्य कृच्छ्र कहा है। १ ॥ और भी कहाहै कि उपवासव्रत कर्के पीछे श्रद्धा कर्के युक्त होयाहोया धर्मसे वारां १२ वेदपाठी ब्राह्मणोंकेताईं तिलांके पात्रदेवे सो प्राजापत्यव्रतके सम फलकों प्राप्तहोताहै ॥ २ ॥ प्रायश्चित्तेंदुशेखरविषे विशेष कहाहै प्राजापत्यकृच्छ्रके स्थानविषे दश हजार १०००० गायत्रीकाजप प्रत्याम्नाय कहाहै अथवा समिदाघृत और हविः और धान्य एनांवि

अत्र द्वादशसहस्रगायत्रीजपे गोमिथुनंच गौतमाद्युक्तप्राजापत्यविषयं शक्तविषयंवा। तत्रैव। अन्नंदत्त्वाहिरण्येनद्वादशब्राह्मणान्शुचीन्। तर्पयेन्मारुताशीचश्रोत्रियान्कृच्छ्रउच्यते १ उपोष्यश्रद्धयायुक्तस्तिलपात्राणिधर्मतः द्वादशब्रह्मवादिभ्यःप्राजापत्येनतत्समम्॥ २ ॥ प्रायश्चित्तेंदुशेखरेविशेषः गायत्र्ययुतजपोवा प्राजापत्यकृच्छ्रस्थानेप्रत्याम्नायः ॥ गायत्र्याद्वादशाधिकसहस्रसंख्याकः समिद्घृतहविर्धान्यानामन्यतमस्यहोमोवा। तिलहोमस्तुसाहस्रएवेतिकेचित्। घृताहुतिशतद्वयंवा वेदसंहितापारायणंवा प्राणायामशतद्वयंवा एकोपवासपूर्वकद्वादशतिलपात्रदानंवा तीर्थोद्देशेन योजनगमनंवा शिरःशोषणपूर्वकंद्वादशसांगस्नानानिवा प्राजापत्यमेवकृच्छ्रम् ॥

चोंकिसे वस्तुका हवन करे गायत्रीके मंत्र कर्के एक हजार और वारां अधिक १०१२ गिणती कर्के। केंक ऋषि कहते हैं एक हजार १००० तिलांका हवन करे व्याहृतियां कर्के ॥ अथवा घृतकीयां दो सौ २०० आहुतियां देवे अथवा सारीवेदसंहिताका पारायणवाचे। अथवा दो सौ २०० प्राणायाम करे गायत्रीमंत्रकर्के। अथवा एक उपवास व्रतकर्के वारां १२ तिलांके पात्रांका दान करे ॥ अथवा तीर्थयात्राके निमित्त चारकोश अपणे चरणांकर्के यात्राकरे॥ शिरके साथ स्नान करे और फेर शिरकों सुकाके फेर शिरके साथ स्नान करे ऐसे वारां स्नान करे वो प्राजापत्य व्रत होताहै ॥

अब तिलोंके पात्रका परिमाण कूर्म पुराण विषे कहाहै तिलेति तिलोंके पात्रका परिमाण त्रयतरांका है एक कनिष्ठ दूसरा उत्तम तीसरा मध्यम तिसकों दिखाते हैं ताम्रेति तामेका पात्र दश १० छटांकका कनिष्ट कहाहै और २० छटांकका मध्यम कहाहै और तीस ३० छटांकका उत्तम कहाहै इति ॥ १ ॥ कृच्छ्रका भेद कहतेहैं गोमूत्रेणेति गोमूत्रा वर्के भिज्जे होये यवांको पीवे एह एकदिनका कृच्छ्र व्रत आप अंगिरस ऋषिने दखायाहै। १ । तिसी प्रकार उपवासव्रतकों रखके घासके बारां १२ भारांकों आप शिरकर्के चुकलेआवे और गायों कोतांई देवे परंतु सो गौवां बहुत होण तां कृच्छ्र व्रतका फल प्राप्तहोताहै इसविषे संशय नाहि है

तिलपात्रपरिमाणंतु कूर्मपुराणेउक्तम्। तिलपात्रंत्रिधाप्रोक्तंकनिष्ठोत्तममध्यमम् ताम्रपात्रंदशपलंजघन्यंपरिकीर्तितम् ॥ १ ॥ द्विगुणंमध्यमंप्रोक्तंत्रिगुणंचोत्तमंस्मृतमिति ॥ गोमूत्रेणसमायुक्तंयावकंचोपयोजयेत् कृच्छ्रमेकाहिकंप्रोक्तंदृष्टमंगिरसास्वयम् १ ॥ तथा ॥ स्वयमाहृत्ययोमूर्ध्नातृणभारानुपोषितः दद्याद्गोमंडलेकृच्छ्रंद्वादशैवनसंशयः २ ॥ प्राणायामशतंकृत्वाद्वात्रिंशीत्तरमार्तिषु अहोरात्रोपितस्तिष्ठत्प्राङ्मुखःकृच्छ्रउच्यते ॥ ३ ॥ नमस्कारसहस्राणिद्वादशैवदृढव्रतः ॥ गोविप्रपितृदेवेषुकुर्यात्कृच्छ्रत्रयंभवेत् ४ ॥ वशिष्ठः ॥ अपिचेच्चरितंकर्तुंदिवसंमारुताशनः । रात्रौस्थित्वाजलेव्युष्टः प्राजापत्येनतत्सममिति ॥ १ ॥

२ ॥ प्राणेति रोग आदि कर्के पीडाके होयां १ एक सौ बत्ती १३२ प्राणायामकोंकर्के दिनरात्र उपवास व्रतकों करे और पूर्व मुख कर्के स्थित होवे तां प्राजापत्य कृच्छ्रका फल होताहै ॥ ३ ॥ नमस्कारेति ॥ व्रतविषे दृढ व्रत होकर जो पुरुष गौ और ब्राह्मण और पितर और देवता इनांकों बारांहजार नमस्कार करे तां त्रय कृच्छ्र व्रतोंका फल तिसकों होताहै ॥ ४ ॥ अब वशिष्ठजी कहतेहैं ॥ निश्चय कर्के जेकर व्रत करणे मे स्थित होवे तां दिन वायु भक्षण करे और रात्रिविषे जल विषे स्थितहोवे और व्युष्टः कया प्रातः कालविषे बाहर होवे असे एक दिनका व्रत प्राजापत्य व्रतके तुल्य होताहै ॥ १ ॥

इसतें उपरत प्राजापत्य कृच्छ्र का समुद्र विषे प्राप्त होणे वालीयां नदीयां विषे जो स्नान करणा है सो प्रत्याम्नायकहाहै ॥ इसविषे देवलऋषिका वचनहै एह समुद्र विषे जाणे वालीयां नदायां हैं भागीरथी गंगा १ यमुना २ नर्मदा ३ सरस्वती ४ गोदावरी ५ कृष्णवेणी ६ तुंगभद्रा ७ पिनाकिनी ८ (१) वलापहारी ९ भीमरथी १० वंजुला ११ भवनाशिनी १२ अखंडा १० कावेरी १४ ताम्रपर्णी १५ महानदी १६ (२) धनुःकोटी १७ प्रयाग १८ गंगासागरसंगम १९ एह पुण्य नदीयां हैं जिनांके दर्शन सें मनुष्योंके पाप नाशकों प्राप्त होतेहैं और स्पर्श करणेतें मोक्षकों देतीयां हैं और स्नान करणे ते मुक्ति कों देतीयांहैं ॥ ३ ॥ और जो सदावीस २० योजनतक

अथ प्राजापत्य कृच्छ्रस्य समुद्रगनदीस्नानं प्रत्याम्नायः ॥ देवलः। समुद्रगनद्यः ॥ भागीरथीचयमुनानर्मदाचसरस्वती गोदावरी कृष्णवेणी तुंगभद्रापिनाकिनी ॥ १ ॥ वलापहारीभीमरथी वंजुलाभवनाशिनी अखंडाचैवकावेरीताम्रपर्णीमहानदी ॥ २ ॥ धनुःकोटिः प्रयागंचगंगासागरसंगमः ताएताः पुण्यनद्यस्तुदर्शनात्पापनाशनाः ॥ स्पर्शनान्मोक्षदान्हणांस्नानान्मुक्तिप्रदायिकाः ॥ ३ ॥ सदाविंशद्योजनगा महानदी समुद्रगाच। एतासुस्नानमात्रेण मनुजः पूतोभवति प्राजापत्यकृच्छ्राचरणेऽसमर्थस्य तत्प्रत्याम्नायेगोदानाचरणेचाशक्तस्य नदीस्नानरूपमेव कलौयुगसमीचीनम्। अतोनदीस्नानमेववर्यंक्रमः ॥ गंगायांमौशलंस्नानंप्राजापत्यसमंविदुरितिभविष्योत्तरोक्तत्वात् गंगास्नानं विशुद्धिदमिति ॥

नगदी है अथवा समुद्र विषे प्राप्तहोती है सो महानदी कहीहै इनां विषे स्नान करणे करके मनुष्य पवित्र होताहै एही अर्थ विशद करके कहीदाहै ॥ प्राजापत्य कृच्छ्र के करणे विषे असमर्थ जो पुरुष है तिसकों गौका दान करणा एह प्रत्याम्नाय है तिसके करणे विषे भी जो असमर्थ है तिसको कलि युगविषे नदीका स्नान रूप हि प्रत्याम्नाय युक्तहै इस कारणतें नदी स्नानकों हि असी कहतेहां गंगाविषे मुसलकी न्याई जो स्नानहै तिसको प्राजापत्यके तुल्य कहतेहैं ॥ एह भविष्योत्तर पुराण विषे कहयोहै ॥ और गंगा स्नान शुद्धिके देणे वाला है एभी वचन है ॥

पंच प्रकारकी गंगा स्कंदपुराण विषे कहीहै भागीति भागीरथी और गौतमी और कृष्णवेणी और पिनाकिनी और अखंडा कावेरी एह पंच गंगा कहीयांहैं होर जो समुद्र विषे प्राप्तहोणे वालीयां नदीयां सो पुरुषांके पापांके दूर करणे वालीयां कहीयां हैं ॥ १ ॥ जो पुरुष इनांविषे स्नानवास्ते यात्रा करतेहैं तिनांके पाप निश्चयकर्के दूर होतेहैं ॥ और तिनां नदीयांकी जो यात्रा करतेहैं तिनां विषे भिन्न फलकों गौतम ऋषि कहताहै स्वग्रामेति अपणे ग्रामके समीप जो नदीहै जो होर योजनमात्र विषे क्या चौंहकोंहां विषे नदी है तिस विषे स्नान करणे वास्ते अथवा दर्शन वास्ते जो प्राप्त होताहै तिस पुरुषकों इतना फल होताहै जितनयां योजनांकी यात्रा होवे अर्थात् दर्शनते स्नानका स्वल्प फल और स्नानतें जितने योजन दूर होणा तितनें

पंचविधागंगास्कंदपुराणे । भागीरथीगौतमीचकृष्णवेणीपिनाकिनी अखंडाचैवकावेरीपंचगंगाःप्रकीर्तिताः ॥ १ ॥ अन्याः समुद्रगानद्योनृणांपापहारिण्यः ॥ एतासु महानदीषुयात्रया मवश्यं पापनाशोभवति । एताः प्रतियात्रयांपृथक्फलमाहगौतमः ॥ स्वग्रामस्यचयासिंधुर्यान्यायोजनमात्रगा तामुद्दिश्ययदागंतुःस्नानार्थंदर्शनायवा ॥ यावंतियोजनानीह फलंतावल्लभेतुसः ॥ १ ॥ परार्थंयोऽनुगच्छेद्वास्नानमात्रंफलंलभेत् मूल्यं गृहीत्वायोगच्छेन्नतस्योभयमस्तिहि ॥ २ ॥ विष्णुपादोद्भवागंगादशकृच्छ्रफलप्रदा यमुनाचतथान्हणामष्टकृच्छ्रफलप्रदा ॥ ३ ॥

कृच्छ्रोंका फल होताहै तांते एकयोजन पर जाणे वालेको एककृच्छ्रका फलहोवेगा ॥ १ ॥ पर पुरुषके अर्थ वास्ते जो पुरुष स्नान करणे जाताहै तिसकों स्नान मात्रका फल प्राप्त होताहै अर्थात् यात्राका फल जो प्रतियोजन वृद्धिसे प्राजापत्यकी तुल्य ताकोदेणे वालाहै सो तिसीको हुंदाहै जिसने उसको भेजयाथा और अल्प फल जाणेवाले को भीहै और मुल्लकों ग्रहणकरके जाताहै तिसकों न जाणेका फल न स्नानका फल प्राप्त होताहै ॥ २ ॥ विष्ण्वति विष्णुके चरणोंतें उत्पन्न होई जो गंगा सो स्नानकरणेंतें दश १० कृच्छ्रव्रतके फलको देतीहै तिसी प्रकार यमुना स्नानतें पुरुषांकों अष्ट ८ कृच्छ्र व्रतके फल कों देतीहै ३ ॥

और गौतमी और कृष्णवेणी स्नान करणेतें नौं९ कृच्छ्र व्रतके फलकों देतीहै और दाक्षायणी और कावेरी अष्ठ ८ कृच्छ्र व्रतके फलकों देणे वालीहैं ॥ ४ ॥ और तुंगभद्रा भीमरथी पुरुषांकों सप्त ७ कृच्छ्र फलके देणेवालीयां हैं और वंजुला भवनाशी स्नानतें छे ६ जो कृच्छ्र व्रत तिनके फलकों देणे वालीयांहैं ॥ ५ ॥ और फाल्गुणी और ताम्रपर्णी पंचकृच्छ्र फलके देणेवालीहैं चापाग्र जो धनुःकोटीहै तिसविषे स्नानमात्र करके अष्टां ८ कृच्छ्रांका फल प्राप्त होता है ॥ ६ ॥ श्रीशैलविषे और संगमविषे अर्थात् श्रीशैलमेजो पूर्वोक्त नदीयांका संगमहै तिस विषे और गंगासागरके संगमविषे स्नान करे वीस २० कृच्छ्र व्रतके फलकों प्राप्त होताहै इस कारणतें नदीयां वडीयां पवित्रहैं ॥ ७ ॥ प्राजापत्य कृच्छ्रका

गौत्तमीकृष्णवेणीचनवकृच्छ्रफलप्रदा दाक्षायणीचकावेरीह्यष्टकृच्छ्रफलप्रदा ॥ ४ ॥ तुंगभद्राभिमरथीसप्तकृच्छ्रफलप्रदा वंजुलाभवनाशीचषट्कृच्छ्रफलप्रदा ॥ ५ ॥ फाल्गुणीताम्रपर्णीचपंचकृच्छ्रफलप्रदा चापाग्रंस्नानमात्रेणह्यष्टकृच्छ्रफलप्रदम् ॥ ६ ॥ श्रीशैलेसंगमेचैवगंगासागरसंगमे विंशकृच्छ्रफलंस्नानमतोनद्यश्चपावनाः ॥ ७ ॥ प्राजापत्याम्नायनदीस्नानप्रकारमाह सएव पूर्ववत्पुण्याहवाचनसंकल्पादिकमृत्विजश्चकृत्वा नदीस्नानाभिमुखोभूयात् नदींगत्वा कर्त्ता पूर्ववत्स्नात्वागंधपुष्पाक्षतैरभ्यर्च्य मयापरिपत्संनिधौसंकल्पितस्यसर्वप्रायश्चित्तस्यसंमग्रफलावाप्त्यर्थं परिपन्निर्णीतंप्राजापत्यकृच्छ्रप्रत्याम्नायभूतमब्दादिसंख्यया अहं ब्राह्मणैर्वा महानदीस्नानरूपमाचरिष्ये इतिसंकल्प्य ब्राह्मणान्प्रेषयेत् ॥

प्रत्याम्नाय जो नदीस्नान तिस का प्रकार गौतमही कहताहै पूर्वकीन्याई पवित्र दिनविषे संकल्पकों करके ऋत्विजांकों साथ लेकर नदीविषे स्नानके वास्ते प्राप्तहोवे नदीकों प्राप्तहोकर पूर्वकीन्याई स्नानकर्के गंध और पुष्प और अक्षतोंकर्के ऋत्विजांकों पूजके संकल्प करे कि मैंने सभाके समीप विषे संकल्प कीयाजो पूर्ण प्रायश्चित्त तिसके संपूर्ण फलकी प्राप्तिवास्ते सभा विषे निश्चय कीयाजो प्राजापत्य कृच्छ्रका प्रत्याम्नायरूप वर्षआदिकी संख्याकर्के तिसके अर्थमें महानदी विषे स्नानकों करताहां अथवा ब्राह्मणा द्वारा कर्ताहां ऐसेसंकल्पकर्के ब्राह्मणांकोंभेजे।

और ऋत्विज जो हैं यजमानके गोत्र और नक्षत्र और राशि और शाखा और नामका उच्चारण करके इस यजमाननें अमुक गोत्रनें अमुक राशिविषे उत्पन्न होये होयेनें अमुक शाखाध्यायी नें अमुक नाम वालेने सभाके समीप विषे संकल्प कीया जो संपूर्ण प्रायश्चित्त तिसको सभा विषे निर्णीत जो कीयाहूवा प्राजापत्य कृच्छ्रका प्रत्याम्नाय जो महा नदीयों विषे स्नान तिनां नूं मुशलकीन्याईं सहित शिरके असीं करतेहां ऐसे ऋत्विज संकल्प करके महा नदी विषे नदी वल मुख करकें मंत्रोंतें रहित मूसलेकी न्याईं सहित शिरकें स्नान को करके फेर तटकों प्राप्त होके दो वार आचमन करे और शुद्ध वस्त्रको धार करके शुद्ध वस्त्र के न होयां होयां तिसी वस्त्रको बा‍रां वार छंडके धारे और दो वार आच

ऋत्विजस्तुयजमानगोत्रनक्षत्रराशिशाखानामधेयानि समुच्चार्य्य एतेनयजमानेनामुकगोत्रेणामुकराशौजातेनामुकशाखाध्यायिनामुकनामधेयेनपरिषत्संनिधौसंकल्पितस्यसर्वप्रायश्चित्तस्यपरिषन्निर्णीतस्यप्राजापत्यकृच्छ्रप्रत्याम्नायपरिकल्पितानि महानदीस्नानानि मौशल्यवदाचरिष्यामः ॥ इतिसंकल्प्य महानद्यां नदीमुखा स्तन्मंत्रवर्जमौशलमज्जनवत्स्नानं कृत्वा तटमागत्य पुनर्द्विराचम्यधौतवस्त्रं परिधाय तदभावेद्वादशसंख्या वस्त्रावधूननंकृत्वा परिधायद्विराचम्य पूर्ववत् स्नायुः । एवंसंकल्पिताब्दादिसंख्या भवति तदा यजमानः स्नातृभ्य ऋत्विग्भ्योनिष्कंवा तदर्धंवापादंस्नानफलस्वीकारार्थंदद्यात् निष्कशब्देदेवमानेन वराहद्वयम् ऋषिमानेन तदर्द्धम् मानुषमानेनापितदेवग्राह्यम् प्रभूणामुत्तमप्रकारमेव समर्थस्य मध्यममकिंचनस्य तदर्द्धं सुवर्णप्रमाणम् ।

मन करे फेर पूर्वकी न्याईं स्नानकरे ऐसें संकल्प कीयाजो व्रतके अर्थ वर्षादि काल तिसकी संख्या होताहै अर्थात् जितने वर्षोका व्रतहै तितने दिनांके स्नान पूरे करणेहैं तिसवास्ते एक एक दिन विषे बहुत स्नान कीते चाहिए अपनी शक्तिकी अनुसार रोज रोज १० वा २० आदि करके संख्या पूरी होगी ॥ तद यजमान जो हैं स्नान करणे वाले जो ऋत्विज् तिनां तांईं स्नानके फलकी प्राप्ति वास्ते निष्क देवे निष्कका अद्ध देवे या चौथाहिस्सा देवे निष्क शब्द देवमान करकेदो २ वराहका अर्थात् १८ मासे स्वर्णकाहै ॥ ऋषियांके मानकरके अद्ध कहाहै मानुषके मानकरके सोहीवराहग्रहण करणा व्यवस्था कहतेहैं प्रतिराजालोकोंको उत्तम प्रकारहै और समर्थ वा धनवालेकों मध्यम प्रमाण सुवर्णका निष्क कहाहै और इससे अद्धानिर्धनकों कहाहै

गौतम जी का वाक्य है ॥ गंगा विषे मूसलेकी न्याई जो सहित शिरके स्नानहै तिसको प्राजापत्य व्रत के सम कहतेहैं एह वाक्य पंचप्रकारकी गंगाके स्नानविषे जानणा इतरेति ॥ इतर जो समुद्रविषे प्राप्त होणे वालियां नदियां तिनांविषे स्नानका संकल्प भिन्न भिन्न करणा और कूलां विषे और तलाव विषे और पुष्करिणी क्या तलाईआं इनां विषे भिन्न संकल्प करणा ॥ और खंडानुवाक ऋचांका पठन करणा और सूर्यके सन्मुख स्थित होकर शुद्धि तें पीछे प्राप्तहोके शुद्ध वस्त्रको धारके और एक सौ अठ १०८ वार गायत्रीके जप करणे करके प्राजापत्य रूप व्रत होताहै ॥ अत्रेति ॥ इसी प्रसंग विषे स्मृति संग्रह और स्मृत्यर्थसार आदि शास्त्र विषे कहा जो प्रकार तिसके अनुसार प्रकार दखाईदाहै ब्रह्महत्याको प्रसंग

गौतमः ॥ गंगायांमैसलंस्नानंप्राजापत्यसमंविदुः एतत्पंचगंगास्नानविषयम् ॥ इतरासु समुद्रगनदीषु प्रतिस्नानं संकल्पः कुल्यायां तटाकपुष्करिण्यादिषुच पृथक्संकल्पःखंडानुवाकपठनंच । सूर्य्याभिमुखःसंमार्जनानंतरं गत्वा धौतवस्त्रादिकं धृत्वाष्टोत्तरशतंगायत्रीं जप्त्वा कृच्छ्रात्मकंभवति ॥ अत्र स्मृतिसंग्रहस्मृत्यर्थसाराद्युक्तप्रकारानुसारीप्रकारःप्रदर्श्यते ब्रह्महत्यामुपक्रम्यभविष्यत्पुराणे॥विंध्यादुत्तरतोयस्यनिवासःपरिकीर्त्तितः पराशरमतंतस्यसेतुबंधनिदर्शनमितिविंध्योत्तरवर्तिनमुक्त्वातत्रैव चतुर्विद्योपपन्नस्तुविधिवद्ब्रह्मयातके समुद्रसेतुगमनंप्रायश्चित्तंविनिर्दिशेत् ॥ १ ॥ स्मृत्यर्थसारे तत्रसंकल्पपूर्वकं पद्भ्यां षष्टियोजनागतस्य भागीरथ्यां स्नानं षडब्दकृच्छ्रसमम् ॥

विषे ल्याके । भविष्यत्पुराणविषे कहाहै विंध्येति विंध्याचल पर्वततें उत्तर पासे निवास करणेवाला जो पुरुषहै तिसको पराशर जीके मतके अनुसार करके ब्रह्महत्या पाप के दूर करणे निमित्त सेतुबंध रामेश्वरका दर्शन कहाहै ॥ ११ ऐसे विंध्याचलके उत्तर वर्ति पुरुषके प्रायश्चित्तको कथन करके तिसीविषे वाक्यहै चार विद्याविषे युक्त जो पुरुषहै सो ब्राह्मणके वधकरण वाले विषे विधि करके समुद्र सेतुके दर्शन वास्ते यात्राको कहे एहि पापके दूरकरणेके निमित्त प्रायश्चित्तहै ॥ १ ॥ और स्मृत्यर्थ सारविषे कहाहै कि पूर्वसंकल्प को करके चरणां करके सठां ६० योजनां की यात्रा करके गंगा विषे जो स्नानहै सो छ वर्षके ६ प्राजापत्य कृच्छ्र के तुल्य है

अर्थात इहां यात्राविषे जैसें योजनांकी वृद्धि है योजन चारकोशका नाम है तैसे हि कृच्छ्र व्रतकी वृद्धि कल्पना करणी योग्यहै ॥ और एक योजनकी यात्राकों लेके नदीके स्नान वास्ते आयाजो पुरुष तिसकों रस्ते विषे पर्वतादिका व्यवधान होवे तां त्रय३ कृच्छ्र व्रतांका फल प्राप्त होताहै और तीसरा हिस्सा अधिक एक कोशकी यात्राको करके भागीरथी गंगा विषे विधि करके स्नान करे तां एक कृच्छ्र व्रतका फल प्राप्त होताहै । और सठ ६० योजनकी यात्राकों करके प्रयाग विषे क्या तीर्थ राज विषे विधि करके जो स्नान कर्ताहै सो पुरुष बारां वर्ष पर्यंत जो कृच्छ्र व्रत करणाहै तिसके तुल्य फलकों प्राप्त होताहै । ऐसे गंगाद्वार जो हरिद्वारहै तिस विषे और गंगासागर संगम विषे जानणा । और गंगाके स्नान वास्ते सठ योजनतें जो आयाहै तिसकों

अत्र यात्रायांयोजनवृद्धौ कृच्छ्रवृद्धिःपरिकल्पनीया ॥ एकयोजनागतस्यमध्ये पर्वतादिव्यवधाने कृच्छ्रत्रयम् ॥ तृतीयांशाधिकक्रोशादागतस्य भागीरथ्यां विध्युक्तस्नानमेककृच्छ्रः ॥ षष्टियोजनादागतस्य प्रयागस्नानं द्वादशाब्दकृच्छ्रसमम् ॥ गंगाद्वारे गंगासागरसंगमेचैवम् ॥ गंगास्नानार्थंषष्टियोजनादागतस्य षडब्दत्वाद्दशयोजनागतस्याब्दप्रायश्चित्तं भवतीत्यादिकमूहनीयम् ॥ वाराणस्यामगणितं फलं यतोवाराणस्यां पातकं न प्रविशति विंशतियोजनागतस्ययामुनंस्नानं द्व्यब्दकृच्छ्रतुल्यम् ॥ तदेवमथुरायांद्विगुणम् ॥ चत्वारिंशद्योजनागतस्य सरस्वतीमज्जनंचतुरब्दकृच्छ्रतुल्यम् ॥ प्रभासेद्वारवत्यांचाद्विगुणम् । यमुनासरस्वत्योर्यात्रायोजनवृद्धौ पादकृच्छ्रवृद्धिःपरिकल्पनीया

छे६ वर्षके कृच्छ्र व्रतकाफल प्राप्त होताहै इसीहिसावसे जो गंगाके स्नान वास्ते दश योजनते आया है तिसकों एक वर्षके कृच्छ्र व्रतका फल प्राप्त होताहै इत्यादिक जानलेणा ॥ और काशी विषे अगणित फल है क्योंकि तिसविषे पापका प्रवेश नहिंहोता ॥ और वीस२० योजनतें जो यमुनाकों प्राप्त होयाहै स्नानवास्ते तिसको दो वर्षके कृच्छ्रव्रतका फल होताहै । और यमुनातें मथुरा विषे दूणा फल जानणा । और सरस्वतीविषे स्नान वास्ते चाली ४० योजनतें जो आयाहै तिसकों चारवर्षके कृच्छ्र व्रतका फल प्राप्त होताहै ॥ और प्रभासविषे और द्वारकाविषे सरस्वतीतें दूणा फल जानणा । और यमुनातें सरस्वतीके स्नान विषे जैसे जैसे यात्रा विषे योजन अधिक होवे तैसे तैसे पाद कृच्छ्र व्रतकी वृद्धि कल्पना करणी ॥

दृषेति दृषद्वती और शतद्रु और विपाशा वितस्ता शरावती मरुद्वधा असिक्री मधुमती पयस्विनी घृतवती आदिक देवनदीयां विषे त्रिंशत् ३० योजनकी यात्रा करके जो स्नानहै सो वर्षके कृच्छ्र व्रतके तुल्यहै ॥ और पंदरां १५ योजनांकी यात्राकरके जो स्नानहै सो पंदरां १५ प्राजापत्यके तुल्यहै। चंद्रभागेति चंद्रभागा वेत्रवती सरयू गोमती देविका कौशिकी नित्य जला मंदाकिनी सहस्रका पौनः पुन्या पूर्णपुण्या वाहुदा गंडकी वारुणी आदिक देवनदी यां विषे वारां १२ योजनोंकी यात्राकरके जो स्नानहै सो सोलां १६ कृच्छ्रके तुल्यहै और पंदरां योजनांकी यात्रा करके इनां महानदीयांके आपस विषे संगम विषे जो स्नानहै सो पूर्वतें त्रय गुणा अधिक फलहै और होर जो समुद्र विषे प्राप्त होणे वालीयां नदीयां हैं तिनां विषे वारां १२ योजनकी यात्रा करके जो स्नान कर्ताहै तिसको छे ६ प्राजापत्यका फल होताहै ॥ और

दृषद्वतीशतद्रुविपाशावितस्ताशरावतीमरुद्वधाअसिक्रीमधुमतीपयस्विनी घृतवत्यादि देवनदीषु स्नानं त्रिंशद्योजनागतस्याब्दकृच्छ्रसमम् ॥ पंचद शयोजनागतस्य मज्जनं पंचदशकृच्छ्रसमम्॥चंद्रभागावेत्रवतीसरयू गोम ती देविका कौशिकी नित्यजला मंदाकिनी सहस्रका पौनःपुन्या पूर्ण पुण्या वाहुदा गंडकी वारुण्यादि देवनदीषु द्वादशयोजनागतस्य स्नानं षो डशकृच्छ्रसमम् ॥ पंचदशयोजनागतस्य एतासु महानदीष्वन्योन्यसंगमे त्रिगुणम् ॥ अन्यासु समुद्रगासु द्वादशयोजनागतस्य कृच्छ्रषट्कतुल्यम् अनुक्तस्थलेषुयात्रायोजनसंख्यया कृच्छ्रसंख्या ज्ञेया नदेषु नद्यर्द्धं महानदे षुमहानद्यर्द्धं फलं विज्ञेयम् शोणाख्यमहानदे गंगार्द्धफलम् पुष्करेप्रयागसमम्

अनुक्तेति नहि कहे जो तीर्थ और क्षेत्र आदिस्थान तिनांकी यात्रा विषे योजनांकी संख्या करके प्राजापत्यकृच्छ्र व्रतांकी संख्या जानणी और नदोंविषे स्नानका फल नदीसे अद्धा जानणा और महानदां विषे स्नानका फल महानदी के स्नानतें अद्धा जानणा ॥ और शोण नाम करके जो महानद तिस विषे स्नानका फल गंगाजीके स्नानतें अद्धाजानणा और पुष्कर विषे स्नानका जो फल है सो प्रयागके तुल्य जानणा

चतुरिति चव्वी २४ योजनकी यात्रा कर्के नर्मदा विषे जो स्नानहै तिसका फल चव्वी २४ कृच्छ्रके तुल्य जानणा और पूर्णा नदी विषें स्नानका फल अर्द्ध योजनकी यात्रा विषे एक कृच्छ्र होता है और कृष्णवेणी और तुंगभद्रा विषें एक योजनकी यात्रा विषे कृच्छ्र व्रतका फल जानणा और पंपासरो वर विषे स्नान करणेतें एकयो जनकी यात्रा विषे दो २ कृच्छ्रांका फलजानणा और हरिहर तीर्थ विषे स्नानका फल एक एकयोजनके प्रति तीन ३ कृच्छ्रांका फल जानणा और कुब्जिकासंगम विषे योजन प्रति दो २ कृ च्छ्रजानणे और शुक्लतीर्थ विषे एकयोजन प्रति चार ४ कृच्छ्रांका फल जानणा और तापीविषे दश योजनयात्रासें स्नानका फल दश १० कृच्छ्रके तुल्य जानणा और पयो ष्णीविषे स्नानका फल अठ ८ योजनकी यात्रा विषे अठ कृच्छ्र जानणे तिस तिस संगमविषे

चतुर्विंशतियोजनागतस्य नर्मदावगहनं चतुर्विंशतिकृच्छ्रतुल्यम् पूर्णायांयो जनार्द्धे कृच्छ्रः कृष्णवेणीतुंगभद्रयोः प्रतियोजनंकृच्छ्रसमम् पंपायांत्रिगुणम् हरिहरेत्रिगुणम् कुब्जिकासंगमेत्रिगुणम् शुक्लतीर्थे चतुर्गुणम् ताप्यां दशयोजनागतस्य दशकृच्छ्रसमम् पयोष्ण्यामष्टयोजनागतस्याष्टकृच्छ्र समम् तत्रतत्रसंगमेत्रिगुणम् गोदावर्य्यां षष्टियोजनागतस्य त्र्यब्दसमम् त्रिंशद्योजनागतस्यैकाब्दम् ॥ सुतीर्थेषुप्रतिलोमानुलोमस्नानं षष्टिकृच्छ्र समम् वंजरासंगमे प्रयागेद्विगुणम् सप्तगोदावरीभीमेश्वरेत्रिगुणम् कुश तर्पणेवंजरायां द्वादशयोजनागतस्य द्वादशकृच्छ्रसमम् गोदावर्य्यां वि श्लेषे समुद्रांतंषड्गुणम् ॥ प्रणीतायांचतुः कृच्छ्रसमम्

त्रीणा फल जानणा और गोदावरीविषे सठ ६० योजनकी यात्रा विषे तीन ३ वर्षके प्राजापत्य का फल होताहै और तीस ३० योजनकीयात्रा कर्के एक वर्षके कृच्छ्रका फल होताहै और सुतीर्थां विषे यात्रा कर्के और यात्राकी निवृत्तिकर्केअर्थात् जांदीवार और आउंदीवार मध्यती र्थके स्नान विषे स्नानका फल सठां ६० कृच्छ्रांके तुल्य जानणा और वंजरासंगम प्रयाग विषे दूणा फल जानणा और सप्तगोदावरी भीमेश्वर विषे स्नानका त्रयगुणां फल अधिक जानणा और कुशतर्पण वंजराविषे बारां १२ योजनकी यात्रा कर्के स्नानका फल बारां १२ कृच्छ्रके तुल्य जानणा और गोदावरी विश्लेष विषे समुद्रपर्यंत स्नानविषे योजन प्रति छे ६ गुणा फल जानणा और प्रणीताविषें एक योजनकी यात्रा विषे चार ४ कृच्छ्रका फल जानणा

तुंगेति और तुंगभद्राविषे वीस २० योजनकी यात्रा कर्के स्नानका फल वीस २० कृच्छ्रके तुल्य होताहै और मलापहारिणी विषे अठ ८ योजनकी यात्राका फल अठ ८ प्राजापत्य कृच्छ्रके तुल्यहै और निवृत्ति विषे छे६ योजनकी यात्रा कर्के छे६ कृच्छ्रका फल होताहै और गोदावरी विषे एक एक योजनकी वृद्धि विषे पादकृच्छ्र जानणा और सिंहराशि विषे सूर्यके स्थित होयां होयां संपूर्ण तीर्थोविषे स्नानका फल गंगा स्नानके तुल्य जानणे योग्यहै कन्या राशिविषे वृहस्पतिके स्थित होयां होयां कृष्णवेणी और मलापहारिणीके संगमविषे जो स्नानका फल है सो सदा गंगा स्नानतें अर्द्ध जानणा॥ और तुलराशिविषे सूर्यके स्थित होयांहोया तुंगभद्रा विषे स्नानका फल गंगाके स्नानतें अर्द्ध जानणा॥ और कर्क राशिविषे सूर्यके स्थितहो यां कृष्णवेणी और मलापहारिणीके संगम विषे ऐसे प्रयागविषे तीस ३० योजनकी यात्राकर्के

तुंगभद्रायांविंशतियोजनागतस्य विंशतिकृच्छ्रसमम् मलापहारिण्याम ष्टयोजनागतस्याष्टकृच्छ्रसमम् निवृत्त्यां षड् योजनागतस्य षट्कृच्छ्रसमम् गोदावर्य्यां यात्रायोजनवृद्धौयोजनेपादकृच्छ्रः सिंहस्थेरवौसर्वत्रजान्हवी समम् कन्यास्थेगुरौ कृष्णवेण्यांमलापहारिणीसंगमे सर्वत्र जाह्नव्यर्द्धम्॥ तुंगभद्रायां तुलास्थेरवौजान्हव्यर्द्धम्॥ कर्कटे कृष्णवेलायांमलापहारिणी संगमेप्रयागे त्रिंशद्योजनागतस्य त्रिंशत्कृच्छ्रसमम् ब्रह्मेश्वरेपंचगुणम् भी मरथ्याःसंगमे प्रयागे द्विगुणम्॥ निवृत्तिसंगमे चतुर्गुणम्॥ पाताल गंगायां मल्लिकार्जुनेचषड्गुणम्॥ ततः पूर्वे षष्टिकृच्छ्रसमम्॥ लिंगालये द्विगुणम्॥ समुद्रगमनेचैवम्॥ अत्र सर्वत्र त्रिंशद्योजनागतस्येतिसंबं धः॥ दशयोजनागतस्य कावेर्य्यां महानद्यां पंचदशकृच्छ्रसमम्॥

प्राप्त होया जो पुरुष तिसको स्नानकाफल तीस ३० कृच्छ्रके तुल्य जानणा॥ भीमेति और भीमरथीके संगम रूप प्रयागविषे एक एक योजनप्रति दूणा फल जानणा॥ और निवृत्ति संगम विषे पूर्वोक्त चार ४ गुणां फल जानणा॥ और ब्रह्मेश्वर विषे पंच ५ गुणां अधिकपूर्वोक्त फल एकएक योजनविषे जानणा। और पाताल गंगाविषे और मल्लिकार्जुनविषे योजनप्रति छे६ गुणां अधिक फल जानणा तिस पूर्वतीर्थ विषे सठां ६० कृच्छ्रांके तुल्य जानणा। और लिंगालय तीर्थ विषे दो २ गुणां अधिक कृच्छ्र जानणा। और समुद्रयात्राविषे भी दूणा फल जानणा इहां संपूर्ण स्थानांविषेतीस ३० योजनकी यात्राका संबंध कर लेणा॥ और कावेरी महानदीविषे दश १० योजनकी यात्राकर्के प्राप्त होया जो पुरुष तिसको पंदरां १५कृच्छ्रके तुल्य स्नानकाफल होताहै

ताम्रेति ताम्रपर्णी श्रौर कृतमाला श्रौर पयस्विनी इनांविषे बारां १२ योजनकी यात्रा कर्के प्राप्त होया जो पुरुष तिसकों स्नानकर्के बारां १२ प्राजापत्य कृच्छ्रके तुल्य फल होताहै ॥ श्रौर सह्यपर्वतके पादांतें उत्पन्न होईयां जो नदीयां श्रौर वेंकटपर्वततें उत्पन्न होईयां जो नदीयां सो अपणी अपणी दीर्घताके अनुसारकर्के यात्राविषे योजनांकी वृद्धि कर्के एक १ दो २ त्रय ३ कृच्छ्रव्रतांके फलकोंदेणे वालीयांहैं श्रौर विंध्यपर्वततें तत्पन्न होइयां जो नदीयां सोपूर्वोक्तसैंदो गुणा अधिक फलकों देणेवालीहैं श्रौर हिमालयपर्वततें उत्पन्न होइयां जो नदीयां सो पूर्वोक्तसह्यपादजातनंदीयांसें त्रयगुणांअधिक फलकों दणेवालीयांहैं श्रौर पिच्छे सह्यपाद वेंकटाद्रिते उत्पन्न होईयां नदीयांके पुण्यका विवेककरतेहैं स्मृताविति स्मृतिविषे श्रौर पुराणविषे जैसे कैसे नहि कथन कोयां जोकूल्हां सो त्रयरात्र निवास कर्के कृच्छ्र आदि फलके देणेवालीयां हैं श्रौर अल्पनदीयां एक कृच्छ्र फलके देणेवालीयां हैं ॥ श्रौर नदीयां दो २ कृच्छ्र फलकेंदेणें वालीयां हैं श्रौर महानदीयां त्रय कृच्छ्र फलके देणेवालीयां हैं

ताम्रपर्णी कृतमाला पयस्विनीषु द्वादशयोजने द्वादशकृच्छ्रसमम् ॥ सह्यपादोद्भूतावेंकटाद्रिपादोद्भूताश्च नद्यः स्वस्वदैर्घ्यानुसारेणैकद्वित्रिकृच्छ्रफलप्रदाः ॥ विंध्यशैलोद्भवाद्विगुणाः ॥ हिमोद्भूतास्त्रिगुणाः ॥ स्मृतौ पुराणेच यथाकथंचिदनुक्ताःकुल्यास्त्रिरात्रिफलदाः ॥ अल्पनद्यःकृच्छ्रशः ॥ नद्योद्विगुणकृच्छ्रशः महानद्यस्त्रिकृच्छ्रशः । सर्वत्र यात्रानुक्तौकृच्छ्रसंख्या योजनसंख्यया स्यात् ॥ एकयोजननादिषड्योजनान्ताः स्रवंत्यःकुल्याः ततोद्वादशयोजनगाअल्पनद्यः । चतुर्विंशतियोजनगानद्यः चतुर्विंशतियोजनाधिकानिवर्त्मानियासांताश्चमहानद्यः ॥उपवाससहितंनदीस्नानं । योजनादर्वागपि । कृच्छ्रसमम्

जिसजगा यात्रा नहि कही तिस संपूर्ण स्थान विषे कृच्छ्र व्रतांकी संख्या योजनकी संख्या कर्के जानणी ॥ अब कूल्हका लक्षण कहतेहैं एकेति एक योजनतें लेकें छे ६ योजन पर्यंत जो वगतीयांहैं तिनांका नाम कुल्याहै ॥ श्रौर बारां योजन पर्यंत जो पर्वाह वालीहैं सो अल्पनदीयांकहीयां हैं श्रौर चव्वी २४ योजन तक पर्वाह वालीयां हैं तिनकानाम नदी है श्रौर चव्वी २४ योजनतें अधिकहै मार्ग जिनांका सो महानदीयांकहीयां हैं और एक उपवास व्रतकों कर्के जो नदी विषे स्नानहै सो कृच्छ्र व्रतके तुल्यहै ॥ योजनतें न्यूनभी यात्रा होवे तदभीउपवासकर्के जो स्नानहैसो कृच्छ्र व्रतके तुल्यकहाहै ॥

शुनीति जिसनदीके प्रवाहते ऊपर और अधोभागके दोनों कनारयां विषे निवास करतेहैं श्वा क्या कुत्ते ऐसी नदीका नाम शुनीकहाहै तिसको म्लेच्छ देशविषे संभावना करतेहैं कि कोई होवेगी ऐसे गर्दभी आदिकजानणी गधयांकर्के सेव्यमान नदी गर्दभी और चांडालांकर्के सेव्यमान नदी चांडाली और शूद्रांकर्के सेव्यमाननदी शूद्रीहै कष्टप्रवाहकर्के जो चलतीयांहैं अर्थात् अल्प है जल जिनांविषे ऐसीं जो नदीयांहैं और कर्मनाशा और करतोया और गंडकीतें आद लेके जो हैं एह सभ पापनदीयां हैं सो कहतेहां स्मृत्यंतर विषे कर्मेति कर्मनाशाके जल स्पर्श करणे कर्के धर्मका क्षय होताहै और करतोया नदीके लंघणे कर्के और गंडकी नदीविषे भुजाकर्के तरणेतें और जो शुभ कर्म आपकीताहै सो अन्य पुरुषकें तांई कहणेतें नष्ट होताहै ॥ १ ॥ पपानद्यःएह कथन भी पूर्व संबंधी है ऐसा कैयोंका मत है सर्वत्र समुद्र विषे स्नान

शुनीगर्दभीचांडालीशूद्रीकष्टगानद्यःपापनद्यश्चवर्जनीयाः। शुनीश्वभिःसेव्या यस्याऊर्ध्वाधोभागीयोभयतटवासिनः श्वानःसाशुनीत्यर्थः। एवंभूता पियावनादिदेशे काचित्संभाव्यते। एवंगर्दभैश्चांडालैःशूद्रैस्सेव्यासासाभिधेया कष्टेनकार्श्यभावाद्गच्छतीतिकष्टगा अल्पजलेत्यर्थः पापनद्यःकर्मनाशाकरतोयागंडकीप्रभृतयः॥ कर्मनाशाजलस्पर्शात्करतोयाविलंघनात् गंडकीवाहुतरणाद्धर्मःक्षरतिकीर्त्तनादितिस्मृत्यंतरवचनात् इदमपिपूर्वसंबंधीतिकेचित्॥ सर्वत्रसमुद्रस्नानंदर्शकार्य्यम्। देवतासमीपेद्विगुणम् तत्र स्नात्वातद्देवतादर्शनेत्रिगुणंसेतौगमनंत्रिंशद्योजनागतस्यत्रिंशत्कृच्छ्रसमम्॥ तत्रस्नात्वारामेश्वरदर्शनेषष्टिकृच्छ्रसमम् विंध्यदेशीयानांरामेश्वरसेतुदर्शनेजाह्नव्यांचत्रिगुणफलम्। जाह्नवीकेदारयोश्च तथैव।

अमावस्यामे कहाहै ॥ और समुद्रके समीप देवताका स्थान होवे तां तिसविषे वीस ३० योजनतें प्राप्तहोया जो पुरुष तिसकों स्नानकरणेतें दूणा क्या ६०कृच्छ्रका फलप्राप्त होताहै तिससमुद्रविषे स्नानकर्के देवताका क्या जगन्नाथआदिका दर्शन करे तां त्रय गुणां अधिक फल क्या नव्वे ९० कृच्छ्रकाफल प्राप्तहोवाहै और तीस ३० योजनकी यात्राकर्के सेतु बंधकों प्राप्त होणेतें तीस ३० कृच्छ्रके तुल्य फलप्राप्त होताहै ॥ तिस सेतुबंध विषे स्नान कर्के रामेश्वरके दर्शन विषे सट्ठां ६० कृच्छ्रांकाफल प्राप्त होताहै और विंध्य देशविषे निवासकरणवाले जो पुरुष तिनांको रामेश्वर सेतुके दर्शन विषे और गंगाकेस्नान विषे पूर्वोक्ततें त्रयगुणां अधिक कृच्छ्रका फलप्राप्त होताहै गंगा और केदारेश्वर विषे भी त्रयगुणां अधिक फल होताहै

दक्षीति दक्षिणदेश निवासी ओंको गंगाविषे योजनयात्रातें छे ६ गुणांअधिक फलहोताहै और गंगा देश निवासीयोंका यात्रा योजनतें सेतुरामेश्वरके दर्शनतें छे ६ गुणाअधिकफल होताहै और तीस ३० योजनकी यात्रातें स्वामिकार्तिकके दर्शनविषे वीस २० कृच्छ्रके तुल्य फल होताहै ॥ जिस स्थान विषे गंगा संज्ञा है तिसी स्थान विषे श्रीरंग और पद्मनाभ और पुरुषोत्तम और चक्रकोट इनांका दर्शन होवे और लोणारस्थान विषे तीस ३० योजनकी यात्राकर्के दर्शनके निमित्त प्राप्त होया जो पुरुष तिसकों तीस३० कृच्छ्रके तुल्यफल प्राप्त होताहै और केदार विषे तीस३० योजनकी यात्राकर्के नव्वे ९० कृच्छ्रका फल प्राप्त होताहै और संपूर्ण जो वैष्णव स्थान और माहेश्वर स्थान और सूर्यजीके स्थान और शक्तिआदिक जो स्थान इनांपीठांके दर्शन कर्के तीस ३० योजनकी यात्रा विषे पंदरां १५ कृच्छ्रका फल प्राप्त होताहै और प्रख्यात

दक्षिणदेशीयानांचजाह्नव्यांषड्गुणम् गंगादेशीयानांचसेतुरामेश्वरेषड्गुणं स्कंददर्शनेत्रिंशद्योजनागतस्याविंशतिकृच्छ्रम् यत्रगंगासंज्ञास्ति तत्रैव श्रीरंगपद्मनाभपुरुषोत्तमचक्रकोटदर्शने लोणारस्थाने त्रिंशद्योजनागतस्य त्रिंशत्कृच्छ्रम् केदारेत्रिगुणम्। सर्ववैष्णवमाहेश्वरसौरशाक्त्यादिपीठदर्शने पंचदशकृच्छ्रम् प्रख्यातेद्विगुणम् अहोविलेपितथा श्रीशैलप्रदक्षिणेषष्टिकृच्छ्रम् श्रीशैलेप्येकैकशृंगदर्शने द्वादशकृच्छ्रसमम् ॥ अन्येषु प्रख्याततीर्थदेवदर्शनेषु षट्कृच्छ्रसमम् सिद्धक्षेत्रेऽन्यक्षेत्रेचस्वयंविभुदर्शने त्रिंशत्कृच्छ्रसमम्। त्रिंशद्योजनागतस्य सर्वत्र कृच्छ्रसंख्या योजनसंख्यया ज्ञेया

पीठ विषे तीस ३० योजनकी यात्रा कर्के सठ ६० कृच्छ्रका फल प्राप्त होताहै और अहोवल पीठ विषेभी सठ ६० कृच्छ्रका फल प्राप्त होताहै तैसे श्रीशैल पर्वतकी प्रदक्षिणाका फल तीस ३० योजनकी यात्रा कर्के सठां ६० कृच्छ्रांके तुल्य होताहै और श्रीशैलविषेभी एक एक शृंगके दर्शन करणेकर्के बारां १२ कृच्छ्रांके तुल्यफल प्राप्त होताहै होर जो प्रकट तीर्थहैं और देवता इनांके दर्शनविषे तीस३० योजनकी यात्राकर्के छे६कृच्छ्रकेतुल्य फल प्राप्त होताहै और सिद्ध क्षेत्र विषे और अन्य क्षेत्र विषे और अपणे अपणे इष्ट देवताके दर्शनाविषे तीस ३० योजनकी यात्रा कर्के तीस ३० कृच्छ्रके तुल्यफल प्राप्त होताहै तीस योजनकी यात्रा कर्के इहां संपूर्ण स्थान विषे कृच्छ्रव्रतांकी संख्या योजन संख्या कर्के जानणे योग्यहै

अब देवलजी कहतेहैं अतीति तीर्थोंको प्राप्त होके और जो पवित्र स्थान तिनांकों प्राप्त होके और ब्राह्मण जो तपस्वी तिनांके स्थानकों प्राप्तहोके जो पुरुष कर्मोकों करताहै सो पापतें रहित होताहै ॥ १ ॥ समुद्रविषे प्राप्तहोणे वालियां सब नदियां पुण्यके देणेवालियां हैं और संपूर्ण जो उत्तम पर्वत हैं सोभी पुण्यके देणे वाले कहेहैं और संपूर्ण उत्तम स्थान पवित्रहै अर्थात् इनां सभ जगा मुनियोंके निवासहैं और जो बनकेआश्रय जो जलस्थान हैं सो संपूर्ण पवित्र कहेहैं २ अबजामदग्न्यका वचनहै ॥ तीर्थविषे स्नान करणेतें पादकृच्छ्रके फलकों प्राप्तहोताहै और नदी विषे स्नानतें अर्द्ध कृच्छ्रके फलको प्राप्त होताहै और महानदीविषे स्नानतें दूसे फलको प्राप्त हो

देवलः । अतिगम्यचतीर्थानिपुण्यान्यायतनानिच नरःपापात्प्रमुच्येतब्राह्मणानांतपस्विनाम् १ सर्वास्समुद्रगाः पुण्याः सर्वेपुण्यानगोत्तमाः सर्वमायतनंपुण्यंसर्वेपुण्यावनाश्रयाइति २ ॥ जामदग्न्यः॥तीर्थेतुपादकृच्छ्रःस्यान्नद्यांत्वर्द्धफलंभवेत् द्विगुणंतुमहानद्यांसंगमेत्रिगुणंभवेदिति ॥ १ ॥ अथपरार्थेतीर्थगमनेफलम् परार्थंगंता तीर्थे षोडशांशफलं लभते प्रसंगेनगंतार्द्धफलंलभते अन्योद्देशेनकृतकर्मणान्यस्यसिद्धिरूपोऽवांतरकार्यनिर्वाहः प्रसंगः ॥ अनुषंगेण तीर्थे प्राप्य स्नानेस्नानफलमेव॥ अन्योद्देशनप्रवृत्तौतत्क्रियानांतरीयकतयान्यस्यसिद्धिरनुषंगः ॥

ताहै और संगम विषे स्नानते त्रिगुणअधिक फलको प्राप्त होताहै इति ॥ १ ॥ इसते उपरंत होरी पुरुष वास्ते जो तीर्थको जाताहै तिसके फलको कहते हैं ॥ परपुरुषके वास्ते जो तीर्थ कों जाता है सो पुरुष पुण्यके सोलवें हिस्सेकों प्राप्तहोताहै जो किसेके प्रसंग अर्थात् अन्य पुरुषके निमित्त करके यात्रा करणी और उसकी यात्रा विषे अपणी यात्राके निर्वाहकों करके जाताहै सो अर्द्ध फलको लभताहै और जो किसेके संग करके अर्थात् अन्य पुरुषके निमित्त करके जो स्नानकों जाताहै अंतरीय करके नहि जाता तिसको तीर्थ विषे प्राप्त होके यात्रा फलतें विना स्नान का हि फल होताहै

मातेति मातामह क्या नाना और मतरेर भ्राताका मातामह क्या नाना और पिताका भ्राता और माताका भ्राता और श्वशुर क्या अपणी स्त्रीका पिता इनांके वास्ते जो स्नान करता है और गुरु और आचार्य जो कर्माके करवाणे वाला और शास्त्रके पढाणे वाला इनांके वास्ते जो स्नानहै और इनां कियां स्त्रीयांवास्ते जो स्नान कर्ताहै और पिताकी भयण और माताकी भयण इनांवास्ते जो स्नानकर्ताहै सो आप अठवें ८ हिस्से फलकों प्राप्तहोताहै॥ और माता पिताके वास्ते पुत्र स्नानकरे तां चौथे हिस्से फलकों प्राप्तहोताहै. स्त्री और भर्त्ता और सपत्नीक्या साकणां इहसब आपसविषे स्नान करें तां अर्द्ध फलकों प्राप्तहोतेहैं ॥ और धनको लेके जो पुरुष तीर्थ कों जाताहै तिसकों अल्प फलहै ॥ अब और विशेष कहते हैं कर्केति श्रावण और भाद्रों इनां

मातामहभ्रातृमातामहपितृव्यमातुलश्वशुरेशेषकार्थम् ॥ गुर्वाचार्यो पाध्यायार्थं तत्पत्न्यर्थंपितृष्वसृमातृष्वस्त्रर्थंच स्नात्वा स्वयमष्टमांशंलभते पित्रोरर्थंकुर्वन्पुत्रश्चतुर्थांशम् । दम्पतीचसपत्न्यश्चलभंतेर्द्धंमिथःफलम् अर्थिनांचतत्फलह्रासः ॥ कर्कादिमासद्वये रजस्वलानद्य स्तास्वपि गोमती चंद्रभागासिंधुर्नर्मदासरयूश्चत्रिरात्रं वापीकूपतडागादिषु स्थितपुराणोदके षुत्रिरात्रम् ॥ सरस्वतीगंगायमुनागयादयोनकदापि रजस्वलाः ॥ इति प्राजापत्यकृच्छ्रस्यनदीस्नानप्रत्याम्नायः॥ प्राजापत्यस्य ब्राह्मणभोजन रूपप्रत्याम्नायमाहदेवलः ॥ प्राजापत्यस्यकृच्छ्रस्यप्रत्याम्नायमथुंशृणु यत्कृत्वामुच्यतेपापैर्महद्भिरपिनारद ॥ १ ॥ पूर्ववत्संकल्पादिकं कृत्वा द्वादश ब्राह्मणान्निमंत्रयेत् ॥

दोनो महीनयां विषे नदियां रजस्वला होतीयांहैं तिनां संपूर्ण नदियां विषे गोमती नदी और चंद्रभागा और सिंधु और नर्मदा और सरयू एह त्रय रातीं अशुद्ध होतियांहैं और जिनांविषे चिर काल जल रहता है तिनां बाउलियां और कूप क्या खूह और तला विषे त्रय रात्र अशुद्धि कहीहै । सरस्वती और गंगा और यमुना और गयाते आद लेके जो नदियां हैं सो कदीभी रजस्वला नहि होतियां एह प्राजापत्यकृच्छ्रके स्थान वदला नदियां विषे स्नानकहाहै ❀ अब प्राजापत्य कृच्छ्रके बिषे जो प्रत्याम्नायहै ब्राह्मणांकेतांई भोजनदेणा तिसकों देवलऋषि कहताहै प्रेति प्राजापत्य कृच्छ्रके प्रत्याम्नाय क्या वदलेकों हेनारद श्रवण कर जिसके करणेसें पापी महा पापांसें रहित होताहै ॥ १ ॥ पूर्वकी न्यांई संकल्पकों करकेबारां ब्राह्मणाकों निमंत्रणकरे

अब पराशरजीकहतेहैं प्राजापत्य कृच्छ्रके प्रत्याम्नायविषे ब्राह्मणांका पूजनकहाहै जिसके करणे कर्के पापी पुरुष पापांतें शुद्धिकों प्राप्त होताहै और प्राजापत्यके फलकों प्राप्त होताहै ॥ १ ॥ पूजनकीविधि कहतेहैं ब्राह्मणांकों निमंत्रण करे केसे ब्राह्मणहैं जो मनकर्के शांत और सहित स्त्रीयाके और वेदके पड़ने विषे युक्त और शुभ कर्मांके करणे कर्के शुद्ध हैं असयां ब्राह्मणांकों कृच्छ्र व्रतके फलकी प्राप्ति वास्ते पूजे ॥ २ ॥ अब आपस्तंबऋषिका वचनहै वोति ब्राह्मण मंत्रों कर्के युक्त और देशतें और कालतें और शौचतें और शुभ दान ग्रहणकरणेतें जो शुद्ध हैं तिनांकों संपूर्ण कृत्यविषे जोडे ॥ १ ॥ असे ब्राह्मणांकों निमंत्रण कर्के बहुत विस्तार वालेयां अन्नांकर्के भोजन खवाये और तिनांके तांई अपने धनके अनुसार दक्षिणा देणे योग्यहै २ ॥ इसतरह जो भलो प्रकार कर्ताहै सो प्राजापत्यके फलकों प्राप्त होताहै ॥ ३ ॥ अब प्राजापत्यके

पराशरः ॥ प्राजापत्यस्यकृच्छ्रस्यप्रत्याम्नायंद्विजार्चनं कृत्वाशुद्धिमवाप्नोतिप्राजापत्यफलंलभेत् १ विप्रान्शांतान्सपत्नीकान्वेदशीलपरिष्कृतान् सदाचारशुचीन्नित्यंकृच्छ्रार्थंतान्नियोजयेत् २ आपस्तंबोपि विप्रान्शुचीन्मंत्रवतःसर्वकृत्येषुयोजयेत् देशतः कालतः शौचात्सम्यक्प्रतिगृहीततः १ ॥ एवंविप्रान्निमंत्र्याथभोजयेद्बहुविस्तरैः तेभ्यश्चदक्षिणादेयायथावित्तानुसारतः २ ॥ एवंयःकुरुतेसम्यक्प्राजापत्यफलंलभेत् ३ ॥ अथप्राजापत्यस्य प्रत्याम्नायंवेदपारायणमाहदेवलः ॥ प्राजापत्यस्यकृच्छ्रस्यवेदपारायणं महत् प्रत्याम्नायंप्रशंसन्तिशाखामात्रंप्रहारणम् ॥ १ ॥ पारायणेनभगवान्कृतकृत्योभवेत्तदा फलंसंपूर्णकृच्छ्रस्यप्रददातिनसंशयः ॥ २ ॥ प्रातःकालेशुचिर्भूत्वास्नात्वानित्यंसमाप्यच ॥ स्वगृहेदेवतागारेनद्यांवादेवतालये ॥ ३ ॥ प्राङ्मुखोदङ्मुखोवापिसंकल्पंपूर्ववच्चरेत् ॥

बदले विषे संहिताके पाठकों देवलऋषि कहताहै प्रेति प्राजापत्यकृच्छ्रविषे संपूर्ण संहिताका उच्चारणकरणा तिसकों श्रेष्ठ कहतेहैं ॥ शाखामात्र अथा अपनी अपनी एकशाखाकाहि पारायण करणा सारे वेदका नहि सो पारायण (प्रहारण) है बध्धा सर्व पाप नाशकहै १ ॥ इसपारायणकर्के भगवान् कृत कृत्य हुंदाहै अर्थात् प्रसन्न हुंदाहै और कृच्छ्रके संपूर्ण फलकों तिसताईं देताहै इसविषे संशय नहि है ॥ २ ॥ और प्रातःकालविषे शुद्धहोके स्नान करे और संध्यावंदनादि नित्य कर्मको करके अपणे गृह विषे वा देवताके मंदिर विषे वा नदी विषे वा देवताके स्थान विषे जावें और इसमे एह अभिप्रायहै कि जिस जगा देवतापहलेथा सो देवतागारकिहाहै और जिस जगा देवता विद्यमानहि है सो देवता लयजानणा ॥ ३ ॥ पूर्वपासे मुखकर्के वा उत्तर पासे मुखकर्के फेर संकल्पकों पूर्वकीन्याई करे

पारायण करणविषे एह विधिहै कि आदविषे ओंकारकोंपडके पारायणकापाठकरे ॥ ४ ॥ और पूर्वादि दिशा पासे न देखे और पापियां पुरुषांके साथ संभाषण त्यागे और मौन व्रतक्या पाठने विनाहोर कुछ न कहे मौनको धारके हौली हौली वेदकोंपडे ॥ ५ ॥ अब पारायणविषे दोष कहतेहैं शीघ्रेति जो शीघ्र पाठ करणेवाला और पाठ करदयां शिरको हलाणेवाला और आपही लिखके पडणेवाला गद्गद क्या जिसकीवाणी स्पष्ट न होवे ऐसा जो है और स्वरतेहीन पठने वाला ॥ एह पंज पाठ करणे वालयांविषे अधम कहेहैं ॥ ६ ॥ इस कारणते होली होली वियाका अभ्यासकरे क्या पाठकरे आत्माकी शुद्धिवास्ते सो पारायणकी समाप्तिके होयां होयां

पारायणेतुप्रणवंकृत्वापारायणंपठेत् ॥ ४ ॥ दिशस्त्वनलोकयेवह्यसंभा षेयच्चपापिनः मौनव्रतंसमागम्यपठेद्वेदंशनैःशनैः ॥ ५ ॥ शीघ्रपाठीशिरः कंपीस्वयंलिखितपाठकः । गद्गदस्स्वरहीनश्चपंचैतेपाठकाधमाः ॥ ६ ॥ अतःशनैःशनैर्विद्यामभ्यसेदात्मशुद्धये यावत्समाप्तिर्भवतितावत्कृच्छ्रफलंल भेत् ॥ ७ ॥ स्वयमेवपठेद्वेदमुत्तमंपरिकीर्त्तितम् प्रमामापोमध्यमः स्याद्भृत केनिष्फलंभवेत् ॥ ८ ॥ प्रमयायथार्थज्ञानेन मापयतिअहंयथार्थपाठीति बोधयतीति प्रमामापअन्यार्थपाठकः । सतु प्रयोजकस्य फलंदातु प्रवृत्त त्वात् मध्यमः यद्वा प्रमांप्रकृष्टलक्ष्मींमापयति तुभ्यं वहुधनंदास्यामी तिविश्वासयति प्रमामापःप्रयोजकः ॥ भूतकेअनध्यायेइति

कृच्छ्र के फलको प्राप्त होताहै ॥ ७ ॥ अब और रीतिसे पाठकको उत्तमादि व्यवस्था कहतेहैं स्वयमेवेति आप वेदको पडे तां उत्तम कहाहै प्रमामापजोहै ॥ यथार्थ ज्ञानकरके जो अन्य पुरुष तांई बोधन करवाए क्या मैं यथार्थ पाठ करताहां . ऐसे अन्यपुरुषके तांई फलके देणेनूं जो पाठ करताहै सो मध्यम पाठक कहाहै। यद्वा दूसरा अर्थहै वहुत धनको जो बोधन करवाताहै क्या मैं तेरेतांई वहुत धन देवांगा ऐसे प्रेरणा कर्त्ताहै ऐसा पाठ वेदका करवाणे वाला मध्यम फल भागी कहाहै और अनध्याय विषे पाठ करे तां निष्फल होताहै ॥ ८ ॥

अथ क्या इस पुराण प्रत्याम्नायकों कहकर्के अब प्राजापत्य कृच्छ्रके प्रत्याम्नायविषें गायत्रीके जपकी विधि कहीहै अयुतमिति वेदकी माता जो गायत्री तिसके दश हजार १०००० जपके करणेंतें पुरुष संपूर्ण पापांते रहित होताहै अब जप करणेकी विधि कहतेहैं प्रातरिति जपकरना ऐसा करे कि पहले प्रातःकालविषें यथा चार क्या जिस २ वर्ण कों जो विधानहै जैसे ब्राह्मणकों १३ तेरां क्षत्रियकों १२ वैश्यकों ११ शूद्रकों १० स्त्री कों ८ अंगुलकीदातन कही है इत्यादि विधि कर्के दातनकोकरें , फेर स्नान करे ॥ १ ॥ और अग्नि होत्र वाले स्थान विषें स्थित होके अथवा देवताके मंदिर विषें वा नदीके कनारे विषें वागोंवांके स्थान विषें वावृंदावन देश विषें इनां मेसें भावें किसे स्थान विषें जपें १०००० ॥ २ ॥ अब जप माला कों दस्वाते हैं पर्वभिरिति हत्थके पर्वांकर्के वा जपकी माला कर्के वा

अथ प्राजापत्यकृच्छ्रप्रत्याम्नायेगायत्रीजपाविधिः ॥ अयुतंवेदमातुश्चसर्वपापैःप्रमुच्यते प्रातःस्नात्वायथाचारंदंतधावनपूर्वकम् ॥ १ ॥ अग्निहोत्रालयेदेवगृहेवापिनदीतटे गोष्ठेवृंदावनेदेशेजपेदयुतसंख्यया ॥ २ ॥ पर्वभिर्जपमालाभिः कुशग्रंथिभिरेवच स्वयंमौनमुपस्थायदिशश्चानवलोकयन् ॥ ३ ॥जपेन्महापापजालहननार्थंदिनेदिने अव्यग्रचित्तःप्रजपेदन्यथादोषमश्नुते ॥ ४ ॥ मार्कंडेयः ॥ संदिग्धस्तुहतोमंत्रोव्यग्रचित्तोहतोजपः अब्राह्मण्यंहतंक्षात्रमनाचारंहतंकुलम् ॥ १ ॥

कुशाकियां गंडां कर्के आप मौनकों धारके परंतु और किसे दिशा विषेंभी दृष्टि न करे क्या एकाग्र चित्त कर्के ॥ ३ ॥ महा पापके समूहके नाश वास्ते दिन दिनविषें सावधानहोकर जपें दश हजार संख्यातक और ऐसें न जपे तां दोषकों प्राप्त होताहै ॥ ४ ॥ अब जपविषें मार्कंडेय जी कहतेहैं संदिग्ध इति संशय वाला मंत्र हत है क्या नहि सिद्धिके देणे वालाहै और एकाग्र चित्ततें विना जपभी हतहै क्या नहिसिद्धिके देणे वाला और जो क्षत्री ब्राह्मणकों नहि मानता सो क्षत्रीभी नष्ट है और आचारं ते हीन कुलभी नष्टहै ॥ १ ॥ इसमे एह अभिप्रायहै कि किसे पुस्तकमें क्षात्रकी जगा (शास्त्र) एह पाठहै तिसका अर्थ एह है कि जिस शास्त्रमे ब्राह्मणकी निंदा हैसो शास्त्र हत है ॥

इस कारणतें मन विषे जप करणे योग्यहै मन कर्के जो जप कीताहै सो क्रोड १०००००० गुणां अधिक फलके देणे वालाहै और दश हजार जप करे तां पूर्ण प्राजापत्य कृच्छ्रके फलकों प्राप्तहोताहै ॥ २ ॥ कुछ और कहतेहैं अंगुलीति जो जप अंगुलीयांके अग्रकर्के जप याहै और जो मेरुके मणकेकों लंघकर्के जपयाहै और दो प्रकारके चित्तकर्के जपयाहैक्या एकाग्र चित्तकर्के नहि सो संपूर्ण निष्फल होताहै ३ पराशरजीकावचनहै हत्थदीयां पंजां अंगुलीयां विषे अंगुठनें जो चौथी अंगुलिहे तिस कर्के विसकारले पर्वतें लेके दोपर्व हथवाले पासयां लेके ग्रहण करे और अंगुठनें पंजवी अंगुलि जो कनिष्ठिकाहै तिसके त्रय पर्व हथवाले पासयां लेके अग्रतक क्रमसें लये ॥ १ ॥ फेर चौथी अंगुली और तीसरी तिनां दोनोंके अगलयां

अतोमनसिजप्तव्यंमानसंकोटिरुच्यते अयुतंचजपेत्पूर्णप्राजापत्यफलंलभेत् ॥ २ ॥ अंगुल्यग्रेणयज्जप्तंयज्जप्तंमेरुलंघने द्विधाचित्तेनयज्जप्तंतत्सर्वं निष्फलंभवेत् ॥ ३ ॥ पराशरः ॥ हस्तस्यानामिकामध्यपर्वादारभ्ययत्नतः तद्द्वितीयंकनिष्ठायाःपर्वत्रयमनुक्रमात् ॥ १ ॥ अनामिकोर्ध्वपर्वादिमध्यमायस्तुतर्जनी पर्वत्रयंतदाकृत्वातदेवाक्रम्यपूर्ववत् ॥ २ ॥ मेरोर्यथवदंगुष्ठं तस्यनातिक्रमंचरेत् पर्वभिर्गणयेत्सोपिगायत्र्यामन्यमेववा ॥ ३ ॥ एकैकस्यशतंप्रोक्तंगणनंमुनिभिस्सदा अयुतेनजपेनाशुजप्तात्तत्फलंलभेत् ॥ ४ ॥ गोत्तमः ॥ कृषितोनास्तिदुर्भिक्षंजपतोनास्तिपातकं मौनेनकलहोनास्तिनास्तिजागरतोभयम् ॥ १ ॥

पर्वाकों ग्रहण करे फेर अंगुष्टतें दूसरी अंगुली जो तर्जनी है तिसके तीन पर्व ग्रहण करे क्रमतें । २ । और मेरुके स्थान विषे जो अंगुष्टहै तिसकों न उलंघे इसतें एक आवृत्ति की दश १० संख्या होजाती है इसप्रकार पर्वों कर्के जप करे गायत्रीका अथवा होर किसे मत्रका ॥ ३ ॥ एक एक आवृत्तिके अंगुलिके जपनें मुनियांने सौ गुणां अधिक फल कहाहै इसी कर्के दश हजार १०००० जप करणेंतें तत्काल कृच्छ्रके फलकों प्राप्त होताहै ॥ ४ ॥ इसमें गोतमजी कहतेहैं खेती कर्मके करणेंते काल नहि होता और जपकरणेंतें पाप नहि होता और मौनधारणेंतें लड़ाई नहि होती और जागरण करणेंतें भय नहि होता ॥ १ ॥

जपतें पाप नाशकों प्राप्त होताहै इस कहणेतें कृच्छ्र व्रतका प्रत्याम्नाय गायत्री कहीहे ॥ इससें उपरंत प्राजापत्य कृच्छ्रका प्रत्याम्नाय तिलांका होम कहाहै होमइति कीडयांते रहित जो तिल घृत करके युक्त तिनांकरके जो होमहै मृत्युंजय मंत्रकरके अंगन्यास और ध्यानकों पूर्व करके सो पापांके नाश करणे वाला कहाहैं ॥ १ ॥ इसमे और विधि कहतेहैं संत्रस्तइति भय करके संयुक्त होयां होया अग्नि विषे हवन न करे अर्थात् सावधान होकरके करे और ॐ ह्रौं जूंसः ॐ भूर्भुवः स्वः इनांबीजां करके तिलांका हवन करे संपूर्ण होम करणेकरके तिसी क्षणमें पवित्र होताहै २ इसमे कुच्छ होरकहतेहैं किआप हवनकरे वा ब्राह्मणांपासो करवाये तिलांकी हजार

जपतोनास्तिपातकमितिस्मरणादयंप्रत्याम्नायः ॥ अथप्राजापत्यकृच्छ्रप्रत्याम्नायेतिलहोमविधिः ॥ होमस्तिलैरकीटैश्चघृतैःपापप्रणाशकृत् मृत्युंजयेनमंत्रेणन्यासध्यानपुरःसरः ॥ १ ॥ संत्रस्तोनहुनेद्दत्त्वाहुतीर्बीजपूरणैः सहोमंसकलंकृत्वापूतोभवतितत्क्षणात् ॥ २ ॥ संत्रस्तोनहुनेत्किंतुसमाहितएवजुहुयादित्यर्थः। तत्रापि बीजपूरणैः ॐह्रौंजूंसःॐभूर्भुवःस्वरितिबीजपूरणयुक्तैः। स्वयंवाऋत्विजोथोवातिलहोमसहस्रकम् कुर्यान्मासिनमेधावीप्राजापत्यफलंलभेत् ॥ ३ ॥ अथ प्राजापत्यकृच्छ्रस्यशतद्वयप्राणायामरूपप्रत्याम्नायमाहदेवलः प्राजापत्यस्यकृच्छ्रस्यप्रत्याम्नायोमहत्तरः धर्मशास्त्राक्रमार्गेणप्राणायामशतद्वयम् ॥ १ ॥ जपसंकल्पहोमेपुसंध्यावंदनकर्मसु

प्राणायामांश्चरेद्विप्रस्तदानंत्यायकल्प्यते ॥ २ ॥

औसे दिन दिनाविषे आहुतिए कमासके करकरके बुद्धि मान् प्राजापत्यके फलको प्राप्त होताहै ३ अब प्राजापत्य कृच्छ्रका और प्रत्याम्नायहै कृया दो सो २०० प्राणायाम तिसकों देवलऋषि कहताहैं प्रै ति प्राजापत्यकृच्छ्रका प्रत्याम्नाय एह बडा श्रेष्ट कहाहै क्या धर्मशास्त्रकरके कहा जो विधिहै तिस विधिकरके प्राणायामदो सौ २०० बार करे गायत्रीके मंत्रकरके ॥ १ ॥ अर्थात जप और संकल्प और हवन इनांके प्रारंभविषे और संध्या वंदनादि कर्माविषे जो ब्राह्मण प्राणायामाकों कर्त्ताहै सो अनंतफलकों प्राप्तहोताहै इसका सो पुण्यअक्षय कल्पना करिदाहै ॥ २ ॥

इस विषे मार्कंडेयजी कहतेहैं वामेति वाम क्या खव्वेपासेकी नासिकाकर्के वायुकों पूर्णकरे पूर्णकरणेंतें तिसका नाम पूरक कहाहै और सव्येपासेकी नासिकाकर्के वायुकों त्यागे वायुके त्यागणेंतें तिसका नाम रेचककहाहै ॥ १ और वायुकों रोके दोनों नासिकां कर्के तिसका नाम कुंभक है और गायत्रीके स्वरूपका मनकर्के ध्यान करे और पूरकविषे कुंभक विषे रेचक विषे त्रयवार जपे २ इसप्रकार त्रयवार जपीहोई संख्याके अभावमें होतीहै अर्थात् अनंत फलके देणे वालीहोतीहै ३ अवपराशरजीकहतेहैं वामेति खव्वी नासिकाकर्के वायुकों ग्रहणकरे मन कर्के उच्चारण गायत्रीका कर्ताहोया जलकर्के पूर्णहोए कुंभकीन्याई ब्रह्मविषे ध्यानलगाके स्थित होवे वायुकोंरोककर्केगायत्रीका मनकर्के उच्चारण कर्ता होआ ॥ १ ॥ ऐसे पूरक और कुंभककों

मार्कंडेयः ॥ वामेनपूरयेद्वायुंपूरणात्पूरकःस्मृतः सव्येनरेचयेद्वायुंरेचनाद्रेचकःस्मृतः ॥ १ ॥ वायुनापूरयेद्रंध्रान्गायत्रींमनसास्मरन् पूरणे कुंभकेचैवरेचनेतांजपेत्त्रिधा ॥ २ ॥ एवंत्रिवारंयाजप्तासंख्याभावेभवेदियम् ॥ ३ ॥ पराशरः । वामेन वायुनापूर्यगायत्रींमनसास्मरन् संपूर्णकुंभवत्तिष्ठेत्पुनस्तामनुवर्त्तयन् ॥ १ ॥ रेचयन्सप्तरंध्रेणपुनस्तामेवसंस्मरन् ॥ एवंपूरककुंभाभ्यांरेचकेनसहामुना योवर्त्तयेत्रिधाब्रह्मन्प्राणायामइतीरितः ॥ २ ॥ श्राद्धेजपेचहोमेचसंध्याकर्मसुसर्वदा योवर्त्ततेप्रतिदिनंपरंब्रह्मतदुच्यते ३ एवंशतद्वयंकृत्वापूर्वोक्तविधिनाद्विजः प्राजापत्यस्य कृच्छ्रस्य प्रत्याम्नायोनिगद्यते सर्वपापविनिर्मुक्तः सयातिपरमंपदम् ॥ ४ ॥

कर्के रेचककोंकर्के गायत्रीका स्मरणकर्ता होया वायुकों सप्तरंध्राके रस्ते त्यागे सप्तरंध्र नाम दक्षभागका है अथवा दक्षरंध्रेण ऐसाहि पाठ है ॥ २ ॥ ऐसे हे ब्रह्मन् पूरक और कुंभक और रेचक इसविधिकर्के जो त्रयवार गायत्रीका उच्चारण करणाहै तिसका नाम प्राणायाम कहाहै २ श्राद्धेति श्राद्धविषे और जपविषे और हवन विषे और संध्या वंदनादि कर्म विषे जो प्राणायाम कर्ताहै सो परंब्रह्म स्वरूप कहाहै ॥ ३ ॥ ऐसे पूर्व विधि कर्के जो ब्राह्मण दोसौ २०० प्राणायामकर्ताहै तिसकों प्राजापत्यके तुल्यफल देणे वाला वदला कहाहै तिसकेकरणेंते संपूर्ण पापातें रहित होके परम पद वैकुंठकों प्राप्त होताहै ॥ ४ ॥

अब सांतपन कृच्छ्र व्रतकों मनुजी कहतेहैं गवितिं गौका मूत्र और गोमय और दुग्ध और दधि और घृत और कुशाके पत्रां कर्के मिलया होयाजल एह मिला कर्के एक दिनपीवे और दूसरे दिन उप वास व्रत करे तिस व्रतका नाम कृच्छ्र सांतपन कहाहै ॥ १ ॥ अब याज्ञवल्क्य जी का बचनहै गौकामूत्र और गुवा और दुग्ध और दधि और गौकाघृत और कुशाकाजल इनां कों एक दिन खाकर दूसरे दिन उपवास व्रत करे एह कृच्छ्र सांतपनकहतेहैं एह दो दिनका व्रत है कृच्छ्रसांतपन १ अब सांतपनके लक्षणकों देवलऋषि कहताहै कृच्छ्र सांतपनकालक्षण जोहै सोसं

अथसांतपनकृच्छ्रमाह मनुः ॥ गोमूत्रंगोमयंक्षीरंदधिसर्पिःकुशोदकं एक रात्रोपवासश्चकृच्छ्रं सांतपनंस्मृतम् ॥ १ ॥ याज्ञवल्क्यः ॥ गोमूत्रंगोमयंक्षीरंदधिसर्पिःकुशोदकम् जग्ध्वापरेद्युरुपवसेत्कृच्छ्रंसांतपनंस्मृतमिति ॥ द्वैरात्रःसांतपनकृच्छ्रः । तल्लक्षणमाह देवलः कृच्छ्रसांतपनस्यास्यलक्षणं सर्वपापहम् श्रीशैलं १ काशिकाक्षेत्रं २ गयाक्षेत्रंमहत्तरं ३ प्रयागं ४ यमुनां ५ सिंधुं ६ गंगासागरसंगमम् ७ कृष्णवेणीं ८ तुंगभद्रां ९ हेमकूपं १० त्रिलोचनम् ११ मार्कंडेयं १२ सिंहगिरिं १३ ततोधर्म्मपुरीश्वरं १४ द्राक्षारामं १५ जपावाटीं १६ मल्लिकार्जुनमेवच १७ अहोवलं १८ नृसिंहंच १९ तथैवभवनाशिनीम् २०

पूर्णपापांके नाश करणे वालाहै श्रीशैलमिति श्रीशैल १ और काशिका क्षेत्र २ और गयाक्षेत्र बहुत श्रेष्टहै ३ और प्रयाग ४ और यमुना ५ और सिंधु ६ और गंगासागरकासंगम ७ और कृष्णवेणी ८ तुंगभद्रा ९ और हेमकूप १० और त्रिलोचन ११ औरमार्कंडेय १२ और सिंहगिरि १३ और धर्मपुरीश्वर १४ और द्राक्षाराम १५ और जपावाटी १६ और मल्लिकार्जुन १७ और अहोवल ॥ १८ ॥ और नृसिंह ॥ १९ ॥ और तैसे भवनाशिनी २०

श्रौर पिनाकिनी नदीके तीरविषे वैद्यनाथहरि नामकर्के प्रसिद्ध जो स्थान है २१ तैसे श्रौर वेंक टाद्रि २२ श्रौर स्वर्णमुखी २३ श्रौर कालहस्तीश्वर २४ श्रौर तैसे साक्षात् वरद राजहैं जोस्वयंभू वज्राकावरस्वरूपहैं २५ श्रौर तैसे एकाम्रनामकर्के लिंग संपूर्णतीर्थों विषे श्रेष्ठ २६ श्रौर मध्यार्जुने श पापांके नाश करणे वाला २७ श्रौर कुंभकोण वडाआश्चर्य २८ श्रौर श्रीरंग महाक्षेत्र २९ श्रौर इसते परे जंबू नाममहाक्षेत्र ३० श्रौर कावेरी पापांके नाश करणे वाली ३१ अब मथुरा विषयविषे जो तीर्थहैं तिनकों श्रवणकर ॥ सुंदरेश १ श्रौर सुंदरेशकी पत्नीका स्थान २ श्रौर तैसे उग्रवती नदी ३ श्रौर तिसीस्थान आग्नेकोण विषे गंधमादनपर्वत ४ श्रौर राम लिंग ५ श्रौर धनुःकोटी संपूर्ण तीर्थोंकर्के युक्त ६ श्रौर तैसे दर्भशमन ७ श्रौर तिसीस्था

पिनाकिनीनदीतीरेवैद्यनाथंहरिंतथा २१ वेंकटाद्रिं २२ स्वर्णमुखीं २३ कालहस्तीश्वरं तथा २४ साक्षाद्वरदराजंचवरभूतंस्वयंभुवः २५ एकाम्रंचतथालिंगं सर्वतीर्थमहत्तरम् २६ मध्यार्जुनेशंपापघ्नं २७ कुंभकोणंतदद्भुतम् २८ श्रीरंगं वामहाक्षेत्रं २९ जंबूनामह्यतःपरम् ३० कावेरींपापजालघ्नीं ३१ मथुराविषये शृणु । सुंदरेशंच १ तत्पत्नीं २ तथैवोग्रवतींनदीम् ३ तत्राग्नेयदिग्भागेपर्वतोगंधमादनः ४ राम लिंगं ५ धनुःकोटिं सर्वतीर्थपरिष्कृतां ६ तथैवदर्भशमनं ७ तत्रपंपा महत्सरः ८ ताम्रपर्णीमहाक्षेत्रं ९ तत्रत्याविष्णुदेवता १० अनंता ख्यंरामक्षेत्रं ११ कौडिन्योयत्रभाग्यवान् जनार्दनंमहाक्षेत्रं १२ गोक र्णंपापनाशनम् १३ तथाहरिहरक्षेत्रं सुब्रह्मण्यंमहत्तरम् १४ एता निपुन्यक्षेत्राणिदृष्ट्वापापहराणिच नीरोगीमुखजोयस्तु एतेषामेकमेववा नस्नायाद्वानपश्येद्वाकोन्यस्तस्मादचेतनः ॥

न पंपामहासर ८ श्रौर ताम्रपर्णी महाक्षेत्र ९ श्रौर तिसी स्थान विषे विष्णुमूर्त्ति १० श्रौर अनंतहै नाम जिसका ऐसा रामक्षेत्र ११ जिसस्थान विषे कौडन्यऋषि भाग्यकों प्राप्त होता भया श्रौर जनार्दन महाक्षेत्र १२ श्रौर गोकर्णतीर्थहै पापांके नाशकरणे वाला १३ श्रौर तैसे हरिहरक्षेत्र जो अतिशय कर्के ब्रह्मण्यहै बहुत श्रेष्ठ १४ एह जो पुण्यक्षेत्रहैं सो दृष्टि विषये प्राप्त होणेनहि पापांके नाश करणे वाले हैं जो ब्राह्मण रोगतें रहितहै श्रौर इनां तीर्थों श्रौर क्षेत्रांके मध्य तिस एक तीर्थ विषे भी स्नान नहि कर्त्ता श्रौर दर्शन नहि कर्त्ता तिस तें परे कोण अचेतनहै अर्थात् सोई ब्राह्मण पत्थरके तुल्य है

धर्मेति धर्मतें रहित जो पुरुषहै और कर्मातें हीन जो पापीपुरुषहै तिसका जन्म अजा क्या बकरीके गलविषे जो स्तन तिसकी न्यांईव्यर्थहै ॥ १ ॥ जो पुरुष जन्म दिनतें लेके सठ ६० वर्षकी आयुपर्य्यंत वर्त्तताहै और तिनां वर्षांके मध्य विषे श्रीशैल कहणे कर्के श्री शैल और चापाग्र और वेंकटाचल और वदरी और श्रीरंगनाथ तें आद लेके जो हैं इनांका ग्रहण करणा इनांका जो नास्तिकता कर्के दर्शन नहि कर्त्ता सो पुरुष संपूर्ण पापांको भोगके पीछे गर्दभ योनिकों प्राप्त होताहै एह वाक्य वामन पुराण विषे कहा है ॥ २ ॥ तिसीको मरीचिऋषि कहताहै ॥ श्रीति श्रीशैल और वेंकटाद्रि और कांची और

स्मृत्यंतरे। धर्महीनस्यमर्त्यस्यकर्महीनस्यपापिनःअजागलस्तनमिवतस्य जन्मनिरर्थकम्॥ १ ॥ योमर्त्योजन्मादिवसात्षष्टिवर्षाणिवर्त्तते नपश्येद्यदि श्रीशैलंतन्मध्येसतुगर्दभः॥ २ जन्मेति स्वजन्मदिवसादारभ्यषष्टिवर्षमध्ये श्रीशैलचापाग्रवेंकटाचलवरदराजश्रीरंगनाथादिकं नास्तिकतया न पश्येत् नदर्शनार्थीतिष्ठेत्ससर्वपापभोगानन्तरंगर्दभोभवेदिति वामनपुराणेश्रवणात् तदाहमरीचिः ॥ श्रीशैलवेंकटाद्रिंचकांचींश्रीरंगनायकम् रामेशंचधनुःकोटिंस्वभावात्षष्टिवर्षगः ॥ १ ॥ नपश्येन्नास्तिकतयागर्दभोभुविजायते तस्यैवनिष्कृतिर्नास्तिकृच्छ्रात्सांतपनादृते ॥ २ ॥ बृहस्पतिः ॥ पुण्यालयान्पुण्यनदीर्नपश्येत्षष्टिवर्षगः महांतंनरकंगत्वापश्चाद्रासभतांव्रजेत्॥ १॥

श्रीरंगनायक रामेश और धनुःकोटि इनांका जो पुरुष अपनेजन्मतें लेके सठ ६० वर्षकी आयुतकनहि दर्शन कर्त्ता नास्तिक स्वभाव कर्के सो भोगतें अनंतर पृथ्वी विषे गर्दभ जन्मकों प्राप्तहोताहै तिसके पापकी निवृत्ति कृच्छ्र सांतपन व्रततें विना नहि होती क्या कृच्छ्रसांतपन व्रतकर्के पापतें शुद्ध होताहै ॥ २ ॥ अब बृहस्पतिजीका वचनहै ॥ पुण्येति दर्शन करणे कर्के पापांके दूर करणे वाले जो पुण्य देवतांके स्थान और पवित्र जो नदीयां तिनांकों जन्मतें लेकर सठां ६० वर्षांकी आयुतक न देखे सो पुरुष वडे नरककों भोगकर पीछे गधेके जन्मकों प्राप्त होताहै ॥ १ ॥

और पिनाकिनी नदीके तीरविषे वैद्यनाथहरि नामककें प्रसिद्ध जो स्थान है २१ तैसे और वेंकटाद्रि २२ और स्वर्णमुखी २३ और कालहस्तीश्वर २४ और तैसे साक्षात् वरद राजहैं जोस्वयंभू ब्रह्माकावरस्वरूपहैं २५ और तैसे एकाम्रनामककें लिंग संपूर्णतीर्थों विषे श्रेष्ठ २६ और मध्यार्जुनेश पापांके नाश करणे वाला २७ और कुंभकोण वडाआश्चर्य २८ और श्रीरंग महाक्षेत्र २९ और इसौं परे जंबू नाममहाक्षेत्र ३० और कावेरी पापांके नाश करणे वाली ३१ अब मथुरा विषयविषे जो तीर्थहैं तिनकों श्रवणकर ॥ सुंदरेश १ और सुंदरेशकी पत्नीका स्थान २ और तैसे उग्रवती नदी ३ और तिसीस्थान आग्निकोण विषे गंधमादनपर्वत ४ और रामलिंग ५ और धनुःकोटी संपूर्ण तीर्थोंकर्के युक्त ६ और तैसे दर्भशमन ७ और तिसीस्थान पंपामहासर ८ और ताम्रपर्णी महाक्षेत्र ९ और तिसी स्थान विषे विष्णुमूर्त्ति १० और अनंतहै नाम जिसका ऐसा रामक्षेत्र ११ जिसस्थान विषे कौडन्यऋषि भाग्यकों प्राप्त होता भया और जनार्दन महाक्षेत्र १२ और गोकर्णतीर्थहै पापांके नाशकरणे वाला १३ और तैसे हरिहरक्षेत्र जो अतिशय कर्के अद्भुतहै बहुत श्रेष्ठ १४ यह जो पुण्यक्षेत्रहैं सो दृष्टि विषये प्राप्त होणेंनहि पापांके नाश करणे वाले हैं जो ब्राह्मण रोगतें रहितहै और इनां तीर्थो और क्षेत्रांके मध्य विषे एक तीर्थ विषे भीस्नान नहि कर्ता और दर्शन नहि कर्ता तिसतें परे कोण अचेतनहै अर्थात् सोई पाषाण पत्थरके तुल्य है

पिनाकिनीनदी तीरेवैद्यनाथंहरिंतथा २१ वेंकटाद्रिं २२ स्वर्णमुखीं २३ कालहस्तीश्वरं तथा २४ साक्षाद्वरदराजंचवरभूतंस्वयंभुवः २५ एकाम्रंचतथालिंगं सर्वतीर्थमहत्तरम् २६ मध्यार्जुनेशंपापघ्नं २७ कुंभकोणंतदद्भुतम् २८ श्रीरंगं वामहाक्षेत्रं २९ जंबूनामह्यतःपरम् ३० कावेरींपापजालघ्नीं ३१ मथुराविषये शृणु । सुंदरेशंच १ तत्पत्नीं २ तथैवोग्रवतींनदीम् ३ तत्राग्नेयदिग्भागेपर्वतोगंधमादनः ४ रामलिंगं ५ धनुःकोटीं सर्वतीर्थैपरिष्कृतां ६ तथैवदर्भशमनं ७ तत्रपंपामहत्सरः ८ ताम्रपर्णीमहाक्षेत्रं ९ तत्रत्याविष्णुदेवता १० अनंताख्यंरामक्षेत्रं ११ कौडिन्योयत्रभाग्यवान् जनार्दनंमहाक्षेत्रं १२ गोकर्णंपापनाशनम् १३ तथाहरिहरक्षेत्रं सुब्रह्मण्यंमहत्तरम् १४ एतानिपुन्यक्षेत्राणिदृष्ट्वापापहराणिच नीरोगीमुखजोयस्तु एतेषामेकमेववा नस्नायाद्वानपश्येद्वाकोन्यस्तस्मादचेतनः ॥

धर्मेति धर्मतें रहित जो पुरुषहै और कर्मातें हीन जो पापीपुरुषहै तिसका जन्म अजा क्या बकरीके गलविषे जो स्तन तिसकी न्यांईव्यर्थहै ॥ १ ॥ जो पुरुष जन्म दिनतें लेके सठ ६० वर्षकी आयुपर्य्यंत वर्त्तताहै और तिनां वर्षांके मध्य विषे श्रीशैल कहणे कर्के श्रीशैल और चापाग्र और वेंकटाचल और वदरी और श्रीरंगनाथ तें आद लेके जो हैं इनांका ग्रहण करणा इनांका जो नास्तिकता कर्के दर्शन नहि कर्त्ता सो पुरुष संपूर्ण पापांको भोगके पीछे गर्दभ योनिकों प्राप्त होताहै एह वाक्य वामन पुराण विषे कहा है ॥ २ ॥ तिसीको मरीचिऋषि कहताहै ॥ श्रीति श्रीशैल और वेंकटाद्रि और कांची और

स्मृत्यंतरे। धर्महीनस्यमर्त्यस्यकर्महीनस्यपापिनः अजागलस्तनमिवतस्य जन्मनिरर्थकम्॥ १ ॥ योमर्त्योजन्मदिवसात्षाष्टिवर्षाणिवर्त्तते नपश्येद्यदि श्रीशैलंतन्मध्येसतुगर्दभः॥ २ जन्मेति स्वजन्मदिवसादारभ्यषष्टिवर्षमध्ये श्रीशैलचापाग्रवेंकटाचलवरदराजश्रीरंगनाथादिकं नास्तिकतया न पश्येत् नदर्शनार्थतिष्ठेत्ससर्वपापभोगानन्तरंगर्दभोभवेदिति वामनपुराणेश्रवणात् तदाहमरीचिः ॥ श्रीशैलवेंकटाद्रिंचकांचींश्रीरंगनायकम् रामेशंचधनुः कोटिंस्वभावात्षष्टिवर्षगः ॥ १ ॥ नपश्येन्नास्तिकतयागर्दभोभुविजायते तस्यैवनिष्कृतिर्नास्तिकृच्छ्रात्सांतपनादृते ॥ २ ॥ बृहस्पतिः ॥ पुण्यालयान्पुण्यनदीर्नपश्येत्षष्टिवर्षगः महांतंनरकंगत्वापश्चाद्रासभतांव्रजेत्॥ १॥

श्रीरंगनायक रामेश और धनुःकोटि इनांका जो पुरुष अपनेजन्मतें लेके सठ ६० वर्षकी आयुतकनहि दर्शन कर्त्ता नास्तिक स्वभाव कर्के सो भोगतें अनंतर पृथ्वी विषे गर्दभ जन्मकों प्राप्तहोताहै तिसकें पापकी निवृत्ति कृच्छ्र सांतपन व्रततें विना नहि होती क्या कृच्छ्रसांतपन व्रतकर्के पापतें शुद्ध होताहै ॥ २ ॥ अब बृहस्पतिजीका वचनहै ॥ पुण्येति दर्शन करणे कर्के पापांके दूर करणे वाले जो पुण्य देवतांके स्थान और पवित्र जो नदीयां तिनांकों जन्मतें लेकर सठ्ठां६० वर्षांकी आयुतक न देखे सो पुरुष वडे नरककों भोगकर पीछे गधेके जन्मकों प्राप्त होताहै ॥ १ ॥

तस्येति तिसदोषके दूरकरणे वास्ते कृच्छ्र सांतपन व्रतकों करे पीछे पंचगव्यकों पीवे तो इस दोषतें रहित होताहै ॥ २ ॥ तिसके विधानकों देवल ऋषि कहताहै ॥ दिन दिन प्रति मांहकादाणा जिसविच छपजावे इतनें दुग्धकों वारां १२ दिनतक पीवे तां योगियांकोंभी दुर्लभ जो सिद्धि है तिसकों प्राप्त होताहै ॥ १ ॥ प्रजापतिका वचनहै ॥ पूर्वेति पूर्वकी न्यांई प्रातःकाल तें लेके स्नानकों कर्के और संकल्पकों कर्के नित्यकर्म जाणकर पूर्व कहा जो विभूत्यादिहै तिसका मनकर्के स्मरण करे ॥ १ ॥ और जिसकाल सूर्यका तेज मंदहोवे तिस समयविषे आदर करा भक्ति कर्के विष्णुके तांई नैवेद्यदे कर्के मांहकादाणा जिस विषे डूबे एतने मात्र दूधकोंव्रती

तस्यदोषोपशांत्यर्थंकृच्छ्रंसांतपनंचरेत् पंचगव्यंपिवेत्पश्चाद्दोषादस्मात्प्रमुच्यते ॥ २ ॥ तद्विधानमाहदेवलः ॥ प्रत्यहंमाषमग्नंचद्वादशाहंपयःपिबेत् शुद्धिमाप्नोतिराजेन्द्रयोगिनामपिदुर्लभाम् ॥ १ ॥ प्रजापतिः ॥ पूर्ववत्प्रातरारभ्यस्नानंसंकल्पमेवच नित्यंकर्मतयाकृत्वापूर्वोक्तंमनसास्मरन् ॥ १ ॥ विभूत्यादिकमित्यर्थः ॥ यावन्मंदायतेभानुस्तावद्योदुग्धमादरात् विष्णवेतन्निवेद्याथमाषमग्नंपिबेद्व्रती २ स्वपेद्देवसमीपेतुगंधतांबूलवर्जितः ततःप्रभातवेलायामेकंकृत्वामहद्व्रतम् ॥ ३ ॥ द्वादशाहोभिरेतैश्चशुद्धोभवतिपूर्वजः पंचगव्यंपिवेत्पश्चात्सांतपनंमुनिसंमतम् ॥ ४ ॥ अथसांतपनकृच्छ्रप्रत्याम्नायमाह देवलः ॥ प्रत्याम्नायंप्रवक्ष्यामिकृच्छ्रस्यैतस्यपापहम् सर्वपापोपशमनं सर्वकृच्छ्रफलप्रदम् ॥ १ ॥

पुरुष पीवे ॥ २ ॥ और देवताके समीप विषे शयन करे और सुगंधी और तांबूलका ग्रहण न करे तिस कारणतें प्रभात समय विषे वारां दिनां कर्के होंणेवाला जो वडा पवित्रव्रत तिस एकहि व्रतके करणे करके ब्राह्मण शुद्ध होताहै और पीछे पंचगव्यकों पीवे एह सांतपन व्रत मुनियां विषे संमतहै ॥ ४ ॥ इसतें अनंतर सांतपन कृच्छ्र व्रतके स्थान जो वदला तिसकों देवल ऋषि कहताहै ॥ इस कृच्छ्र व्रतके वदलेकों कहताहां कैसा वदला है पापके दूरकरणे वाला और सब पापांके नाश करणे वाला और संपूर्ण कृच्छ्र व्रतांके फल देणेवाला ॥ १ ॥

और फेर कैसाहै महापापांके नाश करणे वाला और धर्म कामअर्थको सिद्धि देणे वाला और एह कृच्छ्र सांतपनका प्रत्याम्नाय वडाहै तेजजिनांका असे जो व्यास तिनांने पूर्व कृष्ण देवकेतांई कहाहै ॥ ॥ २ ॥ ॥ जो पुरुष पर धनके चुराणे वाले और परस्त्री यां विषे प्रीति करणे वाले और जो मदिराके पीणे वाले और जो नहि भोगणे योग्य भगिनी आदि स्त्री तिनां विषे गमन करणे वाले ॥ ३ ॥ और जो पुरुष नास्तिक शास्त्र विषे प्रीति वाले और दुष्ट दानके ग्रहण करणे वाले और असत्यवाणी कहणे वाले और मित्रांका आपस विषे विरोध पाणेवाले ॥ ४ ॥ और दीपके बुझाणे वाले और शीशेके तोडन वाले अथवा व्यत्यय करण वाले क्या एकको उठायके दूसरे को वहांण वाले जो

महापापप्रशमनंधर्मकामार्थसिद्धिदं व्यासेनकथितंपूर्वंकृष्णायामिततेजसा २ परस्वहारिणोयेचपरदाररताश्चये मद्यपानरतायेच अगम्यागमनाश्चये ३ असच्छास्त्ररतायेचयेचदुष्टप्रतिग्रहाःमिथ्याभिभाषिणोयेचयेचमित्रविभेदिनः॥ ४ ॥ दीपनिर्वापिनोयेचयेचमंडलभेदकाः मंडलेतिआदर्शभंजकाः स्थानव्यत्ययकारकाश्चेत्यर्थः ॥ दिवाकपित्थछायासुरात्रौचलदलेषुच ॥ ५ ॥ तमालवृक्षछायासुरात्रौवायदिवादिवा गच्छतांपापनाशायप्रत्याम्नायोमहत्तरः ॥ ६ ॥ सदानिष्ठुरवक्तारःसदायाञ्चापरायणाः परान्ननिरतायेच नित्यकर्मविरोधिनः ७ एषांचैवंविशुद्धिःस्यात्प्रत्याम्नायःपरात्परः ॥ गौतमः ॥ सांतपनस्यैवकृच्छ्रस्यप्रत्याम्नायोमहत्तरः सर्वालंकारसंयुक्तोगवांदशमहान्नतइति॥ १ महान्नतअतिपुष्टोगोदशकगणः

पुरुष दिनविषे कपित्थ वृक्षकी छाया विषे और रात्रि विषे पिप्पलकी छाया विषे जाणेवाले ॥ ५ ॥ और रात्रि विषे अथवा दिन विषे तमाल वृक्षकी छाया विषे प्राप्त होणेवाले जो पुरुष तिनांके पाप दूर करणे वास्ते बहुतश्रेष्ट प्रत्याम्नाय कहाहै ॥ ६ ॥ और जो पुरुष सदा कठोर वाणीके कहण वालेहैं और सदा याचना विषे युक्तहै और जो सदा पराये अन्नके भक्षण करणे विषे युक्तहैं और जो नित्य कर्म जो संध्या वंदनादि तिनके त्यागको करतेहै इनांको इस प्रकार प्रत्याम्नाय करके शुद्धि होतीहै एह प्रत्याम्नाय श्रेष्टसेभी श्रेष्ट कहाहै ॥ ७ ॥ गौतम जीका वाक्यहै सांतपन कृच्छ्र व्रतका प्रत्याम्नाय श्रेष्ट कहाहै और अतिशय करके पुष्ट और संपूर्ण भूषणों करके युक्त संख्या करके दश १० गौवां ब्राह्मणांके तांई देवे इति ॥ १ ॥

अयेति इसतें अनंतर महासांतपनव्रतकों याज्ञवल्क्यऋषि कहताहै पृथगिति पंचगव्य और कुशा काजलएह जो छे६ द्रव्यहैं गोमूत्र और गोमय और दधि और दुग्ध और घृत और कुशोदक इनां कों क्रमकर्के छे६ दिनभक्षणकरे और अंतविषे उपवासव्रतकरे तां सतां७ दिनांकर्के महासांतपन कृच्छ्रव्रतकहाहै १ और यमजीने पंदरां १५ दिनांकर्के करणेयोग्य महासांतपनकहाहै सो दखाई दाहै त्र्यहमिति त्रय दिन गोमूत्र पीवे और त्रय दिन गोमयपीवे और त्रय दिनदधि पीवे और त्रय दिन दुग्ध पीवे और त्रय दिन घृत पीवे इहां कुशोदक नहीं कहा इस करणे कर्के शुद्ध होताहै

❀ अथमहासांतपनाख्यंव्रतमाहयाज्ञवल्क्यः पृथक्सांतपनंद्रव्यैःषडहःसोप वासकः सप्ताहेनतुकृच्छ्रोयंमहासांतपनःस्मृतः॥ १ ॥ द्रव्यैःपंचगव्यकुशो दकैःपृथक्प्रतिदिनंसेवितैः महासांतपनं भवति अस्यदिवसमर्यादांदर्शय तिसोपवासकःषडहइतिसप्ताहसाध्यइत्यर्थः ॥ १ ॥ यमेनतुपंचदशाहसा ध्योमहासांतपनोऽभिहितः ॥ त्र्यहंपिबेत्तुगोमूत्रंत्र्यहंवैगोमयंपिबेत् त्र्यहंद धित्र्यहंक्षीरंत्र्यहंसर्पिस्ततःशुचिः महासांतपनंह्येतत्सर्वपापप्रणाशनमिति जाबालिनतु एकविंशतिरात्रनिर्वर्त्यैमहासांतपनउक्तः षण्णामेकैकमेतेषां त्रिरात्रमुपयोजयेत् त्र्यहंचोपवसेदंत्यंमहासांतपनंविदुरिति ॥ १ ॥ यदातु षण्णांसांतपनद्रव्याणामेकैकस्यद्व्यहमुपयोगस्तदाऽतिसांतपनम् ॥

एह महासांतपन संपूर्ण पापांके नाशकरणे वालाहै इति १ जाबालऋषिनें इकीस २१ दिनकर्के महा सांतपन कहाहै छे ६ जो द्रव्यहैं गोमूत्रतें आदलेके तिनां विचों एक एक द्रव्यकों त्रय त्रय दिन भक्षण करे और अंत विषे त्रय दिन उपवास व्रत करे इसकों महासांतपन कहतेहैं इति ॥ १ ॥ जद फेर छे ६ जो महासांतपन विषे द्रव्य कहेहैं गोमूत्रते आदलेके कुशोदकतक तिनां विषे एक एक द्रव्यको दो दो दिन भक्षण करे तां अतिसांतपन व्रत होताहै ॥

जैसे धर्मराजजी कहते हैं यह जो गोमूत्रयों आदलेके पंचगव्यके द्रव्यहैं तिनां विषे एक एककों दो दो दिन पीवे तिस व्रतका नाम अतिसांतपन कहाहै पाप करके चांडालके तुल्य भी जो पुरुषहै तिसको भी शुद्ध करताहै ॥ १ ॥ अब देवलजीका वचन है महासांतपन नाम करके जो कृच्छ्र व्रत है सो संपूर्ण फलके देणे वालाहै इस विषे प्रसंगहै पूर्व आप इंद्र गौतमजीकी स्त्रीकों प्राप्त होता भया ॥ १ ॥ तिस महापापककें सो दोषकों प्राप्त होया होया वृक्षके मूल क्या मुंडपास वडी भावना करके स्थित होया अर्थात् वडी चिंता करके युक्त हूआ अथवा वृद्धभाव नाम वृद्धावस्थाका है पाप करके वुड्ढाहोगया एह अर्थ है ॥ २ ॥ तद वरके देणे वाले गरुडके ऊपर असवार होए होए भक्तांके प्यारे विष्णु इंद्रकों देखकर दया

यथाहयमः। एतान्येवयथापेयादेकैकंतुद्व्यहंद्व्यहं अतिसांतपनंनामश्वपाकमपिशोधयेदिति ॥ १ ॥ देवलः । महासांतपनंनामकृच्छ्रंसर्वफलप्रदं पुरापुरंदरःसाक्षाद्गौतमस्यसतींव्रजन् ॥ १ ॥ तेनपापेनमहतासपापफलदूषितः वृक्षमूलमुपागम्यवृद्धभावमुपाश्रितः ॥ २ ॥ तदाप्रसन्नोवरदश्चक्रपाणिःसवाहनः दृष्ट्वापुरंदरंप्राहदययाभक्तवत्सलः ॥ ३ ॥ एतत्पापविशुद्ध्यर्थंमहासांतपनंचर गुरुदाराभिगामीचचंडालीगमनंचरन् ॥ ४ ॥ स्वसारंतुसमागम्यभगिनींयःप्रधर्षयन् ॥ ४ ॥ स्वसृभगिन्योस्स्वोदरभिन्नोदरत्वेनभेदइत्यर्थःप्रधर्षयन्निति कामुकत्वेनवलादभिगच्छन्नित्यर्थः । चरेद्वारजकीगामी ग्रामचंडालदारगः ॥ विप्रश्चांडालदारेषुचरेत्तास्मिन्द्विजाधमः ॥ ५ ॥

करके कहते भये ॥ ३ ॥ हे इंद्र इस पापकी शुद्धि वास्ते महा सांतपन व्रतकों तूंकर जो पुरुष गुरांकी स्त्रीके साथ गमन कर्ताहै और चांडाली साथ गमन कर्ताहै ॥ ४ ॥ और भगिनीके साथ गमन कर्ताहै और अपणी दूसरी माताकी कन्याके साथ गमन कर्ताहै (प्रधर्षयन्) इसका अर्थ एह है कि कामनातें वलकरके जो भोगताहै ॥ वा छींवेकी स्त्रीके साथ गमन करे और ग्राम विषे रहणे वाला जो चंडाल तिसकी स्त्रीके साथ जो गमन करताहै और ब्राह्मण होकर चंडालकी स्त्री विषे जो गमन कर्ताहै असा पापी भी तिस महा सांतपन व्रत करके शुद्ध होताहै ॥ ५ ॥

श्रोर इनां पापांको शुद्धि करणे वाला महासांतपन व्रतहि है हेराम एह देवलजी का वचन है और असत्यवाणी कहणे विषे जो पाप है और पापी पुरुषके साथ बोलणे विषे जो पाप है ॥ ६ ॥ और किसे पुरुष कर्के दित्ती होई कोई वस्तु तिसके खोलयणे विषे जो पाप और आप ही देणी आपही लय लेणी तिस विषे और जो रुधिरके पीण वाला है रुधिरपान इसजगा मंत्रसाधनादिविषे जानणा और जो सदा औषधोंके करणे वाला है अर्थात् द्रव्यके लोभकर्के नीरोगकोंभी औषधिकर्के रोग बाला कर देताहै ॥ ७ ॥ और सदाहि प्रातःकालविषे और संध्याकालविषे और तैसे देवताके पूजने विषे जो पाखंडहि कर्ताहै असेहि जो व्रात्यहै और तुलादानकों लेके जिसने प्रायश्चित्त नहि कीता ॥ ८ ॥ असे को कर्म काल विषे स्मरण न करे और नादेखे पतितजाण कर्के अथवा और

तस्मिन्सांतपनेचरेत्प्रवर्त्ततइत्यर्थः एतेषांनिष्कृतीराममहासांतपनंपरम् असत्यभाषणेपापमसत्यानांचभाषणे ॥ ६ ॥ परदत्तापहारेचस्वदत्तापहरेतथा ॥ असृक्पानरतेचैवसदाभैषज्यवर्त्तिनि ॥ ७ ॥ प्रातःकाले सांध्यकालेतथादेवार्चनेयदि पाखंडयतितंव्रात्यंतुलास्वकृतनिष्कृतिम् ॥ ८॥ नस्मरेत्कर्मकालेषुनपश्येद्दैकदाचन एतेषांपापराशीनांमहासातपनंपरम् ॥ ९ ॥ तुलास्वकृतनिष्कृतिम् तुलादानंगृहीत्वाऽकृतप्रायाश्चित्तमित्यर्थः । गालवः ॥ द्विदिनंसमुपोष्यैवद्विदिनंपूर्ववत्पयः पूर्ववन्नियमंकृत्वा द्वादशाहेनशुद्ध्यति ॥ १ ॥ पराशरः । माषमग्नंपिबेत्क्षीरंद्विदिनंसमुपोषयेत् एवंकुर्याद्द्वादशाहंपूर्ववन्नियमाश्रितः ॥ १ ॥

शुभ कर्मके करणे योग्यकाल विषे विष्णुकों जो नहि स्मरण करदा और कदेभी देव मूर्त्तिकों नहि देखता असे जो महापापी हैं तिनां पापांके समूहकों दूरकरणे वाला महासांतपन व्रतहि कहाहै । ९ ॥ अब गालवऋषिका वचनहै द्वीति दो २ दिन उपवास व्रत करे और दो २ दिन दुग्धपीवे पूर्ववत् क्या गोमूत्र और गोमय और दुग्ध और दधि और घृत इनांकों दोदोदिन पीवे पीछेकी न्याई नियमकरे इस प्रकार बारां १२ दिनांके व्रत कर्के शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ अब पराशर जीका वचनहै माषेति मांहका दाणा जिस विषे छपे असे दुग्धकों दो २ दिन पीवे पूर्वकी न्यांई गोमूत्र आदिक पीकर दोदिनउपवासव्रत करे सो पूर्वकी न्यांई नियमकों आश्रयकर्त्ता होया बारां १२ दिनांके व्रतकों करे ॥ १ ॥

अब मनुजीका वचनहै पूर्वेति पूर्वकी न्यांई प्रातः कालतें लेकेस्नान आदि नियमकों करे और सो द्विज जद सूर्यकीयां किरणां मंदतेजवालीयां होण तिसकाल विषे नियमकों त्यागता हुया ॥ १ ॥ दो २ दो दिनकें क्रमकर्के गोमूत्र आदिकों पींदा होया माषमग्न दुग्धकों विष्णुके तांई नैवेद्य लाकर्के दोदिन पीवे और दो दिन उपवास व्रत करे ॥ २ ॥ और देवताके समीप विषे शयन करे इस प्रकार वारां १२ दिनांके व्रत कर्के शुद्धिकों प्राप्त होताहै दो दिन है उपवास जिस विषे और दो दिन है दुग्ध पान जिस विषे ऐसा महासांतपन व्रत है ॥ ३ ॥ इसतें उपरंत महासांतपन कृच्छ्रव्रतके प्रत्याम्नायकों देवलऋषि कहताहै महासांतपन कृच्छ्रके प्र

मनुः ॥ पूर्ववत्प्रातरारभ्यद्विजोनियमपूर्वकम् यदामंदायतेभानुस्तदानियममुत्सृजन् ॥ १ ॥ माषमग्नंपिबेत्क्षीरंविष्णवेतुनिवेदितम् दिनद्वयंपयःपीत्वाद्विदिनंसमुपोषयेत् ॥ २ ॥ स्वपेच्चपूर्ववद्देवसमीपेव्रतमाचरन् एवंद्वादशरात्रंचकृत्वाशुद्धिमवाप्नुयात् ॥ ३ ॥ दिनद्वयमुपोषणंदिनद्वयंपयोभक्षः एवंक्रमेण द्वादशाहसाध्यंमहासांतपनम् ॥ अथ महासांतपनकृच्छ्रप्रत्याम्नायमाहदेवलः । महासांतपनकृच्छ्रस्यप्रत्याम्नायंशृणुष्वमे यदाचरणमात्रेणविप्रःपापात्प्रमुच्यते ॥ १ ॥ महाराजविजये । महासांतपनस्यास्यप्रत्याम्नायोमहानयम् कृच्छ्रस्यैतस्यविहितंकर्तुंसर्वमशक्तिमान् ॥ १ ॥ मानवोऽयंप्रकुर्वीत सर्वकृच्छ्रफलाप्तये गावोदेयाःप्रयत्नेन विप्रेभ्यःषोडशामलाः ॥ २ ॥ अलंकृताःसुपुष्पाद्यैर्वस्त्राभरणभूषिताः सुशीलाश्चपयास्विन्यःसवत्साःपापहारिणीः ॥ ३ ॥

त्याम्नायकों मेरेथों श्रवणकर जिसके करणेनेंहि ब्राह्मणपापतें रहित होताहै ॥ १ ॥ महाराज विजय ग्रंथ विषे कहाहै महासांतपनका प्रत्याम्नाय एह महाफलके देणे वालाहै इस कृच्छ्रके करणे विषे सामर्थ्यतें रहित जो पुरुष है सो संपूर्ण कृच्छ्र व्रतके फलकी प्राप्ति वास्ते सोलां १६ गांवां यत्नकर्के ब्राह्मणांकेतांई देवे ॥ २ ॥ कैसीयां गौआं जो पुष्पांकर्के और वस्त्रांकर्के और भूषणां कर्के युक्त हैं और सुशीलाहैं और सहित बच्छयांके हैं और दुग्ध देणे वालीयां हैं और पापांके नाश करणे वालीयांहैं ॥ ३ ॥

पराशरजीका वचन है मोति बुद्धिमान् जो ऋषि हैं सो महासांतपन व्रतके स्थान तुल्य फलके देणे वाले प्रत्याम्नायकों कहतेहैं सोलां १६ गौयां वस्त्रां कर्के और भूषणां कर्के युक्त दुग्धदेणे वालीयां सहित वछयांके साधु स्वभाववालीयां उत्कृष्ट सुखकी प्राप्ति वास्ते ब्राह्मणांके तांई देवे एह प्रत्याम्नाय तुल्य फलके देणे वाला कहाहै ॥ २ ॥ इसतें उपरंत अतिकृच्छ्रव्रतकों मनुजी कहतेहैं एकैकमिति एक एक ग्रासकों पूर्वकान्यांई त्र्यहानि त्रीणि क्या नौ ९ दिन खावे और अंत्य विषे त्रय दिन उपवास करे ऐसे द्विज अतिकृच्छ्र व्रतकों करे ॥ १ ॥ अब देवलजीका वचनहै अतीति अतिकृच्छ्रव्रतकों कहताहां कैसा व्रतहै संपूर्णपापांके दूरकरणे

पराशरः । महासांतपनस्यास्यप्रत्याम्नायंविदुर्बुधाः गावःषोडशविप्रेभ्यो देयाः सम्यक् सुखाप्तये ॥ १ ॥ अलंकृताश्चवस्त्राद्यैः पयस्विन्यः पृथक्पृथक् ॥ सवत्साःसाधुशीलिन्यः प्रत्याम्नायउदीरितः ॥ २ ॥ अथातिकृच्छ्रमाह मनुः ॥ एकैकंग्रासमश्नीयात्त्र्यहाणित्रीणिपूर्ववत् ॥ त्र्यहंचोपवसेदंत्यमतिकृच्छ्रंचरन्द्विजः ॥ १ ॥ देवलः ॥ अतिकृच्छ्रंप्रवक्ष्यामि सर्वपापोपशांतिदम् सर्वकृच्छ्रप्रदंन्दृणांशृणुराजन्प्रयत्नतः ॥ १ ॥ अतिकृच्छ्रस्यमाहात्म्यंवर्णितुंकेनशक्यते पुराहिकौशिकोनामऋषिर्धर्मपरायणः २ ॥ वसिष्ठात्मजघातीस्यात्तस्मात्कारणतःप्रभो तेषांहत्याविनाशार्थंकृच्छ्रमाहप्रजापतिः ॥ ३ ब्रह्महत्यागुरोर्हत्याभ्रूणहत्यामहत्तरा कन्याहत्याशिशोर्हत्यातथातेषांमहत्यपि ॥ ४ ॥ वीरहत्याधेनुहत्यागजाश्वमहिषीवधः ॥

वाला और पुरुषांकों संपूर्ण कृच्छ्र फलकेदेणे वालाहै हेराजन् इसकों यत्नतें श्रवणकर ॥ १ ॥ अतिकृच्छ्रमाहात्म्यके कहणेकों कौण समर्थ होताहै इस विषे प्रसंगहै पूर्व धर्मात्मा विश्वामित्र नाम ऋषि वशिष्ठके पुत्रांकों मारताभया तिस कारणतें हेप्रभो तिनां बालकांकी हत्याके दूरकरणे वास्ते तिनकों प्रजापति ब्रह्मा अतिकृच्छ्र व्रत कहता भया ३॥ ब्रह्महत्याका पाप और गुरांकी हत्या और गर्भकी हत्या जो वडीहै और कन्याकी हत्या और बालककी हत्या तिनांकी जो वडी हत्या ॥ ४ ॥ और वीरकी हत्या क्या शूरमेंकी हत्या और प्रसूत होई होई गौकी हत्या और हाथी और घोडा और महिषी इनांका मारणा ॥

घास और काष्ठ और वृक्षांकाकटणा और खेती और बाग इनांकाकटणा ५ और तला कूआ और जलके स्थान तिनांका और वेदशालाका नाशकरणा और गृहकादाहकरणा और ब्राह्मणके क्षेत्रविषे किसे शूकरादिको मारणा ऐसा जो पाप तिसको वधाणा ६ और अन्नकेस्थानांका दाहकरणा और महिषी और गौ इनांका दाहकरणा और शृंगकाभन्नणा और पुच्छका कटणा तैसे तिनांको विमर्दन तैया खस्सीकरणा ७ और तोता और विर्वीया और सर्प और मच्छ और हंस और कुत्ता और कुकुड और काक तिनांका मारणा और वनके मृगांका मारणा ८ और गृहके दरवाजेको भन्नणा और पात्थरांका भन्नणा और वनके पत्रांका साडना जो गिल्ले पत्रहैं हेराजन्

तृणकाष्ठद्रुमच्छेदःसस्यारामादिछेदनम् ॥ ५ ॥ तटाककूपकासारभेद नंवेदवेश्मनाम् गृहदाहोद्विजक्षेत्रेमारणंपापवर्द्धनम् ॥ ६ ॥ धान्यारामा दिदहनंदाहनंमहिषीगवाम् शृंगलांगूलविच्छेदस्तथातेषांविमर्दनम्॥ ७ शुकचाषभुजंगानांमीनहंसशुनामपि कुक्कुटानांचकाकानांहिंसनंमृगमार णम् ८॥ दारुच्छेदः कपाटस्यपाषाणानांविभेदनम् दाहनंवनपर्णानामार्द्रा णामिहभूमिप ॥ ९ ॥ सर्वासामेवहिंसानामतिकृच्छ्रंविशोधनं सर्वकृच्छ्रप्र दंचैवसर्वोपद्रवनाशनम् ॥ १० ॥ गालवः ॥ अतिकृच्छ्रस्यमहतःप्रकार मिहचोच्यते व्रतमात्रेयवान् शुभ्रान्श्यामाकांस्तंडुलानपि १ एकद्रव्यंस मादायव्रतादौपूर्ववच्चरेत् भागत्रयंतदाकृत्वातंडुलान्पूर्वमानतः ॥ २ ॥

॥ ९ ॥ संपूर्ण हिंसाके जो पापहैं तिनांतें शुद्धिके देणें वाला अतिकृच्छ्र व्रत कहाहै और एही संपूर्णकृच्छ्र व्रतांके फलको देणेवाला और संपूर्ण उपद्रवांके नाश करण वाला है ॥ १० ॥ अब गालव ऋषिका वचनहै ॥ अतीति अतिकृच्छ्र जो बडाव्रत तिसका प्रकार इहां कहाहै व्रत मात्रविषें कहे जो यव सो श्वेत जानणे अथवा श्यामाकी क्या सांक अन्नविशेषहै तंडुलसो प्रसिद्ध हैं १ इनां विषेंएकद्रव्यको ग्रहण करें व्रतकें आद विषे पूर्व की न्यांई स्नान संध्यादि और ब्रह्म चर्य्य करे और पीछे कथन कीया जो प्रमाण तिसी प्रमाण करकें तंडुलादिकों ग्रहण करे और तिसकेतीन ३ भाग करे ॥ २ ॥

एक भागकों व्रतके आद विषें और दूसरे भागकों व्रतके मध्य दिनां विषें और तीसरे भागको व्रतके अंत विषें ग्रहण करे आद मध्य अंत विषें त्रय त्रय दिन जानणे तां प्रथम भाग के तीन ग्रास करेतां आदके तीन३ दिन एक एक ग्रास भक्षण करे पूर्वरीतिसे और स्नान आदि व्रतके नियमपूर्वकी न्याईं करे ॥ ३ ॥ और संपूर्ण दिनांके चतुर्थ कालविषें हस्तपादोंको शुद्धकर्के अंगांकों जलसे स्पर्शकेर और नारायण विषे मनको लगाकर देवताके समीप शयन करें ॥ ४ ॥ और प्रातः कालविषे पूर्वकी न्याईं निर्मलहोंकर संध्यादिकर्म करे इसीतरां तीन ३ दिनांकेपीछे त्रय दिन निराहार रहे ॥ ५ ॥ जैसे छे ६ दिन व्रतका आद कहाहै इसीतरां छे६ दिन मध्यके और छे दिन व्रतके अंतके तां अठारां १८ दिन व्रतके सिद्ध होये ६ और व्रतके अंतविषें एक गौब्राह्म

व्रतादौमध्यदिवसेव्रतान्तेचदिनत्रयम् व्रतादौभक्षयेद्ग्रासंपूर्ववद्व्रतमाचरे त्३ ॥ चतुर्थकालआयातिप्रक्षाल्यांगानिपूर्ववत् स्वपेद्देवसमीपेतुनारायणप रायणः ४ ॥ ततःप्रभातेविमलःसंध्यादीन्पूर्ववच्चरेत् निराहारस्तथाभूत्वा यावत्प्राप्तंदिनत्रयम् ॥ ५ ॥ तत्रैवभक्षयेद्ग्रासंद्वितीयार्द्धेविचक्षणः तत्रा पिपर्ववत्कृत्वाद्वादशेदिवसेशुभम् ॥ ६ ॥ तृतीयेत्थंतथाभुक्त्वागौरिकाविप्र सात्कृता ब्रह्मकूर्चंततःपश्चात्शुद्धिमाप्नोतिपूर्वजः ॥ ७ ॥ अतिकृच्छ्रमि दंसम्यमुक्तंमुनिभिरादरात् एतस्याचरणेनैवसर्वदोषात्प्रमुच्यते ॥ ८ ॥ अत्रा यमभिप्रायः ॥ पूर्वमानत एकैकंग्रासमश्णीयादित्युक्तमानतोभागत्रयम् ५टक्त्रयंकुर्यात् ततश्चाष्टादशदिनसाध्यताजाता

णके तांईं दवे इसको मूलकार फेर प्रकट कर कहतेहैं टीकाकारने इहांईं स्पष्टकह दियाहै और पीछे ब्रह्म कूर्च करे तां ब्राह्मण शुद्धिकों प्राप्त होताहै ॥ ७ ॥ एह अतिकृच्छ्र संपूर्ण मुनियांनें आदरतें कहाहै इसके करणेतें पुरुष संपूर्ण दोषांतें रहित होताहै ॥ ८ ॥ इस विषें एह अभि प्राय है पूर्वप्रमाणतें (एक एक ग्रासकों भक्षण करे त्रय दिन तक और चौथे दिन उपवास करें इस रीतिसे तीन आवृत्ति करणे कर्के १२ दिन साध्यता व्रतकोंहोईथी और इस विषे ग्रासका मानआमलके बराबरहै एह पीछे किहाहै ॥ इस उक्त मानतें जो भागत्रयहै चार दिनां कर्के सो छे दिनके करें तां इसका नियम अठारां दिनांकर्के सिद्ध होया ॥

तिसका प्रकार बतादो इत्यादि करके कहाहै पूर्व त्रय३ दिनां विषे त्रय ग्रास भक्षण करे । और त्रय दिन उपवास करे फेर । ऐसेहि त्रय दिनां विषे त्रय ग्रास भक्षण करे और त्रय दिन उपवास करे ऐसे समाप्ति तक करे इस विषे अतिकष्ट हैंएंते महा अतिकृच्छ्र नाम इसका है और अगले श्लोकसे जाणीदाहै कि सर्वाति कृच्छ्र भी इसकानाम होवेगा द्वितीया दूसरे छक्केविषे तृतीये क्या तीसरेछके विषे तृतीयेत्थ इस विषेसंधि आर्षहै क्या ऋषिके मुखसे इस बचनका उद्गम है सो सर्वज्ञ थे इसकर्के एह निर्दोषहै जो याज्ञवल्क्यजीका वचनहै एहहि प्राजापत्य कृच्छ्र एक भक्त क्या दूसरे पहर विषे २२ ग्रास भक्षण करणे और दूसरे दिन नक्तव्रत विषे १२ वारां ग्रास भक्षण करणे और तीसरे दिन अयाचित दिनकें २४ ग्रास

तत्प्रकारोव्रतादावित्यादिना पूर्वं त्रिदिनं ग्रासत्रयंभुक्त्वा त्रिदिनमुपवासः पुनरेवंयावत्समाप्तीत्यतिकष्टदायित्वान्महातिकृच्छ्रसंज्ञा । द्वितीयाद्वेद्वितीयषट्के तृतीयेतृतीयपट्केइत्यर्थः ॥ तृतीयेत्थमित्यत्रसंधिरार्षः ॥ यत्तु याज्ञवल्क्यः अयमेवातिकृच्छ्रः स्यात्पाणिपूरान्नभोजनइति अयमेवप्राजापत्यकृच्छ्रएकभक्तनक्तायाचितदिवसेषु पाणिपूरान्नभोजनयुक्तोऽतिकृच्छ्रइत्यर्थः तदेतदशक्तविषयम् पाणिपूरान्नस्यग्रासान्नापेक्षयाधिकत्वात् ॥

❀ अथातिकृच्छ्रप्रत्याम्नायमाहदेवलः अतिकृच्छ्रस्यसर्वस्यप्रत्याम्नायोमनीषिभिः प्रोक्तःसर्वहितार्थायसर्वपापप्रणाशनः ॥ १ ॥ संकलीकरणानां चकन्याधेन्वादिविक्रये तिलतंडुलधान्यानांफलानांरसविक्रये महापातकभीतानांशोधनंपापनाशनम् ॥ २ ॥

भक्षण करणे इनांकी जगा एक हत्थका प्रसृति परिमाण अन्न जो भक्षण करणाहै अतिकृच्छ्र व्रत कहाहै एह असमर्थ विषे जानणा क्योंकि पाणिपूरान्न भोजनकों ग्रासतें अधिकहोणतें

❀ इसतें अनंतर अतिकृच्छ्रके प्रत्याम्नायकों देवलऋषि कहताहै अतिकृच्छ्र संपूर्ण व्रतका प्रत्याम्नाय बुद्धिमानानें कहाहै संपूर्ण पुरुषांकेहितवास्ते जो बदला संपूर्ण पापांके नाशकरणे वालाहै ॥ १ ॥ संकली करणपाप और कन्या धेनुआदिकें वेचणेविषे जो पाप और तिल और चावल और अन्न और फल और रस इनांके वेचणे विषे जो पाप हैं तिनां पापांके नाशकरणे वालाहै और महापापतें जो भयकर्के युक्त हैं तिनांके भयकों दूर करणे वालाहै ॥ २ ॥

अब मार्कंडेयजीकावचनहै हेराजन् तूं श्रवणकर इस प्रत्याम्नायकों मैं कहताहां जिसप्रत्याम्नायके करणे कर्के अतिकृच्छ्र व्रतके फलकों पुरुष प्राप्त होताहै ॥ १ ॥ वस्त्रांकर्के अलंकृत दश १० गौयां ब्राह्मणांकेतांई भिन्न भिन्नकर्के देणेयोग्यहैं कैसीं गौयांहैं जों सुशील स्वभाव वालीयां और दुग्ध देणेवालीयां ॥ २ ॥ अब इसतें अनंतर मनुजीका वचनहै अतिकृच्छ्रव्रतजोहै तिसके बदलेकों मेरेतें श्रवणकर ब्राह्मणांकेतांई दश १० गौयां देणेयोग्यहैं सहित वछयांके पूर्वकी न्यांई पूजा प्राप्त होयीं होयीं ॥ १ ॥ सुवर्ण शृंगां कर्के युक्त और भली प्रकार शोभाकर्के युक्त तिसविषें भी आपशुद्ध होकर्के भिन्न भिन्न देणे योग्यहैं वेदांके जानणे वालयांने ऐसे कही जो विधिहै तिस कर्के अतिकृच्छ्र व्रतके फल नूं प्राप्त होताहे ॥ २ ॥ ❀ अब इसतें उपरंत कृच्छ्रातिकृच्छ्र व्रत नूं याज्ञवल्क्य ऋषि कहताहै कृच्छ्रेति दुग्ध कर्के इकी २१ दिनका जो व्रत है तिसकों कृच्छ्रातिकृच्छ्र कहतेहैं गौतम ऋषिने कहाहै कि जल कर्के बारां दिन वर्त्तन करणा अर्थात् जल पान विना होर कुछ नाहैं भक्षण करणा सो कृच्छ्रातिकृच्छ्र कहाहै इसकारणतें समर्थ और असमर्थ पुरुषकों देखकर तिनां इकीस दिन २१ और बारां दिन २१ के व्रतांकी व्यवस्था जानणी ॥ ❀ इसतें अनंतर तप्तकृच्छ्र व्रतनूं मनुजी कहतेहैं तप्तेति त्रयदिन गरम जल पान करे त्रयदिन गरम दुग्ध पान करे और त्रयदिन गरम घृतपान करे और त्रय दिन गरम वायु कया हवा लेवे ऐसे एक काल स्नान को कर्के और निश्चलमन कर्के तप्तकृच्छ्र व्रतके करणेतें शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ एभी १२ दिनकर्के सिसाध्यहै

मार्कंडेयः ॥ प्रत्याम्नायामिमंराजन्वक्ष्यामिशृणुपार्थिव यदाचरणमात्रेण अतिकृच्छ्रफलंलभेत् ॥ १ ॥ दशगावःप्रदातव्यावस्त्राद्यैःसमलंकृताः ॥ साधुवृत्ताःपयस्विन्योविप्रेभ्यश्च पृथक्पृथक् ॥ २ ॥ मनुः। अतिकृच्छ्रस्यमहतः प्रत्याम्नायंशृणुष्वमे विप्रेभ्योदशगावत्साः पूर्ववत्पूजिताअमूःवत्सावत्सवत्यइत्यर्थः ॥ १ ॥ स्वर्णशृंगादिभिःसम्यग्भूषयित्वापृथक्पृथक् शुचिभिस्तुप्रदातव्याविप्रेभ्योवेदवित्तमैः इत्थमुक्तेनमार्गेणकृत्वाकृच्छ्रफलंलभेत् ॥ २ ॥ ❀ अथकृच्छ्रातिकृच्छ्रव्रतमाहयाज्ञवल्क्यः ॥ कृच्छ्रातिकृच्छ्रःपयसा दिवसानेकविंशतिम् गौतमेनतु द्वादशाहमुदकेनवर्त्तनं कृच्छ्रातिकृच्छ्र इत्युक्तम्अतश्चशक्त्यपेक्षया तयोर्व्यवस्था।तयोरेकविंशत्यहद्वादशाहयोः ❀ ॥ अथ तप्तकृच्छ्रमाह मनुः ॥ तप्तकृच्छ्रंचरन्विप्रोजलक्षीरघृतानिलान् प्रतित्र्यहंपिबेदुष्णान्सकृत्स्नायीसमाहितः ॥ १ ॥ अयमपिद्वादशदिनसाध्यः

अब याज्ञवल्क्य जी का वचन है तप्तेति तप्तदुग्ध और तप्तघृत और तप्तजल इनांकों क्रम कर्के एक एक दिन पानकरे और एक दिन उपवास व्रत करे तां तप्त कृच्छ्र व्रत कहाहै १ एइहि व्रत चार दिनका चार गुणां होवे क्या दुग्ध और घृत और लज और उपवास इनांकों क्रम कर्के चार चार दिन पानकरे तां महातप्त कृच्छ्र व्रत सोलां १६ दिनांका होताहै ॥ एभिरिति इनां तप्तक्षीर आदि संपूर्णका एक दिन पान करे और एक दिन उपवास करे ऐसे दो २ रात्रां कर्के सांतपनकी न्यांई तप्तकृच्छ्र भी द्विरात्रनाम व्रत होताहै ॥ मनुजीने तप्तकृच्छ्रं चरन्नित्यादि कर्के पूर्व कहा जो श्लोक तिसकर्के बारां दिनांका व्रत हुंदाहै

याज्ञवल्क्यः तप्तक्षीरघृतांबूनामेकैकंप्रत्यहंपिबेत् एकरात्रोपवासश्चतप्तकृच्छ्रउदाहृतः॥ १ ॥ एषएवप्रत्येकंदिवसचतुष्टयसंपाद्योमहातप्तकृच्छ्रः तथाचायंषोडशादिनसाध्य एभिरेवसमस्तैः सोपवासैर्द्विरात्रसंपाद्यःसांतपनवत्तप्तकृच्छ्रः मनुनातु पूर्वोक्तश्लोकेनद्वादशाहनिर्वर्त्योभिहितः।क्षीरादिपरिमाणंतु पराशरेणोक्तम्। अपांपिबेत्तुत्रिपलंद्विपलंतुपयःपिबेत् पलमेकंपिबेत्सर्पिस्त्रिरात्रंचोष्णमारुतमिति॥ १ ॥ त्रिरात्रंचोष्णमारुतमिति त्रिरात्रस्यपूर्णउष्णोदकवाष्पंपिबेदित्यर्थः॥ प्रकारांतरेण तप्तकृच्छ्रस्वरूपं पुनराह पराशरः ॥षट्पलंतुपिबेदंभस्त्रिपलंतुपयःपिबेत् पलमेकंपिबेत्सर्पिस्तप्तकृच्छ्रोविधीयतइति। १ ।अत्र जलादिकमुष्णमेवग्राह्यम्। यदातु शीतंक्षीरादिकंपीयते तदा शीतकृच्छ्रः

तिसविषें दुग्धादिकांका परिमाण पराशरने कहाहै त्रय ३ छटांक जलपीवे और दो छटांक दुग्ध पीवे और एक छटांक घृत पीवे और त्रय रात्रीके अंत विषें गरम जलकी हवाडको भक्षण करे ॥ १ ॥ अब होरी प्रकार कर्के तप्तकृच्छ्र व्रतके स्वरूपकों फेर पराशरजी कहतेहैं छे ६ पल परिमाण गरम जल पीवे और त्रय पलकेपरिमाण गरम दुग्ध पीवे और एक पल परिमाण गरम घृत पीवे तिसका नाम तप्त कृच्छ्र कहाहै इहां पल कर्के छटांक लैणी इसमे जलादिक सभगर्मंहि ग्रहण करणे ॥ १ ॥ पूर्वोक्त और जद जल आदिक. शीत वस्तु शीत क्या ठंडीयां होण और तिनांकों पीवे तां तिसका नाम शीत कृच्छ्र कहाहै

सो दिखाई दाहै त्र्यह मिति त्रय ३ दिन शीत जल पीवे और त्रय दिन शीतल दुग्ध पीवे और त्रयदिन शीतलघृतपीवे और त्रयदिन वायु भक्षण करे इस कहणेंनें २ अब देवलऋषिका वचनहै त्रय दिन तक गर्म कीताजो जल तिस विषें वायुको हवाड लये और त्रयदिन तक गरम जल और त्रयदिन गरम घृत इनांकों पीणेकर्के ब्राह्मण शुद्धिकोंप्राप्त होताहै इसके मतमे नौ दिनका एह व्रतहै १ अब इसीविषे मार्कंडेयजीका वचनहै त्रयदिन वायुगरम और त्रयदिन दुग्ध गरम और त्रयदिन घृत गरम तिनांके पीणे कर्केहि ब्रह्महत्याराभी शुद्धि को प्राप्त होताहै द्विजर्षभ कया ब्राह्मणां विषे श्रेष्ट होताहै ॥ १ ॥ अब इसी विषे गौतमजीका ब

त्र्यहंशीतंपिवेत्तोयंत्र्यहंशीतंपयःपिवेत् ॥ त्र्यहंशीतंघृतंपीत्वावायुभक्ष्यः परंत्र्यहमितिस्मरणात् ॥ २ ॥ देवलः ॥वायूष्णंत्रिदिनंविप्रःपयउष्णंदिनत्रयम् त्रिदिनंघृतमुष्णंचपीत्वाशुद्धिमवाप्नुयात् ॥ १ ॥ मार्कंडेयः ॥ वायुमुष्णंपयस्तप्तंघृतमुष्णंदिनत्रयम् पीत्वाशुद्धिमवाप्नोतिब्रह्महापिद्विजर्षभः १ गौतमः । उष्णंपयःपयस्तप्तमुष्णंघृतमनंतरम् चतुर्णामपिपापानांपावनंमुनिभिःस्मृतम् । १। अत्रचतुःसंख्यास्थापनार्थमनंतरंत्र्यहमुष्णवायुपानं वोध्यम् ॥ आपस्तम्वः ॥ त्र्यहमुष्णंपिवेद्वारित्र्यहमुष्णंपिवेत्पयः त्र्यहमुष्णंपिवेत्सर्पिर्वायुभक्ष्योदिनत्रयम् ॥ १ ॥ ग्रंथांतरे त्र्यहमुष्णंपिवेद्वारि त्र्यहमुष्णंपिवेत्पयः त्र्यहमुष्णंपिवेत्सर्पिर्वायुभक्ष्योदिनत्रयम् ॥ १ ॥

चनहै गरम जल और गरम दुग्ध और गरम घृत और अनंतर कर्के गरम वायु जानणा इसप्रकार चारोंको ४ त्रयत्रय दिन पीवे तां संपूर्ण पापांके दूरकरणेवाला मुनियांने एहव्रत कहाहै १ ॥ अब इसी विषे आपस्तंव ऋषिका वचनहै त्रयदिन गरम जल पीवे और त्रय दिन गरम दुग्ध पीवे और त्रय दिन गर्मघृत पीये और त्रयदिनगर्म पवनंकाआहारकरे तां तप्तकृच्छ्रव्रत कहाहै एहवारांदिनकर्केसाध्यजानणा । १ । होरी ग्रंथविषे ऐसा कहाहै त्रय दिन गरम जल और त्रय दिन गरम दुग्ध और त्रय दिन गरम घृतपीवे और त्रयदिन गरम वायु पान करे ॥ १ ॥

और वायुका भक्षण गरम रात्रि विषे करे और जेकर शीतल वायु पान करे तां दिन विषे करे और एह त्राय दिन वायुभक्षणभी बारांदिनांके पूर्णकरणे वास्ते कहाहै इसमे अभिप्राय कहतेहैं त्रेति ॥ जिस जिस स्थान विषे मुनियांने कृच्छ्र व्रत कहाहै तिस तिस श्लोक विषे बारां दिनांका जानणे योग्यहै.॥ सो बृहस्पतिजी कहतेहैं हेद्विजर्षभ मुनियांने जो शास्त्रां विषे कृच्छ्रव्रत कहाहै सो बारां दिनांकर्केहि साध्य है और देहकीशुद्धिके देणे वालाहै ॥ १ ॥ और जिस विषे अब्द क्या वर्षदिनका कृच्छ्रव्रतांविषे कहाहै सो वर्षविषे बारां बारां दिनांके हिसाबसें तीस ३० व्रत जानणे सोबृहस्पतिजी कहतेहैं प्रेति प्राजापत्य जोकृच्छ्रव्रत कहेहैं तिनांविषे बुद्धिमानोंने जोवर्ष देनकहाहै तिसकी गिणती करके तीस ३० व्रत जानणे १ एह प्राजापत्य कृच्छ्रकाहि लक्षणहै हारी

वायुभक्षणंतुउष्णमनक्तंवा द्वादशदिनपरिपूर्त्यर्थंकर्तव्यम् ॥ यत्रयत्रकृच्छ्रं मुनिभिरुपदिष्टंतत्रतत्रद्वादशदिनकंवेदितव्यम् तदाह बृहस्पतिः मुनिभिःकृच्छ्रमित्युक्तंशास्त्रेषुचद्विजर्षभ तत्कृच्छ्रं द्वादशाहोभिः साध्यं देहविशुद्धिदम् १ यत्राब्दमित्युक्तंकृच्छ्रेषुतत्त्रिंशत्संख्याकंतदेवाह प्राजापत्येषुकृच्छ्रेषुअब्दमित्युच्यतेबुधैः त्रिंशत्संख्यांविजानीयात्प्राजापत्यस्यलक्षणम् १ प्राजापत्यस्यकृच्छ्रस्यैव नान्यस्य । विष्णुः । सर्वेषामेवपापानां तप्तकृच्छ्रंविशोधनम् ततःपरममित्युक्तंमुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः १ तप्तकृच्छ्रमधिकृत्याहहारीतः एषकृच्छ्रोद्विरभ्यस्तः पातकेभ्यःप्रमोचयेत् त्रिरभ्यस्तोयथान्यायंशूद्रहत्यांव्यपोहति ॥ १ ॥ कृच्छ्रसामान्यविधिमाह विष्णुः ॥ कृच्छ्राण्येतानिसर्वाणिकुर्वीतकृतवापनः नित्यंत्रिषवणस्नायी चाधःशायीजितेंद्रियः ॥ १ ॥

व्रतका नहि ॥ अब विष्णुजीकावचनहै संपूर्ण पापांके दूरकरणेवास्ते यथार्थदेखणवाले मुनियें परम हितजाणकर्के तप्तकृच्छ्र व्रत शुद्धिकरणवाला कहाहै १ अब तप्तकृच्छ्रकों अंगीकारक हारीतऋषिका वचनहै एह तप्त कृच्छ्र व्रत दो वार कीता होया पापांतें शुद्धिकों करताहै और त्रायवार कीता होया यथा योग्य शूद्र हत्यांके पापको दूरकरताहै॥ १॥ अब कृच्छ्र व्रतकी सामान्य विधिको विष्णुजी कहतेहैं इनां संपूर्णा कृच्छ्र व्रतांको पुरुष करे तिनां विषे एह विधिहै मुंडन करवाये और नित्य त्रायकाल स्नान करे और पृथ्वी पर शयन करे और इंद्रियांको विषयांते रोककर राखे ॥ १ ॥

औरं स्त्रीयां और शूद्र और पापीएनांके साथ संभाषणत्यागे और पवित्र जो मंत्र तिनांकोनित्य जपे और अपनी समर्थातें हवन करे ॥ २ ॥ इसतें उपरंत तप्त कृच्छ्र व्रतके स्थान प्रत्याम्नाय जो बदलाहै जिस बदलेके कीतयां होयां तप्त कृच्छ्र व्रतका फल प्राप्त होताहै तिसको देवल ऋषिजी कहतेहैं तप्तेति तप्त कृच्छ्र संपूर्ण व्रतका प्रत्याम्नाय मनुने कहाहै जो पुरुष तप्त कृच्छ्र व्रतके करणे विषे समर्थ वाले नहि हैं तिनां उपर कृपा करके पुरा कया पिच्छे हे अनघ हे पापांतें रहित तप्त कृच्छ्रका बदला कहाहै तिसको अब मैं कहताहां श्रवणकरो हे ब्राह्मणां विषे श्रेष्ठांहो ॥ १ ॥ कलि युग विषे विशेष करके अन्नके त्यागतें पुरुष मृत्युओं प्राप्त होताहै तिसविषे पराशर जीका वचनहै कृतइति सत्ययुग विषे प्राणांकी स्थिति देहके चर्म विषे रहतीहै और त्रेतायुग विषे आ

स्त्रीशूद्रपतितानांचवर्जयेदभिभाषणम् पवित्राणिजपेन्नित्यंजुहुयाच्चापिशक्तितः ॥ २ ॥ अथतप्तकृच्छ्रप्रत्याम्नायमाह ॥ देवलः ॥ तप्तकृच्छ्रस्यसर्वस्यप्रत्याम्नायोमनोःकृतः अशक्तानांचकृपयाकर्तुमुक्तःपुरानघ ॥ तमेवाहंब्रवीम्यद्यशृण्वंतुद्विजसत्तमाः ॥ १ ॥कलौयुगेविशेषेणह्यन्नत्यागान्मृत्युंगच्छति ॥ पराशरः ॥ कृतेचर्माश्रितः प्राणः त्रेतायांकीकसाश्रयः द्वापरेरक्तमाश्रित्यकलावन्नंसमाश्रितइति ॥ १ ॥ कलौयुगेद्वादशरात्रसाध्यकृच्छ्राणांकर्तुमशक्तान् निरीक्ष्य ऋषयः प्रत्याम्नायमुक्तवंतस्तमेवाहात्रैव गौतमः महतस्तप्तकृच्छ्रस्यब्रह्महत्यानिवारिणः तुलाप्रतिग्रहीतॄणांशोधकः स्यान्महामुने ॥ १ ॥ प्रत्याम्नायस्तदाप्रोक्तोयदाचसुसमागमः ॥ स्वयंभूःकृपयान्हणांगवांविंशतिमादरात् सवत्सावहुदुग्धाश्चसाधुशीलाद्विजातये २ ॥ द्विजातिभ्यइतिवक्तव्ये जातावेकवचनम्

श्रांकी स्थिति अस्थियोंविषे रहतीहै और द्वापरयुगविषे रुधिरके आश्रय प्राणस्थितिहै और कलि युगविषे अन्नके आश्रय प्राणांकी स्थितिहै १ इसकारणतें कलियुगविषे बारां १२ दिनांकके व्रत करणे विषे पुरुषसामर्थ वाले नहि ऐसेविचार कर ऋषि प्रत्याम्नायको कहते भये तां तिस तप्तकृच्छ्रको गौतम ऋषि कहताहै हेमहामुने तुला दानके प्रति ग्रहको लयणे वाले जो पुरुष हैं तिनांके पापांको दूर करणे वाला बडा जो तप्तकृच्छ्र व्रत सो कहाहै कैसा व्रत है जो ब्रह्महत्याके भी दूर करणे वालाहै १ प्रत्याम्नाय तद कहाहै जद महात्माका संगमहोवे तो ब्रह्मा पुरुषां उपर कृपाकरके कहताहूया गोयांसहितवछयांके दुग्ध देणे वालीयां और भले स्वभाववालीयां वीस २० आदर करके ब्राह्मणांकेतांई देणे योग्यहै द्विजातये एह जाति विषे एक वचनहै । २ ।

अब इसीविषे मरीचिऋषिका वचनहैं पापोंके नाश करणे वाला जो तप्तकृच्छ्रहै बडा ब्रह्मरूप तिसका वदला एहहै बीस २० गौवां आदर करके ब्रह्मणांके तांई देवे ॥ १ ॥ अब पराशरजी कावचनहै बडा जो तप्तकृच्छ्र तिसका वदला वस्त्र और भूषणांके साथ सहित बछयांके ॥ २० गौवां आत्मज्ञानके विचार करके युक्त जो ब्राह्मण तिनांके तांई देता हुवा ॥ १ ॥ शुद्धिकों प्राप्त होताहै हेराजेंद्र और तप्त कृच्छ्रके फलकों प्राप्तहोताहै तिस कारणतें तिन्नांवर्णा विप्रों जो तप्तकृच्छ्र व्रतके करणे विषे नहि समर्थवाले तिनांनें प्रत्याम्नाय करणे योग्यहैं और पीछे पंचगव्यका पान करणा ऐसा किहाहै ॥ २ ॥ और तुला आदिक दानके ग्रहण करणे वाले जो पुरुष हैं तिनांकों तिस प्रतिग्रहदोषके दूरकरणे वाले प्रायश्चित्त करण विषे एहि

मरीचिः पापनाशककृच्छ्रस्यतप्तस्यब्रह्मरूपिणः दद्याद्द्विजातयेसम्यग्गवांविंशतिमादरात् १ पराशरः॥ महतस्तप्तकृच्छ्रस्याविप्रायाध्यात्मवेदिने सालंकारांसवत्सांचधेनुर्विंशतिकांददन् ॥ १ ॥ शुद्धिमाप्नोतिराजेंद्रतप्तकृच्छ्रफलंलभेत् ततोद्विजातिभिःकार्य्यास्त्वशक्तैस्तप्तरूपिणः पंचगव्यंपिवेत्पश्चात्प्रत्याम्नायइतीरितः ॥ २ ॥ तुलादिप्रतिग्रहीतॄणामपीयमेवगतिस्तत्प्रायश्चित्तकरणविषये ॥ अपरार्के ॥ अतिकृच्छ्रेपराकेचतप्तकृच्छ्रेत्वथैवच प्राजापत्यत्रयंकुर्यात् कृच्छ्रेगोमिथुनंभवेत् ॥ १ ॥ स्मृत्यर्थसारे। मासोपवासस्थाने पंचदशप्राजापत्याइति चतुर्विंशतिमते धर्मनिष्ठास्तपोनिष्ठाः कदाचित्पापमागताः जपहोमादिकंतेभ्योविशेषेणाभिधीयते ॥ १ ॥

तप्तकृच्छ्रव्रत कहाहै ॥ अब अपरार्क विषे कहाहै क्या अतिकृच्छ्रव्रत विषे और पराक व्रत विषे और तप्त कृच्छ्र व्रत विषे तिस प्रकार प्राजापत्यत्रय करे और कृच्छ्रव्रतविषे एक गौ और वलद दानकरे ॥ १॥ अब स्मृत्यर्थसारविषे कहाहै जो एक मासका उपवास व्रत कहाहै तिसका वदला पंदरां १५ प्राजापत्यव्रत कहनें इसमे एह अभिप्रायहै कि प्राजापत्य ६ उपवासके तुल्य हैं ऐसा अगेस्थापनहोणाहै तिसकेहिसावसें ५ पंच प्राजापत्यमासोपवासकी जगा आउतेहै परंतु इसकों अति कष्टदायी जाणकर इसकी जगा १५ पंदराकहेहैं ॥ और चतुर्विंशति मतविषे कहाहै धर्मेति जो पुरुषधर्म विषे युक्त हैं और तप विषे युक्तहैं कदाचित् पापकों प्राप्तहोवें अर्थात् पापकरें तो तिनां तांई विशेषकरके जप और हवन आदिक कहाहै ॥ १ ॥

और जो पुरुष केवल नाम करकेहि ब्राह्मणहैं संस्कारतें रहित और मूर्ख और धर्मतेंरहितहैं तिनां तांई विशेष कर्के कृच्छ्र चांद्रायणादि व्रत देणे योग्य हैं ॥ २ ॥ और धन कर्के युक्त जो पुरुष तिसनें पूर्वोक्त धेनु विंशतिकादिरूप दक्षिणा देणे योग्यहै जो दक्षिणा यत्न कर्के वि धान कीतीहै इस प्रकार नर विशेषकर्के क्या जिसकों जैसा उचितहोवे तैसा मनुष्यकों विशेष कर्के प्रायश्चित्तकों पापके दूर करणेवास्ते देवे ॥ ३ ॥ ❀ इसते अनंतर पर्ण कृच्छ्र कों याज्ञवल्क्य कहताहै पर्णाविति ॥ १ ॥ इसकाअर्थ अपरार्क विषे कहाहै पर्णा दीति पलाह और गूलर और कमल औरविल्व और कुशा इनांके भिन्न भिन्न पत्रांकोंलेकर

नामधारकविप्रायेमूर्खाधर्मविवर्जिताः कृच्छ्रचांद्रायणादीनितेभ्योदद्याद्वि शेषतः ॥ २ ॥ धनिनादक्षिणादेयाप्रयत्नविहितातुया एवंनरविशेषेणप्रा यश्चित्तानिदापयेदिति ॥ ३ ॥ ❀ अथपर्णकृच्छ्रमाह याज्ञवल्क्यः ॥ पर्णो दुम्वरराजीवविल्वपत्रकुशोदकैः प्रत्येकंप्रत्यहंपीतैःपर्णकृच्छ्रउदाहृतः ॥ १ ॥ अत्रापरार्कः ॥ पर्णादिपत्रान्तानांकुशानां चैकैकस्यक्काथो दकमेकैकस्मिन्नहनिपीयते इत्येपपंचरात्रसाध्यःपर्णकृच्छ्रः । अत्रापि प्राशनमाहारांतरनिवर्त्तकम् ॥ पर्णः पलाशःराजीवंपद्मंप्रसिद्धमन्यत् विष्णुस्तुपर्णकृच्छ्रमन्यथाह कुशपलाशोदुम्वरपद्मशंखपुष्पीवटब्रह्मसुव र्चलापत्रैः ७ क्वथितस्यांभसःप्रत्यहंपानेपर्णकृच्छ्रं इति

काथकरें और तिसकाथके जलकों दिन दिन विषे क्रम कर्के पानकरे तांते एहपर्ण कृच्छ्र व्रत पंजां दिनां कर्के सिद्धहोताहै १ इसविषे प्राशन कहणे कर्के अन्य वस्तुके भक्षण कानिषेधहै ॥ विष्णुजी पर्ण कृच्छ्रकों और ही प्रकार कर्के कहतेहैं कुशा और पलाह और उदुंबर क्या गूलर और पद्म और शंखपुष्पी बूटी और बोड और ब्रह्मसुवर्चला बूटी इनांसत्तां ७के पत्रांकर्के जलकों भिन्न भिन्न काढडे और तिनांके काथकें जलको दिन दिन विषे क्रमकर्के पानकरे तां पर्ण कृच्छ्र होताहै इति

जावालऋषि औरही प्रकार करके कहताहै ॥ पलाह और विल्व और पद्म इनांके पत्र और गूलरके पत्र और पिप्पलके पत्र इनांपत्रांकों दिन दिन विषे क्रम करके पीवे ॥ १ और पीछे दिन रात्र उपवास करे एह उपवास सहित छे ६ दिनका व्रतहै पूर्वजन्मके पापकों और इस जन्मके पापोंको दूरकरणे वालाहै इति २ ॥ शंख और लिखितजीभी इसमें कहतेहैं पद्म और विल्व और पलाह और गूलर और कुशोदक इनांकों भिन्न भिन्न क्रमकरके भक्षण करे तां पर्णकृच्छ्र होताहै ॥ और इनां संपूर्णांकों त्रयदिन भक्षणकरे तांभी पर्णकृच्छ्रहोताहै ॥ पहला पांच दिनका दूसरा तीन दिनका ॥ अवयमजीकावचनहै पलेति पलाह और विल्वके पत्र और कुशाऔर पद्म इनांके पृथक पृथक् पत्रांको ग्रहण करे और एक एक वृक्षके पत्रांकों त्रय त्रय

॥ जावालस्त्वन्यथाह ॥ पलाशविल्वपद्मानांपत्राण्यौदुम्वराणिच अश्वत्थस्यचपत्राणिअश्नीयादेकैकशस्तथा ॥ १ ॥ अहोरात्रोपवासश्चपर्णकृच्छ्रःप्रकीर्तितः अन्यजन्मकृतंचैवपापंनाशयतेतुस इति ॥ २ ॥ शंखलिखितौ पद्मविल्वपलाशोदुम्वरकुशोदकान्येकैकमभ्यस्तानि पर्णकृच्छ्रः ॥ समस्तान्येतानित्रिरात्रेणोपभुक्तानि वापर्णकृच्छ्रः । यमः । पलाशविल्वपर्णानिकुशान्पद्मानिवान्यतःएकैकंत्र्यहमश्नीयात्पर्णकृच्छ्रोविधीयतइति १ अन्यतइति पृथगित्यर्थः । अत्र द्विजानांमध्यमानिपत्राणि शूद्रस्येतराणीतिवोध्यमिति यदातु पर्णादीनामेकीकृतानांक्काथ स्त्रिरात्रोपवासांते पीयतेतदापर्णकूर्चः ॥ यथाहयमः ॥ एतान्येवसमस्तानित्रिरात्रोपोषितःशुचिः क्काथयित्वापिवेदद्भिःपर्णकूर्चोभिधीयतइति ॥ १ ॥

दिन भक्षण करे एह वारां १२दिनाकर्के पर्णकृच्छ्र कहाहै ॥ १ ॥ इसविषे ब्राह्मण आदि तीनवर्णांकों पलाहके मध्यम पत्रे कहने अर्थात् ब्राह्मणपलाशके विचले पत्र ग्रहणकरे और शूद्र इतर क्या आसपासके पत्रकों ग्रहकरणे ऐसें जानणा इति यदेति जद फेर पलाह और गूलर और कमल और विल्व इनांके पत्रांकों एकत्र करके कुशाके ज़लकर्के काहडे और त्रय दिन उपवासकों करके पीछे पीवे तां पर्णकूर्च कहाहै जैसे यमजी कहतेहैं त्रय रात्रके उपवास व्रत करके शुद्ध होया होया इनां पलाह और गूलर और कमल और विल्वके पत्रांकों जलके साथ क्वाथकर्के पीवे तां पर्णकूर्च कहीदाहै इति १

यदेंतिजद फेर विल्व आदि फल जलकर्के काहडे होये दिनोदिनोविषे क्रमकर्के पीवे एक मास पर्यंत तां फल कृच्छ्रतें आदलेके नामकों प्राप्त होतेहैं ॥ जैसे मार्कंडेयजी कहतें हैं फलांके काथकों एकमास पर्यंत पीवे तां बुद्धिमानोनें फलकृच्छ्र कहाहै ॥ और श्रीफल क्या विल्वफल इनांके काथकों एक मास पर्यंतपीवे तां तिसका नाम श्रीकृच्छ्र कहाहैं ॥ तैंसे पद्मांकेकाथकों एक मास पर्यंत पीवे तिसका नाम पद्मकृच्छ्र कहा है ॥ १ ॥ ऐसे एक मास पर्यंत आमलेके काथ कों पीवे तां एह दूसरा श्रीकृच्छ्र कहाहै ॥ और विशेष कहतेंहैं पत्रैरिति पत्रांके काथ क्यां काहडेकों पीवे तां पत्रकृच्छ्र हुंदाहै ॥ और पुष्पां कर्के पुष्पकृच्छ्र होताहै ॥ २ ॥ और मूल कर्के मूल कृच्छ्र और केवल जलके काथकों पीवे तां तोय कृच्छ्र कहा है ॥ २ ॥ इसमें एह विचारहै कि

यदातुविल्वादिफलानि प्रत्येकं क्वथितानि मासंपीयंते तदा फलकृच्छ्रादि व्यपदेशंलभंते । यथाहमार्कंण्डेयः ॥ फलैर्मासेनकथितःफलकृच्छ्रोमनीषिभिः श्रीकृच्छ्रःश्रीफलैःप्रोक्तःपद्मास्यैरपरस्तथा ॥ १ ॥ मासेनामलकैरेवंश्रीकृच्छ्रमपरंस्मृतम् पत्रैर्मतःपत्रकृच्छ्रःपुष्पैस्तत्कृच्छ्रउच्यते ॥ २ ॥ मूलकृच्छ्रःस्मृतोमूलैस्तोयकृच्छ्रोजलेनत्विति ॥ पत्रकृच्छ्रोत्रउदुम्बरपद्मविल्वपत्रभेदात्त्रिधा । तोयकृच्छ्रोपिकेवलजलकुशोदकभेदाद्द्विधा ॥ इत्येवमेकादशधापर्णकृच्छ्रइतिमिताक्षराशयः पुष्पकृच्छ्रस्तुपद्मपुष्पजोबोध्यः । मासशब्देनात्रसावनोमासोग्राह्यः तदुक्तंकालनिर्णये ॥ आयुर्दायविभागश्चप्रायश्चित्तक्रियातथा सावनेनैवकर्त्तव्याशत्रूणांवाप्युपासनेति १

अष्टप्रकारके कृच्छ्र जों दिखाएहैं तिनांविचों पत्रकृच्छ्र त्रय तरहांकाहै ॥ और जल कृच्छ्र दो प्रकारकाहै इसतें ११ प्रकार कृच्छ्रके होए एह मिताक्षरा ग्रंथका आशयहै और मूलमे अर्थ स्पष्टहै ॥ और विशेषकतेहैं मासेति मासशब्दके कथन करणे कर्के तीस ३० दिनांका महीना इसजगा ग्रहण करणे योग्यहै और चांद्रमास नहि जानणा इसका निर्णय कहा है कालनिर्णय ज्योतिश्शास्त्र विषे ग्रहांके अनुसार कहा जो आयुर्दाय विभाग सो तीस ३० दिनके मासते जानणा तैंसे प्रायश्चित्तका करणा और शत्रुयांकी उपासना केंदी आदिक अथवा तिनांकी हानि वास्ते अनुष्ठानादि भी तीस दिनके मास कर्के जानणे योग्यहै ॥ १ ॥

अब देवलऋषिका वचनहै हेब्राह्मणा विषे श्रेष्ठांहो पर्णकृच्छ्र नाम कर्केजो व्रतहै तिसकोंश्रवण करो जो अतिशय कर्के श्रेष्ठ है और संपूर्ण पापोंके दूर करणे वाला और संपूर्ण दोषांके नाश करणे वाला है ॥ १ ॥ अब दोषां कर्के युक्त जो पाप हैं अर्थात् जिनां पापा देभोगते पीछे क्षयादि रोग हुंदेहै तिनको कहतेहां तिनांकों हि पर्णकृच्छ्र व्रत दूर कर्ताहै ब्रह्मेति ब्राह्मणके मारणे वाला पुरुष क्षय जो श्वासकास रोग तिस कर्के युक्त हो ताहै और मदिरा के पीणे वाला जो है तिसके काले दांत होतेहैं और जो सुवर्णकी चोरी कर्ताहै तिसके कुनख क्या निंदितनख होतेहैं और गुरुकी स्त्री साथ जो विषय भोगताहै सो कुष्टी होताहै ॥ २ ॥ अन्नेति और अन्नकों चुराणे वाला उदर विषे रोग युक्त होताहै ॥ और शाकके चुराणे वाला दर्दुर क्या डड्डू होताहै और धान्य क्या धाइयां चुराणे वालयांकों हे ब्राह्मणां खुरक रोग होताहै ॥ ३ ॥ ताम्रेति तांबेके

देवलः ॥ पर्णकृच्छ्रंद्विजश्रेष्ठाःशृण्वन्तुपरमंशुभम् ॥ सर्वपापप्रशमनं सर्वदोषोपशान्तिदम् ॥ १ ॥ ब्रह्महाक्षयरोगीस्यात्सुरापःश्यावदंतकः स्वर्णस्तेयीचकुनखीदुश्चर्मागुरुतल्पगः ॥ २ ॥ अन्नहर्त्ताभवेद्गुल्मी शाकस्तेयीतुदर्दुरः स्तेयिनांधान्यहारीणांकंडूतिःसंततंद्विजाः ॥ ३ ॥ ताम्रस्तेयीदीर्घवृषणःप्रमेहीपर्वमैथुनी शिरोव्रणीस्नानहीनःपित्तवांस्त्रपुसीसहा ॥ ४ ॥ गजचर्मानागहन्ताश्वहन्तामहाव्रणी कंठभूषणहारी स्याद्गंडमालीभवेद्भुवि ॥ ५ ॥ रक्तप्रमेहीमनुजोपुष्पवत्यंगनागमः भगिनीगमनोभूमौमधुमेहीभवेन्नरः ॥ ६ ॥ मातुःसपत्नींभगिनींजभेत्कामातुरोनरः सपापमनुभूयाशुरोगीभूयाद्भगंदरी ॥ ७ ॥

चुराणे वालेके पताल़ू लंबे होतेहैं और संक्रांति आदिक पर्व विषे जो मैथुन कर्ताहै सो प्रमेहरोग कर्के युक्त होताहै ॥ और स्नानतें रहित जो है सो शिर विषे व्रणवाला होताहै और लाख और सिक्के चुराणे वाला पित्त रोग युक्त होताहै ॥ ४ ॥ गजेति हाथी के वध करणे कर्के हाथीकी न्याई चर्म वाला होताहै ॥ और घोडेके वध करणे वाला देह विषे बहुत व्रण युक्त होताहै ॥ और कंठके भूषण हरण वालेकों कंठमालारोग होताहै ॥ ५ ॥ रक्तेति ऋतुमती स्त्री के साथ जो गमन कर्ताहै सो रक्तप्रमेहरोग कर्के युक्त होताहै ॥ और जो भगिनी विषे गमन कर्ताहै सो मधुप्रमेहरोग कर्के युक्त होताहै ॥ ६ ॥ मातुरिति दूसरी माताके साथ और माताकी भैणके साथ जो गमन कर्ता है सो तात्काल भगंदररोगकर्के युक्त होताहै ॥ ७ ॥

स्वसारमिति जो पुरुष भैणविषे गमन कर्त्ताहै सो मूत्र कृच्छ्र रोगकर्के युक्त होताहै। और गौके मारणेवाला महापापी पुरुष सदा पृथ्वीविषे रोगी होताहै ॥ ८॥ गविति गौकेवच्छेके मारणेतें गुदाविषे मंमंसी रोगकर्के युक्त होताहै। और शिवजीके निर्माल्यकों जो भक्षण कर्त्ताहै सो कफ रोगकर्के युक्त होताहै ॥ ९ ॥ अजीति जो पुरुषां विषे कठोरताकों अथवाछलको कर्त्ताहै सो उदर विषे अजर्ण रोगी होताहै शठकृत् इस जगा (छलकृत्) ऐसा भी पाठ है और गृहकों दाहकरणे वाला शूलरोग युक्तहोताहै और बंदि ग्रहणजदोषसें अर्थात् जो बिना अपराध किसीकों कैदकर्ताहै सो स्वासकासरोगवाला होताहै १० ॥ जो स्त्री विषांकर्के बाल ककों मारतीहै तिसका गर्भ सदाहि स्रव जाताहै ॥ और जो स्त्री अन्यपुरुषके साथगमन कर्त्तीहै सो स्तनांविषे फोडेवालीहोतीहै ११ क्षीरमिति जस्त्री दुग्धकों चुरातीहै सो दूसरेंजन्मविषे स्तनां

स्वसारंयःपुमान्गच्छेज्जायतेमूत्रकृच्छ्रवान् धेनुहन्तामहापापीसदारोगी भवेद्भुवि ८ गोवत्सहननान्मर्त्यःसभूयादर्शवान्भुवि शिवनिर्माल्यभुक्पापी जायतेकफवान्नरः ॥ ९ ॥ अजीर्णरोगीशठकृद्गृहदाहीचशूलवान् बंदिग्र हणजाद्दोषाज्जायतेश्वासकासवान् ॥ १० ॥ स्रवद्गर्भाभवेत्सातुबालकंहन्ति याविषैः अन्यमालिंगतेनारीसावैस्फोटस्तनीभवेत् ॥ ११ ॥ क्षीरंमुष्णा तियानारीस्तन्यहीनान्यजन्मनि पतिव्रतापहारीचदूषणव्रणरोगवान् १२ विधवासंगजाद्दोषाच्छिश्नदेशव्रणीभवेत् पुष्पस्तेयीविकृनासःकोशस्तेयी तुपेटवान् ॥ १३ ॥ गन्धस्तेयीचदुर्गन्धःक्रमुकेसततंज्वरी विवाहविघ्न कृन्मर्त्योजायतेहीनदारवान् ॥ १४ मयूरहननान्मर्त्योजायतेकृष्णविं दुकःतडागारामविच्छेदीसदादुःखीभवेन्नरः ॥ १५ ॥ इत्येवमादयोदो षामहानरकदानृणाम् एतेषांशोधनार्थायपर्णकृच्छ्रंसमाचरेत् ॥ १६ ॥

मे दुग्ध रहितहोतीहै और जो पुरुष पतिव्रतास्त्रीकों हरताहै सो पताल्यांविषे छिद्रवाला होताहै १२ ॥ विधवेति विधवास्त्रीविषे संग करणेतें लिंगविषे छिद्रकर्केयुक्त होताहै। और पुष्पांके चुरा णे वाला फीना होताहै और खजाने चुराणेवाला जलोदर रोग वाला होताहै १३ गंधेति सुगंधि वाली वस्तुके चुराणेवाला बगल गंधवाला होताहै और सुपारीके हरणेवाला सदाज्वर रोगयुक्त होताहै और किसीके विवाह विषे जो विघ्न कर्त्ताहै सो स्त्रीतें रहित होताहै १४ मयूरेति मोरके मारणे वाला जोहै तिसके देह विषे कालीयां बिंदु होतीयांहैं और तला और बाग इनांके नाश करणेतें सदादुःखी होताहै १५ इसतें आदलेके जो दोष हैं सो पुरुषांकों महानरकके देणे वाले कहेहैं इनादोषांके दूर करणे वास्ते पर्ण कृच्छ्र व्रत कों करे ॥ १६ ॥

अबमार्कंडेयजीका वचनहै ॥ महेति महांपापांके जो समूहहैं और लघु जो पापहैं पृथ्वीविषे आर्द्र क्या इच्छा करके जो पापकीतेहैं और इच्छातें विनाकीतेहैं अथवा आर्द्रक्या तत्कालके कितेहोए पाप और शुष्क क्या चिरकालके कीते होय पाप एह अर्थहै तिनां संपूर्णांकों शुद्ध करणे वाला पर्ण कृच्छ्र व्रत कहाहै ॥ १ ॥ अब पराशरजीका वचनहै ॥ पर्णेति ब्राह्मण पर्ण कृच्छ्रके करण विषे मध्यम पत्र ग्रहण करे बारां दिन पर्यंत नित्यशुद्धहोकर तिलककों धारणकर्के ॥ १ ॥ पूर्वकी न्यांई गंध पुष्प आदिकां कर्के विष्णुकों पूजे जद सूर्य अस्त होवे तां पलाहके तीन पत्रांकर्के तीन डूनेबनावे ॥ २ ॥ और वेदके पठनकरणेविषे युक्त जो ब्राह्मण तिनांके तीन गृहांविषे जाकर तीनडूनयांविषे भिक्षात्रयकों ग्रहणकरे ॥ ३ ॥ एक भिक्षाका डूना विष्णुकेतांई अर्पणकरे और एक

॥ मार्कण्डेयः ॥ महापातकजालानांलघूनांभुविजन्मनाम् आर्द्राणांचै वशुष्काणांपर्णकृच्छ्रंविशोधनम् ॥ १ ॥ पराशरः ॥ पर्णकृच्छ्रस्यपर्णानिम ध्यमानिद्विजोत्तमः द्वादशाहानिपर्यन्तंनित्यंशुचिरलंकृतः ॥ १ ॥ पूर्ववद्वि ष्णुमभ्यर्च्यरविरस्तंगतोयदा त्रिभिःपत्रैर्ब्रह्मभूतैःकृत्वाचैवपुटत्रयम् ॥ २ त्रीणिवेश्मानिविप्राणांवेदाध्ययनशीलिनाम् भिक्षात्रयंसमानीयत्रिपुप त्रपुटेष्विह ॥ ३ ॥ एकंपुटंतुदेवायविप्रायैकंसमर्पयेत् अवशिष्टंतदाश्नी याद्धरिनामपरायणः ॥ ४ ॥ स्वपेद्देवसमीपेतुसंचितंमनसास्मरन् ततः प्रभातवेलायांपूर्ववत्सकलंचरेत् ॥ संचितंपापमित्यर्थः ॥ ५ ॥ विप्राय देयागौरेकापंचगव्यंपिवेत्ततः पर्णकृच्छ्रमिदंभूपशोधनंपापकर्मणाम् यस्याचरणमात्रेणचान्द्रायणफलंलभेत् ॥ ६ ॥

भिक्षाका डूनाब्राह्मण तांई अर्पणकरे और तीसरे डूनेंको आप भक्षण करे और विष्णुके नामका उच्चारण करे ॥ ४ ॥ और विष्णुकीमूर्त्तिके समीपशयनकरे संचित जो पापहै तिसका मनकर्के स्मरणकरे मैंने एह पापकीताहै ॥ ५ ॥ ऐसे बारां दिनके व्रततें अनन्तर प्रातःसमयविषे पूर्वकी न्यांई नित्य कर्मकों कर्के ब्राह्मणके तांई एक गौ देवे और तिसतें अनंतर पंचगव्यका पानकरे एह पर्ण कृच्छ्र हेराजन् पापकर्मांके शुद्ध करणे वालाहै जिसके करणे कर्के पुरुष चांद्रायणके फलकों प्राप्त होताहै ॥ ६ ॥

इसतें उपरंत पर्णकृच्छ्र व्रतका वदला देवलऋषि कहताहै पर्णेति हेराजर्षे तेरे तांई पर्ण कृच्छ्र व्रतके वदले नूं कहताहां केसा बदलाहै संपूर्ण पापांके दूर करणे वाला और संपूर्ण उपद्रवांके नाशकरणे वालाहै ॥ १ ॥ और मनुष्योंकों संपूर्ण कामना फलकें देणेवाला और संपूर्ण कृच्छ्र व्रतांकेफल देणे वाला सो कहतेहां पांच ५ गौयां पंजां ब्राह्मणांके तांई भिन्न भिन्नदेवे केसीयां गौयाहैं वस्त्र आदि शोभाकर्के युक्त और वछयांके सहित हैं ॥ २ ॥ और सुवर्णके हैं शृंगजिनां के और रूप्येकेखुरां कर्के युक्त और दोहनकरणेके लिये कांसपात्रकर्के युक्त और सुशीला और जुवाण ऐसीयांविप्रांकोंदेणेयोग्यहैं एह प्रत्याम्नाय पर्णकृच्छ्रका वहुतश्रेष्ट कहाहै ३ ॥ इसतें उपरंत

अथपर्णकृच्छ्रप्रत्याम्नायमाहदेवलः ॥ पर्णकृच्छ्रस्यराजर्षेप्रत्याम्नायंवदामिते सर्वपापस्यशमनं सर्वोपद्रवनाशनम् । १ । सर्वकामप्रदंन्दृणांसर्वकृच्छ्रफलप्रदम् पंचगावः प्रदातव्याः सालंकाराः सवत्सकाः ॥ २ ॥ हेमशृंग्योरौप्यखुराः कांस्यदोहनसंयुताः ॥ साधुशीलायुवत्यश्च विप्रेभ्यश्च पृथक्पृथक् ॥ पर्णकृच्छ्रस्यविप्रर्षेप्रत्याम्नायोमहत्तरः ॥ ३ ॥ ॥ अथफलकृच्छ्रलक्षणम् । तत्रदेवलः ॥ फलकृच्छ्रस्यदेवर्षे लक्षणंकथ्यतेमया शृणु ब्रह्ममुनेचित्रंसर्वपापप्रणाशनम् ॥ १ ॥ येमातृघातिनोलोकेतथैवपितृघातकाः येवास्युर्भ्रातृहंतारस्तेषामेषाविनिष्कृतिः ॥ २ ॥ येवागर्भविभेत्तारोयेवास्युर्गरदायिनः येवाग्रामविभेत्तारोयेवाकुलजभेदिनः ॥ ३ ॥ येपीहपिशुनालोकेयेवास्युःस्तेयिनः सदा येवावालविभेत्तारस्तेषामेषाविनिष्कृतिः ॥ ४ ॥

फलकृच्छ्रके लक्षणनूं कहतेहां तिसविषे देवलजीका वचनहै फलेति हेदेवर्षे फलकृच्छ्रका लक्षण मैनेकथनकरीदाहै हेब्रह्ममुने तूं श्रवणकर वडाआश्चर्यहै और संपूर्ण पापांके नाशकरणे वालाहै १ ॥ इसकर्के दूर होणेवाले पापोंकों कहतेहां यइति जो पुरुषमाताका और पिताका और भ्राताका वधकर्तेहैं तिनोंकी शुद्धिकर्ताहै ॥ २ ॥ और जो गर्भपात करतेहैं और विषदेतेहैं और नगरांकों लूटतेहैं और कुलविषे संबंधीयांका नाशकरतेहैं ॥ ३ ॥ और जो लोकविषे चुगली करतेहैं और सदा चोरीकरतेहैं औरवालकांकों मारतेहैं तिनांसंपूर्णांकी शुद्धि देणेवाला एह व्रत है ॥ ४ ॥

याइति जो स्त्रीयां भर्ताकों त्यागके अन्य पुरुषां विषे गमन करतीयां हैं तिनां स्त्रीयांकी शुद्धि वास्ते पूर्व ब्रह्माजीने फलकृच्छ्र व्रत रचीदाहोया ॥ ५ ॥ ब्रह्मस्वेति ब्राह्मणांके धनकों जो नाशक रतेहैं अथवा होरीपासों नाशकरवातेहैं और जोलोकविषे खेतीयांकोंचुरातेहैं तिनांकी फल कृच्छ्र व्रत कर्के शुद्धि कहीहै ॥ ६ ॥ उच्छिष्टेति जो पुरुष किसेके जूठे अन्नकोंभक्षणकरतेहैं और झूठा वाद करतेहैं और मुडदेकों उठाकर हरतेहैं इसमे शवका हरणा मंत्रसिद्धि वास्ते अथवा चिकित्साके जानण वास्तेहै तिनांकी कृच्छ्रव्रतकर्के शुद्धि कहीहै ॥ ७ ॥ मद्येति जो मदिराके पीनेविषे नित्ययुक्तहै और नित्यकर्म जो संध्यावंदनादि तिनांका नाशकरतेहैं और पितरांके निमित्त जो श्राद्ध

याश्चनार्य्यः पतिंत्यक्त्वारमंतेऽन्यान्नरान्यदि तासामपिविशुद्ध्यर्थंपुरासृष्टं स्वयंभुवा ॥ ५ ॥ ब्रह्मस्वघातिनोनित्यंब्रह्मस्वानांचघातकाः क्षेत्राणांहारिणोलोकेतेषामेतद्धिनिष्कृतिः ॥ ६ ॥ उच्छिष्टभोजनायेचयेचमिथ्यापवादिनः येवैकुणपहर्त्तारस्तेषामेतद्धिनिष्कृतिः ॥ ७ ॥ मद्यपानरतानित्यंनित्यकर्मविभेदिनः पितृश्राद्धविभेत्तारस्तेषामेतद्धिनिष्कृतिः ॥ ८ ॥ महापातकयुक्तावायुक्तावासर्वपातकैः कृच्छ्रेणैतेनमहतासर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ ९ ॥ महांतः पापकर्म्माणोमहापापहताःसदा एतेनकृच्छ्रराजेनपुनंतिसततंद्विजाः फलकृच्छ्रंमहापापहारिसंपत्प्रवर्धनम् ॥ १० ॥ दिनादिनेमुनींद्राश्चकृत्वैतच्छुद्धिमाप्नुयुः ॥ ११ ॥

तिसका खंडनकरतेहै तिनां पुरुषांकी फलकृच्छ्रव्रतकर्के शुद्धि कहीहै ॥ ८ ॥ महेति जो महापातकर्के युक्तहै वा संपूर्ण होरना पापांकर्के युक्तहै इस बडे फल कृच्छ्रव्रतके करणेंकर्के शुद्धहोंताहैं ॥ ९ ॥ महांतइति जो ब्राह्मण आदि वर्ण हैं महापापांके करण वाले हैं और महापापां कर्के हत होये होये इसकृच्छ्र राज कर्के पवित्र होतेहैं एह फल कृच्छ्र व्रत महापापांके नाशकरण वालाहै और संपदाके वधाणे वालाहै ॥ १० ॥ इसमे संप्रदाय कहतेहैं दिन इति दिन दिनविषे मुनींद्र इसफल कृच्छ्रके करणे करके शुद्धहोंने होये ॥ ११ ॥

कायेति एह फलकृच्छ्र देहको शुद्धकर्त्ताहै और संपूर्ण कृच्छ्र फलांकोदेताहै और संपूर्णपापांका नाशकर्त्ताहै एहफलकृच्छ्रवडा श्रेष्टहै १२ प्रातरिति प्रातःकालविषे स्नानकर्के देहकी शुद्धिवास्ते पूर्वकीन्याई मृत्तिकादिसें स्नानकर्के शुद्धहोया गायत्रीका जप सूर्यके अस्ततांई सारादिन करे ॥ १३ ॥ तावदिति तां व्रती पुरुष मनकों स्थिरकर्के नित्यकर्मको समाप्तकरे विधि कहतेहैं कि कलेका एक फल विष्णुकेतांई अर्पण करे ॥ १४ ॥ और तिस फलकों पूर्व भक्षणकरे मौनकों धारके व्रत विषे स्थित होया होया वीर्यसंपूर्ण अर्थात् पकेहोये फल भक्षण करे जो शुष्क न होण और कचे और चिरकालके त्रुटित न होण ऐसे त्रय फल भक्षणकरे ॥ १५ ॥ और

कायशुद्धिप्रदंकृच्छ्रंसर्वकृच्छ्रफलप्रदम् सर्वपापहरंचेदंफलकृच्छ्रमहत्तरम् ॥ १२ ॥ प्रातःस्नात्वाशुचिर्भूत्वापूर्ववच्छुद्धिहेतवे तावज्जपन्सदातिष्ठ द्यावदस्तंगतोरविः ॥ १३ ॥ तावद्व्रतीस्थिरमनानित्यकर्मसमापयेत् कदलीफलमेकंचविष्णवेतन्निवेदयेत् ॥ १४ ॥ तदेवभक्षयेत्पूर्वंव्रतस्थो मौनपूर्वकम् एकैकर्वार्यसंपूर्णभक्षयित्वाफलत्रयम् ॥ १५ ॥ एतद्वनवन फलैर्विना ॥ एवंद्वादशरात्राणिस्वपेन्नारायणाग्रतः गौर्देयाविप्रवर्य्याय ब्रह्मकूर्चंपिबेत्ततः ॥ १६ ॥ फलकृच्छ्रमिदंसर्वंकथितंब्रह्मणोदितम् ॥ कृच्छ्रस्यैतस्यमाहात्म्यान्नश्यत्येवमहद्भयम् ॥ १७ ॥ अथफलकृच्छ्रप्र त्याम्नायः ॥ देवलः कृच्छ्रस्यैतस्यमुनयःप्रत्याम्नायंमहोन्नतम् शृण्वं तुसर्वपापघ्नंसर्वश्रेयःप्रदंनृणाम् ॥ १ ॥

वनकेंफलाको न ग्रहणकरे इसप्रकार बारांदिन १२ व्रतकरे और नारायणके समीप शयनकरे और श्रेष्ट ब्राह्मणके तांई एक गौ देणेयोग्यहै तिससें पीछेब्रह्मकूर्च पीवे ॥ १६ ॥ एह फलकृच्छ्र व्रत ब्रह्माजी कर्के कथित क्या किहाहोयाथा सो मैंने तुमको कहाहै इस कृच्छ्रके माहात्म्यसें महाभय नष्टहोताहै ॥ १७ ॥ इससें उपरंत फल कृच्छ्रका प्रत्याम्नायहै तिसके वदले विषे देवलजीकावाक्यहै कृच्छ्रेति हेमुनीद्राहो इस कृच्छ्रके उत्तम वदलेको श्रवण करो जो पुरुषांके संपूर्ण पापांके दूरकरणे वाला और संपूर्ण कल्याणांके देणेवालाहै ॥ १ ॥

पुरेति पूर्व गालवनामे ऋषि ब्रह्महत्याके भय करके युक्त होया होया संपूर्ण लोकांके हितकी इच्छावाले जो विष्णु तिनांकी शरणको प्राप्तहोताभया ॥ २ ॥ हे भगवन् लोकांके हित की इच्छावाला जो तूंहैं तेरेकर्के मै अनुग्रह करणे योग्यहां हे देवतयांके देव हे इंद्र आदिकांके स्वामी तुसांके चरणांकी शरणको प्राप्त होया जो मैं मेरी रक्षाकरो ॥ ३ ॥ कैसे होंतुसी जो पुरुष तुसांके नामको स्मरण कर्ताहैं तिसके जो ब्रह्महत्या आदि पापहैं तिनांके नाशकरणेवाले हो इसकारणतें हेपुरुषोत्तम मैंनें तुसांके चरण देखेहैं ॥ ४ ॥ ब्राह्मणकी हत्या जो वडी मेरेदेह विषे हे प्रभो स्थितहै सो तूं दूरकर मेरे देहको जलातीहै जैसे शुष्क लकडीको अग्नि शीघ्रता

पुराहिगालवोनामब्रह्महत्याभयातुरः विष्णुंशरणमापेदेसर्वलोकहितैषि णम् ॥ २ ॥ अनुग्राह्योस्मिभगवंस्त्वयालोकहितैषिणा रक्षमांदेवदे वेशत्वदंघ्रिशरणागतम् ॥ ३ ॥ ब्रह्महत्यादिपापानांस्मरणान्नाशहेतुकम् अतस्त्वत्पादयुगलंदृष्टंमेपुरुषोत्तम ॥ ४ ॥ विप्रहत्यामहत्यासीन्मयितांनुद हेप्रभो जरयत्याशुसादेहंवह्निःशुष्केंधनंयथा ॥ ५ ॥ नास्तिनिंदासमंपापं नास्तिक्रोधसमोरिपुः नास्तिमोहसमःपाशोनदेवंकेशवात्परम् ॥ ६ ॥ विष्णुः ॥ नास्तिक्रोधसमोमृत्युर्नास्त्यकीर्त्तिसमाक्षतिः नास्तिकीर्त्तिस मोधर्म्मस्तपोनाऽनशनात्परम् ॥ १ ॥ प्रत्यहंत्रिषवणंस्नानंकृत्वामांमन सिस्मरन् फलकृच्छ्रंपुराकृत्वाह्यशक्तोयदिगालव ॥ २ ॥

से जला देतीहै ५ सभ देवतां सें अधिकता विष्णुजीकी है एह कहतेहैं नास्तीति निंदाके तुल्य होरकोई पूर्णफलदाता पाप नहिहै और क्रोधके समशत्रु नहि और मोहके तुल्य फाई नहि और विष्णुतें परे देवता नहि ६ विष्णुजीकावचनहै नेति क्रोधके तुल्य होरकोई मृत्यु नहि किसे जगा (क्रोधके तुल्य होर कोई शत्रु नहि ऐसापाठहै) और अपयशतें और कोई हानि नहि कही क्या अपयशहि हानि है और यशके तुल्य होर धर्म नहि और निराहारतें परे तप नहि १ अब फेरप्रसंगकोकहतेहैं प्रति दिन दिन विषे त्रय कालस्नान करें मेरे को स्मरणकर्ताहोया ऐसे फल कृच्छ्रको करके पुरुष शुद्धहोताहै एहअगेसाथ संबंधहै और हेगालव जोपुरुष फलकृ च्छ्रके करणे विषे सामर्थ्यतें रहितहै सोजिसको अगे करणाहै तिसको करे एहअर्थहै

सोपुरुष इसप्रत्याम्नायनूं करणेकर्के पापतें शुद्धहोताहै ओर गोकीपूजा भली प्रकारकरे धूप दीप कनैवेद्यकर्के युक्त ॥ ३ ॥ और पूजनतें पछि प्रदक्षिणाकर्के और नमस्कारोंकर्के श्रेष्ठ ब्राह्मण तांई गोदेवे कैसीगौ है जो सहित वछेके है और दुग्धदेणे वाली और फलकृच्छ्रके वदलेकर्के फलके देणेवालीहै ॥ ४ ॥ ऐसे दानकर्के फलकृच्छ्रके संपूर्णफलकों प्राप्तहोताहै तां हे ब्राह्मणां विषे श्रेष्ठ ऐसे व्रतनूं कर तिसीक्षणमें तूं पवित्रहोवेंगा ५ ऐसेविष्णुकर्के आज्ञाकों प्राप्तहोयाहो या और प्रत्याम्नायनूं करताहोया योगीयांकोंभी दुर्लभ जो सिद्धि हैं तिसनूं प्राप्तहोया ॥ ६ ॥ ॰ अवपराक कृच्छ्रकहींदाहै तिसविषे मनुजीका वाक्यहै यतेति मनकों रोकके और प्रमादतें रहित

प्रत्याम्नायमिमंकृत्वा शुद्धोभवतिपातकात् गोपूजासाधुसंयुक्ताधूपदीपनिवे दनैः । ३ ॥ परिक्रम्यनमस्कृत्यसवत्सांपयसावृताम् योदद्याद्विप्रवर्य्यायप्र त्याम्नायफलप्रदाम् ॥ ४ ॥ सम्पूर्णफलकृच्छ्रस्यह्यखंडंलभतेनरः एवंकुरु ष्वविप्रर्षेपूतोभवसितत्क्षणात् ॥ ५ ॥ इत्याज्ञप्तस्तदातेनप्रत्याम्नायंतदा चरन् सिद्धिमाप्नोतिमहतींयोगिनामपिदुर्लभाम् ॥ ६ ॥॰ अथपराककृच्छ्रम् तत्रमनुः ॥ यतात्मनोऽप्रमत्तस्यद्वादशाहमभोजनम् पराकोनामकृच्छ्रोयं सर्वपापप्रणोदनः ॥ १ ॥ याज्ञवल्क्यः ॥ द्वादशाहोपवासेनपराकःपरिकी र्तितः । देवलः । अथवक्ष्यामिकृच्छ्रस्यपराकस्यमहात्मनः सर्वदोषनिवृ त्तिःस्यात्सर्वशास्त्रानुवर्तिनः ॥ १ ॥ पराकःकृच्छ्रइत्युक्तोविष्णुनाप्रभवि ष्णुना यदाचरणमात्रेणसर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ २ ॥

होके जोवारां १२ दिन भोजनका त्याग करणा एह संपूर्ण पापांके नाशकरणे वाला पराकनाम कर्केकृच्छ्रकहाहै ॥ १ ॥ तिसविषे याज्ञवल्क्य जीकावचनहै हेतिवारां १२ दिनांके उपवास व्रतकर्के पराक कृच्छ्रकहाहै ॥ अव देवलजीकावाक्यहै इसतें उपरंत पराक कृच्छ्रकों कहताहां संपूर्ण शास्त्रोंकर्के वर्त्तनवाला जो पुरुष है तिसके संपूर्ण पापांकी निवृत्ति होतीहै पराक व्रतकर्के १ ॥ ऐसोविष्णु जो प्रभविष्णु हैं तिनांनें पराक कृच्छ्र कहाहै जिसके करणेकरके संपूर्ण पापांतें रहितहोताहै ॥ २ ॥

नेडेपाप इसकर्के दूर हुंदेहैं तिनको कहतेहैं ब्रह्मेति ब्रह्महत्यापाप और मदिराके पीणे का पाप और सुवर्णके चुराणेका पाप और गुरोंकी स्त्री विषे गमन करणेका पाप और तिनांका संसर्ग और तिनाके तुल्यपाप ॥ ३ ॥ और संकलीकरणपाप और मलिनी करण और उपपातक एह नौ ९ प्रकारकापाप कहाहै ॥ ४ ॥ तुलेति तुलादान और हिरण्यगर्भ और ब्रह्मांड और घटदान और पंचलांगलक और पृथ्वीदान ॥ ५ ॥ और विश्वचक्र और कल्पलता और सप्तसागर और चर्म धेनु महती और महाभूतघट तैसे हि एह दान ॥ ६ ॥ और कालचक्र और राशिचक्र और इसतें अनंतर विश्वचक्र और लक्षकोड तिलांकर्के हवन करणा

ब्रह्महत्यासुरापानंस्तेयंगुर्वङ्गनागमः तत्संसर्गोपिपंचैतेह्यनुपातकनामकम्
३ संकलीकरणंचैवमालिनीकरणंतथा उपपातकमित्येतन्नवधापरिकीर्त्तितम्
४ तुलाहिरण्यगर्भश्चब्रह्माण्डोयंघटस्तथा पंचलांगलकंचैवधरादानमतःपरम्
५ विश्वचक्रंकल्पलतासप्तसागरमेवच चर्मधेनुश्चमहतीमहाभूतघटस्तथा
६ कालचक्रंराशिचक्रंविश्वचक्रमनन्तरम् कोटिलक्षतिलैर्होमोद्विमुखीसुर
भिस्तथा ७ आर्द्रकृष्णाजिनंचैवंवेंकटेपर्वसंगमे छागादिपंचकंचैवतथैवदश
धेनवः ८। तथादशमहादानान्यचलाःसप्तनामकाःरहस्यकृतपापानिब्रह्म
हत्यादिकानिच ९॥ पापानांनवविधानामितरेषांमुनीश्वराः तुलादिसंग्रहीं
तॄणांपराकःकृच्छ्रनामकः ॥ १० ॥ सर्वपापहरोन्तॄणांदेवानांचप्रियंकरः
सर्वेष्वेतेषुकृच्छ्रेषुमहान्प्रोक्तःस्वयंभुवा ॥ ११ ॥

और प्रसूत समयविषे गौका दान ॥ ७ ॥ और कृष्णहरिणका आर्द्र चर्म और वेंकट तीर्थविषे पर्वके होयां १ वकरेतें आदिलेकरके पंच अर्थात् वकरा १ भेडा २ गौ ३ महिषी ४ घोडा ५ इनका दान और दश धेनु दान ॥ ८ ॥ और सप्त ७ पर्वतदान और गुप्तपाप और ब्रह्महत्यादि पाप ॥ ९ ॥ तुलाआदि दानांको जो ग्रहण करेंहैं तिनांके पापनूं और नौ प्रकारके जो पापहै इसतें इतर जो पापहैं तिनां संपूर्णांकों शुद्ध करणेवाला पराक कृच्छ्र नामकर्के व्रतहैं ॥ १० ॥ और पुरुषांके संपूर्ण पापांके नाश करणे वाला और देवतयांकी प्रीति करणे वाला ब्रह्माजीनें संपूर्ण कृच्छ्र व्रतांविषे एह पराककृच्छ्र व्रत श्रेष्ठ कहाहै ॥ ११ ॥

अब गौतमजीका वाक्य है प्रत्यहमिति बारां १२ दिनपर्यंत दिन दिनविषे एक छटांकपरिमाण गौके घृतमात्रकों पीणेकर्के ब्राह्मण शुद्धिकों प्राप्त होवाहै एह पराक नामक व्रतसंपूर्ण पापांके नाश करणे वाला प्रसिद्ध है ॥ १ ॥ और संपूर्ण पापांके और उपद्रवांके नाश करणे वाला और संपूर्ण स्वर्गादि लोकगतिके देणे वालाहै एह निश्चयकर्के विश्वके धारणे वाले हरि जो भगवान् सो आप कहते भये ॥ २ ॥ और स्मृतिविषेभी कहाहै दिन दिनविषे बारां १२ दिन पर्यंत एक १ छटांकी परिमाण गोघृतके पीणेकर्के ब्राह्मण संपूर्ण पापांतें शुद्धिकों प्राप्तहोताहै हे द्विज इसतें विना शुद्धि नहि ॥ ३ ॥ लौगाक्षिऋषिनेंभी कहाहै द्वेति बारां १२ दिन एक छटांकी गौकेघृतकों अग्निमे तपाकर पीवे तां पुरुषसंपूर्ण पापांतें रहितहोताहै और शुद्धिकों प्राप्तहोताहै ॥ १ ॥ अवप

गौतमः। प्रत्यहंघृतमात्रंचद्वादशाहंगवोद्भवम् पीत्वापलंद्विजःशुध्येत्पराक इतिविश्रुतः १ ॥ सर्वपापप्रशमनः सर्वोपद्रवनाशनः सर्वलोकप्रदोह्या हभगवान्हरिविश्वधृक् ॥ २ ॥ स्मृत्यंतरे ॥ प्रत्यहंगोघृतंविप्रोद्वादशाहं पलंमुदा पीत्वाशुद्धिमवाप्नोतिपापेभ्योनान्यथाद्विजइति ॥ ३ ॥ लौगाक्षिणाप्युक्तम् । द्वादशाहंघृतंतप्तंपलमात्रंगवामिव पीत्वाशुद्धिमवाप्नोतिसर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ १ ॥ अत्रिवशब्दएवकारार्थः अयमेवपराकः ॥ अथ पराककृच्छ्रप्रत्याम्नायः ॥ देवलः ॥ प्रत्याम्नायंपराकस्यवक्ष्याम्यह्मनुत्तमम् सर्वपापोपशमनंसर्वपापनिकृंतनम् ॥ १ ॥ व्यासः ॥ पराकंनामयत्कृच्छ्रंतत्कर्तुंमनुजोत्तमः अशक्तस्तस्यकृच्छ्रस्य प्रत्याम्नायंसमाचरेत् ॥ १ ॥ यस्याचरणमात्रेणपराकस्यफलंलभेत् प्रत्याम्नायंगवांदद्यादशपंचसवत्सकम् सर्वपापविनिर्मुक्तःप्रयातिपरमंपदम् ॥ २ ॥

राककृच्छ्रका बदलाहै तिसविषे देवलऋषिका वाक्यहै प्रेति पराककृच्छ्रके उत्तमप्रत्याम्नायकों कहतां हों कैसा प्रत्याम्नाय जो संपूर्णपापांके नाश करणे वाला और संपूर्ण पापांके छेदन करणे वालाहै इसमे एह अभिप्रायहै कि लघुपापांका नाश और महापापोंका एक कर्के घाटा होताहै और बहुतयोंकर्के सभकानाश होजावेगा ॥ १ ॥ अब व्यासजीकावचनहै पराकमिति पराक नाम कर्के जो कृच्छ्र है तिसकें करणेविषे पुरुष असमर्थ होवे तां तिसके प्रत्याम्नायनूं करे जिसके करणे कर्के पराक कृच्छ्रके फलनूं प्राप्तहोताहै ॥ १ ॥ सो कहतेहां ॥ प्रत्याम्नायमिति पंदरा १५ गौयां सहित बछयांके दान करे इस बदले कर्के संपूर्ण पापांतें रहित होवाहै और परम पदकों प्राप्त होताहै ॥ २ ॥

क्या करके महापापांके समूहांकों तेसें उपपातकांकों शीघ्रहि नाशकर्के शुद्धिकों देता है जैसें अग्नि रूईकेसमूहकों दाह करताहै ॥ ३ ॥ अब मरीचिजीका वाक्यहै प्रेति पराकव्रतका जो बदला पंदरां १५ गौयां तिनांका ब्राह्मण आदि वर्ण दान करे संपूर्ण पापांकी शुद्धि वास्ते और संपूर्ण कल्याणकी प्राप्तिवास्ते. ॥ १ ॥ हेराजन् महापापांकर्के युक्तभी जो पुरुष है सो पराकके बदले करके पापांतें रहित होताहै ॥ २ ॥ और संपूर्ण कृच्छ्र व्रतांके फलकों प्राप्त होके परम पद जो विष्णुका लोक तिसनूं प्राप्तहोताहै एह तेरेतांई मैंने पराक व्रतकी विधि कहीहै ॥ ३ ॥ पूर्वोक्त अर्थको स्पष्टकर्तेहैं पराकेति पराककृच्छ्रव्रतके करणे विषें जो असमर्थ है तिस पुरुषके पाप दूरकरणे वास्ते प्रत्याम्नाय कहाहै ब्राह्मणांके तांई भिन्न २ पंदरां १५ गौयांके देणेकर्के शुद्धिकों प्राप्तहोताहै एहि अर्थहै ॥ अपरार्कविषें चतुर्विंशति मतविषें कहाहै प्रेति पराककृच्छ्रव्रत और

महापातकजालानिह्युपपातकमेवच तत्सर्वंनाशयित्वाशुतूलराशिमिवानलः ३ मरीचिः प्रत्याम्नायंपराकस्यदशपंचगवांद्विजः दद्यात्पापविशुद्ध्यर्थंसर्वश्रेयोभिवृद्धये १ महापातकयुक्तोपिसर्वपापैःप्रमुच्यते प्रत्याम्नायेनकृच्छ्रस्यपराकस्यजनाधिप २ सर्वकृच्छ्रफलंलब्ध्वाप्रयातिपरमंपदम् इतितेहिसमाख्यातःपराकोविधिरुत्तमः ३ पराककृच्छ्राचरणासमर्थस्य प्रत्याम्नायंपंचदशगवांविप्रेभ्यःपृथग्दत्त्वाशुद्ध्यतीतिवाक्यार्थः ॥ अपरार्के चतुर्विंशतिमते ॥ पराकतप्तातिकृच्छ्रस्थानेकृच्छ्रत्रयंचरेत् सांतपनस्यवाप्यर्द्धमशक्तोव्रतमाचरेत् १ स्मृत्यर्थसारेतु तप्तकृच्छ्रेषट्पराकेपंचेति। असोप्रत्याम्नायोमहत्तप्तकृच्छ्रे।तप्तकृच्छ्रेतु अपरार्के मार्कंडेयः प्राजापत्यसमाधेनुस्तद्द्वयंहिपराकके। विशेषमाहसएव पराकेतुसुवर्णंस्याद्धेमशृंगीतथैवचेति॥हेमशृंगीग्रहणेन कांस्यदोहाद्युपस्करवतींधेनुं लक्षयति॥

तप्तकृच्छ्र और अतिकृच्छ्र इनांविषें एक एक व्रतका त्रयत्रय प्राजापत्य व्रत बदला कहाहै जेकर इनांतीनों विषे भी असमर्थहोवे तां सांतपन व्रतका जो आदका अर्द्धहै तिसकों करे ॥ १ जो स्मृत्यर्थसारविषें फेर कहाहै कि तप्तकृच्छ्र व्रतविषे छे६ प्राजापत्यव्रतवदलाकरे और पराकव्रतविषे पंच५ प्राजापत्यवदला करे सो एहप्रत्याम्नायमहातप्तकृच्छ्र विषे जानणा ॥ तप्तकृच्छ्रविषे अपरार्कविषे मार्कंडेयजीका वचनहै प्राजापत्यके तुल्य फलदेणवाली प्रसूता गौ १ कहीहै सो धेनु पराक व्रत विषे दोकहीयांहैं ॥ इस विषे मार्कंडेयहि विशेष कहताहै पराकव्रत विषें सुवर्ण दानकरे तैसे सुवर्णके शृंग और रूप्येके खुर और कांस्यपात्रतें आदलेके समग्रीकर्के युक्त धेनूका दान करे ॥

इसतें अनंतर मासोपवास कृच्छ्रकों जावाल ऋषि कहताहै अनेति एकमासपर्यंत उपवास व्रत महापापांके नाशकरणेवाला कहाहै ॥ अब इसकाप्रत्याम्नायकहतेहां बारां १२ दिनके उपवासकर्के युक्त पराक व्रतहै अथवा दिन दिन प्रति सठ ६० ब्राह्मणकहणे तिसकारणतें मासकेउपवास व्रत विषें भी फलकी प्राप्तिवास्ते वदला सठ ६० ब्राह्मणाहि कहने एह पक्ष ऐश्वर्य युक्तपुरुष विषें जानणा ॥ और निर्धनपुरुष तीस ३० ब्राह्मणांके तांई भोजन देवे दिनविषें ॥ इसतें उपरंत यावककृच्छ्र व्रतकहाहै तिसविषें शंखजीकावाक्यहै गविति गौकेंगोयेतें यवांकों चुगके एक मासपर्यं जो भक्षणहै सो संपूर्णपापांके दूरकरणेवास्ते यावककृच्छ्र किहाहै १ देवलजीका वाक्यहै

अथ मासोपवासकृच्छ्रम् ॥ जावालः । अनशनंमासमेकंतुमहापातकनाशनमिति अस्यप्रत्याम्नायोद्वादशाहोपवासरूपपराकः षष्टिमितब्राह्मणभोजनं प्रतिदिनंवाविहितम् ॥ तथात्रापि षष्टि ६० मिताब्राह्मणामासंयावत् प्रतिदिनंमासोपवासफलकामनयाभोज्याः इदंचधान्यसमृद्धिपरमितरस्यार्द्धादिव्यवस्थयायोज्यम् ॥ अथयावककृच्छ्रम् तत्रशंखः। गोपुरीषाद्यवानश्नन्मासमेकंसमाहितःव्रतंतुयावकंकुर्य्यात्सर्वपापापनुत्तये १ देवलः । अथातः संप्रवक्ष्यामिकृच्छ्रंयावकसंज्ञकम् यस्याचरणमात्रेणमुच्यतेब्रह्महत्यया १ ॥ शृणुध्वंमुनयःसर्वेयावकंकृच्छ्रमीरितम् विषदानेचयत्पापंयत्पापंगृहदाहके २ शस्त्रधारेणयत्पापंयत्पापंविप्रनाशनात् विधवाव्रतलोपेचयतिसंन्यासिनोरपि ३ गृहस्थस्यसदाचारत्यागेयत्पापमुच्यते प्रकृतेनापियत्पापंतेषां विस्मयतस्तथा ॥ ४ ॥

अथेति यावकनामकर्के जो कृच्छ्रव्रतहै तिसनूं कहतेहां जिसके करणेकर्के पुरुष ब्रह्महत्यापापते रहितहोताहै ॥ १ ॥ अबमरीचिका वचनहै श्रिति हेसंपूर्णमुनीश्वरो श्रवणकरो मैनें यावककृच्छ्र नामव्रतकहीदाहै विषकेदेणेकर्के जोपापहै और गृहविषें अग्निलाणेकर्के जोपापहै ॥ २ ॥ और शस्त्रके धारणेतें जो पापहै और ब्राह्मणके मारणेतें जो पापहै और विधवा स्त्री विषे गमन करणेका जो पापहै और ब्रह्मचारीके और संन्यासीके व्रतके दूरकरणेविषें जोपापहै ॥ ३ ॥ और गृहस्थीकों कर्माके त्यागविषें जो पापहै और स्वभावकर्के जो पापहै और तिनां विधवा स्त्री आदिकांकों भय देणेका जो पापहै ॥ ४ ॥

और अपणेमानवास्ते ब्राह्मणतांई दानदेकर जो कहणाहै मैंनेदानकीया तिसकहणेतें और ब्राह्मण के अवमानतें जोपापै और ब्राह्मणकी निंदाकरणे विषे और माताका निरादरकरणेतें जो पाप ॥ ५ ॥ और धेनुकी निंदाविषे औरशिवांकी निंदाविषें और विष्णुकी निंदाविषे और यज्ञांकी निंदाविषे जो पाप ॥ ६ ॥ और विना बुलाय परगृहभोजनविषे और अनध्याय दिनांविषें पड नेका जो पाप है और दुष्टपुरुषके साथ संगतिकरणेतें जो पाप है और धनके मदतें जो पाप है ७ ॥ और दुग्धकर्के स्नानकरणेतें जो पापहै और स्त्रीके निरपराध त्यागकर्के जो पापहै यज्ञके त्यागविषे और भांडयांके वेचणेविषे जो पापहै ॥ ८ ॥ और विधवानें जो केशातें रहितस्नानक

दानस्यकीर्त्तनात्पापंयथाविप्रावमानतः यत्पापंविप्रानिंदायांयत्पापंमातृभ
र्त्सनात् ॥ ५ ॥ यत्पापंधेनुनिंदायांयत्पापंशिवभर्त्सने यत्पापंविष्णुनिंदा
यांयत्पापंक्रतुकुत्सने ॥ ६ ॥ अमानभोजनेपापमनध्यायेपुपाठने दुःसंगते
श्चयत्पापंयत्पापंधनगर्वतः ॥ ७ ॥ यत्पापंपयसास्नानेयत्पापंदारमोचने
यत्पापंक्रतुसंत्यागेयत्पापंभांडविक्रये ॥ ८ ॥ सकेशस्नानरहिता विधवा
कांस्यभोजना पुनर्भुक्तासताम्बूलासदानिन्दापरायणा ॥ ९ ॥ सदाभ्रमति
यानारीपतिद्वेषपरायणा पुत्रःपितॄणांविद्वेषीसदाविप्रापराधकृत् ॥ १० ॥
कुचैलः सर्वदातिष्ठन्यथातत्क्षालनाद्विसः बह्वाशीनिष्ठुरंवक्ताविप्रदाने
पुविघ्नकृत् ॥ ११ ॥

रणाहै और तिसकों जो कांस्यपात्रविषे भोजन करणेका पापहै और विधवाकों दूसरी वार भो जन करणे विषे और तांवूलके भक्षण करणे विषे जो पापहै और जो स्त्री सदानिंदाविषे तुकहै तिसकों जो पापहै॥ ९ ॥ और जो सदाघरघरविषे भ्रमतीहै और पतिविषे द्वेषकर्के युक्तहै तिसकों जो पाप और पुत्रकों पिताकें साथविरोध करणेका जो पापहै और ब्राह्मणविषे अपराधकरणे काजोपापहै ॥ १० ॥ और सर्वदामलिन वस्त्रधारणका जो पाप और इच्छीतग्रहवस्त्रके अप्रक्षाल णेका जो पाप और वहुत जगा भोजन खाणेविषे जो पाप और जो कठोरवचनकों कहताहै तिसका जो पाप और ब्राह्मणांके तांई दान देणे विषे विघ्न करणे वालेकों जो पापहै ॥ ११ ॥

इनां संपूर्णपापांके दूरकरणे वास्ते यावक कृच्छ्रव्रतकों करे ॥ पराशरजीका वचनहै सर्वेति संपूर्ण पापांके दूर करणे वास्ते यावक कृच्छ्र व्रतकहाहै तिसके करणे कर्के ब्राह्मण शुद्धिकों प्राप्त होताहै ॥ १ ॥ इसकी विधि कहतेहैं अव्रेति जिनांके भक्षण करणेतें व्रत न दूर होवे असयां यवांकों अर्थात् गोमयतें निकालके यवांकों आप ग्रहण कीतीहोंई जो अग्नि तिस विषे छे गुणा अधिक जल कर्के पकाके व्रती जो पुरुषहै शुद्धिकों स्नान पूर्वक करे तिस पके होये यवागूकों पलाशपत्रांके डूने विषे रक्षकर ॥ २ ॥ और यव न होण तां व्रीहि ग्रहण करे वा श्यामाक क्या सवांक ग्रहणाकरे इसके मानतें दिन दिनविषे प्रथम ब्राह्मणके तांई देकर विष्णुनांई सो अन्नअर्पण करे ॥ ३ ॥ और नित्यकर्मकों करकेसूर्यके अस्त

एतेषांपावनार्थाययावकंकृच्छ्रमाचरेत् ॥ पराशरः ॥ सर्वपापविशुद्ध्यर्थं यावकंकृच्छ्रमीरितम् तदाचरणमात्रेण विप्रोभवतिशुद्धिमान् ॥ १ ॥ अव्रतघ्नयवान्पक्कास्वगृह्याग्नौव्रतीशुचिः तद्यवागूंसमाधायब्रह्मपत्रपुटे वशी ॥ २ ॥ यवाभावेव्रीहयोवाश्यामाकाह्यस्यमानतः ॥ तदन्नंप्रत्यहं दत्वायवागूंविष्णवेऽर्पयेत् ॥ नित्यकर्मादिकंकृत्वायावन्मंदायते रविः ॥ ३ ॥ तावत्पर्य्यंतंपूर्वंविभूतिं विश्वरूपादिकं पठन्। स्थित्वा नारायणमनुस्मरन् यवागूं पिबेत् ॥ तदाहगौतमः ॥ ब्रह्मपत्रपुटेराजन्धृत्वासायमतंद्रितः तावतामनसाविष्णुंस्मरन्मंदायतेरविः । १ । यवागूं विष्णवेदत्वापश्चात्पीत्वास्वयंमुदा पूर्ववत्क्षालनंकृत्वापादपाण्योर्यथाक्रमम् ॥ २ द्विराचम्यशुचिर्भूत्वास्वपेन्नारायणाग्रतः अजस्रंधारयेदग्निंयावत्कृच्छ्रंसमाप्यते ॥ ३ ॥ परेद्युरेवंकुर्वीतद्वादशाहोभिरीरितम् तदंतेगोः प्रदातव्यापंचगव्यंपिबेत्तदा ४ ॥ एवंकृत्वाद्विजोयस्तुसद्यः पापात्प्रमुच्यते

पर्यंत विभूति विश्वरूपादिका पाठकरे और नारायणका स्मरणाकरेपीछे तिसयवागूका पानकरे ॥ तिसी नूं गौतम ऋषि कहताहै हेराजन् आलसतें रहित होके सायं काल विषे भक्षण करणे योग्य जो यवागू तिसकों पलाशपत्रांके डूनेविषे रक्षके मनकर्के विष्णुकास्मरणकरे सूर्यके अस्ततक १ ॥ फेर विष्णुनांईदेके आप पानकरे हर्षकर्के पीछेपूर्वकी न्यांईहस्थ और पैरोंकोंक्रमसें शुद्धकर्के २ ॥ दो वार आचमन करे और नारायणके आगे शयन करे और निरंतर अग्निका धारण करे जितनापर्यंत कृच्छ्रव्रत नहि समाप्त होवे ॥ ३ ॥ तितना कालकरतारहै असे संपूर्ण विधि दूसरे दिनसें लेके बारांदिनतककर्के अंतविषे पंचगव्यकों पीवे और गौ दानकरे असे करणे तें तात्काल द्विजपापतें रहितहोताहै ॥ ४ ॥

इसतें उपरंत यावक कृच्छ्रका वदलाहै तिसविषे देवलजीका वाक्यहै कृच्छ्रस्यति इसयावककृच्छ्रके प्रत्याम्नायनूं श्रवणकर जिसकें एकवार करणेकर्के ब्राह्मणादि तात्कालहिपापतें रहितहोंताहै । १ । योगीश्वरका वाक्यहै येति यावककृच्छ्रके वदलेनूं कहतेहां जों वदला संपूर्णपापांके नाश करणे वाला और पुरुषांकों संपूर्ण कृच्छ्र फलकेदेणे वालाहै ॥ १ ॥ यावक कृच्छ्रकावदलेमें दश १० गौयांसहित वछरांकेदुग्धदेणे वालीयां और हछे स्वभाववालीयां वस्त्रभूषणांकर्के संयुक्त ॥ २ ॥ भिन्न भिन्न ब्राह्मणांके तांइं देणे योग्यहैं जो ब्राह्मण जीविकासें रहितहैं ॥ पीछे देहकी शुद्धि वास्ते पंचगव्यकों पीवे एह वदला यावक कृच्छ्रके फल देणे वाला सेवणे योग्यहै

अथयावककृच्छ्रप्रत्याम्नायः॥ तत्रदेवलः ॥ कृच्छ्रस्ययावकस्यास्यप्रत्याम्नायमिमंशृणु सकृत्कृत्वाद्विजोयस्तुसद्यः पापात्प्रमुच्यते १ योगीश्वरः प्रत्याम्नायंप्रवक्ष्यामियावकस्यमहात्मनः सर्वपापप्रशमनं सर्वकृच्छ्रफलंनृणाम् १ ॥ गावोदशप्रदातव्याः प्रत्याम्नायेप्रकल्पिताः सवत्सादुग्धसंयुक्ताः सुशीलास्समलंकृताः २ विप्रेभ्यःप्रतिदातव्या अवृत्तिभ्यःपृथक्पृथक् पंचगव्यंततःपश्चात्पिबेद्देहविशुद्धये ३ एतत्कृच्छ्रस्यफलदंयावकस्यसुखाप्तये ॥ गौतमः ॥ यावकस्यमहापापहारिणःफलदायकम् सर्वपापोपशमनंमहत्पुण्यप्रदायकम् ॥ १ ॥ सम्पूर्णवस्त्राभरणखुरशृंगोपशोभिताः सवत्सायुवतीःसाध्वीर्गवांसंख्यादशस्मृताः ॥ २ ॥ पयस्विनीर्द्विजाग्र्येभ्यः प्रदातव्याःफलाप्तये पंचगव्यंपिबेत्पश्चाच्छुद्धोभवतिमानवः ॥ ३ ॥

सुखकी प्राप्तिवास्ते ॥ ३ ॥ गौतमजी कावाक्य है येति यावककृच्छ्र जों व्रतमहापापांके नाश करणे वाला तिसका वदला फलके देणे वाला और संपूर्ण पापांके नाश करणे वाला और महत्पुण्यकेदेणे वालाहै ॥ १ ॥ तिसमें संपूर्ण वस्त्र और भूषण और रुप्पेके खुर और सुवर्णके शृंगतिनां कर्के शोभायमान सहित वछयांके और जुवाण सुशीला दश गौया १० देणे शास्त्रमें कथनकीतयांहै ॥ २ ॥ दुग्धदेणेवालीयां फलकी प्राप्ति वास्ते श्रेष्ट ब्राह्मणांकेतांइं देवे और पीछे पंचगव्यका पानकरे तां मनुष्य शुद्धिकों प्राप्त होताहै ॥ ३ ॥

जो पुरुष इस प्रकार करताहै सोयावकव्रतके फलको प्राप्त होके शुद्धहोताहै ॥ ४ ॥ अवसौम्यकृच्छ्र कहतेहैं तिसविषे याज्ञवल्क्यकावचनहै पिण्येति प्रथम दिनविषे तिलांको कुटकरभक्षण करे और दूसरे दिन चावलोंकी पिछका पान करे और तीसरे दिन तक्र कया छाहका पानकरे और चौथे दिन केवलजलका पानकरे और पांचमे ५ दिन यवांकेसक्तुयांकापानकरे और एक रात्रका उपवास करे एह छे दिनका सौम्यकृच्छ्रव्रत कहाहै । १ । इहां द्रव्यका परिमाण प्राणांके निर्वाह मात्राजानणा ॥ जावालऋषिमें तो चार दिनांका सौम्यकृच्छ्र कहाहै एक दिन विषे तिलांको कुटकर भक्षण करे और दूसरे दिन सक्तु पान करे और तीसरे दिन छाहका पानकरे

एवंकृतेनरोयस्तुयावकस्यस्वरूपिणीम् गवांसंख्यांद्विजाग्र्यायदत्त्वाफलमवाप्नुयात् ॥ ४ ॥ अथसौम्यकृच्छ्रम् ॥ तत्रयाज्ञवल्क्यः ॥ पिण्याकाचामतक्राम्बुसक्तूनांप्रतिवासरम् एकरात्रोपवासश्चकृच्छ्रःसौम्योयमुच्यते १ ॥ द्रव्यपरिमाणंतुप्राणयात्रामात्रनिबन्धनमधिगंतव्यम् ॥ जावालेनतुचतुरहव्यापीसौम्यकृच्छ्रउक्तः । पिण्याकंसक्तवस्तक्रंचतुर्थेहन्यभोजनम् वासोवैदक्षिणांदद्यात्सौम्योयंकृच्छ्रउच्यते ॥ १ ॥ प्रायश्चित्तेन्दुशेखरे ॥ वारणकृच्छ्रउक्तः ॥ मासंपरिमितसक्तूदकपाने वारणकृच्छ्रः ॥ श्रीकृच्छ्रस्तु ॥ त्र्यहंपिबेत्तुगोमूत्रेत्र्यहंवैगोमयंपिबेत् त्र्यहंयावकमेपश्रीकृच्छ्रःपरमपावनः ॥ १ ॥ अथ यावकृच्छ्रः ॥ यवानांपयःसाधितानां सप्तरात्रं पक्षंमासंवा प्राशने यावकृच्छ्रः ॥

और चौथे दिन विषे उपवासकरे और वस्त्र दक्षिणा देवे एह सौम्यकृच्छ्र कहाहै ॥ १ ॥ प्रायश्चित्तेंदुशेखरविषे वारण कृच्छ्रव्रत कहाहै एकमासपर्यंत जलकरके युक्त जो सत्तु तिनांके पान करणेविषे वारण कृच्छ्रव्रतहोताहै । अब श्रीकृच्छ्रकहीदाहै त्र्यहमिति त्रय दिन गोमूत्रपीवे और त्रय दिन गौका गोयापानकरे और त्रय दिन जवांका काडा पीवे एह श्रीकृच्छ्रव्रत कहाहै ॥ १ ॥ अबयावकृच्छ्र कहीदाहै जलकरके सिद्धकीते जो यव तिनांका सप्त दिन पानकरे वा पंदरांदिन वा एक मास भक्षण करण विषे यावकृच्छ्र कहाहै ॥ एह पूर्वोक्त यावक कृच्छ्रसें विलक्षण होणे करके तुसते भिन्नहै

अव जलकृच्छ्रहै ॥ भोजनकों त्यागके जल विषे स्थितहोवे दिन रात्र तां जलकृच्छ्र होताहै ॥ अव वज्रकृच्छ्र है ॥ गोमूत्र कर्के युक्त जो यव तिनांकों एक दिन भक्षण करे तां वज्रकृच्छ्र व्रत होताहै इसजगाभी कालकानियम अहोरात्रहि जानणा और पापपुरुषको वज्रकी न्याईहै इस कर्के वज्रकृच्छ्रनामहै ❀ अव तुला पुरुष नाम कर्के कृच्छ्रकहीदाहै तिस विषे याज्ञवल्क्यजी का वचन है एषामिति तिल कुटे होये और चावलांकी पिछ और छाह और जल और सतुयांकों क्रमकर्के एक एककों त्रय त्रय दिन भक्षण करे तां पंदरां १५दिनांकर्के तुलापुरुषनाम कृच्छ्रव्रत होताहै ॥ १ ॥ इसतुलापुरुषका पंदरा दिनांकर्के विधान होणेतें उपवास नहि कहा ॥ यमजीनें इकीयां दिनांका तुलापुरुष व्रत कहाहै आचाममिति चावलांकी पिछ और तिलकुटेहोये

अनाशनोजलस्थोहोरात्रंक्षिपेदितिजलकृच्छ्रः ॥ वज्रकृच्छ्रस्तु गोमूत्रयाव कपानिएकोवज्राख्यःकृच्छ्रः ❀ अथतुलापुरुषाख्यकृच्छ्रः ॥ तत्रयाज्ञवल्क्यः ॥ एषांत्रिरात्रमभ्यासादेकैकस्ययथाक्रमम् तुलापुरुषइत्येषज्ञेयःपंचदशाहकः १ ॥ एषांपिण्याकाचामतक्राम्बुसक्तूनामित्यर्थः ॥ १ ॥ अत्रपंचदशाहकत्व विधानादुपवासस्यनिवृत्तिः । यमनत्वेकविंशतिरात्रिकस्तुलापुरुषउक्तः ॥ आचाममथपिण्याकंतक्रंचोदकसक्तुकान् त्र्यहंत्र्यहंप्रयुंजानोवायुभक्षस्त्र्य हंद्वयम् एकविंशतिरात्रस्तुतुलापुरुषउच्यते ॥ १ ॥ ❀ अथकायकृच्छ्रम् ॥ तत्रदेवलः ॥ प्राजापत्यंतप्तकृच्छ्रंपराकंयावकंतथा ततःसांतपनंकृच्छ्रं महासांतपनंतथा ॥ १ ॥ कायकृच्छ्रंतथाप्रोक्तमतिकृच्छ्रंविशुद्धिदम् ॥ औदुम्बरंचपर्णंचफलकृच्छ्रमतःपरम् ॥ २ ॥

और छाह और जल और सतु इनांकों क्रम कर्के त्रय त्रय दिन भक्षण करे और छे ६ दिन वायु भक्षण करे ऐसे इकीस २१ दिनांका तुलापुरुष कहा है इसका नामभी तुलापुरुषदानके तुल्यफल देणे कर्के है तिसके तुल्यहै ॥ १ ॥ ❀ इसतें उपरंत कायकृच्छ्रहै तिस विषे देवल जीका वाक्यहै प्रेति प्राजापत्यकृच्छ्र १ और तप्त कृच्छ्र २ पराककृच्छ्र ३ यावककृच्छ्र ४ सांतपनकृच्छ्र ५ महासांतपन ६ कायकृच्छ्र ७ अतिकृच्छ्र विशेष कर्के शुद्धिके देणे वालाहै और ८ औदुम्बरकृच्छ्र ९ पर्णकृच्छ्र १० और इसके अगे फलकृच्छ्र ॥ ११ ॥ २

माहेश्वरकृच्छ्र १२ ब्रह्मकृच्छ्र १३ धान्यकृच्छ्र १४ स्वर्णमयकृच्छ्र १५ पिच्छे कृच्छ्र व्रत तेरां १३ कथन कीतेहैं अब लिंगपुराण विषे कथन कीते जो अतिकृच्छ्र और काय कृच्छ्र तिनां करके पंदरां कृच्छ्र होतेहैं संपूर्णलोकांके उपकारवास्ते लिखेहैं ॥ कायकृच्छ्र और अतिकृच्छ्रका लक्षण जो लिंगपुराण विषे कहाहै तिसनूं कहतेहां कायेति कायकृच्छ्रनूं कहतेहां जो महापापांकों शुद्धकरणे वास्ते और उपपातकांकी शुद्धिकरणे वास्ते मुनियांने कथन कीताहै १ ॥ अब जो पाप कायकृच्छ्र करके दूर होतेहैं तिनको लिखतेहैं भविष्यत्पुराण विषे ॥ कायकृच्छ्रकरके दूरहोणवाले पाप कहेहैं तुलेति एक हजारका जो दान करताहै और ह ार

एवंमाहेश्वरंचैवब्रह्मकृच्छ्रंतथैवच धान्यंस्वर्णमयंचैवदशपंचैवकीर्तितम् ३ पूर्वंत्रयोदशकृच्छ्राणीत्युक्तम् ।इदानींलिंगपुराणोक्तत्वादतिकृच्छ्रकायकृच्छ्राभ्यांसहपंचदशभवंतिसर्वेषामुपकारकत्वाल्लिखितम् ॥ कायकृच्छ्रातिकृच्छ्रलक्षणंलिंगपुराणोक्तंविशिनष्टि ॥ कायकृच्छ्रंप्रवक्ष्यामिमहापातकशुद्धये उपपातकशुद्ध्यर्थंमुनिभिःपरिकीर्तितम् ॥ १ ॥ भविष्यत्पुराणे ॥ तुलाधेनुसहस्राणिअष्टाब्दानिद्विजोत्तम दाताप्रतिग्रहीताचअन्योन्यंनावलोकयेत् ॥ १ । तुलाधेनुसहस्रदानानंतरमष्टवर्षपर्य्यन्तं दातृप्रतिग्रहीत्रोरवलोकनादिनिषिद्धमित्यर्थः ॥ यदिदैवादनुप्राप्तंतीर्थेषुचमहोत्सवे तदातद्दोषशांत्यर्थंकायकृच्छ्रंसमाचरेत् ॥ २ ॥ द्वितीयोजपकृत्पूतःसहस्रंविधिपूर्वकम् द्वितीयःप्रतिग्रहीता उभयोर्दानयोराजातथाब्रह्मसदस्ययोः ॥ ३ ॥ चत्वार्य्येवहिवर्षाणितन्मुखनावलोकयेत् ।

धेनुका जो दान करताहै और तिनांदानांकों जो ग्रहण करताहै इसमे दाता और प्रति ग्रहीतांकों अठ वर्ष ८ पर्यंत आपसमें देखणका निषेध है क्या आपस विषे दर्शन न करें ॥ १ ॥ जेकर तीर्थां विषे फेर महोत्सव विषे दैवकरके इनां पुरुषांका मिलाप होवे तां तिसदोषकी शांतिवास्ते काय कृच्छ्र व्रतकों करे दाताकों एह प्रायश्चित्तहै ॥ २ ॥ और दानके ग्रहण करणे वाला विधि पूर्वक एक हजार १००० गायत्रीके जप करके शुद्ध होताहै तुलादान हजार और धेनुदान हजार इन दोनों दानों विषे राजा ब्रह्मा और सदस्यके मुखकों चारवर्ष पर्यंत न देखे ॥ ३ ॥

ब्रह्म और सदस्यका अर्थ शब्द कल्प द्रुम विषे कहाहै एकइति एक कर्मविषे नियुक्त होताहै और दूसरा कर्मका धारक होताहै और तीसरा प्रष्णकों कर्त्ताहै और चौथापुरुष कर्मकों कर्त्ताहै ॥ १ ॥ जोकर्मविषे निरंतर युक्तहै तिसका नाम आचार्य और सोहि पुरुष ब्रह्मांग जो होम कर्महै तिस विषे युक्त होवे सो ब्रह्मा कहीदाहै और सोहि ब्रह्माआप हवन करे तिसका नाम होताहै और जो (विधिके दखाणे वालाहै तिसका नाम सदस्य कहाहै इसअमरकोशके वाक्यतें) कदाचित् राजा ब्रह्मसदस्पके मुखको देखे तां तिसकों पापदूरकरणवास्त कायकृच्छ्रव्रतहै ब्रह्मा और सदस्य कों एक हजार१०००गायत्रीका जप शुद्धिवास्ते कहाहै ॥ असे न करे तां दोषनूं बृहस्पति जी

ब्रह्मसदस्ययोःसंज्ञा शब्दकल्पद्रुमे एकःकर्मनियुक्तःस्याद् द्वितीयस्तत्र धारकः तृतीयःप्रष्णकंकुर्य्यात्ततःकर्मसमाचरेत् १ कर्मनियुक्तआचार्यः सच ब्रह्मांगके होमकर्मणिब्रह्मा स्वयंहोमकरोहोतापीत्यादि सदस्याविधि दर्शिनइत्यमरात्सदस्योविधिदर्शीबोध्यस्तत्परिहाराय दातुः कायकृच्छ्रमि तरयोर्ब्रह्मसदस्ययोश्चसहस्रगायत्रीजपः। अन्यथादोषमाहबृहस्पतिः। दातुःप्रतिग्रहीतुश्चकायकृच्छ्रोजपोमहान् अन्योन्यालोकनेनोचेत्तद्दानंनि ष्फलंभवेत् १ महान्सचसहस्रावच्छिन्नोनोचेत् तन्निष्क्रियमकृत्वाचेदित्य र्थः॥ सर्वमहादानप्रतिग्रहेषुदातृप्रतिग्रहीत्रोः ब्रह्मसदस्ययोश्चैवमुक्तं प्राय श्चित्तंसर्वत्र वेदितव्यम् लांगलपंचसंज्ञेचविश्वचक्रमहत्तरे सप्ताब्दंचत थाराजातन्मुखंनावलोकयेत् ॥ २ ॥

कहतेहैं ॥ दातुरिति दाता और प्रतिग्रहीता आपसविषे देखण तो दाता कायकृच्छ्रव्रत न करे और प्रतिग्रहीतामहान् क्या एकहजार गायत्रीका जप न करे तां सोदान निष्फल होताहै १ तिसकी शुद्धिकों जेकर नकरे संपूर्ण महादान प्रतिग्रहां विषे दाता और प्रतिग्रहीताकों और ब्रह्मा और सदस्यकों प्रायश्चित्त जैसे कहाहै सो संपूर्ण स्थानांविषे जानणेयोग्यहै ॥ और पंच लांगल दान विषे और विश्वचक्र महा दानविषे राजा तिनादानांके ग्रहण करण वालयां पुरषांके मुखनूं सत्त ७ वर्ष न देखे २ ॥

सप्तेति सप्तसागर दानां विषें और चर्मधेनुके प्रतिग्रह विषें और महाभूत घट दान विषें और तुला दानविषें कहे जो सप्त प्रतिग्रह तिनां दानां विषें आचार्य और ब्रह्मा क्याहोना और विधि के दखाणे वाला इनांके मुखकों राजा नदेखे कदाचित् देखेता पूर्वकी न्यांई कायकृच्छ्र आदिकों करे तांशुद्धहोनाहै ॥ ३ ॥ और हिरण्य गर्भ दानविषें और ब्रह्मांड दानविषे दाता जेकर आपसविषें मुखदेखे तां दानके फलको नहि प्राप्तहोता इसजगाभी प्रायश्चित आचार्य और ब्रह्मासदस्यको पूर्वकी न्यांईहै ॥ ४ ॥ और सम्यक् कल्पवृक्षके दानविषे और तैसे कल्पलतादान विषे राजा छेद्वर्षतक ब्राह्मणके मुखको नदेखे और ब्राह्मण राजाकों नदेखे १ कदाचित् आपसविषे देखें तां कायकृच्छ्र और गायत्रीका जपकरें तिसविषे संख्या क्रमकर्के जानणे योग्यहै

सप्तसागरदानेषुचर्मधेनोःप्रतिग्रहे महाभूतघटेचैवतुलायांनावलोकयेत् ३ ॥ उक्तेषुसप्तप्रतिग्रहेषु तदाचार्य्यब्रह्मसदस्यानां प्राग्वत्कायकृच्छ्रादिकं वेदितव्यम् ॥ हिरण्यगर्भब्रह्माण्डेदातायदिहिपूर्ववत् अन्योन्यालोकनेराजन्नदानफलमश्नुते ॥ ४ ॥ आचार्य्यब्रह्मसदस्यानांपूर्ववत् ॥ संकल्पपादपादानेतथाकल्पलताग्रहे ॥ षडब्दंतन्मुखंराजाविप्रोवानावलोकयेत् ॥ ५ ॥ कायकृच्छ्रेगायत्रीजपंच तत्रसंख्याक्रमेणवेदितव्यम् ॥ हिरण्यधेनुदानेचहिरण्याश्वप्रतिग्रहे ॥ पूर्ववत्सप्तसंख्याब्दमन्योन्यंनावलोकयेत् ॥ ६ ॥ कृच्छ्रादिकंपूर्ववत् ॥ हिरण्याश्वरथेचैवहेमहस्तिरथेतथा धरादानेकालपुरुषेकालचक्रेतथैवच ॥ ७ ॥ तिलधेनौराशिचक्रेपंचाब्दंनावलोकयेत् यदिदैवात्समालोकोह्यतिकृच्छ्रंचरेद्दाता ॥ ८ ॥

॥ ५ ॥ अर्थात् राजाकायकृच्छ्रकरे और ब्राह्मणजप करे और सुवर्ण धेनुके दान विषे और सुवर्णके अश्व दानविषे पूर्वकी न्यांई सप्त ७ वर्षतक आपस विषे न देखें इसमेभी जेकर देखे तां कृच्छ्रादि व्रतपूर्वकी न्यांई जानणा ॥ ६ ॥ सुवर्णके अश्व कर्के युक्त जो रथ है तिस विषें और सुवर्णके हस्ति कर्के युक्त जो रथ है तिस दान विषें और पृथ्वी दान विषें और काल पुरुष दान विषे और कालचक्र दान विषे ॥ ७ ॥ तैसें और तिल धेनु दानविषें और राशि चक्र दानविषे दाता और प्रतिग्रहीता आपस विषे पंच वर्ष पर्य्यंत नदेखें जेकर दैवकर्के आपस विषें देखणतां दाता अतिकृच्छ्रव्रतकों करे ॥ ८ ॥

पुनरिति ब्राह्मणपटगर्भ विधानते फेर संस्कारके करणेतें शुद्धिकों प्राप्तहोंताहै ऐसे न करे तां दो षकों प्राप्तहोताहै और दाताका दान निष्फलहोताहै ९ और कहतेहैं कोटीति कोटि होमविषे और लक्ष होमविषें और पाप पुरुषके प्रतिग्रहविषें दाता आचार्यके मुखको न देखें १० जेकर देवतें दर्शनकरे तिसविषेंभी दाताकों अतिकृच्छ्रव्रतकहाहै और इतर क्या आचार्यआदिकाकों फेर संस्कार शुद्धिके निमित्त कहाहै इसमें वाशब्दसें पूर्वोक्त ५ वर्ष तक निषेध जानणा ॥ श्वेत अश्व दानकों जो ग्रहण कर्त्ताहै और मृतपुरुषके निमित्त जो शय्या दान तिसको जो ग्रहण कर्त्ताहै और हाथि दानको जो ग्रहण कर्त्ताहै तिसके मुखकों त्रय ३ वर्ष पर्यंत दाता न देखे ॥ ११ ॥ और जेकर देवतें तीर्थआदिविषें देखे तां दाता अति कृच्छ्र व्रतकरे और ब्राह्मण पटगर्भ विधितें संस्कार करणेते शुद्धिको प्राप्तहोताहै ॥ १२ ॥ और

पुनस्संस्कारभृद्विप्रःपटगर्भविधानतः अन्यथादोषमाप्नोतिदाताविफलम श्नुते ॥ ९ ॥ कोटिहोमेलक्षहोमेपापपुरुषप्रतिग्रहे आचार्य्यस्यमुखंदाताद्दै वाद्वानावलोकयेत् ॥ १० ॥ तत्राप्यतिकृच्छ्रंदातुरितरेषांपुनःसंस्कारः श्वेताश्वमृतशय्यायांगजदानप्रतिग्रहे त्र्यब्दंहितन्मुखंदातादैवाद्वानावलो कयेत् ॥ ११ ॥ अतिकृच्छ्रंचदातास्याद्ब्राह्मणःपटगर्भतः १२ आर्द्र कृष्णाजिनेचैवसप्तशैलप्रतिग्रहे द्विज्यब्दंतन्मुखंदातापूर्ववन्नावलोकयेत् ॥ १३ ॥ ब्रह्मकृच्छ्रंचरेद्दाताइतरेपटगर्भतः शुद्ध्यंतिसततंविप्राःशातातपवचो यथा ॥ १४ ॥ ब्रह्मकृच्छ्रंप्राजापत्यमित्यर्थः ॥ कपिलाद्विमुखीदानेदा सीगृहपरिग्रहे अब्दमेकंद्विजदातापूर्ववन्नावलोकयेत् ॥ १५ द्विमुखीउभ यमुखीत्यर्थः ॥ पर्णकृच्छ्रंततःप्रोक्तमितरेषांहिपूर्ववत् तुलादिसप्तदानेषु ऋत्विजोहोतृकानपि द्वारस्थान्नावलोकेद्वाफलकृच्छ्रमुदाहृतम् १६ मासत्रयमित्यर्थः

कृष्ण मृगके आर्द्र क्या गिल्लेचर्मके दानविषे दोवर्ष और सप्त७पर्वत दानके ग्रहणविषे त्रयवर्ष पर्यंत दाता दानके ग्रहण करणवालेके मुखकों न देखे १३ जेकर देवतें देखे तां दाता प्राजापत्यकृच्छ्र व्रतकों करे और इतर जो आचार्य्यआदि सो पटगर्भ विधिते शुद्धहोतेहैं एह शातातपका वचनसत्यहै १४ और कपिलागौके दानविषें और उभयमुखी गौके दानविषें और दासी और गृहदानविषे दाता एकवर्षपर्यंत दानग्रहीताके मुखको पूर्वकीन्याईं नदेखे १५ जेकर देवतें देखे तां दाता पर्णकृच्छ्र व्रतकों करे और.आचार्य्य आदिकांकी शुद्धि पूर्वकी न्याईं पटगर्भ विधानतें होतीहै और तुला आदिसप्त७दानां विषें दाता द्वारविषे स्थित जो ऋचांकों पठनवाले तिनांकों न देखे त्रयमास ३ पर्यंत जेकर देखे तां फल कृच्छ्र करके शुद्ध होताहै ॥ १६ ॥

सर्वेषामिति संपूर्ण ऋत्विजजोहैं तिनांकेदर्शनविषे दाता आदरकर्के गायत्रीका एक हजारज पकरे और आज्य और भूषण और धेनुइनांके दानविषे और बळद आदिके दानविषे १७ ॥ और महिषी और बकरी और भेड इनांके दान विषे एकमासपर्यंत निरंतरदर्शन न करे जेकर करे तां ऋत्विजांको एकशत१००गायत्रीकाजपकहाहै और जोदानकरणेवालाहै सो तिसदोष केदूर करणे वास्ते धेनुदान करे १८अव इसमे विशेषकहतेहैं सात्त्विकेति सात्विक क्या चवी यां२४ अवतारांकीयांमूर्त्तियांके दान ग्रहण करणेवाला जो पुरुष है तिसके दर्शनकरणेमे दोष नहिजानणा ॥ अव इसीविषे गालवजीकावचनहै हेब्राह्मणांके प्यारे चवीयां अवतारांकीयांमूर्त्ती आदिकके दानविषे और दशां १०अवतारांके मूर्त्तिदानविषे और हेप्रभो लक्ष्मीनारायण प्रतिमा आदि दानविषे दाता और दानके ग्रहण करणवालेकों परस्परमुखके देखणेविषे दोषनहि १ ॥ और अर्द्धनारीश्वर शब्दका अर्थ कहतेहैं क्या पार्वती शिवांकी प्रतिमादिकके दान विषे और

सर्वेषामृत्विजांप्रोक्तंसहस्रजपमादरात् आज्यालंकारधेनूनामनड्वाहादिसंग्रहे ॥ १७ ॥ महिषीछागवस्तानांमासमेकंनिरंतरम् ऋत्विजां शतगायत्रींदाताधेनुंसमाचरेत् ॥ १८॥ सात्विकदानेषुचतुर्विंशतिमूर्त्यादिदानावलोकने न दोषः ॥ गालवः चतुर्विंशतिमूर्त्यादिदानेषुद्विजवल्लभ दशावतारदानेषु अर्द्धनार्य्यादिपुप्रभो मुखावलोकनंदातृग्रहीत्रोर्नतुदोषभाक् ॥ १ ॥ अर्द्धनारीश्वरं लक्ष्मीनारायणप्रतिमा ॥ उमामहेश्वरप्रतिमादानेषु कृष्णाजिनतिलविरहितेषु दातृप्रतिग्रहीत्रोर्मुखावलोकनं न दोषहेतुः ॥

कृष्ण हरिणका चर्म और तिल इनांते रहित जो दानहैं तिनांविषे दाता और ग्रहीताकों परस्पर देखणेमे पूर्वोक्तदोष नहि ॥ जेहीयां २४ मूर्त्तियां दानवास्ते बनाईआंजातीयांहैं सो पांचतांत्रविषे लिखतेहैं सशक्तिकाय केशवायनमः १ नारायणायनमः २ माधवायनमः ३ गोविंदायनमः ४ विष्णवेनमः ५ मधुसूदनायनमः ६ त्रिविक्रमायनमः ७ वामनायनमः ८ श्रीधराय नमः ९ हृषीकेशायनमः १० पद्मनाभायनमः ११ दामोदरायनमः१२इत्यादिमंत्रांकर्के जो बारां मूर्त्ति हैं सो शक्तिके साथ गिणनेतें२४जाणनीयां और दशावतारोंके दानमे मत्स्य १ कूर्म्म २ वराह ३ नरसिंह ४ वामन ५ रामचंद्र ६ पर्शुराम ७ बलदेव ८ बुद्ध ९ कल्की १० इसनामकीयां स्वर्णादिमयमूर्त्तियां जाणनीयां ॥ और जो पिछे पटगर्भ विधि कहीहै सो वस्त्रका गर्भ बनाके तिसकीयोनिसे निकालना एह संस्कार विशेष गोमुखप्रसवकी न्याई जानणा

कृष्णेतिश्रौर काले हरिणका चर्म श्रौर तिल इनातें रहित श्रेष्ट प्रतिमाआदिदानके ग्रहणकरणे विषे बिशेष जाबालिऋषिकहताहै दशेति इनांदसां १० अवतारांके दानके योगांविषे तिल चर्म्मादिदानांविषे चाहे पूर्वोक्तमूर्त्तिभी साथहोवे तांभी तिसजगाभोजनकरणे वाले ब्राह्मणको दाता छे६महीने तक न देखे ॥ १ ॥ उत्क्रांतिरिति मरणसमयविषे आतुरदानको श्रौर बैतरिणी दान को श्रौर पुतलादाह विषे जो ब्राह्मण दानको ग्रहण कर्त्ताहै श्रौर प्रेतके निमित्त जो दान है तिसको जो ग्रहण कर्त्ताहै श्रौर प्राणिके मरणेतें यारमें ११ दिन विषे जो तिसके गृहविषे अन्नको भक्षण कर्त्ताहै ॥ २ ॥ उग्रशांतियां क्या बालकांके जन्म विषे अभुक्तमूलादि

कृष्णाजिनतिलरहितेप्रधानप्रतिमाप्रतिग्रहे विशेषमाह जाबालिः ॥ दश स्वेतेषुयोगेषुभुक्तवत्सुद्विजोत्तमान् तिलाजिनप्रधानेषुषण्मासंनाऽवलोकयेत् १ उत्क्रांतिवैतरण्योश्चतथाप्रतिकृतौनृप अन्नप्रतिग्रहेतातएकाहभोजनेतथा २ । उग्रशान्तिषुसर्वत्रतथामाहिषसंग्रहे कर्त्तानालोकयेद्विप्रंकायकृच्छ्रमथाचरेत् ३ ॥ उत्क्रांतिर्मरणोपयोगिसमयः। प्रतिकृतिः पर्णशरदाहसमयः ॥ अन्नप्रतिग्रहः प्रेतान्नग्रहः ॥ एकाहभोजनं एकादशाहभोजनम् ॥ उग्रशान्तयः शिशूनांजनने अभुक्तमूलादयःस्पष्टमन्यत् । ※ कायकृच्छ्रंलक्षयतिमरीचिः ॥ चत्वार्य्यहानिग्रासाःस्युरेकैकंप्रत्यहंप्रति निराहारस्तथातेषुचतुर्ष्वासायभोजनम् ॥ १ ॥ तदंतेव्रतिभिर्देयागौरेकाचान्द्रभूषणा कायकृच्छ्रमिदंप्रोक्तंमुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ॥ २ ॥ चतुर्षुदिवसेषु प्रत्यहमेकैकग्रासभोजनम् ततश्चतुर्षूपवासः ततश्चतुर्षुसायंभोजनमिति द्वादशाहनिर्वर्त्योयं कायकृच्छ्र इत्यर्थः ॥

तिनांविषे जो दानको ग्रहण कर्त्ताहै श्रौर तैसे माहिषदानको जो ब्राह्मण ग्रहण कर्त्ताहै तिसको विधिके करणे वाला न देखे जेकर देखे तां कायकृच्छ्रव्रतको शुद्धिवास्ते करे ३ ※ अवकायकृच्छ्र व्रतको मरीचि ऋषिजीदखातेंहैं चेति चारदिन पर्यंत दिन दिनविषे एक एक ग्रास भक्षणकरे श्रौर तिसतें पीछे चार दिन कुछ न भक्षणकरे श्रौर तिसतें पीछे चार दिन रात्रि विषे भोजनकरे ऐसे बारां दिनांकर्के कायकृच्छ्रव्रतको करे ॥ १ ॥ श्रौर व्रतकी समाप्तिविषे व्रतिपुरुषांनें रजत भूषण युक्त एक गौ देणेयोग्यहै एह काय कृच्छ्र व्रत यथार्थधर्मके देखणवालयां मुनियांनें कहाहै ॥ २ ॥

अवप्रजापतिका वचनहै चार ४ दिनां विषे चारहि ग्रास दिनविषे भक्षणकरे और चारदिन कुछ न भक्षण करे और चार ४ दिन रात्रिविषे भक्षणकरे एह वारांदिनांका परम श्रेष्ठ कायकृच्छ्रनाम व्रतहोताहै १ विधिवास्ते मरीचिऋषिकावाक्यहै प्रातःकालतेंलेके संध्याकालपर्यंत जैसेविधिहै तैसे ब्राह्मण स्नानकों करे गंधपुष्पआदिककर्के विष्णुका पूजनकरे जद सूर्यअस्तहोवे तांबुद्धिमान् १ विष्णुतांई निवेद्य देकर्के ग्रासका भक्षणकरे और पीछे हथपादशुद्धकर्के दोंआचमनकरे और नारायणकों स्मरणकर्त्ता होया समीपहि शयनकरे फेर दूसरे दिन प्रातःसमय उठके पूर्वकीन्यांई नियमकरे ३ तिस दिनविषेभी ग्रासभक्षणकरे ऐसे चारदिन ग्रास भक्षण कर्के तिसतें परे चार दिन

प्रजापतिः । चतुर्ष्वहस्सुग्रासाःस्युर्निराहारस्तथापुनः चतुर्ष्वासायमक्ष्यः स्यात्कायकृच्छ्रमिदंपरम् १ तद्विधिमाह मरीचिः। ग्रासार्यंप्रातरारभ्यस्नात्वाविप्रोयथाविधि अभ्यर्च्यगन्धपुष्पाद्यैरविरस्तंगतोयदा १ तदाग्रासंसमश्नीयाद्विष्णवार्पितममुंसुधीःप्रक्षाल्यपूर्ववत्सर्वैद्विराचम्यशुचिस्तथा २ स्वपेद्देवसमीपेतुनारायणमनुस्मरन् पुनःप्रातःसमुत्थायकृत्वानियमपूकम् ॥ ३ ॥ तत्रापिभक्षयेद्ग्रासमेवंचतुरहंप्रति ततःपरंनिराहारस्तथा चतुर्ष्वभोजनम्॥४॥ अभोजनमेकाहारइत्यर्थः॥ गोदानंव्रतपूर्त्यर्थं पंचगव्यंपिवेत्ततः कायकृच्छ्रमिदंदेवाद्विजानांपावनंस्मृतम् ॥ ५ ॥ अथकायकृच्छ्रप्रत्याम्नायः ॥ तत्रदेवलः ॥ शृणुरामप्रवक्ष्यामिकायकृच्छ्रस्यधीमतः प्रत्याम्नायंमहापुण्यंशृणवतांपापनाशनम् ॥ १ ॥ दशगावःप्रदातव्याः सवत्साभूषिताअपि पयस्विन्यःसुशीलाश्चस्वर्णशृंग्योमहत्तराः ॥ २ ॥

उपवासकरे तैसे चार दिनां विषे रात्रिविषे एक आहारकरे ४ और व्रतकेपूर्णफलकी प्राप्तिवास्ते गौदानकरे और पंचगव्यका पानकरे एहकायकृच्छ्र ब्राह्मण आदि वर्णांकों पवित्रकरणेवाला कहाहै ५ ॥ अवकायकृच्छ्रका प्रत्याम्नायहै तिसविषे देवलजीका वाक्यहै हेराम कायकृच्छ्रके बुद्धिके देणे वाले वदलेनूं श्रवणकर कैसा वदलाहै महापुण्यहै क्या वहुतपवित्रहै और जो श्रवण कर्तेहैं तिनांके पापकों दूरकरणे वालाहै १ दश १० गौवां सहित वच्छयांके दुग्धकर्केयुक्त सुशीला स्वर्णके शृंगांकर्के युक्त और पूजित देणे योग्यहैं वदले विषे ॥ २ ॥

इसी विषयमे गालवजीका वचन है सर्वेति संपूर्ण पापांके दूर करणे वाला जो कायकृच्छ्र व्रत हैं हेराजन् तिसका प्रत्याम्नाय एह है कि सहित बच्छयांके दश १० गौयां तिनांके दानकरणे करके साधुस्वभाववाला पुरुष कायकृच्छ्र व्रतके फल कों प्राप्त होताहै ॥ १ ॥ अब कण्वऋषिका वचन है कायेति संपूर्ण पापांके नाशकरणे वाला कायकृच्छ्र जो संपूर्ण व्रत है तिसका वदलाराजयांके संपूर्ण पापांके नाश करणे वाला और महा दानके ग्रहणकरणे वाले जो पुरुषहै तिनांके संपूर्ण पापांके नाशकरणे वाला कहाहै अथवा राजयांतें प्रति ग्रहउठाणें वालयांके पापको दूर कर्ताहै ॥ १ ॥ स्नात्वेति पुण्यदिन विषे ब्राह्मण पूर्वकी न्याई संकल्पकों करके तिलक और पुष्प आदिकांकर्के दशां ब्राह्मणांकों

॥ गालवः ॥ सर्वपापहरस्यास्यकायकृच्छ्रस्यवैनृप प्रत्याम्नायोदशगवांस वत्साः साधुवृत्तिमान् एतदाचरणेनैवकायकृच्छ्रफलंलभेत् ॥ १ ॥ कण्वः ॥ कायकृच्छ्रस्यसर्वस्यसर्वपापहरस्यच राज्ञांप्रतिग्रहीतॄणां सर्वपापहरंपरम् ॥ १ ॥ स्नात्वापुण्यदिनेविप्रः सुसंकल्प्यैवपूर्ववत् विप्रानभ्यर्च्यगन्धाद्यैर्दशधेनूःपृथक्पृथक् ॥ २ ॥ दद्यात्प्रत्याम्नायभूताः सर्वपापापनुत्तये एतस्याचरणेपूर्णेकायकृच्छ्रफलंलभेत् ॥ ३ ॥ ⊛ अथौदुम्बरकृच्छ्रम् ॥ तत्रदेवलः ॥ औदुम्बरस्यकृच्छ्रस्यलक्षणंवच्मितत्त्वतः कृच्छ्रं महत्तरंभूपसर्वपापहरंपरम् ॥ १ ॥ पितृमातृपरित्यागःस्वदाराणांह्यनाग साम् भगिनीभागिनेयार्थिगर्भिण्यातुरकन्यका ॥ २ ॥ वालश्चकुलवृद्धश्च अतिथिश्चागतःप्रभो सामर्थ्येसतिवन्धूनांत्यागेदोषोमहत्तरः ॥ ३ ॥ ब्रह्महत्यामवाप्नोतियदुपेक्षापरायणः ॥

१० पृजके भिन्न भिन्न एक एककों प्रसूतहोई गौदेवे ऐसें दश १० गौवां दानकरे ॥ २ ॥ एह प्रत्याम्नाय सपूर्णपापांके नाशकरणवास्ते कहाहै इसके करणेकरके कायकृच्छ्रके फलनूं प्राप्तहोताहै ॥ ३ ॥ ⊛ इसतें उपरंत औदुम्बरकृच्छ्रहै तिसविषे देवलजीका वाक्यहै औवेति औदुम्बरकृच्छ्रके लक्षणनूं यथार्थकर्के कहतांहां एह कृच्छ्र वहुत श्रेष्ठहै हेराजन् संपूर्ण पापांकेनाशकरणे वालाहै ॥ १ ॥ अब इसकर्के दूरहोणेवाले पापांको कहतेहां पीति पिता और माता और अपराधर्ते विना स्त्रीयां इनांका जो त्यागहै और भैण और भनेवां और अर्थी और गार्भिणी और रोगी और कन्या ॥ २ ॥ और वालक और कुलमे वृद्ध और अतिथि इनांसंबंधियांके कदाचित् त्याग विषे सामर्थ्यके होयां २ महा दोषहै ॥ ३ ॥ इनांकों सर्वदा त्यागणे वाला पुरुष ब्रह्महत्या पापकों प्राप्त होताहै ॥

भेति भैण और दूसरीमाताकीकन्या और संबंधितेरहितजो स्त्रीहै और जिसकाभर्त्ता विदेशगियाहै और अनाथ जो कन्याहै और विधवास्त्री इनांकों जो पुरुषकारणसें विनात्यागताहै ।१। और पिताकी भैण और माताकी भैण और विदेश गियाभर्त्ता जिसका असी पुत्रतें रहित जो स्त्री है और पूजने योग्य जो स्त्री अर्थात् गुरुआदिकोंस्त्री तिनांकों त्यागणे करके पुरुषनरककों प्राप्तहोताहै अथवा(अधनीयां)क्याधनतें रहितजो स्त्रीहै॥ २ ॥ और महाभारतविषेभी एहविषयकहाहै पितेति कौमार अवस्थाविषे पितारक्षाकरे और भर्त्ताजुवानी अवस्थाविषेरक्षाकरे और पुत्रवृद्ध अवस्थाविषे रक्षाकरे स्त्री अपने अधीन कदाचित् होणेकों योग्यनहिहै ॥ १ ॥ और उन्मत्त और पतित और नपुंसक और काण और बधिर ऐसें पिताकी पुत्र आदिअन्न वस्त्र आदिकांकरके रक्षाकरे ॥ २ ॥ अबगोतमजीकावाक्यहै अरक्षेति रक्षणेयोग्यजोस्त्री नाहि तिसकीरक्षाकरनाहै और जो रक्षणेयोग्यहै

भगिनींचस्वसारंह्यनाथांगतभर्तृकाम् पुत्रीमनाथांविधवांयस्त्यजेत्कारणं विना॥ १ ॥ पितृभगिनींमातृभगिनीमपुत्रांगतभर्तृकाम् अर्चनीयांपरित्यज्यसैवनरकमश्नुते यद्वाअधनीयामियमधनाइत्येवंज्ञाताम् २ महाभारते पितारक्षतिकौमारेभर्त्तारक्षतियौवने पुत्रस्तुस्थविरेभावेनस्त्रीःस्वातंत्र्यमर्हति॥ १ ॥ उन्मत्तंपतितंक्लीबंकाणंबधिरमेवच पुत्रादिर्यत्नतोरक्षेदन्नवस्त्रादिभिःशनैः॥ २ ॥ गौतमः ॥ अरक्षणीयांयोरक्षेद्रक्षणीयांपरित्यजेत् सवैनरकमाप्नोतितिर्य्यग्योनिपुजन्यते ॥ १ ॥ किंचवेश्यादासीतन्मातरस्तत्पुत्राःकुण्डगोलकनटविटगायकचार्वाकास्त्वरक्षणीयाः ॥ अनाथगतभर्तृकानिष्पुत्राःस्त्रियः पितृव्यज्येष्ठभ्रात्रादयोनिष्पुत्रानिर्धनिनः काणकुब्जादयोयत्नतोरक्ष्याः एतेषांपरित्यागेदोषः ॥

तिसकी रक्षा नहि करता सो पुरुषनरककों प्राप्तहोताहै और पशुआदिकजन्मकों प्राप्तहोताहै १ । और विशेषकहतेहैं वेश्येति वेश्या और दासी और तिनांकीयांमाता और तिनांकेपुत्र और भर्त्ताके जीवतयांजो जारतें जन्मयाहै असा कुंडपुत्र भर्त्ताके मृतहोयां होयां जो जारतेंजन्मयाहै गोलकपुत्र और नट और विट क्या व्यभिचारी पुरुषका नोकर और गायक और चार्वाक क्या नास्तिक एह रक्षाकरणे योग्यनहिहैं ॥ और विशेषकहतेहैं अनेति संबंधियांतें रहित और जिसका भर्त्ता विदेश गियाहै और पुत्रांतें रहित जो स्त्री है और पिताका भ्राता और पुत्रतें रहित अपणा बडा भ्राता धनतें रहित भी पूर्वोक्त और काणा अक्षि करके और कुबतें आदलेके जो पुरुष वा स्त्रीहोवे सो एह यत्नतें रक्षाकरणे योग्यहै इनाके त्यागविषे दोषहै ॥

तदिति तिस दोषके दूरकरणे वास्तें प्रायश्चित्तकों मार्कंडेयऋषि कहताहै सामर्थ्यके होयां २ जो पुरुष इनां अपणे संबंधियांकों त्यागताहै सोकाकजन्मकों प्राप्तहोकर वारंवारदुःखी होताहै १ ॥ एकमास पर्यंत जो त्यागताहै सो पंचगव्यके पीणेकर्के शुद्ध होताहै और जोर पुरुष छे६ मास पर्यंत संबंधीयांकों त्यागताहै सो स्वर्णकृच्छ्रव्रतकर्के शुद्ध होताहै और वर्ष पर्यंत संबंधियांके त्यागविषे औदुम्बर कृच्छ्र कहाहै और वर्षतें अधिक त्यागविषे चांद्रायण व्रतकहाहै ॥ २ ॥ अबप राशरजीकावचनहै औदिति औदुंबर व्रतविषे चावलांकों वासांकीकों जैसे विधिहै कि वारां१२

तत्प्रायश्चित्तमाहमार्कण्डेयः ॥ सतिसामर्थ्येत्यजेद्यस्तुएतान्वन्धुजनान्स्वकान् सकाकयोनिमासाद्यदुःखीभूयात्पुनःपुनः १ ॥ मासंत्यक्कापंचगव्यं षण्मासान्स्वर्णकृच्छ्रकृत् वत्सरऔदुम्बरंप्रोक्तमर्वाकूचान्द्रायणंपरम् २ ॥ पराशरः औदुम्वरेतंडुलानांश्यामाकान्वायथाविधि दशद्वेधाविभज्यैवप्रत्यहंपाचयेद्व्रती ॥ १ ॥ दशद्वेधाद्वादशधेत्यर्थः ॥ औदुम्वरैःशुष्कपर्णैःपाचयेन्नान्यदारुभिः औदुम्वरैश्चपर्णैश्चआर्द्रैःपात्रमुदाहृतम् ॥ २ ॥ तत्रनिक्षिप्यतंग्रासंविष्णवेपूर्वमादिशेत् चतुर्थकालआयातेपूर्ववन्नियमंचरेत् ॥ ३ ॥ ग्रासवचननियमादिकमित्यर्थः॥ एवंग्रासाद्वादशस्युर्द्वादशाहानिभक्षयेत् अत्रापिगौःप्रदातव्यापंचगव्यंपिवेत्ततः ॥ ४ ॥

विभागकर्के दिन दिनविषे वारां दिन पर्यंतव्रतीपकावे दशद्वेधा क्या वारां१२ हिस्से करे ॥ १ ॥ गूलरवृक्षके शुष्कपत्रां कर्के पकावे होरी काष्ट कर्के न पकावे और गूलरपत्रां कर्के मिश्रित जो पलाहके पत्र तिनां कर्के पात्र वनावे ॥ २ ॥ तिस पात्रविषे तिसग्रासकों रक्षके विष्णु तांई पहले अर्पण करे और पीछे चौथे पहर विषे पूर्वकी न्यांई नियम करे क्या भक्षण करे नियम कर्के ग्रासादिके भक्षणका विधान जानणा ॥ ३ ॥ इस प्रकार वारां ग्रासहैं वारां १२ दिन वार्में और इस विषे भी पंचगव्यका पान करे और एक गोदान करणे योग्यहै ॥ ४ ॥

एवमिति एह औदुम्बर नाम कृच्छ्र व्रतकहाहै सो विशेषकर्के करणे योग्यहै मौनव्रतबिषेयुक्तहोके उत्तमग्रासका भक्षण करे ॥ ५ ॥ और हत्थां पादांकोंधोके दोवार आचमन करे विधिकर्के फेर सायंकालविषे कर्मकों करे तिसतें पीछे नारायणके आगे शयन करे ॥ ६ ॥ फेर प्रातःकालबिषे निर्मलहोकर दूसरे दिनकीकृत्यकों पूर्वकीन्याईंकरे ऐसे शास्त्रकर्के कहीजो विधि तिसकेकरणेकर्के शुद्धिकों प्राप्त होताहै ॥ ७ ॥ ❀ इसतें उपरंत औदुम्बरकृच्छ्रका प्रत्याम्नायकहाहै तिसविषे देवलजी का वचनहै औदुम्बरेति औदुम्बर कृच्छ्रका प्रत्याम्नायपुरुषांकों श्रेष्ठकहाहै तिसके करणेकर्के संपूर्ण फलकोंप्राप्तहोताहै । १ । अब मार्कंडेयजीकावाक्यहै प्रत्येति हेरामपूर्व औदुम्बरकृच्छ्रकाप्रत्याम्नाय

एवमौदुम्बरंकृच्छ्रंकर्त्तव्यंचविशेषतः भक्षयेदुत्तमंग्रासंमौनव्रतपरायणः ५॥ पादौप्रक्षाल्यपाणीचद्विराचम्यविधानतः सायाह्निकंततःकृत्वास्वपेन्नारायणाग्रतः ॥ ६ ॥ पुनःप्रभातेविमलोद्वितीयंपूर्ववच्चरेत् एवंशास्त्रोक्तविधिनाकृत्वाशुद्धिमवाप्नुयात् ॥ ७ ❀ अथौदुम्बरकृच्छ्रप्रत्याम्नायः॥ तत्रदेवलः ॥ औदुम्बरस्यकृच्छ्रस्यप्रत्याम्नायःपरंनृणाम् तस्याचरणमात्रेणसंपूर्णफलमश्नुते ॥ १ ॥ मार्कंडेयः ॥ प्रत्याम्नायःपुरारामजामदग्न्येनभाषितः मातृहत्याविशुद्ध्यर्थंकिमुतान्यस्यपापिनः ॥ १ ॥ राजविजये ॥ कृच्छ्रस्यौदुम्वरस्यास्यप्रत्याम्नायोमहानयम् सर्वपापविशुद्ध्यर्थंसृष्टवान्पद्मभूः पुरा १ ॥ चतुर्विंशतिमते ॥ औदुम्वरस्यकृच्छ्रस्यप्रत्याम्नायस्यलक्षणम् अष्टगावःप्रदातव्याःसालंकाराःसुलक्षणाः १ ॥ हेमशृंग्योरौप्यखुराःकांस्यदोहनसंयुताः सर्वपापविनिर्मुक्तःसंपूर्णफलमाप्नुयात् ॥ २ ॥

मातृहत्याकीशुद्धिवास्ते परशुरामनेंकथनकीताहै अन्यपापीकाक्या कहणाहै । १ । राजविजयग्रंथ विषे कहाहै कृच्छ्रेति इसऔदुम्वरकृच्छ्रकाएहप्रत्याम्नाय श्रेष्ठहै संपूर्णपापांकी शुद्धि वास्ते इसकों पूर्वब्रह्माउत्पन्न करताभया ॥ १ ॥ चतुर्विंशति मतविषे कहाहै औदुंवरकृच्छ्रके प्रत्याम्नायकेलक्षण कों कहतेहैं अठ ८ गौयां देणेयोग्यहैं कैसीयां गौयां जो शोभाकर्के युक्तहैं और श्रेष्ठ लक्षणा वालियांहैं ॥ १ ॥ और सुवर्णके शृंगों कर्के युक्त और रजत खुरां कर्के युक्त कांस्यके दोहन पात्र कर्के युक्त तिनां गौयांके देणे कर्के संपूर्ण फलकों प्राप्त होता है ॥ २ ॥

इसतें उपरंत माहेश्वरकृच्छ्रका लक्षणकहाहै कृच्छ्रमिति माहेश्वरनामककें जो कृच्छ्रव्रतहै सो संपूर्ण पापांके नाशकरणेवालाहै इसमें गाथाकहतेहैं पूर्वंशिवजीक्रोधकर्के कामदेवकों यद दाहकरते भये तां शिवजीमें बडादोषहोताभया ॥ १ ॥ तिसदोषके दूरकरणेवास्तेब्रह्माकों पुछताभयाहेदेव कामके दाहकरणेतें मेरेविषें बहुतदोषस्थितहै तिसदोषकेदूरकरणेवास्तेउपायकहो । २ । ब्रह्माजीकहतेभये सर्वेति संपूर्ण दोषांके दूरकरणे वाला और संपूर्ण उपद्रवांके नाशकरणेवाला और पुरुषांकों संपूर्ण पुण्यके देणेवाला और संपूर्ण स्नानका फलदेणे वाला और वहुत श्रेष्ठहै ॥ ३ ॥ प्रातरिति प्रातः काल विषें दंतधावनकों कर्के स्नानको करे और जैसें योग्यहै तैसें संध्या वंदनआदिक

* अथमाहेश्वरकृच्छ्रलक्षणम् ॥ कृच्छ्रंमाहेश्वरंनामसर्वपापप्रणाशनम् पुराकंदर्पदहनेमहान्दोषोभवेद्यदा ॥ १ ॥ तद्दोषपरिहारार्थंब्रह्माणंपर्य्यपृच्छत पंचवाणस्यदहनान्महान्दोषोमयिस्थितः ॥ २ ॥ तद्दोषपरिहारार्थंनिष्कृतिर्देवकथ्यताम् ॥ ब्रह्मा ॥ सर्वदोषप्रशमनंसर्वोपद्रवनाशनम् सर्वपुण्यप्रदंन्टणांसर्वस्नानफलंमहत् ॥ ३ ॥ प्रातःस्नात्वायथाचारंदंतधावनपूर्वकम् तावन्नारायणंस्मृत्वापूर्ववत्पापमोचनम् ॥ ४ ॥ यदामंदायतेभानुस्तदाकापालमुद्वहन् श्रोत्रियाणांचविप्राणांगृहेपुत्रिपुर्सस्थया ॥ ५ ॥ शाकंभक्ष्यंफलंवापियथासंभवमादरात् आनयित्वाथदेवायसमर्प्यविधिपूर्वकम् ॥ ६ ॥ भक्षयेत्तानिसर्वाणिवाग्यतोन्नमकुत्सयन् हस्तौपादौतुप्रक्षाल्यद्विराचम्यशुचिःस्ततः ॥ ७ ॥ सायंकालेस्वपेन्नाथसमीपेनियतावसेत् ततःप्रातःसमुत्थायपूर्ववत्सर्वमाचरेत् ॥ ८ ॥

कर्मांकों करे तां फेर पापांके नाशकरणे वालेजो विष्णु तिनांको पूर्वकीन्याईं स्मरण करे ४ ॥ और यद सूर्यका तेज मंददोवे तद कापालको ग्रहणकर्के वेदपाठी जो ब्राह्मणतिनांके तीनगृहां विषें संस्थाकर्के ॥ ५ ॥ भक्षण करणेकेयोग्य जो शाकवाथुआदिक और फलकदली आदिकहै जैसें प्राप्तहोवे भिक्षा तिसकों आदरतेंल्यावे और विधि पूर्वक विष्णुके तांईं अर्पणकर्के ॥ ६ ॥ भक्षणकरें संपूर्णांनूं मौनधारके अन्न निंदा न करे हस्थ और पादांको शुद्धकर्के दोवार आचमन करे ऐसें शुद्ध होके ॥ ७ ॥ रात्रिविषे विष्णुके समीप शयन करे इंद्रियांकों रोकके तिसते उपरंत दूसरे दिनविषे प्रातःकाल उठके पूर्वकी न्याईं संपूर्ण नियम करे ॥ ८ ॥

गौरिति एकगो श्रेष्ठब्राह्मणकेतांई देवे कर्मांके फलकी प्राप्तिवास्ते पीछे पंचगव्यनूं पीवे एह माहेश्वर कृच्छ्रकहाहै । ९ । हेभगवन् इसव्रतकों कर संपूर्णदोषांकी शांतिवास्ते और संपूर्ण पापांके दूरकरणवास्ते और संपूर्णकल्याणांकी प्राप्तिवास्ते । १० । ऐसे श्रवणकर्के महादेव व्रतकों करता भया इसी कर्के इसका नाम माहेश्वर व्रत है महेश्वर जीने प्रकाशित कीता है और इस माहेश्वर कृच्छ्रके करणेकर्के ब्राह्मण आदि वर्ण पापतें रहितहोताहै । ११ ॥ अब माहेश्वरकृच्छ्रकाप्रत्याम्नायहै तिसविषे देवलजीका वाक्यहै मेति माहेश्वर नामकर्के जो कृच्छ्रव्रत तिसके वदलेनूं श्रवण कर कैसा वदलाहै संपूर्ण पापांके दूर करणे वाला और संपूर्ण कृच्छ्र फलकेदेणे वालाहै १ ॥

गौरेकाद्विजवर्य्यायदेयाकर्म्मफलाप्तये पंचगव्यंपिबेत्पश्चात्कृच्छ्रंमाहेश्वरंत्विदम् ॥ ९ ॥ कुरुष्वचैनंभगवन्सर्वदोषोपशांतये सर्वपापविनिर्मुक्त्यैसर्वश्रेयोभिवृद्धये ॥ १० ॥ एवंकृत्वातदादेवोमहेशानस्तथाकरोत् एतस्याचरणेनैवद्विजः पापात्प्रमुच्यते ॥ ११ ॥ ॥ अथमाहेश्वरकृच्छ्रप्रत्याम्नायः ॥ तत्रदेवलः ॥ माहेश्वराख्यकृच्छ्रस्यप्रत्याम्नायमिमंशृणु सर्वपापोपशमनसर्वकृच्छ्रफलप्रदम् ॥ १ ॥ ब्रह्महत्यादिशमनंसर्वग्रहनिवारणम् तुलाप्रतिग्रहीतॄणांपापनाशनहेतुकम् ॥ २ ॥ संध्यादिनित्यकर्म्माणिपरित्यक्तानिसूरिभिः तेषांविशोधनेदक्षंसर्वपापहरंनृणाम् ॥ ३ ॥ गावोदेयाद्विजातिभ्योह्यर्चितावस्त्रभूषणैः हेमघंटादिभिःशुभ्रैरलंकारैरलंकृताः ॥ ४ ॥ स्वर्णशृंग्योरौप्यखुराःकांस्यदोहनसंयुताः रुद्रसंख्याःसवत्साश्चपयस्विन्यःपृथक् पृथक् ॥ ५ ॥

और ब्रह्महत्यादि पापके दूर करणेवाला और संपूर्ण ग्रह बलके दूर करणेवाला और तुलादानकेग्रहण करणे वाले जो पुरुष हैं तिनांके पापके नाशका हेतुहै ॥ २ ॥ और जिनों बुद्धिमानोंनें संध्यावंदनादि कर्मत्यागेहैं तिनांके शुद्धकरणेविषे दक्षहै और पुरुषांके संपूर्णपापांका नाशकहै सो प्रत्याम्नाय कहतेहां ॥ ३ ॥ गौवि गौयां यानि ११ देणी योग्यहैं ब्राह्मणांकेतांई भिन्नभिन्न कैसीयां गायां वस्त्र भूषणां कर्के युक्त और सुवर्णके घंटे आदि जो श्वेत अलंकार तिनां कर्के युक्त ४ ॥ और सुवर्णके शृंग और रूपेके खुर और कांसेका दोहनपात्र तिनांकर्के युक्तसहित बछयांके और दुग्ध देणे वालीयां ॥ ५ ॥

प्रति प्रत्याम्नाय विधिविषे गौयां ११ वहुत श्रेष्ठहैं रुद्रसंज्ञाक्यारुद्रहैं देवता जिनांकाऐसयांहैं । कि सवास्तेरुद्रकृच्छ्रके फलकी प्राप्तिवास्ते और संपूर्णपापांके दूरकरणेवास्तेहैं ६ एवमिति ऐसें जो द्विज प्रत्याम्नायनूं यथाविधिकरके करताहै तिसकों संपूर्णकृच्छ्रका फलप्राप्तहोताहै जो फल मुनियांनें कहाहै ॥ ७ ॥ ❀ अव ब्रह्मकृच्छ्रका लक्षणहै तिसविषे देवलजीका वाक्यहै हेसंपूर्णमुनीश्वरो श्रव ण करो ब्रह्मकृच्छ्रके लक्षणनूं निंदित अन्नके भक्षण करणे विषे जो पापहै और दुष्ट दानके ग्रहण करणेविषे जो पापहै ॥ १ ॥ और नहिपीणेयोग्य जो विनावच्छेके गौकादुधआदिवस्तु तिसके पीणेविषे जो पापहै और पूर्वकहि जो उग्रशांति तिसविषे जो अन्न और शूद्रकाअन्न ॥ २ ॥ और मठका स्वामी जो संन्यासी तिसका अन्न और छींवेका अन्न और वृषलीक्याशुद्रीकाव नायाहोया अन्न और ऋतुमतीस्त्रीकावनायाहोया अन्न । ३ । और विधवास्त्रीकर्के पकाअन्न और

प्रत्याम्नायविधौशस्तारुद्रसंज्ञामहत्तराः रुद्रकृच्छ्रफलप्राप्त्यैसर्वपापापनुत्तये ॥ ६ ॥ एवंकृत्वाद्विजोयस्तु प्रत्याम्नायंयथार्हतः तस्यसम्पूर्णकृच्छ्रस्यफलंमुनिभिरीरितम् ॥ ७ ॥ ❀ अथब्रह्मकृच्छ्रलक्षणम् ॥ तत्रदेवलः ॥ शृणुध्वंमुनयस्सर्वेब्रह्मकृच्छ्रस्यलक्षणम् दुरन्नेनैवयत्पापंपापंदुष्टप्रतिग्रहे ॥ १ ॥ अपेयपानेयत्पापंयत्पापंदुष्टभोजने शांत्यन्नेषुचयत्पापंयत्पापंशूद्रभोजने ॥ २ ॥ संन्यासिनोमठपतेर्भोजनेयद्भवेन्नृणाम् यत्पापंरजकस्यान्नेयत्पापंवृषलीकृते ॥ ३ ॥ यत्पापंपुष्पवत्यन्नेयत्पापंविधवाकृते अमंत्रकेपैतृकान्नेयदनारायणीकृते ॥ ४ ॥ चौलेचपैतृकेचैवदीक्षितस्यैवभोजने सूतकद्वितयेचैवतथादुःपंक्तिभोजने ॥ ५ ॥ तथैवदुष्टसंघान्नेतथाक्रीतान्नभोजने पापपर्य्युषितचान्नेतथातद्रसकस्यच ॥ ६ ॥ यत्पापमनृते प्रोक्तमौपासनविवर्जिते एवमादीनिपापानिलघूनिचमहांतिच सर्वेषांहिविनाशायब्रह्मकृच्छ्रंविकात्थितम् ॥ ७ ॥ शान्त्यन्नमत्रपूर्वोक्तोग्रशान्तिभवंवोध्यम् यदनारायणीकृते नारायणाग्रेऽनिवेदितइत्यर्थः

मंत्रतें रहितपितराका अन्न और नारायणकेतांईं जो नहिअर्पणकीता अन्न । ४ । और चौलकर्मका अन्न और पितरांके निमित्त जो पहलीक्रियातिसका अन्न और यज्ञकी दीक्षा विषे युक्तका अन्न और सूतक मृतसूतकका अन्न और दुष्टपुरुषांकी पंक्ति विषे भोजन कीताजो अन्न ५ ब्राह्मण और दुष्टांके समूहका अन्न और अन्नके वेचण वालेका अन्न और वासी अन्न और रसके वेचण वालेका अन्न ॥ ६ ॥ इनां संपूर्णके सिद्धहोये होये अन्नकों भक्षण करणे विषे जो पाप हैं और जो असत्यवाणी विषे पाप है और जो पाप देवताकी उपासनातें रहित पुरुष विषे कहाहै इसतें आदिके जो पापहैं थोड़े वा वहुत तिनां पापांके दूर करणे वास्ते ब्रह्मकृच्छ्र व्रत कहाहै ॥ ७ ॥

अब मार्कंडेयजीका वचनहै गवितिगोमूत्रऔर गोमयऔर दुग्ध और दधिऔर घृत और कुशा का जल इनांकों पूर्वमानकर्के एकत्र करे शुद्धि कों कर्के सो शुद्धि इस जगा पंचगव्यके मंत्रां कर्के जानणो इसीरीतिसें दिनदिनविषे पानकरे ॥ १ ॥ ऐसे पूर्वकीन्याईं स्नानादिको कर्ताहुआ बारां दिनां १२ का कृच्छ्र व्रत करे तिसी विधिको कहतेहैं प्रातरिति प्रातः काल विषे स्नानको कर्के जैसे समाहै तैसें नित्यकर्मकों समाप्तकर्के ॥ २ ॥ देवताके मंदिर विषे तैसे गौयांके स्थान विषे व्रती पंचगव्यका पान करे इसका परिमाण कहतेहैं गविति अठ ८ मासे गोमूत्र और सोलां १६ मासे गोमय ॥ ३ ॥ और अठ ८ मासे दुग्ध और त्रय ३ मासे दधि और त्रय ३ मासेघृत और कुशाका जल ॥ ४ ॥ तिस तिस मंत्र कर्के

मार्कण्डेयः। गोमूत्रंगोमयंक्षीरंदधिसर्पिःकुशोदकम् संपाद्यपूर्वमानेनप्रत्यहंशुचिपूर्वकम् ॥ १ ॥ द्वादशाहंचरेत्कृच्छ्रंपूर्ववत्स्नानमादितः प्रातःस्नात्वा यथाकालंनित्यकर्मसमाप्यच ॥ २ ॥ देवागारेतथागोष्ठेपंचगव्यंपिबेद्व्रती गोमूत्रंमापकान्यष्टौगोमयस्यतुषोडश ३ ॥ क्षीरंमाषाष्टकंज्ञेयंदधिमाषत्रयं तथा घृतंमाषत्रयंप्रोक्तंतथैवचकुशोदकम् ४ तत्तन्मंत्रेणसंयोज्यंतत्तन्मंत्रेणहावयेत् होमशेषंपिबेत्पश्चाद्रवौमध्याह्नगेसति ५ आसायंमनसाविष्णुं स्मरन्सर्वेश्वरंप्रभुम् स्वपेद्देवसमीपेतुगन्धताम्बूलवर्जितः ६ ततःप्रातःसमुत्थायपूर्ववद्व्रतमाचरेत् एवंद्वादशरात्राणिचरेद्व्रतमनुत्तमम् ७ महापापंचोपपापंमद्यपानसमंतथा तत्सर्वंविलयंयातिहरिनाम्नोऽसुरायथा ॥ ८ ॥

तिनांकों इकठयां करे और तिस तिस पंचगव्यके मंत्रांकर्के हवनकरे और हवनशेषकों पीवे सूर्य्य के मध्यान्हगत होयां २ ॥ ५ ॥ और सायंकालपर्यंत सर्वेश्वर जो विष्णु तिनांकों स्मरणकरे और देवताके समीपविषे शयनकरे और सुगंधि वस्तु और तांबूल इनांकोंत्यागे ॥ ६ ॥ तिसतें उपरंत प्रातः काल विषे उठ कर्के पूर्वकी न्याईं व्रत नूं करे ऐसे उत्तम व्रतकों बारां दिनकरे ॥ ७ ॥ और महापाप और उपपाप और मदिराके पीने के पापके तुल्य जो पाप एह संपूर्ण पाप ब्रह्मकृच्छ्र व्रत कर्केनष्ट होतेहैं जैसे हरिके नामतें दैत्य दूर होतेहैं ॥ ८ ॥

इसतें उपरांत ब्रह्म कृच्छ्रका प्रत्याम्नायहै तिस विषे देवल जीका वाक्य है हेब्रह्मनुने तूं ब्रह्मकृच्छ्रके आश्चर्य प्रत्याम्नायनूं श्रवणकर जिसके करणे कर्के महापापां तें और उपपातकां तें रहित होताहै ॥ १ ॥ ब्रह्म कृच्छ्र है नाम जिसका सो महा पापांके दूर करणे वाला है तिसकों करे तिस विषे असमर्थ होवे तां फलकी प्राप्ति वास्ते प्रत्याम्नायनूं करे ॥ २ ॥ प्रत्याम्नाय विषे भी पुरुष महाकृच्छ्रकेफलनूं प्राप्तहोताहै अठ ८ गौयां देणेयोग्यहैं पूर्वकी न्यांई स्वर्णके शृंगादिकर्के अलंकृत ॥ ३ ॥ वेदके पठनकरणेविषे युक्त जो ब्राह्मण

॥ अथब्रह्मकृच्छ्रप्रत्याम्नायः ॥ तत्रदेवलः ॥ शृणुब्रह्ममुनेचित्रंप्रत्याम्नायं प्रजापतेः यत्कृत्वामुच्यतेपापैर्महद्भिरुपपातकैः १ । प्रजापतेर्ब्रह्मकृच्छ्रस्य आचरेद्ब्रह्मकृच्छ्राख्यंमहापातकशोधनम् असमर्थःप्रकुर्वीतप्रत्याम्नायंफलाप्तये ॥ २ ॥ प्रत्याम्नायेमहाकृच्छ्रफलंप्राप्नोतिमानवः अष्टौगावःप्रदातव्या पूर्ववत्स्वर्णभूषिताः ॥ ३ ॥ विप्रेभ्योवेदविद्भ्यश्चपृथक्पृथगलंकृताःपयस्विन्यःशीलवत्यःसर्वदोषविमुक्तये ॥ ४ ॥ मार्कंडेयः ॥ प्रत्याम्नायंतदाकुर्याद्यद्यशक्तःप्रजापतेः अष्टौगावःप्रदातव्याःस्वर्णशृंग्यःपयोमुचः ॥ १ ॥ विप्रेभ्योवेदविद्भ्यश्चसर्वकृच्छ्रफलाप्तये एवंकृत्वाद्विजःसम्यक्फलमाप्नोतिकृत्स्नशः ॥ २ ॥

तिनांके तांई भिन्न भिन्न शोभाकर्के युक्त और दुग्धदेणे वालियां और शीलस्वभाव वालियां संपूर्ण दोषांके दूर करणे वास्ते ॥ ४ ॥ अब मार्कंडेयजी का वचनहै प्रेति प्रत्याम्नायनूं तां करे जेकर ब्रह्मकृच्छ्रके करणे विषे असामर्थ्य होवे स्वर्णके शृंगांकर्के युक्त दुग्ध देण वालियां अठ ८ गौयां देणे योग्यहैं ॥ १ ॥ वेदके जानणे वाले जो ब्राह्मण तिनांके तांई संपूर्ण कृच्छ्र व्रत के फलकी प्राप्ति वास्ते ऐसे करणे कर्के ब्राह्मणआदि वर्ण संपूर्ण फलकों प्राप्त होताहै ॥ २ ॥

अथेति इसते अनंतरधान्यकृच्छ्रका लक्षणहै तिसविषे देवलजीका वाक्यहै धान्येति तुसांताई धान्य कृच्छ्रका स्वरूप और लक्षण कहताहां संपूर्णकृच्छ्र व्रतांके करणविषे जो असमर्थहै सो पुरुषधा न्यकृच्छ्रवतकों करे ॥ १ ॥ इसविषे मार्कंडेयकावचनहै-तप्तेति तप्त कृच्छ्रवतते आदि लेके जो संपूर्ण कृच्छ्र व्रत हैं तिनांके करणेकी इच्छावाला जेकर कोई धनवाला होवे वा राजाहोवे तां धान्य कृच्छ्रवतकों करे जोजो मैंनें कृच्छ्रव्रत कहाहै तिनां संपूर्णांके करणेकी इच्छावाला जेकर होवेतां ॥ १ ॥ खारीति खारी परिमित जो महाधान्यहै तिसके पांचमें ५ हिस्सेकों ग्रहण करे जो सारेका एक भी भाग है तिसका नाम कृच्छ्र धान्य कहाहै । २ । तिसधान्यकों हिस्सेकर्के देवे

अथ धान्यकृच्छ्रलक्षणम् ॥ तत्रदेवलः ॥ धान्यकृच्छ्रस्वरूपंचलक्षणंप्रवदामिवः सर्वेषामेवकृच्छ्राणामशक्तोधान्यमाचरेत् ॥ १ ॥ मार्कण्डेयः ॥ तप्तादिसर्वकृच्छ्राणांकर्तुंयदिमहान्प्रभुः धान्यकृच्छ्रंतदाकुर्याद्यद्यत्कृच्छ्रंमयोदितम् ॥ १ ॥ यद्यद्यत्कृच्छ्रंमयाकथितंतेषांसर्वेषांस्थानेइदमेवकुर्य्यादित्यर्थः ॥ कश्चिन्महान्धनीवाप्रभूराजाकर्तुमिच्छेच्चेत्तदाधान्यकृच्छ्रंकुर्य्यादित्यर्थः । खारीधान्यस्यमहतःपंचधाभागमाहरेत् कृत्स्नस्यैकस्तुयोभागःस कृच्छ्रंधान्यमीरितम् ॥ २ ॥ तद्धान्यंभागशोदद्यात्तत्कृच्छ्रंमुनिभिःस्मृतम् तत्कृच्छ्रमाचरेद्विप्रःसंपूर्णफलमश्नुते धान्यवृद्धेर्महाराज्ञःकृच्छ्रंपापापनुत्तये ॥ ३ ॥ मरीचिः ॥ खारीधान्यस्यपंचांशोधान्यकृच्छ्रमुदाहृतम् अतोन्यूनंनकर्तव्यमन्यथादानमीरितम् ॥ १ ॥

सो मुनियांनें कृच्छ्र व्रत कहाहै इसमें एह अभिप्रायहै कि पंचभागकर्के क्रमतें दान करणा जद समग्र दान हो जावेगा तद कृच्छ्रभी पूरा होवेगा अथवा एक खारीके पंच कृच्छ्र होतेहैं तिस कृच्छ्र धान्यनूं ब्राह्मण करे तां संपूर्ण फलकों प्राप्त होताहै धान्यकी वृद्धि कर्के युक्त जो महाराजाहै तिसकों पापांके दूर करणे वास्ते एह धान्य कृच्छ्र व्रत कहाहै ॥ ३ ॥ अब निर्धन पुरुष वास्ते मरीचिऋषिका वचनहै खारीति खारी परिमाण धान्यका पांचमां हिस्सा धान्य कृच्छ्र कहाहै इसतें न्यून क्या घट नहि करणे योग्य जेकर घट होवे तिसका नाम दान कहाहै ॥ १ ॥

अब इसीमें लोगाक्षिऋषिकावचनहै पंचेति खारी प्रमाण महाधान्यका पंचमां५हिस्साधान्य कृच्छ्रकहाहै इसप्रमाणतें घटहोवे तां धान्यदानकहाहै सो पुण्यके देणेवालाहै और कृच्छ्रधान्यकेफल वालानहिहोता ॥ १ ॥ और इसीकास्पष्टार्थहै संपूर्ण धान्य कृच्छ्रका पंचमां हिस्सा नहि करणा चाहिए जेकर तिस धान्यतें हीन होवे तां कृच्छ्रकाफल नहि होता ॥ २ ॥ इसमें ऐसा अर्थ है कि राजादिकों सारी खारीके देणेसे धान्यकृच्छ्र हुंदाहै और निर्धनको तिसके पांचमे हिस्सेके देणेसे एह होता अब कहतेहै कि राजा खारीसे न्यून न करे और दूसरा पांचमांसे थोडा न देवे हे ब्राह्मणोंविषे श्रेष्ठ इस धान्य कृच्छ्रका वदला नहि कहा स्वर्णकृच्छ्र व्रत और धान्य कृच्छ्र व्रत एह

लौगाक्षिः ॥ पंचमांशोधान्यकृच्छ्रंखारीधान्यस्यभूयसः अन्यथाधान्यदानंस्यात्कृच्छ्रशब्देनपुण्यभाक् ॥१॥ संपूर्णधान्यकृच्छ्रस्यपंचमांशोनाविद्यते तेनहीनंधान्यदानंनकृच्छ्रफलमश्नुते ॥ २ ॥ कृच्छ्रस्यैतस्यविप्रर्षे प्रत्याम्नायोनविद्यते स्वर्णकृच्छ्रस्यधान्यस्यसमर्थस्यमहात्मनः ॥ ३ ॥ प्रत्याम्नायोनगदितोमुनिभिर्धर्मवत्सलैः धान्यशब्दोव्रीहिएवकृच्छ्राणां न धान्यांतरम् । केचिच्छ्यामाकधान्यमितिवदंति ॥ मनुः ॥ नीवाराव्रीहयो धान्यंश्यामाकाःकृच्छ्रसाधनम् नधान्यांतरमस्तीहप्रभूतकृच्छ्रसाधनमिति १ ॥ ॥ अथसुवर्णकृच्छ्रम् ॥ तत्रदेवलः ॥ ब्रह्महत्यादिपापानामितरेषांमुनीश्वराः तुलादिष्विहदानेषुग्रहीतॄणांविशोधनम् ॥ १ ।

दोव्रत समर्थ पुरुषकों कहने । ३ । इनांकाधर्म'वत्सल जो मुनि तिनांने वदला नाहि कहा धान्य शब्द करके व्रीहि कहने कृच्छ्र विषे होर धान्य नाहि कहे कै एक ऋषि श्यामाक धान्यकों कहतेहैं कि धान्य कृच्छ्रमे सामर्थ्य न होवे तां श्यामाक उसकी जगादेणे इसी विषे मनुजीका वाक्यहै नीति सवांक और चावल और सांकों एह कृच्छ्र व्रत विषे कहेहैं होर धान्य कृच्छ्रके सिद्ध करणे विषे नहि कहे ॥ १ ॥ ॥ इसतें अनंतर सुवर्ण कृच्छ्र कहाहै तिस विषे देवल जीका वाक्य है ब्रह्मेति ब्रह्महत्या आदिक जो पापहैं और इतर जो पापहैं और तुलाआदि दानांकों जो ग्रहण करण वालेहैं तिनां संपूर्णांकों शुद्ध करणे वाला एह स्वर्ण कृच्छ्र कहाहै १ ॥

महेति महाप्रभुकों वराहपरिमाणसुवर्णकहाहै और मध्यमपुरुषकों वराह परिमाणतेंअद्धा सुवर्ण देणाकहाहै और जोनिर्धनहैं तिनांकों वराहपरिमाणतें चौथाहिस्साकहाहै तिसतेंन्यून न करे २ ॥ क्योंकि तिसतें जो न्यूनहै सो सुवर्ण दानकहाहै तिसकेदेणेवालेकों सुवर्णकृच्छ्रकाफलनाहिहोता ३ । इसमें मरीचिऋषिकावचनहै वेति राजाधनीनिर्धनकों इसव्यवस्थासे वराहपरिमाणसुवर्णहोवे तां सुवर्ण कृच्छ्रकहाहै और तिसतें अद्धभी सुवर्ण कृच्छ्रकहाहै वराहपरिमाणतें चौथाहिस्साभी कृच्छ्र है तिसते न्यून होवे तां सुवर्णदान कहाहै उसमें कृच्छ्रशब्दनहि कहा इहां वराहशब्दका अर्थ मानपरिभाषा विषे देखलेना ॥ १ ॥ और धनी पुरुष वराह परिमाणतें अद्धे सुवर्ण का कृच्छ्र करे जो असमर्थ इसके प्रत्याम्नायकी इच्छा करे तिस वास्ते कहतेहैं प्रत्येति इसकाप्रत्या

महाप्रभोर्वराहः स्यात्तदर्धंमध्यमस्यहि तदर्धमितरेषाचततोन्यूनंनकारयेत् २ ॥ ततोन्यूनंसुवर्णदानमात्रं न कृच्छ्रशब्दः। मरीचिः। वराहस्यतदर्धंचतदर्द्धंकृच्छ्रमीरितम् ततोन्यूनंदानमात्रंकृच्छ्रशब्दोनगद्यते ॥ १ ॥ वराहशब्दार्थोमानपरिभाषायांद्रष्टव्यः ॥ प्रभुमात्रेतदर्धस्यात्प्रत्याम्नायोनविद्यते मरणांतप्रायश्चित्तानां ब्रह्महंत्दृणामकृतनिष्कृतीनामितरेषांरहस्यकृतपापानामकृतनिष्कृतीनां तुलादिसंग्रहीत्दृणां यागादिकरहितानां चतुर्भागव्ययाद्यकृतानां कालपुरुषादिप्रतिग्रहीत्दृणांततदुक्तसुवर्णकृच्छ्राचरणेन तत्पापक्षयोभवति ॥ राजविजये ॥ प्रमादाद्ब्रह्महंत्दृणामितरेषांप्रभूयसा प्रायश्चित्तेनहीनानां सुवर्णकृच्छ्रमीरितम् ॥ १ ॥

म्नाय नहि मरण पर्यंतहै प्रायश्चित्त जिनांका असें जो ब्राह्मणके मारणवाले और इतर जो पापीहैं नहि कीती शुद्धि जिनानें असे जो गुप्त पापके करण वाले और तुलाआदि दानके ग्रहण करण वाले और पंचयज्ञ आदि कर्मतें जो रहित हैं और दानकों ग्रहणकर्के जो चतुर्थांश ब्राह्मणके तांई नहि देते और काल पुरुष आदि दानांके जो ग्रहण करण वाले तिनां संपूर्णांका पाप दूर होताहै सुवर्ण कृच्छ्र व्रतके करणेकर्के ॥ अब राज विजय ग्रंथ विषे कहाहै प्रेति प्रमादतें जो पुरुष ब्राह्मणका वध कर्तेहैं और इतर जो पापी है और जो वडे प्रायश्चित्त कर्के रहित हैं तिनांकी स्वर्ण कृच्छ्र व्रतकर्के शुद्धि कहीहै ॥ १ ॥

तुलेति तुलाआदिदानांके ग्रहणकरणवाले जो पुरुषहैं और दानके चतुर्थांश देणेकर्के जो शुद्धिहै तिसते रहितहैं तिनांकी शुद्धिवास्ते ब्रह्माने स्वर्णकृच्छ्र प्रायश्चित्त रचयाहै ॥ २ ॥ सुवर्णकी प्रशंसा करतेहैं स्वर्णमिति सुवर्ण ब्रह्मस्वरूपकर्के ब्रह्माजीने रचयाहोयाहै पुरुषोंके स्वर्णकृच्छ्र व्रतके करणेकर्के कौणपापहै जो नहि दूरहोता अर्थात् संपूर्णपाप दूरहोतेहैं ॥ ३ ॥ अब गौतमजीका वाक्यहै रहेति एकांतविषे ब्रह्महत्याके करणवाले जो पुरुष हैं हेराजन् श्रवणकर तिनांकी दशहजार१००००स्वर्णकृच्छ्र दानकर्के शुद्धिहोतीहै ॥ १ ॥ और प्रत्यक्ष जो ब्रह्महत्याके करण वालेहैं तिनकीशुद्धि मरणपर्यंत प्रायश्चित्तकर्के होतीहै परंतु इसजगा अयुतभी चार ४ गुणा जानणा अगले वचनते सो ४०००० चालीहजार होवेगा एह स्वर्णकृच्छ्र राजाके योग्यहै होरकोई नाह

तुलादिसंग्रहीतॄणांरहितानांविशुद्धिभिः प्रायश्चित्तमिदंकृच्छ्रंब्रह्मणापरिकल्पितम् २ ॥ स्वर्णंब्रह्ममयंप्रोक्तंब्रह्मणानिर्मितंपुरासुवर्णकृच्छ्राचरणेकिमसाध्यंशरीरिणाम् ३ ॥ गौतमः। रहस्यकृतविप्रस्यहत्यायांशृणुपार्थिव अयुतस्वर्णकृच्छ्राणांदानेशुद्धिरवाप्यते ॥ १ ॥ रहस्यकृतपापस्यपापिभिःपरमार्थतः अयुतंपूर्ववज्ज्ञेयमन्यथामरणान्तिकम् २ ॥ प्रकाशकृतब्रह्महत्यानांमरणान्तिकंप्रायश्चितम् ॥ तद्रहितानांचतुर्भिरयुतकृच्छ्रैर्विशुद्धिरिति ॥ तदाहमनुः । प्रकाश्यविप्रहंतॄणांचतुष्कंपापनाशनम् निमित्ताकृतशुद्धीनांजपयागाभिषेचनैः ॥ १ ॥ निमित्तैः प्रायश्चित्तैरकृताशुद्धिर्येषांते तेषांचतुष्कंचतुर्गुणमयुतमित्यर्थः स्मृत्यन्तरम् ॥ तुलाप्रतिग्रहीतृविषये ॥ नदीस्नानादिनाराजंश्चतुर्भागव्ययेन वा ब्रह्मराक्षसमुक्त्यर्थंचत्वार्य्ययुतमाचरेत् १ ॥ चत्वार्ययुतकृच्छ्राणीत्यर्थः ॥

करसक्ता इसके रुपैए पूर्वोक्त वराहपरिमाणवाले स्वर्णके मुल्ल ४८०००० के हुंदेहै मरणांतक प्रायश्चित्तको जो नहि कर्ते सो राजादि चालीहजार४०००० स्वर्णकृच्छ्र कर्के शुद्ध होतेहै २ । तैसे मनुजीकहतेहैं प्रेतिप्रकाश्य क्या नहि प्रत्यक्ष जो ब्राह्मणके वधको कर्तेहैं और गायत्री जपादि प्रायश्चित्तांकर्के नहि होई शुद्धिजिनांकी तिनांके पापनाश वास्ते चाली हजार पूर्वोक्तस्वर्णकृच्छ्र किहाहै ॥ १ ॥ औरहीस्मृति विषे तुला दानके ग्रहण करणे विषे एहवाक्यहै नदीति हेराजन् नदीविषे स्नानादिकर्के और दानके चौथे हिस्सेके देणेकर्के वा दोष दूर करे अथवा ब्रह्मराक्षसगतिके दूरकरणे वास्ते चालीं हजार ४०००० कृच्छ्र व्रतकोंकरे परंतु एह अनेक तुलाग्रहणविषे जानणा प्रायश्चित्तको वहुत होणेते ॥ १ ॥

प्रेति प्रभुकों उत्तमप्रकारकहाहै और मध्यमकों मध्यम और कनीयसकोंक्या छोटेकों पादप्रमाण कहाहै और नहि कीताउक्तप्रायश्चित्त जिनांनैंतिनांकी शुद्धिस्वर्णकृच्छ्रब्रतांके करणेकर्के होतीहै और उपपातकांके मध्यविषे जिस जिसपातकके दूरकरणेवास्ते जो जो कृच्छ्रव्रत कहेहैं तिनांके करण विषे सामर्थ्य न होवे तां तितनेस्वर्णकृच्छ्रव्रतांकर्के शुद्धिहोतीहै। अबयाज्ञवल्क्यजीकाबचनहै उपेति उपपातकांकेसमूहके दूरकरणेवास्तेमुनियांनैं जो जो प्रायश्चित्तकहाहै तिसकेकरणविषे समर्थ नहि होवेतां तितनेहि स्वर्ण कृच्छ्रव्रतकरे ॥ १ ॥ अब मरीचिकावाक्यहै समिति संकली करण पाप

प्रभोरुत्तमप्रकारोमध्यमस्यमध्यमप्रकारःकनीयसःपादप्रमाणतः। कृच्छ्राणिकृत्वात्वकृतप्रायश्चित्तानांशुद्धिर्भवति। उपपातकामांयस्ययस्यचपातकस्य यानियानिकृच्छ्राणि प्रतिपदोक्तानि तेषामाचरणाशक्ततया तावद्भिः सुवर्णकृच्छ्रैःकृतैःशुद्धोभवति। याज्ञवल्क्यः। उपपातकजालानांमुनिभिर्यदुदीरितम् तत्तदाचरणाशक्तःतावत्कृच्छ्रंसमाचरेत् ॥ १ ॥ मरीचिः संकलीकरणेराजन्यस्ययस्ययथोदितम् तदाचरणशक्तस्तुफलमानंत्यमश्नुते ॥ १ ॥ अशक्तस्यद्विजस्यार्थेसुवर्णकृच्छ्रमीरितम् ॥ २ ॥ यद्यत्पापस्ययत्कृच्छ्रंमुनिभिःपरिभाषितम् तदाचरणाशक्तानांतावन्तिहि रण्यकृच्छ्राणि प्रभुत्वदारिद्र्यतारतम्येन कृत्वाशुद्धिमाप्नुवंतीत्यर्थः ॥ एवंचाण्डालादिगमनेषु कृच्छ्रसंख्यया हिरण्यकृच्छ्राचरणैस्तत्प्रतिपदोक्तैः पूर्वोक्तैः शुद्धोभवति ॥

विषे हेराजन् जिस जिस पापका जो जो प्रायश्चित्त कहाहै तिसके करण विषे जो युक्तहै सो अनंत फलकों प्राप्त होताहै ॥ १ ॥ और जो ब्राह्मणादि असमर्थ हैं तिसकों सुवर्ण कृच्छ्र व्रत कहाहै ॥ २ ॥ इसी अर्थकों स्पष्टकर्के कहतेहैं यदिति और धनी पुरुष और निर्धन पुरुष सुवर्ण कृच्छ्र विषे अधिक और न्यून परिमाण कर्के शुद्धिकों प्राप्त होतेहैं ॥ २ ॥ इसी प्रकार चांडाल आदिकीयां स्त्रीयांके गमनकरणे विषे शुद्धिके निमित्त कृच्छ्रव्रतांकी संख्याकर्के कहे जो व्रत तिनांके प्रत्याम्नाय वास्ते उतनेहि स्वर्ण कृच्छ्र व्रतांकर्के शुद्ध होताहै ॥

एवमिति इसी प्रकार निंदित अन्नके भक्षण विषे और उद्बंधन और मरणादिकके होयां २ उपनयनादि कर्म्मोंके मुख्यकालके त्याग विषे जो प्रायश्चित्त निरूपण कीताहै तिसके बदले विषे तावत्संख्या करके स्वर्ण कृच्छ्र व्रतके करणे करके शुद्ध होताहै ऐसे संपूर्ण स्थान विषे जानणे योग्यहै. ॥ तुला आदिक दानांके ग्रहण करण वाळ्यां पुरुषांकों विशेष पैठीनसि कहताहै तुलेति तुलादान विषे जो धनकों ग्रहण कर्त्ताहै और तिस दानके चौथेहि हिस्सेकों जो ब्राह्मणकेतांई नहि देता और लोकविषे निंदाके भयकर्के अभिषेक और जपभी नहि कर्त्ता तिसकों ब्रह्मराक्षसगतिहोणीहै ब्रह्मराक्षस उसकों कहतेहैं जो ब्राह्मणोंके मारण वाला राक्षस होवे इसमें एह अर्थ है कि राक्षसभावमे भी ब्राह्मणको मारेगा तो तिसहत्या

एवं दुरन्नभक्षणोद्बन्धनमरणादिषूपनयनकर्मणां मुख्यकालातिक्रमे प्रायश्चित्तंयन्निरूपितम् तावन्ति हिरण्यकृच्छ्राणि कृत्वा शुद्धोभवतीति सर्व्व प्रयोजनीयम् । तुलादिप्रतिग्रहीतॄणांविशेषमाह पैठीनसिः । तुलायांधन संधातायागंभागचतुष्टयम् अभिषेकंजपंवापिह्यकृत्वालोकनिंदया ॥ १ ॥ ब्रह्मराक्षसमुक्त्यर्थंकृच्छ्राण्येतानिसर्वशः चतुरयुतंप्रकुर्वीतधर्मशास्त्रोक्तमार्गतः ॥ २ ॥ पिशाचत्वविमुक्तिःस्यादिहलोकेपरत्रच सुवर्णकृच्छ्ररूपेणसर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ ३ ॥ हिरण्यगर्भसंधानेयोधर्मेनिष्कृतिंविना चत्वारि कृच्छ्रसाहस्रंकृत्वाशुद्धिमवाप्नुयात् ॥ ४ ॥

कर्के वहुत काल राक्षस हिरहेगा ॥ १ ॥ तिसके दूर करणे वास्ते इतनेंहि कृच्छ्र व्रत कहने संपूर्णताकर्के और धर्मशास्त्रकर्के कथनतें,चालीहजार४००००सुवर्ण कृच्छ्रव्रतकरे २ ॥ तां पिशाच गति दूर होतीहै इसलोकविषे और परलोक विषे सुवर्ण कृच्छ्रके करणेकर्के संपूर्ण पापांते रहितहोताहै ॥ ३ ॥ और हिरण्य गर्भके प्रतिग्रहविषे जिसने शुद्धिका उपाय नहि कीता सो चारहजार कृच्छ्र व्रत कर्के शुद्ध होताहै । ४ । इसमें ऐसा अर्थहै कि जिसका लिया हुआ तुलादान थोडे मुल्लकाहोवे तां ४०००० हजार स्वर्ण कृच्छ्र किसतरह करेगा तो ऐसा करणा चाहिए कि लक्षसे अधिक जिसने तुलादान लियाहोवे उसको इतना प्रायश्चित्तहै और थोडे दान वालेकों लयेहोए दानके चौथे हिस्से अनुसार करणा चाहिए ऐसें आगेभी जानणा

ब्रोति जो पुरुष ब्रह्मांड कुंभकों ग्रहणकर्त्ताहै और तिसकी शुद्धिनिमित्त प्रायश्चित्ततें रहितहै सों त्रय ३००० हजार कृच्छ्रव्रत करे तां पूर्वकीन्यांईं शुद्धिकों प्राप्तहोताहै ॥ ५ ॥ और कल्पवृक्षके दानकों ग्रहण करे तिस दोषकी शुद्धिकों न करे तां पंजा५०००० हजार स्वर्ण कृच्छ्र व्रतांकर्के शुद्धहोताहै ॥ ६ ॥ और सुवर्णकी धेनुके दानकों जो ग्रहणकर्त्ता है और शास्त्रकी विधिकर्के जिसनें अपणी शुद्धि नाहि कीती सोभी पंजा हजार कृच्छ्र व्रतां कर्के पूर्वकान्यांईं शुद्ध होताहै ७ ॥ और सुवर्णके अश्व दानकों जो ग्रहण कर्त्ताहै और पूर्व नहि कीती शुद्धिजिसनें सो पंज सउ५०० सुवर्णकृच्छ्रव्रतकर्के पूर्वकीन्यांईं शुद्धहोताहै ॥ ८ ॥ और सुवर्णके घोडेकर्के युक्त जो रथतिसनूं ग्रहणकर्त्ताहै और रथके ग्रहणकरणेंसें अशुद्ध जो पुरुषहै सो छे सउ ६०० सुवर्ण

ब्रह्मांडकुंभसंधातातन्निष्कृतिपराङ्मुखः त्रिसहस्त्रंचरेत्कृच्छ्रंशुद्धिमाप्नोति पौर्विकीम् ॥ ५ ॥ कल्पवृक्षस्यसंधानेत्यजन्तंनिष्कृतिंपुरा पंचायुतै श्चकृच्छ्रैश्चसुवर्णास्यैर्विशुध्यति ॥ ६ ॥ हिरण्यधेनुसंधाताशास्त्रकृतनि ष्कृतिः पंचायुतैश्चकृच्छ्रैश्चशुद्धिमाप्नोतिपौर्विकीम् ॥ ७ ॥ हिरण्याश्वस्य संग्राहीपुरात्वकृतशुद्धिमान् पंचशतैःस्वर्णकृच्छ्रैःशुद्धिमाप्नोतिपूर्ववत् ८ ॥ हिरण्याश्वरथीराजन्नशुचीरथसंग्रहात् षट्शतैःस्वर्णकृच्छ्रैश्चशुद्धोभवतिपू र्ववत् ॥ ९ ॥ हेमहस्तिरथंविप्रःप्रतिगृह्यधनातुरः अकृत्वानिष्कृतिंशा स्त्रमार्गेणाज्ञानपूरितः ॥ १० ॥ षट्शतैर्हैमकृच्छ्रैश्चशुद्धिमानुभयोर्द्विजः पंचलांगलसंग्राहीह्यकृत्वाधर्मनिष्कृतिम् ॥ ११ ॥ अयुतैस्स्वर्णकृच्छ्रैश्चशु द्धोभवतिपूर्वजः अन्यथानिष्कृतिर्नास्तिब्रह्मराक्षसशंकयेति ॥ १२ ॥

कृच्छ्र व्रतकर्के पूर्वकीन्यांईं शुद्धहोताहै ॥ ९ ॥ और सुवर्णके हाथी और रथनूं ग्रहणकर्के और शास्त्रके द्वारा तिसकी शुद्धिकों न कर्के धनके ग्रहण करण विषे युक्तहै अज्ञान कर्के पूरित होया २ दोषकर्के युक्त सो ब्राह्मण ॥ १० ॥ छे सउ ६०० स्वर्ण कृच्छ्रव्रत कर्के दोनोंदोषोंसें रहित होताहै अथवा सुवर्ण के हाथिआं कर्के युक्त सुवर्णका जो रथ है तिसको ग्रहण कर्के ऐसा अर्थ करणा और (उभयोः) क्या इस लोक विषे और परलोक विषे शुद्ध होताहै ॥ और पंचलांगल दानकों जो ग्रहणकर्त्ताहै और तिसकी शुद्धिकों नाहि कर्त्ता ११ ॥ सो दश हजार १०००० स्वर्ण कृच्छ्र कर्के ब्राह्मण शुद्ध होताहै ब्राह्मणकी शुद्धि अन्यथा नहि कही एह ब्रह्मराक्षसगातिकोंदेणेवाले प्रति ग्रह है ॥ १२ ॥

ॐ अथेति इसतें अनंतर अघमर्षण कृच्छ्रव्रतमाधवनें कहाहै तिसविषे विष्णुजीका वाक्यहै अब कृच्छ्र व्रतहैं त्रय३दिन उपवास करे और दिन दिन विषे त्रय३काल स्नान करे और जल विषे डुब्बी लाके त्रयवार अघमर्षण मंत्रका उच्चारण करे ॥ और दिन विषे खलोवे रात्रि विषे स्थित होवे और कर्मके अंतविषे दुग्ध देण वाली गौका दान करे एह अघमर्षण कृच्छ्रहै ॥ अब शंखऋषि औरहि प्रकारकरके अघमर्षणकृच्छ्रनूं कहताहै त्र्यहमिति त्रयदिन त्रयकाल स्नानको करके मुनि मनकरके जलविषे त्रयवार अघमर्षणमंत्रकोंजपे और त्रयदिन कुछ न भक्षण करे एह अघ

ॐ अथाऽघमर्षणकृच्छ्रं माधवेनोक्तम् ॥ तत्रविष्णुः ॥ अथकृच्छ्राणिभवन्ति त्र्यहंनाश्नीयात् प्रत्यहंचत्रिषवणंस्नानमाचरेत् जलेमग्नस्त्रिरघमर्षणं जपेत् दिवातिष्ठेद्रात्रावासीत कर्मणोन्ते पयस्विनींगांदद्यादित्यघमर्षणम् शंखस्तु ॥ प्रकारान्तरेणाघमर्षणकृच्छ्रमाह ॥ त्र्यहंत्रिषवणस्नायीमुनिस्स्नात्वाघमर्षणम मनसात्रिःपठेदप्सुनभुंजीतदिनत्रयम् अघमर्षणमित्येतद्व्रतंसर्वाघसूदनमिति ॥ १ ॐ अथयज्ञकृच्छ्रः । तत्राङ्गिराः ॥ युक्तस्त्रिषवणस्नायीसंयतोमौनमास्थितः प्रातःस्नानसमारंभंकुर्य्याज्जप्यंचनित्यशः । १ । सावित्रींव्याहृतिंचैवजपेदष्टसहस्रकम् ओंकारमादितःकृत्वारूपेरूपेतथाततः । २ । भूमौवीरासनेयुक्तःकुर्याज्जप्यंसुसंयतः आसीनश्चस्थितोवापि पिबेद्गव्यंपयःसकृत् ॥ ३ ॥

मर्षण कृच्छ्र संपूर्ण पापोंके नाश करणे वाला कहाहै ॥ १ ॥ ॐ इसतें अनंतर यज्ञकृच्छ्रहै तिसविषे अंगिराऋषिकावचनहै युक्तइति मौन विषे स्थित होके इंद्रियोंकोंरोकके विषयोंतें निवृत्त होवे त्रय दिन त्रय काल स्नान करे और प्रातःकाल विषे स्नानके समय प्रारंभिक जप्यरूप अघमर्षणको जपे । १ । और ओंकारका आदविषे उच्चारण करके सहित व्याहृतियोंके गायत्रीका अठ ८००० हजार जप करे २ पृथ्वी विषे वीरासन विषे स्थित होके और इंद्रियोंको रोककर जपकरे बैठकरके वा उठकरके और गौके दुग्धका एकवार पान करे ॥ ३ ॥

गेति दुग्धप्राप्तनहोवे तां गौंका दधिपानकरे और दधिकेअभावविषे छाहपीवे और छाहकेअभाव विषे यवांकेकाडेकोंपीवे ४ ॥ इनांविषे जो२ प्राप्तहोवे तिसकापानकरे दवांकापान गोमूत्रकर्के युक्तकरे ॥ ५ ॥ अंगिराजीनें एकदिनकेकृच्छ्रकर्के संपूर्णपापांके नाशकरणेवालायज्ञनामकर्के व्रत बहुश्रेष्ठकहाहै ॥ ६ ॥ एह यज्ञकृच्छ्रव्रत जो पुरुष पातककर्के युक्तहैं और उपपातकांकर्के युक्त और महापापां कर्के युक्त हैं तिनांके शुद्धकरणे वालाहै ॥ ७ ॥ अब देवकृत कृच्छ्रव्रतनूं यमक हनाहै यति छे ६ गुणा अधिक . जल कर्के पक्के जो यव तिनांकों और शाककों और दुग्धकों और दधिकों और घृतकों त्रय त्रय दिनभक्षणकरे और तिसतें परे त्रयदिन वायु भक्षणकरे १ ॥

गव्यस्यपयसोऽलाभेगव्यमेवभवेद्दधि दध्नोभावेभवेत्तक्रंतक्राभावेतुयावकम् ॥ ४ ॥ एषामन्यतमंयद्यदुपपद्येततत्पिबेत् गोमूत्रेणसमायुक्तंयावकंचोपयोजयेत् ५ ॥ एकाहेनतुकृच्छ्रेणउक्तस्त्वांगिरसास्वयम् सर्वपापहरोदिव्योनाम्नायज्ञइतिस्मृतः॥ ६ ॥ एतत्पातकयुक्तानांतथाचाप्युपपातकैः महद्भिश्चापियुक्तानांप्रायश्चित्तमिदंशुभामिति ॥ ७ ॥ देवकृतकृच्छ्रंदर्शयति यमः॥ यवागूयावकंशाकंक्षीरंदधिघृतंतथा त्र्यहंत्र्यहंतुप्राश्नीयाद्वायुभक्ष्यः परंत्र्यहम् १ ॥ कृच्छ्रंदेवकृतंनामसर्वकल्मषनाशनम् मरुद्भिर्वसुभीरुद्रैरादित्यैश्चरितंव्रतम् व्रतस्यास्यप्रभावेनविरजस्काहितेभवन्निति २ ॥ अथ प्रसृतयावकम् ॥ तत्रहारीतः ॥ अयमात्मकृतैःकर्मकृतैर्गुरुमात्मानंपश्येत् आत्मार्थं प्रसृतयावकंश्रपयेत् ॥

एह देवकृत नामकर्के कृच्छ्र व्रत संपूर्ण पापांके नाशकरणे वालाकहाहै मरुत्देवतां और वसुदेवता और रूद्र और आदित्य इनानें पिच्छे एह व्रत करीदा भया सो इस व्रतके करणे कर्के शुद्धहोतेभये ॥ २ ॥ अथेति अब प्रसृतयावक व्रत अर्थात् एकहाथके परमाणके अन्न खाणेका व्रत कहाहै तिसविषे हारीत ऋषिकावचन है अयमिति एह व्रत करणे वाला पुरुष ब्राह्मणां कर्के कहा जो कर्म तिनांकों आपकरे और तिनां आपकीते होये कर्मां कर्के अपणे आपको गुरु कया पूज्यदेखे अर्थात् शुद्धदेखे और अपणे व्रतवास्ते एकमुष्टिप्रमाणयव पकावे

और तिसतें अनंतर हवन करे और तिसीकर्के वैश्व देव बलिकरे और पके होये यवों कों अभिमंत्रण करे वक्ष्यमाण मंत्रां कर्के पूर्वोक्तहि अर्थ स्पष्टकर्के किहाहै अयमिति यवोसि इत्यादि हेयव तूंयवहै क्या पापांके नाश करणे वालाहैं और अन्नांका राजा हैं वरुण तुजका देवताहे मधुकर्के युक्त होया २ संपूर्ण पापांके दूर करणे वालाहैं और संपूर्ण ऋषियांकर्के तूं पवित्र कहाहै ॥१॥ घृतमिति हेयवातुसीं घृतहो और तुसींहि मधुहो और आपोहिष्ठा क्या परमशुद्धकरणे वाले हो और अमृत हो मेरेसंपूर्ण पापकों दूरकरो जो मेनें दुष्कृतकीयाहै ॥ २ ॥ और वाणी और कर्म और मनकर्के दुर्विचितन कीयाहै और अलक्ष्मीकों और काल

ततोऽग्नौजुहुयात् तदेववलिकर्मशृतंवाभिमंत्रयेत् (अयंपुरुषः आत्मकृतैःस्वयंसंपादितैः कर्मकृतैः कर्मणा प्रयोजकद्वारा कृतैः कर्मभिरितिशेषः आत्मानंगुरुंपूज्यंपश्येदित्यर्थः) यवोसिधान्यराजोवावारुणोमधुसंयुतः ॥ निर्नोदःसर्वपापानांपवित्रमृषिभिःस्मृतम् ॥ १ ॥ घृतंयवामधुयवाआपोहिष्ठामृतंयवाः सर्वंपुनंतुमेपापंयन्मयादुष्कृतंकृतम् ॥ २ ॥ वाचाकृतंकर्म्मकृतंमनसादुर्विचिंतितम् अलक्ष्मींकालकर्णींच सर्वंपुनीतमेयवाः ॥ ३ ॥ मातापित्रोरशुश्रूषांयौवनेकारितंतथा श्वशूकरावलीढंच उच्छिष्टोपहतंचयत् ॥ ४ ॥ सुवर्णस्तेयंव्रात्यत्वंवालत्वादात्मजंतथा व्राह्मणानांपरीवादंसर्वंपुनीतमेयवाः ॥ ५ ॥ वक्ष्यमाणां रक्षां कुर्यात् ॥

कर्णीकों जो मृत्युदाराक्षसोहै इससंपूर्णोंको यवपवित्र करे ॥ ३ ॥ और मातापिताकी अशुशूषा रूपपाप और युवावस्थाकर्के जो व्यभिचारादिरूप पाप और कुत्ते कर्के और शूकर कर्के जो उच्छिष्ट भक्षण का पाप और उच्छिष्ट कर्के युक्त के भक्षण का जो पाप ४ ॥ और सुवर्णस्तेयकापाप और संस्काररहित होणेका जो पाप और वाल्यावस्थाकर्के और ब्राह्मणकी निंदा कर्के उत्पन्न जो पाप तिनां संपूर्णां कों दूरकरो ॥ ५ ॥ और आगे कथन करणी जो रक्षा तिसकों करे

नमोरुद्राय इत्यादि मंत्रांकर्के पात्रविषे स्थापनकरे ॥ और यद्देवा इत्यादि मंत्रांकर्के अपने विषे हवनकरे क्या पानकरे अन्य पुरुषांके अर्थवास्ते त्रय रात्रां पीवे और जिसने पाप कीता है सो छेह रात्रा पीवे तां शुद्ध होताहै और महापापी सप्तरात्रपर्यंतपीवे और वारां १२ रात्रपर्यंत पीणेकर्के संपूर्ण पापदूर होताहै ॥ और गोमयतें क्या गोहेतें निकाले जो यव हैं तिनांको इक्की दिन पर्यंत पीणे कर्के गणांको देखताहै और गणाधिपतिका दर्शन करताहै और विद्याकों देखताहै और विद्याके पतिकों देखताहै और स्मृति कहतेहैं पूर्णायामिति जो पुरुष गोमूत्र विषे पकेहोये यवांकों वा गोमूत्र और गोमय और दधि और दुग्ध और घृतइनांकों पान कर्ताहै सो

नमोरुद्रायभूताधिपतयेद्यौःसावित्रीमानस्तोकेति पात्रेनिषिच्ययद्देवानमो यातामनोजवाः सुदक्षोदहंपितरस्तेनःपांतुतेनोवंतुतेभ्योनमस्तेभ्यः स्वाहे त्यात्मनिजुहुयात् । त्रिरात्रमेवार्थीपापकृत् षड्रात्रंपीत्वापूतोभवतिसप्तरात्रं महापातकीद्वादशरात्रंपीत्वासर्वम्पुरुपकृतंपापंनिर्दहति निःसृतानांयवाना मेकविंशतिरात्रंपीत्वागणान्पश्यति गणाधिपतिंपश्यति विद्यांपश्यतिवि द्याधिपतिंपश्यति । पूर्णायांयावकंपक्कंगोमूत्रंवासकृद्दधिक्षीरंसर्पिःप्रगेभु क्त्वामुच्यतेसोंहसःक्षणादित्याह भगवान् मैत्रावरुणिरिति । अर्थीलौकि ककार्य्यसाधकःत्रिरात्रमेवपिवेत् ॥ पापकृत्तुपड्रात्रमितिसंबन्धः ॥ * ॥ अथब्रह्मकूर्चव्रतमाहजावालः ॥ अहोरात्रोषितोभूत्वापौर्णमास्यांविशेष तः ॥ पंचगव्यंपिबेत्प्रातर्ब्रह्मकूर्चविधिःस्मृतः ॥ १ ॥ यथाह पराशरः ॥ गोमूत्रंगोमयंक्षीरंदधिसर्पिःकुशोदकम् ॥ निर्दिष्टंपंचगव्यंतुप्रत्येकंकाय शोधनम् । १

क्षणतें हिपापतें रहित होताहै ऐसें भगवान् मैत्रा वरुणि कहते भये एह अर्थ स्पष्ट कर्के किहाहै अर्थीनि लौकिककार्य्य करणे वालेकानाम अर्थीहै ॥ * ॥ इसतें अनंतर ब्रह्मकूर्च व्रतकों जावालऋषि कहताहै एक दिन रात्र उपवास करे चाहे किसे दिनहोवे परंतु पूर्णमासी विषे विशेष कर्के कहाहै प्रातःकाल विषे पंचगव्य पानकरे एहब्रह्म कूर्चकी विधि कहीहै १ ॥ जैसें पराशर कहता भया गावेति गोमूत्र और गोमय और दुग्ध और दधि और घृत कुशोदक एह पंच गव्य कहाहै एक एकगोमूत्र आदि देहके शुद्धकरणे वाले कहेहैं ॥ १ ॥

इनमें विशेष कहतेहैं गाविति तांबे की न्याई है वर्ण जिसका ऐसी गौका गोमूत्र ग्रहण करे और श्वेत वर्ण वाली गौका गोमय ग्रहण करे और सुवर्ण की न्याई वर्णवाली गौका दुग्ध और नीलवर्ण गौका दधि ॥ २ ॥ और कृष्णवर्ण गौका घृत जेकर पूर्वोक्त रंगा वालियां गौयां न प्राप्तहोवें तो कपिलागौका हि संपूर्ण ग्रहण करे पंचगव्यविषे एहविधिहै ॥ ३ ॥ अब पंचगव्यका परिमाणहै गाविति गोहेतें दूणा गोमूत्र और चारगुणा घृत और अठगुणा दुग्ध और तैसे अठगुणा दधि पंचगव्यविषे एहपरिमाणहै ॥ ४ ॥ इस जगा एह प्राचीनोंका मत किहाहै ॥ अब नवीनोंका मत दिखाईदा है गाविति गोमूत्र

गोमूत्रंताम्रवर्णायाः श्वेतायाश्चापिगोमयम् पयःकांचनवर्णायानीला याश्चतथादधि ॥ २ ॥ घृतंचकृष्णवर्णायाःसर्वंकापिलमेववा अला भेसर्ववर्णानांपंचगव्येष्वयंविधिः ॥ ३ ॥ पंचगव्यपरिमाणंतु ॥ गो शकृद्द्विगुणंमूत्रंघृतंविद्याच्चतुर्गुणम् क्षीरमष्टगुणंप्रोक्तंपंचगव्येतथादधि ॥ ४ ॥ तथाष्टगुणमितिप्राञ्चः ॥ गोमूत्रेमापकास्त्वष्टौगोमयस्यतुषोडश क्षीरस्यद्वादशप्रोक्तादध्नस्तुदशकीर्तिताः ॥ ५ ॥ गोमूत्रवद्घृतस्याष्टौतद र्द्धंतुकुशोदकम् अर्वाचीनैश्चऋषिभिःपरिमाणमुदाहृतम् ॥ ६ ॥ गायत्र्यादायगोमूत्रंगन्धद्वारेतिगोमयम् आप्यायस्वेतिचक्षीरंदधिक्रा व्णेतिवैदधि ॥ ७ ॥

विषे अठ ८ मासे परिमाण और गोहा सोलां मासे परिमाण और दुग्धवारां १२ मासे परिमाण और दधिदश १० मासेपरिमाण ॥ ५ ॥ और गोमूत्राकी न्याई घृतका भी अठ ८ मासे परि माण और तिसतें अद्ध कया चार४मासे कुशाका जल इहां मापकहणे करके मासयांका ग्रहणहै ॥ ६ ॥ अब इनके मन्त्रोंका कहते हैं गायेति गायत्री मंत्र करके गोमूत्रको ग्रहणकरे और गंध द्वारा इस मंत्र करके गोमयको ग्रहणकरे और आप्यायस्व इस मंत्र करके दुग्धको ग्रहण करे और दधि क्राव्ण इस मंत्रकरके दधिको ग्रहण करे ७ ॥

नयिति और तेजोसिशुक इस मंत्र करके घृतको ग्रहण करे और देवस्यत्वा इस मंत्र करके कुशाके जलनू ग्रहण करे इस रीतिसे ऋचा करके पवित्र जो पंचगव्य है तिसको अग्नि विषे हवन करे ॥ ८ ॥ सप्तहैं पत्र जिनांके और नहि छेदया है अग्र जिनां का और तोतेकी न्याई है वर्ण जिनांका असीयां कुशा करके जैसे विधिहै तैसे पंचगव्यका हवन करे ॥ ९ ॥ और इरावती इदं विष्णु मानस्तोकेतिशंवती एना चार ऋचा करके हवनकरणे योग्यहै और हवनकेशेषनू पिच्छो ब्राह्मण पीवे ॥ १० ॥ और ओंकारकरके पंचगव्यविषे अंगुष्ट और अनामिकाको फेरे और ओंकारको पढ़करके शुद्धकरे और ओंकार मंत्र के उच्चारण करके

तेजोसिशुक्रमित्याज्यंदेवस्यत्वाकुशोदकम् पंचगव्यमृचापूतंहोमयेदग्नि सन्निधौ ॥ ८ ॥ सप्तपत्राश्चयेदर्भाश्छिन्नाग्राः शुकत्विषः एतैरुद्धृत्यहोतव्यंपंचगव्ययथाविधि ॥ ९ ॥ इरावतीइदंविष्णुर्मानस्तोकेतिशंवती एताभिरेवहोतव्यंहुतशेषंपिबेद्द्विजः ॥ १० ॥ प्रणवेनसमालोड्यप्रणवेनाभिमंत्र्यच प्रणवेनसमुद्धृत्यपिबेत्तत्प्रणवेनतु ॥ ११ ॥ मध्यमेनपलाशस्यपद्मपत्रेणवापिबेत् स्वर्णपात्रेणताम्रेणब्रह्मतीर्थेनवापुनः ॥ १२ ॥ यत्त्वगस्थिगतंपापंदेहेतिष्ठतिमामकम् ब्रह्मकूर्चोपवासस्तुदहत्यग्निरिवेन्धनमिति ॥ १३ ॥ इदंपंचगव्यपरिमाणंद्वितीयतृतीयप्रकरणयोरुक्तमपिप्रसंगादत्राप्युक्तमिति न पौनरुक्त्यम्

अंगुष्ट और तर्जनीके साथ व्यवहार ऊर्द्धत्यागे कथा उपरले पासे सुद्दे और ओंकार करके पीवे ११ ॥ पलाशके मध्यम पत्रकरके वा कमलपत्रकरके वा सुवर्णके पात्रकरके अथवा तांबेके पात्र करके वा ब्रह्मतीर्थ करके पंचगव्यको पीवे ॥ १२ ॥ अब प्रार्थनाकरतेहैं यदिति जो पाप मेरीया अस्थियाविषे स्थितहै और देहविषे स्थितहै तिसको एह ब्रह्म कूर्च उपवास व्रत दाह करे जैसे अग्निकाष्टको दाहकर्ताहै १३ ॥ एह पंचगव्य परिमाणदूसरे तीसरे प्रकरणविषे कहाहोयाभीथा तथापि इस स्थान प्रसंगमें कहाहै पुनरुक्ति दोष नहि जानणा ॥

यदेति जद फेर एह पंचगव्य मिलया होया त्रय रात्रां विषे पीवे तां तिस ऋषिनें व्रत का नाम यतिसांतपन कहाहै इस शंख जीके स्मरणतेंहै ॥ जावालनेतो फेर सत्तां ७ दिनांका सांतपन व्रत कहा है गवितिगोमूत्र और गोमय और दुग्ध और दधि और घृत और कुशोदक इनांमेसें दिन दिन विषे क्रम कर्के एक एकका पान कर्के दिन रात्रउपवास करे तां इसका नाम कृच्छ्र सांतपन कहाहै एह संपूर्ण पापांके नाश करणे वालाहै ॥ १ ॥ इनां गुरु लघुकृच्छ्र व्रतोंकी व्यवस्था सामर्थ्यको देखके जानणे योग्यहै । ऐसे आगेभी व्यवस्था

यदात्वेतदेवपंचगव्यमिश्रितंत्रिरात्रमभ्यस्यते तदा यतिसांतपनसंज्ञां लभते एतदेवत्र्यहाभ्यस्तंयतिसांतपनंस्मृतमिति शंखस्मरणात् ॥ जावालेनतु सप्ताहसाध्यंसांतपनमुक्तम् गोमूत्रगोमयंक्षीरंदधिसर्पिःकुशोदकम् एकैकंप्रत्यहंपीत्वात्वहोरात्रमभोजनम् कृच्छ्रंसांतपनंनामसर्वपापप्रणाशनमिति १ ॥ एषांच गुरुलघुकृच्छ्राणां शक्त्याद्यपेक्षया व्यवस्था विज्ञेया एवमुत्तरत्रापिव्यवस्थावोद्धव्येति ॥ ❀ अथचान्द्रायणं वक्तुंतावत्तस्यकार्य्य विशेषोपयोगिता प्रदर्श्यते तत्र याज्ञवल्क्यः ॥ अनादिष्टेषुपापेषुशुद्धिश्चान्द्रायणेनतु धर्मार्थंयश्चरेदेतच्चन्द्रस्यैतिसलोकतामिति ॥ १ ॥ तथाचषट्त्रिंशन्मतेऽभिहितम् यानिकानिचपापानिगुरोर्गुरुतराणिच कृच्छ्रातिकृच्छ्रचांद्रैस्तुशोध्यन्तेमनुरब्रवीदिति ॥ १ ॥

जानसे योग्यहै ❀ इससे अनंतर चांद्रायणव्रतकथन करणे तां आदविषे तिस चांद्रायणके कार्य विषे उपयोगिता दखाईदीहै तिस विषे याज्ञवल्क्यजीका वचन है अनेति अनादिष्ट पापाके होयां २ चांद्रायण व्रत कर्के शुद्धि कहीहै जो धर्मके वास्ते चांद्रायणको करताहै सो चंद्रमाके लोकको प्राप्त होताहै ॥ १ ॥ तैसे षट् त्रिंशन्मत विषे कहाहै येति जो कुछक पापहैं वडे तों वडे सो कृच्छ्र और चांद्रायण व्रत कर्के शुद्ध होतेहैं एह मनुजी कहते भये ॥ १ ॥

अत्रेति इहां कृच्छ्र और अतिकृच्छ्र और चांद्रायण इन तीन व्रतोंकाहि करणा कहाहै और शुक्रजी नें दोनोंका समुच्चय कहाहै तिसकोकहतेंहै दुरीति दुरित जो उपपातकहै और दुरिष्ट जो पातकहैं इनके और महापापोंके और चपुनःसंपूर्ण पापोंके नाश करणवाले कृच्छ्र चांद्रायणव्रत कहेहैं १ गौतमजीने कृच्छ्र और अतिकृच्छ्र एह दोनोंव्रत चांद्रायणकेतुल्यहैं ऐसाकिहाहै संपूर्णप्रायश्चित्त के संक्षेपकर्के करणेंविषे कृच्छ्रातिकृच्छ्र व्रतके करणेंविषे चांद्रायण व्रतकी निःपेक्षताहै क्या कुछ इच्छानहि सूचनकीहै ॥ अथवा इतिशब्दकर्के तीनोंकाहि समुच्चय जानणा(वा समुच्चय इतिको धः द्विव्यादीनां राशौ परस्पर निरपेक्षाणामेकास्मिन्क्रियादा वन्वयः यथा देवदत्तो यज्ञदत्तश्च

अत्र त्रयाणांसमुच्चयःप्रतिपादितः उशनसाच द्वयोःसमुच्चयउक्तः ॥ दुरितानांदुरिष्टानांपापानांमहतामपि कृच्छ्रंचान्द्रायणंचैवसर्वपापप्रणाशनमिति १ ॥ दुरितमुपपातकम् ॥ दुरिष्टंपातकम् ॥ गौतमेनतु ॥ कृच्छ्रातिकृच्छ्रौचान्द्रायणमिति सर्वप्रायश्चित्तसमासकरणेनैन्दवनिरपेक्षता कृच्छ्रातिकृच्छ्रयोःसूचिता ॥ चान्द्रायणस्य तन्निरपेक्षता ॥ इतिशब्देन त्रयाणांसमुच्चयोवाकेवलप्राजापत्यस्यतुनैरपेक्ष्यं चतुर्विंशतिमतेऽभिहितम् ॥ लघुदोषेत्वनादिष्टेप्राजापत्यंसमाचरेदिति ॥ गौतमेनापि प्राजापत्यनैरपेक्ष्यमुक्तम् प्रथमंचरित्वाशुचिःपूतः कर्मण्योभवति द्वितीयंचरित्वा यदन्यन्महापातकेभ्यः पापंकुरुते तस्मान्मुच्यते तृतीयंचरित्वा सर्वस्मादेनसोमुच्यत इतिमहापातकादपीत्यभिप्रेतम् ॥

गच्छतीति) जैसे देवदत्त और यज्ञदत्तका आपसविषे निरपेक्षता कर्के एक गमन विषे अन्वयहै तैसेंहि तीनोंको आपसविषे निरपेक्षता कर्के पापके दूरकरणे विषे अन्वयहै ॥ केवल प्राजापत्यकों दूसरेकी नैरपेक्षता चतुर्विंशति मतविषे कहीहैं सो कहतेहां लघ्विति जिसका थोडादोषहै ऐसा जो अनादिष्टपापहै तिसविषे प्राजापत्यकोंकरे ॥ गौतमजीनेभी प्राजापत्य नैरपेक्ष्यकहाहै ॥ एक प्राजापत्य करणेकर्के देह और अंतष्करणकी शुद्धि और कर्म करणेकी योग्यता वाला होताहै ॥ और दूसरी वार करणे कर्के महापापोंतें जो अन्यपापहैं तिनोंतें शुद्ध होताहै ॥ और तीसरेके करणे कर्के संपूर्ण पापतें रहित होताहै महापापतेंभी एह अभिप्रायहै

मनुनेंभी कहाहै पेति पराकनाम कर्के जो एह कृच्छ्रहै सो संपूर्ण पापांके नाश करणे वाला कहाहै ॥ हारीतऋषिनेंभी कहाहै चांद्रेति चांद्रायणव्रत और पराकव्रत और तुलापुरुष दान और गौयांको घास चुगाणा वनविषे पीछे जाणा एह चार संपूर्ण पापांके नाश करणे वाले कहेहैं १ ॥ तैसें गोमूत्र और गोमय और दुग्ध और दधि और घृत और कुशोदकइनांकों भक्षणकर्के उपवास व्रतकों करे एह व्रत पापकर्के चांडाल तुल्यकों भी शुद्ध कर्ताहै २ ॥ ❀ इसतें अनंतर चांद्रायण व्रतका प्रकारहै ॥ तिसविषे मनुजीका वाक्यहै अयिति एक एक ग्रासनूं कृष्णपक्षविषे घटावे और शुक्लपक्ष विषे वधावे कृष्णपक्षकी एकमते लेके शुक्लपक्षकी पूर्णमासी तक व्रत करे और त्रयकालस्नान करे एह चांद्रायणव्रतकी विधिहै ॥ १ ॥ अब याज्ञवल्क्यजीकावचनहै

मनुनाप्युक्तम् ॥ पराकोनामकृच्छ्रोयंसर्वपापप्रणोदनइति ॥ हारीतेनाप्युक्तम् ॥ चान्द्रायणंपराकश्चतुलापुरुषएववा गवांचैवानुगमनंसर्वपापप्रणाशनम् १ ॥ तथा गोमूत्रंगोमयंक्षीरंदधिसर्पिःकुशोदकम् एकरात्रोपवासश्चश्वपाकमपिशोधयेत् २ ● अथचान्द्रायणव्रतप्रकारः ॥ तत्रमनुः ॥ एकैकह्रासयेत्पिंडंकृष्णेशुक्लेचवर्द्धयेत् उपस्पृशंस्त्रिषवणमेतच्चान्द्रायणंस्मृतम् १ ॥ याज्ञवल्क्यः ॥ तिथिवृद्ध्याचरेत्पिंडान्शुक्लेशिख्यंडसंमितान् एकैकंह्रासयेत्कृष्णेपिंडंचान्द्रायणंचरन् ॥ १ ॥ वशिष्ठः ॥ एकैकंवर्द्धयेत्पिंडंशुक्लेकृष्णेचह्रासयेत् इन्दुक्षयेनभुंजीतएषचान्द्रायणोविधिरिति ॥ १ ॥ चन्द्रस्यायनमिवायनंचरणंयस्मिन्कर्मणिह्रासवृद्धिभ्यां तच्चान्द्रायणम् संज्ञायांदीर्घः । यमः वर्द्धयेत्पिंडमेकैकंशुक्लेकृष्णेचह्रासयेत् एतच्चान्द्रायणं नामयवमध्यंप्रकीर्त्तितम् ॥ १ ॥

तिथ्येति शुक्लपक्षविषे जैसे एकम और द्वितीयार्ते आदलेके तिथीयांकी वृद्धि होतीहै तैसे मोरके आंडे प्रमाण ग्रासोंकी वृद्धि करे और कृष्णपक्ष विषे ग्रासांकों घटावे और अमावस्या विषे उपवासकरे चांद्रायण व्रतकों कर्ताहोया १ ॥ वसिष्ठजीके वाक्यकाभी एहि अर्थहै ॥ चांद्रायण शब्दका अर्थ कहतेहां कि चंद्रमा जैसें शुक्लपक्षविषे किरणां कर्के वृद्ध होताहै और कृष्ण पक्ष विषे किरणांके कम होणेकर्के कम होताहै ऐसे ग्रासां कर्के वधाणा और घटाणा तिस विषे चांद्रायण कहाहै संज्ञा होणे कर्के चकारकों दीर्घ होया यमनें ॥ १ ॥ इसीका नाम यवमध्यचांद्रायण कहाहै एहि कहतेहैं वर्द्धयेदिति ॥ १ ॥

अब पराशरजीकावाक्यहै यवेति यवमध्यकृच्छ्रके स्वरूपकों कहतेहां जिसके करणेकर्के पापीपुरु संपूर्णपापांतें रहित होताहै इसविषे संशयनहिहै॥ १॥ शुक्लपक्षकी प्रतिपदातें लेके व्रतकरणे वला पुरुष नियमकरेप्रातःकलउठकर दातनकोंकर्के जैसेआचारहै तैसें स्नानकरे ॥ २ ॥ और दो शुद्ध वस्त्र धारणकरे और नित्यकर्मकोंसमाप्तकर्के सूर्यकेअस्ततकमौनधारके गायत्रीकाजपकरे। ३। औ निर्मल समय गंध पुष्प आदिकां कर्के विष्णुकी पूजा करे और मयूरके आंडे परिमाण ग्रासकं कर्के । ४ । विष्णुतांई नैवेद्यदेकर्के भक्षणकरे एकवार भक्षण करणाविषे असमर्थहोवेतां दो भाग

पराशरः। यवमध्यस्यकृच्छ्रस्यस्वरूपंप्रवदाम्यहम् यत्कृत्वासर्वपापेभ्योमुच्यतेनात्रसंशयः ॥ १ ॥ शुक्लप्रतिपदारभ्यव्रतीनियमपूर्वकम् प्रातःस्नात्वा यथाचारंदंतधावनपूर्वकम् ॥ २ ॥ तथावस्त्रेपरीधायनित्यकर्मसमाप्यच जपेत्तावन्महामौनीयावमंदायतेरविः ॥ ३ ॥ तदाहरिंसमाराध्यगन्धपुष्पादिभिःशनैः मयूराण्डप्रमाणेनग्रासंकृत्वाकृतीतथा ॥ ४ ॥ विष्णवेतन्निवेद्याशुतंग्रासंभक्षयेत्ततः एकवारमशक्तत्वाद्द्विधाकृत्वैवभक्षयेत् ॥ ५ ॥ उत्तरापोशानंकृत्वावाहिर्जगत्वाथवाश्यतः प्रक्षाल्यपाणीतोयेनगंडूषैर्द्वादशात्मकैः ॥ ६ ॥ पादौप्रक्षाल्यचाचम्यपुनर्गत्वास्वमालयम् स्वयमेवपुनःकृत्वाशुद्धंगोमयवारिभिः ॥ ७ ॥ पुनःप्रक्षाल्यतंपाणिंदेवंनत्वाप्रसंविशेत् पापंडादीन्नपश्येतनसंभाषेत्कदाचन ॥ ८ ॥ सायंसन्ध्यामुपासीतत्वासायंहोमसमाचरेत् ॥

कर्के भक्षणकरे ॥ ५ ॥ देवस्थानतें बाहरजाकर अमृतोपस्तरणमसि इसकर्के आचमनकरके ग्रासको भक्षणकर्के अमृतापिधानमसि इसकर्के आचमनकरे और मौनधारकरहथांको शुद्धकर्के जलकर्के मुखका शुद्धिवास्ते बारां १२ चुलीयांकरे॥ ६ ॥ फेर पादांको जलकर्के शुद्धकरे और आचमन करे पीछे अपणे स्थानको प्राप्तहोके गोमय और जलकर्के स्थानको शुद्धकरे ॥ ७ ॥ फेर हथांकोधोवे देवताको नमस्कार करे पाषंडियांको न देखे और तिनके साथ संभाषणकदीभी॥ न करे ८ ॥ और सायंकाल संध्या उपासे और पीछे सायंकाल तक होम करे ॥

नियतकर्केहै व्रत जिसका सो पुरुष देवताके समीप स्थंडिलमे शयन करे ॥ ९ ॥ फ़ेर प्रातः समय दूसरे दिन उठके स्नानकरे और पूर्वकी न्यांई नियमकों करके ग्रासकों भक्षण करे एक एक ग्रास वधायके ॥ १० ॥ बुद्धिमान् दिन दिन विषे एक एक ग्रासकी वृद्धिकरे पूर्णमासी तके दिव्य जो ग्रासहैं अर्थात् मंत्राकर्के शुद्धहैं ॥ ११ ॥ और पूर्णमासीविषे पंदरां १५ ग्रास भक्षण करे और क्रमसें कृष्ण पक्षविषे एक एक ग्रासको घटावे हर्षकर्के ॥ १२ ॥ पूर्वकीन्यांई एक मास पर्यंत स्थित होवे तां मासके अंत विषे एक ग्रासकों भक्षण करे परमेश्वरके ध्यान विषे युक्त

स्वपेच्चस्थंडिलेदेवसमीपेनियतव्रती ॥ ९ ॥ ततःप्रातःसमुत्थायपरेद्युःस्ना
नमादिशेत् पूर्ववन्नियमंकृत्वाभक्षयेदेकवृद्धितः ॥ १० ॥ एकोत्तरत
याराजन्वृद्ध्याप्रतिदिनंवुधः भक्षयेत्कवलान्दिव्यान्यावतापौर्णिमादि
नम् ॥ ११ ॥ दशपंचैवकवलान्भुक्त्वातत्रव्रतेक्रमात् एकैकंह्रासयेद्ग्रासं
कृष्णपक्षेव्रतीमुदा ॥ १२ ॥ पूर्ववन्नियमंकृत्वामासंयावत्प्रवर्त्तते तत्रापि
भक्षयेदेकंहरिध्यानपरायणः ॥ १३ ॥ व्रतांतेगोःप्रदातव्याव्रतस्यपरिपूर्त्त
ये पंचगव्यंपिबेत्पश्चाद्यवमध्यमुदाहृतम् ॥ १४ ॥ एतदाचरणेनैवब्रह्म
हत्यांव्यपोहति इतराणिचपापानिनश्यंतीतिकिमद्भुतम् १५ ॥ देवलः ॥
अन्नमात्रतृतीयांशैस्तण्डुलैःपाचयेद्धविः तावदन्नंमयूराण्डमितिसन्तोवदं
तिहि ॥ १ ॥ अन्नमात्रंसार्द्धमुष्टिद्वयमितंतत्तृतीयांशैरित्यर्थः

होया होया १३ और व्रतके अंत विषे पूर्ण फलकी प्राप्ति वास्ते एक गौका दान करे और पीछे पंचगव्यकों पानकरे एह यव मध्य चांद्रायण व्रत कहाहै ॥ १४ ॥ इसके करणे करकेहि ब्रह्महत्यादिपापाकों दूरकर्त्ताहै इतरपापांके दूरकरणेविषे क्या आश्चर्यहैं ॥ १५ ॥ देवलजीकावा क्य है असेति ढाई २॥ मुष्ठ चावलांका जो तीसरा भागहै तिस करके युक्त दुग्धकों पकावे तितने प्रमाण अन्नकों मोरके आंडके तुल्य बुद्धिमान् कहतेहैं १ ॥

इतीति ऐसे यवमध्य पवित्रचांद्रायण व्रतकों करके पुरुष तिसी क्षणतें ब्रह्महत्यादि पापतेंरहित होताहै ॥ २ ॥ इस यवमध्य चांद्रायणव्रतकरणेकों जो प्रारंभकर्त्ताहै तिसके पापनष्ट होतेहैं और जो कोई इसव्रतको करचुकाहै उसकी क्या बात कहणीहै। ३ । विष्णुकी प्रीतिके करणे वालाहै और स्त्रीयां और विधवा और यती और ब्रह्मचारी ॥ ४ ॥ और गृहस्थीइनांके महापापांके नाशक रणेवाला विशेषकर्के एहकहाहै चंद्रमाकी वृद्धि और क्षय किरणाकर्के जैसे होताहै तिसकी न्याई वृद्धि और क्षय चांद्रायणव्रतको ग्रासोंकरके जानणा जदशुक्ल पक्षसें प्रारंभ होवे तां यवमध्यहै एहअर्थहै चंद्रमाकीन्यांई वृद्धिक्षयहोणेतें इस यवकृच्छ्रका नाम यवमध्य चांद्रायण कहाहै धर्मरा

इतिचांद्रायणंकृत्वायवमध्यंसुपावनम् ब्रह्महत्यादिभिःपापैर्मुक्तोभवतितत्क्षणात् ॥ २॥ यवमध्यामिदंचान्द्रंकर्त्तुंयस्तदुपक्रमेत् ॥ तस्यपापानिनश्यन्तिकिंपुनर्व्रतचारिणः ॥ ३ ॥ विष्णुप्रियकरंचैवसर्वपापप्रणाशनम् नारीणांविधवानांचयतीनांब्रह्मचारिणाम् ४ गृहस्थानांविशेषेणमहापातकनाशकम् वृद्धिःक्षयश्चचन्द्रस्यवर्त्ततेतद्वदिदमपि एतद्व्रतनामधेयचांद्रस्य शुक्लपक्षेवृद्धिः कृष्णपक्षेक्षयस्तन्नामधेय एष यवकृच्छ्रःएतद्व्रयववत्प्रांतयोरणीयः मध्येस्थवीयइतियवमध्यमितिकथ्यते एतदेवव्रतं यदाकृष्णपक्षप्रतिपदिप्रक्रम्यपूर्वोक्तक्रमेणानुष्ठीयते तदापिपीलिकामध्यमितिकथ्यते ॥ यमः ॥ एकैकंह्रासयेत्पिंडंकृष्णेशुक्लेचवर्द्धयेत् एतत्पिपीलिकामध्यंचान्द्रायणमुदाहृतम् ॥ १ ॥

जका वाक्यहै अयिति कृष्णपक्षविषे पूर्वग्रासांकों घटावे और पीछेशुक्लपक्षविषे वृद्धिकरे इसका नाम पिपीलिका मध्य चांद्रायण कहाहै १ जैसे कीटीका मध्य सूक्ष्महोताहै तैसेहि इसव्रतकाभी मध्य सूक्ष्महै क्या अमावास्याके दिन कुछभोजन नहि सो व्रतकामध्य दिनहै और जैसे यवमध्य विषे स्थूलहै दोनोंपासयां विषे सूक्ष्महै इसप्रकार मध्यविषे स्थूलहोणेतें तिसका नाम यवमध्य चां. द्रायणहै अर्थात् पूर्णिमाके दिन १५ पंदराग्रासका भोजन है सो व्रतका मध्य है एहि व्रत कृष्णपक्षकी १ एकमते ग्रहणकरिये तां तिसका नाम पिपीलिकामध्यहै १ ॥

इयोति तैसे पूर्वकहा जो क्रम तिसकर्के कृष्णपक्षकी प्रतिपदाविषे चौदां १४ ग्रासांकों भक्षणकरे एकएक ग्रासघटावे चतुर्दशीतक तां चतुर्दशीविषे एक ग्रास रिहा तिसको भक्षणकरे और अमावास्याविषे उपवास करे और शुक्लपक्षकी प्रतिपदा विषे एकहि ग्रास भक्षण करे तिसते पीछे इकएक ग्रासको वधावे पक्षके अंतविषें जो दिनहै पूर्णमासी तिसविषें पंदरां १५ग्रास भक्षणकरे ऐसे पिपीलिकामध्य युक्तहै ॥ अब वसिष्ठजीकावचनहै मेति मासाविषे कृष्णपक्षके आदविषे चौदां १४ ग्रासांकों भक्षणकरे आगे दिनदिनविषे घटावे और पक्षके अंतविषे उपवासकरे ॥ १ ॥

तथाहि पूर्वोक्तक्रमेण कृष्णपक्षप्रतिपदि चतुर्दश ग्रासान्भुक्त्वा एकैक ग्रासापचयेनचतुर्दशींयावद्भुंजीत ततश्चतुर्दश्यामेकंग्रासंग्रासित्वा अमावास्यायामुपोष्य शुक्लप्रतिपदिएकमेवग्रासंप्राश्नीयात् ततएकोपचयभोजनेन पक्षशेषनिर्वर्त्यमानेपौर्णमास्यांपंचदशग्रासाःसंपाद्यंतइति युक्तैव पिपीलिकामध्यता । वशिष्ठः मासस्यकृष्णपक्षादौग्रासानद्याच्चतुर्दश ग्रासाऽपचयभोजीसन् पक्षशेषंसमापयेत् ॥ १ ॥ तथैवशुक्लपक्षादौग्रासंभुंजीतचापरम् ग्रासोपचयभोजीसन्पक्षशेषंसमापयेत् ॥ २ ॥ यदात्वेकस्मिन्पक्षेतिथिवृद्धिह्रासवशाद्दिनानिषोडश भवन्ति चतुर्दश वा तदा ग्रासानामपिवृद्धिह्रासौज्ञातव्यौ तिथिवृद्ध्यापिंडांश्चरेदितिनियमात् ॥ चान्द्रायणान्तरमाह याज्ञवल्क्यः ॥ यथाकथंचित्पिंडानांचत्वारिंशच्छतद्वयम् मासेनैवोपभुंजीतचान्द्रायणमथापरम् ॥ १ ॥

वैसे शुक्लपक्षके आदाविषें एकग्रासकों भक्षणकरे आगे दिनदिन विषें ग्रासकों वधावे ऐसे समाप्त करे । २ । जदपक्षविषे सोलां १६ तिथियां होण वा चौदां १४ होण तां ग्रासांकोभी वधावे घटावे इसमें वचनकहाहै तिथिके वृद्धिक्रमकर्के ग्रासांकों भक्षणकरे इसनियमते जानणा ॥ और भीचांद्रायणका भेदहै तिसकों याज्ञवल्क्यकहताहै यथेति जिसकिसे तरह अर्थात् मध्यान्हकालविषे नित्य आठ ८ ग्रास भक्षण करे अथवा चार ग्रास दिन विषे और चार रात्रिविषे भक्षणकरे ऐसे एक मासकर्के दोसउचाली २४० ग्रासभक्षणकरे एहचांद्रायणका भेद कहाहै १

अथेति एक दिनविषे चारग्रासांकों और दूसरे दिनबारां १२ ग्रासांकों भक्षणकरे तैसें एक रात्र उपवासकरे और दूसरे दिन सोलां ग्रास भक्षणकरे इत्यादि प्रकारांविषे किसे प्रकारकर्के अपणी सामर्थ्यतेंकरे एह पूर्व कथनकीते जो दो चांद्रायण तिसतें एह भिन्नचांद्रायणकहाहै॥इसकारणतें इनदोनों विषे ग्रासांकी संख्याका दोसउ चाली २४०एहनियमनाहि क्यांनियमहै दो सउ पंजी २२५ग्रासहैं सो कहतेंहै शुक्लेति शुक्ल प्रतिपदातें लेकर पूर्णिमा पर्य्यंत एक एक वृद्धि कर्के एक सो वीस १२० ग्रासहैं कृष्णपक्षकी प्रतिपदासें लेकर चतुर्दशीतक एक एक ग्रासके ह्रासकर्के

पिंडानांचत्वारिंशदधिकंशतद्वयंमासेनभुंजीत ॥ यथाकथंचित्प्रतिदिनंम ध्याह्निष्टौग्रासान्यथानक्तंदिनयोश्चतुरश्चतुरोवा ॥ अथैकस्मिंश्चतुरोऽपर स्मिन्द्वादशतथैकरात्रमुपोष्यापरस्मिन्षोडशेवत्यादिप्रकाराणामन्यतमेम शक्त्याद्यपेक्षयाभुंजीतेत्येतत्पूर्वोक्तचान्द्रायणद्वयादपरंचान्द्रायणम् अत स्तयोर्नायंग्राससंख्यानियमःकिंतुपंचविंशत्यधिकशतद्वयसंख्यैव॥तद्यथा शुक्लप्रतिपदमारभ्यपूर्णिमापर्य्यन्तमेकैकवृद्ध्या १२० ग्रासाः ॥ कृष्ण प्रतिपदमारभ्यचतुर्दशी १४ प्रभृत्येकैकग्रासह्रासेन १०५ ग्रासाभवंती त्यनयारीत्या २२५ मनुरप्याह ॥ अष्टावष्टौसमश्नीयात्पिंडान्मध्य दिनेस्थिते नियतात्माहविष्याशीयतिचान्द्रायणंपरम्॥ १ ॥ यतिचान्द्रा यणमितिसंज्ञामात्रम् ॥ तेन न यतिमात्रस्यैवाधिकारःकिन्तुसर्वेषाम् ॥

एक सउपांचग्रास १०५ हुए इसरीति कर्के दो सौ पंचीस २२५ ग्रासहैं ॥ मनुजीभी कहतेंहैं अष्टाविति मध्याह्नदिन विषे अठ अठ ग्रासभक्षणकरे मनकों एकाग्र करे परंतु हविष्यकों भक्षण करे एह वडा श्रेष्ट यति चांद्रायणहै ॥ १ ॥ परन्तु यति चांद्रायण केवल इसका नामहिहै ति सकों यतिचांद्रायणनाम होणे कर्के केवल यतिकों हि नहि अधिकार किंतु संपूर्णोकोंहि अधिकारहै

तैसेहि कहतेहैं चेति चार ४ ग्रासां नूं प्रातः कहणे कर्के दिनविषे भक्षणकरे इंद्रियांकों बिषयांतें रोककें स्थितरहे ब्राह्मण और चारग्रास रात्रिविषे भक्षणकरे एक मासतक ऐसे नियमकरे तिसका नाम शिशुचांद्रायणहै ॥ १ ॥ इस व्रत विषे भी संपूर्णांका अधिकारहै केवल वालककों नहि इसीको स्पष्ट कर्के कहतेहैं यथेति जिसाकिसे तरह हविष्य अन्न के दोसउचाली २४० ग्रास भक्षण करे एक मासपर्य्यंत तां चंद्रके लोककों प्राप्तहोताहै २ ॥ तैसें दोसउचाली २४० ग्रासतें घट ग्रासांकेभक्षण करणे विषें औरहि चांद्रायणकहाहैं ● ॥ अवऋषिचांद्रायणको कहतेहैं तिसविषे यमजीका वाक्यहै त्रीनिति दृढ है व्रत जिसका

तथाच चतुरःप्रातरश्नीयात्पिंडान्विप्रःसमाहितः चतुरोस्तमयेसूर्य्येशिशुचान्द्रायणंचरन् ॥ १ ॥ अत्रापिचसर्वेषामधिकारोःन शिशुमात्रस्य ॥ यथाकथंचित्पिंडानांतिस्रोशीतीःसमाहितः मासेनाश्नन्हविष्यान्नंचन्द्रस्यैतिसलोकताम् ॥ २ ॥ तथाच चत्वारिंशच्छतद्वयन्यूनसंख्याग्राससंपाद्यस्यापिसंग्रहार्थमपरग्रहणम् ● अथऋषिचान्द्रायणम् ॥ तत्रयमः ॥ त्रींस्त्रीन्पिंडान्समश्नीयान्नियतात्मादृढव्रतः हविष्यान्नस्यवैमासमृषिचान्द्रायणंस्मृतमिति ॥ १ ॥ एषुच यतिचान्द्रायणप्रभृतिषु न चन्द्रगत्यनुसरणमपेक्षितम् ॥ अतस्त्रिंशद्दिनात्मकं साधारणेन मासेन नैरंतर्येण चान्द्रायणानुष्ठाने यदि कथंचित्तिथिवृद्धिह्रासवशात् पंचम्यादिष्वारंभोभवति तथापि न दोषः ॥

और निश्चलहै मन जिसका सो पुरुष हवि ... त्रयग्रास रात्रि विषे भक्षण करे एकमास पर्यंत तां तिसका नाम ऋषिचांद्रायणकहाहै ॥ १ ॥ एह जो यतिचांद्रायणतें आदि लेके व्रत हैं तिनां विषे चंद्रमाकी गति कर्के शुक्ल कृष्ण पक्षका नियम नहि इसकहणेतें त्रीहां ३० दिनांका ग्रहणहै साधारण एक मास निरंतर चांद्रायणविषे जानणा ॥ जेकर कदी एकम आदि तिथिं पीछें वा आगें पंचमी आदि तिथि होहि है इस विषे प्रारंभ करे तद करणेका भी नहिदोष त्रीह दिन ३० का सावन नाम कर्के मास पूर्णकरे ॥

● इसतें अनंतर चांद्रायण व्रतकी विधिहै कृच्छ्र व्रत विषे मुंडनकों करवाके व्रतकों करे दूसरे दिन पूर्णमासी विषे उपवास करे और आप्यायस्वसंतें पयांसि नमो नम इति इनां मंत्रां करकै तर्पण और आज्य होम और हविकों अभिमंत्रण करणा और चंद्रमाका उपस्थान करणा इनीं मंत्रांको तर्प्पणादि कार्य्यांमे प्रत्येक विषे पढे सबको पढकर तर्प्पणकरे और सभकों पढकर होम करे एह अर्थ आगे स्पष्ट होणाहै यद्देवा देव हेडन मिति चारों मंत्रों करके आज्य होम करे (देवकृतस्य इस करके अंत विषे समिधाकरके हवनकरे और ॐभूःइसतें आदि लेकर

● अथ चान्द्रायणव्रतविधिः ॥ कृच्छ्रेवपनव्रतंचरेत् श्वोभूतांपौर्णमासीमुप वसेत् आप्यायस्वसंतेपयांसिनमोनमइति चैताभिस्तर्पणमाज्यहोमोहवि षश्चानुमंत्रणम् ॥ उपस्थानंचन्द्रमसः ॥ यद्देवादेवहेडनमिति चतसृ भिराज्यंजुहुयाद्देवकृतस्येतिचांतेसमिद्भिः ॥ ॐभूः ॐभुवः ॐस्वः ॐमहः ॐजनः ॐतपः ॐसत्यम् ॐयशः ॐश्रीः ॐऊर्कः ॐइट् ॐओजः ॐ तेजः ॐपुरुषः ॐधर्मः १५ शिव इत्येतैर्ग्रासानुमंत्रणम् ॥ प्रतिमंत्रंम नसानमःस्वाहेति वा सर्वानेतैरेवग्रासान्भुंजीत ॥ चरुभैक्ष्यसक्तुकणयावक शाकपयोदधिघृतमूलफलोदकानि हवींषि उत्तरोत्तरप्रशस्तानि पौर्णमा स्यांपंचदशग्रासान्भुक्त्वा एकैकापचयेनअपरपक्षमश्नीयात् अमावस्या मुपोष्यैकैकोपचयेन पूर्वपक्षंविपरीतमेकेपामेषचान्द्रायणोमासइति

शिवःतकइनांकर्के ग्रासांको अभिमंत्रणकरे और मंत्र मंत्र प्रतिमनकर्के नमःस्वाहा उच्चारणकरे अथवा संपूर्णग्रासांनूं इनांकर्केहि भक्षणकरे । और कुछ कहतेहैं चर्विति चरुभैक्ष्य क्या भिक्षान्न सत्तु शिलाअन्न और जवांका पाक और शाक दुग्ध दधि घृत और मूल शकरकंदी और फ ल आम्रादि और जल एह हवींषि जानणे एह सब उत्तरोत्तर श्रेष्ट हैं पूर्णमासीविषे पंदरां१५ ग्रासांनूं भक्षण कर्के एकैकह्रासकर्के दूसरे पक्षविषे भक्षणकरे । अमावस्या विषे उपवास कर्के एक एक की वृद्धि कर्के पूर्व पक्ष विषे करे और कोई इसतें विपरीत चांद्रायण कहतेहैं १

अत्रेति इस विषे ग्रासका परिमाण ऐसे जानणा जो मुख विषे सुख करके प्रविष्ट होवे एह कहाहै सो बालकांविषे जानणा ॥ हेतुकहतेहैं शिखीति मयूरअंडके परिमाण पंचग्रास भोजन करणविषे सामर्थ्य नहि होणेतें ॥ इसमें एभी विचार जानणा कि दुग्धादिक ग्रास कैसे होणगे तिसवास्ते ग्रासोंकी कल्पना करलैणी क्षीरादि द्रवहविकें ग्रास जो मयूर अंडका प्रमाण सो दूनेकरके बनाकरजानणा ॥ और विशेषकहतेहैं तथेति कुक्कुड अंडकेप्रमाण और गिल्लेऔंवलेके प्रमाण ग्रास समर्थताकों देखकर अन्य स्मृतियां करके कहे होये शक्ति विशेषको देखकर जानणे मयूर अंडप्रमाणतें तिनांकों लघु होणेतें । अब चांद्रायण व्रतके प्रसंगविषे पराशरजीका वचनहै

अत्रग्रासप्रमाणमास्याविकारेणेति यदुक्तंतद्बालाभिप्रायम् शिख्यण्डपरिमितपंचग्रासभोजनाशक्तेः क्षीरादिद्रवहविषां ग्रासाःकल्पनीयाः शिख्यण्डपरिमितत्वंतु पर्णपुटकादिनासंपादनीयम् ॥ तथा कुक्कुटाण्डार्द्रामलकादिपरिमितानिकवलानि स्मृत्यंतरोक्तानिशक्तिविशेषविषयाणि । शिख्यण्डपरिमाणाल्लघुत्वात्तेषां ॥ चान्द्रायणप्रकरणे पराशरस्तु ॥ कुक्कुटाण्डप्रमाणंतुग्रासंवैपरिकल्पयेत् ॥ शंखस्तु ॥ आर्द्रामलकमात्रास्तुग्रासाइन्दुव्रतेस्मृताइति ॥ एतेषांपरिमाणानांविकल्पोबोध्यः ॥ * अथव्रतांतरसंपातेनिर्णयः ॥ एकादश्यादौनित्यप्राप्तउपवासस्तावच्चान्द्रायणविधिनाबाध्यते एतस्यचचरेदेतच्चन्द्रस्यैतिसलोकतामिति काम्यत्वात्

कितिं कुक्कुड अंडके प्रमाण ग्रासकी कल्पनाकरे । शंखजीकाभी एह वचनहै जो गिल्लाऔंवलाहै तिसप्रमाण ग्रासचांद्रायण व्रतविषेकहेहैं इन्हांपरिमाणांका यथाशक्तिसें विकल्पजानलैणा * इसतें अनंतर व्रतांतर संपात विषे निर्णयहै अर्थात् चांद्रायणके बीच कोई और व्रत आजावे तिसका निर्णयहै एकादशी आदिक विषे नियम करके जो उपवासहै सो चांद्रायण विधि करके बाधया जावेगा क्योंकि जो चांद्रायणकोंकरताहै सो चंद्रलोकको प्राप्तहोताहै इसफलके सुणनेसे काम्य होणेतें ॥

लैति और लसुनके भक्षण आदिक निमित्तके होयां होयां विधान करणेकर्के चांद्रायणको ग्रहणताहै श्रीर निमित्तविषेभी ग्रहणताहै इस कारणतें एह सिद्ध होया कि निमित्तें नैमित्तिक वलवान् है का म्य इति और काम्य जो चांद्रायणहै और एकादशीव्रत जो काम्यहै सो अन्य पुरुष द्वारा क रवाणा होरी कर्के कीतयां होयांभी फलकी प्राप्ति होतीहै ऐसे कात्यायनादि ऋषियां कर्के कथन करणेतें और एह एकादशी व्रतके वाधका अभाव अर्थात् एकादशीके व्रतका वाधा कदे भी नहि होता किंतु और व्रत तिस विषे आवे तां एकादशी कर्के तिसकाहि वाधा हुंदाहै सो चांद्रायणतें भिन्न व्रतां विषे हि जानणा क्योंकि तिस विषे दिन दिन प्रति ग्रास ग्रहण विषे

लशुनभक्षणादिनिमित्ते विहितत्वेन नैमित्तिकत्वाच्च काम्यस्त्वेकादश्या द्युपवासोऽन्यद्वाराकरणीयः प्रतिनिधिना कृतेपि फलप्राप्तेः कात्या यनादिभिरुक्तत्वात् ॥ अयंचैकादश्युपवासवाधाभावः सामान्यश्चांद्रा यणभिन्नेषुव्रतेषु तत्र प्रतिदिनंग्रासग्रहणेनियमाभावात् ॥ यत्पुनरुक्तंश्वोभूतां पौर्णमासीमुपवसेदित्यत्र चतुर्दश्यामुपवासमभिधाय पौर्णमास्यां पंचदश ग्रासान्भुक्त्वेत्यादिना द्वात्रिंशदहरात्मकं चान्द्रायणमुक्तंतत्पक्षान्तरप्र दर्शनार्थं नसार्वत्रिकम् योगीश्वरवचनानुरोधेनात्रिंशदहरात्मकस्यैवदर्शि तत्वात् ॥ यद्येतत्सार्वत्रिकंस्यात्तदा नैरंतर्य्येण संवत्सरे चांद्रायणानुष्ठाना नुपपत्तिश्चन्द्रगत्यनुवर्त्तनानुपपत्तिश्च स्यात् ॥

नियमका अभाव होताहै ॥ जो होर कहाहै कि अगलेदिनहै पूर्णमासी जिसके ऐसी चतुर्दशी कों उपवास करे और पूर्णमासी विषे पंदरां १५ ग्रास भक्षण करे इस कर्के वत्ती ३२ दिनका चांद्रायण कहा सो अन्य पक्षकें दस्साणे वास्ते जानणा संपूर्ण स्थान विषे नहि योगीश्वरवच नकें अनुसार कर्के तीहां ३० दिनाकोंहि दस्साणेते । जेकर एह संपूर्ण स्थान विषे होवे तां नि रंतर कर्के वर्षके चांद्रायणकी सिद्धि नहि होती और चंद्रमाकी गतिके अनुसार वर्त्तनेकी भी सिद्धि नहि होती

॥ ● अथेति इसतें अनंतर विशेषता कर्के चांद्रायण कल्पका व्याख्यान करेंहां शुक्ल पक्षकी चतुर्दशी विषे उपवास व्रत करे वा कृष्ण पक्षकी चतुर्दशी विषे उपवासकरे केश और श्मश्रु और नख और लोम इनांकों मुंडन करवाके वा श्मश्रूकाही मुंडन करवाके व्रत करे अब यमजीकावचनहै आयेति लोहेंका पात्र और तैंजस क्या सुवर्ण पात्र और घट शराव क्यां प्याला आदिपात्रांकों त्यागे एह पात्र असुरांके कहेहैं और देवपात्र अचक्रक है ॥ १ ॥ यमजीकहतेहैं अंगुलीयांके अग्र विषे स्थित जो ग्रास तिसका सावित्रीकर्के मंत्रण करे इस विषे ग्रासां कर्के प्राणरूप जो अग्नि तिस विषे हवन करे ॥ ऐसे वौधायन ऋषि कहता है प्रथम ग्रासकों

● अथातोविशेषतयाचान्द्रायणकल्पंव्याख्यास्यामः ॥ शुक्लचतुर्दशीमुपवसेत्कृष्णचतुर्दशींवाकेशश्मश्रुनखलोमानि वापयित्वा श्मश्रूणिवेत्यादि यमः ॥ आयसंतैजसंपात्रंचक्रोत्पन्नंविवर्जयेत् असुराणांहितत्पात्रंदेवपात्रमचक्रकम् १ चक्रोत्पन्नंघटशरावादि सएव ॥ अंगुल्यग्रस्थितंग्रासंसावित्र्याचाभिमंत्रयेत् अत्रग्रासैरेवप्राणाग्निहोत्रमाह ॥ वौधायनः ॥ अश्नीयात्प्राणायेतिग्रासंप्रथमम् १ अपानायेतिद्वितीयम् २ व्यानायेतितृतीयम् ३ उदानायेतिचतुर्थम् ४ समानायेतिपंचमम् ५ यदाचत्वारस्तदाद्वाभ्यांग्रासंपूर्वम् यत्रत्रयस्तदाद्वाभ्यांद्वाभ्यांपूर्वौ यदाद्वौतदात्रिभिःपूर्वंद्वाभ्यामेवोत्तरम् एकंतुसर्वैरिति ग्रासद्वयपक्षे प्रथममाद्यैस्त्रिभिरंतंद्वाभ्याम् एकपक्षेसर्वैरेकामित्यर्थः

प्राणाय स्वाहा इस कर्के भक्षण करे १ और अपानाय स्वाहा इसकर्के दूसरे ग्रासनूं २ और व्यानाय स्वाहा इस कर्के तीसरेनूं ३ और उदानाय स्वाहा इस कर्के चोथेनूं ४ और समानाय स्वहा इस कर्के पंचम ५ ग्रासनूं भक्षणकरे जेकर चार ग्रास होणतां दोनों मंत्रां कर्के प्रथम ग्रासकों भक्षण करे और जां त्र(?)र ग्रासहोण ता दुंह दुंह मंत्रांकर्के प्रथम दो २ ग्रास भक्षण करे । और जद दो २ ग्रास होण तांतीन मंत्रां कर्के प्रथम एक ग्रासकों भक्षण करे और अंतके ग्रासकों दोनो मंत्रो कर्के भक्षण करे और जां एक हिग्रास होवे तां पांचो मंत्रां कर्के एक ग्रासका भक्षण करे दुंह मंत्रां कर्के दूसरेग्रासका भक्षण करे

अब स्पष्ट कर्के प्रयोग कहतेहां चतुर्दशीविषे कीताहै नित्यकर्म जिसनें पूर्वाह्न कालविषे प्राणाया मकों कर्के. उपरंत मासपक्षआदिका उच्चारण कर्के अमुक पापके दूर करणे वास्ते श्रीकी कामना देवताकी प्रीतिकी इच्छाकर्के वा रसा यनादिके सिद्धिकी कामना कर्के इस चांद्रायण व्रत कों करताहां ऐसे संकल्पकरे ॥ ॐ अग्ने व्रत पते व्रतं चरिष्यामि इत्यादि मंत्रां कर्के व्रतनूं सूर्यके तांई अर्पण कर्के ॥ केश और श्मश्रुकाहि मुंडन करवाके अथवा केवल श्मश्रुका हि मुंडन कर वाके तिस दिन विषें उपवासकर्के और तिसी दिन विषे जेकर अमावस्या होवे तां तिस विषे भी उपवास कर्के और जेकर पूर्णमासी होवे

● अथ स्पष्टप्रयोगः ॥ चतुर्दश्यांकृतनित्यक्रियः पूर्वाह्णे प्राणानायम्य मासपक्षाद्युल्लिख्यामुकपापक्षयकामः श्रीकामोदेवताप्रीतिकामोरसायनादिसिद्धिकामोवा अमुकचान्द्रायणंकरिष्य इतिसंकल्पः ॥ ॐअग्नेव्रतपतेव्रतं चरिष्यामीत्यादिमंत्रैर्व्रतमादित्यायनिवेद्य केशश्मश्रुलोमनखानिश्मश्रूण्येव वा वापयित्वातद्दिनमुपोष्य तद्दिनेऽमाचेत्तत्राप्युपोष्य पौर्णिमाचेत्पंचदशग्रासान्भुंजीत ॥ तत अमोत्तरपक्षे उपचयः ॥ पौर्णिमोत्तरपक्षेऽपचयोग्रासानाम् ॥ प्रतिदिनमुदितेचन्द्रे आप्यायस्वसोमतर्पयामि संतेपयांसि सोमंतर्पयामि नमोनमश्चन्द्रमसंतर्पयामीतितर्पयित्वा आज्येनैतैरेवमंत्रैर्लौकिकेऽग्नौहुत्वैतैरेवपात्रस्थंहविरनुमन्त्र्यैतैरेवचन्द्रमुपस्थाय ॥ यद्देवादेवहेडनमितिचतसृभिश्चप्रत्यृचमाज्यंजहुयात् ॥ सर्वत्राग्नये नममेतित्यागः

तां पंदरां १५ ग्रास भक्षण करे और अमावस्यातें उत्तर शुक्लपक्ष विषें ग्रहण करे तांक्रम कर्के ग्रासां कों वधाये और पूर्णमासीतें पीछे कृष्ण पक्ष विषे ग्रासांकों घटावे ॥ और दिन दिन विषे चंद्रमाके उदयहोयां होयां आप्यायस्व सोमंतर्पयामि ॥ संते-नमोनमश्चंद्रमसंतर्पयामि इनां मंत्रां कर्के तर्पणकरे और इनांमंत्रांकर्केहि लौकिक अग्निविषे घृतका हवन करे और एनांहि मंत्रां कर्के पात्र विषे हविका अनुमंत्रण करे और इनां मंत्रां कर्के चंद्रमाकी पूजा करे ॥ और यद्देवादेवहेडन मितिचार ऋचां कर्के ऋचा ऋचा प्रतिघृतका हवन करे और सभजगा न मम ऐसा कह कर्के अग्निमें त्याग करे

वतइति तिसतें उपरंत देवकृतस्य इनतीन ऋचांकर्के त्रयसमिधांका हवनकरे ऊँभूः १ ऊँभुवः २ ऊँस्वः ३ ऊँमहः ४ ऊँजनः ५ ऊँतपः ६ ऊँसत्यं ७ ऊँयशः ८ ऊँश्रीः ९ ऊँऊर्क् १० ऊँइट् ११ ऊँतेजः १२ ऊँपुरुषः १३ ऊँधर्मः १४ ऊँशिवः इनांपंदरां १५ मंत्रां कर्के पात्रमे स्थितएकएक ग्रासका एकएक मंत्र कर्के अनुमंत्रण करे मनकर्के(नमःस्वाहा) असे मंत्रके अंत विषे कहकर संपूर्ण ग्रासांका अनुमंत्रण कर्के और अंगुलीयांसाथ एकएक ग्रासनूं ग्रहण कर्के गायत्री मंत्रकों पढकर भक्षण करे ॥ तां प्रथमदिन के ग्रासके भक्षण विषे प्राणायस्वाहा इत्यादिक पूर्वक्रम कर्के पंचमंत्रां कर्के पंचग्रास भोजन करे पंजांते अधिक जेकर ग्रास होण तां तूष्णी होके

ततोदेवकृतस्येतित्रिभिःसमित्त्रयंहुत्वा ऊँभूः १ ऊँभुवः २ ऊँस्वः ३ ऊँमहः ४ ऊँजनः ५ ऊँतपः ६ ऊँसत्यम् ७ ऊँयशः ८ ऊँश्रीः ९ ऊँऊर्क् १० ऊँइट् ११ ऊँतेजः १२ ऊँपुरुषः १३ ऊँधर्मः १४ ऊँशिवः १५ इत्येतैः पंचदशभिरेकैकंक्रमेणपात्रस्थग्रासमनुमंत्र्य मनसानमः स्वाहा इत्युक्त्वा सर्वाननुमंत्र्यैकैकमंगुल्यग्रैर्गृहीत्वा सावित्र्याऽनुमंत्र्यभक्षयेत् ॥ तत्रप्रथम दिन एकग्रासभक्षणे प्राणायस्वाहा इत्यादयः पूर्वोक्तप्रकारेण पंचापिमं त्रायोज्याः ॥ पंचभ्योऽधिकाग्रासास्तूष्णीमेवभक्षणीयाः ॥ समाप्तौत्र्यव रान्विप्रान्भोजयित्वागांदक्षिणांदद्यात् ॥ आसमाप्तिप्रत्यहं त्रिषवण स्नानम् सौरमंत्रैः कृतांजलेरादित्योपस्थानम् गायत्र्याव्याहृतिभिः कूष्मांडैर्वाज्यहोमः ॥ दिवास्थितिः ॥ रात्रावुपवेशनम् ॥ अशक्तौश यनंयथाशक्ति ॥ आपोहिष्ठेतिसूक्तम् ॥ यतोत्विन्द्रः ऋचंचेति

क्या मौनधार कर भक्षण करणे योग्यहैं ॥ और समाप्ति विषे तीनतें अधिक ब्राह्मणांके तांई भोजन देकर एक गौदक्षिणा देवे ॥ और व्रतकी समाप्तिपर्य्यंत त्रिकाल स्नान करे और सूर्यके मंत्रां कर्के हाथ जोडकर सूर्यके उपस्थानकों करे और गायत्री कर्के व्याहृतियांकर्के अथवा कूष्मांड मंत्रों कर्के घृत कर्के हवन करे ॥ और दिन विषे खलोतारहे और रात्रि विषे स्थित होवे और जेकरसामर्थ्य न होवे तां जैसे शक्तिहै तैसे शयन करे आपोहिष्ठा इति सूक्तं यतोत्विन्द्रः ऋचंचेति इनकोजपे

अथ स्पष्ट कर्के प्रयोग कहतेहां चतुर्दशीविषे कीताहै नित्यकर्म जिसने पूर्वाह्न कालविषे प्राणाया मकों कर्के. उोमद्य मासपक्षआदिका उच्चारण कर्के अमुक पापके दूर करणे वास्ते श्रीकी कामना देवताकी प्रीतिकी इच्छाकर्के वा रसा यनादिके सिद्धिकी कामना कर्के इस चांद्रायण व्रत कों करताहां ओसे संकल्पकरे ॥ ॐ अग्ने व्रत पते व्रतं चरिष्यामि इत्यादि मंत्रां कर्के व्रतनूं सूर्येके तांई अर्पण कर्के ॥ केश और श्मश्रुकाहि मुंडन करवाके अथवा केवल श्मश्रुका हि मुंडन कर वाके तिस दिन विषे उपवासकर्के और तिसी दिन विषे जेकर अमावस्या होवे तां तिस विषे भी उपवास कर्के और जेकर पूर्णमासी होवे

* अथ स्पष्टप्रयोगः ॥ चतुर्दश्यांकृतनित्यक्रियः पूर्वाह्णे प्राणानायम्य मास पक्षाद्युल्लिख्यामुकपापक्षयकामः श्रीकामोदेवताप्रीतिकामोरसायनादि सिद्धिकामोवा अमुकचान्द्रायणंकरिष्य इतिसंकल्पः ॥ ॐअग्नेव्रतपतेव्र तं चरिष्यामीत्यादिमंत्रैर्व्रतमादित्यायनिवेद्य केशश्मश्रुलोमनखानिश्म श्रुण्येव वा वापयित्वातद्दिनमुपोष्य तद्दिनेऽमाचेत्तत्राप्युपोष्य पौर्णिमाचे त्पंचदशग्रासान्भुंजीत ॥ तत अमोत्तरपक्षे उपचयः ॥ पौर्णिमोत्तरपक्षेऽ पचयोग्रासानाम् ॥ प्रतिदिनमुदितेचन्द्रे आप्यायस्वसोमतर्पयामि संते पयांसि सोमंतर्पयामि नमोनमश्चन्द्रमसंतर्पयामीतितर्पयित्वा आज्येनै तैरेवमंत्रैर्लौकिकेग्नौहुत्वैतैरेवपात्रस्थंहविरनुमंत्र्यैतैरेवचन्द्रमुपस्थाय ॥ य द्देवादेवहेडनमितिचतसृभिश्चप्रत्यृचमाज्यंजहुयात् ॥ सर्वत्राग्नये नमम तित्यागः

तां पंदरां १५ ग्रास भक्षण करे और अमावस्याते उत्तर शुक्लपक्ष विषे ग्रहण करे तांक्रम कर्के ग्रासां कों वधाये और पूर्णमासीते पीछे कृष्ण पक्ष विपे ग्रासांकों घटावे ॥ और दिन दिन विपे चंद्रमाके उदयहोयां होयां आप्यायस्व सोमंतर्पयामि ॥ संते-नमोनमश्चंद्रमसंतर्पयामि इनां मं त्रां कर्के तर्पणकरे और इनांमंत्रांकर्केहि लौकिक अग्निविपे घृतका हवन करे और एनांहि मंत्रां कर्के पात्र विषे हविका अनुमंत्राण करे और इनां मंत्रां कर्के चंद्रमाकी पूजा करे ॥ और य द्देवादेवहेडन मितिचार ऋचां कर्के ऋचा ऋचा प्रतिघृतका हवन करे और सभजगा न मम ओ सा कह कर्के अग्निमें त्याग करे

रुतइति तिसतें उपरंत देवकृतस्य इनतीन ऋचांकर्के ऽयसमिधांका हवनकरे ओंभूः १ ओंभुवः २ ओंस्वः ३ ओंमहः ४ ओंजनः ५ ओंतपः ६ ओंसत्यं ७ ओंयशः ८ ओंश्रीः ९ ओंऊर्क् १० ओंइट् ११ ओंतेजः १२ ओंपुरुषः १३ ओंधर्मः १४ ओंशिवः इनांपंदरां १५ मंत्रां कर्के पात्रमे स्थितएकएक ग्रासका एकएक मंत्र कर्के अनुमंत्रण करे मनकर्के(नमःस्वाहा) ऐसे मंत्रकें अंत विषे कह कर संपूर्ण ग्रासांका अनुमंत्रण कर्के और अंगुलीयांसाथ एकएक ग्रासनूं ग्रहण कर्के गायत्री मंत्रकों पढकर भक्षण करे ॥ तां प्रथमदिन के ग्रासके भक्षण विषे प्राणायस्वाहा इत्यादिक पूर्व क्रम कर्के पंचमंत्रां कर्के पंचग्रास भोजन करे पंजांतें अधिक जेकर ग्रास होण तां तूष्णी होके

ततोदेवकृतस्येतित्रिभिःसमित्त्रयंहुत्वा ओंभूः १ ओंभुवः २ ओंस्वः ३ ओं महः ४ ओंजनः५ ओंतपः६ ओंसत्यम् ७ ओंयशः ८ ओंश्रीः ९ ओंऊर्क् १० ओंइट् ११ ओंतेजः १२ ओंपुरुषः १३ ओंधर्मः १४ ओंशिवः १५ इत्येतैः पंचदशभिरेकैकंक्रमेणपात्रस्थग्रासमनुमंत्र्य मनसानमः स्वाहा इत्युक्त्वा सर्वाननुमंत्र्यैकैकमंगुल्यग्रैर्गृहीत्वा सावित्र्याऽनुमंत्र्यभक्षयेत् ॥ तत्रप्रथम दिन एकग्रासभक्षणे प्राणायस्वाहा इत्यादयः पूर्वोक्तप्रकारेण पंचापिमं त्रायोज्याः ॥ पंचभ्योऽधिकाग्रासास्तूष्णीमेवभक्षणीयाः ॥ समाप्तौत्र्यव रान्विप्रान्भोजयित्वागांदक्षिणांदद्यात् ॥ आसमाप्तिप्रत्यहं त्रिषवण स्नानम् सौरमंत्रैः कृतांजलेरादित्योपस्थानम् गायत्र्याव्याहृतिभिः कूष्मांडैर्वाज्यहोमः ॥ दिवास्थितिः ॥ रात्रावुपवेशनम् ॥ अशक्तौश यनंयथाशक्ति ॥ आपोहिष्ठेतिसूक्तम् ॥ यतोत्विन्द्रः ऋचंचेति

क्या मौनधार कर भक्षण करणे योग्यहैं ॥ और समाप्ति विषे तीनतें अधिक ब्राह्मणांके तांई भोजन देकर एक गौदक्षिणा देवे ॥ और व्रतकी समाप्तिपर्यंत त्रिकाल स्नान करे और सूर्यके मंत्रां कर्के हाथ जोडकर सूर्यके उपस्थानकों करे और गायत्री कर्के व्याहृतियांकर्के अथवा कूष्मांड मंत्रों कर्के घृत कर्के हवन करे ॥ और दिन विषे खलोतारहे और रात्रि विषे स्थित होवे और जेकरसामर्थ्य न होवे तां जैसे शक्तिहै तैसे शयन करे आपोहिष्ठा इति सूक्तं यतोत्विन्द्रः ऋचंचेति इनकोजपे

ऋचंषान इन्द्राग्नीस्वस्तिनामिति इनकों जपे श्रौर पुनंतुमादेवजनाः इनको ॥ श्रौर ऋषभं विरजं रौरवयोधाजये सामोकों जपन क्या इनांऋचांकों जपे इनांके अभाव विषे गायत्रीकों जपे श्रौर व्याहृतियांकों जपे वा उँकारकों ८ जपे ॥ एह किहाहै इसजगा परन्तु ब्राह्मण भोजन श्रौर दक्षिणादान आदि श्रौर जप एह संपूर्ण प्राजापत्यआदि व्रतांविषेभी जानणे ❀ इसतें अनंतर सोमायन व्रतका वर्णन है तिसविषे मार्कंडेयजी का वचन है गविति सप्त रात्र ७ पर्यंत गौके चार ४ स्तनांते दुग्धपीवे श्रौर सप्तरात्र ७ तीन ३ स्तनांतें दुग्धपीवे श्रौर सत्तरात्र ७ दुंह २ स्तनांका दुग्धपीवे ॥ १ ॥ श्रौर छें ६ रात्र गौके एक स्तनका दुग्ध पीवे श्रौर त्रय ३ रात्रां कुछ

ऋचंशन्नइन्द्राग्नी स्वस्तिनामिति ॥ पुनंतुमादेवजनाः ॥ ऋषभं विरजं रौरवयोधाजयेसामनीचजपन् एतेषामसंभवेगायत्रींव्याहृतिंप्रणवं वा जपेत् एतच्चविप्रभोजनदक्षिणादानादिजपांतं सर्वेष्वपि प्राजापत्यादिव्रतेषु कल्प्यम् ॥ ❀ अथसोमायन व्रतवर्णनम्॥ तत्रमार्कण्डेयः ॥ गोक्षीरंसप्तरात्रंतुपिबेत्स्तनचतुष्टयात् स्तनत्रयात्सप्तरात्रंसप्तरात्रंस्तनद्वयात् ॥ १ स्तनेनैकेनषड्रात्रंत्रिरात्रंवायुभुग्भवेत् एतत्सोमायनंनाममहाकल्मषनाशनमित २ ॥ अत्रेदंबोध्यम् ॥ यस्यागोःस्तनचतुष्टयेनव्रतानुष्ठातुस्तृप्तिःस्यात्साविड्भोजनादिदोषशून्याऽत्रार्थेप्रयोज्येति ॥ स्मृत्यंतरे सप्ताहंचेत्पिबेद्गोस्तनमखिलमथत्रीन्स्तनान्द्वौतथैकं कुर्यात्त्रींश्चोपवासान्यदि भवतितदामासिसोमायनंतत् ॥ १ ॥ एतदपिचान्द्रायणधर्मकमेव

नभक्षण करे एह त्रीह ३० दिनका सोमायन नामकर्के व्रत कहाहै महापापांके नाशकरणेवाला है ॥ २ ॥ इस विषे एह जानणा कि जिस गौकें चार स्तनांके दुग्धकर्के व्रत करण वालेकी तृप्ति होवें सो गौ विट भोजन आदि दोषतें रहित होवे तां तिसका दुग्ध ग्रहण करणा ॥ होरी स्मृति विषे भी कहाहै सप्तेति जेकर सत्त दिन गौके चारस्तनांतें संपूर्ण दुग्धपीवे श्रौर सत्त दिन त्रुंहस्तनांतें श्रौर सत्त दिन दुहस्तनांतें श्रौर छे६दिन एक स्तनतें पीवे श्रौर त्रय दिन उपवासकरे तां महीने कर्के सामायन व्रत होताहै ॥ १ ॥ एह सोमायन व्रतभी चांद्रायण रूपहि है

क्यों कि हारीत ऋषिनें इसतें आगें चांद्रायणकों कहतेहां इस कर्के साहित कर्त्तव्यताके चांद्रा यणव्रतकों कहके पीछे ऐसे सोमायनभी जानणा इक कर्के सोमायनको भी कहणेतें ॥ जो फेर तिसनें कृष्ण चतुर्थीतें लेकेशुक्ल द्वादशी पर्य्यंत सोमायन व्रत कहाहै सो कहतेहां चतुर्थीतें लेकें त्रयदिन चार स्तनांकेंदुग्धकोंपीवें और तिसतें पीछे त्रयदिन तीन स्तनांके दुग्धकों पीवे और त्रयदिन दुंह स्तनांके दुग्धकों पीवे और त्रय दिन एक स्तनके दुग्धकों पीवे ऐसे बारां १२ दिन कर्के फेर त्रयदिन एक स्तनके दुग्धकों पीवे और त्रयदिन दुंहस्तनां के और त्रयदिन त्रयस्तनां

हारीतेन अथातश्चान्द्रायणमनुक्रमिष्यामइत्यादिना सेतिकर्त्तव्यताकंचान्द्रायणमभिधायैवं सोमायनमित्यतिदेशाभिधानात् ॥ यत्पुनस्तेनकृष्णचतुर्थीमारभ्यशुक्लद्वादशीपर्यंतंसोमायनमुक्तम् ॥ चतुर्थीप्रभृतिचतुःस्तनेनत्रिरात्रम् ॥ ततस्त्रिस्तनेनत्रिरात्रम् ।। द्विस्तनेनत्रिरात्रम् एकस्तनेनत्रिरात्रम् १२ एवमेकस्तनप्रभृतिपुनश्चतुःस्तनान्तम् ॥ १२ ॥ यातेसोमचतुर्थीतनूस्तयानः पाहितस्यैनमः स्वाहा ॥ यातेसोम पंचमी षष्ठीत्येवं यथार्थास्तिथिहोमाःएकमासं एनोभ्यःपूतश्चन्द्रमसःसमानतां सलोकतां सायुज्यंच गच्छतीति ॥ चतुर्विंशतिदिनात्मकसोमायनमुक्तम् ॥ तदशक्तविषयम् ॥ ※ अथयतिचान्द्रायणमाह गौतमः ॥ मासस्यादौयतिर्विप्रोव्रतंकुर्य्याद्यथाशृणु कृत्वामूत्रपुरीषेतुशौचंकुर्य्याद्यथाविधि ॥ १ ॥ दन्तान्संशोध्ययत्नेनह्यपामार्गस्यशाखया स्नानंकृत्वानदीतोयेतडागेवाहृदेपिवा ॥ २ ॥

के और त्रयदिन चौंहस्तनांके दुग्धकों पीवे ऐसे चव्वी २४ दिनका सोमायन व्रत कहाहै इस विषे (याते सोमतुर्थी) इति(यातेंसोम पंचमी)इति और एक मासं एनोभ्यः इत्यादि ऋचांका पाठ करे एह चौवी २४ दिनका व्रत असामर्थ्य विषे जानणा ॥ ※ इसतें अनंतर यति चांद्रायणनूं गौतम ऋषि कहताहै मासेति मासके आदविषे यति ब्राह्मण जैसें व्रतनूं कर्त्ताहै तैसे श्रवण कर मूत्र पुरीषके त्यागकोंकर्के जैसे विधिहै तैसे शौचकों करे॥ १ ॥ पीछेपुटकं डेकी बीडी कर्के यत्न कर्के दंतांकों शुद्धकरे फेर स्नानकरे नदी विषे वा तलाय विषे वा हृद विषे २ ॥

धृत्वेति शुद्ध दुंह वस्त्रांको धारके नित्यकर्मोकोंसमाप्त करे ३ पीछे उपासनाकों क्यान्यासादिकोकर्के देवताका पूजनकरे और मंत्रकों स्मरण कर्के संकल्प करे और फेर विष्णुका ध्यानकरे हत्थ पादांकी शुद्धिपर्यंत ४ हत्थपाद शुद्ध कर्के दोवार आचमनकरे ऐसे शुद्ध होकर संध्या काल विषे संध्या उपासे और नारायणकीमूर्त्ति आगेशयनकरे ५ तिसतें अनंतर प्रातःकालविषे उठकर पूर्वदिनकी न्यांई संपूर्णकर्मकरे और उपवासव्रतकोकरे शुक्लपक्षकीअष्टमीतक ६ और तिस शुक्लाष्टमीविषे पूर्वकी न्यांई पंचग्रासभक्षणकरे और तैसे पूर्णमासी और कृष्णाष्टमी और अमावस्या जैसे क्रमहै ७ पंच पंच ग्रास भक्षण करे और भक्ति युक्त होवे पृथ्वी विषे नित्य शयन करे और सुगंधितांबू

धृत्वाचोद्गमनीयंतुनित्यकर्म्मसमापयेत् ॥ औपासनादिकंकृत्वादेवपूजामथाचरेत् ॥ ३ ॥ उद्गमनीयं धौतवस्त्रद्वयमित्यर्थः ॥ संकल्पमेवंकुर्वीतपूर्वमंत्रमनुस्मरन् तावद्ध्यायेन्महाविष्णुंयावन्नक्षालयेत्करौ ४ ॥ पादौचक्षालयेत्पश्चाद्द्विराचम्यशुचिर्भवेत् सायंसध्यामुपासीतस्वपेन्नारायणाग्रतः ॥ ५ ॥ ततःप्रातःसमुत्थायसर्वंपूर्ववदाचरेत् तावदुपोषणंकृत्वायावच्छुद्धाष्टमीभवेत् ॥ ६ ॥तत्रैवपूर्ववत्पिंडान्भक्षयेत्पंचसंख्यया पूर्णायांवहुलाष्टम्यांतदमायांयथाक्रमम् ७ ॥ भक्षयेत्पंचपंचैवकवलान्भक्तिपूर्वतः अधः शायीभवेन्नित्यंगन्धताम्वूलवर्जितः ॥ ८ ॥ मासान्तेगौःप्रदातव्याव्रतस्यपरिपूर्त्तये पंचगव्यंपिवेत्पश्चाद्यतिचान्द्रायणंचरेत् ॥ ९ ॥ अनेनविधिनायस्तुयतिचान्द्रायणंपरम् कृत्वापापविशुद्धात्माप्राप्नुयात्परमांगतिम् ॥ १० ॥ विधवावाथतिर्वापिव्रतीवापापनाशनम् गृहेवाकुरुतेसम्यक्सर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ ११ ॥⊛ अथशिशुचान्द्रायणलक्षणांतरमाह देवलः ॥ शृणुराममहावाहोसर्वपापहरंपरम् शिशुचान्द्रायणंनाम सुरर्षिगणसेवितम् ॥ १ ॥

लकों त्यागे ॥ ८ ॥ मासके अंत विषे व्रतके पूर्णफलकी प्राप्ति वास्ते गौदान करे पीछेसें पंच गव्यका पान करे ऐसे यति चांद्रायण व्रतकों करे ९ इस विधिकर्के जो यतिचांद्रायणव्रत कों कर्ताहै सो संपूर्णपापांतें शुद्धहोकर परमगतिकों प्राप्तहोताहै १० इसपापांके नाशकरण वाले व्रतको विधवास्त्री वा यति वा व्रती वनविषे वागृहविषे करे संपूर्ण पापांतें रहित होताहै ११ ⊛ अव शिशुचांद्रायणकें लक्षणनूं देवलऋषि कहताहै श्रिति हे परशुराम हे महावाहो शिशु चांद्रायणनाम कर्के संपूर्ण पापके नाश करण वाले व्रतनूं श्रवणकर जो सुरर्षियांके गणा कर्के सेव्यमानहै १

पूर्व कालमें उद्दालक नाम करके ऋषि जद माताके गर्भतें जन्मकों धारताहोया तद अंजालि विषे नाभि नालनूं ग्रहण करके पृथ्वीमें भ्रमताभया नाभिनाल इसपदकरकेजणाया कि जन्मकालतेहि उठकरकेचलागिया नालुछेद तक भीनहिरिहा एह ऋषि लोकोंका प्रभावहै २ ॥ और गर्भतें अष्टमवर्ष के होयां होयां उद्दालक ऋषि गोत्र नाम करके अर्थात् शिशु नाम करके व्रतनूं कर्त्ता भया यद्वा गोत्रेण क्या कुलकी स्थिति वास्ते व्रत कर्त्ताभया ॥ इस कारणते शिश्वर्थक्रियमाण होणेतें अर्थात् वालकके अर्थ होणेतें शिशुचांद्रायण नाम व्रत है अथवा गोत्र व्रतकर्के संततिव्रत जानणा अथवा गोत्रशब्द छत्रका वाचीहे अर्थात् छत्र

पुरातूद्दालकोनाममातृगर्भाद्विनिर्गतः नाभिनालमुपादायस्वांजलौपर्य्यटन्महीम् ॥ २ ॥ गर्भाष्टमेसमायातेसगोत्रेणव्रतंचरेत् ॥ गर्भेति ॥ गर्भाधानादष्टमेऽब्देसउद्दालकोगोत्रेण नाम्ना अर्थात् शिशुनाम्नाव्रंत चेरदचरदित्यर्थः ॥ यद्वा गोत्रेण कुलेन हेतुनाकुलस्थित्यर्थं व्रतमकरोदित्यर्थः ॥ अतएवाशिश्वर्थंक्रियमाणत्वाच्छिशुचान्द्रायणंनाम ॥ यद्वा गोत्रेणेति नामार्थेतृतीया गोत्रव्रतंसंततिव्रतामित्यर्थः ॥ अथवा गोत्रशब्दोऽत्रछत्रवाची ॥ छत्रव्रतंछत्राकारंव्रतम् सर्वोत्तममित्यर्थः ॥ तदाप्रभृत्यसौयोगीसायान्हेभैक्ष्यमाचरन् ॥ ३ ॥ श्रोत्रियाणांद्विजातीनांत्रिषुवेश्मसुसंचरन् कवलत्रयमानीयप्रक्षाल्यशुचिभिर्जलैः ॥ ४ ॥ भागत्रयंतदाकृत्वा भागमेकंहरेर्ददौ द्वितीयमग्नौनिक्षिप्यतृतीयंचात्मनिन्यसेत् ॥ ५ ॥ रात्रौस्वपेत्स्थंडिलेपुगन्धपुष्पादिवार्जितः ॥ एवंवैप्रत्यहंकुर्व्वन् यावत्पुत्रसमागमः ६ ॥ नासिकेतोत्पत्तिपर्य्यन्तामित्यर्थः तदाप्रभृतिलोकेस्मिन्शिशुचान्द्रायणंस्मृतम् कलौयुगेविशेषेणमहापातकनाशनम् ॥ ७ ॥

आकार व्रत संपूर्ण व्रतांविषे उत्तमहै एह अर्थहै तिसदिनतें लेके योगी सायंकालविषें भिक्षाकों जाताभया ॥ ३ ॥ और वेदपाठियांब्राह्मणांके तीन घरांसे भिक्षाकोंल्यके तीन ग्रासांकों शुद्धजलसाथ धोकर ॥ ४ ॥ त्रयभागकर्के एकभागविष्णुकेतांई आर्पणकर्त्ताभया औरदूसराभागअग्निविषें हवनकर्के औरतीसरा आपभक्षणकर्त्ताभया ॥ ५ ॥ रात्रिविषें गंधपुष्पआदिकों त्यागकरस्थंडिलविषें शयनकर फेर प्रातःकाल उठकर इसी विधि मै प्रवृत्त हुंदा होया इसप्रकार उद्दालकऋषि नासकेतुंपुत्रकी उत्पत्ति पर्यंत दिनदिनविषें विधिकर्त्ताभया ॥ ६ ॥ तिसदिन तेलें के लोकविषे शिशुचांद्रायणनाम व्रत प्रसिद्ध होया कलियुगविषें विशेष कर्के महापापांके नाशकरणेवाला कहाहै ७ ॥

इस उत्तम व्रतके करणे कर्के महापापीभी शुद्ध होताभया ॥ अब गौत्तमजीका वचनहै शीति शिशुचांद्रायण जो व्रतहै तिसविषे प्रतिदिन एकहि ग्रास भक्षण करणेयोग्यहै तिसकोकर्के महापापियांके मध्यविषे वर्त्तमानभीहोवे तथापि तिस महापापते शुद्धहोताहै ॥ १ ॥ अब जावालिऋषिका वचनहै शीति जो ब्राह्मणपापां के दूरकरणेवास्ते शिशुचांद्रायण व्रतकोकर्त्ताहै सो तात्काल पापतेशुद्धिको प्राप्तहोकर परमगतिको प्राप्तहोताहै १ तिसशिशुचांद्रायणके प्रकारको देवलऋषि कहताहै मेति मासके आद विषे प्रतिपद्दिनाविषे पूर्वकीन्यांई स्नानकरे पूर्व दंतधावनकोकर्के धौतवस्त्र कों धारके और त्रयकाल संध्याबंदनादि कर्मको करके १ ॥ चौथे पहर पत्रांके डूणेविषे

महापापीविशुद्धोभूत्कृत्वैतद्व्रतमुत्तममिति ॥ गौत्तमः ॥ शिशुचान्द्रायणं सम्यग्ग्रासमेकंनिरंतरम् कृत्वाशुद्धिमवाप्नोतिमहापातकिनामपि ॥ १ ॥ महापातकिनांमध्येवर्त्तमानोपियःकश्चिदेतत्कृत्वाशुद्धिमाप्नोतीत्यर्थः ॥ जावालिः ॥ शिशुचान्द्रायणंकृत्वाद्विजोयःपापमुक्तयेससद्यः पापनिर्मुक्तःप्रपेदेपरमांगतिम् ॥ १ ॥ अवश्यंभाविनिभूतवन्निर्देशात्प्रपेदेप्रपत्स्यतइत्यर्थः ॥ तत्प्रकारमाहदेवलः ॥ मासादौप्रतिपद्दिवसेपूर्ववत्स्नानमाचरेत् दंतधावनधौतवस्त्रत्रिसन्ध्यावन्दनादि कम् ॥ १ ॥ चतुर्थयामेपर्णपुटेह्यपश्यन्पापिनःखलान् श्रोत्रियाणां द्विजातीनांत्रिषुवेश्मसुसंचरेत् २ कवलत्रयमानीयप्रक्षाल्यशुचिभिर्जलैः भागत्रयंतथाकृत्वाभागमेकंहरौक्षिपेत् ३ प्रक्षाल्यपूर्ववद्धस्तौद्विराचम्यशुचिर्भवेत् रात्रौस्वपेद्धरेरग्रेस्थंडिलेगन्धवर्जितः ॥ ४ ॥पुनःपरे द्युरेवंहि कुर्यात्पापविशुद्धये

वेदपाठी ब्राह्मणांके गृहांविषे भ्रमे और नीच और जो पापी हैं तिनांको न देखे ॥ २ ॥ और ग्रास को लयावे पवित्र जलकर्के शुद्ध करे और त्रयभागकर्के एकभाग विष्णुके तांई अर्पणकरे॥३ ॥ एकग्रासका अग्निविषे हवनकरे और एक ग्रास भक्षण करे और पूर्वकी न्यांई हस्थपाद शुद्ध कर्के दोवार आचमन करे तांशुद्ध होताहै और रात्रिविषे विष्णुके आगे स्थंडिल विषे शयन करे गंधपुष्प आदिको त्यागे ॥ ४ ॥ फेर दूसरे दिन ऐसेहि विधिको करे पापेकदुरकरणे वास्ते

ऐसैं एकमासके व्रतकोंकर्के अंतविषें ब्राह्मणकेतांई गौदेणेयोग्यहै ५ पीछे पंचगव्यकापानकरे ऐसैं जो पुरुष कर्त्ताहै सो संपूर्णपापातेंरहितहोताहै ६ ❀ अवमहाचांद्रायणकहीदाहैतिसविषेंदेवलजीका वाक्यहै हेराम हेमहाभुजांकर्के युक्तमहाचांद्रायणव्रतकों तूं श्रवणकर जो श्रेष्ठ उौरहै ब्रह्महत्यादिपापो के दूरकरणेंवाला उौर संपूर्ण मंगलरूपहै १ इसकर्के दूरहोणवाले पापाकों कहतेहैं गुर्विति गुरोंके द्रोहविषें जो पाप है श्रौर जो पाप पापीयांकी संगातिविषें श्रौर चांडालीकेगमनविषे श्रौर विधवा स्त्रीके संग विषे २ श्रौर श्रेष्ठ स्त्रीके संगम विषें श्रौर परअन्नके भक्षण विषें श्रौर नीचस्त्रीकें संगमविषें श्रौर भर्त्ताके जीवतयां जो जारतें उत्पन्न होयाहै श्रौर भर्त्ताके मृतहोयांहोयां जो जारतें

एवंमासव्रतंकृत्वामासांतेगौर्यथार्थवत् ५ देयाविप्रायसहसापंचगव्यंपि वेत्ततः एवंकृत्वानरोयस्तुसर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ ६ ॥ ❀ अथमहाचान्द्राय णम् ॥ तत्रदेवलः । शृणुराममहावाहोमहाचान्द्रायणंपरम् ब्रह्महत्यादि पापानांशोधनंसर्वमंगलम् १ गुरुद्रोहेचयत्पापंयत्पापंपापिसंगमे चाण्डा लीगमनेपापंयत्पापंविधवागमे २ परस्त्रीषुचयत्पापंयत्पापंपरभोजने य त्पापंवृषलीसंगेयत्पापंकुण्डगोलयोः ३ शूद्रवृत्त्याश्चयत्पापंयत्पापंर सविक्रये पुरोहितस्ययत्पापंयत्पापंपरदारगे ४ यत्पापंसर्वसंगेचयत्पा पंधनुविक्रये यत्पापंरजकीसंगेयत्पापंपतिनिन्दया ५ यत्पापंविप्रनिंदायांक न्यासंदूषणेपिच एवमादीनिपापानिगुरूणिचलघूनिच ६ आर्द्राणि चाथशुष्कानियानिपापान्यनेकशः तेषांनाशकरंचेदंमहाचान्द्रायणंव्रतम् यत्कृत्वामुच्यतेपापैर्गुरुभिर्लघुभिस्तथा ॥ ७ ॥

जन्मयाहै तिनांके संबंधविषे जो पापहै ३ श्रौर शूद्रकीजीविकाविषे जो पाप श्रौर रसांकेवेचने विषें श्रौर पुरोहितकों उौर परस्त्रीके संगमकरणे वाले पुरुषके साथ संबंधविषें जो पापहै ४ श्रौर संपूर्णांकी संगातिविषें अर्थात्सर्वगीवणनविषें श्रौर धेनु क्या सूईहोई गौकेवेचणेविषे श्रौर धो वणके संगम विषें श्रौर भर्त्ताकी निंदाविषें ५ श्रौर ब्राह्मणकी निंदाविषें श्रौर कन्याके दूषणविषे जो पापहै इसतें आदलेके जो वडे श्रौर छोटेपापहैं ॥ ६ ॥ श्रौर इच्छा कर्के श्रौर जो नहि इच्छा कर्के कीते होए अनेक पाप हैं तिनांसंपूर्ण पापांके नाशकरणे वाला महाचंद्रायण व्रत कहाहै जिसकेकरणेकर्के वडयांछोटयांपापांते रहित होताहै ॥ ७ ॥

तिसके प्रकारको गौतम ऋषि कहताहै शुक्लेति शुक्लपक्षकी प्रतिपदा विषें शुद्धजलकर्के स्नानको श्रोर पूर्वकी न्यांई संध्या वंदन आदि नियमको कर्के चौथे पहर विषें ॥ १ ॥ विष्णुकी पूजाको करता होया पहले संकल्प करे श्रोर पूर्वकी न्यांई मंत्रका उच्चारण करे श्रोर उपवास कर्के शयनको करे ॥ २ ॥ तिसते उपरंत प्रातःकालविषे उठकर स्नान करे श्रोर जेसे विधि है तैसे आचमन करे श्रोर पूर्वकी न्यांई नित्यकर्मोको समाप्तकरे ॥ ३ ॥ श्रोर चौथे पहरविषें देवताकी पूजाकरे तिसतें उपरंत सो पूर्वकीन्यांई इंद्रियांको रोकके शयनकरे ४ ऐसें दिनादिन विषें करणे योग्यहै श्रोर जितना कालव्रतविषें स्थितहै श्रोर पक्षके अंत विषें पूर्णमासीके दिन पूर्वकी न्यांई नित्यकर्मोको कर्के समाहित क्या निश्चल मत होयाहोया दशग्रा

तत्प्रकारमाह गौतमः । शुक्लप्रतिपदिस्नात्वापूर्ववच्छुद्धतोयतः पूर्ववन्नियमंकृत्वाचतुर्थेकालआगते ॥ १ विष्णुपूजापरोभूत्वापूर्वसंकल्पमाचरेत् पूर्ववन्मंत्रमुच्चार्य्यनिराहारःस्वपेत्तदा ॥ २ ॥ ततःप्रभातउत्थायस्नात्वाचम्ययथाविधि पूर्ववन्नित्यकर्म्माणिसमाप्यविधिपूर्वकम् ॥ ३ ॥ चतुर्थकालआयातेपूर्ववद्देवमर्चयेत् ततोप्येपयथापूर्वंपूर्ववन्नियतःस्वपेत् ॥ ४ एवंप्रतिदिनंकार्य्यंयावत्तत्रप्रवर्त्तते तत्रापिपूर्ववत्कृत्वानित्यकर्म्माणिसर्वशः ५ तत्रैवभक्षयेत्पश्चाद्दशग्रासान्समाहितः तत्रापिहरिसांनिध्येस्वपेद्गन्धादिवार्जितः ६ उपोषणंप्रकर्त्तव्यममायावत्प्रवर्त्तते तत्रापिभक्षयेत् पिंडान् पूर्ववत्पूर्वसंख्यया ७ शुद्धप्रतिपदिस्नात्वागोर्दद्याद्व्रतपूर्त्तये ॥ शुद्धप्रतिपदिशुक्लप्रतिपदि ॥

स भक्षणकरे तिस दिनविषेंभी विष्णुके समीप शयनकरे पुष्पादि सुगंधिको त्यागकर्के ५ श्रोर अमावास्या तक उपवासव्रतकरे तिसअमावास्याके दिन पूर्वकीन्यांई संख्याकर्के दशग्रासभक्षण करे ६ श्रोर व्रतके अंतविषें शुक्लपक्षकी प्रतिपदा विषे स्नान कर्के गोदानकरे पूर्ण फलकी प्राप्ति वास्ते ७ एहव्रत शुक्ल पक्षकी प्रतिपदाते लेके शुक्ल पक्षकी प्रतिपदा तक कहाहै इसमे एह अभिप्रायहै कि पहली अमावास्याके दिन दशग्रास खाकर्के शुक्ल प्रतिपदाके दिन व्रतका आरंभकरे

पीछे पंचगव्यका पान करे तां महा चांद्रायणव्रत होताहै ॥८॥ एह व्रत संपूर्ण लोकां कर्के अशक्य क्या नहि होसकता क्योंकि अन्नके त्याग विषे वहुत क्लेशहै ॥ सो कहतेहां कृतइति सत्ययुग विषें प्राण चर्म विषे स्थितथे और त्रेतायुगविषे अस्थियां विषें स्थित और द्वापर विषे रक्त विषें स्थित रहे और कलियुग विषे अन्नविषे स्थित हैं ॥ ९ ॥ चांद्रायण व्रतकी महिमामैंनेहै अनघ क्या निष्पाप कहीहै जिसके करणें कर्के महापातकतें और उपपातकांतें रहित होताहै १०॥ इसते अनंतर पंचप्रकारके चांद्रायणांके वदलेनूं देवल ऋषि कहताहै अथेति इसतें अनंतर हेराजेंद्र चांद्रायण व्रतका जो प्रत्याम्नाय महापापांके नाश करणे वाला और विष्णुलोक केदेणे

पंचगव्यंपिबेत्पश्चान्महाचान्द्रायणंभवेत् ॥८॥अशक्यंसर्वलोकानामन्नत्यागोमहत्तरः ॥ कृतेचर्माश्रिताःप्राणास्त्रेतायामस्थिसंश्रयाः द्वापरेरक्तमाश्रित्यकलावन्नगताः सदा॥९॥महाचान्द्रस्यमहिमा कथितोऽयंमयाऽनघ यत्कृत्वामुच्यतेपापैर्महद्भिरुपपातकैः १०॥ अथ पंचविधानां चान्द्रायणानांप्रत्याम्नायमाहदेवलः ॥ अथवक्ष्यामिराजेन्द्रमहापातकनाशनम् ॥ प्रत्याम्नायंहिचान्द्रस्यविष्णुलोकप्रदायकम् ॥ १ ॥ अशक्तत्वा दुर्बलत्वादायुर्नाशस्यहेतुतः भक्तिश्रद्धाविहीनत्वादालस्यान्नास्तिकादपि॥ २ ॥चान्द्रायणेप्यशक्तश्चेत्प्रत्याम्नायंकुरुष्वतत् शुक्लप्रतिपदिस्नात्वा नित्यकर्मसमाप्यच॥ ३ ॥

वाला है॥१॥असामर्थ्यते और वलते रहित होणेतें और जेकर हठकर्के करे तो आयुनाश होंताहे इसहेतुतें और भक्तिश्रद्धाते रहित होणे तें और आलसते और नास्तिकतातें नास्तिक शब्द इसजगा अधर्मपर समझणा इसते और शक्ति कर्के मनकाउत्साह १ बल कर्के देहपुष्टि २ इनके नां होनेते आलस कर्के इन्द्रिय शैथिल्य ॥ २ ॥ चांद्रायण व्रतके करण विषे असमर्थ होवे तां तिसकेवदलेको करेसोकहतेहां ॥ शुक्लपक्षकी प्रतिपदा विषे स्नान कों कर्के और नित्यकर्मको समाप्त करे ॥ ३ ॥

समिति पूर्वंकीन्यांई संकल्पकोंकर्के कहे मै उत्तम व्रतकों कर्त्ताहै असेविधिपूर्वकपूर्वकी न्यांई संकल्पकोमनकर्के करे ॥४॥ स्वर्णाके शृंगां कर्के युक्त गौयां पंजाह ५० सहितवछयांके दुग्धके देणे वालीयां ब्राह्मणांकेतांई देणे योग्यहैं असे शास्त्रकी विधि कर्के चांद्रायण व्रतका वदलाद स्वायाहै ॥ ५ ॥ अव गौत्तमजीका वाक्यहै चामिति एह ब्राह्मण चांद्रायणव्रतके प्रत्याम्नायनूं करेगंध पुष्यादि कर्के पूजीयांहोइयां और सुवर्ण भूषणां कर्के भूषितकीतियांहोइयां ॥ १ ॥ गौयांयत्न कर्के पंजां ५० ब्राह्मणांके तांई देणे योग्यहैं इस प्रत्याम्नायकर्के हरि साक्षात् प्रसन्न होताहै इस

संकल्पंपूर्ववत्कृत्वा करिष्येव्रतमुत्तमम् इतिसंकल्प्यमनसापूर्ववाद्विधिपूर्वकम् ॥ ४ ॥ गावोदेयाःप्रयत्नेन पंचाशत्स्वर्णभूषिताः सवत्सावहुक्षीरिण्योविप्रेभ्योजलपूर्वकम् ॥ ५ ॥ अनेनकृतवांश्चान्द्रं शास्त्रमार्गेणदार्शीतम् ॥ गौत्तमः । चान्द्रायणस्यविप्रोसौप्रत्याम्नायंसमाचरेत् अर्चितागन्धपुष्पाद्यैर्भूषिताः स्वर्णभूषणैः १ पंचाशद्गाः प्रयत्नेन विप्रेभ्यश्च पृथक् पृथक् प्रत्याम्नायैर्हरिः साक्षात्सतुष्टोभून्नसंशयः ॥ २ ॥ अशक्तश्चान्द्रविषयेप्रत्याम्नायंतदाचरेत् एतेनशुद्धिमाप्नोतिचान्द्रायणफलंलभेत् ॥ ३ पिपीलिकायवमध्यचान्द्रायणाविषयेऽतिधानिनः ॥ चतुर्विंशतिमते ॥ अष्टौ चान्द्रायणेदेयाः प्रत्याम्नायविधौसदेति ॥ धेनवइतिशेपः ॥ अल्पधनविषयकमिदम् ॥ निर्धनविषयेतूक्तंप्राक् ॥

विषे संशय नहि । २ । जेकर चांद्रायणव्रतकरणे विषे असमर्थ होवे तां प्रत्याम्नाय कों करेअसे करणेकर्के शुद्धिको प्राप्तहोताहै और चांद्रायणके फलको प्राप्त होताहै ३ । और पिपीलिकामध्य और यवमध्य चांद्रायणके विषे अति धनवाले को हए प्रत्याम्नाय कहाहै ॥ अव चतुर्विंशति मत विषे कहतेहां चांद्रायण के प्रत्याम्नाय विषेअठ ८ प्रसून होइयां होयां गौयां देणेयोग्यहैं परंतु एहप्रत्याम्नाय जिसके पास धन थोडाहै तिसके योग्यहै और जिसके पास कुछभी धननहि तिसके अर्थ प्रत्याम्नाय पछि प्राजापत्य व्रत उायरूप कियाहै सो १ जानणा ॥

यतिचांद्रायण व्रत विषे बृहद्विष्णुका वाक्यहै चामिति जो पुरुष यतिचांद्रायणव्रतकों अशक्ति आदि हेतुतेंनहि करै सो तिसका वदला चार प्राजापत्यकृच्छ्रकरै १ ऋषि चांद्रायण विषयविषे भी बृहद्विष्णु काहि वाक्यहै चामिति चांद्रायण और पराककर्के प्रायाश्चित्तके करणविषे असमर्थ होवे तो अपणी शुद्धि वास्ते पच प्राजापत्य व्रत करे १ अव शिशु चांद्रायण के अर्थमदनरत्नग्रंथविषे संगृहीत स्मृतिविषे कहाहै प्रेति प्राजापत्य विषे एक गोदान करे और अतिकृच्छ्र विषे दोगौयां दान करे और चांद्रायण और पराक विषे त्रय गौयांदानकरे १ ॐ इसतें अनंतर व्रतके अंग भूतयम और नियम

यतिचान्द्रयणविषये बृहद्विष्णुः ॥ चान्द्रायणमकुर्व्वाणाःकुर्युःकृच्छ्रचतुष्टय मिति। ऋषिचान्द्रायणविषयेसएवाह चान्द्रायणपराकाभ्यांनिष्कार्तियोनश क्नुयात् सकरोत्यात्मशुद्ध्यर्थंप्राजापत्यस्यपंचकमिति १ शिशुचान्द्रायणविष येमदनरत्नेस्मृतौ ॥प्राजापत्येतुगामेकामतिकृच्छ्रेद्वयंस्मृतम् चान्द्रायणेप राकेचतिस्रोगादक्षिणास्तथेति १ ॐ अथव्रतांगभूतव्रतायमानियमाश्चयाज्ञ वल्क्ये । ब्रह्मचर्य्यंदयाक्षान्तिर्दानंसत्यमकल्कता अहिंसास्तेयमाधुर्य्येदम श्चतियमाःस्मृताः ॥ १ ॥ स्नानंमौनोपवासेज्यास्वाध्यायोपस्थनिग्रहाः वि धिवद्गुरुशुश्रूषाशौचक्रोधाप्रमादता ॥ २ ॥ इतिदशनियमाः ॥ १० ॥

याज्ञवल्क्यविषे कहेहैं व्रेति ब्रह्मचर्य और दया और क्षांति क्या सहिष्णुता और अभयदान और वाणीकर्के सत्यकहना और क्रोधका त्यागणा और हिंसासें रहितहोणा और चोरीकात्याग और माधुर्य्य क्या सौम्यवाक्य और विषयातें इंद्रियांकों रोकणा एह १० यमकहेहैं १ अवनियमक तेहां स्नानमिति स्नान और मौनता क्या वृथावाक्यसेंनिवृत्ति और मानकर्के अन्नकों भक्षणकरणा और यज्ञ और वेद पाठ करणा और जितेंद्रियहोणा और गुरांकी सेवा और शौचता और क्रोधका त्याग और प्रमादसें रहित होणा क्या सत्कर्म्म विषे नाहि भुल्लणा एह दश १० नियम कहेहैं २

इसमें ब्रह्मचर्य्यहै संपूर्ण इंद्रियांकारोकणा उपस्थनिग्रह क्या लिंगमात्रका रोकणा इतनाभेदहै अब इसीमें मनुजीका वाक्यहै अहिंसेति किसेजीवकी हिंसा न करे और सत्यकहे और क्रोधकों त्यागे और कुटिलताकों त्यागे त्रय वार दिनविषे और त्रय वार रात्रिविषे सहित वस्त्रांके स्नान करे १ ॥ स्त्रीति स्त्री और शूद्र और पतित इनांके साथसंभाषण कदीभी न करे और स्थान आसनकों ना त्यागे असमर्थ होवे तां और जेकर समर्थ होवे तां भिक्षाटनादिके लिये दूरभी जावे और पृथ्वी विषे शयन करे ॥ २ ॥ व्रती पुरुष ब्रह्मचर्यकों धारके गुरु और देवता और ब्राह्मणांका पूजन करे और गायत्रीका नित्य जप करे और पवित्र ऋचा जो सहस्रशीर्षादि आशुशिशानइत्या

अत्र ब्रह्मचर्य्यसर्वेन्द्रियनिग्रहः उपस्थनिग्रहोलिंगमात्रनिरोधइतिभेदः ॥ मनुः ॥ अहिंसासत्यमक्रोधमार्जवंचसमाचरेत् त्रिरह्नस्त्रिर्निशायांचस वासाजलमावसेत् १ स्त्रीशूद्रपतितांश्चैवनाभिभाषेतकर्हिचित् स्थानास नाभ्यांविहरेदशक्तोधःशयीतवा २ ब्रह्मचारीव्रतीचस्याद्गुरुदेवद्विजार्चकः सावित्रींचजपेन्नित्यंपवित्राणिचशक्तितः ३ सर्वेष्वेवव्रतेष्वेवंप्रायश्चित्तार्थ मादृतइति ॥ इतिश्रीमन्महाराजाधिराजजम्बूकश्मीराद्यनेकदेशाधीशप्र भुवररणवीरसिंहाज्ञप्तश्रीसारस्वतपण्डितोपनामदेवादत्तसुतपण्डितगंगा राम संगृहीते धर्म्मशास्त्रमहानिबन्धे प्रायश्चित्तभागे व्रतप्रकरणंपंचमम् ॥ ५ ॥ ●●●●●●●●●

दि तिनांकों पढे जैसे सामर्थ्याहै ॥ ३ ॥ संपूर्ण व्रतां विषे ऐसे प्रायश्चित्तके वास्ते आदर करके कहाहै ※ इसप्रकार श्रीकर्केयुक्त जो महाराजयांके अधिराज और जंम्बू काश्मीर आदि अनेक देशके स्वामी प्रभुबर रणवीरसिंह जीतिनाकर्के आज्ञप्त पंडित गंगाराम कर्के संगृहीत जो धर्म्मशास्त्रका महानिबंध तिसके प्रायश्चित्त भागाविषे व्रत प्रकरण पंचम समाप्तहोया ॥ ५ ॥ एह व्रतप्रकरण सभ तहांके प्रायश्चित्तके उपयोगी व्रतांकर्के संपूर्णहै और इसमे अपने अपणे वि षयमें जोजो पाप दूरहोण वालेहै सोलिखेहैं और प्रकरणांतरमें भी इसका उपयोगहे ॥ व्रत विधान मनु आदका जानो धर्म्मनिधान सर्वपाप नसजातहै जो इसपढे सुजान ॥ १ ॥

स्वतइति इसकाअर्थ पीछेसें जानलेणा अथेति विशेष प्रायश्चित्त कथनतें उपरंत अब छेवें प्रकरणमें संपूर्ण पापोंका सांझा प्रायश्चित्त कथन करते हैं तिसके विषें पहलें मनुका वाक्य है यतात्मनइति रोक लिआ है चित्त जिसने और सावधान है तिसकों बारां १२ दिनका उपवास करणा लिखा है एहि पराक नाम करके कृच्छ्र संपूर्ण पापों के नाश करणे वाला है ॥ १ ॥ विगतेति इसमें पूर्व श्लोककाहि अर्थ है सकृदिति इसका एह तात्पर्य है कि जेकर वहुत पाप होवे तां एह पराक कृच्छ्र एक वार संपूर्ण करणा जेकर पाप थोडा होवे तां एक पाद न्यून नौं९दिन करणा जेकर इसतें भी पाप न्यून होवे तां अर्द्धक्याछें६दिनकरणा जेकर इसतेंभी पाप न्यून होवे तां एक पाद तीन३ दिन करणा १ ॥ अब वेद पाठ पंच यज्ञ इनांका फल कथन करते हैं वेदाभ्यास इति दिन दिन प्रति वेद पाठ करणा १ शक्तिकरके पाठ होम अभ्यागतका पूजन तर्पण वैश्वदेव वलि एह पंच महा

उँनमः स्वतोमित्वातत्त्वमित्यादि अथसर्वपापसाधारणप्रायश्चित्तम् तत्र मनुः यतात्मनोऽप्रमत्तस्यद्वादशाहमभोजनम् पराकोनामकृच्छ्रोयंसर्व पापापनोदनः ॥ १ ॥ विगतानवधानस्यसंयतेंद्रियस्य द्वादशाहमभोजन मेव पराकाख्यःकृच्छ्रः सकृदावृत्तितारतम्येनगुरुलघुसमफलपापनाशकः ॥ तथा वेदाभ्यासोऽन्वहंशक्त्यामहायज्ञक्रियाक्षमा नाशयन्त्याशुपापा निमहापातकजान्यपि ॥ १ ॥ क्षमाअपराधसहिष्णुता साचाकस्मिकसद् वृत्तापराधे नतु चौराद्युपद्रवीये यथैधांस्तेजसावन्हिःप्राप्तान्निर्दहतिक्षणात् तथाज्ञानकृतंपापंविप्रोदहतिवेदवित् ॥ १ ॥ अत्र वन्हिदृष्टान्तेन ज्ञानकृ तमज्ञानकृतं च पापंवेदविद्विप्रोदहतीत्यर्थः

यज्ञ २ कीते होए अर क्षमा ३ एभी ब्रह्महत्यादि महापापका नाश करदेते हैं ॥ १ ॥ अब क्षमा पदका अर्थ करतेहैं क्षमेति परकरकें कीते होए अपराधका सहारणा इसका नाम क्षमाहै अर सो क्षमा एक वार स्वाभाविक महात्मा करके होआ जो अपराधहै तिसके विषे युक्तहै अर चौरादिकां करके कीताहोआ जो अपराधहै तिस विषयमे क्षमा युक्त नहि अब वेद पाठका विशेष फल कथन करतेहैं यथेति जिस प्रकार प्राप्त होआं काष्टांनूं तेज करके क्षणमात्रतें अग्नि दग्ध कर देताहै तिस प्रकार वेदके जानने वाला ब्राह्मण अज्ञान करके कीते होए पापकों दग्ध करदेताहै ॥ १ ॥ इसमे वन्हि दृष्टांत करके अग्नि क्या लेणा जिस प्रकार अग्नि स्वाभाविक लग पवे तां भी दग्ध कर देताहै अर जेकर कोई लादेवे तांभी दग्ध कर देताहै तिस प्रकार ज्ञान करके और अज्ञान करकें कीते होए पापकों वेदके जानने वाला ब्राह्मण दग्ध कर देता है ॥१

अब प्राणायाम करके पापकी शुद्धि कथन करतेहैं सव्याहृतीति ॐभूः ॐभुवः ॐस्वः ॐमहः ॐजनः ॐतपः ॐसत्यं तत्सवितुर्वरेण्यंभर्गोदेव स्यधीमहिधियोयोनः प्रचोदयात् ॐआपोज्योतीरसोमृतंब्रह्मभूर्भुवःस्वरों इह जो सप्त व्याहृतिआं अर गायत्री अर ॐकार इनां के सहित जो सोलां १६ प्राणायाम हैं सो दिन दिन प्रति मास पर्यंत कीते होए गर्भके हत करण वालेनूं भी पवित्र करदेतेहैं ।२। इसश्लोकमें व्याहृति अर प्रणव तिनों दोनों करके गायत्री अर शिरस् एभि जानलैने क्योंकि गायत्री शिरसा सार्द्ध इत्यादि जो आगे संवर्त्तका वाक्यहै तिसमें अन्वहं एह जो पूर्व पद कथन कीता है तिस कर्के भी मास पर्यंत लैणा ॥ अब संवर्त्त ऋषिका वाक्य कथन करतेहैं अनादिष्टेष्विति अज्ञान करके कीते होए जो पाप हैं तिनके विषे प्रायश्चित्त कथन करते हैं दानों कर

सव्याहृतिप्रणवकाःप्राणायामास्तुषोडश अपिभ्रूणहनंमासात्पुनंत्यहरहःकृताः ॥ २ ॥ अत्रव्याहृतिप्रणवौगायत्रीशिरसोरुपलक्षकौ गायत्रींशिरसासार्द्धमित्यादिवक्ष्यमाणसंवर्त्तवाक्यात् अन्वहमित्यत्रापिकालाकांक्षायांमासादित्यन्वेति ॥ संवर्त्तः ॥अनादिष्टेषुपापेषुप्रायश्चित्तमथोच्यते दानैर्होमैर्जपैर्नित्यंप्राणायामैर्द्विजोत्तमः पातकेभ्यःप्रमुच्येतवेदाभ्यासान्नसंशयः ॥ १ ॥ सुवर्णदानंगोदानंभूमिदानंतथैवच नाशयंत्याशुपापानिह्यन्यजन्मकृतान्यपि।२।तिलधेनुंचयोदद्यात्संयतायद्विजन्मने ब्रह्महत्यादिभिःपापैर्मुच्यतेनात्रसंशयः ॥ ३ ॥ संयतायजितात्मने द्विजन्मनेविप्राय

के १ अर होमों कर्के २ अर जपों करके ३ अर नित्य प्राणायाम करणे करके ४ अर वेद पाठ करणे करके ५ श्रेष्ठ ब्राह्मण पापांतें रहित होजाताहै इसमें संदेह नहिहै ॥ १ ॥ अब सुवर्णादि दान करके पाप की शुद्धि कथन करतेहैं सुवर्णेति स्वर्णदान १ अर गोदान २ अर पृथ्वी दान ३ एह पूर्व जन्म के विषे कीते होए जो पापहैं तिनांका भी नाश करदेतेहैं ॥ २ ॥ अब तिल दान करके पापांकी शुद्धि कथन करतेहैं तिलधेनुमिति तिलांकी गौकों रचकर जो जितेंद्रिय ब्राह्मण के तांई देताहै सो ब्रह्महत्यादि पापांतें रहित हो जाता है इसमें संदेह नहिहैं ३ ॥ तिल धेनु का प्रकार लिखतेहैं पद्मपुराणमें क्या सोलां १६ आढककी धेनु बनानी अर चार ४ आढक का वछा अर इक्षुउंके पाद अर पुष्पोंके दांत अर नासां चंदनकीआं अर जिव्हा गुडकी अर आसन काले हरिणके चर्मका अर वस्त्र रत्न एनां कर्केयुक्त इसप्रकारकी धेनु बनावें

अव पौर्णमासी के विषे तिलदानका विशेष फल कथन करतेहैं ॥ मासइति मास मासके विषे पौर्णमासीके दिन उपवास कों रखकर ब्राह्मणके तांई तिलांकों देकरके पापांते रहित होजाताहै ॥ ४ ॥ अब कार्त्तिक मासकी पौर्णमासीका अधिक फल कथन करते हैं ॥ उप वासीति उपवासकों रखकर कार्त्तिक मासकी पौर्णमासीके दिन स्वर्ण १ अर वस्त्र २ अर अन्न ३ इनांके दान करके संपूर्ण पापांते रहितहोताहै ॥ ५ ॥ अव दानके विषे श्रेष्ठ तिथिआंकों कथन करते हैं ॥ अमावास्येति अमावास्या १ अर द्वादशी २ अर बिशेष करके सूर्य संक्रांति ३ एह तिथिआं श्रेष्ठ कथन कीतिआं हैं अर तिस प्रकार आदित्यवार भी

मासेमासेचसंप्राप्तेपौर्णमास्यामुपोषितः ॥ ब्राह्मणेभ्यस्तिलान्दत्त्वासर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ ४ ॥ उपवासीनरोभूत्वापौर्णमास्यांचकार्त्तिके हिरण्यंवस्त्रमन्नंवादत्त्वामुच्येतदुष्कृतैः ॥ ५ ॥ अमावास्याद्वादशीचसंक्रान्तिश्चविशेषतः एताःप्रशस्तास्तिथयोभानुवारस्तथैवच ॥ ६ ॥ तत्रस्नानंजपोहोमोब्राह्मणानांचभोजनं उपवासस्तथादानमेकैकंपावयेन्नरम् ॥ ७ ॥ स्नातःशुचिर्धौतवासाःशुद्धात्माविजितेन्द्रियः सात्त्विकंभावमाश्रित्यदानंदद्याद्विचक्षणः ॥ ८ ॥ सप्तव्याहृतिभिर्होमोद्विजैःकार्योहितात्मभिः उपपातकशुद्ध्यर्थंसहस्रपरिसंख्यया ॥ ९ ॥

श्रेष्ठहै ॥ ६ ॥ इनांके विषे स्नान १ अर जप २ अर होम ३ अर ब्राह्मणांको भोजन खुआणा ४ अर उपवास ५ अर दान ६ इनांके विचों एकभी कीताहोआ मनुष्यकों पवित्र करदेताहै ७ अब दानका प्रकार कथन करते हैं ॥ स्नात इति कीताहै स्नान जिसने अर पवित्र है अर धोतेहैं वस्त्र जिसने अर शुद्ध है अंतः करण जिसका अर जीतेहैं इंद्रिय जिसने सो बुद्धिमान् सतो गुणकेआश्रय होकर दानकों देवे ॥ ८ ॥ अवहोमका फल कहतेहैं सप्तेति हितकी इच्छा वाले जो ब्राह्मण और वैश्य तिनोंने पापकी शुद्धिके वास्ते ॐभूः ॐभुवः इत्यादि सप्त व्याहृतिआं करके हजार १००० संख्या करके होम करणा चाहिए अर्थात् हजार आहुति करणी चाहिए ॥ ९ ॥

अव ब्राह्मणांको भोजन खुलाणेका फल कथन करतेहैं ॥ महापातकइति ब्रह्म हत्यादि पाप करके संयुक्त भी ब्राह्मण क्षत्रि वा वैश्य होवे जीवन पर्यंत मास मासके विषे अथवा वर्ष वर्षके विषे लक्ष १००००० ब्राह्मणां को भोजन खुलाकर ब्रह्महत्यादि जो संपूर्ण पाप हैं तिनांते रहित होजाताहै अर तिसप्रकार गायत्रीके जपकरणे वाला भी ब्रह्महत्यादि संपूर्ण पापांतै रहित होजाताहै ॥ १०॥ अव गायत्रीके जपका विशेष फलकहतेहैं अभ्यसेदिति वनको जाकर नदीके कनारे उपर संपूर्ण पापांकी शुद्धिके वास्ते अतिशय कर्के पवित्र और वेदांके उत्पन्न करणेवाली जो गायत्रीहै तिसनूं जपे ॥ ११ ॥ अव गायत्रीके जपका प्रकार कथन करतेहैं ॥ स्नात्वेति ब्राह्मण क्षत्रि वा वैश्य नदीके विषें विधिसें स्नानको करके प्राणात्माको पवित्रकरे अर्थात् तीन ३ प्राणायाम करे फेर तीन ३ प्राणायाम करके शुद्ध

महापातकसंयुक्तोलक्षभोजंसदाद्विजः मुच्यतेसर्वपापेभ्योगायत्र्याश्चैव जापवान् ॥ १० ॥ अभ्यसेच्चमहापुण्यांगायत्रींवेदमातरं ॥ गत्वारण्यंनदीतीरेसर्वपापविशुद्धये ॥ ११ ॥ स्नात्वाचविधिवत्तत्रप्राणात्मानमपावयत् प्राणायामैस्त्रिभिःपूतोगायत्रींतुजपेद्द्विजः १२ अक्लिन्नवासाःस्थलगःशुचौ देशेसमाहितः पवित्रपाणिराचांतोगायत्र्याजपमारभेत् १३ ऐहिकामुष्मिकंपापंपापंसर्वंविशेषतःपंचरात्रेणगायत्रींजपमानोव्यपोहति ऐहिकामुष्मिकं ऐहिकफलकमामुष्मिकफलक मित्यर्थः ॥ १४ ॥ गायत्र्यास्तुपरंनास्तिशोधनंपापकर्मणाम् महाव्याहृतिसंयुक्तांप्राणायामेनसंयुताम् ॥ १५ ॥

होआ होआ गायत्रीको जपे ॥ १२ ॥ अक्लिन्नवासा इति सुक्के हैं वस्त्र जिसके अर्थात् और शुद्ध वस्त्रांको लयकर नदीदे कनारेको प्राप्तहोआ होआ शुद्ध देशविषें स्थित होकर रोकलयेहैं इंद्रियजिसनें अर पवित्रहस्तवाला और कीताहै आचमन जिसने ऐसाहोकर गायत्रीके जपका आरंभ करे ॥ १३ ॥ ऐहिकेति इसलोक विषे फल देणवाले जो पापहैं अरपरलोक विषे फल देणवाले जो संपूर्ण पापहैं तिनांकोंभी गायत्रीके जपकरण वाला पंच ५ रात्रि करके नष्टकर देताहै १४ ॥ अव गायत्रीकी संपूर्णतें श्रेष्ठताकथनकरतेहैं गायत्र्याइति गायत्रीतें परे औरकोई दूसरा पापकर्मके नाशकरणे वाला नहि अर्थात् गायत्रीहि संपूर्ण पापांके नाशकरणे वाली है । और ओंभूः ओंभुवः इत्यादि सप्त महाव्याहृतिआं कर्के युक्त और प्राणायाम करके जो संयुक्तहै ऐसी गायत्रीको जपने वाला पुरुष संपूर्ण पापांतें रहित होजाता है ॥ १५ ॥

अब और प्रकार कथन करतेहैं ब्रह्मचारीति ॥ ब्रह्म आचार वाला जोहै अर्थात् अष्ट प्रकार के मैथुनतें रहितहै और थोडे भोजन के खाने वाला अर संपूर्ण जीवोंके हितकी इच्छाकरता है ऐसा पुरुष गायत्री के लक्ष १०००० जप कर्के संपूर्ण पापांतें रहित हो जाताहै ॥ १ ॥ अब और प्रकार कथन करतेहैं ॥ अयाज्येति पतितादिकों यज्ञ करवा कर औ चंडालादिके अन्न नूं खाकर गायत्रीके अष्ठ हजार ८००० जप कर्के संपूर्ण पापांतें रहित होजाताहै २ अब और प्रकार कथन करतेहैं अहनीति दिन दिन प्रति निश्चय कर्के ब्राह्मण क्षत्री वैश्य इनांके मध्यमें श्रेष्ट जो गायत्रीनूं पड़ताहै अर्थात् जो जप करता है सो पुरुष एक मास करके संपूर्ण पापतें रहित हो जाताहै इसमें दृष्टांत है क्या कि जिस प्रकार सर्प कुं जतें रहित होजाताहै इस दृष्टांत करके क्या लेना कि जिस प्रकार सर्प सुखसें कुंजकों

ब्रह्मचारीमिताहारःसर्वभूतहितेरतः गायत्र्यालक्षजप्येनसर्वपापैःप्रमुच्य ते॥१॥ अयाज्ययाजनंकृत्वाभुक्त्वाचान्नंविगर्हितं गायत्र्यष्टसहस्रंतुजाप्यं कृत्वाविमुच्यते ॥ २ ॥ अहन्यहनियोऽधीतेगायत्रींवैद्विजोत्तमः मासेनमु च्यतेपापादुरगः कंचुकाद्यथा ३ ॥ गायत्रींयःसदाविप्रोजपतेनियतःशु चिः सयातिपरमंस्थानंवायुभूतःखमूर्तिमान् ४ ॥ प्रणवेनतुसंयुक्ताव्या हृतीस्सप्तनित्यशः गायत्रींशिरसासार्द्धंमनसात्रिःपठेद्द्विजः निगृह्यचा त्मनःप्राणान्प्राणायामोविधीयते ॥ ५ ॥

उतार देताहै तिस प्रकार गायत्री के जप करके सुखसें हि पापतें रहित होजाताहै ॥ ३॥ अब गायत्री के जप कर्के मोक्ष कथन करतेहैं गायत्रीमिति नियम वाला अर शुद्ध जो ब्राह्मण स वंदा काल गायत्री नूं जपताहै सो वायुस्वरूप होकर आकाशके स्वरूप वाला अर्थात् सर्वव्यापी होआ होआ वैकुंठको प्राप्त होताहै ॥ ४ ॥ अब प्राणायामका स्वरूप कथन करते हैं प्रणवेनेति अपणेआं प्राणांनूं रोक कर ओंकारके सहित सत व्याहृतिआं नूं और शिरके साथ गायत्री नू मन कर्के तीन ३ वार पडे अर्थात् ओंभूः ओंभुवः ओंस्वः ओंमहः ओंजनः ओं तपः ओंसत्यं तत्सवितुर्वरेण्यंभर्गोदेवस्यधीमहिधियोयोनःप्रचोदयात् ओंआपोज्योतीरसोमृतं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरों इह तीन३ वार मनविषें पडे इसका नाम प्राणायामहै ॥ ५ ॥

अव उसीका प्रकार कथन करतेहैं प्राणायामेति दिन दिन प्रति समाधि लगा कर पुरुष पूरक कुंभक रेचक करके तीन ३ वार प्राणायाम करे॥ अव प्राणायामका फल कथन करते हैं मानसमिति तीन ३ वार प्राणायामके करणे करके मन करके कीता जो पाप और वाणी करके कीता जो पाप और देहकरके कीता जो पाप एह संपूर्ण पाप नष्ट होजातेहैं ॥ ६ ॥ अव और प्रकार कथन करतेहैं ऋग्वेदमिति जो ऋग्वेद नूं और यजुर्वेदकी शाखाकों पडताहै अर सहित रहस्यके सामवेदकों जो पड़ताहै सो पुरुष संपूर्ण पापांते रहित होजावा है ॥ ७ ॥ अव और प्रकार कथन करतेहैं पावमानीमिति पावमानी ऋचानूं अर कौत्ससंज्ञिक मंत्रां कों जप कर और सहस्रशीर्षापुरुष इत्यादि २२ मंत्रां कों जप कर संपूर्ण पापांतें रहित होजाताहै अर पितृभ्यः स्वधा इत्यादि ५० मंत्रां नूं जप कर संपूर्ण पापांतें रहि

प्राणायामत्रयंकुर्यान्नित्यमेवसमाहितः मानसंवाचिकंपापंकायेनैवतुयत्कृतं तत्सर्वंनश्यतेतूर्णंप्राणायामत्रयेकृते॥ ६ ॥ऋग्वेदमभ्यसेद्यस्तुयजुःशाखाम थापिवा सामानिसरहस्यानिसर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ ७॥ पावमानींतथाकौ त्सपौरुषंसूक्तमेवच जप्त्वापापैःप्रमुच्येतपित्र्यंचमधुछांदसम्॥ ८॥ मंडलं ब्राह्मणंरुद्रंसूतोक्ताश्चवृहत्कथाः वामदेव्यंवृहत्सामजप्त्वापापैःप्रमुच्यते ॥ ९ ॥ चांद्रायणंतुसर्वेषांपापानांपावनंपरं कृत्वाशुद्धिमवाप्नोतिपर मंस्थानमेवचेति ॥ १० ॥

त होताहै अर मधुवाताऋतायतेमधुक्षरंतिसिंधवःमाध्वीर्नःसंत्वोषधीःमधुनक्तमुतोषसो मधुमत् पार्थिवंरजःमधुद्यौरस्तुनःपितामधुमान्नोवनस्पतिर्मधुमानस्तुसूर्य्योमाध्वीर्गावोभवंतुनः मधुमधुमधु इति इस मंत्रनूं भी जप कर संपूर्ण पापां तें रहित होताहै ॥ ८ ॥ अव और प्रकार कथन करतेहैं मंडलमिति यदेतन्मण्डलंतपति इत्यादि जो ब्राह्मण मंडलके २२ मंत्र हैं अर ओंनमस्ते रुद्रमन्यवेइत्यादि जो रुद्रसूक्तके ६६ मंत्रहैं अर सूतप्रोक्तकथा अर ब्राह्मण जो है और वामदेव्य संज्ञिक जो मंत्र १ है और वृहत्साम संज्ञिक जो मंत्र हैं इनां मंत्रांके जपकरणे करके भी संपूर्ण पापांतें रहित होजाताहै ॥ ९ ॥ अव और प्रकार कथन करतेहैं चांद्रायणमिति संपूर्ण पापांके नाश करणे वाला जो चांद्रायण व्रतहै तिसके करणे वाला जो पुरुष है सो भी पापांते रहित होजाताहै अर स्वर्गादि स्थान को प्राप्त होताहै ॥ १० ॥

अवइसीविषय में माधवीय ग्रंथके विषे कथन कीता जो यम ऋषि का वाक्य सो कथन करतेहैं सहस्रेति हजार १०००जप गायत्री का उत्तम कथन कीता है अर सउ १०० जप मध्यमहै अर दश १०वार जप न्यूने कथन कीताहै अर्थात् ब्रह्महत्यादि पापां के नाश करण वाली गायत्री कों हजार १०००अर शत १००अरदश१०वार जो जपताहै सोसंपूर्ण पापांते रहित होताहै १ अब और प्रकार कथन करतेहैं विरुजमिति विरुजसंज्ञिक मंत्रां कों दो २ वार जप कर्के तिस दिनमें हि शुद्ध होताहै और वाम देव्य संज्ञिक पूर्व लिखाजो मंत्रहै इसकों भीदो२ वार जप कर्के तिसदिनमें हि शुद्धहोताहै ॥ २ ॥ अब और प्रकार कथन करतेहैं पौरुषमिति और सहस्र शीर्षाकों एक १ वार जपकर संपूर्ण पापांतें रहित होताहै ॥ अब और प्रकार कथनकरतेहैं वृषभमिति वृषभसंज्ञिक मंत्रांनूं सौ १००वार पड कर तिस दिनमेंहि शुद्ध होजाताहै ॥ ३ ॥

माधवीयेयमः सहस्रपरमांदेवींशतमध्यांदशावराम् गायत्रींसंजपेन्नित्यं महापातकनाशिनीम् ॥ १ ॥ विरुजंद्विगुणंजप्त्वातदह्नैवविशुध्यति वामदेव्यंद्विरावर्त्यतदह्नैवविशुध्यति ॥ २ ॥ पौरुषंसूक्तमावर्त्यमुच्यते सर्वकिल्विषात् वृषभंशतशोजप्त्वातदह्नैवविशुध्यति ॥ ३ ॥ वेदमेकगुणंकृत्वातदह्नैवविशुध्यति रुद्रैकादशकंजप्त्वातदह्नैवविशुध्यति ४ ॥ आथर्वणाश्चयेकेचिन्मंत्राःकामविवर्जिताः तेसर्वेपापहंतारोयाज्ञवल्क्य वचोयथा ॥ ५ ॥ ब्राह्मणानिचकल्पांश्चषडंगानितथैवच आख्यानानि तथान्यानिजप्त्वापापैःप्रमुच्यते ॥ ६ ॥ इतिहासपुराणानिदेवतास्तवनानिच जप्त्वापापैःप्रमुच्यंतेधर्मख्यानैस्तथापरैरिति ॥ ७ ॥

और वेदनूं एक १ वार जप कर तिस दिनमें हिं शुद्धहोजाताहै ॥ अब और प्रकारकथनकरतेहैं रुद्रैकादशकमिति रुद्रियके यारां ११ अध्यायां नूं जप कर तिस दिनमें हि शुद्धहो जाताहै ४ ॥ अब और प्रकार कथन करते हैं आथर्वणाइति अथर्वणवेदके जेडे मंत्र निष्काम हैं अर्थात् मारण मोहन स्तंभन इत्यादि कामनातें रहित हैं सो संपूर्ण पापांके नाश करण वालेहैं एह याज्ञवल्क्य ऋषिका वचनसत्यहै । ५ । अब और प्रकार कथन करतेहैं ब्राह्मणानीति ब्राह्मण मंत्र औपनिषदः और शिक्षादि जो वेदके अंगहैं और जो ऋषिउं के वाक्य हैं इनां नूं जप कर संपूर्ण पापांते रहित होजाताहै ॥ ६ ॥ अब और प्रकार कथन करते हैं इतिहासेति महाभारतादि जो इतिहास हैं और भागवतादि जो पुराणहैं और जो देवताके स्तोत्रहैं और मनुस्मृत्यादि जो हैं इहनां के पाठ करणें कर्के भी संपूर्ण पापांते रहित होजाताहै ॥ ७ ॥

इसी विषयमें बौधायन जीका वाक्यहै विधिनेति शास्त्र कर्के देखी जो विधि तिस विधि कर्के दिन दिन प्रति मासपर्यंत प्राणायाम नूं करे लिंग कर्के कीता जो पाप और चरणों कर्के और बाहुं आं कर्के और मन कर्के और वाणी कर्के और कर्णों कर्के और त्वचा कर्के और नासां कर्के और नेत्रों कर्के कीता जो पाप एह संपूर्ण पाप प्राणायाम के करणे कर्के शीघ्रहि नष्ट हो जातिहैं ॥ १ ॥ चतुर्विंशतिका वाक्यहै मृगारेष्टिरिति मृगारेष्टि और पवित्रेष्टि और त्रिहाविः और पावमानी एह संपूर्ण इष्टिआं वैश्वानर इष्टि कर्के युक्त होइयां होइयां पापांके नाश क

बौधायनः ॥ विधिनाशास्त्रदृष्टेनप्राणायामान्समाचरेत् यदुपस्थकृतंपापं पद्भ्यांबायत्कृतंभवेत् ॥ बाहुभ्यांमनसावाचाश्रोत्रत्वग्घ्राणचक्षुषेति ॥ १ ॥ प्राणायामाःमासपर्यन्तंप्रातिदिनम् ॥ चतुर्विंशतिमते ॥ मृगारेष्टिःपवित्रेष्टिस्त्रिर्हविःपावमान्यपि इष्टयःपापनाशिन्योवैश्वानर्यासमन्विताः १ कौर्मे ॥ जपस्तपस्तर्थिसेवादेवब्राह्मणपूजनम् ग्रहणादिपुकालेपुमहापातकशोधनम् ॥ १ ॥ पुण्यक्षेत्राभिगमनंसर्वपापप्रणाशनम् देवताभ्यर्चनंपुंसामशेपाघविनाशनम् ॥ २ ॥ अमावास्यांतिथिंप्राप्यमासमाराधयेद्भवम् ब्राह्मणान्भोजयित्वातुसर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ ३ ॥

रणे वालीआं हैं ॥१॥ कूर्म पुराणमें भी लिखयाहै जपइति जप और तप और तीर्थ सेवन और देवताका पूजन और ब्राह्मणांका पूजन एह संपूर्ण ग्रहणादि काल विषे कीतेहोए ब्रह्महत्यादि पापों के नाश करणे वाले हैं १ और पवित्र स्थान का सेवनभी संपूर्ण पापांका नाश कर देताहै और देवताका जो पूजनहै सो पुरुषां के संपूर्ण पापांके नाश करणे वाला है ॥ २ ॥ अब और प्रकार कथन करतेहैं अमेति अमावास्या तिथितें लेकर एक मास पर्यंत शिवजी का पूजन करे पीछे ब्राह्मणा नूं भोजन देकर संपूर्ण पापांते रहित होजाताहै ॥ ३ ॥

अब और प्रकार कथन करतेहैं कृष्णेति कृष्णपक्षकी अष्टमीके विषे तिसप्रकार कृष्णपक्षकी चतुर्दशी के विषे शिवजीकों पूजकर्के और बहुतिआं ब्राह्मणानूं पूज कर्के संपूर्ण पापातें रहित होताहै ॥ ४ ॥ ब्राह्मणान् इसस्थानमें सुज्ञान् एभी पाठ होताहै ॥ अब और प्रकार कथन करतेहैं त्रयोदश्यामिति तिसप्रकार त्रयोदशीकेदिन रात्रिके पहले पहरके विषे सहित भेटादे शिवजीनूं पूजकर्के संपूर्ण पापांते रहित होताहै ॥ ५ ॥ अब और प्रकार कथन करतेहैं एकादश्यामिति शुक्लपक्षकी एकादशीके विषे उपवास व्रत रक्खकर द्वादशीकेदिन विष्णुकों पूज कर्के संपूर्ण पापांते रहितहोताहै । ६ । अब और प्रकार कथनकरतेहैं उपोषितइति कृष्णपक्षकी

कृष्णाष्टम्यांमहादेवंतथाकृष्णचतुर्दशीं संपूज्यब्राह्मणान्सर्वान्सर्वपापैः प्रमुच्यते ४ ब्राह्मणान्सुज्ञानितिपाठः सर्वान्बहूनित्यर्थोवा ॥ त्रयोदश्यांतथारात्रौसोपहारंत्रिलोचनं दृष्ट्वेशंप्रथमेयामेमुच्यतेसर्वपातकैः ५ एकादश्यांनिराहारः समभ्यर्च्यजनार्दनम् द्वादश्यांशुक्लपक्षस्यसर्वपापैःप्रमुच्यते ६ उपोषितश्चतुर्दश्यांकृष्णपक्षेसमाहितः यमायधर्मराजायमृत्यवेचांतकाय च ७ वैवस्वतायकालायसर्वभूतक्षयायच प्रत्येकंतिलसंयुक्तान्दद्यात्सप्तोदकांजलीन् ८ स्नात्वानद्यांतुपूर्वाह्णेमुच्यतेसर्वपातकैः ॥ तत्रैव नान्यत्पश्यामिजंतूनांमुक्त्वावाराणसींपुरीं सर्वपापप्रशमनंप्रायश्चित्तंकलौयुगे ॥ १ ॥

चतुर्दशीके दिन उपवास व्रत रक्खकर दिनके प्रथमपहरमें नदीके विषे स्नान कर्के और इंद्रियांकों रोककर्के यम धर्मराज मृत्यु अंतक वैवस्वत काल सर्वभूतक्षय एहजो धर्मराजके सप्तनामहैं इनांसत्तांकेताईं भिन्न भिन्न तिलांकर्के संयुक्त सप्त जलकीअंजलियांदेवें तद संपूर्ण पापातें रहित होताहै ८ कूर्मपुराणमेंहि किसे ऋषिका किसेके प्रति वाक्य है नान्यदिति काशीपुरीकों त्याग कर्के कलियुगमें पुरुषांके संपूर्ण पापांके नाश करणे वाले और प्रायश्चित्तनूं नहि देखताहुं अर्थात् कलियुगमें संपूर्ण पापांके नाशकरणे वाली काशीहै ॥ १ ॥

यमजीका वाक्यहै जप्येदिति इस बामदेवकी वामीय ऋचानूंपडे और पावमानीऋचानूं पड करके और कुंताढ्य ऋचानूं पड करके और वालखिल्यजो ऋचा हैं तिनानूं पड करके और निवृत्प्रेषा ऋचानूं पड करके और वृषाकपिनूं पड करके और होता यक्षत इत्यादि जो ऋचा हैं तिनानूं पड करके और नमस्तेरुद्रमन्यवे इत्यादि जो ऋचा हैं तिनानूं एकवार जप करके संपूर्ण पापांतें रहित होताहै ॥ १ ॥ मनुजीकाभी वाक्यहै एनसामिति बहुत और थोडे जो पाप हैं तिनके नाशकी इच्छावाला अवतेहेलो वरुण नमोभिरित्यादि जो अवेत्यृक् ऋचाहै इसनूं और यत्किंचेदमित्यादि ऋचानूं एक वर्ष जपे और जपके मध्यमे होर कार्य न करे

यमः ॥ जप्येद्वाप्यस्यवामीयंपावमानीरथापिवा कुंताढ्यंवालखिल्यांश्चनि वृत्प्रैषांवृषाकपिम् होतृनूरुद्रान्सकृज्जप्त्वामुच्यतेसर्वपातकैः १ मनुः। एन सांस्थूलसूक्ष्माणांचिकीर्षन्नपनोदनं अवेत्यृचंजपेदब्दंयत्किंचेदमितीतिच १ अवेत्यृक् अवतेहेलोवरुणनमोभिरित्यादिका। जपस्त्वर्थांतराविरुद्धेकाले॥ प्रायश्चित्तमयूखे हिरण्यदानंगोदानंभूमिदानंतथैवच नाशयंत्याशुपापा निमहापातकजान्यपि १ गौत्तमः ॥ संवत्सरःषण्मासाश्चत्वारोमासास्त्रयो द्वावेकश्चतुर्विंशत्यहोद्वादशाहःषडहस्त्र्यहोऽहोरात्रइतिकालाः एतान्यना देशेविकल्पेनक्रियेरन् एतानिपूर्वोक्तकालपरिच्छिन्नानिगायत्र्याद्यनुष्ठाना नि एनसिगुरुणिगुरूणिलघुनिलघूनिकृच्छ्रचांद्रायणादीनि ॥

॥ १ ॥ प्रायश्चित्तमयूखमें भी लिखाहै ॥ हिरण्येति स्वर्णदान और गोदान और तिस प्रकार पृथिवी दान एह ब्रह्महत्यादितें उत्पन्नहोएजो पापहैं तिनानूंभी तात्काल नष्ट करदेतेहैं ॥ १ ॥ गौत्तमजीकावाक्यहै संवत्सरइति एक वर्ष और छे ६ मास और चार ४ मास और तीन ३ मास दो २ मास और एक १ मास और चौवी २४ दिन और बारां १२ दिन छे ६ दिन और तीन ३ दिन और एक १ दिन एह काल जपके कथन कीतेहैं ॥ जिस स्थानमें जपका काल नहि लिखा तिसस्थानमें पापकों देख करके काल कथन करणा ॥ और बहुते पापमें बहुत और थोडे पापमें थोडे करणे कृच्छ्र और चांद्रायणादि प्रायश्चित्त करणे

चतुर्विंशतिका मतहै अथेति इसते अनंतर संपूर्ण यत्न कर्के संपूर्ण पापांके विषे ब्रह्महत्यादि पापोंके नाशकरणे वाले जप होमादिकों करे आदिशब्दतें चांद्रायणादि व्रत ग्रहण करणे १ ॥ जपेति इस लोकके विषे फलदेने वाला जो पापहै और परलोकविषे फलदेने वाला जो पाप है तिनांका जप और होमां कर्के नाश करे जप और होम कर्के हि मोक्षकों प्राप्त होताहै एहगर्गजीका वचन यथार्थहै ॥ २ ॥ इहां जप होमकर्के हजार १००० गायत्रीकेमंत्रकर्के ग्रहण करणें जितने पर्यंत शरीर भी इच्छारहे इसपूर्वोक्तयमजीकेवचनतें क्षत्रियइति क्षत्री अपनी भुजा दे बल कर्के आपद तरे । वैश्य और शूद्र धन कर्के तरें और ब्राह्मण जप और होमांकर्के तरें ३ ॥ विष्णुधर्मोत्तरमें भी लिखाहै सायमिति सायं कालके विषे और तिस प्रकार प्रभात

चतुर्विंशतिमते । अथवासर्वयत्नेनसर्वेष्वपिचपाप्मसु जपहोमादिकंकुर्याद्ब्रह्महत्यादिनाशनम् १ जपहोमैर्दहेत्पापमैहिकामुष्मिकंचयत् ताभ्यांपरमवाप्नोतिगर्गस्यवचनंयथा २ जपहोमौचाऽत्रसहस्त्रावाच्छिन्नगायत्रीमंत्रेण यावच्छरीरस्वास्थ्यमितिपूर्वोक्तयमवाक्यात् ताभ्यांजपहोमाभ्यांपरंमोक्षमवाप्नोतीति ॥ क्षत्रियोबाहुवीर्येणतरेदापदमात्मनः धनेनवैश्यशूद्रौतुजपहोमैर्द्विजोत्तमः ३ विष्णधर्मोत्तरे ॥ सायंप्रातस्तथाकृत्वावासुदेवस्यकीर्त्तनम् सर्वपापविनिर्मुक्तःस्वर्गलोकेमहीयते १ प्रभासखंडेश्रीभगवद्वाक्यम् ॥ नाम्नांमुख्यतरंनामकृष्णाख्यंहेपरंतप ॥ प्रायश्चित्तमशेषाणांपापानांमोचकंपरम् १ वाराहे ॥ वासुदेवस्यसंकीर्त्यासुरापोव्याधितोपिवा मुक्तोजायेत नियतंमहाविष्णुःप्रसीदति ॥ १ ॥

कालके विषे विष्णुके कीर्त्तनकर्के संपूर्ण पापांसे रहित होंकर स्वर्गके विषे पूजीदाहै ॥ १ ॥ प्रभासखंडके विषे भी श्रीभगवान् जी का किसेके प्रति वाक्यहै नाम्नामिति हे परंतप मेरे नामांके मध्यमे मुख्य कृष्ण एह जो नाम है सो संपूर्ण पापांके नाश करणे वालाहै और प्रायश्चित रूप है अर पवित्रहै ॥ १ । बाराह पुराणमेंभी लिखा है वासुदेवेति विष्णु के कीर्त्तन कर्के मदिराके पीने वाला और रोगी भी निश्चय कर्के पापांतें रहित होताहै अर विष्ण्वादि संपूर्ण अवतारांका मूल रूप ,जो महाविष्णु है सो भी तिस पुरुषके उपर प्रसन्न होताहै अर्थात् मोक्षकों देताहै ॥ १ ॥

व्याधित इस पद करके पूर्वजन्म के विषे भी मदिरा आदि पान करण वाला ग्रहण करणा ॥ गो विंदेति भक्ति करके संयुक्त जो पुरुष हैं अथवा भक्तितें रहित जो पुरुष हैं तिनां करके हे गोविंदऐसे कथन कीता होआ संपूर्ण पापांकों भस्म करदेताहै जिस प्रकार प्रलय कालके विषे उठिआ होआ अग्निजगतनूं भस्म करदेताहै । २ । विश्वामित्रजीका वाक्यहै कृच्छ्रेति कृच्छ्र और चांद्रायण आदि जो प्रायश्चित्त हैं सो सब शुद्धि और मुक्तिके कारणहैं प्रत्यक्ष जो पाप कीता है और एकांत विषे जो पाप कीता है और जिस पापका प्रायश्चित्त नहि और जिस पाप मे संदेहहै और नि

व्याधितः पूर्वजन्मन्यपि सुरादिपानकर्त्ता विष्ण्वाद्यवतारमूलभूतोमहाविष्णुः ॥ गोविन्देतितथाप्रोक्तंभक्त्यावाभक्तिवर्जितैःदहतेसर्वपापानियुगांताग्निरिवोत्थितः ॥ २ ॥ विश्वामित्रः ॥ कृच्छ्रचांद्रायणादीनिशुद्ध्यभ्युदयकारणं प्रकाशेचरहस्येचअनुक्तेसंशयेस्फुटे ॥ १ ॥ प्राजापत्यःसांतपनःशिशुकृच्छ्रः पराककः अतिकृच्छ्रःपर्णकृच्छ्रःसौम्यकृच्छ्रोऽतिकृच्छ्रकः ॥ २ ॥ महासांतपनःसिद्धैयैतप्तकृच्छ्रस्तुपावकः जपोपवासकृच्छ्रास्तुब्रह्मकूर्चस्तुशोधकः ॥ ३ ॥ एतेव्यस्ताःसमस्तावाप्रत्येकंह्येकशोपिवा पातकादिषुसर्वेषुउपवासेषुयत्नतः ॥ ४ ॥

श्चित कीता जो पाप है इनां संपूर्ण पापांकी शुद्धिके कारण कृच्छ्र चांद्रायणादि हैं ॥ १ ॥ अब और प्रकार कथन करतेहैं प्राजापत्य इति प्राजापत्य १ और सांतपन २ और शिशु कृच्छ्र ३ और पराकक ४ और अतिकृच्छ्र ५ और पर्णकृच्छ्र ६ सौम्यकृच्छ्र ७ अतिकृच्छ्रक ८ महासांतपन ९ और पवित्र जो तप्त कृच्छ्र १० और जप ११ और उप वास १२ और कृच्छ्र १३ और शुद्ध जो ब्रह्म कूर्च ॥ १४ ॥ एह संपूर्ण मिले होए अथवा भिन्न भिन्न अथवा एक एक भी संपूर्ण पापोंके विषे और उपवासों के विषे शुद्धिके वास्ते यत्न करके करणे चाहिदेहैं ॥ ४ ॥

कार्य्याइति प्राजापत्यादि संपूर्ण प्रायश्चित्त चांद्रायणों करके संयुक्त अथवा भिन्न भिन्न पापकी शुद्धि वास्ते करणे चाईदेहैं ॥ अब चांद्रायण व्रतके भेद कथन करते हैं ॥ शिशिवति एक शिशु चांद्रायण एक' यतिचांद्रायण ॥ ५ ॥ एक यवमध्यचांद्रायण अर एक पैपीलिकाकृति चांद्रायण कथन कीताहै इनके स्वरूप व्रत प्रकरणमें देखलैने ॥ तीन ३ दिनका उपवास १ और मास उपवास '२ और पंद्रां १५ दिनका उपवास ३ और आठ ८ दिनका उपवास ॥ ६ ॥ और छे ६ दिनका और वारां १२ दिनका उपवास पापांकी शुद्धि दी इच्छा करदा जो पुरुषहै तिसने करणे चाईदेहैं उपपातकां करके युक्त जो पुरुष हैं तिनां नें अनादिष्ट

कार्य्याश्चांद्रायणैर्युक्ताःकेवलावापिशुद्धये शिशुचान्द्रायणंप्रोक्तंयतिचांद्रायणंतथौ ॥ ५ ॥ यवमध्यंतथाप्रोक्तंतथापैपीलिकाकृति ॥ उपवासस्त्रिरात्रंवामासःपक्षस्तदर्द्धकम् ॥ ६ ॥ षडहोद्वादशाहानिकार्य्यंशुद्धिफलार्थिना उपपातकयुक्तानामनादिष्टेपुचैवहि ॥ ७ ॥ प्रकाशेवाऽप्रकाशेवाअभिसंध्याद्यपेक्षया जातिशक्तिगुणान्दृष्ट्वानुसकृद्द्विःकृतंतथा ॥ ८ ॥ अनुवंधादिकंदृष्ट्वासर्वंकार्य्यंयथाक्रमम् ॥ अनुवंधःप्रकृतस्यानिवर्त्तनम् ॥ प्रकाशउक्तंयत्किंचिद्विंशभागोरहस्यके त्रिंशद्भागःपष्टिभागःकल्प्योजात्याद्यपेक्षया ॥ ९ ॥

पापां के विषे चांद्रायणादि व्रत करणे चाईदेहै ॥ ७ ॥ प्रकाशइति प्रकट पापके विषे और गुप्त पापके विषे प्रायश्चित्तीकी प्रतिज्ञा आदिकी अपेक्षा करके जाति और शक्ति और गुण इनां नूं देख करके अर तिस प्रकार एक वार कीते होए पाप कों अर दो वार कीते होए पाप को भी देखकरके ॥ ८ ॥ अर प्रायश्चित्ती के हठकों भी देखकरके संपूर्ण प्रायश्चित्त क्रमसें करणा चाईदाहै ॥ प्रकट पापके विषे जितना प्रायश्चित्त कथन कीताहै तिसतें वीवां २० हिस्सा गुप्त पाप के विषे ब्राह्मण कों कथन कीताहै अर क्षत्रीको त्रीवां ३० हिस्सा कथन कीताहै अर वैश्य को सठवां ६० हिस्सा कथन कीताहै ॥ ९ ॥

याज्ञवल्क्यजी का वाक्यहै ॥ अनादीति अनादिष्ट पापां की चांद्रायण व्रत करके हि शुद्धि है और धर्मके अर्थ भी चांद्रायण व्रत कों करे सो चांद्रायण व्रतका कर्त्ता चंद्रमाके लोककों प्राप्त होताहै ॥ १ ॥ षड्त्रिंशत्के मतमें कृच्छ्र और अतिकृच्छ्र और चांद्रायण इन तीनों ३ का समुदाय कथन कियाहै ॥ यानीति जो कोई पाप ब्रह्महत्यादितें बडे हैं सो कृच्छ्र और अतिकृच्छ्र और चांद्रायण करके नष्ट होजाते हैं एह मनु कथन करता भया ॥ १ ॥ चतुर्विंशतिके मतमें केवल प्राजापत्य हि पापांको नष्ट करताहै ॥ लघ्विति थोडे अनादिष्ट पापके विषे प्राजापत्यकों हिकरे इति ॥ शुक्र जी कृच्छ्र और चांद्रायण

॥ याज्ञवल्क्यः ॥ अनादिष्टेषुपापेषुशुद्धिश्चांद्रायणेनच धर्म्मार्थयश्चरे देतच्चन्द्रस्यैतिसलोकताम् ॥ १ ॥ षड्त्रिंशन्मते त्रयाणांसमुच्चयःप्रतिपादितः ॥ यानिकानिचपापानिगुरोर्गुरुतराणिच ॥ कृच्छ्रातिकृच्छ्रचांद्रैस्तुशोध्यंतेमनुरब्रवीत् ॥ १ ॥ निरपेक्षोहिप्राजापत्यश्चतुर्विंशतिमते ॥ लघुदोषेत्वनादिष्टेप्राजापत्यंसमाचरेदिति ॥ द्वयोः समुच्चयमाहोशनाः ॥ दुरितानांदुरिष्टानांपापानांमहतामपि कृच्छ्रंचांद्रायणंचैवसर्वपापप्रणाशनमिति ॥ १ ॥ दुरितमुपपातकम् ॥ दुरिष्टंपातकम् ॥ कृच्छ्रानुवृत्तौ गौतमः ॥ प्रथमंचरित्वाशुचिःकर्म्मण्यःपूतोभवति द्वितीयंचरित्वायदन्यन्महापातकेभ्यःपापंकुरुते तस्मात्प्रमुच्यते तृतीयंचरित्वा सर्वस्मादेनसोमुच्यत इति ॥ प्रथमादिपदैः कृच्छ्रोऽतिकृच्छ्रःकृच्छ्रातिकृच्छ्रश्चोच्यते ॥

करके हि पापांके नाशकों कथन करतेभये ॥ दुरितानामिति बडे जो उपपातक पाप हैं और बडे जो पातक पाप हैं इनां संपूर्णांके नाश करणे वाले कृच्छ्र और चांद्रायण हि हैं इति ॥ १ ॥ गौतमजी वारंवार कृच्छ्रकेहि करणे करके पापका नाश कथन करते हैं ॥ प्रथममिति कृच्छ्र कों करके कर्म करणे वाला शुद्ध होताहै अतिकृच्छ्रकों करके ब्रह्महत्यादि महापातकतें और जिस पाप कों करताहै तिसतें रहित हो जाताहै कृच्छ्रातिकृच्छ्रकों करके संपूर्ण पापातें रहित होजाताहै ॥ इनां तीनों ३ का स्वरूप रहस्य प्रकरण मे देख लैणा ॥

हारीतजीका वाक्यहै चांद्रायणामिति चांद्रायण व्रत और पराकव्रत और तुला दान और गौश्रांके पीछे चलना एह संपूर्ण पापांके नाश करणे वालेहैं ॥ १ ॥ अब और प्रकार कथन करतेहैं तथेति तिसप्रकार गोमूत्र और गौका गुहा और गौकादुग्ध और दधि और घृत और कुशाका जल और एक १ रात्रका उपवास एह संपूर्ण चंडालतुल्यपुरुषकोंभी शुद्धकरदेतेहैं ॥ २ ॥ इनांसंपूर्णांकी व्यवस्था विष्णु पुराणमें कथन कीतीहै पापइति ॥ मैत्रेयके प्रति किसे ऋषिका वाक्यहै हे मैत्रेय प्रायश्चित्तांके जानणें वाले मन्वादि वडे पापकेविषें बडे प्रायश्चित्तकों करें अर थोडेपापके विषें थोडे प्रायश्चित्तकों करें एह कथन करते भए ॥ १ ॥भविष्य पुराणमें भी लिखाहै एवमिति पुत्रके प्रति किसेका वाक्यहै हे पुत्र इसतरह पापके भेदकर्के बडे और थोडे संपूर्ण प्रायश्चित्त करणे

हारीतः चांद्रायणंपराकंचतुलापुरुषएवच गवांचैवानुगमनंसर्वेपापप्रणाशनामिति ॥ १ ॥ तथा। गोमूत्रंगोमयंक्षीरंदधिसर्पिःकुशोदकम् एकरात्रोपवासश्चश्वपाकमपिशोधयेत्। २ एतेषांसर्वेषांव्यवस्थोक्ताविष्णुपुराणे पापेगुरूणिगुरुणिस्वल्पान्यल्पेचतद्विदः प्रायश्चित्तानिमैत्रेयजगुस्स्वायंभुवादयः १। भविष्ये॥ एवंविषयभेदेनव्यवस्थाप्यानिपुत्रक प्रायश्चित्तानिसर्वाणि गुरूणिचलघूनिच ॥ १ ॥ अन्यथाहिमहाबाहोलघूनामुपदेशतःगुरूणामुपदेशोहिनिष्प्रयोजनतांव्रजेत् ॥ २ ॥ गौतमः ॥ एनसिगुरुणिगुरूणिलघुनिलघूनि ॥ हविष्यान्प्रातराशान्भुक्त्वातिस्रोरात्रीर्नाश्नीयात् अथापरं त्र्यहंनक्तंभुंजीत अथापरंत्र्यहं न कंचन याचेत अथापरं त्र्यहमुपवसेत्

योग्यहैं अर्थात् वडे पापके विषे बडा प्रायश्चित्त करणा अर थोडे पापके विषे थोडा प्रायश्चित्त करणा ॥ १ ॥ हे महाबाहो इसते जब व्यत्यय करें तों थोडे प्रायश्चित्तके कहनेसें बडे जो प्रायश्चित्तहैं सो निष्फलहि होवेंगे ॥ २ ॥ गौतम जीका वाक्य है एनसीति बडे पापमें बडा प्रायश्चित्त करें और थोडे पापमे थोडा प्रायश्चित्त करें इति ॥ हविष्यानिति प्रातःकाल तीन दिन ३ घृत और तिल और यव इत्यादि जो हविष्य हैं तिनांका भक्षण करें अर रात्रिके विषे कुछ न भक्षण करे इसतें उपरंत तीन ३ दिन रात्रिके विषे भक्षण करें इसते उपरंत तीन ३ दिन किसेसें नहि मांगे जेकर कोई देजावे तब भक्षण कर लेवे इसतें उपरंत तीन ३ दिन उपवास करे इस व्रतके दिन दिनकी कृत्य कहतेहैं

तिष्ठेदिति शीघ्राहि फलकी कामना वाला दिनविषे खडा रहे अर रात्रि विषे बैठा रहै अर सत्य कथन करे उौर नीचों के साथवातां नकरे उौर रौरवयोधा संज्ञिक और जयसंज्ञिक मंत्रांकानित्य पठन करे उौर तीन ३ दिन त्रिकाल स्नान करे उौर उोंआपोहिष्ठा मयो भुवः १ उोंतानऊर्जे दधात नर उोंमहेरणाय चक्षसे ३ एह पवित्र जो तीन ऋचा हैं इनों कर्के मार्जन करे उौर हिरण्य वर्णाः शुचयः पावका इत्यादि अष्ट ८ ऋचां कर्के भी मार्जन करे इसतें उपरंत उोंनमो हमा यइत्यादि मंत्रों कर्के जलके विषे तर्पण करे उौर उों अघमर्षणसूक्तस्याघमर्षणऋषिर नुष्टुप् छंदः भावभृतं देवतं अश्वमेधावभृथेविनियोगः उोंऋतंच सत्यं चाभीद्धा त्तपसोऽध्य जायत ततो रात्रिरजायत ततः समुद्रो ऽर्णवः समुद्रादर्णवादधिसंवत्सरोऽजायत अहोरात्राणि

तिष्ठेदहनिरात्रावासीताक्षिप्रकामः सत्यंवदेदनार्य्यैर्नसंभाषेत रौरवयो धाजयेनित्यंप्रयुंजीतानुसवनमुदकोपस्पर्शनम् आपोहिष्ठेतितिसृभिः पवित्रवतीभिश्चमार्जयेत् हिरण्यवर्णाःशुचयःपावकाइत्यष्टाभिः ॥ अथोद कतर्प्पणम् उोंनमोहमायित्यंतर्जलेवाघमर्षणं त्रिरावर्त्तयन्सर्वपापेभ्यो मुच्यतेइति ॥ वृहन्नारदीये ॥ प्रायश्चित्तानियःकुर्यान्नारायणपरायणः तस्यपापानिनश्यंतिअन्यथापतितोभवेत् ॥ १ ॥ यस्तुरागादिनिर्मुक्तअनु तापसमन्वितः सर्वभूतदयायुक्तोविष्णुस्मरणतत्परः ॥ २ ॥

विदधद् विश्वस्य मिषतो वशी सूर्याचंद्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत् दिवंच पृथि वींचांतरिक्ष मथो स्वः इति इस मंत्रको तीन ३ वार पाठ करे तो संपूर्ण पापांतें रहित होताहै इति ॥ वृहन्नारदीय पुराणमें भी लिखाहै प्रायश्चित्तानीति जो प्रायश्चित्तां नूं करता होआ ईश्वरपरायणहै अर्थात् ईश्वरका स्मरण करताहै तिसके संपूर्ण पाप नष्ट होतें हैं जेकर इसते व्यत्यय करे तव पापी होताहै ॥ १ ॥ यइति जो पुरुष राग द्वेषादितें रहितहै उौर पश्चात्ताप कर्के युक्त है उौर संपूर्ण जीवांके उपर दया करणे वाला अर विष्णुके स्मरण विषे तत्परहै ॥ २ ॥

महेति ब्रह्महत्यादिपापांकर्के अथवा होरना संपूर्ण पापांकर्के युक्त होवे तदभी संपूर्णपापांतें तात्काल रहित होताहै जिस कारणतें तिसका चित्त विष्णुके विषेस्थितहै ॥३॥ नारायणमिति आद और अंततें रहित और जगत्स्वरूप और अविनाशी ऐसा जो विष्णुहै तिसका जो पुरुष निस स्मरण करता है सो संपूर्ण पापांते रहित होजाता है ॥ ४ ॥ विष्णुके विस्मरणविषे दोष कहते हैं विष्णिवति विष्णुका स्मरण न करणा पापहै अर उसकास्मरण पापांके छेदन करणे वाला है इसमे दृष्टांत है कि जिस प्रकार वडे दीपकदे जगां नेसें गुफाके मध्यमें जो अंधकारहै तिसके वलका नाश होजाताहै ॥५॥ और प्रकार कहतेहैं स्मृतइति स्मरणकीताहोआ अर पूजन कीता होआ अर चिंतन कीताहोआ अर नमस्कार विषय कीता होआ जो सनातन विष्णु

महापातकयुक्तोवायुक्तोवासर्वपातकैः सर्वैःप्रमुच्यतेसद्योयतोविष्णुपरंमनः ३ नारायणमनाद्यंतंविश्वाकारमनामयम् यस्तुसंस्मरतेनित्यंसर्वपापैःप्रमुच्यते ४ विष्णुविस्मरणंपापंस्मरणंपापकृंतनम् गुहांतर्ध्वांतबलभिन्महादीपोदयोयथा५स्मृतोवापूजितोवापिध्यातोवानमितोपिवा नाशयत्येवपापानिविष्णुरेवसनातनः६संपर्काद्यदिवामोहाद्यस्तुपूजयतेहरिम् सर्वपापविनिर्मुक्तः प्रयातिपरमंपदम् ७ सकृत्संस्मरणाद्विष्णोर्नश्यतिक्लेशसंचयःस्वर्गादिभोगप्राप्तिस्तुसुलभापरिकीर्त्तिता ८ तस्मात्तडिल्लतालोलंमानुष्यंप्राप्यदुर्लभम् हरिंसंपूजयेद्भक्त्यासर्वपापविमोचकम् ९ सर्वेन्तरायानश्यंतिमनःशुद्धिश्चजायते परंमोक्षंलभेच्चैवपूज्यमानेजनार्दने ॥ १०

है सो निश्चयकर्के पापांकानाश करदेताहै ॥६॥ संपर्केति किसेदे संगतें अथवा मोहतें जो पुरुष विष्णुनूंपूजताहै सो संपूर्ण पापां तें रहित होकर विष्णुके लोकनूंप्राप्त होताहै ॥ ७ ॥ सकृदिति विष्णुके एकवार स्मरणकरणेतें दुःखांके समूहका नाशहोजाताहै अर स्वर्गादि भोगांकी प्राप्ति सुखाली प्राप्त होतीहै ॥८॥ तस्मादिति तिस कारणते विजलीकी न्यांई चंचल अर दुर्लभ मनुष्यजन्मकों प्राप्त होकर्के संपूर्णपापांके नाशकरणेवाले विष्णुकों भक्तिकर्के पूजे ॥९॥ इसका फलकहतेहैं सर्वइति तद संपूर्ण विघ्न नष्ट होजाते हैं अर चित्तकी शुद्धि होतीहै अर विष्णुके पजया होआं निश्चयकर्के मुक्तिकों भी प्राप्त होताहै ॥१०॥

धर्मेति धर्म अर अर्थ और काम और मुक्ति एह सबपुरुषोंके अर्थ विष्णुकी पूजाकरण वालिओंके निश्चयकर्के सिद्धहोतेहैं इसमें संदेह नाहिहै ॥ ११ ❀ अग्नि पुराणमें औरभी अग्निपुष्करसंवादके विषे एक विष्णुजीका स्तोत्र सर्वपापहर लिखाहै परेति परस्त्री और परधन और परका मारणा इत्यादिओं विषे जद पुरुषांका मन प्रवृत्त होवे तब विष्णुको स्तुति प्रायश्चित्तहै ॥ १ ॥ विष्णुकी स्तुति कथन करतेहैं विष्णवइति विष्णुके तांई वारंवार ४ नित्य नमस्कारहोवे मनकेविषे स्थित अर अहंकारकास्थान जो विष्णुहै तिसनूंमै नमस्कार करताहां २ ॥ चित्तस्थमिति जो विष्णुमन केविषे स्थितहै अर एकहै अर नहिप्रकटहै अर नहि नाश जिसका अरनहि किसेकर्के जितयाजांदा

धर्मार्थकाममोक्षाख्याःपुरुषार्थाःसनातनाः हरिपूजापराणांतुसिद्ध्यंतेऽत्र नसंशयः ११ ❀ अग्निपुराणेअग्निपुष्करसम्वादे परदारपरद्रव्यपरहिंसादिके यदाप्रवर्द्धतेनृणांचित्तंप्रायश्चित्तंस्तुतिस्तदा १ विष्णवेविष्णवेनित्यंविष्णवे विष्णवेनमः नमामिविष्णुंचित्तस्थमहंकारगतंहरिम् २ ॥ चित्तस्थमेकमव्य क्तमच्युतंह्यपराजितम् विष्णुमीशमशेषेणअनादिनिधनंविभुम् ३ ॥ विष्णुं चित्तगतंजानन्विष्णुंबुद्धिगतंचयः यश्चाहंकारगंविष्णुंसाविष्णवार्पितसंस्थि तिः ४ करोतिकर्तृभूतोसौस्थावरस्यचरस्यच तत्पापंनाशमायातितास्मिन्वि वतुचिंतिते ५ ॥ ध्यातोहरतियःपापंस्वप्नेदृष्टस्तुभावतः तमुपेंद्रमहंविष्णुंप्रण तार्त्तिहरंहरिम् ॥ ६ ॥

अर संपूर्णोका स्वामी अर जन्म मरणतें रहित अर सर्वव्यापी ऐसा जो विष्णुहै तिसनूं मै नम स्कार करताहां । ३ ।विष्णुमिति जो पुरुष मनके विषे अर बुद्धिके विषे अर अहंकारके विषे प्राप्त होए होए विष्णुनूं जानताहै सो विष्णुकेविषेहि स्थित है ॥ ४ ॥ करोतीति जेडा एह विष्णु कर्त्तारूपहोकर पर्वतादि अर मनुष्यादिआंनू करताहै तिस विष्णुके स्मरण कीतिआं होआं तिस पुरुषकापाप निश्चयकर्के नाशको प्राप्त होताहै ॥ ५ ॥ ध्यातइति जेडाविष्णु भक्तिकर्के चिंतितकी ता होआ अर स्वप्नेके विषे देखिआ होआ पापका नाश करदेताहै तिस शरणागतकी पीडाहरण वाले विष्णु नूं मै नमस्कार करताहौं ॥ ६ ॥

जगतीति ॥ आश्रयते रहित जो एह जगत् है इसकें नरकके विषे हिठा पौंदिआं होआं इस्स का आश्रयदेणवाला और परतें भी परे जो विष्णुहै तिस नूं मैनमस्कारकरता हां॥७॥सर्वेति हेसं पूर्णांके ईश्वर हेसर्वव्यापक हेपरमात्मन् हे अधोक्षज हे इंद्रियोंके ईशर हेकृष्ण वर्ण केशा वाले तेरे तांई नमस्कार होवे ॥ ८ ॥ नृसिंहेति हेनृसिंह हेअंततें रहित हेगोंआंके पालन कर ण वाले हेजिवांके उत्पन्न करणे वाले हे सुंदरकेशां वालें मुझका खोटा कथन और कर्म और चिंतन और मानस दुःख का नाशकर अर्थात् वाणी कर्के और शरीर कर्के और मन कर्के कीता जो पापहै तिसकों दूरकर तुझकों नमस्कार होवे।९।ब्रह्मण्येति हे ब्राह्मणोंके पूजने वाले हे गोंविंद हेपरात्पर हेपरायण हे जगत्के ईश्वर हे जगत्के पालन करण वालें हे अच्युत मुझके पापका

जगत्यस्मिन्निराधारेमज्यमानेतमस्यधः हस्तावलंबनंविष्णुंप्रणमामिपरा त्परम् ॥ ७॥ सर्वेश्वरेश्वरविभोपरमात्मन्नधोक्षज हृषीकेशहृषीकेशकृष्णके शनमोस्तुते ॥ ८॥ नृसिंहानंतगोविंदभूतभावनकेशव दुरुक्तंदुष्कृतंध्यातंश मयाधिंनमोस्तुते ॥ ९ ॥ ब्रह्मण्यदेवगोविंदपरात्परपरायण जगन्नाथज गन्नातःपापंप्रशमयाच्युत॥१०॥यच्चापराह्णेसायाह्णेमध्याह्णेचतथानिशि कायेनमनसावाचाकृतंपापमजानता ॥ ११ ॥ जानताचहृषीकेशपुंडरीकाक्ष माधव पापंप्रशमयाद्यत्वंवाक्कृतंमममाधव ॥ १२ ॥ यदश्ननूयत्स्वपंस्ति ष्ठन्यद्गच्छन्स्विच्छयास्थितः कृतवान्पापमद्याहंकायेनमनसापिवा ॥ १३ ॥ यत्सूक्ष्ममपियत्स्थूलंकुयोनिनरकावहम् तद्यातुप्रलयंसर्ववासुदेवादिकी र्तनात् ॥ १४ ॥

नाशकर ॥१०॥ यच्चेति प्रातः काल और सायंकाल और मध्याह्नकाल और रात्रि इनों विषे शरीर कर्के और मन कर्के और वाणी कर्के और अज्ञान कर्के॥११॥ और ज्ञान कर्के मैंनें कीतों जो पाप है तिसका हेहृषीकेश हे पुंडरीकाक्ष हेमाधवतूं नाशकर॥ १२ ॥ यदिति भक्षण करदा हो आ और शयन करदा होआ और खडा हुंदा होआ और गमनकरदा होआ और अपनी इच्छा सें स्थित हुंदा होआ मैं शरीर कर्के और मन कर्के आदिशब्दने वाणीकर्केभी जो पाप कर्ता भया हे माधव तिस का तूं नाशकर॥ १३ ॥ यदिति खोटीयोनि और जोगर्भादि योंकीहै नरककों प्राप्तकरणे वाला थोडाऔर वहुत जो मुझका पापहै सो संपूर्ण वासुदेवादि नामके कथन करणे वें नाशकोंप्राप्त होंवे एह मेरी प्रार्थना आपकोस्वीकृतहोंवे ॥१४

परमिति परमब्रह्म और परम तेजरूप और परमपवित्र ऐसा जो विष्णुहै तिसके कीर्त्तन कीतिआं होआं संपूर्ण पापनाशको प्राप्तहोवे ॥ १५ ॥ यदिति बुद्धिमान्पुरुष जिस स्थानको प्राप्तहोकर्के फेर जन्मको नहि प्राप्त हुंदे और गंध स्पर्शादि विषय सुखतें रहित और अपूर्वक जो विष्णुका स्थानहै सो मेरे पापका नाश करे ! १६ । इस स्तोत्रका फल कथन करतेहैं पापेति पापकेनाशकरणे वाले इस स्तोत्रका जो पाठकरताहै और जोसुणताहै सो पूरुष शरीरकर्के और चित्तकर्के और वाणी कर्के कीते होए जो पापहैं तिनांते रहित होजाताहै १७ सर्वेति और संपूर्ण पापो सूर्यादि ग्रहांसे मुक्तहोताहै अर्थात् सूर्यादिपापग्रह उसको पीडा नहि देते और विष्णुके परमपदको प्राप्तहोताहै तिस कारणते पापदेकीतिआं होआं संपूर्णपापोंके नाशकरणे वाला एह स्तोत्रजपना चाहिए १८ प्रायश्चित

परंब्रह्मपरंधामपवित्रंपरमंतुयत् तस्मिन्प्रकीर्त्तितेविष्णौपापंसर्वंप्रणश्यतु १५ यत्प्राप्यननिवर्त्तन्तेगंधस्पर्शादिवर्जितम् सूरयस्तत्पदंविष्णोस्त्वपूर्वं शमयत्वघम् १६ पापप्रशमनंस्तोत्रंयःपठेच्छृणुयादपि शरीरैर्मानसैः कार्यैःकृतैःपापैःप्रमुच्यते १७ सर्वपापग्रहादिभ्योयातिविष्णोःपरंपदम् तस्मात्पापेकृतेजप्यंस्तोत्रंसर्वाघमर्दनम् १८ प्रायश्चित्तमघौघानांस्तोत्रं व्रतकृतेवरम् प्रायश्चित्तैःस्तोत्रजापैर्व्रतैर्नश्यतिपातकम् १९ प्रायश्चित्तेंदुशेखरेपि ⊛ तत्रमहापातकादर्वाचीनेषु वहुविधेष्वज्ञानकृतेषुप्रतिनिमित्तंकर्तुमशक्तौसर्वप्रायश्चित्तंपडब्दम् ॥ अत्यंतगुणवतोविरक्तस्याऽभ्यासेद्विगुणम् ॥ मत्यात्रिगुणम्॥ मत्याऽभ्यासेचतुर्गुणम् ॥ अत्यंताभ्यासेनिरंतराभ्यासे वा पंचगुणम् ॥

मिति व्रतांकीकृत्यकेविषे एह स्तोत्र पापांके समूहोंका श्रेष्ट प्रायश्चित्तहै प्रायश्चित्तोंकर्के और स्तोत्रों कर्केजपों कर्के और व्रतां कर्के पाप दूर होताहै १९ ॥ ⊛प्रायश्चित्तेंदुशेखर में भी लिखाहै तत्रेति पापोंके मध्यमें ब्रह्महत्याते विना वहुत प्रकारके अज्ञान कर्के कीते होए जो पापहैं तिनांके विषे कहा जो प्रायश्चित्तहै तिसके करणेविषे जद सामर्थ्य न होवे तद छे६वर्षका संपूर्ण प्रायश्चित्त करणा चाहिए ॥ अतिशयतकर्के गुणवाला और विरक्तहोवे तिसके पापके अभ्यासमें वारां१२ वर्षका प्रायश्चित्त लिखाहै और बुद्धिकर्केकीते होए पापके विषे चौवी२४वर्षका व्रत और अतिशय कर्के अभ्यासके विषे अथवा सर्वदाकाल पापांके अभ्यासमें पंचगुणक्यातीस३०वर्षका व्रत करणा चाहिए प्रतिदिन वहुवारकरणेमे अत्यंताभ्यासहै और विच्छेदसे प्रतिदिन करणेमे निरंतराभ्यास कहीदाहै

अर इसमेभीबहुतकालके अभ्यासमें छत्ती१६ वर्षकाप्रायश्चिचलिखाहै और गोहत्यादितैलेकरके उरेहोणेवाले अज्ञानकर्केकीवेहोएजो जातिभ्रंशादि पापहैं तिनमे कथन कीता जो प्रायश्चित्तहै तिसके करणेमे जब सामर्थ्यनहोवेतबदो२ वर्षकाप्रायश्चित्तलिखाहै। अभ्यासादिउंमें पूर्वकीन्याईकरणा जैसेगुणवालेविरक्तके अभ्यासमेंचार ४ वर्षका अरबुद्धिकर्के कीते होएमें छे ६ वर्षकाअर बुद्धि के अभ्यासमें आठ८ वर्षका अर अतिशय उौर निरंतरअभ्यासमे दश१०वर्षका अर बहुतकाल के अभ्यासमे बारां१२ वर्षका प्रायश्चित्त लिखाहै और तिउंजोए प्रकीर्णक जोपापहैं तिनकेविषे उक्त प्रायश्चित्तकरणे असमर्थहोवे तद एक १ वर्षका प्रायश्चित्तकरे उौर गुणवाले विरक्तकों दो २ वर्षकाअर बुद्धिकर्के कीतेमेंतीन३ वर्षकालिखाहै उौरसबपूर्वकीन्याई जानलैनें। क्षुद्रेति अर थोडे

बहुकालाभ्यासेषड्गुणम् उपपातकमारभ्यार्वाचीनेषु पापेष्वज्ञानकृतेषु प्रतिनिमित्तंकर्तुमशक्तौद्यब्दंप्रायाश्चित्तम् अभ्यासादौप्राग्वत् प्रकीर्णकेषु तादृशेषुतादृशस्यैकाब्दम् अभ्यासादौप्राग्वत् क्षुद्रपापेषु तादृशेषु तादृशस्य कृच्छ्रातिकृच्छ्रचांद्रायणानि तत्स्थाने द्वादश कायानिवा अभ्यासादौप्राग्वत् चतुष्टयमिदं चोत्तमस्य मध्यमस्यद्विगुणम् उत्तममध्यमादिविषये द्विगुणादिव्यवस्थातु वर्णाश्रमसाधारणीबोध्या यथोत्तमब्राह्मणस्योक्तमेव मध्यमब्राह्मणस्यद्विगुणमेवमग्रेपि अधमस्यत्रिगुणम्

जो पापहैं तिनके विषे लिखा जो प्रायश्चित्तहै तिसके विषे जब सामर्थ्य न होवे तब कृच्छ्र उौर अतिकृच्छ्र उौर चांद्रायणकों करे अथवा बारां१२ प्राजापत्य करे॥ अभ्यासादिउंमें पूर्वकीन्यांई जानलैना एह चारे ४ प्रायश्चित्त महांपातकांके उरले १ और उपपातकांके उरले २ और प्रकीर्णक ३ और अनस्थिजीववध और अस्थिवाले कहेहोए ते विलक्षण जो जीवतिनांकावध ४ एह सभ व्यवस्था जैसी वर्णोंमेंहै तैसी आश्रमोमे भीजानणी उत्तम ब्राह्मणकों एक वार करणे चाहिए अर गुणांकर्के मध्यमजो ब्राह्मणहै तिसकों दो२ वार करणा चाहिए उौर नीच ब्राह्मणकों तीन३ वार करणा चाहिए

अर इसतेंभी जो नीच ब्राह्मणहै तिसको चवीस २४ वर्षका करणा चाहिए इस प्रकार क्षत्री औंर वैश्य औंर शूद्र इनकों भी क्रम कर्के प्रायश्चित्त जान लैना ब्रह्म हत्यादि जो संपूर्ण पापहैं तिनोंका एह प्रायश्चित्तहै अर जिनो पापोंका प्रायश्चित्त नहि लिखा तिनके विषे प्रायश्चित्तकी सामर्थ्य देख कर्के एकठे अथवा भिन्न भिन्न कृच्छ्र औंर चांद्रायणादि व्रत दसने चाहिए अर थोंडिओं पापोंके विषे एक दिनका उपवास औंर तीन ३ रात्र उपवास औंर प्राजापत्य योग्यता कर्के दसने चाहिए औंर बहुत थोंडे जो पापहैं तिनकें विषे बारां १२ अथवा छे ६ अथवा तीस ३० प्राणा याम करणे चाहिए ॥ स्त्रीआं को औंर शूद्रांको मंत्रांतें विना प्राणायाम करणे चाहिए अथवा जितने अन्नसें एक पुरुष तृप्त होजावे अथवा गिआसन

ततोप्यधमस्यद्वादशाब्दंद्विगुणं महापातकावधिसकलपापप्रायश्चित्तमिति सर्वत्रानुक्तनिष्कृतौ कृच्छ्रचांद्रायणादीनि समस्तव्यस्तरूपेण योग्यतयायोज्यानि ॥ क्षुद्रेषुपापेषुउपवासत्रिरात्रप्राजापत्यानि अतिक्षुद्रेषु द्वादशषट् त्रिंशद्वाप्राणायामाःकार्य्याःस्त्रीशूद्राणाममंत्रकास्तेपुरुषाहारहंतकाराग्रदानानिवा मौनलोपेविष्णुस्मरणम् ॥ इतिश्रीमन्महाराजाधिराजजंम्बूकाश्मीराद्यनेकदेशाधीश प्रभुवररणवीरसिंहाज्ञप्तसारस्वतश्रीदेविकोपकण्ठवासिदेवीदत्तसुतपण्डितगंगारामसंगृहीते पंचविषयात्मप्रातिरूपकेधर्म्मशास्त्रमहानिबन्धप्रायश्चित्तभागेसाधारणप्रकरणं षष्ठम् ॥ ६ ॥ ❀ ❀

इत्यादि अन्न दानकरणा चाहिए औंर मौनव्रतके लोपके विषे विष्णुका स्मरण करणा (इति) एह पद प्रकरण की समाप्तिके विषे जानणा लक्ष्मीकर्के युक्त जो वडे राजेहैं तिनोंकाभी राजा अर जंबू औंर काश्मीर आदि पद कर्के गिलगितादि जो अनेक देशहैं तिनोका स्वामी श्रेष्ठ जो राजा रणवीर सिंह तिस कर्के आज्ञप्त कीते होए सारस्वत ब्राह्मण संज्ञा वाले औंर श्रीदेविका जीके कनारे पर रहण वाले औंर पंडित देवी दत्तके पुत्रपंडित गंगा रामजी तीनों कर्के संग्रह कीतेहोए धर्मशास्त्र महानिबंधके प्रायश्चित्त भागमे छेमां साधारण प्रकरण समाप्त होया ॥ ६ ॥ ●

साधारणप्रकरणतें उपरंत अब विधान कीता जोकर्म तिसका नकरणा १ अर वर्जित कर्मका करणा २ अर इन्द्रियों का रोकणा एह जो कारण तीन ३ हैं इनातें उत्पन्न हुए जो जातिभ्रंशकरतें आदलेकर नौं ९ प्रकारके पापहैं सो ब्रह्महत्या प्रायश्चित्त प्रकरणमें कथन करेहैं ॥ तिनां नवांके मध्यमे जातिभ्रंशकर पापां कों मनुजी कहतेहैं ॥ ब्राह्मेति ब्राह्मणकों दंडादि करके दुःखदेणा १ और अतिशय करके दुर्गंध वाला जो थोम अर विष्टादिहै इसका अर मदिराका सिंघणा २ ॥

॥ ओंश्रीगणेशायनमः ॥ अथविहिताकरणादिहेतुत्रयोत्पन्नजातिभ्रंशकरादिनवविधानि पापानि ब्रह्महत्याप्रायश्चित्तप्रकरणउक्तानि तत्र जातिभ्रंशकराण्याह मनुः । ब्राह्मणस्यरुजःकृत्वाघ्रातिरघ्रेयमद्ययोः जैह्म्यंच मैथुनंपुंसिजातिभ्रंशकरंस्मृतम् ॥ १ ॥ ब्राह्मणस्यदंडादिनापीडाकरणं १ अतिशयदुर्गंधियल्लशुनपुरीषादि तस्य मद्यस्यचघ्रातिराघ्राणं २ जैह्म्यंमित्रे ३ पुंसिमुखादौचमैथुनं ४ प्रत्येकंजातिभ्रंशकरंनतु समस्तम् याज्ञवल्क्येनात्र पशुमैथुनमप्युक्तम् ॥ इमान्येव प्रायश्चित्तप्रकरण प्रायश्चित्तरत्न प्रायश्चित्तमुक्तावली प्रायश्चित्तशेखर प्रायश्चित्तमयूख प्रायश्चित्तकदंबादौ प्रोक्तानि २

और मित्रके साथ द्रोह करणा ३ और पुरुषके साथ अर स्त्रीके मुखमें मैथुन करणा ४ एह एकभीपाप कीता होआ जातितें भ्रष्ट करदेताहै ॥ १ ॥ ब्राह्मणस्य इत्यादि पदों करके इसी श्लोककाहि अर्थ स्पष्ट कीताहै ॥ अर याज्ञवल्क्यजीनें पशुके साथ जो मैथुनहै सोभी जातितें पतित करण वाला कथनकीताहै अर प्रायश्चित्त प्रकरण अर प्रायश्चित्तरत्न अर प्रायश्चित्तमुक्तावली अर प्रायश्चित्तशेखर अर प्रायश्चित्तमयूख अर प्रायश्चित्त कदंब इत्यादि ग्रंथोंमें भी एही चार ४ पाप जातितें गिडा देणवाले लिखें हैं ॥

तिनके मध्यमें जातिभ्रंशकर पापके प्रायश्चित्तको मनुजी कहते हैं जातीति ब्राह्मणस्यरुज इसतें आदलेकर जो जातिभ्रंशकर कर्म कथन कीतेहैं तिनके मध्यमें इच्छासें किसी कर्मनूं करके सत्त ७ दिनका जो सांतपन कृच्छ्र व्रतहै तिसको करे जेकर जातिभ्रंशकरादिकर्म इच्छासें न करें तद प्राजापत्य व्रत करे इसमें एह (प्रश्न) है कि जो पाप इच्छासे होताहै तिसका प्रायश्चित्त वहुतहै और जो विनाइच्छा से कीताहो आ पापहै तिसका थोडा प्रायश्चित्त होणा चाहिए और इस जगा विपरीतक्योंहै सांतपन ७ दिनका और प्राजापत्य १२ दिनकाहै (उत्तर) इसजगा सांतपनशब्द करके महासांतपन जानणा सो २१ दिन करके होताहै इसतें विरोध नहि अथवा अर्थ से विपरीत कर लेणा इच्छामें प्राजापत्य और अनिच्छामें सांतपन तदभी विरोध नहि आउंदा ॥ १ ॥ ब्राह्मणस्य इत्यादि

तत्रजातिभ्रंशकरपापप्रायश्चित्तमाह मनुः ॥ जातिभ्रंशकरंकर्म्मकृत्वान्यतममिच्छया चरेत्सांतपनंकृच्छ्रंप्राजापत्यमनिच्छया ॥ १ ॥ ब्राह्मणस्यरुजइत्याद्युक्तजातिभ्रंशकरकर्म्मोक्तं तन्मध्यादन्यतममपि कर्म कृत्वा सांतपनंसप्ताहसाध्यंकृच्छ्रंव्रतंचरेत् इदमिच्छयाकामेन अनिच्छयातु प्राजापत्यंकुर्य्यात् केचित्तु इच्छयैतत्कर्म्मकृत्वाप्राजापत्यमनिच्छयातुसांतपनंचरेदित्याहुः वृहस्पतिनात्रविशेषउक्तोयथा ब्राह्मणस्यरुजःकृत्वारासभादिप्रमापणम् निंदितेभ्योधनादानंकृच्छ्रार्द्धंव्रतमाचरेदिति ॥ १ ॥ इदमेवप्रायश्चित्तंप्रायश्चित्तेन्दुशेखरे प्रायश्चित्ताशक्तौ धेनुदानं तदशक्तौ चूर्णीदानंयथाशक्तिदक्षिणा ॥

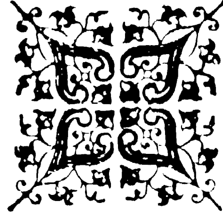
पद करके इसी श्लोककाहि अर्थ दिखायाहै ॥ वृहस्पतिजीनें इसमें विशेष कहाहै ॥ ब्राह्मेति ॥ ब्राह्मणको दंडादि करके दुःख देकरके और गर्दभादिओंको मार करके और निषिद्ध पुरुषोंतें धनका ग्रहण करके अर्द्धा कृच्छ्र व्रत करे ॥ १ ॥ एही प्रायश्चित्त प्रायश्चित्तेन्दुशेखरमेंभी लिखाहै प्रायेति॥जब कृच्छ्रादि व्रत करणेमें सामर्थ्य ना होवे तब प्रसूतहुइ गौका दान करे अर जब गौके दानमें भी सामर्थ्य ना होवे तब चूर्णीदानकरे अर्थात् एक सौ १०० कौडीदानकरे अर जैसी सामर्थ्य होवे तैसी दक्षिणा देवे (प्रश्न) जिसने १०० कपर्दिका मात्र दान कीता उसकी शक्तितो प्रतीत होगई फेर यथाशक्ति क्योंकिहा (उत्तर) चूर्णीदान इसजगा गोदानकी जगाहै तिसके पीछे यथाशक्ति मुद्रिकादि दक्षिणा देवें एह अभिप्रायहै ॥ ऐसे आगेभी जानणा ॥

जेकर ब्राह्मणकों इच्छा करके पीडा देवे तद सांतपन व्रतकों करे ॥ अर जब व्रत करणे में शक्ति न होवे तब गोदानकरे जब गौदानकी भी समर्था न होवे तब षट्कार्षापणदेवे अर्थात् सत्त हजार ७००० अर आठ ८०० सौ अर अस्सी ८० कौडिआंका दानकरे अर यथा शक्ति दक्षिणा देवे ॥ इसप्रकार जब थोमादि अर विष्टा और मदिरा इनांकों इच्छासें न सिंघे तब प्राजापत्य व्रतकरे। जब व्रतकरणमें सामर्थ्य नहोवें तब एक प्रसूत गौकादानकरे जब गौ दानमेंभी सामर्थ्य ना होवे तद तीन ३ कार्षापणका दानकरे जदमित्रके विषे इच्छा करके द्रोहकरे तब प्राजापत्य व्रतकरे ॥ जद व्रतकरणेकी समर्था ना होवे तदगो दानकरें ॥ जद गोदानकी भी समर्था ना होवे तद तीन ३ कार्षापणका दानकरे ब्राह्मणाकों पाषाणादि के उग्रणेमें अर्थात् प्रहार करणेकी इच्छा विषे प्राजापत्य व्रतकरे जद व्रतकरणकी समर्था ना होवे तद एक गौदानकरे गौदानकी भी समर्था ना होवे तद तीन ३ कार्षापण दान करे और

ब्राह्मणपीडाकरणेकामतः सान्तपनंतदभावेधेनुदानं तदभावेषट्कार्षाप णाः यथाशक्तिदक्षिणा एवंलशुनादिमद्ययोराघ्राणेऽकामतः प्राजापत्यम् तदशक्तौ १ धेनुःतदभावेकार्षापणाः३ मित्रकौटिल्येसाभ्यासेचैवम् ॥ ब्रा ह्मणावगूरणेप्राजापत्यंतदशक्तौधेनुः १ तदभावेत्रयःकार्षापणाःपुंसिमैथुने ब्राह्मणेदंडादिपातनेच अतिकृच्छ्रम् तद. धेनुः तद. कार्षा- ३ यथाश क्तिदक्षणा ॥ब्राह्मणशोणितोत्पादनेकृच्छ्रातिकृच्छ्रंतद.५ धेनवःतद. १० कार्षापणाःयथाश- ब्राह्मणांगच्छेदनेप्येवम् ॥ अत्यंताभ्यासेचान्द्रम् दशगोदानंच ॥ तद.७ धेनवःतदभावे २१ यथाशक्तिदक्षिणा ॥

जद पुरुषके साथ मैथुनकरे अर ब्राह्मणकों दंडादिओं करके पीडादेवे तद अति कृच्छ्र व्रतकरे जद व्रतमें समर्था ना होवे तदगोदान करे गोदानकी भी समर्था ना होवे तद तीन ३ कार्षापण दान करे अर शक्तिके अनुसार दक्षिणादेवे अर जब ब्राह्मणकों रुधिर वगादेवे तबकृच्छ्रा तिकृच्छ्र व्रतकरे अर व्रतकरणेमें समर्था नाहोवे तद पांच ५ गौंकादानकरे जबतिसमेंभी साम र्था नाहोवे तब दश १० कार्षापणदानकरे अर यथाशक्तिसें दक्षिणादेवे ॥ अर जब ब्राह्मणका अंग कट देवे तदभी इसीप्रकार व्रतादिकरे जब इसमें वहुत अभ्यास होवे तब चांद्रयणव्रत करे ॥ जदइसमें सामर्था नाहोवे तद दस १० गौकादान करे इसमेंभी सामर्था ना होवे तद नवीन सूईआं होईआं सत्त ७ गौआंका दानकरे इसमेंभी सामर्था ना होवे तब २१ कार्षापण का दानकरे अर यथाशक्तिसेंदक्षिणादेवे ॥ एह जातिभ्रंश करपापसमाप्तभये ॥ ॥

इतिजातिभ्रंशकराणि



अथेति जातिभ्रंशकरां पापांते उपरंत संकरीकरण संज्ञिक पापांको कहतेहैं ॥ तिन कि विषे मनुजी का वाक्य है खरेति गधा और घोडा और ऊट और हरिण और हस्ती और बकरा भिड्डू और मच्छी और सर्प और महिषी इनांमिसें एकका भी मारणा संकरी करण पाप जानना चाहिए ॥ १ ॥ गर्द्दभइत्यादि पदों कर्के इसीका हि अर्थ स्पष्ट कीताहै याज्ञवल्क्य जीनें इसमें भेद कथन कीताहै ॥ ग्राम्येति ग्रामके और वनके पशुआंका मारणा हि संकरीकरण कथन कीताहै तिस विषे देवताके निमित्त मारिया जो पशुहै तिसका पाप नहिहै ॥ प्रायश्चित्त प्रकरण आदि उंमें मनुने कहा जो संकरी करण है सोई लिखाहै अर

ॐश्रीगणेशायनमः ॥ अथसंकरीकरणानि ॥ तत्रमनुः ॥खराश्वोष्ट्रमृगेभानामजाविकवधस्तथा संकरीकरणंज्ञेयंमीनाहिमहिषस्यच ॥ १ ॥ अस्यार्थःखरेति गर्दभतुरगोष्ट्रमृगहस्तिछागमेषमत्स्यसर्पमाहिषाणां प्रत्येकं वधः संकरीकरणंज्ञेयम् १ याज्ञवल्क्येनतु ग्राम्यारण्यपशूनां हिंसनमेवसंकरीकरणमुक्तम् तत्रदेवतोद्देशेनवधेकृते न दोषः ॥प्रायश्चित्तप्रकरणे प्रायश्चित्तरत्ने प्रायश्चित्तमुक्तावल्यां प्रायश्चित्तेन्दुशेखरे प्रायश्चित्तमयूखेप्रायश्चित्तकदंबादौमनूक्तमेवसंकरीकरणम् संकरीकरणा पात्रीकरणमालिनीकरणीयेषु पापेषु प्रायश्चित्तमाह मनुः ॥ संकरापात्रकृत्यासुमासंशोधनमैन्दवम् मलिनीकरणीयेषुतप्तः स्याद्यावकैस्त्र्यहम् ॥ १ ॥ खराश्वोष्ट्रेत्यादिनासंकरीकरणान्युक्तानि तेषां मध्यादन्यतममिच्छातः कृत्वाचांद्रायणं मासंशुद्ध्यैकुर्यात्

याज्ञवल्क्य वाला नहि लिखा ॥ संकरीकरण अपात्रीकरण अर मलिनीकरण एह जो पाप हैं इनके विषे प्रायाश्चित्त नूं मनुजी कहतेहैं ॥ संकरेति संकरीकरण और अपात्रीकरण एह जो पाप हैं इनके करण विषे एक १ मास तक चांद्रायण व्रत करे अर मालिनी करण जो पाप हैं इनांमें जवां कर्के तीन ३ दिन तप्तकृच्छ्र व्रत करे १ एहि अर्थ प्रकट कर्के कहतेहैं खरेति खराश्वोष्ट्र इत्यादि कर्के जो संकरीकरण पाप कहेहै तिनके मध्यमें इच्छासें एक पापकों कर्के शुद्धिके वास्ते एक मास पर्यंत चांद्रायण व्रत कों करे ॥ इन व्रतोंका स्वरूप व्रत प्रकरणमें देख लेणा ॥ १ ॥

तिस प्रकार प्रायश्चित्तमयूखमें भी विष्णुजी का वाक्यहै ॥ संकेति संकरीकरण पापनूं कर्के एक मास पर्यंत जवां का भक्षणकरे अथवा कृच्छ्रातिकृच्छ्र प्रायश्चित्त नूं करे ॥ १ ॥ इस विषेमें अज्ञानतें कीता जो संकरीकरण पापहै तिसके अनुष्ठानमें एक मास पर्यंत जवांका भक्षण करे और जब ज्ञान कर्के संकरी करण पाप नूं करे तब कृच्छ्रातिकृच्छ्र व्रत करे और अज्ञानाभ्यासमें चांद्रायण व्रत करें और ज्ञानाभ्यासमें दो २ चांद्रायण व्रत करे और याज्ञवल्क्यजीनें भी इसमें कुछ कहाहै गजके हत कीतियांहोयां पांच ५ नीलवृष देंणे और खर बकरा

तथाच प्रायश्चित्तमयूखेविष्णुः ॥ संकरीकरणंकृत्वामासमश्नीतयावकम् कृच्छ्रातिकृच्छ्रमथवाप्रायश्चित्तंतुकारयेदिति॥ १ ॥अत्राज्ञानात्संकरीकरणानुष्ठाने मासंयावकाशनम् ज्ञानात्कृच्छ्रातिकृच्छ्रम् अज्ञानाभ्यासेतु चान्द्रायणम् ज्ञानाभ्यासेतुचान्द्रायणद्वयंकल्प्यम् ॥ याज्ञवल्क्येनतु गजेनीलवृषाःपंचखराजमेषेषुवृषोदेयःहयेंशुकम् उरगेआयसोदंडः॥ उष्ट्रेगुञ्जाअक्रव्यान्मृगे वस्तिका जलचरे गौः ॥ यमेनापीदमेवोक्तम् ॥ प्रायश्चित्तेंदुशेखरे अज्ञानतःसंकरीकरणानुष्ठाने मासंयावकाशनम् ॥ ज्ञानतःकृच्छ्रातिकृच्छ्रः अज्ञानतोऽभ्यासेचांद्रम् ज्ञानतस्तथात्वेचान्द्रायणद्वयम् प्रायश्चित्ताशक्तौ धेनुदानम्

भेढा इनके हतकीतियां होयांएक १ वृषदान करणा और घोडेके वधमें वस्त्र और सर्पके वधमें लोहदंड और ऊटके वधमें गुंजाफलभूषण और अमांसाशी मृगके वधमें वस्तिकाक्या वस्त्रविशेष और जलचरके वधमें गोदानकरे ॥ यमजीनेंभी एहि कहाहै अर प्रायश्चित्तेंदुशेखरमेंभी लिखाहै अज्ञेति जान कर्केनहिकीता जो संकरी करण पाप तिसके अनुष्ठानमें एकमास जवांकाभक्षण करे और ज्ञान कर्के कीता जो है तिसके विषे कृच्छ्रातिकृच्छ्र व्रत करे।अज्ञानते अभ्यासमें चांद्रायण व्रत करे।ज्ञानते अभ्यासमें दो२ चांद्रायण व्रत करे॥ और जद प्रायश्चित्तकरणेकी ना समर्थी होवे तद धेनु दानकरे

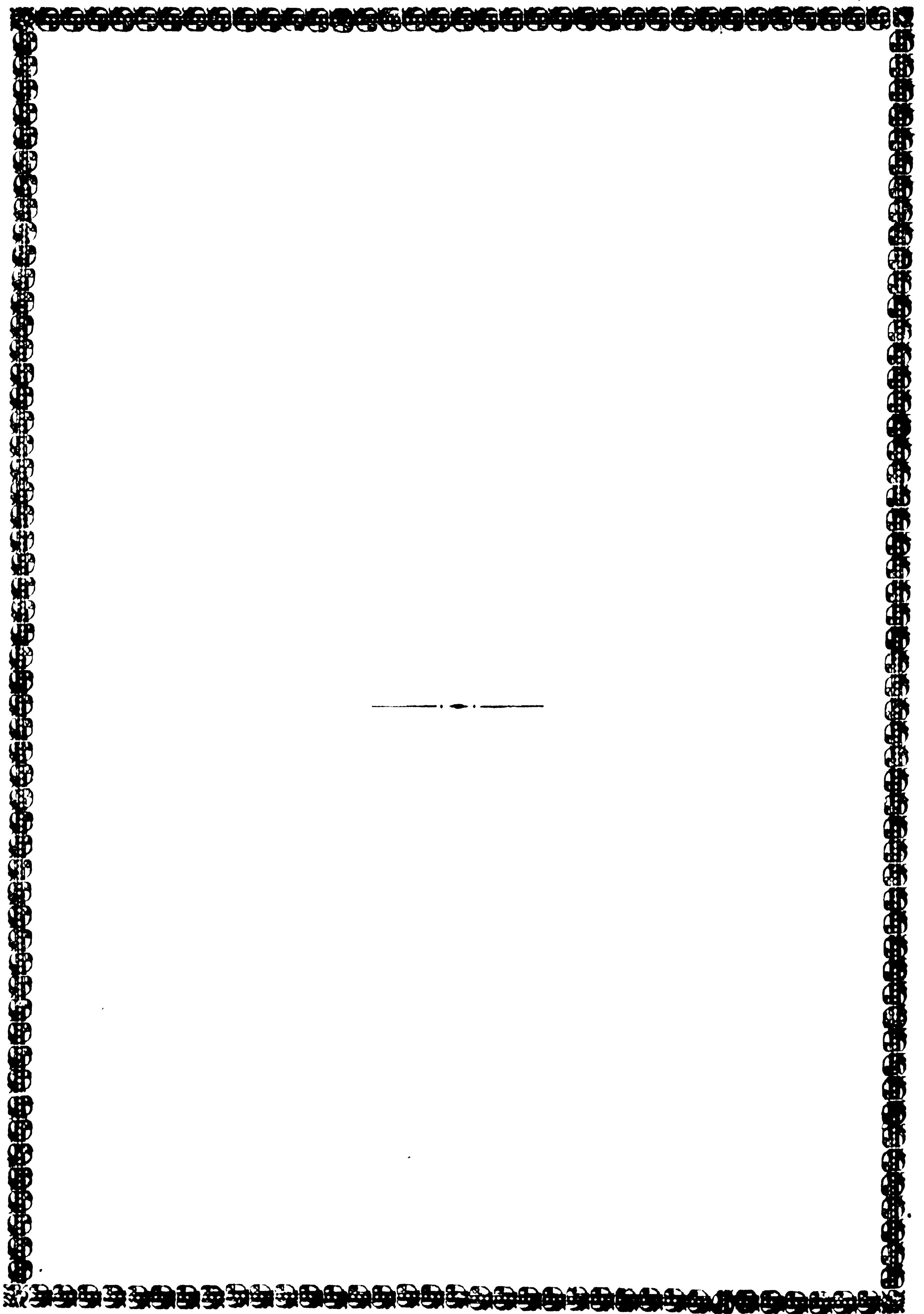
तिसमें भी ना शक्तिहोवे तद सौ १०० कौडीका दान करे अर यथाशक्तिदक्षिणा देवें गधा और घोडा और ऊठ और हरिण और हस्ती और बकरा और भिडु और मछ और सर्प और म हिष इनके मध्यमें एककोंभी एक वार मारकर्के एक मास जवांकापान करे जद इसमेंना सा मर्थ्या होवें तद दो २ धेनु दानकरे अर तिसमें भी ना सामर्थ्या होवे तव छे ६ कार्षापण दान करे अरशक्तिके अनुसारे दक्षिणा देवे अर अभ्यासमें कृच्छ्रातिकृच्छ्र व्रत करे इसमे ना सामर्थ्या होवे

तदशक्तौचूर्णीदानम् कपर्दिकाशतं १०० चूर्णी दक्षिणायथाशक्ति खराश्वोष्ट्रमृगहास्तिच्छागमेषमीनाहिमहिषाणांवधरूपेपुसकृत्करणेमासं यावकपानम् तदशक्तौद्विधेनू ० तदभावे षट्कार्षापणाः यथाशक्ति दक्षिणा अभ्यासेकृच्छ्रातिकृच्छ्रम् तदशक्तौ पंचधेनवः तदभावेपंचदश कार्षापणाः दक्षिणायथाशक्ति अत्यंताभ्यासे चान्द्रायणम् तदशक्तौसा र्द्धसप्तधेनवः तदभावेसार्द्धद्वाविंशतिकार्षापणाः दक्षिणायथाशक्ति ॥

इतिसंकरीकरणानि ॥ २ ॥

तव पंच ५ धेनु दानकरे तिसमे भी ना सामर्थ्या होवे तव पंदरां १५ कार्षापण दानकरे और शक्ति सें दक्षिणा देवे अर अतिशय कर्के अभ्यासमें चांद्रायण व्रतकरे तिसमें ना सामर्थ्या होवे तव सा डिआं सत्त ७ धेनु दानकरे इसमें भी ना सामर्थ्या होवे तव साडिवाईस २२ कार्षापण दान करे अर शक्तिसें दक्षिणा देवे धेनुका अर्द्ध पूर्वोक्त मुल्ल कर्के हिसानणा एह संकरी करण

॥ पाप समाप्त भया ॥



अथेति संकरीकरणतें उपरंत अपात्री करणपाप कहतेहैं ॥ इसकेविषें मनुजीकावाक्यहैं ॥ निंदितेति शूद्र और पापी इत्यादितोंतें दानलैणा औरशूद्रका कर्म करणा और शूद्रकी सेवा करणी और झूठ वोलना एह एक भी कर्म कीता होआ अपात्री करण पाप होताहै ॥ अप्रति इत्यादिपदोंकर्के इसी श्लोककाहि अर्थ कीताहै ॥ १ ॥ और याज्ञवल्क्यजीनें इसमें भेद कहाहै ॥ निंदेति ॥ निंदितादितोंतें दान लैणा और शूद्रका कर्म करणा और व्याज कर्के जीविका करणी और झूठ वोलना और शूद्रकी सेवाकरणी एह अपात्री करण पाप कहेहैयन और इसमै पूर्वोक्तसे वृद्धि जीवन अधिकहै प्रायश्चित्त रत्नादिग्रंथोंमें मनु वालाहि अपात्री

अथापात्रीकरणम् तत्रमनुः ॥ निंदितेभ्योधनादानंवाणिज्यंशूद्रसेवनम् अपात्रीकरणंज्ञेयमसत्यस्यचभाषणम् । १ । अस्यार्थःअप्रतिग्राह्यधनेभ्यः प्रतिग्रहो वाणिज्यं शूद्रस्यपरिचर्य्या अनृताभिधानं इत्येतत्प्रत्येकमपात्री करणंज्ञेयम् ॥ याज्ञवल्क्येनतु निंदितेभ्योधनादानं वाणिज्यं कुसीदजीवन मसत्यभाषणंशूद्रसेवनमित्यपात्रीकरणान्युक्तानि प्रायश्चित्तरत्नादौमनूक्तमेवापात्रीकरणलक्षणम् ॥ विष्णुस्मृतौतु याज्ञवल्क्यसमानम् ॥ अपात्रीकरणपापापायप्रायश्चित्तमाहमनुः। संकरापात्रकृत्यासुमासंशोधनमैन्दवमिति ॥ निन्दितेभ्योधनादानमित्यादिनाचापात्रीकरणान्युक्तानि तेषांमध्यादन्यतममिच्छातः कृत्वा चान्द्रायणंमासंशुद्धयेकुर्यादिति ॥ प्रायश्चित्तमयूखेविष्णुः अपात्रीकरणंकृत्वातप्तकृच्छ्रेणशुद्धयति

करण कथन कीताहै और विष्णुस्मृतिमें याज्ञवल्क्य वाला अपात्री करण कहाहै । अपात्रीकरण पापके दूर करण वास्ते प्रायश्चित्तको मनुजी कहतेहैं संकरेति संकरी करण और अपात्री करण पापों के विषें एक मासपर्यंत चांद्रायण व्रत करे तदशुद्धिहोतीहै इसीके अभिप्रायको कहतेंहै निन्दितेभ्य इति निंदितेभ्य इत्यादि कर्के कहे जो अपात्री करण पापहै तिनके मध्यमे एक किसीनें इच्छानालकीताहोवे तां तिसकी शुद्धि वास्ते एक मासपर्यंत चांद्रायण व्रतको करे ॥ प्रायश्चित्त मयूख विषें विष्णुजीने कहाहै ॥ अपेति अपात्री करणपापनू करनवाला तप्तकृच्छ्रनालशुद्ध होताहै

औंर शीतकृच्छ्र करके अथवा वारंवार महासांतपन व्रत करणेकरके शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ अज्ञानतें अपात्री करण पापके विषें तप्त कृच्छ्र अथवा शीत कृच्छ्रकरे ॥ ज्ञानके विषेमें पूर्व की न्याईं महासांतपन अथवा चांद्रायण व्रत नूं करे ॥ प्रायश्चित्त मयूखमें कहाहै कि आपदाकेविषे श्रेष्ट शूद्रकी सेवादे कीतिआं भी प्रायश्चित्तके योग्य नहि होता ॥ एह भेद दिखाआहै औंर प्रायश्चित्तेंदुशेखरमें भी लिखाहै ॥ अज्ञेति ॥ अज्ञानतें अपात्री करण पापकेविषें तप्तकृच्छ्र अथवा शीतकृच्छ्र नूं करे ॥ जब जानकरके करे तब महासांतपन अथवा चांद्रायण व्रत पूर्वकी न्याईं करे जब व्रतों मे ना सामर्था होवे तब नवीन सूई होई गौकादान करे इसमें भी ना समर्थाहोवे तब सौ १०० कौडीका दानकरे औंर शक्ति नाल दक्षिणा देवे ॥ औंर कहतेहैं निंदितेभ्य इति पतितादिउंतें दान लेणा औंर शूद्रका कर्म करणा औंर शूद्रकी

शीतकृच्छ्रेणवाभूयोमहासांतपनेनवा १ अज्ञानादपात्रीकरणेतप्तकृच्छ्रम् शीतकृच्छ्रंवा ज्ञानतोमहासांतपनं चांद्रायणंवापूर्ववत्। प्रायश्चित्तमयूखेएवापदिसच्छूद्रस्यकृतेऽपिसेवने प्रायश्चित्ताधिकारी न भवतीतिभेदोदार्शितः। प्रायश्चित्तेन्दुशेखरे अज्ञानादपात्रीकरणे तप्तकृच्छ्रम् शीतकृच्छ्रंवा ॥ ज्ञानतोमहासांतपनंचान्द्रंपूर्ववत् तदशक्तौधेनुदानम् तदशक्तौचूर्णीदानं दक्षिणायथाशक्ति ॥ निंदितेभ्योधनादानेवाणिज्येशूद्रसेवने असत्यभाषणेच सकृत्करणे चतुरहःसाध्यंतप्तकृच्छ्रंशीतकृच्छ्रं वा तदशक्तौसपाद धेनुः तदभावेएकोनचत्वारिंशत्कार्षापणाः अभ्यासेमहासांतपनम् तदशक्तौषड्धेनवः तदभावे अष्टादशकार्षापणाः यथाशक्तिदक्षिणा अत्यन्ताभ्यासेचान्द्रायणम् तदशक्तौसार्द्धसप्तधेनवः तदभावेसार्द्धद्वाविंशति कार्षापणाः। यथाशक्तिदक्षिणा ॥ इत्यपात्रीकरणानि ॥ ३ ॥ ❀

सेवाकरणी औंर झूठ वोलना इनके एक वार करणे में चार ४ दिनका तप्त कृच्छ्र अथवा शीत कृच्छ्र करे इसमें ना समर्था होवे तद एक धेनुका चौथाईंमुल्लउंर एक धेनुका दान करे इसमेंभी ना समर्था होवे तब उनताली ३९ कार्षापण दानदेवे अभ्यासके विषें महासांतपन व्रत करे इसमें ना सामर्था होवे तव छे ६ धेनु दानकरे ॥ एभी ना होसके तव अठारां १८ कार्षापणदानकरे औंर शक्तिनाल दक्षिणा देवे ॥ औंर अत्यंतअभ्यासमें चांद्रायण व्रत करे ॥ एभी ना होसके तद एक धेनु का आधा मुल्ल औंर सप्त ७ धेनु दान करे औंर एभी ना होसके तव साडे वाईस २२ कर्षापण दान करे औंर सामर्था नाल दक्षिणा दान देवे एह अपात्री करण पाप समाप्त भये ॥ ३ ॥ ● ❀

क्रम करके प्राप्त होआ जो मलावह पाप तिसको मनुजी कहतेहं ॥ कृमीति कीडिआं और कीडे और पक्षी इनांका मारणा और जो मदिराके साथ लिआंदा शाकादिहै तिसका भक्षण करणा और फल और लकडीआं और पुष्प इनां का चुराणा और थोडी जहि हानि दे होआं होआं वहुत व्याकुलता होणी एह एक भी कर्म मलिनी करण पाप है ॥ १ ॥ कृमि पद करके छोटे कीडे ग्रहण करणे ॥ तिनांते कुछक वडे जोहयन सो कीट पद करके ग्रहण करणे(वयः) इसपद करके पक्षिग्रहणकरणे इनांका मारणा अर एहि अर्थ स्पष्ट

क्रमप्राप्तंमलावहमाहमनुः ॥ कृमिकीटवयोहत्यामद्यानुगतभोजनम् फलैधःकुसुमस्तेयमधैर्यंचमलावहम् ॥ १ ॥ कृमयःक्षुद्रजंतवःतेभ्यईषत्स्थूलाःकीटाः । वयांसिपक्षिणःतेषांहत्यावधः मद्यानुगतं शाकाद्येकत्रपिण्कादौकृत्वामद्येनसहानीतंयद्भोज्यंतस्यभोजनम् केचित्तु मद्यानुगतंमद्यसंस्पृष्टमित्याहुः प्रायश्चित्तगौरवात्तदुपेक्ष्यम् ॥ फलकाष्ठपुष्पाणांचौर्य्यं देवतार्थेपुष्पचौर्य्येनदोषः ॥ अल्पेऽपचयेप्यत्यंतवैक्लव्यं एतत्प्रत्येकंमलिनीकरणम् याज्ञवल्क्येनतु जलचरपक्षिघातनमपिमलावहमुक्तम् इदमेवप्रायश्चित्तप्रकरणप्रायश्चित्तकदंवादौ वर्त्तते विष्णुस्मृत्यांच ॥

करी दाहै मद्येति मद्यानुगतं इस पद करके क्या लयणा कि मदिराके साथ एक टोकरे विच आंदाजो शाकादि भक्ष्यहै तिसका भक्षण करणा ॥ कैईक मद्यानुगतं इसपद करके मदिरा करके स्पर्श कीते होए कों ग्रहण करते हैं सो यथार्थ नहि क्योंकि उसमे प्रायश्चित वहुतहै ॥ इसमे इतनाभी अर्थ प्रकरणांतरका किहा होआ जानणा कि देवताके अर्थ पुष्प चुराणे का दोष नहि ॥ अर याज्ञवल्क्यजीने जल चर पक्षिका भी मारणा मलिनी करण पाप कहाहै ॥ एहि प्रायश्चित्त प्रकरण अर प्रायश्चित्तकदंव अर विष्णु स्मृति इत्यादिउंमें भी लिखाहै ॥

मलावह पाप के प्रायश्चित्तको मनुजी कथन करतेहैं ॥ मलिनीति मलिनी करण पापों के विषे जवां के काडे करके तीन ३ दिन तप्त कृच्छ्र करे इति ॥ इसीका अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं कृमीति कृमिकीट वयोहत्या इत्यादि करकें कथन कीते जो मलिनी करण पाप हैं तिनके मध्यमें इच्छा नाल एक कों भी कर्के तीन ३ दिन जवांके कोटेकों काहड कर्के भक्षण करे ॥ प्रायश्चित्त मयूख अर विष्णु स्मृति इनमें भी विष्णु जीका वाक्य है ॥ मलिनीति मलिनी करण पापोंके दूरकरणे वास्ते. तप्त कृच्छ्र व्रत है अथवा कृच्छ्रातिकृच्छ्र प्रायश्चित्त पापका शोधन वाला है ॥ १ ॥ इसमें अज्ञानतें मलि

मलावहप्रायश्चित्तमाहमनुः ॥ मलिनीकरणीयेषुतप्तःस्याद्यावकैस्त्र्यहम् ॥ कृमिकीटवयोहत्येत्यादिनामलिनीकरणान्युक्तानि तन्मध्यादेकमपीच्छातः कृत्वात्रिरात्रंयवागूंक्वथितामश्नीयात् ॥ प्रायश्चित्तमयूखे विष्णुस्मृत्यांच विष्णुः ॥ मलिनीकरणीयेषु तप्तकृच्छ्रंविशोधनम् कृच्छ्रातिकृच्छ्रमथवाप्रायश्चित्तंविशोधनम् १ अत्राज्ञानात्त्र्यहंयावकम् ज्ञानात्तप्तकृच्छ्रं अज्ञानतोऽभ्यासे कृच्छ्रातिकृच्छ्रम्॥ प्रायश्चित्तेन्दुशेखरे अज्ञानतोमलिनीकरणानुष्ठाने त्र्यहंतप्तयावकपानम् ज्ञानात्तप्तकृच्छ्रः महासांतपनंवा अज्ञानतोऽभ्यासे कृच्छ्रातिकृच्छ्रः ज्ञानतोऽभ्यासेद्विगुणम् ॥

नी करण विषे तीन ३ दिन जवां को भक्षण करे । जब जान करके पाप करे तब तप्त कृच्छ्र करे ॥ अर अज्ञानते अभ्यासमें कृच्छ्रातिकृच्छ्र व्रत करे ॥ प्रायश्चित्तेंदुशेखरमें भी लिखा है ॥ अज्ञानेति ॥ अज्ञानतें कीता जो मलिनी करणहै तिसके प्रायश्चित्ताऽनुष्ठानके विषे तीन ३ दिन जवांकों काहड करके पानकरे ॥ अर ज्ञानके विषे में तप्त कृच्छ्र अथवा महा सांतपन व्रत करे ॥ अर अज्ञानतें अभ्यासके विषेमें कृच्छ्राति कृच्छ्र व्रत करे ॥ अर ज्ञानते अभ्यासके विषेमें दो २ कृच्छ्रातिकृच्छ्र करणे चाहिए ॥

अर जब व्रत करणमें ना सामर्था होवे तव नवप्रसूता गौका दान करे ॥ इस्में भी ना सामर्था होवे तद सौ १०० कौडीका दान करे ॥ अर शक्ति नाल दक्षिणा देवे ॥ कृमि और कीडे और पक्षि इनके एक वार मारणेमें तीन ३ दिन जवांका जल भक्षण करे अर मद्यानुगत द्रव्यके भोजनमे अर्थात् जिसवस्तुके साथ मदिराकापात्र ल्यांदाहै तिसवस्तुके भोजनमे अर फल और काष्ट और पुष्प इनके चुराणके अभ्यासमें तप्तकृच्छ्र व्रत करे ॥ इस्में ना सामर्था होवे तव चार ४ नव प्रसूता गौआंका दानकरे इस्में भी ना शक्ति होवे तद बारां

प्रायश्चित्ताशक्तौधेनुदानम् तदशक्तौचूर्णीदानम् यथाशक्तिदक्षिणा ॥ कृमिकीटपक्षिणांहननेसकृदाचरणे त्र्यहंयावकम् मद्यानुगतद्रव्यभोजने फलकाष्ठपुष्पाणांस्तेयेऽभ्यासेतप्तकृच्छ्रम् तदशक्तौचतस्रोधेनवः तदभावे द्वादशकार्षापणाः ॥ अधैर्येऽत्यंताभ्यासे कृच्छ्रातिकृच्छ्रम् तदशक्तौपंच धेनवः तदभावेपंचदशकार्षापणाः यथाशक्ति दक्षिणा ॥ एतच्चतुष्टये प्रायश्चित्तानुक्तौ तारतम्यंस्वयमूह्यम् ॥ इतिमलावहानि ॥ ४ ॥ *



१२ कार्षापण दानकरे अर अधैर्यता जो पीच्छेकहीहै तिसके अत्यंताभ्यासमे क्या वहुवारकरणेमे कृच्छ्रातिकृच्छ्र व्रत करे ॥ अर व्रतमें ना शक्ति होवे तव पांच ५ धेनुका दान करे ॥ अर एभी ना कर सके तव पंदरां १५ कार्षापणका दान करे ॥ अर शक्ति नाल दक्षिणा देवे ॥ इन चारों पापांमें जहां प्रायश्चित्त नहि कहा तिस स्थानमें पापकी न्यूनता अधिकता देख करके प्रायश्चित्त करणा ॥ एहमलावहनाम वाले पापोंका प्रायश्चित्त किहाहोआ समाप्तहोया ॥ ४ ॥ * ॥

अथेति मलिनीकरण पापतें उपरंत क्रम करके प्राप्त होए जो प्रकीर्णक पापोंके प्रायश्चित्तहैं तिनांको कहतेहैं तिनके विषे मनुजी का वाक्यहै अन्येति पूर्व कथन कीते जो पापहैं तिनां ते भिन्न संपूर्ण प्रकीर्णक पापहैं तिसनू कथन करतेहैं ॥ सो कहाहै प्रायश्चित्त मुक्तावली के विषें नारदजीने राज्ञामिति राजओं की आज्ञाका अर तिस प्रकार तिनकेकथित कर्म का न करणा और एकवार संकल्प कीती होई वस्तु का फेर संकल्प करणा और स्वामी और वजीर और मित्र और तोशे खाना और राज्य और किला और सेना और पुरके लोकोंकीआं पंक्तिआं इन की बुद्धिकी विपरीत ता होणी अर्थात् स्वोचित धर्म्म का परित्याग १ और वेदके प्रमाणनूना मन्नन वाला और नास्तिक और तरखाण अर लुहारादि दश संस्कार रहित ४ इनके संगते अधर्म

अथ क्रमोपस्थितानि प्रकीर्णकपापप्रायाश्चित्तानि तत्रमनुःअन्यत्सर्वंप्रकीर्णकमिति पूर्वेभ्योऽन्यत् तत्तुवक्ष्यते तदुक्तं प्रायश्चित्तमुक्तावल्यां नारदेन राज्ञामाज्ञाप्रतीघातस्तत्कर्माकरणंतथा पुनःप्रदानंसंभेदःप्रकृतीनांतथैवच ॥ १ ॥ पाषण्डिनैगमश्रेणिगणधर्म्मविपर्य्ययाः पितापुत्रविवादश्चप्रायश्चित्तावपर्य्ययः ॥२॥ प्रतिग्रहविलोपश्चकोपश्चाश्रमिणामपि वर्णसंकरदोषश्चतद्वृत्तिनियमस्तथा नदृष्टंयत्तुपूर्वेषुसर्वंतत्स्यात्प्रकीर्णकम् ॥३॥ पुनःप्रदानं दत्तस्यैवदानम् संभेदोवैमत्यम् प्रकृतीनामित्यर्थः पाषण्डिनोवेदस्यप्रामाण्यमेवनमन्यमानाःसौगतादयः नैगमावेदस्यान्यप्रणीतत्वेनाप्रामाण्यवादिनः श्रेणयएकाशिल्पोपजीविनः गणोव्रात्यःएषांसंबंधाद्धर्मविपर्ययोऽधर्मः ॥

होणा और पिता पुत्रका झगडा और प्रायश्चित्त का विपर्य्यय करणा अर्थात् चांद्रायण व्र के विषे कृच्छ्र करणा अर कृच्छ्रके विषे तप्त कृच्छ्र करणा इत्यादि विपर्य्ययकरणाहै । २। और दाननू चुककर फेर उसकों छपालैणा और ब्रह्मचारी १ और गृहस्थी २ और बानप्रस्थी ३ और संन्यासी ४ इनके उप्परवृथाक्रोधकरणा और वर्ण संकर दोष और ब्राह्मणनेक्षत्रियादिओंके कर्म करके उपजीविका करणी और वडओंके विषें नही देखिआ जो कर्महै तिसका करणा एह संपूर्ण प्रकीर्णक पाप कहाहै ॥३॥ पुनः प्रदानं इत्यादि पदों करके इनो श्लोकोंकाहि अर्थ स्पष्ट कीताहै इन संपूर्णोंका प्रायश्चित्त साधारण प्रकरणमें देखलैणा ॥ और जो इसमें विशेष आवेगा सो किहाजावेगा ॥

और प्रकार कथन करतेहैं ॥ तिसके विषे याज्ञवल्क्य जीका वाक्यहै ॥ प्राणेति गर्दभ १ और ऊट २ इन करके युक्त जो बग्गी आदिक है तिसके उपर चढ करके जो पुरुष जाताहै और नंगा जो स्नान करताहै और धोती ना लाकर जो पुरुष अन्न खांदाहै और दिने अपणी स्त्रीके साथ मैथुन करताहै सो पुरुष तला और नदी आदि ओंकेविषे स्नान नूं करके पश्चात् प्राणायामको करे तो शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ एह इच्छाके विषयमें जानना इसी विषयमे मनुजी का वाक्यहै उष्ट्रेति ऊट और गर्दभ करके युक्त जो असवारीहै तिस उपर इच्छा सें जो आरूढ होताहै सो पुरुष सहित बस्त्रोंके जलविषे स्नान करके पश्चात्

प्रायश्चित्तविपर्ययो व्यत्ययेन चांद्रेकृच्छ्रकरणं कृच्छ्रे तप्तकृच्छ्रमित्यादि प्रतिग्रहविलोपोगृहीतप्रतिग्रहसंगोपनम् तद्वृत्तिनियमोवर्णसंकरवृत्तिः क्षत्रियादिवृत्तिस्तयानापद्यपिजीवनम् ॥ एषांप्रायश्चित्तं साधारणप्रकरणे द्रष्टव्यम् विशेषस्तूच्यते) ❀ तत्रयाज्ञवल्क्यः प्राणायामीजलेस्नात्वाखर यानोष्ट्रयानगः नग्नःस्नात्वाचभुक्त्वाचगत्वाचैवादिवास्त्रियम् १ ॥ अस्यार्थः खरयुक्तंयानंखरयानम् उष्ट्रयुक्तंयानमुष्ट्रयानम् रथगंत्र्यादि तेनाध्वगम नंकृत्वादिगंवरः स्नात्वाऽभ्यवहृत्यवा वासरेच निजांगनासंभोगं कृत्वाच तडागतरंगिण्यादाववगाह्यकृतप्राणायामःशुध्यति ॥ इदंच कामकारविषय म् उष्ट्रयानंसमारुह्यखरयानंतुकामतः सवासाजलमाप्लुत्यप्राणायामेनशु ध्यतीति मनुस्मरणात् अकामतःस्नानमात्रंकल्प्यम् साक्षात्खरारोहणे तुद्विगुणावृत्तिः कल्पनीया तस्य गुरुत्वात् ॥१॥ विष्णुरपि ॥ उष्ट्रेणवाग त्वानग्नःस्नात्वाभुक्त्वाच प्राणायामंकुर्य्यादिति ॥साक्षात्खरोष्ट्रारोहणेयमः खरयानमुष्ट्रयानंवाधिरोहेद्द्विजोत्तमः अपोवाप्रविशेन्नग्नस्त्रिरात्रंक्षप णंस्मृतमितिप्रायश्चित्तमयूखः ॥ १ ॥

प्राणायामके करणे करके शुद्ध होताहै और अकामके विषयमे केवल स्नानहीं कहाहै साक्षात् गर्द भउपर आरूढ होणेमें दो २ वार स्नान और प्राणायाम करणा चाहिए क्यों कि इसको बडा पाप होणेतें ॥ १ ॥ विष्णु जीका भी कथन है ऊटके उपर चडकर और नग्न होकर स्नान करके और नग्न होकर अन्न खा करके प्राणायाम नूं करे इति ॥ साक्षात् ऊट और गर्दभके विषे प्रायश्चित्त मयूखमें यमजीने कहाहै खरेति गर्दभ और ऊट इनकरके युक्त जो असवारीहै तिस उपर अथवा साक्षात् गर्दभ और ऊट उपर जो आरूढ होताहै और नग्न जो स्नान करताहै तिस पुरुषकी शुद्धिके वास्ते तीन रात्रि उपवास लिखाहै ॥ १ ॥

गुरुमिति पिता और ताउ और चाचू इत्यादिआं कों झिडक करके अर्थात् तूंहि केंदाथा अर तैनेंहि एह कीता इस प्रकार एक वचन उच्चारण करणे करके झिडक करके और ब्राह्मण और वडाभ्राता और छोटाभ्राता इनानूंभी क्रोधसें झिडक करके अर्थात् तूंचुप करके बैठ मत बोल इसप्रकार झिडक करके और झगडे सें अथवा हासेसें ब्राह्मणनूं जित्त करके अर वस्त्र करके थोडा जिआभी गलकें विषें बांधे तब उसके चरणानूं पकडकर क्रोधनूं त्यागकरा करके एकदिन उपवासकरे १। गुरुं जनकादिकं इत्यादि पदोंमे इस काहि अर्थहै ॥ जो यमजोनेकहाहै वादेनेति ब्राह्मणनूं झगडेसें जित्त करके प्रायश्चित्तकी इच्छा

गुरुंहुंकृत्यत्वंकृत्यविप्रंनिर्जित्यवादतः वद्ध्वावावाससाक्षिप्रंप्रसाद्योपवसेद्दिनम्॥१॥ गुरुंजनकादिकंतुंकृत्यत्वमेवमात्थ त्वयैव कृतमित्येकवचनांतयुष्मच्छब्दोच्चारणेन निर्भर्त्स्यविप्रं वा ज्यायांसं समंकनीयांसं वा सक्रोधंहुंतूष्णीमास्वहुंमावहुवादीरित्येवमाक्षिप्य जल्पवितंडाभ्यां जयफलाभ्यांविप्रंनिर्जित्यकंठे वाससा मृदुस्पर्शेनापि वद्ध्वा क्षिप्रंपादप्रणिपातादिनाप्रसाद्य क्रोधंत्याजयित्वादिनमुपवसेत् अनश्नन्कृत्स्नंवासरंनयेत् । यत्तुयमेनोक्तम् वादेनब्राह्मणंजित्वाप्रायश्चित्तविधित्सया त्रिरात्रोपोपितःस्नात्वाप्रणिपत्यप्रसादयेदिति ॥ १ ॥ तदभ्यासविषम्॥मनुः ॥ हुंकारंब्राह्मणस्योक्त्वात्वंकारंचगरीयसः स्नात्वानश्नन्नहःशेषमभिवाद्यप्रसादयेत् १ ताडयित्वातृणेनापिकण्ठेचावध्यवाससा विवादेवाविनिर्जित्यप्रणिपत्यप्रसादयेत् २ अर्थः हुंतूष्णींस्थीयतामित्याक्षेपंब्राह्मणस्यकृत्वा विद्यादिनाधिकस्य त्वंकारंचोक्त्वा अभिवादनकालादारभ्याहःशेषं यावत्स्नात्वा भोजनानिवृत्तः पादोपग्रहणेनापगतकोपं कुर्यादिति ॥

करके तीन ३ रात्रि उपवास रक्षकर स्नान करके ब्राह्मणके चरणांनूं पगड करके प्रसन्नकरे १ ॥ एह अभ्यासका विषयहै अर्थात् वहुतवार पाप करणेमे प्रायश्चित्तहै ॥ मनुजीका भी वाक्यहै हुमिति तूं चुप करके बैठ इसप्रकार ब्राह्मणकों झिडककर कहे अर तूंहि केंहदाहैं तैनेंहि कीताहै इसप्रकार विद्या करके अधिकनूं झिडक करके अर नमस्कार और स्नान इनांनूं करके तिससें लैकर रैंदा जेडा दिनहै तिसके विषें ब्राह्मणके चरणोंकों पगड करके प्रसन्नकरे । १ । अर जब तृणभी ब्राह्मणको मारे अर गल विषें वस्त्रपाए अर झगडे करके जित्ते तौभी चरणलें पगड करके प्रसन्नकरे अर्थः इत्यादि पदोंसें इसीका अर्थ स्पष्टकीताहै ॥ २ ॥

॥ कुशक और कहतेहैं ॥ विप्रेति ॥ ब्राह्मणकों मारणदी इच्छा करके सोटा उग्रणे में कृच्छ्र व्रत अर डंडा मारणेमें अति कृच्छ्र अर रुधिर निकालनेंमें कृच्छ्रातिकृच्छ्रव्रत शुद्धिका कारणहै ॥ अर मारणे करकें अंदर रुधिर पाणेमें भी कृच्छ्र व्रत शुद्धिका कारणहै ॥ १ ॥ विप्रजिघांसया इत्यादि पदोंमे इसीश्लोककाहि अर्थहै ॥ वृहस्पतिजीने इसमें विशेष कहाहै ॥ काष्ठेति काष्ठादिके मारणें करके त्वचा छेदन करे तब कृच्छ्र व्रतनूं शुद्धिके वास्ते करे अर जब पाषाणादि मार करके हड्डी भग्न देवे तब अतिकृच्छ्र व्रतनूं करे अर अंग छेदनमें पराकव्रत शुद्धिका कारणहै ॥ १ ॥ यमजीकाकथनहै॥ पादेनेति चरणकरके ब्राह्मणनूं स्पर्शकरे तब प्रायश्चित्तके बिधानकी इच्छा करके दिनके विषे उपवास करे अर स्नान करे ब्राह्मणनूं चरणतें पकड कर प्रसन्नकरे ॥ १ ॥ एह सानुबंध विषयमेंहै अर्थात् अनुबंध साथजो

किंच विप्रदंडोद्यमेकृच्छ्रस्त्वतिकृच्छ्रोनिपातने कृच्छ्रातिकृच्छ्रोऽसृकपाते कृच्छ्रोभ्यंतरशोणितइति १ विप्रजिघांसयादंडोद्यमेकृच्छ्रःशुद्धिहेतुः निपातनेताडनेअतिकृच्छ्रः रुधिरस्रवणेकृच्छ्रातिकृच्छ्रः ताडनादिनाअभ्यंतरशोणितेपिकृच्छ्रःशुद्धिहेतुः॥ वृहस्पतिनाप्यत्रविशेषउक्तः॥ काष्ठादिना ताडयित्वात्वग्भेदेकृच्छ्रमाचरेत् अस्थिभेदेऽतिकृच्छ्रःस्यात्पराकस्त्वंगकर्तने १ यमः॥ पादेनब्राह्मणंस्पृष्ट्वाप्रायश्चित्तविधित्सया दिवसोपोषितः स्नात्वाप्रणिपत्यप्रसादयेत् १ सानुबंधेएतत्अनुबंधश्चवाचाधर्षणम् इच्छापूर्वकदोषकरणमनुबंधइतिशब्दार्थचिंतामणिः ॥ तथा ॥ अवाच्यंब्राह्मणस्योक्काप्रायश्चित्तंविधीयते कृच्छ्रातिकृच्छ्रंकृत्वातुप्रणिपत्यप्रसादयेत् १ ॥ एतत्तुपीडातिशयऽनुबंधातिशयेच आक्रोशमनृतंहिंसामनुबंधंसमाचरेत् एकरात्रंत्रिरात्रंवाषड्रात्रंवाविधीयते ॥ २ ॥

पाद स्पर्शहै तिस विषे जानणा अनुबंध क्या वाणी करके जो निरादर करणा तिसका नामहै इच्छा सें जो दोष करणाहै तिसका नाम अनुबंधहै एह शब्दार्थ चिंतामणिमें लिखा है ॥ तिस प्रकार औरभी कहतेहैं अवेति ब्राह्मणकों खोटा वचन कहके प्रायश्चित्तनूं करे क्या कृच्छ्राति कृच्छ्र व्रतनूं करके चरणोंतें पकड कर ब्राह्मणकों प्रसन्न करे ॥ १ ॥ एहअतिशयकरकें पीडा अर अतिशय करकें अनुबंधके विषे जानणा ॥ अब और कथन करतेहैं आक्रोशमिति ब्राह्मण और गुरु और वृद्ध और सिद्ध इनको झूठी चोरी लगाणी और झूठा कथन करणा और हिंसा और इच्छा सें व्यभिचारादि अपराध करणा इनांनू आचरण करके एकरात्र अथवा तीन ३ रात्र अथवा छेः६ रात्र उपवासकरे ॥ २

मनुजीका वाक्यहै ॥ विनेति जलतेंविना अथवाजलकेमध्यमें जो पुरुष मूत्रऔर विष्ठा नूं करताहै सो ग्रामतेंबाहर जाकर सहितवस्त्रोंके नद्यादिमें स्नानकरके पीछेसें गौनूंस्पर्शकरके शुद्ध होताहै १ ॥ एह विनाकामनासें जो पापहै तिसकाविषयहै । असन्निहित इत्यादिपदोंमे इसश्लोककाहि अर्थहै अबकामनाके विषयमेकहतेहैं आपेति आपदाकेविषें जोपुरुषजलतें बिनामूत्र और पुरीष कों करदाहै अर्थात् जलतें बिना पिशाब और दिशा बैठदाहै सो एक दिन उपवास नूं करके पश्चात् समेत वस्त्रांदे जल विषे स्नानकरे एह यमजीका कथन जानना ॥ १ ॥ अनापदा केविषें इसतें दूणाकरे ॥ जो सुमंतुजीकावाक्यहै कि जलांके मध्यमें और अग्नि के विषें मूत्र और पुरीषकों जो पुरुष त्यागता है तिसको तप्तकृच्छ्र व्रत करणा चाहिए ॥ एह सुखवालेपुरुषका और अभ्यासकाविषयहै । अनभ्यासके विषे शंख और लिखितजी कहतेहैं रेत इति

मनुः ॥ विनाद्भिरप्सुवाप्यन्तः शारीरंसन्निषेव्यतु सचैलोवहिराप्लुत्यगामा लभ्यविशुद्ध्यति।१ असन्निहितजलोजलमध्येवाशारीरंमूत्रपुरीषादिकंकृत्वा सवासावहिर्ग्रामादूनद्यादौ स्नात्वा गां च स्पृष्ट्वाशुद्ध्यति ।इदमकामतः का मतस्तु आपद्गतोविनातोयंशारीरंयोनिषेवते एकाहंक्षपणंकृत्वासचैलो जलमाविशेदितियमोक्तंवेदितव्यम् अनापदितु द्विगुणम् यत्तु सुमंतुवचन म् अप्स्वग्नौ वामे हतस्तप्तकृच्छ्रमिति तदनार्त्तविषयमभ्यासविषयंवा अ नभ्यासेतु शंखलिखितौ रेतोमूत्रपुरीषाण्युदकेकृत्वात्रिरात्रोपोषितइदमा पः प्रवहतेत्यृचंजपेत् यमः अटव्यामटमानस्यब्राह्मणस्यविशेषतः प्रणष्टस लिलेदेशेकथंशुद्धिर्विधीयते॥१॥अपोदृष्ट्वैवविप्रस्तुकुर्य्याच्छौचंसचैलकम्॥ गायत्र्यष्टशतंजप्यंस्नानमेतत्परंभवेत् ॥ २॥ देशंकालंसमासाद्यानावस्था मात्मनस्तथा धर्म्मंशौचंचसंतिष्ठेन्नकुर्य्यान्वेगधारणम् ॥३॥ वेगोमलवेगः

जोपुरुष वीर्य और मूत्र और पुरीष इनांनू जलके विषे त्यागताहै सो पुरुष तीन १ रात्र उपवासनू रक्खकर इद माप प्रवहतइस ऋचांकों एकवार अथवा १० वार जपे यमजीका वाक्यहै (प्रश्न) अटव्यामिति वनके विषे गमन करदा होआ सुचेतहोणेकी इच्छावालाजो ब्राह्मणहै जलतें रहित देशके विषें तिसकी किसप्रकार शुद्धि विधानकीतिहै ॥ १ ॥ (उत्तर) तिसकी शुद्धि कहतेहैं ॥ अपइतिसो ब्राह्मणजलनूं देख करके सहित वस्त्रांदे शुद्धि नूं करेपश्चात् एक सौ आठ १०८ वारगायत्रीको जपे एह परम स्नानहोताहै ॥२॥ देशमिति देश और काल और अपनी अनवस्थाकों प्राप्तहोकरके धर्म और शुद्धि नू जैसादेखतैसा कर लेवे और मलके वेग नू कदेभी ना धारण करे क्यों किमलकावेग सहारणे सेरोगकी उत्पत्ति होजातीहै॥३

नित्यकर्मांके नाशके विषे मनु जी प्रायश्चित्त कथन करतेहैं ॥ वेदवितित वेदके विषे विधान कीते जो संध्यावंदन अग्नि हवनादि नित्य कर्महैं तिनके और मनुस्मृतिके चौथे ४ अध्यायमें कथन कीते जो स्नातक व्रतहैं तिनके नाशहोआं होआं एक १ उपवास व्रत कोंकरे ॥१॥ वेद विहित इत्यादिपदोंकर्केइसी श्लोककाहि अर्थस्पष्ट कीताहै ॥इसी विषे में वृहस्पतिजीका भी वाक्यहै ॥ अनीति पाठ १ और होम २ अतिथि पूजन ३ और तर्पण ४ और वैश्वदेववालि ५ इनापंचमहायज्ञांको न कर्के रोगादितें रहित होआ होआ और धनके भी होआं होआं जो गृहस्थी पुरुष अन्नका भक्षण करदाहै सो आधे कृच्छ व्रत कर्के शुद्ध होताहै ॥१॥ आहितेति अग्नि होत्री जो पुरुष अष्टमी १ और द्वादशी २ और अमावावास्या ३ और पौर्णमासी ४ और सूर्य्य संक्रांति ५ इन पंचपर्वांके विषे होमनूं नहि करदा

नित्यकर्म्मलोपेतुमनुः ॥ वेदोदितानांनित्यानांकर्म्मणांसमातिक्रमे स्नातकव्रतलोपेचप्रायश्चित्तमभोजनम् ॥१॥ वेदविहितकर्म्मणामग्निहोत्रादीनामनुपदिष्टप्रायश्चित्तविशेषाणांचपरिलोपे मनुचतुर्थाध्यायोक्तानांस्नातकव्रतानांच लोप जाते एकाहोपवासंव्रतंकुर्य्यात् ॥ वृहस्पतिः ॥ अनिर्वर्त्यमहायज्ञान्योभुंक्तेप्रत्यहंगृही अनातुरः सतिधनेकृच्छ्रार्द्धेनसशुध्यति॥१॥आहिताग्निरुपस्थानंनकुर्य्याद्यस्तुपर्वाणि ऋतौनगच्छेद्भार्य्यायः सोपिकृच्छ्रार्द्धमाचरेदिति॥२॥स्नातकव्रतमधिकृत्यक्रतुनाप्युक्तम्॥एतेषामाचाराणामेकैकस्यव्यतिक्रमेगायत्र्यष्टशतंजप्त्वापूतोभवति॥ अत्रविशेषोऽग्रेबोध्यः । ऋष्यशृंगः॥ इन्द्रचापपलाशाग्नियद्यन्यस्यप्रदर्शयेत् प्रायश्चित्तमहोरात्रंधनुर्दंडश्चदक्षिणेति ॥१ ॥इन्द्रचापोमेघांतरीयःअकस्मात्पलाशेपुपत्रेपुजातोयोऽग्निःसपलाशाग्निः इंद्रचापप्रदर्शनेधनुर्दक्षिणा पलाशाग्निप्रदर्शनेदंडइति

और जो पुरुष ऋतुकालके विषेअपणी स्त्रीमें गमन नहि करदा सोभी अर्द्धकृच्छ्र व्रत नूं करे ॥ २ स्नातक व्रतकों अधिकार करके ऋतुजीनेभी कहाहै ॥ एतइति इनां कर्म्मां के मध्यमें एकके भी व्यतिक्रमके विषय अर्थात् नाशदे होआंहोआं गायत्रीको एकसौ आठ वार १०८ जप करके पवित्रहोता है ॥ इसके विषय अधिक कहणाहै सो आगे जाणलैणा ऋष्यशृंग जीका वाक्यहै मेघ वर्षणतें पीछे जो आकाशके विषें इंद्रका धनुष पडताहै तिसकों और पत्रांके विषे स्वभावक उत्पन्न होआ जो अग्नि है तिसकों जद औरी पुरुषकों दखावे तब एक दिन रात्र उपवास करे अर धनुष और दंड एह दक्षिणा देवे अर्थात् इंद्रचाप दखाणेमें धनुष दक्षिणा अर पलाशअग्नि दखाणेमें दंडा दक्षिणा ॥ १ ॥

शंखऋषिका वचनहै अध्येति॥पलाशवृक्षकी खट्ट और गाडी और पौये और दातन इनांकों प्राप्तहोकरके ब्राह्मण और क्षत्रि और वैश्य तीन ३ रात्र उपवास व्रतकरे।१। अव क्षत्रीकों युद्ध के विषय नसनेका दोष कहतेहैं क्षत्रीति क्षत्रीजो युद्धके विषय मृत्युतें डरता होआ नरसआवे अर फलवाले वृक्षकों जो काटताहै सो पुरुष एक वर्षपर्यंत व्रतकोंकरे इसमें यावक व्रतग्रहण करणा अर्थात् यव भक्षणकरणे पूर्वोक्त शंखजीके वाक्यतें।२। दो ब्राह्मणआदिके वीचलंघणे का दोष कहतेहैं ॥ द्वाविति दो ब्राह्मण १ ब्राह्मण और अग्नि २ अर स्त्री और पति ३ अर गौ और बैल ४ इनके मध्यमे जवपुरुष लंघे तव सांतपन कृच्छ्र व्रतकों करे ॥ ३॥ इसी विषयमें जो अंगिरा ऋषिका वाक्यहै ॥ दंपती स्त्री और भर्ता अर दो ब्राह्मण

शंखः ॥ अध्यास्यशयनंयानंपादुकांदन्तधावनम् द्विजःपलाशवृक्षस्यात्रिरात्रंतुव्रतीभवेत्।१।क्षत्रियस्तुरणेपृष्ठंदत्वाप्राणपरायणः। संवत्सरंव्रतंकुर्य्याच्छित्वावृक्षंफलप्रदम्।२। व्रतमत्रयावकंशंखोक्तत्वात्।॥।द्वौविप्रौब्राह्मणाग्नीचदंपतीगोवृषौतथा अन्तरेणयदागच्छेत्कृच्छ्रंसांतपनंचरेत्॥ ३ ॥ यत्त्वंगिराः दंपत्योर्विप्रयोरग्न्योर्विप्राग्न्योर्वाद्विजातिषु अंतरंयोऽवगच्छेत्तुद्विजश्चान्द्रायणंचरेदित्येतत्कामकारविषयमभ्यासविषयंच॥होमकालेतथादोहेस्वाध्यायेदारसंग्रहे। अन्तरेणयदागच्छेद्द्विजश्चान्द्रायणंचरेत्।२। एतच्चमार्गान्तरसंभवेसतिद्रष्टव्यम् दोहे सान्नाय्यांगभूते ॥

२ दो अग्निआ ३ अर ब्राह्मण और अग्नि ४ इनकेमध्यमे ब्राह्मण और क्षत्री अथवा वैश्य जो लंघता है सो पुरुष शुद्धिके वास्ते चांद्रायण व्रतकोंकरे । १ । एहकाम और अभ्यासका विषयहै ॥ अव और कथन करतेहैं । होमेति होम कालके विषय तिसप्रकार गौके दोहन समयमें अर अध्ययन समयमें अर विवाह समयमें ब्राह्मण अर क्षत्रि अथवा वैश्य जद मध्यमें लंघताहै सो शुद्धिके वास्ते चांद्रायण व्रतकोंकरे एहदोष दूसरे मार्गके होआंहोआ जानणा जेकर और मार्ग नहोवे तव इसका दोषनहि जानणा इसजगा जो दोहनहै सो सान्नाय्यांग रूपजो यज्ञ कर्म्म तिसके अर्थवाले दोहनमे जानणा ॥ २ ॥

जलतें विना मूत्र उोर पुरीष करणमें सुमंतुका भी वाक्यहै अनुदेति जलतें विना मूत्र उोर पुरीषइ नके त्यागनेके विषय अर नख उोर वाल उोर रुधिर इनके भक्षण करणेमें तात्काल स्नान करे अर घृत उोर कुशा उोर स्वर्ण इनका जल पानकरे इसमें घृतादि पानकों प्रायश्चित्तके अर्थ हो णेतें भोजन भक्षण न करणा किंतु उसीको भोजनके स्थानसमझणा यत्त्विति जो मूत्रउोर पुरीष इनके कीतिआं जद जल न होवे तब जलकोंप्राप्त हो करके सहित वस्त्रांदे स्नान करके पी छेते शुद्ध होताहै इह वाक्यहै ॥ १ ॥ उोर जो शातातपका वाक्यहै अनुदेति जलतें विना मूत्र उोर पुरीष करणेमें सहित वस्त्रांके स्नानकरे उोर सप्त महाव्याहृतिआं करके हवन करे एह

अनुदकमूत्रपुरीषकरणे सुमंतुरपि अनुदकमूत्रपुरीषकरणेनखकेशरुधि रप्राशने सद्यःस्नानं घृतकुशहिरण्योदकपानंचेति अत्र घृतादिपान स्य प्रायश्चित्तार्थत्वाद्भोजननिषेधः यत्तुकृतेमूत्रेपुरीषेवायदानैवोदकंभ वेत् स्नात्वालब्ध्वोदकंपश्चात्सचैलस्तुविशुद्ध्यतीति १ यच्च शातातपः अनुदकमूत्रपुरीषकरणे सचैलंस्नानंमहाव्याहृतिहोमश्चेति तदकामतः तथा नोदन्वतोंभासिस्नायान्नचश्मश्रवादिकर्त्तयेत् अंतर्वत्न्याः पतिःकुर्व न्नप्रजोभवतिध्रुवम् ॥ १ ॥ अयंचनिषेधःसप्तममासादूर्ध्वम् तथाच त्रि स्थलीसेतौवचनम् वपनंमैथुनंतीर्थंवर्जयेद्गर्विणीपतिःश्राद्धंचसप्तमान्मा सादूर्ध्वंनाऽन्यत्रवेदाविदिति ॥ १

वाक्य अकामके विषयमे जानने॥तिस प्रकार गर्भवाली स्त्रीके पतिको समुद्र स्नानादिका निषेध करतेहैं नविति गर्भवाली स्त्रीका पति समुद्रके जलविषय स्नान न करे अर दाढीआदिकें वा लांनू भी न कटावे जो कदाचित् एह काम करे तब निश्चय करके संतानतें रहित होताहै एह निषेध सप्तम मासतें उपरंत जानना सप्तम मासतें उरे इनका दोष नहि जानना १ ॥ तिस प्रकार त्रिस्थली सेतुमें भी किसेका वचन लिखाहै वपनमिति गर्भवाली स्त्रीकापति वेदके जानने वाला सप्तम मासतें उपरंत मुंडन उोर मैथुनउोर तीर्थयात्रा उोरश्राद्धका भोजन इनानूं नसेवे १

इस विषय साधारण प्रायश्चित्त जोडनें योग्यहै तैसे दखाते हैं ॥ प्राणेति इसजगा ऐसा अर्थ करणाकि उपपातक जिनोंतें उत्पन्न होतेहैं जैसे अवगूरणादिते गोवध रूप उपापतक उत्पन्न होताहै ऐसे सभपापांके दूरकरणे वास्ते और अनादिष्टजोपाप हैं (नोदन्वतोंभसिस्नायात्) इत्यादिश्लोंकांकर्के कहेहोए तिना सबनां पापांके दूरकरणे वास्ते १०० प्राणायामकिहाहै सर्व शब्दका अन्यइस रीतिसें लगाणा यथा श्रुत नहि लगाणा क्योंकि १०० प्राणायामसे सारे पाप नहि दूरहो सके ॥१॥ याज्ञवल्क्यजीका वाक्य कथनक रतेहैं देशमिति देश

श्राद्धंश्राद्धभोजनमित्यर्थः अत्र सामान्यप्रायश्चित्तंयोज्यम् तद्यथाप्राणायामशतंकार्य्यंसर्वपापापनुत्तये उपपातकजातानामनादिष्टस्यचैवहीति ॥ १ ॥ याज्ञवल्क्यः देशंकालंवयःशक्तिंपापंचावेक्ष्ययत्नतःप्रायश्चित्तंप्रकल्प्यंस्याद्यस्यचोक्तानानिष्कृतिरिति १ ॥ मनुः॥शरणागतंपरित्यज्यवेदंविप्लाव्यचद्विजः संवत्सरंयवाहारस्तत्पापमपसेधति॥१॥अर्थः॥परित्राणार्थमुपगतं शरणागतं शक्तःसन्नुपेक्षतेयोद्विजःअनध्याप्यवेदमध्याप्य एतज्जनितंपापं संवत्सरं निरंतरं यवाहारोऽपनुदति उपपातकानिगोवधादीनिजातानियेभ्योऽवगूरणादिभ्यस्तानितेपांचपुनरनादिष्टस्यनोदन्वतोंभासिस्नायादित्यादिनाकथितसर्वपापापनुत्तये प्राणायामशतंकार्य्यमित्यर्थः

और कालऔर आयुषा और बल और पाप इनांनू देखकरके यत्ननाल प्रायश्चित्त कल्पना करना चाहिए अरजिसपापका प्रायश्चित्त नहिकहा तिसका भी यथा योग्य प्रायश्चित्त कल्पना करणा चाहिए ।१।आगे मनुजीका वाक्यहै॥ शरेति रक्षाके अर्थ वास्ते शरणी आनपडा जोपुरुषहै तिसनू जो समर्थ होआ पुरुष त्याग देताहै और वेदनू आप ना पढ करके जो पुरुष दूसरेनू भडाताहै सो पुरुष एक १ वर्ष पर्यंत यवांनू भक्षण करदा होआ तिस पापनूं दूर करताहै अर्थः इत्यादि पदों कर्के इसी श्लोक का हि अर्थ कीताहै ॥ १॥

षट्त्रिंशत्के मतविषय यमजीका वाक्यहै ॥ चांडालेति वेदऔर मन्वादिस्मृति इनके पाठनूं चांडाल श्रवण कर लेवे तब पाठ करणेवाला पुरुष एकरात्र उपवास व्रत करे ॥ वसिष्ठजी कहतेहैं ॥ पतितेति ॥ पापी और चंडाल और धूर्त इनके समीप जानकरके जो वेद पढे तब तीन ३ रात्र उपवास करें वाणिनूंरोक करके स्थितहोंणा भोजन नूं न भक्षण करदेहोए स्थित होणा अथवा जितनाक पाठ चांडालादियोंने श्रवण कीताहै तितने पाठ नूं हजार १००० वार जपें तद पवित्र होतेहैं ॥ शठश्रावणं इत्यादिपदोंमें एहि अर्थहै ॥ सर्पादिकेमध्यमें गमन करणेमें यमजी

षट्त्रिंशन्मते ॥ यमः ॥ चांडालश्रोत्रावकाशे श्रुतिस्मृतिपाठे एकरात्रमभोजनमिति वृद्धिकृते तु वासिष्ठआः ॥ पतितचांडालशठश्रावणे त्रिरात्रम् वाग्यता अनश्नंत आसीरन् सहस्रपरंवा तदभस्यन्तःपूताभवंतीति विज्ञायते शठश्रावणं शठसंन्निधावध्ययनम् सहस्रपरमितियावान्भागश्चांडालादिभिःश्रुतस्तावंतंभागंसहस्रकृत्वोजपेदित्यर्थः ॥ सर्पादेरंतरागमनेतुयमआह ॥ सर्पस्यनकुलस्याथअजमार्जारयोस्तथा मूषकस्यतथोष्ट्रस्यमंडूकस्यचयोषितः १ पुरुषस्यैडकस्यापिशुनोऽश्वस्यखरस्यच अन्तरागमने सद्यः प्रायश्चित्तमिदंशृणु त्रिरात्रंह्युपवासश्चात्रिरहश्चाभिषेचनामिति २

किसेके प्रति कहतेहैं ॥ सर्पेति सर्प और नेउल ॥ और बकरा और बिल्ला ॥ और तिसी प्रकार चूहा और तिसी प्रकार ऊठ॥ और डिड्डू और स्त्री ॥ १ ॥ और पुरुष और भिड्डू और कुत्ता और घोडा अथवा गधा इनके मध्यमें लंघनके विषय तात्काल प्रायश्चित्तनूं श्रवण कर क्याकि तीन रात्र उपवास अर तीन दिन तिन्नां कालांके विषय स्नान करणा २ ॥ इस विषयमें भी दोष और किसी मार्गके विद्यमान होआं जानना जेकर और मार्ग न होवे तां इनके मध्यमें लंघनेका दोष नहि ॥

प्रकीर्णेति प्रकीर्णक प्रायश्चित्त करणमे जद समर्थ न होवे तद नवीन सूई होई एक गौका दानकरे जब इसमें भी समर्था न होवे तव एक सौ १०० कौडी दान करे अर शक्तिके अनुसार दक्षिणा देवे ॥ अपणी स्त्रीकों मिथ्यादोषारोपणके विषय यम जीका वाक्यहै स्वभार्यामिति तूं नहि मैथुन करणेके योग्य ऐसें जद पुरुष अपणी स्त्रीको क्रोधतें कथन करे तद ब्राह्मण प्राजापत्य व्रत कों करे अर क्षत्री नौ ९ दिन व्रत करे अर वैश्य छे ६ रात्र व्रत करे अर शूद्र तीन ३ रात्र व्रत करे ॥ १ ॥ स्नानतें विना भोजनादिके विषय हारीतजी कथन

एतदपिमार्गांतरसंभवेसतिज्ञेयम्) प्रकीर्णकप्रायश्चित्ताशक्तौ धेनुदानम् ॥ तदशक्तौचूर्णीदानम् ॥ कपर्द्दिकाशतंचूर्णी यथाशक्ति दक्षिणा स्वभार्याभिशंसनेतुयमः ॥ स्वभार्यांतुयदाक्रोधादगम्येतिनरोवदेत् प्राजापत्यंचरेद्विप्रःक्षत्रियोदिवसान्नव षड्रात्रंतुचरेद्वैश्यस्त्रिरात्रंशूद्रश्चरेत् ॥ १ ॥ अस्नातेभोजनादौ हारीतआह ॥ वहन्कमंडलुं रिक्तमस्नातोऽश्नंश्चभोजनम् अहोरात्रेणशुद्धःस्याद्दिनजप्येनचैवहीति ॥ १ ॥ एतच्चा रोगिस्नाने क्लेशदायिस्थानविशेषादिस्नानव्यतिरिक्तेद्रष्टव्यम् एकपंक्त्युपविष्टानांस्नेहादिना वैषम्येण दानादौ यमआह ॥

करतेहैं वहेति ॥ सखणे लोटे नू धारदाहोआ और स्नानतें विना जो पुरुष भोजन भक्षण करदाहै सो एक दिनरात्र उपवास करणे करके अर दिनके विषय जप करणे करके शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ एह प्रायश्चित्त अरोगि स्नान विषें औंर कष्टदे देणे वालाजो पर्वतादिहै तिसतें विनाग्रहण करणा अर्थात् रोगी पुरुषकों औंर वरफादि करके युक्तजो स्थानहै उसके विषय दोष नहि ॥ एक पंक्तिके विषें वैठे होए जो पुरुष हैं तिनकों न्यून अधिक घृतादि देणके विषय यमजी दोष कहतेहै ॥

नेति एकपंक्तिके विषे भेदकरके न देवे अर न मांगे अर नकिसीको दुवाए क्यों कि मांगने वाला अर दुवाणेवाला अर देणे वाला एह स्वर्गकों नहि प्राप्तहोते अर्थात् नरककों प्राप्त होते हैं और प्राजापत्य अथवा कृच्छ्र व्रतकोंकरके तिसकर्मतें शुद्धहोतेहैं ॥१॥ इसस्थानमें विषम क्या न्यूनताअधिकता भोजनखानवालिआंकी इच्छादे होआं होआं जाननी अर्थात् भोजन खाण वालेकी इच्छाहोवे अर वो न देवे तद दोषहै जेकर तृप्त होरएहोण एक न तृप्त होवे तदभी दोष नहि इसीविषयमें शंखजीका वाक्यहै एकेति एकपंक्तिकेविषें भोजन करदे जो पुरुषहैं तिनाकों जोभेद सें देताहै अर्थात् एककों बहुत एककों थोडा देताहै और जो भेदकरके मांगता है सो पुरुष ब्रह्महत्यारेके व्रत नूं एकपक्ष १५ पर्यंत करे ॥ १ ॥ यमजीका वाक्य है ॥ नदीति

नपंक्त्यांविषमंदद्यान्नयाचेतनदापयेत् याचकोदापकोदातानवैस्वर्गस्य गामिनः प्राजापत्येनकृच्छ्रेणमुच्यंतेकर्मणस्ततः १ विषममत्रसहोपविष्टभोजकांतराकांक्षानिरासे सति वोध्यम् ॥ शंखः ॥ एकपंक्त्युपविष्टानांविषमंयःप्रयच्छति यश्चयाचत्यसौपक्षंकुर्याद्ब्रह्महणिव्रतम् १ याचति याचते ॥ यमः ॥ नदीसंक्रमहंतुश्चकन्याविघ्नकरस्यच समेविषमकर्त्तुश्च निष्कृतिर्नोपपद्यते ॥ १ ॥ त्रयाणामपिचैतेषांप्रत्यापत्तिंतुमार्गताम् भैक्ष्यलब्धेनचान्नेनद्विजश्चांद्रायणंचरेदिति ॥ २ ॥ संक्रम उदकावरणमार्गः समे पूजादौ ॥ पतितादिसंभाषणे तु गौत्तमआह ॥ नम्लेच्छाशुद्धाधार्मिकैः सहसंभाषेत संभाष्यपुण्यकृतोमनसाध्यायेद्ब्राह्मणेन वासहसंभाषेत

नदीके घाटकों जो ढादेताहै अर कन्याके विवाहादिके विषय विघ्नकों करदा है अर पूजादिके विषयमें विषमता करदा है इनकी शुद्धि नहि होती ॥ १ ॥ इनतीनोंकी शुद्धिदेखणी चाहिए किभिक्षादे अन्नकरके ब्राह्मण अर क्षत्रि अथवा वैश्य चांद्रायणव्रतनूंकरे । २ संक्रमइत्यादिपदोंमें इसीका अर्थस्पष्टकीताहै और पतितादिके संभाषणके विषय गौत्तमजीका वाक्यहै नेति म्लेच्छ और अशुद्ध औरअधार्मिक इनके साथ धार्मिक पुरुष संभाषण न करे जेकर संभाषण करेतांपुण्यदेकरण वालिआं पुरुषांनूं राजा नल और युधिष्ठिरादिकाकों मनकरके स्मरणकरे अथवा ब्राह्मणके साथ संभाषण करे तो शुद्ध होताहै

म्लेच्छ नाम उसकाहै जो गौका मांसभक्षण करणवाला यवनजाति विशेष होवे और अशुद्ध उसका नामहै जो रजस्वलागमनादिवालाहोवे शय्या और धनके लाभके विघ्न विषय भिन्न भिन्न वर्षांकों कहतेहैं ॥ इसी स्मृति का अर्थ लिखतेहैं भार्य्येति स्त्री अर अन्न अर धन एह किसीकों प्राप्त होने लगें तिस विषय जो विघ्न करणाहै तिसके विषयमें एक एक वर्ष सामान्य ब्रह्मचर्य लिखाहै अर्थात् इस ब्रह्मचर्य्यमे स्त्री संभोगते विना और कोई विधान नहि चौरादिके दंड त्यागके विषय वसिष्ठजी का वाक्यहै दंडविति राजा चोरादिकों जब दंड न देवे तब एक रात्र उपवासकरे अर राजाका पुरोहित तीन ३ रात्र उपवासकरे अर दंडके योग्य नहि जो पुरुष तिसको जब राजा दंडदेवे तब पुरोहित कृच्छ्र व्रत करे अर राजा तीन ३ रात्र उपवासकरे ॥ कुनेति कुनखी क्या खोटे नखां वाला अर स्वभाव

म्लेच्छा गोमांसभक्षका यवनविशेषाः अशुद्धाउदक्यादिगामिनः तल्पान्न धनलाभवधे पृथग्वर्षाणीति ॥ भार्यान्नधनानांलाभस्यवधे विघ्नकरणेप्रत्ये कंसंवत्सरंप्राकृतंब्रह्मचर्य्यमित्यर्थः प्राकृतंसामान्य मष्टविधस्त्रीसंभोग त्यागरूपं नतु साविधानम् ॥ चौराद्युत्सर्गादौवसिष्ठः ॥ दंडोत्सर्गेराजैकरात्र मुपवसेत्त्रिरात्रंपुरोहितः कृच्छ्रमदंड्यदंडे पुरोहितास्त्रिरात्रंराजा कुनखी श्यावदंतश्च कृच्छ्रं द्वादशरात्रंचारित्वोद्धरेयातामिति ॥ दंतान्नखांश्चेत्य भिप्रेतम् ॥ स्तेनपतितादिपंक्तिभोजनेतु मार्कण्डेयः ॥ अपांक्तेयस्ययःक श्चित्पंक्तौभुंक्तेद्विजोत्तमः ॥ अहोरात्रोषितोभूत्वापंचगव्येनशुद्ध्यतीति १

तोंहैं कालिआं दंदां वाला एह दोनों बारां १२ दिन कृच्छ्र व्रत कों करके खोटिआं नखां की अर दंतांकी कृष्णता कों त्यागदेते हैं अर्थात् तिस्रोगतें रहित होतेहैं क्योंकि लिखाहै कि स्वर्णके चुराणे वाला कुनखी होताहै अर मदिराके पान करणे वाला श्यावदंतक होताहै इस वास्ते तिनकों प्रायश्चित्त करणा चाहिए ॥ चोर और स्वधर्म त्यागी इत्यादियों की पंक्तिके भोजन विषयमें मार्कंडेयजीका वचनहै ॥ अपामिति पंक्तिके अधिकारतें रहित जो चोरादि हैं तिनके साथ एक पंक्तिके विषय बैठ करके ब्राह्मण और क्षत्री अथवा वैश्य इनके मध्यमें श्रेष्ट जो पुरुष भोजन करताहै सो एक १ दिन रात्र उपवास रक्ष कर पश्चात् पंचगव्य करके शुद्ध होताहै ॥ १ ॥

भविष्य पुराणमें नीलका दोष लिखाहै ॥ नीलीति नीलके क्षेत्रके बिचों जद अज्ञानतें कदाचित् ब्राह्मण लंघजावे तद एक दिन रात्र उपवासकों करके शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ अब नीलकी दातनका दोष कहतेहैं ॥ कुर्य्येति जो पुरुष अज्ञानतें नीलके काष्ठकी दातन करताहै तद सो पुरुष एक दिन रात्र उपवासकों करके पश्चात् पंचगव्य करके शुद्ध होताहै २ ॥ नीलीरसके अंदर जानेमे आप स्तंवजी दोष कहतेहैं रोमेति जव तीनो वर्णों मेंसें किसीपुरुष के रोमकूपोमें नीलीका रस चला जावे तो सामान्य से तप्तकृच्छ्र व्रत प्रायश्चित्त कहाहै ॥ १ उाैर ब्राह्मणका पाप तीन ३ कृच्छ्रों कर्के शुद्ध होताहै औरनीलीकी दातनादिकरनेसें ब्राह्मणके

भविष्ये नीलीमध्येयदागच्छेत्प्रमादाद्ब्राह्मणःक्वचित् अहोरात्रोषितोभूत्वा पंचगव्येनशुद्ध्यति ॥ १ ॥ कुर्य्यादज्ञानतोयस्तुनीलीजंदंतधावनम् एक रात्रोषितोभूत्वापंचगव्येनशुद्ध्यति ॥ २ ॥ आपस्तंबः॥ रोमकूपेयदागच्छे द्रसोनील्यास्तुकस्यचित् त्रिवर्णेषुचसामान्यंतप्तकृच्छ्रंविशोधनम् ॥ १ ॥ पातनंचभवेद्विप्रेत्रिभिःकृच्छ्रैर्व्यपोहति ॥ नीलीदारुयदाभिंद्याद्ब्राह्मणस्यश रीरतः शोणितंदृश्यतेयत्रद्विजश्चांद्रायणंचरेत् ॥ २ ॥ नीलीरक्तंयदावस्त्रं ब्राह्मणोंगेषुधारयेत् अहोरात्रोषितोभूत्वापंचगव्येनशुद्ध्यति ॥ ३ ॥ भृगुः स्त्रीधृताशयनेनीलीब्राह्मणस्यनदुष्यति नृपस्यवृद्धवैश्यस्यपर्ववर्जंविधारण म् ॥ १ ॥ विधिनाधारणंविधारणं नसाक्षात् तदपिपर्वसु संक्रांत्यादिषु न धार्य्यमित्यर्थः ॥

शरीरतेंजब रुधिर निकले तव द्विज अर्थात् ब्रह्मण क्षत्री वैश्यएह चांद्रायणव्रतकों करे तो शुद्धहोताहै २ नीलीति जद नील करके रंगे होए वस्त्रकों ब्राह्मण शरीरके विषय धारण करे तब एक १ दिन रात्र उपवास व्रत कों करके पश्चात् पंचगव्य कर्के शुद्ध होता है ॥ ३ ॥ इसीमें भृगुजीका भी वचन है ॥ स्त्रीति स्त्रीनें धारिआ होआ जो नीला वस्त्रहै स्त्रीकी क्रीडा समयके विषय ब्राह्मणकों तिसका दोष नहि क्षत्री अर वृद्धवैश्यइनकों पंच पर्वोतें विना विधिकरके नीले वस्त्रका धारणा लिखाहै अर्थात् संक्रांति अर अष्टमी और द्वादशी और अमावस्या और पौर्णमासी इनपंचपर्वोंमे विधि करके भी नहि धारणा लिखा १

वस्त्रके भेद करके इसका दोष नहि सो दखातेहैं ॥ कंवेति कंवलके विषय अर पट्टके वस्त्रके विषै नीलके रंगका दोष नहि अर्थात् नीली लोई अर नीला पट्टका वस्त्र इनके धारणेका दोष नहि ॥ भविष्य पुराणके विषये और भेद कहाहै॥ शृणुष्वेति किसे ऋषिका किसे राजाके प्रति कथनहै ॥ हे वडीआं भुजांवाले हेगणांके मध्यमे श्रेष्ट संपूर्णतासें कथन करदा जो मै हां ऐसे मेरेतें नीले वस्त्रके धारणेतें दोषकों श्रवण कर ॥ १ ॥ पालेति नीलका पालना अर नील करके उपजीविका करणी इनोंकर्मों करके व्राह्मण अर क्षत्री अथवा वैश्य पतितहोताहै अर तीन ३ वर्षो करके अर्थात् तीनवर्षतक कृच्छ्र व्रतकरणे करके शुद्ध होताहै ॥ २ ॥ और प्रकार कथन करतेहैं नीलेति नीले वस्त्रको धार करके जिस कर्म कों

वस्त्रविशेषकृतोपिकचित्प्रतिप्रसवो यथा ॥ कंवलेपट्टसूत्रेचनीलीरागो नदुष्यतीति ॥ भविष्येऽपरोविशेषः ॥ शृणुष्वेतिमहावाहोनीलरक्तस्यधारणात् वाससोगणशार्दूलगदतोममकृत्स्नशः ॥ १ ॥ पालनाद्विक्रयाच्चैवतद्वृत्तेरुपजीवनात् पतितस्तुभवेद्विप्रस्त्रिभिर्वर्षैर्विशुद्ध्यति २॥ नीलरक्तेनवस्त्रेण यत्कर्म्मकुरुतेद्विजःस्नानंदानंतपोहोमःस्वाध्यायः पितृतर्प्पणम् ॥ ३ ॥ वृथातस्यमहायज्ञोनीलवस्त्रस्यधारणात् नीलरक्तंयदावस्त्रंकश्चिद्विप्रस्तुधारयेत् अहोरात्रोषितोभूत्वापंचगव्येनशुद्ध्यतीति ॥ ४ एवमेव केशानिर्म्मितवस्त्रपरिधारणेचोपवासः पंगचव्यंहिरण्योदकंचाधिकमिति केशाश्चात्रोर्णाव्यतिरिक्ताः स्थूलावोध्याः ॥स्त्रीणांक्रीडार्थसंभोगेशयनीयेनदुष्यतीति ॥

करताहै और स्नान और दान और तप और होम और पाठ और पितृतर्पण ॥ ३ ॥ और पंच पूर्व लिखे जो पंच महायज्ञ एह संपूर्ण नीलवस्त्रके धारणेतें तिस पुरुषके वृथाहि होतेहैं और प्रकार कहतेहैं नीलेति नीलेवस्त्रकों जदकोई व्राह्मण धारदाहै तद एक दिन रात्र उपवासकों करके पश्चात् पंचगव्यकेपीने करके शुद्ध होताहै ॥ ४ ॥ इसी प्रकारवालांका जो वस्त्र तिसके धारणेमे उपवास और पंच गव्य और स्वर्णका जल इनकरके शुद्धि होतीहै ॥ केश पद करके इहां उन्नके वस्त्रतें विना वकरे आदिके केश ग्रहण करणा स्त्रीयोंकी क्रीडाके अर्थ शय्याके विषय नीले वस्त्रका दोष नहि ॥

सहित छेकके सूर्य उौर चंद्रादि उौरअशुभ शिवारुतादि इनके दर्शनके विषय शंख जीका वा क्यहै ॥ दुरिति खोटास्वप्न उौर उत्पात इनके दर्शनादिके विषय घृत उौर स्वर्णदान करे यमजीका वचन है प्रत्येति सूर्यके सन्मुख होकर लघी न करे क्या न मूत्रे अर दिशा वे ठाहोआ अपणे विष्टेनूं न देखे जबदेखे तद पश्चात् सूर्य उौर ब्राह्मण अथवा गौ इनका दर्शनकरे । १ । शंखजीका वाक्यहै ॥ पादेति अग्निके विषय पयरांनूं सेक करके अर पयर सें अग्नि नू हिठां दवाकरके अर कुशानाल पयरां नू पूंजकरके एक दिनउपवास व्रत करे॥ १ वृद्धपराशरकाभीएही कथनहै ॥ क्षत्रियादिकों नमस्कारकरणके विषय हारीतजीका वचनहै क्षत्रीति क्षत्रीकों जद ब्राह्मण नमस्कार करे तव एक दिनरात्र उपवास करे अर वैश्यकों नमस्कार करेतद

सच्छिद्रादित्याद्यरिष्टदर्शनादौ शंखः दुःस्वप्नारिष्टदर्शनादौघृतंहिरण्यंच दद्यादिति ॥ यमः ॥ प्रत्यादित्यंनमेहेतनपश्येदात्मनःशकृत् दृष्ट्वासूर्यं निरीक्षेतब्राह्मणंगामथापिवा ॥ १ ॥ शंखः ॥ पादप्रतपनंकृत्वाकृत्वावह्नि मधस्तथा कुशैःप्रमृज्यपादौतुदिनमेकंव्रतीभवेदिति ॥ १ ॥ वृद्धपराश रोक्तिरपीयम् ॥ क्षत्रियाद्यभिवादने हारीतः ॥ क्षत्रियाभिवादनेऽहोरा त्रमुपवसेत् ॥ वैश्यस्याभिवादनेह्नौशूद्रस्याभिवादनेत्रिरात्रमुपवासः॥तथा॥ शय्यारूढपादुकोपानदारोपितपादोच्छिष्टांधकारस्थश्राद्धकृज्जपदेवपूजादि रताभिवादने त्रिरात्रमुपवासःस्यादन्यत्रनिमंत्रितेनान्यत्र भोजनेऽपि त्रिरात्रमिति ॥

दो २ दिन उपवास करे अर शूद्रकों नमस्कार करे तब तीन ३ रात्र उपवास करे तिस प्रकार शय्यादिउोंके ऊपर आरूढ पुरुषकों नमस्कार करणेका दोष कथन करतेहैं शय्येति खट्ट ऊपर जो स्थित होआ होआहै उौर पौए उौर जोडा एह जिसने पयरोंमेंलाए होए हैं उौर जूठाजो है और अंधकारविषे जो स्थित है और श्राद्ध नूं जो करता है उौर जप उौर देव ताकी पूजा इत्यादियोंमें जो लगाहुआ है इनके नमस्कार करणेमे तीन ३ रात्र उपवास लि खाहै।और निमंत्रण कीता होआ, उौर स्थानमें भी जो भोजन करताहै अर्थात् एकस्थानमें भोज न करके उौर स्थानमेभी जो खाताहै तिसकोंभीनमस्कार करणेमें तीन३ रात्रहि उपवासलिखाहै

समीवि समिधां और पुष्प इत्यादि जिसके हाथमेंहैं तिसकोंभी नमस्कार करणेमें तीन ३ रात्रहि उपवास लिखाहै ॥ आपस्तंबस्मृतिमें भी एही लिखाहै ॥ समीति समिधां और पुष्प और कुशा और घृत और जल और मृत्तिका और अन्न और अक्षत एह हैं हाथमें जिसके अर जप और होम नूं करदा जो ब्राह्मण अर क्षत्री अथवा वैश्यहै तिसनूं नमस्कार न करें ॥ १ ॥ जेकर जप आदिकां नूं करदा होआ जो पुरुष नमस्कार नूं करदा है तिस पुरुष कों भी एहि प्रायश्चित्त करणा लिखाहै॥जिस प्रकार शंखजी कहतेहैं ॥ नोदेति जलका कुंभहैहाथमे जिसके और मलोत्सर्गादिककर्के अशुद्ध जो है जप और देवताकार्य्य उंर पितृकार्य्य इनानूं करता होआ उंर खट्ट उपर आरूढ होआ होआ नमस्कारको नकरे ॥ यज्ञोपवीततें विना विष्ठा और मूत्रके त्यागआदिकांके विषय किसे स्मृतिमें प्रायश्चित्त कहाहै॥ जैसे ॥ विनेति यज्ञोप

समित्पुष्पादिहस्तस्याभिवादनेऽप्येतदेव समित्पुष्पकुशाज्यांबुमृदन्नाक्षतपाणिकम् जपहोमंचकुर्वाणंनाभिवादेतवैद्विजमित्यापस्तंबीये ॥ जपादिभिःसमभिव्याहारादभिवादकस्यापीदमेवप्रायश्चित्तम् ॥ यथाह शंखः नोदकुंभहस्तोऽभिवादयेन्नाशुचिर्नजपन्नदेवपितृकार्य्यंकुर्वन्नशयानइति ब्रह्मसूत्रंविनाविण्मूत्रोत्सर्गादौस्मृत्यंतरे प्रायश्चित्तमुक्तम् ।यथा। विनायज्ञोपवीतेनयद्युच्छिष्टोभवेद्द्विजः प्रायश्चित्तमहोरात्रंगायत्र्यष्टशतंतुवा १ । तत्रऊर्द्धोच्छिष्टे उपवासअधउच्छिष्टेऽन्नभक्षणउदकपानेचगायत्रीजपइति व्यवस्था ।भोजनेनोर्ध्वोच्छिष्टोविण्मूत्रोत्सर्गेणाधउच्छिष्टोभवतीत्यर्थः । अकामतस्तु ॥ पिवतोमेहतश्चैवभुंजतोऽनुपवीतिनः प्राणायामत्रिकंषट्कं नक्तंचत्रितयंक्रमादिति स्मृत्यंतरे ॥

वीततें रहित ब्राह्मण अर क्षत्री अथवा वैश्य उच्छिष्ट जद होवे अर्थात् भोजनादि कर्के अपवित्र होवे तद एक १ दिन रात्र उपवास अथवा एक १ सौ१००अठ ८ वार गायत्री नूं जपे ॥ १ तिसके विषय एह व्यवस्थाहै कि जब भोजनकर्के उच्छिष्ट होवे तब एक दिनरात्र उपवासकरेअर जब विष्ठा और मूत्रकों त्यागकर और विनाशौचते अन्न भक्षण और जलकापान करे तब गायत्रीका जप करे इति ॥ भोजनखाकर ऊर्द्ध्वोच्छिष्ट होताहै और विष्ठा और मूत्रकों त्यागकर अधउच्छिष्ट होताहै॥ जब इच्छा सें न करे तिस विषय कहतेहैं ॥ पिवेति यज्ञोपवीतेंरहित जो जलादिकापान करदाहै तिसकों तीन ३ प्राणायाम करणे लिखेहैं अर विष्टा और मूत्र नूं जो त्यागताहै तिसको छेः६ प्राणायाम लिखेहैं अर भोजननूं जो करदाहै तिसको नक्त व्रत त्रय लिखेंहैं एह भी किसीस्मृतिमें कहाहै ॥ १ ॥

जो वृद्धपराशर जीने कहाहै सो इच्छा सें कीता जो अभ्यास तिसविषयमें . है क्योंकि यज्ञोपे ति ब्राह्मण और क्षत्री अथवा वैश्य यज्ञोपवीततें विना भोजन करताहै अथवा मूत्र और पुरीष और वीर्य इनानूं त्यागताहै ॥ १ ॥तब ब्राह्मण तीन ३ रात्र उपवास करे अर क्षत्री कृच्छ्र व्रत का एक १ पाद करे अर्थात् चौथाहिस्सा कृच्छ्रव्रतका करे अर वैश्य एक १ दिनरात्र उपवासकरें इहशुद्धि सनातनीहै सो एहकामनातेवहुवारकरणेमेंहै ।२ । अन्नखाकर्के शुद्धिके वास्ते आचमननूं नकरके उठणके विषय पराशरजीहि कहतेहैं यदिति जदभोजननूं खाकर अर आचमन नूं नकर्के जोपुरुष आसनतें उठबेंदाहै तिसतें उपरंत सो पुरुष शुद्धिकें अर्थ तात्काल स्नाननूं करें जेकर स्नान न करे तद प्रायश्चित्ती होताहै ३॥ नित्ययज्ञादिके न करणेमें आचारमाधवीयमें प्रजापतिने

यत्तु वृद्धपराशरः।यज्ञोपवीतेनविनाभोजनंकुरुतेद्विजः।अथमूत्रपुरीषेवारेतः सेचनमेववा १ ॥त्रिरात्रोपोषितोविप्रःपादकृच्छ्रंतुभूमिपः अहोरात्रोषितोवैश्यःशुद्धिरेपासनातनीति। २। तत्कामतभ्यासे ॥ भुक्त्वाशौचार्थाचमनमकृत्वोत्थानेतुसएव ॥ यद्युत्तिष्ठेदनाचांतोभुक्तवानासनात्ततः सद्यःस्नानं प्रकुर्वीतसोऽन्यथाप्रयतीभवेदिति। ३ प्रयतीप्रायश्चित्ती। नित्ययज्ञाद्यकरणेतुआचारमाधवीयेप्रजापतिः ॥ दर्शंचपौर्णमासंचलुप्त्वाथोभयमेवच एकस्मिन्कृच्छ्रपादेनद्वयोरर्द्धेनशोधनम् १ ॥ हविर्यज्ञेप्यशक्तस्यलुप्तमप्येकमादितः प्राजापत्येनशुद्ध्येतपाकसंस्थासुचैवहि २ विधानपारिजातेएकविंशतिसंस्थागणनायां अष्टकापार्वणश्राद्धश्रावण्याग्रहायणीप्रौष्टपदीचैत्र्याश्वयुजीतिसप्तपाकयज्ञसंस्थाः अग्न्याधेयाग्निहोत्रदर्शपौर्णमासाग्रयणचातुर्मास्यनिरूढपशुबंधसौत्रामणीति सप्त हविर्यज्ञसंस्थाः॥ अग्निष्टोमात्यग्निष्टोमोक्थ्यषोडशीवाजपेयातिरात्राप्तोर्यामेति सप्त सोमसंस्थाः।

कहाहै दर्शमिति दर्श अथवा पौर्णमास यज्ञ नूं जो नहि करदा तिसकों कृच्छ्रव्रतका एक पाद करणा लिखाहै जो पुरुष दोनों कों नहि करदा तिसको आधा कृच्छ्र करणा लिखाहै॥ १ ॥ जो पुरुष हविर्यज्ञके विषय असमर्थहै अर आदतेंलेकर एकभी हविर्यज्ञ जिसका लोपहोगिआहै सो पुरुष प्राजापत्य व्रतकर्के शुद्ध होताहै इसी प्रकारपाक संस्थाके विषय जान लेणा॥ २ ॥ इसमे विधानपारिजातका वचनहै विषेति अग्न्याधेय १ और अग्निहोत्र २ और दर्शपौर्णमास ३ और आग्रयण ४ और चातुर्मास्य ५ और निरूढपशुबंध ६ और सौत्रामणी ७ एह सप्त हविर्यज्ञसंज्ञिकहैं पाकसंस्था क्याहै कि अष्टकाश्राद्ध १ और पार्वण श्राद्ध २ और श्रावणी ३ और आग्रहायणी ४ और प्रौष्टपदी५ और चैत्री ६ और आश्वयुजी७ एहसप्तपाकयज्ञसंस्थाहैं

 गामें तों पौर

संध्येति संध्योपासन और नित्यस्नान और होम और नित्यकर्म इनके भी नाश होआं होआं शुद्धि के वास्ते अठहजार ८००० गायत्रीका जप करें ॥ ३ ॥ सेति अग्निष्टोम १ और अत्यग्निष्टोम २ और उक्थ ३ षोडशी ४ और वाजपेय ५ और अतिरात्र ६ और आप्तोर्याम ७ एहसत यज्ञ सोमसंस्था हैं वर्षके अंतमें सोमयज्ञांके नाशदे होआं होआं चांद्रायण व्रत नूं करे और अधिकारहोणेतें इन यज्ञांके मध्यमे एक किसी नूं भी न कर्के उपवास व्रत करके शुद्ध होताहै पाकसंस्थाके विषय भी इसी प्रकार जाण लैणा ॥ ४ ॥ कात्यायनजीका वचनहै पित्रिति पितृ यज्ञके नाशके विषय अर्थात् पितृतर्पणके नकीतिआं होआं और वैश्वदेव बलिके नकीतिआं होआं और नवें अन्नके भक्षण समयके विषय नवयज्ञ कर्के नपूजन कर्के और तिसी प्रकार पतितके अन्न का भक्षण कर्के शुद्धिके वास्ते चातुर्वैश्वानरी इष्टि नूं करे ॥ १ ॥ बोधायनजीका वाक्यहै यस्येति जिस पुरुषके

संध्योपासनहानौतुनित्यस्नानंप्रलोप्यच होमंचनैत्यकंशुद्ध्यैगायत्र्यष्टसहस्रकम्३ समांतेसोमयज्ञानांहानौचान्द्रायणंचरेत् अकृत्वान्यतमंयज्ञंयज्ञानामधिकारतःउपवासेनशुद्ध्येतपाकसंस्थासुचैवहीति ४ कात्यायनः। पितृयज्ञात्यये चैववैश्वदेवात्ययेपिच अनिष्ट्वानवयज्ञेननवान्नप्राशनेतथाभोजनेपतितान्नस्यचातुर्वैश्वानरोभवेत् १ चातुर्वैश्वानरीमिष्टिंकुर्यादित्यर्थः ॥ बौधायनः ॥ यस्यानित्यानिलुप्तानितथैवागंतुकानिच विपद्यपिनसस्वर्गंगच्छेताऽऽपतितोहिसः१ तस्मात्कंदैःफलैर्मूलैर्मधुनाज्यरसेनवा नित्यंनित्यानिकुर्वीतनचनित्यानिलोपयेदिति २ ऋतौस्वपत्न्यगमनेतुविष्णुः। पर्वाऽनारोग्यवर्जंऋतावगच्छन्पत्नींत्रिरात्रमुपवसेदिति अत्र पर्वपदं ब्रह्मचर्य्यादिलोपोपलक्षकम् ऋतूरजःस्नानादिनादारभ्यद्वादशादिनानि

आपदा काल विषय भी नित्यकर्म अर्थात् पंचयज्ञ और आगंतुककर्म नष्ट होगयेहैं सो पुरुष स्वर्ग नूं नहि प्राप्त होता किंतुचारे और तें पतित होताहै ॥ १ ॥ तिस कारणतें कंद और फल और मूल और मधु और घृत और रस इनों कर्के दिन दिन प्रति अवश्यनित्यकर्मा नूं करे कदे भी नित्यकर्माका नाश न करे ॥ २ ॥ ऋतुसमयके विषय अपणी स्त्रीके अगमनके विषय विष्णुजी का वचनहै पर्वेति संक्रांत्यादि पंच पर्व और रोग इना नूं वर्जित कर्के ऋतुसमयके विषय जो पुरुष अपणी स्त्रीके साथ मैथुन नाहि करदा सो तीन ३ रात्र उपवास करे अर्थात् पंचपर्व और रोग इनके विषय ऋतुकालमें भी न गमन करे इस स्थानमे पर्व पद कर्के ब्रह्मचर्य्य और व्रतादि इनाके लोपका भी ग्रहण करणा अर ऋतुपद कर्के क्या लैणा कि स्नानदिनतें आद लेकर बारां १२ दिनपर्यंत ग्रहण करणा ॥

जो संवर्तजीने कहाहै सो अकामके विषयमेहै अर्थात् उसकों कामनाथी परंतु किसे कार्य्यवशाथे गमन नाहिहोया इसवास्ते थोडा प्रायश्चित्तकहाहै ऋताविति जो पुरुष ऋतुकालके विषय व्रतके आचरण करणवाली अपणी स्त्रीमे गमन नहिकरदा नियमके अतिक्रमकेभयतें तिस पुरुषकों एकसो १००प्राणायाम कथनकीताहै । १ । एह वाक्य निकट देशकेविषय रहणे वालेपर ग्रह ण करणा अरु दूर देशके विषय स्थित होवे तव दोष नहि क्योंकि मिताक्षरामें कहाहै ऋतवि ति समीपकेविषये निवास करदा होआ जो पुरुष ऋतु स्नात अपणी स्त्रीमेगमन नहि करदा सो पितरोंके सहित वडी जो गर्भकी हत्याहै अर्थात् गर्भ हत्या वाला जो नरक है तिसमें डूवताहै ।२। इसवचनतें स्त्रीकोंभी ऋतुकालके विषयमें भर्ताके समीप न प्राप्तहोणका एहि प्राय

यत्तु संवर्तः। ऋतौनोपैतियोभार्यांनियतांव्रतचारिणीं नियमातिक्रमात्तस्यप्रा णायामशतंस्मृतमिति तदकामतः १ ॥ एतच्चसमानदेशविषयम् ॥ ऋतु स्नातांतुयोभार्यांसन्निधौनोपगच्छति घोरायांभ्रूणहत्यायांपितृभिःसह मज्जतीतिमिताक्षरावचनात् २ ऋतौभर्तुरनुपसर्पणेस्त्रिय अपि एतदेव प्रा यश्चित्तम् ॥ तस्याअपिनारदीयेदोषश्रवणात् ॥ आहूतायातुवैभर्त्रानोप यातित्वरान्विता साध्वांक्षीजायतेपुत्रदशवर्षाणिपंचचेति ॥ १ ॥ तासुतुस्त्री त्वादर्द्धम् ॥ अंगिराः ॥ अनापदिचरेद्यस्तुसिद्धांभिक्षांगृहेवसन् दशरा त्रंपिवेद्वज्रमापत्कालेत्र्यहंद्विजः ॥ १ ॥ वज्रंवज्रकृच्छ्रसंबंधिद्रव्यमित्यर्थः देवादीनामाभिमुख्येनिष्ठीवनादौ सुमंतुः ॥

श्चित्त लिखाहै १ तिसकोंभी नारदीयपुराणकेविषय दोषकेश्रवण करणेते सोकहतेहैं आहूतेति ऋतु कालके विषय भर्ता करके बुलाई होई जो स्त्री शीघ्र नहि प्राप्तहोती हैपुत्र सोस्त्रीपंदरां १५ वर्ष तकका संतानिमप्राप्त होतीहै ।१। परंतुस्त्रीभावहोणतें तिनांके विषय अद्धा प्रायश्चित्त लिखाहै अं गिराजीकावाक्यहै अनेति आपदाकालतें विनागृहके विषय निवास करदाहोआ जोपुरुष सिद्ध भिक्षाका आचरण करदाहै सो दश १० रात्र वज्रकृच्छ्र व्रतके विषय लिखीजो वस्तुहै ति सकापानकरे जब आपदाकालके विषय ब्राह्मण और क्षत्रीअथवा वैश्यभिक्षाका आचरणकरे तव तीन ३ दिनपीवे १ । देवादियोंके सन्मुख थुकणादिआंके विषयमें सुमंतुजीका वचनहै

देवेति देवता और ऋषि और गो और ब्राह्मण और गुरु और माता और पिता और राजाइ नके सन्मुखजोथुक्के और झूठकहे सो अग्निकर्के जिह्वानूं साडदेवे और स्वर्णदानकरे परंतु तिनना जिह् वानूंसेकदेवे जितने करके जीवतारहे एह जानलेणा। जनांका निवास स्थान और बाग और देवताका मंदिर इत्यादिके ढाणके विषयमें काश्यपजीका वचनहै वापीति बावली और खूआ और बाग और पुल और वेल और तला और नदी आदिकोंका कनारा और देवताका स्थान इनके ढाणके विषयमें ब्राह्मणांके तांई प्रायश्चित्त दस करके अर्थात् तिनांते पुछकर्के पश्चात्चार ४ घृतकीआं आहुतीआंका हवन करे आहुतीआं दखावतेहैं इदमिति(इदं विष्णु) इसमंत्र करके पहली आहुति करे (मानस्तोक)इसकरके दूसरी आहुति करणी अर (विष्णोःकर्माणि)इस कर

देवर्षिगोब्राह्मणाचार्य्यमातृपितृनरेंद्राणां प्रतिष्ठीवने आक्रोशने च जिह्वांदहेद्धिरण्यंदद्यादिति ॥ दाहोजीवनाविरोधेन ॥ मंडपोद्यानदे वतागारादिभेदे ॥ काश्यपः ॥ वापीकूपारामसेतुलतातडागवप्रदेवता यतनभेदनेप्रायश्चित्तंब्राह्मणेभ्योनिवेद्य ततश्चतस्त्र आज्याहुतीर्जुहुयात् इदंविष्णुरितिप्रथमाम् मानस्तोक इतिद्वितीयाम् पादोस्यांत्यामितिचतु र्थीम् ॥ देवतामुच्छेदयति तस्यैदेवतायै ब्राह्मणान्भोजयेदिति ॥ एत च्चाल्पोपघाते ॥ महत्युपघातेऽभ्यासेच प्राजापत्यादि कल्पनीयम् देव ताचात्रमृण्मयीपूजिताऽपूजिता वा ग्राह्या प्रायश्चित्तस्याल्पत्वात् अन्य त्रतु दंडगौरवदर्शनेन प्रायश्चित्तं कल्प्यम्

के तीसरी अर(पादोस्यांत्यां) इस करके चौथी आहुति करणी जो पुरुष देवताकी मूर्त्तिकों छेद ताहै सो तिस देवताके वास्ते ब्राह्मणानूं भोजन खुवाए एह प्रायश्चित्त थोडे नाशके विषय जानना अर जब बहुत छेदनकरे अर तिसीमें बहुत अभ्यासकरे तब प्राजापत्यादि व्रतकों करे। इस स्थानमें देवता मृत्तिकाकी पूजी होई अथवा न पूजी होई ग्रहण करणी प्रायश्चित्तकों थोडा होणेतें उैरजगां दंडको बडा देखणे करके प्रायश्चित्त बडा कल्पनाकरणा क्योंकि दंडकी न्याईप्रायश्चित्त होताहै इसवचनतें अर्थात् थोडा पापहोवेतां थोडा प्रायश्चित्त अर बहुतपापहोवें तां बहुत प्रायश्चित्त दस्सणा ॥

तिसप्रकार इसके विषय दंडकीगौरवताकों कात्यायनजी कहतेहैं हरेदिति जोदेवताकी प्रतिमाकों जेद चुरालये अर खंडित करदेवे अर दग्धकरदेवे अर देवताके स्थानका भेदन कर देवे तद सो पुरुष उत्तम दंड कों प्राप्तहोवे ॥ १ तीन ३ प्रकारका दंड याज्ञवल्क्यजीने लिखाहै उत्तमदंड १ ऊँर मध्यमदंड २ ऊँर अधमदंड ३ जों एक हजार १००० ऊँर अरसी ८० पैसे चट्टा हैं सों उत्तमदंडहै अर इसते आधा मध्यमदंड हैं अर इसतेंभी आधा अधम दंड हैं ॥ इति ॥ विष्णुजीका वाक्यहै अभेति थोमादि ऊँर नहि वेचने योग्य जों वस्तु इनके वेचने वाला ऊँर

दंडवत्प्रायश्चित्तंभवतीतिवचनात्) तथाऽत्रदंडगौरवमाहकात्यायनः हरे च्छिद्याद्दहेद्वापिदेवानांप्रतिमांयदि तद्गृहंचैवयोभिंद्यात्प्राप्नुयात्पूर्वसाहसम् १ विष्णुरपि ॥ अभक्ष्यस्याविक्रेयस्यचविक्रयी प्रतिमाभेदकश्चोत्तमसाहसंदं डनीयः ॥शंखलिखितौ ॥ प्रतिमारामसंक्रमध्वजसेतुनिपातनभंगेषु तत्सम् त्थापनंप्रतिसंस्कारोऽष्टशतंचेति कूपादिसमीपेऽल्पजलाशयोनिपातनम् यद्वाप्रतिमादीनांनिपातनेभंगेचसति ॥ निपातनेतत्समुत्थापनंभंगेप्रतिसं स्कारइत्यर्थः ॥ मनुः ॥ संक्रमध्वजयष्टीनांप्रतिमानांचभेदकः ॥ प्रति कुर्य्याश्चतत्सर्वंपंचदद्याच्छतानिच ॥ १ ॥

देवताकी मूर्त्तिके छेदने वाला एहदोनों उत्तम दंडके योग्यहैं इसी विषयमें शंख ऊँर लिखि तका भी वचनहै प्रतीति देवताकी मूर्त्ति ऊँर वाग नदी तला आदिक पत्तन ऊँरपुल ऊँर कूप दिके समीप थोंटा जिआ जलका स्थान इनके भेदन करणे वाला तिनानूं फेर नवीन वणावे अथवा पांचसौ ५०० पयसा दान करे ॥ इसीवाक्यमे मनुजीने भी लिखाहै ॥ संक्रेति जलका घाट ऊँर धजा ऊँर लाठो ऊँर देवताकी छोटी जैसी मृत्तिकादि मूर्त्ति इनके छेदन क रणे वाला इनां संपूर्णां नूं नवीन वणावे अथवा पांचसौ ५०० पण दान करे ॥ १ ॥

सामितिसंक्रम इत्यादि पदोंमें इसी श्लोककाहि अर्थ स्पष्ट कीताहै इसस्थानमें प्रतिमाके छोटे बडे भेद करकेअर प्रतिमाके छोटे बडे छेदनके भेद करके दंड और प्रायश्चित्तकाभी भेद जानना अर्थात् थोडा छेदन करे तां थोडा दंड अथवा प्रायश्चित्तकरे जेकर वहुता छेदनकरे तां वहुत दंड अथवा प्रायश्चित्त करे एह व्यवस्थाहै ॥ दारिद्र्यादिकरके भर्ताके निरादरके विषय आपस्तंवजीका वाक्यहै भर्तु रिति निर्धनता और क्रोध और चुगली इत्यादि करके भर्त्ताका जवस्त्री निरादर करे तव कृच्छ्र व्रत करे इति ॥ पर्वके विषय मैथुन करणेका दोष विष्णु पुराणमें लिखाहै ॥ किसे ऋषिका किसे राजाके प्रतिवचनहै हे राजन् चतुर्दशी १ और अष्टमी २ और अमाव

संक्रमोजलोपरिगमनार्थंकाष्ठशिलादिरूपःध्वजश्चिह्नंराजद्वारादौ यष्टिः पुष्करिण्यादौ प्रतिमाश्च क्षुद्रामृण्मय्यादयः एतद्भेदकःपुनर्नवंकुर्य्यात् पणानांपंचशतानिचदद्यात् ॥ अत्रच प्रतिमातारतम्येन तद्भेदतारतम्येन दंडप्रायश्चित्तयोर्व्यवस्था ॥ दारिद्र्यादिना भर्त्तुरतिक्रमे आपस्तंवः भर्त्तुरतिक्रमेकृच्छ्रइति ॥ अतिक्रमोदारिद्र्यक्रोधमात्सर्य्यादिनाऽवमाननम् पर्वणिमैथुनेविष्णुपुराणे।चतुर्दश्यष्टमीचैवअमावास्याथपूर्णिमा पर्वाण्येतानिराजेन्द्ररवेः संक्रांतिरेवच १ स्त्रीतैलमांससंभोगीपर्वस्वेतेषुवैनरः विण्मूत्रभोजनंनामप्रयातिनरकंमृतः २ अस्यप्रतिप्रसवः ॥ शनिषष्ठ्यांस्मृतं तैलंमहाष्टम्यांपलाशनम् तीर्थेक्षौरंचतुर्दश्यांदीपावल्यांचमैथुनम् ॥ १ ॥ महाष्टमी आश्विनशुक्लाष्टमी ॥

स्या ३ और पूर्णमासी ४ और सूर्यकी संक्रांति ५ एह पंच पर्वहै ॥ १ ॥ इनांके विषय जो पुरुष स्त्री और तेल और मांस इनानूं भोगताहै सो मरकरके विष्टा और मूत्रहै भोजन जिसके विषय एसे नरकको प्राप्त होताहै ॥ २ ॥ इसका भिन्न भिन्न दोष निवारणकहतेहैं शनीति ॥ शनिवार षष्ठीके विषय तेल मले अर आश्विनके शुक्ल पक्षकी अष्टमीके विषय मांस भक्षणकरे अर तीर्थके विषय चतुर्दशीके दिन क्षौर कराए अर दिवालीके विषय मैथुन करे तांभी इसी नरकको प्राप्तहोताहै ॥ १ ॥

और किसे स्मृतिकाभी वाक्य है अष्टेति अष्टमी ८ और चतुर्दशी १४ और दिन और पर्व इनके विषय मैथुन कों करके सहित वस्त्रांके स्नान नूं करके पश्चात् वरुण है देवता जिनां का तिनां मंत्रों करके मार्जन करे ॥ १ ॥ उलटीके विषय शातातप जीका वाक्य हैं विच्छेति ब्राह्मण और क्षत्री और वैश्य इनकी उलटीके विषय और भन्ने होए पात्रक विषय भोजन करणेके विषय पंच गव्य करके शुद्धि होतीहै ॥ १ ॥ मांसादिके वमनके विषय यमजी विशेष कहतेहैं ॥ मसूरेति जो ब्राह्मण अर क्षत्री अथवा वैश्य मसर और मांह और मांसको भक्षण करके उलटी करताहै तिसकों तीन ३ रात्र उपवास प्रायश्चित्त करणा लिखाहै अर स्नान करके अर तीन ३ प्राणायामों करके अर घृतका भक्षण करके शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ यज्ञोपवीतादियोंके नाशके विषय भी यम

स्मृत्यंतरे अष्टम्यांचचतुर्दश्यांदिवापर्वणिमैथुनम् कृत्वासचैलंस्नात्वाचवारुणी भिश्चमार्जयेदिति १ वारुणीभिर्वरुणदेवताकैर्ऋग्भिरित्यर्थः।वमनेशातातपः विच्छर्दनेद्विजातीनांभिन्नभांडचभोजने पंचगव्येनशुद्धिःस्यादितिशातातपो ऽब्रवीत् १ मांसादिवमनेतुविशेषमाह यमः॥ मसूरमाषमांसानिभुक्त्वावावम तिद्विजः त्रिरात्रमुपवासोऽस्यप्रायश्चित्तंविधीयतेप्राणायामैस्त्रिभिः स्नात्वा घृतंप्राश्यविशुद्ध्यति १ यज्ञोपवीतादिनाशेपि सएव मेखलादंडाजिनयज्ञोप वीतावपातेषु मनोव्रतवतीभिःसप्तआज्याहुतीर्जुहुयात्पुनर्यथार्थंप्रतीयात् असकृद्भैक्ष्यभोजनेऽभ्युदितेऽभिनिर्मुक्तेवांतेदिवास्वप्नेनग्नस्त्रीदर्शनेनग्नस्वापे श्मशानमाक्रम्यहयादींश्चारुह्यपूज्यातिक्रमेचैताभिरेवजुहुयादग्निसामिंधने

जीनेहि प्रायश्चित्त लिखाहै ॥ मेखेति तडागी और दंड और चर्म और यज्ञोपवीत इनके नाशके विषय मनोव्रतवती इत्यादि मंत्रों करके घृतकीआं सप्त ७ आहुतीआं करके पश्चात् मेखलो दिकों धारणकरे अर अनेकवार भिक्षाकों भोजन करणा और जिसके सुतिआं होआं सूर्य उदय होताहै अर जिसके सुतिआं होआं अस्त होताहै उलटी होणी और दिनके विषय सौना और नग्नस्त्रीकों देखणा और नग्न सौणा और श्मशान भूमिके विचों लंघना और घोडे आदि कोंके उपर चडकर और महात्माकों उलंघन करणा अर्थात् तिनकी आज्ञाकों नहि म न्नणा अथवा बिना नमस्कारके चलेजाणा इन संपूर्णांके विषयमें बलदी अग्निके विषय मनो व्रतवती इत्यादि सप्त मंत्रों करके आहुतीआं करे॥ ॥

स्थेति वृक्षादि और महिष्यादिकी हिंसाकरणेकेविषे (यद्देवादेवहेडनं) इत्यादि जो कूष्मांड संज्ञिकमंत्रहैं इनोंकरके घृतका होमकरे ॥ मणि और वस्त्र और गौ और स्वर्ण इत्यादियोंका दानलेकरके गायत्रीका अठ हजार ८००० जपकरे इति ॥ अर्थः (मनोजूतिर्जुषतां) इत्यादि मंत्रों करके अर (त्वमग्नेव्रतपाअसि) इत्यादिमंत्रोंकरके होमकरे अर यथार्थक्या उपनयन विधि करके सहितमंत्रोंके यज्ञोपवीतका ग्रहणकरे ॥ अभ्युदितादिके स्वरूप नूं यमजी कथन करतेंहैं ॥ सूर्य्येति जो पुरुष सूर्यके उदयहोआं होआं सुत्तारहिताहै तिसको अभ्युदित कहतेहैं अर जोपुरुष सूर्यके अस्त होआं होआं सुत्ता रहिताहै तिसको निर्मुक्त कहतेहैं ॥ १ ॥ अभ्युदितके विषय प्रायश्चित्त नूं भी यमजी कहतेहैं ॥ अजीर्णेति अन्नका नपचना और अभ्यु

स्थावरसरीसृपादीनांवधे यद्देवादेवहेडनमितिकूष्मांडीभिस्त्रिरात्रमाज्यंजुहुयान्मणिवासोगवादीनांचप्रतिग्रहे गायत्र्यष्टसहस्रंजपेदिति मनोजूतिर्जुषतामितिमनोलिंगाभिःत्वमग्नेव्रतपाअसीतिव्रतलिंगाभिश्च यथार्थमुपनयनोक्तविधिनासमंत्रकं प्रतीयादृग्रहणायात् । अभ्युदितादिस्वरूपमाहयमः। सूर्योदयेतुयःशेते ससूर्योदितउच्यते अस्तंगतेतुयःशेतेसूर्येनिर्मुक्तएवसः १ अभ्युदितेप्रायश्चित्तमाहसएव अजीर्णेऽभ्युदितेवांतेश्मश्रुकर्मणि मैथुनेदुःस्वप्नेदुर्जनस्पर्शेस्नानमात्रंविधीयते ॥ २ ॥ अत्रैवकामतोगौतमः सूर्याभ्युदितेब्रह्मचारीतिष्ठेदहन्यभुंजानोऽस्तमितेरात्रौसावित्रींजपेत् । अभ्यासेत्वावृत्तिरूह्या। गर्भाधानादिसंस्कारातिपत्तौतु आश्वलायनः। आरभ्याधानमाचौलात्कालातीतेतुकर्मणाम् व्याहृत्याज्यंसुसंस्कृत्यहुत्वाकर्म यथाक्रमम् ॥ १ ॥ एतेष्वेकैकलोपेपि पादकृच्छ्रंसमाचरेत् ॥

दित और उद्वमन और थोडा क्षौर कर्म और मैथुनकरणा और खोटास्वप्न और दुष्ट पुरुषके साथ स्पर्शकरणा इनकेविषयस्नानहि विधानकीताहै ॥ २ ॥ इसकेविषयहि कामनाकेविषयमेंगौतमजी कावाक्यहै सूर्य्येति अभ्युदितके विषय दिनके विषय अन्नकों न भक्षण करदाहोआ अष्टांगमैथुनतेंरहितहोकर स्थितहोवे सूर्यकेअस्तहोआंहोआं रात्रिके विषय गायत्री नूं जपे इसोंके अभ्यास केविषयमें एहीप्रायश्चित्त दोवारकरे इति ॥ गर्भाधानादिसंस्कारके नाशके विषय आश्वलायनजीका वाक्यहै आरेति गर्भाधान कर्मतें लेकरचौलकर्म पर्यंत कर्मोंका कथनकीता जो काल है तिसके वीतिआंहोआं व्याहृतीआं करके हछी तरां संस्कारकों करके क्रमसें घृत करके होमनूं करे १ इनकर्मोंके मध्यमे एककर्मकेभी नाश होआं होआं एक पाद कृच्छ्र व्रतको करे ॥

चूडेति चूडा कर्मके नाशके विषय आधा कृच्छ्रव्रतकरे आपदासमय मेंभीएहि करणा अर जब आपदा न होवे अर संस्कार कर्मका नाशहो जावे तब संपूर्णस्थानके विषय दूणा प्रायश्चित्त करे ॥ २ ॥ इसीमें कात्यायन जी भी कहतेहैं ॥ लुप्त इति संस्कार कर्मके नाशके विषय संपूर्णस्थानके विषय प्रायश्चित्त करे अर प्रायश्चित्तके कीतिआंहोआं पीछेसें नाश होए कर्म नूं करे ॥ १ ॥ त्वन्नइति(त्वन्नःसत्वन्न)इनांमंत्रांकरके और तिसप्रकार(इमंमे)इसमंत्रकरके आहुतीआंनूं करे अर(येतेशतमयाश्चाभ्यामुदुत्तममृचा)इत्यादिऋचा करकेहोम नूंकरे २ ॥ हुत्वेति भिन्न भिन्न हवन नूं करे पश्चात् कृच्छ्रव्रत का एकपादकरे अर चौल कर्मके विषय आधा कृच्छ्रव्रतकरे स्त्रीआंकां भी इसीप्रकार मंत्रांकके जातादि कर्म करणा ॥ ३ ॥ गर्भाधान कर्मके न करणे के विषय

चूडाया अर्द्धकृच्छ्रः स्यादापदीत्येवमीरितम् ॥ अनापदितुलुप्तेतुसर्वत्रद्विगुणंचरेत् २ ॥ कात्यायनोपि ॥ लुप्तेकर्मणिसर्वत्रप्रायश्चित्तंविधीयते । प्रायश्चित्तेकृतेपश्चाल्लुप्तंकर्मसमाचरेत् ॥ १ ॥ त्वन्नःसत्वन्नइत्याभ्यां इमंमेतुतथाहुतीः येतेशतमयाश्चाभ्यामुदुत्तममृचाहुतीः ॥२॥ हुत्वापृथक् पृथक्पादमर्द्धंचौलेसमाचरेत् स्त्रीणामप्येवमेवस्याज्जातादयामंत्रिकाक्रियेति ॥३ ॥ गर्भाधानाकरणआश्वलायनः ॥ गर्भाधानस्याकरणेतस्यांजातस्तुदुष्यति अकृत्वागांततोदत्त्वाकुर्यात्पुंसवनंपतिरिति ॥ १ ॥ क्षुतादौवृद्धपराशरः विप्रः क्षुत्कृत्यनिष्ठीव्यकृत्वाचानृतभाषणम् वचनंपतितैःकृत्वादक्षिणंश्रवणं स्पृशेत् प्रेक्षणंशशिनोऽर्कस्यब्रह्मेशहरिसंस्मृतिः ॥१॥ एतच्चजलाभावेकर्मण्यापृतेवा अतएव वृद्धशातातपः ॥

आश्वलायनजी का वाक्यहै । गर्भेति ॥ जिस स्त्रीका गर्भाधानसंस्कार नहि कीआ तिस केविचों उत्पन्न होआ बालक दुष्ट होताहै अर गर्भाधान संस्कार नूं नकरके तिसतें उपरंत गोदान करके पश्चात्- भर्त्ता पुंसवन संस्कारकों करे ।१। छिक्यादिकांकेविषय वृद्धपराशरजी का वचनहै विप्रइति छिक्क औंर थुक्क औंर झूठ वचन औंर पतितांके साथ वार्त्ता इनां नूं-करके ब्राह्मण सज्जे कांन नू हाथ लगावे औंर चंद्रमा अर सूर्यका दर्शन करे औंर ब्रह्मा औंर शिवजी औंर विष्णु इनका स्मरण करे ।१।एह वार्ता कबकरे जब पासजल नहोवे अथवा किसी काममे लगा होआ होवे ॥ इसी कारणतें वृद्धशातातपनें कहा है ॥ ॥

क्षुत्वेतिं छिकमार करके और थूक करके और वस्त्र कों पहिर कर बुद्धिमान् पुरुष आचमन करे अथवा ब्राह्मणकों स्पर्श करे अथवा गौकी पिठका दर्शन करे॥१॥यथेति जिस प्रकार एह कथन कीतेहैं तिस प्रकार प्रथमके अभावमें अगले कों ग्रहण करे प्रथमके नाशमें दूसरेकी प्राप्ति इच्छित है अर्थात् जलके अभावमें ब्राह्मण कों स्पर्श करे अर ब्राह्मणके अभावमें गौका दर्शन करे ॥ २ ॥ संवत्सर कर्मके नाशके विषय विष्णु पुराणमें किसे ऋषिनें किसीके प्रति कहाहै । संवेति एक वर्ष पर्य्यंत जिस पुरुष के कर्मका नाश होआहै अर्थात् जिस पुरुषने एक वर्ष नित्य कर्म नहि कीता तिसके दर्शन करणेतें श्रेष्ट पुरुषांनें सर्वदा काल सूर्यका दर्शन करणा योग्यहै॥१॥हे महामते तिसके स्पर्शमें सहित वस्त्रां के स्नान करणा एही

क्षुत्वानिष्ठीव्यवासस्तुपरिधायाचमेद्बुधः कुर्याद्वाब्राह्मणस्पर्शंगोपृष्ठस्यचदर्शनम् ॥ १ ॥ यथाविभवतोह्येतत्पूर्वाभावेततःपरम् अविद्यमानेपूर्वोक्तेउत्तरप्राप्तिरिष्यत इति ॥ २ ॥ संवत्सरक्रियातिपाते विष्णुपुराणे ॥ संवत्सरंक्रियाहानिर्यस्यपुंसःप्रजायते तस्यावलोकनात्सूर्य्योनिरीक्ष्यःसाधुभिः सदा ॥ १ ॥ स्पृष्टेस्नानं सचैलंतुशुद्धिहेतुर्महामते पुंसोभवति तस्योक्तानशुद्धिःपापकर्मणइति ॥२॥अत्रच प्रायश्चित्तविशेषाश्रवणादेकाहातिक्रमेचैकाहमभोजनेनतस्योक्तत्वात्तदनुसारेणच षष्ठ्यधिकशतत्रयदिनापचारे तावदुपवासकरणाशक्तेस्तत्प्रत्याम्नायत्वेन षडुपवासैरेकैकप्राजापत्यकल्पनयायोज्यम् ॥ निमंत्रणत्यागेतुयमः

शुद्धिका कारणहै अर जिसके दर्शनादिते एह सूर्य्य निरीक्षणादि प्रायश्चित्तहै तिस पापी पुरुषकी शुद्धि नहि कथन कीती ॥ २ ॥ इसके विषयप्रायश्चित्तके वहुत भेदके देखणेतें क्योंकि एक दिन कर्मके न करणेमें एक उपवास तिसकों कथन कीताहै तिसके अनुसार करके अर्थात् तिस हसाब करके तीन सौ अर साठ ३६० दिन के वीतिआं होआं तिस उपवास करणेके विषय समर्थाके न होणेतें तव तिस प्रायश्चित्तके बदले करके छिआं ६ उपवासां करके एक एक प्राजापत्य व्रत की कल्पना करके जोडने योग्यहै निमंत्रण कों ग्रहण करके तिस के त्यागके विषयें यमजीका वचनहै ॥

केतेति जो ब्राह्मण श्राद्धादिके निमंत्रण कों करवाके अर्थात् भोजनकों मान करके पश्चात् नहि खांदा सो ब्राह्महत्याके पाप कों प्राप्त होताहै अर मर करके शूद्र योनिकों प्राप्त होताहै ॥ १ ॥ इस पापके प्राप्त होआं होआं ब्रह्मण नियम कों धार करके यति चांद्रायण व्रत कों करके तिस पापतें रहित होताहै ॥ २ ॥ निमंत्रित कीते होए ब्राह्मण के न वुलाणेमें भी एही प्रायश्चित्त जानना ॥ एह वाक्य कामके अभ्यासमेंहै ॥ झूठे वचनादिके विषयमें शंख और लिखितका वाक्य है आक्रोशेति तुमने स्वर्ण चुराआहै इस मिथ्याका नाम आक्रोश है आक्रोशनऔरझूठ कथन करणा इनके विषयमें एक १ रात्र अथवा तीन ३ रात्र उपवास करणा इति अर कामतें अभ्यासके विषयमें असत्यभाषण

केतनंकारयित्वातुयोनिपातयतिद्विजः ब्रह्महत्यामवाप्नोतिशूद्रयोनौच जायते ॥ १ ॥ एतस्मिन्नेनसिप्राप्तेब्राह्मणोनियतव्रतः यतिचांद्रायणंचीर्त्वा ततःपापात्प्रमुच्यते इति २ श्राद्धादौनिमंत्रणंकेतनम् ॥ निमंत्रितस्याऽनाहूतानिष्येतदेव एतच्चकामाभ्यासे ॥ अनृतवचनादौ शंखलिखितौ ॥ आक्रोशनानृतवादे एकरात्रंत्रिरात्रं चोपवास इति ॥ कामतोभ्यासेतु असत्यभाषणं शूद्रसेवनम् इत्यपात्रीकरणंकृत्वा तप्तकृच्छ्रंकृत्वा शुद्ध्यतीति विष्णूक्तंज्ञेयम् ॥ वधफलकेऽनृते तुव्यसनप्रायश्चित्तप्रसंगेनोपपातकेषूक्तं द्रष्टव्यम् ॥ व्रणमध्ये कृमिपाते गरुडपुराणे ॥ जायंतेयस्यशिरसि कृमयोविनतात्मज कृच्छ्रंतदाचरेत्प्राज्ञःशुद्धयेकश्यपात्मज इति १ यत्तुच्यवनः ॥ कृमिदर्शने सांतपनम् ॥ वृषभोदक्षिणेति ॥

और शूद्रसेवन इस अपात्री करण संज्ञिकपापकों करके तप्त कृच्छ्र व्रत करके शुद्ध होताहै एह विष्णुजीका कहाहोया वचन जानना हिंसा है फल जिसका ऐसा जो झूठ है तिसके विषय प्रायश्चित्त व्यसन प्रायश्चित्तके प्रसंग करके उपपातकांके मध्यमें कथन कीताहै सो तिस स्थानमें देख लेणा इति जखमके मध्यमें कीटों के पोणेमें गरुड पुराणमें कहाहै ॥ जायमिति । हे गुरुड जिस पुरुषके शिरके विषये कीडे उत्पन्न होतेहैं हे कश्यपके पुत्र सो बुद्धिमान् पुरुष शुद्धिके वास्ते कृच्छ्र व्रतकों आचरण करे ॥ १ ॥ जो च्यवनजीनें कहाहै कि कृमिओंके पोणेमें सांतपन व्रत करै और एक बैल दक्षिणा देवे

एह वाक्य जब एकसमयके विषय अनेकों जखमोंके विषय तीक्ष्णकी डे उत्पन्न होवें तिस विषय विषे जानना इसस्थानमे क्षत्री आदिओंकों एह प्रायश्चित्त एक एक पाद न्यूनजानना अर्थात् क्षत्रीकों तीन ३ पाद सांतपन व्रत अर वैश्यकों आधा अर शूद्रकों एकपाद जानना ॥ दिनेमे मैथुनादिके विषयमे शंखजीने कहाहै दिवेति दिनके विषय मैथुननूं करके और तिसी प्रकार जलके विषय नग्न होंकर स्नान करके औरं नंगी बगानी स्त्रीनूं देखके एक दिन भोजन न करें इति ॥ १ ॥ नग्न शब्दका अर्थ दिखातेहैं नग्न इति एकवस्त्र वाला पुरुष नग्न होताहै इस वचनतें दो २ वस्त्र लय करके अर्थात् धोती और एक उपरणा

तद्युगपदनेकव्रणेषु खरकृम्युत्पत्तौज्ञेयम् ॥ अत्रक्षत्रियादीनांपादपादन्यूनम् ॥ दिवामैथुनादौतुशंखः ॥ दिवाचमैथुनंकृत्वानग्नःस्नात्वातथांभसि नग्नांपरस्त्रियंदृष्ट्वादिनमेकमभोजनमिति ॥ १ ॥ नग्नस्त्वेकवासाः स्यादितिवचनाद्वस्त्रद्वयवान्स्नायादित्यर्थः अत्रनग्नस्नानादावेकरात्रत्रिरात्रयोरभ्यासाद्यपेक्षयाव्यवस्था द्रष्टव्या निषिद्धकाष्ठदंतधावने वृद्धपाराशरःप्राह ॥ पलाशशिंशपाकाष्ठदंतधावनकृन्नरः दिवाकीर्तिसमस्तावद्यावद्गांनैवपश्यतीति ॥ १ ॥ एतच्चनिषिद्धकाष्ठांतराणामप्युपलक्षणम् ॥

इनानूं धार करके स्नान करे ॥ इस स्थानमें नग्न स्नानादियोंके विषय एक रात्र और तीन ३ रात्र इनकी व्यवस्था अभ्यासादियोंकी इच्छा करके जाननी अर्थात् कामतें अभ्यासके विषय तीन ३ रात्र उपवास जानना ॥ निषिद्ध काष्टकी दातनके विषय वृद्धपाराशरजी कहतेहैं पलेति पलाह और टाली इनके काष्टांकी दातन करणे वाला पुरुष तितना पर्यंत नाईके तुल्य होवाहै जितना पर्यंत गौकों न देखे ॥ १ ॥ पलाशशिंशपा इस पद करके खजूर उीर केउडा और नारकेल इत्यादि जौं निषद्धे काष्ट हि इनकाभी ग्रहणकरणा

ब्रह्मचारीके धर्मके नाशके विषय वौधायनजीका वाक्यहे शौचेति शौच और आचमन और संध्यावंदन और कुशा और भिक्षा और होम इनका त्याग और शूद्रादिके साथ स्पर्श और कौपीन और कटिसूत्र और यज्ञोपवीत और तडागी और दंड और मृगाण इनका त्याग और दिने सौणा और छतडीका धारण और पांये पाणे और पुष्पादि मालाका धारण करणा और वुटना मलना और चंदनादि सुगंधि वाले द्रव्यका मलना और सुरमा पाणा और जलक्रीडा और जूवाखेलणा और नृत्य अर गायन अर वाजा इनके विषय प्रीति करणी और पाषंडी अर चंडाल इत्यादियोंके साथ संभाषण करणा

ब्रह्मचारिधर्मलोपेवौधायनः॥ शौचाचमनसंध्यावंदन दर्भभिक्षाग्निकार्यराहित्यशूद्रादिस्पर्शन कौपीनकटिसूत्रयज्ञोपवीतमेखलादंडाजिनवर्जन दिवास्वाप छत्रधारण पादुकाध्यारोहण मालाधारणोद्वर्त्तनानुलेपनांजनजलक्रीडाद्यूतनृत्यगीतवाद्याद्यभिरति पाषंडिचंडालादिसंभाषण पर्युषितभोजनादि ब्रह्मचारिव्रतलोपसकलनिर्हारार्थं ब्रह्मचारी कृच्छ्रत्रयंचरेत् महाव्याहृतिहोमं चकुर्यात् प्रथमंव्यस्तसमस्तव्याहृतिभिश्चतस्रआज्याहुतीर्हुत्वा ॥ ॐभूरग्नयेपृथिव्यै महतेचस्वाहा ॐभुवोवायवे चांतरिक्षायमहतेचस्वाहा ॐस्वरादित्यायचदिवेचमहतेचस्वाहा ॐभूर्भुवःस्वश्चंद्रमसेचनक्षत्रेभ्यश्चमहतेचस्वाहा ॐपाहिनोअग्नएनसेस्वाहा

और वेहे अन्नका भक्षण करणा इन संपूर्णोंके विषय और ब्रह्मचर्य व्रतके नाशके विषय संपूर्णपापके त्यागणके अर्थ ब्रह्मचारी तीन ३ कृच्छ्र व्रत करे अर महाव्याहृतिआं करके हवन करे अर प्रथम एक एक महाव्याहृति करके तीन ३ आहुतिआं करे पश्चात् सभना महाव्याहृतिआं करके क्या ॐभूः स्वाहा १ ॐभुवःस्वाहा २ ॐस्वःस्वाहा ३ ॐभूर्भुवःस्वःस्वाहा ४ इसरीतिसे तीनके पीछे एक आहुति करे इस प्रकार व्याहृतिआं करके चार घृतकीआं आहुतिआं करके पश्चात् ॐपाहिनो अग्न एनसेस्वाहा इत्यादि करके हवन करे सो मूलमेंहि स्पष्टकीता होआहै ॥

असे नउ ९ आहुति कर्के पुनारेति फेर महाव्याहृतिआंकर्के हवनकरे इति एह प्रायश्चित थोड़े धर्मके नाशके विषय करणा ॥ अर बहुते धर्मकेनाशके विषय अधिक प्रायश्चित्तनूं ऋग् विधान ग्रंथ विषय शौनकजी कहतेहैं तमिति श्मशानके शिवालयके विषय बैठकरके(तंवोधिया)इत्यादि मंत्रकाएक लक्ष १००००० जपकरे ब्रह्मचारिका धर्म शून्यभी होवे तदभी इसजपकरके पूर्ण होताहै इति ॥ ग्रहण कीता होआ जो व्रत तिसके भंगके विषय वायुपुराणमें लिखाहै लोभेति लोभ और मोह और प्रमाद इनसें कदाचित् व्रतभंग होवे तब तीन ३ उपवास व्रत करे अथवा

ॐपाहिनोऽग्नेविश्ववेदसेस्वाहा ॥ ॐयज्ञंपाहिविभावसोस्वाहा ॥ ॐसर्वंपाहिशतक्रतोस्वाहा ॥ ॐपुनरूर्जानिवर्त्तस्वपुनरग्नइषायुषा पुनर्नःपाह्यंहसः सहरय्यानिवर्त्तस्वाग्नेपिवस्वधारयाविश्वशियाविश्वतस्परिस्वाहा पुनर्व्याहृतिभिर्जुहुयादिति ॥ एतदल्पधर्मलोपे ॥ वाहुल्येतु प्रायश्चित्तविशेषमाह ऋग्विधानेशौनकः ॥ तंवोधियाजपेन्मंत्रंलक्षंप्रेत्याशिवालये ब्रह्मचारिणोहिधर्मशून्यंचेत्पूर्णमेवहीति प्रेतानांयोग्यंस्थानंप्रेत्यंश्मशानमित्यर्थः॥ गृहीतव्रतभंगेवायुपुराणे॥ लोभान्मोहात्प्रमादाद्वाव्रतभंगोयदाभवेत् उपवासत्रयंकुर्यात्कुर्याद्वाकेशमुंडनम् प्रायश्चित्तमिदंकृत्वापुनरेवव्रतीभवेत् अत्र वाशब्दः॥ समुच्चयेमिथ्याशपथे यमः ॥ विप्रस्यवधसंयुक्तंकृत्वातुशपथंमृषा ब्रह्महायावकान्निनव्रतंचांद्रायणंचरेत् ॥ १ ॥ एतच्चशपथांततरस्याप्युपलक्षकम् ॥

केशांकामुंडनकरावे ॥ इस प्रायश्चित्तनूं करके पश्चात्व्रतकाधारणकरे १ झूठीसुगंदके विषय यमजी का वचनहै विप्रेति ॥ मैंने ब्रह्महत्याकीतीहै जेकरएह कामकीताहै ऐसे ब्राह्मणकी झूठी सुगंद चुक्कके ब्रह्मघाती होताहै सो यवांके अन्नकरके चांद्रायण व्रतनूं करे ॥ १ ॥ और सुगंदकाभी एही प्रायश्चित्त जानना अर्थात् और तरहांसेभी जेकर कोई शपथकरेगा कि मेरेकोंगौकी शपथ है जैसे वेश्या हारपरभोगयाहोयांइत्यादि तौभी यावकान्न कर्के चान्द्रायण व्रत करे ॥

सुकृतमिति जेडे पुरुष संपूर्ण आयुषाके विषय कीते होए पुण्य नू किसेके तांई देदेनेहैं सो ध र्म्मराज जीकी आज्ञासे शिलाकर्के पेषणकरीदेंहैं जिस प्रकारतैसे पापी पुरुष पेषण करीदेहै १ एहमार्कंडेयपुराणकेवाक्यतें जानना ॥ ऐसे स्थानों विषेप्रायश्चितको व्यवस्था करदेहै यत्रेति जि स स्थानमें प्रायश्चित्त कथन कीताहै अथवा जिस स्थानमें नहि कथन कीताहै इस उशनसजीके वाक्यतें तिस स्थानके बिषय प्राजापत्य व्रत कल्पन करणा ॥ ब्राह्मणकों क्षत्रियादि वृत्ति करके धनके संचयकरणेमें प्रचेतसजीने कहाहै ॥ ब्राह्मणेति पिता और माता और बहु भृत्य इनके ना शके विषय आपदसमयमें क्षत्रीके धर्मनूं ब्राह्मण जब अंगीकार करेअर तिसके विषय एक वर्ष

सुकृतंयेप्रयच्छंति यावज्जीवकृतंनराः तेपिष्यंतेशिलापेषैर्यथैतेपापकारिण इतिमार्कण्डेयपुराणवाक्यात् यत्रोक्तंयत्रवानोक्तमित्यौशनसवाक्यात्तत्र प्राजापत्यः ॥ कल्पनीयःब्राह्मणस्यक्षत्रियादिवृत्त्याधनार्जने प्रचेताः । ब्रा ह्मणस्यापत्कालेपितृमातृबहुभृत्यस्यानंतरंक्षत्रोपनिवेशःआपत्कालेमवद र्शयति पित्रिति पित्राद्यभावेक्षत्रोपनिवेशः क्षत्रधर्म्मस्वीकारश्चेत्तदा तत्रे त्यादि तत्रसवत्सरमर्थप्राप्तौ ॥ चांद्रायणंचरेदिति वैश्यवृत्तिजीवने तत्र वर्षाभ्यंतरे मासादौचांद्रायणभागहारःकल्पनीयः संवत्सरादूर्ध्वंद्विगुणयत्रे गुण्यादिकल्पनीयम् शूद्रवृत्त्याधनार्जने मनुः ॥ नकथंचनकुर्वीतब्राह्मणः कर्मवार्षलम् बृषलःकर्मवाब्राह्मंपतनीयेहितेतयोः ॥ १ ॥ वार्षलंकर्म सेवा

व्यतीतहोजावे तव चांद्रायणव्रतकरे । अर जब वैश्यवृत्ति करके उपजीविकाकरे अर तिसस्थान के विषय वर्षके मध्यमेंहि मासादिके व्यतीतहोनेमें चंद्रायणव्रतके तीन ३ भाग अर्थात् तीनपा द कल्पन करणे योग्यहैं अर जेकदाचित् वर्षतें उपरंतहोजाए तव कालके अनुसारदूणा अथ वा त्रिणाइत्यादि चांद्रायणव्रत कल्पना करणे योग्यहै ॥ शूद्रवृत्ति करके धनके एकत्रकरणेमे मनुजीने कहाहै नेति ब्राह्मण शूद्रके कर्म नूं कदाचित् भी न करे अर्थात् सेवा न करे अर शूद्र ब्राह्मणके कर्मनूं न करे क्योंकि ब्राह्मण और शूद्र इनोको परस्पर कीतेहोये कर्म्म पतित कर देते हैं ॥ १ ॥

इसप्रकार उपक्रम कर्के फेर उपनयन कर्मके साथ कृच्छादि व्रतकी पश्चात् प्रवृत्तिके विषय मनुजीकावाक्यहै प्रेति परकर्मके विषये स्थित होकर जेडे ब्राह्मण और क्षत्री अथवा वैश्य प्रायश्चित्त नूं करतेहैं और अपणी जातितें भ्रष्ट होए होएजो ब्राह्मणहैं तिनांकोभी एही प्रायश्चित्त कथन करे १ ॥ शूद्रकोंभी ब्राह्मण औरक्षत्री अथवा वैश्यके कर्मकरणेके विषय एहि प्रायश्चित्तहै क्योंकि शूद्रकों भी पर कर्म होनेसें अर्थात् निंदित कर्म होनेसें परंतुंपरवृत्तिकर्के एकत्र कीता होआ जो धनहै तिस त्यागके सहित एह प्रायश्चित्त है क्योंकि जिस कारणतें निंदित कर्म केधन नूं संचितकरतेहैं सो तिसधनके त्यागणेते पछि प्रायश्चित्त से शुद्ध होतेहैं इस मनुके वचनतें जानना ॥ स्त्रीके धन कर्के उपजीविका करणेमे कहते हैं चांद्रेति एक चांद्रायण व्रत कर्के संपूर्ण पापांका नाश होताहै सोधन स्त्रीके तांई दे करके चांद्रायण व्रत करणा स्त्री धन इस जगाउंहै जो विवाह विषे पित्रादियोने दित्ताया और श्वशुरके घर पाद वंदनके समय दित्ताहै ॥ स्त्रीके मुखके विषय मैथुन करणेमें उशनसका वचन है यइति जो ब्राह्मण अपणी धर्म पत्नीके अर्थात् विवाहिता स्त्रीके मुखमे मैथुन करताहै सो पतित होताहै अर्थात् पापी होताहै इसका प्रायश्चित्त वैवस्वत मनुजीनें कहाहै कि प्राजापत्य व्रत कर्के सो शुद्ध होताहै इति ॥ बैल कर्के युक्त जो गाडी तिसके विषय स्थित पुरुषके मैथुनमें यमजीका वचनहै यदीति जद ब्राह्मण और क्षत्री अथवा वैश्य बैल कर्के युक्त जो गाडी किसके विषय स्थित होकर्के मैथुन करताहै इसमें स्वायंभुव मनुजी कहते भये ॥ १ ॥ तीन ३ रात्र उपवास कों कर्के सहित वस्त्रांदे स्नान करे अर बैलांके तांई घासदेदेवे अर्थात् बैलांनूं चारे पश्चात् घृतका भक्षणकरे तो शुद्धहोताहै ॥ २ ॥ जो कथनहै

एवमुपक्रम्य पुनरुपनयनसहितकृच्छ्राद्यनुवृत्तौ सएव ॥ प्रायश्चित्तंप्रकुर्वंतिविकर्मस्थास्तुयेद्विजाःब्राह्मण्याच्चपरित्यक्तास्तेपामप्येतमादिशेत् १ ॥ शूद्रस्यापिद्विजकर्मकरणेऽप्येतदेव ॥तस्यापि तद्विकर्मत्वात् अर्जितधनत्यागपूर्वकंचैतत् ॥ यद्गर्हितेनार्जयंतीति मनूक्तेः ॥ स्त्रीधनोपजीवनेतु सएव चांद्रायणेनचैकेन सर्वपापक्षयोभवेत् ॥ चान्द्रायणंस्त्रियैतद्धनंदत्वाकार्य्यम् ॥ भार्यायामुखमैथुनेतूशनाः ॥ यस्तुब्राह्मणोधर्मपत्नीमुखेमैथुनंसेवेतसदुष्यतीति वैवस्वतः ॥ प्राजापत्येनशुद्ध्यतीति ॥ गोयुक्तयानस्थस्यमैथुनेयमः ॥ यदिगोभिःसमायुक्तंयानमारुह्यवैद्विजः मैथुनंसेवतेचैवमनुःस्वायंभुवोऽब्रवीत् ॥ १ ॥ त्रिरात्रंक्षपणंकृत्वासचैलस्नानमाचरेत् गोभ्योधवसकंदद्यादघृतंप्राश्यविशुद्ध्यतीति ॥ २ ॥ यत्तु स्मरणम्

मैथुनमिति ब्राह्मण और क्षत्री अथवा वैश्य बैलां कर्के संयुक्त जो गाडी तिसके विषयस्थित होकर्के स्त्रीके अथवा पुरुषके साथ दिनमे मैथुनको करताहै सो सहित वस्त्रांके स्नानकरे । १ । एह अकामतें एक वारकरणेके विषय जानना ॥ अर काम कर्के पुरुषके साथ मैथुन करणेका प्रायश्चित्त जाति भ्रंशादिके विषय कहाहै । तूं मेरीमाताके समानहै ऐसे जो पुरुष क्रोधतें अपणी स्त्रीकों कह कर्के फेर मैथुनके वास्ते इच्छा करताहै तिसके विषय पराशरजीने कहाहै यइति जो पुरुष क्रुद्धहो कर्के अपणी स्त्रीकों मैथुनके अयोग्यतूं कहताहै अर्थात् तूं मेरी माताहैं ऐसें वचन कहताहै अर फेर मैथुनके वास्ते इच्छा करताहै सो पुरुष ब्राह्मणांके मध्यमें अपणे प्रायश्चित्त कों कथन करवाए । १ । इसीमें औरवचन है आर्तइति आर्त क्या दुःखी अथवा क्रोध अथवा अज्ञान अथवा क्षुधा अथवा तृषा अथवा भय इनां कर्के पीडित होआ होआ

मैथुनंतुसमासाद्य पुंसियोपितिवाद्विजः गोयानेप्सुदिवाचैवंसवासाःस्नानमाचरेत्१ तदकामतः सकृत्करणेज्ञेयम् क्रोधाद्भार्यांत्वमिमात्रासदृशीत्युक्त्वा पुनःसंभोगेपराशरः। यस्तुक्रुद्धःपुमान्ब्रूयाज्जायायास्त्वगम्यताम् पुनरिच्छतिभर्यांचविप्रमध्येतुवाचयेत् १ आर्तःक्रुद्धस्तमोधोवाक्षुत्पिपासाभयर्दितःदानंपुण्यमकृत्वावा प्रायश्चित्तंदिनत्रयम् २ उपस्पृशेत्त्रिपवर्णंमहानद्युपसंगमे स्नानांतेचैवगांदद्याद्ब्राह्मणान्भोजयेद्दशेति ३ वाचयेत्स्वस्यप्रायश्चित्तस्योपदेशंकारयेत् पुण्यंयागादिसंकल्पितंदानयागाद्यकृत्वेत्यर्थः वस्तिकर्मणियमः। वस्तिकर्मणिरूढेश्चप्रच्छर्दनविरेचनैः शिशुकृच्छ्रेणशुद्ध्येततस्मात्पापान्नसंशयः १ प्रच्छर्दनविरेचनयोरभ्यासएवशिशुकृच्छ्रःअन्यत्रतुस्नानमात्रम्

दान और यज्ञादि नूं न कर्के तिसस्त्रीनूं गमन करे तां प्रायश्चित्त तीन ३ दिन करे । २ । और जेकर दानादि होण तां व्रतका प्रयोजन नहि तिसके विना कहतेहैं उपेति अर तीन काल महानदीके संगमकें विषय स्नान करे और स्नानके अंतमें गोसंकल्प करे और दश १० ब्राह्मणा नूं भोजन खुलावे ॥ ३ ॥ वस्तिकर्मके विषय यमजीका वचनहै वस्तीति मूत्राशयकी चिकित्साकानाम वस्तिकर्महै मूत्राशयके शोधन करणेके वास्ते उलटी अथवा जिलाब करवाए तिस पापतें पुरुष शिशु कृच्छ्र व्रतकर्के शुद्ध होताहै इसमें संदेह नहि । १ उलटी और जलाबके अभ्यासके विषय शिशुकृच्छ्र व्रत नूं करे जेकरकदाचित् करवाए तद स्नान कर्के हि शुद्ध होजाताहै अर वस्तिकर्मका स्वरूपदेखणा होवे तब भाव प्रकाशमें देखलेणा

तिस प्रकार अजीर्णादिकेविषयभी यमजीका कथनहै । अजीति अन्नकान पचना और पूर्वकहा जो अभ्युदित और उद्वमन और क्षौर कर्म और मैथुन और खोटा स्वप्न और दुष्ट पुरुषके साथ स्पर्श इनके विषयमें स्नान मात्र अर्थात् केवल स्नानाहि कहाहै । २ । देवताके मंदिरके शिलादि करके अपने गृहके वनानेमियमजी निंदाकरतेंहैं इष्टेति देवताके मंदिरमे लगिआंहोआं जो पक्कि आ इटां और काष्ट और लोहा और पाषाण इनानूं स्या करके लोभतें अपणे गृहके विषय जो पुरुष जोडतें हैं अर्थात् इनां करके अपणे गृहनूं वनातेहैं । १ । सो एकले और भयभीत और क्षुधातृषा करके दुःखी होए होए जितना पर्यंत पापका नाश नहि होता तितना पर्यंत वंधनमे

तथाच सएव ॥ अजीर्णेऽभ्युदितेवान्तेश्मश्रुकर्मणिमैथुने दुःस्वप्नेदुर्जनस्प र्शेस्नानमात्रंविधीयते ॥ २ ॥ देवागारशिलादिना स्वगृहकरणंनिंदति यमः इष्टकाकाष्ठलोहाश्मदेवालयसमन्वितम् गृहीत्वात्मगृहेचैवलोभाद्वियोजयं तिये १ ॥ एकाकिनस्तथोद्विग्नाः क्षुत्तृपापरिपीडिताःवंधनेतेतुतिष्ठंतियाव त्पापस्यसंक्षयः २ ॥ अत्र प्राजापत्यचान्द्रायणादिकल्प्यम् ॥ वानप्रस्थय त्योर्व्रतभंगे सएव वानप्रस्थोदीक्षाभेदकृच्छ्रेद्वादशरात्रंचरित्वामहाकक्षंव र्द्धयेत् ॥ भिक्षुर्वानप्रस्थवत्सोमवृद्धिवर्जस्वशास्त्रसंस्कारंचेति दीक्षाभे दोयमनियमातिक्रमः महाकक्षमौषधवनप्रदेशमुदकसेचनादिना वर्द्धयेत सोमशब्देनौषधिसामान्यंलक्ष्यते ॥ तद्वृद्धिःपरंभिक्षोर्निवर्त्तते परंतु स ममित्यर्थः स्वशास्त्रसंस्कारः प्राणायामाभ्यासः ॥

अर्थात् नरकमें स्थित होतेहै ॥ २ ॥ इसके विषय प्रायश्चित्त प्राजापत्य और चांद्रायणादिव्रत कल्पन करणा ॥ वानप्रस्थ और यति के व्रत भंगमेंभी यमजीका वचनहै ॥ वानेति वानप्रस्थी जव यम और नियम कर्मोंका उल्लंघन करे तव द्वादश १२ रात्रके कृच्छ्र व्रत नूं कर्के पश्चात् औषधिके वन नूं जलके संचन करणे कर्के वधावे ॥ और संन्यासी भी जव यम और नियमादि कर्मोंका उल्लंघन करे तव औषधिकी वृद्धितें विना अपणे शास्त्रके संस्कारनूं करे अ र्थात् प्राणायामके अभ्यास नूं करे अर औषधिओंकी वृद्धिका संन्यासीको निषेधकिताहै (दीक्षा भेदोयमनियमातिक्रमः) इत्यादि पदों कर्के पूर्वले वाक्यका हि अर्थ स्पष्ट कीताहै ॥

हारीतजीका वाक्यहै झूठ और चुगली इनके वचनमे अर्थात् झूठ और चुगली कथन करके संन्यासी तप्त कृच्छ्र व्रत नू करे ॥ क्रोध और अहंकार और चुगली इनके विषय छागलेय जीका कथनहै व्रतेति संन्यासियोंके जो व्रत अर तिसी प्रकार जो उपव्रत हैं इना मेसें एक एकके भी उल्लंघनके विषय प्रायश्चित्त विधानकरीदाहै कि एक १ दिन रात्र उपवासनूं रक्षकर्के पश्चात् कृच्छ्र व्रतके सहित चांद्रायण व्रत नूं करे ॥ १ ॥ व्रत और उपव्रतां नूं बौधायनजी कहतेहैं अथादिके विषय मौनिके व्रतांनूं कहतेहैं ॥ अहिंसेति जीवोंकों न मारणा और सत्य कहणा और चोरी न करणी और मैथुन नकरणा एह संन्यासीके व्रत कहे हैं ॥ इसतें उपरंत उपव्रतांनूं कहतेहैं अक्रोध इति क्रोध न करणा और गुरुकी शुश्रूषा करणी और सर्वदा काल प्रसन्न

हारीतः अनृतपिशुनवचने भिक्षूणांतप्तकृच्छ्रः ॥ क्रोधाहंकारपिशुनेषुच छागलेयः ॥ व्रतानियानिभिक्षूणांतथैवोपव्रतानिच एकैकातिक्रमेतेषांप्रायश्चित्तंविधीयते अहोरात्रोपिवोभूत्वाकृच्छ्रचांद्रायणंचरेत् १ । कृच्छ्रपदंचांद्रायणविशेषणम् व्रतोपव्रतान्याह बौधायनः अथ मौनिव्रतानि। अहिंसासत्यवचनमस्तेयंमैथुनस्यचवर्जनम् ॥ अथोपव्रतानि ॥ अक्रोधोगुरुशुश्रूषाप्रसादशौचमाहारशुद्धिश्चेति जलप्रतिबिंबदर्शनादौयाज्ञवल्क्यः ॥ मयितेजइतिच्छायांस्वांदृष्ट्वांवाप्नुनिवेजपेत् सावित्रीमशुचौदृष्टेचापलेचानृतेपिच ॥ १ मयितेज इतिमंत्रोवाजसनेयिप्रसिद्धः

रहणा और शौच करणी और शुद्ध भोजन करणा एह उपव्रत कथन कीते हैं ॥ जलके विषय छायाके दर्शनादिमें अर्थात् जलमें अपना स्वरूप देखनेमें याज्ञवल्क्यजीने कहाहै मयीति जल के विषय अपणी छायानूं देखकरके (मयितेजः) इत्यादि वाजसनेयिके मंत्र नूं जपे और अशुद्धवस्तुके दर्शनमें अर चित्तकीअनवस्थिति औरझूठवचन इनके विषयमें साविगीनूं जपे अर्थात् गायत्रीका जप करे ॥ १ ॥ इसजगा मयितेज इसमंत्रका और गायत्रीका जप एकवारहि करणा चाहिए और जेकर बहुतवार प्रतिबिंबादि दर्शनहोवे तों बहुवार करणा

अशुचिस्थान और मूत्र और पुरीषादि और अनवस्थिति और निरर्थक शरीरकी क्रिया और अंगीकार करके पश्चात् झूठ कथन करणा इनके विषय हारीतजीका वाक्यहै ॥ प्रतीति जोपुरुष प्रथम अंगीकार करके पश्चात् झूठ अथवा मिथ्याकों सत्य कथन करे सो तप्तकृच्छ्रके सहित चांद्रायण व्रतकों करे ॥ १ ॥ एहवाक्य गुरुकों प्रथम कथन कीता जो है क्योंकि मैं तुसाडा एह काम करांगा अथवामैं तुसानूं एह वस्तु दिआंगा इतना वचन कहकर पश्चात् न करणा तिसके विषय जानना क्योंकि प्रायश्चित्तकों वडाहोणेते । भोजन कालके विषय जो मौनव्रतहै तिसके नाशके विषय पराशरजीका वचनहै मौनेति मौन व्रतकों अंगीकार करके ब्राह्मण और क्षत्री अथवा शूद्र स्थित होआ होआ न कथन करे अर्थात् भोजनतें पहले बोलणाथा तिस विषय न बोले अर भोजन भक्षण करदा होआ जो बोले सो पुरुष शेष अन्ननूं त्यागदेवे क्या बोलणेतें पीछे भोजन न करे ॥ १ ॥ केवल मुखकर्के

अशुचौ मूत्रपुरीषादौचापले वृथाचेष्टायांप्रतिश्रुत्यानृतोक्तौहारीतः॥ प्रतिश्रुत्यानृतंब्रूयान्मिथ्यासत्यमथापिवा सतप्तकृच्छ्रसहितंचरेच्चान्द्रायणव्रतमिति।१।गुरुवस्तुविषयकप्रतिश्रुताकरणपरमेतत् प्रायश्चित्तस्य गुरुत्वात् भोजनकालीनमौनव्रतलोपे पराशरः मौनव्रतंसमाश्रित्यआसीनोनवदेद्द्विजः भुंजानोहिवदेद्यस्तुतदन्नंपरिवर्जयेत् ॥१॥ केवलमुखेन जलपानेस एव । विद्यमानेपुहस्तेपुब्राह्मणोज्ञानदुर्बलः तोयंपिबतिवक्रेणश्वयोनौजायतेध्रुवम् ।२। असपिंडैःसहरोदने पारस्करः। मृतस्यबांधवैःसार्द्धंकृत्वातुपरिदेवनम् वर्जयेत्तदहोरात्रंदानंश्राद्धादिकर्मचेत्यनेनैकाहः॥१॥एतच्च कामतः अकामतस्तुस्नानमेव ॥ प्रेतालंकरणेशंखः॥कृच्छ्रपादःसपिंडस्यप्रेतालंकरणेकृतेअज्ञानादुपवासःस्यादशक्तौस्नानमिष्यतइति॥ १ ॥ कामतोद्विगुणम्

जल पीणेके विषयभी पराशरनेहि कहाहै विद्येति हत्थांके हुंदिआं जो ज्ञानदुर्बल अर्थात् मूर्ख ब्राह्मण जलकों केवल मुख करके पीवताहै अर्थात् लंम्मा पेकर मुखके साथ पान करता है सो निश्चय करके कुत्तेकी योनिकों प्राप्त होताहै ॥ २ ॥ असपिंडांके साथ रुदन करणके विषय पारस्करजीका कथनहै मृतेति मृत होआ जो कोई असंबंधी पुरुषहै तिसके संबंधिआंके साथ रुदननूं करके तिस दिन रात्रके विषय दान और श्राद्ध अर आदिपद करके तर्पणादि इनानूं न करे क्योंकि तिसते वोह अशुद्धहै १ सो एह इच्छा करके जब करे तब एक दिन वर्जन करे अर जब इच्छासें न करे तब स्नान करकेहि शुद्ध होताहै॥ १ ॥ प्रेतके भूषण करणे विषय शंखजीका वचनहै कृच्छ्रेति भिन्न पिंड वाला जो प्रेतहै तिसके भूषण करणेमें अर्थात् स्नानादि कराणेमें कृच्छ्र व्रतका एक पाद करे अर जब अज्ञानतें करवाए तब एक दिन उपवास करे अर जब इसमे शक्ति न होवे तब स्नानमात्रहि इच्छितहै ॥ १ ॥ अर कामके विषयमें दूणा प्रायश्चित्त करे ॥

जो तप्त कृच्छ्रकी प्रवृत्तिके विषय अंगिराजी का वाक्यहै कि आत्मत्याग करणवाले प्रेतांके संस्कार करणके विषय अर्थात् शवांके स्नानादि करवाणेमें पातकी होताहै अर्थात् तब कृच्छ्र व्रत करके शुद्ध होताहै सो एह वाक्य अभ्यासके विषयमें जानना ॥ सजाति और भिन्न जाति के शवके पीछे गमनके विषयमें मनुजीका वचनहै अन्विति सजाति और भिन्नजाति वाला जो शवहै तिसके पीछे इच्छासें जो पुरुष जाताहै अर्थात् मुरदेके दाह करण वास्ते जो साथ जाताहै सो सहित वस्त्रांके स्नान करके और अग्निनूं स्पर्श करके अर घृतका भक्षण करे तो शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ इस स्थानमें इच्छया इस पदके ग्रहण करणेसें एह कामके विषयमें जानना ॥ अर अकामके विषयमें केवल स्नानहि कथन कीताहै ॥ फेर याज्ञवल्क्यने जो कहाहै कि ब्राह्मेति भिन्न पिंड वाले ब्राह्मणने ब्राह्मण और क्षत्री

यत्तु तप्तकृच्छ्रानुवृत्तौ अंगिराः ॥ आत्मत्यागिनांच संस्कृतौ तदस्तुपा तककारीचेति तदभ्यासे ॥समानेतरजातिप्रेतानुगमने मनुः। अनुगम्येच्छ याप्रेतंज्ञातिमज्ञातिमेवच स्नात्वासचैलःस्पृष्ट्वाग्निंघृतंप्राश्यविशुद्ध्यतीति १ अत्रेच्छयेतिग्रहणादेतत्कामतः अकामतस्तुस्नानमेव यत्तुयाज्ञवल्क्यः ब्राह्मणेनानुगंतव्योनशूद्रोनद्विजःक्वचित् अनुगम्यांभसिस्नात्वास्पृष्ट्वाग्निं घृतभुक्छुचिः॥१॥ ब्राह्मणेनासपिंडेन द्विजोविप्रादिः ॥ अस्यचघृतप्राशन स्यभोजनकार्यविधाने प्रमाणाभावान्नभोजननिवृत्तिरितिमिताक्षरायाम् तन्मानवसमानविषयम् ॥ वस्तुतोघृतस्यप्रायश्चित्तार्थत्वादभोजनमेवयु क्तम् अतएववासिष्ठेन मनुष्यास्थिस्निग्धंस्पृष्ट्वात्रिरात्रमस्निग्धेत्वहोरात्रं शवानुगमनेचैवमिति ॥

और वैश्य अथवा शूद्र इनके मृत होयां पीछे गमन नहि करणे योग्य जे कदाचित् जाएभी तब जलके विषय स्नान करके अर अग्निनूं स्पर्श करके और घृतका भक्षण करके शुद्ध होवाहै ॥ १ ॥ इस घृतभक्षणको भोजन कार्यका विधिके विषयमें अप्रमाण होणेतें और भोज न की निवृत्ति नहि जाननी एह मिताक्षरामें लिखाहै सो मनुजीके वचनके तुल्यहि जानना वास्त वतें घृत भक्षणको प्रायश्चित्तके अर्थ होणेतें भोजन नहि भक्षण करणे योग्य ॥ इसी कारणसें वसिष्ठजीने कहाहै मनुष्येति पुरुषकी नवीन हड्डीका स्पर्श करके तीन ३ रात्र उपवास करे अर पुराणी हड्डीका स्पर्श करके एक १ दिन रात्र उपवास करे इसी प्रकार शवके पीछे गमनके विषय जानना चाहिए ॥

विप्रेति ब्राह्मण प्रेतके पीछे गमनके विषय एक दिन कथन करणेतें क्षत्री प्रेत और वैश्य प्रेत के पीछे गमनके विषय कुछक अधिक प्रायश्चित्त कल्पन करणा चाहिए ॥ ब्राह्मणकों शूद्रके पीछे गमनके विषय पराशरजीका वाक्यहै । प्रेतीति लेजाईदे होए शूद्र शवके पीछे जो मूर्ख ब्राह्मण जाताहै सो तीन ३ रात्र व्रत करके शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ तीन रात्र व्रतके कीतिआं होआं पश्चात् समुद्रमे प्रवेश करण वाली जो नदी है तिसकों प्राप्त हो करके अर्थात् वडी नदीके विषय स्नान करके अर पश्चात् सौ १०० प्राणायाम कों करके और घृतका भक्षण करके शुद्ध होताहै ॥ २ ॥ इस स्थानमें घृत भक्षणकों शुद्धिके अर्थ कथन करणेतें भोजनका निषेध नहि एह वाक्य कामका विषयहै ॥ अकामके विषयमें इसतें आधा प्रायश्चित्त करणा ॥ इसी प्रकार क्षत्रीकों वैश्य और शूद्रप्रेतके पीछे गमनमें अर वैश्यकों शूद्र प्रेतके पीछे गमन करणेमें प्रायश्चित्त कल्पन करणा ॥ अग्निहोत्रादि कर्म और वा

विप्रानुगमने एकाहस्योक्तत्वात् क्षत्रियवैश्यानुगमने त्वधिकं कल्प्यम् ब्राह्मणस्य शूद्रानुगमने पराशरः ॥ प्रेतीभूतंतुयःशूद्रंब्राह्मणोज्ञानदुर्बलःअनुगच्छेन्नीयमानंसत्रिरात्रेणशुद्ध्यति १ त्रिरात्रेतुततश्चीर्णेनदींगत्वासमुद्रगाम् प्राणायामशतंकृत्वाघृतंप्राश्यविशुद्ध्यतीति २ अत्र घृतप्राशनस्य शुद्ध्यर्थाभिधानान्नभोजननिवृत्तिः॥ एतच्चकामतःअकामतस्त्वर्द्धम् ॥ एवं क्षत्रियस्यवैश्यशूद्रानुगमने वैश्यस्य शूद्रानुगमनेकल्प्यम् ॥ इष्टापूर्त्तशुभाशुभमहाकर्म्मस्वनुपहतानामपिऋत्विगाचार्यादीनांत्रीणि कृच्छ्राणि चांद्रायणास्त्यसर्वप्रायश्चित्तमाह प्रयोगपारिजाते आचार्यः॥ सएवरजस्वलाकन्यारक्षणे प्रायश्चित्तमाह॥कन्यामृतुमतींशुद्धांकृत्वानिष्कृतिमात्मवान्तथातुकारयित्वातामुद्वहेतानृशंसधीः १ दद्यात्तदृतुसंख्यागाःशक्तःकन्यापिता यदि दातव्यैकापिनिःस्वेनदानेतस्यायथाविधि ॥ २ ॥ तस्यागोर्दानेयथाविधि ऋतुसंख्याकाविधि यथास्यात्तथाऽचरणीयमित्यर्थः

पी कूपादि और शुभ और अशुभ एह जो महाकर्म हैं इनके विषयमे चतुर भी हैं ऋत्विक् और आचार्यादि इनको भी त्रय कृच्छ्र और चांद्रायण संपूर्ण प्रायश्चित्तको प्रयोग पारिजातमें आचार्यजी कथन करते भये ॥ सोई आचार्यजी रजस्वला कन्याके रक्षणमें प्रायश्चित्त कों कहतें हैं । कन्यामिति ज्ञानवाला और नहि निंदाके योग्य बुद्धि जिसकी ऐसा पुरुष प्रथम प्रायश्चित्तकों करके अर कन्याकों भी प्रायश्चित्त करवाके पश्चात् ऋतुवाली कन्याकों विवाह लये ॥ १ ॥ दद्येति अर कन्याका पिता जद समर्थ होवे तब कन्याकी ऋतुके समान गौआं देवे अर्थात् जितनीयां ऋतु लंघीयां होण विवाहतक तितनीयां गौयांका दान करे एह अर्थ है अर कन्याके विधि पूर्वक दानके विषय निर्धननें भी एक गौ देणी योग्यहै परंतु तिस गौके दान विषय ऋतु संख्याके नाम करके संकल्प करणा ॥ २ ॥

सो गौश्रां जामाता को देणियां अथवा ब्राह्मणको इसका उत्तर कहतेहैं ॥ गा इति अर कन्याका पिता धनी होवे तव ब्राह्मणांकों गौश्रां देवे अर जव निर्धन होवे तव दक्षिणा मात्रदेवे तिस कारणतें ऋतुकी संख्याके समान ब्राह्मणांकों गौश्रां देवे अथवा कन्या पासों दुवाए ॥ ३ ॥ उपोष्येति अर कन्या तीन ३ दिन उपवास रखकर पश्चात् रात्रिके विषय गौश्रांके दुग्धकों पीवें जव ऋतुतें रहित कन्या होवे तिस कालके विषय कन्याके तांई भूषण देवे ऊौर तिस कन्याकों विवाहन वाला वर भी कूष्मांड संज्ञिक मंत्रों करके - घृतका हवन करे ॥ ४ ॥ श्राद्ध और उपवासके दिनमें दातन करणके विषय विष्णु रहस्यमें लिखाहै । श्राद्धेति श्राद्ध और उपवासके दिनमें दातनकों करके गायत्रीके सौ १०० मंत्र करके पवित्र होश्रा जो जलहै तिसका आचमन करके शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ और

गादद्याद्ब्राह्मणेष्ववानिःस्वोनिःस्वस्तुदक्षिणाम् तस्मात्तद्दतुसंख्येषुब्राह्मणेषुप्रदापयेत् ॥ ३ ॥ उपोष्यत्रिदिनंकन्यारात्रौपीत्वागवांपयः अदृष्टरजसेदद्यात्कन्यायैतत्रभूपणम् तामुद्वहन्वरश्चापिकूष्मांडैर्जुहुयाद्घृतमिति ४ श्राद्धोपवासदिने दंतधावने विष्णुरहस्ये ॥ श्राद्धोपवासदिवसेखादित्वादंतधावनम् गायत्र्याःशतसंपूतमंवुप्राश्यविशुद्ध्यतीति ॥ १ ॥ अन्यान्यपिप्रकीर्णकान्यपरार्के शंखः ॥ प्रेतस्यप्रेतकार्याणिअकृत्वाधनहारकः वर्णानांयद्वधेप्रोक्तंतदर्धंप्रयतश्चरेत्॥१॥ अतिमानादतिक्रोधाद्भयादज्ञानतोपिवा उद्बध्नीयात्स्त्रीपुमान्वापिगतिरेपांनविद्यते ॥ २ ॥ पूयशोणितसंपूर्णेतमस्यंधेसुदारुणे पष्टिवर्षसहस्राणिनरकेयद्रुपासते ॥ ३ ॥ गोभिर्हतंतथोद्बद्धंब्राह्मणेनचघातितम् संस्पृशंतेतुयेविप्रागरदाश्चाग्निदाश्चये ॥ ४

भी प्रकीर्णक प्रायश्चित्त अपरार्कमें शंखजीने कथन कीते हैं ॥ प्रेतेति ॥ प्रेतके धन कों ग्रहण करणे वाला जव प्रेतके कर्मांकों न करे तव वर्णांके हत करणेके विषय जो प्रायश्चित्त कहाहै तिसतें आधा प्रायश्चित्त इंद्रियोंकेंरोककरकरे १ अव और कहतेहैं अतीति वहुत मान और वहुत क्रोध और भय अथवा अज्ञान इनतें स्त्री अथवा पुरुष किसीकों फांसी दे देवे तिनकी गति नहि होती । २ । तिनकी व्यवस्था कहतेहैं पूयेति पाक और रुधिर करके पूर्ण होश्रा होश्रा और अंधकार करके युक्त और भयानक जो नरक है तिसके विषय सठ हजार ६०००० वर्ष रहतेहैं ॥ ३ ॥ और कथन करतेहैं ॥ गोभिरिति गौश्रांने जो मारिश्रा है और तिस प्रकार फांसी ले करके जो मृत होश्रा है ऊौर ब्राह्मणने जो मारिश्रा है इनाकों जेडे ब्राह्मण स्पर्श करते हैं और जेडे विषके देणे वाले हैं और जेडे अग्निके देणें वालेहैं ॥ ४ ॥

अन्विति ओर जेंडे फासी कर्के मृतहोयेके पीछे जातेहैं ओर जेडे पाशके छेदने वाले हैं सो संपूर्ण पापकर्के संयुक्तहोतेहैं तिनांकी शुद्धिनूं मैं कहताहुं । ५ । तप्तेति सो सब तप्तकृच्छ्र व्रतकर्के शुद्धहोतेहैं ओर ब्राह्मणांकोंभोजन खुलावें अर ब्राह्मणकेताईं वैलकेसहित गौ दक्षिणादेवें ६ ॥ इहां एकवचन वहुवचनके स्थानजानना इसी विषयमें संवर्त्तजीका वाक्यहै गविति गौअनि जो ब्राह्मणने हतकीताहैं उर आप पाशादिकर्के मृतहोआहै कल्याणकी इच्छा करदे जो सत्पुरुषहैं तिनांनें इनके विषय रोदन न करणा चाहिए । १ । ओर कथन करतेहैं एषामिति इनांके मध्यमें एक किसी प्रेतनूं जो पुरुष आच्छादनकरताहै अथवा चुकताहै अथवाकटोदक कियानूं करताहै

अनुयातारोऽपियेचान्येयेचान्येपाशछेदकाः सर्वेतेपापसंयुक्तास्तेषांवक्ष्यामिनिष्कृतिम्॥ ५॥ तप्तकृच्छ्रेणशुध्यंतिकुर्याद्ब्राह्मणभोजनम् अनडुत्सहितां गांचदद्याद्विप्रायदक्षिणाम् ॥ ६ संवर्त्तः॥ गोभिर्हतेतथाविप्रेतथाचैवात्मघातिनि नैवाश्रुपातनंकार्यंसद्भिःश्रेयोऽभिकांक्षिभिः ॥ १ ॥ एषामन्यतमंप्रेतं योवसेतवहेतवा कटोदकक्रियांकृत्वातप्तकृच्छ्रंसमाचरेत् ॥ २ ॥ तच्छवंकेवलंस्पृष्टमश्रुवापातितंयदि पूर्वोक्तानामकर्त्ताचेदेकरात्रमभोजनम् ॥ ३ ॥ पूर्वोक्तानांकटोदकक्रियादीनामकर्त्ता केवलं तच्छवस्पर्शाश्रुपातकर्त्ताचेत्तदेदमल्पप्रायश्चित्तमिति ॥ तथा ॥ यआत्मत्यागिनःकुर्यात्स्नेहात्प्रेतक्रियां नरःसतप्तकृच्छ्रसहितंचरेच्चांद्रायणव्रतम् ॥ १ ॥ वुद्धिपूर्वकएतत् ॥

अर्थात् उठाणे वास्ते किडा वनाकर लेजाताहै ओर जल देताहै सो पुरुष तप्त कृच्छ्र नूं करे । २ । ओर कहतेहैं तदिति अर जिसने केवल शवकेसाथस्पर्श कीताहै अथवा रोदन कीताहै अर कटोदकादि क्रिया जिसने नहिकीती तिसको एक रात्र उपवास कहाहै॥३॥पूर्वोक्तानांइत्यादि पदों कर्के इसी श्लोकका हि अर्थ स्पष्ट कीताहै ॥ तिस प्रकार ओरभी कहतेहैं यइति जो पुरुष आत्मत्यागीहै अर्थात् पाशादि कर्के जो आप मृत होआहै तिसकी प्रेतक्रिया नूं जो पुरुष स्नेहतें करताहै सो तप्त कृच्छ्रके सहित चांद्रायण व्रतनूं करे॥१॥एह ज्ञानके विषयमें जानना

इसी विषयमें यमजीका वाक्यहै नेति ब्राह्मणांके दंड करके हतहोए जो पुरुषहैं तिनके अ शौच श्रौर उदक श्रौर रोदन श्रौर निंदा श्रौर दया श्रौर तखतेका चुकणा इनां नूं नकरे ।१। ब्रह्म दंड नाम शापकाहै परंतु किसे तरहाँ ब्राह्मणांतें मृतहोवे सो सभ ब्रह्मदंडहत जानणा श्रौर कहतेहैं ॥ स्नेहेति स्नेह श्रौर श्रपना कोई कार्य तिसकी सिद्धि वास्ते श्रौर भय इत्यादितें जो पुरुष आत्मत्यागीके अशौचादि नूं करताहै सो गौश्रांके मूत्रकरके यवांके श्राहार नूं करदा होश्रा तप्तकृच्छ्र व्रत करके शुद्ध होताहै।२।एतानि इत्यादि पदोंमें इसी श्लोककाहि अर्थस्पष्टकीताहै श्रौर कथन करतेहैं कृत्वेति आत्मात्यागीकों अग्नि श्रौर उदक श्रौर स्नान करवाणा श्रौर स्पर्श

यमः ॥ नाशौचंनोदकंचाश्रुनापवादानुकंपने ब्रह्मदंडहतानांतुनकार्य्यंकट धारणम्॥१॥स्नेहकार्य्यभयादिभ्योयस्त्वेतानिसमाचरेत् गोमूत्रयावकाहारः सतुकृच्छ्रेणशुध्यति॥२॥एतानिआत्मत्याग्याद्यशौचादीनि कटःशवखट्वा कृत्वाग्निमुदकंस्नानंस्पर्शंवहनमेवच रज्जुच्छेदाश्रुपातेच तप्तकृच्छ्रेणशुद्ध्यति॥३॥एतत्समुदितानां कर्म्मणां मतिपूर्वके संवर्त्तः वोढ्ऋणामग्निदात्दणांसंविधानविधायिनाम् तप्तकृच्छ्रद्वयाच्छुद्धिरेकमेवानुयायिनाम् १संविधानविधायिनःप्रेतालंकारकारिणः एतदपिसमुदितकरणे

श्रौर चुकणा श्रौर पाश्का छेदन श्रौर रोदन इना नूं जो पुरुष करदाहै सो तप्त कृच्छ्र व्रत करके शुद्ध होताहै ॥३॥ कथन कीते जो आत्मत्यागीके कर्महैं सभना इनकों ज्ञान करके जब करे तब एह प्रायश्चित्त जानना॥संवर्त्तजीका भी इसी विषयमें वाक्यहै वोढ्ऋणामिति चुकणे वाले श्रौर अग्निके देणे वाले श्रौर प्रेतकों भूषण करणे वाले इन संपूर्णांकी दों २ तप्त कृच्छ्रतें शुद्धि होतीहै अर पीछे जान वाल्यांकी एक तप्त कृच्छ्र करके शुद्धि होतीहै ॥ १ संविधान इस पदका हि अर्थ स्पष्ट कीताहै कथन कीते जो कर्महैं इनके विषय भीएभी जानना इति

उशनसजीका वचनहै प्रायेति ॥ अतिशयकरके लंघनलेणे और शस्त्र और अग्नि और विष और पाश और पर्वतके शृंग उपरों गिड कर और जल और काष्ठादि इनों करके जो पुरुष अपणे आपनू हत करताहै और राजा और ब्राह्मण और बडे बडे सर्प ॥ १ ॥ और शृंगांवाले और दाडांवाले और नखांवाळे और सर्प विजली इनों करके जो हत होआ है और तिसी प्रकार संकर जातितें उत्पन्नजो होआहै इनकों अशौच और जल और अग्नि इह न देवे २ ॥ तिनके स्पर्श अथवा रोदन इनके विषयमें एक १ दिन उपवास करे अर अज्ञानबें उद्वहनादिके विषयमें अर्थात् शवादिके उठाणे विषे सांतपन कृच्छ्रव्रतका आचरण करे ३ अर जान करककरे तेत्रगौके मूत्रके सहित यवांनूं भक्षणकरदा होआ कृच्छ्रव्रत करे अथवा तप्तकृच्छ्र व्रत करे व्रतमें शक्ति न होवे तव एक मास भिक्षा अन्न खावे ।४। कृत्वेति आपेमृत होयेके चुक

उशनाः ॥ प्रायानशनशस्त्राग्निविषोद्वंधभृगूदकैः काष्ठाद्यैश्चात्मनोहंतुर्नृपब्रह्मसरीसृपैः ॥ १ ॥ शृंगिदंष्ट्रिनखिव्यालविद्युताभिहतस्यच तथासंकरजातस्यनाशौचोदकवह्नयः ॥ २ ॥ तत्स्पर्शेयदिवाक्रोशेदिनमेकमभोजनम् अज्ञानोद्वहनादौतुकृच्छ्रंसांतपनंचरेत् ॥ ३ ॥ बुद्धिपूर्वेपुनस्तस्मिन्कृच्छ्रोगोमूत्रयावकः तप्तकृच्छ्रोप्यशक्तौतुमासंभिक्षाशनोपिवा ॥ ४ ॥ कृत्वातुवाहनादीनिप्रायश्चित्तमकुर्वताम् तप्तकृच्छ्रद्वयाच्छुद्धिरेकमेवानुयायिनाम् ॥५॥यस्त्ववशेषाःक्रियाःकुर्यात्स्नेहान्मूल्येनवापुनः।भवेत्तस्यपुनस्तप्तकृच्छ्रचांद्रायणोत्तमः ॥ ६ ॥ वृहस्पतिः । विषोद्वंधनशस्त्रेणयस्त्वात्मानंप्रमापयेत् मृतोमेध्येनलिप्तोयोनान्यंसंस्कारमर्हति १ ॥ पाशंछित्त्वातुयस्तस्यवोढावह्निप्रदस्तथा सोपिकृच्छ्रेणशुद्ध्येतघातकोपिनराधमः २ ॥

णादि कर्म नूं करके जेडे पुरुष प्रायश्चित्त नूं नहि करदे तिनकीशुद्धि दो २ तप्तकृच्छ्रसें होतीहै अर साथजाने वाल्यांकी शुद्धि एक तप्तकृच्छ्रसें होतीहै ॥ ५ ॥ यइति स्नेहतें अथवा मजूरी करके जेडा पुरुष आत्मघातीकी संपूर्ण क्रिया कों करताहै तिसकी शुद्धिके वास्ते तप्तकृच्छ्र और चांद्रायण श्रेष्ठहै ॥ ६ ॥ इसी विषयमें वृहस्पतिजीने कहाहै ॥ विषेति विष और पाश और शस्त्र इनों करके जो पुरुष अपणे आपनूं हत करता है अर अपवित्र वस्तु करके लिप्त होआ होआ जो मृत होआहै सोपुरुष और संस्कारके योग्य नहि अर्थात् मरणानंतर दाहादिसंस्कार उसका नहि करणा किंतुइसीतरहां जलविषें प्रवाहदेणा १। पाशमिति तिसके पाश का छेदन करके जो पुरुष तिसनूं चुकणे वाला और अग्निके देणे वालाहै सोभी कृच्छ्रव्रत करके शुद्ध होताहै अर तिसके मारणे वाला भी नरांके मध्यमे नीच कृच्छ्रव्रत करके शुद्धहोवाहै२

दक्षजीकावाक्यहै ॥ आरूढेति संन्यास मार्गकों प्रथम धारण करके पश्चात् विषयांकी अभिला षा करके तिसतें पतित होआ जो ब्राह्मण है अर चंडालांके दोष करके अपणी जातितें बा हर कीताजो पुरुष है और पाशकरके जो पुरुष मृत होआहे इनांनूं स्पर्श करके चांद्रायण व्रत नूं करे ॥ १ ॥ इसी का अर्थ स्पष्ट कीता है चांडालैरिति चांडालोंने पकड कर जेडा बंधनमे जोडया है सोचांडाल विनिःसृत है अथवा चांडालांके साथ रहकर जो आया है तिसका एह नाम है ॥ और स्मृतिमे इसकी जगा मंडलतें जो बाहर होया ऐसा अर्थ कीता हे सुमंतु जीने कहाहै उद्बंधेति अपरा धी कों फांसी देणा

दक्षः ॥ आरूढपतितंविप्रंचांडालाच्चविनिःसृतम् उद्बंधनमृतंचैवस्पृष्ट्वाचां द्रायणंचरेत् १ ।चांडालैर्गृहीत्वोद्बंधने योजितं चांडालैःसहोपित्वापरावृत्तंवा स्मृत्यंतरेतु मंडलाच्चविनिःसृतमितिपाठः तत्र सजातीयसमूहेनदूषयित्वाव हिष्कृतमित्यर्थः सुमंतुः । उद्बंधनपाशच्छेदनवहनेषु मासं भैक्षभक्षणंत्रिषव णंच स्नायात् । च्यवनः॥ आत्मघातकस्यस्पर्शनेवहने तप्तकृच्छ्रंचरेत् ॥ विंश तिर्गावोदक्षिणा ब्राह्मणेषु दद्यात् ॥ तथा ॥ शृंगिदंष्ट्रिनखिव्यालविषवह्नि महाजलैः सदूरात्परिहर्त्तव्यः कुर्वन्क्रीडांमृतस्तुयः ॥ १ ॥ नागानांविप्रियं कुर्वन्दग्धश्चाप्यथविद्युता निगृहीताश्चयेराज्ञाचौरदोषेणकुत्रचित् ॥ २ ॥

और पाशका छेदनकरणा और तिसकों चुकणा इस विषयमें एक १ मास तक भिक्षाका अन्न भक्षण करे और तीन ३ काल स्नान करे ॥ च्यवन जीका वाक्य है आत्मेति आत्मघातीके स्पर्श और चुकणेके विषयमें तप्तकृच्छ्र व्रत का आचरण करे और वीस २० गौआं ब्राह्मणों कों दक्षिणादेवे तैसे और कहतेहे शृंगीति शृंगांवालें अर्थात् गोमाहिष्यादि और सिंहा दि औरनखां वाले और सर्प और अग्नि और वडाजल इनोंकर्के और क्रीडा करदा होआ जो पुरुष मृत होआहे सो दूरतें हि त्याग करणे योग्यहे ॥ १ ॥ नागेति और सर्पांनू पगडदा होआ जो पुरुष मृत होआहे अथवा विजलीनें जो दग्ध कीता हेऔर चोरीके दोषकरके राजाने जेडे पुरुष पकडें हैं ॥ २ ॥

परेति परस्त्रीके हरणवाले अर क्रोधतें तिनां स्त्रीआंके पतिआंनें जो हत कीतेहैं अर भिन्न जातिवालोंनें अर संकीर्णजातिवालोंनें अर चांडालादियोंनें हत कीते जो पुरुष हैं ३ ॥ चौरेति चोर और अग्नि और विषइनके देणे वाले जोहैं और पाषंडी और खोटिआंबुद्धिआं वालेजो पुरुषहैं उौर क्रोधतें अतिशयकरके विषउौर अग्नि और शस्त्र और पाश और जल। ४। और पर्वत और वृक्ष इनांके गिडानेवाले नरांके मध्यमें नीच जेडेपुरुष तिनांकर्मानू करदेहैं अर्थात् विषआदि करके जेडेपुरुष मृतहोवेहैं वा मारतेहैं और जेडे निंदित चित्राकारि करके उपजीविका करतेहैं और जेडे स्थानांकों भूषण करतेहैं अर्थात् स्थान भूषण करणे करके उपजीविका करतेहैं ॥ ५ मुखइति जेडे कोईक पुरुष मुखे भग हैं अर्थात् जिनांके मुखसें दुर्गंध आवतीहै उौर जेडे नमर्दहैं उौर जेडे नपुंसकहैं अर्थात् जिनांका कीताहोआ कार्य्य नहि सिद्धहुंदा असे जो हैं

परदाराह्वरंतश्चरोषात्तत्पतिभिर्हताः असमानैस्तुसंकीर्णैश्चांडाल्म येस्तथाहताः ॥ ३ ॥ चौराग्निविषदाश्चैवपाषण्डाःक्रूरबुद्धयः क्रोधात्प्रायोविषंवह्निशस्त्रमुद्बंधनंजलम् ॥ ४ ॥ गिरिवृक्षप्रपातांश्च येकुर्वन्तिनराधमाः कुशिल्पजीविनोयेचस्थानालंकारकारिणः ॥ ५ ॥ मुखेभगास्तुयेकेचित्क्लीवप्रायानपुंसकाः ब्रह्मदंडहतायेचयेचवाब्राह्मणै र्हताः ॥ ६ ॥ महापातकिनोयेचपतितास्तेप्रकीर्त्तिताः पतितानांनदा हःस्यान्नांत्येष्टिर्नास्थिसंचयः ॥ ७ ॥ नचास्रुपातःपिंडोवाकार्यंश्राद्धादिकं क्वचित् एतानिपतितानांतुयःकरोतिविमोहितः तप्तकृच्छ्रद्वयेनैवतस्यशुद्धि र्नचान्यथा ॥ ८ ॥ पराशरः ॥ चांडालेनश्वपाकेनगोभिर्विप्रैर्हतोयदा आहिताग्निर्मृतोविप्रोविषेणात्महतोपिवा लोकाग्निनाप्रदग्धव्योमंत्रसं स्कारवर्जितः ॥ १ ॥

उौर जेडे ब्राह्मणांके शापकरके हतहोएहैं उौर जेडे ब्राह्मणांने हतकीतेहैं। ६ ।महेति उौर जेडे महापातकीहैं एह संपूर्णपतितकथन कीतेहैं और इनांपतितांका दाह उौर अंत्येष्टिकर्म उौर अस्थिआंका चुणना ७ ॥ उौर रोदन उौर पिंडदान उौर श्राद्धादिकर्म इनांनूनकरे पतितांके इना कर्मांको जो पुरुष मोहित होया होया करताहै तिसकी शुद्धि दो २ तप्त कृच्छ्रव्रतकरके होतीहै उौर प्रकार करके नहि होती ॥ पराशरजीका वाक्यहै ॥ ८ चंडेति चंडाल और श्वपाक अर्थात् चंडाल भेद उौर गौ उौर ब्राह्मण इनांने जो हतकीताहै और विषकरके मृत होआजो अग्निहोत्री ब्राह्मणहै और आपजो हत होआहै अर्थात् आप पाशादि ले करकेजो हतहोआ है मंत्रांकरके संस्कारतें रहित लोककी अग्निकरके इनका दाह करणा हवन वालीअग्नि करके नहिकरणा १

स्पृष्टेति सजातियोंके मध्यमें इसकों जो स्पर्श करणें वाला और चुकणे वाला है सो प्राजापत्य व्रतनूंकरे अर पश्चात् ब्राह्मणांकी शिक्षानूं ग्रहण करे अर्थात् ब्राह्मण जो आज्ञा करें तिसनूंकरे ॥ २ ॥ दग्ध्वेति दाहकरके तिसकी अस्थिआंनूं ग्रहण करके पश्चात् बुद्धिमान् पुरुष तिनाकों दुग्धकरके धोदेवे अर पश्चात् हवनवाली अग्नि कर्के अपणें मंत्रकों पडकर भिन्न २ दाहकरे ॥ ३ ॥ वशिष्ठजीका वचनहै जीवेति जो पुरुष पाश और विष आदिकरके मृत होनेलगे अर मृत नहि होआ जीवतारहाहै सो बारां १२ रात्रकृच्छ्रव्रतनूं करे और तीन ३ रात्र उपवास करे और नित्य हि गिल्ले वस्त्रनूं धारणकरके ॥ १ ॥ अर प्राणांनूं आत्माके विषय रोककरके तीन ३ वार अघमर्षण मंत्रका पठनकरे इसतें उपरंत तिसीविधिकरके गायत्रीकों जपे २

स्पृष्टादग्धाचवोढाचसपिंडेपुचसर्वशः ॥ प्राजापत्यंचरेत्पश्चाद्विप्राणामनुशासनम् ॥ २ ॥ दग्ध्वास्थीनिपुनर्गृह्यक्षीरेणक्षालयेद्बुधः ॥ स्वेनाग्निनापुनर्दाहःस्वमंत्रेणपृथक्पृथक् ॥ ३ ॥ वसिष्ठः ॥ जीवन्नात्मपरित्यागात्कृच्छ्रंद्वादशरात्रकम् ॥ चरेत्त्रिरात्रंचोपवसेन्नित्यंक्लिन्नेनवाससा ॥ १ ॥ प्राणानात्मनिचायम्यत्रिःपठेदघमर्षणम् अथवैतेनकल्पेनगायत्रींपरिवर्त्तयेत् ॥ २ ॥ अपिवाग्निंसमाधायकूष्माण्डैर्जुहुयाद्घृतम् यदन्यन्महापातकेभ्यस्सर्वमेतेनपूयते ॥ ३ ॥ अथवाचामेत् अग्निश्चमामन्युश्चमन्युपतयश्चमन्युकृतेभ्यःपापेभ्यो रक्षंतांयदह्नापापमकार्षमनसावाचाहस्ताभ्यांपद्भ्यामुदरेण शिश्नाअहस्तदवलुम्पतुयत्किंचिद्दुरितंमयीदमहमापोऽमृतयोनौसत्येज्योतिषिजुहोमिस्वाहेति ॥ विष्णुः ॥ उद्बंधनमृतस्ययःपाशंछिंद्यात्सप्तरात्रेणकृच्छ्रेण शुद्ध्यति तप्तकृच्छ्रेणशुद्ध्यतीति पाठांतरम्

अथवाअग्निनूं समाधानकरके कूष्मांड संज्ञिक मंत्रांकरके घृतका हवनकरे अर औरभी महापातकांतें जो पाप होआहै सोभी संपूर्ण इसअनुष्ठान करके नष्टहोताहै ३ । अथवा आचमनकरके अग्निश्चमेति इस मंत्रकरके होमकरे इति ॥ इसमंत्रका अर्थ संध्याके व्याख्यानमें स्पष्टकरके लिखाहै सो उसीजगासें देखलेना । पापांतेंरक्षाहोणी तिसमें प्रार्थनाहै इसमंत्रमें । विष्णुजीकावचन है उद्बंधन करके अर्थात् फांसी लेकरके जोमृतहोआहै तिसके पाशकों जोपुरुष छेदताहै सो सप्तरात्रके कृच्छ्रव्रत करके शुद्ध होताहै । १ । और किसेजगा तप्त कृच्छ्र कर्के शुद्ध हुंदाहै ऐसा लिखाहै

आत्मेति पाशादिकरके जेडेदेहकों त्यागतेहैं अर्थात् फांसी और विष इत्यादिकरके जो मृत होएहैं तिनाकों स्नानादि पूर्वकभूषण करणे वाला और तिनाके निमित्तरोदनकरणे वाला और संपूर्ण प्रेतके बांधवांके साथरोदन करणे वाला स्नान करके शुद्धहोताहै और प्रेतकेबांधवांके साथ अस्थिसंचयनकों करके साहितवस्त्रांके स्नानकरे तो शुद्धहोताहै जों ब्राह्मणक्षत्री अथवा वैश्य शूद्र शवकेसाथ जावे तब नदीकों प्राप्त होकरके आठ सें अधिक हजार १००८ गायत्रीका जप करे (अर्थ) केवल ब्राह्मण शवके साथ जावे तब आठ से अधिक हजार १००८ गायत्रीका जप करे अर शूद्र किसे शवके साथ गमन करके स्नानकों करे ॥ अर प्रेतके संबंधिआंके साथ रोदन कों करके भी स्नान करके शुद्ध होताहै अर प्रेतके बांधवांके साथ अस्थिसंचयनकों करे तब समेत वस्त्रांके स्नानकों करके शुद्ध होताहै ॥ अथेति इसतें उपरंत अनाशका दि जो व्रत कुरुक्षेत्रादि विषे धारण कीते होए तिनासें यो हट जाण

आत्मत्यागिनांच संस्कर्ता तदश्रुपातकारीच सर्वस्यैवप्रेतस्य तद्बान्धवैःसहा श्रुपातंकृत्वास्नानेवाकृतेऽस्थिसंचयने सचैलस्नानाद्द्विजःशूद्रःप्रेतानुगमनंकृत्वा स्रवन्तीमासाद्यगायत्र्यष्टसहस्त्रंजपेत्।द्विजःप्रेतानुगमनेष्टाधिकसहस्त्रम् शूद्रःप्रेतानुगमनंकृत्वास्नानमाचरेत् । तद्बांधवैःसहाश्रुपातंकृत्वास्नानेनशुद्ध्यति। तद्बांधवैःसहास्थिसंचयने कृते सचैलस्नानाच्छुद्ध्यतीत्यन्वयः

॥ अथानाशकादिप्रच्युतप्रायश्चित्तानि ॥ तत्रमार्कण्डेयः ॥ येप्रत्यवसिता विप्राः प्रव्रज्यादिजलाग्नितः अनाशकान्निवृत्तायेवांछंतिगृहमेधिताम् १ ॥ तांश्चारयित्वात्रीन्कृच्छ्रांस्त्रीणिचान्द्रायणानिवा जातकर्मादिसंस्कारैः संस्कृताः शुद्धिभाजनाः ॥२ ॥ पराशरः ॥ अनाशनान्निवृत्तस्तुचातुर्वर्ण्येव्यवस्थितः चांडालस्सतुविज्ञेयोवर्जनीयःप्रयत्नतः ॥ १ ॥

तिनके प्रायश्चित्तांकों कहतेहैं। तिनांके विषय प्रथम मार्कंडेयजीका वाक्यहै । यइति जो ब्राह्मण संन्यासकर्म और जल और अग्नि इनके विषय मरणके वास्ते प्रथम उद्यत होए हैं अर फेर हट गये हैं और जिनांने इच्छा सें अन्नका त्याग कीता है तिसतें जेडे हट गये है अर फेर गृहस्थ की इच्छा करतेहैं ॥ १ ॥ तानिति तिनां कों तीन ३ कृच्छ्र व्रत अथवा तीन ३ चांद्रायण व्रत करवाके पश्चात् जात कर्मतें आद लेकर संस्कारां करके संस्कृत कीते होए शुद्ध होतेहैं ॥ २ ॥ पराशर जीका वाक्यहै अनेति अनाशक तें जो हटिआ है और ब्राह्मण और क्षत्री अथवा वैश्य अथवा शूद्र जलादिके विषय मरणके वास्ते प्रथम निश्चय करके फेर जो हट गयाहै सो पुरुष चंडाल कथन कीताहै अर सो यत्न कर के दूरतें हि त्यागना चाहिए ॥ १ ॥

एह उनको कथन कीताहै जेडे पुरुष चिर काल पिछे प्रायश्चित्तकों करतेहैं अर जेडे तात्काल प्रायश्चित्तकों करतेहैं तिनको फेर संस्कार नहि करवाणा ॥ पूर्वोक्त हि अर्थ स्पष्ट करकें किहाहै इसमे एह अभिप्रायहै कि मरणेवास्ते पिछले कहेहोए हेतुयोंकरकें प्रवृत्ती कहीहै सो जेकरधर्म्म के वास्ते होवे तां पूर्वोक्त दोष जानणा सो किहाहै कि गंगा प्रवाहलेणे करकें जो मृत होए हैं और कुरुक्षेत्रादिविषे अनशन करकें और बदरिकाश्रमादिस्थानके समीपजो स्थान तिसमें पर्वतपर आरूढ होकर डिगणेकरकें और उसी स्थानविषे कोइ स्थानहे जिसमे उद्बंधनकी विधिहै तिस करकें और उसी स्थानविषेकोई अग्निकास्थानहै तिस करकें जो मरणहै सो सुगतिकाहेतुहै इस प्रसिद्धिसें॥ और जेकर क्रोध आदिकर्कें मरण वास्ते प्रवृत्ति होवें तदतिसते हटणेंहि दोष नहि जानना

चिरकालंप्रायचिश्तमकुर्वतोऽवस्थानेएतत् ॥ जलेऽग्न्यादौ वा मरणायनिश्चित्यप्रवृत्तःप्रत्यवसितः इयंचपूर्वोक्तहेतुभिर्मरणायप्रवृत्तिर्धर्म्मायचेत्तदोक्तं वोध्यम् ॥ गंगाप्रवाहस्वीकारेण कुरुक्षेत्रादावनशनेन वदरिकाश्रमादिसामीप्यभृगुपातेन तत्रैव स्थानविशेषेणो द्बंधनेन तत्रैवस्थानविशेषेणाग्निना मरणं सुगतिहेतुकमितिप्रासिद्धेः।क्रोधादिनाप्रवृत्तिश्चेत्तदानदोषः आपस्तम्वः। चितिभ्रष्टातुयानारीमोहाद्विचलिताततः प्राजापत्येनशुध्येतुतस्माद्वैपापकर्मणः ॥ १ ॥ भविष्यत्पुराणम् ॥ आरूढोनैष्ठिकंधर्मं प्रत्यावृत्तिंव्रजेत्तुयः चांद्रायणंचरेन्मासामितिविद्धिखगाधिप ॥ १ ॥ मानस्यांप्रत्यापत्तावेतत् ॥ ⊛ अथस्पर्शप्रायाश्चित्तानिदक्षः॥पानेमैथुनसंसर्गेतथामूत्रपुरीषयोः। संस्पर्शंयदिगच्छेत्तुशवोदक्यांत्यजैस्सह ॥ १ ॥

आपस्तंवजीका वचन है चितीति चिखा उपर चढ करके जो स्त्री पीछेसें मोहतें हट गईहै सो तिस पापकर्मतें प्राजापत्यव्रत करकें शुद्ध होतीहे ॥ १ ॥ विष्णुजीने भविष्यत्पुराणमें गरुडजीके प्रति कहाहे आरूढइति जो पुरुष संन्यास मार्गके विषय स्थित हो करके पीछेसें गृहस्थ धर्मको प्राप्तहुआहै सो एक मास पर्यंत चांद्रयण व्रतकोंकरे हे गरुड ऐसेतूं जान । १ । एह प्रायश्चित्त तव जानना जवमन करके निवृत्त होवे ।⊛ अथेति इसतें उपरंतदक्षजी स्पर्शके प्रायश्चित्तांनूं कथन करते हैं पानइति जलादिका पान और मैथुन और मूत्र और पुरीष इनकें करणेतें पिछे जव मनुष्य शव और रजस्वला स्त्री और चंडाल इनके साथ स्पर्शनूं करे १ ॥

संवर्त जीने कहाहे संन्येति जो खोटी वुद्धि वाला पुरुष संन्यासकों प्रथम धार कर के पश्चात् निवृत्त होताहै सो श्रमतें रहित होकर अर्थात् श्रमकों न मानकर छे ६ मास निरंतर कृच्छ्र व्रतकों करे ॥ १ ॥ पराशरजीका वचन है जलेति जल और अग्नि इनके पतनके विषय और संन्यास और अन्न जलके त्याग व्रतके विषय मरणके वास्ते निश्चयनूं कर्के पश्चात् निवृत्त होए जो पुरुष हैं तिनकी शुद्धि किस प्रकार होवे ॥ १ ॥ तिनकी शुद्धि नूं आपहिं पराशरजी कहतेहैं ब्राह्मेति ब्राह्मणांकी प्रसन्नता कर्के और तीर्थांके सेवन करणे कर्के और सैकडे गौआंके दान कर्के तीनों ३ वर्ण शुद्धहोते हैं ॥ २ ॥ इसीमें यमजीकहतेहैं जलेति जल और अग्नि और पाश और संन्यास और अनाशक अर्थात् अन्न जल

संवर्त्तः ॥ संन्यस्यदुर्मतिःकश्चित्प्रत्यापत्तिंभजेत्तुयः सकुर्यात्कृच्छ्रमश्रांतः षण्मासान्प्रत्यनंतरम् ॥ १ ॥ अश्रांतः श्रममन्यमानोनिरालसो वा प्रत्यनंतरंकृच्छ्रोत्तरकृच्छ्रंयथा ॥ पराशरः ॥ जलाग्निपतनेचैवप्रव्रज्यानशनेतथा अध्यवस्यानिवृत्तानांप्रायश्चित्तंकथंभवेत्॥ ॥ १ ॥ ब्राह्मणानां प्रसादेनतीर्थानुगमनेनचगवांचशतदानेनवर्णाःशुद्ध्यंतिवैत्रयः ॥ २ ॥ यमः ॥ जलाग्न्युद्बंधनभ्रष्टाःप्रव्रज्यानाशकच्युताः विषप्रपतनप्रायशस्त्रघाताच्चयेच्युताः ॥ १ ॥ सर्वेतप्रत्यवसिताः सर्वलोकविगर्हिताः चान्द्रायणेनशुद्ध्येयुस्तप्तकृच्छ्रद्वयेनवा ॥ २ ॥ असमर्थविषयमेतत् । अंगिराः । यः प्रत्यवसितोविप्रःप्रव्रज्याग्निजलादितः अनाशननिवृत्तस्तुगृहस्थत्वंचिकीर्षति ॥ १ ॥ चारयेत्त्रीणिकृच्छ्राणित्रीणिचांद्रायणानितु जातकर्मादिभिः प्रोक्तंपुनःसंस्कारमर्हति ॥ २ ॥

का त्याग और विषभक्षण और पर्वतादितें पतन और शस्त्र इनके विषय मरणके वास्ते निश्चय कर्के फेर तिनातें निवृत्त होएहैं ॥ १ ॥ एह संपूर्ण प्रत्यवसित हैं और संपूर्ण लोकके विषय निंदितहैं और चांद्रायणव्रत अथवा दो २ तप्त कृच्छ्र व्रत करके शुद्ध होतेहैं ॥ २ ॥ एह असमर्थताका विषयहै २ इसी विषयमें अंगिराजीकाभी वचनहै यइति संन्यास और जल और अग्नि इनके विषय मरणके वास्ते निश्चय करके फेर जो ब्राह्मण निवृत्त होआहै और अनाशनव्रततें जो निवृत्त होआहै अर्थात् तिनातें हट कर फेर गृहस्थकी इच्छा करता है ॥ १ ॥ तिस पुरुषकों तीन ३ कृच्छ्र अथवा तीन ३ चांद्रायण कर वाके फेर जातकर्मादि संस्कार कर्मकरवाणे योग्यहै ॥ २ ॥

मूत्रेंतितवमूत्रकरणेतेंअनंतर स्पर्शके विषयमें एक १ दिन उपवास करे और पुरीषके विषयमें दो २ दिन और मैथुनके विषयमे तीन ३ दिन और पानके विषयमे चार ४ दिन उपवास करे॥२॥चंडालके ष्ठी वनादिके स्पर्शके विषय तात्काल स्नान नूं आपस्तंवजी कथन करेंगे ॥ भुक्तेति भक्षण करके उच्छिष्ट होआ होआ आचमननूं नकरके प्रमादते जद चंडाल अथवा श्वपचके साथ स्पर्शनूंक रे तव तात्काल स्नान नूं करे।३। पश्चात् गायत्रीका आठसअधिक हजार १०८ तित्प्रकार द्रुपदादि वइत्यादिमंत्रोंका एकसौ १०० जपकरे और तीन ३ रात्र उपवास नू रक्ष कर पीछेंसे पंचगव्यके पीनेकरके शुद्ध होताहै॥४॥शातातपने भी कहाहै उच्छिष्टइति उच्छिष्ट होआ होआ ब्राह्मण जद

दिनमेकंचरेन्मूत्रेपुरीषेतुदिनद्वयम् दिनत्रयंमैथुनेस्यात्पानेतुस्याच्चतुष्टयम् ॥ २ ॥ चांडालष्ठीवनादिस्पर्शे सद्यःस्नानंवक्ष्यत्यापस्तंवः भुक्तोच्छिष्टस्त्व नाचांतश्चांडालैःश्वपचेनवा प्रमादात्स्पर्शनंगच्छेत्तत्रकुर्याद्विशोधनम् ॥ ३ ॥ गायत्र्यष्टसहस्त्रंतुद्रुपदानांशतंतथा ॥ त्रिरात्रोपोषितोभूत्वापंचगव्येनशु द्ध्यति ॥ ४ ॥ शातातपः ॥ उच्छिष्टस्तुस्पृशेद्विप्रश्चांडालंचेत्कथंचन ॥ ऊर्ध्वोच्छिष्टस्तु संस्पृश्यद्विजस्सांतपनंचरेत् ॥ अधोच्छिष्टस्त्रिरात्रांतेपंचग व्येनशुध्यति ॥ १ ॥ भुक्तोच्छिष्ट ऊर्ध्वोच्छिष्टः उत्सृष्टमूत्रपुरीषःअधउ च्छिष्टः ॥ उशनाः ॥ चांडालश्वपचैःस्पृष्टोविण्मूत्रेकुरुतेद्विजः त्रिरात्रेणवि शुद्ध्येत्तुभुक्तोच्छिष्टः षडाचरेत् ॥ १ ॥

कदाचित् चंडाल नूं स्पर्शकरे॥ऊर्ध्वोच्छिष्ट होआ होआ ब्राह्मण चंडाल नूं स्पर्श करे तव सांत पन व्रतका आचरण करे अर जव अधोच्छिष्ट होकर चंडालनूं स्पर्श करे तव पंचगव्यकेपान करके और तीन ३ आचमन करेतो शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ अन्न नूं भक्षण करके ऊर्ध्वोच्छिष्ट होताहै अर मूत्र और पुरीष नूं त्याग करके अध उच्छिष्ट होताहै एह इनका भेद है । उशनसजी का वचन है चांडेति चांडाल और श्वपच इनकरके स्पर्श कीता होआ ब्राह्मण अथवा क्षत्री अथवा वैश्य जव विष्टा और मूत्रकों त्यागता है तव तीन ३ रात्रकरके शुद्ध होता है अरभुक्तो च्छिष्ट क्याभोजनकेपीछे जेकर इनके साथ स्पर्शकरे तां छे ६ रात्र करके शुद्ध होता है॥ १

व्याघ्रजीका वाक्य है चंडेति जो पुरुष चंडालके जल करके स्पर्श करताहै सो स्नान करके शुद्ध होताहै उच्छिष्ट जब चंडालके जलकरके स्पर्शवालाहोवे तब तीन३ रात्र व्रत करके शुद्ध होताहै १ ॥ कश्यपजीने कहाहै श्वेति कुत्ता और सूर और निंदित और चंडाल और मदिराका भांडा और ऋतुवाली स्त्री इनांकों जब उच्छिष्ट होआ होआ स्पर्श करे तब कृच्छ्रसांतपनव्रत नूं करे ॥ १ ॥ एह प्रायश्चित कामतें अभ्यासके विषयमे जानना क्योंकि अकामके विषयमें थोडा प्रायश्चित्त कथन करनेतें ॥ तिस प्रकार वृद्धशातातपजीने कहाहै उच्छिष्टति ॥ २ ॥ उच्छिष्ट होआ ब्राह्मण मदिरा और शूद्र और कुत्ता और जो अपवित्रवस्तु हैं इनांनूं

व्याघ्रः॥ चंडालोदकसंस्पृष्टः स्नानेनसविशुद्ध्यति उच्छिष्टस्तेनसंस्पृष्टस्त्रिरात्रेणविशुद्ध्यति १ कश्यपः॥श्वसूकरांत्यचंडालमद्यभांडरजस्वलाःयद्युच्छिष्टःस्पृशेत्तत्कृच्छ्रसांतपनंचरेत्१ एतत्कामतोभ्यासे मद्यसुराअन्यत्राल्पप्रायश्चित्तस्योक्तत्वात् तथाचवृद्धशातातपः॥उच्छिष्टः संस्पृशेद्विप्रोमद्यंशूद्रंशुनोऽशुचीन्अहोरात्रोषितोभूत्वापंचगव्येनशुद्ध्यति १ आपस्तम्बः॥भुक्तोच्छिष्टोत्यजैःस्पृष्टःप्राजापत्यंसमाचरेत् अधोच्छिष्टेस्मृतः पादःपादआचमनेतथा १ अधोच्छिष्टोवर्त्तमानभोजनः भोजनसमयेआचमनसमयेवायदाऽधोच्छिष्टोभवेत्तदेदंप्रा एकवृक्षेसमारूढौचांडालब्राह्मणौयदि फलंभक्षयतस्तत्रप्रायश्चित्तंकथंभवेत् ॥ २ ॥

जब स्पर्श करे तब एक दिनरात्र उपवास को रक्षकरके पश्चात् पंचगव्य के पीनेसें शुद्ध होता है ॥ १ ॥ आपस्तंबकावाक्यहै भुक्तेति अन्ननूं भक्षणकरके उच्छिष्टहोआ चंडालांकेसाथ स्पर्श करे तब प्राजापत्यव्रतनूं करे अर भोजनकालविषय और आचमन काल विषय जब अधोच्छिष्ट होवे तब प्राजापत्यव्रतका एक १ पाद करे अर्थात् चौथाहि स्सा करे ॥ १ ॥ और कथनकरतेहैं(प्रश्न)एकेति एक वृक्षके विषय स्थित होए होए चांडाल और ब्राह्मण जब फल कों भक्षण करें तब तिसकी शुद्धि किस प्रकार होवे २ (उत्तर)इसकी शुद्धिनूं आपहि आपस्तंबजी कहतेहैं

आप्नोति अपने पापनू ब्राह्मणांनूं द सकरके सहित वस्त्रांके स्नान करे और एक दिन रात्र उपवासनू करके पश्चात् पंचगव्य करके शुद्ध होताहै ॥ ३ ॥ इसमें व्यवधान करके अर्थात् दूरकर्के और अव्यवधानकर्के क्यासमीपकर्के त्रयरात्र अर एक रात्रका व्रतग्रहण करणा बुद्धिकेविषयमें एह प्रायश्चित्त जानना ॥ अर अज्ञानके विषयमें ब्रह्म पुराणमें कहाहै विप्रइति ब्राह्मण चंडालके सहित एक जिस वृक्षके विषय अज्ञानतें फल नूं भक्षण करे तब अघमर्षण नूजपे १ ॥ सो जप पूर्वोक्त वचनसे तीनवार जलविषे निमग्न होकर करणाचाहिए ॥ एकेति जद ब्राह्मण चंडालके साथ वृक्षकी एक शाखाके विषें स्थित होआ होआ फलांनू भक्षणाकरे तब तीन ३ रात्र प्रायश्चित्तहै अर पश्चात् पंचगव्य कर्के शुद्ध होताहै इसमे समीपताके

ब्राह्मणान्समनुज्ञाप्यसवासाःस्नानमाचरेत् अहोरात्रोपितोभूत्वापंचगव्ये नशुद्ध्यति ॥ ३ ॥ अत्राग्रिमश्लोकेच व्यवधानसंनिधानाभ्यामेकरात्र त्रिरात्रे ॥ मतिपूर्वेचैतत् अमतिपूर्वेतु ब्रह्मपुराणे विप्रश्चांडालसहितोयत्र कस्मिन्वनस्पतौ ॥ अज्ञानात्तुफलंभुक्तेचेरत्तत्राघमर्षणम् ॥ १ ॥ एकशा खांसमारूढःफलान्यश्नात्यसौयदि प्रायश्चित्तंत्रिरात्रंस्यात्पंचगव्येनशुध्य ति ॥ २ ॥ चांडालेनगृहीतंयस्त्वज्ञानादुदकंपिवेत् तत्रशुद्धिंविजानीया त्प्राजापत्येननित्यशः ॥ ३ ॥ भुक्तोच्छिष्टस्त्वनाचांतोह्यमेध्यंयदिसंस्पृशेत् अहोरात्रोषितोभूत्वापंचगव्येनशुद्ध्यति ॥ ४ ॥ वृहस्पतिः ॥ उच्छिष्टोच्छिष्ट संस्पृष्टःशुनाशूद्रेणवाद्विजः कृत्वोपवासंनक्तंचपंचगव्येनशुद्ध्यति १ ॥

विषय तीन ३ रात्र प्रायश्चित्त जानना ॥ २ ॥ और कहतेहैं चांडेति जो पुरुष चंडाल कर्के ग्रहण कीते होए जलनू अज्ञानसें पानकरे तिसकी शुद्धि प्राजापत्य व्रत करके जाननी चाहिए । ३ । भुक्तेति भुक्तोच्छिष्ट अथवा अनाचांत अर्थात् आचमन नूं न करके अपवित्र वस्तुनू जद स्पर्शकरे तव एक दिनरात्र उपवासनू रक्ष करके पश्चात् पंचगव्य करके शुद्ध होताहै ॥ ४ ॥ वृहस्पतिजीने कहा है । उच्छिष्टेति ॥ ब्राह्मण अथवा क्षत्री अथवा वैश्य उच्छिष्ट करके उच्छिष्ट स्पर्शकीताहोआ अर्थात् जूठे कर्के जूठाछोताहोया पश्चात् कुत्ता अथवाशूद्र इनके साथ स्पर्श न करे तव उपवास अथवा नक्त व्रत नू करके पश्चात् पंचगव्य कर्के शुद्ध होता है ॥ १ ॥

एहप्रायाश्चित्त इच्छाके विषयमें है ॥ अकामके विषयमें छागलेयजीने कहाहै ॥ उच्छीति उच्छिष्टकर्के उच्छिष्ट स्पर्शकीता होआ स्नाननू करे अर जव स्नानकर रहे अर फेर उच्छिष्ट करके स्पर्श करे तव प्राजापत्य व्रतनू करे ॥ १ ॥ संवर्त्त जीका वाक्यहै ॥ कृतेति त्यागया है मूत्र और पुरीष जिसने अर्थात् अध उच्छिष्ट अथवा भुक्तोच्छिष्ट ब्राह्मण अथवा क्षत्री अथवा वैश्यजद कुत्ता और चंडाल इन करके स्पर्श करे तव प्रथम स्नान करके देवीका एकहजार १००० जप करे अर्थात् गायत्रीका जप करे १ कर्मेति लुहार और धोवा और घुमार और झीवर और नट इनांकरके उच्छिष्ट जद स्पर्श करे तव एक रात्रजल पानकरे अर जव लुहारादि उ

कामकारविषयमेतत् ॥ अकामतस्तुछागलेयोदितम्। उच्छिष्टोच्छिष्टसंस्पृष्टंस्नानंयेषुविधीयते तेनैवोच्छिष्टसंस्पृष्टःप्राजापत्यंसमाचरेत् १ संवर्त्तः कृतमूत्रपुरीषोवाभुक्तोच्छिष्टोथवाद्विजः श्वादिस्पर्शेजपेद्देव्याःसहस्रंस्नानपूर्वकमिति १ तेनस्नातेनपुनरुच्छिष्टःसंस्पृष्टश्चेत्तदाप्राजापत्यमित्यर्थः कर्मारंरजकंवेनंधीवरंनटमेवच एभिःस्पृष्टस्तथोच्छिष्टएकरात्रंपयःपिबेत् १ ब्राह्मणाद्वैश्यकन्यायांजातोम्बष्ठः ब्राह्मण्यांविशोजातोवैदेहकः वैदेहकादम्बष्ठयांजातोवेनः संकरजातीयः ॥ तैरुच्छिष्टैस्त्रिरात्रंस्याद्घृतं प्राश्यविशुद्ध्यति ॥१ ॥ भुंजानेनतुविप्रेणस्पृष्टायदिरजस्वला ॥ शिशुकृच्छ्रेणशुद्ध्येतुप्राणायामशतेनच ॥ २ ॥ आपस्तंवः ॥ उच्छिष्टेनतुसंस्पृष्टोविशोचंस्तुद्विजोत्तमः ॥ उपोष्यरजनीमेकांपंचगव्येनशुद्ध्यति ॥ १॥ चांडालादिविषयमेतत् ॥

च्छिष्टहोन तिनकरके स्पर्शकरे तवतीन३ रात्रजलपान करे पश्चात् घृत नू भक्षणकरके शुद्धहोताहै १ भुंजेति ॥ भोजनकरदे होए ब्राह्मणने रजस्वला स्त्री जद स्पर्श करी तव शिशुकृच्छ्र व्रत अथवा सौ १०० प्राणायाम करके शुद्धहोता है ॥ २ ॥ आपस्तंवजीका वचनहै ॥ उच्छिष्टइति विशोचनूक्या विशेष कर्के शोक कर्त्ताहोया ब्राह्मण और क्षत्री अथवा वैश्य इनकेमध्यमें श्रेष्ठ उच्छिष्ट चंडालनें जद स्पर्श करिए तवएक १ रात्र उपवास रक्ष कर्के पश्चात् पंचगव्य करके शुद्ध होताहै १ चंडालादिका एहविषयहै

हारीत जीका वाक्यहै ॥ महेति ब्रह्महत्यादि पाप नू करण वालेके साथ स्पर्श होवे तब स्नानमात्र करे जब चंडालादिके साथ स्पर्श कीता होआ फेर चंडालादिके साथस्पर्श करे तब ब्रह्मकूर्च करके शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ और कहते हैं त्रीति तीन ३ रात्र अथवा एक १ रात्र जो पुरुष अन्न नू न भक्षण करदा होआ अर पंच गव्य नू भक्षण करदा होआ इच्छीतरां ओंकार नू जपे सो भी शुद्धि नू प्राप्तहोताहै अर्थात् शुद्ध होताहै ॥ २ ॥ कृतेति मूत्र अथवा पुरीष इनके त्यागयां होआं अथवा भुक्तोच्छिष्ट ब्राह्मण और क्षत्री अथवा वैश्य जब कुत्ता और चंडाल इत्यादि करके स्पर्श करे तब स्नान नू करके पश्चात् हजार गायत्री काजपकरे ॥ ३ ॥ आपस्तंबजीनेकहाहै विप्रइति जब उच्छिष्ट ब्राह्मणकेसाथ कदाचित् ब्राह्मण स्पर्श करे तब आचमनकर्के शुद्ध होताहै एह आंगिरसजीने कहाहै ॥ १ ॥ और कथन करतेहैं

हारीतः महापातकिसंस्पर्शेस्नानमेवविधीयते संस्पृष्टस्तुयदास्पृष्टोब्रह्मकूर्चेनशुद्ध्यति१ स्पर्शानंतरंपुनः स्पृष्टइत्यर्थः त्रिरात्रमेकरात्रंवायोनश्नन्पंचगव्यभुक् जपेच्चप्रणवंसम्यगेवंशुद्धिमवाप्नुयात् २ कृतमूत्रपुरीषोवाभुक्तोच्छिष्टोथवाद्विजः श्वादिस्पृष्टोजपेद्देव्याः सहस्रंस्नानपूर्वकम् ३ देव्यागायत्र्याः आपस्तंबः विप्रोविप्रेणसंस्पृष्टउच्छिष्टेनकथंचन आचम्यवैतुशुद्धःस्यादित्यांगिरसभाषितम् १ उदक्यास्पृष्टउच्छिष्टोविड्वराहश्वकुक्कुटैःकाकमार्जारक्रव्याद्भिरुपवासेनशुद्ध्यति २ येनकेनचिदुच्छिष्टोह्यमेध्यंयदिसंस्पृशेत् अहोरात्रोषितोभूत्वापंचगव्येनशुद्ध्यति ३ छागलेयः ॥ उच्छिष्टःसंस्पृशेद्विप्रोमद्यशूद्रशुनोशुचीन् अहोरात्रोषितःस्नात्वापंचगव्येनशुद्ध्यति १ उच्छिष्टःस्पृष्टआचामेदुच्छिष्टेनस्वजातिना नक्तेनचोपवासेनक्षत्रविट्स्पर्शनेक्रमात् ॥ २ ॥

उदेति रजस्वलास्त्री और वैश्य और ग्राम्य सूकर और कुत्ता और कुक्कुड और काक और बिल्ला और गिरजादि इनकरके जब उच्छिष्ट स्पर्श करे तब एक १ उपवासकर्के शुद्ध होताहै २ ॥ येनेति जिस किसि वस्तु करके उच्छिष्ट होआ पुरुष अपवित्र वस्तु नू जद स्पर्श करे तब एक १दिन रात्र उपवास रक्षकर्के पश्चात् पंचगव्य कर्के शुद्ध होताहै ॥ ३ ॥ छागलेयजीकावाक्यहै उच्छिष्टइति उच्छिष्ट ब्राह्मण मदिरा और शूद्र और कुत्ताऔर अपवित्र वस्तु इनांनू जद स्पर्श करे तवएक दिनरात्र उपवास नू रक्षकर्के पश्चात् स्नान करे फेर पंचगव्यका पान करे तो शुद्ध होजाताहै ॥ १ ॥ उच्छिष्टइति उच्छिष्ट सजातिकरके उच्छिष्ट पुरुष जब स्पर्शकरिए तब आचमन कर्के शुद्ध होताहै अर जब उच्छिष्ट क्षत्री कर्के ब्राह्मण स्पर्शकरे तब नक्तव्रतकर्केशुद्ध होताहै अर जद उच्छिष्ट वैश्य कर्के ब्राह्मण स्पर्श करे तब उपवास करके शुद्धहोताहै ॥ २ ॥

इसीमे शातातपजीका वाक्यहै जो ब्राह्मण जेकर चांडालकी छाया विषे आजावे तद तिसकी शुद्धिवास्तेस्नान और घृतप्राशन किहाहैं । १ । और जब ब्राह्मण चांडालादिने हत्थलए काष्ठ कक अथवा वस्त्रकर्के स्पृष्ट क्या छोता होवे तद अंगांनु धो कर्के आचमनकरे और जेकर उह जूठा भीया तद रात्रि भोजनका त्यागभी करे । २ । औपकायन ऋषिका वाक्यहै अस्पृश्य जो चांडालादि तिनांके साथ व्यवधानसें बेडी आदिकर्के तरणेको इच्छावाला होया होया जावेतद हत्थ और पाद जलविच्चपारक्षे परंतु साक्षात् स्पर्श नकरे तां उसको दोष नहि ॥ १ ॥ शातातपजी का वचनहै कापालिक जो हैं पाषंडी तिनके साथ जब ब्राह्मणादि स्पर्श करे तद विधि पूर्वक स्नानकर्के१००इकसउ प्राणायामकरे और तप्तघृतकापानकरे तां शुद्ध हुंदाहै। १ । षट्त्रिंशन्मत

शातातपः। यस्तुछायांश्वपाकस्यब्राह्मणोप्यधिगच्छति तत्रस्नानंतुतस्यैवघृतप्राशश्चशोधनम् ॥ १ ॥ अंत्यजैर्हस्तकाष्ठेनवाससास्पृष्टएवच प्रक्षाल्यांगंतदाचामेदुच्छिष्टस्तुनिशांक्षिपेत् ॥ २ ॥ औपकायनः। अस्पृश्येनसहैकांतेतरन्नौसंक्रमादिभिः निदध्यादप्सुपाण्यादीन्नदुष्येत्तेनचास्पृशन् ॥१ ॥ शातातपः ॥ कापालिकानांसंस्पर्शेस्नानंकृत्वायथाविधि प्राणायामशतंकृत्वाघृतंप्राश्यविशुद्ध्यति ॥ १ ॥ षट्त्रिंशन्मते ॥ बौद्धान्पाशुपतांश्चैवलोकायतिकनास्तिकान् विकर्म्मस्थान्द्विजान्स्पृष्ट्वासचैलोजलमाविशेत् ॥ १ ॥ मनुः ॥ दिवाकीर्त्तिमुदक्यांचपतितंसूतिकांतथा शवंतत्स्पर्शिनंचैव स्पृष्ट्वास्नानंसमाचरेत् ॥ १ ॥ दिवाकीर्त्तिश्चाण्डालः ॥ एतदकामतः तथाचबृहस्पतिः॥ दिवाकीर्त्तिंचितियूपंपतितंचरजस्वलां स्पृष्ट्वाप्रमादतोविप्रः स्नानंकृत्वाविशुद्ध्यति ॥ १ ॥

जो३६ छत्री ऋषियों ने कठे होकर्के बनायाहै तिसमें लिखयाहै । बौविति बौद्ध नास्तिक लोक और पाशुपत पशुपतिजीकेमतवाले और लोकायातिकएभी तिन्हांकेमतमें मिलतेहैं और नास्तिक और विरुद्ध कर्म्मवाले जो त्रयवर्ण इनको स्पर्शकर्के सहित वस्त्रांके जलमें प्रवेशकरे । १ । मनु जी कहतेहैं दिवाकीर्त्ति इसजगा चांडालजानणा और रजस्वलास्त्री और पतित और सूतिकाक्या प्रसूतास्त्री और शव क्या मृतदेह और तिसकें स्पर्श करणे वाला इनका स्पर्शकर्के स्नानकरे १ ॥ एह प्रायश्चित्त अकामते कीते होए पापविषे जानणा। सोई बृहस्पति जी कहतेहैं दिवेति चांडाल और चिता शवखट्वा और यूप जिसस्तंभके साथ पशुको बांध कर्के मारतेहैं और पतित और रजस्वला इनांको जेकर प्रमादसे ब्राह्मण स्पर्श करे तां स्नान कर्के शुद्ध होताहै ॥ १ ॥

और कामनाकर्के इसकोंजो कर्त्ताहै तिसवास्तेभी बृहस्पतिजी कहतेहैं पततीति पतित और सूतिका और नीच उौर शव इनका कामनाते दर्शनकरे तां स्नानकर्के उौर पवित्रवस्तुस्पर्शते अनंतर घृतको प्राशनकरे तो शुद्धहोताहै ॥ १ ॥ और शव इसजगा मृत मनुष्यका जानणा जेकर कुत्ते आदि मृत होए के साथ स्पर्शादि होवे तां अधिककल्पना करणी अर्थात् गायत्रीका जपभी साथ करणा और मृत चांडालके स्पर्शविषे आगे प्रायश्चित्त आवेगा ॥ और मोल लेकर मुडदा उठाणे वाले जो पुरुषहैं तिनांको प्राजापत्य कराणा परंतु तिसके स्पर्श विषे गायत्रीका जपभीकराणा ॥आगेकहणा जो वाक्य तिसतेंइहबहुतवार करणेमें जानना ॥ और एकवारकरणेमें मार्कण्डेयपुराण विषे वचनहै अभोज्येति अभोज्य और सूतिका और खंडकया नपुंसक और मा

कामतोपिसएव पतितंसूतिकामंत्यंशवंस्पृष्ट्वातुकामतःस्नात्वाचैवशुभंस्पृष्ट्वा घृतंप्राश्यविशुद्ध्यति ॥ १ ॥ शवेति मृतमनुष्यशवस्पर्शे मृतश्वादिस्पर्शेत्वधिकंकल्प्यम् मृतचांडालस्पर्शेवक्ष्यते मूल्येनशवहारकाणां प्राजापत्यं । तत्स्पर्शेगायत्रीजपोपिवक्ष्यमाणवाक्यात् ॥ एतच्चाभ्यासेसकृद्विषये मार्कण्डेयपुराणे अभोज्यसूतिकाखण्डुमार्जाराखुश्वकुक्कुटान् पतितापविद्धचांडालमृतहारांश्चधर्म्मवित् संस्पृश्यशुद्ध्यति स्नानादुदक्या ग्रामसूकरौ ॥ १ ॥ कापालिकानांस्वरूपं यथा नरास्थिमालाकृतभूरिभूषणः श्मशानवासीनृकपालभोजनः पश्यामियोगांजनशुद्धदर्शनोजगन्मिथोभिन्नमभिन्नमीश्वरादिति॥१॥अभोज्यारजकादयः अपविद्धोवाहिष्कृतः मृतहारोमूल्येनशवहारकः मार्जारोवनमार्जारःस्नानेविशेषमाहगार्ग्यः

और क्या बिल्ला और चूहा औरकुत्ता और कुक्कट और पतित और अपविद्ध और चांडाल और मृतके उठाणेवाला और रजस्वला औरग्रामशकरइनांके साथधर्म्मवित्तापुरुष स्पर्शकरेतां स्नानतें शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ कापालिकादियोंका स्वरूपकहतेहैं नरेति मनुष्यकी हड्डिउंकीमालाकर्के जो भूषित होवे और श्मशानवासी और नृकपाल जो मनुष्यके मस्तकर्का हड्डी तिसविषे भोजन करे उौर कहे किजगत् ईश्वरसें भिन्नहै और अभिन्नभी है असे में देखताहुं ऐसे योगरूपी अंजन कर्के शुद्धहै दर्शन जिसका ऐसे का नाम कापालिकहै ॥ १ ॥ अभोज्यनाम रजकादिका है अपविद्ध नाम उसका है जो लोकसे वाहरनिकालयाहै और मृतहार वोहै जो मोल लेके मुडदेकों उठाताहै और मार्ज्जार इसजगा बनका बिल्ला ग्रहण करणा ॥ स्नानमे विशेष गार्ग्यजी कहतेहैं ॥

क्रव्येति कच्चे मांसनूं भक्षणे वाला जीव अर्थात् गिरझ काकादि घोडा और गधा और ऊट इनके साथ जद व्यवधान करके स्पर्श करे तव वस्त्रांतें रहित अथवा वस्त्रांके सहित स्नाननूं करके शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ जव जानके स्पर्श करे तवसहित वस्त्रांके स्नानकरे अर जब जानके न करे तव वस्त्रांतेंरहित स्नान करे ॥ और कथन करते हैं । शूद्रमिति शूद्र और म लाह इनांनूं स्पर्श करके व्राह्मण अथवा क्षत्री अथवा वैश्य आचमनहि करके शुद्ध होजाताहै अर सूर्यका दर्शन अथवा स्नान अथवा प्राणायाम अथवा तपका वल अथवा गायत्र्यादिका जप इनकरके भी सो प्रायश्चित्तहो जाताहै ॥ २ ॥ जो पुरुष स्नानमें अशक्त हैं तिसको शूद्रके स्पर्शमें आचमनहीं कहाहै अर समर्थको स्नानहि कहाहै इस कारणतें और किसे स्मृतिकाभी वाक्यहै ॥ एडेति ग्रामका सूर और कुकड और काक और कुत्ता और शूद्र और चांडालइनांनूं

क्रव्यादश्वखरोष्ट्रैश्चस्पर्शेऽव्यवहितेद्विजः ॥ अचैलंवासचैलंवास्नानंकृत्वाविशुद्ध्यति ।१ । सचैलंमतिपूर्वेऽन्यत्राचैलम् शूद्रंस्पृष्ट्वानिषादंचशुद्ध्येदाचमनाद्द्विजः तद्वानिदर्शनस्नानप्राणायामतपोवलात् ।२ । तत्प्रायश्चित्तं हि इनस्यसूर्य्यस्यदर्शनेनस्नानेनप्राणायामेनतपोवलेन गायत्र्यादिनावा भवति स्नानासमर्थस्यशूद्रस्पर्शनेआचमनम् समर्थस्यतु स्नानमेव अतएवस्मृत्यन्तरम् । एडकंकुक्कुटंकाकंश्वशूद्रांत्यावसायिनःदृष्ट्वैतान्नाचरेत्कर्म्म स्पृष्ट्वैतान्स्नानमाचरेदिति १ एतान्दृष्ट्वाकर्म्मनाचरेत्किंतुआचम्याचरेदित्यर्थः॥ यद्वा दृष्ट्वैतानाचमेत्प्राज्ञइतिपाठान्तरम् यद्वा सच्छूद्रस्पर्शेआचमनमसच्छूद्रस्पर्शेस्नानम्॥ एडकोग्राम्यशूकरः॥ वृद्धयाज्ञवल्क्यः॥चांडालपुस्कसम्लेच्छाभिल्लकापालिपारदान् उपपातकिनश्चैवस्पृष्ट्वास्नानंसमाचरेत् ॥ संवर्त्तः ॥ कैवर्तमृगयुव्याधसौरशाकुनकानपिरजकंचतथास्पृष्ट्वास्नात्वैवाशनमाचरेत् ॥ १ ॥

देख करके कर्मनूं न करे क्या करे आचमन नूं करके कर्मनूं करे अर इनांनूं स्पर्श करके स्नाननूं करे॥ १ ॥ एतान इत्यादि पद करके इसीका हि अर्थ स्पष्ट कीताहै और भीहै क्या श्रेष्टशूद्रके स्पर्शमें आचमन करे असत् शूद्रके स्पर्शमें स्नान करे इति ॥ वृद्धयाज्ञवल्क्यजीने कहा है ॥ चांडेति । चंडाल और चांडाल भेद और म्लेछ और भील और सर्वंगी और परस्त्रीके गमन करणे वाला पुरुष (पारदान्) इसजगा (रा) कालोपसमझणा अथवा पारलघाणे वाला और गोवधादि पापके करणवाला पुरुष इनांनूं स्पर्श करके स्नाननूं करे ॥ १ ॥ संवर्त्तजीका वचनहै । कैवेति झीवर और मृगोंके मारण वाला पुरुष और फंधक और वावुरीआ और पक्षिहंता अर्थात् माछी और धोबा इनांनूं स्पर्शकरके पश्चात्स्नानकरके भोजनकरे १ ॥

वृद्धशातातपजी विशेषकहतेहैं चांडालमिति चांडाल और पतित और व्यंगक्या काणादि और उन्मत्त मदिरापानादि कर्के औरशव और अंत्यज और प्रसव करवाणे वाली और प्रसूता स्त्री और रजस्वला ॥ १ ॥ और कुत्ते आदलेके जो पशु हैं इनांको जेकर कोई स्पर्शकरे तां वस्त्रांके साथ शिर तक स्नान कर्के शुद्ध हुंदाहै ॥ २ ॥ जेडी प्रसूतिकों करावे सोभी सूतिका कहींदी है॥ जेकर अशुद्धांको आपभी अशुद्ध होकर स्पर्श करे तद एक उपवास कर्के शुद्ध हुंदाहै और जेकर भोजनतें उपरंत स्पर्श करे तां त्रिरात्र व्रत कर्के शुद्ध हुंदाहै॥ ३ ॥ हारीतजीके मतमें विशेषहै चांडालोंके साथ संयोगके होयां २ प्राजापत्य व्रतकर्के शुद्ध होताहै परंतु क्या कर्के १०

वृद्धशातातपः ॥ चांडालंपतितंव्यंगमुन्मत्तंशवमंत्यजम् ॥ सूतिकांसूतिकां नारीं रजसाचपरिप्लुताम् १ श्वकुक्कुटवराहांश्चग्राम्यान्संस्पृश्यमानवःसचैलः सशिरःस्नात्वातदानीमेवशुध्यति २ प्रसवंयाकारयतिसासूतिका॥ अशुद्धान्स्वयमप्येतानशुद्धश्चयदिस्पृशेत् विशुध्यत्युपवासेनत्रिरात्रेणोत्तरेणतु उत्तरेणभुक्तोच्छिष्टेनेत्यर्थः हारीतः ॥ चांडालैःसहसंयोगेप्राजापत्येन शुध्यति विप्रान्दशवरान्कृत्वातैरनुज्ञाप्यशासनात् दशविप्रान् वरान्सभ्यान्कृत्वा शासनात्शास्त्राद्धेतोःतैर्दशभिरनुज्ञाप्यआत्मानमनु शास्येत्यर्थःअथवा आढकस्यप्रमाणंतु कुर्य्याद्गोमयकर्दमम् तत्रास्थित्वात्वहोरात्रं वायुभक्षःसमाहितः ॥ १ ॥ वालकृच्छंततः कुर्य्याद्गोष्टेवसतुसर्वथा सकेश वपनं कुर्य्यात्परमां शुद्धिमृच्छतीत्येववालकृच्छम् ॥ २ ॥

दस्सां ब्राह्मणांकों सभामें ल्याकर्के और शासन जो शास्त्र तिसतें तिनांकर्के बोधकरवा कर्के १ ॥ अथवा प्राजापत्य विषे समर्था न होवे तां आढक जो द्रोणका चौथा हिस्सा तितने प्रमाणके गोमयका क्यागोएका कर्दम चिक्कड करे तिस विषे एकदिनरात्र स्थित होकर्के परंतु वायुके विना और कुछ भक्षण नकरे और समाहित क्यासमाधानहोकर रहे ॥ १ ॥ इस व्रतका नामवाल कृच्छ्रहैं। इसको करे और सर्वथा गोष्टी विषे क्या गौआंके स्थानविषे वसे और सहित केशांके मुंडन करावे अर्थात् सारे देहके वाल दूर करे जोपरम शुद्धिको इच्छा करदाहैं। एह वाल कृच्छ्र काभी स्वरूप दिखायाहै ॥ २ ॥

और जो वृद्धहारीत जीने किहा है कि चांडालादि के साथ यद संबंध होवे तद एक दिन रात्र अथवा २ दोरात्रां अथवा तीनरात्र अथवा ६ छेदिनका व्रत करे ॥ १ ॥ और ना जाणया होआ चांडाल सत्तरोजतक जब किसे ब्राह्मणादिके घरमे रहे तां तिस चांडालादि संसर्गि पर जिसका वृत्तांत अच्छीतरहसे जाणचुकेहैं सो ब्राह्मण धर्म्मशास्त्री अनुग्रह करें ॥ २ ॥ दधिक्षीर घृत कर्के युक्त गोमूत्रविषे पकाहोआ जवांदा काहडा तिसको सहित सेवकादि के एक महीना निरंतर भक्षण करदा रहे विनातृप्तिसे जिसकर्के एह व्रतहैं ॥ ३ ॥ सो एह वचन जिसका बहुत संबंधहो चुकाहै तिसपरजानणा ॥ इसीमें पराशरजीका वचन है । रजकीआदिक्या

यत्तुवृद्धहारीतः ॥ चंडालश्वपचानांचसंकरेसमुपस्थिते अहोरात्रंद्विरात्रंवा त्रिरात्रंषडहंस्मृतम् ॥ १ ॥ अविज्ञातस्तुचंडालःसप्ताहंनिवसेद्यदि तस्य ज्ञानोपपन्नस्यविप्राःकुर्य्युरनुग्रहम् ॥ २ ॥ दधिक्षीरघृतैर्युक्तैःकृच्छ्रगोमूत्र यावकं प्राशयेत्सहभृत्यैस्तुमासमेकंनिरंतरमिति ॥ ३ ॥ तस्यचांडाल संसर्गिणोद्विजस्य ज्ञानोपपन्नस्य ज्ञाततत्संसर्गस्य तदतिसंकरेज्ञेयम् ॥ पराशरः । रजकीचर्म्मकारीचलुब्धकीवेणुजीविनी चतुर्वर्णस्यगेहेतुअज्ञाता ह्यधितिष्ठति । १ । ज्ञात्वातुनिष्कृतिंकुर्य्यात्पूर्वोक्तस्यार्द्धमेवतु गृहदाहंनकुर्वीतशेषंसर्वंसमाचरेदिति । २ । अत्रयादृशसंसर्गेयादृशप्रायश्चित्तमुक्तंतदर्द्धमित्यर्थःस्नात्वैवभुंजीतेत्यर्थः । एवंचयद्रजकादिस्पर्शेष्वाचमनं तद्व्याधितादिविषयेद्रष्टव्यम् ॥ षड्त्रिंशन्मते ॥ चांडालशवसंस्पर्शनेकृच्छ्रंकुर्यात् यानशय्यासनेषुचत्रिरात्रेण चांडालशवस्पर्शनइति ॥ चांडालस्यशवत्वमापन्नस्यस्पर्शने इत्यर्थः ॥

धोवण आदिस्त्री चारवर्णोके घरविषे नजाणीहोईरहे ॥ १ ॥ तां जबप्रतीतहोवे तब तिस दोषके दूर करणे वास्ते पूर्वोक्त प्रायश्चित्तका अर्द्ध करे और घर दाह नाहि करणा होर सभकृत्य करणी २ ॥ परंतु इसमे ऐसा अभिप्रायहै किजैसा जैसा पिच्छे संसर्गकाप्रायश्चित्त किहाहै तिसीका अर्द्ध करणा एह अर्थहै । स्नान कर्के भोजनकरे एह अर्थहै । एवमिति इसीतरहाँजो रजकादियोंका स्पर्शकरे सो आचमनकरे एह वचन व्याधिकर्के ग्रसे होएपर जानणा और षट्त्रिंशन्मत विषें कहाहै मृतहोए चांडालके स्पर्शविषें कृच्छ्र करे अर्थात् प्राजापत्यकरे और यान क्या इकट्ठे चांडालसाथ घोडे आदिपर चढना और शय्याविषें और आसनविषें तिससाथ इकट्ठा होवेतां त्रिरात्र व्रत कर्के शुद्ध हुंदाहै ॥

मृत चांडाल विषें कहकर जीवित चांडाल विषें कहतेहैं कि जीवते चांडालके साथ स्पर्श करे यानादि विषें तां त्रिरात्र व्रतकरकेहि शुद्ध हुंदाहै तथेति तैसें हि ब्रणाक्या किसे कारणतें देहविषे शस्त्र लगाणा चांडाल ब्राह्मणादिकों लगावे वा ब्राह्मणादि चांडालकोंलगावे एह अर्थ आगेभी जानणा और बंधन करणा और तैलादिका मलना और विस्रावण क्या दस्तां आदिका कराणा और रुधिरोत्पादन क्या रोग निवृत्ति वास्ते लहु छुडाणा इनां ५ पंजांके होयां होयां १२ बारां रात्रिका प्रायश्चित्त कराणा इसांमें आपस्तंबजी कहतेहैं येनेति जिस किसे करके तैलादिके मर्दन करके स्पृष्ट होया चांडाल द्विजातिकों स्पर्शकरे और तैलादि करके संस्कृत द्विजादि चांडालकों स्पर्श करे तां १ उपवास करके और पंचगव्य करके शुद्ध हुंदाहै ॥ १ ॥ तैलकों मलायाहै जिसने सो और वमन जिसको होयासो और दाडीकों स्पष्ट कराणवाला और मैथुन

जीवताचांडालेन सह यानादिषुत्रिरात्रमिति ॥ तथा व्रणबंधनाभ्यंजनाविस्रावणरुधिरोत्पादनेषुकृच्छ्रंद्वादशरात्रंचरेत् ॥ व्रणबंधनादीनांचंडालंप्रतिकरणेचंडालेनात्मनिकरणेएतत् ॥ आपस्तम्बः ॥ येन केनचिदभ्यक्तश्चंडालंयदिसंस्पृशेत् उपवासेनचैकेनपंचगव्येनशुद्ध्यति ॥ १ ॥ येनकेनेति तैलोद्वर्त्तनादिनाऽभ्यक्तः कृतमर्दनइत्यर्थः ॥ तैलाभ्यक्तस्तथावांतःश्मश्रुकर्मणिमैथुने मूत्रोच्चारंयदाकुर्यादहोरात्रेणशुद्ध्यति ॥ २ ॥ प्रचेताः ॥ स्वकायेचंडालकायादिस्पर्शनेद्विरात्राभोजनाच्छुद्धिः ॥ इदंपरिष्वंगविषयम् ॥ चंडालोयदिकायस्यरक्तमुत्पादयेत्क्वचित् त्रिरात्रेणविशुद्धिःस्यादेकहासेनचोत्तरे ॥ १ ॥ उत्तरेक्षत्रियादौत्रिरात्रादेकैकस्याहोरात्रस्यह्रासः ॥ क्रतुः ॥ चंडालस्योच्छिष्टदानेचंडालनृत्यदर्शने गीतवादित्रश्रवणे भैषज्यक्रियायांच त्रिरात्राभोजनेन शुद्धिः ॥

करणवाला जब स्नानादि शुद्धि विना मूत्रऔर विष्ठेकोत्यागेतां अहोरात्र करके क्या दिनरातकेव्रत करके शुद्धहुंदाहै । २ । प्रचेताजीकावचनहै अपणे देहविषें चांडालके देहका स्पर्शहोवे तां दोरात्र तक भोजनकी निवृत्ति करके शुद्ध हुंदाहै परंतु एह स्पर्श गलविषें वाहुलगाकर होवे तां द्विरात्र व्रत जानणा ॥ और कहतेहैं कि चांडाल किसे ब्राह्मणके देहतें रक्त निकाले तां तिसको शुद्धि तिन्नां रातांके व्रत करके हुंदीहै और क्षत्रियादिके देहतें निकाले तां एक एक रात्रके घटाणे करके जानणा १ जैसें क्षत्रियके देह विषें रक्तनिकाले तां दो२ रात्र औरवैश्यके देहतें निकाले तां एक रात्र और शूद्रके देहतें निकाले तां स्नान करके शुद्ध हुंदाहै ॥ क्रतुजीकहते हैं चांडाल तांई उच्छिष्ट देणाविषे और चांडालकी नृत्य देखणे विषें और तिसके गीतवादित्रके सुणने विषें और तिसकी औषध करणे विषें तिन्नांरात्रांके भोजनके त्याग करके शुद्धि हुंदीहै

और कहतेहैं कि अशुचिकों क्या चांडालको देखकर्के सूर्यको देखकर और पंदरां १५ प्राणायाम कर्के शुद्ध हुंदाहै। अव पराशरजी कथनकरतेहैं श्वेति चूढा डूम चंडाल इनांके साथ संभाषणकरे तद ब्राह्मणोंके साथ संभाषण करके अथवा गायत्रीका एकवार जप करके शुद्ध होताहै। १। और चांडालके साथ शयन करके त्रय ३ रात्रि व्रत करके शुद्ध होताहै और चंडालैकमयीकों प्राप्त होकरके गायत्रीके स्मरणतें शुद्ध होताहै। २। अव इसीका अर्थ स्पष्ट करके कहतेहैं यत्रेति जिस सभाविषेंअथवा पंक्तिविषे चंडालहि एकक्याकेवल होवें सो चंडालैकमयीकहीहै एह सभाका नामहै अथवा चंडालहै एक प्रधान जिस विषे एह अर्थहै अव और प्रकार प्रचेताजी कथन करतेहैं चंडालेति जो चंडालके घरमे प्रवेश करणे विषें और चंडालकें साथ घर विषें अथवा

अशुचिंदृष्ट्वाआदित्यमीक्षेत प्राणायामंकृत्वापंचदशमात्रकम् अशुचिश्चां डालादिः। पराशरः। श्वपाकडोम्वचंडालान्मिथःसंभाषतेयदि द्विजसंभाष णंकुर्यात्सावित्रींवासकृज्जपेत् १ चंडालेनसमंसुप्त्वात्रिरात्रेणाविशुद्ध्यति चंडालैकमयींगत्वासावित्रीस्मरणाच्छुचिः ॥ २ ॥ यत्रसभायांपंक्तौवा एकेकेवलाश्चंडालाः सा चंडालैकमयी चंडालएकःप्रधानंयत्रेतिवेत्यर्थः प्रचेताः। चंडालगृहप्रवेशने चंडालेनैवगृहेवृक्षच्छायायांवा सहावस्थानेचं डालएवस्यात् ब्राह्मणानुद्दिष्टपाण्मासिकंप्रायश्चित्तंकृच्छ्रंवा ब्राह्मणस्य चतु स्त्रिद्व्येकमासाः शेषाणाम् । शेषाःक्षत्रियोवैश्यःशूद्रःकैवर्तादिश्च एषां यथासंख्यंचतुस्त्रिद्व्येकमासाःकृच्छ्राः

वृक्षच्छाया विषें सायस्थित होणेंतें चंडालहि होजाताहै इस विषें ब्राह्मणांको दिखायाहै कि छे ६ महीनें कावत अथवा छे ६ महीने तक कृच्छ्र करे परंतु एह व्रत वो हैकि जो ब्रा ह्मणकों उद्दिष्ट न होवे अर्थात् उपवास न होवे किंतु एकभक्तादिविधि होवे सो छे महीने तक करणा किहाहै ॥ और शेषां को चार ४ त्रय ३ दो२ एक १ महीनेका पूर्वोक्त व्रत क्रम करके करें शेष शब्दका अर्थ कहतेहैं शेष जो हैं क्षत्री वैश्य शूद्र झीवरादि अर्थात् शूद्रोकी अधम जाति एह संपूर्ण क्रम करके चार ४ त्रय ३ दो२ एक १ महीनें का कृच्छ्र व्रत करें ॥ क्षत्री चार ४ महीनेंका वैश्य त्रय ३ महीनेका शूद्र दो२ . महीनेका झीवरादि एक १ महीनेका व्रत करें तो शुद्ध होते हैं ॥

उशनाजी कहतेहैं अनिष्टगंध जो विष्टादिकी है तिसके आघ्राण विषे क्या सिंघण विषे और अनिष्ट शब्द जो किसेका किहाहोआ विष्टा मूत्रादिका शब्द तिसके श्रवण विषे और अनिष्टरूप जो गर्द्दभादिका स्वरूप तिसके दर्शन विषे और अनिष्टवाक्य जो तूंबि ष्टादि भक्षण कर असा वाक्य इसकें उदाहरणदेणे विषे सूर्य्यजीके दर्शनते शुद्धि होतीहै देवलजीका वचनहै चांडालके उपदेश लेणवाला पुरुष प्राजापत्य करे तद शुद्ध हुंदाहै और चांडालों कर्के बनाया होआ और चांडालों कर्के सेव्यमान जो कूपहै तिसके सेव नवें द्विजादि त्रिरात्र व्रत करे १ और कहतेहैं दृष्ट्वेति चांडालकों और पतितकों देख कर्के संध्या काल विषे संध्या वंदनते अनंतर सूर्य्यजीका दर्शन करे तां शुद्ध हुंदाहै तैसेहि रजस्वला कों देखकर्के और विष्टा मूत्रादिको देख कर्केभी सूर्य्यका दर्शन करे । २ । इसमे मनुजीकहतेहैं

उशनाः अनिष्टगंधाद्युपाघ्राणश्रवणदर्शनोदाहरणे आदित्यदर्शनाच्छौचम् अनिष्टानां गंधशब्दरूपवाक्यानामुपाघ्राणश्रवणदर्शनोदाहरणेष्वादित्यदर्शनाच्छुद्धिरित्यर्थः देवलः। चंडालधर्मसंयोगेप्राजापत्यंसमाचरेत् चरेत्त्रिरात्रंचंडालकूपतीर्थनिषेवणात् १ धर्मस्यसंयोगउपदेशःदृष्ट्वाचंडालपतितौसंध्याकालउपस्थिते ईक्षेतादित्यमुद्यंतंतथोदक्यांमलानिच२ उदक्यां रजस्वलां.मलानिविण्मूत्रादीनिदृष्ट्वाप्यादित्यमीक्षेतेत्यर्थः मनुः। आचम्य प्रयतोनित्यंजपेदशुचिदर्शने सौरान्मंत्रान्यथोत्साहंपावमानीश्चशक्तितः १ अशुचीनां चंडालश्वपचविण्मूत्रादीनांदर्शने आचमनानंतमाकृष्णेत्यादिसूर्यमंत्रान् जपेत् ॥ पराशरः अविज्ञातस्तुचांडालोनिवसेद्यस्यवेश्मनि विज्ञातेतूपसन्नस्यद्विजाःकुर्युरनुग्रहम् १ उपसन्नस्येति विज्ञातेसत्युपसन्नस्यपरिषदुपासत्तिंविधायास्थितस्योपरिद्विजाःपरिषदुपसन्नाअनुग्रहं वक्ष्यमाणश्लोकोक्तरीत्याकुर्युरित्यर्थः ॥

आचम्येति जेकर अशुचि वस्तु जो है पूर्वोक्त तिसके दर्शन विषे इंद्रियोंको रोकता होआआचमन कर्के नित्यहि सूर्य्यजीके मंत्रांकोंपढे और पावमानीजो ऋग्वेदके मंत्र तिनांकोभी यथाशक्तिसें जपे। एहि अर्थ स्पष्टकर्के कहीदाहै अशुचीनामिति अशुचि जोहै चांडाल और श्वपच तिसीका भेद और विष्टामूत्रादि इनांके दर्शन होआं होआं आचमनकरे पीच्छे (आकृष्णेनरजसा) इत्यादि मंत्रांका जपकरे और (उद्वयंतमसस्परिस्वः) इत्यादि उपस्थानके मंत्रांका जपकरे इसमे पराशरजी कहते हैं अवीति अविज्ञात चांडाल क्या नहि जाणयाथाकि एह चांडालहै सो जिसके घरविषे रहे और जद जाणयाजावे कि एह चांडालहि साडेघरमो रैंहदाथा तद उस ऊपर धर्मशास्त्री ब्राह्मण अनुग्रह करे ॥ १ ॥

(उपसन्नस्य) इसका अर्थ कहतेहैं ज्ञानते पछि सभाकी सेवा कर्के जेडा स्थित होरिहाहै तिसपर प्रायश्चित्तका उपदेशकरे वक्ष्यमाण रीतिसें ❀ (प्रश्न) सभजगा पापके होआं होआं सभामे जाणा वणदाहै इसजगा वकुखरा कर्के क्यों लिखाहै (उत्तर) रहस्य प्रायश्चित्त विषे सभाकी आज्ञा नहि इसकर्के किहाहै कि इसजगा रहस्यभी करणा होवे तांभी प्रकाश करणा इस अभिप्रायसे लिखाहै उपसन्नस्येति उपदेशका प्रकार कहतेहैं ऋषेति सो धर्म्मशास्त्रके पाठक ब्राह्मण ऋषियोंके मुखते निकले होए धर्म्मोंकोगायनकरदेहोए तिस पतितका उद्धार करें शास्त्रकर्के कहेहोए कर्म्म कर्के ॥ २ ॥ दहीं कर्के और घृतकर्के और दुग्ध कर्के गोमूत्र विच्चों निकालकर यवांके काढेको भक्षणकरे जितने घरके लोकहें सेवकादि तिनके साथ और त्रयकाल स्नानकरे ॥ ३ ॥ पूर्वोक्तकोहि व्यवस्था

अत्र परिषदुपसत्यर्थमुपसन्नस्येत्युक्तम् यद्यपि सर्वत्र पापे परिषदुपसत्तिरभिहिता तथापि रहस्ये परिषदुपसत्तेरननुज्ञानादत्र रहस्यमपिप्रकाशनीयमित्येतदर्थमिदमिति ॥ ऋषिवक्त्रच्युतान्धर्मान्गायंतोधर्मपाठकाः पतंतमुद्धरेयुस्तंशास्त्रदृष्टेनकर्मणा ॥ २ ॥ दध्नाघृतनक्षीरेणकृच्छ्रगोमूत्रयावकं भुंजीतसहितोभृत्यैस्त्रिसंध्यमवगाहनम् ॥ ३ ॥ त्र्यहंतुदध्नाभुंजीत सर्पिषातुत्र्यहंततः क्षीरेणतुत्र्यहंभोज्यमेकैकेनपुनस्त्र्यहम् । ४ भावदुष्टंनभुंजीतभोक्तव्यंगोरसप्लुतं तिष्ठेद्दिनानियावंतितावंत्येवसमाचरेत् ५ त्रिपलंतुदधिक्षीरंपलमेकंतुसर्पिषः आकरेतुभवेच्छुद्धिरारकूटेसकांस्यके ६ आकरउत्पत्तिस्थानं सजातिसमूहोमह्यांखननंवा आरकूटोरीतिकम्

कर्दहैं त्र्यहमिति तिन्नदिन दहींकेसाथ गोमूत्र यावकका भोजनकरे और त्रयदिन घृतकर्के खावे और त्रयदिनदुग्धकर्के खावे और इसी प्रकार पीछे इनांहि वस्तुयांके साथ एक २ दिन खावे तो एभीद्वादश दिनका व्रतहोआ । ४ । और भावदुष्ट जो वस्तुहै जैसे तक्रपाकमे पतले दस्तका भावनाहै तिसको न भोजनकरे और गोरस जो दहीं तिसकर्के मिले होएका हि भोजन करे परंतु जितने दिन सो चांडाल घरविषे रहाहै तितने दिन इसव्रतको करे ॥ ५ ॥ तिनका परिमाणकहतेहैं त्रीति तिन्न ३ पा दहीं और दुग्ध और १ एकपा घृत इसमर्य्यादासें लए और उसघरमे जितने भांडेहैं पित्तलके और कांस्यके तिनांको शुद्धि आकरमे रक्षणेकर्के जानणी ६ । आकरनाम उत्पत्ति स्थानकाहै तिसविषे अथवा सजातिकासमूह तिसविषे स्थापन करणा अथवा पृथ्वीविषे दब्बदेणा और आरकूटनाम पित्तलकाहै

अंगिराजी कहतेहैं ॥ कांस्यके भांडेविच्च चुली नहि करणी और पेर नाहि धोणे जेकर ऐसा करे तां पृथ्वी विच्च छे ६ महीने तिस कांस्यभाजनकों रखकर पीछे वहुते भांडे विच्च रखे तां शुद्ध हुंदा है ॥ १ ॥ वस्त्रजेडे उस घर विषे हैं सो जल कर्के शुद्धकरणे और जे डे मृत्तिकादे भांडेहैं सो सभत्यागदेणे और कुसुंभा १ गुड २ कपाह ३ लून ४ मधु ५ घृत ६ इनाकों दरवाजेविच्च ल्या रखणा वायुकर्के शुद्ध होणगे इसी तर्हां धान्यभी शुद्ध करणे और घर विषे अग्नि लगाणी तिसके सेक लगणे कर्के घर पवित्र हुंदाहै एह मनुजीका वाक्यहै ॥ ३ और सहित पुत्रके और सहित सेवकांके ब्राह्मणांकों भोजनदेवे और २० गौआं और १ वैल दक्षिणा देवे ॥ ४ ॥ पीछे लेपन और किसेजगा खातकरणे कर्के और होम और जप

अंगिराः ॥ गंडूषंपादशौचंतुनकुर्यात्कांस्यभाजने भूमौनिक्षिप्यषण्मासा न्पुनराकरमादिशेदिति ॥ १ ॥ जलशौचेनवस्त्राणिपरित्यागे नमृण्मयम् कुसुंभगुडकर्पासलवणंमधुसर्पिषी ॥ २ ॥ द्वारिकुर्वी तधान्यानिदद्याद्वेश्मानिपावकम् हुताशज्वालासंस्पृष्टंशुचितन्मनुरब्रवी त् ॥ ३ ॥ सपुत्रःसहभृत्यैश्चकुर्याद्ब्राह्मणभोजनं गोविंशतिंवृषंचैकंदद्या द्विप्रेषुदक्षिणाम् ४ पुनर्लेपनखातेनहोमजप्येनचैवहि अवधारणेनविप्रा णांतत्रदोषोनविद्यते ॥ ५ ॥ स्वल्पकालसंपर्केएतत् संवर्त्तः ॥ अंत्यजः पतितोवापिनिगूढोयत्रातिष्ठति सम्यग्ज्ञात्वातुकालेनततःकुर्याद्विशोधनम् ॥ १ ॥ चांद्रायणपराकोवाद्विजातीनांविशोधनम् प्राजापत्यंतुशूद्राणां शेषाणामिदमुच्यते ॥ २ ॥ यैस्तत्रभुक्तंपक्वान्नंतेषामुक्तोविधिक्रमः ॥ प्राजापत्यइत्यर्थः ॥ तेषामपिचयैर्भुक्तंकृच्छ्रपादोविधीयते ३ ॥

कर्के ब्राह्मणां के अनुग्रह कर्के तिसविषे दोष नांहि ॥ ५ ॥ परंतु एह प्रायश्चित्त थोडे संबंध विषे है तिसचांडालका संबंध उसमे वहुतहोवे तां तिस वास्ते प्रायश्चित्त होर है ॥ संवर्त्तजी कहतेहैं ॥ अंत्यज क्या चांडाल अथवा पतित जिसके घर छपकर्के रहे और पिच्छे जद मलूम होवे तां इसतर्हां शुद्धि करे । १ । चांद्रायण अथवा पराककर्के ब्राह्मणादिकी शुद्धि और शूद्रांकी शुद्धि प्राजापत्य करके है और इनांतेंजो होर हैं आश्रमी लोक तिनके अर्थ भी एहहै ॥ २ ॥ जेडे होर दूसरे घरवाले हैं तिनांकोंभी कहतेहैं कि जिनांने तिस घर विषे पका न भक्षण कीताहै तिनां वास्ते प्राजापत्य किहाहै और जिनांनें इनके घर अर्थात् चांडलवालें घर खाण वालेके घर खादाहै तिनकी शुद्धि पादकृच्छ्र कर्केहै ॥ ३ ॥

और कहतेहैं कूपैकेति जेडे एक खूएकें जल पान कर्के दोष वालेहैं अर्थात् जिस खूए विषें चांडालपींदेहैं तिसी खूयें विषें जलपान करणवाले । और संसर्ग जो परंपरा संसर्गहै तिसकर्के दोष वाले जो हैं इनसभनांकों उपवास कर्के और पिच्छे पंचगव्य के पान कर्के शुद्ध करे ॥ ४ ॥ जिस स्त्रीका वालक छोटाहोवे और रोगी और गर्भिणी और वृद्ध इनांकों नक्त क्या नक्त देणा चाहिए और वालकांकों २ पहरका व्रतदेणा चाहिए ॥ ५ ॥ अथवा जिनांकों व्रतकरणेसें पीडा वहुत होवे तिनांकों थोडा व्रतदेणा उचितहै जिसतें व्रतिकी मृत्यु न होवे ॥ ६

कूपैकपानदुष्टायेतथासंसर्गदूषिताः सर्वानेवोपवासेनपंचगव्येनशोधयेत् ॥ ४ ॥ बालापत्यातथारोगीगर्भिणीवृद्धएववा तेषांनक्तंप्रदातव्यंबालानांप्रहरद्वयम् ॥ ५ ॥ अथवाक्रियमाणेषुयेषामार्त्तिःप्रदृश्यते ॥ शेषंसंपादयेत्तेषांविपत्तिर्नभवेद्यथा ॥ ६ ॥ अंत्यजोऽत्रचंडालः ॥ वसिष्ठः ॥ चंडालोनिवसेद्यत्रगृहेत्वज्ञातएवतु तस्यान्नंतुद्विजोभुक्त्वाप्राजापत्यंसमाचरेत् ॥ १ ॥ अकामतःसकृद्भुक्त्वाकुर्य्यादितद्द्विजोत्तमः कामाच्छुद्धिः पराकेणमहासांतपनेनवा॥२॥चांद्रायणंपराकोवाद्विजातीनां विशोधनम् प्राजापत्यंतुशूद्राणांशेषाणामिदमुच्यते॥३॥योन्योपिभुंक्तेपक्वान्नंकृच्छ्रंस्यात्तस्यशोधनम् शुष्कान्नभोजनेपादमित्याहभगवान्मनुः ॥ ४ ॥

अंत्यज नाम इसजगा चंडालकाहै ॥ इसमे वसिष्ठजी कहतेहैं ॥ चांडाल जिसके घर अज्ञात हो या २ वसे तिसका अन्न द्विजक्या व्राह्मणादि जेकर खावे तां प्राजापत्य व्रतकरे ॥ १ ॥ परंतु अकामते एक वार खाणेमें एह प्रायश्चित्तहै कामनातें खावे तां पराक कर्के शुद्ध हुंदाहै अथवा महासांतपन कर्के ॥ २ ॥ चान्द्रायण अथवा पराक द्विजातियोंका शोधकहै और प्राजापत्य शूद्रों का शोधकहै और जो दूसरे घरवालेहैं तिनांवास्ते कहतेहैं ॥ ३ ॥ जो होर तिस घरविषे पकान्न खावे तिसके शोधन करणे वाला कृच्छ्रहै और जो सुका अन्न खावे तिसके वास्ते लघुकृच्छ्रहै एह भगवान् मनुजी कहतेहैं ॥ ४ ॥

तैसेहि जेकर तिनां चांडालघरवालयेंनें स्पर्श कीतेहोए अन्नको जद भोजनकरे और विधिवाले स्नानतें विना जो भोजन करदाहै तां भोजनमे कृच्छ्र किहाहै और पानाविषें तिसका चौथा हिस्साकिहाहै ॥ ५ ॥ और चांडालकर्के जद संस्पृष्टहोवें कांसका भांडा अथवा मृत्तिकाका और अज्ञानतें जो कांस्यके भांडेमें भोजन करता है और मृत्तिकाके भांडेमें जलपान करताहै तिनांमें कांस्यभोजीकृच्छ्र व्रतकरे और जलपानवाला कृच्छ्रका पादव्रतकरे ६ कांस्यभाजन इसजगा भज्जा दा समझणा । ६ । अब च्यवन ऋषिजी और प्रकार कहतेहैं चंडाल घरविषे प्रवेश करें तो घर कों फूक देवे संपूर्ण मृत्तिकाके भांडे भन्न देवे और लकडीको छिला देवे और शंखसिप्पी सो

तथा ॥ तैःस्पृष्टोयदिभुंक्तेन्नमस्नात्वाविधिवज्जले विहितांभोजनेकृच्छ्रंपाने स्यात्पादएवतु ॥ ५ ॥ चंडालेनतुसंस्पृष्टंकांस्यभांडंसमृण्मयं ॥ अज्ञा नात्कांस्यभोजीतुमृण्मयेजलपानकृत् कांस्यभुक्त्वाचरेत्कृच्छ्रंजलपानेतुकृ च्छ्रकम् ६ ॥ कृच्छ्रकः कृच्छ्रपादः ॥ च्यवनः ॥ चंडालसंकरेस्वभवनदहनं सर्वमृद्भांडभेदनं दारवाणांतुतक्षणं शंखशुक्तिसुवर्णरजतवैदलानामद्भिः क्षालनं कांस्यताम्राणामाकरेशुद्धिः ॥ आकरशब्दार्थस्तूक्तः पूर्वम् ॥ सौवी रपयोदधितक्राणापरित्यागः ॥ सौवीरं वदरं ॥ गोमूत्रयावकाहारोमासं क्षिपेत् वालवृद्धस्त्रीणामर्द्धप्रायश्चित्तम् ॥ आषोडशाद्वालःअशीत्यूर्ध्वंतुवृद्धः चीर्णेप्रायश्चित्तेब्राह्मणभोजनं गोशतंदद्यात्तदभावेसर्वस्वम् ॥

ना चांदी वंझ इनके जो पात्र हैं तिनां पर जल सिंचन करे और कांस ताम्रकी आकर विषे शुद्धि कहीहै आकर शब्दका अर्थ पिच्छे कहाहै ॥ और वेर दुग्ध दधि छाह इनांको त्याग देवे और गोमूत्र युक्त यवोंका भक्षण करदा होया महीना रोज व्यतीत करे और बालक वृद्ध स्त्री इनको अर्द्ध प्रायश्चित्त देणा अर्थात् पंदरां १५ दिन । और सोलां १६ वर्षतें उरें वालक होता है और अस्सी ८० वर्ष तें उपरंत वृद्ध होताहै और प्रायश्चित्तके कीते होयां ब्राह्मणोंको भोजन देवे और सौ १०० गौ देवे जेकर एह न मिले तां सर्वस्व दे देवे ॥

अब बोधायन जी और विशेष कहतेहैं चंडालके देखणे विषे तारयोंका दर्शन करे तो शुद्ध होताहै और चंडालके साथ संभाषण क्या बोले तो ब्राह्मणके साथ संभाषण करे और स्पर्श करे तो स्नान कर्के शुद्ध होताहै और जूठा होकर चंडालका दर्शन करे तो एक रात्र उपवास व्रत करे और संभाषण करे तो दो २ रात्र उपवास करे और स्पर्श करे तो त्रय रात्रि उपवास करे और जूठे चंडालके दर्शन संभाषण स्पर्श करणे में भी एही व्रत करणे ॥ और चंडालके साथ मार्ग चले तो सवस्त्र स्नान करे ॥ अब प्रायश्चित्त मयूख विषे कहतेहैं द्रव्येति द्रव्यहै हस्थ विषे जिसके सो जूठेका स्पर्श करे तिसमे मनुका वचन है द्रव्यहस्तवाला होया २ जूठेके साथ स्पर्श करे तो तिस द्रव्यको हस्थमें हि रख कर आचमन करे तो शुद्ध होता है

बौधायनः। चंडालदर्शनेज्योतिषांदर्शनं संभाषणेब्राह्मणसंभाषणम् स्पर्शनेस्नानम् उच्छिष्टदर्शन एकरात्रमुपवसेत् संभाषणे द्विरात्रं स्पर्शने त्रिरात्रम् चंडालिनसहाध्वगमनेसचैलस्नानम्। प्रायश्चित्तमयूखे द्रव्यहस्तस्योच्छिष्टस्पर्शे। मनुः। उच्छिष्टेनसमंस्पृष्टवाद्रव्यहस्तः कथंचन अनिधायैव तद्द्रव्यमाचांतः शुचितामियात् १ एतच्चामान्नविषयम्। भोज्यविषयेतु वसिष्ठः। प्रचरन्नन्नपानेषुयदुच्छिष्टमुपस्पृशेत् भूमौनिधायतद्द्रव्यमाचांतः प्रचरेत्ततः ॥ १ ॥ तद्द्रव्यस्यह्यभ्युक्षणं कार्य्यमित्याहतुः शंखलिखितौ॥ द्रव्यहस्तोच्छिष्टोनिधायाभ्युक्षयेद्द्रव्यमिति उच्छिष्टउच्छिष्टस्पृष्टः। एतच्चानुच्छिष्टहस्तादिनास्पर्शे ॥ साक्षादुच्छिष्टहस्तादिस्पर्शेत्वभोज्यमेव

एह कच्चे अन्नके विषयमें जानणा । १ । और भोज्यअन्नके विषयमे वसिष्ठजीकहतेहैं प्रेति प्रचरन्क्या अन्न वरतांदा होया जूठेका स्पर्श करे तो तिसद्रव्यको भूमि पर स्थापन करके आचमन करे फेर तिस अन्न नूं वरतावे । १ । परंतु तिसद्रव्यको सेचन करणा एह किहाहै शंख और लिखितजी ने द्रव्येति अपूपादि भक्ष्य द्रव्य जिसके हाथ मे है और जूठेके साथ स्पर्श वाला होवे तां उस वस्तु को हेठ रक्षकर जल साथ सिंचे पीच्छे ग्रहण कर्के वर्ता देवे तां दोष नहि परंतु एहप्रायश्चित्त जेडा हस्थ नहि जूठा तिसके स्पर्शविषे जानणा जेकर साक्षात् जूठे हस्थनाल स्पर्श होवे तां नहि भोजन करणा

सोई वसिष्ठजी कहतेहैं उच्छिष्टमिति गुरुका उच्छिष्ठ होवे तां भोजन करलेणा और किसेका होवे तां नाहि भोजन करणा और अपणा जूठा और जूठेके साथ जेडा मिलया होआहै तिसका भी भोजन नाहि करणा ॥ जेकर भोजन करे तां स्नानतें पीच्छे १०० प्राणायाम करे एह जान लेणा ॥ जूठे मनुष्यको सूर्य्यादिका दर्शन करणेमे मार्कंडेयपुराणमें दोष कहाहै सूर्येंद्विति सूर्य्य और चंद्रमा और तारे जिसजूठे ने दिक्खे होण कदाचित् तिन्हां पुरुषांदे अक्षिपर अग्निको रक्षकर यमदूतांन फूकां लगाईंदीआंहैं ॥ १ ॥ उच्छिष्टने पलांडुआ दिके स्पर्शविषे वृहस्पतिजीका वचनहै सुरेति मदिरा १ गंडा २ लस्सन ३ इनांके कामनाकर्के

यथाहवसिष्ठः.उच्छिष्ठमगुरोरभोज्यंस्वमुच्छिष्टोपहतंचेति उच्छिष्ठस्यसूर्यादिदर्शनेदोपउक्तोमार्कंडेयपुराणे ॥ सूर्येंदुतारकादृष्टयैरुच्छिष्टैः कदाचन तेपांयाम्यैर्नरैरक्षिन्यस्तोवह्निःसामिध्यते ॥ १ ॥ उच्छिष्ठस्यपलांडुादिस्पर्शे वृहस्पतिः ॥ सुरापलांडुलशुनस्पर्शेकामकृतेद्विजः त्र्यहंपिबेत्कुशजलं सावित्रींचजपेत्तथा ॥ १ ॥ इदमूर्ध्वोच्छिष्ठस्येति शूलपाणिः ॥ यत्तु सएव पलांडुलशुनस्पर्शेस्नात्वानक्तंसमाचरेत् कृताचारस्त्वहोरात्रमुच्छिष्ठोद्व्यहमाचरेदिति १ तदधोच्छिष्ठविपयमूर्ध्वोच्छिष्टेऽकामविपयंवा नक्तं शूद्रोच्छिष्ठविपयं द्व्यहमूर्ध्वोच्छिष्ठद्विजविपयामितिकेचित् ॥

स्पर्श कीतिआं होआं द्विजक्या ब्राह्मणादि त्रयदिन कुशाकाजलपीवे और गायत्रीको १० दशादिकीसंख्यासेंजपे ॥ १ ॥ परंतुएह ऊर्ध्वोच्छिष्टजोपुरुषहै तिसपर जानणा एह शूलपाणिजी कहतेहैं । और जो सोईशूल पाणि कहतेहै पलेति पलांडुक्या और लशुन इनके स्पर्शविषे स्नानतें पिछे नक्त व्रत करे क्या एकाहारकरे और कृताचार क्या जिसने दिशा होकर दिनरात्र तक शौच नहि कीता और भोजन करचुकाहै सो दो २ दिन उपवासकरे तां शुद्ध हुंदाहै ॥ १ ॥ सो एहअधोच्छिष्टका विषयहै अथवा ऊर्ध्वोच्छिष्टमे अकामका विषयहै और कोई कहतेहैं किनक्त व्रत शूद्रांके लियेहै और दो दिनका व्रत ऊर्ध्वोच्छिष्ट ब्राह्मणादिको विषयकरताहै ॥

एह पूर्वोक्त व्रत त्रय अकामके विषयहै और सावित्रीके जपसाथ तीन रात्र कुश जलको पानकी अशक्ति होयां २४ चौंवी पण मुल्लवाला सुवर्ण देणा चाहिए । और जो उच्छिष्ट नहि है और लशुनादिको स्पर्श करे तिसको स्नानमात्रहि किहाहै ॥ और शूलपाणि जीके बनाएहोए ग्रंथमे वृद्धशातातपजीका वचनहै ॥ उच्छिष्ट होआ होआ विप्र मदिराको और कुत्तेको लशुनादिको स्पर्शकरे सो दिनरात्रके व्रत करके पीछे पंचगव्यके पीणे करके शुद्ध हुंदाहै ॥ १ ॥ सोएह ऊर्ध्वोच्छिष्टके काम करके कीते होये स्पर्श विषे जानणा ॥ अब इसीका अर्थ स्पष्ट करके कहतेहैं मद्यमिति मद्य क्या सुरातें पृथक् जानणा क्यों कि सुराके स्पर्शमे अधिक प्रायश्चित्त होणेने और शूद्रक्या शूद्रकाजूठा अशुचि क्या लस्सनादि

तथात्रयमिदमकामतः सावित्रीजपान्वितत्रिरात्रकुशवारिपानाशक्तौ चतुर्विंशतिपणलभ्यं कांचनंदेयम् अनुच्छिष्टस्पर्शेकेवलस्नानमेव ॥ शूलपाणौ वृद्धशातातपः ॥ उच्छिष्टःसंस्पृशेद्विप्रोमद्यंशूद्रंशुनोऽशुचीन् अहोरात्रोषितोभूत्वापंचगव्येनशुद्ध्यति १ एतदूर्ध्वोच्छिष्टस्यकामतः ॥ मद्यंसुरेतरं शूद्रंशूद्रोच्छिष्टं अशुचीन्लशुनादीन् ॥ सुरानुवृत्तौ यमः ॥ दर्शनात्स्पर्शनाद् घ्राणात् प्रायश्चित्तंविधीयते प्राणायामैस्त्रिभिःस्नात्वा घृतं प्राश्यविशुद्ध्यति १ दर्शने कामतः स्पर्शनेऽकामतः घ्राणेवाकामतः कामतोजातिभ्रंशकरत्वं तथा ॥ याज्ञवल्क्यः ॥ आघ्रायरसगंधंच सुरागंधंचसोमपाःस्नात्वाऽपःस्पृश्यकृत्वात्रीन् प्राणायामान्विशुद्ध्यति १ ॥

सुराकी अनुवृत्ति विषे यमजी कहतेहै देति सुराके दर्शनतें स्पर्शतें सिंघणतें प्रायश्चित्त होताहै कि तीन ३ प्राणायाम करके स्नानकरे और घृतका भक्षणकरे तो शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ और इसमे ऐसी व्यवस्थाहै कि देखणेंमें इच्छा विषे जानणा और न इच्छातें स्पर्श विषे और सिंघण विषे इच्छातें जानणा ॥ और इच्छातें करणे विषे जातिभ्रंशकर पाप होताहै ॥ तैसेहि इसीमें याज्ञवल्क्य जी कहतेहैं आघ्रायेति रसगंध क्या विष्टा दि और सुरागंध क्या मदिरादि इनांनू सोमपा पुरुष सिंघे तो स्नान करके जलका स्पर्श करेऔर त्रय ३ प्राणायाम करे तो शुद्ध होताहै १ ॥

जो सुमंतुजीने किहाहै सो कहतेहैं मद्येति मदिराके साथ स्पर्श करणेमें ऋषभ मंत्रका जप करे और मदिराके सिंघण विषें प्राणायाम करे सो एह न इच्छातें करण विषें जानणा और इच्छातें करणेमें विष्णुजी कहतेहैं सुरामिति सोमपा पुरुष मदिराका गंध सिंघकर्के जल विषें डुब्बा होया त्रय ३ अघमर्षण जपे फेर घृत प्राशनकरे तो शुद्धहोताहै॥ अब जूठे पुरुषकों नरादिकी विष्टा स्पर्श विषें लघुहारीतजीकहतेहैं श्वेति कुत्तेकी विष्टा और काक विष्टा और कंक गिरज पक्षिकी विष्टा और पुरुषकी विष्टाका और अधोच्छिष्टका स्पर्श करे तो सवस्त्र जलमें स्नान करे ॥ १ ॥ और जूठे पुरुषको स्पर्श करणेमे एह प्रायश्चित्त करे कि एकरात्रि उपवासकर्के पंचगव्य पान करे तो शुद्ध होताहै २ इस जगा अधोच्छिष्ट क्या विष्टाके

यत्तुसुमंतुनोक्तम् मद्यसंकरेऋषभंजपेत् सुराघ्राणेप्राणायामइति तदकामतः ॥ कामतस्तु विष्णुः ॥ सुरामाघ्रायगंधंसोमपउदकेमज्जमा नस्त्रिरघमर्षणंजप्त्वाघृतप्राशनमाचरेदिति अथोच्छिष्टस्यनरादिपुरीष स्पर्शेलघुहारीतः । श्वविष्ठांकाकविष्ठांवाकंकगृध्रनरस्यच अधोच्छिष्टंतुसं स्पृश्यसचैलोजलमाविशेत् ॥ १ ॥ ऊर्ध्वोच्छिष्टंतुसंस्पृश्यप्रायश्चित्तमि दंचरेत् उपोष्यरजनीमेकांपंचगव्येनशुद्ध्यति ॥ २ ॥ अत्राधोच्छिष्टस्यपु रीषस्यस्पर्शेस्नानम् ऊर्ध्वोच्छिष्टस्यतूपवासःपंचगव्यंचपेयम् । अथानुच्छि ष्टस्यमलस्यस्पर्शे तत्रांगिराः ॥ ऊर्ध्वंनाभेःकरौमुक्त्वायदंगमुपहन्यते तत्र स्नानमधस्तात्तुक्षालनेनैवशुद्ध्यति ॥ १ ॥

स्पर्श विषें स्नान करे तो शुद्ध होताहै एह अर्थ है इस जगा प्रायश्चित्त बहुत होणेतें जानणा कि उच्छिष्टहि जद उच्छिष्टको स्पर्श करे तां ऐसा करे एह अभिप्रायहै और जेडा आप जूठा होवे और जूठेको अथवा मनुष्यादिमलको छोए सो उपवास कर्के पंचगव्यकों पीवे । अब जो जूठा नहि तिसको मलके स्पर्शविषे अंगिराजी कहतेहैं ऊर्ध्वमिति इत्यादि विना नाभितें उपर जेकर कोई अंग मलादि कर्के (उपहन्यते) क्या स्पृष्ट होवे तां तिस विषे स्नान करणा किहाहै और उसके हेठ स्पर्शहोवे तां तिस जगाके धोणेकर्के हि शुद्ध हुंदाहै ॥ १ ॥

एह प्रायश्चित्त विष्टादि स्पर्श विषे है तिसमें भी गाढा अंगमै जद लगे तां है इसी मै शंखजी कहतेहैं ॥ रथ्येति गली कूचेके जल कर्के और थुक कर्के श्लेष्मादि कर्के नाभिते उपर पुरुष स्पृष्ट होवे तां शीघ्र स्नान कर्के शुद्धहुंदाहै ॥ १ ॥ और अंगिराजीने किहा कि धोणा जो है नाभिके हेठले अंगका सो मृत्तिका करके और जल करके करणा विष्णुजीभीकहतेहैं नाभेरिति नाभिके हेठले अंगांविषे देहदीमलकर्के और सुराकर्के मद्यकर्के जो युक्त होवे सो निरालस होआ होआ मृत्तिका और जलकर्के धोवे तां शुद्ध हुंदाहै ॥ जेकर और जगा अर्थात् नाभितें उपर मलादि कर्के युक्त होवे तां मृत्तिका जल कर्के तिस

अमेध्यादिस्पर्शविषयमिदम् निविडांगादिस्पर्शविषयमपि ॥ तथाह शंखः रथ्याकर्दमतोयेनष्ठीवनाद्येनवापुनःनाभिरूर्ध्वंनरःस्पृष्टःसद्यः स्नानेनशुध्यति १ अंगिरसोक्तंक्षालनंमृदंभसाकार्य्यमित्यत्र विष्णुः ॥ नाभेरधस्तात्प्रवाहेपुचकायिभिर्मलैः सुराभिर्मद्यैर्वोपहतोमृत्तोयैस्तदंगंप्रक्षाल्यातंद्रितः शुध्येत् अन्यत्रोपहतोमृत्तोयैस्तदंगं प्रक्षाल्य स्नानेन चक्षुष्युपहत उपोष्य पंचगव्येनदशनच्छदोपहतः प्रवाहेपु करयोः ॥ अत्रमृत्तोयपदमुपलक्षणं अन्यदपिगंधलेपक्षयकरंज्ञेयम् ॥ तथाचदेवलः ॥ प्रलेपगंधस्नेहाणामशुद्धौव्यपकर्षणम् शौचलक्षणमित्याहुर्मृदंभोगोमयादिभिः ॥ १ ॥ लेपनस्नेहगंधेषुव्यपकृष्टेषुदूरतः पश्चादाचमनंवापिशौचार्थंवक्ष्यतेवुधैः २

अंगनु धो कर्के और पिच्छे स्नान कर्के और नेत्रां विषे मलादि कर्के युक्त होवे तां उपवास ते पिच्छे पंचगव्य पान कर्के और जेकर ओठां विषे युक्त होवे और कपोलादिविषे हत्थां विषे युक्त होवे तांभी स्नानादि कर्के हि शुद्ध हुंदाहै परंतु सभनांके पिच्छे पंचगव्यका पान हि करणा ॥ सोई देवलजी कहतेहैं प्रलेपेति प्रलेप गंध स्नेह इनांकी अशुद्धि विषे मृत्तिका जल गोमयादि करके इनांका दूरकरणा हि शुद्धिका लक्षण कहाहै इस जगा आदिशब्द कर्के आटा तोआंका ग्रहण करणा १ और लेप स्नेह गंध इनांको दूरतेंहि हटा देवें पीछेतें आचमन करे एहि वुद्धिमानों नें शुद्धि कहीहै ॥ २ ॥

जो फेर व्यासजीने कहाहै सो कहते हैं मांसमिति वानर बिल्ला गधा ऊट कुत्ता इनांका मांस और शूकरोंकी मिंज इनांका स्पर्श करके सवस्त्र स्नान करें ॥ १ ॥ सो एह भी न जूठे को नाभि तें उपर लेपके दूर करणे के विषय में जानणा अर्थात् जो झूठा नहि होवे तिसको प्रायश्चित्त थोडाहै ॥ अथवा लघुहारीत का किहा होया अधोच्छिष्ट के विषय में जानणा । इसी वास्ते आपस्तंवजी कहतेहैं यदिति जो काक ऊंर बगुले करके वेष्टित वस्तु और मिंज करके लिप्त शरीर होवें और मुख कर्ण विषे लगीहोई न शुके तिस जगाहै और स्नेह करके लेप दूरकरणकी शुद्धि पूर्वोक्त गोमयादि करके हि जानणी ॥ १ ॥ अब इसीका अर्थ मूल में स्पष्ट करके किहाहै

यत्पुनर्व्यासेनोक्तम् । मांसंवानरमार्जारखरोष्ट्राणांशुनांतथा सूकराणाममेध्यंवैस्पृष्ट्वास्नायात्सचैलकमिति १ तदप्यनुच्छिष्टस्यनाभ्यूर्ध्वलेपोपहतविषयम् लघुहारीतोक्ताधउच्छिष्टविषयंवा अतएवाहापस्तंवः यद्वेष्टितंकाकवलाकिकाभ्याममेध्यलिप्तंचभवेच्छरीरं श्रोत्रेमुखेनप्रतिशेतसम्यक्स्नेहेनलेपापहतस्यशुद्धिः ॥ १ अमेध्यादिलिप्तशरीरंमुखश्रोत्रेवानप्रतिशेतन शुष्कंभवेदित्यर्थः ॥ मलमाहमनुः वसाशुक्रमसृङ्मज्जामूत्रविट्कर्णविण्नखाः श्लेष्माश्रुदूषिकास्वेदोद्वादशैतेनृणांमलाः १ अमेध्यमाहदेवलः ॥ मानुषास्थिशवोविष्टारेतोमूत्रार्त्तवंवसा ॥ स्वेदोश्रुदूषिकाश्लेष्मामलंवामेध्यमुच्यते १ एषांदेहात्प्रच्युतानामेवामेध्यत्वम् ॥ देहाच्चैवच्युतामला इतिमनुवचनात् ॥

अमेध्येति ॥ अब मनुजी मलां कों कहतेहैं वसेति मिंज १ वीर्य २ रुधिर ३ मज्जा ४ मूत्र ५ विष्टा ६ कर्ण मल ७ नख ८ श्लेष्म ९ अश्रु १० नेत्र मल ११ परसीना १२ एह बारां पुरुषको मल होतेहैं ॥ १ ॥ अमेध्य को देवल जी कहते हैं मानुषेति मनुष्यकी हड्डी शव विष्टा वीर्य मूत्र ऋतुकाल मे स्त्री का रुधिर मिंज परसीना अश्रु नेत्रमल श्लेष्म मल एह अमेध्य कहीदे हैं परंतु इनांकों देहतें बगकर बाहर होयां कों हि अमेध्यत्व किहाहै देहादिति देहतें जो बगे सो मल कहाहै इसमनुजी के वचन तें ॥

अब ऋष्य शृंगजी कहतेहैं मद्येति मदिरा विष्टा मूत्रके किणके करके मुख जिसका स्पर्शवाला होवे सो मृत्तिका और गोए करके लेपकरे फेर पंचगव्यपानकरके शुद्धहोताहै । १ । इसको स्पष्ट करके कहतेहैं स्नात्वेति स्नानकरके उपवास करे फेर पंचगव्यपान करके शुद्ध होताहै इसपूर्वोक्त विष्णुके वचनतें । इस विषय देवलजी विशेष कहतेहैं मनुष्यकीयां हड्डीयां चरवी विष्टा और रजस्वलाका रुधिर मूत्र वीर्य मिज रुधिर एह संपूर्ण जेकर दूसरेके होवें इनांका स्पर्श करे । १ । तां स्नान करके लेपादियोंकों दूर करके आचमन करे तो शुद्धहोताहै सो एह अपणे होवें तद इनांका स्पर्श करे तो मार्जन करणे करके शुद्ध होताहै । २ । और इसीका तात्पर्य्य

ऋष्यशृंगः ॥ मद्यविण्मूत्रविप्रुड्भिःसंस्पृष्टंमुखमंडलं मृत्तिकागोमयैर्लेपात्पंचगव्येनशुद्ध्यति १ स्नात्वोपोष्यपंचगव्येनशुद्ध्यतीत्यर्थः पूर्वोक्तविष्णुवचनात् ॥ अत्रविशेषमाह देवलः ॥ मानुषास्थिवसांविष्टामार्त्तवंमूत्ररेतसी मज्जानंशोणितंवापिपरस्ययदिसंस्पृशेत् १ स्नात्वापमृज्यलेपादीनाचम्यसशुचिर्भवेत् तान्येवस्वानिसंस्पृश्यपूतःस्यात्परिमार्जनात् ॥ २ ॥ अतःपरमलस्पर्शेस्नानमात्ममलस्पर्शे प्रक्षालनमाचमनंच ॥ सुमंतुः ॥ चंडालंपतितंवापितथानारींरजस्वलां उच्छिष्टस्तुद्विजःस्पृष्ट्वाप्राजापत्यंसमाचरेत् ॥ १ ॥ एतत्कामतः ॥ यत्त्वापस्तंवः ॥ भुक्तोच्छिष्टोंत्यजैःस्पृष्टःप्राजापत्यंसमाचरेत् ॥ अर्द्धोच्छिष्टेस्मृतः पादः पाद आस्याशनेतथा ॥ १ ॥

कहतेहैं इसतें दूसरेकी मल स्पर्श विषे स्नानमात्र है और अपणी मल क्या विष्टादिके स्पर्श विषे सिंचन और आचमन करणा। अब सुमंतु जी कहते हैं चंडालमिति चंडाल और पतित तैसेंहि रजस्वला कों जूठा होया २ ब्राह्मणादि स्पर्श करे तो प्राजापत्य व्रत करके शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ सो एह इच्छातें करण में जानणा । जो आपस्तंव जीने कहाहै सो कहतेहैं भ्विति भक्षणकरके जूठेकों हि चंडाल स्पर्श करे तो सो ब्राह्मणादि प्राजापत्य व्रत करके शुद्ध होताहै और अर्द्धोच्छिष्टविषें एह पाद व्रत कहाहै और एक पाद मुख स्पर्श मात्रविषे जानणा । १ ।

इस विषें अर्द्धोच्छिष्ट मुख विषें ग्रास पाणे मात्रमें जानणा निंगलने में नहिं है। और न इच्छातें करण में सोई आपस्तंव जी कहतेहैं ॥ भोजन करके जूठा होया २ आचमनतें रहित हि प्रमादतें चंडाल अथवा नीच करके स्पर्श वाला होवे ॥ १ ॥ तिसकी शुद्धि इस तहाँ करे गायत्रीका आठ सें अधिक १००८ हजार जप और सौ १०० (द्रुपदादिव) इसमंत्रका जप करे और त्रय ३ रात्रि उपवास करके पंचगव्यका पान करे तो शुद्ध होताहै। २। जो सोई आपस्तंव जी कहतेहैं चमिति चंडाल करके स्पर्श वाला ब्राह्मण विशेष करके शोककरताहुआ शुद्धिकों करे क्या एक रात्रि उपवासव्रत करके पंचगव्यका पान करे तो शुद्ध होताहै। ३। सो एह आपत्ति विषें इच्छातें विना करण विषें जानणा लघुहारीतस्मृति मे लिखाहै ॥ जूठा मनुष्य जेकर स्पर्श करे नटुएकों ललारीकों

अत्रार्द्धोच्छिष्टो मुखेग्रासप्रक्षेपमात्रिकृते नतु निगीर्णे आस्याशनेमुख स्पर्शमात्रे अकामतः सएव भुक्तोच्छिष्टस्त्वनाचांतः चांडालैःश्वपचेनवाप्र मादात्स्पर्शनंगच्छेत्तत्रकुर्याद्विशोधनम् १ गायत्र्यष्टसहस्रंतुद्रुपदानांशतंत था त्रिरात्रोपोषितोभूत्वापंचगव्येनशुद्ध्यतीति २ यत्तुसएव ॥चंडालेनतुसं स्पृष्टोविशोचंस्तुद्विजोत्तमः उपोष्यरजनीमेकांपंचगव्येनशुद्ध्यतीति ॥ ३ तदापद्यकामतः। लघुहारीतः। उच्छिष्टः संस्पृशेद्यस्तुनटरंजकमोचकान् अधोच्छिष्टोयदासस्यादेकरात्रमभोजनम् १ ऊर्ध्वोच्छिष्टोयदासस्यात्प्राय श्चित्तंभवेदिदम् उपवासास्त्रिरात्रंस्याद् घृतंप्राश्यविशुद्ध्यतीति२अतश्चऊ र्ध्वोच्छिष्टस्यतैरुच्छिष्टैः स्पर्शेषड्रात्रम् एवमेव यत्रोर्ध्वोच्छिष्टस्यचांडालादि स्पर्शेषड्रात्रम् तत्राधोच्छिष्टस्यतदर्द्धंत्रिरात्रम् कालिकापुराणे स्पृष्ट्वारुद्रस्य निर्माल्यंसवासाआप्लुतःशुचिरिति मलादिदूषितकूपादिजलपाने संवर्त्तः चंडालभांडसंस्पृष्टंपिवेत्कूपगतंजलम् गोमूत्रयावकाहारास्त्रिरात्रेणविशुद्ध्यति१

मोचीकों सो जेकर दिशा फिरकर आयाहै, इसतहींका जूठा होवे तां एकरात्र भोजन न करे ॥ १ ॥ और जेकर भोजन करणेंते पिच्छे इनांको छोवे तां इस प्रायश्चित्तनुं करे किं तीनरातां उपवासकरकेपिच्छे घृतपानकरे तोशुद्धहुंदाहै ॥ २ ॥ इसीकारणतें और जिनांके साथ स्पर्श होया हैं जेकर सोभी जूठे होण तां ६ छेरात्रका व्रत करे इसी तहाँ जित्थे ऊर्ध्वो च्छिष्टका चांडालादिके स्पर्श विषे छे ६ रात्रिका व्रतहै तिस जगा अधोच्छिष्टका तिसी के स्पर्शमें तीन ३ रात्रिका व्रत जानणा ॥ और विशेष कालिका पुराणविषे किहा हैं। शिवके निर्माल्यकों स्पर्श करके सहित वस्त्रांके स्नानकरे तां शुद्ध हुंदा हैं ॥ मलमूत्रादि जि सखूएमे पडे होण तिसके जलपानविषें संवर्त्तजी कहेतेहैं चांडालके भांडे करके स्पर्श वाला जो खूयाँहै तिसके जलको पीवेसो गोमूत्रयावकके आहारकरके तीन३रात्र व्यतीतकरेतो शुद्ध हुंदाहै१

श्रौर कहतेहैं श्रंत्यजैरिति चांडालों कर्के सेवितजो तडागकश्रातला श्रौर नदिश्रां तिस विषे जलपीके श्रकामनाते पंचगव्य पीणे कर्के शुद्ध हुंदाहै ॥ २ मदिरा वाला घडा श्रौर धर्म्मशालाका जल श्रौर पनालेका जल इनको पीके दिनरात्रका उपवास रक्षकर पंचगव्य पीवे तां द्विजक्याब्राह्मणादि शुद्ध हुंदाहै ॥ ३ ॥ जेकर खुया विष्टामूत्र कर्के युक्त होवे तिस विचों ब्राह्मणादि जलपान करे तां तीनरात्रके व्रत कर्के शुद्ध हुंदाहै श्रौर जेकर श्रैसा घडाहि होवे क्या विष्टा मूत्र वाला होवे श्रौर तिसके जलको पीवेतांसांतपनव्रतकरे ॥ ४ ॥ श्रौर बाउलीं १ खूया २ तलाओ ३ एह जेकर दूषितहोण तां इनकी शुद्धि इसतर्हां जानणी जलका १०० सउघडा

श्रंत्यजैःस्वीकृतेष्वेवतडागेपुनदीषुच शुद्ध्यतेपंचगव्येनपीत्वातोयमकामतः २ सुराघटप्रपातोयंपीत्वाकाशजलंतथा श्रहोरात्रोपितोभूत्वापंचगव्यंपिवेद्द्विजः ३ कूपेविएमूत्रसंस्पृष्टप्राश्यचापोद्विजातयः त्रिरात्रेणैवशुद्ध्यंतिकुंभेसांतपनंस्मृतम् ४ वापीकूपतडागानांदूषितानांविशोधनम् श्रपांघटशतोद्धारःपंचगव्यंचनिःक्षिपेत् ५ प्रसंगाज्जलशुद्धिरप्युच्यते तत्रपराशरमाधवः वापीकूपतडागेषुदूषितेषुकथंचन उद्धृत्यंवैघटशतंपंचगव्येनशुद्ध्यतीति १ कूपादिदूषणंद्वेधा श्वमार्ज्जारादीनांतत्रपततंमरणात् मृतशरीराणांतत्रैव चिरंजरणाच्च तत्र मरणविषयमिदंविशोधनम्

निकाल कर पंचगव्य उसमे पावे तां शुद्धहुंदाहै ॥ ५ ॥ प्रसंगतें जलशुद्धिभी कहिंदीहै तिसमे पराशर माधवजीका वचनहै बाउली १ खूया २ तलाओ कदाचित् दूपितहो जाए तां जलका सउ १०० घढा कडा कर पंचगव्य तिस विचपाणा तिसकर्के शुद्ध हुंदेहै ॥ १ ॥ पिछलाहि श्रर्थहै।कूपादियोंका सो दूषण दोतर्हांकाहै कुत्ते बिल्ले श्रादिका तिनमेपै कर्के मरणा श्रौर मृतहोयांका चिरकाल कर्के जीर्ण होणा इनमेसैं पहलेकी क्या जो मृतहोश्रा श्रौर जिसते शीघ्रनिकाललिश्रा तिसकी एह सउ १०० घडे वाली शुद्धिहै

इसी को हारीत जी भी कहतेहैं वाउली खूआ तला एह किसे करके दूषित होवें तो इनांकी शुद्धि करे क्यासौ १०० घडा जल कडा करके पंचगव्य तिसमे पादेवे। १। संवर्त्त जी भी इसी मे कहतेहैं वापीति वाउली खूआ तलाओ एह कदाचित् मलादि करके दूषित होवें इनांकी शुद्धि वास्ते जलका सौ १०० घडा निकाल करके पंचगव्य तिसमें पादेवे। १। एही शुद्धि जोडे आदिके दूषण विषे भी देखणे योग्यहै। सोई आपस्तंब जी कहतेहैं उपेति जोडा और पुराणे जोडेका एक भाग छिप्य किहाहै और विष्ठा मूत्र स्त्रीका रज मदिरा इनांके पैने करके दूषित जो खूआ तिसतें सौ १०० घडा जलका निकाल देवे। १। अब इसीमे और विचार करतेहैं उच्छीति(प्रश्न)जूठा और अपवित्र और जो विष्टा करके लिप्त होवे एह संपूर्ण जल करके शुद्ध होते

एतदेवहारीतोप्याह वापीकूपतडागेषुदूषितेषुविशोधनम् घटानांशतमुद्धृत्यपंचगव्यंक्षिपेत्ततइति १ संवर्त्तोपि वापीकूपतडागानांदूषितानांचशुद्धये अपांघटशतोद्धारः पंचगव्यंचशोधनमिति १ इयमेवशुद्धिरुपानहादिदूषणेपिद्रष्टव्या तदाहापस्तंबः उपानच्छिप्यविण्मत्रस्त्रीरजोमद्यमेवच पतितेर्दूषितंकूपेकुंभानांशतमुद्धरेदिति ॥ १ ॥ पुरातनोपानदेकभागश्छिप्यम्। उच्छिष्टमशुचित्वंचयच्चविष्ठानुलेपनम् सर्वंशुद्ध्यतितोयेनतत्तोयंकेन शुद्ध्यति ॥ २ ॥ सूर्यरश्मिनिपातेनमारुतस्पर्शनेनच गवांमूत्रपुरीषेणततोयंतेनशुद्ध्यति ॥ ३ ॥ अस्थिचर्मादियुक्तंतुखरश्वानोपदूषितं उद्धरेदुदकंसर्वंशोधनंपरिमार्जनम् ॥ ४॥ कूपोमूत्रपुरीषेणयवनेनापिदूषितः श्वसृगालखरोष्ट्रैश्चक्रव्यादैश्चजुगुप्सितः ॥ ५ ॥

हैं और सो जल किस करके शुद्ध होताहै २ (उत्तर)सूर्यकी किरणांके डिगणें करके और वायुके स्पर्श करणे करके सो जल शुद्ध होताहै और गाआंके मूत्र करके और गोए करके सो जल शुद्ध हुंदाहै। ३। अब छोटे जलाशयके वास्ते कहतेहैं अस्थीति हड्डीआं करके और चम्म करके आदि शब्दतें मलमूत्र करके युक्त होवे और गधा कुत्ता इन करके दूषित होवे तां तिस जलाशयतें सारा जल निकाल कर उसके तलकों पूंज देवे तां शुद्ध होवेगा ॥ ४ खूआ मूत्र पुरीष करके अर यवन जो नीचजाति तिस करके दूषित होवे अथवा कुत्तेकरके गिद्दडकरके गधे करके ऊट करके व्याघ्रादि करके दोषवाला होवे ॥ ५ ॥

तां तिसके सारे जलको निकाल कर्के सत्त टोकरिआं मित्तीकिआं काढे और ऋचा कर्के पवित्र होआ २ पंचगव्य उस खूये विषे पावे ॥ ६ ॥ इसीमे विशेष कहतेहैं कि जिस खूएका जल शुक न सके तिस विचों १०० सउघडाजलदा निकालकें पंचगव्य पावे एह पिछलाहि अर्थहै ॥ ७ ॥ अब प्रासंगिकको कहतेहैं यच्चेति जेडा ब्राह्मण दुष्ट खूए का जल पीवे खूया कैसाहैं कि मुडदे कर्के दोषवालाहै तां किसतरीं तिसकी शुद्धि होतीहै एह मेरेको संशयहै ८ (उत्तर)जेकर मुडदा तिसविषे गलया नहि औरटुट्टा नहि केवल दूषण मात्र हि होआहै तां तिसके जल पीणे कर्के जो दोषहै सो पंचगव्य कर्के दूरहुंदाहै ९ और जेकर जल विषे मुडदा गलगया होवे तो तिस जल को पान करण वाला चांद्रायण अथवा तप्त कृ

उद्धृत्यैवचतत्तोयंसप्तपिंडान्समुद्धरेत् पंचगव्यमृचापूतंकूपेतच्छोधनंस्मृत म् ६ वापीकूपतडागानांदूपितानांचशोधनम् कुंभानांशतमुद्धृत्यपंचगव्यंत तःक्षिपेत् ॥ ७ यच्चकूपात्पिवेत्तोयंब्राह्मणःशवदूपितात् कथंतत्रविशुद्धिः स्यादितिमेसंशयोभवेत् ८ ॥ अक्लिन्नेनाप्यभिन्नेनकेवलंदूपिताद्यहि पीत्वा कूपादहोरात्रंपंचगव्येनशुद्धयति ॥ ९ ॥ क्लिन्नभिन्नेशवंचैवतत्रस्थंयदित त्पिवेत् शुद्धिश्चांद्रायणंतस्यतप्तकृच्छ्रमथापिवा ॥ १० ॥ अत्रकामतश्चां द्रायणमकामतस्तप्तकृच्छ्रमितिव्यवस्था ऽपरार्के ॥ पराशरः ॥ कूपेतुपति तंदृष्ट्वाश्वसृगालंचमर्कटं अस्थिचर्मादिपतनात्पीत्वामेध्याद्यपोद्विजः १ नारंतुकुणपंकाकंविड्वराहंखरोष्ट्रयोः गावयंसौप्रतीकंचवाघ्रंवंत्वाखुजंत था ॥ २ ॥ वैयाघ्रंमार्गसैहंवाकूपेयद्यस्थिमज्जति तडागस्यैवदुष्टस्यपी तंस्यादुदकंयदि ॥ ३ ॥ प्रायश्चित्तंभवेत्तस्यक्रमेणैतेनसर्वशः ॥ ४ ॥

च्छ्र व्रत कर्के शुद्ध होताहै ॥ १० ॥ इस विषे इच्छातें करणे में चांद्रायण और न इच्छातें करणें विषे तप्त कृच्छ्र व्रतकरे एह व्यवस्था अपरार्कमें कहीहै अब पराशर जी कहतेहैं कूपेति कुत्ता गिदड वानर इनांनु खूए विषे डिगे होआं नूं देख कर्के औरहड्डी चर्मादिके डिगणे तें अपवित्र जो जल तिसनूं ब्राह्मण पान कर्के ॥ १ और पुरुषका मुडदा काक विट् भक्षक शू० कर गधा ऊट गोइंद हस्ती नौल चूहा ॥ २ ॥ व्याघ्र मृग शेर इनका मुडदा खूए विषें डि गया होवे और हड्डि डिगे खूए विषें अथवा तलाओ विषें इनका जेकर जल पान करे ३ तो इसका प्रायश्चित्त संपूर्ण इस क्रम कर्के करणे योग्यहै ॥ ४ ॥

विप्र इति ब्राह्मण त्रय ३ रात्रि करके और क्षत्रि दो २ दिनतें वैश्य एक दिन करकें शूद्र उपवास करके शुद्ध होताहै ॥ ५ ॥ एह तलाओंकें जल पानमें जानणा ॥ और खूएके जल पान में अधिक प्रायश्चित्त कल्पना करणा । मृत शरीर जिस विषें गल गया होवे तिस जल कें पान में विष्णु जी कहतेहैं मृतेति मृत होंए पंचनख जिस खूएमें डिगें तैसें मुडदा जिसमे गल जावे तो तिस संपूर्ण जलकों निकाल देवे बाकी दें जल कों शास्त्र करके शुद्ध करे ॥ १ ॥ और अग्नि जगा करके पीछे पक्का बणाजो खूआ तिस विषें पंचगव्य पा देवे फेर नवीन जल उत्पन्न होवे तो जानणा शुद्ध भया ॥ २ ॥ और कुष्ठ्यादि मनुष्यके श

विप्रः शुद्ध्येत्त्रिरात्रेण क्षत्रियश्चदिनद्वयात् ॥ एकाहेनचवैश्यस्तु शूद्रो नक्तेनशुद्ध्यति ॥ ५ ॥ सुप्रतीकोगजःतस्येदंसौप्रतीकम् ॥ तडागोदको पयोगविषयमेतत् कूपोदकोपयोगेत्वधिकंकल्प्यम् ॥ मृतशरीरजरणकृता यामत्यंतोपहतौ विष्णुराह मृतपंचनखात्कूपादत्यंतोपहतात्तथा ॥ अपस्तदुद्धरेत्सर्वाः शेषंशास्त्रेणशोधयेत् १ वह्निप्रज्वालनंकृत्वाकूपेपक्केष्टि काचिते पंचगव्यंन्यसेत्तत्रनवतोयसमुद्भव इति ॥ २ ॥ कुष्ठ्यादिम नुष्यशरीरजरणेप्येषैवशुद्धिः ॥ तदाहहारीतः ॥ वापीकूपतडागेषु मानुषं शीर्य्यतेयदि अस्थिचर्मविनिर्मुक्तैर्दूषितंश्वखरादिभिः उद्धृत्यतज्जलंसर्वंशो धनंपरिमार्जनम् १ ॥ मानुषंशवम् ॥ अत्रसर्वजलोद्धारप्रकारोजलोद्धारक यंत्रविशेषेण वा तावन्मृदापूर्य्यपश्चात्सर्वमृदुद्धरणेनभवतीतियौक्तिकोऽर्थः

रीर गलनें में भी एही शुद्धि जानणी । सोई हारीत जी भी कहतेहैं वापीति बाउली खूआ तलाओ इनां विषें जेकर पुरुषका मुडदा अर्थात् किसें कुष्ठी आदिका मुडदा गल जावे और हड्डी चर्म इन करकें रहित कुत्ता गधादि करकें दूषित जो जल तिस सारें जलकों हि निकाल देवे और परिमार्जन करकें क्या घड्डा सोत देवे तां शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ अत्रेति इस विषें संपूर्ण जल निकालनेंका प्रकार एहहै जलोद्धारक यंत्र विशेष करके निकाल देवे अथवा जितनां जल होवे तितनी मृत्तिका पाकर पूर्ण कर देवे पीछेंतें संपूर्ण मृत्तिका निकालनें करके शुद्ध होताहै एह युक्ति सिद्ध अर्थहै वचन करके नाहीं है ॥

श्रोर वडे तला आदिविषें दोष नाहिं है सो विष्णुजीकहतेहैं जलेति छोटे जो जलस्थान श्रौर वडे जो पृथ्वी विषें जल स्थान जेडे स्थावरहैं क्या वगदे नहि तिनांकी शुद्धि खूए की न्याई कही है श्रौर वडे जल स्थानों में दोष नहिहै । १ । इसी में देवलजी भी कहते हैं वडे जो जल स्थान हैं तिनांमें दोष नाहिं है श्रौर जिनां में सें जल वगता है तिनांमें भी दोष नाहिं है श्रौर छोटे की जल निकालनें सें शुद्धि कही है क्योंकि जिस करके मल विषें हि दोष होताहै । १ । अल्प जल स्थानों विषें भी पूर्व कथन कीता होया जो दोष तिसतें अल्प दोष विषें विष्णु जी कहते हैं अन्यात्तमिति अपवित्र वस्तु थोडी जगामें जिस जल में पडी हो और तैसें हि जिस में पत्थर लगे हों तिनकी शुद्धि चंद्रमा सूर्यकी किरणां करके और वायु

प्रौढेषुतडागादिषुनास्तिदोषस्तदाहविष्णुः ॥ जलाशयेषुस्वल्पेषुस्थावरेषुमहीतले कूपवत्कथिताशुद्धिर्महत्सुचनदूषणामिति ॥ १ ॥ देवलोपि अक्षुद्राणामपांनास्तिप्रस्रुतानांचदूषणम् ॥ स्तोकानामुद्धृतानांचकश्मलेदूषणंभवेदिति १ अल्पोदकेष्वपिपूर्वोदाहृताद्दोषादल्पेदोषेविष्णुराह अन्यात्तंचदमेध्येनतद्वदेवाशिलागतम् सोमसूर्यांशुपातेनमारुतस्पर्शनेनच गवां मूत्रपुरीषेणशुध्यंत्यापइतिस्मृताइति ॥ जानुदघ्नाधिकजलेकूपेऽत्यजेस्सहजलोद्धरणे न दोषस्ततोऽल्पेतु दोषएव। तथाचापरार्केऽत्रिः॥ म्लेच्छादीनांजलंपीत्वापुष्कराणांहृदेपिवा जानुदघ्नंशुचिज्ञेयमधस्तादशुचिस्मृतम् ॥ १ ॥ म्लेच्छादीनांसंबंधिनांपुष्कराणां तडागादिजलाशयानांवाहृदेतादृशहृदेजलंपीत्वातृप्तस्यशुद्ध्यर्थंजानुदघ्नंशुचि ततोऽल्पमशुचीत्यर्थः

स्पर्श कर्के श्रौर गौश्रां के मूत्र पुरीष करके होतीहै एह स्मृतिकार कहते है अब इसीमे श्रौर विशेषकहतेहैं जान्विति जानुतक अर्थात् गोडेतक जिसखूएमे जलहोवे श्रौर उसीसे ब्राह्मणादि श्रौर नीचादि जलपीतेहोण तां ब्राह्मणादिको कोई दोष नहि श्रौर जेकर इससे जलवहुतहोवे तां क्याकहणा श्रौर जेकर गोडेसें थोडा जल होवे तां पूर्वोकमे दोषहि है एहअर्थ अपरार्क विषें अत्रिजीने किहाहै म्लेच्छे ति म्लेच्छादिकोंके संबंधिजोतडागादि वा हृद तिनांका जलपीके तृप्तहोया जो द्विजादि तिसको जानुके वरावर जलपवित्रहै हेठहोवेतां अपवित्रहै ॥ १ ॥

तिस जलको जेडा ब्राह्मण कामनातें अथवा अकामते पीवे तां अकामके पान विषे नक्तभोजी होवे क्या रात्रिमे भोजन करे और कामनाते पीवे तां दिनरात्रके व्रतकर्के शुद्धहुंदा है ॥ २ ॥ और शातातपजी कहते हैं चांडेति चांडालके जलपात्रतें तृषातुर पुरुष जलपीवे तां तत्क्षणाहि उसको त्यागकर प्राजापत्यसे शुद्ध हुंदाहै ॥ १ ॥ जेकर सो जल तिसके उदर विषेहि जीर्ण होजावे तांशुद्धिवास्ते प्राजापत्य और सांतपनभीकरे ॥ २ ॥ इसीमें और विशेषकहते हैं कि जूठे आदिवस्तुका संयोग जिसजलमें नहि और गौओंके पीणेते क्षय नाहि होआ असा जो पृथ्वीविषे स्थित जलहै सोई शुद्धहै और तिसतें थोडा होवे तां शुद्ध नहि सोई देवलजी कहतेहैं अवीनि दुर्गंधिसे जो रहित और रसवाले क्या स्वादु और निर्म्मल

तत्तोयंयः पिबेद्विप्रः कामतोऽकामतोपिवा अकामान्नक्तभोजीस्या दहोरात्रंतुकामतः ॥ २ ॥ शातातपः ॥ चंडालोदकभांडेषुयः पिबे त्तपितोजलम् ॥ तत्क्षणात्क्षिपतेतच्चप्राजापत्येनशुध्यति ॥ १ ॥ यदिनक्षि पतेतोयंचिरेणैवास्यजीर्यते प्राजापत्यंतुकर्त्तव्यंकृच्छ्रंसांतपनंचरेत् ॥ २ ॥ उच्छिष्टाद्युपघाताभावेपि गवांपानाद्यदुदकंनक्षीयतेतदेवशुद्धंनतुततोल्पम् तदाहदेवलः अविगंधारसोपेतानिर्मलाः पृथिवीगताः अक्षीणाश्चैवगोपा नादापः शुद्धिकराः स्मृताइति १ मनुरपि ॥ आपः शुद्धाभूमिगतावैतृष्णयं यासुगोर्भवेत् अव्याप्ताश्चेदमेध्येनगंधवर्णरसान्विताइति १ नवोदककाला च्छुद्धिमाहयमः अजागावोमहिष्यश्चनार्य्यश्चैवप्रसूतिकाःदशरात्रेणशुध्यंति भूमिष्ठंचनवोदकमिति १ उद्धृतोदकंप्रतिदेवलआह । उद्धृताश्चापिशुध्यंति शुद्धैः पात्रैःसमुद्धृताः एकरात्रोषिताश्चापस्त्याज्याः शुद्धाअपिस्वयमिति १

और पृथिवीविषे स्थित और गौओंके पीणेते नष्ट नहिहोए सोजल शुद्धिके करणेवाले है । १ । मनुजीभीकहतेहैं ॥ जो जल पृथ्वीविषे स्थितहैं जिनांविषे गौ तृप्तहोजावे और विष्टा आदि कर्के युक्त नहि और अपणा गुण जो है मधुर रसादि तिसकर्के युक्त हैं सो जल शुद्धजानणे । १ । नवीन जलविषे कालते शुद्धि यमजीकहते हैं ॥ अजाइति बकरी १ गौ २ महिषी ३ स्त्री ४ एह प्रसूत होइआं होइआं १०दसां दिनां कर्के शुद्ध हुंदीआंहैं और पृथ्वीविषे नवीनजो जल है सोभी १०रात्रकर्केहि शुद्धहुंदाहै । १ । और जोजल खूए आदिते निकालयाहोवे सोजल जेकरशुद्धपात्रसाथ निकालयाहोवे तां शुद्धहै एहदेवलजी कहते हैं जेकर सो निकालयाहोआ जल एक १ रात्र उसपात्रमै रहे तां अशुद्धहुंदाहै उसको त्यागदेणा चाहिए चाहे प्रथमशुद्धभीया । १ ।

इसमे यमजी कहतेहैं अपइति जलको रात्रिमें नहिभरणा अर्थात् खूएआदिसे नहिनिकालना जेकर किसेकार्य्यवशतें निकाले तां अग्निउपररक्खे औरं धाम्नो धाम्न इसमंत्रका उच्चारणकरे तां शुद्ध होतेहैं ❀ १ अब रजस्वला स्त्रियोंके आपसमे स्पर्श विषे प्रायश्चित्तमयूखविषे किहाहै तिस विषे सपत्नीं आंजेडीआं रजस्वलाहैं और एक कुलदीआंहैं तिनके आपसमें स्पर्शविषे वसिष्ठजी कहते हैं स्पृष्ट इति कदाचित् दोए रजस्वला एक कुलदीआं एक पति वालियां आप समें जाण कर्के अथवा नजाणकर्के छोणतां शीघ्रहि स्नान करणे कर्के शुद्ध हुंदिआंहै। १। और जेकर भिन्न पति वालिआं और इक कुल दिआंहोण तां मार्कंडेयजी कहतेहैं उदक्येति ॥ इककुलदिआं रजस्वला साथ जेकर तैसी दूसरी स्पर्श करे तां तिसीदिनाविषे स्नानकर्केशुद्ध

यमोपि अपोन्निशिनगृह्णीयाद्गृह्णातापिकदाचन निधायाग्निमुपर्या सांधाम्नोधाम्नइतीरयन् ॥ १ ॥ ततश्चशुद्धाभवेयुरित्यर्थः ॥ ❀ अथ रजस्वलायाअस्पृश्यस्पर्शे प्रायश्चित्तमयूखे तत्ररजस्वलयोः सपत्न्योरेक गोत्रयोः स्पर्शेवसिष्ठः स्पृष्टरजस्वलेन्योन्यंसगोत्रेत्वेकभर्तृके कामादका मतोवापिसद्यःस्नानेनशुध्यतः १ असपत्न्योस्तुसवर्णयोर्मार्कण्डेयः उदक्या तुसवर्णायास्पृष्टाचेत्स्यादुदक्यया तस्मिन्नेवाहनिस्नाताशुद्धिमाप्नोत्यसं शयः १ इदंचाकामतः ॥ कामतस्तु काश्यपः। रजस्वलातुसंस्पृष्टाब्राह्म ण्याब्राह्मणीयदि एकरात्रंनिराहारापंचगव्येनशुध्यति १ यत्तुपराशरः॥ स्पृ ष्ट्वारजस्वलान्योन्यं ब्राह्मणीब्राह्मणींतथा तावत्तिष्ठेन्निराहारात्रिरात्रेणैव शुध्यतीति १ तत्कामतोभ्यासे सहशयनादिचिरस्पर्शेवा ॥असवर्णास्पर्शे पुनः सएव ! रजस्वलातुसंस्पृष्टाराजन्याब्राह्मणीचया त्रिरात्रेणविशु द्धिःस्याद्व्याघ्रस्यवचनंयथा १

हुंदीहै इसमें संशयनहिहै ॥ १ ॥ एह अकामकृत स्पर्शमे है जेकर कामकृतमे होवें तां कश्यप जीकहतेहें रजइतिरजस्वलाब्राह्मणीजेकर रजस्वला ब्राह्मणीके साथ छोजावे तां एकरात्र निराहार रहकर पंच गव्य कर्के शुद्ध होतीहै। १। और जो पराशर जीने किहाहै कि आ पसमे ब्राह्मणीआं रजस्वला स्पर्श करें तां तिन रात्र तक निराहार स्थित रहें तां शुद्ध हुं दीआंहैं एह प्रायश्चित्त कामनाते वहुत वारकरणे मैहै अथवा एकठीआंदे शयनादि स्पर्श विषे है ॥ जो एक वर्णकीआं नहि तिनाके आपसमे छोणे विषे सोई पराशरजी कहतेहैं जेकर ब्राह्मणी रजस्वला क्षत्रियाणी रजस्वलाके साथ स्पर्शवाली होवे तां तिन्नांरात्रांकर्के शुद्ध हुंदीहै एह व्याघ्रजीका वचनहै ॥ १

और रजस्वला ब्राह्मणी वैश्या रजस्वला कर्के स्पर्श वाली होवे तां पंज रातां निराहार रहकर पीछे पंचगव्यके पान कर्के शुद्ध हुंदीहै ॥ २ ॥ और रजस्वला ब्राह्मणी शूद्रा रजस्वला कर्के स्पर्शवाली होवे तां छे ६ रात्र कर्के शुद्ध हुंदीहै एह सभकामनाके स्पर्शविषे है ॥ ३ ॥ अकाम ते स्पर्श विषे ब्राह्मणी सभजाति विषे अर्द्ध प्रायश्चित्त करे ॥ ४ ॥ इसमें ऐसा जानणा कि जिसतहींब्राह्मणीआं रजस्वला आपसमें स्पर्श वालिआं होण तां तिनांकों उपवास और पंचगव्यपान किहाहै तिसतहीं होरणांको समान कुल वालि आंके स्पर्श विषे भी उपवास

रजस्वलातुसंस्पृष्टावैश्ययाब्राह्मणीचया पंचरात्रंनिराहारापंचगव्येनशुद्ध्यति ॥ २ ॥ रजस्वलातुसंस्पृष्टाशूद्रयाब्राह्मणीचया षड्रात्रेणविशुद्धिः स्याद्ब्राह्मण्याः कामकारतः ॥ ३ ॥ अज्ञानतश्चरेदर्धंब्राह्मणी सर्वजातिषु ॥ ४ ॥ अत्र यथा ब्राह्मणी रजस्वलयोःस्पर्शेउपवासः पंचगव्याशनंच तथाऽन्यासामपि सवर्णरजस्वलास्पर्शेपि तदेव ॥ असवर्णेतु यथाब्राह्मण्याःक्षत्रियास्पर्शेत्रिरात्रम् ॥ तथाक्षत्रियायावैश्यास्पर्शे ॥ वैश्यायाःशूद्रास्पर्शेपितदेव ॥ तथाचभवदेवनिबंधस्मृतिः ॥ रजस्वलातुयानारि अन्योन्यमुभयंस्पृशेत् सवर्णेपंचगव्येनत्रिरात्रमसवर्णके ॥ १ ॥ पंचगव्येनउपवाससहितेनेतिभवदेवः ॥ तथाशातातपः रजस्वलेउभेनार्यावन्योन्यंस्पृशतोयदि सवर्णेपंचगव्येनब्रह्मकूर्चमतःपरमिति १ ब्रह्मकूर्चप्रकारोव्रतप्रकरणेद्रष्टव्यः ॥

और पंचगव्यपानहै और असमानवर्णविषे जैसे ब्राह्मणीको क्षत्रियाणीके स्पर्शविषे त्रिरात्रहै इतनाहि क्षत्रियाणीको वैश्याकेस्पर्शविषेहै और वैश्याको शूद्राके स्पर्श विषेभी सोई है तैसेहि भवदेवके निबंधमें स्मृतिहै रजइति रजस्वलाजो स्त्रीहै सो दो आपसमें स्पर्शकरें अपणे वर्णमें तां उपवाससहित पंचगव्यकर्के और भिन्नवर्ण विषे त्रिरात्र व्रत कर्के शुद्धहुंदीआंहैं । १ । तैसेहि शातातपजी कहतेहैं दोस्त्रीयां रजस्वला आपसमें स्पर्शकरें तां सवर्णविषे पंचगव्यके पीछे ब्रह्मकूर्च करने कर्के शुद्ध हुंदिआंहैं ॥ १ ॥ सो ब्रह्मकूर्चका प्रकार व्रतप्रकरणमें देखलेना

जो वृद्ध वसिष्टजीने किहाहै स्पृष्टेति ब्राह्मणी और शूद्रा एह दोनो रजस्वलाहोवें और आपसमे स्पर्श करें तां ब्राह्मणी प्राजापत्य करके और शूद्रा गोदान करके शुद्ध हुंदीहै ॥ १ ॥ और ब्राह्मणी वैश्या एह दोनो रजस्वलाहोए और परस्पर स्पर्श करें तां पूर्वा क्या ब्राह्मणी पादोन प्राजापत्य करे क्या ९ दिनका व्रत करे और उत्तरा क्या वैश्या तिसका इकपाद व्रत करे ॥ २ ॥ और ब्राह्मणी तथा क्षत्रियाणी एह आपसमे रजस्वला होकर स्पर्श करें तां पहली अर्द्ध कृच्छ्र करके शुद्ध हुंदीहै और दूसरी लघु कृच्छ्र करके शुद्ध हुंदीहै ॥ ३ ॥ और क्षत्रि

यत्तुवृद्धवसिष्ठः ॥ स्पृष्टारजस्वलान्योन्यंब्राह्मणीशूद्रजापिवा कृच्छ्रेणशुध्य तेपूर्वाशूद्रादानेनशुध्यति ॥ १ ॥ स्पृष्टारजस्वलान्योन्यंब्राह्मणीवैश्यजा पिवा पादहीनंचरेत्पूर्वाकृच्छ्रपादंतथोत्तरा ॥ २ ॥ स्पृष्टारजस्वलान्यो न्यंब्राह्मणीक्षत्रियातथा कृच्छ्रार्धात् शुध्यतेपूर्वाइतरातुतदर्द्धतः ॥ ३ ॥ स्पृष्टारजस्वलान्योन्यंक्षत्रियाशूद्रजापिवा उपवासैस्त्रिभिःपूर्वात्वहोरात्रे णचोत्तरा ॥ ४ ॥ स्पृष्टारजस्वलान्योन्यंक्षत्रियावैश्यजापिवा त्रिरात्रा च्छुध्यतेपूर्वात्वहोरात्रेणचोत्तरा ॥ ५ ॥ स्पृष्टारजस्वलान्योन्यंवैश्याशू द्रातथैवच त्रिरात्राच्छुध्यतेपूर्वा उत्तरातुदिनद्वयात् ॥ ६ ॥ वर्णानांका मतःस्पर्शशुद्धिरेपासनातनीति ❀ ❀ ❀

याणी तथा शूद्रा एह रजस्वला होयां होयां आपसमे स्पर्श करें तां पहली क्या क्षत्रियाणी तिन्नां उपवासां करके शुद्ध हुंदीहै और दूसरीक्याशूद्रा अहोरात्रके अर्थात् दिनरात्रके व्रत करके शुद्ध हुंदीहै ॥ ४ ॥ और क्षत्रियाणी तथा वैश्या एह रजस्वलाहोइयांदीआं आपसमे स्पर्श करें तां तिन्नांरातां करके क्षत्रिया और दिनरातके व्रत करके वैश्या शुद्ध हुंदीहै ॥ ५ ॥ और वैश्या और शूद्रा एह दोनो रजवालिआं होकर स्पर्श करें तां तिन्नांरातां करके वैश्या और दोदिन करके शूद्रा शुद्ध हुंदीहै ॥ ६ ॥ एह वर्णकी कामकृत स्पर्श विषे शुद्धि कहीहै सो सनातनीहै ❀

एह व्रत कामनासें वहुतवार करणेमें जानणा दान कर्के पादकृच्छ्रके प्रत्याम्नाय विषे और पतित चांडालादिके स्पर्श विषे वृद्धवसिष्ट और वृद्धवृहस्पतिजीका वचन है ॥ पतीति पतित १ अंत्यक्याडूम २ श्वपाक चांडाल ३ इनांकर्के कदाचित् रजस्वला स्त्री स्पर्श वाली होवे तां तिनां दिनांनूं लंघकर्के प्रायश्चित्त करे ॥ १ ॥ पहले दिनहि पतिता दिके साथ स्पर्श होवे तां तिन्न ३ रातां व्रत करे परंतु स्नान दिनतें पीछे इसीतरहांदूसरे दिन स्पर्श होवे तां दो २ दिन और तीसरे दिन दिनरात्रका व्रतकरे और चौथे दिन स्पर्श करे तां नत्त करे तां शुद्धहुंदीहै ॥ २ ॥ और जूठीशूद्रा कर्के और कुत्ते कर्के स्पर्श वाली रजस्वला होवे तां भी दो २ दिनका हि व्रतकरे इस स्मृतिका अर्थ

एतच्चकामतोऽभ्यासे ॥ दानेनपादकृच्छ्रप्रत्याम्नाये ॥ पतितचांडालादिस्पर्शे वृद्धवसिष्टवृद्धवृहस्पती ॥ पतितांत्यश्वपाकेन संस्पृष्टाचेद्रजस्वला तान्यहानिव्यतिक्रम्यप्रायश्चित्तंसमाचरेत् ॥ १ ॥ प्रथमेह्नित्रिरात्रंस्याद्द्वितीयेद्व्यहमेवतु अहोरात्रंतृतीयेह्निचतुर्थेनक्तमेवच ॥ २ ॥ शूद्रयोच्छिष्टयास्पृष्टाशुनावाद्व्यहमाचरेदिति चत्वारिदिनान्यस्पृश्यानि रजस्वलायायस्मिन्दिनेस्पर्शोजातस्तदाग्रिमाणिदिनानि व्यतिक्रम्यानाशकेन नत्वित्यर्थः।अत्रसर्वत्रपंचगव्यप्राशनमपिकर्त्तव्यमिति चतुर्थेनक्तमिति विशुद्धिस्नानात्पूर्वम् ॥ तथाचविष्णुः। रजस्वलाचतुर्थेह्निस्नात्वाशुद्ध्येत् ॥ त्रिरात्राशक्तौ पणचतुर्विंशतिलभ्यंकांचनंदेयम् उपवासद्वये पुराणैकमूल्यं कांचनं देयम्

स्पष्ट कर्के कहीदा है ॥ चार दिन रजस्वला स्त्रीके है जिनोंमे स्पर्श नहि करणा तिनां विच्चों जिस दिन स्पर्श होवे तिसके अगले दिन व्यतीत कर्के क्या निराहार कर्के लंघकर एह अर्थ है परंतु इसजगा पंचगव्यका पान अंत्यमे अवश्य कर्के है और जो चौथे दिनमें नत्त किहा है सो स्नानते पहले स्पर्श होवे तां जानणा । सोई विष्णुजी कहते हैं रजइति रजस्वला चौथे दिन विषे शुद्ध हुंदीहै और जो पिच्छे त्रिरात्र व्रत किहा है तिस विषे सामर्थ्य न होवे तां २४ चौवी पैसेके मुल्लका सुवर्ण दान करे और जो दो २ उपवास किहेहैं तिनांविषे सामर्थ्य न होवे तां इक पुराणके मुल्लका सुवर्ण दानकरे ॥ और पुराणादिमान व्रत प्रकरणविषे कहीहोई मानपरिभाषासें जानणा

इसमे भवदेव जी का बचन है रजइति जेकर रजस्वला चांडाल १ गर्दभादि २ काक ३ इनां करके छोजावे तां तितने दिन निराहार रहे जितने दिनां करके सो शुद्ध होवें एह बौधायन जीका वचन असमर्थ रजस्वला विषे और अकाम स्पर्शविषे जानणा ॥ १ ॥ और कामना विषे वृद्ध शातातप जी कहते हैं रजइति रजस्वला स्त्री जद चांडाल १ अंत्यजया नीच २ कुत्ता ३ काक ४ इनांकर्के स्पर्श वाली होवे तितना काल निराहार रहेजितने काल कर्के स्नानसे शुद्ध हुंदीहै ॥ १ ॥ इसका अर्थ कहते हैं रजस्वला स्त्री चांडालादि स्पर्श वाली जिसकालमे होवे तिस कालतें लेकर जितने दिनां कर्के शुद्धि होवे

भवदेवः।रजस्वलातुसंस्पृष्टाचांडालाऽपशुवायसैः तावत्तिष्ठेन्निराहारायावत्कालेनशुद्ध्यतीति ॥ १ ॥ वौधायनीयमशक्ताया मकामिवावोध्यम् ॥ अपशवोगर्द्दभादयः॥यावत्कालेन रजस्वलीयास्पृश्यद्दिनावच्छिन्नेन ॥ कामतस्तुवृद्धशातातपः ॥ रजस्वलायदास्पृष्टाचांडालांत्यश्ववायसैः तावत्तिष्ठेन्निराहारा स्नात्वाकालेनशुद्ध्यति ॥ १ ॥ अस्यार्थः ॥ रजस्वलाचांडालस्पर्शकालादूर्ध्वं यावद्दिनैः शुद्ध्यति तावत्संख्यंदिनं चतुर्थदिनेविशुद्धिस्नानं कृत्वापंचमदिनात्प्रभृतिनिहारातिष्ठेदिति॥ यत्तु ॥ शातातपः ॥ उदक्यासूतिकावापिशवांगंसंस्पृशेद्यदि त्रिरात्रेणैवशुद्ध्येत इतिशातातपोऽब्रवीत् ॥ १ ॥ तथा चांडालैः श्वपचैर्वापिआत्रेयीस्पृशतेयदि त्रिरात्रोपोषिताभूत्वापंचगव्येनशुद्ध्यति ॥ १ ॥ तथा काश्यपः ॥ चांडालेनतुसंस्पृष्टा कदाचित्स्त्रीरजस्वला तान्यहान्यतिक्रम्यप्रायश्चित्तंसमाचरेत् ॥ १ ॥

तितने दिनोंकी संख्याकर्के चौथे दिनशुद्ध स्नान कर्के पंचम दिनतें लेकर निराहार रहे ॥ जो शातातपजी कहतेहैं उदेति रजस्वला और प्रसूति वालीस्त्री शवांगक्यामुडददेअंगको जद स्पर्श करे तां तिन्नांरातांकर्केशुद्धहोतीहैं एह शातातपजीका वचनहै ॥ १ तैसेहिअत्र कहतेहैं चांडालैरिति चांडालोंकेसाथ और श्वपचांकेसाथ जोतिनकेतुल्यहै आत्रेयीक्या रजस्वला जदस्पर्शकरेतां त्रिरात्रउपवासकेअनंतर पंचगव्यपानकर्के शुद्ध हुंदीहै ॥ १ ॥ तैसेहिकश्यपजीकावाक्यहै चांडालके साथ कदाचित् रजस्वलास्त्री स्पर्शवालीहोवें तांतिन्नांदिनानुलंघकर प्रायश्चितकरे ॥ १

त्रिरात्रउपवासककें पंचगव्यपानककेंशुद्धहुंदीहै और तिन्हारातांकोव्यतीतकरकेवकरीसेत्रपणेदेह कोंसिंहणदेवे ॥ २ ॥ एहपहलेदिनके स्पर्शमेहै एह कैंक कहतेहैं और शूलपाणिजी ने कश्यपजीकेवचनमे प्रथमदिनकी व्यवस्था नहि हैं किंतु वृद्धशातातपजीके वचन ते कामनाके स्पर्शको विषय करताहै एह कहाहै ॥ और पहलेदिनकेविषयकरणवाला(प्रथमेह्नित्रिरात्रंस्यात्) इत्यादि वृहस्पतिजीका वचनहै एहियुक्तहै ॥ उपवासमें असमर्थ जोस्त्रीतिसमे अंगिराजीकहतेहैं चंडालइति ॥ चंडाल और श्वपच जेकर रजस्वलाकोंस्पर्शकरें तांअपक्कत्रष्टकों सोस्त्रीखावे तितनेदिन और स्नानतेपीछे पंचगव्यकापानकरेतांशुद्धहोतीहै ॥ १ ॥ अपक्केति जो वस्तु अग्नि

त्रिरात्रमुपवासःस्यात्पंचगव्येनशोधनम् तानिशास्तुव्यतिक्रम्यअजाघ्राणं तुकारयेत् २ इत्येतत्प्रथमदिनविषयमितिकेचित् शूलपाणिस्तुकाश्यपवाक्येप्रथमदिनव्यवस्थानास्ति त्रिरात्रेणैवेतिवृद्धशातातपवचनात्कामविषयमेवैतदित्याह प्रथमदिनविषयंतुप्रथमेऽह्नित्रिरात्रंस्यादित्यादिवार्हस्पत्यमेवन्याय्यम् ॥ उपवासासमर्थायांत्वंगिराः। चंडालःश्वपचोवापियद्यात्रेयींस्पृशेत्तदा अपक्कत्रष्टंवर्त्तेतपंचगव्येनशुध्यति १ पंचगव्यपानंस्नानानंतरंकार्य्यम्। अपक्कत्रष्टमग्निपक्कहलकृष्टोत्पन्नव्यतिरिक्तम् चंडालेनसहैकवृक्षाद्यारोहणे पराशरः ॥ एकवृक्षसमारूढौ चंडालोथरजस्वला अहोरात्रोषिताभूत्वा पंचगव्येनशुद्ध्यति १ ॥ एकशब्द एकावयव्युपलक्षणएतच्चविशुद्धिस्नानानंतरमित्यापस्तंबीयमग्रे श्वादिस्पर्शेविशेषमाह यमः॥ रजस्वलातुसंस्पृष्टा शुनाजंबुकवायसैः निराहाराभवेत्तावद्यावत्कालेनशुद्धयति ॥ १ ॥

करकेनहिपक्की औरहलककें नहिपैदेहोईतिसकानामहै। औरचांडालकेसाथएकवृक्षपरआरूढ रजस्वलाविषे पराशरजीकहतेहैं एकेति एकवृक्षमेंआरूढहोणचांडालऔररजस्वला तां सो स्त्रीदिनरातकेव्रतपीछेपंचगव्यककेंशुद्धहुंदीहै।१।इसजगाएकशब्दएक- वयविकावाचकहै एहविशुद्धिस्नानतेपीछेपीणा ऐसावचनआगेआवेगा। कुत्तेआदिकेस्पर्शमेयमजीविशेषकहतेहैं रजइति रजस्वला जद कुत्ता १ गिदड २ काक ३ इनांककेंस्पर्शवालीहोवेतां तितने दिन निराहाररहेजितनेकाल ककें शुद्ध हुंदी है ॥ १ ॥

एह विना कामनातें स्पर्शविषे जानणा और कामनाकर्के स्पर्शविषे रजस्वलापदकी अनुवृत्ति विषे बृहस्पति जीका वचनहै शुनेति कुत्तेकर्के और जूठीस्त्री कर्के और शूद्राकर्के स्पर्शवालीहोवे तां दोरात्रकाव्रतरक्खे परंतुजदतीसरेदिनस्पर्शहोवेतां एकदिनरात्रकाव्रतकरे और चउथेदिनस्पर्श करे तां नक्तकरे । १ ।और पहलेदूसरेदिनके स्पर्शविषेदोदिनकाव्रतजानणा और इसजगाभीसो दिनव्यतीतकर्के असाअर्थकरलेना ॥ जोवौधायनजी कहतेहैं रजइति रजवालीस्त्री ग्राम्यकुक्कुट और काक कुत्ता इनांकर्के स्पर्शवाली होवे तां जबतकचंद्रदर्शन नहि होयाहै तांतक निराहाररहे अर्थात् नक्तव्रतकरे ॥ १ ॥ एह चौथे दिनके स्पर्शविषे अशक्त स्त्री विषे जानणा ॥

एतदकामतः॥ कामतस्तुरजस्वलानुवृत्तौ बृहस्पतिः। शुनावोच्छिष्टयाशूद्रासंस्पृष्टाद्व्यहमाचरेत् अहोरात्रंतृतीयेह्निपरतोनक्तमाचरेत् १ प्रथमद्वितीयदिनेश्वादिस्पर्शेद्व्यहम् परतश्चतुर्थे अत्रापितान्यहानिव्यतिक्रम्यतियोज्यम् यत्तुवौधायनः।रजस्वलातुसंस्पृष्टाग्राम्यकुक्कुटवायसैःश्वभिःस्नात्वापिवेत्तावद्यावच्चन्द्रस्यदर्शनमिति १ चंद्रदर्शनंनक्तमित्यर्थः एतदशक्तायाश्चतुर्थदिनविषयम्।रजकादिस्पर्शेतु चंडालस्पर्शसमानमेव तयोः समानत्वादितिशूलपाणिः॥ यत्तुप्रचेताः॥ रजस्वलातुसंस्पृष्टाशुनाचंडालरासभैः पंचरात्रंनिराहारापंचगव्येनशुध्यति १ तत्कामतोभ्यासे ॥ भोजनकालेश्वांत्यजादिस्पर्शेतु । वौधायनः । रजस्वलांतुभुंजानांश्वांत्यजोयदिसंस्पृशेत् गोमूत्रयावकाहारापड्रात्रेणविशुद्ध्यति ॥ अशक्तौकांचनंदद्याद्विप्रेभ्योवापिभोजनमिति ॥ १ ॥

और धोवे आदि के स्पर्श में तुपुनः चंडाल स्पर्शके समान हैं तिना दोआंको तुल्य होणेतें एह शूलपाणिने किहा है ॥ जो तुपुनः प्रचेताने किहाहै कि कुत्ता और चंडाल और गर्दभ इनां कर्के स्पर्श होइहोइ रजस्वला स्त्री पंच दिन निराहार व्रतकरणेकर्के पीछेतें पंच गव्यपानक कें शुद्ध हुंदी है ॥ १ ॥ एह इच्छा तें अभ्यास विषे जानणा ॥ और भोजन समय विषेकुत्ते चांडाल आदिके स्पर्शमें वौधायन जी कहते हैं भोजनकों कर्दी होइ रजस्वलाकों जेकर कुत्ता और चंडाल स्पर्शकरे तां छे ६ दिन गोमूत्र कर्के यावक भक्षण करणेंते शुद्ध हुंदीहै और न समर्थाहोवे तां सुवर्ण वा भोजन ब्राह्मणांके तांई देवे ॥ १ ॥

जेकर दोए रजस्वला जूठीआं होण तां तिना उच्छिष्टोंमे स्पर्श विषे तुपुनः अत्रिजीका वाक्यहै ॥ कदाचित् रजस्वला स्त्री जूठी होवे और दूसरी जूठी रजस्वलाके साथ स्पर्श वाली होवे तां पूर्वा क्याब्राह्मणी क्षत्रियाणी वैश्या एह प्राजापत्य कर्के और शूद्री दानकर्के और उपवासकर्के शुद्ध हुंदीहै १ परंतु एकहि जातिकीआं दोए होण तिनांविषे एह है जेकर भिन्नजातिकियां होण तां ब्राह्मणी क्षत्रियाणीके स्पर्श मे २ दो प्राजापत्य और वैश्या रजस्वलाके स्पर्शमें ३ त्रय इत्यादि जानणा। और शूद्रीआं रजस्वलाके परस्पर स्पर्शमें २ दो उपवाससहितप्राजापत्यके प्रत्याम्नाय दानकर्के शुद्धिहुंदीहै एहकामनातें करणेमेहै अकामकृतमे अद्धा है शूलपाणि जी ने इसतर्हा पाठ लिखाहै जूठे कर्के कदाचित् रजस्वला स्त्रीछोजावे तां

उच्छिष्टयोःपरस्परंस्पर्शे त्वत्रिः । उच्छिष्टोच्छिष्टसंस्पृष्टाकदाचित्स्त्रीरजस्वला कृच्छ्रेणशुद्ध्यतेपूर्वाशूद्रादानैरुपोषितेति १ अत्रपूर्वाशब्देनब्राह्मणक्षत्रियवैश्यस्त्रियोभिधीयंते॥तेनरजस्वलयो;समानजातीययोरुच्छिष्टयोःब्राह्मणक्षत्रियवैश्यानांपरस्परस्पर्शेप्राजापत्यम् ॥ स्वस्वानंतरस्पर्शेत्वेकैकवृद्धिरूहनीया ॥ तादृशशूद्रयोःस्पर्शेपरस्परंतूपवाससहितप्राजापत्यप्रत्याम्नायदानेनशुद्धिः । एतच्च कामतः । अकामतस्तदर्द्धम् ॥ शूलपाणिस्तु उच्छिष्टेनतुसंस्पृष्टाकदाचित्स्त्रीरजस्वला कृच्छ्रेणशुद्ध्यतेपूर्वाशूद्रादानेनशुद्ध्यतीतिपपाठ १ तत्रोच्छिष्टेन चांडालादिना । दानेन कृच्छ्रप्रत्याम्नायेन एपुरजस्वलात्वमेव निमित्तमतोनक्षत्रियवैश्ययोर्ब्राह्मण्यादिभ्यो विशेषइत्याह । उच्छिष्टद्विजसंस्पर्शेतुमार्कण्डेयः ॥ द्विजान्कथंचिदुच्छिष्टान्रजःस्त्रीयदिसंस्पृशेत् अधोच्छिष्टेत्वहोरात्रमूर्ध्वोच्छिष्टेत्र्यहंक्षिपेदिति १

पूर्वा क्या ब्राह्मणी आदि प्राजापत्य कर्के शुद्ध हुंदीहै और शूद्रा दान कर्के १ इस जगा उच्छिष्ट चांडाल समझणा और दान कृच्छ्रका प्रत्याम्नाय जानणा । और इसमे रजस्वलात्व धर्म हि उक्त प्रायश्चित्तका निमित्त है कोई ब्राह्मणत्वादि जाति नहि इस कर्के सभना वर्णा कीआं स्त्रीयां का तुल्यहि प्रायश्चित्त है किसेमे विशेष नहि ऐसा किहाहै ॥ जूठे द्विजके क्या ब्राह्मणादिके स्पर्शविषे मार्कण्डेय जी कहते हैं ॥ द्विजानिति कदाचित् ब्राह्मणादिंको जूठआंको रजस्वला स्त्री स्पर्श करे जेकर अधोच्छिष्टांको स्पर्श करे तां दिनरात्रव्रत करे और ऊर्ध्वोच्छिष्टांको स्पर्श करे तां त्रय दिन व्रत करे ॥ १ ॥

इस विषे यद्यपि विशेष नहिसुणीदाहै तथापि ब्राह्मणादिकी अपेक्षा करके उच्छिष्टक्षत्रियादि स्पर्श विषे ब्राह्मणीको अधिक कल्पना करणी । इसी तहाँ हीनजाति की रजस्वला ते अधिकजातिवालीके स्पर्श विषेहै जैसे क्षत्रियाणीको ब्राह्मणी के स्पर्श विषे कुछ न्यून क्या थोडा कल्पना करणा ॥ भोजनकालमें रजस्वला दूसरी रजस्वलाको देखे तां तिसमे आप स्तंवजी कहते हैं उदे ति। जेकर रजस्वला भोजन करदी होई दूसरी रजस्वला को देखे तां स्ना नके दिन तक भोजन न खावे और पीछे ब्रह्मकूर्च पीवे ॥ १ ॥ एह कामनाके दर्शन विषे जानना । और चांडालादि के दर्शनमें अत्रिजी कहतेहैं रजस्वलेति भोजन को करदीहोई रजस्वलास्त्रीचंडालको देखे तां त्रय उपवास व्रत करे और इच्छाते देखे तां

अत्रयद्यपि नविशेषः श्रूयते तथापिब्राह्मण्यपेक्षया उच्छिष्टक्षत्रियादिस्पर्शे ब्राह्मण्या अधिकंकल्प्यम्।एवंहीनायाउच्छिष्टस्पर्शेन्यूनम्। भोजनकालेरज स्वलांतरंदृष्ट्वापुनर्भोजनेत्वापस्तंवः उदक्यायदिवाभुंक्तेदृष्ट्वान्यांतुरजस्व लाम् आस्नानकालेनाश्नीयाद्ब्रह्मकूर्चंततःपिवेत् १ एतच्चकामतः चांडालादिदर्श नेत्वात्रिः रजस्वलातुभुंजानाचंडालंयदिपश्यति उपवासत्रयंकुर्यात्प्राजापत्यं तुकामत इति १ रजस्वलायाः श्वादिदंशनेव्यासः रजस्वलायदादष्टाशुना जंवुकरासभैः पंचरात्रंनिराहारापंचगव्येनशुद्ध्यतीति ॥ रजस्वलायाआ शौचिस्पर्शेशातातपः ॥ आर्त्तवाभिप्लुतानारीस्पृशेच्चशवसूतकम् ऊर्ध्वं त्रिरात्रंस्नातांतांत्रिरात्रमुपवासयेत् १ स्पृष्ट्वाभोजनादौत्वत्रिः आर्त्तवाभि प्लुतानारीमृतसूतकयोःस्पृशेत् भुक्त्वापीत्वाचरेत्कृच्छ्रंस्पृष्ट्वातुत्र्यहमेवच १

प्राजापत्यकरे ॥ १ ॥ रजस्वलाकोंकुत्ते आदिके डंगनमेंव्यासजीकहतेहैं कुत्ता और गिद्दड और गर्दभ रजस्वलाकों दंश करें क्या वडण तां पांच दिन निराहार व्रतकर्के पंच गव्यकापानकरे तां शुद्धहोतीहै ॥ १ रजस्वलाकों सूतकीके स्पर्शमें शातातपजीकावचनहै ॥ ऋतुकर्के युक्तस्त्री मरणके सूतकी पुरुषको स्पर्श करे और त्रयदिनतें उपरंत स्नातहोवेतां त्रयदिन उपवास व्रतकरे। १। स्पर्शकर्के भोजनके खाणेमें अत्रिजीका वाक्यहै रजस्वला स्त्री जन्म सूतक और मृतसूत कियोंके साथ स्पर्शकरे और पीछे अन्न जलको भक्षणकरे तां कृच्छ्र व्रतको करे और केवल स्पर्शमें त्रयदिन व्रतकरे १

सूतकी के साथ स्पर्श में स्नानतें पूर्व ऋतुके देख णेमें मार्कंडेयजी का वाक्य है मृत सूतक के स्पर्श होयां होयां जेकर स्त्री ऋतुकों देखे तां यचा करे सो कहते हां चारदिन पर्य्यंत न भक्षण करे जेकर भक्षण करे तां चांद्रायणव्रतकों करे ॥ १ ॥ मदन रत्नमें स्मृत्यंतरविषेंकहाहै मृत सूतकके होयां होयां जेकर रजस्वला होवेतां अभिषेक कर्के शुद्धि हो तीहै और तात्काल स्नान कर्के भोजनकर्के एहअसमर्थ स्त्रीमें जानणावा बालक संतानवालीमेंजान णा। १। इनांतें अन्य स्त्रीकोंत्रयदिन उपवासकिहाहै। संबंधीकेमरणआदिके सुणनेविषे व्यास

स्पर्शानंतरंभोजनादौकृच्छ्रंकेवलस्पर्शेतुत्र्यहम् आशौचिस्पर्शेस्नानात्प्राग्र जोदर्शनेमार्कण्डेयः ॥ मृतसूतकसंस्पर्शेऋतुंदृष्ट्वाकथंभवेत् नास्नानका लमश्नीयाद्भुक्त्वाचांद्रायणंचरेदिति १ आस्नानकालपर्यंतंचतुर्थदिनपर्यंतम् मदनरत्नेस्मृत्यंतरे ॥ अप्रायत्येसमुत्पन्नेमलवद्वाससीयदि अभिषेकेण शुद्धिः स्यात्सद्यःस्नानेनभोजनम् १ इदमशक्तायावालापत्याविपयंवा॥अ न्यस्यास्तुत्रिरात्रोपवासः अप्रायत्यंमृतसूतकम्। मलवद्वाससीरजस्वलाशु द्धिःस्पर्शयोग्यता ॥ वंधुमरणश्रवणादौव्यासः ॥ मलवद्वसनायास्तुअप्राय त्यंभवेद्यदि अभिषेकेणशुद्धिःस्यान्नाशनंवादिनत्रयमिति १ अत्रापिपूर्ववद् व्यवस्थादिनत्रयमित्यवशिष्टकालोपलक्षणम् ॥ अप्रायत्यंबंधुमरणादिना सएव आर्त्तवाभिप्लुतानारीनावगाहेत्कदाचन उद्धृतेनजलेनैवस्नात्वाशेषंस मापयेत् २ सिक्तगात्राभवेदद्भिःसांगोपांगमलैर्युता नवस्त्रपीडनंकुर्यान्ना न्यवासाभवेत्पुनरिति ३ तत्रपराशरः ॥ स्नानेनैमित्तिकेप्राप्तेनारीयदिरज स्वला पात्रांतरिततोयेनस्नानंकृत्वाव्रतंचरेत् ॥ १ ॥

जीका वाक्यहै ऋतुके होयां होयां मरण सूतक होवे तांअभिषेक कर्के शुद्धि कहीहै आगेपू र्वकीन्याई अर्थजानणा ॥ १ ॥ सोई व्यासजीकहतेहैं ऋतुयुक्त स्त्रीतलाआदिमें स्नाननकरे जल कों वाहर निकासकर स्नानकरे शेषकर्मसोहै जिसका आरंभ कीता होआहै तिसकों पूराकरे। २ पक्षांतर कहतेहैं सिक्तेति अथवा जलकर्के अंगाकों सिंचन करावे और सांगोपांगमल कर्के युक्तरहे और वस्त्रकों निष्पीडनन करे और दूसरे वस्त्रकों नधारणकरे । ३ । तिसमें पराशरजीका वाक्यहै रजस्वलास्त्री नैमित्तिक स्नानके प्राप्तहोयांहोयां पात्रकेजलकर्के स्नानकरे और व्रतकरे १

❀ अब परंपरा स्पर्श विषे तिसविषे भी अचेतन दंडादि व्यवधान विषे याज्ञवल्क्यजी कहतेहैं उदेति रजस्वला अशुचि पतितादि तिनांकर्के स्पर्श वाला पुरुष स्नान करे और आपः पुनंत्वित्यादि मंत्र और गायत्रीका एकवार मनकर्के जपकरे और जेडा रजस्वलादिकर्के स्पर्श वालाहै तिसकर्के जिसको स्पर्श होवे सो आचमन कर्के शुद्धहुंदाहै क्योंकि इसको साक्षात् स्पर्श नहि किंतु परंपरा स्पर्श है १ ॥ और चेतनके व्यवधान विषे मनुजीकावचनहै ॥ मुडदेका और तिसके स्पर्शवालेका तृणादि व्यवधान कर्के जो स्पर्श वाला है सो स्नान कर्के शुद्ध हुंदाहै ॥ पहलेश्लोकमेजो (अशुचिभिः) एहपदहै सो कुत्तेआदिका वाचकहै ॥ परंपराकेहि स्पर्श मै शातातपजीका वचनहै जेडा अशुचिजो मलमूत्रादि तिसको

❀ अथपरंपरास्पर्शे तत्राप्यचेतनदंडादिव्यवधानेयाज्ञवल्क्यः उदक्याशुचिभिःस्नायात्संस्पृष्टस्तैरुपस्पृशेत् अब्लिंगानिजपेच्चैवगायत्रींमनसासकृदिति १ तैरुदक्याशुचिसंस्पृष्टैःसंस्पृष्टउपस्पृशेदाचामेदित्यर्थः अशुचिरत्र शुनकादिःचेतनव्यवधानेतुमानवं शवंतत्स्पर्शिनंचैवस्पृष्ट्वास्नानेनशुध्यतीति ॥ स्पृष्टस्पर्शनेतुशातातपः । अशुचिंसंस्पृशेद्यस्तुएकएवसदुष्यति तंस्पृष्ट्वान्योनदुष्यतसर्वद्रव्येष्वयंविधिरिति ॥ १ तथासंहतानांतुपात्राणांयद्येकमुपहन्यते तस्यतच्छोधनंप्रोक्तंनतुतत्स्पर्शिनामपि २ क्वचिदचेतनव्यवधानेपिवचनात्प्रायाश्चित्ताधिक्यम् यथाहापस्तंबः ॥ एकशाखासमारूढश्चांडालादिर्यदाभवेत् ब्राह्मणस्तत्रनिवसन्स्नानेनशुचितामियात् १ ॥ आदिशब्दादुदक्यादीनांग्रहणम् ॥ शाखाग्रहणमवयव्युपलक्षणमिति

स्पर्शकरे सोई अपवित्र हुंदाहै और इसकेसाथ जो दूसरा स्पर्शकरे उसको दोष नहि समझना वस्तुयों विषे एहि विधि जानणी।१। तैसेहि जेडेपात्र इकट्ठे हैं तिनां विचों एकपात्रमलादि कर्के दूषित होवे तां तिसीकी शुद्धि करणी होर सभ पवित्रहैं। २ । और किसे जगा अचेतनके व्यवधान विषे भी वचनते प्रायश्चित्त बहुतहै जैसे आपस्तंबजी कहते हैं एकशाखामे क्या वृक्षमें चंडाल आदि जद स्थित होवे और तिसमे ब्राह्मण भी स्थित होवे तां स्नानकर्के शुद्ध हुंदा है । १ ।इसजगा आदि शब्दतें रजस्वलापतितादिका ग्रहणहै और शाखाग्रहणते समझना अंगांवालेवस्त्रादियोंका ग्रहण है ॥

इसमे परंपरास्पर्शमे स्पर्शशब्दगौणहै तिसमै वचनते प्रायश्चित्तहै इसमे अपवादकों पराशरजीक हतेहैं ॥ गलीका चिकड और जल और वेडीऔर मार्गऔर तृणघास और पक्कीयांइटांकीकंध एह स्पर्शतें दोष वालियां नाहि १ स्पर्श प्रायश्चित्तके अपवादकों वृहस्पतिजीकहतेहैं तीर्थ और विवाह और यात्रा और युद्ध और भाजड और नगर ग्राम आदिकादाहतिन्हांमें स्पर्शास्पर्शि दोष नाहि अर्थात् परंपरास्पर्शका दोष नहिहै १॥ ऐसेहि होर वाक्यभीहैं और ब्राह्मणकों चैत्यवृक्ष आदिके स्पर्शमें पराशरजी कहतेहैं चैत्यवृक्ष क्या मार्गादि विषे साधारण वृक्ष साधारण पुरुषां करके जो नमस्कार करीदाहै और श्मशानकाष्ट और पशुयांके मारणे वास्ते जो वंधने वाला काष्ट

अत्रपरंपरास्पर्शेपि स्पर्शशब्दोगौणस्तत्रवचनात्प्रायश्चित्तम् अत्रापवादमाहपराशरः ॥ रथ्याकर्द्दमतोयानिनावः पंथास्तृणानिवा स्पर्शनान्नप्रदुष्येतपक्केष्टकचितानिच १ स्पर्शप्रायश्चित्तापवादमाह वृहस्पतिः ॥ तीर्थेविवाहेयात्रायांसंग्रामेदेशविप्लवे नगरग्रामदाहेपुस्पृष्टास्पृष्टिर्नदुष्यति एवमन्यान्यप्यपवादवचनानिव्यवस्थापनीयानि ॥ ब्राह्मणस्यचैत्यवृक्षादिस्पर्शे पराशरः॥ चैत्यवृक्षश्चितिर्यूपश्चंडालःसोमविक्रयी एतांस्तुब्राह्मणः स्पृष्ट्वासवासाजलमावसेदिति १ क्षत्रियादीनांन्यूनंकल्पनीयम् चैत्यवृक्षोग्रामादौसाधारणजनवंद्यः चितिःश्मशानकाष्ठम्। यूपःपशुमारणार्थंवन्धनकाष्ठम् उपरिभागस्पर्शेशंखः॥ रथ्याकर्द्दमतोयेनष्ठीवनाद्येनवात्वथ नाभेरूर्ध्वंनरःस्पृष्टःसद्यःस्नानेनशुध्यतीति १ अधोभागस्पर्शेयमः सकर्द्दमंतु वर्षासुप्रविश्यग्रामसंकरम् जंघयोर्मृत्तिकास्तिस्रःपादयोःषण्मृदः स्मृता इति इत्यस्पृश्यस्पर्शप्रायश्चित्तानि॥

और चांडाल और सोमविक्रयी इनांके साथ ब्राह्मण स्पर्श करे तो साहित वस्त्रांके जलमें स्नान करे १ क्षत्रियांदिकों थोडा किहाहै ऊपर भागमें स्पर्शविषे शंखजीकावाक्यहै गलीका चिकड और थुक इनांकरके नाभितें ऊर्ध्व स्पर्शमे तात्काल स्नान करके शुद्ध होताहै १ और नाभितें अधो भाग स्पर्शमें यमजी कहतेहैं वर्षामें नगरके कूडेके साथ जो चिकड जंघामें स्पर्शहोवे तो त्रय बार मृत्तिका लगांणे करके और पैरांविषे ६ बार लगाणे करके शुद्धि होतीहै ॥ १ ॥ एह जिनका स्पर्श नहि करणा तिनांके स्पर्शका प्रायश्चित्त समाप्त हुया ॥ ॥

अब कुत्ते आदिके डंगमें मनुजी कहतेहैं श्वेंति कुत्ता और गिदड और खोता और जोमांसके भक्षणकरणेवाले नगरमें जीवहैं और घोडा और ऊट और सूकर इनांकर्के वड या होया जो पुरुष है सो प्राणायामकर्के शुद्ध हुंदाहै ॥ १ ॥ प्राणायाममें विशेषघृतभक्षणकों याज्ञवल्क्यजी कहतेहैं ॥ पुंश्चली और वानर और खोता और ऊट आदिक और काक इनांकर्के वडया होया पुरुष जलमें प्राणायाम कर्के और घृतभक्षण कर्के शुद्धहुंदाहै २ एह नाभिते हिठां थोडे वडणेमें जानणा ॥ जोतुपुनः सुमंतुने किहाहै ॥ कुत्ता और गिदड और मृग और महिष और बकरा और भेड और खोता और करभक्याऊट और नेवल और

अथश्वादिदंशे मनुः ॥ श्वसृगालखरैर्दष्टोग्राम्यैः क्रव्याद्भिरेवच ॥ नराश्वोष्ट्रवराहैश्चप्राणायामेनशुध्यतीति १ प्राणायामेविशेषंघृतप्राशनंचाह याज्ञवल्क्यः ॥ पुंश्चलीवनरखरैर्दष्टश्चोष्ट्रादिवायसैः प्राणायामंजलेकृत्वाघृतंप्राश्यविशुध्यति २ एतच्चनाभेरधस्तादीपद्दष्टस्य। यत्तुसुमंतुः॥ श्वसृगालमृगाज महिषाजाविखरकरभनकुलमार्जारमूषकाप्लवकाकपुरुषदष्टानामापोहिष्ठीयाभिः स्नानंप्राणायामत्रयंचेति॥ एतच्चपादयोःकिंचिदधिकदंशे नाभेरूर्ध्वंदंशेतु बौधायनः॥ शुनादष्टस्तुयोविप्रोनदींगत्वासमुद्रगां प्राणायामशतंकृत्वाघृतंप्राश्यविशुध्यतीति १ नाभेरधस्तादतिगाढदंशविषयं ॥ एतस्मिन्नेवविषयेदेवलः ॥ श्वदष्टःसागरगायांनद्यांस्नातोनिराहारः प्राणायामशतमावर्त्तयंस्त्रिरात्रादपगतपाप्माभवति ॥ तन्नाभेरूर्ध्वं गाढदंशे ॥

बिल्लाऔर चूहा और डड्डू और काक और पुरुष इनांकर्के डंगेहोये जोपुरुषहैं सो आपोहिष्टा आदिक ऋचाकर्के स्नानकरे और त्रय ३ प्राणायामकरे एह पादोंमें वहुत डंगणेमें प्रायश्चित्तहै नाभितें ऊपर डंगणेमे बौधापनजीकहतेहैं कुत्तेकर्के डंगया होया ब्राह्मण समुद्रमें प्राप्त होणवालीनदीकों प्राप्त होकर सउ१०० प्राणायामकर्के और घृतभक्षणकर्के शुद्धहुंदाहै १ ॥ एहनाभितें अधःक्याहिठवहुत डंगणेमें जानणा ॥ इसीविषयमे देवलजीकहतेहैं ॥ कुत्तेकर्के वडयाहोया पुरुष समुद्रमें जाणेवाली नदीमें स्नानकोंकरे और निराहारव्रतकरे सउ १०० प्राणायामकरे त्रयदिनतें उपरंत शुद्ध हुंदाहै एह नाभितें उपरवहुते डंगमें जानणा ॥

इसीमें शंखजीकावाक्यहै वसमेंकेकाष्ठकर्के क्षतहोयाहोया श्रौर तैसेकुत्तेकर्के डंगयाहोया श्रौर व्यभिचारिणीस्त्रीके दंदांकर्के डंगयाहोयात्रयादिनके व्रतकर्केशुद्धहुंदाहै १ इसीवाक्यकोंयमजीकहते हैं ॥ गिदड श्रौर सूर श्रौर खोता श्रौर ऊठ श्रौर कुत्ता श्रौर वानर श्रौर हाथी इनांकर्के डंगयाहोया ब्राह्मणदिनमें त्रयश्राचमनकरे तांशुद्धहुदाहै श्रौर पंजवासत्त ब्राह्मणाकेतांई हविष्यभोजन देवें १ ब्रह्मचारीमें हारीतजीकहतेहैं कुत्तेकर्के डंगयाहोयादिनमें एकवारभोजनकरे श्रौर समुद्रपर्यंत नदीमें प्राप्तहोकर सौप्राणायामकरे श्रौर घृतभक्षणकरे तां शुद्धहुंदाहै ॥ इसीप्रकार गिदड श्रौर विल्ला श्रौर नेवल श्रौर चूहा इनांकर्के डंगयां होयांकों भीजानणा ॥ श्रव ब्रह्मचारीके श्रधिकारमें पैठीनसीजीकहतेहैं ॥ कुत्तेकर्के वडेहोयेको त्रयदिनउपवासव्रत श्रौर ब्राह्मणकेगृहमेंनि

श्रत्रैवशंखः । नीलीकाष्ठक्षतोविप्रः शुनादष्टस्तथैवच त्रिरात्रंतुव्रतंकुर्यात्पुंश्चलीदशनक्षतइति १ यमोपि सृगालसूकरखरोष्ट्रश्ववानरकुंजरैः एतैस्तुब्राह्मणोदष्टस्त्रिरक्तःसमुपस्पृशेत् १ हविष्यंभोजयेदन्नंब्राह्मणान्सप्तपंचचेति १ ब्रह्मचार्यधिकारेहारीतः॥ शुनादष्टस्त्वहन्येकाहारः समुद्रगांनदींगत्वाप्राणायामशतंकृत्वाघृतंप्राश्यततःशुचिरेवंगोमायुमार्जारनकुलमूषकैर्दष्टानाम् ॥ ब्रह्मचार्यधिकारे पैठीनसिः शुनादष्टस्यत्रिरात्रमुपवासोविप्रगृहेवासश्च ॥ यत्तुशातातपः ॥ गवांशृंगोदकस्नातः शुनादष्टस्तुब्राह्मणः समुद्रदर्शनाद्वापिशुनादष्टःशुचिर्भवेत् ॥ १ ॥ श्रत्रसमुद्रेत्यादिसाक्षाद्धेतुप्रदर्शनेनपूर्ववाक्यवैलक्षण्यात्पुनःशुनादष्टइत्युपात्तम् ॥ १ ॥ वेदविद्याव्रतस्नातः शुनादष्टस्तुब्राह्मणः हिरण्योदकमिश्रंचघृतंप्राश्यविशुध्यति ॥ २ ॥ तन्नाभेरधस्तादीपदृष्टविषयम् वचनाद्विशिष्टब्राह्मणमात्रविषयं वा समुद्रदर्शनंतुतत्तीरवासिनाम्॥ व्रतस्थस्यविशेषमाह वौधायनः । व्रतस्थस्तुशुनादष्टस्त्रिरात्रमुपवासयेत् सघृतंयावकंपीत्वाव्रतशेषंसमापयेत् ॥ १ ॥ यत्तु शातातपः॥ श्रव्रतःसव्रतोवापिशुनादष्टोभवेद्द्विजः ॥

वासशुद्धिकेदेणेवालाकिहाहै जोतुपुनःशातातपनेंकिहाहै कुत्तेकर्के डंगयाहोया गौयांके शृंगांके जलकर्के स्नानकीतयां होयां शुद्धहोताहै श्रौर समुद्रके दर्शनकर्केभी शुद्ध होताहै १ वेदविद्याव्रतमें जिसनें स्नानकीताहै श्रर्थात् वेदविद्यामें चतुरहै तिसकों जेकर कुत्तावडे तां सुवर्णके जलकर्के रलयाहोया जोघृत तिसकों भक्षणकर्के शुद्ध हुंदाहै २ सोनाभिकेहेठां थोडे डंगमेंजानणा इसवचनतें श्रथवाविशिष्टगोत्री ब्राह्मणके विषय जानणा श्रौर समुद्रदेखणा तिसके कनारेमें रहणवालयांविषें जानणा ॥ जो व्रतमें स्थितहै तिसकोंविशेष वौधायनजीकहतेहैं व्रतमेंस्थित पुरुषको कुत्ताडंगें तां त्रयदिनउपवासव्रतकरे सहितघृतके यावककोंपीकरशेषव्रतकों समाप्तकरे १ जोतुपुनःशातातपनें किहाहै श्रव्रतइति व्रततें रहितहोवे वा युक्तहोवे कुत्तेकर्के डंगयाहोवे

सो सुवर्णके जलकर्के मिश्रितजोघृत तिसकों पीकरशुद्धहुंदाहै १ सोअतिअसमर्थमेंजानणा ब्राह्मणांते रहित ग्राममें पराशरजी कहतेहैं ब्राह्मणांते रहित ग्राममें कुत्ते कर्के डंगया होया पुरुष बैलकी प्रदक्षिणा और शीघ्रहि स्नानकर्के शुद्धहुंदाहै ॥ १ ॥ स्त्रीयांकों विशेष पराशरजीक हतेहैं ॥ ब्रह्मणी कों जेकर कुत्ता वा गिद्दड वाविगहाड वडे तां उदय होयेग्रहनक्षत्रकों देख कर तात्काल शुद्धहुंदीहै १ बौधायनजी कहतेहैं ब्राह्मणी कुत्ते कर्के डंगीहोवे तां चंद्रमाकेदे खणेकर्के वानक्षत्रांकेदेखणेकर्के शुद्धहुंदीहैं १ जेकर कृष्णपक्षमें चंद्रमानादिस्से तद जिसदिशामें चंद्रमास्थितहै तिसादिशापासेदेखे २ अंगिरसऋषिनें पंचगव्यकाभीभक्षण किहाहैं ब्राह्मणीति इ सका अर्थपूर्वकहीदत्ताहि कुछ विशेष कहतेहां १ सोममार्गकर्के क्या तिसके देखणे कर्के पवित्र होई २पंचगव्यकर्केशुद्धहुंदीहै २ ब्राह्मणीकाग्रहण उपलक्षणमात्रहै॥ व्रतमें स्थितजो स्त्रीतिसवि

हिरण्योदकमिश्रंतुघृतंप्राश्यविशुद्ध्यति ॥ १ ॥ तदत्यंताशक्तविषयम् ब्राह्मणरहितग्रामेतुपराशरः॥ असद्ब्राह्मणकेग्रामेशुनादष्टोद्विजोत्तमः वृषं प्रदक्षिणीकृत्यसद्यःस्नात्वाशुचिर्भवेत् ॥ १ ॥ स्त्रीणांविशेषमाहपराशरः ॥ ब्राह्मणीतुशुनादष्टाजंबुकेनवृकेणवा उदितंग्रहनक्षत्रंदृष्ट्वासद्यःशुचिर्भवे त् १ बौधायनोपि ॥ ब्राह्मणीतुशुनादष्टासोमेदृष्टिंनिपातयेत् नक्षत्रदर्शना द्वापिशुनादष्टाशुचिर्भवेत् १ कृष्णपक्षेयदासोमोनदृश्येतकदाचन यांदिशं व्रजतेसोमस्तांदिशंत्ववलोकयेदिति २ अंगिरसा त्वत्र पंचगव्यप्राशन मप्युक्तम् ब्राह्मणीतुशुनादष्टासोमेदृष्टिंनिपातयेत् यदानदृश्यतेसोमःप्रा यश्चित्तंकथंभवेत् १ यांदिशंतुगतःसोमस्तांदिशंचावलोकयेत् सोममार्गेण सापूतापंचगव्येनशुद्ध्यतीति २ ब्राह्मणीग्रहणमुपलक्षणम् व्रतस्थस्त्रीवि षयेपराशरः॥ त्रिरात्रमेवोपवसेच्छुनादष्टातुसव्रता सघृतंयावकंभुक्त्वाव्रत शेषंसमापयेत् १ रजस्वलायाविशेषमाह पुलस्त्यः रजस्वलायदादष्टाशु नाजंबुकरासभैः पंचरात्रंनिराहारापंचगव्येनशुद्ध्यति १ ऊर्ध्वंतुद्विगुणंना भेर्वक्त्रेतुत्रिगुणंतथा चतुर्गुणंस्मृतंमूर्ध्निदष्टेन्यत्राशुचिर्भवेत् ॥ २ ॥ अन्यत्ररजस्वलावस्थाया इतिशेषः

षय पराशरजी कहतेहैं व्रतकर्के युक्त जोस्त्री तिसकों कुत्तावड्डे तां त्रयदिन उपवासव्रतकोंकरे और सहितघृतके यावककों भक्षण कर्के व्रतकी न्यूनताकों पूर्णकरे१ रजस्वला स्त्रीमें विशेष पुलस्त्य जी कहतेहैं रजस्वलाकों कुत्ता गिदड खोत्ता जेकर वडे तां पंच ५ दिन निराहार व्रतकों करे पीछे पंचगव्य कर्के शुद्ध हुंदीहै १ नाभितें ऊपरडंगहोवेतां दूणा व्रत किहाहै और मुखमें त्री णाव्रत किहाहै शिरमें चारगुणा अधिक किहाहै ॥ २ ॥ और जोरजस्वला नहिहै तिसकों व्रत नहि किहाहै किंतुअशुद्धि कहीहै सो पूर्वोक्त प्रकार कर्के हि दूरहोवेगी ॥

कुत्तेके सिंघणे आदिमे शातातपजी कहतेहैं जिस पुरुषको कुत्तेनें सिंघयाहै वा चटयाहै वा नखां करके विलुंद्रया है तिसकी शुद्धि जल करके धोणेनें और अग्नि करके तपाणेतें हुंदीहै ॥१ और व्रणमे कीडेकी उत्पत्तिमें बौधायनजी कहतेहैं(प्रश्ण)जिस ब्राह्मणके फटमें पाक और राधरे के होयांहोयां कीडे उत्पन्न होण तिसका प्रायश्चित्त कैसे हुंदा है ॥ १ ॥ (उत्तर) गोमूत्र गोमय और दुध दधि घृत कुशाका जल इनां द्वारा त्रय दिन स्नान करके और पान करके कृमि दष्ट होया होया शुद्ध हुंदाहै। २। एह नाभितें हिठां जानणा ॥ मनुजीभी कहतेहैं ब्राह्मणदे तेह

शुनाघ्रातादिषुशातातपः ॥ शुनाघ्रातावलीढस्यनखैर्विदालितस्यच अद्भिः प्रक्षालनंशौचमग्निनाचोपचूलनमिति १ उपचूलनंतापनम् ॥ व्रणेकृम्युत्पत्तौतु बौधायनः ॥ ब्राह्मणस्यव्रणद्वारेपूयशोणितसंभवे कृमिरुत्पद्यतेयस्यप्रायश्चित्तंकथंभवेत् १ ॥ गोमूत्रंगोमयक्षीरंदधिसर्पिःकुशोदकम् त्र्यहंस्नात्वाचपीत्वाचकृमिदष्टःशुचिर्भवेदिति २ एतच्चनाभेरधस्ताद्ज्ञेयम्। मनुरपि ॥ ब्राह्मणस्यव्रणद्वारेपूयशोणितसंभवे कृमिरुत्पद्यतेयस्यप्रायश्चित्तंकथंभवेत् ॥ १ गवांमूत्रपुरीषेणत्रिसंध्यंस्नानमाचरेत् त्रिरात्रंपंचगव्याशीत्वधोनाभ्याविशुद्ध्यति ॥ २ ॥ नाभिकंठांतरोद्भूतेव्रणेचोत्पद्यतेकृमिः षड्रात्रंतुतदाप्रोक्तंप्राजापत्यंशिरोव्रणइति ॥ ३ यत्तुशातातपः। ब्राह्मणस्यव्रणद्वारेयदासंपद्यतेकृमिः प्रायश्चित्तंतदाकार्यमितिशातातपोऽब्रवीत् १ गोमूत्रंगोमयंक्षीरंदधिसर्पिःकुशोदकम् त्र्यहंस्नात्वापीत्वाचकृमिदष्टःशुचिर्भवेदिति ॥ २ ॥ तदीषद्दष्टाविषयम् ॥

सके पूर्व श्लोकका उहीहि अर्थ कथन कीताहै ॥ १ ॥ और गौवांके गोहे और मूत्र करके त्रय काल स्नान करे त्रयदिन पंचगव्य भक्षण करे नाभितें हिठां कृमि डंगणेसे शुद्ध होताहै ॥ २ और नाभि कंठके मध्यमे फट विषे कीडयांकी उत्पत्ति होवे तां छे ६ दिनका व्रत किहाहै और शिरके फटमें कृमि होण तां प्राजापत्य किहाहै ॥ ३ जो तुपुनः शातातपजीने किहाहै सो बौधायन जीके वाक्यके तुल्य अर्थ जानणा परंतु एकदिन करणा ॥ १ ॥ एह थोडे दंशमें जानणा ॥ २ ॥

वर्णभेद करके तिसीनें क्या मनु जीने प्रायश्चित्तकहाहै ब्राह्मणस्येति ब्राह्मणके व्रणमे क्या फट विषे रक पाक वालेविषे कृमि उत्पन्न होण तां तिसका प्रायश्चित्त किस तहीं होवे ॥ १ ॥ इस प्रश्नका उत्तर ॥ गौआंके मूत्रादि पंचगव्य करके स्नान करे त्रय दिन और पीवेतां कृमिदष्ट पवित्र होवेगा ॥ २ ॥ और ऐसा जेकर क्षत्री होवेतां पंजमासे सोना दान करे और वैश्य जेकर ऐसा होवे तां उपवासके पीछे गोदान करे ३ ॥ और शूद्र जेकर ऐसा होवे तां गोदान हि केवल करे उपवास न करे तां शुद्ध होताहै ॥ एभि नाभितें हेठ कृमि होण तां जानणा ॥ तिस

वर्णभेदेनप्रायश्चित्तविशेषउक्तस्तेनैव ब्राह्मणस्यव्रणद्वारेपूयशोणितसंभवे कृमिरुत्पद्यतेयस्यप्रायश्चित्तंकथंभवेत् ॥ १ गवांमूत्रपुरीषेणदधिक्षीरेणसर्पिषा त्र्यहंस्नात्वाचपीत्वाचकृमिदष्टःशुचिर्भवेत् २ क्षत्रियोपिसुवर्णस्यपंचमाषान्प्रदापयेत् गोदक्षिणांतुवैश्यस्याप्युपवासंविनिर्दिशेत् ३ शूद्राणांनोपवासःस्याच्छूद्रोदानेनशुद्ध्यतीति स्नानंपानंचपंचगव्येनैव दानंगोदानम् ॥ एतदपिनाभिरधस्तात्क्रिम्युत्पत्तौज्ञेयम् नाभेरुपरिविशेषउक्तोभविष्यत्पुराणे ॥ ब्राह्मणस्यव्रणद्वारेपूयशोणितसंभवे कृमिरुत्पद्यतेयस्यनिष्कृतिंतस्यवच्मितु १ गवांमूत्रपुरीषेणत्रिसंध्यंस्नानमाचरेत् दधिक्षीरंघृतंप्राश्यपंचगव्येनशुद्ध्यतीति २ ॥ अधोनाभेःप्रदष्टस्यआपादाद्विनतात्मज एतद्विनिर्दिशेत्प्राज्ञःप्रायश्चित्तंयथाभवेत् ३ नाभिकंठांतरेवीरयदाचोत्पद्यतेकृमिः षड्रात्रंतुतदाप्रोक्तंप्रायश्चित्तंमनीषिभिरिति ॥ ४ ॥

नाभितें उपर जेकर होण तां तिस विषे विशेष किहाहै भविष्यत्पुराणमे ब्राह्मेति ब्राह्मणके व्रण विषे कृमि होजाए तां तिसकी निष्कृतिकों क्या प्रायश्चित्तकों कहताहुं ॥ १ ॥ गौआंके मूत्र करके और गोहे करके त्रय कालस्नान करे और दहिं १ दुध २ घृत ३ इनकों खा करके पीछे पंचगव्य पान करके शुद्ध हुंदाहै एह विधि त्रय दिन तकहै ॥ २ ॥ नाभिके हेठ पैरां तक जेकर दशवाल होण हेविनताके पुत्र इसप्रायश्चित्तकों बुद्धिमान् कहे ॥ ३ और नाभि और कंठके मध्यमे कृमि होण तां छे ६ रात्रिकपरिमाणवाला व्रत मुनियोंने शुद्धि वास्ते किहाहै ४ ॥

आपस्तंब जी कहते हैं वलादिति वलते क्या जोरावरीते जो दास बना लये हैं म्ल छोने क्या मुसलमानोने और चांडालोने दस्यु जो नीच जाति तिनोंने उौर अशुभ कर्म्म गो वधादि जिनांते कराया है १ तिनांका जूठा उठाणा और जूठाहि खाणा और गधा १ ऊट ग्राम्य वराह ३ इनका मांस भक्षण करणा ॥ २ ॥ और तिनांकिआं स्त्रीआंका संग और तिनां स्त्रीयां साथ भोजन करणा जेकर महीना रोज द्विजाति असा करे तां तिसका शोधन प्राजापत्यसे हुंदा है ॥ ३ ॥ और अग्निहोत्री जेकर असा कर्म करे तां चांद्रायण कर्के अथवा पराक कर्के शुद्ध होवे और जो आहिताग्नि नहि है परंतु वर्ष रोज तक तिनके साथ रिहा होवे सो जैसा कैसा हो चांद्रायण वा पराक करे ॥ ४ ॥ और जेकर शूद्र वर्ष रोज रहे तां अद्धा महीना यावक पीवे और जेकर महीना रोज पूर्वोक्त व्यवस्था

आपस्तंवः । वलाद्दासीकृतायेतुम्लेच्छचंडालदस्युभिः अशुभंकारिताःकर्मगवादिप्राणिहिंसनम् ॥ १ ॥ उच्छिष्टमार्जनंचैवतथातस्यैवभोजनम् खरोष्ट्रविड्वराहाणामामिषस्यचभक्षणम् ॥ २ ॥ तत्स्त्रीणांचतथासंगस्ताभिश्चसहभोजनम् मासोषितेद्विजातौतुप्राजापत्यंविशोधनम् ॥ ३ ॥ चांद्रायणंत्वाहिताग्नेः पराकस्त्वथवाभवेत् चांद्रायणंपराकंचचरेत्संवत्सरोषितः ॥ ४ ॥ संवत्सरोषितःशूद्रोमासार्द्धयावकंपिवेत् मासमात्रोषितःशूद्रः कृच्छ्रपादेनशुध्यति ॥ ५ ॥ ऊर्ध्वंसंवत्सरात्कल्प्यंप्रायश्चित्तंद्विजोत्तमैः त्रिभिःसंवत्सरैश्चापितद्भावमनुगच्छतीति ॥ ६ ॥ हीनवर्णस्तुयःकश्चिदंत्यजैःसहसंवसेत् सशिखंवपनंकृत्वामासमेकंयवान्पिवेत् ॥ ७ ॥ सर्वाण्येतानि प्रायश्चित्तानि यथाशक्तियथानुवंधप्रत्ययाभ्यासापेक्षया व्यवस्थापनीयानीत्यपरार्के ॥ इदंचमहापातकिसंसर्गिप्रायश्चित्तानंतरं देवलस्मरणेनाप्युद्घाटितं तत्र द्रष्टव्यम् ॥

से तिनां साथ रहे तां लघु कृच्छ्र कर्के शुद्ध हुंदा है ॥ ५ ॥ वर्षते उपरंत तिनांके साथ रहे तां प्रायश्चित्त विद्वानोने कल्पना करणे योग्य है और त्रय वर्ष पर्य्यंत तिनांके साथ रहणे कर्के तिनांके हि स्वरूपको प्राप्त हुंदा है ॥ ६ ॥ जो कोई हीनवर्णदा नीचांदे साथ वासकरे तां सहित शिखादे मुंडन करावे और महीना रोज जवानू पींदा रहे अर्थात् जवानू बनाकर खांदा होया महीना व्यतीत करे ॥ ७ ॥ संपूर्ण एह प्रायश्चित्त यथाशक्ति और पाप करणे मैं दृढतासें और एक वार वहुवार के ज्ञान सें जोड लेने एह अपरार्क मैं लिखया है ॥ और एह म्लेच्छ संसर्ग प्रायश्चित्त महापातकि संसर्गी प्रकरण में देवल स्मृति के दिखाणे कर्के प्रकट कीता है सो तिस जगाहि देखलेना इस जगा प्रसंगसें किहा है और उपपातक प्रकरण विषे भी किहा है प्रसंग वशाते

● अब जो लोक कैदरह कर पीछे अपणेघरआवतेहैं तिनकेअर्थ प्रायश्चित्त कहीदाहै जेडे मनुष्य राजाने अपराध जाण कर जोरसे दास बनाए हैं और तिनांतैं स्नानादि नित्य कर्म्मभी छुडाआ है सो उसजगाते छुट्टेहोए वर्षादि कालके उचित जो चांद्रायणादि तिनांका संकोच कर्के प्राजापत्य कर्के शुद्धकर लैने उसमेभी तिनके निवासकी अल्पता और बाहुल्यताको देख कर द्विकृच्छ्र लघु कृच्छ्रादि व्यवस्था कर लैणी ॥ धर्म्म शास्त्रके योग्य जेडा न्यायाधि कारीराजा है तिसने बंदीघरविषे जोडे होये लोक सो केवल नित्य कर्म्मके लोप करणे ति वेहि हैं तिनांका प्रायश्चित्त केवल नित्यकर्म्म लोपनिमित्त हि कहणा ॥ सो कहतेहैं

● अथबंदीगृहनिवासपरावृत्तप्रायश्चित्तम् येतुराज्ञाऽपराधपूर्वबलाद्दासी कृताअशुभंकारिताश्चतन्मुक्तास्तेपूर्वोक्तसंवत्सरोचितचान्द्रायणादिह्रासा पेक्षयाप्राजापत्यं कुर्युस्तत्रापि वासतारतम्येन द्विकृच्छ्रलघुकृच्छ्रा दिव्यवस्थोह्या ॥ येतुधर्म्मशास्त्रोचितन्यायाधिकारिणा क्षत्रियादिराज्ञाबं दीगृहेनियुक्तानित्यकर्म्ममात्रलोपिनस्तेषांनित्यकर्म्महानिनिमित्तम् ॥सं ध्योपासनहानौतुनित्यस्नानंप्रलोप्यच होमंचैवनित्यकंशुद्ध्यैगायत्र्यष्टसहस्र कमित्यादि पूर्वोक्तंप्रायश्चित्तंज्ञेयम् स्वयं परेण वा कारयेत् ॥ अ त्रान्यत्रवानुक्तविषये देशकालौचित्यं संभावनीयम् ॥

संध्योपेति संध्योपासन की हानि होयां क्या किसैं कारण तें लोप होयां चपुना नित्य स्नानको लोप कर्के और नित्य करीदा जो हवन है तिसका लोप कर्के शुद्धिवास्ते आठसै अधिक हजार १००८ गायत्री जप एह पीछैं कहा होआ जानणा १ सो जप आपकर अ थवा दूसरेंते कराधे ॥ इस जगा वा और जगा जो विषय कहणेमें नहि आया जैसे जिनां कीडयांतें पद्मकी उत्पत्ति है तिनांकें मारणेका प्रायश्चित्त जुदे नहि लिखया तो इ त्यादियोंमे देशकालोचितकी भावना करणी तां इनका प्रायश्चित्त (किंचित्सास्थिवधेदे यंप्राणायामस्त्वनस्थिके) इत्यादि वचनते एकके वधमे १ प्राणायाम है तिना वहुतयांके वधमे तिस द्रव्यका दशांशदान कल्पना मे आवेगा ॥

होई याज्ञवल्क्य जीने किहाहै। देशमिति देश १ काल २ और अवस्था ३ शक्ति ४ पाप ५ इनाकों यत्नतें देख कर प्रायश्चित्तकी कल्पना करे॥ जिस जगा प्रायश्चित्त इस पापका एहहै ऐसा नहि किहा १ इसका अर्थ कहतेहैं जद निमित्त क्या पाप बहुत होवे तां तिसका नैमित्तिक प्रायश्चित्त बहुत हि होणा चाहिए जैसे बरतांके भांडेआंके पुरापोंका प्रायश्चित्त एक एकका वक्खरा कर्के नहि हो सक्ता इसवास्ते व्यवस्था करदे हैं कि जिस्थे प्रायश्चित्तका उपदेश करणाहै उस जगा देशादिकों देख कर कहे जैसे करण वाले का प्राणवियोग न होवे तिस तर्हां करे जैसे प्रायश्चित्तहै॥ वाय्विति वायु भक्षण करदा होया दिने खलोता रहे और रात्रिमें जलेंमें वास करे और सूर्य्यके सामणे दृष्टि रक्खे रात्रिमें सूर्य्य

तथाचयाज्ञवल्क्यः। देशंकालंवयःशक्तिंपापंचावेक्ष्ययत्नतः प्रायश्चित्तं प्रकल्प्यंस्याद्यत्रचोक्ताननिष्कृतिः १अर्थः। निमित्तबाहुल्येन प्रतिव्यक्तिनैमित्तिकस्यवक्तुमशक्यत्वादुक्तानुक्तविषये व्यवस्थोच्यते। यत्रप्रायश्चित्तमादिश्यते तद्देशादिकमपेक्ष्य यथाकर्तुः प्राणवियोगोनस्यात् तथा विषयविशेषोविधेयः॥ तथा वायुभक्षोदिवातिष्ठे द्रात्रिंनीत्वाप्सुसूर्य्यदृगित्यत्रयदिहिमवद्गिरिनिकटवर्त्तिनामुदकवासउपादिश्यतेअतिशीताकुलितवाशिशिरादिकालेतदाप्राणवियोगोभवेदितितद्देशकालपरिहारेणोदवासः कल्पनीयः तथावयोविशेषादपि यदि नवतिवार्षिकादेरपरिपूर्णद्वादशवार्षिकस्यवाद्वादशाब्दिकं प्रायश्चित्तमुपदिश्यते तदाप्राणाविपद्येरन् ततो वयोविशेषादपि अन्यवयस्केतत्प्रायश्चित्तंकल्प्यम्॥ अतएवस्मृत्यंतरे क्वचिदर्द्धंक्वचित्पादइति वृद्धादिषु प्रायश्चित्तस्य ह्रासोदर्शितः तच्च प्राक् प्रपंचितम्॥

न देखण में आवे तां तिस की दिशाको देखतारहे॥ एह प्रायश्चित्त जद हिमालय वासियोंको अथवा पौषमाघमें दित्ता जावे तां प्राणवियोगकी भावना होवेगी तां तिसके परिहार करके उसके जल वासकी कल्पना करणी तैसेहि अवस्थाके देखणेतेहै। जैसे ९० नवे वर्ष की आयु वालेकों अथवा १२ बारां वर्षकी आयु वालेको जेकर बारां वर्षका प्रायश्चित्त किहाजावे तां तिसके प्राण दूर हो जाणगे इस करके उनको ऐसा नहि कहणा किंतु जुवानकों देखकर कहणा इसी कर्के और स्मृतिमें किहाहै। कि किस जगा अद्धा और किसे जगा चौथा हिस्सा प्रायश्चित्त वाले वृद्धादि विषे कहणा इसका प्रपंच पिच्छे भी होचुकाहै

एव मिति इसीप्रकार निर्धन पुरुषविषे गजदानकी आज्ञा और आतुर जो रोगादि कर्के पीडितहै तिसमे वारांदिनके उपवासवाले पराक व्रतकी आज्ञा और स्त्री शूद्रादिके विषय गायत्री जपादिकी आज्ञा और वालादिविषय समग्रकी आज्ञा नहि होणीचाहिए किंतु कृच्छ्रकी जगा लघु कृच्छ्रादि हि उपदेशकरणें ॥ इसतें एह वार्ता सिद्ध होई कि प्रायश्चित्तदेणके समयमें सारे धर्म्म शास्त्रके देखणेका आवश्यकहै । इसी कर्के पहले १ दूसरे २ तीसरे ३ प्रकरणोंमे कामाकामादि एकबार वहुवारादिका निर्णय विस्तरसे किहाहै ॥ इसजगा मिताक्षराकी व्यवस्था औ

एवंनिर्धने गजदानादि आतुरादौ पराकादि स्त्रीशूद्रादौजपादिकं वालादौ समग्रं नोपदिश्यते किंतु कृच्छ्रोपवासपादाद्येवोपदिश्यते एवंच प्रायश्चित्तदाने सकलधर्म्मशास्त्रावलोकनमपेक्षितंभवति अतएव प्रथमद्वितीयतृतीयप्रकरणेषु कामाकामसकृदभ्यासादिनिमित्तता प्रपंचिता अत्रमिताक्षरा तथा महापापोपपापाभ्यांयोभिशंसेन्मृषापरम् अब्भक्षोमासमासीतेत्युक्तम् तत्रमहापापोपपापयोस्तुल्यप्रायश्चित्तस्याप्युक्तत्वात्पापापेक्षयोपपातके मासिकव्रतस्यह्रासःकल्पनीयः तत्रच हासितजृंभितास्फोटनानि नाकस्मात्कुर्य्यात् तथा नोदन्वतोंभसिस्नायान्नचशमश्रुवादि कर्त्तयेत् अंतर्वत्न्याः पतिः कुर्वन्नप्रजोभवतिध्रुवमित्यादौ प्रायश्चित्तंनोपादिष्टम् ।

सोहै महेति महापापकर्के और उपपाप कर्के जो झूठा दोष किसेको लगावे सो महीना रोज जल पानमात्र करता होआ व्यतीतकरे एह महापाप और उपपापाक तुल्यकप्रायश्चित्त किहाहै परंतु पूर्वोक्त वचनते उपपातकमे पूरामहीना नहि कहणा किंतु १० दिनकहणाचाहिए ॥ हासितेति और हस्सणा १ उवासी लयणी २ वाहु ठोकणी ३ इनको कारणते बिना नकरे तैसेहि समुद्रके जलविषे स्नान १ और दाढीका कटणा गर्भिणीकापति नकरै जेकर करे तां सतानसें रहित होताहै १ इत्यादि स्थानों मे प्रायश्चित्त नहि किहा ॥

तिसजगाभी देशादिकी अपेक्षाकर्के प्रायश्चित्त कल्पनाकरणी (प्रश्ण) जितने निमित्त क्या पाप मनुजीके कहे होएहैं सो सभ प्रायश्चित्त कर्के युक्तहिहैं जैसे (प्राणेति) १०० सउप्राणायाम करणा चाहिए सभना पापांकेदूर करणे वास्ते उपपातकांदे समूहां वास्ते और अनादिष्ट क्या जिनका प्रायश्चित्त विशेषकर्के नाहि किहा तिनां वास्ते इसकर्के सभका प्रायश्चित्त होचुका है किसकर्के कहतेहोकि आप कल्प लयना ॥ और गौतमजीने भीकिहाहै कि एहि एकाहादि व्रतरूप प्रायश्चित्त आदेश विना जो स्थानहैं तिसजगा विकल्प कर्के कीतेजाण (उत्तर) यद्यपि सभजगा प्रायश्चित्तोपदेश है परंतु सामान्यकर्केहै विशेष कर्के नाहि तिसवास्ते देशकालादिकी

तत्रापिदेशाद्यपेक्षयाप्रायश्चित्तंकल्प्यम् ननुकिंचिदपिनिमित्तजातंमनूक्तं निष्कृतिकमुपलभ्यते प्राणायामशतंकार्यं सर्वपापापनुत्तये उपपातकजाता नामनादिष्टस्यचैवहीत्यनुक्तनिष्कृतिष्वपिप्रायश्चित्तस्यविद्यमानत्वात् गौतमेनाप्येतान्येवानादेशेविकल्पेन क्रियेरन्नित्येकाहादयः प्रतिपादिताः उच्यते । सत्यमस्त्येव सामान्यतःप्रायश्चित्तोपदेशस्तथापि सर्वदेशकाला दीनामपेक्षितत्वादस्त्येवकल्पनावसरः नच हसितादिषु सर्वत्र प्राणायामशतंयुक्तंनिमित्तस्यलघुत्वादतःपापापेक्षया ह्रासः कल्पनीयः प्रायश्चित्तांतरंवा॥ ननु कथंपापस्यलघुत्वं येनप्रायश्चित्तस्य ह्रासस्यवाकल्पनास्यात् नचप्रायश्चित्ताल्पत्वादितिवाच्यम् अनुक्तनिष्कृतित्वादितिचेत्

अपेक्षाहोणेते कल्पनाकरणीआवश्यकहै एहिअर्थ स्पष्टकरीदाहै नचेति जेडे पिच्छे हसितादिपाप कहेहैं तिनां सभनांविषे १०० प्राणायाम उचित नहि क्योंकि निमित्तको लघुहोणेतें इसकारणते पापकी अपेक्षाकर्के १०० सउप्राणायामको थोडा करणा होगा अथवा कोई और प्रायश्चित्त कल्पनाकरणाहोगा (प्रश्ण)किसतर्हां पाप छोटाजानणा जिसकर्के १००सउका और प्रायश्चित्तका ह्रास क्या अल्पत्वकीकल्पनाहोवे जेकर कहो कि थोडा प्रायश्चित्तदेखणेकर्के मलूमहुंदाहै ऐसा मत कहणा कि इसजगा प्रायश्चित्तका नहि कथनहोणेते ॥ जिसजगा प्रायश्चित्तका उपदेश हि नहि उसजगा किसतर्हां जाणेगे ॥

सत्यमिति (उत्तर) एहआपने सच्च किहाहै तथापि कुछक अर्थवाद क्या प्रशंसाके पढ्ने कहणेते पीछे जाणकर करना और नजाण कर करना और हठकर करणा और विनाहठसे करना इत्यादि विचारसे पापका थोडा वहुत होनेका ज्ञान सुखालाहिहै और तहां सेभी थोडे वहुतेका ज्ञान हुंदाहै इसको कहहैंते तथेति जिसजगा राजदंडका प्रसंगहै तिसतेभी एह प्रतीत होवेगा सो दंड बिधान विधि विषे देख लेना जैसे ब्राह्मणको दुर्वचन पूर्वक दंड उठाणे आदि अपराध विषे अपणी जाति विषे प्राजापत्यादिक कहेहैं तिसमें जद आनुलोम्य कर्के क्या ब्राह्मणादिसे क्षत्रियाणी आदिसे उत्पन्न होयां विषे तिस ब्राह्मणावगूरणादि पापका पूर्वोकसे थोडा देखणेते और मूर्द्धावसिकादियोंने ब्राह्मणां विषे पूर्वोक्त अपराध

सत्यं किंचिदर्थवादसंकीर्त्तनाद्बुद्धिपूर्वाबुद्धिपूर्वानुवंधाद्यपेक्षया चसुवोधएव दोषस्यगुरुलघुभावः तथादंडह्रासवृद्ध्यपेक्षयाच प्रायश्चित्तस्यगुरुलघुभावः सतु दण्डप्रणयनविधौद्रष्टव्यइति यथा ब्राह्मणावगूरणादौ सजातिविषयेप्राजापत्यादिकमुक्तम् तत्र यदानुलोम्येनप्रातिलोम्येन वाऽवगूरणादिक्रियते यदाबामूर्द्धावसिक्तादिभिस्तदादंडस्यतारतम्यदर्शनाद्दोपाल्पत्वमहत्त्वावगमात् प्रायश्चित्तस्यापि गुरुलघुभावः कल्पनीयः । दर्शितश्चदण्डस्यगुरुलघुभावः प्रातिलोम्यापवादेषुद्विगुणास्त्रिगुणोदमइत्यादिनेति ॥ अथप्रायश्चित्तविवेके ॥ प्रायश्चित्तीयतेनर इत्यत्र नरपदोपादानात्सर्वेषां चांडालादीनामपि तद्धर्मप्रदर्शनपूर्वं प्रायश्चित्तं प्रदर्शितम् ॥

विषे वहुत दंडहै इसीसे प्रायश्चित्तमेभी ऐसा देखणेते विचार सुगमहै सो तिसजगा दिखायाहिहै (प्रातिलोम्यापवादेषु) इत्यादि श्लोकों कर्के शूद्रादिसे क्षत्रियाणी आदि विषे उत्पन्न होए अपणेते उच्चजाति वाले विषे अपराधकरें तां तिनांको दूणादंड करणा एह अर्थहै । अब प्रायश्चित्त विवेक ग्रंथमें और विचार लिखाहै सो कहीदाहै विहितके नकरणेसे १ और निंदितके सेवनेसे २ इन्द्रियोंके नरोकणेसे ३ नर प्रायश्चित्तीहुंदाहै इसजगा (नर) आखाकिहाहै ॥ द्विज ॥ ऐसा नहि किहा इसते प्रतीत होया कि चांडालादिकोभी कोई अपना धर्महै और तिसके त्यागणेते तिनोंकोभी प्रायश्चित्त है ॥

सो देवलजीने किहाहै कि अपणी जातिका पोषण करणा १ और सभको प्रणाम करणा २ शीतोष्णादिका सहारणा ३ व्यवहारशुद्ध रक्षणा ४ और किसेका अनादर नहि करना ५ और अपणे सेवकको पालना ६ प्रधानकर्म्मपरिवर्ज्जन क्या उत्तम जातिके योग्य जो कर्म्म तिसका त्यागणा ७ एह चांडालोंके धर्म्मकी हानिहोयां मनुजी प्रायश्चित्त कहतेहैं ब्राह्म णके अर्थ और गौआंके अर्थ जो देह त्यागहै और जेकर चांडाल किसेकी स्त्रीको वावाल कको मारे तां शस्त्रादिके विना अर्थात् अनशनादि कर्के देह त्यागहै एह वाह्य क्या जो वर्णा श्रमते हीन तिनांकी शुद्धिका हेतुहै परंतु इसमे एभी अर्थहै कि जद थोडा अपराधहै तां गो ब्राह्मणके अर्थ देह त्याग करणा क्या देहको समर्प्पण करणा तिनांकी सेवा वास्ते जद सेवा

तद्यथा देवलः॥ स्वजातिपोषणंसर्वप्रणामस्तितिक्षाव्यवहारशुद्धिरपरानव माननंस्वभृत्यपोषणंप्रधानकर्म्मपरिवर्जनमितिचांडालधर्म्मःएतदादिधर्म्म प्रच्युतौ स्वजातिवैमुख्ये प्रायश्चित्तमाहमनुः ॥ ब्राह्मणार्थेगवार्थेवादेहत्या गोऽनुपस्कृतः स्त्रीवालाभ्युपपत्तौचवाह्यानांशुद्धिकारणम् ॥ १ ॥ चाण्डा लादिकर्त्तृकस्त्रीवालादिविपत्तौजायमानायामनुपस्कृतः शस्त्रादिसंभारशू न्योदेहत्यागोगोब्राह्मणरक्षार्थंवाह्यानांवर्णाश्रमहीनानां शुद्धिहेतुः ॥ अत्रा ल्पेऽपराधे गोब्राह्मणकार्य्यार्थे देहत्यागोदेहसमर्पणम् तत्प्रीतौसत्यां तच्छु द्धिरित्यर्थोवसेयः ॥ स्त्रीवालेतिपदंगवादिहिंसोपलक्षणपरम् ॥ अत्रसाधा रणप्रकरणोक्ततीर्थसेवापि पापतारतम्येन योज्या प्रायश्चित्तानंतरंसजा तिभोजनमपि ॥ इतिवर्णाश्रमवाह्यशुद्धिहेतुप्रायश्चित्तम् ॥ ❀ किंतुकालमवे क्ष्यप्रायश्चित्तंदातव्यमित्यत्रेदमपिचिन्तनीयम् पूर्वोक्तसंसर्गादिप्रायश्चित्तं प्रायोयुगान्तरयोग्यमेव तस्याधुनाकलौसंकोचःकर्त्तव्यः ॥

कर्के सो प्रसन्न होणगे तां शुद्ध होवेगा ऐसा जानणा १ और स्त्रीबाल पद गवादिके मारणेका उपलक्षणहै अर्थात् तिनांके मारणेमेंभी पूर्वोक्त प्रायश्चित्त करणा इसजगा साधारण प्रकरणमे किहा जो तीर्थ सेवनादि सोभी पापकी न्यूनता वा अधिकता देखकर जोडने और जद प्रा यश्चित्त हो जावे तां पीछे सजातियोंको भोजन देणा एह वर्णाश्रमते हीन जो लोकहैं तिनकी शुद्धि करने वाला प्रायश्चित्त पूराहोआ ❀ अब और विचार करतेहैं किंचेति कालको देखक र प्रायश्चित्तदेणा इसमे एभीविचार है कि जेडा पिच्छे छोणे का और परंपरा छोणेका प्राय श्चित्त किहाहै सोसभ और युगांमेहै कलियुगमे नहि

क्योंकि जिनके साथ छोकर प्रायश्चित्त करणा है सोई कलियुगमें राजा हैं किसप्रकार अथवा कितने वार एकवृक्षकी छाया बिषे बैठ कर अथवा लकडी पर किसे शाखापर एकफरसवाली सभामें और संभाषण करणा क्या तिनके साथ वार्ता करणियां तिसमें संबंधवालाहोकर प्रायश्चित्तकरे इसते ऐसा करणा चाहिए कि साथभोजनमें जलपीणेमें तिनकी स्त्रीके भोगमें और तिनको पढाणेमें और तिनसे पढनेमेंहि प्रायश्चित्त कल्प नाकरना और इनसे होरनां छोटे पापांमें सूर्यादि दर्शन और मध्यममें १०० सउ गायत्रीका जप और उससे जो वडेहैं तिनमें नक्त और स्नान रूप प्रायश्चित्त किहाहै सो महापातकिके संसर्गि प्रकरणमे देखलेना क्योंकि इससमयविषें तिसतहींके संसर्गको अव श्यहोणे तें तैंसे प्रायश्चित्तको कदेभी नहि होणेतें देशकालके देखणेसे और अनुग्रह

यैःसंसृज्यप्रायश्चित्तीयते तएव यत्र राजानः कथंकतिवारान्वातत्रैकवृक्ष च्छायादौ एकशाखादावेकवस्त्रास्तृतसभादौ संभाषणादिप्रवृत्तौ संसर्गी भूत्वा प्रायश्चित्तंकुर्य्यादतस्तत्र सहभोजनपानयौनादौ सत्येव प्रायश्चि त्तंकल्प्यम् एतदतिरिक्तसंसर्गेलघौ सूर्य्यादिदर्शनंमध्यमे शतंगायत्रीजपः १००उत्तमेनक्तं स्नानं चेति महापातकिसंसर्गिप्रकरणेपि द्रष्टव्यम् ॥ सा म्प्रतंतेषांतथाविधस्यन्यूनस्यापिसंसर्गस्यनाप्राप्तत्वात् तथाविधप्रायश्चि त्तस्यकर्त्तुमशक्यतयादेशकालावेक्षणेनानुग्रहस्यशास्त्रानुमतत्वेनाल्पतर प्रायश्चित्तोपदेशस्ययुक्तत्वादेवंचांडालादिधूमयंत्रेण ॥ द्विजात्यादिनाधू मपाने उच्छिष्टभक्षणादौसाक्षात्तच्छब्दानुपादानात्तदुपलक्षणेनैवतत्प्राय श्चित्तोपलंभोभवति यथा अंत्यानांभुक्तशेषंतुभक्षयित्वाद्विजातयःचान्द्रंकृ च्छ्रंतदर्द्धंचब्रह्मक्षत्रविशांविधिरित्यापस्तंबीयेभुक्तशेषंधूमयंत्रोपभुक्तिशेषो पलक्षणम् अत्रक्षत्रियविशोःकृच्छ्रतदर्धविधानंतदापादिवलात्कारादन्नेतर ताम्बूलाद्युच्छिष्टपरमितिप्रायश्चित्तकदंबः अत्रादिनातदुच्छिष्टधूमोगृह्यते

करणेसें शास्त्रकी संमतिसें प्रायश्चित्तोपदेशको युक्तहोणेतें ॥ इसी प्रकार चांडालादिके धूमयंत्र कर्के द्विजात्यादिके धूमपानविषें अर्थात् तमाकूके पीणे विषे उच्छिष्ट भक्षणादि विषें साक्षात् कोईतिसका वाचकपद नहि लभदा तथापि उपलक्षण विधानसेंक्या चांडालादिका जूठाजा णकरके प्रायश्चित्त देणाचाहिए ॥ जैसे नीचांके भुक्तशेष कों क्या जूठेको द्विजाति खाकर वा ह्मण चांद्रायण करे क्षत्री प्राजापत्यकरे वैश्य अर्द्धकृच्छ्रकरेतां शुद्ध हुंदाहै एहआपस्तंवजीका वचनहै भुक्तशेषपद झारी नरेले आदिका बोधकहै अत्रेति इसजगा क्षत्रिय वैश्यको कृच्छ्रका और तिसके अर्द्धका जो विधानहै सो आपत्ति विषेक्या किसेकेशविषे अथवा वलत्कारतो अन्नसे विना तांबूलादि जूठेके भक्षणके विधान विषे जानणा एह प्रायश्चित्तकदंबविषेलिख याहै इसमें आदिशब्दतें जूठे धूमकाभी ग्रहण करना

उौर जगानकहणेते एहकामवामेहे विनाकामनाते अद्दाजानणा सोई अंगिराजीने किहाहे चांडाल पतितादिओंके जूठेखाणेविषे ब्राह्मण चांद्रायणकरे और क्षत्रीसांतपनकरे औरवैश्यको६रात्रका और शूद्रको तिन्ना३रातांका व्रतकिहाहै १ इसमे सांतपनकर्के महासांतपन समझणा वहुत पाप होणेते इहांभी अन्नपद धूमका उपलक्षणहै भोजनभी जोउदरमें चलाजावे सोजानणा मुखप्रवेश मात्रनहि जानणा तिसविषेभी वहुतवार करणेमे जानणा एकवार करणेमे लघुकृच्छ्रकी विधिहै यत्रोक्तं) इस उशनाजीके वचनसे १ इसका अर्थ पीछे होचुकाहै इसमे कुछ और पराशरजी कहतेहैं भांडेति नीचांके भांडे विषे जो जल १ दही २ दुध ३ है इसको ब्राह्मण क्षत्री वैश्य

अन्यत्रानुक्तत्वादिदंकामतःअकामतस्त्वर्द्धम् तथांगिराअपि चांडालपति तादीनामुच्छिष्टान्नस्यभोजने चांद्रायणंचरेद्विप्रः क्षत्रःसांतपनंचरेत् षड्रात्रंच त्रिरात्रंचवर्णयोरनुपूर्वशइति १ सांतपनमत्रमहासांतपनंद्रष्टव्यम् अत्राप्यन्न पदंधूमोपलक्षणम् भोजनंचगलाधोदेशसंयोगानुकूलव्यापारएव इदमभ्या सविषयम् सकृद्विषयेतुलघुकृच्छ्रं यत्रोक्तंयत्रवानोक्तमिहपातकनाशनम् प्राजापत्येनशुद्ध्येतेत्युशनस्सामान्यप्रायश्चित्तस्मरणात् किंच पराशरः भांडस्थमंत्यजानांतुजलंदधिपयःपिबेत् ब्राह्मणःक्षत्रियोवैश्यःशूद्रश्चैवप्र मादतः १ ब्रह्मकूर्चोपवासेनद्विजातीनांतुनिष्कृतिः शूद्रस्यचोपवासेनतथादा नेनशक्तितः २ इत्यत्रापिभांडपदंधूमयंत्रोपलक्षणम् ॥ जलंधूमोपलक्षणंबो ध्यम् ॥ प्रायश्चित्तस्योचितत्वादन्यत्रानुक्तत्वाच्च ॥ किंच साधारणप्रकरणे विश्वामित्रः कृच्छ्रचान्द्रायणादीनिशुच्यभ्युदयकारणम् प्रकाशेचरहस्येचअ नुक्तेसंशयेस्फुटे १

शूद्र भुलकरपीवे १ तांतिन्नावर्णाको ब्रह्मकूर्चके साथ उपवासकर्के शुद्धिहुंदीहै औरशूद्रकोदानके साथ उपवास कर्के हुंदीहै ॥ २ ॥ इसजगाभी भांडपद धूमयंत्रका उपलक्षणहै और जल धूमका उपलक्षणक्यावोधकहै क्योंकिप्रायश्चित्तको उचितहोणेतें और दूसरी जगा नाहि कथनतें ॥ कुछ होर कहते हैं किंचेति साधारण प्रकरणमे विश्वामित्रजीका वचनहै कृच्छ्र चांद्रायणते लेकर जोव्रतहैं सोसभ पवित्रताके और अभ्युदयके क्यावृद्धिके कारणहैं प्रकाशविषे क्या जोसभको विदितहोवे तिसके प्रायश्चित्त विषे और रहस्य विषे और अनुक्त प्रायश्चित्तविषे और जिसमे संशयहै तिसमे और स्फुटक्या जिसपापका निर्णय होचुकाहै ॥ १

तिसमें प्राजापत्य इत्यादि १२ वारां व्रतहैं एहसभ इकट्ठे अथवा जुदे जुदे इकपापमें० इकप्रा० अथवा दो तिन आदिपापमें एकप्रा०सवनांपातकांविषे और उपपापांविषे ॥ ४ ॥ चांद्रायणकर्के युक्त होएहोए करनेयोग्यहैं अथवा विना चांद्रायणके करणेयोग्यहैं चांद्रायणके भेदकहतेहैं शिशिवाति शिशुचां.१ यति.२यव.३ पिपीलका. ४ और उपवासादि ७ एहसभ शुद्धि फलकी इच्छावालेने करनेचाहिए उपपातकादि सभना पापांके दूरकरणेकी इच्छावालयांने ७ प्रकाशविषे अप्रकाशविषे पापिके अभिप्रायको जाणकरके और जाति शक्ति गुणानुं देखकर्के एकवार दोवारको जाण कर्के ॥ ८ ॥ और अनुवंधादिको देखकर्के सभएह प्रायश्चित्त यथाक्रम कर्के करे ॥

प्राजापत्यः सांतपनः शिशुकृच्छ्रःपराककः अतिकृच्छ्रः पर्णकृच्छ्रः सौम्यकृच्छ्रोऽतिकृच्छ्रकः २ महासांतपनःसिद्धैतप्तकृच्छ्रस्तुयावकः जपोपवासकृच्छ्रस्तुब्रह्मकूर्चस्तुशोधकः ३ एतेव्यस्ताःसमस्तावाप्रत्येकद्वेकशोऽपिवा पातकादिषुसर्वेषुउपवासेषुयत्नतः ॥ ४ ॥ कार्याश्चान्द्रायणैर्युक्ताःकेवलावाविशुद्धये शिशुचान्द्रायणंप्रोक्तंयतिचान्द्रायणंतथा ॥ ५ ॥ यवमध्यंतथाप्रोक्तं तथापैपीलिकाकृतिः उपवासस्त्रिरात्रंवामासः पक्षस्तदर्द्धकम् ६ षडहोद्वादशाहानिकार्य्यंशुद्धिफलार्थिना उपपातकयुक्तानामनादिष्टस्यचैवहि ७ प्रकाशेवाऽप्रकाशेवाअभिसंध्याद्यपेक्षया जातिशक्तिगुणान्दृष्ट्वाअसकृद्द्विः कृतंतथा८अनुवंधादिकंदृष्ट्वासर्वेकार्य्यं यथाक्रममिति एपुपक्षेषुजातिशक्तिगुणावस्थाद्यपेक्षयाविषयविभागोवसेयः ॥ इतिचंडालाद्युच्छिष्टधूमपानप्रायश्चित्तम् ❀ क्षुद्रजन्तुवधप्रा- उपपातकप्रकरणेहिंसाप्रसंगेऽवगंतव्यम् ॥ इतिश्रीमन्महाराजाधिराजजम्बूकाश्मीराद्यनेकदेशाधीशप्रभुवररणवीरसिंहाज्ञप्तसारस्वतपंडितदेवीदत्तसुतपंण्डितगंगारामसंगृहीतिपञ्चविषयात्मकप्रतिरूपके धर्म्मशास्त्रमहानिवन्धे प्रायश्चित्तभागेजातिभ्रंशकर. संकरीकरण.अपात्रीकरण ❀ मलिनीकरण. प्रकीर्णकानिपंचप्रकरणानि ७ ८ ९ १० ११ ॥❀॥

एह चांडालादिकर्के जूठा धूआं तिसके पीणेका प्रायश्चित्त पूराहोया ❀ । होर निक्के जीवांके मारणेका प्रा० उपपातक प्रकरणमें हिंसाके प्रसंगविषे देखलेना ॥ ❀ ॥ एहश्रीराजाधि राज रणवीर सिंह जीकी आज्ञासे पंडितवरसारस्वत देवीदत्तजीके पुत्र पंडित गंगारामने संग्रहकी तेहोएधर्म्मशास्त्रके ग्रंथके प्रायश्चित्त भागविषे जातिभ्रंशादि ४ और प्रकीर्णक प्रकरण पूराहोआ ॥ ४ ॥ शुभं भूयात् ॥ ॥ ७ । ८ । ९ । ०१ ११ ॥

॥ प्रकीर्णकप्रकरणसूचीपत्रमिदम् ॥

षष्ठप्रकरणशुद्धिपत्रम्

पृ०	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
१६४	मू०५	स्तार्थे	स्तीर्थे
१६४	टी०५	त्रिर्हावि	त्रिर्हवि
१६७	मू० १	ष्वंपि	ष्वपि
१६८	मू०२	हहते	दहते
१७०	टी०३	आति	आर्ति
१७२	मू०३	तिष्ठद	तिष्टद

पृ०	प	अशुद्ध	शुद्ध
१७३	मू०६	नृश्यति	नश्यति
१७३	मू०७	ष्णोन्	ष्णोर्न
१७३	टी०७	पजया	पूजया
१७४	टी०२	मनकं	मनके
१७४	टी०५	नमस्कर	नमस्कार
१७५	टी०५	अदिशव्दने	अपिशव्दतें
१७५	मू०१	निमज्य	निमज्ज्य
१७६	टी०७	वर्प	वर्ष
१७६	टी०८	औरविच्छेद	औरविनाविच्छेदसे
१७७	टी०६	तियोजोए	तियोजिए
१७८	टी०७	तासि	तीस
१७८	टी०५	तीनों	तिनों
१७८	मू०५	जंम्बू	जम्बू
१८४	टी०१	देवैं	देवे
१९०	टी०१	ब्रके	ब्रतके
१९०	टी०७	वेगा	वेगासो
१९२	मू०८	विपम्	विषयम्
१९७	मू०१	कशे	कश
१९९	मू०२	आः	आह
२००	मू०१	तेर	तर
२१०	मू०५	तीयामग्रेत्रुटी०	विष्णोःकर्माणीतितृतीयां
२१४	मू०८	तिष्ट	तिष्टे
२१७	मू०९	तत्मज	तात्मज
२१७	टी०२	ब्राह्म	ब्रह्म
२२०	मू०१०	ततर	तरे
२३३	मू०८	कूत्र	कुत्र

पृ०	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
२३७	मू १	चिशत्त	श्चित्त
२५६	मू ४	स्पृट्वा	स्पृष्ट्वा

॥ व्रतादिप्रकरणेयत्रयत्रमंत्रप्रतीकानिकृतानितत्पूर्त्यर्थंमंत्रसंग्रहोलिख्यते ॥

पृ०	पं०	प्रतीक	
१५	१	हिरण्यति	हिरण्यवर्णाः शुचयः पावकायासुयातः सवितायास्वग्निया अग्निंगर्भंदधिरे सुवर्णास्तानआपःसंस्योनाभवंतु ॥ १ ॥
१९	७	देवकृतस्येति	देवकृतस्यैनसोवयजनमसिमनुष्यकृतस्यै नसोवयजनमसिपितृकृतस्यैनसोवयजनमस्यात्मकृतस्यैनसोवयजनमस्येनसऽएनसोवयजनमासि यच्चाहमेनोविद्वांश्चकारयच्चाविद्वांस्तस्यसर्वस्यैनसोवयजनमासि य० सं० अ०८
१९	७	तरत्समिति	तरत्समंदीधावतिधारासुतस्यांधसः तरत्समंदाधावति
६१	२	त्र्यंबकइति	त्र्यंबकंयजामहेसुगंधिंपुष्टिवर्धनम् उर्वारुकमिवबंधनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् ॥
१३०	३	मानस्तोकेति	मानस्तोकेतनयेमानऽ आयुषिमानोगोषुमानोऽअश्वेषुरीरिषः मानोवीरान्रुद्रभामिनोवधीर्हविष्मंतःसदमित्वाहवामहे ॥

१४० २ संतेपयांसि संतेपयांसिसमुयंतुवाजाःसंवृष्ण्यान्यभिमातिषाहः आप्यायमानोअमृतायसोमदिविश्रवांस्युत्तमानिधिष्व

१४५ ११ यतइति यतऽइंद्रभयामहेततोनोअभयंकृधि मघवांछग्धितवतन्नऊतिभि विद्विषोविमृधोजहि ॥

१४६ १ शन्नइति शन्नइंद्राग्नीभवतामवोभिःशन्नइंद्रावरुणारातहव्या शमिंद्रासोमासुवितायसंयोःशन्नइंद्रापूषणावाजसातौ ॥

१४६ १ पुनंतुमामिति पुनंतुमादेवजनाःपुनंतुमनसाधियः पुनंतुविश्वाभूतानिजातवेदःपुनाहिमां

१६६ ४ अवतइति अवतेहेडोवरुणनमोभिरवयज्ञेभिरीमहेहविर्भिःक्षयंनस्मभ्यमसुरप्रचेताराजन्ननांसिशिश्रथःकृतानि

२१० ५ विष्णोरिति विष्णोःकर्माणिपश्यतयतोव्रतानिपस्पशे इंद्रस्ययुज्यःसखा ॥

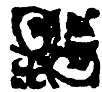
२१५ ३ इमंमेति इमंमेवरुणश्रुधीहवमद्याचमृडय त्वामवस्युराचके ॥

३ उदुत्तममिति उदुत्तमंवरुणपाशमस्मदवाधमं विमध्यमंश्रयाथाय अथावयमादित्यव्रतेतवानागसोअदितयेस्याम ॥

२७० २ धाम्नोधाम्नइति धाम्नोधाम्नोराजन्नितोवरुणमुंचनयदापोअघ्न्याइतिवरुणेतिशपामहेततोवरुणनोमुंच

॥ दोहा ॥

रामचंद्रकरुणानिधिभक्तलोकउरधार
महाराजरणवीरके सभकारजसुधयार
॥ १ महाराजरणवीरसिंहदूसरोहैं हर
नाम इसवलसे शोधनकरे जुपंढत गं
गाराम ॥ २ ॥



स्वत इत्यादि श्लोक पिच्छे आगिआहै इसको स्मरण करलेणा ॥ अब श्रीरमंगला चरणकहेंहैं नत्वेति मैं कवि गंगाराम शर्माने प्रायश्चित्त शब्दार्थ कथन १ और तिसकी प्रशंसा २ और सभाका विधान ३ और कर्म्मविपाक ४ और व्रतविधि ५ और तिसके आगे जाति भ्रंशकरा दिछे प्रकरण कहकर इसके अनंतर पापोंके विषे जो उपपातक पाप हैं तिनांकी संख्या क्या गणना और तिनके दूर करणे वास्ते प्रायश्चित्त कहीदा है क्या कर्के लक्ष्मी कर्के युक्त जो रामचंद्र तिनांके चरण कमल नूं नमस्कार कर्के कैसे चरणकमल हैं श्री क्या संपत्ति और सिद्धि और सर्वत्र प्रसरणशीलाबुद्धि तिसके देण वाले हैं और जम्बूद्वीपकी न्याई प्रसिद्ध जो जम्बूराजधानी तिसके बहुत प्रताप युक्त श्री स्वामी रणवीरसिंह नृपति जीकी प्रकट आज्ञाकों ले कर्के ॥ चपुनः क्या कर्के उपपातकांके और तिनके प्रायश्चित्तोंके अधिकारकों संग्रह कर्के अर्थात् तिसके प्रतिपादक अनेक ग्रंथोंको देख कर्के ॥ कैसी उह संख्याहै मनुसें ले कर्के जो धर्म्मशास्त्री तिनांनें अंगीकार कीतीहै १ अब आगे महापातक प्रकरण विषे कहणी जो हैं पाप गणना तिसविषें जाति भ्रंशकरसें आदलेकर छेमे स्थानविषे आएहोए उपपातकके कथन

ओंश्रीगणेशायनमः स्वतोमित्वातस्वमित्यादि०नत्वाश्रीरघुनाथपादवनजं श्रीसिद्धिबुद्धिप्रदं जम्बूनाथमहानुभावनृपतेराज्ञांनिधायस्फुटाम् पापा नामुपपापभेदगणनांमन्वादिभिःस्वीकृतां प्रायश्चित्तमथोवदामिनितरां संगृह्यतत्प्रक्रियाः १ अथवक्ष्यमाणजातिभ्रंशकरादिपापगणनयापष्ठमु पपातकमभिधास्यमानेनप्रथमंतद्गणनोच्यते॥तत्रमनुः॥ गोवधोऽयाज्यसं याज्यपारदार्य्यात्मविक्रयाःगुरुमातृपितृत्यागःस्वाध्यायाग्न्योः सुतस्यच १

करणे वास्ते प्रथम तिसकी गणना कहीदीहै तिसविषें मनुजीका वाक्यहै गोवध इत्यादि॥ ...का अर्थ भिन्न २ कर्के किहाजावेगा अब क्रमकर्के इनकानामार्थकहतेहां ॥ गोवध नाम उसकाहै कि जो गौके देहका वध क्या शस्त्रादि कर्के नाश करणा अर्थात् पाषाणादि प्रहार मात्रका नाम गोवध नाहिं जानणा १ और नाहिं यज्ञ करवाणे योग्य जो जाति कर्के दुष्ट और कर्म्मोंकर्कै दुष्ट शूद्र और व्रात्यक्या संस्कारतें रहित इनांतें लेकर जो हैं तिनांको यज्ञ करवाणा अर्थात् शूद्रादितें समंत्रश्राद्ध सोम यागादि करवाणे परंतु इसमें इस बातका विचार रक्षणा कि शूद्र भी दो प्रकारका होताहै इक सच्छूद्र और दूसरा असच्छूद्र तिसमें सच्छूद्रसें याग कराणेका दोष नहिहै एह विचार आगे तिनके निरूपण विषे आवेगा २ और पारदार्य्य क्या परस्त्रीका संभोग एह जो परस्त्रीका संभोगहै सो गुरुकी स्त्रीतें और तिसके तुल्य पापतें भिन्न जानणा। गुरुस्त्रीके संभोगकों महापातक कहीदाहै और तिसके तुल्य पापकों अनुपातक कहीदाहै ३

आत्मविक्रयःक्या पहलां धनको लेकर्के पीछे तिसका दास्य कर्म्म करणा अर्थात् तिसके दासहो कर्के रहणा परन्तु एह आत्मविक्रय किसे द्यूतादि व्यसन पूर्वक होवे तद दोषहै इस विषे याज्ञवल्क्यजीका वचनहै व्यसनेति ४ और गुरु और माता और पिता इनांका त्याग अर्थात् सेवा न करणी अथवा पापतें रहित भीहैं तथापि तिनांको अपणे घरतें बाहर कर देणा ॥ इस जगा याज्ञवल्क्यजीने पितृमातृसुतत्याग ऐसा पाठ किहाहै सो इसमें सुतत्याग अधिकहै और गुरुका बोध पितृपदसें हि जाणयाहै इस कर्के एह तीन उपपातक हैं ७ स्वाध्यायेति स्वाध्याय क्या पड़े होए वेदका किसे कारण तें कुटुंबादिके पालनादि कर्के व्याकुल होणेतें

परिवित्तिताऽनुजेनूढेपरिवेदनमेवच तयोर्दानंचकन्यायास्तयोरेवचयाजनम् २ कन्यायादूषणंचैव वार्द्धुष्यंव्रतलोपनम् तडागारामदाराणामपत्यस्यचविक्रयः ३ व्रात्यतावांधवत्यागोभृत्याध्यापनमेवच भृताच्चाध्ययनादानमपण्यानांचविक्रयः ४ सर्वाकरेष्वधीकारोमहायंत्रप्रवर्त्तनम् हिंसौषधीनांस्त्र्याजीवोऽभिचारोमूलकर्म्मच ५ इन्धनार्थमशुष्काणांद्रुमाणामवपातनम् आत्मार्थंचक्रियारंभोनिंदितान्नादनंतथा ६ अनाहिताग्नितास्तेयमृणानामनपाक्रिया असच्छास्त्राधिगमनंकौशीलव्यस्यचक्रिया ७ धान्यकुप्यपशुस्तेयंमद्यपस्त्रीनिषेवणम् स्त्रीशूद्रविट्क्षत्रवधोनास्तिक्यंचोपपातकम् ८ अर्थः गोवधोगोपिण्डव्यापादनम् १ अयाज्यानांजातिदुष्टकर्म्मदुष्टानां शूद्रव्रात्यादीनां संयाज्यंयाजनम् २ पारदार्य्यंपरस्त्रीसंभोगः इदंचगुरुतल्पतत्समव्यतिरेकेणवोध्यम् ३ आत्मविक्रयोद्रव्यग्रहणेनपरदास्याचरणम् अयंचव्यसनान्यात्मविक्रयइत्यादियाज्ञवल्क्योक्तव्यसनपूर्वकोवोध्यः ४ गुरुमातृपितृणांत्यागःशुश्रूषाद्यकरणं वाऽपतितानांतेषांगृहान्निष्कासनम् याज्ञवल्क्यस्मरणेतु पितृमातृसुतत्यागइतिपाठः ७ स्वाध्यायाग्न्योःसुतस्यचत्यागः॥ सर्वदाब्रह्मयज्ञत्यागो नवेदविस्मरणं ब्रह्मोज्झतेत्यनेनोक्तत्वात् ८ अग्नीनांश्रौतस्मार्त्तानांत्यागःअग्नेः स्मार्त्तस्य त्यागोन श्रौतस्य अग्निहोत्र्यपविद्धाग्नीनित्यादिनोक्तत्वादितिव्याख्याता ॥ ९ ॥ सुतत्यागस्संस्कारभरणाद्यकरणम् १०

अथवा सच्छास्त्र जो हैं व्याकरणादि तिनके परिचयते त्याग करणा ॥ और जो अनुपातकोंकी गणनामें वेदका त्यागहै सोभी स्वाध्यायत्याग है परंतु सो असच्छास्त्रके परिचय निमित्त कर्के जानणा अधिक दोषहोणेतें ८ अग्नीनामिति अग्नि जो श्रौत क्या गार्हपत्य आहवनीय दक्षिणाग्नि और स्मार्त्त जो आवसत्थ्यादि तिनांकात्यागकरणा इसमें कुल्लूकभट्टजीकहतेहैं कि स्मार्त्ताग्निका परित्यागउपपातकहै औरश्रौताग्नि त्यागनाहि सो अनुपातकहै ९ और सुतत्यागक्या जो दश संस्कार जातकर्म्मादि और भरण क्या पालनादि तिनांका न करणा १०

कनीति और छोटे भ्राताका वडे भ्राताके विवाहतें पहिले विवाह होवे तो वडे भ्राताकी परिवित्ति संज्ञा कहीहै ११ और छोटेका नाम परिवेत्ताहै १२ और सो जो है दोनों तिनांको कन्या देणी १३ और तिनांदोओंको विवाह होमादि कर्म्म विषे आर्त्विज्य करणा अर्थात् तिनांते विवाहादि करवाणे १५ और कन्याकी योनि विषे मैथुन के विना अंगुली करके दूषण करणा एह अर्थ इस करके कीनाहै कि मैथुन करके जो कन्या दूषणहै तिसको महापातकमें गणनाहै सो मैथुनभी (रेतःसेकः) इत्यादि वचन तें वीर्य्यपात पर्य्यंत जाणना अव कन्यादूषणका और निमित्त कहतेहैं । कि तूं नहिं कन्या तूं मैथुन करणे योग्यहै ऐसे वचनकर्के भी कन्या दूषण होताहै एह पापभी सोम विक्रय और कृतघ्नतादि काभी उपलक्षण है सो प्रायश्चित्त निरूपण विषे कहेंगे १६ वार्द्धुष्य कया प्रतिषिद्ध वृद्धि करके

कनीयसआदौविवाहेज्येष्ठस्यपरिवित्तित्वंभवति ॥ ११ ॥ कनिष्ठस्यपरिवेत्तृत्वंभवति ॥ १२ ॥ तयोः परिवित्तिपरिवेत्रोः कन्यायादानम् ॥ १४ तयोरेवविवाहहोमादियागेष्वार्त्विज्यम् १५ कन्यायामैथुनंविनांगुल्यादिनादूषणं रेतःसेकपर्य्यंतं मैथुनेपुरेतःसेकःकुमारीपुस्वयोनिष्वित्यादिनामहापातकेषुगणनात् त्वंनकन्याकिंतुमैथुनार्हेत्युक्तिर्वाइदंचसोमविक्रयकृतघ्नताद्युपलक्षणं तच्चतत्प्रायश्चित्तनिरूपणावसरेनिरूपयिष्यते १६ वार्द्धुष्यंप्रतिषिद्धवृद्धिजीवनम् मुद्रिकाशतएदानेसवंधकावंधकविभागशः सपादमुद्रिकाधिकंद्विकाधिकंवाप्रतिषिद्धवृद्धिः १७ व्रतलोपनम् ॥ ब्रह्मचारिणःस्त्रीसंगः १८ तडागोद्यानभार्य्यापत्यानांविक्रयः २२ यथाकालमनुपनयनंव्रात्यता तथाचोक्तम् ॥ अतऊर्ध्वंत्रयोप्येतेयथाकालमसंस्कृता इति व्रात्यता असोमयाजित्वमित्यपिकेचित् २३

जीविका करणी प्रतिषिद्ध वृद्धि उसको कहतेहैं कि जो गहणा रक्षणें वालेतें १ ।) सवा रुपैया सैकडेतें अधिक होवें और विना गहणेतें २) दोरुपैए सैकडेतें अधिक होवे । जेकर इतनी होवे तद दोष नहिंहै १७ व्रतेति व्रत लोपन उसको कहतेहैं कि ब्रह्मचारीने स्त्रीसंग करणा १८ और तलाओ और वाग और स्त्री और पुत्र इनांका वेचणा २२ यथाकाल कया ब्राह्मणको गर्भस्थितितें अष्टमें ८ वर्षतें लेके सोलमें १६ वर्ष तक और क्षत्रीकोंगर्भतें यारमें ११ वर्ष तें वाईस २२ वर्ष तक और वैश्यको गर्भस्थितितें वारमे १२ वर्षतें लय के चौवी २४ वर्ष पर्य्यंत यज्ञोपवीतका धारण कहाहै । एनां समयां विषे जो ना धारणकरे उस की व्रात्यता कहीहै कि उना समयां तो पीछे ब्राह्मण और क्षत्री और वैश्य तीनांवर्ण संस्कार रहितव्रात्यकहेहैं और कोईकऋषिकहतेहैं किजो सोमयज्ञ नहिंकरणा तिसकानामव्रात्यताहै २३

वान्धवेति वान्धवत्याग क्या पिताका भ्राता और माता का भ्राता इनांते लेकर्के जो संबंधि. यांका त्याग करणा धनके होयां२ भी ना रखणा २४ भृत्येति भृत्याध्यापन क्या मजूरी ले कर्के नौकर होकर शिष्यकों पडाणा २५ और पंडितकों नौकर रखकें पडना इसमें एहवि चारहै कि पडन वाला ऐसा अपने चित्तमें जानताहै कि में मजूरी देकें पडताहां और पंडित जानताहै कि मैं मजूरी लेके पडाताहां इनां दोआं के पठनमें कोई परमार्थ बुद्धि नहिं इसक र्के दोषहै २६ अपेति और अपण्य क्या नहिंवेचणेके योग्य लूण और तिलांते लेकर अन्न वा रस तिनांका वेचणा परंतु इसमें यथायोग्यता कर्के दोष है जैसें ब्राह्मणको रसविक्रय है ऐसे और भी जानणे २७ सर्वेति सुवर्णते आदलेके जो धातु तिनांकीयां जा खाणा उत्प त्तिस्थान तिनां विषे राजा की आज्ञा लेके जो अधिकार होणा २८ महेति महायंत्र जो हैं इ

वान्धवत्यागःवान्धवानांपितृव्यमातुलादीनांत्यागःसतिविभवेऽपरिरक्षणम् २४ भृत्या- प्रतिनियतवेतनग्रहणपूर्वकमध्यापनम् २५ प्रतिनियतवेतन दानपूर्वकमध्ययनम् २६ अपण्यानांलवणतिलादीनांविक्रयः २७ सर्वा करेषुसुवर्णाद्युत्पत्तिस्थानेषुराजाज्ञयाअधिकारःस्वामित्वं २८ महेतिमहतां यंत्राणांतिलेक्षुपीडाकराणांप्रवर्त्तनं हिंस्रयंत्रप्रवर्त्तनमितियाज्ञवल्कयीयपा ठःप्रवाहप्रतिवन्धहेतूनांसेतुवंधादीनांप्रवर्त्तनम् २९ ओपधीनांजातिमात्रा दीनांहिंसाहिंसनंज्ञानपूर्वकाभ्यासविषयमेतत्प्रायश्चित्तगौरवात्। यत्तूक्त ष्टजानामोषधीनामित्यादिनावक्ष्यतितत्सकृद्धिंसायांवेदितव्यं प्रायश्चित्त लाघवात् ३० स्त्रीतिभार्य्यादिस्त्रीणांवेश्यात्वंकृत्वातल्लब्धधनेनोपजीवनम्। स्त्रीधनेनोपजीवनंवा ३१

क्षुयंत्र और तिलयंत्र इनमें आदलेकरपीडाके स्थान तिनांका स्थापन करणा ॥ इसी कर्के याज्ञ वल्क्य जीने (हिंस्रयंत्र प्रवर्त्तनं) ऐसा पाठ किहाहै इसमें भी ओहि अर्थहै २९ ओषधीनामि ति जो जातिमात्र ओषधिआदि क्या जो अपणे स्थानपर स्थित हैं तिनांका मूलतों लयके पुट्ट णा परंतु जाणकर्के और बहुतवार कर्के एह इनांका प्रायश्चित्तहै क्योंकि वडा होणें तें॥ और इनांका प्रायश्चित आगेभी आवेगा सो थोडाहै उह एकवार हिंसा करणेमें जाणणा ॥ इस वि षें याज्ञवाल्क्य जीने (स्त्रीहिंसौषधिजीवनं) ऐसापाठकिहाहै इसका अर्थ एहहै कि स्त्रीकर्के और हिंसाकर्के और ओषधिकर्के क्या वशीकरण कर्के जीवनहै सो उपपातक जानणा ३० स्त्रीति अपणी स्त्रीकों वेश्या वनायके जो धनका ग्रहण करणा तिसकर्के जीविका करणी वा स्त्रीके धन कर्के जीविका करणी ३१

अभीति और बाजके यज्ञकर्के अपराधतें विनामारणा ३२ मूलेति मंत्र वा औषधी कर्के वश करणा ३३ इन्धनेति गिल्लयां वृक्षांका छेदणा तिसकाप्रयोजन कहतेहैं पाकेति भोजन का जो पकाणा एहहीहै प्रयोजन जिसका प्रयोजन दो प्रकारका है दृष्ट और श्रुत केवल देहके ही सुख वास्ते जो प्रयोजनहै सो दृष्टहै जोपरलोकके सुख वास्तेहै सोश्रुतहै ३४ आत्मेति देवता पितरांके निमित्तों विना जो आपणे वास्तेही अन्नसिद्ध करणा ३५ निन्दीति निंदित जो अन्नहै वा थोम इसतें आद लेकर्के इनांका एकवार इच्छातें विना भक्षण करणा सो उपपात कर्म किहाहै जो इच्छाकर्के इनांका वहुतवार भक्षण करणाहै सो (गर्हितान्नाद्ययोर्जग्धिः) इसवचनते सुरापानके बराबरहोणे कर्के अनुपातकमे किहाहै इसमेविशेष कहतेहैं कि जो योगीश्वरनें किहाहै (निन्दितार्थोपजीवनमिति) इसका अर्थ एहहै राजाकर्के दूरकीती जो उपजी

अभीति श्येनयज्ञेनानपराद्धस्यमारणम् ३२ मूलेतिमंत्रौषधिनावशीकरणम् ३३ इन्धेति अशुष्काणामार्द्राणांवृक्षाणांपाकादिदृष्टप्रयोजनार्थमात्रमवपातनंछेदनम् ३४ आत्मेति स्वस्थस्यदेवपित्राद्युद्देशंविना पाकाद्यनुष्ठानम् ३५ निंदितेति निन्दितान्नस्यलशुनादेःसकृदनिच्छयाभक्षणम् इच्छापूर्वकाभ्यासभक्षणेतुगर्हितान्नाद्ययोर्जग्धिरित्यादिनासुरापानसमीयम् निन्दितार्थोपजीवनमितियोगीश्वरोक्तेऽराजस्थापितार्थोपजीवनमित्यर्थः३६अनेति सत्यधिकारेऽग्न्यनाधानम्। अत्रमिताक्षरा ननुज्योतिष्टोमादिकामश्रुतयः स्वांगभूताग्निनिष्पत्त्यर्थमाधानंप्रयुंजतइतिमीमांसकप्रसिद्धिः अतश्चयस्याग्निभिःप्रयोजनंतस्यतदुपायभूताधानेप्रवृत्तिर्व्रीह्यार्थिनइवधनार्जने यस्यपुनरग्निभिःप्रयोजनंनास्तितस्याप्रवृत्तिरितिकथमनाहिताग्निताद्रोषउच्यते

विका तिसोकर्के जो उपजीविकाकरताहै सो निंदितधनोपजीवीहै जैसें राजानें हटाया जो जूआ और तिसते ही जो उपजीविकाकरताहै सो उपपातकीहै ३६ अनेति अग्निके अधिकार के होयां होयां जो अग्निका ना स्थापन करणा इस विषे मिताक्षराका वाक्यहै (प्रश्ण) नन्विति ज्योतिष्टोमादियज्ञके विधान करणे वालीयां जो कामश्रुतियां हैं सो अपणे अधिकार युक्त अग्निकी सिद्धिवास्ते अग्निके आधाननूं कहतीयांहैं एह मीमांसकांके मतविषे प्रसिद्धहै इसकारणें जिसकों अग्नियां कर्के प्रयोजनहै तिसकों तिनां अग्नियांके उपायभूत स्थापनविषे प्रवृत्ति कहीहै जैसें चांवलांके इकठेकरणे वालेकों धनके इकठे करण विषे प्रयोजनहै और जिसकों अग्नियां कर्के प्रयोजन कुछ नहीं तिसकी अग्निके आधानविषे प्रवृत्ति नहिहै एहप्रसिद्ध लोकवाणीभी है कैसे अनाहिताग्नि दोष किहाहै(उत्तर)

अस्मेति इसीवचनतें अग्निस्थापनको आवश्यक प्रतीतहुंदाहै क्योंकि नित्य कर्मकोयां कहण वालियांजो श्रुतियां सो प्रयोजन कोलयके स्थितहैन विशेषतें रहित अग्नि आधानकीयां प्रयो जकहैन एहस्मृतिकारांका अभिप्रायहै इसकर्के अनाहिताग्नि उपपातकयथार्थहै ॥ इसमै बचन भीहै(वसंतेऽग्नीनाधीत) इस बाक्य कर्के सब पुरुष अग्निकाआधान करण ऐसीआज्ञाहै ३७ स्तेयमिति सुवर्णतेंविना होर सारधनका चुराणा उपपातकहै असारधनका चुराणा अगे कहांगेंधान्यकुप्यइत्यादिकर्के ३८ ऋणेति देवता औरपितर और ऋषिइनांके त्रय जो ऋणहैं तिनांकर्के ऋणवालापुरुषहै तिनां ऋणोंका ना दूरकरणा उपपातकहै चपुनःग्रहणकीतेहोए सुवर्णा दीका नादेणा उपपातकहै ऋणदूरकरणे वास्ते श्रुतिप्रमाणदेतेहैं ऋणैस्त्रिभिरिति ३९ असदिति श्रुति स्मृतितें विरुद्धशास्त्र जो आधुनिक रचेहोए विरुद्धमतवालयोंकेशास्त्र तिनोकापडना अथवा खोटा शास्त्र जो चार्वाकादि क्या प्रत्यक्ष प्रमाणादिबोधक तिसका पडना ४० कौशीति नृत्य

अस्मादेवाधानस्यावश्यकत्ववचनान्नित्यश्रुतयोपिसाधिकाराश्चाविशेषादा धानस्यप्रयोजकाइतिस्मृतिकाराणामभिप्रायोलक्ष्यतइत्यदोषः ३७ स्तेयम् सुवर्णादन्यस्यसारद्रव्यस्यापहरणम् असारापहरणंवक्ष्यते ३८ ऋणानामिति ऋणैस्त्रिभिर्ऋणवान्नरोजायतेतदनपकरणम् गृहीतस्यसुवर्णादेरप्रदानंच ३९ असदिति श्रुतिस्मृतिविरुद्धशास्त्राशिक्षणम्असच्छास्त्रस्यचार्वाकादेरधिगमोवा ४० कौशीति नृत्यगीतवादित्रादेरुपसेवनम् याज्ञवल्क्येतुव्यसनान्यात्मविक्रयइत्यनेनकौशील्व्यंसंगृहीतम् ४१ धान्येति धान्यंव्रीह्यादिकुप्यमसारंत्रपुसीसादिपशवोगवादयःतेषामपहरणम् ४४ मद्येतिद्विजातीनांपीतमद्यायाःस्त्रियागमनम् ४५ स्त्रीतिस्त्रिशूद्रवैश्यक्षत्रियहननम् ४९ नास्तीतिअदृष्टार्थकर्म्माभावबुद्धिः नास्तिपरलोक इत्याद्यभिनिवेशोवा ५०इमानिमनूक्तानियोगीश्वरेणविमानिस्वीकृत्यषड धिकान्यपिपठितानियथाशूद्रप्रेष्यंहीनसख्यंहीनयोनिनिषेवणम् तथैवाना श्रमेवासःपरान्नपरिपुष्टता ॥ शूद्रसेवनम् १ हीनेपुमैत्रीकरणम् २ अनूढ सवर्णदारस्यकेवलंहीनवर्णदारोपसेवनम् साधारणस्त्रीसंभोगश्चेति ॥ ३

और गीत और वादित्रआदिकोंका ग्रहण करणा जो वीणादि और मुरजादि और वंशादि आर कांस्यतालादिहें इनांका इकठा नाम वादित्रहै ॥ याज्ञवल्क्यजीने(व्यसनान्यात्मविक्रयः) इस कर्के कौशीलव्यकाग्रहणकीताहै ४१ धान्येति व्रीहिआदि और कुप्य क्या असारवस्तुलाषसिका आदि पशु गोआदि इनांकाचुराणा ४४ मद्येति ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यइनांनेजिसने मदिरा पीताहो आहै तिसस्त्रीकेसाथ मैथुन करणा ४५ और स्त्री शूद्र वैश्य क्षत्रीका मारणा ४९ नास्तीति क र्मोंका जो फल परलोक विषे होणा तिसविषे अभावबुद्धि क्या कोई फल नहि एहबुद्धि वा स्व र्गादि कोई नहि एह निश्चय होणा ५० एह पंजाहउपपातक मनुजीने कहेहैं योगीश्वरनें इ नांको अंगीकार कर्के छेअधिककहेहैं शूद्रप्रेष्यमित्यादि इनांकाअर्थ किहा जाताहै शूद्रकीसे वाकरणी १ हीनजाति विषे मैत्री करणी २ अपने तुल्य जाति वाली स्त्रीतों विना केवल ही नजाति वाली स्त्रीके साथ विवाह करणा चपुनः साधारण स्त्रीविषे संभोग करणा ३

सत्येति अधिकारके होयां २ गृहस्थादि आश्रमका ना ग्रहण करणा अथवा ब्रह्मचारि गृहस्थादि क्रम कर्के आश्रमका नहिग्रहणकरणा ४ परेति दूसरेके पकाए होए अन्न विषे प्रीति करणी ३ इसमें एह अभिप्रायहै कि जो कोई अन्न पकावे तिसका विना विवेकके भोजन करणा ५ व्रतेति व्रतलोपभी इसविषे अधिकहै इसके समाधानमें तिसजगा दूसरे वार जो व्रतलोपका ग्रहणहै उसमें मिताक्षराकारजी ऐसा कहतेहैं कि किसेने ऐसी प्रतिज्ञा कीत्ती कि ठाकुरजी के दर्शनविना मै भोजन नहीं करांगा एह भी इक व्रत होया सो जद नाहीं कीता तद व्रतलोप होया इसके अर्थ दूसरा व्रतलोपहै ६ इनां कर्के छपुंजा ५६ इपपातकांकेभेद दखाएहैं और

सत्यधिकारेऽगृहीताश्रमत्वम् ४ परपाकरतित्वम् ५ व्रतलोपोऽप्यन्यो धिकस्तत्र मिताक्षरा पुनर्व्रतलोपग्रहणमशिष्टाप्रतिषिद्धेष्वपि श्रीहरिचर णकमलप्रेक्षणात्प्राक्तांबूलादिकं न भक्षयामीत्येवंरूपेषुप्राप्त्यर्थंनतुस्नातक व्रतप्राप्त्यर्थम् तत्रस्नातकव्रतलोपे प्रायश्चित्तंचाभोजनमिति मनुना लघु प्रायश्चित्तत्वस्यप्रतिपादितत्वात् ६ एभिः षट्पंचाशद्भेदाउपपातकाना मितिप्रदर्शितंभवति । प्रायश्चित्तेंदुशेखरे । भार्य्यात्यागःअसत्प्रतिग्रहोपि पठितोऽत्र शूलपाणिनाऽयाज्यसंयाज्येत्यनेनवासत्प्रतिग्रहाध्यापने उ पलक्षणविधया संगृहीते सुतस्यचेत्यत्र चकाराद्भार्य्यात्यागोपिसंगृहीतः किञ्च याज्ञवल्क्येन मिथ्याभिशंसी मिथ्याभिशस्तश्च प्रायश्चित्तेन शो धितोततश्चमतांतरे षष्टिभेदाअवगंतव्याः ६० अथैषांक्रमेणप्रायश्चित्तानि तत्रादौगोवधप्रायश्चित्तम । मनुः। उपपातकसंयुक्तोगोघ्नोमासंयवान्पिवेत् कृतवापोवसेद्गोष्ठेचर्मणातेनसंवृतः १ चतुर्थकालमश्नीयादक्षारलवणंमि तम् गोमूत्रेणचरेत्स्नानंद्वौमासौनियतेंद्रियः २ दिवानुगच्छेद्गास्तास्तुति ष्ठन्नूर्ध्वंरजःपिवेत् शुश्रूषित्वानमस्कृत्यरात्रौवीरासनंवसेत् ३ तिष्ठंतीष्वनु तिष्ठेत्तुव्रजंतीष्वप्यनुव्रजेत् आसीनासुतथासीनोनियतोवीतमत्सरः ४

प्रायश्चित्तेंदुशेखर विषे भार्य्यात्याग और असत्प्रतिग्रहभी किहाहै और शूलपाणिजीने अयाज्य संयाज्यविषे उपलक्षणविधिकर्के असत्प्रतिग्रह और असत्कोंक्या शूद्रादिकों पढानाभीसंग्रह कीताहै और सुतस्यच इस चकारते भार्य्यात्यागभी संग्रहकीताहै किञ्चेति याज्ञवल्क्यजीने मिथ्या भिशंसी क्या तैनें मेरी वस्तु चुराई है ऐसे झूठ कहने वाला उसकोभीप्रायश्चित्तहै और जिसको किहाहै उसकोभी जन्मांतरके दोषकी संभावना तें प्रायश्चित्त दखायाहै ॥ इस कर्के इनां दोआं कोमिलाकर सठ ६० भेद उपपातकां दे निर्णय होएहैं ॥

पीछे कहे जो उपपातक अब उनोंका क्रमकर्के प्रायश्चित्त कथन करतेहां तिसके पहिले गोवधका प्रायश्चित्तहै इसमें मूलकी व्याख्याकोहि व्याख्याहै श्लोकोंकीनहि तिस विषे मनुजीका वाक्यहै ॥ उपेति इसश्लोकतें लेकर अष्ठां ८ श्लोकांतक कुलकहै अनेन विधिना इसश्लोकपर्य्यंत उपपातक एह पद संज्ञाके दखाणे वास्तेहैं जिसने गो घात कीताहै सो पुरुष शिथिल क्या पतला जो यवांदा काढा तिसको प्रथम एक मास क्या महीनापीवे इसमें गोघ्न शब्दका अर्थ शूलपाणिजीने दखायाहै (प्रश्न) गोघाती पदसे उपपातकीपदका अर्थ सिद्धहै फेर (उपपातक संयुक्तः) ऐसा क्यों किहा(उत्तर)जो यज्ञविषे स्थितगोहै तिसके वधकरणे वाला उपपातकी नहिंहै किंतु अनुपातकीहै इसकर्के उपपातकपद किहाहै एहि स्पष्टकर्के मूलमें लिखयाहै ॥ ऐसा गोघाती दाढी और शिरको मुनायके तिसगौके

आतुरामभिशस्तांवाचौरव्याघ्रादिभिर्भयैःपतितांपंकलग्नांवासर्वोपायैर्विमोचयेत् ५ उष्णेवर्षतिशीतेवामारुतेवातिवाभृशम् नकुर्वीतात्मनस्त्राणंगोरकृत्वातुशक्तितः ६ आत्मनोयदिवान्येषांगृहेक्षेत्रेथवाखले भक्षयंतींनकथयेत्पिबंतंचैववत्सकम् ७ अनेनविधिनायस्तुगोघ्नोगामनुगच्छति सगोहत्याकृतंपापंत्रिभिर्मासैर्व्यपोहति ८ उपेत्यष्टभिःकुलकम् । अनेनविधिनायस्त्वितियावत् । गोघ्नोगोघातीशिथिलयवागूरूपेण प्रथममासं यवान्पिबेत् उपपातकेतिसंज्ञाप्रदर्शनार्थम् उपपातकसंयुक्तोगोघ्नोनतुयागादिविहितगोवधकर्त्तापीतिशूलपाणिः । कृतवापःसशिखंमुंडितशिराःलूनश्मश्रुःतेनहतगोचर्मणाछादितदेहोमासत्रयंयावद्गोष्ठेवसेत् १ किंच । नियतेंद्रियः सन्गोमूत्रेणस्नानमाचरेत् अक्षारलवणंकृत्रिमलवणवर्जितं हविष्यान्नंचतुर्थकालं एकाहंभुक्त्वाद्वितीयेहानिसायंद्वितीयतृतीयमासंयावदश्नीयात् २ दिवाप्रातस्तागाअनुगच्छेत् खुरप्रहारादूर्ध्वमुत्थितंरजस्तिष्ठन्सन्नास्वादयेत् शुश्रूषित्वाकंडूयनादिनातागाःपरिचर्य्यप्रणम्यच रात्रौभित्त्यादिकमनुवेष्ट्यउपविष्ट आसीत अहर्निशिष्ठेद्रात्रावासीतेतिस्मृत्यंतरात् । उत्थितस्तुदिवातिष्ठेदुपविष्टस्तथानिशि एतद्वीरासनंनामसर्वकल्मषनाशनमिति १

चर्मको ऊपर लयके त्रय ३ महीनें तकगौवांकीशालाविषे निवासकरे १ किंचेति इन्द्रियांको रोकके स्थितरहे औरगौके मूत्रकर्के स्नानकरे और कृत्रिम लूणतें रहित हविष्यान्नको चौथे पहर एकदिन भक्षणकरे और दूसरे दिन संध्याकाल विषे भक्षणकरे इसीतरां दूसरा तीसरा महीना व्यतीत करे २ दिवेति दिने प्रातः काल विषे गौवांको चारदा होया पीछे जावे और खुरां कर्के उठी जो धूड तिसको स्थित होके स्वाद लेवे और गौवांके खुरका पूजन करे और नमस्कारकरे और रात्रि विषे गौवांकी शालाविषे भित्तको चढाकर स्थित होवे ॥ दिनविषे खडारहे और रात्रिविषे बैठ कर निवास करे एह और स्मृतिविषे किहाहै ॥ उत्थितइति उठकर दिनें स्थित होवे रात्रिविषे बैठ जावे इसका नाम वीरासनहै जो संपूर्ण पापां के नाश करणेवालाहै १

तथेति गौवांके उठयां होयां पीछे उठे और जद वनविषें फिरें तां पीछे पीछे वनविषें फिरे तिनां गौवांके बैठयां होयां पीछे आप बैठे और इन्द्रियोंकों जितकर्के स्थित होवे इसमेंभी छलतें रहित और क्रोधतें रहित होया होया ४ किंचेति और जो रोग कर्के युक्त गौ है अथवा चौर कर्के और व्याघ्रादिभयकर्के युक्त है और जो डिगीहै और जो चिकड विषें खुब्बी है तिनां दुःखां तेंगौवांकी जैसें समर्थाहोवे तैसें हि उपायकर्के रक्षा करे ५ और गौवोंकीसेवाका प्रकार कहतेहें तथेति तिस प्रकार सूर्य के तप्तहोयां होयां और वर्षा विषें और शीतविषें और अतिशयकर्के चलती जो वायुहै तिस विषें प्रथम गौवांकी रक्षा कर्के पीछे अपणी रक्षा करे ६ तैसेंहि अ पणे तें होरणांके घरविषें वा क्षेत्रविषें वा खलवाडे विषें क्षेत्र आदिकों भक्षणकरतीकों किसें ताईं

तथा उत्थितासुगोषुपश्चादुत्तिष्ठेत् वनादौपरिभ्रमंतीषुपश्चात्परिभ्रमेत् तासूपविष्टासूपविशेत् नियतोजितेंद्रियः वीतमत्सरोविगतक्रोधः ४ किंच आतुरांव्याधितांवाचौरव्याघ्रादिभयहेतुभिरभिशस्तामाक्रांतांपतितांकर्दम मग्नांवा यथाशक्तिसर्वोपायैर्विमोचयेत् ५ तथाउष्णेसूर्य्येतपति मेघेच वर्षति वाशीतेजातेसतिवाऽत्यर्थंवायौवातिसति यथाशक्ति गोरक्षामकृत्वा त्मरक्षांनकुर्यात् ६ तथाआत्मनोऽन्येषांवागृहेक्षेत्रे खलेसस्यादिभक्षयन्तींन कथयेत् क्षीरंपिबंतंवत्सकंच अनेनविधिना पूर्वोक्तप्रकारेण यो गोघ्नो गाः परि चरति सगोहत्याकृतं पापंत्रिभिर्मासैर्व्यपोहति अपनुदति ७।८ व्रतांतरद्वयमाहसएव वृषभैकादशकागाश्चदद्यात्सुचरितव्रतः अविद्यमा नेसर्वस्वंवेदविद्भ्योनिवेदयेत् १ वृषभएकादशोयासांतागाःसुचरितव्रतः सम्यक्कृत पूर्वमासोक्तप्रायश्चित्तोदद्यादितिद्वितीयम्

न कहे और दुग्ध पींदा जो वच्छाहै तांभी किसेको न कहे और नआप हटाए ७ इस विधि कर्के पिछले प्रकार कर्के गौवांकी सेवा करता होया सो पुरुष गोहत्याकरणेसें प्राप्त होया जो पाप तिस कों तीन ३ महीनें कर्के दूर कर्ताहै ८ एह गोघ्न इत्यादि कर्के कहे होए श्लोकांकाहीअर्थ कीताहै अब मनुजी और दो व्रत कहतेहैं वृषेति सो उपपातकी वृषहै यारवां ११ जिनां विषें ऐसीयां दश १० गौवां को दान करे कैसा है उपपातकी भलीप्रकार प्रथमकीताहै पूर्वमासोक्त प्रायश्चित्त जिसनें एह दूसरा व्रत किहाहै ॥ १॥

अब होर व्रतकहतेहैं तावेति तितने धनकें ना होयांहोयां जितना अपणे पास धन है सो संपूर्ण, वेदके जानणे वाले जो ब्राह्मण हैं तिनके ताई दे देवे इस विषे भी पूर्वमासोक व्रतकों पहिलेकरलेवे असाजानणा एह तीसरा व्रत किहाहै ३ एह जो त्रय व्रत कहेहैं सो याज्ञवल्क्य कर्के कहे होए जो व्रत मास प्राजापत्य १ और मासपंचगव्याशन २ और वृषहै यारवां जिनां विषे ऐसीयां दस्सां गौवांका दान और साथ त्रिरात्रोपवासरूप व्रत त्रय १ इनां कर्के बराबर हैं एह मिताक्षराकार का वाक्य हैजिसकाएहव्याख्यानहै तिसको अब कथन करतेहैं पंचेति जो पुरुष गोहत्या करणेवाला है सो एक महीना इंद्रियांको रोकके स्थिर होवे

तावतिधनेऽविद्यमानेवेदविद्भ्यः सर्वस्वंदद्यादितितृतीयम्अत्रापिपूर्वमासोक्तव्रतानुवृत्तिः ३ एतच्चव्रतत्रितयंयाज्ञवल्कयीयमासप्राजापत्यमासपंचगव्याशनं ऋषभैकादशगोदानयुक्तत्रिरात्रोपवासरूपव्रतत्रितयेनसमानामितिमिताक्षरा तद्यथा पंचगव्यंपिवेद्गोघ्नोमासमासीतसंयतः गोष्ठेशयोगोनुगामी गोप्रदानेनशुद्ध्यति १ कृच्छ्रंचैवातिकृच्छ्रंचचरेद्वापिसमाहितः दद्यात्त्रिरात्रंचोपोष्यवृषभैकादशास्तुगाः २ गांहंतीतिगोघ्नःअसौसमाहितआसीत किंकुर्वन्पंचतानिगव्यानिगोमूत्रगोमयक्षीरदधिघृतानि यथाविधिमिलितानि मिश्रितानिपिवन् आहारांतरपरित्यागेन भोजनकार्यंतस्यविधानात् तथा गोष्ठेशयः प्राप्तशयनानुवादेन गोष्ठविधानेनदिनेशयननिषेधाद्रात्रौ गोघ्नो गोशालायांशयानः गोनुगामीगवानुगमनव्रतीव्रतेणिनिः अत्रयासांगवांसन्निधौगोष्ठेशेते वनमनुगच्छंतीःप्रातस्ताएवानुगच्छेत् अनुगमनवचनात्

और गो मूत्र और गोमय क्या गोआ और दुग्ध और दधि और घृत एह जो पंचगव्य है इसकोविधिके साथ रलाकर पीवे और कुछ ना भक्षण करे इसतरां एक महीना स्थित रहे जद और तिसीप्रकार गोष्ठेशयः इसवाक्य कर्के एह अभिप्राय हैं कि दिनविषे शयन का निषेध होणेतें रात्रिको गौशाला विषे शयन करे और गोनुगामी क्या गौआंके पीछे वन विषे जावे व्रत कर्के युक्त होया इसमेंभी असाजानणा कि जिनांगौवांके समीप विषे शयन करे सोगौआं वन विषे जाण तां प्रातः काल विषे पीछे जावै जो किहाहै अनुगच्छेत् इस वाक्य कर्के

असी प्रतीति होइहै कि गौआं आपणी इच्छा करके वनकों जाण तां पीछे जावे जद गौआं स्थित होण तां आपवी स्थित होवें क्योंकि तिसमें अनुगमनका संभव नहिहे १ और जद सायं काल विषे गौआं शयन करण वाले स्थान कों प्राप्त होण तां आपभी प्रात होवे और जेकर पीछे गौशाला विषे प्राप्त होणेकी सामर्थ्य न होवे तां वाहर स्थित होवे दरवाजे कों वंदकर्के एह भी इसमें अभिप्राय जानणा ऐसें हो महीने पर्यंन्त करे और महीने के पीछे एक गोदानकरे ऐसें अनुष्ठान करणे कर्के गौ हत्या पापतें शुद्धिको प्राप्त होताहै इह इक व्रत किहाहै यद्वा एक महीना गौशाला विषे शयनकों करता होया और गौआं के पीछे वनविषे फिरता

यदातागच्छंतितदाऽनुगच्छेत् यदात्वनुतिष्ठंत्यासतेवा तदास्वयमपि तिष्ठेदासीतवातत्रानुगमनस्याशक्यत्वादित्यर्थः १ तस्मादेवयदासायंगोष्ठेप्रविशेयुस्तदा ताभिःसह स्वयमपितदनुप्रविशेदित्यपिज्ञायते मासांते गोप्रदानेनएकांगांदत्वाऽनुष्ठानेनगोहत्यायाः शुद्ध्यतीत्येकंव्रतम मासंगोष्ठेशयोगोऽनुगामीतिपदत्रयमनुवर्त्त्य यद्वा मासंगोष्ठेशयोगोनुगामीसन् कृच्छ्रप्राजापत्यंनिरंतरंसमाहितमनोवृत्तिश्चरेदित्यपरम् ॐ जावालेनापि मासंप्राजापत्यस्यपृथक्प्रायश्चित्तत्वमुक्तम् यथाप्राजापत्यंचरेन्मासंगोहंताचेदकामतः गोहितोगोनुगामीस्याद्गोप्रदानेनशुद्ध्यतीद्वितीयम् एवमेवातिकृच्छ्रंचरेदितितृतीयम् अथवात्रिरात्रमुपोष्य

होया और मनकीयां वासनाकों जित कर्के कृच्छ्र नाम जो प्राजापत्य व्रत है तिसकों निरंतरकरें एह और प्रायश्चित्त किहाहै मतांतरदिखातेहैं जावालि ऋषिनें भी एक महीना प्राजापत्यकों करे एह पृथक् प्रायश्चित्त किहाहै तिसका वचन दिखाईदाहै यथेति एक महीना प्राजापत्यकों करे जेकर इच्छातें विना गौको मारे और गौंआं की सेवाकों करदा होया और गौआं के अनुसार पीछे वन विषे जांदा होया नित्य काल ऐसें ही स्थित होकर गौका दानकरे तां गो हत्या पापतें शुद्धिकों प्राप्तहोताहै एहदूसरा व्रत किहाहै और इसी प्रकार अतिकृच्छ्र व्रतकों करे एह तीसरा व्रत है अथवा त्रय दिनरात्र उपवास व्रतकों कर्के

वृषहै याग्वा जिनांविषैऐसीयां गौआंको देवे अर्थात् दश गोआं एक वैल साथदान करे एह चौथा व्रत किहाहै ४ इसविषैजो चौथाव्रत किहाहै सो मनुजीके वाक्य कर्के किहा जो पीछे सर्वस्वदान अर्थात् संपूर्ण धनकादेणा तिसके तुल्य है तिसका विषय दिखातेहैं अकामेति जो जातिमात्र ब्राह्मणहै संध्यावंदनादि कर्म तों रहित तिसकी जो सौशील्यादि गुणोंते रहित गौ तिसके इच्छातें विना वध विषेएह प्रायश्चित्त देखणे योग्यहै और जोब्राह्मण संध्यावन्दनादिकर्मोंकर्केयुक्त है तिसकी जो गुणों कर्के युक्त गौं तिसके वध विषे द्विगुण क्या दूणा प्रायश्चित्त किहाहै और क्षत्रिय संवन्धीजो गुणों कर्के युक्त गौहै तिसके वध विषे पाप के दूरकरणवास्ते महीना पर्यंत पंचगव्यकों भक्षण करे इस मनुजीके वाक्यकर्के किहा होआ जो द्वितीय प्रायश्चित्त तिसके समहै और वैश्यसंबंधी जो गुणों कर्के युक्त गौहै तिसके मारणे विषे एक महीना अतिकृच्छ्र व्रतके करणे सें शुद्ध होताहै

वृषभएकादशोयासांतागादद्यादितिचतुर्थम् अत्रचतुर्थंमानवीयसर्वस्वदानात्मकतुल्यम् अकामकृतेज्ञातिमात्रब्राह्मणस्वामिकगोमात्रवधेद्रष्टव्यं विशिष्टस्वामिकायाविशिष्टगुणवत्याश्चवधेद्विगुणंकल्प्यम् क्षत्रियसंबंधिन्यास्तादृशायागोर्वधेमासपंचगव्याशित्वरूपं मानवीयद्वितीयसमम् वैश्यसंबंधिन्यास्तुताहग्विधेव्यापादने मासातिकृच्छ्रंकुर्यात् शूद्रस्वामिकगोहत्यायांमासप्राजापत्यरूपंमानवीयप्रथमसमम् अत्रपूर्वपूर्वतउत्तरोत्तरस्यलघीयस्त्वंप्रत्याम्नायविधया विज्ञानेश्वरेणोक्तं ततएवावधार्य्यम् ब्राह्मणसंबन्धिद्रव्यस्यगुरुत्वम् देवब्राह्मणराज्ञांतुविज्ञेयंद्रव्यमुत्तममिति नारदोक्तवचनाद्बोध्यम् एतदेवव्रतचतुष्टयम् साक्षात्कर्त्रनुग्राहकप्रयोजकानुमंतृपुगुरुलघुभावतारतम्यापेक्षयापूर्वविषयेप्रयोजनीयम्

और शूद्रकी गौके मारणें विषे एकमहीना प्राजापत्य व्रत कों करे एह मनुजीने किहा जो प्रथम व्रत तिसके तुल्यहै इस विषे ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र इनांको प्रायश्चित्त क्रम कर्के थोडा थोडा किहाहै एह निर्णय पीछे भी आयाहै फेर प्रसंगते किहा है प्रत्याम्नाय क्या परंपरासंप्रदायविधि कर्के अथवा विज्ञानेश्वरजीने कहा है इसकाविशेष उसी जगाते धारणें योग्यहै इसमे बीज एह हैकि ब्राह्मण संबंधि वस्तु सबतें श्रेष्ठ कहीहै सो नारदजीके वाक्य कर्के जानणे योग्य हैं तिसवचनकोंदिखातेहैं देवेति क्या देवता ब्राह्मण राजा एनांका द्रव्य जो है सोउत्तम किहाहै परंतु एह जो गोवधके चार व्रतहं सोंजोंसाक्षात् वधकरणेवालाहै और जोवधकर्के आपा पुरुष तिसका रक्षाकरणवालाऔर जों प्रेरणाकरणवाला और जोवधकरणे विषे युक्तहै तिसको प्रेरणेवाला इनांको गुरुलघुभावकर्के प्रायश्चित्त देणेयोग्यहै पाहिले को संपूर्ण दूसरे को पाद तीसरेको आधा चौथेको एकपाद इस क्रम कर्के जानणा

इसविषे धर्म्मराज जपणे योग्य जो गोमती विद्या तिसको कहताहै गोमतीमिति जोमें धर्म्मरा ज गोमती विद्याको कहताहां तिसको मेरेतें श्रवण करो हेब्राह्मणो मनको एकाग्र करके १ गौआं नित्य सुरभिआं हैं अर्थात् यशवालियांहैण और गुग्गुल धूपकी गंधवालियांहैं अर्थात् तिनके दुग्धादिसें देवताके प्रसन्न करणे वाला गुग्गुलगन्धके तुल्य गंधआउताहै और जीवांकी प्रतिष्ठारूप हैं क्याजिसके घर गौआं होण उसकी अभ्यागतादिके सत्कारसे लोक प्रतिष्ठा कर तेहैं इसीकरके स्वस्त्ययनरूप क्या स्वस्त्ययनसे प्रारब्धकार्य्योंकीयां सहायकहैं २ और देवतयांका उत्तमहवि अन्नरूपभी गौआंहि हयण और सबजीवां को पवित्रकरण वालीयां और रक्षाकरण वालीयां और दुग्धको देणवालीयां और वस्तुओंके पुचाणवालिआंहैन ३ और मंत्रांकरके पवि

अत्रजप्यांगोमतींविद्यांयमआह गोमतींकीर्त्तयिष्यामिसर्वपापप्रणाशिनीं तांतुमेवदतोविप्राः शृणुध्वमुसमाहिताः १ गावःसुरभयोनित्यंगावोगुग्गुल गंधिकाः गावःप्रतिष्ठाभूतानांगावःस्वस्त्ययनंमहत् २ अन्नमेवपरंगावोदे वानांहविरुत्तमम् पावनंसर्वभूतानांरक्षंतिचवहंतिच ३ हविषामंत्रपूतेनत र्पयंत्यमरान्दिवि ऋषीणामग्निहोत्रेषुगावोहोमप्रयोजिकाः ४ सर्वेषामेव भूतानांगावःशरणमुत्तमम् गावःपवित्रंपरमंगावोमंगलमुत्तमम् ५ गावःस्व र्गस्यसोपानंगावोधन्याःसनातनाः नमोगोभ्यःश्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एवच नमोब्रह्मसुताभ्यश्चपवित्राभ्योनमोनमइति ६ अपरार्केवहुकर्तृकेतुह नने संवर्त्तापस्तंवौ विशेषमाहतुः

त्र जो हवि तिसकरके देवतयांकी स्वर्ग विषे तृप्तिकरण वालीयां और ऋषियां को अग्निहोत्र वि षे होमकी प्रवृत्ति कराण वालीयांहैं ४ और संपूर्ण जीवांकी शरण क्या रक्षारूपहैं और परम पवि त्रहयण और मंगलरूप हयण अर्थात् दर्शनसेंभी पुण्यजनकहैं ५ और स्वर्गकी पौडी रूप हय ण सो ऐसीयां गौआं धन्य हयण और सनातनहैं तिनां गौआं ताई नमस्कार होवे जो शोभा करके युक्तहैं और सुरभीकीयां कन्याहैं तिनांताई नमस्कार होवे और जो ब्रह्माकीयां कन्यासर्व या पवित्रहैं तिनाताई नमस्कार होवे नमस्कार होवे एह अधिकआदरविषे पुनरुक्तिहै ६ अपरार्कवि षे जो किहाहै वहुतयां करके गौके मृत होयां होयां तिसविषे संवर्त्त और आपस्तंवऋषि विशेषकहतेहैं

एकेति जिसतरांकर्के गोहत्या होईहै तिसके अनुसार जो व्रत कहाहै जेकर वहुत पुरुष एकगौंकों मारण तां तिसव्रतकें एकएकपादको सब भिन्न २ करण १ परन्तु ऐसाभी विचारहै कि चार व्रतों विचों जिसको जो व्रत व्यवस्था सें आवे तिसीका पाद जानणा एकेति एह जो पद है सो औरके दखाने मात्रहै इसकारणतें वहुतयां पुरुषां कर्के एक गौ वा दो गौआं वा वहुत गौआं मृतहोण तां इक इक पुरुषनें त्राय त्रय पाद अथवा दो दो पाद गोहत्या पापकें दूर करणे वास्ते व्रत करणे योग्य है १ अथ इसीका प्रतिद्वंद्वि अर्थ कहतेहैं एकेनेति जद इकपुरुषसें वंधनादि कर्के अथवा रोकणे कर्के वहुत गौआं मृत होण तिसविषें ८ संवर्त्तऋषि

एकाचेद्बहुभिःकाचिद्दैवाद्व्यापादिताक्वचित् पादंपादंतुहत्यायाश्चरेयुस्तेपृथक्पृथगिति १ यादृग्विधगोहत्यायांयद्व्रतमुपदिष्टंप्रत्येकंतत्पादंपादंकुर्य्युः एकाचेदित्युपलक्षणम् अतोबहुभिर्द्वयोर्बहूनांचव्यापादनेप्रतिपुरुषंपादद्वयं पादोनंवा कल्पनीयम् यदातु एकेनैवरोधनादिव्यापारेणवहवोगावोव्यापादितास्तत्रसंवर्त्तापस्तंबौविशेषमाहतुः व्यापन्नानांवहूनांतुरोधनेवंधनेपिवा भिषङ्मिथ्योपचारेचद्विगुणंगोव्रतंचरेत् १ बहुष्वपिव्यापन्नासु न प्रतिनिमित्तनैमित्तकानुष्ठानं नापितंत्रेण किंतुवचनाद्द्विगुणमेवेत्यर्थः यत्तुपराशरवचनम् ग्रामघातेशरौघेणवेश्मभंगनिपातने अतिवृष्टिहतानांचप्रायश्चित्तंनविद्यते १

और आपस्तंवऋषि विशेष कहतेहैं व्यापन्नानामिति रोकणे कर्के वन्नणे कर्के और औषधिआं के मिथ्या प्रचार कर्के क्या देणी थी होर औषधी और होर दित्तीजावे अथवा और विधिसे देणीथी और होर विधिसें दित्तीगई तिसकर्के जद वहुत गौआं मृत होण तो दूणा गोव्रत करे १ इसमें ऐसा विचारहै कि वहुतियां गौयांके मारयां होयां एक एकके निमित्ततें वहुताहि व्रत करणे चाहिए अथवा सबके निमित्त एकहि व्रतकरणाचाहिए एहदोनो पक्ष नहि स्वीकार करणे किंतु दूणा व्रत करणे योग्यहै क्योंकि वचनके वलसे एह विचार दूसरे प्रकरणाविषेंभी आचुकाहै १ पहलेंतें विशेष कहतेहैंयत्त्विति जोपराशरजीका वचनहै ग्रामके नष्टहोयां २ और वाणकेंसमूहकर्के औरघरदे डिगयां होयां जकरऔर वडीवर्षादे होयां वहुत गौयां मृतहोण तां तिसविषेंप्रायश्चित्तनहिंकरणा १

कूपइति और किसे धर्म्मके अर्थ कर्के बनाए होए खूये विषे और गृहके दाह विषे और ग्रामके दाह विषे और किसेस्थानके दाहके होयां २ गौ मृत होवे तां प्रायश्चित्त नहिं करणा२ एह वाक्य जिस पशुको वन्धन नहिहै तिसविषे जाणणे योग्यहै जिसको बंधनहै तिसके अर्थ आपस्तंबजीने भिन्नकर्के किहाहै ॥ कांतारेष्विति कांतार क्या वनादि और गृह क्या घर तिनके दाहविषे और खलवाडेकेदाहविषे जेकर गौ मृत होवे तां एकपाद व्रत करणेसें शुद्ध होजाताहै १ और विशेषवास्ते वृहस्पति का वचनहै गर्भीति गर्भवाली और कपिला और दुग्धदेणे वाली और होमधेनु और सुंदर स्वभाव वाली गौ इनांकों मोहआदि कर्के मारे तां दूणा व्रत करे १ इसमें भी विशेष कहतेहैं यदीति और जेकर दंडके मारणे कर्के गौ जीवती रहे और

कूपेखातेचधर्म्मार्थेगृहदाहेचयामृताः ग्रामदाहेतथागारेप्रायश्चित्तंनविद्यतइति२ इदंतुबंधनरहितेपशौबोध्यम् इतरथातुआपस्तंबेनोक्तम् कान्तारेष्वथसर्वेषुगृहदाहेखलेषुच यदितत्रविपत्तिःस्यात्पादएकोविधीयतइति १ वृहस्पतिः गर्भिणींकपिलांदोग्ध्रींहोमधेनुंचसुव्रताम् मोहादिनाघातयित्वा द्विगुणंगोव्रतंचरेत् १ यदिलगुडादिघातेनगौर्जीवतिगर्भमात्रघातोभवति तदाविशेषमाहयमः पादमापन्नमात्रेतुद्वौपादौगात्रसंमिते पादोनंव्रतमाचष्टेहत्वागर्भमचेतनम् १ चेतनगर्भघातेतु कृत्स्नमेवप्रायश्चित्तमितिकेचित् पराशरस्तु निष्पन्नसर्वगात्रस्तुदृश्यतेवासचेतनः अंगप्रत्यंगसंपूर्णोद्विगुणंगोव्रतंचरेत् १ पादेंगरोमवपनंद्विपादेश्मश्रुणोपिच त्रिपादेतुशिखावर्जंसशिखंतुनिपातने २

गर्भ छणजावे तिसविषे धर्म्मराज कहताहै पादमिति अंगातें रहित गर्भके पातविषे एकपाद व्रतकरें और अंगउत्पत्तिके होयां२ गर्भके पातविषे दोपाद व्रतकरे और अचेतन गर्भके पातविषे तीनपाद व्रतकरे १ और सचेतन गर्भके पातविषे संपूर्ण प्रायश्चित्त करे एह केकहतेहैं पराशरजी और कहतेहैं निष्पन्नेति जेकरगर्भ निष्पन्नगात्रहोवे क्यासव अंगां वाला होवे और सचेतन प्रतीत होवे क्याजिसवेले बाहरहोवे उसवेले थोडा चिर जीवित रहकर मृतहोवे और अंगोकेसाथ प्रत्यंगअंगुल्यादिभी स्पष्टकर्के होण ऐसी गौ के हतहोयां २ गौवधका प्रायश्चित्त करे १ इसमेंमुंडनकी विधि कहतेहैं पादइति एकपाद व्रतविषे अंगां उप्पर जो रोम तिनांका मुण्डन करावे और दोपाद व्रतमे श्मश्रु क्या दाडीकाभीसाथ मुंडन करावे और त्रिपाद व्रत विषे शिखातें विना मुण्डन करावे और संपूर्ण प्रायश्चित्त विषे सहित शिखाके मुण्डन करावे २

अब इसमें दानविशेष भीकहतेहैं पाद इति और पाद व्रत विषे दोवस्त्र देवे और दोपाद व्रत विषे कांस्यपात्र देवे और त्रिपादव्रतविषे एकगौ और वृषदेवे और संपूर्ण व्रतविषे दो गौआंदा नकरे तदशुद्धहोताहै२ अववृहस्पतिजीकावचनहै नेकर पुरुष वहुत वृद्धगौ और वहुवलिस्सी और वहुत छोटी और रोगवाली ऐसीआंगौयांकों मारे तां पूर्व विधिकर्केअर्द्ध व्रतकोंकरे१ इसकातात्पर्य कहतेहैं नेति जितना प्रायश्चित्त नीरोगगौकाहै एह प्रायश्चित्त साक्षात् गौवधकेविषे कहाहै साक्षात् गौवधके प्रकार आपस्तंब ऋषिनें दखाए हयण पाषाणेरिति पत्थरकर्के और दंडकर्के और शस्त्र कर्के वा और किसे साधन कर्के वा वलतें मोहतें गौ को जो पुरुष मारते हयण तिनां कों

पादेवस्त्रयुगंचैवद्विपादेकांस्यभाजनम् त्रिपादेगोवृषंदद्याच्चतुर्थेगोद्वयंस्मृतम् ३वृहस्पतिः अतिवृद्धामतिकृशामतिबालांचरोगिणीम् हत्वापूर्वविधानेनचरेद र्द्धव्रतंनरःनीरोगादिवधेयत्प्रोक्तंतस्यार्द्धम्एतत्प्रायश्चित्तंसाक्षाद्गोवधविषयम् साक्षाद्गोवधप्रकारास्त्वापस्तम्बेनदर्शिताः पाषाणैर्लगुडैर्वापिशस्त्रेणान्येनवा वलात् निपातयंतियेमोहात्तेषांसर्वंविधीयते १वृहत्प्रचेतसाप्यत्रविशेषउक्तः एकवर्षेहतेवत्सेकृच्छ्रपादोविधीयते अबुद्धिपूर्वंपुंसःस्याद्द्विपादस्तुद्विहायने त्रिहायनेत्रिपादःस्यात्प्राजापत्यमतःपरमिति १ वैर्य्यादिद्वेषेणकामकृतगो वधे निमित्तविशेषे प्रायश्चित्तमाह वृहत्पराशरः काष्ठलोष्टकपाषाणैःशस्त्रे णैवोद्धतावलात् व्यापादयतियोगांतुतस्यशुद्धिंविनिर्द्दिशेत् १ चरेत्सांतप नंकाष्ठेप्राजापत्यंतुलोष्टके तप्तकृच्छ्रंतुपाषाणेशस्त्रेणैवातिकृच्छ्रकमिति २

संपूर्णव्रतकिहाहै१ इसविषे वृहत्प्रचेतस ऋषिनें विशेष किहाहै एकेति न जानकर्के एक वर्षके वच्छे केमृतहोयां २ कृच्छ्र व्रतके पादकों करे और दोवर्षके वच्छेके मृतहोयां २ दोपादव्रत करे और त्रयवर्षके वच्छेके मृतहोयां २ त्रयपादव्रतकरे इसते उपरंतहोवेतां प्राजापत्य व्रतकरेतो शुद्धहोताहै१ और वैर कर्के इच्छा पूर्वक गौके वध विषे प्रायश्चित्तकों वृहत्पराशरजी कहतेहैं काष्ठेति काष्ठकर्के मृत होवे तां सांतपन व्रत करे लोष्ट कर्के मृत होवे तां प्राजापत्य व्रत करे पत्थर कर्के मृतहोवें तां तप्तकृच्छ्र व्रत कों करे शस्त्र कर्के मृत होवे तां अति कृच्छ्र व्रत कों करे तां शुद्धहोताहै २

मुष्टीति और मुक्कोके मारणे कर्के और किल्ले कर्के और शृंगादिके पुट्टणे कर्के और दंडेके मारण कर्के जिस पुरुषसें गौ मृत होवे तिसकों गोवध कहे और तिसकोंभी अतिकृच्छ्रका निर्दे शहै ॥ ३ ॥ इसीकाविशेष कहतेहैं हलइति हल विषे और गड्डे विषे जो पुरुष निर्बल बैलकोंजोड ताहै सो पुरुष तिसप्रत्यवायके होयां होयां गोवध पापकों प्राप्त होताहै तिसकोंभी पूर्वोक्तप्रायश्चित्त है ॥ ४ ॥ इसमें और विशेषवास्ते नारदजीका वचनहै दमनइति खरसी करणे कर्के और किसें पा सॉकरवाणे कर्के और रोकणे कर्के और बलवालीआं गौयांके साथ निर्बल गौयां के जुटणे कर्के स्तंभके साथ संगल पाणे कर्के और फाही कर्के गौके मृत होयां होयां त्रयपाद व्रतकों कर्के शुद्ध होताहै १ अतिदाहेति अतिशयकर्के अग्निके दाह कर्के औरबहुत वाहणे कर्के और नासि का विषें रस्सी पाणे कर्के और नदीपर्वतविषें रोकणे कर्के गौ मृत होवे तां त्रिपाद व्रतकरें २

मुष्टिघातेनकीलिनतथाशृंगादिमोटनैः लगुडादिप्रहारेणगोवधस्तस्यनिर्दिशे
त् ३ तस्याप्यतिकृच्छ्रकं प्रायश्चित्तंनिर्दिशेदित्यर्थः हलेचशकटेचैवदुर्बलंयोभि
योजयेत् प्रत्यवायेसमुत्पन्नेतत्रप्राप्नोतिगोवधम् ४ अत्रापि पूर्वोक्तमेव प्राय
श्चित्तम् विशेषमाहनारदः दमनेदामनेचैवरोधेसंघातयोजने स्तंभशृंखलपा
शैश्चमृतेपादोनमाचरेत् १ बलवतीभिःसहनिर्बलायायोजनंसंघातयोजनम्
अतिदाहातिवाहाभ्यांनासिकाछेदनेतथा नदीपर्वतसंरोधेमृतेपादोनमाचरेत् २
दीर्घरज्वाकृतेचैवप्रग्रहेयुग्मयोजिते लग्नयुग्यमृतेचैवद्विपादंतत्रनिर्दिशेत् ॥ ३

इसमे भी विशेष कहतेहैं दीर्घेति बडीरस्सी कर्के गौंके ग्रहण विषे इसमे एह अभिप्रायहै किं लम्मी रस्सी कर्के किसे जगां घासके अर्थ गौ बद्धी औरपीछे व्याघ्रादिनें मारी तद एह अद्धा व्रतहै और एक वाहकों दूसरेके साथ वाहणे कर्के सो वाह इसजगा दोप्रकारकाहै एक पंजा ली पाणे कर्के और दूसरा लादे कर्के दोनों विषे एह विचार जानणाकि इसमें जुंगलेका लागा लगणे पिछे कीडे आदिक रोगकी मृत्यु विषे एह है और किसें जगा लग्नयुग्ममृते ऐसाभी पा ठहै तिसजगा दोरस्सेदी गंड कर्के अथवा दो गंडी कर्के मृत होवे ऐसा अर्थहै और जुंगले के जुट्टणे कर्के मृत्यु विषें दोपाद व्रत करे३

घंटेति और घंटा भूषण के दोष कर्के गौकी मृत्यु होवे तां अर्द्ध व्रतकोंकरे क्योंकि सो घंटा भूषण वास्ते पायाहै इस कारणतें अर्द्ध व्रत किहाहै ४ अब पराशरजीका वचन कृच्छ्र पूर्वोक्तसें विलक्षण दखाईदाहै अतीति बहुत दाह विषे और बहुत वाहणे विषे और नासिकाके छिद्र करणे विषे और नदी और पर्वत के उप्पर रोकणे कर्के गौकी मृत्यु होवे तां प्रायश्चित्तकों करे अर्थात् उपकारके अर्थभी एह अतिदाहादि होण तथापि प्रायश्चित्त करणा चाहिए एहअभिप्रायहै परंतु इसमें भी पूरा प्रायश्चित्त करणा चाहिए॥ १ ॥ इसकाविवेक पराशरजी कहतेहैं अतीति बहुत अग्निके दाह कर्के मृत्यु होवेतां एक पाद व्रत करे और बहुत वाहणे विषे मृत्यु होवे तां दोपाद व्रत करे और नासिका के छिद्र करणे विषे त्रयपाद व्रत करे इसजगा नासिका पद कर्के नासिकाका छेदन जानणा अंतपदलोपी समास होणेतें ॥ और नदी और पर्वत विषे डिगे तां

घंटाभरणदोषेणविपत्तिर्यत्रगोर्भवेत् गोघ्नोर्द्धंतुचरेत्तत्रभूषणार्थंहितत्स्मृतम् ४
पराशरःअतिदाहेतिवाहेचनासिकाभेदनेतथा नदीपर्वतसंचारेप्रायश्चित्तंवि
निर्दिशेत् १ अतिदाहेचरेत्पादंद्वौपादौवंधनेचरेत् नासिकापादहीनंस्याच्चरे
त्सर्वंनिपातने २ काष्ठलोष्टाश्मभिर्गावःशस्त्रैर्वानिहतायदि प्रायश्चित्तंकथंत
त्रशास्त्रेणात्रविधीयते ३ काष्ठेसांतपनंकुर्यात्प्राजापत्यंतुलोष्टके तप्तकृच्छ्रं
तुपाषाणेशस्त्रेवाप्यतिकृच्छ्रकम् ४ प्रत्याम्नायोपितेनैवदर्शितः पंचसांत
पनेगावःप्राजापत्येतथात्रयः तप्तकृच्छ्रेभवंत्यष्टावतिकृच्छ्रेत्रयोदश ५ ॥

संपूर्ण व्रत करे इसमें ऐसा जानणा कि आप धक्का देकर्के जेकर गौकों गिडावें तद एह प्रायश्चित्त है ॥ २ ॥ काष्ठेति और काष्ठ और मृत्तिका की जिल और पत्थर और शस्त्र इनां कर्के जद गौको मृत होवे तां शास्त्रकी विधि कर्के प्रायश्चित्त कों करे तद शुद्ध होताहै ॥ ३ ॥ पूर्वोक्त निमित्त विषे कहतेहैं काष्ठेति काष्ठ कर्के गौ मृत होवे तां सांतपन व्रत करे और लोष्ट कर्के मृत होवे तां प्राजापत्य करे और पत्थर कर्के मृत्युहोवेतां तप्त कृच्छ्र व्रतकों करे और शस्त्र कर्के मृत होवे तां अति कृच्छ्रव्रतकों करे ॥ ४ ॥ इसी विषे पराशरजीने प्रत्याम्नाय दिखायाहै प्रत्याम्नाय नाम उसकाहै कि उक्त विधिके करणे को असमर्थ देखकर तिसके तुल्य दूसरी विधि करणी जिस पुरुषसें सांतपन व्रत नहोवे तां पञ्च गौआं दान करे और प्राजापत्य विषे त्रय गौआंदान करे और तप्त कृच्छ्र विषे अष्ट ८ गौआं और अतिकृच्छ्र विषे तेरां १३ गौआं देवे ॥ ५

अब और विशेषकहतेहैं प्रमेति प्राणधारी और जीवांकी हिंसा विषे जिसका उह प्राणी होवे तिसके ताईं मारेहोए जीवके तुल्य वस्तुदेवे अथवा तिसका मुल्ल देवे और पिच्छे प्रायश्चित्त करे अथवा तिसके तुल्यदानकरे तद शुद्ध होताहै ॥ जैसे अश्वके मारणेविषे अश्वदानकरे वा तिसके तुल्यमुल्लकोंदेवे एह मनुजीका वाक्यहै ॥६॥ अस्थीति और गौआं की हड्डीकों भन्ने वा पुछ को कटे वा कर्ण वा शृंगकोकटेतो अर्द्ध महीनाजवांको पीवे तां शुद्धहोताहै ॥ ७ ॥ भवदेवजीके व नायें होए ग्रंथाविषे किहाहै किगौके स्वामीके ताईं जो गौ मृत्यु होई है तिसीके तुल्यगौ देकर्के एह प्रायश्चित्तकरे अब इसमें और स्मृतिके वचनसे गोघात प्रायश्चित्तका विशेष अर्थ कहतेहैं

प्रमापणेप्राणभृतांदद्यात्तत्प्रतिरूपकम् तस्यानुरूपंमूल्यंवादद्यादित्यब्रवी
न्मनुरिति ६ अस्थिभंगंगवांकृत्वालांगूलस्यचभेदनम् पाटनेकर्णशृंगाणां
मासार्द्धंतुयवान्पिबेत् ७।भवदेवीये।इदंचप्रायश्चित्तं गोस्वामिने व्यापन्नस
दृशींगांदत्त्वैवकार्य्यम्। पाषाणेनैवदंडेनगावोयेनाभिघातिताः शृंगभंगेचरे
त्पादंद्वौपादौनेत्रघातने १ लांगूलेपादकृच्छ्रंतुद्वौपादावस्थिभंजने त्रिपा
दंचैवकर्णेतुचरेत्सर्वंनिपातने २ शृंगभंगेस्थिभंगेचकटिभंगेतथैवच यदिजी
वतिषण्मासान्प्रायश्चित्तंनविद्यते ३

पाषाणेनेति पत्थर कर्के और दंडकर्के गौआंको जिसनें मारयाहै सो पुरुष शृंगकेभज्जयां होयां पाद व्रत करे और नेत्रके घात होयां होयां दो पाद व्रत करे ॥ १ ॥ और पूछल के दूर होयां २ पाद व्रत करे और अस्थि के भज्जयां होयां दोपाद व्रत करे और कर्णाके दूर होयां त्रिपाद व्रत करे और मृत्युके होयां २ संपूर्ण व्रत करे ॥ २ ॥ अब इसमें और विशेषकहतेहैं शृंगेति शृंगकेभंगाविषे और अस्थिकेक्या हड्डीकेभंगाविषे और कटिके भंगाविषे अर्थात् मध्यभागके भंगाविषे जेकर गौ छे ६ महीनें जीवती रहे फेर मृत होजावे तां पीछे प्रायश्चित्त नाहिं करणा परन्तु शृंगादि भंग करणे वाला गौयांकीसेवापरायण रहे तद दोष नहिंहै ॥ ३ ॥

अब इसीवात कों कथन करतेहैं व्रणेति व्रण भंग उसको कहतेहैं जो शृंगादिकांदे भंग कीत्ते होयां अधिक व्रण हो जावे तिसके होयां होयां अपणे हत्थ कर्के घृत आदि मले और घासभक्षणकरवाए जितनापर्यंत गौवलसंयुक्त न होवे इसमें कोईक (अंग भंगेचकर्त्तव्यः) ऐसा पाठभी कहतेहैं ॥ ४ ॥ यावदिति जितना पर्यंत संपूर्ण अंगां कर्के वल संयुक्त नहि होवे तितना काल पर्यंत तिसकी पालना करे फेर गौका रूप सुवर्ण वा चांदीदावणाकर ब्राह्मणकों नमस्कार कर्के देवे इतना प्रायश्चित्तभीकरे ॥ ५ ॥ यदीति जेकर गौकी चिकित्साकर्के संपूर्ण अंग न होण तद तिसका नाम हीनदेहहै तां सो अंगभंग करणे वाला गोहत्याका जो अर्द्ध प्रायश्चित्तहै तिसकोंकरे

व्रणभंगेचकर्त्तव्यःस्नेहाभ्यंगस्तुपाणिना यवसश्चोपहर्त्तव्योयावद्दृढवलो भवेत् ४ यावत्संपूर्णसर्वांगस्तावत्तंपोषयेन्नरः गोरूपंब्राह्मणस्याग्रेनमस्कृत्वाविसर्जयेत् ५ यद्यसंपूर्णसर्वांगोहीनदेहोभवेत्तदा गोघातकस्यतस्यार्द्धं प्रायश्चित्तंविनिर्दिशेत् ६ इतिपराशरकथनात्। तथाचमनुः। योयस्याहिंस्याद्द्रव्याणिज्ञानतोऽज्ञानतोपिवा सतस्योत्पादयेत्तुष्टिंराज्ञेदद्याच्चतत्सममिति १ एतच्च प्रायश्चित्तं ब्राह्मणस्यैवहन्तुर्वेदितव्यम्। क्षत्रियादेस्तुहंतुर्विशेषमाह वृहद्विष्णुः ॥ विप्रेतुसकलंदेयंपादोनंक्षत्रियेस्मृतम् वैश्येर्द्धंपादएकस्तुशूद्रजातिपुशस्यतइति ॥ १ ॥

इस पराशरजीके कथनतें ६ तथेति तैसेंहि मनुजीकहतेहैं यइति जो पुरुष जिसके पशु आदि पदार्थका जाण कर्के वा नजानकर्के नाशकरें सो जिसका द्रव्य नाश कीताहै तिसकी प्रसन्नताकरे और तिसीके तुल्य धन राजाकेतांई देवे तदशुद्धहोताहै ॥ १ ॥ एह पूर्वोक्त प्रायश्चित्त गोहत्याकरण वाले ब्राह्मणकों किहाहै और क्षत्रियादि मारण वाला होवेतां तिस विषें बृहद्विष्णुजी कहतेहैं विप्रइति ब्राह्मण विषें संपूर्ण प्रायश्चित्त देवे और क्षत्री विषे त्रिपाद देवे और वैश्यविषें दो पाद व्रतदेवे और शूद्रविषें एकपाद व्रत किहाहै ॥ १ ॥

और स्मृतियों मैभी किहाहै प्रायइति जो प्रायश्चित्त ऋषियोंनें ब्राह्मणकों किहाहै तिस प्रायश्चि त्तकों क्षत्री पादऊन करे और वैश्य दोपाद करे और शूद्र एकपाद करे संपूर्ण पापां विषें एही विधिहै परंतु एह प्रायश्चित्त प्रातिलोम्यानुष्ठितसाहसतें भिन्नजानणा अर्थात् शूद्र तिन्नां ३ वर्णोंका अपराध करे और वैश्य दो २ का और क्षत्री एक १ ब्राह्मण का अपराध करे तद प्रातिलोम्या परावहै इसविषें ऐसीव्यवस्थाहै कि ब्राह्मणको क्षत्रियादिके अपराध विषें जितना दंडहै तिसतें दूणा क्षत्रीको ब्राह्मणके तिसी अपराध विषें जानणा ऐसे औरभी जाणो १ अब चार प्रकारका साहस कहतेहैं मनुष्येति मनुष्यका मारणा और वस्तुकाचुराणा और परस्त्रीका सेवणा और दोप्रकारका पारुष्यहैं एक कठोरवचन और दूसरा दंडमारणा एह चारप्रकारका साहसहै २ अब

स्मृत्यंतरेतु प्रायश्चित्तंयदाम्नातंब्राह्मणस्यमहर्षिभिः । पादोनंक्षात्रियःकुर्याद्द्वैवैश्यःसमाचरेत्शूद्रःसमाचरेत्पादमशेषेष्वपिपाप्मस्विति ॥ १ ॥ इदंच प्रातिलोम्यानुष्ठितचतुर्विधसाहसव्यतिरिक्तविषयम् मनुष्यमारणंचौर्यंपरदाराभिमर्शनम् पारुष्यमुभयंचेतिसाहसंस्याच्चतुर्विधम् २ स्त्रीणांविशेषमाहपराशरः ॥ प्रायश्चित्तंहिनारीणांनप्रव्रज्याजपादिकम् नगोष्ठेशयनंतासां नवसीरन्गवाजिनम् १ सर्वान्केशान्समुद्धृत्यच्छेदयेदंगुलिद्वयम् सर्वत्रैवंहि नारीणांशिरसोमुंडनंस्मृतमिति २ पुरुषेषुविशेषःसंवर्त्तेनदार्शितः । पादेंगरोमवपनंद्विपादेश्मश्रुणोपिच त्रिपादेतुशिखावर्जंसशिखंतुनिपातन इति १ ॥

स्त्रीयांको पराशरऋषि विशेष कहतेहैं प्रेति स्त्रीयांको ऐसा प्रायश्चित्तहै संन्यास नहिं लयणा और जपआदि नाहैं करणे और गौशालाविषें शयन नहिं करणा और गोचर्मउप्पर नहिं लेणा १ सर्वांतिनि स्त्रीयांकोदोअंगुली प्रमाण शिरके वाल कटाणे योग्यहैं संपूर्ण केशों के उठाणे पूर्वक त्यागके एही स्त्रीयांको संपूर्ण शास्त्रांविषें मुंडनकिहाहै २ और मुंडनकापुरुषां विषें विशेष संवर्त्त ऋषिनें दखायाहै पादइति एक पाद व्रत विषें शरीरकेही वालांनूं मुनावे और दो पाद व्रत विषें दाढीको मुनावे और त्रिपाद व्रत विषें शिखातें विना मुंडन करावे और संपूर्ण व्रतां विषे सहित शिखाके मुंडन किहाहै ॥ १ ॥

प्रायश्चित्त विवेक विषे गौआंका न पालना इसनिमित्तकर्के जो गोवधहै तिसर्के प्रायश्चित्तकों परा शरजीकहतेहैं शीतेति शीत और अग्नि कर्के और वन्नर्णे कर्के मृत होवे और जिसगृहविषे मनुष्य कोई नाहिं होवे तिसविषे गौकों त्यागकर उपेक्षाकीतियांहोयां मृत होवे तो प्राजापत्यव्रत कों करे तो शुद्धहोताहै ॥ १ ॥ अपेति पीछे गौके न रक्षा करणेतें तृणकों चुगती होई मृत होवे अथवा जल विषे डूब कर्के अथवा सर्पकेंलडने कर्के अथवा विजली कर्के मृत होवे ॥ २ ॥ अथ वा डूंगे स्थानविषे डिगणे कर्के अथवा व्याघ्रादिके भक्षण करणेकर्के गौ मृत होवे तां गौका स्वामी न रक्षा करण वाला उत्तम जो कृच्छ्र प्राजापत्य व्रत तिसको करे तदशुद्धहोताहै इसमें एह अभिप्रायहै कि सर्प दंशमें और विद्युत्पातमें यद्यपि स्वामीका दोष नहिंहै तथापि सर्पदं

प्रायश्चित्तविवेके अपालननिमित्तगोवधप्रायश्चित्तम् । शीतानलहताचैवउ द्बंधनमृतापिवा शून्यागाराद्युपेक्षायांप्राजापत्यंविनिर्दिशेत् ॥ १ ॥ अपाल नात्प्रणश्येत्तुगौश्चरंतीकथंचन जलौघपटलेमग्नानागविद्युद्धतापिवा ॥२॥ श्वभ्रेवापतिताऽकस्माच्छ्वापदैर्वापिभक्षिता प्राजापत्यंचरेत्कृच्छ्रंगोस्वामी व्रतमुत्तमम् ॥ ३ ॥ सशिखंवपनंकार्यंत्रिसंध्यमवगाहनम् शृंगैर्वापिखुरैर्युक्तं लांगूलश्रवणादिभिः ॥ ४ ॥ आर्द्रमेवहितच्चर्मपरिधायसगांव्रजेत् तासांम ध्येवसेद्रात्रौदिवाताभिःसमंव्रजेत् ॥ ५ ॥ ब्राह्मणस्यविशेषेणतथाराजन्यवै श्ययोः प्रायश्चित्तेततश्चीर्णेकुर्याद्ब्राह्मणभोजनम् ॥ ६ ॥

शते उपरंत औषधी करणीथी और विद्युत्पातकी संभावनामें तिसको अपणें पासे खिचणवालि यां लोहशलाकादि वस्तु गौआंके समीप रखणीथी एह गोस्वामीने नहिं कीता इसवास्ते तिसको दोष जानणा ॥ ३ ॥ सेति और सहित शिखाके मुंडन करवाके त्रिकाल स्नानकों करे शृं ग और खुर और पूछल ओर कर्ण ॥ ४ ॥ एनांके साथ गिल्लाहि जोगोचर्म तिसकों उपर लेके गौआंके पीछे वनविषे जावे और रात्रिमें तिन्हांके मध्यविषें निवास करे और दिनमे तिनांके साथ जावें ॥ ५ ॥ ब्राह्मेति ब्राह्मणकों विशेष कर्के प्रायश्चित्त कहाहै और तिसी प्रकार क्षत्री और वैश्य प्रायश्चित्त कर्के ब्राह्मणांके तांई भोजन देवे ॥ ६ ॥

और बैलके साथ गौ दक्षिणा देवे ब्राह्मणके तांई इसमें (ब्राह्मणस्य विशेषेण) इस वचनतें ब्राह्मणकों विशेष करके प्रायश्चित्त कहाहै क्या गौआंके पीछे वन विषे जाणा मुख्यहै इसका अर्थ स्पष्ट करके कहतेहैं एतेनेति इस कहणे करके एह सिद्ध होया क्या गौआंकी पालनातें विना मृत्यु होवे तद प्राजापत्य व्रत करणे योग्यहै और ना समर्थ होवे तां एक गौ ब्राह्मणके तांईदवे और बैलके साथ गौ दक्षिणा देणे योग्यहै ॥ यदेति ॥ पालनके होयां होयां गर्त्त आदि करके मृत्यु होवे तो तिस विषे प्रायश्चित्तकों विष्णु जी कहतेहैं पल्वलेति पल्वलौघ क्या छपडीयां और भगयाड और चित्रा और श्वापद क्या हिंसक मृगविशेष और गर्त्त और बंधन और सर्प्प

अनडुत्सहितांगांच दद्याद्विप्रायदक्षिणाम् । ब्राह्मणस्याविशेषेणेति । ब्राह्मणस्य गवानुगमनं मुख्यमित्युक्तम् ॥ एतेनापालनादिकृतगोवधेप्राजापत्यं करणीयम् अशक्तौधेनुरेकादातव्या वृषभसहितागौर्दक्षिणादेया इत्यादि बोध्यं वक्ष्यमाणवचनात् । यदातु सत्येव पालने श्वभ्रादिपातादेर्मरणं स्यात्तदा प्रायश्चित्तमाह विष्णुः ॥ पल्वलौघवृकव्याघ्रश्वापदादिनिपातनात् श्वभ्रोद्बंधनसर्प्पाद्यैर्मृतेपादोनमाचरेत् अपालनेतुकृच्छ्रंस्याच्छून्यागाराद्युपेक्षया ॥ १ ॥ अत्रपादोनंप्राजापत्यस्यैव उत्तरवचनेकृच्छ्रश्रवणात् । तथा पादश्चाऽप्राप्तकेदेयो वत्सस्वामिन्यपेक्षिते ॥ अप्राप्तकेऽप्राप्तदृश्यावस्थेऽस्मिन्श्वभ्रपातादिना मृते वत्सस्वामिना प्राजापत्यपादः करणीय इत्यर्थः

इन्हां निमित्तां करके मृत्यु होयां होयां त्रिपाद व्रतकों करे और नापालनके होयां होयां अर्थात् मनुष्यांतें रहित जो शून्यगृह तिसविषे ना रक्षा करणेतें मृत्यु होवे तां कृच्छ्र व्रतकों करे । १ । इसका स्पष्टार्थ एह हैं कि इस विषे पादऊन प्राजापत्यका हि जानणा क्यों कि पिछले वचन विषे कृच्छ्र व्रतका श्रवण होणेतें और वचनहै तथेति तैसेही वच्छेके स्वामिने बच्छा ढूंडयाहै परंतु तिसकों प्राप्त नहिं होआ और ढूंढणेतें उपरंत गर्त्त आदि करके मृत्यु हो गयाहै तद वच्छेके स्वामीने प्राजापत्य व्रतका एक पाद व्रत करणे योग्यहै एह अर्थ है ॥

अब गोवध प्रायश्चित्तका अपवाद क्या किसे जगा प्रायश्चित्त नहिं करणा तिसमें पराशरजी कहतेहैं * धुर्य्येष्विति गड्डे आदिमें जुगडे होए जो वैल तिनां विषे दंड कर्के ताडना कीतयां होयां और काष्ठ कर्के वा लोष्टकर्के क्या ढीम कर्के वा कोरडेकर्के वा पत्थर कर्के मारयांहोयां ॥ १ ॥ मूर्छाकों प्राप्तहोजावे वा डिगजावे वा शताबी मृत होजावे इसप्रकार मृतहोए जो वैल तिनांको विधिकोंकहताहां । २ । पूर्वोक्तनिमित्ततें मूर्छावाला होया होया फेर उठकर्के जेकर पंच ५ वा सत ७ वा दश १० पैर चले और ग्रासभी ग्रहण करे और जलभी आपपीवे ॥ ३ ॥ और पीछे पूर्वव्याधि कर्के मृत होए जो वलद तिनांका प्रायश्चित नहिं कहाहै ॥ ४ ॥ इसी अर्थ

अथगोवधापवादः * अत्रपराशरः ॥ धुर्य्येषुवहमानेषुदंडेनाभिहतेषुच ॥ काष्ठलोष्टेनग्राव्णाऽपिपापाणिनापिताडितः ॥ १ ॥ मूर्छितःपतितश्चैवमृतोवा सद्यएवच ॥ एवंगतानांधुर्याणांप्रवक्ष्यामियथाविधि ॥ २ ॥ उत्थितस्तुयदा गच्छेत्पंचसप्तदशापिवा । ग्रासंवायदिगृह्णाति तोयंवापिवतिस्वयम् ३ । पूर्वव्याधिविनष्टानां प्रायश्चित्तंनविद्यते ॥ ४ ॥ यदिव्याधियुक्तानां वृषभाणां हलयोजनमात्रेण दंडादिघातेन वा मूर्छया पतनं भवति तदा गमन ग्राससग्रहणतोयपानकरणेन तदानींतनमरणहेत्वभावं निश्चित्य पूर्व व्याधिनष्टत्वम् अतःप्रायश्चित्ताभावः ॥ सद्योमरणेतु प्रायश्चित्तमस्त्येव । दंडप्रमाणमाह पराशरः ॥ अंगुष्ठमात्रस्थूलस्तु वाहुमात्रःप्रमाणतः आर्द्र स्तुमपलाशश्चदंडइत्यभिधीयतइति ॥ यदिच पूर्वव्याधिरहितएव प्रहा रजनितव्याधिना पश्चान् म्रियते तदा प्रायश्चित्तमस्त्येव ॥

कों स्पष्टकर्के मूलमें लिखाहै यदीति ॥ एह इसकालके दंडादिनिमित्तते मृत नहि होया किंतु इसकों कोई पिच्छे व्याधिथी तिसकर्के मृत होयाहै इसकारणतें उसका प्रायश्चित्त नहिंहै और शताबी मृत होवे तां प्रायश्चित्तहै ॥ अवदंडका प्रमाण पराशरजीकहतेहैं ॥ अंगुष्ठमात्र मोटा होवे और वाहु जितना लंवाहोवे और गिल्लाहोवे और पत्रांवाला होवे सो दंडकहाहै इसके यथायुक्ति लगाणे कर्के दोप नहि और इसतें भिन्न होवे तां प्रायश्चित्तहै जेकर प्रथमपीडासें रहित होवे और दंडादि प्रहारतें उत्पन्न जो व्याधि तिस कर्के मृत होवे जो गौ तिसविषें प्रायश्चित्तहै सो प्रायश्चित्त ॥ व्रणभंगके प्रसंगविषे पिच्छे आगिआहै उसीसे जानलेणा ॥

लकुटेति और सोटे आदिके मारणें विषे इसीवास्ते प्रायश्चित्त पराशर जी कहतेहैं ॥ दंडादिति दंडमारणेतें उपरंत तिसी प्रहारतें जद गौ मृत होवे वा मरणेंके योग्य होवे तिसविषे दूणा गोघातका व्रतकरे तां शुद्धहोताहै ॥ १ ॥ अब इसीका अपवाद संवर्त्त ऋषि कहतेहैं ॥ यंत्रणइति गौको चिकित्सावास्ते अच्छीतरह बंधन कीते होयां तिसविषे और मृत जो गर्भ तिसका निकालनातिसविषे यत्नकीते होयां जद गौ मृतहोवे तां प्रायश्चित्तनाहिंकरणा ॥ १ ॥ और दाह क्या रोग निवृत्तिवास्तें किसे अंगकों गुल देणा अथवा रुधिर निकालना इनांयत्नांकर्के जो द्विज गौआंके हितवास्ते उपकार करें तिनांको प्रायश्चित्त नहिंहै अथवा द्विजां किएं गौआंके उपकार करण वालेयांको प्रायश्चित्त नहिं एह अर्थ है ॥ २ ॥ एह वाक्य शास्त्र कर्के कही जो औषधि तिसकर्के मृत होवे तिसमें जानणे योग्यहै । और इसतें भिन्न करे तां प्रायश्चि

लकुटादिपातनेऽतएवप्रायश्चित्तमाह ॥ पराशरः ॥ दंडादूर्ध्वंयदन्येन प्रहाराद्यदिपातयेत् ॥ प्रायश्चित्तंतदाप्रोक्तंद्विगुणं गोव्रतंचरेत् ॥ १ ॥ पातयेन्मारयेत् ॥ मरणयोग्यांवाकुर्यादित्यर्थः ॥ संवर्त्तः ॥ यंत्रणेगोश्चिकित्सार्थेगूढगर्भविमोचने यत्नेकृतेविपत्तिः स्यात्प्रायश्चित्तंनविद्यते ॥ १ ॥ दाहच्छेदशिराभेदप्रयोगैरुपकुर्वताम् ॥ द्विजानांगोहितार्थायप्रायश्चित्तंनविद्यते ॥ २ ॥ द्विजानांगवांहितार्थमित्यर्थःगूढगर्भोमृतगर्भः ॥ एतद्यथावदुपचारेवेदितव्यम् ॥ नपुनः सन्निपाताभिभूतस्योदकपानादिनेव ॥ अत एव चिकित्सतांचसर्वेषांमिथ्याप्रहरतांदमइति मनुनोक्तम् ॥ मिथ्याचिकित्सतांमिथ्याप्रहरतांचदमोदंडइत्यर्थः ॥ एतएव काश्यपोप्यत्र प्रायश्चित्तमाह ॥ औषधंलवणंचैवस्नेहंपिण्याकमेवच अतिरिक्तंनदातव्यं कालेस्वल्पंतुदापयेत् ॥ १ ॥ अतिरिक्तेविपन्नानां कृच्छ्रपादोविधीयते ॥ औषधेतुनदोषास्तिस्वेच्छयापिवतेयदि अन्यथादीयमानेतु प्रायश्चित्तंनसंशयः ॥ २ ॥

त्तहै जैसें सन्निपातादि कर्के युक्त जो कोई होवे तिसकों जलपानादि करवाणा। तिस कर्के मृत होयां तिसविषें प्रायश्चित्त करणे योग्यहै ॥ इसीवास्ते मिथ्याचिकित्सा कर रहे जो पुरुष और मिथ्या प्रहारकर्त्ता जो पुरुष तिनकों दंड मनुजीनें पीछे कहाहै ॥ इसीवास्ते काश्यप जी इस विषे प्रायश्चित्त कहतेहैं ॥ औषधमिति औषधी और लूण और स्नेह क्या तैलादि और खल एह उपाय करणेंके समय विषे अधिक नहिं देवे किन्तु प्रथम थोडे देणे योग्यहैं ॥ १ ॥ अधिक दित्ते होयां जद गौ मृत होवे तां तिसविषें कृच्छ्र व्रतका एक पादव्रत करे और औषधि देणेंविषे दोष नहिंहै जेकर गौ अपनी इच्छा कर्के पीवे और जेकर जोरावरी देवे तां तिसविषें प्रायश्चित्तहै इसमें संशय नहिं करणा ॥ २ ॥

अब अंगिराजी विशेष कहतेहैं । शृंगेति शृंगकाभन्नणा औरअस्थिका भन्नणा और चर्मका उखेड़ना इनकेविषे दशरात्र वज्र पानकरै जेकर स्वस्थ गौ होजावे ॥ १ ॥ अब वज्रका लक्षणकहते हैं गोमूत्रेति गोमूत्र कर्के युक्त जो यवोंका काडा तिसनूं पीवे एह एक दिनका कृच्छ्र व्रत अंगिरानें आपकिहाहै संपूर्ण पापोंकों दूर कर्त्ता है और दिव्यहै और नाम कर्के वज्र किहाहै ॥ २ ॥ इसमें और विशेष कहतेहैं अन्यत्रेति अन्यत्र क्या औरके मत विषे अंकन और लक्ष्म और वाहन और मोचन इनां विषे दोष नहिंहै और सायं काल विषे बंधन वास्ते जो रोकणा और बन्नणा इनां विषे भी दोष नहिं है क्योंकि दूसरेके क्षेत्रमे न पडणे वास्ते बंधन किहाहै ॥ ३ ॥ इसविषे जो सायं पदहै सो दूसरेके क्षेत्र विषे गौका जाणा तिसका उपलक्षण जानणा । अब श्लोकका अर्थ

अंगिराः॥ शृंगभंगेस्थिभंगेवाचर्मनिर्मोचनेपिवा दशरात्रंपिवेद्वज्रंस्वस्थासा यदिगौर्भवेत्॥ १ ॥ गोमूत्रेणसमायुक्तंयावकंचोपयोजयेत् एकाहेनैवकृच्छ्रो यमुक्तश्चांगिरसास्वयम् सर्वपापहरोदिव्योनाम्नावज्रइतिस्मृतः ॥ २ ॥ अन्यत्रांकनलक्ष्मभ्यांवाहनेमोचनेपिवा सायंसंगोपनार्थंतुनदुष्येद्रोधबंधयोः ३ ॥ अत्रसायमितिपरकीयक्षेत्रपाताद्युपलक्षणार्थम् । वृषार्थमंककरणेचिन्ह करणेच वाहनादिना चर्मनिर्मोचनेच सायं रक्षार्थरोधबंधनयोः शृंगभंगादि न दुष्येत् शृंगभंगादौ न दोष इत्यर्थः। अंकनंतप्तत्रिशूलादेर्लक्ष्म कुंकुमादेरित्यपिकेचित् । तथाचमाधवः ॥ अंकनंतप्तलोहादिना स्थिरचिन्हकरणं लक्ष्म गोमयादिनातात्कालिकचिन्हम् अत्रवाहनमोचनयोःशास्त्रविहितत्वात् सांकलक्ष्मयोर्वाहने मोचने तु दोषएव शास्त्रनिषिद्धत्वादिति

स्पष्ट कर्के कहतेहैं वृषेति वृषवास्ते अंक करणे विषे और चिन्ह करणे विषे वाहनादिकर्के चर्म उखेडने विषे और सायं काल रक्षा वास्ते जो रोकणा और बन्नणा इनां विषे शृंगभंगहोवे तां दोष नहिंहै ॥ अब मतांतरकहतेहैं अंकनामिति अंकन क्या ताये होए त्रिशूलादियोंका लगाणा एह कैयोंका मतहै इसीमें माधवजी कहतेहैं अथवा अंकन नामहै तायेहोए त्रिशूलादि कर्के स्थिर चिन्ह बनाणा और लक्ष्महै गोमयादिकर्के तात्कालिकचिह्नकरणा इह्नां वाले बैलांते होरनां बैलां विषे वाहन विषे और मोचन क्या भारस्थापन विषे दोष नहिं क्योंकि तिनके वाहनादि विषे शास्त्रका निषेध नहिं और अंकनाचिन्ह वालेआं विषे वाहनादिविषे शास्त्रका निषेधहै इसीका स्पष्टअर्थहै

यदीति जेकर कहे जो प्रयोजनइनांतें विना बंधनादिकरणांतिसतें अकाल मृत्युहोवे तां दोषहै तिस विषे दशरात्र वज्रव्रतकरे। परंतु इसविषें एहविचारहै जो तीसादिनका वज्रव्रतहै तिसविषें स्मृतियोंनें १२वारां धेनु दानका प्रत्याम्नाय किहाहै सो व्रतप्रकरणमें देखणे योग्यहै इसकारणतें तिस व्रत विषें द्वादश१२धेनुकर्के मिलित जो महीनेका गोमूत्रयावकव्रत तिसका तीसरा भाग होणेंतें चार ४ धेनुदेवें ॥ अब घातकों चारप्रकारकर्के पराशरजीकहतेहैं ॥ रोधेति रोकणा और बन्नणा और योक्त्र और घात एह चारप्रकारका वधका निमित्तहै इनके लक्षण अग्गे कहेंगे एकेति रोकणेंविषें एकपादव्रत करे और बन्नणेंविषें द्विपादव्रत करे और योक्त विषें त्रिपाद व्रत करे और घातविषें

यदितूक्तप्रयोजननिरपेक्षबंधनादिकारितोऽकालिकोमृत्युर्भवति तदा दोषोभवत्येव दशरात्रवज्रव्रते धेनुद्वादशसंकलितमासगोमूत्रयावकव्रततृतीयभागत्वाद्धेनुचतुष्टयंदेयमिति ॥ घातस्यचातुर्विध्यमाहपराशरः ॥ रोधबंधनयोक्त्राणिघातश्चेतिचतुर्विधम् वधनिमित्तमितिशेषः । एकपादंचरेद्रोधेद्वौपादौबंधनेचरेत् योक्त्रेपुचत्रिपादंस्याच्चरेत्सर्वंनिपातने ॥ १ ॥ अत्रैकपादादिव्यवस्था पराशरांगिरःसंवर्त्तापस्तंवोक्तानांप्राजापत्यमासद्वयकृच्छ्रपक्षकृच्छ्रषोडशदिनसाध्यकृच्छ्रादीनां निर्गुणवनस्थगुणवतांगोर्बालवत्सायाश्चविषयत्वेन माधवेनोक्ता ज्ञेया ॥

संपूर्ण व्रतकरे।१। इसविषें माधवजीकी बनाई होई व्यवस्था इसतरां जानणी पराशरजीनेंकहाहै कि निर्गुण पुरुषकी गौ मृतहोवे इसविषें प्राजापत्यव्रतके ही एकपादादि जानणें और अंगिराजीने किहाहै कि वनविषें स्थितहोणवाले जो ऋषि तिनकी गौ मृतहोवे उसमें मासद्वयकृच्छ्र व्रतके एकपादादिजानणें और संवर्त्तजीनें कहाहै कि गुणवाले पुरुषकी गौ मृत होवे तां पक्षकृच्छ्र व्रतकेपादादि जानणे और आपस्तम्बजीने कहाहै कि बालहै बच्छा जिसका ऐसी गौ मृत होवे उसमें १६ सोलां दिनां कर्के साध्य जो कृच्छ्र तिसके पादादि जानणे ॥ अब रोधादिचारोंका अर्थ कहतेहैं ॥

गाविति गौआंके वाडेविषे वा गृहविषे वा किलेविषे और उंची नीमी जगाविषे और नदी विषे और समुद्र विषे और किसे सोपद्रव स्थान विषे और नदी मुख विषे और दग्ध देश विषे अर्थात् जिसमें तृणादि न होए उसजगा विषे रोकणें कर्के जद गौआं मृत होवें उसकों रोध नामघात कहतेहैं ॥ १ ॥ योक्रेति योक्र और दामक और डोर एह रसीआंके भेदहैं इनांकर्के वा कंठके जो भूषण इनांकर्केगृहविषे वा वनविषे बन्नीहोइ गौ जदमृतहोवे उसकोंबंधन नाम घात कहतेहैं तिसकों इच्छाकर्के करे वा ना इच्छाकर्केकरे एह दोप्रकारकाबंधनहै ॥ २ ॥ अब योक्रा दिशब्दका अर्थ कहतेहैं पाशइति योक्र नाम फाईकाहै और गड्डेके युगविषे जो छिद्र तिसमें संवद्ध जो रज्जुहै उसकों दाम कहतेहैं । और डोर रज्जुमात्रकोंकहतेहैं॥ अब योक्र वध दिखाइदाहै

गोवाटेवागृहेवापिदुर्गेष्वप्यसमस्थले नदीष्वथसमुद्रेषुत्वन्येषुचनदीमुखे दग्धदेशेमृतागावःस्तंभनाद्रोधउच्यते । १ । योक्रदामकडोरैश्चकंठाभरण भूषणैःगृहेवापिवनेवापिवद्धास्याद्गौर्मृतायदि तदेववंधनंविद्यात्कामाकामकृतंचयत् । २ । योक्रंपाशःशकटयुगच्छिद्रसंवद्धारज्जुर्दामकं डोरकंरज्जुमात्रम् ॥ हलेवाशकटेपंक्तौपृष्ठेवापीडितानरैः गोपतिर्मृत्युमाप्नोतियोक्रोभवति तद्वधः ॥ ३ ॥ पंक्तिर्गलेमेढीबंधनम् ॥ मत्तःप्रमत्तउन्मत्तश्चेतनोवाप्यचेतनः कामाकामकृतक्रोधोदंडैर्हन्यादथोपलैः प्रहतोवामृतोवापितद्धिहेतुर्निपातने । ४ ॥ मत्तोधनादिनादृप्तः प्रमत्तोमद्यपानादिना परवशः ॥ उन्मत्तोव्याध्यादिना विभ्रांतः अचेतनोमुग्धः मारयिष्यामीतिबुद्धिःकामः ॥

हलइति हलविषे वा गड्डेविषे वा पंक्ति विषे वा पृष्ठविषे पुरुषोंकर्के ताडया होया बैल मृतहोवे तां तिसवधका नामयोक्रहै ३ ॥ जो गलविषे मेढ बन्नणा उसका नाम पंक्तिहै ॥ मत्तइति मत्त और प्रमत्त और उन्मत्त और चेतन वा अचेतन इच्छाकर्के वा ना इच्छाकर्के कियाहै क्रोध जिसने ऐसे पुरुषने दंडकर्के वा पत्थर कर्के ताडया होया बैल मृत होवे सो निपातन विषे हेतु है अर्थात् इस वधका नामघात है ॥ ४ ॥ अब इसी श्लोकका अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं ॥ मत्त इति मत्त उसकों कहतेहैं जो धन कर्के अभिमानी होवे और प्रमत्त उसकों कहतेहैं जो मदिरापानादि कर्के परवश होवे और उन्मत्त उसकों कहतेहैं जो व्याधिकर्के भ्रमित होवे और अचेतन नाम मुग्धकाहै अर्थात् मूर्खकों अचेतन कहतेहैं ॥ मे मारांगा एह जो बुद्धि इसको काम कहतेहैं ॥

ऽपार्थ जो चेष्टाका धारणा इसकों अकाम कहतेहैं इनांदोत्रां करके उत्पन्न होयाहै क्रोध जिसको सोकामाकामकृतक्रोधीहै होर अर्थसुगमहै ४ ॥ अबकुलविशेषदखातेहैं दहनादिति जो जोडया होया बैल दाह होणेतें मृत होवे तिस विषे पराशरजीने कहाहै कि एकपाद व्रतकरे यथाविधि करके परंतुइसजगाकोई (वहनात्) ऐसापाठकहतेहैं क्योंकि जुगडेहोए बैलको दाहकासंभव नहि होणेतें अरि वहनकाअर्थ भारउठाणा एह होसकाहै और पादव्रत भी इहां मासत्रयका अथ वा मासद्वयका जानणा प्राजापत्यका नहिंपापके अधिकहोणेतें । १ । अब और मतकर्के वधके निमित्त कहतेहैं रोधनमिति रोकणा औरबन्नणा और भारदेणा और प्रहारकरणा और दुर्ग में फैंकणा और जोत्रणा एह छे निमित्त वधकेहैण ॥ २ ॥ पूर्वोक्त सें उौर विशेष कहतेहैं ॥ बंधेति ॥ वंध और पासकर्के युक्तहै अंग जिसके ऐसा गोपशु जिसके गृह विषे मृतहोवे सो

ऽयर्थचेष्टाधारणमकामः ताभ्यामुत्पादितःक्रोधोयस्यासौतथा) दहनात्तुवि पद्येतअनड्वान्योक्रयंत्रितः उक्तंपराशरेणैवह्येकपादंयथाविधि ॥ १ ॥ रो धनंवंधनंचैवभारःप्रहरणंतथा दुर्गप्रेरणयोक्त्रंचनिमित्तानिवधस्यपट् ॥ २ ॥ वंधपाशसुयुक्तांगोम्रियतेयदिगोपशुः भुवनेयस्यपापीस्यात्प्रायश्चित्तार्द्धम र्हति ॥ ३ ॥ ननारिकेलैर्नचशाणवालैर्नचापिमौंजैर्नचवल्कशृंखलैः एतैस्तु गावोननिवंधनीयावध्वातुतिष्ठेत्परशुंगृहीत्वा ॥ ४ ॥ कुशैःकाशैश्चवध्नीयाद्गो पशुंदक्षिणामुखम् पाशलग्नाग्निदग्धेषुप्रायश्चित्तंनाविद्यते । ५ । यदितत्रभवे त्काष्ठंप्रायश्चित्तंकथंभवेत् जपित्वापावनींदेवींमुच्यतेतत्रकिल्विपात् ॥ ६ ॥

पुरुष पापीहै तिसकों प्राजापत्यादिका अर्द्ध प्रायश्चित्त करणे योग्य है । ३ । अबगौआंकेवंधनका प्रकार कहतेहैं ॥ नेति ॥ नरगेलदे रस्सेकर्के वा शणदे रस्से कर्के वा मुंञकर्के वाबलूंगड़दे जो रस्से उौर संगुलजो है इनांकर्के गौआंको न वंधन करे जेकर वंधन करे तां कुहाडा लेकर पासस्थि तरहे जद गौंकों कष्ट बणे तां रस्सेनूं कटदेवे । ४ । जिनांकर्के बंधनेमे दोष नहि तिनको कहतेहैं ॥ कुशैरिति कुशा और काई इनां कर्के गौकों दक्षिण पासे मुख कर्के बन्न देवे इसमें जेकर रस्से विषे लगी जो अग्नि तिसकर्के दग्ध होवे तां उसमे प्रायश्चित्त नहिंहै ॥ ५ ॥ जेकर तिसविषे काष्ठहोवे तां प्रायश्चित्त कैसें होवेगा तिसकोकहतेहैं कि तिसविषे पवित्र जो गायत्री तिनका जप करणेतें पापते शुद्धहोताहै ॥ ६ ॥

और विशेष कहतेहैं ॥ प्रेति खूआ और बाउली इनां विषे गौनूं प्रेरणा करे ॥ और जिसजगाविषे वृक्षांको कटदेहोण तिसके हेठ गौनूं लेजावे और कसाईके पास वेचणे कर्के पुरुष गोवध पापकों प्राप्त होताहै ॥ ७ ॥ अब पिछले श्लोकका अर्थ स्पष्टकर्के कहतेहैं ॥ पाशेति कुशादिके जो रस्से इनाको शीघ्र भस्म होणेतें एकवेरही दुःखकोप्राप्तहोताहै और मृत नहिं होताहै इसकारणतें तिसविषें प्रायश्चित्त नहिंहै । यदीति गलविषें प्राप्त जो पाश तिसके दग्धहोयां जेकर कुशमूलादिका कुछककाष्ठ तिस रस्सेविषे स्थित होवे तां तिस चुआंलीके स्पर्शतें थोडाचर्म दाह होवे तिसविषें गायत्री जप कर्केहि शुद्ध होताहै(पावनीयं)इस पाठ विषें इसी सूक्तकाजपकर

प्रेरयन्कूपवापीषुवृक्षच्छेदेषुपातयन् गवाशनेषुविक्रीणंस्ततःप्राप्नोतिगोवधम् ७ पाशेति कुशादिमयपाशानांशीघ्रंभस्मीभावात्सकृत्संपातमात्रं संपद्यतेनतुप्राणांतिकउपद्रवः अतोनतत्प्रत्यवायः । यदीति गलगतेपाशेदह्यमानेयदिकुशमूलादिरूपंकिंचित्काष्ठंतास्मिन्पाशेऽवतिष्ठेत तदा तदुल्मुकसंस्पर्शादीपत्त्वग्दाहोभवेत् तत्र गायत्रीजपेनैवशुद्धिः पावनीयमितिपाठेसूक्तंजपित्वेतिव्याख्येयम्। प्रेरयन्निति यत्रचारणप्रदेशेजीर्णकूपादयः यत्रच प्रौढावृक्षाःछिद्यंतेतत्रप्रेरयन्पातयन् गवाशनेषु गोमांसभक्षकेषु विक्रीणन् गोवधप्रायश्चित्तंप्राप्नोतीतिमाधवः। आराधितस्तुयःकश्चिद्भिन्नकक्षोयदाभवेत् श्रवणंहृदयंभिन्नंमग्नोवाकूपसंकटे ॥ ८ ॥ कूपादुत्क्रमणेचैवभग्नोवाग्रीवपादयोः सएवम्रियतेतत्रत्रीन्पादांस्तुसमाचरेत् ॥ ९ ॥ उद्दृषभयज्ञादौउपघातेपादत्रयंप्रायश्चित्तमाह ॥

ऐसा व्याख्यान कियाहै । प्रेरयन्निति जहां चारणे वाले देशविषें पुराणे कूपादि होण जहां बडे वृक्ष कटे होण तहां गौआंको प्रेरणा करे और कसाई के पास गौकों वेचतद गोवधप्रायश्चित्तको प्राप्त होताहै एह माधवजीने किहाहै । आरेति आराधित होया जो वैल जेकर उसकी वक्खी भेदी जावे वा कर्ण वा हृदय भेद्या जावे वा वडे कूपविषें डुवजावे । ८ । और कूपतें निकालदे होयां ग्रीवा वापाद टुट जावे वा तिसविषे मृतहोजावे तां तिस विषे त्रिपादव्रत करणे योग्यहै ॥ ९ ॥ अब इसश्लोकका अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं ॥ उद्दृषभेति उद्दृषभ नाम जो यज्ञहै तिस विषे हिंसा करे तिसविषे त्रिपाद व्रत कहतेहैं माधवजी ॥

आराधितइति उद्वृषभनाम जो यज्ञ है तिसविषें वैलनूं आराधन करके दुडातेहैं तिसविषें अति वेग करके दौडता जो वैल तिसकी कदाचित् कक्ष भेदी जावे वा कण वा हृदय भेदया जावे तिसविषें एह जानणे योग्यहै ॥ और विशेषहै जद तृषा करके युक्त गौ आपही कूपा दिमें प्रवेश करके मृत होजावे और कूपका स्वामी एह वात नहिं जानता है इसतें तिसमें कूपके स्वामीकों दोष नाहिं है परंतु गौआंके स्वामी को दोष है ऐसे और भी जाणो ॥ इस करके एह श्लोक कहतेहैं कूपेति कूपखात विषें और तटाबंध विषे और नदीबंध विषे और जल विषं जद पशुमृत होजावे तिसमें प्रायश्चित्त नहिं कहाहै ॥ १० ॥ अब इसी श्लोकका अर्थ स्पष्टकरके कहतेहैं वहुतडूंगा जो खूआ तिसको कूपखात कहतेहैं। कनारे जिसमें वन्हेजावें सो तडावंध क्या तलाओ कहिये। नदीवंध नामपुलकाहै पत्थर करके वणाई जो पौडी सो प्रपा कहीदीहै और कूपादि

आराधितइति उद्वृषभयज्ञेहिवलीवर्द्दमाराध्यधावयंति तत्रातित्वरया धावतः कदाचित्कक्षोभिद्यते तदेदंबोध्यम्। कूपखाततटावंधनदीवंधप्रपासुच पानीयेषुविपन्नानांप्रायश्चित्तंनविद्यते। १०। अगाधःकूपःकूपखातः। तटेन तीरेणआवध्यतइति तटावंधस्तटाकः॥ नदीवंधःसेतुः। पाषाणादिद्रोण्यःप्रपाःकूपखातितटाखातेदीर्घखातेतथैवच स्वल्पेपुधर्मखातेषुप्रायश्चित्तंनविद्यते। ११ । कूपादिनिर्मातुर्गवादिमरणोद्देश्यकप्रवृत्त्यभावान्नप्रायश्चित्तमितिभावः॥ वेश्मद्वारेनिवासेषुयोनरःखातमिच्छति स्वकायगृहखातेषुप्रायश्चित्तंविनिर्दिशेत् ॥ १२ ॥

निर्माण करण वाल। जो पुरुष तिसकों प्रायश्चित्त क्यों नाहिंहै इसआशंका करके एहश्लोक कहतेहैं कूपखातइति कूपका जो गत्त और तटाखात और वाउलीयां और जो धर्मवास्ते खातहैं इनांविषें पशु आपहि मृत होजावे तां जिस पुरुषनें कूपादि वणाएहैं तिसको दोष नहिंहै क्याकि तिस खूए आदिक धर्मवास्ते वणायेहैं गौआंके मरणवास्ते नहिं वणाये इस वास्ते तिसको प्रायश्चित्त भी नहिं है और कूपखातादिकी न्यांई गृह विषं जो खात तिसमें मृत होवें तां दोष है क्योंकि सो धर्मार्थ नाहिं है ॥ ११ ॥ इसवास्ते एह श्लोक कहतेहैं ॥ वेश्मेति घरका जो दरवाजा और गौआंके स्थान इनोंमे जो पुरुष गत्त करताहै और अपणे कार्य वास्ते जो घरमे गत्त करणा इनोंमें जो पशु मृत होवे इसमें उस पुरुषको पूर्वोक्त त्रिपाद व्रत करणे योग्यहै ॥ १२ ॥

वेश्मेत्यादि खात जो हैं सो धर्म्मवास्ते नहिंहैं इसकारणतें तिनां विषे पशु मृत होजावे तां प्राय श्चित्तहै (प्रश्ण) गृहखातादिकी न्यांई गृहविषे सर्पादि कर्के मृत होवे तिसमें भी प्रायश्चित्त होणा चाहिये इसको इस श्लोक कर्के दूर कर्त्तेहैं ॥ निशेति रात्रिविषे रक्षाकरण वास्ते बंधन कर्के रोकियां जो गौआं सो सर्पव्याघ्रादिकर्के जद मृत होजावें तद स्वामीकों दोष नाहिं है और अग्निकर्के वा विजलीकर्के मृत होजावें तां प्रायश्चित्त नाहिं है ॥ १३ ॥ विद्युत् के दाह की न्यांई ग्रामघातादि कर्के मृत होवें तां दोष नाहिं है इस अभिप्राय कर्के एह श्लोक कहतेहैं ॥ ग्रामेति ग्रामके घात विषे और वाणोंके समूहकर्के अथवा वाणोंके समूह कर्के ग्रामके घा तहोयां वा घरके डिगयां होयां और वडीवर्षाहोवे इनां निमित्तांकर्के गौयां मृत होवें तांप्रायश्चित्त नहिंहै इसमे एह अभिप्रायहै कि किसेराजादिके परस्पर विरोधकर्के एकने दूसरेके ग्रामका घात

वेश्मेत्यादि खातानांधर्म्मार्थत्वाभावात्तत्रपातेभवत्येवप्रायश्चित्तम्॥ निशि बंधनिरुद्धेषुसर्पव्याघ्रहतेषुच अग्निविद्युद्विपन्नानांप्रायश्चित्तंनविद्यते १३। ग्रामघातशरौघेणवेश्मभंगनिपातने॥ अतिवृष्टिहतानांचप्रायश्चित्तंनविद्य ते॥ १४॥ संग्रामेप्रहतानांचयेदग्धावेश्मकेषुच॥ दावाग्निग्रामघातेषुप्रा यश्चित्तंनविद्यते॥ १५॥ यंत्रितागौश्चिकित्सार्थंगूढगर्भविमोचने॥ यत्ने कृतेविपद्येतप्रायश्चित्तंनविद्यते॥ १६॥ व्यापन्नानांवहूनांचरोधनेवंधनेपिवा भिषङ्मिथ्योपचारेणप्रायश्चित्तंविनिर्द्दिशेत्॥ १७॥ अयथाशास्त्रंचिकि त्सनंभिषङ्मिथ्योपचारः॥ गोवृषाणांविपत्तौचयावंतःप्रेक्षकाजनाः अनि वारयतांतेषांसर्वेषांपातकंभवेत्॥ १८॥

कीता तद उसग्राममे मृतहोइआंगौआंके स्वामिआंको दोष नहिं क्योंकि उह उनकी रक्षामे स मर्थ नहिंहैं॥ १४॥ और लडाई विषे मृत होवे वा घरमे दग्ध होजावे वा दावाग्निकर्के ग्राम के घातविषे गौमृत होवे तां प्रायश्चित्त नहिं है॥ १५॥ और चिकित्सा वास्ते गौ बांधी जावे तिसमें वा मृतगर्भके निकालनमें यत्नके कीत्ते होयां जेकर गौ मृत होवे तां प्रायश्चित्त नहिं है १६॥ इसमें भी कुछ विशेष कहतेहैं व्यापेति रोकणे विषे वा बंधन करणे विषे वहुत पुरुषोंकर्के जेकरगो मृत होवे वा शास्त्ररहित चिकित्सा कर्के मृत होवे तिसमें प्रायश्चित्त करणे योग्य है॥ १७॥ अव गो घातको देखणे वालेको भी दोष कहतेहैं गोवृषाणामिति गौआं और वृष इनांको विपत्तिके होयां जितने देखणवाले पुरुष हैं और तिस विपत्तिकोदूर नाहिं करते हैं तिन संपूर्णांकों पाप प्राप्त होताहै॥ १८॥

शक्ताविति समर्थंदे होयां उपेक्षा करण वालें पुरुषकों भी दोषहै केवल कर्त्ताकों ही नहिंइस अभिप्राय कर्के प्रेक्षका एह किया है ॥ एह हंता और मंता और उपदेष्टा इत्यादि जो पापी दूसरे प्रकरणेमें कहेहैं उनका भी उपलक्षण जानणा ॥ अववहुकर्तृक घात विषें कहतेहैं एकेति वहुत पुरुषोंनें एक पशु माग्याहै और जिस पुरुषके प्रहारतें मृतहोयाहै सो नहिं जानयाजाता तिनां वहुत पुरुषां विषों दिव्य क्या सुगंदककें प्रतीत होवे सो राजाके नौकरोंनें पृथक् करणे योग्य है ॥ अव इसी श्लोकका अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं यस्येति जिसनें गोवृषादि मारयाहै सो हंताकिहाहै इहां कर्त्ता में क्त प्रत्यय है ॥ यद्वेति अथवा जिसपुरुषके मारणेंतें सो वृषादि मृतहोगयाहै सो पुरुष नाहिं जानया जाता एह अर्थहै मारणतें उपरंत मारण वाले जो वहुतहैं उनांके मध्य विषे नहिं जाणया तहांसुगंदी देणेकर्के राजाके जो नौकरहैं तिनोंने निवर्त्तनीय क्या

शक्तौसत्यामुपेक्षकस्यापिप्रत्यवायो न केवलं कर्तुरेवेत्यभिप्रेत्योक्तंप्रेक्षकाइ त्यादि इदंचहंतामंतोपदेष्टेत्यादिद्वितीयप्रकरणोक्तोपलक्षणम् ॥ एकोहतो येर्वहुभिःसमेतैर्नज्ञायतेयस्यहतोभिघातात् ॥ दिव्येनतेषामुपलभ्यहंतानि वर्त्तनीयोनृपसन्नियुक्तैः ॥ १९ ॥ यस्यगोवृषादेर्हतःकोर्थोहंताकर्त्तरिक्तःयद्वा यस्यपुरुषस्याभिघातात्सवृषादिर्हतः सपुरुषोनज्ञायतइत्यर्थः अभिघाता दनंतरंमारकवाहुल्यांतः पातित्वेनचेन्मारकोनज्ञायतेतदादिव्यक्रिययानृ पसन्नियुक्तैराजभृत्यैर्निवर्त्तनीयःपृथक्करणीयइत्यर्थः ॥ इदंचगोघ्नप्राय श्चित्तार्थम् ॥ तदितरप्रायश्चित्तार्थमुच्यते। एकाचेद्बहुभिःकाचिद्दैवाद्व्यापा दिताक्वचित् ॥ पादंपादंतुहत्यायाश्चरेयुस्तेपृथक्पृथक् २० ॥ हतेतुरुधिरं दृश्यंव्याधिग्रस्तःकृशोभवत् लालाभवतिदष्टेषुएवमन्वेषणंभवेत् ॥ २१ ॥ यत्र। वहुषुनिमित्तेषु संदेहस्तत्र वधनिमित्तं कथं ज्ञायेतेत्येतदर्थमिदम् ॥

तिनां वहुत पुरुषांके मध्यतें जुदा करणे योग्य है एह अर्थ है १९ ॥ एह जो प्रायश्चित्त है सो गौ मारण वाले पुरुषकों जानणा तिसतें और प्रहार वालेंकों प्रायश्चित्त कहीदा है ॥ एकेति एक गौ वहुत पुरुषों नें मारी होवे तिसमें संपूर्ण पुरुष गोहत्याका जो व्रत पीछे कियाहै तिसका एक एक पाद पृथक् पृथक् करें ॥ २० ॥ जहां वहुत निमित्तों कर्के संदेह होवे तहां किस तरहां वध निमित्त जानणा इस आशंकार्के होयां चिन्ह विशेष कर्के तिनां चिन्हां को दिखाते हैं हतइति जहां रुधिर होवे तहां प्रहार निमित्त जानणा और जो कृश होवे सो व्याधि युक्त जानणा और जहां लाला होवे उसके विषें सर्पका दंश जानणा एह तीन प्रकारके मृत्युके चिन्ह जानणे योग्यहैं अर्थात् मृत्यु मै तीनोंचिह्न होतेहैं ॥ २१ ॥

अब इसी श्लोकका अर्थ स्पष्टकर्के कहतेहैं यत्रेति जिसके मृतहोआं रुधिर देखणेमें आवे उसमें वध निमित्त पत्थर आदिका प्रहारजानणा और कृशके उपलंभ विषें क्या लिसयाई देखणे विषे मृत्युकी हेतु व्याधि जानणी और लालाके देखणेविषें सर्पदंश निमित्त जानणा इत्यादि कहे जो चिन्ह इनों कर्के निमित्तकास्वरूप निश्चय करणे योग्यहै ॥ वाहरले अंगके चिन्होकों कह कर्के अब अंतरवाले अंगके चिन्होकों कथन कर्त्तेहैं ग्रासेति ग्रास वास्ते प्रेरित जो गौ सो ग्रास न भक्षण करे औरमार्ग में भी न चले तिस विषें एक जो मनु संपूर्ण शास्त्रके जानण वाला ॥ २१ ॥ तिसने किया है गौ मारणा वाला पुरुष चांद्रायण व्रत करे तां शुद्ध होताहै ॥ केशांकें

यत्र हते रुधिरंदृश्यते तत्र वधनिमित्तं पाषाणादिप्रहारः कार्श्योपलंभे मृतिहेतुर्व्याधिर्ज्ञेयःलालादर्शने सर्पदंशोनिमित्तमित्याद्युचितैर्लिंगैर्निमित्तस्वरूपंनिश्चेतव्यम् वाह्यावयवभंगचिन्हमभिधायाभ्यन्तरावयवभंग चिन्हमाह ग्रासेति ग्रासार्थचोदितावापिअध्वानंनैवगच्छति मनुनाचैवमेके नसर्वशास्त्राणिजानता ॥ २१ ॥ प्रायश्चित्तंतुतेनोक्तंगोघ्नश्चांद्रायणंचरेत् केशानांरक्षणार्थायद्विगुणंव्रतमाचरेत् ॥ २२ ॥ द्विगुणेव्रतआदिष्टेदक्षिणा द्विगुणाभवेत् ॥ २३ ॥ यस्यनद्विगुणंदानंकेशाश्चपरिरक्षिताः तत्पापं तस्यातिष्ठतत्यक्त्वाचनरकंव्रजेत् ॥ २४ ॥ स्त्रीणामपिगोबधादौकर्त्तव्यतामाह ॥ यत्किंचित्क्रियतेपापंसर्वंकेशेषुतिष्ठति सर्वान्केशान्समुद्धृत्य च्छेदयेदंगुलिद्वयम् ॥ १ ॥

रक्षणवास्ते दूणा व्रतकरें २२ और दूणेव्रतके कीतयां होयां दक्षिणा भी दूणी देणे योग्यहै २३ ॥ यस्येति जिस पुरुषने दूणी दक्षिणा नहिं दित्ती और केशोकी रक्षा करी है तिस पुरुषका पाप स्थिर रहताहैं और पीछे देहकों त्यागकर्के नरककों प्राप्त होताहै ॥ २४ । अब स्त्रीयांकोभी गोवधादि पाप विषे कर्त्तव्यता कहतेहैं यदिति जो कुछ पाप स्त्रीकर्तीहै सो संपूर्ण केशोंविषे स्थित रहताहै उन स्त्रीयांकों चाहिए कि संपूर्ण केशांकों रखकरके दो २ अंगुलि प्रमाण केश कटादेणे परंतु एह विधि सधवाकों है और विधवाकों अधिक कटाणेमे भी दोष नहिंहै १

इस प्रकार स्त्रियां श्रौर कुमारीयांको शिरका मुंडन किहाहै उौर स्त्रियां को केश कटाणे योग्य नहिहै श्रौर नापतितें दूरविषें शयन करणा २ श्रौर रात्रीमे गौ शाला विषें वास नाहिं करणा श्रौर दिनमे गौश्रांके पीछे नहि जाणा श्रौर नदीविषें वा संगमविषें वा वनविषें नहिं जाणा ॥ ३ ॥ स्त्रीयांको चर्म का वस्त्र नहि लेणा इसप्रकार व्रतकों स्त्री करे अर्थात् एह संपूर्ण वार्त्ता नहिं करे जो करणा है तिसको कहतेहैं त्रीति त्रिकाल स्नानकों करे श्रौर देवतयोंका पूजन करे ४ श्रौर कृच्छ्र चांद्रायणादि जो व्रत तिसको स्त्री वंधुश्रों के मध्यविषें हि करे श्रौर घरविषें सदाहि स्थित रहे पवित्र हो कर्के व्रत नूं करे ५ अव पापछपाणे वालेकी निंदाकरतेहैं इहेति इससंसार विषं जो पुरुष गोवधकर्के पीछे उसपापको छपातेहैं सो पुरुष घोर नरकविषे प्राप्तहोतेहैं कैसा

एवंनारीकुमारीणां शिरसोमुंडनंस्मृतम् नस्त्रियाःकेशवपनंनदूरेशयनासनम् २ ॥ नचगोष्ठेवसेद्रात्रौनदिवागाअनुव्रजेत् नदीषुसंगमेचैवअरण्येषुविशेषतः ३ नस्त्रीणामजिनंवासोव्रतमेवंसमाचरेत् त्रिसंध्यंस्नानमित्युक्तंसुराणामर्चनंतथा ॥ ४ ॥ वंधुमध्येव्रतंतासांकृच्छ्रंचांद्रायणादिकम् गृहेषुसततंतिष्ठेच्छुचिर्नियममाचरेत् ॥ ५ ॥ इहयोगोवधंकृत्वाप्रच्छादयितुमिच्छति सयातिनरकंघोरं कालसूत्रमसंशयम् ॥ ६ ॥ विमुक्तोनरकात्तस्मान्मर्त्यलोकेप्रजायते क्लीवोदुःखीचकुष्टीचसप्तजन्मानिवैनरः ७ तस्मात्प्रकाशयेत्पापंस्वधर्मंसततंचरेत् स्त्रीवालभृत्यविप्रेषुअतिकोपंविवर्जयेत् ।८ ॥ इत्युपपातकप्रायश्चित्तेषुगोवधप्रायश्चित्तं प्रथमम् । १ । ॥ अथायाज्ययाजने प्रायश्चित्तमाह मनुः ॥ व्रात्यानांयाजनंकृत्वापरेषामंत्यकर्म्मच अभिचारमहीनंचत्रिभिःकृच्छ्रैर्व्यपोहति ॥ १ ॥

नरकहै कालसूत्र है नाम जिसका ६ तिस नरकतें विमुक्त होकर मनुष्यलोक विषे उत्पन्न होताहै तिसविषे भी नपुंसक श्रौर कुष्टी श्रौर दुःखी सप्त जन्मपर्य्यंत सो पुरुष रहताहै ७ तिस कारणते पुरुष अपने पापकों प्रकट कर देवे अपने धर्मकों सदा करता रहे स्त्री श्रौर वालक श्रौर नौकर श्रौर व्राह्मण इनांविषें वहुत कोप न करे । ८ ॥ एह उपपातक प्रायश्चित्त विषें गोवधका प्रायश्चित्त प्रथम किहाहै ॥ ॥ अव नहिं जो यज्ञका अधिकारी तिसको यज्ञकरवाणे विषें मनुजी प्रायश्चित्त कहतेहैं व्रात्येति संस्कारते हीन जो पुरुष इनकों यज्ञ कराणा श्रौर वंधुश्रातें भिन्न उौरोंका अंत्यकर्म्म करणा श्रौर अहीन जो अभिचार इनके विषे जो दोषहै सो तिन्न कृच्छ्रवतों कर्के दूर होताहै ॥ १ ॥

परेषामंत्यकर्म्म एह अत्यंत अभ्यासका विषयहै अर्थात् वहुत वार करणेका विषयहै वा शूद्रके अंत्यकर्म्मकराणेका विषयहै प्रायश्चित्त वहुत होणेतें अहीन क्या यज्ञविशेष दो रात्रीतें लेकर वारां १२ दिन तक जो दूसरेके मारणका उपाय करणा सो अभिचार कियाहै ॥ इसमे एह अभिप्रायहै कि एह अभिचार गुरुआदिका करे तो दोषहै होरकाकरे तो दोष नहिहै इसमें वचनहै (अभिचारोऽनभिचारणीयस्येति) और वो अभिचार भी दोतीनदिनआदिकर्के साध्य जानना एक दिनसाध्य नहि जानना इसमे श्रुतिप्रमाणहै(अहीनेति)याज्ञवल्क्य जो कहतेहैं त्रीनिति संस्कार रहित पुरुषको यज्ञ करवाणवाला और अभिचारी तीन कृच्छ्र व्रत करे और वेदभुलाणे वाला वर्ष पर्य्यंत यवभक्षण करे किसे शरणागतको त्यागे तौभी यवभक्षणकरे तां शुद्धहोताहै १ इसका तात्पर्य्य एहहै किप्राजापत्यप्रभृति जो तीनकृच्छ्रहैं तिनांको गुरु लघु भावहै क्या इनमें कोई गुरुहै और कोई लघुहै तिसी तरह इनांको त्रित्वनिमित्तकं गुरु लघु भाव कर्के कल्पना

परेषामंत्यकर्म्मेत्यत्यंताभ्यासविषयम् शूद्रांत्यकर्म्मविषयंवा प्रायश्चित्तस्य गुरुत्वात् अहीनांद्विरात्रादिद्वादशाहपर्य्यंतोहर्गणः।अयमभिचारोऽभिचारानर्हस्य गुर्वादेःकृतोदोषावहोनान्यस्य अभिचारोऽनभिचारणीयस्येतिवचनात् सोप्यहीनो द्वित्रिरात्रादिसाध्यः नत्वेकादिनीयइत्यर्थः अहीनयजनमशुचिकरमितिश्रुतेः।याज्ञवल्क्यः।त्रीन्कृच्छ्रानाचरेद्व्रात्ययाजकोभिचरन्नपि वेदप्लावीयवाश्यब्दंत्यक्त्वाचशरणागतम् १ त्रीन्कृच्छ्रान्प्राजापत्यप्रभृतीन् तेषांचगुरुलघुभूतानांत्रित्वं निमित्तगुरुलघुभावेनकल्पनीयम् किंच उपपातकशुद्धिःस्यादेवंचांद्रायणेनतु पयसावापिमासेनपराकेणाथवापुनः२ एवं गोवधोक्तव्रतप्रकारेण मासं पंचगव्याशनादिना अन्येषां व्रात्यतादीनामुपपातकानां शुद्धिर्भवेत् वा वक्ष्यमाणलक्षणेन चांद्रायणेन मासंपयोव्रतेनवापराकेणवाशुद्धिर्भवेत् ॥

करणे योग्यहै अर्थात् निमित्त अधिक होवे तद इनांको गुरु करणा जेकर निमित्त लघु होवे तां लघु करदेणा जेकर निमित्त मध्यम होवे तां एक लघु दूसरा गुरु करणे योग्यहै १ कुछक और कहतेहैं उपेति एवं क्या गोवधोक्त प्रकार कर्के और चांद्रायण व्रत कर्के उपपातककी शुद्धि होतीहै वा महीने पर्य्यंत जलपान करणे कर्के अथवा पराक व्रत कर्के शुद्धि होती है २ इसी अर्थको स्पष्ट कर्तेहैं एवमिति इसतरां गोवध विषे कहा जो व्रतप्रकार मास पंचगव्याशनादि तिस कर्के और व्रात्यतादि उपपातकोंकी शुद्धि कहीहै वा आगे कहणा है लक्षण जिसका ऐसे चान्द्रायण कर्के वा महीनेका जो पयोव्रत तिस कर्के वा पराक व्रत कर्के शुद्धि कहीहै एह चार व्रत दिखाएहैं ॥

परंतु इसी विषें अन्यत्र सिद्धका अन्यत्र समर्थनरूप जो अतिदेशवाक्य तिसतें गो चर्म का वस्त्र और गोसेवादिक गोवध विषें कितनेक असाधारण धर्म्महैं तिन्हां कर्के कुछक न्यूनता जानणें योग्यहै ॥ अर्थात् गोचर्म्मधारणादि इसमें नहि करणे योग्य ॥ एह व्रत चतुष्टय कामनाके विना करणे वाला जो पुरुष तिस विषें शक्तिकी अपेक्षा कर्के विकल्पकरणे योग्यहै अर्थात् जैसी शक्ति होवे तैसा करणें योग्यहैं और कामना कर्के करणे वालाजो पुरुष तिसविषें कहतेहैं ॥ एतदिति ॥ उपपातकी जो द्विज हैं सो अवकीर्णिकों त्याग कर्के अपणी शुद्धि वास्ते चांद्रायण व्रतकों करेंइसकों स्पष्टकर्तेहैंकि जिसका स्वप्नादिविषें वीर्य्यादि स्खलन होवे उसका नाम अवकीर्णीहै एह जो मनुका कथन किया होया तीनमहीनेका व्रत एहि देखणे योग्यहै ॥ इसी वचनतें एह प्रायश्चित्तका अतिदेश है सो सब उपपातक गणों विषें पठित जो पाप हैं सो कैसेहैं कि कियाहै प्रायश्चित्त जिनांकावा नहिं कियाहैं प्रायश्चित्त जिनांका

अत्रातिदेशसामर्थ्याद्गोचर्मवसनगोपरिचर्यादिभिर्गोवधासाधारणैः कतिपयैर्न्यूनत्वमवगम्यते एतच्चव्रतचतुष्टयमकामकारेशक्त्यपेक्षयाविकल्पितं द्रष्टव्यम् ॥ कामकारेतु ॥ एतदेवव्रतंकुर्युरुपपातकिनोद्विजाः अवकीर्णिवर्जं शुद्ध्यर्थंचांद्रायणमथापिवेति मनूक्तंत्रैमासिकंद्रष्टव्यम् अतएववचनादयं प्रायश्चित्तादेशःसर्वेषामुपपातकगणपठितानामुक्तप्रायश्चित्तानामनुक्तप्रायश्चित्तानांचावकीर्णिवर्जितानामविशेषेणवेदितव्यः अवकीर्णिनस्तुप्रतिपदोक्तमेव अतोव्रात्यतादिषु अस्मिन् शास्त्रे शास्त्रांतरे वा दृष्टैः प्रायश्चित्तैःसहोपपातकशुद्धिःस्यादेवमित्यादिना प्रतिपादितव्रतचतुष्टयस्य समविषमताकल्पनेन विकल्पोविषयविभागोवाश्रयणीयइतिमिताक्षरा ॥ प्रायश्चित्तेन्दुशेखरेपीत्थमेवव्याख्यातम् । तद्यथा अयाज्ययाजकोव्रात्ययाजको व्रात्योपनेता व्रात्याध्यापकः ॥

और अवकीर्णि कर्के रहित जोहैं तिनांका अविशेष कर्के जानणे योग्यहै अर्थात् एह प्रायश्चित्त सभना उपपातकोंदा सांझाहै २ और अवकीर्णि का पृथक् प्रायश्चित्त किया है इस कारण तें व्रात्यतादियोंको इस शास्त्र विषें वा शास्त्रांतर विषें देखे होंए जो प्रायश्चित्त तिनांके साथहि-(उपपातकशुद्धिःस्यात्) इत्यादि वचन कर्के प्रतिपादन कीते जो चारव्रत तिनांको सम और विषमताके कल्पना करणें कर्के विकल्प वा विषयविभाग आश्रय करणें योग्यहै एह मिताक्षरामें कहाहै और प्रायश्चित्तेन्दु शेखरविषेंभी इसी प्रकार व्याख्यान कियाहै सो जैसें हैतैसें कथन करतेहैं अयाज्येति नहिं जिसको यज्ञका अधिकार तिसको यज्ञ करवाणवाला १ और संस्कारतें हीन जोपुरुषतिसको यज्ञ करवाण वाला २ और व्रात्यपुरुषको यज्ञोपवीत करवाण वाला ३ और व्रात्यकोंपढाणवाला ४

और अपवित्र पुरुषकों यज्ञ करवाण वाला ५ और शूद्रका जो कर्म्म क्रियादि करवाणवाला ६ और वेद भुलाण वाला ७ और चोरतें विना जो शरणागत पुरुष तिसको त्यागण वाला ८ और जो पुरुष चोरकी रक्षा करण वाला ९ और वशीकरण उच्चाटनादि कर्के जो अभिचार कर्ताहै १० एह संपूर्ण न जाणकर्के करें तां कृच्छ्र और सांतपन और अतिकृच्छ्र इनांको यथा योग्यकरें परंतु एह व्यवस्थाहै कि कितेक तीन इकठे करणे कितेक इक करणा अर्थात् जैसा पाप होवे तैसाही व्रतकरणा ॥ अव प्रायश्चित्तविवेकविषे मनुजी कहतेहैं असदिति खोटे दानके लयणेवाला उभयमुखीगौ और तिलधेनु आदिदानका जो प्रतिग्रहीता सोहै असत्प्रति ग्रहीताहै और नांहि यज्ञका जो अधिकारी तिसको यज्ञ करवाणवाला और नक्षत्रोंकर्के जीविकाकरण

अहीनयाजकः शूद्रांत्येष्टिकर्म्मयाजको वेदविप्लावी तस्करेतरशरणागत त्यागी तस्कररक्षकः वशीकरणोच्चाटनादिरूपाभिचारकर्त्ताचाऽमत्या कृच्छ्रसांतपनातिकृच्छ्रेषु त्रिषु यथायोग्यंक्वचित्समुदितंक्वचिदेकंकुर्य्यादिति प्रायश्चित्तविवेकेमनुः। असत्प्रतिग्रहीतारस्तथैवायाज्ययाजकाः नक्षत्रैर्जीवंतियश्चसेंधकारंप्रपद्यते वसिष्ठः ॥ श्रद्दधानस्यभोक्तव्यंचौरस्यापिविशेषतः नत्वेववहुयाज्यस्ययश्चोपनयतेवहून् १ प्रायश्चित्तेत्रवौधायनः। वहुप्रतिग्राह्यस्यवाप्रतिगृह्य अयाज्यान्याजयित्वाऽप्रातिग्राह्यस्य वा प्रतिगृह्य अनाश्यस्यवाऽन्नमशित्वातरत्समंदीयंजपेत् इत्ययाज्ययाजकप्रायश्चित्तं द्वितीयम् ॥ २ ॥ ❁

वाला पुरुष एह सभ अंधकार नरकविषे प्राप्तहोतेहैं १ अव वसिष्टजीकहतेहैं श्रदिति श्रद्धावाला चोरभी होवे तिसका अन्न भक्षण करलैणा और वहुत यज्ञ करवाणवाले पुरुषका और वहुतयों कोयज्ञोपवीत करवाण वालेका अन्न भक्षण नहिं करणा ॥ इस प्रायश्चित्तविषे वौधायनजी कहतेहैं ॥ वहुत दान लयण वाले पुरुषका दान लयणा। और अयाज्यपुरुषकों यज्ञकरवाणा और जिसका अन्न नहिं खाणा होवें तिसका भी खाई लयणा इनां सभनां विषे तरत्समंदीय नाम जो ऋचा तिसका जप करणे योग्यहै ॥ एह नाहिं यज्ञका जो अधिकारी तिसको यज्ञ करवाण वाले पुरुषका प्रायश्चित्त कियाहै एह उपपातक गणनामें दूसरा है ॥ २ ॥ ❁

अब पर स्त्री गमनका प्रायश्चित्त कहतेहैं पारदार्य्यमिति इसविषे जो पारदार्य्यपापहै सो गुरुतल्प और तत्सम और तदतिदेशिक इनांतें भिन्न विषयजानणा तिनांविषे उपपातकका जो सामान्य प्रायश्चित्तहै तिसका गुरुदारादिविषे अपवाद पिच्छे कियाहै तैसें अपवादान्तर गौतमजी कहतेहैं वार्षिकमिति वर्ष ब्रह्मचर्यके प्रसंगमें कियाहै कि ऐसें एक वर्षहि ब्रह्मचर्य्य उपपातक विषे जानणा दोवर्ष परस्त्रीगमनविषे ब्रह्मचर्यजानणा और त्रयवर्ष ब्रह्मचर्य्यवेदपाठीकी स्त्रीविषे जानणा इसविषे इसप्रकार व्यवस्था कहतेहैं ॥ ऋत्विति ऋतुकालविषे कामना कर्के जातिमात्र ब्राह्मणीके गमन विषे दोवर्ष ब्रह्मचर्य धारणा तिसीविषे वेदपाठीकी स्त्रीविषे गमनकरे तां तीनवर्ष ब्रह्मचर्य धारणकरे

* अथपारदार्य्यम् पारदार्य्यंचात्र गुरुतल्पतत्समतदातिदेशिकव्यतिरिक्तविषयम् तत्रोपपातकसामान्यप्रायश्चित्तस्य गुरुदारादावपवादउक्तएव। तथाअपवादान्तरमाह गौतमः। वार्षिकंब्रह्मचर्यंप्रस्तुत्योपपातकेपुचैवमिति द्वेपरदारे त्रीणिश्रोत्रियस्येति अत्रेत्थंव्यवस्थामाहुः। ऋतुकाले कामतोजातिमात्रब्राह्मणीगमने वार्षिकं ब्रह्मचर्यम् तस्मिन्नेवकाले कर्मशालित्वादिगुणयोगिन्या ब्राह्मण्यागमने द्वे वर्षे तत्रैव श्रोत्रियभार्यागमने त्रैवार्षिकामिति यद्वा ब्राह्मणीक्षत्रियावैश्यापरत्वेन त्रैवार्षिकद्वैवार्षिकैकवार्षिकाणां व्यवस्थेति ऋतुकालादन्यत्रगमनेतूपपातकेष्वौत्सर्गिकतयोक्तंबोध्यमितिदिक्

॥ अत्रोशनाः ॥ गमनेतुव्रतंयत्स्याद्गर्भेतद्द्विगुणंचरेत् ॥ १ ॥

इसी विषे और पक्ष कहतेहैं ब्राह्मणीति ब्राह्मणी और क्षत्रियाणी और वैश्यकी स्त्री इनांकों गमन काविषय रक्ष कर्के तीनवर्ष वा दो वर्ष वा एकवर्ष इनकी व्यवस्था जानणी अर्थात् ब्राह्मणी विषे गमन करणेतें तीनवर्ष ब्रह्मचर्य करणा और क्षत्रियाणी विषे गमन करणेतें दो वर्ष ब्रह्मचर्य धारणा और वैश्यकी स्त्री विषे गमन करणेतें एकवर्ष ब्रह्मचर्य धारणा ऐसी व्यवस्थाहै और ऋतुकालतें अन्यत्र गमन विषे उपपातक विषे उपपातकशुद्धिःस्यादित्यादि वाक्य कर्के जो सामान्य प्रायश्चित्त कियाहै सो जानणे योग्यहै ॥ इसीविषे शुक्रजी कहतेहैं गमनइति गमन विषे जो व्रत कियाहै जेकर गमनकरणेतें गर्भ होवे तां दूणा व्रत करे १ ॥

संवर्त जी कहतेहैं कथमिति क्षत्री वा वैश्य ब्राह्मणीविषें गमनकरे तद कृच्छ्र वा सांतपन व्रतकों पापकी शुद्धि वास्ते करे १ श्रौर शूद्र कामके वश होया होया ब्राह्मणी विषें गमन करे तद गोमूत्र युक्त जो यव तिनांको पापकी शुद्धि वास्ते एक महीना भक्षण करे २ परंतु एह प्रायश्चित्त अत्यंत व्यभिचारिणी ब्राह्मणीके गमन विषें जानणा ॥ होरनां विषें कहतेहैं प्रातिलोम्येति प्रातिलोम्यविषें पुरुषका वध करणा वा नासा कर्णादिका कट देणा अर्थात् शूद्र वैश्यादि स्त्री मेंगमन करे वैश्य क्षत्रियादिस्त्री विषें गमन करे क्षत्री ब्राह्मणी विषें गमन करे तद इसेंम ऐसी व्यवस्थाहै परंतु इसका ऐसा अभि प्रायहै कि (प्रातिलोम्ये)इत्यादि वचन दंडपारुष्यके दंडविषेहैं तिस जगादंडबहुत श्रवण करणेंकर्के प्रायश्चित्तभी बहुत जानणा ॥ अब नीचजातिकी स्त्रीविषे आपस्तंवजी कहतेहैं म्लेच्छीति म्लेच्छकी स्त्री अर्थात् मुसलमानकी स्त्री म्लेच्छ शब्दका अर्थआगे

संवर्त्तः कथंचिद्ब्राह्मणींगच्छेत्क्षत्रियोवैश्यएवच कृच्छ्रंसांतपनंवास्यात् प्रायश्चित्तंविशुद्धये १ शूद्रस्तुब्राह्मणींगच्छेत्कथंचित्काममोहितः गोमूत्रयावकाहारोमासिनैकेनशुद्ध्यति २ इदंचात्यंतव्यभिचारितब्राह्मणीगमनविषयम् अन्यत्रतु। प्रातिलोम्येवधःपुंसोनासाकर्णादिकर्त्तनमितिदंडगौरवस्मरणात्प्रायश्चित्तमपिगुरुतरं कल्प्यम् आपस्तंवः। म्लेच्छीनटीचर्मकारीरजकीवरटीतथा एतासुगमनंकृत्वाचरेच्चान्द्रायणद्वयमिति १ रजकश्चर्मकारश्च नटोवरटएवच कैवर्त्तमेदभिल्लाश्चसप्तैतेह्यंत्यजाःस्मृताः २ एतासांचांत्यजस्त्रीणांमध्येयदेकस्याव्यवायेप्रायश्चित्तमभिहितंतत्सर्वासुभवति सर्वासांसदृशत्वात् ॥ तथाहोशनाः॥ वहूनामेकधर्म्माणामेकस्यापियदुच्यते सर्वेषांतद्भवेत्कार्य्यमेकरूपाहितेस्मृताइति १ ॥

आवेगा जो गोमांसकाभक्षक है श्रौर सदाचारतेहीनइत्यादि श्रौर नटुए की स्त्री श्रौर चमयारी श्रौर धोवण श्रौर डूमणी इनांविषे गमनकर्के दो चांद्रायण व्रत करे तां शुद्ध होताहै १ चर्म्मकार पदसे श्रौरकाभी स्मरण आयाहै इसकर्के तिनकी गणना करतेहैं रजक इति धोवी श्रौर चमयार श्रौर नटुआ श्रोर डूम श्रौर मलाह श्रौर मेद इनकाहि भेदहै जिनकोंदडई कहतेहैं श्रौर भिल्ल बेलदार अथवा वनमें रहण वाले किरातलोक एह सत्त अंत्यजजाति कही है २ एह जो अंत्यज इनांकी स्त्रियांके मध्यविषें जो इकके गमनविषें प्रायश्चित्त है सो सभनां विषें जानणा क्योंके सभनांको तुल्य होणेंते ॥ तैसेंहि शुक्रजी कहतेहैं वहूनामिति एकधर्म्मवाले जो बहुत होण तिनांविषें एकका जो कार्य कहीदाहै सो कार्य सभनां को होताहै जिसकर्के सो सम्पूर्ण एक रूप कहेहैं ॥ १ ॥

वृहत्संवर्त्तनेंभी एही कियाहै ॥ रजकेति रजककी स्त्री और फंदकीकी स्त्री और नटुए की स्त्री और वेज वा चर्म्म इनां कर्के जो उपजीविका करण वाले तिनांकी जो स्त्री इनांविषें ब्राह्मणादि गमनकरे तां दो चान्द्रायण व्रत करणें कर्के शुद्ध होताहै १ ॥ शुक्रजी कहतेहैं चांडाल्यामिति चांडालीविषें गर्भको स्थापनकरे तां गुरुतल्प व्रत करे अर्थात् गुरुतल्प तुल्य पाप होताहै ॥ जो आपस्तंवजीका वचनहै कि अंत्यजायामिति पीछे कथन कीते जो अन्त्यज तिनांकी स्त्री विषें जद ब्राह्मणादिकी प्रसूतिहोवे तां तिसविषें प्रायश्चित्त नहि होताहै तिसपुरुषको विदेशमें निकाल देणा इसमें संशय नहि करणा एह इच्छा कर्के करण वाले पुरुष विषे जानणा ॥ १ ॥ इसका स्पष्टार्थ कहतेहैं ॥ इसका एह अर्थहै अन्त्यजाके साथ गमन करण वाला कृतागस्य क्या किया है अपराध जिसनें कृतांक

वृहत्संवर्त्तः ॥ रजकव्याधशैलूषवेणुचर्मोपजीविनीः एतास्तुब्राह्मणोगत्वा चरेच्चांद्रायणद्वयम् ॥ १ उशनाः ॥ चांडाल्यांगर्भमारोप्य गुरुतल्पव्रतंचरेत् यत्त्वापस्तंववचनम् । अंत्यजायांप्रसूतस्यनिष्कृतिर्नविधीयते निर्वासनंकृताग स्यतस्यकार्य्यमसंशयमिति १ तत्कामकारविषयमिति अंत्यजायांप्रसूतस्य अं त्यजागामिनः कृतागस्यकृतापराधस्य कृतांकस्येतिवापाठः अत्रसर्वत्रमत्या भ्यासेप्रतिनिमित्तनैमित्तिकानुवृत्तौप्रसक्तायांविशेषमाह लौगाक्षिः । अभ्या सेऽहर्गुणावृद्धिर्मासादर्वाग्विधीयते ततोमासगुणावृद्धिर्यावत्संवत्सरंभवेत् १ अमतिपूर्वावृत्तौविशेषमाह । सकृत्कृतेपुयत्प्रोक्तंत्रिगुणंतत्त्रिभिर्दिनैः मासा त्पंचगुणंप्रोक्तंषण्मासाद्दशधाभवेत् २ संवत्सरात्पंचदशद्व्यब्दाद्विंशगुणंभवेत्

स्य इसपाठमें एह अर्थ है क्या कीताहै अंक क्या चिन्हभगका अथवा लिंगकाजिसको ऐसा कर्के निकाल देणा ॥ इन्हां सभना विषे जाण कर्के वहुत अभ्यासदे होयां २ जितने निमित्त होवें उतने ही नैमित्तक होनेचाहिए अर्थात् जितने पाप होवें उतनेहीं प्रायश्चित्त होनेचाहिए इस न्या यके प्रसंग के होयां विशेष कहतेहैं लौगाक्षिजी अभ्यासइति महीनेके उरें अभ्यासदें होयां एकदिन प्रायश्चित्त की वृद्धि करणी जैसें अष्ठ दिनके प्रायश्चित्तमें नव ९ दिन होण और वर्ष तक अभ्यासदे होयां महीनेकी वृद्धिकरणी १ अज्ञान पूर्वक अभ्यास विषे विशेष कहतेहैं सकृदिति एकवेर पापविषे जो प्रायश्चित्त कियाहै सोप्रायश्चित्त तीन दिन पाप करणेंमें त्रिगुणकरणा और महीनें तक पाप करणेंमें पंचगुणा करणा और छे ६ महीनें तक पाप करणेंमें दश गुणा करणा औरवर्ष तक पाप करणे में पंद्रां १५ गुणाकरणा दोवर्ष पाप करणे में वीस गुणा करणा

इसप्रकार कल्पना करणे योग्यहै और इसके आगे होवे तां अपनी कल्पना करणीं चाहिए जैसें एकवार करणेंमें जो कियाहै सो दोवर्षउप्पर जद तीनदिन होए तां वीस गुणांकर्के पीछे एकवारकरणे वालेकों त्रिगुणकरणा इसके आगे मासादिविषे ऐसेंहि कल्पनाकरलयणी चारव र्ष तक तिसके आगे छेवर्ष तक फेर ऐसेहि जाणो इसमें कोई ऐसा अर्थकरतेहैं कि दोवर्षतें आगे तीसरेवर्षविषे पंचगुणा वृद्धिके हसावसें २५ गुणाकरणे चाहिए परंतु इसमें एहवातध्यान करणी चाहिए कि दोवर्षतें जद एकमहीनाअधिकहै वा ४ अथवा १०तांभी पंजहिवर्षगे और चौथे वर्ष विषे१० व्रत पांचमें १५ ऐसेंहि जाणो यह शातातपजीका वचन यथार्थहै ३ अब दूसरे व्रतकी व्यवस्थाकहतेहैं विधेरिति एहजो पहलीविधिहै इसतें दूसरी विधिविषे दूणा करणा एहजा आवृत्ति विधानहै सो महापातकके विषयमे जानणे योग्यहै अब औरकहतेहैं पुषेति किसेपुरुषकें

अतोप्येवंप्रकल्प्यंस्याच्छातातपवचोयथा ३ यत्तु विधेःप्राथमिकादस्माद् द्वितीयेद्विगुणंभवेत् इत्यावृत्तिविधानम् तत्तुमहापातकविषयमितिदिगिति पुरुषांतराव्यभिचारितां जातिमात्रविप्रामृतौ विप्रोगत्वापूर्वोक्तंवार्षिकंब्र ह्मचर्य्यव्रतम् धर्मादिकर्म्मशीलत्वादिगुणशालिनीं तादृशींगंतुर्विप्रस्यद्वि वार्षिकंप्रायाश्चित्तम् श्रोत्रियपत्न्यांतादृश्यांत्रिवार्षिकंतत् ताभिर्यदिद्रव्यं दत्तंभवेत्तर्हितत्संत्यज्यप्रायाश्चित्तम् द्वित्रिचतुर्वारगमने क्रमेण द्वित्रिचतुर्गु णम् अग्रेचपातित्यम् एवंद्वितीयतृतीयादिगमनेपि

साथजिसने व्य भिचार नाहिं किया ऐसी जो जातिमात्र ब्राह्मणीतिसके साथ ऋतुकालविषे ब्राह्मण गमनकरे तां विषे पूर्वोक्तवर्षतक ब्रह्मचर्य्य व्रतकरे तदशुद्धहोताहै और धर्मादि कर्म्म और शील त्वादिगुणों कर्के युक्त ब्राह्मणी गमन करण वाले ब्राह्मणकों दोवर्षका प्रायश्चितहै और ॥ वेदपा ठीकी धर्मादि कर्के युक्तस्त्रीविषे गमन करे तां तीन वर्ष प्रायाश्चित्तकरणा तिनां स्त्रियांने जो कुछ द्रव्य दित्ताहै तिसको त्याग कर्के प्रायश्चित्तकरणा परंतु दोवार अथवा तीनवार अथवा चारवार उसीस्त्रीविषे गमन करणेमें दूणा त्रीणा चौगुणा व्रत करणा चाहिए और इसतें अधिक गमन करे तां पतितहोताहै अर्थात् तिसका प्रायश्चित्त नहिहै एह किसेका मतहै ॥ और कालियुगमें पतितकाभी प्रायश्चित्तहैं एह आगे महापातकि प्रकरण विषे आवेगा एवमिति इसी तरह दो त्रय और चार स्त्री विषे गमनकरणेमे प्रायश्चित्त जानणा

और इससें विलक्षण शूलपाणि मिताक्षरादिकारोंने कियाहै ॥ एकेति एकस्त्री विषे दो त्रय बार गमनदे होयां पूर्वोक्त ही द्वि त्रि चतुर्गुण व्रतका एकपादन्यून करणा और क्षत्रियादि अपणे वर्णकीस्त्रीविषे गमन करें तां पूर्वोक्त व्रतका एक पाद ऊन व्रत करेऔर ब्राह्मणको गुणवाली जो क्षत्रियादियोंकी स्त्री तिसविषे गमन करणेतें दो वर्ष इकवर्ष छे ६ महीने तक क्रमतें व्रत करणा चाहिएअर्थात् क्षत्रीकी स्त्री विषे दो वर्ष और वैश्यकी स्त्रीमें एक वर्ष शूद्रकी स्त्रीमें छे महीनें इस तरांव्यवस्थाजानणी पराई जो गुणवालीहै शूद्री तिसविषें शूद्र गमन करे तां छे ६ महीनेका व्रत करे इसमें अज्ञान कर्के करे तां सवजगा अर्द्ध व्रत जानणा अपणे भर्त्ता से अतिरिक्त समान वर्णके एक पुरुष साथ गमन करण वाली स्त्री के साथ गमन करण वालेकों पूर्वोक्तहि व्रत क्या द्वेपरदारे इसीका इक पाद न्यून व्रत करणा उचित है ॥ दो पुरुष साथ गमन करण

शूलपाणिमिताक्षराकारादयस्तु एकस्यामेवद्वित्रिवारगमने पूर्वोक्तमेवपाद हान्येतिप्रोचुः। क्षत्रियादीनांच स्वस्ववर्णासु गमनेपादहानिः विप्रस्यगुण वतीपुक्षत्रियादिस्त्रीषु द्विवार्षिकैकवार्षिकपण्मासिकानीति शूद्रस्यपरकी यायांगुणवत्यांशूद्रयांगंतुः पाण्मासिकम् अकामतःसर्वत्रैतदर्धम् । स्वभ र्तृव्यतिरिक्तसवर्णैकपुरुषगामिन्यां गंतुः पूर्वोक्तमेव पादहान्याकार्यम् पुरु षद्वयगामिन्यांद्विपादहानिः पुरुषत्रयगामिन्यांत्रिपादहानिः पुरुषचतुष्ट यगामिन्यां स्वैरिणीसंज्ञायां विप्रायां गंतुस्त्र्यहोपवासपूर्वकं घृतपात्रदानम् तादृश्यां क्षत्रियायामुपवासपूर्वकमाढकयवदानम् ॥ वैश्यायांगंताचतु र्थकालाहारोविप्रान्भोजयेदिति शूद्रायांगंतुः सचैलस्नानपूर्वकमुदकुंभदा नम् । पंचमादिगामिन्यांवंधकीसंज्ञायां अष्टमुष्टियवदानम् तादृश्यांशूद्रायां विप्रस्योदकुंभदानम

वाली के साथ गमन करण वालेकों दो पाद न्यून व्रत करणा त्रय पुरुष साथ गमन करण वालीके साथ गमन करण वाले कों त्रय पाद न्यून व्रत करणा ॥ चार पुरुषके साथ गमन करण वालीको स्वैरिणी संज्ञाहै ऐसी ब्राह्मणी विषे गमन करण वाला त्रय उपवास पूर्वक घृतपात्र दान करे ॥ तैसीहि क्षत्रियाणी विषे गमन करणेतें उपवासपूर्वक एक आढकयवदान करे ॥ तैसेहि वैश्यकीस्त्रीके साथ गमन करण वाला चौथे काल भोजन करे और ब्राह्मणांकों भोजन देवे ॥ तैसी शूद्री विषे गमन करण वाला सचैल स्नान पूर्वक जलपूर्णघटका दान करे ॥ पंचमादि पुरुष साथ गमन करण वाली की वंधकी संज्ञाहै इस विषे गमन करण वालेकों अठ मुठी यवदान करणा योग्यहै वंधकी संज्ञावाली शूद्रीविषे गमन करणेतें ब्राह्मणको जलपूरितघटका दान देणा उचितहै

क्षत्रीति वंधकीक्षत्रियाणीविषे गमनकरणेतें गोदानकरणा और वैश्याविषे गमन करणेतें वस्त्र दानकरणा ॥ जेकर बहुत वेर गमन करे तां प्रायश्चित्त भी बहुत वेर करे । इससे विशेष वंधकी गमन विषे षड्त्रिंशन्मतमें भी कियाहै ब्राह्मणीमिति वंधकी ब्राह्मणी विषें गमन करे तां अष्ट मुष्टि अन्न ब्राह्मणके ताई देवें और वंधकी राजाकी स्त्री विषें गमन करे तां धनुष देवे परंतु राजा इसजगा जातिमात्र जानणा पृथिवीपति नहि पृथ्वीपतिकी स्त्रीकों असाहोणा संभावना विषे नहि आउताहै और वैश्याविषें गमन करे तां वस्त्र दान करे १ शूद्री विषें गमन करें तां जलका घट ब्राह्मणके ताईं देवे वा एक दिन उपवास करे और ब्राह्मणकों भोजन देवे २ किंचित् नाम अष्टमुष्टि धान्यका है ॥ अव प्रचेताजी और प्रायश्चित्त कहतेहैं शूद्री वंधकीके साथ गमनदेहोयां आचमन करके प्राणायाम करे ॥ ब्राह्मण वंधकी साथ गमन करे तां गडवी दान करे

क्षत्रियायांधेनुदानम् वैश्यायांवस्त्रदानम् । अभ्यासेप्रायश्चित्तावृत्तिः वंधकी गमनेपड्त्रिंशन्मतेपि । ब्राह्मणींवंधकींगत्वाकिंचिद्दद्याद्द्विजातये राजन्यां चधनुर्दद्याद्वैश्यांगत्वातुचैलकम् १ शूद्रांगत्वातुवैविप्रउदकुंभंद्विजातये दिवसोपोषितोवास्याद्दद्याद्विप्रायभोजनमिति २ किंचिदष्टमुष्ट्यात्मकंधान्यम् प्रायश्चित्तांतरमाह प्रचेताः । वंधकीगमने उपस्पृश्य प्राणायामं । ब्राह्मण वंधकींगत्वाकमंडलुंदद्यात् क्षत्रियवंधकीमायुधम् वैश्यवंधकींप्रतोदमिति अत्र त्रिषु वर्णत्रयोपादानात्प्रथमंशूद्रवंधकीपरम् स्वैरिणीवंधक्योर्लक्षणं स्मृत्यंतरे । चतुर्थेस्वैरिणीप्रोक्तापंचमेवंधकीमतेति १ गौडास्तु ॥ विप्रादेः क्षत्रियादिगमनस्यैवार्धार्धादिहानिमाहुः ॥

क्षत्रिय वंधकी विषे गमन करे तां धनुष दान करे ॥ और वैश्यवंधकी विषे गमन करे तां प्रतोद नाम कोरडा दान करे परंतु इसके विषें तिन्नां वर्णांके ग्रहण होणेतें पहिला जो है सो शूद्रवंधकी पर लगाणा ॥ अव स्वैरिणी और वंधकीकालक्षण और स्मृतिसें कहतेहैं ॥ चतुर्थ इति चारपुरुषासाथ गमनकरणे वाली स्वैरिणी कही है ॥ पंच पुरुषोंके साथ गमन करण वाली वंधकी कहीहै १ अव गौडों का मत कहतेहैं विप्रेति विप्रादियों को क्षत्रियादि गमन विषे अर्द्ध अर्द्ध प्रायश्चित्त कयाहै अर्थात् विप्रको क्षत्रियाणीके गमनविषे जो ब्राह्मणी के गमनमें प्रयाश्चित्तकिहाहै तिसका अर्द्ध करणा और वैश्याणी विषे जो क्षत्रियाणी में प्रायश्चित्तहै तिसका अर्द्ध करणा और शूद्री विषे जो वैश्याणी में प्रायश्चित्त है तिसका अर्द्ध करणा ॥ एसें ही क्षत्री को क्षत्रियाणी में जो प्रायश्चित्तहै तिसका अर्द्ध वैश्याणी विषे करणा एसेंअग्गे भी जानणा

अनृताविति ऋतुतें विना जातिमात्र ब्राह्मणी विषे ब्राह्मण गमन करे तां मनुने कहा जो तीन महीनेंका व्रत सो करे ॥ ऐसेंहि क्षत्रियादि स्त्रियां विषे गमन करणेतें क्रम कर्के दो महीनें वा चांद्रायण वा महीना व्रत करे अर्थात् क्षत्रियाणीमें दो महीने और वैश्यामें चांद्रायण और शूद्रीमें एक महीना व्रत करे तां शुद्धहुंदाहै और क्षत्रियादि अपणे अपणे वर्णकी स्त्रीविषे ऋतुतें विना गमन करेतां दो महीनेका व्रत करें और इनांविषे जेकर गर्भ होवे तां तिस तिस विषयमें सभ जगा व्यभिचारी पुरुष दूणा व्रत करें शूद्रीविषे गर्भ होवे तां त्रय वर्ष पर्यंत चौथे काल एक वेर भोजन करे तद शुद्धहोताहै जेकर ब्राह्मण नहिं इच्छाकरती जो विप्रादि योंकी स्त्री तिसविषे गमन करे तां क्रमकर्के गोघ्नको अर्थात् गोघातीकों किहा जो प्रायश्चित्त

अनृतौ जातिमात्रविप्रांविप्रोगत्वामानवं त्रैमासिकं कुर्यात् ईदृशक्षत्रियादि स्त्रीषुक्रमेण द्वैमासिकचांद्रायणमासिकानि क्षत्रियादीनांस्वस्ववर्णास्वनृतौग मनेद्वैमासिकान्येव आसुगर्भोत्पत्तौतु तत्तद्विषये सर्वत्रोक्तमेवाद्विगुणंकार्यम् शूद्रायांगर्भोत्पत्तौतु त्रीणिवर्षाणि चतुर्थकालेनक्तंभुंजीत। विप्रस्यानिच्छन्ती षुविप्रादिस्त्रीषुगंतुरनुक्रमेणगोघ्नत्रैमासिकद्वैमासिकचांद्रायणानि। अत्रवासि ष्ठंस्मरणम्। शूद्रश्चेद्ब्राह्मणीमभिगच्छेद्वीरुद्भिर्वेष्टयित्वेत्यादिरूपंगुरुतल्पप्रक रणेद्रष्टव्यम् ॥ प्रायश्चित्तमयूखेचतुर्विंशतिमतादाभिहितम् ॥ वृषल्यामभि जातस्तु त्रीणिवर्षाणिचतुर्थकालसमये नक्तंभुंजीतेति एतच्च कामतोऽत्यंताभ्या सेन गर्भोत्पत्तौवेदितव्यम्। अभिजातइत्याहितगर्भः यत्तुहारीतः॥ ब्राह्मणो वृषलींगत्वात्र्यहंभवतिसूतकी अथास्यगर्भमाधत्तेब्राह्मण्यादेवहीयत इति १

त्रय महीनें का वा दो महीनेंका वा चांद्रायण व्रत तिसको करे ॥ इसमें वसिष्ट जीकी स्मृति है शूद्रइति जेकर शूद्र ब्राह्मणीके साथ गमन करे तां तिस शूद्रकों घासर्से लपेट कर्के फूक देवे इत्यादि रूप गुरुतल्प प्रकरण विषे देखणे योग्यहै ॥ प्रायश्चित्त मयूख विषे चतुर्विंशति मतसें कहतेहैं वृषल्यामिति। वृषलीविषे जद गर्भ धारण करे तां तीन वर्ष तक चतुर्थकाल विषे एक वेर भोजन करे। सो एह कामनातें बहुत अभ्यासकर्के गर्भकी उत्पत्तिविषे जानणा और जो हारीत जीनें कियाहै सो कहतेहैं ब्राह्मणइति ब्राह्मण वृषली विषे गमन करे तां त्रय दिन सूतक वाला रहता है जेकर वृषली विषे गर्भ करे तां ब्राह्मण्यतें अर्थात् ब्राह्मणजातिसें दूरहुंदाहै ॥ १ ॥

तैसेंहि और कहतेहैं ब्राह्मणइति ब्राह्मण वृषली विषे गमन करके शीघ्रहि अधोगतिको प्राप्तहो ताहै जेकर इसीविषे गर्भ करे तां पतित होताहै इसमें संशयनहिं करणा २ सो एह सभ वचन पापके गौरवपर व्याख्यानकीतेहैं ॥ अब कण्वऋषिजी कहतेहैं प्रसूतइति जो ब्राह्मण वेश्याविषे जन्मे कया वैश्याणी विषे गर्भ धारण करे सो भिक्षा करके अन्न खावे और इन्द्रियांको रोकरखे एक लक्ष गायत्रीजपकरे तो शुद्ध होताहै १ इसीविषे मलाह की स्त्री और धोबीकी स्त्री और वैश्यकी स्त्री इनां विषे पुरुष गमन करे तां प्राजापत्य व्रत कों करे तां शुद्ध होताहै ॥ २ ॥ इस शाततपके वाक्यविषे वैश्यापदके साथ कथब करणे करके कैवर्त्यादियांके गर्भोत्पादन विषे भी एह प्रायश्चित्त करणा वेश्याविषे गमनका हीनयोनि सेवना के प्रसंग विषे प्रायश्चित्त कहांगे

तथा ब्राह्मणोवृषलींगत्वासद्योगच्छेदधोगतिम् अथास्यगर्भमाधत्ते पतत्या शुनसंशय इति २ तान्येतानिपापगौरवव्याख्यानपराणि कण्वः। प्रसूतोय स्तुवैश्यायांभैक्षभुङ्नियतेन्द्रियः शतंसहस्रमभ्यस्यगायत्रीमितिशुद्धतामि ति १शतंसहस्रंलक्षमित्यर्थः लक्षगायत्रीजपपर्य्यन्तंभैक्षभुक्स्यादितिया वत् अत्रकैवर्त्तीरजकींचैववैश्यांवापिगतोनरः प्राजापत्यविधानेन कृच्छ्रेणै केनशुध्यतीति २ शातातपवाक्ये वैश्यासममितिव्याहृतकैवर्त्यादिपु गर्भो त्पादनेपीदमेवप्रायश्चित्तमिति वारस्त्रीगमनेहीनयोनिनिषेवणप्रसंगे प्राय श्चित्तंवक्ष्यते ॥ किंच । याज्ञवल्क्यः अनियुक्तोभ्रातृजायांगच्छंश्चांद्रायणं चरेत् त्रिरात्रांतेघृतंप्राश्यगत्वोदक्यांविशुध्यति १॥ शास्त्रीयविनियोगंवि नायोज्येष्ठस्यकनिष्ठस्यवाभ्रातुर्जायांकामुकतयागच्छति सचांद्रायणंकु र्य्यात् सकृदमतिपूर्वविषयमेतत्

कुच्छ और भी याज्ञवल्क्यजी कहतेहैं अनियुक्तइति किसे करके नाहिं प्रेरयाहोया भरजाईके साथ गमन करे तां चांद्रायण व्रत करे तद शुद्ध होताहै और रजस्वलाविषे गमन करे तां त्रयरात्रि घृतप्राशन करके शुद्ध होताहै १ शास्त्रकी विधि तें विना जो पुरुष ज्येष्ठकी वा कनिष्ठभ्रा ताकी स्त्री विषे इच्छा करके गमन करे तां सो पुरुष चांद्रायण व्रतकरे तां शुद्ध होताहै ॥ एहअ ज्ञान करके एकवेरकरणे विषे जानणे योग्यहै इसमे एहअभिप्रायहै कि देवरतें पुत्रकी उत्पत्ति शास्त्रनें कहीहै तिसविषे जेकर आज्ञाहै तदभरजाई विषें गमनका दोष नहि और तिसावि.. नादोषहै इसकरकेकिहाहै कि (अनियुक्तः) इसमेभी ऐसा जानणा कि उहपुरुष कामुकहै परंतु भरजाईकों नहि जानदा

इच्छा कर्के करणे विषे शंख ऋषिजी कहतेहैं परिविचिरिति बडे भ्राताके विना छोटेका विवाह होवे सो परिवेत्ता है और बडेका नाम परिवित्तिहै सो दोनो प्रायश्चित्तके अधिकारी हैं सो अपने पापके दूर करणे वास्ते एकवर्ष ब्राह्मणके गृह से भिक्षाका अन्न लेकर भोजन करते रहैं और ज्येष्ठ भ्राताकी भार्याविषे नहि किसेकर्के प्रेरयाहोया गमन करे तां उसमे जो प्रायश्चित्तहै सोही छोटे भ्राताकीभार्य्याके गमन विषे करे ॥ इसमेभी जाणकर्के किया जो अभ्यास तिसके विषे गुरुतल्पका अतिदेश जानणा अर्थात् गुरुतल्प मे जो प्रायश्चित्तहै सोकरणा ॥ रजस्वलाके गमन विषे त्रयरात्रि उपवासतें पीछे घृतका भक्षण शुद्धि का कारण है परंतु रजस्वला इसविषे अपणी स्त्री जानणी और गमन अज्ञान पूर्वक एकवार कीत्ता होवेतो जानणा ॥ शातातप जी भी कहतेहैं अनुदकेति जलके विना मूत्र और विष्टाके

कामतः प्रवृत्तौ ॥ शंखः ॥ परिवित्तिःपरिवेत्ताचसंवत्सरंब्राह्मणगृहेभैक्षंच रेयातां ज्येष्ठभार्य्यामनियुक्तोगच्छंस्तदेवकनिष्ठभार्य्यांचेति मतिपूर्वक साभ्यासेगुरुतल्पातिदेशः ॥ रजस्वलागमनेत्रिरात्रोपवासानंतरंघृतप्राशनंशुद्धिहेतुः ॥ रजस्वलात्रस्वभार्य्या गमनममतिपूर्वकंसकृत्कृतम् ॥ शातातपोपि। अनुदकमूत्रपुरीषकरणेसचैलस्नानंमहाव्याहृतिभिर्होमश्चरजस्वलाभिगमनेचैतदेव। तत्रैवाभ्यासे।रजस्वलागमनेसप्तरात्रमिति। गोवर्ज्जममानुषीषुपरदारेपुरजस्वलासुचमतिपूर्वकसकृद्गमने वसिष्ठः। रजस्वलाव्यवाये कृष्णवृषभंदद्याच्छुक्लोलिंगमिति लिंगलांछनं यत्तुमनुः। अमानुषीषुपुरुषउदक्यायामयोनिषु रेतःसिक्त्वाजलेचैवकृच्छ्रंसांतपनंचरेदिति १ तन्मतिपूर्वकेसाभ्यासे परस्त्रीगमनेद्रष्टव्यमिति

करणेविषे सचैलस्नान करे और महाव्याहृतियां जो(ॐभूः ॐभुवः ॐस्वः) इनां कर्के हवनकरे और रजस्वलाके गमनविषे भी एही जानणा ॥ जेकर रजस्वला गमन मे अभ्यास होवे तां सप्तरात्रि उपवास करणा ॥ और गौतें विना पशुयोनि विषे और परस्त्री विषे और रजस्वला विषे जाणकर्के एकवार गमन कीत्ता होवे उसमे वसिष्टजी कहते हैं रजस्वलेति रजस्वला गमनविषे काला बैल दान करे कैसा उह बैलहै कि श्वेत है चिन्ह जिसको इसमेजो मनुजीने कथन कियाहै सो कहतेहैं अमानुषीष्विति पशुयोनि विषे और रजस्वला विषे और अयोनि क्या बालकविषे पुरुष वीर्य्यत्यागे वा जलविषे तां तिसकोकृच्छ्र सांतपन व्रत करणे योग्यहै ॥ १॥ सो एह जाण कर्के अभ्यास वाले परस्त्री गमनविषे देखणे योग्यहै सर्वत्र नहि प्रायश्चित्तके अधिक होणेतें और पशुयोनि क्योंकि विषे भी एही जानणा

इसी विषे नहि इच्छा वाली स्त्री विषे गमन करणे वाले प्रति वृहत्संवर्त्तजी कहतेहैं रजस्वला मिति जो पुरुष रजस्वला विषें गमन करे वा गर्भिणीविषे वा पतितस्त्रीविषे तिस पापको शुद्धि वास्ते अतिकृच्छ्र व्रत करे १ शंख लिखितजीकी स्मृतिमें विशेष कहाहै रजइति रजस्वला और खोटी स्त्री विषे गमन करे तो तीन रात्रि उपवासव्रत और घृत भक्षण करे अवधूतानाम वन्धकी काहैतिसके गमनका पृथक् निमित्तहै एह अपरार्कमें कियाहै और इच्छा कर्के वहुत अभ्यासविषे वेदपाठीकीस्त्रीके गर्भ तक वारां १२ वर्ष व्रत के प्रसंगको लयकर शंखजी कहतेहैं ❀ पादमिति शूद्रहत्या विषें रजस्वला गमन विषे एक पादव्रत करे अव इसीका अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं शूद्रहत्या और रजस्वला गमन इनां निमित्तां विषे वारां १२ वर्षव्रत का पाद करणा अर्थात् त्रय वर्ष व्रत करणा चाहिए ॥ इसमे भी अव और विशेष कहतेहैं श्रोत्रियेति जेकर श्रो

अत्रैवानिच्छंतींगच्छंतंप्रति। वृहत्संवर्त्तः। रजस्वलांतुयोगच्छेद्गर्भिणींपतितां तथा तस्यपापविशुद्ध्यर्थमतिकृच्छ्रविशोधनम् १ शंखलिखितौ रजस्वला ऽवधूताभिगमनेत्रिरात्रमुपवासः घृतप्राशनंचेति अवधूता वन्धकी तद्गमनं चपृथङ्निमित्तमित्यपरार्कः ॥ कामतोऽत्यंताभ्यासे॥श्रोत्रियभार्य्यायागर्भ पर्य्यंतंद्वादशवार्षिकंप्रकृत्य । शंखः पादंतुशूद्रहत्यायामुदक्यागमनेतथेति शूद्रहत्यायामुदक्यागमनेचनिमित्तेद्वादशवार्षिकस्यपादः त्रैवार्षिकमित्यर्थः श्रोत्रियपत्नीत्वाभावेगर्भाभावेच। वृहस्पतिः अकामात्पुल्कसींगत्वाकामाद्ग त्वारजस्वलाम् शिष्यभार्य्यांनरोगत्वापराकेणविशुद्ध्यतीति १।अत्रपरभा र्य्यानिमित्त मुदक्यागमननिमित्तं च प्रायश्चित्तंपृथक्कार्य्यम् द्वयोरपिनि मित्तयोरन्योन्यनिरपेक्षत्वात्

त्रियपत्नीके अभावमें वा गर्भके नाहीं होणेमें गमन करे तिसमें वृहस्पति जी कहतेतेहैं अका मादिति विना इच्छातें नीचजातिकी स्त्री विषें गमन करे और इच्छा सें रजस्वला विषें गम न करे और शिष्यकी स्त्री विषें पुरुष गमन करे तां पराक व्रत जो वारां दिन का उपवासहै तिसकें करणें कर्के शुद्ध होताहै १। इस विषें परस्त्री निमित्त और रजस्वला गमन निमित्त का प्रायश्चित्त पृथक् करणा क्योंकि दोआं निमित्तांकों परस्परमें न अपेक्षा होणेंवें अर्थात् परस्त्री गमन निमित्त प्रायश्चित्त विना रजस्वला गमनतेंभी हुंदाहै और रजस्वला निमित्त प्रायश्चित्त ति सके विना क्या अपनी स्त्रीविषेभी हुंदाहै

जिसके विषे एक निमित्त और निमित्त विना न होवे तिसके विषे एकही निमित्तका प्रायश्चित्तहै जैसे गुरु दाराका गमन परदारा विना नहिं है तिसके विषे गुरुतल्पगमनका प्रायश्चित्त पृथक् नहिं करणा ॥ कुछक औरभी कहतेहैं ॥ चतुर्विंशति मत विषे । भ्रातु रिति छोटे भ्राताकी स्त्री विषे जो पुरुष इच्छा कर्के गमन करताहै सो सांतपन व्रत करे वा दो कृच्छ्र व्रत करे तां शुद्धहोताहै १ मातुरिति माताकी जो भैण तिसकी कन्याविषे गमन करे तैसेंहि चाचेकी कन्या विषे गमन करे तां तप्तकृच्छ्र व्रत कर्के शुद्धहोताहै और मासीकीकन्या और चाचेककन्याकी कन्या विषे गमन करे तां छे ६ रात्रि व्रत करणा योग्यहै २ गुरोरिति गुरुकी कन्या विषे जो गमनकरे तां पराक जो बारां १२ दिनका व्रतहै सो करणा भनेई विषे जेकर द्विज क्या ब्राह्मणादि गमन करे तां चांद्रायण व्रत करणे कर्के तिसका पाप दूर होताहै ३ मातुलस्येति मामेंकी कन्या विषे गमन करे तैसें ही पिता की भयणकी कन्या विषे गमन करे तां प्राजापत्य व्रतकरे

यत्रनिमित्तं निमित्तांतराविनाभूतं तत्रैकमेवानिमित्तकंप्रायश्चित्तम् यथा गुरुदारगमनंपारदार्य्याविनाभावि नहि तत्र गुरुतल्पगमनं पृथगिति किंचचतुर्विंशतिमते ॥ भ्रातुश्चैवकनिष्ठस्यभार्य्यांगत्वातुकामतः सांतपनं प्रकुर्वीतकृच्छ्रद्वयमथापिवा ॥ १ ॥ मातुश्चस्वस्त्रियांगत्वापितृव्यतनयांतथा तप्तकृच्छ्रंप्रकुर्वीतषड्रात्रंतत्सुतासुच ॥ २ ॥ गुरोर्दुहितरंगत्वापराकंतुसमाचरेत् भागिनेयींद्विजोगत्वाचरेच्चांद्रायणव्रतम् ॥ ३ मातुलस्यसुतांगत्वापितुश्चस्वस्त्रियांतथा प्राजापत्यंप्रकुर्वीतहारीतवचनंतथा ४ मातुश्चस्वस्त्रियांचैवभार्य्यांगत्वातुकामतः पितृव्यतनयस्यैवसपादंकृच्छ्रमाचरेत् ५ दौहित्रींपुत्रतनयांचरेच्चांद्रायणव्रतम् तत्सुतांचस्नुषांगत्वापराकंतु समाचरेत् ६ चरेच्चान्द्रायणंविप्रोगत्वोपाध्याययोषिताम् आचार्यस्यपराकंतुबौधायनवचोयथा ७ संबन्धिनःस्त्रियंगत्वासपादंकृच्छ्रमाचरेत् विधवागमनेकृच्छ्रमहोरात्रसमन्वितम् ८

एह हारीतकावचनहै ४ मातुरिति और माताकी जो भयणतिसकी कन्या और चाचेकेपुत्रकी स्त्रीविषे इच्छा कर्के गमन करेतां एक पाद सहित कृच्छ्रव्रतकरे तां शुद्ध होताहै ५ दोत्री और पुत्रकी स्त्रीकी कन्या अर्थात् पोत्री तिस विषे गमन करे तां चांद्रायण व्रतकर्के शुद्धहोताहै और दौहित्रीकी कन्या और पुत्रकी कन्याकी कन्या विषे गमन करे तां पराक व्रत कर्के शुद्ध होताहै ६ चरेदिति और गुरुकी स्त्री विषे ब्राह्मण गमन करे तां चांद्रायण व्रत कर्के शुद्ध होताहै और आचार्यकी स्त्री विषे गमन करे तां पराक व्रत कर्के शुद्ध होताहै एह बौधायन जी का बचनहै ७ संमिति और संबंधि जो हैं मामेंके पुत्रादि तिसकी स्त्री विषे गमनकरे तां एक पाद सहित कृच्छ्र व्रत करणे कर्केशुद्ध होताहै विधवा स्त्री साथ गमन करे तां दिनरात्र युक्त जो कृच्छ्र व्रत तिसको करे तोशुद्धहोताहै ८

व्रतेति और व्रतमें स्थित जो स्त्री तिसविषे गमनकरे तां एक पाद सहित कृच्छ्र व्रतकरे और मित्र की स्त्री वा अपणी जाति की स्त्री वा संबंधीकी स्त्री विषे गमन करे तां पूर्वला जो कृच्छ्र व्रत तिसकों करके फेर एक पाद व्रत करे और कुमारी गमन विषे ब्राह्मण चांद्रायण व्रत करे और पतित स्त्री विषे द्विज गमनकरे तां भी चांद्रायण व्रतकरके शुद्ध होताहै १० इहां कथन कीते होए जो संपूर्ण व्रत इनां विषे गौरव लाघवकी परीक्षा करके यथार्थ अयथार्थ बुद्धि पूर्व अभ्यासादिकेविषय करके जोडने योग्यहैं ब्रेति ब्राह्मण नहि इच्छावाली जो ब्राह्मणी तिस विषे इच्छाकरके गमनकरे तां कृच्छ्र और चांद्रायण व्रत करे जेकर प्रमादतें करे तां अर्द्ध व्रत करे इच्छावाली स्त्री विषे करे तां भी अर्द्ध व्रत करणा एक वार जाणकरके करे तां तप्तकृच्छ्र करे और नृपादियोंकी स्त्रीविषे वा ब्राह्मणकी स्त्री विषे गमन करे तां अर्द्धव्रत करे १२ एतदिति और वेदपाठीकी स्त्री विषे गमन करे

व्रतस्थागमनेकृच्छ्रंसपादंतुसमाचरेत् सखिभार्य्यांसमारुह्यज्ञातिस्वजनयोषिताम् ॥ ९ ॥ सकृत्वाप्राकृतंकृच्छ्रंपादंकुर्यात्ततःपुनः कुमारीगमनेविप्रश्चरेच्चांद्रायणव्रतम् पतितांतुद्विजोगत्वातदेवव्रतमाचरेदिति १० अत्रप्रोक्तेषुसर्वेषुव्रतेषुगौरवलाघवे परीक्ष्य यथायथं बुद्धिपूर्वाभ्यासादिविषयत्वंयोजनीयम् ॥ ब्राह्मणोब्राह्मणींगच्छेदकामांयदिकामतः कृच्छ्रंचांद्रायणंकुर्य्यादर्द्धमेवप्रमादतः ११ अर्द्धमेवसकामायांतप्तकृच्छ्रंसकृन्मतौ अर्धमर्धंनृपादीनांदारेषुब्राह्मणेषुच १२ एतद्व्रतंचरेत्सार्द्धंश्रोत्रियस्यपरिग्रहे अश्रोत्रियश्चेत्त्रिगुणमगुप्तामर्द्धमेवचेति १३ कण्वोपि शूद्रदारान्गतोविप्रोऽतिकृच्छ्रंसमाचरेत् चांद्रायणंविशोराज्ञःसमंचब्राह्मणव्रतमिति १ विशइतिवैश्यदारान्गत्वाचांद्रायणं राज्ञोदारान् गत्वा ब्राह्मणव्रतंसमंकृच्छ्रचांद्रायणस्वरूपंसमाचरेदित्यर्थः यदिब्राह्मणेनैवचातुर्वर्ण्यप्रसूतासुक्रमेणनिविष्टं तदानींब्राह्मणस्यब्राह्मणीगमने यदुक्तं तदेव पादहीन क्षत्रियादिगमनेद्रष्टव्यम् व्याघ्रवचनात्

तां एही व्रत अर्द्ध सहित एक अर्थात् डेढ व्रत करे जेकर सो ब्राह्मण आप वेदपाठी न होवे तिसमे दूणा व्रत करणा और अगुप्ताविषे अर्थात् जो स्त्री पतिकरके रक्षित नहि तिसविषे गमन करे तां अर्द्ध व्रत करणा १३ अब इसी विषयमें कण्वजी कहतेहैं शूद्रेति शूद्रकीस्त्रीविषे ब्राह्मण गमन करे तां अतिकृच्छ्र व्रतकरके शुद्ध होताहै और वैश्यकी स्त्री विषे गमन करे तां चांद्रायण व्रत करणा और राजाकी स्त्री विषे ब्राह्मण गमन तां कृच्छ्र चांद्रायण स्वरूप व्रतकरे १ जेकर ब्राह्मणनें चार वर्णकी प्रसूता विषे क्रम करके प्रवेश कीता होवे तां तिस काल विषे ब्राह्मण को ब्राह्मणी गमन विषे जो व्रत कयाहै तिसीका एक पाद हीन क्षत्रियादि गमन विषे देखणे योग्यहै व्याघ्र जीके वचन सें

सोंवचनकहतेहैं विप्रेति ब्राह्मणनोंहि चारवर्णकी प्रसूतीविषे गमन कीत्ताहोवे तां सोब्राह्मण तिसमें क्रमकर्के एक एक पाद हीन व्रत करे १ विधवा गमन विषें चतुर्विंशतिके मतसें कहतेहैं विधवे तिविधवागमन विषे दिनरात्र युक्त जो कृच्छ्र व्रत तिसको करे और व्रतविषें स्थित जो स्त्री तिस विषें जेकर गमन करे तां एकपादसहित कृच्छ्र व्रत करे तां शुद्धहोताहै १ अब मुख मैथुन विषें उशना जीने जो कयाहै सो कहतेहैं यस्त्विति जेकर ब्राह्मण अपणी स्त्री विषें मुख मैथुन करे तां प्राजापत्य व्रत कर्के शुद्ध होताहै और जेकर परस्त्रीहोवे तां द्विगुण करे एहअर्थसेंहि प्रतीतहुंदाहै और पश्वादि गमनका पितृदारातें उरें होणे कर्के तिस विषें थोडा प्रायश्चित्त करणा उचितहै तिसको कहतेहैंपश्विति पशु और वेश्यादि गमन विषें और महिषीऊटणी और खर

विप्रेणवनिविष्टाश्चेच्चातुर्वर्ण्यप्रसूतयः क्रमेणपादशोहीनंव्रतंतासुगतश्चरेत् ॥ १ ॥ विधवागमनेचतुर्विंशतिमते विधवागमनेकृच्छ्रमहोरात्रसमान्वितम् व्रतस्थागमनेकृच्छ्रंसपादंतुसमाचरेदिति ॥ १ ॥ मुखमैथुनेतूशनसोक्तम् यस्तुपुनर्ब्राह्मणोधर्म्मपत्नीम्मुखमैथुनं सेवेत सदुष्यतिप्राजापत्ये नशुद्ध्यतीति पश्वादिगमने पितृदारादर्वाचीनत्वेन तत्राल्पं प्रायश्चित्तम् पशुवेश्यादिगमने महिष्युष्ट्रीकपीस्तथा खरींचसूकरींगत्वाप्राजापत्यंसमाचरेदितिस्मृत्यंतरात् ॥ गर्भेतुकण्वआह प्रसूतायस्तुवेश्यायांभैक्षभुङ्नियतेंद्रियः शतंसहस्रमभ्यस्यसावित्रीमितिशुद्धतामिति १ गोसंयुक्तशकटादिवाहनेऽवस्थायस्त्रियंभुंजानस्ययमआह यदिगोभिःसमायुक्तंयानमारुह्ययोद्विजः मैथुनंसेवतेतत्रमनुःस्वायंभुवोऽब्रवीत् ॥ १ ॥

रीते सेंही गधी सूरणी इनां विषें गमन कर्के प्राजापत्य व्रत करे इसमें कोई ऐसा विचार करतेहैं कि उष्ट्री खरीआदिमे पुरुषका गमन नाहिं होसक्ताहै इस कर्के उष्ट्रीप्रभृति किसे स्त्रीकी संज्ञाहै किसे अपलक्षणाते अथवा तादृश स्वरूपत असोसंज्ञाहै तिसविषे गमनकाएह प्रायश्चित्त होणाहै एह और स्मृति में कयाहै ॥ जेकर गर्भ होवे तां तिसमें कण्वजीकहतेहैं प्रसूतेति इसश्लोकका अर्थ पीछे कयाहै । गोसंयुक्त जो गड्डादिवाहन तिसविषे स्थित होकर्के स्त्रीको भोगणे वाला जोपुरुष तिसका प्रायश्चित्त यमजी कहतेहैं यदीति जेकर बैलों कर्के युक्त जो यान क्या रथ तिसमे जो द्विज आरूढ होकर्के मैथुन करताहै तिसकेविषे मनु जो स्वायंभु जी सोकहतेहैं १

त्रीति त्रय रात्रि उपवास कर्के सहित वस्त्रों के स्नान करे पीछें गौओंके तांई यवोंका आढकदे कर्के घृतका भक्षण करे तां शुद्ध होताहै अष्ठ मुष्ठी का क्रौंच होता है और अष्ठ क्रौंच का एक आढक कयाहै २ इसमे मनु जी भी कहते हैं मैथुनमिति पुरुष विषे वा स्त्रीविषे जोद्विज मैथुन करे परंतु गोरथविषे वा जल विषे वा दिन विषे गमन करे तां वस्त्रोंके सहित स्नान करे तो शुद्धहोताहै १ ॥ अब कहतेहैं कि पीछे महिष्यादि गमन विषे जो प्राजापत्य कयाहै सो वहुत अभ्यास विषे जानणा एकवार गमन विषे अव कहतेहैं महिषीति महिषी और उष्ट्रीऔर गधी इनांविषे गमन करणवाला पुरुष एक उपवासकर्के शुद्धहोताहै १ पिताकी भैणकी कन्या दि विवाह विषे प्रायश्चित सुमंतु नाम ऋषिजी कहतेहैं पित्रिति पिताके भैणकी कन्या और

त्रिरात्रंक्षपणंकृत्वासचैलस्नानमाचरेत् गोभ्योयवाढकंदत्वाघृतंप्राश्यविशुद्ध्यतीति ॥ २ ॥ मनुरपि ॥ मैथुनंतुसमारोप्यपुंसियोपितिवाद्विजः गोयानेपुदिवाचैवसवासाःस्नानमाचरेदिति १ ॥ पूर्वंमहिष्यादिगमनेयत्प्राजापत्यमुक्तं तदभ्यासविपयम् सकृद्गमनेत्विदानीमाह ॥ महिष्युष्ट्रीखरीगामीत्वहोरात्रेणशुद्ध्यतीति १ महिषीचउष्ट्रीचखरीचतागच्छतीतिमहिष्युष्ट्रीखरीगामी स एकोपवासेन शुद्ध्यतीति ॥ पितृष्वसृसुताविवाहे प्रायश्चित्तमाह सुमन्तुः ॥ पितृष्वसृसुतां मातुलस्यसुतां मातृसगोत्रां समानार्षेयीं विवाह्य चांद्रायणंचरेत् परित्यज्यैनांविभृयात् ॥

मामेंकी कन्या और माताकेगोत्रवाली कन्या और समानप्रवरवाली कन्या इनांको विवाह कर्के चांद्रायण व्रत करे तां शुद्धहोताहै और व्रतके पीछे भोगकर्मतें इनांको त्याग कर्के पालनाहै इसजगा मातृसगोत्रापद जातिपरहै जैसें पंडितजातिवालेने पंडितजातीकी स्त्री विवाही तांदोषहै क्योंकि गोत्रनामवंशकाहै सो अर्थ इसमैं आवेगा और यद्यपि वसिष्ट गोत्रीपुरुषने वसिष्टगोत्री स्त्रीके विवाहमेभी एह अर्थ आवताहै तथापि वसिष्टगोत्रादिव्यवहार व्यापकहै और पंडितजात्यादि व्यवहार व्याप्यहै सो व्यापकतें व्याप्यवलवान्है एह किसे विद्वान्ते निश्चय करलैणा तद एह अर्थ साधु प्रतीत होवेगा॥

शातातपजीभी कहतेहैं परीति समानगोत्र वालेकों और समान प्रवर वाली स्त्रीकों विवाहकर्के अतिकृच्छव्रत करे परंतु पहिले मैथुनादितें तिसकोंत्याग देवे और पीछेव्रत करे १ मातुलस्येति और मामेंकी कन्या नूं तैसेंहि माताके गोत्र वाली नूं और समान प्रवर वाली नूं द्विज विवाह कर्के चांद्रायण व्रत करे २ अव स्त्रियां के व्यभिचारका प्रायश्चित्त मनुजी कहतेहैं वीति व्यभिचारिणी स्त्री नूं भर्त्ता एक गृह विषें रोक कर्के जो पुरुष नूं परस्त्री विषें व्रत कियाहै सो करवावे १ अव इसीका अर्थ स्पष्ट कर कहतेहैं परेति परस्त्री गमन विषें पुरुषको जो वसिष्ठादियों ने प्रायश्चित्त कियाहै सो इसव्यभिचारिणीनूं स्त्रीकार्य्यंतें दूर कर्के घर विषें रोकके करवावे एह वाचानिक क्या वचनका अतिदेश होणेतें एक पाद ऊन करणा एह

शातातपोपि। परिणीयसगोत्रांतुसमानप्रवरांतथा कृत्वातस्याःसमुत्सर्गम तिकृच्छ्रंसमाचरेत् १ मातुलस्यसुतामूढ्वामातृगोत्रांतथैवच समानप्रवरांचैव द्विजश्चांद्रायणंचरेदिति२ अथ स्त्रीणांव्यभिचारे प्रायश्चित्तम्। मनुः॥ विप्रदुष्टांस्त्रियंभर्त्तानिरुंध्यादेकवेश्मनि यत्पुंसःपरदारेषुतच्चैनांकारयेद्व्रतम् १ परस्त्रीगमने पुंसःपुरुषस्य यद्वसिष्ठादिभिः प्रायश्चित्तमुक्तं तत् एनां विप्रदुष्टां विशेषेण प्रदुष्टां व्यभिचारिणीं स्त्रीकार्य्येभ्यो निवर्त्त्य गृहेनिरुध्य कारयेत् एतच्च वाचनिकातिदेशात्पादोनमितिकेचित् पूर्णमेवेतिनीलकंठः।यत्तुवसिष्ठादिभिः ॥ स्त्रीणामर्द्धंप्रदातव्यमित्युक्तंतदनिच्छयाव्यभिचारे द्रष्टव्यम्।मिताक्षरायाम् ब्राह्मण्याः प्रातिलोम्येनाद्विजातिव्यवाये संवर्त्तोक्तं प्रायश्चित्तांतरमप्युक्तम् ब्राह्मण्यकामागच्छेच्चेत्क्षत्रियंवैश्यमेववा गोमूत्रयावकैर्मासात्तदर्द्धाच्चविशुध्यतीति १ एतदेवकामतोद्विगुणम्॥ कामतो द्विगुणंचरेदित्यादिवचसः

किसीका मत है अथवा संपूर्ण हि करणा एह नीलकंठजीका मत है और जो वसिष्ठादियोंने स्त्रियां कों अर्द्ध प्रायश्चित्त देणा एह कियाहै सो इच्छा विना जो व्यभिचार तिसके विषें देखणे योग्यहै । मिताक्षराविषें कहतेहैं ब्राह्मण्याइति ब्राह्मणीकों प्रातिलोम्य कर्के क्षत्रिय और वैश्यके गमन विषें संवर्त्तजीका कियाहोया प्रायश्चित्त कहतेहैं ब्राह्मणीति ब्राह्मणी इच्छातें विना क्षत्रियविषें वा वैश्यविषें गमन करे तां गोमूत्रकर्के युक्त जो यव तिनको महीना पर्य्यंत भक्षण करे अथवा अर्द्ध महीना करे अर्थात् क्षत्रिय गमनविषे अर्द्ध महीना भक्षण करणेतें शुद्ध होतीहै और वैश्यकें गमनविषें महीना भक्षण करणेतें शुद्धहोतीहै इसमें क्रम विवक्षा नहींहै १ जेकर सोस्त्री इच्छातें गमन करे तां एहीव्रत दूणाकरे एह कामतो द्विगुणं चरेत् इत्यादिवचनतें जानणा

षट्त्रिंशत् के मत विषे भी कहतेहैं ब्राह्मणीति ब्राह्मणी क्षत्रीके साथ गमन करे तां अतिकृच्छ्र व्रत करे और वैश्यके साथ गमन करे तां कृच्छ्रातिकृच्छ्र व्रत करे और क्षत्रीकी स्त्री ब्राह्मण क्षत्री वैश्य इनके साथ गमन करे तां दिनरात्र वा त्रयरात्र वा कृच्छ्र व्रत का अर्द्ध करे एह क्रम कर्के जानणा जैसें ब्राह्मणमें दिनरात्र व्रत करणा इत्यादि और भी जानलेणे परंतु एह नहिं इच्छा वाली स्त्रीमे वा अपणे पतिकी भ्रांतिकर्के जद गमनकीताहोवे उसमें जानणा शूद्र सेवाविषेविशेष बृहत्प्रचेताजीकहतेहैं विप्रेति ब्राह्मणी शूद्रकेसाथ गमनकरे जेकर तिसते प्रसूति न होवे तिसका प्रायश्चित्त कयाहैकि एक कृच्छ्र और त्रय चान्द्रायण व्रत करे तां शुद्धहोतीहै १ ॥

षट्त्रिंशन्मतेपि । ब्राह्मणीक्षत्रियवैश्यसेवायामतिकृच्छ्रंकृच्छ्रातिकृच्छ्रौचरेत्क्षत्रिययोपिता ब्राह्मणराजन्यवैश्यसेवायांत्वहोरात्रत्रिरात्रकृच्छ्रार्द्धमिति एतदनिच्छत्यांस्वपतिभ्रांत्यावागमनेवेदितव्यम् ॥ शूद्रसेवायांतु विशेषो बृहत्प्रचेतसोक्तः विप्राशूद्रेणसंपृक्तानचेत्तस्मात्प्रसूयते प्रायश्चित्तंस्मृतं तस्याः कृच्छ्रंचांद्रायणत्रयम् ॥ १ ॥ चान्द्रायणेद्वेकृच्छ्रंचविप्रायावैश्यसेवने कृच्छ्रचांद्रायणेस्यातांतस्याःक्षत्रियसंगमे ॥ २ ॥ क्षत्रियाशूद्रसंपर्के कृच्छ्रंचांद्रायणद्वयम् चान्द्रायणंसकृच्छ्रंतुचरेद्वैश्येनसंगता ३ शूद्रंगत्वा चरेद्वैश्याकृच्छ्रंचांद्रायणोत्तरम् आनुलोम्येप्रकुर्वीतकृच्छ्रंपादावरोपितामिति ४ पादावरोपणंपादह्रासः प्रजातायास्तुचतुर्विंशतिमतेविशेषउक्तः

चांद्रेति और ब्राह्मणीको वैश्यके साथ गमन करणे तें दो चान्द्रायण और कृछ्र व्रत करणेयोग्य हैं और ब्राह्मणीकों क्षत्री साथ गमन करणेतें कृछ्र और चान्द्रायण व्रत करणे योग्यहै २ और क्षत्रियाणी शूद्र साथ गमन करे तां कृछ्र और दो चान्द्रायण व्रत करे और वैश्यसाथ गमन करे तां सहित कृच्छ्रके चान्द्रायण व्रत करे ३ शूद्रामिति और शूद्र साथ वैश्यकी स्त्री गमन करे तां कृच्छ्र और चान्द्रायण व्रत करे और आनुलोम्य कया अपणे तें छोटी जाति विषें गमन करणे तें पादऊन एहि कृछ्र व्रत करणे योग्यहै ४ प्रसूति होवे जिस स्त्रीको तिसकों चतुर्विंशति मत विषे विशेष कयाहै

विप्रेति ब्राह्मणका गर्भ होवे किसे स्त्रीको तां पराक व्रत करे एह चारवर्णकी साधारण व्यवस्था है ऐसे हि आगे भी जानणा और कोई कहतेहैं कि ब्राह्मणके अनुलोम और शूद्रके प्रतिलोम और क्षत्रियवैश्यके दोनोमें एह व्यवस्थाहै और क्षत्रीका गर्भ होवे तो चांद्रायण व्रत करे नहिं इच्छातें वैश्यकेसाथ गमन करणें तें गर्भ होवे तां चांद्रायण और पराक व्रतकरे १ शूद्रेति और शूद्रसें गर्भके होयां त्याग करणा चाहिए जिस कारणतें सो चांडाल होताहि और धातुदोषकर्के गर्भ पात होवे तां त्रय चांद्रायण करणें तें स्त्री शुद्ध होतीहै २ ॥ अब अर्थको स्पष्टकरतेहैं (अकामेतिः) अकामकारतइस विशेषणके ग्रहण होणेतें इच्छा कर्के करणेविषे फेर पराकादि व्रत द्विगुणकरणें जेकर गर्भ दस महीने स्थित होकर्केभी प्रतीतनाहोवे तां प्रायश्चित्त नहिं करणा सोई कहतेहैं ब्राह्मेति ब्राह्मण और क्षत्री और वैश्य इनांकीस्त्री शूद्रके साथगमनकरे और जेकर

विप्रगर्भेपराकःस्यात्क्षत्रियस्यतथैन्दवम् ऐंदवश्चपराकश्चवैश्यस्याकाम कारतः॥ १ ॥ शूद्रगर्भेभवेत्त्यागश्चांडालोजायतेयतः गर्भस्रावैर्धातुदोषे श्चरेच्चांद्रायणत्रयमिति ॥ २ ॥ अकामकारतइतिविशेषणोपादानात् कामकारे पुनःपराकादिकंद्विगुणंकुर्यात् यदात्वानिःसृतगर्भैवदशममासं स्थित्वाप्रजायतेतदाप्रायश्चित्ताभावः ॥ ब्राह्मणक्षत्रियाविशांभार्याःशूद्रेण संगताः अप्रजाताविशुद्ध्यंतिप्रायश्चित्तेनतेनरा इति ॥ ३ ॥ अयमर्थः शूद्रादिनासंगताब्राह्मण्यादिकायदागर्भशंकास्पदाजाता तदादशमासप्र तीक्षानंतरमनिःसृतगर्भैवप्रजायते प्रतीता तदा प्रायश्चित्तंविनैव शुद्धाभ वति तावतैवप्रायश्चित्तोपपत्तेः तेनराव्यभिचारिणस्तु प्रायश्चित्तेनैवशु द्ध्यंतीतिवसिष्ठस्मरणात् यदात्वाहितगर्भैवपश्चाच्छूद्रादिभिर्व्यभिचर ति तदा गर्भपातशंकयाप्रसवोत्तरकालमेवप्रायश्चित्तंकुर्यात्

प्रसूतिनाहोवे तां सोस्त्रीशुद्धहै और सो पुरुष प्रायश्चित्तकर्के शुद्धहोतेहैं ३ अब इसीका अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं शूद्रेति शूद्रादिके साथ ब्राह्मण्यादि स्त्री गमन करे जेकर गर्भशंकावाली होवे तद दसमहीनेतें उपरंत नाहिं होया गर्भकासंभव किंतु व्यभिचारमात्रहि प्रतीतहोयाहै जिसकों तां प्राय श्चित्त विनाहि शुद्धहोतीहै क्योंकि तितनें कर्केही तिसका प्रायश्चित्त होणेतें अर्थात् उसकेगर्भकी शंकाकर्के उतनाकाल वाहर निकालदिया सो उसका कष्ट वहुत होया वोहि उसका प्रायश्चित्त जानणा और सो व्यभिचारीपुरुष प्रायश्चित्त कर्के हिशुद्धहोतेहैं एहवसिष्ठजीकी स्मृतिसेंकिहाहै अब इसीमें और विशेषकहतेहैं यदेति जेकर प्रथमगर्भ पतिकाहि स्थितहोवे और पीछे शूद्रादि केसाथ व्यभिचारकरे तद उसस्त्रीको गर्भपातकीशंकाकर्केप्रसूतितेंअनंतरहिप्रायश्चित्त करणेयोग्यहै

सोई स्मृतिमे किआहे अंतर्वत्नीति गर्भवती जो स्त्री सो कामीपुरुष कर्के बलने प्रेरित होई गमन करे तां प्रायश्चित्त नहिं करणा परंतु जितना काल गर्भ नहिं निकले १ जातइति गर्भदे निकले होयां पश्चात् व्रत करे त्रया महीना पर्यंत यवांका काढा पीवे तद गर्भ दोष तिसकों नाहिं है और जो जन्मयाहै तिसका यथाविधि संस्कार करे २ और स्मृतिमें कहतेहैं यदेति जेकर सो व्यभिचारिणीस्त्री उन्मा दतें प्रायश्चित्त नू न करे तां उसका कर्णादि कटदेणा एह देखणे योग्यहै ॥ अब नीचके साथ गमन करणे विषे स्त्रियांकों और स्मृति विषे प्रायश्चित्त दखायाहै रजकेति धोवा और फंवक नटु आ और बंजां कर्के और चर्म कर्के उपजीविका करण वाला इनां विषे इच्छातें विना ब्राह्मणी गमन करे तां त्रय चांद्रायण व्रत करे १ तैसेंहि चांडालादि नीचके साथ गमन विषे भी

अन्तर्वत्नीतुयानारीसमिताक्रम्यकामिना प्रायश्चित्तंनकुर्यात्सायावद्गर्भो ननिःसृतः १ जातेगर्भेव्रतंपश्चात्कुर्यान्मासंतुयावकं नगर्भदोषस्तस्यास्तिसं स्कार्यःसयथाविधीति २ स्मृत्यंतरेदर्शनात् ॥ यदात्वौद्धत्यात्प्रायश्चित्तंनक रोति तदानार्याः कर्णादिकर्त्तनमितिद्रष्टव्यम्। अंत्यजगमनेपिस्त्रीणांस्मृत्यं तरे प्रायश्चित्तंदर्शितम् रजकव्याधशैलूषवेणुचर्मोपजीविनः ब्राह्मण्येतान् यदागच्छेदकामादैंदवत्रयमिति १ तथा चांडालाद्यंत्यजगमनेपि। चांडालंपु ल्कसंम्लेच्छंश्वपाकंपतितंतथा ब्राह्मण्यकामतोगत्वाचांद्रायणचतुष्टयम् १ अकामतइतिवचनात्कामतोद्विगुणंकल्प्यम् तथा चांडालेनतुसंपर्कंयदि गच्छेत्कथंचन सशिखंवपनंकुर्याद्भुंजीयाद्यावकौदनम् ॥ १ ॥ त्रिरात्रमुप वासःस्यादेकरात्रंजलेवसेत् आत्मनासंमितेकूपेगोमयोदककर्दमे ॥ २ ॥ तत्रस्थित्वानिराहारासात्रिरात्रंततःक्षिपेत् शंखपुष्पीलतामूलंपत्रंवाकुसु मंफलम् ॥ ३ ॥

कहतेहैं चांडालमिति चांडाल पुल्कस म्लेछ श्वपाक एह चार चांडालकेहि भेदहैं और जाति तें जो बाहरहैं इनां विषे ब्राह्मणी इच्छातें विना गमन करे तां चार चांद्रायण व्रत करे अकामतः इस वचन तें जेकर इच्छातें करे तो दूणा व्रत करणे योग्यहै १ तैसेंही और कहतेहैं चाडालके साथ जेकर स्त्री गमन करे तां सहित शिखाके मुंडन करावे और यवोका काढा पीवे १ त्रेति और त्रयरात्रि उपवास व्रत करे और एकरात्रि जल विषे वास करे और अपणे बराबर खूआ षणावे तिसको गोआ जल चिकड इनां कर्के भरे २ तत्रेति तिसके विषे स्थित हो कर्के निराहार सो स्त्री त्रयरात्रि व्यतीत करे और शंखपुष्पीकी वेलका मूल वा पत्र वा पुष्प वा फल ३ ॥

क्षीरइति इनकों दुग्धमें पावे और सुवर्ण पावे इनांका काथ करके पानकरे और पश्चात् एक वखत भोजन खावे जितना काल रजस्वला न होवे ४ बितना काल बाहर स्थित होवे जितनें तब व्रत नूं करे तिसतें उपरंत प्रायश्चित्तके होयां ब्राह्मणोंको भोजन करावे ५ और दो गौआं दक्षिणा देके तां शुद्ध होवोहै एह मनुजीनें कयाहै एह भी नहि इच्छावें गमन विषे जानणा(यदिगच्छत्कथंचन) इसवचनतें अब पिच्छे किहा जो दूसरा श्लोक तिसका अर्थकहतेहैं आत्मनेति चांडाल साथ गमन वालीस्त्रीअपने देहके बराबर बनायागोमययुक्तजलकर्के पूरित जो कूपतिसविषे एह अर्थहै ऋष्यशृंगोजीनेभी नीचके साथ गमनविषे और प्रायश्चित्तकयाहै समिति जोस्त्री नीचके साथगमन करे सो एकवर्ष कृच्छ्रव्रतकरे परंतु एह इच्छाकर्के एकवारगमनविषे जानणाजेकर पहिले स्थितहै

क्षीरेसुवर्णसंमिश्रंक्काथयित्वाततःपिबेत् एकभुक्तंचरेत्पश्चाद्यावत्पुष्पवती भवेत् ॥ ४ ॥ बहिस्तावच्चनिवसेद्यावच्चरतितद्व्रतम् प्रायश्चित्ततत श्चीर्णेकुर्याद्ब्राह्मणभोजनम् ॥ ५ ॥ गोद्वयंदक्षिणांदद्याच्छुद्ध्येतस्वायंभुवोऽब्रवीदिति ॥ एतदप्यकामविषयमेव यदिगच्छेत्कथंचनेतिवचनात् आत्मनासंमितचांडालगादेहमात्रिगोमययुक्तजलपूरितेकूपइत्यर्थः ॥ ऋष्यशृंगेणाप्यंत्यजव्यवायेप्रायश्चित्तांतरमुक्तम् संपृक्तास्यादथांत्यैर्यासाकृच्छ्राब्दंसमाचरेदिति कामतःसकृद्गमनेइदम् यदात्वाहितगर्भायाएवश्वाचांडालादिव्यवायस्तदा तेनैव विशेषउक्तः। अंतर्वत्नीतुयुवतिःसंपृक्ताचांत्ययोनिना प्रायश्चित्तंनसाकुर्याद्यावद्गर्भोनानिःसृतः १ नप्रचारंगृहेकुर्यान्नचांगेषुप्रसाधनं नशयीतसमंभर्त्रानवाभुंजीतबांधवैः २ प्रायश्चित्तंगते गर्भेविधिकृच्छ्राब्दिकंचरेत् हिरण्यमथवाधेनुंदद्याद्विप्रायदक्षिणामिति ३ यदातु कामतोऽत्यंतसंपर्कं करोति तदा ॥ अंत्यजेनतुसंपर्के भोजनेमैथुने कृते प्रविशेत्संप्रदीप्तेऽग्नौमृत्युनासाविशुद्ध्यतीत्युशनसोक्तंद्रष्टव्यमिति ॥

गर्भ जिसकों सो स्त्रीपश्चात् चांडालादिके साथगमनकरे तिसमेंभी ऋष्यशृंगोजीने विशेषकयाहै अंतरेति गर्भवाली स्त्री नीचकेसाथ गमन कर्के प्रायश्चित्त न करे जितने तक गर्भ नहि निकले १ और गृहविषे प्रचार न करे और अंगकी शुद्धि नकरे और भर्ताकेसाथ शयननकरे और बंधुयोंकेसाथ भोजन नकरे २ और गर्भके निकले होआं प्रायश्चित्त विधि जो कृच्छ्रव्रत वर्षका है तिसनूं करे और सुवर्ण वा गोको ब्राह्मणके तांई दक्षिणा देवे ॥ ३ - जेकर इच्छातें बहुत संसर्ग करे तिसमे कहतेहैं ॥ अंत्यजेनेति द्विजकीस्त्री नीचके साथ गमन करे वा भोजन करे वा मैथुन करे तां अच्छीतरह प्रज्वलित जो अग्नि तिसविषे प्रवेश करे सो मृत्युके सायांई शुद्धहोतीहै एह उशनसाजीका कया होया प्रायश्चित्त देखणे योग्यहै ॥

यदेति जेकर कथनकीते होए प्रायश्चित्तकोंनकरे तद तिसस्त्रीके मस्तकविषे लोहेको तपाकर्के पु
केलिंगकर्के चिन्हलगावे वा मारदेवे। इसमे वचन कहतेहैं हीनेति हीनवर्णकर्के भोगीहोवे जो स्त्री
सो चिन्हकरणे अथवामारणेयोग्यहे एहव्यासस्मृतिमेकथाहै १ पूर्वमिति पिच्छेसमानवर्णवालोस्त्रीके
अनुलोमक्या अपणेते छोटी जातिकेगमनविषे स्त्रीवा पुरुषको स्वभावते समान प्रायश्चित्त कयाहै
तिनका कितेक अपवादहे तैसेहि संवर्त्तजी कहतेहैं वलादिति वलसें खिन्नकर्के भोगी होवे का
मकर्के पीडित होया जोचित तिसकर्के तद तिसका परमपवित्र करणेवाला प्राजापत्य व्रतहै तिस
कर्के शुद्ध होतीहै १ इसमे पराशरजीभीकहतेहैं सकृदिति नाहि इछाकरतीस्त्री पापीपुरुषोंने एक
वार भोगी होवे तां प्राजापत्यकर्के शुद्धहोतीहै वा रुधिरके निकालनेकर्के अर्थात् ऋतुके आवणे
कर्के शुद्धहोतीहै १ बृहस्पतिजीकहतेहैं अनीति नहि इच्छा वाली स्त्री भोगी जावे तां तिसनूं गुप्त

यदातूक्तंप्रायश्चित्तं न करोति तदा पुल्लिंगेनांकनीया वध्या वा भवेत्। हीन
वर्णोपभुक्तायासांक्यावध्याथवाभवेदिति पाराशर्यस्मरणात्। पूर्वसवर्णानु
लोमव्यवाये स्त्रीपुंसयोरौत्सर्गिकंप्रायश्चित्ततुल्यमुक्तं तस्य क्वचिदपवाद
स्तथाचसंवर्त्तः। वलात्प्रमथ्यभुक्ताचेदर्धमानेनचेतसा प्राजापत्येनशुद्धास्या
त्तदस्याःपावनंपरमिति १ पराशरोऽपि। सकृद्भुक्तातुयानारीनेच्छंतीपापक
र्मभिः प्राजापत्येनशुद्धयेतअसृक्प्रस्रावणेनवेति १ बृहस्पतिरपि। अनि
च्छंतीतुयाभुक्तागुप्तांतांकारयेद्गृहे मलिनांगीमधःशय्यांपिंडमात्रोपजी
विनीं १ कारयेन्निष्कृतिंकृच्छ्रंपराकंवासमंगतां हीनवर्णोपभुक्तायात्याज्या
वध्यापिवाभवेदिति २ समंसमानजातीयम् ॥ अत्रसकृदुपगमेकृच्छ्रम्
द्विरभ्यासेपराकः ॥ अभ्यासेतुचांद्रायणम्। तदाहोशनाः। व्यभिचारिणी
भार्य्या कुचेलां पिंडगुप्तां निवृत्ताधिकारां चांद्रायणं पराकं प्राजापत्यं वा
कारयेदिति

घरविषे रक्खे और उहस्त्री मलीन अंगां वाली पृथ्वीविषे शयन करे और तिसको अन्न मात्र
खाणेको देवे २ पीछे तिसका शुद्धि करावे जेकरतिसने समानजातिके साथ गमनकीताहोवे तां
कृच्छ्रऔर पराक व्रत करे और हीन वर्ण कर्के भोगी होवे तां सो त्यागणे और मारणे योग्य है
इसमे व्यवस्थाकरतेहैं अत्रेति इहां एकवार गमन विषे कृच्छ्र व्रत जानणा और दोवार गमन वि
षे पराक व्रत जानणा और वहुत वार गमन विषे चांद्रायण व्रत जानणा। तिसीको उशन ऋ
षि जो कहतेहैं व्यभिचारिणीमिति व्यभिचारिणी जो स्त्री कैसी है मलीनहैं वस्त्र जिसके और
अन्नमात्र भक्षण करण वाली और घरके कार्येतें दूर कीती होई है तिसको चांद्रायण वा
पराक वा प्राजापत्य व्रत करवावे

अब इसमे मनु जो कहतेहैं॥ सेति सो स्त्री फेर दोषवालीहोवे क्या तुल्यकर्के प्रेरित कीतीहोई तिसके साथक्रीडाकरे तां इसके पापकों दूर करणवाला कृच्छ्र और चांद्रायणव्रतहे १ परंतु एह प्रायश्चित्त इच्छातें विनाकीताहे व्यभिचार जिसने तिसमें जानणा और जो इच्छा तें कीता हैं तिसमें दूणा व्रत करणे योग्यहे अवकहतेहें कि जो ऋष्य शृंगीजीनें कया हे तिसकों कहते हैं वलेति वल कर्के तुल्य जाविवालेनें स्त्री साथ गमन कीता होवे अर्थात् ब्राह्मणने ब्राह्मणी साथ और क्षत्रीनें क्षत्रियाणीसाथ तां तिसस्त्रीकी शुद्धिवास्ते त्रय रात्रिका प्रायश्चित्त कथन करे १ सो एह वीर्य्य स्खलिततें प्रथम निवृत्तिविषे देखणा योग्यहे॥ पराशरजीभी कहतेहें वंदीति कैद कर्के वा ताडना कर्के वा वन्न कर्के वा वलतें वा भयतें स्त्रीकों भोगे तां सांतपन व्रत कर्के सोस्त्री शुद्ध होती हैं १ एह पाराशर जीनें कया हे इच्छाकर्के प्रवृत्ति विषे तिसी स्त्री

मनुः। साचेत्पुनःप्रदुष्येत्तुसदृशेनोपयंत्रिता कृच्छ्रंचांद्रायणंचैवतदास्याःपापशोधनमिति १ इदंचाकामतः कामतस्तुद्विगुणम् यत्तुऋष्यशृंगः। वलेनकाभितानारीसवर्णेनकथंचन प्रायश्चित्तंत्रिरात्रंवैतस्याःशुद्ध्यर्थमादिशेदिति १ तद्रेतःसेकात्प्राङ्निवृत्तौद्रष्टव्यम् पाराशरोपि। वंदीग्राहेणवाभुक्ताहत्वावध्वावलाद्भयात् कृत्वासांतपनंकृच्छ्रंशुद्ध्येत्पाराशरोब्रवीत् १ इच्छयाप्रवृत्तौ तु तस्याःपुंतुल्यमेवप्रायश्चित्तम् तदाहतुःशंखलिखितौ। इच्छयाव्यभिचारिणींपरदारेषुपुंसोविहितंतांकारयेदिति अंगिराः। व्रतंयच्चोदितंपुंसांपतितस्त्रीनिषेवणात् तच्चापिकारयेन्मूढांपतितासेवनात्स्त्रियमिति आसेवनादिति पदच्छेदः तच्चकामतः अकामतस्त्वाहसंवर्त्तः॥ ब्राह्मण्यकामाद्गच्छेच्चेत्क्षत्रियंवैश्यमेववा गोमूत्रयावकैर्मासात्तदर्द्धाच्चविशुद्ध्यति १ ब्राह्मण्याःशूद्रसंपर्केकथंचित्समुपागते चांद्रायणेनशुद्धिःस्यात्तत्तस्याःपावनंस्मृतमिति २

कों पुरुष तुल्यही प्रायश्चित्तहे॥ तिसीको शंख और लिखित कहतेहैं इच्छेति इच्छा कर्के जो व्यभिचारिणी स्त्रीहे तिसनूं और परस्त्रीविषे पुरुषको जो प्रायश्चित्तहे सोकरवावे॥ अंगिरा जीकहतेहैं व्रतमिति पुरुषांको पतित स्त्रीके सेवणेतें जोव्रत कयाहे सो पतित पुरुष नूं सेवनवाली स्त्रीनूं करवावे आसेवनात् एह पदच्छेद करणा सो एह इच्छा कर्के करणे विषे जानणा १ नाहिं इच्छा तें करणे विषे संवर्त्त जी कहते हैं ब्राह्मणीति ब्राह्मणी इच्छातें विना क्षत्री वा वैश्य साथ गमन करे तां गोमूत्र कर्के युक्त जो यव उनांको महीना वा अर्ध महीना भक्षण करणेतें शुद्ध होती है॥ क्षत्री विषे अर्ध महीना और वैश्यमें महीना इसमें क्रम विवक्षा नाहिं है १ एह पूर्वोक्तहि ब्राह्मणीका कदाचित् शूद्र साथ गमन होवे तां तिसकी चांद्रायण व्रतकर्के शुद्धि होतीहे जिस कारणसें वो परमपवित्र कहाहे २

ओर शूलपाणिजीकहतेहैं कि एह नहिं इच्छावाली स्त्रीके विषयविषे जानणा और संवर्त्तजीके वाक्यविषे मासात् इसकर्के वैश्य जानणा और क्षत्रीविषे अर्द्धजानणा एहपूर्वोक्तहि अर्थहै और हीनवर्णाकर्केभोगी जोस्त्रीसो त्यागणेयोग्यहै एहपीछेकयाहै तिसविषे वसिष्ठऋषिजीविशेषकहतेहैं चतस्त्रइति चार स्त्रियां त्यागणे योग्यहैं एक शिष्य साथ गमन करण वाली और दूसरी गुरु साथ गमन करण वाली और तीसरी पतिमारण वाली और विशेष कर्के जुंगित साथ गमन करण वाली १ अब जुंगितशब्दका अर्थदिखातेहैं जुंगितइति शूद्रके घरमें वैश्या क्षत्रियाणीवाब्राह्मणीरहे और वैश्यके घरमे क्षत्रियाणी वा ब्राह्मणी रहे और क्षत्रीके घर मे ब्राह्मणी रहे इन छेह तें जो उत्पन्नहोवे सो जुंगितहै तिस साथ गमन करणवाली एहि चार त्यागणेयोग्यहैं होर नहिं इसके विषे विशेष विधानतें परित्याग क्या घरतें निकाल देणा हि जानणा औरके विषे अतिशयकर्के

शूलपाणिस्तुअनिच्छतीतिविषयमेतदिति मासादितिवैश्ये क्षत्रियेत्वर्धामिति पूर्वहीनवर्णोपभुक्तात्याज्येत्युक्तंतत्रविशेषमाह वसिष्ठः । चतस्त्रस्तुपरित्याज्याःशिष्यगागुरुगाचया पतिघ्नीचविशेषेणजुंगितोपगताचयेति १ ॥ जुंगितः प्रतिलोमजः अत्रचविशेषविधानात् परित्यागोगृहान्निर्वासनमेव अन्यत्रतु विप्रदुष्टांस्त्रियंभर्त्तानिरुंध्यादेकवेश्मनीतिमनूक्तोनिरोधः ॥ याज्ञवल्क्योपि । हृताधिकारांमलिनांपिंडमात्रोपजीविनीं परिभूतामधःशय्यां वासयेद्व्यभिचारिणीमिति ॥ १ ॥ अत्र वासनंवैराग्यजननार्थमेव यत्तु चतुर्विंशतिमते। स्त्रीणांनास्तिपरित्यागोब्रह्महत्यादिभिर्विना तत्रापिगृहमध्येतु प्रायश्चित्तानिकारयेत् ॥ १ परित्यक्ताचेरत्पापंवह्वल्पंवापिकिंचन तत्पापंशतधाभूत्वाबांधवानपिगच्छतीति ॥ २ ॥ तद्गर्भानुत्पत्तिपरम्

दोष वाली स्त्री नूं पति एक घरमे रोक कर्के प्रायश्चित्त करवावे एह मनुका कयाहोया निरोधहै और याज्ञवल्क्य जी भी कहतेहैं हृतेति दूरहै अधिकार जिसका और मलीन वस्त्र वाली और अन्न मात्र तें जीविका करण वाली और तिरस्कृतकीती होई और पृथ्वीमे शयन करण वाली ऐसी व्यभिचारिणी स्त्री नूं वासनमात्र करवावे १ परंतु इसके विषे वासन विरक्तताके उत्पन्न करणे वास्ते जानणा ॥ अब इससे कुछ विलक्षण दखातेहैं यत्त्विति जो चतुर्विंशतिमत विषे कया है कि स्त्रीणामिति ब्रह्महत्यादितें विना स्त्रीयांका परित्याग नाहिं है तिसके विषे भी घरके मध्य विषे प्रायश्चित्तनूं करवावे १ क्योंकि त्यागी होई स्त्री थोडा वा बहुत पापकरे तां सो पाप सौ १०० प्रकारका हो कर्के बंधुओंकों प्राप्त होवाहै २ सो एह चतुर्विंशतिका मत गर्भ के न उत्पन्न होणेमें जानणे योग्यहै

तदिति सो व्यभिचारिणी गर्भकर्के युक्त होवे तां तिसकात्यागपराशरजी कहतेहैं ॥ जारेणेति जेकर स्त्री जार कर्के गर्भकों उत्पन्न करे पतिके मृत होआं अथवा पतिके व्यक्त वया प्रकट पास होयां अथवा पतिके गयां होआं तां तिस स्त्री कों दूसरे देश विषे त्याग देवे कैसी है सो स्त्री पतितहै और पाप करण वाली है ॥ अर्थको स्पष्ट कर्के कहतेहैं कि अपरेराष्ट्रे इसके कयां होआं घरतें निकाल देणा जाणीदा है इसी कारणतें चतुर्विंशति मत विषें कहतेहैं चतस्रइति पतित होआं भी चार स्त्रियां त्यागणे योग्यहैं चांडालके साथ गमन करण वाली और पतिके मारणवाली और यति साथ वयासंन्यासी साथवा पुत्रसाथगमन करण वाली १ इसके विषें शिष्यादिसाथ गमन करण वालीयांका त्याग गर्भ विषय विषे जानणा ॥ इसीमे और वचनहै व्यभिचारादिति व्यभिचारतें ऋतुविषें शुद्धि होतीहै और गर्भ विषें

तद्युक्तायास्तुपरित्यागमाह ॥ पराशरः ॥ जारेणजनयेद्गर्भंमृतेव्यक्तेगते पतौ तांत्यजेदपरेराष्ट्रेपतितांपापकारिणीमिति ॥ १ ॥ अपरेराष्ट्रइत्युक्ते गृहान्निष्कासनंगम्यते अतएवचतुर्विंशतिमते॥ चतस्रएवसंत्याज्याःपतने सत्यपिस्त्रियः श्वपाकोपहतायातुभर्तृघ्नीयतिपुत्रगेति ॥ १ ॥ अत्रशिष्य गादीनांत्यागोगर्भविषयएव ॥ व्यभिचाराद्दतौशुद्धिर्गर्भेत्यागोविधीयते गर्भभर्तृवधादौचतथामहतिपातकइति याज्ञवल्क्योक्तेः । गर्भः शूद्रादिकृतः ब्राह्मणक्षत्रियविशांभार्याःशूद्रेणसंगताः अप्रजाताविशुद्ध्यंति प्रायश्चित्ते नेतनरा इति वसिष्ठस्मरणात् शूद्रग्रहणंप्रतिलोमजोपलक्षणार्थम् नतुत्रैव र्णिकव्यावृत्त्यर्थम् ॥ तेनशिष्यगागुरुगयोरपित्रैवर्णिक प्रवेशनत्यागःअयं चत्यागोनगर्भमात्रेकिंतुप्रसवमात्र इतिप्रामाणिकाः ॥ अयमेवाभिप्रायो माधवाचार्य्याणाम्

त्याग विधान कियाहै गर्भ विषें और पतिके वधादि विषें तैसें हि वडे पापके विषें त्यागहै १ इस याज्ञवल्क्यकी उक्तितें त्यागका अर्थ किहाहै परंतु जिसगर्भके दोषकर्के त्यागहै सोगर्भ शूद्रादिका कीत्ता होआ जानणा इसमै वचन कहीदाहै ब्राह्मण इति इसतें लेकर वसिष्ठस्मरणात् इस तक अर्थ पीछे लिखयाहैइस विषे शूद्रग्रहण प्रतिलोमज जो पिछे कयाहै तिसके उपलक्षण वास्ते है और त्रय वर्णकी व्यावृत्तिवास्तेनाहिंहै तिस कर्के एहवात सिद्ध होई कि शिष्य साथ गमन करण वाली और गुरु साथगमन करण वाली स्त्रीकी त्रय वर्ण विषें हि स्थिति होणेतें त्याग कयाहै तथापि एह त्यागगर्भमात्राविषेंनाहिंहै किंतु प्रसूतिमात्रविषें है एह प्रामाणिकोंका मतहै एही अभिप्राय माधवाचार्य्योंका है

व्यवेति ओर त्याग शब्द कर्के व्यवहार तिसदी साथ नहिं करणा एही कया है कोई घरतें निकालनेका नाम त्याग नहि एह मिताक्षरा में कया है ॥ अब स्त्रीको मनके पापका ओर वाणीके पापका प्रायश्चित्त वासिष्ठस्मृतिसें कहतेहैं मानसेति मनकर्के पतिकें मारणे विषे त्रय रात्रि यवोंका काडा ओर क्षीरोदनका भोजन करे ओर पृथ्वी विषे शयन करे ओर त्रयरात्रितें उपरंत जल विषे डुब्ब कर्के गायत्रीकी चारमालाका शिर विषे हवन करें तां पवित्र होती है एह जाणीदाहै परंतु जिसकर्के हवन करणाहै सो द्रव्य नहि लिखया सो इसप्रकरणसें जलहि प्रतीतहुंदाहै अथवा घृत कर्के हवन करे ओर चार माला तक श्वासरोध नहि हुंदा इस कर्के जाणीदाहै कि श्वास संचार रक्षकर निमग्न होवे ओर हवनादि दूसरेसे करावे आपजलमे निमग्नरहे इतनाभी विचारकरणा ॥ अभिचार नाम मारणकाहै वाणीके पाप

व्यवहारनिरोधएवत्यागशब्देनोक्तो नतु गृहान्निर्वासनमपीतिमिताक्षरा ॥ मानसवाचिकयोः प्रायश्चित्तंवसिष्ठस्मरणे।मनसाभर्त्तुरभिचारेत्रिरात्रंयावकं क्षीरोदनंवाभुंजानाअधः शयीत ऊर्ध्वंत्रिरात्रादप्सुनिमग्नायाःसावित्र्याचतुर्भिरष्टशतैःशिरोभिर्जुहुयात्पूताभवतीतिविज्ञायते अभिचारोहिंसा वाक्संबंधेएतदेवमासंचरित्वा ऊर्ध्वमासादप्सुमग्नायाःसावित्र्याचतुर्भिरष्टशतैः शिरोभिर्जुहुयादिति ॥ अष्टाधिकंशतमष्टशतंतैश्चतुर्भिःशिरोभिःशिरसीत्यर्थः ॥ इदंच मानसिकव्यवहारेप्रायश्चित्तं रजोदर्शनादर्वाग्व्यवहार्यत्वसिद्धये ॥ रजोदर्शनेतु सति तेनैवशुद्धिः। तथाचमनुः । मृत्तोयैःशोध्यतेशोध्यंनदीवेगनशुद्ध्यति ॥ रजसास्त्रीमनोदुष्टासंन्यासेनद्विजोत्तमइति १ ॥
इतिस्त्रीव्यभिचारप्रायश्चित्तम् ॥ ❀ ॥

विषे इसी व्रतको महीना रोज करे महीनेतें उपरंत जलविषे गायत्रीकी चारमाला कर्केशिर विषे हवन करावे अठां तें अधिक सौ १०० नूं अष्टशत कहतेहैं तिनां चऊं कर्के सिरविषे हवन करे एह मनके व्यभिचार विषे प्रायश्चित्तहै परंतु रज देखणेतें उरे व्यवहार्यत्वकी सिद्धि वास्तेहै ॥ ओर रजदेखणें विषे तिसी रजकर्के शुद्धि होवीहै ॥ तैसेंही मनुजीकहतेहैं मृदिति शोधने योग्य जो वस्तु सो मृत्तिका ओर जलकर्के शुद्ध होतीहै ओर नदी वेगकर्के शुद्ध होतीहै ओर दुष्टहैमन जिसका ऐसी स्त्री रजकर्के शुद्ध होतीहै ओर द्विज संन्यास कर्के शुद्ध होताहै १ एह स्त्रीयोंके व्यभिचारका प्रायश्चित्त कया है ॥ ❀ ॥

अब पशु गमन विषे शंख और लिखित कहतेहैं तिर्यगिति गौके विना और पशुयोनिविषे गमन करे तां सचैल स्नानकर्के घासकाभार गौआंको देवे तां शुद्धहोताहै ॥ एहि पराशरजी कहतेहैं महिषीति महिषी ऊटणीगधी इनके साथ गमनकरे तां दिनरात्रके व्रतकर्के शुद्ध होताहै परंतु एह नहिं कामना कर्के कीताहोवे तिसमे जानणा ॥ और कामनाकर्के करण वालेविषे जावाली जी कहतेहैं इतरेषामिति और पशुयोंविषे गमनकरे तां कृच्छ्रव्रतकाएकपाद व्रतकरे ॥ इसीमे कामनाकर्के बहुत अभ्यास विषे संवर्त्तजी कहतेहैं पश्विति पशु और वेश्याके गमनविषे प्राजापत्य व्रतकरे ॥ कुत्तीके साथ गमन करणें विषें विशेष चतुर्विंशति मत विषें कहतेहैं शुनीमिति कुत्तीके साथ द्विज गमन करे तां अतिकृच्छ्र व्रतकर्के शुद्धहोताहै ॥ अब जो गौतमजीने कयाहै सो कहतेहैं अमानुषीष्विति

अथपशुगमनेशंखलिखितौ ॥ तिर्यग्योनिषुगोवर्जंसचैलस्नातोयवसभारंदद्यात् ॥ पाराशरः ॥ महिष्युष्ट्रीखरीगामीत्वहोरात्रेणशुद्ध्यति इदमकामतः कामतस्तु ॥ जावालः ॥ इतरेषांपशूनांतुकृच्छ्रपादोविशोधनमिति कामतोऽभ्यासे संवर्त्तः ॥ पशुवेश्याभिगमनेप्राजापत्यंविधीयतइति ॥ शुनीगमने विशेषश्चतुर्विंशतिमते ॥ शुनींचैवद्विजोगत्वाअतिकृच्छ्रंसमाचरेदिति ॥ यत्तु गौतमः ॥ अमानुषीषुगोवर्जंस्त्रीषुगमने कूष्मांडैर्घृतहोमइति तदकाम कामसकृदभ्यासेष्वष्टाविंशत्यष्टोत्तरसहस्रादिसंख्ययायोज्यम् ॥ अथगोगमने ॥ पराशरः ॥ गोगामीचत्रिरात्रेणगामेकांब्रह्मणेदद्यात् इदमकामतः सकृद्गमने कामतोविष्णुः ॥ गोव्रतंगोगमनेच ॥ कामतोऽभ्यासेतुशंखलिखितौ ॥ गोष्ववकीर्णःसंवत्सरं प्राजापत्यंचरेदिति ॥

गौके विना पशुयोनिकी स्त्रीविषें गमन कीते होयां कूष्मांड मंत्रो कर्के घृतका हवनकरे सो एह नहिं इच्छातें करणेंविषे अष्टाविंशति संख्याकर्के जोडनेयोग्यहै ॥ इच्छाकर्के करणेंविषे अष्टोत्तर सहस्र संख्या कर्के जोडना ॥ एकवार गमन विषें अष्टा विंशति जोडना ॥ और बहुत अभ्यास विषें अष्टोत्तर सहस्र जोड कर्के हवन करणा ॥ अब गौके साथ गमन करणें विषें प्रायश्चित्त पराशरजी कहतेहैं गविति गौके साथ गमन करण वाला त्रय रात्रि व्रतकर्के एक गौ ब्राह्मणके तांईं देवे तथापि एह नहिं इच्छातें एकवार गमनविषें जानणा ॥ इच्छातें करणें विषें विष्णुजी कहतेहैं गोव्रतमिति गौके गमनविषें भी जो गो घातकाव्रतहै सो करे अबइसमे बहुवार इच्छातें करणें विषें शंख और लिखित जी कहतेहैं गोष्विति गौ विषें गमन करणेतें वर्ष पर्यंत प्राजापत्य व्रत करे तो शुद्ध होताहै

जो गोतमजीने कयाहै सो कहतेहैं गवीति गौके गमनविषें गुरु तल्पके तुल्यप्रायश्चित्त करणा सो एह ज्ञानतें जन्मसें लेकर बहुत अभ्यास विषें जानणा एह परस्त्री व्यभिचारका प्रायश्चित्त पूरा होया ❁ इसत उपरंत आत्मविक्रयके प्रायश्चित्त कहतेहैं तत्रेति तिस विषें सामान्य प्रायश्चित्त जो याज्ञवल्क्यनें (उपपातकशुद्धिःस्यादेवंचांद्रायणेनतु) इत्यादि पिछे कथन कीत्तेहोए चार हैं अथवा तिनांके तुल्य मनुजीनेकहे होएहैं सो यथा प्रकार जोडने योग्यहैं अर्थात् जैसा पाप होवें तैसाही व्रत जोडने योग्यहै ॥ सो अयाज्य संयाज्य प्रकरण विषें कहेहैं ॥ कुछक और कहतेहैं कि याज्ञवल्क्यकी उपपातक गणना विषें व्यसनतें उपरंत आत्मविक्रय प्रतिपादन कीता है तिसका प्रायश्चित्त स्कंदपुराणके पातालखण्डसें कहतेहैं पानमिति मदिरा पान करणा १ और

यत्तु गोतमः गविगुरुतल्पसम इति तद्ज्ञानादाजन्माभ्यासे इतिपारदार्य्यम् ३ ❁ एतदनंतरमात्मविक्रयः ॥ तत्र सामान्यप्रायश्चित्तानि याज्ञवल्क्योक्तानिचत्वारि ॥ तत्समानि मानवीयानि वा यथायथंयोज्यानि तानिचायाज्यसंयाज्यप्रकरणेप्रोक्तानि किंच याज्ञवल्क्योपपातकगणनायांव्यसनान्यात्मविक्रय इतिव्यसनोत्तरमात्मविक्रयः प्रतिपादितः। तत्प्रायश्चित्तं स्कंदपुराणे पातालखण्डे ॥ पानमक्षाःस्त्रियश्चैवमृगयाचोग्रदंडनम् अतीवपरुषंवाक्यंसर्वस्वदानमेवच १ एतानिसप्तव्यसनानि ❁ ॥ अथापराणिसप्तव्यसनानि अनृतंगंधपुष्पाणांसेवनंदोषचारिणाम् ऋणंकृत्वाघृतंपीत्वा प्रत्यहंभोजनेस्पृहा स्वंकिंचनपणंकृत्वाऋणंकृत्वाव्रतंचरेत् १

जूआ खेलना २ और परस्त्रीका सेवणा ३ और मृगया क्याबहुताशिकार खेलना ४ और थोडे पापमेंबहुतदंड देणा ५ और बहुतकठोर वचनबोलणा ६ और कुटुंबदे होआं २ संपूर्ण धनका दानकरणा ७ एह सत्तव्यसनकहेहैं ॥ १ ॥ अब और सत्तव्यसनकहतेहैं अनृतमिति झूठबोलणा १ गंधपुष्पोंका सेवणा २ और दोष वाले पुरुषका अर्थात् मदिरापानी वेश्यागामी आदिपुरुका सेवणा ३ और ऋण उठाय कर्के घृत पीणा ४ और नित्यंप्रति नवीन पदार्थ खाणेकी इच्छा करणी ५ और मेरेको इतना धन देओ में आपका व्रत करूंगा ऐसा व्यवहार करणा ६ और ऋण कर्के व्रत करणा अर्थात् व्रतके उद्यापनादि विषे बहुत धन लगाणा ७ एह सत्त व्यसनहें ॥ १ ॥

एष्विति इनां व्यसनांके भोगमें आसक्त होआ अपणे आपनू वेचकर्के वर्त्तेगा ॥ आत्माके वेचणे का प्रकार कहतेहैं वर्षमिति एक वर्ष वा छे महीनें भगवान्का आराधन करोंगा ऐसें संविद नूं कर्के जेकर पापवुद्धि वाला पुरुष वर्त्तन करे ॥ १ ॥ तद नित्यकर्म्म जो संध्या वंदनादि और काम्यकर्म्म जो यज्ञादि एह संपूर्ण तिसकि होतेहैं जिसते धन लेकर वनावे आप निष्फल होताहै ॥ २ ॥ अव द्यूतकी निंदाकरतेहैं अग्नाविति अग्निविषे दग्ध होवे वा जलविषें डुब्ब जावे जो पृथ्वीविषें डिग पडे सो संपूर्ण वस्तु परलोक वास्ते होतीहै और जूए विषें जो धन जावे सो नष्ट होताहै अर्थात् फेर कदाचित् प्राप्त नहीं हुंदाहै ॥ ३ ॥ सो पापी

एषुभोगासक्तःस्वात्मानंविक्रयित्वावर्त्तयेत् ॥ वर्षंवाथतदर्द्धंवाभगवदाराध नंचरे इतीवसंविदंकृत्वावर्त्तयेद्यदिपापधीः १ नित्यकर्म्माणिकाम्यानि इष्टापूर्त्तादिकानिच सर्वंतत्रैवभवतिस्वयंवैनिष्फलोभवेत् २ अग्नौदग्धंजले मग्नंभूमौनिपतितंचयत्।तत्सर्वंपरलोकायद्यूतेनष्टंविनश्यति ३ पतितःसभवे त्पापीभ्रंशाद्वैनित्यकर्मणाम् नरकेनियतंवासःपापकारीभवेद्यतः ४ तस्यवै निष्कृतिर्दृष्टामुनिभिर्धर्मकोविदैरिति ५ हिरण्यगर्भप्रतिग्रहप्रायश्चित्तव त्सर्वंकुर्यात् तत्तुप्रायश्चित्तंतुलादानादिप्रतिग्रहप्रायश्चित्तप्रकरणेद्रष्टव्यम् इत्यात्मविक्रयप्रायश्चित्तम् ४ ॥ ❀ ॥ अथगुरुमातृपितृत्यागेप्रायश्चित्तम्

पुरुष नित्यकर्म्मांका जो नाहिं करणा तिसकर्के पतित होताहै और तिस पाप करण वाले पुरु षका नियम कर्के नरक विषें वास होताहै क्योंकि जिसकारणतें उह पापकारीहै ४ परंतु तिस पुरुषकोभी धर्म्मके जानण वाले मुनियोंने पापके दूर करणेका उपाय देखयाहै ॥ ५ ॥ सो दि खाइंदाहै हिरण्येति हिरण्यगर्भके दानके प्रतिग्रहको न्याईं प्रायश्चित्त इसका संपूर्ण करे सो प्रायश्चित्त तुलादानादि प्रतिग्रहके प्रायश्चित्त प्रकरण विषे देखणे योग्यहै ॥ एह संपूर्ण आत्मविक्र यका प्रायश्चित्त कया है ॥ ❀ ॥ अव गुरु और माता और पिताके त्याग विषे प्रायश्चित्त कहतेहैं

एतदिति इनांके त्याग करणवालेको पंक्तिरहित पुरुषोंविषे पढ कर्के मनुजी कहतेहैं षष्ठेति षष्ठ काल विषे महीना पर्य्यंत भोजन करे क्या छेमे कालविषे भोजनकरे इसका अर्थ आगे आवेगा और संहिताका जप करे और नित्य शाकलमंत्रोंका हवन करे एह अपांक्त्य पुरुषोंके शुद्धकरणे वास्ते कयाहे ॥ इसी श्लोकका अर्थस्पष्टकर्के कहतेहैं अपांक्त्य जो पतितहैं (स्तेनक्लीवा) इत्यादि श्लोक कर्के कहे होए सो और विशेषते नहिं दिखायाहै प्रायश्चित्त जिनांको तिनांको महीना पर्य्यंत त्रयदिन जलपान कर्के तीसरे दिनविषें सायं काल भोजन करे और वेदसंहिता का जप करे ॥ हवनके मंत्रदखाईदेहैं देवेति (देवकृतस्यैनसो अवयजनमसी) इत्यादि अष्ठ

एतच्चापांक्तेयमध्येपठित्वाप्राहमनुः षष्ठान्नकालतामासंसंहिताजपएवहि ॥ होमश्चशाकलैर्नित्यमपांक्त्यानांविशोधनमितिअस्यार्थः अपांक्त्यायेपतिताः स्तेनपतितक्लीवाइत्यादिनोक्तास्तेषांविशेषतोऽनुपदिष्टप्रायश्चित्तानांमासं त्र्य हमपोभुक्त्वातृतीयेह्निसायंभोजनं वेदसंहिताजपोदेवकृतस्यैनसो अवयज नमसीत्यादिनाउद्गात्राऽष्टभिर्मंत्रैर्होमःप्रत्येकंकार्यः एतत्समुद्दिष्टंपापशोधन म् षष्ठान्नकालतायामयमभिप्रायः। सायंप्रातर्द्विजातीनामशनंमुनिनोदितम् याममध्येनभोक्तव्यं यामयुग्मंनलंघयेदित्युक्तप्रतिदिनभोजनद्वयनियमेन तृतीयदिनोत्तरार्द्धभोजनकालः ॥ जलपानंतुप्रातिदिनकमेवेतिवोध्यम् ॥

मंत्रोंकर्के उद्गाता एक एक का हवन करे एह पापशोधनका प्रकार कियाहै और षष्ठान्नकालता इसविषें एह अभिप्रायहै कि द्विजातियांको सायंकाल प्रातःकाल मुनियोंनें भोजन कया है एक प्रहरके मध्य विषें भोजन न करे और दोप्रहर न लंघनकरे अर्थात् दो प्रहरके अंदर ही भोजन करे ॥ ऐसा कहा जो नित्यंप्रति दो वार भोजनका नियम तिस कर्के तीसरे दिनके उत्तरार्द्ध विषें भोजनका काल आवता है इसीको षष्ठान्नकालता कहतेहैं और जलपान जो है सो प्रतिदिन करणा एह जानणें योग्यहै ॥

अपांक्तेयाइति अपांक्तेयभी तिसीविषे जाननेयोग्यहैं। जेडेब्राह्मण चोर और पतित और नपुंसक और नास्तिक हैं तिनां ब्राह्मणांका देवकर्म्म पितृकर्म्म विषे अधिकार नहिं है एह मनुजीनें कयाहै इसका उपक्रमकर्के क्या आरंभकर्केकहतेहैं कारणतें विनाही माता पिता और गुरु कें त्यागणे वाला जो ब्राह्मणादिहै सोभी हव्य कव्यतें बाहर है अर्थात् पूर्वोक्त प्रायश्चित्त इसतें कराणा चाहिए और एहि प्रायश्चित्त भार्य्याके त्याग विषेभी जानणा और माता जो है सो संपूर्णदोषों वालीभी होवे तांभी नहिं त्यागणी सो सदैव रक्षा करणे योग्यहै एह नागेशका वाक्यहै एह मातापिता गुरुके त्यागविषे प्रायश्चित्त समाप्तहोयाहै ❀ अब स्वाध्यायअग्निपुत्रके त्यागका प्रायश्चित्तकहतेहैं(प्रश्न) वेदकाविस्मरणतो ब्रह्महत्याके तुल्यकिहाहै सोउसका प्रायश्चित्त

अपांक्तेयाअपितत्रैव । येस्तेनपतितक्लीबायेचनास्तिकवृत्तयः तान्हव्यकव्ययोर्विप्राननर्हान्मनुरब्रवीदित्युपक्रम्य अकारणपरित्यक्तामातापित्रोर्गुरोस्तथेत्यादिना भार्यात्यागेप्येवम् मातुस्तुसर्वदोषेप्यत्याज्यतैव सर्वथा रक्षणीयत्वादितिनागेशः इतिगुरुमातृपितृत्यागप्रा ❀ ७ अथस्वाध्यायाग्निसुतत्यागप्रायश्चित्तम् ॥ अधीतस्यचनाशनमितिब्रह्महत्यासमत्वेनकथनं तुव्यसनासक्तयात्यागेबोध्यम् शास्त्रश्रवणव्याकुलतयात्यागेतु त्रैमासिकाद्युपपातकप्रायश्चित्तानिशक्तयाद्यपेक्षयायोज्यानि ॥ यत्तुवसिष्ठस्मरणं ॥ ब्रह्मोज्झिता कृच्छ्रं द्वादशरात्रं चरित्वा पुनरुपयुंजीत वेदमाचार्य्यादिति तदत्यंतापद्विषयमितिमिताक्षरा ॥

अनुपातकमें आवेगा इसमेंक्योंलिखयाहै इसकाउत्तरकहतेहैं अधीतस्येति पढे होए वेद का भुलाणा एह पिच्छे ब्रह्महत्याके तुल्य कहाहै सो भुलाणा व्यसनकी आसक्ति कर्के होवे तां तिसविषे जानणा सो एह अनुपातकों में गिणयाहै और शास्त्रके श्रवण कर्के जोव्यकुलताक्या न्यायादि शास्त्रके अभ्यासमें जो खचितहोणा सो उपपातकहै तिस विषे त्रैमासिकादि उपपातकका प्रायश्चित्त कियाहै सोई तिनांनूं शक्त्यादिकी अपेक्षा कर्के जोडना ॥ और इससे विलक्षण जो वसिष्ठ स्मृतिमें कहाहै सो कहतेहैं ब्रह्मेति वेदनूं भुलाणवाला बारां १२ रात्रि का कृच्छ्र व्रत कर्के फेर आचार्य्य तें वेद नूं पढे सो एह अत्यंत आपत्तिविषे जानणा एह मिताक्षरामें कयाहै

अब अग्नित्याग रूप उपपातकका प्रायश्चित्त कहतेहैं तिसमें मनुजीका वचनहैं अग्नीति इच्छाकर्के पापकरण वाला जो ब्राह्मण सो अग्निहोत्रविषे अग्नियांका एक महीना त्यागकरे तां चांद्रायणव्रत कर्के शुद्ध होताहै पापकास्वरूपकहतेहैकि सो अग्नित्यागरूपपाप यजमानहत्याके तुल्य होताहै १ तैसेंही श्रुतिमें कहाहै जो पुरुष अग्निकात्याग करताहै सो देवतयांको यजमान हत्याके तुल्य प्रतीत हुंदाहै परंतु एह इच्छातें करण वाले विषे जानणा ॥ और जोहारीतजीनेकयाहै सोकहतेहैं संवत्स रइति जेकर अग्निहोत्री अग्निहोत्र नूं वर्ष रोज त्यागे तां चांद्रायण व्रत कर्के फेरअग्नि स्थापन करे और दोवर्ष त्यागेतां सोमायनऔर चांद्रायण व्रतकोंकरे सोमायन औरचांद्रायणकाभेद व्रतप्रकरण विषे देखणा और त्रयवर्ष त्यागे तां वर्ष पर्य्यंत कृच्छ्र व्रत कर्के फेर अग्नि स्थापन करेतांशुद्धहुंदाहै

अग्नित्यागेमनुः । अग्निहोत्र्यपविद्ध्याग्नीन् ब्राह्मणःकामकारकः चांद्रायणं चरेन्मासंवीरहत्यासमंहितत् । १ । अपविध्य त्यक्त्वा वीरोयजमानःमास मपविध्येत्यन्वयः ॥ तथाचश्रुतिः ॥ वीरहावाएषदेवानांभवतियोऽग्निमुद्वास यते इति इदंचकामतः । यत्तुहारीतः ।संवत्सरोत्सन्नेऽग्निहोत्रेचांद्रायणंकृत्वा पुनरादध्यात् द्विवर्षोत्सन्ने सोमायनचांद्रायणेकुर्यात् त्रिवर्षोत्सन्ने संव त्सरंकृच्छ्रमभ्यस्यपुनरादध्यादिति तदकामतोज्ञेयम् ॥ शंखस्तु वर्षोत्सादे गोदानमप्यधिकमाह । अग्न्युत्सादी संवत्सरंप्राजापत्यंचरेद्गांचदद्यादिति विष्णुरपि वेदाग्न्युत्सादीत्रिषवणस्नाय्यधःशायीसंवत्सरंभैक्षेणवर्त्तयेदिति कामतस्त्वेतान्येवस्वस्वविषयेद्विगुणानि ॥

परंतु सोएह नाहीं इच्छातें करणें विषे जानणा शंखजी कुछ पूर्वोक्तसें विलक्षण कहतेहैं वर्षेति वर्ष रोज त्यागणें विषें चांद्रायण कर्के गोदान अधिक करे अर्थात् अग्निके त्यागण वाला पुरुष एक वर्षका प्राजापत्य व्रत कर्के पीछे गोदान करे ॥ विष्णुजी कहतेहैं वेदेति वेद और अग्नि के त्यागण वाला पुरुष त्रयकाल स्नान करे और पृथ्वी में शयन करे और वर्ष पर्य्यंत भिक्षाके अन्न कर्के उपजीविका करे तदशुद्धहुंदाहै परंतु एभी इसमेजाननाकिइनांनूंइच्छातें जेकर त्याग देवें तां अपणें अपणें विषय विषें द्विगुण व्रत करणे योग्यहै ॥ जैसे एकवर्ष अग्निके त्यागण वालेको दो वर्षका प्राजापत्य और दो गौका दानकरणा उचितहै ऐसे औरभी जानलेणा ॥

जो वसिष्ट जीने कया है सो कहतेहैं यइति जो पुरुष अग्नियां नूं त्यागे सो बारां १२ रात्रिका कृच्छ्र व्रत करके फेर अग्नि स्थापन करे किन्हाअग्नियांके त्यागविषे एहप्रायश्चित्तहै तिनकों जना तेहैं अग्नीनिति अग्नियां जो दक्षिणाग्नि और गार्हपत्य आहवनीय अवसथ्य और सभ्य इनांयं त्रां नूं त्याग देवे तां पूर्वोक्त व्रतकरे इसमे द्वादशरात्रग्रहण उत्तमकालादिकी अपेक्षा करके प्राजा पत्यादि जो गुरु लघु कृच्छ्र इनांकी प्राप्ति वास्तेहै इसजगा उत्तम काल नाम एक ऋतुका और तिसते अधिकका है तिसविषे दो महीनें त्यागे तां प्राजापत्य व्रत करे और चार महीनें त्यागे तां अतिकृच्छ्र व्रत करे और छे ६ महीनें त्यागे तां पराक व्रत करे ॥ और ६ महीनें उपरंत योगीश्वरजीनें कहे होए जो उपपातकमें सामान्य प्रायश्चित्त सो कालादियोंकी अपेक्षा करके जोडनें योग्यहैं एहमिताक्षरामें कयाहै परंतु एह नास्तिक बुद्धितें त्यागणे विषे जानणा तैसेंहि

यत्तुवासिष्ठः। योग्नीनपविध्येत्सकृच्छ्रंद्वादशरात्रंचरित्वापुनराधानंकारयेदिति अग्नीन्दक्षिणाग्निगार्हपत्याहवनीयावसथ्यसभ्यान् अपविध्येत्परित्यजेत् द्वादशरात्रग्रहणमुत्तमकालापेक्षया प्राजापत्यादिगुरुलघुकृच्छ्राणां प्राप्त्य र्थं तत्रमासद्वयेप्राजापत्यंमासचतुष्टयेऽतिकृच्छ्रःषण्मासोत्सन्नेपराकः षण् मासादूर्ध्वंयोगीश्वरोक्तान्युपपातकसामान्यप्रायश्चित्तानि कालाद्यपेक्षया योज्यानीतिमिताक्षरा एतच्च नास्तिक्यात्त्यागेज्ञेयम् तथाचव्याघ्रः॥ मासद्व यंतुयोवाग्निंत्यजेदेवंसमाचरेत् नास्तिक्यात्कृच्छ्रमेकंतुहोमद्रव्यंददातिच १ होमद्रव्यंयावत्कालंहोमोनकृतस्तावद्धोमपर्याप्तम् तथाभरद्वाजगृह्ये ॥ याव त्कालमहोमीस्यात्तावद्द्रव्यमशेषतः तद्दानंचैवविप्रेभ्योयथाहोमस्तथैवचेति १ जातूकर्ण्योपि अतीतकालंजुहुयादग्नौविप्रायवास्वयम् दद्याद्वेदविदेसम्यक्कृ त्वाधानंपुनर्द्विजइति १ इदंचहोमद्रव्यदानंस्मार्ताग्नित्यागविषयमितिमाधवः

व्याघ्र ऋपि जी कहतेहैं मासद्वयमिति दो महीना जो पुरुष अग्निकोत्याग देवे नास्तिकबुद्धितेतां एक कृच्छ्रव्रत करे और होमद्रव्यका दान करे १ अब होम द्रव्यकापरिमाण कहतेहैं कि जितना काल होम न कीता होवे तितनां हि होम परिपूर्णजानणा जैसे दोमहीने होम जद नहि कीता तां जितना घृतादि उसमें लगाणाथा उतना घृतादि ब्राह्मणकेतांई देकर प्रायश्चित्तकरे तां शुद्धहोताहै तैसेंहि भरद्वाजका बणाया जो गृह्यसूत्र तिसमें कहतेहैं यावदिति जितना काल हवन न करे तितनां हि संपूर्ण द्रव्य ब्राह्मणको देदेवे जैसा होमहै तैसा हि दानहै १ जातूकर्ण्य जीभी कहतेहैं अतीति अतीत काल में अग्निविषे हवन करे वा वेदके जानणे वाले ब्राह्मणनांई होम द्रव्य देदेवे फेर द्विज अग्नि स्थापनकरे परंतु एह होमद्रव्यकादान स्मार्त अग्निके त्याग विषें जानणा एह माधवजीने कया है

उभेति श्रौत और स्मार्तअग्निकेत्यागविषेंभी एहयुक्त है एहअर्थयथायोग्य प्रतीत हुंदाहै एहभीकिसें कामतहै और अपणाभी मतहै । अब और इसमें विशेषहै मासेति चार महीनें अग्निके त्यागविषें माधवजीकहतेहैं ॥ चेति संपूर्ण चारमहीनें अग्निकें त्यागविषें अतिकृच्छ्र व्रत करे तां तिस पाप ते रहित होताहै १ जेकर छे ६ महीनेत्याग करे तां पराकव्रतकर्के शुद्ध होताहै इसते उपरंत त्यागकर्के रहे तां वर्ष पर्य्यंत पयोव्रत करे अर्थात् वर्षपर्य्यंत परिमित दूधपान करतारहे ॥ जैसा उशनाजी कहतेहैं षडिति छे६ महीने जो अग्नि त्याग करे सो पराक व्रत कर्के शुद्ध होताहै और छे महीनें ते उपरंत त्याग कर रहे तां सावधान होकर एक महीना एक वर्ष पर्य्यंत पयो व्रत करे ॥ कीतेहैं व्रत जिनोंने ऐसे मुनियोंने एह कयाहै ॥ १ ॥ छे ६

उभयत्यागेऽपियुक्तमितितुप्रतिभाति मासचतुष्टयत्यागेतुसएव चतुष्टये तुसपूर्णमासानांतुहुताशनं त्यक्त्वातिकृच्छ्रंकुर्वीत ततःपापात्प्रमुच्यते १ षण्मासत्यागेपराकः ॥ अतऊर्ध्वमब्दपर्य्यंतंपयोव्रतम् ॥ यथाहोशनाः षण्मासांस्त्यजतेयोवैपराकंतुसमाचरेत् ॥ ऊर्ध्वंपयोव्रतंकुर्यान्मासमेकं समाहितः ॥ वर्षपर्य्यंतमेवाहुर्मुनयःशंसितव्रताः ॥ १ ॥ मासषट्कादूर्ध्वं संवत्सरंयावत्याज्ञवल्क्योक्तान्युपपातकसामान्यप्रायश्चित्तानिजातिशक्ति गुणाद्यपेक्षयायोजनीयानि संवत्सरादूर्ध्वंसंवत्सरानंतरमपित्यागेमनूक्ते द्वैमासिकत्रैमासिके कालाल्पत्वमहत्त्वापेक्षयायोज्ये ॥ एतदपिनास्तिक्य त्यागविषयम् ॥ प्रमादत्यागेभारद्वाजगृह्योक्तोविशेषः ॥

महीने तें उपरंत एक वर्ष तक याज्ञवल्क्य जीने कहे होए जो उपपातक में सामान्य प्रायश्चित्त सो जाति शक्ति गुणादिकी अपेक्षा कर्के जोडने योग्यहैं अर्थात् जातिमें ब्राह्मणको पूर्णव्रत देणा क्षत्रीको एक पाद ऊन देणा वैश्यको आधा देणा शूद्रको एक पाद देणा वा जैसी शक्ति होवे तैसाहि प्रायश्चित्त करणा और गुणवान् कों पूर्ण व्रत देवे निर्गुणकों आधा देवे और वर्षतें उपरंत अग्नि त्याग रहे तां मनुके कथन कीते होए जो दो २ महीने त्रय महीनेके व्रत सो थोडे काल वा वहुत कालकी अपेक्षा कर्के जोडने योग्यहैं अर्थात् थोडे कालमें थोडा दो महीनेका व्रत वहुत कालमें वहुत त्रय महीनेका व्रत करणा परंतु एह भी नास्तिक बुद्धि तें त्याग विषें जानणा ॥ प्रमादतें त्याग विषें भारद्वाजका वणाया जो गृह्यसूत्र तिसमें विशेष कयाहै

प्रति त्रय रात्रि त्यागणे विषे एक सौ १०० प्राणायाम करे और वीस २० रात्रि त्यागणे विषे उपवासकरे इसतें उपरंत सठ ६० रात्रि तक त्यागणे विषे त्रय रात्रि उपवास व्रत करे इसते उपरंत एक वर्ष त्यागणे विषे प्राजापत्य व्रत करे इसते उपरंत वहुत काल विषे दोष वहुत है अर्थात् वहुत काल मे एहीव्रत वहुत करणा ॥ एही इच्छाते गृह्य अग्निके त्याग विषे जानणा एह अपरार्क मे कयाहै ॥ इसी विषयमे स्कंदपुराण विषे कहतेहं हुताशन मिति हे प्रभो जो ब्राह्मण प्रमाद ते अग्नि कों त्याग देवें सो ब्राह्मण एक सौ १०० प्राणायाम और उपवास व्रत करे तां शुद्ध होताहै १ इच्छाते अग्निके त्याग विषे भी स्कंद पुराण विषे वचन है द्वादशेति वारां दिन त्यागे तां त्रय ३ दिन उपवास व्रत करे औ

प्राणायामशतमात्रिरात्रात् ॥ उपवासःस्यादाविंशतिरात्रात् अत ऊर्ध्वमाषष्टिरात्रात्तिस्रोरात्रीरुपवसेत् अतऊर्ध्वमासंवत्सरात्प्राजापत्यंच रेत् अतऊर्ध्वकालवहुत्वेदोपवहुत्वमिति इदमेवकामतोगृह्याग्नित्यागइत्य परार्के अत्रैवविषयेस्कांदे ॥ हुताशनंतुयोविप्रः प्रमादात्त्यजतिप्रभो प्राणा यामशतंकुर्यादुपवासमथापिवेति १ कामतस्त्यागेतुतत्रैव। द्वादशाहातिक्र मेत्र्यहमुपवासः मासातिक्रमेद्वादशाहमुपवासः संवत्सरातिक्रमेमासोपवा सःपयोभक्षणं वा कूष्मांडीभिर्होमः क्रमेणोभयंवति उपवासाशक्तौमासं पयोभक्षणम् संवत्सरानंतरमधिककालाभिक्रमउभयमिति मदनपारि जाते। इदमेवचालस्येनश्रौताग्नित्यागेष्विति तथास्मृत्यंतरे आलस्येनयदा वह्निंद्वादशाहेत्यजेत्प्रभो त्रिरात्रमुपवासंचचरेत्पापविशुद्धय इति १ इत्य ग्नित्यागेप्रायश्चित्तम् ॥ ९ ॥ ❀

र एक महीना त्याग करे तां वारां १२ दिनका उपवास व्रत करे और एक वर्ष त्याग करे तां एक महीना उपवास व्रत करे वा जल भक्षण करे और यद्देवा देवहेडनमित्यादयः कूष्मांड मंत्राः इनां मंत्रों कर्के हवन करे अथवा क्रम कर्के दोनो करे ॥ जेकर उपवास करणे की सामर्थ्य न होवे तां महीनारोज जलभक्षण करे ॥ एक वर्षते उपरंत जो जो अधिक कालका प्रथम क्रम ति स विषे एह दोनो जानणे ॥ मदन पारिजात विषे कहतेहैं इदमिति जो कयाहै सो एह आ लस कर्के श्रौत अग्निके त्याग विषे जानणा ॥ तैसे हि और स्मृति मे कहतेहैं आलस्येनेति जेकर आलस कर्के अग्निका वारां दिन त्याग करे तां अपणे पापकी शुद्धि वास्ते त्रय ३ रात्रि उपवास व्रत करे ॥ एह अग्निके त्यागका प्रायश्चित समाप्तहोया ❀ ॥ ९ ॥

अथेति अग्नियागतें अनंतर सुत त्यागका प्रायश्चित्त कहतेहैं अत्रेति इसविषे उपपातकशुद्धिःस्यात् इत्यादि सामान्य उपपातक का प्रायश्चित्त कल्पनाके योग्य है ॥ तैसें हिनागेश जी कहतेहैं संस्कारेति संस्कारादियोंका न करणा वा ऐश्वर्य के होयां रक्षा नहि करणी ऐसा जो सुत त्याग तिस विषे पूर्वोक्त चांद्रादिका एक व्रत करणा ॥ और एभी कियाहै कि सुत त्याग विषे और बंधु त्याग विषे त्रय महीने का गोवध व्रत करे तथापि एह इच्छा तें करण वाले विषे जानणा जेकर इच्छातें न करे तां तिसविषे योगीश्वरजीके कहे होए चार व्रत सो शक्त्यादिकी अपेक्षा कर्के जो डने योग्यहैं एह मिताक्षरामे कयाहै एहपुत्रत्यागका प्रायश्चित्त समाप्तहोया १० ❀ अब परिवित्तिता और परिवेदनादि के प्रायश्चित्त विषे वासिष्ट का कया होया विशेष कहतेहै परीति

अथसुतत्यागप्रायश्चित्तम् अत्रोपपातकशुद्धिःस्यादित्यादिसामान्योपपातकप्रायश्चित्तंकल्प्यम् तथाचनागेशः । संस्काराद्यकरणरूपेविभवेसत्यरक्षणरूपेचसुतत्यागेचांद्रादिष्वेकामिति ॥ सुतत्यागेवंधुत्यागेचत्रैमासिकंगोवधव्रतंकामतएतत् अकामतस्तुयोगीश्वरोक्तव्रतचतुष्टयंशक्त्याद्यपेक्षयायोज्यमितिमिताक्षरा इतिसुतत्यागेप्रायश्चित्तम् १० ❀ अथपरिवित्तितापरिवेदनादिप्रायश्चित्तेवसिष्ठाभिहितोविशेषः परिविविदानःकृच्छ्रातिकृच्छ्रौचरित्वातांतस्मैदत्वापुनर्निविशेत् तांचैवोपयच्छेतेति ॥ परिविविदानःपरिवेत्तोच्यते तत्स्वरूपंपरिगणनायांप्रागुक्तमेव असौकृच्छ्रातिकृच्छ्रौचरित्वा तस्मैज्येष्ठाय तां स्वोढांदत्वा ब्रह्मचर्याहृतभैक्ष्यवद्गुरुपरिभवपरिहारार्थंनिवेद्यपुनरुद्वहेदिति

परिविविदान कृच्छ्र और अतिकृच्छ्र व्रत कर्के तिस स्त्री कों वडे भ्राता कों दे कर फेर विवाह करे वा विवाह तें पहले भ्राताकी आज्ञा ले कर्के तिसो नूं विवाहे ॥ अब इसीका अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं परिविविदान नाम परिवेता का है तिसका स्वरूप परिगणना विषे पिच्छे कया ॥ है एह कृच्छ्र और अतिकृच्छ्र व्रतकर्के वडे भ्राताके तांई तिस विवाहितास्त्रीकों देकर्के फेर विवाह करे इसमे दृष्टांत है जैसे ब्रह्मचर्यमे इकट्ठा कीता होया जो भिक्षाका अन्न तिसको गुरुके अनादर के दूर करण वास्ते निवेदन करे गुरु आज्ञा देवे तां अन्न खावे न आज्ञा देवे तां नहिं खावे तिसकी न्यांई एह जानणा

कामिति किसनूं विवाहे इस अपेक्षाविषे कहतेहैं तामिवोपयच्छेत ज्येष्ठभ्राताके तांई निवेदनकीा होई स्त्री जोहै तिसीविवाहिता नूं भ्राताकी आज्ञा लेकर्के विवाह लेवे ॥ अपरार्कके आरंभविषे तों एह वसिष्टजाका कथन है ॥ परिविचिरिति परिविति जो है वडाभ्राता सो वारां १२ रात्रिका कृच्छ्र व्रत कर्के विवाह करे ॥ नहिं कीता है विवाह जिसनें ऐसा जो वडा भ्राता सो प्रथम कीता है विवाह जिसने ऐसे छोटे भ्राताकर्के उल्लंघित हुंदाहै सो परिविति कयाहै ॥ सो जेडी छोटे भ्रातानें प्रथम विवाही होवे तिसनूं तिस कर्के दित्ती होई नूं स्वीकार करे इसकर्के वढे भाईके पास दो २ स्त्री होई इसमे इतना विचार मनमे रक्षणा चाहिए कि वढेकों जो प्रायश्चित्त दित्ताहै सो इसने छोटके विवाह समे तिसके हटाणेमे यत्न नहि कीता एहि अपराधहै

कामित्यपेक्षायामुक्तं तामिवोपयच्छेतेति तामेवस्वोढांज्येष्ठायानिवेदितां ते नचानुज्ञातामुद्वहेत्। अपरार्केतूपक्रमेवसिष्ठमिदम्। परिवित्तिःकृच्छ्रंद्वादश रात्रंचरित्वानिर्विशेततांचैवोपयच्छेत अकृतविवाहोऽग्रजोऽनुजेनप्रागात्म नोविवाहंकुर्वताऽतिक्रांतःसपरिवित्तिः सच कृच्छ्रंद्वादशरात्रंप्राजापत्यंचरि त्वा निर्विशेतोद्वहेत तांच कनीयसापूर्वपरिणीतांतेनदत्तामुपयच्छेत स्वीकु र्य्यादितियावत् तस्यैव सा भार्य्या नानुजस्याशास्त्रीयत्वात्तद्विवाहस्य भा र्य्यात्वंच शास्त्रीयविवाहजन्यत्वमिति यदत्रहारीतेनोक्तम् ज्येष्ठेनिर्विष्टकनी यान् निर्विशमानः परिवेत्ता भवति परिवित्तिर्ज्येष्ठः परिवेदनीकन्या परि दायीदाता परियष्टायाजकः तेसर्वेपतिताःसंवत्सरंप्राजापत्येनकृच्छ्रेणपा वयेयुरिति

और जेकर यत्न कीताहै परंतु तिसको औरने नहि मन्नया तद ज्येष्ठकों वचनते थोडाहि प्रायश्चित्त होणाचाहिए एह निश्चित अर्थ है ॥ सो स्त्री तिसीकी हैं छोटे भ्राताकी नहिं है तिसके विवाहकों शास्त्र रहित होणेतें ॥ भार्य्यात्व क्या है जो शास्त्रीय विवाहतें उत्पन्न होवे इससें कुछविलक्षण जो हारीत जी नें कया हैं सो कहतेहैं ज्येष्ठ इति वडे भ्राता के स्थित होयां छोटा भ्राता विवाह कर लेवे तां सो परिवेत्ता कया है १ और परिवित्ति नाम वडे भ्राताका है २ और परिवेदनी नाम कन्याका है ३ और परिदायी नाम दाताका है ४ और परियष्टा नाम विवाह करवाणे वालेका है ५ एह संपूर्ण पतितहैं इनकी शुद्धि एक वर्षके प्राजापत्य व्रत कर्के होतीहै

अत्रेति जेकर वर्षरोज प्राजापत्यव्रत न करसके तां बीस ३० धेनुकादानकरे एहइसका प्रत्याम्नायहै परंतु एह प्रायश्चित्त ज्येष्ठभ्राताके उद्देशकर्के कन्या त्यागतें अनंतर जानणा अर्थात् ज्येष्ठभ्राताके तांई तिसकन्याकोदेके प्रायश्चित्तकरणा एह प्रायश्चित्तकदंबमें कयाहै ॥ इसतें विलक्षण जो शंखनें कयाहै सो कहतेहैं ॥ परिवित्तिरिति और परिवेत्ता एक वर्ष ब्राह्मणके घरविषे भिक्षा करें हारीत और शंखके वचन दोनो भी इच्छा कर्के कन्या के पित्रादिकी आज्ञा विना कीता जो विवाह तिसविषे जानणा क्योंकि प्रायश्चित्तको बहुत होणेतें ॥ जेकर गुणवाले ज्येष्ठभ्राता कर्के वारंवार हटाया होय कनिष्ठभ्राता विवाह करे तिसविषे जानणा एह अपरार्कमें कयाहै अत्र इसीमे और दूसरामतकहतेहैं कन्येति कन्याके पित्रादिके नाहिं जाणतेहोयां और इसीकर्के पित्रादियोंने नाहिं दित्तीहोईनूं बालात्कारादिकर्के इच्छाते जाण कर्के विवाह करे तां विवाह

अत्रत्रिंशद्धेनवःप्रत्याम्नायः।इदंतुज्येष्ठमुद्दिश्यकन्यात्यागानंतरमितिप्रायश्चित्तकदंबे यदपिशंखेनोक्तम् । परिवित्तिः परिवेत्ताचसंवत्सरंब्राह्मणगृहेषुभैक्ष्यं चरेयातामिति तदुभयमपिकामकारेण कन्यापित्राद्यननुज्ञातोद्वाहविषयम् प्रायश्चित्तस्यगुरुत्वात् ॥ यदागुणवताज्येष्ठेनवार्य्यमाणःकनिष्ठःकरोति तद्विषयमित्यपरार्कः ॥ कन्यापित्राद्यपरिज्ञानेतत्पित्रादिभिरदत्तां बलात्कारादिनाकामतोज्ञात्वाचोद्वोढुरब्दंप्राजापत्यपूर्वकंपूर्वोक्तमितिनागेशः । यदापुनः कामतःकन्यांपित्रादिदत्तामेवपरिणयति तदा मानवंत्रैमासिकम् पूर्वोक्तौकृच्छ्रातिकृच्छ्रौ याज्ञवल्क्यीयव्रतचतुष्टयंचाज्ञातविषयम् ॥ यमेनाप्यत्रविशेषउक्तः ॥ कृच्छ्रौद्वयोःपारिवेद्यकन्यायाःकृच्छ्रएवच ॥ अतिकृच्छ्रंचरेद्दाता होताचांद्रायणंचरेदिति ॥ १ ॥ एतच्च पर्याहिताग्न्यादीनामपिसमानम् । एकयोगनिर्देशात् ॥

करणवाला वर्ष रोजके प्राजापत्य पूर्वक पूर्वोक्त व्रत करे एह नागेशका मतहै ॥ जेकर फेर इच्छाते पित्रादियोंने दित्तीहोई कन्या नूं विवाहे तां मनुजीका कथन कीता होया त्रैमासिक व्रत करे और पिच्छले कहे होए जो कृच्छ्र और अतिकृच्छ्र व्रत और याज्ञवल्क्यके कहे होए चार व्रतसो एह नाहिं जाण कर्के विवाह करणे विषे जानणे ॥ यमजीनेभी इस विषे विशेषकयाहै कृच्छ्राविति परिवित्ति और परिवेत्ता दोए कृच्छ्र व्रत करें क्रम कर्के और कन्या एक कृच्छ्र व्रत करे और दाता अतिकृच्छ्र व्रतकरे और होताचांद्रायण व्रत करे १ एह अग्निहोत्रादियोंके विषे भी तुल्य जानणा अर्थात् वडे भ्राता विना छोटा भ्राता प्रथम अग्न्याधान करे इसमेंभी पूर्वोक्त प्रायश्चित्त करणा एकयोगका निर्देश होणेतें

गौतम जी कहतेहैं परीति परिविति परिवेत्ता और पर्याहित और पर्याधाता अग्रेदिधिषू वडी भगिनीके न विवाहित होयां छोटीजो विवाहित है तिसका पति और वडीका पति एह संपूर्ण तीनसौ ३६० सठ दिनका जो वर्ष तिसतक ब्रह्मचर्य धारण करें पर्य्याहित नाम उसकाहै जिस ज्येष्ठने पीछेते अग्न्याधान कीता है और पर्य्याधाता नाम उसकाहै कि जिसकनिष्ठने पहले अग्न्याधान कीता है इसी कारणतें वसिष्ठ जीनें अग्रेदीधिषूकेपत्यादियों विषे एहि प्रायश्चित कया है अग्रेदिधिषूका पति वारां १२ रात्रीका कृच्छ्र व्रत करके फेर विवाह करे चपुनः तिसीनूं विवाह लेवे और दिधिषूका पति कृच्छ्र और अति कृच्छ्र व्रत करके और छोटी भगिनीके पतिके तांई तिसस्त्रीनूं देकरके फेर अपणा विवाह करें अग्रेदिधिष्वादियोंका लक्षण और स्मृतिसें कहतेहैं ज्येष्ठायामिति जेकर वडी कन्या विवाहित न

यथाहगौतमः। परिवित्तिपरिवेत्तृपर्याहितपर्याधात्रग्रेदिधिपूदिधिषूपतीनां संवत्सरंप्राकृतंब्रह्मचर्यमिति पर्य्याहितः येनज्येष्ठेनपश्चादग्न्याधानंकृतं पर्य्याधातायेनकनिष्ठेनप्रथममग्न्याधानंकृतंसःअतएववसिष्ठेनाग्रेदिधिपूपत्यादाविदमेवप्रायश्चित्तमुक्तम् अग्रेदिधिषूपतिः कृच्छ्रंद्वादशरात्रंचरित्वानिर्विशेत्तांचैवोपयच्छेत दिधिषूपतिःकृच्छ्रातिकृच्छ्रौचरित्वातस्मैदत्वापुनर्निर्विशेतेतिअग्रेदिधिष्वादेर्लक्षणंस्मृत्यंतरेऽभिहितम् ज्येष्ठायांयद्यनूढायांकन्यायामूह्यतेनुजा यासाग्रेदिधिषूर्ज्ञेयापूर्वातुदिधिषूःस्मृतेति॥ १ तत्राग्रेदिधिषूपतिःप्राजापत्यं कृत्वा तामेवज्येष्ठांपश्चादन्येनोढामुद्वहेत् दिधिषूपतिस्तुकृच्छ्रातिकृच्छ्रौकृत्वा स्वोढांज्येष्ठांकनीयस्याःपूर्वविवोढ्रेदत्वान्यामुद्वहेदिति अत्रापरार्कः॥ यत्तुशंखेनोक्तम् परिवित्तिःपरिवेत्तायया चपरिविद्यते व्रतंसंवत्सरंकुर्य्युर्दातृयाजकपंचमाइति तत्पंचानांमिथःकृतसंकेतानांसम्मत्यापरिणयेसतिद्रष्टव्यम्॥

होवे और छोटीका प्रथम विवाहहोवे सो अग्रेदिधिपू कहीदीहै और वडी कन्याका नाम दिधिषूहै॥ १ ॥ अवसंज्ञादिखाकरपूर्वोक वसिष्ठ स्मृतिका अर्थ कहतेहैं तत्रेति तिसकेविषे अग्रेदिधिषूका पति प्राजापत्य व्रत करके दूसरे करके विवाही होई जो वडी कन्या तिसीनूं फेर विवाहे और दिधिषूका पति कृच्छ्र और अतिकृच्छ्र व्रत करके विवाही होई जो ज्येष्ठा तिसनू छोटी कन्याको जो प्रथम विवाहण वालाहै तिसके तांई देकरके और कन्या नूं विवाहे इसविषे अपरार्क में जो शंख जी नें कयाहै सो कहतेहैं परीति परिवित्ति और परिवेत्ता और जिसकरके परिवित्तिदोष होयाहै और दाता और विवाह करणे वाला और याजक एह संपूर्ण एकवर्ष का व्रत करें परंतु एह आपसमें कीताहै संकेत जिनोंनें ऐसे पंञ्जोंके विवाह विषे देखणे योग्यहै

जो सुमंतुजीनेकयाहे सो कहतेहैं परिवित्ति श्रौर परिवेत्ता श्रौर कन्या श्रौर दाता श्रौर याजक एह संपूर्ण वारां १२ रात्रि सत्तु पानकरें श्रौर ब्राह्मणोंकी तृप्ति करवावें तद शुद्धहोतेहैं श्रौर तिसकन्या नू पुनर्भू कहतेहैं फेर इसनू विवाह लेवे एह क्षत्रियादियोंके असमर्थ वालक विषे जानणा क्यों कि थोडाप्रायश्चित्त होणेतें ॥ अब इसतें अधिक प्रायश्चित्त प्रचेताजीकहतेहैं परिवित्तीति परिवित्ति परिवेत्ता श्रौर पर्य्याहित पर्याधाता अग्रेदिधिषूपति दिधिषूपति एह संपूर्ण प्राकृत वर्ष तकब्रह्मचर्य धारण करें श्रौर ब्रह्महत्याका व्रत करें प्राकृत नाम सठ ६० उपर त्रय सौ ३० दिनकर्के युक्त श्रौर स्वाधीनहै आरंभ जिसका असें वर्षकाहे श्रौर स्वाधीनारंभ उसकोकहतेहैं कि जिसदिन जिसको इच्छा होवे उसी दिनसे प्रारंभकरणा श्रौर विशेषकहतेहैं कि दत्तकादिपुत्रोंको एह परिवित्ति परिवेत्तादोष नहिं है इसमेंवचनहै भीति मात्रयांका पुत्र श्रौर दत्तपुत्र श्रौर पितृव्यतनय इनांको दार

यत्तुसुमंतुनोक्तम्। परिवित्तिपरिवेत्तृकन्यादातृयाजकानांद्वादशरात्रंसक्तुपानं ब्राह्मणतर्पणंच तांपुनर्भुवमित्याचक्षतेभूयश्चैनामभिगच्छेदिति तत्क्षत्रियाद्यसमर्थवालकविषयम् ॥ प्रचेताः॥परिवित्तिपरिवेत्तृपर्याहितपर्याधात्रग्रेदिधिषूदिधिषूपतीनां प्राकृतंसंवत्सरंब्रह्मचर्यंब्रह्महव्रतम्। प्राकृतंपष्ठ्युत्तरशतत्रयदिनमितंस्वाधीनारंभकंवत्सरमित्यर्थः।दत्तकादीनांतुनायंदोषः ॥ भिन्नोदरेचदत्तेचपितृव्यतनयेतथा दाराग्निहोत्रसंयोगेनदोषः परिवेदने ॥ इतिगौतमस्मरणात्। भिन्नोदरइतिसापत्नभ्रातृविषयम् दत्तेचेति म[redacted]कुलेज्येष्ठभ्रातृसत्त्वेनदत्तकस्यविवाहादौपरिवेत्तृत्वं नापिज्येष्ठस्य प[redacted]रिवि[redacted]व मित्यर्थः पितृव्यतनयइति देवरेणोत्पादितस्यभ्रातुःक्षेत्रजपुत्रस्य[redacted]विवाह[redacted]दौ देवरपुत्रादेः परिवेत्तृत्वादिकंनेत्यर्थः ॥ अत्रपराशरः ॥ पि

क्या स्त्री श्रौर अग्निसंयोगविषे परिवित्ति परिवेत्तादोषनहिंहै ॥ १ ॥ एह गौतमस्मृतिमेंकयाहै श्रौर दत्तक आदि पुत्रोंकेलक्षण ग्रंथांतरसें जानणे इसमेभी भिन्नोदर एह सापत्न भ्रातृकेविषें जानणा श्रौर सापत्नभ्राता उसको कहतेहैं कि जिनकापिता एकहै श्रौर माता दोहैं ॥ अब जिसप्रकार दत्तकादोष आउता हैं इसका उद्घाटन कर्के दूर कर्तेहैं दत्तेचति एह पिता के कुल विषें वडे भ्राताके होयां दत्तक पुत्रको विवाहादि विषें परिवेत्तृत्व नहिं है श्रौर ज्येष्ठ भ्राताको परिवित्तित्व नहिंहै पितृव्यतनय इति देवर कर्के उत्पन्न जो भ्राताका क्षेत्रज पुत्र तिसके विवाहादि विषें देवरपुत्रादियोंको परिवेत्तृत्वादि दोष नहिं है एह अर्थ भया है इसजगा पितृव्यतनय चाचे के पुत्रकानाम नहिं इसीवास्ते इसशब्दका अर्थ कीताहै इसी विषें पराशर ऋषि जी कहतेहैं

परिवित्तिरिति परिवित्ति और परिवेत्ता और जिसकर्के परिवित्ति दोषहोयाहै अर्थात् कन्या और दाता दानकरणेवाला और यज्ञकरवाणेवाला एह पञ्जनरककों प्राप्तहोतेहैं १ एक कृच्छ्रव्रत परिवेत्ता करे और एककृच्छ्र परिवित्ति करे और एक कृच्छ्र कन्याकरे कृच्छ्र और अतिकृच्छ्रव्रत दाता करे और हवनकरवाणेवालेको चांद्रायणव्रतकरणेयोग्यहै २ इसमे विशेषकहतेहैं कि कुब्ज और वामना और नपुंसक और स्खलितवाणीवाला और जडजन्मांध बोला मूक इनांको परिवित्ति परिवेत्ता दोष नाहिं हैं ३ पितृव्येति पितृव्यपुत्र जो पिच्छे किहाहै और मात्रयांका पुत्र और परस्त्री का सुत इनांको दारसंयोगमे वा अग्निहोत्र विषे परिवित्ति परिवेत्ता दोष नहिंहै ४ जेकर ज्येष्ठ भ्राता स्थितहोवे तां अग्न्याधान न करे वा आज्ञालेकर्के करलेवे तां दोषनहिं है एह शंख जी का

परिवित्तिः परिवेत्ता ययाचपरिविद्यते सर्वेतेनरकंयांतिदातृयाजकपंचमाः १ द्वौकृच्छ्रौपरिवेत्रोस्तुकन्यायाःकृच्छ्रएवच कृच्छ्रातिकृच्छ्रौदातुस्तुहोता चांद्रायणंचरेत् २ कुब्जवामनषंडेषुगद्गदेषुजडेषुच जात्यंधेबधिरेमूकेनदोषःपरिविंदतः ३ पितृव्यपुत्रःसापत्नःपरनारीसुतस्तथा॥ दाराग्निहोत्रसंयोगेनदोषः परिवेदने ४ ज्येष्ठोभ्रातायदातिष्ठेदाधानंनैवकारयेत् अनुज्ञातस्तुकुर्वीतशंखस्यवचनंयथा ५ अत्रेदमपिविचार्य्यम् परिवेत्ताऽनुजोऽनूढे ज्येष्ठइत्यत्र ज्येष्ठपदं स्वजन्मतःपूर्वजन्मपरं नतुप्रथमोत्पन्नपरम् तेनभ्रातृत्रये प्रथमोत्पन्ने कृतविवाहे मध्यमेऽकृतविवाहेतत्कनिष्ठेन विवाहे कर्त्तव्ये परिवेदनंभवति पूर्वजन्मनोऽकृतविवाहत्वात् यदातुप्रथमोत्पन्नोऽकृतविवाहोमध्यमस्तुकृतविवाहस्तदापितत्कनिष्ठेन विवाहे कर्त्तव्येत्रयाणांदोषः एवंभ्रातृचतुष्टयादावपिज्ञेयम् इतिपरिवेदनादिप्रायश्चित्तम् ॥

वाक्यहै ५ इसविषे एहभी विचारणेयोग्यहै कि(परिवेत्ताऽनुजोऽनूढेज्येष्ठे दारपरिग्रहात) इस श्लोक विषे ज्येष्ठ पद अपणे जन्मतें पूर्वजन्मपरजानणा प्रथमकी उत्पत्ति पर नहिं जानणा ॥ तिसकर्के त्रय भ्राताविषे प्रथमोत्पन्नने विवाह कीताहै और मध्यम भ्राताने विवाह नहिं कीता और तिसके छोटे भ्राताकें विवाह करणे विषे परिवित्ति परिवेत्ता दोषहै किसतें वडे भ्राताकों विवाह नहिं करणेतें जेकर प्रथमोत्पन्नने विवाह नहिं कीता है और मध्यम भ्राताने विवाह कीता है तां भी तिसके छोटे भ्राताके विवाह करणेविषे तिन्नां भ्रातांकों दोषहै इसी प्रकार चार भ्रातादिके विषे भी जानणे योग्य है एह परिवेदनआदि प्रायश्चित्त समाप्तहोया

अव कन्या दूषण विषे प्रायश्चित्त कहतेहैं तदिति तिसका स्वरूप पिछे उपपातकोंकी गणना विषे कहाहै तिसमें शंखजी कहतेहैं कन्येति कन्या दूषण करण वाला और अमृतवल्लीका रस वेचनवाला वर्ष रोजका कृच्छ्र व्रत करे परंतु तिसविषे समान वर्णकी कन्या दूषणमें चांद्रायण वा त्रय महीनेकाव्रतकरे और आनुलोम्यकरके असवर्ण कन्याके दूषणमें अर्थात् ब्राह्मणक्षत्रियादिकी कन्या दूषणमे और क्षत्रियादिक वैश्यादिकी कन्यादूषणमे और वैश्य शूद्रादिकीकन्या दूषणमें महीनारोज जल पान करे वा प्राजापत्य करे और क्षत्रीको ब्राह्मणकी कन्या दूषणमें वैश्यको ब्राह्मणक्षत्रीकी कन्या दूषणमें वर्ष रोज कृच्छ्र व्रत करणाचाहिए अवइसीमें अपने धर्म्म शास्त्रके

अथकन्यादूषणेप्रायश्चित्तम् तत्स्वरूपमुपपातकपरिगणनायामभिहितम् तत्रशंखः ॥ कन्यादूषीसोमविक्रयीचकृच्छ्रमब्दंचरेयातामिति तत्रसवर्ण कन्यादूषणे चांद्रं त्रैमासिकं वा आनुलोम्येनासवर्णकन्यादूषणे मासंपयः पानं कार्यंवा ॥ प्रातिलोम्येतुक्षत्रियवैश्ययोःकृच्छ्राब्दम् ॥ हारीतोपि ॥ कन्यादूषीत्याद्युपक्रम्य एते ग्रीष्मवर्षाहेमंतेषु क्रमेण पंचतपोऽभ्रावकाशजलशयनपूर्वकंमासंगोमूत्रयावकपानंकुर्युः शूद्रस्यतु विप्रादिकन्यादूषणे वध एव अत्यंताभ्यासे सवर्णस्यापिकृच्छ्राब्दम् सोमविक्रयी ॥ वृषलीपतिः

कौमारदारत्यागी शूद्रयाजकः ॥

द्वारा हारीतजीभीकहतेहैं कन्यादूषी इसते प्रारंभ करके वचनहै एह कन्यादूषण करणवालेतें आदि करके जो लोकहैं सो संपूर्ण ग्रीष्म वर्षा हेमंत ऋतुविषे क्रमकरके पंचतप अभ्रावकाश जलशयन पूर्वक महीनारोज गोमूत्र युक्त जवोंका पानकरें अर्थात् ग्रीष्ममें पंचाग्नि तपें वर्षाऋतुमे नग्नहोके वर्षामें स्थित रहें और हेमंत मे जलशय्या करें तद शुद्धहोतेहैं शूद्रको विप्रादिकी कन्या दूषण में मारदेणाहि योग्यहै और वहुत अभ्यास विषे समानवर्णवालेकोंभी वर्ष रोजका कृच्छ्र व्रत करणा उचितहै और अमृतवल्लीका रस वेचण वाला और वृषलीकापति और कौमार अवस्थामे स्त्री त्यागण वाला और शूद्रकों यज्ञ करवाण वाला ॥

गुरोरिति और गुरुके मारण वाला और पेष्टी मदिरातें भिन्न मदिराका पान करण वाला और ब्राह्मण वृत्तिके दूर करणवाला झूठा व्यवहार करणवाला मित्रसे द्रोहकरणवाला और शर णागत पुरुषको मारणवाला और वहु रूपिया एह संपूर्ण अज्ञानतें प्रवृत्त होण तां त्रय महीनेंका व्रतकरें ॥ और जेकर जाण कर्के करें तां छे ६ महीनेका व्रतकरें ॥ वहुतअभ्यासविषें वर्ष रोज का कृच्छ्रव्रत करें तद शुद्ध होतेहैं ॥ अव हारीति स्मृतिमें कहतेहैं कन्येति कन्याकोदूषण करण वाला अमृतवल्लीका रस वेचण वाला वृषलीका पति और कौमार अवस्थामे स्त्री त्यागण वाला पेष्टी मदिराते भिन्न मदिराका पान करण वाला शूद्रको यज्ञ करवाणवाला गुरुको मारण वाला नास्तिकवृत्तिवाला कीतें होए उपकारकों दूरकरण वाला झूठा व्यवहार करण वाला मित्र

गुरोःप्रतिहंतासुराभिन्नमद्यपोब्राह्मणवृत्तिघ्नः कूटव्यवहारी मित्रध्रुक् शर णागतघाती प्रतिरूपवृत्तिश्चैतेऽमत्या प्रवृत्तास्त्रैमासिकंव्रतंकुर्युः मत्याषा ण्मासिकम् अभ्यासेकृच्छ्राब्दम् ॥ हारीतस्मृतिश्च ॥ कन्यादूषीसोमविक्र यीवृषलीपतिः कौमारदारत्यागीसुराभिन्नमद्यपः शूद्रयाजको गुरोःप्रति हंतानास्तिकवृत्तिःकृतघ्नःकूटव्यवहारी मित्रध्रुक् शरणागतघातीप्रतिरूप कवृत्तिरित्येतेपंचतपोऽभ्रावकाशजलशयनान्यनुतिष्ठेयुर्ग्रीष्मवर्षाहेमंतेषुमा संगोमूत्रयावकमश्नीयुरिति ॥ प्रतिरूपकवृत्तिः ॥ अन्यरूपानुकर णेनर्जीविकासंपादकः ॥

साथ द्रोह करण वाला शरणागत पुरुषको मारण वाला प्रतिरूपक वृत्ति वाला एह संपूर्ण पंच तप अभ्रावकाश जलशयन करें अर्थात् ग्रीष्मवर्षा हेमंतऋतुमें महीनारोज गोमूत्रयुक्त जवोंका भक्ष णकरें ग्रीष्मऋतुमें पंचाग्नितपें वर्षाऋतुमें नग्नहोके वर्षामे स्थितरहें हेमंतमे जलशय्याकरें ॥ प्रति रूपकवृत्ति नाम और रूपकर्के जीविकाकरणवालेका है इसको भाषामे वहुरूपिया कहतेहैं सो अनेकरूपोंको वनाकर लोकोंकोप्रसन्नकर्के जीविकाकरदाहै अथवा जो सुंदर स्वरूपवा लीस्त्रीको देखकर तिसमेंवर्ते सोभी प्रतिरूपकवृत्ति कहिदाहै इसका प्रायश्चित्त पारदार्य्य मे हिहोविगा

एह शंख हारीत कीयां जो पीछे दो स्मृतियां हैं सो क्षत्रिय वैश्यके प्रातिलोम्य कर्के जो दूषण तिसविषे जोडनेयोग्यहैं एह मिताक्षरामेंकयाहै। एह कन्या दूषणादिका प्रायश्चित्तसमाप्त होया १६ ❀ अब वार्द्धुष्य और लवण क्रियाका प्रायश्चित्त कहतेहैं इसकाविव·ण पीछे उपपातकोंकी गणना विषे होचुकाहै तिस विषे (उपपातकशुद्धिःस्यादेवंचांद्रायणेनतु) इत्यादि याज्ञवल्क्यके कथन कीत्ते होए जो वृषभैकादशकागाश्च ॥ वा०एतदेवव्रतं कुर्युरित्यादि दो श्लोककर्के मनुजीने कथन कीत्ता होया जो त्रय महीनेका व्रत है तिसको करे एह जाति शक्ति गुणादियोंकी अपेक्षा कर्के जोडने योग्यहै अतिदेशवाक्यतें ॥ और जगा कहे होएकों दूसरी जगामें कथन करणाको अतिदेश किहाहै ॥ तिसविषे लवणक्रिया क्या लवणके उत्पत्तिकरणेकी रीति जानणी तिसविषे भी एहि प्रायश्चित्त विधि जानणी ॥ मिताक्षराकार तो कुछ इस विषे विलक्षण कहतेहैं वार्द्धुष्येति वार्द्धुष्य और लवण क्रिया विषे मनु और याज्ञवल्क्यके कथन कीत्ते होए जो सामान्य उपपातक

शंखहारीतस्मरणद्वयंक्षत्रियवैश्ययोःप्रातिलोम्येन दूषणे योज्यमितिमिताक्षरा इतिकन्यादूषणादिप्रायश्चित्तम् ❀ १६ अथवार्द्धुष्यलवणक्रियाप्रायश्चित्तम् तच्चोपपातकगणनायांविवृतंप्राक् तत्रचांद्रादिष्वेकं त्रैमासिकंवा जातिशक्तिगुणाद्यपेक्षयायोज्यम् अतिदेशवाक्यात् लवणक्रिया लवणोत्पादनं तत्राप्येवं ध्येयम् मिताक्षरायांतु वार्द्धुष्यलवणक्रिययोर्मनुयोगीश्वरोक्तसामान्योपपातकप्रायश्चित्तानि जातिशक्तिगुणाद्यपेक्षयायोज्यानीति इतिवार्द्धुष्यादिप्रायश्चित्तम् १७ ❀ अथब्रह्मचारिणोव्रतलोपेप्रायश्चित्तम् ॥ तत्रमनुः अवकीर्णीतुकाणेनगर्दभेनचतुष्पथे पाकयज्ञविधाने नयजेतनिर्ऋतिंनिशि १

के प्रायश्चित्त सो जाति शक्ति गुणादियोंकी अपेक्षा कर्के जोडने योग्यहैं अर्थात् जैसी जाति और जैसी शक्ति और जैसा गुण होवे तिनांको तैसाही प्रायश्चित्त करवाणा योग्य है जैसे ब्राह्मणको अधिक क्षत्रियादिको न्यून और समर्थको अधिक असमर्थको न्यून गुणवान्को अधिक निर्गुणको न्यून सोभी प्राजापत्यसें चांद्रायण अधिक और चांद्रायणसे पराक इत्यादि जाण लेणे एह व्याजले कर्के और लूण वनाकरजीविका करणी इनका प्रायश्चित्त पूराहोया ❀॥ १७॥ इसमे एभी जानणे योग्य है कि लवण क्रिया मनुजीके मतमैं नहि किंतु याज्ञवल्क्य के मतमे है ॥ अब ब्रह्म चारिके व्रत लोप विषे प्रायश्चित्त कहतेहैं तिस विषे मनुजीका वाक्यहैं अवकीर्णीति अवकीर्णी पुरुष काणे गधे कर्के चुरस्ते विषे पाकयज्ञके विधान कर्के रात्रि विषे निर्ऋति देवताका पूजन करे॥ १॥

अव इसीका अर्थ स्पष्टकर्के कहतेहैं अगे कहणाहै लक्षण जिसका ऐसा जो अवकीर्णी ब्रह्मचारी सो रात्रिको चुरस्ते विषे पाकयज्ञ तंत्र कर्के निर्ऋति नाम देवताका यज्ञ करे और पशु के अभावविषे चरु कर्के यज्ञ करे अथवा निर्ऋतिनूं वणाकर्के चरुसें पूज्ये फेर तिसका हवनकरे इनां नामां कर्के कामायस्वाहा कामकामायस्वाहा निर्ऋत्यैस्वाहा रक्षोदेवताभ्यःस्वाहा एह वसिष्टस्मृतिमें कहाहै परंतु एह अशक्त विषयविषे जानणा और समर्थ पुरुषको ऐसाकरणाचाहिए कि अवकीर्णी गर्द्दभ कर्के निर्ऋतिका चुरस्ते विषे यज्ञ करे तिस गर्द्दभका चर्म सहित वालोंके धारण करे फेर लोहेके पात्रविषे सत्तां ७ घरांते भिक्षा करे कर्म्म नूं कथन करता होया कि मैं अवकीर्णी हां ऐसाकथन करता होया भ्रमे तद वर्ष कर्के शुद्धहोताहै ॥ एह पूर्वोक्त गौतम जी

अवकीर्णीवक्ष्यमाणोब्रह्मचारी रात्रौ चतुष्पथे पाकयज्ञेन तंत्रेणनिर्ऋतिसंज्ञितांदेवतांयजेत पशोरभावेचरुणायष्टव्यम् निर्ऋतिंवाचरुंनिर्वपेत् तस्य जुहुयात् कामायस्वाहा कामकामायस्वाहा निर्ऋत्यैस्वाहा रक्षोदेवताभ्यःस्वाहेतिवसिष्ठस्मरणात् एतच्चाशक्तविषयम् । शक्तस्यतुगर्द्दभेनावकीर्णीनिर्ऋतिंचतुष्पथेयजेत् तस्याजिनमूर्ध्ववालंपरिधायलोहितपात्रेसप्तगृहान् भैक्ष्यं चरेत्कर्म्माचक्षाणः संवत्सरेणशुद्ध्यतीतिगौतमोक्तोवार्षिक तपः समुचितः पशुयागश्चरुर्वाद्रष्टव्यः। अपरार्के॥ रात्रिपदेनकालः सचामावास्यायाः। उक्तंहितैत्तिरीयके। योब्रह्मचार्य्यवकिरेदमावास्यायांरात्र्यामग्निंप्रणीयोपसमाधायेत्यादि ब्रह्मचार्य्यत्रोपकुर्वाणोनैष्ठिकश्चसचयोपितंगत्वाऽवकीर्णीभवति। तथाचयाज्ञवल्क्यः। अवकीर्णीभवेद्गत्वाब्रह्मचारीतुयोपितम् गर्द्दभंपशुमालभ्यनैर्ऋतंसविशुद्ध्यतीति अत्रव्याख्या चरमधातोर्विसर्गोऽवकीर्णम् तद्यस्यास्तीतिसोऽवकीर्णी सनिर्ऋतिदैवत्येन गर्द्दभपशुना यागंकृत्वाविशुद्ध्यति ॥

का कथन कीताहोया वर्ष रोजका तपके उचित पशुयाग कयाहै वा चरु देखणें योग्यहै ॥ अपरार्कमें कयाहै कि रात्रि पदकर्के काल जानणा सो अमावास्याका है इसमें सम्मति देतेहैं तैत्तिरियकइति सोई तैत्तिरीय उपनिषद्में कहाहै कि जो ब्रह्मचारी भ्रष्टहोजावे सो अमावास्याकी रात्रिविषे अग्निमें हवनकरे इत्यादि जानणा ॥ परंतु ब्रह्मचारी चारप्रकारकेहैं सो इसविषे उपकुर्वाण और नैष्ठिकका ग्रहणहै सो एह स्त्री साथगमनकरे तां अवकीर्णी होतेहैं ॥ तैसेंहि याज्ञवल्क्य जीनें कयाहै ॥ अवकीर्णीति ब्रह्मचारी स्त्री साथ गमन करे तां अवकीर्णी होताहै और निर्ऋतिहै देवता जिसका ऐसे गर्दभ पशुका आलंभन करे तां शुद्ध होताहै अर्थात् निर्ऋति देवता के निमित्त गर्द्दभ पशूनूं मार कर्के शुद्ध होता है इस विषे इसकी एह व्याख्या है कि अंत धातुके त्यागणेको अवकीर्ण कयाहै सो विद्यमान है जिसविषे सो अवकीर्णीहै सो निर्ऋति देवताके निमित्त गर्द्दभ पशु कर्के यज्ञ करे तो शुद्धहोताहै ॥

अव इसमे शास्त्रार्थ कर्तेहैं गर्द्दभेति कि गर्द्दभको पशुत्वकेसिद्ध होयांभी अर्थात् गर्द्दभको आलभ करे इस वचनतें भी पशुका अर्थ प्रतीत होताहै फेर पशु ग्रहण जो कीयाहै सो अथपशु कल्प इत्यादि आश्वलायन के कहे होये गृह्य सूत्रमें जो पशु धर्म्म तिसकी प्राप्ति वास्तेहै सो पंद्रां सूत्र उसी जगाते देखणेयोग्यहैं अवकीर्णिकालक्षणमनुजीनेंभी कयाहै कामतइति व्रत विषे स्थित जो ब्राह्मण अर्थात् ब्रह्मचरी तिसका इच्छातें वीर्य्य स्खलित होवे तां व्रतका उल्लंघन कयाहै धर्म्म के जानणें वाले ब्राह्मवादियोंनें १ ब्रह्मचर्य्यका अतिक्रम अवकीर्ण रूप हि जानणा इसमें हवनका विधान भी मनु जी नें कयाहै हुत्वाति (अंतत और समेति) इस ऋचा कर्के विधिनें होमा नू अग्निविषे हवन करे और वात इंद्र गुरु वन्हि इनांको घृत कर्के आहुतियां देणें योग्यहैं । १ अव इसीका अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं तिसतें अनंतर निर्ऋति देवताके तांइ गर्द्दभ

गर्द्दभस्य पशुत्वेसिद्धेपिपुनः पशुग्रहणमथपशुकल्पइत्याश्वलायनादिगृह्योक्तपशुधर्म्मप्राप्त्यर्थम् तत्रोत्तरतोऽग्नेरित्यादिपूर्वेणसहपंचदशसूत्रीततएवानुसंधेया।अवकीर्णिलक्षणंमनुनापिदर्शितम् कामतोरेतसःसेकंव्रतस्थस्यद्विजन्मनः अतिक्रमंव्रतस्याहुर्धर्म्मज्ञाब्रह्मवादिनइति व्रतस्यब्रह्मचर्य्यस्यातिक्रममवकीर्णरूपम् हवनविधानमपितेनैवोक्तम् हुत्वाग्नौविधिवद्धोमानंततश्चसमेत्यृचा वातेंद्रगुरुवह्नीनांजुहुयात्सर्पिषाहुतीः १ अस्यार्थः ततोनिर्ऋत्यै गर्द्दभवपादिहोमान्यथावच्चतुष्पथे कृत्वा तदंतेसमासिंचंतुमरुतइत्येतयाऋचा मारुतेंद्रबृहस्पत्यग्नीनांघृतेनाहुतीर्जुहुयादिति ॥ एतद्धोमहेतुमाहसएव मारुतंपुरुहूतंचगुरुंपावकमेवच चतुरोव्रतिनोऽभ्येतिब्राह्मंतेजोऽवकीर्णिनः ॥ १ ॥ अस्यार्थः ॥ व्रतचारिणोवेदाध्ययननियमानुष्ठानजं तेजः तदवकीर्णिनःसतो मरुदिंद्रबृहस्पतिपावकांश्चतुरः संक्रामति अतस्तेभ्यआहुतीर्जुहुयादितित्याज्याहुतेरयमनुवादः अत्रत्रिषवणस्नानमेककालभोजनमपियावद्व्रतसमाप्ति

की निज का हवन चुरस्ते विषे विधिनें कर्के तिसतें उपरंत समासिंचंतुमरुत इस ऋचाकर्के वायु और इंद्र और वृहस्पति और अग्नि इनांका घृतकी आहुतीनें अच्छी तरह हवनकरणेंयोग्यहै इसी हवनविषें मनुजी हेतु कहतेहैं मरुतइति वायु इन्द्र वृहस्पति अग्नि एह जोचार हैं इनांको व्रति अवकीर्णिका जो ब्राह्म तेजहै सो प्राप्त होताहै १ अव इसीका अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं व्रतचारि पुरुषका वेदका पडना और नियम और अनुष्ठान इनांते उत्पन्न होया जो तेज सो अवकीर्णिका मरुत् इंद्र वृहस्पति अग्नि इनां चारां को प्राप्त होताहै इस कारणतें तिनांके तांई आहुतियांदेवे एह त्याज्य आहुतीका अर्थात् देणे योग्य जो आहुतियांहैं तिनका अनुवादहै इसविषें त्रयकाल स्नान करे और एक काल भोजन करे जवतक व्रत की समाप्ति नहिहै

तैसेंहि मनुजी कहतेहैं एतस्मिन्निति इस अवकीर्णरूप पापके प्राप्तहोयां गर्द्दभके चर्म को उपर लयकर्के सत्तां ७ घरांते भिक्षाकरे अपणे कर्म नूं कथन करदा होया अर्थात् मैं अवकीर्णी हां इसतरां कथन करे १ तिनां घरां ते प्राप्त होया जो भिक्षाका अन्न तिस कर्के एककाल भोजन करे और त्रय काल स्नान करता रहे इसी प्रकार एक वर्ष करदा रहे तां शुद्ध होताहै २ एह जो वर्षका व्रतहै सो वेदपाठ रहित ब्राह्मणकी स्त्री विषें अवकीर्णी होवे और वेदपाठीकी वैश्या विषें अवकीर्णी होवे तिस विषें जानणा जेकर सो दोए वेदपाठीकीयां स्त्रीयां होण अथवा ब्राह्मणी और क्षत्रियाणी आपही गुणवालीयां होण तिनांविषे अवकीर्णीहोवे तां त्रयवर्ष और दोवर्षका व्रत क्रमकर्के करे अर्थात् ब्राह्मणी मे त्रयवर्ष का व्रत क्षत्रियाणीमे दोवर्षका व्रत

तथाचमनुः॥ एतस्मिन्नेनसिप्राप्तेवसित्वागर्द्दभाजिनं सप्तागारांश्चरेद्भैक्ष्यं स्वकर्मपरिकीर्त्तयन्॥ १॥ तेभ्योलब्धेनभैक्ष्येणवर्त्तयन्नेककालिकम्॥ उपस्पृशंस्त्रिषवणंत्वब्देनसविशुद्ध्यति २ एतस्मिन्नवकीर्णरूपे एनसि पापे वार्षिकव्रतमिदमश्रोत्रियब्राह्मणपत्न्यां श्रोत्रियपत्न्यांवैश्यायांचज्ञेयम् यदातु तेश्रोत्रियपत्न्यौब्राह्मणक्षात्रियेस्वयमपिगुणवत्यौ तत्रावकीर्णीचेत्तदा द्विवार्षिकत्रिवार्षिकेक्रमेणद्रष्टव्ये। इदमेवाहतुःशंखलिखितौ। गुप्तायांवैश्यायामवकीर्णःसंवत्सरं त्रिषवणमनुतिष्ठेत् क्षत्रियायांद्विवर्षेब्राह्मण्यांत्रीणिवर्षाणीति। अवकीर्णनिमित्तंतुब्रह्महत्याव्रतंचरेत् चीरवासास्तुषण्मासांस्तथामुच्येतकिल्विषादित्यंगिरोवचनमकामतोऽवकीर्णे ईषद्व्यभिचारिण्यामवकीर्णेवाद्रष्टव्यम् अत्रसार्द्धसप्तधेनवः प्रत्याम्नाय इति शूलपाणिःएतद्विषय

एवाभ्यासेशातातपवचः॥

करणा और इसीको शंख लिखितजी अपनीस्मृतिमें कहतेहैं गुप्तायामिति तीसरे वर्णकी वैश्या विषें अवकीर्णीहोवे तां एकवर्ष पर्य्यंत त्रिकाल स्नान कर्के अनुष्टान करे और क्षत्रियाणी विषें दो वर्षका व्रतकरे और ब्राह्मणी विषें त्रय वर्षका व्रत करे तां शुद्ध होताहै॥ अब और कहतेहैं अवेति अवकीर्णीके प्रायश्चित्त करणवाला ब्रह्महत्याका व्रतकरे। ताडपत्रेद वस्त्र लगा कर छे ६ महीने का व्रतकरे तां पापने मुक्त होताहै १ एह अंगिरा जीका जो वचनहै सो नहिं इच्छातें अवकीर्णीविषें वा थोडीव्यभिचारिणी स्त्री विषें अवकीर्णी होवे तिसविषें जानणा जेकर एह व्रत न होसके तां साढियां सत्त गौयां दान करे अर्थात् तिनांका मुल्लदें देवे एह शूलपाणि नें कयाहै इसी विषयमें बहुत अभ्यासहोवें तां तिसविषें शातातपजीकावचनहै सो तिसीस्मृति सें जानणा

अब और मतकर्के भी इसविषयको कहतेहैं अथेति इसतें उपरंत अवकीर्णिका प्रायश्चित्त कहतेहैं ब्रह्मचारी जेकर अवकीर्णीहोवे तां चौथेपहर अष्टवर्ष तक भिक्षाका अन्न खावे इसप्रकार करे तां पवित्रहोताहै तैंसेंही पैठीनसिजीकहतेहैं अवकीर्णी गर्दभकेचर्मको धारणकरे और वर्ष तक प्राजापत्य व्रतकरे तिसके प्रायश्चित्तविषे ओंकार पूर्वक महाव्याहृतियोकर्के अर्थात् ओंभूःओंभुवः ओंस्वः इनांकर्के हवनकरे १ अथवा वर्षतकएककाल भिक्षाकाअन्न खावे २ वा चतुर्थकाल नियत कर्के भोजन करे और गायत्रीका जप करे ३ गायत्री जप भी वर्षराज तक करणा विशेषकहतेहैं स्वैरिणीति स्वैरिणी जो वृषल्यादि स्त्री तिसविषे अवकीर्णीहोवेतां सचैल स्नानकर्के जलदा घट ब्राह्मणके तांई देवे और वैश्याविषे अवकीर्णीहोवे तां चौथे काल भोजन करे और ब्राह्मणोंको भोजन देवे और घासका भार गौआंके तांई देवे और क्षत्रियाणीविषे अवकीर्णी होवे तां त्रिरात्रि

अथातोऽवकीर्णिप्रायश्चित्तंव्याख्यास्यामः । ब्रह्मचारीयदाऽवकीर्येत चतुर्थकालमष्टसंवत्सरान्भैक्ष्यंचरेदेवंपूतोभवतीति तथापैठीनसिरपि अवकीर्णी गर्द्दभाजिनंसंवसेत्संवत्सरंप्राजापत्यंचरेदिति तत्रप्रायश्चित्तम् महाव्याहृतिभिर्जुहुयादोंपूर्वकाभिःसंवत्सरं वानक्तंभैक्ष्यंचरेच्चतुर्थकालेनियतभुग्गायत्रींवाजपेदिति गायत्रीजपेपिसंवत्सरमितिसंवन्धः॥ स्वैरिणीवृपल्यादाववकीर्णश्चेत्तदासचैलस्नानमुदकुंभंदद्याद्ब्राह्मणाय वैश्यायांचतुर्थकालाहारोब्राह्मणान्भोजयेत् यवसभारंचगोभ्योदद्यात् क्षत्रियायांत्रिरात्रमुपोषितोघृतपात्रंदद्यात् ॥ ब्राह्मण्यांपड्रात्रमुपोषितोगांचदद्यात्गोष्ववकीर्णःप्राजापत्यंचरेत् पंडायामवकीर्णः पलालभारंसीसमापकंचदद्यादितिशंखलिखितोदितंकुर्यात् षंडावंध्या । वंध्यातुवृपलीज्ञेयावृपलीतुमृतप्रजा अपरावृपलीज्ञेया कुमारीयारजस्वलेति ॥ उशनाः ॥ एतच्चावकीर्णिप्रायश्चित्तंत्रैवर्णिकस्यापि ब्रह्मचारिणः ॥समानम् ॥ अवकीर्णीद्विजोराजावैश्यश्चापिखरेणतु इच्छाभैक्ष्याशिनोनित्यंशुद्धयंत्यब्दात्समाहिताइतिशांडिल्यस्मरणात्

उपवास व्रत कर्के घृत पात्रका दान करे तां शुद्ध होताहै ॥ ब्राह्मणीविषे अवकीर्णी होवे तां छे ६ रात्रि उपवासकर्के फेर गौ दान करे तद शुद्ध होताहै । और गौआंविषे अवकीर्णी होवें तां प्राजापत्यव्रत करे ॥ और पंडा विषे अवकीर्णीहोवे तां परालीका भार और एक मासासिक्का दान करे तां शुद्ध होताहै एह शंख लिखित स्मृतिमें कयाहोया प्रायश्चित्तकरणे योग्यहै ॥ षंडा नाम वंध्या स्त्री का है इसकोस्पष्टकरतेहैं वंध्या नाम वृपलीकाहै और जिसकी संतान मृत होजावे उसका नाम वृपली है जो कुमारी हि रजस्वला होवे उसका नाम भी वृपलीहै उशनामें कया है और व्यवस्था कहतेहैं एह अवकीर्णि का प्रायश्चित त्रयवर्णके ब्रह्मचारिके तुल्य है अवकीर्णी द्विजकया ब्राह्मण और राजा और वैश्य होवें तद गर्द्दभकर्के यज्ञ करे और भिक्षाका अन्न नित्यखावें तद वर्ष कर्के शुद्ध होताहै एह शांडिल्य जीका स्मरणहै

यदेति जदस्त्री संभोगके विना ब्रह्मचारी अपनीइच्छातें वीर्य स्खलितकरे और दिनविषे वा स्वप्न विषे करे तां तिसविषे नैर्ऋत यज्ञमात्र देखणे योग्यहै ॥ इसीको कहतेहें कि वीर्य्यका प्रयत्नतें त्याग दिन विषे वा स्वप्नविषे होवे तां नैर्ऋत यागमात्रकरे इसवासिष्टकर्के यज्ञ मात्रका अतिदेशहो णेतें अतिदेश कियाहै ब्रह्मचर्य्यका जिनां विषे ऐसे जो कृच्छ्र चांद्रायणादि व्रतांतर तिनां विषे भीजेकर अवकीर्णिहोवे तिसविषे पूर्वोकहि यज्ञमात्रकरणा अर्थात् गर्दभकाआलंभननहि करणा इसमे वचन कहतेहें व्रतेति व्रतांतरों विषें भी एही करणा एहतिसी वसिष्ठकर्के अतिदेश होणेतें अव स्वप्न विषें वीर्य्य स्खलितहोने मे मनुजी कहतेहैं ॥ स्वप्न इति द्विज ब्रह्मचारी वीर्य्यको इच्छाते विना स्वप्न विषे स्खलित करे तां स्नान कर्के सूर्य्यका पूजन करे और त्रयवार पुनर्मां)

यदा स्त्रीसंभोगमंतरेण कामतश्चरमधातुंविसृजति दिवाचस्वप्नेवाविसृजति तदानैर्ऋतयागमात्रंद्रष्टव्यम् ॥ एतदेवरेतसः प्रयत्नोत्सर्गे दिवास्वप्नेचे तिवासिष्ठेनयागमात्रस्यातिदिष्टत्वात् ॥ व्रतांतरेषुचकृच्छ्रचांद्रायणादिष्वति दिष्टब्रह्मचर्येषुच स्कंदने सत्येतदेव यागमात्रम् ॥ व्रतांतरेषुचैवमितितेनै वातिदिष्टत्वात् ॥ स्वप्नस्कंदनेतुमनुः ॥ स्वप्नेसिक्त्वाब्रह्मचारीद्विजःशुक्र मकामतः स्नात्वार्कमर्चयित्वात्रिः पुनर्मामित्यृचंजपेदिति १ यमोपि ॥ प्रकीर्यरेतःस्वप्नेतुब्रह्मचार्यप्यकामतः स्नात्वार्कमीक्ष्यप्रयतोगायत्र्यष्टशतं जपेत् १ तथा ब्रह्मचारीतुयोगच्छेत्स्त्रियंकामप्रपीडितः प्राजापत्यंचरेत्कृ च्छ्रमब्दमेकंसुयंत्रितः १ भूयोऽभ्यासविषयमेतत् ॥ वानप्रस्थादीनांचेदमे वब्रह्मचर्यखंडने अवकीर्णिव्रतंकृच्छ्रत्रयाधिकंभवति ॥ वानप्रस्थोयतिश्चै वस्कंदनेसतिकामतः पराकत्रयसंयुक्तमवकीर्णिव्रतंचरेदितिशांडिल्यस्मर णात् ॥ यस्तुसंन्यासीभूत्वागार्हस्थमिच्छतिचेत्तत्रसंवर्त्तोक्तंप्रायश्चितम्

इस ऋचाका जपकरे १ ॥ यम भी कहताहै प्रकीर्येति ब्रह्मचारी इच्छाते विना स्वप्नविषे वीर्य्य स्खलित कर्के सूर्य्यको देख फेर प्रयत्नते अष्टोत्तर शत गायत्रीका जपकरे १ तैसें हि और कह तेहैं ब्रह्मचारीति जो ब्रह्मचारी कामकर्के पीडितहोया २ स्त्री साथगमन करे तां समाधानहोकर्के वर्षरोजका कृच्छ्र प्राजापत्य व्रत करे तां शुद्धहोताहै १ एहबहुत अभ्यास विषय विषें जानणा वानप्रस्थादियांको एही ब्रह्मचर्यखंडनविषें कृच्छ्रत्रय हैं अधिक जिसविषें ऐसा अवकीर्णिका व्रत करणाउचितहै वचनकहतेहें वेति और वानप्रस्थ और यतिइनांकोइच्छातें वीर्य्यदेस्खलित होय। त्रयपराकव्रतकर्के युक्तजो अवकीर्णिकाव्रतहै सो करणा उचितहै एह शांडिल्यस्मृतिमें कयाहै १ जोसंन्यासीहोकर्के फेर गृहस्थकी इच्छा करे तिसविषे संवर्त्तजीका कया होआ प्रायश्चित्तकहतेहैं।

संन्यस्येति कोईक दुर्म्मतिपुरुष संन्यासी हो कर्के जेकर गृहस्थाश्रम स्वीकार करे सो अश्रांत होया २ छे ६ महीने का कृच्छ्र व्रतकरे १ इसीमें वासिष्ठजी कहतेहैं यस्त्विति जो संन्यासीहोकर्के फेर मैथुन करे सो सठ ६०००० हजार वर्ष विष्टाविषे कीडा होताहै १ पराशरजी भी कहतेहैं य इति जो प्रत्यवसित होया ब्राह्मण संन्यासतें दूर हो जावे और अनाशक होकर्के फेर हटजावे फेर गृहस्थकी इच्छाकरे १ सो पुरुष त्रयकृच्छ्र और त्रय चांद्रायण व्रत करे और संपूर्ण जातकर्म्मादि संस्कारोंकर्के शुद्धिको प्राप्त होताहै २ अब पिच्छले श्लोकका अर्थ स्पष्टकर्के कहतेहैं यइति जो प्रत्यवसित क्या संन्यासादि धर्म वाला होया और जो अनाशक क्या महीने आदि को अवधिकर्के अर्थात् महीनापर्यंत अन्न नहिंखाणा ऐसी प्रतिज्ञाकर्के फेर तिसनूं न करे एह अर्थहै ॥ तिसविषे ब्राह्मण को छे ६ महीनेका कृच्छ्रहै फेर संन्यास लयणा उचितहै ॥ और

संन्यस्यदुर्म्मतिःकश्चित्प्रत्यापत्तिंचरेद्यदि सकुर्यात्कृच्छ्रमश्रांतःपण्मासान्प्रत्यनंतरामिति १ प्रत्यापत्तिर्गृहस्थाश्रमस्वीकारः ॥ अतएववासिष्ठः॥यस्तुप्रव्रजितोभूत्वापुनःसेवेतमैथुनम् षष्टिवर्षसहस्राणिविष्टायांजायतेकृमिरिति १ पराशरोपि यःप्रत्यवसितोविप्रोप्रव्रज्यातोविनिर्गतः अनाशकोनिवृत्तश्चगार्हस्थ्यंचेच्चिकीर्षति १ सचरेत्त्रीणिकृच्छ्राणित्रीणिचांद्रायणानिच जातकर्मादिभिःसर्वैःसंस्कृतःशुद्धिमाप्नुयात् २ यःप्रत्यवसितःस्वीकृतसंन्यासादिव्रतइत्यर्थः । यश्चाऽनाशकोभूत्वामासाद्यवधिंकृत्वाऽनशनीभूत्वापुनर्निवृत्त इत्यर्थः ॥ तत्रब्राह्मणस्यपाण्मासिकःकृच्छ्रः पुनःसंन्यासः ॥ क्षत्रियस्यचांद्रायणत्रयम् ॥ वैश्यस्यकृच्छ्रत्रयमितिव्यवस्था ॥ वाविप्रस्यैवशक्तिसकृदभ्यासाद्यपेक्षया व्यवस्थितं प्रायश्चित्तत्रयंद्रष्टव्यम् तथातुरसंन्यासिनामपि ॥ यमेनापि ॥ प्रायश्चित्तमुक्तम्॥ जलाग्न्युद्बंधनभ्रष्टाः प्रव्रज्यानाशकच्युताः विषप्रपतनप्रायःशस्त्रघातच्युताश्चये १

क्षत्रीको त्रय चांद्रायण हैं ॥ और वैश्य को त्रय कृच्छ्र हैं ॥ इसमे ऐसी व्यवस्था जानणी अथवा ब्राह्मणको हि शक्ति और सकृत् क्या एकवार परावृत्ति और अभ्यासादिकी अपेक्षा कर्के व्यवस्थित जो पिछले त्रय प्रायश्चित्तहैं सो देखणे योग्यहैं ॥ शक्ति में छे ६ महीनेका कृच्छ्र व्रतकरणा ॥ और सकृत्में त्रयकृच्छ्र व्रत करणे ॥ और अभ्यासमें क्या वहुतवारमें त्रय चांद्रायण व्रत करणें ॥ तैसेंही जिसने आतुर समयमें संन्यास लेआ फेर राजीहोकर गृहस्थी होगया तिस विषे यमनेंभी प्रायश्चित्तकयाहै ॥ जलेति प्रायश्चित्तवास्ते जलविषे पडे वा अग्निविषे वा फाह लयणा इनांते भ्रष्ट होजावे और प्रायश्चित्तके अर्थ संन्यास लयणा और अनाशक क्या इतनें दिन अन्न नहिं खाणा ऐसा कह कर व्रती होवे और पीछे इनांते भ्रष्ट होवे वा प्रायश्चित्तके अर्थ विष पान करणा वा किसे जगाते डिगणा और शस्त्र सें मरणा इनांते भ्रष्ट होवे १

नेति एह संपूर्ण प्रत्यवसितनहिंहैं अर्थात् संन्यासादि व्रतोंसेंरहितहैं और संपूर्ण लोकोंतें वाहरहैं चांद्रायणकर्कैंवा दो २ तप्तकृच्छ्रव्रतकर्कैंशुद्धहोंतेहैं २ इसमै ऐसाजाणणा कि जो एह चांद्रायण तप्तकृच्छ्रात्मक दो प्रायश्चित्तहैं सो शक्त्यादिकी अपेक्षा कर्के व्यवस्थित जानणेंयोग्यहैं ॥ अब इसीमे विशेष कहतेहैं ॥ जीवन्निति प्रायश्चित्तके अर्थ अपणे आपनूं त्यागे फेर जीउंदा होजावे तिसमें वारां रात्रिका कृच्छ्र व्रत करे और त्रय रात्रि उपवास व्रत करे एह वसिष्ठकाकया होया जोवचनहै सो स्वीकार कीता जो शास्त्रीय मरण जिसने तिसकें मुड़ने विषे जानणा ॥ इसमे व्यवस्थाकरतेहैं ॥ तादिति जिसने व्रतके उद्यममे संकल्पकीताहै सो तिसकेहटणेविषे त्रयरात्रि व्रत करे ॥ और प्रवृत्तितेउपरंत हटणेविषे वारां १२ रात्रिका व्रतकरे एह व्यवस्था जानणी ॥ इसमें ऐसा विचारहै गुरुकी स्त्री साथ गमनकरणा और तिसके तुल्य जो अगम्यागमनहै तिस विषे प्रायश्चित्तको वहुत होणेते एह जो अव कीर्णीका व्रत है सो इनांते पृथक् स्त्रियां मे अवकीर्णी

नैवैतेप्रत्यवसिताःसर्वलोकवहिष्कृताः चांद्रायणेनशुद्ध्यंतितप्तकृच्छ्रद्वयेनचे ति २ इदंचचांद्रायणतप्तकृच्छद्वयात्मकं प्रायश्चित्तद्वयं शक्त्याद्यपेक्षयाऽव्यव स्थितंविज्ञेयम् जीवन्नात्मत्यागीकृच्छ्रंद्वादशरात्रंचरेत्त्रिरात्रंचोपवसेदितिवा सिष्ठंतु स्वीकृतशास्त्रीयमरणस्यप्रत्यावृत्तौवोध्यम् । तदुद्योगसंकल्पमात्रात्प रावृत्तौत्रिरात्रम् प्रवृत्त्यनंतरपरावृत्तौद्वादशरात्रमितिव्यवस्था ॥ गुरुदार तत्समागम्यागमनेप्रायश्चित्तस्य गुरुतरत्वादिदमवकीर्णिव्रतंतद्व्यतिरिक्ताव कीर्णेद्रष्टव्यम ॥ नचलघुनाऽवकीर्णिव्रतेन गुरुदारादिगमनमहापातकोचि तप्रायश्चित्तवाधोविशेषविधानादितिवाच्यम् ॥ ब्रह्महननप्रकरणे ब्रह्मचा र्य्यादीनांद्वैगुण्यादेर्विधानात् ॥ अत्रागम्यागमननिमित्तंप्रायश्चित्तंनपृथक्का र्यंस्त्रियांब्रह्मचारिणोब्रह्मस्खलनस्यागम्यागमनेनांतरीयकत्वात् ॥ यत्र निमित्तेनिमित्तांतरंसमं न्यूनंवाऽवश्यंभावि तत्रनपृथङ्नैमित्तिकंप्रयुज्यते॥

होवे तिसमे जानणा(प्रश्न)करतेहैं नचाति छोटा जो अवकीर्णीका व्रत है तिसने गुरुदारादि गमनका जो महापातकोके उचित प्रायश्चित्त सो वाधयाहै क्योंकि विशेषविधान होणेतें (उत्तर) ऐसा मत कहो किसतें ब्रह्महत्याके प्रकरण विषे ब्रह्मचार्य्यादियोंको द्विगुण प्रायश्चित्तके विधान होणेतें ॥ अर्थात् ब्रह्मचारीको हि अवकीर्णि व्रत है और इसीको महापातकोंमे दूणा व्रत है इसतें प्रतीत होया कि महापातकों वाला व्रत जुदाचाहिए॥ अव इसीमे और विचार करतेहैं इसमे अगम्यागमनका प्रायश्चित्त भी होणा चाहिए इसवास्ते कहतेहैं ॥ अत्रेति इस विषे अ गम्यागमन निमित्तप्रायश्चित्त पृथक् नाहिं करणा स्त्रीविषे ब्रह्मचारिके ब्रह्मस्खलन को अगम्यागमन कर्के अंतरीयक होणेंतें अर्थात् अवकीर्णि व्रत विषे हि अगम्यागमनकाभी व्रतहै जिस निमित्त विषे और निमित्त वरावर वा थोडा अवश्य होवेगा तिसके विषे पृथक् नैमित्तिक नाहिं होताहै

अब इसमें दृष्टांतकहतेहैं यथेति जैसें गौकेतांई लाठीग्गूरें तां कृच्छ्रव्रतकरे और लाठी आदिके प्रहारविषें अति कृच्छ्रव्रत करे और रुधिर निकालनेंविषें कृच्छ्रातिकृच्छ्र व्रत करे और जिसप्रहार तें अंदररुधिर होजावे तिसमें कृच्छ्रव्रत करे १ ऐसीआज्ञाहै तथापि इसरुधिर निकालनें निमित्त विषें गुरणादि जो निमित्त हैं सो अंतर स्थितहैं परंतु कृच्छ्र और अतिकृच्छ्र पृथक् नाहिं करी दें किन्तु कृच्छ्रातिकृच्छ्रहि करीदा है ऐसें हि और जगा भी जानणा ॥ जिसविषें अंतर्भाव का नियम नहिं हैं जैसा पर्वकालमें रजस्वला जो परस्त्री तिससाथ गमन करे इसमे ऐसाअभि प्रायहैं कि एह नियम नहिंहैं कि पर्व कालमेहि रजस्वलाहोतीहै किंतु तिसविनाभी हुंदीहै और परस्त्री विना भी पर्वमे गमन हुंदाहै तिसतें तद वडा दोषहै इत्यादियोंविषें निमित्त पृथक् जो

यथा अवगूर्य्यचरेत्कृच्छ्रमतिकृच्छ्रंनिपातने कृच्छ्रातिकृच्छ्रोऽसृक्पातेकृच्छ्रो भ्यंतरशोणितइत्यत्र शोणितोत्पादननिमित्तेऽवगूरणादिनिमित्तद्वयमवश्य मंतःस्थितं परन्तु कृच्छ्रमतिकृच्छ्रंचनपृथक्क्रियते अन्यत्राप्येवमेवोह्य म् यत्रांतर्भावनियमोनास्ति पर्व्वणि परस्त्रींरजस्वलांगच्छतीत्यादौ तत्र निमित्तानि पृथक्प्रयुज्यंते अत्रपूर्वपक्षसिद्धांतौमिताक्षरायांद्रष्टव्यौ व्रतां तरलोपेप्यवकीर्णिव्रतमतिदिशति मनुः अकृत्वाभैक्ष्यचरणमसमिध्यचपा वकम् अनातुरःसप्तरात्रमवकीर्णिव्रतंचरेदिति ॥ १ अथब्रह्मचारिव्रतलो पप्रायश्चित्तप्रसंगादन्यदनुपपातकपापस्याऽपिप्रायश्चित्तमाह याज्ञव ल्क्यः भैक्ष्याग्निकार्येत्यकृत्वातुसप्तरात्रमनातुरः कामावकीर्णइत्याभ्यांजु हुयादाहुतिद्वयम् ॥ १ ॥

डी दे हयण अर्थात् त्रयप्रायश्चित्त पृथक् २ करणे. ॥ इस विषें पूर्व पक्ष और सिद्धांत मि ताक्षरा विषें देखणेयोग्यहैं ॥ अब और व्रतके लोपविषें अवकीर्णीका व्रत दिखाईदाहै ॥ इस में मनु जी कहतेहैं ॥ अकृत्वेति अग्नि होत्र करण वाला पुरुष अनातुर क्या स्वस्थ चित्त वाला होया २ भिक्षा न करे और अग्नि नूं न जगावे तां तिस को सत्त ७ रात्रि पर्य्यन्त अवकी र्णीका व्रत करणे योग्यहै १ अब ब्रह्मचारिके व्रत लोपके प्रायश्चित्तप्रसंगतें और अनुपपातक पापकाभी प्रायश्चित्त याज्ञवल्क्यजी कहते हैं । भैक्षेति भिक्षा और अग्नि कार्य जेकर सत्तरा त्रि त्यागे तां (कामावकीर्ण) इनमंत्रों करके दो २ आहुतियांका हवन करे ॥ १ ॥

अब इसी श्लोक का अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं यस्त्विति जो ब्रह्मचारी सावधान होया २ निरंतर सप्तरात्रि भिक्षाअथवा अग्निकार्य त्याग देवे तां ॥ कामावकीर्णोऽस्म्यवकीर्णोस्मिकामकामाय स्वाहा ॥ इस मंत्र कर्के एक आहुती देवे और कामावपन्नोस्म्यवपन्नोस्मि कामकामायस्वाहा इसमंत्रकर्के दूसरी आहुतीदेवे तां शुद्ध होताहै इस तें उपरंत फेर समासिंचतुमरुतः समिंद्रःसं वृहस्पतिः संमायमग्निः सिंचंतांयशसाब्रह्मवर्चसेन इसमंत्रकर्के अग्निका उपस्थानकरे क्याउठकर्के इसमंत्रके अर्थका स्मरणकरे सो अर्थऐसाहै कि मरुतःक्या ४९ देवता और इंद्रऔर वृहस्पति और यम अग्नि एह सभ यशकर्के और ब्रह्म तेज कर्के मेरेविषे सिंचनकरण अर्थात् जो मेरा यश और ब्रह्म तेज नष्ट होगयाथा उसको पुनः स्थापन करण ॥ इसको स्पष्ट कर्के कहतेहैं कि भिक्षाकर्के गुरु सेवा होनीथी सो नहिहोई इसतें गुरुजीका अपराध होणेतें प्रायश्चित्त दिखाया है परंतु एह गुरु सेवादि जो कोई गृह निर्माणादि वड़ा कार्य तिस विषे खचित होणे कर्के भि

अस्यार्थः यस्त्वनातुरएव ब्रह्मचारी निरंतरंसप्तरात्रंभैक्ष्यमग्निकार्यंवात्यजतिअसौकामावकीर्णोऽस्म्यवकीर्णोऽस्मिकामकामायस्वाहा कामावपन्नोऽस्म्यवपन्नोऽस्मिकामकामायस्वाहा इत्येताभ्यांमंत्राभ्यामाहुतीर्हुत्वा समासिंचंतु मरुतः समिंद्रः संवृहस्पतिःसंमायमग्निःसिंचंतांयशसाब्रह्मवर्चसेनेत्यनेन मंत्रेणाग्निमुपतिष्ठेत इदंचगुरुपरिचर्यादिगुरुतरकार्यव्यग्रतयाअकरणेद्रष्टव्यम् ॥ यदात्वव्यग्रएवभैक्ष्याग्निकार्ये त्यजाति तदा अकृत्वाभैक्ष्यचरणमसमिध्य चपावकम् अनातुरःसप्तरात्रमवकीर्णिव्रतंचरेदितिमानवंद्रष्टव्यम् अत्रैववृहस्पतिः संध्यामुपास्योपस्थितःसावित्र्याः सहस्रेणादित्यमुपतिष्ठेत उत्क्रमाग्निकार्यंव्रतपत्याहुत्यातीतंसंपाद्योपस्थितंकुर्यात् ॥ यज्ञोपवीतादिनाशंतु हारीतेनप्रयाश्चित्तमुक्तम् मनोव्रतपतीभिश्चतस्रआज्याहुतीर्हुत्वापुनर्यथार्थंप्रतीयात् असकृद्भैक्ष्यभोजनेभ्युदितेऽभिनिर्मुक्तेवांते

क्षादिके न करणे विषे देखणे योग्य है ॥ जेकर तिसमे नहिं खचित होवें और भिक्षा और अग्नि कार्य त्याग देवे तां एह मनुजीका कथन कीता होया प्रायश्चित्त देखणे योग्य है । इस श्लोक का अर्थ पिछे कहा है इसी विषे वृहस्पति जी कहते हैं संध्यामिति प्रातःकालकी संध्या कर्के फेर उठ कर्के एक हजार गायत्री कर्के सूर्यकी स्तुति करे और उल्लंघन होया जो अग्नि कार्य तिसनूं ॥ व्रतपति ॥ इस मंत्र कर्के पिछलीया आहुतियां दे कर्के फेर उपस्थान करे और यज्ञोपवीतादिके नाश विषे हारीतजीनें प्रायश्चित्त कया हैं मन इति (मनोव्रतपतीभिः) इस मंत्र कर्के चार आहुतियां घृतकीयां दे कर्के फेर यथार्थ कर्के यज्ञोपवीत पावे भिक्षासें प्राप्त होया जो अन्न तिसके वहुत वार भक्षण विषे प्रायश्चित्तहै और सुत्ते होयां सूर्य उदय होवे वा अस्त होवे और वमन होवे तांभी प्रायश्चित्त करे

दिवेति दिनविषे शयनकरे. और नग्नस्त्रीके देखणेंविषे और नग्न होकरशयनकरे और श्मशानकों उल्लंघन कर्के घोडे उप्पर चड कर चले और पूज्य जो हैं गुर्वादि उनको प्रणामादि न करे एह जो संपूर्ण पूर्वोक्तहैं इनां विषे इनांहि पूर्वोक मंत्रां कर्के घृतकीयां आहुतियां देवे ॥ और अग्निके प्रज्वलित कर्दे होयां वृक्ष वा सर्पादियोंके मारणे विषे (यद्देवादेवहेडनम्) इत्यादि जो कूष्मांड मंत्र हैं इनांकर्के त्रयरात्रि घृतकर्के हवन करे॥ मणि और वस्त्र और गवादि इनांके दान लैणें में अष्ट सैंअधिक १००० हजार गायत्रीका जपकरे इतनींहिस्मृति हारीतजीकी है॥ अब इसीका अर्थ स्पष्टकर्के कहतेहैं (मनोव्रतपनीभिः) मनोज्योतिः इत्यादिजो मंत्र हैं मनहै चिन्ह जिनांका और ; त्वमग्ने व्रतपाअसि ! व्रतहै चिन्ह जिसविषे इनांकर्के हवनकरे ॥ यथार्थ प्रती

दिवास्वप्ने नग्नस्त्रीदर्शने नग्नस्वापे श्मशानमाक्रम्य हयादीनारुह्य पूज्याति क्रमेचैताभिरेवाज्याहुतिभिर्जुहुयात्। अग्निसमिंधनेस्थावरसरीसृपादीनांवधे यद्देवादेवहेडनमितिकूष्मांडीभिस्त्रिरात्रमाज्यंजुहुयात् मणिवासोगवादीनां प्रतिग्रहेसावित्र्यष्टसहस्रंजपेदितिमनोव्रतपतीभिरिति मनोज्योतिरित्यादि॥ मनोलिंगाभिस्त्वमग्नेव्रतपाअसीत्यादिव्रतलिंगाभिरित्यर्थः यथार्थंप्रतीयादिति उपनयनोक्तमार्गेणसमंत्रकंगृह्णीयादित्यर्थः । अपरार्केपैठीनसिः नष्टेदंडकाष्ठेभैक्ष्यंदत्वाब्राह्मणायतदहरेवोपवसेत्कमंडलावप्येवमेव नष्टायांमेखलायांद्वेऋचावुद्धरेत्। इयंदुरुक्तेति । संवर्त्तः । भिक्षाटनमकृत्वायः स्वस्थएकोन्नमश्नुते अस्नात्वाचैवयोभुंक्तेगायत्र्यष्टशतंजपेत् १ उपासीतन चेत्संध्यामग्निकार्यंनचेत्कृतम् स्नात्वासूर्यसमभ्यर्च्यप्राणायामेनशुध्यति २

यात् इसकाअर्थ कहतेहैं यज्ञोपवीतमें कहा जो मार्ग तिसकर्के समंत्रक ग्रहणकरे ॥ अपरार्कमे पैठीनसिजी कहतेहैं नष्टइति ब्रह्मचारी दंड काष्ठके नाशहोयां भिक्षाकाअन्न ब्राह्मणांको देदेवे और उसदिन उपवासकरे और कमंडलुके नाशमेंभी ऐसेंहि करे ॥ ब्रह्मचारी तडागीके नाश होयां दो २ ऋचा का पाठ करे इयंदुरुक्ता इत्यादि ॥ संवर्त्त जी कहतेहैं भिक्षेति स्वस्थचित्त होया १ जो ब्रह्मचारी भिक्षाटन कर्के इकछाहि अन्न खावे और स्नान तें विना जो भोजन करताहै सो अष्टसे अधिक १०८ सौ गायत्री का जपकरे तां शुद्धहोताहै १ जो संध्या नकरे और अग्नि कार्य्य न करे तां स्नान कर्के सूर्यका पूजन कर्के और प्राणायाम करणेंतें शुद्ध होताहै २

दिवेति स्वस्थ चित्तवाला ब्रह्मचारी जेकर दिनविषे शयन करे तद स्नानकर्के सूर्यका पूजन करे और गायत्रीका अठसे अधिक सौ जप करे तदशुद्ध होताहे ३ जिस पुरुषनें यज्ञोपवीत विना संध्याकी तीहैसो ब्रह्मचारी स्नान कर्के समाधान होया २ अठसे अधिक हजार १००८ गायत्री का जप करे तदशुद्ध होताहै ४ जोपुरुष यज्ञोपवीत विना भोजन करदाहे सो अठसे अधिक १०० सौ गायत्रीका जप करे और एक प्राणायाम करे तद शुद्ध होताहै ५ यम जीकहतेहें सूर्य इति जो पुरुष सूर्यके उदय तक शयन करदाहै उसकानाम सूर्योदितहै और जो सूर्यके अस्ततक शयन करदाहै उसका नाम सूर्यनिर्मुक्तहै १ सो दोए ब्रह्मस्तेन कहेहैं अर्थात् वेदके चुराणे वालेहें दिन रात्रिके उपवास करणेंतेशुद्धहोतेहैं दशतें अधिक गायत्रीका पृथक् २ जपकरें २ अवइसीका अर्थ

दिवास्वपितिचेत्स्वस्थोब्रह्मचारीकथंचन स्नात्वासूर्यंसमभ्यर्च्यगायत्र्यष्टशतंजपेत् ३ ब्रह्मसूत्रंविनायेनसन्ध्योपास्तिर्यदाकृता गायत्र्यष्टसहस्रंतुजपेत्स्नात्वासमाहितः ४ ब्रह्मसूत्रंविनायस्तुभोजनंकुरुतेजनः गायत्र्यष्टशतेनैव प्राणायामेनशुद्ध्यति५। यमः। सूर्योदयेतुयःशेतेससूर्योदितउच्यते अस्तंगतेतुयःशेतसूर्यनिर्मुक्तएवसः १ ब्रह्मस्तेनावुभौसम्यगहोरात्रोपितौशुची गायत्र्यादशसाहस्रंकुर्यातामाह्निकंपृथक् २ सूर्योदितोहरुपोषितः सूर्यनिर्मुक्तोरात्रिमुपोषितःएवमुभावहोरात्रोपितौगायत्र्यादशाधिकंसहस्रजपमहानिकुर्याताम् वसिष्ठः। सूर्याभ्युदितःसन्नहास्तिष्ठेत्सावित्रींजपेत् ॥ एवंसूर्याभिनिर्मुक्तोरात्रावासीत । विष्णुः । सूर्याभ्युदितोनिर्मुक्तःसचैलस्नातःसावित्र्यष्टशतमावर्त्तयेत् ॥ संध्याधिकारेबौधायनः॥ तत्रसायमतिक्रमेरात्र्युपवासः प्रातरुपक्रमेहरुपवासः ॥

स्पष्टकर्के कहतेहैं सूर्येति-सूर्योदित पुरुष दिनमें उपवास करे और सूर्यनिर्मुक्त पुरुष रात्रिमें उपवास करे इसप्रकार दोनों दिनरात्रिके उपवास वाले गायत्रीका दश १० तें अधिक हजार जपदिन विषेकरें ॥ वसिष्ट जी कहतेहें ॥ सूर्येति सूर्योदित पुरुष दिनविषे स्थितहोकर्के गायत्रीकाजपकरें ॥ ऐसेही सूर्यनिर्मुक्त पुरुष रात्रिमें स्थित होकर्के रहपरंतु दिनाविषे जप करे विष्णुजी कहतेहैं सूर्येति सूर्योदित वा सूर्यनिर्मुक्त पुरुष सचैल स्नान कर्के गायत्रीका अठ से अधिक १०० सौ जपकरे अबसंध्याके अधिकारमें बौधायनजी कहतेहैं तत्रेति जेकर सायंकालकी संध्या न करे तद रात्रि उपवासकरणा और प्रातःकालकी संध्या न करणेमे एकदिनका उपवास करणे योग्यहै

आपस्तंवजीकहतेहैं स्वपन्निति जिसको सुत्तेहोयां सूर्य अस्तहोवे सो भोजन न करे और वाणी रोकरकखे रात्रिमें स्थितरहे और दूसरे दिन जलकास्पर्शकर्के वाणीनूंखोलदेवे और जेकर सुत्तेहोयां सूर्य उदय होजावे तद्भीभोजन न करे और वाणीनूं रोकरकखे और दिनमें स्थितरहे और नम्र होया २ प्राणायामकरे एहकिसीका मतहै । आतिमितः! इसपाठविषे अस्तपर्य्यंत स्थितरहे एह अर्थहै ॥ कुछक और कहतेहैं मध्विति ब्रह्मचारीको मखीरमांसकेभक्षणविषे कृच्छ्रव्रतकरणेयोग्यहै फेर शेष व्रतांनूं करे ब्रह्मचारीनें मखीरभक्षण विषे और शिष्ट पुरुषोंके भोजन योग्य जोमांसतिसकेभक्षणविषे प्राजापत्यव्रतकरणेयोग्यहै ॥ तिसतेंउपरंत प्रारंभकीता होया जो ब्रह्मचर्य वा वेद व्रतइनांविचों शेषरिहा जो व्रत सो करे ॥ तिसतेउपरंत अग्गेकरणे जो व्रत तिनांनूं समाप्तकरे

आपस्तंवः स्वपन्नभिनिर्मुक्तोनश्नन्वाग्यतोरात्रिमासीत । श्वोभूतेंउदकमुपस्पृश्यवाचंविसृजेत् । स्वपन्नभ्युदितोनश्नन्वाग्यतोहस्तिष्ठेदान्मितः प्राणान्नियच्छेदित्येके ॥ अनश्नन्नभुंजानः किंच मधुमांसाशनेकार्यःकृच्छ्रःशेषो व्रतानिच ब्रह्मचारिणामधुभक्षणेशिष्टभोजनीयमांसभक्षणेचप्राजापत्यंकार्यम् ॥ तदनंतरमुपक्रांतस्यब्रह्मचर्यस्यवेदव्रतानांवान्यतमस्यशेषःकार्यःतदनंतरंक्रियमाणानिव्रतानिसमापनीयानि मधुमांसाशनेकार्य्यःकृच्छ्रःशेष व्रतानिच प्रतिकूलंगुरोःकृत्वाप्रसाद्यैवविशुध्यतीतिमिताक्षरास्थःपाठःनपुनर्ब्रह्मचर्यारम्भशंकानिवृत्त्यर्थायविधिः तदाशंकायांच पुनरुपनयनविधानात् । तथाचसंवर्त्तः ॥ ब्रह्मचारितुयोश्नीयान्मधुमांसेकथंचन सकृत्वाप्राकृतंकृच्छ्रंमौंजीहोमेनशुध्यतीति मांसस्यचशिष्टभोजनीयस्यभक्षणेएतत्

इसमे विशेषकहतेहैं मध्विति ब्रह्मचारी मखीरमांसके भक्षणविषे कृच्छ्रव्रतकरे फेर शेष व्रतकरे औरगुरुका अनादराकीतां गुरुकीप्रसन्नताकर्के शुद्धहोताहै एहमिताक्षरामेकहाहै १ परंतुएह फेर ब्रह्मचर्यके आरंभकी शंकको निवृत्तिवास्ते विधि नहिंहै अर्थात्इसीकृत्यकर्के एहशंका निवृत्तहो गई पुनर्ब्रह्मचर्यकी आशंका विषे फेर यज्ञोपवीतका विधान होणेतें सो इसमे नहिंहै । तैसेहि संवर्त्तजीकहतेहैं ब्रह्म चारीति जो ब्रह्मचारी मखीर और मांसका भक्षण करे सो प्राकृत कृच्छ्रव्रत कर्के और मौंजीहोम कर्के शुद्धहोताहै १ प्राकृतकृच्छ्र नाम सामान्यकृच्छ्र जो द्वादशाहसाध्य है तिसकाहै यज्ञोपवीतविषे प्रतिपादन कीता जो होम तिसकर्के शुद्ध होताहै परंतु शिष्टोंके भोजन योग्य जो मांस तिसके भक्षण विषे एहजानणा ॥

जोवासिष्टजीनें कहाहै सो कहतेहैं ब्रह्मचारीति ब्रह्मचारी जेकर शिष्टोंके योग्य जो मांस तिसनूं खावे तद बारां १२ रात्रीका कृच्छ्र व्रत कर्के शेषव्रतनूं समाप्त करे सोभी एह व्याधिरहितकोजानणा ऋौर व्याधियुक्तकों मधु मांस भक्षणमें दोष नहिंहै सोई वसिष्ट एह कहताहै कि सो जेकर व्याधियुक्तहोवे तद गुरुका जूठांमांस औषधीवास्ते सारही खालेवे क्योंकि मधुमांसादि जो हैं सो रोगिपुरुषको स्वीकार करणेयोग्यहैं इसमे जो सर्वग्रहणहै सो मांसलशुनादि जो अभक्ष्य तिसके ग्रहण वास्तेहै गुरुकाजूठा भोजनकर्के वा वचनकर्के जानणाहै ॥ इच्छातें विना प्राप्तहोया जो मधु तिसके भक्षणमें दोष नहिंहै एह वसिष्टजीने कहाहै सो कहीदाहै अकामेति इच्छातें विना प्राप्तहोयाक्या भक्षण कीताजो मखीर वाजसनेयीशाखावाले ब्रह्मचारीकों तिसके भक्षणमें दोष नहिंहै एहजाणीदाहै ॥ इसकों स्पष्टकरतेहैं कि वाजसनेयी यजुः शाखाका भेदहै ॥ अब ब्रह्मचर्यके अधिकारविषे पैठीनसिजीकहतेहैं मधिवति ब्रह्मचारी मधुमांसके भक्षण विषे त्र्यरात्रि

यदाहवसिष्ठः ब्रह्मचारीचेन्मांसमश्नीयाच्छिष्टभोजनीयंकृच्छ्रंद्वादशरात्रंचरित्वाव्रतशेषंसमापयेदिति एतच्चाव्याधितस्य व्याधितस्यतुमधुमांसभक्षणेपि नदोष इत्याह सएव सचेद्व्याधीयीतकामंगुरोरुच्छिष्टंभेषजार्थंसर्वंप्राश्नीयादिति मधुमांसाद्यप्रतिषिद्धम् सर्वग्रहणंमांसलशुनाद्यभक्ष्यमात्रग्रहणार्थम् गुरोरुच्छिष्टमपिभोजनेनवचनेनवाज्ञेयम् अकामोपनतमधुभक्षणे नदोष इत्याहसएव अकामोपपन्नंमधुवाजसनेयकेनदुष्यतीतिविज्ञायते । वाजसनेयंयजुःशाखान्तरम् ॥ ब्रह्मचर्याधिकारेपैठीनसिः मधुमांसप्राशने त्रिरात्रंपुनरुपनयनंच प्राजापत्यासमर्थविषयमेतत् ॥ मनुः ॥ मासिकान्नं तुयोश्नीयादसमावृत्तकोद्विजः सत्रीण्यहान्युपरमेदेकाहंचोदकेवसेत् १ ॥ मासिकमत्रप्रतिमासंमृताहनियद्विहितंतद्ग्राह्यम् नपुनरमानवम्याम् सूतिकान्नंनवश्राद्धंमासिकान्नंतथैवच ब्रह्मचारीतुयोश्नीयात्त्रिरात्रेणसशुद्ध्यतीति संवर्त्तवाक्येन नवश्राद्धसाहचर्यात् ॥ बौधायनः ॥ सचेद्व्याधीयीत कामंगुरोरुच्छिष्टंभेषजार्थंसर्वमश्नीयात्

उपवासकरे फेर यज्ञोपवीतपावे ॥ एह प्राजापत्य व्रत के असमर्थ विषयविषे जानणा अर्थात् जिससे प्राजापत्यनहि होसक्ता सो इसव्रतको करे ॥ मनुजीकहतेहैं मासिकेति जो ब्राह्मण ब्रह्मचारी मासिकान्न भक्षणकरे सो त्रयदिन उपवासकरे और एकदिनजलविषे वास करे ता शुद्धहोताहै १ इस विषे मासिक शब्दका अर्थ कहतेहैं महीनें महीनें मृत होए पुरुषके दिन विषे जो विधान किया है सो ग्रहण करणा योग्यहै ॥ अवइसीमेंहेतु कहतेहैं नेति फेर अमावास्या नवमीविषे जो श्राद्ध है तिसकोभी मासिक कहतेहैं परंतुसो नहिं ग्रहण करणा क्योंकि सूतिकान्न और नवश्राद्ध और मासिकान्न इनांको जो ब्रह्मचारीभक्षण करे सोत्रयरात्रि कर्के शुद्धहोताहै एह संवर्त्तके वाक्य कर्के नव श्राद्धकी साहचर्यताहोणेतें बौधायनजीकहतेहैं सइति सोब्रह्मचारी जेकर पाडी कर्के युक्तहोवे तद अतिशय कर्के गुरुकाजूठा औषधीवास्ते संपूर्ण खालेवे

येनेति जिसककें इच्छाहोवेतिसीकर्के चिकित्सा करे सो जद रोगरहित होवे तदउठ कर्के सूर्य्य का उपस्थान करे हंसः शुचिषत् इस ऋचाकर्के ॥ इसीमें वृद्धयाज्ञवल्क्य जी कहतेहैं ब्रह्मचारीति ब्रह्मचारी व्रती और विधवा ब्राह्मणी एह मधु मांस भक्षण करें तद त्रयरात्रिके व्रत कर्के शुद्ध होतेहैं ॥ यमजीभी कहतेहैं मध्विति जो ब्रह्मचारी मधु मांस भक्षण करे और श्राद्धका वा सूतक का अन्न खावे तद प्राजापत्य कृच्छ्र व्रत कर्के शेष व्रतनूं समाप्तकरे १ एह जेकर उलटी न होवे तिसमें जानणा और उलटीविषे लघुकृच्छ्र व्रतकरे १ शातातपजीकहतेहैं सूतकइतिजेकर सूतक

येनेच्छेत्तेनविचिकित्सेत् सयदाऽगदोभवति तदोत्थायादित्यमुपतिष्ठेद्धंसः शुचिषदित्येतयर्चा । अगदोरोगरहितः । वृद्धयाज्ञवल्क्यः । ब्रह्मचारीव्रतीचैवब्राह्मणीविधवाचया अशित्वामधुमांसानित्रिरात्रेणैवशुध्यतीति १ । यमः मधुमांसंचयोश्नीयाच्छ्राद्धंसूतकमेवच प्राजापत्यंचरेत्कृच्छ्रंव्रतशेषंसमापयेत्१ छर्दनाभावएतत् छर्दनेतुलघुकृच्छ्रम्। शातातपः। सूतकेतुयदाविप्रोब्रह्मचारीविशेषतः पिबेत्पानीयमज्ञानात्समश्नीयात्स्पृशेतवा १ पानीयपानेकुर्वीतपंचगव्यस्यभक्षणम् त्रिरात्रंभोजनेप्रोक्तंस्पृष्ट्वास्नानंविधीयतइति २॥ विष्णुः ब्रह्मचार्यामश्राद्धान्नंप्राश्नीयादज्ञानदुर्बलः पराकेनविशुद्धिःस्यान्निष्कृतिर्नान्यथाभवेत् १ उच्छिष्टंक्षत्रियविशोःशूद्रोच्छिष्टमथापिवा ब्रह्मचारीयदाश्नीयात्तस्यशुद्धिःकथंभवेत् २ स्नानंतथैवकृत्वातुगायत्र्यष्टशतंजपेत्

विषे ब्राह्मण ब्रह्मचारी विशेषतें पानी पीवे अज्ञानतें भोजनकरे वा स्पर्शकरे १ तद पानी पीने विषे पंचगव्य का भक्षण और भोजन विषे त्रयरात्रि उपवास करे और स्पर्श विषे स्नान करे तद शुद्ध होताहै १ अब विष्णुजी कहतेहैं ब्रह्मचारीति जो ज्ञान रहित ब्रह्मचारी श्राद्धका कच्चा अन्न खावे तद बारां १२ दिनका जो पराक व्रत तिस कर्के शुद्धि होताहै और किसे कर्के भी शुद्धि नाहैं होतीहै १ उच्छिष्टमिति क्षत्री वैश्य शूद्र इनका जूठा अन्न ब्रह्मचारी जेकर खावे तिसकी शुद्धि कैसें होवे ॥ २ ॥ उत्तर तिसीकालमें स्नान कर्के अष्टोत्तर शत गायत्रीका जपकरे

उपोष्येति और बारां दिनका उपवास व्रतकरे असें पृथक् २ क्या जुदे जुदे तीनोंकी शुद्धि कही है इसी प्रकार गृहस्थीको पाद ऊन व्रत करणा योग्यहै ३ इसकोंस्पष्टकरतेहैं ब्राह्मणेति ब्राह्मण क्षत्री वैश्य इनांको क्रमकर्के क्षत्री वैश्य शूद्र के उच्छिष्ट प्राशनमें एह जानणा अर्थात् ब्राह्मणको क्षत्रीके उच्छिष्ट भक्षणमें और क्षत्रीको वैश्यके और वैश्यको शूद्रके एहप्रा० और एही व्रत ब्राह्मणको क्षत्री वैश्य शूद्रके उच्छिष्ट भक्षणमें और क्षत्रीको वैश्य शूद्रके जूठाभक्षण करणेमें और वैश्यको शूद्रका जूठा भक्षण करणे में कुछक अधिक करणा योग्यहै ॥ देवलजी कहतेहैं मधिवति मधुमांस और सूतकका अन्न जो व्रती भक्षण करे तद त्रयरात्रि उपवासव्रत कर्के एकरात्रिजलविषें वास करे १ इसकर्के रात्रिविषें जलमें वास विधानाकियाहै ॥ और मनुनें दिनविषें जलवासकियाहै तिसतें विकल्प जानणा ॥ और जेकर

उपोष्यद्वादशदिनमेवंशुद्धिःपृथक्पृथक् एवमेवगृहस्थस्यपादोनमितिनिश्चयः ३ ब्राह्मणक्षत्रियविशांयथाक्रमंक्षत्रियवैश्यशूद्रोच्छिष्टप्राशनेएतत् एतच्चब्राह्मणस्यक्षत्रियवैश्यशूद्रोच्छिष्टं क्षत्रियस्यवैश्यशूद्रोच्छिष्टं वैश्यस्यशूद्रोच्छिष्टमश्नतःकिंचिदधिकंकल्प्यम् ।देवलः। मधुमांसंसूतकान्नंयश्चाश्नातिव्रतीकचित् त्रिरात्रोपोषितःसम्यग्रात्रिमेकांजलेवसेत् १ अनेनरात्रौ जलवासोविहितः मनुनात्वहनीत्युक्तं ततोविकल्पः दोषभूयस्त्वेतुसमुच्चयः ब्रह्मचारिप्रसंगाद्गुरुविषयंकिंचिदाह । कृच्छ्रत्रयंगुरुःकुर्यात्प्रहितोम्रियतेयदि । ब्रह्मचारीगुरुणाप्रहितःप्रेषितःशंक्यमानार्थविषयेयदिम्रियते तदागुरुःप्राजापत्यसहितांस्त्रीन्कृच्छ्रानाचरेत् । शंक्यमानविषयस्तुचौरोरगव्याघ्रादिनासांद्रतरांधकाराकुलितनिशीथावसरादिनाभवति अत्रपूर्ववाक्याद्ब्रह्मचारीतिशब्दोऽनुवर्त्तते

दोषबहुतहोवे तां दिनरात्रि जलमें वासकरणा ॥ अब ब्रह्मचारीके प्रसंगतें गुरुविषय कुछक प्रायश्चित्तकहतेहैं कृच्छ्रेति जेकर ब्रह्मचारी गुरु कर्के प्रेरित कीता होया मृत हो जावे तद गुरु त्रयकृच्छ्र व्रत करे ॥ अब इसीका अर्थ स्पष्टकर्के कहतेहैं ब्रह्मचारी गुरुकर्के भेजया होया शंक्यमान विषयविषें जेकर मृतहोजावे तद गुरु प्राजापत्य सहितत्राय कृच्छ्रव्रत करे (प्रश्न) शंक्यमानविषय कौणसाहै ॥ (उत्तर) चोर सर्प व्याघ्रादिकर्के बडेगाडे अंधकार कर्के युक्त अर्धरात्र में किसी स्थानमे जाणा इत्यादि करके होताहै इसविषे पूर्ववाक्य तें ब्रह्मचारी एह शब्द अनुवर्त्तन करीदाहै ॥

अतइति इसीकारणतें ब्रह्मचारिकें प्रायश्चित्तके प्रसंगतें गुरुको दुःख देणे विषे भी याज्ञवल्क्यनें प्रायश्चित दिखाईदाहै प्रतीति गुरु का प्रतिकूल कर्के गुरु को प्रसन्न करे तां शुद्ध होताहै अव इसीका अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं गुरुको प्रतिकूल क्या दुःख दे कर्के गुरुनूं प्रसन्न कर्के हि शुद्ध होताहै ॥ इसी में वसिष्ट जी कहते हैं गुरुके साथ झूठ कह कर्के फेर उसी झूठ को सचा करे तिसमें सचैल स्नान कर्के और गुरु नूं प्रसन्न करे तद शुद्ध होताहै एह जाणीदाहै ॥ एह अज्ञानतें जो एक वार थोड़ा अपराध तिसविषे जानणा ॥ अतिशयतें हठ कर्के ज्ञान पूर्वक जो गुरुको दुःख देणा तिस विषे वारां १२ वर्ष का जो ब्रह्महत्याका व्रत तिसकी प्राप्ति वास्ते कयाहै मनुनें एह समग्र श्लोकहै (उक्त्वाचैवानृतंसाक्ष्येप्रतिरुध्यगुरुंतथा अपहृत्यचनिःक्षेपंकृत्वाच

अतएव ब्रह्मचारिप्रायश्चित्ते प्रकृते प्रसंगाद्गुरोःप्रातिकूल्येऽपि याज्ञवल्क्येनप्रायश्चित्तमुपदिश्यते ॥ प्रतिकूलंगुरोःकृत्वाप्रसाद्यैवविशुद्ध्यतिगुरोःप्रतिकूलंदुःखकरं कृत्वा गुरुं प्रसाद्य व्यपगतकोपं कृत्वा विशुद्ध्यति विपापोभवति । अत्रवसिष्ठः ॥ गुरोश्चालीकनिर्बंधेसचैलंस्नानतोगुरुंप्रसादयेत्पूतोभवतीतिविज्ञायते । एतदमतिपूर्वकंसकृदल्पापराधविषयम् ॥ अत्यंतसानुबंधमतिपूर्वकमहाऽपराधेतु गुरुप्रातिकूल्ये द्वादशवार्षिकब्रह्महव्रतप्राप्त्यर्थमुक्तंमनुना प्रतिरुध्यगुरुंतथेति यद्वा पितृविषयंमानवं वासिष्ठयाज्ञवल्क्यीयंचौपचारिकगुरुविषयम् ॥ मानवंब्रह्महत्याप्रकरणेद्रष्टव्यम् ॥ विष्णुः ॥ समुत्कर्षान्तेगुरोश्चालीकनिर्बंधे तदाकारणेच मासंपयसा वर्तेत तस्यगुरोराकारणेआव्हानेचेत्यर्थः स्वल्पाभ्यासविषयमिदम् ॥ इतिब्रह्मचारिव्रतलोपेप्रायश्चित्तम् ॥ १८ ॥ ❀

स्त्रीसुहृद्वधम् १) कोइक कहते हैं एह जो मनुजीका कथन कीता होया वारां वर्ष का व्रत सों पिता रूप जो गुरुहै तिसविषे जानणा वहुत प्रायश्चित्त होणेतें । और वसिष्ट याज्ञवल्क्यजीका वचन पितातें विना और गुरुविषे जानणा क्योंकि थोडा प्रायश्चित्तहोणेतें ॥ मनु जीकावचन ब्रह्महत्या प्रकरण विषे देखणे योग्यहै ॥ अव विष्णुजीकहतेहैं समिति गुरुके साथ अपणी वडयाई वास्ते झूठ बोलणें विषे और किसी वातका झूठाहठ करणेविषे और गुरुके वुलाणे विषे अर्थात् गुरुके साथ कूलकामहोवे तदआपगुरुपासनहिजाणा किंतु गुरुको अपणे पास वुलाणा एह वडा दोषहै इसवास्ते प्रायश्चित्तहै कि महीना पर्यंत जल पान करे तद शुद्ध होताहै एह थोडे अभ्यास विषे जानणा एह ब्रह्मचारिके व्रत लोपका प्रायश्चित्त समाप्तहुआ ॥ ८ ॥ ❀

सतें उपरंत तला बगीचा पुत्र स्त्री इनका वेचणा पीछे किहाहै तिस विषें प्रायश्चित्त कहतेहैं
वोंकि जो मनुजी का किहा होयाव्रत है(एतदेवव्रतं कुर्युरुपपातकिनोद्विजा)इत्यादि श्रौर याज्ञ
ल्क्यका किहा होया जो है(उपपातकशुद्धिःस्यात्)इत्यादि उपपातकोंके जो सामान्य प्रायश्चित्त
चांद्रायणादि व्रत सो जाति शक्ति गुणकी अपेक्षा करकें देखणें योग्यहें अर्थात् जैसी जाति
ब्राह्मणादि होवे वा जैसी सामर्थ्य होवे वा जैसा गुण होवे तैसाहि प्रायश्चित्त करणा ॥ आपत्ति
कालमें इच्छातें विना वेचणेंविषें शंखजीकहतेहैं देवेति देवताका मंदिर श्रौर जिस घरविषें यज्ञ
होवे तिसकों वेच करके श्रौर बगीचा वा छोटी बगीची श्रौर सभा स्थान वा धर्म्मशाला तला
श्रौर व्रनादि वा पुल पुत्र इनांको वेंचकर्के तप्त कृच्छ्रव्रतकरे तद शुद्ध होताहै ॥ इसीमें पराशर
जीभी कहतेहैं विक्रीयेति कन्या श्रौर गौकों वेचकर्के कृच्छ्र सांतपन व्रत करे ॥ इच्छातें वेचणें
विषें चतुर्विंशतिमतमें कहतेहैं नारीणामिति स्त्रीकों वेच कर्के चांद्रायण व्रत करे तद शुद्ध होताहै
श्रौर पुरुषके वेचण विषें दूणा व्रत बुद्धिमानोंनें किहाहै १ श्रवइसमें जो पैठीनसि जीनें कियाहै

अनंतरं तडागारामसुतदारविक्रयइत्युक्तं तत्र पूर्वोक्तमनुयोगीश्वरोक्तोप
पातकसामान्यप्रायश्चित्तंचांद्रायणादि जातिशक्तिगुणापेक्षया द्रष्टव्यम्
आपद्यकामतोविक्रये शंखः देवगृहप्रतिश्रयोद्यानारामसभाप्रपातडागपु
ण्यसेतुसुतविक्रयंकृत्वातप्तकृच्छ्रंचरेदिति । पराशरोपि विक्रीयकन्यकांगां
चकृच्छ्रंसांतपनंचरेदिति । कामतोविक्रये चतुर्विंशतिमते । नारीणांविक्रयंकृ
त्वाचरेच्चांद्रायणव्रतम् द्विगुणंपुरुषस्यैवव्रतमाहुर्मनीषिणइति १ यत्तुपैठीन
सिः । आरामतडागोदपानपुष्करिणीसुकृतसुतविक्रये त्रिषवणस्नाय्यधःशा
यीचतुर्थकालाहारः संवत्सरेणपूतोभवतीति गुरु प्रायश्चित्तमुक्तवान् तदेक
पुत्रविषयम् इतितडागारामादिप्रायश्चित्तम् २२॰ अथव्रात्यता । व्रात्यइ
तिव्रातशब्दादिवार्थयप्रत्ययेननिष्पन्नः यद्वा व्रातमर्हतीति व्रातंनीचकर्म
दंडादिभ्योयइति व्रात्यःशरीरायासजीवी व्याधादिक अष्टाविंशतिसंस्का
रहीनोभ्रष्टगायत्रीकः षोडशवर्षादूर्ध्वमप्यकृतव्रतबंधोदानादकर्त्ताद्विजो
व्रात्य इत्यमरटीकाराजमुकुटी ॥

सो कहतेहैं श्रारामेति बगीची तला खूहा बाउली पुण्य पुत्र इनके वेचणें विषें त्रिकाल स्नान
करे श्रौर पृथ्वी विषे शयन करे चौथे पहर भोजन करे तद वर्षकर्के शुद्ध होताहै जो एह बहुत
प्रायश्चित्तकियाहै सो एकपुत्रविषे जानणा । एह तलाश्रादि चारवस्तुके वेंचणका प्रायश्चित्तसमाप्त
होया २२ ॰ श्रब व्रात्यताका प्रायश्चित्तकहणें वास्ते पहले तिसशब्दका अर्थकहतेहैं व्रात्यइति
व्रातशब्दतें परे सादृश्य अर्थमें यप्रत्यय आया तद व्रात्य सिद्ध होया १ दूसरा अर्थ कहतेहैं व्रात
जोहै नीचकर्म तिसके योग्यजोहोवे(दंडादिभ्योय)इससूत्रकर्के यप्रत्यय आया तद व्रात्यसिद्ध होया
सो किसका नामहै कि शरीरके आयासकर्के जीविका करणेवाले जो भारवाहकहैं अठाई २८
संस्कारोंतेंहीन श्रौर गायत्रीसेंभ्रष्ट श्रौर सोला १६ वर्षतेंउपरंतनहिंहोया यज्ञोपवीत जिसकाश्रौरदा
नादिके न करणेवाला जो द्विजतिसकानामव्रात्यहै एह अमरकोशकी राजमुकुटीटीकामें किहाहै

(व्रातच्फञोरस्त्रियाम्) एह जो कौमुदीका सूत्रहै इसविषे बहुतजानिवाले और नहिंहै नियमकर्के वृत्ति जिनांकी अर्थात् कदी भारका कम्मकरणा कदी लकडीका वा चर्म्मका कम्मकरणा और शरीरकर्के जीविका करणवाले इनका जो समूहहै तिसको व्रात कहतेहैं ॥ तैसेंहि व्रातेनजीवति इससूत्रविषे व्रात कया शरीरके आयासकर्के जीविका करता है बुद्धिकर्के जीविका ना करे एह अर्थ है ॥ व्रातेनजीवति इस सूत्र विषे महाभाष्य का भी प्रमाण कहते हैं किंव्रातमित्यादिना। अब व्रात्यां को मनु जी कहते हैं द्विजातयइति जो ब्राह्मण क्षत्री वैश्य इनांतें समान जाति की स्त्री विषे व्रतरहित उत्पन्न होवें और गायत्रीसें भ्रष्ट होवें तिनका नाम व्रात्य है १ व्रात्य ब्राह्मण तें तुल्यजातिकी स्त्री अर्थात् ब्राह्मणी तिस विषे जो उत्पन्न होवे तिसका नाम भूज कंटक है तैसें आवंत्य वाढधान पुष्पध शैख एह एककेहि देश भेद कर्के प्रसिद्ध नामहैं १ झह

व्रातच्फञोरस्त्रियामितिसूत्रे कौमुद्यांतु नानाजातीया अनियतवृत्तयः॥ उत्सेधजीविनःसंघाव्राताइति। तथाव्रातेनजीवतीतिसूत्रे व्रातेनशरीरायासेनजीवति नतुबुद्धिवैभवेनेति। व्रातेनजीवतीति सूत्रेमहाभाष्यम् किंव्रातं नाम नानाजातीया अनियतवृत्तय उत्सेधजीविनः संघा व्राता इति॥ व्रात्यानाहमनुः॥ द्विजातयःसवर्णासुजनयंत्यव्रतांस्तुयान् तान्सावित्रीपरिभ्रष्टान्व्रात्यानितिविनिर्दिशेत् १ व्रात्यात्तुजायतेविप्रात्पापात्माभूर्जकंटकः आवंत्यवाटधानौचपुष्पधःशैखएवच १ झल्लोमल्लश्चराजन्याद्व्रात्यान्निच्छिविरेवच नटश्चकरणश्चैवखसोद्रविणएवच॥ २ वैश्यात्तुजायतेव्रात्यात्सुधन्वाचार्यएवच कारुपश्चविजन्माचमैत्रःसात्वतएवच॥ ३॥ तपोबीजप्रभावैस्तुतेगच्छंतियुगेयुगे उत्कर्षंचापकर्षंचमनुष्येष्विहजन्मतः॥ ४॥ शनकैस्तुक्रियालोपादिमाःक्षत्रियजातयः वृषलत्वंगतालोकेब्राह्मणादर्शनेनच॥ ५ पौंड्रकाश्चौंडद्रविडाःकांबोजायवनाःशकाः पारदाःपल्हवाश्चीनाः किरातादरदाःखसाः ६॥

इति व्रात्य क्षत्रितें समानजातिकी स्त्रीविषे उत्पन्न होवे तिसके नाम झल्ल मल्ल निच्छिवि नट करण खस द्रविड हैं एहभी एककेहि नामहें २ वैश्यादिति व्रात्यवैश्यतें समान जातिकीस्त्री विषे जो उत्पन्न होवे तिसके नाम सुधन्वाचार्य कारूष विजन्म मैत्र सात्वतहैं एहभी एककेहि नाम हैं ३ तपइति तपके और बीजके प्रभाव कर्के पूर्वोक्त जो हैं सो इस जन्मतें मनुष्यों विषे चौथी पीडी मै जाकर उत्कर्ष और अपकर्ष नूं प्राप्त होतेहैं अर्थात् व्रात्य ब्राह्मणादि सत्कर्म्म करते रहें तद चौथी पीडीमें जाकर शुद्ध होतेहैं और नीचकर्मकरें तद बहुत नीच होजातेहैं ४ अब इसीमे हेतु कहतेहैं शनकैरिति मंद मंद क्रियाका लोपहोणेतें और ब्रह्मणके अदर्शनसें एहक्षत्रिजाति लोक विषे शूद्र भाव नूं प्राप्तहोगई अर्थात् क्षत्रिलोक शत्रुआदि के भयतें देशांतर मे जाकर जातिभ्रष्ट होगए ५ पौंड्रक चौंड द्रविड कांबोज यवन शक पारद पल्हव चीन किरात दरद खस ६

खेति ब्राह्मणक्षत्रि वैश्य शूद्र इनांते उत्पन्नहोई जो वाहर लीयां जातियां कायस्थ कोलीमाली त्यादि सो म्लेच्छ भाषाकर्के युक्त अथवा श्रेष्ट भाषाकर्के युक्त एह संपूर्ण दस्यु कहातेहैं ७ अव सीका अर्थ स्पष्टकर्के मूलमें कहतेहैं व्रात्येत्यादि ॥ २ ॥ ३ ॥ अव शूद्र कमला करविषे कह हैं भूर्जकंटकादिति भूर्जकंटकतें आवन्त्य होआ और आवन्त्यंत जो उत्पन्न होया सो ाढधानहै और वाढधानते जो उत्पन्न होया सो पुष्पधहै इत्यादि जानणे ॥ इसीप्रकार त्रि वैश्य व्रात्य तें जो उत्पन्न होवें तिनां विषे भी क्रम कर्के नाम भेद जानणे योग्य हैं

मुखवाहूरुपज्जानांयालोकेजातयोवहिः म्लेच्छवाचश्चार्यवाचःसर्वेतेदस्यवः स्मृताः ७ व्रात्येत्यादि ॥ व्रात्याद्ब्राह्मणात्सवर्णास्वित्यनुवृत्तेः ब्राह्मण्यां पापस्वभावोभूर्जकंटकोजायते तथा आवन्त्यवाटधानपुष्पधशेखाजायंते एकस्यचैतानिदेशभेदप्रसिद्धानिनामानि ॥ क्षत्रियाद्व्रात्यात्सवर्णायांझल्लम ल्लनिच्छिविनटकरणखसद्रविडाख्याजायंते एतान्यप्येकस्यैवनामानि २ वैश्यात्पुनर्व्रात्यात्सवर्णायांसुधन्वाचार्यकारूपविजन्ममैत्रसात्वताख्याजा यंते ॥ एकस्यचैतान्यपिनामानि ३ शूद्रकमलाकरेतु भूर्जकंटकादावन्त्यः आवन्त्याद्वाढधानो वाढधानात्पुष्पधइत्यादि । एवमेवक्षत्रियवैश्यव्रात्यो त्पन्नाविपयेक्रमेणनामभेदएवोक्तः ॥ अथव्रात्यप्रायश्चित्तम् ॥ तत्रयाज्ञ वल्क्यः ॥ उपपातकशुद्धिःस्यादेवंचान्द्रायणेनवा ॥ पयसावापिमासे नपराकेणाथवापुनरिति १ एवं मासंपंचगव्याशनेन चांन्द्रायणेन मासं पयोव्रतेन पराकेणवाशुद्धिरित्यर्थः ॥ एतच्चाकामकारेशक्त्यपेक्षयाविक ल्पितं व्रतचतुष्टयं द्रष्टव्यमितिमिताक्षरा ॥ कामकारेचाहमनुः ॥ एतदेवव्र तंकुर्युरुपपातकिनोद्विजाः अवकीर्णिवर्ज्जंशुद्ध्यर्थंचांद्रायणमथापिवेति १ ॥

अव व्रात्यका प्रायश्चित्त कहतेहैं तिस विषे याज्ञवल्क्यजीका वचन है उपेति इसतरां गोवध विषे कहा जो व्रतप्रकार मास पंचगव्याशनादि तिस कर्के और जो व्रात्यतादि उपपातक ति नांकी शुद्धि कहीहै वा चांद्रायण कर्के वा महीनेंका जो पयोव्रत तिस कर्के वा पराक व्रत कर्के शुद्धि कही है १ एह अज्ञानतें करण वाले विषे शक्तिकी अपेक्षा कर्के विकल्पित चार व्रत जानणे योग्यहैं एह मिताक्षरामें कहाहै ॥ इच्छातें करण वाले विषे मनुजी कहतेहैं एतदिति उपपातकी जो द्विज हैं सो अवकीर्णिको त्यागकर्के अपनी शुद्धिवास्ते इसी त्रैमासिक व्रतको करें अथवा चांद्रायणकरें १

इसी त्रयमहीनेके व्रतमें चौथे पहर विषें अक्षार लवण विना परिमित यवोंका पान
अक्षारलवण और स्मृतिमें कहतें हैं ॥ गोक्षीरमिति गौकादुग्ध और गौका घृ
मुंग तिल यव समुद्रकाजल सिंधलूण इतनें अक्षार लवणहैं १ एह अतिदेशतें प्राप्त हो
पंचक अर्थात् पीछे इसको कह चुकेहैं परन्तु इसमें भी इसका प्रयोजनथा इस वास्तें किहाहैं
इसमें मनुजी विशेष कहतेहैं येषामिति जिनों द्विजोंनें गायत्री यथाविधि कर्के गुरु पास नहिं
पढी तिनांनूं त्रय कृच्छ्र व्रत करवा कर्के फेर यथाविधि कर्के यज्ञोपवीत पावे १ असमर्थके अर्थ
कहतेहें प्रति प्राजापत्य त्रय विषें गौआं त्रय देणीयां परंतु एह जो प्राजापत्यत्रय रूप व्रतकिहाहे
सो एह पिता रहित जो पुरुष है तिसके गायत्री पात विषें जानणा और जो आलस्यादि कर्के

एतदेवत्रिमासंचतुर्थकालेऽक्षारलवणमितयवपानरूपंकुर्य्युः ॥ अक्षारलव
णंस्मृत्यंतरे ॥ गोक्षीरंगोघृतंचैवधान्यमुद्गतिलायवाः सामुद्रंसैंधवंचैवमेते
ह्यक्षारलवणकाइति ॥ १ ॥ एतच्चातिदेशप्राप्तंव्रतपंचकम् ॥ विशेपमप्या
हमनुः ॥ येषांद्विजानांसावित्रीनानूच्येतयथाविधि तांश्चारयित्वात्रीन्कृ
च्छ्रान्यथाविध्युपनाययेत् १ प्राजापत्यत्रयेधेनुत्रयम् एतत्पितृरहितस्य
सावित्रीपातेज्ञेयम् आलस्यानवधानादिनासावित्रीपातेतु याज्ञवल्क्यः ॥
आषोडशाद्द्वाविंशाच्चतुर्विंशाच्चवत्सरात् ब्रह्मक्षत्रविशांकालऔपनायनि
कःपरः १ अत्रयमः ॥ सावित्रीपतितायस्यदशवर्षाणिपंचच सशिखंवपनं
कृत्वाव्रतंकुर्यात्समाहितः १ एकविंशतिरात्रंचपिवेत्प्रसृतियावकम् हविष्यं
भोजयेच्चैवब्राह्मणान्सप्तपंचवाततोयावकशुद्धस्यतस्योपनयनंस्मृतम् २

गायत्री न पढे तिस विषें याज्ञवल्क्य जी कहते हैं आषोडशादिति सोलां १६ वर्ष तक और
बाई २२ वर्षतक औरचौवी २४ वर्षतक ब्राह्मण क्षत्री वैश्य इनांका एह उपनयन काल है इसतें
उपरंत व्रात्य होताहै अर्थात् ब्राह्मणको सोलां वर्ष तक और क्षत्रिको बाई २२ वर्ष तक और
वैश्यको २४ चौवी वर्ष तक यज्ञोपवीतका काल है १ इस विषें यमजी कहतेहैं सावित्रीति जि
स पुरुषकी गायत्री पंद्रां १५ वर्ष तक पतित होवे सो पुरुष सहित शिखाके मुंडन करवाकर
समाधान होया २ व्रत नूं करे १ और ईकी २१ रात्रि तक यवोंका काढा लप्प मात्र प्रतिदिन
पानकरे और सत ७ वा पंच ५ ब्राह्मणनूं हविष्य जो तिल मुंग यव तण्डुल इत्यादि इनांका भो
जन करावे तिसतें उपरंत यावक कर्के शुद्ध जो पुरुष तिसको यज्ञो पवीत किहाहै २ ॥

वशिष्ठ जी भी कहतेहैं पतितेति पतित है गायत्री जिस पुरुषकी सो उद्दालक व्रत क्या शि शुचांद्रायण व्रनकरे दो २ महीनें यवोंका काढापीवे वा महीना रोज जल पानकरे वा एक पक्ष आमिक्षा क्या विन्नडयादा दुग्ध तिसकर्के रहे जो गर्म दुद्धविषे दहीपाके वणे सो आमिक्षा है वा अठ ८ रात्रि घृत पान करे वा छे ६ रात्रि अयाचित क्या किसेसे भोजनकी याचना न करे और त्रय रात्रि जल पान करे वा एक दिनरात्र उपवास करे वा अश्वमेध यज्ञ का जो यज्ञांतस्नान तिसनूं करे अथवा व्रात्यस्तोम नाम यज्ञकरे ॥ इसमें व्यवस्था कहतेहैं मिताक्षराविषे यस्येति जिस पुरुषको यज्ञोपवीत विषे आपत्ति होणे कर्के पीछे जो काल कहेहैं तिनका उल्लंघन होजावे तद तिसपुरुष को व्रतो विचों एक व्रत शक्ति की अपेक्षा कर्के करणे योग्यहै ॥ और आपत्तिति विना जो कालका उल्लंघन तिसविषे मनुजी का कथन कीताहोया त्रयमहीने का व्रत

वशिष्ठोपि ॥ पतितसावित्रीकउद्दालकव्रतंचरेत् । द्वौमासौयावकेन मासंप यसा पक्षमामिक्षया अष्टरात्रंघृतेन षट्रात्रमयाचितेन त्रिरात्रमब्भक्षोऽहो रात्रमुपवसेदश्वमेधावभृथंगच्छेत् व्रात्यस्तोमेनवायजेदिति अत्रव्यवस्था मिताक्षरायाम् यस्योपनयनेआपद्भाविनतत्कालातिक्रमस्तस्यव्रतानामन्य तमंशक्त्यपेक्षयाभवति ॥ अनापद्यतिक्रमेतुमानवंत्रैमासिकम् पंचदशवर्षा दूर्ध्वमपिकियत्कालातिक्रमेतूद्दालकव्रतं व्रात्यस्तोमोवेति येषांतुपित्रादयो प्यनुपनीतास्तेषामापस्तंबोक्तम् ॥ यस्यपितृपितामहावनुपनीतौस्यातां तस्यसंवत्सरंत्रैविद्यकंब्रह्मचर्यम् ॥ यस्यप्रपितामहादेर्नानुस्मर्यते उपनयनं तस्यद्वादशवर्षाणित्रैविद्यकंब्रह्मचर्यमिति ॥ तथाचापस्तम्बः ॥ अतिक्रां तेसावित्र्याःकालेऋतुंत्रैविद्यकंब्रह्मचर्यंचरेदथोपनयनम्

जानणा और पंद्रां १५ वर्षते उपरंत भी कुछक कालके उल्लंघन विषे भी उद्दालक व्रत करे वा व्रा त्यस्तोम नाम यज्ञ करे । जिनांपुरुषोंके पिता पितामह प्रपितामह भी यज्ञोपवीतसें रहित होण तिनांको आपस्तंब जींका कथन कीता होया प्रायश्चित्त करणा योग्यहै ॥ यस्येति जिसके पिता पितामह दोनो अनुपनीत होवे अर्थात् दोनोंका यज्ञोपवीत संस्कार नहिं होया होवे तिसको वर्षमात्र त्रैविद्यक ब्रह्मचर्यहै अर्थात् ब्रह्मचर्य्य धारकर्के ऋग्यजुःसाम एह जो वेदत्रय हैं इनको वर्ष तक अध्ययनकरे ॥ जिसके और प्रपितामहादिकायज्ञोपवीत नहि होयाहोवे तिसको बारां वर्षका त्रैवि द्यक ब्रह्मचर्य है ॥ सोई आप स्तंब जी भी कहतेहैं अतिक्रांतइति गायत्रीकालके व्यतीत होयां २ ऋतुक्या दो २ महीने का त्रैविद्यक ब्रह्मचर्य करे इसते उपरंत यज्ञोपवीत पावे

तिसते उपरंत वर्ष भर जलका स्पर्श करे इसका अर्थ अगेभी आवेगा फेर सो पढाणे योग्यहै जिसके पिता पितामह यज्ञोपवीत से रहित होवें सो तीनो पुत्र पिता पितामह ब्रह्महत्या करण वालेके तुल्यहैं तिनोका अभिगमन क्या सन्मुखआउना और भोजन विवाह अतिशयकर्के वर्जितहै और जेकर ओही प्रायश्चितकी इच्छाकरें तव वो प्रथम अतिक्रमविषेदो २ महीनेका ब्रह्मचर्य करे और वर्षमे यज्ञोपवीतकरें फेर उदकोपस्पर्शकर्मकरें और प्रतिपुरुष क्या पुरुषपुरुषप्रति संख्या कर्के जितने वर्षतक यज्ञोपवीत रहित होवें (पवित्रणांतरसेन) इस मंत्रकर्के वा सप्तां व्याहृतियोंकर्के पढाणेयोग्यहै और जिसके प्रपितामहादिका यज्ञोपवीत नहिंहोया सो श्मशानसंभूतकहेहैं अर्थात् श्मशानकी न्यांई अपवित्रहैं और तिनकाजोअभ्यागमन क्यासंमुख आउना और भोजनविवाह इनका अतिशय कर्के त्यागे और जेकर सो प्रायश्चित्तकी इच्छा करें तद वारां १२ वर्षब्रह्मचर्य्य

ततःसंवत्सरमुदकोपस्पर्शनमथाध्याप्यः। अथयस्यपितृपितामहावनुपनीतौस्यातांते ब्रह्महसंस्तुताः तेषामभिगमनंभोजनंविवाहमितिवर्जयेत् तेषामिच्छतांप्रायश्चित्तम् ॥ यथा ॥ प्रथमेतिक्रमेऋतुरेव संवत्सरेचोपनयनम् ततोदकोपस्पर्शनम् ॥ प्रतिपुरुषंसंख्यायसंवत्सरान्यावतोऽनुपनीताःस्युः पवित्रेणांतरसेनेत्यनेनसप्तभिर्व्याहृतिभिरेववाध्याप्यः। यस्यप्रपितामहादेर्नानुस्मर्येत उपनयनम् ते श्मशानसंभूतास्तेषामभ्यागमनं भोजनंविवाहमिति वर्जयेत्तेषामिच्छतांप्रायश्चित्तंद्वादशवर्षाणिब्रह्मचर्यंचरेदथोपनयनम् ततउदकोपस्पर्शनम् ॥ पावमान्यादिभिरथगृहमेधोपदेशोनाध्यापनम् ॥ ततोयोनिवर्त्तते तस्यसंस्कारोयथा ॥ प्रथमे तिक्रमेततऊर्ध्वप्रकृतिवत् ॥ अस्यार्थः ॥ अतिक्रांतेसावित्र्याःकालेउपनयनकालेविप्रादीनांषोडशद्वाविंशतिचतुर्विंशतिवर्षात्मके ऋतुंमासद्वयंयावत्त्रैविद्यकं वेदत्रयसंबंधि ब्रह्मचर्य्यं भैक्ष्याशनगुरुशुश्रूषादिकंचरेत् वेदत्रयार्थंब्रह्मचर्य्यंचरेदिति

धारणकर्के फेर यज्ञोपवीत पावे तिसतें उपरंत जलका स्पर्शन करे और पावमान्यादि जो मंत्रहैं तिन्होंकर्के गृहस्थकाउपदेशकरे और इनको अजेतकपढाणा नहिं। तिसतें उपरंत जो तिसका संस्कारहोहै सो करे प्रथम अतिक्रमविषे तिसतें उपरंत गायत्री पढाकर तिसके साथ व्यवहार करलेवे कोई स्पर्शादिविवेक न करे ॥ अव इसीपूर्वोक्त स्मृतिका अर्थस्पष्टकर्के कहतेहैं अतिक्रांत इतिव्यतीत जो गायत्रीका काल तिसमें यज्ञोपवीत काल जो विप्रादियोंका ब्राह्मण क्षत्री वैश्य इनका सोला १६ वाई २२ चौवी २४ वर्ष तक जिसका नहि होया है सो ऋतु क्या दो २ महीने संपूर्ण त्रैविद्यक जो वेदत्रयसंबंधि ब्रह्मचर्य्य तिसको करे और भैक्षाशन क्या भिक्षाका अन्न मांग कर्के भोजन करे और गुरु शुश्रूषादि क्या गुरुकी सेवा तिसको करे और वेद त्रय जो ऋग्यजुसाम इनके निमित्त ब्रह्मचर्य्य धारण करे तद शुद्ध होताहै

ब्रह्मचर्य्यतें उपरंत यज्ञोपवीतपावे तिसतें उपरंत एकवर्षपर्य्यंत उदकोपस्पर्शकर्म्म करे अर्थात् दिन दिनमे मंत्र सहितअपणे सूत्रोक्तविधिकर्के स्नानकरे तिसतें उपरंतपढाणेयोग्यहै इसमे कोई कहतेहैं कि उदकोपस्पर्शनकाहि अर्थहै प्रत्यहमित्यादिपभीध्यान रक्षणाचाहिए। और जिसव्रात्यके पिता पितामह व्रात्यहोवे सो तीनों ब्रह्महत्या करणवालेके तुल्यहैं तिनोंका मंगल स्थानमे जो आगमन और तिनके प्रति ज्ञातिकार्य्य सिद्धिके निमित्त जो गमनहै और भोजन विवाह तिनके वर्जितहैं जेकर एह शुद्धिकी इच्छा करे तो अग्गे कहणा जो प्रायश्चित्तहै सो करे। ऋतुके स्थान एक वर्ष जानणा। तिसतें पुरुष पुरुष प्रति तीनवर्ष ब्रह्मचर्य्य करणे योग्यहै इसतें उपरंत यज्ञोपवीतपावे तिसतें उपरंत एकवर्षपूर्वोक्तउदकोपस्पर्शनकरे अव तिसमें जोमंत्रहैं सोकहतेहै(यादंतियश्चदूरकेइति सप्तयेनदेवाःपवित्रेणेति। यजुःपवित्रम्। कयानश्चित्रआभुवदूतीसामपवित्रम्। हंसः शुचिपदित्यांगिर

अथब्रह्मचर्य्यानंतरमुपनयनम् ततःसंवत्सरंयावदुदकोपस्पर्शनम्। प्रत्यहंसमंत्रकंस्वगृह्योक्तविधिनास्नानम् ॥ तदनंतरमध्याप्यः। यस्यतुव्रात्यस्यपितृपितामहौव्रात्यौस्यातांतेत्रयोपिब्रह्महशब्दवाच्याः ॥ तेषामागमनम्। तान्प्रतिज्ञातिकार्य्यसिद्ध्यर्थं गमनं भोजनविवाहौच वर्जयेत्। तेषांशुद्धिमिच्छतांवक्ष्यमाणंप्रायश्चित्तम् ऋतोःस्थानेसंवत्सरः तेन प्रतिपुरुषंवत्सरत्रयंब्रह्मचर्य्यंकार्य्यम्॥ ततःसंवत्सरमुदकोपस्पर्शनम् तत्रमंत्राः यादंतियश्चदूरकेइति। सप्तयेनदेवाः पवित्रेणेति ॥ यजुःपवित्रम्। कयानश्चित्रआभुवदूतीतिसामपवित्रम् हंसःशुचिषदित्यांगिरसम्। एतेचमंत्राःप्रायश्चित्तार्थमध्येतव्याः। कृतप्रायश्चित्तोवाध्याप्यः ॥ यस्यतुप्रपितामहादेरुपनयनंनस्मर्यते तत्राथादेतेषामपिपुरुषाणामनुपनीतत्वम् तेसर्वेश्मशानवदशुचयः तेष्वागतेष्वभ्युत्थानं भोजनंच वर्जयेत् आपद्यपिनकुर्यादित्यर्थः तेषांस्वयमेवशुद्धिमिच्छतांप्रायश्चित्तानंतरमुपनयनम् तदनंतरसंवत्सरमुदकोपस्पर्शनं पूर्वोक्तैर्मंत्रैस्ततोनाध्यापनं किंतुगार्हस्थ्योपदेशनम्

सम्)इतने मंत्र प्रायश्चित्तके निमित्त पढाणेयोग्यहैं परंतु जिससमय प्रायश्चित्त कर लेवे तव पढाणे योग्यहैं जिसके प्रपितामहादिका उपनयन नहि स्मरणकीता अर्थात् एह वात श्रवणमे नहि आई कि इनके प्रपितामहादिको यज्ञोपवीतथा जिनके सो प्रपितामहादिये तिनांपुरुषांका भी अनुपनीतत्वहै सो संपूर्ण श्मशानकी न्याई अपवित्र होतेहैं ॥ तिनके आगमनमें अभ्युत्थान जो है उठ खडेहोणा सो नहि करे और भोजनभी तिसके साथ नहि करे संपत्तिकी क्या वातहै आपत्तिमें भी भोजन अभ्युत्थानको नहि करे ॥ सो जेकर आपहि शुद्धिकी इच्छाकरे तव तिनको प्रायश्चित्त करणेतें उपरंत उपनयन करणे योग्यहै। तिसतें उपरंत वर्षभर जलका आचमन रूप जो वेदोक्त कर्म तिसको पूर्वोक्त मंत्रों कर्के करे और तिसते अनंतर तिसको नहि पढाणा किंतु गृहस्थ धर्मका जो उपदेश तिसको करे ॥

ओर तिसतें उपरंत उपदिष्ट जो गायत्रीका काल तिसके अतिक्रम विषे वचनहै ततइति इस का अर्थ एह है कि तिसतें उपरंत ब्रह्मनिकी न्याई जानणा और नहि उल्लंघन होया जोंगायत्री काल तिसकी न्याई व्यवहार करणें योग्य है अर्थात् उसकी निन्दा नहि करणी ॥ अब आग राजी कहतेहै व्रात्यस्तोमैरिति व्रात्यस्तोम नाम जो यज्ञ तिसतें पूजन करवाकर्के संपूर्ण द्विजा तियानें एह प्रायश्चित्तके निमित्त कर्के फेर यथा विधि कर्के उपनयनकोंप्राप्त करणा १ अब इसी विषें शंखलिखित स्मृतिसें कहतेहैं व्रात्यइति व्रात्यपुरुष चांद्रायण व्रत करे चपुनः गोदान करे इस का और पूर्वोक्त उद्दालकके व्रतका प्रत्याम्नाय सवा नौ गौआं दानकरे अर्थात् इनका मुल्लदे देवें। देशके उपद्रवादि कर्के पतितहै गायत्री जिसकी तिसविषें यमजी कहतेहैं पतितेति जि सकी गायत्री दश १० वर्ष वापंच ५ वर्ष पतितहोवे ब्राह्मणकी विशेष कर्के तैसेंहि राजन्य

ततउपदिष्टसावित्रीकालातिक्रमे ततऊर्ध्वंप्रकृतिवदनतिक्रांतसावित्रीकाल वत्संव्यवहार्यता। अंगिराः। व्रात्यस्तोमैर्याजयित्वाद्विजातीन्सर्वमेवहि नि ष्कृत्यर्थमिदंकृत्वायथाविध्युपनाययेत् १ अत्रशंखलिखितौ व्रात्यश्चान्द्राय णंचरेत् गोप्रदानंचकुर्य्यादिति। एतस्यचपूर्वोक्तोद्दालकव्रतस्यसपादनवधे नुरूपस्यतत्प्रत्याम्नायस्यतुल्यत्वम् देशोपप्लवादिनापतितसावित्रीकेयमः। पतितायस्यसावित्रीदशवर्षाणिपंचच ब्राह्मणस्यविशेषेणतथाराजन्यवैश्य योः१ प्रायश्चित्तंभवेत्तेषांप्रोवाचवदतांवरः ॥ विवस्वतःसुतःश्रीमान्यमोध र्म्मार्थतत्त्वतः २ सशिखंवपनंकृत्वाव्रतंकुर्यात्समाहितः हविष्यंभोजयेदन्ये ब्राह्मणान्सप्तपंचवा ३ एकविंशतिरात्रंतुपिबेत्प्रसृतियावकं ततोयावकशुद्ध स्यतस्योपनयनंस्मृतम् ४ अत्रैकविंशतिरात्रयावकप्रसृतिपानेमासंपयः पानाल्पत्वात्सपादधेनुत्रयमेव

वैश्यकी पतित होवे १ तिनांको प्रायश्चित्तहोताहै कहण वालेयां विषे श्रेष्ट और सूर्य्यजीका पुत्र और शोभा वाला ऐसा जो यम सो धर्म्मार्थतत्त्वतें कहताहै २ सहित शिखाके मुंडन कर्के समा धानहोया २ व्रतको करे और कहतेहैं सात ७ वा पंच ५ ब्राह्मणाको हविष्य भोजन करवावे इसमें एह अभिप्रायहै कि महीनेका जो पयोव्रतहै सो २ प्राजापत्यसें दूणाहै इसकर्के तिसका प्रत्याम्नाय ५ धेनुहैं तिसके हसाबसे ३ धेनु कहीहैं और इक्कीस २१ रात्रि प्रसृति क्या उष्प मात्र यवांका काढा पान करे तिसते उपरंत यावक कर्के शुद्ध होया जो पुरुष तिसका उपनय न कहाहै ४ इसविषें इक्कीस २१ रात्रि यावक प्रसृति मात्र पान करणें विषे महीना रोज ज लपानतें इसको छोटा होणेते इसके प्रत्याम्नाय वास्ते सवा त्रय गौआं दान करदेवे अर्थात् इ नका मुल्ल कल्पना कर्के देदेवे

तथेति तैसेंहि इसी पूर्वोक्त विषय विषें गायत्रीकालके व्यतीत होयां तिसमें व्रात्यके अधिकार विषें हारीत जी कहतेंहैं तेषामिति तिनांको प्रायश्चित्त होयाहै क्या महीना रोज दुग्ध पान करे और गौ की सेवा करें और जो पुरुष प्रायश्चित्त कर चुकाहै तिसकों वासिष्ठके कहेहोए जो व्रत विनां कर्के यज्ञोपवीत पावे जैसी प्रकृति क्या ब्राह्मण क्षत्री वैश्य अपणी अपणी जातीके अनुसार पावे और जैसी ऋतु जैसा छंद होवे तैसा हि करे ब्राह्मणको वसंत ऋतु क्षत्रीको ग्रीष्म वैश्यको शरद् ऋतु कहीहै और यथाछंद क्या अपणे २ वेदकी विधि कर्के करे ॥ इसमें और विशेष कहतेहैं यद्यपीति इत्थे यम जीका कथन कीयाहोया इक्कीस २१ रात्रिका व्रत है। तांभी इसके विषें महीनेंका जो व्रत किहाहै सो पृथक् जानणा परंतु इसमें क्षीर क्या दुग्ध पानके परिमाणकों न कहणेंतें जितनीक इच्छा होवे तितनाही पान करणा योग्यहै ॥ और यम जी के कथनमें यावक पान है प्रसृति क्या लप्प मात्र तितनाही परिमाणका किहाहै ति

तथास्मिन्नेवविषयेऽतिक्रांतकाले व्रात्याधिकारे हारीतः तेषांप्रायश्चित्तंमासंपयोभक्ष्यंगामनुगच्छेत् ॥ यश्चीर्णप्रायश्चित्तस्तंवसिष्ठव्रतैरुपनयेयुः यथाप्रकृतिऋतुछंदोविशेषात् । ऋतुर्वसंतग्रीष्मशरदादिकःछंदोवेदः स्ववेदोक्तविधिनेत्यर्थः ॥ यद्यपियमोक्तमेकविंशतिरात्रमत्रानुमासंपृथगपिक्षीरपरिमाणानुपदेशाद्यथेष्टमेवपानम् यावकपानंतुप्रसृतिपरिमितमल्पत्वाद्विकल्पः अत्रत्येतिकर्तव्यतायांकिंचिद्गुरुत्वाद्यथोक्तमेवेति इतिव्रात्यता प्रायश्चित्तं त्रयोविंशम् २३ ❀ अथबंधुत्यागेप्रा० एतच्चप्राग्विवृतम् बंधुत्यागे त्रैमासिकंगोवधव्रतं कामतः अकामतस्त्यागेयोगीश्वरोक्तंव्रतचतुष्टयं योज्यमितिमिताक्षरा इतिबंधुत्यागेप्रा०२४ ❀ अथभृत्याध्यापनप्रा० ॥ एतल्लक्षणंतूक्तंप्राक् तच्चपिबेद्ब्रह्मसुवर्चलामित्यनुवृत्तौ विष्णुः भृतकाध्यापनं कृत्वाभृतकाध्यापितस्तथा अनुयोगप्रदानेनत्रीन्पक्षान्नियतः पिबेत् १ पक्षत्रयंब्रह्मसुवर्चलांपिबेदित्यर्थः

सको थोडा होणेंते विकल्प जानणा ॥ और इस कर्त्तव्यताविषें यम जीके कथन किये होए प्रायश्चित्तको गुरु क्या वडा होणेंतें यथोक्तहि प्रायश्चित्त करें अर्थात् महीनें वालाही प्रायश्चित करे क्यां कि इसमें विकल्प नहिंहैं ॥ एह व्रात्यतारूप जो उपपातक तिसके प्रायश्चित्तका प्रकरण पूराहोयाहै एहप्रकरण त्रेयांहै २३ ❀ अब बंधुके त्याग विषें प्रायश्चित्त कहतेंहैं एतदिति इसका लक्षण पीछे किहाहै इच्छातें बंधुत्याग विषें त्रय ३ महीनेंका गोवध व्रत करे ॥ अकामतें त्यागण विषें याज्ञवल्क्यके कथन कीते होये चार व्रत करे एह मिताक्षरामें कयाहै एह यथाशक्तिकर्के जोडने योग्यहै एहबंधुके त्यागका प्रायश्चित्त समाप्तहोया २४ ॥ ❀ अब मजूरी लैकर्केजो पढाना तिसके विषें प्रायश्चित्त कहतेहैं एतदिति इसका लक्षण पीछे कयाहै ब्रह्मसुवर्चला वूटी नूं पीवे इस प्रसंग विषें विष्णु स्मृतिमे विष्णु जी कहतेहैं ॥ मजूरीले कर्के जो पढावे और मजूरीदे कर्के जो पढे और अनुयोगके प्रदानकर्के त्रय पक्ष ब्रह्मसुवर्चलावूटीकोपानकरे अनुयोगका अर्थअगेहै १

अन्विति अनुयोग नाम यशके अथवा द्रव्यके अर्थ अच्छीतरह पडन वालेको भीतुं नाहिं अछीतरह पडताहै ऐसा गुरुके कहणेका नामहै और पडन वाला पडाने वालेको अपणी वडयाई वास्ते प्रष्ण पूर्वकखंडनकरे अर्थात् भाकिसे न पडे तदभीएही प्रायश्चित्त करणायोग्यहै अब इसीमे उदाहरण कहतेहें यथेति जैसे अहिंसा जो है सो परमधर्म्महै ऐसा गुरुने कहा तो शिष्य कहताहै कैसे यज्ञमे हिंसा होतीहै तो गुरु कहताहै कि यज्ञकी जो हिंसा है उसका नाम हिंसा नाहिं है तो शिष्य कहताहै कि हिंसाशब्दका अर्थ प्राण वियोगहै सो यज्ञमें भी है सो किसप्रकार अहिंसाहै इत्यादिरूप जो खंडनहै इसप्रकार विवाद करदे होए मेरेको लोक अधिक विद्यावान् जाणेगे एह शिष्यका अभिप्राय हैं और गुरुके पक्ष मे स्पष्ट जानणा तैसेहि और स्मृतिमे कहतेहैं

अनुयोगोयशोर्थिद्रव्यार्थिवा सम्यगधीयानस्य न सम्यगर्धापे इत्याक्षेपः अध्येताऽध्यापयितारंस्वोत्कर्षार्थंप्रष्णपूर्वमाक्षिपतिचेत्तदापीदंप्रायाश्चित्तं कुर्यादित्यर्थः यथाऽहिंसा परमोधर्म्मइति गुरुणोक्ते कथंयागेहिंसा तत श्चयागीयाहिंसानहिंसेत्युक्तेहिंसाशब्दार्थोवाच्यः प्राणवियोगानुकूलव्या पारश्चतदायागेपि सवर्त्तते सा कथमहिंसेत्यादिरूपआक्षेपः ॥ एवंविवदं तंमांलोकोऽधिकंविद्यावंतंजानीते इतिशिष्याभिप्रायः गुरुपक्षेस्पष्टम् तथा चस्मृत्यन्तरम् कृतानुयोगानध्येतुः पतितान्मनुरब्रवीदिति त्रीन्पक्षांस्तु पयःपिबेदितिहारीतीयपाठः ॥ उत्कर्षहेतोरधीयानस्यकिंपठसिनाशितं त्वयत्येवंपर्य्यनुयोगोऽनुयोगप्रदानमितिशेखरः अनुयोगप्रदानाभ्यासेपा तित्यमिति ॥ शातातपः ॥ ब्रह्मविक्रयानुयोगनियोगेषुचतुर्विंशतिर्ब्रह्मरूपा णिदध्यादिति ॥ ब्रह्मरूपंवेदपारायणम् ब्रह्मविक्रयोमूल्येनवेदपाठोवे दाध्यापनंवा अनुयोगस्तिरस्कारार्थंहेतुवादप्रष्णः नियोगोभयंकरस्था नादौशिष्यादेःप्रेरणम्

कृतेति पडानें वाले साथ जो अनुयोग करतेहैं सो मनु जीने पतित कहेहैं त्रय पक्ष दुग्ध पान करे एह हारीत जीका वचनहै ॥ अपणी वडयाई वास्ते अच्छीतरह पडनवाले शिष्यको कहणा कि तू क्यापडताहैतैनें नाशकियाहै इसप्रकार जो कथन करणा उसका नाम अनुयोगप्रदानहै एहशेखरका मतहै अनुयोगप्रदानविषे वहुतअभ्यास होवे तद पतित होताहै अब शातातपजी कहतेहैं ब्रह्मेति वेद वेचणेके विषे और अनुयोग नियोग विषे चौवीस २४ वेदके पारायण करे तद शुद्ध होताहै । ब्रह्मविक्रय क्या मुल्लेकर वेद पाठ करणा अथवा मुल्लेकर वेदका पढाणा ॥ और अनुयोगक्या अनादरकरणेवास्ते जो हेतुपूर्वक प्रष्णहै ॥ और नियोगक्या भयवाले स्थानविषे जो शिष्यादियोंका भेजणा ।

अस्यैति इस प्रायश्चित्तका (एतदेवव्रतंकुर्यु रुपपातकिनोद्विजाः अवकीर्णिवर्जंशुद्ध्यर्थं चांद्रायण मथापिवेति) एह मनुजीके कथन किये होए और (उपपातकशुद्धिः स्यादेवंचांद्रायणेनतु पयसावापिमासेनपराकेणाथवापुनः) एहयाज्ञवल्क्यजीके कथन कीते होए प्रायश्चित्तों कर्के जात्यादियोंकी अपेक्षा कर्के इसमे विकल्प जानणे योग्यहै अर्थात् जैसीजाति ब्राह्मणा दिकी होवै वा जैसी शक्ति होवे तैसाहि प्रायश्चित्तकरे ॥ इस विषे प्रसंगमे जो आयाहै सो कुछक वसिष्टजी कहतेहैं पतितेति पतित चण्डाल शवको वेद सुनाणेमे त्रयरात्रि वाणी रोकरक्खे और भोजन न करे सहस्रपरमको अभ्यास करे तद पवित्र होताहै अब इसीका अर्थ स्पष्ट कक कहतेहैं शवश्रवण क्या मुडदे पास वेद पढना तिसका प्रा० इनप्रकारहै कि पतितादियोंके समीप जितनाकाल वेद पढे तितने हजार १००० मंत्रोंकाअभ्यासकरे तद

अस्यप्रायश्चित्तस्यमनुयोगीश्वरोक्तसामान्यप्रायश्चित्तैर्जात्याद्यपेक्षयाविकल्पः ॥ अत्रप्रासंगिकंकिंचिदिति वसिष्ठः ॥ पतितचण्डालशवश्रवणे त्रिरात्रंवाग्यताअनश्नंतआसीरन् ॥ सहस्रपरमंवाऽभ्यस्यन्तःपूताभवंतीतिविज्ञायते ॥ शवसमीपेऽध्ययनं शवश्रवणम् ॥ पतितादिसन्निधौ यावद्ब्रह्माधीतं तावद्ब्रह्मसहस्रपरमं सहस्रसंख्या यथाभवतितथाऽभ्यस्यन्तः पूयंतइत्यर्थः ॥ इदंचप्रकीर्णकेप्युक्तमिति इतिभृत्याध्यापनादिप्रायश्चितम् २५ २६ ॥ अथापण्यविक्रयेप्रा० । प्रदर्शितोऽस्यविषयः पूर्वम् ॥ हारीतः ॥ गुडतिलपुष्पमधुफलपक्वान्नविक्रये सोमायनम् (सोमकृच्छ्रः)लाक्षालवणमधुमांसतैलक्षीरदधिघृतगंधतक्रचर्म्मवाससामन्यतमविक्रयेचांद्रायणम् ॥

पवित्र होताहै एह प्रकीर्णक प्रकरणमें भी कहाहै परंतु अभ्यास इसजगा गायत्रीका अथवा जोमंत्रउसजगापढेथे तिनांकाजानणा एह मुल्लेकर पढानेका प्रायश्चित्तसमाप्तहोया २५ । २६ ॥ अब जिनोंवस्तुयोंके वेचणेमें पापहोताहै तिनका प्रायश्चित्तकहतेहैं इसकालक्षण पीछेकहाहै इसमें हारीत जीकावचनहै गुडेति गुड तिलपुष्प मूलक्या कचालू आलू इत्यादि फल अंब केला आरु खरबूजा इत्यादि बहुत और पकान्न इन संपूर्ण वस्तुयोंके वेचणेतें सोमायण व्रत करे तद शुद्ध होताहै ॥ इसीकानामसोमकृच्छ्रभीहै और लाख लूण मखीर मांस तेल दुग्ध दधि घृत गंध वालीवस्तु तक्र क्या छाह चर्म्म वस्त्र इनमेंसें एकके वेचणेमेभी चांद्रायण व्रत करे तद शुद्धहोताहै अर्थात् एक एकके वेचणेमे चान्द्रायणहि व्रत करणा योग्यहै और चांद्रायण सोमायन का विशेष देखणा होवे तां व्रत करणमे देखलेणा ॥

तथेति तैसेही उन्न केश केसर पृथ्वीगौ वैल घर पत्थरशस्त्र इनके वेचणेविषे ओर मच्छीमांस आं दर हड्डी शंख नख शिप्पी इनके वेचणे विपे तप्तकृच्छ्र व्रतकरे तद शुद्ध होताहै ॥ तैसेहि ऊर्णि केशि केसरि इसपाठ विपे ऊर्णी क्याभिड्डुतें आदलेकर ओर केशीक्या चमर मृगादि ओर केसरि क्याघोडेनोआदलेकर जानणें ॥ पूर्व पाठ विपे केसर क्या मृग विशेष जानणा ओर हिंगु गुग्गुल हड्ताल मनःशिलाक्या धातु विशेष सुरमा गेरी लाख लूण मणि मोती मुंगा वैणव क्या वंजकेपात्र ओर वंज मृत्तिकाकापात्र इनके वेचणे विपे तप्तकृच्छ्र व्रत करे तद शुद्धहोताहै ॥ ओर वगीचा तलाआ झवचा वाउली ओर सुकृत जो व्रत वा पुण्य इन संपूर्णोंके वेचणे विषे त्रिकाल स्नानकरे ओर पृथ्वीमे शयनकरे ओर चौथे पहर भोजन करे ओर दश तें अधिक हजार

तथोर्णाकेशकेसरभूधेन्वनुडुद्वेश्मशस्त्रविक्रये मत्स्यमांसस्नाय्वस्थिशंखशुक्तिविक्रयेचतप्तकृच्छ्रः। तथोर्णिकेशिकेसरीतिपाठांतरम् तत्रोर्णिनोमेपादयः केशिनश्चमरादयःकेसरिणोऽश्वाद्याः । पूर्वपाठेकेसरामृगाविशेपाःहिंगुगुग्गुलहरितालमनःशिलांजनगैरिकलाक्षालवणमणिमुक्ताप्रवालवैणववेणुमृण्मयविक्रयेचतप्तकृच्छ्रः ॥ आरामतडागोदपानपुष्करिणीसुकृतविक्रये त्रिपवणस्नाय्यधःशायीचतुर्थकालाहारोदशसहस्रंगायत्रींजपन् संवत्सरेण पूतोभवति हीनमानोन्मानद्रव्यसंकीर्णविक्रयेचेति हीनमानंकूटप्रस्थादि हीनोन्मानंकूटतुलादि ताभ्यांविक्रये अन्यवस्तुमिश्रितमन्यवस्तुद्रव्यसंकीर्णं यथा जलमिश्रितंदुग्धम् यवमिश्रितोगोधूमस्तद्विक्रये विषमतुलादिधारणे त्रिषवणेत्यादि इदमभ्यासे सकृद्विषयेतुकृच्छ्रार्द्धम्

१०१० गायत्रीका जपकरतारहे तद वर्ष रोज करके पवित्रहोताहै ओर हीनमान हीनोन्मान ओर द्रव्यसंकीर्ण इनके वेचणे विपे भी एहि व्रतजानणा इनको स्पष्ट करके अग्गे कहतेहैं हीन मानक्या झूठा सेरटुपे रखणे ओर हीनोन्मान क्या झूठी कंडीतकडी रखणी तिना करके वेचणे विपे ओर दूसरी वस्तु करके युक्त जो वस्तु सो द्रव्यसंकीर्ण किहाहै जैसे जलयुक्त दुग्धहै ओर यवयुक्त कणकहै तिसके वेचणे विपे ओर झूठे तोलकेधारण विपे अर्थात् सेर वट्ट ओर त्राकडी खोटोनहि परंतु तोलणवालेको क्रिया खोटीहै तिसविषे त्रिपवण इत्यादि पूर्वोक्त प्रायश्चित्त करणा परंतु एह वहुत अभ्यास विपे जानणा एकवार विपे अर्द्धकृच्छ्रव्रत करे तद शुद्धहोताहै ॥

नेति रसे आदिके वेचणेविषे प्राजापत्य व्रतकरे अवशंख लिखितस्मृतिका वाक्य कहतेहैं नेति नाहिं वेचणे योग्य जो वस्तु तिनांको न वेचे ॥ तिल तेल दधि मखीर लूण लाख मदिरा मास सुकृत क्या पुण्य अन्न स्त्री पुरुष हस्ति अश्व गंध षट्रस क्षौमक्या अलसीका कपडा काला चर्म सोमवल्लीका जल नील इन संपूर्णवस्तुयोंके वेचणे कर्के शीघ्र हि पुरुष पतित होताहै ब्राह्मणवेचे तद वर्षरोज तप्तकृच्छ्र व्रतकरे तो शुद्धहोताहै ॥ तैसेंहि शस्त्र रसें भूमि अश्वादि इनके वेचणे विषे भी पूर्वोक्तप्रायश्चित्त करणा और घर यज्ञशाला वाग वगीचा सभा पानीकी धर्मशाला तलाओ खाता पुल इनांको वेचकर्के तप्तकृच्छ्र व्रत करे तद शुद्ध होताहै ॥ उद्यानागम इस पाठ विषे आगम नाम वेद जानणा ॥ अव पराशर जी कहतेहैं विक्रीयेति कन्या और गौकों वेच

निगडादिविक्रयेप्राजापत्यम् ॥ शंखलिखितौ नविक्रीणीयादविक्रेयाणि ॥ तिलतैलदधिक्षौद्रलवणलाक्षामद्यमांससुकृतान्नस्त्रीपुरुषहस्त्यश्वगंधरस क्षौमकृष्णाजिनसोमोदकनीलीविक्रयात्सद्यः पतति ॥ ब्राह्मणइत्युपक्रम्य संवत्सरंतप्तकृच्छ्रमाचरेदिति ॥ तथा शस्त्रबंधनभूम्येकशफविक्रयेचैतदेव गृहप्रतिश्रयोद्यानारामसभाप्रपातडागपूर्त्तसेतुविक्रयं कृत्वा तप्तकृच्छ्रमाचरेत् । बंधनं निगडादि उद्यानागमेतिपाठे आगमोवेदः । पराशरः ॥ विक्रीयकन्यकांगांचकृच्छ्रंसांतपनंचरेदिति । चतुर्विंशतिमते । सुरायाविक्रयं कृत्वाचरेत्सौम्यचतुष्टयम् लाक्षालवणमांसानांचरेच्चांद्रायणत्रयम् १ मध्वाज्यतिलसोमानांचरेच्चांद्रायणद्वयम् पयःपायसपूपानांचरेच्चांद्रायणव्रतम् २ ॥ दध्नश्चेक्षुरसस्यैवगुडखंडादिविक्रये सर्वेषांस्नेहपक्वानांपराकंतुसमाचरेत् ३ कदलीनारिकेरंचनारंगंबीजपूरकम् एतेषांपादकृच्छ्रस्याज्जंबीरादेस्तथैवच ॥ ४ ॥ कस्तूरिकादिगंधानांविक्रयेकृच्छ्रमाचरेत्

कर्के कृच्छ्र सांतपन व्रतकरे तद शुद्ध होताहै । चतुर्विंशतिमतविषे कहतेहैं सुरायाइति मदिरा को वेचकर्के चार चांद्रायण करे और लाख लूण मांसकों वेचे तद तीन चांद्रायण व्रत करे १ और मखीर घृत तेल अमृतवल्लीका रस इनांको वेचकर्के दो २ चांद्रायण व्रत करे और दुग्ध क्षीर पूडे इनांके वेचणेविषे चांद्रायण व्रत करे २ और दधि गन्नेकारस गुड खंड इनांके वेचणे विषे और संपूर्ण स्नेहकर्के पक्के होएके वेचणे विषे पराक व्रत करे ३ और केला नरेल नारंगी मौकडी और जंवीरी तें आद लेकर जो फल तिनांके वेचणे विषे कृच्छ्रका एक पाद व्रत करे तद शुद्ध होताहै ४ और कस्तूरिकादि सुगंधिके वेचणे विषे कृच्छ्र व्रत करे

तथेति तैसेही उन्न केश केसर पृथ्वीगौ बैल घर पत्थरशस्त्र इनके वेचणेविषे और मच्छीमांस आंदर हड्डी शंख नख शिप्पी इनके वेचणे विषे तप्तकृच्छ्र व्रतकरें तद शुद्ध होताहे ॥ तैसेहि ऊर्णि काशि केसरि इसपाठ विषे ऊर्णि क्याभिड्डुतें आदलेकर और केशीक्या चमर मृगादि और केसरि क्याघोडेनोआदलेकर जानणें ॥ पूर्व पाठ विषे केसर क्या मृग विशेष जानणा और हिंगु गुग्गुल हडताल मनःशिलाक्या धातु विशेष सुरमा गेरी लाख लूण मणि मोती मुंगा वैणव क्या वंजकेपात्र और वंज मृत्तिकाकापात्र इनके वेचणे विषे तप्तकृच्छ्र व्रत करें तद शुद्धहोताहै ॥ और वगीचा तलाऊ झवचा वाउली और सुकृत जो व्रत वा पुण्य इन संपूर्णांके वेचणे विषे त्रिकाल स्नानकरे और पृथ्वीमे शयनकरे और चौथे पहर भोजन करे और दश तेंअधिक हजार

तथोर्णाकेशकेसरभूधेन्वनुडुद्वेश्मशस्त्रविक्रये मत्स्यमांसस्नाय्वस्थिशंखशुक्तिविक्रयेचतप्तकृच्छ्रः। तथोर्णिकेशिकेसरीतिपाठांतरम् तत्रोर्णिनोमेषादयः केशिनश्चमरादयःकेसरिणोऽश्वाद्याः । पूर्वपाठेकेसरामृगाविशेषाःहिंगुगुग्गुलहरितालमनःशिलांजनगैरिकलाक्षालवणमणिमुक्ताप्रवालवैणववेणुमृण्मयविक्रयेचतप्तकृच्छ्रः ॥ आरामतडागोदपानपुष्करिणीसुकृताविक्रये त्रिषवणस्नाय्यधःशायीचतुर्थकालाहारोदशसहस्त्रंगायत्रींजपन् संवत्सरेण पूतोभवति हीनमानोन्मानद्रव्यसंकीर्णविक्रयेचेति हीनमानंकूटप्रस्थादि हीनोन्मानंकूटतुलादि ताभ्यांविक्रये अन्यवस्तुमिश्रितमन्यवस्तुद्रव्यसंकीर्णं यथा जलमिश्रितंदुग्धम् यवमिश्रितोगोधूमस्तद्विक्रये विषमतुलादिधारणे त्रिषवणेत्यादि इदमभ्यासे सकृद्विषयेतुकृच्छ्रार्द्धम्

१०१० गायत्रीका जपकरतारहे तद वर्ष रोज कर्के पवित्रहोताहै और हीनमान हीनोन्मान और द्रव्यसंकीर्ण इनकें वेचणे विषे भी एहि व्रतजानणा इनकों स्पष्ट कर्के अग्गे कहलेहैं हीनमानक्या झूठा सेरटुपे रखणे और हीनोन्मान क्या झूठी कंडीत्रकडी रखणी तिनां कर्के वेचणे विषे और दूसरी वस्तु कर्के युक्त जो वस्तु सो द्रव्यसंकीर्ण किहाहे जैसें जलयुक्त दुग्धहै और यवयुक्त कणकहै तिसके वेचणे विषे और झूठे तोलकेधारण विषे अर्थात् सेर वट्ट और त्राकडी खोटीनहि परंतु तोलणवालेको क्रिया खोटीहै तिसविषे त्रिषवण इत्यादि पूर्वोक्त प्रायश्चित्त करणा परंतु एह बहुत अभ्यास विषे जानणा एकवार विषे अर्द्धकृच्छ्रव्रत करें तद शुद्धहोताहै ॥

आदिके वेचणेविषे प्राजापत्य व्रतकरे अवशंख लिखितस्मृतिका वाक्य कहतेहैं नेति जो वेचण योग्य जो वस्तु तिनांको न वेचे ॥ तिल तेल दधि मखीर लूण लाख मदिरा मास सुकृत क्या पुण्य अन्न स्त्री पुरुष हस्ति अश्व गंध पट्रस क्षौमक्या अलसीका कपड़ा काला चर्म सोमवल्लीका जल नील इन संपूर्णवस्तुयोंके वेचणे करके शीघ्र हि पुरुष पतित होताहै ब्राह्मणवेचे तद वर्षरोज तप्तकृच्छ्र व्रतकरे तो शुद्धहोताहै ॥ तैसेंहि शस्त्र रस्से भूमि अश्वादि इनके वेचणे विषे भी पूर्वोक्तप्रायश्चित्त करणा और घर यज्ञशाला वाग वगीचा सभा पानीकी धर्मशाला तलाओ खाता पुल इनांको वेचकरके तप्तकृच्छ्र व्रत करे तद शुद्ध होताहै ॥ उद्यानागम इस पाठ विषे आगम नाम वेद जानणा ॥ अव पराशर जी कहतेहैं विक्रीयेति कन्या और गौकों वेच

निगडादिविक्रयेप्राजापत्यम् ॥ शंखलिखितौ नविक्रीणीयादविक्रेयाणि ॥ तिलतैलदधिक्षौद्रलवणलाक्षामद्यमांससुकृतान्नस्त्रीपुरुषहस्त्यश्वगंधरस क्षौमकृष्णाजिनसोमोदकनीलीविक्रयात्सद्यः पतति ॥ ब्राह्मणइत्युपक्रम्य संवत्सरंतप्तकृच्छ्रमाचरेदिति ॥ तथा शस्त्रवंधनभूम्येकशफविक्रयेचैतदेव गृहप्रतिश्रयोद्यानारामसभाप्रपातडागपूर्तसेतुविक्रयं कृत्वा तप्तकृच्छ्रमा चरेत् । वंधनं निगडादि उद्यानागमेतिपाठे आगमोवेदः । पराशरः॥ विक्री यकन्यकांगांचकृच्छ्रंसांतपनंचरेदिति । चतुर्विंशतिमते । सुरायाविक्रयं कृ त्वाचरेत्सौम्यचतुष्टयम् लाक्षालवणमांसानांचरेच्चांद्रायणत्रयम् १ मध्वा ज्यतिलसोमानांचरेच्चांद्रायणद्वयम् पयःपायसपूपानांचरेच्चांद्रायणव्रतम् २ ॥ दध्नश्चेक्षुरसस्यैवगुडखंडादिविक्रये सर्वेषांस्निहपक्वानांपराकंतुसमाच रेत् ३ कदलीनारिकेरंचनारंगंवीजपूरकम् एतेषांपादकृच्छ्रस्याज्जंवीरा देस्तथैवच ॥ ४ ॥ कस्तूरिकादिगंधानांविक्रयेकृच्छ्रमाचरेत्

करके कृच्छ्र सांतपन व्रतकरे तद शुद्ध होताहै । चतुर्विंशतिमतविषे कहतेहैं सुरायाइति मदिरा को वेचकरके चार चांद्रायण करे और लाख लूण मांसकों वेचे तद तीन चांद्रायण व्रत करे १ और मखीर घृत तेल अमृतवल्लीका रस इनांको वेचकरके दो २ चांद्रायण व्रत करे और दुग्ध क्षीर पूडे इनांके वेचणेविषे चांद्रायण व्रत करे २ और दधि गन्नेकारस गुड खंड इनांके वेचणे विषे और संपूर्ण स्नेहकरके पके होएके वेचणे विषे पराक व्रत करे ३ और केला नरेल नारंगी मौकडी और जंवीरी तें आद लेकर जो फल तिनांके वेचणे विषे कृच्छ्रका एक पाद व्रत करे तद शुद्ध होताहै ४ और कस्तूरिकादि सुगंधिके वेचणे विषे कृच्छ्र व्रत करे

केति कर्पूरादिके वेचणे विषे अर्द्ध कृच्छ्र व्रत करे और हिंग ते आद लेकर वेचणेविषे ८॥ स और कृच्छ्र व्रत करे तद शुद्ध होताहै ५ और तिलां को वेचकर के प्राजापत्य व्रत करे तद शुद्ध होताहै ५॥ धर्म वास्ते इकट्ठा कीताजो अन्नादि है सो कहिए धर्मार्थ ऐसे यज्ञार्थ भी जानणा और क्रिमिजात जो हैं पट्टवस्त्रादि अथवा कीडोंके समूह जिनतें वस्त्र बनतेहैं तिनको वेचे और रक्त पीतादि वस्त्र काला चर्म धर्मके अर्थ वेचे तद त्रय दिनका व्रत करे एह गर्ग जीका बचनहै ६ धनकर के मोहि तहोया २ लाभके वास्ते गौको वेचे तद प्राजापत्य व्रत करे और हस्तिके वेचणेमें चांद्रायण व्रत करे ७ और गधा अश्व खच्चर उष्ट्र इनांके वेचणे विषे पराक व्रत करे और पुत्रके वेचणे विषे एही व्रत दूणा करणा ८ और स्त्रीयोंके वेचणे विषे चांद्रायण व्रतकरे तद शुद्धहोताहै और पुरुषके

कर्पूरादेस्तदर्धस्याद्दिनंहिंग्वादिविक्रये ५ दिनमेकदिनीयंकृच्छ्रम्। तिलानां विक्रयंकृत्वाप्राजापत्यंसमाचरेदिति धर्मार्थंकृमिजातांश्चयज्ञार्थंविक्रयंनयेत् रक्तपीतादिवस्त्राणिकृष्णाजिनमथापिवा ॥. विक्रयेत्र्यहमेतेषांगर्गस्यवचनं यथा ६ गोविक्रयंनरःकृत्वालाभार्थंधनमोहितः प्राजापत्यंप्रकुर्वीतगजाना मैन्दवंस्मृतम् ७ खराश्वाश्वतराणांचकरभाणांचविक्रये पराकंतत्रकुर्वीतसु तानांद्विगुणंचरेत् ८ करभाउष्ट्राः नारीणांविक्रयंकृत्वाचरेच्चांद्रायणव्रतम् द्विगुणंपुरुषस्यैवव्रतमाहुर्मनीषिणः ९ चांद्रायणंप्रकुर्वीतएकाहाद्वेदविक्रये अंगानांतुपराकःस्यात्स्मृतीनांकृच्छ्रमाचरेत् १० इतिहासपुराणानांचरेत्सां तपनंद्विजः। रहस्यंपंचरात्राणांकृच्छ्रमेवसमाचरेत् ११ गाथानांनीतिशास्त्रा णांप्राकृतानांतथैवच सर्वासामेवविद्यानांपादकृच्छ्रंसमाचरेत् १२

वेचणे विषे बुद्धिमानोंने एही व्रतदूणाकिहाहै ९ और एकदिनके वेदपाठके वेचणे विषे चांद्रायण व्रत करे और वेदके अंगवेचणेविषे पराक व्रतकरे और स्मृतियोंके वेचणेमे कृच्छ्र व्रत करे १० और इतिहास पुराणके वेचणे विषे सांतपनव्रत करे और रहस्य शास्त्र और पंचरात्र जो तांत्रिक इनांके वेचणे विषे कृच्छ्रव्रतहि करे ११ और गाथा नीतिशास्त्र जो साहित्य और प्राकृत जो प्रकृतिपुरुषका कथन अर्थात् सांख्यशास्त्र इनांके वेचणेमें भी कृच्छ्र व्रत करे और इनातें अतिरिक्त विद्याके वेचणेमे पाद कृच्छ्र व्रतकरे तद शुद्ध होताहै १२ परंतु वेचणा इसजगा ऐसे जानणा कि तिसतिस शास्त्रके अध्ययनका फल वेचणा अथवा तिनके पुस्तकवेचणे एह अर्थ

...यवनजी कहतेहैं ॥ दधीति दधि मधु पिष्ट क्या पीतीहोई औषधादि वस्तु घृत पक्वान्न तेल छाह ... रस विष शस्त्र तिल अश्व नील रेष्मके वस्त्र लाखकर्के रंगेहोए वस्त्र लूण इनांके वेचणें विषे प्राजापत्यव्रत करणे योग्यहैं ॥ अब शातातपजी कहतेहैं आमेति कच्चामांस मदिरा अमृतवल्लीकारस लाखलूण घृत और संपूर्ण पुष्पके वेंचणेविषे द्विजचांद्रायणव्रतकरे तद शुद्धहोताहै पिछे लाक्षारक्त हाथा इसमें लाक्षा कहीहै इतना विशेषहै १ विष्णुजी कहतेहैं ॥ रक्तेति लालवस्त्र लालरंग गुड गंध मखीर रस उन्न इनांके वेचणें वाला पुरुष त्रयदिनका उपवासव्रत करे १ और पुरुषादिके विना प्राणी जो कुकुट मेषादि तिनांका वेचणा क्योंकि हिंसाका संभव होणेतें ॥ और भू

च्यवनः । दधिमधुपिष्टसर्प्पिःपक्वान्नतैलतक्रक्षीररससविषशस्त्रतिलाश्वनीलीकौशेयवासोलाक्षारक्तलवणाविक्रयेप्राजापत्यंचरेत् । शातातपः । आममांससुरासोमलाक्षालवणसर्पिषाम् विक्रयेसर्वपुण्यानांद्विजश्चांद्रायणंचरेत् १ ॥ विष्णुः ॥ रक्तवस्त्ररक्तरंगगुडगंधमधुरसोर्णाविक्रयीत्रिरात्रमुपवसेत् ॥ प्राणिभूपुष्पसोमविक्रयीतप्तकृच्छ्रंकुर्यात् ॥ तंचभूयश्चोपनयेत् ॥ शंखः ॥ धारयित्वातुलांवक्रांविषमांकारयन्वाणिक् सुरालवणमद्यानांकृत्वाक्षीरस्यविक्रयम् १ लाक्षायाश्चैवमांसस्यकुर्य्यादेवमहाव्रतम् विक्रेताप्राणिनामब्दंतिलस्यचतथाचरेदिति २ ॥ महाव्रतंद्वादशाब्दम् एतत्तुवहुशोऽभ्यस्तेवोध्यमिति ॥

मि पुष्प सोमइनांको वेचणवाला तप्तकृच्छ्र व्रतकरे फेर यज्ञोपवीत पावे तद शुद्धहोताहै ॥ अब शंखजी कहतेहैं ॥ धारयित्वेति तकडीको टेडी धारणकर्के जो बणियां विषम करे अर्थात् देणेमें जिसकर्के थोडा जावे और लयणेमें वहुतआवे ऐसी करे तिसको और मदिरा लवण मद्य दुग्ध इनांको वेच कर्के १ और लाख मांसके वेचणें विषे महाव्रत करे अर्थात् बारां १२ वर्षका व्रतकरे तदशुद्धहोताहै और प्राणी जो पुरुषादिके विना गौ हस्ति अश्व गर्दभ पाक्षि इत्यादियोंके वेचणें में और तिलके वेचणेंमें भी वर्ष रोजका व्रतकरें । एह प्रायश्चित्त पुरुषके वहुत अभ्यास विषें जानणेयोग्यहै और अल्पापराधविषे पूर्वोक्त विष्णुजीकाहि वचन देखणेयोग्यहै

ब्राह्मेति ब्राह्मण लवण पक्वान्न मधु दुग्ध दधि घृत जल संपूर्ण गंध तिल रक्त वस्त्र गुड तेल ग्राम्यके पशुआंविषों घोडा गधा इत्यादि और संपूर्ण वनके पशु बकरी भेड इनेताहै विद्या गौ शंख उन्न इनमेंसे एक एकके वेचणे में प्राजापत्य व्रत करे तो शुद्ध होता है । शंख जी कहतेहैं आरामेति वगीचा तलाओ झवचा वाउली पुण्य सोम क्या अमृत वल्लीका रस इनांके वेचणे में त्रिकाल स्नान करे पृथ्वीमें शयन करे चौथे पहर भोजन करे तो वर्ष रोज कर्के शुद्ध होताहै ॥ सुमन्तुजीकहतेहैं देवर्षीति देवर्षि कर्के देवताकी और ऋषिकी प्रतिमा सोम और संपूर्णलोकोंके विश्राम स्थानकेवृक्ष और अपनी संतान और कूप झवचा दान क्या दित्तीहोई वस्तु और अपणे आपका वेचणा इनमें त्रयकृच्छ्र व्रत करे ॥ भविष्यत्पुराणविषे

ब्राह्मणस्यलवणंपक्वान्नंमधुक्षीरंदधिघृतमुदकंसर्वंगंधास्तिलारक्तंवासोगुड
तैलानि ग्राम्यपशूनामेकशफाश्च सर्वेचारण्याःपशवोविद्यागावःशंखश्चो
र्णश्चेति विक्रयणेएकैकस्मिन्प्राजापत्यंचरेदिति ॥ सएव ॥ आरामतडागोद
पानपुष्करिणीसुकृतसोमविक्रयेत्रिषवणस्नाय्यधःशायीचतुर्थकालाहारः ॥
संवत्सरेणपूतोभवतीति ॥ सुमन्तुः ॥ देवर्षिसोमचैत्यात्मापत्यकूपोदपानदा
नात्मनांविक्रयेकृच्छ्रत्रयंचरेदिति । देवर्षीतिप्रतिमाभिप्रायेण ॥ भविष्यत्पु
राणे गुडंतिलांस्तथानीलींकेशगोधूमशल्यकान् विक्रीयब्राह्मणोगांचकृच्छ्रं
सांतपनंचरेदिति १ ॥ गोविक्रयेनिंदार्थवादमाह यमः ॥ गवांविक्रयकारी
तुगवांरोमाणियानितु तावद्वर्षसहस्राणिगवांगोष्ठेकृमिर्भवेदिति १ एता पां
निलघुगुरुप्रायश्चित्तानि कामाकामसकृच्छक्त्याद्यपेक्षया योजनीयानि ॥ ग
इदंचसर्वंप्रायश्चित्तजातमापदि वैश्यवृत्त्याजीवतोब्राह्मणस्यैव इतरेषां
त्वापदिनदोषः ॥ वैश्यवृत्त्यात्वविक्रेयंब्राह्मणस्यपयोदधीतिनारदोक्तेः

लिखतेहैं ॥ गुडामिति गुड तिल नील केश कणक और शल्यक क्या मृगाविशेष और गौ इनां को वेचकर्के कृच्छ्र सांतपन व्रतकरे १ अवगौके वेचणविषे निंदाकहतेहैं यमजी ॥ गवामिति गौ विषे आंको वेचण वाला पुरुष जितने गौके रोमहैं तितने हजार वर्ष गोशाला विषे कीडारहताहै एइ जो लघु गुरु प्रायश्चित्तहैं सो काम अकाम एकवार वहुत वार शक्त्यादियोंकी अपेक्षा कर्के जोडने योग्यहैं परंतु इसमें ऐसाविचारहै कि एह संपूर्ण जो पूर्वोक्त प्रायश्चित्तका समूहहै सो एह आपत्ति विषे वैश्यवृत्ति कर्के जीविका करण वाले ब्राह्मणकोंहि जानणा औरोंको आपत्ति विषे दोष नहिंहै इसमें प्रमाणकहतेहैं वैश्येति वैश्य वृत्तिविषे ब्राह्मणको पय दधि नहीं ऐसे वेचणा चाहिए एह नारदजी का कथनहै । आं

और मिताक्षरा विषे कहाहै यत्रेति जिनविषे निषेधहै तिन विषे विधिभीहै इसी कारणतें किते कितेक प्रायश्चित्त विधिविषे ब्राह्मणका ग्रहण कियाहै और शूद्रकों आपत्ति विषेंहि दोषकाअभाव शूलपाणि जी कहाहै सो अच्छानहि तैसेंहि पराशरजीकहतेहैं लवणमिति लवण मखीर मदिरा दधि तक्र घृत दुग्ध इसकर्के शूद्र शूद्रजातिकों दोष नहिं कहतेहैं इनके वेचणे विषे सभनों विषे विक्रयकों करे १ और कालिकापुराण विषे भी कहाहै विक्रयमिति संपूर्ण वस्तुयोंकों वेचता होया शूद्र दोष वाला नहि होताहै मखीर चर्म मदिरा लाख मांस इनांका त्यागकर्के और संपूर्ण वस्तुको वेच लेवे १ तिसके विषे पराशर और कालिकापुराण इनके दोनो वाक्योंको आपत्ति विषयविषे प्रमाणका अभावहोणेतें अर्थात् आपत्तिमे हि दोषका अभावहै और आपत्ति विना दोषहै एह

मिताक्षरायाम् यत्रचनिषेधस्तत्रैवप्रायोविधेयः अतएव क्वचित्क्वचित्प्राय श्चित्तविधौब्राह्मणग्रहणंकृतम् ॥ शूद्रस्यापद्येवदोषाभावमाह शूलपाणिः ॥ तन्नसाधीयः तथाचपराशरः।लवणंमधुमद्यंवादधितक्रंघृतंपयः नदुष्येच्छू द्रजातीनांकुर्यात्सर्वेषुविक्रयम् १ कालिकापुराणेपि । विक्रयंसर्ववस्तू नांकुर्वन्शूद्रोनदोषभाक् मधुचर्मसुरालाक्षांत्यक्त्वामांसंचपंचममिति १ ॥ तत्रानयोर्वाक्ययोरापद्विषयत्वेप्रमाणाभावात् अतश्चशूद्रस्यानापद्यपिम द्यादिपंचव्यतिरिक्तानिविक्रेयाणि क्षत्रियवैश्ययोस्त्वनापदिशूद्रवत्प्रतिप्र सवाभावात्सर्वाण्यविक्रेयाणि ।आपदितुनदोषः॥ निषेधानांप्रायश्चित्तानां चब्राह्मणमात्रविषयत्वोक्तेः ॥ ब्राह्मणानामेवत्वापदिवैश्यवृत्त्याजीवितुंदो षइतित्वार्षः ॥ इदंचप्रायश्चित्तजातमपण्यविक्रयार्जितधनपरित्यागपूर्व कंकार्यमित्याह मनुः

निर्णय नहि हुंदा इसी कारणतें शूद्रको आपत्तिके विनाभी मद्यादि पंचेते अतिरिक्त वस्तु वेचणे योग्यहैं ॥ और क्षत्रिय वेश्यकों आपत्तिने विना शूद्रका न्याई प्रतिप्रसवके अभाव होणेतें (निषेधका जो निषेधहै सो प्रतिप्रसव किहाहै) संपूर्ण अविक्रेय क्या नहिं वेचणेयोग्यहैं ॥ और आपत्ति विषे दोष नहिंहै क्योंकि निषेधोंकों और प्रायश्चित्ताकों ब्राह्मण मात्रका विषय होणेतें ॥ और ब्राह्मणांकोहि आपत्तिविषे वैश्य वृत्तिकर्के जीविकाकरणे सें दोषहै एह ऋषियोंका मतहै ॥ एह संपूर्ण प्रायश्चित्तोंका जो समूह है इसको अपण्य क्या जोनाहि वेचणे योग्य वस्तु तिसका वेचणा तिसकर्के इकठा कीता जो धनतिसको त्याग कर्के पिच्छें करे । इह मनुजी कहतेहैं

यदिति जो ब्राह्मण खोटे कर्म कर्केधन इकठा करतेहैं तिस के त्यागणे कर्के हि जप करणे कर्के वा तपकरणे कर्के शुद्ध होतेहैं १ इस विषे जप और तपस आं जानणा अर्थात् चाहे जप करे अथवा तप करे ॥ काममिति खेती करण वाल्ना आपही खेती विषे कामनासें उत्पन्न कर्के थोडा काल स्थित रहण वाले जो शुद्ध तिल तिनांको धर्मके वास्ते वेचदेवे २ इसी विषे कृष्यादि ग्रहण नियम वास्ते जानणा और तिस कर्के खरीदे जो तिल तिनांके वेचणे विषे दोषहोताहै इस विषे भी पूर्वोक्त मान्य उपपातक प्रायश्चित्तों कर्के विकल्प जानणा तिसविषे आपत्ति विना त्रयमहीने का मनुजीका व्रत जानणा और आपत्ति विषे याज्ञवल्क्यके चारव्रत जानणे एह व्यवस्थाहै एह नहि वेचणे योग्य जोवस्तु तिसके वेचणेके प्रायश्चित्तका प्रकरणपूराहोआ ॥ २७ ॥ ॐ इससे उपरंत

यद्गर्हितेनार्जयंतिकर्मणाब्राह्मणाधनम् ॥ तस्योत्सर्गेणशुद्ध्यंतिजप्येनतपसैवचेति ॥ १ ॥ अत्रजपतपसोर्विकल्पइति ॥ काममुत्पाद्यकृष्यांतुस्वयमेवकृषीवलः विक्रीणीततिलान्शुद्धान्धर्मार्थमचिरस्थितान् ॥ २ ॥ कृष्यादिग्रहणंनियमार्थम् ॥ तेनक्रीतानांतिलानांविक्रयेदोषएवअत्रापिसामान्योपपातकप्रायश्चित्तैर्विकल्पः तत्रानापदित्रैमासिकंमानवम् आपदितुयाज्ञवल्कयीयव्रतचतुष्टयमितिव्यवस्था इत्यपण्यविक्रयेप्रा० २७ ॐ एतदनंतरमाकराधिकार १ महायंत्रप्रवर्तनौ २ षधीहिंसा ३ स्त्र्याजीवना ४ भिचार ५ मूलकर्म्माणि ६ गणनायांव्याकृतानि । तत्रसामान्योपपातकप्रायश्चित्तानि मनुयाज्ञवल्क्योक्तानि अभ्यासे त्रैमासिकंमानवमनभ्यासेयोगीश्वरोक्तंव्रतचतुष्टयम् तत्रापिजातिशक्तिगुणापेक्षयातारतम्यंवोध्यम् अभिचारप्रायश्चित्तमयाज्ययाजनप्रसंगेपिप्रागुक्तम् ओषधीहिंसाप्रायश्चित्तमग्रेद्रुमच्छेदेपिवक्ष्यते इत्याकराधिकारादिप्रा० ।२८।२९। ३०।३१।३२।३३

आकराधिकार १ महायंत्रप्रवर्त्तन २ ओषधीहिंसा ३ स्त्र्याजीवन ४ अभिचार ५ मूलकर्म ६ इनों के अर्थ पीछे गणना विषे कहेहैं तिनांविषे सामान्य उपपातक प्रायश्चित्त मनु याज्ञवल्क्यकेकहे होए अभ्यास विषे त्रय ३ महीनेंका मनुजीका व्रत जानणा और अनभ्यास विषे याज्ञ वल्क्यके कथन कीयेहोए चारव्रत जानणे तिनां विषेभी जाति शक्ति गुणकी अपेक्षा कर्के न्यूनाधिकताजानणी अर्थात् जैसी जाति शक्ति और गुणहोवे तैसाही प्रायश्चित्त करणे योग्यहै कंवार इसका अर्थ पिछे होचुकाहै और अभिचारका प्रायश्चित्त अयाज्ययाजनके प्रसंग विषेभी पीछे कहाहै ओषधीहिंसाका प्रायश्चित्त अग्गे वृक्षच्छेद विषेभी कहेंगे एहखाणाजोहैं लूणलोहादिकी तिनके अधिकारका और महा यंत्रके प्रवर्त्तनादिका प्रायश्चित्त पूरा होया २८।२९।३०। ३१।३२।३३)

और मिताक्षरा कटणे विषे प्रायश्चित्त मनुजी कहतेहैं फलेति फलदेणे वाले वृक्षोंके कटणे विषे प्रायश्चित्त ऋचाका सौं १०० जपकरे और गुल्म वल्ली लता पुष्प वाले वृक्ष वीरुध इनांके विषेभी पूर्वोक्त जप करे ता शुद्धहोनाहै ॥ १ ॥ इसका अर्थ स्पष्टकर्के दिखातेहैं फलदाना फल देणे वाले जो आम्र पनसादि वृक्षहैं तिनांके कटणे विषे तैसेहि गुल्म जो हैं कांडों से रहित जानणे चपुना कुब्जकादि जानणे और वल्लीलता जो हैं ग्लोते लेकर और लता जो हैं वृक्षोंकी शाखामे सक्त और गुच्छे कर्के युक्त जो लता है सोवीरुधकहीहै सो कूष्मांडचादि अर्थात् पिंठदीवेलतें आदिलेकरजानणी और मतकहतेहैं गुल्म मालत्यादि जानणे और लता द्राक्षादि जानणी इनोंके विषे वहुवचन आदि के अर्थ वास्ते हैं

अथद्रुमच्छेदेप्रा० ।मनुः।फलदानांतुवृक्षाणांछेदनेजप्यमृक्शतम् गुल्मवल्लीलतानांचपुष्पितानांचवीरुधाम् १ फलदानामाम्रपनसादीनांवृक्षाणांछेदने तथा गुल्माअप्रकांडाः कुब्जकादयश्च वृहल्लतावल्ल्योगुडूच्याद यः लतावृक्षशाखासक्ताः प्रतानिन्योलतावीरुधःकूष्मांडयादयः॥ गुल्मा मालत्यादयः लताद्राक्षादयः वहुवचनमाद्यर्थे ततः क्षुपाःकरवीरादयः प्रतानाः सारिवादयः ओषध्यःशाल्यादय इतिशेखरः ॥ पुष्पितानामितिगुल्मादिभिःसंवद्ध्यतइत्यपरार्कः॥ पुष्पितानामुक्तेतराणांपूजार्हाणांमुनिवृक्षाणामित्यन्ये ॥ एतच्छेदनेचसावित्र्यादेर्ऋचःशतंजप्यम् इदंफलवद्वृक्षादिच्छेदनेलघुप्रायश्चित्तं अज्ञानतः सकृद्विषयम् अपरिग्रहीतेपुवृक्षादिष्वेतत्

और क्षुप करीरतें लेकर जानणे और प्रतान क्या सारिवावृक्षविशेषतें लेकर जानणे और औषधियां धान्यतें आदलेकर जानणीयां एह शेखरकामतहै और (पुष्पितानां) इस पदका गुल्मादि साथ संबंध करणा एह अपरार्कमे कहाहै ॥ और पूजाके योग्य और पीछे कहे जो वृक्ष उनोंसें विना पुष्पवाले मुनियोंके वृक्ष इसविधि जानणे एह किसी आचार्यका मतहै । इनोंके कटणे विषे सावित्र्यादि ऋचां का सौं १०० जप करे तद शुद्ध होताहै ॥ एह फल वाले वृक्षादिके कटणे विषे थोडा प्रायश्चित्तहै सोअज्ञानकर्के एकवार करणे विषे जानणा और नाहिं है किसका स्वत्व जिनां वृक्षोमे तिनां विषे एह प्रायश्चित्त जानणे योग्यहै ॥

श्रौर स्वत्वहै जिनांविषै तिनांमें प्रायश्चित्त कहतेहैं ॥ तृणमिति तृण वा काष्ट वा पु इनांको न पुछकर्के ग्रहण करे तद उसके हाथकटणें योग्यहैं १ इसमें दण्डको आधि स अां स्वत्व वालें विषे द्विगुण प्रायश्चित्त जानणा एह व्याख्याकरणेवालिउँका मतहै श्रौर यज्ञा तिल कटणेंमेंदोष नहिहै श्रौर खेतीके निमित्त हलादि वास्ते कटणेंमेंभी दोष नहिहै इस श्रौर वसिष्टजीकहतेहैं पुष्पेति पुष्प श्रौर फलके देणे वाले वृक्षोंको न कटे श्रौर हलचलाणें वास्ते कट लेवे क्योंकि हलादि वास्ते कटणके दोषको यज्ञकर्के दूर होणेतें एह मिताक्षरामें किहाहै इसमें एह अभिप्रायहै कि जो लोकखेती करतेहैं उनको बीजणे के समय अथवा दाणे घरल्याउणे के समय एक यज्ञकरणाहोताहै तिसकर्के उक्तदोष नहिहै ॥ अब यमजी कथन

तृणंवायदिवाकाष्ठंपुष्पंवायादिवाफलम् अपृष्ट्वापरिगृह्णीतहस्तच्छेदनम र्हतीतिदण्डाधिक्यदर्शनात् परिगृहीतिपुष्पिद्विगुणमितिव्याख्यातारः यज्ञा र्थंछेदने न दोषःतथाकर्षणांगभूतहलाद्यर्थत्वेपिनदोषः अत्रवसिष्ठः॥ पुष्प फलोपगान्पादपान्नहिंस्यात् कर्षणकरणार्थंचोपहन्यादिति कर्षणार्थच्छेदन दोषस्ययत्नेनपरिहार्यत्वादितिमिताक्षरा यमः। वृक्षलतागुल्मतृणच्छेदने पादकृच्छ्रकः फलवतांप्राजापत्यम् सएव त्रिरात्रंतुव्रतंकुर्य्याच्छित्वावृक्षंफ लप्रदम्॥ प्रसंगात्प्राणिवधप्रायश्चित्तावसरेवक्तव्यस्यफलाद्याश्रितानांव नस्पतिच्छेदेऽवश्यंमर्तव्यानांप्राणिनांवधस्यप्रायश्चित्तमाहमनुः॥ अन्नादि जानांसत्वानांरसजानांचसर्वशः फलपुष्पोद्भवानांचघृतप्राशोविशोधनम् १

कहतेहैं वृक्षेति वृक्ष श्रौर लता श्रौर गुल्म गुच्छे तृण इनांके कटणे विषे लघुकृच्छ्र व्रत करे तो शुद्धहोताहै श्रौर फलवाले वृक्षोंके कटणेंविषे प्राजापत्य व्रतकरे श्रौर फल देण वाले वृक्षको कटकर्के भी त्रय रात्रि व्रत करणाचाहिए एहभी यमजीने कहाहै ॥ श्रौर प्रसंगतें प्राणिवधके प्रायश्चित्तके अवसरमें फलादियोंके आश्रय वृक्षोंके कटणे विषे अवश्य कर्के मरणे योग्य जो प्राणी तिनांके मारणे विषे प्रायश्चित्तको मनुजी कहतेहैं अर्थात् वृक्ष फ लमें रहण वाले जो जीव तिनांके मारण विषे प्रायश्चित्तकहतेहैं ॥ अन्नादीति अन्नादितें उत्पन्न जो जीव श्रौर रसतें उत्पन्न जो जीव श्रौर फल पुष्पतें उत्पन्न जो जीव इनांके मारणें विषें घृत प्राशन करे तद शुद्ध होताहै १

और मिताक्षरा प्रायश्चित्त ... जो गुडादि इनातें उत्पन्न और उंबलादि फलातें उत्पन्न और मधूकादि ... उत्पन्न जो प्राणी तिनांके मारण विषें घृत प्राशन करे और भोजन न करे उसी दिन पाप नष्ट होतेहैं ॥ और औषधियां जो ग्राम्य वा वनकीयां तिनांके वृथाहि कटणे विषें एकदिन सारा गौआंकी सेवा वास्ते पीछेजावे तिसतें उपरंत सायंकाल दुग्धपान करे और भोजनका परित्याग कर देवे तो शुद्धहोताहै ॥ तैसेंहि याज्ञवल्क्य जी कहतेहैं वृक्षेति वृक्ष गुल्म लता वीरुध इनांके कटणे विषें सा १०० ऋचा का जप करे और औषधीके वृथा कटणे विषें क्षीरभोजन करे और एकदिन गौकी सेवाकरे तद शुद्ध होताहै १ तैसेंहि मनुजी कहतेहैं वृष्टिजानामिति वृष्टितें उत्पन्न जो औषधियां वा आपही वनविषे उत्पन्न होइ

रसजानां गुडादिजातानामुदुंबरादिफलजातानां मधूकादिपुष्पोद्भवानांप्राणिनांवधेघृतप्राशनंभोजनांतररहितंतद्दिनमेवपापनाशनम् ओषधीनांतुग्राम्यारण्यानांवृथैवछेदनेदिनंकृत्स्नमहर्गवांपरिचर्य्यार्थमनुगमनंतदंतेक्षीरपानम्। आहारांतरपरित्यागः। तथाचयाज्ञवल्क्यः। वृक्षगुल्मलतावीरुच्छेदनेजप्यमृक्शतम्। स्यादोषधीवृथाछेदेक्षीराशीगोनुगोदिनम् १ ॥ तथाचमनुः वृष्टिजानामोषधीनांजातानांचस्वयंवने वृथारंभेनुगच्छेद्गांदिनमेकंपयोव्रतम् १ वृथारंभोनिष्प्रयोजनंछेदनम् कुत्रचित्स्थानविशेषवृक्षादिच्छेदेदंडाधिक्यंदृष्टं तत्र प्रायश्चित्तमपितथा ॥ तदुक्तं ॥ चैत्यश्मशानसीमासुपुण्यस्थानेसुरालये जातद्रुमाणांद्विगुणोदमोवृक्षेषुविश्रुतइति १ ॥ अयंचऋक्शतजपोद्विजातिविषयोनपुनःशूद्रादिविषयः तेषांजपेऽनधिकारात् अतस्तेषांदंडानुसारेणद्विरात्रादिकंकल्पनीयम् ॥

वा जो औषधियां तिनांके वृथारंभविषे गौके पीछे जावे एक दिन दुग्ध पान करे तो शुद्धहोताहै ॥ १ ॥ वृथारंभ नाम निष्प्रयोजन कटणेका है ॥ कुत्रचिदिति कितेक स्थान विशेष विषें वृक्षादिके कटणेमें दंडकी आधिक्यता जाणीदीहै इस करके तिस विषें प्रायश्चित्त भी कहेहैं ॥ चैत्येति जो आश्रम श्मशान हद्द पुण्यस्थान देवताका मंदिर इनांविषें उत्पन्न होए वृक्षको कट देवे तिसको पूर्वोक्त दूणा दंड जानणा १ परंतु एह जो ऋचाका शत जपहै सो ब्राह्मण क्षत्री वैश्यमें जानणा और शूद्रादिविषें नहिं जानणा क्योंकि तिनांको जपका अधिकार नहिं है इस कारणतें तिनांको दंडके अनुसार दो २ अथवा तीन रात्रिका व्रत कल्पना करणा चाहिए इस बातकाभी इस जगा ध्यान रखणा

और गृंजनक्षा उपेति कि उपपातकविषें इस पाठकी अनर्थकताहोगी क्योंकि पूर्वोक्त प्रायश्चित्तका ...का और होणेतें तिस अनर्थकताके दूर करण वास्ते उपपातकोंका साधारण प्रायश्चित्त मनु याज्ञ...दिवास्ते का कथन किया होया इसविषें जानणा ॥ और इस सामान्य प्रायश्चित्तको गुरु है ...विषें अभ्यास विषयविषें कल्पना करणी योग्यहै ॥ और बडे फलोंके देण वाले जो नारिकेलादि वृक्ष तिनांको इच्छातें कटणेका जो अभ्यास तिस विषें वर्ष रोजका व्रत करे तो शुद्ध होताहै और इच्छातें एक वार कटणें विषें पीछे किहा जो जप तिसीको दूणा कर लेवे ॥ एह वृक्षोंके कट्टणे विषें जो प्रायश्चित्त था तिसका प्रकरण पूराहोया ॥ ३४ ॥

अब आत्मार्थ क्रियारंभका प्रायश्चित्त कहतेहैं इसका अर्थ पीछे प्रायश्चित्त गणनामें किहाहै अत्रेति इसविषेंभी यथा योग्य उपपातकोंके मनु योगीश्वरके कथन कीत्ते होए सामान्य प्रायश्चित्त जानणें ॥ एह अपणे वास्तेहि भोजनादि क्रियाका आरंभ करणा इसका प्रायश्चित्तपूरा होया ३५ अब निंदित अन्नके भक्षण में प्रायश्चित्त कहतेहैं इदमिति एह मनुनें उपपातकोंके मध्य विषें पढयाहै और विज्ञानेश्वरने अनुपपातकोंके विषें पठित कीताहै ॥ निंदित अन्नका भक्षण करणा इस जगा अन्नका निंदितत्व छे ६ प्रकारका ॥ स्वभाव १ काल २ संपर्क ३ क्रिया ४ भाव५ परिग्रह ६ इनकर्के होताहै तिसविषें स्वभावतें लशुनादियोंको निंदित जानणा और ग्रंथांतरविषें स्वभाव दुष्टको ही जाति दुष्ट कहतेहैं ॥ १ ॥ और कालतें शुक्तादि निंदित जानणे २ और संपर्कतें कुत्तेके साथ स्पर्शादि होणेतें अशुद्धि कहीहै ३ और क्रियातें हृत्थ कर्के दित्ते जो व्यजन क्या लवणादि तिनकी अशुद्धि जानणी ४

उपपातकमध्ये ॥ विशेषतः पाठस्यानर्थक्यपरिहारार्थमुपपातकसाधारण प्रायश्चित्तमप्यत्रभवति। एतच्चगुरुत्वादभ्यासविषयंकल्प्यम् ॥ महाफल प्रदानांनारिकेलादिवृक्षाणांकामतःछेदनात्यंताभ्यासेसंवत्सरव्रतम् ॥ सकृच्छेदेतुपूर्वोक्तजपोद्विगुणोविधेयः ॥ इतिद्रुमच्छेदेप्रायश्चित्तम् ॥ ३४ ॥ ॥ अथात्मार्थक्रियारंभप्रा० ॥ अत्रापियथायोग्यमुपपातकसामान्यप्रायश्चित्तम् ॥ ३५ ॥ अथनिंदितान्नादनप्रा- ॥ इदंचमनुनोपपातकमध्येपठितम् ॥ अनुपपातकमिदमितिविज्ञानेश्वरः ॥ निन्दितस्यान्नस्यादनमित्यन्नस्यनिन्दितत्वं स्वभावकालसंपर्कक्रियाभावपरिग्रहरूपोपाधिषट्केनभवति तत्रस्वभावाल्लशुनादेः १ ग्रंथांतरेस्वभावदुष्टमेवजातिदुष्टम् ॥ कालतःशुक्तादेः ॥ २ ॥ संपर्कात्श्वस्पर्शादेः ३ क्रियातोहस्तदत्तव्यंजनादेः ४

अब और भी भाव क्या और वस्तुमें और वस्तुका भ्रम होणा जैसें गन्नेके रसविषे मदिराका ज्ञान होणा तिसमें गन्नेका रस प्रतीत होणा ५ परिग्रहतें क्या पतितके अन्नादितें ६ इस विषे भी ब्राह्मणादियोंकों संपूर्ण पादोन अर्द्धपाद इस व्यवस्थातें प्रायश्चित्त जो देणा सो पूर्वोक्त हि जानणा ॥ ब्राह्मणकों संपूर्ण क्षत्रीको पादोन वैश्यको अर्द्धपाद एह व्यवस्था जानणी अब जाति दुष्टका उदाहरण कहतेहैं लशुनमिति लस्सन गाजरां अथवा थोमका कोई भेदहै और कोई कहतेहैं कि विषवाले वाण कर्के मारे होए मृगके मांसकानाम गृंजनहै गंडे छत्रियां शाकविशेष नालिका नलीकाशाक अलावु क्या घीआ एह सब जातिदुष्ट कहेहैं १ तिस विषे स्वभावतें अभक्ष्य भक्षणमें अर्थात् जातिदुष्टके भक्षणमें प्रायश्चित्त मनुजी कहतेहैं

भावोह्यन्यवस्तुनोऽन्यत्रसंभावना यथेक्षुरसादौसुरेयमितिसंभावना ततोपीक्षुरसादेः ५ परिग्रहात्पतितान्नादेः ६ अत्रापिब्राह्मणादिभ्यः सकलपादोनार्द्धपादशोव्यवस्थापनदिशा प्रायश्चित्तदानं पूर्वोक्तमेव बोध्यम् ॥ जातिदुष्टोदाहरणम् ॥ लशुनंगृंजनंचैवपलांडुःकवकानिच वार्त्तिकानालिकालावुउपेयाज्जातिदूषितम् १ कवकंछत्राकम् । तत्रस्वभावतोऽभक्ष्यभक्षणेप्रा. ॥ मनुः । छत्राकंविड्वराहंचलशुनंग्रामकुक्कुटम् पलांडुंगृंजनंचैवमत्याजग्ध्वापतेन्नरः १ स्मृत्यंतरे ॥ पलांडुंविड्वराहंचछत्राकंग्रामकुक्कुटम् लसुनंगृंजनंचैवजग्ध्वाचांद्रायणंचरेत् १ पलाण्डुःकंदविशेषः विड्वराहो ग्रामसूकरःछत्राकंछत्रसदृशम् । ग्रामकुक्कुटलशुनेप्रसिद्धे गृंजनंकंदविशेषः गंत्रेनकइतिउदीच्यप्रसिद्धः एतानिकामतःसकृद्भक्षयित्वाचांद्रायणंचरत् ॥

छत्राकमिति छत्रियां विड्वराह लस्सन ग्राम कुक्कड गंडा गाजरां इनांकोइच्छातें भक्षण करे तद द्विज पतित होताहै १ कुछक और भी स्मृत्यंतरमें कहतेहैं पलांडुमिति गंडा विड्वराह छत्राक ग्रामकुक्कुट लस्सन गाजरा इनांको भक्षण करे तो चांद्रायण व्रत कर्के शुद्ध होताहै १ पलांडु नाम कंदविशेषकाहै और विड्वराह नाम ग्रामसूकरकाहै और छत्राक छत्रीकीन्याई जो शाक विशेषहै तिसका नामहै और ग्राम कुक्कुट लशुन प्रसिद्धाहिहै और गृंजन भी कंद विशेष जानणा गंत्रेनक इस नाम कर्के उत्तर दिशामें प्रसिद्धहै एह संपूर्ण जो पीछे कहे हैं इनांको इच्छातें एकवार जो पुरुष भक्षण करता है सो चांद्रायण व्रत करे तो शुद्ध होताहै ॥

अब चतुर्विंशति मतसें कथनकरतेहें लशुनमिति लस्सन गाजर तृणराज क्या तालवृक्ष तिसका फल और नीली क्या औषधिविशेष इनांको द्विजभक्षणकर्के चांद्रायणव्रतकरे तद शुद्धहोताहै १ एह नइच्छातें वहुतवार वा इच्छातें एकवार भक्षणकरणेंमें पूर्वोक्तव्रतजानणा ॥ अलाबुमिति और अलाबु क्या घीआ और श्वेत भट्ठे कंडेतें रहित कुसुंभा और नालिकासाग और शणकेपुष्प इनां को भक्षणकरे तो एकदिनका उपवासव्रतकरे २ कंदेति और भ्रमवाले जो कंद मूल फलादि अर्थात् जिनका निर्णय धर्म्मशास्त्रसे नहि होया भक्ष्या भक्ष्यविचारमे इनांको भक्षणकरे तिसकेविषे उपवास होताहै एह शातातपजीका वचनहै ॥ ३ ॥ और इसीका अर्थ कहतेहैं संभ्रांत क्या भक्ष्यहैं वा अभक्ष्यहैं इस संदेहवाले जानणे और शणका पुष्प सिंबल और हस्तकर्के मथन

चतुर्विंशतिमतात्तु ॥ लशुनंगृंजनंचैवतृणराजफलंतथा नीलींचैवद्विजोभुक्त्वा चरेच्चान्द्रायणव्रतम् १ अकामतोऽभ्यासेकामतोवासकृद्भक्षणेएतत् तृण राजस्तालः ॥ अलाबुंशुभ्रवृंताकंकुसुंभकमकंटकम् नालिकाशाणपुष्पंच जग्ध्वादिनमभोजनम् २ कंदमूलफलादीनिसंभ्रांतानिनभक्षयेत् उपवासो भवेत्तत्रशातातपवचोयथा ३ संभ्रांतानिभक्ष्याभक्ष्यत्वेनसंदिग्धानि ॥ श णपुष्पंशाल्मलंचकरनिर्मथितंदधि वहिर्वेदिपुरोडाशंजग्ध्वानाद्यादहर्निश म् ४ लशुनादिपुयेतुल्यागंधवर्णरसादिभिः अभक्ष्यास्तेद्विजातीनांभुक्त्वा चांद्रायणंचरेत् ५ शंखः ॥ लशुनपलांडुगृंजनच्छत्राकनालिंगाविड्वराहग्रा मकुक्कुटनखरोममांसभक्षणेचान्द्रायणंकुर्य्यात् ॥ गृंजनमत्रलशुनानुकारि

कीताहोया दधि और वहिर्वेदिका पुरोडाश इसका अर्थ पिच्छे कहचुकेहैं इनांको भक्षण कर्के एक दिनरात्र भोजन न करे ॥ ४ ॥ और लस्सनादिके जो गंध वर्ण रसादि कर्के तुल्यहैं सो द्विजातियोंको अभक्ष्यहैं जेकर भक्षण करें तो चांद्रायण व्रतकर्के शुद्धहोतेहैं ॥ ५ ॥ अब शंखजीका मत कथन करतेहैं लशुनमिति लस्सन गंडा गाजर छतडियां नालिंग क्या फलविशेष ग्रामसूकर ग्रामकुक्कुट नख रोम मांस इनांके भक्षणविषे चांद्रायण व्रत करे तो शुद्ध होताहै । और गृंजनपद इस विषे लस्सनका अनुकारि क्या तुल्य जानणा

विषेति विष करके मिलित जो शस्त्र तिस करके जो मृग मृत होवे तिसका मांस अभक्ष्यहै तिसीका नाम गृंजनहै एह किसीका मतहै १ अब शातातपजी कथन करतेहैं लशुनमितिलस्सन गंडे गाजरां और दुष्टगंधि वालि वस्तु जैसें लस्सनादि और ग्रामसूकर ग्रामकुक्कुट मनुष्यमांस गोमांस इनां संपूर्णोंके भक्षण विषे द्विजातियोंको प्रायश्चित्ततें उपरत संस्कार करणा उचितहै इसमें एसा नहिं जानणा कि पलांडु भक्षण में प्रायश्चित्त थोडा है और गोमांस भक्षण में बहुत प्रायश्चित्त है इनका कैसें सहचार है इसवास्ते कथन करतेहैं कि प्रायश्चित्तके अंतमें संस्कार वास्ते पलांडु गोमांसका सहचार है अर्थात् सो दोनोमें एक जैसाहिहै ॥ सुमंतुजी कथन करतेहैं लशुनमिति लस्सन गंडे गाजरां कुंभीक क्या शाकविशेष श्राद्धका अन्न सूतक

विषदिग्धेनशस्त्रेणयोमृगःपरिहन्यते अभक्ष्यंतस्यतन्मांसंतद्धिगृंजनमिष्यते इतिकेचित्पठंति ॥ शातातपः ॥ लशुनपलांडुगृंजनपिच्छगंधिविड्वराहग्रामकुक्कुटनरगोमांसभक्षणेच सर्वेष्वेतेषुद्विजातीनांप्रायश्चित्तांते पुनः संस्कारंकुर्यात् । प्रायश्चित्तपार्थक्येऽपि प्रायश्चित्तांतसंस्कारार्थं पलांडुगोमांसयोःसहचारः ॥ सुमंतुः ॥ लशुनपलांडुगृंजनकुंभीकश्राद्धसूतिकाभोज्यान्नमधुमांसमूत्ररेतोऽमेध्याभक्ष्यभक्षणेसावित्र्यष्टसहस्रंमूर्ध्निसंपातानवनयेत् उपवासश्च । मूर्ध्निमस्तकेसंपातान् अवनयेत् उदकविन्दून्पातयेत् एतान्येव व्याधितस्य भिषक्क्रियायामप्रतिषिद्धानि भवंति यानिचैवंप्रकाराणितेष्वप्यदोषः । संपातावनयोपवासावनुपनीतबालविषये ॥ प्रचेताः

पीयूषंश्वेतलशुनंवृंताकफलगृंजनम्

का अन्न और अभोज्य अन्न मधु मांस मूत्र वीर्य विष्टा एह जो अभक्ष्य इनके भक्षणविषे एक हजार १००८ अष्ठ गायत्री मंत्र करके शिर विषे जल बिन्दु पावे और उपवासभी करे एहि अर्थ स्पष्टकीताहै मूर्ध्नीति परंतु एह जो पूर्वोकहैं सो व्याधिवाले पुरुषको औषधि करणें विषे अप्रतिषिद्ध क्या स्वीकार करणे योग्यहैं पूर्वोक्तकी न्याईं औरोंविषे दोष नहिं जानणा और जल बिंदुका पाणा उपवास एह यज्ञोपवीत रहित बालक विषे जानणा ॥ और गायत्रीको पूर्वोक्तजपके साथ एह यज्ञोपवीत वालेको जानणा और शूद्रादि विषे इसका प्रायश्चित्तहि नहि मद्यादि मिलितवस्तुयों विषे औषधीके अर्थ असाविवेक करणा उचितहै ॥ अब प्रचेताजी कथन करतेहैं पीयूषमिति पीयूष श्वेत लस्सन भंठे और गाजरां

गेंडे गुंद देवताका धन छतडियां १ ऊठणीका दुग्ध भेडीकादुग्ध इनको जो द्विजअज्ञानतें पान करे सो तीनरात्रिका उपवासव्रतकरे और पंचगव्य पान करे तो शुद्धहोताहै २ पीयूष नवीन प्रसूता गौके दुग्धका नामहै और इसमें असमर्थपुरुषको दानकरणाहियोग्यहै परंतु एभी जिसनें पान कर्के उलटी कीतीहै तिसविषे जानणा और जिसनें पानकर्केपचायाहै सो दूणा प्रायश्चित्तकरे ॥ अब यमजी कथन करतेहैं तंडुलीयकेति तंडुलीयक क्या शाकविशेष और कुंभीक शाकविशेष और एकवृक्षको काट कर उसीपर दूसरा वृक्ष लगाणा अर्थात् पीउंदलगाणी तिसतें उत्पन्नजो शाक अथवा व्रश्चनप्रभावनाम गुंदकाभीहै परंतु प्रकरणशाककाहै इसतें शाक विशेषहि समझणा उचितहै और नालिकाशाक और नालिकेरी और लस्सूडेके फल १ और सुगंधि

पलांडुवृक्षनिर्यासंदेवस्वंकवकानिच ॥ १ ॥ उष्ट्रीक्षीरमविक्षीरंयस्त्वज्ञाना त्पिबेद्द्विजः त्रिरात्रमुपवासश्चपंचगव्येनशुध्यति ॥ २ ॥ पीयूषंनवप्रसूतायागोःक्षीरम् ॥ असमर्थस्यतुदानमेवप्रच्छर्दितवतएतत् ॥ यमः ॥ तंडुलीयककुंभीकव्रश्चनप्रभवास्तथा नालिकानालिकेरीचश्लेष्मांतकफलानिच १ भूस्तृणंशिग्रुकंचैवखुखंडंक्षवकंतथा एतेषांभक्षणंकृत्वाप्राजापत्यंचरेद्व्रतम् ॥ २ ॥ नालिकेरीशाकविशेषः ॥ क्षवकंराजसर्षपः ॥ खुखंडाख्यं शाकविशेषः ॥ आपस्तंबः ॥ भक्षयेद्यदिनीलींतुप्रमादाद्ब्राह्मणःक्वचित् चान्द्रायणेनशुद्धिःस्यादापस्तंबोब्रवीन्मुनिः १ अथस्वभावदुष्टदुग्धपानेप्रा०

॥ संवर्त्तः ॥

वाला तृण और सुभांजना खुखंड क्षवक इनांको पुरुष भक्षण करे तो प्राजापत्यव्रत करणे कर्के शुद्ध होताहै २ और नालिकेरीभी शाकविशेष जानणा और क्षवक नाम राजसर्षप क्या राईका जानणा परंतु एह राई सभदेशकी निषिद्धनहि किंतु यवनदेशकी निषिद्धहै ऐसाभी किसेका समाधानहै और खुखंड नाम कर्के भी शाकविशेष जानणा ॥ अब आपस्तंबजी कथन करतेहैं भक्षयेदिति लेकर ब्राह्मण प्रमादतें नीली क्या वसमेंका भक्षण करे तो चांद्रायण व्रतकर्के शुद्ध होताहै एह आपस्तंब मुनिनें किहाहै इसमे एह अभिप्रायहै कि नीलीको शाकके वास्ते कोई भक्षण नहि करता परंतु कल्पके वास्ते किसे भक्षण कीती होवे तिसमे जानणा १ अब स्वभावतें जो खोटे दुग्धहैं तिनके पानविषेप्रायश्चित्त संवर्त्तजी कहतेहैं

अवत्सेति वत्स कर्के रहित गौका दुग्ध और गधीका दुग्ध स्त्रीका दुग्ध इनांको ब्राह्मण पानकरे और नवीन प्रसूत गौका दुग्ध दश दिनके उरे पान करे तो त्रयरात्रि यवोंका काढा पानकरे तदशुद्ध होताहै १ परंतु इस विषें यावकका पानमात्र हि करे तिस कर्के तृप्त न होवे एह अर्थ सिद्धहै और तिस विषें इच्छातें विना एकवार पान विषें उार स्मृतिका वचनहै अनिर्दशायाइति और नवीन प्रसूता गौका दश दिनते उरे दुग्ध ऊटनी गधी भेडीका और जिस गौके पीछे बैल लगाहै और वत्स रहित गौका दुग्ध १ और महिषीतें विना संपूर्ण वनके मृगोंकी स्त्रीका दुग्ध एह संपूर्ण वर्जित हैं और संपूर्ण वस्तु जो दो २ चार दिनकीहै अर्थात् वासीहै सोभी वर्जित जानणी २ परंतु दो २ चार ४ दिनका दधि होवे

अवत्सैकशफास्त्रीणांक्षीरंप्राश्यद्विजोत्तमः अनिर्दशायागोश्चैवत्रिरात्रंयावकंपिवेत् १ यावकस्यचपानमात्रंकार्य्यं नतु तेनतृप्येत् तत्रचाकामतःसकृत्पानेस्मृत्यंतरम् अनिर्दशायागोःक्षीरमौष्ट्रमैकशफंतथा आविकंसंधिनीक्षीरंविवत्सायाश्चगोःपयः १ आरण्यानांचसर्वेषांमृगाणांमहिषींविना स्त्रीक्षीरंचैववर्ज्यानिसर्वशुक्तानिचैवहीति २ दधिभक्ष्यंचशुक्तेषुसर्वंचदधिसंभवमित्युक्त्वा शेषपूपवसेदहरितिमनूक्तउपवासोद्रष्टव्यः। कामतस्तुयोगीश्वरोक्तस्त्रिरात्रोपवासोद्रष्टव्यः ॥ यत्तुपैठीनसिनोक्तम् ॥ अविखर्युष्ट्रीमानुषीक्षीरप्राशनेतप्तकृच्छ्रःपुनरुपनयनंच ॥ अनिर्दशाहगोमहिषीक्षीरप्राशने षड्रात्रमभोजनम् ॥

सो भक्षण करणें योग्यहै और संपूर्ण दहीसें उत्पन्नहोएजो व्यंजनकडी और मंथरेसें आदलेकर सो सभ शुक्तभी होवें तथापि भक्ष्यहैं इनकेभक्षणमे दोष नहि औरोंके भक्षण करणें विषें एक दिनका उपवास व्रत करणाचाहिए एह मनुजीका कथन कीता होया उपवास देखणें योग्यहै ॥ और इच्छाते भक्षण विषें याज्ञवल्क्यजीका कथन कीता होया त्रयरात्रिका उपवास व्रत जानणा योग्यहै ॥ जो पैठीनासिजीनें कथन कियाहै सो कहतेहैं अवीति भेडी गधी ऊटणी स्त्री इनांके दुग्ध पानकरणें विषे तप्तकृच्छ्र व्रत कर्के यज्ञोपवीत पावे तो शुद्ध होताहै और नवीन प्रसूत गौका वा महिषीका दश दिनके उरे दुग्ध पान कर्के छे ६ रात्रिका उपवासव्रत करे तो शुद्धहोताहै ॥

सर्वेति और संपूर्ण जो दोस्तनवालीयां पूर्वोक्त स्वरीते आदिलेकर कहिआंहैं परंतु बकरीते विना तिनांके दुग्ध पान विषे भी पूर्वोक्त व्रत जानणा ॥ जो शंखजी ने कथन कियाहै सो कहतेहैं क्षीराणीति जितने दुग्ध अभक्ष्य कहेहैं तिनांके भक्षणविषे प्रायश्चित्तहै परंतु तिनके विकार जो हैं दधि मावा इत्यादि तिनके भक्षणविषेभी बुद्धिमान् कहतेहैं जेकर भक्षणकरे तो सप्तरात्रिका व्रत समाधान होया २ करे तद शुद्धहुंदाहै १ एह यावक व्रत कथन कियाहै सो दोनो भी पैठीनसि और शंखजीके कहेहोए तप्त कृच्छ्र और यावक व्रत इच्छाते अभ्यास विषय विषे जानणे ॥ और जो शंख जी कथन करतेहैं संधिनीति संधिनीगौ और विष्टाभक्षण करण वाली गौ इनके दुग्ध पान विषे एक पक्ष का व्रत कथन कियाहै ॥ तिसवचनको दखातेहैं संधि नीति संधिनी और विष्टाभक्षक गौ के दुग्ध पान करणेमे पक्ष व्रत करे सो एह अभ्यास वि

सर्वासांद्विस्तनीनांक्षीरपानेप्यजावर्जमेतदेवेति ॥ यच्चशंखेनोक्तम् ॥ क्षीराणियान्यभक्ष्याणितद्विकाराशनेबुधः ॥ सप्तरात्रंव्रतंकुर्यात्प्रयत्नेनस माहितइतियावकव्रतमुक्तंतदुभयमपिकामतोभ्यासविषयम् ॥ यत्तुशंखेन संधिन्यमेध्यभक्षकक्षीरप्राशने पक्षव्रतमुक्तम् ॥ संधिन्यमेध्यभक्ष्याया भुक्त्वापक्षव्रतंचरेदिति ॥ तदभ्यासविषयम् ॥ सकृत्पानेतु गोअजम हिषीवर्जंसर्वाणिपयांसिप्राश्योपवसेत् अनिर्दशाहंताप्यपि ॥ संधिनीयम सूस्यंदिनीविवत्साक्षीरंचामेध्यभुजश्चप्राश्योपवसेदितिविष्णुनोपवासस्यो क्तत्वात् ॥ संधिनीवृषभेणोपजिगमिषुः ॥

षय विषे जानणा और एकवार दुग्ध पान करणेमें विष्णुजीका वाक्यहै गवितिगौ बकरी महिषी इनांते विना और संपूर्णोंके दुग्धको भक्षण करे तो उपवासव्रतकरणेसें शुद्ध होताहै और गौ अजमहिषीका दुग्ध जेकर दश दिनते उरे होवे तद तिसके पानविषेभी उप वासकरणा चाहिए जेकर दशदिनते अगेहोवेतां दोषनहि इसमें वचन कहितेहैं ॥ संधिनीति संधिनी गौ और यमसू क्या जिस गौने दो २ बछे दिते होण और स्यंदिनी क्या जिसका दुग्ध सदाहि चलतारहे और वच्छेरहित गौके दुग्धपानमें और विष्टाभक्षण वाली गौके दुग्ध पान विषे विष्णु जीने उपवास ही कथन कियाहै और संधिनी नाम उसकाहै जो बैल साथ गमन करणेकी इच्छा वालीहै

श्रौर स्यंदिनी नामदुग्ध बगाणे वाली गौकाहै ॥ स्पष्टकर्के कहतेहैं गविति गौ बकरी महिषी इनो के विना होरनेके दुग्ध पान विषे पूर्वोक्त प्रायश्चित्त है श्रौर दश दिनके उरे गौ अज महिषी इनाके दुग्ध पानमें भी उपवास करणा उचितहै ॥ श्रौर तैसेंहि वर्णोंके निबंधमेंभी प्रतिषेध है सो कहतेहैं अर्थात् किसे वर्णने कोई दूधपीणा श्रौर किसेने नहिंपीणा इसकी व्यवस्था करतेहैं ॥ क्षत्रियइति अपनी वृत्तिमें स्थित क्षत्रिय वा वैश्य वा शूद्र जो कपिला गौका दुग्ध पान करे तो इनातें परे पापी कोई नहिंहै अर्थात् इनकों वहुत पापहै केवल ब्राह्मणकों ही अधिकारहै १ इस विषयकी प्रकरण साथ संगति करतेहैं एवमिति इत्यादिविषे यद्यपि प्राय

स्यंदिनीस्त्रवत्क्षीरा गोऽजमहिषीवर्जेदुग्धपानेप्रायश्चित्तमिदम् ॥ दशा हाभ्यंतरेतु ॥ गोऽजमहिषीदुग्धपानेप्युपवासइत्यर्थः ॥ तथावर्णानिबं धनश्चप्रतिषेधः । क्षत्रियश्चापिवृत्तस्थोवैश्यःशूद्रोथवापुनः यःपिबेत्कपि लाक्षीरंनततोन्योस्त्यपुण्यकृदिति । एवमादौचयद्यप्रतिपदोक्तंप्रायश्चित्तंन दृश्यते तत्र शेषेषूपवसेदहरितिसाधारणप्रायश्चित्तमनूक्तंद्रष्टव्यम् चतुर्विं शतिमते स्त्रियाःक्षीरंद्विजःपीत्वाकथंचित्काममोहितः पुनःसंस्कृत्यचात्मा नंप्राजापत्यंचरेत्ततः १ स्मृत्यंतरम् ॥ त्वग्मांसमूर्णयासार्धमाविकंत्रितयं शुचि पुरीषमूत्रेसक्षीरेअपवित्रंत्रयंपुनः ॥ प्रमादादशनेतस्यदिनमेकंव्र तंचरेत् १ तस्यापवित्रत्रयस्यव्रतमभोजनम् ॥ पूर्वोक्तविषयमेतत् ॥

श्चित्त नहिं किहा तथापि (शेषेषूपवसेदहः) एह साधारण प्रायश्चित्त मनुजीका कथन कीता होया जानणा अब चतुर्विंशति मतविषे कहे होएका कथनकरतेहैं स्त्रियाइति जो द्विज कामके वश होया २ स्त्रीका दुग्ध पान करे तो अपणे आपका संस्कार कर्के प्राजापत्य व्रत करे तो शुद्ध होताहै १ अब श्रौर स्मृतिसें कथन करतेहैं त्वगिति चर्म्म मांस उन्न एह त्राय वस्तु भेडकी यां पवित्रहैं श्रौर विष्टा मूत्र दुग्ध एह त्रय भेडके अपवित्र कथन कियेहैं श्रौर तिसके प्रमाद तें भक्षणमें एक दिनका व्रत करणा योग्यहै १ एह भी पीछे कथन कीता जो विषय तिसविषे हि जानणे योग्यहै अर्थात् दुग्ध पानके विषयके प्रसंगमेंहि एह कथनहै

अब शातातप जो कथन करते हैं उष्ट्रीति ऊटणीका दुग्ध और भेडीका दुग्ध और मृत होए सूतकका अन्न और चोरका अन्न और नव श्राद्धका अन्न इनांको पुरुष भक्षण करे तो चांद्रा यण व्रत कर्के शुद्ध होताहै १ एह इच्छातें अभ्यास विषय विषे जानणा । अब पैठीनसि जो कहतेहैं अवीति भेडी गधी ऊटनी स्त्री इनके दुग्ध पान विषे प्राजापत्य व्रत कर्के यज्ञोपवीत पावे तो शुद्ध होताहै अब ॥ जावालजी कहतेहैं दश दिनतें उरे गौका दुग्ध और स्त्रीका दुग्ध ऊटनीका दुग्ध मदिरा और नव श्राद्धका अन्न इनांको भक्षण कर्के सांतपन व्रत करे १ परंतु एह इच्छातें विना एकवार भोजन विषे जानणा ॥ मदिरा नाम मद्यकाहै सो सुरातें अतिरि

॥ शातातपः ॥ उष्ट्रीक्षीरमाविक्षीरमन्नंमृतकसूतके ॥ चौरस्यान्नंनवश्राद्धं भुक्त्वाचांद्रयणंचरेत् १ कामतोभ्यासविषयमेतत् ॥ पैठीनसिः ॥ अवि खर्युष्ट्रीमानुषीदुग्धप्राशनेपुनरुपनयनंप्राजापत्यंच ॥ जावालिः ॥ अनिर्द शायागोःक्षीरंमानुष्यंचौष्ट्रमेवच मदिरांचनवश्राद्धंभुक्त्वासांतपनंचरेत् १ अज्ञानतःसकृद्भोजनेएतत् ॥ मदिरामद्यम् सुराव्यातिरिक्तम् । द्रव्यांतर ॥ तिरोहितरसरूपम् ॥ अंगिराः माहिष्यंगव्यमाजंचभक्ष्यंक्षीरेषुनिर्दिशेत् भुक्त्वापरमतःक्षीरंकृच्छ्रपादंसमाचरेत् ॥ १ ॥ अथस्वभावदुष्टमांसादि भक्षणेप्रा० ॥ तत्रग्रामकुक्कुटविड्वराहयोःप्रायश्चित्तंपलांड्वादिप्रसंगे प्रागुक्तमप्यत्रपुनःप्रासंगिकंनदोषाय ॥ अत्रमिताक्षरा ॥

क्त विषय विषे जानणा और जो द्रव्य तिनांते तिरोहित रसरूप है अर्थात् मदिरा और द्रव्य की होतीहै गुण और द्रव्यकी होतीहै जिसकर्के एह प्रायश्चित्त थोडाहै अब अंगिराजी कथन करतेहैं माहिष्यमिति महिषीका दुग्ध गौकादुग्ध बकरीका दुग्ध एह त्रय भक्ष्य कहेहैं इनांते विना औरोंके दुग्ध पान विषे एकपाद कृच्छ्र व्रत करे १ अब स्वभावतेंहि दुष्ट मांसादिके भ क्षण विषे प्रायश्चित्त कथन करतेहैं तत्रेति तिसविषे ग्राम कुकुट विड्वराह इनका प्रायश्चित्त प लांड्वादि प्रसंग विषे पीछे कहाभीहै इस विषे प्रकरण वास्ते फेर कथन कीताहै सो दोष वास्ते नाहीं जानणा इस विषे मिताक्षराकार कथन करतेहैं

तत्रेति तिस विषे इच्छातें एक वार भक्षण विषे (शेषेषूपवसेदहः) एह मनु जी का कथन कीना होया साधारण प्रायश्चित्त देखणे योग्यहै॥ और इच्छातें भक्षण विषे कहतेहैं चाषानिति चिषीहा लालपादोंवाले सोन पक्षी और कसाईकी हट्टीकामांस और वल्लूर क्या सुक्कामांस और मच्छ इनांको पुरुष इच्छातें भक्षण करे तो त्रय दिन उपवास व्रतकर्के शुद्ध होताहै १ एह याज्ञवल्क्य जी का किहा होया देखणे योग्यहै ॥ और इच्छातें बहुत अभ्यास विषे अभक्ष्यमांसके भक्षण कर्के सप्तरात्रि जल पान करे एह मनुजीका कया होया जानणा परंतु एह विट् सूकरादि मांसतें अतिरिक्त विषयविषे जानणा ॥ क्रव्येति और गृध्रादि सूकर उष्ट्र कुक्कुट मनुष्यकाक गधा

तत्र कामतः सकृद्भक्षणे शेषेषूपवसेदहरितिमनूक्तंसाधारणप्रायश्चित्तंद्रष्टव्यम् ॥ कामतस्तु चाषानूरक्तपादांश्चसौनंवल्लूरमेवच मत्स्यांश्चकामतोजग्ध्वासोपवासस्त्र्यहंवसेदितियोगीश्वरोक्तंद्रष्टव्यम् ॥ कामतोभ्यासेतु जग्ध्वामांसमभक्ष्यंतुसप्तरात्रंपयःपिबेदितिमनूक्तंद्रष्टव्यम् ॥ इदंविट्सूकरादिमांसव्यतिरिक्तविषयम् ॥ क्रव्याद्विट्सूकरोष्ट्राणांकुक्कुटानांचभक्षणे नरकाकखराणांचतप्तकृच्छ्रंविशोधनमितिमनुनाजातिविशेषेणप्रायश्चित्तविशेषस्योक्तत्वात् ॥ एतन्मूत्रपुरीषप्राशनेप्येतदेव ॥ वराहैकशफानांतुकाककुक्कुटयोस्तथा क्रव्यादानांचसर्वेषामभक्ष्यायेचकीर्त्तिताः १ मांसमूत्रपुरीषाणिप्राश्यगोमांसमेवच श्वगोमायुकपीनांचतप्तकृच्छ्रंविधीयते॥ २

इनांके भक्षण विषे तप्तकृच्छ्र व्रत कर्के शुद्ध होताहै १ एह मनुने जाति विशेष कर्के प्रायश्चित्त विशेषको कथन करणेते अर्थात् पिच्छे केवल अभक्ष्य मांस किहाथा अब सूकरादिजातिनिर्देश कर्के किहाहै एही प्रायश्चित्त पूर्वोक्तोंके मूत्र विष्टाके भक्षण विषे भी जानणा ॥ वराहेति और वराह क्या सूकर और एकशफ जो हैं गर्दभादि और काक कुक्कुट क्रव्याद जो व्याघ्रादि तिनां सभनांके मध्यविषे जो अभक्ष्य कथन कीतेहैं १ तिनका मांस मूत्र पुरीष क्या विष्टा और गौका मांस कुत्ता गोमायु क्या गिद्दड वानर इनांका मांस भक्षण जो पुरुष करता है सो तप्तकृच्छ्र नामक जो व्रत है तिसको करे तो शुद्ध होताहै ॥ २ ॥

अथवा बारां १२ दिनका उपवास व्रत करे और पिछेकर्के घृतका हवन करे अथवा कूष्मांडसं ज्ञकमंत्रोंकर्के घृतकाहवनकरे एह वृहद्यमस्मृतिमें कयाहै तिसके तिसविषे इच्छातें भक्षणमे ततकृच्छ्र व्रतकरे और अभ्यासविषे कूष्मांडहवनसहित पराकव्रतकरे एह व्यवस्था जानणी ॥ तैसेंहि प्रचे ता जी भी कहतेहैं श्वेति कुत्ता गिद्दड काक कुकुट पार्पत क्या मृगविशेष वानर चित्रा पिपी हा व्याघ्रादिका मांस गधा ऊट हाथी घोडा विट्शूकर गौ मनुष्य इनांके मांस भक्षण विषे ततकृच्छ्र व्रत करे और इनांके मूत्र विष्टा भक्षण विषे अतिकृच्छ्र व्रत करे इसमे गोमांस कर्के वनके गोपशुका मांसजानणा थोडा प्रायश्चित्तहोणेतें एहइच्छा कर्के भक्षणविषे जानणा। जो उश नसाका वचनहै सो कहतेहैं नरेति पुरुषका मांस और कुत्तेका मांस और गौका मांस घोडेका

उपोष्यवाद्वादशाहंकूष्मांडैर्जुहुयाद्घृतमितिवृहद्यमस्मरणात् तत्रकामत स्ततप्तकृच्छ्रः ॥ अभ्यासेतुकूष्मांडसहितःपराकइतिव्यवस्था ॥ तथाप्रचेत साप्युक्तम् श्वसृगालकाककुक्कुटपार्षतवानरचित्रकचापक्रव्यादखरोष्ट्रगज वाजिविड्वराहगोमानुषमांसभक्षणेतप्तकृच्छ्रमादिशेदपांमूत्रपुरीषभक्षणे त्वतिकृच्छ्रमिति इदंचकामकारविषयम्। यत्तूशनसोवचनम्। नरमांसंश्व मांसंचगोमांसंवाश्वमेवच भुक्त्वापंचनखानांचमहासांतपनंचरेदिति १ ॥ तदकामविषयम् पंचनखानामविहितानामित्यर्थः ॥ यत्त्वंगिरोवचनम् ॥ वलाकाभासगृध्राखुखरवानरसूकराः ॥ दृष्ट्वाचैषाममेध्यानिस्पृष्ट्वाचाम्य विशुध्यति ॥ १ ॥

मांस और पंचनखोंकें मांसको जो पुरुष भक्षण करे सो सांतपन व्रत करे १ सो एह नहिं इच्छातें भक्षण विषे जानणा ॥ भक्ष्यप्रकरण विषे अगे कहणेहैं गोधा कछपशल्यक खड्ग शशक ५ इनते भिन्न पंचनख जो व्यघादि इसके भक्षण विषे एह प्रायश्चित्तजानणा। परंतु इसमें एह विचारहै कि इसश्लोकके उत्तरार्द्धमे जो प्रायश्चित्त किहाहै सो इस प्रकरणके योग्य नहि तथापि प्रसंगसे किहाहै और दूसरे श्लोकमे प्रकरणोपयोगीहै इसकर्के दोषनहिहै। अव जो अंगिरा जी का वचनहै सो कथन करतेहैं वलाकेति वलाका क्या वगुलीयां और भास क्या पक्षिविशेष और गृध्र चूहा गर्दभ वानर सूकर इनोंकी विष्टाकों देख अथवा स्पर्श करे जो पुरुष सो आचमन करणे कर्के विशुद्धहोताहै १ ॥

वार१

च्छेति एह जो पूर्वोक्त वलाकादि इनांके विष्टादियोंकों इच्छाकर्के जो द्विजाति भक्षण करें सो
ांतपनव्रत करें और इच्छाविना भक्षण करें तो प्राजापत्य व्रत कर्के शुद्ध होतेहैं १ सो एह भक्षण
ार्के जो उलटीकरे तिस विषे जानणा ॥ और इस जगा सांत' न शब्द कर्के महासांतपन
ानणा क्योंकि अकामतें भक्षणमें प्राजापत्यका विधान होणेतें ॥ और जो फेर अंगिरा जीका
चनहै सो । कहतेहैं नरेति मनुष्य काक गधा घोडा हस्ति इनांके मांस भक्षण करणेमें और
ाष्टा मूत्र भक्षणमें भी द्विज चांद्रायण व्रतकरे तो शुद्ध होताहै १ और जोवृहद्यमनें कथन किया

इच्छयैषाममेध्यानिभक्षयित्वाद्विजातयः कुर्युःसांतपनंकृच्छ्रंप्राजापत्यमनि
च्छयेति १ तद्भक्षितोद्गारितविषयम् सांतपनशब्देनचात्र महासांतपनमु
च्यते ॥ अकामतःप्राजापत्यविधानात् यत्पुनरंगिरोवचनम् नरकाकखरा
श्वानांजग्ध्वामांसंगजस्यच एषांमूत्रपुरीषाणिद्विजश्चांद्रायणंचरेदिति १ ॥
यच्चवृहद्यमेनोक्तम् ॥ शुष्कमांसाशनेविप्रोव्रतंचांद्रायणंचरेदिति तदुभयम
पिकामतोऽभ्यासविषयम्यत्पुनःशंखेनोक्तम् ॥ भुक्त्वाचोभयतोदंतांस्तथा
चैकशफानपि औष्ट्रंगव्यंतथाजग्ध्वाषण्मासान्व्रतमाचरेदिति १ तत्काम
तोत्यंताभ्यासविषयम् ॥

सो कहतेहैं शुष्केति शुष्क मांसकों ब्राह्मण भक्षण करें तो चांद्रायण व्रतकरणेकर्के शुद्धहोताहै
ह पूर्वोक्त अंगिरा और वृहद्यमजीकावचन दोनोंभी इच्छातें अभ्यास विषय विषे जान
ा । जो फेर शंखजीने कथन कियाहै सोकहतेहैं भुक्त्वेति जिनपशुयोंके दोएपासे दंत हैं
और एकशफ जो घोडा गर्दभादिहैं तिनका मांस और ऊटका मांस गौका मांस इनांको
रुप भक्षण करे तो छे ६ महीनेंका व्रत करे तद शुद्ध होताहै १ एह इच्छातें वहुत अभ्यास
षय विषे जानणा

जो स्मृत्यंतरमे कथन कियाहै सो कहतेहैं जग्ध्वेति मनुष्य विड्वराह गर्दभ गौ घोडा हस्ति ऊट संपूर्ण पंचनखोंवाले गोधा सल्लकी आदिते विना तिनका और क्रव्याद जो हैं कच्चामांसखाणे वाले शृगालादि और ग्रामका कुक्कड इनांका मांस भक्षण करके वर्षरोजका व्रत करे १ सोएह अत्यंतकर्के वहुत अभ्यास विषे जानणा ॥ इस प्रकरण विषे जो मूत्र पुरीषका ग्रहणहै सो चरवी वीर्य मिंज इनका उपलक्षण जानणा और कर्णकामल विष्टा इत्यादि जोछे ६ मलहैं तिनां विषे अर्ध व्रत कल्पना करणा योग्यहै ॥ और केशादियोंके भक्षणमे फेर षट्त्रिंशन्मत विषे विशेष किहाहै । अजेति वकरी भेड महिषी मृग इनांके कच्चा मांस भक्षण विषे और

यत्तुस्मृत्यंतरोक्तम् ॥ जग्ध्वामांसंनराणांचविड्वराहंखरंतथा ॥ गवाश्वकुंजरोष्ट्राणांसर्वंपांचनखंतथा क्रव्यादंकुक्कुटंग्राम्यंकुर्यात्संवत्सरंव्रतमिति तदत्यंतानवच्छिन्नाभ्यासविषयम् ॥ अत्रप्रकरणेमूत्रपुरीषग्रहणं वसाशुक्रासृङ्मज्जानामुपलक्षणम् ॥ कर्णविट्प्रभृतिमलषट्केत्वर्धंकल्पनीयम् केशादिषु पुनः षट्त्रिंशन्मतेविशेषउक्तः ॥ अजाविमहिषीमृगाणामाममांसभक्षणे केशनखरुधिरप्राशनेबुद्धिपूर्वेत्रिरात्रमज्ञानादुपवासइति। यत्तु प्रचेतसोक्तम् नखकेशमृल्लोष्टभक्षणेऽहोरात्रमभोजनाच्छुद्धिरितितदप्यकामतःसकृत्प्राशनविषयम् ॥ केशकीटनखंप्राश्यमत्स्यकंटकमेवच हेमतप्तंघृतंपीत्वातत्क्षणादेवशुद्ध्यतीति स्मृत्यंतरोक्तंमुखमात्रप्रवेशेज्ञेयम्

केस नख रुधिर इनको इच्छाते भक्षण करे तो त्रय रात्रिका व्रत करे और अज्ञानतें भक्षण विषे एक उपवास व्रत करे तो शुद्धहोताहै जोप्रचेताजीने किहाहै सोकहतेहैं नखेति नखकेश मृत्तिका इनके भक्षण विषे एकदिनरात्रि भोजन न करे तो शुद्धहोताहै एहभी इच्छाते एकवार भक्षण विषे जानणा केशेति और केशकीडा नख मच्छीका कंडा इनांको भक्षणकरे तो सुवर्णको विचपाकर्के तप्त जो घृत तिसनूं पान कर्के शीघ्रहि शुद्धहोताहै १ एह जो स्मृत्यंतरका वचनहै सो मुखमात्र प्रवेश विषे जानणा पीणेविषे नहि

यत्रेति जिस जगा भांडेमें स्थित जो अन्न सो केशादिककर्के दूषित होवे तिसमें प्रायश्चित्त कहतेहैं अन्नमिति भोजन कालविषे अन्न मक्षिककर्के वा केशकर्के दूषित होवे तिनांनूं कड कर्के जलका स्पर्श करे और अन्ननूं भस्म साथ स्पर्श करे१ एह प्रचेतस ऋषिका कथन कीता होया जानणा परंतु प्रकीर्णक प्रकरणमें एह श्लोकहै इसजगा प्रसंगसे किहाहै ॥ अव इसी विषे हारीत जी कहतेहैं कृमीति कीडा कीडियां पीउलियां जलौका क्या जलजंतु और पतंग अस्थि इनांके भक्षणमें गोमूत्र और गोमयको भक्षण करे तो त्राय रात्रिकर्के शुद्ध होताहै ॥ अव अपरार्कमे सं वर्त्तजीका वचनहै गोमांसमिति गौका मांस मनुष्यका मांस और नवीन प्रसूत स्त्रीके हत्थसे यद मिले तद वहुत दुष्ट हुंदाहै क्योंकि एह प्रथमहि अभक्ष्य हैं इनको भक्षण करे तो चांद्रायण

यत्रभाजनस्थापितमन्नंकेशादिदूषितंतत्रापि अन्नंभोजनकालेतुमाक्षिकाकेशदूषितम् अनन्तरंस्पृशेदापस्तच्चान्नंभस्मनास्पृशेदिति प्रचेतः प्रोक्तंज्ञेयम् । प्रकीर्णकविषयोयंश्लोकः प्रसंगेणात्रोक्तः । अत्रैवहारीतोपि कृमिकीटपिपीलिकाजलौकःपतंगास्थिप्राशने गोमूत्रगोमयाहारस्त्रिरात्रेणविशुध्यति । अपरार्केसंवर्त्तः। गोमांसंमानुषंचैवसूतिहस्तात्समाहृतम् अभक्ष्यंतद्भवेत्पूर्वंभुक्त्वाचांद्रायणंचरेत् १ पराशरः ॥ अगम्यागमनेमद्यगोमांसस्यचभक्षणे शुद्ध्यैचांद्रायणंकुर्यान्नदींगत्वासमुद्रगाम् १ चांद्रायणेततश्चीर्णेकुर्य्याद्ब्राह्मणभोजनम् अनडुत्सहितांगांचदद्याद्विप्रेषुदक्षिणामिति २ विष्णुः ॥ ग्राम्यकुक्कुटनरगोमांसभक्षणेचसंवत्सरंद्विजातीनांप्रायश्चित्तम् ॥ संवत्सरव्रतेपंचदशधेनवः अंतेपुनरुपनयनम् ॥

व्रत करणे कर्के शुद्ध होताहै १ अव पराशर जीकथन करतेहैं अगम्येति अगम्याके गमन विषे मदिरा और गोमांसके भक्षणमें शुद्धिवास्ते चांद्रायण व्रत करे परंतु समुद्रमें गमन करणवाली नदी मे जा कर्के १ और चांद्रायण व्रतके होयां ब्राह्मण भोजन करावे और वयल सहित मिली होई गौकी दक्षिणा ब्राह्मणको देवे २ अव विष्णुजी कथन करतेहे ग्राम्येति ग्रामकुकुट मनुष्य मांस गोमांस इनांके भक्षण विषे वर्षरोजका द्विजातियों को प्रायश्चित्त है और वर्ष रोज के व्रत में पंद्रां १५ गौआं देवे अर्थात् व्रतका प्रत्याम्नाय पंद्रां गौआं है और तिसतें उपरंत यज्ञोपवीत पावे

अब शंख लिखित स्मृतिसें कथन करतेहैं वकेति वगुला वगुली हंस जलकुक्कुट ममोला जलकाक चकवा चकवी डडूडू घरवाले कबूतर चिडावन कबूतर पाण्डु पक्षिविशेष तोता मैना सारस टिटीहरी उल्लू काकोल क्या वाज लाल पादजीव अर्थात् जालकी न्याई पाद वालेपक्षि वाग्गुदक्या खटक अर्थात्चमागिडद पिपीहा भास पक्षिविशेष काककोकिला शाह्लि पक्षिविशेष कुक्कुट हारीत पक्षि इनांके भक्षणविषे दश रात्रि निराहार व्रतकरे वा गोमूत्रयुक्त यावक पान करे परंतु इनमंसे एकके भक्षणमें वहुत अभ्यास होवे वाइनके समुदायके भक्षणमेएह प्रायश्चित्त जानणा अब शंखजोकहतेहैं मद्गिति जलकाक हंस वगुला काक कोकिला ममोला मच्छों

शंखलिखितौ ॥ वकवलाकाहंसप्लवखंजनकारंडवचक्रवाककटंभरगृहकपोतचटकपारावतपाण्डुशुकसारिकासारसटिट्टिभोलूककाकोलरक्तपादजालपादवाग्गुदवापभासवायसकोकिलशाह्लिकुक्कुटहारीतभक्षणे ॥ दशरात्रमनाहारः पिवेद्वागोमूत्रयावकम् ॥ काकोलःश्येनः ॥ एषामन्यतमस्यात्यंतभक्षणाभ्यासे ॥ प्रत्येकंसमुदायभक्षणेवैतत् ॥ शंखः मद्गुंहंसंवकंकाकंकोकिलंखंजरीटकम् मत्स्यादांश्चतथामत्स्यान्वलाकाःशुकशारिके १ चक्रवाकंप्लवंचैवमंडूकंभुजगंतथा मासमेकंव्रतंकुर्यादेतच्चैवनभक्षयेत् २ मद्गुर्जलवायसः ॥ जलेचरांश्चस्थलजान्प्रतुदान्नखविष्किरान् रक्तपादांजालपादान्सप्तरात्रंव्रतंचरेत् ३ प्रतुद्यप्राणिनांभक्षयन्तीतिप्रतुदाः ॥ नखैर्विकीर्यभक्षयन्तीतिनखविष्किराः ॥ जालाकारानखैर्विकीर्णाःपादायेषांतेजालपादाः ॥ सर्वएवरक्तवर्णाःपादायेषांतेरक्तपादाः

के भक्षण करणवाले पक्षी मच्छ वगुली तोता मैना १ चकवा चकवी जल कुक्कट मंडूक सर्प इनांके भक्षणमें एक महीना व्रत करके फेर भक्षण न करे २ इहां मद्गु नाम जल काकका जानणा और जलचर जीव और स्थल वाले पक्षी प्रतुद और नखविष्किर रक्तपाद इनांके भक्षणमें सप्त ७ रात्रि व्रत करे तो शुद्ध होताहै ३ अब पूर्वोक्त पदोंका अर्थ स्पष्ट करके कहतेहैं प्रतुद्येति प्रतुद्य क्या तोड करके जीवोंको भक्षण करें सो प्रतुदहैं टाटुकुरुतो आदिलेकर हैं और जोनखों करके फरोलके भक्षण करें सो नखविष्किरहैं और जालाकार नखोंकरके छिन्न२रहैं पाद जिनांके सो जालपादहैं और संपूर्णहिहैं लालवर्णके पाद जिनांके सो रक्तपाद कहेहैं ॥

भुक्त्वेति दोनोंपासें दंतो वाले जोहैं शृगालादि तिनको श्रौर तैसेंहि एक खुरवाले अश्वादि श्रौर दंष्ट्रिजोहैं सिंहादि इनांको भक्षणकर्के छे ६ महीनेंका व्रत करे १ श्रौर सुराकर्के मिलयाहोया जो मांसहै सो कहिए सुरामांस श्रौर सुक्का मांस श्रौर श्रपणे वास्ते कीता जो मांस तिसको भक्षणकर्के इंद्रियोंको रोक कर श्रौर समाहित चित्त वाला हुवा २ प्रयत्नकर्केव्रत करे २ श्रौर ऋभीसमें पक्का जो मांस तिसनूं संपूर्ण यत्नकर्के त्यागदेवे श्रौर जेकर भक्षण करे तद वर्ष रोजका व्रतकरे एहि व्रत पिचले श्लोकमे जो व्रत श्रायहै तिसजगाभीजानणा परंतु एह प्रायश्चित्त तदजानणा कि जेकर जानकर्के भक्षणकरे ३ श्रौर ऋभीस नाममांसकेपकानेवाले स्थानविशेषकाजानणा तिसविषे पक्काहोया सत्पुरुषोंके भोजन योग्यभी

भुक्त्वाचोभयतोदंतांस्तथाचैकशफानपि दंष्ट्रिणश्चतथाभुक्त्वाषण्मासान् व्रतमाचरेत् १ सुरामांसंशुष्कमांसमात्मनोर्थंतथाकृतम् भुक्त्वामांसंव्रतंकुर्यात्प्रयतःसुसमाहितः २ ऋभीसपक्कंमांसंचसर्वयत्नेनवर्जयेत् संवत्सरंव्रतंकुर्यात्संप्राश्यज्ञानतस्तुतत् ३ ऋभीसंनाममांसपाकस्थानविशेषः तत्रपक्कं सर्वशिष्टभोजनीयमपिमांसंनभक्षणीयम् तप्तकृच्छ्रत्रयंचांद्रायणंचरेदित्यनुवृत्तौ। मनुः। शुष्काणिभुक्त्वामांसानिभौमानिकवकानिच अज्ञातंचैवसूनास्थंमासमेतद्व्रतंचरेत् १ यत्रफलकेमांसंखंड्यतेसासूना कवकानिछत्राकाराणितेषांभूमिरूढानांभक्षणेएतत्प्रायश्चित्तम् ॥ न वृक्षादिरूढानाम् ॥

मांसहै सोभी भक्षण नहिकरणा चाहिए श्रौर तप्तकृच्छ्रत्रय श्रौर एक चांद्रायणकरे इसीप्रसंगविषे मनुजीकथनकरतेहैं ॥ शुष्काणीति सुक्कमांसनूं भक्षणकरे श्रौर पृथ्वी विषे उत्पन्न हुए जो कवक श्रौर न जाणकर्के सूनामेंस्थित जो मांस इनको भक्षणकर्के पूर्वोक्तहि व्रत करे तो शुद्धहोताहै १ जिसफलक क्या पटडेपर मांस टुकदेहैं तिसका नाम सूनाकथन कीताहै श्रौर कवक क्या छत्र ढोकी न्याईहैं सोछतडियां जेकर पृथ्वीतें उत्पन्न होवें तिनांके भक्षणमे एह पूर्वोक्त प्रायश्चित्त जानणा श्रौर वृक्षादियोंमें उत्पन्न जो छतडियांह तिनमें एह प्रायश्चित्त नहिं श्रर्थात् पृथ्वीतें उत्पन्नांमें दोषहै वृक्षादियोंमे उत्पन्न होण वालियोंमें दोष नहिं है ॥

क्रव्यादिति क्रव्याद विष्टा सूकर ऊट कुकुट काक गधा इनांके मांस भक्षण विषे तप्त कृच्छ्र व्रत करे तो शुद्ध होताहै १ एभी एकवार न इच्छा कर्के भक्षण विषे व्रत जानणा ॥ कच्चे मांसको जो भक्षण करें सो क्रव्याद हैं सो व्याघ्रादि जानणे। अब शंख लिखित स्मृति सें कथन करतेहैं श्वेति श्व क्या कुत्ता गिद्दड काक कुकुट दंष्ट्रि सिंहभेद व्याघ्रादि मनुष्य गधा ऊट हस्ति घोडा इनके मांस भक्षण विषे चांद्रायण व्रत करे तो शुद्ध होताहै ॥ एह इच्छा कर्के भक्षण विषे जानणा ॥ कुत्ता गिद्दड कुकुट ग्राम सूकर कंक पाक्षि गिरज भास पक्षिविशेष कबूतर मनुष्य घरदे कबूतर इनांके मांस भक्षण विषे सत्त ७ रात्रि उपवास व्रत करे और निष्पुरीषीभाव रक्षे अर्थात् सुचेते न जावे घृत भक्षण करे और

क्रव्याद्विट्सूकरोष्ट्राणांकुक्कुटानांचभक्षणे एतत्काकखराणांचतप्तकृच्छ्रंहिशोधनम् २ ॥ सकृदमत्याभक्षणेएतत् ॥ क्रव्यमपक्वंमांसंतददंतीतिक्रव्यादाः व्याघ्रादयः॥ शंखलिखितौ ॥ श्वसृगालकाककुक्कुटदंष्ट्रिक्रव्यादनरखरोष्ट्रगजवाजिमांसभक्षणे चांद्रायणव्रतम् ॥ कामकारएतत् ॥ श्वकुक्कुटग्राम्यसूकरकंकगृध्रभासपारावतमानुषकपोतानां मांसादने सप्तरात्रमुपवासोनिष्पुरीषीभावोघृतप्राशनंसंस्कारश्चेत्यादिविस्तरस्तु पृथक्कृतेऽभक्ष्यभक्षणप्रकरणेद्रष्टव्यः ॥ अत्रानुक्तमांसभक्षणप्रायश्चित्तं ॥ शेषपूपवसेदहरितिमानवंद्रष्टव्यमिति केचित् ॥ क्वचिन्मांसभक्षणमप्यनुजानाति छागलेयः

यज्ञोपवीतादि संस्कार करे इत्यादि वहुत प्रकारके जानणे ॥ निष्पुरीषी भावका अर्थ अगे स्पष्ट होवेगा और विस्तार जो है सो पृथक् कीतेहोये अभक्ष्य भक्षण प्रकरणविषे देखणे योग्यहै इसीविषे नहि कथन कीता जो मांस तिसके भक्षण विषे प्रायश्चित्त (शेषपूपवसेदहः) एह पूर्वोक्त मनु जीका कथन कीता होया जानणा एह कईक ऋषियोंका मत है सो अच्छी तरह जानणे योग्यहै इसमे एह अभिप्रायहै कि जिसजगा अभक्ष्यवस्तुके भक्षण में दोषकिहाहै और प्रायश्चित्त नहि किहा उसजगा मनुजीका वचन प्रमाणकर्के एक उपवासहि प्रायश्चित्तदेणा एह शेषशब्दका अर्थहै और कितेक मांस भक्षणमें भीदोष नहिंहै इसमें छागलेयका वचन है

वृथेति वृथामांस नाहिं भक्षण करे अर्थात् जो देवताके तांईं नहि अर्पण कीता सो वृथा मांसहै तिसको न खावे और श्राद्ध कर्मविषे भक्षण कर लेवे और जगाविषे भक्षण करे ब्राह्मण तो प्राजापत्य व्रत करे तो शुद्धहोताहै १ एह शिष्टपुरुषोंके भक्षण योग्य जो मांस तिस विषे जानणा इसमें ऐसाभी विचारहै कि श्राद्धविषे भी जो राजपुरोहित हैं उनकोहि मांसभक्ष्यहै और सभ ब्राह्मणको नहि एह देवीभागवतमे किहाहै जिस जगा सात्विकादि भेद कर्के तीन प्रकारके ब्राह्मण लिखेहैं इसमे और भी बहुत विचारहै सो ग्रंथकी बाहुल्यताके भय से नहि लिखया ॥ अब शंख जो कथन करतेहैं भक्ष्याइति पंचनख भक्ष्य कहेहैं सो कहतेहैं घो १ कच्छु २ सेहणी ३ गेंडा ४ सेहा ५ इनांकी भक्षण कर्के व्रत

वृथामांसंनभोक्तव्यंभोक्तव्यंश्राद्धकर्मणि अन्यथाभक्षयन्विप्रःप्राजापत्यंसमाचरेत् १ एतत्तुशिष्टभोजनीयमांसविषयम् शंखः ॥ भक्ष्याःपंचनखाश्चैवगोधाकच्छपशल्यकाः ॥ खड्गश्चशशकश्चैवतान्भुक्त्वानाचरेद्व्रतम् १ तथा तित्तिरिंचमयूरंचलावकंचकपिंजलम् वार्ध्रीनसंवर्त्तकंचभक्ष्यानाहसदा यमः २ वार्ध्रीनसोवृद्धछागः ॥ तथा ॥ माहिषंत्वाजमौरभ्रंरौरवंमार्गमेवच भक्ष्यंमांससमुद्दिष्टंयश्चैवपार्षतोभवेत् १ रुरुर्बहुशाखशृंगोमृगः पार्षतःपूर्वमभक्ष्येपिप्रतिपादितोऽतोविकल्पः ॥ विष्णुः ॥ शशशल्यकगोधाखड्गकूर्म्मवर्ज्जंपंचनखमांसाशने सप्तरात्रमुपवसेत् ॥ विषयविवेकेनमांसमनुजानातियाज्ञवल्क्यः ॥

न करे अर्थात् इनके भक्षणमे दोष नहि १ तैसेंहि और कथन करतेहैं तित्तिरिमिति तित्तिर मोर लवडा कपिंजल क्या पक्षिविशेष वार्ध्रीनस नाम वृद्धछागका है और वर्त्तक क्या वटेरा इनांको यमजीनें भक्ष्य किहाहै २ तैसेंहि और कथन करतेहैं माहिषमिति महिष बकरा भेडा रुरु मृग पार्षत मृगविशेष इनांका मांस भक्ष्य कथन कियाहै १ रुरु नाम बहुत शाखा वाले शृंग जिसके तिसका है और पार्षत मृग विशेष पिच्छे अभक्ष्य विषे भी प्रतिपादन कीताहै इसकारणतें इसमें विकल्प जानणा ॥ अब विष्णुजीकथन करतेहैं शशेति सेहा सेहणी घो गेंडा कच्छु इना पंजांको त्यागकर्के औरोंके मांस भक्षणविषे सत्त रात्रि उपवास व्रत करे तोशुद्ध होताहै अब विषय विवेक कर्के मांसका भक्षण कथन करतेहैं याज्ञवल्क्यजी

ग्रहणेति और ग्रहण निमित्त निषिद्ध जो काल तिस विषें और संधि काल जो प्रात मध्यान्ह सायं अर्द्धरात्र और बहुत प्रातः काल बहुत सायंकाल इनविषें भोजन करके और रात्रि विषें धाना दधि सत्तु तिलयुक्त अन्नके भोजनविषें इनतों आद लेकर जो अनादिष्ट प्रायश्चित्त तिनांविषें भी सौ १०० प्राणायाम करे तो शुद्ध होताहै ॥ और इच्छातें भक्षणाविषें उपवासव्रतकरे और अज्ञानतें भक्षणमें उपवास करे एह किसीका मतहै ॥ और ग्रहणतें अन्यत्रभी भोजनके निषिद्ध कालविषें मार्कंडेय जो कहतेहैं चंद्रस्येति हे भार्गव चंद्रमा वा सूर्य्यका ग्रहण जिस दिनविषें होवे तिस दिनतें प्रथम भोजन न करे और ग्रहणविषें भी न करे १ तैसेंहि ग्रहण साथहि सूर्य वा चंद्रमा अस्त होवे तो भी जितना काल तिसका उदय न होवे तितना काल भोजन न करे २ तैसेंहि और कहतेहैं ग्रहणमिति चंद्रमाका ग्रहण रात्रिके प्रथमपहरते अग्गेहोवे तो आवर्त्तनतें उरे भोजन करलेवे अर्थात् दिनके प्रथमपहरमें भोजनकरे और रात्रिके प्रथमपहरमे ग्रहण होवे तो सूर्य उदयके

ग्रहणनिमित्तनिषिद्धकालेतिप्रातरतिसायंकालेचभुक्त्वारात्रौधानादधिसक्तु तिलसंवद्धान्नभोजनेएवमादिष्वनादिष्टप्रायश्चित्तेषुप्राणायामशतम् मत्योपवासः । अमत्योपवासइत्यन्ये । ग्रहणादन्यत्रापिनिषिद्धकालेभोजनेमार्कंडेयः ॥ चंद्रस्ययदिवाभानोर्यस्मिन्नहनिभार्गव ग्रहणंतुभवेत्तस्मिन्नपूर्वंभोजनक्रियाम् १ नाचरेत्सग्रहेचैवतथैवास्तमुपागते यावत्स्यान्नोदयस्तस्यनाश्नीयात्तावदेवतु २ तथा ॥ ग्रहणंतुभवेदिंदोःप्रथमादधियामतः भुंजीतावर्त्तनात्पूर्वंप्रथमेप्रथमादधः १ तथा अपराह्णेनमध्याह्नेसायाह्नेनतुसंगवे भुंजीतसंगवेचेत्स्यान्नपूर्वंभोजनक्रियेति १ यच्चमनुनोक्तम् ॥ नाश्नीयात्संधिवेलायामिति नातिप्रगेनातिसायमित्येवमादि अत्रापिप्राणायामशतम्

प्रथम पहर विषें भोजन करे इसी तरह अग्गे भी जानणा १ अब सूर्यग्रहणकी व्यवस्था कहतेहैं अपेति अपराह्ण काल में सूर्य ग्रहण होवे तो मध्यान्हमें भोजन न करे और सायंकाल मे ग्रहण होवे तो संगव काल मे भोजन म करे संगव कालमे ग्रहण होवे तो ग्रहणके प्रथम भोजन न करे किंतु ग्रहणतें पिछे खावे अथवा संगवकाल जो प्रातकालतें अग्गेहै तिसमे ग्रहण होवे तो पूर्व दिनकी रात्रि में भोजन न करे क्यों कि ४ चार पहर पहले सूर्य ग्रहणतें भोजनका निषेधहै १ और जो मनुजीनें किहाहै सो कहतेहैं नेति संधिवेलाविषें भोजन न करे वचनांतर कहतेहैं नातीति और अतिप्रातकाल विषे अतिसायंकाल विषे इस तो आद लेकर इनमे भोजन करे तो सौ १०० प्राणायाम करके शुद्ध होताहै अति प्रातः सूर्य्योदयसे पहिले मुहूर्त मात्र जानणा और अतिसायं सूर्य्यास्तसे उपरंत मुहूर्त मात्राहै

अब संसर्गतें दुष्ट अन्नके भक्षण विषें प्रायश्चित्त कहतेहैं तिसका उदाहरण भविष्यत् पुराण विषें किहाहै सुरेति मादिरा लस्सन इनांकर्के स्पृष्टहोवे और पीयूष क्या नवीन दुग्धादिकर्के युक्त होवे एह संसर्ग दुष्टकहेहैं शूद्रकी जूठ न्यांई जानणे और शूद्रका जूठासों जानणा कि एह तेरे योग्य अन्नहै इस भावना कर्के किसेनें शूद्रके ताई दखायाहै सो शूद्रोच्छिष्ट किहाहै ॥ १ ॥ अब संवर्त्त जी कहतेहैं केशेति रोम कीडेकर्के युक्त जो अन्न और नील लाक्षा कर्के जो स्पर्श कीता होया अन्न और आंदरां अस्थि चर्म इनां कर्के स्पर्श कीते होए अन्नकों भक्षणकर्के एकदिनका उपवास व्रत करे तो शुद्ध होताहै १ तैसेहि शातातपजी कथन करतेहैं केशेति रोम कीट कर्के युक्त अन्न और रुधिर मांस और नहिं स्पर्श करणे योग्य जो वस्तु तिस कर्के स्पर्श कीता होया जो अन्न और गर्भ हत करणे वाले पुरुष कर्के देखया

अथसंपर्कदुष्टभक्षणेप्रायश्चित्तम् तदुदाहरणंभविष्यति। सुरालशुनसंस्पृष्टंपीयूषादिसमान्वितम् संसर्गाद्दुष्टमेताद्धिशूद्रोच्छिष्टवदाचरेत् शूद्रोच्छिष्टंतु विज्ञेयंपूर्वंशूद्रेप्रदर्शितम् १ इदंत्वद्योग्यमन्नमितिभावनयाकेनचिच्छूद्रायप्रदर्शितंतच्छूद्रोच्छिष्टंभवति संवर्त्तः केशकीटोपपन्नंतुनीलीलाक्षोपघातितम् स्नाय्वस्थिचर्मसंस्पृष्टंभुक्त्वातूपवसेदहरिति १ तथाहशातातपः केशकीटावपन्नरुधिरमांसास्पृश्यस्पृष्टभ्रूणहावेक्षितपतत्र्यवलीढश्वसूकरगवाघ्रातशुष्कपर्युषितवृथापक्वदेवान्नहविषांभोजनेतूपवासः ॥ पंचगव्याशनंचेति एतच्चोभयमप्यकामविषयम् कामतस्तु मृद्वारिकुसुमार्द्रश्चफलकंदेक्षुमूलकान् विण्मूत्रदूषितान्प्राश्यकृच्छ्रपादंसमाचरेत् ॥ १ ॥

जो अन्न और पक्षि कर्के अवलीढ क्या आस्वादित जो अन्न और कुत्ता सूकर गौ इनां कर्के सुंगया होया जो अन्न और पकायाहोआ शुष्का अन्न और बासी अन्न और वृथापक्कया जिस अन्नका नारायणको भोग नहिं लगा है और देवताके निमित्त दित्ता जो है तिसकों नैवेद्य लगाणेतें विना जो भक्षण करे वा देवता निमित्त जो हविष घृतादि हैं तिनका हवन न करे और आपही भक्षण करे जो पुरुष सो एक उपवास और पंचगव्य भक्षणकरे एह संवर्त और शातातपका वचन अज्ञानतें भक्षण विषें जानणा ॥ अब कामतें भक्षण विषें कहतेहैं मृदिति मृत्तिका जल पुष्पादि फल कंद क्या सकरकंदि प्रभृति गन्ने मूलियां एह विष्टा मूत्र कर्के दूपित होवें तो इनको भक्षण कर्के कृच्छ्र पाद व्रत करे तद शुद्ध होताहै १

और विष्टा मूत्र जिस अन्नके पास होवें तिसके भक्षण विषे अर्धव्रत करे और विष्टादिके स्पर्श कर्के अपवित्र जो भोजनतिसके भक्षणविषे कृच्छ्रव्रतकरे एह विष्णुकाकिहा होया जानणा और थोडे संसर्गविषे पादव्रतकरे और बहुत संसर्गविषे अर्धकृच्छ्र करे एहभी व्यवस्था जानणी जो व्यासजीनें किहाहै सो कहतेहैं संसर्गेति संसर्गतें दुष्ट जो अन्न और क्रियातें दुष्ट जो अन्न और स्वभाव दुष्ट जो अन्न इनकों इच्छातें भक्षण कर्के तप्त कृच्छ्र व्रतको करे १ एह व्रत संसर्ग वाले जो अमेध्या दि तिनके रसकी प्राप्ति होवे जिस अन्नमें तिसके भक्षणविषे जानणा अर्थात् खंदेखंदे तिसवि ष्टादिका स्वाद आगिआ होवे तद एह प्रायश्चित्तजानणा॥ रजस्वलादि स्त्रीके स्पर्शविषे शंखजी कहतेहैं अमेध्येति विष्टा पतितपुरुषचांडालपुष्कसक्या चांडालजातिविशेष रजस्वलास्त्री अवधूत

संनिकृष्टेऽर्धमेवस्यात्कृच्छ्रस्त्वशुचिभोजनइतिविष्णूक्तंवेदितव्यम्। अल्पेसंस र्गेपादोमहासंसर्गेऽर्धकृच्छ्रइतिव्यवस्था। यत्तुव्यासेनोक्तम्।संसर्गदुष्टंयच्चा न्नंक्रियादुष्टंचकामतः भुक्त्वास्वभावदुष्टंचतप्तकृच्छ्रंसमाचरेत् १ एतच्चसं स्पृष्टामेध्यादिरसोपलब्धौवेदितव्यम् रजस्वलादिस्पर्शेतुशंखोक्तम् अमेध्य पतितचांडालपुष्कसरजस्वलाऽवधूतकुणिकुष्ठिकुनखिसंस्पृष्टान्नानिभुक्॥ त्वाकृच्छ्रंचरेदिति कुणिर्हस्तविकलः। एतत्कामकारविषयम्। अकामतोऽ र्धम्। भुक्त्वाऽस्पृश्यैस्तथाशौचिकेशकीटैश्चदूषितम् कुशोदुंवराविल्वाद्यैः पनसांबुजपत्रकैः॥ शंखपुष्पीसुवर्चादिक्वाथंपीत्वाविशुध्यतीतियद्विष्णुनो क्तं तदशक्तविषयंरजकादिस्पर्शविषयंवा अस्पृश्यैर्विण्मूत्रादिभिः ॥

क्या संन्यासी कुणिक्या खोटे हाथवाला(अर्थात्टुंडा) कुष्टि और खोटे नखोंवाला इनांकर्के स्प र्श कीता होया जो अन्न तिसको भक्षणकर्के कृच्छ्र व्रत करे ॥ एह इच्छा कर्के भक्षण करणे विषे जानणा ॥ और अज्ञानतें भक्षणविषे अर्ध व्रत करे ॥ भुक्त्वेति और अस्पृश्य जो विष्टा मूत्रादि इनांकर्के दूषित जो अन्न और अपवित्र अन्न और केशकीटकर्के दूषित जो अन्नइनांको भक्षण कर्के कुशा रुंबल बिल्वादि पनस वृक्ष कमल इनांके पत्रोंका और शंखपुष्पी सुवर्चादि इनां के क्वाथको पान करे तो शुद्ध होताहै १ एह जो विष्णुजीने किहाहै सो असमर्थ विषय विषे वा रजकादि स्पर्श विषय विषे जानणा ॥

अब शूद्रादियोंकर्के स्पर्शवालाजो अन्न तिसके भक्षणविषे हारीतका कथनकीता होयाप्रायश्चित्त जानणा शूद्रेणेति शूद्र कर्के स्पर्शवाला अन्न वा विष्टा भक्षणकरणवाले कीडोंकर्के स्पर्श वाला और जिस स्थानमे ब्राह्मण भोजन करतेहैं तिसमें शूद्र अन्न वरतावे १ अब इसका अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं तिस शूद्रको अयोग्य होणेतें पंक्ति विषे भोजन कररहे जो ब्राह्मणादि तिनांमें अन्न देवे अथवा जिस जगा उठ कर्के जूठा देदेवे वा प्रथम आचमन कर लेवे वा निंदा कर्के अन्न देवे तिसविषे प्रायश्चित्त एक दिनरात्रका उपवास करे तो शुद्ध होताहै और उच्छिष्ट पांक्तिके भोजन विषेभी एही व्रतजानणा ॥ यस्त्विति जो द्विज उच्छिष्ट पांक्तिविषे कदाचित् भोजन करे तो एक दिनरात्रका उपवास व्रतकर्के पंचगव्य पानकरे तो शुद्ध होताहै १ एह क्रतुस्मृतिमें किहाहै वाम

शूद्राद्युपहतेतुहारीतोक्तंविज्ञेयम् शूद्रेणोपहतंभोज्यंकीटैर्वामेध्यसेविभिः भुंजानेषुचवायत्रदद्याच्छूद्र उपस्पृशेत् १ अनर्हत्वात्सशूद्रःपंक्तौभुंजानेषुवाय त्रोत्थायोच्छिष्टंप्रयच्छेदाचामेद्वाकुत्सित्वावायत्रान्नंदद्युस्तत्रप्रायश्चित्तमहो रात्रमिति ॥ उच्छिष्टपंक्तिभोजनेप्येतदेव ॥ यस्तुभुंक्तेद्विजःपंक्त्यामुच्छिष्टा यांकदाचन अहोरात्रोषितोभूत्वापंचगव्येनशुध्यतीतिक्रतुस्मरणात् ॥ वाम करनिर्मुक्तभुक्तामत्रभोजनेतु ॥ समुत्थितस्तुयोभुंक्तेयोभुंक्तेभुक्तभाजने एवंवै वस्वतःप्राहभुक्त्वासांतपनंचरेदिति १ षट्त्रिंशन्मतोक्तंवेदितव्यम् ॥ एकपं क्त्युपविष्टानांविप्राणांसहभोजने यद्येकोपित्यजत्पात्रंशेषमन्नंनभोजयेत् १ मोहाद्भुंजीतयस्तत्रपंक्त्यामुच्छिष्टभोजनः प्रायश्चित्तंचरेद्विप्रःकृच्छ्रंसांत पनंचतादिति ॥ २ ॥

हस्त कर्के दिताजो अन्नतिसविषे अथवा और जूठे पात्रविषे भोजन करणेमें प्रायश्चित कहतेहैं समिति जो पुरुष उठकर्के भोजनकरताहै और जो जूठे पात्रविषे भोजन करताहै इहांभुक्तभाज नपद वामहस्तकर्के दितेहोएका उपलक्षण जानणा इसप्रकार यमजीने किहाहैकि पूर्वोक्त प्रकार कर्केजो भोजनकरेसो सांतपन व्रतकरे १ एह षट्त्रिंशन्मतका कथनकीताहोया जानणा षट्त्रिंश न्मत उहै कि जो ३६ छत्री ऋषियोंने इकठे होकर्के वनायाहै ॥ तैसेंहि पराशरजीनेंभी इस विषे किहाहै एकेति एक पंक्तिमें स्थित जो ब्राह्मण तिनांको भोजन करदे होयां जेकर एक मनुष्य भी पात्र त्यागदेवे तदहोर कोई शेष जो अन्न तिसकाभक्षण न करे १ मोहसें जो तिसविषे भोजन करे सो उच्छिष्ट भोजी होताहै तिसविषे ब्राह्मणकृच्छ्रसांतपन नाम व्रतकरे तोशुद्धहोताहै २

अवमनुजीकथनकरतेहैं अभोज्येति जिनांका अन्न नहिं भक्षण करणा तिनांकेअन्नको भक्षणकर्के और स्त्री शूद्रका जूठा भक्षणकर्के और अभक्ष्यमांसको भक्षणकर्के ७सत्तरात्रि जवपानकरे १ अवइ सांका अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं अभोज्येति अभोज्यान्न अग्गेकहने जो हैं तिनका अन्न और स्त्री शूद्रका जूठा मांस प्रकरणमें किहा जो अभक्ष्यमांस तिसकों भक्षणकर्के जलयुक्त सत्तूरूपकर्के वा यवागू रूपकर्के पानयोग्य जो यव तिनांको पानकरे तो शुद्ध होताहै विडालेति बिल्ला काक चूहा नकुल इनांका जूठा भक्षणकर्के और केश कीडा इनांकर्के युक्त जो अन्न तिसनू भक्षण कर्के ब्राह्मी सुवर्चलाबूटीका पानकरे तिसका पाम कोइ क्राथकर्के कहतेहैं और कोइकहतेहैं किरात्रिमेजलमेंपारक्षे और प्रातःउसजलकों पीवें २ अव विष्णुजी कथनकरतेहैं गोरिति गौका

मनुः अभोज्यानांतुभुक्त्वान्नंस्त्रीशूद्रोच्छिष्टमेवच जग्ध्वामांसमभक्ष्यंचसप्त रात्रंयवान्पिवेत् १ अभोज्यान्नावक्ष्यमाणास्तदन्नंस्त्रीशूद्रोच्छिष्टंमांसप्रकर णोक्तमभक्ष्यमांसंभुक्त्वाजलमिश्रितसक्तुरूपेणयवागूरूपेण वा पानयोग्या न्यवान्पिवेदित्यर्थः ॥ विडालकाकाखूच्छिष्टंजग्ध्वाथनकुलस्यच केशकी टावपन्नंचपिवेद्ब्राह्मींसुवर्चलाम् २ आखुर्मूषकः ॥ विष्णुः ॥ गोरुच्छिष्टाश नेदिनमेकमुपोषितः पंचगव्यंपिवेत् ॥ संवर्त्तः ॥ विण्मूत्रभक्षणेविप्रः प्राजापत्यंसमाचरेत् श्वकाकगोभिरुच्छिष्टभक्षणेतुदिनत्रयम् १ वसिष्ठः ॥ श्वकाकावलीढशूद्रोच्छिष्टसंभोजनेष्वतिकृच्छ्रः ॥ कृच्छ्रइतरेष्वन्यत्रमधु मांसफलविकारेषुमतिपूर्वकाभ्यासेएतत्

जूठाभक्षण करणविषें एकादिन उपवास व्रतकर्के पंचगव्यपानकरे॥अव संवर्त्तजी इसमे विशेष कह तेहैं विडालेति विष्टामूत्रभक्षण करणवाला ब्राह्मणप्राजापत्यव्रतकरे तो शुद्धहोताहै और कुत्ताकाक गो इनांके जूठा भक्षण करणेंविषें तीनादिनका व्रतकरे तो शुद्धहोताहै १ अव वसिष्ठजी कथन करते हैं श्वेति कुत्ता काक इनांकर्के जो आस्वादित अन्न और शूद्रका जूठाइनांके भक्षण करणेविषें अतिकृच्छ्र नाम व्रत करे तो शुद्धहोताहै ॥ औरोंके अर्थात् गवादिके जूठा भक्षण करणेंविषें कृच्छ्रव्रतकरे तो शुद्ध होताहै ॥ परंतु मखीर मांस फल इनांका जो विकार एह जेकर काकादि कर्के जूठे होणतां इनके भक्षणमे एह व्रतहै नहि किंतु एक उपवासहै इच्छापूर्वकबहुत वार भक्षण करणेंमें पूर्वोक्त प्रायश्चित्त जानणा

अब शंख जो कथन करते हैं शुनेति कुत्तेके जूठे अन्न को भक्षण कर्के एक महीनेंका व्रत करे तो शुद्ध होताहै और काकका जूठा गौका सिंघया होया अन्न भक्षण कर्के एक पक्ष अर्थात् पंदरांदिनका व्रत करे १ ॥ केश कीट कर्के दूषित अन्न और जिसनें मूषकादि भक्षण कीते हैं ऐसे बिल्लेका जूठा जो अन्न अथवा बिल्लेका जूठा और दूषकैः क्या नेत्रोंकी मलकर्के दूषित जो अन्न और मक्खी मच्छर कर्के दूषित जो अन्न तिसको भक्षण कर्के त्रय ३ रात्रि व्रत करे तो शुद्ध होताहै २ और वृथा जो खिचडी कडाह क्षीर पूडे पूरियां इनांको भक्षण कर्के समाधान हो कर्के त्रय ३ रात्रिका व्रत करे ३ अब इसीका अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं वृथे

शंखः । शुनोच्छिष्टंतुभुक्त्वान्नंमासमेकंव्रतंचरेत् काकोच्छिष्टंगवाघ्रातंभुक्त्वा पक्षव्रतीभवेत् १ दूषितंकेशकीटैश्चमार्जारैर्दूषकैस्तथा मक्षिकामशकैश्चैव त्रिरात्रंव्रतमाचरेत् २ कथंभूतैर्मार्जारैर्दूषकैःभुक्तमूषकादिभिरित्यर्थः॥वृथा कृसरसंयावपायसापूपशष्कुलीः भुक्त्वात्रिरात्रंकुर्वीतव्रतमेतत्समाहितः ३ वृथेति विष्णवे विप्रायवा निवेदनं विना कृसरंघृतपक्वगोधूमसारसितादि चूर्णम् ॥ अमतिपूर्वाभ्यासेएतत् ॥ श्वकाकगवाघ्रातभोजनेसाभ्यासेप्येतत् गोमूत्रयावकाशनमेवात्रव्रतम् ॥ कामतःसकृद्भोजने ॥ प्रचेताः ॥ मक्षीगोधाथखद्योतःशतस्पृष्टोथलोष्टकृत् पड्विध्यन्मुरदुर्गश्चसप्तैतेदुष्टकीटकाः १

ति विष्णुजीके ताईं वा ब्राह्मणके ताईं निवेद लगाणेंनें विना कृसर और घृत कर्के पकाहोया कणकका सार स्वेतादि चूर्ण अर्थात् कडाह इनके अज्ञान पूर्वक वहुतवार भक्षणविषे पूर्वोक्त प्रायश्चित्त जानणा ॥ और कुत्ता काक गौ इनांका सिंघया जो अन्न तिसके वहुत वार भक्षण विषे भी पूर्वोक्त प्रायश्चित्त जानणा गोमूत्र युक्तयवोंका भक्षण करणा एहहि इसजगा व्रत जानणा और इच्छातें एकवार भक्षण करणें विषे प्रचेतसा ऋषि जो कथन करतेहैं मक्षीति मक्खी १ गोह २ टटाणा ३ शतस्पृष्ट कीटविशेष ४ लोष्टकृत् कीटविशेष ५ पड्विध्यन् भी कोई कीट विशेष जानणा मुरदुर्ग भी कीटविशेष जानणा एह सत्त ७ दुष्ट कीडे कहेहैं १ ॥

इसकाप्रयोजन कहतेहैं एतैरिति उन पूर्वोक्तोंकर्के वा काकादिकर्के जो अन्न दूषितहै तिसको इच्छातें भक्षण करे तो कृच्छ्र सांतपनकर्के शुद्धहोताहै २ और अज्ञान पूर्वक एक वार भक्षणविषे कालदुष्ट भक्षणके प्रसंगविषे पिच्छे किहाहै ॥ अब और कहतेहैं केशेति केश कीट कर्के युक्त अन्न और स्त्रियोंका जूठा अन्न कुत्ता रजस्वला स्त्री शूद्र इनां कर्के स्पृष्ट जो अन्न तिसको भक्षण करें पंचगव्य पानकरे तो शुद्ध होताहै १ कितक क्षत्रि वैश्यके अन्नकी न्याईं घृतादि द्रव्य विशेष युक्त जो शूद्रका अन्न तिसके भक्षणविषे पराशर जी आज्ञा देतेहैं घृतमिति घृत तैल क्षीर गुड और तेल कर्के पक्की जो वस्तु और शूद्रका अन्न इनको नदी कनारे जाकर्के ब्राह्मण

एतैः काकादिभिश्चैवयदन्नंदूषितंभवेत् तदन्नंकामतोभुक्त्वाकृच्छ्रंसांतपनंचरेत् २ अबुद्धिपूर्वसकृद्भक्षणेकालदुष्टाशनप्रसंगेप्रोक्तम्। केशकीटावपन्नंच स्त्रीभिःखातंतथैवच श्वोदक्याशूद्रसंस्पृष्टंपंचगव्येनशुध्यतीति १ एतदन्नंभुक्त्वापंचगव्येनशुद्ध्यतीत्यर्थः। क्वचित्क्षत्रियाद्यन्नवत् शूद्रान्नस्यापिघृतादिद्रव्यविशेषरूपस्याभ्यनुज्ञामाहपराशरः॥ घृतंतैलंतथाक्षीरंगुडंतैलेनपाचितं गत्वानदीतटेविप्रोभुंजीयाच्छूद्रभोजनमिति १ तैलपाचितंपूरिकाशष्कुल्यादि । भुज्यतइतिभोजनं भोज्यद्रव्यं शूद्रस्यसंबंधिभोजनंशूद्रभोजनं तादृशंघृतादिकं यदा भोक्तव्यंभवति तदा क्षत्रियादिगृहेष्वेव न शूद्रगृहे किंतर्हितच्छूद्रान्नंयादृशंतादृशं वा गृहीत्वागृहाद्बहिर्नदीतीरादौवाभुंजीत

भक्षण करे १ तैलपाचित क्या पूरियांपराकडी तो आद लेकर जानणा॥ इसका अर्थ करतेहैं जो भक्षण करिए सो भोजन कहिए सो क्या भक्षण करणे योग्य द्रव्य और शूद्र संबंधि जो भोजनहै सो शूद्र भोजन किहाहै तादृश क्या शूद्रसंबंधि घृतादिके जेकर भक्षण करणेमे इच्छा होवे तद क्षत्रियादियोंके घर विषे भक्षण करे शूद्रके घर विषे भक्षण करणे योग्य नहिहै इसमे भी विशेष कहतेहैं किमिति तद क्या सो शूद्रका अन्न जैसा तैसाहोवे तिसको ग्रहण कर्के घरतें वाहर नदीकेकनारे तो आद लेकर और किसी एकांत जलके कनारे जा कर्के भक्षण कर लेवे इसमें दोष नहिं जानणा

एह पूर्वोक्तक्षत्रियादि त्रयवर्णके घरविषे भोजनकी आज्ञाहै सो मार्गके थकेहोयांविषे पूर्ववर्ण जो ब्राह्मण तिसके न मिलयां होयांजानणी वा आपात्तिकालके भक्षणाविष जानणी एह माधवजीने कहाहै और क्षुधायुक्तचाक्रायण ऋषिनें हार्थीवाणदाअन्नभक्षणकिया एह छांदोग्यके प्रथमाध्याय विषे देखणेयोग्यहै । आपात्ति कालमें शूद्रकेगृहविषे भोजन करणेमें पराशरजीकहतेहैं आपादिति आपात्ति कालमें जेकर ब्राह्मण शूद्रके घर विषे भोजन करे तो मनमें पश्चात्ताप करणे करके शुद्ध होताहै और(द्रुपदादिवमुमुचानः)इस मंत्रका सौ जप करे १ अव दीपके जूठे भक्षणकरणें में षट्त्रिंशन्मतविषे कहतेहैं दीपेति दीपका जूठा जो तेलहै और गली में डिगया जो ते

एतत्क्षत्रियादिवर्णत्रयभोजनाभ्यनुज्ञानं मार्गश्रांतादौपूर्ववर्णत्रयासंभवे वेदितव्यमापदिवेतिमाधवः ॥ चाक्रायणर्षिणाक्षुधितेनहास्तिपकान्नंभुक्तमि तिछांदोग्येप्रथमाध्यायेद्रष्टव्यम् ॥ आपदिशूद्रभोजनेपराशरः ॥ आपत्का लेतुविप्रेणभुक्तंशूद्रगृहेयदि मनस्तापेनशुद्ध्येत्तुद्रुपदानांशतंजपेत् १ दीपो च्छिष्टभक्षणेषट्त्रिंशन्मते ॥ दीपोच्छिष्टंतुयत्तैलंरात्रौरथ्याहतंचयत् । अभ्यं गाच्चैवयच्छिष्टंभुक्त्वानक्तेनशुद्ध्यति १ तैलग्रहणाद् घृते न दोषः शंखलि खितौ ॥ वृथाकृसरपायसापूपमांसभक्षणमाहिताग्निःकृत्वाप्राजापत्यंचरेत् यमः ॥ माक्षिकंफाणितंशाकंपायसंगोरसंयुतम् ॥ हस्तदत्तानिभुक्त्वातुभो क्तासांतपनंचरेत् १ इदमभ्यासविषयम् ॥ फाणितमिक्षुविकारविशेषः ॥

ल और मालशनें शेष जो तेल इनांको भक्षण करे तो एकव्रत करके शुद्ध होताहै १ इस जगा तेलका ग्रहण होणेनें घृतमें दोष नाहें जानणा ॥ शंखलिखित स्मृतिसें कहतेहैं वृथति ब्राह्मण वा विष्णु को निवेद लगाणेतें विना खिचडी क्षीर पूडे मांस इनका भक्षण करे अग्निहोत्री तो प्राजापत्य व्रत करे ॥ अब यम जी कहतेहैं माक्षिकमिति मखीर फाणित साक क्षीर दुग्ध घृत इनको हत्थ तें दित्ते होयांको भक्षण करे तो भक्षण करण वाला सांतपन व्रत करे तो शुद्ध होताहै १ एह वहुत वार भक्षण करण विषे जानणा और फाणित नाम गन्नेके विकार विशेषका जानणा ॥

अव यम जी कुछ और कथन करतेहैं विप्रेति ब्राह्मणके साथ अन्न भक्षण करे तो प्राजापत्य व्रत कर्के शुद्ध होता है और राजा के साथ अन्न भक्षण करे तो तप्त कृच्छ्र व्रत कर्के शुद्ध होता है १ और वैश्यके साथ अन्न भक्षण करे तो अतिकृच्छ्र व्रत कर्के शुद्ध होता है और शूद्रके साथ अन्न भक्षण करे तो चांद्रायण व्रत कर्के शुद्ध होताहै २ इस स्थान में साथ भोजन क्या एकपात्रविषे जो भोजन करणा सो जानणा ॥ एह इच्छातें वहुत वार भक्षणविषे जानणा अव शंखलिखित स्मृतिसें कहतेहैं ब्राह्मणेति ब्राह्मणके जूठा भक्षण करणे विषे महाव्याहृतियां जो(ॐ भूः ॐभुवः ॐस्वः) इनां कर्के जलको मंत्रण करे फेर तिसका पान करे क्षत्रीके जूठा भक्षण करणे में ब्राह्मी बूटीके रसकर्के क्षीर वनावे तिसको त्र्यदिन भक्षण करे और वैश्यकेजूठा

किञ्च विप्रेणसहभुक्त्वान्नंप्राजापत्येनशुद्ध्यति भूभुजासहभुक्त्वान्नंतप्तकृच्छ्रेणशुद्ध्यति १ ॥ वैश्येनसहभुक्त्वान्नमतिकृच्छ्रेणशुद्ध्यति शूद्रेणसहभुक्त्वान्नंचांद्रायणमथाचरेत् २ सहभोजनमेकपात्रभोजनम् ॥ एतत्तुकामतोत्यंताभ्यासविषयम् ॥ शंखलिखितौ ॥ ब्राह्मणोच्छिष्टभोजनेमहाव्याहृतिभिरभिमंत्र्यापःपिवेत् ॥ क्षत्रियोच्छिष्टभोजनेब्राह्मीरसाविपक्वेनत्र्यहंक्षीरेण वर्त्तयेत् ॥ वैश्योच्छिष्टभोजनेत्रिरात्रोपोषितः ब्रह्मसुवर्चलांपिवेत् ॥ शूद्रोच्छिष्टभोजनेसुराभांडोदकपानेचसप्तरात्रमभोजनम् ॥ चांद्रायणंवेतिक्वचित्पुस्तकेपाठः ॥ एतदकामतः । अभ्यासेद्विगुणम् ॥ विष्णुः आमश्राद्धाशने त्रिरात्रंपयसावर्त्तेतब्राह्मणः शूद्रोच्छिष्टाशनेवमनंकृत्वासप्तरात्रम् ॥ वैश्योच्छिष्टाशनेपंचरात्रम् ॥ राजन्योच्छिष्टाशनेत्रिरात्रम्

भक्षण करणेमें त्र्यरात्रि उपवास व्रत कर्के ब्रह्मसुबर्चला बूटीको पान करे और शूद्रके जूठा भक्षण करणे में और मदिरा के भांडेमें जल पान करणे विषे सत ७ रात्रि उपवास व्रतकरे तो शुद्ध होताहै वा चांद्रायणव्रतकरे एह किसे पुस्तकमे पाठ है एह प्रायश्चित्त अज्ञानतें जूठे भक्षण विषे जानणा ओर वहुत अभ्यास होवे तिसमे दूणा जानणा ॥ अव विष्णुजी कथनकरतेहैं आमेति कच्चे अन्नका जो श्राद्ध तिसके भक्षण विषे ब्राह्मण त्र्य रात्रि केवल जल पानही करणे कर्के शुद्ध होताहै और शूद्रके जूठा भक्षण करणेमे उलटी कर्के सत्त ७ रात्रि व्रत करे और वैश्यके जूठा भक्षण करणेमे पंच ५ रात्रि व्रत करे और क्षत्रीके जूठा भक्षण करणे मे त्र्य रात्रिका व्रत करे तो शुद्धहोताहै

और क्षत्रीको शूद्रके जूठा भक्षण करणेमें पंचरात्रिका व्रत करणे योग्यहै वैश्यके जूठा भक्षण में त्रय रात्रि व्रत करे और वैश्य शूद्रका जूठा भक्षण करे तो त्रय रात्रि व्रत करे ॥ शंखजी कहतेहैं शूद्रेति शूद्रके जूठा भक्षण करणे मे महीनेका व्रत करे ॥ तैसेहि वैश्यके जूठा भक्षण करणे में पन्द्रा १५ दिन का व्रत करना ॥ और क्षत्रीके जूठ भक्षणेमें सप्त ७ दिनका व्रत करे और ब्राह्मणके जूठे भक्षणमें एक दिनका व्रत करे और कचे आमका श्राद्ध तिसके भक्षणमें विद्वान् महीनेका व्रत करे १ यह नवश्राद्ध विषे जानणा यह जो जूठ भक्षण का प्रायश्चित्त है सो पित्रादिकोंसें और विषय में जानणा ॥ पिता और बडे भ्राता का जूठा भक्षण करणे योग्यहै यह आपस्तंब स्मृतिका वचनहै ॥ जो वृद्धव्यास जी का वचन है सो कहतेहैं मातेति माता वा भगिनी स्त्री और कोई स्त्री इनांके साथ भोजन न करे जेकर करे तो चांद्रायण व्रत करे यह प्रायश्चित्त इनांके साथ भोजनमें जानणा। १ और इनके जूठा मात्र भक्षण विषे कहतेहैं शूद्रेति शूद्रके जूठा भक्षण करणेमें और स्त्रियों के जूठा भक्षण में सप्त ७ उपवास व्रत करे तो शुद्ध होताहै अब शातातप ऋषि जी कथन करतेहैं उच्छिष्टेति जो गुरु न होवे तिसका जूठा नहिं भक्षण करणा और अपणा जूठा और जूठे साथ जो लगा है यह भी नहिं भक्षण करे जेकर भक्षण करे तो कृच्छ्र व्रत करणे करके शुद्ध होताहै ।

राजन्यःशूद्रोच्छिष्टाशीपंचरात्रम् ॥ वैश्योच्छिष्टाशीत्रिरात्रम् वैश्यः शूद्रोच्छिष्टाशाच । शंखः । शूद्रोच्छिष्टाशनेमासंपक्षमेकंतथाविशः क्षत्रियस्य तु सप्ताहंब्राह्मणस्यतथादिनम् १ आमश्राद्धाशनेविद्वान्मासमेकंव्रतीभवेत् ॥ एतन्नवश्राद्धवोध्यम् ॥ एतदुच्छिष्टप्रायश्चित्तंपित्राद्यतिरिक्तविषयम् ॥ पितुर्ज्येष्ठस्यचभ्रातुरुच्छिष्टंभोज्यमित्यापस्तंवस्मरणात् ॥ यत्तुवृद्धव्यासवचनम् ॥ मातावाभगिनीवापिभार्यावान्याश्चयोषितः नताभिःसहभोक्तव्यंभुक्त्वाचांद्रायणंचरेत् १ तत्सहभोजनविषयम् ॥ उच्छिष्टमात्रभोजनेतु शूद्रोच्छिष्टभोजनेसप्तरात्रमभोजनं स्त्रीणांचेत्यापस्तंवोक्तंद्रष्टव्यम् ॥ शातातपः। उच्छिष्टमगुरोरभोज्यंस्वयमुच्छिष्टमुच्छिष्टोपहतंच तद्भोजनेकृच्छ्रम्

अब अंगिराका वचन है सो कहतेहैं ब्राह्मण्येति ॥ ब्राह्मणीके साथ जो भोजन करे वा तिसका जूठा भक्षण करे तिसविषे विद्वान् पुरुष दोष नहिं मानतेहैं १ यह तिसके विवाहमें वा आपत्ति विषयमें जानणा ॥ अब नीचके जूठा भक्षणमें कहतेहैं अंत्येति नीचोंका जूठा द्विजाति भक्षण करे सो चांद्रायण कृच्छ्र व्रत और तदर्ध ब्रह्म क्षत्र वैश्य इनामें यह विधि आपस्तंब जीका कथन कीती हुई जानणी अर्थात् ब्राह्मण नीचका जूठा भक्षण करे तो चांद्रायण व्रत करे क्षत्री भक्षण करे तो कृच्छ्र व्रत करे वैश्यको भक्षण करणे में कृच्छ्रका अर्ध व्रत करणा योग्यहै अब शंख जी कहतेहैं अमेध्येति अपवित्र वस्तु पतित पुरुष चांडाल पुल्कस कथा चांडालविशेष रजस्वला स्त्री कुणि कथा टुंडा खोट नखो वाला इनां कर्के स्पर्श वाला जो अन्न तिसको

यस्त्वंगिरोवचनम् ब्राह्मण्यासहयोऽश्नीयादुच्छिष्टंवाकदाचन तत्रदोषंन मन्यंतेसर्वएवमनीषिणइति १ तद्विवाहविषयमापद्विषयंवा । अंत्योच्छिष्ट भोजनेतु अंत्यानांभुक्तशेषंतुभक्षयित्वाद्विजातयः चांद्रं कृच्छ्रं तदर्धंचब्रह्म क्षत्रविशांविधिरित्यापस्तंबोक्तंद्रष्टव्यम् शंखः । अमेध्यपतितचांडालपुल्क सरजस्वलाकुणिकुष्ठिकुनखिसंस्पृष्टंचभुक्त्वाकृच्छ्रमाचरेत् कुणि हस्ताविक लः । यमः । मसूरमांसमाषांश्चभुक्त्वायोवमतिद्विज त्रिरात्रमुपवासोऽस्यप्रा यश्चित्तंविधीयते प्राणायामैस्त्रिभिःस्नात्वाघृतंप्राश्यविशुद्ध्यति १ विष्णुः शूद्रोच्छिष्टंशुनावापिसंस्पृष्टंप्राश्यभोजनम् तप्तकृच्छ्रेणशुध्यतप्राजापत्ये नवापुनः शक्त्यापराकोदातव्य इतिधर्मस्यनिश्चयः १

भक्षण कर्के कृच्छ्र व्रत करे तो शुद्ध होताहे अब यम जी कहतेहैं मसूरेति मसर माष मांस इनांको जो द्विज भक्षण कर्के उलटी कर देवे इसका प्रायश्चित्त त्रय रात्रिका उपवास व्रत जानणा और स्नान कर्के घृत प्राणायाम करे तो शुद्ध होताहै १ अब विष्णु जी कहतेहैं शूद्रेति शूद्रका जूठा वा कुत्ते का जूठा इनां कर्के स्पर्श वाला जो अन्न तिसको भक्षण करे तो तप्तकृच्छ्र व्रत कर के कर्के शुद्ध होताहै वा प्राजापत्य व्रत कर्के शुद्ध होताहे वा शक्ति कर्के पराक व्रत जो बारां १२ दिनका है सो देणे योग्यहै यह धर्मशास्त्रका निश्चय जानणा अर्थात् जैसी शक्ति होवे तैसा हि व्रत देणे योग्यहै १

कृद्देति क्षत्रि वैश्यादिकर्के भक्षण करणेजोगमहिहाहोया जो अन्न और गर्भसूतककर्के युक्तशवजो अन्न तिसको द्विज भक्षणकर्के एकपादहीन कृच्छ्र व्रत करे और समर्थहोवे तद संपूर्ण व्रत करे १ और शव क्या मुर्देआदि कर्के स्पर्श वाला जो जल तिसके पानविषे प्रायश्चित्तादि अनेकप्रकारयाविषे देखणे योग्यहै ॥ अब क्रियादुष्टके भक्षणविषे प्रायश्चित्तकहतेहैं नेति क्रियादुष्ट जो अन्न तिसका न भक्षण करे जो पतित पुरुषों कर्के पृथक् देखया होवे इत्यादिकर्के निषिद्ध जो अन्न तिसकों भी भक्षण न करे॥ तैसेहि ब्रह्मपुराणविषे कहतेहैं हस्तेति हस्त कर्के दित्ती होई जो स्नेह वाली वस्तु क्या घृतादि और लवण व्यंजन एह दाताको प्राप्त नाहिं होते और उसको

सतूत्रयस्यादाभजुष्टगर्द्दभःसूकरस्तया पादहान्याभवत्कृच्छ्रःशक्तयासवचरेद्विजः १ जुष्टभुक्तशेषम् शवाद्यपहतिजलपानेप्रायश्चित्तादिप्रकीर्णकप्रकरणेद्रष्टव्यम् ॥ अथक्रियादुष्टाशनेप्रा० नभक्षयेत्क्रियादुष्टयद्दुष्टंपतितैः पृथगित्यादिनानिषिद्धम् ॥ तथाब्रह्मपुराणे। हस्तदत्ताश्चयेस्नेहालवणव्यंजनानिच दातारंनोपतिष्ठंतिभोक्ताभुंक्तेतुकिल्बिषम् १ तस्मादंतरितंदेयंपर्णेनवतृणेनवा प्रदद्यान्नतुहस्तेननायसेनकदाचन २ तथा। एकेनपाणिनादत्तं शूद्रदत्तनभक्षयेत् घृततैलेचलवणंपानीयंपायसंतथा भिक्षाचहस्तदत्तापिनग्राह्यायत्रकुत्रचिदिति १

भक्षण करण वालाभी पापको भक्षणकरताहै १ तिस कारणतें घृतादि वस्तु पत्रकर्के वा तृणकर्के देणे योग्यहै हस्त कर्के न देवे और लोहेके पात्र कर्के भी न देवे २ तैसेंहि और कथन करतेहैं एकेति एक हस्त कर्के जो दित्ता होया और शूद्र कर्के दित्ता होया जो अन्नादि तिसको न भक्षण करे और घृत तेल लवण पानी दुग्ध भिक्षा एह संपूर्ण एक हस्त कर्के दित्ते होवें तो किसी जगा ग्रहण करणे योग्य नहिंहैं अर्थात् किसी स्थानविषे भी इनांका ग्रहण न करे अरु करे तो दोषभागी होताहै इसका प्रायश्चित अगली स्मृतिसें जानणा १

श्रीर शंख लिखित स्मृति में कहतेहैं नेति जलतें विना अन्न कों नहिं भक्षण करे क्योंकि भोजनके पहले और पीछे आचमनका विधानहै सो विना जलसे नहि होसक्ता और दो श्रम को पका होया तिसकों भी नहिं भक्षण करे और वासी अन्न कों भी नहिं भक्षण करे और राग चरा रंगोरी मिठआई क्षीर खण्डकी वणी वस्तु दधि गुड कणक यव पीठ इनांके विकारतें विना पूर्वोक्तोंके भक्षण विषे सामान्य उपपातकका पूर्वोक्त प्रायश्चित्त जानणा ॥ और पर्युषित रागादिके भक्षण विषे दोष नहिंहै । अब मिताक्षरा विषे पराशरजीकावचनहै माक्षिक मिश्रत मखीर फाणित शाक दुग्ध लवण घृत एह हाथ करके दिते होयेकों भक्षण करे तो एक दिनका उपवास व्रत करे १ और (भाकासांतपनंचरेत्) एह चतुर्थ पाद विषे पाठ पिच्छे शूलपाणिनें कराहै और इस स्थान मे सांतपन व्रत त्रय दिनका जानणे योग्यहै इसका प्रत्याम्नाय

॥ शंखलिखितौ ॥ नापानीयमन्नमश्नीयात् ॥ नद्विपक्वंनपर्य्युषितमन्यत्र रागचरुखाण्डवदधिगुडगोधूमयवपिष्टविकारेभ्यः ॥ एतद्भक्षणेसामान्योपपातकप्रायश्चित्तंबोध्यम् ॥ मिताक्षरायांतुपराशरः ॥ माक्षिकंफाणितंशाकंगोरसंलवणंघृतम् हस्तदत्तानिभुक्त्वातुदिनमेकमभोजनमिति १ भाका सांतपनंचरेदिति चतुर्थपादेपाठःशूलपाणिनाभिहितः॥ अत्रसांतपनंचत्र्यहसाध्यम् ॥ पुराणमेकंप्रत्याम्नायः ॥ एतद्ज्ञानतः ॥ अज्ञानतस्त्वर्द्धम् ॥ कामतस्तुहस्तदत्तभोजने अब्राह्मणसमीपेभोजने दुष्टपंक्तिभोजनेपंक्त्यग्रेभोजनेऽभ्यक्तमूत्रपुरीषकरणे मृतसूतकशूद्रान्नभोजने शूद्रैःसहस्वप्ने त्रिरात्रमभोजनमितिहारीतोक्तंविज्ञेयम्

एक पुराण जानणा ॥ अर्थात् पुराण दान करे वा तिसका पाठ करा देवे और पुराण नाम सोना मासे १६ चांदीकाहै तिसका दान करणा एह अर्थयथा योग्यहै परंतु एहज्ञानतें भक्षण करणा विषे जानणा और अज्ञानतें भक्षण विषे अर्द्ध व्रत जानणा और इच्छातें हाथकरके दित्ते होएके भोजन विषे कहतेहैं अब्राह्मणोंनि ब्राह्मणके समीप विना भोजन करणे विषे और दुष्ट पांक्तिके विषे भोजन करणे में और पांकितें प्रथम भोजन करणे विषे और स्नान करके मूत्र विष्टा करणे विषे और मृत होएके सूतक विषे वा शूद्र के अन्न भक्षण करणे विषे और स्वप्न विषे शूद्र के साथ भोजन करणे विषे त्रय रात्रि का उपवास व्रत करे एह हारीत जीका कथन कीता होया जानणा

पर्य्येति परस्पर दानतेंजो दुष्ट अन्नहै तिसके भक्षण विषे पराशरजी कहतेहैं ब्राह्मणेति ब्राह्मणका अन्न शूद्र देवे और शूद्रका अन्न ब्राह्मण देवे एह दोनोंअन्न अभक्ष्य है जेकर भक्षण करे तो इक दिनका उपवास व्रत करे एह वृद्धयाज्ञवल्क्यका कथन कीताहोया जानणा ॥ १ ॥ अब शूद्रके हस्ततें भोजन करणे में कहतेहैं ॥ शूद्रेति शूद्रके हस्त करके जो भोजन करता है वा जल पान करताहै सो एक उपवास करके पंचगव्य पान करे तो शुद्ध होताहै एह मनुजीका कथन कीता होया जानणा १ अब फूकदेकरके जो दुष्ट अन्न तिनके भक्षण मे कहते हैं आसनेति आसन पर स्थित होके वा आसन पर पाद रख के वा अर्द्ध वस्त्र ऊपर लेकरके वा फूक मार करके जो भोजन करता है सो कृच्छ्र सांतपनव्रत करे तो शुद्ध होताहै १ इसतें आसन अपवित्र जानणा

पर्य्यायान्नदानदुष्टेतु ब्राह्मणान्नंददच्छूद्रः शूद्रान्नंब्राह्मणोददत् द्वयमेतदभोज्यंस्यादभुक्त्वातूपवसेदहरितिवृद्धयाज्ञवल्क्योक्तमवगंतव्यम् १ शूद्रहस्तभोजनेतु । शूद्रहस्तेनयोभुंक्तेपानीयंवापिबेत्क्वचित् अहोरात्रोपितोभूत्वा पंचगव्येनशुद्ध्यतीतिमनूक्तंज्ञेयम् १ धमनदुष्टेपि । आसनारूढपादोवाव स्त्रार्धप्रावृतोपिवा मुखेनधमितंभुक्त्वाकृच्छ्रंसांतपनंचरेदितितेनैवोक्तम् १ पित्राद्युद्देशेनत्यक्तान्नभोजनेतु । भुंक्तेचेत्पार्वणश्राद्धेप्राणायामान्षडाचरेत् उपवासस्त्रिमासादिवत्सरांतंप्रकीर्तितः १ प्राणायामत्रयंवृद्धावहोरात्रंसपिंडने असरूपेस्मृतंनक्तंव्रतपारणकेतथा २ असरूपेद्विवर्षिकत्रिवार्षिकश्राद्धे व्रतपारणकेव्रतंधृत्वाश्राद्धपारणायवकृतातद्भोजनेपिनक्तमेव

अब पित्रादिके निमित्त दिताजो अन्न तिसके भक्षणविषे कहतेहैं भुंक्तइति जो पुरुष पार्वणश्राद्ध विषे भोजन करता है सो छे ६ प्राणायाम करे और मृत होए के त्रय महीने तें लेकर वर्षतक भोजन करताहै सो उपवास व्रत करे १ । और वृद्धि क्या नांदीश्राद्धविषे भोजन करे तद त्रय प्राणायाम करे और सपिंडी विषे भोजन करे तो एक उपवास व्रतकरे २ और असरूप विषे नक्त व्रत करे तैसेंहि व्रत पारण विषे जानणा २ अब इसीका अर्थ स्पष्ट करके कहतेहै असरूपइति असरूप क्या दो २ वर्ष वा त्रय ३ वर्षके श्राद्ध विषे और व्रत पारणक क्या व्रत धारण करके श्राद्ध विषे पारणा करे तिस भोजन विषे भी नक्तव्रत करे अर्थात् रात्रिको भोजन करे तो शुद्ध होताहै

यहो पूर्वोक्त व्रत क्षत्रीके अन्नभक्षण करणमें दूणाकरे और वैश्यके अन्न भक्षण करणेंमें त्रिगुण करे और शूद्रके अन्न भक्षण करणेंमें चारगुणा व्रत करे १ और विशेष कहतेहैं अतिथ्याविति अभ्यागत को दरवाजे विषे स्थित होयां २ जो द्विज जल पान करे तो सो जल रुधिरकी न्याई होताहै तिसके भक्षण करणे कर्के चांद्रायण व्रतकरे एह भारद्वाजका कथन कीता होया जानणा २ अब हारीत जी भी कथन करतेहैं एकेति मृत होएके ग्यारवें दिन विषे जो भोजन करे वा अस्थिसंचयन विषे भोजन करे तो त्रय दिनका उपवास व्रत कर्के विधि कर्के स्नान करे और कूष्मांड जो यद्देवादेवहेडनमित्यादि मंत्र इनां कर्के घृत का हवन करे तद शुद्ध होताहै १ अब विष्णुजी भी कथन कर तेहैं प्राजापत्यमिति नवश्राद्ध विषे भोजन करे तो प्राजापत्य व्रत करे और प्रथम महीनें में भोजन करणें तें एक पाद ऊन प्राजापत्य व्रत करे और त्रयपक्ष के श्राद्ध विषे भो

द्विगुणंक्षत्रियस्यैतत्त्रिगुणंवैश्यभोजने साक्षाच्चतुर्गुणंह्येतत्स्मृतंशूद्रस्य भोजने १ ॥ अतिथ्याविति द्वारिस्थेपः प्राश्नंतियेद्विजाः रुधिरंतद्भवेद्वारिभुक्त्वाचांद्रायणंचरेदितिभारद्वाजोक्तमवगंतव्यम् ॥ हारीतेनाप्युक्तम् । एकादशाहेतुत्र्यहंभुक्त्वासंचयनेतया ॥ उपोष्यविधिवत्स्नात्वाकूष्मांडैर्जुहुयाद् घृतमिति १ विष्णुनाप्युक्तम् । प्राजापत्यंनवश्राद्धेपादोनंचाद्यमासिके ॥ त्रैपक्षिकेतदर्द्धंतुपंचगव्यंद्विमासिकेइतिचापद्विषयम् ॥ अनापदितु चांद्रायणंनवश्राद्धेप्राजापत्यंतुमिश्रके एकाहस्तुपुराणेषुप्राजापत्यंविधीयते १ ॥ इतिहारीतोक्तंद्रष्टव्यम् । एकाहःप्राजापत्यएकदिनीयंप्राजापत्यंपुराणश्राद्धेष्वित्यर्थः ॥ प्राजापत्यंतुमिश्रकेइत्येतदाद्यमासिकविषयंद्रष्टव्यम्

जन करणें तें अर्द्ध प्राजापत्य व्रत करे और दूसरे महीनेमें भोजन करणें से पंचगव्य पानकरे एह आपत्तिकालविषे जानणा ॥ अब आपत्ति जिसको नहि तिसके भक्षणकरणेंमें कहतेहैं चांद्रायणमिति नवश्राद्ध विषे भोजन करणें तें चांद्रयण और मिश्रक विषे भोजन करणेंतें प्राजापत्य व्रत करे और पुराणें श्राद्ध विषे भोजन करणेंतें एकदिनका प्राजापत्य व्रत करे एहहारीतजी का कथन कीता होया जानणा १ एकाह प्राजापत्य क्या एक दिन का प्राजापत्यव्रत पुराणेश्राद्ध विषे जानणा (और प्राजापत्यंतुमिश्रके) एह जो पूर्वोक्त पद है सो मृत होए पुरुष के प्रथम महीनेका जो श्राद्ध तिसके विषे जेकर भोजन करे तो तिस विषय विषे जानणे योग्य है ॥

अब द्वितीयादि महीनेविषें कहतेहें प्राजापत्यमिति नवश्राद्धविषें भोजन करणेनें प्राजापत्य व्रतक रे और प्रथम महीनें विषे भोजन करणेतें एक पाद ऊन प्राजापत्य व्रत करे ॥ और त्रय पक्षके श्राद्ध विषें भोजन करणेतें अर्द्ध प्राजापत्य व्रत करे और दो २ महीनेके श्राद्धविषें भोजनकरणे तें एक पाद व्रत करे १ और छे ६ महीने के श्राद्ध विषें वा वार्षिक श्राद्ध विषें भोजनकरे तो एकपाद ऊन कृच्छ्र व्रत करे और अन्य मास विषें अर्थात् । ३ । ४ । ५ । ७ । ८ । ९ । १० । ११ ॥ इनामहीनेके मासिक श्राद्ध विषे भोजन करणें तें त्रय रात्रि व्रत करे और नित्य श्राद्ध विषें भोजन करणेतें एक दिन का उपवास व्रत करे एह षट्त्रिंशन्मत का कथन कीता होया जानणा २ और क्षत्रियादियोंके श्राद्ध विषें आपात्तिबिना भोजन करणे में विशेष कथन कीताहे २ नव श्राद्धविषें भोजन करणेमे चांद्रायण व्रत करे और मा

द्वितीयादिषु तु ॥ प्राजापत्यंनवश्राद्धेपादोनंचाद्यमासिके त्रैपाक्षिकेतदर्द्धं तु पादोद्वैमासिकेतथा १ पादोनकृच्छ्रोनिर्दिष्टंषण्मासेचतथाब्दिके त्रिरात्रंचा न्यमासेषुप्रत्यहंचेदहःस्मृतमितिषट्त्रिंशन्मतोक्तंद्रष्टव्यम् क्षत्रियादिश्राद्ध भोजनेत्वनापदितत्रैवविशेषउक्तः। चांद्रायणंनवश्राद्धेपराकोमासिकेस्मृतः त्रैपाक्षिकेसांतपनंकृच्छ्रोमासद्वयेस्मृतः १ क्षत्रियस्यनवश्राद्धेव्रतमेतदुदाहृ तम् वैश्यस्यार्द्धाधिकंप्रोक्तंक्षत्रियात्तुमनीषिभिः २ शूद्रस्यतुनवश्राद्धेचरेच्चां द्रायणद्वयम् सार्द्धचांद्रायणंमासित्रिपक्षेत्वैंदवंव्रतम् मासद्वयेपराकःस्यादू र्ध्वंसांतपनंस्मृतम् ३

सिक श्राद्धविषें भोजन करणेमे पराक व्रत जो बारां १२ दिनकाहे तिसको करे और त्रि पाक्षिक श्राद्ध विषें भोजन करणे मे सांतपन व्रत करे और दो महीने के श्राद्ध विषें भोजन करणे मे कृच्छ्र व्रत करे १ एह पूर्वोक्त व्रत क्षत्री के नवश्राद्ध विषें जानणा और क्षत्रीतें वैश्यको अर्द्धतें अधिक अर्थात् पादोन ऋषियोंने कथन कीताहे २ और शूद्रके नव श्राद्ध विषें भोजनक रणे तें दो २ चांद्रायण व्रत करेतो शुद्ध होताहे और मासिक श्राद्ध विषें भोजन करणेमे अर्द्ध और एक चांद्रायण अर्थात् डेढ चांद्रायण व्रत करे और त्रय पक्षके श्राद्ध विषें भोजन करणेमे एक चांद्रायण व्रत करे और दो २ महीनेके श्राद्ध विषे भोजन करणे मे पराक व्रत जो बारां १२ दिनकाहे सो करणा योग्यहे और इनातें उपरंत जो श्राद्ध हें तिनांविषें जो भोजन करताहे सो सांतपन व्रत करणे करके शुद्ध होताहे ३

अब जो शंख जी का वचनहै सो कथन करतेहैं ॥ चांद्रायणमिति मृत होए पुरुषके नव श्राद्ध विषे जो भोजन करताहै सो चांद्रायण व्रत करे और मासिक श्राद्ध विषे भोजन करे तो पराक व्रत करके शुद्ध होताहै और त्रय पक्षके श्राद्ध विषे भोजन करणेते अति कृच्छ्र व्रत करे और छे ६ महीने के श्राद्ध विषे भोजन करणे ते कृच्छ्र व्रत करे १ और वार्षिक श्राद्ध विषे भोजन करणेते पाद कृच्छ्र व्रत करे और द्विवार्षिक त्रिवार्षिक श्राद्ध विषे भोजन करणे ते एक उपवास व्रत करे इसते उपरंत विषे दोष नहिंहै २ एह शंख का वचनहै सो एह सर्पादि यों करके मृत होए पुरुषाविषे जानणा ॥ अथवा जो पतित नपुंसकइत्यादि पंक्ति रहितहैं इनांके विषय विषे जानणा । व्रत करणेको असमर्थ वास्ते कहतेहैं चांद्रेति चांद्रायण व्रतका प्रत्याम्नाय अठ ८ गौयां हैं और तप्तकृच्छ्र विषे चार ४ गौआंहैं ॥ सोई कहतेहैं चांडालेति

यत्तुशंखवचनम् चांद्रायणंनवश्राद्धेपराकोमासिकेस्मृतः॥ पक्षत्रयेतिकृच्छ्रः स्यात्षण्मासेकृच्छ्रएवतु १ आब्दिकेपादकृच्छ्रंस्यादेकाहःपुनराब्दिके ॥ अत ऊर्ध्वंनदोषः स्याच्छंखस्यवचनंयथेति २ तत्सर्पादिहतविषयम् ॥ यस्ते नपतितक्लीबाद्यपांक्तेयविषयंवा चांद्रायणेऽष्टधेनवः ॥ तप्तकृच्छ्रेतुधेनुचतुष्टयम् ॥ चांडालादुदकात्सर्पाद्ब्राह्मणाद्वैद्युतादपि दंष्ट्रिभ्यश्चपशुभ्यश्चमरणंपापकर्मणाम् १ पतनानाशकैश्चैवविषोद्बंधनकैस्तथा भुक्त्वैषां षोडशश्राद्धेकुर्यादिंदुव्रतंद्विज इति २ तथा अपंक्तियान्नमुद्दिश्यश्राद्धमेकादशेऽहनि ब्राह्मणस्तत्रभुक्त्वान्नंशिशुचांद्रायणंचरेदिति १ ॥ आमश्राद्धे तथाभुक्त्वातप्तकृच्छ्रेणशुध्यति संकल्पितंतथाभुक्त्वात्रिरात्रंक्षपणंभवेदिति भरद्वाजेनगुरुप्रायश्चित्ताभिधानात् ॥

चांडाल जल सर्प ब्राह्मण बिजली दंष्ट्रि जो शूकरादि पशु इनां करके मृत होवे १ और टोए विषे डिगणे ते और अनाशक कया नहिंभोजनकरणा और विष बंधन वा इनांकरके मृत होवैं इनांके षोडश श्राद्ध विषे जो द्विज भोजन करे सो चांद्रायण व्रत करे २ तैसेहि और कहतेहैं अपांक्तेयेति पंक्ति रहित जो पुरुष मृत होया होवे तिसके निमित्त दित्ता होया जो अन्न और ग्यारवें दिनका जो श्राद्ध तिसको जो ब्राह्मण भोजन करे सो शिशु चांद्रायण व्रत करे १ और कच्चे अन्न का जो श्राद्ध है तिसको भक्षण करके तप्त कृच्छ्र व्रत करे और संकल्पित जो अन्न तिसको भक्षण करके त्रय रात्रि उपवास करे २ एह भरद्वाज ने गुरु प्रायश्चित्त कथन कीताहै अ थात् पूर्वोक्त शंखजीके वचनका जो तात्पर्य्य किहाहै सो इन्हादि वचनांते किहाहै

अब ब्रह्मचारियों विषे बृहद्यम जो विशेष कथन करते हैं मासिकेति नहिं समाप्त होगा है व्रत जिस द्विज का सो ब्रह्मचारि मासिकादि श्राद्ध विषे भोजन करे तो इसका प्रायश्चित्त त्रयरात्रि उपवास व्रत किया है फेर त्रय प्राणायाम कर्के घृत का प्राशन करे तो शुद्ध होताहै ॥ १ एह अज्ञान विषय विषे जानणा ॥ और इच्छा तें भक्षण विषे भी बृहद्यम जो कहतेहैं मध्विति मदिरा मांसको जो भक्षण करे और श्राद्धका अन्न सूतकका अन्न भक्षण करे तो प्राजापत्य कृच्छ्र व्रत कर्के ब्रह्मचारी शेष व्रत नूं समाप्त करे १ और कच्चे अन्न के श्राद्ध विषे भोजन करणेतें सबजगा अर्द्ध व्रत करे इसमें वचन कहतेहैं आमेति आम श्रद्ध विषे अर्द्ध व्रत करणा और सब

ब्रह्मचारिषुबृहद्यमोविशेषमाह मासिकादिषुयोऽश्नीयादसमाप्तव्रतोद्विजः त्रिरात्रमुपवासोवैप्रायश्चित्तंविधीयते१ प्राणायामत्रयंकृत्वाघृतंप्राश्यविशुद्ध्यतीति १ इदमज्ञानविषयम् ॥ कामतोपिसएवाह ॥ मधुमांसंचयोऽश्नीयात् श्राद्धंसूतकमेववा प्राजापत्यंचरेत्कृच्छ्रंव्रतशेषंसमापयेदिति ॥ २ ॥ आमश्राद्धेतुसर्वत्रार्द्धम् ॥ आमश्राद्धेतदर्द्धंतुप्राजापत्यंतुसर्वदेति षट्त्रिंशन्मतेविधानात् यत्तूशनसोक्तम् ॥ दशकृत्वः पिबेच्चापोगायत्र्याश्राद्धभुग्द्विजः ततःसंध्यामुपासीतशुद्ध्येत्तुतदनंतरमिति १ ॥ तदनुक्तप्रायश्चित्तश्राद्धविषयम् । संस्कारांगभूतश्राद्धभोजनेतुव्यासनविशेषउक्तः

जगा प्राजापत्यहि करणा इस वचन कों षट्त्रिंशन्मत विषे कथन करणे तें ॥ और जो उशना जीने किहाहै सो कथन करतेहैं दशेति जो ब्राह्मण श्राद्ध विषे भोजन करताहै सो गायत्रीकादश वार मंत्र पड कर्के जल पानकरे तिसतें अनंतर संध्या करे फेर शुद्ध होजाताहै १ सोएह अनुक्त क्या पिछे नहिं कथन कीता जो श्राद्ध तिसमें भोजन करणेका जो प्रायश्चित्त तिस विषय विषे जानणा अर्थात् तीर्थ श्राद्धादिकर्के जो पिछे घर आके श्राद्धकर्तेहैं तिस विषे जानणा और संस्कार जो जातकर्मादि तिनोंका अंगभूत जो श्राद्ध नांद्यादि तिसके विषे भोजन करणेमें व्यासदेव जी का जो वचनहै सो कथन करतेहैं

निवृत्तइति चूडाहोमके निवृत होयां २ और नाम करणतें प्रथम जेकर भोजन करे तो सांतपन व्रत करे और जातकर्ममें भोजनकरे तौभी सांतपन व्रत करे १ और होर संस्कारों विषे ब्राह्मण भोजन करे तो इसीवचन तें उपवास व्रत करके शुद्ध होताहै कैसा ब्राह्मण है निंदित अन्न के भक्षण करणवालाहै २ और सीमंत उन्नयनादि जो कर्म्महैं तिनांविषे भोजन करणेमें फेर धौम्यजी विशेष कहतेहैं ब्रह्मेति ब्रह्मौदन विषे और सोम यज्ञविषे सीमंत उन्ननयनादि कर्म और जातश्राद्ध विषे नव श्राद्ध विषे ब्राह्मण भोजन करे तो चांद्रायण व्रतकर्के शुद्धहोताहै १ इसस्थानमें ब्रह्मौदन

निवृत्तेचूडाहोमेतुप्राङ् नामकरणात्तथा ॥ चरेत्सांतपनंभुक्त्वाजातकर्मणि चैवहि १ अतोऽन्येषुतुभुक्त्वान्नंसंस्कारेषुद्विजोत्तमः नियोगादुपवासेनशुद्ध्यतेनिंद्यभोजनइति २ सीमंतोन्नयनादिषुपुनर्धौम्योविशेषमाह॥ ब्रह्मौदनेचसोमेचसीमंतोन्नयनेतथा जातश्राद्धेनवश्राद्धेद्विजश्चांद्रायणंचरेदिति १ अत्र ब्रह्मौदनाख्यंकर्म यज्ञांगभूतं सोमसाहचर्य्यात् ॥ दूषितफलादौ प्रायश्चित्तमाह लघुविष्णुः ॥ मृद्वारिकुसुमादींश्चफलकंदेक्षुमूलकान् विण्मूत्रदूषितान्प्राश्यचरेत् कृच्छ्रंचपादतः॥ सन्निकृष्टेह्यमेवस्यात्कृच्छ्रंत्वशुचिभोजने १ दूषितंसंसर्गमात्रम् ॥ सन्निकृष्टत्वंतुमहान्संसर्गः

नाम कर्म यज्ञका अंगभूत जानणा क्योंकि सोम यज्ञकी साहचर्य्यतातें ॥ अब दूषितजो फलादि तिनके भक्षण में प्रायश्चित्त लघु विष्णु जी कहतेहैं मृदिति मृत्तिका जल पुष्पादि फल कंद गन्ने मूलिआं एह विष्टा मूत्र कर्के दूषित होवे तो इनके भक्षणकरणेमें कृच्छ्रव्रतका एक पाद व्रत करे जेकर विष्टा मूत्र समीप होवें तो अर्द्ध कृच्छ्र व्रत करे और अपवित्र भोजनके भक्षणविषे कृच्छ्र व्रतकरे १ और इस स्थानमें दूषित नाम समीप मात्रका जानणा॥ और संन्निकृष्टत्वनाम बहुत समीपता का इस जगा जानणा

अब आपस्तंबजी कथन करतेहैं ॥ याजकेति यज्ञ करवाणे वाले का अन्न और नव श्राद्धोंका और संग्रह क्या मेलेका जो अन्न और स्त्रीके प्रथम गर्भ होयां २ तिसके गृहका अन्न अथवा तिसके गर्भके संस्कारदा जो अन्न इनांको ब्राह्मण भक्षण कर्के चांद्रायण व्रत करेतो शुद्ध होताहै १ अब मनुजी कहतेहैं घृतेति जो पुरुष पंचग्रासी घृततें विना करताहै और पिच्छेतें घृतकर्के भोजन करताहै सो चांद्रायण व्रतकर्के शुद्ध होताहै १ अब वृथा पाक जो अन्न तिसके भक्षण विषे प्रायश्चित्त शातातपजी कहतेहैं तिसमेभी प्रथम वृथापाकका लक्षण कहतेहैं यत्रेति जिस विषे देवता और पितर भोजन नकरें सो वृथापाक किहाहै तिसको कदाचित् भी भक्षण नकरे १

आपस्तंबः ॥ याजकान्नंनवश्राद्धंसंग्रहेचैवभोजनम् स्त्रीणांप्रथमगर्भेचद्विजश्चांद्रायणंचरेत् १ मनुः । घृतहीनंतुयोभुंक्तेनरस्त्वाहुतिपंचकम् पश्चाद्घृतेनयोभुंक्तेभुक्त्वाचांद्रायणंचरेत् १ वृथापाकान्नभक्षणे । शातातपः । यत्रनाश्नंतिदेवाश्चपितरश्चयथाविधि वृथापाकःसविज्ञेयस्तस्यनाद्यात्कथंचन १ वृथापाकस्यभुंजानःप्रायश्चित्तंचरेद्द्विजः प्राणायामैस्त्रिरभ्यस्यघृतंप्राश्यविशुध्यति २ लिखितोपि । यस्यचाग्नौनाक्रियतेयस्यवाग्रंनदीयते नतद्भोज्यंद्विजातीनांभुक्त्वातूपवसेदहारिति १ ⊛ ॥ अथभावदुष्टवाग्दुष्टादिभक्षणे प्रायश्चित्तम्

और वृथा पाक के भोजन करणे वाला ब्राह्मण प्रायश्चित्त करे सो त्रय प्राणायाम कर्के घृतका प्राशन करे तो शुद्ध होताहै २ अब लिखित स्मृति सें भी कथन करतेहैं यस्येति जिस अन्नके अग्र भागका अग्निविषे हवन न करे और जिस अन्नके अग्र भागका दान न देवे अर्थात् जिस अन्नतें हंदा न देवे सो अन्न द्विजाति क्या ब्राह्मणको भोज्य नहि हैं अर्थात् भक्षण करणे योग्य नहि है और जेकर भक्षण कर लेवे तो एक उपवास व्रत करणे कर्के शुद्ध होताहै १ ⊛ अब भाव दुष्ट वाग्दुष्टादि जो अन्न तिनके भक्षणविषे प्रायश्चित्त कहतेहैं

तत्रेति प्रथम भावदुष्टका लक्षण कहतेहैं तिस भावदुष्टादि विषेजो रंगतें वा स्वरूपतें तुल्यता करके निंदित जो शरीरके मलक्या विष्टादि तिनकी भावनाकों उत्पन्न करे वा शत्रु प्रेरित बिषादि की जोशंकाकूं उत्पन्न करे सो भावदुष्ट किहाहै भविष्यत्पुराणविषे किहाहै विचिकित्सेति जिस अन्न तें हृदय विषे संशय होजावे सो सुहृल्लेख क्या भावदुष्ट किहाहैं और स्वभावतें शंका होजावे अर्थात् किसेके देणेसें शंकानहि होई किंतु उसकी दुर्गंधि आदि स्वभाव ते हि शंकाहोईहैतो विष्टा तुल्य किहाहै १ और रसके विकारतें रस दुष्ट किहाहै वचनतें क्षीर दुग्ध पूडेतो आद लेकर यथा क्या यथावत् तिसी दिन विषे रहणे तें हुंदेहैं क्योंकि दूसरे दिन विषे उनका विकार हो वजाताहै ॥ २ ॥ अब इसी विषे पराशर जी कहते हैं वागिति वाणी दुष्ट और भाव दुष्ट जो अन्न और भावदूषित भाजन क्या मलादि शंका वाला जो भांडा तिसके विषे ब्रा

तत्र यद्दर्णत आकारतोवाविसदृशतया जुगुप्सितशरीरमलादिभाव नांजनयति अरिप्रयुक्तगरादिशंकां वा जनयति तद्भावदुष्टम् ॥ भविष्यत्पुराणे ॥ विचिकित्सातुहृदये अन्नेयस्मिन्प्रजायते ॥ सुहृल्लेखंतु विज्ञेयंपुरीषंतुस्वभावतः ॥ १ ॥ रसदुष्टंविकाराद्धिरसस्येतिनिदर्शनात् पायसापूपक्षीरादितस्मिन्नेवदिनेयथा ॥ २ ॥ सुहृल्लेखंभावदुष्टं अत्र पराशरः ॥ वाग्दुष्टंभावदुष्टंचभाजनेभावदूषिते भुक्त्वान्नंब्राह्मणःपश्चात् त्रिरात्रेणविशुध्यतीति ॥ १ ॥ इदंपुरीषंभुंक्ष्वेत्याद्युक्त्वादत्तमन्नंवाग्दुष्टम् शंकायांसत्यांतु शंकास्थानेसमुत्पन्नेअभोज्याभक्ष्यसंज्ञिते आहारशुद्धिंवक्ष्यामितन्मेनिगदतः शृणु १ ॥

ह्मण अन्नको भक्षण करके पिच्छे त्रय रात्रिके उपवास व्रत करके शुद्ध होताहै १ और वाग्दुष्ट का लक्षण कहतेहैं ॥ एह विष्टाहै इसको तूं भक्षण कर इत्यादि कथन करके दित्ता जो अन्न इसको वाग्दुष्ट कहतेहैं ॥ और जिसमें शंका हो जावे तिसमें अब कथन करते हैं शंकेति शंका स्थानके उत्पन्न होयां २ अभोग्य अभक्ष्य है संज्ञा जिसकी अर्थात् एह वस्तु अभोज्य क्या भक्षण करणे योग्य नाहिहै अर्थात् शूद्रादिके पकाए होएएह चणेआदिहोणगे और अभक्ष्य जो वस्तुक्या एह वस्तु अभक्ष्यहै अर्थात् पतितादिके हाथके वनाए होएएहपूडे आदि होणगे इस प्रकार की जिस स्थानमे शंका होजावे तिसमे पराशरजी कहतेहैं कि तिसके भक्षण करणेकी शुद्धि कथन कर रिहा जो मैं हां सो तूं मेरे तें श्रवण कर १

अक्षारेति खारेलवणोंते विना और रूक्खी ब्राह्मीसुवर्चलाका वा त्रय रात्रि शंखपुष्पीकापान दुग्ध के साथ ब्राह्मण करे अर्थात् जितने दिन ब्राह्मी पीतारहे उतने दिन खारी वस्तु और लवण और घृत ना भक्षण करे १ ॥ पलाशेति पलाहके बिल्लके पत्र कुशापद्म रूंबल इनका क्राथकर्के जलपान करे तो त्रय रात्रि कर्के शुद्ध होता है २ एह वसिष्ट जो का कथन कीताहोया जानणा ॥ और मनु जी नें भी अभक्ष्य के भक्षणकी शंकाविषें कथन किया है संवत्सरेति वर्षरोजमे एक कृच्छ्र व्रतकों ब्राह्मण करे परंतु अज्ञान तें जो भक्षण कीता है तिसकी शुद्धि वास्ते और ज्ञान तें जो भक्षण कीताहै विशेष तें तिसकी शुद्धि वास्ते १ और शंख स्मृतिमें भी एही कथन कीताहैं संव त्सरेति वर्षरोजमें जो अज्ञानतें भक्षण कीताहै तिसकी शुद्धि वास्ते वर्ष वर्ष प्रति ब्राह्मण एक

अक्षारलवणांरूक्षांपिवेद्ब्राह्मींसुवर्चलां त्रिरात्रंशंखपुष्पींवाब्राह्मणःपयसा सह १ पलाशबिल्वपत्राणिकुशान्पद्ममुदुंबरं अपःपिवेत्क्राथयित्वात्रिरात्रे णविशुद्ध्यतीतिवासिष्ठोक्तंद्रष्टव्यम् । मनुनाप्यभोज्यभोजनशंकायामुक्तम् ॥ संवत्सरस्यैकमपिचरेत्कृच्छ्रंद्विजोत्तमः अज्ञातभुक्तशुद्ध्यर्थंज्ञातस्यचाविशेष तइति १ शंखस्मरणेप्येवम् ॥ संवत्सरस्याज्ञातभुक्तशुद्ध्यर्थंप्रतिवर्षंद्विजोत्त मएकंकृच्छ्रंचरेदित्यर्थः। प्रायश्चित्तविवेकेसंवर्त्तः ॥ आपोशानमकृत्वातुयो भुंक्तेनापादाद्विजः भुंजानस्तुयदाब्रूयाद्गायत्र्यष्टशतंजपेत् १ अष्टशतमष्टो त्तरशतम् ॥ स्मृत्यंतरे भोजनकालेमौनंविहितम् ॥ यस्त्वन्विच्छतिसर्वेषां पापानांचविनिष्कृतिम् मौनेनान्नंसमश्नीयादगस्त्यशिरसात्स्वपेदिति १ ॥

कृच्छ्र व्रत करे इसमे ज्ञातभुक्तशुद्धि वास्ते द्विगुणकरे एह अर्थ सिद्धहै १ अब प्रायश्चित्त विवेक विषे संवर्त्त ऋषि जी कथन करतेहैं आपोशानमिति आपोशान मंत्र कों न पढ कर्के जो ब्राह्मण आपात्तिके विना भोजन करे और भोजन करदा होया जेकर वात करे तद गायत्रीका अष्ट शत जप करे अष्टशत क्या अष्टोत्तर शत अर्थात् एक माला जप करे १ और स्मृतिविषे भोजन काल मे मौन विधान कीताहै तिसको कहतेहैं ॥ यस्त्विति जो पुरुष संपूर्ण पापांके दूर करणेकी इच्छा करताहै सो पुरुष चुप कर्के भोजन करे और दक्षिण दिशा विषे शिर रखके शयन करे तो शीघ्र ही पापोंते रहित होताहै इसी वास्ते बिना मौनते भोजनमे प्रायश्चित्तहै ॥ १

॥ सोई संवर्त जी फेर कथन करतेहैं अनेति जो पुरुष आचमन करणेतें विना जल पान करे वा कुछक भक्षण करे तो सो अष्ठ ८००० हजार गायत्री का जप करे तद शुद्ध होताहै २ अथ लघुहारीत जी कथन करतेहैं रेतइति वीर्य्य मूत्र विष्टा इनांका त्याग करके जेकर प्रमाद तें कुछक भक्षण कर लेवे तौं तिसके आद विषे एह करणे योग्यहै कि मृत्तिका जल करके तिसकी शुद्धिहै और पिच्छे तें आचमन करके जल विषे अघमर्षण मंत्र जो ऋतंचसत्यमि त्यादि इसका जप करे १ परंतु एह नाहीं निगलया जो ग्रास तिसविषे जानणा ॥ और एक बार ग्रासके निगलने विषे आपस्तंब जी कहतेहैं भुंजानस्येति भोजनकरदे होए ब्राह्मण की गुदा वग जावे अर्थात् विष्टा हो जावे तो तिसको उच्छिष्टता और अपवित्रतादोष हैं १ तिसका प्रायश्चि

सएव ॥ अनाचांतःपिवेद्यस्तुभक्षयेद्वापिकिंचन गायत्र्यष्टसहस्रंतुजपंकृत्वा विशुध्यति २ लघुहारीतः ॥ रेतोमूत्रपुरीषाणामुत्सर्गश्चेत्प्रमादतः। तदादौतु प्रकर्तव्यातिनशुद्धिर्मृदंबुभिःपश्चादाचम्यतुजलेजप्तव्यमघमर्षणम् १ एतद निर्गीर्णग्रासेसकृन्निर्गीर्णग्रासेतु। आपस्तंबः। भुंजानस्यतुविप्रस्यकदाचित्स्र वतेगुदम् उच्छिष्टमशुचित्वंचप्रायश्चित्तंकथंभवेत् १ आदौकृत्वातुवैशौचंत तःपश्चादुपस्पृशेत् अहोरात्रोषितोभूत्वापंचगव्येनशुद्ध्यति २ यत्तुशातात पः। मूत्रोच्चारसमुत्सर्गेमोहाद्भुंक्तेथवापिवेत् त्रिरात्रंतत्रकुर्वीत इतिशातातपो ब्रवीत् १ तद्बहुग्रासाशने। आपस्तंबः। मूत्रोच्चारंसकृत्कृत्वाऽकृत्वाशौचमा त्मनः ॥ मोहाद्भुक्त्वात्रिरात्रंतुयवान्पीत्वाविशुध्यतीति १ मूत्रपदंपुरीषादेरु पलक्षणम् ॥

त कैसें होवे इसमे व्यवस्था करतेहैं कि तद पहिलें शौच करे फेर आचमन करे और एक दिन रात्रका उपवास व्रतकरके पंचगव्यका पानकरे तो शुद्धहोताहै २ अब इसीमे जो शातातप जीका वचनहै सो कहतेहैं मूत्रेति मूत्र विष्टा के त्याग कीते होयां मोहकरके जो पुरुष भोजन करे वा जल पान करे तद तिसविषे त्रय रात्रि व्रत करे एह शातातपजीने किहाहै १ सो एह बहुत ग्रा सों के भक्षणविषे जानणा ॥ अब इसीमें आपस्तंबजी कहतेहैं मूत्रेति मूत्र और विष्टाको एकवार करके और अपने आपका शौच न करके मोहतें भोजन करे तो त्रय रात्रि यव पान करके शुद्ध होताहै १ इस जगा मूत्रपद विष्टादिका उपलक्षण जानणा।

अब शातातप जो कथन करतेहैं अथेति जेकर भोजन काल विषे ब्राह्मण अपवित्र होजावे अर्थात् अधोवायु छोडे तद तिस ग्रासको पृथ्वी विषे सुटदेवे और स्नान करे तो शुद्ध होताहै १ और तिस ग्रासको जेकर भक्षण करे तो एक दिनरात्रके उपवास व्रत करके शुद्ध होताहै और संपूर्ण अन्न भक्षण कर लेवे तो त्रयरात्रिके व्रत करके शुद्ध होता है २ और तैल मर्दनादि करके जो स्नान निमित्तहै तिसमें स्नान नहि करे तो उसमें संवर्त्त जो का वचनहै सामिति स्नाननिमित्त के प्राप्त होयां २ जेकर ब्राह्मण स्नान विना भोजन वा जल पान करे तो स्नान करके गायत्रीका अष्ट सहस्र जपकरे अष्ट सहस्र क्या अष्ठ ८ तें अधिक हजार जप करे १ एह एक वारके स्नान विषे जानणा। और अभ्यास विषे शंख जो कथन करते हैं नीलमिति नीले वस्त्रको धारण

शातातपः। अथभोजनकालेचेदशुचिर्भवतिद्विजः भूमौनिक्षिप्यतंग्रासंस्नात्वा विप्रोविशुध्यति १ भक्षयित्वातुतंग्रासमहोरात्रेणशुध्यति अशित्वासर्वमन्नंतु त्रिरात्रेणविशुध्यतीति २ तैलाभ्यंगादिनास्नाननिमित्तेऽकृतस्नानस्य संवर्त्तः समुत्पन्नेद्विजःस्नानेभुंजीतार्थपिबेतवा गायत्र्यष्टसहस्रंतुजपेत्स्नातःसमाहितः १ अष्टसहस्रमष्टाधिकसहस्रम् ।एतच्चसकृत् ॥ अभ्यासेशंखः ॥ नीलंवस्त्रं परीधायभुक्त्वास्नानार्हकोभवेत् त्रिरात्रंतुव्रतंकुर्याच्छित्वागुल्मलतांतथेति १ क्रतुः ॥ आसनारूढपादोवावस्त्रार्द्धप्रावृतोपिवा मुखेनधमितंभुक्त्वाकृच्छ्रं सांतपनंचरेदिति १ स्मृत्यंतरं एवमेवस्थितोगच्छन् व्यायामैरन्नभोजने एवमेवेति एकाहादीन्यभक्ष्यभक्षणप्रायश्चित्तानियोजनीयानि ॥

करके जो भोजन करता है सो स्नानके योग्य होताहै और त्रयरात्रि व्रत करे तो शुद्धहोताहै और विनाटाणेतें जो वृक्ष है तिसको और गुच्छे लता क्या वेल इनांनूं कट करके भी एही पूर्वोक्त व्रतकरे तो शुद्ध हुंदाहै १ अब क्रतुस्मृति सें कथन करते हैं आसनेति आसनपर स्थित होके वा आसन पर पैर रखके वा अर्द्ध वस्त्र ऊपर लेकर वा फूक मारकरके जो भोजन करताहै सो कृच्छ्र सांतपन व्रतकरे १ और स्मृतिसें कहतेहैं इसीप्रकार बैठाहोया वा चलताहोया वा कसरत करदा होया भोजन करे तो तिसके अर्थ कहतेहैं एवमिति एकाहादि जो अभक्ष्य भक्षणके प्रायश्चित्त सो जोडने योग्यहैं अर्थात् बैठाहोया भोजन करे तो एकदिनका व्रत करे और चलताहोया भोजन करे तो दोदिनका व्रतकरे और कसरत करदा होया भोजनकरे तो त्रयदिनका व्रतकरे एह अर्थहै

अब पराशरजी कथन करतेहैं । भुंजान इति जो ब्राह्मण भोजन करदा होया पयरनूं हत्थकरके स्पर्श करे और जो जूठे भांडेविषे भोजन करताहै सो अपणा जूठा भक्षण करताहै ॥ १ ॥ और विशेष कहतेहैं ॥ पेति खडावांमें स्थित होके और पलंग परस्थित होके भोजन न करे और कुत्ते और चांडालकरके देखया जो भोजन तिसको त्यागदेवे जेकर उसको भक्षण करे तो पूर्वोक्त १००८ गायत्रीका जप करे तद शुद्धहुंदाहै ॥ २ ॥ एहकर्तृ दुष्टके भक्षणविषें प्रायश्चित्तहै ॥ ॐ अब वाणीकरके दुष्ट भोजनके प्रायश्चित्तको प्रसंगसे कहतेहैं तिसमे ब्रह्मपुराणका वचनहै भक्ष्यमिति जो पुरुष भक्षण करणे योग्य वस्तु को क्रोधतें अभक्ष्यवाणी करके कहे अर्थात् एह वस्तु अभक्ष्य क्या विष्टाहै ऐसा कह कर देवे तो गुरुका भी अन्न होवे तिसको भक्षण न करे

पराशरः ॥ भुंजानश्चैवयोविप्रःपदंहस्तेनसंस्पृशेत् स्वमुच्छिष्टमसौभुंक्तेयोभुंक्तेभुक्तभाजने १ पादुकास्थोनभुंजीतपर्यंकस्थःस्थितोपिवा श्वानचांडालदृष्टंचभोजनंपरिवर्जयदिति २ । इतिकर्तृदुष्टाशनेप्रायश्चित्तम् ॐ ॥ ब्रह्मपुराणे । भक्ष्यंत्वभक्ष्यवाक्येनयोदद्याद्रोषधर्मतः गुरोरपिनभोक्तव्यं वाग्दुष्टंतन्महाघहृदिति ॥ १ ॥ अकामतः सकृद्भक्षणेभावदुष्टादिप्रक्रम्य गौतमः छर्दनंघृतप्राशनंचेति ॥ हारीतः । शंकितंप्रतिदत्तान्नंविद्विष्टान्नमथापिच यदिभुंजीतविप्रोयःप्रायश्चित्तंकथंभवेत् १ एकरात्रोपवासश्चगायत्र्यष्टशतंजपेत् प्राशयेत्पंचभिर्मंत्रैःपंचगव्यंपृथक्पृथगिति २ अन्यस्मै परिविष्यान्यस्मैदत्तंप्रातिदत्तान्नम् ॥

क्योंकि सो वाग्दुष्ट अन्नवडा पापदेणवालाहै १ और अज्ञानतें एकवार भक्षण विषें भावदुष्टादि को प्रारंभकरके गौतमजी कहते हैं छर्दनामिति भावदुष्टादिके भक्षणविषे जेकर उलटी होजावे तो पीछे घृत प्राशन करके शुद्ध होताहै ॥ अब हारीत जी कहतेहैं शंकितमिति शंकित क्या विषादिकी शंका वाला जो अन्न और प्रतिदत्तान्न और शत्रुकाअन्न इनको जेकर ब्राह्मण भक्षण करे तो तिसका प्रायश्चित्त कैसेहोवे १ सो कहतेहैं सो विप्र एकरात्र उपवासव्रत करे और गायत्री का अठ सौ जपकरे और पंचगव्यके जो मंत्रहैं तिनां करके पृथक् २ पंचगव्यका पान करे तो शुद्धहोताहै २ प्रतिदत्तान्नका अर्थ कहतेहैं जो अन्न दूसरेके ताईं परिवेषण करके दूसरेको दित्ताजावे तिसका नाम प्रतिदत्तान्न जानणा ॥

अब गुण दुष्ट जो अन्न तिसके भक्षण विषे मनु जी कहते हैं शुक्तानीति शुक्त और कषाय एह पवित्र भी हैं परंतु इनांनू द्विज पानकर्के तितना काल अपवित्र रहताहै जितना काल शौच नहिं आवे १ इसविध अज्ञानतें होवे तो (शेषेषूपवसेदहः) इस वचन तें प्रतीत हुआ एह उपवास देखणे योग्य है ॥ और इच्छातें पान करणे विषे कहतेहै केवलानीति केवल जो शुक्त है तैसेहि वासी जो अन्न और ऋजीष पक्क जो अन्न इनां नू भक्षण कर्के त्रय रात्रि व्रती रहे एह शंख स्मृति में किहाहै ॥ अब पूर्व श्लोकका हि अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहै शुक्तानीति जो स्वभावतें मधुरादि रस कालयोग वया समय विपरीतता कर्के जल विकार तें अम्लभाव नू प्राप्त होते हैं सो

अथगुणदुष्टाशनेमनुः ॥ शुक्तानिचकषायांश्चपीत्वामेध्यानपिद्विजः ॥ तावद्भवत्यप्रयतोयावत्तन्नव्रजत्यधइति ॥ अत्राकामतः शेषेषूपवसेदहरित्युपवासोद्रष्टव्यः ॥ कामतस्तु ॥ केवलानिचशुक्तानितथापर्युषितंचयत् ऋजीषपक्कंभुक्त्वाचत्रिरात्रंतुव्रतीभवेदितिशंखस्मरणात् ॥ शुक्तानीति यानिस्वभावतोमधुरादिरसानिकालयोगेनोदकपरिणामादिनाऽम्लभावंव्रजंतितानिशुक्तानि ॥ कषायान्विभीतकादीनुक्क्थितानिअप्रतिषिद्धान्यपिपीत्वायावन्नजीर्णानिभवंतितावदशुचिःपुरुषोभवति ॥ ऋजीषपक्कमुद्धृतरसंशाकादितत्पुनःपक्कंभुक्त्वेत्यर्थः । एतच्चामलकादिफलयुक्तकांजिकादिव्यतिरेकेणद्रष्टव्यम् । कुंडिकासफलायेषुगृहेषुस्थापिताभवत् तस्यास्तुकांजिकाग्राह्यानेतरस्याःकदाचनेतिस्मरणात् ॥

शुक्त कहेहैं और कषाय जो विभीतक वया बहेडे तो आदलेवर और क्वथित और अप्रतिषिद्ध भी हैं परंतु इनांका पानकर्के जितना काल सो जीर्ण न होवें तितना काल पुरुष अपवित्र रहताहै और ऋजीष पक्क वया रसतें रहित जो शाकादि तिसनू फेर पकाये तिसनू भक्षण कर्के एह आमलकादि फल युक्त जो कांजिकादि इनां ते भिन्न विषे जानणा ॥ और फल युक्त कुंडिका अर्थात् कांजी वास्ते कुंडी विषे फलविशेषको पाय कर्के जिसदे घर विषे स्थित है तिसका कांजि ग्रहण करणा योग्य है और किसीका ग्रहण नहि करणा एह स्मृतिमें किहा है ॥

उद्धृत स्नेहादि विषे कहते हैं उद्धृतेति उद्धृतस्नेह विलयन खल मथित वस्तु इनातें लेकर जो आत्तवीर्य्य हैं इनांको भक्षण न करे ऐसें कह करके पीछे एह कियाहै कि (प्राक् पंचनखेभ्यः) पंचनख जो हैं सहकी आदि इनके मारणे तें पहले एह प्रायश्चित्त है कि छर्दन क्या उलटी करके घृत प्राशन करे तो शुद्ध होता है एह गौतम जी का किहा होया जानणा और विलयन नामघृतादि मलका जानणा॥ और उद्धृत क्या दूर होयाहै स्नेह क्या सारांश जिनांका सो जो हैं विलयनादि इसी कारणतें आत्तवीर्य्य कहे हैं तिनांको न भक्षण करे और जेकर इनांका भक्षण होवे तद उलटी करके घृत प्राशन करे एही प्रायश्चित्त (प्राक्पंचनखेभ्यः) एह स्मृत्युक्त निमित्त की अवधि पर्य्यंत देखणे योग्य है और जिस अन्नमेंसें हवनादि न होवे तिस अन्नके भक्षण विषे लिखित स्मृति सें कहतेहैं यस्येति जिस अन्नमेंसें हवन न होवे

उद्धृतस्नेहादिषु ॥ उद्धृतस्नेहविलयनपिण्याकमथितप्रभृतीनिचात्तवीर्य्याणि नाश्नीयादित्युक्त्वा प्राक्पंचनखेभ्यःछर्दनंघृतप्राशनंचेतिगौतमोक्तंद्रष्टव्यम् विलयनंघृतादिमलम् उद्धृतःस्नेहःसारांशोयेभ्यस्तानिविलयनादीनि अतएवआत्तवीर्य्याणिकथ्यंतेतानिनाश्नीयात् ॥ एतस्मिन्भुक्तेछर्दनंघृतप्राशनंप्रायश्चित्तंप्राक्पंचनखेभ्यइतिस्मृत्युक्तनिमित्तावधिप्रदर्शनम् ॥ अहुताद्यन्नभोजनेतुलिखितआह यस्यचाग्नौनक्षिप्यतेयस्यचाग्रंनदीयते नतद्भोज्यंद्विजातीनांभुक्त्वातूपवसेदहः १ वृथाकृसरसंयावपायसापूपशष्कुलीः आहिताग्निर्द्विजोभुक्त्वाप्राजापत्यंसमाचरेत २ अनाहिताग्निस्तुशेषपूपवसेदहरित्युपवासोद्रष्टव्यः॥ भिन्नभाजनादिषुभोजनेसंवर्त्तेनोक्तम् ॥ शूद्राणांभाजनेभुक्त्वा भुक्त्वावाभिन्नभाजने ॥ अहोरात्रोषितोभूत्वापंचगव्येनशुद्धयतीति ॥ १ ॥

और जिस में सें हंदा न दित्ता जावे सो द्विजातियों को भक्षण करणा योग्य नाहिं है जेकर भक्षण करे तो एक उपवास व्रतकरके शुद्ध होताहै १ और वृथा क्या विष्णुके तांई नैवेद्य लगाणे तें विना खिचड़ी कड़ाह क्षीर पूड़े पराकड़ी इनांनू अग्निहोत्री ब्राह्मण भक्षण करके प्राजापत्यव्रत करे और अग्निहोत्री न होवे और जेकर पूर्वोक्त को भक्षण करे तो तिसको (शेषपूपवसेदहः)एक उपवास देखणे योग्यहै ॥ अबभज्जे होए भांडादिमें भोजन करणे विषे संवर्त्त जी कहतेहैं शूद्रेति शूद्रोंके भांडे विषे भोजन करणवाला और भज्जे होए भांडे विषे भोजन करणे वाला पुरुष एक दिन रात्रके उपवास व्रत करके फेर पंचगव्य पान करे तो शुद्ध होताहै १

जैसें स्मृत्यंतरविषें कथन कियाहै सो कहतेहैं वटेति बोड अरु पिप्पल कुंभी तेंदुक कोविदार कदंब इनोंके पत्रोंविषें भोजन करै सो चांद्रायण व्रतकरके शुद्धहोताहै १ तथा इहां और कहतेहैं पलेति पलाशके और पद्मके पत्रविषें गृहस्थी भोजनकरै तो चांद्रायणव्रतकरै और वानप्रस्थी और यति इनमे भोजनकरे तो चांद्रायणव्रतके फलको प्राप्तहोताहै १ ॥ अब किसीके लेणेकरके जो अभोज्य वस्तु तिसके भोजन विषें प्रायश्चित्त कहतेहैं यदिति जो वस्तु स्वरूपतें निषिद्ध नहिंभी है और नीचादि पुरुषको स्वामि होणेसें अभोज्य किही जावे सो पारग्रह करके अपवित्र जानणो तिसविषे मनुजी कहतेहैं नेति अश्रोत्रिय क्या जो वेदपाठी नहि तिसके यज्ञ और ग्राम विषे यज्ञ करवाणे वाले करके करवाया जो यज्ञ तिस विषे और स्त्रीकरके कीता और नपुंसकने कीता जो यज्ञ इनोविषें ब्राह्मण भोजन न करै १ मत्तेति उन्मत्त और क्रोधयुक्त पुरुषका और रोगीका

यथास्मृत्यंतरेप्युक्तम् ॥ वटार्काश्वत्थपत्रेषुकुंभीतिंदुकपत्रयोः ॥ कोविदारकदंबेषुभुक्त्वाचांद्रायणंचरेदिति १ तथा पलाशपद्मपत्रेषु गृहीभुक्तैंदवंचरेत् वानप्रस्थोयतिश्चैवलभतेचांद्रिकफलमिति १ ॥ अथपरिग्रहादभोज्यभोजनप्रायश्चित्तम् ॥ यत्स्वरूपतोऽनिषिद्धमपिविशिष्टपुरुषस्वामिकतयाऽभोज्यंभवत्यततत्पारिग्रहादशुचि ॥ तत्रमनुः ॥ नाश्रोत्रियतनेयज्ञेग्रामयाजिहुतेतथा स्त्रियाक्लीबेनचहुतेभुंजीतब्राह्मणः क्वचित् १ ॥ मत्तक्रुद्धातुराणांतुनभुंजीतकदाचन गणान्नंगणिकान्नंचविदुषाचजगुप्सितम् २ स्तेनगायनयोश्चान्नंतक्ष्णोवार्धुषिकस्यच दीक्षितस्यकदर्यस्यबद्धस्यनिगडस्यच ३ ॥ अभिशस्तस्यषंडस्यपुंश्चल्यादांभिकस्यच ॥

अन्न भक्षण न करे और सभलोकोंके समूहका और गणिका क्या वेश्याका और विद्वान् पुरुष करके निंदित जो अन्न अर्थात् विद्वान् जिसको कहैकि एह अन्न भक्षण नहि करणा ऐसा जो चांडालादि दुष्ट अन्न २ और चोरका और गायन करणे वालेका और काठके करणे वालेका अर्थात् तरखाण का और वार्द्धुषिक क्या जो बहुत व्याज करके जीविका करणे वालाहै तिसका और अग्नीषोमीय यज्ञमें प्रथम जो दीक्षित है तिसका और कृपणका और निगडस्य एह तृतीयाके अर्थ विषें षष्ठी है इस वास्ते बेडी गलविषे राजुआदि करके बद्ध होया जो पुरुष तिसका अन्न एह अर्थ है अथवा (बद्धस्य निगडस्यच) ऐसा पाठ भी जानना ३ और अभिशस्त क्या महापाप करके उत्पन्न हैं लोकने निंदा जिसकी अथवा पापकी वाक्यता है तिसका और षंड क्या नपुंसक तिसका और व्यभिचारिणी स्त्री का और दांभिक पुरुष का

और वैद्यका और मृगयु नाम व्याधका है अर्थात् शिकारीका और क्रूर पुरुष का
और जूठा भक्षण करण वाले पुरुषका अन्न ४ और उग्र नाम दारुण कर्मका है जो दूसरे के
दुःखके उत्पन्न करणेमें चतुर होवे अथवा क्षत्रीसें शूद्रको स्त्री विषे उत्पन्न होवे तिसका और
सूतिका स्त्री करके स्पर्श कीना होया जो अन्न पर्याचान्तकका और एक पंक्ति विषे स्थित
हुए तिनोंका अनादर करके जिस अन्न को भक्षण करते होंवें तिसविषे किसेने आचमन कीताहै ति
स शेष अन्नके भक्षण करणे में प्रायश्चित्त जानणा और जन्म उर मृत सूतकवाले का दश १०
दिननंतरे अन्न भक्षण करणे में दोष जानणा और पूजा योग्य पुरुष को जो पूजा नहिं करताहै

चिकित्सकस्यमृगयोःक्रूरस्योच्छिष्टभोजिनः ॥ ४ ॥ उग्रान्नंसूतिकान्नंच
पर्याचान्तमनिर्दशम् अनर्चितंवृथामांसमवीरायाश्चयोषितः ॥ ५ ॥
द्विषदन्नंनगर्य्यन्नंपतितान्नमवक्षुतम् ॥ पिशुनानृतिनोश्चैवक्रतुविक्रयक
स्यच ॥ ६ ॥ शैलूषतंतुवायान्नंकृतघ्नस्यान्नमेवच कर्मारस्यनिषादस्यरं
गावतरणस्यच ७ सुवर्णकर्तुर्वैणस्यशस्त्रविक्रयिणस्तथा श्ववतांशौण्डिका
नांचचैलनिर्णेजकस्यच ८ रंजकस्यनृशंसस्ययस्यचोपपतिर्गृहे मृष्यंति
येचोपपतिंस्त्रीजितानांचसर्वशः ९ अनिर्दशंचप्रेतान्नमतुष्टिकरमेवचेति
१० गणान्नंशठब्राह्मणसंघान्नम् गणिकावेश्या तस्या अन्नम् तक्ष्णःतक्षवृ
त्तिजीविनस्य ॥ वार्द्धुषिकस्यवृद्ध्युपजीविनः ॥ दीक्षितस्यप्रागग्नीषोमीयात्
कदर्यस्यकृपणस्य ॥ निगडस्यतितृतीयार्थेषष्ठी निगडेनबद्धस्येत्यर्थः

तिसका अन्न और देवतादिके उद्देश बिना जो कीनाहै सो वृथामांस है और पतिपुत्र र
हित जो स्त्री तिसका अन्न ५ और शत्रुका और नगर वाले लोकों ने समूहसें दित्ता जो अ
न्न अर्थात् समूहसें दित्ता जो अन्न और पतित पुरुष का और जिस अन्न पर छिक मारी है
सो अन्न और पिशुन कथा चुगलीखोरका और झूठबोलने वाले पुरुष का और क्रतु कथा य
ज्ञ वेचणे वाले पुरुष का अन्न ६ और नटुए का जुलाहु का और कृतघ्न पुरुष का
और लुहार का और मलाह का और लश्कारी का अन्न ॥ ७ और सुनार का और वंज करके
जो जीविका करण वालाहै अर्थात् वरुड तिसका अन्न

अभीति और शस्त्र क्या लोहा तिसके वेचणे वालेका अन्न और श्ववत क्या शिकार वास्ते कुत्तेयों केपालन वाले का अन्न और मादरा वेचणे वाले का अन्न और चैल निर्णजक नाम धुब्बेकाहै तिसका अन्न ८ और रंजक क्या छींबेका और नृशंस क्या क्रूर का और जिसके घर विषे उपपति रहे अर्थात् जार रहे तिसका और जो पुरुष घर विषे जारनूं जाण करके फेर कुछ नहि कहनेहैं तिनका और स्त्रीके वश जो पुरुष तिनका अन्न ९ और मृत होए पुरुषके

अभिशस्तस्यमहापातकित्वेनसंजातलोकविक्रोशस्य मृगयुर्व्याधः । उग्रो दारुणकर्मापरदुःखोत्पादनपटुः क्षत्रियाच्छूद्रायामुत्पन्नोवा तस्यान्नम् एक पंक्तिस्थानन्यानवमन्यपवान्नेभुज्यमानेकेनचिदाचमनंक्रियतेतत्पर्याचांतम् अनिर्दशामितिसूतकान्नमेव अनर्चितामिति । अर्चार्हस्ययदवज्ञयादीयतेनत् वृथामांसंदेवतादिकमुद्दिश्ययदन्नकृतम् तत् अवीरायाः । पतिपुत्ररहितायाः । द्विषदन्नामिति शत्रुनगरपातितानांच उपरिकृतक्षुतंचान्नंनभुंजीत शैलूषोनटः कर्मारोलोहकारः । वेणस्यवेणुभेदनेनयोजीवयतिवरुडः तस्य शस्त्रलोहं तद्विक्रयिणः ॥ श्ववतामाखेटकार्थंशुनःपोषकानाम् शौंडिकानांमद्यविक्रयिणाम् ॥ चैलनिर्णजकोरजकस्तस्य नृशंसोघातुकः उपपतिर्जारः गेहज्ञातं भार्य्याजारं ये सहंते तेषामन्नं न भुंजीत

घरका दश १० दिनते उरे जो अन्न और जिस अन्न करके प्रसन्नता न होवे सो अन्न इन संपूर्ण अन्नोंका भक्षण न करे जेकर भक्षण करे तो प्रायश्चित्त करके शुद्ध होताहै दशश्लोकसें अगे जो लिखयाहै सो प्रायश्चित्तसमीपहिअगेहैं उसजगाते (क्षवणं त्र्यहम्) एह जानणा १० इन पूर्वोक्त श्लोकोंका अर्थ मूलमेंभी स्पष्ट करके किहाहै सो जानणे योग्यहै गणान्नमित्यादि

मृगेति और बाणके नहिं चलाणेंवाला जो व्याधतिसका अन्ननहीं भक्षणकरणा और बाणचलाणें वालेका भक्षण करणा योग्यहै इसमें विष्णुजी कहतेहैं नेति बाण चलाणें वालेशिकारीका अन्न वर्जित नहिंहै अर्थात् भक्षण कर लेणा और याज्ञवल्क्यके कथन कीते होए भी अभोज्याम्न कहतेहैं दत्तान्नमिति अग्निहीन पुरुषकर्के दित्ता होया जो अन्न तिसको आपत्तिके विना भक्षण न करे अर्थात् आपत्तिमें भक्षण कर लेवे अब इसीका अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं अग्नेति अग्निही न जो पुरुषक्या अग्निके अधिकार होयां २ श्रौत स्मार्त्ताग्नि को ग्रहण न करे अथवा अनापत्तिमें अग्निकात्यागकरे तिसका अन्न न भक्षण करे। कदर्य्येति और कदर्य्यपुरुषका और बद्धहोए पुरुष का और चोर और नपुंसक और ललारीका अन्न १ और वेज कर्के उपजीविका करण वाला और अभिशस्त और वार्द्धुष्य और वेश्या और गणदीक्षित और वैद्य और आतुर और क्रो

मृगयोरनिषुचारिणः। इषुचारिणस्तुभोज्यमित्याह विष्णुः॥ नमृगयोरिषु चारिणोवर्ज्यमन्नमिति योगीश्वरोक्ताअप्यभोज्यान्नायथा दत्तान्नमग्निहीन स्यनचाश्नीयादनापदि। अग्निहीनस्यअधिकारे सत्यपि श्रौतस्मार्त्ताद्यग्निप रिग्रहमकुर्वतः उत्सृष्टाग्नेश्चानापदिअन्नंनभुंजीत॥ कदर्य्यबद्धचौराणांक्लीव रङ्गावतारिणाम् १ वेणाभिशस्तवार्द्धुष्यगणिकागणदीक्षिणाम् चिकित्सा तुरसंक्रुद्धपुंश्चलीमत्तविद्विषाम् २ क्रूरोग्रपतितव्रात्यदांभिकोच्छिष्टभोजि नाम् अवीरस्त्रीस्वर्णकारस्त्रीजितग्रामयाजिनाम् ३ शस्त्रविक्रयिकर्मारत न्तुवायश्ववृत्तिनाम् नृशंसराजरजककृतघ्नवधजीविनाम् ४ चैलधावसु राजीवसहोपपतिवेश्मनाम् एषामन्नंनभोक्तव्यंसोमविक्रयिणस्तथा ५॥

धी और व्यभिचारिणी स्त्री और उन्मत्त और शत्रु २ और क्रूर और उग्र और पतित और सं स्कार हीन और दंभी और जूठा भक्षण करण वाला और पतिपुत्ररहित स्त्री और सु नयार और स्त्रीजित पुरुष और ग्राम विषे यज्ञ करवाणें वाला ३ और शस्त्र बेचण वाला और लुहार और जुलाह और कुत्तेकर्के उपजीविका करण वाला और नृशंस और राजा क्या धर्म्म शास्त्रसें बहिर्मुख जो राजा और रजक और कृतघ्न और वध कर्के जीविका करण वाला ४ और धोबी और मदिरा बेचण वाला और स्त्रीके जार सहित घर रहण वाला इन सपूर्णोंका अन्न न भक्षण करे और तैसेंही सोम जो अमृतवल्ली का रस तिसके बेचणें वाले का भी अन्न न भक्षण करे और संपूर्णोंका अर्थ पीछे भी स्पष्ट कर्के कथन कीताहै ५

कदर्य्यका लक्षण कहतेहैं आत्मेतिजो धर्मकृत्यको त्यागदेवे अपणे आप और पुत्रस्त्रीकों पीडादेवे और लोभतें पितर और नौकरोंकों दुःखदेवें अर्थात् श्राद्धादिनकरे सो कदर्य्य कहाहै १ और चिकित्सक पूर्वोक्त इसजगा अशास्त्रीय जानणा अर्थात् शास्त्र विना चिकित्साकरण वाला ॥ और तंतुवाय वस्त्र सीणे वाला अथवा फटे होए वस्त्रकों रफूकरणवाला इन संपूर्णोंमेंसें भी एकका अन्न अज्ञान तें भक्षण करेतो तीन दिनका उपवास व्रतकरे और इच्छातें भक्षण करणेमें कृच्छ्र व्रतकरे तैसेंहि वीर्य्य विष्टा मूत्रकेभक्षणेमें एहीव्रत जानणा२ और अभोज्यान्न पुरुषोंका और स्त्री शूद्रका जूठा अन्न और अभक्ष्य जो गर्दभादि तिनांका मांस भक्षणकरके सप्त ७ रात्रि यव पानकरे तो शुद्ध होताहै ३ अब इसीमें पैठीनसि ऋषि विशेष कहतेहैं कुनखीति खोटे नखोंवाला और कालेद

आत्मानंधर्म्मकृत्यंचपुत्रदारांश्चपीडयेत् लोभाद्यःपितरौभृत्यान्सकदर्य्य इतिस्मृतः १ ॥ चिकित्सकोऽशास्त्रीयःतंतुवायोवस्त्रस्यूतकर्त्ता पाटितवस्त्र संधायकोवा ॥ भुक्त्वातोन्यतमस्यान्नममत्याक्षपणंत्र्यहम् मत्याभुक्त्वाचरे त्कृच्छ्रंरेतोविण्मूत्रमेवच२ अभोज्यानांचभुक्त्वान्नंस्त्रीशूद्रोच्छिष्टमेवच जग्ध्वा मांसमभक्ष्यंचसप्तरात्रंयवान्पिबेत्३ पैठीनसिः ॥ कुनखीश्यावदन्तःपित्रा विवदमानःस्त्रीजितःकुष्ठीपिशुनः सोमविक्रयीवाणिजकोग्रामयाजकोभिश स्तोवृषल्यामभिजातःपरिवित्तिः परिविविदानोदिधिषूपतिःपुनर्भूपुत्रश्चौ रः कांडपृष्ठःसेवकश्चेत्यभोज्यान्नाः ॥ अभोज्यान्नाअपांक्तयाअश्राद्धार्हाः ॥ एषांभुक्त्वाचाविज्ञानात्त्रिरात्रम् ॥,

न्तोंवाला और पिताके साथ झगडनें वाला और स्त्रीके वशीभूत पुरुष और कुष्टवाला और चुगल और अमृतवल्लीका रस वेचणवाला और वणियां और ग्रामविषे यज्ञकराणवाला और अ भिशस्त इसका अर्थ पीछे कहचुकेहै और ब्राह्मणतें जो शूद्री विषे उत्पन्न होया और परिवि त्ति और परिविविदान इनका अर्थ पीछे किहाहै और दोवार २ विवाही स्त्रीका पति और २ दोवार विवाही होईस्त्रीका पुत्र और चौर और कांडपृष्ठ क्या धनुष वनाण वाला और नौकर एह अभोज्यान्न कहेहै अर्थात् इनांका अन्न भक्षण नहि करणा अथवा अभोज्यान्न क्या पंक्ति तें वहार होतेहैं और श्राद्धके अधिकारी नहिंहैं और इनसंपूर्णोंका अन्न अज्ञानतें भक्षण क रेतो त्रयरात्रिकें व्रतकरके शुद्ध होतेहैं ॥

अब इसीमे शंखजी विशेष कहतेहैं ॥ अभिशस्तेति अभिशस्त और रजक और पतित और घुनार और तैली और ग्राम याजक और शूद्र और सांवत्सरिक क्या नक्षत्रसूची और कुलिक अर्थात् पुजारी अर्थात् धनके अर्थ देवपूजन करणवाला और सुनार और कर्म्मकर क्या कारु और लुहार और विचित्रवृत्ति क्या संपूर्ण जो वृत्तियां व्यापारादि तिनां करके उपजीविका करणवाला और घोषक क्या जो मुल्ल करके पाठकरण वाला अथवा घडिआउल वजाण वाला और तंतुवाय और रंगावतारी और कूटमानकृत् और शौंडिक और वधजीवी और क्रूर और आत्मविक्रयी इनका स्वरूप आत्मविक्रयप्रकरण विषे किहाहै और वार्द्धुषिक और तारिक क्या नद्यादिके तारण करके जीविका करण वाला और भगवृत्ति क्या स्त्रीकिर्के उपजीविका करण वाला और व्रात्यक्या संस्कारहीन और चोर और भास्कर क्या सुआंग वनाणवाला

॥ शंखः ॥ अभिशस्तरजकपतितचाक्रिकतैलिकग्रामयाजकशूद्रसांवत्सरिककुलिकसुवर्णकारकर्मकरकर्मारविचित्रवृत्तिघोषकृत् तंतुवायरंगावतारिकूटमानकृच्छौंडिकवधजीविनृशंसात्मविक्रयिवार्द्धुषिकतारिकभगवृत्तिव्रात्यतस्करभास्करगणान्नभोजनेष्वतिकृच्छ्रंकुर्यात् ॥ कुलिकोदेवलकः घोषकोमूल्येनपाठकः॥ तारिकोनद्यादिसंतारणजीवी अभ्यासविषयमेतत् ॥ विष्णुः ॥ गणगणिकास्तेनगायकान्नानिभुक्त्वापयसावर्त्तेत ॥ सुमंतुः ॥ अभिशस्तपतितपौनर्भवभ्रूणहपुंश्चल्यशुचिशस्त्रकारतैलिकचाक्रिकध्वजिकसुवर्णकारलेखकपंडकबन्धकीगणगणिकान्नानिचाभोज्यानि ॥ सौकारिकव्याधनिषादवरुडचर्मकाराश्चभोज्यान्नाअप्रतिग्राह्याः ॥ तदशनप्रतिग्रहयोश्चांद्रायणंचरेत् ॥

और गणसमूह इनसंपूर्णोंके अन्न भक्षण करणेमें अतिकृच्छ्र व्रतकर्के शुद्धहोताहे ॥ एहप्रायाश्चित्त अभ्यास विषय विषे जानणा ॥ अब विष्णुजी कहतेहै गणेति गण गणिका चोर गायक इनांका अन्न भक्षणकर्के एकदिन जलपान करै ॥ अब इसीमे सुमन्तु जी कहते हैं अभिशस्तेति अभिशस्त पतित पौनर्भव और गर्भहत्या करणवाला और व्यभिचारिणी स्त्री और अपवित्र पुरुष और शस्त्रकार और तैलिक और चक्री और ध्वजिक और सुवर्णकार और लिखण वाला और नपुंसक और वन्धकी स्त्री और गण क्या समूह और वेश्या इनांका अन्न अभोज्यहै अर्थात् भक्षण करणेयोग्य नाहिं है ॥ और सौकरिक और शिकारि और भील और वरुड और चमयार इनांका अन्न ग्रहण करणा योग्य नाहिं है तिनके अन्न भक्षणमें अथवा दानलेने मे चांद्रायण व्रत करणेसे शुद्ध होताहे

सूकर कर्के जो प्रकाशमान है अथवा जीवका करे और वरुड क्या जो वंज कर्के जीवकाकरे तिसका नाम सोकारिकहै एह प्रायश्चित्त बुद्धि पूर्वक बहुत अभ्यास विषे जानणा ॥ अब इसीमें और विशेष हारीत जी कहतेहैं चाक्रिकेति घमयार और लुहारके और अभोज्यान्नादियोंके अन्न भक्षणमें त्रयरात्रि उपवासव्रतकरे । गोमूत्र और गोम्मा प्राशनकरे ॥ और ध्वजि वणिक किराटि वार्धुषिक इनका अर्थ पीछे किहाहै और इनांके अन्न भक्षणमें चांद्रायण व्रतकरे और मृतपुरुष के सूतकमें भोजन करणेमे दशरात्रिव्रतकरे ॥ और विशेष कहतेहैं कि ब्राह्मणका जूठा अन्न और ब्राह्मण मृतक सूतकके एकोद्दिष्ट श्राद्ध विषे भोजन करणेमे कृच्छ्र व्रत करे ॥ और क्षत्रीका जूठा अन्न और क्षात्रेके मृतक सूतकके एकोद्दिष्ट श्राद्ध विषे भोजन करणेमें अतिकृच्छ्र व्रत करे और

सूकरेणदीव्यति जीवति वेति वरुडोवेणुजीवी । बुद्धिपूर्वकभूयोभ्यासविषय मेतत् । हारीतः चाक्रिकलोहकाराभोज्यान्नभोजनेत्रिरात्रमुपवसेत् गोमूत्रं गोमयंचप्राश्नीयात् ॥ ध्वजिवणिककिराटिवार्धुषिकान्नभोजनेचांद्रायणम् मृतकसूतकेदशरात्रम् ब्राह्मणोच्छिष्टान्नमृतकसूतकेकोद्दिष्टभोजने कृच्छ्रम् क्षत्रियोच्छिष्टान्नमृतकसूतकेकोद्दिष्टभोजनेऽतिकृच्छ्रम् । वैश्योच्छिष्टान्नमृतकसूतकेकोद्दिष्टभोजनेचांद्रायणम् । शूद्रोच्छिष्टान्नमृतकसूतकेकोद्दिष्टभोजनेचांद्रायणद्वयम् ताम्रकांस्यसीसकारव्याधिततस्करान्नभोजनेतप्तकृच्छ्रम् ब्राह्मणवृत्तिघ्नवधबंधोपघातवृत्त्यन्नभोजनेचपौनर्भवशौवसंकीर्णान्नभोजने च ॥ एकोद्दिष्टं नवश्राद्धादन्यत् किराटीवाणिग्विशेषः

वैश्यकाजूठा और बैश्यके मृतक सूतकके एकोदिष्ट श्राद्ध विषे भोजन करणेमें चांद्रायण व्रतकरे । और शूद्रका जूठा अन्न और शूद्रके मृतक सूतकके एकोद्दिष्ट श्राद्ध विषे भोजन करणेमें दो चांद्रायण व्रत करणे कर्के शुद्ध होताहै ॥ और ताम्र कांस सिका इनांके बनाण वाला और रोगी पुरुष और चोर इनांके अन्न भक्षण में तप्त कृच्छ्र व्रत कर्के शुद्ध होताहै ॥ और ब्राह्मणकी वृत्ति के दूर करणे वाला पुरुष और वध क्या कसाई और बंध क्या पंछी पकड़ने वाले और राजाने जो मारण वास्ते स्थापित कीत्ते होए हैं तिनाका अन्न और दूसरी वारी विवाहित स्त्री का पुत्र और कुत्ते रखणे वाला और समूह इनके अन्न भक्षण विषे भी पूर्वोक्त व्रत करे ॥ इहां एकोद्दिष्ट नव श्राद्धसें भिन्न जानणा ॥

अथ इसीमें और विशेष अंगिरा जी कहतेहैं अभोज्येति अभोज्यान्न जो पिच्छे कहेहैं तिनोंके पक्वान्नको भक्षण कर्के और नीच पुरुषके अन्नको भक्षण करे तो कृच्छ्र व्रतका एक पाद व्रत करे १ परंतु एक वार अज्ञान पूर्वक और सामर्थ्यके अभाव विषे एह प्रायश्चित्त जानणा ॥ अव शातातपजी और विशेष कहतेहैं यत्रेति जिस अन्नको देवता और पितर तैसेहि अभ्यागत न भक्षण करे सो अन्न वृथापाक किहाहै तिसको भक्षण न करे १ और जो पुरुष अग्नि नूं ग्रहण कर्के फेर त्याग देवे और मै गृहस्थी हां ऐसें जाणे तां तिसका अन्न भक्षण नाहिं करणा सो अन्न वृथापाक किहाहै २ और वृथापाकके भोजन करण वाला ब्राह्मण त्रय प्राणायाम कर्के घृत प्राशन करे तो शुद्ध होताहै ३ तैसेंहि और कहतेहैं परेति परपाकतें निवृत्त और परपाकमें प्रीति वाला और अपच जो पुरुष इनका अन्न

अंगिराः ॥ अभोज्यानांतुसर्वेषांभुक्त्काचान्नमुपस्कृतम् अंत्यावसायिनोभुक्त्काकृच्छ्रपादेनशुद्धयति १ सकृदमतिपूर्वकसामर्थ्याभावेचसत्येतत् । शातातपः ॥ यत्रनाश्नंतिदेवाश्चपितरश्चतथातिथिः वृथापाकःसविज्ञेयस्तस्यनाद्यात्कथंचन १ योगृहीत्वाविहायाग्निंगृहस्थइतिमन्यते अन्नंतस्यनभोक्तव्यंवृथापाकोहिसस्मृतः २ वृथापाकस्यभुंजानःप्रायश्चित्तंचरेद्द्विजः प्राणायामंत्रिरभ्यस्यघृतंप्राश्यविशुद्धयति ३ तथा परपाकनिवृत्तस्यपरपाकरतस्यच अपचस्यचभुक्त्कान्नंद्विजश्चांद्रायणंचरेत् १ अनिंदितपाकादपिनिवृत्तःपरपाकनिवृत्तः ॥ अपचोभिक्षुः ॥ एतच्चाभ्यासविषयम् ॥ अन्यत् परपाकादिलक्षणंशंखेनोक्तम् गृहीत्वाग्निंसमारोप्यपंचयज्ञान्ननिर्वपेत परपाकनिवृत्तोसौमुनिभिःपरिकीर्त्तितः १

भक्षण कर्के ब्राह्मण चांद्रायण व्रत करे तो शुद्ध होताहै १ और परपाकनिवृत्त नाम उसकाहै कि जो नाहिं निंदित पाक क्या अन्न तिसतें भी निवृत्त होवे ॥ इसमें एह अभिप्रायहै कि अनिंदितपाकमें निवृत्त नहि होणाथा सो निवृत्त होया इसकर्के दोषहोया और अपच नाम भिक्षुकका है एह प्रायश्चित्त अभ्यासविषय विषे जानणा ॥ अव एक हौरभी परपाकादिका लक्षण शंखजीनें किहाहै गृहीत्वेति जो अग्निको ग्रहण कर्के फेर स्थापन करदेवे तिसतें उपरंत पंचयज्ञ जो पाठ होम अभ्यागतकापूजन तर्प्पण क्या देवतर्प्पण और पितृतर्प्पण वलिवैश्वदेव इनांको न करे सो पुरुष मुनियोंनें परपाक निवृत्त किहाहै १ और आगे परपाकरतका लक्षण कहते हैं

पंचेति जो प्रातः काल उठ कर पंच यज्ञांनूं आप कर्के और दूसरे के अन्न तें उपजीविका करे सो पुरुष परपाकरत जानणा २ और गृहस्थ धर्म्म में युक्त और दानतें रहित जो है सो धर्म्म के जानणें वाले ऋषियोंनें अपच कथन कीताहै ३ अब और प्रकारका पराशरजी कथनकरदे हैं आपदिति आपत्ति कालविषें ब्राह्मणनें जेकर शूद्रके घर विषे भोजन कीता होवे तद मन में पश्चात्ताप करणें कर्के शुद्ध होताहै और (द्रुपदादिवमुमुचानः) इस मंत्र का सौ १०० जप करे १ अब ब्रह्मपुराण विषें और विशेष कहतेहैं यइति जो पुरुष बहुतयांकों यज्ञोपवीत करवावे अर्थात् ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र इनांको यज्ञोपवीत करवावे और बहुतयांको यज्ञ करवावे और यज्ञवास्ते अमृतवल्ली बेचने वाला और जो पुरुष वडे यज्ञविषें दीक्षित १ और जहां अ

पंचयज्ञान्स्वयंकृत्वापरान्नादुपजीवति सततंप्रातरुत्थायपरपाकरतस्तुसः २गृहस्थधर्म्मयुक्तोयोददातिपरिवर्जितः ऋषिभिर्धर्म्मतत्त्वज्ञैरपचःसप्रकीर्तितइति ३ पराशरः॥ आपत्कालेतुविप्रेणभुक्तंशूद्रगृहेयदि मनस्तापेन शुद्ध्येततुद्रुपदानांशतंजपेत् १ ब्रह्मपुराणे यश्चोपनयनंचक्रेबहूनांबहुयाजकः॥ यज्ञार्थंक्रीतसोमस्यदीक्षितस्यमहाध्वरे १ यत्रचाश्रोत्रियस्त्वभ्यस्त्वथवाग्रामयाजकः होताक्लीबोथवानारीनाश्नीयात्तत्रहिकाचित् २ तपोयज्ञफलानांचयःक्रेतायश्चविक्रयी पुरःपुरोहितंकालमुद्दिश्यनृपतेर्हितमित्याद्यपरार्केऽनुसंधेयम् ॥ बहूनामनुपनेयोपनेयानामुपनेता बहूनामयाज्यानांयाज्यानांचयाजकोयज्ञस्यकारयिता यस्तदन्नं महाध्वरेदीक्षितस्यान्नंच यत्र चश्रोत्रियेविद्यमाने अश्रोत्रियःअभ्यःपूज्योवाग्रामयाजकोभवेदित्याद्यन्नंच नाश्नीयादित्यर्थः

श्रोत्रिय पूज्य होवे अथवा ग्राममें यज्ञ करवाणवाला पूज्य होवे तिसका और नपुंसक अथवा स्त्री हवन करवाण वाली होवे इनांका अन्न भक्षण नहिं करणा २ और तपयज्ञके फलादणवाला और वेचण वाला और पुरोहितंकालं इस अर्द्ध श्लोक का अर्थ आगे लिखेंगे अब पूर्वोक्त श्लोकों का अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं बहूनामितिबहुते जो यज्ञोपवीत के अधिकारी नहिं है और जो है अधिकारी तिनकों यज्ञोपवीत कर वाण वाला और बहुते जो यज्ञ करवाणे के अधिकारी नहिंहैं और यज्ञके अधिकारी तिनांको यज्ञ करवाण वाला तिनका और वडे यज्ञ विषे दीक्षितका अन्न और जिस जगा श्रोत्रिय के विद्यमान होयां २ अश्रोत्रिय पूज्य होजावे और जो ग्रामयाजक पूज्य होवे इत्यादियोंका अन्न भक्षण न करे एह अर्थ जानणा

पुर इति पुरोहित का अग्गे होण वाला जो ऐश्वर्य्य तिसके अतिशयका उद्देश कर्के चपुनः राजाके हितका उद्देश कर्के जो तप यज्ञ के फलोंका वेचण वाला हैं तिसका अन्न न भक्षण करे। अब इसी का दूसरा अर्थ कहतेहैं राजाके अग्गे पुरोहितको साक्षि क्या उगाहिकर्के एह निश्चित अर्थ हैं और राजाके हितका उद्देश कर्के जो पुरुष तप और यज्ञके फलोंको वेचता है तिसका अन्नभी भक्षण न करे ॥ जो पुरुष वल तें भोजन करवाताहैं तिनका विशेष कहतेहैं आपस्तंवजी वलादिति म्लेच्छ चांडालचोर इनोंनें जो वलतें दासकीताहै और गवादि प्राणिका मारणा इत्यादि जो कर्म्म जिनसे करवायाहै १ और उच्छिष्टका मार्जन जिनसें करवायाहै और

पुरोहितं ॥ पुरःकालं पुरोहितस्याग्रेभाविनमैश्वर्य्यातिशयमुद्दिश्यनृपतेर्हि तंचोद्दिश्ययस्तपोयज्ञफलानांविक्रयीतदन्नंचनाश्नीयादित्यर्थः यद्वा पुरोहि तंपुरःकालंनृपतेरग्रेपुरोहितंसाक्षिणंकृत्वेतियावत् नृपतेर्हितमुद्दिश्ययस्त पोयज्ञफलानांविक्रयीतदन्नंचनाश्नीयादित्यर्थः ॥ यस्तुवलात्कारेणभोज्य तेतस्यविशेषमाहापस्तंवः ॥ वलाद्दासीकृतायेतुम्लेच्छचांडालदस्युभिः ॥ अशुभंकारिताः कर्म्मगवादिप्राणिहिंसनम् ॥ १ ॥ उच्छिष्टमार्जनंचैवतथो च्छिष्टस्यभोजनम् ॥ खरोष्ट्रविड्वराहाणामामिषस्यचभक्षणम् २ ॥ तत्स्त्री णांचतथासंगस्ताभिश्चसहभोजनम् मासोषितेद्विजातौतुप्राजापत्यंविशोध नम् ॥ ३ ॥ चांद्रायणंत्वाहिताग्नेःपराकस्त्वथवाभवेत् चांद्रायणंपराकंच चरेत्संवत्सरोषितः ॥ ४ ॥

तैसेंहि उच्छिष्ट क्या जूठे अन्नको भक्षण करण वाला और खर क्या गधा ऊट विड्वराह क्या सूकर इनोंके मांसभक्षण करणवाला २ और तिनांकीस्त्रियोंके साथभोग करणवाला और स्त्रियोंके साथ वैठ कर इकठे भोजनकरणवाला जेकर ब्राह्मण महीना रोज चांडालादिके घरविषे वसता रहै तो शुद्धि वास्ते एह सभपूर्वोक्त प्राजापत्यव्रतकरे ३ और आहिताग्नि अर्थात् अग्नि होत्री एह पूर्वोक्त करे तो चांद्रायण व्रत करे अथवा पराक व्रत जो वारां १२ दिनकाहै तिसको करे और जेकर वर्षरोज चांडालादिके घरविषे रहै तो चांद्रायण और पराक व्रतकरे तो शुद्ध होताहै ४

और जेकर वर्षरोज शूद्र चांडालादिके घर विषें वासकरे तो अद्धा महीना अर्थात् पंदरां १५ दिन यवोंका काढा पीवे और महीना रोज वास करे तो कृच्छ्र व्रतके एक पाद व्रत करणे कर्के शुद्ध होता है ॥ ५ ॥ और वर्ष रोजतें उपरंत वास करे तो ब्राह्मणोंनें तिसका प्राय. श्चित्त कल्पना करणी योग्य है अर्थात् वर्ष के प्रायश्चित्तको हि कुछ अधिक द्विगुणादि रीतिसें करे और त्रय ३ वर्ष चांडालादि के घर विषे वास करे तो तिनांके हि तुल्य हो जाता है ॥ ६ ॥ एह संसर्गि प्रकरण विषें भी पाठ है इसमें प्रसंगतें कथन. कीताहै ॥ इसने जेकर प्रायश्चित्त नहि कीता तद इसका अन्नभी नहि भक्षण करणा चाहिए जेकर खादाहोवे तां पूर्वोक्त प्रायश्चित्त करे एह अभिप्राय हैं ॥ अब अपवित्र पुरुषकर्के ग्रहणकीता जो अन्न तिसकें भोजन विषें छागलेय जी कथन करतेहैं अज्ञानादिति अज्ञानसें ब्राह्मण सूतकमें अथवा मृतक सूतक विषें भोजन करे तो सौ १०० प्राणायाम कर्के शुद्ध होता है एह शूद्रके सूतक विषें जानणा १ और वैश्यके सूतक मे भोजन करे तो सठ ६०

संवत्सरोषितःशूद्रोमासार्द्धयावकंपिवेत् मासमात्रोषितःशूद्रःकृच्छ्रपादेन शुध्यति ॥ ५ ॥ ऊर्ध्वंसंवत्सरात्कल्प्यंप्रायश्चित्तंद्विजोत्तमैः संवत्सरैस्त्रिभिश्चैवतद्भावंसंनियच्छतीति ॥ ६ ॥ संसर्गिप्रकरणेप्ययंपाठोऽत्रप्रसंगादुक्तः एतस्याप्रायश्चित्तिनोऽन्नंनाश्नीयादशितंतु तस्मिन् पूर्वोक्तमेवाचरेदित्यर्थः ॥ अशौचपरिगृहीतान्नभोजनेतुछागलेयआह ॥ अज्ञानाद्भुंजतेविप्राः सूतकेमृतकेतथा प्राणायामशतंकृत्वाशुध्यंतिशूद्रसूतके ॥ १ ॥ वैश्येषष्टिर्भवेद्राज्ञिविंशतिर्ब्राह्मणेदश एकाहंचत्र्यहंपंचसप्तरात्रमभोजनम् ॥ २ तथाशुद्धिर्भवत्येषांपंचगव्यंपिबेत्ततइति विप्रादिक्रमेणैकाहत्र्यहादिव्रतविधानम् ॥ अल्पत्वादिदमकामतः ॥ कामतोभोजनेमार्कण्डेयः

प्राणायाम करे और राजाके सूतक विषें भोजन करे तो वीस २० प्राणायाम करे और ब्राह्मणके सूतक विषें भोजन करे तो दस १० प्राणायाम करे इन प्राणायामोंके साथ व्रतविधिभी हैं सो कहीदीहै एक दिनका उपवास व्रत करे ब्राह्मणके सूतक में भोजन करणेनें और त्रय उपवास राजाके सूतक में जानणे और वैश्यके सूतकमें पंचरात्रि उपवास करे और शूद्रके सूतक मे भोजन करणें तें सत्त ७ रात्रि उपवास व्रत करे २ और तिस प्रकार तिनांकी शुद्धि कही है तिसतें अनंतर पंचगव्य पान करे एह विप्रादि क्रम कर्के एक दिन त्रय दि. नादि व्रतका विधान जानणा और इसकों थोडा व्रत होणेंतें अज्ञानतें भोजन करणे विषें जानणा ॥ अब इच्छा ते ब्राह्मण शूद्रादिके घर विषें भोजन करे तो तिसमें प्रायश्चित्त-मार्कण्डेय जी कथन करते हैं

भुक्त्वेति ब्राह्मणके अशौच विषें भोजन करे तो ब्राह्मण सांतपन व्रत करे और क्षत्री के अशौच विषें भोजन करे तो कृछ्रव्रत करे १ और वैश्यके अशौच विषें भोजन करें तो महासांतपन व्रत करे और तैसेहि शूद्रके अशौच विषें भोजन करें तो ब्राह्मण चांद्रायण व्रत कर्के शुद्ध होता है २ और शंख जी नें किहा है सो कहते हैं शूद्रस्येति शूद्रके सूतक विषें भोजन करे तो छे ६ महीनेका व्रत करे और वैश्यके सूतक विषें भोजन करें तो त्रय ३ महीनें का व्रत करे ॥ १ ॥ और क्षत्रीके सूतक विषें भोजन करे तो दो २ महीनेका व्रत करे और तैसेंही ब्राह्मणके सूतक विषे भोजन करे तो महीनें का

भुक्त्वातुब्राह्मणाशौचेचरेत्सांतपनंद्विजः भुक्त्वातुक्षत्रियाशौचेतथाकृच्छ्रोविधीयते १ वैश्याशौचेतथाभुक्त्वामहासांतपनंचरेत् शूद्रस्यैवतथाभुक्त्वाद्विजश्चांद्रायणंचरेदिति २ यच्चशंखेनोक्तम् शूद्रस्यसूतकेभुक्त्वाषण्मासान्व्रतमाचरेत् वैश्यस्यतुतथाभुक्त्वात्रिमासान्व्रतमाचरेत् १ क्षत्रियस्यतथाभुक्त्वा द्वौमासौव्रतमाचरेत् ब्राह्मणस्यतथाशौचेभुक्त्वामासव्रतंचरेदित्यभ्यासेबोध्यम् २ अशौचानंतरमिदंप्रायश्चित्तंकार्य्यम्। ब्राह्मणादीनामशौचेयःसकृदेवान्नमश्नातितस्यतावदेवाशौचम्। अशौचव्यपगमेतुप्रायश्चित्तंकुर्यादितिविष्णुस्मरणात् ॥ अपुत्राद्यन्नभोजनेतुलिखितआह भुक्त्वावार्धुषिकस्यान्नमव्रतस्यासुतस्यच शूद्रस्यचतथाभुक्त्वात्रिरात्रंस्यादभोजनमिति १

व्रत करे एह अभ्यास विषे जानणा ॥ २ ॥ अशौच ते उपरंत एह प्रायश्चित्त करे ॥ इसमें स्मृति वचन को दिखातेहैं ॥ ब्राह्मेति ब्राह्मणादियों के अशौच विषे जो पुरुष एक वार अन्न भक्षण करे तिसको तितना काल हि अशौच जानणा और अशौचके दूर होंयें प्रायश्चित्त करणा योग्य है एह विष्णु स्मृति मे कथन कीताहै ॥ अब अपुत्रादि पुरुषोंके अन्न भोजन करणे मे लिखित स्मृति मे कहते हैं भुक्त्वेति और बहुत व्याज लेने कर्के जो उपजीविका करताहै तिसका अन्न और व्रत रहित पुरुषका अन्न और पुत्र हीन पुरुष का अन्न और तैसेहि शूद्रका अन्न इनांको जो पुरुष भक्षण करता है सो त्रय ३ उपवास व्रत करणे कर्के शुद्ध होता हैं इसमे संशय नाहिं जानणा चाहिए ॥ १ ॥

जो ब्रह्मचार्य्यादियोंके अन्न भक्षण में प्रायश्चित्तहै सो वृद्धयाज्ञवल्क्य जी कथन करतेहैं यतिश्चे ति यति और ब्रह्मचारी जिस अन्नके स्वामीहैं सो अन्न तिनां दोंआंका भक्षण न करे क्योंकि उह आप पकान्नके स्वामी हैं अर्थात् उह जिसके घर भिक्षाकों जाण उसके घर पका जो अन्न तिसके स्वामी हैं तिसकर्के उसगृहस्थीने पहले उनकों देकर भोजन करणा चाहिए इसकर्के उसका अन्न नहि ग्रहण करणा उह मंग्रहदोषकर्के दुष्टहै तिसका भक्षण करे तो चांद्रायण व्रत करके शुद्ध होताहै १ और जो पार्वण श्राद्धादियोंके न करणे वालेके अन्न भक्षण विषे भरद्वाज जी कहतेहै पक्षइति पक्षविषे अथवा महीने विषे जिस पुरुष का अन्न देवता भक्षण न करें तिस खोटे आत्मा वाले पुरुषका अन्न ब्राह्मण भक्षण करे तो चांद्रायण

यत्तुब्रह्मचार्याद्यन्नभोजनेवृद्धयाज्ञवल्क्यआह ॥ यतिश्चब्रह्मचारीचपक्वान्न स्वामिनावुभौ तयोरन्ननभोक्तव्यंभुक्त्वाचांद्रायणंचरेदिति १ यच्चपार्व्वण श्राद्धाद्यकर्त्तुरन्नभोजनेभरद्वाजआह ॥ पक्षेवायदिमासेयस्यनाश्नंतिदेवताः भुक्त्वादुरात्मनस्तस्यद्विजश्चांद्रायणंचरेदिति १ तदुभयमप्यभ्यासविष यम् । पूर्वपरिगणितातिरिक्तायेनिषिद्धाचरणशीलास्तदन्नभोजनेतुनिराचा रस्यविप्रस्यानिषिद्धाचरणस्यच ॥ अन्नंभुक्त्वाद्विजःकुर्याद्दिनमेकमभोजन मितिषड्त्रिंशन्मतोक्तंद्रष्टव्यम् १ अत्रैवसंवत्सराभ्यासेषड्त्रिंशन्मतएवो क्तम् ॥ उपपातकयुक्तस्यअब्दमेकंनिरंतरम् अन्नंभुक्त्वाद्विजःकुर्य्यात्परा कंतुविशोधनमिति ॥ १

व्रत करे १ सोएह पूर्वोक्त दोनो व्रत अभ्यास विषयमे जानणें और पूर्वोक्त परिगणनातें अधिक जो निषिद्ध आचरण और निषिद्ध स्वभाव वाले पुरुष तिनांके अन्न भक्षणमें कहतेहै निराचार स्येति आचाररहित ब्राह्मण और खोटे आचरणवाला ब्राह्मण अर्थात् संध्यादिकर्मोंहीन द्यूतादि रसिक जो ब्राह्मण इनांका अन्नभक्षणकरे ब्राह्मण तो एक दिनउपवास व्रतकरे एह षड्त्रिंशन्म तका हि कथन कीता होया जानणा योग्यहै १ और इसी पूर्वोक्तमें वर्षराजके अभ्यास होणे विषे षड्त्रिंशन्मतका हि कथन कीता होता कथन करतेहैं उपेति एह पूर्वोक्त उपपातक कर्के युक्त जो पुरुष तिसका अन्न ब्राह्मण वर्षरोज निरंतर भक्षण करे तो पराक व्रत करणे कर्के शुद्ध होताहै १

इदमिति एह अभक्ष्य भक्षण प्रायश्चित्त व्रतोंकासमूह श्रेष्ठ ब्राह्मणको हिसारा होताहै और क्षत्रियादियों को पाद पादन्यून जानणा अर्थात् क्षत्रीतें एकपाद न्यून वैश्यकोहै और वैश्यतें पाद ऊन शूद्रको जानणा ॥ ब्राह्मणको संपूर्ण व्रत देवे और क्षत्रीको पादऊन देवे इत्यादि वचनतें एह मिताक्षरा मे किहाहै ॥ कुछक इसबिषे और कहतेहैं इसविषे किते किते इच्छातें अभ्यासविषे भी प्रायश्चित्त प्रसंगतें कथन कीताहै ॥ और विचारते अनुपातकहि तिनोंका विषयहै एह पीछे दखायाहै ॥ इसमे और विशेष जो हैं सो पृथक् संग्रहह कीता जो अभक्ष्य भक्षणका प्रायश्चित्त प्रकरण तिसविषे देखणेयोग्यहै इसीमे कुछक और भी कथन करतेहैं निंदितेति निंदितान्नोपजी

इदंत्वभक्ष्यभक्षणप्रायश्चित्तव्रतकदंबकं द्विजाग्र्यस्यैव। भवति क्षत्रियादीनांतुपादपादहानिर्बोध्या ॥ विप्रेतुसकलंदेयंपादोनंक्षत्रियेस्मृतमित्यादि वचनादितिमिताक्षरा। किंचात्रक्वचित्क्वचित्कामतोऽभ्यासेपि प्रायश्चित्तमुक्तंप्रसंगात् वस्तुतोऽनुपातकएवतद्विषयइति प्राङ्निदर्शितम्। विशेषस्तु पृथक्संगृहीतेऽभक्ष्यभक्षणप्रायश्चित्तप्रकरणेद्रष्टव्यः ॥ किञ्च ॥ निंदितान्नोपजीवनमित्यस्यस्थाने याज्ञवल्क्येननिंदितार्थोपजीवनमित्युक्तम् तच्चव्याख्यातंगणनायाम् तत्रापि ॥ सामान्यमेवोपपातकप्रायश्चित्तंजातिशक्तिगुणाद्यपेक्षयायोज्यम् ॥ इत्यभक्ष्यभक्षणप्रायश्चित्तप्रकरणम् ॥ ३६

वनं इसके स्थान विषे याज्ञवल्क्यजीने निंदितार्थोपजीवनं ऐसा पाठ कथन कीताहै सो पीछे गणना विषे तिसका व्याख्यान कीताहै तिसी विषे भी सामान्यहि जो उपपातकों के प्रायश्चित्त सो जाति शक्ति गुणादियों को अपेक्षा करके जोडने योग्यहै अर्थात् जैसी जाति जैसी शक्ति जैसा गुण होवे तैसा हि प्रायश्चित्त देणा योग्यहै इसकाविषय बहुत भी है परंतु बुद्धिमान विचारसे समझको कहसकाहै जैसे पतितके स्पृष्ट अन्नके प्रायश्चित्तमेहिथोडे पाप वाले को उसी प्रायश्चित्त को थोडाकरके कहसकाहै असे औरभी जानणे चाहिए एह अभक्ष्य भक्षणका प्रायश्चित्त समाप्तभयाहै ॥ ३६ ॥ ॥

अब पीछे विवरण कीता जो अनाहिताग्निता तिसका प्रायश्चित्त कहतेहैं अत्रेति इसके विषे सामान्य जो उपपातकोंके चार व्रत सो आपत्ति विषे जानणे ॥ और वर्ष रोजतें उपरंत तक अनाहिताग्नि रहे तो शक्तिकी अपेक्षा करके अर्थात् यथाशक्ति तिसको प्रायश्चित्त देणा योग्यहै और आपत्तिके बिना मनुजीका किहा होआ त्रय महीनेंका व्रत करे ॥ और जेकर वर्ष पूर्ण न होवे तिसमें कार्ष्णाजिनिजी विशेष कहतेहैं काल इति जेकर ब्राह्मण समुचितकालविषे कर्मोंकी विधानतें स्थापनकरके फेर तिनातूं करे और पीछे न करे सो महीनें महीन त्रय रात्रि व्रत करे ॥ तो शुद्ध होताहै १ अब इसीका अर्थ स्पष्ट करके कहतेहैं दारेति विवाहकालमें अथवा भ्रातृविभाग काल विषे इत्यादि कथन कीते होए जो काल तिनां विषे ब्राह्मण अग्निको स्थापन करके

अथप्राग्विवृतानाहिताग्निताप्रा० अत्रसामान्योपपातकव्रतचतुष्टयमापदि संवत्सरादूर्ध्वंशक्त्यपेक्षयायोज्यम्। अनापदितुमानवंत्रैमासिकम्॥ अपूर्णेवत्सरेकार्ष्णाजिनिर्विशेषमाह। कालेत्वाधायकर्माणिकुर्याद्विप्रोविधानतःतदकुर्वंस्त्रिरात्रेणमासिमासिविशुध्यति १ दारकालेदायाद्यकालेवेत्याद्युक्तेकालेविप्रोऽग्निमाधायनित्यादीनिकुर्य्यादितिविधिः तदग्न्याधानमकुर्वन्मासिमासित्रिरात्रव्रतेनशुध्यति। अनाहिताग्नौपित्रादौवक्ष्यमाणःसुतोयदि सहिव्रात्येनविधिनायजेत्तन्निष्क्रियायन्विति १ एकाग्नेरपिविशेषस्तेनैवोक्तः एकाग्निरावसथ्याधाता ॥ कृतदारोगृहेज्येष्ठोयोनादध्यादुपासनम् चांद्रायणंचरेद्वर्षेप्रतिमासमहोपिवा १ वर्षातिक्रमेचांद्रायणम् ॥ मासातिक्रमेऽहरुपवासः ॥ इत्यनाहिताग्नितांप्रा० ॥ ३७ ॥ ॥

नित्यादि कर्म करे एह विधिहै तिस अग्न्याधाननूं न करे तो महीने १ विषे त्रय रात्रि व्रत करके शुद्ध होताहै और पित्रादि अनाहिताग्नि होवे जेकर तिनांका पुत्र यज्ञ करणकी इच्छा वालाहै तो सोहि व्रात्य विधि करके पितरोंके उद्धार वास्ते यज्ञ करे १ और एकाग्निकोंभी विशेष तिसीनें किहाहै एकेति एकाग्नि जो आवसथ्य अग्निके धारण वाला किहाहै विवाह जिसनें और घर विषे ज्येष्ठ क्या वडाहै सो उपासना नाम अग्निको धारण न करे तो वर्ष तक महीने २ चांद्रायण व्रत करणेसें शुद्ध होताहै ॥ १ अब इनमें व्यवस्था करतेहैं जेकर वर्षका लंघ जावे तो चांद्रायण व्रत करे और महीनेका लंघ जावे तो एक दिनका उपवास करे एह अनाहिताग्निका प्रायश्चित्त समाप्तभया ॥ ३७ ॥ ॥

अब चौर कर्मका प्रायश्चित्त कहतेहैं तिसमे मनुजीका वाक्यहै धान्येति जो ब्राह्मण ॥ अपणें बंधुयोंकेघरतें धान्य अन्न धन इनाकों इच्छातें चुरावे सो वर्षभरका कृच्छ्र व्रतकरे तो शुद्धहोताहै १ और क्षत्रियादियोंको क्रमकरके पादपादन्यून जानणा ॥ एह देशकाल द्रव्य परिमाण स्वामिगुणादियों की अपेक्षा करके महत्त्वके होयां २ तिसमें जानणा अर्थात् जैसा देश जैसे कालादियोंको देखकरके प्रायश्चित्त करणा ॥ तैसेंहि और कथन करतेहै द्रव्येति अल्पसार वाले जो द्रव्य इनाके दूसरेके घरतें चुराकरकें अपणी शुद्धि वास्ते सांतपन कृच्छ्र व्रतकरे १ अब इसीका अर्थ स्पष्टकरके कहतेहै अल्पेति अल्पसार क्या थोडाहै प्रयोजन जिनोंका लाख सिक्कादि और जो नहि कहे होए तिनांका हरया जो द्रव्य तिसनू स्वामिकेताईं देकरके प्रायश्चित्तकरे ॥ अब इसीमे

अथस्तेयम् तत्रमनुः धान्यान्नधनचौर्याणिकृत्वाकामाद्द्विजोत्तमः स्वजातीयगृहादेवकृच्छ्राब्देनविशुध्यति १ क्षत्रियादिस्तुक्रमेणपादपादन्यूनंबोध्यम् । एतच्चदेशकालद्रव्यपरिमाणस्वामिगुणाद्यपेक्षयामहत्त्वेसति बोद्धव्यम् तथा द्रव्याणामल्पसाराणांस्तेयंकृत्वान्यवेश्मनः चरेत्सांतपनंकृच्छ्रंनिर्यात्यात्मविशुद्धये १ अल्पसाराणामल्पप्रयोजनानांत्रपुसीसकादीनामनुक्तानांचनिर्यात्याऽपहृतंद्रव्यंस्वामिनेदत्त्वेत्यर्थः । भक्ष्यभोज्यापहरणेयानशय्यासनस्यच पुष्पमूलफलानांचपंचगव्यंविशोधनम् ॥ १ तृणकाष्ठद्रुमाणांचशुष्कान्नस्यगुडस्यच चेलचर्मामिषाणांचत्रिरात्रस्यादभोजनम् २ एषांमध्ये एकस्यापिहरणात्रिरात्रम् । मणिमुक्ताप्रवालानांताम्रस्यरजतस्यच अयःकांस्योपलानांचद्वादशाहंकणान्नता ३ एषांमध्येएकस्यापिहरणेद्वादशाहंकणान्नता तंडुलकणभक्षणम्

और कथनकरतेहैं भक्ष्येति भक्ष्यभोज्यके हरणेंविषे और वाहन शय्या आसन पुष्प मूल फल इनांके हरण विषे अपना शुद्धिवास्ते पंचगव्यपानकरे १ और तृण काष्ठ वृक्ष और सुका अन्न और गुड वस्त्रचर्म मांस इनांके हरणविषे त्रयरात्रिका उपवास व्रतकरेतो शुद्ध होताहै २ इनांके मध्यविषे एकको चुरावे तो त्रयरात्रिव्रतकरे ॥ और मणि नीलमादि और मोती मुंगा और तांम्बा रजतक्या चांदी और लोहा कांस उपल क्या पत्थर इनांके चुराणे विषे बारांदिन कणान्नतारहे इनांके मध्य विषे एकके भी हरणें विषे बारां १२ दिन कणान्नता क्या तंडुल क्या चावलका दाना भक्षणकरे तो शुद्ध होता है ३

कार्पासेति कपाहके वस्त्र और कीडेके वस्त्र पशमीनादि और ऊनदे वस्त्र और द्विशफ क्या गवादि और एकशफ क्या अश्वादि और पक्षि गंध औषधि रस्सी इनांके हरणे विषे त्रय दिन जलपान करे ४ इसमें भी देश कालादिकी अपेक्षातें विषयमें तुल्यता जानणी ॥ जैसें उत्तम देशकी कपाहकाजा वस्त्र और उत्तम कालका बणाया होयाजोवस्त्र तिसमें त्रयदिन जलपानकरे और माडे देशका वस्त्र अथवा माडे कालका बणाया होया वस्त्र होवे तिसके हरण विषे दोदिन जलपानकरे ॥ ऐसें हि औरोंमेंभी जानणा ॥ अब इसीका व्याख्यारूप और प्रकरण लिखीदाहै अर्थात अब स्तेयमें प्रायश्चित्त कहतेहैं स्तेय नाम चोरीका है परंतु सो एह ब्राह्मणहै स्वामि जिसका ऐसी वस्तु का हरण महापातकमें जानणा ॥ और स्वर्णका चुराणाभी तोलां १६ मासेसें अधिक

कार्पासकीटजौर्णानांद्विशफैकशफस्यच पक्षिगंधौषधीनांचरज्ज्वाश्चैवत्र्यहंपयः ४ अत्रापिदेशकालाद्यपेक्षयाविषयसमीकरणम् ॥ एतद्व्याख्यारूपं प्रकरणांतरंलिख्यते ॥ अथस्तेयप्रायश्चित्तम् ॥ स्तेयंचौर्य्यम् ॥ तच्चविप्रस्वामिकस्वर्णतत्समव्यतिरिक्तमेवोपपातकम् ॥ धान्यहरणतिलापहरणेचांद्रम् ॥ धातुलोहापहारेपराकः ॥ विप्रस्याविप्रस्वामिकदशकुंभपरिमितधान्यतत्परिमिततण्डुलादितत्तुल्यताम्ररजताद्यपहारेऽमत्यात्रैमासिकम् ॥ मत्याभ्यासे वा कृच्छ्राब्दम् ॥

होवे तद महापातक है और तिसके तुल्य जो पाप है सो अनुपातक है और तिनतें व्यतिरिक्त क्या पृथक् है सो उपपातकमें जानणा ॥ और धन्यके हरण विषे और तिलोंके हरण विषे चांद्रायण व्रत करे और धातु लोहा इनके हरण विषे पराक व्रत जो बारा १२ दिनका है सो करे तो शुद्ध होता है इस जगा लोह शब्द करके सिक्केका भी ग्रहण होता है इसी वास्ते धातु लोह एह पद किता है ॥ और ब्राह्मण है स्वामि जिसका ऐसे जो दश १० कुंभ परिमाण वाले धान्य और इतनें परिमाण वाले चावलादि और तिसीके तुल्य मुल्लवाले जो तांबा रजतादि इनांके इच्छा ते बिना हरण विषे त्रय महीनेका व्रत करे और इच्छाते अथवा बहुत वार चुरावे तो वर्षराजका कृच्छ्र व्रत करे तद शुद्ध होता है ॥

और जेकर क्षत्रियादि हरण वाले होवें तो पूर्वोक्त व्रत पाद पाद ऊन करणा अर्थात् क्षत्रीतें वैश्यको एक पाद ऊन और वैश्यतें शूद्रको एकपाद ऊन व्रत देणा ॥ अब पूर्वोक्त कुंभका लक्षण कहतेहैं अष्टेति आठां ८ मुठियां का १ किंचित् होताहै और आठ ८ किंचितका १ पुष्कल होताहै और चार ४ पुष्कलका १ आढक होताहै ॥ १ ॥ और चार ४ आढकका १ द्रोण किहाहै और दश १० द्रोणका खारि होताहै और वीस २० द्रोणका कुंभ किहाहै । २ । और कुंभ नाम पंज हजार परिमाण वाले पलका है एह स्मृत्यर्थसार विषे किहाहै ॥ ढाई ॥ २५० ॥ सौ पैसा इसका मुल है ॥ और कहतेहैं क्षत्री है स्वामि जिसका ऐसे जो क्षेत्र बाउ

क्षत्रियादेर्हर्तुःपादपादह्रासः । अष्टमुष्टिभवेत्किंचितकिंचिदष्टौचपुष्कलम् पुष्कलानिचचत्वारिआढकंपरिकीर्तितम् १ आढकानिचचत्वारिद्रोणइत्य भिधीयते दशद्रोणाभवेत्खारीकुंभोपिद्रोणविंशतिः २ कुंभपंचसहस्रपलप रिमाणइतिस्मृत्यर्थसारे ॥ सार्द्धशतद्वयपणमूल्यः क्षत्रियस्वामिकक्षेत्रवा पीकूपतडागगृहपानीयस्मानांतस्वामिकस्यानिक्षेपस्यतावन्मूल्यरजतव स्त्ररत्नादेश्चनारीनराश्वानामपहारेचांद्रम् वैश्यशूद्रस्वेतादृशेचांद्रार्धतत्पा दौ ॥ विप्रस्वेतादृशस्वर्णस्तेयसमम् ॥ तेनषडब्दम् स्वर्णस्तेयसमवदिति

ली खूहा तलाओ घर जल स्नान इनांके हरण विषे और सोई क्षत्री है स्वामि जिसका ऐसा जो अमानत क्या द्रव्य अर्थात् तिसके ही मुल के रजत क्या चांदी और वस्त्र और रत्नादि और स्त्री पुरुष घोडा इनांके हरण विषे चांद्रायणव्रत करे ॥ और वैश्य और शूद्रां के धन हरण विषे चांद्रायणका अर्द्ध और चांद्रायणका पाद व्रत करे ॥ जैसे वैश्य के पूर्वोक्त तुल्य धन हरण में चांद्रायण का अर्द्ध व्रत करे और शूद्रके धन हरण विषे चांद्रायण का पाद व्रत करे ॥ और ब्राह्मणका जि जो पूर्वोक्त तुल्य धन है तिसका हरण ॥ स्वर्ण चुराणे के तुल्यहै तिस करके छे ६ वर्ष का प्रायश्चित्त करे क्योंकि स्वर्णस्तेय के तुल्य होणेतें ॥

इसी विषे मनु जी भी कथन करते हैं मनुष्येति मनुष्योंके हरण विषे और स्त्री क्षेत्र घर बावली खूआ जल इनांके हरण विषे पुरुष अपणा शुद्धि वास्ते चांद्रायण व्रत करे तो शुद्ध होताहै १ इसजगामनुष्य स्त्री जोहै सो दास दासी जानणें उत्कृष्ट क्या उत्तम नहिं जानणें ॥ तिनांके हरण विषे दासतेहै पुरुषेति कुलीन पुरुष और कुलीन नारी और तिनांमें भी मुख्य जो स्त्रियांहै तिनाके हरण विषे हरणे वाला पुरुष वधके योग्यहै अर्थात् मारणे योग्यहै १ इसमें बहुत दंडको मनुजी का कथन होणेंसे तिसी विषय में जानणा अर्थात् पूर्वोक्त मनुष्य हरणका प्रायश्चित्त दास दासी विषे ही जानणा ॥ अब इसीमें और कथन करतेहैं निक्षेपेति निक्षेप जो अमानत द्रव्य तिसके हरण विषे और पुरुष अश्व रजत पृथ्वी हीरा मणी इनांका हरण स्वर्ण चुराणेके

अत्रमनुरपि मनुष्याणांचहरणेस्त्रीणांक्षेत्रगृहस्यच वापीकूपजलानाचशु द्धेचांद्रायणंस्मृतम् १ मनुष्यास्त्रियोदासदास्योनतूत्कृष्टो तद्धरणेतु।पुरुषा णांकुलीनानांनारीणांचविशेषतः मुख्यानांचैवनारीणांहरणेवधमर्हति १ गु रुदंडस्यमनूक्तत्वात्तद्विषयमेव। निक्षेपस्यापहरणेनराश्वरजतस्यच भूमिव ज्रमणीनांचस्वर्णस्तेयसमंविदुरिति १ अनुपातकत्वाद्गुरुप्रायश्चित्तंज्ञेयम् स्मृत्यर्थसारे अत्रषडब्दंन्यूनंकल्प्यम् त्रपुसीसलोहादिद्रव्याणामल्पत्र योजनानांसार्द्धशतद्वयपणपंचदशांशमितानांहर्तुःसांतपनम् ॥ एकवारभ क्ष्यभोज्यापहारेतत्सममूल्यापहारेचैतदेव

तुल्य किहाहै १ इसको अनुपातक होणेंसे बहुत प्रायश्चित्तजानणा सो अनुपातक प्रकरणविषे भी आवेगा अब स्मृत्यर्थसार विषे कहतेहैं अर्थात् इस विषे छे ६ वर्ष का जो प्रायश्चित्त है सो थोडा कल्पना करणा योग्यहै और थोडाहै प्रयोजन जिनोंका ऐसा जो कलि सिक्का लोह प्रभृति द्रव्य इनांके हरण विषे और ढाई २५० सो पैसा इनांका जो पंद्रवां १५ अंश (१६ (२) (०)

तत्परिमितके हरण वाला पुरुष सांतपन व्रत करे तो शुद्ध होताहै ॥ और एक वार भक्ष्य जो अन्नादि और भोज्य जो मिठा[redacted]भृति इनांके हरण विषे और तिनांके तुल्य मुल्यके हरण विषे भी एही प्रायश्चित्त जानणा योग्यहै ॥

अब और कहतेहैं यानेति वाहन रथादि शय्या आसन पुष्प फल मूल पत्र मृत्तिकाका भांडा मखीर मांस इनांके हरण विषे पंचगव्य पानकरके एक दिनरात्रका उपवास व्रत करे ॥ और एही पुष्पफलादि दो त्रय वार भोजनकी परिपूर्णताके तुल्य होवे तिसके हरण विषे दो त्रय रात्रि व्रत करे अर्थात दो वार हरणमें दो रात्रि व्रत करे और त्रय वार हरणविषे त्रय रात्रिव्रत करे ॥ सोई मधुमांसादि छे ६ दिनके आहारका परिपूर्णताके वास्ते होवे और भोज्य वस्तु अथवा तिसके तुल्य मुल्ल और तृण काष्ठ वृक्ष सुका अन्न गुड तेल चर्म मांस इनांके हरण विषे त्रय रात्रिव्रत करे ॥ सोई एह गुड तेलादि त्रय वार भोजन तृप्तिके आहारका मुल्ल तिसके हरणविषे भी त्रय रात्रि

यानशय्यासनपुष्पफलमूलपर्णमृद्भांडमधुमांसापहारेपंचगव्येनाहोरात्रम् द्वित्रिवारभोजनपर्य्याप्ततद्धाहरणेद्वित्रिरात्रम् ततषड्दिनाहारपर्याप्तभोज्यमूल्यतृणकाष्ठद्रुमशुष्कान्नगुडतैलचर्ममांसापहारे त्रिरात्रम्। ततत्रिवारभोजनपर्याप्ताहारमूल्यंहृतेतदेवेति ॥ द्वादशाहारपर्याप्तविप्रस्वामिकमणिमुक्ताप्रवालताम्ररजतशंखशुक्तिलोहकांस्यापहारेद्वादशाहंकणान्नता त्रिभोजनपर्याप्ताहारमूल्यकार्पासकीटजजीर्णद्विशफैकशफपशुरज्जुपक्षिणामपहारेएकउपवासःत्र्यहंपयःपानंवा। गजाश्वभूमिकन्याहरणेषडुपवासाः। अभ्यासेचांद्रायणम् षण्मासं गोमूत्रयावकाहारोवा ॥

व्रत करे ॥ और बारां दिनकी तृप्तिका आहार और ब्राह्मणहै स्वामी जिनका ऐसे जो मणि मोती मुंगा तांबा चांदी शंख सिप्पी लोहा कांस इनांके हरण विषे बारां दिन चावलका किणका भक्षण करे ॥ और त्रय वार भोजन तृप्तिका आहार अथवा तिसके तुल्य मुल्ल और कपाहके वस्त्र कीडेके वस्त्र रेशमादि पुराणे वस्त्र और गवादि और घोडा प्रभृति पशु रस्सी पक्षि इनांके हरणविषे एकदिनका उपवास व्रत करे। अथवा त्रय दिन जल पानकरे॥ और हाथी घोडा भूमि कन्या इनांके हरण विषे छे ६ दिनका उपवास व्रत करे। और जेकर बहुत इसमें अभ्यास होवे तो चांद्रायण व्रत करे अथवा छे ६ महीने गोमूत्र युक्त यवोंका भक्षण करे तो शुद्ध होता है ॥

तैसे ही प्रायश्चित्त विवेक विषे जावाल जी कहते हैं अश्वेति घोडा गौ पृथ्वी कन्या इनांके हरण विषे चांद्रायण व्रत करे और छोटे पशुओंको चुरा करके प्राजापत्यव्रत करे १ इस जगा कन्यापद नीचकी कन्या पर जानणा और जगा कन्याके हरण वाला मारणे योग्य है इसदंड के कथन करणे तें ॥ एहभी ब्राह्मण संबंधि जो चांदि भूमि अश्वादि तिनके विषय में जानणा क्यों कि ब्राह्मणके रजतादि तिनके हरण को अनुपातक होणेते अर्थात् सो अनुपातकोंमे कहाहै ॥ तैसेहि इसी में विष्णु जी कहतेहै ब्राह्मणेति ब्राह्मणकी भूमिका हरणा और अमानत द्रव्य का हरणा और सुवर्ण चुरणेके तुल्य वस्तु का हरणा इनके और रजतके बहुत वार चुराणे विषे और गो भूमि कन्या इनां संपूर्ण के एक वार चुराणेविषे चांद्रायण व्रतकरे ॥ और पूर्वोक्त जो छोटे पशु इनांते अतिरिक्त पशुओंके हरण विषे अथवा इनके बहुत वार चुराणेविषे एह व्रत

तथाचप्रायश्चित्तविवेके जावालः।अश्वगोभूमिकन्याश्चहृत्वाचांद्रायणंचरेत्
क्षुद्रपशूनपहृत्यप्राजापत्यंसमाचरेत् १ कन्यापदमधमकन्यापरम्॥ अन्य
त्रकन्याहरणोवधइतिदंडस्योक्तत्वात् एतद्ब्राह्मणसंबंधिरजतभूम्यश्वादिविष
यम् ॥ ब्राह्मणरजतादिहरणस्यानुपातकत्वोक्तेः। तथाचविष्णुः। ब्राह्मणभूमि
हरणनिक्षेपापहरणंसुवर्णस्तेयसमरजतहरणाभ्यासेगोभूमिकन्यानांसकृद्ध
रणेचांद्रायणम्॥ उक्तेतरक्षुद्रपश्वपहारेवाभ्यासे एवंपुस्तकादिचौर्य्येष्वपि
ह्रियमाणाल्पत्वबहुत्वाभ्यांप्रायश्चित्तादिकल्प्यम् ॥ देवद्रव्यापहारेऽब्दम्
यस्यवर्णस्यवृत्तिंयोहरेत्सतद्वर्णवधप्रायश्चित्तंपादोनंकुर्य्यात् सर्वत्रसकृ
कृदभ्यासद्रव्याल्पत्वमहत्त्वदेशकालस्वाम्यपहर्तृगुणवैगुण्यापेक्षयाप्राय
श्चित्तगुरुलघुताज्ञेया ॥

जानणा ॥ इसी प्रकार पुस्तकादिके चुराणे विषे भी चांद्रायण व्रत करे ॥ और चुराई होई जो अल्प वस्तु अथवा बहुत वस्तु तिनां करके प्रायश्चित्तादि कल्पना करणे अर्थात् थोडीवस्तु हरण में थोडा प्रायश्चित्त और बहुत वस्तु हरण में बहुत प्रायश्चित्त करणा ॥ और देवताके द्रव्य हरण में वर्ष राजका व्रत करे ॥ और जो पुरुष जिस वर्णवाला ब्राह्मणादिकी वृत्तिको हरताहै सो पुरुष तिस वर्णके वध का प्रायश्चित्त एक पाद ऊन करे तो शुद्ध होताहै ऐसे सब जगा एक वार अभ्यास द्रव्याल्पत्व महत्व देश काल स्वामि अपहर्ताके गुण वैगुण्यादिकी अपेक्षा करके प्रायश्चित्त गुरु लघु जानणा अर्थात् जैसा द्रव्य जैसे देशादि होवे तैसाहि प्रायश्चित्त करवाणा ॥

एह प्रायश्चित्त हरया है द्रव्य जिसका तिसकों सो द्रव्य देकरके हि करणा योग्यहै और विशेष कहतेहैं वैदिकेति वैदिक अग्नि क्या जिसमें हवन होता है तिस अग्नि के तांई काष्ठ चुरा कर देवे और गौको तृण क्या घास चुराकर देवे और रस्तामें चलने वाले द्विजको दो २ गन्ने चुराणेका दोष नहि है ॥ और दो २ मूलियां चुराणे काभी दोष नहि है ॥ और छोले धान्य चणक यव मुंग माष इनाको एक मुष्टि लेवों हरे तांई क्षेत्रके स्वामि करके अनिषिद्ध क्या नहि हटाया होया होवे और जेकर क्षेत्रका स्वामि कहे तो मुष्टि तें अधिक भी लेलेवे तिसको चोरीका दोष नहि है एह मनुस्मृतिमें लिखा है ॥ तैसे हि इसमें शंखजी विशेष कहते हैं अस्तेयमिति अग्निके वास्ते जो काष्ठ लेणा तिसमें दोष नहि है और गौवास्ते जो

इदंचप्रायश्चित्तमपहृतद्रव्यस्यामिनेतद्द्रव्यंदत्त्वैवकार्य्यम् वैदिकाग्निभ्यः काष्ठं गवेतृणंहर्तुः पांथद्विजस्येक्षुद्वयं मूलकद्वयम् चणकव्रीहिगोधूमयवमुद्गमाषाणांमुष्टिःक्षेत्राद्धरतः स्वाम्यनिषिद्धस्यस्तेयदोषोनेतिमयूखे ॥ तथाच शंखः । अस्तेयमग्न्यर्थेकाष्ठमस्तेयंचतृणंगवे कन्याहरणमस्तेयंयोहरत्यनृतंकृतमिति १ यःपुरुषःकन्यांवाचादत्त्वापि नदत्तेयामित्यनृतंकृतंयथास्यात्तथावदति तत्कन्याहरणमस्तेयंस्तेयपापाजनकमित्यर्थः यद्वा अनृतंकृतंकन्यादानमुकरीत्याऽनृतंकृतंहरतिनाशयति अर्थात् तदेववाक्यंबलात्कारेणतदीयकन्याहरणेन सत्यं करोति तत्कन्याहरणमस्तेयमित्यर्थः ॥

घास चुराणा तिसमें भी दोष नहि है ॥ और जो अनृत करके कन्याका चुराणा तिसमें भी दोष नहि है ॥ १ अब इसी श्लोकके उत्तरार्द्धका अर्थ स्पष्ट करके कहतेहैं यइति जो पुरुष कन्याको वाणीसें दे करके भी एह कन्या मैंने नहि दित्ती इस प्रकार जैसे होवे तैसे कहता है तिस कन्याके चुराणे मे दोष नहि जानणा ॥ अब दूसरा अर्थ कहतेहैं यद्वेति कथनकोतो छोड़ देनी करके कन्या दानने अनृत क्या नाश करता है अर्थात् तिसीवाक्यको बलकरके तिस कन्या हरणेसे सच्चा करता है अर्थात् तिसके मुकरणेको हटाताहै सोभी कन्या हरण पाप रहित होता है

श्रौर अर्थ कहतेहैं जो झूठ करे सो अनृतंकृत् है अर्थात् कन्या देकर्के क्या वाक्य. दान देकर्के कहे कि मैंने कन्या नहि दिनो तिस कन्यादाताकों हरति धातुको द्विकर्मक होणेंते जो कन्यागृहीता है सो अनृतंकर्त क्या कन्यादाताकी कन्याकों हरताहे तिसको. वो अ तेयहै अर्थात् उसको कन्या हरणेका पाप नहि होता ॥ इसमे पंचमीके अर्थको अ मुख्य कर्मता है इसमे उदाहरण देतेहैं जैसे वृक्षमिति कोई पुरुष वृक्षसे फलोंकों उतारता हैं इहां वृक्ष जोहै अमुख्यकर्म सो पंचमीके अर्थकों देताहै श्रौर गौ जो है अमुख्य कर्म सो पंच·

यद्वाऽनृतंकरोतीत्यनृतंकृत् कन्यांदत्त्वा न दत्तेयमित्यपलापी कन्यादाता तमनृतंकृतं कन्यादातारं हरतेर्द्विकर्मकत्वात् ॥ यःकन्यागृहीता अनृतंकृतं कोर्थःकन्यादातुःकन्यामितिशेषः कन्यां हरति तस्य कन्याहरणमस्तेयस्ते यपापहीनमित्यर्थः ॥ अत्रामुख्यकर्म्मणःपंचम्यर्थत्वात् वृक्षमवचिनोति फलानि॥गांदोग्धिपय इतिवत्सुष्ठुक्तत्वात् ॥ शूलपाणौ अत्रापि मनुयोगी श्वरोक्तसामान्यप्रायश्चित्तचतुष्टयादिना विकल्पोबोध्यः ॥ इतिस्तेयप्राय श्चित्तमष्टात्रिंशत्कम् ॥ ३८ ॥ ® ॥

मीके अर्थको देताहै इहां दोनोंहि कर्म हैं वृक्षको अमुख्य कर्मता है श्रौर फलोंको मुख्य कर्मताहै (गांदोग्धिपयः) इसकी न्याई जैसे कोई मनुष्य गौसे दूध दोहन करता है श्रौर शूलपाणिके वनाए होए ग्रंथ विषे एसा विचारकीताहै कि अर्थात् शूलपाणि इसजगामनु श्रौर याज्ञवल्क्यकर्के कथित जो सामान्य व्रत चतुष्टय अर्थात् चार व्रत तिस कर्के विकल्प जानणा चाहे इस प्रायश्चित्त कोंकरे चाहे दूसरेको करे एह चोरी करणेका प्रायश्चित्तसमाप्त होया ॥ ३८ ॥ ® ॥

अब ऋणके ना दूर करणेमें प्रायश्चित्त कहतेहैं तत्रेति तिसमें एकऋण दूसरेके द्रव्यको ग्रहणकर्के तिसके ना देणेतें उत्पन्नहोताहै इकप्रकारएहै और ब्राह्मणदेवता पितर और ऋषिइनोंतीनों ऋणों कर्के ऋणवालाहोताहै तिनमें यज्ञकर्के देवताका ऋण और दूसरापुत्रोत्पत्ति कर्के पितरोंका ऋण और ब्रह्मचर्यकर्के ऋषियोंका ऋणदूरहोताहै इस श्रुतितें कहेहोए तीनऋणमिलाकर्के चारप्रकारका ऋणहोताहै इसके ना दूर करणेविषे प्रायश्चित्तहै अपरार्कमे कहतेहैं ऋणकेप्रसंगकर्के ऋणमिति यज्ञ प्रजा अध्ययन इनोंके ना दूरकरणेविषे तैसेंही पुत्र और पौत्रनें ऋणदेणाचाहिए इत्यादि धर्म्म शास्त्रविहित जो ऋणदूर करणेमें आज्ञाहै तिसऋणके ना दूरकरणेविषे शक्तिके अनुसार गोवध

अथऋणानपाकरणेप्रा० तत्रपरद्रव्यंगृहीत्वाऽप्रदानात् जायमानोब्राह्मणस्त्रिभिर्ऋणैर्ऋणवानजायत यज्ञेनदेवेभ्यः प्रजयापितृभ्योब्रह्मचर्य्येणऋषिभ्यइति श्रुतेश्चचतुर्धर्णभवति। एतस्यानपाकरणे अपरार्केतु ऋणंप्रस्तुत्य यज्ञप्रजाध्ययनानामकरणे तथापुत्रपौत्रैर्ऋणं देयमित्यादि धर्म्मशास्त्रविहितमृणापाकरणं तस्यचानपाकरणे शक्त्यनुसारेण गोवधप्रायश्चित्तचांद्रायणादीनां साधारणोपपातकप्रायश्चित्तानांचैकंकार्यम्। तत्रव्यतिक्रमकालाल्पत्वभूयस्त्वाद्यपेक्षयातद्विशेषोध्यवसेयः प्रायश्चित्तांतरमप्यत्रमनुनोक्तम् ॥ इष्टिंवैश्वानरींचैवनिर्वपेदब्दपर्य्यये क्लृप्तानांपशुयज्ञानांनिष्कृत्यर्थमसंभव इति १

प्रायश्चित्त चांद्रायणादि और साधारण जो उपपातकोंके प्रायश्चित्त तिनांमेंसे एक प्रायश्चित्त करणे योग्यहै ॥ तिसविषे उल्लंघितकालकी अल्पत्वता बहुत्वतादि जाणकर तिनांकी अपेक्षा कर्के तिनांका विशेष जानणे योग्यहै अर्थात् जिस ऋणको देणाथा तिसके ना देणेमें थोडा काल होवेतो थोडा प्रायश्चित्त देणा और बहुतकाल होवे तो बहुतप्रायश्चित्तदेणा ॥ इस विषे और प्रायश्चित्तभी मनुजीने किहाहै इष्टिमिति जेकर ऋणके ना देणेमें वर्ष व्यतीत होजावे तो वैश्वानरी नाम इष्टि क्या यज्ञ करे क्लृप्त क्या विहित जो पशु यज्ञ तिनांकी निष्कृति वास्ते प्रायश्चित्तके ना होणेतें जेकर प्रायश्चित्तहोजावे तो इनांको ना करे १

अब पूर्व श्लोकका अर्थ कहतेहैं अब्दपर्यये क्या वर्षके अंतविषे कृतान क्या जिनांयज्ञांका प्रारंभ कियाहै तिनांके ना करणे मे वैश्वानरी इष्टि करे एह केयोंका मतहै परंतु जो नित्य यज्ञ हैं तिनांका ग्रहण करणा एह वात युक्त है असंभव क्या जिनका अधिकारहै कि वर्ष वर्ष मे यज्ञ करणा तिसके ना करणे मे और जान कर्के और नजान कर्के डोर किये जो पाप तिनके प्रायश्चित्तके अभाव मे ॥ इस मे प्रजापतिजी भी कहतेहै कि जद वर्ष के अंतमे सोम यज्ञ ना होवे तो चांद्रायण व्रतकरे तैसेहि जैसाजैसा अधिकार होवे तैसे वर्ष गणना कर्के क्या इसने इतने वर्ष यज्ञ नहि किया इसको इतनेहि चांद्रायण करणे चाहिए डोर

अब्दपर्ययेसंवत्सरांते कृतानांप्रारब्धानामितिकेचित नित्यनयाकृतानामि तितयुक्तम असंभवे ज्ञाताज्ञातपापानांप्रायश्चित्ताभावे । प्रजापतिः समां तेसोमयज्ञानांहानौचांद्रायणं चरेदिति । तथाचाधिकारांतरंवर्षगणनयाका माकामयोस्त्रैमासिकचांद्रायणादीनियोज्यानि अतश्च प्रतिसंवत्सरंसोमः पशुःप्रत्ययनंतथा कर्तव्याग्रयणेष्टिश्चचातुर्मास्यानिचैवहि १ एषामसंभ वेकुर्यादिष्टिंवैश्वानरींद्विज इति याज्ञवल्कचोयमपिसोमादिद्वितीयादिवर्षेष्व ननुष्ठानेवेदितव्यम् इत्यृणानपाकरणप्रायश्चित्तम् ३९ ० ॥

इच्छासे करणेमे त्रैमासिक और न इच्छासे केवल चांद्रायण करणे योग्यहै ऐसे और भी जानणा इस कारणसे वर्ष वर्षमे सोम यज्ञ पशुयाग प्रत्ययन क्या मकर कर्कटमे आग्रयणेष्टि क्या जद नवान्न भक्षण करणा तो प्रथम इष्टि करणी और चातुर्मास्ययाग करणा इनके ना करणेमे द्विज क्या ब्राह्मण क्षत्री वैश्य वैश्वानरनामक जो इष्टि तिसको करे १ एह जो याज्ञवल्क्य प्रोक्तहै सो सोम यज्ञादियाके द्वितीयादि वर्षोमे ना करणेमे जानणा एह ऋणके ना दूर करणेका प्रायश्चित्त समाप्त होया ३९

इस तें उपरंत गणना विषें असच्छास्त्राधिगमन विवरण कीताहै इस विषें भी सामान्य उपपातकोंके प्रायश्चित्तजानणें (उपपातकशुद्धिःस्यात) इत्यादि मन्वादियों का कथन कीता होयाजानणा एह असत् शास्त्रके पढनेका प्रायश्चित्त समाप्तहुआ ४०॥ ® ॥ इसतें उपरंत कौशीलव्यस्यच क्रिया एहपढयाहै अर्थात् ब्राह्मणकों कुशीलतापापहै तिसका प्रायश्चित्तहै तिसविषें प्रायश्चित कहतेहैं यमजी नटेति नटुआ नचण वाला तरखाण चमयार सुनयार स्थाणुक इसका अर्थ अगे कहणाहै और नपुंसक वेश्या एह अभोज्यान्न कहेहैं अर्थात् इनांका अन्न भक्षण नहिं करणा १ और गायन करणवाला और लुहार सोची जुलाह तेली धोब्बा धूर्त चोर २ ध्वजी और माला करके जीविका करणेंवाला और शूद्रकों पढानें वाला अथवा यज्ञकराणें वाला चमयार

एतदनंतरंगणनायामसच्छास्त्राधिगमनंविवृतम् अत्रापिसामान्योपपातकप्रायश्चित्तम् ॥ उपपातकशुद्धिः स्यादित्यादिमन्वाद्यभिहितंबोध्यम् ॥ इत्यसच्छा-प्रा-॥ ४० ॥ ® ॥ अनंतरंकौशीलव्यस्यचाक्रियेतिपठितं तत्रप्रायश्चित्तमाहयमः ॥ नटनर्त्तकतक्षाणश्चर्मकारःसुवर्णकृत् स्थाणुकापंडगणिकाअभोज्यान्नाः प्रकीर्त्तिताः १ गांधर्वोलोहकारश्चसौचिकस्तंतुवायकः ॥ चक्रोपजीवीरजकः कितवस्तस्करस्तथा २ ध्वजीमालोपजीवीचशूद्राध्यापकयाजकौ ॥ कुलालश्चित्रकर्माचवार्द्धुषिश्चर्मविक्रयी ३ समर्घंपण्यमाहृत्यमहार्घंयः प्रयच्छति ॥ सर्वेवार्द्धुषिकोनामयश्चवृद्ध्याप्रयोजयेत् ४ वृथाश्रमीवृथादाताआश्रमाणांचभेदकः॥

चित्र कारी करण वाला और बहुतव्याज करके उपजीविका करण वाला और चर्म के वेचणें वाला ३ वार्द्धुषिक शब्दका अर्थ कहतेहैं समर्घमिति और जो पुरुष सस्ते समय विषें अन्नादि संग्रहकरे और तिसनूं महंगे समय विषें वेचे सो पुरुष वार्द्धुषिक नाम करके किहाहै जो वृद्धि करके जीविका करे ४ और वृथा जो आश्रम धारण वाला अर्थात् वेदवाह्य जटादि धारण करण वाला और वृथा क्या पित्रादि विष्णु इनांके निमित्ततें ही विना जो पुरुष दान करण वाला और जो पुरुष आश्रम जो वानप्रस्थादि तिनांका भेद करण वाला अर्थात् विरोध करण वाला ॥

पुण्यरसोंके पुण्यको जो वेचणवाला पुरुष और योनिसंकरकरणा व्यभिचारी अथवा अन्यजातिमे विवाह करणवाला ५ और रंगकर्के उपजीविका करण वाला अर्थात् ललारी और पातिके ना मृत होयां २ जो आगे उत्पन्नहोवे सो कुंड किहाहै तिसका अन्नभक्षण करणवाला और वीरहा कया अग्निके त्याग करण वाला और गुरुगुत्थिरा कया दंडादिकर्के गुरुको शासना करण वाला और वैद्य और गरद कया विषदेणे वाला और रूपकर्के जीविका करणवाला अर्थात् बहुरूपिया और चुगली करणवाला ६ और सौनिक और पार्विणक एह सभ निषादके कया नीचजातिके तुल्यहै इनां संपूर्णांके कर्मविषे जो ब्राह्मणमोहनें सदा वर्त्तमानहोवे ७ तिसब्राह्मणनें प्रायश्चित भी कीताहै तां भी सो त्यागणे योग्यहै इनांपूर्वोक्तोंके कर्मोविषे युक्त जो ब्राह्मण सो संपूर्ण

पुण्यस्याविक्रयीयश्चयोनिसंकरकस्तथा ५ रंगोपजीवीकुंडाशीवीरहागुरुगुप्तिगः भिषक्चगरदश्चैवरूपाजीवीचसूचकः ६ सौनिकःपार्विणकश्चैवनिषादैनसमाःस्मृताः कर्मस्वेतेषुयोमोहाद्ब्राह्मणोवर्त्ततेसदा ७ प्रायश्चित्तपिचरितेपरिहार्योभवेत्सहि एतेब्राह्मणचांडालाःसर्वेब्रह्महणःकिल ८ तस्माद्दैवेचपित्र्येचवर्जितास्तत्वदर्शिभिः एतेषामेवसर्वेषांत्र्यापतितुमागतां भैक्ष्यान्नमुपभुंजानोद्विजश्चांद्रायणंचरेत् ९ स्थाणुकाभ्रातृमतीतिमदनः वृथाश्रमीवेदबाह्यजटादिधारणकर्त्ता आश्रमाणांतुभेदकःतद्विरुद्धकारित्वात् ॥ आश्रमधर्महिंसकइतिकल्पतरौ ॥

चांडालजानणें और ब्रह्महत्याकरणवालेके तुल्यहैं ८ तिसकारणतें एह ब्राह्मणपंडितोंनें दैवकर्म जो वालैश्वदेवादि और पितृकर्म जो श्राद्धादि तिनोंमें तिनकोहैं जकर एहसंपूर्ण ब्राह्मण प्रायश्चितको इच्छाकरें तो भिक्षाके अन्नको भक्षण करता होया द्विज चांद्रायण व्रतकरें तां शुद्धहोताहै ९ अब पूर्वोक्त श्लोकोंमे जो कठिन २ पदहै तिनोंका अर्थ स्पष्टकर्के कहतेहैं स्थाणुकेति स्थाणुका नाम भ्राता रहित स्त्रीकाहै एह मदननें किहाहै और वृथाश्रमी कया वेदबाह्य जो जटादि धारण करणवाला और आश्रमका भेद करण वाला अर्थात् तिनोंके साथ विरोध करणवाला अथवा आश्रम जो वानप्रस्थादि तिनोंका जो धर्म तिसका नाश करण वाला एह कल्प तरुनें किहाहै

और योनिसंकरक. नाम व्यभिचारीकाहै और कुंडाशी नामचौट ६४ पा अन्नके भक्षणकर णवालेकाहै एह शूलपाणिजीनें किहाहै ॥ अब कुंडका और लक्षणकहतेहैं पत्याविति पतिके जी वितहोयां जो जारसें उत्पन्न होवे सो कुंड किहाहै और पतिके मृत होयां जो जारसें उत्पन्न होवे सो गोलक किहाहै जो इनां दोआंका अन्न भक्षण करे सो बुद्धिमानोंनें कुंडाशी कियाहै १ एह मनु जीका किहाहोया जानणा ॥ और वीरहा नाम अग्नित्याग करण वालेकाहै ॥ और गुरुगुप्तिग नाम दंडादिकके गुरुको शासना करणवालेकाहै एह प्राचीनोंका मतहै अथवा गुरु के साथ छल करण वाला एह मदनका मत है ॥ और रूपजीवी नाम और वेश करणे वाले का है ॥ अथवा ताम्रादियोंका स्वर्णादि तुल्य रूपकरणवाला ॥ और सूचक नाम चुगलका है

योनिसंकरकोव्यभिचारी । कुंडाशीचतुःषष्टिपलान्नभक्षकइतिशूलपाणिः युक्तस्तु ॥ पत्यौजीवतिकुंडस्तुमृतेभर्तरिगोलकः यस्तयोरन्नमश्नातिसकुं डाइत्युच्यतेबुधैरितिमनूक्तएव ॥ वीरहाऽग्नित्यागी ॥ गुरुगुप्तिगोदंडादिनागु रुशास्तेतिप्राच्याः॥ गुरुनिह्नवकारीतिमदनः ॥ रूपजीवीवेशकरः ॥ ता म्रादीनांस्वर्णादिसदृशरूपकारीवा ॥ सूचकःपिशुनः ॥ सूना घातस्थानं तेनजीवत्यसौसौनिकः ॥ अत्रापिकौशीलव्याद्यर्जितधनत्यागइत्यादयःप रिग्रहदुष्टभोजनेप्रोक्ताअपिकुशीलवावोध्याः ॥ अथगुरुद्विष्टपुविष्णुः ॥ समुत्कर्षानृतंगुरोश्चालीकनिर्बंधेतदक्षारणेच मासंपयसावर्त्तेतेति ॥ इदंच मतिपूर्वम् ॥ अक्षारणमभिशापः ॥

और सूना नाम मारण वाला स्थान तिस करके जो जीविका करताहै सो सौनिक कियाहै इस विषे भी कौशीलव्यादि करके अर्जित कया इकठा कीता जो धन तिसका त्याग करणा इत्या दि परिग्रहदुष्टभोजन विषे कहेभी हैं तोभी कुशीलव जानणे अर्थात् इनका नाम कुशीलवभीहै अब गुरुके द्वेषी विषे प्रायश्चित्त विष्णु जी कहते हैं समिति गुरुके साथ बहुत झूठ कहणे वाला और कपट करण वाला और तिसके अक्षारण विषे एक महीना जल पान करे तो शुद्धहोताहै एह इच्छा पूर्व करण वाले विषे जानणा ॥ और अक्षारण नाम अभिशापका है अर्थात् गुरु को गाली देणे वाला पुरुष पूर्वोक्त व्रत करे ॥

अब इसीमें और विशेष शंखजीकहतेहैं क्षिप्त्वेति जो पुरुषअग्निविषे अशुचिद्रव्य यथा मलमूत्रादिपावे और विलीनूं जो जलविषे पावे तो एक महीना व्रतकरे और तैसेहि गुरुकी आज्ञा उल्लंघनकरेतोभी एही व्रतकरे तो शुद्धहोताहै ॥ १ ॥ अब और प्रकारका सुमंतुजीकहतेहैं देवर्षीति देवता ऋषि ब्राह्मण आचार्य माता पिता राजा इनांके उपर थुके अथवा इनांको गाली देवे तो अग्निकर्के अपना जिव्हाको दग्धकरे और सुवर्ण दानकरे ॥ और अज्ञान पूर्वक जो गुरुके साथ किसी बातका हठकरणा तिसविषे वसिष्टजीकहतेहैं गुरोरिति जो पुरुषगुरुके साथ किसी बातका हठ करताहै सो बारां १२ रात्रिका कृच्छ्र व्रतकरे और सवस्त्र स्नान करके गुरुको हि प्रसन्न करे तो शुद्ध होताहै ॥ अब इसीमें और विशेष याज्ञवल्क्यजी कहतेहैं गुरुको तुं शब्द करके अ

॥ शंखः ॥ क्षिप्त्वाग्नावशुचिद्रव्यंतदेवांभसिमानवः ॥ मासमेकंव्रतंकुर्या दपाक्रम्यतथागुरुम् १ अशुचिमलमूत्रादि ॥ सुमंतुः ॥ देवर्षिब्राह्मणाचार्यमातृपितृनरेन्द्राणां प्रनिष्ठीवने आक्रोशनेचोल्मुकेन जिव्हांदहे- द्धिरण्यंदद्यात् ॥ अमतिपूर्वगुरोर्निर्बंधेतुवसिष्ठः ॥ गुरोरलीकर्निर्बंध कृच्छ्रंद्वादशरात्रकम् ॥ चरित्वासचैलंस्नातोगुरुप्रसादात्पूतोभवति ॥ याज्ञवल्क्यः ॥ गुरुंतुंकृत्यहुंकृत्यविप्रंनिर्जित्यवादतः ॥ बध्वावावाससा क्षिप्रंप्रसाद्योपवसेद्दिनम् १ बृहस्पतिनातूत्तरार्धे ॥ ताडयित्वातृणेना प्यप्रसाद्यैवविशुद्ध्यतीतिपठितम् ॥ इदंतुप्राग्ब्रह्मचारिप्रायश्चित्तप्रसंगेपिद र्शितम् ॥ इदमकामतः ॥ कामतस्तुशंखलिखितौ ॥

थवा हुं शब्द करके कहे और ब्राह्मण नूं वादके करा शास्त्रार्थादि करके जीत लेवे अथवा ग्रीवा हि वस्त्र करके बन्न लेवे तो उस ब्राह्मणको प्रसन्न करे और एक दिन उपवास व्रत करे तो शुद्धहोताहै १ और बृहस्पतिजीनें इस पूर्वोक्तश्लोकके उत्तरार्धविषे ऐसा पाठ किहाहै ताडयित्वेति तृण करके जो पुरुष ब्राह्मणको ताडना करताहै सो तिस को प्रसन्न करेतो शुद्ध होताहै ॥ एह प्रायश्चित्त पीछे ब्रह्मचारीके प्रायश्चित्त विषे भी प्रसंग द्वारा दिखायाहै ॥ एह अज्ञानपूर्वक करणे विषे जानणा ॥ और इच्छा पूर्वक करणे विषे शंख लिखित स्मृति में कहते हैं ॥

आक्रोशादि दुर्वचन कहणेंमें और झूठ बोलणें विषे एक रात्र वा त्रय रात्रि उपवास व्रत करे अर्थात् दुर्वचन में एक रात्र उपवास करे और झूठ बोलणेमें त्रय रात्रि उपवास व्रत करे ॥ और जो वसिष्ठ जीने कहाहे सो कहतेहैं आचार्यइति आचार्य माता पिता इनांको जो दुःख देणे वाला है सो इनांकों प्रसन्नकरे सो पापतें रहित होताहै सो एह अज्ञानतें दुःखदेणे वाले विषे जानणा और इहां हंतार इसपदतें अल्प दुखदेणे वालेका ग्रहणकरणा ॥ जो आपस्तंब जीनेंकिहाहै सो कहतेहैं अनंति नाहि जो दुर्वचनके योग्य माता पिता गुरु इत्यादि इनांकों दुर्वचन कहण वाला त्रय रात्रि अक्षार लूणका भोजन करे और शूद्र अथवा स्त्री दुर्वचन कहे तो

आक्रोशानृतवादेएकरात्रंत्रिरात्रंवोपवासइति। यत्तुवसिष्ठः। आचार्यमातृपितृहंतारस्तत्प्रसादादस्तपापाइति तदप्यज्ञानतःहंतारोल्पतरदुःखकराः। यच्चापस्तंबः। अनाक्रोश्यमाक्रोश्यत्रिरात्रमक्षारलवणभोजनम् शूद्रस्यसप्तरात्रमभोजनंस्त्रीणांच तदपिज्ञानतः। इतिकोशालव्यप्रा- ४१॥ एतदग्रेधान्यकुप्यपशुस्तेयमितिपठितं विवृतंच तत्प्रायश्चित्तं पूर्वोक्तस्तेयप्रकरणएव प्रसंगतःप्रोक्तम् अयंभावः स्तेयंहि स्वर्णमनुष्यधनादिस्वल्पधान्यादिरूपैरुत्तममध्यमाधमोपाधिभिस्त्रिधाविभक्तंत्रिधाप्रायश्चित्तयोग्यम् तत्राधमोप्यवांतरोपाधिभिस्त्रिधाज्ञेयः ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ इतिधान्यादिस्तेयप्रा

सप्त ७ रात्रि भोजन ना करे सो एह ज्ञानतें करणे विषे जानणा ॥ एह कोशालव्यका प्रायश्चित्त समाप्त भया ४१ ॥ इसके आगे धान्य कुप्य पशु इनांका चुराणा एह पढ्याहै और विवरण भी इसका कीताहै तिनांका प्रायश्चित्त पूर्वोक्त स्तेय प्रकरण विषे हि प्रसंगतें किहाहै इसमें ऐसा तात्पर्यहै कि स्तेय जो है सो स्वर्ण १ मनुष्य धनादि २ स्वल्पधान्यादि ३ रूप करके उत्तम मध्यम अधम उपाधि करके त्रय प्रकारका विभाग कीताहै सो एह त्रय प्रकारका हि प्रायश्चित्त करणे योग्यहै तिनां विषे भी अधम जो है सो अवांतर उपाधि करके त्रय प्रकारका जानणा ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ एह धान्यादि की चोरीका प्रायश्चित्त समाप्त भया ॥ ७ ॥

इसतें उपरंत मद्यपस्त्रीनिषेवणं एह किहाहै तिस विषे उपपातकशुद्धिः स्यात् इत्यादि जो सामान्य प्रायश्चित्त है सो जाति शक्ति गुणादियोंकी अपेक्षा कर्के जानणे योग्य है। ४५ ॥ इसतें उपरंत पाछे गणना विषे स्त्री शूद्र विट् क्षत्र वध एह किहाहैं तिसका प्रायश्चित्त मनुजी कहतेहै तुरीय इति क्षत्रीके मारणे विषे ब्रह्महत्याका चौथा हेसा प्रायश्चित्त करे ॥ और वैश्यके मारणे विषे अठमा हेसा ब्रह्महत्याका प्रायश्चित्त करे। और शूद्रके मारणेविषे सोलवां १६ हेसा जानणा १ ॥ अब इसीका अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहै तुरीय इति ब्रह्महत्याका बारां १२ वर्षका प्रायश्चित्त है तिसका चतुर्थ हेसा त्रय वर्षका प्रायश्चित्त जानणा इस प्रायश्चित्तको वडा होणेतें अपणी

अनंतरंमद्यपस्त्रीनिषेवणमित्युक्तम्। तत्रोपपातकशुद्धिःस्यादित्यादिसामान्यप्रायश्चित्तंजातिशक्तिगुणाद्यपेक्षया व्यवस्थापनीयम्॥ ४५ ॥ एतदनंतरंगणनायां स्त्रीशूद्रविट्क्षत्रवध इतिपठितं तत्प्रायश्चित्तमाह मनुः॥ तुरीयोब्रह्महत्यायाः क्षत्रियस्यवधस्मृतः वैश्येऽष्टमांशोवृत्तस्थेशूद्रेज्ञेयस्तुषोडशः १ तुरीयोद्वादशवार्षिकस्य चतुर्थांशस्त्रिवर्षात्मकः॥ इदंगुरुत्वाद्वृत्तस्थक्षत्रियस्यकामतोवधेबोध्यम्॥ एवमेताद्दशवैश्यवधेसार्धवर्षम् ताद्दक्शूद्रवधेनवमासिकम्॥ १॥ अकामतस्तुराजन्यंविनिपात्यद्विजोत्तमः वृषभैकसहस्त्रागादद्यात्सुचारितव्रतः॥ १॥ वृषभेणाधिकंसहस्त्रंयासांगवांता आत्मशुद्ध्यर्थंब्राह्मणेभ्योदद्यात्॥ १॥

वृत्तिमें स्थित जो क्षत्री तिसके इच्छातें मारण विषे जानणा ॥ ऐसा ही जो अपणी वृत्तिमें स्थित वैश्य तिसके मारण विषे डेढ वर्षका प्रायश्चित्त करे॥ और ऐसेंहि शूद्रके मारण विषे नव ९ महीनेंका प्रायश्चित्त करे १॥ और जो ब्राह्मण अज्ञानतें क्षत्री कों मारे सो एक बैल हजार गौका १००० दान करे पर प्रथम तिस मारणका पूर्वोक्त जो प्रायश्चित्त है तिसकों कर्के॥ १॥ अब इसी श्लोकका अर्थ स्पष्टकर्के लिखतेहैं वृषेति वृष क्या बैल कर्के अधिकहै हजार १००० जिनां गौआंका तिनां गौआंकों अपणी शुद्धि करणे वास्तें सो ब्राह्मण-ब्राह्मणांके तांई दे देवे १॥

त्र्यब्दमिति त्रय वर्ष नियत होया २ और ग्रामतें दूर वृक्ष मूल विषे वास करदा होया और जटा धारणकर्के ब्रह्महत्याकाव्रतकरे ॥ २ ॥ अब इसीका अर्थ स्पष्टकर्के कहनेहैं यद्वेति इंद्रियां को रोक कर्के जटा वाला होया २ ग्रामतें दूर वृक्षके मूलविषे निवास करे ब्रह्महत्या वाले कों जो किहाहै कि ब्रह्महत्या करण वाला पुरुष बारां १२ वर्ष व्रत करे इत्यादि कर्के सोई व्रत त्रय वर्ष करे परंतु इसमें एसा (प्रश्न) है कि इस पूर्वोक्त श्लोककें पूर्वार्द्ध मांहि किहाहै ब्रह्महत्याका व्रत करे इसी वास्ते ब्रह्महत्याकरण वालेको ग्रामतें दूर रहणा इत्यादि प्रकार सिद्धहो गया क्यों पीछे किहाहै कि (वसन्दूरतरे ग्रामाद्वृक्षमूलनिकेतनः) ॥ इसके कहणेतें पुनरुक्ति दोषहै(उत्तर) ब्रह्महत्या वालेको शव शिरके ध्वजादि धारण भी कहेहैं इसके निषेध वास्ते एह वचनहै इसतें पुनरुक्ति दोष नहिं है ॥ २ ॥ एतदिति इसीव्रतकों वर्षरोजतक ब्राह्मण करे जेकर

त्र्यब्दंचरेद्वानियतोजटीब्रह्महणोव्रतम् वसन्दूरतरेग्रामाद्वृक्षमूलनिकेतनः २ त्र्यब्दमिति यद्वा संयतोजटावान् ग्रामाद्विप्रकृष्टवृक्षमूले कृतनिवासो ब्रह्महणि यदुक्तं ब्रह्महाद्वादशसमा इत्यादि तद्वर्षत्रयंकुर्यात् ॥ अस्य शवशिरोध्वजधारणादिधर्मनिवृत्त्यर्थत्वान्नपुनरुक्तिः ॥ २ ॥ एतदेवचरेदब्दंप्रायश्चित्तंद्विजोत्तमैः ॥ प्रमाप्यवैश्यंवृत्तस्थंदद्याच्चैकशतंगवाम् ३ एतदेवद्वादशवार्षिकव्रतमकामतःसाध्वाचारंवैश्यं निहत्य वर्षमेकं ब्राह्मणादिः कुर्यात् ॥ एकाधिकं वा गोशतंदद्यात् ॥ ३ ॥ एतदेवव्रतंकृत्स्नंषण्मासान्शूद्रहाचरेत् वृषभैकादशावापिदद्याद्विप्रायगाः सिताः ॥ ४ ॥ एतदप्यकामतः । इदमेवव्रतंशूद्रहाषण्मासांश्चरेत् ॥ वृषभएकादशोयासां गवां ताःशुक्लवर्णाब्राह्मणायदद्यात् ॥ ४ ॥

वृत्तस्थ वैश्य कों अर्थात् अपने धर्म विषे स्थितहोए वैश्यकों मारे अथवा एक कर्के अधिक सौ गौ दान करे ॥ ३ ॥ अब इसीका अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं एतदिति इसी बारां १२ वर्ष के व्रत कों अज्ञान तें सुंदर आचार वाले वैश्य कों मार कर्के एक वर्ष व्रत ब्राह्मणादि करे अथवा एकतें अधिक सौ गोका दान करे ॥ ३ ॥ एतदिति इसी व्रतकों छेः महीनें करे जो शूद्रकी हत्या करे अथवा वृषभ क्या बैलहै ग्यारवां जिनांविषे ऐसी धाउंवत गोआं ब्राह्मणके तांई दानकर्के देदेव ॥ ४ ॥ अब इसीका अर्थ स्पष्टकर्के कहतेहैं इस व्रतको भी अज्ञानतें शूद्र हत्या करण विषे जानणा ॥ इदमिति इसीपूर्वोक्त व्रत को शूद्र हत्या करण वाला पुरुष छेः महीने तक करे अथवा बैलहै ग्यारवां ११ जिनां विषे ऐसीयां चिट्टीयां दश गोआं ब्राह्मण के तांई देवे तो शुद्ध होताहै ४

अब इसमें याज्ञवल्क्य जी भी कहतेहैं ऋषभेति जो पुरुष क्षत्रिकों मारता है सो एक बैल और हजार गौका दान करै अथवा ब्रह्महत्याका व्रत जो बारां १२ वर्षका है तिसकों ३ य वर्ष तककरै ॥ १ ॥ और वैश्यको हत करणवाला पुरुष एकसौ गौका दानकरै और इसी प्रकार शूद्रके हत करण वाला छे६ महीनेका व्रतकरै अथवा दश १० गौआंका दान करै ॥ २ ॥ अब इसीका अर्थ स्पष्ट करके कहतेहैं एकमिति एक है अधिक जिस हजार विषे सो एक सहस्र किहाहै और बैलहै एक जिनां गौआं के हजार विषे अधिक तिहां गौआंको क्षात्रिके हत करण विषे देवे अर्थात् १ हजार गौ देवे और एक साथ बैल देवे अथवा ब्रह्महत्याका व्रत त्रय वर्ष करै ॥ और वैश्यको हत करण वाला ब्राह्मण ब्रह्महत्याका

याज्ञवल्क्येपि ॥ ऋषभैकसहस्रागादद्यात्क्षत्रवधेपुमान् ब्रह्महत्याव्रतंवा पिवत्सरत्रितयंचरेत् १ वैश्यहाऽब्दंचरेदेतद्दद्याद्वैकशतंगवाम् षण्मासा न्शूद्रहाप्येतद्धेनूर्दद्याद्दशाथवा २ एकमधिकंयस्मिन्सहस्रतदेकसहस्रम् तस्यपूरणे एकसहस्रः। ऋषभः एकसहस्रायासांगवांता ऋषभैकसहस्रा । क्षत्रवधेदद्यात् । अथवा ब्रह्महत्याव्रतंवर्षत्रयंचरेत् । वैश्यहाप्येतद्ब्रह्महत्या व्रतमेकमब्दंचरेत् । गवांऋषभैकशतंवादद्यात् ॥ शूद्रघातीतु ब्रह्महत्याव्र तंषण्मासांश्चरेत् ॥ यद्वा दशधेनूरचिरप्रसूताः सवत्सादद्यात् । इदमकाम तो जातिमात्रक्षत्रियादिवधविषयम् ॥ किंचास्मिन्नेवविषयेस्मृत्यन्तरम् ॥ क्षत्रियस्यवधंकृत्वाचरेच्चान्द्रायणत्रयम् ॥ वैश्यस्यतुद्वयंकुर्याच्छूद्रस्यै न्दवमेवत्विति १ ॥

व्रत एक वर्ष तक करै अथवा एक बैल सो १०० गौका दान करै ॥ और शूद्रको मारण वाला पुरुष ब्रह्महत्याका व्रत जो बारां १२ वर्षका है तिसका छे ६ महीनेका व्रत करै अथवा थोडे दिनकी सूई होई वछे सहित दश १० गौआं दान करै तो शुद्ध होताहै ॥ यह प्रायश्चि त अज्ञानतें जातिमात्र क्षत्रिय वैश्य शूद्रकें मारण विषे जानणा योग्यहै ॥ कुछक और भी इसी विषय विषे किसी स्मृति मे कहतेहैं क्षत्रियस्येति जो पुरुष क्षत्रिको मारताहै सो त्रय चांद्रायण व्रत करै और वैश्यका मारण वाला दोर २ चांद्रायण व्रत करै और शूद्रको मारण वाला एक चांद्रायण व्रत करै तो शुद्ध होताहै १ ॥

वृत्तस्य क्षत्रिकें वध करणें विषं साडे ४
अब इसमें मिताक्षराकार भी लिखतेहैं वृत्तस्थइति आत्मगुणादि जानणे ? अब और वृत्तशब्द
चार वर्षका व्रत करे ॥ इस जगा वृत्तशब्द करके
का अर्थ कहते हैं गुर्वेति गुरुकी पूजा करणी और लज्जा करणी और पवित्रता सत्य
कहणा और इन्द्रियोंको रोकणा और हितोंको प्रेरणा एह संपूर्ण वृत्त कहे हैं १ जो वृद्धहारीत
जीका वचन है सो कहतेहैं ब्राह्मणइति ब्राह्मण क्षत्रिको हत करे तो छे ६ वर्षका प्रायश्चित्त
करे ॥ और वैश्यका वध करे तो इसी प्रकार त्रय वर्षका व्रत करे और ब्राह्मण शूद्रका वध करे
तो एकवर्षका व्रत करे और एक बैल दश १० गोआंका दान करे तो शुद्ध होताहै १ परंतु सो
इह प्रायश्चित्त इच्छातें वधकरणेंविषं जानणा ॥ और वेदपाठी क्षत्रिया दि के वध विषं कहते हैं

अत्रमिताक्षरा वृत्तस्थक्षत्रियेतुसार्धचातुर्वार्षिकंकल्प्यम्। वृत्तशब्देनचात्म
गुणादिकमुच्यते। गुरुपूजाघृणाशौचंसत्यमिन्द्रियनिग्रहः प्रवर्तनंहितानां
चतत्सर्ववृत्तमुच्यते इतिस्मरणात्॥ यत्तु वृद्धहारीतवचनम् ब्राह्मणः क्षत्रिय
यंहत्वाषड्वर्षाणिव्रतंचरेत् वैश्यंहत्वाचरेदेवंव्रतंत्रैवार्षिकंद्विजः॥ शूद्रंहत्वा
चरेद्वर्षमृषभैकादशाश्चगाः इति १ तत्कामकारविषयम् श्रोत्रियक्षत्रादिव
धेतु तुरीयोनंक्षत्रियस्यवधेब्रह्महणिव्रतम् अर्धंवैश्यवधेकुर्यात्तुरीयंवृषल
स्याप्यपि वृद्धहारीतेनोक्तंद्रष्टव्यम्। यत्तु वासिष्ठवचनम् ब्राह्मणोराजन्यं
हत्वाऽष्टौवर्षाणिव्रतंचरेत्॥ षड्वैश्यम्॥ त्रीणिशूद्रमिति॥ तदपिहारीतीये
नसमानविषयम्॥

तुरीयेति क्षत्रिके वध करणें विषं ब्रह्महत्याके व्रतका चतुर्थ पाद न्यून करे अर्थात् ९ नव वर्षका
व्रत करे और वैश्यके वध विषं अर्द्धव्रतकरे और शूद्रके वध विषं चौथा हेसा व्रत करे १ एहभी
वृद्ध हारीतका कथन कीता होया जानणा ॥ अब जो वसिष्ठ जी का बचन है सो कहते हैं
ब्राह्मणइति ब्राह्मण क्षत्रिका वध करे तो अठ ८ वर्षका व्रत करे ॥ और वैश्यके हत
करणें में छे ६ वर्षका व्रत करे ॥ और शूद्रके वध करणें विषं त्रय वर्षका व्रतकरे तो शुद्ध
होता है ॥ सो एह भी प्रायश्चित्त वासिष्ठका कथन कीता होया हारीतके कथन कीते होएके
तुल्य विषय विषे जानणा अर्थात् कामनाकरके वधविषं हि हे और इसमे अधिकताका विषय
अगर है ॥

और हारीतके वचन मे जो क्षत्रि पदहै तिस विषें किंचित् गुण ऊन इतना हि विशेष है ॥ और जेकर वेदपाठी है और अपणी वृत्तिमें स्थितहै तद पूर्व जो वर्ण ब्राह्मणादि कहे हैं तिनमे जो वेद पढनें वाला होवे तिसके वध करणे विषें आपस्तंबजी का कथन कीता होया बारां १२ वर्ष का व्रतजानणें योग्यहै ॥ और जेकर आरंभ कीताहे यज्ञका जिसनें ऐसाक्षत्रियादि और वेदरहित होवे तिसके मारणविषें वचनहै यागेति यज्ञविषें स्थित जो क्षत्रिवैश्य तिनके मारणविषे ब्रह्महत्या का व्रत करणा योग्यहै ॥ और जेकर फेर यज्ञविषें स्थित क्षत्रियादि वेदपाठीहोवे तिसके मारण विषें गौतम जी कहते हैं ब्राह्मणेति ब्राह्मणको राजा के मारण विषें छे ६ वर्षका प्राकृत ब्रह्मच

क्षत्रियेत्वीपदगुणन्यूनइत्येतावान्विशेषः॥ यदातुश्रोत्रियोवृत्तस्थश्चभवति तदापूर्ववर्णेर्गोवेदाध्यायिनंहत्वेत्यापस्तंबोक्तंद्वादशवार्षिकंद्रष्टव्यम् ॥ यदा प्रारब्धयागःक्षत्रियादिरश्रोत्रियोभवेत्तस्मिन्व्यापादिते यागस्थक्षत्रविड् घातीचरेद्ब्रह्महणिव्रतमितिद्रष्टव्यम् ॥ यदा पुनर्यागस्थक्षत्रियादिःश्रोत्रियोभवेत् तत्र व्यापादिते गौतमः ॥ ब्राह्मणस्यराजवधेषड्वार्षिकंप्राकृत ब्रह्मचर्य्यमृषभैकसहस्राश्चगादद्याद्वैश्यवधेत्रैवार्षिकमृषभैकशताश्चगादद्या च्छूद्रवधेसांवत्सरिकमृषभैकादशाश्चगादद्यादितिदानतपसोःसमुच्चयमाह एतच्चामतिपूर्वविषयम् ॥

र्य्य करें और एक बैल हजार १००० गौ दानकरे ॥ और वैश्यके मारण विषें त्रय वर्षका व्रतकरे और एक बैल सौ १०० गौ दानकरे ॥ और शूद्रके मारण विषें एक वर्षका ब्रह्मचर्य्य धारण करें और एक बैल दश १० गौ दानकरे एह दान और तपका समुच्चय कथा व्रतके साथ अधिकदान तपभी किंहाहै क्यों किंदोषकी अधिकतासे प्रायश्चित्तकी अधिकता कहिये॥ ईहां प्राकृत ब्रह्मचर्य्यकाअर्थ पिच्छोकिंहाहै प्रथम जो गुरुकुलमें वासादिनियमसाथ जो ब्रह्मचर्य्यहै सो प्राकृत ब्रह्मचर्य्यहै और एह प्रायश्चित्त अज्ञान पूर्वक जो मारणहै तिसविषें जानणा योग्य है

अब गौतम स्मृति में विशेष कहते हैं पूर्वेति पिछलेको न्याई अज्ञान पूर्वक चार वर्णोंके मारण विषें बारां १२ छे ६ त्रय ३ एक १ वर्ष व्रत करणें योग्यहैं ॥ तिनांके अन्त विषें हजार गौं तिससें अर्द्ध और तिससें अर्द्ध और तिससें अर्द्ध गो दान करे अर्थात् ब्राह्मणको मारे तो बारां वर्षका व्रतकर्के हजार १००० गौ दान करे ब्राह्मण क्षत्री को मारे तो छे ६ वर्षका व्रत कर्के पंच ५०० सौ गौ दान करे और वैश्यके मारण विषें त्रय ३ वर्षका व्रतकर्के ढाई २५० सौं गौं दान करे और शूद्रके मारण विषें एक वर्षका व्रतकर्के १२५ सवा सौ गौ दानकरे स्मवनां विषें क्रमतें बचा अनुलोम क्रमकर्के जानणा आगेभी क्षत्रिको मारे तो ६ वर्षका और वैश्यको मारे तो त्रयवर्ष इत्यादि जानणा ॥ और प्रातिलोम्य क्रम ब्रह्महत्या प्रकरण विषें जानणा एह शंखस्मृति में किहा है एह बारां १२ वर्षका व्रत गौतम विषय का ही है अर्थात् अज्ञात विषय है

पूर्ववदमतिपूर्वं चतुर्षु वर्णेषु प्रमाप्य द्वादश षट् त्रीन्संवत्सरंच व्रतान्यादिशेत् तेषामंते गोसहस्रंततोर्धं तस्यार्धमर्धंच दद्यात् ॥ सर्वेषामानुपूर्व्येणेति शंखस्मरणात् ॥ इदंचद्वादशवार्षिकंगौतमीयविषयमेव ॥ किंचिन्न्यूनगुणं क्षत्रिये गुणाधिकयोर्वैश्यशूद्रयोश्चद्रष्टव्यम् ॥ स्त्रीशूद्रविट्क्षत्रवध इत्युपपातकमध्येविशेषतएवपठितत्वेनोत्सर्गापवादन्यायगोचरत्वाभावादुपपातकसामान्यप्राप्तान्यपिप्रायश्चित्तान्यत्र योजनीयानि ॥ तत्र दुर्वृत्तक्षत्रियादौ कामतोऽप्यापादिते मानवंत्रैमासिकंद्वैमासिक चांद्रायणंच वर्णक्रमेण योज्यम् ॥

और थोडे गुण वाला क्षत्री अधिक गुण वाला जो वैश्य शूद्र तिनांको मारे तां भी बारां १२ वर्षका व्रत करे परंतु इसमें (स्त्रीशूद्रविट्क्षत्रवधः) इह उपपातकोंके मध्य विषें विशेषतेंहि पढनें कर्के उत्सर्गापवाद न्यायके अभाव होणते अर्थात् उत्सर्ग विधितें अपवाद विधि बलवान् होतीहै इस वास्ते इसमें अपवाद विधि कोई नहिंहै इसकर्के उपपातकोंके सामान्य प्रायश्चित्त उपपातकशुद्धिः स्यात् इत्यादि मनु याज्ञवल्क्य जीके कथन कीते होए भी जोडनें योग्यहैं तिस विषें खोटी वृत्ति करण वाले जो क्षत्रियादि तिनांके इच्छाते मारणे विषें मनु जी का कथन कीता होया त्रय महीनेंका व्रत करे और वैश्यके मारणविषें दो २ महीनेंका व्रत करे और शूद्रके मारण विषें चांद्रायण व्रत कर्के शुद्धहोताहै इसी प्रकार वर्ण क्रम कर्के जोडने योग्यहै

अब इनोंमें पराशर जी कहतेहैं वैश्यामिति विकर्म्ममें स्थित और शूद्र के कर्म करणे वाले वैश्य को ब्राह्मण मार कर्के चांद्रायण व्रतकरे और त्रो ३० गौआं दक्षिणा देवे इस विषें ब्राह्मण अपतित जानणा अथवा क्षत्रियादि भी जानणें एह माधव जीका मतहै ॥ एह कामना कर्के कीते होए पाप विषे जानणा और अकाम तें वध करणें विषें याज्ञवल्क्य जी के कथन कीते होए त्रय ३ रात्रि उपवास व्रत के सहित एक बैल दश गौ दान करे ॥ और महीना रोज पंचगव्य भक्षण करे ॥ अथवा महीना रोज जल पान करे ॥ एह यथा क्रम कर्के जोडने योग्य है ॥ एह जो पीछे किहाहै व्रतां का समूह सो ब्राह्मणहै कर्ता जिसका ऐसे क्षत्रियादिके वध विषें देखणें योग्यहै इसमे वचन उप दिखावेंहैं अकेति ब्राह्मणस्येति ब्राह्मणइति और अज्ञानतें ब्राह्मण क्षत्री को मार कर्के और तैसे ही ब्राह्मण

पराशरः । वैश्यंशूद्रक्रियायुक्तं विकर्म्मस्थंद्विजोत्तमः हत्वाचांद्रायणंत स्यत्रिंशद्गाश्चैवदक्षिणाति ॥ द्विजोत्तमोऽत्रापतितोविप्रःक्षत्रियादिश्चेतिमाधवः इदंकामतःकृतेबोध्यम् ॥ अकामतस्तुयोगीश्वरणोक्तं त्रिरात्रोपवाससहितमृषभैकादशगोदानंमासंपंचगव्याशनंमासिकं चपयोव्रतंयथाक्रमेणयोज्यम् ॥ एतच्च प्रागुक्तंव्रतजातंब्राह्मणकर्तृकेक्षत्रियादिवधेद्रष्टव्यम् ॥ अकामतस्तुराजन्यंविनिपात्यद्विजोत्तमः॥ तथा ब्राह्मणस्यराजन्यवधेपड्वार्षिकं तथा ब्राह्मणः क्षत्रियंहत्वेत्यादिषु मनुगौतमहारीतवाक्येषु ब्राह्मणग्रहणात्क्षत्रियादिकर्तृकेतुक्षत्रियादिवधेपादन्यूनंद्रष्टव्यम् ॥ विप्रेतुसकलंदेयंपादोनंक्षत्रियेस्मृतम् ॥ वैश्येर्धमेकपादस्तुशूद्रजातिषुशस्यते इतिवृद्धविष्णुस्मरणात् ॥

को क्षत्री के मारण विषें छे ६ वर्ष का प्रायश्चित्त है ॥ तैसें ही और कहतेहैं ब्राह्मण जोहै सो क्षत्री को मार कर्के इत्यादि जो मनु गोतम हारीतके वाक्य तिना विषें ब्राह्मण का ग्रहणहोणें तें ॥ क्षत्रियादिहै कर्ता जिसके ऐसे क्षत्रियादि वध विषें पाद पाद न्यून जानणा अर्थात् क्षत्रीतें वैश्यमें एक पाद न्यून करणा और वैश्य तें शूद्र विषें एक पाद न्यून व्रतकरणा इत्यादि जानणे इसमे वचनहैं विप्रेति ब्राह्मणके तांई संपूर्ण व्रत देवे और क्षत्रि को ब्राह्मण तें पाद ऊन व्रतदेवे और वैश्य को अर्द्ध व्रत देवे और एक पाद व्रत शूद्र जाति विषें कथन कीताहै एह वृद्ध विष्णु जी के वचन तें एह अर्थ पिछे आचुका है परंतु प्रसंगतें किहाहै

इस विषें जो सभा ब्राह्मणोंके प्रायश्चित्त विषें कहीहै सो सभा राजोंकी दूणी जानणी इत्यादि व्यवस्था ब्रह्महत्या प्रकरण विषें कहीहै सो इस जगाभी जानणी तिस विषे मूर्द्धावसिक्त जो ब्राह्मणों क्षत्रियाणों विषे उत्पन्न होवें तिनांको जैसा दंड अधिक है तैसेहि प्रायश्चित्त भी अधिक जानणा सो (दंडप्रणयनकार्येषुवर्णजात्युत्तरोत्तरम्) इसयाज्ञवल्क्यजीके वचनसे जानणा ॥ इस पूर्वोक्तका अतिदेशभी है धनेति धन हरण वालेको प्रेतक्रियाके न करण विषे शंख जी कहतेहैं प्रेतस्येति प्रेतके जो प्रेतकार्य हैं तिनांको तिसका धन हरण वाला न करे तो जिसवर्णके वधविषे जो प्रायश्चित्त किहाहै सो पुरुष तिस व्रत नूं यत्नतें करे ॥ और अज्ञान तें खोटी वृत्तिवाले क्षत्रिके वध विषे भी शंखजी कहतेहैं निहत्येति मोहतें क्षत्रिको मारकर्के

अत्र पर्षद्ब्राह्मणानामित्यादिव्यवस्था ब्रह्महप्रकरणे प्रोक्ता सात्राप्यनुसंधेया तत्र मूर्द्धावसिक्तादीनांदंडवत्प्रायश्चित्तमुक्तम् ॥ एतस्यातिदेशोपि ॥ धनहर्तुः प्रेतक्रियायाअकरणे शंखः ॥ प्रेतस्यप्रेतकार्य्याणिअकृत्वाधनहारकः वर्णानांयद्वधेप्रोक्तंतद्व्रतंप्रयतश्चरेदिति १ अज्ञानाद्दुर्वृत्तक्षत्रियवधेतु शंखः निहत्यक्षत्रियंमोहात्त्रिभिः कृच्छ्रैर्विशुद्ध्यति तथा कृच्छ्रातिकृच्छ्रैःकुर्वीतसनरोवैश्यघातकः कुर्याच्छूद्रवधेविप्रःकृच्छ्रंसांतपनंतथेति पराशरः। शिल्पिनंकारुकंशूद्रंस्त्रियंवायस्तुघातयेत् प्राजापत्यद्वयंकृत्वावृषैकादशदक्षिणेति १ व्यभिचारोत्पन्नवधेतुयाज्ञवल्क्यः ॥ चांद्रायणंचरेत्सर्वानवकृष्टान्निहत्यतु १ अवकृष्टाव्यभिचारजाः ॥

डाय ३ कृच्छ्र व्रत कर्के शुद्ध होताहै ॥ तैसेहि वैश्यको मारण वाला पुरुष कृच्छ्रातिकृच्छ्र व्रत करे और तैसेहि शूद्रके मारण विषे ब्राह्मण कृच्छ्र सांतपन व्रतकरे १ अब और विशेष पराशर जी कथन करतेहैं शिल्पिनमिति चित्रकारि करण वाला और कारुक क्या कटको बनाण वाला और शूद्र स्त्री इनमेंसे एककोभी जो पुरुष मारताहै सो दो २ प्राजापत्य व्रत कर्के एक बैल और दश १० गोआं दाक्षिणा देवे १ अब व्यभिचार ते उत्पन्नका जो वध तिस विषें याज्ञवल्क्य जी कहतेहैं चांद्रायणमिति संपूर्ण अवकृष्ट क्या व्यभिचारी तें उत्पन्न होए जो पुरुष तिनांका वध करे तो चांद्रायण व्रत कर्के शुद्ध होताहै १ ॥ अब कृष्ट नाम व्यभिचारोत्पन्नका है ॥

अब इसोमें और विशेष हारीतजी कहतेहैं चांडालेति चांडाल वध की प्राप्ति जेकर ब्राह्मणको होवे तद सो बारां १२ दिनका कृच्छ्र व्रतकरे तिसतें उपरंत तप्तकृच्छ्र करे॥ १ ॥ अब अंगिरा जी कहतेहैं सर्वांत संपूर्ण अंत्यज जो नीच तिनाके साथ गमन विषे अथवा भोजन विषे अथ वा तिनाके मारणाविषे पराक व्रतकरके शुद्धिहोतीहै ॥ १ ॥ एह अंगिराका किहाहोया अज्ञानतें वधविषे जानणा ॥ और ज्ञानतें वधविषे चांद्रायण व्रत करे एहविज्ञानेश्वरका मतहै ॥ और मा धवजीनें किहाहै कि एह विपरीत जानणा अर्थात् ज्ञानते वधविषे पराक और अज्ञानतेंवधविषे चान्द्रायण॥ सोई लौगाक्षिजीकहतेहै हननउति शूद्रतें उत्पन्नहोए जो ब्राह्मणी क्षत्रियाणी वैश्या विषे तिनाके ज्ञान पूर्वक मारणाविषे पराक व्रत करे और अज्ञानपूर्वक वधमें चांद्रायण व्रतकरे १

हारीतः ॥ चांडालवधसंप्राप्तिर्ब्राह्मणस्यभवेद्यदि ॥ कारयेद्द्वादशंकृच्छ्रंतप्तकृच्छ्रंततोभवदिति १ अंगिराः ॥ सर्वांत्यजानांगमनेभोजनेचप्रमापणे पराकेणविशुद्धिःस्यादित्यांगिरसभाषितमिति १ एतदज्ञानतोवधे। ज्ञानतस्तुचांद्रायणमितिविज्ञानेश्वरः ॥ विपरीतमितितुमाधवः ॥ तदाहलौगाक्षिः ॥ हननेप्रतिलोमानांशूद्रजानांकथंभवेत् ज्ञानपूर्वेपराकः स्यादज्ञानादैंदवंतथेति १ ॥ चांद्रायणंद्विविधमष्टधेनुकंत्रिधेनुकंच ॥ पराकोपिद्विविधःपंचधेनुकोद्विधेनुकश्चेति ॥ तत्रज्ञानतोमहतोश्चांद्रायणपराकयोर्निवेशः ॥ अज्ञानतस्त्वल्पयोरितिग्रंथयोरविरोधः ॥ यत्तु मासा इत्यनुवृत्तौब्रह्मगर्भआह ॥ अंतरप्रभवाणांतुसूतादीनांचतुर्द्विषडिति ॥ तत्कामतोभ्यासविषयम् ॥ तत्रसूतस्यवधाभ्यासेषण्मासाः ॥ वैदेहिकस्य चत्वारः ॥ चांडालस्यद्वौ ॥ मागधस्यचत्वारः ॥

चांद्रायण दो प्रकारकाहै एक अठ ८ गौआं वाला और दूसरा त्रय गौआं वाला ॥ और पराक व्रतभी दो प्रकारकाहै पंच५गौआंवाला और दो गौआंवाला ॥ इसी अर्थका स्पष्टकरके कहतेहैं तत्रेति तिसविषे ज्ञानतें वध विषे वडे चांद्रायणपराकका निवेशहै । और अज्ञानतें वधविषे अल्प योःकया छोटे योंकानिवेशहै इसकरके दोनांग्रंथोका अविरोधहै ॥ और जो मासाकया महीनेकी अनुवृत्तिविषे ब्रह्मगर्भजी कहतेहैं अंतर इति अंतरकरकेहै जन्म जिनांका ऐसे सूतादिओंके वधविषे चार४ दो२ छे६ महीनें व्रत करे ॥ सो एह इच्छातें वहुत अभ्यास विषे जानणा ॥ तिसमें सूत वधकें अभ्यास विषे छे६ महीनेका व्रत करे और वैदेहिकके वध विषे चार ४ महीनेका व्रत करे और चांडालके वधविषे दो२ महीनेका व्रत करे और मागधके वधविषे चार४ महीनेका व्रत करे

क्षत्तुरिति क्षत्ता और आयोगवको दो महीनेंका व्रतहै और श्वपाक चांडाल चोर होवें तो इनके वधविषे देवलजीकहतेहैं ॥ चौरइति श्वपाक और चांडाल चोरहोवें तो इनको जेकर ब्राह्मण मारे तद एकदिन रात्रके उपवास व्रतकरके पंचगव्य पान करे तो शुद्धहोताहै । १ । इनमें सूतादियोंकी उत्पत्ति इसक्रमसें जानणीक्षत्रीसे ब्राह्मणी कन्यामें सूतजातिवाला होताहै ॥ वैश्यसेंक्षत्रिया कन्यामें मागध और ब्राह्मणी कन्यामें वैदेह जाति वाला होताहै ॥ और शूद्रसें वैश्य क्षत्रिय ब्राह्मणकी कन्यासे क्रमसें आयोगव क्षत्ता अधम चांडाल जातिवाले होतेहैं ॥ अब स्त्रीके वधविषे हारीतजीकहतेहैं षडिति छे ६ वर्ष राजन्यके वधविषे व्रतकरे और प्राकृतब्रह्मचर्य करे प्राकृतब्रह्मचर्य उसको कहतेहैं प्रथम जिस प्रकार ब्रह्मचर्य कीताहै तैसाहि करे इसमें एह अभि प्रायहै कि प्रथम ब्रह्मचर्यमें गुरुकुलवास गुरुसेवादि साथ होता है केवल स्त्रीसंभोगका परित्यागमात्र नहीं पीछे व्रतादि विषे जो ब्रह्मचर्यहै सो स्त्रीसंभोगका त्यागमात्र हि है ॥ ॥ और त्रय वर्ष वैश्यके वधविषे व्रतकरे और डेढ १॥ वर्ष शूद्रके वधविषे व्रत करे ऐसा प्रतिपादन कियाहै ॥ ऐसेहि जो क्ष

क्षत्तुरायोगवस्यचद्वाविति ॥ श्वपाकचांडालयोश्चोरयोर्वधेतु ॥ देवलकः ॥
चौरःश्वपाकश्चांडालोविप्रेणनिहतोयदि अहोरात्रोषितोभूत्वाघृतंप्राश्यविशुध्यतीति १ अथ स्त्रीवधे हारीतः। षड्वर्षाणिराजन्येप्राकृतंब्रह्मचर्य्यम् त्रीणिवैश्ये सार्द्धशूद्रे इतिप्रतिपाद्योक्तम् । क्षत्रियवद्ब्राह्मणीषु॥ वैश्यवत् क्षत्रियासु ॥ शूद्रवद्वैश्यासु ॥ शूद्राधमितरासु । शूद्रार्धनवमासिकम् ॥ इतरासु शूद्रासु ॥ एतच्चश्रोत्रियपत्न्यागुणवत्याः कामतोवधविषयम् । मनुः । जीनकार्मुकवस्तावीन्पृथग्दद्याद्विशुद्धये । चतुर्णामपिवर्णानांनारीर्हत्वाऽनवस्थिताः १ अस्यार्थः ॥ ब्राह्मणादिवर्णस्त्रियोलोभादुत्कृष्टापकृष्टपुरुषव्यभिचारिणीर्हत्वाब्राह्मणादिःक्रमेणचर्मपुटधनुःछागमेषान् शुद्ध्यर्थंदद्यात् ॥

त्रिके वधविषे प्रायश्चित्त है सो ब्राह्मणीके वध विषे जानणा ॥ और जो वैश्यके वधविषे त्रय वर्षका व्रतहै सो क्षत्रियाणी के वध विषे जानणा ॥ और शूद्रके वधविषे जो व्रत है सो वैश्याणीके वध विषे जानणा ॥ और इतरा जो शूद्रा तिसके वध विषे जो शूद्रवधमें प्रायश्चित्त है तिसका अर्द्ध अर्थात् नव ९ महीनेका व्रतकरे ॥ एह चारवर्णकी स्त्रीयोंका प्रायश्चित्तभी वेदपाठीकी जो गुण वाली स्त्री तिसके इच्छासे वध विषे जानणा ॥ जेकर वेदपाठीसें और जगा व्यभिचारवालिआं होण तो मनुजीकहतेहैं ॥ जीनेति जीन कार्मुक वस्त अवी इनांनु पृथक् २ शुद्धिवास्तेचारोंवर्णको व्यभिचारणी स्त्रीको वधकरके देवे । १ । अब इसका अर्थस्पष्टकरके कहतेहैं ब्राह्मणेति ब्राह्मणादि वर्ण की स्त्री लोभसें उच्चनीचपुरुष साथव्यभिचार करणवालि जो हैं तिसको मारकरके ब्राह्मणादि क्रमकरके चर्मपुट धनुष छागमेष अपनी शुद्धि वास्तेदेवे अर्थात् ब्राह्मण चर्मपुट क्या थोका देवे और क्षत्रि धनुषदेवे और वैश्य छागक्या बकरा देवे और शूद्र मेष क्या भेडा दान करे

अब इसमे याज्ञवल्क्य जीभी कहतेहैं दुर्वृत्ताइति खोटीवृत्ति वालियां जो ब्राह्मण वैश्य क्षत्रि शूद्र को स्त्रियांतिनांका वधकर्के हतिधनुष बस्तअवि अपनी शुद्धिवास्तेक्रमसेदेवे। १। इसीका अर्थस्पष्ट कर्के कहते हैं ब्राह्मणादियोंकी स्त्री अपनी इच्छासेविचरणवालीहोवे तिसका वधकर्के क्रमतेंहति क्या जलका आधारचर्मकोश अर्थात् वोका धनुषवकरा मेषइनको शुद्धिवास्ते देवे इसविषे द. क्षिणामे तों सुवर्ण देणा चाहिए तिसका परिमाण अनुबंधादिकी अपेक्षाकर्के कल्पना करणा और अनुबंध नाम हठकर्के कीना जो अपराध तिसकाहै एह प्रातिलोम्यकर्के नीचके घर जो ब्राह्मणादि रहे तिसतें उत्पन्न जो स्त्री तिसके न इच्छातें वधविषे जानणा थोडाप्रायश्चित्त होणेत और इच्छाते वध विषे ब्रह्मगर्भजी कहतेहं प्रतिलोमेति प्रतिलोम क्या शूद्रादितें उत्पन्न

याज्ञवल्क्योपि ॥ दुर्वृत्ताब्रह्मविट्क्षत्रशूद्रयोषाःप्रमाप्य तु ॥ दृतिधनुर्व स्तमविंक्रमाद्दद्याद्विशुद्धये १ ब्राह्मणादिभार्यादुर्वृत्ताःस्वैरिणीःप्रमाप्य क्रम णदृतिंजलाधारंचर्मकोशं धनुःकार्मुकं वस्तंछागंअविंमेषंचविशुद्धयेदद्यात् ॥ अत्र दक्षिणात्वेन सुवर्णमपिदेयम् ॥ तत्परिमाणंचानुबन्धाद्यपेक्षयाकल्प्य म्। अनुबंधश्चहठकृतापराधे । इदंचप्रातिलोम्यनांत्यजातिप्रसूतानां ब्राह्म ण्यादीनामकामतोवधविषयम् ॥ कामतस्तुब्रह्मगर्भआह ॥ प्रतिलोमप्र सूतानांस्त्रीणांमासावधिःस्मृतः अंतरप्रभवाणांचसूतादीनांचतुर्द्विषडिति ब्राह्मण्यावधेषण्मासाः ॥ क्षत्रियायाश्चत्वारोवैश्यायाद्वावित्येवं यथार्हतया न्वयः ॥ यदा तु वैश्यकर्मणाजीवंतीं व्यापादयति तदा किंचिद्देयं वैश्यके नाकिंचिदितिगौतमस्मरणात् ॥ वैश्यकेन वैश्यकर्मणाजीवंत्यांव्यापादिता यां किंचिद्देयम् ॥

करण वालिआं स्त्रीयोंको मासाऽवधि कहीहै अंतर है प्रभव जिनांका अर्थात प्रतिलोमतासें है जन्म जिनांका ऐसे सूतादियोंकोचार ४ दो २ छे ६ महीनेका व्रत करे ॥ ब्राह्मणीके वध विषे छे ६ महीनेका व्रत करे ॥ और क्षत्रियाणीके वध विषे चार ४ महीने व्रत करे वैश्याके वध विषे दो २ महीनेका व्रत करे इस प्रकार यथायोग्यता कर्के अन्वय जानणा ॥ और जेकर ब्राह्मणी वैश्यके कर्म कर्के जीविका करणे वालीहै तिसको वधकर्के कुछक वस्तु देदेवे एह गौतमका वाक्य है एहि अर्थ स्पष्ट कीताहै वैश्यकेनेति ॥

सो कहतेहैं जलेति जेकर ब्राह्मणीका वध करे तो जलकोश क्या चर्म्मपात्र तिसको खूएपर रक्खे और क्षत्रियाणीके वध विषे धनुष देवे और वैश्यकी स्त्रीके वध विषे बकरा देवे १ और शूद्र की स्त्रीके वधविषे भेडा देवे और वेश्या जो गणिका तिसके वधविषे पुरुष जल देवे एह अंगिराका वाक्यहै ।१। अब इसीका अर्थ स्पष्ट करके कहतेहैं ब्राह्मणीके वध विषे चर्मका जलपात्र खूए विषे परोपकार वास्ते देवे अथवा ब्राह्मणको देवे और वेश्या अर्थात् कंजरीके वध विषे कुछभी न देवे किंतु जलकी प्रपा करे अर्थात् धर्म्मशाला बनाए और जेकर फेर क्षत्रियादि प्रातिलोम्य क्या शूद्रादिके साथ व्यभिचारवाली ब्राह्मण्यादिस्त्री मारीहै तद गोवध प्रायश्चित्त यथायोग्य जोडने योग्यहै ॥ और थोडा व्यभिचार करणे वाली ब्रह्मण्यादिके वध

तच्च ॥ जलकोशंचकूपेचब्राह्मण्याःप्रतिपादयेत् वधेधनुःक्षत्रियायावस्तो वैश्यावधेस्मृतः ॥ १ ॥ शूद्रायामाविकंवेश्यांहत्वादद्याज्जलंनरइत्यंगिरःस्मरणात् ॥ अस्यार्थः । ब्राह्मण्यावधे कोशं चर्म्ममयंजलपात्रं कूपे परोपकाराय ब्राह्मणायवादद्यात् वेश्यायांवारयोषायांहतायांनकिंचिद्दद्यात् ॥ यदापुनःक्षत्रियादिःप्रातिलोम्येन व्यभिचारिता ब्राह्मण्याद्या व्यापादयति तदा गोवधप्रायश्चित्तानि यथार्हयोज्यानि ॥ ईषद्व्यभिचरितब्राह्मण्यादिवधे विशेषमाह ॥ यदात्वप्रकर्षेणदुष्टामीषद्व्यभिचारिणीं ब्राह्मण्यादिकां व्यापादयति तदा शूद्रहत्याव्रतंषाण्मासिकंकुर्यात् ॥ यद्वा द्वादशधेनूर्दद्यात् ॥ इदंचषाण्मासिकमकामतोब्राह्मण्याव्यापादने ॥ क्षत्रियावधेतु कामकृतं द्रष्टव्यम् ॥ कामतोवैश्यावधेदशधेनूर्दद्यात् ॥ कामतःशूद्रावधेतूपपातकसाधारणप्राप्तंमासंपंचगव्याशनंकार्यम् ॥

विषे विशेष कहतेहैं यदेति जेकर न अतिशय करके दुष्ट अर्थात् थोडा व्यभिचार करणे वाली ब्राह्मणी क्षत्रियाणी वैश्या शूद्रीहै इनोंका वध करे तद जो शूद्र मारणका प्रायश्चित्त छे ६ महीनेंका है सो करे अथवा बारां १२ गौआं दानकरे ॥ एह जो छे ६ महीनेंका व्रत है सो अज्ञानसें ब्राह्मणीके वधविषे जानणा ॥ और क्षत्रियाणी विषे इच्छातें कीता जो वध तिस विषे जानणा ॥ और इच्छातें वैश्याके वध विषे दश १० गौआं दानकरे ॥ और इच्छातें शूद्रकी स्त्री के वधविषे उपपातकोंके साधारण प्रायश्चित्त (उपपातकशुद्धिःस्यात) इत्यादितें प्राप्त होया जो महीना दिन पंचगव्य भक्षण करणा तिसको करे तो शीघ्रहि शुद्ध होताहै ॥

यदेति जेकर इच्छातें ब्राह्मणीका वध करे तद् बारां १२ महीनेका व्रत करे ॥ और क्षत्रियादि की स्त्रीके अज्ञाननें वध करणे विषे त्रय ३ महीनें डेढ १॥ महीना साढे बाई २२॥ दिनका व्रत करे अर्थात् क्षत्रियाणीके वधविषे त्रय ३ महीनेंका व्रत करे ॥ और वैश्यकी स्त्रीके वध विषे डेढ १॥ महीना व्रत करे ॥ और शूद्रकी स्त्रीके वध विषे २२॥ साढे बाई दिनका व्रत करे ॥ जैसे प्रचेता जी कहते हैं रजस्वला नाहि जो ब्राह्मणी तिसके वध करणे विषे वर्षभेज का कृच्छ्र व्रत करे अथवा छे ६ महीनेंका व्रत करे ॥ और क्षत्रियाणीके वधविषे छे ६ महीनें अथवा त्रय महीनेंका व्रत करे ॥ और वैश्याणीकावधकरे तो त्रय ३ महीने अथवा डेढ

यदा कामतोब्राह्मणींव्यापादयति तदा द्वादशमासिकम् ॥ क्षत्रियादीनांत्व कामतोव्यापादने त्रैमासिकं सार्द्धमासं सार्द्धद्वाविंशत्यहानि ॥ यथाहप्रचेताः ॥ अनृतुमतींब्राह्मणींहत्वा कृच्छ्राब्दंषण्मासान्वेति ॥ क्षत्रियांहत्वाषण्मासान्मासत्रयंवेति ॥ वैश्यांहत्वामासत्रयंसार्द्धमासंवेति ॥ शूद्रांहत्वासार्द्धमासंसार्द्धद्वाविंशत्यहानिवेति कामाकामकृतोविकल्पः ॥ अकामतस्तुसर्वत्रार्द्धकल्प्यम् ॥ विषयविशेषेव्रतातिरेकमाहांगिराः ॥ आहिताग्नेर्द्विजाग्र्यस्यहत्वापत्नीमनिन्दिताम् ॥ ब्रह्महत्याव्रतंकुर्य्यादात्रेयीघ्नस्तथैवचेति ॥ १ ॥

१॥ महीना व्रत करे ॥ और शूद्रकी स्त्रीके वध करणे विषे डेढ १॥ महीना अथवा साढे २२॥ बाई दिनका व्रत करे तो शुद्ध हे ताहै ॥ इस जगा इच्छा और न इच्छातें करणे विषे विकल्प जानणा ॥ और जेकर अज्ञानतें इनका वध करे तो सब जगा अद्धा व्रत कल्पना करणा योग्यहै ॥ और विषय विशेष विषे व्रतकी अधिकताको अंगिराजी कहते हैं आहितेति श्रेष्ठ अग्निहोत्री ब्राह्मणकी पतिव्रता स्त्रीका वध करके ब्रह्महत्याका व्रत करे और तैसेहि अत्रिगोत्र वाली स्त्री अथवा आत्रेयी नाम रजस्वला स्त्रीका हैं तिसके वध करके भी ब्रह्महत्याके उचित जो व्रत तिसको करे ॥ १ ॥

उपेति उपपातकोंके प्रायश्चित्त विषयविषे स्त्रीके वधविशेषमे अंगिराजी कहतेहैं अनाहितेति नहीं जो अग्निहोत्री तिनांकी स्त्री तैसेंहि वैश्य शूद्रको जो स्त्री और शूद्र जातिकी स्त्री इनांके वध करणें विषें जो गोवधमे व्रत किहाहै सो करे तो शुद्ध होताहै १ अब इसी में पैठानसीजी विशेष कहतेहैं त्रिवर्षमिति त्रय३ वर्ष स्थानासन कचा दिनमें खडा रहे रात्रिमे स्थित होकर्के और रात्रिमें भोजन करे तो स्त्रीवधकरणवाला पुरुष शुद्ध होताहै ॥ अथवा वर्षरोजके प्राजापत्य व्रतकरे ॥ अब शातातपजी और विशेष कहतेहैं पडिति छे ६ महीने स्त्रीके वधविषे प्राजापत्य व्रत करे और अज्ञान पूर्वक करे तो चांद्रायण व्रतकर्के शुद्ध होताहै ॥ अब व्यास जी और प्रकार कहतेहैं अकामतइति अज्ञानतें ब्राह्मणीका वध कर्के जो वैश्य वधमें प्रायश्चित्त है सो

उपपातकप्रायश्चित्तविषयेस्त्रीवधविशेषेसएवह ॥ अनाहिताग्निपत्नीनां तथाविट्शूद्रयोषितां गोघातकव्रतंकुर्य्याच्छूद्रायांचैवनित्यशः १ पैठीनसिः त्रिवर्षंस्थानासनाभ्यांनक्तमश्नीयात् स्त्रीघातकःशुध्यतिसंवत्सरंप्राजापत्ये नवा। शातातपः॥ षण्मासान्स्त्रीघातीप्राजापत्यंचरेत्॥ अमतिपूर्वकेतुचांद्रायणम् ॥ व्यासः ॥ अकामतःस्त्रियंहत्वाब्राह्मणींवैश्यवच्चरेत् ॥ कामतो द्विगुणंप्रोक्तंप्रदुष्टायांनकिंचन १ ॥ पुण्यांल्लोकानवाप्नोतिशूद्रगांयस्तुपातपातयेत् ॥ पतिघ्नींमथगर्भघ्नींताहिसंकरकारिकाः २ ⊛ उपपातकप्रकरणे स्त्रीहत्याप्रायश्चित्तंवहुधाप्रपंचितं तत्र कन्याहत्यायाअनिर्वार्य्यत्वं महापातकांतर्गतत्वंवा वुध्वा नोक्तमतस्तत्स्वरूपाद्युच्यते ॥

करे और इच्छातें वध करे तो एही व्रत दूणा करणा योग्य है और व्यभिचारिणी स्त्रीके वध विषें कुछ दोष नाहिं जानणा १ इसी अर्थको पुष्ट करतेहैं पुण्यानिति और ब्राह्मणी क्षत्रियाणी वैश्या एह शूद्र साथ गमन करण वालियां होण तां इनांका वध करणेंविषें पुरुष पवित्र जो स्वर्गादि लोक तिनको प्राप्त होताहै और पतिके हत करणें वाली स्त्री तैसेंहि गर्भके नाश करणें वाली स्त्री एह वर्णसंकरके उत्पन्न करण वालियां हैं इनांके वधकरणें विषें भी दोष नाहिं है ॥ २ ॥ ⊛ और उपपातक प्रकरणविषें स्त्रीहत्याका प्रायश्चित्त वहुत प्रकारकर्के कथन कीताहै तिसविषें कन्याहत्याके पापको अनिवार्य्य जाण कर्के अथवा महापातकोंके मध्य विषें जान कर्के नहि कथन कीता है इसकारणतें अब तिसके स्वरूपादि कथन करिदे हैं

स्त्रीकों दश १० वर्ष तक कन्या जानणा तिसतें एह निश्चित होया कि कुमारियोंको (अष्ठ ८ वर्ष तक गौरी कहा है) इत्यादि वचनतें देवीके तुल्य होने कर्के तिसके वध विषें स्त्रीवधतें भी अधिक प्रायश्चित कल्पना करणा योग्यहै ॥ और जन्म समय विषें ही कन्याके वध विषें ऐसा विचारहै कि पांचवर्ष तक जो बालक हैं सो गर्भके तुल्य जानणा व्यक्तिमात्र दिखाया है इत्यादि वचन कर्के तिस कन्याको गर्भ के तुल्य होणेतें तो इसके वध विषें गर्भहत्यातें अधिक प्रायश्चित कल्पना करणा चाहिए॥ क्योंकि तिस को प्रगट होणेतें ॥ इसी प्रकार पुरुष तथा बालकविषें भी व्यवस्था जान- णी ॥ और नासिकेत ग्रंथ विषे स्त्री घात करणवाला और गर्भ घात करण वाला पुरुष तैल यंत्र कर्के पीडित होताहै और बालक वृद्ध दुःखी इनके वध करणे वाला पुरुष तैलपाक नरक

स्त्रियादशवर्षावधि कन्यात्वं ततश्च कुमारीणामष्टवर्षाभवेद्गौरीत्यादिवच नाद्देवीतुल्यत्वेन तद्वधे स्त्रीवधतोऽधिकंप्रायश्चित्तंकल्प्यम्॥ जन्मसमनंत रमेवकन्यावधे सहिगर्भसमोज्ञेयोव्यक्तिमात्रप्रदर्शित इत्यादिना तस्याग र्भसमत्वेपि भ्रूणहत्यातोऽधिकंकल्प्यं व्यक्तीभूतत्वात्॥ पुरुषेष्वेवंव्यव स्था नासिकेतोपाख्याने स्त्रीघातीगर्भघातीचतैलयंत्रेणपीड्यते बालवृद्ध संघातीतुतैलपाकेपुपच्यते १ अत्र स्त्रीपदंकुमारीविवाहितासाधारणम्॥ मासःषष्ठोऽष्टमःपुंसांस्त्रीणांमासश्चपंचमइत्याद्यन्नप्राशनमुहूर्तादौ स्त्रीपदे न कन्याग्रहणात्॥ मनुः॥ चतुर्णामपिवर्णानांनारीर्हत्वाऽनवस्थिताः निक्षेपंचापहृत्याथविश्वासात्प्रतिहृत्यच १ अंधतामिस्रंयातीतिसंबंधः

विषे पकाईदाहै॥ १॥ इसविषे स्त्रीपद जो है सो कुमारी और विवाहिताका साधारण जानणा इसमे संमति कहतेहैं मासइति छे ६ और अष्ठ ८ मे महीने विषे पुरुषको और स्त्रियोंको पंचमे ५ महीनेमे अन्न प्राशन किहाहै इत्यादि जो अन्न प्राशनके मुहूर्तादि निर्णयविषे स्त्री पद कर्के कन्याका ग्रहण करणे तें॥ अब इसीमे और प्रकार कर्के मनुजी कहते हैं चतु- र्णामिति चारवर्णकी ब्राह्मण क्षत्रि वैश्य शूद्रकी व्यभिचारिणी स्त्रीका वध कर्के और निक्षे प कया अमानत द्रव्यको हर कर्के अथवा विश्वासतें धनको हर कर्के अंधतामिस्र नाम नरक को प्राप्त होताहै॥ १॥

तैसहि वालकोंके हन करण वाले अंधतामिस्र नाम नरकको जितनें रोम देह पर हैं तितनें वर्ष प्राप्त होतेहैं ॥ इसविषें वालक और कन्याको हन करणवाला वालघ्न होताहै एह अर्थ जानणा क्योंकि लिंग जो पुल्लिंग स्त्रीलिंग तिसको अविवक्षित होणेतें ॥ अव इसी प्रकार काशीखण्ड विषे कहतेहैं स्त्रीघ्नमिति स्त्रीके हन करण वाला गौके हन करण वाला मित्रके हन करण वाला इनको कूटशाल्मलिवृक्ष विषे चिरकाल ऊपर पाद करकें हेठ मुख करकें हंदूतो लमकाओ एह धर्मराजनें किहाहै १ इसविषें भी स्त्रीपद कन्यापर प्रतीत होताहै क्योंकि चिरं इस पद करकें तिस पापके फलको आधिक्यताके प्रतिपादन करणेतें ॥ कुछक और भी स्त्रीवध प्रायश्चित्त विषें कहते हैं गुणेति गुणवालो में अधिक प्रायश्चित्त है और निर्गुण में थोडा प्रायश्चित्त और प्रसूत स्त्री में अधिक अप्रसूत मे थोडा और गर्भ वाली मे अधिक गर्भ

तथा वालघ्नाश्चांधतामिस्त्रंयावल्लोमानिदेहिनइति अत्रवालान्वालाश्चघ्नंतीतिवालघ्नाइत्यर्थोऽवसेयः। लिंगस्याविवक्षितत्वात्॥ काशीखण्डे ॥ स्त्रीघ्नं गोघ्नं वमित्रघ्नं कूटशाल्मलिपादपे उल्लंबयचिरंकालमूर्द्धपादमधोमुखम् १ अत्रापि स्त्रीपदंकन्यापरमेव प्रतिभाति चिरमित्यादिना तत्पापफलस्याधिक्यप्रतिपादनात् ॥ किंच ॥ स्त्रीवधप्रायश्चित्ते गुणागुणप्रसूताप्रसूतसगर्भागर्भसजातीयविजातीयब्राह्मण्यादिभिःतारतम्यमुक्तं नत्ववस्थया ॥ तत्र पूर्वोक्तमेवव्यवस्थापकंज्ञायते येतु कन्यादानेकुलधर्म्मोचितद्रव्यव्ययवाहुल्यापेक्षया कन्यावाहुल्यं पापफलमितिलोकोक्त्या दुःखजनकवुद्ध्या स्वकीयदारिद्र्यवुद्ध्या वा कन्यांघातयंति तेषां प्रायश्चित्तशतेनापि निष्कृतिर्नोद्भावनीया

रहित वालो मे थोडा और सजाति स्त्री मे अधिक विजातिमे थोडा और ब्राह्मणी मे अधिक क्षत्रियाणी मे थोडा इनांकरकें न्यूनाधिकता कथन कीतीहै परंतु अवस्था जो वाल वृद्धादि तिस करकें नहीं किहाहै तिस विषे पूर्वोक्ताहि व्यवस्था जाणीदीहै ॥ और जो पुरुष कन्या दान विषें कुल धर्मके उचित द्रव्य खरचके वाहुल्यताकी अपेक्षा करकें अर्थात् इसमें धन वहुत खरच होताहै और कन्या वहुत होणीयां पापांकाफल है इस लोकोक्तिकरकें भी दुःख जनक वुद्धि करकें अथवा अपनी दारिद्य वुद्धि करकें अर्थात् असीं दरिद्री होजावेंगें इस कारणतें कन्याका वध करतेहैं तिनां पुरुषों को सो १०० प्रायश्चित्त करके करकें भी निष्कृति नाम प्रायश्चित करकें पापतें रहित होणा सो नहीं होसकताहै ॥

क्योंकि तिनको इच्छातें करणेतें ॥ तिसके अनिवारणत्वको (प्रायश्चित्तैरपैत्येनः) इत्यादि वचन कर्के प्रतिपादन होणेतें ॥ इस स्मृतिका अर्थ दूसरे प्रकरण विषे वहुत हो चुकाहै उसी जगा ते देखलयणा उससे प्रतीत होवेगा कि एह पापदूरहोणेवाला नहि ॥ एह वडा आश्चर्यहै कि कन्या घात करण वालेयों में दुर्बुद्धिहै श्येन क्या बाज व्याघ्रादि हिंसा करण वाले भी हैं परंतु आप णी संततिकी रक्षा करतेहैं औरोंका हि वध करतेहैं एह लोक विषे देखीदाहै ॥ इस लोकके और परलोकके वृत्तांत जानण वाले पुरुषोंने इस प्रकारके कुकर्म क्या खोटे कर्म विषे किस वास्ते परिचय करीदाहै । इसी कारणतें कन्या घात करण वाले पुरुषोंने प्रायश्चित्त कीताभी है

कामकृतत्वात् तस्याअनिवार्य्यत्वस्य प्रायश्चित्तैरपैत्येनोयदज्ञानकृतंभवेत् कामतोव्यवहार्य्यस्तुवचनादिहजायत इत्यादिनाप्रतिपादितत्वात् अहोकन्याघातकानांदौर्जन्यम् श्येनव्याघ्रादयोहिंस्राअपि स्वापत्यरक्षका लोकेदृष्टाः ऐहिकामुष्मिकज्ञानिभिः पुरुषैरेवंभूते कुकर्म्मणि किमर्थंपरिचीयते ॥ अतएवकन्याघातकैः कृतप्रायश्चित्तैरपि व्यवहारोयाज्ञवल्क्येन निषिद्धः । शरणागतबालस्त्रीहिंसकान्संविशेन्नतु चीर्णव्रतानपिसतः कृतघ्नसहितानिमान् ॥ १ ॥ इमान् शरणागतादिव्यापादनकारिणः कृतघ्नसहितान् प्रायश्चित्तेन क्षीणपापानपि नसंव्यवहरेदिति वाचनिकोयं प्रतिषेधइति

तथापि तिनके साथ व्यवहार याज्ञवल्क्यजीनें निषिद्ध कीताहै सो बचन दिखाईदा है शरणेति शरणागत पुरुषकी और बालक और स्त्रीकी हिंसाकरण वालेने प्रायश्चित्त कीताभीहै तोभी इनके साथ व्यवहार न करे और कृतघ्न जो है किसेका उपकारनहि मनणे वाले तिनके साथभी व्यवहार न करे ॥ १ ॥ इसीका अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं एह शरणागतादियोंके वध करणे वाला कृतघ्नके साथ सो एह प्रायश्चित्त कर्के पापतें रहित भी है तब भी इनके साथ व्यवहार न करे इस वचन कर्के प्रतिषेध जानणा ॥

अब इसीमें मनु जोभी कहते हैं वालेति वालकों को हत करण वाला और कृतघ्न पुरुष एह धर्मतः क्या प्रायश्चित्तादिकके शुद्ध भीहैं और इसी प्रकार शरणागत पुरुषको हत करण वाला और स्त्रीके हतकरण वाला जो है इनके साथ व्यवहार न करे एह पूर्वोक्त ही अर्थ जानणा ॥ एह महापातक प्रकरणके उचितभीहै परंतु स्त्रीहत्या प्रसंगतें इसी जगा स्थापन कीताहै ॥ और हिंसाके प्रायश्चित्त प्रकरण विषे प्रसंगतें प्रकीर्णक पदाभिधेय अनुपपातक प्राणिके वध विषे भी प्रायश्चित्त कहतेहै मनुजो मार्जारेति विल्ला नौल इनको हत करके और पिपीहा डड्डू कुत्ता गोह उल्लू काक इनांको हतकरके जो शूद्र वध करणेमें प्रायश्चित्तहैं सो करणायोग्यहे ॥ १ ॥ (स्त्रीशूद्रविट्क्षत्रवध) एह उपपातकोंके प्राश्चित्त वास्ते जो पिच्छे गोवधका व्रतचांद्रायण दिखायाहै तिसको करे और शूद्र विषे बारां १२ वर्ष के व्रत का सोलवां १६ हेस्सा प्रायश्चित्त किहाहै सो इसमें नहिकरे क्योंकि पापके थोडा होणेतें ॥ और एह चांद्रायण व्रतभी उक्तातें अभ्यासादिके विषय विषे जानणा योग्यहै १ इतीकरके और प्रायश्चित्तकहतेहै पयःति अथवा त्रयरात्रि दुग्ध पान करे अथवा योजन क्या चार ४ कोश मार्ग चले अथवा स्रवंत्यां क्या नदी विषे जल का स्पर्श करे क्या स्नान करे अथवा अपहै देवता जिस सूक्त का तिसका जप करणा योग्यहै ॥ २ ॥ सो सूक्त मंत्र संग्रह प्रकरण विषे देखलेणा ॥

मनुरपि वालघ्नांश्चकृतघ्नांश्चविशुद्धानपिधर्मतः शरणागतहंतॄंश्चस्त्रीहंतॄंश्चनसंवसेदिति पूर्वोक्तएवार्थःइदंचमहापातकप्रकरणोचितमपिस्त्रीहत्याप्रसंगादत्रैवानिहितम् ॥ हिंसाप्रायश्चित्तप्रकरणे प्रसंगात्प्रकीर्णकपदाभिधेयानुपपातकप्राणिवधेपिप्रायश्चित्तमाह मनुः ॥ मार्जारनकुलौहत्वाचाषंमंडूकमेवच ॥ श्वगोधोलूककाकांश्चशूद्रहत्याव्रतंचरेत् १ स्त्रीशूद्रविट्क्षत्रवधइत्युपपातकप्रायश्चित्तं गोवधव्रतंचांद्रायणंचरेत् नतुशूद्रेज्ञेयस्तुषोडशेत्यादिप्रायश्चित्तं पापस्यलघुत्वात् चांद्रायणमप्येतत् कामतोऽभ्यासादिविषयंद्रष्टव्यम् ॥ १ ॥ पयःपिवेत्त्रिरात्रंवायोजनंवाऽध्वनोव्रजेत उपस्पृशेत् स्रवंत्यांवासूक्तंवाब्दैवतंजपेत् ॥ २ ॥

अब इसोका अर्थ स्पष्ट करके कहतेहैं मार्जारेति बिडालादियोंको अज्ञान पूर्वक वध करणे विषे त्रय रात्रि दुग्ध पान करे अथवा मंदाग्नि करके इसमें समर्थ ना होवे तो त्रय ३ रात्रि तक योजन क्या चार ४ कोस मार्ग चले और इसमे समर्थ ना होवे तो त्रय ३ रात्रि नदी मे स्नान करे जेकर इसके करणे में भी समर्थ ना होवे तो त्रय ३ रात्रि आपोहिष्टामयोभुव इत्यादि सूक्तका पाठ करे परंतु इसको और यथाक्रम लघु होणे ते एक ते दूसरे के करणे मे ना समर्थ होवे तो उत्तरोत्तर क्या उसके आगे का ग्रहण करे और इसमे विकल्प नाहि जानणा अभ्रिमिति लेकर ब्राह्मण सर्पको हत करे तो एह पूर्वोक्त व्रत करे और लोह दंड दान करे और

अर्थः ॥ मार्जारादीनामबुद्धिपूर्वकवधेत्रिरात्रंदुग्धंपिबेत् ॥ अथमं दानलत्वादिना न समर्थः त्रिरात्रंप्रतियोजनमध्वनोव्रजेत् ॥ अत्राशक्त स्त्रिरात्रंनद्यांस्नायात् ॥ तत्राप्यक्षमस्त्रिरात्रमापोहिष्ठेत्यादिसूक्तंजपेत् ॥ पश्चोत्तरंलघुत्वात्पूर्वपूर्वासंभवे उत्तरोत्तरपरिग्रहः । नतुवैकल्पिकः ॥ अभ्रिंकार्ष्णायसींदद्यात्सर्पंहत्वाद्विजोत्तमः ॥ पलालभारकंषंडेसैसकं चैकमाषकम् ॥ ३ ॥ अर्थः ॥ सर्पंहत्वाब्राह्मणाय तीक्ष्णाग्रंलोहदंडंदद्यात् नपुंसकंचहत्वा पलालभारंसीसकंचमाषकंब्राह्मणायदद्यात् ३ ॥ घृतकुंभंवराहेतुतिलद्रोणंतुतित्तिरौ शुकंद्विहायनंवत्संक्रौंचंहत्वात्रिहायनम् ४ ॥

नपुंसक को हतकर्के पराली का भार और एकमासा सिक्का दानकरे ॥ ३ ॥ अब इसीका अर्थ स्पष्टकर्के कहते हैं सर्पमिति सर्प को हतकर्के प्रथम प्रायश्चित करे और ब्राह्मणके ताईं तीक्ष्ण अग्र वाला दक्षिणा वास्ते लोहदंड देवे और नपुंसक पुरुषको हत कर्के प्रथम प्रायश्चित कर लेवे फेर पराली का भार मासा सिक्का दान करे ब्राह्मणके ताईं देवे ॥ ३ ॥ घृत इति सूकर के हत करणे मेघृतका घट दान करे और तित्तिरके हत करणेमें तिलोंका द्रोणदान करे और तोतेके हत करणमें दो २ वर्षका वछादेवे और क्रौंच नाम पक्षिको हतकर्के त्रय ३ वर्षका वछा दान करे ॥ ४ ॥

अब इसीका अर्थ स्पष्ट करके कहते हैं सूकर इति सूकरके हत कीत्ते होश्रां घृतका घट दान करे ॥ और तितिरि नाम पक्षिके हत कीत्ते होश्रांचार४ आढक परिमाण तिलदान करे ॥ और तोतेके हत कीत्ते होश्रां दो २ वर्षका बच्छा दान करे ॥ और क्रौंच नामा पक्षिको हत करके त्र य ३ वर्षका बच्छा दान करे एह एक एकके वध विषयविषं जानणा ॥ और सो इनां सभनांके इकट्ठे वधविषे मार्जार इत्यादि कथन कीताहै सो जानणा ॥ और इच्छातें वारंवार वध करणे वि षे वासिष्ट जी कहतेहैं श्वेति कुत्ता बिडाल नौल डड्डू सर्प दहर नाम छोटा चूआ अथवा छुछुं

अर्थः सूकरे हते घृतकुंभं तितिरिसंज्ञिनि पक्षिणि हते चतुराढकपरिमाणं तिलंदद्यात् ॥ शुकेहतेद्विवर्षंवत्सं क्रौंचाख्यंपक्षिणंहत्वात्रिवत्संब्राह्मणायद द्यात् प्रत्येकवधाविषयामिदम् । समुदितवधेतु मार्ज्जारित्याद्युक्तम् । कामतोत्यं ताभ्यासेवासिष्ठः।श्वमार्जारनकुलमंडूकसर्प्पदहरमूषकान् हत्वाकृच्छ्रंद्वादश रात्रंचरेत् किंचिद्दद्यादिति । दहरोऽल्पमूषकः छुछुन्दरीवा । हत्वाहंसंवला कांचवकंवर्हिणमेवच वानरंश्येनभासौचस्पर्शयेद्ब्राह्मणायगाम् ५ स्पर्शयेद्द द्यात् ५ वासोदद्याद्धयंहत्वापंचनीलान्वृषान्गजम् अजमेषावनड्वाहंखरं हत्वैकहायनम् ६

दर चूआ इनांका वध करके बारां १२ रात्रिका कृच्छ्र व्रत करे और कुछक दान करे तो शु द्ध होताहै दान इसजगा पूर्वोक्तहि जानणा ॥ और हंस बगुली बगुला मोर वानर बाज भास पंछी विशेष इनांका वध करके ब्राह्मणके ताई गौदान देवे तो शुद्ध होताहै ५ वास इति घोडे का वध करके वस्त्रदान करे और हस्तिका वध करके पांच ॥ ५ ॥ नीले बैलों का दान करे और बकरा भेडा बैल गर्दभ इनां का वध करके एक वर्ष के बच्छेका दान करे तो शुद्ध होताहै ॥ ६ ॥

और क्रव्याद नाम मृगोंके वधकर्के दुग्धदेणे वाली गौका दान करे और अक्रव्यादोंके वध विषे वच्छी देवे और टप्रका वध कर्के कृष्णल दान करे ॥ ७ ॥ अब इसीका अर्थ स्पष्टकर्के कहतेहैं क्रव्याद नाम कच्चे मांसको भक्षण करणवाले व्याघ्रादि जानणे और अक्रव्याद नाम हरिणादियों का जानणा और कृष्णल नाम सुवर्णकी रत्ति दान करे ॥ ७ ॥ और पीछे कहा जो पंच ५ नीलवृषादिओंका दान तिसमे सामर्थ्य न होणेविषे प्रायश्चित्त मनुजी कहतेहैं दानेनेति सर्पादि योंके वधका पाप दान कर्के दूर करणेको समर्थ न होवे तो एक एकके वध विषे ब्राह्मण पापके

क्रव्यादांस्तुमृगान्हत्वाधेनुंदद्यात्पयस्विनीम् अक्रव्यादान्वत्सतरीमुष्ट्रंह. त्वातुकृष्णलम् ७ क्रव्यादान् आममांसभक्षकान् व्याघ्रादीन् ॥ अक्रव्यादा न्हरिणादीन् ॥ कृष्णलंसुवर्णरक्तिकाम् ७ नीलवृषपंचकादिदानाशक्तौप्रा यश्चित्तमाहसएव वधंदानेननिर्णेक्तुंसर्प्पादीनामशक्नुवन् एकैकशश्चरेत्कृ च्छ्रंद्विजःपापापनुत्तये ८ अर्थः अभ्रिप्रभृतीनामभावाद्दानेन सर्वपापानि र्हरणंकर्त्तुमसमर्थोब्राह्मणादिःप्रत्येकवधे कृच्छ्रंप्राथम्यात् प्राजापत्यंद्विजः पापनिर्हरणार्थं चरेत् ॥ सर्प्पादयश्चाभ्रिकाप्र्णायसींदद्यादित्येवमारभ्येत त्पर्यंताग्रह्यंते ॥ ८ ॥

दूर करणे वास्ते कृच्छ्र व्रत करे तो शुद्ध होताहै ॥ ८ ॥ अब इसीका अर्थ स्पष्ट कर्के कहते हैं अभ्रीति अभ्रि आदियों का अभाव होणेते दान कर्के संपूर्ण पापके दूर करणेको समर्थ न होवे तो ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र एक एकके वध विषे प्रथम तें कृच्छ्र व्रत करे इसीका अर्थ एहहै कि प्रजापत्यव्रतको ब्राह्मण पाप दूर करणे वास्ते करे ॥ और सर्प्पादियोंके ग्रहण करणे वास्ते अर्थात् कितनें उह सर्प्पादिहैं इसगणना वास्ते (अभ्रिकाप्र्णायसींदद्यात्) इनाते आद लेकर इस पर्यंत ग्रहण करणा योग्यहै ॥ ८ ॥

अस्थीति अस्थिवाले हजार जीवोंके मारण विषे और अस्थि विना एक गड्डा भर पूर्णके वध विषे शूद्र हत्याका व्रत करे ॥ १ ॥ अब इसीका अर्थ स्पष्ट करके कहतेहैं अस्थीति अस्थि यां वाले जो जीव किरले तों आदलेकर हजार १००० के वध विषे शूद्र वधका प्रायश्चित्त औपदेशिक करे अर्थात् जो शूद्र वधमें प्रायश्चित्त किहाहै सो करे ॥ और अस्थि रहित जो गड्डा भर जीव हैं तिनोंके वधविषे भी एही प्रायश्चित्त करे ॥ ९ ॥ तैसेंहि इसीमें याज्ञवल्क्य जी कहते हैं अस्थीति अस्थिवाले जीवोंके हजार के वध विषे और अस्थि रहितों के गड्डा भरके वध विषे पूर्वोक्त व्रत करे। अस्थि रहित जो जूआं मत्कुणादि इनमें एक

अस्थिमतांतुसत्त्वानांसहस्रस्यप्रमापणे ॥ पूर्णेचानस्यनस्थ्नांतुशूद्रहत्याव्रतंचरेत् ॥ ९ ॥ अस्थिमतांप्राणिनांकृकलासादीनांसहस्रस्यवधेशूद्रवधप्रायश्चित्तमौपदेशिकंकुर्यात् ॥ अस्थिरहितानांच शकटपरिमितानां वधे तदेवप्रायश्चित्तंकुर्यात् ॥ ९ ॥ तथाचयाज्ञवल्क्यः ॥ अस्थिमतांसहस्रंतुतथानस्थिमतामनइति ॥ अस्थिरहितानांयूकामत्कुणादीनांप्रतिप्राणिप्रायश्चित्तस्यानंत्यात्सामान्येनप्रायश्चित्तमाह ॥ मनुः ॥ किंचिदेवतुविप्रायदद्यादस्थिमतांवधे अनस्थ्नांचैवहिंसायांप्राणायामेनशुद्ध्यति ॥ १ ॥ किंचिदिति स्वल्पंधान्यहिरण्यादि ॥ तत्रयदाहिरण्यंदीयतेतदापणमात्रम् ॥ अनस्थिवधेत्वेकःप्राणायामः ॥

२ प्राणि वध के प्रायश्चित्त को बहुत होणेतें सामान्य करके प्राणियों का प्रायश्चित्त मनुजीभी कहते हैं किंचिदिति अस्थि वाले जीवों के वध विषे ब्राह्मणके ताईं किंचित् देवे और अस्थि रहित जीवों के मारण विषे एक प्राणायाम करके शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ किंचित् नाम थोडे धान्य सुवर्णादि का जानणा अथवा अष्ट ८ मुठी धान्य का नाम किसीने किहाहै। तिस विषे जो सुवर्ण दान किहाहै सो पण मात्र जानणा पणका परिमाण व्रत प्रकरणकी मान परिभाषा विषे देख लेणा ॥ और अस्थि रहित जीवों का वध करे तो एक प्राणायाम करणे करके शुद्ध होताहै ॥

अब प्राणायामका लक्षण कहते हैं सइति व्याहृतियां ओंकार और शिर के साथ गायत्रीका प्राणों को रोक करके त्रय ३ वार पाठ करे सो प्राणायाम किहा है एह वसिष्ठ जी का किहा होया लक्षण ग्रहण करणा ॥ १ ॥ एह छोटे जीवोंके वध विषे जानणा । और अस्थिरहित वडे जीवोंके वध विषे (कृमिकीटवयोहत्वा) इत्यादि मलिनीकरण पापों विषे (तपया होया जवोंके काडेका व्रत ३ दिन पान करे) एह मनुजीका कथन कीता होया प्रायश्चित्त देखणे योग्यहै । अब अपरार्क विषे कहतेहैं शूद्रेति शूद्रहत्याका व्रत ब्रह्महत्याके व्रतको विधि करके छे ६ महीनेका व्रत करे अथवा दश १० दुग्धदेण वाली गौआं दान करे तो शुद्ध होताहै । और

सच ॥ सव्याहृतिकांसप्रणवांसावित्रींशिरसासह त्रिःपठेदायतप्राणः प्राणायामःसउच्यते इतिवसिष्ठप्रोक्तलक्षणोग्राह्यः ॥ १ ॥ क्षोदिष्ठजन्तुवधएतत् ॥ स्थविष्ठानस्थिजन्तुवधेतु कृमिकीटवयोहत्वेत्यादिमलिनीकरणीयेषु ततःस्याद्यावकस्त्र्यहमितिमनूक्तंद्रष्टव्यम् । अपरार्के शूद्रहत्याव्रतंषाण्मासिकंब्रह्महव्रतं दशधेनुदानंवा ॥ अनस्थिकानांचकेषांचित्सहस्रसंख्याकानांवधे शूद्रवधप्रायश्चित्तमाहयमः॥ अतऊर्ध्वंक्रिमिकीटपतंगभ्रमरदंशमशकमाक्षिकाणांसहस्रं हत्वा तथा कोकिलशुककपोतकपिंजलकुक्कुटटिट्टिभखर्जूरखंजरीटानां पुरुषभारवधेशूद्रवधप्रायश्चित्तमिति ॥

अस्थिरहित कोईक जो हजारां १००० जीव तिनांके वध करणे विषे शूद्रवधका जो प्रायश्चित्त है तिसको यम जी कथन करते हैं अतऊर्ध्वेति इससे उपरंत क्रिमि क्या छोटे कीडे और वडे कीडे पतंग भ्रमर वनमक्षि मच्छर मक्षिआं इनांके हजारांका वध करके और कोकिला तोता कबूतर कपिंजल क्या चिडा कुकुड टिट्टिभ क्या टिटीहरी खर्जूर पाक्षि विशेष खंजरीट क्या ममोला इनां के पुरुष भार वध विषे शूद्र हत्या का व्रत करे तो शुद्ध होताहै अर्थात् एह संपूर्ण जीव पुरुष के भार तुल्य होजावें तो इनके वध विषे पूर्ण प्रायश्चित्त करे ॥

फलं पुष्पादि तें उत्पन्न जो प्राणी तिनों के वध विषे मनुजी कहतेहैं अन्नेति अन्नादितेंउत्पन्न जो जीव और रसतें उत्पन्न जो जीव और फल पुष्पतें उत्पन्न जो जीव इनां संपूर्णोके वध विषे घृत प्राशन करे तो शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ और इसी विषय विषे याज्ञवल्क्यजी कहतेहैं ॥ फलेति फल पुष्प अन्न रस तें उत्पन्न जो जीव तिनां के वध विषे घृत प्राशन करे ॥ और अस्थि वाले जीवोंके वध विषे कुछक देवे अर्थात् अष्ठ ८ मुठी अन्न देवे और अस्थिर हित जीवों के वध विषे प्राणायाम करे ॥ अब इसी का अर्थ स्पष्ट करके कहतेहै उंबला दिके फल विषे और महु आदि के पुष्पों विषे और चिरकालके स्थित जो भक्त सत्तु

फलपुष्पादिजातानांप्राणिनांवधे ॥ मनुः ॥ अन्नाद्यजानांसत्वानांरसजानांचसर्वशः फलपुष्पोद्भवानांचघृतप्राशो विशोधनम् १ अस्मिन्विषयेच याज्ञवल्क्यः ॥ फलपुष्पान्नरसजसत्वघातेघृतप्राशनम् ॥ किंचित्सास्थिमतांदेयंप्राणायामस्त्वनास्थिकेइति ॥ औदुंबरादौफले मधूकादौच कुसुमे चिरस्थितभक्तसक्त्वादावन्नेच रसेचगुडादौ यानिसत्वानि प्राणिनोजायंते तेषांघातेघृतप्राशनं शुद्धिसाधनम् ॥ इदंचघृतप्राशनंभोजनकार्यएवविधीयते नतु भोजनमपि ॥ प्रायश्चित्तानांतपोरूपत्वात् ॥ तदुक्तमंगिरसा ॥ प्रायोनामतपःप्रोक्तंचित्तंनिश्चयउच्यते ॥ तपोनिश्चयसंयुक्तंप्रायश्चित्तंतदुच्यते १ एतच्चानुक्तनिष्कृतिप्राणिवधविषयम् ॥

आदि अन्न और रस गुडादि इनां विषे जो जीव उत्पन्न होतेहैं तिनांके मारण विषे घृतका प्राशन शुद्धि का साधनहै एह जो घृत प्राशन है सो भोजन कार्य विषे हि जानना और कुछ भोजन न करे अर्थात् घृतको भोजनका स्थान जाणे और भोजन भी साथ करे असा नहि क्योंकि प्रायश्चितों को तप रूप होणे तें ॥ सोई कहाहै अंगिरा जीने प्रायइति प्राय नाम तपका है और चित्तनाम निश्चयका है तप निश्चय करके युक्त प्रायश्चित्त किहाहै ॥ १ ॥ एह प्रायश्चित्त नहिं कथन कीतो निष्कृति जिनां जीवां की तिनांके वध विषे जानणा अर्थात् नहिं किहै प्रायश्चित्तजाते जो तेतुएआदि जीव तिनांके वध विषे जानणा ॥

और जिस विषे प्रायश्चित्त विशेष श्रवण करीदाहै तिस विषे सोइ प्रायश्चित्त होताहै एह मिताक्षरा में किहाहै ॥ जैसें पराशर जी और विशेष कहते हैं हंसेति हंस सारस चक्र क्रौंच कुक्कुट इनांके वध करण वाला और मोर भेड़ा इनांका वध कर्के एकभक्त व्रत करे तो शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ और मद्गु टिटीहरी तोता कबूतर आडी बगुला इनाके वध कर्के नक्त भोजन करे तो शुद्ध होताहै ॥ २ ॥ एकभक्त और नक्तका अर्थ व्रत प्रकरणविषें जानणा ॥ और पिपीहा काक कबूतर सागे तितिर इनाके वध करण वाला जलविषें डुब कर्के प्रात काल और सायंकाल मे प्राणायाम कर्के शुद्ध होताहै ॥ ३ ॥ और गिरज बाज पक्षि उल्लू इनांके वध करणेवाला दिनमे फला

यत्रतु प्रायश्चित्तविशेषःश्रूयते तत्र सएवभवतीतिमिताक्षरा यथाहपराशरः हंससारसचक्राव्हक्रौंचकुक्कुटघातकः ॥ मयूरमेषौहत्वाचएकभक्तेनशुद्ध्यति १ मद्गुंचटिट्टिभंचैवशुकंपारावतंतथा ॥ आडिकांचबकंहत्वाशुद्ध्येन्नक्तभोजनात् ॥ २ ॥ चापकाककपोतानांसारितित्तिरघातकः ॥ अंतर्जले उभेसंध्येप्राणायामेनशुद्ध्यति ३ गृध्रश्येनविहंगानामुलूकस्यचघातकः अपक्काशीदिनंतिष्ठेद्द्वौकालौमारुताशनः ॥ ४ ॥ हत्वामूषकमार्जारसर्पाजगरडुंडुभान् ॥ प्रत्येकंभोजयेद्विप्रान् लोहदंडश्चदक्षिणा ५ सेधाकच्छपगोधानांशशशल्यकघातकः ॥ वृंताकफलगुंजाशीअहोरात्रेणशुध्यति ६

दि भक्षण कर्के स्थित रहे और दो काल अर्थात् एकदिन क्योंकि दिनमे भोजनके दोनोंहि काळ हैं तिनांमे वायु भक्षण करता होया स्थित रहे ॥ ४ ॥ और चूआ बिल्ला सर्प अजगर जल सर्पइनां में एक २ के वध विषे ब्राह्मणांको भोजन करावे और लोहेका दंडा दक्षिणा देवे तो शुद्ध होताहै ॥ ५ ॥ और सेधा क्या जीव विशेष और कच्छू गोह सेहा शल्यक क्या सेहेका भेदहै इनांके वध करण वाला और भट्ठेका फल और रत्तियां इनांके भक्षण करणवाला पुरुष एक दिन रात्र के व्रत कर्के शुद्ध होताहै ॥ ६ ॥

और मृग रोहिमृग शूकर बकरी बकरा इनांके वधकरणे विषे और भगयाड गिदड ऋच्छ तरख इनांके वध करणेवाला एकप्रस्थ तिल दान करे और त्रयदिन वायुभक्षण करता रहे ८ और हस्ति भेडा घोडा ऊठ गवय इनांके वधविषे दिनरात्रका व्रतकरे और त्रयकाल स्नानकरे ९ और गधा वानर सिंह चित्रा व्याघ्र इनांके वध करण वाला त्रयरात्रि व्रतकर्के और ब्राह्मणांको भोजनदेने कर्के शुद्धहोताहै १० इसी प्रकार और जो स्मृति वचनहैं तिनांकी देश कालादि अपेक्षा कर्के विषय व्यवस्था कल्पना करणी अर्थात् ग्राममृगते वनके मृगभक्षणमें थोडा प्रायश्चित करे और जो भ्रष्टस्थान में शाकादि उत्पन्न होवें तिनांके भक्षणमे अधिक प्रायश्चित करे इसी प्रकार और भी जानणा ॥ अब इसीमे याज्ञवल्क्य जो विशेष कहतेहैं हंसेति हंस बाज

मृगरोहिवराहाणामविकावस्तघातने वृकजंबुकऋक्षाणांतरक्षाणांचघातकः॥ ७ ॥ तिलप्रस्थंत्वमोदद्याद्वायुभक्षोदिनत्रयम् ॥ ८ ॥ गजमेषतुरंगोष्ट्रगवयानांनिपातने प्रायश्चित्तमहोरात्रंत्रिसंध्यंचावगाहनम् ॥ ९ ॥ खरवानरसिंहानांचित्रकव्याघ्रघातकः शुद्धिमेतित्रिरात्रेण ब्राह्मणानांचभोजनैरिति १० एवमन्येषामपि स्मृतिवचसां देशकालाद्यपेक्षया विषयव्यवस्थाकल्पनीया ॥ याज्ञवल्क्यः ॥ हंसश्येनकपिक्रव्याज्जलस्थलशिखंडिनः भासंहत्वाचदद्याद्गामक्रव्यादांस्तुवत्सिकाम् ॥ १ ॥ उरगेष्वायसोदंडःपंढकेत्रपुसीसकम् कोलेघृतघटोदेयउष्ट्रेगुंजाहयेंशुकम् ॥ २ ॥ तित्तिरौतुतिलद्रोणंगजादीनामशक्नुवन् दानंदातुंचरेत्कृच्छ्रमेकैकस्यविशुद्धय इति ३

वानर और कच्चे मांसके भक्षण करणवाला शृगालादि और जलस्थलके मोर भास पक्षि इनांका वधकर्के गोदान करे और नहि जो कच्चा मांस भक्षण करणवाला मृग तिसके वधमें वच्छीदान करे १ और सर्पके वधविषे लोहेका दंड देवे और षंढक कोई जीवविशेषहै तिसके वधमें कलिसिका देवे और शूकरके वधविषे घृतका घट देवे और उष्ट्रकेवधमें सुवर्णकी रत्ति देवे घोडेके वधमें वस्त्र देवे २ और तित्तरके वधमें द्रोण परिमित तिलदान करे द्रोणका परिमाणपीछे कहाहै और गजादियोंके दानदेणे जो समर्थ न होवेतो एक २ की शुद्धिवास्ते कृच्छ्रव्रत करे ३ एहसंपूर्ण दान प्रायश्चित्तसें पीछे करणे योग्यहैं

इस विषें कृच्छ्र शब्द लक्षणा करके क्लेशसाध्य जो तपमात्र तिसविषें जानणा और तप जो है सो वर्ष रोज छे ६ महीनें चार ४ त्रय ३ दो २ एक १ महीनें अथवा चौवी २४ दिन बारां १२ दिन छे ६ दिन त्रय ३ दिन एक दिनमात्र इत्यादि गौतम जीका कथन कीता होया जानणा ॥ इस विषें दानके अनुसार करके व्रत कल्पना करणी ॥ जैसें हस्तिके वधविषें दो २ महीने यवोंका काडा पान करे और तोतेके वधविषें उपवास व्रत करे इत्यादि और भी जानणे ॥ और पराशरजीके वाक्यका ज्ञान अज्ञानादि करके विवरण नागेश जीने कीता है जैसे स्मृत्यर्थ सार विषें कहते हैं गजाति हस्ति घोडा ऊंट गधा श्वेत गवय ऋच्छ महिष भेडों

कृच्छ्रशब्दश्चात्र लक्षणया क्लेशसाध्यतपोमात्रवाच्यः ॥ तपश्चसंवत्सरःषण्मासाश्चत्वारस्त्रयोद्वावेकश्चतुर्विंशत्यहोद्वादशाहः षडहस्त्र्यहोहोरात्रइत्यादिगौतमेनोक्तम् ॥ अत्र दानानुसारेणव्रतकल्पना ॥ततश्च गजवधेद्विमासिकंयावकाशनं शुकवधेतूपवासइत्यादि ॥ पराशरीयमेवज्ञानाज्ञानादिभिर्विवृतंनागेशेन यथास्मृत्यर्थसारे ॥ गजाश्वोष्ट्रखरगौरगवयऋक्षमाहिषमेषादिष्वमत्याप्रत्येकवधेसार्द्धकृच्छ्रः ॥ समस्तवधेचांद्रम् ॥ मत्याप्रत्येकवधेपिचांद्रम् ॥ मत्यासमस्तवधेत्वावृत्तिश्चांद्रस्य ॥ हरिणसारंगरुरुवराहसिंहगंडकव्याघ्रमहामत्स्यग्राहशिशुमारादिष्वमत्याप्रायेककृच्छ्रः ॥ समस्तवधेकृच्छ्रद्वयम् ॥ मत्याप्रत्येकवधेचैवम् ॥ समस्तवधेचांद्रम् ॥

आदि लेकर इनांमेंसें एक २ के अज्ञानतें वधकरणे विषें डेढ कृच्छ्र व्रत करे ॥ और सभनां के वध विषें चान्द्रायण व्रतकरे ॥ और इच्छातें एक २ के वध करणे विषभी चान्द्रायण करे और इच्छातें सभनांके वध विषे चान्द्रायणकी आवृत्ति करे ॥ और हरिण सारंग रुरु कहा मृगविशेष वराह कहा शूकर सिंह गेंडा व्याघ्र वडामच्छ तंतुआ और शिशुमार आदिलेकर जो जीव हैं इनां मे अज्ञानतें एक २ के वधविषे कृच्छ्रव्रत करे ॥ और सभनांके वधविषे दो कृच्छ्र व्रत करे ॥ और इच्छातें एक २ के वध विषे भी एहि व्रत करे ॥ और इच्छातें संपूर्णांके वध विषें चांद्रायण व्रत करे ॥

श्वपति कुत्ता भगयाड वानर गिदड विष्टा भक्षक शूकर इनांमे से एक २ के अज्ञानतें वध विषें त्रय रात्रि व्रत करे। और सभनां के वध विषें कृच्छ्रव्रतकरे॥ और इच्छातें एक २ के वध विषेंभी कृच्छ्रव्रतकरे ॥ और इच्छातें सभनांके वधविषें दूणा व्रत करे॥ और बिल्ला सर्प अजगर जलसर्प नोल डडू चूआ कर्कट सलयां सेही गोह कंडे वाली सेही कच्छू सेहा इनांमे सें अज्ञानतें एक १ के वध विषें कृच्छ्र व्रत का एक पाद व्रत करे॥ और अज्ञान तें सभनांके वध विषें अर्द्धकृच्छ्र व्रत करे। और इच्छातें एक २ के वधविषें भी एही व्रत करे। और इच्छातें सभनां के वधविषे कृच्छ्र व्रत करे॥ और हंसादियोंमे सें अज्ञानतें एक १ के वध विषे, कृच्छ्र व्रत करे

श्वसृकवानरजंबुकविड्वराहादिष्वमत्याप्रत्येकंत्रिरात्रम्। समस्तवधेकृच्छ्रः मत्याप्रत्येकवधेचैवम्। समस्तवधेद्विगुणम्। मार्जारसर्पाजगरडुंडुभनकुलमंडूकमूषककर्कटशलभसधागोधाशल्यककूर्मशशादिष्वमत्याप्रत्येकवधेपादकृच्छ्रः। समस्तवधेत्वर्धकृच्छ्रः।मत्याप्रत्येकवधेचैवम्। समस्तवधेकृच्छ्रः। हंसादिष्वमत्याप्रत्येकवधेकृच्छ्रः। गृध्रादिषुपादन्यूनः॥ शुकादिष्वर्धकृच्छ्रः ॥ मत्याद्विगुणम्॥ टिट्टिभादिषुपादः॥ समस्तवधेद्विगुणम्। हरिणादिषुहंसादिषुचहंतृवहुत्वेप्रत्येकंत्रिरात्रम् ॥ श्वादिषुगृध्रादिषुचैवम्॥गजादिषुप्रतिपुरुषंकृच्छ्रः ॥ मार्जारादिषुशुकादिषुच प्रत्येकमुपवासः॥ टिट्टिभादिषु प्रतिपुरुषंनक्तम् ॥

और अज्ञानतें गृध्रादिके वधविषे एक पाद ऊन कृच्छ्र व्रत करे॥ और अज्ञानतें तोते आदिके वधविषे अर्द्ध कृच्छ्रव्रतकरे॥ और इच्छातें वधविषे दूणा व्रत करे॥ और टिट्टिभादिके वधविषें एकपाद व्रतकरे॥ और सभनांके वधविषे दूणा व्रत करे॥ और हरिणादि अथवा हंसादि विषे वध करणवाले वहुत होवें तो एक २ त्रयरात्रि व्रतकरे ॥ और कुत्तेआदि गृध्रादि विषे ऐसे जानणा॥ और हाथिआदिके वधविषे वहुत पुरुष होवें तो एक २ कृच्छ्र व्रत करे ॥ और ऐसेहि बिल्लादि शुकादिके वध विषे एक २ उपवास व्रत करे ॥ और टिट्टिभादिके वध विषे एक २ पुरुष नक्त व्रत करे

अब नास्तिकताते उपरंत पठन कीते होए जो शूद्रप्रेष्य १ हीनसख्य २ हीनयोनिनिषेवण ३ अनाश्रमवास ४ परपाकरतित्व ५ सामान्यव्रतलोप ६ भार्य्या त्याग ७ एह पीछे व्याख्यान कीते हैं इनांका प्रायश्चित्त (एतदेवव्रतं कुर्युः) (चांद्रायणमथापिवेति) एह मनु जी का कथन कीता होया शक्तिजातिगुणादिकी अपेक्षा कर्के जोडने योग्यहै और इस श्लोकका व्याख्यान पीछे कीताहै ॥ अब इसी का संबंधि और कथन करतेहे प्रायश्चित्तमिति ॥ जो ब्राह्मण कुकर्म्म मे स्थित हुए २ प्रायश्चित्त की इच्छा करें और ब्रह्म कर्के दूर होवें तिनांको भी एही

अथनास्तिक्यानंतरंपठितानां शूद्रप्रेष्य हीनसख्य हीनयोनिनिषेवणाऽनाश्रमवास परपाकरतित्व सामान्यव्रतलोप भार्य्यात्यागानां प्राग्व्याख्यातानां प्रायश्चित्तं एतदेवव्रतंकुर्य्युरुपपातकिनोद्विजाः अवकीर्णिवर्ज्जं शुद्ध्यर्थंचांद्रायणमथापिवेतिमनूक्तंशक्त्याद्यपेक्षया योज्यम् श्लोकः प्राग्व्याख्यातः॥ किंच ॥ प्रायश्चित्तंचिकीर्षन्तिविकर्म्मस्थास्तुयेद्विजाः ब्रह्मणाचपरित्यक्तास्तेषामप्येतदादिशेदिति ॥ १ शूद्रादिसेवकानां मनुना प्रायश्चित्तमुक्तम् तच्च सामान्येनविकल्पार्थम् ॥ विकर्म्मस्थाः ॥ शूद्रादिसेवकाः ॥ ब्रह्मणापरित्यक्ताविदाध्ययनरहिताः ॥ एतत्प्राजापत्यादित्रयमित्यर्थः॥

पूर्वोक्त प्रायश्चित्तदेणेयोग्यहै ॥ १ ॥ और शूद्रादियोंकी सेवा करणे वालोंको मनु जीने एही प्रायश्चित्त किहाहै सो एह सामान्य साथ विकल्पार्थ जानणा अर्थात् उपपातकोंका जो सामान्य प्रायश्चित्त ४ हैं तिनके साथ विकल्प वाला जानणा ॥ अब इसी श्लोक का अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं विकर्मस्थाइति विकर्मस्था क्या शूद्रादिकी सेवा करण वाले और ब्रह्म क्या वेद तिसथें रहित अर्थात् जिनांने वेद नहिं पढा होवे तिनां को एह प्राजापत्यादि त्रय व्रत करणे योग्यहै

और अनाश्रम वासविषें विशेष हारीतजीनें कथा कीताहै अनाश्रमीति आश्रम जो ब्रह्मचर्यादि तिससें रहित पुरुष प्राजापत्य कृच्छ्र व्रतकरके फेर आश्रमको प्राप्तहोवे ॥ १ ॥ और दो वार विषें अर्थात् एक वार प्रायश्चित्तकरके फेर भी आश्रम ग्रहण न करे तो अतिकृच्छ्रव्रतकरे और तीसरी वार विषें कृच्छ्रातिकृच्छ्र व्रत करे इससें अधिक होजावे तो चांद्रायण व्रत करे परंतु एह प्रायश्चित्त आश्रम वासका संभव नहिथा क्या हो नहि सक्काथा तिस विषें जानणे योग्यहै ॥ और आश्रम वासहो सक्काथा परन्तु कीता नहि तिस ना होणे विषें सामन्य पूर्वोक्त व्रत जानणा ॥ और तिस विषें भी इच्छा और न इच्छासें करणेमें लघु गुर्वादि व्यवस्था जानणी अर्थात् इच्छातें

अनाश्रमेवासेविशेषोहारीतेन प्रोक्तः। अनाश्रमीसंवत्सरंप्राजापत्यंकृच्छ्रंचरित्वाऽऽश्रमसुपयात् १ द्वितीयेऽतिकृच्छ्रंतृतीयेकृच्छ्रातिकृच्छ्रमतऊर्ध्वं चांद्रायणमिति । एतत्तु आश्रमवासासंभवेवेदितव्यम् । संभवेतु सामान्यप्रायश्चित्तम् । तत्रापि कामाकामतोलघुगुर्वादिका व्यवस्था बोध्या । अत्रायमभिप्रायः ॥ मनुना शूद्रसेवनमपात्रीकरणविहितं तेनैव शूद्रप्रेष्यता प्याभिहिता योगीश्वरेणापि तु सामीप्यदूरत्वोपाधिभ्यां शूद्रसेवन शूद्रप्रेष्य योःपृथगभिधानं तयोः शूद्रप्रेष्यत्वस्योपपातकमध्येपठितम् ॥ हीनयोनिनिषेवणेऽपिविशेषःशातातपोक्तोऽवसेयः ॥

करणेमें बहुत और न इच्छासें करणेमे थोडा प्रायश्चित्त करणा ॥ इस विषे एह अभिप्रायहै की मनु जीने शूद्र सेवाका प्रायश्चित्त अपात्री करण प्रकरण विषे विधान कीताहै तिसीने शूद्र प्रेष्यता भी कथा कीतीहै ॥ और याज्ञवल्क्यजीने सामीप्य दूरत्व उपाधि करके शूद्रकी सेवा और शूद्र प्रेष्य एह दोनो पृथक् पृथक् कथन कीतेहै अर्थात् सामीप्य करके शूद्रसेवन और दूरत्व उपाधि करके शूद्रप्रेष्यत्व विधान कीताहै तिनां मे से शूद्रप्रेष्यत्व उपपातकोंके मध्य विषे पठित कीताहै ॥ और हीनयोनि निषेवणविषे भी विशेष शातातप जीका कीता होया जानणा ॥

और अगेहि जो रोगकर्के मरणे वाले गजादि तिनांके अज्ञानतें वधविषे त्रय ३ रात्रि व्रत करे। और इसी प्रकार हरिणादिके वधविषे दो २ रात्रि व्रतकरे। और गर्दभादिके वधविषे चौथे काल भोजन करे ॥ और बिडालादिके वधविषे उपवास व्रत करे ॥ और गृध्रादिके वधविषे नक्त व्रत करे ॥ और तोतेआदिके वधविषे एक भक्तव्रत करे ॥ और मृत प्राय जो टिट्टिभादि तिनांके वध विषे जल में प्राणायाम करे ॥ और नहि जाणे जो संपूर्ण मृग पक्षि तिनांके वधविषे त्रयरात्रि व्रत करे ॥ एह व्रत देश काल जाति शक्ति गुणादिकी अपेक्षाकर्के गुरु लघु विषयविषे जोडनेयोग्यहै ॥

मृतप्रायेषुगजादिष्वमत्याप्रत्येकवधेत्रिरात्रम् ॥ हरिणादिषुद्विरात्रम् । खरादिषुचतुर्थकालाहारः॥ मार्जारादिषूपवासः॥ गृध्रादिषुनक्तम्। शुकादिष्वेकभक्तम् ॥ टिट्टिभादिषुजलेप्राणायामः ॥ अविज्ञातसर्वमृगपक्षिषु त्रिरात्रमिति इदंदेशकालजातिशक्तिगुणाद्यपेक्षया गुरुलघुविषयेयोग्यम् इतिस्त्री शूद्रविट्क्षत्रवधप्रायश्चित्तम् । ४६ । ४७ । ४८ । ४९ । ० ॥ अथ गणनायांव्याख्यातस्यनास्तिक्यस्यप्रा ० अत्रापिसामान्योपपातकप्रायश्चितयोजना जातिशक्तिगुणाद्यपेक्षयाज्ञेया तत्र नास्तिक्यशब्देन वेदनिंदा तेनजीवनंनास्तिक्यमितिव्युत्पत्तिं प्रदर्श्य वसिष्ठस्मरणमाह विज्ञानेश्वरोयथा ॥

इसका अर्थ पीछे स्पष्टकर्के किहाहै ॥ एह स्त्री शूद्र वैश्य क्षत्रीके वधकाप्रा॰ समाप्त होया ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥० अब गणना विषे व्याख्यान कीता जो नास्तिक्य तिसका प्रायश्चित्त कहतेहे अगेति इस विषेभी सामान्य जो उपपातकोंका प्रायश्चित्त योजना (उपपातकशुद्धिःस्यात) इत्यादि सो जातिशक्ति गुणादियोंकी अपेक्षा कर्के जानणे योग्यहै ॥ तिस विषे नास्तिक शब्द कर्के वेदकी निंदा जानणी ॥ तिस कर्के जो जीविका सो नास्तिक्य किहाहै इस व्युत्पत्तिको दिखा कर्के अर्थात् कह कर्के वसिष्ठ जीकी स्मृतिको विज्ञानेश्वर जी कथन करतेहैं जैसे ॥

नास्तिक इति नास्तिक क्या परलोक और ईश्वरको नहिं. मानण वाला सो बारां १२ रात्रि का कृच्छ्र व्रत करके नास्तिक भावतें विश्राम करे और नास्तिककी कोटियां करके अर्थात् नास्तिक भावकी युक्ति दिखाणे करके जो उपजीविका करताहै सो अतिकृच्छ्रव्रत करे ॥ एह प्रायश्चित्त एक वार करणें विषे जानणा ॥ और अभ्यासविषे उपपातकों के प्रायश्चित्त चांद्रायणादि जानणें ॥ और अत्यंत अभिनिवेश करके अर्थात् एककोटीतें एक अधिक इसप्रकार बहुत कालके अभ्यास विषे शंखजी कहतेहैं नास्तिकइति नास्तिक और नास्तिकभावककें जीविका करणवाला और कृतघ्न और झूठाव्यवहार करणें वाला और झूठा कथन करण वाला एह पंच ५ वर्ष रोज ब्राह्मणके घरविषे भिक्षा करे तद शुद्ध हुंदेहें ॥ इत्थे संवत्सर एह पद भिक्षा करणेका काल कि

नास्तिकः कृच्छ्रं द्वादशरात्रं चरित्वा विरमेन्नास्तिक्यान्नास्तिक्यवृत्तिस्त्वतिकृच्छ्रमिति । सकृद्विषयमेतत् ॥ अभ्यासेतूपपातकप्रायश्चित्तानिचांद्रायणादीनि ॥ अत्यंताभिनिवेशेन बहुकालाभ्यासेतु शंखः ॥ नास्तिकोनास्तिकवृत्तिः कृतघ्नःकूटव्यवहारी मिथ्याभिशंसी इत्येते पंचसंवत्सरं ब्राह्मणगृहे भैक्ष्यंचरेयुरिति ॥ संवत्सरमितिभैक्ष्याचरणकालः ॥ अत्रैवहारीतः नास्तिकोनास्तिक्यवृत्तिरितिप्रक्रम्य पंचतपोभ्रावकाशजलशयनान्यनुतिष्ठेयुरिति ॥ ग्रीष्मवर्षाहेमंतेष्विति ॥ नास्तिक्येनवृत्तिर्जीवनंयस्यसः । इतिनास्तिक्यप्रायश्चित्तम् ॥ ५० ॥

हाहै और किसे नियमवास्ते नहि। अब इसी विषे हारीतजी भी और प्रायश्चित्त कहतेहैं नास्तिक इति नास्तिक और नास्तिकतातें जीविका करणवाला इनांतें आद लेकर्के पंचतप अभ्रावकाश जलशयन इनांको करे । ग्रीष्म वर्षा हेमंत ऋतु विषे अर्थात् ग्रीष्म ऋतु विषे पंचाग्नि तपना रहे और वर्षा ऋतु विषे घरतें बाहरही रहे अर्थात् संपूर्ण जल अपणें शरीरपरहि वरसावे और हेमंत ऋतु विषे जलमें शयन करेतद शुद्ध होताहै । नास्तिक पदका अर्थ कहतेहैं नेति नास्तिक क्या परलोक और ईश्वर नहिंहै इत्यादि करके वृत्ति क्या जीविका जिस पुरुषकी सो कहिए नास्तिक्यवृत्ति एह नास्तिकताका प्रायश्चित्त पूराहोया ॥ ५० ॥

ब्राह्मोति ब्राह्मण प्रथम क्षत्रीको कन्या विवाहे और ब्राह्मणकी कन्या फेर विवाहे तो बारां १२ रात्रिका कृच्छ्र व्रतकर्के तिसनूं अर्थात ब्राह्मणकी कन्याको विवाहे ॥ और प्रथम वैश्यकी कन्या विवाहे तो तप्तकृच्छ्र व्रतकर्के फेर ब्राह्मणा क्षत्रियाणांको विवाहे ॥ और शूद्रापूर्वीहोवे तो कृच्छ्र और अतिकृच्छ्र व्रतकर्के ब्राह्मण क्षत्रि वैश्यकी कन्या विवाहे । और जेकर क्षत्री वैश्यापूर्वी होवे तो बारां १२ रात्रिका कृच्छ्र व्रतकर्के फेर क्षत्रीकीकन्या विवाहे । और शूद्रापूर्वीहोवे तो अतिकृच्छ्र व्रत कर्के तिसनूं विवाहे ॥ और जेकर वैश्य शूद्रकी कन्या विवाहे तो बारां १२ रात्रिका कृच्छ्र व्रत कर्के फेर वैश्यकी कन्या विवाहे ॥ इसका अर्थ स्पष्टकर्के कहतेहैं राजन्यामिति राजवं

ब्राह्मणोराजन्यापूर्वी कृच्छ्रं द्वादशरात्रं चरित्वा निविशेत्तांचोपयच्छेत् ॥ वैश्यापूर्वी तप्तकृच्छ्रम् । शूद्रापूर्वीतु कृच्छ्रातिकृच्छ्रम् । राजन्यश्चेद्वैश्यापूर्वी कृच्छ्रंद्वादशरात्रंचरित्वा निविशेत्तांचोपयच्छेदिति । शूद्रापूर्वीत्वातिकृच्छ्रम् वैश्यश्चेच्छूद्रापूर्वी कृच्छ्रंद्वादशरात्रंचरित्वा तांचोपयच्छेदिति। राजन्यांराजवंशीयांमवर्णाविवाहात्पूर्वमुद्वहतीति राजन्यापूर्वी एवमग्रेपि तत्र निविशेत्तां चोपयच्छेदिति । कृच्छ्रानुष्ठानोत्तरकालं सवर्णापरिणयनादूर्ध्वं तांच राजन्यादिकामुपयच्छेदित्यर्थः । इदंचाज्ञानविषयम् । ज्ञानतस्तूपपातकसामान्यप्रायश्चित्तंव्यवस्थितमेवद्रष्टव्यम् ॥ साधारणस्त्रीसंभोगश्च हीनस्त्रीनिषेवणमित्युक्तम् ॥ तत्रापि पशुवेश्याभिगमनेप्राजापत्यंविधीयतइति संवर्तोक्तमकामतोद्रष्टव्यम् कामतस्तुयमोक्तम्

शकी कन्याको ब्राह्मणकी कन्यातें प्रथम विवाहे सो राजन्यापूर्वी कहिए इसीप्रकार अग्गे भी जानणा ॥ कृच्छ्र व्रत के करणें तें उपरंत और अपणे वर्णकी कन्याके विवाहणेंतें उपरंत क्षत्रियादिकी कन्याको विवाह लेवे एह अर्थ है ॥ एह प्रायश्चित्त अज्ञानतें करणें विषे जानणा ॥ और ज्ञानतें करणें में उपपातकोंके सामान्य प्रायश्चित्त व्यवस्थित हि हैं सो जानणे ॥ और साधारण स्त्री संभोगभी हीनस्त्री निषेवण एह किहाहे तिस विषे भी (पशु और वेश्याके गमन विषे प्राजापत्य व्रत करे) एह संवर्तजी का कथन कीता होया अज्ञान तें करणें विषे जानणा ॥ और इच्छातें करणें विषे यम जीका किहा होया जानणा

और वेश्याके गमन विषें जो पाप है तिसनूं ब्राह्मण दूर करे एक बार तपाये होए कुशाके जलको सत्त ७ रात्रि पानकर्के १ इसमें असा अभिप्राय है किउपपातकोंके जो सामान्य प्रायश्चित्त(उपपातकशुद्धिःस्यात्)इत्यादिहैं सो इच्छा और न इच्छा और अभ्यासकी अपेक्षाकर्के जो हनें योग्यहै अर्थात् इच्छातें करणें में त्रय महीनें का व्रत करे और न इच्छातें करणें में चांद्रायण व्रत करे और अभ्यास विषें पराक व्रत करे इत्यादि व्यवस्था जानणी ॥ और तिस विषें अभ्यास के होयां २ निमित्त २ प्रति नैमित्तिककी आवृत्ति करणी ॥ इस जगा निमित्त पाप है नैमित्तिक प्रायश्चित्त है इस न्याय कर्के निमित्त प्रति नैमित्तिकानुवृत्तिके प्रसंग विषें लौगाक्षिने विशेष किहाहै ॥ अभ्यास विषे दिनोंकी वृद्धि करणी अर्थात् एक बार करणें में सत्त ७ रात्रि जल पान किहाहै दो दिन करे तो चौदां १४ रात्रि जल पान करे महीनें तक

वेश्यागमनजंपापंव्यपोहंतिद्विजातयः पीत्वापीत्वासकृत्तप्तंसप्तरात्रंकुशोदकमिति १ उपपातकसामान्यप्रायश्चित्तानि कामाकामाभ्यासापेक्षया योज्यानि ॥ तत्र सत्यभ्यासेतु प्रतिनिमित्तंनैमित्तिकमावर्त्तनीयमितिन्यायेन प्रतिनिमित्तंनैमित्तिकानुवृत्तौ प्रसक्तायां लौगाक्षिणा विशेषउक्तः ॥ अभ्यासेऽहर्गुणावृद्धिर्मासादर्वाग्विधीयते ततोमासगुणावृद्धिर्यावत्संवत्सरंभवेत् ततःसंवत्सरगुणायावत्पापंसमाचरेदिति १ इदंमतिपूर्वविषयम् ॥ अमतिपूर्वावृत्तौचतुर्विंशतिमते विशेषउक्तः ॥ सकृत्कृतेतुयत्प्रोक्तंत्रिगुणंतत्त्रिभिर्दिनैः मासात्पंचगुणंप्रोक्तंषण्मासाद्दशधाभवेत् १ संवत्सरात्पंचदशंत्र्यब्दाद्विंशगुणंभवेत् ततोप्येवंप्रकल्प्यंस्यात्शातातपवचोयथेति २ ॥

ऐसें दिनवृद्धि करे और महीनेतें अधिकमे महीनेकी वृद्धि करे वर्ष रोज तक अर्थात् एक महीनेते अधिक दो महीने पाप करे तो महीनेका व्रत दूणा करे वर्षरोजतक ॥ और वर्ष रोजके अगभी पापकरे तो वर्षकी वृद्धिकरे इसीतरह अगेभी जानणा ॥ १ ॥ एह इच्छा पूर्वककरणेमे जानणा और अज्ञान पूर्वक करणेमेचतुर्विंशतिमत विषे विशेष किहाहै सकृदिति एक बार के पाप विषें जो प्रायश्चित्त किहाहै सो त्रय दिनके पापमे त्रय गुणां अधिक करे और महीना रोज करणे में पंचगुणां अधिक करे और छे६ महीनें करणेमे दशगुणा करे ॥ १ ॥ और वर्ष रोज करणेमे पंद्रां १५ गुणां वृद्धि करे और त्रय वर्ष करणे मे वीस गुणा करे इस प्रकार कल्पना करणे योग्यहै एह शातातप जी कावचनहै २ ॥

जो फेर पहली विधि तें दूसरे विषे दूणा व्रत करे एह निमित्त प्रति आवृत्तिका विधान करणे वाला वचनहै सो महापातकविषे जानणा ॥ और इस पूर्वोक्त श्लोकका अर्थ स्पष्ट कर्के पार दार्य्य प्रकरणविषेभी पीछे किहाहै ॥ एह शूद्र प्रेष्यादिका प्रायश्चित्त समाप्तभया ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ और भार्य्या त्याग ॥ ५७ ॥ ❀ अब खोटे दान के लेणे विषे प्रायश्चित्त कहते हैं तदिति सो दान इकट्ठा कीता जो धन तिसके त्याग पूर्वक है इसमें मनु जी कहतेहैं यदिति जो ब्राह्मण निंदित कर्म कर्के धनको इकट्ठा करता है सो तिस धनके त्याग कर्के शुद्ध होताहै अथवा जप तप कर्के शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ अब इसी का अर्थ स्पष्ट कर्के कहते

यत्पुनर्विधेः प्राथमिकादस्माद्द्वितीयेद्विगुणंचरेदिति प्रतिनिमित्तमावृत्ति विधायकं तन्महापातकविषयम् ॥ पारदार्य्येपिप्रागुक्तमिदम् ॥ इतिशूद्र प्रेष्यादिप्रा० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ भार्य्यात्यागः ॥ ५७ ॥ अथासत्प्रतिग्रहप्रायश्चित्तम् ॥ तच्चोपार्जितधनत्यागपूर्वकमि त्याहमनुः ॥ यद्गर्हितेनार्जयंतिकर्म्मणाब्राह्मणाधनम् ॥ तस्योत्सर्गेणशु द्ध्यंतिजप्येनतपसैवच ॥ १ ॥ गर्हितेनकर्म्मणा निषिद्धदुष्प्रतिग्रहादिना जप्येन तपसा वक्ष्यमाणेनशुद्ध्यंति एतच्च धनत्यागादि बहुमूल्याल्पमू ल्यकरिवस्त्रादिपरिग्रहे तुल्यप्रायश्चित्तार्थम् ॥ अविक्रेयविक्रयादावप्येवम् जपित्वात्रीणिसावित्र्याःसहस्राणिसमाहितः ॥ मासंगोष्ठपयःपीत्वामुच्य तेऽसत्प्रतिग्रहात् ॥ २

हैं निंदित कर्म क्या निषिद्ध जो खोटे दान तिनाते अगे कहणा जो जप अथवा तप तिस कर्के शुद्ध होतेहैं एह जो धन त्याग किहाहै सो बहुत मुल्ल थोडे मुल्ल वाले हस्ति और वस्त्रादि तिनांके दान लेणे विषे तुल्य प्रायश्चित्त वास्ते जानणा अर्थात् जैसे बहुत मुल्ल वाले हस्तिका त्यागहै तैसेहि थोडे मुल्ल वाले वस्त्रादिका त्यागहै इस कारण ते पृथक् प्रायश्चित्त जानणा ॥ और नहिं जो खरीदणे योग्य वस्तु तिसके खरीदणे विषे भी एही प्रायश्चित्त करणा ॥ और विशेष कहते हैं जपित्वेति समाधान होया २ गायत्रीका त्रय हजार ३००० जप महीना रोज कर्के और गोशाला विषे दुग्ध पान कर्के खोटे दान के लेणे ते शुद्ध होताहै ॥ २ ॥

अब इसी का अर्थ स्पष्ट कर्के कहते हैं त्रीणीति त्रय ३००० हजार गायत्री का जप करे अथवा गोशाला विषें महीना रोज दुग्ध पान करता रहे तो खोटे उक्तवक्ष्यमाण दान लेणेंतें उत्पन्न जो पाप तिसतें मुक्तहोताहै ॥ और शूद्र ते दान लेणें विषें भी एही प्रायश्चित्त जानणा क्योंकि द्रव्यके दोष कर्के और दाताके दोष कर्के भी दानको निंदितत्वके अविशेष होणेंते अर्थात् कोई द्रव्यहि निंदितहै जैसे तुलादि और कोई देणेवाला शूद्रादि निंदितहै २ ॥ इसविषें मासं एह पद (कालाध्वनोरत्यंतसंयोगेद्वितीया) इस सूत्र कर्के द्वितीया विभक्तिका विधान होणे तें त्रयहजार जप प्रतिदिन का व्याप्ति जाणीदाहै अर्थात् ३००० जप प्रतिदिन करे अब इसी मे याज्ञवल्क्यजी और प्रकार कहतेहैं गोष्ठइति ब्रह्मचर्य धारण कर्के गोशाला विषें वास करता होया महीना रोज दुग्ध पान करे और गायत्रीका जप करता रहे तो खोटे दान

त्रीणिसावित्रीसहस्राणिजपित्वा गोष्ठे वा मासंक्षीराहारोऽसत्प्रतिग्रहजनितात्पापान्मुक्तो भवति॥ शूद्रप्रतिग्रहादावप्येतदेवप्रायश्चित्तं द्रव्यदोषेणच दातृदोषेणापि प्रतिग्रहस्य गर्हितत्वाविशेषादिति २ अत्रमासमिति कालाध्वनोरत्यंतसंयोगेद्वितीयाविधानात् त्रिसहस्रसंख्याकजपस्य प्रतिदिवसव्यापित्वंगम्यते ॥ याज्ञवल्क्यः ॥ गोष्ठेवसन्ब्रह्मचारीमासमेकंपयोव्रतः गायत्रीजाप्यनिरतःशुध्यतेऽसत्प्रतिग्रहात् ॥ १ ॥ यस्त्वसत्प्रतिग्रहं करोति सब्रह्मचर्ययुक्तो गोष्ठेवसन् गायत्रीजपशीलो मासंपयोव्रतेनशुध्यतीति ॥ प्रतिग्रहस्य चासत्त्वं दातुर्जातिकर्मनिबंधनं यथा चांडालादेः पतितादेश्च तथादेशकालनिबंधनंच यथा कुरुक्षेत्रोपरागादौ तथाप्रतिग्राह्यद्रव्यनिबंधनंच यथासुरामेषीमृतशय्योभयतोमुख्यादेः॥ यदातुपतितादेर्मेष्यादिकंगृह्णाति तदेदंगुरुप्रायश्चित्तंद्रष्टव्यम् ॥

केलेणेतें उत्पन्न जो पाप तिसतें शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ अब इसी का अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं यस्त्विति जो पुरुष खोटा दान ग्रहण करे सो ब्रह्मचर्य कर्के युक्त गोशाला विषें वास करता होया और गायत्रीका जप करतारहे और महीना रोज दुग्ध पान करतारहे तो शुद्ध होताहै ॥ प्रतीति प्रतिग्रहक्या दानको जो असत्त्वताहै सो दाताकी जाति और कर्माके निबंधते जानणी जैसें जातितें चांडालादितें और कर्मतें पतितादितें जो प्रतिग्रहहै तैसेंहि देशकालके निबंधतें जानणा जैसें देश कर्के कुरुक्षेत्रादि और काल कर्के ग्रहणादिविषें दान असत्है तैसेहि प्रतिग्राह्य जो द्रव्य तिसके निबंधतें जानणा जैसें मदिरा भेडी मृत पुरुषकी शय्या और उभयमुखी गौ इत्यादिजानणें ॥ और जेकर पतितादि पुरुषोंतें भेडी आदिका ग्रहण करें तिसमें एह पूर्वोक्त प्रायश्चित्त वडा देखणें योग्य है

क्योंकि दो ५ प्रकारके देखणें कर्के निमित्तको बडा होणे तें) और इस विषे जप संख्या पूर्वो क्तमनुजीकी कथन कीती होई जानणी ॥ और जेकर न्याय युक्त ब्राह्मणादि होवे तिसके पासते निषिद्ध मेषादिका ग्रहणकरे और पतितादियोंतें अनिषिद्ध जो भूम्यादि तिसका ग्रहण करे तिस में षट्त्रिंशन्मत विषे प्रायश्चित कहते हैं पवित्र इति पावित्रेष्टिनाम यज्ञ करणे कर्के संपूर्ण जो घोरदान तिनांके लेणेतें शुद्ध होतेहैं और चान्द्रायण मृगारेष्टि मित्रविंदा अथवा गायत्री के लक्ष जप कर्के खोटे दानके लेणेतें शुद्ध होतेहैं १ एह पवित्रेष्टयादि तीनों यज्ञ विशेष जानणे ॥ अब राजाके दान लेणे विषे वृद्ध हारीतजी कहतेहैं राज्ञइति राजाका दान लेकर्के महीना गं ज जल विषे वास करे और षटकाल विषे दुग्ध पान करता रहे तो पूर्ण महीने कर्के शुद्ध हो

व्यतिक्रमद्वयदर्शनेन निमित्तस्यगुरुत्वात्) जपसंख्यातु मानवीयावोध्या ॥ यदान्याय्यवर्त्तिब्राह्मणादेः सकाशान्निषिद्धंमेषादिकंगृण्हाति पतिता देर्वाऽनिषिद्धंभूम्यादिकंगृण्हाति तदाषट्त्रिंशन्मतेप्रा० पवित्रेष्ट्याविशु द्ध्यंतिसर्वेघोराःप्रतिग्रहाः। ऐन्दवेनमृगारेष्ट्याकदाचिन्मित्रविन्दया ॥ देव्या लक्षजपेनैवशुध्यंतेदुष्प्रतिग्रहात् ॥ १ ॥ राजप्रतिग्रहेवृद्धहारीतः। राज्ञः प्रतिग्रहंकृत्वामासमप्सुसदावसेत् षष्ठकालेपयोभक्षःपूर्णेमासेविशुध्यति ॥ १ ॥ तर्पयित्वाद्विजान्कामैः सततंनियतव्रत इति ॥ राज्ञोऽसच्छास्त्रा भिनिविष्टस्य ॥ अत्रशूलपाणिः ॥ राजपदमत्रोच्छास्त्रवर्त्तिनृपतिपरम् ॥ शूद्रनृपतिपरंच ॥ उभयप्रतिग्रहस्यैवमनुनानिषिद्धत्वात् ॥ यथाहमनुः ॥ नराज्ञःप्रतिगृण्हीयादराजन्यप्रसूतितः ॥ तथा ॥ योराज्ञः प्रतिगृण्हा तलुब्धस्योच्छास्त्रवर्त्तिनः सपर्यायेणयातीमान्नरकानेकविंशतिम् १ न्या यवर्तिक्षत्रियनृपतेः प्रतिग्रहस्य देवलेनाभ्यनुज्ञातत्वात् ॥

ताहै और षट कालका अर्थ अग्गे कहेंगे ॥ और ब्राह्मणांको प्रसन्न कर्के व्रतवाला होया २ नि रंतरहि शुद्ध होताहै १ इसमे राजा खोटे शास्त्र जानण वाला अर्थात् नास्तिक जानणा ॥ अब इसी मे शूलपाणि जी कहते हैं राजेति इसमे राजपद असच्छास्त्र जो बौद्धादि तिनके जा नणे वाले राजा पर है अथवा शूद्र राजा पर है इन दोनोंके दानको मनुजी ने निषिद्ध कि हाहै ॥ जैसें मनुजी कहतेहैं नेति जो क्षत्रीतें नहिं उत्पन्न राजा तिसका दान ग्रहण नहिं करणा तै सें हि और कहते हैं यइति यो लोभी अथवा खोटे शास्त्र जानण वाले राजाका दान ग्रहण करताहै सो पुरुष क्रम कर्के इकीस २१ नरकांको प्राप्तहोताहै १ और न्याय युक्त क्षत्रि राजाके दान को देवल जी कर्के अभ्यनुज्ञात होणते अर्थात् तिसने आज्ञा दिची है

ऐसे देवलजी कहते हैं धर्मज्ञ इति धर्म्मके जानणे वाला और श्रेष्ट और खोटे पुरुषों को दंड देणे वाला ऐसा राजा तीक्षणभी होवे तिसका धन पवित्रहै सो ग्रहण करणे योग्यहै १ इसमें युक्ति कहतेहैं आढ्यानामिति धनवानको बहुत भारवाला होणेते अथवा महात्मा पुरुषों को देणेयोग्य होणेते राजा लोकोका दान श्रेष्ट किहाहै औरोंविषे ब्राह्मणोके विना और किसीको दान नहि ग्रहण करणेयोग्यहै २ राज्ञां एह पद क्षत्रि राजा परहै इसको मुख्यहोणेतें अथवा ब्राह्मणके समीप होणेतें इसविषे पंद्रा १५ गोआं द्रव्यत्याग पूर्वक देणेयोग्यहे ॥ और प्रथम दो २ दिन उपवासतें उपरंत तीसरे दिनमे जो सायंकालहै तिसका नाम षष्ठकाल किहाहै तिसविषे देह धारणके उचित दुग्धपान करता रहे ॥ परंतु एह पूर्वोक्त प्रायश्चित्त अभ्यासविषे देखणे योग्यहै ॥ अथवा पतिता

यथाहदेवलः ॥ धर्म्मज्ञस्यकृतज्ञस्यरक्षार्थंशासतोऽशुचीन् ॥ मेध्यमेवधनंप्राहुस्तीक्ष्णस्यापिमहीपतेः १ आढ्यानांभूरिभाराच्चदेयत्वाच्चमहात्मनाम् ॥ श्रेयान्प्रतिग्रहोराज्ञांनान्येषांब्राह्मणादृते २ राज्ञामिति क्षत्रियनृपतिपरम् ॥ अस्यैवमुख्यत्वात् ॥ ब्राह्मणसन्निधानाच्च अत्र पंचदशधेनवोद्रव्यत्यागपूर्वकंदातव्याः ॥ दिनद्वयोपवासानंतरंतृतीयेह्निसायंकालः षष्ठकालः ॥ तत्रदेहधारणोचितक्षीरपायी ॥ एतच्चाभ्यासेद्रष्टव्यम् ॥ पतितादेः कुरुक्षेत्रोपरागादौ कृष्णाजिनादिप्रतिग्रहेवा प्रतिग्राह्यद्रव्यालपत्वेप्रायश्चित्तालपत्वमाह हारीतः ॥ मणिवासोगवादीनांप्रतिग्रहणेसावित्र्यष्टसहस्रंजपेदिति ॥ षड्त्रिंशन्मतेपि ॥ भिक्षामात्रेगृहीतेऽतिपुण्यमंत्रमुदीरयेत् ॥ प्रतिग्रहेषुसर्वेषुषष्ठमंशंप्रकलपयेदिति १ अतिपुण्यमंत्रोगायत्री। प्रकलपयेद्ब्राह्मणेभ्योदद्यादित्यर्थः। तथा जपहोमादिकंकुर्यादज्ञात्वायज्ञप्रतिग्रहौ पवित्रेष्ट्यापिशुद्ध्यंतिमुच्यंतेऽसत्प्रतिग्रहात् १

दि तें और कुरुक्षेत्र ग्रहणादि विषे काले चर्मादि के दान लेणे विषे जानणा योग्य है ॥ और दान लेआ जो द्रव्य सो थोडा होवे तो तिसमे थोडाहि प्रायश्चित्त कहतेहैं हारीतजी मणीति मणि वस्त्र गवादियोंके दान लेणे विषे अष्ट ८००० हजार गायत्री का जपकरे तो शुद्ध होताहै इसीमे षट्त्रिंशन्मत वालेभी कहते है भिक्षेति भिक्षामात्रक ग्रहण विषेभी प्रतिग्रहका दोषहै तिसमें अतिपुण्य जो गायत्री तिसका पाठ करणेते शुद्ध होता है और संपूर्ण प्रतिग्रह विषे छे ६ मां हेसा ब्राह्मण को देदेवे तो शुद्ध होताहै १ तैसेहि और कहतेहैं जपेति यज्ञ और प्रतिग्रह को जाण करके जपहोमादि करे तो शुद्ध होताहै और पवित्रेष्टि नाम यज्ञ करके शुद्धहोते हैं ॥ और खोटे दान के लेणेतें भी मुक्त होते हैं १

अब इसीमें और भी कहतेहैं पवित्रइति पवित्रेष्टिकर्के अथवा गरिष्टि कर्के अथवा मित्र विंदा कर्के अथवा गायत्रीके लक्ष जप करणे कर्के खोटे दानके लेणें तें शुद्ध होताहै १ अब और प्रकार उशनाजी कहतेहैं पतितादिति पतित पुरुषतें ब्राह्मण द्रव्यग्रहण करे अथवा जकरभक्षण करे तो तिस द्रव्य का त्याग कर्के अतिकृच्छ्रव्रत करे तो शुद्ध होताहै १ अब कश्यपजी विशेष कहतेहैं असदिति पूर्वोक्त खोटे दानके लेणें विषें महीना रोज गोशालाविषे वास करता होया दुग्धपान करता रहे अथवा चांद्रायणव्रत करे अथवा गोहत्या का व्रत जो त्रय महीनेंकाहै सो करे १ एह पूर्वोक्त व्रत अभ्यास विषय विषें जानणा ॥ अथवा इच्छातें एक बार करणें विषें जानणा ॥ हारीत जी कथन करतेहैं मणीति मणि वस्त्र गवादिके प्रतिग्रह विषे गायत्रीका एक १००० हजार जप करे मणि इसजगा थोडि मुल्यवाली जानणी मध्यम द्रव्यके

अन्यत्र ॥ पवित्रेष्ट्यागरिष्ट्यावाकदाचिन्मित्रविंदया देव्यालक्षजपेनैवमुच्य तेदुष्प्रतिग्रहात् १ देवीश्रीगायत्री ॥ उशनाः ॥ पतितादद्रव्यमादत्तेभुं क्तेचब्राह्मणोयदि कृत्वातस्यसमुत्सर्गमतिकृच्छ्रंचरेद्द्विजः १ कश्यपः । अ सत्प्रतिग्रहेमासंवसन्गोष्ठेपयःपिबेत् चांद्रायणंवागोघ्नस्ययथोक्तंव्रतमाचरे त् १ गोघ्नव्रतंत्रैमासिकम् ॥ अभ्यासविषयमिदम् ॥ कामकृतसकृद्विषयंवा हारीतः ॥ मणिवासोगवादीनांप्रतिग्रहे सावित्र्याःसहस्रं जपेत् ॥ पंच मध्यमे दशाधमे द्वादशरात्रंपयोव्रतःशतसहस्रमतिमतिग्रहेप्वपि। उत्तम प्रतिग्रहेसहस्रम् ॥ मध्यमप्रतिग्रहेपंचसहस्राणिजपेत् ॥ प्रतिग्राह्यद्रव्य मध्यमत्वेन प्रतिग्रहस्य मध्यमत्वम् ॥ एवमधमप्रतिग्रहे दशसहस्राणि

प्रतिग्रह विषें पंच ५००० हजार गायत्री का जप करे ॥ और अधम दानके लेणें विषें दश १०००० हजार गायत्री का जप करे ॥ और बारां १२ रात्रि दुग्ध पानकरे ॥ और जो दान करणेसो अधमके बहुत बार लेणें विषें सो १००००० हजार अर्थात् लक्ष गायत्रीका जप करे ॥ अब इसीका अर्थ स्पष्ट कर्के कहते हैं उत्तमेति उत्तम दान लेणे विषे एक १००० हजार गायत्री का जप करे ॥ और मध्यम दान लेणे विषे पंच ५००० हजार जप करे ॥ अब मध्यमत्वादिका विवेक कहतेहैं प्रतीति प्रतिग्रह करणे योग्य जो द्रव्य सो मध्यम होवे तो प्रतिग्रहको भी मध्यमत्व है इस प्रकार अधम द्रव्यके प्रतिग्रह विषे दश १०००० हजार गायत्रीका जप करे इनका भेद अग्गे आवेगा ॥

अब इसीमे देवल जी कथन करते हैं नवेति नव दान उत्तम हैं और चार मध्यम हैं और संपूर्ण शेष रहे दान अधम कहे हैं एह बुद्धिमानों नें त्रय ३ प्रकारके दान कहे हैं ॥ १ ॥ अन्नमिति अन्न दधि मखीर रक्षा करणी गौ भूमि सुवर्ण मार्गका रस्तावताना हरित एह नव ९ उत्तम दान जानणें उत्तम द्रव्य के होणे तें ॥ २ ॥ और वियान्न क्या विद्या ग्रहण करके पिछे दिना जो अन्न और वस्त्र आवास क्या घर गोधन एह चार मध्यम दान हैं मध्यम द्रव्यके होणें तें ३ उपेति जोडा भगूंडा रथ छतड़ी पात्र आसन दीपक लकडो फलादि एह सपूर्ण चरम क्या अधम हैं परन्तु बहुत वर्ष लेता रहे तद ४ और ॥ अर्थ जातोंको बहुत होणेंते इनके नामकी संख्या नाहीं इच्छा करीदो है अर्थात् और वस्तु बहुत हैं इस वास्ते गिणनेमे नहिं आते हैं

अत्रदेवलः ॥ नवह्युत्तमानिचत्वारिमध्यमानिविधानतः अधमानीतिशेषाणित्रिविधत्वमिदंविदुः ॥ १ ॥ अन्नंदधिमधुत्राणंगोभूरुक्माध्वहस्तिनः ॥ एतान्युत्तमदानानिउत्तमद्रव्यमानतः २ विद्यान्नाच्छादनावासाः परितोगोधनानिच ॥ दानानिमध्यमानीतिमध्यमद्रव्यमानतः ३ विद्यान्नंविद्याग्रहणेनदत्तमन्नम् । आवासोगृहम् । उपानत्प्रेंखयानानिछत्रपात्रासनानिच ॥ दीपकाष्ठफलादीनिचरमंवहुवार्षिकम् ४ वहुत्वादर्थजातानांसंख्योद्देशेपुनेष्यते अधमान्यवशिष्टानिसर्वदानान्यतोविदुरितिछांदोग्येविहितम् ॥ तथा त्रीण्याहुरतिदानानिगावःपृथ्वीसरस्वतीत्यादिप्रपंचोदानग्रंथेऽवसेयः ॥ अत्रगावइतिवहुवचनमविवक्षितम् ॥ तेन तदवहुत्वमुत्तमःप्रतिग्रहः। सुमंतुः शूद्रयाजकःसर्वद्रव्यपरित्यागात्पूतोभवति

इस कारणते शेष रहे जो संपूर्ण दान सो अधम जानणें ५ एह छांदोग्य विषे विधान कीताहै इसमें (संख्याशेषेपुनेष्यते) इह पाठ भी है ॥ तैसे हि और कथन करते हैं त्रीणीति त्रय ३ अतिदान कहे हैं गौ पृथ्वी सरस्वती क्या विद्या इत्यादि प्रपंच दान ग्रंथ विषे जानणे योग्यहै इस विषे गाव एह जो बहुवचन है सो अविवक्षित जानणा अर्थात् इच्छातें नहिं किया होया जानणा तिस कारण करके एक भी गौ दान होवे सो उत्तम दान जानणा ॥ अब सुमंतु जी और प्रकार कथन करते हैं शूद्रेति शूद्रको यज्ञ करवाणे वाला पुरुष संपूर्ण द्रव्य जो शूद्र ते लेआ है तिसका त्याग कर देवे तो शुद्ध होजाताहै ॥

अब इसीमें वौधायनजी और प्रकारकर्के कहतेहैं वह्विति वहुतोंके लेणे योग्य जो दान तिसको एकहि लेलेवे ॥ और जिसका अन्न नहिं भक्षण करणा तिसका अन्न भक्षणकरलेवे ॥ और जिस को यज्ञ नहिं कर वाणा तिसको यज्ञकरावे ॥ और जिसका दान लेणेयोग्यहै तिसका दान न हिं लेवे ॥ एह संपूर्ण तरत्समंदी नाम ऋचाका जप करे इत्यादि और भी स्मृतियां यथार्थ कर्के जोडने योग्यहैं ॥ अब कुछक और प्रकार कहतेहैं किंचेति अभक्ष्य भक्षण प्रकरण विषे जो अ भोज्यान्न कहेहैं सो अप्रतिग्राह्यन्नभी कहेहैं तिनका अन्न नाहिं ग्रहण करणेयोग्य परंतु तिस अन्न के दान लेणेविषे भी प्रायश्चित्त सोई क्या जो अभोज्यान्नके भक्षणमे प्रायश्चित्तहै सो इसमे भी

वौधायनः । वहुप्रतिग्राह्यस्यवाप्रतिगृह्य अनशनीयस्यवान्नमशित्वाअया ज्यंयाजयित्वा प्रतिग्राह्यस्यवाअप्रतिगृह्य तरत्समंदीयंजपेदित्यादिस्मृत्यं तराणि यथायथंयोज्यानि ॥ किञ्चाभक्ष्यभक्षणे येऽभोज्यान्नाः प्रोक्ता स्तेऽप्रतिग्राह्यान्नाअपि तदन्नप्रतिग्रहे प्रायश्चित्तंतदेवावगंतव्यम् ॥ अत्रे दंविचार्य्यम् ॥ मनुनानिंदितेभ्योधनादानमित्यपात्रीकरणेपठितम् ॥ अ न्येस्तु । प्रतिग्रहस्याऽसत्त्वेदेशकालकर्म्मादिनिवंधनंवुद्ध्वोपपातकमध्येप ठितम् ॥ तत्रविकल्पएवशरणम् । अत्रवहुवक्तव्यंपृथक्संगृहीतेऽसत्प्रतिग्र हप्रकरणेद्रष्टव्यम् ॥ इत्यसत्प्रतिग्रहप्रायश्चित्तम् ॥ ५८ ॥ ॥

जानणा ॥ इसमे एह विचार करणेयोग्यहै क्योंकि मनु जीने निंदित पुरुषोंते धन का ग्रहण करणा एह अपात्री करण विषे विधान कीनाहै ॥ औरोंके मत विषे कहतेहैं प्रतीति प्रतिग्रहको जो असत्त्व है सो देश काल कर्म्मादिके निवंधको जाण कर्के उपपातकोंके मध्य विषे पडयाहैं तिस विषेविकल्प हि जानणा अर्थात् चाहे अपात्रीकरणमें जाणो चाहे उपपातकों मे जाणों ॥ इसविषे वहुत जो कहणाहै सो पृथक् संग्रह कीता जो असत्प्रतिग्रह प्रकरण तिसविषे देखणे योग्यहै ॥ एह असत्प्रतिग्रह का प्रायश्चित्त समाप्त भयाहै ॥ ५८ ॥ ॥

अथ मिथ्याभिशंसि और मिथ्याभिशस्तका प्रायश्चित्त कहतेहैं इनका लक्षणपीछे किहाहै॥ इसमें याज्ञवल्क्यजी कहतेहैं मिथ्येति मिथ्याभिशंसिकों मिथ्याभिशस्तसें दूणा दोष है और यथार्थव का को तुल्य दोषहै और मिथ्याभिशस्त के दोषकों मिथ्याभिशंसि ग्रहण करताहै १ अब इसी श्लोक का अर्थ स्पष्टकर्के कहतेहैं यइति जो कोई पुरुष अन्तः करण सें ईर्षा करण वाला है सो महापापीहै ऐसे दूसरे को झूठ कहताहै तिसको जिसको अभिशाप कियाहै तिसते दूणा प्रायश्चित्त होताहै ॥ अब कुछक और कहतेहैं यइति जिस पुरुषमे दोष विद्यमानहैं परन्तु दूसरे कर्के नहिं जाणयाहै तिस दोषकों लोकोंके सन्मुख प्रकट करताहै तिसको पातकि पु

अथमिथ्याभिशंसिमिथ्याभिशस्तयोः प्रा० ॥ योगीश्वरः ॥ मिथ्याभिशंसिनोदोषोद्विः समोभूतवादिनः ॥ मिथ्याभिशस्तदोषंचसमादत्तेमृषावदन १ यःकश्चिन्मात्सर्य्यकलुषितान्तः करणोऽसौमहापापीति परंमिथ्याभिशपति तस्य यस्याभिशापस्तद्द्विगुणं प्रायश्चित्तं भवति ॥ किंच ॥ यस्तु विद्यमानमेवदोषं परैरज्ञातं लोकसमक्षं प्रकाशयति तस्य पातकिदोषसमदोषभाक्त्वम् ॥ भूतंतत्त्वार्थंवदतीति भूतवादी तस्य ॥ भूतंतत्त्वार्थमुद्दिष्टंप्रमादाभिहितंछलमिति नारदस्मरणात् । इदमेवाहापस्तंवः। दोषंबुद्ध्वानपूर्वः परेभ्यः समाख्यातास्यात् परिहरेच्चैनंधर्म्मेष्विति ॥ किंच मिथ्याभिशंसिनोनकेवलं प्रायश्चित्तद्वैगुण्यं किंतु अभिशस्तस्य यत्किंचिद्दुरितजातं तद्गामित्वमपीत्याह मिथ्याभिशस्तदोषमित्यादि

रुषके तुल्यदोषहै ॥ और भूतकथा तत्त्वार्थकों जो कहै सो भूतवादी किहाहै तिसको ॥ भूत नाम तत्त्वार्थका है और प्रमादतें जो कथन कियाहै सो छल किहाहै एह नारद स्मृति किहाहै॥ अब इसीकों आपस्तंव जी कहतेहैं ॥ दोषको जाण कर्के प्रथम आप न करे ... तक दूसरा कथन न करे जेकर कहे तो धर्म्मोंके विषें इसको त्यागदेवे ॥ अब कुछक और कथन करते हैं मिथ्येति मिथ्याभिशंसिकों केवल दूणा ही प्रायश्चित्त नहिंहै परन्तु अभिशस्त को जो कुछ पापोंका समूहहै सो भी मिथ्याभिशंसिको प्राप्त होताहै इस कर्के किहाहै मिथ्याभिशस्तदोषम् इत्यादि

अत्रेति इसमिथ्याभि शंसीके विषय विषें पापकी द्विगुणता यथार्थ नहिहै परन्तु अर्थवादहिहै क्योंकि थोडे प्रायश्चित्तके अगेकहणेंकरके निमित्त जो पापतिसकोभी लघुत्व प्रतीतहोणेंते । अथवा किएहोएका नाश और न किएहोएकी प्राप्ति होणेतें भी थोडा प्रतीत हुंदाहै ॥ जिसने कीताहै तिसको दंड न होआ और जिसने नहि कीता तिसको दंड होया ॥ अब कुछक और कहतेहैं उपेति उपपातकोंकी गणना विषे अभिशंसि और अभिशस्त नहिं पडेहैं ब्रह्मचारिका गुरुके प्रातिकूल्याचरणमे अर्थात् गुरुको दुःख देणेके प्रसंग विषे एहदोनो जाणेहें तिस कारणते भी निमित्त थोडा प्रतीतहोताहै तिसका प्रायश्चित्तकहतेहें महेति महापाप और उपपापकरके जो दूसरे को मिथ्या कहे सो जलपान करता होया और जप करता होया इन्द्रियोंको रोक करके महीना

अत्रहि पापद्वैगुण्यमात्रं न विवक्षितं किन्त्वर्थवादएव लघुप्रायश्चित्तस्यवक्ष्यमाणत्वेन निमित्तस्यापि लघुत्वभानात् ॥ कृतनाशाकृताभ्यागमप्रसंगाच्च ॥ किञ्च उपपातकगणनायामभिशंस्यभिशस्तौ न पठितौ ब्रह्मचारिणोगुरुप्रातिकूल्याचरणप्रसंगादिमौज्ञातौ ततोपि निमित्तंलघुप्रतिभाति तत्प्रायश्चित्तम्। महापापोपपापाभ्यांयोभिशंसेन्मृषापरम् अब्भक्षोमासमासीतसजपी नियतेन्द्रियः ॥ १ ॥ महापापंब्रह्महत्यादि उपपापंगोवधादि मृषैव ताभ्यामभिशंसेत्सोऽभिशंसी मासपर्य्यंतजलाशनोजपशीलश्चभवेत् जपश्चशुद्धवतीभिःकार्य्यः ॥ तथाचवसिष्ठः ॥ ब्राह्मणमनृतेनाभिशंस्य पतनीयेनोपपातकेन वा मासमब्भक्षः शुद्धवतीभिरावर्त्तयेदश्वमेधावभृथं वा गच्छेदिति ॥ एतच्चमहापातकशंसने सकृत्कृते उपपातकशंसने चासकृत्कृते प्रायश्चित्तंद्रष्टव्यमित्यपरार्कः ॥

नारोज स्थितरहे १ अब इसीका अर्थ स्पष्टकरके कहतेहैं महेति महापाप जो ब्रह्महत्यादि उपपाप जो गोवधादि इनां करके झूठही दूसरे को कहे सो अभिशंसी महीना दिन जलपान करे अथवा जपकरे ॥ जप जो है सो शुद्धवती नाम ऋचाकरके करे । तैसेहि वसिष्ठजी कहतेहैं ब्राह्मणमिति ब्राह्मणको झूठ कहना है अथवा पतित करण वाले जो उपपातक गोवधादि तिस करके अभिशंसन करे सो महीना रोज जलपान करे और शुद्धवती ऋचा करके स्नान करे अथवा अश्व मेध नाम यज्ञविषें जावे ॥ एह प्रायश्चित्त जेकर महापातकोंमेंसे एकवार पाप लगावे तो जानणा और उपपातकोंमेंसें बहुत वार पाप लगाया होवे तिसविषे प्रायश्चित्त देखणे योग्यहै इस अभिप्राय करके एह अपरार्कमें कथन कीता है ॥

अतिपातकादियोंकाभी एह अपरार्क जीका कथन उपलक्षण है तिसके अभिशंसन विषे उक्त प्रायश्चित्तको घटा वधालैणा ॥ तिसविषे भी एह ब्राह्मणकर्के अभिशंसनकीता होवे तिस विषे जानणा ॥ और जेकर ब्राह्मण क्षत्रियादियोंको अभिशंसन करे और क्षत्री ब्राह्मणका अभिशंसन करे तिसमे कहतेहैं प्रतीति प्रतिलोमापवादविषे दूणात्रीणा दंडहै और वर्णाको अनुलोम क्रमकर्के तिसते अर्द्ध २ न्यून जानणा इस दंडानुसार कर्के न्यूनाधिकता जानणी अर्थात् जो ब्राह्मण को ब्राह्मणके अपराधमे दंडहै सो ब्राह्मणसे क्षत्रियाणी विषे उत्पन्नहोएको अद्दा है ॥ और ब्राह्मणसें वैश्याणी विषे उत्पन्न होयेको उससेभी अद्दा है ॥ ऐसे शूद्री पुत्रके वास्ते उससे भी अद्दा है

अतिपातकादीनामप्येतदुपलक्षणम् । तदभिशंसनेपिप्रायश्चित्ततारतम्यं वोध्यम् ॥ तत्रापीदंब्राह्मणकर्तेऽभिशंसेद्रष्टव्यम् ॥ यदातु ब्राह्मणःक्षत्रियाद्यभिशंसी क्षत्रियश्चब्राह्मणाभिशंसीभवेत्तदा प्रतिलोमापवादेपु द्विगुणस्त्रिगुणोदमः वर्णानामानुलोम्येनतस्मादर्द्धार्द्धहानितइतिदंडानुसारेणहृद्धिह्रासौकल्पनीयौ यस्तुभूताभिशंसी तस्य त्वर्द्धं कल्पनीयम् ॥ अत्रेयंव्यवस्थायस्त्वतिपातकाभिशंसी तस्यैतदेवपादोनम् यस्तु महापातकाभिशंसी तस्यार्द्धम् उपपातकाभिशंसिनस्तुपादः ॥ तुरीयोब्रह्महत्यायाः क्षत्रियस्य वधेस्मृतइत्यादिना योगीश्वरेणोपपातके महापापतुरीयांशस्योक्तत्वात् ॥ प्रकीर्णाभिशंसिनस्त्वतोपिकिंचिन्न्यूनंप्रकल्प्यम् ॥

और जो अपराधका दंड शूद्रको शूद्रके अपराधमेहै सो शूद्रसे वैश्याणी विषे उत्पन्न होएको दूणाहै इसी तरां अगेभी जानणा ॥ अव इसमे विशेष कहतेहैं यइति जो भूताभिशंसीहै अर्थात् यथार्थ हि कहताहै कि तुमने मद्य पान कीताहै इत्यादि तिसको पूर्वोक्त व्रत अद्दा करणे योग्यहै इसमे भी एह व्यवस्था है कि अतिपातकके अभिशंसन विषे पिच्छे किहे होये प्रायश्चितके तीन पाद करणे और महापातकांके वरावर जो पाप हैं तिनांके अभिशंसन विषे अद्दा और उपपातकांके अभिशंसन विषे १ पाद व्रत जानणा एहि अर्थ विशद कर्के किहाहै ॥ तुरीयइति और प्रकीर्णपापके अभिशंसीको पादसे भी थोडा जानणा ॥

अत्रेति इस विषे भी शक्त्यादियोंकी अपेक्षाकर्के प्रायश्चित्त कल्पना करणे योग्यहै इसमें प्रमाण कहते हैं शक्तिमिति सामर्थ्यको अथवा पापको जाण कर्के प्रायश्चित्त की कल्पना करे इस स्मृतितें ॥ इसविषे शंख लिखित स्मृतिने वहुत प्रायश्चित्त किहाहै जैसें नास्तिक पुरुष और कृतघ्न झूठा व्यवहार करणे वाला और ब्राह्मणकी वृत्तिके नाश करण वाला मिथ्या कथन करण वाला एह संपूर्ण छे ६ वर्ष ब्राह्मणके घरमे भिक्षा करतेरहें और वर्ष रोज धोकर्के भिक्षाका अन्न भक्षण करें अथवा छे ६ महीनें गौआं के पीछे फिरतेरहें तो शुद्धहोतेहै ॥ इसमें ऐसा समझणा कि प्रायश्चित्त एक हि है परंतु धोतीहोई भिक्षाकी जगा गोसेवाका विकल्पहै सो एह प्रायश्चित्त अभ्यास विषय विषे जानणा ॥ और बारं बार हठ कर्के उक्तपापका करणा

अत्रापि शक्त्याद्यपेक्षया प्रायश्चित्तकल्पना कर्त्तव्या शक्तिंचावेक्ष्यपापंचप्राय श्चित्तंप्रकल्पयेदितिस्मरणात्। अत्र शंखलिखिताभ्यां गुरुप्रायश्चित्तमुक्तम् यथा नास्तिकःकृतघ्नःकूटव्यवहारी ब्राह्मणवृत्तिघ्नोमिथ्याभिशंसीचेत्यते षड्वर्षाणि ब्राह्मणगृहेषु भैक्ष्यंचरेयुः संवत्सरंधौतभैक्ष्यमश्नीयुः षण्मासा न्वागाअनुगच्छेयुरिति तदभ्यासविषयम्॥ सानुबंधे तदभिशंसननिमित्तेच ब्राह्मणस्यांकननिर्वासनादिदंडप्राप्तौ सत्यांवावेदितव्यम्। भार्याभिशंसनंप्र कीर्णकेप्रोक्तमपि प्रसंगादत्राप्युच्यते॥ यमः॥ क्रोधादुक्त्वागम्यात्वंभार्या यांहिनरः क्वचित्॥ प्रायश्चित्तंचरेत्कृच्छ्रंतस्यपापस्यशुद्धये १ प्राजापत्यं चरेद्विप्रः क्षत्रियोदिवसान्नव षड्रात्रंतुचरेद्वैश्यस्त्रिरात्रंशूद्रआचरेत् २ ॥

इस निमित्त विषे जानणा अथवा ब्राह्मण को किसे पाप निमित्त जो चिह्नकरणा और निर्वास क्या निकालदेणा इत्यादि दंडकी प्राप्तिविषे जानणे योग्यहै अर्थात् उसको जगा एहव्रतकराणा ॥ और भार्याको अभिशंसन क्या झूठा वक्ष्यमाण अपवादकरणा सो प्रकीर्णक प्रकरण विषे किहा भी है परंतु प्रसंगतें इसविषे भी कहदियाहै ॥ इसमें यम जी का वचनहै क्रोधादिति जो पुरुष अपणी स्त्रीको क्रोधतें तुं अगम्या क्या भगिनी है वा माता है ऐसा कहे सो तिस पापकी शुद्धि वास्ते कृच्छ्र व्रत करे तो शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ और इस प्रकार ब्राह्मण कहे तो प्राजापत्य व्रत करे और क्षत्रि नव ९ दिन व्रतकरे और वैश्य कहे तो छे ६ रात्रि व्रत करे और शूद्र कहे तो त्रय ३ रात्रि व्रत करे ॥ २ ॥

अब सुवर्चलाके अधिकार विषे हारीत जी कहतेहैं अनृतेति झूठ कहणे मे और गाली देणे विषे और गुरुयोंकी चुगली करणे विषे इकीस २१ रात्रि तिस सुवर्चलाका यत्नतें पान करे ॥ १ ॥ और देवता गुरु ब्राह्मण इनांके उल्लंघन विषे त्रय ३००० हजार जप गायत्रीका करे तो शुद्ध होताहै ॥ अब इसीमे आपस्तंब जी कहतेहैं अनाक्रोश्यमिति जो नहिं गाली देणे योग्य तिसकों गाली देवे अथवा झूठ कहे तो त्रय ३ रात्रि अक्षार लवणका भोजन करे और शूद्र इस प्रकार करे तो सप्त ७ रात्रि उपवास व्रत करे ॥ और स्त्रियोंको भी एही प्रायश्चित जानणा ॥ अब विष्णुजी कहतेहैं विप्रस्येति ब्राह्मणके बध युक्त शपथकों मिथ्या करे अर्थात् मैं मेरे साथ हरिद्वारको ना जामागा तो मेरेको ब्राह्मणमारणेका पाप लगे ऐसा कह कर पीछे

सुवर्चलाधिकारेहारीतः ॥ अनृताभिशंसनाक्रोश गुरूणांपैशुनेषुच ॥ एकविंशतिरात्रंतुपिबेत्तामिवयत्नतः । १ । तामेवसुवर्चलामित्यर्थः ॥ देवगुरुब्राह्मणातिक्रमेत्रिसाहस्त्राजपोगायत्र्याः ॥ आपस्तंबः । अनाक्रोश्यमाक्रोश्यानृतंवोक्त्वात्रिरात्रमक्षारलवणभोजनम् ॥ शूद्रस्यसप्तरात्रमभोजनम् ॥ स्त्रीणांचैतत् । विष्णुः । विप्रस्यवधसंयुक्तंकृत्वातुशपथंमृषा ब्राह्मणोयावकान्नेनतीव्रंचांद्रायणंचरेत् ॥ १ क्षत्रियस्यपराकंस्यात् प्राजापत्यंतथाविशः वृषलस्यत्रिरात्रंतुव्रतंब्रह्महणश्चरेत् २ ॥ शंखः ॥ आक्रोशानृतवादेषुएकरात्रमुपवासः ॥ अथाभिशंसकप्रसंगादभिशस्तस्यापि प्रायश्चित्तमाह याज्ञवल्क्यः ॥ अभिशस्तोमृषाकृच्छ्रंचरेदाग्नेयमेवच ॥ निर्वपेत्तुपुरोडाशंवायव्यंपशुमेववा ॥ १ ॥

ना जावे तो ब्राह्मण यवोंके अन्न करके तीव्र चांद्रायण व्रत करे ॥ १ ॥ और क्षत्री मारणका पाप मेरेकोहोवे ऐसा कहे तो पराकव्रत करे और वैश्यमारणके विषयमेकहे तो प्राजापत्यव्रतकरे और शूद्र मारण विषे कहे तो ब्रह्महत्याका व्रत त्रय ३ रात्रि करे ॥ २ ॥ अब शंखजी कहतेहैं आक्रोशेति गाली देणे विषे और झूठ बोलणे मे एक रात्रि उपवास व्रत करे ॥ अब अभिशंसकके प्रसंगतें अभिशस्तका भी प्रायश्चित्त याज्ञवल्क्य जी कहतेहैं अभिशस्तइति मिथ्या जो अभिशस्त सो कृच्छ्र व्रत करे अथवा आग्नेय पुरोडाशका निर्वाप करे अथवा वायव्य चरुका निर्वाप करे एह अर्थ पिच्छे स्पष्ट होचुकाहै ॥ १ ॥

अब इसी श्लोकका अर्थ प्रगट कर कहतेहैं वसिवाति जिन पुरुषकों मिथ्या आभिशमन कीना है सो कृच्छ्र प्राजापत्य व्रत करे और अग्नि है देवता जिसका तिस चरुका निर्वाप करे अर्थात् तिसकी पूजा करे ॥ अथवा वायु है देवता जिसका तिस चरुकी पूजा करे एह पूर्वोक्त जो चार पक्ष हैं सो अभिशस्त पापकी गौरव और लाघवकी अपेक्षाकर जोडनेयोग्यहैं अर्थात् अनुपातक पाप कर्के अभिशस्त होवे तो वहुत प्रायश्चित्त करे और उपपातक पाप कर्के अभिशस्त होवे तो थोडा प्रायश्चित्त करे अथवा शक्ति अनुबंधादिकर्के जोडने योग्यहैं ॥ अब जो वसिष्ट जीनें मिथ्याकहणेका प्रायश्चित्त (महीना रोज जलपान करे और शुद्धवती ऋचाका जप करे ऐसा किहाहै) इसी कर्के अभि शस्तका अभिशाप क्या अभि शंसन किहाहै

यस्तु मिथ्याभिशस्तःसनु कृच्छ्रंप्राजापत्यंचरेत् आग्नेयंपुरोडाशंचरुंनिर्वपेत् अग्निदैवत्येन यजेदित्यर्थः। वा वायव्यंचरुंपुरोडाशंनिर्वपेत् । एतेपक्षा अभिशस्तपापगौरवलाघवापेक्षया शक्त्यनुवंधादिना वा योज्याः यत्तु वसिष्ठेन मिथ्याभिशापेन मासं यावदब्भक्षः शुद्धवतीजपंच विधायोक्तमेतेनाभिशस्तोऽव्याख्यातइति तन्महापापेनाभिशस्तविषयम् । इदंचवाचनिकमेव नत्वपराधनिवंधनं परिवित्तिरिववचनाद्भवतीत्यपरार्कः। कृमिदुष्टानामिव पूर्वजन्मनिपापसंभावनयाऽभिशस्तस्यापिप्रायश्चित्तमितिमिताक्षरा वहुपातकाभिशस्तेपैठीनासिः अनृतेनाभिशस्यमानः कृच्छ्रंचरेन्मासं पातकेपुद्विमासमतिपातकेषु महापातकेपुच

सो एह वचन महापाप कर्के अभिशस्तके विषयमें जानणा ॥ एह वाचानिक हि है अपराध निबंधसें नाहिहै अर्थात् अपराध सें नहि है परन्तु परिवित्तिकी न्याई वचनतें होताहै एह अपरार्कनें किहाहै ॥ जैसें परिवित्तिको वचनतें दोषकोविना भी प्रायश्चित्तहै तैसेंहि इसमें जानणा ॥ और जो पुरुष कीडोंकर्के युक्त है तिन विषे जन्मांतरके पापकी संभावना कर्के प्रायश्चित्तहै तैसेहि अभिशस्तको भी प्रायश्चित्तहै एह मिताक्षरामें किहाहै ॥ अब वहुत पातकोंकर्के अभिशस्त जो है तिसविषे पैठीनासिजी कहतेहैं अनृतेनेति झूठ कर्के अभिशस्त जो है अर्थात् तूं झूठ कहणवाला हैं ऐसे वचनका जो विषयहै सो महीनेका कृच्छ्र व्रत करे और जो महापातकों कर्के अभिशस्त होवे सोदो २ महीनेका कृच्छ्र व्रत करे ॥

अब थोड दोष करके जो अभिशस्त तिसविषे बौधायन जी कहतेहैं पातकेति पातक पापों करके अर्थात् उपपातकों करके जो अभिशंसन करताहै सो कृच्छ्र व्रत करे ॥ और जिसको अभिशंसन करताहै सो अर्द्ध कृच्छ्र व्रत करे ॥ इस विषे मिताक्षरा कार कहतेहैं यदिति जो वसिष्ठ जीका किहा होया कि महीना रोज जल पान करे एह जो बडा प्रायश्चित्त है सो कुछक काल नहिं कीताहै प्रायश्चित्त जिस अभिशस्तने तिसको देणे योग्यहै इसमें वचन है संवत्सरेति वर्ष रोज तक जो अभिशस्त है और दुष्टहै तिसको दूणा दंड किहाहै एह दंडकी अधिकता देखणेतें ॥ अब कुछक और कहतेहैं जो पंक्तियोग्य नहिं हैं तिनांके मध्यमें अभिशस्त

अल्पतरदोषाभिशस्ते । बौधायनः। पातकाभिशंसनेकृच्छ्रः तदर्द्धमभिशस्त इति ॥ अत्रमिताक्षरा यद्वसिष्ठोक्तंमासंयावत्पयोभक्षणंगुरुप्रायश्चित्तंतदभिशस्तस्यैव किंचित्कालमकृतप्रायश्चित्तस्यसतोद्रष्टव्यम् ॥ संवत्सराभिशस्तस्यदुष्टस्यद्विगुणोदमइतिदंडातिरेकदर्शनादिति ॥ किञ्चापांक्तेयमध्येऽभिशस्तस्यापिपाठः॥ तत्र मनुः ॥ पष्ठान्नकालतामासंसंहिताजपएववा होमाश्चशाकलानित्यमपांक्तयानांविशोधनमिति श्लोकोव्याख्यातः प्राक् एवमन्यदपिव्यवस्थापनीयम् इत्यभिशंस्यादिप्रा० । ६० ॥ इतिश्रीमन्महाराजाधिराजजम्बूकाश्मीराद्यनेकदेशाधीशप्रभुवराज्ञप्तकविगंगारामसंगृहीते पंचविषयप्रतिरूपके धर्म्मशास्त्रमहानिबंधे प्रायश्चित्तभागेउपपातकप्रकरणंद्वादशंसंपूर्णम् ॥ १२ ॥

का भी पाठ है तिस विषे मनुजी कहतेहैं पष्ठेति पष्ठान्नकालता महीना रोज रहे अथवा संहिताका जप करे और शाकल मंत्रों करके नित्य हवन करे एह जो पंक्ति रहितहैं तिनकी शुद्धि वास्ते किहाहै १ इस श्लोकका अर्थ स्पष्ट करके पीछे व्याख्यान कीताहै इसीप्रकार और भी ऐसी व्यवस्था करणे योग्यहै ॥ एह अभिशंस्यादिका प्रायश्चित्त समाप्त भया ६० और उपपातक प्रकरणभी बारवां पूरा होया १२ ॥ ॥ दोहा ॥ धर्मराज धरमादिकी वृद्धि करे विशेष गंगकवी की प्रार्थना उपपातकनिःशेष १ ॥ सं १९ ३५ ॥ वै० प्र० ३१

॥ १२ उपपातकप्रकरणसूचीपत्रमिदम्॥

॥ १२ उपपातकप्रकरणसूचीपत्रमिदम्॥

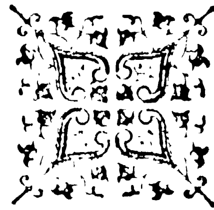
॥ १२ उपपातकप्रकरणसूचीपत्रमिदम् ॥

॥ १२ उपपातकप्रकरणसूचीपत्रमिदम् ॥

पृ०	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
१२४	७ मू.	ज्ञास्त्र	शास्त्र

चतुर्थप्रकरणशुद्धिपत्रम्

पृ-	पं.	अशुद्ध	शुद्ध
१२	२	मयज्य मू-	मयाज्ब
४९	१	कमं टी.	कर्म
४९	६	सुनर्से टी-	सुननेंसें
४९	७	सूयंके	सूर्यके
४९	६	स्यात्दा मू-	स्याद्दा
५०	५	विचर टी-	विचार
५०	६	पेह टी-	येह
५१	३	साय टी.	साथ
५१	४	तरक्षेति टी.	तरेति
५१	३	गयेसें टी.	गधेसें
५१	५	भागिनोके टी.	भागिनीके



द्वादशप्रकरणेयत्रयत्रमंत्रप्रतीकानिकृतानितत्पूर्त्यर्थमंत्रसंग्रहोलिख्यते

पृ०	पं०	प्रतीक
८५	६	पुनर्म्मामिति पुनर्म्माविशताद्रयिः ॥
९०	४	मनोज्योतिरिति मनोजूतिर्जुषतामाज्ज्यस्यवृहस्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टंय्यज्ञꣳसंमिमन्दधातुव्विश्वेदेवासइहमादयन्तामोꣳप्रतिष्ठ ॥ वा- सं-अ- २ मं. १३ ॥
९०	५	त्वमग्नेव्रतपाऽअसीति त्वमग्नेव्व्रतपाऽअसिदेवऽआमर्त्येष्वात्वंय्यज्ञेष्वीड्यः रास्वेयत्सोमाभूयोभरदेवोनःसविताव्वसोर्दाताव्वस्वदात् । वाज- । अ-च- मं.१६
९०	८	इयदुरुक्तमिति ओंइयंदुरुक्तंपरिवाधमानावर्णंपवित्रंपुनतीमआगात् प्राणापानाभ्यांवलमादधानास्वसादेवीसुभगामेखलेयंयुवासुवासाः परिवीतआगात्सउश्रेयान्भवतिजायमानःतंधीरासः कवयःउन्नयंतिस्वाध्योमनसादेवयंत इति ॥
९४	१	हꣳसःशुचिषदिति हꣳसःशुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोताव्वेदिषदतिथिर्दुरोणसत् । नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जागोजाऽऋतजाऽअद्रिजाऽऋतम् वृहत् । वाजसनेयीसंहितायाम् अध्याय १० मंत्र २४
१०३	६	यदंतीति यदंतियच्चदूरकेभयंविंदतिमामिह पवमानवितज्जहि ॥
१०३	७	येनदेवाइति येनदेवाःपवित्रेणात्मानंपुनतसदा ॥ तेनसहस्रधारेणपावमान्यः पुनातुमां ॥ ऋग्वे-सं- अष्टक ७ अध्या . २
१०३	७	कयानइति कयानश्चित्रऽआभुवदूतीसदावृधःसखाकयाशचिष्ठयावृता । वासं. अ- ३६ मं - ४ ॥

द्वादशप्रकरणेयत्रयत्रमंत्रप्रतीकानिकृतानितत्पूर्त्यर्थंमंत्रसंग्रहोलिख्यते
पृ० पं० प्रतीक

१०४ २ व्रात्यस्तोमाश्चत्वारोहितीयउध्योव्रात्यगणस्ययेसंपादयेयुस्तप्रथमेनय
जेरंद्वितीयेननिंदितानृशंसास्तृतीयेनकनिष्ठाज्येष्ठाश्चतुर्थेनायेतप्रजननास्थ
विरासदास्यास्तेपांयोनृशंसुतमःस्याद्द्रव्यवत्मोवानूचानतमे वातस्यगार्हप
तेर्दीक्षेरंस्तस्यभक्ष्यमनुभक्षयंतआसीरन्व्रात्यधनानि भवंति तिर्यङ्नद्धमुष्णी
षंप्रतोदोज्याहोडोयोग्यंधनुस्तदास्यं वासः कृष्णशंकद्रुवपनं कृष्णदशंवात
दास्यंफलकास्तीर्णो विपथोश्वाश्वतएभ्योकंप्राभ्यांयुक्तःस्यादित्येके निष्को-
राजितोजिने पार्श्वसहिते कृष्णवलक्षेआविकेतद्वहपतेरेवमेवाजिनानांतरेषां-
दामतूपाणिवल्कांतानि द्विचूडान्याविकानिवासांसि। लोहितांतानि कृष्णां
तानिवातदास्यानिदामनीद्वंद्वउपानहौच कर्णिन्यौ कृष्णेस्याताामित्येकेमाग
धदेशीयायब्रह्मबंधवेदक्षिणाकालेव्रात्यधनानि दद्युःविरतेभ्योवा व्रात्यचर
णांतेष्वेवमृजानायंतीतिश्रुतेस्त्रयस्त्रिंशतं त्रयस्त्रिंशतं दक्षिणादद्युर्द्विगु
णागृहपतिरित्येके व्रात्यस्तोमेनेष्ट्वा व्रात्यभावाद्विरमेयुर्व्यवहार्याभवंत्यग्नि
पुद्ब्रह्मवर्चसवीर्यान्नाद्यप्रतिष्ठाकामानां यश्चापूतइव मन्येतयज्ञविभ्रष्टस्यच
यस्माद्वाविभ्रंशेरन ४ छांदोग्येविशेषोयथा ॥ कामं सुब्रह्मण्याग्रेष्येवंय
थास्तुत्सर्वमके पथोत्साहं दद्यादाग्रयानामनड्द्भिरण्याश्वाजानांत्रिवृतश्च
त्वारोनिरुक्तप्रातःसवनःप्रथमईशुयज्ञोग्रामकामस्य वा दक्षिणाश्वरथश्चतुर्यु
क्ष्या चोन्यतमस्तेजोब्रह्मवर्चसपुरोधा कामस्य बृहस्पतिसवोदवसूहवींषि
निर्वयत्यतिग्राह्यग्रहं गृह्णाति बृहस्पतेअतियदर्यइत्युपालंभ्योवार्हस्पत्ये
निहितपुनाराशंसेषु प्रातःसवनेनयाकुर्वन्नेकादश दक्षिणाव्यादिशत्यश्व
द्वादशा माध्यंदिने पाकरोत्युभयीरेकादशतृतीयसवनेननूबंध्यवपाहोमांतेपा
करणामतिक्रमणंच सर्वासामेकादशदशवा शतानिस्युः सहस्राणिवाश्वस्त्वे
वमाध्यंदिनेधिकोवाजपेयवदाज्यनाभिषिच्यते कृष्याजिने शुक्रामंथिसंशः

द्वादशप्रकरणेत्रययत्रमंत्रप्रतीकानिकृतानितत्पूर्त्यर्थंमंत्रसंग्रहोलिख्यते

पृ० पं० प्रतीक

स्त्रेणवान्यतमस्त्वभिवाद्योप्रत्यवरोहीस्यात्स्थपतिरित्येनंब्रूयुः सराजा नोब्राह्मणापंपुरस्कुर्वोरंत्स्यएतेनयजेतपुःश्येनवदसद्योमरणकामस्य

१३९ १ अथ मित्रविन्दाइष्टिरुच्यते साच श्रीकामराष्ट्रकाममित्रकामायु ष्कामाणांभवति। तत्रदशहवींपिभवन्ति आग्नेयोऽष्टाकपालः सौम्यश्चरुः वारुणो दश कपालःयवमयश्चरुर्वा २) अथवाव्रीहिमयश्चरुः मैत्रश्चरुः ऐन्द्र एकादश कपालः। वार्हस्पत्यश्चरुः सावित्रो द्वादश कपालो ऽष्टाक पालो वा पौष्णश्चरुः सारस्वतश्चरुः त्वाष्ट्रो दश कपाल इत्येतानि दश हवींपि उपांशु भवन्ति।तत्रउद्धरणे। मित्रविन्दार्थमिति। मित्रविंदयाहं य क्ष्यऽइति वरणे पात्रासादने शूर्पाग्निहोत्रहवणि स्फ्यः कपालान्येकपञ्चा शत्सप्तचत्वारिंशद्वा ३) वारुणचरुपक्षे दशभिरूनानि चरुस्थाल्यः प ञ्च पड्वा शम्याकृष्णाजिनमित्यादि। दक्षिणा दशगावः सहस्रं वा अ ष्टादशेध्मकाष्ठानि शृतावदानानन्तरं मेक्षणम् पात्र्यः पञ्च चतस्रो वा शेपं प्रकृतिवत् नानावीजधर्मा उक्ताः ग्रहणे अग्नये जुष्टम् सोमाय वरु णाय मित्राय इन्द्राय वृहस्पतये सवित्रे पूष्णे सरस्वत्यै त्वष्ट्रे जुष्टमिति प्रोक्षणे त्वा जुष्टमिति एकवीज पक्षे कणान्ते विभज्यालम्भः इदमग्नेर्व रुणस्येन्द्रस्य सवितुः पूष्णस्त्वष्टुश्च इदं सोमस्य मित्रस्य वृहस्पतेः स रस्वत्याश्च यथोक्तमग्नीधः कपालोपधानम् दशकपालेचत्वार्युपधाय षट् समं विभज्य त्रीणिदक्षिणतस्त्रीणि चोत्तरत इति पिष्टानां तण्डु लानां चेक्षणम्। ईक्षणान्ते पूष्णो विभागः इदमग्नेर्वरुणस्येन्द्रस्य सवितु स्त्वष्टुश्च इदं पूष्णः चरूणामित्यादि कातीये श्रौतसूत्र पंचमाऽध्याये द्रष्टव्यः॥

द्वादशप्रकरणयत्रयत्रमंत्रप्रतीकानिकृतानितत्पूर्त्यर्थमंत्रसंग्रहोलिख्यते

पृ०	पं०	प्रतीक
२१४	९	पवित्रवत्यः ॐआपोऽअस्मान्मातरःशुन्धयन्तुघृतेननोघृतप्वः पुनन्तु। विश्वᳲहिरिप्रंप्रवहंतिदेवीरित्यादि ॥
२४४	६	कनिक्रदज्जनुषंप्रब्रुवाणऽइयर्तिवाचमरितेवनावं ॥ सुमंगलश्च शकुनेभवासिमात्वाकाचिदभिभाविश्व्याविदत् । मात्वाश्येन ऽउद्वधीन्मासुपर्णोमात्वाविददिषुमान्वीरोऽअस्ता ॥ पित्र्यामनु प्रदिशंकनिक्रदत्सुमंगलोभद्रवादीवदेह ॥ अवक्रंददक्षिणतो गृहाणांसुमंगलोभद्रवादीशकुंत ॥ मानस्तेनऽईशतमाघशं सोबृहद्वदे० ॥ १ ॥ प्रदक्षिणिदभिगृणंतिकारवोवयोवदंतऽऋ तुथाशकुंतयः ॥ उभेवाचौवदतिसामगाऽइव गायत्रंचत्रैष्टुभंचा नुराजति ॥ उद्गातेवशकुनेसामगायासिब्रह्मपुत्रऽइवसवनेषुशं ससि ॥ वृषेववाजीशिशुमतीरपीत्यासर्वतोनःशकुनेभद्रमावद विश्वतोनःशकुनेपुण्यमावद ॥ आवदंस्त्वंशकुनभद्रमावदतू ष्णीमासीनःसुमतिंचिकिद्धिनः ॥ यदुत्पतन्वदसिकर्करिर्यथाबृ हद्वदे०॥ २ ॥ ऋग्वेदसं -अष्टक २ अ- ३ शाकलमंत्राः

॥ उपपातकप्रकरणशुद्धिपत्रम् ॥

पृ०	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
६	मू-२	जका	जिका
८	१	७	८
८	१	कके	कर्के
९	११	अथ	अर्थ
९	म ९	दशका	दशा

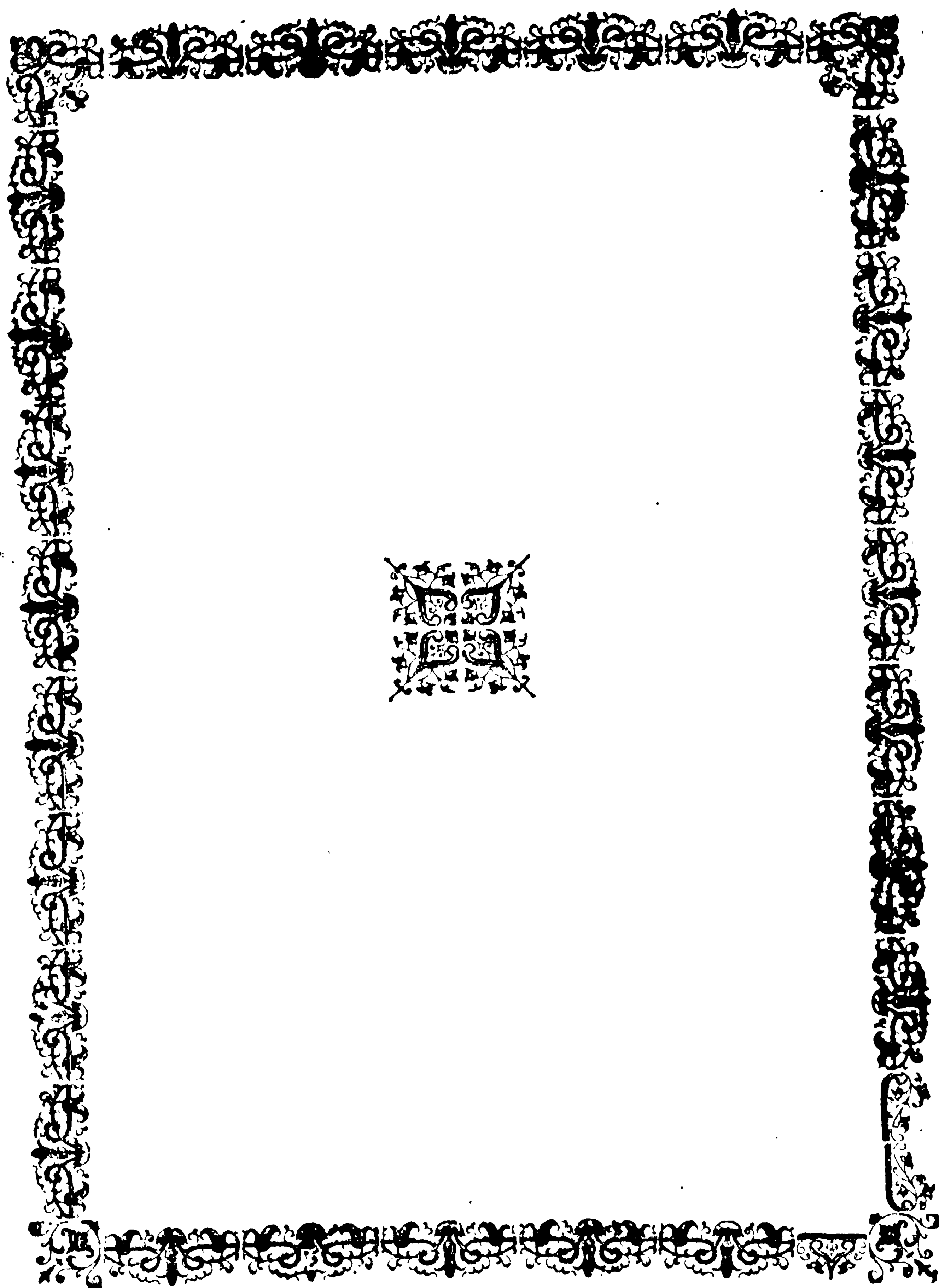
पृ०	प०	अशुद्ध	शुद्ध
११	मू- ४	ब्रतम	ब्रतम्
११	मू. ९	चरदि	चरेदि
१२	मू. २	ज्ञाति	जाति
१२	टी. ४	वघ	वध
१६	मू. १	घा	द्या
१६	टी. २	गोवृप इस जगा वृप कर्के सामान्य बैल जानणा कोई धुरंधुर बैल नहिं क्योंकि उह दश १० गौके तुल्यहै और इस जगा गौके मुल्ल तें थोडे मुल्ल वाला चाहिए	
२१	मू. ५ टी, १	प्रायश्चित्तमित्यादिश्लोकत्रयमाधिकमतोनिस्सारणीयम्	
२७	मू- ८	माधेव	माधवे
२९	टी- ५	अथ	अर्थ
३१	मू- ७	काय	कार्य
३१	टी. २	कण	कर्ण
३८	टी- ७	परु	पुरु
३९	टी- १	यस्त्री	परस्त्री
५०	मू- ११	सतासु	सूतासु
५३	मू- ६	वत्य	वर्त्य
५५	टी- ७	मेतिः	मेति
५७	टी- २	तव	तक
५७	मू. ७	श्चा	पश्चा
५८	मू. ५	त्कृ	कृ
५८	मू. ८	कृति	ष्कृति
६५	मू- २	रे	रेत्
७४	टी- ९	वा	व
७७	मू- ४	दोपं	दोपः
७७	टीः ३	घा	भा

पृ०	पं	अशुद्ध	शुद्ध
७८	टी- १	पात	पात
७९	टी, ६	अवस्थामे	अवस्थाकीस्त्रीकों
८२	टी- ५	चरी	चारी
८३	टी- ५	ब्रह्म	ब्राह्म
८७	मू- २	च्छ	च्छ्
८७	मू- ७	व्यम	व्यम्
९०	मू. ६	य	या
९१	टी, ६	सूर्ये	सूर्यो
९२	टी- १	ब्रह्म	ब्रह्म
९२	टी- २	दरा	दर
९२	टी- ३	शंक	शंका
१०४	टी- ३	आगरा	आगरा
१११	मू. ६	घार	धार
१३४	मू- ११	पा	पां
१५३	मू- ८	वार्पि	वार्षि
१९७	मू- ६	तादृकशाद्र	तादृक्शूद्र
२००	मू- ६	लस्या	लस्य
२०१	मू- ७	च्छ	च्छ्
२०५	मू- ९	अह	आह
२०६	टी. ३	त्रके	रात्रके
२०७	टी, ५	वांधादि	वंधादि
२०८	टी;१	घोडा	घोडा
२१०	मू- ६	वह	वाह
२१०	मू- १	पातपातयेत्	पातयेत्
२१०	मू- ७	तिघ्नां	तिघ्नी
२१९	मू- ७	तथ	तथा
२२९	मू- ३	रत्रं	रात्रं

पृ० पं-	अशुद्ध	शुद्ध
२३० मू- ८	सामा	मासा
२३२ मू० ७	गोष्ट	गोष्ठ

एह उपपातक प्रकरण श्रीसरकारजीकी आज्ञानुसार संस्कृतसे भाषा कर्के लोकोंके उपकारके लिये छपाया गयाहै अव इसके पठन पाठन कर्के जो अल्पवुद्धिभी लोकहैं सो भी प्रायश्चित्त समझहांक कहें गे जकर संस्कृतहि हुंदा तां पंडित लोक जो शास्त्रज्ञ हैं सोई कह सक्तेथ परन्तु एह ग्रंथ संस्कृतके साथ रक्षणे कर्के तिनोंकोभी प्रिय है और संस्कृत के और ग्रंथ किसे २ जगा अशुद्ध होणे गे इसकी शुद्धि अच्छी तरहा होई है और साथ शुद्धिपत्रभीहै और वहुत ग्रंथोंसें संग्रह होआहै इस कर्केभी प्रियहै इसकर्के सभलोकोंकों एह अपूर्व ग्रंथ पडना विचारणा चाहिए और इसमे एह स्थापन कीया गयाहै कि जो कोई प्रायश्चित्त की इच्छा करे तिनां सभनांको प्रायश्चित्त कराया जावे गा





ॐश्रीगणेशायनमः ॥ अब महापातक प्रकरणका प्रारंभ है तिसमे आदिविषें मंगलके अर्थ राजाधर्म्मकास्मरण कर्तेहैं ककुभांति दिशापति जो इंद्रादिहैं तिनके मध्याविषें अति उत्तमहै और सभलोकोंके प्राप्तहोनेका एकहि स्थानहै और ब्रह्मा विष्णु शिव इनोने दीयाहै सभका स्वामित्व अधिकार जिसको और धैर्य गति बुद्धि इनका कारण ऐसा जो धर्ममूर्त्तिहै तिसकामैं स्मरण करता हुं किसवास्ते पदपद विषें कठिन जो पातकहैं तिनके प्रगट करणे वास्ते और इसमे गति शब्द करके सामान्य ज्ञान और मतिशब्द करके विशेष ज्ञान जानणा १ । अब प्रायश्चित्त कदंबादिके विषें (अकुर्वन्विहितंकर्म्म) इत्यादि तीनहेतु अर्थात् वेदविषे जो विहित

ॐश्रीगणेशायनमः ॥ ककुभिपतिपुरस्थंसर्वलोकैकगम्यं विधिहरिहरदत्तस्वाम्यसर्वाधिकारम् प्रतिपदकठिनानां पातकानांविवृत्यै धृतिगतिमतिहेतुं धर्म्ममूर्त्तिंस्मरामि ॥ १॥ अथ प्रायश्चित्तकदंबादौ अकुर्वन्विहितं कर्म्मेत्याद्युक्तहेतुत्रयोत्पन्नपापपातकभेदानां जातिभ्रंशकरसंकरीकरणापात्रीकरण मलावह प्रकीर्णकोपपातकानुपातक महापातकातिपातकानां प्राप्तावसरतया महापातकातिपातकेनिरूप्यते अत्रेयं नवविधत्वगणनाऽतिपातकपार्थक्यबुद्धा प्रायश्चित्तरत्नाद्युक्तातिपातकस्य महापातकांतर्गतत्वेनाऽष्टधात्वमेवोक्तम्

तहै तिसका नहि करणा १ और जो तिसमे निषिद्धहै तिसका करणा २ और इन्द्रियों को न रोकणा ३ इनसें उत्पन्न जो पाप और पातक भेद हैं तिनके मध्यविषे जातिभ्रंशकरादि नवविधपापके निरूपण करके पश्चात् अवसरको प्राप्तहोकर महापातक और अतिपातक एह निरूपण करतेहैं ॥ ३ ॥ इसविषें जातिभ्रंशकरादि नव प्रकारके भेद होतेहैं जेकर अतिपातकको भिन्न करें नहि तो आठहैं और प्रायश्चित्त रत्नादि विषें अतिपातकको महापातकके अंतर्गत लिखाहै इसतें आठहि प्रकार कहेहैं अर्थात् महापातकका नामहि अतिपातकहै

एतदिति एहिपक्ष बहुतयांकों सम्मतहोणेतें असांकों प्रमाणहै ॥ प्रायश्चित्तेति प्रायश्चित्त प्रकरण विषे अतिपातकांकों कह करके कात्यायनजीने तो महापातकांके समान जो विष्णु प्रभृतियांने अनुपातकता करके कहेहैं तिनकी पातक संज्ञा कहीहै महापापमिति महापाप और अतिपाप तैसेहि पातक और प्रासंगिक और उपपाप एह पंजां पापांका गण कहाहै इसमें पातक संज्ञा कहीहै इति १ पातयतीति यथा गिडादेवे सो कहिए पातक इसव्युत्पत्ति करके तो महापातकहि पातक होताहै और अभ्यास करके उपपातकभी पातकहै कै ऐसें क. हतेहैं ॥ और जातिभ्रंशकरादियांके लक्षणादि तो तिसातिस निरूपणके अवसर विषे लिखेहैं और वाकी रहे जो महापातकांके भेद और लक्षण जैसे मनुजीने कहे है तैसें दिखांदेहां ब्रह्म-

एतदेवबहुसम्मतत्वाद्युक्तंप्रतीमः प्रायश्चित्तप्रकरणेऽतिपातकान्युक्त्वाकात्यायनस्तुमहापातकसमानांविष्णुप्रभृतिभिरनुपातकतयोक्तानांपातकसंज्ञामाह महापापंचातिपापंतथापातकमेवच प्रासंगिकंचोपपापमित्येवंपंचको गणइति पातयतीतिपातकमितिव्युत्पत्त्यातुमहापापमभ्यासेतूपपातकमपि पातकमितिकेचित् १ जातिभ्रंशकरादीनांलक्षणादीनिततन्निरूपणावसरएवलिखितानिअवशिष्टानिमहापातकभेदलक्षणानियथाहमनुः। ब्रह्महत्यासुरापानंस्तेयंगुर्वंगनागमः महान्तिपातकान्याहुःसंसर्गश्चापितैःसह १ एतल्लक्षणान्यपि तत्तन्निरूपणावसरेवक्ष्यन्ते इमान्येवयाज्ञवल्क्यापरार्कप्रायश्चित्तप्रकरणप्रायश्चित्तमयूखप्रायश्चित्तरत्नावल्यादौ अतिपातकानितु जनन्यांचभगिन्यांचस्वसुतायांतथैवच स्नुषायांगमनंचैवविज्ञेयमतिपातकम् १

ति ब्राह्मणको मारणा और मदिराका पीणा और स्वर्णकी चोरी करणी और गुरुकी स्त्रीसाथ गमन करणा एह महापातक कहेहैं तिनांके साथ जो संसर्गहै सोभी महापातक कहाहै ॥ १ ॥ लक्षणेति इनके लक्षणांकों तिस तिस निरूपणके अवसर विषे कहेंगे इमेति और एहि महापातक याज्ञवल्क्य और अपरार्क और प्रायश्चित्त प्रकरण प्रायश्चित्त मयूख और प्रायश्चित्त रत्नावली आदि ग्रंथां विषे भी लिखेहैं ॥ अब अतिपातक कहतेहैं ॥ जेतिमाता और भगिनी और कन्या और पुत्रकीस्त्री इनके साथ जो गमनहै सो अतिपातक जानणा १ इसमें एभी वातजानणी चाहिए जो माता और भगिनी और कन्या और पुत्रकी स्त्री वहुत प्रकारकीयां होतियां हैं परंतु इसजगा माता पिताकी स्त्री और गुरुकी स्त्री जानणी ऐसें और भी जानो

इदमिति ॥ एही अतिपातकांके लक्षण प्रायश्चित्तेन्दुशेखर ग्रंथविषे लिखेहैं और महा पातकतें कुछक जादै संभावना करके अतिपातक भिन्न किहाहै॥ महापातकेति ॥ बहुते ऋषियोंका एह मतहै कि जो महापातक है उसीका पर्य्याय वाचक अतिपातक है इति ॥ शूलपाणिने ऐसा कहाहै महेति महापातकतें भी अतिपातक वडाहै किसकरके विष्णुनें पापों की गणनाविषे पहलें गिणयाहै इस करके वडाहै कुछ औरभी अतिपातक वडा होनेकाकारण कहतेहां जाणकरके अथवा न जाणकरके जो अतिपातकको करे सो मरजावे ऐसाप्रायश्चित्त सुणीदाहै जैसे स्मृतिवचन है अतीति मातादिविषे गमनकरणे वाले इतने अतिपातकी अग्नि विषे प्रवेश करें तां शुद्धहोतेहैं और किसी प्रकारकरके कदाचित् भी शुद्धनहिं होते १ (कथंचन)इसका

इदमेवप्रायश्चित्तेन्दुशेखरे ॥ महापातकात्किंचिदाधिक्यसंभावनयापृथ गुक्तिः महापातकपर्य्यायमेवातिपातकमिति बहवः॥ शूलपाणिना ॥ महापातकादप्यतिपातकंगरीयः विष्णुना प्रथममुद्दिष्टत्वादित्युक्तम् किंच ज्ञानतोऽज्ञानतश्चात्र मरणांतिकमेवप्रायश्चित्तंश्रूयतेयथा ॥ अति पातकिनस्त्वेतेप्रविशेयुर्हुताशनम् अन्यथानिष्कृतिस्तेषांविद्यतेनक थंचनेति ॥ १ ॥ कथंचनेतिज्ञानतोऽज्ञानतश्चेत्यर्थः अन्यथा तदन र्थकंस्यात् ॥ भविष्ये॥ अतिपातकयुक्तानांप्राणान्तिकमुदाहृतम् अत्र सकृद्गमनेऽपि प्राणांतिकम् यथापूयतइत्यनुवृत्तौ हारीतेन ।सर्वोऽग्निं प्रविशेयुरतिपातकिन इति भणितम्॥ वृद्धविष्णुनातु । उत्तरोत्तरलघी यांसिपापानिगणितानि तत्र महापातकानंतरमेवातिपातकंगणितमतोम हापातकादतिपातकंलघीयः विज्ञानेश्वरमतेप्येवं सा स्मृतिःप्रथमप्रकर णे पापगणनायांद्रष्टव्या एषामवांतरभेदाअपि तत्रैवावगंतव्याः ॥

अर्थ एहहै कि अतिपातकको जाण करके अथवा न जाण करके करे [illegible] ऐसा न मानो तो कथंचन पद अनर्थक होजावेगा और भविष्य पुराण विषे भी लिख्याहै अतीति अतिपातकियोंको मरजाणा ऐसाहि प्रायश्चित्तहै । इसविषे एकवार गमन करने करके भी मरणांत प्रायश्चित्तहै जैसे पवित्र होवें इसअनुवृत्तिविषे हारीतने किहाहै अतिपातकी सतावी अग्नि विषे प्रवेश करे ॥ और वृद्धविष्णुने तो पहलेथे दूसरा छोटा दूसरे तें तीसरा छोटा इसी प्रकार पापोंकी गिणती करीहै तिस विषे महापातकतें पीछे [illegible] अति पातक गिणयाहै इस करके महापातकतें अतिपातक छोटाहै ॥ और विज्ञानेश्वरने भी अति पातकको छोटाहि कहाहै सो स्मृति पहले प्रकरण विषे और पापोंकी गिणती विषे देख लैणी इनां अतिपातकांके अवांतरभेद भी तिसी प्रकरण विषे देख लैणे इति

अथ ब्राह्मणवातिके लक्षण कथन करणवास्ते प्रथम ब्राह्मणका लक्षण कहतेहैं जन्मेति प्रथम जन्मकर्के शूद्रहोनाहै फेरजातकर्म यज्ञोपवीत संस्कार होने कर्के द्विजसंज्ञा होतीहै और वेदका अभ्यास करणे करके विप्रसंज्ञाहोतीहै और ब्रह्मको जाने तद ब्राह्मणहुंदाहै ॥ १ ॥ इसविषें संयोग पृथक्त्व न्यायकरके ब्राह्मणमें जन्महोना फेर संस्कार फेर वेदाभ्यास फेर ब्रह्मज्ञान एहसंपूर्ण यथासंभव कर्के भिन्न २ होवें अथवा एकत्रहोवेंतदभी ब्राह्मणत्व करदेतेहैं अर्थात् इनमेसें कोई एकभी संस्कारहोवे तदभी ब्राह्मण हुंदाहै और जन्म उत्पत्तिसें और तपसेंजानणा किस वास्ते कि वाल्मीकि ऋषि जन्मका भील था सो तपकर्के ब्राह्मण होता भया इस कर्के विश्वा

ब्रह्मब्रलक्षणमभिधातुं प्रथमंब्राह्मणलक्षणमुच्यते ॥ जन्मनाजायतेशूद्रः संस्काराद्द्विजोत्तमः वेदाभ्यासीभवेद्विप्रोब्रह्मजानातिब्राह्मणः १ अत्र संयोगपृथक्त्वन्यायेन ब्राह्मणाज्जन्म संस्कारोवेदाभ्यासोब्रह्मज्ञानंचेमानिसमुदितानि यथासंभवं व्यस्तानि मिलितानि वाब्राह्मणत्वप्रयोजकानि जन्मतु योनिस्तपसोवाबोध्यम् वाल्मीक्यादेस्तथास्मरणात् एतेनविश्वामित्रादावव्याप्तिर्व्याहता यद्वा विश्वामित्रोहिब्राह्मणीयमंत्राभिमंत्रितचरुभक्षणेनक्षत्रियोत्पन्नोपि ब्राह्मणएवेत्यभिध्येयम् ॥ क्षत्रियांतरब्राह्मणीभूताऽव्याप्तिस्तूक्तयुक्तेरेवमार्या क्षत्रियसंस्कारादौ किंचिद्भेदश्रवणात्तत्र नातिव्याप्तिः जन्मनाजायतेशूद्र इत्यत्र शूद्रसदृश इत्यर्थः

मित्रादि विषें अतिव्याप्ति दूर होजातीहै अथवा विश्वामित्र ब्राह्मण वनाने वाले मंत्रों कर्के मंत्रित चरुको क्षत्रियाणी भक्षण करती भयी तिस क्षत्रियाणीते उत्पन्नभीसा तदभी ब्राह्मण भावको प्राप्त हुंदा भया एह भी जानणा ॥ क्षत्रीति औरभी क्षत्री ब्राह्मण होते भये इस विषें अव्याप्ति तपरूप जो पूर्व युक्ति तिसीसें दूर करनी और क्षत्रिय संस्कार विषें ब्राह्मण संस्कारते कुछकभेदहै इसवास्ते तिस विषें दोष नहिहै और जो कियाहै जन्म कर्के शूद्र होताहै इस विषें शूद्र पद कर्के शूद्र समान जानना

और सादृश्यविषे भी एह पुरुष सिंहहै इत्यादि प्रयोगभी होनेहै अर्थात् जैसे पुरुष सिंहसमान क्रूरता कर्के युक्तहै कुछ सिंहाहि नहिहै इसीप्रकार जन्म कर्के शूद्र समान जानणा और वेदाभ्या स रहित जो ब्राह्मणहै सो जातिमात्र ब्राह्मण किहाहै १ इसी प्रकार जोवेदपाठीहै सो अनूचा न किहाहै २ और वेदपढना पढाना यज्ञ करणा और कराणा और दानदेना और दानलेना इनां छेयां कर्मां कर्के युक्त जो ब्राह्मण सो षट्कर्मा किहाहै ३ और जिसकी ब्रह्म विषे स्थि तिहै उसका नाम ब्रह्मनिष्ठ है ४ और यज्ञ सभको जो करावे उह याजक होताहै ५ इत्यादि ब्राह्मण भेद जानने योग्य है और शूद्र द्विज विप्र ब्राह्मण एह संज्ञा पूर्व पूर्व संज्ञातें

सादृश्येपि सिंहोयंमाणवकइत्यादौ प्रयोगदर्शनात् यत्र वेदाभ्यासादिविर हःसतुजातिमात्रोब्राह्मणः १ एवमनूचानः २ षट्कर्मा ३ ब्रह्मनिष्ठः४याजकः ५ इत्यादयोब्राह्मणभेदाज्ञातव्याः ॥ शूद्रद्विजविप्रब्राह्मणसंज्ञास्तुपूर्वस्मा दुत्तरोत्तरसंज्ञाप्रयुक्तगुणोत्कर्षाधायका नतु जात्यंतरप्रयोजकाः एवंविध ब्राह्मणवधे गुणापेक्षयाप्रायश्चित्ततारतम्यंवक्ष्यते अतएव सर्वोत्तमब्राह्मण लक्षणमाहवसिष्ठः योगस्तपोदमोदानं सत्यंशौचंदयाघृणा विद्याविज्ञा नमास्तिक्यमेतद्ब्राह्मणलक्षणम् १ स्वार्थमनपेक्ष्यपरदुःखप्रहरणेच्छा दया

आगे २ संज्ञाप्रयुक्त अधिक गुणका प्रति पादकहै कुछ और जाति प्रति पादक नहिहैं अर्था त् शूद्रतें आगे द्विजमें वहुत गुणहैं और ऐसेहि विप्रसें ब्राह्मणमे भी जानना और ऐसे ब्राह्म ण वध विषे जैसे २ गुणहे तिनके अनुसार प्रयश्चित्त आगे कहेंगे और इसी कारणतेंसभमे उत्तमजो ब्राह्मणहै तिसका लक्षण किहाहै वसिष्टजीने सो जैसे योग इति प्राणांको रोक कर चित्तको स्थिर करणा एह योगहै और तपकरणा कि शीत और उष्णको सहारणा और इ न्द्रियांको दुष्टविषयते रोकणा और अपने वित्तानुसार दानको कुछदेणा और सत्य बोलणापवि त्ररहणा और सभ ऊपर दयाकरणीकि अपने अर्थको त्याग कर दूसरेके दुःख दूरकरणकी इच्छा

परेति जोदूसरेके धन वृद्धिकी इच्छाकरणी अथवादूसरेके दुःखीहोयांर आपको दुःख जानणा अथवा निंदित वस्तुतें मनको हटाणा एह घृणाहै और विद्या पठन करणी और ब्रह्मज्ञानहो णा और आस्तिकभाव होणा ११ एह एकादश लक्षण जिसमें होवें सो उत्तमब्राह्मण किहाहै १ इति और एह योगादिगुण करके रहित जो ब्राह्मण है सो गौण किहाहै और ब्राह्मण कल्पका लक्षण चतुर्विंशति मतमें लिखाहै ब्रह्मेति ब्राह्मणवीर्यते उत्पन्न होवे और मंत्रसंस्कारतें हीनहै केवल ब्राह्मण जाति करके जो उपजीवका करे सो ब्राह्मण समान कि हाहै १ इस कारणतें गुणभेदकरके ब्राह्मणके भेद कहेहैं सोजैसे सममिति संस्कारहीन जो है सो अब्राह्मण किहाहै उसको जोदानदेणाहै तिसका समानाहि फलहोताहै अधिकफल न हि होता और जिसके केवल संस्कारहोएहैं उह ब्राह्मणब्रुव किहाहै उसको दान दिता हो

परसंपत्त्युदयेच्छा घृणा यद्वा परदुःखेपि दुःखित्वंघृणा जुगुप्सितेभ्योम नसोपसर्पणंवा एतदित्येकवचननिर्देशात्समुदितानां ब्राह्मणलक्षणत्वं त दभावेगौणोब्राह्मण इति। ब्राह्मणकल्पलक्षणं चतुर्विंशतिमते ब्रह्मवीजस मुत्पन्नोमंत्रसंस्कारवर्जितः जातिमात्रोपजीवीच सभवेद्ब्राह्मणःसमः १ अतएव गुणभेदेनब्राह्मणभेदायथा सममब्राह्मणेदानंद्विगुणंब्राह्मणब्रुवेअ धीतेशतसाहस्रमनंतंवेदपारगे १ अथब्रह्महलक्षणमपरार्के ब्राह्मणप्राण वियोगफलकव्यापारकर्ता सब्रह्महा कर्त्ताच स्वतंत्रस्तत्प्रयोजकश्च तत्र स्वतंत्रोनाम द्वारभूतकर्त्रंतरमनपेक्ष्य क्रियाप्रवर्त्तकः परतु स्वतंत्रस्यक रनुकूलमाचरंस्तत्साध्यांक्रियां साधयति सप्रयोजकः

या दूणाहोताहै और कुछपढाहोवे सो अधीतकिहाहै उसको दित्ता होया दान हजार गुणाहोता है और संपूर्ण वेदपढाहोवे उह वेदपारगहै उसविषे दानका अनंत फलहोताहे ॥ १ ॥ अथ ब्राह्मण हतकरण वालेकालक्षण अपरार्कमें लिखाहै कि जो पुरुष ब्राह्मणके प्राणवियोग करण वाला व्यापार करे सो ब्रह्महा किहाहै अर्थात् जिसकर्म करके ब्राह्मण मृत होजावे उस कर्मके करणवाला ब्रह्महा होताहै सोकर्त्ताभी दो प्रकारकाहै एक स्वतंत्र दूसरा प्रयोजक और तिस विषें स्वतंत्र तिसका नामहै कि जो द्वारभूत दूसरे कर्त्ताको त्याग करके केवल आ पहि कर्ममें प्रवृत्त होवे अर्थात् दूसरेकी सहायताते विना अकलाहि कामकरे और प्रयोजक उसका नामहै कि जो स्वतंत्रकर्त्ताके अधीनहोकर तिसकरके सिद्धकरणवाले कार्यको सिद्धकरे अर्थात् कार्यकरणवालेको अच्छीतरां प्रेरणाकरे उसको प्रयोजक कर्त्ता कहतेहैं

(प्रश्न) इसविषें स्वतंत्रतासे ब्राह्मणवध करणवालेका ब्रह्महा शब्द अंतरंग होताहै क्या साक्षात् तिसकावाचकहै और प्रेरक वहिरंग कहाताहै पूर्व २ जोहोवे उसकानाम अंतरंगहै और उसके पीछे २ जोहोवे उसकानाम वहिरंगहै पूर्वकार्यकासिद्धहोयां वहिरंग असिद्धहोताहै) उत्तर) एहनहि कहना किसवास्ते कि प्रयोजककाभी ब्रह्महा शब्द अंतरंगहै । सोकिहाहै आपस्तम्बजीने प्रयोजयितेति प्रेरणा करणवाला और कार्यमें प्रवृत्तको पीछे से प्रेरणा करण वाला और कार्य करणे वाला एह स्वर्ग नरक फल वाले कर्म विषे फल भागी होतेहैं अर्थात् शुभ कर्म विषे प्रेरक अनुमंता कर्ता एह स्वर्गको प्राप्त होतेहैं और अशुभ कर्म विषें एह नरकको प्राप्त होतेहैं इसवास्तें इनको भी ब्रह्महा कहतेहैं ॥ और जो बार बार शुभाऽशुभ कर्मका आरंभकरे तिस विषें अधिक फल होताहै (प्रश्न) अनुमंता जो है सोआपतो कुछ काम नहि क

तत्रस्वातंत्र्येणब्रह्मवधकर्त्तारं ब्रह्महेतिशब्दोंतरंगत्वादेवाचष्टे नतु प्रयोजकं वहिरंगत्वादितिनवाच्यंतस्यापितद्वाच्यत्वात् ॥ यदाहापस्तम्बः ॥प्रयोजयिताऽनुमंताकर्त्तावेतिस्वर्गनरकफलेषुकर्म्मसु फलभागिनःयोभूयआरभते तस्मिन्फलविशेषइति ॥ नचानुमन्तुःकथंकर्त्तृत्वमकर्त्तुश्चकथंस्वर्गनरकफलयोगइतिवाच्यम् प्रयोजकतयातस्यापि कर्त्तृत्वात् प्रवलेहिदण्डप्रणेतरि राजादौ तेनाननुमतःसत्यपि ब्रह्मवधरागे कश्चित्कर्त्तुं नशक्नुयात् अनुमतस्तुशक्नुयादितिवधादौ भवत्येवानुमन्तुः प्रयोजककर्तृत्वम् गोवलीवर्दन्यायेन प्रयोजककर्त्तुःपृथगनुमन्तोपात्तः

ता सोकर्ता कैसे होया और स्वर्ग नरक फल तिसको कैसे होगा ॥ (उत्तर) एह नहि कहना किसवास्ते कि प्रेरणा करणे करके हि तिसको कर्ताभाव होताहै उसते अर्थात् जो पुरुष प्रेरकर किसीसे कुछ कार्य करावे उसविषे प्रेरककाहि नाम होताहै इसवास्ते प्रयोजक भी वधहोताहै । जैसे कि तेजस्वीदंडदेनेवाले राजाके विद्यमानहोयां यद्यपि अननुमंताको अर्थात् राजाआज्ञाहीनको ब्रह्मवध करणेकी इच्छा है भी तदभी कोई करणेको समर्थ नहि होता और अनुमंता समर्थ होजाताहै । और वधादि विषे अनुमंताको प्रयोजक कर्ताभावहै ॥ और इस स्थानमें गोवलीवर्दन्याय करके अनुमंताका भिन्न ग्रहण कियाहै ॥ गोवलीवर्द न्याय एह है कि गामानय वलीवर्दंच इसमें गामानय करके वलीवर्दकाभी बोध था परंतु वलीवर्द शब्द भिन्न कहणे करके पूर्वला शब्दगोकाहि वाचक रहा ... भी जाणो ॥

श्रोर प्रयोजकका लक्षण प्रथम किइाहै ॥ श्रौर कार्य विषे प्रवृत्तकों जो उपदेश करे तिसका नाम अनुमंताहै ॥ श्रौर उपदेष्टाभी उसीको कहतेहैं ॥ एह केवल उदाहरण दिखानेवास्ते लिखाहै॥श्रौर जिसते विना कर्त्ता अपने कार्य करणेको समर्थ न हो सो सपूर्ण हननसिद्धिके वास्ते अनुरक्त घातक होताहै श्रौर इसीकारणते हि हंताके साथहि चतुर्दश १४ पैठीनसीनेकहे है हंतेति हन्ता १ मन्ता २ उपदेष्टा ३ संप्रतिपादक ४ प्रोत्साहक ५ सहाय ६ मार्गानदेशक ७ आश्रय ८ शस्त्रदाता ९ भक्तदाता १० उपेक्षक ११शक्तिमान् १२ दोषवक्ता १३ अनुमोदक १४ इनका अर्थ जो है सो दिखायीदा है साक्षात् जो मारे सो हंता कहाहै १

प्रयोजकस्तूक्तः अनुमंता प्रवृत्तप्रवर्त्तकः उपदेष्टेतियावत् प्रदर्शनार्थंचैतत् ततश्चयेनविनाकर्त्तास्वाक्रियांकर्त्तुनशक्नुयात्ससर्वोपिहननासिद्धयेव्याप्रियमाणोघातकोभवति ॥ अतएव हंत्रासहान्ये चतुर्दशोक्ताः पैठीनासिना हंता मन्तोपदेष्टाच तथासंप्रतिपादकः प्रोत्साहकःसहायश्चतथामार्गानुदेशकः १ आश्रयःशस्त्रदाताच भक्तदाताविकर्मणाम् उपेक्षकःशक्तिमांश्च दोषवक्तानुमोदकः अकार्यकारिणस्तेषां प्रायश्चित्तं प्रकल्पयेदिति २ हंता साक्षाद्धंता १ मन्ता ऽनुमन्ता प्रवृत्तप्रवर्त्तकः २ उपदेष्टा मर्मोद्घाटनादिकृत् ३ संप्रतिपादकः ॥ पलायमानममित्रमुपरुंधन् परेभ्यो हंतारं परिरक्षंश्च हंतुर्वृद्धिमानमुपनयन्नुपकरोतिसः ४ प्रोत्साहकःस्तावकः ५ सहायः सहगंता ६ अनुमादको हन्तुर्हर्षमनुयोक्ष्यति ॥ भक्तपदमौषधादेरप्युपलक्षकम् ॥ अन्यत्स्पष्टम्

श्रोर जो पुरुष कार्यमे प्रवृत्तको प्रेरणाकरे सो मंता किहाहै २श्रौर जो यथार्थ अभिप्रायको प्रकटकरे उसका नाम उपदेष्टाहै ३श्रौर मारणे वालेतें भयकरके आगे नसदा जो शत्रुहै तिसको भी रोकलेवे श्रौर श्रौर पुरुषांते मारणे वालेकोभी रक्षाकरके फेर मारणमे उसको दृढकरके उपकार करे तिसकानाम संप्रतिपादक है ४ श्रौर जो मारण वाळेकी स्तुतिकरे उसकानाम प्रोत्साहकहै ५ श्रौर साथ जो गमन करे उसकानाम सहायहै ६ श्रौर हंताके हर्षको प्राप्त होया २ हर्षको प्राप्तहोवे तिसकानाम अनुमोदकहै ७ श्रौर हंताको भत्त कया भोजन देवे उसकानाम भक्तदाताहै इसमे भक्तशब्दकरके औषध इत्यादिकाभी ग्रहण करणा श्रौर सभ स्पष्ट है

यह सभ पापी होते हैं इस वास्ते इनको भी प्रायश्चित्त देणे योग्यहै और इनका प्रायश्चित्त न्यूनाधिक भाव करके आगे किहा जावेगा इसमे अनुमंता उसका नाम है कि जो अनुमति देवे सो अनुमति दो२ प्रकारकी है एक तो जिसको विरोध करके हत करणा होवे उस विषे अनुमंताको भी कुछ विरोध होवे और सो अपने विरोधते मारण वाले को तिसके मारण विषे युक्ति कहे १ और दूसरा किसीने कहा है कि मै अमुक पुरुष को मारताहुं इस प्रकार तिसके वाक्य को सुनकर तिसका वधते निषेध न करे ॥ इस प्रकार तिसके योगते अनुमंता दो प्रकारका होता है ॥ और इसी प्रकार उपदेष्टा भी दो २

प्रायश्चित्ततारतम्यंवक्ष्यते अत्रानुमंताऽनुमतिकर्त्ता सानुमतिर्द्विविधा यद्वि रोधाद्धननंसंभवति तत्रानुमंतुरपि विरोधस्तत्प्रयुक्तिः १ अपरा एतं हन्मीति वचने शक्तस्याप्रतिषेध एवेति तद्योगादनुमन्ता द्विविधः एवमुपदेष्टापि स्वभृत्यं वेतनदानादिना स्वतःप्रवृत्तमेव मंत्रोपायादिना प्रयोजकत्वाद्द्विविधः आभ्यांभेदाभ्यांसहानुमंत्रादयश्चतुर्दश १४ हंतात् पंचदशकः १५ इतिशूलपाणिमतेनोक्तम् तत्र ये भक्तदाता विकर्मणामित्यादयस्तेतु परमरणमभिसंधाय यदि भक्तादि प्रयच्छंति तदा वधहेतवो न भक्तादिदानमात्रेण यदि तन्मात्रेणापि हेतुता स्यात्तदा पित्रोरपि पुत्रंजनयतोस्तत्कर्तृकासु कुशलाकुशल क्रियासु हेतुता स्यात्

प्रकारका है कि एक तो अपने भृत्यको धन दे करके वध करवाणा १ और दूसरा स्वतंत्र जो उद्यत है तिसको मंत्र अर उपायादि करके वध विषे प्रवृत्त करणा २ इन भेदोंके साथ अनुमंतादि १४ होते हैं और हंता १५ वां होताहै एह शूलपाणिजी के मतमे कहाहै अनंति और तिसविषे दुष्टको जो अन्नदाता हैं सो जेकर किसीके मारणे वास्ते दुष्टको अन्नादिदेवें तद उहभी वध विषे कारण होते हैं कुछ अन्नादि दने करके हि नहि पापीहोते और जेकर अन्नमात्र देणे करके वधकी कारणता होवे तद पुत्रको उत्पन्न करते जो माता पिता हैं तिनको भी पुत्रकृत शुभाऽशुभ क्रिया विषे कारणता होनी चाहिए

इसविषें औरभी आपत्ति आवतीहै क्या कि किसी पुरुषने धर्मार्थ बनाया जो कूप अथ वा तडाग है तिस विषें कोई ब्राह्मण प्रमादसे गिडकर मृत होजावे तद कूप वा तडाग बनाने वालेकों भी ब्राह्मण मारणे की कारणता प्राप्त होनी चाहिए इसवास्ते दुष्टकों केवल अन्न देणे करके पापका भागी नहि होता किंतु जेकर किसीके मारणवास्ते नीचको अन्न अथवा और कुच्छ वस्तु देकर अपने घरमे उस नीच पुरुष की रक्षा करे तद उह भी पापका भागी होताहै ॥ और जेकर भक्त देणे करके हिं सा विषें कारणता कहो तद एह नहि कहना किस वास्ते सो आगे हेतु लिखा है ॥ इस विषें एह हेतु है कि किसी कारणके कारण करके अकारण भाव होनेंते ॥ वधमि ति और भी हेतु लिखाहै किसी अन्य पुरुषने वधनिमित्तते विना भी किया जो कु छ कामहै उसकामकी जेकर वध कर्त्ताको कुछ लोड होवे तद दूसरेको भी वध निमित्त

धर्मार्थनिर्मितकूपादौच प्रमादपतितब्राह्मणमृत्युहेतुता कूपकर्त्तुरापद्येत नचैयमस्ति कारणकारणत्वेनाकारणत्वात् ॥ वधमनुद्दिश्यापि परे णकृतो व्यापारो यदि वधमाचरता कर्त्तृविशेषविशिष्टत्वेनापेक्ष्यते तदा भवत्येव तस्य हेतुता यथाहमनेनाकुष्टस्ताडितोनिर्धनोवाकृत इत्यात्मानं हन्मीत्यभिसंधायात्मनि व्यापादिते भवत्याक्रोशादिकर्तु स्तद्व्यापत्तौ हेतुता पुनःकूपादावेवं नहि तत्र भवति यस्मादेवद त्तेनायंकूपोनिर्मितस्तस्मादहमत्र पतामीत्यभिसंधिः ॥ आक्रोशादिकर्त्तुर्ब्र ह्मवधनिमित्तता माह विष्णुः

कार्य करणे करके वध विषें कारणता होतीहै और जेकर अन्यकृत कार्य वधमे कुछभी स हायता न करे तद दूसरे पुरुषको वध विषें कारणता नहि होती जैसे कि दूसरेको वधकारणता होतीहै सोलिखतेहैं । जैसाकि मेरा तिरस्कार इसने कीताहै अथवा मेरेको ताडन कीताहै अथवा मेरा सभ धन इसने लेलियाहै इसवास्ते मैं अपना देह त्याग करताहुं ऐसे कहकर जब ब्राह्मण किसीके ऊपर शरीरत्याग कर देवे तद अवमानादि करण वालियों को ब्राह्मण मारण विषें कारणता होतीहै और फेर कूपविषे गिडने करके ऐसी कारणता नहि होती और जिसका रणते अमुकपुरुषने एह कूप बनवायाहै इसवास्ते इसविषें मैं गिडताहूं ऐसे गिडे तदभी कूप कर्त्ताको वधहेतुता नहि है । और तिरस्कारादि करणवालेकों ब्राह्मणवधविषे कारणता क हतेहै विष्णुजी ।

आकुष्टइति जो ब्राह्मण अवमानको प्राप्तहोयाहै अथवा सोटोकरके ताडयाहोया अथवा धन करके हीन कियाहोया जिसके ऊपर प्राणोंका त्याग करे महात्मा पुरुष तिसीको ब्रह्मघातक कहतेहैं और जो ब्राह्मण अन्याय करके ग्रहण कीयाहै और कहताहै कि मेरा न्यायकरो जेकर उसका न्याय न होवे तिसदुःख करके जिसके उद्देश करके मृत होजावे तिसको ब्रह्मघातक कहतेहैं पिछलेश्लोकदा उत्तरार्द्ध इसजगा जोडलेणा १ इसविषे और विशेषहै जिसविषे अनादर ताडनादि संबंधके विना दूसरेके उद्देशसे भ्रमादिकरके ब्राह्मण प्राणों कोत्याग देवे तद मरण वालेको हि दोषहै और जिसके उद्देशसे मरे उसको कुछदोष नहिहोता सोलिखाहै सुमंतुने असंबंधेनेति कि संबंधसे विना कोई ब्राह्मण किसी ऊपर मृत होजावे तद तिसी मरण वालेको हि पापहोताहै और उह जिसका नाम लेवे तिसको कुछ पाप नहिहोता॥१

आकृष्टस्ताडितोवापिधनैर्वापिप्रयोजितः यमुद्दिश्यत्यजेत्प्राणांस्तमाहुर्ब्रह्मघातकम् अन्यायेनगृहीतस्तु प्रार्थयन्न्यायदर्शनम् १ यत्रत्वाक्रोशताडनादिसंबंधमन्तरेण भ्रांत्यादिवशेन परमुद्दिश्य ब्राह्मण आत्मानंहन्ति तत्र हन्तुरेवदोषो नोद्दिश्यस्येत्याह सुमन्तुः असंबंधेनयःकश्चिद्द्विजः प्राणान्समुत्सृजेत् तस्यैवतद्भवेत्पापंनतुयंपरिकीर्तयेत् १ अत्रापरोविशेषो भविष्यत्पुराणीयः प्रायश्चित्तविषये प्रकरणोपान्तेऽवसेयः आततायिनंतुब्राह्मणमपिहतवतोन ब्रह्महत्वमितिव्यासआह आततायिनमायांतमपिवेदान्तगंरणे जिघांसंतंजिघांसीयान्नतेनब्रह्महाभवेत् ॥ १ ॥ मनुः गुरुंवाबालवृद्धंवाब्राह्मणंवाबहुश्रुतम् आततायिनमायांतंहन्यादेवाविचारयन् १

अत्रेति ॥इसके प्रायश्चित्त विषे और विशेषहै भविष्यत्पुराणका सो प्रकरणके अंतके समीप देख लेणा ॥ इस विषे और विशेष कहतेहैं कि आततायि ब्राह्मण भी हो तिसको मारणे करके ब्रह्महत्या नहि है एह व्यासदेवने किहाहै । आततायिनमिति । वेदान्तपारग भीहो आततायी और संग्राममे आजावे उसको आगेसे शस्त्र प्रहार करनेको जेकर मार देवे तिसके मारणे करके ब्रह्महा नहि होता ॥१॥ सोई मनु जीने लिखाहै गुरुमिति गुरु होवे अथवा बालक वा वृद्ध हो अथवा पण्डित ब्राह्मण होवे तद भी विचारतें विना आवते आततायीको मार देवे अर्थात् गुरु ब्राह्मण एह विचार कुछ नहि करणे योग्य १

सोई वशिष्ठजी ने लिखा है स्वाध्यायिनामिति जो पुरुष वेदपाठियोंको कुल विषे है जन्म जिसका ऐसेभी आततायीको मार देवे तदभी तिसके मारण करके सो पुरुष भ्रूणहा नहिहोता अर्थात् ब्रह्महा नहि होता किसवास्ते कि क्रोधहि तिसके क्रोधको मारताहै और बृहस्पति जीनें भी किहाहै आकुष्ट इति । कि जो कोई किसीको गाली देकर अव मान करे और आगेते उहभी उसको गाली देवे और अवमान करे और जो किसीको ताडना करे आगेते उहभी उसको ताडना करे और जो कोई अपने घात करण वास्ते शस्त्र पकड कर आवे उसको शस्त्र करके मार देवे तद कुछ अपराधको नहि प्राप्त होता १॥ एहि विष्णुने किहाहै परेति कि जो ब्राह्मण परस्त्रीविषे रत होवें और चौर होवें अथवा और किसी दोषको प्राप्त होवें ऐसे ब्राह्मण जेकर आपसमे जदयुद्ध विषे मृतहोजावें अर्थात

॥ वशिष्ठः ॥ स्वाध्यायिनांकुलेजातं योहन्यादाततायिनम् नते नभ्रूणहाभवतिमन्युस्तन्मन्युमृच्छति ॥ १ ॥ भ्रूणहाब्रह्महा मन्युः क्रोधः सएव तन्मन्युं तत्क्रोधं ऋच्छति हंति ऋच्छगतींद्रियप्रलयमूर्त्तीभावेषु ॥ बृहस्पतिः । आक्रुष्टस्तुसमाक्रोशंस्ताडितःप्रतिताडयन् विनाशार्थिनमायांतं घातयन्नापराध्नुयात १ येनाक्रुष्टःसोपितेनाक्रुष्टःयेनताडितः सोपितेनताडितश्चेत्तदा नापराधः विष्णुः। परदाररताश्चौरादोषप्राप्ताश्चयेद्विजाः अन्योन्यंवाहतायुद्धे नतेनब्रह्महाभवेत् १ मनुः॥शस्त्रंद्विजातिभिर्ग्राह्यंधर्मोयत्रोपरुध्यते आत्मनश्चपरित्राणेदक्षिणानांचरक्षणे १ दक्षिणारक्षणं यज्ञरक्षणेन भवतीति यज्ञरक्षण इत्यर्थः ॥ बौधायनः षट्स्वनाभिचरन् पतति षट्स्वाततायिषु तानाह ॥ वसिष्ठः। अग्निदो गरदश्चैव शस्त्रपाणिर्धनापहः क्षेत्रदारहरश्चैवषडेतेह्याततायिनः १

लडितपांदोंके एक जद मर जावे तदभी उह मारणे वाला ब्रह्महा नहि होता॥ १ ॥ और जिस स्थानमे ब्राह्मण भी शस्त्र धारण करे सो मनुजीने किहाहै शस्त्रमिति कि जिस स्थानमे धर्मविषयका संकट होजावे अथवा अपनी रक्षा करण वास्ते अथवा यज्ञसामग्री की रक्षा वास्ते ब्राह्मणोने भी शस्त्र ग्रहणकरणे योग्य है ॥ १ ॥ और बौधायनने कहाहै षडितिछे६प्रकारके जो आततायीहैं तिनकोंनमारे तदपापीहोताहै छेप्रकारकेही आततायी वसिष्ठजीने किहेहैं अग्निद इति अग्निलगाने वाला १ विषदेनेवाला२शस्त्र पकडनेवाला ३ धनहरनेवाला ४ स्थान हरनेवाला ५ स्त्री हरणवाला ६ एह छे आततायी हैं ॥ १ ॥

और इस मे एभी विचारहे क्षेत्र करके स्त्रीका भी ग्रहण होताहै इसजगा भूमि वाचकहै। औरमत्स्य पुराणमे लिखियाहैं गृहेति कि घर अथवा क्षेत्र इत्यादि स्थानकीचोरी करणी और अपनी स्त्रीके साथ बलात्कारसे मैथुन करे और किसीके घरको बिना अपराधसे अग्नि लगावे और किसीको मारण वास्ते बाहांनेसेविषदेकर मार देवे और शस्त्र उठाकर शस्त्र रहत पुरुषको मारने के वास्ते आवे १ और किसीको मारण वास्ते मंत्र यंत्र तंत्र इत्यादि अभिचार करे और राजापास भले पुरुष के अनादरवास्ते चुगली करे एह सपूर्ण धर्म जानने वाले महात्मा पुरुषोंने संसार विषे आततायी कहेहैं इति २ और व्यासदेव जीने किहा है उद्यतेति कि बल करके तलवारकोधारे और अग्नि लगावे और विषदेवे और छल करके किसी को मारदेवे और राजाविषे जाकरचुगली करे

गरदोविषदः ॥ मत्स्यपुराणे ॥ गृहक्षेत्रादिहर्त्तारं तथापत्न्यभिगामिनम्
अग्निदंगरदंचैव तथाचाभ्युद्यतायुधम् ॥ १ ॥ अभिचारंहिकुर्वाणं राजगामिचपैशुनम् एतेहिकथितालोके धर्मज्ञैराततायिनः ॥ २ ॥
व्यासः॥ उद्यतासिं विषाग्निंचशस्त्रोद्यतकरंतथा आथर्वणेनहंतारं पिशुनंचैवराजनि॥भार्यापहारिणंचैव षडाहुराततायिनः १ तद्वधाभ्यनुज्ञा ॥ अत्रच वर्त्तमानाग्निदानादिव्यापारा आततायिनउच्यंते ॥ तद्व्यापारनिवारणंच यत्रवधमंतरेण नसंभवति तत्रैव तद्वधानुज्ञा यत्रतु दंडशस्त्रादि प्रहारमात्रेणैव शक्योनिवारयितुं तत्रदोषनिमित्तमेव तद्वधोज्ञेयइति ॥ मिताक्षरायांतु इदंसर्वमर्थशास्त्रमितितत्रदण्डाल्पत्वमिति व्यवस्थापितम् अतश्च दण्डाल्पत्वेप्यनुबंधापेक्षया लघ्वपिप्रायश्चित्तमुचितमेव

और स्त्रीकोहर करके कहींलेजावे एह छे आततायी कहेहैं १ और आततायी किस समय विषे मारणा सोकिहाहै ॥ कि इस विषे जो वर्त्तमान अग्नि वा विषदेनेवास्ते कुछ व्यापारकरे सो आततायीकिहेहैं और उसकाव्यापार बिना मार देणेसे निवारण नहि होता इसवास्ते तिसीकाल विषे आततायीको मारणा योग्यहै और जिस स्थानविषे आततायीको दंडवाशस्त्र प्रहार करकेहि हटा देनेको जो पुरुष समर्थ होवे तद उसके मारणे मे दोष अवश्यहै परन्तुमिताक्षरा विषे उसको अर्थ शास्त्र जाणकर थोडाही दंड किहाहै इसतें प्रायश्चित्त भी उसको थोडा कहणा चाहिए कि उसमे पुना पुना विषादि देणे करके अथवा तिसकीशंका कर के उसको मारियाहै इस अभिप्रायते ॥

और सुमन्तुने भी एह किहा है नाततायीति कि आततायी के मारणका कुछ दोषनहि पर गौब्राह्मणों विना अर्थात् जेकर ब्राह्मण अथवा गौ एह आततायी होवें तद इनके मारण का दोष हैं इति । और ऐसे भी जिस स्थानविषें गौ ब्राह्मणते विना अन्य आततायी को भी प्रहारादि से हटाकर अपनी रक्षा करण को समर्थहो तिसस्थानमे आततायी को मारण वाला पुरुष ब्रह्महा होताहै । इसवास्ते आततायी वधविषें दोष प्रतिपादक और प्रायश्चित्त प्रतिपादक जो स्मृतियां हैं तिनका एह अभिप्राय जानना ॥ और प्रायश्चित्त कदंबादिकेंविषेएह लिखा हैं कि ब्राह्मणकों मारदेणा हि ब्रह्महत्या होती है और इस विषें प्राण निकालनें वाला जो कार्य है सोईहंतिका अर्थहै अर्थात् जिस कार्य करके किसीके प्राण दूर होजावें उसका नाम मारणा है ॥ और जिस कार्यके पीछे भी पुरुष व्यापारते विनाहि मृत्युहो

समन्तुनापि ॥ नाततायिवधेदोषोऽन्यत्रगोब्राह्मणादित्येवमेवोक्तं एवंच यत्र गोब्राह्मणवधादृते तत्प्रहारमात्रादिना शक्य आत्मा त्रातुं तत्र तद्वधकर्त्ता ब्रह्महा भवत्येव ततश्चाततायिवधे दोषबोधकानां तत्प्रायश्चित्तप्रतिपादकानांच स्मृतीनामयमेवविषयोबोध्यः ॥ प्रायश्चित्त कदंबादौतु ब्राह्मणस्यहननं ब्रह्महत्या अत्र प्राणवियोगानुकूलोव्यापारोहंतेरर्थः यदनंतरंपुरुषव्यापारं विनैव मरणं भवति तच्चाव्यवधानेन कालान्तरेवेत्यन्यदेतत् ॥ अ शूलपाणिः पूर्वोक्तब्रह्महसामान्यलक्षणमुक्त्वा साक्षाद्धंता प्रयोजकोऽनुमंताऽनुग्राहकोनिमित्ती चेति पंचधानिर्दिश्य॥ तत्र मरणोद्देश्यकनरांतरव्यापाराव्यवहितप्राणवियोगफलकनिषिद्धव्यापारकर्त्ता साक्षाद्धंता १

जाता है और तिस विषें जेकर कुछ व्यवधान न हो और कालांतरमे यद्यपि मरे तदपि ऐसे हि जानना अर्थात् जैसे कि किसी ब्राह्मणको किसीने दंड प्रहार कीयाहै और उह ब्राह्मण उस चोटके क्लेश करके हि पीछे दशवीस दिनके मरजावे पर बीच चोटकी पीडा हटी न होवे तदभी चोट लगाने वाले को ब्रह्महत्या होती है इति । और इस विषें शूलपाणिजीने पूर्वोक्त ब्रह्महाका सामान्य लक्षण कह कर साक्षात् हंता इत्यादि कहेहैं सो जैसे ॥ साक्षात् हंता १ प्रयोजक २ अनुमंता ३ अनुग्राहक ४ निमित्ती ५ एह पांच हैं ॥ और इनका लक्षण किहा है जैसे । कि किसीके मारण वास्ते अन्य पुरुषके व्यापार ते विनाहि प्राणवियोग है फल जिसका ऐसानिषिद्ध कर्मके करण वाला साक्षात् हंता होता हैं (१)()

(प्रश्न)साक्षाद्व्यापार मनुष्यका तद होवे जेकर खड्गादिबीच न होवें तिनांके होयां किसतर ह साक्षात्है(उतर)नरशब्द करके सो अर्थ सिद्ध होचुका अर्थात् खड्गका व्यापारभी मारणवाले काहै और जिसको प्रथमकिसीके मारणकी इच्छान हिहै तिसको धनदेने करके वधवास्ते उद्योगकरा वे । अथवा वधके वास्ते आपाहि उद्यत जो पुरुषहै तिसको सलाह देकर और उपदेश देकर वधविषे उत्साह करवावे उसका नाम प्रयोजक किहाहै २ और मारण वालेको अनुमति देने वाला अथवा किसीने किहाहै कि तिसको मैं मारताहुं इस वाक्यविषें समर्थ पुरुषको वधकर णेते जोनहटावे उसका नाम अनुमंताहै ३ और मरणकेभयसे भागता जो पुरुषहै तिसको आगे ते रोककरके मारण वालेको जो पुरुष पकडादेवे उसका नाम अनुग्राहक किहाहै । और अ नुग्राहक दो प्रकारकाहै एकतो मारणेयोग्य जोहै तिसको आगेते रोकनेवाला और दूसरा थ डाप्रहार करणवाला ४ और मारणवालेको निमित केहायांभी क्रोधकोजो उत्पन्नकरे तिसको

अत्र खड्गादेर्व्यवधायकत्वं नरशब्देन निराक्रियते अप्रवृत्तस्यपदातेर्वेत नदानादिना वधार्थंप्रवर्तयितास्वतः प्रवृत्तमेव वामंत्रोपायोपदेशादिनाः त्साहकोऽपरः २ अनुमतिदाताऽनुमंता सचतंहन्मीतिवचनेशक्तस्याः निषेद्धा ३ वध्यस्यपलायनादिविघातकोऽनुग्राहकः अयंचद्विविध एकोवध्यप्रतिरोधकः अपरःस्वल्पप्रहर्त्ता ४ उद्देश्यत्वेसतिहंतुर्मन्यूत्पा दकोनिमित्ती ५ तत्रप्रयोजकस्यप्रयुक्तिद्वारा अनुमंतुर्हंतुर्निर्भयत्वेन दृढ तरप्रहारोत्पत्तिद्वाराऽनुग्राहकस्यपलायनादिसंरोधनद्वारा निमित्तिनाहं तृमन्यूत्पादनद्वारेतिचतुर्णांव्यवहितकारणत्वं अवांतरप्रकारभेदादेषांभेद इत्याचख्यौ एषांप्रायश्चित्ततारतम्येग्रंथकाराएवप्रमाणंयथा साक्षाद्धंतुः सकलंसंप्रतिपादकाख्यानुग्राहकस्य व्यापारबाहुल्यान्मौलिकमेवपादोनम्

नामनिमित्तीकिहाहै ५ ॥ और इनको वधकारणताहै सोजैसे इसविषे प्रयोजकको तो प्रेर णा करणेके द्वारा और अनुमंताको निर्भयहोने करके अतिशय दृढप्रहार करणेके द्वारा अर्था त् मारण वाला अनुमतिको प्राप्तहोकर अतिशय करके दृढप्रहार करेगा अनुग्राहक को भागने को रोकलेना तिसद्वारा । और निमित्ती को मारण वालेको क्रोधके उत्पन्नकरणके द्वारा इन चारोंको व्यवधान सहित वधविषे कारणताहोतीहै और विचले प्रकारके भेदते इनका भेद किहाहै । और इनके संपूर्ण और न्यून प्रायश्चित्तविषे ग्रंथकार हि प्रमाणहै । सोजैसे किहाहै किसाक्षात् मारणवालेको संपूर्ण प्रायश्चित्तहै अर्थात् ब्रह्महत्याका जितना प्रायश्चित्त निबंधों मे लिखाहै उसके करणे करके शुद्धहोताहै १ और प्रतिपादकजो अनुग्राहकहै तिसको भी अधिक व्यापार होनेते मूलव्रतकापादोन करणेयोग्यहै २

श्रोर प्रयोजकको केवलआज्ञादेनी श्रोर कुछक प्रार्थनाकरणी इसवास्ते मूलव्रतका आधाव्रत करणा किहाहै३श्रौर आगेहि वधमे प्रवृत्तको प्रेरणा करण वाला जो अनुमंताहै तिसको अल्प व्यापारहोनेंते मूल व्रतका डेड पाद प्रायश्चित्त करणा योग्यहै४श्रोर आगेनिमित्ती वास्ते लिखाहै निमित्तइति कि निमित्तके होयां पाद प्रायश्चित्तकरे इस वाक्यते निमित्तोको केवल निमित्तमात्र होने करके मूलव्रतका पादहि करणायोग्यहै ५ ऐसेएहसंपूर्ण यथोक्तप्रायश्चित्त करणे करकेशुद्धि को प्राप्तहोताहै इहसभ प्रायश्चित्त मयूखमें लिखाहै श्रोर जो वारं वार आरंभ करे तिसको विशेष फलहोताहै ॥एह पूर्वलिख आयेहैं इति इसवास्तै इस प्रकारका ब्रह्महा होताहै ॥अब तिसकाप्रायश्चित्त किहाहै ब्रह्महेति कि ब्राह्मणके मारणे वाला पुरुष वनविषे कुटिया बनाकर

आज्ञाप्रार्थनादिनाप्रयोजकस्यार्द्धम् ३ प्रवृत्तप्रवर्तकस्यानुमंतुःसार्द्धपादम् ४ निमित्तेपादमादध्यादित्युक्तेर्निमित्तिनःपादः ५ इतिप्रायश्चित्तमयूखे योभूयआरभते तस्मिन्फलविशेषइति पूर्वोक्तस्मरणात्तस्मादेवंविधोब्रह्महा तत्प्रायाश्चित्तमाह ॥ मनुः ॥ ब्रह्महाद्वादशाब्दानिकुटींकृत्वावनेवसेत् भैक्ष्याश्यात्मविशुद्ध्यर्थंकृत्वाशवशिरोध्वजम् १ अस्यार्थः ब्रह्महा ब्राह्मणवधकारी द्वादश वर्षाणि वनेकुटीं पर्णशालां कृत्वा ब्रह्महत्या निवृत्तये वसेत् भैक्ष्यंफलमूलाद्यलाभे चतुर्वर्णलभ्यंतदाशी तदशनशीलो वक्ष्यमाणवचनान्मितभुक् शवस्य स्वयंहतस्यब्राह्मणस्य तदलाभे यस्यकस्यचिद्वा शिरःकपालं ध्वजंकृत्वा शिरोऽस्थ्येकदेशारोपितशवनिर्हरणकाष्ठांगेन ध्वजंकृत्वेत्यर्थः

वारां१२वर्षनिवासकरे श्रोर अपनी शुद्धिके वास्ते मुडदेके शिरके कपालकीध्वजा वनाकरहाथ मेलेवे श्रोर भिक्षामागकर भोजन करे १ ॥ श्रोर इसका एह अर्थहै कि निवृत्तिवास्ते द्वादश वर्ष वासकरे श्रोर तिसको फलमूल भक्षण करणाचाहिये जेकर फलमूलन प्राप्तहोवे तद ग्राम विषे जाकर चार वर्णोंते भिक्षा मांग कर थोडा भोजन करणा श्रोर आप मारया जो ब्राह्मणथा तिसके शिरका कपाल लेकर ध्वजा बनाकरके हाथमे रक्खे श्रोर जेकर उसशवका शिर नप्राप्तहोवे तद श्रोर किसी शवका कपाल लेलेवे फेर शवके दाहकरण वास्ते एकपासे रक्खाजो लंबाकाष्टहै तिसको लेवे फेर उसकपालको उसी काष्ट ऊपर बांधकर ध्वजारूप बनाकर हाथ मेरक्खे एह. इसका अर्थहै इति ॥

और सोई अपरार्क विषे लिखाहै शिर इति ब्राह्मणके वध करण वाला पुरुष शिरः कपाली होवे क्या शिरका कपाल अथवा और कोई शिरकी अस्थि धारण करे । और ध्वजाको धारण करे अर्थात् खट्वांगकोभी हाथ विषे धारण करे और नियम करके नित्यं प्रति भिक्षा मांग कर खावे और अपना कर्म क्या जो ब्राह्मणका वध कीयाहै उस कर्मको लोकों के आगे प्रकट करता हुया विचरता रहे जेकर इस प्रकार बारां १२ वर्ष पर्यंत नियमकरे तद ब्रह्महत्याते उह मुक्त होताहै अर्थात् इस प्रकार प्रायश्चित्त करणे करके ब्रह्महत्याका पाप दूर होजाताहै इति १ और इस विषे आप हत कीया जो ब्राह्मणहै तिसीका कपाल धारणेयोग्यहै किस वास्ते कि शातापत जीने किहाहै ब्राह्मणको मारकरके तिसीका शिर कपाल ग्रहणकर

अपरार्केविशेषः ॥ शिरःकपालीध्वजवान्भिक्षाशीकर्म्मवेदयन् ब्रह्म हाद्वादशाब्दानिमितभुक्शुद्धिमाप्नुयात् १ब्रह्महा द्वादश वर्षाणि शिरःकपा लीशिरोस्थ्येकदेशधारी ध्वजवान् खट्वांगीभिक्षाशीभिक्षाभोजननियम वान् स्वकृतंकर्म्मब्रह्मवधाख्यंलोकेभ्योवेदयन् शुद्धिमाप्नुयात् ब्रह्मवधपा पान्मुच्यतइत्यर्थः स्वयंहतस्यब्राह्मणस्यैव कपालंधार्य्यं ब्राह्मणंघातयि त्वा तस्य शिरःकपालमादाय तीर्थान्यनुसंचरेदितिशातातपस्मरणात् ॥ तदभावेत्वन्यस्येति प्रायश्चित्तरत्नादौ तच्च पाणिनाधार्यम् यदाहगौत्तमः खट्वांगकपालपाणिरिति खट्वाचात्र शवनिर्हरणार्था तदंगमेव ध्वजशब्दे नविवक्षितंतेनचध्वजाग्रारोपितकपालिनभवितव्यम् भिक्षाशनेविशेषमाह संवर्त्तः

के तीर्थां विषे जाकर विचरता रहे इस वाक्य स्मरणते उसीका कपाल धारण करणाचाहिये और जेकर तिस मृत होये ब्राह्मणका कपाल न मिले तद और किसीका कपाल ग्रहण करणा एह प्रायश्चित्त रत्नादिकोंमे लिखाहै । सो कपाल हाथमे धारण करणे योग्यहै सो किहाहै गौत्तमजीने खट्वां गेति खवांट्ग औरकपाल हाथमे धारण करके रहे और इस स्थान विषे खट्वा एह ग्रहण करणी क्या जिसके ऊपर रख करके शवको दाह करण वास्ते श्मशानको लेजातेहैं उसीके एक पासेका काष्ट ग्रहण करणा और ध्वजा शब्द करके भी एहां लिखाहै तिस करके ध्वजा ऊपर कपाल बांध कर हाथमे धारण करणा योग्यहै और भिक्षाशन विषे विशेष किहाहै संवर्त्तजीने

भिक्षेति भिक्षाशी॰का एह अर्थ ग्रहण करणा क्या वनविषे जाकर गौके पुच्छके वालांका वस्त्र धारे और शिरमे जटा और पूर्वोक्त ध्वजा हाथमे धार कर वनके फल भक्षण करता हुया और संपूर्ण कामनाते रहित वनमे इस प्रकार विचरे १ और जेकर वनके फलों करकेउपजीवका न होवे तद पुरुष कपाल ध्वजा धार कर और इंद्रिय रोक कर चार वर्णकी भिक्षा ग्रहण करे इसमे ऐसा विचार रखणा कि ब्राह्मणके घरते वाहरते भिक्षामांगे पर अंदर प्रवेश न करे औरोंके घरमे अंदरभी जावे एह अर्थ अगो आवेगा और इस प्रकारग्रामते भिक्षा ग्रहण करके फेर वन विषे चला जावे ऐसे हि नित्यं प्रति बारां वरस करे वाल करके गोपुच्छ वर्त्ति केशलेणे ॥ और एहि अर्थ संक्षेपसे कहाहै प्रायश्चित्तेंदुशेखर वि अज्ञानाति अज्ञानते क्या इच्छाते विना कीया जो ब्राह्मण वध तिसविषे मृतब्राह्मणके कपाल

भिक्षाशीतुवनंगत्वावालवासाजटीध्वजी ॥ वन्यान्येवफलान्यश्नन् सर्व कामविवर्जितः ॥ १ ॥ भिक्षाशीविचरेदेववन्यैर्यदिनजीवति चातुर्वर्ण्यंचरे द्भैक्ष्यंखट्वांगीसंयतःपुमान् भिक्षांस्त्वेवंसमादायवनंगच्छेतत्तःपुनरिति२ वालागोपुच्छवर्त्तिनःकेशाः अयमेवार्थःसंक्षेपेण प्रायश्चित्तेन्दुशेखरे अज्ञा नतोऽनिच्छया कृते ब्रह्मवधे हतविप्रशवशिरोध्वजह[illegible]स्तत्कपालीलोमग्र हीतान्यदीयकपालःस्वकर्मख्यापयन् ब्रह्मचारिधर्मवा[illegible]न त्रैवर्णिकाचार्या दिदर्शने मार्गादपक्रमन् त्रिषवणस्नायी अध्ययनाध्य[illegible]पनादिषट्कर्माणि वर्जयन् समंत्रकंस्नानसंध्योपासनमात्रं कुर्वन् रात्रौ वीर[illegible]सनीजटीमुंडीवा वन्यफलमात्राहारी तदभावेत्वसंकल्पितविधूमभुक्तवज्जनस्व[illegible]गृहागारेष्वेव भै क्ष्यंमृत्पात्रेणचरन्

ध्वजा ग्रहण करके वोनमिलेतोओरकीओरअपना कर्म प्रकट करता होया और ब्र[illegible] ह्मचारी धर्मवाला और ब्राह्मण क्षत्री वैश्य आचार्यांको देखकर आगेते हटजावे और तीनकाल स्नान[illegible] करे और पढना पढाना इत्यादि छे कर्मको वार्जित करे ॥ और समंत्रक स्नान संध्योपासनमात्रकरे[illegible] ॥ और रात्री विषे वीरासन स्थितहोवे और जटा धारण करे अथवा मुंडितरहे और वनके फल[illegible] मात्रभक्षण करे ॥ जेकर वन विषे फलादि न मिलें तद एह काम करे क्या ग्राम विषे जाकर[illegible] जिस घरमे धूम न निकले और सभ घरके पुरुष भोजन करचुके होवें और कुछ संकल्प भी[illegible] होकि एह मेरेको अवश्य देवेंगे ऐसे विचार छोडकरके सात घरतें मृण्मय पात्रमें भिक्षा ग्रहण[illegible] करे और इसका एह अभिप्राय है कि जितना अन्न सात घरसें मिले उसीसें निर्वाह करणा ॥

और क्रोध नहि करणा और इंद्रिय रोककर रहिणा और ऊर्णादि वस्त्र विछाकर शयनकरे और लीरां अथवा भुर्जपत्रका वस्त्र धारे अथवा और किसीका पुराणा वस्त्र लेकर धारे और ग्राम तें वाहर देवताके मंदिरके समीप निवासकरे और तिसने ब्राह्मणके घरविषें नहि प्रवेश करणा और दरवाजेके वाहर खलोकर ब्राह्मणके घरांकों नमस्कार करणी और सो पुरुष एक कालहि भोजनकरे और जिसदिन भिक्षा कुछ न प्राप्त होवे उस दिन उपवास करण योग्यहै इस प्रकार वारां वर्ष व्यतीत करे तद ब्रह्महत्या दूर होतीहै इसमें वशिष्ठ जीनें विशेष किहाहै सप्तेति जिन घरोंमें अपना कुछ संकल्प नहि है ऐसेंहि सात घरतें भिक्षा ग्रहण करे और भिक्षा न मिले तद निराहार रहे इति ॥ यमजीनें तो ऐसे किहाहै सप्तेति क्या अपूर्व सात घरतें जिनांतें आगे भिक्षा नहिं लयी अर्थात् जिसघरतें एक वारी भिक्षा ग्रहण करी उसघर विषे दूसरी वारी न जावे और सातघर कैसे होण यदृच्छा करके प्राप्त होण इसी घर विषे

क्षमीदान्ताचारःकंबलक्षौमशयानश्चीरवल्कलान्यतमवासावहिर्ग्रामाद्देवा लयादिसमीपवासी विप्रगृहाण्यऽप्रविशन्दूरादेव तत्तद्गृहान्नमस्कुर्व न्नेककालाशी भिक्षायाअलाभे उपवसन द्वादश वर्षाणि क्षपयेत् अत्र विशेषमाहवशिष्ठः सप्तागाराण्यसंकल्पितानिचरेद्भैक्ष्यमिति अलब्ध्वो पवासइति यमस्तु सप्तागाराण्यपूर्वाणिन्यायसंकल्पितानिच एककालं चरेद्भैक्ष्यंतदलब्ध्वोदकंपिवेदित्याह १ न्यायसंकल्पितानि यदृच्छाप्राप्तानि आपस्तम्बीयेऽपरोऽत्रविशेषः॥ जटाधारणंचवपनादूर्ध्वं कार्य्यं कृतवापो वसेद्गोष्ठेग्रामान्तेगोव्रजेपिवा आश्रमेवृक्षमूलेवा सर्वभूतहितेरतइति मा नवीयात् प्रायश्चित्तप्रकरणादौतुकृतवापोजटीवेतिविकल्पोऽभिप्रेतःअत्र चारण्यकुट्यसंभवे निवासांतरविधिर्द्रष्टव्यः ग्रामांतोग्रामारण्ययोस्संधिः

जाणाहै ऐसे विचार वाले नहोण और दिन विषे एकवारीहि भिक्षा लेवे और न मिले जिस दिन उस दिन केवल जलपान करेइति ॥ और आपस्तंबीय विषे और विशेषहै क्या जटाको जोधारणकरे सोमुंडनतें पीछे प्रथम मुंडन पीछे जटाधारणकरे ॥ सोई बातकहते हां जैसे कृतेति प्रथम मुंडन कराकरके गौके स्थान विषे अथवा ग्रामके समीप अथवा गोव्रजविषें अथवा किसी आश्रम विषें अथवा वृक्षमूलविषे संपूर्णजीवोंकेहितमें प्रीतिवाला होकर निवास करे इसीमनुजीके वाक्यतें १ प्रायश्चित्त प्रकरणादिकोंविषें तो ऐसा लिखाहै क्या मुंडनक रवाकर्के अथवा जटाकोधारकर आश्रम विषे निवासकरे एह विकल्पहि आशयकीताहै और इसविषें वनमे कुटिया न वनसके तद और स्थानमे निवासकरणेकी विधिदिखायीहै और ग्रामां न्तशब्दकर्के ग्राम और वन इन दोनोकी संधि ग्रहण करणी

और आश्रम उस स्थानका नाम है जहां ऋषि निवास करतेहैं ॥ अबके समय विषे तीर्थके एकपासे जो एकांतदेशहै उसकानाम आश्रम जानना और इस स्थानविषे स्मृतियोंमे कहे जो संपूर्णधर्म हैं तिनका आपसविषे कुछभी बिरोध नहि तदसर्वशाखाप्रत्यय एक कर्महै क्या भिन्न२ शाखावालयोंके वास्तें एकहि कर्म करणा किहाहै इसन्यायकर्के ग्रहण करणेयोग्यहैं ॥ और विरुद्ध जो कर्म हैं सोसभ विकल्प कर्के ग्रहण करणे एह अपरार्कमेलिखियाहै सोईजैसेशंखनेकहेहैं नित्यमिति क्या वनविषे पत्तरांकी कुटिया बना कर्के नित्यं प्रति तीन काल स्नानकरे और भूमीऊपर शयनकरे और जटाकोधारणकरे और पत्तर फल मूल इनका भक्षणकरे१ और अपने कर्मको प्रकट करता होया भिक्षावास्ते ग्रामविषे प्रवेशकरे और एककालविषे अल्पाहार करे इसीप्रकारकरातियां जब द्वादश वर्ष व्यतीतहोजावें तद सुवर्णकीचोरी करण वाला और

आश्रमोमहर्षीणांनिवासः ॥ सचाधुनातीर्थप्रान्तविविक्तदेशोवोध्यःअत्र स्मृत्यन्तरोक्ताअविरुद्धास्सर्वेपिधर्म्माः सर्वशाखाप्रत्ययमेककर्म्मेतिन्यायेनसंग्रहीतव्याः विरुद्धास्तु विकल्पेनेत्यपरार्कः तद्यथा शंखः नित्यंत्रिषवणस्नायी कृत्वापर्णकुटींवने अधःशायीजटाधारीपर्णमूलफलाशनः १ ग्रामंविशेच्चभिक्षार्थीस्वकर्मपरिकीर्त्तयन् एककालंसमश्नानोवर्षेतुद्वादशे गते२रुक्मस्तेयीसुरापश्चब्रह्महागुरुतल्पगः व्रतेनानेनशुद्ध्यंतिमहापातकिनस्त्विमे३गौतमः खट्वांग कपालपाणि र्द्वादश संवत्सरान् ब्रह्मचारीभैक्ष्यायग्रामंप्रविशेत्कर्माचक्षाणः पथोऽपक्रामेत्संदर्शितादार्यस्य स्थानासनाभ्यांविहरन्सवनेपूदकोपस्पर्शीविशुद्ध्येत् । ब्रह्मचारिपदंचात्र वर्जयेन्मधुमांसगंधमाल्यदिवास्वप्नांजनाभ्यंजनोपानच्छत्रकामक्रोधलोभमोहहर्षनृत्यगीतपरिवादभयानीत्यविरुद्धानां ब्रह्मचारिधर्म्माणांप्राप्त्यर्थम्

मदिरा पीनेवाला और ब्राह्मणके हतकरणवाला और गुरुकी स्त्रीसाथ मैथुन करण वाला एहसभमहापातकी इसव्रतकरण कर्के शुद्धहोजातेहैं अर्थात्इस बारांवर्षकेव्रतकरके सभमहापातक नष्टहोतेहैं३ और गौतमजीनेकिहाहैखट्वांगेतिखट्वांगइत्तलेकर विशुद्धचेत्इहांतकइसकाअर्थ पूर्व होचुकाहै और इसविषे ब्रह्मचारी कहनेका एह अभिप्रायहै क्या मधु मांस सुगंधि द्रव्यपुष्पादि दिनविषे सोणा नेत्रांमे अंजनपाना वुटनामलनापैरोंविषे जोडा धारणा छतडी काम क्रोध लोभमोह हर्ष नृत्यकारीका देखना गायन श्रवण करणा और दूसरेकी निंदा करणी और किसी जीवते भयकरणा एहसब त्यागनेचाहिए इत्यादि विरोध रहितजो ब्रह्मचारीके धर्म हैं तिनकी प्राप्तिवास्ते अर्थात् इनसंपूर्ण धर्मोंका सेवनकरे

श्रौर श्रागेते श्रावते महात्मा पुरुषको देखकर अथवा ब्राह्मणादि तीन वर्णों को देख कर मार्ग को त्याग देवे इति । श्रौर वशिष्टजीने किहाहै कि द्वादश वर्ष अपने उद्देशकरके अर्थात् अपनी शुद्धि वास्ते ग्राम विषे और वन विषे न रहे अर्थात् ग्रामकी अर वनकी जो संधिहै तिसविषे बासकरे ॥ श्रौर खट्वांगी इत्यादि स्पष्टहै श्रौर मैं पापीहां मेरेको भिक्षादे वो इसप्रकार अपना पाप प्रकट करने करके पाप क्षीण होजाताहै इति श्रौर अपने बास्ते शास्त्रका अर्थ विचार करके प्रायश्चित्त वास्ते संकल्पित ग्राम विषे श्रौर संकल्पित वन विषे निवास न करे श्रौर ग्राम श्रोर वनकी संधिविषे रहे श्रोर स्पष्टहै । श्रौर यमजीने किहाहै अथेति अथवा ब्रह्महत्या विष गधेका चर्म ऊपर ओड करके मृत्तिकाके कपाल विषे भिक्षा

आर्यस्य त्रैवर्णिकस्य सम्यग्दर्शने पथोमार्गादपक्रामेदित्यर्थः । वशिष्ठः द्वादशवर्षाण्यात्मनोद्दिश्यनग्रामेनारण्येवसेत् ॥ खट्वांगीकपालपाणिः सप्तागाराण्यसंकाल्पितानि चरेद्भैक्ष्यं भ्रूणहनेभिक्षांदेहीति स्वकर्मनिवे दयमानो विज्ञायते हिनिरुक्तमेनःकनीयोभवतीति आत्मनोद्दिश्यात्मना शास्त्रार्थंविचार्य प्रायश्चित्तमुद्दिश्य संकल्प्य न ग्रामे नारण्ये वसेत्किन्तु तयोःसंधावसंकल्पितान्यत्र प्रवेष्टव्यमनेनेति भिक्षालोभेनासम्प्रधारिता नि ॥ निरुक्तमेनः कनीयोभवति आख्यातंपापं क्षीणंभवतीत्यर्थः ॥ यमः अथवाब्रह्महत्यायांवसित्वागर्द्दभाजिनम् मृण्मयेनकपालेनस्वकर्मख्या पयंश्चरेत् १ गोष्ठेवसेत्तपोयुक्तोग्रामान्तेस्थंडिलेपिवा वृक्षमूलेश्मशानेवा श्मश्रुलोमनखीजटी २ ॥ कुटींकृत्वावसेत्तत्रगोब्राह्मणहितेरतः अम्भसः पतनादग्नेश्चौरव्याध्यादितोभयात् ३ गोब्राह्मणंमोचयित्वाब्रह्महत्यांव्य पोहति ब्राह्मणावसथान्सर्वानग्न्यागारांश्चवर्जयेत् ॥ ४ ॥

ग्रहण करे श्रौर अपने ब्रह्मवध कर्मको विख्यात करता हुआ विचरे ॥ १ ॥ श्रौर जिस स्थान विषे गौयां वैठतीयां हैं उसस्थानविषे स्थितहोकर तपकरे अथवा ग्राम वनकी सीमास्थानविषे अथवा चुरस्तेविषे पिप्पल वटवृक्ष इनके मूलविषे अथवा श्मशानिविषे दाडी रोम नखजटा एह धार करके । २ । श्रौर कुटिया वनाकर निवासकरे कैसा गोब्राह्मणकेहितमे है प्रीति जिसको ऐसा । और गौ अथवा ब्राह्मण इनको जलके विषे पतनते श्रौर अग्नित श्रौर चोरते श्रौरव्याधि इत्यादिभयते जेकर छुडा देवे तद ब्रह्महत्याको दूरकरताहै अर्थात् गौ ब्राह्मणको मृत्यु भयते जेकर छुडादेवे तदभी ब्रह्महत्या पापते मुक्त होजाताहै श्रौर ब्राह्मणांके संपूर्ण घर श्रौर अग्नि स्थान क्या अग्निहोत्रका स्थान इन विषे प्रवेश न करे ४ ॥

और अपने आपको शोच करताहुया अपनी निंदाकरे और जिस ब्राह्मणको मारयाहै तिस ब्राह्मणका भी नित्य स्मरणकरे। इसप्रकार दृढव्रतधारण करे और सत्य वाणी बोले जितेंद्रिय होकर ॥ ५ ॥ अपूर्व सात घरते भिक्षा ग्रहणकरे और सप्तागाराणि इत्यादिका अर्थ पीछेकियाहै इसवास्ते इहां नहि अर्थ लिखा ७ इसप्रकार ब्रह्महत्याको विख्यात करता हुया विचरतारहे और जब द्वादश वर्ष व्यतीत होजावें तब उसकी ब्रह्महत्या नष्टहोतीहै ८ और ब्राह्मणावसथान् वर्जयेत् इसका एह अर्थहै कि ब्राह्मणके घरमे प्रवेश न करे और दूर स्थित होकर भिक्षायाचन करे और देवताके मंदिरतेंभी दूर स्थित होकर देवताको नमस्कार करे। इसते। चातुर्वर्ण्यंचरेद्भैक्ष्यं। इस वचनके साथ विरोध नहि आया इति॥ विष्णुजीने किहाहै वेति ब्रह्मचारी होवे अतिको

शोचन्निंदंस्तथात्मानंसंस्मरन्ब्राह्मणंचतं एवंदृढव्रतोनित्यंसत्यवादीजितेन्द्रियः ५ सप्तागाराण्यपूर्वाणियान्यसंकल्पितानिच संसरेत्तानिशनकैर्विधूमेभुक्तवज्जने ६ भ्रूणघ्नेदेहिमेभिक्षामेनोविख्याप्यसंचरेत् एककालंचरेद्भिक्षामलब्धावुदकंपिवेत् ७ एवंसंचरमाणस्तु ब्रह्महत्यांब्रुवन्सदा पूर्णेतुद्वादशेवर्षे ब्रह्महत्यांव्यपोहति ८ ब्राह्मणावसथान्वर्जयेत् नप्रविशेद् दूरेस्थित्वाभिक्षांयाचेत देवांश्चतदागारेभ्योदूरेस्थित्वानमस्कुर्यात्। विष्णुः ॥ ब्रह्मचारिमृदुर्दांतोधर्मारामःशुचिःक्षमी ॥ स्नानव्रतपरोनित्यंचीरवस्त्रो जिनीजटी १ कुतपक्षौमशाणींयवल्कवासामलाचितः ॥ कृशाङ्गोलोमशश्शान्तःसुखदुःखविवर्जितः २ मद्यतैलक्षरस्वादुसंगवर्ज्योजितेंद्रियः देवागारगुहाकुंजचैत्यवृक्षादिकेतनः ३ चरेद्ब्रह्महनःसर्वंव्रतंद्वादशवार्षिकम् ॥ सनाप्तेतुशतंदद्याद्गवामस्मिन्व्रतेशुभे ॥ ४ ॥

मल है स्वभाव जिसका रोकलेयां हैं इंद्रियां जिसने धर्म विषें है आराम जिसको पवित्र और क्षमा करण वाला स्नानकरणा व्रतकरणा इसमे तत्पर नित्यंप्रति धारण कीयेहैं चीरवस्त्र जिसने अथवा धारया हैं चर्म जिसने और धारीहै जटा जिसने १ और कंबल अलसीवस्त्र शणवस्त्र भूर्जपत्र एह हैं वस्त्र जिसके और मलयुक्तहै शरीर जिसका और व्रत करके कृश हैं शरीर जिसका और लोमश्च क्या क्षौरहीन हैं और शांतहै स्वभाव जिसका और सुखदुःखको सहारणवाला २ और मद्य तैललवण स्वादु अन्न संग इनतें वर्जित और जितेंद्रियहोकर देवतामंदिर अथवा गुफा कुंजश्मशानका वृक्ष इत्यादिहैं स्थान जिसके ३ ऐसा होकर ब्रह्महा बारां वर्षका संपूर्ण व्रतकरे और जब एहशुभव्रत समाप्त होजावे तब सौ १०० गौदान करके ब्राह्मणांको देवे ४ ॥

अथवा पचास गौआं देवे अथवा पचीस अथवा दश गौ देवे जो भिक्षा करके एकत्र करीहैं और ब्राह्मणांको अपनी शक्तिके अनुसार भोजन देवे और वस्त्र निवेदन करे ॥ ५ ॥ और मृदु इत्यादि पूर्वपाठ को व्याख्या है क्या मृदु क्या कठोर नहि और दान्त क्या शीत उष्णके सहारणे वाला और धर्माराम क्या अपने प्रायश्चित्त करणेमेहै प्रीति जिसकी और चीर क्या वस्त्रका टुकडा और कुतप क्या कंवल और क्षुमा अलसी औरशण इनदोनोकी त्वचा ऐसे हैं वस्त्र जिसके इसमे भी एहविचार है कि इनके वीचसे कोई वस्त्र होवे सभका ग्रहण नहि है क्षर क्या लूण और कुंज गव्हर चैत्य श्मशान वृक्ष भेक्ष संभृत क्या भिक्षा करके प्राप्त । इसतें आदिक विहित जो धर्महैं सो सभ स्मृतियांतें जानणे

शतार्द्धवातदर्द्धवादशवाभैक्ष्यसंभृताः विप्राणांभोजनंवस्त्रंयथाशक्तिनिवे दयेत् ५ मृदुरकठोरोदान्तः शीतादिसहिष्णुर्धर्मारामःस्वप्रायश्चित्तरतः चीरंवस्त्रखण्डंकुतपःकंवलः क्षुमाअतसीशणःप्रसिद्धस्तयोर्वल्कोवल्कलंत्व गितियावत्।तन्मयवस्त्रंचीरादीनिवस्त्राणिकल्प्यंते क्षरोलवणं कुंजोगव्हरं चैत्यवृक्षःश्मशानवृक्षः ॥ भैक्ष्यलब्धाएवमाद्याअविरुद्धधर्माःस्मृत्यन्त रेभ्योवोद्धव्याः॥ विरुद्धास्तुविषयव्यवस्थयानुष्ठेयाः॥ द्वादशाब्दव्रतमि दंस्वकामतो ब्राह्मणवधे द्रष्टव्यं एतद्विषयकमेव मानवं वाशिष्ठंच । तेचवि रुद्धाधर्म्मा द्वादशाब्दव्रतातिरिक्तामनूक्ता यथा लक्ष्यंशस्त्रभृतांवास्या द्विदुषामिच्छयात्मनः प्रास्येदात्मानमग्नौवासमिद्धेत्रिरवाक् शिराः १ ॥

योग्यहैं और विरुद्ध धर्म जोहैं सो सभ विषय व्यवस्था करके अनुष्टान करणे योग्यहैं इति ॥ एह जो वारां१२ वर्षका व्रतकिहाहै सो कामनाते विना जो ब्राह्मणवधहै उसविषे जानना ॥ और मनुजीने और वशिष्टजीने जोव्रतकिहाहै सोभी कामनाते भिन्न ब्राह्मणवधविषे हि जानना ।और मनुजीने जो व्रतकिहेहैं सो वारांवर्षके नहिहैं और इसव्रतते भिन्नहैं । सोजैसेहै तैसादि खाइदेहैं । लक्ष्यमिति इस स्थानविषे इनश्लोकोंका सामान्य अर्थ करतेहैं । और व्याख्या इनकी आगेहोगी ॥ और ब्राह्मण मारण वाला पुरुष अपनी शुद्धिके वास्ते वहुत चतुर जो शस्त्र धारीहैं तिनका लक्ष्यरूप होकर आगेस्थित होवे ॥ अथवा अपने शरीरको अधःशिर करके जगीहोई अग्नि विषे तीनवारी प्रक्षेपकरे १ ॥

यजेतेति अथवा अश्वमेध करके यजन करे अथवा स्वर्जितयज्ञ करके यजन करे ॥ अथवा गोमेध करके यजनकरें ॥ अथवा अभिजित और विश्वजित इनकरके भिन्न २ यजन करे अथवा त्रिवृत यज्ञ और अग्निष्टोम इनकरके यजन करे ॥ २ ॥ अथवा चार वेद विषे एक वेदका जपकरदा २ सौ १०० योजन मार्ग गमनकरे अथवा नियतेन्द्रिय और मितभुक् होवे ब्रह्महत्या दूर करणके वास्ते ॥ ३ ॥ सर्वेति । वेदविद् ब्राह्मणके तांयीं अपना सर्वस्व दे देवे अथवा जीवनके वास्ते पूर्ण धन ब्राह्मणको देवे जिसको १०० वर्ष तक खंदा रहे ॥ अथवा सहित सामग्रीके घर ब्राह्मणके तांयीं देवे ॥ ४ ॥ अथवा हविष्य भुक् हुया २ प्रतिस्रोतःसरस्वतीको अनुसरणकरे ॥

यजेतवाश्वमेधेनस्वर्जितागोसवेनवा अभिजिद्विश्वजिद्भ्यांवात्रिवृताग्निष्टुतापिवा ॥ २ ॥ जपन्वाऽन्यतमंवेदं योजनानांशतंव्रजेत् ब्रह्महत्यापनोदाय मितभुङ्नियतेन्द्रियः ॥ ३ ॥ सर्वस्वंवेदविदुषे ब्राह्मणायोपपादयेत् धनंवाजीवनायालं गृहंवासपरिच्छदम् ॥ ४ ॥ हविष्यभुग्वानुसरेत्प्रतिस्रोतःसरस्वतीम् ॥ जपेद्वानियताहारस्त्रिर्वैवेदस्यसंहितामिति ॥ ५ ॥ अथैषामर्थः लक्ष्यमिति धनुः शराद्यायुधधारिणां विदुषां ब्रह्मवधपापक्षयार्थमयंलक्ष्यीभूत इत्येवं जानतां स्वेच्छया वाण लक्ष्यभूतोवावतिष्ठेदितिकुलूकभट्टः विदुषामिच्छयेत्यपरार्कः ॥ यावन्मृतो मृतकल्पोवा विशुध्येत् ॥

अथवा नियताहारहोकर तीनवार वेदकी संहिताको जपे ॥ ५ ॥ एह संक्षेपसें अर्थ कियाहै आगे इनका व्याख्यान अर्थ होगा इति ॥ अब पूर्वोक्त श्लोकोंका अर्थ लिखते हैं लक्ष्यमिति लक्ष्य क्या धनुष वाण इत्यादि शस्त्रधारी जो पुरुष है कैसे है जब शस्त्रको चलाने लगें उस काल विषे ब्राह्मण वधका पाप दूर करण वास्ते एह पापी सन्मुख नशानेके स्थानमे आकर स्थित होया है इस वातको जो जानते हैं उनके आगे वाणका नशाना वनकर अपनी इच्छामें स्थितहोवे और वाणके लगणे करके जब मृत होजावे अथवा मरणवाला होजावे तद शुद्ध होजाता है अर्थात् इस प्रकार करणे से उसकी ब्रह्महत्या दूर होतीहै ॥

सोई याज्ञवल्क्यजीने किहाहै संग्रामइति ब्रह्महा पुरुष जेकर युद्धविषे मृतहोजावे अथवा नशा ना वणके स्थितहोया मृतहोजावे अथवा प्रहार करके अतिपीडाको प्राप्त होकर जीवता रहे तद उह शुद्ध हुंदाहै अर्थात् ब्रह्महत्याते मुक्तहुंदाहै। एह एक प्रकारहै इति १ आगे दूसराप्रकारहै क्या ब्रह्महा पुरुष अतिप्रज्वलित अग्नि विषे हेठ मुख करके तीन बारी अपने शरीरको पा देवे जेकर मृत होजावे तद भी और जेकर बच रहे तदभी उह शुद्धहुंदाहै एह आपस्तंबजी का वचनहै इसमेंभी ऐसे पतित होवे जिस्तें मरजावे इति और एह दोनो प्रायश्चित्त और आगे कहना जो है अश्वमेध करके पूजन करे एह जो तीन प्रकार प्रायश्चित्त है सो कामनाते क्षत्रीको ब्राह्मण वध विषे किहाहै अर्थात् जो क्षत्री जानकर ब्राह्मण वध करे उसके वास्ते एह तीन प्रकारका प्रायश्चित्त जानना। और मनुकाश्लोक लिख करके व्याख्यान कियाहै भविष्य पुराणविषें लक्ष्यमिति इसश्लोककी व्याख्या पूर्वकी न्याईं जाननी १ यजेतेति ब्रह्मघातक जो

तदाहयाज्ञवल्क्यः ॥ संग्रामेवाहतोलक्ष्यभूतःशुद्धिमवाप्नुयात् मृतकल्पः प्रहारार्त्तोजीवन्नपिविशुध्यति१इत्येकःप्रकारः॥अग्नौप्रदीप्तेवाऽधोमुखस्त्रीन् वारान् शरीरं प्रक्षिपेत् तथाप्रास्येतयथाम्रियेतेत्यापस्तंववचनात् एवंप्रक्षिपेत् एतत्प्रायश्चित्तद्वयमनन्तरेवक्ष्यमाणंच यजेतवाश्वमेधेनेत्येवंप्रायश्चित्तत्रयमिदंकामतःक्षत्रियस्य ब्राह्मणवधविषयम् मनुश्लोकमेवालिखित्वायथाव्याख्यानंभाविष्ये लक्ष्यंशस्त्रभृतांवास्याद्विदुषामिच्छयात्मनः ॥ प्रास्येदात्मानमग्नौवासमिद्धेत्रिरवाक्शिराः १ यजेतवाश्वमेधेनक्षत्रियोविप्रघातकः प्रायश्चित्तत्रयंह्येतत्क्षत्रियस्यप्रकीर्त्तितम् २ क्षत्रियोनिर्गुणोधीरंब्राह्मणंवेदपारगं॥ निहत्यकामतोवीरलक्ष्यःशस्त्रभृतांभवेत् ३ चतुर्वेदविदंधीरंब्राह्मणंचाग्निहोत्रिणम् निहत्यकामादात्मानंक्षिपेदग्नाववाक्शिराः ॥ ४ ॥

क्षत्रीहै सो अश्वमेध यज्ञ करके यजनकरे अर्थात् जोक्षत्री जानकर ब्राह्मणको मारदेवे सो अपनी शुद्धि वास्ते अश्वमेध यज्ञ करे एह तीन प्रकारका प्रायश्चित्त क्षत्रिकोहि किहाहै २। इनां तिना व्रतांकी व्यवस्था करके लिखतेहैं क्षत्रियइति और निर्गुण जो क्षत्रीहै जिसविषें कुछभी गुण नहि सो जेकर जिसने संपूर्ण वेद अध्ययन कीयाहै और धैर्य करके युक्तहै तिस ब्राह्मणको मार देवे जान करके सो क्षत्री शस्त्रधारी शूरवीरका लक्ष्य होकर स्थित होवे ३ (दूसरा) चार वेदके जानने वाला और धैर्यधारी और नित्यप्रति अग्निहोत्र करने वाला जो ब्राह्मणहै तिसको कामनाते मारकर क्षत्री हेठ शिर करके अपने शरीरका अग्निविषें प्रक्षेप करे अर्थात् जोक्षत्री ऐसे गुणी ब्राह्मणको जानकरके हतकरे सो अग्निविषे दग्धहोने करके पवित्र होताहै ॥ ४ ॥

नीति और जो महीपति क्या क्षत्रिराजा आप तो गुणवान्होवे हे स्वामिकार्त्तिक सो क्षत्रीगुण हीन ब्राह्मणको कामनाते मारकर अश्वमेधयज्ञ करे । अर्थात् जो क्षत्रीराजा आपगुणवान् हो कर निर्गुण ब्राह्मणको जानकर मार देवे सो अश्वमेध यज्ञ करणे कर्के शुद्धहुंदाहै ॥ ५ ॥ और स्वर्जित जो यज्ञविशेष हैं जिस यज्ञ कर्के स्वर्गकी प्राप्ति होतीहै अथवा गो मेध जो यज्ञहै तिस कर्के अथवा अभिजित यज्ञ कर्के अथवा विश्व जित यज्ञ कर्के अथ वा अग्निष्टोम यज्ञ कर्के यजनकरे अर्थात् इनमेंसे कोई एक यज्ञ करे नारायणको प्रसन्नकरे और सभ देवताको तृप्त करे तदभी ब्रह्महत्याते मुक्त हुंदाहै ॥ एह जो ब्रह्मवध विषे प्रायश्चि त्त किहेहैं यज्ञरूप सो सभ तीन वर्ण वास्ते कल्पना कीयेहैं ॥ सोई भविष्यपुराण विषे लिख याहै स्वर्जितेति क्या अज्ञानकृत जो ब्राह्मण वध है तिसविषे हे वीर हे कार्त्तिकेय स्वर्जितादि

निर्गुणंब्राह्मणंहत्वाकामतोगुणवान्गुह यष्टावाश्वमेधेन क्षत्रियोयो महीपतिः ५ ॥ यजेतेति यजेत वा अश्वमेधेनेत्यनंतरं व्याख्यातं स्वर्जि तायागविशेषेण । गोसवेनवा अभिजिताविश्वजिता वात्रिवृता अग्निष्टुता वायजेत् ॥ एतानिचाज्ञानतोब्रह्मवधेप्रायश्चित्तानित्रैवर्णिकस्यविकल्पि तानि ॥ तदुक्तंभविष्यपुराणे स्वर्जितादेश्चयद्वीर कर्मणांपृतनापते अनुष्ठानं द्विजातीनां वधेह्यमतिपूर्वके १ जपान्निति वेदानांमध्यादेकंवेदंजपन् स्वल्पाहारः संयतेन्द्रियो ब्रह्महत्यापापनिर्हरणाय योजनानांशतंगच्छे त् ॥ एतदप्यज्ञानकृते जातिमात्रब्राह्मणवधे त्रैवर्णिकस्य प्रायश्चित्तम् तथाचभविष्यपुराणे अयमेव श्लोकः पठितो व्याख्यातश्च जातिमात्रंय दाविप्रंहन्यादमतिपूर्वकम् वेदविद्याग्निहोत्रीचतदातस्यभवेदिदम् १

यज्ञका अनुष्ठान करणा योग्यहै अर्थात् जो कोई पुरुष अज्ञानते ब्राह्मणका वध करे सो पूर्वोक्त जो स्वर्जितादि यज्ञ हैं तिनका अनुष्ठान करणे कर्के शुद्ध हुंदा है ॥ १ ॥ जप न्निति चारवेदके मध्यमे एक वेद का पाठ करे और थोडा भोजन करता हुया इंद्रियांकों रोक कर ब्रह्महत्या दूर करण वास्ते सो १०० योजन प्रमाण मार्ग चले ॥ एह भी सभ अज्ञानसे कीया जो जाति मात्रब्राह्मणवध है उस विषे तीन वर्णको प्रायश्चित्त जान ना ॥ तैसेंहि भविष्य पुराण विषे लिखयाहै एहि श्लोक पूर्व मूलमे भी लिखयाहै और व्याख्या भी इसकी होगयीहै ॥ जातिमात्रमिति जो ब्राह्मण वेदके जानने वाला और अग्निहोत्री जेकर अज्ञानते जातिमात्र ब्राह्मणको मार देवे तद उसवास्ते एह पूर्वोक्त प्रायश्चित्त किहाहै इति १

सर्वस्वमिति ॥ अथवा संपूर्ण वेद पठन करनवाले ब्राह्मणको अपना सर्वस्वदेवे ॥ अथवा जितनां धन उमर भर विषे उपजीवका वास्ते वहुत होवे अर्थात् जितने धन कर्के सारी आयुषा ब्राह्मणकी उपजीवका होवे उतनाधन देवे ॥ अथवा संपूर्ण घरके उपयोगी धन अन्नादि सभ सामग्री कर्के युक्त घरकोहि देदेवे ॥ इसतें लिखाहै सर्वस्वमित्यादि वाक्यते जीवनपर्याप्त सर्वस्व वा घर देना योग्यहै और इसते न्यून नाहि देणा ॥ और इसका एह अभिप्राय है कि जेकर ब्रह्महा कुटुंवी न हो और धनी होवे तदतां सर्वस्व ब्राह्मणको देवे और जेकर कुटुंवी होवे तद सभ सामग्री कर्के युक्त गृह देवे एह मिताक्षराविषे लिखयाहै ॥ और एह प्रायश्चित्त जातिमात्र ब्राह्मण वध विषे ब्राह्मणको जानना अर्थात् जे

सर्वस्वमिति सर्वस्वंवा वेदविदे ब्राह्मणायदद्यात् यावद्धनं जीवनाय समर्थं गृहंवा गृहोपयोगिधनधान्यादियुतम् अतःसर्वस्वं वा गृहं सपरिच्छदन्दद्यात् जीवनायालमिति वचनात् जीवनपर्याप्तंसर्वस्वंगृहंवादद्यान्नततोऽल्पम् ब्रह्महानिष्कुटुंवीधनीचेत्तदा सर्वस्वंदद्यात् सकुटुंवीचेत्तदासपरिच्छदंगृहंदद्यादिति मिताक्षरा॥ एतच्च जातिमात्रब्राह्मणवधे ब्राह्मणस्य प्रायश्चित्तम् ॥ तथाचभविष्यपुराणम् ॥ जातिमात्रंयदाहन्याद्ब्राह्मणंब्राह्मणोगुह वेदाभ्यासविहीनोवै धनवानग्निवर्जितः १ प्रायश्चित्तंतदाकुर्यादिदम्पापविशुद्धये धनंवाजीवनायालं गृहंवासपरिच्छदम् २ जीवनपर्याप्तधनदानासमर्थोगृहंसपरिच्छदं तदसमर्थः सर्वंदद्यात् ॥ परिच्छदो गृहोपकरणजातम्

कर ब्राह्मण किसी जातिमात्र ब्राह्मणको मारदेवे उह ऐसा प्रायश्चित्त करणे कर्के शुद्ध होताहै इति ॥ तैसेहि भविष्य पुराण विषे लिखयाहै जातिमात्र मिति हे स्वामिकार्त्तिक जो ... ब्राह्मण धनयुक्त होवे और वेदाभ्यासते रहितहोवे और अग्निहोत्रतेभी रहितहोवे १ सो जेकर जातिमात्र ब्राह्मणको मार देवे तद अपनी शुद्धि वास्ते एह प्रायश्चित्त करे क्या सो जैसे एक ब्राह्मणको उमर भर उपजीवका वास्ते पूर्ण धन अथवा सभ सामग्री कर्के युक्त घरको देवे २ और जेकर उपजीवका वास्ते पूर्णधन देनेको सामर्थ्य न हो तद सपरिच्छदगृह देवे और जेकर ऐसा घर देने की सामर्थ्य न हो तद फेर सर्वस्वदेना चाहिये सर्वस्वदानकी एहव्यवस्थाहै

और सर्वस्व किसका नामहै सो अंगिरानें किहाहै सेति एकहजार अस्सी १०८० पैसेते ऊपरधन हो तद सर्वस्वहोताहै ऐसा सर्वस्व देनेकर्के राजन् निर्धन ब्रह्महा शुद्धहुंदाहै अर्थात् जिसपास कुछ धन नाहिहै सो सर्वस्व देनेकर्के सुखाला शुद्ध हुंदाहै इति हविष्येति नीवारादि जो मुनि अन्नहै तिनका और हविष्य अन्नका भोजन करे । और जिस स्थानतें लेकर पश्चिम पासेते अव स्रोतः क्या कनारे कनारे उतरादा होया समुद्र पर्यंत प्रतिसरस्वतीको जावे ॥ एह प्रायश्चित ज्ञान पूर्वक जातिमात्र ब्राह्मण वध विषे जानना अर्थात् जो कोई जातिमात्र ब्राह्मणको जाण कर मारे उह ऐसा प्रायश्चित्त करणे कर्के शुद्ध हुंदाहै इति ॥ तैसेहिलिखयाहै भविष्यपुराणविषे जातिमात्रेइति अज्ञानतें जातिमात्र ब्राह्मणके मारयां हे देवेन्द्र मारने वाला जेकर वेदहीन होवे और धन कर्के युक्त होवे १ तद तिसको एह प्रायश्चित्त कल्पना करे सो

अत्रांगिराः ॥ साशीतिपणसाहस्रादूर्ध्वंसर्वस्वमुच्यते ॥ निर्द्धनोब्रह्महा शुद्धयेत्सुखाधिक्यान्नरेश्वर १ हविष्येति ॥ नीवारादिहविष्यान्नभोजी ॥ विख्यातप्रसरणादारभ्यपश्चिमादवस्रोतःप्रतिसरस्वतींयायात् ॥ एतच्च जातिमात्रब्राह्मणवधेज्ञानपूर्वके ॥ तथा भविष्यपुराणे ॥ जातिमात्रेहतेविप्रेदेवेन्द्रमतिपूर्वकम् हन्तायदावेदहीनोधनेनचभवद्युतः १ तदैवकल्पयेतस्यप्रायश्चित्तंनिबोधमे हविष्यभुक्करेद्वापि प्रतिस्रोतःसरस्वतीम् अथवापरिमिताहारस्त्रीन्वारान्वेदसंहिताम् २ संहिताग्रहणात्पदक्रमव्युदासः अत्रापिभविष्यपुराणीयोविशेषः जातिमात्रंतुयोहन्याद्विप्रन्त्वमतिपूर्वकम् ब्राह्मणोत्यन्तगुणवान् तेनेदंपरिकल्पयेत् १ जपेद्वानियताहारस्त्रिर्वेवेदस्यसंहिताम् ऋचोयजूंषिसामानि त्रैविद्यास्थसुरोत्तम २

प्रायश्चित सुन क्या उह हविष्यान्न भोजनकरे और प्रतिस्रोतः सरस्वतीको जावे ॥ अथवा अल्पभोजन करता हुया तीनवार वेदसंहिताका पाठकरे २ और इसस्थानमे वेदसंहिताग्रहण करके पदक्रमका ग्रहण नहि है (धनेनचभवेद्व्यतः) इसमें कोई ऐसाभी अर्था करदेहैं कि धनहीन होवे तद ऐसा प्रायश्चित्त करे एह अर्थ (द्रु) निन्दाविम्मृत्योः इसधातुकाहै और इसविषे भविष्य पुराणीय विशेषहै जातीति जो पुरुष जातिमात्र ब्राह्मणको अज्ञानतें मारे और सो ब्राह्मण अत्यंतगुणवान् हो तिस कारण करके एहप्रायश्चित्तकरे १ क्या थोडा भोजन करताहुया तीन वारी वेदसंहिताका पाठकरे अथवा ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद एह जो त्रैविद्याहै तिसका पाठकरे हे सुरोत्तम २

इसविषे स्वामिकार्त्तिकके प्रति महादेवका वाक्यहे पापानामिति हे वीर हे स्वामिकार्त्तिक ऋषि योंने वडे पापोंके मध्यविषे प्रथमभाव किसका किहाहै सो लिखतेहैं क्या तिन संपूर्ण पापोंके मध्यविषे ब्राह्मणहत्याका प्रथम ग्रहण कीयाहै १ और तिसविषेभीहे सुव्रत ब्राह्मण वधविषे मनु जीने क्रम पूर्वक तेरां १३ प्रकारका प्रायश्चित्त किहाहै २ सो संपूर्ण विषय करके सर्वत्र यथायोग्य स्थापन कीयेहैं अर्थात् मनुजीने ब्रह्महत्याके प्रायश्चित्त तेरां १३ प्रकारके जो किहे हैं सो सभ जैसी ब्रह्महत्याहोवे उसके अनुसार जानने सोपिच्छेआगयेहैं और हे महावल अन्यथा क्या इसव्य वस्थाके विना जेकर पाप थोडाहो और उस अल्प पापके उपदेशते प्रायश्चित्त अधिक होजावे तद अयोग्य होताहै अर्थात् पाप अल्पहो और प्रायश्चित्त अधिकदेना और अधिक पापहो जेकर

तत्रैवगुहंप्रतीश्वरकथनम् पापानांमहतांवीरप्राथम्यमृषिभिर्गु हतेषांच ब्रह्महत्यायाःप्रथमंग्रहणंस्मृतम् ॥ १ तत्रापिब्राह्मणवधेप्रायश्चित्तानिसु व्रत मनुनाकीर्त्तितानीहत्रयोदशयथाक्रमम् २ व्यवस्थाप्यानिसर्वाणिता निवैविषयेणतु अन्यथाहिलघूनांतुउपदेशान्महावल ३ गुरूणामुपदेशस्य नयोग्यत्वंभवेदिह स्मृत्यन्तराण्यथालोच्यपुराणानिचकृत्स्नशः ४ एवंनि रूप्योविषयोगुरुहत्याद्यपेक्षया तत्रसामान्यतोहत्वाब्राह्मणंसुरसत्तम ५ प्रायश्चित्तन्तुवैकृत्वाविधिवद्द्वादशाब्दिकम् प्राप्नोतिशुद्धिंजीवान्तेस्वर्गतिं स्वजनैस्सहेति ६ ॥ अपरार्केविष्णुः अश्वमेधेनशुध्येयुर्महापातकिनस्त्विमे पृथिव्यांसर्वतीर्थानांतथानुसरणेनवा १ ॥

उसको प्रायश्चित्त अल्पदेना तद एह योग्य नहिहै और इस वास्ते संपूर्ण स्मृतियां और पुराण इनको देख करके ४ गुरुहत्यादिके अनुसार प्रायश्चित्त निरूपण करणा योग्यहै और तिसविषे लिखाहै क्या सामान्यते ब्राह्मणको मार करके हे सुरसत्तम ५ एह वारां १२ वर्षोका प्रायश्चि त्तकरे ऐसे करणे करके शुद्धिको प्राप्त होजाताहै और अंतविषे संबंधीयोंके साथ स्वर्गको प्राप्तहोताहै इति ६ अपरार्कविषे विष्णुजीने किहाहै अश्वेति एह जो महापातकी हैं सो सं पूर्ण अश्वमेध यज्ञकरके शुद्ध होतेहैं अथवा पृथिवीविषे जितने तीर्थ हैं तिनकी यात्रा करणे करके पवित्र होतेहैं अर्थात् जो पुरुष महापातक करे ब्रह्महत्या सुरापान इत्यादि सो पुरुष अश्वमेधयज्ञकरे संपूर्ण तीर्थ यात्रा करे तद शुद्ध होताहै १

और महापातककी अनुवृत्तिविषे कश्यपजीने किहाहै ॥ जेकर कोई पुरुष महापातक करे सो अपनी शुद्धि वास्ते तीनवर्ष व्रत करे अथवा ब्राह्मणको प्रसन्नता वास्ते अपने शरीरके बराबर तोल कर सुवर्ण देवे तद शुद्ध हुंदाहै ॥ १ ॥ भविष्य पुराण विषे लिखयाहै मतिपूर्व मिति क्या जो कोई पुरुष जान कर्के जातिमात्र ब्राह्मणको मारे सो हजार गौ १००० अपनी शुद्धि वास्ते दान करे अथवा स्वर्जित नामा जो यज्ञविशेष है तिसको करे तद पवित्र हुंदाहै ॥ १ ॥ और अंगिरा जीने किहाहै परिषेति जो ब्राह्मणांको परिषद् कहीहै सो क्षत्रियांको दूनां होतीहै और वैश्यांको त्रिगुण होतीहै और परिषदकी न्याई व्रतभी जानना अर्थात् जो व्रत ब्राह्मण वास्ते किहाहै उसते दूना क्षत्रिको करणा योग्यहै ॥ और वैश्यको त्रिगुण करणा ॥ १ ॥ इस विषे भविष्यत्पुराणमें लिखयाहै क्षत्रिय इ

महापातकानुवृत्तौ ॥ कश्यपः ॥ वत्सरत्रितयंकुर्यान्नरःकृच्छ्रंविशुद्धये आत्मतुल्यंसुवर्णंवेंदद्याद्वाविप्रतुष्टिदम् १ भविष्यत्पुराणम् ॥ मतिपूर्वंयदाहन्याद्ब्राह्मणंजातिमात्रकम् गोसहस्रंतदादद्यादथवास्वर्जितायजेत १ अत्रांगिराः ॥ परिषद्याब्राह्मणानां साराज्ञांद्विगुणाभवेत् ॥ वैश्यानां त्रिगुणाचैव पर्षद्वद्व्रतंस्मृतम् १ अत्रभविष्यत्पुराणम् ॥ क्षत्रियोब्राह्मणंहत्वा प्रायश्चित्तद्वयंचरेत् ॥ यजेतवाश्वमेधेनक्षत्रियोविप्रघातकः १ प्रायश्चित्तद्वयं द्विर्द्वादशवार्षिकमित्यर्थः ॥ परिषदित्यांगिरसवचनंमिताक्षरायांव्याख्यातं यथा एवंच ब्राह्मणानांयेनहन्तृहन्यमानगतगुणाविशेषेणयः प्रायश्चित्तविशेषोव्यवस्थितः सएव तद्गुणविशिष्टे क्षत्रियादौ हन्तरि द्विगुणस्त्रिगुणोवेदितव्यः ॥ अनयैवदिशा क्षत्रियवैश्यादावपि हीनेनोत्कृष्ट वधे दोषगौरवात् प्रायश्चित्तस्यापि द्वैगुण्यादि कल्पनीयम् ॥

त्ति क्षत्री ब्राह्मणको मार कर दूणा प्रायश्चित्त करे अर्थात् २४ वर्षका व्रत करे अथवा इनां दोयांकी जगा अश्वमेध करे तद शुद्ध हुंदाहै ॥ १ ॥ और परिषद एह जो अंगिराका वचनहै इसकी व्याख्या मिताक्षरा विषे कीतीहै जैसे इसजगा ऐसीव्यवस्था है ब्राह्मणांको जिस मारण वाले विषे और जो मृत होयाहै उसविषे जो गुणविशेषहै तिस कर्के जो प्रायश्चित्तविशेष स्थापन कीयाहै सोई प्रायश्चित्त क्षत्रियादि हंताविषे द्विगुण जानने योग्यहै अर्थात् ब्राह्मण ब्राह्मणकोमारे तद पूर्वोक्त प्रायश्चित्तहै ॥ और क्षत्री ब्राह्मणकोमारे तद दूना प्रायश्चित्त और वैश्यको त्रिगुण और शूद्रको चतुर्गुण ऐसीव्यवस्थाजाननी ॥ और इसीरीतिकर्के क्षत्रिवैश्यादिकों विषे हीन कर्के उत्कृष्टवधमे दोष गौरवते प्रायश्चित्तकीभी द्विगुणतादि कल्पना करणे योग्यहै

और प्रायश्चित्तकी गौरवता दंड गौरवताते जाननी अर्थात् जिस प्रायश्चित्तीको जैसा दंड किहाहै प्रायश्चित्तभी तैसाहि जानना सोई किहाहै प्रतिलोमाति प्रतिलोमापवादविषे द्विगुण त्रिगुण दंड किहाहै और वर्णोके अनुलोम करके आधा २ घटानेते दंडहोताहै अर्थात् जेकर हीनजाति उत्तम जातीका अपमानकरे तद दूना तीणा इत्यादि दंड जानना और जेकर उत्तमजाति किसी हीनजातीका अपमान करे तद आधा २ घट दंड होताहै १ और जो चतुर्विंशति मतविषे वचन किहाहै क्या जो कुछ ऋषियोंने ब्राह्मणको प्रायश्चित्त निश्चय कीयाहै उसका पादोनादिक्षत्री आदि को जानना उसका पादोन क्षत्रीकरे और आधा वैश्यकरे और शूद्र एक पाद करे ऐसा प्रायश्चित्त सभ पापविषे जानना अर्थात् संपूर्ण पाप विषे प्रायश्चित्तका विभाग ऐसा कीयाहै ऋषियोंने क्या ब्राह्मणको संपूर्ण प्रायश्चित्तहै और क्षत्रिको तीनहिस्से और वैश्यको आधा और शूद्रको एक पाद इति १ एह जो प्रायश्चित्त लिखयाहै सो प्रतिलोम करके कीया जो चार प्रकारका साहस है तिसते भिन्न

दोषगौरवं दंडगौरवादवगम्यते ॥ यथोक्तम् ॥ प्रतिलोमापवादेषु द्विगुणस्त्रिगुणोदमःवर्णानामानुलोम्येन तस्मादर्धार्धहानित इति॥ १ ॥ यत्तु चतुर्विंशतिमतवचनम् प्रायश्चित्तंयदाम्नातंब्राह्मणस्यमहार्षिभिः पादोनंक्षत्रियःकुर्यादर्धंवैश्यःसमाचरेत् शूद्रःसमाचरेत्पादमशेषेष्वपिपाप्मसु इति तत्प्रतिलोमानुष्ठितचतुर्विधसाहसव्यतिरिक्तविषयंप्रकीर्णकादावेतद्विषयइत्यर्थः॥ शूलपाणिस्तु पादोनंक्षत्रियइत्येतद्विषयंसामान्यविशेषन्यायेनब्रह्मवधेतरपरमभक्ष्यभक्षणपरंच संप्रयोगप्रकरणादिति तथामूर्धावसिक्तादीनामप्यनुलोमोत्पन्नानां दंडवत्प्रायश्चित्तमूहनीयम् ॥ दर्शितंच दंडतारतम्यम्

विषय जानना । जैसे क्षत्री ब्राह्मणको मारे तद उसको ब्राह्मणते दूना प्रायश्चित्त किहाहै एसेहि वैश्यको क्षत्रीके मारण विषे और शूद्रको वैश्यके मारण विषे दूना २ होताहै इस कारणते भिन्न विषय जानना । और प्रकीर्णकादि पापों विषे पाद २ हानि एहि विषयहै ॥ और शूलपाणिने तो पादोन क्षत्री करे एह इस अभिप्रायसे किहाहै क्या सामान्य विशेष न्याय करके ब्राह्मण वधते भिन्न पाप विषे जानना और अभक्ष्यभक्षणपर है ऐसे प्रकरणते युक्तकीयाहै । और तैसेहि मूर्धावसिक्त इत्यादि अनुलोमोत्पन्न जो चौट ६४ जातीहैं तिन सभको दंडकी न्याईं प्रायश्चित्त भी कल्पना करणा योग्यहै । अर्थात् मूर्धाभिषिक्त उसका नामहै जो ब्राह्मणते क्षत्रियास्त्री विषे उत्पन्न होवे ऐसेहि और भी क्षत्रीते वैश्या विषे और वैश्यते शूद्राविषे उत्पन्न होवे । एह अनुलोम जात किहेहैं और इनको दंडकीभी तारतम्यता दिखाई है ॥

दंडप्रणयनामिति वर्ण चार ब्राह्मणादि और उत्तम अधम चौट ६४ जाति इनको यथायोग्य दंड देणा योग्यहै सो क्रम लिखयाहै और ब्राह्मणकी चार स्त्री कहींहैं और क्षत्रीकी तीन स्त्री और वैश्यकी दो और शूद्रकी एक स्त्री ऐसेहि इनमेसें जो उत्पन्न हैं सो भिन्न २ जाति कहींहैं आगे इनके संक्षेप करके मनुजीने चौंट भेद लिखेहैं । और तैसेहि मूर्धावसिक्तको ब्राह्मण वध विषे ब्राह्मणतें अधिक क्षत्रीते न्यून प्रायश्चित्त हुंदाहै ॥ इस कारणते अठारां वर्षका प्रायश्चित्त हुंदाहै अर्थात् ब्राह्मणको ब्राह्मण वध विषे द्वादश वर्षका व्रतहै ॥ और क्षत्रीको ब्राह्मण वध विषे चौवीस २४ वर्ष हुंदाहै और इस वास्ते मूर्धावसिक्तको ब्राह्मणते अधिक क्षत्रीसे न्यून १८ वर्ष प्रायश्चित्त हुंदाहै इति और ऐसे अनुलोमोत्पन्न जो हैं तिनको प्रायश्चित्त दिखायाहै और इसी रीति करके प्रतिलोमोत्पन्न जो हैं तिनकोभी अधिक प्रायश्चित्त जानने योग्यहै ॥ और तैसेहि आश्रमियोंकोभी अंगिराजीने विशेष दिखायाहै गृहस्थेति जो २

दंडप्रणयनंकार्यंवर्णजात्युत्तराधरैरिति ततश्च मूर्धावसिक्तस्य ब्राह्मणवधे ब्राह्मणादतिरिक्तं क्षत्रियान्न्यूनमप्यर्धं द्वादशवार्षिकं भवति १८ अनयैवादिशाप्रतिलोमोत्पन्नानामपि प्रायश्चित्तगौरवमूहनीयम् तथाश्रमिणामपि विशेषांगिरसा प्रदर्शितः गृहस्थोक्तानिपापानि कुर्वंत्याश्रमिणोयदि शौचवच्छोधनंकुर्य्युरवाग्ब्रह्मनिदर्शनादिति १ एतच्छौचंगृहस्थानांद्विगुणंब्रह्मचारिणाम् त्रिगुणंतुवनस्थानांयतीनांतुचतुर्गुणमित्युक्तशौचवदित्यर्थः ॥यथाचार्य्यादीनां शौचं द्विगुणादिविधीयते तथा शोधनंप्रायश्चित्तमपि द्विगुणादि भवतीत्यर्थः

पाप गृहस्थीयोंके किहेंहैं ओही पाप जेकर आश्रमीकरे तद शौचकीन्याईं प्रायश्चित्त करे ब्रह्मज्ञानते उरे १ जैसे गृहस्थीते आश्रमीको शौच करणा कहींहै तैसेहि प्रायश्चित्त करणा किहाहै जितना चिर ब्रह्मज्ञान नहि हुया और ब्रह्मज्ञानके होयां ज्ञानीको प्रायश्चित्तका अधिकार नहिहै आगे शौचप्रकार लिखयाहै १ एतादिति एह पूर्वोक्त शौच गृहस्थीको कहींहै और इसतें दूनां ब्रह्मचारी की जाननी और वानप्रस्थीको त्रिगुण और संन्यासी को चतुगुण शौच करणी कहींहै इति । एह जो शौच कहींहै तैसेहि शौचकी न्यांई प्रायश्चित्त भी आश्रमियोंको किहाहै ॥ और जैसे ब्रह्मचारी गृहस्थी वानप्रस्थी संन्यासी इनको दूनी त्रीणी चौगुणी शौच विधान करीहै तैसेहि प्रायश्चित्त भी दूना त्रीणा चौगुणा यथा क्रमकरके हुंदाहै इसका एह अर्थहै

और ब्रह्मचारीको जो दूना प्रायश्चित्त किहाहै सो सोला १६ वर्षकी अवस्थाते उपरंत जानणा अर्थात् जेकर ब्रह्मचारीकी अवस्था सोलां वर्षके उरे होवे तद उसको दूनाप्राय श्चित्त नहि किहा सो लिखयाहै क्या जो सोलां वर्षतेंउरे अवस्थावाला वालकहै सो आधे प्रायश्चित्तके योग्य हुंदाहै इस वचनते इस कारणते बालकको आधा प्रायश्चित्त हुंदाहै इति और पतितको अग्निहोत्रकी अग्निका त्याग नहि किसवास्ते कि पतितकोभी अश्वमेध यज्ञका विधान कीयाहै इसते जानीदाहै ॥ सोई कात्यायनजीने किहाहै महापातकोंति साग्नि क जो ब्राह्मणहै क्या अग्निहोत्री सो जेकर दैव योगते पतित होजावे तद उसके जो पुत्रादिहैं सो उतना चिर अग्निकी रक्षाकरें जितना चिर उसका पाप नाश नहि हो या और जब उह यथायोग्य प्रायश्चित्त करणे करके शुद्ध होजावे तद फेर पूर्वकी स्थापी वैतानकी अग्निको धारण कर लेवे अर्थात् फेर अग्निहोत्र नित्य करे १ और जेकर उह प्राय

ब्रह्मचारिणोद्विगुणादितु षोडशवर्षानंतरमेव वालोवाप्यूनषोडशः ॥ प्रायश्चित्तार्द्धमर्हतीत्यादिवचनात् पतितस्य वैतानाग्नित्यागोनास्तीति अश्वमेधादिकृताविधानाद्गम्यते अतश्चाहकात्यायनः । महापातकसंयुक्तो दैवात्स्यादग्निमान्यदि पुत्रादिःपालयेदग्नीन्युक्तआदोषसंक्षयात् १ प्राय श्चित्तंनकुर्याच्चेत्कुर्वन्वाम्रियतेयदि गृह्यंनिर्वापयेत्सर्वमुदस्येत्सपरिच्छदम् शमयेदुभयंवाद्भिरद्योग्निरभवद्यतः पात्राणिदद्याद्विप्रायदहेदप्स्वथवाक्षि पेत् २ आदोषसंक्षयादाप्रायश्चित्तापवर्गादित्यर्थः एवंचसतिवैतानंप्राक्षिपे दप्सुयज्ञपात्राणिसंदहेदित्यादिकंवचनं प्रायश्चित्तमकुर्वाणे द्रष्टव्यम् ॥

श्चित्त न करे अथवा प्रायश्चित्त करतियां मृत होजावे तद उसके पुत्रादि ऐसा कार्य करें क्या संपूर्ण अग्निको ग्रहण करके वुझा देवें अथवा अग्निहोत्रकी और भी जो सामग्रीहै तिस के साथ अग्निको जल विषे प्रवाहदेवें अथवा अग्निको और सामग्रीको शांत करदेवें २ कि सवास्ते कि जिस कारणते अग्नि जो है सो पूर्वकाल विषे जलांतेहि उत्पन्न होताभया और पात्र जोहैं सो सभ ब्राह्मणके तांई देदेवें अथवा सभ पात्रांको अग्नि विषेहि दग्ध करदे वें अथवा जल विषे सभपात्र प्रवाहदेवे और आदोप संक्षयात् इसका एह अर्थहै क्या जितना चिर प्रायश्चित्तका अपवर्ग नहि हुया अर्थात् प्रायश्चित्त यथार्थ नहि कीया एह अर्थहै और ऐसे होयां वैतानाग्निको जल विषे प्रवाहदेवे और यज्ञपात्रांको दग्ध करे इ त्यादि वाक्य प्रायश्चित्तके न करण विषे दे ने योग्यहै अर्थात् प्रायश्चित्त जेकर न होवे तद अग्निको जलमे पावे और [illegible] पात्र दग्ध करे इति

भविष्यत्पुराण विषें लिखयाहै प्रायश्चित्तेति हे सुराधिप वैश्य ब्राह्मणको मार करके तीन प्रकारका प्रायश्चित्त करे अपनी शुद्धि वास्ते एक वन विषें निवास करके भिक्षा मांग कर भोजन करणा ऐसेहि बारां १२ वर्ष व्रत करे ॥ १ ॥ और दूसरा एक किसी वेदका पाठ करे २ तीसरा किसी तीर्थके उद्देशसे सौ १०० योजन प्रमाण मार्ग गमन करे एह तीन प्रकार हैं और तिन्हां व्रतांकी साधारण विधि कहतेहैं ब्रह्मेति ब्रह्महत्याके दूर करण वास्ते अल्प आहार करणा और सभ विषय वासना रोकनी २ ॥ और मुंडनकरवाकर ग्रामके वाहर अथवा गौकेस्थानविषें निवासकरे अथवा किसीआश्रम विषें वृक्षमूलविषें गी और ब्राह्मण के हितमे रत हुया २ निवासकरे ऐसा प्रायश्चित्त करणे करकेवैश्य ब्रह्महत्या तेमुक्तहोताहे ३ ॥ और आगे शूद्र वास्ते लिखयाहै शूद्रइति शूद्र ब्राह्मणको मार क

भविष्यत्पुराणम् प्रायश्चित्तत्रयंवैश्योहत्वाविप्रंसुराधिप चरित्वाद्वादशा ब्दानिभिक्षाशीवनगोचरः १ जपेदन्यतमंवेदंयोजनानांशतंव्रजेत् ब्रह्मह त्यापनोदार्यमितभुङ्गनियतेन्द्रियः २ कृतवापनोवानिवसेद्ग्रामांते गोव्रजे पिवा आश्रमेवृक्षमूलेवा गोब्राह्मणहितेरतः ३ शूद्रोवाब्राह्मणंहत्वा प्राय श्चित्तचतुष्टयम् कुर्यादात्मविशुद्ध्यर्थंयथावच्छृणुसुव्रत ४ दत्वावेदविदेवि प्रेसर्वस्वंप्रथमंगुह हविष्यभुक्चरत्पश्चात्प्रतिस्रोतस्सरस्वतीम् ५ सेतुवंधं ततोगच्छेद्भिक्षाशीकृतवापनःगवार्थेब्राह्मणार्थेवा सम्यक्प्राणान्परित्यजेत्६ शंखः। अकामकृते ब्रह्महापरिपदोनुमते खट्वांगीगर्दभाजिनो मृण्मयपा त्रीपतितशिष्टान्नभोजी कपालध्वजो स्वकर्म विख्यापयं श्चरेद्भैक्षमेकका लाहारः शून्यागारं पर्वतगुहानदीवृक्षमूलनिकेतनः सएवंगोसहस्रं दत्वा द्वादशवर्षे शुद्धिमाप्नोति

र चार प्रकारका प्रायाश्चित्त अपनी शुद्धि वास्ते जैसे करे सोसुन हे सुव्रत ४ और हे गुह इस्वा मिकार्तिक प्रथम वेदजाननवाले ब्राह्मणको शूद्र अपना सर्वस्व दे करके हविष्य अन्नका भो जन करताहुया प्रतिस्रोतः सरस्वतीको जाकर प्राप्तहोवे ५ और तिसते अनंतर मुंडन करवा कर भिक्षामांगताहुया सेतुबंधको जावे अथवा गौके अर्थ अथवा ब्राह्मण वास्ते प्राणांको त्याग देवे ६ ॥ शंखजीने किहाहै कि ब्रह्महा शूद्रभी पार्षदकी आज्ञाकरके अकामकृत पापविषें ऐसाकरे क्या खट्वांग धारे और गर्दभका चर्म और मृण्मयपात्र और भिक्षाविषें भी गृहस्थी ने भोजनके पीछे पृथ्वी उप्पर स्थित कीया जो अन्नहै तिसको ग्रहण करके भोजन करे और कपालध्वजी इत्यादि कर्मकरके द्वादशवार्षिक व्रत करतियां शुद्ध हुंदाहै

और जेकर वीच ब्राह्मणकों मृत्युते रक्षा करे अथवा १२ द्वादश गौकीरक्षा करणेते अथवा अन्यकृत अश्वमेधविषें यज्ञांतस्नान करके पवित्र हुंदाहै और भविष्यपुराण विषें इसका विशेष किहाहै सो जैसेहै तैसा दिखाईदाहै हेवीर महात्मा शंखने जो प्रायश्चित्त किहाहै सो सभ यज्ञ विषें ब्राह्मण के मारण विषे जानना इति ॥

और कामनातें एक काल विषे अनेक ब्राह्मण वध विषें भी विशेष किहाहै भविष्यत्पुराण विषें कहा है हरनंदन कोई पुरुष एक निमित्त कों आश्रय करके एक काल विषें वहुत ब्राह्मणांकों जेकर मार देवे और १ एकको मारे अथवा दोको अथवा वहुतको मारे तद हे वीर एक समय विषें ऐसे मार करके उसने एक प्राणांतिक प्रायश्चित्तहि करणा योग्यहै अ

अन्तरावा ब्राह्मणं मरणान्मोचयित्वा गवां वा द्वादशानां परित्राणा त्सद्यएव वान्यकृताश्वमेधावभृथे स्नात्वा पूतोभवति ॥ पतितंभूमौ स्थापितं नतु हस्तेनदत्तं शिष्टभुक्तावशिष्टनत्वभुक्तेषुस्वकीयेपुप्रथमवेदत्तं तदन्नभोजीत्यर्थः अस्यभविष्यत्पुराणेविषयउक्तः तद्यथा शंखेनोक्तंतुयद्वीर प्रायश्चित्तं महात्मना तद्यज्ञगतविप्रस्य विनाशे परिकीर्तितमिति ॥ युगपत्कामतोवाऽनेकब्राह्मणवधेविशेषउक्तो भविष्यत्पुराणे ।एककालंय दाहन्याद्युगपद्धरनंदन निमित्तमेकमाश्रित्यहन्यतेवैकदाविभो १ ब्राह्म णंब्राह्मणौवीरब्राह्मणांश्चवहूनपि निहत्ययुगपद्वीरएकंप्राणांतिकंचरेत् २ युग्मम् एककालंएककालावच्छेदेनयुगपत्वहून्विप्रान्हन्यात् अथवा ए कंनिमित्तमाश्रित्यैकस्मिन्कालेवहुभिरेकोहन्यतेइत्यर्थः ॥ किन्त्वत्रसुरशा र्दूलविशेषंगदतोमम बुद्धिपूर्वाबुद्धिपूर्वविकल्पंशृणुपुत्रक ३ अकामतो यदाहन्याद्ब्राह्मणान्मानवोगुह चरेद्वनेतदाघोरेयावत्प्राणपरिक्षयः ४

र्थात् एक पुरुष एक निमित्त वास्ते वहुत ब्राह्मणांको अकेलाहि मारे अथवा एक निमित्तके आश्रय होकर एकहि काल विषें वहुतियोंने एक ब्राह्मण मारीये तद एह सभ प्राणांत प्राय श्चित्त करके शुद्ध हुंदाहैं इति ॥ २ और हे देवता विषें सिंह इस विषें कुछ विशेष मे कहता हुं सो तुम श्रवण करो क्या बुद्धि पूर्वक और अबुद्धि पूर्वक इनका विकल्पहै पुत्र श्रवण कर अर्थात् ऐसें पाप विषें ज्ञान अज्ञान करकें जो कुछ विशेषहै सो मेरेते तुम सुनो ॥ ३ अका मेति हे स्वामिकार्त्तिक कोई पुरुष कामनाते विना जेकर वहुत ब्राह्मणांको एक काल विषें एकहि प्रयोजन वास्तें मारे तद उतना चिर अति भयानक वन विषें विचरे जितनाचिर प्राण दूर नहि होये अर्थात् मृत्यु पर्यंत गव्हर वन विषें निवास करे इति ॥ ४ ॥

और जानकरके हे सुरसत्तम कोई पुरुष कामनाते वहुत ब्राह्मणांको मारे तद सो पुरुष जिस विधिकरके अपने शरीरको अग्निमे दग्ध करें तिस प्रकारको श्रवण कर ५ ॥ क्या करे कि निष्कालक होकर क्या जीवनकी आशा त्यागकर अर्थात् मृत्युका निश्चय करके अपने शरीर को वस्त्रसे लपेटे और कैसा उह वस्त्रहै घृतेति घृत करके जो भियाहे तिसको शरीरके उपर लपेट लेवे फेर अपना सर्वस्व ब्राह्मणके तायीं देदेवे ॥ ६ ॥ और तिसते अनंतर करीष क्या शुष्क गोमयकी चिता जगा कर प्रथम पाद उस विषें रख करके आदरते अपने शरीरको दग्ध कर देवे और ऐसेहि भय न करे और सिर पर्यंत दग्धहो जावे हेसुरसत्तम ॥ ७ ॥ और ऐसे पाप विषें हेमहाबाहो इस विधिसे शरीर दग्ध करणे कर के निर्दोष किहाहै अर्थात् जो कोयी पुरुष वहुत ब्राह्मणांको मारे तद ऐसे विधि पूर्वक

कामतश्चयदाहन्याब्राह्मणान्सुरसत्तम तदात्मानंदहेदग्नौविधिनायेनतच्छृणु५ भूत्वानिःकालकोवीरवेष्टयित्वाचवाससा घृताक्तेनमहावाहोदत्त्वासर्वस्वमेवहि ६ हित्वापादौकरीषाग्नौदहेदात्मानमादरात् आउत्तमाङ्गाद्विधिवदत्रस्थःसुरसत्तम ॥ ७ ॥ एवमत्रमहावाहोनिर्दोषःपरिकीर्तित इति ततश्चायमर्थः सिद्धइति ॥ यद्यकामतोयुगपदनेकब्राह्मणवधस्तदाद्द्वादशाब्दिकंतपउक्तं तदेव यावज्जीवंकार्यम् यदितु कामतस्तदोक्तप्रकारेणाग्निप्रवेशइति मिताक्षरायामपि द्वित्रिब्राह्मणवधे प्रायश्चित्तस्यतन्त्रत्वंपूर्वपक्षीकृत्य विधेःप्राथमिकादस्माद्द्वितीयेद्विगुणंचरेत् तृतीये त्रिगुणंप्रोक्तंचतुर्थेनास्तिनिष्कृतिरित्यादिना प्रायश्चित्तावृत्तिरेवसिद्धांतिता

शरीर त्याग करणे करके सो पुरुष शुद्ध हो जांदाहै इति ॥ अकामत इत्यादि श्लोकतें ऐहि अर्थ सिद्धहै इति जद कामनाते विना एककालविषें ब्राह्मणों का वध होजावे तद पूर्वजो द्वादश वर्षका तप किहाहै सो सारी आयुषा करता रहे और जेकर कामनातें करे तद पूर्वोक्त प्रकार करके अग्निविषें प्रवेश करे इति । और मिताक्षरा विषें भी ऐसा लिखाहै क्या दो तीन ब्राह्मण वध विषें प्रायश्चित्त तंत्रको पक्ष वना कर विधि को प्रथम होनेते प्रथम किहाहै अर्थात् एक वध विषें पूर्वोक्त प्रायश्चित्त जानना और दोकेवध विषें दून और तीनके वधविषें त्रिगुण और चारके वध विषें कुछ प्रायश्चित्त नहिहै अर्थात् उसको कोयी भी शुद्ध नहि करता इस वास्ते वारं वार आवृत्ति करें एहि सिद्धांत कियाहै

किंच और सर्प व्याघ्र इत्यादि जीव करके हन्यमान जो ब्राह्मणहै तिसकी रक्षा करणेते और ऐसेहि गौकी रक्षा करणेते अथवा अश्वमेध विषे यज्ञांत स्नान करणेतें ब्रह्महत्यातें शुद्ध हुंदाहै अर्थात् व्रतके बीचभी ऐसा कार्य होजावे तद आगे व्रतकी समाप्ति कर देवे इति १ यज्ञस्नान विषे विशेष किहाहै मनुजीने शीति भूमिदेव जो ब्राह्मणहैं तिनके और अभिषेकको प्राप्त जो क्षत्रीहैं तिनके समागम विषे अपने पापको अर्थात् ब्रह्महत्याको प्रकट कर्के यज्ञांतस्नानकरे तद पवित्र हुंदाहै १ और इसका एह अभिप्राय जानना क्या सोपापीपुरुष प्रथम अश्व

॥ किंच ॥ ब्राह्मणस्यपरित्राणाद् गवांद्वादशकस्यवा तथाश्वमेधावभृथस्नानाद्वाशुद्धिमाप्नुयात् १ सर्पव्याघ्रादिनाहन्यमानस्यब्राह्मणस्य परिरक्षणाद् ब्रह्महत्यातःशुद्धिमाप्नोति प्रक्रान्तंव्रतंकार्याभावात्तदैवोत्सृष्टव्यमथवा गवांद्वादशसंख्याकानांवधपरित्राणाच्चशुद्ध्यति यद्वाश्वमेधावभृथस्नानात् अश्वमेधावभृथेचविशेषमाहमनुःशिष्ट्वावाभूमिदेवानांनरदेवसमागमे स्वमेनोवभृथेस्नात्वाहयमेधेविमुच्यते १ भूमिदेवाब्राह्मणा अभिषिक्तःक्षत्रियो नरदेवस्तेषामन्योन्यसमागमे स्वमेनोब्रह्महत्यांशिष्ट्वाविख्याप्यावभृथस्नातःशुद्ध्यतीत्यर्थः अश्वमेधेब्राह्मणानामृत्विजां क्षत्रियस्य यजमानस्य समागमे ब्रह्महत्यापापंशिष्ट्वानिवेद्य तत्रैवतदाज्ञयाऽवभृथस्नातोब्रह्महत्यापापान्मुच्यते इतिव्याख्यानांतरम् ॥ एतच्चप्रक्रान्तद्वादशाब्दिकस्यैव यदाहशंखः अन्तरावाब्राह्मणंमरणान्मोचयित्वागवांद्वादशानांपरित्राणात्सद्यएवाश्वमेधस्नानेनपूतोभवति अन्तराद्वादशाब्दिकव्रतमध्येइत्यर्थः ॥

मेध यज्ञ विषे जाकर ऋत्विजोंके क्षत्रि यजमानके समागम विषे ब्रह्महत्या पापको निवेदनकर्के तिसी स्थान विषे तिनकी आज्ञा कर्के यज्ञांत स्नान करे तद ब्रह्महत्या पापते मुक्त हुंदाहै इति एह बारां वर्षके व्रतके वीचहि किहाहै सोयीकहाहै शंखजीने क्या व्रतकेवीचाहिब्राह्मणको मृत्युतें छुडा कर्के अथवा द्वादशगौयांकी रक्षाकरणेते शीघ्र अश्वमेध विषे स्नान कर्के पवित्र हुंदाहै ॥

और इस विषे गो ब्राह्मणकी रक्षा करणी और अश्वमेध यज्ञ विषे स्नान करणा एह पाप नाश करण के कारण विधान कीयेहैं और कुछ व्रत कर्त्ता का मरण नहि किहा और जेकर व्रत नहि समाप्त होया और व्रतके मध्य विषे जद उसका मरण होजावे तदभी उसी समय विषे पाप क्षय हुंदाहै अर्थात् प्रायश्चित्तका आरंभकीतयां जेकर समाप्तिते विनाहि उह पापी मृतहोजावे तदभी पवित्र हुंदाहै क्या उसका ब्रह्महत्याका पाप दूरहुंदाहै इति॥ तैसे यम जीने किहाहै प्रायश्चित्त इति प्रायश्चित्तके निश्चय कीतयां होयां कर्त्ता जद मृत होजावे तदभी उह उसीदिन विषे शुद्ध किहाहै इस लोक विषे भी और परलोक विषे भीअर्थात् जो पापी ऐसा निश्चयकरे कि अमुकव्रतकरताहुं जिस करके मै शुद्ध होजावां इस प्रकार दृढ करके किसी व्रतका आरंभ करे फेर थोडे कालमे जेकर मरभी जावे तदभी उह पवित्र किहाहै

अत्रचगोब्राह्मणपरित्राणमश्वमेधावभृथस्नानंच पापक्षयहेतुत्वेन विधीयतेन पुनर्व्रतकर्तुर्मरणमप्यश्रवणात्‌ अक्रांतव्रतमध्येयदिमरणंस्यात्तदातावतैवपापक्षयः यदाहयमः ॥ प्रायश्चितेऽव्यवसितेकर्त्तायदिविपद्यते शुद्धस्तदहरेवासावत्रलोकेपरत्रचेति १ अंगिराः॥ योयदर्थंचरेद्धर्म मप्राप्य म्रियतेतुतम् सतत्पुण्यफलंप्रेत्य प्राप्नुयान्मनुरब्रवीत् १ सर्वधर्मविषयंचैतत् यत्तुभविष्यत्पुराणम् मातरंपितरंहत्वा सोदर्यंभ्रातरंतथा गुरुंहत्वाश्रोत्रियंवा आहिताग्निमथापिवा अनेन विधिना पापी कीर्तयेत्पापमात्मनः पृथिवमिटतसर्वांशृणुष्वगदतोविधिमित्येतन्मातृपितृगुरुप्रभृतिवधविषयमापस्तम्वीयमेवोक्तम् ॥

और परलोक विषे भी उसको कुछ दंड नहिहुंदाइति ॥ २ ॥ और अंगिराजीका वाक्यहै यइति जोपुरुष जिस अर्थवास्ते धर्मका आचरणकरे और तिसको न प्राप्तहोकरके जदमृतहोजावे तदभी परलोक विषे तिस पुण्य फल को प्राप्त हुंदाहै एह मनुजी कहते भये इति १ एहप्रकार सभधर्मके विषयजानना और जोभविष्यत्पुराणविषे लिखयाहै कि मातरमिति मातापिता को हतकरके और तैसेहि सके भ्राताको और गुरु श्रोत्रिय अग्निहोत्री इनको मार करके पापी इस विधि करके अपना पाप कीर्तन करे और संपूर्ण भूमिको अटनकरे इस विधिको मेरेते श्रवण कर एह संपूर्ण विधि माता पिता गुरु इत्यादि जो हैं तिनके वधविषे कहीहै एह आपस्तंबीय धर्म शास्त्र विषे किहाहै ॥

और इसविषें गुरु पद जोहै सो ब्रह्मचारी वानप्रस्थी यती इनका उपलक्षणहै इस वास्ते इनके वध विषें भी एहपूर्वोक्त प्रायश्चित जानना इनकोभी गुरुहोनेते और फेर इसविषें जिस वर्णके ब्रह्मचारी वानप्रस्थीहोवें उसवर्णके अनुसार प्रायश्चित्त कल्पनाकरणीयोग्यहै और याति विषयविषे विशेष दूसरे प्रकरणविषें दिखायाहै ॥ सोयी विधि आपस्तंवजीने कहीहै क्या वाणीजित कर वनविषें कुटिया बनाकरके निवासकरे और शवशिरोध्वजी इत्यादि और शणके वस्त्रकरके नाभीके हेठ और जानुके ऊपर आछादनकरे और मार्गविषें किसीको देखकरके क्या तिसके मार्ग करके किसीका मार्ग मिले तद मै ब्रह्महत्यावाला हां ऐसा कहकर हट जावे अथवा

अत्रगुरुपदंब्रह्मचारिवानप्रस्थयतीनामुपलक्षणं तद्वधेप्येतदेव प्रायश्चित्तं गुरुत्वात् तत्रापि ब्रह्मचारिवानप्रस्थयोस्तत्तद्वर्णीयानुसारेण कल्प्यम् यतिविषये विशेषो द्वितीय प्रकरणे द्रष्टव्यः ॥ तदाहापस्तंवः ॥ अरण्ये कुटींकृत्वा वाग्यतः शवशिरोध्वजोऽर्धशाणीपटमधोनाभ्युपरिजान्वाच्छाद्यतस्यपथाचान्तरा वर्त्मनिदृष्ट्वा न्यमुत्क्रामेत्खण्डेन लोहितेन शरावेण ग्रामंप्रतिष्ठेत कोभिशस्तायभिक्षां ददातीति सप्तागाराणि चरेत्सा वृत्ति रलब्धोपवासोऽनेनविधिना आउत्तमादुच्छ्वासाच्चरेत् नास्यास्मिंल्लोके प्रत्यापत्तिर्विद्यते कलुषं तु निहन्यत इति ॥ अभिशस्ताय ब्रह्मघ्नाय कः पुरुषोभिक्षांददातीति कथयन् सप्तागाराणि चरेदित्यर्थः अलब्धोपवासः अलब्धायां भिक्षायामुपवासएवतस्येत्यर्थः सप्रायश्चित्ती आ उत्तमात् उच्छ्वासात् उत्तमोच्छ्वासपर्यंतं जीवनान्तं यावदनेनविधिनाचरेदिति अस्यव्यवहारोनसिद्ध्यति किन्तु नरकानुकूलाशक्तिर्नाश्यते ॥

आगेते हटादेवे और हाथमे मृत्तकापात्र अर्थात् लाल रंगदाखंडितठूठालेकर भिक्षावास्ते ग्राम में जावे और ऐसे कहे क्या कोयी ब्रह्मघ्नके तांयीं भिक्षादेवे ऐसे सातघर विषें फिरे और भिक्षा न मिले तद उपवास करे पर उत्तम स्वासपर्यंत अर्थात् जितना चिर जीवतारहे उतना चिर इसीविधि करके करता रहे और फेर इसलोक विषें तिसका आगमन नहि हुंदा और पापभी दूर हो जंदाहै और इसका व्यवहार नहि सिद्धहुंदा किंतु नरकानुकूलशक्ति नाशहोंदीहै पापकी दोशक्ति होतीहैं एक व्यवहार अनुरोधकरणवाली और दूसरी नरक देणे वाली और प्रायश्चित्तामें यथोक्त प्रायश्चित्त करके दोनो शक्ति नष्ट होतीहैं और इस विषें नरक देणे वालीहि दूर होतीहै इस करके जीवनपर्यंतव्रतकिहाहै

तुपुना जो मनुजीने कहाहै ब्राह्मणेति कि ब्राह्मणके वास्ते और गौवास्ते प्राणांका परित्याग करदेवे तद गौ ब्राह्मणकी रक्षा करण वाला पुरुष ब्रह्महत्याते मुक्त हुंदाहै एह पूर्वोक्त द्वादशाब्द विषय विषे जानणा और इसका अर्थहै क्या द्वादश वार्षिकके प्रक्रांतहोयां क्या आरंभहोयां कि व्रतके मध्य विषे अग्नि जल हिंसक जो अन्य जीवहें तिना करके पीडित जो ब्राह्मणहै वा गौहै तिनकी रक्षा वास्ते प्राण त्यागदेवे कि मृत होजावे तद ब्रह्महत्या पापते मुक्त हुंदाहै और इस विषे गौ ब्राह्मणकी रक्षाते विनाभी प्राण त्यागकर णेते शुद्धहुंदाहै अथवा गौ ब्राह्मणकी रक्षावास्ते जो मृत्यु पर्यंत यत्नकरे और मृत्युको नहिभी प्राप्तहोवे तदभी ब्रह्महत्याते मुक्त हुंदाहै इति इसीको प्रकट करके अंगिरा जीने कहाहै दीर्घेति दीर्घ क्या वहुत कालका जो अति भयानक रोगहै तिस रोगकरके ग्रस्त

यत्तुमनुनोक्तम् ब्राह्मणार्थेगवार्थेवासर्वान्प्राणान्परित्यजेत् मुच्यतेब्रह्महत्यायागोप्तागोर्ब्राह्मणस्यचेति तत्पूर्वोक्तद्वादशाब्दविषयम् ब्राह्मणार्थइतिप्रक्रान्तेद्वादशवार्षिकेऽन्तराग्न्युदकहिंसकाद्याक्रांतब्राह्मणस्यगोर्वापरित्राणार्थंप्राणान्परित्यजन् ब्रह्महत्ययामुच्यते अत्रगोब्राह्मणाऽपरित्राणेपिप्राणत्यागाच्छुद्ध्यति वा प्राणपरित्यागपर्यंतंकृतप्रयत्नोगोब्राह्मणपरित्राणायामृतोपिमुच्यते एतत्प्रपंचयन्नाहांगिराः दीर्घतीव्रामयग्रस्तंब्राह्मणंगामथापिवा दृष्ट्वापथिनिरातंकंकृत्वावाब्रह्महाशुचिःदीर्घोवहुकालीनः तीव्रोऽत्युग्रआमयोयोव्याधिस्तेनग्रस्तंब्राह्मणं वेदृशींगांपथिमार्गेदृष्ट्वा ततश्चैनंनिरातंकं निरुपद्रवंकृत्वाब्रह्महाशुचिरपापोभवति गामितिस्त्रीपुरुषसाधारणम् पथिदृष्ट्वेत्येतदनाथतासूचनार्थम्

क्या पीडित जो गौ वा ब्राह्मणहै तिसको मार्ग विषे देख करके निरातंक क्या दुःखही नकरे तदभी ब्रह्महा पवित्र हुंदाहै अर्थात् अति उग्ररोग करके ग्रस्त ब्राह्मण गौको देखकर उसको औषधी देवे और विधि पूर्वक सेवाकरे ऐसे सेवा करतियां उनको राजी करे तद ब्रह्महत्यापापते मुक्त हुंदाहै इति क्या ब्रह्महत्या निवृत्ति वास्ते गौ ब्राह्मणका क्लेश दूर करणा योग्यहै इति और गां इस पदकरके गौका और वैलका ग्रहण हुंदाहै इस वास्ते गौकी न्याईंवैलकी रक्षाकरे तदभी पापते मुक्त हुंदाहै और मार्ग विषे देख करके इसका एह अभि प्रायहै कि अनाथ सूचन वास्ते अर्थात् जिसकी अन्यकोईभी सेवा करण वाला नहिहै उसकी रक्षा करणी

और ब्राह्मणस्य एह जो पूर्वोक्त भविष्य वचन विषे एक वचन कहाहै सो अविवक्षित जानने योग्यहै किसवास्ते कि दो तीन चार इत्यादिगों ब्राह्मणकी रक्षा विषे तैसाहि फल प्राप्त हुंदाहै इस कारणते और आमय इस शब्द करके जल विषे पतन होना अग्नि विषे दग्धहोना और पर्वतते गिरना और अति भयानक रोग इन सभका ग्रहण हुंदाहै और सांयी यमजीने कहाहै अंभस इति ॥ जल विषे पतनते अग्निते और चौर व्याघ्र इत्यादि भयते गो ब्राह्मणको छुडादेवे तद ब्रह्महत्याको दूर करताहै अर्थात् ऐसा पूर्वोक्त प्रकार करके जो पापी गो ब्राह्मणको मृत्युते रक्षा करे तद उसकी ब्रह्महत्या दूर होजंदीहै और इसीका अन्यप्रकारमनुजीने कहाहै ऽयवरमिति तीनवारी ब्राह्मणके निमित्त युद्धमेजावे अ

अत्रगवांद्वादशकस्येतिपूर्वोक्तभविष्यवचनेसमुदायवोधकं एकत्वमाविवक्षितंवाध्यम् द्वित्र्यादिपरित्राणेपितत्फलसम्भवात् आमयपदमत्रअंभसिपतनादिरुपलक्षणम् तथाहयमः ॥अम्भसःपतनादग्नेश्चौरव्याघ्रादितोभयात् गोब्राह्मणंमोचयित्वाब्रह्महत्यांऽपपोहति ॥ अस्यैवप्रकारान्तरमाहमनुः त्र्यवरंप्रतिरोद्धावासर्वस्वमवजित्यवा विप्रस्यतन्निमित्तेवाप्राणालाभेविमुच्यते १ अर्थः ॥त्र्यवरं त्रीन्वारान् यद्वा त्रयोऽवरान्यूनायेभ्य श्चतुर्थादिभ्य इतित्र्यवराः तत्त्र्यवरं क्रियाविशेषणम् ब्राह्मण सर्वस्वे चौराद्यैरपह्रियमाणे तदानयनार्थं निर्व्याजंयथाशक्ति प्रयत्नं कुर्वन् प्रतिरोद्धा युद्धेप्रवर्तमानस्सर्वस्वेऽलब्धेपि ब्रह्महत्यापापात्प्रमुच्यते

यवा चौरोंको जीतकर ब्राह्मणका सर्वस्व लेयादेवे अथवा ब्राह्मणके निमित्तमृतभी होजावे तदभी शुद्धहुंदाहै १ अर्थइसकालिखयाहै कि ऽयवरं कथा तीनवारी अथवा तीनहैं अवरक्या न्यून जिनचतुर्थादिते तिस्कानामहै ऽयवर एहक्रिया विशेषणहै और इसवास्ते ऽयवरं यथास्यात् तथा ऐसा अर्थ होवेगा और ऽयवरं इसकेएसेहि दोअर्थहुयेहैं एक तीनवारी दूसरा तीनहैं अल्पजिनते ॥ और ब्राह्मणका जो सर्वस्वहै तिस सभके चोरां करके हरयांहोयां अर्थात् ब्राह्मणका संपूर्णपदार्थ चौर चुराकरके अवलेजावे तद उस धनके ले आवने वास्ते कपटते रहित अपनीशक्तिके अनुसार यत्नकोकरताहुया प्रतिरोद्धाक्या युद्धविषे जाकर प्राप्तहोवे ऐसेकरणे करके जेकर सर्वस्व नाभी मिले तदभी उह ब्रह्महत्यापापते मुक्तहुंदाहै ॥

अथवा प्रथम वारी क्या पहली वारी जाकर हरया जो सर्वस्व है तिसको चोरांते जी तकरके तिस ब्राह्मण के तांयीं दे देवे तिस करके भी ब्रह्महत्याते मुक्त हुंदाहै अथवा चोरादिकोने अपहृतकोया है सर्वस्व जिसका ऐसा जो ब्राह्मणहै सो जेकर आपहि मरण वास्ते अथवा चोरोंके साथ युद्ध करण वास्ते उद्यमकरे तद उस ब्राह्मणको जो अपने पासते धनदेने करके जीवदान देताहै सोभी ब्रह्महत्या पापते मुक्त हुंदाहै ॥ और अन्यकिसी प्रकार करके रक्षणविषे (गोप्तागोब्राह्मणस्यच) इसवचनकाविषय जा नणा इस अभिप्राय करके याज्ञवल्क्यजीनेभी कयाहै आनीयेति क्या चोरांने हरयाजो ब्राह्मण का सर्वस्वहै तिसको ल्याकरके यद्यपि आपचोरों करके घातितभीहै अथवा तिसके निमित्त शस्त्रों करके क्षतभीहोवे अर्थात् विप्रके सर्वस्ववास्ते आपशस्त्रोंकरके फट्टियाजावे और जीव

अथवा प्रथमवारएव यदपहृतं सर्वस्वं जित्वा चौरादेस्तत्तस्मै द्वि जायदत्वामुच्यते ॥ यद्वाचौराद्यपहृतसर्वस्वोब्राह्मणः स्वयंमरणायचौरैर्वा युद्धे मारणाय प्रवर्त्तते तदास्वकीयधनदानेन तं योजीवयति सोपिब्रह्मह त्यायामुच्यते ॥ प्रकारांतरेणरक्षणे गोप्ता गोब्रह्मणस्येतिविषयः याज्ञव ल्क्यः आनीयविप्रसर्वस्वं हृतंघातितएववा तन्निमित्तंक्षतःशस्त्रैर्जीवन्न पिविशुध्यति १ योब्रह्महाचौरापहृतं ब्राह्मणसर्वस्वं चौरादेरानयनाय प्र वृत्तः स्वयंचोरैर्घातितोप्यादाय ब्राह्मणाय प्रयच्छति १ योवातन्निमित्तं चौरैर्हन्यतेव्यापाद्यते २ यश्चतद्दशाच्चौरैः शस्त्रैः क्षतोमृतकल्पः परित्यज्य ते ससर्वोपि ब्रह्महत्यायामुच्यते ॥ ३ ॥

ता रहे तदभी पवित्र हुंदाहै १ इसीकाविशेषकरके अर्थः॥ जो ब्रह्महा चोर करके हरया जो ब्रा ह्मण सर्वस्वहै तिसधनको चोरांतेल्यावण वास्ते प्रवर्तत होवे क्या उद्यमकरे और आप चोरां करके घातित यद्यपिहोजावे तदभीसर्वस्व चोरांते ग्रहणकरके ब्राह्मणके तांयीं दिंदाहै १ अ थवा जो तिसनिमित्तकरके चोरांनें हतकीयाहै २ अथवा जो तिस सर्वस्वके वश होनेते चो रोंनें शस्त्रोंकरके क्षत कीताहै क्या फट्टियागियाहै और मृतहोयेकीन्यायीं चोरांने त्यागदियाहै सोसभब्रह्महत्यातेमुक्तहोंदाहै ३ । अर्थात् जोपापी ब्राह्मणका सर्वस्व चोरांते लेयावे तदभी और चोर उसको फट्टकरके छोडजावे अथवा चोर शस्त्रोंकरके मारदेवे तदभी ब्रह्महत्यापाप ते मुक्तहुंदाहै ॥

और शस्त्रै एह जो वहुवचनहै सो क्षत वहुत्व प्रकट करणे वास्ते जाणणा यद्यपि एकहि शस्त्र करके शरीर विषे वहुत घा पड जावे तदभी पवित्र हुंदाहै इस अभिप्राय करके शस्त्रै एह वहु वचन दिताहै और एह पूर्वोक्त प्रायश्चित्त जो गुणवान् क्षत्री कामनाते विना निर्गुण ब्राह्मणको अमति पूर्वक मारे तिस क्षत्रीको करणा योग्यहै इति ॥ और कामनाते ब्राह्मणवध विषे प्राय श्चित्त अपरार्क विषे लिखयाहै लोमभ्य इति ब्रह्महा पुरुष लोमभ्यःस्वाहा इत्यादि मंत्रों करके शरीर विषे रोमते आदि जो धातुहैं तिन करके समस्त देहका हवन करे लोमभ्यः स्वाहा इ त्यादि मंत्रांकेसाथ क्रमपूर्वक अग्निविषे हवनकरे आगे सोईमंत्र लिखेहैं लोमभ्यःस्वाहा १ त्व चेस्वाहा २ लोहितायस्वाहा ३ मांसायस्वाहा ४ स्नायुभ्यःस्वाहा ५ मेदसेस्वाहा ६ अस्थिभ्यः स्वाहा ७ मज्जाभ्यःस्वाहा ८ औरक्रमपूर्वक इन्हांमंत्रांकरकेजैसे वाजिसनेय पाठका अतिक्रमन

शस्त्रैःक्षतोजीवन्नपिविशुद्ध्यतीत्यत्र शस्त्रैरिति वहुवचनं क्षतवहुत्वद्योतकम् एतच्चनिर्गुणं ब्राह्मणममतिपूर्वमकामतश्चहतवतः क्षत्रियस्यगुणवतोद्र ष्टव्यम् कामतोब्राह्मणवधेप्रायश्चित्त मपरार्के । लोमभ्यःस्वाहेति हिवा लोमप्रभृतिवैतनुंमज्जान्तंजुहुयाद्वापिमंत्रैरेभिर्यथाक्रमम् लोमभ्यःस्वाहा १ त्वचेस्वाहा २ लोहितायस्वाहा ३ मांसायस्वाहा४स्नायुभ्यःस्वाहा५मेदसे स्वाहा६अस्थिभ्यःस्वाहा७ मज्जाभ्यःस्वाहा८इत्यादिभिर्मंत्रैर्यथाक्रमं वाज सनेयपाठानतिक्रमेणलोमप्रभृतिमज्जान्तंयथाभवति तथा येनशरीरेणब्रा ह्मणोहतःतच्छरीरंजुहुयात् अत्रचलोमादीनां मंत्रसामर्थ्याद्देवतात्वम् तेषा मपिचलोमप्रभृतिवैतनुंजुहुयादिति वचनाद्देवतव्यत्वमपिप्रथमोत्रवाशब्दो वासिष्ठादिशास्त्रोक्तैर्मंत्रैरेषांमंत्राणांविकल्पार्थः द्वितीयस्तु द्वादशवार्षिकेण तनुहोमस्य ॥ वासिष्ठादिमंत्रायथा

होवें ऐसे क्रमकरके लोमभ्यःस्वाहा इसतें आदिलेकर और मज्जाभ्यःस्वाहा इहांपर्यंत जैसेहो वे तैसेहि जिसदेह करके ब्राह्मण मारयाहै उस शरीरकरके हवन करे और ऐसे करण करकेभी ब्रह्महत्याते मुक्त होजंदाहै और इसस्थानविषे लोमादि शब्दांको मंत्रसामर्थ्यहोनेते देवतास्वरू पकयाहै और तिनको भी (लोमप्रभृतिवैतनुंजुहुयात्)इसवचनकी सामर्थ्यते स्वरूपहोना योग्यहै और प्रथमइसस्थान विषे जो वाशब्द लिखयाहै उसका एह अभिप्रायहै कि वासिष्ठादि शा स्त्रोंविषे उक्त जोमंत्रहैं तिनके साथ इन पूर्वोक्त लोमादि मंत्रोंका विकल्पहै इस अर्थवास्ते वा शब्द पढा है और दूसरा द्वादश वार्षिक व्रतके साथ शरीर होमकाविकल्पहै इस अभिप्रायक रके कयाहै सोई वासिष्ठादि मंत्र मूलमें स्पष्ट लिखेहैं

श्रीर इसी विषे पूर्वोक्त मनुजी करके कथित विशेषहै प्रास्येदिति अति प्रज्वलित अग्नि विषे नीचोशिर करके अपने शरीर को तीन वारी सुट देवे इति । श्रीर एह प्रायश्चित्त कृतोपवासने करणा योग्यहै अर्थात् जिसने एह प्रायश्चित्त करणा होवे उह पुरुष पहिले दिन नदी विषे स्नान करके निराहार व्रत करे फेर पूर्वोक्त रीति करके अग्नि विषे प्रवेश करे । श्रीर ब्रह्मघ्न को कया ब्रह्महत्या करण वाले को अग्नि विषे जो प्रसक्तिहै कयातीनवारी अग्नि विषे पडना एहि प्रायश्चित्त कयाहै श्रीर अव क्षुत कया भूषा होवे तद अर्थात् निराहार व्रत करके अग्नि

भ्रूणहाग्निमुपसमाधायजुहुयाल्लोमानिमृत्योर्जुहोमि लोमभिर्मृत्युंवाशय इतिप्रथमां त्वचंमृत्योर्जुहोमित्वचामृत्युंवाशय इतिद्वितीयां लोहितंमृत्योर्जुहोमि लोहितेनमृत्युंवाशय इतितृतीयां मांसानिमृत्योर्जुहोमि मांसैर्मृत्युंवाशयइति चतुर्थीं मेदोमृत्योर्जुहोमिमेदसामृत्युंवाशय इतिपंचमीं स्नायूनिमृत्योर्जुहोमि स्नायुभिर्मृत्युंवाशयइतिषष्ठीं अस्थीनिमृत्योर्जुहोमि अस्थीभिर्मृत्युंवाशय इतिसप्तमीं मज्जांमृत्योर्जुहोमि मज्जाभिर्मृत्युंवाशय इत्यष्टमीमिति । अत्रैवपूर्वोक्तोमानवोविशेषः । प्रास्येदात्मानमग्नौवासमिद्धेत्रिरवाक्शिराइति । इदंप्रायश्चित्तंतुकृतोपवासेन कार्यम् । तदाहगौतमः। प्रायश्चित्तमग्नौसक्तिर्ब्रह्मघ्नःत्रिरवक्षुतस्येति । ब्रह्मघ्नोब्रह्महत्याकर्तुरग्नौत्रीन्वारान् प्रसक्तिरेवप्रायश्चित्तम् । अवक्षुतस्यवुभुक्षितस्येत्यर्थः ॥ तथाचकाठकश्रुतिः ॥ अनशनेनकर्षितोऽग्निमारोहेदिति कामकारविषयमेवैतत् ॥ तथाचमध्यमांगिराः ॥ प्राणांतिकंचयत्प्रोक्तंप्रायश्चित्तंमनीषिभिः ॥ तत्कामकारविषयंविज्ञेयंनात्रसंशयः १ ॥

विषे प्रवेशकरे ब्रह्महत्या करण वालाहै जेकर तद उसके वास्ते एही प्रायश्चित्त कयाहै । श्रीर तैसे हि काठक श्रुति कहीहै अनशन इति कि निराहार करके अतिकृश होया अग्नि को आरोहण करे अर्थात् चिताके ऊपर चढे । एह प्रायश्चित्त कामना करके कीती होई यो ब्रह्महत्या तिस विषे जाणणा । तैसेहि मध्यम अंगिरा जीने कयाहै प्राणांतिक मिति जो प्रायश्चित्त ऋषियोंने प्राणांतिक कयाहै सो कामना कृत पाप विषे जाणणा इस विषे कुछ संशयनहिहै। अर्थात् जो पाप जाण करके होवे उसका प्राणांतिक प्रायश्चित्तहै इति ॥

फेर अंगिराने कयाहै ॥ य इति जो कोयी पुरुषकामनाते महा पाप करे कदाचित् तब पर्व तते गिडना और अग्नि विषे दग्धहोणा इसतें विना उसकी शुद्धि किसी तरां नहि दिखा यी अर्थात् जो कोयी पुरुष जाण करके महा पाप करे उह यद अग्नि विषे गिडे अथवा पर्वत के ऊपर गिडे तद शुद्ध हुंदाहै अन्य प्रायश्चित्त करके पवित्र नहि हुंदा इति । और एह जो पूर्वोक्त प्रायश्चित्त है सो स्वतंत्रहै क्या किसे व्रतके अंतर्भूत नहि जैसे द्वादश वर्ष के व्रतका प्रारंभ करके पीछे गो ब्राह्मणकी रक्षा करणे से शुद्धिहै तैसा एह नहिहै । और ब्राह्मण को ब्रह्महत्या विषे मरणांत प्रायश्चित्त नहि किया किंतु मरणांत प्रायश्चित्त क्षत्री को हि कियाहै सोलिखयाहै हत्वेति क्षत्री गुण युक्त ब्राह्मण को कामना ते मार करके अपनी शुद्धि वास्ते विधि पूर्वक एह प्रायश्चित्त करे इति १ और मनुजीका किया होआ शस्त्र धारीयों का लक्षहो

सएव ॥ यःकामतोमहापापंनरः ॥ कुर्यात्कथंचन नतस्यशुद्धिर्निर्दिष्टाभृ ग्वग्निपतनादृतइति ॥ एतच्चप्रायश्चित्तंस्वतंत्रमेव नब्राह्मणत्राणादि वत् द्वादशवर्षांतर्भूतं मरणांतंप्रायश्चित्तंक्षत्रियस्य हत्वातुक्षत्रियोविप्रंगु णाढ्यमपिकामतः प्रायश्चित्तंचरेद्वीरोविधिवत्त्वात्मशुद्धये १ ॥ लक्ष्यं शस्त्रभृतांवास्यादित्यादिपूर्वोक्तंप्रायश्चित्तत्रयंक्षत्रियस्यैवविहितम् विप्रस्य तुकामतोब्रह्मवधेद्विगुणंव्रतम् ॥ विहितंयदकामानां कामात्तद्द्विगुणंभवे दितिदेवलस्मरणात् जातिमात्रब्राह्मणवधकर्तुर्विप्रस्यतु जातिमात्रंयदा हन्यादिति पूर्वोक्तंबोध्यम् भविष्ये यद्वापराशरोक्तेनप्रायश्चित्तेनशुद्ध्यति

वे इत्यादि पूर्वोक्त तीन प्रकार का प्रायश्चित्तहै सो क्षत्री वास्ते हि विधान कीयाहै । और ब्राह्मण को कामनाते ब्राह्मण वध विषे दूणा व्रत करणा कियाहै ॥ सोई लिखया है विहितमिति जो प्रायश्चित्त कामनातेविना कीतेहोए पाप विषे किया है सोई का मकृत पाप विषे दूना हुंदाहै एहदेवलजीका कहनाहै इसते और जातिमात्र ब्राह्मणका वध करण वाला जो ब्राह्मणहै तिसको (जातिमात्रंयदाहन्यात्) इत्यादि पूर्वोक्त प्रायश्चित्त जा णा अर्थात् ब्राह्मण जातिमात्र ब्राह्मणको मारकरके पूर्वोक्त प्रायश्चित्त करके शुद्धहुंदाहै और भ विष्यविषे ऐसालिखयाहै कि पराशरजी करके कथित जो प्रायश्चित्तहै तिसके करणे करके शुद्धहुंदाहै अर्थात् जातिमात्र ब्राह्मणको मार करके पाराशरोक्त व्रत करे शुद्धिवास्ते

सोऐसे लिखयाहे चातुर्विद्योति चारविद्या करके युक्त जो ब्राह्मणहे सो लेकर महा घातक होवे यथा ब्राह्मणको मारे तद उसके वास्ते एह विधान लिखयाहे यथा समुद्रसेतुको गमन करणा एह प्रायश्चित उसको उपदेश करे और उह ब्राह्मण क्याकरे कि समुद्रके वीचते लंकाका मार्ग जो सेतुवंधस्थानहे तिसका दर्शन करे १ और उसका प्रमाण दश योजन चौडाहै और सौ योजनलंवाहे और जब सेतुबंधके दर्शन वास्तें घरते चलेतो मार्ग विषे चार वर्णोकी भिक्षा ग्रहण करे और नीच कर्म करण वालेको त्याग करके और सभके घरते भिक्षा लेलेवे और छतडी उपानह अर्थात् पयरोकी रक्षाकरणवाला जोडा इनकोभी न धारण करे और भिक्षाके समय ऐसा कहे किमै वडापापीहां और मैने वडे महापतक करेहैं और भिक्षा वास्ते तुमारे द्वार विषे स्थितहां ऐसे ब्रह्म घातकको भिक्षा देवो इस प्रकार द्वार २

तद्यथा चातुर्विद्योपपन्नेतुविधानंब्रह्मघातके समुद्रसेतुगमनं प्रायश्चित्तं विनिर्दिशेत् सेतुबंधंतुसंपश्येल्लंकामार्गंमहोदधेः ॥ १ ॥ दशयोजनविस्तीर्णंशतयोजनमायतम् ॥ सेतुबंधपथेभिक्षांचातुर्वर्ण्यात्समाचरेत् वर्जयित्वाविकर्मस्थाञ्छत्रोपानद्विवर्जितः अहंदुष्कृतकर्माच महापातककारकः वेश्मद्वारेषुतिष्ठामि भिक्षार्थीब्रह्मघातकः गोकुलेषुचगोष्ठेषुग्रामेषुनगरेषुच तपोवनेषुतीर्थेषुनदीप्रस्रवणेषुच एतत्प्रख्याप्ययत्नेनपुण्यंगत्वातुसागरं ब्रह्महाविप्रमुच्येतस्नात्वातत्रमहोदधौ ततःपूतोगृहंप्राप्यदत्वाब्राह्मणभोजनम् जप्त्वाचसुपवित्राणिपूतात्माप्रविशेद्गृहं गवांचापिशतंदद्याच्चातुर्विद्यायदक्षिणाम् ॥ एवंशुद्धिमवाप्नोति चातुर्विद्यानुमोदितः ॥

सेकहकर भिक्षाग्रहणकरे औरफेरगौयांविषे अथवागौस्थानविषे ग्रामोंविषे नगरोंविषे तपोवन विषे तीर्थोविषे नदीयोंविषे प्रस्रवण योहैंनाडे तिन्हाविषे इनस्थानोंमें जाकर अपना पाप प्रगट करे और इस प्रकार फिरते २ वडेयत्नकर अतिपवित्र जोसमुद्रहै तिसको प्राप्तहोवे ऐसे तिसस्थान समुद्र विषे स्नानकरके ब्रह्महामुक्तहुंदाहै अर्थात् विधिपूर्व सेतुबंधका दर्शन करणे करके और तहां समुद्रका स्नानकरणे करके ब्रह्महत्या पाप दूरहुंदाहै इति ॥ और इसप्रकार करके तदपवित्र होयेया २ फेर अपने घरको प्राप्तहोकरके ब्राह्मण भोजन देवे और पवित्रजो मंत्रहे तिनके जप करणे करके पवित्रात्मा होकर गृहविषे प्रवेश करे और शत १०० गौ चातुर्विद्या पठण करण वालें ब्राह्मणकेतांयीं देवे और दक्षिणा देवे और इस विधि करके शुद्धहुंदाहै चातुर्विद्याकरके अनुग्रहका विषय होआ होआ

[illegible]दिति जिसपुरुषका[illegible]के उत्तरपासे निवास कियाहै तिसको सेतुबंधका दर्शन करणायोग्यहै एह पराशरजीका मतहै अर्थात् जोपुरुषविंध्याचल पर्वतके उत्तरपासे निवास करताहै तिसतें जेकर ब्रह्महत्याहोजावे तद उह पुरुष सेतुबंधरामेश्वरका दर्शन कर्के और समुद्रकास्नानकर्के शुद्ध हुंदाहै सेतुबंधकीप्रशंसाकर्देहै रामेति जिसते रामचंद्रजीकी आज्ञातें अनेक वस्तुके संचय कर्के सो सेतु रचयाहै इसकर्के तिसको देखकर ब्रह्महत्याते पुरुष मुक्त हुंदाहै भविष्यत्पुराणविषें लिखयाहै जातिमात्रेति कि जातिमात्र ब्राह्मणके हत कीतयां होयां मारणवाला जेकर धनहीन होवे तदतिसको अंगिरा जीने तीन वर्षका व्रत प्रायश्चित्तकियाहै अर्थात् निर्धन पुरुष तीन वर्ष के व्रतकर्के शुद्धहो जंदाहै इति सोई जैसेअतइति अंगिराजी कहतेहै की इसतेअनंतर इंद्रादिपूजन जो व्रतहै तिसको कहताहां कि जिसको पडकर्के और सुन

विंध्यादुत्तरतोयस्यनिवासः परिकीर्त्तितः पराशरमतंतस्यसेतुबंधस्यदर्शनम् ॥ रामभद्रसमादेशाल्लक्षसंचयसंचितम् ॥ सेतुंदृष्ट्वामहापुण्यं ब्रह्महा परिमुच्यते ॥ इति भविष्यत्पुराणे ॥ जातिमात्रेहतेविप्रेहंतुर्वैनिर्धनस्यच प्रायश्चित्तंत्वांगिरसंत्रैवार्षिकमुदाहृतम् ॥ तद्यथा ॥ अतऊर्ध्वंप्रवक्ष्यामि कृच्छ्रंशक्रादिपूजितम् यदधीतंश्रुतंवापि पापान्मोचयतेनरम् १ युक्तस्त्रिषवणस्नायीस्नायान्मौनव्रतेस्थितः प्रातः स्नातः समारंभंकुर्याज्जप्यस्ययत्नतः २ सावित्रींव्याहृतीस्तिस्रोजपेदष्टसहस्रकम् ओंकारमादितः कृत्वारूपरूपतथान्ततः ३ शल्यविद्धइवासीनः पिबेद्गव्यंपयः सकृत् गव्यस्यपयसोलाभेगव्यमेवपरंदधि ४

कर्के पुरुष पापतें मुक्तहुंदाहै अथवा जो व्रत पडयाहोया और सुनेयाहोया पुरुषको पापतें मुक्तकरदेंदाहै १ इति ऐसाप्रकार व्रतकाहै की पुरुष युक्त होकर तीन काल स्नान करणवालाहोवे और स्नानके समय विषे मौन व्रत धारकर स्नानकरे और प्रातः काल विषे स्नान कर्के जपका आरंभ यत्नतें करे २ जपमंत्र कहतेहां ओंकारमिति(ओंभूर्भुवः स्वस्तत्सवितुर्वरेण्यंभर्गोदेवस्यधीमहि धियोयोनः प्रचोदयात् ओम्)तीनव्याहृतियांके साथ आठहजारगायत्रीकाजपकरे और ओंकारको प्रथम उच्चारण कर्के फेर रूप २ विषे फेर अंतर २ विषेभी ओंकारका उच्चारणकरणायोग्यहै ३ और बाणकर्केजोविद्धहै तिसकी न्यायीं स्थित होकर जपकरे औरएक काल विषे गौकादूधपानकरे और जेकरगौ कादूधनप्राप्त होवे तद गौका दधि एक काल पानकरे ॥ ४

और जेकर दधिभीन प्राप्तहोवे तद गौंकीछाहपानकरे और जेकर छाहभीन प्राप्तहोवें तद यावक भक्षणकरें ५ क्या कि गोमूत्रविषें जौंभिगोकरभक्षणकरें और इनमें कोयीएकप्राप्तजो होजावें उसी के साथ दिन व्यतीत करलेंवे और एहएकांतककृच्छ्रहै और आप अंगिराजीने दिखायाहै ६ इति कैसाहै एह व्रत संपूर्ण पापके नाश करण वालाहि और बहुत उत्तमहैं और इस व्रतका नाम वज्र इह किहाहै ॥और जैसे काल किहाहै तिसके कारण ब्राह्मण हि किहेहैं अर्थात् इसव्रतका काल नहि दिखाया कि कितना चिर करणा योग्यहै इस व्रतको ब्राह्मण पाप देखें करकें जैसा जिसको योग्य होवे तैसाहि उप देश कर देवें इति ॥ औरतुपुना जोसुमं तुजीका वाक्यहै ब्रह्महेति ब्रह्महा जोपुरुष है सोसंवत्सर क्या एक वर्षव्रत करे और इस क्रम करकें वर्ष व्यती तकरे कि भूमी ऊपर शायन करणा और तीन कालविषे स्नान करणा

दध्नोभावेपिवेत्तक्रंतक्राभावेतुयावकम् एषामन्यतमंयद्यदुपपद्येततद्व्रजेत् ५ गोमूत्रेणसमायुक्तंयावकंयः प्रयोजयेत् कृच्छ्रमेकांतिकमिदंदृष्टमंगिरसास्वय म् ६ सर्वपापहरंदिव्यं नाम्नावज्रइति स्मृतम् । कालस्यतुयथोक्तस्य ब्राह्मणा एवकारणमिति अत्रवज्रकृच्छ्रेऽनुक्तस्य कालस्यप्रयोगे पार्षदाब्रह्मणाएवस्था पनहेतुरित्यर्थः यत्तुसुमंतुवचनम् ॥ ब्रह्महासंवत्सरंकृच्छ्रंचरेदधःशायीत्रिष वर्णीकर्माविदको भैक्षाहारोदिव्यनदीपुलिन संगमाश्रमगोष्ठपर्वत प्रस्रवण तपोवनविहारीस्यात् । स्थानवीरासनेनसंवत्सरेपूर्णेहिरण्यमणिगोधान्यति लभूमि सर्पींषि ब्राह्मणेभ्यो ददत्पूतो भवतीति ॥

और अपना ब्रह्म हत्या रूपजो कर्महै तिस को सभके आगे विख्यात करणा और भिक्षामांगकर भोजनकरना और दिव्यनदी जो गंगा जीहै तिसके कनारे विषें अथवा गंगाजीके संगम विषे अथवा ऋषियों के आश्रम विषे अथवा गोयोंके स्थान विषें ॥ अथवापर्वतकी गुफा विषें ॥ अथवा पर्वतकी नदी के कनारे ॥ अथवा तपो वन विषें विहारकरे अर्थात् इन स्थान विषे विचरता रहे ॥ और स्थान विरासन क्या दिन विषे खलोते रहणा और रात्रि विषें बैठ रहणा भजन पूर्वक इस विधि करकें वर्षके समाप्तहोयां सुवर्ण मणिगो अन्न तिल पृथिवीघृत एह सभ अपनी शक्ति अनुसार ब्राह्मणाकेतांयींदेवे तदपवित्र हुंदाहै ॥

श्रोर तदभी एह प्राय श्चित्तजातिमात्र ब्राह्मण वध विषे मूर्ख धन वाला जो हंताहै तिसकोदि खाया है इति श्रोर वशिष्ठजीका वचनहै द्वादशेति बारांबारां १२ दिन जल पान करे श्रोर बारां १२ दिन उपवास करके रहणा इति ॥ श्रोर एह प्रायश्चित्त योमनविषे ब्रह्महत्या करणेका प्रथम निश्चय करके पीछे आपहि विचार करके हिंसाते उपराम होजावे उसके वास्ते जानणे योग्य है ॥ श्रोरजो फेर किहाहै षंढं रिवति कि नपुंसक ब्राह्मण को मार करके शूद्र हत्या का ब्रतकरे अथवा चांद्रायणव्र तकरे अथवा अपनी शुद्धि वास्ते दोपराक व्रत करे एहत्रिंशति मतका वाक्य है इति श्रोर एहप्रायश्चित्त जिन के पुरुष भाव काज्ञाननहि है उस केज्ञात वध विषे जाणना ॥ श्रोर इसीके विषयके अज्ञातवधविषें बृहस्पतिजीने किहाहै अरुणेति जोपुरुष ज्ञानतेविना

तदपिहन्तु र्मूर्खस्य धनवतो जातिमात्रविप्रव्यापादनेद्रष्टव्यम् ॥ यत्तुपु नर्वसिष्टवचनम्। द्वादशरात्रमब्भक्षो द्वादशरात्रमुपवसेदिति तन्मनसा ध्यवसितब्रह्महत्यस्यस्वतएवोपरतजिघांसस्यवेदितव्यम् ॥ यत्पुनः। षं ढंतुब्रह्मणंहत्वाशूद्रहत्याव्रतंचरेत् चांद्रायणं प्रकुर्वीत पराकद्वयमेवचेति त्रिंशन्मतवचनम् ॥ तदप्रत्यानेयपुंस्त्वस्यसप्रत्ययवधे द्रष्टव्यम् ॥ अत्रैवविषये अप्रत्ययवधे बृहस्पतिराह अरुणायाःसरस्वत्याः संगमे लो कविश्रुते शुद्ध्येत्त्रिषवणस्नायी त्रिरात्रोपोषितोद्विज इति ब्रह्महत्याव्रता तिदेशमाहयाज्ञवल्क्यः ॥ यागस्थक्षत्रविट्घातीचरेद्ब्रह्महाणिव्रतम् गर्भ हाचयथावर्णं तथात्रेयीनिषूदकः ॥ १ ॥

नपुंसक कोमारे उह संसारविषें बहुत प्रकट जो अरुणा नदीका श्रोर सरस्वतीका संगमहै उ सस्थान विषें जाकर तीन काल नित्यस्नानकरे श्रोर तिनउपवास व्रत करे तद ब्राह्मण शुद्धहुं दाहै इति ॥ श्रोर ब्रह्महत्या व्रतकाअतिदेश याज्ञवल्क्य जीने किहाहै अतिदेश नाम उसका है कि अन्यत्र मे जो सिद्धहोवे उसको अन्यत्र जगामें स्थापन करणा ॥ यागस्थेति कि यज्ञवि षें स्थित जो क्षत्री श्रोर वैश्यहै तिनके मारण वाला पुरुष ब्रह्महत्या व्रतकरे अर्थात् जोव्रत ब्रह्महत्याविषें लिखयाहै उस व्रतके करणें करके पवित्र हुंदाहै श्रोर तैसेहि गर्भके मारण वा ला श्रोर तैसेहि आत्रेयीके मारणवाला जोवर्ण होवे उसी वर्णके अनुसार ब्रह्महत्या व्रतकरे तद शुद्धहुंदाहै श्रोर इसस्थानविषें आत्रेयी शब्द करके अत्रिगोत्रकी स्त्रीकाग्रहणहै इति ॥ १ ॥

श्रौर इसका अर्थ अपरार्कविषें लिखयाहैं कियागस्थयोःक्या यज्ञ विषें अधिकारपूर्वक कर्ताभा वकर्कें जो स्थितहे क्षत्री वैश्य तिनके मारण वाला पुरुष ब्राह्मणकी हत्याविषें नाना प्रकारके जो व्रतविधान कीयेहैं उनके मध्यते एक व्रतको करे तद यज्ञ स्थित क्षत्री श्रौर वैश्यकी ह त्यातें मुक्तहुंदाहे इति ॥ श्रौर इसस्थान विषें यज्ञकर्कें सोमयागका ग्रहण कीताहे श्रौर इस वास्ते सो जो क्षत्रीहैं सोमयागविषें श्रपनें शस्त्रोंकोस्थापनकर्के ब्राह्मणांके शस्त्र यो कुशाश्र वा कमंडलु तिन्हांकर्केहि ब्रह्माके स्वरूप कर्के ब्राह्मणव्रतकर्कें यज्ञमे स्थित हुंदाहै अर्थात् यद्यपि क्षत्रीहै तद भी सोम यागाविषें ब्राह्मण स्वरूप हुंदाहै इसकारणते तिसके मारणकर्के ब्रह्महत्या व्रतकरणायोग्यहे श्रौर श्रुति वाक्य कर्के यजमान क्षत्रीको सोमयज्ञविषें ब्राह्मणत्व

अस्यार्थोऽपरार्के यागस्थयोर्यागाधिकारपूर्वकर्तृत्वेन स्थितयोः ॥ क्षत्रियवैश्ययोर्हंतायद्ब्रह्मघातिनोनाना प्रकारव्रतंविहितंतच्चरेत् यागोत्रसोमयागोविवक्षितः तत्क्षत्रंनिधायस्वान्यायुधानिब्राह्मणएवायुधैर्ब्रह्मणो रूपेण ब्रह्मभूत्वायज्ञमुपावर्तत इति श्रुतिवाक्येनक्षत्रियस्ययजमानस्य सोमयागंप्रति ब्राह्मणत्वमित्यभिधानादेवंच दीक्षणीयायाऊर्द्ध्वप्रागवभृथान्ताद्वर्तमानयोः क्षत्रियविशोर्हंतुर्व्रतंमतदतिदिश्यत इतिमंतव्यम् ॥ यदापिच वासिष्टेनोक्तम् ब्राह्मणींचात्रेयींस्त्रियंहत्वाभ्रूणहत्याप्रायश्चित्तं सवनगतौच राजन्यवैश्याविति ॥ तत्रापिकृतदीक्षणीयावेवसवनगताविति विवक्षितम् ॥

प्रतिपादन कीताहे अर्थात् सोमयागविषें क्षत्रीभी ब्राह्मणका रूपहे इसकारणनें दीक्षणीया विधिले उपरंत श्रौर अवभृथांत कि यज्ञांत स्नानते पूर्व वर्तमान जो क्षत्री वैश्यहैं तिनके मार ण वालेको एह पूर्वोक्त प्रायश्चित्त करणा योग्यहै ऐसामन्नणा चाहिये इति श्रौर चपुना जो वाशिष्ठ जीनें किहाहैं ब्राह्मणी मिति क्या ब्राह्मण की स्त्रीको अथवा अत्रिगोत्रकी जो स्त्रीहैं तिसको मारकर्के गर्भहत्या प्रायश्चित्त किहाहै श्रौर तैसेहि यज्ञ विषें प्राप्त जो क्षत्री वैश्यहैं तिन का हत कर्के गर्भहत्या प्रायश्चित्तजान्नणा श्रौर इसस्थानविषें भ्रूणहत्याशब्दकर्कें ब्रह्महत्याका ग्रहण हुंदाहै ॥ श्रौर तिस विषें भी दीक्षणीया विधि के उपरंतहि यज्ञ विषें प्राप्तक्षत्री वैश्यका ग्रहण कीताहै ॥

श्रोर जो पुरुष जिस वर्ण का गर्भ होवे श्रोर जिस वर्ण की आत्रेयी होवे उह मारण वाला पुरुष उसी वर्ण के वधका प्रायश्चित करे अर्थात् ब्राह्मण वर्णका जेकर गर्भ श्रोर आत्रेयी होवे ॥ तद ब्रह्महत्याका प्रायश्चित करणेकर्के शुद्ध हुंदाहै ॥ श्रोर जेकर क्षत्रीका होवे तद क्षत्री वधका प्रायश्चित कर्के श्रोर वैश्य होवे तद वैश्य वधका ॥ श्रोर शूद्र होवे तद शूद्र वधका प्रायश्चित्त करणा योग्यहै ॥ श्रोर जेकर अज्ञात होवें तदभी ब्रह्महत्या का प्रायश्चित्त करणा योग्यहै इति ॥ श्रोर मनुजीनेभी अन्य किसी निमित्तके होयां ब्रह्महत्या प्रायश्चित्त का अति देश कहाहै अर्थात् ब्रह्महत्याते भिन्नपाप विषे भीब्रह्महत्या ब्रत किहाहै ॥ सोगो लिखयाहै हत्वेति अविज्ञात गर्भ को मार कर्के एह जो पूर्वोक्त ब्रतहै तिसकोकरे क्या जिस गर्भ विषे बालक कन्याका ज्ञान नहिंहैं ॥ उसको ॥ श्रोर ईजान क्या यजमान जो

यश्चयस्यवर्णस्यगर्भमात्रेयींचहंतासतद्वर्णवधप्रायश्चित्तंकुर्यात् ॥ मनुस्तु निमित्तान्तरेष्वपिब्रह्महत्या व्रतातिदेशमाह हत्वागर्भमविज्ञातमेतदेवव्रतंचरेत् राजन्यवैश्यावीजानावात्रेयीमेवचस्त्रियम् ॥ उक्त्वाचवानृतंसाक्ष्येप्रतिरभ्यगुरुंतथा अपहृत्यचनिःक्षेपंकृत्वाचस्त्रीसुहृद्वधमिति साक्ष्येऽनृतभाषणंतुयत्रव्यवहारेऽसत्यवचनेन वर्णिनांवधप्राप्तिस्तद्विषयमेतत् प्रायश्चित्तस्यातिगुरुत्वात् प्रतिरंभःक्रोधावेशः निःक्षेप श्चब्राह्मणसंबंधी ईजानौयजमानौक्षत्रियवैश्यौगर्भमविज्ञातंस्त्रीपुरुषभावेनेत्यर्थः गर्भश्चायं ब्राह्मणस्यैव तथाचापस्तम्वः ॥ गर्भंचतस्याविज्ञातमिति ॥ तस्यब्राह्मणस्येत्यर्थः ॥

क्षत्री वैश्यहैं तिनको मार कर्के अर्थात् यज्ञकरणवाले जो क्षत्री वैश्यहैं ॥ अथवा अत्रिगोत्र विषे उत्पन्न जो स्त्रीहै तिसको हत कर्के अथवा उगाही विषे झूठ बोल कर्के ॥ अथवा गुरुके साथ वैर करणे कर्के पूर्वोक्त ब्रत करणा योग्यहै ॥ अथवा अमानत किसी की हरणे कें अथवा स्त्री को श्रोर संबंधी को मार कर्के भी एह पूर्वोक्त ब्रत करणे कर्के पवित्र हुंदाहै परंतु साक्ष्य विषे यो झूठबोलणा तिसमे इतना विशेषहै कि जिस व्यवहार विषे असत्य बोलने कर्के वर्णीको वधकी प्राप्ति होवें उसस्थान विषे एह ब्रत जानणा किसवास्ते कि उनको प्रायश्चित्त बहुत होनेते ॥ श्रोर चुराईहोई अमानत ब्राह्मण कीजेकर होवे तद इसब्रत का ग्रहण हुंदाहै श्रोर जेकर एह गर्भ ब्राह्मण काहै ऐसाज्ञान होवें श्रोर स्त्रीपुंभाव कर्के ज्ञानना होवे तदभी एही ब्रत किहाहै ॥ तैसेहि आपस्तंबजीने किहाहैगर्भमिति ॥

ओर स्त्रीपुंभाववें गर्भका ज्ञान होवे तद जैसा चिन्ह होवे तैसाहि प्रायश्चित्त जाणणा और जेकर गर्भविषें कन्याका चिन्ह होवे उसके मारयां उपपातक प्रायश्चित्त जाणणा और इससे विना अर्थात् पुरुषका गर्भहै उस स्थान विषें ब्राह्मण मारणे वालेको जो एह पूर्व व्रत किहा है सोयी व्रत किहाहै और इस विषें एह विचारहै कि एह जो पाप कहेहैं सो ब्रह्म हत्याके समानहैं इस वास्तें इन विषें नाना प्रकारके जो ब्रह्म हत्याके व्रतलिखेहैं तिनके मध्यते विचार कर्के एक किसी व्रतको ग्रहण करणा और द्वादश वार्षिक का ग्रहण नाहि करणा योग्य किस वास्ते कि इस विषें कोयी विशेष कारण नहिहै इस कारणते अन्यका ग्रहण जाणणा ॥ और जो एह आपस्तंब जोने ब्राह्मणका गर्भ और अत्रिगोत्रकी जो स्त्रीहै तिनके मारण वाले पुरुषको बारां वर्षकाहि व्रत किहाहै सो केवल एक दिखाने वास्तेहै कुछ नियमवा

विज्ञाततुगर्भेयथालिंगंप्रायश्चित्तं स्त्रीलिंगेहतेउपपातकप्रायश्चित्तमितरत्रतुब्रह्मघ्नोव्रतमेतदेवव्रतम् इत्यनन्तरोक्तं नानाप्रकारंब्रह्मह‍व्रतंपरामृश्यतिनतुद्वादशाब्दिकमेवविशेषहेतुत्वाभावात् यत्त्वापस्तम्बेनब्राह्मणस्यगर्भमात्रेयींघ्नतोद्वादशाब्दिकमुक्तं तत्प्रदर्शनार्थंननियमार्थंतथाहिसतिसकृदभ्यासेनप्रत्ययाप्रत्ययानुबंधतारतम्यादिकृतहननेद्वादशवार्षिकव्रतमेवकार्यमिति विषयसमीकरणमन्यायमापद्येत व्रतग्रहणाच्चप्रायश्चित्तातिदेशः तेनातिदिष्टप्रायश्चित्तेऽपतित्वाद्द्विजातिकर्मभिरधिक्रियतएव

स्ते नहिहैं इस अर्थको स्पष्ट कर्तेहैं ॥ तथाहीति ॥ और तैसेहि एकवार कर्के और अभ्यास कर्के प्रत्ययादि क्या ज्ञाताज्ञात कर्के वधके कीतयां होयां द्वादश वार्षिकहि व्रत करणेसे सम प्रायश्चित्तका विषय तुल्यहि होया तिस कर्के अन्याय प्राप्त हुंदाहै अर्थात् जो २ प्रायश्चित्त जिस २ पाप विषे लिखायाहै सो २ यथा योग्य स्थान विषें जाणणा और ऐसानहि करणा कि पाप औरहै और प्रायश्चित्त और कहणा और जेकर ऐसे विषय सभका एकत्र होजावे तद अपने को पाप हुंदाहै और इसस्थान विषें व्रत ग्रहणते प्रायश्चित्तका ग्रहण कायाहै और तिस कर्के प्रायश्चित्तके अतिदेश कीतयां पतित न होनेते ब्राह्मणके कर्मोका अधिकार हुंदाहै अर्थात् एह पापी भीहै तथापि आपणे नित्यकर्मादि कर्दे रहणा

श्रोर पूर्वजो लिखयाहे किस्त्री वधकर्के श्रौर सुहृदवध कर्के एही प्रायश्चित्तहै इस विषे केवल सामान्य स्त्रीका ग्रहणनहि कीता श्रौर जेकर सामान्य स्त्रीका ग्रहणहोवे तद अत्रीगोत्रकी स्त्री काजो ग्रहणहै सोव्यर्थ होजंदाहे किसवास्ते कि स्त्री शब्दकर्के श्रात्रेयीकाभी ग्रहणहुंदाहे । इस कारणतें । अंगिराजीनेविशेष कहाहै श्राहिताग्नेरिति श्रग्निहोत्र करणवाला जो उत्तमब्राह्मणहै तिसकी पति व्रता स्त्रीको मारकर्के श्रौर तैसेहि श्रात्रेयीको मारकर्के ब्रह्म हत्याव्रतकरें श्रर्थात् जो कोयी पुरुष ऐसी स्त्रीकावधकरे सो पुरुषब्रह्महत्याविषे जो व्रतकहाहै उस व्रतकर्के शुद्धहुंदाहै श्रौर विशेष इस विषे पराशरजीने किहाहै सवनस्थामिति किसी व्रत विषे स्थित जोस्त्रीहै तिसको हतकर्के ब्रह्महत्याका प्रायाश्चित्त करे इति । श्रौर विष्णुजीने किहाहै एतदिति पुरुष ब्रा ह्मण को मार कर्के बारां वर्ष प्रमाण एह जो महा व्रत किहाहै तिसको करे अथवा अत्रिगो

कृत्वाचस्त्रीसुहृद्वधमित्यत्र नस्त्रीमात्रंविवक्षितम् श्रात्रेयीग्रहणस्यानर्थक्यप्रसंगात् ॥ श्रतएवतद्विशेषमाहांगिराः ॥ श्राहिताग्नेर्द्विजाग्र्यस्यहत्वापत्नीमनिंदितांब्रह्महत्याव्रतंकुर्यादात्रेयीघ्नस्तथैवच पराशरस्त्वन्यविशेषमाह ॥ सवनस्थांस्त्रियंहत्वा चरेद्ब्रह्महणिव्रतम् ॥ विष्णुः ॥ एतन्महाव्रतंब्राह्मणंहत्वा द्वादश वत्सरान्कुर्यादत्रिगोत्रांनारींवा मित्रंवा श्रनेनचात्रिगोत्रेत्यात्रेयीत्युक्तंभवति ॥ वसिष्ठःपुनरन्यदप्याह॥रजस्वलामृतुस्नातामात्रेयीमाहुरिति वदन्नजोदर्शन प्रभृतिषोडशाहोरात्राणियावदात्रेयीभवति इतिगमयति श्रत्रह्येकमपत्यंभवतीति व्युत्पत्तिप्रदर्शनंबंध्याव्युदासार्थं ॥ श्रन्यथानर्थकंस्यादितिकेचित् ॥ व्युत्पत्तिमात्रपरमेतदित्यपरे

त्रकी स्त्रीको श्रथवा मित्रको मार कर्के द्वादश वर्ष करे श्रपनी पवित्रतावास्ते ॥ श्रौर इस कर्के श्रत्रिगोत्रकी जो स्त्रीहै उसका नाम श्रात्रेयी हुंदाहै ऐसे किहाहै इति । श्रौर वासिष्ठजीने होर श्रर्थ श्रात्रेयीका कीताहै रजस्वलेति किऋतु स्नाता जो रजस्वलाहै तिसको भीश्रात्रेयी कहतेहैं ॥ श्रौर इस विषे रजो दर्शनते श्राद लेकर सोलां दिन रात्रि पर्यंत श्रात्रेयी हुंदी है ऐसे भी जानणा श्रौर इसऋतु विषे एकसंतान हुंदीहै एह जो व्युत्पत्ति दिखायीहै सो बंध्याके निषेदवास्तेहै ॥ इस कारणते बंध्याजो श्रात्रेयीहै तिसका वध करणे कर्के एह पूर्वोक्त प्रायश्चित्त नहि जानणा श्रौर जेकर ऐसे नहोवे तद श्रनर्थक हुंदाहै एह कयांकामतहै । श्रौर श्रन्योंके मत विषे व्युत्पत्तिमात्रपरहै इसते बंध्याभी होवे तद भी श्रात्रेयी हुंदीहै ।

और अर्थ कीताहै कि नहिहै कार्यकरणोंके योग्य तिन दिन जिसके तिसकानामहै अत्रेयी एभी जाननाअर्थात् किसीके मतविषे अत्रेयी ऐसा नामहै ऐसी स्त्रीके बधकर्के पूर्वोक्त ब्रह्महत्याका प्रायश्चित्त जानणा ॥ और जो पुरुष ऋतु स्नाता स्त्रीको हतकरे सो ब्रह्महत्या व्रत करणे कर्केप वित्र हुंदाहै ॥ और अब आत्रेयीतेभिन्न स्त्रीके वध विषे अन्य व्रत किहाहै तिसीने क्या विधि छजीने अत्री गोत्रकी और ऋतु स्नाता इनते भिन्नस्त्रीके वध विषे और हि प्रायश्चित्त आगे किहाहै सोयोजैसे आत्रेयीते भिन्नजेकर ब्राह्मणीस्त्री होवे तिसके मारण वाला पुरुष क्षत्री हिंसा विषे जो व्रत किहाहै तिस व्रत को करे ॥ और जेकर आत्रेयीते भिन्न क्षत्रीकी स्त्री होवे उसके मारण वाला पुरुष वैश्य हिंसा विषे जो प्रायश्चित्त किहाहै तिसको करे ॥ और आत्रेयीभिन्नजेकर वैश्यकी स्त्री होवे उसके मारण वाला पुरुष शूद्र हिंसा विषे जो प्रायश्चित्त किहाहै तिसप्रायश्चित्त को करे ॥ और आत्रेयीभिन्न जेकर शूद्र की स्त्री होवे उसके मारण वालेने वर्षका जो

नसंतिकर्म्मयोग्यानि त्रीणिदिनानियस्याः साअत्रेयीत्यपि ॥ अनात्रेयीवधेव्रतांतरातिदेशमाहसएव ॥ अनात्रेयींराजन्यहिंसायां राजन्यां वैश्यहिंसायां वैश्यां शूद्रहिंसायां शूद्रांहत्वा संवत्सरमिति ॥ अयमर्थः अनात्रेया ब्राह्मणींहत्वाराजन्यहिंसायांयद्व्रतमुक्तंतत्कुर्यादिति एवमुत्तरत्रापि ॥ शूद्रांहत्वासंवत्सरंब्रह्महत्या प्रायश्चित्तंकार्यम् यत्तुस्त्रीगर्भस्योपपातकत्ववचनं तदभिव्यक्तस्त्रीगर्भस्यवधेद्रष्टव्यम् (स्त्रीरूपोगर्भःस्त्रीगर्भः) विष्णुः समुत्कर्षानृतेगुरोश्चालीकनिर्वन्धे तदाक्षारेणमासंपयसावर्त्तेत अल्पापराधविषयमेतन्महापराधेब्रह्महत्याप्रायश्चित्तमेव अतएवभगवान् याज्ञवल्क्यो

ब्रह्महत्या प्रायश्चित्तहै सो करणा योग्यहै अर्थात् आत्रेयी भिन्न शूद्रकी स्त्री को मार कर्के इस प्रायश्चित्त करणे कर्के पवित्रहुंदाहै इति और स्त्रीरूपगर्भ कीहिंसाको उपपातक प्रतिपादन करण वाला जो वाक्यहै सोप्रकट स्त्रीरू पगर्भके वधविषे दिखाया है अर्थात् जिसस्थान विषे एहस्त्रीहै एहसभ प्रकट होवे उसगर्भ की जो हिंसाहै सो उपपातक हुंदाहै और विष्णुजीने किहाहै समुत्कर्षेति कि गुरुते अभिमान कर्के वडा वणना और गुरुआगे झूठ वाक्य कहणा और झूठी वात बनाकर करणी इस प्रायश्चित्त विषे क्षाराजल पान कर्के एकमहीना व्यतीत करे अर्थात् एकमहीना केवल खाराजल पीवे तदपवित्रहुंदाहै और एहप्रायश्चित्त थोडे अपराध विषे जाणणा और बहुत अपराधविषे ब्रह्महत्या प्रायश्चित्त करणा योग्यहै और (इसी कारणतेहि भगवान् याज्ञवल्क्यजीने

ब्रह्महत्याके तुल्याकि हे जो तिरस्कार करणा इत्यादि पाप हैं तिनका भिन्न २ प्राय श्चित्तनहि किहाहै अब इसमें होरविशेषकहतेहैं चरेदिति किजोपुरुष किसीकेवधवास्ते आयाहै और जेकर उहनहीभी मृतहोवे तदभी उहवर्णवधके अनुसार प्रायश्चित्तकरे अर्थात् जिसवर्णको मारणे वास्ते उद्यमकरे उसवर्णकी हत्याका प्रायश्चित्त करणा योग्यहै इति और यदकोई पुरुष ब्राह्मण वधविषे उद्यम करे और किसीविघ्नवशते नहतकरे और नहि शास्त्रबलते अर्थात् कुछशास्त्र विचार करके ब्रह्महत्याके दोषके भयते ना त्यागदेवे किंतु विघ्नहोयां ब्राह्मणकावध नाकरे तद भी उहपुरुष ब्रह्महत्या प्रायश्चित्त करे तद शुद्धहुंदाहै और इसकारणते ऐसायोग्यनहि क्या व

ब्रह्महत्यादिसमत्वेनाभिहितानांगुर्वधिक्षेपादीनांपृथक्प्रायश्चित्तंनोक्तवान् ॥ किंच ॥ चरेद्व्रतमहत्वापिघातार्थं चेत्समागतः यथावर्णमित्यनुवर्त्तते यदिब्रह्मवधेप्रवृत्तोविघ्नवशान्नहन्तिनतुशास्त्रबलात् तदापि ब्रह्महत्याप्रायश्चित्तंचरेत् नचवधंकृतवतोऽकृतवतश्चैकमेवव्रतंयुक्तंतेनाघ्नतः पादोनंकल्प्यम् एवंक्षत्रियादिवधेपि एवंकेनचिद्ब्राह्मणपराहत्तयेदण्डादिपातितं तेनैवदैवान्मृतश्चेत्तथापि मारणार्थसमुद्योगाभावादल्पमेव तस्यप्रायश्चित्तमित्यपि तुल्यन्यायात्कल्पंते केचित् यत्तुगौतमेनोक्तम् पृष्टश्चेद्ब्राह्मणवधेऽहत्वापीति तत्रब्राह्मणग्रहणंप्रदर्शनार्थम् ॥ त्वंब्राह्मणहननायगतोसित्वयाब्राह्मणोहतो नवेतिपृष्टो मयानहत इति कथयन्नपि तत्प्रवृत्तिवशात्प्रायश्चित्तीत्यर्थः

ध करणवाले को और जिसने वधनहि कीता उसको भी एक हिव्रत योग्यहै इसवास्ते जो वध नाकरे तिसको पादोन प्रायश्चित्त कल्पना करणे योग्यहै और इसप्रकार क्षत्रियादि वधे विषे भीजानणा और किसेने ब्राह्मण हटाणेवास्ते दंड चलाया परंतु सो उसीकरके मरगिया उस जगाभी थोडा अर्थात् पादोन हि व्रत करवाणा जिसकरके उसको मारण विषे प्रवृत्ति नहि और गौतम जीने किहाहैं पृष्टेति ब्राह्मण वध विषे पुच्छियाहोया क्या तुंब्राह्मण मारण वास्ते गयाथा तैंने ब्राह्मण को मारयाहै किनहि मारया उह मैने नहिमारया ऐसेभी कहे तद भी मरण वास्ते प्रवृत्तहोनेते प्रायश्चित्त हुंदाहै

श्रोर पृष्ठः इहां सृष्टः एह भी पाठहै इस करके ब्राह्मण वधते फिरयावे ऐसा अर्थ करणा ॥ श्रोर इस विषें ब्राह्मण का ग्रहण केवल दृष्टांत मात्र है किंतु औरों वास्ते भी ऐसा जानणा इसमें होर विशेष कहते है किंचद्विगुणमिति कि यज्ञ स्थित ब्राह्मणके मारयां दूणा व्रत करे क्या सोम यज्ञ विषे लर्याहैदीक्षा जिसने ऐसे ब्राह्मण के वध विषें दूणा ब्रह्महत्याका प्रायश्चित्त करे श्रोर ऐसेहि यज्ञ स्थितब्राह्मणके वध विषें प्रवृत्त मात्र पुरुष को भी द्विगुण पादोन व्रत किहाहै अर्थात् यज्ञ स्थित ब्राह्मणके मारण को उद्यत होवे मारेनाहि तद भी दूणा पादहीन व्रतजान्नणा ॥ एह व्रतयाज्ञवल्क्यजीनेकहेहैं श्रोर होर ऋषियोनेभीकहेहैं ॥ १६ ॥ तिस विषें जमदग्नि जीनेकिहाहै क्या अथवा

सृष्टश्चेतिवापाठः सृष्टः परावृत्तइत्यर्थः ॥ किंच द्विगुणं सवनस्थेचब्राह्मणे व्रतमाचरेत् ॥ सोमयागायकृतदीक्षस्य ब्राह्मणस्यवधेब्रह्महत्याव्रतंद्विगुणमाचरेत् एवंचतद्वधे प्रवृत्तस्याघ्नतोवापिद्विगुणमेवपादोनम् ॥ एवं तावद्भगवतायाज्ञवल्क्येनकानिचिद्ब्रह्मवधे व्रतान्युक्तानि अन्यान्यपिकानिचिन्महर्षयश्राहुः ॥ तत्रजमदग्निः यदावाराणसींगच्छेत्सेतुंश्रीपर्वतादिकं अन्यान्यपिचतीर्थानिगायत्रींचजपेत्तथा अत्रिः ब्रह्महाब्दत्रयंविप्रो गायत्रीमभ्यसेत्तदा प्राणायामशतंकुर्यात्प्रत्यहंनियतःशुचिः १ एतदेवव्रतं स्तेनः पादन्यूनंसमाचरेत् गत्वैतदेवकुर्वीतगुरुतल्पमकामतः २ ब्रह्महत्यासमेष्वेतत्प्रयोजककर्तृपुवाऽल्पत्वात् षड्भिर्वर्षैः कृच्छ्रचारीब्रह्महापूयतेनरः

ब्रह्महापुरुष काशीको जावे अथवा सेतु श्रोर श्री पर्वत श्रोर भीजोतीर्थहै तिन विषें स्नान करे श्रोर गायत्रीजप करे तद पवित्र हुंदाहै ॥ श्रोर तैसेहि अत्रिजीका वाक्यहै क्याब्रह्महा ब्राह्मण तिन्न वर्ष गायत्रीअभ्यास करे श्रोर नित्यप्रतिपवित्रहोकरनियमसेसौ प्राणायाम करे १ श्रोर सुवर्ण का चोर ओहोवे सो इसीव्रतको पादहीन करे श्रोर कामनातेबिनागुरु की शय्या उपर गमन करे सोभीएही व्रत करे २ ब्रह्महत्यासमान पापों विषें प्रेरणा करण वाल्योंको अल्पपाप होनेते एहि व्रत किहाहै ॥ श्रोर ब्रह्महा पुरुष व्रत करदारहे तद छे वर्ष करके पवित्र हुंदाहै ॥

और जेकर महीने २ पराक व्रतकरे तद तिन्नां वर्षां कर्के ब्रह्महत्या को दूर करताहै और जेकर एक २ महीनेविषे एक २ वारी भोजन करे तद एक वर्ष कर्के पवित्रहुंदाहै १ अथवा एकह जार गौ विधि पूर्वक पात्रब्राह्मणोंकों जेकर देवे तद भी ब्रह्महा संपूर्ण पापते मुक्त हुंदाहै २ मासाशी शब्दका अर्थ कहतेहैं मास इति महीनेके व्यतीत होयां जो भोजन करे उसका नाम मासाशीकिहाहै और देवल जीने किहाहै कि ब्राह्मण पवित्रतीर्थां विषे देहत्याग करदेवे त दभीमहापातकते मुक्तहुंदाहै और क्षत्री धर्मयुद्धविषे अथवा गौ मारणवास्ते ग्रहण कीतयां गौके रक्षावास्ते प्राणत्याग करे तद शुद्धहुंदाहै ॥ और कालिका पुराण मेलिखयाहै वृत्रमिति

मासेमासे पराकेणत्रिभिर्वर्षैर्व्यपोहति संवत्सरेणमासाशीपूजतेनात्रसंश यः १ गवांसहस्रंविधिवत्पात्रेभ्यःप्रतिपादयेत् ब्रह्महाविप्रमुच्येतसर्वपापे भ्यएवतु २ मासेव्यतीतेऽश्नातियः सभवेन्मासाशी देवलः तीर्थेपुपुण्यतम षुयावद्देहसंन्यासाद्ब्राह्मणोमहापातकात्प्रमुच्यते धर्मयुद्धेगोग्रहणघातादि षुप्राणत्यागात्पूयतेक्षत्रियः कालिकापुराणे। वृत्रंहत्वाततःशक्रोमहेंद्रेस्था प्यशांकरंलिंगंमुक्तस्तयायोवैततःसत्रिदिवंगतः १ ॥ रावणंसूदयित्वातु रामोदासरथिस्तदाविमुक्तोब्रह्महत्यायाःस्थाप्यलिंगंसुतेजसम् ॥ २ ॥ अद्राविंद्रेश्वरंदृष्ट्वातथारामेश्वरंप्रभुंमुच्यतेब्रह्महत्यायानरोवैनात्रसंशयः ३ यत्तुवसिष्ठः ॥ अथापरंभ्रूणहत्यायाद्वादशरात्रमब्भक्षोद्वादशरात्रमेवो पवसेत् अस्यापरोविषयोभविष्यत्पुराणेएवोक्तः

इंद्र वृत्रासुर को मारकर्के तिसकी ब्रह्महत्या दूरकरण वास्ते महेंद्र पर्वत विषें शंकरकालिंग स्थापन कर्के तिसब्रह्महत्याते मुक्तहोया २ तिसते अनंतर स्वर्गको जांदाभया इति १ और राम चंद्र रावणको मारकर्के तिसकी हत्याके दूरकरण वास्ते ज्योति लिंगको स्थापन कर्के ब्रह्मह त्याते मुक्तहुंदे भये इति २ और ऐसेहि महेंद्र पर्वत विषे इंद्रेश्वर का दर्शन कर्के और तैसेहि रामेश्वर प्रभुका दर्शन कर्के पुरुष ब्रह्महत्याते मुक्त हुंदाहैं इसमे कुछ संशयनहिहै इति ३ औ रवसिष्टजीने किहाहै कि इसते उपरंत भ्रूणहत्याका एहजो प्रायश्चित्त किहाहै कि द्वादशरात्रि जल भक्षण करे और द्वादशरात्रिउपवासकरे इसका होरविषय भविष्यत्पुराणविषे लिखयाहै

यदेति अद अतिशय करके गुणहीन होवे और गायत्रीते भी वर्जितहोवे ऐसे ब्राह्मण को कामनाते जोपुरुष मारदेवे उसकेवास्ते मेरेते प्रायश्चित्त सुन १ क्यामारण वाला पुरुष दान देने कोसमर्थ जेकर होवे तद इसप्रकार व्रतकल्पनाकरे क्या वशिष्ठने जो ब्रह्महत्या नाशक व्रतजो किहाहै तिसव्रतको करे २ किद्वादशरात्रि जल पान करे और द्वादशरात्रि उपवासकरे एहअर्थजाणणा और इसका अभिप्राय एहहै किपूर्वोक्त गोसहस्रदान विषे समर्थ होवे अर्थात् प्रथम हजार गोदान करके तिसते अनंतर द्वादशरात्र्यादि व्रतकरे इति और इसमें मतांतर पूर्वकिहाहै और शंखलिखतजीने किहाहै ॥ कि पतित शिष्टान्न भोजन करे अर्थात् पतित शिष्ट क्या पतित व्यति रिक्त जो ब्राह्मणादिहैं तिनते याचना करके जोअन्न लेयाहै तिस को भोजन करके

यदात्यर्थंगुणैर्हीनोगायत्र्यापिविवर्जितःनिहतः कामतश्चैवतदैवैतन्निबोध मे १ हंतादानसमर्थश्चेत्तदैवंपरिकल्पयेत् वसिष्ठेनसमास्यातंब्रह्महत्याव्यपोहनम् २ ॥ द्वादशरात्रमभक्षोद्वादशरात्रमुपवसेदित्यर्थः शंखलिखितौ ॥ पतिताशिष्टान्नभोजीद्वादशवर्षाणिगवांसहस्रंदत्वाद्वादशेवर्षेशुद्धिमाप्नोति। पतिताशिष्टाः पतितव्यतिरिक्ताः । ब्राह्मणादयः याचनयातदन्नभोजीसन् द्वादशवर्षाणि चरित्वागवांसहस्रंदत्वाचशुद्ध्यति । एतदपि सवनस्थब्राह्मणवधविषयम् । बृहस्पतिः । गंगायमुनयोर्वापि संगमेलोकविश्रुते । शुद्ध्येत्त्रिषवणस्नायीत्रिरात्रोपोषितोद्विजः १ शुद्ध्येत् ब्रह्महाशुद्ध्येदित्यर्थः ।एवमादीनिगुरूणिलघूनिच प्रायश्चित्तानि संतितेषां देशकालसामर्थ्यवयोजाति गुणाद्यपेक्षयाविषयव्यवस्था कल्पनीया । अन्यथागुरुकल्पोपदेशोऽनर्थकः स्यात् ॥

वारां वर्ष व्यतीत करे और फेर हजार गौदे करके शुद्धिको प्राप्त हुंदाहै । एह भीयज्ञ विषे स्थित जो ब्राह्मणहै तिस के वध विषयक जाणणा ॥ और बृहस्पति जीने किहाहै - गंगेति कि संसारमें विख्यात जो गंगायमुना का संगमहै तिस विषे ब्राह्मण तिनकाल स्नान करे और तिन्न उपवास करे तद पवित्र हुंदाहै इति १ और ऐसेही पूर्वोक्त प्रकार करके इत्यादि थोडे और वडे प्रायश्चित्तहैं तिनकी व्यवस्था देश काल सामर्थ्य अवस्था गुण इनके अनुसार कल्पना कराणे योग्यहै । और इस के अनुसार व्यवस्था जेकर नाहो तद अल्प पाप विषे बहुत प्रायश्चित कल्पना करके अनर्थ हुंदाहै इति ॥

भविष्यत्पुराण विषे गुहजीने पुच्छियाहै ईश्वरके पाससे यमिति कि कोयी ब्राह्मण जिसके ऊपर क्रोध कर्के अपने आत्मा को हत करे अर्थात् मृत हो जावे आपहि हे विभो जिसके ऊपर मृत होवे उस को कैसा प्रायश्चित्त करणा योग्यहै इति । आगेईश्वरजी कहतेहै केश इति ॥ कि हे स्वामि कार्त्तिक जिसके ऊपर क्रोध वशतें ब्राह्मण मृत हो जावे तिसको इस प्रकार करणा चाहिये क्या केश दाढी नख इनको कटा कर्के हेवीर ब्रह्म चर्य करे तद एक वर्ष कर्के शुद्ध हुंदाहै १ ॥ और एह जिसके निमित्त मृत होयाहै तिसके अल्प अपराधके विषय विषे जानणा ॥ और ब्राह्मण गुण रहित होवे सो हे स्वामिकार्त्तिक जेकर घर वास्ते और क्षेत्र वास्ते होर किसी संबंध कर्के क्रोध वशते जिसके ऊपर प्राणत्याग करे २ सो पुरुष तिन्न वर्ष का व्रत करे और ब्रह्म चर्यधारण करे तद पवित्र हुंदाहै ॥ और

भविष्यत्पुराणे । गुहउवाच । यमुद्दिश्याद्विजोहन्याद्ब्राह्मणंस्वयमेवहि । आत्मानंसहसाक्रोधात्तस्याकिंनुभवेद्विभो । ईश्वरउवाच । केशश्मश्रुनखादीनांकृत्वाचवपनंगुह । ब्रह्मचर्यंचरेद्वीरवर्षेणैकेनतद्व्रतः १ यमुद्दिश्य मृतः सवर्षंब्रह्मचर्यंकुर्यादित्यर्थः इदमुद्देशुरल्पापराधविषयम् । ससंबंधायदाविप्रोहत्वात्मानंमृतोगुह । निर्गुणःसहसाक्रोधाद्गृहक्षेत्रादितो विभो २ त्रैवार्षिकंव्रतंकुर्याद्ब्रह्मचर्यंचरन्मुने । एवंशुद्धिमवाप्नोतिहत्वात्मनंमृतोयदि ३ ॥ ससंबंधोभ्रात्रादिसंसृष्टा ॥ तिरस्कृतोयदा विप्रोनिर्गुणोम्रियतेनघ । यन्निमित्तंतथापुत्रतदेवसविशुद्धये ॥ ४ ॥ त्रैवार्षिकंब्रह्मचर्यंकृत्वाशुश्रतविग्रहा प्रतिलोमंचगच्छेद्वा नियताशीसरस्वतीम् ५ । पूर्वसामान्य धननिमित्तमिदंतुतिरस्कारनिमित्तमितिभेदः ।

इस प्रकार सो पुरुष शुद्धि को प्राप्त हुंदाहै जिसके ऊपर ब्राह्मण मृत होवे । संबंध क्या भ्रात्रादियों की सांज जाणणी ३ । और निर्गुण ब्राह्मण अपमा नको प्राप्त होया जिसके निमित्त कर्के हे अनघ मृत होजावे उसकी शुद्धि वास्ते एह प्रायश्चित्त किहाहै ॥ ४ ॥ और उह ब्राह्मण तिन्न वर्ष ब्रह्मचर्यकर्के शुद्ध हुंदाहै अथवा नियम कर्के एक काल भोजन करता होया प्रतिलोमसर स्वती कोजावे अर्थात् जिसस्थानते सरस्वती प्रकट होयीहै उसस्थान ते लेकर जहां तक अंतहै उहां पर्यंत जावे और फिर अंत ते लेकर कनारे २ फेर जहां प्रकट होयीहै उस स्थान विषे आकर प्राप्तहोवे इस प्रकार स्नाना करणा कर्के पवित्र हुंदाहै ॥ ५ ॥ पिचला सांझे धनदे निमित्तणा और एह प्रायश्चित्त तिरस्कारके निमित्तहै इतना भेदहै

और अति निर्गुण जो ब्राह्मण है सोकारण तेविना अतिगुणवान् पुरुष कर्के अनादर को प्राप्त हो कर तिसगुण वानके उपर जेकर मृतहोजावे ६ । तद उह पुरुष अपनीशुद्धि वास्ते ऐसे प्रायश्चित्तकरे अर्थात् सो पुरुष अपनी शुद्धि वास्ते तिनवर्ष व्रतकरे ॥ ७ ॥ अथवा अपने शरीरके बरावर तोलकर सुवर्ण ब्राह्मण केतांयी देवे इसप्रकार प्रायश्चित्त कर्के पवित्रहुंदाहै । इसमे होर विशेष कहतेहैं कि जेकर किसी निमित्त ते ब्राह्मण एह वाक्य कहे किमैं मरजाताहां तद ऐसी वाणी के किहां होयां उहपुरुष आगेते उस ब्राह्मण कौशस्त्रदेवे कि ले इस शस्त्र कर्के मृत हो और फेर शस्त्र को ग्रहण कर्के जेकर उसीशस्त्र का अपने ऊपर प्रहार कर्के ब्राह्मण मृतहोजावे ८ ॥ और उह पुरुषजिसने शस्त्र दीया हैसोइस प्रकार ब्राह्मण को मृतहोनेविषे उपेक्षाकर देवे अर्थात् ब्राह्मण ने अपने मरण वास्तेशस्त्रग्रह

अत्यर्थनिर्गुणोविप्रोह्यत्यर्थगुणिनोपरि सम्बन्धेनविनापुत्र म्रियतेपरिभर्त्सितः६अतिनिर्गुणोविप्रोहि अतिगुणिना पुरुषेण निष्कारणं अनादृतस्तस्यगुणिनउपरि म्रियतेचेत्तदातेनगुणिना इदंप्रायश्चित्तकर्त्तव्यमित्यर्थः प्रायश्चित्तंयथाकुर्यादिदंपापविशुद्धये वत्सरत्रितयंकुर्यान्नरःकृच्छ्रंविशुद्धये७ आत्मतुल्यंसुवर्णंवा दद्याद्विप्रायतुष्टिदम् ॥ वाचोक्ताचार्पितेशस्त्रेहत्वाविप्रः क्षयंगतः८। यएवंम्रियमाणंतुब्रह्मणंसमुपेक्षते। तस्यतांनिष्कृतिंवच्मिनिर्गुणस्यविशेषतः ९ सशिखंवपनंकृत्वा क्षुताम्भपक्तस्तथागुह । आत्मानंनिर्दहेदग्नावापादतलमस्तकम् १० ॥क्षुतोऽनशनः॥ यद्येवंवहवोविप्राघ्नंतिविप्रमनागसम् ॥ तदैषांनिष्कृतिंवाच्मिशृणुष्वैकमनागुह ११

ण कीताहै तिस कोसन्मुख देख कर्के भी मृत्युते ना हटावे तिसकेवास्ते एह प्रायश्चित्त है और तिस निर्गुण पुरुषके वास्ते प्रायश्चित्त कहताहां विशेषते अर्थात् जिसने ब्राह्मणकोमरण वास्ते शस्त्रदीयाहै सोपुरुष जेकर गुणहीन होवे विशेषते उसके वास्ते एह प्रायश्चित्त जानणा ९ सो लिखया है कि उह पुरुष प्रथम शिखाकेसाथ मुंडन करवाकर्के हे स्वामि कार्त्तिक फेर अनशनकरे अर्थात् अन्न जल सभ त्याग करे फेर अपने शरीर को पयरांते लेकर मस्तक पर्यंतअग्नि विषे दग्ध कर देवे इस प्रकार प्राय श्चित्त कर्के पवित्र हुंदाहै १० और इसी प्रकार बहुतब्राह्मण एकत्र हो कर अपराध ते विना जेकर एक ब्राह्मणको हतकरेंतद उन सभ के वास्ते प्रायश्चित कथन करताहांतुम हेस्वामि कार्त्तिक एकाग्रचित्तकर्के श्रवणकरो ॥ ११ ॥

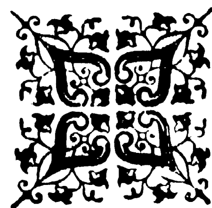
श्रौर तिन सभके विषें जिसके प्रहार कर्के ब्राह्मण मृत्युको प्राप्तहोवे सो पुरुष अपनी शुद्धि वास्ते प्रतिस्रोता सरस्वतीकी यात्रा करे १२ श्रौर अन्यसंपूर्णहे पुत्र अपनी शुद्धि वास्ते एहु प्रायश्चित्त करें कि हे गुरु चतुर्विद्यामत विषें जो एकवर्षका व्रतहै तिसको करें अर्थात् वाकोंके सभ एकवर्ष प्रमाण जेकर व्रत करें तद पवित्र हुंदेहैं १३ सो चारविद्या आन्वीक्षिकी इत्यादि कर्के कहीहै श्रौर एह प्रायश्चित्त निरपराध विषें अथवा थोडे अपराध विषेंहै श्रौर बहुते अपराध होवेतां सिंह इत्यादि श्लोक किहाहै श्रौर सिंहतें आदलेकर हिंसा करणवाले जीवहैं श्रौर सर्प श्रौर राजा श्रौर ब्राह्मणोंका समूह एह सभ इन दोषों कर्के नहि लिप्तहो
यद्यपि संपूर्ण जगतको हत करें तदपि सो प्रायश्चित्त इस प्रकार करणा चाहिये १४ कियद्य
बहुत प्रायश्चित्त होवे अथवा अल्पहो जितना चिर आत्माकी प्रसन्नता नहि होयी

तेषांयस्यप्रहारेणसविप्रोनिधनंगतः सरस्वतींप्रतिस्रोतःसचरेत्पापशुद्धये १२ अन्येकुर्युरिदंपुत्रप्रायश्चित्तंविशुद्धये कुर्युःकृच्छ्रंद्विपण्मासांश्चातुर्विद्यामतंगुरु १३ आन्वीक्षिकीत्रयीवार्त्तादंडनीतिरूपाणां चतसृणां विद्यानांमतं तेनानुज्ञातमिदंकृच्छ्रमित्यर्थः इदमपिनिरपराधेअल्पापराधेवाज्ञेयं सापराधेतुसिंहेत्यादि सिंहादयस्तथासर्पाराजाविप्रकदम्बकम् एतेदोषैर्नलिप्यन्तेघ्नंतोपिसकलंजगत् १४ गुरुलघुतांप्रतियद्यात्मतुष्टिर्नजायते प्रतिपुराणंवैतत्रजपादिभिरुदाहृतम् १५ जपादीनांसर्वेषांधर्मशास्त्रेषुसर्वशः प्रायश्चित्तंविशेषेणसर्वेषामिदमुच्यते १६ शोधनंदेवशार्दूलजपहोमादिकंमहत् जपस्तपस्तथाहोमउपवासोघमर्पणम् १७

अर्थात् सभ पाप विषें ऐसा प्रायश्चित्त करणा चाहिये कि जिसके करणे कर्के अपना आत्मा प्रसन्न होजावे श्रौर सभ पुराणां विषें जपादिको कर्के शुद्धि कहीहै १५ श्रौर संपूर्ण धर्म शास्त्र विषें संपूर्ण जपादिकोंको सभ प्रकारके पापोंका एह प्रायश्चित्त किहाहै किहे देवता विषें सिंह जपहोमादिजोहैं सो सभ पापके शोधन कहेहैं अर्थात् जप होम इत्यादि कर्म कर्के सभ पापनाश हुंदेहैं १६ सोयी जैसे जप क्या गायत्री मंत्र अन्य जो पवित्र मंत्रहैं तिनका अभ्यास करणा श्रौर व्रत शीत उष्ण इन कर्के शरीरको कृश करणा इसका नाम तपहै श्रौर मंत्रके साथ अग्नि विषें चरूकी आहुति करणी इसका नाम होमहै श्रौर उपवास व्रत करणा श्रौर जल विषें श्वास रोककर अघमर्पण करणा एह प्रायश्चित्त उनको । जिनोंने सापराध ब्राह्मण मारयाहै १७

एह सभ अतिशय करके संपूर्ण पापके नाश करणवाले कहेहैं और हेस्वामि कार्त्तिक औरभी जो प्रायश्चित्त शास्त्रों विषे कहेहैं उनकी व्यवस्थाभी पापके बहुत अल्प विषे जाननी और जिस बडेपाप विषे जो प्रायश्चित्त किहाहै सोयी अन्यगुरु पापके समीप वर्ति विषे जानणा और तैसेहि लघुपापविषे जो प्रायश्चित्त किहैहै सोयी लघुपापकेसमपिवर्तिविषे जानणा और जेकर संशयते अपनी प्रसन्नताना होवे तद संपूर्ण पुराणविषे किहे जो जपादिहैं तिनकर्के निश्चयकीता जावे एह अर्थहै एहसंपूर्णब्रह्महत्याकाप्रायाश्चित्तकिहाहै इति ब्रह्महत्याप्रायाश्चित्तप्रकरणंसमाप्तम

ज्ञानाऽज्ञानकृतानांतुपापानांशोधनंपरम् १८ अन्यशास्त्रो
दितानांचनिष्कृतीनांसुराधिप ॥ उत्प्रेक्ष्योविषयोह्येवंसततं
गुरुलाघवे १९ यत्रगुरुणिपापेऽन्यगुरुणः समीपवर्त्त
नितथालघुनिपापेऽन्यलघुनःसमीपवर्त्ति
निशंशयादात्मतुष्टिर्नस्याच्चित्तदाप्र
तिपुराणंकोऽर्थः सर्वत्रपुराणे
षुप्रोक्तंजपादितेनानि
श्चिताभवेदित्यर्थः
प्रोक्तमिदंब्रह्म
हत्याप्रा
याश्चि
त्तम्



अब ब्रह्महत्या प्रायश्चित्तके निरूपणके अनंतर महापातकोंके मध्यगतजो सुरापानहै तिसका प्रायश्चित्त निरूपण करतेहैं सुरापदजोहै इसस्थानविषे सोमद्यका उपलक्षणहै सोकिहाहै निघंटुविषे पेयमिति क्या जोलोकोंने मदकरणवाला द्रव्यपीनेयोग्यहै उसका नाममद्य किहाहै अर्थात् जिसकों लोकमदवास्ते पानकरे उसकानाम मदिराहै और सोअरिष्ट सुरासीधुआसव इत्यादि अनेकभेदवालाहै इति और सुरापानाविषें निषेध किहाहै मनुजीने गौडीति एक गौडी १ एकमाध्वी २ एकपैष्टी ३ यहतिनप्रकारकी सुरा जाणणी और जैसे एकहै तैसेहि और संपूर्णहै एहसभ ब्राह्मणोंने नहि पानकरणेयोग्य और जोगुडकर्के वनीहै उसकानाम

ॐश्रीगणेशायनमः अथमहापातकान्तर्गतसुरापानप्रायश्चित्तंनिरूप्यते॥ सुरापदमत्रमद्योपलक्षणं तदुक्तंनिघंटौ ॥पेयंयन्मादकंलौकैस्तन्मद्यमभिधीयते तदरिष्टंसुरासीधुरासवाद्यमनेकधेति सुरापाननिषेधमाहमनुः गौडीपैष्टीचमाध्वीचविज्ञेयात्रिविधासुरा यथाचैकातथासर्वानपातव्याद्विजोत्तमैः गौडीगुडकृता १ पैष्टीयवादिपिष्टकृता २ मधुकवृक्षोद्भव पुष्पकृतामाध्वीद्विजोत्तमैर्ब्राह्मणैरित्यर्थः क्षत्रियादिसाधारण्येतु सुराशब्देनपैष्ट्येवाभिधीयते मनुनासुरावैमलमन्नानांपाप्माचमलमुच्यते तस्माद्ब्राह्मणराजन्यौ वैश्यश्चनसुरांपिवेदित्यत्रान्नविकारस्यैवसुरात्वनिर्देशादन्नशब्दस्यचान्नेन व्यञ्जनमित्यादिषुव्रीह्यादिविकारएवप्रयोगदर्शनात्

गौडीहै और जोयव चाउल इनकी पीठीकी वनाईहे उसकानाम पैष्टी किहाहे और महुएके पुष्पोंकर्के जोवनायीहै तिसकानाम माध्वी किहाहै और द्विजोत्तमैः क्या ब्राह्मणोंने और क्षत्रियादि साधारणता विषे तोकहतेहै सुरेति सुराशब्द कर्के पैष्टीकाहि अभिधान करणा अर्थात् सुरानाम पैष्टीकाहि जाणणा सोमनुजीने किहाहे सुरेति क्या सुराजोहै सोअन्नकी मल है और मलजोहै सोपाप रूप कहाहे तिसकारणते ब्राह्मण क्षत्रि वैश्य एह सुराका पान नाकरे इस जगा विषे अन्न विकार कोंहि सुरात्व निर्देशहोणेते चपुनः अन्नशब्दको अन्नेन व्यजनं इत्यादि वचन विषेधान्यादि विकार कोंहि प्रयोग दर्शनते

गुड श्रौर मधुको रसरूप होनेतें श्रौर सौत्रामणी यज्ञपात्रां विषें अन्न विकारकोहि सुरा शब्द सुणनेंते अन्न विकारकाहि नामहै सुरा एह निश्चय होत्रा श्रौर विस्तर जोहै सो मिताक्षरा विषें देषलेणा श्रौर तिस कारणते पैष्टी सुरापान द्विजातिकों विशेषते निषिद्धहै इसका अभिप्राय एहहै कि केवल ब्राह्मणकोंहि पैष्टी सुराका नहि निषेध किंतु क्षत्रीवैश्यकोभी पैष्टी सुराका निषेधहै ऐसा जान्नणा तैसेहि भविष्यत्पुराण विषें लिषयाहि गौडीतिकि गुडकी पीठी की दाखकी एह तिन्न प्रकारकी सुरा जान्नणी श्रौर जैसी एकहै तैसेहि संपूर्णहै इन विषें न्यूनता अधिकता नहिहै इस कारणतें ब्राह्मणोंने नहि पान करणे योग्य किस वास्ते कि कुछ पैष्टी सुराहि मुख्य नहिहै किंतु गौडी माध्वी एहभी पैष्टी सुराके समान कहीहैं श्रौर इस स्थान विषें द्विजोत्तम शब्द विवक्षितहै अर्थात् द्विजोत्तम शब्द करके ब्राह्मणका ग्रहण कीताहै

गुडमधुनोश्चरसरूपत्वात्सौत्रामणीग्रहेषुचान्नविकार एवसुराशब्दस्य श्रुतत्वात्विस्तरस्तुमिताक्षरायांद्रष्टव्यः ततश्चपैष्टीपानंद्विजानांप्रतिषिद्धम् पैष्ट्याइतरयोश्चब्राह्मणस्येतिमन्तव्यम् तथाभविष्यत्पुराणम् गौडीपैष्टीचमाध्वीचविज्ञेयात्रिविधासुरा यथैवैकातथासर्वानपातव्याद्विजोत्तमैः सुराहिपैष्टीमुख्योक्तानतस्यास्त्वितरेसमेनेतरयोर्मुख्यः सुराशब्दइत्यर्थः अत्रद्विजोत्तमग्रहणंविवक्षितम् तेनक्षत्रियवैश्ययोःपैष्ट्येवप्रतिषिद्धानितरे मद्यांतराणिब्राह्मणस्यैवप्रतिषिद्धानिनेतरयोः तत्रापियुद्धाद्यंतयोःक्षत्रियस्य सौत्रामण्यांवैश्यस्यपानंविहितंमितिज्ञेयं तदाहमनुः यक्षरक्षःपिशाचान्नंमद्यंमांसंसुरासवम् तद्ब्राह्मणेननात्तव्यंदेवानामश्नताहविः १

तिस कारण करके क्षत्री वैश्यको केवल पीठीकी सुराका निषेधहै श्रौरका निषेध नहिहै किस वास्ते कि संपूर्ण मद्य ब्राह्मणकोंहि निषेधहै इतरके वास्ते नहि अर्थात् क्षत्री वैश्य वास्ते सभका निषेध नहिहै क्योंकि ब्राह्मणोंको किसी प्रकारके मदिरा पानका अधिकार नहि श्रौर क्षत्री वैश्यको गौडी माध्वीका अधिकारहै इसमैंभी ऐसा विचार रक्षणाकि क्षत्री लोक युद्धके आद विषें अंत विषें श्रौर वैश्य सौत्रा मणि विषें मद्य पीवें सदा नहि श्रौर सोंयी मनुजीनेंकिहाहै यक्षेति कि मद्य मांस सुरासव एह यक्ष राक्षस पिशाच इनका अन्नहैं अर्थात् यक्षोंका मद्य श्रौर राक्षसोंका मांस श्रौर पिशाचोंका सुरासव एह भोजनहै इसकारणते देवताका हवि भोजन करण वाले ब्राह्मणनें एह नहि भक्षण करणे योग्य १

और इस विषे एहभीहेतुहै क्या ब्राह्मण जेकर मदिरापानकरे तद फेर मदमत्त होकर किसी अपवित्र स्थान विषे गिडपडे अथवा अपवित्रस्थान विषे वेद मंत्रका उच्चारण करदेवे अथवा और कुच्छ अनुचितकामकर देवे मद कर्के मोहित इस कारण कर्के ब्राह्मणको मदिरानिषेधहै। और जिस ब्राह्मणके देह विषे स्थित जो ब्रह्म मद कर्के विक्षेपको प्राप्त होवे उसका ब्राह्मण भाव दूर होजंदाहै और शूद्र भाव उसको प्राप्त होंदाहै। और एह सुरा ब्राह्मणोंने यज्ञोपवीतके और स्त्रीयोंने विवाहके प्रथम हित्याग करणे योग्यहै। और ब्राह्मणने गौडी माध्वी इत्यादि जो मद्यहै सभ त्याग करणे योग्यहैं। और क्षत्री वेश्य एह ब्रह्म चारी होवें तद इन मदिराका त्याग करें। इस मे होर विचारकर्देहै कियों यज्ञोपवीतते पूर्व अपनी कामना

अमेध्येवापतेन्मत्तोवैदिकंवाप्युदाहरेत् अकार्य्यमन्यत्कुर्य्याद्वाब्राह्मणोमदमोहितः २ यस्यकायगतंब्रह्ममद्येनाप्लाव्यतेसकृत्तस्यव्यपैतिब्राह्मण्यं शूद्रत्वंचसगच्छतीति ३ इयंचसुराद्विजातिभिरुपनयनात्स्त्रीभिश्चविवाहात्प्रागपिवर्ज्या ॥ ब्राह्मणेनतुगौडीमाध्वीमद्यान्यपि ॥ इमानिब्रह्मचारिभ्यांराजन्यवैश्याभ्यामपिवर्ज्याणि ॥ प्रागुपनयनात्कामचार कामवादकामभक्षाइति गौतमीयंतूपविष्टेनाचम्यभक्षणीयमित्यादिनियमनिवृत्यर्थंनपुनरभक्ष्यभक्षणानुग्रहार्थं एतदेवाहजातूकर्ण्यः ॥ अनुपेतस्तुयोबालोमद्यंमोहात्पिबेद्यदि ॥ तस्यकृच्छ्रत्रयंकुर्यान्माताभ्राततथापिता ॥ अतो गौतमस्यप्रागुपनयनादितिवचनंसुरादिव्यतिरिक्तशुष्कपर्युषितादिविषयमितिमिताक्षरा ॥

पूर्वक विचरणा और अपनी कामना पूर्वक बोलणा अपनी इच्छा अनुसार भोजनकरणा एह गौतम स्मृति विषे किहाहै। सो इस अभिप्रायसे किहाहै किएक स्थानमे स्थित होकर आचमन कर्के भोजन करणा इस नियम को निवृत्ति वास्तेहै कोई अभक्ष्य भक्षणके अनु ग्रह वास्ते नाहिहै। और एहि जातूकर्ण्य जीने किहाहै अनुपेतेति कि जेकर यज्ञोप वीतसे विना बालक अज्ञानतेमद्य पान करे तद उसकी माता अथवा उसका भ्राता पिता एह तिन कृच्छ्र व्रत करें तद उह बालक पवित्र हुंदाहै। और इसी कारणते गौतम जीका जो प्रागुपनयनात् इत्यादि वचनहै तिसको सुरादियांतें भिन्न शुष्क और बेहा जो भोजनहै तिस विषय विषे जानणा एह मिताक्षरा विषे लिखयाहैं ॥

और अतिसुरापानविषें छेकृच्छ्रकल्पनाकरणे योग्यहै अर्थात् बालककापितादिछेव्रतकरे इति और मद्यपानते अतिसुरापानका प्रायश्चित्त द्विगुण दिखायाहै अर्थात् जोसुरापानकरे ति सको मद्यपानतें दूणाप्रायश्चित्त करणा चाहिये और पंचमवर्षते उपरंत जेकरब्राह्मणकाबा लक भीकदाचित्त सुरापानकरे. तद उसकेमातापिताकों अथवागुरुकों प्रायश्चित्तकरणा योग्य हैं इसकारणते पंचम वर्षते आदिलेकर ब्राह्मणांको सुरापान विषें निषेधजाणणा और बाल क को कामनाते भी मरणांतिकनाहिहै अर्थात् जेकर बालक जाणकर्के भी सुरापानकरे तदभी पर्षदने मरणांत प्रायश्चित्त नहि कहनायोग्य किंतुबालकजेकर व्युत्पन्नहो तदआप विचार कर्के प्राणांततेविना प्रायश्चित्तकरे प्राणांतप्रायश्चित्तनकरे और तदविषयक वाक्य अनुग्रहवास्ते मुनि योंने किहेहै सोई अंगिरा जीने किहाहै ऊनेति एकादश वर्षते ऊनहोवे और पांचवर्षते उप

अतिसुरापानेतुपड्कृच्छ्राःकल्पाः मद्यपानादतिसुरापानप्रायश्चित्तस्यद्वै गुण्यदर्शनात् एतच्चपंचमादूर्ध्वंमातापित्रोस्सुहृद्गुरोरिति एवंपंचमवर्ष प्रभृत्येवद्विजानांसुरापाने प्रतिषेधोवेदितव्यः बालस्यचकामतोपिनमरणां तिकं॥मरणांदेकंप्रायश्चित्तंनपर्षदातिश्यंकिंतुस्वयमेवविदित्वाकुर्याद्बालोपि व्युत्पन्नश्चेन्मरणांतिकव्यतिरिक्तमेव तद्विपयाणिचानुग्रहवचनानि॥अंगि राःऊनैकादवर्षस्यपंचवर्षात्परस्यच चरेद्गुरुःसुहृद्वापिप्रायश्चित्तंविशुद्धये तथाचाविष्णुः॥अशीतिर्यस्यवर्षाणिबालोवान्यूनषोडशःप्रायश्चित्तार्धमर्हति स्त्रियोरोगिणएवचेति पुलस्त्योपि ॥ स्त्रीणामर्धप्रदातव्यंवृद्धानांरोगिणांत थापादंबालेषुदातव्यंसर्वपापेष्वयंविधिः ॥ १ ॥

रंतहोवे उसबालककी शुद्धिवास्ते गुरु अथवा माता पिता प्रायश्चित्तकरें अर्थात् पांचवर्षते ऊ पर और एकादश वर्षते न्यून जो बालकहै तिसको आप नहि प्रायश्चित्तकरणा योग्यहै और तैसेहि विष्णु जीने किहाहै अशीतिरिति कि जिस पुरुष कीआयुषा अस्सी वर्षते ऊपर होजावे अथवा सोलां वर्षते न्यून जो बालकहै और स्त्री और रोगीएहसभअर्धप्रायश्चित्त के अधिकारीहै अर्थात् वृद्धबालक स्त्रीरोगी इनको आधा प्रायश्चित्त करणा किहाहै इति पु लस्त्य जीनेंभी किहाहै स्त्रीणामिति किस्त्रीयांको आधाप्रायश्चित्तदेणा योग्यहै और तैसेहि वृद्धों को और रोगीयांको भीआधाहिप्रायश्चित्त देणा योग्यहै और बालकांविषें चौथा हेस्साप्रायश्चि त्तदेणा योग्यहै एहसंपूर्ण पाप विषें एह विधि कहेहैं ॥ १ ॥

और तैसेहि असंस्कृतेताति किसंस्कार रहितजो पुरुषहै और उत्साहते जो रहितहै अथवा रोग युक्तजो पुरुषहै अथवा नवे ९० वर्षकी जिसकी अवस्थाहै इनको शक्ति अनुसार प्रायश्चित्त देणा योग्यहै और इन विषे न्यूनभी व्रतहोवे तदभीनहि लोप होंदा और इनको प्राणांत प्रायश्चित्त कल्पना करणा नहि योग्य और मद्य गौडो पैष्टीमाध्वी इनते भिन्नहै मद्यभेद बृहस्पति जीने किहेहैं माध्वीकमिति माध्वी १ ऐक्षव २ मैर ३ ताल ४ खाजूर ५ पानस ६ मधूत्थ ७ सैर ८ ऐरेय ९ नालिकेरज १० अर्थात् द्राक्षाकी मदिराका नाम माध्वीकहै १ और गन्नेके रसकी वनीहो उहऐक्षवहै और मिराकीबनीहोउहमैरहै ३ और इसी प्रकार ताड वृक्ष खजूर कावृक्षपनसवृक्षमौहा एरानरेलभिन्न २ इनकी मदिरा वनीहो उसका नाम पूर्व जो लिखेहैं

तथाअसंस्कृतोनिरुत्साहोरोगीनवतिजीवकः यथाशक्तिप्रयुंजीतव्रतस्तेषु नलुप्यते ॥ असंस्कृतोवालः निरुत्साहोवाताद्यभिभूतः रोगीक्षयादिरोगयुक्तः नवतिर्वर्षाणिजीवकमायुर्यस्यसः ॥ नात्रमरणांतिकस्यकल्पनायुज्यते ॥ मद्यंतुगौडीपैष्टीमाध्वीभ्योऽन्यदस्ति तद्भेदानाहबृहस्पतिः ॥ माध्वीकमैक्षवंमैरंतालखर्जूरपानसम् मधूत्थंसैरमारिष्टंमैरेयंनालिकेरजम् अमेध्यानिदशैतानिमद्यानिब्राह्मणस्यतु पुलस्त्यस्तुपुनरेकादशविधमाह पानसंद्राक्षमाधूकखार्जूरंतालमैक्षवं मधूकंसैरमारिष्टमैरेयंनालिकेरजं माध्वीकंटांकमाध्वीकंमैरेयंनारिकेलज मित्युत्तरार्धेपाठान्तरम्॥क्षौद्रजातंमाधूकम् इक्षोःपक्वैरसैः सिद्धः सीधूरित्यैक्षवपर्य्यायः पक्वौषधाम्बुसिद्धंयन्मद्यंतत्स्यादरिष्टकं अरिष्टमद्यंद्राक्षारिष्टमित्यादि ॥

सोयी जानणे एह दश प्रकार कीमादिरा ब्राह्मणके वास्ते अपवित्र कहीहैं और पुलस्त्य जीने यारां भेदमद्यके कहेहै पनसका १ दाखका २ मौहाका ३ खजूरका ४ तालका५ गन्नेका ६ मधुका ७ सीरका ८ अरिष्टका ९ एरेका १० नरेलका ११ एह एकादशभेद मद्यकेहैं और मखीर कर्के जोवणे उसका नाम माधूकहै और मौहेके पुष्यांतेजो उत्पन्नहो उसका नाम मधूक ॥ और गन्नेके रसको पकाकर जो सिद्धहो उसका नाम सीधूहै और ऐक्षवहै ॥ और औषधी और जल इनके पकानेकर्के जो मद्य सिद्धहो उसका नाम अरिष्टहै और ऐसे दाखकाभी अरिष्टमद्यहुंदाहै

और सीरनामहै अर्कके वृक्षका तिसते जोवणे उसकानाम सैरमद्यकिहाहै और जोकची औष धी और जल इनकर्के मद्यसिद्धहो उसकानाम आसव किहाहै और इसीकानामऐरेयभी किहाहै और टंकनाम नीलेकैथकाहै उसते जो उत्पन्नहो उसकानाम टांक मद्यंहुंदाहै ॥ और एह जो यारां प्रकार के मद्यहैं उन संपूर्ण को समानहि जाणणा अर्थात् इनसभके पान करणे कर्के समान प्रायश्चित्त हुंदाहै और बारवां सुरामद्यहै एहसभनाविषें अधम किहाहै ॥ १ ॥ और वारुणीभी एक सुराकाहि पर्यायहै अर्थात् वारुणीभी सुराका एक नामहैं ॥ जिस कारणते सुराते भिन्न अनेक प्रकार का मद्य हुंदाहै और सुरारूपजोमद्यहै सो अतिशय कर्के निषिद्ध किहाहै और किसीका रसभीत्याग करणे योग्यहै सोभीजिसे दाखगन्ना नीलाकैथ खजूर पनस इत्यादि वृक्षोंका शीघ्र उत्पन्न जोरसहै तिसकोपान कर्के ब्राह्मण तिन्न उपवास करे तद शुद्धहुं

सीरोऽर्कवृक्षस्तदुद्भवंसैरं यदपक्वौषधाम्बुभ्यांसिद्धं मद्यंसआसवः इदमेव मैरेयंटंकोनीलकपित्थस्तदुद्भवंटांकं समानानिविजानीयान्मद्यान्येकादशैवतु द्वादशंतुसुरामद्यंसर्वेषामधमंस्मृतं ॥ १ ॥ वारुण्यपिसुरापर्य्यायः यतएवसुराव्यतिरिक्तमनेकविधंविद्यते ॥ सुरात्मकंतु अत्यन्तंनिकृष्टं क्वचित्तुरसोपिवर्ज्यः ॥ द्राक्षेक्षुटंकाखार्जूरपनसादेस्तुयोरसः । सद्योजातंतु तत्पीत्वात्र्यहाच्छुद्ध्येद्द्विजोत्तमइति ॥ अतएवाहवसिष्ठः । मद्यपानेत्व सुरायास्सुरायाश्चज्ञानेकृच्छ्रातिकृच्छ्रघृतप्राशः ॥ पुनःसंस्कारइदमत्यन्ताशक्तस्यबालतरस्याविद्यमानपित्रादिकस्यप्रतिषिद्धमेतत्पान मित्यविदुषो हठात्क्वचित्पानस्यद्रष्टव्यम् ॥ पूर्वोक्तमप्येतत्प्रसंगादत्रापिलिखितम्

दाहै अर्थात् जो ब्राह्मण इनवृक्षोंका जेकर रसभी पान करे तद तिन्न उपवास करणे कर्के पवित्र हुंदाहै इति और इसीकारणते वशिष्ठजीने किहाहैं कि जिसको सुराका और सुराभिन्न जोमद्यहैं तिसका ज्ञानहो फेर जेकर मद्यपानकरे तद उहकृच्छ्राति कृच्छ्र व्रत करे जिस व्रत विषें केवल घृतहि भक्षणकरणा किहाहैं और पुनः संस्कारकरे ॥ और एह प्रायश्चित्त जो अत्यंतअशक्तहै अथवा जोछोटाबालकहै और माता पिताभी जिसकानाहि तिसको जाणणाहै और एह पाननिषिद्धहै इसको नहि जाणणे वाला जोपुरुषहै सोहठ कर्के पान करलेवे कदाचित् तद उसके वास्ते और यद्यपिएह प्रसंग पूर्व किहाभीहैं तद भी प्रसंगद्वारा दूसरी वारी लिखयाहैं इसस्थान विषें इसकारणते पुनरुक्ति दोषनहि जाणणा इति

इस सुरापान का प्रायश्चित्त मनुजीने कहाहै सुरामिति कि ब्राह्मणमोहते सुरापानकर्के फेर अग्निकेतुल्य है वर्णजिसका ऐसी सुरापान करे अर्थात् जोब्राह्मण कदाचित् मोहते सुरापान कर लेवे तद अपनी शुद्धिवास्ते ऐसा करे कि सुरालेकर फेर ऐसीगर्म करे कि अग्निके तुल्य होजावे उसको पीवे और तिस तप्त सुराकर्के जब शरीर दग्ध होजावे तद ब्राह्मण पापते मुक्त होजंदाहै १ और इसीका अर्थस्पष्ट कर्के लिखतेहै मुख्य जो पैष्टी सुराहै तिस को मूढताकर्के द्विज क्याब्राह्मणादितिन्नवर्णपान कर्के अग्निवर्णकी सुरा पानकरे तिसकर्के शरीरके दग्धहोयां तिस पापते मुक्तहुंदेहै ॥ और इस प्रायश्चित्तको गुरु होनेते कामनाकृतसुरापानके विषयमे जानणा अर्थात् जोब्राह्मण कामनाकर्के सुरापानकरे उसके वास्ते पूर्वोक्त प्रायश्चित्तहै इति। और तैसहि

अथसुरापानप्रायश्चित्तमाहमनुः सुरांपीत्वाद्विजोमोहादग्निवर्णांसुरांपिवेत् तयासकायेनिर्दग्धेमुच्यतेकिल्विषात्ततः १ मुख्यांसुरांपैष्टींरागादिव्यामूढतयाद्विजोब्राह्मणादिश्चपीत्वाअग्निवर्णांसुरांपिवेत्तयाशरीरेनिर्दग्धेसति द्विजस्तस्मात्पापान्मुच्यते एतच्चगुरुत्वात्कामकारकृतसुरापानविषयंतथाचबृहस्पतिः। सुरापानेकामकृतेज्वलतींतांविनिःक्षिपेत् मुखेतयासनिर्दग्धोमृतः शुद्धिमवाप्नुयात् कुर्याद्वाऽनशनंतावद्यावत्प्राणैर्विमुच्यतेअपरार्के ॥ सुरांबुघृतगोमूत्रपयसामग्निसन्निभंसुरापोन्यतमंपीत्वामरणाच्छुद्धिमृच्छति

बृहस्पतिजीने किहाहै सुरेति कि जोकामान कर्के सुरापानकरे सोपुरुष तिससुरा जलती को मुखविखें पावे अार तिसकर्के दग्धहोया जेकरमृतहोजावे तद उह शुद्धिको प्राप्तहुंदाहै अर्थात् ब्राह्मणको मारणकर्के सुरापानकीतयां ऐसेहि प्राणांत प्रायश्चित्तकरणायोग्यहै अथवा उतनाचिर ब्राह्मण कुछन खावे जितना चिर प्राणांकर्के मुक्तनहिहोया क्या अन्न जल त्यागकर्के मृतहो जावे जेकर तदभी पवित्रहुंदाहै इति। और अपरार्कविषे लिखयाहै सुरामिति सुरापान करणे वाला अपनी शुद्धिवास्ते अग्निकेतुल्य तपी होयी सराहि पीवें अथवा अग्नितुल्य तपयाहोया जल अथवा ऐसाहि घृत अथवा ऐसाहि तपाकर गोमूत्र अथवा ऐसाहि तपाकर दुध पावे इस प्रकार करणे कर्के जेकर मरजावे तद शुद्धिको प्राप्त हुंदाहै ॥

अर्थात् सुरा दि जो किहेहैं इनके मध्य विषे एक चीजलेकर गरम करणी जब उह बहुत लाल होजावे क्या जैसे अग्नि स्पर्श कर्के साड़ देताहै ऐसेहि उह भी स्पर्श कर्के साड़ देवे तब अग्निके तुल्य हुंदाहै और इस स्थान विषे अग्नि सन्निभ इस शब्द काभी एहि अभिप्रा यहै कि उष्णता कर्के अग्निके तुल्य दग्धकरे। और ऐसा जलादि तप्तकरे कि जिसकेपानकी तियां पीणे वाला पुरुष मृत होजावे। और सुराप तैसा हि तप्त सुरा पान कर्केमरणेते शुद्ध हुंदाहै। और एह प्रायश्चित्त मतिपूर्वक सुरापान विषेहैतैसेहि मनुजीने किहाहै मतीति कि मति पूर्वक सुरा पान विषे प्राणांत प्रायश्चित्त नहि पर्षदने उपदेश करणा ऐसे स्थितिहै ॥ क्याका मना कर्के सुरापानविषे जोप्राणांतप्रायश्चित्त पर्षदनेनहि उपदेश कीता उसको शास्त्रते आपहि देख कर करणा योग्यहै अर्थात् ब्राह्मण जान कर्के सुरापान करे जेकर तब आपहि

सुरादीनामन्यतममेकंसंतापनादग्निसान्निभमुष्णत्वेनाग्नितुल्यम् । यस्मि न्पीतेपातुर्मृत्युर्भवतितथाविधंसुरापः पीत्वा मरणाच्छुद्धो मतिपूर्वकसु रपानविषय मेतत् ॥ तथाचमनु. मतिपूर्वमनिर्देश्यंप्राणान्तिकामितिस्थि तिरिति ॥ मतिपूर्वं कामपूर्वं अनिर्देश्यमितिब्रुवन्प्राणांतिक प्रायश्चित्तं पर्षदनुक्तंस्वयमेवशास्त्रतोविदित्वाकुर्या दितिगमयति॥ अस्यविषयोभवि ष्यत्पुराणे पैष्टीपानेतुचैतासांप्रायश्चित्तंनिबोधमेमनुनोक्तमहावाहोसमास ठपासयोगतः १ एतासामितिसुराणामित्यर्थः एतासांप्रजानामितिवासुरांपी त्वेतिपूर्वोक्तं ॥ गोमूत्रमग्निवर्णंवापिवेदुदकमेववा ॥ पयोघृतंसुवर्णंवागोश कृद्रसमेववा ॥ २ ॥

शास्त्र ते विचार कर्के प्राणांतप्रायश्चित्त करे और इसका विषय भविष्यत्पुराण विषे लिखाहै पैष्टीति कि महादेव स्वामिकार्त्तिकको कहतेहै क्या हे गुह पैष्टीसुरा पान विषे और इतर जो है तिनके पान विषे अथवा तिन्हां प्रजां का जो प्रायश्चित्त है सो मेरेते श्रव णकर और मनुजीनें संक्षेपते एह किहाहै सोभी (सुरांपीत्वा) इत्यादि पूर्वालिखयाहै १ क्या सुरा पान कर्के अग्निके समान हे वर्ण जिसका ऐसा जोगो मूत्र है अथवा जल है तिस को पीवे अथवा अति तप्त दूधघृत सुवर्ण गौके गोहेका रस एह अति तपाकर पान करे अर्थात् इनके पीणे कर्के जेकर मृत होजावे तब उहपवित्र हुंदाहै अन्यथा नहि॥ २ ॥

असकृदिति किजोब्राह्मणअनेकवारि जाणकर्के वारुणी मदिरा पानकरे सोपतित होजाताहै इसकारणते उसके वास्तेप्राणांताहे प्रायश्चित्त विधानकिताहै अर्थात् ज्ञानते अनेकवारिवारुणीमादिरा पानविषे ब्राह्मणको जोपूर्व मरणांत प्रायश्चित्त किहाहै उोहि प्रायश्चित्तजाणणा ३ ओर सोपीजैसे किवारुणीपीणेवाला ब्राह्मणलोहेके पात्रविषे वारुणीमदिरा कोतपाकर पूर्वकी न्यायी पान करे ॥ ओर कैसे होवे की अग्निके तुल्यहै वर्णजिसका और पापके हरणेवाली ऐसीको पानकरे तिसते अनंतरपापते मुक्तहुंदाहै ४ ओर एहविधिजीवते पुरुषको अंतकालके प्राप्तहोयां श्मशान विषे जाकर करणी कहीहै ॥ ओर एह प्रायश्चित्त गोडी ओर माध्वीके पान कीतयांब्राह्मणकों जाणणा इति । ओर उशनाजीने किहाहै गोवालेति कि सुरा पीनवाला ब्राह्मणगोके बालांकावस्त्र धारणकरे ओर अग्नितुल्यतप्तसुरा पान कर्के पवित्र हुंदाहै

असकृद्ज्ञानतः पीत्वावारुणींपततिद्विजःमरणंपूर्वनिर्दिष्टंप्रायश्चित्तंविधीयते ३ आयसेभाजनेतप्तांब्राह्मणोवारुणींपिवेत् अग्निवर्णांपापहरांततःपापात्प्रमुच्यते ४ जीवितस्यांतकालेतुश्मशानेविहितोविधिः गौडीमाध्वीविषयमेतत् उशनाः । गोवालचीरवासासुरापस्सुरामग्निवर्णांपीत्वापूतोभवति ॥ देवलः सुरापानेब्राह्मणोरूप्यताम्रत्रपुसीसानामन्यतममग्निकल्पं पीत्वाशरीरपरित्यागात्पूयते हारीतः ॥ सुरापोऽग्निवर्णांसुरांपीत्वाघृतमपः पयोवा पिहिरण्यंवाविलाप्यमृत्युनापूतो भवति ॥ सुरापानंसकृत्कृत्येत्यनुवृत्तौ ॥ अंगिराः ॥ भृगुप्रपातपतनंज्वलनंवासमाविशेत् ॥

इति । देवलजीने किहाहै सुरापानेति किब्राह्मण सुरापान विषे रुप्याताम्र जसत सिक्का इनके मध्य विषे एक वस्तुको अग्नि तुल्यतपाकर पान कर्के शरीर त्यागते पवित्र हुंदाहै । ओर सोयी प्रकार हारीतजीने किहाहै कि सुरा पान करण वाला पुरुष अग्निवर्ण की जो सुराहै तिसको पान कर्के अथवा अग्नि वर्ण घृत अथवा जल अथवा दूध अथवा सुवर्णको गालकर पान करणे कर्के मरजावे तद पवित्र हुंदाहै अर्थात् सुरापान कीतयां ब्राह्मणको शरीरत्याग करणा एहि प्रायश्चित्त सर्वत्र दिखायाहै । ओर एक वारी पान करणे विषे अंगिरा जीने किहाहै ॥ भृगु इतिकि जो पुरुष एकवारी सुरापानकरे सो अपनी शुद्धि वास्ते इसप्रकार करे क्या किसी पर्वतकेऊपरचढकरछालमारे अथवा अगाध जल विषे छाल मारे अथवा अतिप्रज्वलित अग्नि विषे प्रवेश करे ॥

अथवा महाप्रस्थान जो हिमालयहै तिस विषें जाकर वरफमे प्रवेशकरे और इनमेंसे एकवि धि भीकिरे तद संपूर्ण पापते मुक्तहोजंदाहै परंतु इसमैंतिसके जीवनकी संभावनाहै इस कर्के पहिलेते न्यून एह प्रायश्चित्तहै इति १ और इसते अन्य प्रायश्चित्त याज्ञवल्क्यजीने किहाहै वालेति किसुरापीनवाला पुरुष वालों का वस्त्र और शिर विषें जटा धारकेब्रह्महत्या ब्रत करे अथवा तिलांकी खल वाचाउलांकीयांकाणियां इनको रात्रि विषें भक्षण करे एक वर्ष पर्यंत वातीन वर्ष पर्यंत कोई ऐसा कहतेहै ॥ और इसका विशेष अर्थहै कि वालधी योगोपुछति सके वालउठाकरवस्त्रवनवालेवे और वाल कर्के ताडपत्र भुर्ज पत्र भीग्रहण करणे और शिरमे जटाधारकर जो पूर्व किहाहै द्वादश वर्ष ब्रत उसब्रतको धारण करे और इसस्थानविषें वाल वासा इत्यादि काहै जोग्रहण सो वारां १२ वर्षका जो ब्रह्महत्याब्रतहै तिसकी प्राप्ति के निमि वास्तेहै अर्थात् जो २ विधि वारां वर्षकी ब्रह्महत्या ब्रत विषें कहीहै उसी विधि कर्के सुरापान

महाप्रस्थानमातिष्ठन्मुच्यतेसर्वकिल्विषैः १ प्रायश्चित्तान्तरमाहयाज्ञवल्क्यः
वालवासाजटीवापिब्रह्महत्याब्रतंचरेत् पिण्याकंवाकणान्वापिभक्षयेत्तुस
मानिशि १ वालधि स्थितकेशास्तन्मयंवसनंजटांश्चविभ्राणोब्रह्महणियदु
क्तंद्वादशाब्दिकंब्रतंवाचरेत्वालेतिचीरवल्कलयोरुपलक्षणमितिमिताक्षरा
अत्रवालवासाइत्यादिग्रहणंद्वादशाब्दिकब्रह्महब्रताप्तिनियमार्थं अन्यथा
ब्रतान्तरमपि तदीयंस्यात् यदितुबालवसनजटिलत्वरूपधर्मद्वयनियमा
र्थमिदंस्यात् नतर्हिमनुरत्राऽब्दादिग्रहणंकुर्यात् कृतंचतत्तेनकणान्वाभक्षये
दब्दंपिण्याकंवासकृन्निशि सुरापानापनुत्यर्थंवालवासाजटीध्वजी ॥ पि
ण्याकमुद्धृतस्नेहंतिलकल्कं कणांस्तंडुलान्वासकृद्रात्रौवत्सरंयावदश्नीयात्

विषें भी प्रायश्चित्त करणा चाहिये और जे कर ऐसेनाहो तद ब्रह्महत्या का और भी कोइ ब्रत होणा चाहिये और जेकरवालवासन और जटिल रूपएह जो धर्महै इस दोनोधर्मके नियम वास्ते इनका ग्रहण हुंदा तद मनुजी इस ब्रत विषें वर्षादि ग्रहण नाकरते और वर्ष संख्या का ग्रहण मनुजीने कीताहै इसकारणते इसस्थान विषें भी द्वादश वर्ष ब्रतका ग्रहण करणायोग्यहै सोयीजैसे कणानितिकि एक वर्ष प्रमाण चावलकी कणियांभक्षणकरे अथवा पिण्याक भक्षण करे एकवारी रात्रिविषें और सुरापान पापी की निवृत्तिवास्तेवालों का वस्त्र जटाध्वजा एह धारणकरे और पिण्याक उसकानामहै को तेल निकालकर जोतिलांकी खल रहिजाति है और कणान् इसशब्द कर्के कणियां अथवा चावल इनको रात्रि विषें एकवारी भोजनकरेवर्ष पर्यंत ॥

और इसविषें कोयी ऐसाकहतेहै कि समाशब्द बहुवचनांतहै इस कर्के तिन वर्ष ग्रहण हुंदे है एह नहि योग्य किसवास्ते कि जेकर तिन वर्षका ग्रहण होवे तद तिन्हांको कणान्वा भक्षये दब्दं एहजो मनु जीकावाक्यहै तिसके साथ विरोध आंजदाहै इसवास्ते तिनवर्षका ग्र हण नहि हुंदा और(सुरापाना पनुत्त्यर्थं)इसवचनते ऐसाबोध हुंदाहै कि जिसपुरुषने सुरापान कीताहै उसकी शुद्धि वास्ते एहव्रतहै और जिसको तालु मात्र संयुक्त सुराहोईहैतिसको एह व्रत नहि किहा अर्थात् जिस पुरुषके केवल तालुको सुराका संयोग होयाहै और पान नहि होया॥एहअच्छानहि इसविषेंएह कारणहै कि तालुका और सुराका संयोगहै फल जिसका ऐसा जो व्यापारहै उसव्यापार कर्के पान शब्दका प्रयोगहुंदाहै अर्थात् जिस स्थान विषें तालुका और सुराका संयोग होवे उसीका नाम सुरापान जानणा॥ और मनुजीका जोएहवाक्यहै कि

केचिदत्रसमाशब्दबहुवचनातंवर्षत्रयपरत्वेनव्याचक्षते॥ तेषांकणान्वाभक्ष येदब्दामितिमनुवाक्यविरोधः ॥ अस्मादेवचसुरापानापनुत्त्यर्थमितिवचना त्कृतसुरापानस्यैतद्व्रतमितिगम्यते नपुनस्तालुमात्रसंयुक्तसुरस्येतिनवरम् तादृशसुरासंयोगफलकव्यापारेणपानशब्दप्रयोगात् अज्ञानतःसकृत्पान विषयमेतदितिकेचित् मनुवचनमिदंतालुमात्रसंयोगेसुरायाअबुद्धिपूर्वेद्रष्ट व्यमितिमिताक्षरायांव्याख्यातम् (भक्षयेत्रिसमानिशीतितत्संमतःपाठः) तद्यथाननुद्रवद्रव्यस्याभ्यवहरणंपानमित्युच्यते अभ्यवहरणंचकंठस्याधो नयनंनताल्वादिसंयोगमात्रमतः कथंतत्र पाननिमित्तं प्रायश्चित्तमुच्यते येनताल्वादिसंयोगेनविनापानक्रियानानिवर्त्तते सोऽपिपानक्रियाप्र तिषेधेनप्रतिषिद्धः ॥

एह व्रत उसको जानणा जिसको अज्ञानते सुराका और तालुमात्रका संयोगहोवे इसवाक्य की व्याख्या मिताक्षरा विषें करीहै ॥ सोयीजैसे ननु एह प्रश्णहै क्या कि द्रव रूपजो द्रव्यहै तिसका जो अभ्यवहरणहै तिसका नाम पान किहाहै और अभ्यवहरण उसको कहतेहै कि जो कंठतेहेठांकरणाहैं अर्थात् पान उसकानामहै किजोबहुत पतले द्रव्यको मुखविषें पाक रकंठतेहेठां निगललेना ॥ और तालुमात्र संयोगका नामनहिंहुंदा॥ और तालुमात्र संयोगवि षें पान निमित्त प्रायश्चित्त मनुजीनेकैसे किहाहै आगे उत्तरलिखतेहैं किजिसतालुसंयोगतेबिना पान क्रिया नहि निवृत्त होंदीसोभी पानाक्रियाके निषेध कर्के निषिद्धहो जंदाहै ॥ अर्थात् जेक रपान क्रिया निषेधहोगातद तालुसंयोगका आप हिनिषेध होजंदाहै

इसकारणते यद्यपि सुरातालुमात्र संयोग विषे मुख्यपानके अभावते महापातक नहिहै इसका एह अभिप्रायहै किसुरा तालुसंयोगमुख्यपाननहिहै इसवास्ते महापातक भावभी इसको नहिहै तदभी मुख्यपानके निषेध होयां तिसका अंगजो सुरातालुसंयोगहै तिसकोभी निषेधहुंदाहै इसकारणते तालुसंयोग विषे दोषके विद्यमान होयां प्रायश्चित्त निश्चयकर्के हुंदाहै इसविषे एहहेतुहै चरेदिति कि जिसप्रकार कोई ब्राह्मणके मारण वास्तेजावे और मारे नहि उसको भी महाव्रत करणा योग्यहै अर्थात् द्वादश वर्ष व्रतकर्के पवित्र हुंदाहै और जैसे उसस्थान विषे मारण क्रियाके निषेध होणेकर्के तिसका अंगरूप जो अध्यवसाहै तिसका भी निषेध होनेते प्रायश्चित्त विधान कीताहै तैसे इसस्थान विषे भी तालुसंयोगसे भी प्रायश्चित्तहै अवइस मैं होरविचार कर्दैहै यत्त्विति योवौधायन स्मृतिविषे लिखयाहै किजेकर ज्ञानतेंविना कोईसुरा

अतोयद्यपिमुख्यपानाभावान्नपातकत्वं तथापितत्प्रतिषेधेनतदंगभूताव्य भिचारितालवादिसंयोगस्यापिप्रतिषिद्धत्वेनदोषस्यविद्यमानत्वाद्भवत्येव प्रायश्चित्तं चरेद्व्रतमहत्वापिघातार्थंचेत्समागतइतियथाहननप्रतिषेधेनतदं गभूताध्यवसायादेरपिप्रतिषिद्धत्वात्प्रायाश्चित्तविधानं यत्तुबौधायनीयंत्रै मासिकममत्यासुरापानेकृच्छ्राब्दपादंचरित्वापुनरुपनयनमिति यच्चयाम्यं सुरांपीत्वाद्विजंहत्वारुक्मंहृत्वाद्विजन्मनः संयोगपतितैर्गत्वाद्विजश्चान्द्रा यणंचरेदिति यदपिवार्हस्पत्यंगौडीमाध्वीसुरांपैष्टींपीत्वाविप्रःसमाचरेत् तप्तकृच्छ्रपराकंचचान्द्रायणमनुक्रमादिति

पानकरे सोतिन्न महीने व्रत करणे कर्के फेरयज्ञोपवीत संस्कार करे तदशुद्धहुंदाहै और यमजीने किहाहै सुरामिति क्यासुरापान कर्के और ब्रह्महत्याकर्के और ब्राह्मणका सुवर्ण हरकर्के और नीचकेसाथ संगकर्के ब्राह्मण चांद्रायणव्रतकरे अर्थात् ब्राह्मण इनमेंसे एकभी कामकरेतो चांद्रायण करणेकर्के पवित्र हुंदाहै और बार्हस्पत्य विषे अर्थात् बृहस्पतिजीके बनायेहोए शास्त्र विषे यद्यपिऐसा लिखयाहै किब्राह्मण जेकर गौडीमाध्वी पैष्टी इनका पानकरे तद क्रमपूर्वक कृछ्र और पराक और चांद्रायण करे अर्थात् गौडीपान कर्के तप्तकृछ्र करणा योग्यहै और माध्वी जेकर पानकरे तदपराक व्रत करणा चाहिये और पैष्टीसुरा जेकर पान करे तद चांद्रायण व्रत करणा किहाहै

तद भीएह जोतिन प्रकारका प्रायश्चित्त है सो जिसस्थान विषे रोग निवृत्ति वास्ते सुरा पान होवे उस स्थान विषे जाणणे योग्यहै क्या योरोग अन्य किसी ओषधी कर्के नदरहोवे औरम दिरा पान कर्के दूर हो जंदाहै उसके नाश वास्ते जो मदिरापान करे उसके वास्तेएहप्रा यश्चित्त विधान कीताहै किस कारण तेकि प्रायश्चित्त को अल्प होनेते ॥ इस मेएहविशेष हैकि सुरापान विषे ब्रह्महत्याके ब्रतका योअति देशहै सो अतिदेशविषे पिछे पादोनकिहाथा तथापिइहां पूराहि करणा॥तैसेहि शंखजीने किहाहै अध इति किसुरापान करण वाला इस विधि कर्के ब्रतकरे क्याकि पृथिवी ऊपर शयन करे और शिर विषे जटा धारण करे और पत्रमूल फल इनका एक काल विषे भोजनकरे इसप्रकारकरतियां यद बारां १२ वर्ष व्यती त होजावेंतद इस ब्रतके कर्णे कर्के एहजो ब्राह्मण मारण वाला और सुवर्ण कीचोरीकरण वाला और मदिरापीने वाला औगुरुकी शय्या ऊपरगमन करण वाला सोसंपूर्ण शुद्धहो

तत्त्रितयमप्यनन्यौषध साध्यव्याध्युपशमार्थेपाने वेदितव्यं॥ प्रायश्चित्त स्याल्पत्वात् ब्रह्महब्रतमतिदिष्टमपिद्वादशाब्दिकसुरापःकुर्यात्॥ तथाचशं खिः अधःशायीजटाधारीपर्णमूलफलाशनःएककालंसमश्नानोवर्षेतुद्वाद शेगते ॥ रुक्मस्तेयीसुरापश्चब्रह्महागुरुतल्पगःब्रतेनानेनशुद्ध्यन्तिमहापा तकिनस्त्विमे। तदेवाहवृद्धहारीतः॥ द्वादशभिर्वर्षैर्महापातकिनः पूयंतइति पिण्पाकादिभक्षणंचतपस्त्वाद्भोजनांतरानिवर्तकं ब्रह्महत्याब्रतादेशश्चोदक वृद्ध्यासकृत्पीतायांसमनंतरमेवप्रछर्दितायांवेदितव्य :

जंदाहै अर्थात् एह महापातकी द्वादश वर्ष विधि पूर्वकव्रतकर्ने कर्के महापातकते मुक्त होजंदेहै सोयी वृद्धहारीत जीने किहाहै किबारां १२ वर्ष कर्के महापातकी पवित्र हो जंदा है ॥ औरपिण्याक भक्षण करणा एहतप विषे अन्य भोजनकीनिवृत्ति वास्ते किहाहै अर्थात् तपकरतियां तिलांकीखलकाहि भोजन करणा चाहिये और कुछ नहि भक्षण कर णाइस अभिप्रायसे किहाहै और सुरापीण वाले कोएह जो ब्रह्महत्या ब्रतका उपदेशकी ता है सोजिसने अज्ञानते एक वारी सुरापान कर्के फेर वमन करदित्ताहो उसके वास्ते जा णणा अर्थात् जोकोयी पुरुष एकवारि ज्ञानतेंविनासुरापान कर्केफेरवमनद्वारा निकाल दे सो पुरुष द्वादश वर्ष ब्रत कर्केशुद्ध होजंदहै ॥ कोई कहतेहै जल बुद्धिकर्के एक वारी पीणे का एह प्रायश्चित्त है ॥

और इसीकारणते ब्रह्महत्याके प्रसंगविषे व्यासजीने किहाहै एतदिति कि एहि जो ब्रह्महत्याव्रतहै इसीको मदिराके वमन कीतियां होयांकरे अर्थात् जेकर मदिराकोनिकाल देवे तद इस ब्रह्महत्याव्रतकर्के शुद्धहुंदाहै और शरीर को पवित्रकरणवाला जोपंचगव्यहै सोनित्यप्रति तिस को पीणाकिहाहै और खलभक्षणकरणेकर्के उसकाव्यवहार शुद्धहुंदाहै और पापका नाशन हि हुंदाहै अथवा द्वादशवार्षिकव्रतकरणेको जिसको सामर्थ नहिहै उसके वास्ते पिण्याक भक्षणकाजो विधानकीताहै सोभीपापकोनाशकरण वाला हुंदाहै किसवास्तेकिएह (सुरापानापनुत्त्यर्थं) इसीसामान्यवचनते अर्थात् इन्हां दोयां वचनाको तुल्यहोणेते कल्पना करणे योग्यहै अर्थात् जोपुरुष बारांवर्ष व्रतकरणेको सामर्थ नहिहै उसकोपिण्याक भक्षण भी पापनाशकजानणा॥ और प्रायश्चित्त प्रकरणविषेकामनाते विना मद्यपानकीतियां बृहस्पतिजीने

अतएवब्रह्महत्यानुवृत्तौव्यासः। एतदेवव्रतंकुर्यान्मद्यप्रच्छर्दनेकृतेपंचगव्यंचतस्योक्तंप्रत्यहंकायशोधनमिति पिण्याकादिभक्षणेनचसंव्यवहार्यताभवतिनपुनःपापक्षयःयद्वाद्वादशवार्षिकासमर्थप्रतिपिण्याकादिभक्षणंपापक्षयकरमपिभवतीति सुरापानापनुत्त्यर्थमित्यविशेषवचनाछक्यकल्पयितुं प्रायश्चित्तप्रकरणेअकामतोमद्यपानेबृहस्पतिराह। पीत्वाप्रमादतोमद्यमतिकृच्छ्रंचरेद्द्विजःकारयेत्तस्यसंस्कारंशक्त्याविप्रांस्तुभोजयेदिति यदेतन्मद्यपानप्रायश्चित्तंब्राह्मणस्यैवनतुक्षात्रियविशोः ब्राह्मणस्यैवमद्यपानस्यनिषिद्धत्वादित्याहुः ॥ वस्तुतस्तुनराश्वमेधौमद्यंचकलौवर्ज्याद्विजातिभिरिति आचारकांडेमाधवोदाहृतब्रह्मपुराणवचनेनकलौ सर्वान्प्रतितन्निषेधोस्त्येवेत्यवधेयम्॥

किहाहै पीत्वेति प्रमादते मद्यपानकर्के ब्राह्मणअतिकृच्छ्रव्रतकरे और पुनासंस्कार कर्के आपनी शक्तिके अनुसार ब्राह्मणभोजन देवे तद शुद्धिको प्राप्तहुंदाहै और एहजो प्रायश्चित्त किहाहै सोब्राह्मणकोहि जानणा और क्षत्रीवैश्य कोएहनहिहै किसवास्तेकि मदिरापीनेका निषेध ब्राह्मणकोहि कीताहै ऐसे सभ ऋषिकहतेहैं तदभी इसमे सिद्धांत कहतेहै वस्तुत इति वास्तवते ऐसाहै नरोतीकि कलियुगविषे द्विजातियांने नरमेध अश्वमेध मदिरा इनकात्यागकरणा योग्यहै ब्रह्मपुराणके आचारखंडविषे विष्णुजीकावाक्यहै तिसवाक्यकर्के कलियुगविषे ब्राह्मणक्षत्रीवैश्य इनसभको मदिराकानिषेधजानणा अर्थात् क्षत्रीवैश्यकोभी कलिविषे मदिराका निषेधहै इति

और एकवारी सुरापानके प्रसंग विषे अंगिरा जीकावाक्यहै वृहस्पतीतिकि सुरापीणे वाला ब्राह्मण वृहस्पति यज्ञकरणे कर्के ब्राह्मणोंकी समताको प्राप्त हुंदाहै एह वेदकी श्रुतिहै अर्थात् सुराप जो ब्राह्मणहै सो वृहस्पति यज्ञकर्के फेर अपनी जातीके समान हुंदाहै १ और जो उत्तम ब्राह्मण सुरापान कर्के भूमिदानकरे फेर जेकर ना पान करे तदभी संस्कारको प्राप्त होकरशुद्ध हुंदाहै और इसस्थान विषे संस्कार शब्दकर्के यज्ञोपवीतका ग्रहणकीताहै २ और सोयी विष्णु जी ने किहाहै सुरापानैरिति कि जो ब्राह्मण अज्ञानत अथवा प्रमादते किसीके संगते मदिरा पान करे सो अपनी शक्ति अनुसार दो प्राजापत्य व्रत करे अब इसका अर्थ स्पष्ट कर्के कीताहै

सुरापानंसकृत्कृत्वेत्यनुवृत्तावंगिराः । वृहस्पतिसवेनेष्ट्वा सुरापोब्राह्मणःपुनःसमत्वंब्राह्मणैर्गच्छेदित्येषावैदिकीश्रुतिः १ भूमिप्रदानंयःकुर्यात्सुरांपीत्वा द्विजोत्तमः पुनर्नैवपिबेज्जातुसंस्कृतस्त्वपिशुध्यति २ संस्कृतःउपनीतःविष्णुः सुरापानैर्ह्यविज्ञानात्प्रमादात्संगतोपिवा शक्त्याकृच्छ्रद्वयंकार्यंवत्सरंसम्मितंतथा १ प्रथमेतप्तकृच्छ्रंतुपुनःसंस्कारकर्मच द्वितीयेजन्मतस्यस्यात्साम्मितं तदनंतरं २ प्राजापत्यंततःकार्यंपराकस्तुसमापने चान्द्रायणंत्रिरभ्यस्यपततोमुच्येतकिल्विषात् ३ शक्त्याहिरण्यंरजतंगाश्चभूमिंचदापयेत् अविज्ञानात्प्रमादाद्वायःसंगस्ततोजातैःसुरापानैःकृत्वापुरुषेण शक्तिश्चेत्तदाकृच्छ्रद्वयं कार्य्यं । वत्सरंयावच्चसम्मितं पुनःकदापिनपिबामीतिपरीक्षार्थंशुभाचारस्थितिमात्रंकार्य्यंनतुसंव्यहारः

क्योंकि अज्ञानते अथवा प्रमादते जो नीचोंके साथ संगकरणा तिस नीच संग कर्के जो पुरुष मदिरा पान करे तिस पुरुषने जेकर शरीर विषे शक्ति होवे तद दो प्राजापत्य व्रत करणे योग्यहैं अर सभकी आज्ञाकर्के एक वर्ष पर्यंत संमत क्या शर्त करणी चाहिये कि फेर कभी नहिमै मदिरा पान करांगा इस परीक्षाके वास्ते शुभ आचार स्थिति करे क्योंकि जिस कर्के शुभ आचार नष्ट न होजावे ऐसा करणा योग्यहै और कुछ इसके साथ व्यवहार नहि करणा वर्ष पर्यंत अर्थात वर्ष तक जेकर उह फेर पान नहि करेगातां पीछे व्यवहार करणा १

जेकर वर्षके वीच फेर एक वारी सुरा पान विषें तप्त कृच्छ्रादि और चकारते अग्ये वर्ष तक पूर्वोक्त साम्मित करणा और जेकर प्रमादते दूसरी वारी सुरापान करे तद पूर्वोक्त व्रतके साथ गो प्रसव करणा किहाहै अर्थात् उसका दूसरा जन्म संस्कार करवाणा और तिसते अनंतर भी वर्षका साम्मित पूर्वोक्त करणे कर्के शुद्ध हुंदाहै ।२ और जेकर किसीके संग कर्के तीसरी वारी सुरापान करे तद तिसको पूर्वोक्त व्रत के साथ हि प्राजापत्य व्रत करणा किहाहै और समाप्ति विषें पराक व्रत करणा किहाहै जेकर ऐसेंहि संपूर्ण करे तद उह पवित्र जाणणा । जेकर फेर भी पानकरे तद प्रायश्चित्त नहि एह वार्त्ता अर्थसे जानणी इति ३ और सुमंतु जीने किहाहै ब्राह्मणेति कि जो ब्राह्मण सुरा पान करे उसको छेमहीने समुद्र विषें स्नान करणा योग्यहै परंतु समुद्रते बाहर जल ल्या कर्के नहि करणा किंतु समुद्रके वीचहि करणा । और उह गायत्री मंत्रके साथ नित्यं प्रति आठहजार आहुतिदेवे और तिसते अनंतर तिन उपवासकरे और फेर तप्त

ततःसकृत्पानेप्रथमे तप्तकृच्छ्रादि चकारात्साम्मितंच द्वितीयेपुनःपानेपूर्वोक्तेनसहगोप्रसवोपितदनन्तरमपिसाम्मितं ततोपिपाने पूर्वोक्तेनसहप्राजापत्यं । समाप्तौपराकइत्यादि सुमंतुः । ब्राह्मणस्यसुरापस्यषण्मासानुद्धृत समुद्रोदकस्नानं । सावित्र्याष्टसहस्रंजुहुयात्प्रत्यहंत्रिरात्रमुपवासस्तप्तकृच्छ्रेणपूतोभवत्यश्वमेधावभृथस्नानेनवा । प्रायश्चित्तप्रकरणेव्याघ्रः । सुरांमत्याह्यमत्यावापुनः पीत्वाद्विजोत्तमः ॥ ततोग्निवर्णांतांपीत्वामृतः । शुध्येत्सकिल्बिषात् इति । बृहस्पतिः ॥ गौडींमाध्वींसुरांपैष्टींपीत्वाविप्रः समाचरेत् ॥ तप्तकृच्छ्रंपराकंच चान्द्रायणमनुक्रमात् १

कृच्छ्र करे तद पवित्र हुंदाहै अथवा यज्ञ विषें अवभृथ स्नान कर्के पवित्र हुंदाहै अर्थात् अश्वमेध यज्ञ विषें यज्ञांत स्नान कर्के शुद्ध हुंदाहै इति और प्रायश्चित्त प्रकरण विषें व्याघ्रजीका वाक्यहै सुरामिति जोद्विजोत्तम ज्ञान पूर्वक अथवा अज्ञान कर्के पुनः क्या पूर्वोक्त सम्मतके अनंतर अर्थात् सम्मतके पीच्छे चउथीवार सुरापानकरे सो तिसते अनंतर अपनी शुद्धि वास्ते अग्निकें तुल्यहै वर्ण जिसका ऐसी सुरा पीवे और तिसके पान करणे कर्के जेकर मृत हो जावे तद उह ब्राह्मण सुरा पानके पापते मुक्त हुंदाहै इति । और बृहस्पतिजीने किहाहै कि गौडीति कि जो ब्राह्मण गौडी माध्वी पैष्टी इनका पान करे तद उह इस क्रम कर्के प्रायश्चित्त करे क्या जेकर गुडकी मदिरा पानकरे तद तप्त कृच्छ्र व्रत कर्के शुद्ध हुंदाहै और जेकर माध्वी मदिरा पान करे तद पराक व्रत कर्के पवित्र किहाहै और जेकर पैष्टी सुरा पान करे तद चांद्रायण व्रत कर्के शुद्ध हुंदाहै इति१

और तिसकारण कर्के पैष्टी सुरापानविषे ब्राह्मण को चांद्रायण कहाहै एहप्रायश्चित्त उसके वास्तेहै कि जो ब्राह्मण अज्ञानते और एकवार सुरापानकरे और जेकर ज्ञानते पीवे तो फेर वमन कर देवे और अन्यव्रतकरणेकोंभी सामर्थनहो तिसकेवास्ते जानणा योग्यहै एवमिति इसप्रकार जोवडे और थोडे व्रत कहे हैं एह संपूर्ण अभ्यास और अनभ्यासके अनुसारकर्के कर्ताको शास्त्रविचार कर्के और देशकाल गुण जातिसामर्थ्य एह सभदेखकर पर्षदमे व्यवस्था करणेयोग्यहैं अर्थात् एहजो पूर्व व्रत कहेहैं सो सभजो मदिरा पीणेवालाहै उसकी जाति इत्यादि संपूर्ण देखकर शास्त्रके अनुसार दिखाणे योग्यहैं और लिखयाहै अज्ञानेति एह श्लोक पिच्छेभी आयाहै तथापि इसजगाभी इसकी आवश्यकताहै इस कर्के पुनरुक्ति नहींसम

तेनपैष्टयामपिब्राह्मणस्यचांद्रायणमेवोक्तं तदेतत्सकृदमत्याकामतःपीतासु प्रच्छर्दितासुव्रतांतरासमर्थस्यैववेदितव्यं एवमादीनिगुरुलघूनिव्रतानिनिमितस्या भ्यासानभ्यासानुसारेणकर्तुरनुवंधतारताम्यवशेनदेशकालगुणजातिसामर्थ्यवशेनचपरिषदाव्यवस्थापनीयानि किंच अज्ञानात्तुसुरांपीत्वा रेतोविण्मूत्रमेववापुनःसंस्कारमर्हतित्रयोवर्णाद्विजातयः १ अज्ञानादकामतस्तुसुरांसकृत्पीत्वारेतोविण्मूत्रंवाप्राश्यपुनः संस्कारमुपनयनं द्विजातयो ब्राह्मणक्षत्रियवैश्याः कर्तुमर्हंति अनेनचसुरापाननिमित्तंप्रायश्चित्तंकृत्वा पुनः संस्काराच्छुद्धिः ॥ नतुसंस्कारशुद्धिमात्रात्प्रायश्चित्तनिमित शुद्धिरित्युच्यते ॥ अनेनैवाभिप्रायेण मनुनाप्युक्तं अज्ञानाद्वारुणीं पीत्वापुनः संस्कारमर्हतिमतिपूर्वमनिर्देश्यं प्राणांतिकमिति स्थितिः १

झणी कि जेकर ब्राह्मणक्षत्रीवैश्य एह तीनवर्ण ज्ञानते विना सुरापानकरे अथवा वीर्य विष्टा मूत्र इनकोभक्षणकरे तद पुना संस्कार कर्के शुद्धहुंदेहैं और इसस्थान विषे ऐसा अभिप्रायहै किअज्ञानात् क्या कामनाते विना एकवारी सुरापानकर्के अथवावीर्यविष्ठा मूत्रइनकोभक्षणकर्के ब्राह्मणादि तिन्नवर्ण पुनासंस्कारक्या यज्ञोपवीत संस्कार करणेके योग्यहोतेहैं १ और इस कर्के इसमें एभी समझना चाहिये सुरापान निमित्त प्रायश्चित्त कर्के पश्चात् संस्कारकरणेते शुद्धिहुंदीहै और केवल संस्कार शुद्धिमात्रतें प्रायश्चित्त निमित्त शुद्धिनहिंहुंदी इसी अभिप्राय कर्के मनुजीनेकिहाहै अज्ञानेति कि जोपुरुष ज्ञानतेविना वारुणीमदिराका पानकरे सो पुनासंस्कारके योग्य हुंदाहै अर्थात् अज्ञानतेवारुणी पानकर्के पुना संस्कार करणे कर्के शुद्धहुंदाहै १

और जो पुरुष जाण कर्के वारुणी पान करे सो अनिर्देश्य जो प्राणांत व्रतहे तिस कर्के पवित्र हुंदाहै क्यों कि जाण कर्के सुरा पान कीतियां होयां तिसके निमित्त सभाने जो प्राणांत प्रायश्चित्त नहि उपदेश कीता उसीको आपहि विचार कर्के प्राणांत प्रायश्चित करणा योग्यहै और जेकर ऐसान होवे तदपूर्वोक्त प्रायश्चित्तका उपदेश व्यर्थहो जंदाहै ॥ और प्रायश्चित्तेन्दुशेषर विषे लिखयाहै कि जो पुरुष जल बुद्धि कर्के सुरा पान कर लेवे फेर उसी समय विषे वमनभी कर देवे तदभी उसको पूर्वोक्त धर्मके अनुसार तिन्न वर्ष प्रमान ऐसा प्रायश्चित्त करणा किहाहै कि एककाल रात्रि विषे तिलांकी खल अथवा चावलकी कणियां इन्हांदोआं विचों एकका भक्षण करणा इसते विना होर अन्न नहि भक्षण करणा और नित्यं प्रति पंचगव्य पान करणा योग्यहै अथवा दोनो स्थान विषे भूमिदान पूर्वक पुना संस्कारकरणा योग्यहै ऐसे प्रायश्चित्त करणे कर्के

मतिपूर्वसुरापानमनिर्देश्यंप्रायश्चित्तंपर्षदा अनिर्दिष्टमपिनिमित्तवतातत् स्वयमेवकार्य्यं अन्यथातदुपदेशोनर्थकस्स्यात् प्रायश्चित्तेन्दुशेषरे उदकबुद्ध्यापीतायाःसुरायास्तत्कालमेव वमनेतुपूर्वोक्तधर्मवतोवर्षत्रयंरात्रौसकृत्तिलकल्कतंडुलकणान्यतरमात्रभक्षणंनत्वन्नभक्षणं प्रत्यहंपंचगव्यपानंच अथवोभयत्रभूमिदानपूर्वकंपुनःसंस्कारःअनेनेहव्यवहार्यतैवद्वादशाब्दासमर्थस्यपापक्षयोपीतिमिताक्षरा तथाअज्ञानात्प्राश्यविण्मूत्रंसुरासंस्पृष्टमेवच पुनःसंस्कारमर्हन्तित्रयोवर्णाद्विजातयः सुरासंस्पृष्टंतिरोहितंसुरारसमिति विज्ञेयम् तथाशुष्कसुराभांडास्थितमुदकंइतरद्वातत्प्राशः सुरापानमेवतत्रापिचप्रायश्चित्तपूर्वकमेवपुनःसंस्कारः ॥

व्यवहार की योग्यता हुंदीहै कोई पापनाश नहि और जेकर द्वादशाब्द व्रत करणेकी सामर्थ्यने होवे तद इसकर्के पापका भी नाशहो जंदाहै एह मिताक्षरा विषे भी लिखयाहै सायी ॥ जैसे अज्ञाना दिति कि ज्ञानते विना विष्टा मूत्र इनको भक्षण कर्के अथवा सुराके साथ जोस्पर्श होया पदार्थहै उसको भक्षण कर्के ब्राह्मणादितिन्नवर्ण पुना संस्कार के योग्य हुंदेहै और संस्पृष्ट इस शब्द कर्के सुरा रस वीच जो भिज्जाहो उसका ग्रहण कीताहै और तैसेहि सुकाहोया जो सुरा पात्रहे उस विषे स्थित जो जलहै अथवा अन्यकोई वस्तुहै तिसको भक्षण करणा एहभी सुरा पानके तुल्यहै और इस विषे भी प्रायश्चित्त पूर्वोक्त पुना संस्कारहि करणा किहाहै अर्थविशेष वास्ते फेर एह श्लोक लिखाहै ॥

तिसका प्रायश्चित्त शातातपजीने किहाहै सुराभांडेति कि जोपुरुष सुरावाले भांडेकाजल पानकरलेवे फेर उसको वमनभी जेकरदेवे तदभी उसको एकदिनरात्रि उपवास और घृतभक्षण करणा किहाहै। और सुरापात्रका वासीजल पीणेविषे बौधायण जीनेकिहाहै सुरापानस्येति कि जिसपात्रकेसाथ सुरापानकरतेहैं उसभांडे विषे स्थितजो बेहा जल उसजलको जोपुरुष पीवे सोअपनी शुद्धिवास्ते शंखपुष्पी बूटीकेसाथ दुग्ध काड करके तिन्नदिन पानकरे तद शुद्धिको प्राप्तहुंदाहै और दूधभी एकवारी दिनविषे पानकरणे योग्यहै । और जेकर जाणकर्के एकवारी मदिराके भांडेका जलपानकरे और अज्ञानते वहुत वारी पानकरे उसस्थानविषे मनुजीने किहाहै अपइति किजोपुरुष सुरापात्र विषे स्थितजोजल तिसको जाण कर एक वारी जेकर पान करे और मद्यके भांडे विषे स्थित जोजलहै तिस

तत्प्रायश्चित्तमाह शातातपः ॥ सुराभांडोदकपानेछर्दनंघृतप्राशनमहोरात्रोपवासश्चेति।सुराभांडपर्युषितजलपानेबौधायनआह सुरापानस्ययोभांडेष्वपः पर्युषिताः पिवेत् शंखपुष्पीविपक्वंतुक्षीरंसतुपिवेत्त्र्यम् क्षीरंचस्तोकमेवपातव्यं तपस्त्वात् सकृन्मतिपूर्वकेमद्यभांडोदकपानाभ्यासेचामतिपूर्वकेमनुराह। अपः सुराभाजनस्था मद्यभांडस्थितास्तथापंचरात्रंपिवेत्पीत्वाशंखपुष्पीश्रितंपयः। पयोत्रक्षीरं सुराभाजनस्थाअपः॥ सकृन्मतिपूर्वकंपीत्वामद्यभांडस्थाश्चामतिपूर्वा भ्यासेपीत्वापंचरात्रंशंखपुष्पीश्रितंपयः अवुद्धिपूर्वकेतुसुराभांडोदकपानेविष्णुराह ॥ अपःसुराभाजनस्थाःपीत्वाससरात्रंशंखपुष्पीश्रितंपयः पिवेत् अस्मिन्नेवविषयेसाभ्यासे वृद्धयमआह सुराभांडस्थितंतोयंयदिकश्चित्पिवेद्द्विजः सद्वादशाहंक्षीरेणपिवेद्ब्राह्मींसुवर्चलां॥ व्राह्मीसुवर्चलालवणिकाब्राह्मी ॥

को अज्ञानते जेकर वहुत वारीपान करे तद उह पुरुष शंखपुष्पीवूटीके साथ दुग्धकाड कर्के पांच दिन रात्रि पान करे तद शुद्ध हुंदाहै ॥ और इस स्थान विषे पयः शब्द कर्के दुग्ध का हि ग्रहण करणा जल नहि ग्रहण करणा ॥ अज्ञान पूर्वक सुरापात्रके जल पान विषे विष्णु जीने किहाहै अप इति किसुराके पात्र विषे स्थितजोजलहै तिसको पान कर्के सात रात्रिशंख पुष्पी वूटीके साथ काड्या होयादुग्ध पान करे ॥ और इसी विषयविषे वहुत वारमे वृद्ध यम जीने किहाहै सुराभांडेति जो ब्राह्मणं कदाचित सुराभांडस्थित जल पान कर लवे तद सो ब्राह्मण दुग्ध के साथ ब्राह्मी सुवर्चला पान करे और ब्राह्मी सुवर्चला उसका नामहै कि जिसको लूणककहतेहं

और सुरापकेमुखके गंधकी घ्राणके प्रायश्चित्त विषेतो मनुजी का वाक्यहै ब्राह्मणस्येति कि सुरा पीण वालेब्राह्मणके मुखकी गंध को घ्राण करके सोमयाजियोंहैं सो जल विषे तिन्नप्राणायामकरके फेरआचमनकरे फेर घृत प्राशन करे तद शुद्धहुंदाहै इति १ एह प्रायश्चित्त सोमयाजिको अज्ञान विषे हि जाणणा और ज्ञान विषे तोदूणा करणा और नहिपीताहै सोमवल्लीरस जिसने उस को जेकर साक्षात्सुराका घ्राणहोजावे तद(घ्राति रग्रेयमद्य योः) एह पिछे वचन किहाहै इसेत जाति भ्रंशकर होणेते जातिभ्रंश कर्म करण वाले विषे प्रायश्चित्त जाणणा अर्थात् महापाप करण वाले विषे प्रायश्चित्त नहिहै एह मनूक्तदेखलेणा अर्थात् मनु जीका किहाहोया देखणे योग्यहै इति ॥ जो सुराप्रसंग विषे गौतम जीने मद्यपानमे किहाहै किब्राह्मणमदिरापान करके अपनी शुद्धि वास्ते दुग्ध घृत जल वायुः एह गरम करके तिन्न दिनपानकरे अर्थात् तिन्नदिन

सुरापस्यमुखगंधघ्राणेतुमानवं ॥ ब्राह्मणस्यसुरापस्यगंधमाघ्रायसोमपः प्राणानप्सुत्रिराचम्यघृतंप्राश्यविशुध्यतीति १ एतच्चसोमयाजिनोऽमति पूर्वेएवमतिपूर्वेतुद्विगुणं अपीतसोमस्यतुसाक्षात्सुरागंधघ्राणस्यघ्रातिरग्रे यमद्ययोरिति जातिभ्रंशकरत्वाज्जातिभ्रंशकरं कर्मेतिमनूक्तंद्रष्टव्यं॥यत्तु सुरानुवृत्तौगौतमेनमद्यपाने पयोघृतोदकंवायुः प्रतित्र्यहंतप्तानिसकृच्छ्रंततोस्यसंस्कारः मूत्रपुरीषरेतसांप्राशनेचेतितप्तकृच्छ्रपूर्वकत्वेनसंस्कारेविहितः तत्रापितप्तकृच्छ्रोऽल्पापराधविषयएवविषयांतरेतुप्रायश्चित्तांतरंद्रष्टव्यम् ॥

गरम दुग्ध और तिन्न दिन गरम घृत और तिन्न दिन गरम जल और तिन्न दिन गरम वायुहि पानकरे और एह सभएककाल विषे हि ग्रहण करणे योग्यहै तद एह तप्तकृच्छ्रहुंदाहै अर्थात् इसव्रतकानाम तप्तकृच्छ्र किहाहै और इस प्रकार तप्तकृच्छ्र करके तिसते अनंतर उसका संस्कार करणा चाहिये ऐसे करणे करके उह शुद्ध हुंदाहै और मूत्रविष्ठा वीर्य इनके भक्षण विषे भीएहि प्रायश्चित्त करणा किहाहै अर्थात् जो पुरुष कदाचित् मूत्रादि भक्षण करे उसको भी तप्त कृच्छ्र पूर्वक संस्कार करणा योग्यहै क्योंकिप्रथम तप्त कृच्छ्र करके फेरयज्ञोपवीत संस्कार करणा चाहिये और इसस्थान विषे तप्त कृच्छ्र करके थोडे अपराधमे जाणणा और जिसस्थान विषे और कोई विषयहोगा उसस्थान विषे प्रायश्चित्त भी और हि जाणणा

इसी कारणते बौधायन जीने किहाहै अज्ञानते जो पुरुष सुरापानकरे कृच्छ्रका वर्ष कृच्छ्रका चौथा हिसा व्रत करके फेर यज्ञोपवीत संस्कार करे तद शुद्धहुंदाहै और कृच्छ्राब्दपादशब्दका एह अर्थ है कि वर्ष का पाद तिन महीने कृच्छ्र करणा चाहिए ॥ और वशिष्ठजीने किहाहि मद्येति कि जद कदे ब्राह्मण मद्यके भांडे विषे स्थित जो जल है तिसको पान करे तद कम ल हुंवल वृक्ष और बिल्व पलाश कुशा इनका जल निकाल कर तिन दिन एक काल वि षे पान करे तद उह शुद्धहुंदाहै और तिसते अनंतर यज्ञोपवीत संस्कार करणा योग्यहै ॥ और पुनासंस्कारमें मुंडन की निवृत्तिविषे मनुजीका श्लोककिहाहै वपनमिति कि मुंडन करवा णा और मुंजीकी मेखला और पलाशकादंड धारणकरणा और भिक्षामांगनी और ब्रह्मचारी को

अतएवाहबौधायनः अमत्यासुरापानेकृच्छ्राब्दपादंचरित्वा पुनरुपनयनमिति कृच्छ्राब्दपादंकृच्छ्रेणाब्दपादंत्रीन्मासानित्यर्थः वसिष्ठः॥मद्यभांडस्थितं तोयंयदिकश्चिद्द्विजःपिबेत् पद्मोदुंबरविल्वपालाशकुशानामुदकंपीत्वात्रिरात्रेणशुद्धयति ततःपुनरुपयनं वपनादीनांनिवृत्तीमानवंचात्रश्लोकमुदाहरंति वपनंमेखलादंडोभैक्षचर्याव्रतानिच । निवर्त्ततेद्विजातीनांपुनःसंस्कारकर्मणीति अपरार्केभविष्यत्पुराणम् प्रायेणधर्मशास्त्रेषुसर्वेष्वेवसुराधिप मतिपूर्वंसुरापानेप्राणांतिकमुदाहृतम् पैष्टीपानेतुऋषिभिर्नैवतस्यकदाचन ऋषिभिःपैष्टीपानेसतितस्यपानस्यप्रायश्चित्तंनोक्तंप्रायश्चित्ताधिक्यात् अनपदिष्टमपिस्वयंप्राणांतिकंकुर्यादित्यर्थः वसिष्ठनतथैवोक्तंप्रायश्चित्तंसुराधिप कामतोमद्यपानेतुनसुरायाःकदाचन'॥ २ ॥

और जो व्रत कहेहैं एह संपूर्ण कर्म पुना संस्कार विषे ब्राह्मणको निवृत्त होजंदेहै अर्थात् जिसस्थान विषे ब्राह्मणको पुना संस्कार करणा किहाहै उस स्थान विषे मुंडनादि कर्मतेवि ना संस्कार करणा योग्यहै और अपरार्क विषे भविष्यत्पुराणका वाक्यहै प्रायेणेति हे राजन् कि अतिशय करके संपूर्ण धर्म शास्त्र विषे ऐसा लिखयाहै कि जो जानकर सुरापान करे उसके वास्ते प्राणांतहि प्रायश्चित्त किहाहै और पैष्टीसुरापान विषे ऋषियोंने प्रायश्चित्तनहि दिखाया किस वास्ते कि प्रायश्चित्त उसका वहुतहै इस कारणते प्रायश्चित्त नहिभी किहा तदभी आपहि प्राणांतिक करणा योग्यहैं । और हे राजन् वाशिष्ठजी ने भी तैसे हि प्रायश्चित्त किहाहैं कि कामनाते मदिरा पान विषे प्रायश्चित्तपूर्वोक्त किहा है और सुराका नाहि दिखाया २

पूर्वोक्तएहवासिष्टहै कि ऐसा अभिप्रायहै किजो पुरुष सुराते भिन्न जोमदिराहै तिसका पान जेकर जाणकर करें और ज्ञानते बिना सुरापानकरे तदउह पुरुष अपनी पवित्रतावास्तेकृच्छ्र अतिकृच्छ्र व्रतकरे और घृतभक्षणकरे और फेर यज्ञोपवीत संस्कारकरणा किहाहै अर्थात्सा मान्य मदिरा जेकरपीवे जानकर तदकृच्छ्र करणे कर्के पवित्र हुंदाहै और अज्ञानते जेकर सुरा पानकरे तद अतिकृच्छ्र कर्के शुद्धहुंदाहै और और जोवहुतवारी सुरापानकरे सोऽग्निवर्णकी सुरापीवे एहप्रायश्चित्त उसस्थानमे जाणणा किजदकामनाते अथवा माध्वीका पानहो वे सांयी लिखयाहै हेसुराधिपकिजो पुरुषकामनाने एकवारी मदिरापानकरे सोपुरुषकृच्छ्राति कृच्छ्रकर्के फेर पुनासंस्कारते शुद्धहुंदाहै ३ और इसस्थान विषे भीमदिरा सुराते भिन्नहि ग्रह णकीता है और हेउत्तम कुलविषे श्रेष्ठ जेकर कामनाते पैष्ठी सुरापानकरे तदभी कृच्छ्रातिकृ

पूर्वोक्तमिदंवासिष्ठं मद्यपानेतुअसुरायास्सुरायाश्चाज्ञानेकृच्छ्रातिकृच्छ्रौघृ तप्राशः पुनःसंस्कारश्चाभ्यासेतुसुरायाअग्निवर्णांसुरांपिबेत् कामतो गौडी माध्वीपानेएतत्। कामतोमद्यपानंतुसकृत्कृत्वासुराधिप कृच्छ्रातिकृच्छ्रौकृत्वा वैपुनःसंस्कारतःशुचिः ३ मद्यंसुराव्यतिरिक्तं अकामतःसुरांपीत्वापैष्टींसत्कु लनन्दनकृच्छ्रातिकृच्छ्रौकृत्वावैपुनःसंस्कारत;शुचिः ४ अत्यंतासक्तवालातुर विषयमेतत् । चतुर्थकालंभुंजानःसुरापोब्राह्मणोगृह वर्षत्रयंतुविधिनातिष्ठे दात्मविशुद्धये ५ पैष्टीपानेकामतःसकृत्कामतोवाभ्यासेगौडीमाध्वीपानएतत् प्रमादान्मद्यमसुरंसकृत्पीत्वाद्विजोत्तमः गोमूत्रयावकाहारोदशरात्रेणशु द्ध्यति ६

च्छ्रकर्के फेरपुनासंस्कारते पवित्र हुंदाहै ४ और एहप्रायश्चित्त उसस्थानाविषे जाणणा जहांवाल क और रोगी अतिशयकर्के खचितहोवे और हेस्वामीकार्तिक सुरापीणेवाला ब्राह्मण आप नीशुद्धिवास्ते तिन्नवर्ष इस विधि कर्के स्थितहोवे क्याकि दिनके चौथे प्रहराविषेोनित्यप्रति एक काल भोजन करे और इसप्रकार तिन्नवर्ष कर्के पवित्रहुंदाहै ५ और एहप्रायश्चित्त अज्ञानतेएक वारी पैष्टी पानविषे और कामनाते वहुतवारी गौडीमाध्वीके पानविषे जाणणा और जोउत्त मब्राह्मणप्रमादते सुराभिन्नमदिराकोपीवे सोब्राह्मणगोमूत्रविषे यवोंका यावक बनाकर भोजनक रतियां दशादिन कर्के शुद्धहुंदाहै औरयावक उसकोकहतेहै जवांकोगोमूत्रके साथपीस कर्के फे रकाडलेना ६ ॥

और जो ब्राह्मण अज्ञानते एक वारी मदिरा पान करे सो तप्त कृच्छ्र व्रत करे । और घृत भक्षण करे तद पवित्र हुंदाहै ७ और इस स्थान विषे भी सुराते भिन्न मद्याकिहाहै और गौतमादि ऋषियोंने ब्राह्मणों को सुरा पान विषे और मदिरा पान विषे निषेध किहाहै ८ और जो कि गौतमादि ऋषियोंने तप्त कृच्छ्र का विधान किहाहै सो अज्ञानतें गौडी माध्वीके पान विषे जाननणा ९ और ज्ञान पूर्वक तैसे हि गौडी माध्वीके पान विषे हे स्वामिकार्त्तिक संपूर्ण पाप हरणे वाला जो वासिष्ठ जीने शुभ व्रतकिहाहै सोयी जानणे योग्यहै १० सो वचन पिच्छे किहाहै मद्य पाने इत्यादि ॥ और कामनाते सुरा भिन्न मदिरा पान कीतियां होयां ब्राह्मण को अपनी शुद्धि वास्ते चांद्रायण व्रत का अभ्यास करणा योग्यहै अर्थात् जो ब्राह्मण कामनाते मदिरा पीवें सो चांद्रायण व्रत करके शुद्धहुंदाहै ११ अथवा इसी विषय विषे मनुजीने जो व्रत

अज्ञानान्मद्यपानंतुसकृत्कृत्वाद्विजोत्तमः । तप्तकृच्छ्रंसमातिष्ठेत् घृतंप्राश्य ततःशुचिः ७ अत्रापिसुराव्यतिरिक्तमेवमद्यंविवक्षितं प्रतिषेधःसुरापानेम द्यस्यचसुराधिप द्विजोत्तमानामेवोक्तंसततंगौतमादिभिः८तप्तकृच्छ्राभिधानंहियदुक्तंगौत्तमादिभिः अबुद्धिपूर्वपानेतुगौडीमाध्व्योस्तदुच्यते९गौडीमाध्व्योस्तथापानेमतिपूर्वेक्षितेगुह वासिष्ठंतत्रविज्ञेयंसर्वपापहरंशुभम् १० वासिष्ठंच । मद्यपानेत्वसुरायाइत्यादिकम् असुरामद्यपानेतुकृतेविप्रस्तु कामतः चान्द्रायणंसमभ्यस्येच्छुद्धिकामःस्वशुद्धये ११ यद्वास्मिन्नेवविषये मानवीयंप्रकल्पयेत् कणान्वाभक्षयेदब्दामित्यादिकं ॥ गौडीमाध्व्योस्तथाभ्यासेप्राणांतिकमुदाहृतं माध्वींपीत्वाप्रमादेनसकृद्विप्रः सुराधिप १२ गोमूत्रयावकाहारोदशरात्रेण शुद्ध्यति ॥ सकृत्पीत्वातथागौडीमज्ञानात्सुरसत्तम कृच्छ्रातिकृच्छ्रौविहितौघृतपानकमेवच १३ गौडीमज्ञानतःपीत्वा ब्राह्मणोब्राह्मणप्रियतप्तकृच्छ्रंतुवैकृत्वापुनः संस्कारतः शुचिः १४ ॥

पूर्वं लिखयाहै सोयी कल्पना करे सोयी दिखायाहै कणान् इत्यादि और उसकी टीका भी होचुकीहै । और तैसे हि गौडी माध्वीके बहुत वारी पानके अभ्यास विषे प्राणांत प्रायश्चित्त किहाहै । और हे स्वामिकार्त्तिक जो ब्राह्मण प्रमादते एक वारी माध्वी का पान करे सो गोमूत्र के साथ यावक भोजन करता होया दशदिन करके शुद्धि को प्राप्त हुंदाहै १२ और तैसे हि अज्ञानते एक वारी गुडकी मदिराको जो ब्राह्मण पान करे हे स्वामिकार्त्तिक तिसकीशुद्धि वास्ते कृच्छ्रातिकृच्छ्र विधान कीतेहैं और घृत पान विधान कीताहै अर्थात् कृच्छ्र अतिकृच्छ्र करके घृत पान करे तद पवित्र हुंदाहै १३ अथवा हे स्वामिकार्त्तिक जो ब्राह्मण अज्ञानतें गौडी मदिरा पीवे सो तप्त कृच्छ्र करके फेर यज्ञोपवीत संस्कार करणेते पवि पवित्र हुंदाहै १४

और हेसुराधिप ॥ जो ब्राह्मण जाण कर्के गौडी पानकरे सो प्रथम अपनी शुद्धिवास्ते चांद्रा यण करे फेर उत्तमब्राह्मण केतांयी गो दानकर देवे तदउहब्राह्मण शुद्धहुंदाहै १५ और प्राणांत प्रायश्चित्तके प्रसंग विषे फेर भविष्यत्पुराणका वाकथहै एतानीति कि एह जो संपूर्ण प्रायश्चित्त पूर्व कहेहैं सोसभकामनातें पैष्टीसुरा पान विषे हि जानणे और आगे गौडी पान विषें प्रायश्चित्त सुनो १ क्याकिगौडी मदिरा पीने वाला ब्राह्मण वृहस्पति यज्ञकर्के ब्राह्मणां की समताको प्राप्तहुंदाहै एह वेदकी श्रुतिहै २ और ब्राह्मणी स्त्री को भी मदिरा पानके निषेध विषें याज्ञवल्क्यजीका वाक्यहै पतिलोकमिति किजो ब्राह्मणी सुरा पान करतीहै सोमृत्त होकर पतिकेलोकविषें नहिजाती ॥ और उहब्राह्मणी इसीलोक विषें कुत्तीकी योनी विषें और गिरझकी योनी विषें और शू

मतिपूर्वंयदागौडंपिबेद्विप्रः सुराधिप तदाचान्द्रायणंकुर्याद्गांचदद्याद्द्विजोत्तमे १५ मरणांतिकप्रायश्चित्तानुवृत्तौ पुनर्भविष्यत्पुराणं।एतानिपैष्ट्याः पानेतु कामतः संप्रवर्तते प्रायश्चित्तानिचोक्तानिगौडीपानेनिबोधमे १ वृहस्पतिसवेनेष्ट्वामद्यपोब्राह्मणः पुनः समत्वंब्राह्मणैर्गच्छेदित्येषावैदिकीश्रुतिः२ याज्ञवल्क्यः किंच पतिलोकंनसायातिब्राह्मणीयासुरांपिबेत् इहैवसाशुनीगृध्रीसूकरीचोपजायते१ सत्कर्मार्जितमपिपतिलोकंस्वर्गादिकं सुरापीब्रह्मणीनयाति दंपत्योस्सहाधिकाराद्योगादिकारिणः पत्युर्लोकः सएवपत्न्याअपीत्यभिप्रायेणोक्तंपतिलोकंनसायातीति नकेवलंस्वर्गादिलोकंनयाति किंतु कुत्सितां श्वादियोनिं प्राप्नोति तस्माद्ब्राह्मण्यापिसुरानपेया पीताचेत्प्रायश्चित्तंकार्यमितितात्पर्यार्थः अत्रमिताक्षरा ब्राह्मणीग्रहणं चात्रतिस्रोवर्णानुपूर्वेणेतिन्यायेन यस्यद्विजातेर्यावत्योभार्यास्तासामुपलक्षणम् ॥

करी की योनी विषे जन्म धारण करतीहैं ५ क्याकि श्रेष्ठ कर्म कर्के पति लोकमे जाणेका अधिकारभी जेकर होवे तद भी सुरापीणे वाली ब्राह्मणी पतिलोक विषे नहि जाती ॥ किसवास्ते कि पुरुषको स्त्रीके साथ यज्ञविषे अधिकार होणेते यज्ञकरण वाले पति कोजोलोक प्राप्तहुंदाहै सोयीलोकस्त्रीकोंभीप्राप्तहुंदाहै इसअभिप्राय कर्के किहाहै किपतिलोक को नहि जाती और केवल पति लोककाहि निषेध नहि किंतुनिंदित जोश्वानयोनीहै तिसकोंभी प्राप्तहुंदीहै ॥ इसवास्ते ब्राह्मणीनेंभी नहिसुरापानकरणा ॥ और ॥ जेकर पानकरलवे तद उसका प्रायश्चित्त करणा योग्यहै इसका एह तात्पर्यहै और इसस्थानविषें मिताक्षरा मे लिखया है किइत्थे ब्राह्मणी जो ग्रहणकीताहै सो ब्राह्मणकीयां जितनीयां स्त्रीयां होवें उनकाउपलक्षणहै अर्थात् ब्राह्मण की सभस्त्री मदिरापाननकरें

इसी कारणते मनुजीने किहाहै पततीति कि जिसकी स्त्री सुरा पान करे उसका आधा शरीर पतितहोजंदाहै ॥ और जिसका आधाशरीर पतित होजावे तिसकी कल्याण नहिहोंदी इति और धर्मार्थकार्य विषे स्त्री के साथ पतिको अधिकारहै इसकारणते स्त्री पुरुष काशरीर एकहि किहाहै ॥ इसते जिस ब्राह्मणकी स्त्री सुरा पान करतीहै तिसका स्त्री रूप आधाशरीर पतित होजंदाहै ॥ और जिसका भार्या रूप आधाशरीर पतितहोजावे तिसकी कल्यान नहिहोंदी और इसीकारणते ब्राह्मण कीस्त्रीने सुरापान नहि करणा योग्य और ऐसायो लिखयाहै कि ब्राह्मण क्षत्री वैश्य एह सुरापाननकरे इसनिषेध विधि विषे पुंलिगहि केवल नहि जानणा किंतु स्त्रीका भीग्रहणहै इसकारणते ब्राह्मणकी तिनवर्णकी स्त्रीयोंको भी सुरापान विषे निषेधके प्राप्त होय फेर ऐसा वाक्य लिखयाहै कि ब्राह्मण की शूद्रास्त्री को भीसुरा पान करणा निषेधहै अर्थात्

अतएवमनुः पतत्यर्धशरीरस्यपस्यभार्यासुरांपिबेत् पतितार्धशरीरस्य निष्कृतिर्नविधीयत इतिधर्मार्थकामेषुसहाधिकाराद्दंपत्योरेकशरीरत्वमेवा तोयस्यद्विजातेर्भार्यासुरांपिबतितस्यभार्यारूपमर्धशरीरंपतति ॥ पतित भार्यारूपार्धशरीरस्यनिष्कृतिर्नाविधीयते तस्माद्द्विजातिभार्ययासुरानपे या तस्माद्ब्राह्मणराजन्यौ वैश्यश्चनसुरांपिबेदितिनिषेध विधौलिंगस्याविवक्षतत्वेनवर्णत्रयभार्याणामपिनिषेधे सिद्धेपुनर्वचनं द्विजातिभार्यायाःशूद्रायाअपिसुराप्रातिषेधप्राप्त्यर्थम् अतोद्विजातिभार्याभिः सुरापानप्रायश्चित्तस्यार्धकार्यं शूद्रभार्यायास्तुशूद्रायाः शूद्रवदेवनप्रतिषेधः अन्यायास्तुप्रतिषेधएवसुरापानसमेषुतुनिषिद्धभक्षणादिषुसुरापानप्रायश्चित्तादर्धमिति अत्रापरार्कः॥मनुस्तु तस्माद्ब्राह्मणराजन्यौवैश्यश्चनसुरांपिबेदितिवाच्य गतंलिंगविवक्षितंमन्यमानः स्त्रीणांसुरापानानिषेधंपृथगाह ॥

शूद्राभी सुरा पान नकरे इसकारणते ब्राह्मणकी स्त्रीयोंने सुरापान का प्रायश्चित्त आधाकरणायोग्यहै और शूद्रकी जोइस्त्री शूद्रा है तिसको शूद्रकीन्याई और शूद्रकेघर होर वर्णकी स्त्री होवे तो उसको प्रायश्चित्त का नहिनिषेध कीता अथवा शूद्रकी स्त्री योंशूद्रा है तिसको मद्यपानकानिषेध नहि योहोरहै उसको निषेधजानणा ॥ और सुरापान के समान जो निषिद्धवस्तुभक्षणहै तिसविषेभी सुरापानका आधा प्रायश्चित्त करणा किहाहै ॥ और अपरार्क विषे और मनुजीने भीयो ऐसा लिखयाहै कि ब्राह्मण क्षत्री वैश्यएह सुरा पान नकरे इसस्थानविषे जोपुंलिगदिखायाहै तिसको विवक्षित मानकर स्त्रीयोंका सुरा पान कानिषेध भिन्न किहाहै

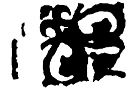
और जोस्मृतियोंकेकरणे वालेहैं तिनोनेभी मनुजीके वाक्यविषे ऐसाहि निश्चाकिताहै । इसी कारणते ब्राह्मणनहिमारणेयोग्य किजेसे इसस्यानविषे ब्राह्मणवधका निषधकीताहै औरब्रह्म णीवधविषय नहिहोंदा अर्थात्एह जोपुंल्लिंग दिखायाहै किब्राह्मण नहिमारणाइसवास्तेस्त्री लिंग वाचीजो ब्राह्मणीहै इसके बधकानिषेधनाहि जानणा क्योंकिआत्रेयीके मारणवा लेकोब्रह्महत्याका प्रायश्चित्त दिखायाहै सोअतिदेशवाक्यहोणते योडाहै । और एसेहि ब्राह्मणकेसुवर्ण हरणवालेको महापातककिहाहै और ब्राह्मणीके सुवर्णहरणेकरके महा पातक नाहिहुंदा हेसाहि निश्चयसिद्धहुंदाहै । और इसस्थानविषे ब्राह्मणीका जोग्रहण कीताहै सोक्षत्रियादिकीनिवृत्तिवास्तेजानणा और लिखयाहै कि विधेयविषेलिंगभे दकरताहे अर और स्थानविषे कोयिनियमनहिहै अर्थात् किसीस्थानविषे तोपुंलि

अन्येस्मृतिकाराश्चानुपादेयस्यापिविशेषणं विवक्षितंमन्यंते अतएवब्राह्म णोनहंतव्य इत्येषप्रतिषेधो ब्राह्मणीवधविषयोनभवति ॥ अतएवात्रेय्या दिवधकारिणोब्रह्महत्याप्रायश्चित्तातिदेशः।एवंचसतिब्राह्मणसुवर्णहरणं महापातकमित्युक्तोब्राह्मणीसुवर्णहरणं नमहापातकमितिसिद्धयति। अ त्रब्राह्मणीग्रहणंक्षत्रियादिस्त्रीणांव्यावृत्त्यर्थम् विधेयेभेदकंतत्रमन्यतोनि यमोनहींत्यादिवचनाद्विशेषणविवक्षाविवक्षेज्ञेये ॥ अतएववासिष्ठः॥याब्रा ह्मणीसुरापीनतांदेवाः पतिलोकंनयंतिइहैवसाभ्रमतिक्षीणपुण्या ऽप्सुलु ग्भवतिजलौकासुक्तिकेतिवाब्राह्मणीस्त्रीत्युक्तवान्॥ शंखोपिसुरालशुनप लांडुगृंजनकमांसान्यभक्ष्याण्याह

गकहनेकर्केपुंलिंगकाहिग्रहण हुंदाहै और किसीस्थान विषेंपुलिंग कर्के स्त्रीलिंग का और स्त्रीलिंग कर्के पुंलिंगका ग्रहण होजंदाहे इत्यादि वाक्यते किसीस्थान विषे वि शेषण का ग्रहण कीताहे और किसी स्थान विषे नहिं ग्रहण हुंहा ऐसा जानणा और इ सी कारणते वासिष्ठ जीका वाक्यहै कि जो ब्राह्मणी सुरापान करतीहै तिसको देवता पति लोक कोनाहि ले जाते और सोब्राह्मणीइसी स्थान विषे भ्रमणकरतीहै ॥ अर्थात् मदिरा पीने वाली ब्राह्मणीपतिलोक विषे नहिंजंदी किंतु तिसको इसी स्थान विषे अनेक नीचयोनि प्राप्तहुंदीहै और पुण्य के क्षीणहोयांउहजल विषे लीन हुंदीहै अथवा सिप्पी रूपहोजं दीहै अथवा जलौकाहुंदीहै ॥ इस प्रकार वसिष्ट जी कथन करते भये औरशं खजीने भी सुरालसन गंडा गाजर मांसएह सभ अभक्ष कहे है ॥

और रसरूपशरीरहुंदीहै रसरुपहोंणेतेब्राह्मण वर्ण संकर होजंदाहै किसवास्ते किजो कुछ माता खावे पीवे उसकर्के हिगर्भ स्थित हुंदाहै। इसी वास्ते सुरादि अभक्ष योहै तिनको भक्षण करण वाली ब्राह्मणी कापुत्र भीवर्ण संकर हुंदाहै क्योंकि माताके खाने पीणे कर्के गर्भकीवृद्धिहुंदीहै इसकारण तेइस स्थान विषे ब्राह्मणीको सुरा पान निषेध कीताहै एह संपूर्ण सुरा पान करणे का प्रायश्चित प्रकरण किहाहै

रसमयंहिशरीरंतन्मयत्वाद्ब्राह्मणःसंकीर्यतेमातुरशितपीताद्धिग
र्भस्संभवातिसुराद्यभक्ष्यभक्षकायाब्राह्मण्याः
पुत्रःसंकरोभवतिमातृभुक्तपी
ताद्युपचितत्वात् अत्रा
पिब्राह्मण्याःसुरा
निषेधःइतिसुरा
पानप्रायश्चि
तप्रकर
णम्



ॐनमः अथमहापातकके मध्यविषें स्तेयप्रायश्चित्त लिखतेहैं और इसस्थान विषें स्तेयनामहै चोरीका और चोरीभी स्वर्णहरण परजाननी और सोयीजैसें किसुवर्णकी चोरी करणवाला ब्राह्मण इसवाक्य कर्के प्रायश्चित्तों विषें मनुजीने सुवर्णकी चोरीविषेंहि उपसंहारकीयाहै अर्थात् मनुजीने संपूर्ण प्रायश्चित्त विषें सुवर्ण कीचोरी कोंहि महापातक निश्चयकीताहै ॥ और मनुजीने पूर्वऐसा जोलिखयाहै किस्तेय और गुरुकीस्त्री साथगमन करणा इस स्थान विषें स्तेय शब्द कर्के सुवर्णकी चोरीकाहि ग्रहण जानणा और सुवर्णकी चोरीतें विना अन्य यो चोरीहैं तिसका प्रायश्चित्त उपपातक प्रकरण विषें जानणे योग्यहै इस कारणतें सुवर्ण चुराणा महापातकहै और सुवर्ण तेविना। और चोरी उपपातकहै और चोरीका लक्षण

ॐनमःअथमहापातकान्तर्गतस्तेयप्रायश्चित्तं स्तेयमत्रस्वर्णापहरणपरं सुवर्णस्तेयकृद्विप्रइत्यनेनप्रायश्चित्तेषुमनुनासुवर्णविषयत्वेपसंहृतत्वात् स्तेयंगुर्वंगनागमइतिपूर्वमपिमानवीयंस्वर्णहरणपरमेवज्ञेयं तदपिवक्ष्यमाणस्मरणाद्ब्राह्मणीयमेव एतदतिरिक्तन्तूपपातकप्रकरणेबोध्यम् स्तेयलक्षणंप्रायश्चित्तप्रकरणेपरद्रव्यापहरणमिति स्तेयसामान्यलक्षणमिदम् एवमेवापरार्कादौ॥अथैतत्प्रायश्चित्तं मनुः सुवर्णस्तेयकृद्विप्रोराजानमभिगम्यतु स्वकर्मख्यापयन्ब्रूयान्मांभवाननुशास्त्विति१ अपहृत्यसुवर्णंतुब्राह्मणस्य यतःस्वयमितिशातातपस्मृतेः विप्रसुवर्णचोरोब्राह्मणोनृपंप्राप्य द्विजसुवर्णापहाररूपंनिजंकर्मप्रकटयन्भवान्ममनिग्रहंकरोत्विति वदेत्

प्रायश्चित्त प्रकरणमें लिखयाहै किदूसरेका द्रव्यहरलेणा एह चोरीका सामान्यलक्षणहै और ऐसेहि अपरार्कादि ग्रंथोंविषेंहै और अब तिसका प्रायश्चित्त मनुजीने किहाहै सुवर्णेति कि सुवर्णकी चोरीकरण वाला ब्राह्मण राजाके समीप जाकर्के अपने कर्मको प्रकट करताहोया एसे राजाको कहै क्या किहे राजन्तुसी मेरेको शासना करो अर्थात् दंडदेवोइति॥ १ ॥ और ब्राह्मणका सुवर्ण चुराकर्के आपहि राजाको ऐसाकहे एहशातातपस्मृति विषें लिखयाहै कि ब्राह्मणका सुवर्ण चुराणे वाला ब्राह्मण राजाको प्राप्तहोकर अपना कर्म इसप्रकार प्रकट करे कि मैनेब्राह्मणका सुवर्ण चुरायाहै इसकारण तुसीमेरेको दंडदेवो ऐसे राजाके आगे प्रार्थना करे इति ॥

और इस स्थान विषे ब्राह्मणका जो ग्रहण कीताहै सो मनुष्य मात्रके दिखाणे वास्तेहै अर्था त् ब्राह्मण शब्दकर्के सामान्य मनुष्यका ग्रहण जान्नणा क्योंकि प्रायश्चित्तीयते नर इस प्रसं गविषे भी नर शब्दकर्के मनुष्य मात्र काहि ग्रहण होणेते क्षत्रियादि कोभी प्रायश्चित्त विधान कीताहै इसकारणते सोयी अपरार्क विषे लिखयाहै कि ब्राह्मणका सुवर्ण चुराणे वाला पुरु ष राजाके तांयीं मुशल अर्पण करे और अपना कर्म प्रकट करता होया सो सुवर्ण चोर राजा ने मुशलके प्रहार कर्के हत होया २ पवित्र हुंदाहै ॥ अथवा राजा छोड देवे तदभी उह शुद्धहोजंदाहै इसीका फेर विशेष अर्थ कहतेहै ब्राह्मणेति ब्राह्मणका जो सुवर्णहै तिसको जि स किस प्रकार कर्के चोहरलेवे सो राज्यके अभिषेक वाले राजापास जाकर अपने कर्मको

ब्राह्मणग्रहणमत्रमनुष्यमात्रप्रदर्शनार्थं प्रायश्चित्तीयतेनरइतिप्रकृतत्वात् क्षत्रयादीनांचप्रायश्चित्ताभिधानात् अपरार्के। ब्राह्मणसुवर्णहारीराज्ञेमुश लमर्पयेत् स्वकर्म्मख्यापयंस्तेनहतोमुक्तोपिवाशुचिः ब्राह्मणस्वभूतंसुवर्ण हृत्वायेनकेनापिप्रकारेणाछिद्याभिषिक्तायक्षत्रियायस्व कीयंब्राह्मणसुवर्ण स्तेयाख्यंकर्मख्यापयन्मुशलमर्पयेत् तेनराज्ञातेनचमुशलेनहतःशुचिर्भव ति यदिराजानहन्तिकिन्तुमुंचतितदासौतेनमुक्तः सन्नपिशुचिर्भवतियद्यपि सुवर्णशब्दोहेमजातिवचनएव तथाप्यत्रपरिमाणविशेषविशिष्टस्यैवहेम्नो ऽपहारेप्रायश्चित्तमिदंद्रष्टव्यं ॥ क्षत्र्यादिमापात्मकहेमहरणंतुक्षत्रियादिहे महरणवदुपपातकमेव ॥ मरणेतरप्रायश्चित्तोपदेशात् सुवर्णमानमाह याज्ञवल्क्यः। जालसूर्यमरीचिस्थंत्रसरेणुरजःस्मृतम् तेष्टौलिक्षातुतास्ति स्रोराजसर्षपउच्यते १

कहताहोआ मुसल देवे होर अर्थस्पष्टहै और यद्यपि सुवर्ण शब्द इस स्थान विषे सुवर्णका वाचिकहै तदभी परिमाण विशेष युक्त सुवर्ण चुराणे विषे एह प्रायश्चित्त जान्नणा सो परिमा ण विशेष आगे दिखाया जावेगा और दोतिन्न मासे सुवर्ण हरण विषे तो क्षत्रियादियोंके सुवर्ण हरणकी न्यायी उपपातक हिहै क्योंकि मरणते भिन्न प्रायश्चित्तका उपदेश होणेते नि श्चय कर्के उपपातकहै कुछ संशयनहि और सुवर्णका प्रमाण याज्ञवल्क्यजीने किहाहै जाले ति कि झरोखे विषे स्थित जो सूर्यकीयां किरणांहै उनमें जो बहुत सूक्ष्मरजके किणके प्रतीत हांतेहै उनके मध्य विषे एक किणकेका नाम त्रसरेणु किहाहै और आठ किणके होवें तद एक १ लीखहुंदीहै और तीन लीखांका एक १ रायी कादाणा हुंदाहै १

श्रौर रायीके तीन ३ दाणे होवें तद एक १ श्वेतसरोंका दाणा किहाहै ॥ श्रौर गौरी सरोंके छे ६ दाणे होवें तद एक मध्यजौं १ हुंदाहै श्रौर तीन जौका एक १ कृष्णल हुंदाहै श्रौर पांच ५ कृष्णल होवें तद एक १ मासा किहाहै श्रौर सोला १६ मासेका एक १ सुवर्ण अथवा तोला किहाहै २ श्रौर चार ४ सुवर्ण होवें तद एकपलकिहाहै अथवा पांच ५ सुवर्ण का एक पलकिहाहै श्रवरूप्येकी मानपरिभाषा कहंदेहै (द्वि इति) श्रौर दोकृष्णलहों १ रूप्ये का मासाजान्नणा श्रौर १६ मासे १ धरण अथवा पुराण हुंदाहै ३ श्रौर १० पुराणका १ शत मान अथवा पल हुंदाहै श्रौर ४ सुवर्ण का रजतका निष्क किहाहै श्रौर ताम्रपण कार्षिक कार्षापणभी उसीका नामहै ४ श्रौर ९ मासेका सुवर्ण बराह किहाहै श्रौर मध्यमशब्दका सर्वत्र

गौरस्तुतेत्रयःषट्तेयवोमध्यस्तुतेत्रयः कृष्णलःपंचतेमाषस्तेसुवर्णस्तुषोडश २पलंसुवर्णाश्चत्वारः पंचवापिप्रकीर्त्तितम् द्विकृष्णलेरूप्यमाषोधरणंषोडशै वते ३शतमानंतुदशभिर्धरणैःपलमेवतु निष्कंसुवर्णाश्चत्वारः कार्षिकस्ताम्र कःपणइति ४ जालान्तःप्रविष्टसूर्यमरीचिस्थितंयद्रजस्तत्त्रसरेणुइति तेष्टौ लिक्षातिस्त्रेलिक्षाराजसर्षपः तेराजिकास्त्रयोगौरसर्षपः गौरसर्षपाः षट्म ध्ययवः तेत्रयः कृष्णलइतिकृष्णल पंचकंमाषः षोडशमाषाः सुवर्णः च त्वारः सुवर्णाः पलमिति पक्षेपंचभिः सुवर्णैरपिपलंभवतीति द्विकृष्णलेरू प्यमाषइति षोडशमाषैर्धरणमिति अस्यैवसंज्ञांतरंपुराणमिति दशभिर्धर णैः शतमानंपलंचेति चत्वारः सुवर्णाराजतंनिष्कमिति ताम्रिकः पणः का र्षिकःकार्षापणश्चभवति नवमाषंसुवर्णंवराहः इतिमध्यमशब्दः सर्वत्रानु संधेयः इतिप्रत्याम्नायप्रकरणेप्रोक्तमपिप्रसंगादुक्तं अतएवोक्तंषट्त्रिंशन्म तेसुवर्णस्यापहारेमाषकेनापिपातकं निष्कमात्रापहारेणनविद्मः किंभ विष्यति १ वालाग्रमात्रेपहृतेप्राणायामंसमाचरेत् ॥

संबंध करणा योग्यहै श्रौर एह संपूर्ण प्रमाण प्रथम प्रत्याम्नाय प्रकरण विषेंहैं श्रौर प्रसंग करके फेर इसस्थान विषें भीकिहाहै इसवास्ते पुनरुक्ति दोषनहि जाणना श्रौर जे कर इसस्थानमे नलिषत तद कार्य नहि सी चलता इति इसी कारणते षट्त्रिंशतमत विषें लिखयाहै सुवर्णस्ये ति कि एक मासाप्रमाण जो पुरुष सुवर्ण चुरालेवे उसको पातक हुंदाहै श्रौर जे कर निष्कप्र माण क्या एक पलप्रमाण सुवर्ण की चोरीकरेगा उसको क्या होगा एह हम नहिजानते अ र्थात् महापातक हुंदाहै १ श्रौर वालका जितना अग्रभाग हुंदाहै उतनामात्र सुवर्ण चुरालेवे तद एक प्राणायाम करके पवित्र हुंदाहै ॥

श्रौर जेकर लीख मात्र प्रमाण सुवर्ण की चोरी करे तद तैसेहि सो बुद्धि मान तीन प्राणायाम कर्के शुद्ध हुंदाहै श्रौर रायी प्रमाण सुवर्ण की चोरी जेकर करे तद चार प्राणायाम कर्के पवित्र हुंदाहै अथवा आठहजार गायत्री मंत्रका विधि पूर्वक जप करे अपनी शुद्धि वास्ते ३ श्रौर सैंसीसरोंका जितनातोलहै उतना प्रमाण सुवर्ण जेकर कोई पुरुष ब्राह्मणका हरलेवे तद एकादिन गायत्री जप कर्के पवित्र हुंदाहै श्रौर जेकर यव प्रमाण सुवर्ण हरलेवे तद उसको दोदिन वरा वर प्रायश्चित्त करणा चाहिये अर्थात् गायत्री जप जितना दोदिनमे होजावे उतनेहि जप कर्के शुद्धिको प्राप्त हुंदाहै ४ श्रौर एक कृष्णल प्रमाण सुवर्ण चुरा कर्के उत्तम ब्राह्मण अपनी शुद्धि वास्ते सांतपन व्रत करे तद सो पापते मुक्त होजंदाहै ५ श्रौर जो अधम ब्राह्मण एक मासा प्रमाण सुवर्ण चुरा लेवे सो गोमूत्रके साथ यावक वना कर भोजनकरताहोया तिन्नमहीने कर्के शुद्ध

लिक्षामात्रेपितथाप्राणायामत्रयंबुधः २ राजसर्षपमात्रेतुप्राणायामचतुष्टयं
गायत्र्यष्टसहस्रंतुजपेत्पापविशुद्धये ३ गौरसर्षपमात्रेतुगायत्रींवैदिनंजपेत्
यवमात्रेसुवर्णस्यप्रायश्चित्तंदिनद्वयम् ४ सुवर्णकृष्णलंह्येकमपहृत्यद्विजोत्तमः
कुर्यात्सांतपनंकृच्छ्रंतस्यापनुत्तये ५ अपहृत्यसुवर्णस्यमाषमात्रंद्विजा
धमःगोमूत्रयावकाहारस्त्रिभिर्मासैर्विशुद्ध्यति ६ सुवर्णस्यापहरणेवत्सरंयाव
कीभवेत् ऊर्ध्वंप्राणांतिकंज्ञेयमथवाब्रह्महव्रतम् ७ इदंचवत्सरंयावकाशनंकिं
चिन्न्यूनसुवर्णापहारविषयंसुवर्णापहारेमन्वादिषुद्वादशवार्षिकविधानात्॥
शंखः अधःशायीजटाधारीपर्णमूलफलाशनःएककालंसमश्नानोवर्षेतुद्वा
दशेगते ॥ १ ॥

हुंदाहै ६ श्रौर जेकर एक तोला प्रमाण सुवर्णको चुरा लेवे तद एक वर्ष प्रमाण यावक भोजन कर्के पवित्र हुंदाहै श्रौर इसते उपरंत सुवर्ण की चोरी विषे प्राणांत प्रायश्चित्त अथवा ब्रह्महत्या व्रत करणा किहाहै ७ इसमै सुवर्ण मात्रके हरणेमे यो प्रायश्चित्त किहाहै सो सुवर्णते कुछ न्यूनहरण विषे समझणा पूरे सुवर्णके हरण विषे मनुजीने वारां १२ वर्षका प्रायश्चित्त किहाहै इसते कुछ न्यून हरण विषेहि जानणा सोलां मासे सुवर्णका नामसुवर्णहै श्रौर शंखजीने भी ऐसा किहाहै अध इति कि भूमि ऊपर सौणा श्रौर शिर विषे जटाधारण करणी श्रौर फल मूल पत्तर इनका भोजन करणा एक काल विषेइस विधि कर्के वारां १२ वर्ष व्यतीत करणे एहद्वादश १२ वर्षका व्रतहै ॥ १ ॥

और इसव्रत कर्के एह जो महापातकीहैं कि सुवर्णका चोर और सुरापीणे वाला और ब्रह्महत्या करण वाला और गुरुकी शय्या ऊपर गमन करणे वाला एहसभपवित्रताको प्राप्तहोजंदेहैं२ और इसस्थान विषे क्षत्रीको दूणी सभाकरनी नहिहै और इसस्थान विषे अज्ञानते बारां वर्षकाव्रत और ज्ञानतेप्राणांत अथवा मृत्युकेतुल्य चौवीस २४ वर्षका व्रतहै अर्थात् जोक्षत्री ज्ञानते विना ब्राह्मणका तोला भर सुवर्ण चुरा लेवे सो बारां १२ वर्ष व्रत कर्के शुद्ध हुंदाहै और जेकर जाण कर्के सुवर्णकी चोरी करे तद प्राणांत व्रत कर्के अथवा चौवीस २४ वर्ष व्रत कर्के पवित्र हुंदाहै और ब्राह्मण ब्राह्मणका सुवर्ण पूर्वोक्तपरिमाणवाला योहै तिसको चुरावेतो ज्ञानते बारां १२ वर्षका व्रत और अज्ञानते छे ६ वर्ष व्रत करणा किहाहै और भविष्यत्पुराणविषे लिखयाहै अपहृत्येति किहेस्वामिकार्तिकजो पुरुष ब्राह्मणका पांच ५ तोले प्रमाण सुवर्ण चुरालेवे सोऐसे करे किक्षत्री राजा पास चला जावे १ औरराजा तिसको एक

रुक्मस्तेयीसुरापश्चब्रह्महागुरुतल्पगः व्रतेनानेनशुद्ध्यंतिमहापातकिनस्त्विमे२परिपद्द्विगुण्यादिकमत्रराजन्यानांनास्तिअत्राज्ञानतोद्वादशवार्षिकंज्ञानतोमर...मरणवैकल्पितचतुर्विंशतिवार्षिकंवाब्राह्मणस्यद्वादशवार्षिकं अज्ञानतःषट्वार्षिकं भविष्ये अपहृत्यसुवर्णंतुब्राह्मणस्यसुराधिप पंचनिष्कप्रमाणंतुराजानंक्षत्रियंव्रजेत्१ तस्मादौदुंवरंशस्त्रंप्राप्यात्मानंहनेदिह निमीलिताक्षोजठरेस्वशक्त्याःमारणाच्छुचिः २ अल्पापहारेत्वल्पंप्रायश्चित्तंतद्वक्ष्यमाणगायत्रीजपादिनाकार्य्यम् एतच्चसुमंतुस्मरणेनवक्ष्यते मनुःराजास्तेनेनगंतव्योमुक्तकेशेनधावता स्कंधेनादायमुशलंलगुडंवापिखादिरं १ अयंचोभयतस्तीक्ष्णमायसंदंडमेववा शासनाद्वापिमोक्षाद्वास्तेनःपापात्प्रमुच्यते २ अशासित्वातुतंराजास्तेनस्याप्नोतिकिल्विषं ॥

ग्रमेका शस्त्र लेकर नेत्र मीटकर तिसके उदर विषे अपनी शक्ति कर्के प्रहारकरे तद तिसके मारणेते जीवे चाहे उहमरे उहशुद्धहोजंदाहै२ और अल्पचोरी विषे प्रायश्चित्त भी अल्पहै सोयो प्रायश्चित्त आगे कहणा जो गायत्री जपादिकर्के करणेयोग्यहै एह सुमंतुजीके स्मरणते कहेंगे और तेसेहि मनुजीने किहाहै राजेति कि सुवर्णके चुराने वालेनें राजाके समीप जाणे योग्यहै ॥ कैसे जाणा कि केशखोलकर स्कंध कर्के मुशलधारे अथवा खैर वृक्षका दंडालेकरमूंडे ऊपर धारण करे१अथवा अतिभयानक और दोनोंपासेते अतितीक्ष्ण ऐसा लोहेका दंडा ग्रहण करे और भागता२ राजाके समीपप्राप्त होवे ॥ और ऐसेहि जेकर राजा उसको शासनादेवे तदभी अथवा छोडदेवे तदभी उहचोर पापते मुक्त हुंदाहै २ और राजा भी जेकर चोरको दंड न देवे तद पापको प्राप्तहुंदाहै

और प्रायश्चित्तक्रियाविषै ब्राह्मणभी वध योग्यहुंदाहै ऐसामनुजीने लिखयाहै वधेनेति सोब्राह्मण सुवर्ण का चोर व्रत करके अथवा तपकरके शुद्धहुंदाहै एहदोनो पक्ष व्यवस्थाके अर्थहैं ऐसा कोईकहतेहैं सो नहि यथार्थसमझणा किसवास्ते कि वाशब्दव्यर्थ होजाताहै इसकारणते आगे इनकी व्यवस्थाकरीहै और ब्राह्मणको कभी नहिमारणा सभपापविषै ऐसानिश्चयकीताहै अर्थात् कैसाहिपाप यद्यपि ब्राह्मण करे तदभी उसकोमारणानहि और ऐसाजो लिखया है सोजहां ब्राह्मणकोदंडविधानकीताहै उसविषयमे जाणणा कोई प्रायश्चितविषय नहि और प्रायश्चित्तक्रियायांतु इत्यादिवचन प्रायश्चित्तका विषयहै और इसीकारणते प्रायश्चित्त प्रकरणविषे मनुजीने ऐसालिखयाहै किसुवर्णचुराकरके ब्राह्मण मुसल हाथमे लेकर राजाके पास चलाजा

प्रायश्चित्तक्रियायांतुब्राह्मणोपिवधमर्हतीत्याहसएव वधेनशुद्ध्यतिस्तेनो ब्राह्मणस्तपसैववेतिव्यवस्थापनमेतद्वाक्यमितिव्यवस्थानयुज्यते वाशब्दानर्थक्यप्रसंगात् नजातुब्राह्मणंहन्यात्सर्वपापेष्ववस्थितमिति एतद्ब्राह्मणस्यदंडविषयम् प्रायश्चित्तविषयंत्विदम्अतएवप्रायश्चित्तप्रकरणेसएवाह सुवर्णस्तेयकृद्विप्रइत्यादिगृहीत्वामुशलंराजासकृद्धन्यात्तुतंस्वयं अत्रचविप्रग्रहणंनवर्णांतरव्युदासार्थंकिंतुब्राह्मणोनहंतव्यइतिनिषेधनिरासार्थं ब्राह्मणोनहंतव्यइतिनिषेधोरागप्राप्तब्राह्मणवधविषयःसुवर्णापहर्तुस्तुब्राह्मणस्यस्वघातायराजानंप्रत्यागतस्यवधः गृहीत्वामुसलमित्यादिराज्ञोधर्मोविहितत्वादेतदकरणेचप्रत्यवायः

वे और राजाउसते मुसललेकरके एकवारी तिसको प्रहारकरदेवे इति और इसस्थानविषे ब्राह्मण ग्रहण जोकीताहै सो कुछक्षत्रियादिवर्णोंके निषेधवास्ते नहिजाणणा किंतु ब्राह्मण नाहि मारणे योग्य इसनिषेधके दूरकरण वास्ते किहाहै और ऐसाजो निषेधहै कि ब्राह्मण नहि मारणे योग्य एह क्रोधकरके प्राप्तजोब्राह्मणवधहै उसस्थान विषयक किहाहै और सुवर्ण चुरणे वाला जो ब्राह्मणहै कैसाहै कि आपमरण वास्ते मुसलग्रहणकरके राजाके समीप प्राप्त होया तिसका मुसल प्रहार करके राजाने वधहि करणा योग्यहै क्योंकि उसको मारदणा एह राजाका धर्महै इसकारणते जेकर राजा ऐसा नकरे तदराजाको पाप हुंदाहै

श्रीर इसी कारणते गौतम जीका वाक्यहै कि सुवर्ण चुराणे वाले को जेकर राजा नमारे तद पापी हुंदाहै इस वास्ते मार हि देवे एह राजा का धर्महै । श्रौर जेकर मुसल प्रहार के लगने से फेर भी ब्राह्मण जीवतारहे मरे नहि तदउसीसमय विषे शुद्ध हो जंदाहै । श्रौर सोयी संव र्त्त जन किहाहै कि तिसी कारणते राजा मुसल लेकर एक वारी श्रापहि तिसको मारे । जे कर उह चोर जीवतारहे तद सुवर्ण चोरीके पापते मुक्त हो जदाहै । श्रौर प्रायश्चित्तेंदुशेखर विषें लिखयाहै कि उह चोर मरजावे जेकर तद भी श्रौर जेकर उसको राजा छोड देवे किसी कारणते तद भी उह पवित्र हो जंदाहै श्रौर (प्रायश्चित्तेंदुशेखरविषें)(हतोमुक्तोपिवा शुचिः) एह जो पूर्वोक्त मनुजी का वाक्यहै उसी को माधवजीने व्याख्यात कीताहै कि एक के मरणे कर्के उसके जो सभ संवंधीहैं स्त्री पुत्रादि एह संपूर्ण श्रनाथ होणे कर्के मरजावेंगे

श्रतएवगौतमः श्रघ्नन्नेनस्वीराजेतिसुवर्णचैारमघ्नन्राजाप्रत्यवायीभवतिश्र तोहन्यादेवेति राज्ञोधर्मः यदातुमुशलहतोब्राह्मणोजीवति तदा तावतैवशुद्धोभवतीति श्रतएवाहसंवर्त्तः ततोमुसलमादायसकृद्धन्यात्तुतंस्वयं यदि जीवतिसस्तेनःस्वर्णस्तेयाद्विमुच्यते ॥ प्रायश्चित्तेन्दुशेखरे ॥ हतोमुक्तो पिवाशुचिरितिपूर्वोक्तमनुवचनंव्याख्यातं माधवस्तु एकस्यमरणेवहूनांत दीयामित्रकलत्रादीनामनाथतयामरणंसंभाव्ययदिराजादययाधनदंडादि पुरस्सरंमुंचतितदापिशुद्ध्यतीति ॥ यदिराजाद्दढंहंतुमसमर्थः तस्मैताम्र मयमायुधंदद्यात्तेनात्मानंघातयेत् मरणात्पूतोभवति वसिष्ठोप्येतदाहब्राह्मणसुवर्णहरणेप्रकीर्णकेशोराजानमभिधावेत्स्तेनोऽस्मिभोशास्तुमांभवानितितस्मैराजौदुंवरंशस्त्रंदद्यात्तेनात्मानंप्रमापयेन्मरणात्पूतोभवति ॥

इस वार्ता को विचार कर्के जेकर राजा दया कर्के नमारे श्रौर धनका हि दंडलेकर छोड देवे तद भी उह चोर शुद्धि को प्राप्त हो जंदाहे ॥ श्रौर जेकर राजा श्राप दृढ प्रहार करणे को समर्थ न होवे तद तिसकोंहि तांवेका एक शस्त्र देवे श्रौर फेर उह चोर शस्त्र कर्के श्रपने शरीरके ऊपर दृढ प्रहार करे जेकर मर जावे तद भी पवित्र हुंदाहे । श्रौर वसिष्ट जीने भी ऐसाहि किहाहै कि ब्राह्मणका सुवर्ण चुरायां होयां ऐसा करणा चाहिये कि केश खिलार कर्के भागते २ राजाके समीप जावे श्रौर ऐसे कहे मैं चोरहां हेराजन् इस कारणते तुसी मेंको दंड देवो जव इस प्रकार राजा को कहे तद राजा भी उसके तांबी ताम्रका एक शस्त्र श्रागेत देवे फेर उह चोर शस्त्र को ग्रहण कर्के श्रपने शरीर ऊपर प्रहार करे उह इस विधि कर्के मरणेते पवित्र हो जंदाहे ॥

श्रोर जेकर राजा दृढ प्रहार करणे को समर्थ नहोवे तद एह ब्राम्हिका शस्त्र उसीको देदेणा ऐसाजान्नणेयोग्य है ॥ श्रोर औंदुंबरनाम ताम्रेकाहै श्रोर तैसे हि फेर वसिष्ठ जीने किहाहैकि यद्यपि उह नहिभी मरणे वाला तदभी उह सारे शरीरविषे घृत मल कर्के गोहेकी अग्निना पगरोंसे लकरशिखा पर्यंत अपने शरीरको दग्ध करदेवे तदभी मरणेवे पवित्र हुंदाहै अर्थात् घृतके साथ वस्त्रभिगा कर्के शरिर उपर लपेट लेवे श्रोर अग्निलगा कर मृतहोजावे तदशुद्धहोजंदाहै ऐसेजाणादाहै ॥ श्रोर निष्कालकका एह अर्थहै कि निकलेहैं काले रंगकेकेशादिजिनते तिनका नाम है निष्कालक क्या कि सारे शरीर विषेरोमरहितहै अर्थात् जिसके शरीरमे कालारोम कायोनाहि उत्पन्न होया ऐसा अर्थ कीताहै ॥ इसीप्रकार इत्यादिहोर

दृढप्रहारासमर्थेराजन्येतत् औदुम्बरंताम्रमयमुतथाचसएव निष्कालकोवा घृताक्तोगोमयाग्निनापादप्रभृत्यात्मानंदाहयेन्मरणात्पूतोभवतीतिविज्ञाय तेनिर्गतंकालंकृष्णवर्णकेशादि यस्मात्सनिष्कालकः सकलशरीरलोमरहितइत्यर्थः एवमादीनिमरणांतिकप्रायश्चित्तानि कामकारकृते स्वयंवेदितव्यानि अतएवाहांगिराः मरणांतंहियत्प्रोक्तंप्रायश्चित्तंमनीषिभिः तत्तुकामकृतेपापेविज्ञेयंनात्रसंशयइति अत्रशूलपाणिःक्षत्रियादेः पादपादहानिरेवद्वैगुण्यादिकंतुप्रकरणाद्विप्रवधविषयमेवेति ॥ पर्षद्याब्राह्मणानांत्विति वचनव्याख्यावसरे ब्रह्महप्रायश्चित्तप्रकरणे प्रागुक्तम्

जोमरणांतिक प्रायश्चित कहेहैंसो संपूर्ण आप जाण कर सुवर्ण चुराणेविषे जाननणे योग्यहै अर्थात् योकोयी पुरुष कामनाते ब्राह्मणकासुवर्ण हरलेवे उह प्राणांत प्रायश्चित्त करणेकर्केशुद्धहुंदाहै ॥ इसकारणते ऐसाहि अंगिरा जीनेकिहा है मरणांतमिति कि ऋषियोंनेजो मरणांत प्रायश्चित्त किहाहै सो सभकामनाकृतपापोंविषे जान्नणा इस विषे कुछ संशयनहिहै औ इसविषे शूलपाणीजीने किहाहै किक्षत्रि वैश्य शूद्रको सभप्रायश्चित्त विषे पाद २ हानि कहीहै श्रोर दूणा दूणा करणा इत्यादिकभी प्रसंगते ब्राम्हण वध विषेहि किहाहै क्योंकि जोसभा ब्राम्हणांकोकहिहै उसते दूणी क्षत्रियादिकोंकोहुंदीहै इसवाक्यके व्याख्यानसमयमे ब्रह्महत्या प्रायश्चित्त के प्रसंग विषे पूर्व कह आये हैं ॥

और प्रायश्चित्त अंगिराजीने इसस्थानविषें किहाहै अनिवेद्येति कि ब्राह्मणका सुवर्ण चुराकर्के जेकर राजाकोंनहिभी कहे तद इसप्रकार शुद्धहुंदाहै कि जो व्रत सुरापानविषें लिखयाहै उसव्रतको विधिपूर्वककरे अथवा अपनी शुद्धि वास्ते शरीरके वरावर तोल कर्के सुवर्ण ब्राह्मणकी प्रसन्नता वास्ते देवे तद पवित्रहुंदाहै अर्थात् सुवर्ण चुराणे वाला जेकर वहुत धनकर्के युक्तहोवे तद अपने शरीरके वरावर सुवर्ण तोलकर ब्राह्मणके तांयीं देवे और जेकर थोडाधनहोवें तदब्राह्मणको सारी उमर कुटुंवके निर्वाहयोग्य प्रसन्नता करणे वाला धनदेवे अर्थात् सारीआयुपर्यंतजित धनकर्के कुटुंव पालनाहोजावे उतनाधन देनेकर्के पवित्रहुंदाहै पवित्रहोणेकेवास्तेएहि प्रकार कहेहैं अर्थात् और कोईप्रकार नहिहै १ और मनुजीने किहाहै तपसेति किसुवर्णचोरी

प्रायश्चित्तांतरमाहसएव अनिवेद्यनृपेशुद्ध्येत्सुरापव्रतमाचरन् आत्मतुल्यं सुवर्णंवादद्याद्वाविप्रतुष्टिकृत् १ स्वकीयंस्तेयात्स्यंकर्म्मराज्ञेऽनिवेद्यापिसुरापव्रतंसमाचरन् शुद्ध्येत्स्वर्णापहर्त्तावहुधनश्चेत्तदास्वशरीरगौरवतुल्यसुवर्णंविप्रायदद्यात् अल्पधनश्चेद्यावज्जीवंकुटुंवनिर्वाहक्षमतयातुष्टिकरंदद्यादित्यर्थः मनुः तपसापनुनुत्सुस्तुसुवर्णस्तेयजंमलं चीरवासाद्विजोऽरण्ये चरेद्ब्रह्महणोव्रतम् १ स्वर्णस्तेयोत्पन्नंपापंद्विजोऽपनेतुमिच्छन् चीरवासाः सन् ब्रह्महाणियद्व्रतमुक्तं तत्कुर्यात् अरण्यग्रहणात्प्राथम्याच्च एतद्व्रद्वादशवार्षिकं ॥ क्लेशगौरवात् ॥ पंचकृष्णलकोमाषस्तेसुवर्णस्तुषोडशेति सुवर्णपरिमाणावच्छिन्नब्राह्मणसुवर्णापहारे द्रष्टव्यम् ॥

ते उत्पन्नजो पापहै तिस पापको जेकर तपकर्के दूर करणेकोंजिसकीइच्छा होवे सोब्राह्मणली रांकावस्त्रधारणकरे औरवनविषें जाकरब्रह्महत्याव्रतकरे क्यां जोब्राह्मण सुवर्णस्तेयते उत्पन्न पापको दूरकरणेकी इच्छाकरे सोपुराणे पाटेहोये वस्त्रधारकेंजो व्रत ब्रह्महत्याविषें किहाहै तिस व्रत कर्के शुद्धहुंदाहै १ और इसव्रतविषें अरण्यपदका ग्रहणहै इसते और प्रथम होनेते एह व्रतभीवारां १२ वर्षकाहिजाणणा और इसव्रतविषें क्लेशवहुतहै इसकारणते एह व्रत उसस्थान विषें जाणणा कि जिसस्थानमे एक तोला प्रमाण सुवर्ण की चोरी होवे अर्थात् जोपुरुष तोला प्रमाण सुवर्णचुराकरलेवे उसके वास्ते यह व्रत दिखायाहै ॥

श्रोर इसते जेकर न्यून होवे तद परिमाणकीश्रपेक्षा कर्के मनुजीने जो परिमाण किहाहै सो ग्रहण करणा एह नीतिहै । श्रोर जो भविष्यत्पुराण विषे श्रधिक प्रमाण श्रवण करीदाहै सो तैसेहि श्रनुबंध विशिष्टापहार विषे जानणा यथा जो कोयी पुरुष किसी स्थानमे सुवर्ण चुराणे वास्ते जाये श्रोर मिले नहि फेर उसी स्थान विषे चोरी करण वास्ते जाये श्रोर एक पुरुष उसको मना करे कितुम ऐसा काम मत करो फेर भी उह सुवर्ण की चोरी करे इसका नाम श्रनुबंध विशिष्टापहार किहाहै एह तैसेहि प्रायश्चित्त का विषय भी उहां जानणा श्रर्थात् तहां प्राणांत प्रायश्चित्तहै । तैसेहि भविष्यत्पुराण विषे लिखयाहै कि क्षत्री वैश्य शूद्र एह तीन वर्ण गुण हीन होवें श्रोर पाप विषे तत्पर होवें । श्रोर एह गुणी ब्राह्मण का पांच ५ निष्क प्रमाण जेकर सुवर्ण चुरा कर लेवें १श्रथवा दश १० जारां११ निष्क प्रमा

ततोन्यूनस्यपरिमाणापेक्षयामनूक्तपरिमाणस्यग्रहीतुंन्याय्यत्वात् यत्त्वधिकपरिमाणंभविष्यत्पुराणेश्रूयते तत्तथानुबंधविशिष्टापहारेतथाविधप्रायश्चित्तविषयमेव तथाभविष्यपु- क्षत्रियाद्यास्त्रयोवर्णानिर्गुणाह्यघतत्पराः गुणाढ्यस्यतुविप्रस्यपंचानिष्कान्हरंतिचेत्१निष्कानेकादशतथादग्ध्वात्मानंतुपावके शुध्येयुर्मरणाद्वीरचरेद्ब्रह्मात्मशुद्धये२ब्रह्माब्राह्मणः श्रात्मशुद्धयेचरेत् तपः कुर्य्यादित्यर्थः इतिक्षत्रियादीनांमरणांतंद्वादशवार्षिकंवेतिज्ञानाज्ञानाभ्यांविकल्पोऽवसेयः ॥ श्रपरार्के ॥ श्रत्रच कपालधारणादिनिवर्त्तते श्रनेनैवाभिप्रायेणभगवतायाज्ञवल्क्येनोक्तम्। सुरापानव्रतमाचरन्निति ॥

ण सुवर्ण हर लेवें तद उह ऐसा करें कि श्रपने शरीर को श्रग्नि विषे दग्ध करें तद पवित्र हो जंदेहैं ॥ जेकर ब्राह्मण ब्राह्मण का सुवर्ण चुरावे तद श्रपनी शुद्धि वास्ते तप करे २श्रोर इस प्रकार क्षत्री वैश्य शूद्रको एक प्राणांत श्रोर एक द्वादश वार्षिक व्रत किहाहै सो ज्ञान श्रोर श्रज्ञान कर्के निश्चय करणा योग्यहै । श्रर्थात् क्षत्रियादि जेकर जाण कर्के सुवर्ण की चोरी करें तद मरणांत प्रायश्चित्त करें श्रोर जेकर श्रज्ञानते करें तद बारां १२ वर्ष व्रत कर्के शुद्धि को प्राप्त हुंदेहैं । श्रोर श्रपरार्क विषे लिखयाहै कि इस स्थान विषे द्वादश वार्षिकव्रत मे कपाल धारणादि नहि करणा श्रोर इसी श्रभिप्राय कर्के भगवान् याज्ञवल्क्यजीने किहाहै कि सुरा पान व्रत करतेहैं श्रर्थात् जो पुरुष ब्राह्मण का सुवर्ण चुरा लेवे सो सभ जो व्रत सुरा पान विषे किहाहै उस व्रत कर्के शुद्ध होंदेहैं ॥

श्रोर एह प्रायश्चित्त ब्राह्मण संबंधी सुवर्ण चोरी विषे जानणा परंतु चुराणवाले ब्राह्मणको आपत्ति होवे श्रोर गुणवान् होवे श्रोर कुटुंब पालन वास्ते सुवर्ण चुरालेवे उसके वास्ते दिखायाहै ॥ श्रोर जोपुरुष आपतो गुणहीन होवे श्रोर किसीगुणी का सुवर्ण चुरालेवे जूआ खेलनेवास्ते उसकोमरणांत प्रायश्चित्त देणा योग्यहै इसी प्रसंग विषे आपस्तंब जीने किहाहैकि सुवर्ण चुराणे वाला पुरुष अपनी शुद्धि वास्ते अग्नि विषे प्रवेश करे अथवा अति उग्रतप करके शरीर त्याग करे अथवा अन्नका त्यागकरणे कर्के शरीरका भी त्याग करे अर्थात् मृत होजावे तद पवित्र हुंदाहै अथवा एक वर्ष प्रमाण व्रत करे तद पवित्र हुंदाहै श्रोर भक्तापचय उपवासकानामहै श्रोर सुमंतु जीकावाक्यहै कि सुवर्णका चोर गायत्री मंत्र कर्के घृत

एतच्चब्राह्मणसंबंधिनः सुवर्णस्यापहारे आपत्कालेकुटुंबार्थंगुणवद्ब्राह्मणकर्तृकेद्रष्टव्यम् निर्गुणस्यतुगुणवत्संबंधिवहुतरंद्यूताद्यर्थमपहरतः प्राणांतिकमेवप्रायश्चित्तम् स्तेनइत्यनुवृत्तावापस्तंबः अग्निंवाप्रविशेत्तीक्ष्णंवा तपआयच्छेद्भक्तापचयेनात्मानंवासमापयेत् कृच्छ्रंसंवत्सरंवाचरेत्भक्तापचयोऽनशनम् सुमंतुः सुवर्णस्तेयीमासंगायत्र्यष्टशतमाज्याहुतीर्जुहुयात् प्रत्यहंत्रिरात्रमुपवासः तप्तकृच्छ्रेणचपूतोभवति अश्वमेधावभृथस्नानेनवा इदंचपूर्वोक्तमापसुवर्णापहारप्रायश्चित्तेनविकल्प्यतेलघुविष्णुःस्तेयेब्रह्मस्वभूतेतुसुवर्णहरणेकृतेतस्मात्तेनैवदातव्यंतस्माएकादशाधिकम् १ ऋणसंशुद्धिभावायततश्चान्द्रायणत्रयम्संवत्सरेणकर्तव्यंनिपुणांशुद्धिमिच्छता२ अभावेकांचनस्यस्याद्व्रतमेतच्चतुर्गुणम् ॥

के साथ नित्यं प्रति आठसौ ८०० आहुति हवन करे फेर तिन्नदिन उपवास करे तद पवित्र हुंदाहै अथवा तप्त कृच्छ्र कर्के पवित्र हुंदाहै अथवा यज्ञांतस्नान कर्के पवित्र हुंदाहैएह प्रायश्चित्त पिछे किहा जोमासे सुवर्ण की चोरी तिसके प्रायश्चित्तके साथ विकल्पवालाहै चाहे इसको करो चाहे उसको करो श्रोर लघु विष्णु जीने किहाहै स्तेयेति किजोपुरुष ब्राह्मणका सर्वस्व रूप सुवर्णको हरे फेर तिस चुराणे वालेनें जितना प्रमाण सुवर्ण लीयाहै उसते जारां ११ गुणातिसको देणा योग्यहै १ क्योंकि जारां गुणा अधिक सुवर्ण उसको देकर्के फेर अपने ऋणकी शुद्धि वास्ते तिन्न चांद्रायण करे भलीप्रकार जिसको शुद्धिकीइच्छा होवें तद सो पुरुष पवित्र हुंदाहै २ श्रोर जेकर जारांगुणांसुवर्ण पास न होवे तद एहि व्रत चारगुणाकरणा चाहिये

क्योंकि आत्माको जीतकर्के और संगकोभी त्यागकर्के अपनी शुद्धि वास्ते पूर्णचार वर्ष एहि व्रत करणे योग्यहै ॥ और जब इस प्रकार व्रत करतियां चार वर्ष समाप्तहोवें २ फेर अपनी समर्थाके अनुसार ब्राह्मणके तायीं सुवर्ण देवे ॥ और गौरजत देवे ॥ और पापके नाश वास्तें पवित्र अन्न उत्तम ब्राह्मण के तायींदेणा योग्यहै ॥ और इस स्थान विषे एकादशाधिकशब्द कर्के एकादशगुणां ग्रहण करणा ॥ और तिस पूर्वोक्त दानको ऋणकी शुद्धि वास्ते विधान होणेते पूर्व प्रायश्चित्त कल्पनाका शेषभूत जो चांद्रायण तिन्हैं सोयी इस स्थानमें ग्रहण करणे योग्यहैं ॥ इसकारणते यवमध्यपिपीलिकामध्य यति चांद्रायण इनका वर्षभर अभ्यासकरे तद पवित्रहुंदाहै अर्थात् इह तीन चांद्रायण कोई वक्रूखराप्रायश्चित्त नहि किंतु एकादश गुण दानके साथ हिहै ॥ और जेकर निर्धनता कर्के एकादश गुणा सुवर्ण देणे विषे अ

चरेद्यतात्मानिःसंगः पूर्णवर्षचतुष्टयम् २ समाप्तेकांचनंगौश्चरजतंचापिशक्तितः। देयमन्नंद्विजाग्र्येभ्यःशुभंपापापनुत्तये एकादशाधिकमेकादशगुणम् तद्दानस्यच ऋणसंशुद्धयेविहितत्वात्पूर्वप्रायश्चित्तकल्पशेषभूतचांद्रायणत्रयंयवमध्यपिपीलिकामध्ययतिचांद्रायणात्मकंतत्संवत्सरंयावदभ्यसेत् ॥ निर्धनतयात्वेकादशगुणदानासमर्थस्तदेववर्षचतुष्टयमभ्यसेत् । प्रायश्चित्तेन्दुशेखरे स्मृत्यर्थसारेतु ॥ सुवर्णस्तेयीविप्रोव्रतमेवाचरेत् ॥ नदंडेनात्मानंघातयेत् नचराजाविप्रंहन्यादित्युक्तम् ॥ अकामतोरजतादिबुद्ध्यापहारेसुरापोक्तंद्वादशवार्षिकम् कामतोरजतादिबुद्ध्यापहारेप्येतदेव । शूलपाणिस्तु ॥ कामतोरजतादिबुद्ध्यापहारेएव द्वादशाब्दम्

समर्थ होवे तद चार वर्ष पर्यंत इन चांद्रायणाका अभ्यासकरे अर्थात् चार ४ वर्षनियम पूर्वक चांद्रायण कर्के पवित्र हुंदाहै ॥ और प्रायश्चित्तेंदुशेखर विषे और स्मृत्यर्थसारमेभीलिखयाहै कि ब्राह्मण सुवर्ण चुराकर्के प्रायश्चित्तहिकरे और दंडप्रहारकर्के शरीरत्याग न करे औरराजा भी ब्राह्मण को न हत करे ऐसा किहाहै ॥ परंतु एह निषेध जिस वास्ते है तिसकों दिखातेहैं कि कामनाते विना जो पुरुष रजतबुद्धि कर्के सुवर्ण चुराकर लेवे उसको सुरापके वास्ते योद्वादश वार्षिक व्रत किहाहै सोयी व्रत करणा योग्यहै और जेकर कामनाते रजत बुद्धि कर्के सुवर्ण चुरालेवे तद भी एहि द्वादश वार्षिक व्रत करणाकिहाहै ॥ और शूलपाणि जीने इसमें विशेष दिखायाहै कि कामनाते रजत बुद्धि कर्के सुवर्ण चोरी विषे हि द्वादशवार्षिक व्रत करणा किहाहै

और कामनाते विना जेकर रजत बुद्धि कर्के सुवर्ण हरे तदछे वर्षका व्रतकरणा किहाहै और द्वादश वार्षिक व्रतके विषय विषे सुवर्ण का चोर जेकर महा धन वाला होवे तद उसको अपने शरीरके साथ सुवर्ण बराबर तोलकर्के दानकरणा योग्यहै अर्थात् जिसचोरकोवारां १२ वर्षकाव्रतकरणा किहाहै उसके पास जेकर वहुतधनहो वे तदसुवर्णकी तुलाकरणे कर्के शुद्ध हुंदाहै और निर्गुण पुरुष के सुवर्ण चुराणे विषे गुण वाले पुरुषको नौ९ वर्षका व्रत किहाहै अर्थात् जोगुण युक्त पुरुष गुणहीन पुरुष का सुवर्ण हरलेवे सोनौं ९ वर्ष व्रत कर्के पवित्रहुंदाहै और कोई पंडित पादोन सुवर्ण क्या १२ मासे सुवर्णके हरणविषे भीइसी ९ वर्ष के व्रतको कहताहै और जदकोयी गुणी ब्राह्मण क्षुधा कर्के पीडित कुटुंवकी पालनावास्ते गुणहीन पुरुष का सुवर्ण चुरालेवे तद उसकोछे ६ वर्षका

अकामतस्तद्बुध्यापहारितुषाड्वार्षिकमित्याह द्वादशवार्षिकविषयेऽपहर्त्तुर्म हाधनिकत्वेआत्मतुलितहेमदानम् ॥ निर्गुणस्वामिकहरणेसगुणस्यनववा र्षिकम् कश्चित्पादोनसुवर्णहरणेप्येतदेवाह यदाक्षुत्क्षामःकुटुंवभरणार्थं सगुणोपिविप्रोनिर्गुणस्वामिकमपहरतितदाषडब्दम् तीर्थयात्रासाहितं षाड्वार्षिकमितिमाधवः कश्चिदर्धसुवर्णहरणेतदेवाह ब्राह्मणान्यस्वामि कसुवर्णहरणेनमहापातकं किंतूपपातकमितिमिताक्षरा यदात्वपहारानंत रमनुतप्यत्यजतिप्रत्यर्पयतिवातदाचतुर्थकालमिताशिनस्त्रिवर्षमवस्थानम्

व्रतकरणा किहाहै और माधवजीने एहछे वर्षका व्रत तीर्थयात्राके साथ किहाहै क्याकि तीर्थयात्रा करतियां ऐसाछेवर्षकाव्रतकरणा चाहिये और कैयांने पांच ५ मासे सुवर्ण हरणविषे एहव्रतकिहाहै अर्थात् जोपुरुष ५ मासे किसीका सुवर्णचुरालेवे सोतीर्थयात्राविषे छे ६ वर्ष प्रमाण व्रत कर्के पवित्रहुंदाहै और ब्राह्मणतेंविना और किसीका सुवर्ण हरलेना एह महापातक न हि है किंतु उपपातकहै ऐसामिताक्षराविषे लिखयाहै और जदकोयी पुरुष प्रथमतो सुवर्णचुरालेवे फेर पश्चात्तापकर्के त्यागदेवे अथवा जिसका चुरायाहै उसीके अर्पन करदेवे तद उसकोचौथेपहरविषे थोडाभोजन करणा इसप्रकारतीनवर्ष व्रतकरणायोग्यहै अर्थात् चौथे पहरअल्पभोजन करणा ऐसेहि तीनवर्ष व्रतकर्के शुद्धहुंदाहै

और क्षत्री वैश्य शूद्रके सुवर्ण चुराणे विषे कैयोंने एहि व्रत करणा किहाहै अर्थात् क्षत्रियादिका सुवर्ण चुरालेना उपपातकहै एहभी कैयोंकामतहै और ननु इस कर्के(प्रष्णहै) कि जिसनें प्रथम सुवर्ण चुरायाहै फेर पश्चात्ताप कर्के उसीके अर्पण करदीया होवे इस कर्के हरणा एह धातुका अर्थ सिद्धहोणेतें कैसे उसको थोडा प्रायश्चित्त करणा किहाहै अथवा जेकर उसको चोरि नहि सिद्ध होती तद उसकों प्रायश्चित्तका अभावहोना चाहिये अल्प प्रायश्चित्त उसकों योग्य नहिहै क्योंकि जेकर चोरी बनजावे तद पूर्ण प्रायश्चित्तयोग्य है और जेकर चोरी न बने तद उसको कुछ प्रायश्चित्त करणा योग्य नहिहै ऐसाप्रष्णहै (उत्तर कि ऐसे मत कहो क्योंकि अपहारको उपभोगफल पर्यंत होनेते उपभोगते प्रथमहि निवृत्त होयां बहुत अपहारका अभाव होनेते अल्प प्रायश्चित्त होना उसको योग्यहै अर्थात् चोरीका एह फलहै कि उसपदार्थको भोगलेना इस वास्ते इस स्थान विषे चोरि तो करी फेर

क्षत्रियादिसुवर्णापहारेप्येतदेवेतिकेचित् क्षत्रियादिस्वामिकहरणमुपपातकमित्यपरे ननुप्रत्यर्पणेत्यागेवापहारधात्वर्थस्यानिष्पन्नत्वात्कथंप्रायश्चित्तालपत्वम् । अथानिष्पन्नस्तदाप्रायश्चित्ताभावएवस्यान्नतुप्रायाश्चित्तालपत्वम्॥ मैवम् अपहारस्योपभोगादिफलपर्यंतत्वादुपभोगात्प्राङ्निवृत्तौच पुष्कलस्यापहारार्थस्याभावाद्युक्तमेव प्रायश्चित्तालपत्वंपीतवांतइवापेयेद्रव्ये नन्वेवंसतिचौरहस्ताद्बलादाकृष्यग्रहणेपितस्योपभोगलक्षणफलाभावात्प्रायश्चित्तालपत्वप्रसंगः मैवं तस्य त्यागे स्वतःप्रवृत्त्यभावात्

भोगनेते पूर्वहि निवृत्तहोगयाहै क्या जिस वास्ते चोरी कीतीहै उह कार्य नहि कीया क्यों कि प्रथम जिसका सुवर्ण चुरायाहै फेर उसीकों देदेयाहै अथवा त्याग दीयाहै इस वास्तें थोडा प्रायश्चित्तहि योग्यहै इस विषे दृष्टांतहै कि जैसे किसीने मदिरा पान कर्के वमनकर दीया होवे उसको अल्प प्रायश्चित्तहै पूर्ण नहिहै तैसेहि इस स्थान विषे जानणा । फेरप्रष्णहै । कि जेकर ऐसा होवे कि चोरने उसको भोगा नहि इस कारणते अल्प प्रायश्चित्त है तद जिस स्थानमे बलकर्के चोरके हाथने पदार्थ खोसलीयाहै उस चोरको भोग लक्षण फलका अभावहै कि उसको कुछ नहि फल होया इस कारणते उसकोभी थोडा प्रायश्चित्तहोणाचाहिये (उत्तर) कि ऐसा नहिहै क्योंकि उसको चोरकी त्याग विषे अपने आप प्रवृत्तिका अभावहोनेते

और चपुनः फलपर्यंत चोरी विषें उसको अपने आप प्रवृत्तहोनेंते अर्थात् चोरने कुछ आपजान कर्के पदार्थका त्याग नहि कीया और पदार्थका भोग रूप जो फलहैं उसके निमित्त चोरी कीतिहैं इसको पूर्णहि प्रायश्चित्त करणा योग्यहै और जो रजत तांवा इनके साथ मिले होये सुवर्णकी चोरी होवे उसस्थान विषें भी एह अल्प प्रायश्चित्त नहि जानणा किस वास्ते कि जिस कारणते रूप्पातांवा इन साथ मिले होयांभी सुवर्ण भाव नहि दूर होता किस तरां जैसेपृषदाज्य जो घृत युक्त चरुहै उस विषें घृतभाव नहि दूरहोता तैसेहि इस स्थान विषें जानणा और इस कारणते तिस स्थान विषें द्वादशवार्षिक व्रतहि योग्यहै॥ अवसुवर्णकेतुल्य और जोपदार्थहै तिसकीचोरी विषें थोडा प्रायश्चित्त कहतेहैं कि कुछ तिस स्थान विषें तीन वर्षका अल्प प्रायश्चित्त नहि ग्रहण करणा किंतु उपपातक

फलपर्यन्तेपहारेस्वतःप्रवृत्तत्वाच्च यस्तुरजतताम्रादिसंसृष्टसुवर्णापहारो नतत्रेदंलघुप्रायश्चित्तम् यतःसंसर्गेपिसुवर्णत्वंनापैति आज्यत्वमिवपृषदाज्येअतस्तत्रद्वादशवार्षिकमेवेतियुक्तम्। अथस्वर्णसदृशंद्रव्यांतरमेवेति लघुप्रायश्चित्तम् उच्यतेनतर्हितत्रत्रैवार्षिकादिलघुप्रायश्चित्तादिविषयता असुवर्णत्वादेवकिंतूपपातकप्रायश्चित्तमेवेतिमिताक्षरा अपरार्केब्रह्महत्या प्रायश्चित्तानुवृत्तौव्यासःएतदेवव्रतंस्तेनःपादन्यूनंसमाचरेत् एतदेववर्षचतुष्टयमेव अत्रिः षडब्दंवाचरेत्कृच्छ्रंयजेद्वाक्रतुनाद्विजः तीर्थानिचभ्रमन्विद्वांस्ततःस्तेयाद्विमुच्यते क्रतुर्ब्रह्महत्याप्रायश्चित्तप्रकरणेद्रष्टव्यः एकवचनंजात्यभिप्रायम्

प्रायश्चित्त करणा एह मिताक्षरा विषें लिखयाहै अर्थात् जो सुवर्ण तुल्य पदार्थकी चोरी करे सो उपपातक प्रायश्चित्त कर्के पवित्र हुंदाहै और अपरार्क विषे ब्रह्म हत्या प्रसंगमे व्यासदेवजी कावाक्यहै एतदिति चोर जोहै सो एहि व्रत एक पादहीन करे अर्थात् एह जो चार ४ वर्षका व्रतहै सो पादहीन क्या तिन्न वर्ष अपनी शुद्धि वास्ते सुवर्ण चुराणे वालेको करणा योग्यहै और चोरीके प्रसंगविषें अत्रिजीका वाक्यहै षडिति कि सुवर्ण चुराणे वाला ब्राह्मण छे ६ वर्ष पर्यंत कृच्छ्रकरे अथवा यज्ञकरे अथवा संपूर्ण तीर्थ यात्रा करे तद उह विद्वान् चोरीके पापते मुक्तहुंदाहै और यज्ञ इसस्थानविषें उह ग्रहण करणा कि जोयज्ञ ब्रह्महत्या प्रकरण विषें दिखायाहै एकवचन भी जातिके अभिप्रायसे किहाहै किसवास्ते किब्रह्महत्या प्रकरण विषें बहुत प्रकारके यज्ञकहेहैं उनसभका ग्रहण एक वचन कर्के होजंदाहै ॥

और सुमंतुजीनेकहाहै सुवर्णेति सुवर्ण चुराणे वाला बारां १२ दिन केवलव युभक्षणकरणवाला होवे अर्थात् जोपुरुष सुवर्ण चोरीकरे सोबारां १२ दिनानिराहार करणे कर्के पवित्रताकोप्राप्तहो जंदाहै और इसीप्रकार वडे और थोडे प्रायश्चित्तहैं जो स्मृति शास्त्रोंविषें विधानकीतेहैं तिन कोंविचारकर्के जैसा अपराध होवे उसके अनुसार सभाने व्यवस्थापनकरणेयोग्यहै अर्थात् स भास्थित पुरुषांने जैसाअपराधहोवे तैसाहि विचार कर्के प्रायश्चित्तकहनायोग्यहै और सामा न्यवस्तुका जो प्रायश्चित्त विधानकीताहै सो स्त्रीबालक वृद्ध रोगी इनको आधा हि जा णणा और चतुर्विंशति मतविषें लिखयाहै हृत्वेति किप्रथम जितना पदार्थ चुराकरलेवे उससेद श १० गुणा उसको देकर्के पीछे प्रायश्चित्त विधिपूर्वककरणा योग्यहै और ब्राह्मणमोहते रू प्याहरकर्के चांद्रायण व्रतकरे अर्थात् जोब्राह्मण अज्ञानते ब्राह्मणकी चांदी चुरालेवे सो चांद्रा

सुमंतुः ॥ सुवर्णस्तेयीद्वादशरात्रंवायुभक्षोभवतीतिएवं गुरूणिलघूनिचप्राय श्चित्तानिस्मृतिशास्त्रेषुविहितानिपर्यालोच्ययथापराधंपरिषदाव्यवस्थाप नीयानि यत्सामान्यवस्तुप्रायश्चित्तं स्त्रीबालवृद्धातुराणांविहितंतदेषांचा र्धमेव चतुर्विंशतिमते। हृत्वादशगुणंदत्वाप्रायश्चित्तंसमाचरेत् रूप्यंहृत्वाद्वि जोमोहाच्चरेच्चान्द्रायणंव्रतम् १ वधानदशकादूर्ध्वमाशताद्द्विगुणंभवेत् आ सहस्रात्त्रिगुणमूर्ध्वंहेमविधिःस्मृतः २ सर्वेषांधातुलोहानांपराकंतुसमाचरे त् ३ निष्कापरपर्यायोवधानम् षट्त्रिंशन्मतात् बलाद्येकामचारेणहरन्तितुन राधमाः ॥ तेषांतुबलहर्तॄणांप्राणांतिकमिहोच्यते ॥ १ ॥

यण व्रतकर्के पवित्र हुंदाहै १ और दश १० निष्कपरिमाणते ऊपरसौ १०० निष्कपर्यंत दूणा प्रायश्चित्त हुंदाहै कांई (वधान) इसकीजगा (गद्याण) एहपाठकहतेहै सो ४८ अठता लीरत्तिरुप्पेका नामहै और सौते उपरंत हजार निष्क पर्यंत त्रिगुण प्रायश्चित्तजाणणा इसते अ गेरुप्पा हरण वाले वास्ते सुवर्णविधिकहीहै २ और सुवर्णते विना और जो संपूर्ण धातुहैं लोहा आदि तिनकी चोरी विषें पराक व्रत करणा किहाहै अर्थात् लोहादिधातुकी जो पुरुष चोरीकरे सो पराक व्रतकर्के पवित्र हुंदाहै और इसस्थानविषें वधानशब्द निष्ककापर्या यहै और षट्त्रिंशत मतविषें लिखयाहै बलादिति किजो नराधम पुरुष कामनाकर्के बलते सुवर्णादि धातुकोंहरलेतेहैं तिनकों प्राणांतहि प्रायश्चित्त इसस्थानविषें किहाहै अर्थात् जो कोयीनीच पुरुष बलकर्केकिसीते सुवर्णादिधातुखोंसलेवें उहप्राणांतप्रायश्चित्त कर्के शुद्धहुंदाहै

श्रौर भविष्यत्पुराण विषे लिखयाहै महापातकेति कि महापातक जहां दिखायाहै उसस्थान विषे तीसरा महापातक सुवर्ण आदि की चोरी हिहै तिसमें सुवर्ण की कहकर तिसके तुल्य रुप्पेके अर्थ कहतेहै नचेति जेकर जाण कर कोई ऐसी चोरीकरे तद उसके वास्ते पातकत्व ब्रह्महत्या के तुल्य मुनि कह तेहैं इसजगा चोरी ॥ १०० निष्कते अधिक रुप्पेकी अथवा निष्क सुवर्ण की जानणी १ क्षत्रियेति क्षत्रियादि होवे चोर यूतके अर्थ करे चोरी श्रौर तिसमे भी अनुबंध क्याहठ होवे कदाचित् ऐसाकोयी करे तद अपनी शुद्धि वास्ते इस प्रकार प्राणांत प्रायश्चित्तकरे २ क्याकि प्रथम निष्कालक होवे किजितने शरीर विषे कालेरोमहैं तिनको उतार देवे फेर वहुतघृत शरीर को लगा कर्के गोहेंकी अग्नि साथ पैरां तेलेकर सभदेहदग्ध कर देवे तद मरणेतेपवित्र हुंदाहै ऐसेजानीदाहै ॥ इस विषे होर विशेष कहतेहैं ॥ श्रौर क्षत्री अग्नि होत्री ब्राह्मणकासुवर्ण चुरा कर्के रोम रहित होकर श्रौर घृतके साथ शरीरको भिगो कर्के अग्नि विषे दग्धकरदे

भविष्यत्पुराणम् ॥ महापातकनिर्देशेतृतीयंस्तेयमुच्यते ॥ नचाप्यबुद्धिपूर्वंतत्क्रियतेकेनचित्क्वचित् ॥ पातकत्वंचाविशिष्टंवदंतिमुनयोगुरु १ क्षत्रियादियदाहर्त्ताद्यूताद्येनप्रयोजयन् ॥ सानुबंधोपहारश्चतदैवंशुद्धयेचरेत् २ निष्कालकोवाघृताक्तोगोमयाग्निनापदप्रभृत्यात्मानंदहेन्मरणात्पूतोभवतीतिविज्ञायते ॥ अत्रैवापरोविशेषः ॥ हृत्वासुवर्णंराजन्योब्राह्मणस्याग्निहोत्रिणः रोमहीनोघृताक्तस्तुआत्मानंपावकेदहेत् ॥ १ ॥ विशिष्टब्राह्मणद्रव्यहरणेप्रतनापते दोषोवहुतरःस्याद्वैक्षत्रियादिषुहर्त्तृषु ॥ २ ॥ इदमपिपूर्वसंवंधि ॥ तथास्मिन्नेवविषयेचौर्ययातिद्विजोत्तमः ॥ अल्पानुवंधेहिकृतेक्षत्रियेणेतरेणवा ॥ ३ मूर्धाभिषिक्तोराजास्याद्गुणवान्क्षत्रियस्तथा हृतविप्रसुवर्णश्च प्रायश्चित्तमिदंचरेत् ॥ ४ ॥

वे अर्थात् जोक्षत्री पूर्वोक्त ब्राह्मणका सुवर्ण हरलेवे सो इस विधि कर्के पवित्र हुंदाहै ॥ १ ॥ श्रौर हेरत्वामिकाग्निक वसिष्ट गोत्री अथवा विशेष गुणवान् योब्राह्मण तिसके द्रव्यकी चोरी विषे क्या दूसरेका प्रेरण कर्के ब्राह्मणके धन हरण विषे क्षत्रियादि हरणवालेको अतिशयके वहुत दोषहुंदाहै अर्थात् उहपूर्वोक्त मरणांतहि प्रायश्चित्तकरे ॥ २ ॥ श्रौर तैसेहि इसी प्रसंग विषे जद ब्राह्मण चोरीका प्राप्तहुंदाहै ॥ अर्थात् जेकर ब्राह्मण चोरीकर्म करे श्रौर क्षत्रीके साथ अथवा होरकिसेसाथ अल्पानुवंधकरे अल्पानुवंध इसकानामहै कि दूसरेकेसंवध कर्के किसीकाधन हरणा तदभी इनको प्राणांत प्रायश्चित्तकहाहै ३ मूर्धेति श्रौर जोमूर्धाभिषिक्तहैं अर्थात् ब्राह्मणते क्षत्रिया स्त्री विषे जो उत्पन्न होवे उसका नाम मूर्धाभिषिक्तहै अथवा राजाहो वै श्रौर तैसेहि गुणवान् क्षत्रीहोवे एहजेकर ब्राह्मणका सुवर्ण चुरालेवें तद सोभी एहि प्रायश्चित्त करें ॥ ४ ॥

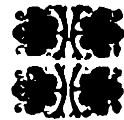
जो आगे कहणा ब्राह्मणका सुवर्ण चुरायांहोयां केशांको खलार कर्के राजाके समीप प्राप्त होवे और ऐसेकहै हेराजन् मैचोरहां मेरेको तुसीशासनादेवो और राजा उसको आमेका शस्त्र देवें और शस्त्रलेकर्के अपने शरीरको प्रहारकरे ऐसेमरजाणेते पवित्रहुंदाहै एहिअर्थस्पष्टकर्के कहतेहैं तथेति ॥ और ब्राह्मणका सुवर्ण चुराणे विषे पुरुष केश खिलारकर्के राजाकेसन्मुख चलाजावे इत्यादि जो पूर्वकिहाहै सोकामकरे ॥ और जेडासुवर्ण त्रामे आदिका बणयाहोवे तिसके चुराणे विषे एहपूर्वोक्त प्रायश्चित्त नहिजाणणा क्योंकि मुख्यसुवर्णकी जाति उहन

ब्राह्मणसुवर्णहरणेकेशान्प्रकीर्यराजानमभिगच्छेत् स्तेनोस्मिभोःशास्तुमां भवानिति तस्मैराजोदुंबरंशस्त्रंदद्यात्तेनात्मानंप्रमापयेत् मरणात्पूतोभवतीतिविज्ञायते तथास्मिन्नेवविषयेइत्यादेरयमर्थः॥अग्निहोत्रिब्राह्मणसुवर्णापहारे ब्राह्मणोत्यंतसानुबंधद्यूतादिसिद्धयेहर्त्ताक्षत्रियादिर्वाअल्पानुबंधः तत्र यद्यभिषेकादिगुणवान्क्षत्रियोनृपतिरास्तितदावासिष्ठोक्तम् ॥ब्राह्मणसुवर्णहरणेकेशान्प्रकीर्यराजानमभिगच्छेदित्याद्युक्तंकुर्यादिति यस्तुताम्रादिकरसवेधाद्यापादितसुवर्णरूपस्यापहारोनतत्रेदंप्रायश्चित्तं मुख्यजातिसमवायाभावात् इतिमिताक्षरा॥पुनर्भविष्ये अपहृत्यसुवर्णंचब्राह्मणस्यसुराधिप निष्कप्रमाणंपश्चात्तुराजानंक्षत्रियोव्रजेत्१ तस्मादौदुंबरंशस्त्रंप्राप्यात्मानंहनेद्गुह प्रयात्येवनसंदेहोयदिजीवतिसुव्रत२यदिजीवतितदाप्रयात्येवशुद्धय्त्येवेत्यर्थः॥यद्येतद्वचनंवीरब्राह्मणस्तपसैववा तत्रैवकारणाद्विद्व्राह्मणस्यसुराधिप ॥ ३ ॥

हिहै फेर भविष्यविषे लिखयाहै हेसेनापते तैसेहि क्षत्रीभी ब्राह्मणका एक निष्क प्रमाण क्या दश १६ मासे सुवर्ण चुराकर्के राजाके समीप चलाजावे १ और राजाते त्रामेका शस्त्र ग्रहण कर्के अपने शरीरको तिस शस्त्रका प्रहारकरे अपनेबलके अनुसार और जेकर उह हेस्वामिकार्त्तिक जीवतारहे तदभीप वित्रहुंदाहै २ और हेस्वामिकार्त्तिक ऐसा जो वचनहै किब्राह्मण तपकर्के पवित्र हुंदाहै तिसस्थानविषे विद्वान् ब्राह्मणका ग्रहण कीताहै ३

इसकारण कर्के बुद्धिमान् ब्राह्मणको प्राणांत प्रायश्चित्तका निषेध जाणणा और
ऐसे कर्मविषें मूर्ख ब्राह्मणको प्राणांतहि प्रायश्चित्त किहाहै और
जेकर इसप्रकार व्यवस्था न होवें तद (सुवर्णस्तेयकृत्विप्रः)
इत्यादि मनुवाक्य विषें विरोध हुंदाहै एह सुवर्णह
रणका प्रायश्चित्त प्रकरण पूरा होचुका ॥ ●

तपसैवेत्यनेन विदुषोब्राह्मण
स्यप्राणांतिकंनिषिध्यतेअविदुष
स्तत्रविषयेप्राणांतिकमेव अ
न्यथासुवर्णस्तेयकृ
द्विप्रइत्यादि म
नुवाक्यविरो
धः स्यात्
इतिसुवर्णहरणप्रायश्चित्तप्रकरणम्



ओंनमः अथमहापातकके मध्यविषे चतुर्थ ४जो गुरुतल्पग महापातकहै तिसका प्रायश्चित्त लिखतेहैं तिसमें भी पहले गुरुतल्पशब्दका अर्थ लिखतेहैं अथेतिकि तल्पशब्दअटारी विषे और स्त्री विषे और शय्या विषे किहाहै इसवाक्यते तल्पशब्द इसस्थान विषे स्त्री वाचकहै अर्थात् इहांतल्प नाम स्त्रीकाहि ग्रहण करणा और गुरुतल्पगशब्दका एह अर्थहै कि गुरुकीजो तल्पक्या स्त्रीहैतिसके साथ जो गमन करे उहगुरुतल्पग हुंदाहै॥और इसस्थान विषे कौन गुरुहै और तिसकी स्त्री कौनहै इसमें कोयीऐसाकहतेहैं किपिताहि गुरुहै॥तैसेहि मनुजीने किहाहैनिषेकेति कि जो पुरुष गर्भाधानते आद लेकर जो संस्कारहैं तिनको विधि पूर्व करे और अन्न देणेकर्के पालनकरे सोब्राह्मणगुरु किहाहै १ और इस कारणतेपिताकोहि गुरुभाव

ओंनमः॥ अथमहापातकांतर्गतगुरुतल्पगप्रायश्चित्तम् अट्टेदारेचशय्यायांतल्पशब्दोऽभिधीयत इतिवचनात्तल्पशब्दोऽत्रदारवचनः गुरोस्तल्पं स्त्रीतत्रगच्छतीतिगुरुतल्पगः तत्रकोगुरुः कावांगना पितैवगुरुरितिकश्चित् तथाचमनुः निषेकादीनिकर्म्माणियःकरोतियथाविधि संभावयतिचान्नेनसविप्रोगुरुरुच्यते १ निषेकोगर्भाधानंतेनपितुरयंगुरुत्वोपदेशः गर्भाधानादीनि संस्कारकर्म्माणि पितुरुपदिष्टानि योयथाशास्त्रंकरोतिचपुनः अन्नेनसंवर्द्धयति सविप्रोगुरुःकथ्यतेइत्यर्थः॥यद्वानिषेकादिसंस्कारंकृत्वाऽन्नादिनायः पोषयातिसविप्रः पितागुरुरित्यर्थः विप्रइतिपितृमात्रोपलक्षणार्थम्॥याज्ञवल्क्यः॥सगुरुर्यःक्रियाःकृत्वावेदमस्मैप्रयच्छति उपनीयददद्वेदमाचार्य्यःसउदाहृतः १ अस्मैब्रह्मचारिणे यः क्रियागर्भाधानादिका उपनयनांताः कृत्वा वेदंप्रयच्छति सगुरुः यस्तूपनयनमात्रंकृत्वावेदंप्रयच्छतिसआचार्य्यइत्यर्थः ॥

प्रतीत हुंदाहै अर्थात् निषेक कर्के पिताहि गुरुहुंदाहै अथवा गर्भाधानादिकजो कर्महैं तिनको पिताके उपदेश कर्के शास्त्र विधिके अनुसार जो करे चपुना अन्न कर्के शरीरको जो पुष्टकरे सो ब्राह्मण गुरु कहींदाहै॥यद्वेति अथवा प्रथम निषेकादि कर्म कर्के फेर अन्न वस्त्र इत्यादि पदार्थ कर्के पालना करे सो ब्राह्मण पिता गुरुकिहाहै और इस स्थानविषे ब्राह्मण शब्दसर्व पिताका उपलक्षणहै अर्थात् विप्र शब्द कर्के ब्राह्मणहोवे अथवा क्षत्रियादि होवे तथापि गुरुहै ऐसा अर्थ जाणना॥और याज्ञवल्क्य जीने किहाहै सगुरुरिति इस ब्रह्मचारीके तांयीं जो गर्भाधानादि यज्ञोपवीत पर्यंत संपूर्ण संस्कार कर्के वेद पढा देवे सो गुरुहुंदाहै और जो पुरुष केवल यज्ञोपवीत मात्र कर्के वेद पढावे सो आचार्य हुंदाहै १

श्रौर तिसकी जो स्त्रीहै श्रौर श्रपनी माताहै श्रथवा उत्तम वर्णकी तिसकी साकणहों. वे श्रौर हीनवर्णकीनहोवे तिसके साथ मैथुन करणा महापातकहुंदाहै श्रौर गुरुकी हीनवर्णकी स्त्रीसाथजो गमनहै सोगुरुतल्पके समानहै एह श्रागेकहेंगे इसकारणते उहमहापातक नहिहै इति श्रौर गुरुकी हीनवर्णा स्त्रीसाथ जोमैथुनहै सोमहापातकनहिहैएह श्रर्थसंगतनहिहै किसवास्तेकि श्राचार्यादिकोंकोभी गुरुभाव श्रवणकरीदाहै इसकारणते श्रौर इतर जो माता पिता उनकोभी श्रन्यनिषेधका श्रभावहोणेते श्रर्थात् जहां माता पिताको गुरुकिहाहै तहां होरकोई गुरुनहिहै ऐसेश्रर्थके नहि स्वीकारकरसेते॥तैसेहिमनुजीने किहाहै पितेति कि पिताजोहै सोगार्हपत्य. श्रग्निरूपहै श्रौर माता दक्षिण श्रग्निरूपहै श्रौर गुरुश्राहवनीयश्रग्निरूपहै एह तीनगुरु १ माता

तस्यांगनास्त्रीमातातत्सपत्नीचोत्तमवर्णा न हीनवर्णा तद्गमनेगुरुतल्पसमानत्वस्यवक्ष्यमाणत्वात् ॥ तद्गमनंनमहापातकमितितदसंगतम् ॥ श्राचार्यादेरपिगुरुत्वश्रवणादितरयोश्चान्यनिषेधार्थत्वाभावात् ॥ तथाचमनुः पितावैगार्हपत्याग्निर्मातावैदक्षिणः स्मृतः गुरुराहवनीयस्तुसाहित्रेतागरीयसी १ इदंलोकंमातृभक्त्यापितृभक्त्यातुमध्यमम् गुरुशुश्रूषयात्वेवं. ब्रह्मलोकंसमश्नुते २ श्रनेनउत्पादकब्रह्मदात्रोरित्यादिवक्ष्यमाणेनचगुरोरेवाधिक्यश्रवणात् ॥ तत्स्त्रियांहीनवर्णायामपि गमने महापातकमेवेतिसूचितम्॥अन्यच्च स्वल्पंवावहुवायस्य श्रुतस्योपकरोतियः तमपीहगुरुंविंद्याच्छ्रुतोपक्रिययातथा १ यस्यपुरुषस्योपरियः स्वल्पंमसीलेखन्यादिवहुभोजनाच्छादनादिवा उपकरोति तमपिगुरुंजानीयात् ॥

२ पिता१ सभतेवडेहैं१श्रौर माताकी भक्तिकर्के इसलोककों भोगताहै श्रौर पिताकी भक्तिकर्के मध्यलोककों भोगताहै श्रौर गुरुकी भक्तिकर्के ब्रह्मलोककोभोगताहै इसकारणकर्के गुरुकी कृपातेब्रह्मलोकविषें प्राप्तहुंदाहै २ इसते श्रौर उत्पादकजोमाता पिता श्रौरब्रह्मदातागुरु इनांविषें ब्रह्मदाताहिवडाहै एह श्रागेकहेंगे इसवास्ते गुरुको सभतेवडाहोनेतें तिसकी हीनवर्णा स्त्री साथभोगमन करणेविषें महापातकहुंदाहै एहप्रकटकीताहै॥श्रन्येति होरकहतेहैं श्रौर जिसके ऊपर जो थोडाभीउपकार करे सो गुरुजानणा क्या कि वेदपडनवालेकों पुस्तकलिखन वास्ते स्याही लेखनी. देवे एहथोडाउपकारहै श्रौर भोजन वस्त्र देणे कर्के वेदपाठीके ऊपर वहुत उपकार करे तिसकोभी जानना श्रर्थात् जो पुरुष वेदपाठीको भोजन कपड़ा देवे सोभी उसकागुरु हुंदाहै ॥ १

और जो पुरुष वेद शास्त्रका उपकार करे क्याके शास्त्र पढाना और अपने पासते पुस्तक देणा इत्यादि उपकार करण वाला जोहे सोभी गुरु किहाहै और तैसेहि गौतमजीनें किहाहै आचार्य इति कि संपूर्ण वडयोंके मध्य विष आचार्य श्रेष्ठहै और कैयोंके मतविषेमाता समते उत्तमहै और जेकर कोयी ऐसे कहे कि गुरु शब्द पिता बिषं हि संकेत कीताहै कि गुरु कहने कर्के पिताकाहि मुख्य ज्ञान हुंदाहै और आचार्य विषे गुरु पद गौणहै ऐसा नहि कहना क्योंकि आचार्यादिकों बिषं भी गुरुपदका संकेत कीताहै अर्थात् गुरुपद कर्के आचार्यकाभी ज्ञान हुंदाहै इस कारणते ॥ और सोयी विष्णु जीने किहाहै त्रय इति पुरुषको एह तीन वडे हुंदेहैं कि माता १ पिता२ आचार्य ३ इति और तैसेहि देवलजीकावाक्यहै आचार्य इति कि पुरुषके एह सभ गुरु हुंदेहैं कि आचार्य १ दोषरहित पिता २ और वडाभाई ३ और राजा ४ और अपनामामा ५ और अपनासौरा ६ और प्राणांकी रक्षा करण वाला

तथाश्रुतोपक्रिययापाठनपुस्तकदानादिरूपयोपकारकः सोपिगुरुरित्यर्थः गौतमः आचार्यःश्रेष्ठोगुरूणांमातेत्येके ॥ पितर्येवसंकेतितत्वादाचार्ये गौणंगुरुपदमितिचिन्न आचार्यादावपिसंकेतदर्शनात् यथाहविष्णुः पुरुषस्यातिगुरवोभवंति मातापिताआचार्यश्चेति॥तथाहदेवलः॥आचार्यश्चपिताश्रेष्ठोभ्राताचैवमहीपतिःमातुलःश्वशुरस्त्रातामातामहापितामहौ १ वर्णश्रेष्ठः पितृव्यश्चपुंस्येतेगुरवोमताः । त्राताप्राणरक्षकःपिताश्रेष्ठोऽदुष्टपितः पितेत्यर्थः वर्णश्रेष्ठ क्षत्रियादीनांब्राह्मणः अनेनैकादशगुरवोदर्शिताः ॥ अत्रापरार्कः ननुगुरुशब्दस्यान्यत्रप्रयोगोपिदृश्यते उपनीयगुरुःशिष्यमित्यादिनाचार्ये स्वल्पंवावहुवायस्यश्रुतस्योपकरोतियः तमपीहगुरुं विंद्यादित्युपाध्याये व्यासेनान्यत्रप्रयोगोपिदर्शितः ॥ गुरवोमातृपितृपत्याचार्यविद्यादातृज्येष्ठभ्रातरऋत्विजोभयत्रातान्नदातोचेति ॥

७ और मातामाहानाना ८ पितामहादादा ९ और वर्णश्रेष्ट ब्राह्मण १० और पितृव्य पिताका भ्राता चाचा ताया ११ एह संपूर्ण गुरु कहेहैं और इस कर्के देवलजीने एकादश गुरु दिखायेहैं । और इसी प्रसंगमे अपरार्क विषं लिखयाहै कि नन्विति (प्रश्णहै) कि गुरु शब्दका और स्थान विषेभी प्रयोग देखीदाहै और जिस स्थान विषं ऐसाहि कि गुरु शिष्यको यज्ञोपवीत पाकर्के वेद पढाये इस स्थान विषं गुरु शब्दका प्रयोग आचार्य विषे दिखायाहै और स्वल्पं इत्यादि कर्के गुरु शब्दका प्रयोग उपाध्याय विषे दिखायाहै और व्यासदेवजीने औरहि स्थानमे गुरुपदका प्रयोग दिखायाहै कि इतने गुरुहे माता पिता पति आचार्य विद्या देणे वाला वडा भ्राता यज्ञकराणे वाला भयते रक्षा करण वाला अन्न देणे वाला एह संपूर्ण पुरुषके गुरु कहेहैं इति

और इस स्थानविषें जोअन्न कर्के पालना करे इसपूर्वोक्त मनुवाक्य कर्के ॥ और अन्नदाताच इसव्यास जीके वाक्यते अन्न मात्रदेणे वाला जोपुरुषहै सोस्वामी क्या राजाभी गुरुजाननेयोग्य है। और इनकी स्त्री साथ गमन करणा उहभी महा पातक हुंदाहै। और इसस्थान विषें स्वामीशब्द कर्के जातिका ग्रहण नहि कीता इसकारणते राजा कोयी जातिहो उसको गुरु जाणणा ॥ और जोकोयी अन्नका उपकार करे सोयी स्वामीहै ॥ और इसीकारणते पूर्व हरिश्चन्द्रराजाने अन्नदेने वाले चांडालकी आज्ञा परमभक्ति कर्के ग्रहण करीहै एह महाभारत विषें कथा प्रसंगहै॥नचेति इसवास्ते गुरुशब्दके अनेक अर्थकाकल्पना कुछदोषनहिहै क्योंकि गुरुशब्दकी जोप्रवृत्तिहै तिसका निमित्तभूतपूजा योग्यताका सर्वत्र अनुस्यूत होनेते अर्थात् जिसस्थान विषें

अत्रसंभावयतिचान्नेनेतिपूर्वोक्तमनुवचसा अन्नदाताचेतिव्यासवचसाचान्नमात्रदातास्वामीराजादिकोपिगुरुः संभावनीयः ॥ तत्स्त्रीगमनमपिमहापातकम् । अत्रस्वामीजातिनिरपेक्षएवबोध्यः योवाकोवाऽत्रोपकारकोभवेत्सतुस्वाम्येव ॥ अतएवहरिश्चन्द्रेणराज्ञाऽन्नदातुश्चाण्डालस्याप्याज्ञापरमभक्त्यागृहीतेतिमहाभारतेगाथा। नचानेकार्थकल्पनादोषः॥ गुरुशब्दस्यप्रवृत्तिनिमित्तभूतायाःपूजार्हत्वायाः सर्वत्रानुस्यूतत्वात् ॥ दर्शितंचतस्याः प्रवृत्तिनिमित्तत्वंयोगीश्वरेण ॥ एतेमान्यायथापूर्वमेभ्योमातागरीयसीतिमान्या इत्युपक्रम्य गरीयसीत्युपसंहारंकुर्वता नचोपाध्यायादशाचार्य आचार्याणांशतंपितेत्युपाध्यायादधिकाचार्यात्पितुरतिशयितत्ववचनात्सएवमुख्य इतिवाच्यम्

गुरुशब्दकी प्रवृत्ति होगी उसस्थान विषें पूजाकी योग्यता अवश्यहोगी क्योंकि जो गुरुहोगा सो अवश्यपूजनीयहोवेगा और तिसकी प्रवृत्तिकानिमित्त योगीश्वर जीने दिखायाहै एतेति एह पूर्वोक्त संपूर्ण क्रमपूर्व माननेयोग्यहैं अर्थात् इनसभकामान करणा उचितहै और इनसभतेमातावडीहै इसकारणते योगीश्वर जीने मान्याइसते प्रारंभ कर्के गरीयसी इहां समाप्ति करीहै इसवास्ते माताते वडाकोयी नहिहै और ऐसा कहना किदश १० उपाध्यायहोवें तद एक आचार्य हुंदाहै और सौ १०० आचार्यकेतुल्य पिताकहाहै इसकर्के उपाध्यायते अधिक आचार्य हुआ और आचार्यते अधिक पिता कहाहै और पिताको अतिशयवचनते सोयी मुख्यहै एह यथार्थ नहि

किसवास्ते कि आचार्यविषे भी ऐसा अतिशय वाक्ययुक्तहै सोईजैसे उत्पन्न करणवाला जोहै और जोवेदपढाने वालाहै इनदोनोंविषे वेदपढाने वालापिताहै इति और गौतमजीने भी किहाहै संपूर्ण वडयोंके मध्यविषे आचार्य उत्तमहै इति किंच जेकर अतिशयमात्र करके मुख्यता कहोगे तद पितुः शतगुणं पुण्यं सहस्रं मातुः वदि इत्यादि वाक्यतें माताको सभते अधिक गुरुभाव होनाचाहिये इसकारणते सभ गुरुहै तिनकी स्त्री साथगमन करणा गुर्वंगनागमन एह किहाहै ॥ इसमे कहतेहैं कि निषेकादीनि एहजो मनुवाक्यहै इसविषे गर्भाधानादि कर्मकरणवाले पिताको गुरुभाव प्रतिपादन कीनाहै किसवास्ते निषेकादि कर्मविषे पितातें विना दूसरेका अधिकार नहिहोता इसकारणते जोफिर व्यासदेवजीका और गोतमजीका वाक्यहै सोपूजाविधिको विशेषता करके स्तुतिवास्ते

आचार्येऽप्यतिशयितत्वस्याविशिष्टत्वात् उत्पादकब्रह्मदात्रोर्गरीयान्ब्रह्मदः पितेति गौतमेनाप्युक्तम् आचार्यः श्रेष्ठो गुरूणामिति॥किंच यद्यतिशयितत्वमात्रेणमुख्यत्वमुच्यते तर्हिसहस्रमितिवचनान्मातुरेवगुरुत्वंस्यात्तस्मात्सर्वेगुरवस्तस्यपत्नीगमनंगुर्वंगनागमनमितियुक्तम्॥अत्रोच्यते निषेकादीनीतिमनुवचनंनिषेकादिकर्तुर्जनकस्यगुरुत्वप्रतिपादनपरम् अनन्यपरत्वात् ॥ यत्पुनर्व्यासगौतमवचनंतत्परिचर्यापूजादिविधिशेषतयास्तुत्यर्थत्वेनान्यपरम् । अतोगुरुत्वप्रतिपादनपरान्निषेकादिमनुवचनात्पितुरेवमुख्यंगुरुत्वमितिस्थितम्॥अतएवच वशिष्ठेनाचार्यपुत्रशिष्यभार्यासुचैवमित्याचार्यादिदारेष्वातिदेशिकंगुरुतल्पगप्रायश्चित्तमुक्तम् ॥ तथाजातूकर्ण्यादिभिरप्युक्तम् आचार्यादेस्तुभार्यासुगुरुतल्पव्रतंचरेदित्यादि ॥

और के गुरुभावको प्रतिपादन करताहै इसकारणते पिताविषे गुरुभाव प्रतिपादन करणेते और निषेकादि मनुवाक्यते पिताकोहि मुख्यगुरुभाव सिद्ध होया इति ॥ और इसीकारणते वशिष्ठजीने आचार्य पुत्र शिष्य इनको स्त्रियोविषे अतिदेश गुरुतल्पग प्रायश्चित्त किहाहै कि अतिदेश उसका नामहै कि जो और स्थानका प्रायश्चित्त और स्थानविषे दिखाणा जैसे कि इसस्थानमे गुरुतल्पग प्रायश्चित्तको आचार्य पुत्र शिष्य इनकी स्त्रीगमनविषेभी किहाहै और तैसेहि जातूकर्ण्यादिक ऋषियोंने किहाहै आचार्यादि जो पुरुष आचार्य पुत्र शिष्य इनकी स्त्री साथ गमनकरे तिसको गुरुतल्पग व्रतकरणा चाहिये इत्यादि दिखायाहै

और इसस्थानविषे आचार्यकोभीमुख्यगुरुभावहोयतो गुरुशब्दकर्के हि गुरुतल्पग प्रायश्चित्तकी प्राप्तिहुंदीहे तो अतिदेशव्यर्थहोजावे। इसकारणतेसंवर्त्तजीने प्रगटहिपिताकीस्त्रीकाग्रहणकीता हे सोयी लिखयाहै पितृदारेति किमातातेविना और जोपिताकीस्त्रीयांहै उनके साथजोनीच पुरुषगमनकरे उसकोगुरुतल्पग व्रतकरणा योग्यहै। और षट्त्रिंशत्मतविषे भीलिखयाहै पितृ भार्यामिति। कि जो पुरुषपिताकीसवर्णास्त्रीको जाणकर्के गमनवास्तेप्राप्तहोताहै इसवाक्यतेनिषे कादिकरणवाला जोपिताहै सोयीमुख्यगुरुहुंदाहै और पिताविषे जो गुरुभावहै सोचारवर्णविषे वरावरहै किसवास्तेकि सर्वत्रस्थानमे निषेकादिकरणविषेपिताको अविशेषहोणेते जैसे किक्षत्री काक्षत्रीपिता गुरुहोयावैश्यकावैश्य शूद्रका शूद्रपितागुरुहुंदाहै और जोऐसालिखयाहै कि सो

आचार्यादेर्मुख्यगुरुत्वेगुरूपदेशतएवव्रतप्राप्तेरतिदेशोनर्थकएवस्यात् किं चसंवर्त्तेनस्पष्टमेवपितृदारग्रहणंकृतम् पितृदारान्समारुह्यमातृवर्ज्यंनरा धमइति ॥ षट्त्रिंशन्मतेपि ॥ पितृभार्यांतुविज्ञायसवर्णांयोधिगच्छतीति अतोपिनिषेकादिकर्त्तापितैवमुख्योगुरुः॥तच्चगुरुत्वंवर्णचतुष्टयेप्यविशिष्टं निषेकादिकर्तृत्वाविशेषात् अतःसविप्रोगुरुरुच्यत इतिविप्रग्रहणमुपल क्षणम् अतःपितृपत्नीगमनमेवमहापातकम् ॥ गमनंचचरमधातुविसर्गप र्यंतंकथ्यते अतस्ततोऽर्वाङ्निवृत्तौतु न महापातकित्वम् अथगुरुतल्प गमनप्रायश्चित्तमाहमनुः ॥ गुरुतल्पोभिभाष्यैनस्तप्तेस्वप्यादयोमये सू र्मींज्वलन्तींवाश्लिष्येन्मृत्युनासविशुध्यति १ ॥

ब्राह्मणगुरुकिहाहै इसस्थानविषे विप्रशब्द पिताका वाचकहै इसकारणतें पिताकी स्त्रीसाथ ग मनकरणा महापातकहुंदाहै और गमनभी अंत्यधातुकापात क्यावीर्यपातहोना तिसपर्यंतकिहा है इसते ऐसा जाणना किवीर्यपातसे उरेहि निवृत्तिकिसेकारणतेहोजावे तदमहापातकनहिहै॥ अब गुरुस्त्रीगमनप्रायश्चित्त मनुजीने किहाहै गुरुतल्पइति कि जोपुरुष गुरुकी स्त्रीसाथ मैथुन करे तिसकोऐसाकरणाचाहिये क्या कि गुरु स्त्रीगामी अपने गुरुस्त्री गमनपापको प्रकटकर्के लोहेकीजो अतितपीहोई शय्याहै तिसके ऊपर शयनकरे अथवासूर्मी क्या लोहेकीवनायीहो यी जोस्त्रीकी मूर्त्तहै तिसको जलतीको कंठकेसाथलगाकर्के शयनकरे तिससे मरणे कर्के शुद्ध हो जंदाहै ॥ १ ॥

अथवा आपहि अपनालिंग और पताल काटकर्के अंजलि विषं ग्रहण कर्के सूधा नैऋतको ण विषं चला जावे ऐसे चलते२ जबमृतहोजावे तदफर शुद्ध हुंदाहै२ और दक्षिण पश्चिमके मध्य विषं जोकोणहै तिसकानाम नैऋतकोणहै और एह दोएप्रायश्चित्त वहुतवडेहैं इसकारणते सवर्णा गुरुस्त्री के विषयाविषे जानणे अर्थात् जोपुरुष ब्राह्मण गुरुकी ब्राह्मणी स्त्रीसाथ गमनकरे अथवाक्षत्री गुरुकीक्षत्रिय स्त्रीसाथ गमनकरे उसकोएह प्राणांत प्रायश्चित्त करणायोग्यहै और जाणकर्के वीर्यत्यागपर्यंत मैथुनके विषयमें जानणा अर्थात् जिस स्थान विषे गुरुस्त्री साथ गमन करतियां वीर्यपातहोजावे उसस्थानविषे एह प्रायश्चितहै ॥ २ ॥ और अपरार्क विषे याज्ञवल्क्यजीकावाक्यहै तप्तइति कि जिसके

स्वयंवाशिश्नवृषणौव्युत्कृत्यादायचांजलौ ॥ नैऋर्तिदिशमातिष्ठेदानिपाताद जिह्मगः॥ २ गुरुतल्पोगुरुस्त्रीगामीस्वमेनोगुरुभार्यागमनपापंविस्याप्य अयोमयेलोहमयेतप्तशयनेसूर्मीलोहमयींस्त्रीप्रतिकृतिंकृत्वातांज्वलन्तीमालिंग्यसुप्यात्ततश्चमृत्युना विशुद्धोभवति१ वालिंगवृषणौस्वयंछित्वाअंजलौकृत्वाशरीरपातंयावदवक्रगतिःसन्नैऋर्तींदक्षिणपश्चिमांदिशंगच्छेत् प्रायश्चित्तद्वयमिदंगुरुत्वात्सवर्णगुरुभार्याविषयम् ॥ ज्ञानतोरेतोविसर्गपर्यन्त मैथुनविषयंचवोध्यम् २ ॥ अपरार्केयाज्ञवल्क्यः ॥ तप्तेयःशयनेसुप्यादायस्यायोषितासह गृहीत्वोत्कृत्यवृषणौनैऋर्त्यांचोत्सृजेत्तनुम् १ प्राजापत्यंचरेत्कृच्छ्रंसमावागुरुतल्पगः ॥ चांद्रायणंवात्रीन्मासानभ्यसन्वेदसंहिताम् ॥ २ ॥ उक्तलक्षणोगुरुतल्पगःतप्तेऽग्निवर्णेलोहमये शयनेमृत्यवेसुप्यात् संविशेत् नकेवलमेकाकीआयस्यायोषितासहेतियावत् यद्वा स्वकीयौवृषणौस्वयमेव उत्कृत्यांजलिनागृहीत्वानैऋर्त्यांदिशि गत्वा तत्र तनुंशरीरमुत्सृजेत् ॥ आशरीरनिपाताद्गच्छेदित्यर्थः

पर्व लक्षण लिखेहैं ऐसा जो गुरुतल्पगहै सोतप्तकया अग्निवर्णकीजो लोहेकी शय्याहै तिसाविषें मरणवास्ते शयनकरे और केवलएकलाहि न सोवे किंतु लोहेकी जो स्त्रीकीमूर्तीहैतिसको भीतपाकर्के तिसके साथ सोणा योग्यहै अथवाअपने वृषण काट कर्के अंजालि विषं ग्रहणकर्के फेर नैऋतिदिशाको जाकर्के तिसमे अपना शरीरत्याग करदेवे ॥ १ ॥ और इस स्थान विषें ऐसा अभिप्राय जाणणा कि जितना चिरदेहपतितनहोवे उतना चिर चलतारहै एह अर्थ कीताहै अथवा प्राजापत्यं इत्यादि मूलमें स्पष्टहै ॥ २ ॥

इस प्रकारके जो प्रायश्चित्तहैं सो सभ उसको जानने कि जो पुरुष कामनाते विनामाताके साथ गमनकरे। और नाहिहै उत्तमवर्ण जिसका ऐसी जो माताकी सपत्नीहै तिसमे गमनहोने विषें और तिसके विना और जो पिताकी स्त्रीहै तिसके साथ कामनाते गमनकरे एह सभ उसके वास्ते प्रायश्चित्त दिखायेहैं और षट्त्रिंशन्मतविषें भी लिखयाहै कि जो पुरुष पिताकी स्त्रीको सवर्णाजान कर्के गमन करताहै अर्थात् जिसवर्णका पिताहै उस वर्णकी अपनी मातातेविना जो स्त्री है तिसके साथ जाणकर्के गमन करताहै। और जो पुरुष न जाण कर्के माताके साथ गमन करताहै सो पुरुष मृत हुया शुद्धिको प्राप्त हुंदाहै १ और एह प्रायश्चित्त मुख्य पुत्रको हि जाणना किस वास्ते कि होरणा पुत्रां को पुत्र संबंधि कार्य करणा किहाहै और उनको पुत्र भाव नहि किहा। सोयी लिखयाहै कि जो क्षेत्रजते आदि लेकर एकादश ११ प्रकारके पुत्रहैं तिनको बुद्धिमान् क्रियालोपते पुत्रके तुल्य कहतेहैं एह मनुवाक्य है। और अ

एवमादीनिप्रायश्चित्तान्यपि॥ कामतोमातरमनुत्तमवर्णांच तत्सपत्नीं तदन्यांतु कामतोगच्छतोद्रष्टव्यानि २ षड्त्रिंशन्मतेपि पितृभार्यांतुविज्ञायसवर्णां योऽधिगच्छति जननींवाप्यविज्ञायनामृतःशुद्धिमाप्नुयादिति १ इदंचमुख्यस्यैवपुत्रस्य इतरेषां पुनः पुत्रकार्य्यकरत्वमेव नपुत्रत्वम्॥क्षेत्रजादीन्सुतानेतानेकादशयथोदितान् पुत्रप्रतिनिधीनाहुःक्रियालोपान्मनीषिण इतिमनुवचनात् ॥ अमतिपूर्वासमानवर्णपुंश्चलीगुरुस्त्रीगमने प्राग्रेतोविसर्गान्निवृत्तौच समासंवत्सरमेकंवाप्राजापत्यंकृच्छ्रंचरेत् अभ्यसेत्।यद्वोक्तलक्षणंचान्द्रायणंस्वाध्यायसंहितामभ्यस्यन्मासत्रयंयावदाचरेत् ॥ मरणान्तिकंचप्रायश्चित्तत्रयंस्वकृतंगुरुतल्पगमनमभिभाष्यकार्यम् ॥ तथा चहारीतः। गुरुतल्पगोमृण्मयींचायसींवास्त्रियाःप्रतिकृतिमग्निवर्णांकृत्वाता मालिंग्यपूतोभवति। वसिष्ठः।निष्कालकोघृताभ्यक्तस्तप्तांसूर्मींपरिष्वज्य मरणात्पूतोभवतीतिविज्ञायते निष्कालकोव्याख्यातः

ज्ञानते नहिहै समान वर्ण जिसका ऐसी व्यभिचारिणी गुरुकी स्त्री साथ मैथुन कीतियां होयां पूर्व वीर्य त्यागकी निवृत्ति विषें एक वर्ष प्राजापत्य कृच्छ्रकर अभ्यास करे ॥ अथवा अपीछे जिसके लक्षण कहेहैं तिस चांद्रायणको करे और तीन महीने वेद संहिताका अभ्यास करे परंतु प्राणांतिक प्रायश्चित्त तीन प्रकारकाहै सो गुरुतल्प गमन पाप को प्रकाश कर्के करणे योग्यहै ॥ तैसेहि हारीत जीने किहाहै कि गुरु स्त्री गमन करणे वाला पुरुष मृत्तिकाकी अथवा लोहेकी अग्नि वर्ण की स्त्री साथ आलिंगन कर्के पवित्र हुंदाहै ॥ और वसिष्ठ जीने किहाहै कि निष्कालक हो कर्के क्या केश दाडी रोम इनका मुंडन करवा कर्के और घृत मल कर्के तिस लोहेकी मूर्तीको आलिंगन कर्के मरणते पवित्र हुंदाहे निष्काल शब्दका अर्थ पीछेभी होचुकाहै

और अंगिराजीने भी किहाहै गुरुतल्पीति कि जो पुरुष गुरुतल्पी होवे कि गुरुकी स्त्री साथ गमन करे सो पुरुष शिला तपा कर्के अथवा लोहेकी स्त्रीको तपा कर्के आपहि उस विषे प्रवेश करे। अथवा अपने वृषण काट कर्के आपहि अंजलि विषे धारण करे १ अथवा मरण वास्ते पादो कर्के उत्तर दिशाको चला जावे इस प्रकार देहके त्याग करणे कर्के अशुभ कर्मते मुक्त हो जंदाहै २ अथवा महा व्रत करे क्या कि ब्रह्म हत्या विषे जो २४ वर्ष का व्रतहै सो महा व्रत जानने योग्यहै। अथवा अपना सर्वस्व दान कर देवे। अथवा गुरुके निमित्त युद्ध विषे मर जावे जेकर तद भी गुरुतल्पग मुक्त हुंदाहै अर्थात् इस प्रकार प्रायश्चित्त करणे कर्के गुरु स्त्री गमन करण वाला पवित्रताको प्राप्त हुंदाहै ३ और इस स्थान विषे प्राणान्त प्रायश्चित्त ज्ञानते माता विना सवर्ण अथवा उत्तम वर्णकी गुरु स्त्री गमन विषे

अंगिराः। गुरुतल्पीशिलांतप्तामायसींवास्वयंविशेत्। उत्कृत्यवृषणौवा पिधारयेदंजलौस्वयं १मरणायाथवापद्भ्यांप्रव्रजेद्दिशमुत्तराम्। शरीरस्य विमोक्षेणमुच्यतेकर्मणोऽशुभात् २ महाव्रतंवहेद्वापिदद्यात्सर्वस्वमेववा गुर्वर्थंवाहतोयुद्धेमुच्यतेगुरुतल्पगः ३ अत्रमरणान्तिकंज्ञानकृतेमातृव्यतिरिक्तसवर्णोत्तमवर्णगुरुदारगमने बोद्धव्यम्॥महाव्रतंचरेद्वापीतिब्रह्महत्याव्रतं चतुर्विंशतिवार्षिकंबोधव्यम् प्राजापत्यकृच्छ्राभ्यासेविशेषमाहमनुःखट्वाङ्गी चीरवासावाश्मश्रुलोविजनेबने प्राजापत्यंचरेत्कृच्छ्रमब्दमेकंसमाहितः १ खट्वाङ्गीब्रह्मवधलांछनः श्मश्रुलःकेशनखलोमश्मश्रुधारी॥समाहितःसंयतमनाःनिर्जनेबनेवर्षमेकंप्राजापत्यंचरेत् ॥इदंचलघुत्वात्स्वभार्यादिभ्रमेणाज्ञानविषयंबोध्यम् ॥ चान्द्रायणंवात्रीन्मासानभ्यस्येन्नियतेंद्रियः ॥ हविष्येणयवाग्वावागुरुतल्पापनुत्तये २

जानणे योग्यहै। और प्राजापत्य व्रतके अभ्यास विषे मनुजीने विशेष किहाहै खट्वांगी कि खट्वांगी धारण करे और पुराणे वस्त्र धारण करे। और जटाधारण कर्के पुरुष रहित वन विषे सावधान होकर एक वर्ष प्राजापत्य व्रत करे १ और खट्वांगी क्या ब्राह्मण वध के चिह्न कर्के युक्त। श्मश्रुलक्या वाल नख रोम दाढी एह धारण करे इस विधि कर्के एक वर्ष प्राजापत्य करे ॥ १ ॥ और एह प्रायश्चित्त अल्पहै इस वास्ते अपनी स्त्रीके भ्रम कर्के गुरुस्त्री गमन विषे जानणे योग्यहै अर्थात् जो पुरुष अपनी स्त्री जाण कर गुरु स्त्री गमन करे सो इस प्रायश्चित्त कर्के पवित्र हुंदाहै। चांद्रायण मिति कि अथवा इंद्रिय जीत कर तीन महीने चांद्रायण का अभ्यास करे और इस व्रत विषे हविष्यान्न भोजन करे अथवा यवागु भोजन करणा किहाहै गुरुतल्प पाप के दूर करण वास्ते २ ॥

अथवा गुरु स्त्री गमन पापके नाश वास्ते इंद्रिय रोक कर फल मूल भक्षण करे अथवा हवि ष्य अन्न खावे अथवा नीवार इत्यादि अन्नका यवागूबना कर भोजनकर्ताहुया तीन महीने चांद्रायणका अभ्यास करे और एह पूर्वोक्तप्रायश्चित्तते अल्प प्रायश्चित्तहै इस वास्ते व्यभिचारि णी और असवर्णा गुरु स्त्री गमन करणे वाले पुरुषको जानणा २ और यमजीने किहाहै अथे ति कि अथवा लिंगके समेत वृषण उखाड़ कर्के हाथमे ग्रहण कर्के गुरुके सन्मुख जेकर स्थित हो जावे तद पापते मुक्तहो जंदाहै अर्थात् गुरुतल्पगएह प्रायश्चित्त करणे कर्के पवित्रहो जं दाहै १ अथवा दिनके अष्टम भाग विषे भोजनकरे और ब्रह्मचर्य धारण कर्के सदैव व्रतीरहे

यद्वागुरुभार्यागमनपापनिवृत्तयेनियतेंद्रियः फलमूलादिनाहविष्येणनी वारादिकृतयवाग्वावात्रीन्मासान्चान्द्रायणान्यभ्यस्येत् एतच्चपूर्वोक्तादपि लघुत्वादसाध्वीमसवर्णांवागच्छतोज्ञेयम्२यमः अथवाशिश्नवृषणावुत्कृत्य प्रतिगृह्यच गुरोरभिमुखंतिष्ठन्पूतोभवतिकिल्बिषात् १कालेष्टमेवाभुञ्जा नोब्रह्मचारीसदाव्रतीस्थानासनाभ्यांविहरंस्त्रिरह्नोभ्युपयन्नपः२ अधःशा यीत्रिभिर्वर्षैस्तदपोहतिपातकम् स्थानेति स्थानासनाभ्यांदिवारात्रिवि भागेनविहरन् किंचत्रिरह्नःदिनस्यत्रीन्वारान् अपोजलानि अभ्युपयन् स्नानत्रयंकुर्वन्नित्यर्थः ॥ शंखेनाप्युक्तम् ॥ अधःशायीजटाधारीपर्णमूल फलाशनः ॥ एककालंसमश्नीयाद्वर्षेतुद्वादशेगते १ स्वर्णस्तेयीसुरापश्च ब्रह्महागुरुतल्पगःव्रतेनानेनशुध्यंतिमहापातकिनास्त्विमे २ इत्येतच्च मतिपूर्वसवर्णगुरुदारगमनाविषयम् यत्तुमनुनासपत्नींभगिनीमित्यादिना गुरुतल्पगव्रतमतिदिष्टत्वात्पादोनमुक्तम् ॥ तदसवर्णगुरुदारतल्पगवि षयम् ॥

और दिनरात्रिके विभाग कर्के ईश्वर स्मरण करता होया तिन्न काल स्नान करे अर्थात् दिनके विषे तिन्न काल स्नान करे और पृथिवी ऊपर सोवे इस प्रकार तिन्न वर्ष करणे कर्के पापको दूरकरताहै २ और तैसेहि शंख जीने किहाहै अध इति किभूमि ऊपर शयन करे और जटा शिर विषे धारण करे और फल मूल भक्षण करे और एक काल भोजन करे इस तरां द्वादश वर्ष १२व्यतीतहोयां १ सुवर्ण स्तेयी इत्यादि सभ पापी पवित्र होतेहैं एहस्मृतिपीछेभीआचुकी है २ और एह प्रायश्चित्त अज्ञान कृत इन पापों विषे जानणा और माताकी सौकनभगिनी इनके गमन विषे भीगुरु तल्पग व्रतका पादोन करणा किहाहै एह असवर्णा गुरु स्त्री गमन विषे किहाहै

और उस विषेंभी ब्राह्मणीका पुत्रजोहै तिसको क्षत्रिया पिताकी स्त्रीगमन विषें वर्ष ९ का प्रायश्चित्त किहाहै और ऐसेहि वैश्यापिताकी स्त्रीगमन विषें ६ वर्ष और शूद्रागमनविषें ३ वर्ष गुरुतल्पग व्रत हुंदाहै ऐसे एकऋषि मानतेहै ॥ और अन्यइति होर ऋषिऐसा कहतेहैं अतिदेशिक संपूर्णकरणा योग्यहै कि अतिदेशकवाक्य विषेंन्यूनत्वादिक कल्पना विषेकोयी प्रमाण नाहिहै इसवास्ते याज्ञवल्क्य और अंगिरा इनके वाक्योंका एकविषयहै और इसकारणसे तिसके समान प्रायश्चित्तांकाभी न्यूनप्रायश्चित्त नहिजानणा इसमें तुल्यविषें समशब्दका प्रयोगहि प्रमाणहै और ब्रह्महत्या प्रसंग विषें व्यास देव जीने किहाहैं गत्वेति कि कामनाते विना

तत्रापिब्राह्मणीपुत्रस्यक्षत्रियांपितृभार्यांगच्छतोनववार्षिकम् वैश्यांषाड्वार्षिकम् शूद्रायांत्रैवार्षिकम् गुरुतल्पगव्रतंभवतीत्येकेमन्यन्ते अन्येत्वातिदेशिकंसर्वंसंपूर्णमेवकार्यमित्याहुरखंडपापकत्वादतिदेशस्यपादोनत्वादिकल्पनायांचप्रमाणाभावात् अतएवयाज्ञवल्कीयांगिरसवाक्ययोःसमानविषयतैव तत्समप्रायश्चित्तानांत्वन्यूनत्वेसमशब्दप्रयोगएवप्रमाणम् राजसमोमंत्रीत्यादावन्यूनविषयस्यसमशब्दस्यप्रयोगदर्शनात् ॥ ब्रह्महत्यानुवृत्तौव्यासः। गत्वातदेवकुर्वीतगुरुतल्पमकामतःकामतोद्विगुणंप्रोक्तंसर्वेपुचयदुच्यते सर्वेपुब्रह्महत्यादिषुद्वादशवार्षिकंव्रतमुच्यते तदपिकामतःकृतेपापेद्विगुणंभवतीत्यर्थः सुमंतुः। गुरुदारगामीसंवत्सरंकंटकिशाखांपरिष्वज्याधःशायीत्रिषवणीसुकर्माचक्षाणोभिक्षाहारःपूतोभवत्यश्वमेधावभृथस्नानेनवा

जाकें खयांि विषें स्त्री गमनकर्के जो प्रायश्चित्त करणा किहाहैं सोयी दूनाकामनाते किहाहै सभ पाप विषें विधि कहाहै अर्थात् संपूर्ण ब्रह्महत्यादि पापोंमें द्वादशवार्षिकव्रतकहतेहैं सोयी कामनाकृत पाप विषें दूणेहोतेहैं और सुमंतऋषिजीनेकिहाहै कि गुरु स्त्रीगमन करण वाला पुरुष एक वर्ष प्रमाण कंडियावाले वृक्षके साथ आलिंगन कर्के पृथिवी ऊपर शयन करे और तीनकाल स्नानकरे और शुभकर्मको विचार करताहोया भिक्षा मांगकर भोजनकरे इस प्रकार पवित्रहुंदाहै अथवा अश्वमेध यज्ञविषें अंत्य स्नानकर्के पवित्रहुंदाहै ॥

और एहप्रायश्चित्त ब्राह्मणी पुत्रको वैश्यारूप गुरुस्त्री गमनविषे जाननणा तैसेहिआपस्तंबजीका वाक्यहै किगुरुस्त्री साथ पापकरणवाला पुरुष गर्दभके चर्मकोऊपरलपासेरोमकर्के ऊपरअपने ओडलेवे और गुरुस्त्रीगमनकरण वालेको इसप्रकारसात ७घरतेभिक्षाएकवारप्रातिदिनग्रहणकरे ऐसेहि छे ६ महीने कर्के पवित्रहुंदाहै और एह प्रायश्चित्तभी ब्राह्मणी पुत्रको शूद्ररूपगुरुस्त्रीगमनविषे जाननणा ॥ विष्णुजीनेकिहाहै किमाताके साथ और कन्याकेसाथ और पुत्रकी स्त्रीसाथ गमनकरणा एह अतिपातककहेहै और ऐसेहि अतिपातककरणेवाले संपूर्ण अपनी शुद्धि वास्ते अग्नि विषे प्रवेश करे और मरणे तेविना तिसकी शुद्धि किसी प्रकार नाहिहोती और संवर्तजी

ब्राह्मणीपुत्रस्यवैश्यात्मकेषुगुरुदारेष्वेतत्॥ आपस्तम्बः॥ गुरुदारव्यतिक्रामीखराजिनंचवहिर्लोमपरिधायगुरुदारव्यतिक्रमिणेभिक्षांदेहीतिसप्तागाराणिचरेदावृत्तिषण्मासान् प्रतिदिनमेकावृतिर्यास्मिन्कर्मणितद्यथास्यात्तथेत्यर्थः ब्राह्मणीपुत्रस्यशूद्रात्मकेषुगुरुदारेष्वेतत् ॥ विष्णुः ॥ मातृगमनंदुहितृगमनंस्नुषागमनमित्यातिपातकानि ॥ अतिपातकिनस्त्वेतेप्रविशेयुर्हुताशनम् नान्यथानिष्कृतिस्तेषांविद्यतेहिकथंचन ॥ संवर्तः॥ मातरंयादिगच्छेत्तुस्नुषांवापुरुषाधमःनतस्यनिष्कृतिंविद्यात्कामाद्दुहितरंतथा १ जीवतोनिष्कृतिर्नास्तीत्यर्थः ॥ उशनाः॥ गुरुतल्पाभिगामीसंवत्सरंब्रह्महव्रतंषण्मासान्वातप्तकृच्छ्रंचरेत् एतच्चक्षत्रियापुत्रस्यशूद्रात्मिकांगुरुस्त्रियंगच्छतः॥ बृहन्मनुः गमनेगुरुभार्यायाः पितृभार्यागमेतथा ॥ अब्दत्रयमकामात्तुकृच्छ्रंनित्यंसमाचरेत् ॥

कावाक्यहै मातरमिति कि जेकर माताके साथ अथवा स्नुषासाथ जो पुरुषाधमगमनकरताहैतो सकीकिसी प्रकार शुद्धिनहिहुंदी और जोपुरुष कामनाते कन्याकेसाथ गमन करे उसकीभी जीवितियां शुद्धिनहिहुंदी एहअर्थहै औरउशनाजीनेकिहाहै किगुरुस्त्री गमनकरण वाला पुरुषएक वर्ष प्रमाण ब्रह्महत्याव्रतकरे अथवाछे ६ महीने तप्तकृच्छ्र करे औरएहप्रायश्चित्तक्षत्रियास्त्रीके पुत्रकी शूद्र स्त्री गमन विषे जाननणा १ और सायीबृहन्मनुजीने किहाहै गमनेतिकिगुरु स्त्रीगमनविषे और पिताकीस्त्रीगमनविषे कामनाते विनापुरुष तिन्नवर्ष पर्यंतनित्यप्रतिकृच्छ्र करे अर्थात्जेकर कामनाते विनागुरु औरपिताइनकीस्त्रीसाथमैथुनकरेतदातिन्नवर्ष व्रतकर्के पवित्रहुंदाहै

और संवर्त जीका वाक्यहै किजो शूद्र ब्राह्मणकी स्त्री विषे गमन करे अज्ञानते तिसको अपनी शुद्धि वास्ते गुरु तल्प व्रत करणा किहाहै और जेकर जाणकर करे तद प्राणांतिकाहि प्रायश्चित्त करणा योग्यहै ऐसासर्वत्र निश्चय कीयाहै । और वसिष्टजीने किहाहैकि जेकर कोयी शूद्र ब्राह्मणी गमन करे तद उसके शरीरमे तृणवेष्टन कर्के अग्नि विषे सुट देवे और उस ब्राह्मणीको शिर मुना कर्के उसके शरीर विषे घृत मर्दन कर्के और नग्न कर्के काले खोते ऊपरचढा कर्के वजारके मार्ग विषे ले जावे नगरते बाहर निकाल देवे तद उह ब्राह्मणी पवित्र होंदीहै ऐसे जान्नणा इस जगा (शिरसि) एह पद समग्र शिरके मुंडन वास्तेहै ऐसा नहि कहंद तद अगुलि द्वय काहि मुंडन पूर्वोक्त वचन से हुंदा और जे कर कोयीवैश्य ब्राह्मणी गमन करे तद

संवर्त्तः शूद्रस्तुविप्रागमनेगुरुतल्पव्रतंचरेत् अज्ञानादज्ञानतोगत्वाप्राणान्तिकमितिस्थितिःवसिष्टः । शूद्रश्चेद्ब्राह्मणीमभिगच्छेद्वीरुद्भिर्वेष्टयित्वाशूद्रमग्नौप्रास्येत् ब्राह्मण्याःशिरसि वपनंकारयित्वासर्पिषाभ्यज्यनग्नांकृष्णाखरमारोप्यमहापथगमनंव्राजयेत् पूताभवतीतिविज्ञायते अनेकशिखावपनप्राप्तयेशिरसीत्युक्तम् वैश्यश्चेद्ब्राह्मणीमभिगच्छेल्लोहितदर्भैर्वेष्टयित्वावैश्यमग्नौप्रास्येद्ब्राह्मण्याःशिरसिवपनंकारयित्वासर्पिषाभ्यज्यनग्नांगौरखरमारोप्यमहापथंव्राजयेत्पूताभवतीतिविज्ञायते राजन्यश्चेद्ब्राह्मणीमभिगच्छेच्छरपत्रैर्वेष्टयित्वाराजन्यमग्नौप्रास्येद्ब्राह्मण्याःशिरसिवपनंकारयित्वासर्पिषाभ्यज्यनग्नांश्वेतखरमारोप्यमहापथगमनंव्राजयेत् पूताभवतीतिविज्ञायते महापथोराजपथः पूताभवतिप्रायश्चित्तयोग्याभवतीत्यर्थः

और वैश्यके शरीरमे लालरंगकी कुशा वेष्टन कर्के अग्नि विषे सुटदेणा चाहिये और ब्राह्मणीका शिर मुनवा कर्के और उसको घृत मर्दन कर्के और सभवस्त्र उतारके और श्वेत खोते विषे चडा कर्के नगरतेवाहर निकाल देणा तद उह ब्राह्मणीपवित्र होजंदीहै ऐसा निश्चय जाके और इसी प्रकार जेकर क्षत्री ब्राह्मणी गमन करे तद उस क्षत्रीको कानेके पत्र देह विषे लपेटके अग्नि विषे सुट देणा और उस ब्राह्मणी कोभी श्वेत खोते ऊपर चडा कर्के वजार विषे फेरके नगरते बाहरनिकालदेणा किहाहै तद उह ब्राह्मणी पवित्र होंदीहै और इस स्थान विषे महापथनाम राजमार्गकाहै और पूता भवति इस कर्के प्रायश्चित्त योग्यहोंदीहै अर्थात् प्रथम उसब्राह्मणी कों ऐसें कर्के फेर प्रायश्चित्त उसतें करवाणा चाहिये ॥

और कण्व ऋषिजी का वाक्यहै कि जो ब्राह्मण क्षत्रय जातीकी जोगुरुस्त्रीहै तिसके साथ गमन कदाचित् करे तदउह ब्राह्मण अपनी शुद्धि वास्ते चांद्रायण और तप्तकृच्छ्र और अति कृच्छ्र करे तद पवित्रहुंदाहै १ और इसस्थान विषे ऐसा अभिप्रायहै किजेकर दोनो कीइ छा होवे तद तप्त कृच्छ्र करणा योग्यहै ॥ और जेकर तिसब्राह्मणी कर्के पुरुष उत्साहको प्राप्त होकर गमन करे तद तिसको अतिकृच्छ्र करणा किहाहै ॥ और जेकर तिसपुरुषकी इच्छा कर्के ब्राह्मणी कोमैथुन कीइछा होवे तद तिस स्त्रीको चांद्रायण करणा योग्यहै औ र एह व्यवस्था माधव पराशर जीने कीतीहै और वारं वार करणविषे पूर्वोक्तहि प्रायश्चित्त जाण ... अर्थात् जेकर बहुतवारी ब्राह्मणी साथजोगमनकरे उसके वास्ते पूर्वकिहा जोप्रायश्चित्तहै सो यीजाणणा औ... ...पराशर माधवजीनेकिहाहै तथेति कि ब्राह्मण ज्ञानते एकवारी वैश्याजो गुरुकी स्त्रीहै तिसकेसाथ गमन कर्के सो अपनी पवित्रता वास्त एक महीना.. तप्तकृ च्छ्र अथवा पराक व्रत और तैसेहि सांतपनकरे तद उह ब्राह्मण पवित्रहुंदाहै १ और इसस्थानविषे

कण्वः चांद्रायणंतप्तकृच्छ्रमतिकृच्छ्रंतथैवच सकृद्गत्वागुरोर्भार्य्यामज्ञाना त् क्षत्रियांद्विजः ॥ १ ॥ अत्रोभयोरिच्छातः प्रवृत्तौतप्तकृच्छ्रः तयाप्रोत्सा हितस्यातिकृच्छ्रःतेनप्रोत्साहितायाश्चांद्रायणंद्रष्टव्यमिति माधवपराशरः अभ्यासेतुपूर्वोक्तंज्ञेयम् ॥ तथासएव तप्तकृच्छ्रंपराकंचतथासांतपनंगुरोर्भा र्यांवैश्यांसकृद्गत्वाबुद्ध्यामासंचरेद्द्विजः ॥१॥ अत्राप्युभयोरिच्छातः प्रवृ त्तौतप्तकृच्छ्रं तयाप्रोत्साहितस्यसांतपनंआत्मनाप्रोत्साहितायाःपराकः । अभ्यासेलिंगाग्रच्छेदः॥ तथाचलौगाक्षिः॥ गुरोर्वैश्यांपुनर्यस्तु गत्वाचापि पुनःपुनः लिंगाग्रंछेदयित्वातु ततः शुद्ध्येतकिल्विषादिति अस्मादेवज्ञ पकादभ्यासेयदुक्तंतदेव प्रायश्चित्तं बहुशोभ्यासेपिद्रष्टव्यम् अबुद्धि सकृद्गमने

भी उनदोनोंकी इच्छाते गमन विषे प्रवृत्ति होयां तप्तकृच्छ्र जाणणा और तिसस्त्रीकी इछातें केगमनमे इछाहोवें तदतिस पुरुषको सांतपन व्रत जाणणा और जेकर पुरुष लोभदेकर्के का उत्साहकरा देवे तद उसस्थान विषे पराक व्रतजानणा और बहुत वारी ऐसे करणे उनके लिंगका अग्रभाग काट देणा किहाहै और इनास्त्रीयोंका प्रायश्चित स्त्री चारके प्रसंगविषे देखणा और तैसेहि लौगाक्षि ऋषि का वाक्यहै गुरो कि जो पुरुष एकवारी गुरु की वैश्यास्त्री के साथ गमन कर्के फेर दूसरी वारी गमन करे अ वा अपनी इछानुसार वारंवार गमन करे सोपुरुष जेकर अपना लिंगकाटकर सुटदेवे तद उस पापतें मुक्तहुंदाहै इति । और इसकारणतेंहि जो प्रायश्चित्त अभ्यास विषे किहाहै सोयी प्रायश्चित्त बहुत अभ्यास विषे जाणणा अर्थात् जोथोडे अभ्यास विषे प्रायश्चित्त है सोयी बहुते अभ्यास विषे दिखायाहै एह सर्वत्र निश्चय कीताहैं ॥

और ज्ञानते विना एक वारी गमन विषे प्रजापति जीका वाक्यहै पंचेति कि ब्राह्मण ज्ञानतें विना एक वारी वैश्याजो गुरुकी स्त्रीहै तिसके साथ गमन कर्के पांच ५ रात्रि भोजन नकरे अथवा सात ७ अथवा आठ ८ रात्रि कुछ भीन भोजन करे अर्थात् जो ब्राह्मण अज्ञानते गुरु की वैश्या स्त्री गमन एक वार करे सो पांच ५ दिन सात ७ दिन आठ ८ दिन निरा हार कर्के पवित्र हुंदाहै । १ । और तैसेहि इस स्थानविषे भी दोनोस्त्री पुरुषकी इछाते ऐसे व्यभि चार विषे सात ७ रात्रि उपवास करणा किहाहै और जेकर स्त्री की इछा कर्के पुरुषको इछा होवे तद पांच ५ रात्रि निरा हार व्रत जाणणा और जेकर पुरुषकी इछा कर्के स्त्रीको भी इछा होजावे तद आठ ८ रात्रि उपवास करणा योग्यहै और जेकर अभ्यास करे तद मरणपर्यंत ब्रह्मचर्य करणा योग्यहै और यम जीने किहाहै रेत इति कि कुमारी कन्या विषे वीर्य त्याग कीतियां और चांडाली जो स्त्रीहै तिनों विषे अथवा अंत्यजातिकी जो स्त्रीहैं अथवा अपने कुलकी जो स्त्रीहैं अथवा पुत्रकी जो स्त्रीहैं इनमे विर्य पातकीतियां होयां प्राण त्यागहि क

प्रजापतिः॥ पंचरात्रंतुनाश्नीयात्सप्ताष्टौवातथैवचदैश्यांभार्यांगुरोर्गत्वासकृदज्ञानतोद्विजः १ इत्यत्राप्युभयोरिच्छातःसप्तरात्रंतयाप्रोत्साहितस्यपंचरात्रम् आत्मनाप्रोत्साहितायाश्चाष्टरात्रम् अभ्यासेत्वामरणाद्ब्रह्मचर्य्यरक्षणम् यमः।रेतःसेकेकुमारीषुचंडालीष्वंत्यजातिषु सपिंडापत्यदारेषुप्राणत्यागोविधीयते १ कुमार्यादिषुकामतोभ्यासे अपत्यदारेष्वकामतःसकृद्गमनेएतत् यत्तुवृहद्यमेनोक्तम् चांडालींपुष्कसींगत्वास्नुषांचभगिनींसखीं मातापित्रोःस्वसारंचनिक्षिप्तांशरणागताम्१ मातुलानींप्रव्राजितांस्वगोत्रांनृपयोषितम् शिष्यभार्य्यांगुरोर्भार्य्यांगत्वाचांद्रायणंचरेदिति ॥ २ ॥

रकिहाहै १ । अर्थात् जिसका विवाह नहि हूया उस कन्याके साथ और चांडालीके और नीचकी जो स्त्रीहै तिसके साथ और अपने गोत्रकी जो स्त्रीहै तिसके साथ और आपनी स्नुषाके साथ जो पुरुष गमन करे सो पुरुष मरणें कर्केहि पवित्र हुंदाहै और एह प्रायश्चित्त कामनातेकुमार्यादि गमनके अभ्यासविषे जाणणा और कामनाते एकवार पुत्रस्त्री गमन औरविषेएह प्रायश्चित्तजानणा औरवृहत्यमजीनेऐसे जोकिहाहै किचांडालीमिति कि चांडाल की स्त्रीऔर पुष्कसकी स्त्री इनकेसाथ गमनकर्के अथवा अपने पुत्रकी स्त्रीऔर अपनीभगिनी अथिवाअपनी सेवाकरणवाली और माताकीभगिनी मास्सी और पिताकीभगिनीभूया और जो स्त्री अपने पास किसी और पुरुषने अमानत रूप धरीहो किसी कारणते और किसी भयते शरणको जो स्त्री प्राप्त होवे॥ १ ॥ और अपने मामेकी स्त्री और जिसस्त्रीने संन्यासधारण कीताहोवे और अपने गोत्रकी जो स्त्रीहै और राजाकी स्त्री और अपने शिष्यकी स्त्री और अपनेगुरुकी स्त्री इनके साथ गमन कर्के चांद्रायण व्रत करे एह वाक्य जोहै ॥ २ ॥

और एह जो अंगिराजीकावचनहै पतितामितिकि जोस्त्री पतितहोजावे। और नीचकीजो स्त्रीहै इनके साथ गमनकर्के अथवा इनके साथ एकत्र भोजन कर्के अथवा इनको अंगीका र कर्के एक महीना उपवासकरे अथवा अपनी शुद्धिवास्ते चांद्रायणकरे। और एह दोनोवा क्य गुरु तल्पग प्रायश्चित्तके अतिदेशविषयमेकामनाते गमनविषे प्रवृत्त पुरुषकोवीर्य पाततें पू र्वनिवृत्तिविषें जानणे जोग्यहै अर्थात् जोपुरुष गमनकरतियां वीर्यत्यागते विना पहिलेहि हट जावे उसवास्ते एह प्रायश्चित्तजानणा ॥ और अंत्यजाके सात ७ भेद अंगिराजीने दिखायेहैं कि एक १चांडाल और२श्वपच और३क्षत्ता४सूत५वेदेह... यागवएहसात ७ अंत्यज ...कहीहै और धोबी चमियार इत्यादि ...अंत्यजानी इसजगानहिहै किस वास्तेतिनरजका दि कोप्रायश्चित्त ... ...कारणते और तैसेहि लिखयाहैचांडालेतिकि चांडाल और

यत्त्वांगिरोवचनम् ॥ पतितांत्यस्त्रियोगत्वाभुक्त्वाचप्रतिगृह्यचमासोपवासंकु र्वीतचांद्रायणमथापिवेति तदुभयमपिगुरुतल्पातिदेशविषयेषुकामतः प्रवृ त्तस्यरेतःसेकादर्वाङ्गनिवृत्तौवोढव्यम् अंत्यस्त्रियोऽत्यजास्ताश्च सप्तांगिर सादर्शितायथा। चांडालः श्वपचःक्षत्तासूतोवैदेहिकस्तथा मागधायोगवौ चैवसप्तैतेंत्यावसायिनइति नतुरजकश्चर्मकारश्चेत्यादिप्रतिपादिताः तेषुल घुप्रायश्चित्तस्योक्तत्वात् तथा चांडालांत्यस्त्रियंगत्वाभुक्त्वाचप्रतिगृह्यच पतत्यज्ञानतोविप्रोज्ञानात्साम्यंतुगच्छतीति चांडालादिसाम्यंप्रतिपादयता मनुनापि कामतोऽत्यंताभ्यासेमरणांतिकदर्शितम्॥तथाह्यज्ञानतश्चांडालीग मनाभ्यासेपतत्यतःपतितप्रायश्चित्तंद्वादशवार्षिकंकुर्यात् कामतोऽत्यंता भ्यासेचांडालैःसाम्यंगच्छत्यतोद्वादशवर्षिकाधिकंमरणांतिकंकुर्यात् एतद्ब हुकालाभ्यासविषयं एकरात्राभ्यासेतुवर्षत्रयम्

अंत्यज इनकीस्त्री साथ गमन कर्के अथवा भोजनकर्के और अंगीकार कर्के पुरुषपतितहोजा. जेकरअज्ञानतेकरे तद और जेकरजानकर्के करे तद चांडालादि केसमान होजाताहै औ... सप्रकार चांडालादिकके समान प्रति पादन करते जोमनुजीहैं तिनोनेभी कामनाते अत्यंत भ्यासविषें मरणांतहि प्रायश्चित्त दिखायाहैं ॥ और तैसेहि ज्ञानते विना चांडाली गमनके भ्यासविषें पतितहोजंदाहै इसकारणते पतितको जोप्रायश्चित्तहै बारां १२ वर्षतत तिसकोकरे और कामनाते बहुत अभ्यासविषे जोपुरुष चांडालोंकेसमानहोजावे सो पुरुष द्वादश वर्षते अ धिक जो मरणां तिकहै तिसकोकरे ॥ और एहबहुत चिर काल अभ्यास विषयहै अर्थात् जो चांडाली गमन का बहुत चिर अभ्यास करतारहै । उसके वास्ते एह प्रायश्चित्तकरणाकिहाहै। और एकरात्रि अभ्यासविषे तिन्नवर्षकाव्रतकरणा किहाहै ॥

और जेसे मनु जीने किहाहै यदिति कि जेकर ब्राह्मण एक रात्रि भी वृषलीका सेवन कर तद उह ब्राह्मण भिक्षाका अन्न भोजन करताहोया और नित्यं प्रति गायत्री जप करता होया तिन ३ वर्ष कर्के पाप को दूर करताहै ॥ १ ॥ और इस स्थान विषे वृषली चांडाली का नामहै ॥ सोयी लिखयाहै कि चांडाली और वंधकी क्या कि जिसकी कभी ऋतु दर्शन नहि होता २ और वेश्या ३ उौर जो कन्या भाव विषे ऋतु वाली होतीहै ४ और जो अपने गोत्रकी विवाही होवे एह ५ पांच वृषली कहीहैं १ किस वास्ते कि स्मृत्यंतर विषे वृषली शब्दका प्रयोग दर्शनते ॥ और वंधकी व्यभिचारिणी का भी नामहै ।(प्रश्न) । पूर्वोक्तमनुवचनविषे एक रात्रपद कर्के किस तहीं अभ्यासका अर्थ प्रतीत है।पा(उत्तर) एकरात्रेण इस जगा अत्यंत

यथाहमनुः । यत्करोत्येकरात्रेणवृषलीसेवनाद्द्विजः तद्भैक्ष्यभुग्जपन्नित्यं त्रिभिर्वर्षैर्व्यपोहतीति १ एकरात्रेणएकरात्राभ्यासेनेत्यर्थः ।अत्रवृषलीशब्दे नचांडाल्यभिधीयते । चांडालीवंधकीवेश्यारजःस्थायाचकन्यका ऊढाया चसगोत्रास्याद्वृषल्यः पंचकीर्तिता इति स्मृत्यंतरे वृषलीशब्दप्रयोगदर्शनात् । बंधकीस्वैरिणी । कथंपुनरत्राभ्यासावगमः । उच्यते । यत्करोत्येकरात्रेणेत्यत्यंतसंयोगापवर्गवाचिन्यास्तृतीयायादर्शनात् । एकरात्रेण चात्यंतसंयोगोगमनस्याभ्यासंविनानुपपन्न इति गमनाभ्यासोवगम्यते।गुरुतल्पगप्रायश्चित्तानुवृत्तौहारीतः । एवमेवगुरुपितृव्यस्त्रीगमः ।कन्यासगोत्रास्वस्त्रेयागमनेचान्द्रायणंवा ॥ साभ्यासे मतिपूर्वकेपितृव्यादिस्त्रीगमने गुरुतल्पगप्रायश्चित्तमन्यथाचान्द्रायणम् ॥ गुरुतल्पगप्रायश्चित्तमभिधायाहवसिष्ठः ॥ आचार्यपुत्रशिष्यभार्यासुचैवम् ॥ ऋतुः रेतःसेकःसुयोनिषुगोषुशिष्यांगनासुच सखिभार्यासुतस्त्रीषुगमनाद्गुरुतल्पगः १ सुशोभनाअक्षतायोनीयासांतासुकन्यासु इतिगुरुतल्पगप्रायश्चित्तम् १३ ●

अत्यंत के अर्थ विषें तृतीया विभक्ति है सो अर्थ विना अभ्याससे नहि हुंदा इस कर्के अभ्यास दा अर्थ जानणा अर्थात् एक रात्र विषे बहुतवार गमन करणा ऐसा अर्थहै ॥ और गुरुतल्प प्रायश्चित्त प्रसंग विषे हारीत जीने किहाहै कि ऐसेहि गुरु पिता और तिसका यो भा तिसकी स्त्री विषें गमनका प्रायश्चित्त है । और कन्या और अपने गोत्रकी स्त्री और भगिनीकी कन्या इनके गमन विषे चांद्रायण करणा किहाहै ।और गुरुतल्पग प्रायश्चित्तप्रसंगविषें वासिष्ठ जीने किहाहे कि आचार्य पुत्र शिष्य इनकी स्त्री विषें भी ऐसेहि जानणा ॥ और ऋतु जीने किहाहे कि सुयोनी जो कन्याहै तिस विषें वीर्य सिंचन करे और जो गौय विषे और शिष्य स्त्रीयां विषें और मित्रकी स्त्री विषें गमन करे सो गुरुतल्पग होताहै १ एहगुरुतल्पगप्रायश्चित्त समाप्तहोया ॥ एह त्रयोदशमा प्रकरण पूराहोया ॥ ● ॥ १३

अव पतितसंसर्गिकों प्रायश्चित्त विधान कीताहै तिस विषे भी महापातकीका यो संसर्ग है तिसकोहि पापका कारण भात्र होताहै और पातकीके संसर्गको पापका कारण भाव नहि होता अर्थात् जो पुरुष महापातकीका संसर्गकरताहै उसीकोहि महापातक हुंदाहै। सोयी मनुजीने किहाहै कि ब्राह्मणहत्या १ सुरापान २ स्तेय ३ गुरुस्त्रीगमन ४ एह महापातकहैं और पांचवां इनके साथ संसर्ग ५ है ॥ इस कारणते महापातकीकाहि संसर्ग महापातक किहाहै इस वास्ते मनुजीने (तैःसह)इस प्रकार कथन करणेते महापातकीके संसर्गकाहि प्रायश्चित्त दिखायाहै।सोयी जैसें लिखयाहै एषामिति कि एह जो ब्रह्महत्यादि चार पाप करण वालेहैं तिनका तो प्रायश्चित्त पूर्व किहाहै अवतिनोंके साथ जो संसर्गीहै तिनकों एह प्रायश्चित्त श्रवणकर १

अथपतितसंसर्गिणः प्रायश्चित्तविधानम् ॥ तत्रपापहेतुत्वंमहापातकिसंसर्गस्यैव न पातक्यन्तरसंसर्गस्य तदाहमनुः। ब्रह्महत्येत्यादिसंसर्गश्चापि तैःसहेतितैःसहेतिनिर्देशात् मनुना। प्रायश्चित्तमपिमहापातकिसंसर्गिण एवानिर्दिष्टम्। यथा। एषांपापकृतामुक्ताचतुर्णामपिनिष्कृतिः पतितैःसंप्रयुक्तानामिमाःशृणुतनिष्कृतीः १ योयेनपतितेनैषांसंसर्गंयातिमानवः सतस्यैवव्रतंकुर्यात्तत्संसर्गविशुद्धये २ एषांब्रह्महादिमहापापिनांचतुर्णामपि निष्कृतिःप्रायश्चित्तमुक्ता तैःसहव्यवहर्तॄणामिमावक्ष्यमाणानिष्कृतीः प्रायश्चित्तानिशृणुत१ एषांब्रह्महादिमहापापिनांमध्येयेनमहापापिनाब्रह्महाद्यन्यतमेनपतितेनसंसर्गंयातितस्यैवव्रतरूपंप्रायश्चित्तंकुर्यात् नमरणांतिकमित्यर्थः ॥

और जो पुरुष इनके मध्य विषे जिसके साथ संसर्गको प्राप्तहोवे सो पुरुष संसर्गकी विशुद्धि वास्ते तिस पापीको जो व्रत किहाहै ओहि व्रतकरे जैसेंहि जिस पुरुषने ब्रह्महत्या कीती उसकों ब्रह्महत्या पाप दूरकरण वास्ते जो प्रायश्चित्त करणा किहाहै सोयी जो पुरुष ब्रह्महत्या करण वालेका संसर्ग करताहै उसकोभी किहाहै और इसी प्रकार सुरापान करणे वालेका संसर्गी सुरापान प्रायश्चित्त करे २ और एह जो ब्रह्महादि पापीहैं तिनके मध्य विषे जिसे महापातकीके साथ अथवा ब्रह्महादिते और किसी पतितके साथ संसर्गको प्राप्त होवे अर्थात् जिस पापीके साथ भोजनादि व्यवहार करे सो पुरुष तिस पापीको जो व्रतरूप प्रायश्चित्त किहाहै सो तिसी प्रायश्चित्तकों करें और प्राणांत प्रायश्चित्त न करें एह अभिप्राय है

तदभी तिसके संसर्गीको बारां १२ वर्षका जो ब्रह्महत्यादि व्रतहै सोयी एक पादहीन करणा योग्यहै॥इसमे प्रमाण कहतेहैं यइति और जो पुरुष जिस पापीके साथ एक वर्ष संसर्ग करताहे सोभी तिसकी समानताको प्राप्त होजंदाहै जैसे कि जो पुरुष ब्रह्महत्या करण वाले पुरुष साथ एक वर्ष भोजनादि व्यवहारकरे सोभी ब्रह्महत्यारेके तुल्य जान्नणा ॥ और इस कारणते संसर्गी तिस तिसका पादोन व्रत करे ऐसे व्यासदेव जीका वाक्यहे तिसके स्मरणते अर्थात् व्यास जीनें किहाहे ।कि जो पुरुष जिस पापीके साथ संसर्ग करताहै तिसकोभी जो प्रायश्चित्त हुंदाहै ओहि व्रत पादोन करणा योग्यहे २ और इसस्थानाविषें यद्यपि प्राणांत प्रायश्चित्त विषें पादोन नहिहोसकता तद भी मरणांतके स्थान जो चवीस २४ वर्षका व्रतहै तिसका पादोन कथा अठारां १८ वर्ष करणा योग्यहै ॥ और [illegible] प्रायश्चित्त महापातकी

तद्व्रतमपिसंसर्गिणः क्रियमाणंब्रह्महाद्वादशसमाइत्यादिकंपादहीनंकर्त्तव्यं योयेनसंसृजेद्वर्षंसोपितत्समतामियात् पादन्यूनंचरेत्सोपितस्यतस्यव्रतंद्विज इतिव्यासस्मरणात्।२।अत्र यद्यपिमरणे पादोनत्वंनसंभवतितथापि मरणे वैकल्पिक चतुर्विंशतिवार्षिकंव्रतंपादोनंकर्त्तव्यमिति महापातकिव्यतिरिक्तेनयःसंसृष्टस्तद्विषयमेतदित्यपरार्कः॥ प्रायश्चित्तीयतांप्राप्यदैवात्पूर्वकृतेनवा नसंसर्गंव्रजेत्सद्भिःप्रायश्चित्तेऽकृतेद्विजः१ द्विजोदैवात्पूर्वकृतेनपापेनप्रायश्चित्तीयतांप्रायश्चित्तयोग्यतांप्राप्याऽकृतेप्रायश्चित्तेसद्भिस्सहसंसर्गंनव्रजेदित्यर्थः एनस्विभिरनिर्णिक्तैर्नार्थंकचित्समाचरेत् कृतनिर्णेजनांश्चैव नजुगुप्सेत्कर्हिचिदिति मनुना सामान्यतःपापिष्ठसंसर्गस्यानिषिद्धत्वात् अनिषिद्धाचरणात्पापोत्पत्तिः पापिष्ठसंसर्गएव दर्शिता २

संयोगमें [illegible] कीके साथ जो पुरुष संसर्ग करे तिसके विषयमेहे ऐसा अपरार्क विषें लिखयाहै सका प्रायश्चित्त बोधक स्मृति कहतेहैं प्रायइति और जो ब्राह्मण दैव संयोगते अथवा पूर्वल्पम के पाप कर्के प्रायश्चित्ती भावको प्राप्तहुंदाहै सो प्रायश्चित्त करणेते विना महात्माके साथ ता [illegible]र्गको नहि करे इस वचनते अवश्य ब्राह्मणको प्रायश्चित्त करणाचाहियें१ औरभी लिखयाहै नमस्विभिरिति कि जिनों पापयोंने पापका कुछ निर्णय नहि कीता तिनकेसाथ कुछभी व्यवहार न करे और जिनोंने भलीप्रकार निर्णय कीताहे तिनकी निंदा कदाचित् नहि करणेयोग्य २ इस प्रकार मनुजीने सामान्यपापिष्ठका संसर्ग निषेध कीताहै॥और निषिद्धकर्म करणेते पापकी उत्पत्ति होतीहै इस कारणतेभी सामान्य पापीका संसर्गहि दिखायाहै

श्रौर जो पुरुष जिस पापीके साथ संसर्ग करताहै इस सामान्य निर्देशते मनुजीने प्रायश्चित्त भी सामान्यता करके हि कथन कीताहै । श्रौर (चतुर्णा) एह जो किहाहै इसकर्के हिंसा करणी १ श्रौर अभक्ष्य वस्तुका भक्षण करणा २ श्रौर चोरी करणी ३ श्रौर अगम्या गमन करणा ४ एह जो चार प्रकारहैं इनका ग्रहण कीताहै । अर्थात् पूर्व मनु जीने जो किहाहै चारोंका प्रायश्चित्त सो कथन कीताहै । अब संसर्गका प्रायश्चित्त श्रवणकर १ ॥ इस स्थान विषे च... तः... करके ब्रह्महत्यादि ४ चारोका नहि ग्रहण । श्रौर हिंसादि चारों का ग्रहण सामा... जानणा ॥ श्रौर एह कुछ ब्रह्म हत्यादि विशेष अर्थ वास्ते ... ॥ किस वास्ते कि ... गमन तथापि पूर्व मनु जीने कथन ... भी एहहै कि हिंसा अभक्ष्य भक्षण चोरी ... होंदाहै ॥ श्रौर भी लिखयाहै कि जिस स्मृ... का।

योयेनपतितेनेति सामान्यनिर्देशान्मनुनाप्रायश्चित्तमपिसामान्येनदर्शितम् ॥ चतुर्णामितिहिंसाभक्ष्यभक्षणस्तेयागम्यागमनाख्यप्रकारचतुष्टयपरं ॥ नतुब्रह्महत्यादिविशेषार्थम् ॥ लघीयसामपिहिंसाभक्ष्यभक्षणस्तेयागम्यागमनादीनांमनुनापूर्वमुक्तत्वात् ॥ अपिच संसर्गपापस्मृत्याश्रुतिः कल्प्यमाना पापिष्ठसंसर्गीपापीभवतीतिसामान्यश्रुतिरेवकल्पनीया लाघवात् । होलिकाद्यधिकरणन्यायएवात्रजागर्ति ॥ रंगक्षेपणापशब्दलापादिहोलिकाचरणं हिसर्वसाधारणम् ॥ विष्णुनापि सामान्येनैवस्मृतम् ॥ यश्चयेन पापात्मना सह संसृज्येत सतस्यैव प्रायश्चित्तंकुर्यात् ॥

ति विषे संसर्ग पाप कथन कीताहै उस स्मृति करके श्रुति कल्पना कीतीहै ॥ क्या कि पापिष्ठ पुरुष के साथ संसर्ग करणे वाला पुरुष भी पापी हो जंदाहै ॥ इस प्रकार सामान्य श्रुति हि कल्पना करणे योग्यहै क्यों कि बहुत कल्पनाते अर्थ वाली थोडी ह कल्पना श्रेष्ट होंदीहै ॥ श्रौर इस सामान्य ग्रहण विषे होलिका अधिकरण न्याय मालूम होंताहै कि जैसे होलिका विषे रंग डारणा श्रौर गारि देणी एह होलीका आचरण सभ लोकों को साधारणहै ॥ इस प्रकार इस स्थान विषे भी विशेष कल्पनाते सामान्य कल्पना श्रेष्ठहै श्रौर ऐसे हि विष्णु जीने भी सामान्यता करके हि किहाहै कि जो पुरुष जिस पापी के साथ संयुक्त होवे अर्थात् संसर्ग करे सो तिसका हि प्रायश्चित्त करे ॥

और गौतम जीभी कहतेहैं कि ब्रह्महा १ सुरापीणेवाला २ गुरुस्त्रीगमनकरणेवाला और माता पिताके योनि संबंधविषे गमनकरणेवाला और चोर और अभक्ष्यभक्षक और नास्तिक और निंदित कर्मकरणेवाला और पतितकेसाथसंबंधकरणेवाला और जोपतित नाहिहै उसका त्याग करणेवाला एह संपूर्ण पतितकहेहैं॥और जोपातकीकेसाथ संयोग करके एकवर्ष तिसके समान आचरण करतेहैं ॥ अत्रेति इसस्थानविषे भी पतितात्यागि इससामान्य वचनकरके दिखातेहैं॥और तैश्चाब्दंसमाचरन् क्या तिन पापीयोंसाथ एकवर्षसमान आचरणकरतियां भी इसवाक्यते दूसरे पातकीके संसर्गीयोंकोभी पतितभाव किहाहै(प्रश्नः)किएकग्रामविषे निवासियोंकोंभी पतित भाव होणाचाहिये(उत्तर)एसानहिहै किएकग्राम निवास विषे विशेष संसर्गके अभावहोणेते अ

गौत्तमोप्याह ब्रह्महसुरापगुरुतल्पगमातृपितृयोनिसंबद्धागस्तेनाभक्ष्यभक्षकनास्तिक निंदितकर्माभ्यासि पतितात्याग्यपतितत्यागिनः पतिताः पातकसंयोजकास्तैश्चाब्दंसमाचरन्॥अत्रपतितात्यागीतिसामान्येनैव दर्शयति तैश्चाब्दंसमाचरन्निति द्वितीयसंसार्गिणामपि पातितत्वमुक्तम् ॥नन्वेकग्रामनिवास्यादीनामपि पतितत्वं स्यादितिचेन्न संसर्गविशेषाणामेव निषेधात् । निषिद्धपतितसंसर्गात्पततीतिश्रुतिः कल्प्येति शूलपाणिर्व्याचख्यौ ॥ अत्रापरार्कः एभिस्तुसंवसे योवैवत्सरंसोपितत्समः॥एषांब्रह्महादीनांमध्येएकेनापियःसंवत्सरंयावत्संवसेत्संव्यवहरेत् सोपिप्रायश्चित्ततस्तत्समःयःप्रायश्चित्तविशेषस्तस्यपापिनः सएवतत्संसर्गिणोपिभवति नकेवलंमहापातकिसंयोगीतत्समः किंत्वतिपातकिपातक्युपपातक्यादीनांमध्येयोयेनसहसंसर्गंकरोतिसोपितत्समइत्यर्थः ॥

एकग्रामनिवासरूप संसर्गको नानिषिद्धहोनेते ॥ सोकहते हैं निषिद्धेति और निषिद्ध पतित संसर्गते पतितहोजाताहै एह श्रुतिकल्पना करणे योग्यहै एह शूलपाणीजीने कथनकीताहै ॥ अपरार्क ग्रंथविषे लिखयाहै एभिरिति कि एह जो पूर्वब्रह्महादिकहैं तिनके मध्यविषे एक जोपुरुष वर्षप्रमाणनिवासकरे किव्यवहारकरताहै सोभी प्रायश्चित्तते तिसके समानहोजं और जो प्रायश्चित्तविशेष तिस पापीको किहाहै सोयी प्रायश्चित्त तिसके संसर्गीको हुंदाहै और इसस्थानविषे केवल महापातकीका संसर्गीहि महापातकी नाहिहुंदा किंतु अतिपातकी पातकीउपपातकी इनके मध्यविषे भी जो पुरुष जिस पातकीके साथ संसर्ग करे सोभी तिसके समान किहाहै ॥

पातित्यमिति और पतितहोनेका कारण और तिसका समभाव पहलपूर्वकहिकथन कीताहै ॥ और तिसमेंभी जानकर्के वर्षप्रमाण अत्यंतसंसर्गविषें तिसी प्रायश्चित्तकी प्राप्ति होतीहै सोयीदेवल जीनेंभीकिहाहै पतितेति जोपुरुष एक वर्ष पतितके साथ निवासकरे जानातिया सो तिसके साथ मिलयाहोया वर्षके अंतविषें आपभी पतितहोजानाहै ॥ १ ॥ और संसर्गके कारण वृहस्पति जीनेकिहहे एकेति एकशय्या ऊपर शयन १ एक आसनमेंस्थिति २ एकपंक्तिमेंभोजन ३ एकपात्रविषें भिन्न भिन्न पकेहोये अन्नकाभोजन ४ भिन्न २ पकेहोये अन्नको एकपात्रविषें आपसमें एकठा करणा अथवा तिस अन्नका भक्षण करणा ५ पतितको यज्ञकराणा अथवा आपतित कुर्के अपनायज्ञकरणा ६ अध्यापनामितिपतितकोवेद पढाणा अथवा पतितते आपवेद

पातित्यंतुतत्समत्वंप्रागेवोक्तम्॥जानतश्चसंवत्सरं यावदत्यंतसंसर्गे तत्प्राय श्चित्तप्राप्तिः॥ देवलोप्याह पतितेनसहोपित्वाजानन्संवत्सरंनरः मिश्रित स्तेनसोब्दांतेस्वयंचपतितोभवेत्१ संसर्गहेतून्बृहस्पतिराह एकशय्यासने पंक्तिभांडपक्वान्नमिश्रणम् याजनाध्यापनेयोनंतथाचसहभोजनम् नवधा संकरः प्रोक्तानकर्त्तव्योऽ धमैस्सहेति १ एकस्यांशय्यायांसहावस्थानम्१ एकस्मिन्नेवासने २ तथाएकस्यांपंक्तौभोजनादिना ३ एकस्मिन्नेवभां डेपृथक्पक्वयोरप्यन्नयोर्भोजनम् एकभांडपचनंवा ४ पृथक्पक्वयोरप्यन्न योः परस्परंमिश्रतातदीयान्नभोजनंवा ५ याजनंपतितस्यस्वस्यवातेन ६ अध्यापनंपतितस्यस्वस्यवातेन ७ योनंपतितायकन्यादानंतस्माद्वातत्प रिग्रहः ८ सहभोजनमेकामत्रभोजनम् ९ ॥ देवलः ॥ संलापस्पर्शनिःश्व ससहयानासनाशनात्

दपढना ७ पतितको अपनी कन्यादेणी अथवा पतितकी कन्या आप ग्रहणकरणी ८ पतितके साथ एकपात्र विषे भोजनकरणा ९ इसप्रकार एह नव ९ काम पतितहोनेका कारण होवे अर्थात् जो पुरुष इनके मध्यविषें एकभी पतितकेसाथ करताहै सोभीपतितहोजाताहै १॥इस हेतु पतितकेसाथ इनमसें कोईकाम नाहि करणायोग्य॥ और देवलजीने किहाहै संलापेति कि पतितके साथ जोसंलापकरणा क्या वार्त्ताकरणी और पापीकेअंगका स्पर्शकरणा और पतितका श्वासक्या मुखवायुका संयोगहोणा और सहयानक्या पतितके साथ एक अश्वादि असवारी ऊपर चढना और पतितके साथ एक आसनऊपर स्थितहोणा और पतितकसाथ अशन क्या भोजन करणा क्या एकपात्र विषे एक आसन ऊपर स्थितहोकर भोजनकरणा ॥

और पतितको यज्ञकराणा और याजनशब्द कर्के इस स्थान विषे सोम यज्ञ काहि ग्रहण कीताहै और पतितको वेद पडाना । और पतितके साथ योनि संबंध करणा क्या पतितको अपनी कन्या विवाह करदेणी अथवा पतितकी कन्या आपग्रहणकरणी ॥ इतने काम पतितके साथ करणेते पुरुषों कोभी पाप प्राप्तहोताहै ॥ १ इसमैं और विशेषकहतेहैं याजनमिति और यज्ञ कराणा और योनि संबंध करणा और पतितको विद्या पडाणी अथवा पतितते आपविद्या पडणी और पतितके साथ भोजन करणा और पतितकेसाथ इतने काम कर्के शीघ्र पतित होताहै इसमै कुछसंशय नहिहै ॥ २ और इसस्थान विषे याजनादि एक२ पतित होनेका कारणहै किसवास्ताकि इन विषे समास नहिकीताहै इसकारणते और संलापादि एह समासांत प

याजनाध्यापनाद्यौनात्पापंसंक्रमतेनृणाम् १ याजनयोनिसंबंधंस्वाध्यायंसहभोजनम् कृत्वासद्यःपतत्येवपतितेननसंशयः २ अत्रयाजनाद्येकेकं पातित्यहेतुः असमासनिर्देशात् । संलापादितुसमुदितम् अतएवसंलापस्पर्शनिःश्वाससहयानासनाशनादितिद्वंद्वनिर्देशः ॥ संलापःसंभाषणंस्पर्शो गात्रसंमर्दः निःश्वासःपतितमुखवायुसंपर्कः सहयानमेकतुरगाद्यारोहणम् याजनमत्रसोमयागविषयं पतिताय कन्यादानंतस्माच्चकन्यायाआदानंयोनिसंबंधः ॥ स्वाध्यायग्रहणेनपतितस्याध्यापनंत्वंस्वस्यवातेनाध्यापकत्वं चात्रविवक्षितम् । तथासहभोजनमेकस्मिन्युगपद्भोजनम् एतत्प्रत्येकंसद्य एवंससर्गिणःपातित्यहेतुः ॥ मनुः ॥ संवत्सरेणपततिपतितेनसहाचरन् याजनाध्यापनाद्यौनान्नतुयानासनाशनात् १ अस्यार्थः ॥ पतितेनसह संसर्गमाचरन् संवत्सरेणपतति संसर्गश्चैकयानगमनैकासनोपवेशनैकपंक्तिभोजनरूपोबोध्यः

यानएक स कारणते संलाप स्पर्श निःश्वास एक असवारी एकत्र भोजन इन विषे द्वंद्व समास दिवट्ठांगमैं है इसकारणते संलापादि सभ होवें तद पतित होनेके कारण होतेहैं ॥ और याजनादि मैं एम २ पतित होनेका कारणहै और एह एक २ संसर्गीको शीघ्र पातित्य हेतुहै अर्थात् संसर्ग पतितके साथ इतने काम करणे कर्के पतित होजाताहै। और मनु जीने किहाहै संवत्सरए कि पतितके साथ संसर्ग करतियां एक वर्ष कर्के पतित हुंदाहै अर्थात् जो पुरुष पतितके साथ एक वर्ष संसर्ग करताहै सोभी पतित होजंदाहै और संसर्ग एह किहाहै कि पतितकेसाथ एक असवारी ऊपर चडना और पतितके साथ मार्ग विषे गमन करणा और एक आसन ऊपर स्थित होना और एक पंक्ति विषे भोजन करणा एह संसर्ग जानणा १

और याजन अध्यापन योनिसंबंधरूप नहि संसर्ग जाणणा ॥ क्यों कि तिसको शीघ्र पातित्यका रण होणेते ॥ और याजन क्या पतितको यज्ञकराणा ॥ और अध्यापन क्या यज्ञोपवीतसंस्कार कर्के गायत्रीमंत्रका श्रवण कराणा ॥ और योनिसंबंध क्या पतितको अपनी कन्यादेणी ॥ अथवा पतितकी कन्या ग्रहण करणी ॥ और तैसेहि इनके शीघ्रपातित्य विषे विष्णु जीनेकि हाहै कि एक वर्ष पर्यंत पतितके साथ यान आसन भोजन करदा होया पतितहोजंदाहै ॥ और जेकर कन्याका लैना देणा ऐसा संसर्ग करे तद शीघ्रहि पतित होताहै ॥ १ ॥ और बौधायनजीनेभी किहाहै कि पतितके साथ आचार करतियां वर्ष कर्के पतित हुंदाहै और याजन अध्यापन योनिसंबंध भोजन इनते शीघ्र पतित होजंदाहै १ ॥ और शयन आसन इनते शी

नतुयाजनध्यापनयौनरूपः तस्य तु सद्यः पातित्यहेतुत्वात् ॥ याजनंयज्ञकारयितृत्वम् ॥ अध्यापनमुपनयनपूर्वकंसावित्रीश्रावणं ॥ यौनंकन्यादानादानादिरूपम् ॥ तथाचैषांसद्यःपातित्येविष्णुः ॥ आसंवत्सरात्पततिपतितेनसहाचरन् सहयानासनाभ्यासंयौनात्तुसद्यएवहि १ बौधायनोपि संवत्सरेणपततिपतितेनसहाचरन् याजनाध्यापनाद्यौनात्सद्योनुशयनासनादिति १ शनादित्यपिपाठः अत्रकेचित् याजनादीनांत्रयाणांसंवत्सरेणपातित्यहेतुत्वं सहासनादीनांलघुत्वात् नसंवत्सरेणपातः किंतुतस्मादूर्ध्वमभ्यासेन विष्ण्वादिस्मरणेपुसद्यःपदंद्विवर्षाद्यपेक्षयाल्पत्वात्संवत्सरपरमितिव्याचक्षते ॥ प्रायश्चित्तमयूखेत्वयंसंसर्गस्त्रिविधःउत्तमोमध्यमः कनीयांश्च३ तत्राद्यश्चतुर्द्धायौनस्रौवमौखैकपात्रभोजनभेदात् मध्योप्येकयानासनशय्यैकपांक्तिभोजनभेदाच्चतुर्द्धा

घ्र नहि किंतु वर्ष कर्के हि पतित हुंदाहै ऐसाअर्थहै और इस विषे कोयी ऐसा कहतेहैं कि याजनादि तीनकोहि पतितके साथ आचरणकरतियां एकवर्ष कर्के पतित हुंदाहै ॥ और पतितके साथ आसनादिको अल्प होनेते वर्षकर्के नहि पतित हुंदाहै किंतु वर्षते अधिक अभ्यास कर्के पतित हुंदाहै ॥ और विष्णु स्मृति विषे सद्यः शब्द दोवर्षादि अपेक्षा कर्के अल्प होनेते वर्षपरहै ॥ और प्रायश्चित्त मयूखविषे भी संसर्ग तीन ३ प्रकारका किहाहै ॥ एक उत्तम १ मध्यम २ अधम ३ तिसविषें भी उत्तम संसर्ग चार ४ प्रकारका है कि योनिसंबंध १ श्रुवसंबंध २ अध्यापन ३ एकत्र भोजन ४ और मध्यम भी एकयान १ आसन २ शय्या ३ एकपंक्तिभोजन ४ इसभेदते ४ प्रकारका है ॥

और अधमभीसहालाप १ स्पर्श२ निःश्वास ३ एकपात्रसेभोजन ४ तिसकाअन्न भोजन ५ तिसकाप्रतिग्रह ६ तिसकर्के सिद्धकीये अन्नका भोजन ७ इत्यादिभेद कर्के अनेक प्रकारकाहै एह ग्रंथकारों का मतहै ॥ संवत्सरेति और एकवर्ष प्रमाण पतितकेसाथ संसर्गकीतियां जो प्रायश्चित्त करणा किहाहै उसीप्रायश्चित्तका उतनाभागघटादेणा जेकर वर्ष न समाप्तहोवे तद ॥ अर्थात् जितने महीने वर्षतें न्यून होवे उतनाहि क्रम कर्के प्रायश्चित्तभी न्यूनकरणा योग्यहै तैसेहि वृहस्पति जीने किहाहै कि पतितके साथ यज्ञकराणा पतितको पढाणा एक आसन एकशय्याइत्यादि कर्के छे६ महीने संसर्गकीतियां आधा प्रायश्चित्त करे॥१॥ और इसी प्रकारनिरंतरतीन महीने पतितकेसाथ संसर्ग कीतियां चौथाहिस्सा प्रायश्चित्त करणा इत्यादि और भी

अन्त्यस्तुसहालापस्पर्शनिःश्वासैकपंक्तिभांडभोजनतदीयान्नभोजनतत्प्रतिग्रहतत्सृष्टान्नभोजानादिभेदादनेकविधइतिनिर्वंधकृतः ॥ संवत्सरसंसर्गे यत्प्रायश्चित्तमुक्तंसंवत्सरासमाप्तौभागहारःकर्त्तव्यः ॥ तथाचबृहस्पतिः ॥ षाएमासिकेतुसंयोगेयाजनाध्यापनादिना एकत्रासनशय्याभिःप्रायश्चित्ताद्धमाचरेत् १ एवंनिरंतरमासत्रयसंसर्गेप्रायश्चित्तपादइत्याद्यूहनीयम्॥ अमतिपूर्वकएवस्वल्पतरेपतितसंयोगेच ॥ वसिष्टआह ॥ पतितसंयोगेन ब्राह्मणवास्त्रौवेणयौनेनवायास्तेभ्यः सकाशान्मात्राउपलब्धास्तासांचपरित्यागः तैश्च नसंवसेत् ॥ उदीचींदिशंगत्वाऽनश्नन्संहिताध्ययनमधीयानः पूतोभवतीतिविज्ञायते॥ ब्राह्मोध्ययनाध्यापनात्मा॥ स्त्रौवो याजनं मात्राधनम् ॥ अमतिपूर्वकसंसर्गेपराशरआह ॥ संसर्गेवाचरन्विप्रः पतितादिष्वकामतः पंचाहंवादशाहंवाद्वादशाहमथापिवा ॥

ऐसेहि आगे विचारकरणायोग्यहै और अज्ञान पूर्वक अतिथोडे पतितसंसर्ग विषे वसिष्टजीनेकिहाहै कि जिसपुरुषने पतितकेसंयोग कर्के अथवा पतितको पढानेवा पडने कर्के अथवा यज्ञकराणे कर्के अथवा योनिसंबंध कर्के पतितके पासोंजोकुछ पदार्थ ग्रहण कीताहै उसधनंका तो त्यागकरदेवे॥ और तिनके साथ भी निवास नहिकरे॥ और उत्तर दिशाके जाकर्के निराहारव्रतकरे और संहिता पाठकरताहुया पवित्रहुंदाहै इसप्रकारजाणीदाहै ॥ और अमतिपूर्वक संसर्गविषे पराशर जीने किहाहै कियोपुरुष कामना तेविना पतितादि विषे संसर्गकरताहै पांच ५ दिनवादश १० दिन वाबारां १२ दिन

अथवाछे६महीने अथवाएक वर्ष और इससे उपरंत तिसके समानहोजंदाहै १ इसवास्तेपहिले पक्षविषें तीनदिनव्रत करे और दूसरे पक्षविषें कृच्छ्रकरे और तीसरे पक्षविषें सांतपनकृच्छ्रकरे। २ ।और ४पक्षविषें दशरात्रि व्रतकरे और ५ पक्षविषें पराककरे और ६ पक्षविषें चांद्रायणकरे और ७पक्षविषें दोचांद्रायणकरे और ८ पक्षविषें छेमहीनेकृच्छ्रकरे ३ और ज्ञानपूर्व पतित संसर्ग विषें तो और स्मृतिविषें लिखयाहै । पंचेति कि पांचदिन पतितके साथ जाणकर्के संसर्गकीतियां कृच्छ्रकरे और दशदिन पतितके साथ संसर्ग कीतियां तप्तकृच्छ्रकरणा किहाहै और आधामहीनाक्या १५ दिनपातितसंयोग कीतियां पराकव्रतकर्के पवित्र हुंदाहै और जेकर एकमहीना पापी पुरु

अब्दार्धमब्दमेकंवाभवेदूर्ध्वंतुतत्समः १ त्रिरात्रंप्रथमेपक्षेद्वितीयेकृच्छ्रमाचरेत् चरेत्सांतपनंकृच्छ्रंतृतीयेपक्षएवतु २ चतुर्थेदशरात्रंस्यात्पराकः पंचमेमतः षष्ठेचांद्रायणंकुर्यात्सप्तमेचैन्दवद्वयं अष्टमेतुतथापक्षेपण्मासान्कृच्छ्रमाचरेत् ३मतिपूर्वकसंसर्गविषयेतुस्मृत्यंतरम्॥पंचाहेतुचरेत्कृच्छ्रंदशाहेतप्तकृच्छ्रकम् पराकस्त्वर्धमासेस्यान्मासेचांद्रायणंचरेत् १ मासत्रयंतुकुर्वीतकृच्छ्रंचांद्रायणोत्तरम् पाण्मासिकेतुसंसर्गेकृच्छ्रंत्वब्दार्धमाचरेत्२संसर्गेत्वाब्दिकेकुर्यादब्दंचांद्रायणंबुधः संवर्त्तः।एभिःसंसर्गमायातियः कश्चित्पापपूरुषः पण्मासानब्दमेकंवापूर्वोक्तानांव्रतंचरेत् ॥ एभिर्ब्राह्मणहंतृप्रभृतिभिर्गुरुतल्पगांतैर्मतिपूर्वंकपण्मासान्संसर्गेय आयाति॥ यश्चामतिपूर्वमब्दमायातिसतेपामेवव्रतंचरेदित्यर्थः ॥

ष के संसर्गकरे तद चांद्रायणकरे१ और तीनमहीने पतितसंसर्गकीतियां चांद्रायण कर्के पीछे कृच्छ्र करे और जेकर छे ६ महीने पतितसंसर्गहोवे तद कृच्छ्र भी छे महीने करे२और जेकर एकवर्ष संसर्ग करे तद एकवर्षप्रमाण उत्तरोत्तरक्रमकर्के बुद्धिमान पुरुष अपनी पवित्रतावास्ते चांद्रायणकरे ॥ और संवर्तजीनें किहाहै ॥ एभिरिति कि जोकोयी पापी पुरुष एहजावे ब्रह्महातें आदलेकर गुरुतल्पग पर्यंत पातकीहैं इनकेसाथ जाणकर्के छे ६ महीने संसर्गको प्राप्त हुंदाहै ॥ अथवा जोपुरुष अज्ञानतें इनके साथ एकवर्षसंसर्गकरे सोपुरुष इनकाहि व्रतकरे अर्थात् इनके मध्यविषें जिसका संसर्ग करे जोव्रत उसपातकीको करणा किहाहै ते सी व्रतकर्के पवित्राहुंदाहै

और वृहस्पति जीने किहाहै कि तैसेहि एक वर्ष संसर्ग कीतियां और विशेषते पतितकेसाथ योनि संवंध कीतियां पूर्वोक्त विधि कर्के पतिनका जो व्रतहै सोयी व्रत करे और योनि नामहै उत्पत्ति स्थान का तिन कर्के युक्त अर्थात् पतित पुरुष कर्के वापतित स्त्री साथ मैथुन युक्त एह अर्थहै जैसे पुरुष पतित होवै स्त्री शुद्ध होवे अथवा स्त्री पतित होवे पुरुष शुद्ध होवे असे मेथुन विषें ॥ १ ॥ और जो एह सुमंतु जीनें किहाहै कि एक वर्ष संसर्ग करण विषें प्राजापत्यव्रत करे एह प्रायश्चित्त महापातकी के तुल्य जो होवे तिसके साथ जो संसर्ग करे तिसको जानणा और संवत्सरं एह द्वितीया कालके अत्यंत संयोग विषेंहै और विष्णु जीने किहाहै कि अन्न पानते रहित थोडे भीपतित संसर्ग विषें ऐसा प्रायश्चित्त लिखय है क्यातप्त

वृहस्पतिः। तथावत्सरसंसर्गेयोनियुक्तेविशेषतःपूर्वोक्तेनविधानेनपतितव्रतमाचरेत् १ योनिःप्रजननंतद्युक्तेपतितेनपतितयावामैथुनयुक्तइत्यर्थःयत्तु सुमंतुनोक्तम् साहचर्येवासंवत्सरं प्राजापत्यंचरेदिति तन्महापातकिसमेनसंस्पृष्टस्यवेदितव्यम्। साहचर्यंसंसर्गः संवत्सरामितिकालात्यंतसंयोगेद्वितीया विष्णुः ॥ स्तोकसंसर्गेप्वन्नपानादिवर्जितेपुविशोधनंतप्तकृच्छ्रंचरित्वातुशिशुचांद्रायणंचरेत् १ स्तोकसंसर्गः संलापस्पर्शादिरूपः ॥ शातातपः। पतितेनसहोषित्वातप्तकृच्छ्रेणशुध्यति। एतदमतिपूर्वकाल्पतरसंसर्गविषयम् प्रचुरसंसर्गविषयेतु शंखआह। पतितसंस्पृष्टोह्यात्मानमुद्धरन् संवत्सरंतप्तकृच्छ्रंचरेत् तथापतितसंव्यवहारीमित्रध्रुक्शरणागतघातीप्रतिरूपकवृत्तिर्जलशयनपंचतपोभ्रावकाशानातिष्ठेद्धेमंतग्रीष्मवर्षासु अत्रमार्गशीर्षादिमासचतुष्टयंहेमन्तः चैत्रादिमासचतुष्टयंग्रीष्मः॥

कृच्छ्र प्रथमकर्के फेर शिशु चांद्रायणकरे। १। और स्तोकसंसर्ग भाषण स्पर्शरूपआदिजानणा और शातातप जीने किहाहै कि पतित के साथ निवास कर्के तप्त कृच्छ्र करणकर्के शुद्ध हुंदाहै एह प्रायश्चित्त अज्ञान पूर्वक अति थोडे संसर्ग के विषयमे जानणा और अति संसर्ग विषें शंख जीनें किहाहै कि पतितके साथ संसर्गको प्राप्त होकर अपने आत्माके उद्धार वास्ते एक वर्ष प्रमाण तप्त कृच्छ्र करे और तैसेहि पतित के साथ व्यवहार करण वाला और मित्रके साथ द्रोह करण वाला और प्रतिरूपकवृत्ति क्या आश्रमीनहोवे और आश्रमीकी वृति धारण कर्के एह हेमंत विषें जलशय्या करे और हेमंत मार्गादि चार ४ महीनेंका नामहै ॥ और ग्रीष्म विषें क्या चैत्रादि चार ४ महीने विषें पंचाग्नितपे ॥

और वर्षा विषे क्या श्रावणादिचार ४ महीने विषे अभ्रावकाश विषे क्या वर्षाविषे नग्न शिर करके बाहर स्थित होवें अथवा गोमूत्रकेसाथ यावकवना कर पानकरे इस प्रकार करके शुद्धहुंदाहै। और पतित संसर्ग के निषेधकरके निषिद्ध पुरुषका यो योनिसंबंधहै तिसको कि सीस्थान विषे स्वाकर याज्ञवल्क्य जीने किहाहै किकन्यामिति कि एहजो ब्रह्म हादिक पति तहैं तिनां संबधी कन्याकों परकैसीहैंकन्या तिस पातितके धन करके रहित औरकीताहै उ षवास व्रत जिसने एसी कों विवाहलेवे किसवास्ते कि पतित करके उत्पन्नभी है तदभी सो कन्या पतित नहि हुंदी सोयी वसिष्ठ जीने किहाहै कि पतित करके जो उत्पन्न है तिस कों बुद्धिमान् पतित कहतेहैं परंतु स्त्रीते विना अर्थात् कन्या तेंविना पतित की और सभ संतान पतित कहीहै किसवास्ते कि कन्या परगामिनी हुंदीहै क्या दूसरे केघर जाणेवलीहै

श्रावणादिमासचतुष्टयंवर्षाः प्रतिरूपकवृत्तिरनाश्रमीसन्नाश्रमिलिंगधारी तथामासंगोमूत्रयावकंपिबेत्एवंशुद्ध्यति। पतितसंसर्गप्रतिषेधेन प्रतिषिद्ध स्ययौनसंवधस्यक्वचित्प्रतिप्रसवमाह याज्ञवल्क्यः। कन्यांसमुद्वहेदेषांसो पवासामकिंचनां एषांब्रह्महादीनांपतितानांसंवंधिनींकन्यांतदीयधनरहितां कृतोपवासामुद्वहेत् विवहेत् पतितेनोत्पन्नापिसानपतिता तदाहवसिष्टः प तितेनोत्पन्नःपतितइत्याहुरन्यत्रस्त्रियाःसाहिपरगामिनी तामरिक्थामुपादे यादितिवदंस्तेनादत्तांस्वयमुपनतांपरिणयेदितिगमयति तथाचहारीतः। प तितस्यकुमारींविवस्त्रामहोरात्रमुपोषितांप्रातःशुक्लेनाहतेनवाससाच्छादि तांनाहमेतेषांममनेतेइतित्रिरुच्चैरभिदधानांतीव्रसंकटहेतोरुद्वहेदिति क न्यांसमुद्वहेदितिवदन्स्वयमेवकन्यांत्यक्तपतितसंसर्गांसमुद्वहेन्नपुनःपति तहस्तात्प्रतिगृह्णीयादितिदर्शयति॥

इसवास्ते उह त्याग करणे योग्य नहिहै किंतु ग्रहण करणे योग्यहै इसकारणते इसविषें एसा अभिप्राय मालूम हुंदाहै कि जो पतितने आपनहि दित्ती और तिनको त्याग करके आप हि प्राप्त होयी होवे उस कन्याके साथ विवाह करलेवे और तैसे हिहारीत जीने किहाहै कि पतित की जो कन्याहै कैसीहै वस्त्रते रहित और एकादिन रात्रि उपवास जिसने कीताहै एसी को प्रातःकालविषें नवीन वस्त्र करके आछादित होकर और नामे तिनांकीहां और न उहमे रहें इस प्रकार तीनवारी उच्ची जिसने किहाहै तिसकों अति कष्टके कारणतेविवाह लेवे इ स स्थानविषे त्याग दीयाहै पतित संसर्ग जिसने एसी कन्या कों आप हि विवाह लेवे फे रपतितके हाथते नग्रहण करे एसादिखायाहै

और ऐसे होयां योनि संसर्गका निषेध दूर होजंदाहै एह मिताक्षरा में लिखयाहै॥और पतिततें उत्पन्न जो कन्याहै तिसकोभी प्रायश्चित्त बौधायन जीने किहाहै कि अपवित्र वीर्यतें जो उत्पन्न कन्याहैं तिनको जेकर प्रायश्चित्त करणेकी इच्छा होवे तद तिनको पतित प्रायश्चित्त का तीसरा हेस्सा प्रायश्चित्त करणा किहाहै क्या कि पतित पिताके जितने पतित होनेवाले कर्महैं तिनकर्मोंका जो प्रायश्चित्त किहाहै तिसका तीसरा हेस्सा पतिततें उत्पन्न जो पुरुषहै तिनकोहै और तिसका तीसरा हिस्सा स्त्रीयोंको हुंदाहै ॥ किंचेति और पतित पुरुषतें अथवा पतित स्त्रीतें जो उत्पन्न कन्याहै तिसको जान्नणा॥किसवास्ते कि पुरुषकी न्यायीं स्त्रीयांकोभी पातकी इत्यादिके संसर्गतें पतित भाव हुंदाहै॥और जैसे शौनक जीने किहाहै कि पुरुषको जितने पत

एवंचसतिपतितयौनसंसर्गप्रतिषेधोऽपिपरिहृतोभवतीतिमिताक्षरा। कन्यायाश्चपतितोत्पन्नायाःप्रायश्चित्तमाह बौधायनः॥अशुचिशुक्रोत्पन्नानामिच्छतां प्रायश्चित्तानि पतनीयानांतृतीयांशःस्त्रीणामंशातृतीयः॥ अयमर्थः जनकस्य पतितस्ययानि पतनीयानि कर्म्माणि तत्प्रायश्चित्तानांतृतीयांशः पतितोत्पन्नानांपुंसांप्रायश्चित्तम् तस्यापि तृतीयोभागःपतितोत्पन्नानांस्त्रीणामिति॥ किंचपतितोत्पन्नायाः पतितात्पुरुषात् पतितायाःस्त्रियोवोत्पन्नायाइत्यर्थः॥ पुरुषवत्स्त्रीणामपि महापातक्यादिसंसर्गात्पातित्यमविशिष्टम्॥यथाह शौनकः॥पुरुषस्ययानिपतननिमित्तानिस्त्रीणामपितान्येव ब्राह्मणी हीनवर्णसेवायामधिकं पततीति॥अतस्तासामपिमहापातकिप्रभृतीनांमध्ये येनसहसंसर्गस्तदीयमेव प्रायश्चित्तमर्धंकृत्वा योजनीयम्।एवं बालवृद्धातुराणामपिकामतोऽर्धमकामतःपादः॥तथानुपनीतस्यापिबालस्य कामतःपादोऽ कामतस्तदर्धमित्येवमादिकं ॥

न करण वाले कर्महैं ओहि स्त्रीयांकोभी पतित करणे वाले कहेहैं ॥ और ब्राह्मणी हीनवर्णकी सेवा करके अधिक पतित होतीहै इसकारणतें तिनकोभी महापातकी अतिपातकी इत्यादिके मध्य विषे जिसके साथ संसर्ग होवे उसके प्रायश्चित्तका अर्ध करणा चाहिये ऐसी योजनाकरणी योग्यहै॥और इसी प्रकार बालक वृद्ध रोगी इनकोभी कामनाते आधा और कामनाते विना चौथाहेस्सा प्रायश्चित्त जान्नणा ॥ और तैसेहि यज्ञोपवीततें रहित जो बालकहै तिसको कामनातें चौथा हेस्सा और कामनाते विना आठवां हेस्सा प्रायश्चित्तहै इति दिक् क्या इसी मार्गसे आगे विचार करणा ॥

और प्रायश्चित्तेंदु शेखर विषें माधव जीका वाक्यहै कि संसर्ग दोष कलियुग विषें पतित भावको नहि प्रति पादन करता किंतु पापमात्रकों प्रतिपादन करताहै किंस वास्ते कि संसर्ग दोष कलि युग विषें त्यागकरणे योग्यहै इस वचन कर्के कलि वर्ज्य प्रकरण विषे गणना होणेते। और वास्तवते सत युग विषें पाप होवे उस देशकोंहि त्याग देवे और त्रेता विषें उस ग्रामकों त्याग देवें। और द्वापर युग विषें उस एक कुल कों त्याग देवे। और कलि युग विषें पाप करण वालेकों त्याग देवे १ इस पराशरजीके वचनतें सत्य युग विषे देशका और त्रेता विषें ग्रामका और द्वापर विषें कुलका यो त्यागहै सो कलि युग विषें नहोवे इस कारणते संसर्ग की कलि वर्ज्यों के मध्य विषें गिणती योग्यहै। और एह और कलि युग विषें विशेष किहा है कि जो सत्य युग विषें पापीके साथ संभाषण मात्र करणेतें पतित भाव होजाताथा। औ

प्रायश्चित्तेन्दुशेखरेमाधवः॥संसर्गिदोषः कलौपातित्यापादकोनकिंतुपाप मात्रापादकः।संसर्गदोषःपापेष्वितिकलिवर्ज्येषुगणनादित्याह॥वस्तुतस्तु त्यजेद्देशंकृतयुगेत्रेतायांग्राममुत्सृजेत् द्वापरेकुलमेकंतुकर्त्तारंतुकलौयुगइ तिपराशरवचनात्॥कृतयुगादौदोषजनकत्वेनोक्तदेशादिसंसर्गस्यैवकलिव र्ज्येषुगणनंयुक्तम्॥ अयंचापरः कलौविशेषः। यत्कृतेसंभाषणमात्रादेवपा तित्यम्॥त्रेतायांस्पर्शमात्राद् द्वापरेतत्स्वामिकान्नमात्रग्रहणात् तत्कलौस्ने हेन समुदितेनैव संभाषणादिकर्मणा नत्वेकेनेतिदिक्॥किंचसंसर्गिसंसर्गि णांपादपादहानिः ॥ तथाच मुख्यमहापापिनांसंसर्गवतोद्वादशाब्दम्॥ तत्संसर्गिणोमुख्यात्ततीयस्यनवाब्दम् ॥

र त्रेता युग विषें पतितके साथ केवल स्पर्श मात्र करणेते पतित भाव हो जाताथा और द्वापर विषें पतितका अन्नमात्र ग्रहण करणेतें होजाताथा। और सोयी पतित भाव कलि युग विषें पतितके साथ स्नेह कर्के होताहै क्या एकत्र संभाषणादि कर्म कर्केहै एक कर्के नहि अर्थात् कलि युग विषें पतित के साथ संभाषण स्पर्श अन्नग्रहण स्नेह इन संपूर्ण कर्मों कर्के पतित भाव होजाताहै। और किहाहै कि संसर्गीके जो संसर्गीहैं तिनको पाद पाद हानि कर्के प्रायश्चित्त करणा योग्यहै। तथेति और तैसेहि मुख्य जो महापापीहैं तिनके साथ संसर्ग करण वालेकों बारां १२ वर्षका व्रत करणा किहाहै और तिसके संसर्गिकों मुख्यपापीतें तीसरेकों नव ९ वर्षका व्रत करणा किहाहै ॥

और तीसरे के साथ संसर्ग करण वाले कों क्या मुख्य पापीतें चौथे कों छे ६ वर्ष व्रत करणा योग्यहै ॥ और मुख्य पापीते पांचमे संसर्गीकों तीन वर्ष व्रत करणा किहाहै । और मुख्य पातकीतें जो दूसराहै क्या मुख्य पापी का जो संसर्गीहै तिसको हि पतित भाव होनेतें श्रौत स्मार्त कर्म की हानि होतीहै अर्थात् पतितको वेद विहित कर्म और स्मृति विहित कर्म नहि करणे योग्यहै ॥ और तीसरेते आदिक जो हैं तिनकों केवल प्रायश्चित मात्र होताहै और वेदोक्त कर्म की हानि नहि होती ऐसे मिताक्षरा विषे लिखयाहै । और प्राचीनों के मत विषे पाद हानि क्रम करके तीसरेने संसार्गिव्रत का आधा मात्र व्रत करणे योग्यहै ॥ और चौथेकों पाद व्रत जाणणा और पांचवेको कुच्छ प्रायश्चित्त नहिहै अर्थात् मुख्यपापीको जो प्रायश्चित्त है तिसते आधा तिसके संसर्गीको हुंदाहे ॥ और संसर्गीके संसर्गीको तिसते आधा॥ और आगे तिसके संसर्गीको चौथा हिस्सा ॥ और आगे तिसके संसर्गीको पांचवे स्थान कुछ व्रत नहि करणा किहाहै ॥ और प्रायश्चित्त कदंव विषे व्यास देव जी का वाक्यहै येऽइति कि जो जिस पातकीका अन्न भक्षण करण वाले ब्राह्मण हैं तिनको कृच्छ्र विधान कीयाहै और आगे तिन ब्राह्मणोंका जो अन्नभक्षण करण वालेहैं तिनको अर्ध कृच्छ्र करणा किहाहै फेर आगे तिनका जो अन्न भक्षण करण वालेहैं तिनको चौथाहिस्सा प्रायश्चित्त करणाकिहाहैं ॥ १ ॥ और तैसेहि आप स्तंव जीनें किहाहै भुक्तमिति कि जिनोने पातकीके घर विषे पक्का न भक्षण कीयाहै तिनके वास्ते प्रायश्चित्त कृच्छ्र विधान कीयाहै और आगे तिनके घर विषे जिनोनें अन्न भक्षण कियाहै तिनको आधा और आगे चौयाहिस्सा प्रायश्चित्त दिखायाहै। १। और योयेन इत्यादि जो मनुवचन है सो संसर्गी तीनका बोधक जाणणा योग्यहै ॥ और मिताक्षरा विषें तो ऐसालिखयाहै ॥ कि ब्रह्महा मदिरा पीणे वाला स्तेन गुरुतल्पग एह महापातकीहैं इनके साथ जो संसर्ग करे सोभी महापातकी होताहै ॥ १ ॥

तृतीयेनसंसर्गवतोमुख्याच्चतुर्थस्यषडब्दम् । पंचमस्यत्रैवार्षिकम् ॥ मुख्य संसर्गिणोद्वितीयस्यैवपातित्याच्छ्रौतस्मार्तकर्महानिः तृतीयादेः प्रायश्चित्त मात्रं ॥ नतुवैदिककर्महानिरितिमिताक्षरा ॥ प्रांचस्तु पादहानिक्रमेण तृतीयेनसंसर्गिव्रतार्धमात्रंकार्यम् ॥ चतुर्थस्यतुपादः मुख्यात्पंचमस्यनाकिंचिदित्याहुः ॥ प्रायश्चित्तकदंवेतुव्यासः । येतदन्नाशिनोविप्राः कृच्छ्रंतेषां विधीयते तद्भोजिनोर्द्धकृच्छ्रेणतदन्नादाश्चपादतः १ तथाचापस्तम्बः ॥ भुक्तयैस्तत्रपक्वान्नंकृच्छ्रंतेषांविधीयते ॥तेषामपिचयैर्भुक्तमर्द्धंतेषांविनिर्दिशेत् तेषामपिचयैर्भुक्तंकृच्छ्रपादोविधीयते १ तथाचयोयेनेतिमनुवचनंसंसर्गित्रितयपरमितिध्येयम् ॥ मिताक्षरायांतु ॥ ब्रह्महामद्यपःस्तेनस्तथैवगुरुतल्पगः एतेमहापातकिनायश्चतैःसहसंविशेदिति ॥ १ ॥

और (तैः) इस पदकर्के सर्वनामका परामर्श होताहै इसकाकारणतें प्रकरण विषें ब्रह्महादि चारोंका जो संसर्गीहै तिसकाहि बोध होताहै और महापातकित्व इस वचनते महापातकीके संसर्गीको महापातकी भावहै औरोंको नहि आवता । प्रश्नः कि महापातकीका जो संसर्गहै सोयी महापातकी भावका कारण है क्यों ब्रह्महादि विशेष संसर्ग नहि व्यभिचारहोनेते अर्थात् चारोंके बीचसे किसेका हि संसर्ग होवेगा कोई सभका नहि इस कारणते ब्रह्महादि संसर्गीकें संसर्गीको भी महापातकी संसर्गहि विद्यमान हुया ॥ इसते तिस महापातकीके संसर्गीके संसर्गीकोभी महापातकी भाव होजावे कुच्छ निषेध नहि है ॥ इसबिषें कहतेहैं । उत्तर । कि जेकर ऐसा होवे तद संसर्गी संसर्गके महापातकी भावमें औरभी कुच्छ प्रमाण होणा चाहिये किसवास्ते एक शब्द कर्के जिसका ज्ञानहो

तैरितिसर्वनामपरामृष्टप्रकृतब्रह्महादिचतुष्टयसंसर्गिणएवमहापातकित्व वचनात्तत्संसर्गिणोनमहापातकित्वम्॥ ननुमहापातकिसंसर्गएवमहापात कित्वेहेतुःनब्रह्महादिविशेपसंसर्गस्तस्यव्यभिचारात् अतोब्रह्महादिसंसर्गिणोपिमहापातकिसंसर्गोविद्यतइतितस्यापिमहापातकित्वंस्यान्नचप्रतिषेधः उच्यते स्यादेवंयदिप्रमाणांतरगम्यंमहापातकित्वंस्यात् शब्दैकसमधिगम्येतुतस्मिन्नैवंभवितुमर्हतीति तैरितिप्रकृतविशेपपरामर्शिनासर्वनाम्नाब्रह्महादिविशेपसंसर्गस्यैवमहापातकित्वेहेतुत्वस्यावगमितत्वात् एवंचसति प्रतिषेधाभावोप्यहेतुःप्राप्तभावादेव॥अतःसंसर्गिसंसर्गिणांद्विजातिकर्मभ्योहानिर्नभवतिप्रायश्चित्तंतुभवत्येव॥ नचसंसर्गिसंसर्गिणःपातित्याभावेकथंप्रायश्चित्तमितिवाच्यम् एनास्विभिरनिर्णिक्तैर्नार्थांकंचित्समाचरेदिति सामान्येनैनस्विमात्रसंसर्गप्रतिषेधनमहापातकिसंसर्गिसंसर्गस्यापि प्रतिपिद्धत्वात्पातित्याभावेपि युक्तमेवप्रायश्चित्तम्

ताहै उस विषें ऐसाहोणा योग्यहै और (तैरिति) एह जो प्रसंग विषें विशेषका परामर्श करताहै इस सर्वनाम कर्के ब्रह्महादि विशेष संसर्गको हि महापातकी भावका कारण जाणणे योग्यहै ॥ इस कारणते और ऐसे होयां प्रतिषेधका अभाव हि कारण होजावे ऐसा नहि प्राप्तिके अभावतें ॥ और इस कारणते संसर्गीके संसर्गियोंको द्विजाति कर्मतें हानि नहि होती और प्रायश्चित्त होताहिहै ॥ कि ऐसा नाहि कथन कारणा कि संसर्गीके संसर्गीको पतित भाव न होनेते कैसे प्रायश्चित्त हुया सोयी लिखयाहै कि जिन पापियोंने पापका प्रायश्चित्त नहि कीता तिनके साथ कुच्छ कार्य न करे इस सामान्य ग्रहण कर्के संपूर्ण पापी मात्र संसर्गके निषेध कर्के महापातकी क संसर्गी संसर्गके निषेध होनेतें पतितभावके अभाव होयांभी प्रायश्चित्त करणा योग्यहै और सो प्रायश्चित्तभी पादहीन जाणना

अर्थात् जो प्रायश्चित्त जिसको किहाहै उसीका पादहीन तिसके संसर्गिको जाननणा और जो पुरुष जिस पापीके साथ एक वर्ष निवास करे सोभी तिसके सामानहि होजाताहै इस कारणते सो ब्राह्मणादितिस२के व्रतको पाद हीन करें ऐसे जो व्यासदेव जोने कथन कीताहै सो देखने योग्यहै और इसी प्रकार चौथा पांचवाजो कामनातें संसर्गी होवें तिनको भी आधा और पाद प्रायश्चित्त जाणणे योग्यहै ॥ इस कारणते साक्षात् ब्रह्महादि संसर्गि कोही ब्रह्महादि प्रायश्चित्त का अधिकारहै और तिसके संसर्गिको नहिहै ऐसा सिद्धहुया इस प्रकार मिताक्षरा विषे व्याख्यान किताहै॥अवनिषिद्ध संसर्ग प्रसंगते निषिद्ध संसर्गते उत्पन्नजो प्रति लोमहैं तिनके वध विषे प्रायश्चित्त याज्ञवल्क्य जोने किहाहै चांद्रायण मिति किवर्णांते जो अवकृष्टहैं

तद्व्रपादहीनम् योयेनसंवसेद्वर्षंसोपितत्समतामियात् पादहीनंचरेत्सोपि तस्यतस्यव्रतंद्विज इतिव्यासोक्तेर्द्रष्टव्यम् एवंचतुर्थपंचमयोरपिकामतः संसर्गिणोरर्धहीनंत्रिपादोनंचद्रष्टव्यम् अतःसाक्षाद्ब्रह्महादिसंसर्गिणएवतदीयप्रायश्चित्ताधिकारोनतत्संसर्गिणइतिसिद्धमितिव्याख्यातम्॥निषिद्धसंसर्गप्रसंगान्निषिद्धसंसर्गोत्पन्नप्रतिलोमवधेप्रायश्चित्तमाहयाज्ञवल्क्यः चांद्रायणंचरेत्सर्वानवकृष्टान्निहत्यतु १ वर्णेभ्योऽवकृष्टान्वर्णवाह्यानंत्यजान्पुरुषान्सर्वान्निहत्यप्रत्येकंचांद्रायणंचरेत् मिताक्षरायांअवकृष्टाःसूतमागधादयः प्रतिलोमोत्पन्नाःतेषांप्रत्येकंहननेचांद्रायणम् तथाचशंखः।सर्वेषामवकृष्टानांवधेप्रत्येकंचांद्रायणामिति यच्चांगिरसोवचनम् । सर्वांत्यजानांगमनेभोजनेसंप्रमापणे पराकेणविशुद्धिःस्यादित्यांगिरसभाषितमितिपराकंकुर्यात्

कृष्ट वर्ण वाह्यहैं तिनको और संपूर्ण अंत्यज पुरुषों को मार करके एक २ के वध करणे विषे चांद्रायण करे।१।और मिताक्षरा विषे अव कृष्ट सूतमागध इत्यादि जो प्रति लोम करके उत्पन्नहैं तिनका नामहै अर्थात् शूद्रते वैश्या क्षत्रिया ब्राह्मणो इन विषे जो उत्पन्न होवें और वैश्यते क्षत्रिया ब्राह्मणी इन विषे जो उत्पन्नहैं और क्षत्रियत ब्राह्मणी विषे जो उत्पन्न होवे एह प्रतिलोमज कहेहै और तैसेहि शंख जीने किहाहै कि संपूर्ण अव कृष्टोंके वधकीतयां अपणी शुद्धिवास्ते चांद्रायणव्रतकरे इति और जो एह अंगिराजीकावचनहै कि संपूर्ण अंत्यजातिका वध कीतियां और इन के साथ मैथुन कीतियां और इनके साथ भोजन कीतियां पराकव्रत करणे करके शुद्धि होतीहैयद्यपि इनके वधादि विषे पराक करे ॥

तदभीतिसस्थानविषेंकामनाते सूतादिविषेंचांद्रायणकरणा किहाहै औरकामनातेविना सूतादिव धविषें पराकव्रतजान्नणा ॥ औरवैदेहके वधविषें एकपादऊन पराककरणा और चांडालकेवध विषें आधापराककरणा औरमागधकेवधविषें भीपादऊन पराककिहाहै। और क्षत्त केवधकीतियां अद्धापराककरणे कर्के पवित्रहुंदाहै और अयोगवकावधकीतियांभी अद्धाहिपराककरणा योग्य है और इसी प्रकारकर्के चांद्रायण कीभीतारतम्यताकल्पना करणे योग्यहै अर्थात् अधिकार पू र्वकसंपूर्ण अर्धएकपाद इत्यादि जान्नणा ॥ और जोएहब्रह्मगर्भकावचनहै प्रतिलोमेति कि प्र तिलोम क्रमकर्के उत्पन्न योस्त्रीयांहै तिनको महीन्योंकी अवधीकर्के प्रायश्चित्त किहाहै और अंतर कर्के उत्पन्नजोसूतादिहै तिनको दोमहीने चारमहीनेछेमहीने भिन्न २ इसक्रम क र्के प्रायश्चित्त करणा किहाहै सोएहआवृत्ति के विषयमे जान्नणा अर्थात् पुनःपुनः वधविषेंजान्न

तत्रकामतःसूतादिवधेचांद्रायणं॥ अकामतस्तुतद्वधेपराकः वैदेहवधेपादो नः चांडालवधेद्विपादः मागधवधेपादोनःपराकः क्षत्तरिद्विपादः आयोगवे चपादद्वयम् अनयैवदिशाचांद्रायणस्यापितारतम्यंकल्प्यं॥यत्तुब्रह्मगर्भव चनम् प्रतिलोमप्रसूतानांस्त्रीणांमासावधिःस्मृतः अंतरप्रभवानांचसूतादी नांचतुर्द्विषडितितदावृत्तिविषयम् तत्रसूतवधेषण्मासाः वैदेहकवधेचत्वारः चांडालवधेद्वाविति योग्यतयान्वयःतथामागधवधेचत्वारःक्षत्तरिद्वैमासिकं आयोगवेचद्वैमासिकमितिव्यवस्था॥ अपरार्कः ननुचांद्रायणपराकादित पोगायत्र्यादिजपमंत्रयुक्तं कथंतत्रशूद्रादेरनधीतवेदस्याधिकारइत्याह

णा तिसस्थानविषेंसूतकेवध विषें छेमहीने व्रतकरणे कर्के पवित्रता होतीहै। और वैदेहके वधवि षें चारमहीनेव्रतकरणा और चांडालकेवधविषें दोमहीनेव्रतकरणायोग्यहै एह योग्यता कर्के ऐ सा संबंधलगायाहै और तैसे हि मागधकेवधकीतियां चारमहीने औरक्षत्ताके वधकीतियां दोमहीने का व्रत और अयोगवके वधविषें भी दो महीने का व्रतकरणा योग्यहै ऐसीव्यवस्था लगायीहै ॥ और अपरार्क विषें लिखयाहै कि चांद्रायण और पराकइत्यादि संपूर्णव्रततपरूप हैं और गायत्री इत्यादि मंत्रोंके जपकर्के भीयुक्तहैं क्या कि इनसभव्रतोंविषें गायत्री मंत्रका जप करणा किहाहै इसकारणते तिसचांद्रायणादि व्रतविषें नहिपढावेदजिसने ऐसे शूद्रकों के से अधिकार होताहै ॥

(उत्तर) इसकारणतें किहाहैं कि यद्यपिशूद्र अधिकार रहितभीहै क्याजपकरणा होमकरणा इस अधिकारते रहितभीहै तदभी सोजैसे कहहैं तैसेहि शरीरकरके कर्मकर्ताहुया इतने काल क कें क्या महीना वर्ष इत्यादि कालकर्के पवित्रहोताहै अर्थात् पापते मुक्तहोजाताहै (प्रश्ण:) ऐसेंहोयां लूलेको विष्णुकी परिक्रमा रहितकर्म विषे और शूद्रको मंत्रहीन दर्शपूर्णमासादि कर्मविषे भी अधिकारहोनाचाहिये (उत्तर) ऐसामतकहो किसवास्ते तिसस्थानविषे शूद्रकिसी वाक्यकरकेभी दर्शादि यज्ञकाकर्ताहोवे ऐसा नहिदिखाया जिसकर्के तिसशूद्रकोमंत्रादिरहित दर्शादि कर्मविषे अधिकारकल्पनाहोवे क्योंमंत्रादि संपूर्ण अंगयुक्त कर्मप्रयोग विषे द्विजाति अधिकारीहोतेहैं इसकर्के (स्वर्गकामो यजेत्) इसश्रुतिते उपसंहारकीताहै ॥ और जैसेस्थपती

शूद्रोधिकारहीनोपिकालेनानेनशुध्यति। जपहोमाद्यधिकारहीनोपिशूद्रोय थोक्तशरीरकर्मकारीकालेनानेनोक्तेनमाससंवत्सरादिनाशुद्ध्यति।विपायो भवति नन्वेवंसतिपंगोर्विष्णुक्रमरहिते शूद्रस्यचमंत्रादिहीनदर्शपूर्णमासा दिकर्मण्यधिकारः स्यात्॥ मैवंवादीः । नहितत्रसाक्षाच्छूद्रः कर्तृत्वेनकाचि द्वाक्येनानिर्दिष्टोस्तियेनतस्यमंत्रादिरहितेदर्शादिकर्मण्यधिकारःपरिकल्पे त । संतिचमंत्रादिसकलांगोपेतकर्मप्रयोगसमर्थाद्विजातयोधिकारिणइति तत्रैवस्वर्गकामादिश्रुतेरुपसंहारः॥ प्रायश्चित्तेतुयथास्थपतीष्टौमंत्रादिरहि तोपिसाक्षाच्छ्रुत्यानिषादःकर्तृतयागृहीतः ॥ तथाशूद्रः प्रायश्चित्तेषु॥ त थाचांगिराः। तस्माच्छूद्रंसमासाद्यसदाधर्मपथेस्थितम्। प्रायश्चित्तंप्रदात व्यंजपहोमविवर्जितम् १ तथा । शूद्रः कालेनशुद्ध्येत्तुगोब्राह्मणहितेर तः ॥ दानैर्वाप्युपवासैर्वाद्विजशुश्रूषयातथा २ ॥ जाबालोप्याह ॥ अका मकृतपापानांवदंतिब्राह्मणाव्रतं ॥

इष्ट यज्ञविशेष मंत्रादिरहितभीहै तद भीसाक्षात् श्रुतिकर्के उसयज्ञविषे कर्ताभावकर्के सोभील ग्रहण कीताहैं तैसेहि प्रायश्चित्त विषे शूद्रहैं तैसहि अंगिराजीने किहाहै कितिसकारणते सदैवधर्ममार्गविषे स्थितजो शूद्रहै तिसको जपहोमादि रहित प्रायश्चित्त देणा योग्यहै ॥ १ ॥ और वचनकहतेहैं तथेति तैसेहि गौ और ब्राह्मण इनकेहितमें प्री तिवाला इतने कालकर्के पापते मुक्तहोताहै दान कर्के और उपवास करणे कर्के ब्राह्मणोंकी सेवाकरणे कर्के पवित्र हुंदाहै ॥ २ ॥ शूद्रविषे और स्मृति कहतेहैं जाबेति और जाबाली भी कहताहै अकामेति कि अकामकृतपापांका ब्राह्मण व्रतकहतेहैं

और कोई मुनि ब्राह्मणोंको और बृषल को क्या शूद्रको कामनाकृत पाप विषेभी प्रायश्चित्त कहतेहै ॥ १ ॥ और कीयेह पाप जिसने और सदाहि धर्ममार्ग बिषे योस्थितहै असे शूद्रको बेद मंत्र वर्जित प्रायश्चित्त देणायोग्यहै ॥ २ ॥ योमार्कंडेय जीने किहाहै कृच्छ्रेति किएह जो संपूर्ण कृच्छ्र कहेहै सोब्राह्मण क्षत्री वैश्य इनतीनो कोई सदैव करणे योग्यहै और इनों कृच्छ्रोंविषे शूद्रको अधिकार नाहिविधान कीया सो शूद्रकोमंत्रयुक्त कृच्छ्रका निषेध कीताहै ॥ १ इसकारणतें मंत्ररहित कृच्छ्र करणाहि शूद्रकोयोग्यहै और जोएह मनुजीने किहाहै न शूद्रेति किशूद्रके तांयां किसी कार्य वास्ते बुद्धिन देवे अर्थात् विद्यानपढावे और अपना उच्छिष्ट अ

कामकारकृतेप्येकेद्विजानांवृषलस्यच ॥ १ ॥ शूद्रंकृतैनसंप्राप्यसदाधर्मपुरस्सरम् प्रायश्चित्तंप्रदातव्यंवेदमंत्रविवार्जितम् ॥ २ ॥ यदुक्तंमार्कंडेयेन कृच्छ्राण्येतानिकार्याणिसदावर्णत्रयेणतु कृच्छ्रेष्वेतेषुशूद्रस्यनाधिकारोविधीयते १ तन्मंत्राविशिष्टकृच्छ्रप्रतिषेधकम् मंत्रवर्जंकृच्छ्रंकुर्यादेव यत्तुमनुनोक्तम् नशूद्रायमतिंदद्यान्नोच्छिष्टंनहविष्कृतम् नचास्योपदिशेद्धर्मंनचास्यव्रतमादिशेदिति। तदंतराब्राह्मण मकुर्वतांप्रायाश्चित्तात्मकव्रतातिदेश निषेधपरम् ॥ अतएवशंखः अन्तराब्राह्मणंकृत्वाव्रतादेशः कार्यइत्याह ॥ न्यायतोमार्गतःक्षिप्रंक्षत्रियादेःकृतैनसः अंतराब्राह्मणंकृत्वाव्रतंसर्वंसमादिशेत् ॥ १ ॥ आयत्तोब्राह्मणानांयोवृत्तिंयश्चप्रयच्छति ब्राह्मणानांचयोभक्तः सतार्यः सर्वयत्नतइति ॥ २ ॥

न्नदेवे और यज्ञकाअन्नभीशूद्रके तांयी नदेवे और शूद्रके तांयीधर्म उपदेश भीनकरे और ब्रतकाभीउपदेश नकरे इति एहमध्यविषे ब्राह्मणको न साक्षी करके प्रायश्चित्त रूप व्रतकरण वालेनोशूद्रहै उनके वास्तेव्रतातिदेशके निषेध पर जानणा।इसकारणते हि शंखजीकहतेहै कि ब्राह्मण कों मध्य विषे साक्षीकरके शूद्रकेतांयी प्रायश्चित्तका आदेश करणेयोग्यहै और क्षत्रि वैश्यशूद्र जेकर पाप करें तद इनकों नीतिमार्गते मध्यविषे ब्राह्मणकों साक्षीकरके संबंधिलोक संपूर्णव्रतउपदेशकरे १ औरजोपुरुष ब्राह्मणोंके अधीनहै औरजोब्राह्मणोंकों उपजीवका देणवाला है और ब्राह्मणोंका जो भक्त है सो इन्होंने यत्नकरकेभी तारणेयोग्यहै इति २

इति श्रीमन्महाराजाधिराज जम्बू काश्मीराद्यनेकदेशाधीश प्रभुवर रणवीरसिंहाज्ञप्तदेविकोपकंठवासिसारस्वत पण्डितदेवीदत्तसुतपंडितगंगाराम संगृहीते पंचविषयात्मक प्रतिरूपके धर्म्मशास्त्रमहानिबन्धेप्रायश्चित्तभागे महापातकिसंसर्गि प्रकरणंचतुर्दशम् १४

एह श्रीमहाराजराजयोंकेराजाकाश्मीरतिब्बतादिदेशोंकेअधिपतिप्रभुवर रणवीर सिंह नाम कर्के तिनकी अज्ञासे देविका के समीप निवास करणे वाले और पांचप्रकारके ब्राह्मणोंमें सारस्वत जो पंडित देवीदत तिसके पुत्र जो पंडितगंगाराम तिनोंने बनायायो धर्म्मशास्त्रमहानिबंध अर्थात् बडाग्रंथ उस विषे प्रायश्चित्त भाग विषे महापातकोंके संसर्गकरणवालेयोंका प्रकरण पूराहोआ चउदमा १४

अबदेवलस्मृति विषेंसंसर्गि प्रायश्चित्तका विशेषदिखायाहै और सोप्रायश्चित्तइससमयमे यवना दिसंसर्ग कर्के जो दूषित होगें तिनकेवास्ते अतिशयकर्के उपयोगीहोगा देवलजीनें किहाहै त्रिशंकुमिति कि प्रथम महानदी जो गंगाहै निसके उत्तर पासे और कीटक जोदेशहै तिसकेद क्षिणपासे संपूर्णबारां १२ योजन प्रमाण विषें जो त्रिशंकुदेशहै तिसकोत्यागदेवे अर्थात् त्रिशं कुदेशविषें कभीनिवासनाहि करणेयोग्य १ इसमे एह अभिप्रायहै कि इस देशविषें जावे विना तीर्थ यात्रा तद उह प्रायश्चित्तकरे त्रिशंकुपद सभ म्लेछदेशोंका उपलक्षणहै चाहे किसेम्लेछदे शमे जावे तद प्रायश्चित्तहुंदाहै तिसप्रायश्चित्तको देवलजी कहतेहैं हेऋषियों अबमें विस्तार कर्के प्रायश्चित्त कथनकरताहुं तुमश्रवणकरो क्या कि मृत सूतक विषें दासियोंकों और भिन्न वर्ण कीयांस्त्रीयांको और अनु लोमक्रम कर्के जो उत्पन्नहैं तिनकों स्वामिके मृतहोयां२स्वामि

देवलस्मृतौतुसंसर्गिप्रायश्चित्तेविशेषः सचाधुनायवनादिसंसर्गदूषितेषु प्राय उपयुज्यतेतत्रदेवलः त्रिशंकुवर्जयेद्देशंसर्वंद्वादशयोजनम् उत्तरेणम हानद्यादक्षिणेनतुकीकटम् १ प्रायश्चित्तंप्रवक्ष्यामिविस्तरेणमहर्षयः ॥ मृतसूतेतुदासीनांपत्नीनांचानुलोमिनाम् २ स्वामितुल्यंभवेच्छौचंमृतेस्वा मिनिसूतकम् अपेयंयेनसंपीतमभक्ष्यंचापिभक्षितम् ३ म्लेच्छैर्नीतेन विप्रेणअगम्यागमनंकृतम् तस्यशुद्धिंप्रवक्ष्यामियावदेकंतुवत्सरम् ॥४ ॥ चांद्रायणंतुविप्रस्यसपराकंप्रकीर्तितम् क्षत्रियस्यपराकैकंपादकृच्छ्रेणसं युतम् ५ पराकार्द्धंतुवैश्यस्यशूद्रस्यादिनपंचकम् नखलोमविहीनानांप्रा ॥ यश्चित्तंविधीयते ॥ ६ ॥

के समान शौचहुंदाहैअर्थात् जिसवर्णका पतिहोवे उसवर्णके अनुसार उतने दिनों कर्के इनका सूतक दूरहोताहै २ और फेर कहतेहै कि जिस पुरुषने पीने योग्य जोद्रव्यनहिंहै मदि रादि तिसकापानकीताहो। और जो भक्षण करणेयोग्यपदार्थ नहिहै निषिद्ध मांसादि तिसका भक्षण कीताहो।३।और म्लेछों कर्के ग्रहण कीताजो ब्राह्मणहै तिसने अगम्या गमनकीताहो तिसकी शुद्धिकथनकरताहुं एकवर्षप्रमाण पूर्वोक्त पापदेहोयांहोयां ४ चांद्रायणमिति ब्राह्मणको पराक व्रतकेसहित चांद्रायण करणा कियाहै और क्षत्रीको पाद कृच्छ्र कर्के संयुक्त एकपराकक रणा योग्यहै ५ और वैश्यको आधा पराक करणा चाहिये और शूद्रको पांचदिन व्रत करणा योग्यहै ॥ एभीनखरोमते रहितहोकर्के प्रायश्चित्त करणा ॥ ६ ॥

अब नि म्नि द्विजके अर्थ कहतेहैं प्राय इति और द्विजातिकों प्रायश्चित्त विषे पवित्र करण वा ला प्राजापत्य व्रत किहाहैं ॥ अर्थात् ब्राह्मण क्षत्री वैश्य एह पूर्वोक्त म्लेच्छोंके ससर्गके प्रायश्चि त्त विषे प्राजापत्य व्रत करणे कर्के पवित्र होतेहैं । और अग्निहोत्री कों चांद्रायण अथवा परा क पवित्र करण वाला होताहै ॥ १ ॥ और एक वर्ष निरंतर म्लेछके साथ निवास करणे कर्के चांद्रायण करें अथवा पराकव्रत करे तद पवित्र होताहैं और शूद्र एक वर्ष निवास कर्के फेर आधा महीना दिन १५ अपनी शुद्धि वास्ते यावक पान करे २ और जेकर शूद्र एक महीना तिन्होके साथ निवास करे तद पाद कृच्छ्र कर्के शुद्ध होताहै और वर्ष ते उपरंत जे कर म्लेछ के साथ निवास करे तद ब्राह्मणोंने उसके वास्ते प्रायश्चित्त कल्पना करणे योग्यहैं ३ अर्थात् दो वर्षके संसर्ग विषे दूणा और तीन वर्षके संसर्ग विषे त्रीणा कल्पना करणा चा हिये ।, संवेति और चार वर्ष कर्के म्लेछ भावको प्राप्त होजाताहै अर्थात् तिसका प्रायश्चित्त

अनग्निसाग्नित्वेनव्यवस्थापयतिप्रायइति प्रायश्चित्तेद्विजातौतुप्राजापत्यं विशोधनं । चांद्रायणंवाहिताग्नेः पराकस्त्वथवाभवेत् । १ । चांद्रायणंपरा कंचर्चरेत्संवत्सरोषितः । संवत्सरोषितः शूद्रोमासार्द्धयावकंपिवेत् २ मा समात्रोषितःशूद्रः कृच्छ्रपादेनशुद्ध्यतिऊर्ध्वंसंवत्सरात्कल्प्यंप्रायश्चित्तंद्विजो त्तमैः ॥ ३ ॥ संवत्सरादूर्ध्ववर्षद्वयंवर्षत्रयंयावत्म्लेच्छससर्गेपूर्वोक्तमेवद्विगु णंत्रिगुणंकल्प्यमित्यर्थः॥ संवत्सरैश्चतुर्भिस्तुतद्भावमधिगच्छति ॥ ४ ॥ स्पृ ष्टारजस्वलान्योन्यंब्राह्मणाशूद्रजायदा ॥ चतूरात्रंनिराहारापंचगव्येनशुद्ध्य ति ॥ १ ॥ ब्राह्मण्यनशनंकुर्यात् क्षत्रियास्नानमाचरेत् ॥ सचैलंवैश्यजा तीनांनक्तंशूद्यांविनिर्दिशेत् २म्लेच्छान्नंम्लेच्छसंस्पर्शोम्लेच्छेनसहसंस्थ ति; वत्सरंवत्सरादूर्ध्वंत्रिरात्रेणविशुध्यति १ इदमज्ञातविषयम् ॥

नहिहै॥४॥और जेकर ब्राह्मणी और शूद्रा एह रजस्वला होकर्के आपसमे स्पर्श करें तद चार रात्रि निराहार करणे कर्के और पंचगव्य पान कर्के शुद्ध होतीहैं । १ । और ब्राह्मणी रजस्वला क्षत्रिया रजस्वलाके साथ स्पर्श करे तद ब्राह्मणी एक निराहार करे क्षत्रिया स्नान मात्र करे तद पवित्र होतीहै । और वैश्य जातीकी रजस्वला सहित कपडेयांके स्नान करे और शूद्र जातीकी रजस्वला नक्त व्रत कर्के पवित्र होतीहै ॥ २ ॥ और म्लेछाति कि म्ले छका अन्न भक्षण करणा और म्लेछके साथ स्पर्श करणा और म्लेछके साथ एक आस न उपर स्थित होना जो कोयी पुरुष ऐसा करताहै सो वर्ष ते उपरंत तीन रात्रि निरा हार कर्के शुद्ध होताहै अर्थात् म्लेछके साथ वर्षते अधिक इतने काम कर्णे कर्के तीन उप वास कर्णे कर्के पवित्र होताहै परंतु एह प्रायश्चित्त अज्ञात विषयमे जानणा जिस कर्के थोडाहै ॥ १ ॥

और जो पुरुष म्लेछां कर्केवा चौरांकर्के अथवा वन विषे किसे लुटगेरे कर्के ताडितहोया २ अथवा अतिक्षुधा कर्के पीडाको प्राप्तहोया अभक्ष्यभक्षण कर लेवे अथवा किसीके भय कर्के अभक्ष्य भक्षण कर लेवे १ तद ब्राह्मणादिचार वर्णांकी शुद्धि इस प्रकार होतीहै क्याकि ओह पुरुष फेर अपने देश को प्राप्तहोकर प्रायश्चित्त करे २ कृच्छ्र मिति ब्राह्मण होवेतो एक कृच्छ्र कर्के पवित्रहुंदाहै और क्षत्री तिसतें पौंणा करे और वैश्य अपनी शुद्धि वास्ते आधा कृच्छ्र करे और शूद्र को एक पाद प्रायश्चित्त देवे तद पवित्र हुंदाहै १ और इस प्रायश्चित्ततें बिना चारवर्णांकी शुद्धि नहि होती २ और जिसने एसा प्रायश्चित्त कीता होवे तद उसके शरीर विषे मेखला और दंड इनते रहित यज्ञोपवीत संस्कार करणा योग्यहै॥इसी अर्थको स्पष्ट कर्के कहतेहै

म्लेच्छैर्हृतोवाचौरैर्वाकांतारेविप्रवासिभिः भुक्त्वाभक्ष्यमभोज्यंतुक्षुधार्तेनभयेनवा १ पुनः प्राप्यस्वकंदेशंचातुर्वर्ण्यस्यनिष्कृतिः २ स्वकंदेशंप्राप्य प्रायश्चित्तार्थीभवेत्तदाचातुर्वर्ण्यस्यापिनिष्कृतिरुच्यतइत्यर्थः॥कृच्छ्रमेकंचरेद्विप्रः पादोनंक्षत्रियश्चरेत् तदर्द्धमाचरेद्वैश्यः शूद्रः पादंसमाचरेत् १ चतुर्णामपिवर्णानामन्यथानैवनिष्कृतिः २ प्रायश्चित्तेविनीतेतुतदातेषांकलेवरेकर्त्तव्यःसूत्रसंस्कारोमेखलादंडवर्जितः ३ म्लेच्छैर्नीतोथशूद्रैर्वाहारितेदंडमेखले संस्कारप्रमुखंतस्यसर्वंकार्यंयथाविधि ४ अस्यसंस्कारेदंडमेखलेहारितेपरित्याज्येइत्यर्थः॥संस्कारांतेचविप्राणांदानंधेनुश्चदक्षिणा दातव्यं शुद्धिमिच्छद्भिरश्वगोभूमिकांचनम् ५ तदासौस्वकुटुंबानांपंक्तिप्राप्नोतिनान्यथा स्वभार्यांगंतुमिच्छेद्वैगच्छेच्चैवविशुद्धितः ६

३ म्लेच्छैरिति म्लेछों कर्के जो ग्रहण कीताहै अथवा शूद्रों कर्के ग्रहण कीता होवे तिसके संस्कार विषे मेखला दंड रहित विधि पूर्वक संपूर्ण यज्ञोपवीत संस्कार करणे योग्यहै ४ फेर संस्कारके अंत विषे ब्राह्मणों कोधेनु दक्षिणा देणीचाहिये और जिनको अपनी शुद्धि की इछा होवे उनोने ब्राह्मणोंके तांई घोडागौ सुवर्ण पृथवी एह अपनी शक्ति अनुसार देणा योग्यहै५तदेतिति और जेकर इस प्रकार प्रायश्चित करे तद अपने कुटुंब की पंक्ति को प्राप्तहोताहै अन्यथा क्या जेकर एह प्रायश्चितन होवे उतना चिर अपनीपंक्ति विषे भोजन करणेयोग्य नहि होता और जेकर अपनी स्त्री पास जाने की इछा होवे तदभी शुद्ध होकर जावे ६ ॥

अव होर पक्ष कहतेहैं अथेति और जिसको म्लेच्छोंने पकडियां होयां एक वर्षते ऊ पर काल होजावे तद उह पुरुष प्रथम प्रायश्चित्त कीतियां होयां फेर गंगा स्नान करणे कर्के पवित्र होताहै ॥ ७ ॥ और सिंधु सौवीर सौराष्ट्र कांवोज शश कलिंग एह जो देशकहेहैं और इनके समीपके जो निवासी देशहैं इन विषे प्राप्त होकर फेर संस्कारके योग्य होताहै अ र्थात् तीर्थ यात्राते विना जो पुरुष इनदेशों विषे चलाजावे सो फेर दूसरी वारी यज्ञोपवीता दि संस्कार कर्के पवित्र हुंदाहै और जो तीर्थ यात्राके अर्थजावे अथवा दिग्विजय के अर्थ राजाजावे तिनको कोई दोष नहि ॥ ८ ॥ वलादिति और जो पुरुष म्लेछोंने अथवा चांडा लोंने अथवा चोरोंने वल कर्के अपना दासवनालेयाहोवे और तिसीते गौ इत्यादि जीवों

पक्षांतरंदर्शयति अथसंवत्सरादूर्ध्वंम्लेच्छैर्नीतोयदाभवेत् प्रायश्चित्ततुसं चीर्णेगंगांस्नात्वाविशुध्यति ॥ ७ ॥ सिंधुसौवीरसौराष्ट्रांस्तथाप्रत्यंतवासि नः कांवोजशशकाल्गिानूगत्वासंस्कारमर्हति ८ अत्रायमभिप्रायःएषु म्लेछप्रायदेशेषुगतानांम्लेछसंसर्गभावनयाप्रायाश्चितमुक्तम् यत्रतु दिग्वि जयार्थंगतानांरघुप्रभृतिवद्राज्ञां तीर्थाटनार्थं गतानांसाधूनांनतत्संसर्गभा वना नतत्रप्रायश्चित्ताभिधानमिति॥ वलाद्दासीकृतोम्लेच्छैश्चांडालाद्यैश्च दस्युभिः अशुभंकारितंकर्मगवादिप्राणिहिंसनम् ९ उच्छिष्टमार्जनंचैवत थातस्यैवभक्षणम् तत्स्त्रीणांचतथासंगस्ताभिश्चसहभोजनम् १० कृच्छ्रा न्संवत्सरंकृत्वासांतपनान्शुद्धिहेतवे व्राह्मणःक्षत्रियस्त्वर्धंकृच्छ्रान्कृत्वावि शुध्यति ११ मासोषितश्चरेद्वैश्यःशूद्रःपादेनशुध्यति १२ अथस्त्रीविषये किंचिदुच्यते॥गृहीत्वास्त्रीवलादेवम्लेच्छैर्गुर्वीकृतायदि गुर्वीनशुद्धिमाप्नोति त्रिरात्रेणेतराशुचिः १

की हिंसा करवायीहोवे ॥ ९ ॥ अथवा म्लेछोंकी जूठ हाथ कर्के मार्जन कीतीहोवे अथ वा म्लेछादिकी जूठ भक्षण कीतीहोवे अथवा तिनकी स्त्रीसाथ मैथुन कीताहोवे अथवा तिनकी स्त्रियोंके साथ भोजन कीताहोवे ॥ १० ॥ तद व्राह्मण अपनी शुद्धि वास्ते एक वर्षत क कृच्छ्रसांतपनकरे और क्षत्री व्राह्मणते आधे कृच्छ्र करणे कर्के शुद्धिको प्राप्त होजंदाहै ११ और एक महीना उपवास कर्के पीछे वैश्यभी अर्ध कृच्छ्र कर्के शुद्धहोजंदाहै और शूद्र चौथा हेस्सा प्रायश्चित्त करणे कर्के पवित्र हुंदाहै ॥ १२ ॥ अवस्त्री विषेभी कुछ कहतेहैं गृहीति और म्लेछोंने वलते ग्रहण कर्के जेकर किसीकी स्त्री गर्भ वाली कीतीहोवे तद गर्भ वाली स्त्री नहि पवित्र होती और इतराक्या गर्भ रहित जोस्त्रीहै सो तिन्नं रात्रां कर्के पवित्र होजातीहै । १ ।

योषेति श्रौर जोस्त्री कामनाते श्रथवा कामनाते विना म्लेच्छ पुरुषते गर्भको धारण करतीहै सो यद्यपि ब्राह्मणीहो श्रथवा क्षत्रिया वैश्या शूद्रा होवे २ श्रौर जोस्त्री श्रभक्ष्य वस्तुको भक्षण करे तिसकी शुद्धि किसप्रकार होवेगी सो कहतेहैं कि सोस्त्री श्रपनी शुद्धि वास्ते सांतपन कृच्छ्र करे श्रौर शुद्ध घृत करके श्रपनी योनिको पका देवे श्रर्थात् घृत गर्म करके श्रपनी योनि विषे पावे तद पवित्र होजातीहै ॥ ३ ॥ श्रौर जो श्रसवर्णी पुरुषते स्त्रीयोकी योनि विषे गर्भका निषेक होताहै उतना चिर सो स्त्री श्रपवित्र रहतीहै जितना चिर उसगर्भको नहि त्यागतीहै ४ श्रौर गर्भके निकलयां होयां श्रौर पीछे रजका दर्शन होयां श्रर्थात् जेकर गर्भ वाहर निकल जावे श्रौर रजका दर्शन होवे तद सो स्त्री पवित्र होतीहै जैसेकि शुद्ध सुवर्ण होवे उसकी न्या

योषागर्भंविभर्त्तियाम्लेच्छात्कामादकामतः ब्राह्मणीक्षत्रियावैश्यातथावर्णेतराश्रपि ॥ २ ॥ श्रभक्ष्यभक्षणंकुर्यात्तस्याःशुद्धिःकथंभवेत् कृच्छ्रंसांतपनंशुद्धघृतैर्योनिविपाचनम् ॥ ३ ॥ श्रसवर्णात्तुयोगर्भःस्त्रीणांयोनौनिषिच्यते श्रशुद्धासाभवेन्नारीयावच्छल्यंनमुंचति ॥ ४ ॥ विनिःसृतेनशल्येनरजसोवापिदर्शने तदाशुद्ध्यतेसानारीविमलंकांचनंयथा ॥ ५ ॥ तद्गर्भोदीयतेऽन्यस्मैस्वयंग्राह्योनकर्हिचित् स्वजातौवर्जयेद्यस्मात्संकरःस्यादतोन्यथा ६ पुनरपिप्रकारांतरेणपुरुषविषयेप्रोच्यते ॥ गृहीतोवावलान्म्लेच्छैः स्वयंवामिलितस्तुवः वर्षाणिपंचसप्ताष्टौशुद्धिस्तस्यकथंभवेत् १ प्राजापत्यद्वयंतस्यशुद्धिरेषाप्रकीर्त्तिता

यी शुद्धहै ॥ ५ ॥ श्रौर सो गर्भभी श्रौर किसेके तांईदेणा चाहिये श्रापउस गर्भको कभीन हि ग्रहण करणा योग्य इस कारण ते श्रपनीजाति विषे उसका त्यागहि करणा योग्यहै जेकर उसका त्याग नहोवे तद श्रागे उसते संकर उत्पन्नहोगा इसवास्ते उसका त्याग करणाहि योग्य है ॥ ६ ॥ श्रव होर प्रकार करके पुरुष विषे कुछ कहतेहैं गृहीत इति (प्रश्न) श्रौर जो पुरुष वलते म्लेछोंने ग्रहण कीताहो श्रथवा श्रपनी इच्छा करके म्लेच्छोंके साथ मिल गयां होयां पंच वर्ष श्रथवा सातवर्ष श्रथवा श्राठ वर्ष श्रर्थात् जो पुरुष पांच ५ सात ७ श्राठ ८ वर्ष पर्यंत म्लेच्छोंके साथ रहे सो किसप्रकार पवित्र होताहै १ (उत्तर) तिसकी शुद्धि वास्ते दो प्राजा पत्य कहेहैं श्रर्थात् उह पुरुष दो २ प्राजापत्य व्रत करके शुद्ध होताहै

इसतें परे और कोयी शुद्धि नहिहै ॥ और म्लेछके साथ निवासमात्रहै और तिनके अन्नादिकाभ क्षण नहि तद तिसकें पवित्र करण वाला कृच्छ्रहि किहाहै क्योंकि जो पुरुष म्लेछकेसाथ नि वासकरताहै सो विना कृच्छ्रते पवित्र नहिहोता२ और पांच वर्षते आदिलेकर वीस २० वर्ष पर्यंत जो पुरुष म्लेछके साथ निवास करताहै तिसको एह प्रायश्चित्त किहाहै क्या कि सोपुरु ष दो ॥ २ ॥ चांद्रायण करणे कर्के पवित्र होताहै ॥ ३ ॥ और प्रथम कछकेवाल और लिंग केवाल और शिखाके वाल श्मश्रुक्या मुछां इनको त्यागकर और संपूर्णरोम मुनादेवे और हाथोंके और पैरोंके सभनख कटा देणे तद तिस कारणेत उह शुद्ध होजंदाहै ॥ ४ चत्वेति और इसमै कोइ पाठांतरते कहतेहैं कि उक्त ४ चार जगाके भीरोम उत्तारदेवे ॥ और

अतःपरंनास्तिशुद्धिःकृच्छ्रमेवसहोषिते । २ ॥ सहोषितेसहवासमात्रेनत्व न्नभक्षणादिसंसर्गे ॥ म्लेच्छैः सहोषितोयस्तुपंचप्रभृतिविंशतिं वर्षाणिशु द्धिरेषोक्तातस्यचांद्रायणद्वयम् ३ ॥ कक्षागुह्यंशिखाश्मश्रुचत्वारिपरिवाप येत् परिवर्जयेदितिक्वाचित्पाठः ॥ प्रहृत्यपाणिपादांतान्नखान्स्नातस्ततःशु चिः ॥ ४ चत्वारिपरिवापयेत् चतुर्ष्वपिस्थानेपुवपनंकुर्यादित्यर्थः ॥ इ दमपिसमस्तदेहवपनोपलक्षणंवोध्यम् ॥ पाणिपादांतान्नखान्प्रहृत्यउत्ता र्यस्नातःशुचिरिति प्रायश्चित्तांताविधिः ॥ योयथानैवजानातिप्रायश्चित्तं द्विजोत्तमः शुद्धिंददातिचान्यस्मैतदशुद्धेः सभाजनम् ॥ ५ सब्राह्मणःत स्यपापिनोऽशुद्धेर्भाजनमित्यर्थः॥संभाषणात्स्पर्शनाच्चम्लेच्छेनसहसंगमा त् कुर्यात्स्नानंसचैलंचदिनमेकमभोजनम् ॥ ६ ॥ माताम्लेच्छत्वमापन्ना पितरौवाकथंचन श्राद्धंषोडशवर्षेतुदेवलस्यवचोयथा ॥ ७ ॥

जोपुरुष यथार्थ प्रायश्चित्तको नहि जानता और पुरुषको प्रायश्चित्त देताहै सो तिसकेपाप का भांडाहै ॥ ५ ॥ और तिसके संगते भी सभामे स्थित पुरुष अपवित्र होताहै । और म्लेछ के साथ वात करणे ते और तिसके साथ स्पर्श करणेतें और तिसके एकआसन ऊपर स्थित होणेते पुरुष वस्त्र सहित स्नान करे और एक दिन उपवास करे तद पवित्रहोताहै ॥ ६ ॥औ र जिसकी माता म्लिछनी होजावे अथवा माता पिता एह दोनो म्लेछ भावको प्राप्त होजावें सो पुरुष सोलांवर्ष विषे शुद्ध होताहै क्या श्राद्ध करणेके योग्यहोताहै अथवा तिनांम्लेछोंका पुत्र श्राद्ध कीया चाहे तद १६ वर्षमै करे एह देवल जीका वाक्य है अर्थात् जिसके मा ता पिता म्लेछ होजावेंसो १६ वर्ष प्रायश्चित्त करणे कर्के पवित्रहोताहै । ७ ।

और स्त्रीयोंको और शूद्रोंको और पतित जोहैं तिनको पंचगव्य नहिदेणे योग्य और जेकर अवश्य देणाहो तद मंत्र रहित इनको पंचगव्य देणा ॥ १ ॥ अब पंचगव्यके देवता कहतेहैं किगोमूत्रका वरुण देवताहै और गोमयका अग्नि देवता किहाहै और दुग्धका चंद्रमा देवता जानणा और दधिका वायु देवता जानणा और घृतका सूर्य देवता किहाहै ॥ २ ॥ और पंचगव्य विषे गोमूत्र ताम्र वर्णकी गौका ग्रहण करणा किहाहै और श्वेतवर्णकी गौका गोमयलेना चाहिये और सुवर्णकी न्यायींहै वर्ण जिसका ऐसी जोगौहै अर्थात् पीत वर्ण गौका दूध ग्रहण करणा किहाहै और नील वर्णकी गौका दधि ग्रहण करणा ॥ ३ ॥ और कृष्णवर्णकी गौका घृत ग्रहण करणा इस वर्ण विभाग कर्के पंचगव्य एकत्र करणा योग्यहै और जेकर एह संपूर्ण वर्ण वर्णकी गौयां न प्राप्तहोवें तद कपिला गौका पंचगव्य बनालेना।

स्त्रीणांचैवतुशूद्राणांपतितानांतथैवच पंचगव्यंनदातव्यंदातव्यंमंत्रवर्जितम् १ वरुणोदेवतामूत्रेगोमयेहव्यवाहनः सोमःक्षीरेदध्निवायुर्घृतेरविरुदाहृतः २ गोमूत्रंताम्रवर्णायाःश्वेतायाश्चैवगोमयं दुग्धंकांचनवर्णायानीलिकाया श्चवैदधि ३ घृतंवैकृष्णवर्णायाविभक्तिर्वर्णगोचरा उदकंसर्ववर्णंतुकस्यव र्णोनगृह्यते ४ एकमात्रंतुगोमूत्रंगोमयंतुद्विमात्रकम् त्रिमात्रकंघृतंक्षीरंद ध्नःस्यादर्धमात्रकम् ५ व्रतेषुसर्वकर्मेषुपंचगव्यस्यसंख्यया ६ अथप्राय श्चित्तप्रकारंवक्तुंतावद्वक्तुःकर्तव्यतांदर्शयति॥प्रायश्चित्तंयथोक्तंहिदातव्यं ब्राह्मणैःसह अन्यथादापयेद्यस्तुप्रायश्चित्तीभवेद्द्विजः १

एह पिछे कह आएहैं और जिस जगा पंचगव्य किसे गौकाभी नाहि मिले उसजगा केवल जलहि पंचगव्योंके मंत्र कर्के ग्रहण करणा और तिसमें वर्णका विचार नाहि करणा ॥ एह कहतेहैं उदक मिति उदक यो जल है सो सर्ववर्ण साधारणहै ४ ॥ औरइस विषे भी एक भाग गोमूत्र और दोभाग गोमय और तीन भाग घेउ और । दूध और आधा भाग दधि इस क्रम कर्के एकत्र करणा किहाहै ॥ ५ ॥ और संपूर्ण व्रतों विषे और संपूर्ण कर्मो विषे इसी संख्या कर्के पंचगव्य एकत्र करणा योग्यहै ॥ ६ ॥ अब प्रायश्चि त्तके प्रकारको कहनेनुं पहिले कहणवालेकी कर्त्तव्यताको कहतेहैं प्रायइति और जैसा पापी को प्रायश्चित्त किहाहै सो ब्राह्मणोंके साथहि होकर देणा चाहिये और जो ब्राह्मणांते बिना आपहि पापीको प्रायश्चित्त देताहै सो आपहि प्रायश्चित्ती होताहै, इस वास्ते ब्राह्मको साक्षी रख कर्के यथार्थ प्रायश्चित्त देणा चाहिये ॥ १ ॥

और कपिला गौका दूध दोहन कर्के जो पुरुष गरम२धारा दुग्ध पान करे एह व्यासदेव जी ने कृच्छ्र किहाहै कैसा एह कृच्छ्रहै चांडालको भी शुद्ध करताहै॥ इसमै कितने दिन पीणाहै एह संख्या अपणे चित्तसे विचार कर कहणी और दूधका प्रमाण भी आहारते चतुर्थांश जानणा २॥ तिलांका हवण करणा और विष्णो रराट मासि इस मंत्र कर्के जप करणा सावधान होकर तद प्रायश्चित्ती पवित्र होताहै॥ ३ और इसी वास्ते बहुत क्या कहनाहै कि प्रायश्चित्त विषे तिल होम अवश्य विधान कीताहै किस वास्ते प्रायश्चित्ती पुरुष तिल दान कर्के और तिल भक्षण कर्के पापको निवारण करताहै॥ ४ और ब्राह्मण जो कुछ तीर्थ विषे स्नान कर्के जिस फलको संपादन करताहै और जो फल तप कर्के प्राप्त होताहै उस फल कर्के सभ पाप दूर होतेहैं ॥ ५ एह तृतीयादि प्रकरण विषे भीहै परंतु इत्थे प्रसंगते किहाहै ॥ प्रायइति और जिस

कपिलापायसंदुग्ध्वाधारोष्णंयःपयःपिवेत् एषव्यासकृतःकृच्छ्रःश्वपाकमपिशोधयेत् ॥ २ ॥ तिलहोमंतुकुर्वीतजपंकुर्यादतंद्रितः विष्णोरराटमंत्रेणप्रायश्चित्तीविशुद्ध्यति ॥ ३ ॥ बहुनात्रकिमुक्तेनतिलहोमोविधीयते तिलान्दत्त्वातिलान्भुक्त्वाकुर्वीतापनिवारणम् ४ संपादयतियद्विप्रःस्नानंतीर्थफलंतपः समाक्रामयतेपापंतस्यसंपद्यतेफलम् ॥ ५॥ प्रायश्चित्तंसमाख्यातंयथोक्तंदेवलेनतु इतरेषामृषीणांतुनान्यथावाक्यमर्हति ॥ ६ ॥ सुवर्णदानंगोदानंभूमिदानंतथाह्निकं ॥विप्रेभ्यःसंप्रयच्छेतप्रायश्चित्तीविशुद्ध्यति ७ ॥ अथसंसर्गविषयेपंचगव्यप्रदानप्रकारः ॥ पंचद्व्यहसहवासेन संभाषणसहासनैः ॥ संप्राश्यपंचगव्यंतुदानंदत्त्वाविशुद्ध्यति ॥ ८ ॥

प्रकार देवल जीने प्रायश्चित्त किहाहै सोयी प्रायश्चित्त इस स्थान विषे किहाहै इस वास्ते और ऋषियोंका वाक्य भी व्यर्थ होने योग्य नहिहै अर्थात् होरना ऋषियोंको भी एह प्रमाणहै इसमे समयानुसार व्यवस्था करणी चाहिए॥ ६ और सुवर्ण दान करणा और गौदान कर्के ब्राह्मणोंके तांयी देणा और भूमि दान कर्के ब्राह्मणोंके तांयी देणी और नित्यं प्रति संध्या वंदनादि कर्म करणे इनको विधि पूर्वक करणे कर्के प्रायश्चित्ती पुरुष पवित्रताको प्राप्त निश्चय कर्के होजाताहै ॥ ७ अथसंसर्ग विषयमै पंचगव्यके देणेकाप्रकार कहतेहैं और जो पुरुष म्लेच्छके साथ पंच ५ दिन अथवा दो २ दिन एक स्थान विषे निवास करे अथवा संभाषण करे अथवा एक आसनके ऊपर स्थित होवे सोपुरुष पंचगव्य पान कर्के और ब्राह्मणके तांयी यथाशक्ति कुछ दान दे कर्के शुद्ध होताहै ॥ ८ ॥

और जो उत्तम ब्राह्मण म्लेछके साथ एक दिन दो २ दिन तीन ३ दिन चार ४ दिनपंच ५ दिन जेकर निवास करे तदक्रम कर्के पंच गव्यकी वस्तुयोंका योग करे ॥ ९ ॥ सोई कहतेहैं एकेति एकदिन म्लेछके साथ निवास कर्के एक दिन गोमूत्र पान करे औरजेकरदोदिन करे तद दोदिन गोमूत्र और गोमय एहदोनो एकत्र कर्के भक्षण करे और जेकर तीन दिनकरेतद गोमूत्र गोमय दुग्ध एह एकत्र कर्के तीनदिन पान करे और चार दिन विषे संबंधकरेतद इन केसाथ दधि मिलाकर चार दिनभक्षण करे । १० ।और पांच दिनके संबंधविषे इनके साथ घृत मिला कर संपूर्ण पंचगव्यदेवे तद उह ब्राह्मण पांचदिन मे पवित्र होताहै ॥ ११ ॥ और जिस स्थान विषे पांच५दश १० पंदरह १५ वीसदिन २० म्लेछ के साथ निवास होवेति

एकद्वित्रिचतुःपंचवासरान्संवसेद्यदिम्लेच्छवासंद्विजश्रेष्ठः। क्रमात्तद्द्रव्ययोगतः ९ एकाहेनतुगोमूत्रंद्व्यहाच्चैवतुगोमयम् त्र्यहात्क्षीरेणसंयुक्तंचतुर्थेदधिमिश्रितम् १० पंचमेघृतसंपूर्णंपंचगव्यंप्रदापयेत् ११ । पंचयत्रदशाहानिपंचादशचविंशतिम्। संवासंतत्रवक्ष्यामिदेहशुद्धिंद्विजन्मनम् १२ ॥ पंचाहेः पंचगव्यंस्यात्पादकृच्छ्रंदशाहकैः पराकंपंचदशाभिःविंशत्याकृच्छ्रमेवच १३ उदरं प्रविशेद्यस्यपंचगव्यंविधानतः यत्किंचिद्दुष्कृतंतस्य सर्वंनश्यतिदेहतः ॥ १४ पंचसप्ताष्टदशवाद्वादशवाथविंशतिः म्लेच्छत्वंतस्यविप्रस्यपंचगव्यंविशोधनम् ।१५ अथव्रतप्रकारः ॥ पंचगव्यंचगोक्षीरंदधिमूत्रशकृद्घृतं प्राश्यान्येद्युरुपवसेत्कृच्छ्रंसांतपनं चरेत् ॥ १

सस्थान विषे ब्राह्मणों किदेह शुद्धि कथन करताहुं १२ ॥ क्याकि पांच दिन कर्के पंचगव्य पान करणा । और दश दिन विषे पाद कृच्छ्र करणा और १५ दिन कर्के पराक करणा और २० वीसदिन कर्के एक कृच्छ्र करणा योग्यहै॥ १३॥ किस वास्ते एह पंचगव्य विधि पूर्वक जिसके उदर विषे प्रवेश करे तिसके संपूर्ण पाप नाशहो जातेहैं । १४ ॥ और पाच ५ सात ७ आठ ८ दश १० बारां १२ वीस २० दिन जिस ब्राह्मणको म्लेछका संग होवे उसको पंचगव्य पवित्र करदेताहै ॥ एह प्रकार भी केवल ब्राह्मण वास्ते हिहै १५ अथव्रत स्वरूप कहतेहैं पंचेति किपंच गव्य क्या गौका दूध दधि घृत गोमूत्र गोमय इनको एक २ दिन भक्षण कर्के फेर एक दिन उपवास करणा एह सांतपन कृच्छ्रहै तिसको अपनीशुद्धि वास्ते करे ॥ १ ॥

और एहसांतपनके द्रव्यों कर्के भिन्न २ छे दिनका व्रतहै उपवासकेसहित और एहिजेकरसात ७ दिनकर्के होवेतद इसका नाम महासांतपन किहाहै सोछे दिन इस तहां कर्के हुंदेहैं किपंचगव्यकियांवस्तुभिन्न २ कर्के होए ५ छेवें दिन कहे ५ इसकर्के होए ६ और एकउपवास कर्के ॥ २ ॥ और ढंबल पत्तर १ कमल २ विल्वपत्र ३ कुशाकाजल ४ इनको भिन्न २ एक२दिनभक्षणकरणा इसकानाम पर्ण कृच्छ्र किहाहै एहचारदिन कर्के होताहै ॥ ३ और गरम पात्रविषें स्थित जो घृत एहपूर्वोक पर्णादि५और घृतएहाभिन्न२कए२ दिनपान करे और एकदिन उपवास करे इसकानाम तप्तकृच्छ्र किहाहै अथवाचार दिन ढंबलके पत्रके साथ जितना घृत आवे उतनाखावे तदतप्तकृच्छ्र व्रत हुंदाहै ॥ ४ और एकदिन एककाल भोजनकरणा और एक

दिनद्वयसाध्यमिदम्) पृथक्सांतपनद्रव्यैः षडहः सोपवासकः सप्ताहेनतुकृच्छ्रोयंमहासांतपनःस्मृतः २ पर्णोदुंबरराजीवविल्वपत्रकुशोदकैः प्रत्येकं प्रत्यहंपीतैःपर्णकृच्छ्रउदाहृतः ॥ ३ ॥ चतुर्दिनसाध्यमिदम् । तप्तभांडघृतपर्णमेकेकंप्रत्यहंपिवेत् एकरात्रोपवासश्चतप्तकृच्छ्रस्तुपावनः ॥ ४ ॥ ... भांडघृतादौदुंवरपर्णपूरयित्वाप्रत्यहंदिनचतुष्टयं यावत्पिवेदित्यर्थः । एक भक्तेननक्तेनतथैवायाचितेनच उपवासेनचैकेनपादकृच्छ्रउदाहृतः ॥ ५ ॥ कृच्छ्रातिकृच्छ्रःपयसादिवसानेकविंशतिं द्वादशाहोपवासेनपराकः... ग्कीर्त्तितः ॥ ६ ॥ पिण्याकशाकतक्रांबुसक्तूनांप्रतिवासरं एकरात्र... ॥ सश्चकृच्छ्रसौम्यःप्रकीर्त्तितः ॥ ७ ॥ एषांत्रिरात्रमभ्यासादेकैकस्ययथाक्रमं तुलापुरुषमित्येषज्ञेयःपंचदशाहिकः ॥ ८ ॥ तिथिवृद्ध्याचरेत्पिंडान्शुक्ले शिख्यंडसम्मितान् एकैकंह्रासयेत्पिंडंकृष्णेचांद्रायणंचरन् ९

दिन रात्रिमे भोजनकरणा और एकदिनअयाचित और एकदिन उपवास इसकानाम पादकृच्छ्र किहाहै ॥ ५ ॥ कृच्छ्रेति और इक्कीस २१ दिनकेवल दूधपानकर्के व्यतीत करणा इसकानामकृच्छ्रातिकृच्छ्रकिहाहै और बारां १२ दिनविषें उपवासकरणा इसकानामपराककिहाहै ॥ ६ और तिलोंकी खल १ शाक २ छाछ ३ जल ४ सत्तू ५ एहएक २ दिनभक्षणकर्के फेरएकदिनउपवास इसकानामसौम्य कृच्छ्र किहाहै ॥ ७ औरइनवस्तूमेहि एकवस्तु तीन २ दिनअभ्यास करनेते पंदरहादिनका तुलापुरुषजाणणा ॥ ८ औरशुक्ल पक्षविषें मोरके अंडेजितना एक२तिथिक्रमकी वृद्धिकर्के भक्षण करे और कृष्ण पक्षविषें एक २ ग्रास कमती करताजावे ॥ ९ ॥

ऐसेहि २४० ग्रासमहीनेमे होतेहैं इसकानाम चांद्रायण किहाहै और विशेष व्रत प्रकरण विषें देषना एह इहां प्रासंगिकहै १० एह देवलजीकाधर्म्म शास्त्रहै ॐ और इसप्रकार महापातकों करके पतित जो पुरुषहै उसकेवास्तेजो प्रयश्चित्त किहाहै और जो पुरुष अभि मानतें प्रायश्चित्त करणे की इछा नाहिक रेतिसको क्या करणायोग्यहै इसविषे मनुजीने किहाहै पतितस्येति कि महापातकोंके जीवतेंहितिस केयोसपिंडहैं और समानोदकहैं तिनोंने एकत्र होकर इसरीतीसे प्रेतकी उदक क्रिया करणी चाहिये क्याकि ग्रामतें बाहर करके अपने सभजाती और ऋत्विज गुरु इनके समीप रिक्तातिथि जोन वमी तिथिहै तिसदिन सायं काल विषें जैसे मृत होयेकी उदक क्रिया होतीहै तैसेहि तिसप तितकी प्रेत संबंधी उदक क्रिया करणे योग्यहै १ और तैसेहि याज्ञवल्क्यजीने किहाहै दासी

यथाकथंचित्पिंडानांचत्वारिंशच्छतद्वयम्१०इतिदेवलकृतंधर्मशास्त्रम् ॥ॐ एवंमहापातकादिभिःपतितस्यप्रायश्चित्तमुक्तम् ॥। यस्त्वौद्धत्यान्नचिकीर्षे तितस्यकिंकार्य्यमित्याहमनुः॥ पतितस्योदकंकार्यं सपिंडैर्बांधवैः ॥ निंदितेहनिसायाह्नेज्ञात्यृत्विग्गुरुसन्निधौ ॥ १ पतितस्येतिमहापातकिनो जीवतएवप्रेतस्योदकक्रियावक्ष्यमाणरीत्या सपिंडैःसमानोदकैर्ग्रामाद्ब हिःकृत्वाज्ञातिऋत्विक् गुरुसन्निधानेरिक्तायांनवम्यांतिथौदिनान्तेकर्त्तव्या तथाचयाज्ञवल्क्यः॥ दासीकुंभं वहिर्ग्रामान्निनयेरन्स्वबांधवाः पतितस्यव हिःकुर्युःसर्वकार्येषुचैवतामिति अत्रमिताक्षरा एतच्चनिनयनमुदकपिंडदाना दिप्रेतक्रियोत्तरकालंद्रष्टव्यम् तस्यविद्यायोनिगुरुसंबंधाश्चसन्निपात्यसर्वा एयुदकादीनिप्रेतकर्माणिकुर्युः पात्रंचास्यविपर्यस्येयुः

कुंभ मिति किपतित के जो संबंधीहैं सोसभ एकत्रस्थित होकर ग्रामते बाहर एकदासी कुंभक्या अपवित्र घडाजलसे पूर्णकरें फेर उस पतितकानाम लेके करके पैरकेसाथ उसघडेको उलटा कर देवें फेर उसदिन तें आदिलेकर तिसपतित कों सभकार्यविषें बाहर निकालदेवें और ऐसातद करणा जेकर उहपतित किसीके वाक्यकरकेभी प्रायश्चित्तनकरे इति ॥ और मिताक्षरामे ऐसालि षयाहै एह जोनियमहै क्याजलकुंभकाविपर्यय करणा सोसभ उदकापिंडदानादि प्रेतक्रियाहै ति सतें उत्तरकाल विषें जान्नणा अर्थात् प्रथम प्रेतक्रिया करके पीछेघटविपर्यय करणा चाहिये और तिसपतितकी विद्या जन्मगुरु संबंधि एहसभ कठेहोकरकेफेरसंपूर्ण उदकादि प्रेतक्रिया करें और फेर पात्रका विपर्ययभीकरें॥

श्रोर दास अथवा श्रोर कोयी कामकरणे वाला चकारते ऐसाहैकि अपवित्र पात्र लिया कर्के दासी घटाकों पूर्ण कर्के दक्षिण पासे मुखकर्के पैरके साथ उसघटको उलटा देवे श्रोर मुख ते एह संकल्प पडे कि अमुक जो पतितहैं तिसको जलक्रियाते रहित करताहुं॥ फेर तिसके पीछे सभ तिसका नाम उच्चारण करें। श्रोरप्राचीनावीतिनोक्या अपसव्यहोकर्के श्रोर शिखाको खोलकर्के पतितकी प्रेतक्रिया कर्के फेर योनिसंबंधादि लोक उसको कुछ न देखें श्रोर जलकों स्पर्श कर्के ग्राम विषे प्रवेश करें एह गौतम स्मृति विषे किहाहि इसतें॥अयमितिकि इस प्रकारत्याग तद करणा चाहिये जेकर संबंधियों कर्के प्रेरणाकों प्राप्त हो कर्के भी अपनी शुद्धि वास्ते प्रायश्चित्तनकरें॥ श्रोर स्मृति कहतेहैं तस्येति तिस पापीके गुरु श्रोर संबंधि ऐसे करें कि राजाके सन्मुखदोष प्रकट कर्के उस पापीको इस प्रकार कथन करें कि तुम अपने आचार

दासःकर्मकरोवा चकारात् अमेध्यपात्रमानीय दासीघटान् पूरयित्वादक्षिणाभिमुखःपदाविपर्य्यस्येदिदं अमुकमनुदककरोमीति नामग्रहांतंसर्वेऽन्वालभेरन् प्राचीनावीतिनोमुक्तशिखाविद्यागुरवोयोनिसंबंधाश्चनवीक्षेरन् अपःस्पृश्यग्रामंप्रविशेयुः इतिगौतमस्मरणात्॥ अयंचत्यागोयदाबंधुभिःप्रेर्यमाणोपिप्रायश्चित्तंनकरोतितदाद्रष्टव्यः तस्यगुरुबांधवाःराजसमक्षंदोषानभिख्याप्यानुभाष्यपुनःपुनराचारंलभस्वेति सयद्येवमप्यनवस्थितमतिःस्यात्ततोस्यपात्रंविपर्यस्येदितिशंखस्मरणात्। दासीघटमपांपूर्णंपर्य्यस्येत्प्रेतवत्पदा अहोरात्रमुपासीरन्नशौचंबांधवैःसह ॥ १ ॥ दासीतिसपिंडसमानोदकप्रयुक्तादासीउदकपूर्णंघटंप्रेतवदिति दक्षिणाभिमुखीभूयपादेनक्षिपेत्। यथासनिरुदकोभवति। तदनुतेसपिंडाःसमानोदकैः सहाहोरात्रमशौचमाचरेयुः

कों प्राप्तहों श्रोर ऐसे तिनके वाक्य कर्के भी जेकर तिस पातकीकी मति स्थिर न होवे तद तिसका पात्र विपर्यय करणा योग्यहै एह शंखस्मृति विषे लिखयाहै इस कारणते॥श्रोर स्मृति कहतेहैं दासीति तिसके जो सपिंड क्या भाई बंधु श्रोर समानोदकहै तिनां सभसंबंधियां कर्के प्रयुक्त जो एकदासीहै सो ऐसे काम करे कि एकघडेको जलके साथ पूर्ण कर्के प्रेत की न्यायी दक्षिण दिशामे मुख कर्के अपने पैरके साथ उस घटको उलटा कर देवे ॥ १ ॥ श्रोर जैसे सो पापी निरुदकहो जाताहै अर्थात् फेर तर्पण विषे श्राद्ध विषे सभसंबंधियाकों उसवास्ते जलदेणका अधिकार नहि रहिना कि फेर कोयी संबंधीभी उसके निमित्त जलनदेवे॥ श्रोर तिसकेपीछे सो संपूर्ण सपिंड समानोदकोंके साथ एक दिन रात्रि अशौच करें॥

और प्रेतवत् एह शब्द इस अभिप्राय कर्के किहाहै कि दाक्षिणाभि मुखहो कर्के और अपसव्य यज्ञोपवीत कर्के पूर्वोक्त कार्य करणा इसीकी प्राप्तिवास्तेहै एह मिताक्षरा विषे लिखयाहै ॥ निवर्त्तेश्चेति कितिस पतिततें सपिंडादियों के मध्य विषे इतने कामनिवृत्त करणे चाहिये किफेर उस पतितके साथ संभाषण और एक आसन ऊपर स्थिति और तिसके तांयी हेस्सा देना और वार्षिक श्राद्धादि विषे और विवाह विषे निमंत्रण रूपजो लोकव्यव हारहै सोसंपूर्ण कार्य दूर करदेवें अर्थात् सभ संबंधि उस पतिततें सभ व्यवहारका त्याग करे ३ और जेकर हितकर्के तिसके साथ जो पुरुष संभाषण करे तद तिसने प्रायश्चित्त करणा योग्यहै सोयी गौतम जीने किहाहै अतइति इसते उपरंत कि इस प्रकार पतितका त्याग कीतियां होयां फेर जेकर ज्ञानतें विना उस पतितके साथ संभाषण करे सो एक रात्रिगाय

प्रेतवदिति दक्षिणामुखापसव्ययोः प्राप्त्यर्थमितिमिताक्षरा॥ निवर्त्तेरंश्च तस्मात्तुसंभाषणसहासने दायाद्यस्यप्रदानंचयात्राविवाहलौकिकी ३ निवर्त्तेरन्निति तस्मात्पतितात् सपिंडादीनांसंभाषणमेकासनोपवेशनंच तस्मैरिक्थप्रदानंसांवत्सरिकादौनिमंत्रणादिरूपोलोकव्यवहार एतानिनि वर्त्तेरन् ३ यदिस्नेहादिनासंभाषणंकरोति तदाप्रायश्चित्तंकार्य्यम् गौत्तमः अतऊर्ध्वंतेनसंभाष्यतिष्ठेदेकरात्रंजपन्सावित्रीमज्ञानपूर्वंज्ञानपूर्वंचेत्त्रिरात्र म्॥ज्येष्ठताचनिवर्त्तेतज्येष्ठावाप्यंच यद्धनं ज्येष्ठांशंप्राप्नुयाच्चास्ययवीयान्गु णतोधिकः ॥ ४ ॥ ज्येष्ठतेतिज्येष्ठस्ययत्प्रत्युत्थानादिकं कार्य्यं तत्तस्यन कार्य्यम् ज्येष्ठलभ्यंचतस्याविंशत्युद्धारादिकंधनंनदेयम् यद्यपि ऋक्थ प्रदानप्रतिषेधादेवाप्युद्धारप्रतिषेधः सिद्धः ॥

त्री जप कर्के पवित्र होताहै और जेकर जान कर्के तिस पतितके साथ संभाषणादि व्यवहार करे तद तीनरात्रि गायत्री जप करणे कर्के शुद्धिको प्राप्तहोताहै ४ ज्येष्ठता इत्यादि योस्मृति है इसका अर्थ आपहि मूलविषे स्पष्ट करेंगे ॥ ज्येष्ठेति कि अपनेतें वडे को जो प्रत्युत्था नादिक करणा किहाहै सो तिस पतित को फेर नहि करणा योग्य । और ज्येष्ठ को जोधन अपने विभागतें अधिक ग्रहण करणा किहाहै सोभी तिसको विंशति उद्धारादि क रूप धन नहि देणा योग्य अर्थात् जितने भ्राताहैं उन सभ विषे ज्येष्ठको संपूर्ण पिता के धनका वीसवां हिस्सा अधिक देणा शास्त्रमे लिखयाहै सो उसकोनहिदेणा और यद्यपि दूसरस्थानविषें धनदानके निषेध तेंहि उद्धार निषेध सिद्ध होजाताहै

तदपि तिसते छोटेकों तिसधनकीप्राप्ति वास्तेलिखाहै क्या कि तिसज्येष्ठ संबंधि जोधनहै उद्धारकेसहित सोसभधन तिसते जो अधिकगुणवालाकनिष्ट भ्राताहे तिसने ग्रहणकरणा ४ । प्रायश्चित्तेति कि फेर पतितने प्रायश्चित्तकीतियांहोयातिसके जो सपिंडसमानोदकहैं सोसंपूर्णकीयाहै प्रायश्चित्तजिसने तिसकेसाथ पवित्र जलाशय विषे स्नानकर्के जल पूर्णजो नवीन घटहै तिस' का प्रक्षेपकरें ५ और इसस्थानविषे नवीनघट ग्रहणते दासीघटकाहि उपयोगकीयाहै ऐसाप्रतीतहोताहै अर्थात् तिसनवीन घटको पतितकेतांयींदेणा और पीछेघरको ल्याउण इसकर्के दासीघटका परिहारप्रतीतहुंदाहै ॥ और गौत्तमजीने इसविषे विशेषकिहाहै कि जोपुरुष प्रायश्चित्त

तथापियवीयसस्तत्प्राप्त्यर्थमनूद्यते तस्यैवज्येष्ठस्यसंबंधिधनं सोद्धारांशं तदनुजोगुणाधिकोलभते ४ पुनः पतितसंग्रहायाह प्रायश्चित्तेतुचरितेपूर्णकुंभमपांनवम् तेनैवसार्द्धंप्रास्येयुः स्नात्वापुण्येजलाशये ५ प्रायश्चित्तेति कृतेपुनः पतितेन प्रायश्चित्तेसपिंडसमानोदकास्तेनैवकृतप्रायश्चित्तेनसहपवित्रेजलाधारेस्नात्वाजलपूर्णनवंघटं प्रक्षिपेयुः इहनवघटग्रहणा द्दासीघट एव कृतोपयोगघटः प्रतीयते (प्रक्षिपेयुः पतितायदद्युः ततश्चगृहं निनयेयुः) गौत्तमेनात्रविशेषउक्तः। यस्तुप्रायश्चित्तेनशुध्येत्तस्मिन् शुद्धेशातकौंभमयंपात्रं पुण्यतमाद्ध्रदात्पूरयित्वा स्रवंतीभ्योवाततएनमुपस्पर्शयेयुः अथास्मैतत्पात्रंदद्युः तत्संप्रतिगृह्यजपेत् शांताद्यौः शांतापृथिवीशांतंशिवमंतरिक्षंयोरोचनस्तमिहगृह्णामीत्येतैर्यजुर्भिस्तरत्समंदीभिः पावमानीभिः कूष्मांडैश्चाज्यंजुहुयात् ब्राह्मणायवादद्यात् गांचार्याय ॥

कर्के शुद्धहोताहै तिसके शुद्धहोयां सुवर्णका पात्र पवित्र हृदतेपूर्ण कर्के तिसके जो सपिंडसमानोदकहैं सोसभस्रवंतीभ्यो वा क्या अथवा नदीते पूर्ण कर्के तिससुवर्णपात्रने इसकों जलकास्पर्श करवावें और इसते अनंतर फेर उसी तांयीं उह पात्र देदेवें सो पुरुष पात्रकों ग्रहण कर्के इसमंत्रका जपकरें सोमंत्र शांताद्यौः इत्यादि मूलविषे लिखयाहे और इसीमंत्र कर्के और यजुर्वेदके जो मंत्रहैं और तरत् समंदीभिःइत्यादि जो मंत्रहैं और पवमानादि जो ऋचाहैं और कूष्मांडऋचाहैं तिन कर्के भिन्नभिन्न घृतका हवन करें फेर सुवर्णब्राह्मणके तांयींदेवे आचार्यकेतांयीं गौदान देवे तब पवित्रहोताहै ॥

और जिसकों प्राणांत प्रायश्चित्त किहाहै सो मरणे कर्के हि शुद्ध होताहै ॥ और तिसकेसंबंधीयो हैं सो तिसके मृत होयां तिसके निमित्त जलदानादि संपूर्ण प्रेत कर्म करें और एहिशांति जल सभ उपपातकोंविषेभी जानणा इति । सत्वेति किकीताहै प्रायश्चित्त जिसने सो पुरुष तिस पूर्वोक्त घटकों जलके मध्य विषे गिराय कर्के फेर तिसतें अनंतर अपने घर विषे प्रवेश कर्के जैसे पूर्वकार्य करताहो तैसे अपने संबंधियोंकेसाथकार्यां कों करे ॥ ६ ॥ और ऐसेहि विधिको पतित स्त्रीयां विषे करे अर्थात् जेकर स्त्री पतित होजावे और संबंधियोंके कहेसेभी जो प्रायश्चित्त न करे उसके वास्तेभी इसी प्रकार पूर्वोक्त विधि करणी योग्यहै । क्या कि पतितका उदक कार्य करणा योग्यहै इत्यादि विधिकों तिसस्त्रीका पति और सपिंड समानोदक वर्ग जो हैं सो करे ॥ और उन पतित स्त्रीयोंका इस विधि कर्के त्याग कीतियां भी भोजन वस्त्र फेर भी

यस्यतुप्राणांतिकंप्रायश्चित्तंसमृतःशुद्ध्येत् सर्वाण्येवमस्मिन्नुदकादीनि प्रेतकर्माणिकुर्युःएतदेवशांत्युदकंसर्वेपूपपातकेष्विति ॥ सत्वप्सुतंघटंप्रास्यप्रविश्यभवनंस्वकं सर्वाणिज्ञातिकार्याणियथापूर्वंसमाचरेत् ६ सत्वितिसकृतप्रायश्चित्तःतंपूर्वोक्तघटंजलमध्येक्षिप्त्वाततःस्वकीयभवनंप्रविश्य यथापूर्वंसर्वाणिज्ञातिकर्माणिकुर्यात् ॥ ६ ॥ एतमेवविधिंकुर्याद्योषित्सुपतितास्वपि वस्त्रान्नपानंदेयंतुवसेयुश्चगृहांतिके ७ ॥ एतमिति स्त्रीष्वपि पतितासुएतमेवपतितस्योदकंकार्य्यमित्यादिविधिंभर्त्रादिसापिंडसमानोदकवर्गःकुर्यात् ग्रासाच्छादनानिपुनराभ्योदयानि गृहसमीपेचासांवासार्थंकुटीर्दद्युः ॥ कास्ताःपतिताइतिपतितगणनायांज्ञेयम् ७ अकृतप्रायश्चित्तिनासंवसतःकृतप्रायश्चित्तिनासहावसतोदोषमाहयाज्ञवल्क्यः ॥एनस्विभिरनिर्णिक्तैर्नार्थंकंचित्सहाचरेत् कृतनिर्णेजनांश्चैवनजुगुप्सेतकर्हिचित्

तिनकों नांगी देनेंहि योग्यहै । और उनके संबंधी अपने घरके समीप इनको निवास करणे वास्ते कुटिया बना देवें और कौनसीयां पतितहैं एह विचार पतितोंकी गिनती विषे जानने योग्यहै इति ॥ ७ ॥ जिनोंने प्रायश्चित्त नहिकीता तिनके साथ यो व्यवहार करण वालेहैं तिनको और जिनोंने प्रायश्चित्त कीताहै तिनके साथ जोव्यवहार नहि करदे तिनका दोष कहतेहैं याज्ञवल्क्यजी एनस्विभिरि तिकेनाहि कीयाहै प्रायश्चित्त जिनोंने ऐसे पापीयोंके साथ दान प्रतिग्रहादिक अर्थ कुछभी नकरे अर्थात् पापीको नदान देणा और नपापीतें प्रतिग्रह ग्रहण करे इत्यादि और भी व्यवहार पापीके साथ कुछ नहि करे और जिनोंने अपनी शुद्धि वास्ते प्रायश्चित्त कीयाहो तिनको कदाचित् भी पूर्वकृत पाप कर्के निंदा न करे ॥ १ ॥

किंतु पूर्वकी न्यायीं उसके साथ व्यवहार करे अर्थात् जिन पुरुषोंने पाप निवृत्ति वास्ते संबंधियोंके वाक्य कर्के अपनी जाति विषे भोजनादि व्यवहारके निमित्त प्रायश्चित्त कीयाहै तिनको ऐसा निंदावाक्य कभी न कहे कि तुमने एह अमुक पाप कीताहै और जैसे आगे उनके साथ व्यवहार होताहो फेर भी तैसे हि करणा योग्यहै ॥ ८ ॥ और कैयोंने प्रायश्चित्त कीता भी है तथापि तिनां साथ व्यवहार नहि करणा एह कहतेहैं वालघ्नानिति बालक मारणे वाला जो पुरुषहै और किसीके कृत उपकारको दुष्ट आचरण करणे कर्के जो पुरुष नाश करणे वाला और अपनी प्राण रक्षा वास्ते जो शरण को प्राप्त होवे तिसको जो मारण वालाहै और जो

एनस्विभिरितिपापकारिभिरकृतप्रायश्चित्तैः सहदानप्रतिग्रहादिकमर्थंकिंचिन्नानुतिष्ठेत् कृतप्रायश्चित्तान्नैवकदाचिदपि पूर्वकृतपापत्वेन निंदेत्किंतुपूर्ववद्व्यवहेरत् ८ कृतप्रायश्चित्तिभिरपिकैश्चिन्नव्यवहार्य्यमित्याहसएववा लघ्नांश्चकृतघ्नांश्चविशुद्धानपिधर्मतःशरणागतहंतॄंश्चस्त्रीहंतॄंश्चनसंवसेत् ९ वालघ्नानिति वालंयोहतवान् कृतोपकारमपकाराचरणेनयोविनाशितवान् प्राणरक्षार्थमागतंयोहतवान् स्त्रियंचयोव्यापादितवान् एतान् यथावत्कृत प्रायश्चित्तानपि संसर्गितया न परिवसेत् ९ चरितव्रतविधौविशेषमाहमनुः उपवासकृतंतंतुगोव्रजात्पुनरागतं प्रणतंप्रतिपृच्छेयुः साम्यंसौम्येच्छसीति किं । १ । सत्यमुक्तातुविप्रेषुविकरेद्यवसंगवाम् गोभिःप्रवर्त्तितेतीर्थेकुर्युस्तस्यपरिग्रहम् २ केवलक्षीराहारेणेतरभोजनव्यावृत्त्या कृशदेहंगोष्ठात्प्रत्यागतंप्रणतंनम्रीभूतंकिमस्माभिः साम्यमिच्छसि पुनरसत्प्रतिग्रहंनकरिष्यसीतिएवंधर्मब्राह्मणाःपरिपृच्छेयुः ॥

स्त्रीको मारण वालाहै इनोंने विधि पूर्वक प्रायश्चित्त यद्यपि कीता भी होवे तदपि संसर्गि भाव कर्के इनके साथ न व्यवहार करे ॥ ९ ॥ प्रायश्चित्त कीतियां होयां फेर तिस विधि विषे मनुजीने विशेष किहाहै ॥ उपवासेति कि केवल दुग्ध पान करणे कर्के अतिकृश है शरीर जिसका और गोष्ठमें विधि पूर्वक निवास कर्के फेर आकर प्राप्त होयाहै और नमस्कार कर्के सन्मुख जो स्थितहै तिसको सभाके विद्वान् ऐसा कहे कि तुम असांके साथ साम्यताकी इच्छा करताहैं और फेर दुष्ट प्रतिग्रह न करें गा इस प्रकार ब्राह्मण धर्मको पूछें ॥ १

और उह आगे ते ऐसा कहै कि मैसत्य कहताहुं फेर असत् प्रति ग्रहमें नहि करोंगा अर्थात् कुकर्मनाकरोंगा इस प्रकार ब्राह्मणोंके आगे प्रार्थना कर्के गौयांकों घास देवे ॥ और तिसके घासको गौयांकें भक्षण कीतीयांहोयां सो पवित्र होजाताहै और इस प्रकार तिसके पवित्र होयांब्राह्मण तिसकोंफेर व्यवहारविषे अंगीकार करलेवे २ असत्प्रतिग्रह इसजगा पापमात्रकों उपलक्षणहै अर्थात् जिसने जैसा पाप कर्के प्रायश्चित्त कीताहै तैसे पापकेवास्ते निषेधवचन करावे एह अन्य प्रायश्चित्तका उपलक्षणहै और तैसेहि याज्ञवल्क्य जीने किहाहै घटे इति किघटकों किसीहृदके जलकेसाथ पूर्ण करे फेर तिसघटके अपवर्जितकीतियांहोयां फेर कीयाहै प्रायश्चित्त जिसने सो अपने सपिंडोंके मध्य विषे स्थितहोकर गौयांके तांयी घासदेवे

सत्यमेतत्पुनरसत् प्रतिग्रहं न करिष्यामीत्येवं ब्राह्मणेपूक्त्वाघासंगवांदद्यात् तस्मिन् यवसेभक्ष्यमाणेंगोभिः पवित्रीकृतत्वात्तीर्थीभूतब्राह्मणास्तस्य संव्यवहारे स्वीकारं कुर्युः २ एतच्चप्रायश्चित्तांतरोपलक्षणम् ॥ तथाच याज्ञवल्क्यः घटेपवर्जितज्ञातिमध्यस्थोयवसंगवाम् प्रदद्यात्प्रथमंगोभिः सत्कृतस्यहिसत्क्रिया १ अर्थः ॥ घटेपवर्जितेहृदादुद्धृत्यपूर्णकुंभचानिनीतेऽसौचरितव्रतः सपिंडादिमध्यस्थोगोभ्यो यवसंदद्यात् ताभिः प्रथमंसत्कृतस्यपूजितस्यपश्चाज्ज्ञात्यादिभिः सत्क्रियाकार्या गोभिश्चतस्यसत्कारस्तद्दत्तयवसभक्षणमेव गावस्तद्दत्तमन्नंयवसंनगृह्णीयुः तर्हिपुनः प्रायश्चित्तमुपतिष्ठेत् यथाहहारीतः ॥ शिरसायवसमादायगोभ्योदद्याद्यदिताः प्रतिगृह्णीयुरथैनंप्रवर्त्तयेयुरिति इतरथानेत्यभिप्रेतमृइतिश्रीमन्महाराज० साधारणसंसर्गिप्रा०१५

औरजेकर गौयां कर्के प्रथम उह सत्कारकों प्राप्तहोवे अर्थात् गौयां उसकाघास ग्रहण कर लेवे तद फेर उसके संबंधियोंने भी उसका सत्कार करणा योग्यहै और जे कर तिस कर्के दीयाहोया घासगौयां न ग्रहण करें तद उह फेर प्रायश्चित्त करे १ सोयीहारीत जीनें किहा है शिरसेति कि सिरके साथ घास उठा कर्के गौयांके तांयी देदेवे जेकर घासकों गौयां ग्रहण कर लेवें तद फेर संबंधि भी उसको व्यवहार विषे ग्रहण करें अन्यथा क्या जेकर घासकों गौया न भक्षण करें तद उसके साथ कुछव्यवहारन करे एह अभिप्रायहै इति एह साधारण संसर्गका प्रायश्चित्त प्रकरण पूरा होया पंदरवां ॥ १५ ॥

सवैया ॥ प्रायश्चितीयहभापवनी सभपापिकिसं-
गममे विधगाई पंचदसीवुधमानवसी महराजज-
मुपतश्रापजनाई पंडितविप्रदमोदरनेकरसाथनिधी
पतश्रानदखाई गंगकवीशविचारकरीशुधजानलई
पुनयंत्रछपाई ॥ १ ॥ दुष्टमहीधरमारनमैनितका
लकरालनकीधुनवाजैमित्रसमाजनिकाशनमै जिन
केघरफूलनवारससाजै सज्जनमंजनकज्जनको यह
राजजमूपतकासुरराजै गंगकवीशसुधारनकोपुन
कल्पतरूकरुणासिधराजै ॥ २



ऊँनमः॥ अब अपरार्क विषें संपूर्ण महापापके प्रायश्चित्त कहेहैं यद्यपि तिसतिस प्रकरणविषें पिछे कोई २ प्रायश्चित्त किहाभीहै तथापि सभ महापापांके साधारण कहणेकीविवक्षा करके एह प्रकरण आरंभ कीताहै इसवास्ते पुनरुक्तिदोष नहि और तिस स्थानविषें विष्णुजीका वाक्यहै अर्थात् कि एहजो संपूर्ण महापातकीहैं ब्रह्महत्या करण वाला और सुरा पीणे वाला और सुवर्ण की चोरी करण वाला और गुरुकी स्त्री साथ गमन करण वाला और इनका संसार्गी एह अश्वमेध यज्ञ करके शुद्धिको प्राप्त होतेहैं अथवा पृथिवी ऊपर जितने तीर्थहैं तिनकी यात्रा करके पवित्र होतेहैं। १। और इस स्थान विषे अश्वमेधरूप जो प्रायश्चित्त विधान कीताहै सो अग्निहोत्रीके वास्ते और जिसने प्रथम यज्ञ कीताहै उसके वास्ते विधान कीताहै किस वास्ते कि आधानादि जो कर्महैं सो ब्राह्मणोंकों अवश्य करणे योग्यहै इस कारणते पापीकों भी करणे

ऊँगणेशायनमः अथापरार्केसर्वमहापापप्रायश्चित्तानि इमानितत्तत्प्रकरणप्रोक्तान्यपिसाधारणविवक्षयापुनःप्रोच्यन्तेऽतोनपुनरुक्तिर्विभाव्या॥तत्रविष्णुः॥ अश्वमेधेनशुद्ध्येयुर्महापातकिनस्त्विमे पृथिव्यांसर्वतीर्थानांतथानुसरणेनवा॥ १॥ अश्वमेधादिक्रतुरूपंप्रायश्चित्तमाहिताग्निमिष्टप्रथमयज्ञंप्रतिविधीयतइति॥ आधानादेर्द्विजातिकर्मत्वेनपतितानामप्यनुष्ठेयत्वात् एवमधीतवेदस्यैवसंहितादिजपादिविधीयते॥अश्वमेधश्चराजक्रतुस्तेनयदिराजाकामतोगुणवंतंब्राह्मणंहंतितथैवपैष्टींसुरांवापिबति गुणवतोब्राह्मणस्यसुवर्णंवापहरति कामतएववागुरुदारान्गच्छति तदासौप्रतिमहापातकंयजेत्॥ तत्रशंखः॥ नित्यंत्रिषवणस्नायीकृत्वापर्णकुटींनरः अधःशायी जटाधारीपर्णमूलफलाशनः॥ १॥

योग्यहै इस हेतुतेपिछे श्रौतस्मार्त्तकी हानि पतितोकी कहिहै सो और स्थानविषे जानणी॥ और ऐसेहि जिस ब्राह्मणने वेद अध्ययन कीताहै उसकों संहितका पाठ करणा विधान कीताहै अर्थात् और इस स्थान विषे अश्वमेध करके राजक्रतुका ग्रहणहै जेकर राजा कामनाते गुणवान ब्राह्मणको मार देवे और तैसेहि पैष्टी सुरा पान करे अथवा गुणवान् ब्राह्मणका सुवर्ण हर लेवे अथवा कामनाते गुरुकी स्त्रीसाथ गमन करे तद उह राजा एक २ महापातकके दूर करणे वास्ते तिस यज्ञ करके भिन्न २ यजन करे॥और तिस विषे शंखजीने किहाहै निमित्त्येतिकि नित्यं प्रति तीनकाल स्नान करणा चाहिये वन विषें पत्तरां की कुटिया वना कर उसमें निवास करणा और पृथिवी ऊपर शयन करणा और शिरमे जटा धारण करणी और पत्तर फल मूल एह भक्षण करणे॥ १॥

और अपना पाप प्रकट करतियां होयां भिक्षा वास्ते ग्रामाविषें प्रवेशकरणा और एक काल भोजन करणा इस प्रकार करतियां जद वारां १२ वर्ष ब्यतीत होजावें ॥ २ ॥ तदइस व्रत कर्के स्वर्ण स्तेयी और महापातकी सभपवित्र होजातेहैं । ३ । और देवलजीने किहाहै कि ब्राह्मण पवित्र तीर्थविषे विधिपूर्वक देह त्याग करणे ते महापातकते मुक्त होजाता है ॥ और क्षत्री धर्म युद्ध विषे अथवा गौब्राह्मणकी रक्षावास्ते अथवा ग्रामके नाशादिकों विषें तिसकी रक्षाके अर्थ शरीर त्याग ते पवित्र होजाताहै । अर्थात् महापातकी जो क्षत्रीहै सोध र्मयुद्धादिकों विषे मरणेते शुद्ध होताहै ॥ और महापातक प्रसंग विषें शस्त्रोपजीवी पुरुषोंकी शुद्धि विषे च्यवन जीका वाक्यहै कि शस्त्रकर्के है उपजीविका जिसकी सो पुरुष जव महा

ग्रामंविशेत्तुभिक्षार्थीस्वकर्मपरिकीर्त्तयन् एककालंसमश्नानोवर्षेचद्वादशे गते २ ॥ रुक्मस्तेयीसुरापश्चब्रह्महागुरुतल्पगः व्रतेनानेनशुद्ध्यंतिम हापातकिनस्त्विमे॥३॥देवलः॥ तीर्थेपुण्यतमेयथावद्देहसंन्यासाद्ब्राह्मणोमहा पातकान्मुच्यते।धर्मयुद्धेगोग्रहेग्रामघातादिपुप्राणत्यागात्पूयतेक्षत्रियः श स्त्रोपजीविनश्चमहापातकानुवृत्तौच्यवनः आसेतुदर्शनात्पूतोभवत्यश्वमे धावभृथस्नानात्पूतोभवतिउभयतःशिरसंवाप्रदायब्राह्मणेभ्यःपूतोभवति । उभयतः शिरसमुभयतोमुखींगाम् ॥ पराशरः ॥ चातुर्विद्योपसंपत्तौब्रह्म हागुरुतल्पगः सेतुंपश्येत्समुद्रस्यप्रायश्चित्तंविनिर्दिशेत् १ सेतुबंधंतथा पश्येल्लंकामार्गेमहोदधेः दशयोजनविस्तीर्णंशतयोजनमायतम् ॥ २ ॥

पातकी होजावे तद उह सेतुदर्शनपर्यंत तीर्थयात्राकर्के पवित्रहोताहै अथवा अश्वमेध यज्ञ विषें अवभृथस्नान करणेते पवित्र होताहै । अथवा उभयमुखी गौ ब्राह्मणके तांईदेणेते पवित्रहुं दाहै ॥ और पराशरजीका वाक्य है चातुरिति चार विद्याकी प्राप्ति होयां यो ब्राह्मणको हत करण वालाहै और गुरुस्त्री गमन करण वाला है एह होर रहे जो त्रय महापापी तिनका भी बोधक है उसके वास्ते एह प्रायश्चित्त दिखायाहै॥ किउह पुरुष अपने पाप नाश वास्तेस मुद्रका जो पुल है तिसका दर्शन करे॥१॥और तैसेहि समुद्रते जोलंका पुरीका मार्गहै सेतुवं ध तिसका दर्शन करे । और कैसाहै सेतु दश१० योजन क्या चाली ४० कोश चौडाहै और सौ१०० योजन क्या चार सौ ४०० कोश लंबा है ॥२ ॥

रामेति और रामचंद्रजी की आज्ञाते महादेवको स्तुति करके जो महादेव रामचंद्रजीने स्थापन कीताहै इसका एह अभिप्राय है कि प्रायश्चित्तको न करे तो सेतुका दर्शन करे ॥ ३ ॥ और सोयी पद्म पुराण विषे लिखयाहै एवमिति कि इसप्रकार राम चंद्र करके स्तुतिको प्राप्तहुये महा देव भक्तिकरके नम्र और सन्मुख स्थित जो राम चंद्रहै तिसको एहवाक्य कहते भये ॥ १ ॥ कि हे रघुनंदन एह जो तुमने मेरा स्थान बनायाहै इसस्थान विषे स्थित होकर और मेरा पूजन करके जो पुरुष समुद्रका दर्शनकरेंगे।२।सोजेकर महापातक करके भी युक्त होवें तदभी तिनका पाप नष्ट होजावेगा इसमे कुछ संशय नहिहै ॥ ३ ॥ और आपस्तंबजीने किहाहै स्तेयमिति कि गुणवान् ब्राह्मणका सुवर्ण चुरा करके और सुराका पान करके और गुरुकी स्त्रीसाथ गमन करके

रामभद्रसमादेशात्शिवंस्तुत्वातुसंचितम्॥३ ॥ प्रायश्चित्तमकृत्वासेतुवंधंप इयेदित्यर्थः ॥ पद्मपुराणे । एवंवैस्तूयमानस्तुदेवदेवोमहेश्वरः उवाचराघ वंवाक्यंभक्तिनम्रंपुरःस्थितम् ।१ ॥ त्वयाचेइकृतेस्थानेमदीयेरघुनंदनआरा ध्यमानामांरामपश्येयुरिहसागरम् ॥ २ ॥ महापातकयुक्तावैतेषांपापंवि नंक्ष्यति ॥ ३ ॥ आपस्तंबः ॥ स्तेयंकृत्वासुरांपीत्वागुरुदारांश्चगत्वाब्रह्म हत्यामकृत्वा चतुर्थकालमितभोजिनोपोभ्युपेयुः सवनानुकल्पं स्थानास नाभ्यांविहरंत एतेत्रिभिर्वर्षैःपापंनुदंति ॥ पंचानांमहापातकानांमध्येब्रह्म हत्यायानैतत्प्रायश्चित्तमितिवक्तुमुक्तंब्रह्महत्यामकृत्वेति । चतुर्थेभोजनका लेमितंस्वल्पंशरीररक्षणोपयोगिभोजनंयेषांतेचतुर्थकालमितभोजिनः ॥ अतृप्तिरन्नस्यव्रतंयेषांतेतथाअपोऽभ्युपेयुः ॥

ब्रह्महत्याते विना चौथे कालविषे भोजन करणा इत्यादि उक्तप्रायश्चित्त करतियां तीन वर्षकरके पापको दूर करतेहैं । इसमे एह अभिप्रायहै कि ब्रह्महत्या वाला त्रयवर्षते अधिक व्रत करके शुद्ध होवेगा ॥ पंचेति और ब्रह्महत्या न करके एह प्रायश्चित्त करें । इसका एह अभिप्रायहै कि पांच महा पातकोंके मध्यविषे ब्रह्महत्याकाएह प्रायश्चित्त नहिहै एह कथन करणवास्ते ब्रह्महत्यां अकृत्वा ऐसा लिखयाहै॥अब प्रायश्चित्तकी विधि दिखायीहै। कि चौथाजोभोजन कालहै उसकालविषे मितक्याथोडा भोजन करे कि जिस करके केवलप्राणमात्र रक्षाहोवे ऐसाभोजन करणा अर्थात् तृप्तिपूर्वक अन्न नखावे और अन्नकी तृप्ति नहोणी एहि तिनको व्रतहै ॥

और पृथिवी ऊपर स्थित जो जलहैं तिनाविषें स्नानकरें परंतु सवनानुकलपक्या प्राताकाल म ध्यान्हकाल सायं कालविषें और स्थान आसनइनकर्के दिनमेंस्थितहोना और रात्रिविषें आस न ऊपर सावधान होकर स्थितहोवें और विहरंतःक्या विहारकरें कि अपनी शक्ति के अनु सार दिन २ विषें और किसी उत्तमस्थान विषें चलेजावें ऐसानियमकरतियां तीनवर्षकर्के पा पकानाश्यकरतेहैं और एह प्रायश्चित्त गुणवान् कर्ता कोनिर्गुण ब्राह्मणके सुवर्ण हरण विषें और अज्ञान पूर्वक गौडीमाध्वीके एकवारी पानविषें और एह गुरु स्त्री है ऐसी प्रतीतिके नाहोयां एक वारी गुरु स्त्रीगमन विषें जानणे योग्यहै ॥ और अंगिराजीने जोएह वज्रारूय व्रत किहाहै युक्त इति कियुक्तक्या यत्नवाला होकर तीन काल स्नान करे और सभ इंद्रिय रोक कर्के मौ न व्रत विषें स्थित होवे और प्राता काल नदीमे स्नान कर्के और कुशाके आसन ऊपरास्थित

भूमिंगत्वास्वप्सुस्नानमाचरेयुःसवनानुकल्पंप्रातर्मध्यंदिनेसायमिति स्था नासनाभ्यांदिवास्थानंरात्रावासनेयुक्ताभवेयुःविरहंतोविहरेयुःयथाशक्त्य हरहरन्यतमंदेशंगच्छेयुः एतद्गुणवतःकर्तुर्निर्गुणविप्रस्वर्णापहारेगौडीमा ध्व्योश्चामतिपूर्वकेसकृत्पानेगुर्वङ्गनागमनप्रत्ययरहितेसकृद्गमनेचवेदित व्यम् ॥ यच्चांगिरसावज्रारूयव्रतमुक्तम् युक्तस्त्रिषवणस्नायीसंयतोमौनमा स्थितः प्रातःस्नात्वासमारंभंकुर्य्याज्जाप्यस्यानिश्चलः १ सावित्रींव्याहृती श्चैवजपेदष्टसहस्रकृत् ओंकारमादितः कृत्वारूपेरूपेतथांततः २ भूमौवी रासने युक्तः कुर्याज्जप्यंसुसंयतः तत्रासीनः कांस्यपात्रेपिवेद्गव्यंपयःसकृत् ३ गव्यस्यपयसोलाभे गव्यमेवापिवेद्दधि दध्यभावेपिवेत्तक्रंतक्राभावेतुया वकम् ॥ ४

होकर जपका आरंभकरे और फेर जपकर तियां आसनते न उठे ॥ १ ॥ और एकाग्रमन कर्के व्याहृतिसहितगायत्रीका आठहजार ८००० जपकरे अथवा आठसे अधिक १००८ हजार जपकरे और ऐसेविधि पूर्वकमंत्रका उच्चारणकरे कि आदि विषे ओंकारका उच्चारण कर्के फेर एक ॥ २ ॥ पद विषे फेर अंत्तविषे ओंकारका उच्चारण करेमंत्रःओंभूःओंभुवःओंस्वःओंमहःओंजनः ओंतपःओंसत्यं ओंतत्सवितुर्वरेण्यंभर्गो देवस्यधीमाहि धियोयोनःप्रचोदयात् ओम् २ औरइसप्रकार पृथिवी विषेंवीरासनास्थितहोकर अर्थात् खलोकरसावधानतासे जपकरेजिसकर्के अक्षरमात्रामंत्र विषेंभ्रष्टनहोवे और पीछे उसीआसनमे स्थितहोयां कांस्यकेपात्रविषें एकवारीगौकादूधपानकरे ॥ ३ और जेकरगौकादूधनप्राप्तहोवे तदगौकाहि दधिपान करे और जेकर दधिभी न मिले तद गौ कीछाछ पीवे औरतक्रभीनामिले तद यावक वनाकर पान कर लेवें ॥ ४ ॥

और इतनी वस्तुमेसे जोमिले उसको पानकरे और गोमूत्रके साथ यवके आटेको मिलावे ५ एहजो यावकपानकरणाहै सोएकादिनकर्के कृच्छ्रहोजाताहै एह अंगिराजीने आप किहाहै और एहजो वज्रनामकर्के व्रतहै सोसंपूर्ण पापके नाशकरणवालाहै और वहुत श्रेष्ठहै ६ एतदिति और एह व्रत पातक यामहापातकांके तुल्यतिनकर्के युक्तजोहै और उपपातकयुक्तयोहैं और महापातक युक्तयोहैं तिनकोप्रायश्चित्तदखायाहै ७ और महापातक संयुक्तजोपुरुषहै सोतो नववर्षकर्के शुद्धहोतेहैं औरपातकयुक्तजोहै तिनकोएकवर्षकाप्रयोगहै औरउपपातक युक्तको तीन महीनेंका प्रयोग जान्नणा ८ औरजावालऋषिकावाक्यहै अपहारेति किसुवर्णके चुरायांहोयां वर्षप्रमाण कृच्छ्रकर्के शुद्धहुंदाहै और तैसेहि गुरुस्त्री गमन कीतियां होयां और सुरापान की

एषामन्यतमंयत्तदुपपद्येतताल्पिवेत् गोमूत्रेणसमायुक्तंयावकंवोपयोजयेत् ५ एकाहेनैवकृच्छ्रोयमुक्तस्त्वंगिरसास्वयं ॥ सर्वपापहरोदिव्योनाम्नावज्र इतिस्मृतः ६ एतत्पातकयुक्तानामुपपातकिनांतथा महद्भिश्चाभियुक्तानां प्रायश्चित्तंविनिर्दिशेत् ७ महापातकसंयुक्तावर्षैःशुद्ध्यतिवैत्रिभिः ॥ इद मपिमहापातकेष्वापस्तंबीयेनसमानविषयं तुल्यप्रायक्लेशत्वात् ॥ पातक युक्तेपुवार्षिकःप्रयोगः उपपातकेपुत्रैमासिकः॥ जावालः।अपहारेसुवर्णस्य कृच्छ्राब्देनविशुद्ध्यति गुर्वंगनागमेचैवसुरापानेतथैवच १ वहुधनानिर्गुण हीनवर्णेसुवर्णमल्पतरमापादिगुणवतोपहरतः॥ गुरोश्चहीनवर्णामकामतः सकृदंगनांगच्छतः॥ सुरांवामुख्यांसकृदमत्यापीत्वाछर्दितवतश्चैतत् ॥ य थाहांगिराः।पड्भिर्वर्षैर्ब्रह्मचारीब्रह्महापूयतेनरः॥ इतिब्राह्मणहननायप्रवृ त्तस्य केनचित्प्रकारेण परावृत्तस्यैतत्

तियां होयां जान्नणा ॥ १ ॥ और एह प्रायश्चित्त उसकोहै कि जो विपदा विषे गुणवान् पुरुष वहुत धन जिसके पास और गुणहीनहै और हीनवर्ण तिस पुरुषका अतिथोडा सुवर्ण हरलेवे । और जो पुरुष हीनवर्णागुरुस्त्री साथ कामनातें विना एक वारी गमन करे ॥ और जो एकवारी अज्ञानते सुरापान कर्के फेर वमन कर देवे उसको जान्नणा ॥ और तैसेहि अंगिराजीनें किहाहै षड्भिरिति कि ब्रह्महा पुरुष छे ६ वर्ष ब्रह्मचारी जेकर होवे तद पवित्र हुंदाहै और एह प्रायश्चित्त ब्राह्मणको मारण वास्ते प्रवृत्त होकर फेर किसी प्रकार कर्के न मारे उस को जान्नणा

और शक्तिवाले और अशक्तिवाले की व्यवस्था पूर्व कहिहै तदभी प्रत्याम्नाय करके कहतेहैं कि द्वादश वर्षका जो महाव्रतहै १ तिसके स्थान विषे एकसौअस्सी १८० प्राजापत्यकहेहैं २ अथवा एकसौ अस्सी १८० धेनुदान कहेहैं ३ अथवा तिसकामूलचाली ४० पुराण और पांचसौ ५० कार्षापणका दान एह चार कल्प क्या चार पक्ष जानणे ॥ और(ननु)एहप्रश्नहै कि एकसौ अस्सी गोदान इसस्थान विषे कैसहैं(उत्तर)सोसुन कि जिसकारणते अंगिरा जीने ज्ञानतेविना ब्राह्मणकेवधविषे बारा१२वर्ष व्यतीतहोयां ब्राह्मण पवित्र होजाताहै ऐसे कहकरके ज्ञानते इसते दूणा २४ वर्षकथन करणेके योग्य होयां हजार १००० ब्राह्मणोंकेतांयीं १०००

अथ शक्ताशकव्रतव्यवस्था पूर्वोक्तापि प्रत्याम्नायेनोच्यते द्वादशवार्षिकं महाव्रतम् साशीतिशतंप्राजापत्यानि । साशीतिशतंपयस्विनीधेनुदानम् तन्मूल्यानिचत्वारिंशत्पुराणाधिकपंचाशत्कार्षापणावा चत्वारःकल्पाःननु साशीतिधेनुशतदानंकथमत्रेतिचेन् यतोंगिरसाऽज्ञानकृतेब्रह्मवधे गतेतुद्वादेशवर्षेब्रह्महापूयतेनर इत्यभिधाय ज्ञानतोद्विगुणेचतुर्विंशतिवार्षिकेवक्तव्ये गवांसहस्रंविधिवद्विप्रेभ्यः प्रतिपादयेत् ब्रह्महाविप्रमुच्येतसर्वपापेभ्य एवचेति गोसहस्रदानमुक्तम् तच्चतुर्विंशतिवार्षिकानुकल्पे सषष्टिपयस्विनीधेनुशतत्रयदानमूल्यस्यगोसहस्रदानमूल्येनतुल्यत्वाभिधानार्थंमते न धेनुमूल्यंसपाद कपर्दकत्रयाधिककाकिनीत्रयन्यूनपुराणत्रयम् गोमूल्यंतु किंचिदधिकंपुराणमेकम् अन्यथापयस्विनीधेनुमूल्यंयथाश्रुतं पुराणत्रयं गोमूल्यं चैकपणाधिक पुराणं यदिस्यात्तदावैषम्यंस्यात् ॥

गौ प्रतिपादन करे कि देवे तद हेविप्र ब्रह्महा पुरुष संपूर्ण पापते मुक्तहोताहै १॥ इसस्थान विषे हजार गोदान किहाहै सोचौवीस२४वर्षके स्थान विषे तीन सौसाठ ३६० पयस्विनी गौंके मूल हजार गोदानके मूलके समान कहने वास्ते अर्थात् ३६० गौंका मूल हजार गोदानके मूलके समान किहाहै और इसका अर्था १८०है॥ और तिसकारणते गौका मूल सवा दोकौडी और तीन दमडी घट तीन पुराण होताहै । और गौका मूल यथार्थ कुछक अधिक एक पुराणकिहाहै और इसतेविनाजेकर पयस्विनी धेनुका मुल्लबराबर तीनपुराण होवे और गौका मूल एकपैसे ऊपर एक पुराण घटहोवे तद विषमता होजावेगी ॥

जिसकारणते तीनसौसाठ ३६० जो पयस्विनीधेनुका मूलहै सो एकहजार और अस्सी कार्षापण होजातेहैं और हजार गौका मूल एकहजार साडेबाट १०६२॥ कार्षापणहो जातेहैं सो इस तरां जानणा कि १००० गौका १००० कार्षापण आया और १००० पणभी आयासो १६ पणका १ कार्षापणहै इसते १००० से १६ ॥ काभागदियातो आए६२॥ इसकारणते ३६० धेनुके मूल भी साढे सतारां १७॥ कार्षापणते अधिक होनेतें इनदोनो प्रकारमे विरोध आजाताहै इसकारणते शूलपाणीजी ने इन दोनो प्रकार विषे विषमताको विचार करके ऐसें व्यवस्था करीहै कि द्वादश वार्षिक महा

अतःसषष्टिपयस्विनीधेनुशतत्रयमूल्यंअशीत्युत्तरकार्षापणसहस्रंस्यात् गोसहस्रमूल्यंसार्द्धद्वयाधिकषष्ट्युत्तरकार्षापणसहस्रंस्यात् अतःसषष्टिधेनुशतत्रयमूल्ये सार्द्धसप्तदशकार्षापणाधिक्यादिति शूलपाणिनाचानयोर्वैषम्यमाकलय्यद्वादशवार्षिकमहाव्रते धेनुसंकलनेपयस्विनीधेनुमूल्यंकिंचिन्न्यूनकार्षापणत्रयम् गोमूल्यंसप्तदशपणाइतिलिखितम् तदत्रनिर्णायिनिर्णायकैःसुधीभिर्विभाव्यम् षोडशपणाश्चात्रकार्षापणःअस्यैवसंज्ञांतरं पुराणम् ॥ इतिश्रीमन्महा०सामान्यमहापातकप्रायश्चित्त प्रकरणंषोडशकम् ॥ १६ ॥

व्रत विषे व्रतके स्थान पयस्विनी गौका मूल तीनकार्षापण कहेहै ॥ और गौका मूल सतारापण कया १७ पैसे होतेहैं ऐसा लिखयाहै सो निर्णय करके निर्णय करण वाले पंडितलोक संभावना करलेवें और इसस्थान विषे सोला १६ पैसेका एक कार्षापण किहाहै और पुराणभी इसीका नामहै ॥ एह महाराजाधि राज० जम्बू काश्मीर तिब्बतादि अनेकदेशोंके अधिपति श्रीप्रभुवर रणवीरसिंहजी करके आज्ञप्तहोए सारस्वत पंडित वर देवीदत्तजीकेपुत्र कवि गंगा राम जीने आपवनाया होई भाषा विषे सभ महापतकोंका सांझा प्रायश्चित्त प्रकरण पूराहोआ ॥ १६ ॥ सोलमा शुभं भूयात्

सवैया ॥ प्रायश्चिती यह षोडशमोविध पांचमहाअघकीकृ-
तआई पंडितलोकविचारकरेनित भाषवनामनकीचतुराई
जम्मुमहीपतनेमुखपंकज आपकृपाकरकेसमुझाई ॥
गंगकवीकरशोधकरी पुनदेखधरीसभमैंचित
लाई ॥ १ ॥



ऊँनमः अत्र ब्रह्म हत्याके समान जो अनु पातकहैं तिनका निरूपण करतेहैं तिस विषे मनुजीका वाक्यहै अनृतमिति कि एह संपूर्ण पाप ब्रह्म हत्याके समान जाणणे क्या अपनी जातीकी वडा यी वास्ते झूठी वडायी कहनी जैसे कि आप तो ब्राह्मण नहिहै कोयी राजाको जाकर कहताहै मै ब्राह्मण हों । अथवा अन्य किसीके मार देणे वाला दोष झूठाहि राजाको कह देणा जैसे कि इसीने चोरी कीतीहै । इस कारणते राजगमी इस पदका दोनो के साथ संबंध होताहै ॥ और गुरुके आगे झूठी वात वना कर कहदेनी एह ब्रह्महत्याके वरावर है ॥ १ ॥ और गौतम जीने भी गुरुके आगे झूठ वोलना एह ब्रह्महत्याके समान किहाहै ॥ और याज्ञवल्क्य जीने किहाहै गुरूणा मिति कि गुरुका निरादर करणा और

ऊँश्रीगणेशायनमः अथब्रह्महत्यादिसमानि।अनुपातकानि तत्रमनुः अनृतंचसमुत्कर्षेराजगामिचपैशुनम्।गुरोश्चालीकनिर्वंधः। समानिब्रह्महत्यया १ एतानिब्रह्महत्यासमानिज्ञेयानिजात्युत्कर्षनिमित्तमनृतभाषणम् ॥ यथाअब्राह्मणः कश्चिद्राजनि ब्रवीतिब्राह्मणोहामिति ॥ वापरेषांस्तेयादीनांमरणफलकंदोषाभिधानम् ॥ राजगामीत्युभयतःसंवद्धम् गुरोश्चानृताभिशंसनम् ॥ गौतमेपि ॥ गुरोरनृताभिशंसनमिति ॥ याज्ञवल्क्यः ॥ गुरूणामध्यधिक्षेपोवेदनिन्दासुहृद्वधः ब्रह्महत्यासमंज्ञेयमधीतस्यचनाशनम् ॥ १ ॥ गुरूणामाधिक्येनाधिक्षेपः अनृताभिशंसनम् ॥ एतच्चलोकाविदितदोषाभिशंसनविषयम् । दोषंवुद्ध्वानपूर्वंपरेषांसमाख्यातास्यात्संव्यवहारेचैनंपरिहरेदित्यापस्तंवस्मरणात् ॥ वेदनिंदा ॥ वेदकुत्सनम् ॥ नास्तिक्याभिनिवेशन ॥ असच्छास्त्रविनोदेनवा ॥ सुहान्मित्रतस्याब्राह्मणस्यापिवधः । आलस्यादिनाअधीतवेदस्यनाशनम् विस्मरणम् ॥ एतानिप्रत्येकंब्रह्महत्यासमानि ॥

वेदकी निंदा करणी और किसे संवंधीको मार देणा एह संपूर्ण ब्रह्म हत्या समान जानने और पढे होये वेदको भुला देणा १ एतदिति एह लोकोंको अप्रसिद्ध जो दोषहै तिसका प्रकट करणा उस विषयमे जानणा । किस वास्तें किसीका दोष जाण कर्के भी और किसीको न कहे ॥ और व्यवहार विषे उस दोष युक्त पुरुषको त्याग देवे ऐ आप स्तंवजीका वाक्यहै तिसके स्मरणते । और नास्तिक मतको ग्रहण कर्के अथवा असत् शास्त्र पड कर्के वेदकी निंदा करणी ॥ और सुहृत् योहै मित्र तिसका ब्राह्मणका वा अब्राह्मणका मारणा एह अर्थहै और आलस कर्के पडे होये वेद को भुला देणा एह एक २ ब्रह्महत्याके समान जानणे ।

और ऐसा जो लिखयाहै कि पठित वेद और अग्नि और पुत्र इनका त्याग देणा इस कर्के अधीत त्यागकी तो उपपातकमे गणनाहै इहां कैसेंहै (उत्तर) इस कारणते किसीप्रकार कुटुंबकी पालना करण विषें व्याकुलता कर्के अथवा शास्त्रके श्रवण विषें खचित होणे कर्के विस्मरण विषें उपपातक होताहै ॥ और आलसते वेद पड कर्के भुला देना ब्रह्महत्याके समान है॥और प्रचेताजीने किहाहै कि गौका वध करणा और गर्भ वाली स्त्रीका वध करणा और बालकका वध करणा एहभी सभ ब्रह्महत्याके समानहैं॥इस जगा गौभी गर्भणी जाणणी गोवधको उपपातक होणेते॥और गौतमजीने किहाहै किझूठी उगाही देणी और राजाके आगे किसी को मरवाणे वास्ते झूठबोलणा और चुगलीकरणी और गुरुके आगे मिथ्या वाक्यकहना एह भी सभ ब्रह्महत्याके समान किहेहै॥ और प्रायश्चित्तेन्दु शेखर ग्रंथ विषें लिखयाहै यज्ञ

यत्पुनः स्वाध्यायाग्निसुतत्यागइति अधीतत्यागस्योपपातकमध्येपरिगणनं तत्कथंचित्कुटुंबभरणाकुलतया सच्छास्त्रश्रवणाव्यग्रतयावाविस्मरणेद्रष्टव्यम्॥प्रचेताः॥गोगर्भिणीबालवधाब्रह्महत्यासमानिच॥गौतमः॥कूटसाक्षित्वंराजगामिपैशुन्यंगुरोरनृताभिशंसनंब्रह्महत्यासमानिच॥प्रायश्चित्तेन्दुशेखरे यागस्थनृपवैश्यवधः १ शरणागतवधः २ रजस्वलागर्भिण्यत्रिगोत्रस्त्रीणांवधः ३ अविज्ञातगर्भस्यसुहृदश्चवधः ४ गुरुविपर्यमिथ्याभिशंसनक्रोधोत्पादनमधिक्षयोऽसकृन्मत्यालीकानिर्बंधश्च ५ राजगामिपैशुन्यम्६ गुरौमहाद्वेषः ७ नास्तिक्याद्वेदनिंदा ८कुशास्त्राध्ययनेनावितंडावादेनचाधीतवेदानांनाशनम् ९ इतिभेदाः ॥

विषे स्थितजो राजाहै और वैश्यहै तिसका वध करणा १ और शरणको जो पुरुष प्राप्तहोवे उसका वध करणा २ और रजस्वलाका और गर्भ वाली स्त्री का और अत्रिगोत्र विषे उत्पन्न जो स्त्रीहै इनका वध करणा ३ और जो गर्भ नहि जानया कि किसकाहै अथवाअजेप्रतीत नहि हुंदा तिसका और किसी अपने सुहृदका वध करणा ४ और गुरुके विषय विषें मिथ्या दोषकहना और गुरुकोकिसी कारणते क्रोध उत्पन्न करणा और किसी कारणते गुरुका अनादर करणा और जान कर्के वारं वार गुरुके आगे झूठ वातवना कर कहनी ५ ॥ और राजाके पास जाकर किसी की झूठी चुगली करणी ६ और गुरु विषें अतिवैर करणा ७ और नास्तिक भाव होनते वेदनिंदा करणी ८ और खोटा शास्त्र पडने कर्के अथवा वितंडा वाद कर्के अधीत वेदका नाशकरणा ९ इस प्रकार नव९ भेदहैं ॥

और ब्रह्महत्या व्रतका अतिदेश दो प्रकारकाहै॥एक तो ब्रह्महत्या स्वरूप प्रति पादन कर्के और दूसरा ब्रह्महत्याके समान प्रति पादन कर्के और जो पाप ब्रह्महत्या रूपहैं उन विषेंब्रह्महत्या व्रत पादोन किहाहै ॥ और ब्रह्महत्या समान विषें ब्रह्महत्याका आधा व्रत जानणा॥तिस भेदके दिखाणेका एह फलहै॥ और तैसेहि याज्ञवल्क्य जीने किहाहै यागेति कि यज्ञ विषें स्थित जो क्षत्रीहै अथवा यज्ञ स्थित वैश्यहैं तिनको मारण वाला ब्रह्महत्या व्रत करे । इसीका अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं किदीक्षणीया विधिते आदिलेकर उदवसनीया विधि पर्यंत सोमयज्ञके प्रयोग बिषें वर्त्त मान जो क्षत्री वैश्यहैं तिनको जो पुरुष मार देवे सो पुरुष ब्रह्महत्या विषें जो व्रत करणा उपदेश कीयाहै सोयी द्वादश वार्षिकादि व्रत करे तद पवित्र ताको प्राप्त होताहै ॥ और तै

ब्रह्महत्याव्रतातिदेशाविषयोद्विविधःतद्रूपताप्रतिपादनेनसादृश्यप्रतिपादनेन वा॥तत्राद्यविषयेब्रह्महव्रतंपादोनम् द्वितीयविषयेत्वर्द्धम्॥तथाचयाज्ञवल्क्यः॥यागस्थक्षत्रविड्घातीचरेद्ब्रह्महणिव्रतम् गर्भहाचयथावर्णंतथात्रेयीनिषूदकः १ दीक्षणीयाद्युदवसनीयापर्य्यन्ते सोमयागप्रयोगेवर्त्तमानौ क्षत्रियवैश्यौव्यापादयत्यसौब्रह्महाणिपुरुषेयद्ब्रह्महत्याव्रतमुद्दिष्टंद्वादशवार्षिकादितच्चरेत्॥ यद्यपियागशब्दःसामान्यवचनस्तथाप्यत्रसोमयागमभिधत्ते ॥सवनगतौचराजन्यवैश्यावितिवशिष्ठन सवनत्रयसंपाद्यस्यसोमयागस्यैवविनिर्दिष्टत्वात् ॥ अत्रचगुरुलघुभूतानांद्वादशवार्षिकादिब्रह्महत्याव्रतानां जातिशक्तिगुणाद्यपेक्षयाप्रागुक्तव्यवस्थावोदितव्या॥एवंगर्भवधादिष्वपि मरणांतिकंतु नातिदिश्यते व्रतग्रहणात् ॥

सेहि गर्भ घ.ती और आत्रेयीके मारणेवाला भी ब्रह्महत्या व्रतकरणे कर्के शुद्ध होताहे ।१। और यद्यपि यागशब्द सामान्य यज्ञका वाचक है तद भी इसस्थान विषें सोमयागहि किहाहै॥ किस वास्ते कि वशिष्ट जीने भी जिसस्थान विषें यज्ञगत क्षत्री वैश्यके मारणका प्रायश्चित्त किहाहै उसस्थान विषें यागशब्द कर्के सोमयज्ञकाहि ग्रहण किहाहै इसकारणतें ॥ और इसस्थान विषें भी गुरु लघु भूत जो द्वादश वार्षिकादि ब्रह्महत्या व्रतहैं तिनकी व्यवस्था जाति शक्ति गुण इनके अनुसार जैसे पूर्व कहीहै तैसेहि जानने योग्यहे॥ और इस प्रकार गर्भादि वध विषें भी मरणांतिक प्रायाश्चित्त अतिदेश नहि है किसवास्ते कि गर्भादि वध विषें व्रत ग्रहणकरणेते ।

और इस कारणते कामनाते यज्ञस्थित क्षत्री बैश्यके वध विषें दूणाहि व्रत करणा किहाहि । सो संपूर्ण व्रत करणा योग्यहै ॥ पूर्वयोरिति और पूर्व वर्णयोहैं ब्राह्मण और क्षत्री तिनां विचों वेदाध्ययन वालेको मार कर्के ऐसा प्रसंग ल्या कर्के आपस्तंव जीने तिसका प्रायश्चित्त द्वादश वार्षिकहि किहाहै इस कारणते। इसमै स्मृति वचनहै गर्भमिति और जिस विषें प्राण नहि हुंये एसे गर्भको नाश कर्के यथा वर्ण क्या जिस वर्णके पुरुषके वध विषे जो प्रायश्चित्त किहा है उस वर्णके गर्भके वध विषे भी ओहि प्रायश्चित्त करे ॥ और एह प्रायश्चित्त नहि जानया स्त्री पुरुष नपुंसकका चिन्ह जिसका तिस गर्भ के वध विषयहै किसवास्ते कि मनुजीने अज्ञात गर्भके मारण विषे विशेष दिखायाहै ॥ इस कारणते तिसविषे मनुजीकावाक्यहै हत्वे

अतः कामतोयागस्थक्षत्रियादिवधेव्रतस्यैवद्वैगुण्यम् ॥ तच्चव्रतंसंपूर्णमेव कर्त्तव्यम् पूर्वयोर्वर्णयोर्वेदाध्यायिनंहत्वेतिप्रक्रम्यापस्तंवेनद्वादशवार्षिकाभिधानात् (गर्भंचविनासुमंभूतंहत्वा यथावर्णं) यद्वर्णपुरुषवधेयत्प्रायश्चित्तमुक्तंतद्वर्णगर्भवधेतच्चरेत् एतच्चानुपजातस्त्रीपुन्नपुंसकव्यंजनगर्भविषयम् हत्वागर्भमविज्ञातमितिमानवेविशेषदर्शनात् तथाचमनुः॥ हत्वागर्भमविज्ञातमेतदेवव्रतंचरेत् राजन्यवैश्यावीजानावात्रेयीमेवचास्त्रियम् ॥१॥ यद्यपिब्राह्मणगर्भस्यब्राह्मणत्वादेवतद्वधनिमित्तव्रतप्राप्तिस्तथापि स्त्रीत्वस्यापिसंभवात् ॥ स्त्रीशूद्रविट्क्षत्रवधइत्युपपातकत्वेनतत्प्रायश्चित्तप्राप्तिरपिस्यादतः स्त्रीपुंनपुंसकत्वेनाविज्ञानेपि ब्राह्मणगर्भत्वमात्रप्रयुक्तंब्रह्महत्याव्रतंकुर्यादित्यर्थवदतिदेशवचनम् ॥

ति कि अविज्ञात गर्भको मार कर्के एहि व्रतकरे ॥ और क्षत्री वैश्य इनके वीर्यका जो गर्भ है और अत्रिगोत्रकी स्त्रीकोमार कर्के भीब्रह्महत्या व्रतकरे ॥ १ ॥ इस विषें यद्यपि ब्राह्मणके गर्भ को ब्राह्मण होनेतें तिसके वध निमित्त ब्रह्महत्या व्रतकी प्राप्ति होताहै तथापि स्त्री भाव का भी इस जगा संभव होणेते और स्त्री शूद्र वैश्य क्षत्री इनके वधविषें उपपातक भावकर्के उपपातक प्रायश्चित्तकी भी प्राप्तिहोतीहै ॥ इस कारणते स्त्री नपुंसकादिरबके अज्ञात गर्भविषें ब्राह्मण गर्भ मात्रका प्रयोगहै ॥ इस वास्ते इनके वधविषें ब्रह्महत्या व्रतकरे इस अर्थ वाला अति देश वचनहै ॥

जेकर जन्मके होयांस्त्रीनपुंसका दिविशेष ज्ञानविषे जैसा होवेतैसाहि प्रायश्चित्त भी जानणा ॥ और आत्रेयीके वधकरणवालाभी जिसवर्णकी आत्रेयीहोवे उसवर्णके वधके अनुसारव्रतकरे और आत्रेयीशब्दकर्के ऋतुवाली स्त्री कहीहै सोयी लिखयाहै ऋतुस्नातस्त्रीको आत्रेयीकहतेहै क्योंकि तिसकी संतान होतीहै ॥ सोयीवासि ष्ठजीने किहाहै कि जो स्त्री रजस्वला होकर ऋतुस्नानकरे उसको आत्रेयी कहतेहैं ऐसे जिस दिनर जका दर्शनहोवे उसदिनते आदि लेकर सोला १६ रात्रि पर्यंत ओहस्त्री आत्रेयी होतीहै ऐसा निश्चय कीयाहै ॥ और इस आत्रेयी विषे संतान होतीहैं एह जो व्युत्पत्तिदिखायीहै सोवंध्याके निषेध वास्तेहै वंध्यास्त्री ऋतुस्नाताभीहै परंतुआत्रेयी नहि होती ॥ अन्येति और जेकर ऐसा न होवे तद अनर्थकहोजावेगा ऐसा कयीकामतहै और

उपजातेतु स्त्रीपुंसादिविशेषव्यंजनेयथायथमेवप्रायश्चित्तम् । यश्चात्रेय्या निषूदकोव्यापादकःसोपितथाव्रतंचरेत् हन्यमानात्रेयीवर्णानुरूपव्रतंचरेदित्यर्थःआत्रेयीशब्देनर्तुमतीत्युच्यते ।रजस्वलामृतुस्नातामात्रेयीमाहुरत्रह्येतदपत्यंभवतीतिवसिष्ठस्मरणात् अत्ररजस्वलामृतुस्नातामात्रेयीमाहुरितिवदत्रजोदर्शनप्रभृतिषोडशाहोरात्राणियावदात्रेयीभवतीतिगमयति अत्रह्येतदपत्यंभवतीतिव्युत्पत्तिप्रदर्शनंवंध्याव्युदासार्थम् अन्यथानर्थकंस्यादितिकेचित् व्युत्पत्तिमात्रएवंतदित्यपरे ॥ यमस्तु जन्मप्रभृतिसंस्कारैः संस्कृता मंत्रवच्चया गर्भिणीत्वथवायास्यात्तामात्रेयींविदुर्बुधाः१ अत्रिगोत्रजाचअत्रिगोत्रांवानारीमिति विष्णुः ॥ एतन्महाव्रतंब्राह्मणत्वाद्द्वादशवत्सरान्कुर्यात् यागस्थंक्षत्रियंवैश्यंगर्भिणींचरजस्वलाम् अत्रिगोत्रांनारींवामित्रं वा अनेनचात्रिगोत्रैवात्रेयीत्युक्तंभवति

और नोंकामतव्युत्पत्तिमात्रभीहै अर्थात् उसशब्दकाइकअर्थहै कीताहोआ कोईकिस वंध्याआदिकानिषेधनहि । और यमजीका वाक्यहै जन्मेति स्त्रीजन्मते लेके जो आदिलेकर मंत्र संस्कारों कर्के संस्कारको प्राप्तहोयीहै मंत्रकी न्यायीं अथवा जोस्त्री गर्भवालीहै तिसको बुद्धिमान पुरुष आत्रेयीकहतेहैं अथवा अत्रिगोत्रविषे ओउतपन्न स्त्रीहै तिसको भीआत्रेयीकहतेहैं १ और विष्णुजीने भीकिहाहै किएहजोमहा व्रतहै सो ब्राह्मण भावहांनेते द्वादश १२ वर्ष हि करे और यज्ञविषे जोक्षत्रीवैश्यहैं और गर्भवती जोस्त्रीहै और रजस्वला स्त्री और अत्रिगोत्रकीजोस्त्रीहै और अपनामित्र इस कर्के इसस्थानविषे अत्रिगोत्र विषे उत्पन्न स्त्रीकानाम आत्रेयी होतीहै

और ब्राह्मणके गर्भ वध विषें और ब्राह्मणी आत्रेयीके वधविषे ब्रह्महत्याव्रतहि किहाहै ॥ और क्षत्रीके गर्भ मारण विषें और क्षत्रिया आत्रेयीके वधविषें क्षत्रिहत्याका व्रत करणा किहाहै और इसीप्रकार और स्थान विषेंभी जानणा ॥ जैसे वैश्यगर्भ और वैश्याणी आत्रेयी शूद्रगर्भ और शूद्री आत्रेयीके वध विषें इनकीहत्याका प्रायश्चित्तहै । और चशब्दतें साक्षी भावविषें झूठवचनादिक विषेंभी इसी प्रकार पूर्वकिहा जो व्रत तिसकी न्याईहै अर्थात् जिस वर्णकी उगाहीमें झूठ बोलेजो उसी वर्णकी हत्याका प्रायश्चित्तहै तिसको करे । और मनुजीने किहाहै उक्तेति कि साक्षि भावमे झूठ बोल कर्के और गरुको क्रोध उत्पन्नकरा कर्के ॥ और तैसेहि किसीकी अमानत अपहरण कर्के अथवा स्त्री वध कर्के और किसी संबंधीका वध कर्के ब्रह्महत्या व्रत करे ॥ १ ॥ और एह जो प्रायश्चित्तहै जिस स्थान विषें व्यवहार विषें साक्षिमे झूठे बचन कर्के

ब्राह्मणगर्भवधेब्राह्मण्यात्रेयीवधेच ब्रह्महत्याव्रतम्।क्षत्रगर्भवधेक्षात्रियात्रेयीवधेचक्षत्रहत्याव्रतमेवमन्यत्रापीति चशब्दात्साक्ष्ये अनृतवचनादिष्वपियथाहमनुः। उक्त्वाचैवानृतंसाक्ष्येप्रतिरभ्यगुरुंतथा अपहृत्यचानिःक्षेपंकृत्वाचस्त्रीसुहृद्वधम् १ पूर्वोक्तव्रतंचरेदितिसंबंधः।यत्र साक्ष्यव्यवहारेअसत्यवचनेन वर्णिनांवधप्राप्तिस्तद्विषयमेतत्प्रायश्चित्तस्यातिगुरुत्वात् प्रतिरंभःक्रोधावेशः। निःक्षेपश्चब्राह्मणसंबंधी। स्त्रीचाहिताग्निभार्या पतिव्रतत्वादिगुणयुक्तोच्यतेसवनस्थाच यथाहांगिराः।आहिताग्नेर्द्विजाग्र्यस्यहत्वापत्नीमनिंदिताम् ब्रह्महत्याव्रतंकुर्यादात्रेयींचतथैवच १ पराशरस्त्वन्यविशेषमाह सवनस्थांस्त्रियंहत्वाब्रह्महत्याव्रतंचरेदिति याज्ञवल्क्यः । चरेद्व्रतमहत्वापिघातार्थंचेत्समाहितः अहत्वापियथावर्णंब्रह्महत्याव्रतंचरेदिति १

ब्राह्मणादि वर्णांकी वधकी प्राप्ति होजावे उस स्थान विषें जानणा अति वडा होनेतें ॥ और इस स्थान विषें अमानत ब्राह्मण संबंधी ग्रहण करणो ॥ और स्त्री शब्द कर्के अग्नि होत्री ब्राह्मणकी स्त्रीका ग्रहण करणा । अथवा पति व्रतादि गुणयुक्त स्त्रीका ग्रहण किहाहै । अथवा यज्ञ विषे जेकर स्थित होवे उसका ग्रहणहै । और तैसेहि अंगिराजीने किहाहै आहितेति अग्नि होत्री उत्तम ब्राह्मणकी पतिव्रता स्त्रीको मार कर्के और तैसेहि आत्रेयीको मार कर्के ब्रह्महत्या व्रत करे ॥ १ ॥ और पराशरजीने और विशेष किहाहै सवनेति कि यज्ञ विषे स्थित स्त्रीको मार कर्के ब्रह्महत्या व्रत करे सोयी याज्ञवल्क्यजीने किहाहै चरेति कि जो पुरुष मारण वास्ते उद्यत होवे और किसी कारणतें नहि मारे और जिस प्रकार जिसवर्णके मारणको उद्यत होवें तदभी ब्रह्महत्या व्रत करे इति ॥ १ ॥

और इस विषें एह अभिप्रायहै जेकर ब्राह्मण वधाविषें उद्यत होकरकिसी विघ्नवशतें नहिमारता कुछशास्त्र विचारतें नत्यागकरे तदभी ब्रह्महत्या व्रत करणे योग्यहै। नचांति और ऐसानहिंहै कि वधकरणवाले को भी और जो वध नहि करे उसको भी एकहि प्रायश्चित्त योग्यहै ॥ इस कार णकर्के जो ना वधकरे उसको पादोन व्रत कल्पना करणे योग्यहै ॥ और इसीप्रकार क्षत्रियादि व धविषें भीजानणा ॥ और तैसेंहि गौतमजीका वाक्यहै कि ब्राह्मणके वधविषे स्पष्टःक्या उद्योगकरे तद एहि ब्रह्महत्या व्रतकरे एहअर्थहै ॥ और भीहै कि सोमयज्ञ विषे स्थित जो ब्राह्मणहै अर्थात् सोमयाग विषें करीहै दीक्षा जिसने तिस ब्राह्मणके वध विषें ब्रह्महत्या व्रत दूणाकरणा योग्यहै

यदिब्राह्मणवधेप्रवृत्तोविप्रंविघ्नवशान्नहंति नतु शास्त्रवलात्तदापि ब्रह्मह त्याप्रायश्चित्तंचरेत्। नचवधंकृतवतोऽकृतवतश्चैकमेवव्रतंयुक्तं तेनाघ्नतःपादो नंकल्प्यम् एवंक्षत्रियादिवधेपि। तथाचगौतमः।स्पृष्टश्चेद्ब्राह्मणवधे एतदेव ब्रह्महव्रतमेवेत्यर्थः॥ किंचद्विगुणंसवनस्थेचब्राह्मणेव्रतमादिशेत् सोमयागा यकृतदीक्षस्य ब्राह्मणस्यवधेब्रह्महत्याव्रतंद्विगुणंसमाचरेतुए वंघतद्वधेप्रवृ त्तस्याघ्नतोवापिद्विगुणमेवपादोनम् ॥ एवंतावद्भगवतायाज्ञवल्क्योक्तानि का निचिद्व्रतान्युक्तानि॥ अन्यान्यपिकानिचिन्मयूखे तत्रजमदग्निः॥ यद्वावाराण सींगच्छेत्सत्रंश्रीपर्वतादिकम् अन्यान्यपिचतीर्थानिगायत्रीमभ्यसेत्तदा १ प्राणायामशतं कुर्यात्प्रत्यहंनियतः शुचिः एवदेवव्रतंस्तेनःपदान्पूनंसमा चरेदिति २ पूर्वंब्रह्महत्याप्रायश्चित्तप्रकरणेप्रसंगतः किंचित्समप्रायश्चित्त मप्युक्तमधुनाऽनुपातकसाकल्याभिप्रायेणपुनरुक्तमतः पुनरुक्तिर्नोद्भावनी या॥ इतिब्रह्महत्यासमप्रायश्चित्तानि ॥ ❀

और इसी प्रकार जो उसके मारणका उद्यम करे औरकिसी विघ्नवशतें नमारे तदभी दू णापादोन करणा चाहिये इसप्रकार भगवान् याज्ञवल्क्य जीने कुछक व्रत कहे हैं और भी कै व्रत मयूख विषें लिखेहैं तिस विषें जमदग्नि ऋषि कहतेहैं अथवा काशीको चलाजावे अथवा श्रीपर्वतको जावे अथवा संपूर्ण तीर्थयात्राकरे अथवा गायत्री जपका अभ्यासकरे ।१। अथवा नित्यं प्रति पवित्र होकर्के १००सौ प्राणायाम करे । और स्वर्णका चोरभी इसी व्रतको पादोन करे ॥ २ ॥ और पूर्वब्रह्महत्या प्रकरणविषें ब्रह्महत्या समानप्रायश्चित्त कहेहैं तदभी अबअनुपात क साकल्यक अभि प्रायकर्के फेर कहेहैं इसवास्ते पुनरुक्ति दोष नहि भावना करणा इति ॥

ॐनमः अब सुरापान के समान पापोंका प्रायश्चित्त कहतेहै तिस विषेंमनुजीका वाक्यहै ब्रह्मे ति कि ब्राह्मण पढे होये वेदको अभ्यासतें विना आलस कर्के भुला देवे १ और निंदित शास्त्रके सुनने कर्के वेद की निंदा करणी कि वेद अछा नहि है और म्लेछोंका मत श्रेष्टहै २ और साक्षिभाव विषें झूठबोलना ३ और ब्राह्मणते भिन्न जो अपना मित्रहै तिसका वध करणा ४ और निषिद्ध जो लशुनादिहैं जो नहि भक्षण करणे योग्य तिनको भक्षण करणा ५ और अनाद्य जो विष्टादि है जिनके स्पर्शते अपवित्रता होती है उनको भक्षण करणाएहछे ६ काम सुरा पानके समान कहेहै । १ । और मेधा तिथि नेभी अनाद्यका ऐसा अर्थ कीयाहै कि जिस पदार्थ विषें प्रथम एह संकल्प होजावे कि एह खाने योग्यनहिहै फेरउसपदार्थ को

अथसुरापानसमप्रायश्चित्तम्। तत्रमनुः। ब्रह्मोज्झतावेदनिंदाकौटसाक्ष्यंसुहृद्वधः। गर्हितानाद्ययोर्जग्धिः सुरापानसमानिषट् १ ब्रह्मणोधीतवेदस्यानभ्यासेनविस्मरणम् असच्छास्त्रश्रवणेनवेदकुत्सनम्। साक्ष्येमृषाभिधानं मित्रस्याब्राह्मणस्यवधः। निषिद्धस्यलशुनादेर्भक्षणम्। अनाद्यस्यपुरीषादेरदनम् मेधातिथिस्तु। नभोक्ष्यतइतिसंकल्पयद्भुज्यते तदनाद्यमित्याचष्ट एतानिमनुनासुरापानसमान्यभिहितानि। याज्ञवल्क्यः॥ निषिद्धभक्षणंजैह्म्यमुत्कर्षेचवचोनृतम् रजस्वलामुखास्वादःसुरापानसमानितु १ निषिद्धं लशुनादिकंतस्यमतिपूर्वंभक्षणं अतएवमनुः। छत्राकंविड्वराहंचलशुनंग्रामकुक्कुटम्। पलाण्डुंगृंजनंचैवमत्याजग्ध्वापतेन्नरइति॥ १ ॥अमतिपूर्वेतुप्रायश्चित्तान्तरम् अमत्यैतानिषड्जग्ध्वाकृच्छ्रंसांतपनंचरेत् ॥

भक्षण करलेना उसका नाम अनाद्यकिहाहै एह मनुजीने सुरापान केसमानकहेहैं । और याज्ञवल्क्यजीने किहाहै निषिद्धेति कि निषिद्धजोलशुनादिहै तिनको अभक्ष्य जान कर्के फेर भक्षण करणा और सभके साथ कुटिलता करणीअपनीवडियायी वास्ते झूट बोलना और रजस्वला का उंठ चुंबन करणा एहसभ सुरापानके समान होतेहै १ और इसी कारणते मनुजीने किहाहै छत्रेति किच्छत्राक १ और विष्टाभक्षण वाला शूकर २ और लशुन ३ ग्राम कुकुट ४ पलांडु वा गंडा ५ गाजर ६ इनको जानकर भक्षण कर्के पुरुष पतित हो जाताहै ॥ १ ॥ और अज्ञानते भक्षण विषें और प्रायश्चित्त किहाहै अमत्येति एह जो पूर्व ६ अभक्ष्य कहेहै इनको भक्षण कर्के अपनीशुद्धिवास्ते सांतपनकृच्छ्रव्रतकरे

अथवायति चांद्रायण व्रतकरे और अब शेषजो अभोज्यान्नादि उसके भक्षणविषे एकदिन उपवास करे ऐसे मनुजीके वाक्यते॥जैह्म्य शब्दकर्के कुटिलताका ग्रहणहै॥अथवा और किसीके संबंध कर्के और किसी साथ वृथा वैर करणा॥अथवा और कुछ करणा॥यद्यपि इसस्थान विषे जैह्म्य एह शब्द सामान्यता कर्के किहाहै तथापि प्रायश्चित्तके गुरु भावते जिस पापके निमित्त प्रायश्चित्त किहाहै उसकी भी गुरुता प्रतीत हुंदीहै सो जो जैह्म्यका प्रायश्चित्त गुरु देखयाहै इस कर्के एह जैह्म्यभी ऐसा जानणा कि जिस कर्के किसेका प्राण वियोग होवे एह विचार सम जगाहै कि नैमित्तिककी आधिक्यते निमित्तकी भी अधिकता प्रतीत हुंदीहै । जैसे यस्येति

यतिचांद्रायणंवापिशेषेषूपवसेदहरितितेनैवोक्तत्वात् जैह्म्यंकौटिल्यम् अन्याभिसंधानेनान्यवादित्वमन्यकर्तृत्वंच अत्रजैह्म्यमिति यद्यपिसामान्येनोक्तं ॥ तथापिप्रायश्चित्तस्यगुरुत्वान्निमित्तस्यापि गौरवमवगम्यते ॥ अस्तिचनैमित्तपर्य्यालोचनयानिमित्तस्यविशेषावगतिः ॥ यथायस्योभावग्नीअनुगतौस्या।तामभिनिम्लोचेद्वा।पुनराधेयं तत्रप्रायश्चित्तिरित्यत्रोभावित्यस्यानिमित्तविशेषणत्वेनहविर्षोरुभयत्ववदाविवक्षितत्वेप्यग्निद्वयानिष्पादकपुनराधेयरूपे नैमित्तिकविधिवलादग्निद्वयानुगतिरेव निमित्तमितिकल्प्यते ॥ तथात्रापीतियुक्तंनिमित्तगौरवकल्पनम्॥तथासमुत्कर्षनिमित्तं राजकुलाद्वावचतुर्वेदएवचतुर्वेदोहमित्यनृतभाषणम्॥ रजस्वलायामकामवशेनवक्रासवसेवनमेतानियाज्ञवल्क्योक्तानिसुरापानसमानि ॥ असत्यभाषणरजस्वलामुखास्वादाभ्यांसहमानवायानिषड्टौभवंति ॥

इस जगा उभौ एह निमित्तका विशेषणहै इसते नैमित्तक यो हवनहै उसमेभी इस विशेषणका संबंधहै ऐसी कल्पना करींदीहै॥तथेति तैसेहि इसस्थान निमित्तके गौरवकी कल्पना करणी योग्यहै और अपनी वडियाई वास्ते राजाके समीप इसने चार वेद नहिपडे मैने चार पडेहैं इस प्रकार झूठ वचन कहना॥और रजस्वलाका अर काम वशते ओष्ट चुंवन करणा एह संपूर्ण याज्ञवल्क्यजीने सुरापानके समान कहेहै ॥और इस प्रकार इनकी संख्या असत्य भाषण १ और रजस्वला के मुखका स्वाद लेना २ दोएइ छे ६ जो मनुजीने कहेहैं सो ऐसे आठ ८ होजातेहैं

और ज्ञानते २४ चौवीस वर्ष । और अज्ञानते तिसते आधा १२ वर्ष ॥ ऐसे जेकर न होवे तद १८० धेनु दान करणा किहाहैं । और धेनुके अभावविषें ५४० कार्षापण देवे ॥ और तिसकी दक्षिणाभी १०० सौगांदेणी । और तिसके अभाव विषें १०० कार्षापण । और कार्षापणादि संज्ञा पूर्व कहीहि । और मिता क्षरा विषें देवल जीका वाक्यहै मृतामिति कि पहिली स्त्रीके जीवत मृत होयी जो दूसरी स्त्रीहै तिसको अग्नि होत्रकी अग्नि कर्के दग्ध करताहै सोभी सुरापानके समान किहाहै ॥ १ ॥ अब सुवर्णकी चोरीके समान पाप का प्रायश्चित्त कहतेहैं तिस विषें मनु जीका वाक्यहै निःक्षेपेति कि ब्राह्मणके सुवर्णते भिन्न किसीकी अमानत हरलेनी और तैसेहि मनुष्य घोडा रजत पृथिवी हीरा मणियां इनको

अत्रज्ञानतो २४ वार्षिकमज्ञानतस्तदर्द्धम् १२तदभावे १८० धेनवःतदभावे ५४० कार्षापणाः । तद्दक्षिणाशतंगावः तदभावे १०० कार्षापणाः कार्षापणादिसंज्ञात्रुक्तापूर्वम् ॥ किंचमिताक्षरायांदेवलः ॥ मृतांद्वितीयांयोभार्य्यांदहेद्वैतानिकाग्निभिः जीवंत्यांप्रथमायांतुसुरापानसमंहितत् १ अथ सुवर्णस्तेयसमप्रायश्चित्तम्॥तत्रमनुः निःक्षेपस्यापहरणंनराश्वरजतस्यच भूमिवज्रमणीनांचरुक्मस्तेयसमंस्मृतम् १ अस्यार्थः ब्राह्मणसुवर्णव्यतिरिक्तनिःक्षेपस्यहरणम् ॥ तथामनुष्यतुरगरूप्यभूमिहीरकमणीनांहरणं सुवर्णस्तेयतुल्यम् ॥ तथाचयाज्ञवल्क्यः अश्वरत्नमनुष्यस्त्रीभूधेनुहरणंतथा निःक्षेपस्यचसर्वंहिसुवर्णस्तेयसंमितम् १ अस्यार्थःअश्वादीनांब्राह्मणसंबंधिनां निःक्षेपस्यचसुवर्णव्यतिरिक्तस्यापहरणम् मनुष्यःपुरुषःस्त्रीपुरुषीमनुष्यसाहचर्यात् ।गोबलीवर्दन्यायेनपौनरुक्त्यपरिहारः। धेनुर्नवप्रसूतागौः

हर लेना एह संपूर्ण सुवर्ण चोरीके समान किहाहैं ।१। और तैसेहि याज्ञ वल्क्य जीने किहाहै अश्वेति कि ब्राह्मण संबंधी जो अश्वहै क्या घोडा और रत्न पुरुष स्त्री पृथिवी गौ और अमानत इनकी चोरी सुवर्णकी चोरीके समान होतीहैं १ और इस स्थान विषें मनुष्य कर्के पुरुष और स्त्री इन दोनों का ज्ञान हो जाताहै फेर स्त्री शब्द किस वास्ते कहनाथा ॥ इस शंका की निवृत्ति वास्ते मनुष्य की साहचर्यताते गोबलीवर्द न्यायतेहैं जैसे (गामानय) बलीवर्दंच इस जगा गौ कहने कर्के दोनो का ग्रहणथा पीछे बली वर्द कहणेते गौ शब्द गवीका हि वाचक रिहा तैसे हि इस स्थान विषें पुनरुक्ति दोष नहि होता । और धेनु नवीन प्रसूता गौका नामहै ॥

ओर इसी कारणते विष्णुजीने किहाहै कि ब्राह्मणकी पृथिवी खोसलेनी अर किसीकी विश्वास ते धरी होयी अमानत नहि देणी इह सुवर्ण स्तेयके समानहैं ओर प्रायश्चित्तेन्दुशेखर विषे लिषाहे विप्रसंबंधिनि एह ब्राह्मण संबंधी घोडा हीरकादि रत्न पृथ्वी पुरुष स्त्री गौ अमानत इनका हरलेना पर दश मासे तोलते उरे इहभी सुवर्ण चोरिके समान होताहै अर एह जो सातवस्तुहैं इन सभका हरलेना इह ब्राह्मणका अस्सी ८० रत्ती सुवर्ण चुरालेना तिसके समान कहेहैं इस विषे भी ज्ञानते बारां १२ वर्षका व्रत अर अज्ञानते छे ६ वर्षका व्रत करणा योग्य है अर जेकर इतना व्रत न होसके तद इसके स्थान विषे १८० एकसौ अस्सी गोदान करणा अर जेकर गोदानभी न होसके तद पांचसौ चाली ५४० कार्षापण दान देणा तद इह पाप दूरहोताहै इति ओर इनकी दक्षिणा सौ १०० गौ ओर इसमे सामर्थ्य न होवे तां सौ १००

अतएवाह विष्णुः ब्राह्मणस्यभूमिहरणंनिक्षेपहरणंचसुवर्णस्तेयसमम् ॥ प्रायश्चित्तेन्दुशेखरे विप्रसंबंध्यश्वरत्नमनुष्यस्त्रीभूमिधेनुहरणंनिक्षेपहरणंच अर्वाक्सुवर्णमानादितिस्वर्णस्तेयसमम् । एतानिसप्तब्राह्मणस्वामिकाऽशीतिरक्तिकापरिमितसुवर्णस्तेयसमानि । अत्रज्ञानतोद्वादशवार्षिकव्रतमज्ञानतस्तदर्द्धं तदभावेऽशीत्यधिकैकशतधेनवःतदभावे ५४० चत्वारिंशदधिकपंचशतंकार्षापणाःतद्दक्षिणाशतंगावःतदभावे १०० शतंकार्षापणाः॥ अथगुरुतल्पगसमप्रायश्चित्तम् तत्रमनुः । रेतःसेकःस्वयोनीषुकुमारीष्वंत्यजासुच सख्युःपुत्रस्यचस्त्रीषुगुरुतल्पसमंविदुरिति । अस्यार्थः सोदर्यभगिनीचंडालीसखिपुत्रभार्यासुयोरेतःसेक स्तं गुरुभार्यागमनसमानमाहुः एतेषांभेदनसमीकरणंयद्येनसमीकरणंतस्यतेनप्रायश्चित्तार्थम्

कार्षापण देणा अर्थात् सौ १०० रुपैयाहि देणा ॥ ॐ ॥ अब गुरुस्त्री गमनके समान प्रायश्चित्त कहतेहैं तिस विषे मनुजीका वाक्यहै रेतइति कि अपनी सक्की भगिनी अर चांडाली अर अपने मित्रकी जो स्त्रीहै अर अपने पुत्रकी जो स्त्रीहै अर जिसका विवाह नहि होयाऐसी जो कुमारी कन्याहै इन विषे जो वीर्यका त्यागहै अर्थात् इनके साथ जो मैथुनहै तिसको भी गुरुस्त्री गमनके समान बुद्धिमान् कहतेहैं क्योंकि इन साथ गमन करण वालेको गुरुस्त्री गमनके बराबर प्रायश्चित्त होताहै १ ओर इह जो इनके भेद करके समीकरणहै सो जिसका जिसके साथ समीकरण क्या तुल्यता होजावे तिसको तिसकेहि प्रायश्चित्तके तुल्यताबारेहै अर्थात् जो पाप जिसके समान कहाहै उस पाप विषे उसी पापका प्रायश्चित्तभी करणा योग्यहै

और कूटसाक्षीअर संबंधीका वध एह दोनो सुरापान के समानकीयेहैं अर इन विषे प्रायश्चित्त ब्रह्महत्या का आगे कहेंगे सो विकल्पके वास्ते कहाहै और जो फिर गुरुके आगे झूठ बात बनाकर कहणी तिसको भी ब्रह्महत्या के समान कीयाहै अर इस विषे उपरते ब्रह्महत्याका हि प्रायश्चित्त दिखायाहै ॥ इह इस अभिप्राय वास्तेहै किसमान कियेजो पापहैं तिनका कुछ न्यून प्रायश्चित्त होताहै ॥ इसके प्रकट करण वास्तेहै जैसे कि संसार विषे राजाके समान मंत्री है इस वाक्यते मंत्रीको राजाके तुल्य कोइ नहि जानदा किंतु न्यूनहि जाणदाहैं राजा तुल्य कहणेते उसको प्रशंसाहै ॥ और याज्ञवल्क्य जीने भी गुरुतल्पग समान कहेहैं सखीति कि सखायो अपना मित्रहैं तिसकी स्त्री १ अर उत्तम वर्ण की जो कन्याहै २ और स्वयोनि क्या एक उदरतेहै जन्म जिसका ऐसी जो अपनी भगिनीहै ३ अर अंत्यजा जो चांडालीहै ४ अर सगोत्रजाक्या समान गोत्रकी स्त्री अर्थात् जिसगोत्रका पुरुष होवे उसगोत्रकी जो स्त्रीहै

यत्कौटसाक्ष्यसुहृद्वधयोः सुरापानसमीकरणं ब्रह्महत्याप्रायश्चित्तंवक्ष्यति तद्विकल्पार्थं यत्पुनर्गुरोरलीकनिर्वंधस्यब्रह्महत्यासमीकृतस्यपुनरुपरिष्टाद् ब्रह्महत्याप्रायश्चित्तनिर्देशनंतत् समीकृतानां न्यूनप्रायश्चित्तंभवतीतिज्ञापनार्थंतथाच लोके राजसमः सचिवइत्यत्रसचिवस्यन्यूनतैवगम्यते याज्ञवल्क्यः॥ सखिभार्याकुमारीपुस्वयोनिष्वंत्यजासुच सगोत्रासुसुतस्त्रीषुगुरुतल्पसमंस्मृतम् १ सखामित्रंतस्यभार्या १ कुमार्युत्तमजातीया कन्यका सकामास्वनुलोमासुनदोपस्त्वन्यथादमः दूषणेतुकरच्छेदउत्तमायांवधस्तथेति तत्रैवदंडविशेषकथनात् प्रायश्चित्तगुरुत्वंयुक्तम् स्वयोनिर्भगिनी अंत्यजाचांडालीसगोत्रासमानगोत्रा सुतस्त्रीस्नुषा एतासांगमनं प्रत्येकंगुरुतल्पसमम् ॥

५ अर अपने पुत्रकी जो स्त्रीहै ६ इनकाजोगमनहै सो एक १ गुरु स्त्री गमन के समान होताहै इस मे कुछ विशेष कहतेहैं सोदि मित्रकी स्त्री अर उत्तम जाति की कन्या इह जेकरकामना करके युक्त होवें अथवा अनुलोमजातीहोवें तद इनके गमन विषे ऐसा दोष नहिहै अन्यथा क्या ऐसा जेकरन होवे तद राजाने उसको दंड देणा कहाहै सोई लिखाहै दूषणेति कि उत्तम वर्णकी स्त्री विषे हाथ करके दूषण कीतियां होयां उसके हाथ काट देने अर जेकर संभोग करे तद वध करणा अर्थात् पुरुष आपतो हीनजातहो अर उत्तम जातीकी स्त्री को बलते मथुनादि करके भ्रष्टकर देवे उसको राजाने ऐसा दंड देणा चाहिये कि पहले उसके हाथ काट करके पीछे वध करणा इसकारणते इस स्थान विषे विशेष दंड कथन करणेते प्रायश्चित्त का बहुत होना योग्यहै ॥

अरएहप्रायश्चित्तवीर्यत्यागते उपरंतजानने योग्यहै अरवीर्यत्यागनेविना गमनकीनिवृत्तीविषे गुरुस्त्रीगमनके समान नहिहोता किंतुथोडाप्रायश्चित्त होताहै किसवास्ते किमनुजीनेपूर्वश्लोकविषे वीर्य त्याग इह विशेषकर्के प्रतिपादन कीआहै इसकारणतें सगोत्रेति सगोत्राग्रहण कर्के हि सिद्धहोयां फरजांपुत्रकी स्त्रीकाग्रहणहै सोभी प्रायश्चित्तकी गौरवताके प्रतिपादनवास्तेहै अर्थात पुत्रस्त्रीके गमन विषे पाप अधिकहै और इसविषे एहभी विचार करणा किब्रह्महत्यादिकर्के समान जो गुरुका अपमानादिहै सोभी तिसब्रह्महत्याके निमित्त प्रायश्चित्तके उपदेशवास्तेजानणा औरभी लिखाहै पितुरिति किअपनेपिताकी भगिनी १ और माताकीभगनी २ और मामेकीस्त्री ३ पुत्रकीस्त्री माताकी ४ सपत्नी ५ अपनीभगनी ६ आचार्य्यकीकंन्या ७ आचा

एतच्चरेतःसेकादूर्ध्ववेदितव्यम् अर्वाङ्निवृत्तौतुनगुरुतल्पेनसमत्वम् किंत्वल्पमेवप्रायश्चित्तम् मनुनापूर्वश्लोकेरेतःसेक इतिविशेषणोपादानात् सगोत्राग्रहणेनैवसिद्धेपुनः सतस्त्रीग्रहणंप्रायश्चित्तगौरवप्रतिपादनार्थम् ब्रह्महत्यादिसमत्ववचनं गुर्वधिक्षेपादेस्तन्निमित्त प्रायश्चित्तोपदेशार्थम् अन्यच्चपितुःस्वसारंमातुश्चमातुलानींस्नुषामापिमातुःसपत्नींभगिनीमाचार्य्यतनयांतथा १ आचार्य्यपत्नींस्वसुतांगच्छेच्चगुरुतल्पगः लिंगंछित्वावधस्तस्यसकामायाःस्त्रियस्तथा २ पितृभगिन्यादीनामन्यतमांगच्छन् गुरुतल्पगोभवतितस्यब्राह्मणव्यातिरिक्तस्यालिंगंतावच्छित्वापश्चाद्वधः कार्य्यो राज्ञाउत्कटकामायाःस्त्रियोप्येषदंडः राजदंडेनापिपापक्षयस्मरणात् तथा चवसिष्ठःराजभिर्धृतदंडाश्चकृत्वापापानिमानवाः निर्म्मलाःस्वर्गमायांति संतःसुकृतिनोयथेति १ वधादन्यत्रापिराजदंडानंतरं स्वल्पंप्रायश्चित्तंप्रकल्प्यमित्यपिबोध्यम्

र्य्यकीस्त्री ८ अपनीकंन्या ९ इनके साथजोपुरुष गमनकरताहै सोगुरुतल्पगकिहाहै अर्थात इनके मध्यविषे किसी एकसाथ गमनकरणे कर्के गुरुतल्पग होताहै इसवास्ते राजाने ब्राह्मण तेभिन्नतिसगुरुतल्पगका प्रथमलिंगछेदनकर्के पीछेवधकरणायोग्यहै और जिसस्त्रीकोकामचेष्टाअहतहै उसकोभी एहिदंडदेनाकिहाहै किसवास्ते किराजाके दंडकर्के भीपाप क्षयहोजाते है इत्यादिस्मरणतें २ औरतैसेंहि वसिष्टजीने कहाहै राजभिरि० कि जोपुरुष पापोंकोकर के फिरराजाकर्के दंडकोधारण करतेहैं सोपापतें मुक्तहूये स्वर्ग को प्राप्तहोतेहै किजैसेंशुभकर्म्मकरनेवाले स्वर्गकोजातेहैं १ और वधतेंबिना और जगाभिराजदंड० अनंतर स्वल्प प्रायश्चित्त कल्पना करणे योग्यहै ऐसाभी जानना

और नारद जीका वाक्यहै मातेति कि माता १ माता की भगिनी २ अपनी स्त्रीकी माता ३ मासी ४ पिताकी भगिनी ५ पिताके भ्राताकी स्त्री ६ मित्रकी स्त्री ७ अपने शिष्यकीस्त्री ८ अपने पुत्रकीस्त्री ९ अपनी भगिनी १० भगिनी की सखी ११ अपनी कन्या १२ आचार्य की स्त्री १३ अपने गोत्रकी स्त्री १४ शरणको जो प्राप्त होयी होवे १५ और राजा की स्त्री १६ साधनी १७ अपनीदासी १८ पतिव्रता १९ अपनेते उत्तमवर्णकीस्त्री २० इन के मध्यमें किसीके साथ गमनकरे तदभी उह पुरुषगुरुतल्पग कहीदाहै ३ इसविषे मिताक्षरामें लिखयाहै कि(प्रश्ण)ननुवेदनिंदादिके विषे दोषको अल्पहोनेते तिसविषे अतिबहुत ब्रह्महत्यादि प्रायश्चित्त नहियोग्य (उत्तर) ऐसेनहिहै क्योंकि गुरुप्रायश्चित्तके उपदेशबलते दोषमेंभीगुरु

नारदः। मातामातृष्वसाश्वश्रूर्मातुलानीपितृष्वसा पितृव्यसखिशिष्यस्त्री भगिनीतत्सखीस्नुषा १ दुहिताचार्य्यभार्याचसगोत्राशरणागता राज्ञीप्रव्रजिताधात्रीसाध्वीवर्णोत्तमापिच २ आसामन्यतमंगच्छन्गुरुतल्पगउच्यते ३ अत्रमिताक्षरा ननुवेदनिंदादौदोषस्यलघुत्वाद्गुरुतरंब्रह्महत्यादिप्रायश्चित्तंनयुज्यते नैवम् गुरुप्रायश्चित्तोपदेशबलादेव दोषगुरुत्वमवगम्यते नच नब्रह्महत्यादिप्रायश्चित्तातिदेशार्थमेवेदंवचनंभवति॥किंतु दोषगौरवमात्रप्रतिपादनपरमित्याशंकनीयम् ॥ यतस्तावन्मात्रप्रतिपादनपरत्वेब्रह्महत्यासममिदं गुरुतल्पसममित्यादिभेदेन समत्वाभिधानंनोपपद्यते ॥ तच्च प्रायश्चित्तंसमशब्देनोपदिश्यमानं ब्रह्महत्यादिप्रायश्चित्तेभ्यः किंचिन्न्यूनमेवोपदिश्यते लोकेराजसमोमंत्रीत्यादिवाक्येषु समशब्दस्यकिंचिद्धीनेप्रयोगदर्शनात् महतः पातकस्येतरस्यचाल्पतरस्यायुक्तत्वात् ॥

भावजानयाजादाहै (प्रश्ण) इहवचन केवल ब्रह्महत्यादिप्रायश्चित्तके अतिदेश वास्ते नहि है किंतु दोषकी गौरवतामात्रपरहै (उत्तर) ऐसे शंकानहि करणे योग्यहै कि जिसकार णते दोषकी गौरवतामात्र प्रतिपादनपरभावके होयां २ ब्रह्महत्यासमानहि एहहै ॥ और गुरुतल्पसमानहै इत्यादि भेदकरकेसमानभाव नहि प्राप्तहोता और इसकारणते समानशब्द करके जोप्रायश्चित्त विधानकीयाहै ॥ सो ब्रह्महत्यादिप्रायश्चित्तोंते किंचित् न्यून विधानकरीदाहै क्योंकि लोकविषेभी राजाके समानमंत्रीहै इत्यादि वाक्यों विषे समानशब्दका कुछक हीनविषे हिप्रयोगदेखनेते और बडे पातकको अल्पपातकके तुल्य होना योग्य नहिहै इसकारणते ॥

अर ऐसेहोंयां २ याज्ञवल्क्यजीनें ब्रह्महत्याके समानभावकरकेजोकहेहे ब्रह्मजिह्मादि तिनकोहि मनुजीने सुरापानसम कहाहै इहभी प्रायश्चित्तकें विकल्प वास्तेजानना अर ऐसे हि और और वचनों विषे भी विरोधका परिहारकरणा ॥ और जो वाशिष्टजीने ऐसे कहाहै कि गुरुकेसाथ वृथा वैरकरणे विषेवारां १२ रात्रीका कृच्छ्र करके फिर सचैलस्नान करे अर गुरूकी प्रसन्नतातें पवित्र होताहै इह लघुप्रायश्चित्तकहाहै ॥ सोभी अज्ञानते एक वारीकरणे विषेजाननेयोग्यहै ॥ और अन्यग्रंथविषें अठायां २८ गुरुतल्पगसमानसहित प्रायश्चित्तकहेहैं सोयों जैसे लिखे है कि अपने सापिंडस्त्री गमनविषें क्या सातपाडोंके उरे किसीकीस्त्री सायगमनकरणा १ अर ब्राह्मणकी कन्या गमनविषें २ और चंडालादि स्त्रीगमनाविषें३ ज्ञानते महापातकके प्रकारकरके मरणहि उसका

एवंचसतियाज्ञवल्क्येन ब्रह्महत्यासमत्वेनोक्तानामपि ब्रह्मजिह्मवेदनिंदा सुहृद्वधानांमनुनायत्सुरापानसाम्यम् ब्रह्मोज्झतावेदनिंदाकौटसाक्ष्यंसुहृद्वधः ॥ गर्हितानाद्ययोर्जग्धिः सुरापानसमानिषडित्युक्तं । तत्प्रायश्चित्तविकल्पार्थं॥ एवमन्येष्वपिवचनेषुविरोधः परिहर्तव्यः ॥ यत्तुवासिष्टेन गुरोरलीकनिर्वंधेकृच्छ्रंद्वादशरात्रंचरित्वासचैलस्नातोभवतीतिलघु प्रायश्चित्तमित्युक्तम्॥ तदमतिपूर्वसकृदनुष्ठानेवेदितव्यम् ग्रंथान्तरेऽष्टाविंशतिकानिगुरुतल्पसमानिसप्रायश्चित्तानि तानियथासपिंडस्त्रीगमने १ ब्राह्मणकुमारीगमने २ चंडालादिस्त्रीगमने ३ ज्ञानतोमहापातकोक्तप्रकारेणमरणम् । तद्वैकल्पिकं चतुर्विंशतिवार्षिकंवातदभावेऽशीत्यधिकैकसहस्रकार्षापणाः तद्दक्षिणाद्विशतेगावः तदभावेद्विशतेकार्षापणाः । सवर्णायां स्त्रियां असवर्णायांपुत्रस्त्रियां औरसेतरभार्यायांगमने चतुर्विंशति २४ ॥ वार्षिकं अज्ञानतोद्वादश १२ वार्षिकं ॥

प्रायश्चित्त कहाहै अर्थात् इनके सायगमनकीतियांहोयां महापातकी होताहै इसकारणते प्राणांतहि उसका प्रायश्चित्तहै अथवा इसके स्थान चौवीस २४ वर्षका व्रत धारण करणा । अर जेकर एसा न हो सके तद एक हजार अस्सी १०८० कार्षापण देवे अर तिसकी दक्षिणा दासौ २०० गौदेणी अर तिसके अभाव विषें दोसौ२ ०० कार्षापण देणे कहेहै और अपनी वर्णकी जो मित्रकी स्त्रीहै तिस विषें अर असवर्ण पुत्रकी स्त्रीविषे और जो पुत्रबनाहै अर्थात् जो औरस नाहिहै उसकी स्त्री विषें गमन कीतियां ज्ञानते चवीस २४ वर्ष अर अज्ञानते वारां १२ वर्ष व्रत धारण करणा ॥

अरातिसके अभावविषे एकसोअस्सी १८० धेनुदेणी अरातिसके भी अभावमें पांचसौ चालीस ५४० कार्षापणदेणे अर दक्षिणा१०० सौगौदेणी अरातिसके अभावमें १०० कार्षापणदेणाचाहिए (४।५।६) अर माताकी भगिणी ७ पिताकीभगिनी ८ हीनवर्णापिताकीस्त्री ९ पांचपुरुषते अधिक गामिनी जो इहहै इनके साथ गमन कितियां होआं चांद्रायण करणाकहाहै इसकें अभावमें आठ ८ धेनुदेणी अर तिनके अभावविषे १२ कार्षापण अर दक्षिणा दो २ गौदेणी तिसके अभावविषे २ दो कार्षापण कहेहैं ॥ और पिताके भ्राताकीस्त्री १० अर माताके पिताकीस्त्री ११ अर माताके भ्राताकीस्त्री १२ सातपुरुषगामिनी जो इहहैं इनके साथ व्यभिचार करके एकवारी गमनकीतियां पराकव्रतकरणाकहाहै अर जेकर आठ ८ पुरुषगामिनीहोवें तद तप्तकृच्छ्रकरणाकहाहै अर जेकरऐसानहोसके तदपांच ५ धेनुदानकरणायोग्यहै अर जेकरधेनुकाभी अभावहोवे तदगौका मूल पंदरह१५कार्षापण देणेकहहै अर अपनीशक्ति

तदभावे १८० धेनवः तदभावे ५४० कार्षापणाः तल्लभ्यस्वर्णादिवा तद्दक्षिणा शतंगावःतदभावे१००कार्षापणा(४।५।६)मातृष्वसृपितृष्वसृहीनवर्णापितृपत्नीनां ९ पंचपुरुषाधिकगामिनीनामासांगमने चांद्रायणं तदभावेऽष्टौ ८ धेनवःतदभावे १२ कार्षापणाः तद्दक्षिणा २ गावौ तदभावे २ कार्षापणौ ॥पितृव्यपत्नी १० मातामहपत्नी ११ मातुलपत्नीनां १२ व्यभिचारित्वेनसप्तमपुरुषगामिनीनां सकृद्गमने पराकः अष्टमादिपुरुषगामिनीनां गमनेतु तप्तकृच्छ्रम् तदभावेपंचधेनवः तदभावे १५ कार्षापणाः तद्दक्षिणा यथाशक्ति श्वश्रू १३ स्वसृ १४ ज्येष्ठभ्रातृपत्नी १५ राजपत्नी १६ श्रोत्रियपत्नी १७ ऋत्विक्पत्नी १८ गमनेऽज्ञानादारोहणमात्रे संबंधविप्रकर्षेवा पराकस्तप्तकृच्छ्रोवातदभावे चतुर्धेनवः तदभावे ११ कार्षापणाः यथाशक्ति दक्षिणा। उपाध्यायपत्नी १९ शिष्यपत्नी २० स्वसृसखी २१ अवर्णास्वस्त्रीजातदुहितृ २२ गमनेज्ञानतोमहापातकोक्तप्रकारेणमरणम् ॥

के अनुसार तिसकी दक्षिणादेणी ऐसेप्रयाश्चित्त करके शुद्धि होतीहैं और अपनीस्त्रीकी माता १३ अपनीभगिनी१४ वडेभ्राताकीस्त्री १५ राजाकीस्त्री १६ आचार्यकीस्त्री १७ ऋत्विजकीस्त्री १८ इनकें साथ गमन कीतियां क्योंकि अज्ञानतें इनके ऊपर आरोहण मात्र विषे अथवा संबंधके विप्रकर्ष विषे अर्थात् थोडेसंबंध विषे पराक व्रत अथवा तप्त कृच्छ्र करके पवित्रता कहीहै।अर जेकर व्रत करणेकी सामर्थ नहोवे तद व्रतके स्थानमें चार ४ धेनु दान करणा अर धेनुकेभी अभावमें एकादश११ कार्षापण देणे योग्यहै अर अपनी शक्ति अनुसार दक्षिणा देणी और उपाध्यायकीस्त्री१९और शिष्यकीस्त्री२० अर भगिनीकी सखी२१हीनवर्णास्त्रीविषे उत्पन्न जो कन्याहै २२ ज्ञानतें इनकें साथ गमन कीतियां महापातक प्रकरण विषे जो प्रकार कहाहै उस प्रकार करकें प्राण त्यागकरणा कहाहै ॥

अर तिसके विकल्प विषे चवीस २४ वार्षिक व्रत जानना अर तिसके अभावविषे तीन सौ साठ३६० गौदान करणा ॥ अर तिसके भीअभावविषै एकसौ अस्सी १८० कार्षापण ॥ अरइनके अभाव में सुवर्णादिदेणे अर तिनकी दक्षिणा २०० गौ अर गौके अभाव विषे २०० कार्षापण देणे योग्यहै ॥ और आचार्यकी स्त्री २६ अर शरणको जो प्राप्तहोयीहो २४ अज्ञानते इनकागमन कीतियां द्वादश १२ वर्ष कावत करणा कहाहै ॥ अर तिनके अभाव विषे एकसो अस्सी १८० गौदान करणे योग्यहै अरगौके अभाव विषे पांचसौ चालि ५४० कार्षापन दान करणा कहाहै । अथवा उनके मूलका सुवर्णादिदेणा योग्यहै ॥ अरतिसकी दक्षिणासौ १०० गौदेणी अर तिसके अभावमे एकसौ १०० कार्षापण देणा ॥ और संन्यासनी जोस्त्री हैं २५ अर अपनीउपमाता २६ अर पतिव्रता २७ इह पांच पुरुषतें अधिक गमन करणे वाली होवें इनके गमन कीतियां चांद्रायण व्रत करणा कहाहै ॥ अर जेकर चांद्रायण की सामर्था नहोवे तद आठ ८ गोदान करणा कहाहै ॥ अर गौके अभावविषे बायीस २२ कार्षापण देने अर अपनीशक्तिके अनुसार दक्षिणा देणी योग्यहै ॥ और सात पुरुष गामिनी जो असमानरूप उत्तम वर्ण कीस्त्री ह २८ तिसके साथ गमन कीतियां पराकव्रत करणा कहाहै अर जेकर पराक व्रत करणेकी सामर्थ्य नहोवे तद पांच गोदानकरणे योग्यहैं ॥ अर जेकर पांच गौदेणे की भी सामर्थ्य न होवे तदपंदरह १५ कार्षापण देणेकहे अपनी शक्ति अनुसार दक्षिणा देनी ॥ अर आठ ८ पुरुष गामिनी जेकर उत्तम स्त्री होवे उसकेसाथगमन कितियां तप्तकृच्छ्र करणा कहा है

तद्वैकल्पिकं २४ वार्षिकव्रतंतदभावे ३६० धेनवःतदभावे १८० कार्षापणाः तन्मूल्यस्वर्णादिवातद्दक्षिणा२०० गावःतदभावे २०० कार्षापणाः ॥ आचार्यपत्नी२३ शरणागतागमने २४अज्ञा०१२वार्षिकमूतदभावे १८० धेनवः तदभावे ५४० कार्षापणाः तन्मूल्यसुवर्णादिवातद्दक्षिणा १०० गावः तदभावे १००कार्षापणाः प्रव्राजिता२५ धात्री २६साध्वीनां२७ पंचपुरुषाधिकगामिनीनामासांगमनेचान्द्रायणम् तदभावे८ धेनवः । तदभावे२२कार्षापणाः। यथाशक्तिदक्षिणा । सप्तमपुरुषगामिनीनिक्षिप्तोत्तमस्त्रागमने२८पराकः तदभावे ५ धेनवस्तदभावे १५ कार्षापणाः वायथाशक्तिदक्षिणा॥ अष्टमादिपुरुषगामिन्याअस्यागमनेतप्तकृच्छ्रंवा ४ ॥

अर जेकर तप्तकृच्छ्रकी समर्था नहोवे तद ४ गौ देणी कहीहै ॥ अर तिनके अभाव विषे ग्यारह ११ कार्षापण अर अपनी शक्ति अनुसार दक्षिणा देणी योग्यहै ॥ अर इह संपूर्ण गुरुतल्पग समान हैं अर सभ अनुपातक इस प्रकार मिल करके दो २ अर पचास अर्थात् ववंजा ५२ होतेहैं ॥ और सखिभार्या इत्यादि विषे पराशर जीने विशेष कहाहै कि चांडाली अर श्वपाकी इनसाथ जो ब्राह्मण गमन करताहै सो ब्राह्मण प्रथम तीन दिन उपवास करके फिर ब्राह्मणोंकी आज्ञानें इस प्रकार प्रायश्चित्त करे यथा कि शिखासहित मुंडन करवा करके फेर दोंप्राजापत्य करे अर दोगौ दाक्षिणा देवे तद पवित्र होताहै इस प्रकार उसकी शुद्धि पराशर जीने कहीहै २ और चांडाली शब्दकी व्याख्या करतेहैं चांडाली उह होतीहै

धेनवो वा ११ कार्षापणाः यथाशक्ति दक्षिणा ॥ एतानिगुरुतल्पसमानिमिलित्वा सर्वाण्यनुपातकानिद्विपंचाशन्मितानि ५२ सखिभार्याकुमारीषुस्वयोनिष्वंत्यजासुचेत्यत्रविशेषमाह पराशरः चांडालींवाश्वपाकींवाअनुगच्छतियोद्विजः त्रिरात्रमुपवासित्वाविप्राणामनुशासनात् १ सशिखंवपनंकृत्वाप्राजापत्यद्वयंचरेत् गोद्वयंदक्षिणांदद्याच्छुद्धिंपाराशरोब्रवीदिति २ व्याख्या । ब्राह्मण्यांशूद्राज्जाताचांडाली आरूढपतिताज्जातावासगोत्राज्जातावा । आरूढपतितःसंन्यासीस्त्रीसेवी तदेतत्त्रिविधं चंडालत्वंयमआह आरूढपतिताज्जाताब्राह्मण्यांशूद्रजश्चयः चंडालौताबुभौप्रोक्तौसगोत्राद्यश्चजायतइति १ एतत्त्रिविधचंडालसंततौ स्त्रीचंडालीक्षत्र्युग्रयोर्जाता श्वपाकी

जो ब्राह्मणी विषे शूद्रके वीर्यतें उत्पन्नहोवे अथवा आरूढपतिततें जो उत्पन्नहोवे यथा कि संन्यासीहोकर जो स्त्रीसेवा करताहै उसकानाम आरूढपतितकहाहै अर उसकी कन्याभी चांडाली कहीहै अथवा अपने सगोत्रीतें जोउत्पन्नहोवे अर्थात् किसेने सगोत्री विवाही होवे तिसतें उत्पन्न होवे उहभी चांडाली कहीहै ॥ इह इसप्रकार तीनप्रकारकी चांडाली होतीहै सोयी यमजीने कहाहै आरूढेति कि पतित संन्यासीतें जो उत्पन्न होवे अर शूद्रतें जो ब्राह्मणीविषे उत्पन्न होवे इहदोनो चांडालकहेहैं अर तीसरा अपने सगोत्रीतेंजो उत्पन्न होवे १ इह तीनप्रकारका चांडाल कहाहै अर ऐसी स्त्रीहोवे तद उह चांडाली कहीहै अर किसी उग्रजातितें क्षत्रिया विषे उत्पन्न होवे उह श्वपची कहीहै

सोयी मनु जीने कहाहै कि किसी उग्रजातिते जो क्षत्रियाविषे उत्पन्नहोवे सो श्वपच कहाहै अर स्त्रीहोवे श्वपची होतीहै ॥ अर इसस्थानविषे द्विजशब्द कर्के ब्राह्मणकाहि ग्रहणहै क्यों कि क्षत्री वैश्य को आगे कहनेते ॥ उपवासित्वा शब्दका अर्थ कर्त्तेहैं उपवासीति ॥ और इस शब्दकीसिद्धि कहतेहैं आचारेति और क्षत्री वैश्यको दक्षिणा अधिककहीहै मनुजीने क्षत्रियइति कि क्षत्री अथवावैश्य जो पूर्वोक्तचांडालीके साथ गमन करताहै सो अपनी शुद्धि वास्ते दो प्राजापत्यकरे अर दो गोमिथुन दक्षिणादेवे क्या कि दो गौ और दो बैल इहदक्षिणा देणी १ और शूद्रको व्रत थोडा अर दक्षिणा अधिकहै ऐसा मनुने कहाहै श्वपाकीमिति कि श्वपाकी अथवा चांडाली इनके साथ जो शूद्र गमन करताहै सो अपनी शुद्धिवास्ते एक प्राजापत्य कर्के

तदाहमनुःउग्रात्तुजातःक्षत्रायांश्वपाकइतिकीर्तितइति॥द्विजशब्दोत्रब्राह्मणपरः क्षत्रियवैश्ययोर्वक्ष्यमाणत्वात् उपवासित्वोपवासंचरेदित्यर्थः। आचारार्थवाचिकिंवताच्छब्दनिष्पत्तिः।क्षत्रिवैश्ययोर्दक्षिणाधिक्यमाह क्षत्रियोवाथ वैश्योवाचांडालींगच्छतेयदि प्राजापत्यद्वयंकुर्याद्द्याद्गोमिथुनद्वयमिति शूद्रस्यस्वल्पंव्रतमधिकादक्षिणेत्याहसएव ॥श्वपाकींवाथचांडालींशूद्रोवायदि गच्छति प्राजापत्यंचरेत्कृच्छ्रंचतुर्गोमिथुनंददेदिति १ अत्रस्मृत्यंतरेषुचांडालीगमनेप्रायश्चित्तान्यन्यथास्मर्यंते तत्र कानिचिदाचार्योक्तप्रायश्चित्तानि न्यूनाधिकानि तद्यथाहसुमंतुः॥ मातृष्वसृपितृष्वसृस्नुषाभगिनीभागिनेयीगोचांडालीनामपिगमनेतप्तकृच्छ्रमिति ॥ तदेतदकामतःप्रवृत्तस्यरेतःसेकात्प्राङ्निवृत्तोद्रष्टव्यम् ॥ यत्त्वंगिरसोक्तं पतितांत्यस्त्रियोगत्वाभुक्त्वा चपरिगृह्यच मासोपवासंकुर्वीतचांद्रायणमथापिवेति १

अर चार ४ गोमिथुन क्या ४ गौ ४ बैलदक्षिणा देके तद पवित्र होताहै ॥ १ ॥ इस जगा और स्मृतियां विषे चांडाली गमन कीतियां और प्रायश्चित्त कहाहै अर इस विषे कैयांआचार्योंने प्रायश्चित्त न्यून कहेहैं अर कैयांने अधिक कहेहैं । और सोयी जैसे सुमंतु जीने कहाहै कि माताकी भगिनी पिताकी भगिनी पुत्रकी स्त्री अपनी भगिनी अपनी भगिनीकी कन्या गौचांडाली इनके साथ गमन कितियांतप्त कृच्छ्र करणा योग्यहै इति । अर इह प्रायश्चित्त उनकोहै कि जो कामनाते विना मैथुनविषे प्रवृत्तहोकर वीर्य्य त्यागने पहिलेहि निवृत्तिको प्राप्त होवे । और फेर अंगिरा जीने कहाहै पतितामिति कि पतित पुरुषकी स्त्री अर चांडालकी जो स्त्री है इनको भोग कर्के अथवा इनको ग्रहण कर्के एक महीना उपवासकरे अथवा चांद्रायण करे इति १

तिस स्थान विषे चांद्रायण कामनाते मैथुन मे प्रवृत्त होकर वीर्य त्यागते पूर्व निवृत्त होनेको जानना॥ अर सामर्थ्य वालेको एक महीना उपवास हि कहाहै॥ परंतु एह वचन श्लोकके अर्द्ध अर्द्ध कर्के दोहै ऐसाभी कोई कहतेहैं ॥ औंर मूल वचन कर्के महीने उक्त जोगोद्वयदक्षिणा युक्त दो प्राजापत्य हैं तिसका प्रत्याम्नाय कल्पना कर्के महीनेके उपवासके समान होनेते एहि विषय है ॥ कोई दूसरा नहि अर्थात् महीना उपवास औरदक्षिणा दो गौ सहित जो प्राजापत्यहैं तिनके समानहोताहै ॥ औंर शंखनेभी जो कहाहै॥ अकामेति॥ कामनाते विना जो ब्राह्मण चांडाली गमन करताहै सो तप्तकृच्छ्रकर्के शुद्धहोताहै ॥ अथवा दो प्राजापत्यकर्के पवित्र होताहै १ ॥ अर कामनाते जो ब्राह्मण चांडाली सेवा करताहै सो चांद्रायण व्रत कर्के पवित्रहोताहै अथवा दो प्राजापत्यकर्के शुद्धहोताहै ।२। इस वाक्यका अभिप्रायमूल वचनके समानहै । औंर

तत्रचांद्रायणं कामतः प्रवृत्तस्यरेतः सेकात्प्राङ्निवृत्तस्यावगंतव्यम् शक्तस्यतुमासोपवासः ॥ गोद्वयदक्षिणायुक्तप्राजापत्यद्वयस्य मूलवचनोक्तस्यप्रत्याम्नायकल्पनाद्वारेण मासोपवाससमानत्वादयमेवविषयः ॥ यदपिशंखेनोक्तम् अकामतस्तुयोविप्रश्चांडालींयदिगच्छति तप्तकृच्छ्रेणशुद्ध्येतप्राजापत्यद्वयेनवा १ कामतस्तुयदाविप्रश्चंडालींयदिसेवते चांद्रायणेनशुद्ध्येतप्राजापत्यद्वयेनचेति २ एतन्मूलवचनेनसमानविषयम् यमस्तुविषयव्यवस्थापूर्वकंपक्षद्वयमाह चांडालपुष्कसानांतुभुक्त्वागत्वाचयोपितम् कृच्छ्राब्दमाचरेज्ज्ञानादज्ञानादैंदवद्वयमिति१ एतच्चोभयंरेतः सेकपर्यन्तसकृद्गमनविषयम् यत्तुगौत्तमेनोक्तम् अंत्यावसायिनीगमनेकृच्छ्राब्दोऽमत्याद्वादशरात्रमिति तत्राब्दकृच्छ्रोयमोक्तसमानविषयः द्वादशरात्रंतु सुमंतुप्रोक्ततप्तकृच्छ्रसमानविषयम् ॥

यमजी विषय व्यवस्थापूर्वक दो पक्ष कहतेहैं चांडालेति किचांडालकी जो स्त्रीहै अर पुक्कस की जो स्त्रीहै औंर इनका अन्न भक्षण कर्के अर इनके साथ गमन कर्के जेकर जानते करे त दएक वर्ष कृच्छ्र करे ॥ अर अज्ञानते दो चांद्रायण करे तदपवित्र होताहै १ ॥ इहदोनोंप्रायश्चित्त वीर्य त्याग पर्यंत एकवारी गमन के विषयमें जानने चाहिये ॥ औंर गोतम जीने एसा कहाहै॥ अंत्येति॥ कि अंतवसायिनी जो चांडालीहै तिसके साथ गमन कीतियां जान कर्के तद उह एक वर्षकृच्छ्र करे ॥ अरअज्ञानते बारां १२ रात्रि उपवास करे तद पवित्र होताहै ॥ अर इस विषे एक वर्ष का जो कृच्छ्र कहाहै सो यमोक्तप्रायश्चित्तके समान विषय है ॥ अरद्वादश रात्रि जो है सो सुमंतु जीके कहे होये तप्तकृच्छ्र के समान विषय जानना ॥

यद्यपि अंगिरा जीने ऐसा कहाहै अंत्येति किअंत्यजा जो चांडालीहैं तिनके साथ गमन कीतियां अथवा इनके साथ भोजन कीतियां अथवा प्रमापण कीतियांक्या इनके मारयांहोयां प राककरणे कर्के शुद्धि होतीहै इह भगवान् अंगिराजी कहते भये इतिअर्थात् जोपुरुष चांडाली साथमैथुनादिव्यवहार करे सोपुरुष पराक व्रत कर्के पवित्र होताहै १ सोभी इह प्रायश्चित्त तत्कृच्छ्रके समानविषयहै॥और जो वसिष्ठजीने कहाहै कि बारां १२ रात्रि केवल जलहि पानकरणा अर बारां १२ रात्रि उपवासकरणा अथवा अश्वमेध यज्ञविषें यज्ञांतस्नान करे इस प्रायश्चित्त कर्के औरहि विषयहै परंतु चांडाली मैथुन भी प्रकट कीयाहै ॥ तदभी इह वृहद्यमने जो प्रायश्चित्त कहाहै चांद्रायण तिसके समान विषय है ॥ और जो इह संवर्तने कहाहै यइति कि जो ब्राह्मण काम कर्के पीडितहोया किसी प्रकार चांडालीगमन करे सो ब्रा

यद्यप्यंगिरसोक्तं अंत्यजानांतुगमनेभोजनेचप्रमापणे पराकेणविशुद्धिः स्याद्भगवानंगिरोऽब्रवीदिति तदपितत्तकृच्छ्रसमानविषयम्। यदपिवासिष्ठेनोक्तं द्वादशरात्रमब्भक्षोद्वादशरात्रमुपवसेदश्वमेधावभृथंवागच्छेत् एतेनैवचांडालीव्यवायोव्याख्यातइति एतदपिवृहद्यमोक्तचांद्रायणसमानविषयम् यच्चसंवर्त्तनोक्तम् यश्चांडालींद्विजोगच्छेत्कथंचित्काममोहितः त्रिभिः कृच्छ्रैर्विशुध्येतप्राजापत्यानुपूर्वकैरिति एतच्चांद्रायणद्वयेनसमानविषयम्। यदपिमनुनोक्तं यःकरोत्येकरात्रेणवृषलीसेवनंद्विजः सभैक्ष्यंभक्षयन्नित्यं त्रिभिर्वर्षैर्व्यपोहतीति १ वृषलीचांडाली स्मृत्यंतरम् चंडालीबंधकीवेश्या रजःस्थायाचकन्यका ॥ ऊढाचसमगोत्रेणवृषल्यःपंचकीर्त्तिताइति १ ॥

ह्मण क्रमपूर्वक प्राजापत्य करदियां होयां तीन वर्ष कर्के शुद्ध होताहै क्याकि प्राजापत्यतत्कृच्छ्र अतिकृच्छ्रइह प्राजापत्यके आनुपूर्व कहेहैं अर्थात् पहिले प्राजापत्य पीछेहोरदो एहभी दो चांद्रायणके समान विषय कहाहै १ और जो इह मनुजीने कहाहै कि जो पुरुष एकरात्रि कर्के भी चांडालीका सेवन करताहै सोनित्यंप्रति भिक्षाका अन्न भक्षण करता हुया तीनवर्ष कर्के पापको दूरकरताहै १ इसजगा वृषली नाम चांडालीकाहै॥और स्मृतिविषें भी लिखाहै कि चांडाली अर बंधकी क्या जिसस्त्रीको ऋतु कभी नहि होती उसस्त्रीका नाम बंधकीहै अरवेश्या अर जो कन्याहि ऋतुमतीहोवे अर समानगोत्र वाले पुरुषने विवाहीहोवे इह पांच वृषली कहीहैं अर्थात् इह पांच स्त्री चांडालीके तुल्य होतीहैं ॥ १ ॥

अर एह पूर्वोक्त प्रायश्चित्त एक दिनके अभ्यास विषयहैं अर जो वीर्य त्याग पर्यंत मनुने कहाहै अर सखिभार्यासु इत्यादि जो याज्ञवल्क्यने कहाहै सो एक पक्ष अभ्यासके विषयमेजानना और रेतःसेकःकुमारीषु इत्यादिजो यमने कहाहै सो एक वर्ष अभ्यासक विषयमे जानना ॥ प्रश्न ॥ सखिभार्य्या इत्यादि स्मृति वचनोमे चांडालीके गमनविषे और गुरुपत्नीके गमन विषे जेकर एकाहिप्रायश्चित्तहै तदएह सहचार बहुतबुरा प्रतीत हुंदाहै पंडितलोकोंने काक और संतआपणे वगाने पुत्रोंको नहि जाणदे इत्यादि विषे दोषबारते किहाहै ॥ उत्तर ॥ एह दोष अ

तदेकदिनाभ्यासविषयम् यदपिरेतःसेकइत्यादिमानवीर्यंसाखिभार्य्येत्यादि याज्ञवल्क्यीयंच तत्पक्षाभ्यासविषयंरेतःसिक्काकुमारीषुचांडालीष्वंत्यजासु चसपिंडापत्यदारेषुप्राणत्यागोविधीयतइतियमोक्तंतत्संवत्सराभ्यासविष यंननुसखिभार्य्याकुमारीषुस्वयोनिष्वंत्यजासुचेत्यादियाज्ञवल्क्यादिवचने चांडालीगमनेगुरुपत्नीगमनेचैकमेवप्रायश्चित्तमितिचेत्तदासहचराचारुता स्यात्साचध्वांक्षाः संतश्चतनयंस्वंपरंवानजानते इत्यादौत्यक्तुमर्हैवाविद्व द्भिर्घोषितेतिचेदेवंविचारोऽत्र तथासहचराचारुविरुद्धान्योन्यसंगतो इत्या दिदूषणानिप्रायआलंकारिकैरेवोन्नीतानि तानिचतत्तदलंकारव्यंग्यरसाप कर्षावहत्वेनतत्रैववैरस्यमावहंतिनपुनर्धर्म्महेतूत्पादकनिवन्धेऽर्थशास्त्रनि वन्धेवा अतएवभिक्षुकोवालकश्चैवराजाभार्य्यातथैवचेत्यादिचाणिक्यवा क्यंसद्भिः साध्वेवामृश्यते किंचचांडालीगमनंगुरुपत्नीगमनंचोभयमपिन रकहेतुरितितद्गणनायांयुक्तमेवश्वयुवमघोनामतद्धित इतिवत्तदुपादानम तश्चांडालीसदृशागुरुपत्नीतिमूढसंभावनानश्रद्धेया

लंकारोंके जानणे वालयोंने दिखाएहै क्योंकि रसको घटातेहैं इसकर्के उसीजगा जानणे और धर्म्मके कारण जित्थे दिखाएहै उसजगा और अर्थशास्त्रमे इनका दोषनहि इसीकर्के चाणक्य ऋषिने (भिक्षुको) इत्यादि श्लोक विषे राजाका और भिक्षुका साथ कीताहै और पाणिनीजीने (श्वयुव) इत्यादि सूत्र विषे कुत्तेका और इंद्रका साथ कीताहै इस कारणते जो किसेने किहाकि चांडाली बराबर गुरुपत्नी इस जगा प्रतीतहुंदीहै एह बात मूर्खकीहै यथा र्थनहि जानणी

इति श्रीमन्महाराजाधिराजजम्बू
काश्मीरतिब्बताद्यनेकदेशाधिपति
प्रभुवर रणवीरसिंहाज्ञप्त श्रीदेवि
कोपकंठवासि सारस्वतपंडितदेवी
दत्तसुतकवि गंगाराम संगृहीतेध
र्म्मशास्त्रमहानिबंधे प्रायश्चित्त भा
गेऽनुपातकप्रकरणंसप्तदशम् १७

इति श्रीमन्महाराजाधिराज श्रीरणवीर
सिंह भूपाल तिनकी आज्ञासे
जो पंडितगंगारामने बनाया धर्म्म शास्त्र
महा निबंध तिसके प्रायश्चित्त भाग विषे
एह अनु पातक प्रकरण सतारमा पूरा
होया भाषा ॥ १७ ॥

त्रयोदशादिप्रकरणशुद्धिपत्रम्

पृ०	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
२	टी०६	तकहि	तकभी
४	मू०६	णेच	णेन
४	टी०५	मेस्ते	मेसे
५	टी०७	जानते	जानने
५	टी०३	प्रयाश्चि	प्रायाश्चि
६	टी०४	मत	हत
६	टी०२	काह	काहे
६	टी०९	प्रेया	प्रयो
७	टी०१	स्वनंत्र	स्वतंत्र
८	टी०४	चर्तुदश	चतुर्दश
९	टी०४	तत्राति	तत्राति
१०	टी०१	अय	अथ

पृ०	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
१३	मू०३	लाके	लोके
१३	टी०३	अपनी	किसिकी
१४	मू०७	अशूल	अत्रशूल
१९	मू०३	वसन	वसन्
२१	टी०६	अर्य	अर्थ
	टी०८	विप	विपे
२८	टी०३	भवेभ्रतः	भवेद्भृतः
	टी०४	दृभ्र	भृ
२९	मू०१	गु ह	गुह
३५	मू०३	प्रथमवे	प्रथममेव
	मू०६	युगयत्	युगपत्
३६	मू०१	हन्या	हन्याद्
	टी०५	लयेट	लपेट
	टी०७	दून	दूना
३७	टी०३	वाचि	वीच
३८	मू०८	पृथिवमिटतसे	पृथिवीमटतस
४१	टी०८	आर	और
	टी०७	रादा	रोदा
४३	टी०१	शास्त्रे	शास्त्रैः
	टी०२	शास्त्रै	शास्त्रैः
४४	मू०९	ब्रह्मघ्ना	ब्रह्मघ्नो
	टी०२	कृताप	कृतोप
	टी०३	या	यो
४५	टी०८	रोत्क	रोक
४७	मू०८	शल्प	शल्य
		सकृत	सकृत्
४८	टी०५	विरासन	वीरासन
४९	टी०१	नर्पुसक	नपुंसक

पृ०	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
५०	मू०३	ब्रह्मणों	ब्रह्मणो
५३	टी०९	रां	रा
५४	मू०३	शद्रा	शूद्रां
५४	मू०४	त्रेया	त्रयीं
५४	मू०५	शद्रा	शद्रां
५६	मू०९	कृछ्र	कृच्छ्र
५७	मू०१	पूजते	पूयते
५७	मू०३	मपु	मेपु
५८	मू०७	स्यतिः	स्पतिः
५८	टी०४	रात्रि	रात्रि
५८	टी०६	कराणि	करणि
५९	मू०१	मुदि	मुह्नि
५९	मू०१	ह्राह्म	ह्राह्म
५९	मू०८	नध	नघ
६०	मू०६	चर्पिते	चार्पिते
६०	मू०७	ब्रह्म	ब्राह्म
६०	मू०७	भ्यक्त	भ्यक्तश्चभ्यक्तःस्नातःकल्पितमर्दनोवा
६१	मू०४	मपिनिर	मपिहंतव्यानिर
६६	मू०४	णांदेकं	णांनिकं
	मू०४	ह्यपि	ह्यापि
	मू०७	द	दश
६८	मू०८	विद्य	विद्य
		मेत्तत्	मेतत्
६९	टी०१	कामान	कामना
७०	टी०६	दूधघृत	दूधघृत

पृ०	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
७१	मू०४	वासासु	वासाःसु
	टी०६	प्वान	पान
७२	टी०६	पापीकी	पापकी
७३	मू०५	दितिकेचित्	दित्यपिकेचित्
	मू०४	सकृत्या	सकृत्पा
७४	टी०७	साहै	सायहै
७५	मू०३	शंखिः	शंखः
	टी०२	नदरहोवे	नदूरहोवे
	टी०१०	पींने	पीने
७६	मू०६	कृच्छ्रचरे	कृच्छ्रचरं
		यदेतत्	तदेतत्
	मू०९	धोरत्ये	धोरूत्ये
७८	मू०७	गौडिं	गौडीं
७९	मू०९	वारणीं	वारुणीं
८१	मू०३	इयम्	इयहम्
८२	मू०७	संस्कारे	संस्कारो
	टी०७	जिविपे	जिसविपें
८६	मू०६	ब्रह्मणी	ब्राह्मणी
८७	मू०१	पम्य	यस्य
	मू०६	वक्षत	वक्षित
८९	टी०१	रसरूप	रमरूप
९१	टी०३	राजाने	राजाके
९२	मू०२	पाडे	पोड
	टी०३	ह्रिइति	ह्रइति
९४	टी०४	तेसे	तेसे
९७	टी०६	केशादि	केशादि

पृ.	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
	टी०६	हाजंदा	होजंदा
	टी०३	आंगिरा	आंगिरा
	टी०५	जीन	जीनि
		मिनि	भिति
९८	टी०८	चोरे	चोरो
	टी०२	ब्रह्मण	ब्राह्मण
९९	मू०४	निष्कान	निष्काम्
१०१	मू०८	शलपाणि	शूलपाणि
१०२	मू०७	त्रिवर्पु	त्रिवर्प
१०३	टी०८	उसकाचोरकी	उसचोरकी
१०४	टी०८ जोपदार्थहै अर्थात् जोरसायनकरकेबना याहो आसुवर्णहै		
११७	मू०११	गुरुतल्या	गुरुतल्पा
११९	मू०२	शूद्रायां	शूद्रा
१२०	टी०२	उपरलपासे	उपरलेपासे
१२२	मू०४	पुर्वोक्त	पूर्वोक्त
१२४	मू ८	तिक	तिक
१२६	मू०४	चतर्णा	चतुर्णां
	५	पतित	पतित
१२६	टी०३	सगर्ग	संसर्ग
१२७	मू०८	कचित्	कंचित्
१२९	मू०९	संमगर्ग	संसर्गी
१३१	मू०९	एवंस	एवंसं
१३२	मू०१	याजनध्या	याजनाध्या
	८	सद्यःपद	सद्यःपदं
१३४	मू०१०	दित्यर्थः.	दित्यर्थः
	टी०६	महेना	महीना

पृ०	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
१४३	मू०१	शुद्ध्यति	शुद्ध्यति
१४४	टी०२	ग्रार	ग्रौर
१४६	टी०३	निसके	लिसके
१४७	मू०१	सा स्थ	सांस्थ
	टी०१	नि ग्नि	निराग्नि
१४८	मू०१	काता	कांता
१४९	टी०८	गर्भै	गर्भ
१५१	टी०१	पाप	पाप
	टी०३	ऐक	ऐके
१५२	टी०५	ग्रहणा	ग्रहण
	टी०९	ब्राह्मको	ब्राह्मणको
१५४	मू०४	जन्मनम्	जन्मनाम्
	मू०९	सात	सांत
१५५	टी०६	कए	एक
		एकीद	एकादि
१६२	मू०६	पिडा	पिंडा
	टी०७	कवं	कर्के
१६३	टी०१	प्रायश्चि	प्रायश्चि
१६४	टी०२	किता	कीता
		हितका	हिताका
	टी०१	निमित्येति	नित्यमिति
१६७	टी०४	॥२॥	२
१६८	मू०१	वहध	वहुध
१७१	टी०१	प्रायश्चि	प्रायश्चि
१७२	मू०११	मित्र	मित्रं
१७३	७	क्षयो	क्षेपो
१७३	१	टी०ग्नि	ग्नि

पृ०	पं		अशुद्ध	शुद्ध
१७४	मू० ८		वार्पि	वार्पि
१७६	टी० १		और	०
१७७	मू० ९		व्रम	वन
	टी०	६	उत्क	उक्के
	टी०	७	गरु	गुरु
१७८	मू०	६	घ्रतो	घ्रतो
	टी०	२	भगवान्	गौत्तमने
	टी०	२	जाने	जाके
	टी०	५	पद्रा	पादो
१७९	मू०	९	पला	पलां
१८०	मू०	११	नवा	नवी
१८१	मू०	११	धर्नुन	धेनुर्न
१८४	मू०	३	सत	सुत
१८८	टी०	५	मर्थ	मर्ध्य
१८९	मू०	१	नवो:	नवो
	मू०	८	जाना	जातो
१९०	मू०	२	दोप	द्योप
१९३	मू०	३	सोप	सपिं

॥ इति श्रीदृशप्रकरणप्रभृतिसप्तदशप्रकरणंयावच्छुद्धिपत्रंसंपूर्णम् ॥

टीका ॥ ॐनमः ॥ अनु पातक प्रकरण कह कर अब शुद्धि प्रकरण कहतेहैं अनु-पातक पाप ब्रह्महत्यादि पापोंके तुल्य होतेहैं तिनके प्रायश्चित्त कहणेके प्रसंग से शुद्धिकी उपस्थिति होई तिस कारण ते शुद्धि प्रकरण कहतेहैं और तिसके आदमे ग्रंथकर्त्ता मंगला चार करतेहैं गोपेति। कि गौआं पालन वालाभीहै तद भी पृथवी के पालन वालाहै इसमें विरोधा लंकारहै क्या जो गोपालहै सो अचला पाल नहि होता ॥ और गोपीआं का स्वामी भीहै तदभी गोपां का प्यारा नहि जो गोपीश होताहै सो गोप वल्लभ होताहै और जलमें होण वाला भीहै तदभी जलतें उदासीनहै जो जल भू होताहै सो जल निर्वेद नहि होता इतने कहणे ते तीन जगाहि विरोध आया परंतु वास्तव अर्थ यहहै कि पालनके अधि कारते विष्णु अचला पालहै १ और अगोप क्या गोवर्द्धन के समीप स्थान तिनका प्याराहै २

ॐश्रीगणेशायनमः ॥ गोपालोप्यचलापालोगोपीशोऽगोपवल्लभः ॥ जलभूर्जलनिर्वेदः शुद्धः शुद्धौमतोमहान् ॥ १ ॥ अगोपानांगोवर्द्धनोपाश्रितानांवल्लभः तथामत्स्यावतारेजलभूः परशुरामावतारेचजलनिर्वेदः समुद्रोत्सादित्वादितिवास्तवोर्थः ॥ अथशुद्धिप्रकरणमारभ्यते । अत्रेत्थप्रसंगसंगति ॥ अनुपात्यतेतत्सदृशत्वेनज्ञायतेतान्यनुपातकानि महापापतुल्यानिपापानि अत्रतत्प्रायाश्चित्तप्रसंगतस्तत् सादृश्यांपस्थित्याशुद्धेरुपस्थितिरिति शुद्धिस्तावदपवित्रसंसर्गाभावः ॥ साचदेशकालवस्तुस्वभावकृतत्वेनचतुर्धा देशकृताचांडालगृहादिनिवृत्त्या १ कालकृतासूतकादिनिवृत्त्या २ वस्तुकृताऽमेध्यादिनिवृत्त्या ३ स्वभावकृतास्वर्णादिस्था ॥ ४ ॥

मत्स्या वतारमें जल भूथा और परशुरामावतार विषे तिसते उदासीन है समुद्र के उठाणे करके यह तात्पर्य्यहै । और वडाहै और शुद्धहै सो ईश्वर शुद्धि के वास्ते मन्याहै ॥ १ ॥ इसमें प्रतिज्ञा करतेहैं ॥ अथेति । पहले शुद्धि शब्द का अर्थ कथन करतेहैं कि शुद्धि नाम उसकाहै जो अपवित्र वस्तु के साथ संग ना करणा ॥ और सो शुद्धि देश १ और काल २ और वस्तु ३ और स्वभाव४इन करके चार ४ प्रकार की है और जो चांडाल गृहादि और अवित्र स्थान इत्यादि तें निकल जाणा सो देश कृत शुद्धिहै १ सूतक और मरण इनकी निवृत्ति करके जो शुद्धिहै सो काल कृत है २ और अपवित्र वस्तु जो मदिरादि तिंसके लेप की भस्मादि करके निवृत्ति सो वस्तु कृत शुद्धिहै ३ और स्वर्णादियों में जो शुद्धि है सो स्वभाव कृत है ४

रूद्रधरजी कथन करतेहैं शुद्धिरिति किसंपूर्ण विधान कियाजो कर्म्माधिकार तिसके सिद्ध करण वाला जो धर्म भेद तिसकानाम शुद्धिहै॥श्रौर कर्मोका जो विरोधि धर्म्म भेद तिसका नाम श्र शुद्धिहै अर्थात् जिसमें संध्यादि कर्मोका लोप होजावे॥सो कौणसाहै जो सपिंडी पुरुषका जन्म श्रौर मरण इत्यादिहैं श्रौर किसेस्थानमें अशुद्धिके निकलनके समय कथन करणे करके शुद्धिका विचार करीदाहै श्रौर किसे स्थानमें तिसके विना भी शुद्धि होतीहै॥जैसेंवस्त्रादिकीशुद्धि कालते विनाहि होतीहै जेकर मलादि लिप्त वस्त्र तत्काल धोता जावे तद तत्काल शुद्ध होता है श्रौर जेकर दश अथवा वीस दिन पडा रहे तद तितनेही दिन अशुद्धहै॥तत्रेति तिनके मध्य में देश कृत शुद्धि प्रकीर्णकादियोंमें पहले दिखाईहै अब कालकृत शुद्धि दिखातेहैं तिसमें भी

रुद्रधरस्तु ॥ शुद्धिस्तावदखिलविहितकर्म्माधिकारापादकोधर्मविशेषः अशुद्धिस्तुतद्विरोधीधर्म्मविशेषएवसपिंडजन्मादिकः साक्वचिदशुद्धिविगमसमयकथनेनविविच्यते ॥ क्वचित्तुतद्विचाराविमर्शनेनेत्याह ॥ तत्रदेशकृताशुद्धिःप्रकीर्णकादौदर्शिताप्राक् कालकृताप्रदर्श्यते तत्रापिमरणापेक्षयाजननस्यैवप्रथमोपस्थितत्वात्तच्छुद्धिस्तावदभिधीयते ॥ मनुः ॥ यथेदंशावमाशौचंसपिण्डेषुविधीयते जननेप्येवमेवस्यान्निपुणांशुद्धिमिच्छताम् ॥ १ ॥ सर्वेषांशावमाशौचंमातापित्रोस्तुसूतकम् मातुर्वासूतकंप्राहुरुपस्पृश्यपिताशुचिः २ यथासपिण्डेषुदशाहादिश्राशौचमुक्तंअत्रतुवक्ष्यमाणंशावंमरणनिमित्तम् तथाजननेजन्मनिमित्तमप्येवमेवबोध्यम्

मरण को उपस्थितितें जन्मकोहि पहले उपस्थित होणेतें प्रथम जन्मकी शुद्धि कहतेहैं इसमें मनुजी कथन करतेहैं यथेति कि जिस तरहां यह शाव अशुद्धि सपिंडीयोंमें विधान करीदीहै तिसी तरहां निपुण शुद्धिको जो इच्छा करतेहैं पुरुष तिनको जन्मविषे भीशुद्धि कथनकीतिहै ॥ १ ॥ इसमें कुछ भेद कहतेहैं सर्वेति किशाव अशुद्धि सबनोंको कथन कीतिहै ॥ श्रौर सूतक वाली माता पिताकोहि कहिहै अथवा माताकोहि सूतक कथन करतेहैं श्रौर पिता स्नान करके शुद्ध होजाताहै ॥ २ ॥ इसीका अर्थ स्पष्टकरके कहतेहैं यथेति जिस तरहां सपिंडीयोंके विषे दश १० दिन पर्यंत (शावं) क्या मरण निमित्त अशुद्धि ग्रहण कीतीहै (जनने) क्या बालादि जन्मके विषे भी जन्म निमित्त अशुद्धि तिसी तरहां जानणी ॥

टीका ॥ (निपुणां) क्या अच्छी तरहां शुद्धि) इसमें यह भेदहै कि मरण निमित्त अशुद्धिति सके सब संबंधियोंको होतीहै और जन्म निमित्त अशुद्धि माता पिता कोहि होतिहै अर्थात् माता पिताको हि अस्पृश्यताहै ॥तत्रेति॥तिसमेंभी माता कोहि दश दिन अस्पृश्यताहै और पिता स्नान कर्के शुद्ध हो जाताहै ॥ अब आशौच शब्दका अर्थ करतेहैं कि अशुद्धिका जो होणा उसको आशौच कथन करतेहैं ॥ इस स्थानमें दुहां पदांको वृद्धिहै ॥ अंगिराजी कथन करते हैं सूतेति कि जन्म निमित्त सूतकमें प्रसूता स्त्रीकों छोड कर्के और संबंधीयोंके साथ स्पर्श करणे कर्के दोष नाहि होताहै ॥ १ ॥ और जेकर पिता प्रसूता स्त्रीकी खट्टादिको स्पर्श करे तद दश दिन उोभी अस्पृश्य॥होताहै सोई पराशरजी कथन करतेहैं यदीति ॥ कि जेकर ब्राह्मण प्रसूता स्त्रीके साथ स्पर्श करे तद तिसको अस्पृश्यता होतीहै भावें ब्राह्मणषडंगके

निपुणांसमीचीनां अत्रायंविशेषः शावमाशौचं तद्भागिनां सर्वेषां भवतिसूतकेसूतिनिमित्तंतुमातापित्रोरेवास्पृश्यतापादकंभवति तत्रापिमातुरेवास्पृश्यतादशाहव्यापिनीभवति पितातु उपस्पृश्यस्नात्वाशुचिः शुद्धोभवति वा शब्दोत्रैवकारार्थः अशुचेर्भावः आशौचं पदद्वयस्यापिवृद्धिः अंगिराः सूतकेसूतिकावर्ज्जमंगस्पर्शोनदुष्यति संस्पर्शेसूतिकायास्तुस्नानमेवविधीयते ॥ १ ॥ पितासूतिकायाःशयनादिभिः संस्पृष्टोदशाहमेवास्पृश्यो भवति यथाहपराशरः ॥ यदिपत्न्यांप्रसूतायांद्विजःसंपर्कमिच्छति सूतकंतुभवेत्तस्ययदिविप्रःषडंगवित् ॥१ ॥ षडंगवेदवेत्तापिब्राह्मणःप्रसूतपत्नीमंस्पृष्टःसकलसूतकभाग्भवतीत्यर्थः॥ अत्रसंपर्कपदेनशयनासनादिसंपर्कएवगृह्यत इतिपराशरमाधवनिर्णयसिंधु विद्वन्मनोहरादिषु स्पष्टम् केवलस्पर्शेतुस्नानमेव ॥ संवर्त्तोपि ॥ जातेपुत्रेपितुःस्नानं सचेलस्यविधीयते माताशुध्येद्दशाहेनस्नात्वातुस्पर्शनंपितुः १ स्नात्वास्थितस्यपितुःस्पर्शनंननिषिद्धमित्यर्थःस्नानात्तुस्पर्शनंपितुरितिपाठांतरम्

जानणे वाला भी होवे ॥ १ ॥ इसीका स्पष्ट कर्के अर्थ करतेहैं कि षडंग वेदके भी जानणे वाला होवे ब्राह्मण तदभी जेकर प्रसूता स्त्रीके साथ स्पर्श करे तद सारे सूतकके भजन वाला होताहै ॥ इस स्थानमें संपर्क पद कर्के शयन और आसन इत्यादिका स्पर्श ग्रहण करणा यह पराशर माधव और निर्णय सिंधु और विद्वन्मनोहरा इत्यादियोंमे स्पष्टहै॥और केवल स्पर्शके विषें स्नानहि विधान कीयाहै॥इसमें संवर्त्तजी कथन करते हैं जातेति कि पुत्रके उत्पन्न होयां २ पिता को सहित वस्त्रोंके स्नान विधान कीयाहै और माता दश दिन कर्के शुद्ध होतीहै और स्नान कर्के पिताको स्पर्श विधान कीयाहै अर्थात् स्नानतें उपरंत पिताके साथ स्पर्श करणे का दोष नहि(स्नानात्तुस्पर्शनंपितुः)एभीकिते पाठहोताहै १

टी० ॥ ब्रह्मपुराणमें भी कहाहै ॥ सूतेति कि सूतक के होयां २ अर्थात् पुत्र के उत्पन्न होयां २ पुत्रके मुख को देखकरके पिता अशुद्ध होताहै ॥ पश्चात् सहित वस्त्रांके स्नान करके तात् काल शुद्ध होताहै (जनकःशुचिः) यहभीकिते पाठ होताहै ॥ १ ॥ अन्याइति कि और माता भी जेकर सूतक घर को न प्राप्तहोण तद सपिंडीयों की न्याईं सोभी स्पर्शके योग्य होती यांहैं ॥ और सापिंडी भी जेकर सूतक गृहको न प्राप्त होण तद ओभी संपूर्ण सर्वदा काल स्पर्श करणे योग्यहैं ॥ २ ॥ इसीका अर्थ स्पष्ट करके कहतेहैं ॥ कि अन्यामातरःक्या माता कियां सोकणा तदेहं क्या जद प्रसूता स्त्री के घरको प्राप्त होकर प्रसूता स्त्रीको न स्पर्श करण तद सपिंडीयोंकी न्याईं शुद्धहैं जेकर प्रसूताको स्पर्श करण तद सोभी दश १० दिन अ

ब्रह्मपुराणे सूतकेतुमुखंदृष्ट्वाजातस्यजनकोशुचिःकृत्वासचैलंस्नानंतुशुद्धो भवतितत्क्षणात् १ अन्याश्चमातरस्तद्वत्तद्गेहंनव्रजंतिचेत् सपिण्डाश्चापि संस्पृश्याःसंतिसर्वेपिनित्यशः २ अन्यामातरःसपत्नमातरः अत्रतद्गेहग मनं सूतिकास्पर्शपरं सूतिगृहेगत्वातांचेन्नस्पृशंति तदासापिंडवच्छुद्धाएव सूतिकास्पृष्टास्तुतत्तुल्याइत्यर्थः सपिण्डाअप्येवंतत्स्पृष्टाअशुद्धाभवंति ते पुनःस्नानेनशुध्यन्ति पित्रास्नानमपि पुत्रमुखदर्शनानंतरंकार्यमित्याह वासि ष्ठः जातमात्रकुमारस्यमुखमस्यावलोकयेत् पिताऋणाद्विमुच्येत पुत्रस्यमु खदर्शनादिति विधिमप्याहसएव श्रुत्वाजातंपितापुत्रंसचैलंस्नानमाचरेत् उत्तराभिमुखोभूत्वानद्यांवादेवखातके १ इत्यादिग्रंथांतरतोऽवसेयम् अ त्रपुत्रंजातमितिनिर्देशात्कन्यां जातां दृष्ट्वा श्रुत्वावास्नानेनाविनैवपिताशु द्ध्यतीतिहारलतादयः

स्पृश्य होतीआं हैं और सपिंडी भी जेकर स्पर्श करण तद सोभी अस्पृश्य होतेहैं सोसापिंडी फेर स्नान करके शुद्ध होतेहैं और पितानें पुत्रके मुख देखणेतें उपरंत स्नान करणे योग्यहै यह वसिष्ठजीनें कहाहै जातेति कि पाहिले पिता उत्पन्न होए २ पुत्रके मुखको देखे पुत्रके मुखदे खणेतें पिता पितरांके ऋणते रहित होजाताहै इह कहाहै १ इसमें विधिको भी वसिष्ठजी कह तेहैं श्रुत्वेति कि उत्पन्न होयेपुत्रको सुण करके पिता सहित वस्त्रांके और उत्तर दिशाके पासेमु ख करके नदीमें अथवा देवखातमें स्नान करे इत्यादि औरग्रंथोंतें भी निश्चयकरलैणा इसमें पुत्रंजातं इसपदके दिखाणेतें कन्या उत्पन्न होईको देख करके अथवा सुण करके स्नान ते विना भी पिता शुद्ध होताहै यहहारलतादि ग्रंथोंमें कहाहै ॥

इसमें कुछ और कथन करतेहैंकि (पौत्री माता महस्तेन) इस वाक्य कर्के कन्याके विषें भी पुत्र पदका प्रयोग होणेतें अर्थात् पुत्र शब्द कर्के कन्याका भी बोध होताहै इस कारणतें कन्याके भी उत्पन्न होयां २ स्नान कर्के हि पिताकी शुद्धि होतीहै यह निर्णयसिन्धुमें कथन कीयाहै ॥ योकहाहै ॥ ब्राह्मेति कि ब्राह्मणी क्षत्राणी और वैश्यकी स्त्री और शूद्री यह प्रसूत होइआं २ दश १० दिन से उपरंत स्पर्शके योग्य होमीआंहैं और शूद्री तेहरां १६ दिन कर्के स्पर्शकेयोग्य होतीहै इसमें शूद्रीके विषें जो तीन दिन अधिक कथन कीएहैं सो असत् शूद्री योहै भीलणी तिसके विषें जानणा श्रेष्ठ शूद्रीके विषें प्रचेता जी कथन करतेहैं सूतिकेति चतुर्वर्णकी स्त्री दश दिन कर्के शुद्ध होतीहैं एह कहाहै॥प्रसूत। स्त्रीके कर्मके योग्य कालको पैठीनसि जी कहतेहैं सूतीति कि पुत्रके उत्पन्न करण वाली स्त्रीकों २० दिन ते उपरंत स्नान करवाके

पुत्रशब्दस्यपौत्रीमातामहस्तेनेतिकन्यायामपि प्रयोगात्कन्योत्पत्तावपि स्नानेनैवपितुःशुद्धिरितिनिर्णयसिंधुः यत्तुब्राह्मणीक्षत्रियावैश्याप्रसूतादशभिर्दिनैःगतैः शूद्राचसंस्पृश्यात्रयोदशभिरेवंचेतिशूद्रायादिनत्रयाधिक्यप्रतिपादनमसच्छूद्राविषयम्॥सच्छूद्राविषयेतुप्रचेताः सूतिकासर्ववर्णानांदशरात्रेणशुद्ध्यतीति तस्याःकर्मयोग्यताकालमाह ॥ पैठीनसिः॥ सूतिकांपुत्रजननींविंशतिरात्रेणस्नातांसर्वकर्म्माणिकारयेत् मासेनस्त्रीजननींम्॥पुत्रोत्पत्तौविंशतिरात्रेणपुनःकृतस्नानोपाकादियागादिवाकर्म्मकारयेत् कन्योत्पत्तौ मासेनेति अत्र जननाशौचे मरणाशौचेच सूतकेकर्म्मणां त्यागःसंध्यादीनांविधीयते इत्यादिनियमआह्निकभागेविस्तरशःप्रतिपादितत्वात्पुनर्नप्रतिपाद्यते॥कानिचिद्वस्तूनिसूतकादावपिशुद्धान्येवेत्याह मरीचिः॥लवणेमधुमांसेचपुष्पमूलफलेषुच शाककाष्ठतृणेष्वेवं दधिसर्पिःपयस्सुच १ तैलौषध्याजिनेचैवपक्वापक्वेस्वयंग्रहे पुण्यपुचैवसर्वेपुनाशौचंमृतसूतके २

पयोदुग्धम्

कर्मोंको करवाए और कन्याके उत्पन्न करण वालीको एक मासते उपरंत कर्मोंमें जोडे इस स्थानमें जन्म आशौचके विषें और मरण आशौचके विषें (सूतके कर्म्मणांत्यागः संध्यादीनां विधीयते ॥ इत्यादि वचनों कर्के जो नियम कीयाहै तिसको आन्हिक भाग में विस्तार कर्के प्रति पादन करणेतें फेर इस स्थानमें नहिं प्रति पादन कीया॥ कोई वस्तु सूतकमेंभी शुद्ध हिरहतीआंहैं इह मरीचिजी कहतेहैं लवेति कि लवण मक्षीर मांस और पुष्प और मूल और फल और शाक और काष्ट और तृण और दधि और घृत और दुग्ध १ तैल और औषध और घ. में और आपणे कर्के ग्रहण कीये पक्व और अपक्व और संपूर्ण पवित्र जो वस्तूहैं यह सभ वस्तूं मरण और जन्म सूतकमेंभी अपवित्र नहि हुंदीआंहैं अर्थात् शुद्धही रहंदीआंहैं ॥ २

इसका अर्थ स्पष्ट करके कहतेहैं कि पक्कं इस पद करके सत्तूं और लड्डू इत्यादि ग्रहण करणे अपक्कं इसपद कर्के चावलादि ग्रहण करणा इन वस्तूं कों अपणे हस्त कर्के जद ग्रहण करे तद दोष नहि और जिसके घर सूतकहै तिसके हस्त करके जद ग्रहण करे तद दोषहै तिसकी आज्ञाले कर्के ग्रहण करलेवे॥स्वयंग्रहे इस पदका पकापक्कके साथ संबंध करणा और लवणादिके साथ संबंध नहि करणा तिस कारणतें लवणादि सूतक वालेपुरुषके हस्तकरके ग्रहण करलेणे यह रुद्रधर जीने कहाहै ॥ इसतें उपरंत आशौचका भेद दक्ष जीने कहाहै सद्य इति कि एक स्नान करके शुद्धहै इसी तरहां एक दिन कर्के और तीन ३ दिन और चार दिन तिसी तरहां छे दिन और दश दिन और बारां दिन और पंदरह दिन और एक मास ३० ॥ १ ॥ और तिसीतरहां मरण पर्यंत यह दश पक्ष आशौचमें कथन कीयेहैं इन संपूर्णोंकों स्थिति क्र

पक्कंसक्तुमोदकादि अपक्कंतण्डुलादि अस्मिन्नहिस्वयंग्रहे आत्मनागृह्यमाणे नतुस्वामिहस्तात् तदनुमतिरेवस्वीकारेहेतुरित्यर्थः। अत्रस्वयंग्रहेइति पक्कापक्कसंवंध्येवनलवणादिसंवंधि तेन लवणादिग्रहणमशौचिद्वारापिकार्य्यमितिरुद्रधरः। अथाशौचविशेषोदक्षप्रोक्तः। सद्यःशौचंतथैकाहस्त्र्यहश्चतुरहस्तथा षड्दशद्वादशाहश्चपक्षोमासस्तथैवच॥ १ ॥ मरणांततथा चान्यद्दशपक्षाश्चसूतके उपन्यासक्रमेणैतान्वक्ष्याम्यहमशेषतः ॥ २ ॥ सूतकेशौचे स्नानमात्रेण यत्र शुद्धिस्तत्सद्यः शौचम् १ एकाहोरात्रव्यापकमेकाहः२ एवमन्यत्रापिचतुरहादावहःपदं अहोरात्रपरम् रात्रिपदमप्येवं वोध्यम् रुद्रधरोप्येवं यदारात्रौसंध्ययोश्चमरणजन्मनीभवतस्तदानींतेन दिनेनैवसहाहोरात्रोग्राह्यःयथाचकश्यपः॥रात्रावेवसमुत्पन्नेमृतेरजसिसूतकेपूर्वमेवदिनंग्राह्यं यावन्नाभ्युदितोरविरिति द्विगर्त्तादावेवायंपक्षःशिष्टपरिगृहीतः अन्यत्रतुरात्रिंत्रिभागांकृत्वा आद्यभागद्वये चेज्जननमरणे पूर्वमेव दिनं तृतीयेतूत्तरंदिनं ग्राह्यमिति मिताक्षराद्युक्तेः मरणजनननिमित्तविलक्षणमन्यत् दशममशौचमित्यर्थः ॥

म कर्के में कथन करता हां ॥ २ ॥ इसी तरहां रुद्रधरजी भी कहतेहैं यदेति कि रात्री और सायंकाल और प्रातः काल इनमें जद मरण और जन्म होवे तव पूर्वले दिन करकेहि दिन रात्र ग्रहण करणा ॥ १ ॥ इसी प्रकार कश्यप जीभी कहतेहैं रेति कि जद रात्रिके विषे जन्मे और मृत होवे और स्त्रीको ऋतु आवे तद पूर्वला दिन हि ग्रहण करणा जितना पर्यंत सूर्य्य न उदय होवे इह कहतेहैं ॥ १ ॥ द्विगर्त्तादिदेशोंमेंहि यह पक्ष श्रेष्ठोंने ग्रहण कीयाहै और और देशोंमें यह विभाग कीयाहै क्या कि रात्रिके तीनभाग करणे और जेकर आदके दो २ भागोमें जन्मे और मृत होवे तद पूर्वला दिन हि ग्रहण करणा ॥ और तीसरे भागमें जन्म मरण होवें तद अगला दिन ग्रहण करणा यह मिताक्षरादियों में कहाहै ॥ मरण और जन्म निमित्त आशौचतें दशवां आशौच विलक्षणहिहै यह पूर्व श्लोक का अर्थ है ॥

तिसमें सद्यः शौचवाले पुरुष को कहतेहैं ॥ ग्रंथेति ॥ सहित कल्पके और सहित रहस्यकें और छे अंगों कर्के युक्त जो वेद तिसको जो ब्राह्मण ग्रंथते और अर्थते जाणताहै और क्रियावाला है तिसको सूतक नहि हुंदा ॥ १ ॥ इसीका स्पष्ट कर्के अर्थ कहतेहैं ॥ जोब्राह्मण वेद कोंग्रंथ ते क्या शब्दते और अर्थतें अछीतरहां जानताहै कैसे वेदको ॥ ज्योतिष्टोमादि जो यज्ञ और अनुष्ठानों के विधान यह रूप जो कल्पहैं और शिक्षादि यो और पंच अंगहै और वेदांतऔर मीमांसादि जो रहस्य हैं इन कर्के जो युक्त है ॥(क्रियावान्)क्या श्रुति और स्मृति प्रतिपाद्य जो क्रिया तिसमें चतुर हो जद ब्राह्मण तद सूतकको नहि प्राप्त होताहै इसमें सूतकका नाश जोहै सोही सद्यः शौचहै क्योंकि प्राप्तिके होयां २ हिनिषेधको उचित होणेतें एक दिन और

तत्रसद्यःशौचवन्तमाह ग्रंथार्थतोविजानातिवेदमंगैःसमन्वितम् संकल्पं सरहस्यंचक्रियावांश्चेन्नसूतकम् १ योद्विजोवेदं ग्रंथतः शब्दतःअर्थतश्च समीचीनतयाजानाति कीदृशं ज्योतिष्टोमाद्यनुष्ठानपद्धतिस्वरूपैःकल्पैः शिक्षादिपंचभिरपरैरंगैरहस्यरूपैश्च ब्रह्ममीमांसादिभिर्युक्तंक्रियावान् श्रौतस्मार्तक्रियाकुशलःएवंभूतश्चेन्नसूतकीभवति अत्रसूतकाभावोहिस द्यःशौचंगमयति प्राप्तौसत्यामिवनिषेधौचित्यात् । नसूतकं एकाहाद्यशौ चंनभवतितेनसद्यःशौचंभवतीतिशुद्धिविवेकः ॥ तथाशुद्धिविवेकेदक्षः।एका हाद्ब्राह्मणः शुद्ध्येद्योऽग्निवेदसमन्वितः हीनोहीनतरश्चैवत्र्यहश्चतुरहस्त था १ योद्विजोविहितक्रियाकर्ताअग्निनाश्रौतेनस्मार्तेनचवेदेनसांगेनज्ञा नार्थेनसमन्वितःतस्यैकाहमशौचंभवतियस्तुहीनः श्रौताग्निनाविशेषणांत रवान्तस्यत्र्यहम् योवाअग्निद्वयहीनोविशेषणान्तरवांश्चेत्तदातस्यचतुरहो ऽशौचम्

तीन दिन इत्यादि जो अशौचहै सो नहि हुंदा तिस कारणतें सद्यः शौचहै यह शुद्धि विवेकमें कहाहै॥इसी विषेमें शुद्धि विवेकमें दक्षजीने कहाहै।एकेति कि जो ब्राह्मण अग्नि और वेद इ न कर्के युक्तहै सो ब्राह्मण एक दिनतें शुद्ध होताहै और जो श्रौत अग्नितें रहितहै सो तीन दि न कर्के शुद्ध होताहै और जो श्रौत और स्मार्त अग्नितें रहितहै सो चार दिन करके शुद्ध होता है ॥ १ ॥ इसीका अर्थ स्पष्ट करके कहतेहैं। जो ब्राह्मण संध्यादि कर्मके करणे वाला और श्रौत और स्मार्त अग्नि और सहित अंगोंके जो वेद इन करके जो युक्तहै तिसको एक दिन और जो ब्राह्मण श्रौत अग्नितें रहितहै और स्मार्त अग्नि और वेद इन करके युक्तहै तिसको तीन दिन और जो दोनो अग्नितें रहितहै और वेद करके युक्तहै तिसको चार दिन अशौचहै

इस विषेमें बृहस्पति जीका वाक्य है त्रिरेति किवेद और अग्नि करके युक्त जोब्राह्मण है सो तीन रात्रि करके शुद्ध होता है औरजो अग्नि तेरहित है और वेद करके युक्तहै सोपांच दिन करके शुद्ध होता है औरजो ब्राह्मण ब्रुवहै सोदश दिन करके शुद्ध होताहै ब्राह्मण ब्रुवका अर्थ आगे आवेगा १ इसीका स्पष्ट अर्थहै ॥सहित अंगोंके वेद औररमार्त्त अग्नि इन करके युक्त जोहै और श्रौत अग्निसे रहित है तिसको तीन ३ दिन अशौचहै और जो दोनो अग्नितें रहितहै और केवल वेदके पढने वालाहै तिसको पांच दिन अशौच है । और जो वेद कोभीन हि पढदा तिसको छे ६ दिनअशौच है ॥ इस वाक्य विषे। जो ब्राह्मण अग्नि द्वय करके अनुष्ठान करणे वाला है और वेदार्थ को सकलता करके नहि जानता और कुछ वेदार्थ जानता है और संध्यादि संपूर्ण कर्म्मों के करणे वाला है तिसको एक १ दिन अशौच है । क्यों

अत्रैवविषयेबृहस्पतिः ॥ त्रिरात्रेणविशुद्ध्येताविप्रोवेदाग्निसंयुतः । पंचाहेनाग्निहीनस्तुदशाहाद्ब्राह्मणब्रुवः ॥१॥ अत्रापिवेद ऋगादिः सांगः अग्निः स्मार्त्तः तद्युतस्यत्र्यहम् अग्निद्वयरहितस्यनिरंगवेदाध्यायिनः पञ्चाहः एतस्मादप्यपकृष्टोवेद तस्यषडहः॥ अत्राग्निद्वयेनानुष्ठातुः वेदार्थसाकल्यज्ञानहीनस्य विहितसकलक्रियानुष्ठातुः पूर्ववाक्येन सहैक वाक्यत्वादेकाहमशौचम्॥व्यासेन ब्राह्मणब्रुवः।प्रदर्शितःगर्भाधानादिभिर्युक्तस्तथोपनयनेनच नकर्म्म कृन्नचाधीते सभवेद्ब्राह्मणब्रुवः॥ १ ॥ विहितक्रियाहीनो वेदाध्ययनशून्यः ब्राह्मणब्रुवः अस्यदशरात्रमशौचम् सूतकेसंपर्कएवहेतुरित्याह पराशरः ॥ संपर्काद्दुष्यतेविप्रोजननेमरणेपुचसंपर्कविनिवृत्तानां नप्रेतंनैवसूतकम् १ प्रेतंमरणनिमित्तमशौचमित्यर्थः इमेसद्यःशौचादयोऽल्पाशौचपक्षाःसर्वेपिसपिंडान्तराणामशौचभागिनांसंपर्काभावेद्रष्टव्याः तदभावेतेपामपिदशाहंबोध्यामितिविवेककारः ॥

कि इस वाक्य की पूर्वले वाक्य के साथ एकता होणे तें ॥ ब्राह्मण ब्रुव व्यासजी ने कहाहै ॥ गेति। गर्भाधानादि और उपनयन कर्म्म करके जोयुक्तहै ॥ और संध्यादि कर्म्मोंको नहि कर्त्ता और वेद भी नहि पढतासो ब्राह्मण ब्रुव होताहै ॥ १ ॥ इसीका स्पष्ट अर्थहै ॥ विधान कीतियां जोक्रियाहैं तिनतें और वेदा ध्ययन तेरहित सो ब्राह्मण ब्रुव होताहै तिसको दश१० दिन आशौचहै सूतकमें संगहि कारणहै॥ इहपराशर जी कहतेहैं समिति किजन्म और मरण अशौच विषे संगतें ब्राह्मण दोषको प्राप्त होताहै॥ और संगते रहितहैं तिनको मरण निमितऔरजन्म निमित अशौचन. हिंहुंदा ॥ १॥ यह सद्यः शौचादि थोडे अशौचके पक्ष जोहें सो संपूर्ण-अशौचके भजन वाले जो सपिंडीहैं तिनको संगका अभावजद होवे तद होतेहैं और जेकर संग करण तद तिनकोभी दश १० दिन अशौच जानरणा ॥ एह विवेक कार नें कहा है ॥

लोकमें भी श्रेष्ठ पुरुष संसर्गी कोंहिं अशौच कथन करतेहैं इसमें अकठा आसन और शयनादि करके संसर्गभी नौ ९ प्रकारकाहै सो संसर्गी प्रकरणमें देख लेणा ॥ माधवीय ग्रंथमें और कहाहै कि आचार और स्वाध्याय इनको देखकरके सूतकका संकोच कीयाहै इत्यादि वचनों का प्रारंभ करके कलियुगमें बुद्धिमान् इन धर्मों का त्याग कहतेहैं यह और स्मृति में कथन करणेतें अर्थात् सूतक संकोच कलियुगमें ना करणा चाहिये इसतें सपिंडी के मृत होयां होयां ब्राह्मण को दश १० दिन हिंअशौच कहाहै ॥ इसीमें और भी प्रमाणहै कि कलियुगमें अशौच के भेदोंको करदाहुआ पापी होताहै इस हारीत के वचनतेंभी दश १० दिनहि अशौचहै ॥ और चार ४ पढ़ेहैं वेद जिनोंने इत्यादि वाक्य करके सूतक संकोच

लोकेपि संसर्गिणमेवाशौचिनंवदंतिशिष्टाः संसर्गोप्यत्र एकासनशयनादिनवविधः संसर्गिप्रकरणेद्रष्टव्यः माधवीयेतु वृत्तस्वाध्यायसापेक्षमघसंकोचनंतथेत्याद्युपक्रम्यकलौयुगेत्विमान्धर्मान्वर्ज्यानाहुर्मनीषिण इतिस्मृत्यन्तरेऽभिधानात् दशाहएवविप्रस्यसपिण्डमरणेसति कल्पान्तराणिकुर्वाणःकलौभवतिकिल्विषीतिहारीतवचनाच्च चत्वार्यधीतवेदानामित्यादिनोक्तोऽघसंकोचोयुगान्तरविषय इति व्यवस्थापितम्॥भार्याभेदेजननेविशेषमाह मनुः । निरस्यतुपुमान् शुक्रमुपस्पृश्यैवशुद्ध्यति वैजिकादभिसंबंधादनुरुंध्यादघंत्र्यहम् १ अर्थः ॥ पुरुषः शुक्रंवीर्य्यंनिरस्यत्यक्त्वाअकामः स्वप्नादैरितः सिक्त्वामूत्रवत् सउपस्पृश्यआचम्यस्नानंविनैवशुद्ध्यतीत्यर्थः कामतोरेतः सेकेमैथुनेवाःकृतेस्नानमुक्तंवैजिकात् अभिसंबंधात् परपूर्वभार्य्यायामपत्योत्पत्तौ त्र्यहमशौचंभवति ॥

किआहै ॥ सो और युगका विषयहै यह स्थापन कीयाहै॥मनुजी भार्या भेद करके जन्मके विषे अधिक कहतेहैं । निरेति पुरुष अकामतें वीर्यकोत्याग करके आचमनकरे तद शुद्ध होताहै । वैजक संबंधतें संततीके उत्पन्न होयां होयां तीन दिन अपवित्र रहताहै ॥ १ ॥ इसीका स्पष्ट अर्थहै कि पुरुष अकामतें अर्थात् स्वप्नादि में वीर्य्यको त्याग करके (मूत्रवत्) जिसतरहां मूत्रको करके आचमन करके स्नानते विनाही शुद्ध होताहै तैसेहि यहभी शुद्ध हुंदाहै ॥ कामते वीर्य्यके त्यागमें अथवा मैथुनके कीत्यांहोयां स्नानकरके शुद्धहोताहै ॥ वैजकात् अभिसंबंधात् क्या वगानी स्त्रीकेविषे अर्थात्जो पहले वगानीथी तिसविषे संतती उत्पन्न होयां२ तीन३ दिन अशुची होताहै

इसी विषेमें विष्णु जीका वाक्यहै ॥ परेति । कि पराई यों स्त्रीयों के विषे वीर्य को जो त्या गन वाला पुरुष है तिसको तीन ३ दिन अशौचहै अर्थात् जिसकी स्त्री है और जिसने वी र्य सेक कीयाहै इन दोनों को तिसकी संततीमें तीन दिन अशौच है इति ॥ इस वाक्यमें जन्म और मरण नहि भी कथन कीये तदभी जन्म के प्रसंगतें जन्माशौच ग्रहण करणा. यह कोई कहतेहैं ॥ और वहुत यह कहतेहैं । कि जन्म और मरणके विषे स्त्रीवाले कों और वीर्य के सेक करण वाले कों तीन दिन अशौच कथन कीयाहै और जिस पुरुष की स्त्री है तिसके सपिंडीयों को एक दिन अशौच है और जो वीर्यके स्थापन करण वाला है तिसके सपिंडीयों को तीन ३ रात्र अशौच है । इति ॥ यह मरीच्यादिके वचनके अनु सार करके (वैजिकादभिसंवंधात्) यह वचन जन्म और मरण इन दोनोंमें है यह वार्ता

तथाचविष्णुः ॥ परपूर्वभार्य्यासु रेतःपातिनस्त्रिरात्रमशौचमिति । जननमरणयोरनुक्तावपिजननप्रसंगाज्जननाशौचपरमिदमित्येके ॥ सूतकेमृतकेचैवत्रिरात्रंपरपूर्वयोः । एकाहस्तुसपिण्डानांत्रिरात्रंयत्रवैपितुरितिमरीचिप्रभृतिवचनानुरोधेन वैजिकादपि संवन्धादितिवचनस्य जननमरणोभयपरत्वमितिवहवः॥ क्षत्रियवैश्ययोः साग्न्योर्विशेषमाहपराशरः ॥ क्षत्रियस्तु दशाहेनस्वकर्म्मनिरतः शुचिः तथैवद्वादशाहेन वैश्यःशुद्धिमवाप्नुयादिति जननमरणयोः साधारणमिदम् ॥ शूद्रेविशेषोयाज्ञवल्क्येनप्रदर्शितः ॥ क्षत्रस्यद्वादशाहानिविशांपंचदशैवतुत्रिंशद्दिनानिशूद्रस्यतदर्द्धंन्यायवर्त्तिनः ॥ १ ॥ न्यायवर्त्तिनइति शूद्रसंवंध्येव नक्षत्रवैश्यसंवंधि तदर्थस्यपूर्वंप्रदर्शितत्वात् ॥ अत्रत्यक्षत्रवैश्यावन्यायवर्त्तिनौवोध्यौ ॥

वहुत कहतेहैं ॥ अग्नि होत्र जो क्षत्री और वैश्य हैं तिनको विशेष कहते हैं पराशर जी ॥ कि अपने कर्म्मों के करण वाला क्षत्री जन्म और मरण के विषे दश १० दिन करके शुद्ध होताहै ॥ तिसी प्रकार वारह दिन करके वैश्य शुद्धिकों प्राप्त होताहै । याज्ञवल्क्य जीने शूद्र के विषे विशेष करके दखायाहै । क्षत्रेति । कि क्षत्रीको वारां १२ दिन अशौच और वैश्य कों पंदरां १५ दिन और शूद्र कों तीस ३० दिन और ब्राह्मणादि की सेवा करण वाले शूद्र कों पंदरां १५ दिन अशौच कहाहै ॥ १ ॥ इस वाक्यमें (न्याय वर्त्तिनः) । इस पदका शूद्र पदके साथ संवंध करणा ॥ क्षत्र और वैश्य के साथ नहि संवंध करणा क्युंके तिसके अर्थको पूर्व दिखाएतें ॥ इस वाक्य मे क्षत्रि और वैश्य अन्याय वर्त्ति जानणे ॥

इस वाक्यमें न्याय पद कर्के तीन वर्ण की सेवा करणी इत्यादि शूद्रका विहित कर्म्म ग्रहण करणा ॥ अर्द्ध कथा पंदरा १५ दिन॥यह जो सूतक का संकोच है सो नियत जो होमादि हैं तिनके विषें हि जानणा॥और दान देणा और दान लेणा और भोजन खाणा और खुला णा इनके विषें नहि ग्रहण करणा॥इस विषें ब्राह्मणको दश १० दिन और क्षत्रीकों १२ ॥ दिन वैश्यकों १५ दिन और शूद्रको तीस ३० दिन यह संपूर्ण दश दिनादि अशौच जान णा॥यह रुद्रधर जीने कहाहै॥कुछ और कहतेहैं॥कि संकोच भेदजोहै सो सामान्य वाक्यके बा धने वालाहै और विशेष वाक्यका बाधक नहि॥तिस प्रकार दखातेहैं ॥ कि दशदिन मरण नि मित्त अशौचहै चतुर्वर्णके विषें यह विधान कीयाहै इस सामान्य वाक्यका बाधकहै ॥ अग्नि और वेद कर्के युक्त जो है ब्राह्मण सो एक १ दिन कर्के शुद्ध होताहै इत्यादिका संकोचहै द्वाद शाहादि अशौचका संकोच नहि अर्थात् अग्नि वेदके धारणेवाले ब्राह्मणादि में संकोचहै॥और

न्यायोऽत्रद्विजशुश्रूषादिशूद्रविहितक्रिया। अर्द्ध१५ पंचदशदिनानि सूत कसंकोचोयं नियतेष्वेव होमादिषु नदानान्नप्रतिग्रहादिषु तत्रब्राह्मणादी नां १०। १२।१५।३० ॥ संपूर्णमेव दशाहादीतिरुद्रधरः ॥ किंच संको चोहिविशेषःसचसामान्यबाधकएवनतुविशेषबाधकःतथाच। दशाहंशाव माशौचंसर्ववर्णेष्वयंविधिरितिसामान्यबाधक एकाहाच्छुद्ध्यतेविप्रोयोग्निवे दसमन्वितइत्यादिसंकोचोनतुद्वादशाहाद्यात्मकस्य केचित्तु योग्निवेदस मन्वित इत्यादिसंकोचविधायिवाक्येषुयानि अग्निवेदादिविशेषणानि तद र्थमेवसंकोचोनयावत्कर्म्मार्थकः। अतएवहारलतायांजाबालयमस्मृती सं ध्यांपंचमहायज्ञान्नैत्यकंस्मृतिकर्म्मच तन्मध्येहापयेत्तेषांदशाहांतेपुनःक्रि या १ उभयत्रदशाहानिकुलस्यान्नंनभुज्यते दानंप्रतिग्रहोहोमःस्वाध्याय श्चनिवर्त्तते २ उभयत्रजननेमरणेचेति

जिनको द्वादशाहादि अशौचहै उनमें संकोच नहि ॥ केई यह कथन करतेहैं कि जो अग्नि और वेद कर्के युक्तहै इत्यादि जो संकोच के विधान करणे वाले वाक्यहैं इनके विषें जो अग्नि वेदादि विशेषणहैं तिनके वास्ते हि संकोच कीयाहै अर्थात् अग्नि और वेद इनमेंही संकोच है और कर्म्मोंके वास्ते संकोच नहि ॥ इस कारणतेंहि हारलताके विषें जाबाल और यम स्मृ ति का वाक्यहै ॥ समिति ॥ कि सूतक के मध्यमें संध्या और पंच महायज्ञ और नित्य क र्म्म और स्मृति कर्म्म इनका त्याग करवाये फेर दश दिनके अंतमें तिनके कर्म्म करवाये ॥ १ ॥ उभेति जिस कुलमें अशौच होवे तिस कुलका अन्न जन्म और मरण अशौचमें दश दिन न हि खाणा चाहिये और दानकरणा और दानलेणा होम और वेदाध्ययन यह भी निवृत्त होजा तेहैं २ इससे प्रतीत होताहै कि अग्नि वेद वाला इक दिन ते केवल स्पर्श योग्य हुंदाहै और किसे कार्य योग्य नहि २ः

टी० ॥ सदा अशौचको दक्षजी कहतेहैं व्येति रोगि और नीच और करजाई और जो उप नयनादि क्रियोंतें रहित और मूर्ख और स्त्रीके अधीनहै १ और द्यूतादिमें लगाहैचित जिसका और पराधीन और जो सर्वदाकालश्रद्धा और दान इनते रहित हैं इन सभको मरण पर्यंतसू तकहै ॥ २ इसीका स्पष्ट अर्थ (व्याधितस्य) क्या चिकित्साते रहित जो रोगहै तिस कर्के जो ग्रस्तहै अर्थात् असाध्य रोग कर्के जो ग्रस्तहै (कदर्य्यस्य) क्या अपने आपको और ध र्म कृत्यको और पुत्र और स्त्री और कन्या इनको जो दुःखी करदा हुआ और लोभ कर्के यु क्त जो धनादि को संचय करताहै सो कदर्य कथन कीया जाताहै इस देवलजीके कथन कीये होये लक्षण कर्के युक्तहै (ऋणग्रस्तस्य) क्या धनवाल्योंकी सेवा करण वाला ॥ उपनयनादिक

सदातनमशौचमाहदक्षः व्याधितस्यकदर्य्यस्यऋणग्रस्तस्यसर्वदा क्रिया हीनस्यमूर्खस्यस्त्रीजितस्यविशेषतः ॥ १ ॥ व्यसनासक्तचित्तस्यपराधीन स्यानित्यशःश्रद्धात्यागविहीनस्यभस्मांतंसूतकंभवेदिति २ व्याधितस्याचि कित्सनीयव्याधिग्रस्तस्य कदर्य्यस्य आत्मानंधर्म्मकृत्यंचपुत्रदारांश्चपीड यन् लोभाद्यःप्रचिनोत्यर्थान्सकदर्य्यइतिस्मृतइतिदेवलोक्तलक्षणलाक्षि तस्य ऋणग्रस्तस्य धनिकसेवापरस्यक्रियाउपनयनादिका तद्रहितस्य गायत्रीरहितोमूर्खःतस्य स्त्रीजितोहिभार्य्याधीनतया गुरुजनतिरस्कर्त्तात स्य १ अत्रसर्वदेतिप्रत्येकमन्वयिभस्मांतंमरणांतम् ॥ व्यसनेति द्यूताद्या सक्तयानित्यकर्म्माण्यपित्यक्तवतःपराधीनस्य श्राद्धकालेपिअनायतचित्त स्यश्रद्धा गुरुवाक्यादौविश्वासःत्यागआवश्यकं दानंश्राद्धादि तद्राहितस्य अत्रापिनित्यश इतिप्रत्येकसंबंधि एषांनित्यादावाधिकारः प्रायश्चित्तेत्वधि कारएव वचनादिति विवेककर्त्ता ॥

भाँते जो रहितहै (मूर्ख) क्या गायत्रीतें जो रहितहै (स्त्रीजित) क्या स्त्रीकी अधीनता कर्के माता पिताका अनादर करताहै इसमें जो यह सर्वदा पदहै इसका सबनों पदोंके साथ संबंध क रणा (व्यसन) क्या द्यूतादि व्यसनोंमें जो आसक्ति तिस कर्के नित्य कर्मोंको भी त्यागने वा लाहै (पराधीनस्य) क्या श्राद्ध कालमेंभी नहि रोक्या चित्त जिसने (श्रद्धा) क्या गुरुके व चनादिमें विश्वास (त्यागः) क्या जो आवश्यक दान करणा क्या श्राद्धादि तिसतें रहितहै इसमें भी जो नित्यशः यह पदहै इसका सबनोंके साथ संबंध करणा ॥ इनका नित्यादि क र्मोंमें अधिकार नहि और प्रायश्चित्तमें अधिकारहै क्योंकि वचनतें यह विवेक कर्त्ताहै ॥

यह अशौच पूर्व कथन कीती जो गणना इसमें दशवां १० अशौच मरण पर्यंतहै तद भीकोई इसको दूरकरणेदी कामना वाला होया २ अशौच के सिद्ध करण वाले कर्म्मोंको त्याग करके और संपूर्ण प्रायश्चित्त विधि करके अशौचतें रहित होताहै॥सो विधि तृतीय प्रकरणमें दिखलादीहै ॥ और ब्रह्मपुराणमेंभी कथन कीयाहै ॥अन्येति किजो स्त्री पहले किसीनें विवाही हुई होवे पीछे और किसीके घरमें चली जाये उसको अन्य पूर्वा कहतेहैं सो अन्य पूर्वा स्त्री जिसके घरमेंहै तिसके घरमें संपूर्ण कार्य्योंके विषे अशौचताहै और दान प्रतिग्रह होम और और भी संपूर्ण तिसका वृथाहीहै॥ पूर्वले का स्पष्ट अर्थ कहतेहैं कि जिस स्त्री का पहले और पति हो उसका नाम अन्य पूर्वाहै॥अर्थात् दूहालहै।एसी स्त्री जिस ब्राह्मणादिके घर में हो उसको सर्वदा काल अशौचहै॥परंतु जेकर तिस स्त्रीको सब कम्म घरके सौंपदेवे तद

इदंचाशौचंपूर्वोक्तगणनायां दशमं मरणांतमप्येतत्तथापिकश्चिन्निर्मोक्तुकामस्तत्तदापादकं कर्म्मविहाय सर्वप्रायश्चित्तविधिना। निर्मुच्येत सविधिः तृतीयप्रकरणेद्रष्टव्यः ब्रह्मपुराणेपि ॥ अन्यपूर्वागृहेयस्यभार्याभवति नित्यशः अशौचंसर्वकार्य्येषुगृहे भवतिसर्वदा दानं प्रतिग्रहोहोमस्सर्वन्तस्यवृथाभवेत् ॥ अन्यःपतिः पूर्वंयस्याःसाअन्यपूर्वाभार्य्यायस्यद्विजातेः तस्याशौचं सदाभवति परन्तुतस्याः सर्वधुरंधरत्वेसदातनं सूतकं नान्यथा गृहपदोपादानादिति विद्वांसः अयमेवार्थः शंखेनापिदर्शितः हीनवर्णाशूद्रसंगमादित्यादिना ॥ माधवीयेतु नामधारकविप्रस्तुदशाहंसूतकीभवेदिति वचनानुरोधेनैषांवचनानां निन्दार्थवादत्वमभिधाय यावज्जीवाशौचविधायकत्वंनास्तीत्येवनिर्णीतम् ॥ अथसामान्येन चातुर्वर्ण्यस्यमृतकाशौचम ॥ तत्रादौगर्भस्रावनिमित्तमशौचम् ॥

सर्वदाकाल अशौच है॥और जेकर सभ कम्म ना सौंपीये तद सर्वदा काल सूतक नहि क्योंकि गृह पदके रखणेतें यह विद्वान कहतेहैं ॥ और यही अर्थ शंखजीने भी दिखायाहै ॥ कि हीन वर्णा जो शूद्राहै तिसके संगनें सर्वदाकाल अशौच होताहै इत्यादि वचन करके ॥ माधवीय ग्रंथमें भी यह कहाहै नामेंति कि नाम करके जो ब्राह्मणहै अर्थात् ब्राह्मणोंके कर्मोंते रहित हो सो ब्राह्मण दश दिन सूतकी होताहै इस वचन के अनुरोध करके यह जो पूर्वले वचनहैं इन्हों वचनों करके तिनकी निंदाही कीतीहैं और मरण पर्यंत अशौच नहि हुंदा यह निर्णय कीयाहै ॥ ॥ जन्माशौचको कहकर अब सामान्यता करके चतुर्वर्णके मरण निमित्त अशौच को कथन करतेहैं और तिसमें भी पहले गर्भ स्राव अशौच कहतेहैं

याज्ञवल्क्यजीका वचनहै गेति किगर्भके पात होयां २ मासके बरोबर रात्रियां शुद्धिका कारणहैं इस वाक्यमें निशाः यह जो वहुवचनहैं सो अविवक्षितहै तिस कारणतें एक महीनेका जद गर्भ पात होवे तद एक रात्र और जद दोमहीनेका गर्भ पात होवे तद दोरात्र सूतक होताहै इसी प्रकार छेः६ महीनें पर्य्यंत जानना यह सूतक स्त्रीकोहै और पुरुषको नहि गर्भके पातमें मासोंके तुल्य रात्रियां स्त्रीयांको सूतकहै॥और पुरुषको स्नान मात्रहै अर्थात् स्नान करके पुरुष शुद्ध होताहै॥गर्भके पातमें तीन ३ रात्र अशौचहै इत्यादि वाक्य कर्के जो गौतमजीने कहाहै सोभी तीन मासतें उरे गर्भके पातहोयां २ जानना ॥ इसमें मरीचिजी विशेषकहतेहैं

याज्ञवल्क्यः गर्भस्रावेमासतुल्यानिशाःशुद्धेस्तुकारणम् अत्रनिशाइतिवहुवचनमाविवक्षितम् तेनैकमासीयगर्भपातेएकाद्विमासीयगर्भपातेद्वेरात्रीसूतकमेवंषण्मासपर्य्यन्तंज्ञेयं एतच्चस्त्रियाएवनपुरुषस्यगर्भस्रावेमासतुल्यारात्रयः स्त्रीणां स्नानमात्रमेवपुरुषस्येतिवृद्धवसिष्ठस्मृतेः॥यद्गौत्तमेनगर्भस्रावेत्रिरात्रमुक्तं(त्र्यहंच)इत्यादिनातदपिमासत्रयादर्वाचीनस्रावेवोध्यम् अत्रमरीचिःसविशेषमाह गर्भस्रुत्यांयथामासमचिरेतूत्तमेत्रयःराजन्येतुचतूरात्रंवैश्येपंचाहमेवचअष्टाहेनतुशूद्रस्यशुद्धिरेषाप्रकीर्त्तितेति ॥अचिरेमासत्रयात्मकेउत्तमेब्राह्मणे त्रयइत्यत्रपुंस्त्वमार्षीतिस्त्रोरात्रयइत्यर्थः यथामासमितितुषण्मासपर्य्यन्तमेवद्रष्टव्यम् तदनंतरंसंपूर्णमेवजननाशौचंभवति ॥ तत्रप्रसूतौसर्वांगपूर्णस्यदर्शनात् अतएवस्मृत्यंतरे

गेति कि तीन ३ मासके गर्भके पातहोयां २ ब्राह्मणको तीन दिन अशौच कहाहै और क्षत्रिकों चार रात्र और वैश्यको पांच ५ रात्र और शूद्रको आठ ८ दिन अशौच कथन किहाहै इसीका स्पष्ट अर्थ कहतेहैं (त्रय) इस पदमें पुल्लिंग ऋषि कर्के कथन कीयाहै अर्थात् तीन रात्रीयां जाननीयां ।(अचिरे)। क्या तीन मासके गर्भ पातमें (उत्तमे । क्या ब्राह्मणके विषे यह व्यवस्थाहै । यथामासं । इसमें दिन पद कर्के और रात्रिपद कर्के अहो रात्र समझणा छेः६ मास पर्य्यंत जाननी छे मासतें उपरंत संपूर्ण जन्माशौचहै॥क्योंकि तिस कालमें प्रसूतके होयां २ सवना अंगांको संपूर्ण होणेतें इस कारणतेहिं और स्मृतिमेंभी कथन कीयाहै ॥

चेति ॥ छे ६ मासके अंतर अर्थात् ६ मास पर्यंत जद गर्भ पात होवे तद मासोंके तुल्य दिनों करके स्त्रीयोंकी शुद्धि कथन कीतीहै॥१॥इसते उपरंत अर्थात् ६ मासते उपरंत स्त्रीयोंको अपनी जातिमें कहा जो अशौचहै सो होताहै और गर्भके पात होयां २ सपिंडियोंको सद्यः शौचकहाहैं अर्थात् स्नान करके शुद्धहोतेहैं॥२॥गर्भ स्राव इस पद करके जलकी न्यांई वगदा गर्भहै तिसकापात ग्रहण करणा और कठिन अवयवों वाला जो गर्भहै तिसका पात नाहीं ग्रहण करणा सो गर्भ पात पांचवें अथवा छेवें महीने कभी होताहै ॥ दो वर्षोंते न्यून जो वालकहै तिसके मृत होयां २ और गर्भ के पात होयां २ सपिंडीयोंको तीन रात्र अशौचहै इस वशिष्ठके वचन ते जनणा। इसी कारण तेही मरीचिजीने कहाहै चौथेमहीने तक गर्भ स्राव होताहै अर्थां

षण्मासाभ्यंतरेयावद्गर्भस्रावोभवेद्यदा तदामाससमैस्तासांदिवसैः शुद्धिरिष्यते१ अतऊर्ध्वस्वजात्युक्तं तासामाशौचमिष्यते सद्यःशौचंसपिण्डनांगर्भस्यपतनेसति २ गर्भस्रावोऽत्रद्रवीभूतगर्भपतनंनतुकाठिनावयविपतनं तस्मिन्सति सपिण्डानांत्रिरात्रमेव तच्चपंचमषष्ठयोःकदाचिज्जायते ऊनद्विवार्षिकेप्रेते गर्भस्यपतनेसति सपिंडानांत्रिरात्रंस्यादिति वशिष्ठवचनात्।अतएवमरीचिः आचतुर्थाद्भवेत्स्रावःपातःपंचमषष्ठयोःअतऊर्ध्वंप्रसूतिःस्याद्दशाहंसूतकंभवेत् स्रावेमातुस्त्रिरात्रंस्यात्सपिंडाशौचवर्जनम् पाते मातुर्यथामासं पित्रादीनांदिनत्रयमिति सप्तम मासानंतरं नालच्छेदात्पूर्वं जातमृते मृत जातिवा सपिंडानांदशाहमिति सएवाह इदमशौचं सूतकवत् मरणनिमित्तोदकदानादिहीन मितिपारस्करः ॥

त् तीसरे अथवा चौथे महीने गर्भ पात होवे तद उसको स्राव कहतेहैं और जेकर पांचवें छेवे महीने होवें तद पात कथन करीदाहै और इसतें उपरंत प्रसूती होतीहै तिसका दश १० दिन सूतक होताहै और स्राव के होयां २ माता को तीन ३ रात्र अशौच कहाहै और सपिंडियों को सूतक नहिहोता और पातकें होयां २ माता को मासके तुल्य दिन अशौचहै और पित्रादिकोंको तीन ३ दिन अशौचहै और सप्तम७ मासते उपरंत और नाल छेदनते उरें और उत्पन्न होकर मृत होवे अथवा मृत होया २ जन्मे तद सपिंडीयोंको दश दिन अशौच होताहै यहभी मरीचिजीनेकहाहै यह अशौच सूतकवत्है और मरण निमित्त जो तिलांजलि आदिक क्रिया तिसते रहितहै यह पार स्कर जी ने कहाहै ॥

इसी अर्थको बृहत्मनु जी कहतेहैं ॥ दशेति किदश १० दिनके अंतर बालकके मृत होयां २ तिसके संबंधियोंने मरण निमित्त अशौच नहि करणा योग्यहै और तिनको जन्म निमित्त अशौच विधान कीहाहै । १ ॥ तिसी प्रकार और स्मृतिमे भीकथन कीयाहै किदश दिनके मध्यमे मृत हुआ जोबालकहै तिसका अशौच सूतक दिनों करके है अर्थात् मरण निमित्त अशौच नहि है और जन्म निमित्त अशौच करणा इसमें जन्माशौचका संकोच नहि यह विज्ञानेश्वरकहताहै क्योंकि (दशाहादि । इस बचनके बलतें ॥ और उत्पन्न होकर बालक मृत होवे अथवा मृत होया २ उत्पन्न होवे तद कुलकी तात्काल शुद्धि होतीहै अर्थात् स्नान करके शुद्धि होतीहै और माता पिताकी दश दिन करके शुद्धि होतीहै ॥ यहजो बृहद्विष्णुजी का वचन है सोबालकका मरण निमित्त जो स्नान तिसकरके जो शुद्धि तिस परायण है

इममेवार्थमाहबृहन्मनुः॥ दशाहाभ्यंतरेबालेप्रमीते तस्यबान्धवैः शावाशौचंनकर्त्तव्यं सूत्याशौचंविधीयते १ ॥ प्रमीतेमृते शावाशौचंमरणनिमित्तं तथाअंतर्दशाहापरतस्य सूतकाहोभिरेवाशौचमितिस्मृत्यंतरम् । अंतरिति दशाहाभ्यंतरेमृतस्य अत्रजननाशौचसंकोचोपिनास्तीतिविज्ञानेश्वरः उक्तवचनबलात् ॥ यत्तुजातिमृतेमृतजातेवा कुलस्यसद्यःशौचमितिबृहद्विष्णु वचनम् तच्छिशुमरणनिमित्तस्नानशुद्धिपरम् प्रसवनिमित्तपरंनज्ञेयम् अतएवपारस्करः॥ गर्भेयदिविपत्तिः स्याद्दशाहंसूतकंभवेत् अत्रपूर्वोक्तवचनात्सपिण्डानां प्रसवनिमित्तं ॥ जीवन्जातोयदिप्रेयात्सद्यएवविशुद्ध्यति ॥ प्रेयात् म्रियेतविशुद्ध्यतीति कुलमितिशेषः । इदंचमरणाभिप्रायम् ॥ प्राङ्नामकरणात्सद्यः शौचमितिशंखोक्तेः। वैष्णवसमानार्थमेवाह कात्यायनः ॥ अनिवृतेदशाहेतुपंचत्वंयदिगच्छति सद्यएवविशुद्धिःस्यान्नप्रेतं नोदकक्रिया॥ १ ॥

और प्रसूति निमित्त नहि जानना ॥ इसी वास्ते पारस्कर जीने कहाहै गर्भे इति किगर्भ के विषे जदढुःख होवे अर्थात् मृत होजावे तद दश १० दिन सूतक कथन कीयाहै इसमें पूर्वले वचनतें सपिंडीयोंको प्रसूति निमित्त अशौचहै और जेकर जीवता उत्पन्न होवे और पीछे मृत होजावे तद कुल तात्काल ही शुद्धहै अर्थात् स्नान करके शुद्ध होताहै ॥इहवचन मरण विषेहै ॥ जेकर नाम करणते पहले बालक मृत होजाये तद सद्यःशुद्धिकथनकीतीहै अर्थात् स्नानतें हि शुद्धिहोती है इसशंखके वचनतें ॥ कात्यायन भीविष्णुके तुल्य अर्थ कोहि कहतेहे ॥ अइतिकि जेकर दश दिन नानिवृत्तहोवे अर्थात् दश दिनके बीच बालक मृतहो जाए तदभी तात्काल शुद्धि होतीहै॥ प्रेतकार्य्य और उदक क्रिया नहिं करणी ॥ १ ॥

इसीका स्पष्ट अर्थहै॥प्रेत कार्य क्या पिंड दानादि क्रिया और उदक दान क्रिया अर्थात् तिलांजलि नहि देंणी इसकी मरण निमित्त सद्यः शुद्धि कथन कीतीहै। इसमें यह अभिप्रायहैं कि जो जातमृत इत्यादि के निमित्त मरण अशौच निषेध करण वाले वचनहैं सो मरण निमित्त जो पिंड दानादि क्रिया तिनके निषेध करण वालेहैं ॥ और संपूर्ण जो अशौच तिसकेनिषेध करणवाले नहि॥इसमें क्या कारण कितिसमें जन्म और मरण निमित्त जो अशौचहैं तिनकेएकत्र होयां २अर्थात् दोनोंके प्राप्त होयां २ मरण निमित्त तात काल शुद्धि होतीहै और जन्म निमित्त दश १० दिन अशौच होताहै इसअर्थ परायण जानणे ॥ जद मरण और जन्म निमित्त अशौच इकठेहोवें तद मरण निमित्त अशौच वलवान् है अर्थात् शाव शुद्धि करके जन्म

प्रेतंप्रेतकार्य्यंपिण्डदानादिनकार्य्यमुदकदानाक्रियाचनेत्यर्थः किन्तुशावाशौचनिमित्तंसद्यःशौचमेव अत्रायंभावः जातमृतादिनिमित्तशावाशौचनिषेधवचनानि मरणनिमित्तपिंडदानादिनिषेधपराणि नतुसर्वाशौचनिषेधकानि किंतुतत्राशौचयोर्जननमरणनिमित्तकयोःसंपातेमरणनिमित्तसद्यःशौचं जनननिमित्तंदशाहमित्यर्थपराण्यवगंतव्यानि मरणोत्पत्तियोगेतुगरीयोमरणंभवेदित्यादिवचनानिजातमृतमृतजातनिमित्तेतरविषयाणीतिज्ञेयम् ॥ अत्रविज्ञानेश्वरः॥ यदातुनप्रेतंनैवसूतकमितिपाठस्तदासूतकमस्पृश्यत्वंनैवभवतिपित्रादीनामित्यर्थः अथवायमर्थःअंतर्दशाहेयदिशिशूपरमःतदानप्रेताशौचंयदितत्रसपिंडजननं तदासूतकमपिनभवति किंतुपूर्वाशौचेनैव शुध्यतीत्यर्थइति ॥ नालच्छेदात्पूर्ववालमरणेविशेषोबृहन्मनुबृहत्प्रचेतसोः।

शुद्धि होतिहै इत्यादि जो वचन है सो जात मृत और मृत जात इनते जो भिन्न विषय है तिसमें जानने॥इसमें विज्ञानेश्वर जी कथन करतेहैं ॥ किजद(नप्रेतंनैवसूतकं)यहपाठहोवे तद पित्रादि यों को अस्पृश्यता नहि होतीहै अर्थात् स्पर्श के योग्य होतेहैं॥अथवा यहभी अर्थहै कि दश दिनके मध्यमें जदवालक मृतहोजावे तद पिंडादि क्रिया और अशौच नहि होता॥ और जेकर कोई सपिंडी उत्पन्न होवे तद सूतकनहि होना ॥ क्या होताहै किपूर्वले अशौच करकेशुद्धि होतीहै ।नाल छेदन तेपहले वालकके मरणेके विषे बृहत्मनु और बृहत् प्रचेतसजी इसमें विशेष कथन करतेहैं ॥

जीवेति । किजद वालक जीता उत्पन्न होवे और पीछे मृत होजाए तद सूतकनिमित अशौच होताहै और मरणनिमित अशौच नहि होता १ ॥ इसमे व्यवस्थाकहतेहैं । किसारा सूतकमाता को होताहै और पित्रादियों को तीन ३ रात्र अशौचहोताहि ॥ मुहूरिति ॥ दोघडी जीव कर्के पश्चात् जद मृत होजाए तद माता की शुद्धि दश दिन कर्के होतीहै और स्वगोत्री तातकाल शुद्धहोतेहैं इसमें यहतातपर्य्येहे ॥ किपित्रादियोकों जन्मनिमित्त अशौचहै ३ दिन । और अगले वाक्यमें सद्यः शुद्धि कथन कीतीहै सो अग्नि होत्रके वास्ते कहीहै । तिस प्रकार शंख जीने भी कहाहे ॥ अग्नि होत्रकें अर्थ वास्ते स्नान और आचमनतें तात काल शुद्धि होतीहै ॥ नालछेद नते उपरंत वालकके मृत्युके विषें जैमनि जीका वाक्यहे । कि जितना काल नालनाछेद न क

जीवन्जातोयदिततोमृतःसूतकएवतुसूतकंसकलंमातुःपित्रादीनांत्रिरात्रकमिति ॥ १ ॥ सूतकएवनमरणनैमित्तकम् तत्रव्यवस्थासूतेतिमुहूर्तंजीवितोवालःपंचत्वंयदिगच्छति मातुःशुद्धिर्दशाहेनसद्यःशुद्धास्तुगोत्रिणइति । पित्रादीनांजननिमित्तं दिनत्रयंउत्तरवाक्येसद्यः शौचमग्निहोत्रानुष्ठानाद्यर्थं ॥ तथाचशंखः अग्निहोत्राद्यर्थंस्नानोपस्पर्शनात्तत्कालंशौचमिति नाभिवर्द्धनानंतरंवालविपत्तौतुजैमिनिः ॥ यावन्नछिद्यतेनालंतावन्नाप्नोतिसूतकम् छिन्नेनालेततःपश्चात्सूतकंतुविधीयतइति ॥ नालच्छेदात्पूर्वं अल्पाशौचंपूर्वोक्तवाक्यात् ईपदर्थवाचकत्वान्नञःतदनंतरं संपूर्णाशौचमित्यर्थः मनुनंदं रजस्वलासप्रसंगमुक्तम् ॥ रात्रिभिर्मासतुल्याभिर्गर्भस्रावेविशुद्ध्यति रजस्युपरतेसाध्वीस्नानेनस्त्रीरजस्वलेति रजसिदृष्टे शीघ्रमेवोपरतेसासाध्वी स्नानेनविशुद्ध्यति दैवादिकर्म्मयोग्याभवति

रियें तितना काल सूतक नहि होता और नाल के छेदन कीतियां होयां तिसतें पश्चात् सूतक विधान कीताहे ॥ यहकथनकीयाहैं ॥ परंतु इसका एसा अर्थ हैं कि नाल छेदनते पहले थोडा अशौच कहाहे । क्यों कि । अग्नि होत्राद्यर्थं मित्यादि वाक्यतें ॥ और नञ् को थोडे अर्थका वाचक होणेतें और नाल छेदनतें उपरंत सारा सूतक होताहै ॥ और मनुजीनेयहरजस्वलाके साथ कथन कीयाहैं रात्रीति ॥ गर्भ स्राव के होयां २ मासोंके तुल्यदिनोंकरके माता शुद्ध होतीहै और ऋतुआकर तात काल जद दूरहोजावे तद सो रजस्वलास्त्री स्नानकरके शुद्धहोतीहै । इसीका स्पष्ट अर्थहै ॥ किऋतु केदेरयांहोयां शीघ्रही दूरहोजावे तद स्नानकर्के शुद्ध होतीहै अर्थात् देवतादि कर्म्मके योग्यहोतीहै

और ऋतु जेकर दूर नाहोवें तद चौथेदिन विषे स्नान करके शुद्ध होतीहैं यह वृहन्मनुजीने कहाहै अर्थात् चौथे ४ दिन व्यवहारके योग्यहोतीहै तिस वचनको कहतेहैं ॥ चतुरिति चौथेदिनमें स्नान करके शुद्धहोतीहैं (व्यावहारिकी) क्या व्यवहारमें विधान कीये जोक र्महैं तिन के योग्य होतीहैं ॥ तिसी प्रकार और स्मृतिमें भी कथन कीयाहै ॥ शुद्धेति कि रज स्वला स्त्रीचौथे दिन स्नान करके शुद्ध होईहोई भर्त्ताके योग्य होतीहै और पांचमें ५ दिनदेव कर्म और पितृ कर्म के योग्य होतीहै यह कहाहै इसीका स्पष्ट अर्थ है ॥ किचौथे दिनके विषे भर्त्ताके मैथुनकें योग्य होतीहै ॥और देव और पितृ कर्म के योग्य पांचमे दिन होतीहै(इ सश्लोकमें पंचमे) यह जोपदहै सोऋतु का जो निवृत्ति कालहै तिसका उपलक्षणहै उपलक्ष ण उसका नामहै जोसब्द अपने अर्थको कह कर और के अर्थ कोभी जनाये तिसकारणतें

रजस्यनुपरतेतु चतुर्थेहनिस्नानादितिवृहन्मनुः ॥ चतुर्थेहनिसंशुद्धाभवति व्यावहारिकीति ॥चतुर्थेहनिसंशुद्धयास्नाताव्यावहारिकी व्यवहारोचितक र्म्मयोग्याभवतीत्यर्थः स्मृत्यंतरमपितथा शुद्धाभर्त्तुश्चतुर्थेह्निस्नानेनस्त्रीर जस्वलादैवेकर्म्मणिपित्र्येचपंचमेहनिशुद्ध्यतीति ॥ चतुर्थेह्निभर्त्तुर्मैथुनार्हा भवतिदैवादिकर्म्मार्हापंचमेह्नीत्यर्थः अत्रपंचमइति रजोनिवृत्तिसमयोप लक्षणम् तेनपष्ठेसप्तमेवादिनेतत्संभवे तत्रैवदैवादिकर्म्मयोग्यताज्ञेया ॥ अत्ररजोदर्शनानंतरं पुनारजोदर्शनेविशेषमाहात्रिः रजस्वलायदास्नातापु नरेवरजस्वला अष्टादशदिनादर्वागशुचित्वंनविद्यते ॥१॥एकोनविंशतेरर्वा गेकाहंस्यात्ततोद्व्यहम्॥ विंशत्प्रभृत्युत्तरेपुत्रिरात्रमशुचिर्भवेदिति॥२॥अयम र्थः॥ १७ सप्तदशदिनपर्य्यंतं अशौचाभावः १ ततएकोनविंशतिदिनं यावत् द्व्यहम् ततस्त्र्यहम्

छेवें ६ अथवा सातमें ७ दिन रज कि निवृत्ति होंजाये तदहि देवतादि कर्म को यो ग्यता होतीहै ॥ इसके विषे ऋतु दर्शनते उपरंत फेर ऋतु दर्शनमें अत्रिजीने विशष कहाहै॥रजे ति कि रजस्वला स्त्री चोथे दिन स्नान करके फेर जेकर अठारां १८ दिनाते उरे उरे रजस्वला होजाए तद अशुद्ध नहि होती॥१॥और जेकर उन्नीस १९ दिनमें होवे तद एक दिन अपवित्र रहतीहै ॥ और उन्नीस दिनतें उपरंत होवे तद दो २ दिन और वीसदिन तें उपरंत रजस्वला होवे तद तीन ३ दिन अपवित्र रहतीहै॥२॥इसमें यह तात्पर्यहै कि सतारह १७ दिन पर्य्यंत अशौच नहि होता ॥ तिसते उपरंत १९ दिन पर्यंत १ दिन फेर वीसतक २ दिन और तिसते उपरंत तीन ३ दिन अशौच होताहै ॥

और कैयोंनें चौदा दिनतें उरे अशौचका अभाव मन्याहै सो स्नानकेदिनतें लेकर जनना॥१८ अठारा दिन वाला जो पक्षहै तिसमें रजो दर्शन दिनतें लेकर जानना इसतें विरोध नहिहै और जिस स्त्रीकी ऋतुनियमहै तिसमें एह नियम जानना और जिस स्त्रीकी कदे ऋतुका नियम नहि तिसके विषे यह नहि जानना यह विज्ञाने श्वरजीने कथन कीयाहै॥और वसिष्टजी रजस्वला स्त्रीके अशौचमें नियमाको कहतेहैं रजेति किरजस्वलास्त्री ३ दिन अशुद्ध रहतीहै और रजस्वला स्त्री अंजनना पावे और वुटणा नामले और जलमें स्नान नाकरे किंतु निकाल कर्के वाहर स्नान करे और पृथवीमें शयन करे और दिनमे नाशयन करे और तारेयोंको नादेखे और अग्निको नास्पर्श करे और अन्न नाभक्षण करे किंतुथोडाखाये और रस्सीकोना वटे और

कैश्चित्तु चतुर्दशादिनादर्वागशौचाभावइत्युक्तं तत्स्नानदिनमारभ्यगणन यावोध्यं पूर्वकंतुरजोदर्शनमारभ्योक्तमित्यविरोधः यस्याः प्रौढयौवना याउक्तदिषयेनियतंरजोदर्शनं तद्विपकमिदं नतुकादाचित्केषीतिविज्ञा नेश्वरादयः रजस्वलायाअशौचेनियमानाह वशिष्टः।रजस्वलात्रिरात्रमशुचिर्भवति साचनांजीत नाभ्यंजीत नाप्सुस्नायादधः शयीतनदिवास्वप्यात् नग्रहान्वीक्ष्येत नाग्निंस्पृशेत् नाश्नीयान्नरज्जुंसृजेत् नचदंतान्धावयेत् नहसेन्नचकिंचिदाचरेत् अखर्वेणपात्रेणपिवेदंजलिनावा पात्रेणलोहिताय सेनवेति ॥ नांजीत अंजनेननेत्रेनसंस्कुर्यात् नाभ्यंजीत तैलेनांगानि नमर्दयेत् नरज्जुंसृजेत् रज्जुसर्ज्जनं तदुत्पादन विस्तारणत्रोटनादिरूपंतन्न कुर्यादित्यर्थः॥अखर्वेण अधातुजेन विशेषआंगिरसे॥हस्तेश्नीयान्मृण्मयेवाऽहविर्भुक्क्षितिशायिनी रजस्वलाचतुर्थेह्निस्नात्वाशुद्धिमवाप्नुयादिति ॥

वीडोना करे हस्से भीनहि और कुछकामभीना करे और तूंवीके पात्र कर्के अथवा हाथ कर्के जलपीवे वा तांवेके पात्रमे अथवा लोहेके पात्रमें जलपीवे ॥ पूर्वश्लोकका स्पष्टअर्थहै(नांजीत) क्यासुर्मे कर्के नेत्रोंको भूषित नाकरे(नाभ्यंजीत) क्यातैल करके शरीरको मर्दन नाकरे (नरज्जुंसृजेत्) क्यारस्सिको नावट्टे और नातोडे (अखर्वेण) क्याकाष्टके पात्र करके अथवा मृतकाके पात्र कर जल पान करे अथवा खर्वनाम छोटे पात्र काहै तिस कर्के जल नापीवे और अंगिरसाके शास्त्रमें विशेष कथन कीयाहै॥हस्तइति। किरजस्वला स्त्री हस्त कर्के अन्न खाये अथवा मृतकाके पात्रमे खाये और घृतना खाये और पृथवीमें शयन करे और चौथे दिनमें स्नान कर्के शुद्ध होतीहै ॥

और स्मृति का वाक्यहै ॥ उदेति । कि रजस्वला स्त्री मांस और मखीर और सुगंधी वाली वस्तु और पुष्प और घृत इनको त्यागे और काष्ठ अथवा मृतकाके पात्रमें अन्न खाये और वृक्षसाथ जलपीवे ॥ १ प्रसूता अथवा रजस्वलास्त्री तारेयोंको नादेखें और दिनमें निद्रा और सुपारि अथवा पान और परवे आदिका बांधना इनको त्याग देवे ॥ २ इसीमें स्कंदपुराणका वाक्यहै स्त्री इति कि रजस्वला स्त्री तीन रात्र अपने मुखको न दिखावे और अपने वाक्यको न सुनावे रजस्वला जितना काल स्नान कर्के शुद्ध नहिहोती। तिसी प्रकार और कथन कीयाहै तस्मेति कि तिस कारणतें रजस्वला स्त्री के साथ एक घरमें निवास न करे और दान और वातां और रजस्वला का अन्न इनको त्यागे ॥ १ ॥ स्मृति मंजरी ग्रंथमें निषिद्ध वस्तु के सेवन में खोटे फल दिखाएहैं ॥ रजेति ॥ कि रजस्वला स्त्री जेकर पतिको प्राप्त होवे तद

स्मृत्यंतरे । उदक्यापललंक्षौद्रंगंधंपुष्पंघृतंत्यजेत् अखर्वपात्रेभुंजीयात्तोयमंजलिनापिवेत् १ प्रसवासार्त्तवानारीग्रहाणामीक्षणंत्यजेत् दिवानिद्रांच तांबूलंतालवृंतादिबंधनम् २ स्कांदे । स्त्रीधर्म्मिणीत्रिरात्रंतुस्वमुखंनैवदर्शयेत् स्ववाक्यंश्रावयेन्नापियावत्स्नानेनशुध्यति १ तथा ॥ तस्मादुदक्यया सार्द्धमेकगेहेनसंवसत् प्रतिग्रहंचसंवादमस्याश्चान्नंविवर्जयेत् १ निषिद्धसेवने दुःफलान्यपि दर्शितानिस्मृतिमंजर्य्याम् ॥ रजस्वलापतिंगच्छेच्चांडालोजायतेसुतः आलवालक्ष्वस्नाता जातस्त्वप्सुमरिष्यति ॥ १ ॥ तैलेनाभ्यंजनंकुर्य्यात् कुष्टरोगीप्रजायते आर्त्तवेचेत्खनेद्भूमिमल्पायुर्जायतेनरः ॥ २ ॥ नेत्रयोरंजनंकुर्य्यात्काणश्चांधश्चजायते पुष्पिणीदंतधावी स्याज्जायतेश्यावदंतकः ॥ ३ ॥ नखानांकृंतनंकुर्य्यात्कुनखीजायतेसुतः ऋतौरज्ज्वादिकच्छेदंकुर्य्यात्क्लीवः प्रजायते ॥ ४ ॥ इत्यादिसंस्कारभागे वोध्यम् ॥

तिसका पुत्र चांडाल होताहै और जेकर क्यारेके जलमें स्नान करे तद उसका पुत्र जल मे डूब के मरताहै ॥ १ ॥ तैलेति ॥ जेकर तेल शरीरमें मले तद कुष्ट रोग वाला होताहै ॥ और ऋतु समयमें पृथिवीको पुटे तद थोडी आयुषा वाला पैदा होताहै २ और जेकर नेत्रोंमे सुरमा पावे तद काणा अथवा अंधा होताहै ॥ और जेकर रजस्वला स्त्री वीडी करे तद श्याम दंदों वाला होताहै ॥ ३ ॥ नखेति ॥ जेकर नखां को कटे तद खोटे नखां वाला होताहै ॥ और जेकर ऋतु समय में रज्ज्वादिका छेदन करे तद नपुंसक उत्पन्न होताहै ४ ॥ इत्यादि संस्कार भागमें जाणलैणा ॥

और विशेष कथन कीयाहै पाराशर के ग्रंथमें ॥ स्नेति ॥ जद कदाचित् नैमित्तक स्नान प्राप्त होवे ॥ अर्थात् सूर्यादि ग्रहण आजावे तद रजस्वला स्त्री और पात्रमें स्थित जो जलहै तिस जल कर्के स्नान करे और व्रत करे ॥ १ ॥ सिक्तेति । और जल कर्के जद सांगोपांग गिल्ले श रीर वाली होवे तद वस्त्रोंको न निचोडे और और वस्त्रको भी न धारण करे अर्थात् उोहि गिल्ला वस्त्र ऊपर रखे यह कथन कियाहै ॥ २ ॥ शुक्रके ग्रंथमें और भी विशेष कहाहै ॥ ज्वरेति (प्रश्न) कि जो स्त्री ज्वर वाली जद रजस्वला होजाये तिस स्त्रीकी पवित्रता किसप्रकार होवेगी और किस कर्म कर्के तिसकी शुद्धि होवेगी ॥ १ ॥ चतुरिति ॥ उत्तर ॥ चौथे दिनके प्राप्त होयां होयां और स्त्री तिस रजस्वला स्त्रीको स्पर्श करे ॥ और पश्चात् सो स्त्री सहित वस्त्रों के स्नान करे फेर रजस्वलाको स्पर्श करे इसी प्रकार पुनः पुनः स्नान कर्के स्पर्श करे ॥ २ ॥

अन्योविशेषः पराशरीये स्नानेनैमित्तके प्राप्तेनारीयदिरजस्वला पात्रांतरिततोयेनस्नानंकृत्वाव्रतंचरेत् १ सिक्तगात्राभवेदद्भिः सांगोपांगाकथंचन नवस्त्रपीडनंकुर्य्यान्नान्यद्वासश्चधारयेदिति २ अन्योपिविशेषऔशनसे ज्वराभिभूतायानारीरजसाचपरिप्लुता कथंतस्याभवेच्छौचंशुद्धिः स्यात्केनकर्म्मणा १ चतुर्थेहनिसंप्राप्तेस्पृशेदन्यातुतांस्त्रियम् सासचैलावगाह्यापः स्नात्वास्नात्वापुनः स्पृशेत् २ दशद्वादशकृत्वोवाआचामेच्चपुनः पुनः अंतेचवाससांत्यागस्ततः शुद्धाभवेच्चसा दद्याच्छक्त्याततोदानं पुन्याहेनविशुद्ध्यतीति २ अन्यारजस्वलेतराशुद्धा तांरजस्वलां पुनः पुनः स्नात्वाचम्यस्पृशेत्तदासाशुद्ध्यति प्रकारोयमातुरमात्रेज्ञेयः। रजस्वलासूतिकयोर्मृतौविशेषमाह पराशरमाधवः सूतकायांमृतायांतुकथंकुर्वंतियाज्ञिकाः कुंभे सलिलमादायपंचगव्यंक्षिपेत्ततः ॥ १ ॥

दशेति ॥ दश १० वार अथवा वारां १२ वार फेर फेर आचमन करे । और अंतमें वस्त्रोंका त्याग करदेवे । तिसते उपरंत शुद्ध होतीहै ॥ ३ ॥ दद्येति ॥ तिसते उपरंत शक्ति कर्के दान करे। पश्चात् पुण्याह वाचन कर्के शुद्ध होतीहै यह कथन कीयाहै ॥ पूर्व श्लोकका स्पष्ट अर्थहै ॥ कि रजस्वला स्त्रिति इतर और कोई शुद्ध स्त्री वारं वार स्नान कर्के और आचमन कर्के तिस रजस्वला स्त्रीको स्पर्श करे तद सो रजस्वला स्त्री शुद्ध होतीहै ॥ परंतु जद रोग कर्के स्त्री बहुत दुःखी होवे तद यह प्रकार करणा योग्यहै ॥ रजस्वला और प्रसूता स्त्री बहुत दुःखी होवे तद यह प्रकार करणा योग्यहै ॥ रजस्वला और प्रसूता स्त्रीकी मृत्युमें पराशर माधव जी विशेष कहतेहैं ॥ सूतेति कि प्रसूता स्त्रीके मृतहोयां २ ब्राह्मण किस प्रकार करतेहैं ॥(प्रकार)॥ घटमें जलपायकर पश्चात् पंचगव्य पाय देवे ॥ १ ॥

पुण्येति ॥ पवित्र ऋचों करके जलोंको मंत्र करके और ब्राह्मणकी वाणी करके शुद्ध होतीहै तिसे जल करके स्नान कर वाके पश्चात् विधिसे दाह करे ॥ २ ॥ इसीका स्पष्ट अर्थहै ॥कि आपोहिष्ठा और उपपातक प्रकरणमें लिखीयां जो पावमान्यादि ऋचां तिन कर्के जलको मंत्र कर पश्चात् यह मृतहोई २ स्त्री शुद्ध होगीहै इस ब्राह्मणकी वाणी करके शुद्धिको प्राप्त होतीहै ॥ सोई कथन कीयाहै इति ॥ कि लोकोंकी कृत्यके वास्ते देववा ब्राह्मणोंके वास्ते तीन ३ पवित्र कल्पन करते भये ॥ क्या दानादि करके जो रोगादिका दूर करवा देणा

पुण्यर्ग्भिरभिमंत्र्यापोवाचाशुद्धिंलभेत्ततः तेनैवस्नापयित्वातुदाहंकुर्य्याद्यथोविध पुण्यर्ग्भिः आपोहिष्ठापावमान्यादिभिः अपोजलानिअभिमंत्र्यततः वाचाब्राह्मणोक्तया इयंमृताशुद्धाइत्येवंरूपयाशुद्धिंलभेदित्यर्थः तदुक्तं त्रीणिदेवाःपवित्राणिब्राह्मणानामकल्पयन् अदृष्टमद्भिर्निर्णिक्तंयच्चवाचाप्रशस्यतेइतिअदृष्टंपुण्यं१ मंत्रेणजलसेकः२ शुद्धिवचनंचेति रजस्वलायास्तुवृद्धशातातपः पंचभिःस्नापयित्वातुगव्यैःप्रेतांरजस्वलाम् वस्त्रांतरावृतांकृत्वा दाहयेद्विधिपूर्वकामिति प्रेतांमृतांपंचगव्यस्नानानंतरंसामान्यविधिनादाहयेदित्यर्थः।निर्णयसिंधौतुविशेषः अब्लिंगाभिर्मंत्रिताभिर्वामदेव्याभिरेवच अन्यैश्चवारुणैर्मंत्रैःसंस्नाप्यविधिनादहेत् १

अथवा मंत्रेहोए जल कर्के शुद्ध करणा और वाणी करके जिसको श्रेष्ट कथन करणा ॥ ३ ॥ रजस्वलाके विषे वृद्ध शातातपजीने विशेष कथन कीयाहै ॥ पंचेति ॥ कि मृत रजस्वलाको पंच गव्य करके स्नान कराके और और वस्त्र करके आछादन करे पश्चात् विधि करके दाह करे ॥ यह मिताक्षरामें कहाहै ॥ १ ॥ निर्णयसिंधुमें विशेषहै ॥ आबेति ॥ आपोहिष्ठादि और मंत्रित और वामदेवी सहस्रशीर्षा इनमंत्रों कर स्नान करवाये पीछे विधिसे दाह करे ॥ १

गृह्य कारिकामे प्रसूता होई स्त्रीके मरण विषें विधि कहीहै ॥ सूतिकाके मृत होयां२ सर्वौषधी कर्के तिसको लेपन करे परंतु जिसको सूतक नहि सो लेपन करे और पिच्छे तिसके स्पर्शके दोष दूर करणे वास्ते एक १०० सउ छज्ज मिट्टिका जलाशयतें बाहर निकाले ॥ १ ॥ और सूतिका मरणके प्रायश्चित्त विषें विशेष किहाहै तिसी स्थान विषें । जद सूतिका स्त्री विना स्नानतें मरजावे तद तिसकी क्रियाका अधिकारी तिन्न वर्ष तक कृच्छ्र करदा रहे ॥ २ ॥ यह प्रा० प्रसूति होया त्रय दिनके अंदर मरणे का है ॥ और अगले त्रेदिन के अंदर मरें तां दो वर्ष कृच्छ्र करणा चाहिये ॥ ३ ॥ और छे दिन के आगे ९ दिनके अंदर मरे तद एक वर्ष का कृच्छ्र करणा चाहिये ॥ ४ ॥ जेकर इसमें असमर्थ होवेतो भी तिसमें कहतेहैं ॥ कि पूर्वोक्त पक्ष त्रय

गृह्यकारिकायां । सूतिकामरणेप्राप्तेसर्वौषध्यनुलेपनं असूतकीतुसंस्पृष्टः शूर्पाणांतुशतंक्षिपेत् १ प्रायश्चित्ते विशेषस्तत्रैव सूतिकातुयदासाध्वीवि स्नातामरणंगता त्रिवर्षपूर्णपर्य्यंतंशुध्येत्कृच्छ्रेणसर्वदा २ इदंचाद्यत्र्यहे।सूतिकातुयदानारीरजसानुपरिप्लुता म्रियतेचेत्तुसानारीद्विवर्षंकृच्छ्रमाचरेत् ३ इदंद्वितीयत्र्यहे । सूतिकातुयदासाध्वीविस्नातामरणंगता अब्दकृच्छ्रेण शुद्धेतव्यासस्यवचनंयथा ४ इदंतृतीयत्र्यहे अत्राशक्तौपक्षांतरमुक्तं तत्रैव सूतिकातुयदानारीविस्नातामरणंगता।त्रिपएनवदिनादर्वागेकाब्देनविशुध्यति५ऊर्ध्वंतु।सूतिकातुयदानारीप्राणांश्चैवपरित्यजेत् मासमेकावधिंयावत्रिभिः कृच्छ्रैर्विशुध्यति ६ रजस्वलामरणेतुचांद्रायणत्रयमेवप्रायश्चित्तं तत्प्रत्याम्नायोवाकार्य्यः ॥अत्र रजोजननमरणानांगणनोपयोगितयादिन प्राथम्येविकल्पमाह कश्यपः॥ उदितेतुयदासूर्य्येनारीणांदृश्यतेरजः जननंवाविपत्तिर्वा यस्याहस्तस्यशर्वरी १ यस्यवारस्याहः प्रवृत्तं तस्यैव शर्वरी रात्रिंसर्य्योदयमारभ्याष्टपंचशद्दंडपर्य्यंतंपूर्वमेवाहोज्ञातव्यम्॥अर्धरात्रावधिः कालः सूतकादौविधीयते ॥

विषें भी एक वर्ष काहि प्रायश्चित्त करणा ॥ ५ ॥ और ९ दिनके आगे महीने तक सूतिका मृत होवे तद त्रे कृच्छ्र कर्के शुद्ध हुंदाहै ॥ ६ ॥ और रजस्वलाके मरणमें त्रे चांद्रायण व्रत करणे कहेहैं अथवा प्रत्याम्नाय जो व्रत प्रकरणमेंहै सो करणा ॥ और ऋतु ॥ और जन्म । मरण इनका क्रम कर्के दिनको प्रथमतामें कश्यपजीने विशेष कहाहै ॥ उदीति ॥ सूर्यके उदय होयां २ स्त्रीयोंकोऋतु । बालकका जन्म और मरण जद देखें तद ओही दिन ग्रहण करणा । क्यों जिसका दिनहै उसीकी रात्रिहै १ इसीका स्पष्ट अर्थहे॥ जिस वारका दिनहो उसीकी रात्री होतीहै सूर्योदयतें लेकर ५८ घडी तक पूर्वला दिनही जानणा ॥ इसमें भेद कहतेहैं । अर्धेति । कि । जन्म । मरण और ऋतु इनमें आधिरात तक काल विधान कीयाहै ॥

इसीका स्पष्ट अर्थहै ॥ अर्द्धरात्रतें पहले जद रजहोवे अथवा जन्म और मृत्यु होवे तद पूर्व लादिन ग्रहण करणा और जद अर्द्ध रात्रनें उपरंत होवे तद अगलादिन ग्रहण करणा ॥ २ ॥ और भेद कथन करतेहैं ॥ रेति ॥ कि रात्रिके तिन भाग करणे पहले दो भाग पूर्व दिन साथ जोडने ॥ और पिछलाभाग प्रातःकालसाथ लगाणा ऋतु और सूतकमें यहव्यवस्थाकीतीहै ३ और व्यवस्थाकहतेहैं ॥ रात्रिविषे जदमृतहोवे और ऋतुहोवे और जन्महोवे तद जितनाकाल सूर्य उदे ना होवे तितना काल पूर्वला दिनाहि ग्रहण करणा ॥ ४ ॥ पूर्वला यह पक्ष विषय भेद करके कथन कीयाहे ॥ इनमैंदेशाचार नें व्यवस्था जाननी ॥ और त्रिगर्त्तादिदेशोंमें पूर्वला हि प्रवृत्तहे ॥ रजस्वलास्त्रीके स्पर्शका शुद्धि विस्तार प्रकीर्ण प्रकरणमें देखलेणा ॥ अवसामान्य

अर्द्धरात्रात्प्रागुत्पन्नेरजआदौपूर्वतदनंतरं परमहः प्रथमंग्राह्यम् ॥ २ ॥ रात्रिंकुर्य्यात्रिभागांन्तुद्वौभागौपूर्वएवतु उत्तरांशंप्रभातेन युज्यते ऋतुसूतके ३ रात्रेःपूर्वभागद्वयंयावत्पूर्वतदनंतरं परमहःप्रथमम् ॥ रात्रावेवसमुत्पन्नेमृतेरजसिसूतके पूर्वमेवादिनंग्राह्यंयावन्नाभ्युदितोरविः ४ पूर्वएवायंकल्पोविपय भेदेनोक्तः॥देशाचारतोव्यवस्था त्रिगर्त्तादौ पूर्वएवपक्षःप्रवर्त्तते॥ रजस्वलास्पर्शादिशुद्धिप्रपंचस्तुप्रकीर्णकप्रकरणेद्रष्टव्यः ॥ सामान्यतोमृतकाशौचमाहमनुः शुद्ध्येद्विप्रोदशाहेनद्वादशाहेनभूमिपःवैश्यःपंचदशाहेनशूद्रोमासेन शुद्ध्यति ॥ १ वर्णसंकरविषयेब्रह्मपुराणम् । शौचाशौचेप्रकुर्वीरन्शूद्रवद्वर्णसंकराःहीनवर्णेनउत्तमवर्णासुस्त्रीषुजाताःवर्णसंकराः॥ बृहस्पतिनाविशेषोभिहितः॥ दशाहेनसपिण्डास्तुशुद्ध्यंतिप्रेतसूतके त्रिरात्रेणसकुल्यास्तु स्नात्वाशुध्यन्तिगोत्रजाः १

तें मनुजी मृतके अशौच को कथन करते हैं ॥ कि प्रेताशौचमें ब्राह्मण दश १० दिन करके और क्षत्रीबारां १२ दिनकरके । वैश्य पंदरां १५ दिन करके । और शूद्रएकमास ३० दिनकरके शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ वर्णसंकरके विषे ब्रह्मपुराण का वाक्यहै ॥ शौचेति ॥ वर्णसंकर शूद्र कीन्याईं शौच और अशौच करण ॥ वर्णसंकरवोह होतेहैं जो हीन वर्ण पुरुषतें श्रेष्ठ वर्ण की स्त्रीयोंमें उत्पन्न होवें ॥ इसमें बृहस्पतिजी विशेष कहते हैं ॥ दशेति कि प्रेतसूतक में सपिंडी पुरुष दश १० दिनकरके शुद्ध होतेहैं ॥ और तीन ३ रात्रीकरके सकुल्य शुद्ध होतेहैं और गोत्रज स्नान करके शुद्ध होते हैं ॥ १ ॥

इसश्लोकमें(दशाह)यहजोपदहै सो अपने २ वर्णमें कथनकीयाजो अशौचहै तिसको कहताहैं। अर्थात् क्षत्री १२ वारां दिन करके और वैश्यपंदरा दिन करके और शूद्र तीस ३० दिनकरके शुद्धहोतेहैं। और सत ७ पीडीयां पर्यंत सपिंडीहोतीहैं ॥ तिसते उपरंत दशपीडी पर्यंत सकुल्य होतेहे॥ और तिसते उपरंत जांताहैं नाम और जन्मजिनका ऐसे जो कुलज इसप्रकारज्ञानका विषेहे ॥ तिसते उपरंतसगोत्र और सजातीय यहतीनसंज्ञावालेंहै।इसमें यहव्यवस्थाहै। किब्राह्मण के सपिंडी ब्राह्मणके मृत होयां २ दश १०दिन करके शुद्धि होतीहैं ॥ और सकुल्यकेमृतहोयां २ तीन दिन ३ करके शुद्धिहोतीहै ॥ और तिसते उपरंतजांताहै जन्म और नाम जिसका ऐसे कुलजके मृतहोयां २ वारां१२ पहर करके ॥ और गोत्रजके मृतहोयांहोयां स्नानकरके शुद्धिहोती

अत्रदशाहपदंस्वस्ववर्णोचिताशौचोपलक्षणम्। सप्तपुरुषाविधिःसपिण्डाः ततोदशमपुरुषपर्य्यंतस्ववंश्याःसकुल्याः तदूर्ध्वंज्ञातजन्मनामानःकुलजा इत्येवज्ञानविषयाः तदूर्ध्वंसगोत्राः १ गोत्रजाः २सजातीयाइतिसंज्ञात्रय संज्ञिनः॥ अत्रेयंव्यवस्था॥ ब्राह्मणस्य सपिंडे ब्राह्मणेमृतेदशरात्रेणशुद्धिः सकुल्येमृते त्रिरात्रेण ॥ तदूर्ध्वंज्ञायमानजन्मनामकेकुलजेमृतेपक्षिण्या गोत्रजेमृतेस्नानेन ॥ एवंक्षत्रियस्यसपिण्डमरणेद्वादशाहेन ॥ सकुल्येत्रिरात्रेण तदूर्ध्वंज्ञातनामादिकेपक्षिण्या गोत्रजेस्नानमात्रेण एवंवैश्यसपिण्डेवैश्यस्य१५ पंचदशभिःअन्यत्समानम् । शूद्रस्यसपिण्डेशूद्रेमृतेमासेनशुद्धिरन्यत्समानम्

है॥ इसी प्रकार क्षत्रीके सपिंडी के मृत होयां २ वारा १२ दिन करके और सकुल्यकेमृतहोयां २ तीन ३दिन करके और ज्ञात नामके मृतहोयां २ वारा पहर १२ करके। और गोत्रजके मृत होयां २ स्नान करके शुद्धि होतीहै ॥ इसी प्रकार वैश्यके सपिंडी मृतहोयां २ वैश्यकीशुद्धि १५ दिन करके ॥ और सकल्यके मृतहोयां २ तीन दिनकरके और ज्ञात नामादिके मृतहोयां २ वारां १२ पहर कर्के और गोत्रजके मृतहोयां २स्नानकरके शुद्धिहोतीहै । इसीप्रकार शूद्रके सपिंडीके मृत होयां २ एकमास कर्के और सकल्यके मृत होयां २ तीन दिन कर्के और ज्ञातनामादिके मृतहोयां २ वारां २१ पहर करके शुद्धि होतीहै

निर्णयसिंधुमें यह कहाहै कि सप्त पिंडी पर्यंत दश १० दिन और चौदह पिंडी पर्यंत तीन ३ दिन और तिसते उपरंत स्नान मात्र ही सूतक होंताहै । सपिंडी समानोदक और सगोत्र इस भेद कर्के तीन प्रकार का निर्णय कीयाहै॥स्पर्शके विषे अंगिराजीने विशेष कहाहै ॥चेति कि ब्राह्मणके मृतहोयां २ ब्राह्मणको चौथे ४ दिन स्पर्श करणा कहाहै ॥ और क्षत्रीकोपांच मेदिन और वैश्यको सप्तम ७ दिन और शूद्रको दश १० दिन बुद्धिमानोंने स्पर्श करणाक हाहै।२।इसमें यह वात पर्यहै॥कि अशौचके होयां होयां२भी अशौचके तीसरे भागके व्यतीत होयां २ अंगस्पर्श करणेयोग्यहै॥क्योंकि अशौच दिनतें लेकर तीसरे भागके व्यतीतहोयां २

निर्णयसिंधौतु सप्तपुरुषपर्य्यंतंदशरात्रंततआचतुर्दशांत्रिरात्रंततःस्नानमि ति । सपिण्डसमानोदकसगोत्रेतिभेदेनत्रिविधं निर्णीतम् ॥ स्पर्शेविशेषमा हांगिराः ॥ चतुर्थेहनिकर्त्तव्यःसंस्पर्शोब्राह्मणस्यतु पंचमेहनिविज्ञेयःसंस्प र्शःक्षत्रियस्यतु १ सप्तमेहनिवैश्यस्यविज्ञेयंस्पर्शनंवुधैःदशमेहनिशूद्रस्यका र्य्यंसंस्पर्शनंवुधैरिति २ अयंभावः अशौचेविद्यमानेपितत्तृतीयभागेऽतीते ऽङ्गस्पर्शःकर्त्तव्यः।अशौचकालाद्विज्ञेयंस्पर्शनंतुत्रिभागतः शूद्रविट्क्षत्रवि प्राणांयथाशास्त्रप्रदर्शनादितिदेवलस्मरणात्॥अत्रमनूक्तेब्राह्मणाद्याशौचवि षये ऋष्यंतरवचसा क्वचित्तारतम्यमुपलभ्येततदागुणवद्गुणवद्विषयंवो ॥ ध्यम् सूतकाल्पतापक्षोगुणवद्विषयः तदितरोऽल्पगुणविषय इतिव्यवस्था निर्णयसिंधौत्वियमंङ्गस्पर्शव्यवस्थापि युगांतरविषयिण्येवेत्युक्तम्॥

शूद्र और वैश्य और क्षत्री और ब्राह्मण इनको स्पर्शकरणा कहाहै॥क्योंकि यथायोग्य शास्त्रके देखणेंते १ इसदेवलके बचनते इसमें मनुजीने कहाहै॥ कि ब्राह्मणादिके अशौचमें किसे ऋषि के वचन कर्के किसी स्थानमें जद न्यूनाधिक अशौच देखिए तद सो न्यून और अधिकता गुण वालेमें और निर्गुणमें जाननी अर्थात् गुणवालेको अशौच थोडा और निर्गुणको बहुत होताहै यह व्यवस्था मनुस्मृतिमें कथन कीतीहै ॥निर्णय सिंधुविषे यह अंगस्पर्शकी व्यवस्था और युगोंमेंहैं कलि युगमें नहि ऐसा लिखाहै ॥

अब अशौचोंका मिश्रीभाव कथन करतेहैं ॥कूर्म्मपुराण का वाक्यहै।कि अथेति।जद वहुते अशौच होवे तद जो वहुते दिनावाला अशौचहै तिसकरके शुद्धि होतीहै॥और जिस स्थानमें मरणा शौच और जानना शौचदोनोहोवे तद तिनमें मरणाशौच वली होताहै॥इसीकास्पष्टअर्थ है (अघानां) क्याएकअशौच वहुत काल होण वाला है और एक अशौच थोडे कालकाहै उहनोंकीयोगपद्यता ग्रहण करणी॥क्योंकि (आद्यभागे)इत्यादि वाक्यतें(यौगपाद्यं) क्याएक अशौचमेंजो और अशौच पडजावे उसकानाम यौगपद्यहै (गरीयसा) क्यावहुते दिन होण वाला जो अशौचहै तिसके निकलने करके दूसरे कीभीशुद्धि होतीहै॥अर्द्धश्लोककरके (अघानां) इसकाअपवादकहतेहैं ॥कि मरणा शौच और जन्माशौचके एकत्र होयांहोयां २ मरणाशौच थोडे कालकाभी होवे तदभी मरणाशौच वली होताहै॥और जन्माशौच वहुते दिन होण

॥ अथाशौचसंकरः॥कूर्म्मपुराणे अघानांयौगपद्येतुज्ञेयाशुद्धिर्गरीपसा मरणोत्पत्तियोगेतुगरीयोमरणंभवेदिति अत्राघानामशौचानांयौगपद्यं विषमकालव्यापिनांवोध्यमुत्तर वाक्यात् एकस्मिन्नपरोपनिपतनंयौगपद्यंगरीयसाऽधिकदिवसव्यापिनाऽशौचेननिर्गतेनशुद्धिर्भवति उत्तरार्द्धेनास्यापवादमाहमरणजननिमित्तयोःसन्निपातेमरणनिमित्त मल्पकालव्याप्यपिगरीयोवलवत् तेनजननाशौचमधिकमपिनिवर्त्यतइत्यर्थः समानदिनव्यापकसजातीयाशौचव्यवस्थाव्रह्मपुराणे ॥ आद्यभागद्वयंयावत्सूतकस्यतुसूतकेद्वितीयेपतितेत्वाद्यात्सूतकाच्छुद्धिरिष्यते १ । अतउर्ध्वंद्वितीयात्तुसूतकान्त्याच्छुचिः स्मृतः एवमेवविचार्य्यंस्यान्मृतकेमृतकान्तरे २ अत्राशौचकालेचतुर्द्धाविभक्ते प्रथमभागद्वयपर्य्यंतं समानदिनव्यापिसजातीयाशौचांतरसन्निपाततदाद्याशौचव्यपगमनेनशुद्धिः ॥

वाला भी होवे तदभी तिसकरके निवृत्तक्या दूरहोजाताहैं ॥ अर्थात् मरणाशौचकरके शुद्धिहोतीहैं ॥ तुल्यादिनमें होण वाले जोसजातीय अशौचहैं तिनकी व्यवस्था व्रह्मपुराणमें कथन कीतीहैं ॥ आद्येति किसूतक के दोभाग पर्यंत अर्थात् साडेचार दिन तक जद तुल्यादिन वाला और सूतक पडजावे तद आदलेसूतककरके शुद्धिहोतीहै ॥१॥अतइति। दोभागतें उपरंत जद सूतकमें सूतक पडजाये तदपिछले सूतक करके शुद्धिहोतीहै और मरणा शौच में मरणाशौचजद पडजाये तदभी इसीतरा विचारलेणा । २ । इसमें यह तातपर्य्यहै कि अशौच काल के चार भाग करणे पहले दोभागतक तुल्यदिनोंवाला जद और अशौच पडजाये तद आदले अशौच कोनिकाल करके शुद्धिहोतीहै

और दो भागतें उपरंत जद तैसा और अशौच पडजावे तद पिछले अशौच करके शुद्धिहोतीहै ॥ इसमें भी विशेषकहतेहैं किजद अशौच के अंतले दिनमें अर्थात्१ दिनमे और अशौच पडजाये तद और दोदिन कर्के शुद्धि होतीहै क्योंकि शेष रिहा जो दिन रात्रि तिसतें अधिक दोदिन करके शुद्धिहोतीहै इसवचनतें जानणा और अशौचके अंतले दि किसाथ नहिंदो दिन ग्रहण करणे ॥ जेकर उसके साथ ग्रहण करणा हुंदा तद एकदिनहि कथन करणे योग्यहै इसमें इसीप्रकार रुद्रधरजीने कहाहै कि अशौचके अंतले दिनरात्रेमें और पूर्ण अशौच पडजाये तद पूर्वले अशौचके अंतलेते अधिक दोदिन कर्के शुद्धिहोतीहै और जदप्रभातकालमें और अशौचांतका एकदिन रात्र शेष रहे और सूर्योदयतें पहले और पूर्वदिशाके प्रका

तदूर्ध्वंतादृगाशौचान्तरसन्निपातस्तदा द्वितीयान्तादेवशुद्धिः । तत्राप्यशौचांतिमेह्निअशौचांतरपातस्तदाधिकेनदिनद्वयेनशुद्धिः अवशिष्टादहोरात्रादधिकंतुदिनद्वयमितिवचनात् तत्राशौचान्तादिनेनसहादिनद्वयमितिनार्थः तथासतिएकमित्येवब्रूयात् अत्रेत्थंरुद्रधरोव्याख्याति अशौचान्तिमेऽहोरात्रेयद्यपरंसंपूर्णाशौचमापततितदापूर्वाशौचांतादाधिकेनादिनद्वयेनशुद्धिः॥ यदाप्रभातेऽशौचांताहोरात्रशेषेसूर्योदयात्प्राक्प्राचीप्रकाशेवृत्ते संपूर्णाशौचांतरोपनिपातितदासूर्योदयानंतरंदिनत्रयेणशुद्धिः अत्रच यदिदशरात्राःसन्निपतेयुराद्यंदशरात्रमशौचमित्यादिवाक्येन परिशेषेणचसंपूर्णसमानसजातीयाशौचोपनिपातेव्यवस्थाविज्ञायते ॥तथाहि गरीयसाऽल्पदिनव्यापकानां सजातीयनांवाध्यत्वविज्ञानात् विजातीयानांजननाशौचानामल्पदिनव्यापकेनापि मरणाशौचेन वाध्यत्वविधानात् ॥

शहोयां२ तुल्यदिन वाला और अशौच पडजाए तद सूर्योदयतें पीछे तीन ३ दिनकरके शुद्धि होतीहै ॥ इसमे विशेष कहतेहैं किजददश दिनदशरात्रके बहुते अशौच पडजायें तदआदले दशरात्रका अशौचहोताहै इत्यादिवाक्य कर्के और परिशेष करके भी संपूर्ण तुल्यदिनोंवाला सजातीय अर्थात् दशदिनके मरणाशौचमें दशदिनका मरणाशौच पडजाये तिसमें यहव्यवस्थाजाणनी योग्यहै क्या सोदिखातेहैं बलवान् अशौच करके थोडे दिन होणवाले और सजातीय अशौचोंकी बाधाजाननेतें और ऊंरजातीवाले जो जन्माशौचहैं तिनकी थोडे दिन होनवालेभी मरणाशौच करके बाधा विधान करणेतें अर्थात् मरणाशौच करके जन्माशौच बाधा जाताहै ॥

और परिशेषतें बाधक रहित तुल्य दिन होन वाले और एक जातीवाले दो अशौच जहां पड जायें तिस स्थानमें यह व्यवस्था जाननी ॥ और विषम दिनमें होणवालेजो भिन्न जातीके दो अशौचहैं अर्थात् जन्माशौचके दो अथवा तीन ३ दिनसें पीछे मरणाशौच पडे और विषम दिनमें होण वाले जो एक जातीके अशौचहैं अर्थात् जन्मा शौचके दो तीन दिनसें पीछे और जन्मा शौच पडजाये अथवा मरणाशौचके दो तीन दिन पीछे और मरणाशौच पडजावे तिनकी यह व्यवस्था नहि जानणी ॥ और इसको संपूर्ण शौच परत्व कर्के और एक कालमें होन वाले जो असंपूर्ण अशौचहैं तिनकी शुद्धि अगलेतें ही होतीहै ॥ कुछ और कहतेहैं॥ कि दोदिनका अथवा तीन दिनका अशौच पडा हुआ होवे तिसमें पश्चात् संपूर्णाशौच अर्थात् दश दिनका अशौच जद पडजाये तद दो और तीन दिनके अशौचको थोडा

परिशेषेणावाध्यं समकालव्यापकं सजातीयं यत्राशौचद्वयंनिपतति तत्रेयं व्यवस्था। विषमदिनव्यापकविजातीययोर्विषमकालव्यापक सजातीय योश्चनेयंव्यवस्था तत्रगरीयसैवव्यवस्थेति एतस्याः। संपूर्णाशौचपरत्वेन असंपूर्णाशौचानांसमकालव्यापकानामुत्तरेणैवशुद्धिः। किंच द्व्यहाशौचेत्र्यहाशौचेवावर्द्धिते तत्रपुनः संपूर्णाशौचांतरपातश्चेत्तदाद्व्यहत्र्यहयोर्लघुत्वाद्गुरुतराग्रिमाशौचापगमेनैवशुद्धिरिति तथाचदेवलः॥ परतःपरतःशुद्धिरघवृद्धौविधीयते स्याच्चेत्पंचतमादह्नः पूर्वेणाप्यनुशिष्यते १ एकस्मिन्नाशौचेत्रशौचांतरपातस्तदसमाप्तौ पुनरशौचांतरंचेत्तदा पूर्वाशौचपंचमदिनादग्रेपरेणैव शुद्धिर्ज्ञेया ॥

होणेतें और वहुत दिनका जो अगला अशौचहै तिसके निर्गम कर्के शुद्धि होतीहै ॥ तिसी प्रकार देवलजीने भी कहाहै ॥ परेति ॥ कि अशौचोंकी वृद्धिमें अर्थात् एक पूर्ण अशौचमें और पूर्ण अशौच पडजाये और ओह अशौच अजे ना निकले होन तो और अशौच पड जाये तद परले परले कर्के शुद्धि होतीहै॥ इह व्यवस्था पंचम दिनतें परे परे जानणी ॥ और जेकर पंचम दिनते पहले अशौचमें अशौच पड जाये तद पूर्वले अशौच कर्के शुद्धि होती है ॥ १ ॥ इसीका स्पष्ट अर्थहै ॥ कि एक अशौचमें और अशौच पडजाये और वोह अशौच अजे निकलेआभी न होवे तो पश्चात् पूर्वले अशौच के पंचम दिनतें आगे जद और अशौच पडजायें तद पिछले अशौच कर्के शुद्धि जानणी ॥

और परतम् । इस पद कर्के पूर्ण अशौच जानना ॥ और पंचम दिनते पहले जद पूर्ण अशौच में और पूर्ण अशौच पड जाये तद पूर्वले अशौचके निकलने कर्के शुद्धि होतीहै ॥ एह वचन (आद्यभागद्वयमित्यादि) इस वचन के तुल्यहै ॥ अर्थात् जो उसका अर्थहै सोई अर्थ इसका है ॥कूर्म पुराणमेंभी कथन कीयाहै॥अघेति॥ कि अशौचके वधाने वाला जो अशौचहै सो जद पहले अशौचमे पड जाये ॥ अर्थात् एक अशौच पहले पिया होवे और उपरंत एक और अशौच पडजावे तद पूर्वले अशौच कर्के शुद्धि होतीहै ॥ जेकर पंचमी रात्रिनें उपरंत पडे तद पिछले कर्के शुद्धि होतीहै ॥ १ ॥ इसीका स्पष्ट अर्थहै ॥ अशौचके वधाने वाला अ

परमशौचमत्रसंपूर्णाशौचपरंज्ञेयम् पंचमादह्नः पूर्वेण तादृगशौचान्तरपा तेपूर्वेणैवाशौचनिरासेनशुद्धिः आद्यभागद्वयमित्यादिब्रह्मवचनतुल्यमिदम् कूर्म्मपुराणेपि अघवृद्धिमदाशौचमूर्द्ध्वंचेत्तेनशुध्यति अथचेत्पंचमीरात्रि मतीत्यपरतोभवेत्१ अघवृद्धिमत् अशौचवर्द्धकमशौचंऊर्ध्वंप्रथमाशौचोत्त रंचेत्पतिततदातेनप्रथमेनैवोत्तरमपिशुद्ध्यति ।प्रथमाशौचपञ्चमीरात्र्यनं तरं द्वितीयंपतिततदापरतोद्वितीयेनैवेत्यर्थः विष्णुपुराणमप्येतद्विषयंयथा जननाशौचमध्ये यद्यपरं जननंस्यात्तदापूर्वाशौचव्यपगमेनशुद्धिः रात्रिशे षेदिनद्वयेन प्रभाते दिनत्रयेण मरणाशौचमध्येज्ञातिमरणेप्येवमिति ॥ रा त्रिशेषपदव्याख्यातूक्ताप्राक् ॥

शौच पहले अशौचमें जद पवे तद पूर्वले अशौच कर्के पिछले अशौचकी भी शुद्धि होती है ॥ और पूर्वले अशौचकी पंचमी रात्रिनें उपरंत दूसरा अशौच पावे तद पिछले अशौच कर्के शुद्धि होतीहै ॥ विष्णुपुराणमें भी कथन कीयाहै ॥ सो दिखातेहैं । जन्माशौचके मध्य में जद और जन्माशौच पवे तद पूर्वले अशौच कर्के शुद्धि होतीहै ॥ और एक रात्रि शेष रहे तद अशौचांतमें दो दिन अधिक कर्के शुद्धि होतीहै ॥ जेकर प्रभात कालमें अशौचमें अशौ च पडे तद तीन दिन कर्के शुद्धि होतीहै ॥ इसी प्रकार मरणाशौचके मध्यमें सजातिके मर णमें जानना ॥ और रात्रि शेष पदकी पूर्व व्याख्या कीतीहै ॥

इसमें यद्यपि बौधायनीय ग्रंथमे कथन कीयाहै कि नवम दिन तक जद अशौचमें अशौच प
डे तद पूर्वले अशौच करके अशौचकी समाप्ति होतीहै । यथा । जन्मा अशौचमें जद और
जन्माशौच पडे तद दश १० दिन अशौच होताहै इसते उपरंत दशरात्रके अशौचमें नव
दिन तक जद दश रात्रका अशौच पडे तद आदले अशौच करके शुद्धि होतीहै इसीका स्प
ष्ट अर्थहै ॥ जन्माशौचमें जन्माशौच पडे और मरणाशौचमें मरणाशौच पडे तद दश दिन
ही अशौच होताहै इसमें न्यूनाधिक कल्पना नहि करणी ॥ और दिनाके छिंडेमें नवम दिन
तक पूर्वे कथन कीयाहै तदपि पूर्वलाहि दश रात्र अशौच होताहि यह बौधायन जीने कहाहि
तदपि इह वचन सामान्यहै और पंचम ५ दिनकी अवधिको जनाने वाला जो ब्राह्मका व

अत्रयद्यपिबौधायनीये नवमदिनपर्य्यंतमशौचांतरपातेप्रथमेनैवसमाप्ति
रुक्ता॥यथाजननमरणयोःसन्निपातेसमानेदशरात्रः॥ अथदशरात्रायदिस
न्निपतेयुराद्यंदशरात्रमशौचमानवमाद्दिवसादिति। अर्थः जननेजननान्तर
स्यमरणेमरणांतरस्यचसन्निपाते दशरात्रमेवाशौचंनात्रन्यूनाधिकभावक
ल्पनादिनान्तरे आनवमात्पूर्वोक्तंतदापिप्रथममेवदशरात्रमिति। तथापि
सामान्यमिदंपंचमावधिबोधकब्राह्मवचसाबाध्यते॥बौधानीयंतच्छाखापरं
वावचनांतरमप्येवमेवसमाधेयं। अत्रपूर्वोक्तवचनेपुपंचमपदंसंपूर्णाशौचार्द्ध
परंतेनक्षत्रियादेः षट्सार्द्धसप्तपंचदशदिनानिपूर्वपरबोधकानिज्ञेयानि॥एवं
नवमपदंसंपूर्णाशौचोपान्त्यदिनपरम् दशरात्रपदंसंपूर्णाशौचोपलक्षकमि
तिबोध्यम् असंपूर्णाशौचसन्निपातेयमः

चनहै तिस करके बाध्या जाताहै अर्थात् यह वचन सामान्यहै और ब्राह्म वचन विशेषहै॥और विशे
ष करके सामान्यकी बाधा होतीहै अथवा बौधायनजीका वचन तिनकी शाखाकोहि विषय
करदाहै॥ और वचनभी इसी प्रकार समाधान करणा इसमें पूर्वले वचनमें जो पंचम इह पद
है सो संपूर्ण अशौचके अर्द्धपर है अर्थात् पंच दिन करके अद्धा अशौच ग्रहण करणा॥तिस
कारणतें क्षत्रिके सूतकमें छे६ दिन और वैश्यके सूतकमें साडे सात ७॥ दिन और शूद्रके सू
तकमें पंदरां १५ दिन पूर्वके और परके, जनाने वाले जानने ॥ इसी प्रकार नवम पद कर
के संपूर्ण अशौचांतके आदला दिन ग्रहण करणा और दश रात्र इस पद करके संपूर्ण अ
शौच लेणा ॥ थोडे अशौचके सन्निपातमें यमजी कथन करतेहैं

अघेति ॥ अशौचोंकी वृद्धिमे पिछले अशौचकरके अशौच समाप्त होताहै ॥ इसीका स्पष्ट अर्थ है॥किदो अथवा तीनदिनके अशौचके पिछाड़ी होयां जेकर तैसा और अशौच पडे तद पिछले अशौचकरके शुद्धि होतीहै ॥ यही शुद्धिविवेकमें स्पष्ट करके कहाहै ॥ कि दश १० दिनों के अशौचमें पांचमें दिनतक जेकर दूसरा सजातीय दश १० दिनका अशौचपडजाये तद पहले अशौचके निकलने करके शुद्धि होतीहै ॥ और जेकर पंचमदिनतें उपरंत नवमदिन तक दूसरा अशौच पडजाये तद अगले अशौच करके शुद्धि होतीहै॥ और जेकर दशादिनमें पूर्ण अशौच होर पडजाये तद दशदिनते उपरंत दोदिनकरके शुद्धि होतीहै ॥ और जेकर दशमदिनकीशेष रात्रिमें और सूर्यके उदेकालमें पूर्ण अशौच पवे तद सूर्योदयतें उपरंत तीनरात्रकरके शुद्धि

अघवृद्धावशौचेंतुपाश्चिमेनसमापयेदिति। एकस्मिन्‌द्व्यहत्र्यहादिके अशौचे तादृगशौचांतरपातश्चेत्तदापश्चिमेनैवशुद्धिः।इदमेवविशदीकृतंशुद्धिविवेके दशाहाशौचेपंचमदिनपर्य्यंतंयदिद्वितीय सजातीयंदशाहाशौचमापततित दापूर्वाशौचव्यपगमेनशुद्धिः। पंचमदिनानंतरंनवमदिनपर्य्यंतंद्वितीयाशौचे सत्यग्रिमाशौचव्यपगमेनशुद्धिः दशमदिने संपूर्णाशौचसतितद्दिनानंतर दिनद्वयेनशुद्धिः दशमदिनरात्रिशेषे अरुणोदयवेलायां संपूर्णाशौचोपनिपाते सूर्य्योदयानंतरंत्रिरात्रेणशुद्धिः।एवंक्षत्रियवैश्यशूद्राणां संपूर्णस्वस्वाशौचानिज्ञेयानि पूर्वार्द्धेसमानदिनव्यापकमशौचांतरं यदि भवति तदा पूर्वाशौचव्यपगमेनशुद्धिः।अग्रिमार्द्धेऽग्रिमाशौचव्यपगमेनशुद्धिः अशौचान्तदिनप्रभातकालेऽशौचांतरेऽधिकेनदिनत्रयेणशुद्धिः ॥ त्र्यहाद्यसंपूर्णाशौचे समानकालाशौचांतरोपनिपातेऽग्रिमाशौचव्यपगमेनशुद्धिरिति ॥

होतीहै ॥इसीप्रकारक्षत्री वैश्य और शूद्र इनकेभी संपूर्णअशौचमें अपने अपने अशौच जानने और पहले अर्द्धमें तुल्यदिनहोण वाला अशौच जद अशौचमें पड जाये तदपूर्वले अशौच करके शुद्धि होतीहै॥और जेकर अगले अर्द्धमें पडेतद अगले अशौच करके शुद्धि होतीहै॥और जेकर अशौचके अंतदिनके प्रभात कालमें और अशौच पवे तद और तीनदिनों करके शुद्धि होतीहै और जद दो तीन दिनका जोअसंपूर्ण अशौच है तिसमेंतैसा और अशौच पड जाये तद अगले अशौच करके शुद्धि होतीहै॥

विजातीय अशौच के मिश्री भावमें लघु हारीत जी कहतेहैं ॥ सूतेति ॥ जन्म निमित्त अशौ चमें जद मरण निमित्त अशौच पडे और तैसे जन्म निमित्त अशौचमें मरण निमित्त अशौच पडे ॥ तद मरण निमित्त अशौच करके जन्म निमित्त अशौच निकल जाताहै॥ और जन्मनि मित्त अशौच करके मरण निमित्त अशौच दूर नहि होता और मरणोत्पत्ति ॥ इस वाक्य क रके मरण अशौच की समाप्तिसें अधिक भी होवे जन्माशौच तद भी मरणाशौच करके शुद्धी होतीहै ॥ और जेकर मरणा शौच जन्माशौचकी समाप्तिसें अधिक होवे तद भी जन्माशौच करके शुद्धि नहि होतीहै । क्या होताहै कि मरणाशौच अपने दिनों करके निकलताहै ॥ अ र्थात् मरणा शौच करके शुद्धि होतीहै ॥ एह सभ एक कुलके अशौच का निर्णयहै और भिन्न कुल जो गुरु शिष्य स्वामि सेवकादिका अशौच तिस विषे नहि ॥ इहां दोआं वचना का एकही विषयहै ऐसा भी कई कहतेहैं ॥ इसमें कुछ और कहतेहैं ॥ कि अशौच

विजातीयसंकरेलघुहारीतः ॥ सूतकेमृतकंचेत्स्यान्मृतकेसूतकंतथा मृतेन सूतकंगच्छेन्नेतरत्सूतकेनतु॥मरणोत्पत्तियोगेतुगरीयोमरणंभवेदित्यादिना मृतेनस्वसमाप्त्यधिकमपिसूतकंगच्छेत् । इतरन्मृतकंसूतकसमाप्त्यधि कंसूतकेननगच्छतिकिंतु स्वकालेनैव यातीत्यर्थः ॥ कुलप्रयुक्तोयम शौचानिर्णयः ॥ अशौचसंपातयोर्यंनिर्णयः ससर्वोपि शुद्धिविवेकानुसारी ति यत्रदेशेशुद्धिविवेकानुसार्याशौचनिर्णय एवशिष्टपरिगृहीतस्तत्रैतान्निर्ण यानुसारिणाशौचपरिग्रहव्यवस्थाऽऽस्थेया॥ अन्यत्रतुषडशीतिनिर्णयासिं धुपराशरमाधवत्रिंशच्छ्लोकीव्याख्याकरादिकृतैवव्यवस्थातत्तद्ग्रंथेभ्यो ऽवगन्तव्या ॥ अतःस्त्रीणांस्वप्रसवनिमित्तमशौचंप्रतिव्यक्तिविश्रांतत्वाद न्याशौचेन न वाध्यते॥

के मध्यमें और अशौच पडनेमें जो यह निर्णय कीयाहै सो संपूर्ण शुद्धि विवेक के अनु सा रहै इसी कारणते जिस देशमें श्रेष्ठोनें शुद्धिविवेकके अनुसार अशौच का निर्णय ग्रहण कीयाहै तिस देशमें इस निर्णय के अनुसार अशौच की व्यवस्था स्थित करणे योग्यहै ॥ और और देशमें षडशीति और निर्णयसिंधु और पराशर माधव और त्रिंश च्छ्लोकी इनकी व्याख्या के करण वाले जो हैं तिन करके कीती हुई व्यवस्था जानणी ॥ और सो व्यव स्था तिस तिस ग्रंथतें जाण लैणी ॥ इसी कारणतें स्त्रीयों का जन्म निमित्त जो अशौ चहै सो और अशौच करके नहि वाध्या जाता कंचुके एक २ के प्रति कथन करणे तें ॥ अर्थात् सूतक के वाधनेतें और संबंधियों की शुद्धि होतीहै और प्रसूता स्त्रीयोंकी शुद्धि नहि होती ॥

तिसी कारण तें पुत्र के उत्पन्न होयां २ वीस दिन २० और कन्या के उत्पन्न होयां २ एकमास ३० दिन उपरंत स्त्रीको श्राद्धके अन्न पाकादिमें अधिकार होताहै॥जेकर सूतकमें पतिकी मृत्यु होजाये तदपि कथन कीया जो कालहै तिसी कालमें सूतक का अंत जानना॥कुछ और कहतेहैं ॥मातेति कि पहले माताके मृतहोयां २ जेकर अशौचमें पिता मृत होजाये तद पिता के अशौच के शेष दिनों करके शुद्धिहोतीहै और जेकर पिताके मृतहोयां २ पश्चात् माता मृत होजाये तद पिताके अशौचतें आगे एक रात्रि करके शुद्धिहोतीहै॥यह शंखजीने कहाहै॥इसीका स्पष्टअर्थहै ॥कितीन पादोंका अर्थ स्पष्ट है॥और चौथे पादका यह अर्थहै कि पिताके अशौचके मध्यमें माता मृतहोजाये तद पिताके अशौचांततें अधिक माताके अशौच की एक रात्रि अधिककरे तिसमें(अशुद्धौ)इस पदतें क्या कि जेकर पिता अपने आपको मारण वाला होवे अर्थात्

ततश्च पुत्रे जाते विंशतिदिनात् कन्यायांजातायांमासादूर्ध्वंश्राद्धपाकादावधिकारः अत्रांतरापतिमरणेप्युक्तकालएवसूतकांतोवोध्यः ॥ किंच ॥ मातर्य्यग्रेप्रमीतायामशुद्धौम्रियतेपिता पितुःशेषेणशुद्धिःस्यान्मातुःकुर्य्यात्तु पक्षिणीमिति ॥ शंखस्मरणे पादत्रयंस्पष्टंचतुर्थेत्वयमर्थः ॥ पित्राशौचमध्येमातृमृतौपित्राशौचांतेमातुः पक्षिणीमधिकांकुर्य्यादिति ॥ तत्राशुद्धावित्युक्तेः यदिपितात्महत्यादिमान् तदा तदाशौचाभावात् तत्र मातृमरणे न पक्षिणीवृद्धिःकिंतुसंपूर्णमेवमात्रशौचंकार्य्यमितिनिर्णयसिंधुः ॥ पक्षिणीवृद्धिरपि तृतीयदिनादौ प्रथमदिनद्वये न विधेयेत्यपितत्रैवोक्तं किंच सपिंडाशौचेनमातापित्रोरशौचं नापैयाति एवंभर्त्तुरपिवोध्यं इयंपक्षिणीवृद्धिरपि दशमदिनात्प्राङ्मातृमरणेज्ञेया दशम्यांरात्रौतत्प्रभातेवामातृमरणेदिनद्वयेनसहवर्द्धनीयेतिकेचित् ॥

फांसी विषादि करके आप मृतहोजावे॥और ब्रह्म हत्यादि वाला होवे तद उसका अशौच नहि होता ॥तिसमें माताके मरणके विषे एक रात्रि नहि वधाणी क्या करणा कि माताकाहि संपूर्ण अशौच करणा इह निर्णयसिंधुमें कथन कीयाहै॥एक रात्र की जो वृद्धिहैसोभी तीनदिनतें लेकर के जानणी और जेकर प्रथम दो दिनमें मृत होवे तद नहि एक रात्रि की वृद्धि करणी यहभी निर्णय सिंधुमें कहाहै ॥ कुछ और कहतेहैं कि सपिंडोके अशौच करके माता और पिताका अशौच नहि दूरहोता ॥ इसीतरां स्त्रीको औरके अशौचकरके पतिका अशौच दूर नहिहोता और जेकर दशदिनतें पूर्व माता मृतहोवे तद पक्षिणी वृद्धिजानणी ॥ और जेकर दशमी रात्रिमें अथवातिसके प्रभात में माता मृतहोवे तद और तीन दिनोंकरके शुद्धि होतीहै ॥

षडशीति मतमें स्त्रीकोपति साथजानमें विशेष कहाहै ॥ मृतमिति ॥ किमृतहोये पतिकेपीछे जा करस्त्री जदअग्निमें प्रवेश करे अर्थात् साथ अथवाकिसे दिनपीछे दग्ध हो जाये तद तिसमे एकरात्रि अधिक नहिकरणी ॥ और पिताके अशौच दिनोंकी समाप्तिकरकेहि शुद्धिहोतीहै १ ॥ पुत्रेति। तिससती स्त्रीकोपुत्र अथवा औरकोई अग्निकोदेवे सोताबनमात्र अपवित्रहोताहै ॥ अर्थात् स्नानकरके शुद्धहोताहै तिनदोनोंका श्राद्ध और पिंड भिन्न नाकरे अर्थात् इकठ्ठाहिकरे २ ॥ अथविदेश मृतका अशौच कथन करतेहै । तिसमें मनुजीकावचनहै ॥ विगतेति विदेशमें मृत होये सपिंड को जोदश दिन के मध्यमें श्रवण करे तो दशदिनके मध्यमें जितने दिनशेषरहण तितने दिन अशुचिहोताहै ॥ १ ॥ अतिइति जेकर दशदिन बीतजान तद तीन दिन अशौच

सहगमनेविशेषः षडशीतिमते ॥ मृतंपतिमनुव्रज्यपत्नीचेदनलंगता नतत्रपक्षिणीकार्य्यापितृकोदेवशुध्यति ॥ १ ॥ पुत्रोऽन्योवाग्निदस्तस्यास्तावदेवाशुचिस्तयोः नश्राद्धंनचपिंडंचयुगपत्तुसमापयेत् ॥ २ ॥ न श्राद्धंनपृथक्पिंडमिति पाठान्तरम् ॥ तावदेवग्निदानपर्य्यंतमेवसद्यः शौचमित्यर्थः ॥ २ ॥ अथविदेशस्थाशौचं ॥ मनुः ॥ विगतंतुविदेशस्थंशृणुयाद्योह्यनिर्दशम् ॥ यच्छेषंदशरात्रस्यतावदेवाशुचिर्भवेत् १ ॥ अतिक्रांतेदशाहेतुत्रिरात्रमशुचिर्भवेत् सम्वत्सरे व्यतीतेतुस्पृष्ट्वैवापोविशुध्यति २ एकेनदिनेनयतामृतस्यवार्त्तानश्रूयते साहिविदेशः तत्रस्थं अनिर्दशमनतिक्रांतदशाहंविगतंमृतंपित्रादिकंयःपुत्रादिःशृणुयात् सदशरात्रशेषंयावदशुचिर्भवति। विगतमिति जन्मनोप्युपलक्षणम् तथाचबृहस्पतिः अन्यदेशमृतंज्ञातिं श्रुत्वावापुत्रजन्मच ॥ अनिर्गत दशाहेतुशेषाहोभिर्विशुध्यति ॥ १ ॥

होताहै ॥ जेकर वर्षबीतजाये तद जलका स्पर्शकरके अर्थात् आचमनकरके शुद्धिहोतीहै २ ॥ इसीका स्पष्टअर्थहै एकदिन करके जिसमें मृतहोयेकी वार्तान सुणीजाये सो विदेश होताहै ॥ तिसमें मृत होये पिता आदिको जो पुत्रादि दशदिन के मध्यमें श्रवणकरे सोपुत्रादि शेष दिन अशुचि रहताहै ॥ विगत इस पद करके बालकादिका जन्म भीग्रहण करणा ॥ तिसीप्रकार बृहस्पतीजीने भी कथन कीया है ॥ अन्येति कि और देशमें मृतहोये सपिंडीको अथवा पुत्रके जन्मको श्रवण करके और दशदिनके नाव्यतीत होयां होयां शेष दिनो करकेशुद्ध होताहै ॥ १ ॥

और दश दिनके व्यतीत होयां होयां मृत सपिंडीके श्रवणमें तीन रात्र अशौचहै और वर्षके व्यतीत होयां होयां मृत सपिंडीके श्रवणमें स्नान करके शुद्धि होतीहै।।यह शुद्धि भेदतें रहित कथन करणेतें चतुर्वर्णोमे जाननी।।और दश दिनके व्यतीत होयां होयां जन्म निमित्त अशौच नहि होता क्योंकि दश दिनके व्यतीत होयां होयां जन्मका अशौच नहि होता।।इस देवल जीके वचनतें।।दश दिनते उपरंत प्राप्त हुआ जो तीन ३ दिनका अशौचहै तिसमें मनुजी विशेष कहतेहैं।।निरेनि।।किदश दिनके व्यतीत होयां २ सपिंडीके मरणको और पुत्रके जन्मको श्रवण करके।।सहित वस्त्रोंके स्नान करे तो शुद्ध होताहै १ और वृहस्पतीजीका वचन सपिंड मरण परथा और यह सजाति परहै ऐसा विवेकहै।।और दशाहाशौचके व्यतीत होयां २ कर्म्मोकी

दशाहेऽतिक्रांतेव्यतीतेसपिण्डमरणश्रुतौत्रिरात्रमशौचंभवति सम्वत्सरानंतरंसपिण्डमरणश्रवणेस्नानमात्रेणशुद्धिः एतच्चाविशेषेणाभिधानाद्वर्णचतुष्टयविषयम् जन्मनिमित्तमशौचंदशाहातीतेनास्ति॥नाशौचंप्रसवस्यास्तिव्यतीतेषुदिनेष्वपीतिदेवलस्मरणात्॥दशाहानंतरंप्राप्तेत्र्यहाशौचेपिविशेषमाहमनुः निर्दशंज्ञातिमरणंश्रुत्वापुत्रस्यजन्मचसवासाजलमाप्लुत्यशुद्धोभवतिमानवः १ दशाहाशौचव्यपगमेकर्म्मानर्हत्वलक्षणस्यत्र्यहाशौचस्योक्तत्वात्तदंगस्पर्शाविषयम् निर्गतदशाहेसपिण्डमरणेपुत्रजन्मनिचसचैलस्नानानंतरंस्पृश्यताभवतीतिभावः ॥ देशान्तरस्थबालादिमरणेप्येवमित्याहसएव॥बालेदेशांतरस्थेचपृथक्पिण्डेचसंस्थितेसवासाजलमाप्लुत्यसद्यएवविशुध्यति ॥ बालेजातदन्तेमृते जातदन्तेनृणामकृतचूडानामित्येकाहोरात्रविधानाद्देशान्तरस्थसपिण्डमरणाशौचविषयमिदम्

योग्यताहै।।जिसमें एसा जो तीन दिनका अशौचहै तिसको उक्त होणेतें तीन दिनके अशौचमें अंग स्पर्शता होतीहै।।यह भावहै किदश दिनके व्यतीत होयां २ और सपिंडीके मरणमें और पुत्रके जन्ममें समेत वस्त्रोंके स्नानकरणेतें उपरंत अंग स्पर्शता होतीहै ॥ औरदेशमें बालादिके मरण विषे मनुजी कहतेहैं।।कि औरदेशमें सपिंडीबालकके अथवा भिन्नपिंडी बालकके मरणेमें सहित वस्त्रोंके स्नान करके तात्काल शुद्ध होताहै।।बालक ईहां जात दंतां वाला ग्रहणकरणा(जातदंतइत्यादि)यह स्मृतिका सारा वाक्य नहि।।इस श्लोक करके एक दिन रात्र विधान करणेतें औरदेशमें सपिंडीके मरणके अशौचके विषयमेंहै ॥

यह आशय है कि जिस में दशदिन अशौच है तिसमें दश दिन ते उपरंत श्रवण हो तोतीन दिन अशौच है ॥जहां भिन्न पिंडी और समानोदकी हो उसमें तीन रात्र अशौक कहाहै॥ और तिसमें तीन रात्र के व्यतीत होयां२ श्रवण हो तो सहित वस्त्रों के स्नान करके शुद्ध होता है ॥ इसमें कुछविष्णुजी भी कथन करतेहैं ॥ अइति ॥ कितीन पक्षतें उरे अर्थात् पंचताली ४५ दिनतें उरे विदेशमें मृतहोये सपिंडीकोश्रवण करे तदतीनरात्र ॥ और तीनपक्षतें उपरंत और छे महीनेते उरे एकरात्र और छेमासते उपरंत वर्षते उरे एकादिनही अशौच कथन कीयाहै १ और विदेशमें मृतहोये सापिंडी और सोदकों के श्रवण मेंस्नान मात्र अशोच कहाहै ॥ देशांतरका लक्षण बृहस्पती जीने कथन कीयाहै ॥ मेति ॥ कि जिसमें महानदी का

अयंभावः यत्रदशाहा शौंचं तत्रदशाहानंतरं श्रवणे त्र्यहमशौंचं यत्रपृथक्पिंडेसमानोदकात्रिरात्रमुक्तं तत्रत्रिरात्रेऽतीतेश्रवणेसचैलस्नानेनशुद्धिरिति॥ किंच विष्णुः। अर्वाक्त्रिपक्षात्त्रिनिशं षण्मासाच्चदिवानिशम् अहःसंवत्सरादर्वाक्देशांतरमृतेष्वपीति सपिण्डानां सोदकानांदेशांतरमृतानां श्रवणे स्नानमेव ॥ देशांतरलक्षणंबृहस्पतिनाप्रोक्तम्॥ महानद्यंतरंयत्रगिरिर्वाव्यवधायकः वाचोयत्रविभिद्यंते तद्देशांतर मुच्यते ॥ १॥ देशांतरंवदंत्येकेषष्टि योजनमापनं चत्वारिंशद्वदंत्यन्येत्रिंशदन्येतथैवचेति ॥२ ॥ सर्वमिदंमातापितृभिन्नपरम् ।तयोस्तु पितरौचेन्मृतौ स्यातांदूरस्थोपिहि पुत्रकः श्रुत्वातद्दिनमारभ्यदशाहंसूतकंचरेदितिपैठीनसिवचनात्सदा दशाहादि पूर्णमेवाशौंचभवति ॥

व्यवधान हो अथवा किसीपर्वतकाव्यवधानहै ॥ और जिसमें वाणीका व्यवधान होजाये सो देशांतर कथन करीदाहै ॥ १ ॥ देशेति कईपंडित साठ ६० योजन के अंतरालमें अर्थात् दो सौचालीस २४० कोशके छिडेंको देशांतर कथन करतेहैं ॥ और और मुनिःचालीस ४० योजनके छिडें में और और कई तीस ३० योजनके छिडें में देशांतर कथन करतेहैं॥२॥यह सभ मातापितातें भिन्नविषयमें जानना॥और माता पिताके विषयमें॥ पितेति माता और पिता मृतहोजाये तद दूरमें भीस्थित होवें पुत्र तद भी श्रवण करके श्रवण दिनतें लेकर दशदिन सूतक करे॥इस पैठीनासि के वचनतें सदा दशदिनादि संपूर्ण अशौचहोताहै ॥

एहि वार्तास्मृत्यर्थसार में कथन कीताहै ॥ मातेति किमाता और पिता दूरदेशमें भी मृत होन और वर्ष भी व्यतीत होजाए तदभी पुत्र दशाहादि सूतककरे ॥ इसी प्रकार स्त्री और पुरुष को भी योग्यहै अर्थात् स्त्री मृतको श्रवण करके पति और पति मृत होयेको श्रवण करके स्त्री दशाहादि अशौच को करेऔर तुल्य वर्णकीयोंमें अथवा उत्तम वर्णकीयों सपत्नीयोंमें भी इसी प्रकार जानना अर्थात् तुल्य वर्ण वाली अथवा उत्तम वर्णकी साकण मृत होई कोश्रवणकरके साकण दशाहादि अशौचकरे यहनिर्णय सिंधुमें कथन कीआहै ॥ माताकी साकणके विषयमें दक्षजी कथन करतेहैं ॥ पित्रिति ॥ माताके विना पिताकी स्त्री को विदेशमें मृतहोयां होयां और वर्षके व्यतीत होयां होयां भी पुत्र तीन रात्र अशौच करे ॥ इसी प्रकार हीन वर्णकी मातामें और हीनवर्ण कीयां साकणामें जानना यह स्मृत्यर्थसारमें कथन की

इदमेवस्मृत्यर्थसारे ॥ मातापितृमरणेतुदूरदेशेपि संवत्सरोर्ध्वमपिपुत्रोदशाहादिकंकुर्य्यात् ॥ स्त्रीपुंसयोः परस्परंसवर्णोत्तमवर्णसपत्नीषुचैवमिति निर्णयसिंधुः ॥ सपत्नमातृविषये दक्षः ॥ पितृपत्न्यामपेतायां मातृवर्ज्यं द्विजोत्तमः संवत्सरेव्यतीतेपित्रिरात्रमशुचिर्भवेदिति ॥ अपेतायां देशांतरे मृतायाम् ॥ हीनवर्णमातृषुहीनवर्णसपत्नीषुचैवमितिस्मृत्यर्थसारे ॥ और सपुत्रष्येवमिति केचित् । तथाचब्राह्म्यम् ॥ पितृपत्न्यांप्रमीतायामौरसेतनयेतथेति एतच्चसर्ववर्णसाधारणम् ॥ तुल्यंवयसिसर्वेषामतिक्रांतेतथैव चेति व्याघ्रस्मरणात् ॥ वयसिबालविषयेअतिक्रांते देशांतरवशादशौचकालेव्यतीते सर्वेषांवर्णानांतदुक्तमशौचंतुल्यमेव इतिविदेशस्थाशौचम् ॥

याहै ॥ इसी प्रकार अपनी स्त्रीमें उत्पन्न होयाजो पुत्रहै तिसके मृतहोयां भी इसी प्रकार करणा यह भी कैई कथन करतेहैं॥तिसी प्रकार ब्राह्म्यमें क्या ब्रह्मपुराणमें भी कथन कीयाहै॥ पित्रिति कि पिताकी स्त्री और अपना पुत्र इनके मृतहोयां होयां दशाहादि अशौच करे इति और यह सब वर्णोंको तुल्य जानना ॥ क्युंके बालकमें और दशाहादि मरणा शौचके व्यतीत होयां २ सभना वर्णाको) बराबरहि अशौच हुंदाहै इस व्याघ्रजीके वचनतें ॥ इसका स्पष्ट अर्थहै ॥ (वयसि) क्या बाल्यावस्था विषे (अतिक्रांते) क्यादेशांतरके वशतें अशौच कालके व्यतीत होयां २ सर्ववर्णोंको पूर्व कथन कीआजो अशौचहै सो तुल्य होताहै ॥ यहविदेशीका अशौच समाप्त हुआ ॥

संकर अशौचमे जहांपूर्वले अशौच करके शुद्धि कथन कीतीहै तिसका अपवाद षडशीतिमेक हाहैं ॥ पूर्वेति॥किपूर्वले अशौच करके जो शुद्धि सूतकमे और मरणमें कहीहै सो प्रसूतास्त्री और शवके दाहकरण वाले और मृतपुरुषके पुत्र इन्हाको त्याग करके जाननी अर्थात् पूर्वलेअशौच करके होरणा संबंधीआंकीशुद्धि होतीहै ॥ और इनकी शुद्धि नहि होती ॥ १ यह स्मृतिसंग्रहमें कथन कीयाहै । इयमिति ॥ प्रसूता स्त्री और शवके दाह करण वाला इनते विनायह शुद्धि कथन कीतीहै (अग्निदः) किजोपुरुष मजूरी लेकर शवको दाह करे॥ और मातुलादि संबंध करके दाह करनेमें तीन रात्र अशौच होताहै॥यही अशौच वृद्धात्रि जीने कहाहै ॥ सूतेति॥जन्म निमित अशौचतें मरणाशौच दूणा होताहै और शावतें दूणा ऋतुसंबंधी होताहै और ऋतुतें दूणा प्रसूता स्त्री का होताहै और सूतिते दूणा शवके दाह करण वाले को होताहै ॥ कुछ और कथन करतेहैं। क्या किसी स्थानमें अशौच के शंकरमें भी तिस निमित प्रतिबंधक नहि होता ॥ अशोच इति ॥ शावाशौच के होयां २ जेकर पुत्रका जन्म होवे तद कर्म्म के करण वाले को तिसकालमें शुद्धि होतीहैं। अर्थात् तिसकालमेंकर्मोका अधिकार होताहै और सो शुद्धिपूर्वले अशौच करके होतीहैं अर्थात् पुत्र जन्म निमितदानादि करणे॥ शाता तपजी कहतेहैं अतेति ॥ कि दश दिनके मध्यमें सूतकके विषे पश्चात् जेकर कोई मृतहोजाये तद विधि पूर्वक प्रेतके निमित्त पिंडदान करणे योग्यहै ॥१॥ प्रारेति॥ प्रेतपिंडके आरंभमें अर्थात् किसेके मृतहोयांहोयां जेकर जन्मनिमित्त अशौच पड जाये अर्थात् कोई उत्पन्न होपवे तदजिस प्रकार पहले पिंड देताथा तिसी प्रकार बाकीकें पिंड विधि पूर्वक देतारहें तिनको ॥ २ ॥

षडशीत्यांपूर्वाशौचापवादउक्तः ॥ पूर्वाशौचेनयाशुद्धिः सूतकेमृतकेचसासूतिकामग्निदंहित्वाप्रेतस्यचसुतानपि ॥ १ । स्मृतिसंग्रहे इयंविशुद्धिरुदितासूतिकामग्निदंविना अग्निदात्रमूल्येनशवदाहकः मातुलादिसंबंधेनदाहकरणेत्रिरात्रम् एतदशौचमाहवृद्धात्रिः सूतकाद्द्विगुणंशावंशावाद्द्विगुणमार्त्तवम्आर्त्तवाद्द्विगुणासूतिस्ततोपिशवदाहकः किंचाशौचसंपातेपिनतन्निमित्तंकचित्प्रतिबन्धः अशौचेतुसमुत्पन्ने पुत्रजन्मयदाभवेत्कर्त्तुस्तात्कालिकीशुद्धिः पूर्वाशौचेनशुद्ध्यतीति शातातपः॥ अंतर्दशाहेजननात्पश्चात्स्यान्मरणंयदि प्रेतमुद्दिश्यकर्त्तव्यंपिंडदानंयथाविधि १ प्रारब्धेप्रेतपिंडेतुमध्येचेज्जननंभवेत् तथैवाशौचपिंडांस्तुशेषान्दद्याद्यथाविधि ॥ २ ॥

यह जो कथन कीयाहै कि पिताके मृत होयां २ दश दिन में जेकर माता मृत होजाये तद एक रात्र अशौच करे ॥ इसमें कथन करतेहैं ॥ माताकि एक रात्रिमें भी पिताके एकादशाह को करे । क्युंके यारमे ११ दिनमें अशौच भी होवे तदपि आदले श्राद्धको करे ॥ इस वचन तें । यह वचन क्षत्रि आदिमें जानना ॥ यह कोई कथन करतेहैं । दशेति । दशमे दिन १० पिंडको दे करके रात्रि शेषमें शुद्ध होताहै । इस विज्ञाने श्वर के वचनतें ब्राह्मणको अशौच के अंतहिं एकादश ११ दिनहै ॥ कुछ और कथन करतेहैं कूर्म पुराण में लिखाहै ॥ नैष्टीति नैष्ठक ब्रह्मचारी वोह होताहै कि जो जीवन पर्यंत गुरुके कुलमें व्रत करके निवास करे ॥ वानप्रस्थी सन्यासी और ब्रह्मचारी इनको किसे संबंधीके मृत होयां २ और पतित होयां २ पति

मातुः पक्षिणीमध्येपितुरेकादशाहंकुर्य्यात् आद्यंश्राद्धमशुद्धोपिकुर्य्यादेकादशेहनीतिस्मरणात् क्षत्रियादिपरमिदमितिकेचित् दशमंपिंडमुत्सृज्यरात्रिशेषेशुचिर्भवेदितिविज्ञानेश्वरवचनाद्विप्रस्याशौचांतएवैकादशाहः॥ किंचकौर्म्मे नैष्ठिकानांवनस्थानांयतीनांब्रह्मचारिणाम् नाशौचंकीर्त्तितंसद्भिःपतितेचमृतेतथेति अंत्यपादेशावेवापितथैवचेतिस्मृत्यंतरपाठः ॥ अत्राशौचपदंअंत्यकर्म्मोपलक्षणम् ॥ ब्रह्मचारीनकुर्वीतशवदाहादिकांक्रियाम् यदिकुर्य्याच्चरेत्कृच्छ्रंपुनःसंस्कारमेवचेतिदेवलवचनात् पित्रादिभिन्नपरमिदम् तथाचमनुः आचार्य्यंस्वमुपाध्यायंमातरंपितरंगुरुंनिर्हृत्यतुव्रती। प्रेतंनव्रतेनवियुज्यते ॥ १ ॥

त वोह होताहे यो अपने धर्मते विचल होजाये॥इनकरके श्रेष्ठोंनें अशौच कथन नहि कीआ॥(पतितेचमृतेतथा) इस स्थानेंमे (शावेवापितथैवच) यहभीपाठ होताहै ॥ इस श्लोकमें) अशौच) इस पद करके सपिंडी क्रिया काभी ग्रहण करणा ॥ क्युंके ब्रह्मेति । ब्रह्मचारी शवकी दहादि क्रिया ना करे और जेकर दाहादि क्रिया करे तद कृच्छ्र व्रत को करके पीछे संस्कार को फेर करे । इस देवल जीके वचनतें ॥ यह वचन पिता माता इत्यादिमें नहि जानना ॥ तिसी प्रकार मनु जीभी कथन करतेहैं ॥ आचेति ॥ पुरोहित और विद्यागुरु और माता पिता और गुरु इन प्रेतोंको उठाणे और सपिंडी कर्म करने करके ब्रह्मचारी व्रततें रहित नहि होता अर्थात् तिस ब्रह्मचारी का व्रत दूर नहि होताहै॥

इसी प्रकार मृत नाने के उठाणे में भी भविष्य पुराण का वचनहै ॥ यथेति ॥ कि जिस प्रकार ब्रह्मचारि भी पुत्र पिता की क्रिया करे ॥ तिसप्रकार हे राजन् नानेकी क्रिया करने कों दौहित्र योग्यहै ॥ १ ॥ काला दर्शमें भी ऐसा लिखाहै ॥ इसमें दाह क्रिया निमित्त यो अस्पृश्य ताहै सो दश दिन पर्यन्त जाननी ॥ क्युंके ॥ सइति ॥ हेमित्र सगोत्री वा भिन्न गोत्री जो पुरुष शवको दाह करे सोभी शुद्ध दश दिनमें होताहै और नव ९ श्राद्धां कोभी करे ॥ इस दिवोदास के वचनतें ॥ और कहतेहैं । नित्येति पित्रादिको दाह करके ब्रह्मचारीके नित्य कर्मका भी लोप नहिं होता अर्थात् नित्य कर्मो को छोड न देवे किंतु करता रहे ॥ यह छांदोग परिशिष्ट उप निषदमें कथन कीयाहै ॥ और स्थानमें भी कहाहै ॥ नेति । कि ब्रह्मचारी सूतकमें अपने

व्रतीब्रह्मचारी ॥ निर्हरणमत्रान्त्यकर्मणोप्युपलक्षणम् ॥ एवंमातामहनिर्हरणेपिभविष्यवचनम् । यथाव्रतस्थोपिसुतःपितुःकुर्य्यात्क्रियांनृप तथामातामहस्यापिदौहित्रः कर्त्तुमर्हतीति कालादर्शेप्येवं अत्रांत्यकर्म्मनिमित्तमस्पृश्यत्वं दशाहावध्येव सगोत्रोवाऽसगोत्रोवायोग्निंदद्यात्सखेनरःसोपिकुर्य्यान्नवश्राद्धान् शुद्धेतुदशमेहनीतिदिवोदासवचनात् ॥ अपिच नित्यकर्म्मलोपोपिनब्रह्मचारिणइतिछांदोगपारिशिष्टे ॥यथा नत्यजेत्सूतकेकर्म्मब्रह्मचारीस्वयंक्वचिदिति। संवर्त्तः पित्रोर्गुरोर्विपत्तौतुब्रह्मचार्य्यपियःसुतःसव्रतश्चापिकुर्वीतअग्निपिंडोदकक्रियाम् १ ॥ तेनाशौचंनकर्त्तव्यंसंध्याचैवनलुप्यते अग्निकार्य्यंचकर्त्तव्यंसायंप्रातश्चानित्यशः २ ॥ इति अत्रायमशौचाभावः कर्म्माधिकारपरोनस्पृश्यतापरःपूर्वोक्तवचनात् केचित्त्वेकाहमशौचमाहुः॥

कर्मोंके कदेभी त्याग ना करे ॥ इस वचनतें ॥ इसीमें संवर्त्तजीभी कहतेहैं ॥ माता और पिता और गुरु इनके मृत होयां २ ब्रह्मचारी भी जो पुत्रहै सो सहित व्रत के अग्नि और पिंडोदक क्रियाकों करे ॥ १ ॥ तेनेति ॥ और तिस पुत्र ने अशौच नहि करने योग्यहै ॥ और तिसके संध्या कर्मका लोप नहि होता अर्थात् संध्या को करे ॥ और सायंकाल और प्राता काल में नित्य ही अग्निमें हवन करे ॥ २ ॥ इति इस वाक्यमें यह जो अशोचाभावहै सो कर्माधिकार पर जानना और अस्पृश्यता पर नाहि जानना अर्थात् कर्मो के करणे में उसको अधिकार है और अस्पृश्य उसकी नहि दूर होतीहै ॥ क्योंकि पूर्वले वचनतें ॥ कोई एकादिन तिसको अशौच कहतेहैं ॥

आचेति ॥ पुरोहित और विद्याके पढाणे वाला और गुरु पिता और माता इनको ब्रह्मचारी दाह करके और तिसस्थानमें भोजनखाय करके॥१॥व्रततें पतित नहि होता और तिस स्थानमें हि प्रेतके अन्न को खाये परंतु वखेर भोजनको करे और तिनके साथ निवास नाकरे ॥ २ ॥ और एकदिन अशुचिहोताहे दूसरेदिन शुद्धहोजाताहै ॥ इस ब्राह्म्यके वचनतें ॥ यहसंक्षेपकर के कहाहे और विस्तार निर्णय सिंधु आदिमें कहाहे * अब सूतकमें यह कर्म्मत्याग करने और यह कर्मत्याग नहि करने यहव्यवस्था याज्ञवल्क्यजीने कथनकरीहै ॥ वैतेति वैतान और औपासना और क्रिया यहसूतकमें भी करणा योग्यहैं श्रुतिके विधानतें॥ श्रुतिमें जो कहाहे कि यह

आचार्य्यंवाप्युपाध्यायंगुरुंवापितरंचवा मातरंवास्वयंदग्ध्वाव्रतस्थस्तत्र भोजनं १ कृत्वापततिनोतस्मात्प्रेतान्नंतत्रभक्षयेत् अन्यत्रभोजनंकुर्यान्नच तैःसहसंवसेत् २ एकाहमशुचिर्भूत्वाद्वितीयेहनिशुद्ध्यतीति ब्राह्म्यवचना द्विस्तरस्तुनिर्णयसिंध्वादौ * सूतकेत्याज्यात्याज्यकर्म्मव्यवस्थापितंयाज्ञवल्क्येन । वैतानोपासनाःकार्य्याःक्रियाश्चश्रुतिचोदनात् वैतानाःत्रेताग्निसाध्याःअग्निहोत्रदर्शपूर्णमासाद्याःक्रियाःऔपासनाः सायंप्रातर्होमाक्रियाः इमावैदिक्यः सर्वाअपिसूतकेमृतकेपिकार्य्याः श्रुतिचोदनात्श्रुतिप्रतिपादितत्वात् ॥ श्रुतिश्चयावज्जीवमग्निहोत्रंजुहुयात् अहरहःस्वाहाकुर्य्यादित्यादिका । अत्रश्रौतिकर्म्मणिविधानानुज्ञानात्स्मार्त्तविधानंगम्यते तथा चव्याघ्रपादः॥स्मार्तकर्म्मपरित्यागोराहोरन्यत्रसूतकेश्रौतिकर्म्मणि तत्कालंस्नातःशुद्धिमवाप्नुयादिति

कर्म करना चाहिये इसतें ॥ इसीका स्पष्ट अर्थ है (वैतानाः) कि अग्नि त्रय करके साध्य अग्नि होत्र और दर्श पूर्ण मासादि क्रिया ॥ (औपासनाः) कि सायंकालमें और प्रातःकालमें हवन क्रिया यह वैदिक सब क्रियासूतकमें और मृतकमें भी करणे योग्यहैं ॥ क्युं श्रुतिके प्रति पादनतें श्रुतिभी कहतेहैं ॥ कि जितना पर्यंतजीवें उतना पर्यंत अग्निहोत्रको करे ॥ और दिन २ में हवन करे इत्यादिक श्रुतिहैं ॥ इसमें श्रौत कर्मके विषें विधानके ज्ञानतें स्मार्त्त कर्मका अविधान जाणीदाहे ॥ तैसे व्याघ्र पादकहताहै ॥ स्मार्त्तेति ॥ कि ग्रहणतें विना और सूतकमें स्मार्त्त कर्म नहि करणा चाहिये ॥ और श्रौत कर्मके विषें स्नान करके तात्काल शुद्धिको प्राप्त होताहे ॥

पिंड और पितृ यज्ञादि यह स्मार्त कर्महै श्रौतनित्य और नैमित्तक यह पूर्व कथन कीयेहै ॥ पैठीनसि जीका वाक्यहै ॥ वैतान कर्मतें विना शालाग्निमें नित्य कर्मनही करणे अर्थात् वैतान कर्म करलेणा यह एककहतेहैं ॥ इति ॥ इसमें अवश्य करणे योग्यजो अग्नि त्रयसाध्य कर्म हैं सो करने चाहिये क्योंकि तिनमें अशौचके अभावतें॥इसी कारणतें संवर्त्त कहताहै ॥ होममिति ॥ जन्माशौचमें और मरणाशौचमें शुष्क अन्नकरके अथवा फलकरके हवनको करे और पंचयज्ञ विधिको ना करे इति ॥ इसमें कुछ और कहतेहैं क्याकेब्राह्मण वैश्वदेवकर्मतें विना

स्मार्त्तपिंडपितृयज्ञादि श्रौतंचोक्तंतच्चनित्यंनैमित्तिकंच पैठीनासिः । नित्यानिविनिवर्त्तेरन्वैतानवर्ज्यंशालाग्नौचैक इति अत्रावश्यकानि अग्नित्रयसाध्यानि पूर्वोक्तवचनात्कार्य्याण्येव तत्राशौचाभावात् अतएवसंवर्त्तः॥ होमंतत्रप्रकुर्वीत शुष्कान्नेनफलेनवा पंचयज्ञविधानंतुनकुर्य्यान्मृत्युजन्मनोरिति किंचात्र॥विप्रोदशाहमासीतवैश्वदेवविवर्जित इत्यादिवचनेनवैश्वदेवोनिषिद्धएव नन्वहरहःसंध्यामुपासीतेत्यादिनासंध्यायाअपिश्रौतत्वेनाविहितत्वं सूतकेकर्म्मणांत्यागः संध्यादीनांविधीयतइत्यादिनानिषद्धत्वचोक्तमतोविरोध इतिचेदेवंव्यवस्था॥सूतकेप्यंजलिप्रक्षेपादिकंविहितम् तथाचपैठीनसिः ॥सूतकेसावित्र्याचांजलिंप्रक्षिप्य प्रदक्षिणंकृत्वासूर्य्यंध्यायन्नमस्कुर्य्यादिति ॥

दशादिन स्थितहोवे इत्यादि वाक्यकरके वैश्वदेवकर्मनिषेधक्याहै(प्रश्ण)दिन दिनमें संध्याको उपासे इत्यादि वाक्य करके संध्याको भी श्रौत धर्मकरके विधान कीयाहै ॥ और सूतकमें संध्यादि कर्म्मोंका त्यागकरे ॥ इत्यादि वाक्यकरके निषेधकहाहै ॥ इसकारणते विरोध पडा (उत्तर) जेकर ऐसें कथन करें तदयह व्यवस्थाहै ॥ और सूतकमें भी अंजलि दानादि देणा कहा है ॥ तैसे पैठीनसि जी का वाक्यहै सूतेति ॥ सूतकमें भी गायत्री करके जलकी अंजलि को देकरके और प्रदक्षिणा को करके सूर्य को ध्यान करदाहुआ नमस्कार करे ॥ इति ॥

कुछ और कथन करतेहैं ॥ कि वैतानोपासना भी और पुरुष करके करवाणे योग्यहै ॥ क्योंकि और पुरुष इन कर्मा कों करण यह तिस करके हि उक्त होणेंते ॥ और वृहस्पतिजीने भी यही अर्थ दिखायाहै ॥ सूतेति । कि सूतकमें और शावाशौचमें और अशक्तिमें और श्राद्ध भोजनमें और यात्रादि निमित्तोंमें कर्मो को और पुरुषतें करवाये । और कर्म्मों का त्याग न करे ॥ इति । कुछ और कहतेहैं ॥ स्मार्त्त कर्म भी और पुरुष करके कर वाणे योग्यहैं ॥ सूतेति । सूतक के उत्पन्न होयां होयां स्मार्त्त कर्म कैसे होवे ॥ पिंड और पंच यज्ञ चरू और हवन यह असगोत्री पुरुष करके करवाये और इन कर्मों का त्याग न करे । इति ॥ इसमें और पुरुष करके करवायां होयां भी दक्षिणा दान और हवन का द्रव्य देणा यह काम आप

किंच ॥ वैतानोपासनाप्यन्येनकारयितव्या । अन्यएतानिकुर्य्युरितितेनैवोक्तत्वात् ॥ वृहस्पतिनाप्ययमेवार्थोदर्शितः ॥ सूतकेमृतकेचैवअशक्तेश्राद्धभोजने प्रवासादिनिमित्तेपुहावयेन्नतुहापयेदिति ॥ किंच । स्मार्त्तमपिकिंचित्कर्म्मान्येनकारयितव्यमित्याह जातूकर्ण्यः ॥ सूतकेतुसमुत्पन्नेस्मार्त्तकर्म्मकथंभवेत् पिंडयज्ञंचरुंहोममगोत्रेणचकारयेदिति ॥ अत्रान्येन कारयितव्येपि स्वद्रव्यत्यागात्मकंप्रधानं कर्म्म स्वयमेवकुर्य्यात् तस्यान्येनकारयितुमशक्यत्वात् एतदर्थमाह श्रौतेकर्म्मणितत्कालंस्नात्वाशुद्धिमवाप्नुयादिति यस्तुदानंप्रतिग्रहोहोमःस्वाध्यायश्चनिवर्त्तत इति निषेधः सहि काम्यकर्म्मपरः वैश्वदेवपरोवाद्रष्टव्यः ॥ विस्तरस्तुनिर्णयसिंध्वादिनिबंधेषु द्रष्टव्यः ॥ किंच । सूतकेतुकुलस्यान्नमदोषंमनुरब्रवीत्

ही करे ॥ क्योंकि तिस कर्म को और पुरुष करके करणे को न समर्थ होणेंतें । इस वास्ते हि कथन करतेहैं ॥ श्रौत इति । श्रौत कर्म के निमित्त स्नान करके तात्काल शुद्धि को प्राप्त होताहै ॥ और यह जो कथन कीया कि दान देणा और दान लेणा हवन और वेद पाठ ढणा यह कर्म अशौचमें नहि करणे यह जो निषेधहै सो काम्य कर्म पर जानना ॥ और जो ईश्वर निमित्तहैं तिनका दोष नहि ॥ अथवा वैश्वदेव पर जानना । यह संक्षेप करके .कथन कीयाहै ॥ और विस्तार निर्णयसिंध्वादिमें कथन कीयाहै ॥ कुछ और कथन करतेहैं । सूतेति कि सूतकमें कुलको अन्नका भक्षण करणम इसमें दोष नहिहै यह मनु जीका वचनहै ॥

इस वचन तें सूतक वाली कुलतें इतर जो हैं तिन्होंने सूतकका अन्न भक्षण करना नहिं चाहिये ॥ यह दाता और भक्षण करणे वाला इनके मध्यमें एकको अथवा दोनोंको खवर होवे तो जानना ॥ एकको भी सूतकका ज्ञान होवे तद भक्षण करणे वाले को दोष होताहै ॥ इस षट्त्रिंशत् के मतसें दोनो को ज्ञान न होवे तद दोष नहि॥विवाहादिमें पूर्व संकल्प कीया जो हैं तिसमें भी दोषनहि ॥ क्युंके विवाह और उत्सव और यज्ञ इनके विषे मरण और सूतक जे कर पड जाये तद पूर्वसंकल्पितों में दोष नहि इस बृहस्पति के वचन तें॥तिसमें भी सूतक वाल्यों पुरुषों ने परोसना नहि चाहिये ॥विवेति॥ विवाह उत्सव और यज्ञ इनके मध्यमें मरणऔ

इति वचनात्कुल्येतरैःसूतकेऽन्नं न भोक्तव्यम् एतच्चदातृभोक्त्रोरन्यतरेणो भाभ्यांवाज्ञातेज्ञेयम्।एकेनापिपरिज्ञाते भोक्तुर्दोषमुपावहेदितिषट्त्रिंशन्मतात् उभाभ्यामपरिज्ञातेतुनदोषः।विवाहादिषुपूर्वसंकल्पितेपिनदोषः।विवाहोत्सवयज्ञेषुत्वंतरामृतसूतके पूर्वसंकल्पितार्थेपुनदोषः परिकीर्त्तितइति बृहस्पतिस्मरणात् ॥ तत्रापिसूतकिभिः परिवेषणंनविधेयम्।विवाहोत्सवयज्ञेषुत्वंतरामृतसूतके परैरन्नंप्रदातव्यंभोक्तव्यंचाद्विजोत्तमैः ॥ १ ॥ भुंजानेषुतु विप्रेषुत्वंतरामृतसूतके अन्यगेहोदकाचांताःसर्वेतेशुचयः स्मृताः ॥ २ ॥ इतिषट्त्रिंशन्मतात् । लवणादिद्रव्यविशेषे न सूतकदोषइतिप्रागभिहितम् अंगिराः॥अन्नसत्रप्रवृत्तानामाममन्नमगर्हितम् भुक्त्वापक्कान्नमेतेषांत्रिरात्रंतु पयःपिबेत् १

रसूतकके पडेआं होयां और पुरुषोंने अन्न परोसनें योग्यहैं और उत्तम ब्राह्मणों ने भक्षण करणा योग्यहै ॥ १ ॥ भुंजेति॥ब्रह्मणोंको भोजन करदेयां होयां जेकर मरण और सूतक होजाये तद औरघरके जल करके आचमन करें तद सो ब्राह्मण शुद्ध होतेहैं॥२॥इस पट्त्रिंसतके मत तें ॥ सूतकमें लवणादि द्रव्यका दोष नहि यह पूर्व कथन कियाहै ॥ अंगिरा जीका वक्य है॥ अन्नेति अन्न यज्ञमें प्रवृत्त होये जो पुरुष हैं अर्थात् सदा व्रत वाले जो पुरुष है तिनके कच्चे अन्नके ग्रहण करण का दोष नहि और इनके पके होये अन्न को भक्षण करके तीन रात्र जल को पान करे ॥ १ ॥

अन्न सत्रनाम सदावर्त्तका है और तिसदिनमेंहिं दिदाजो अन्नहै तिसके ग्रहण करणका दोषहि है। और गरुड पुराणमें लिखाहै भीति। गृहस्थीके मृतहोयां होयां याचक भिक्षाको न ग्रहण करे इति और सर्वदाकाल देईदा जो पक्का होया अन्न यह तिसके ग्रहणकरणेमें भी दोष है शवके संसर्ग निमित्त अशौचके विषे अंगिराजी विशेष कहतेहैं॥ अशौविति ॥ जिस गृहस्थी पुरुषको संसर्गतें अशौच प्राप्त हुआहि तिसकीयां संपूर्ण क्रियां लोप होजातीयांहैं अर्थात् तिसकोक र्मोमें अधिकार नहि होता ॥ और तिसके गृहमें होने वाले जोपुत्रादिहैं तिनको अशौचनहि इति ॥ इसीका स्पष्टअर्थहै । जिस गृहस्थी पुरुषको शवके संसर्गते अशौच उत्पन्न हुआहै

अन्नसत्रंहि सदातनदीयमानान्ननिबंधः तद्दिनीयान्नग्रहणेतुदोषएव भिक्षुर्भिक्षांनगृह्णीयान्मृतेचगृहमेधिनीति गरुडोक्तेः॥ पक्वान्नेसदातननिबन्धेपिदोषः शवसंसर्गनिमित्ताशौचेविशेषमाहांगिराः अशौचंयस्यसंसर्गादापतेद्गृहमेधिनः क्रियास्तस्यविलुप्यंतेगृह्याणांचनतद्भवेदिति ॥ यस्यगृहमेधिनः शवसंसर्गादशौचंजातं तस्यैवश्रौतस्मार्त्तक्रियाः पूर्वोक्तालुप्यंते॥ गृह्याणांतद्गृहेभवानांभार्य्यादीनांतद्द्रव्याणांचनेत्यर्थः ॥ स्मृत्यंतरे अतिक्रांताशौचेपीदमेवव्यवस्थापितम्॥ अतिक्रांतेदशाहेतु पश्चाज्जानातिचेद्गृही त्रिरात्रंशूतकंतस्यनतद्द्रव्यस्यकर्हिचिदिति ॥ ॥ अथस्त्रीशूद्रविषयेकिंचिदुच्यते शंखः अनूढानांतुकन्यानां तथावैशूद्र जन्मनामित्यत्र तथापदंत्र्यहवाचकम् ॥

तिसकीयां हि पूर्व कथन कीया जोश्रौत और स्मार्त क्रियांहैं सोदूरहोजानीहैं (गृह्याणां) क्या कि तिसके गृहमें होन वाले जो स्त्री और पुत्रादि और द्रव्य इनको अशौच नहिं होता यह अर्थहै ॥ स्मृत्यंतरमें भी अशौचके व्यतीत होयां २ यही कथन कीयाहै अर्तीति दशदिन के व्यतीत होयां होयां पीछे जेकर गृहस्थी श्रवण करे तद तीन रात्र तिसको सूतक होताहै और तिनके द्रव्यको अशौच नहि होता ॥ ॥ इसतें उपरंत स्त्री और शूद्रइनके विषे कुछ कथन करतेहैं शंखजीका वाक्य है अनूढइति विवाहिता कन्या और शूद्रा इनके मृत होयां भी तीनदिन अशौच होताहै

एहि मत्स्य सूक्तमें कहाहै ॥ त्रिरेति ॥ छेमासके शूद्रके बालकको मृत होयां २ तीनरात्रअशौच होताहै ॥ इति ॥ यह अजातदंत शूद्रमे जानना ॥ और जिसके दंतउत्पन्नहोयेहों तिसके मृतमें पांच ५ दिन अशौच होताहै यह केई कथन करते हैं ॥ इसी तहीं अजात दंत कन्याके मृतहोयां२माता पिताको एकरात्र अशौच होताहै यह माधवजीने कहाहै॥ और चौलकर्मते पर्व कन्याके मृतमें स्नान मात्र अशौचहै । क्युंके चौल कर्मतें रहित जो कन्याहै इसके मृत होयां २स्नान मात्र अशौचहै इसआपस्तंबके वचनतें ॥ और कुडमाईतें उपरंत कन्याके मृतमें तीनपीढी तक अशौचहै ॥ और कुडमाईते पूर्व कन्याके मृतमे सात पीढी तक अशौचहै और

मत्स्यसूक्तेपि ॥ त्रिरात्रंतुभवेच्छूद्रेषण्मासेपिशिशौमृतइति इदमजातदंत शूद्रविषयम् जातदंतेशूद्रेमृतेपंचाहइति केचित् एवंकन्यासुजातदंतासुपित्रो रेकरात्रमितिमाधवः कन्यायाश्चौलात्प्राङ्मृतौस्नानमेव अचूडायांतुकन्या यांसद्यःशौचंविधीयते इत्यापस्तंववचनात् कन्यायावाग्दानोत्तरं त्रिपुरुष मध्येअशौचं ततः प्राक् साप्तपौरुषम् अप्रत्तानांतथास्त्रीणांत्रिपुरुषीविज्ञाय ते इतिवशिष्ठोक्तेः ॥ अप्रत्तानांतथास्त्रीणांसापिंड्यंसाप्तपौरुषमितिस्मृत्यं रात्र ॥ एकत्राप्रत्ताशब्देन संस्काराभावोऽन्यत्रवाग्दानाभावोवक्ष्यमाणव चनात् ॥ अंगिरसातु त्रिरात्रस्थाने ऽहोविहितम् ॥ अविशेषेणवर्णानामर्वा क्संस्कारकर्म्मणः त्रिरात्रात्तुभवेच्छुद्धिःकन्यास्वह्नाविधीयत इति ॥ याज्ञ वल्क्यमतेपि ॥

संस्कार रहित और वाग्दान जिनका होया २ है तिनकन्याके मृतमें तीन पुरुष पर्यंत अशौच होताहै इस वासिष्ठके वचनते ॥ और वाग् दानते रहित जो कन्याहैं तिनके मृत होआं २ सप्त पुरुष पर्यंत अशौच होताहै ॥ यह और स्मृतिमे कथन कीयाहैं ॥ एक स्थानमें अप्रत्त शब्दकरके संस्कारका अभाव ग्रहण करणा और दूसरे स्थानमे वाग्दानका अभाव ग्रहण करणा अगले याज्ञवल्क्यके वचनतें ॥ और अंगिराने तीन रात्रके स्थानमें एक दिन कहाहै ॥ अवीति ॥ यज्ञोपवीततें पूर्व संपूर्ण वर्णोंके बालक के मृत होयां २ तीन रात्रीते उपरंत शुद्धि होतीहै और कन्योंके मृत होयां २ एक दिन करके शुद्धि होतीहै ॥ एह याज्ञवल्क्य जीने भी कहा है

और भी कथन करतेहैं। कि दत कन्या और बालक इनके मृतहोयां २ एकदिन अशौच कथ न कीयाहै ॥ इति ॥ इसमें देशा चार करके व्यवस्था जाननी ॥ शूद्र कोउपनयन के स्थानहिवाह ग्रहण करणा और जेकर शूद्र विवाहतें पूर्व मृतहोवे तोतीन रात्र अशोच होताहै ॥ इसमेंविवाह काल १६ वर्ष तकजानणा यह अपरार्कजी कहतेहैं ॥ और सोलांवर्षतें उपरंत विवाहना भी होवें तदभी संपूर्ण अशौचहै ॥ तैसे शंखजी कहतेहैं। अनूढेति ॥ जद सोलां वर्षते उपरंत विवाह ना भी होवे अर्थात् कारा शूद्र मृत होजाये तद एक मासतें उपरंत तिसके संबंधि शुद्धि कोंप्राप्तहोतेहैं। इसमें कारण नहि विचारणा ॥ यह गुण वाले शूद्रमें जानना और निर्गुण में तीन वर्षतें उपरंत पंच ५ दिन और छे वर्षते उपरंत विवाह के नाभी होयां २ बारा दिन ॥ और तिसते उपरंत संपूर्ण अशौच होताहै। यह कई कथन करतेहैं ॥ और कुइ

अहस्तुदत्तकन्यासुबालेपुचविशोधनमिति अत्रदेशाचारएवव्यवस्थापकः। शूद्रस्योपनयनस्थानीयविवाहात्पूर्वंत्रिरात्रम् अत्रविवाहकालःषोडशाब्द परइत्यपरार्कःषोडशाब्दोत्तरं विवाहाभावेपिपूर्णाशौचम् ॥ तथाचशंखः ॥ अनूढभार्यः शूद्रस्तुषोडशाद्वत्सरात्परम् मृत्युंसमधिगच्छेच्चेन्मासात्तस्यापिबांधवाः ॥ शुद्धिंसमधिगच्छंतिनात्रकार्य्याविचारणेति ॥ इदंसगुणशूद्रपरम् निर्गुणशूद्रे त्र्यब्दोर्ध्वंपंचाहःषडब्दोर्ध्वंविवाहाभावेद्वादशाहस्ततऊर्ध्वं पूर्णाशौचमितिकेचित्। वाग्दानोत्तरंविवाहात्प्राक्कन्यामृतौपितृकुलेभर्तृकुले चसप्तपुरुषावधित्रिरात्रमितिमरीचिः॥अवारिपूर्वंप्रत्तातुयानैवप्रतिपादिता असंस्कृतातुसाज्ञेयात्रिरात्रमुभयोः स्मृतामितिशुद्धितत्वेशंखः ॥ पितृवेश्मनियानारीरजःपश्यत्यसंस्कृतातस्यांमृतायांनाशौचंकदाचिदपिशाम्यति १ ॥ यावज्जीवमशौचमित्यर्थः ॥

माईते उपरंत विवाहतें पूर्व कन्याके मृतमें पिताके कुलमें और भर्ताके कुलमें सप्त पीढी तक तीन रात्र अशौच होताहै॥ यहमरीचिजी कथनकरतेहे ॥ अवेति। जो कन्या वाणी करके दिती है और अछी तरा जिसका संबंधनहि कीया अर्थात् विवाह नहि होया ॥ सोकन्या असंस्कृता कहिदीहै ॥ और तिसके मृतहोयां २ पितृकुलको और भर्तृकुलको तीनरात्र अशौचकथनकीया है यह शुद्धि तत्त्वग्रंथमें शंखजीने कथनकीयाहै ॥ पितृ इति ॥ पिताके घरमेजो कारीकन्या ऋतुको देखे अर्थात् कारी कन्या कोपिताके घरमें ऋतु आवेतो तिसकन्याके मृत होयांहोयां पिताका अशौच कदे भी दूर नहि होता अर्थात् जीवन पर्यंत अशौच रहताहै ॥ १ ॥

स्त्री और शूद्रको विवाहतें उपरंत संपूर्ण जातीका अशौचहोताहै॥स्त्रीयोंकी विवाह विधी उपनयन होताहै अर्थात् स्त्रीका विवाह यज्ञोपवीतके स्थानहै ॥ इस वचनतें औरभी कहतेहैं स्त्रीऔर शूद्रतुल्य धर्मवाले होतेहैं इसवचन तेंभी जानना ॥ विवाही होई स्त्रीका अशौचभर्ताकेकुलविषेहिं होताहै॥ विवाहिता स्त्रीका अशौच भर्ताकोहि होताहै।इस वचनतें विष्णुजी कथनकरतेहैं॥समिति विवाहिता स्त्रीयोंका अशौच पिताके कुलमें नहिं होता॥विवाहिता स्त्री पिताके गृहमें प्रसूत होवे और मृतहोवे तदएकरात्र और तीनरात्र अशौचहोताहै अर्थात् प्रसूत होवे तो एकरात्र औरमृत होवेतो तीनरात्र अशौच होताहैं ॥ यहीविज्ञानेश्वरजीका वा

स्त्रीशूद्रयोस्तुविवाहोर्ध्वं जात्याशौचम् वैवाहिकोविधिः स्त्रीणामौपनायनिकः स्मृतइत्युक्तेःस्त्रीशूद्राश्चसधर्माण इतिवचनाच्च ॥तदशौचंभर्तृकुलएव दत्तानांभर्तुरेवहीतिवचनात्॥विष्णुः संस्कृतासुस्त्रीपुनाशौचंपितृपक्षेतत्प्रसवमरणेचेत्पितृगृहेस्यातां तदैकरात्रं त्रिरात्रंचेति ॥ प्रसवेएकरात्रंमरणेत्रिरात्रमितिविज्ञानेश्वरः॥ प्रसवेपिपित्रोस्त्रिरात्रंभ्रातृवर्गस्यत्वेकरात्रमितिमाधवः तथाचब्राह्म्यम् दत्तानारीपितुर्गेहेसूयेताथम्रियेतवातद्बंधुवर्गस्त्वेकेनशुचिस्तज्जनकस्त्रिभिरिति॥कल्पतरुस्तु॥दत्तानारीपितुर्गेहेप्रधानेसूयते यदाम्रियतवातदातस्याः पिताशुद्ध्येत्रिभिर्दिनैरिति प्रधानगृहपरत्वेनाह गृहांतरेत्वेकरात्रमित्यर्थासिद्धम् ॥

धवहै ॥ पितृगृहमें प्रसूत होवे तदमाता पिताको तीन ३ रात्र औरभाईयोंके आद जो हैं तिनको एकरात्र अशौच होताहै यह माधवजीकथनकरतेहैं॥और यही वार्त्ता ब्राह्म्यपुराणमें कहीहै दत्तेति विवाही होई स्त्रीपिताके गृहमें प्रसूत अथवा मृत होवे तो तिसकन्याके भ्रातादि संबंधी एक दिन करके और तिसका पिता तीन दिन करके शुद्धहोताहैं ॥ कल्पतरुमें और कहाहै दत्तेति ॥ किविवाहिता स्त्रीपिताके निवास गृहमें प्रसूत होवे अथवा मृत होवे तद तिसका पिता तीन दिन करके शुद्धिको प्राप्त होताहै और जेकर और गृहमें प्रसूत और मृत होवे तद एकरात्र अशौचहोताहै यह अर्थ करके सिद्ध होताहै ॥

कुछ और कहतेहैं ॥ पतीति पतिकेघरमें प्रसूताहोवे तदपित्रादिकों अशौच नहिहोता ॥ अर प ति गृहमें मृत होवे तद तीन ३ रात्र अशौच होताहै ॥ प्रत्तेति ॥ जिनका वाग्दानकीयाहै अथ वा नहि कीया और विवाहिता अथवा नाविवाहिता स्त्रीयोंके मृत होयां २ माता पिताको ती न रात्र अशौचहोताहै औरनोंमें यथाविधि जानना ॥ तिसमेंभी माधवके मतमें और कहाहै ॥ जातेति ॥ कि उत्पन्नहोयेहैं दंत जिसकन्याके तिसके मृत होयां २ तीन रात्र अशौचहोताहै ॥ और नहि उत्पन्न होये दंत जिनके एसी कन्याके मृत होयां २ एक रात्र अशौचहोताहै ॥ और कहतेहैं सेति नहि कीया चौल कर्म जिसका तिस कन्याके मृत होयां स्नान मात्र करके शुद्धि होतीहै । और कीया चौलकर्म जिसका तिसके मृतहोयां २ एकदिन अशौच होताहै । और नहि कीया वाक दान जिसका सो अदत्ता होतीहै ॥ तिस के मृतमें तीन रात्र करके शुद्धि

किंच पतिगृहेप्रसवेपित्रादीनामशौचाभावः मरणेत्रिरात्रमस्त्येव प्रत्ताप्रत्ता सुयोपित्सुसंस्कृतासंस्कृतासुच मातापित्रोस्त्रिरात्रंस्यादितरेषुयथाविधीति तत्रापिमाधवमेव ॥ जातदंतायांत्रिरात्रमजातदंतायामेकरात्रम् ॥ सद्यस्त्व प्रौढकन्यायांप्रौढायांवासराच्छुचिः अदत्तायांत्रिरात्रेणदत्तायांपक्षिणीभवेदि तिपुलस्त्यस्मृतेः॥ अयमर्थः अप्रौढाकन्या अकृतचौलापूर्वोक्तवचनात् प्रौढा ऽदत्ताचेत्तदातन्मृतौत्रिरात्रंदत्ताचेत्पक्षिणीदत्तानांभर्त्तुरेवहीतिवचनात् ॥ प डशीतिमतंतुपितृगेहादतोऽन्यत्र यदि पुत्री प्रमीयते पक्षिणीतत्रपित्रोः स्यान्नान्येषामितिनिश्चयः। भगिन्यांमृतायांभ्रातुःपक्षिणीतिबृहस्पतिः श्व शुरयोर्भगिन्यांचमातुलान्यांचमातुलेपित्रोःस्वसरितद्वच्चपक्षिणींक्षपयेन्नि शामिति । पित्रोःस्वसरिपितृभगिन्यांमातृभगिन्यांचमृतायामित्यर्थः ॥

होतीहै । और वाग्दान जिसका होगया सो दत्ता होतीहै ॥तिसके मृतमें एक रात्र अशौचहो ताहै ॥ यह पुलस्त्य स्मृतिमें जानना ॥ इसका यह अर्थहै । के प्रौढा और अदत्ता जो कन्या है तिसके मृतमें तीनरात्र ॥ जेकर अदत्ता मृतहो तो एक रात्र अशौचहै क्योंकि दत्ता स्त्रीयों का अशौच भर्ताकोहोताहै ॥ इस वचनतें ॥ षडशीति मतमे और कहाहै ॥ पितृइति ॥ पिताके घरतें और किसि घरमें जद कन्या मृत होवे तद माता पिताको एकरात्र अशौचहोताहै॥ और औरोंको नहिहोताहै ॥ यहनिश्चयहै ॥ भयणके मृतमें भ्राताको एकरात्र अशौचहोताहै ॥ अबबृ हस्पति जी कहतेहैं ॥ श्वेति ॥ सस्स और सौहरा भैण मामी मामा और पिताकि भैण और माताकी भैण इनके मृत होयां एक रात्र अशौच होताहै ॥ इति ॥

माता और पिताके मृतमें स्त्रीयोंको तीनरात्र अशौच होताहै ॥ पित्रोरिति ॥ माता पिताकेमृत होयां२ विवाहिता स्त्रीयोंकी शुद्धि किसप्रकार होवे ॥ उत्तर ॥ तीनरात्रकर्के शुद्धि होतीहैं यहभगवान् यम कथन करतेहैं ॥ १ ॥ और भ्राताके घरमें भगिनी अथवा भगिनीके घरमें भ्राता मृत होवे तद तीन रात्र अशौच होताहै ॥ जेकर घरमें मृत ही नहि होवे तद एक रात्र अशौचहोताहै ॥ परेति ॥ अर्धश्लोकका पूर्वलाहि अर्थहै ॥ जितनापुरुषको मामेका अशौचहै तितनाहि कन्याको समीप होयां २ अपने चाचेका अशौचहै इसब्राह्मवचनतें । वर्ण शंकरकेविषे व्राह्म्यका वचनहे॥शौचेति ॥शुद्धि और अशौचवर्ण शंकरशूद्रकी न्याई करन अर्थात् जैसे शूद्र शुद्धि और अशौच को करण तैसे वर्ण शंकर शुद्धि और अशौच करें ॥ दत्तेति ॥ किसेकर्के दित्ता होया और मुल्ल लिया होया और बनाया होया इत्यादि पुत्रके मृतहोयां २ पहले पिताको और पिछले पिताको तीनरात्र अशौच होताहै ॥ और उत्तम वर्णकीयों स्त्रीयोंके

पित्रोर्मृतौस्त्रीणांत्रिरात्रमाशौचम् पित्रोरुपरमेस्त्रीणामूढानांतुकथंभवेत् त्रिरात्रेणैवशुद्धिः स्यादित्याह भगवान्यमः॥१॥ भ्रातुर्भगिनीगृहे अस्यावा भ्रातृगृहेमृतौत्रिरात्रमन्यत्रपक्षिणी ॥ परस्परंमृतौभ्रातृ भगिन्योः पक्षिणीभवेत् मातुलाशौचवत्पुत्र्याः पितृव्याशौचमिष्यत इतिब्राह्मात्॥वर्णसंकरविषये॥ब्राह्म्यम्॥शौचाशौचेप्रकुर्वीरन्शूद्रवद्वर्णसंकराइतिवर्णसंकराः पुत्रादुहितरोवा दत्तक्रीतकृत्रिमादिपुत्रपुत्रहीनवर्णगासुस्त्रीपुंसपिंडत्वेपिप्रसवमरणेचपूर्वापरपित्रोर्भर्तुश्चत्रिरात्रमेवनदशाहाद्यशौचम्॥तथाचविष्णुः अनौरसेपुपुत्रेपुजातपुचमृतपुच परपूर्वासुभार्य्यासुप्रसूतासुमृतासुचेति।त्रिरात्रानुवृत्तावाह ॥ अत्रसपिंडानामेकाहमाह । हारीतः ॥ परपूर्वासुभार्य्यासुपुत्रेपुकृतकेपुच भर्तृपित्रोस्त्रिरात्रंस्यादेकाहस्तुसपिंडतइति १

प्रसूत होयां २ अथवा मृत होयां २ पहले और पिछले भर्त्ताको तीनरात्राहिं अशौच होताहै ॥ और दश दिनादि नहिं होना ॥ तैसे विष्णुजी कहतेहैं ॥ अनौरस पुत्रोंके उत्पन्न होयां २ अथवा मृत होयां २ पिताको तीनरात्र अशौचहै ॥ धर्म पत्नीतें रहित जो स्त्री तिसमें जो उत्पन्न होवे सो अनौरस होताहै ॥ और दुहाल स्त्रीयोंके मृतमें और प्रसूत में पहले और पिछले पतिको तीनरात्र अशौच होताहै॥और सपिंडीयों को एक दिन होताहै ॥ इसीमें हारीत जी कहतेहैं ॥ परेति ॥ दुलाहस्त्रीयों के मृत और प्रसूत में पतिको तीनरात्र अशौच होताहै और सपिंडीयोंको एक दिन अशौचहै ॥ और कृत्रिम पुत्रोंकेमृत और उत्पन्न होयां पिताको तीनरात्र अशौचहै और सपिंडीयोंको एक दिन अशौच होताहैं ॥ इसमें कृत्रिमादियोंकी उत्पत्ति तिनके जन्मते पहलें कृत्रिमादि संकेतके होयां जाणणी और प्रकारसे नहिहै ॥ १ ॥

अब शंख और लिखित कथन करते हैं॥ परेति दुहाल स्त्री और कृत्रिम पुत्र इनके मृति और प्रसूति उत्पन्नमें अनध्याय और अशौच और तिलांजली यह पति और पिता ना करण १ ॥ यह अर्थ असवर्ण और हीन वर्णकीयां स्त्रीयांमें जानना ॥ परंतु यह निकटतामें है और दूरमें याज्ञवल्क्य जी कहतेहैं ॥ कि अनौवीति ॥ अनौरसपुत्र और दुहाल स्त्रीयोंके मृतमें एक दिन अशौच कहते भये जहां पिताकोएकदिन अशौच है तहांसपिंडीयोंको स्नानमात्र अशौचहै अन्येति ॥ अर्ध श्लोक का वोहि अर्थ है ॥ और सगोत्री स्नान करके शुद्ध होतेहैं पति और पिताको तीन रात्र अशौच होताहै १ दत्तादि पुत्रोंको पिताके मरणे में तीन रात्र अशौच कहा है ब्राहम्यमें सूतेति सूतकमें और मरण में तीनदिन अशौचके भागी होतेहैं इस वचनतें ॥ ॐ ॥

परपूर्वापुनर्भूः॥शंखलिखितौ परपूर्वासुभार्यासुपुत्रेषुकृतकेषुच नानध्यायो भवेत्तस्यनाशौचंनोदकाक्रिया १ इदमसवर्णाहीनवर्णभार्याविषयम् एतच्च सन्निधावसंनिधौतुयाज्ञवल्क्यः अनौरसेषुपुत्रेषुभार्यास्वन्यगतासुचेत्ये काहानुवृत्तावाह यत्रपितुरेकाहस्तत्रसपिंडानांस्नानमन्यत्रअन्याश्रितेषुदारेषुप रपत्नीसुतेषुच गोत्रिणः स्नानशुद्धाःस्युस्त्रिरात्रेणैवतात्पितेति १ पितेतिवोढु रप्युपलक्षकः दत्तकादीनांपितृमरणेत्रिरात्रमुक्तंब्राह्मे सूतकेमृतकेचैवत्र्यहा शौचस्यभागिन इतिवचनात् ॥ अथानुपनीतविषयेकिंचिदुच्यते मनुः ॥ नात्रिवर्षस्यकर्त्तव्याबांधवैरुदकक्रिया जातदंतस्यवाकुर्य्युर्नाम्निवापिकृतेस तीति॥ अत्रोदकक्रियाकरणेऽकरणेचानुज्ञानादाद्येप्रेतोपकारोद्वितीये प्रत्य वायाभाव इतिवोध्यम्॥इदमपिजातदंतकृतनाम्नोरवनेतरस्येत्यपिवोध्यम् आत्रिवर्षवर्षत्रयात्प्राक् उदकक्रियासाहचर्य्याद्दाहश्च न कर्त्तव्यः ॥

अवयज्ञोपवीतते रहित जोहैं तिनमें कुछ कहतेहैं ॥ प्रथम मनु जीका वचन है ॥ नेति तीन वर्ष तक वालक के मृत होयां २ संबंधियोंनें उदक क्रिया नहि करणी चाहिये ॥ इसमें पक्षांतर कहतेहै जात दंत वालकके होयां २ अथवानामके कीतयां होयां उदक क्रिया कर लेणी इसमें उदक क्रिया करणी और न करणी यह आज्ञा होई इसमें यह व्यवस्था है कि करणमें प्रेतका उपकार होता है और न करणे में कोई पाप नहि यह जानना ॥ यहभी जातदंत कृत नाम इसमें ही जानना और इतरमें नहि जानना ॥ और उदक क्रियाकी साहचर्यतातें दाह भी नहि करणा ॥

शिश्वादि के विषें विशेष कहाहै । निर्णयसिंधु के विषें देव याज्ञिक निबन्धमें ॥ शिशुरिति ॥ दंत जन्म तक । शिशु । और शिखा स्थापन तक बाल । और मौंजी बंधन तक कौमार यह संज्ञा संपूर्ण शास्त्रोंमें कथन करीदीहै १ आइति ॥ पंचम वर्ष तक कौमार और नौ ९ वर्ष तक पौंगंड इत्यादि करके संज्ञा दिखाईहै ॥ गेति ॥ गर्भ के पातादिमें उदक दानादि क्रिया कोई नहि करणी । और शिशुके मृतमें शिशु के निमित्त दुग्ध देवे और बालक के मृतमें तस्मै और दुग्ध देवे ॥ १ ॥ एकेति एकादशाह और द्वादशाह वृषोत्सर्ग विधिते विना करण ॥ तैसें । यत्रेति ॥ जिस कालमें बालक मृत होवे तिस कालमें सत्कार करके तुल्य आयुः वाल्यों बालकों को कुछ अन्न विधि के साथ देवे ॥ १ ॥ भेति ॥ और तिस कालमें

शिश्वादौविशेषोनिर्णयसिंधौदेवयाज्ञिकनिबन्धे । शिशुरादंतजननाद्बालः स्याद्यावदाशिखम् कथ्यतेसर्वशास्त्रेषुकौमारामौंजिबंधनात्१संधिरार्षःआ शिखंशिखास्थापनंयावत्।आपंचवर्षात्कौमारं पौगंडोनवहायनइत्यादिना संज्ञाःप्रदर्श्य ॥ गर्भेनष्टेक्रियानास्तिदुग्धंदेयंशिशौमृते परंचपायसंक्षीरंद द्याद्बालविपत्तितः ॥ १॥ एकादशद्वादशाहंवृषोत्सर्गविधिंविना तथा यत्रप्र मीयतेबालस्तत्रप्रायःप्रदीयते किंचित्समानवयसांसत्कृत्यान्नंयथाविधि । १ । भक्ष्यंभोज्यंचदातव्यंतथाचसुखभक्षिकाः तद्वस्त्राणिप्रदेयानिसोपान त्कानितत्समे । २ ॥ कुमाराणांचबालानांभोजनंवस्त्रवेष्टनम् यच्चोपजी वनेबालस्तत्तद्विप्रायदीयते ३ ॥ तथा ॥ भूमिनिःक्षेपणंबालेआवर्षद्वयमा शिखम् ततःपरंखगश्रेष्ठदेहदाहोयथाविधि ॥ ४ ॥ अचूडेप्यूर्ध्वंखनननि वृत्त्यर्थमावर्षद्वयामिति । प्रागपिचूडस्यतन्निवृत्त्यर्थमाशिखामिति ॥

भक्ष्य और भोज्य और और भी सुंदर भक्ष्य वस्तु देवे और बालक के वस्त्र सहित उपानत् को देवे अर्थात् पैरों वास्ते जोडा देवे ॥ २ ॥ कुमेति । कुमारों को और बालकों को भोजन और वस्त्र और पगडी और और भी जिस वस्तु करके बालक उपजीवका करे सो ब्राह्मण को देवे ॥ ३ ॥ तैसें । भूमीति ॥ दोवर्ष २ तक शिखा स्थापन तक बालके मृतमें भूमीमें दबादे ॥ तिसतें परे हेगरुड विधि साथ दाह करे इसमे एह अभिप्रायहै कि दो वर्षते पह ले भी चूडा कर्म्म हो जावे तांभी दोवर्ष पर्य्यंत दाह नहिहै और जेकर दोवर्षते अगे चूडत कर्म्म होण वाला होवे तांभी दोवर्षते अगे भूमिनिःक्षेपण करे वा नहि प्रागपीति चूडा कर्म्मों पहले पृथ्वीमे रक्षणेकी प्राप्ति के दूर करणे वास्ते आशिखं एह किहाहै ॥ ४ ॥

याज्ञवल्क्यजी भीकहतेहैं ऊनेति दो२वर्षते पूर्व मृतहोया जो वाल है तिसकोभूमिमें दावदे और उदक क्रियाको नकरे और अंत्य कर्मभी नकरे इसमें यमजीका वाक्यहै ऊनेति धर्म राजकी गाथागायन करदाहुआ और धर्मराजके सूक्तको स्मरण करताहुआ दोवर्षते न्यून मृतहोये वालकको घृतमलके भूमिमें दवादेवे १ और तीनवर्षते उपरंत जोमृतहोयाहै तिसको चुप्पकरके तिलांजालिदेवे तिलांजलि और संस्कार चुप्पकरके करे यह लौगाक्षि वचनतें जानणा असामिति असंस्कृतोंका भूमीमें पिंड देवे और संस्कृतोंका कुशामें पिंडदेवे इसप्रचेतसके वचनतें पिंडदानभी करे॥देवल जीकहतेहैं द्वादेति द्वादशवर्षतें पूर्व पौगंडकेमृतहोयां सपिंडी और एकोद्दिष्टश्राद्ध नकरे इसवाक्यतें उदक दान और प्रेत पिंड दशान्हिक यहकरे प्रेतेति

याज्ञवल्क्योपि ॥ ऊनद्विवर्षंनिखनेन्नकुर्य्यादुदकंततइति उदकमत्रांत्यकर्म्मपरमित्यपरार्कः॥ यमः ॥ ऊनद्विवार्षिकंप्रेतंघृताक्तंनिखनेद्भुवि यमगाथांगायमानोयमसूक्तमनुस्मरन्॥१॥वर्षत्रयोर्ध्वंतूष्णीमेवोदकदानम्।तूष्णीमेवोदकंकुर्य्यात्तूष्णींसंस्कारमेवचेति लौगाक्षिवचसः ॥ असंस्कृतानांभूमौ पिंडंदद्यात्संस्कृतानांकुशेष्विति प्रचेतोवचनात्पिंडदानमपिकार्य्यम्॥देवलः द्वादशाद्वत्सरादर्वाक्पौगंडमरणेसति।सपिण्डीकरणंनस्यान्नैकोद्दिष्टानिकारयेदित्युक्तेरुदकदानंप्रेतापिंडाश्चदशाहूनिकाः कार्य्याः ॥प्रेतपिण्डंवहिर्दद्याद्दर्भमंत्रविवर्जितमितिमरीचिस्मृतेः।द्वादशाद्वत्सरादित्यनुपनीतद्विजानूढशूद्रविषयम्॥ त्र्यहाशौचे पिण्डदानविधिः पारस्करेणोक्तः।प्रथमेदिवसेदेयास्त्रयःपिंडाःसमाहितैः द्वितीयेचतुरोदद्यादस्थिसंचयनंतथा त्रींस्तुदद्यात्तृतीयेहूनिवस्त्रादिक्षालयेत्ततइति ॥

कुशा और मंत्रतें रहित और घरतें वाहर मृतवालके पिंडकोदेवे यह मरीचिस्मृतितें जानणा पांचवर्षंतक कौमार और दशम वर्षतक पौगंड और पंद्रां वर्षतक केशोर औरतिसते उपरंतसत्तर ७० वर्षतक यौवन तिसते उपरंत वृद्धावस्थाहोतीहै(द्वादशाद्वत्सरात्)इसपदकरके यज्ञोपवीततें रहित जोब्राह्मण और विवाहतें रहितजो शूद्र इनके विषे जानना तीनदिनके अशौच मे भी पिंड दान विधिः पारस्करजीने कहाहै प्रथेति प्रथम दिनमें तीन ३ पिंड समाहितोंनें देणे योग्यहैं औरदूसरेदिनमें चारदेवे औरअस्थिसंचय भीकरे औरतीसरेदिनमें तीनपिंड देवे पश्चात् वस्त्रादि को प्रक्षालन करे इति ॥

इस विषें ऐसीव्यवस्थाहै कि (नात्रि वर्षस्य)इत्यादि मनुजीके पूर्वोक्तवचन विषें त्रय वर्ष तक भी अग्नि दान क्या दाह और जल देणा एह होवेतांमृत होएबालकका उपकारहै और जेकर न होवे तां कोई दोष नहि यह श्लोकके पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्धका तात्पर्य्य निकालयाहै कुलूक भट्टजीने तथापि यह विकल्प दो वर्षतें अगे श्रेष्ठ प्रतीत हुंदाहै ॥ क्योंकि दो वर्षतें उरे मृत बालककों यमकी कथा करदा होया पृथवीमें रखे इस यमजीके वाक्यतें ॥और जो गरुड पुरा

अत्रेत्थं व्यवस्थापनम् नात्रिवर्षस्यकर्त्तव्येत्यादिपूर्वोक्तमनुवचने आत्रि वर्षमग्न्युदकक्रियाकरणेमृतबालोपकारस्तदकरणेनकोपिप्रत्यवाय इति पूर्वार्द्धोत्तरार्द्धतात्पर्य्यावगतिर्दर्शितातथापि वर्षद्वयानंतरमेवाग्न्युदकदाना दिविकल्पोयंसाधीयान्प्रतिभाति ऊनद्विवार्षिकंप्रेतमित्यादियमवाक्यात् यत्तु गारुडेवाक्यान्तरं गंगातीरेमृतंबालंतस्यामेवनिपातयेत् अन्यदेशेक्षि पेद्भूमौसप्तविंशतिमासजमित्यपिवर्षद्वयेतीतेअग्न्युदकदानादिक्रियाविक ल्पार्थमानवेनसमानम् ॥ एव मेव भूमिनिःक्षेपणमित्यादि वृषोत्सर्गोपिपं चवर्षोर्ध्वमितिकेचित् ॥

णमें होर वचनहै ॥ गंगेति ॥ कि गंगाके तीरविषें मृत होये बालक को गंगा विषे ही पायदे वे और जेकर होर देश विषें मृत होवे तां २७ सताई महीने तक पृथिवीमें रखे इसमें भी दो वर्ष तें अगे दाहादि का विकल्प मनुजी के वचनके तुल्यहै ॥ इसी तहीं (भूमिनिःक्षेपण) इसमें भी अर्थ है ॥ वृषोत्सर्ग भी पांच वर्ष ते आगे करणा यह केई मुनि कहतेहैं ॥

चूडेति।चूडा कर्मके कीत्या होयां जदवालक मृत होजाये तद सूतकके अंतमें वृषोत्सर्ग करे॥१॥ तिसमें दाह और उदकक्रिया करणी ॥ और सपिंडी कर्मते विना षोडश १६ श्राद्धभी करे इसवचनतें । २ । तैसे और भी कहतेहैं ॥ किजन्मेति ॥ जिस कारणतें जन्मते लेकर पांचवर्ष वालक असंस्कृत अन्नको भक्षण करताहै ।तिस कारणतें मंत्रोंते विना उदकादिक देणा १जेकर पांच वर्षते उपरंत बालक मृत होवे तद ॥ वृषेति ॥ वृषोत्सर्ग और उदक कर्म करणे योग्य है॥२॥इत्यादि श्लोक करके दिवोदासीयमें लिखाहै और कहतेहैं ॥ अत्रेति ॥ यज्ञोपवीतते रहित जेकर बाल मृत होवे तद ब्राह्मण और क्षत्री और वैश्य इनमें सपिंडी कर्मतें विना शूद्रकी

चूडाकर्मणिसंजातिविपत्तिस्तुयदाभवेत् सूतकांतेप्रकर्त्तव्यंवृषस्योत्सर्जनंतथा ॥ १ ॥ तत्रदाहः प्रकर्त्तव्यउदकंतत्रानिश्चितम् श्राद्धानिषोडशापिस्युः सपिंडीकरणंविनेतिवचनात् । २ ॥ तथा ॥ जन्मनःपंचवर्षाणिभुंक्तेदत्तमसंस्कृतम् पंचवर्षाधिकेबालेविपत्तिर्यदिजायते १ । वृषोत्सर्गादिकंकर्मकर्त्तव्यमुदकंतत ! इत्यादिना ॥ दिवोदासीये अत्रव्रतेनिधनंप्राप्तेविप्रादौशूद्रजातिवत् क्रियाःसर्वाःसमुद्दिष्टाःसपिंडीकरणंविना उदकंपिंडदानंचकृतचूडेविधीयत इति एतद्वयोनिमित्तंसर्ववर्णसाधारणम्॥ तुल्यंवयसिसर्वेषामतिक्रांतेतथैवचेति व्याघ्रपादोक्तेः अत्रमूलंचिन्त्यमितिनिर्णयसिंधौ किंच जात्याशौचंद्विजपुंसामुपनयादूर्ध्वप्रवर्त्तते याज्ञ ० त्रिरात्रमाव्रतादेशाद्दशरात्रमतःपरम् क्षत्रस्यद्वादशाहानिविशःपंचदशैवतु त्रिंशद्दिनानिशूद्रस्यतदर्धंन्यायवर्त्तिन इति न्यायवर्त्तिन उचिताचारिणः शूद्रस्यार्द्धंपंचदशाहमाशौचमित्यर्थः

क्रियाकी न्याईं क्रिया करणे योग्यहैं ॥ और कृतचूडमें उदक और पिंडदान करणा ॥ इति ॥ एह आयुषा निमित्त अशौच संपूर्ण वर्णोको तुल्य जानना ॥ १ । वेयुके (तुल्यंवयसि) इत्यादि व्याघ्रजीके वचनते ॥ इसमें मूलविचारणा चाहियें एह निर्णय सिंधुमें लिखाहै ॥ कुछ और कहतेहैं ॥ जेति ॥ जातिका अशौच ब्राह्मणादिको यज्ञोपवीतते उपरंत प्रवृत्त होताहै ॥ याज्ञवल्क्यजीकहतेहैं ॥ उपनयनतक तीनरात्र अशौच होताहै ॥ और उपनयतें उपरंत ब्राह्मणको दश रात्र और क्षत्रीको बारां रात्र और वैश्यको पंदरांरात्र और शूद्रको ३० दिन और जो आचार शूद्रको किहाहै तिसके करण वाला जो शूद्रहै तिसको पंदरां दिन अशौच होताहै

जिस स्थानमें त्रिरात्र अथवा दश रात्र शाव अशौच इच्छा करीदाहै यह दो पक्षहैं तिस स्थानमें दशाह अशौच के विषे तीन रात्र अस्पृश्यताका कारणहै यह अर्थ जानना ॥ औरजिस स्थानमें ब्राह्मण दश दिन कर्के शुद्धहोताहै इत्यादि वाक्य कर्के दश दिन अस्पृश्यता कहीहै तिसस्थानमें एक दिनमे और एक कालमें उत्पन्न होए जो दो अशौचहैं तिनमें जानना क्युंकि मरेति कदाचित् मरण कर्के जद मरण तुल्य होवे अर्थात् एक कालमें जद शावाशौच दो होवें तद सहित संबंधियोंके सपिंडीयों को दश दिन अस्पृश्यताहोतीहै॥इस अंगिराके वचनतें ❀ अथशववाहकादियोंका अर्थात् उठाकर लेजाने वालेका अशौच कथन करतेहैं ॥ प्रथम कूर्म पुराण का वाक्यहै ॥ यदीति ॥ जद लोभ कर्के अर्थात् मजूरी लेकरके शव को दाहके वास्ते

यत्रतु त्रिरात्रंदशरात्रंवाशावमाशौचमिष्यते इति पक्षद्वयंतत्र त्रिरात्रंदशाहेऽस्पृश्यताहेतुरित्यर्थोऽवसेयोनतुविकल्पः॥यत्रतुशुध्येद्विप्रोदशाहेनेत्यादिनादशाहव्यापकमस्पृश्यत्वं तत्रैकदिनोत्पन्ने समानकालिकेऽशौचद्वये सतिबोध्यम्।मरणंयदितुल्यंस्यान्मरणेनकथंचन अस्पृश्यंतुभवेद्गोत्रंसर्वमेवसबांधवमित्यंगिरोवचनात् ❀ अथशववाहकाद्याशौचम्॥ कूर्म्मपुराणे॥ यदिनिर्हरतिप्रेतंप्रलोभाक्रांतमानसः दशाहेनद्विजः शुध्येद्द्वादशाहेनभूमिपः मासार्द्धेनतुवैश्यस्तुशूद्रोमासेनशुद्ध्यति १ प्रेतंमृतंनिर्हरतिवहति ॥ निर्णयसिंधौविशेषः ॥ स्नेहेनसर्ववर्णशवनिर्हारे तदन्नाशने तद्गृहवासेचदशाहः तदन्नानशनेतद्गृहवासेत्र्यहः गृहावासेऽन्नभक्षणेचैकाहः। भृतिग्रहणेन निर्हारे दाहेचजात्याशौचमिति ॥

चुक ले जाये तद ब्राह्मण दश दिन कर्के और क्षत्री द्वादश १२ दिन कर्के और वैश्य पंदरां दिन कर्के और शूद्र एक मास कर्के शुद्धहोताहै ॥ १ ॥ और निर्णयसिंधुमें विशेष कहाहै ॥ कि प्रीति कर्के संपूर्ण वर्णके शवके चुकणेमें और तिसके अन्न भक्षणमें और तिसके घर निवासकरणेमें दश दिन अशौच होताहै॥ और जेकर तिसको चुक लेजाये और तिसके घरमें निवास करे और अन्न न भक्षण करे तद तीन दिन अशौच होताहै॥और जेकर घरमें निवास न होवे और अन्नको भी भक्षण न करे और शवको चुक लेजाये तद एक दिन अशौच होताहै॥और मजूरी ग्रहण कर्के चुकणमें और दाहमें जातिका अशौच होताहै ॥

टी- । यदिनिर्हरतीति । इस पूर्वोक्त कूर्म पुराणके वाक्यतें ॥ और विजातीय शवके निर्हरणमें क्या मुड्देके उठाणेमें शवकी जातीका अशौच होताहै ॥ इसमें मजूरीको ग्रहण करके चुकणमें पूर्वला दूणा होताहै तैसे व्याघ्र पादजी कहतेहैं ॥ अवेति । कि जेकर न्यून वर्णका पुरुष श्रेष्ट वर्णके मुड्देको अथवा श्रेष्ट वर्ण वाला पुरुष हीन वर्णके मुड्देको चुके तद शवकी जातीका अशौच होताहै और जेकर मुल्य ग्रहण करके चुके अथवा दाह करे तद दूणा अशौच होताहै।१। आपदके विषे कूर्म पुराणमें विशेष कहाहै ॥ यइति ॥ जो पुरुष न्यून वर्णके शवको मजूरी ग्रहण करके लेजाय करके दाहकरे तिस पुरुषके शवकी जातिके तुल्य अशौच होताहै ॥ हेराजन्

यदिनिर्हरतीतिपूर्वोक्तकूर्मपुराणवाक्यात् विजातीयशवनिर्हारेशवजातीयमाशौचम् ॥ अत्रभृतिंगृहीत्वानिर्हारेपूर्वोक्तंद्विगुणम्॥तथाचव्याघ्रपादःअवरश्चेद्वरंवर्णंवरोवाप्यवरंयदिवहेच्छवंतदाशौचंद्रव्यार्थेद्विगुणंभवेदिति १ अवरोब्राह्मणादिभ्यःक्षत्रियादिःवरःशूद्रादिभ्योवैश्यादिः। दाहस्याप्युपलक्षकमिदम् आपदिविशेषःकौर्म्मे॥योऽसवर्णंतुमूल्येननीत्वाचैवदहेन्नरः आशौचंतुभवेत्तस्यप्रेतजातिसमंनृपेति सोदकनिर्हारेतुदशाहएवेत्यापदनापत्समम् ॥अत्रापिविशेषमाहशंखः॥कृच्छ्रपादोऽसपिंडस्यप्रेतालंकरणेकृतेअज्ञानादुपवासःस्यादशक्तौस्नानमिष्यतइति अत्रानाथसवर्णप्रेतनिर्हारेदाहेक्रियाकरणेचानंतफलमुक्तंगारुडादौ॥ अनाथप्रेतसंस्कारेकोटियज्ञफलंलभेदित्यादिना स्नानप्राणायामाग्निस्पर्शाएवात्रविधेयाः

और सोदकके चुकणेमें दशदिन अशौच होताहै यहआपदमें और अनापदमेंतुल्यहै और सोदकका अर्थ पीछे कह चुकेहैं इसमें भी शंखजी विशेष कहतेहैं ॥ कृच्छेति ॥ असपिंडी प्रेतके भूषण करणेमें कृच्छ्र व्रतका एक पाद करे और कृच्छ्र व्रत पूर्व प्रकरणोंमें कहाहै ॥ और जेकर अज्ञानतें अलंकार करे तद एक उपवास करणा कहाहै ॥ और जेकर उपवासके करणेकी शक्तिना होवे तद स्नान करके शुद्ध होताहै ॥ और इसमें अनाथ सवर्ण प्रेतके चुकणमें और दाहमें और क्रिया करणेमें अनंत फल कहाहै गारुडादि पुराणमें ॥ अनेति ॥ अनाथ प्रेतके संस्कार करणमें क्रोड यज्ञके फलको प्राप्त होताहै इत्यादि ॥ ऐसे प्रेतको सैस्कारकरके स्नान और प्राणायाम और अग्निका स्पर्श इन करके शुद्ध होताहै ॥

माधवीयमें यमजीने कहाहै॥प्रेतेति॥प्रेतके स्पर्श और संस्कारों करके ब्राह्मण दोषको नहि प्राप्त होता और चुकणे वाला और अग्निके देणे वाला अर्थात् दाह करणे वाला स्नान करके तात्कालशुद्ध होताहै ॥ एह अनाथ प्रेत संस्कारमेंहै ॥ वृद्धात्रिजी कथन करतेहैं ॥ सूतेति— सूतकर्ते क्या जन्म सूतकर्ते दूणा शाव और शावतें द्विगुण आर्त्तव क्या स्त्री की ऋतुनिमित्त अशौच और आर्त्तवतें द्विगुण सूति और सूतितें द्विगुण शव दाह होताहै परंतु यह अनाथप्रेतकी जगा नहि जानना पीछे भी यह श्लोक आयाहै ॥ १ ॥ विष्णुजी कथन करतेहैं॥मृतमिति॥मृत होये ब्राह्मणको शूद्र करके और शूद्रको ब्राह्मण करके चुकवाये नहि इति॥शवके स्पर्शमें हारीतजी कथन करतेहैं ॥ शवेति ॥ जददिनहोवे तद शवको स्पर्श करण वाला

माधवीयेयमः॥ प्रेतसंस्पर्शसंस्कारैर्ब्राह्मणोनैवदुष्यतिवोढा चैवाग्निदाताच सद्यःस्नात्वाविशुद्ध्यतीति ।वृद्धात्रिः। सूतकाद्द्विगुणंशावंशावाद्द्विगुणमार्त्तवम् आर्त्तवाद्द्विगुणासूतिस्ततोपिशवदाहकः ॥१॥ सपिंडेसूतकंजनन्यां सूतिः ॥ शवदाहकोत्रस्वार्थेकः ॥ अनाथप्रेतसंस्कारातिरिक्तविषयमिदम् विष्णुः ॥ मृतंद्विजंनशूद्रेणहारयेन्नशूद्रंद्विजेनेति।शवस्पर्शेहारीतः।शवस्पृष्टोग्रामंनप्रविशेत्पुरानक्षत्रदर्शनाद्रात्रौचेदादित्यस्येति ॥ सपिंडनिर्हरणे सपिंडानांनदोष इत्याहदेवलः ॥ विहितंहिसपिंडानांप्रेतनिर्हरणादिकम् तथांकरोतियःकश्चित्तस्याधिक्यंनविद्यतइति॥ समोत्कृष्टवर्णनिर्हारेप्रायश्चित्तंकएवोक्तं। माधवीये ॥ अनुगम्यशवंबुद्ध्यास्नात्वास्पृष्ट्वाहुताशनम् ॥सर्पिःप्राश्यपुनःस्नात्वाप्राणायामैर्विशुद्ध्यति हीनवर्णानुगमनेक्रमेणशुद्धिमाहविज्ञानेश्वरः

पुरुष नक्षत्रदर्शनतें पहले ग्राम प्रवेश ना करे जेकर रात्रि होवे तद सूर्यका दर्शन करके प्रवेश करे इति ॥ सपिंड प्रेतके निर्हरणमें सपिंडीयोंको दोषनहि यह देवलजी कथन करतेहैं॥विहीति सपिंडीयोंको सपिंडी प्रेतका निर्हरणादि विधान कीयाहै॥सपिंडीयोंके मध्यमें जो पुरुष सपिंडीप्रेतका निर्हरणादि करताहै तिसको सपिंडीयोंते अधिक कुछ करणा उचित नहिंहै॥और सम और उत्तम वर्णके निर्हरणमें प्रायश्चित्त करणा कहाहै॥कएवजीने माधवीयमें क्यामाधवजीके वना ए होए ग्रंथमें ॥ अइति ॥ ज्ञानते शवके पीछेजा करके और स्नान करके और अग्निको स्पर्श करके और घृतको भक्षण करके फेर स्नान करके प्राणयामोंको करके शुद्ध होताहै ॥हीनवर्णके शवके पीछे गमन करणेमें क्रम करके विज्ञाने श्वरजी शुद्धिको कहतेहैं ॥ १ ॥

व्रेति ॥ ब्राह्मणको क्षत्रिय शवके पीछे गमनमें एक दिन अशौच और वैश्य शवके पीछेगमनमें दोदिन और एकरात्र और शूद्र शवके पीछे गमनमें तीनरात्र अशौच होताहै ॥ और क्षत्रीको वैश्यशवके पीछे गमनमें एकदिन और शूद्रके पीछे गमनमें दोदिन और एकरात्र अशौच होताहै। और वैश्यको शूद्रके पीछेजानेमे एक दिन अशौच होताहै स्नान और अग्नि स्पर्श और घृतभक्ष एह सवशवके पीछे जानेमें करणाचाहिये एहमाधवजीका कथनहै ॥ और वृद्ध मनुनें विशेष कहाहै ॥ दहेति ॥ हेभार्गव अन्यप्रेतका दाह और मुंडननकरे और माता पिता इनदोनोंकादाह और मुंडन सर्वदा काल करवाये ॥ १ ॥ और संततीतिरहित ज्येष्ट भ्राता और मामा इनका भीदाह और मुंडनकरे ॥ २ ॥ और मनुजीनेभी हीनवर्णके उदकादि क्रियाकरण में निषेध कहाहै अर्थात् हीनवर्णकी दाहादि क्रिया नहि करणी। व्रात्येति संस्कारतें रहित जोपुरुष

ब्राह्मणेनक्षत्रियशवानुगतावहश्राशौचम् वैश्येपक्षिणी शूद्रेत्रिरात्रम् ॥ क्षत्रियस्यवैश्येहः। शूद्रेपक्षिणी। वैश्यस्यशूद्रेऽहरिति स्नानाग्निस्पर्शघृताशनानिसर्वत्रेतिमाधवः॥ वृद्धमनौविशेषः ॥ दहनंवपनंचैवप्रेतस्यान्यस्यभार्गव नकुर्य्यादुभयंमातुः कुर्य्यादेवपितुः सदा १ ॥ ज्येष्ठस्यवानपत्यस्य मातुलस्यासुतस्यच २ मनुनापिहीनवर्णौर्ध्वदैहिकानिषिद्धम्॥ व्रात्यानां याजनंकृत्वापरेषामंत्यकर्मच अभिचारमहीनंचत्रिभिः कृच्छ्रैर्व्यपोहति १ त्रिभिः कृच्छ्रैःपापं व्यपोहतिशुद्धोभवतीत्यर्थः ॥ अथ समोत्तमवर्णयोरोदनेश्राशौचंब्राह्म्ये॥ अस्थिसंचयनेविप्रोरोतिचेत्क्षत्रवैश्ययोः तदास्नानंसचैलंतुद्वितीयेहनिशुद्ध्यति ॥ १ ॥ कृतेतुसंचयेविप्रः स्नानेनैवशुचिर्भवेत् ॥

हैं तिनको यज्ञ करवाके माता पिता और गुरुइत्यादितें भिन्न पुरुषोंके दाहादि कर्मको करके और अभिचार कर्मको करके अर्थात् जादू को करके सो अभिचार कर्म छे प्रकारका हैं यथा मारण १ मोहन २ स्तंभन ३ विद्वेषण ४ उच्चाटन ५ और वशीकरण ६ इति एह सवउपपातकपापके भेदहैं और अहीन यज्ञकोकरके अहीन पदका अर्थ उपपातकप्रकरणमें कीयाहै अथवा अहीन शब्द अभिचारका विशेषण जानणा ॥ तीनकृच्छ्रकर्के शुद्धहोताहै १ इनको कर्के अवसमान और उत्तम वर्णके मृत होयां २ रोदनकरणमें अशौच कहाहै ब्राह्म्यमें अइति क्षत्री और वैश्यके अस्थिसंचयनके विषे जद ब्राह्मण रोदनकरे तद समेतवस्त्रोंके स्नानकरे और दूसरेदिनमे शुद्धहोताहै ॥ १ ॥ कृतइति और अस्थिसंचयतें उपरंत जेकर ब्राह्मण रोदनकरे तदं

इसमें कमलाकर ग्रंथकार कहताहै ॥ इसीतरां क्षत्रीको वैश्यके अस्थिसंचयनमें जानना और शूद्रके अस्थिसंचयनतें पूर्वरोदनकरणेमें ब्राह्मणको तीनरात्र । क्षत्री और वैश्यको दोरात्रअशौच होताहै ॥ और शूद्रकेअस्थिसंचयनते उपरंत रोदनमें ब्राह्मणक्षत्री वैश्यको एकदिनअशौचहोता है और शूद्रको शूद्रके अस्थिसंचयनतें पूर्व रोदन और स्पर्शतें विना सूर्य्यास्त पर्यंत अशौच होताहै ॥ यह ऐसा ज्योतिःपदका अर्थहै ऐसास्थापनकर्ताभया और सज्योतिऔर पक्षिणीका अर्थ अगे मूलमे आवेगा ॥ अब आचार्य्यादिके मृतमें अशौच कथनकरतेहैं ॥ द्वादेति ॥ महा गुरुओं के मृत होयां २ दान और अध्ययनको द्वादश १२ दिनत्यागे दान और अध्ययनते विना और कर्मों को करे ॥ यह आश्वलायन जीका वाक्य वेदाध्यापकादि परहै ॥ अब महागुरुओंको कथन करतेहैं विष्णुजी । त्रेति पुरुष के तीन महागुरु होतेहैं सोकौनहैंएक माता दूसरा पिता और तीसरा आचार्य्य ॥ इति ॥ और स्त्रीकागुरु पति होताहै और माता पिता नहि

अत्रकमलाकरः॥ क्षत्रस्यवैश्येप्येवं शूद्रेतुसंचयात्प्राक्विप्रस्यत्रिरात्रंक्षत्रवैश्ययोर्द्विरात्रम्॥ ऊर्ध्वंतुद्विजानामेकाहःशूद्रस्यशूद्रेस्पर्शेविनासंचयात्पूर्वमेकाहःऊर्ध्वंसज्योतिरितिव्यवस्थापयामास ॥ समानंज्योतिरस्येत्यर्थात्सूर्य्यास्तपर्य्यंतंसूतकमित्यर्थः अहःपदमहोरात्रपरम् ॥ अथाचार्य्याद्याशौचम् द्वादशरात्रंमहागुरुषुदानाध्ययनेवर्ज्जयन्निति अत्रोक्तेतरकर्म्मस्वधिकारएवइदंचाश्वलायनीयंवेदाध्यापकादिपरम् ॥ तानाहविष्णुः त्रयःपुरुषस्यातिगुरवोभवंतिमातापिताचार्य्यश्चेतिस्त्रियास्तुपतिरेवनपितरौ ॥ अत्रशातातपः॥ पतिरेकोगुरुःस्त्रीणांसर्वस्याभ्यागतोगुरुरिति ॥ त्रिंशच्छ्लोक्याम् प्रेतेष्वाचार्य्यमातामहदुहितृसुतश्रोत्रियर्त्विक्स्वयाज्य स्वस्त्रीयेषुत्रिरात्रंत्रिदिवसमशुचिःसोदकस्तूभयत्र पक्षिण्याशौचमृत्विग्दुहितृसुतसहाध्यायिवंधुत्रयांतेवासिश्वश्रूसुमित्रश्वशुरभगिनिकाभागिनेयप्रयाणे ॥ १ ॥ मातामह्यांचपित्रोःस्वसरिचविरतेमातुलेमातुलान्यां चाथोसज्योतिरेवस्वविषयनृपतौग्रामनाथेचनष्टे

गुरु होते । इसमें शातातप जी कथन करतेहैं ॥ पति एकही स्त्रियोंका गुरु होताहै और अभ्यागत सभनोंका गुरु होताहै ॥ अब त्रिंशच्छ्लोकीका वाक्य कथन करतेहैं ॥ प्रेतइति ॥ गुरु और नाना और दौहित्र और पंडित और पुरोहित और यजमान और भनेया इनके मृत होयां तीन रात्र अशौच होताहै और सोदकका दो रात्र और एक दिन अशौच होताहै (उभयत्र) इसका अर्थ आगे आवेगा ॥ पुरोहित और दोहत्तरा और साध्यायी अर्थात् साथ पठन वाला और वंधु त्रय और विद्यार्थी और ससु और सुंदर मित्र और सोहरा और और भानजा ॥ १ ॥ और नानी और पिताकी भागिनी और माताकी भगिनी और मामा और मामी इनके मृत होयां २ एक रात्र अशौच होताहै ॥ और अपने देशका राजा और मुकद्दम के मृतहोयां २ संध्या काल तक अशौच होताहै ॥ इनका स्पष्ट आगे होणाहै ॥

शिष्येति । शिष्य और उपाध्याय और बंधु त्रय और गुरुका पुत्र और गुरुकी स्त्री और सगोत्र और सहित अगके वेदको अध्ययन करण वाला और पंडित इनके मृत होयां २ भी संध्या कालतक अशौच होताहै ॥ और अपने गृहतें परके गृहमें मामेके मृतहोयां और साथ जो ब्रह्मचारी इनके मृतहोयां २ एक रात्र अशौच होताहै ॥ २ ॥ और थोडे संवंध कर्के युक्त जो पुरुषहै क्या लैणेदेणेकाजो प्रतिदिन व्यवहारहै इत्यादि जो संवंधहै तिसके मृत होयां २ सहित वस्त्रोंके स्नान करणे कर्के शुद्ध होताहै यह संपूर्ण सब वर्णोंमें तुल्य जानना ॥ इसीका स्पष्ट अर्थहै ॥ कि उपनीत दौहित्र के मरण में तीन रात्र और अनुपनीतके मरणमें एकरात्र अशौच होताहै उपनीत यज्ञोंपवीत वाले का नामहै ॥ इसीप्रकार कर्ममें प्रवृत्त जो ऋत्विक्है तिसके मृतमें

शिष्योपाध्यायवंधुत्रयगुरुतनयाचार्य्यभार्य्यासगोत्रानूचानश्रोत्रियेषुस्वगृहपरमृतौमातुलेचैकरात्रम् २ रात्रिंसब्रह्मचारिण्यथतुकथमपिस्वल्पसंवंधयुक्ते स्नानंवासोयुतंस्यादिदमपिसकलंसर्ववर्णेषुतुल्यम् ॥ अत्रोपनीतदौहित्रमरणेत्रिरात्रमनुपनीतमृतौपाक्षिणिएवमृत्विकूशब्दस्यादिरुपादानात्कर्मणिप्रवृत्तेऋत्विजिमृतेत्रिरात्रंततोनिवृत्तेपक्षिणिदूरस्थे त्वेकाह इत्यपि प्रतिभाति अत्रोभयत्रपदोपादानाद्यस्मिन्मृतेयावद्यस्याशौचमुक्तंतस्यापि मरणेतावदस्मिन्नाशौचम्। यथा मातामहमरणेदौहित्रस्यत्रिरात्रंतथादौहित्रमरणेमातामहस्यापित्रिरात्रमित्यर्थोवोध्यः ॥ वंधुवर्गेविशेषोवक्ष्यते किंचात्रसर्वत्रदूरस्थसमीपस्थयो रुपनीतानुपनीतयोर्वा उपकारकानुपकारकयोश्चत्रिरात्रपक्षिण्यौज्ञातव्ये सोदकउक्तलक्षणः त्रिदिवसमशुचिः रात्रिद्वयसहितंदिवसमित्यर्थः अन्यथात्रिरात्रेणसमानतास्यात् ॥

मजमानको तीन रात्र ॥ और कर्ममें प्रवृत्त जो नहि है तिसके मृतमें एक रात्र ॥ और विदेशस्थितमें एक दिन एभी जाणीदाहै॥और(उभयत्र) क्या कि जिसके मृत होयां २ जितना अशौच जिसको कहाहै तिसके मृतमें तिसको भी तितना अशौच कहाहै ॥ जैसें नानेके मृत होयां दौहित्रे को तीनरात्रहै ॥ तेसे दोहित्रे के मरणमें भी नानेको तीन रात्र अशौच होताहै ॥ यह अर्थ जानना ॥ अव संवंधी समूहमें विशेष कहतेहै ॥ इसमें सवनोंमें समीपस्थ और उपनीत और उपकारक इनमे तीनरात्र और दूरस्थ और अनुपनीत और अनुपकारक इनमें एक रात्र जानना ॥ और सोदक का पूर्व लक्षण कराहै ॥ (त्रिदिवसमशुचिः) इसका अर्थ कहतेहैं । कि दोरात्रिकें साथ १ एक दिन है ऐसा न कहिये तां त्रिरात्र काहि अर्थ आवेगा ॥

विष्णुजी कथन करतेहैं असेति जद असपिंडी अपने घरमें मृतहोवे तद एकरात्र अशौच होताहै (अत्रांतःशवेच) इस आपस्तंवके सूत्रका हरदत्तने एहव्याख्यान कीयाहै कि जदग्रामके मध्यमें शवास्थित होवे और सौ १०० धनुष प्रमाणतें उरे होवे तद जब तक निकालया नहि तब तक अन्न नहि भक्षणकरणा ॥ और जेकर घर साथ घर न मिलयाहोया होवे तद दीप और जलका कुंभमध्यमें स्थापनकरके अन्नभक्षण करलेवे ॥ और सूतिमें भी इसी प्रकार जानना ॥ इति ॥ और गृहकेमध्यमें शव स्थित होवे तद एक रात्र अशौच होताहै ॥ एह अर्थ युक्तहै क्युंकि पूर्वोक्तविष्णुजीकेवचनके अनुरोध होनेतें ॥ अर हरदत्तका व्याख्यान और किसे वचन का विषयहै एहप्रतीत होताहै ॥ और निवासगृहमें किसीके मृत होयां २ तीन रात्र अशौच

विष्णुः ॥ असपिंडेस्ववेश्मनिमृतेएकरात्रम् ॥ अत्रांतःशवेचेत्यापस्तंवसूत्रं हरदत्तेन ग्राममध्यास्थितेशवेधनुःशतादर्वाङ्नभोक्तव्यंयदिसमानकाष्ठंगृहंनास्ति तदादीपमुदकुंभचोपनिधायतुभुंजीत सूत्यामप्येवमितिव्याख्यातम् । अतःशवेगृहाभ्यंतरस्थितेशवेएकरात्रमितितुयुक्तोर्थःवैष्णावानुरोधित्वात् हरदत्तव्याख्यानंतुवचनान्तरविषयंप्रतिभाति ॥ प्रधानगृहमृतौत्रिरात्रमुक्तमंगिरसा ॥ गृहेयस्यमृतःकश्चिदसपिंडःकथंचन तस्याप्यशौचं विज्ञेयंत्रिरात्रंनात्रसंशयइति ॥ कूर्म्मेपि । त्रिरात्रमसपिंडेपुस्वगृहेसंस्थिते पुचेति ॥ मृतद्विजपरमिदम् । अन्यत्रशुद्धितत्त्वेमनुः ॥ श्वशूद्रपतिताश्चांत्या मृताश्चेद्द्विजमंदिरे अशौचंतत्रवक्ष्यामिमनुनाभाषितंयथा १ दशरात्राच्छुनिमृतेमासाच्छूद्रेभवेच्छुचिः ॥ द्वाभ्यांतुपतितेगेहमंत्येमासचतुष्टयात् अत्यंत्येवर्जयेद्गेहमित्येवंमनुरब्रवीत् २ ॥

कहाहै अंगिराजीने ॥ गृहइति ॥ जिसके घरमें कोई असपिंडी कदे मृतहोजावे तिसका भी अशौच तीनरात्र कथन कीयाहै इसमें संशयनहि करणा १ ॥ और कूर्मपुराणमेंभी लिखाहै ॥ त्रीति अपने घरमें असपिंडीमृतहोजावे तदतीन रात्र अशौच होताहै यहवचन ब्राह्मणादिपर जानना ॥ और औरोमें शुद्धितत्त्वविषे मनुजी कथन करतेहैं ॥ श्वेति ॥ कुत्ता और शूद्र और पतित और म्लेच्छ जदब्राह्मणादिके घरमें मृत होजान तिसमें अशौच कथन करताहां जैसा मनुजीने कहाहै ॥ १ ॥ दशेति कुत्तेके मृत होयां दशरात्रकरके और शूद्रकेमृतहोयां एकमासकर्के और पतितके मृत होयां दोमासकरके और म्लेच्छके मृत होयां चार ४ मास करके गृह शुद्ध होता है १ और चांडाल के मृत होयां गृह को त्यागदेवे यह मनुजी कथन करते भये ॥ २ ॥

अंत्य नाम इसजगा मुसलमान काहै और अत्यंत्य चांडाल जानना॥ अब शव दूषित गृह की शुद्धि संवर्त्तजी कथन करतेहैं ॥ गृहेति ॥ अंतरस्थ शव करके गृहके दूषित होयां २ गृहकी शुद्धि को कथन करताहां ॥ मृतका का पात्र और पके होये अन्न को प्रोन्मृज्य क्या घरतें वाहर करके ॥ १ और गृहको गोहेके साथ लेप करके पश्चात् बकरे को घरकीयां सभ वस्तु सिंघा देवे॥फिर पीछे वेदपाठी ब्राह्मणों करके सुवर्ण और कुशाके जल करके सारे घरको सिंचन करवादेवे तो पश्चात् शुद्ध होताहै ॥ इसमें शंशय नहि करणा ॥ २ ॥ घर में गौ और कुत्तेआदि के मृत होयां २ जितना काल घरमें शव टिकारहे तितनाकाल अशौच होताहै ॥ ३ ॥ ग्रामेति ॥ जिस ग्राम के मध्यमें जितना काल शव स्थित रहेतितना

अंत्योम्लेच्छः यस्तुविरुद्धभाषीगोमांसभक्षकः ॥ अत्यंत्यः श्वपाकइतिसिंधुव्याख्या ॥ शवदूषितगृहशुद्धिमाहसंवर्त्तः ॥गृहशुद्धिंप्रवक्ष्यामिअंतरस्थशवदूषिते प्रोन्मृज्यमृण्मयंभांडंसिद्धमन्नं तथैवच १ ॥ गोमयेनोपलिप्याथ छागेनघ्रापयेत्ततः ब्राह्मणैर्मन्त्रपूतैश्चाहिरण्यकुशवारिभिः ॥ २ सर्वमभ्युक्षयेद्वेश्मततः शुद्ध्यत्यसंशयः ३ ॥ गृहगोश्वादिमृतेयावच्छवनिर्गमनमशौचम्॥ग्राममध्यस्थितोयावच्छवस्तिष्ठतिकस्यचित् ग्रामस्यतावदाशौचंनिर्गतेशुचितामियादितिवृद्धविष्णुवचनस्य तुल्यन्यायत्वात् भगिन्यांसंस्कृतायांतुभ्रातर्यपिचसंस्कृते मित्रजामातरिप्रेतदौहित्रेभगिनीसुतेश्यालकेतत्सुतेचैवसद्यः शौचेनशुध्यतीति वृहन्मानवंदेशांतरमृते आत्राद्योज्ञेयम् समीपस्थेत्वेकाहः स्वगृहेत्रिरात्रम् ॥ श्यालकसुतजामात्राः स्वदेशसंस्थिते ज्ञेयम् ॥ देशांतरेअशौचाभावात् ॥ श्यालकेस्वदेशेमृतेप्येकाहइतिसिंधुः क्रियाकर्तुस्तुसर्वत्रदशाह इतिमनुः ॥

काल ग्राम को अशौच होताहै और जद शव ग्रामतें बाहर जाए तद ग्राम शुद्ध होताहै ॥ इस वृद्धविष्णुके वचन को तुल्य न्याय होनेतें ॥ भेति ॥ विवाही होई भगिनी और उपनीत भ्राता और मित्र जुवाई और दौहित्रा और भनेया और साला और साले का पुत्र इनको देशांतरमें मृत होयां२ स्नान करणे करके शुद्धि होतीहै ॥ एह वृहन्मनुका वाक्यहै ॥ और जेकर समीप मृत होवें तद एक दिन और जेकर अपने घरमें मृत होवे तद तीन रात्र अशौच होताहै और शालेका पुत्र और जुवाई इनके अपने देशमें मृत होयां एह अशौच जानना और एह दोनो जेकर देशांतरमें मृत होयें तद अशौच नहि होताहै यही सिंधुमें कहाहै ॥ और क्रियाके करणे वालेको संपूर्ण स्थानमें दश दिनहि अशौच होताहै ॥

अब गुरुमें विशेष कथन कीयाहै ॥ गुरोरिति ॥ शिष्य मृत होये गुरुमें पिताकी न्याईं बुद्धि रखे अर्थात् पिता कीन्याईं क्रियाकरे ॥ और प्रेतके चुकण वाल्यों के साथ तिसस्थानमें दश दिनकरके शुद्ध होताहै । अर्थात् प्रेतको उठाने वाले जोहैं सोदश दिन करके शुद्धहोतेहै ॥ शिष्य यह पद निर्वेश मृत हुआजो सपिंडीहे तिसकी क्रिया करणे वाले कोभीजनानाहै ॥ इसी कारण तें लिखाहै निरेति ॥ कि संततीतें रहित सपिंडी के मृत होयां २ दया करके युक्त होया २ तिसके अशौच कोआचरण करके पिता के तुल्य क्रिया को करे इति ॥ एह ब्राह्म पुराणते जानना ॥ बंधुत्रय का विभाग निर्णयसिंधुमे कहाहै ॥ बमिति बंधुत्रय पद करके आत्मबंधु त्रय और पितृबंधु त्रय और मातृबंधुत्रय यह नवबंधु ग्रहण करणे ॥ यथा आत्मेति अपने पिताकी भगिनीके पुत्र और अपनी माताकी भगिनी का पुत्र और अपनेमामेके पुत्र यह आत्म बांधव जानने१ पितुरिति॥और पितामह कीभगिनीके पुत्र और पितामही कीभगिनी केपुत्र और पिताके मामेके पुत्र यह पितृबांधव जानने२ मातुरिति और नाने कोभगनी केपुत्र और नानी की भगिनी केपुत्र और माता के मामेके पुत्र यह मातृ बांधव जानने॥३॥और कथन करतेहै॥विवाहित जोपिता कीभगनी आदिक कन्याहैं तिनके मृत होयां तिनके संबंधियोंका समूह एक दिन करके शुद्ध होताहै ॥ इस वचनके बलतें एकादिन अशोच भया ॥ और विवाहितोंके मरणमें स्नान मात्र अशोच होताहै यह निर्णयसिंधुका आशयहै ॥

गुरोः प्रेतस्यशिष्यस्तुपितृमेधंसमाचरेत् प्रेतहारैः समंतत्रदशरात्रेणशुद्ध्यतीति ॥ शिष्यइतिनिर्वेशमृत सपिंडक्रियाकर्तुरप्युपलक्षकम् ॥ निरन्वये सपिंडेतुमृतेसतिदयान्वितः तदाशौचंपुराचीर्त्वाकुर्य्यात्तुपितृवत्क्रिया मितिब्राह्मात् ॥ अत्रनिर्णयसिंधुः ॥ बन्धुत्रयपदेनात्मबंधुत्रयं पितृ बंधुत्रयं मातृबंधुत्रयमिति नवबंधवोग्राह्याः तद्यथा ॥ आत्मपितृस्वसुः पुत्रा आत्ममातृष्वसुःसुताः । पितुर्मातुलपुत्राश्चविज्ञेया आत्मबांधवाः ॥ १ ॥ पितुःपितृष्वसुःपुत्राःपितुर्मातृष्वसुःसुताः पितुर्मातुलपुत्राश्चविज्ञेयाः पितृबांधवाः ॥ २ ॥ मातुःपितृष्वसुपुत्राःमातुर्मातृष्वसुःसुताःमातुर्मातुलपुत्राश्चविज्ञेया मातृबांधवाइति । पितृष्वस्रादिकन्यानांतुविवाहितानांमरणे तद्बंधुवर्गास्त्वेकेनेतिवचनबलादेकाहोऽनूढानांमरणेस्नानमात्रमितिनिर्णयसिंध्वाशयः ॥

वंधुत्रय वाक्यमें पुत्र जोहै कन्याको भी कथन करताहै यह नागोजी भट्ट कहतेहैं ॥ तिनके मतमें पिताकी भगिनी आदिक जो विवाहित कन्याहै तिनके मरणमें दो दिन एक रात्र और अविवाहिताके मरणमें एक दिन अशौच होताहैं इत्यादि । और पिताकी भगिनी आदिक कन्योंने वंधु त्रय के मरणमें स्नान मात्र अशोच करणे योग्यहे ॥ यह सिंधुके आशय करके सिद्ध होताहै ॥ और भट्टके मतमें पुत्र पदकी न्याई तिस वाक्यमें जो आत्म पदहै तिसको भी कन्या परत्वापत्ति करके कन्योंने भी वंधु त्रय का अशौच करणा चाहिये ॥ तिस विषे वहुशिष्टा चारों करकें यह अर्थ त्यक्तहै ॥ यह सिंधुका आशय युक्तहै ॥ अर्थात् वंधु त्रयके मरणमें देवदत्तको और देवदत्तके मरणमें वंधु त्रयको अशौच होताहै॥इसमें यह तत्वहै क्या यथार्थ अर्थहै

नागोजीभट्टास्तुवंधुत्रयवाक्येपुत्रपदंकन्योपलक्षकमित्याहुः तन्मतेपितृष्वस्त्रादिकन्यानामूढानांमरणेपक्षिणीअनूढानामेकाहइत्यादिपितृष्वस्त्रादिकन्याभिस्तुवंधुत्रयमरणेस्नानमात्रंकार्य्य मितिसिंध्वाशयेनसिद्ध्यतिभट्टमतेतु पुत्रपदवत्तद्वाक्यस्थात्मपदस्यापिकन्यापरत्वापत्त्याकन्याभिरपिवंधुत्रयाशौचंकार्य्यमित्यापतति । तत्रचवहुशिष्टाचारविगानमितिसिंध्वाशयोयुक्तोभातिअत्रेदंतत्वम्॥ देवदत्तीयवंधुनवकमध्येआत्मवंधुत्रयेसंवंधसाम्यात्परस्परमाशौचम् अवाशिष्टवंधुषट्केतुवंधुषट्कमरणेदेवदत्तस्याशौचंदेवदत्तस्यमरणेतुवंधुषट्कस्यनाशौचंसंवंधाभावादितिसुधीभिरूह्यम् ।दत्तकस्यमरणेपूर्वापरपित्रोस्त्रिरात्रंसपिंडानामेकाहमाशौचम् । नीलकंठीयेदत्तकानिर्णयेतूपनीतदत्तकमरणादौपालकपित्रादि सपिंडानांदशाहादिकमेवाशौचमित्युक्तम् ॥

कि देवदत्तके वंधु नवके मध्यमें आत्म वंधु त्रय के विषे संवंध तुल्य होनेतें आपसमें अशौच होताहे ॥ और वाकी के जो वंधु छेहैं तिनके मरणमें देवदत्तको अशौचहै और देवदत्त के मरणमें वंधु छेको अशौच नहि वंधुके संवध के अभावतें यह वुद्धि मानोंने जानना चाहिये॥ अव दत्तक पुत्रका अशोच कथन करतेहैं ॥ देति । दत्त पुत्र के मरणमें पहले और पिछले पिता को तीन रात्र और सपिंडीयों को एक दिन अशौच होताहैं ॥ और नीलकंठकेग्रंथमें दत्त पुत्रके निर्णय विषें । उपनीतदत्त पुत्रके मरण और जन्ममें पालन वाले पिताको और सपिंडीयोंको दशदिन अशौचहै ॥

और दत्त पुत्रनेभी पूर्वले और पालने वाले पिताके मरणमें तीनरात्र और पूर्वापर सपिंडीयोंके मरणमें एकदिन अशौच करणे योग्यहै ॥ और पूर्वापर माता पिताके कर्म्मोके करणमें कर्मांग दश दिन अशौच होताहै अर्थात् दत्तपुत्र जद कर्मोको करे तद दश दिन अशौच होताहै और जेकर कर्मोको होर कोई करे तदतीन रात्र अशौच होताहै॥और दत्तकके पुत्र और पौत्रादिके जन्म और मरणमें पूर्वापर सपिंडीयों को एक दिन अशौच होताहै । इसीप्रकार पूर्वापर सपिंडीयों के जन्म और मरणमें दत्तकके ॥ पुत्र और पौत्रादिको भी एकदिन अशौच होताहै ॥ इसीप्रकार सपिंड और समानो दक इनते भिन्नजो वनायाहोया दत्तपुत्रहै तिसमें भी जानना॥और सगोत्र सपिंडकाहिवनाये होए दत्तपुत्रमें दश दिन और सोदक दत्त पुत्रमे तीनरात्रअशौच जानना और अब और कहतेहैं ॥ कि आचार्य्य के मृत होयांतीन रात्र अशौच होताहै और जेरक ओहिआ

दत्तकेनापिपूर्वापरपित्रोर्मृतयोस्त्रिरात्रंपूर्वापरसपिंडानांमरणएकाहःपित्रोरौर्द्ध्वदैहिककरणेतुकर्म्मांगदशाहमेव॥दत्तकस्यपुत्रपौत्रादेर्जननेमरणेवापूर्वापरसपिण्डानामेकाहः एवंपूर्वापरसपिण्डमरणादावपि दत्तकपुत्रपौत्रादेरप्येकाहः॥ एवंसपिंडसमानोदकभिन्नेदत्तीकृतेज्ञेयम्॥ सगोत्रसपिंडेसोदकेचदत्तीकृते यथाक्रमंदशाहंत्रिरात्रंच ॥ यथाप्राप्तंभवत्येव आचार्य्येमृतेत्रिरात्रम् ग्रामांतरेमृतेपक्षिणी॥ उपनीयवेदाध्यापकआचार्य्यःस्मार्त्तकर्म्मनिर्वाहकोप्याचार्य्यः आचार्य्यभार्य्यासुतयोर्मरणेप्येकाहःमंत्रोपदेशकगुरुमरणेत्रिरात्रम्। ग्रामांतरे पक्षिणी ॥ शास्त्राध्यापकोव्याकरणज्योतिः शास्त्राद्यंगाध्यापकश्चानूचानसंज्ञकस्तन्मरणेएकाहः ॥ शिष्यस्योपनीयाध्यापितस्यमरणेत्रिरात्रम्॥ निवृत्ताध्ययनस्यमृतौपक्षिणी॥

चार्य्य किसी और ग्राममें मृत होवे तददोदिन और एकरात्र अशौच होताहै ॥ और आचार्य्य वोह होताहै जोउपनयन को करवाके वेद कोपढावे और स्मार्त कर्मके निरवाहकरण वालाभी आचार्य्य होताहै॥और आचार्य्य की स्त्री और तिसके पुत्रके मृतमें भीएक दिन अशौच होताहै और मंत्रोपदेश करण वाले गुरुके मृतमें तीन रात्र अशौच और और ग्रामकेविषे मृतमें पक्षिणी अशौच होताहै ॥ और शास्त्रके अध्ययन करवाणे और व्याकरण और ज्योतिःशास्त्रादि अंगके अध्ययन करवाणे वाला अनूचान होताहै ॥ तिसके मृतमें एकदिन अशौच होताहै।अब गुरुको अशौच कहतेहैं ॥ उपनयन करके पढाया जो शिष्यहै तिसके मृतमें तीन रात्र गुरुको अशौच होताहै । और अध्ययन करके चलागया जोशिष्यहै तिसके मृतमें पक्षिणी मात्रहि अशौचहै ॥

श्रर श्रौर किसीने कीयाहै उपनयन जिसका श्रौर वहुत काल पढाहै जोशिष्य तिसके मृतमें गुरुको एकदिन श्रशौचहोताहे श्रौर साध्यायीके मरणमें पक्षिणी श्रशौचहोताहै ॥ इसीप्रकार यजमानके मरणमें गुरुको पक्षिणीश्रशौच होताहै। श्रर्थके सहित वेदकोपढनवाला श्रौरश्रौतस्मार्त कर्ममें चतुरजोश्रोत्रिय है तिनदोनोके मृतमें तीनरात्र श्रशौचहोताहै। श्रौरजेकर तीन संबंधहोवें तदक्याके पूर्वोक्तश्रौतादि श्रौर मैत्रश्रौरि श्रपने एकगृहमें तिनके साथ निवास होवे तां तीन रात्री श्रौर जेकर तिनके विच्चों एकही संबंध होवे तद तिनके मृतमें पक्षिणी श्रौर जेकर तिनके साथ संबंध न होवे तद एक दिन श्रशौचहोताहै ॥ श्रौर समान वर्णके मित्रके मृतमें एक दिन श्रशौच होताहै श्रौर संबंधिसंन्यासिके मृतमें संपूर्ण सपिंडीयोंको स्नानमात्र श्रशौचहै श्रौरश्रपने घरमें उदासीन सपिंडीके मरणमें एक दिन श्रशौच होताहै ऊरश्रपने करके श्राश्रित जोगृहहै तिसके विषे श्रसपिंडीके मृतमें तीनदिन श्रशौचहोताहै यह

परोपनीतस्यवहुकालमध्यापितस्यमरणेएकाहः॥ सहाध्यायिमृतौ पाक्षिणी एवंयाज्यमरणेपि सार्थवेदाध्यायीश्रौतस्मार्त्तकर्म्मनिष्ठश्च श्रोत्रियः तयोर्मरणेमैत्रीगृहानंतर्य्यादिसंबंधेत्रिरात्रम् ॥ एकतरसंबंधेपक्षिणीसंबंधाभावेएकाहः सवर्णमित्रमरणे एकाहः यतिमरणेसर्वसपिंडानांस्नानमात्रम् स्वगृहेउदासीनासपिंडमरणेएकाहःस्वाधिष्ठितस्वगृहेऽसपिंडमरणेत्र्यहमिति केचित्॥ श्राशौचप्रयोजकसंबंधिनिस्वगृहेमृतेत्रिरात्रम् ग्रामाधिपदेशाधिपादेर्मृतौसज्योतिः दिवामरणेरात्रौ स्नानाच्छुद्धिः॥ रात्रिमरणेदिवास्नानाच्छुद्धिरितिसज्योतिःपदार्थः। पक्षिणीपदार्थस्तुदिवामरणेसदिवसः सारात्रिर्द्वितीयदिनेनक्षत्रदर्शनपर्य्यन्तामिति 'श्रागामिवर्त्तमानाहर्युतामध्यगता रात्रिः रात्रिमरणेसारात्रिस्तदुत्तरमहोरात्रिश्चेतिपक्षिणी॥

कईकथन करतेहैं ॥ श्रवश्रौर कथन करतेहैं श्रशौचके प्रेरणवाला श्रर्थात् जिसके साथ श्रशौचकासंबंधहै ऐसा जो कोई संबंधी श्रपने गृहमें मृतहोजावे तद तीन रात्र श्रशौच होताहै श्रौर ग्रामका स्वामी श्रौरदेशकास्वामी इनके मृतहोयां सज्योति श्रशौचहोताहै श्रर्थात् दिनमें मृत होवे तद रात्रिकेविषें स्नानकरके शुद्धिहोतीहै जेकर रात्रिमें मृतहोवे तददिनमें शुद्धिहोतीहै ॥ श्रवपक्षिणीपदका श्रर्थकरतेहैं जेकर दिनेमृत होवे तदतिस दिनके सहितरात्रि श्रौर द्वितीयदिनके विषें तारे देखन तक पक्षिणीहोतीहै सोईकहतेहैं। श्रागेति श्राउणा जोदिन श्रौर वर्त्तमान जो दिन है तिनदोनो करके युक्तजोरात्रि सोपक्षिणी होतीहै। श्रौर जेकर रात्रिमें मृतहोवे तद सोरात्रि श्रौर श्रगला दिन श्रौररात्रि एह पक्षिणीहोतीहै ॥

कैं एहकथन करतेहैं कि रात्रिमरणमेंभी मरणदिनते लेकर द्वितीय दिनविषें नक्षत्र दर्शनतकप क्षिणी होतीहै॥इसीप्रकार व्यतीत अशौच विषें भीदिने अथवा रात्रिविषें मरणज्ञानके अनुसार पक्षिणीकी व्यवस्था जाननी॥अब और कथन करतेहैं शिष्यादिके अंत्यकर्मकरणेमें दशाहादि अशौचहोताहै॥और जेकर अंतकर्म नकरे तद्पूर्व कहा जो अशौच सोहोताहै औरघरमें उत्प न्नहुआ और मूल्य साथ ग्रहण कीआ हुआ और गिरवी रखाहुआ और किसेस्थानते लब्ध हुआ इत्यादि जोदासहैं तिनको स्वामीके मरणमें स्वामी जातीका अशौच होताहै॥अब और कथन करतेहैं युद्धविषेंशस्त्रके प्रहार करके तात्काल मृतहोवे तिसका स्नानमात्र भी, अशौच और तिसका दशाहादि अंत्यकर्मभी तात्कालकरणे योग्यहै और युद्ध में शस्त्रके प्रहार करके

केचित्तुरात्रिमरणेपिमरणादिनाद्द्वितीयदिनस्थनक्षत्रदर्शनपर्य्यंतमेवपाक्षि णीपदार्थमाहुः॥एवमतिक्रांतविषयेदिवारात्रौवामरणज्ञानानुसारिणपक्षिणी व्यवस्थायोज्या॥शिष्यादीनामंत्यकर्म्मकर्त्तृत्वेतुदशाहाद्याशौचमन्यथापू र्वोक्तम्॥दासानांगृहजातक्रीतऋणमोक्षितलब्धत्वादिप्रकाराणां स्वामिमर णेस्वामिजातीयाशौचम् ॥ युद्धेशस्त्रघातेनसद्योमृतेस्नानमात्रमाशौचमंत्य कर्म्मापिदशाहादिकंसद्यएवकर्त्तव्यम् ॥ युद्धक्षतेनकालांतरेमरणेएकाहः त्र्यहादूर्ध्वंयुद्धक्षतेन मरणे पराङ्मुखहते युद्धेकपटेनहतेच त्रिरात्रम्॥ युद्ध क्षतेनसप्तरात्रादूर्ध्वंमृतेदशाह इत्याहुः॥ शिष्टास्तुयुद्धेहतस्य सद्यःशौचा दिकं लोकविरुद्धत्वान्नवदंति ॥प्रयागादौकाम्यमरणेस्नानमात्रम् प्रायश्चि त्तार्थमग्न्यादिमरणे एकाहः

घायल हुआ २ कुछकालकरके मृतहोवे तिसका एकदिन अशौच कथन करतेहैं ॥ और युद्धमे घायल हुआ २ तीन दिनते उपरंत मृतहोवे और और युद्धमें पराङ्मुखहोकेमरे और यु द्धमें छलकरके किसीने जो हतकीयाहै इनसभका तीनदिन अशौच होताहै॥और जोयुद्धमेफटा हुआ सातदिनतें उपरंत मृतहोवे तिसका दश दिन अशौच कथन कीयाहै और श्रेष्टजन यु द्धमें मृतकी तात्काल शुद्धि नहि कथन करते क्योंकि लोकमें विरुद्ध होनेतें अर्थात् दशदिन हीकहतेहैं ॥ अब और कथन करतेहैं ॥ प्रयागादि तीर्थ में कामना करके मरणके विषें स्नान मात्र और प्रायश्चित्तके अर्थ अग्नि और पर्वतादि करकें मरणमें एकदिन अशौच होता है ॥

और जो कोई महारोगकीपीडाको नहिसहारदे और जलमे डुबके अथवा फाहलेकर्के मृपहोवें॰तिनका तीन रात्र अशौच होताहै॥इसमे भी शिष्ट चारोंकी सम्मति नहि अर्थात् शिष्ट जो यथार्थज्ञान वाले सो इसको नहि जानते किंतु दश दिन १० तक अशौच होताहै॥यह क्रमको त्याग कर्के त्रिंशत् श्लोकीके कथनके अढाई २॥श्लोकहैं तिनकी व्याख्या पूरी होई ॥ (प्र०ण) पक्षिणीआद लेकर वाक्य त्रिंशत् श्लोकीमें कहाहै और इसमें कमलाकर आदियोंने व्यवस्था कीतीहै कि कर्ममें प्रवृत्त जो ऋत्विजहै तिसके मृतहोयां२जिनके कार्य्यमें सो लगाथा तिनको त्रयदिन कर्के शुद्धि कहीहै और कर्मोतें निवृत्तजो ऋत्विजहै तिसकी मृत्युमें पक्षिणी कालते पीछे

महारोगपीडाऽक्षमाणां जलादिप्रवेशे त्रिरात्रम् अत्रापि नशिष्टाचारसम्मतिः एवं कारागृहेंमृतस्यैकरात्रमपीति।क्रमनिरपेक्षत्रिंशच्छ्लोक्युक्तसार्द्धश्लोकद्वयव्याख्या॥ननुपक्षिण्याशौचमृत्विग्दुहित्रित्यादित्रिंशच्छ्लोक्यांकर्म्मणिप्रवृत्तेऋत्विजिमृतेत्रिरात्रंततोनिवृत्तेपक्षिणीतिव्यवस्थापितंकमलाकरादिभिः॥तत्रोच्यतेआगामिवर्त्तमानाहर्युक्तायांनिशिपक्षिणीत्यभिधानात् पक्षौपूर्वापराहरूपौविद्येतेयस्यां सा रात्रिःपक्षिणी द्वादशयामात्मकःकाल इत्यर्थः ॥ अत्र यदिमध्याह्नेरात्रावर्द्धरात्रेवातस्मिन्मृतेतमारभ्याशौचपाते तदातत्कालसंकोचएवेष्टोवारात्र्यंतरसंमेलनेन तावानेवावधार्य्यः॥उभयत्रापि वचनादिनाभाव्यं तदभावात्कथंनिश्चेतव्यमिति ।

शुद्धि कहीहै॥इसमे कुछ और विचार करतेहें आगामीति अगला जो दिन और वर्त्तमान दिन तिसकरयुक्तजो रात्रिहै इतने कालका नामपक्षिणीकहाहै॥इस पदकी व्युत्पत्ति एहहै किपूर्व और पर दिनरूप पक्ष विद्य मान होन जिस रात्रिमें तिसका नाम पक्षिणीहै सोबारां १२ पहर का काल होया एह अर्थहै॥और इसमें होर विचार करतेहै मध्यान्हमें वा रात्रिमें अथवा अर्ध रात्रि में तिस ऋत्विजके मृतहोयां २ तिस कालतें लेकर सूतकादि प्राप्त होन तो तिस कालका संकोच हि योग्यहै॥वा दूसररात्रिके मेलने कर्के बारां १२ पहरका हि काल ग्रहण करणा ॥ इन दोनोंमें निश्चय वचनादि कर्के हुंदाहै तिसके अभावतें कैसे निश्चय करणा एह पूर्व पक्षहोआ ॥

इसमें केइक विचार करतेहैं ॥ दिवापक्षिणी रूप अशौच सो दिनांतर करके पूर्ण करणा और रात्रिका अशौच दूसरी रात्रि करके समाप्त करणा इति॥इसमतमें पक्ष पूर्व और पर दिन रूप होण जिसमें वा पूर्व और पर रात्रि रूप होण जिसमें तिस का नाम पक्षिणीहै ॥ और मध्यान्ह और अर्द्ध रात्रि आदिकमें अशौच के होयां २ संकोच करणाहि योग्यहै॥तिसमें कथन क करतेहां कि देशातरमें जो मृत होयाहै तिसका श्रवण दश दिन के अंदर होवे तांदश दिन में जो शेष दिनहै तिसो करके शुद्धि कहीहै और श्रवणतें दश दिन करके नहि ॥ इसकी न्याईं इसमें भी जानणा और मेरेमत में पूर्व कहा जो यह दृष्टांत तिस करके और कोश वा

अत्रकेचित् ॥ दिवापाक्षिण्यात्मकाशौचपातेदिनांतरेणसमापनीयं रात्रौतत्पाते रात्र्यंतरेणसमापनीयामिति।तन्मते पक्षौ पूर्वापराहरूपौपूर्वापररात्रिरूपौवायस्यांवेलायामित्यर्थः।मध्याह्नार्द्धरात्रादौतत्पातेयच्छेषंदशरात्रस्यतावदेवाशुचिर्भवदिति देशांतरमरणनिमित्ताशौचवत्संकोचएवेष्टइति। मन्मतेतु पूर्वोक्तदृष्टांतेनाभिधानवाक्यानुरोधेनच प्रथमव्युत्पत्त्यावगतार्थेसंकोचएव साधीयान् प्रतिभाति तद्बाधकवचनांतराद्यदर्शनात् संकोचेतु दृष्टांतस्यसत्वात् दृश्यतेहिचातुर्मास्यव्रतादौ केनचित्कारणेनभाद्रपदाद्यारंभेप्यवशिष्टेन कार्त्तिकीपर्य्यंतेनैवतत्समाप्तिः किंचनैतावतामध्याह्नाद्यारंभेपि तादृशकालहानिः प्रातरारभ्यैवतत्प्रवृत्तेरिति विद्वद्भिराकलनीयम् ॥

क्यके अनुसार करके प्रथम व्युत्पत्ति करके प्राप्त होया जोअर्थ तिसमें संकोचाहि साधुहै क्योंकि तिसके बधानेवाले अन्य वचनके न देखणेतें और संकोचमें दृष्टांतके देखणेतें ॥ इसमें ॥ और भी कथन करतेहां कि चातुर्मास्य व्रतमें किसे कारणतें विघ्नके होयां २ भाद्रपदमासके विषे भी प्रारंभके होयां २ शेष जो कार्त्तिक पूर्णमासीतक कालहै तिसीमें समाप्तिहै तिससें अधिकन हि करीदाहै तैसेहि इसमें भीजानणा ॥ किंच मध्यान्हादि प्रारंभमें तिस पक्षिणीके कालकीइतनें करकें हानि नही क्योंकि तिसकी प्रातः कालतें हि प्रारंभ की प्रवृत्तिसें ऐसे बुद्धिमानोनें विचारणे योग्यहै

अब अशौचापवादमे सिंधुके विषे मनुजी कथन करतेहैं ॥ उद्येति ॥ युद्धमें शस्त्रों करके और क्षत्रधर्म्म करके जोमृत हुआहै तिसका दशाहादिकर्म और शुद्धि तात्काल कथन कीहै १ ॥ इसोंका स्पष्ट अर्थहै ॥ (यज्ञ) क्या अंत्यकर्म तात्काल करणे योग्यहै ॥ और अशौचभी तात्काल सिद्ध करदेणा ॥ और कर्म सदैव करणा अर्थात् विश्वे देवके साथ श्राद्ध करणा ॥ और कथन करतेहैं ॥ अइति ॥ युद्धमें हतहुआ जो सूरमा सो शोक करणे योग्य नहि और सोईसूरमा स्वर्गमें पूजीदाहै ॥ और तिसको अन्न दान और तिलांजालि और स्नान और अशौच नहि करणा ॥ १ ॥ यहमहाभारतके वचनमें संपूर्ण क्रियाकाजो निषेधहै सो पुत्रादिके अभावमें जा

अथाशौचापवादेसिंधौमनुः ॥ उद्यतैराहवेशस्त्रैःक्षत्रधर्म्महतस्यच सद्यःसंतिष्ठतेयज्ञस्तथाशौचमितिस्थितिः ॥ १ ॥ अस्ययज्ञोंत्यंकर्म्मसद्यःसंतिष्ठते सद्यएवसंपादनीयअशौचमपिसद्यएवसंपादनीयामित्यर्थः॥ कर्म्मापिसदैवंविधेयम् ॥ अशोच्योहिहतःशूरःस्वर्गलोकेमहीयते नह्यन्नमुदकंतस्य नस्नानंनाप्यशौचकमिति १ सर्वथाक्रियानिषेधपर भारतीयवचनं पुत्राद्यभावाविषयंबोध्यम् युद्धक्षतेनकालांतरमरणेतुपराशरः आहवेपिहतानां चएकरात्रमशौचकमिति तत्कालमरणेतुपूर्वोक्तमेवानुसंधेयम् शस्त्रंविनापि स्वाम्यर्थमरणे अग्निपुराणे

नना अर्थात् पुत्रन होवे ता तिनकी क्रियादि न करे और जेकर पुत्र अथवा भ्राता होवेतां क्रिया करे एहपिच्छेभी किहाहै ॥ और युद्धमेंफटा हुआजो पुरुषहै तिसके कालांतर करके मरणेमें पराशरजी कथन करतेहैं ॥ आहेति युद्धमें हत हुआ जो पुरुषहै तिसकाभी एक रात्र अशौच होताहै ॥ और जो युद्धविषे प्रहार कहाहोआ उसी कालमे मृत होवे क्या जिसदिनमे युद्धलगा था तिसदिनकी समाप्ति तक जो मृत होआहै तिसके वास्ते पिच्छे किहाजो मनुजीका वचनहै सो जानना ॥ और कथन करतेहैं शस्त्रतें विना भी स्वामीके अर्थ मरणेमें अग्निपुराणमें. कथन कीयाहै

दंष्ट्रीति ॥ सिंहादि और महिषादि और म्लेछ और चोर इन्हो करके जो स्वामीके अर्थ हत होयेहैं हेराजन् सो हत हुए २ स्वर्ग को प्राप्त होतेहैं इसमें संशय नहि यह सभ वर्णो को कथन कीयाहै और क्षत्रिको विशेष कहाहै इति ॥ १ ॥ अब और कथन करतेहैं जिस पुरुषने जीवंदियां होयां अपनी क्रिया करदित्तीहै तिस पुरुषने किसी का कुछभी अशौच करणे योग्य नहिहै एह हेमाद्रिमें कहाहै ॥ कूर्मपुराणका वचनहै ॥ सेति दुर्भिक्ष विषे और उपद्रव विषे विजली करके और पाषाणादि करके और पक्षीयों करके और राजातें रहित जो युद्ध तिस में हत हुए २ और गजयों करके और ब्राह्मणो करके जो मृतहोएहैं ॥ १ ॥ उपेति और उपद्रवमें और महावायु करके और रोगकी पिडाके होयां २जो मृत हुये अथवा महारोग क

दंष्ट्रिभिःशृंगिभिर्वापिहताम्लेच्छैश्चतस्करैः येस्वाम्यर्थेहतायांतिराजन्स्वर्गेनसंशयः ॥ १ ॥ सर्वेषामेववर्णानांक्षत्रियस्यविशेषतइति ॥ हेमाद्रौ कृतजीवच्छ्राद्धेनकिमप्याशौचंनकार्य्यमित्युक्तम् ॥ कूर्म्मपुराणे सद्यःशौचंसमास्यातंदुर्भिक्षेचाप्युपद्रवे डिंवाहवाहतानांचविद्युतापार्थिवैर्द्विजैः ॥ १ उपद्रवेऽत्यंतमरकेव्याधिपीडाप्रवर्त्तने उपसर्गमृतेचैवसद्यःशौचंविधीयते २ नृपतिशून्ययुद्धंडिम्वाहवम् ॥ अत्यंतमरकोमहावायुप्रचारः॥मरीचिः आपद्यपिचकष्टायांसद्यःशौचंविधीयत इति अतएव मरणसमयेपि नाशौचम् ततश्चातुरसंन्यासःसर्वदाविधेयएव दक्षः॥ स्वस्थकालेत्विदंसर्वंसूतकंपरिकीर्त्तितम् आपद्गतस्यसर्वस्यसूतकेपिनसूतकम् १ नाशौचमित्युपक्रम्य त्रिंशच्छ्लोक्याम्

रके जो मृत हुयेहैं इनका तात्काल शौच विधान कीयाहै ॥ २ ॥ इसमें मरीचिजी कथन करतेहैं ॥ आपेति बडी आपदमें तात्काल शौच विधान कीयाहै ॥ इसी कारणते मरण समयमें भी अशौच नहि होताहै अर्थात् जोकोई संबंधि वर्गके मरण निमित्त अशौचवालाहै आप मरणलगाहै तद तिसको तिसकालमें अशौचनहि इस कारणतें आतुर पुरुष को संन्यास सर्वदा काल विधान कीयाहै ॥ अब दक्षजी कथन करतेहैं स्वस्थेति ॥ स्वस्थ कालमें क्या सुखकालमें यह संपूर्ण अशौच कथन कीयाहै और आपद को जो प्राप्त होताहै तिसको सूतकमें भी सूतक नहि होताहै ॥ १ ॥अशौच नहि होता इसको प्रारंभ करके त्रिंशत् श्लोकीमें लिखाहै।

तत्रेति यज्ञ करण वाला और अनंतादि व्रतवाला औरराजाऔर राजाका भृत्य और यज्ञकी दीक्षा वाला और ऋत्विक् औरअपने देशते निकलया होया विपदावाला औरअनेक श्रुतियोंके पढन वाला औरवैद्य वोट्टी औरधोबा और रोगकर्के आतुर इनको तिस तिस कार्य्यमेंअशौच नहि अर्थात् सत्रीकोयज्ञ कर्ममें औरव्रतीको व्रतमें अशौच नहि और होरकर्मोंमें अशौचहै औरदेशभ्रंश और आपदमेंभी अशौच नहि औरदान औरउपनयन औरजन्मऔरश्राद्ध और युद्ध औरप्रतिष्ठा औरचूडाकर्म और तीर्थयात्रा जप और विवाह इत्यादि उत्सवोंके आरंभ कीयां होयां इनकार्य्योंके अर्थ अशौच नहिहोताहै ॥ १ ॥ इतीति

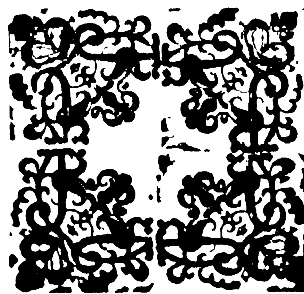
तत्तत्कार्येषुसत्रिव्रतिनृपनृपवद्दीक्षितर्त्विकूस्वदेशभ्रंशापत्स्वप्यनेकश्रुतिपठनभिषकूकारुशिल्पातुराणाम् संप्रारब्धेपुदानोपनयनजननश्राद्धयुद्धप्रतिष्ठा चूडातीर्थार्थयात्राजपपरिणयनाद्युत्सवेष्वेतदर्थे ॥ १ ॥ इतिकर्म्मतत्राशौचाभावउक्तः सत्रीसत्रवान् मुख्यसत्रस्यदीक्षितपदात्सिद्धेः। व्रती अनंतव्रतादिनियमवानितिसिंधुः॥ प्रचेताः ॥ कारवः शिल्पिनोवैद्यादासीदासास्तथैवच ॥ राजानोराजभृत्याश्चसद्यःशौचाःप्रकीर्त्तिताः १ कारुपदेनसूपकारादयः।शिल्पिपदेन चैलनिर्णेजकादयोविवक्षिताः

एह कर्म्म करणे विषे आशौचका निषेध किहाहै इसमें सत्रीपद कर्के सत्रकर्म्म वाला जानना मुख्य सत्रवालेका क्या यज्ञकरवाणलेका नाम दीक्षित पद कर्के कथन होणेते और व्रतीपद कर्के अनंतादि व्रतके नियम वाला जानना एह निर्णयसिंधु कारका मतहै इसीमें प्रचेताजी कथन करतेहैं ॥ कारेति वोट्टीआदिक और धोबे आदिक अथवा (कारु । किडे बनानेवाला और शिल्पी चित्रकारी करनेवाला और राजा और राजाका भृत्य एह तात्काल पवित्र कथन कीएहैं ॥ १ ॥

प्रारंभके कीत्यांहोयां भी सूतक नहि एह लघुविष्णुजी कथन करतेहैं ॥ व्रतेति व्रत और यज्ञ और विवाह और श्राद्ध और हवन और पूजा और जप इनके आरंभके कीत्यां होयां सूतक नहि होता अर न आरंभके कीत्यांहोयां सूतक होताहै १ अब प्रारंभका अर्थ करतेहै। प्रेति ॥ यज्ञका प्रारंभ वरणी और व्रत और सत्र इनका प्रारंभ संकल्प और विवाहका आरंभ नांदीमुख श्राद्ध ॥ और श्राद्धका प्रारंभ पाकक्रियाहै ॥ इति ॥ सदेति मंत्रके जपको त्यागकर्के जद पुरुष अपवित्र होजाए अर्थात् जप करणवाला थोडाहिजप कर्के वीचमें मूत्रा

आरब्धेपिसूतकंनास्तीतिलघुविष्णुः व्रतयज्ञविवाहेषुश्राद्धेहोमेऽर्चनेजपे आरब्धेसूतकंनस्यादनारब्धेतुसूतकमिति तथा प्रारंभोवरणंयज्ञेसंकल्पो व्रतसत्रयोःनान्दीमुखंविवाहादौश्राद्धेपाकपरिक्रियेति सदामंत्रजपंमुक्त्वाय दिस्यादशुचिर्नरः मनसाविहितस्तत्रस्मरेन्मंत्रनतूच्चरेदितिनृसिंहस्मरणं मूत्राद्यशौचपरम् ॥ श्रौतस्मार्तविषयेतुप्रागुक्तम् विस्तरस्तुग्रंथांतरादवसेयः ॥ इतिश्री शुद्धिप्रकरणे सूतक, सामन्य निर्णयः समाप्तः। शुभं भूयात् ॥

दिको चलाजाये तद पीछे पवित्र होकर तद मनकर्के मंत्रको स्मरण करे अर उच्चारण न करे इति ॥ नृसिंहका स्मरण क्या नृसिंहजीकी स्मृतिका वचन मूत्रादि अशौच पर जानना ॥ और श्रोत स्मार्त कर्मविषे पूर्वकथन कीयाहै इसमें संक्षेप कथन कर्के कथन कीयाहै ॥ और विस्तार और ग्रंथोंते देख लेणा इतिश्री इत्यादि प्रायश्चित्त भागमें शुद्धि प्रकरणके विषे सूतक सामान्यकानिर्णय समाप्तकीयाहै



अब द्रव्य शुद्धि कहने की इच्छा करके वर्ण और आश्रम शुद्धि कथन करणे योग्यथी परंतु तिसको आन्हिक भागमें कथन करणेतें अर्थात् पूर्व कथन करलेणेसें और स्त्रीपुरुषोंकी सामान्य शुद्धि निरूपण पूर्वक अब वस्त्रादियोंकी शुद्धि कथन करतेहैं प्रथम विष्णुधर्म्मोत्तरमेंक हतेहैं जब शयन में मंचादि के उपर स्थित जो स्त्री और पुरुषहैं उससमय दोनो अपवित्र होतेहै जबशयनतें उठीजो स्त्री सो पवित्र होतीहै और शयनतें उठया होया जोपुरुष सो अपवित्रहोताहै १ गरुड पुराण में कहाहै अपुष्टाइति अपुष्टजो हैं व्रतोके करणे वाले और संतति त्याग जो हैं वानप्रस्थ और वायुकरके उडेजोरेणुहैं स्त्रीयां जोहैं और बालक जोहैं और वृद्ध जो हैं एह कदाचित् भी अपवित्र नाहिं होते १ उदकइति जलमें स्थितजोहैं सोजलमें तर्प्पणादिको करे और जो स्थलमें स्थितहै सोस्थलमें तर्प्पणादिको करे और पैरोंके धोणे करके दोनोंअव

अथद्रव्यशुद्धिविवक्षयादौवर्णाश्रमशुद्धेर्वक्तव्यतायामपि तस्याआह्निकभागेप्रकीर्णकादौचकथितत्वात्स्त्रीपुरुषसामान्यशुद्धिनिरूपणपूर्वकंवस्त्रादिशुद्धिरुच्यते विष्णुधर्म्मोत्तरे ॥ उभावप्यशुचीस्यातांदंपतीशयनेगतौ शयनादुत्थितानारीशुचिस्स्यादशुचिः पुमान् १ गारुडे।अपुष्टाः संततित्यागावातीभूताश्चरेणवः स्त्रियोवृद्धाश्चवालाश्चनदुष्यंतिकदाचन १ अपुष्टाःव्रतिनः संततित्यागावानप्रस्थाइत्यर्थः १ उदकेचोदकस्थस्तुस्थलस्थश्चस्थलेशुचिः पादौप्रक्षाल्योभयंस्यादाचान्तःशुचितामियात् २ जलस्थेनजले स्थलस्थेनस्थले तर्प्पणादिविधेयमितिभावः पादप्रक्षालनेनउभयंअवयवानांशौचमशौचंच नाभेरधःशौचंतदूर्ध्वमशौचमित्यर्थः आचान्तः पादप्रक्षालनानन्तरंकृताचमनःशुचितांसकलदेहशौचंप्राप्नुयादित्यर्थः ॥ यद्वा उदकस्थोयावज्जानुदघ्नादिकेतस्मिन्वर्त्तमानः शुचिः समस्तः शुचिर्नतु जलनिमग्नावयवमात्रः स्थलस्थस्तुस्थलेगौरमृदाद्युपलिप्तभूप्रदेशे शुचिर्नतुततोन्यत्र पादप्रक्षालनेनतुउभयंजलीयस्थलीयशौचद्वयंभवति कृताचमनोऽशुचिरपिशुचिर्भवतीत्यर्थः ॥

यवजोहैं तिसके शौच और अशौच होतेहैं नाभिके हेठ पवित्र होजाताहै और नाभिकेऊपर अपवित्र रहताहै और पाद प्रक्षालन क्या पैरोंको धोय करके पीछेआचमन करलेवे सोपवित्रताको प्राप्त होताहै अर्थात् संपूर्णदेहकी शुद्धिको प्राप्तहोजाताहै।२।यद्वेति अथवा जलमें स्थित क्या जानुप्रमाणादि जलमें स्थित जोमनुष्यहैं सोसंपूर्ण क्यासमग्रही पवित्रहोजाताहै इसमेंयह बात नहिहै जोजितनाअंग जलमें स्थितहै उतनाहि पवित्रहोताहै॥और स्थलमें स्थित जो मनुष्यहै सोस्थलमें सुपेद मृत्तिकादि करके लेपन करि जो पृथिवी तिसमें वैठ करके पवित्र होताहै तिसते लेपनादितें वाहर नहि पवित्रहोता ॥ और पैरोंके धोणे तें दोनों स्थलोंमें क्या जल निमित्त और स्थल निमित्त पवित्र होताहै औरजिसने आचमन करलीयेहैं सो मनुष्य अपवित्र भीहै तदभी पवित्र होजाताहै

सूक्ष्म वस्त्रांकी शुद्धि दाडिम आदि फलां करके कहीहै॥और क्षौम क्या अलसीके वस्त्रांकी शुद्धि सेती सरों करके कहीहै और मृगां के रोमा करके बने जो वस्त्र तिनां की शुद्धि पद्म बीज करके युक्त जो जलहै तिस करके कहिहे । और पुष्पों और फलोंके जलके सिंचणेंते संपूर्ण शुद्धि कहिहै ॥ और सामान्य शुद्धि कहतेहैं कि सभ वस्तुकी शुद्धि अर्थात् जिस जगा शुद्धि का प्रकार नहिहै उस जगा सर्वत्र जल करके शुद्धि जानणी ॥ १ ॥ अग्नि पुराण विष्णु धर्म्मोत्तर विषे भी अयसे कहाहै ॥ ब्रह्म पुराण विषे भी कहाहै ॥ संख और पाखाण और सुवर्ण और (कुप्य) क्या सुवर्णते रूप्येतें जो होर धातुहें तिनांकि और रंग संयुक्त वस्त्रां कि और शाक और मूल आद्रक और फल और विदल क्या वंझके जो पात्र और अजा आदिके चर्म तिनांकी ॥ १ ॥ और मणि और वस्त्र और प्रवाल क्या मुंग तैसे मुक्ता फल और पात्रांकी और धान्य इनां संपूर्णा की जल करके शुद्धि कहीहै ॥ २ ॥ तैसे वृक्ष और

सुफलैरंशुपट्टानांक्षौमानांगौरसर्पपैः।शुद्धिःपद्माक्षतोयेनमृगलोम्नांचकीर्त्तिता १ पुष्पानांचफलानांचप्रोक्षणाज्जलतोखिलम् ।अग्निपुराणविष्णुधर्म्मोत्तरयोरप्येवम्॥ब्रह्मपुराणेपि।शंखाश्मस्वर्णकुप्याणांरंजितानांचवाससाम् शाकमूलफलानांचतथाविदलचर्म्मणाम् १ मणिवस्त्रप्रवालानांतथामुक्ताफलस्यचपात्राणांचैवसस्यानामंवुनाशौचमिष्यते २ तथाद्रुमाश्मकानांच मुशलोलूखलस्यच संहतानांचवस्त्राणांप्रोक्षणात् संचयस्यच ३कल्कानामप्यशेपाणामम्बुमृच्छौचमिष्यते ॥कल्काउद्धृततैलास्तिलादयः ॥ विष्णुधर्म्मोत्तरेपि ससर्जिकेनतोयेनवाससांशुद्धिरिष्यतेवहूनांप्रोक्षणाच्छुद्धिर्धान्यानांचविनिर्दिशेत् १ अग्निपुराणेपि।क्षारेणकांस्यलोहानांमुक्तादेःक्षालनेनतु शाकरज्जुमूलफलदेवतानांतथैवच १ शोधनाभ्युक्षणाद्दस्त्रमृत्तिकादिविशोधनम् वहुवस्त्रेप्रोक्षणाच्चदारवाणांचतक्षणात् २ देवतानांदेवमूर्त्तीनामित्यर्थः शोधनंकेशकीटाद्यपसारणम् ॥

पाषाण और मूसल और उखल और वहुत जो वस्त्रहैं और जो वस्तु का समूह तिनांकी भी शुद्धि जल के सिंचनेंते होतीहे ॥ ३ ॥ और निकालयाहैं तेल जिन्हां तिलांते ऐसे जो तिलादिक तिन्हांकी शुद्धि जलकी और मृत्तका कीन्याई कहीहै । अथवा जल और मृत्तिका करके कहिहे ॥ विष्णु धर्म्मोत्तर विषे भी कहाहै ॥ सहित सज्जी के जो जलहै तिस जल करके वस्त्रांकी शुद्धि कहिहै ॥ और वहुत अन्नां के समूह की भी जलके सिंचणेते होतीहै ॥ १ अब अग्नि पुराणविषेभी कहाहै ॥ क्षार करके कांस्य और लोहेकी शुद्धि होतीहे । और मोती आदि की शुद्धि जलके धोणे ते होतीहै और शाक और मुंजआदि करके रचीजो रज्जुहै और मूलक्या आद्रक और आम्रादि फल और विष्णु आदि मूर्त्तिआं इनांकी शुद्धिजलके सिंचणेतें होतीहे ॥ १ और वस्त्रांकी शुद्धि जल करके शोधनेतें होतीहै।और सिंचणेते मृत्तका आदि की शुद्धि होतीहे ॥ और वहुत वस्त्रां की सिंचणेतें होतीहे । और काष्ठके पात्रांकी भी शुद्धि प्रोक्षणेते होतीहे । शोधन क्या केश कीटादि का दूर करणा ॥ २ ॥

वामनपुराणमें भी कहाहै ॥ मणि और रत्न और मुंग तैसे मोति पाषाण पात्र और काष्ठका पात्र और तृण और गुल्मशर इक्षु प्रभृति और औषधि और पत्थर॥१॥और छज्जा और धान्य और और मृगचर्म और ताम्र और भिक्षुका वासादि रचित भिक्षा पात्रभोजन पात्रादि संपूर्ण तिनां संपूर्णकी शुद्धि जल करके होतीहै॥२॥और थिंदे जोकुप्प आदि पात्र तिनांकी शुद्धि अग्निसें तपाना और तिलांकीखल इन्हांककें मलनेसें होतीहै और कार्पासिक जो वस्त्रहैं तिन्हांकी शुद्धिभस्मके साथ जलकरकें होतीहि ॥ ३ ॥ वैष्णवधर्म्म शास्त्र विषेंभी कहाहै ॥ शयन वस्त्र और यान और आसन और वहुत धान्य और अजिन तंतु रचित रज्जु और वंशपत्र और सूत्र और कार्पास और वस्त्र और शाक और मूल और फल और पुष्प और तृ

वामनपुराणे। मणिरत्नप्रवालानांतद्वन्मुक्ताफलस्यच शैलदारुमयानांचतृणगुल्मौषधाश्मनाम् १ सूर्पधान्याजिनानांचरक्तवैदलवाससाम् वल्कलानामशेषाणामम्बुनाशुद्धिरिष्यते २ सस्नेहानामथोष्णेनातिलकल्केनचापितत् कार्पासिकानांवस्त्राणांशुद्धिः स्यात्सहभस्मना ३ वैष्णवेधर्म्मशास्त्रेपि शयनयानासनानांवहूनांधान्याजिनतांतवरज्जुवैदलसूत्रकार्पासवाससांचशाकमूलफलपुष्पाणांचतृणकाष्टपलालानांच एतेषांप्रक्षालनेनाल्पानां ऊषैः कौशेयाविकयोः आरिष्टकैःकुतपानांश्रीफलैः अंशुपट्टानांगौरसर्षपैः स्यादूषः क्षारमृत्तिकेत्यमरः ॥ याज्ञवल्क्यस्मृतावपिसौवर्णराजतावूजानामूर्धपात्रग्रहाश्मनाम् शाकरज्जुमूलफलवासोविदलचर्म्मणाम् पात्राणां च मसानांचवारिणाशुद्धिरिष्यते १ सौवर्णंसुवर्णपात्रम् तथाराजतम् अव्जंजलजम् मुक्ताफलंशंखादि ऊर्ध्वपात्रंयज्ञोपयोगि मुसलोलूखलादि ग्रहाःषोडशिप्रभृतयःअश्माशिलादि शाकंसर्षपवास्तुकादि

ण और काष्ट परालीइन्हांकी शुद्धिजलके प्रक्षालन करनेंहोतीहै॥और अल्पजो वस्त्रादि तिनकी शुद्धि क्षारमृत्तिका के सहित जल करके होतीहै ॥ और पट वस्त्र इन्हा की शुद्धि रेठयां करके होतीहै ॥ और कुतप जो दुशाले तिनकी शुद्धि विलां के फलां करके होतीहै ॥ और अंशु पट क्या सूक्ष्म वस्त्रांकी शुद्धि सेती सरों करके होतीहै ॥ याज्ञवल्क्य स्मृति विषें कहा है ॥ कि सुवर्ण वस्त्र और रूप्पे के पात्र और जलमें जो उत्पन्नहै मुक्ता फल शंखादि और ऊर्ध्व पात्र क्या यज्ञ पात्र और मूसल और उखलू आदि और सोम रसके स्थापन करण आदि पात्र और शिला आदि और शाक सरों आदि और वास्थू आदि ॥

और रज्जु मुंजादि रचित और मूलआर्द्रकादि और फल आम्र पनस आदि और विदलवंश पात्र और चर्म अजादिका इन्हांविकारांते उत्पन्नहोये जो छत्र आदि और पात्र प्रोक्षणी आदि और चमस यज्ञविषे सोमका पानपात्र आदि और चरु शब्दकरकेचरुस्थाली पात्र प्रकरणते जानणी एहसंपूर्ण दुष्टतैल आदि करके स्निग्धहोंन तां गरम जल करके शुद्ध होतेहैं ॥ तिसविषे भी निर्लेप जो स्थानहैं जिसविषे लेपण नहि वापात्र और सुवर्णपात्र और मुक्ता फल आदि और पाषाणमय पात्रादि और रूप्यके पात्रादिएह जलां करके शुद्धहोतेहैं ॥ और अनुपस्कृत क्या कुमारके हस्थतें नवीन जो लिआहै घटआदि तिसकी शुद्धि भी जल करके होतीहै ॥ मनुजीके स्मरणते अलिप्त जो स्थानहै वापात्रहै सो जलां करके शुद्धहोतेहैं ॥ और लि

रज्जुमुंजादिरचिता ॥ मूलमार्द्रकादि ॥ फलमाम्रपनसादि ॥ विदलंवंशजपात्रम् ॥ चर्म्मअाजमेषादि ॥ एतद्विकारजानि छत्रादीनि ॥ पात्राणांप्रोक्षण्यादीनां॥चमसानांहोतृचमसप्रभृतीनां॥चरुशब्देनचरुस्थाली पात्रप्रकरणात् । एतानिदुष्टतैलादिनास्निग्धानिचत्तदोष्णेनजलेनशुद्ध्यन्ति तत्रापि निर्लेपंकांचनंभांडमद्भिरेवविशुद्ध्यति॥ अब्जमश्ममयंचैवराजतंचानुपस्कृतमिति मानवीयस्मरणादलिप्तान्येवजलेनशुद्ध्यन्ति ॥ लिप्तानितु॥ तैजसानांमणीनांचसर्वस्याश्ममयस्यच ॥ भस्मनाद्भिर्मृदाचैवशुद्धिरुक्तामनीषिभिरिति ॥ तदुक्तादिशाशुद्ध्यन्ति । मार्जाराद्युच्छिष्टंपात्रंतुशुच्येव ॥ मार्जारश्चैवदर्वीच मारुतश्चसदाशुचिरितिमानवात् ॥ काकाद्युच्छिष्टपात्रे स्मृत्यंतरम् ॥ कृष्णशकुनिमुखावघृष्टंपात्रंनिर्लिखेत्॥ श्वापदमुखावमृष्टंपात्रंनप्रयुंजीतेति अनुपस्कृतंतद्घटकहस्तादेवगृहीतंनतुप्रवर्त्तितम् निर्लेखनंघटनासाधनादिनाघर्षणम् नप्रयुंजीतेति अतैजसपात्रविषयम् ॥

प्तजो किसेनिंद वस्तु करकेहै तिन्हांके अर्थ कहतेहैं । तैजसपात्र और मणियां और संपूर्ण जो पाषाण पात्र इनकी शुद्धि बुद्धि मानां ने भस्म जलां करके और मृत्तिका करके कहीहै ॥ तिसतेंआद लय के क्याहोर भी शुद्ध होतीहे । एह मनुजीके कहेहोए प्रकार तेहैं ॥ और बिडाल आदि करके उच्छिष्ट जो पात्रहै सों शुद्ध कहाहै बिडाल और डोई और वायु एह सदा पवित्रहैं ॥ मनुवाक्यते काक आदि उच्छिष्ट पात्र विषे अन्य स्मृतिहै ॥ कृष्ण पक्षिके मुखकरके घर्षण होया जो पात्रहै सो छिलणे करके शुद्ध होताहै ॥ और श्वान मुख करके अर्थात् श्वापद मृगविशेष के मुखकरके युक्त जो पात्रहै तिसको ना ग्रहण करे जेकर मृतिका होवे तां पूर्वोक्त रीतिसें ग्रहण करणा कहाहै

और इसविषे बौधायनऋषिका वाक्यहै ॥ तैजस जो पात्रहैं मूत्र और पुरीष और रुधिर और मिज्ज और मद्य इन्हांकर्के चिरकालयुक्त होनतां अग्निविषे फेर घडनेंतें शुद्धहैं ॥ थोडे संसर्ग विषें छिलणे कर्के शुद्धिहै और स्पर्श विषे भस्म कर्के इक्की वार २१ मांजणेतें शुद्धिहै और जो तैजस पात्र नहिंहैं तिनका त्याग कहाहै ॥ अब पराशर जीका वाक्यहै ॥ कटाह आदि पात्रां की शुद्धि लोह साधन कर्के घर्षणतें होतीहै ॥ एह मार्कंडेय पुराण विषे भस्म कर्के भी शुद्धि कहीहै ॥ और हस्ति दंत कर्के रचे जो पात्रहैं ॥ और अस्थियां कर्के रचित शृंग और रूप्य

अत्रबौधायनः। तैजसानांमूत्रपुरीषासृक्कुणमद्यैरत्यंतमाहतानामावर्त्तनम्। अल्पसंसर्गेतुपरिलेखनम् स्पर्शमात्रोपघातेतुत्रिःसप्तकृत्वोभस्मनापरिमार्ज्जनमतैजसानामेवंभूतानामुत्सर्गइति आवर्त्तनंपुनरग्नितापेनघटनम्॥ पराशरः॥ आयसेष्वायसानांचसीसस्याग्नौविशोधनम् दंतमस्थितथाशृंगं रौप्यंसौवर्णभाजनम्॥१॥ मणिपात्राणिशंखश्चेत्येतान् प्रक्षालयेज्जलैः पाषाणेतुपुनर्घर्षः शुद्धिरेषाह्युदाहृतेति आयसानांकटाहादीनांआयसेषुअयोमयेषुघर्षणसाधनेषुशोधनंघर्षणम्। मार्कण्डेयपुराणेतुभस्मघर्षणमप्युक्तम्॥ गात्राणांचमनुष्याणामंबुनाशौचमिष्यते॥ तथायसानांतोयेनभस्मसंघर्षणेनचेति अंत्यजादिस्पर्शेतोयेन अमेध्याद्युपहतेभस्मसंघर्षणेनेतिविवेकः दंतंहस्तिदंतमयंकरंडादिपात्रमेवमग्रेपि १ मणिपात्राणिप्रवालस्फाटिकादिघटितानि पाषाणपात्रस्यतुतोयंपाषाणघर्षणंचेत्युभयमपिशुद्धिहेतुः॥ २॥ पुनरपिसएव चरुस्रुकस्रुवसस्नेहपात्राण्युष्णेनवारिणा स्फसूर्पाजिनधान्यानांमुसलोलूखलानसाम् प्रोक्षणंसंहतानांचवहूनांधान्यवाससाम्॥

कापात्र सुवर्ण पात्र १ और मणिपात्र और शंख इनकों जलकरके शुद्धकरे जेकर चांडालादि करके स्पर्श होन और अमेध्यवस्तु करके उपलिप्त होन तां भस्म करके घसाणेतें शुद्धि होतीहै और पाषाणकी शुद्धि जल करके वा भस्मकरके होतीहै ॥ और मनुष्यादिके अंगांकी और पुरुषांकी शुद्धि जल करके होतीहै एह यथायोग्यतासें अर्थ करणा ॥ फेर पराशर जीका वचनहै चरूस्थाली और स्रुक् और स्रुव आदिजो थिंदेपात्रहैं तिन्हांकी शुद्धि गरम जल करके होतीहै

और स्फःक्या वज्र यज्ञका अंग और सूर्प और मृगचर्म और धान्य और मूसल और उखल और गडा इनकी भी गरम जलकरके शुद्धि कहिहै और जो अजिन कहाहै सो यज्ञके योग्यजा नणा पुनरुक्तितें ॥ जोवहुत धान्यहैं और वहुत जोमिले होये वस्त्रहैं ॥ अमेध्यविष्टा आदिकरके युक्तहैं तिनांविषे मूत्र पुरीष आदि युक्तहैं तिनकीधोणे करके शुद्धि होतीहै ॥ और जो अमेध्यक रके नहि उपलिप्त अर्थात् स्पर्श वालेहैं तिनकी शुद्धि जलकरके सिंचणे तेहोतीहै एह विचार एक जो समूहहै धान्यका वावस्त्रांका तिन्हांवस्त्रां वहुतेयांविषे कुछमूत्रपुरीषकरके स्पर्शहै तिन्हा की शुद्धि धोणें करके और दूसरेयांदी सिंचणेतें होतीहै एह व्यवस्था ऐसे जानणी कि स्पष्ट थोडे होण और अस्पृष्ट वहुत होण ॥ और जो चांडाल आदि करके स्पर्श वाले वहुत होण

स्फोवज्जोयज्ञांगम् ॥ अनःशकटम् एषामप्युष्णेनजलेनशुद्धिः अत्राजिनंय ज्ञोचितंवोध्यम्। पुनरुक्तत्वात् यानिवहूनिधान्यानि वासांसिसंहितानि अ मेध्याद्युपहतानितत्रोपलिप्तानांक्षालनेन अवशिष्टानांप्रोक्षणेनेत्येकस्यांरा शौविवेकोयंस्पृष्टानामल्पत्वेऽस्पृष्टानांवहुत्वेज्ञेयः यत्रचांडालादिस्पृष्टानां वहुत्वमितरेषामल्पत्वंतदा तेषांक्षालनमेवोचितम् स्पृष्टास्पृष्टसमत्वेपिप्रो क्षणमेव अल्पानांक्षालनमिति वहुत्वप्रतिशेषितयाज्ञेयम् तथाचमनुः॥ अ द्भिस्तुप्रोक्षणंशौचंवहूनांधान्यवाससाम् प्रक्षालनेनत्वल्पानामद्भिः शौचं विधीयत इति ॥ अथवस्त्रादिशुद्धिः तत्रयाज्ञवल्क्यः ॥ सोषैरुदकगोमूत्रैः शुद्ध्यत्याविककौशिकम् सश्रीफलैरंशुपट्टंसारिष्टैः कुतपंतथा १ अस्यार्थः ऊषाक्षारमृत्तिकास्यादूषा क्षारमृत्तिकेत्यमरात् तत्सहितैःसोषैरुदकैर्गोमूत्रै र्वा आविकं अविजातोर्णादिभवम् कौशकं कृमिकोशोत्पन्नपट्टपदवाच्यनि र्मितम् शुद्ध्यति वल्कलतन्तुकृतंवस्त्रंअंशुपट्ट तत्श्रीफलैर्विल्वफलसहितैरु दकगोमूत्रैःशुद्ध्यति

और स्पर्शतें रहित थोडे होणतांसंपूर्णांकी शुद्धि धोणेकरके हीहोतीहै ॥ और चांडालादिकरके स्पृष्ट स्पृष्ट वरावर होणतां सिंचणे करके दूहवां की शुद्धिहै ॥ और थोडेयां की धोण करकेशु द्धिहै यह वहुतेयांतें शेष होणेतें जानणां ॥ तैसें मनुजीकावाक्यहै ॥ वहुतजो धान्यहैं और वस्त्र हे तिनकी शुद्धि जलसिंचनतें होतीहै ॥ और थोडियां की जल करके धोणेते होतीहै इसतेअ नंतर वस्त्रांआदिकी शुद्धि कहतेहैं ॥ तिसविषे याज्ञवल्क्यजीकावाक्यहै क्षारमृतिका करके युक्तजो जलवागोमूत्र तिस करके ऊर्णवस्त्र और कीडेंते उत्पन्नहोये वस्त्र शुद्धहोतेहैं ॥ और वृक्षांकी त्व चातें ततुवां करके वने जोवस्त्रहै अंशु पट नाम करके ख्यात ॥ सोविल्व फल करके युक्त जो जल वा गोमूत्र तिस करके शुद्ध होताहै ॥

श्रोर नेपालदेशते रचयाजो कंवल तिसकी शुद्धिरेठयांकर्के युक्त जो जल वा गोमूत्र तिसकर्के होतीहै एह शुद्धि वहुत निंदत जो थिंदआई आदिक तिस कर्के युक्त जो वस्त्र तिन्हांविषे जानणी ॥१॥ श्रोर थोंडी थिंदयाई कर्के युक्त जो वस्त्रतिन्हांवास्ते देवलजीका वाक्यहै ॥ ऊर्ण वस्त्र श्रोर पट वस्त्र श्रोर दुशाला श्रोर पट श्रोर अलसी कीयांततुतें उत्पन्नहोये जो वस्त्र तिन्हां विषे थोडी अशुद्धि होवेतां सुकाणे कर्के श्रोर जलके सिचणेतें शुद्धि होतीहै ॥ इसजगा कौशेय शब्द कर्के कुशाके वनाए होए आसनादि जानणे क्योंकि पट्ट पदसें जुदे होणेते श्रोर निंदत जो महा अपवित्र विष्टा आदि तिस कर्के युक्त होए वस्त्र तिनां दी शुद्धि नूं देवल ऋषि ही कहताहै ॥ सो पूर्व कहे जो वस्त्रादि अपवित्र वस्तु कर्के युक्त होनतां तिनां वस्त्रां की जिस जिस के जोजो वस्तुहैं क्या धान्नाते कडे होए जो तोह श्रोर फलांकेजो रसहैं श्रोर क्षारवस्तु तिन्हां

कुतपंकंवलोनैपालादिजन्यः सारिष्ठैः अरिष्ठः फेनिलः रेठाइतिभाषितः तत्सहितैरेवोदकगोमूत्रैः शुध्यति इदंदुष्टस्नेहादिदृढतरोपघातिद्रव्यम् अल्पोपघातेदेवलः ऊर्णाकौशेयकुतपपट्टक्षौमदुकूलजाः अल्पाशौचाभवंत्येते शोषणप्रोक्षणादिभिरित्याह। अत्रकोशेयं कुशनिर्मितमासनादिबोध्यंपृथगुपादानात् अमेध्याद्युपघातेपिसएवाह तान्येवामेध्ययुक्तानिक्षालयेच्छोधनैः स्वकैः धान्यकल्कैस्तुफलजैरसैःक्षारानुगैरपीति १ अत्रक्षौमपदंशाणाद्युपलक्षकंज्ञेयम् तूलकादीनामपिक्षालनासत्त्वात्प्रोक्षणमेवेत्याहसएव तूलिकामुपधानंचपुष्परक्ताम्वरंतथा शोषयित्वातपेकिंचित्करैः सम्मार्जयन्मुहुः १ पश्चात्तुवारिणाप्रोक्ष्यविनियुंजीतकर्म्मणीति। अतिमलीनत्वेतुतथैवेत्याह तान्यप्यतिमलिष्ठानियथावत्परिशोधयेदिति पुष्पंकौसुंभादिहरिद्रोपलक्षकम् मांजिष्ठकंतुक्षालनसहत्वात्तादृक्कर्मणैव शोधनीयम् ॥

कर्के शुद्ध करे ॥ १ ॥ इस विषे क्षोम पदकर्के शणके वस्त्रकोभी जानणा। श्रोर रजाई श्रोर सिराणा आदिकों धोणेके अभाव होणेतें क्या नहि सहारणेतें सिचणा ही कहाहै ॥ श्रोर रजाई सिराणा आदि श्रोर पुष्प क्या कुसुंभा आदि हरदल कोभी इसमें जानणा॥श्रोर रक्त वस्त्र इन्हां कोभी थोडा काल आतप विषे सुकायके हथां कर्के वार वार मले ॥ १ ॥ श्रोर पीछे जल कर्के सिंचे ऐसें शुद्ध कर्के अंगी कार कर लेवे ॥ जेकर अतिशय कर्के मलीन होनतां कहतेहां॥सो अतिशय कर्के मलीन होनतां तिन्हां को यथावत पूर्वोक्त रीतीसे शुद्ध करे॥श्रोर मंजीठ कर्के रंजित जो वस्त्रहै अति मलीन सो धोणे को सहारनेहैं इस कर्के धोणे कर्के शुद्ध होताहै ॥

पराशरजी विशेषकहतेहैं । वेणु और वल्कल जो चीरहैंण क्या ताडवृक्षके त्वचा पत्रादि और क्षौम और कार्पासजो वस्त्रहैं और ऊर्ण और नेत्र पट जो वनवासियांनें धारीदेहैं वस्त्र विशेष तिनकी शुद्धि जलके सिंचणेतें होतीहै ॥ सगौर इति । अलसीके वस्त्र की शुद्धि सेती सरों करके युक्त जो जल वा गोमूत्र तिस करके होतीहै । और पृथ्वी पात्र क्या घटा शरावादि क्या टूठा तिसकी शुद्धि फेर अग्नि विषे पकाणेतें होतीहै । जेकर उच्छिष्ट घृतादि कर्के क्या जूठे घेउ कर्के दूषित होवे तां अग्नि कर्के शुद्ध करे ॥ और कारी गिर का हत्थ शुद्धहै और हट्टी विषे घृतादि वस्तु शुद्धहै ॥ और भिक्षा का अन्न शुद्धहै और स्त्रीका मुख शुद्धहै ॥ १ ॥ अपवित्रता करके युक्त विषे तुपुनः देवल जीका वाक्यहै । मद्य और मूत्र और पुरीष और श्लेष्म और पूय रक्त विकार अश्रु और रुधिर इनां करके स्पृष्ट जो मृण्मय घट शराव आदि सो और किसे करके नहि शुद्ध होते । किंतु फेर पकाणेते शुद्ध होतेहैं ॥ १ ॥ पराशर

विशेषमाहपराशरः ॥ वेणुवल्कलचीराणांक्षौमकार्पासवाससाम् ऊर्णनेत्र पटानांचप्रोक्षणाच्छुद्धिरिष्यतइति । सगौरसर्षपैःक्षौमंपुनःपाकान्महीम यम् । कारुहस्तःशुचिःपण्यंभैक्ष्यंयोषिन्मुखंतथा ॥ १ ॥ क्षुमाअतसीत दीयंवस्त्रंक्षौमंतत्तुसगौरसर्षपैरुदकगोमूत्रैः शुद्ध्यतीतिपूर्वेणैवसंबन्धः ॥ म हीमयंघटशरावादिउच्छिष्टघृतादिदूषितंपाकाद्वह्न्याशुद्धंभवति अमेध्याद्यु पलिप्तेतुदेवलः मद्यमूत्रपुरीषैश्चश्लेष्मपूयाश्रुशोणितैः संस्पृष्टंनैवशुद्ध्येत पुनःपाकेनमृण्मयामिति ॥ १ ॥ पाराशर्यविशेषः चाण्डालाद्यैस्तुसं स्पृष्टंधान्यंवस्त्रमथापिवा प्रक्षालनेनशुद्ध्येतपरित्यागान्महीमयम् ॥ १ ॥ परित्यागात्परित्यजेदित्यर्थः यद्वापरित्यागादेवशुद्ध्यतितादृशघटादिपरि त्यक्तंवर्त्तनविहीनंकालान्तरेशुद्धंभवतीत्यर्थः वाक्प्रशस्तंचिरातीतमितिव क्ष्यमाणवाक्यात् ॥ १ ॥ उत्तरार्द्धमग्रेव्याख्यातवामनीयसदृशम् ॥ वि ष्णुधर्म्मोत्तरेप्येवम् ॥ अथाग्निपुराणोक्तमृण्मयादिपात्रशुद्धिः ॥ मृण्मयं भाजनंसर्वंपुनःपाकेनशुद्ध्यति ॥ मद्यैर्मूत्रपुरीषैर्वाष्ठीवणैः पूयशोणितैः संस्पृष्टंनैवशुद्ध्येतपुनःपाकेनमृण्मयम् ॥ १ ॥

जोंके वाक्य विषे विशेष कहाहै ॥ चांडाल आदि कां करके स्पर्श होये जो धान्य वा वस्त्र सो धोणें करके शुद्धि को प्राप्त होतेहैं । और घट आदि का त्याग कहाहै ॥ अथवा तिस घट को वर्त्तन क्या व्यवहार विषें ना वर्त्ते सो त्यागिया होआ चिर काल करके शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ विष्णु धर्म्मोत्तर विषें भी ऐसे कहाहे इसतें अनंतर अग्नि पुराण विषें कहाहै ॥ मृण्मय पात्र आदि शुद्धि ॥ मृण्मय जो संपूर्ण घट आदि पात्र उच्छिष्टादि दोष करके निंदत होवेतां फेर अग्नि विषे पकाणें करके शुद्ध होताहै ॥ और मद्यमूत्र और पुरीष और ष्ठीवन क्या थुक इन्हां करके स्पर्श होवे तां फेर अग्नि विषें पकाणे करके भी नाहिं शुद्ध होताहै ॥ १ ॥

श्रीर मदरा मूत्र आदि करके स्पर्श वाला तांबे कापात्र और सुवर्ण पात्र और रुप्येके पात्रहो णतां फेर भन्नकरके घडेतां अग्नि विषे शुद्धहोतेहैं औरजेकर मदिरा आदि करके नस्पर्शहोवे तांकेवल जल करके शुद्ध होतेहैं ॥ २ और तांबेकापात्र खटयाई करके युक्त जलकरके शुद्धहोता है और तैसेंहि सिक्केकापात्र और जस्तका पात्र शुद्ध होताहै और कांस्यपात्र और लोहेका पात्र इनकी शुद्धि क्षार करके होतीहै ॥ ३ ॥ मोती और मणिया और मुंगे इनांकी शुद्धि धोणेक रके होतीहै औरअन्यजो होर भांडे औरसंपूर्ण जोपाषाणपात्र औरशाक और रज्जु और मूल और फल और वेदल क्याभिक्षुका भिक्षा पात्र ४ ॥ और यज्ञ भाडे इनकी शुद्धि जलसें धो

एतैरेवतथास्पृष्टंताम्रसौवर्णराजतम् शुद्धयत्यावर्त्तितपश्चादन्यथाकेवलांभसा २ ॥ आम्लोदकेनताम्रस्य सीसस्यत्रपुणस्तथा क्षारेणशुद्धिःकांस्यस्यलोहस्यचविनिर्दिशेत् ३॥ सीसस्यसिक्कतिस्यातस्य त्रपुणः जिस्तेतिस्यातस्य ॥ मुक्तामणिप्रवालानांशुद्धिःप्रक्षालनेनतु अन्येपांचैवभांडानां सर्वस्याश्ममयस्यच शाकरज्जुमूलफलवैदलानांतथैवच ४ मार्जनाद्यज्ञभांडानांपाणिनामाग्निकर्माणि५पाणिनांवाद्यभांडानामाग्निकर्म्माणि प्रतापेसति शुद्धिरित्यर्थः॥ यद्वापाणिनाह्यग्निकर्म्मणीतिपाठ स्तत्रपाणिनाहस्तेनदाक्षिणेन इदंवस्त्रदशादर्भपवित्राणामुपलक्षणम् उष्णांभसातथाशुद्धिः सस्नेहानांविनिर्दिशेत् शुद्धिर्द्रुमाणांविज्ञेयानित्यमुत्पवनेनतु ॥ ६ प्रोक्षणात्संहतानांतुदारवाणांचतक्षणात् सिद्धार्थकानांकल्केनशृंगदंतमयस्यच ।७। शुद्धिश्चकाचभांडानां केवलेनतथांभसा ॥ ८ विष्णुधर्म्मोत्तरेप्येवम् । ॥

णे करके होतीहै और पाणि क्या छैणे आदि वाजेयांकी शुद्धि अग्नि विषे तपाणे करके होतीहै यद्वा पाणि क्या दक्षिण हत्थ करके अग्नि कर्मविषें शुद्धिहै औरवस्त्रकीयां दसीयां औरदर्भ पवित्रभी दक्षिण हाथ विषे लैणे करके शुद्धिहोतीहै ५ ॥ औरगरम जल करके शुद्धि होतीहै थिंदयाई वाले पत्रांकी औरवृक्षांकी शुद्धि नित्य वायुकरके होतीहै ६ ॥ और आपसविषें मिलयां होयां पात्रांकी सिंचणेतें शुद्धिहै और काष्ठ पात्रांकी शुद्धि छिलणेंत होतीहै और तेलघृत आदि पात्रांकीऔर शृंग पात्र औरहस्तिदंत पात्रकी तिलांकी खलकर्के होतीहै ७॥ और कचके जोपात्र हैंतिनूहांकी शुद्धि केवल जलकरके होतीहै ॥ ८ और विष्णुधर्मोत्तर विषें भी ऐसे जानणा

(प्रश्ण) जो प्रकीर्णक प्रकरणमें भविष्यपुराण का वचनहै ॥ नीलीति नीलकरके रंगी होई धोती आदि वस्त्र कों जेकर कोई ब्राह्मण अंगा विषे धारे तां दिनरात्र व्रतके पीछे पंचगव्यके पीणे करके शुद्ध हुंदाहै ॥ इस जगा केवल नील करके हिरंगया होयाजानणा अथवा जिसमें नीलका लेश भी होवे सो भी त्यागणा । जेकर नील लेश वालेका भी त्यागहै तोजिसमें थो डियांतंदु नीलीयांहैं ऐसे धोती आदि वस्त्रांकों लोक क्यों धारदेहैं । थोडे मदिरा वाले जलका भीपीणेमें निषेधहै (उत्तर) इसमें ऐसाविचारहै कि जिसतरां योग करके विष अमृत होजां दाहै ओर केवस्तुके योगते अमृत भी विष हुंदाहै इसन्यायते ओर खोटे योग जो मृत्यु आदि

ननु प्रकीर्णकप्रकरणेभविष्यम् । नीलीरक्तंयदावस्त्रंकश्चिद्विप्रस्तुधारयेत् अहोरात्रोपितोभूत्वापंचगव्येनशुद्ध्यतीत्यत्र । केवलनीलीरक्तमेवाशुद्धंवा नीलीलेशाक्तमपि द्वितीयपक्षे नीलतंतुसंवलितं शाटयादि लोकैःकथंगृ ह्यते नहि मद्यविन्दुमिलितघटमितमपिजलंगृह्यते ॥ अत्रोच्यते । यथा हियोगादमृतायतेविषंविषायते वाप्यमृतंहियोगत इत्यादिन्यायेन अयो गेसुयोगोपिचेत्स्यात्तदानीमयोगनिहत्यैषसिद्धिंतनोतीत्यादिन्यायेन च शुभयोगवाहुल्येऽशुभयोगाल्पत्वेशुभमेववस्तुज्ञायते तथाच ॥ हरितादिर क्तोर्णादिवस्त्रेनीलीलेशोपिदाडिमादिफलशुभरससंयोगात् देवपूजादौतद्ग्र हणेनदोषः तथा ॥ नीलतंतुसंवलितंकार्पासशाटयादिनदोषावहम् जलेम द्यविन्दुसंयोगदृष्टांतस्तुविषम एव तद्ग्रहणेदोषप्रतिपादकस्य सुरापान स्ययोभांडेष्वपःपर्युषिताःपिवेत् शंखपुष्पीविपक्वंतुक्षीरंसतुपिवेत्त्र्यहमि त्यादिबौधायनादिवचनस्यसद्भावात् अत्रतु तादृशवचनस्यानुपलंभादिति प्रतिभाति परंतु रागांतराधिक्येनीलीलेशाल्पत्वएवेदमितिज्ञेयम् नीलंप ट्टंजलंतक्रेगोशालाम्लेच्छमंदिरमित्यादिविशेषस्तत्रैववोध्यः॥

तिनोंमे जेकर अमृत सिद्धयोगादि होण तां खोटायां को दूरकरके शुभ योगसिद्धिदिंदेहैं ॥ इस न्यायते भी जाणीदाहै । कि शुभ वस्तु ज्यादाहोवे ओर अशुभ थोडी होवे तां सो शुभहि जानणी । तैसाहि जेडे हरेजंगाली रंगके वस्त्रहैं तिनमे नील का संयोग थोडाहै । ओर दाडि मादिके शुभफलका संयोग वहुतहै इसकर्के इना ऊर्ण वस्त्रांका पूजादि विषे धारणे का नि षेध नहि जानणा ॥ तैसेही कोई नीलतंदू वाली धोती आदिका भी धारणेमे दो षनहि ॥ ओर जोदृष्टांत किहाहै मदिरा वाला सो इसकें वरावर नहि क्योंकि उसमें वचनहे ओर इसमेंनहि सो मूलमें लिखयाहै ॥

वामन पुराण विषे भी कहाहै कि खिदयाई कर्के युक्त जो अशुद्ध पात्रादि तिनकी शुद्धि गरम जलकर्के वा बहुत गरम खल कर्के होतीहैं और हस्तिदंतादि की तक्षणते होतीहै ॥ १ इसविषे भस्मयुक्त जल और मृत्तिका जल इनांका भी ग्रहणहै जितना पर्य्यंतमल और दुर्गंधि न दूर होवे तावत् काल पर्य्यन्त संपूर्ण द्रव्य शुद्धि विषे मृत्तिका और जल देणे योग्यहै पात्र विषे एह सामान्य शुद्धि और ही स्मृति का वाक्यहै २ । हस्ति दंत और अस्थि और शृंग इनकी शुद्धि जितने स्थान विषे अशुद्धता होवे तावन्मात्रके छिलणे कर्के कहीहै॥ तैसे कहाहै । मृण्मय जो पात्र हैं तिनकी शुद्धि फेर अग्नि विषे पकाणे कर्के कहीहै ॥ और तांबेके पात्र और कलिके पात्र

वामनपुराणे सस्नेहानामथोष्णेनतिलकल्केनचापितत् नागदंतास्थिशृंगानांतक्षणाच्छुद्धिरिष्यते १सस्नेहानामुच्छिष्टस्नेहाद्युपलिप्तानामुष्णेनवारिणा तिलकल्केनवाशुद्धिः॥इदमपिभस्मोदकमृद्वार्य्याद्युपलक्षणम् ॥ यावन्नापैत्यमेध्याक्तोगन्धोलेपश्चतत्कृतः तावन्मृद्वारिचादेयंसर्वासुद्रव्यशुद्धिष्विति २ सामान्यशुद्धौ स्मृत्यन्तरम् ॥ तक्षणं तावन्मात्रावयवापनयनम्॥तथाच पुनःपाकेनभांडानांमृण्मयानांचमेध्यता औदुम्बराणांचाम्लेनक्षारेणत्रपुसीसयोः १ भस्मांबुभिश्चकांस्यानांशुद्धिःप्लावोद्रवस्यच अमेध्याक्तस्यमृत्तोयैः शुद्धिर्गन्धापकर्षणात् २ याज्ञवल्क्यः॥ त्रपुसीसकताम्राणां क्षाराम्लोदकवारिभिः भस्माद्भिःकांस्यलोहानांशुद्धिःप्लावोद्रवस्यतु॥१॥ अर्थः क्षारोदकेनअम्लोदकेनवारिणाऽत्राप्युपघाततारतम्येन समस्तेन व्यस्तेन वेति व्यवस्थापनीयम् ॥

और सिक्केके पात्र तिनकी शुद्धि खटयाई वाले जलकर्के और खारे जल कर्के कहीहै ॥ १ और कांस्य पात्रांकी शुद्धि भस्म संयुक्त जल कर्के कहीहै ॥ और द्रव जोहैं घृत तैलादि वस्तु तिनकी शुद्धि जितने तक दूरहोसके उप्परसे वगाणेते तितनेते मलादिके दूर करणे कर्के होतीहैं और अमेध्यता कर्के युक्त जो पात्र आदि तिसकी शुद्धि मृत्तिका और जल कर्के दुर्गंधि के दूर करणेते होतीहै २ ॥ अब याज्ञवल्क्यजीका वचनहै कली और सिक्का और ताम्रइनांके पात्रांकी शुद्धि क्षारे जल कर्के और खटयाई युक्त जल कर्के और कांस्य और लोहेके पात्रांकी भस्म और जल करके होतीहै॥१ इसविषे भी मलके बहुत थोडा होणेते संपूर्ण क्षार आदि जलकर्के वा एक कर्के शुद्धिकी व्यवस्था जानणी ॥

ताम्रेति ताम्रपदतें एकजगा उत्पत्ति होणेतें पित्तल वालीवस्तु और लोहेकाभी उपलक्षण जानणा जिसताम्रादि पात्रांविषें मलकासंयोग जिसवस्तुकरके दूरहोवे सोईतिसका शोधन कहाहै इत्यादिकसामान्य द्रव्य शुद्धिके करणे वालाहै॥इसकरके ताम्रआदि पात्रकी सामान्य शुद्धि मृत्तिका आदि करकेभी कहीहै नियमके अभाव होणेंते कयापूर्वोक्तताम्रादि शुद्धि विषें कोईनियम नहि है॥तैसेमनुजीका वाक्यहै ताम्रऔर लोह औरकांस्य और पित्तल औरकालि औरसिक्का इनकी शुद्धि जैसेयोग्य होवे तैंसे क्षार युक्त जल और खटयाई युक्त जल औरजल इनांकरके कहीहै १॥शुद्धिः प्लावइति द्रवजो द्रव्यहै घृतआदिसोकुत्ता औरकाक आदि कर्के उच्छिष्टहोवे तिसकी शुद्धि सजातीय द्रव्य घृत आदि करके पात्रकों अतिपूर्ण करणा फेर वाहर घृतआदिके निरसणे ते जानणी यह शुद्धि प्रस्थपरिमाणते अधिककी होतीहै ॥औरतिसतें अल्पकात्यागकहा

ताम्रपदमत्रैकयोनित्वाद्रीतिकावृत्तलोहयोरुपलक्षणम् ॥ मलसंयोगजंतज्जंयस्ययेनोपहन्यते तस्यतच्छोधनंप्रोक्तंसामान्यद्रव्यशुद्धिकृदित्यादिसामान्यशुद्धिरपिताम्रादेर्मृदादिकृताग्राह्या नियमाभावात्।तथाचमनुःताम्रायःकांस्यरैत्यानांत्रपुणःसीसकस्यतु शौचंयथार्हंकर्तव्यंक्षाराम्लोदकवारिभिरिति ॥ शुद्धिः प्लावइति ॥द्रवद्रव्यस्य घृतादेः श्वकाकाद्युपहतस्य प्लवः प्लावनम् ॥संजातीयेनद्रवद्रव्येणभांडस्यातिपूरणायावन्निस्सरणंशुद्धिः।एतच्च प्रस्थपरिमाणाधिकस्यैवतदल्पस्यतुत्यागएवेतिविज्ञानेश्वरः।वह्वल्पत्वव्यवस्थापिदेशकालादिनिबंधनेति॥बौधायनोयथा ॥ देशकालंतथात्मानंद्रव्यंद्रव्यप्रयोजनम् उपपत्तिमवस्थांचज्ञात्वाशौचंप्रकल्पयेदिति ॥ १ ॥

है॥अवविज्ञानेश्वरकावाक्यहै वहुत औरथोडा तिसकी व्यवस्था देशकाल आदि निबंधनते जानणी अर्थात् जिसतरां वहुत शीत वाला देशजोहै अथवा माघमासादि काल इनुहांकी विषेंनाहिं भी कहा होवे तथापि गरम जल करकेहि प्रक्षलनादि करणे औरहोर देश कालविषें गरम जलकी जगा भी ठंडे जलकरके ही पूर्वोक्त व्यवहार करणा औरथोडे धनवालेको वहुत द्रव्यका परित्याग नहि होसक्ता इसकरके उसने प्लावादि करके द्रव्य शुद्ध करलेणा औरवहुत धन वालेको थोडे द्रव्यके त्यागमें कोई कष्ट नाहि तद उसने उसका त्यागहीकरणा यहआदि पदकाअर्थहै॥जैसेबौधायन ऋषिका वाक्यहै देश औरकाल औरआत्माकी स्वस्थता और द्रव्य औरद्रव्यका प्रयोजन औरसिद्धि और अवस्था इनांकी जाण करके शुद्धिकी कल्पनाकरे १

जो द्रव क्या वगणे वाला द्रव्य जेकर कीट आदि करके युक्त होवे तां वस्त्र करके पात्र विषे पुणनेते शुद्ध होताहै ॥ तैसे मनु जीका वाक्यहै ॥ कि संपूर्ण द्रव्यांकी शुद्धि वस्त्र करके पुणनेनें कहीहै ॥ और अशुद्धपात्र स्थित जो मधु घृत आदि तिसकी शुद्धि और ही पात्र विषे स्थापन करणेनें होतीहै ॥ और शूद्र आदि के हस्थतें ग्रहण कीतेजो पूडे आदि तिनाकी शुद्धि फेर अग्निविषे पकाणेनें होतीहै ॥ बौधायन और शंख जी कहतेहैं ॥ मधु जल क्या शर्बत और दुग्ध आर तिनां के विकार यह संपूर्ण पात्रतें होरही पात्र विषे स्थापन करणे करके शुद्ध कहेहै ॥ घृत करके तले होये जो पदार्थ अशुद्ध होण तिन्हांका फेर पकाणा ही शुद्धि है ॥ ऐसे ही स्नेहांकी क्या तेलादि की जानणी और रसांकी शुद्धि स्नेहकी न्याई जानणी॥ ब्रह्मपुराण विषे भी ऐसे हि किहाहै अब विष्णुस्मृति विषे भी कहतेहै ॥ अतिशय करके अशु

द्रवद्रव्यंकीटाद्युपहतंचेत्तदावस्त्रांतरितपात्रप्रक्षेपेणशोध्यम्।तथाचमनुः द्रव्याणांचैवसर्वेषांशुद्धिरुत्पवनंस्मृतामिति ॥ उत्पवनंपुणनाइति भाषितम् अथमपात्रस्थमधुघृतादेः पात्रांतरस्थापनेन शूद्रादिहस्ताद्गृहीतानामपूपादीनांपुनःपाकेनशुद्धिरिति ॥ बौधायनशंखौयथा मधूदकंपयस्तद्विकारश्चपात्रात्पात्रांतरानयनेनशुद्धाइति॥ अभ्यवहार्य्याणांघृतेनाभिघारितानां पुनःपचनमेवंस्नेहानांस्नेहवद्रसानामितिच ॥ अभ्यवहार्य्याणांभक्ष्याणाम् ब्रह्मपुराणेप्येवम् ॥ विष्णुस्मृतावपि अत्यंतोपहतसर्वलोहभाण्डंवह्नौप्रक्षिप्तंशुद्ध्येत् । मणिमयमब्जंसप्तरात्रंमहीनिखननेन शृंगदंतास्थिमयंसंतक्षणेनदारवंमृण्मयंजह्यात् । सौवर्णराजताब्जमणिमयानांनिर्लेपानामद्भिः शुद्धिः ॥ अश्ममयानांचमसानांग्रहाणांचदारुस्त्रुक्स्रुवानामुष्णेनांभसा ॥

द्ध जो संपूर्ण लोह पात्र सो अग्नि विषे पाणे करके शुद्ध होताहै ॥ मणि मय और जलतें उत्पन्न हुंदे जो कौडी आदि सो सप्तरात्र पृथवी विषे दबणे करके शुद्ध होतेहैं ॥ शृंग और दंत और अस्थि विकार इनकी शुद्धि छिलणे करके है और काष्ट पात्र और मृत पात्रकों त्यागे ॥ सोवर्ण और रूप्या और शंख आदि और मणि मय एह मलतें रहित होणतां तिनकी शुद्धि जलकर्के कहीहै ॥ और पाषाण पात्र और यज्ञविषे चमस पात्र और ग्रह और दारु और स्रुक् और स्रुवा इनकी शुद्धि गरम जल कर्के कहीहै

श्रोर यज्ञ कर्म विषे यज्ञपात्रोंकी शुद्धि हस्थ कर्के मलनेतेंहै श्रोर क्षौम वस्त्र श्रोर शृंग श्रोर अ स्थि दंत इन पात्रों की शुद्धि कोल डोडेयां को पीसके मलने ते वा जलके साथ मलणेतेंहै॥श्रो र मृगांके रोमां कर्के जो वस्त्रहैं श्रोर ताम्र श्रोर कालि श्रोर सिका इनकी शुद्धिखटयाई वा लै जल कर्केहै॥श्रोर कांस्यलोहपात्रकी शुद्धि भस्मकर्के कहीहै श्रोर काष्टपात्रकी शुद्धिछिलणेकर्के कहीहै श्रोर मृण्मयपात्रांकी क्या मिट्टिके पात्रांकीशुद्धि फेर अग्निविषे पकाणेकरके कहीहै।अब गारुडपुराण विषे विशेष कहाहै॥ जो कांस्य पात्र मदिराकरके नहि युक्त होवेतिसकी शुद्धिभस्म कर्केहै॥ श्रोर मूत्र मदिरा कर्के स्पर्श होवे तांताप कर्के लेप कर्केहै॥ अर्थात् पहले मृत्तिका का लेपन करणा पीछे तपाणा ऐसातीन वार करणेसे होतीहै ॥ १ ॥ श्रोर जो कांस्य पात्र गौकर्के

यज्ञपात्राणांयज्ञकर्मणिपाणिनासंमार्जनेन क्षौमाणांशृंगास्थिदंतमयानां चपद्माक्षैः मृगलोमिकानांताम्रत्रपुसीसानामम्लोदकेन भस्मनाकांस्यलो हयोः तक्षणेनदारवाणांपुनः पाकेनमृण्मयानाम् पद्माक्षैः पिष्ट्वासंमर्द्दि तैःसजलैर्वा॥गारुडेविशेषः।भस्मनाशुद्ध्यतेकांस्यंसुरयायन्नलिप्यते॥मूत्रेण सुरयास्पृष्टंमुच्यतेतापलेपनैः ॥१॥ गवाघ्रातानिकांस्यानिशूद्रोच्छिष्टानि यानिच काकश्वानहतान्येवशुद्ध्यंतेदशमासकैरिति॥याज्ञवल्क्यस्मृतावपि सौवर्णराजताब्जानामूर्ध्वपत्रग्रहाश्मनाम्॥ शाकरज्जुमूलफलवासोविदल चर्मणाम् १ तक्षणेदारुशृंगास्थ्नांगोवालैः फलसंभवाम् ॥ मार्जनंयज्ञपा त्राणांपाणिनायज्ञकर्मणि २ अमेध्याक्तस्यमृत्तोयैः शुचिर्गंधापकर्षणात् वाक्शस्तमम्बुनिर्णिक्तमज्ञातंचसदाशुचि॥ ३ ॥

सिंघे होये श्रोर शूद्र कर्के उछिष्ट होवे श्रोर काक श्रोर कुत्ता इन कर्के उच्छिष्ट होवे तोदशमा सके पीछे भस्म कर्के शुद्धि कहीहै॥ २ ॥ याज्ञवल्क्यस्मृति विषे कहाहै॥सुवर्ण श्रोर रजित श्रो र शंख श्रोर ऊपरलेजो वृक्षांके पत्र श्रोर ग्रह श्रोर अश्म शाक रज्जु मूल फल वंशपत्र श्रोर चर्म इनकी शुद्धिजलकर्के कहीहै ॥ १ ॥ दारु शृंगअस्थि इनकी छिलणेसे होतीहै॥श्रोर जो फलतें उ त्पन्नहै तिन की शुद्धि गोवालां कर्के श्रोर यज्ञ विषे यज्ञपत्रांकी शुद्धि हस्थ कर्के शुद्धकरनेतें क हीहै ॥ २ ॥ अमेध्यकर्के क्या विष्टादिकर्के युक्तजो वस्तु तिसकी शुद्धि मृत्तिका श्रोर जलकर्के दुर्गंधिके दूर करणेतें कहीहै श्रोर वाणि कर्के शुद्धि श्रोर जल कर्के श्रोर अज्ञात कर्के सभकी शुद्धि कहीहै अर्थात् यह वस्तु शुद्धहै ऐसे ब्राह्मणसे कहा करवाणासे शुद्धि होतीहै ॥ ३ ॥

देहते उत्पन्न होयेजो मिज्ज और वीर्य आदि मलां सोअमेध्यकहीयांहैं ॥ तिसविषें मनुजी कहते है ॥ चर्बी और वीर्य और रुधिर ॥ और मिज्ज और मूत्र और विष्टा और कर्णमल और नख और श्लेष्म और अश्रु और नेत्रमल स्वेदएह बारां मलांकहीयांहे ॥ १ ॥ तैसे देवलजीकावाक्यहै ॥ मानुष अस्थिक्या मनुष्यकीहड्डी और शब और विष्टा और वीर्य और मूत्र और ऋतु और मिज्ज और स्वेद और अश्रु और नेत्रमल और श्लेष्म और मद्य एहअमेध्यकहेहैं ॥ २ ॥ इनकरके युक्त होण जेकर सुवर्ण रजतादि तांमृत्तिका जल करके दुर्गंधिके दूर करणेनें शुद्ध होतेहै । गौतमजीकावाक्यहै ॥ अमेध्य लिप्त की शुद्धि लेपगंधके दूरकरणे करके कहीहै नाभितें ऊपर परपुरुष की अमेध्य केस्पर्श विषें स्नान कोदेवल ऋषि कहताहै ॥ मनुष्यकी अस्थि और चर्बी और विष्टा

देहोद्भवावसाशुक्रादयोमलाअमेध्यशब्देनव्यवह्रियंते ॥ तत्रमनुः ॥ वसा शुक्रमसृङ्मज्जामूत्रविट्कर्णविड्नखाः ॥ श्लेष्माश्रुदूषिकास्वेदोद्वादशैतेमलाःस्मृताः ॥ १ ॥ तथाहिदेवलः ॥ मानुषास्थिशवंविष्टारेतोमूत्रार्त्तवंवसा । स्वेदाश्रुदूषिकाश्लेष्ममद्यंचामेध्यमुच्यते ॥ २ ॥ एतदुपहितंस्वर्णरजतादि मृदातोयेन गंधापकर्षणादितिलेपोपलक्षणं॥तदपनयनेनशुद्धिः । गौतमः । लेपगन्धापकर्षणैः शौचममेध्यालिप्तस्येतिनाभेरूर्ध्वं ॥ परामेध्यस्पर्शेस्नानमाहदेवलः । मानुषास्थिवसांविष्टामार्त्तवंमूत्ररेतसी । मज्जानंशोणितंस्पृष्ट्वा परस्यस्नानमाचरेदिति ॥ स्वकीयामेध्यस्पर्शेतुसएव तान्येवस्वानिसंस्पृश्यप्रक्षाल्याचम्यशुद्ध्यतीति ॥ स्मृत्यंतरे ॥ ऊर्ध्वंनाभेःकरौमुक्त्वायदंगमुपहन्यते ॥ तत्रस्नानमधस्तात्तुप्रक्ष्याल्याचम्यशुद्ध्यतीति ॥ पूर्वोक्तप्रकारेणशोधितमपिवस्तुशुद्धमिदंनवेति कस्यचचित्संशये वाकूशस्तं शुद्धमस्त्विदमिति ॥ ब्राह्मणवाचा राजवाचावाशस्तं शुद्धंभवतीत्यर्थः ॥

और ऋतु और मूत्रवीर्य और मिज्ज और रुधिर एह परपुरुषके स्पर्श करे तांस्नान करके शुद्धि कहीहै इति ॥ आपणी अमेध्यके स्पर्श विषें देवल ही कहताहै सो पूर्वोक्त आपणे होण तिनको स्पर्श करे तद जलके साथ धो करके जलको स्पर्श करे और आचमन करे तांशुद्ध होताहै ॥ और हीस्मृति विषें कहाहै ॥ नाभि ऊपर हत्थांतें विना होर अंग अमेध्य करके युक्त होवें तां स्नान करे और जेकर नाभितें हेठां होवे तांधोएकर आचमन करके शुद्ध होताहै ॥ पूर्वोक्तप्रकारकरके शुद्ध भी वस्तुहै ॥ एह शुद्धहै वानहि एसें संसयके होयां होयां जेकर ब्राह्मणकी वाणी करके अथवा राजाकी वाणी करके शुभकही होवेतां शुद्ध होतीहै ॥

पूर्वजो जलकरके धोणेतें शुद्धिकहीहै। सो शुद्धि जेकर धोणेको सहारे और जेकर नासहारे तां सिंचणे करकेहि जानणी। कुत्तेआदि करके स्पर्श होयाऽजेकर अज्ञातहै तां कर्म विषे तिसके अंगीकारविषे दोषनहि॥ विष्णुधर्मोत्तरविषे फलपत्र आदिकां कीशुद्धिकहीहे गोवाला करके फल पत्राकी शुद्धि और अस्थियां कीशुद्धि शृंग कीन्याई॥ गूंद और गुड और लवण और कुसुंभा और केसर और ऊर्ण और कपास इनांकीझुणकणेते शुद्धि कहीहे॥ गरुडपुराण विषे किहाहे। कि आममिति। कचा मांस और घृत और क्षौद्र मखीर और तेलादि स्नेह एह जेकर नीचके हाथसे बनाए होएभीहे परंतु जद उनके पात्रसें अपने पात्रमें स्थापन करीये तांशुद्धजा

अम्बुनिर्णिक्तंउक्तादन्यत्सर्वम्॥ अम्बुनाजलेननिर्णिक्तंसतुशुद्ध्यति एतच्च क्षालनसहस्यैव। तदसहस्यतुप्रोक्षणेनशुद्धिः। श्वादिस्पृष्टमपि अज्ञातंचेत्त दाकर्म्मणिनस्वीकारेनदोषः। विष्णुधर्म्मोत्तरे फलपत्रादीनांशुद्धिः गोवालैः फलपत्राणामस्थ्नांस्याच्छृंगवत्तथा निर्यासानांगुडानांचलवणानांतथैवच कुसुंभकुंकुमाणांचऊर्णाकर्पासयोस्तथा प्रोक्षणात्तुकथिताशुद्धिरित्याहभगवा न्यमः। प्रोक्षणात् झुणकणाइतिभाषितात्। गारुडे आममांसंघृतक्षौद्रंस्नेहाश्चा न्तकसंभवाः अन्यभांडस्थिताःसर्वेनिष्क्रांताःशुचयः स्मृताः ॥ १ ॥ तैला दिघृतमाध्वीकंपण्यद्रव्यंद्रवस्तथा॥ अंतकसंभवाअंतकैःसंपादिताः तथा शुचयइत्यर्थः। विष्णुधर्म्मोत्तरे भूमिष्ठमुदकंशुद्धंतथैवचशिलागतम् वर्णगं धरसैर्दुष्टैर्वर्जितंयदितद्भवेत्॥ १ ॥ शुद्धंनदीगतंतोयंसर्वएवतथाऽऽकराः॥ शुद्धप्रसारितंपण्यंशुद्धावश्वाजयोर्मुखे॥ २ ॥ अग्निपुराणेप्येवम्। विष्णु स्मृतावपि नक्षणेन:रवाणांगोवालैःफलसंभवानां प्रोक्षणेन संहतानामु त्प्लवनेन द्रवद्रव्याणाम्॥ पाराशर्य्ये रोमचर्म्मतथामांसमाविकंत्रितयंशुचि ततोऽन्यदशुचिर्ज्ञेयंनग्राह्यंशुभकर्म्मसु १

नणे॥ १ ॥ तैलादीति पूर्व वत् जानणा। और विष्णुधर्मोत्तर पुराणमेंभी कहाहै। किजो ज लपृथ्वी विषे स्थितहे सो सभ शुद्ध जानणा और जोशिला विषे होवे सोभी शुद्धहै। परंतु दु ष्ट रंग और गंध और रस इना करके रहित होवे वा इन करके युक्त होवे तद जब तक अप नी प्रकृतिमे नहिं आवे तब तक शुद्ध नाहिजानणा॥ १ ॥ और नदी विषे जो जलहै सो सभ शुद्धहे और खाना कीयां वस्तु सभ शुद्धहैं॥ होर पूर्व वत् जानणा॥ २ ॥ अग्नि पुराण विषे भी एसा लिखाहै। और विष्णु स्मृति विषेभी एही प्रसंग हे॥ पराशरजी के धर्म्म शास्त्रमे कि हाहै कि भेडकीआं त्रय वस्तु शुभ हैं सो मूलमें स्पष्टहैं॥

कि गुडादि जो गन्नेयां दे विकार बहुते घरके अंदर रक्खे होये होन और अशुद्ध होजान तां दरवा जेविच अग्नि जलाकर तापदेणेतेशुद्ध हुंदेहैं । इसी तहीं मधु लवणादिकी वार्ता जानणी नित्यक्या दो चार वारी रोज रोज मलको हटा कर अग्निदेणे करके शुद्ध हुंदेहैं होर विषय सुग महिहै ॥ फेर भी विष्णु जी कहतेहैं ॥भूमीति । पृथ्वी विषे स्थित जो जलहै सो शुद्धहै जिस जगा गौकी तृषा दूर होसके सो जल कैसाहै कि विष्टादि करके युक्त भी होवे और शिलागतक्या शिलाविषे स्थितजो जलहै सो भी गोतृप्ति योग्य होवे तां शुद्ध जानणा ।१॥ मृतेति । जिस खूएमें श्वानादि मृतहोवें और सो खूआ अत्यंत करके उपहतहे क्या मुडदेदे अंग जि

गुडादीनामिक्षुविकाराणां प्रभूतानां गृहनिहितानांद्वार्यग्निदानेनवासर्वमधुलवणानांच(शौचंनित्यमतंद्रतः)अतंद्रतोमहतः प्रयत्नात् । अमेध्याद्यपनयनपूर्वंनित्यंबहुवारमग्निदानादिरित्यर्थः ॥ पुनःसएवाह।भूमिष्ठमुदकं शुद्धंवैतृष्ण्यंयत्रगोर्भवेत् अवाप्तंचेदमेध्येनतद्वदेवशिलागतम् ॥ १ मृतपंचनखात्कूपादत्यंतोपहतात्तथा अपःसमुद्धरेत्सर्वाः शेषंशस्त्रेणशोधयेत् २ वह्निप्रज्वालनंकुर्यात्कूपेपक्वेष्टकान्विते ॥ पंचगव्यंन्यसेत्पश्चान्नवतोयसमुद्भवे ॥ ३ ॥ याज्ञवल्क्यः॥ शुचिगोतृप्तिकृत्तोयं प्रकृतिस्थंमहीगतम् ॥ तथामांसंचचांडालक्रव्यादादिनिपातितम् ॥ १ ॥ एकस्यागोस्तृप्तिजनकंजलंशुचि आचमनादियोग्यम् । प्रकृतिस्थंदुर्गंध्यादिसंपर्कशून्यं महीगतमिति अमेध्याद्युपहितभूमिस्थमपिशुचीत्यर्थः। कूपादिरुद्धृतंपयःशुद्धमेवेत्याह । १ ।

समें डिगेदेहैं तिसते सारा जल निकाल देवे और पीछे शस्त्र जो कही आदि तिस करकेशोधे क्या कुछ मृत्तिकाभी बाहर निकाले ॥ २ ॥ और जेकर पक्कीयां इट्टांका बणया होवेतां अग्नि भी तिसमें जगावे और पीछे नवीन जलके होयां होयां पंचगव्य पावे ॥ ३ ॥ याज्ञवल्क्य जी कहतेहैं ॥ शुचीति गो तृप्तिके करणे वाला जल पवित्रहै परंतु जो निर्म्मल होवे और पृथ्वी विषे स्थित होवे तैसेहि मांस चांडालके हाथते डिगेया होवे कुत्तेसे छुडाया होया पृथ्वी विषे स्थित होवे और दुर्गंधादिसें रहित होवे सो शुद्धहै ॥ १ ॥

देवल जी कहते हैं ॥ जेडे जल शुद्ध पात्र करके निकाले होण सो खूयेते बाहर आए भी शुद्ध जानणे॥जो जल खूएसें निकाले होये एक रात्र पात्रविषे ही रहण सो पहले शुद्ध ही थे तथापि अशुद्ध जानणे अर्थात् स्नानादि क्रियाके योग्यवो नहिहैं १ ॥ चांडालादिककेँ वनीया जो कूप तिस विषे जल शुद्ध है तैसेशातातपकावाक्यहै ॥ चांडालांकरके कीता जोकूप और सेतु नाडा वापी आदिक तिस विषे स्नान और जल पान करणे करके प्रायश्चित्त नहि कहा॥१॥ और जो कहाहि कि प्राजापत्यव्रत करके शुद्ध होताहै सो चांडालादि आपणेधन करके वनवाये तां प्राजापत्य व्रत कहाहै १ ॥चांडालपदकरके औरभीनीच जातीका ग्रहण करणा और कुत्ते आदि मुख करके स्पर्श होया मृगमांसादि सो नहि उच्छिष्ट किंतु शुद्ध होहै ॥ अव

देवलः उद्धृताश्चापिशुध्यंतिशुद्धैः पात्रैः समुद्धृताः ॥ एकरात्रोपिताआप स्त्याज्याः शुद्धाअपिस्वयम् १ चांडालादिकारितेपिकूपादौतच्छुद्धम्॥त थाचशातातपः॥अन्त्यैरपिकृतेकूपेसेतौवाप्यादिकेतथा ॥ तत्रस्नात्वाचपीत्वा चप्रायश्चित्तंनविद्यतेइति ॥ १ ॥ यत्तुअन्त्यजैः खानिताः कूपास्तडागावा प्यएवच॥एपुस्नात्वाचपीत्वाचप्राजापत्येनशुध्यतीति १ तत्स्वद्रव्यादिभि श्चांडालादिकृतेबोध्यम्॥ चांडालपदमत्रपुष्कसाद्युपलक्षणम् ॥ क्रव्यादः श्वादिः निपातितं एतद्धस्तस्पृष्टंनतूच्छिष्टम्॥जलाशयेष्वथाल्पेपुस्थावर पुवसुंधरे कूपवत्कथिताशुद्धिर्महत्सुचनदूषणम् २ नित्यंशुद्धःकारुहस्तः पण्यंयच्चप्रसारितम्॥जलशुद्धिप्रपंचस्तुप्रकीर्णकप्रकरणेज्ञेयः॥विष्णुधर्म्मो त्तरप्राणिशुद्धिः ॥ शुद्धप्रसारितंपण्यंशुद्धावश्वोजयोन्मुखौ ॥मुखवर्ज्जंतुगौः शुद्धामार्ज्जारश्चाशुगाच्छुचिः ॥१॥जयोन्मुखोअश्वोयुद्धोयोगचाल्यमानोच र्म्मरज्ज्वादिसंवीतावपितदारूढानांजलपानादौननिषिद्धावित्यर्थः॥आशुगा त्यवनादित्यर्थः ॥

औरकहतेहैं कि छोटे जो जलाशय तिनां विषे और वृक्षांविषे अथवाजो जलाशयस्थिरहैंतिना विषें हेपृथ्वि कूपकीन्याई शुद्धि कहीहै और महाजलाशयांविषे नहि दूषण सो नित्य शुद्धहै॥२॥ कारीगरका हस्त और वेचणे वास्ते प्रसारित जो वस्तु सो शुद्धहै और विशेष करके जल की शुद्धि प्रकीर्णकप्रकरणविषे जानणी ॥ विष्णुधर्म्मोत्तरविषेप्राणि शुद्धि कहीदीहै ॥पण्य वस्तु जो वेचणे योग्य हट्टी विषे खलरीहै वेचणे वास्तेसो शुद्धहै और जयके सन्मुख अश्वशुद्धहै अर्थात् चर्म रज्जु करके युक्तभी होन तदभीतिन्हांऊपर आरूढ जो मनुष्य तिनांके जलादि पीणे आदि विषे दोषनहि और विल्लावायुके स्पर्शतें शुद्धहै ॥ १ ॥

शय्येति शय्या और भार्या और शिशु और वस्त्र और यज्ञोपवीत और गडवा यह जिसके होण तिसकोंहि शुद्ध कहनें और यज्ञोपवीत आपणे कर्के वनाया होवे तां शुद्ध है होरकर्के वणाएहोन तां नहि ॥ २ ॥ नारीणामिति ॥ स्त्रीयांका मुख विषय भोग विषें शुद्ध है और दुग्धके चोणे विषें व च्छेयांका मुख शुद्ध है और वृक्षके फल विषें पक्षिका मुखशुद्ध है और सकार विषें कुत्तेका मुख शुद्ध है ॥ ३ ॥ अववाज्ञवल्क्यजीका वाक्य है सूर्यकीयां किरणा वा वागां और अग्नि और गृह आदि स्थान विषें रजकया धूलिहै और वृक्षआदि छाया और पृथ्वी और वायु और विप्रुषः कया वेदके उच्चारण करणे विखे जो मुखतें विंदुहैं वा कुहीड विषें जो विंदु एह चांडालादि स्पर्शको प्राप्तहोण तदभी शुद्ध हैं और स्पर्श विषें मक्षिका और चोंणे विषें वच्छा एह संपूर्ण शुद्ध कह

शय्याभार्याशिशुर्वस्त्रमुपवीतंकमंडलु स्वात्मनःकथितंशुद्धंनपरस्यकथं चन ॥ २ ॥ नारीणांचैववत्सानांशकुनीनांशुनांमुखम् रतौप्रस्रवणेवृक्षे मृगयायांसदाशुचि ॥ ३ ॥ याज्ञवल्क्यः रश्मिरग्नीरजश्छायागौरश्वोवसु धानिलः विप्रुषोमक्षिकास्पर्शेवत्सःप्रस्रवणेशुचिः ॥ १ ॥ रश्मयःसूर्यादेः रजोगृहादिसम्मार्जनभवं । नाजादिसंभवम् । तथाचस्मृत्यंतरे । श्वकाकौ ष्ट्रखरोलूकसूकरग्राम्यपक्षिणाम् अजाविरेणुसंस्पर्शादायुर्लक्ष्मीश्चहीयत इति ॥ विप्रुषोनीहारजाः एतेचांडालादिस्पृष्टाअपिस्पर्शेशुद्धाएव ननुवृक्ष च्छायायाःशुचित्वेएकच्छायांसमाश्रित्येत्यादिना कथंचाण्डालेनसहच्छा यासमाश्रयणेदोषइतिचेत्सहावस्थानमेव दूषकंगृहाण प्रस्रवणेऊधोगत दुग्धत्याजनम् वत्सपदेनवालादयोपिवोध्या इतिव्याख्यातारः वालैरनुपरि क्रांतंस्त्रीभिराचरितंचयत् अविज्ञातंचयात्किंचिन्नित्यंशुद्धमितिस्थितिरिति देवलवचनात् ॥ अनुपरिक्रांतपरिविष्टभोजनादेःस्पर्शनम् ॥

ण ॥ १ ॥ और अजा कया वकरी आदिकी धूलि अशुद्ध है। तैसें कहाहे अन्यस्मृति विषें कुत्ता और काक और उष्ट्र और गर्दभ और उल्लू और सूकर और ग्राम पक्षि इनके स्पर्शतें और व करी और भेड इनकी धूलिके स्पर्शतें आयु और लक्ष्मी नष्ट होतीहै। ननिवति शंकायां वृक्षछा यांके शुद्ध होयां होयां कैसे कहाहे एक छाया विषे चांडालादिके साथ स्थित होणेतें दोषहै जे कर ऐसे कहैं(उत्तर)तां वृक्षके हेठां साथ मिल कर्के स्थित होणें विषें दोषका अंगीकारहै और वच्छे कर्के वाल आदि भी जानणे। और वालकां कर्के जो भोजन आदि स्पर्शहै और स्त्रीयां कर्के आचरितहै और अविज्ञात जो नहि देखया सो संपूर्ण शुद्ध है देवलजीके वाक्यतें ॥

मूत्र पुरीषके त्यागकों करके लेप गंध को दूर करके बुद्धिमान । उद्धृत जल करके शौच करे
और मृत्ति का करके शौचकरे ॥ २ ॥ मलके त्याग विषे नखांको शुद्धि कों करके त्रय वार
मृत्ति का करके लिंगकी शुद्धि कहीहै ॥ और शुद्धि कामना वाला पादों विषे क्रम करके त्र
य त्रय वार मृत्ति का लावे रोज रोज ॥ ३ ॥ और मूत्र पुरीषके त्याग कों करके और स्नान
कों करके और जेकर भोजन कों करने की इच्छा वाला होवे और भोजन खाकरके और
निच्छां करके क्या छिकां मार करके और शयन करणेते उठकर और जल को पीणेतें पीछे
और जलके प्रवाह को लंघकें और रथनें उत्तर के और वस्त्रांनू धारके इन संपूर्णा विषे आच
मन करे अर्थात् दसां १० स्थानोंमे आचम करे तां परम शुद्धि कहीहै ॥ यह शुद्धि
गृहस्थीयां को कहीहै ॥ और इससें दूणा शौच ब्रह्मचारि को कहाहै ॥ और वानप्रस्थियांको

कृत्वामूत्रपुरीषंचलेपगंधापहंबुधः उद्धृतेनाम्भसाशौचंमृदाशौचंसमाचरेत्
॥ २ ॥ मेहनेमृत्तिकाज्ञेयाःकृत्वातुनखशोधनम् । तिस्रास्तिस्रःपादयोश्चशौ
चकामस्तुनित्यदा ॥ ३ कृत्वामूत्रंपुरीषंवास्नात्वाभोक्तुमनास्तथा भुक्त्वाक्षु
त्वातथासुप्त्वापीत्वाचाम्भोवगाह्यच रथमाक्रम्यवाचामेद्वासोविपरिधायच
॥ ४ ॥ शौचमेतद्गृहस्थानांद्विगुणंब्रह्मचारिणाम् ॥॥ त्रिगुणंतुवनस्थानां
यतीनांचचतुर्गुणम् ॥ ५ ॥ सिद्धार्थकैःशुद्धिमुदाहरंतिलोम्नांतथाभार्गववंशमु
ख्य । सर्वस्यजीवस्यविशुद्धिरुक्तामृदाचतोयेनविगन्धलेपात् ॥ ६ ॥ अग्नि
पुराणेप्येवम् ॥ वामनपुराणे ॥ शुचिर्भैक्षंकारुहस्तःपण्यंयोषिन्मुखंतथा
रथ्यागतमविज्ञातंदासवर्गेणयत्कृतम् ॥ १ ॥ भिक्षाणांसमूहोभैक्षम्ब्रह्मचा
र्यादिसगृहीतंअनाचांतस्त्रीपुरुषहस्तग्रहणेनमलिनप्रदेशपर्य्यटनादिना
वाऽशुद्धंनभवति ॥ केशकीटावपन्नंतुतावत्त्याज्यमेवेति । कारुहस्तसहचा
राद्गृहीतम् ॥

त्रयगुणा कहाहै । और यतीयांको चार गुणा अधिक गृहस्थियोंतें कहाहै ॥ ५ ॥ हे भृगुवं
श विषे मुख्य रोमांकी शुद्धि सेति सरों करके कही ॥ और संपूर्ण पुरुषांकी शुद्धि जल करकें
कही और मृत्तिका करके दुर्गंधिके दूर करणेतें ॥ ६ ॥ अग्नि पुराण विषे भी एसे कहाहै ॥
अब वामन पुराण विषे कहतेहैं ॥ भिक्षा अन्न का जो समूहहै । ब्रह्मचारि आदिकने जोग्रह
ण कीताहै । सो अन्न आचमनसें रहित जो पुरुष और स्त्री पुरुषहैं इनके हस्थसें पकडने क
रके और मलीन देश विषे जाणे करके अशुद्ध नाहिं होता ॥ होर अर्थ स्पष्टहै ॥ १ ॥ जित
ना अन्न केशकीटादि करके युक्त होवे तावत् अन्न त्यागणे योग्यहै ॥ एह कारू हस्तकी सह
चर्य्य तातें आनणा ॥

कारिगर जो रंग कारक धोवा वस्त्र धोणे वाला और रसोईआ और तरखाण इनका हस्थ सूतक आदि विषे भी वस्त्र शोधन आदि आपणे आपणे कर्म विषे शुद्ध कहाहै ॥ और पण्य क्या जो वेचणे योग्य यव गोधूमादि सो नीचां करके इधर उदर ले जाणे करके स्पर्श होया २ भी शुद्धहै ॥ और स्त्रीका मुख और गलीयां विषे स्थित जो कर्दम आदि और जो परोक्षहै श्रीवर आदिके कर्म एह संपूर्ण शुद्ध कहेहै पू ० प ० टी ० ॥ वाक् इति व्यभिचारादि करके होये जो दोष सो वहुत वर्षके व्यवधान होयां २ सभाविषे वुद्धिमाना पुरुषांके वचन करके शुद्ध कहेहैं ॥ और अनेक तृण आदि करके युक्त जो तृण आदिसो श्लेष्म आदि करके युक्त होवे स्थान तिसके मध्य विषे स्थित जो वस्तु वा पुरुष सोभी शुद्ध कहेहै ॥ और बाल वृद्ध आदि

कारूणां रजकचैलधावकसूपकारतक्षकादीनांहस्तः सूतकादावपि वस्त्रशोधनादितत्साध्यकर्म्माणिसदाशुचिरेवज्ञेयः ।पण्यंपणार्हंयवगोधूमादिविक्रयार्थमितस्ततोनीचैर्नीयमानम् ।वाक्प्रशस्तंचिरातीतमनेकांतरितंलघु चेष्टितंवालवृद्धानांवालस्यतुमुखंशुचि २ चिरातीतंवहुवर्षव्यवहितंव्यभिचारजादिदूषणम्।।वाक्प्रशस्तंसभ्यविद्वज्जनादिवाचावचनेनप्रशस्तंशुद्धंभवति लघुश्लेष्मादिदुष्टंतृणादि अनेकैस्तृणादिभिरंतरितंतन्मध्यपाति शुद्धमित्यर्थः॥ कर्म्मण्यागारशालासुस्तनंधयसुताःस्त्रियः वाग्विप्रुषोद्विजेंद्राणांसंतत्याश्चाम्बुविन्दवः ३ संतत्याः स्वपुत्रादेः स्नानशौचोद्भवाजलकणिकाः कर्म्मणिवर्त्तमानस्यलग्नाअपिशुद्धाएवभवन्तीत्यर्थः॥अमेध्याक्तस्यमृत्तोयैःशुद्धिर्गंधापकर्षणात् ॥ अन्येषामपिद्रव्याणांशुद्धिर्गन्धापहारतः ४ अमेध्येति चिरातीतस्यापि अमेध्याक्तस्योपहतितारतम्येनमृदातोयेन समस्तेनव्यस्तेनवा शुद्धिः वहुवचनमाद्यर्थंतेनभस्मादिग्रहणम् ॥

की कर्म क्या चेष्टा शुद्ध कहीहै और वालक का मुख शुद्ध कहाहै २ ॥ कर्मणीति ॥ स्नानांके विषे दुग्ध पीणे वालेहैं पुत्र जिन्हांके ऐसीयां स्त्रीयां गृहांके कार्यां विषे शुद्धहैं ॥ और ब्राह्मणाके मुखतें वेदके उच्चारण विषे जो विंदुहैं सोभी शुद्ध कहेहैं और संतती जो पुत्रादि तिसके स्नान विषे शौचादितें होये जो विंदु सो कर्मा विषे युक्त जो पुरुषहै तिसको स्पर्श विषे शुद्ध कहायांहैं ॥ ३ ॥ और जो पवित्रता करके युक्तहै और वहुत दिन की अमेध्यता करके जो युक्तहै तिसकी शुद्धि जैसें दुर्गंधि दूर होवे तैसेही मृत्तिका और जल करके कहिहै ४ ॥ और मृत्तिका जल के रखाणे करके परंतु दूषणके वाधे घाटे को जाण कर जल मृत्तिकाके दोनोंका वा एकका प्रचार जानणा और (तोयैः)इस वहुवचनतें भस्मआदिका ग्रहणाहे ॥ और अन्यजो द्रव्यहैं तिनकी शुद्धि दुर्गंधि के दूरकरणेतें होतीहै ॥

काकेति काक और कुत्ता इनां कर्के उच्छिष्टजो अन्न तिसकों त्यागे क्या नग्रहण करे और जे कर घृत इनां कर्के उच्छिष्ट होवे तां तिसकों सुवर्णके साथ जलकों स्पर्श कर्के सिंचे और पीछे अग्नि विषें तप्त कर्के ग्रहण करे किंतु नत्यागे ॥ ५ ॥ गोके चोंण विषें वच्छा शुद्धहै और फलके पातन विषें पक्षि शुद्धहै और भारके वाहन विषें गर्दभ श्रेष्टहै और मृगके ग्रहन करण विषें कुत्तेका मुख शुद्धहै ॥ ६ ॥ और रजस्वला स्त्री और कुत्ता और नग्नपुरुष और पुजारी और अंत्ये वसायी क्या चांडाल और शवके चुकणे वाला इनको स्पर्श करे तां शुद्धिके वास्ते स्नान को करे पूजक इस जगा वाम मार्ग कर्के भैवारदिका पूजक जाणना अथवा क्षुद्र देवता जो काली वीरादि तिनका तिनका पूजक जाणना ॥ ७ ॥ और रुधिर आदि कर्के युक्त जो अस्थियां तिनांको स्पर्श करे तां सहित वस्त्रांके स्नानतें शुद्ध होताहै और शुष्क अस्थियांको स्पर्श करे

काकश्वानोपलीढंतुअन्नमाज्यन्तुनत्यजेत् सुवर्णाद्भिःसमभ्युक्ष्यहुताशेतु प्रतापयेत्५ तेनकाकाद्युच्छिष्टमन्नंत्यजेत् आज्यंघृतमेतादृशंनत्यजेत् किंतुसुवर्णाद्भिःसुवर्णजलैःसमभ्युक्ष्यसंप्रोक्ष्यहुताशेऽग्नौतापयेदित्यर्थः मातुःप्रस्रवणेवत्सःशकुनिःफलपातने गर्दभोभारवाहित्वेश्वामृगग्रहणेशुचिः६ उदक्याःश्वाननग्नांश्चपूजकांत्यावसायिनः स्पृष्ट्वास्नायीतशौचार्थीतथैव मृतहारिणः ॥ ७ ॥ सस्नेहमस्थिसंस्पृश्यसवासाःस्नानमाचरेत् आचम्यैवतुनिःस्नेहंगामालभ्यार्कमीक्ष्यच ॥ ८ ॥ नलंघयेत्पुरीपासृक्संकीर्णोद्वमनानिच संकीर्णममेध्यादिलिप्ततृणादि ॥ गृहादुच्छिष्टविण्मूत्रेपादांभांसिक्षिपेद्बहिः ॥ ९ ॥पंचपिंडाननुद्धृत्यनस्नायात्परवारिणि स्नायीतदेवखातेपुसरोहृदसरित्सुच ॥ १० ॥ देवतापितृसच्छास्त्रयज्ञवेदादिनिंदकैः कृत्वातुस्पर्शमालापंशुद्ध्यतेर्कविलोकनात् ॥ ११ ॥

तां आचमन कर्के गोको स्पर्श करे सूर्यका दर्शन करे तां शुद्ध होताहै ॥ ८ ॥ और पुरीष और रुधिर और पुरीषादि कर्के दुष्ट जो तृण आदि और मुखतें जो उगलाछयाहै तिनको उलंघन नाकरे और उछिष्ट और विष्टा और मूत्र और पादांके शौचका जलइनांको गृहतें बाहर त्यागे९ और पर पुरुष कर्के बनायाहोया जो तला आदि तिस विषें पंच मृतकाके पिंडाको बाहर निकालनेतें विना स्नान नाकरे और देव खात जो तीर्थहैं और सरोवर और हृद और नदीइनां विषें स्नान करे तां पंच पिंडके निकालनेतें विनाभी स्नानमें दोषनहि ॥ १० ॥ देवता और पितृ और श्रेष्टशास्त्र और यज्ञ और वेद आदि इनां की निंदा करते जो पुरुष तिनां के साथ जो स्पर्श करता है और संभाषण कर्ताहै सो सूर्य के दर्शन करके शुद्ध होता है ॥ ११ ॥

ओर अभक्ष्य भक्षण प्रकरण विषे कहाहै लक्षण जिनका ऐसे जो अभोज्यहैं और सूतिका स्त्री ओर नपुंसक और बिल्ला ओर चूहा ओर कुत्ता ओर कुकड ओर पतित क्या पापी ओर जिसके माता पिता की खबर नहि होवे ओर नग्न ओर चांडालादि जोनीचहै तिनके साथ स्पर्श संभाषणा दिकरे तां सूर्य केदर्शन करके शुद्ध होताहै॥यह पूर्व श्लोक करके संबंध करणा १२ ॥ इसमें इतना विचारहै किचांडाला दिके स्पर्श कायह प्रायश्चित्त नहि किंतु दर्शन ओर संभाषण काहै॥ओर स्पर्श विषे पूर्वोक्त सम झणा॥अथवा (दर्शमालापं) ऐसा पाठ इस जगा जानणा अथवा स्पर्श ओर दर्श यथा योग्य लगाणा यइति ॥ जो पुरुष नित्य कर्म्म संध्या और नैमित्तक श्राद्धयादि कोत्यागताहै तिसके अन्नकोंजो भक्षण करताहे सोत्रय दिनके उप वास व्रत करकेशुद्ध होताहै १३ ओर ज्योतिषी जोसिद्धांतीनाहि और मलाह ओर वेश्या और वैद्य ओर जोमरण

अभोज्याःसूतिकापंडमार्जाराखुश्वकुक्कुटाः पतितापविद्धनग्नाश्चचाण्डालाद्य धमाश्चये॥ १२ ॥अभोज्यलक्षणान्यभक्ष्यभक्षणप्रकरणेप्रोक्तानितितएवानुसंधेयानि येअभोज्यायेचसूतिकाद्यास्तत्स्पर्शनादौसत्यर्कविलोकनाच्छुद्धिरितिपूर्वेणैवसंबन्धः॥ योनित्यकर्म्महानिंचकुर्य्यान्नैमित्तिकस्यच भुक्त्वान्नं तस्यशुद्ध्येतत्रिरात्रोपोषितोनरः १३॥गणकस्यनिषादस्यगणिकाभिषजस्यच कदर्य्यस्यापिशुध्येतत्रिरात्रोपोषितोनरः ॥१४॥ एकेनान्नंफलंद्वाभ्यां त्रिभिःकंदोनदुष्यति ॥ १५ ब्रह्मपुराणेपि सिद्धार्थकानांकल्केनघर्षणेनापि वापुनः साधूनांचैवजपतउपघातंचसंसदा १६ उपघातंस्निग्धास्थ्यादिविघट्टितंवस्त्रादिसिद्धार्थकल्केन॥पात्रेचेत्घर्षणेन स्थानेचेत्साधुजपतः साधुसंसदाचशुद्ध्यतीत्यर्थः॥ शुद्धंद्रव्यंकारुदत्तं पण्यंयोपिन्मुखंतथा रथ्यागतमविज्ञातंदासवर्गेपुसत्क्रिया॥ १७॥

समयविषे भीकिसे तांइ नहि देता तिनांके अन्नको जो भक्षण करताहै सोत्रय दिनके उप वास करके शुद्ध होताहै ।१४॥ जल१ अग्नि२ लवण३ एह त्रय वस्तु चौंका करण वालीयांहे इना विच्चों इक करके अन्न नहि दूषित होताहे । और दोकरके फल ओर तिन्ना करके कंद कचालु आदि दूषित नाहिं हुंदा ॥ १५ ॥ अब ब्रह्म पुराण विषे कहाहै स्निग्ध अस्थि करके स्पर्श वस्त्र आदि होवे तां सरों कीखल करके शुद्ध होताहै ओर जेकर पात्र होवेतां घसाणे करके शुद्ध होताहै ओर स्थान होवेतां महात्मा पुरुषां के जप करणे करके शुद्ध होताहै ॥ ओर महात्मा की सभा करके शुद्ध होताहै १६ शुद्धमिति । इसका अर्थ पूर्व कहाहै वामन पुराण जी के वाक्य विषे ॥ १७ ॥

वाद्य जो नगारा आदि अन्न करके युक्त और अंदरहैं बहुत वाल जिसके और बंधने कर के अंदरहै अशुद्धि जिसके सो चिरकालके व्यवधान करके शुद्धहै ॥ १८ ॥ और कर्मके अंत विषें गृहशाला शुद्धहै । और स्त्रीके दोनो स्तन शुद्धहैं और बकरी और भेड यह दोनोंमुखतें शुद्धहै और गौके वछेका मुख शुद्धहै ॥ १९ ॥ और माताका मलीन वस्त्र आदि अशुद्धहै तथापि सो शुद्ध कहाहै और पक्षीके मुख करके डिगयाजो फल सो भी शुद्धहै और जो पुरुष इच्छाते विना दुष्ट भिक्षा कों भक्षन करताहैं सोत्रय

वाद्यंशस्तंचिरातीतमन्नेनाम्लाचितंलघु अंतः प्रभूतबालंचवद्धांतराविचेष्टितम् १८ अंतरित्यादिविशेषणद्वयंवाद्यस्य अन्नेनाम्लचितंचूर्णादिनासंसक्तमपिशुद्धंभवतीत्यर्थः इदंचवद्धपुस्तकाद्युपलक्षणंतुल्यन्यायात् । कर्मान्तागारशालाचस्तनद्वयंशुचिस्त्रियः अजाश्वौमुखतोमेध्यौगोवत्सस्यतथाननम् ॥ १९ मातुः प्रच्छादितंमेध्यंशकुनेःफलपातनम् ॥ उपवासास्त्रिरात्रंतुदुष्टभिक्षाशिनोभवेत् ॥ २० ॥ मातुः प्रच्छादितंमलिनवस्त्रादिमेध्यंशुद्धमित्यर्थः अज्ञानादज्ञानपूर्वंतुतद्दोषापगमेनच २१ तद्दोषापगमेनेति अभक्ष्यभक्षणप्रायश्चित्तेन उदक्यामपिनग्नांचसूतकांत्याबसायिनः स्पृष्ट्वास्नायात्तुशौचार्थंतथैवमृतहारिणः २२ ॥ सर्वस्पृष्ट्वास्थिसस्नेहंस्नानाच्छुध्यातिमानवः । आचम्यैवतुनिःस्नेहंगामालभ्यार्कमीक्ष्याच ॥ २३ नलंघयेत्पुरीपासृक्संकीर्णान्नमनानिच नोयानादौविकालेषु प्राप्तंनिंदेत्कदाचन २४ नोद्वहेज्जनविद्विष्टंवीरहीनास्तथास्त्रियः ॥ विकालेपुयात्रादिभिन्नकालेपुदेशोपद्रवादिनिमित्तेयानादौगर्द्दभ.दौप्राप्तंनानिन्देदित्यर्थः जनविद्विष्टंपुरुषंव्याघ्रादिकं यापतिपुत्रहीनाःस्त्रियश्चस्कंधोपरिनउद्वहेत् नोयानादिविकालेष्वतिनुसाधीयान्

दिन उपवास व्रत करे ॥ २० ॥ और जेकर इच्छा करके भक्षण करेतां अभक्ष भक्ष प्रायश्चित्त करके शुद्ध होताहे ॥२१ उदक्या इति इसका अर्थ पीछे वामन पुराणके वाक्य विषे कहाहै २२ २३ नोयानादाविति यात्रा आदितें भिन्न कालविषें देशाविषे उपद्रव आदि निमित्त होयांऽ जा गर्दभ आदि यान विषे जो आटा आदि वस्तु प्राप्तहै तिसकों कदीभी ननिंदे और पुरुषांके साथ जो द्वेष करणे वाला पुरुष वा व्याघ्रादि तिसनूं और तैसे पति पुत्रतें रहित जो स्त्रीयांहैं तिनांनूं स्कंदो परिक्या मोंढे उपर नचुके ॥२४ ॥

रजस्वला स्त्री को छेदकर्के और संबंधियोंकरके जो त्यागय है और जो पतितहै॥२५॥ और शठ और जो अधर्म विषे स्थितहै ॥अर्थात् स्वकीयधर्म जो पूजनादि तिनका त्यागीहै ॥ और निंदित कर्म विषे स्थितहै ॥अर्थात् मदिरा पानादि विषे जो स्थितहै और त्यागणे यो ग्यहै और जुमार आदि और शवके वाहक क्या चुकण वाले और जो पर स्त्री विषे रतहै ॥ २६॥ तिनके स्पर्शादि पापके दूरकरण वास्ते बुद्धि मानों नेस्नान को करवाके सूर्य का दर्शन करवाणे योग्यहै ॥ और विधर्मस्थादियों का प्रायश्चित्त साधारण प्रकरण विषे अथवा प्रकी र्णकविषे देखणा ॥ जो अभक्ष भक्षण करताहै और पाखंडी और बिडाल और चूहा और कुत्ता और कुक्कुट ॥ २७ ॥ और पतित और जिसके माता पिता की खबर नाहे और चां डाल और शवके चुकणवाला तिनांको जो स्पर्श करताहै और जो रजस्वला स्त्री और मा मसूकर इनको जो स्पर्शकरताहे सोसहितवस्त्रांके स्नानकरके सूर्यकादर्शनकरे तांशुद्धहोताहै॥

अवरोध्य त्यागयोदयांस्वकं पतितं शठं २५ विधर्म्मस्थं विकर्मस्थावर्ज्या अन्त्यावसायिनः॥मृतनिर्यारकाश्चैवपरदाररताश्चये।२६।विधर्म्मस्थादी नां तु साधारणादौ शु विज्ञेया । एतदेवाहिकर्तव्यं प्राज्ञैः शोधनमात्मनः अभो ज्यभिक्षुपाखण्डमार्जारसुखकुक्कुटान् । २७ । पतितापविद्धचण्डालंमृतहा रं च धर्म्मवित् संस्पृश्य शुद्ध्येत्स्नानादुदक्यं ग्रामसूकरान् ॥२८॥एतदेवसूर्य्य दर्शनमित्र नद्वंचमूत्रिकाशौचदूषितान्पुरुषांश्चैव यस्य चानुदिनं हानिर्गृहे नि त्यस्य कर्म्मणः॥२९॥सतुब्रह्मच्युतस्तस्य किल्बषाशोनिराधमः नित्यस्यक र्म्मणो हानिं न कुर्वीत कदाचन॥३०॥तस्मान्नित्यकरणेबन्धः केवलमृतजन्मसु॥ तस्मान्नित्यकर्म्मणोऽकरणेमृतजन्मसु संसारदव चेयकेवलंबंधोभवति अ तस्तद्धानिं न कुर्वीतेत्यर्थः॥ विष्णु । नैतेऽपि भृग्वग्न्यनशनांभोभिर्मृतानामा त्मघातिनाम् ॥ पतितानां च नाशौचंविद्युच्छस्त्रहताश्चये ॥ १ ॥

२८ और केदी वो और चूहा और अशौच तिस करके दूषित जो पुरुषहै और घर विषे दि न दिन प्रति जो नित्यकर्म का त्यागताहै तिनको स्पर्श करके सूर्य कादर्शन करके शुद्धहोताहै ॥२९॥ सो पुरुष ब्रह्मकर्मसेभ्रष्टहै ॥ और पापको भक्षण करताहै पुरुषों विषे अधमहै तिसका रणे नित्यकर्मकीहानी कदाचित् ना करे ॥३०॥ तिस नित्य कर्म को त्यागे तो केवल मरण और जन्मकरके युक्त जो पुरुष संसारहै तिस विषे केवल बंधन रूपहै तिस कारणों नित्यक र्मकी हानी को कभी ना करे ॥ अथविष्णु धर्मांतर विषे भीकहाहै ॥ कि जोवदरीवन भृगुपा तविषे मरतेहैं और अग्नि विषे और कुरुक्षेत्र विषे अनशन करके और गंगा विषे जलकरके जिनोंने आत्म घातकीताहै और जो पतितहैं और बिजली करके और शस्त्र करके जो मृत होये है ॥ इनका अशौच नहि करणा ॥ १ ॥

और यज्ञ विषे और व्रतविषेंजो युक्त है और ब्रह्मचारि और राजाके पाठ विषे जोदीक्षितहैं॥और जो राजाकी आज्ञाकरणवालेहे सो अशोचभागि नहि कहे।२।इसमें यह अभिप्रायहे किजोअति पुण्यात्मा होवे और अति पापी होवे इनका अशोच नहि हुंदा और जोयज्ञादि विषे स्थितहैं तिनको किसके मरणे निमित्त अशोचनहिहुंदा यह स्पर्श के प्रसंगसे अशोच का प्रसंगहे ॥ ऐसे मृत्यु को प्राप्त होया जो स्वजातीका वापर जातिका मनुष्य तिसकोइच्छा करके जोस्पर्श करताहे सो पुरुष सहित वस्त्रोंके स्नानको करे और घृतको भक्षण करे तो शुद्ध होताहै ॥ ३ ॥ मैथुन इति ॥ स्त्रीके साथ चतुर्थ दिनके स्नान विषे जोमैथुनकरताहे सोतात्काल स्नान करके शुद्ध कहाहै ॥ और चौथे दिनते आगे मैथुनकरेतां शौचकर्के हि शुद्धि होताहै और चिताके धूमको जो सिंहताहै ॥ सोतात्काल स्नान करके शुद्धहोताहै ॥ सूतकमें और विशेषकहतेहैं॥जन

सत्रिव्रतिब्रह्मचारिनृपपाठकदीक्षिताः ॥ नाशौचभाजः कथिताराजाज्ञाकारिणश्चये ॥ २ ॥ अनुगम्येच्छयाप्रेतंज्ञातिमज्ञातिमेववा । सवासाजलमाप्लुत्यघृतंप्राश्यविशुद्ध्यति ॥ ३ मैथुनेकटधूमेचसद्यः स्नानंविधीयते ॥ मैथुनमत्रस्नातायांचतुर्थादिदिनीयमन्यत्रमलोत्सर्गवच्छौचंविधेयामित्यर्थः कटधूमेचिताधूमं आघ्रातिसतीतिशेषः॥जननमरणयोरनिर्दशाहे नभवतिशौचविधिर्नविप्रयोज्यम् ॥ नभवतिचप्रतिग्रहेपुदोषोद्विपदचतुष्पदधान्यदक्षणासु ॥ ४ ॥ सूतकीब्राह्मणोयजमानेनासावाशौचीतिवुद्ध्यानत्याज्यः ॥ भोजनंविनाप्रतिग्रहेनदोषइतितात्पर्यार्थः॥नविप्रयोज्यंप्रतिषेधोनेत्यर्थः ॥ विष्णुस्मृतावपि ॥ सवर्णस्याशौचेद्विजोभुक्तः स्रवंतीमासाद्यतन्निमग्नस्त्रिरघमर्षणंजप्त्वोत्तीर्यगायत्र्यष्टशतंजपेत् ॥ १ ॥

नेति ॥जन्म मरणके होयां१०दश दिनतें उरे कितने कार्य्योंमें शौच विधि उरे निषेधनहि और प्रतिग्रहजोदानलेणाहै तिसका भीदोषनहि सो कार्य दिखाउंदेहैं द्विपदेति द्विपदजो मनुष्य तिनकी चिकित्साविषे और चतुष्पदजो पशु तिनके लेणें देणे विषे और धान्यके दाक्षिणाके लेणेदेणे विषे अथवा द्विपद्दासादि और चतुष्पद गवादि और धान्य और दाक्षिणा इनो विषे सूतकका निषेधादि नहि ॥ इसीका अर्थ स्पष्ट करके कोताहैं किसूतकी ब्राह्मणको भोजनादिव्यवहार में नहि ल्याउणा ॥ और प्रति ग्रहादिमें दोष नहि जानणा ॥ ४ ॥ विष्णुस्मृतिमें कहाहे ॥ तुल्य वर्ण के अशौचमें ब्राह्मण भोजन करेतो नदीमें जाके जलमें निमग्न होकर त्रय बार अघमर्षण सूक्तको जप कर पीछे कनारे वैठ कर १०८ एक माला गायत्रीकी जपें ॥ १ ॥

और क्षत्रियके अशौचमें इसीको उपवासके साथकरे और वैश्यके अशौचमे इसीको व्रतत्रयके साथ करे औरब्राह्मण के अशौचमें राजा और वैश्य भोजनकरे तांनदीमें जाके ५०० पजरु उ गायत्रीका जपकरे शुद्धिकेवास्ते वैश्यजोहै क्षत्रिकेअशौचविषे भोजनकरे तांएकसौआठ १०८ वारगायत्रीकाजपकरे औरशूद्रके अशौच विषे ब्राह्मण आदिवर्ण अन्न भक्षण करे तांप्राजा पत्य व्रतकरे और द्विजके अशौचविषे शूद्रअन्नको भक्षण करे तां स्नान करके शुद्धहोताहै औ रशूद्रके अशौचविषे शूद्र जेकर अन्नभक्षणकरे तांस्नानकरके पंचगव्यभक्षणकरे॥भृग्वि त वदरो वनविषे भृगुपात अर्थात् टोएविच छालमारणी औरअग्नि औरकुछ नभक्षण करणा कुरुक्षेत्र

क्षत्रियाशौचेब्राह्मणस्त्वेतदेवोपोषितः कृत्वाविशुद्ध्यति॥ वैश्याशौचेब्राह्म णस्त्रिरात्रोपोषितश्च। ब्राह्मणाशौचेराजन्योवैश्यश्चस्त्रवंती मासाद्यगाय त्रीशतपंचकंजपेत्॥ वैश्यश्चक्षत्रियाशौचेगायत्र्यष्टशतंजपेत्॥शूद्राशौचेद्वि जोभुक्त्वाप्राजापत्यंसमाचरेत् शूद्रश्चद्विजाशौचेस्नानमाचरेत् शूद्रश्चशूद्रा शौचेस्नात्वापंचगव्यंपिबेत् भृग्वग्न्यनशनांबुसंग्रामविद्युन्नृपहतानांनाशौ चम् नराज्ञांराजकर्म्मणि नव्रतिनांव्रते नसत्रिणांसत्रे नकारूणांकारुकर्म्म णि नराजाज्ञाकारिणां तादिच्छायाम् नदेवप्रतिष्ठाविवाहयोः नदेशविभ्रमे आपद्यपिचकष्टायां आत्मत्यागिनःपतिताश्च नाशौचोदकभाजः पतितस्य दासीमृताह्नियदाघटमपवर्जयेत् ॥ उद्बंधनमृतस्य यः पाशंछिंद्यात्सततप्तकृ

च्छ्रेणशुद्ध्यति ॥

विषे औरजल प्रवाह औरयुद्ध औरविजली औरराजातिनाकरके जोमृत्युको प्राप्तहोवे तिनको अशौचना नहिंकहाहै और राजयोंको राजकर्मविषे अशौच नहि औरव्रतके करणे वालोंकोव्र तविषे औरयज्ञके करणवालोंको यज्ञविषे और कारिगरको स्वकर्मविषे औरराजाकी आज्ञा करण वालेको तिसकी आज्ञाविषे और देवप्रतिष्ठा विवाहविषे और पर्वविषे औरसामग्री जो डनें और देशके भ्रमन विषे और आपदाविषे कष्टदशाविषे और जो आत्मघाति औरजो प तितहैं सोसंपूर्ण अशुद्धिके भागि नाहि कहे औरजो शुभस्थानोंमे मृत्युहोयेहैं तिनको सुगति हो णेतें औरदुष्ट स्थानोंविषें जोमृत्युहोयेहैं तिनांकोअशौच नाहि दुर्गति होणेतें

अर्थात् जेकर यह मृत होणा तां इनके मरण निमित्त अशोच नहि रखणा और जो पतितहै और प्रायश्चित्त को नहि इच्छा करे । तद दासी उसको मृत तुल्य वणाणेके लिये घडेको फोडे और जो किसीका सगोत्र मृत होयाहै तां तिसके निमित्त दुरस्तेमें घडेको फोडे और जो फांसी लगाहै उसकी फाई को कटे यह सब तप्त कृच्छ्र कर्के शुद्ध होतेहैं ॥ द्विज जेकर शूद्र प्रेत के पीछे जाए श्मशाननें तां नदी को प्राप्त होके आठ हजार ८००० गायत्री का अथवा एक हजार आठ १००८ से अधिक गायत्री का जप करे और द्विज जेकर द्विज प्रेतके पीछे जावे तद आठ सौ गायत्री अथवा आठ अधिक १०८ सो गायत्री जपे और शूद्र जेकर प्रेतके पीछे श्मशानविषें जावे तां स्नान कर्के शुद्ध हुंदाहै और चिता धूमके सेवन विषें सब

पतितस्य प्रायश्चित्तानिच्छोर्थंदासीघटमपवर्जयेत् मृततुल्यतापादनाय घटस्फोट प्रकारेण घटंस्फोटयेत् यश्च मृतदिने सगोत्रोघटमपवर्जयेत्॥ उद्बद्धं अन्यत्स्पष्टम्॥ द्विजः शूद्रप्रेतस्यानुगमनंकृत्वा स्रवंतीमासाद्यगा यत्र्यष्टसहस्त्रंजपेत्॥ द्विजप्रेतस्याष्टशतम्॥ शूद्रः प्रेतानुगमनं कृत्वास्नान माचरेत्॥ चिताधूमसेवनेसर्ववर्णाः स्नानमाचरेयुः॥ मैथुने वमने दुःस्वप्ने वमनविरेकयोश्चरनश्रु कर्मणि कृतेच शवस्पर्शं स्पृष्ट्वा रजस्वलाचंडाल धूमांश्च भक्ष्यवर्जं पंचनखं शावं तदस्थि सस्नेहं सर्वेष्वेषु स्नात्वा पूर्वं वस्त्रं नाप्रक्षालितं बिभृयात् क्षुत्वा स्नात्वा भुक्त्वा अपः पीत्वा नव्यवासोवि परिधायरथ्यामाक्रम्यच मूत्रपुरीषं कृत्वा नरास्थिस्पृष्ट्वाचामेत् चांडालम्लेच्छसंभाषणे च नाभेरधस्तात्प्रबाहुषु कायिकैर्मलैः॥

दण स्नानकर्के शुद्ध होतेहैं ॥ और कहतेहैं मैथुनइति ॥ मैथुनके कीतयां और मुंडन के होयां और दुःस्वप्न के होयां और वमनके होयां और दस्तों के होयां और दाढा कटवावनायां और शवके स्पर्श होयां और रजस्वला के चांडालके धूमके स्पर्श होयां और सेह सल्लकीते लेकर जो पंचनख भक्ष्यहैं इनते विना जो पंचनख श्वानादि तिनका मुडदा वा गिल्लीहड्डी इनका स्पर्श होयां सहित वस्त्रोंके स्नानकर्के ॥ और छिकमारके स्नानकरे भोजन कर्के जल पीके नवीन वस्त्र पहनके मलीनगलीमें जाके मूत्र विष्टा त्यागके पुरुषकी सुक्कीहड्डी को स्पर्श करके और चांडाल म्लेछ के साथ वार्ता कर्के आचमन करे और नाभीके हेठ और बाहु विषें देहकी मलके स्पर्श होयांहोयां ॥

और सुरामय करके स्पर्श होयां तिनां अंगाको मृत्तिका जल साथ धोके पीछे स्नान करके शुद्ध हुंदाहे ॥ और पूर्वोक्त वस्तुओंका नेत्रों विषे स्पर्श हावेतां उपवास करके स्नान करे पंचगव्य पान करके शुद्ध हुंदाहे ॥ आचार्य्य और आपणे पढाणे वाला और माता पिता और गुरु इन प्रेतों को व्रती लेकर दाह करे तां व्रततें भ्रष्ट नहिं हुंदा ॥ १ ॥ और ब्रह्मचारी तिलांजलि को नदेवे व्रत की समाप्ति पर्य्यंत और व्रत की समाप्ति तें पीछे तिलां जलि को देकर त्रय दिनके व्रत करके शुद्ध हुंदाहे ॥ २ ॥ ज्ञानमिति ॥ ज्ञान और तप और अग्नि और निराहार और मृत्तिका और मन और जल इनांका सेवणा ॥ और वायु और कर्म और सूर्य्य और काल एह सब

सुराभिर्मद्यैश्चोपहतोमृत्तोयैः प्रक्षाल्यतदंगंस्नानेनचक्षुष्युपहतस्तूपोष्य स्नात्वापंचगव्येनशुद्ध्यतीति ॥ पुनः सएव । आचार्यस्वमुपाध्यायंपितरंमा तरंगुरुम् निर्हृत्यतुव्रतीप्रेतान्नव्रतेनवियुज्यते १ आदिष्टीनोदकंकुर्यादा व्रतस्यसमापनात् ।समाप्तेरुदकंकृत्वात्रिरात्रेणैवशुद्ध्यति २ आदिष्टीब्रह्मचा रीउदकं तिलांजलिनकुर्य्यात् । व्रतसमाप्तिपर्य्यन्तामिदं व्रतसमाप्त्यनंतरं तिलांजलिंदत्वात्रिरात्रव्रतं कृत्वाशुद्ध्यति ॥ ज्ञानंतपोग्निराहारोमृन्मनोवार्यु पार्जनम् वायुकर्मार्ककालौचशुद्धेः कर्तृणिदेहिनाम् ३ सर्वेषामेवशौचा नामर्थशौचंपरंस्मृतम् ॥ योर्थेशुचिःसहिशुचिर्नमृद्वारिशुचिः शुचिः ४ ॥ अर्थशौचंन्यायोपार्जनेनभवतीतिभावः॥ क्षान्त्याशुद्ध्यन्तिविद्वांसोज्ञानेनाका र्यकारिणः॥ प्रच्छन्नपापाजप्येनतपसावेदवित्तमाः ५ मृत्तोयैः शुद्ध्यतेशो ध्यंनदीवेगेनशुद्ध्यति रजसास्त्रीमनोदुष्टासन्यासेनद्विजोत्तमः ॥ ६ ॥

पुरुषां की शुद्धि करण वाले कहेहैं ॥३॥ और संपूर्ण शुद्धियां विषे अर्थ शुद्धि श्रेष्ठहै । जो अर्थ विषे नीति करके द्रव्यके उपार्जन विषे शुद्धहै सोहि शुद्ध कहाहे ॥ और नहि मृत्तिका जल करके शुद्ध शुद्ध कहाहे ॥४॥ क्षान्त्येति । सहिष्णुताकरके विद्वान् शुद्धहोतेहैं ॥और जो नहिं कर्म कों करें सो ज्ञान करके शुद्ध होतेहैं ॥ और छपया होयाहै पाप जिनांका सो जप करके शुद्ध होतेहैं ॥ और वेद केवेत्ता तप करके शुद्ध होतेहैं ॥ ५ ॥ शुद्धकरणे योग्यजो वस्तुहैं सो मृत्तिका और जल करके शुद्ध होतीहैं ॥ और नदी प्रवाहकेवेग करके शुद्ध होतीहै।और मन करके दुष्ट जो स्त्रीहै सो ऋतु करके शुद्ध होतीहै ॥ और ब्राह्मण त्याग करके शुद्ध है ॥ ६ ॥

श्रौर शरीर के श्रंग जल करके शुद्ध होतेहैं । श्रौर सत्य वाक्य करके मन श्रौर वाणी शुद्ध होतीहै । श्रौर भूतात्मा जो चितहै सो विद्या श्रौर तप करके शुद्ध होताहै श्रौर बुद्धि ज्ञान करके शुद्ध होतीहै । एह अशौच विधि देह धारियों को निर्णय करके कहीहै ॥ ७ ॥ श्रव याज्ञवल्क्यजीका वचनहै ॥ बकरी श्रौर श्रश्वका मुख शुद्धहै ॥ श्रौर गौका मुख शुद्ध नहि कहा श्रौर पुरुषते होये जो वसादि मलां सो भी शुद्ध नहि श्रौर पंथा जो मार्गहैं सो रात्रि विषें चंद्रमा कियां किरणा श्रौर वायु करके श्रौर दिन विषें सूर्य कीयां किरणा श्रौर वायु करके शुद्ध होतेहैं ॥ १ ॥ श्रौर मुख कीयां विंदु श्रौर आचमन के विंदु शुद्धहैं ॥ मुख श्रौर दंता विषे प्राप्त होये जो श्मश्रु तिसकों मुखतें बाहरकडणेतेहि शुद्धिहै ॥ २ ॥ श्रौर मुख के विंदु श्रोर श्लेष्म श्रौर श्रश्रु विंदु इन करके पुरुष अशुद्ध नहि हुंदा जेकर श्रंगा विषें नहि डिगण ॥ श्रार यह श्रंगा विषें डिगण तां श्रंग श्रंग अशुद्ध कहतेहैं ॥ तैसे गौत्तम जीका

अद्भिर्गात्राणिशुद्ध्यन्तिमनःसत्येनशुद्ध्यति ॥विद्यातपोभ्यांभूतात्माबुद्धिर्ज्ञानेनशुद्ध्यति ॥ ७॥ एषशौचविधिःप्रोक्तःशारीरस्यविनिर्णयः ॥याज्ञवल्क्यः अजाश्वयोर्मुखंमेध्यंनगोर्ननरजामलाः ॥ पन्थानश्चविशुद्ध्यन्तिसोमसूर्य्यांशुमारुतैः ॥ १ ॥नरजावसादयोमलाः रात्रौसोमांशुमारुताभ्यांदिवासूर्य्यांशुमारुताभ्यांमार्गाःशुद्ध्यन्ति मुखजाविप्रुषोमेध्यास्तथाचमनविन्दवः श्मश्रुचास्यगतंदंतसक्तंत्यक्त्वाततःशुचिः ॥ २ ॥ मुखजाविप्रुषः श्लेष्माश्रुविंदवस्तैरुच्छिष्टोनभवति एतच्चांगेनिपतनाभावेबोध्यम् ॥ तथाचगौत्तमः नमुखविप्रुषःउच्छिष्टंकुर्वन्तिनचेदंगेनिपतंतीति ॥ आचमनविन्दवःपादादौपतिताअपिनोच्छिष्टंकुर्वन्ति आस्यगतंमुखेप्रविष्टमपिश्मश्रुदन्तलग्नमन्नादिचस्वयंगलितंत्यक्त्वाशुचिर्नोच्छिष्टंकरोति दंतसक्तंतुदन्तवद्देवज्ञेयम् ॥ दन्ताश्लिष्टंतुदंतवदन्यत्रजिह्वाभिमर्शनादितिगौत्तमस्मृतेः

वाक्यहै जेकर मुख के विंदु शरीर के श्रंगा विषें नडिगण तां अशुद्ध नहि करतीयां ॥ पूर्व लाही अर्थ स्पष्ट करके कहीदाहै ॥ आचमेति ॥ आचमनके विंदु आदि श्रंग विषें पतित होन तां अशुद्धि को नहिकरतीयां ॥ श्रौर मुख विषें प्रवेश होइ श्मश्रुक्या दाढी श्रौर दंता विषें स्थित जो अन्नादि सो आपहि श्रंदरलंगें वाबाहर त्यागिये तां अशुद्धि को नहि करते क्योंकि जो दंता विषे लगाहै सो दंता कीन्यांई जाणना ॥ सो कहतेह ॥ गौत्तमस्मृतितें ॥ जो दंता विषें स्थितहै ॥ सो दंतां की न्याईं जानणा विनाजिह्वा के साथ स्पर्शतें ॥ अर्थात् जिह्वा करके स्पृष्ट होण तां मुख को जूठे करदीयाहैं ॥

केऐसा कहतेहैं। कि दंतातें भिन्न होया जो अन्न तिसको अंदर निगले तां आचमन करके शुद्ध होताहै। तांबूल भक्षण विषें विशेषकहतेहैं। शातातपऋषिजी। तांबूल और फल तिनाको भक्षण करके जेकर शेषरहे तां दंता विषें स्थित होयके स्पर्श विषें अशुद्धता नहिं कही॥ १ ऊर्ध्व मिति नाभितें ऊपर सब इंद्रीयां पवित्र कहियांहैं सो अशुद्धिको नहिं करतियां। और जो नाभिते हेठहैं इन्द्रीयां सो अपवित्रहैं और देहते दूर होया जो संपूर्ण मैल सो अशुद्ध कहाहै॥ २ मक्षिका इति माक्षिका और विंदू और छाया और गौ और अश्व और सूर्य कीयां किरणा॥ उौर धूलि और पृथवी और वायु और अग्नि और विडाल यह सदा शुद्ध कहेहैं॥ ३॥ और द्रव्यहै हस्थ विषें जिसके सो कदाचित् अपवित्र करके स्पर्श होवे तां तिस द्रव्यको त्यागके आ

दंतच्युतमन्नादिनिगलित्वाचमेदितिकेचित्॥तांबूलेविशेषमाहशातातपः ताम्बूलेचफलेचैवभुक्तास्नेहावशिष्टके दंतलग्नस्यसंस्पर्शेनोच्छिष्टोभवतिद्विजः १ ऊर्ध्वंनाभेर्यानिखानितानिमेध्यानिनिर्दिशेत्॥ यान्यधस्तादमेध्यानिदेहाच्चैवच्युतामलाः २ मक्षिकाविप्रुषःछायागौरश्वःसूर्य्यरश्मयः॥ रजोभूर्वायुरग्निश्चमार्जारश्चसदाशुचिः॥ ३॥ उच्छिष्टेनतुसंस्पृष्टोद्रव्यहस्तःकथंचन॥अनिधायैवतद्द्रव्यमाचांतःशुचितामियात् ४ याज्ञवल्क्यः॥ स्नात्वापीत्वाक्षुतेसुप्तेभुक्त्वारथ्योपसर्प्पणे। आचान्तापुनराचामेद्वासोविपरिधायच १ आचान्तःपुनराचामेत्द्विराचामेदित्यर्थः॥ अत्रचकारोरोदनाध्ययनारंभाल्पानृतभाषणादिसमुच्चायकः॥ वसिष्ठोपि॥ सुप्त्वाभुक्त्वाक्षुत्वास्नात्वापीत्वारुदित्वाचाचांतःपुनराचामेदिति॥ तथाचमनुः॥ सुप्त्वाक्षुत्वाचभुक्त्वाचष्ठीवित्वोक्त्वानृतंवचः पीत्वापोध्येष्यमाणस्यआचामेत्प्रयतोपिसन्निति॥ भोक्ष्यमाणस्तुप्रयतोपिद्विराचामेत्॥

चमनको करेंकरके शुद्धिको प्राप्त होताहै॥ ४॥ अवयाज्ञवल्कयजीका वाक्यहै। स्नानकरके और जल पान करके और छिकांमार करके और शयन करके और भोजन खाके और गलिया विषें भ्रमण करके और वस्त्रांको धारण करके दोवार आचमनकरे इस वाक्य विषें चकारतें जानणा रोदन और अध्ययन का आरंभ और थोडा अनृत वाक्य तिन विषें भी दोवार आचमन करे १। इसमें वसिष्ठजीका वाक्यहै।शयनकरके और अन्न भक्षण करके और निच्छामारके और स्नान करके और जलपान करके और रूदन करके दोवार आचमनकरे। तैसे मनुजीकावाक्यहै। सुप्त्वेति शयन और निच्छ और भोजन और मुखतेंथुकका त्याग और असत्यवाक्य और जल पान और पठनका आरंभ इनको करके पीछे दोवार आचमन करे॥

श्रौर श्रापस्तंवके वचनतें भोजन के श्राद विषे श्रोर श्रंत विषे दोवार श्राचमन करे श्रौर स्नान पान विषे एक वार श्राचमन करे ॥ इस विषे कै इक ज्ञानी योगीश्वरके वचनतें त्रयवार श्राचमन कर्के श्रौर उोष्ठके श्रंतकों दोवार हत्थ कर्के शुद्ध करे श्रौर जल कर्के नेत्र श्रादि इंद्रियां को स्पर्श करे एह पुरुष की शुद्धि कही है ॥ इस श्रर्थ के श्रनुसारतें ब्राह्मणादि त्रय वर्णों कों श्राचमन त्रय कहेहैं श्रन्य वचनतें शूद्रको एक श्राचमन कहाहि ऐसे कहतेहैं ॥ कै ज्ञानी ऐसे कहतेहैं । कि गोकर्णकीन्याईं हत्थ कर्के जलको ग्रहण करे जितने विषे माष छप जाये इस प्रकार त्रय वार जलपान करणे कर्के एक श्राचमन कहाहि ॥ शूद्रकों ऐसे एक श्राचमन

इत्यापस्तंववचनाद्भोजनादावपिद्विराचमनंस्नानपानयोः सकृदिति अत्र केचित्त्रिःप्राश्यापोद्विरुन्मृज्यखान्यद्भिः समुपस्पृशेदितियोगीश्वरवचनं अपोजलानित्रिस्त्रीन्वारान्प्राश्यद्विर्द्वौवारौओष्ठावुन्मृज्य अद्भिः खानि नेत्रादीनिसमुपस्पृशेदित्यर्थकमनुसृत्यद्विजातिराचमनत्रयं शूद्रस्यवचनान्तरादेकमितिवदन्ति केचित्तु गोकर्णाकृतिहस्तेनमाषमग्नंपिवेज्जलमित्याद्युक्तप्रकारेणवारत्रयजलपानेनैकमाचमनं शूद्रस्यत्वाचमनैकदेशइतिमन्यन्ते अतएवाद्विराचामेदित्यत्रषट्वारान् पिवतीति तन्न विचारसहं सकृद्द्विरित्यादीनांक्रियावृत्तिवाचकत्वात्तस्याश्वैकवारपानेनापिगतार्थत्वात् सकृद्द्विस्त्रिरित्यादीनांक्रियाभ्यावृत्तिवाचकत्वेनसमानार्थत्वेपिद्विरित्यत्र विशेषविवक्षाहेतोरनुपलम्भात् किंच सकृदितिपदं मयूखेव्याख्यातम् ॥

का एक देश कहाहे ॥ इस प्रकार तें (द्विराचमेत्) इस विषे छे वार जल पान करे । यह इनका अर्थ विचार को नहि सहारदा क्योंकि (सकृत् (द्विः) इत्यादि शब्दां को क्रियाकी आवृत्ति श्या पुना पुना करणा इसके वाचक होणेतें इनके अर्थको एकवार दोवार करणे कर्के भी यथार्थ अर्थ वाले होणेतें अोर (सकृत्) द्विः) त्रिः) इत्यादि शब्दों को क्रिया वृत्ति मात्र जनानेतें तुल्यार्थ होणे कर्के (द्विः) इस जगा अधिकार्थ जो छेवार जलपान तिस अर्थके नाः लभणेतें ॥ होर भी युक्ति कहतेहैं ॥ किंचेति ॥ (सकृत्) इस पदका अर्थ आचार मयूख विषे किहाहै ॥

सकृत्) यहतिन्नवारकरणे कानिषेधहै सोजी (द्विः) एभीतिन्नवारजल पीणेका अपवादक्यों नहि आवेगा कुछऔरहै कि तिन्नवार चारवारजल पीवे एहगौतमजीका वचनहै इसतेंतुसांदि रीतिसे ९नौवार अथवा १२ वारां वार जलपान का प्रसंगहोवेगा जेकर कहो किहोवे इसमें दोषनहितो ऐसामतकहो इसमें सदाचार काविरोधहै इसते एह नहि होसकता और याज्ञवल्क्य जीकी कही होई सामान्य विधिकरके भी तुल्यार्थता नहिहोवेगी सोआपकोअपेक्षितहीहै और विचार कहतेहैं किजो आचारादर्श विषे किहाहै ॥ द्विराचामेत् इसजगा त्रिरभ्यस्तावृत्ति क्याछे वारजलपानकरणा चाहिए सोएहअर्थ वहुत अशुद्धि कीशंका करके अथवा गौतम जीकी

सकृदितित्रित्वापवादइतितथाचतत्तद्द्विरितिकथंनत्रित्वापवादः॥अपिच त्रिश्चतुर्वा अपआचामेदितिगौत्तमीयवचनान्नववारान्द्वादशवारान्वातत्प्रसं गःस्यात्॥इष्टापत्तिरितिचेदाचारविरोध योगीश्वरीयसामान्यविधिनापिस मानार्थतानस्यात् ॥ यत्तुआचारादर्शः॥ द्विराचामेदित्यत्रत्रिरभ्यस्तावृत्ति नेतुत्रित्वापवादइति तदशुचित्ववाहुल्यशंकयागौत्तमस्मरणास्मरणेनवाफ लभूमार्थकाम्ययावबोध्यम् तथाच श्राद्धविवाहादिसामान्यविधानेत्रित्वाप वादएवसमुचितः आकाशवायुर्दिनयौवनोत्थानाचामतिस्वेदलवान्मुखेतइ त्यादौवारत्रयादिविवक्षाभाववदिति॥ कूर्मपुराणेद्वादशाध्याये व्यासः भुक्त्वा पीत्वाचसुत्वाच स्नात्वा रथ्योपसर्पणे ओष्ठौ चलोमकौ स्पृष्ट्वा वासादि परिधायच ॥ १ ॥

स्मृतिकीविस्मृति करके अथवा वहुतफलकी आकांक्षा करके जानना तथाच एहनिश्चय होया किश्राद्ध विवाहादिविषें सामान्यता करके जिस जगा (द्विः) ऐसा पद आवेतिस जगा दोवार ही जल पान करणा चाहिये ॥और आकाशेति ।एहरघुवंशका श्लोकहै ।इसविषेभी)आचाम ति)एहपदहै इसमेंभीत्रय वारजल पानकी विवक्षा नहि इसि तहाँ और जगाभी जानणा कूर्म पुराण के १२ वारवेंअध्यायमें व्यासजी कथन करतेहैं किभोजन कर्के औरपान कर्के औरश यनकर्के औरस्नान कर्के औरगालियांमें फिरकरके औरओष्टांको स्पर्श करणा औररोमांको स्पर्श करणा औरवस्त्रांको धारकरकेभी १

और वीर्य और मल मूत्र का त्याग और अयुक्त वचन कथन करणा और थुक सटणा और पठनके प्रारंभके आद और कास श्वासोंके आवणेमें॥ २ ॥चुरस्तेमें फिरणा और श्मशानमें जाणा और प्रात और सायं संध्यामें इनां कर्म्मांमें ब्राह्मण पूर्व आचांत होया होया फेर आचमन करे ॥ ३ ॥ और चांडाल और म्लेछके साथ संभाषण करणेमें और स्त्री और शूद्र और अपवित्र के साथ संभाषण करणेमें और अपवित्रपुरुषके साथ स्पर्शमें और तैसे उच्छिष्ट अन्नके साथ स्पर्श करणेमें ॥ ४ ॥ पीछे आचमन करे और तैसे अश्रुपात और रुधिरके निकलनेमें और भोजनमें प्रातःसायं संध्यामें और स्नानकर्के पान कर्के मूत्र मलको त्यागकरके ॥ ५ ॥ आचांत होया फेर आचमन करे और छिकके त्यागमें एकवार वा बहुतवार और

रेतोमूत्रपुरीषाणामुत्सर्गेयुक्तभाषणे ष्ठीवित्वाध्ययनारंभेकाशस्वासागमेतथा२॥चत्वरंवाश्मशानंवासमाक्रम्यद्विजोत्तमः संध्ययोरुभयोस्तद्वदाचांतोप्याचमेत्पुनः ॥ ३ ॥ चांडालम्लेच्छसंभाषेस्त्रीशूद्रोच्छिष्टभाषणे उच्छिष्टपुरुषंस्पृष्ट्वाभोज्यंचापितथाविधं॥ ४ ॥ आचमेदश्रुपातेवालोहितस्यतथैवच भोजनेसंध्ययोःस्नात्वापीत्वामूत्रपुरीषयोः॥ ५ ॥आचांतोवाचमेत्क्षुत्वासकृत्सकृदथान्यतःअग्नेर्गवामथालंभेस्पृष्ट्वाप्रयतमेवचा६।स्त्रीणामथात्मसंस्पर्शेनीवींवापरिधायच उपस्पृशेज्जलंचार्द्रंतृणंवाभूमिमेववा ॥ ७ ॥ केशानांचात्मनःस्पर्शेवाससोऽक्षालितस्यच अनुष्णाभिरफेनाभिरदुष्टाभिश्चधर्मतः॥८॥शौचेतुसर्वदाचामेदासीनः प्रागुदङ्मुखः शिरःप्रमृज्यकंठंवामुक्तकेशशिखोपिवा ॥ ९ ॥ अकृत्वापादयोशौचमाचांतोनशुचिर्भवेत् सोपानत्कोजलस्थोवानोष्णीषीचाचमेद्बुधः ॥ १० ॥

वहुत अग्नि और गोआंके स्पर्शमें ॥ ६ ॥ और स्त्रीयांके साथ स्पर्शमें और अधोवस्त्रका धारणा आचमनकरे जलको अथवा सिज्जेहोय घासको और पृथवीको स्पर्श करके७॥और अपणे केशां केस्पर्श और नाधोते होये नवीन वस्त्रके स्पर्शमें ब्राह्मण धर्मके अर्थवास्ते नहिजो गर्म और झगतें रहित शुद्ध जल तिनाकरके आचमन करे ॥ ८ ॥ और शौचमें सदाहि पूर्ववा उत्तर मुख होया होया आचमन करे शिर और कंठको जल साथ धोकरके नहि खुलेहैं केशवा शिखाजिसकी एसा होया होया ॥ ९ ॥ और विशेष कहतेहैं॥अकृत्वेति पैरोंके शौचको ना करके जोआचमन करताहै सोशुद्ध नहि हुंदा बुद्धिमान् खडावां पाकर और जलमें और पगडीको धारकर आचमन न करे ॥ १० ॥

और नावर्षा कीयां धारा करके और कढकर जलकों खडे करके नाकरे॥ और अनेक जगा पृथवीमें स्थित जो जल तिस करके नाकरे॥ और यज्ञोपवीतते विना नकरे ११ और जोडे परस्थित होकर और गोडेयांकेबाहरहत्थकरके और नबोलदा होया और नहसदा होया और किसेके देखदा होया ॥ लेटया होया नमस्कारकर्दा होया ॥ १२ ॥ और प्राप्त होये जोहै झगके साथ हत्थमें तिनके नदेख्यां होयां जलां कर्के आचमननकरे ॥ ब्राह्मण हृदयमें आचमन जाणे करणे शुद्ध हुंदाहै ॥ अर्थात् इतने जल साथ ब्राह्मण आचमन करे जो हृदय तक पहुंचे और क्षत्रि कंठमें जाणे करके ॥ १३ ॥ और वैश्य तालु पर्यंत पीणे करके और स्त्री और शूद्र ओष्ठां के स्पर्श वाले जल करके शुद्ध हुंदेहैं ॥ और अंगुष्ट के मूलतें उत्तर पासे ब्राह्म तीर्थ कहाहै ॥ १४ ॥ और अंगूठतें तर्जनीके मध्यमें पितृ तीर्थहै और छोटि अंगुल मूल पास पिछले

नचैववर्षधाराभिर्नतिष्टन्नोद्धृतोदकैः नैकभूस्थापितजलैर्विनासूत्रेणवापुनः ॥ ११ ॥ नपादुकासनस्थोवाबहिर्जानुरथोपिवानजल्पन्नहसन्प्रेक्षन्शयानः प्रव्हएवच ॥ १२। नावीक्षिताभिः फेनाभिरुपेताभिरथापिवा हृद्गाभिः पूयतेविप्रःकंठाद्भिः क्षत्रियःशुचिः ॥ १३ ॥ प्राशिताभिस्तथावैश्यः स्त्रीशूद्रौस्पर्शतोंततः अंगुष्ट मूलोत्तरतोरेखायाब्राह्ममुच्यते १४ अंतरांगुष्टदेशिन्योःपितृणांतीर्थमुत्तमं कनिष्टामूलतः पश्चात्प्राजापत्यंप्रचक्षते १५ अंगुल्यग्रेस्मृतंदैवंतदेवार्षंप्रकीर्तितं मूलेवादैवमार्षंस्यादाग्नेयमध्यतःस्मृतम् १६ तदेवसौमकंतीर्थमेतज्ज्ञात्वानमुह्यति ब्राह्मेणैवतुतीर्थेनद्विजोनित्यमुपस्पृशेत् १७ कायेनवाथदैवेननतुपित्र्येणवैद्विजः त्रिःप्राश्नीयादपः पूर्वंब्राह्मणः प्रयतस्ततः १८ संमृज्यांगुष्टमूलेनमुखंवैसमुपस्पृशेत् अंगुष्टानामिकाभ्यांतुस्पृशेन्नेत्रद्वयं ततः १९ तर्जन्यांगुष्टयोगेनस्पृशेन्नासापुटद्वयम् कनिष्टांगुष्टयोगेनश्रवणेसमुपस्पृशेत् ॥ २०

पासे प्राजापत्यतीर्थहै ॥ १५ ॥ और अंगुलीयांके आगे देवता तीर्थहै ॥ सोई ऋषियोंकाहै अर्थात् आर्ष तीर्थहै ॥ अथवा जो अंगुलीयांकें मूलमें होवे सोई देवतीर्थ और आर्ष किहाहै और अंगुलांके मध्यमे आग्नेय कहाहै ॥ १६ ॥ सोई सोमतीर्थ भीहै इसकोजाणकर पुरुष मोहको प्राप्तनहि हुंदे॥ब्राह्मणादि वर्ण नित्यब्राह्मतीर्थ करके ही आचमनकरें १७ वा प्राजापत्य तीर्थ करके वादैवतीर्थ करकें करे परंतु पितृ तीर्थ करके आचमनना करे हेब्राह्मणो तुसीसुणो ब्राह्मण पूर्व निश्चयमनहोया२त्रय वारजलकों आचमन करे॥ १८॥ अब और विधि इसमेंकहतेहै सामिति अंगूठकें मूलकरमुखकों पूजकर। फेर अंगूठ और अनामिका अंगुल कर मुखकोंस्पर्श करे और दोनों नेत्रों को स्पर्श करे ॥ १९ ॥ और तर्जनी अंगूठ करके नासांको और चीचि अगुल और अंगूठ कर्के कर्णा को स्पर्श करे ॥ २० ॥

श्रौर संपूर्ण श्रंगुलीं कर्के वा हत्थकी तली कर्के हृदयकों श्रौर शिरकों स्पर्श करे वा श्रंगुष्ठ कर्के हृदय श्रौर शिरकों स्पर्श करे ॥ २१ ॥ त्रयवार श्राचमन कों ग्रहण करे तिस कर्के ब्रह्मा-विष्णु श्रौर शिव प्रसन्न होतेहैं । एह असी सुणदे होंए ॥ २२ ॥ श्रौर श्रोष्ठां के मांजनतें गं-गा श्रौर यमुना प्रसन्न होतीहैं ॥ नेत्रांके स्पर्शते चंद्रमा श्रौर सूर्य प्रसन्न होतेहैं ॥ २३ ॥ श्रौर-नासाके स्पर्श कर्के श्रश्वनी कुमार श्रौर कर्णांके स्पर्श ते वायु श्रौर श्रग्नि प्रसन्न होतेहैं ॥ २४ श्रौर हृदय के स्पर्श कीतयां होयां सभ देवता प्रसन्न होतेहैं । श्रौर शिरके स्पर्श करणेतें एक-पुरुष पुरुषोत्तम प्रसन्न होताहै ॥ २५ ॥ श्रौर विशेष कहतेहैं ॥ नइति ॥ मुख कर्के विंदु पतत होयां होयां उच्छिष्ट नहि करदे श्रौर दंताके श्रंदर श्रौर दंतामें उच्छिष्टके लगयां होयां जिव्हा

सर्वेषामथयोगेनहृदयंतुतलेनवा संस्पृशेद्वाशिरस्तद्वदंगुष्ठेनाथवाद्वयम् २१
त्रिः प्राश्णीयादथांभस्तुप्रीतास्तेनास्यदेवताः ब्रह्माविष्णुर्महेशश्चभवंती
त्यनुशुश्रुमः २२ ॥ गंगाचयमुनाचैवप्रीयेतेपरिमार्ज्जनात् संस्पृष्टयोर्लोचन
योः प्रीयेतेशशिभास्करौ २३॥ नासत्यदस्रौप्रीयेतेस्पृष्टेनासापुटद्वये कर्ण
योः स्पृष्टयोस्तद्वत्प्रीयेतेचानिलानलौ ॥ २४ संस्पृष्टेहृदयेचास्यप्रीयंतेसर्व
देवताः मूर्धनिसंस्पर्शनादेकः प्रीतः सपुरुषोभवेत् २५ ॥ नोच्छिष्टंकुर्वतेमु
ख्याविप्रुषोंवैपतंतियाः दंतांतर्दंतलग्नेपुजिव्हाऽोष्टं शुचिर्भवेत् २६ ॥
स्पृशंतिविन्दवः पादौयश्राचमयतः परान् भूमिगास्तेसमाज्ञेयानतैरप्रय
तोभवेत् २७ । मधुपर्केचसोमेचतांबूलस्यचभक्षणे फलमूलेचेक्षुदंडेनदो
षंप्राहवैमनुः २८ प्रचरंश्चान्नपानेपुद्रव्यहस्तोभवेन्नरः भूमौनिक्षिप्यतद्द्र
व्यमाचम्याभ्युक्षयेत्तुतत् २९

श्रौर श्रोष्ट शुद्धहैं श्रर्थात् श्रशुद्ध नहि हुंदे ॥ २६ ॥ श्रौर जो विंदु श्राचमन करदेयां होयां पुरुषां के पैरों को स्पर्श करण श्रौर दूसरके श्राचमन करदेयां होयां जेडे विंदु पृथवी में प्रा प्तहोजांण सो होरना जलांके तुल्य जानणे तिनां कर्के श्रपवित्र नाहिं हुंदा ॥ २७ मधुपर्क श्रौ रसोमवल्ली का रस श्रौर तांबूल श्रौर फल मूल श्रौर गन्ने इनांके भक्षण कीत्यां होयां दोष नहि श्रर्थात् जूठे नहि हुंदे ऐसे मनूजी कहतेहैं ॥ २८ ॥ कुच्छ द्रव्य छावडी श्रादिकों हत्थमें लेकर श्रन्न पानादि स्थानमें विचरे पुरुष तां तिस द्रव्यकों पृथवी पर रखकर श्रौर श्राचमनकोंले कर द्रव्यकों जलकें साथ सिंचन करे ॥ २९ ॥

वातेजस धातु आदि को लेके जेकर द्विज उछिष्ट होवे वा जिसद्रव्य कों लेकर उच्छिष्ट कर्के युक्त होवे ॥ ३० ॥ तिसद्रव्य कों पृथवी पर रख कर आचमन करणेतें शुद्ध हुंदाहे ॥ ३१ ॥ औंर विशेष कहतेहैं । अरण्यइति ॥ वनमें और निर्जन स्थानमें और रात्रिमें और चोर विं घयाड आदिकां करके जो युक्त देश तिनस्थानोंमें मल मूत्रके त्यागतें द्रव्यहै हत्थमें जिसके सो अपवित्र नहिं हुदा अर्थात् तिस करके वर्त्तनेमें शंका नहि करणी ॥ ३२ ॥ याज्ञवल्क्यजी का वचनहै गलीयां विषें जो कर्दम और जल एह अंत्यज और कुत्ता और काक इनां कर के स्पर्श होण तां वायु करके तिनकी शुद्धि कहीहै॥तैसेहिं पक्कीयाँ इटां करके रचियां जो कं द्धां गृह आदिक सो वायु करके शुद्ध होतहैं ॥ (नावःपंथास्तृणानिच) ॥ एह दूसरे पाद

तैजसंवासमादाययद्युच्छिष्टोभवेद्द्विजः यद्यद्द्रव्यंसमादायभवेदुच्छेषणान्वितः ३० ॥ भूमौनिधायतद्द्रव्यमाचांतःशुचितामियात ३१ ॥ अरण्येनुदकेरात्रौचौरव्याघ्राकुलेपथि ॥ कृत्वामूत्रपुरीषंवाद्रव्यहस्तोनदुष्यति ॥ ३२ ॥ याज्ञवल्क्यः ॥ रथ्याकर्दमतोयानिस्पृष्टान्यंत्यश्ववायसैः मारुतेनैवशुद्ध्यन्तिपक्केष्टकाचितानिच ॥ १ ॥ नावःपंथास्तृणानिचेति द्वितीयपादेपाराशरीयःपाठः॥रथ्यामार्गमात्रोपलक्षिकातत्स्थानिपंकादीनिचांडालादिस्पृष्टानिपक्वेष्टिकादिनिर्मितानिगृहादीनिचमारुतेनवायुनैवशुद्ध्यन्ति । वहुवचनेनरथ्यादिगतानिगोमयपाषाणादीनिवोध्यानि । प्रोक्षणसंहितानामित्यादिवचनान्नप्रोक्षणार्हाणीत्यर्थः तृणकाष्टपर्णादीनांप्रोक्षणंयुक्तमेव ॥ स्मृत्यंतरे श्वमृगालप्लवंगाद्यैर्मानुषैश्चरतिंविना स्पृष्टःस्नात्वाशुचिःसद्योदिवासंध्यासुरात्रिषु ॥ १ ॥

विषें पराशर जीका पाठहै ॥ इसमें नौका और पंथा और तृणादि वायु करके शुद्ध कहेहै॥ रथ्या कहणेतें रस्ते विषें जो चिकड आदि सो चांडालादि करके स्पृष्ट होन तां वायु कर्के शुद्धि कहीहै॥और वहु वचनते गलियां आदि विषें स्थित जो गोमय पाषाण आदि तिनकी भी शुद्धि जानणी अर्थात् इस वचनतें एह रथ्याकर्दम आदि जल करके नहि सिंचणे योग्य॥ और तृण काष्ट और पत्र आदि इनको सिंचणा योग्यहै ॥ १ ॥ और स्मृति विषें किहाहै ॥ श्वेति ॥ मनुष्यां करके पालित जो श्वक्या कुत्ता और गिधड और वानर इन कर्के लाडतें विना पुरुष स्पर्श होवें तां स्नान करके तात्काल शुद्ध होताहै ॥ १ ॥

श्रौर जेकर लाड करके स्पर्श करे तां उपवासादि व्रत करके शुद्धि कहीहै ॥ तिस विषे भी दिनें स्पर्श करेतां स्नान करके शुद्धि श्रौर संध्या विषे स्पर्श होयांभी स्नान करके हिशुद्धिहैं ॥ श्रौर जेकर रात्रिका व्यव धान होवे तां अधिक प्रायश्चित्त कहाहै ॥ अर्थात् व्रत भी साथ करे अब भूमी आदिकां की शुद्धि को याज्ञ वल्य जी कहतेहै ॥ पृथ्वी की शुद्धि मार्जनते कहीहै क्या काष्ट तृणादिके दूर करणेतें ॥ श्रौर तिस स्थान विषे काष्ट आदिके उद्दीपनतें क्या दाहादिक रणेते श्रौर जिस करके गंधलेपादि दूर होवें तिस महीने आदिके कालते श्रौर गौश्रां कीस्थितितें श्रौर शुद्ध जल श्रौर गोमूत्रआदि के सिचणेते श्रौर पृथवी को कहा आदि केखरोतणे

मानुपैःमनुष्यपालितैः श्वादिभिःस्पृष्टोद्विजः क्रीडार्थस्पर्शेनविनास्नात्वा शुद्ध्यति ॥ क्रीडार्थस्पर्शेनेतूपवासाद्याधिकंकल्प्यम् ॥ तत्रापिदिवास्पर्शे दिवास्नानेनसंध्यास्वपिस्नानेन शुद्धिः रात्र्यादिव्यवधानेत्वाधिकमेवमग्रेपि ॥ भूम्यादीनांशुद्धिमाह याज्ञवल्क्यः ॥ भूशुद्धिर्मार्जनाद्दाहात्कालाद्गोक्रमणात्तथा ॥ सेकादुल्लेखनाल्लिपाद्गृहंमार्जनलेपनात् ॥ १ ॥ मार्जनाद्दुष्टतृणाद्युत्थापनात् ॥ दाहात्तत्रत्यकाष्ठाद्युद्दीपनात् ॥ कालात्गन्धलेपादिक्षयकरण समर्थान्मासादिमितात् । गोक्रमणात् गोस्थित्यादिनोपहतात् सेकात् शुद्धाम्बुगोमूत्रादिवहनात् ॥ उल्लेखनात् लघुकुद्दालादिनाकर्षणात् लेपाद्गोरमृदादिजात् ॥ एतेसप्तसमस्ता व्यस्तावा दोपतारतम्येन भूशुद्धिहेतवोवोध्याः । गृहंतुमार्जनलेपाभ्यामेवशुद्ध्यति ॥ तत्रापिप्रतिदिनमिदमितिपृथगुक्तम् ॥ भूदोषापादकानि देवलेनोक्तानि ॥ यत्रप्रसूयतेनारीम्रियतेदह्यतेऽपिवा ॥ चांडालाद्युषितंयत्रयत्रविष्टादिसंगतिः ॥ १ ॥ एवंकश्मलभूयिष्टाभूरमेध्याप्रकीर्त्तिताश्वशूकरखरोष्ट्रादिसंस्पृष्टादुष्टतांव्रजेत् । २ । अंगारतुपकेशास्थिभस्माद्यैर्मलिनाभवेदिति

तें श्रौर श्वेत मृतिकाके लेपणेतें १ ॥ जेकर वहुत अशुद्ध होवेतां पूर्वोक्तहेतुसत ॥ सव ग्रहण करे ॥ श्रौर दोष कम होवेतां थोडे करके शुद्धि कहीहै ॥ श्रौर होरना गृहादिकांकीमार्जन श्रौर लेपकरके शुद्धि कहीहै । तिस विषे भी दिन दिन विषे पूर्वोक्त हेतु भिन्न जानणा ॥ भूइति पृथ्वीको अशुद्धि करण वालीयां जो वस्तु सोदेवलऋषि करके कहियाहैं जिस स्थान विषे स्त्री प्रसूत होतीहे वा मृत्युहोवे वा दाह को प्राप्तहोवे वा चांडालादि करके दूषित होवे वा विष्टा करके युक्त होवे ऐसे दोषकी अधिकतातें अशुद्धिकहीहै १ कुत्ता श्रौर सूर श्रौर खर उष्ट्र इन करके युक्त होवे तां पृथ्वी अशुद्धिको प्राप्तहोतीहै २ श्रौर अंगार तोह केश अस्थि भस्म आदि इनां करके मलीन होतीहै अर्थात् थोडी अशुद्धहोतीहै ॥

पूर्वोक्त याज्ञवल्क्यजीका वचन स्पष्ट करके दिखाइदाहै भुवइति अशुद्ध पृथवीकीसंज्ञा त्रय३ कहींयांहै अमेध्या १ दुष्टा २मालिना३ इनकी शुद्धिके हेतुभी त्रय ३ हिहैं सोकहतेहैं । पंचोत इसश्लोककाविवेकार्थ एहहै कि जेडी अमेध्यासंज्ञा वालीहै क्या मनुष्य दाहसंज्ञावाली । और चांडालादिके निवास वाली । सोपूर्वोक्त पंजांहेतुआं करके शुद्धिहुंदीहै । मार्जन करणते क्याअ शुद्धवस्तुके हटाणेतें १ औरतिसजगा तृणादिके दाहकरणेते २ औरमलके दूरकरण योग्यनही नेत्रआदिकालतें ३ औरउसजगा गौआंकें निवास होणेते ४ औरशुद्धजलके सिंचनते ५ यहपं जहेतुजानणे । औरजेकर सोभूमी मनुष्यजन्म करके औरमनुष्योंके मरणे करके और अत्यंत विष्टादिके वा मदिरा के लेप करके दूषित होवे तांतिन्हांपंजाते दाहको छोडकर वाकीकचा

भुवोऽमेध्यादुष्टामालिनेतिसंज्ञात्रयंप्रदर्श्य तच्छुद्धिहेतुत्रयंदर्शयति पंचधा वाचतुर्द्धावाभूरमेध्याविशुद्ध्यति दुष्टान्विताात्रिधाद्वेधाशुद्ध्येतमलिनैकधेति अत्रायंविवेकः मनुष्यदारुचांडाला ध्युषिता दुष्टाभूर्मार्जनानंतर्वार्त्तिपंचभिः मनुष्यजननमरणात्यन्तविष्टादिनादूषिता पूर्वोक्तैरेवदाहहीनैश्चतुर्भिः॥ श्वशूकराध्युषिता गोक्रमणसेकोल्लिखनैस्त्रिभिः ॥मार्जनानुलपनयोस्सर्वत्र संवन्धइति मिताक्षरा॥ विष्णुस्मृतावप्येवम्॥ ब्रह्मपुराणे॥ भूमिर्विद्ध्य तेकालेवातवर्षणगोकुलैः। लेखादुल्लेखनात्संगाहिश्मानांभजनादिना॥ १ ॥

रहेतुआं करके शुद्धहुंदीहै ॥ औरकुत्तेके औरसूकरके जोवासवालीहै सोगौआंके फिरनेतुरनेसें १ और सिंचनसें २ और उल्लेखनजो खोतरना तिसते ३शुद्धहुंदीहै । इसकी शुद्धिके हेतुत्रयकेह हैं परंतु मार्जन और अनुलेपकासभजगा अन्वयहै ॥ और जोपृथ्वीमलीनहै सोमार्जन और अनुलेपसेंहिशुद्धहोतीहै । एहमिताक्षराकाअर्थहै । विष्णुस्मृतिविषे भीएसाहीकहाहै । ब्रह्मपुराण विषे भीकहाहैं। पृथवी कालतें शुद्धहुंदीहैं और वातकरके और वर्षा करके और गौआंकेआ क्रमणादि करके और खोंतरनेते वाहनेते और श्रेष्टवस्तु केसंगते और घरांकी मार्जनादि ते शुद्धिहुंदीहै ॥ १ ॥

केशकीटादि करके युक्त होवे अन्नतां अथवा गौ करके सिंघया होवें अथवामृतहोई मक्षी वाला होवे तदमृत्तिका १ जल २ भस्म ३ क्षार ४ यह तिसकीशुद्धि वास्ते कहे हैं ॥ २॥ वामन पुराण विषे विष्णुध र्मोत्तर विषे भी ऐसा ही लि खया हैं ॥ पराशर जीका वाक्य हैं निरंतर जल कियां धारां और वायुतेउत्पन्न होये रेणु और स्त्रीयां और बृद्धऔर वाल यहकदाचित् अशुद्ध नहिहोते १ छिक्कविषें और थुक और दंतोच्छिष्ट और अनृत और पतित केसाथ संभाषण होवेतांतिसकी शुद्धि वास्ते सजे कर्ण को स्पर्श करे २ इसविषै हेतुहै अग्नि और जल

केशकीटावपन्नान्ने गोघ्रातेमक्षिकान्विते मृदम्बुभस्मक्षाराणि प्रक्षेप्तव्यानिविशुद्धये ॥२॥ वामनपुराणेविष्णुधर्मोत्तरेचाप्येवम् ॥ पाराशरीये।अद्भ्यःसंततधारावातोद्भूताश्चरेणवः स्त्रियोवृद्धाश्चबालाश्चनदुष्यान्तिकदाचन ॥१॥ क्षुतेनिष्ठीवनेचैव दंतोच्छिष्टेतथानृते पतितानांचसंभाषेदक्षिणंश्रवणंस्पृशेत् ॥ २ ॥ अग्निरापश्चवेदाश्चसोमसूर्य्यानिलास्तथा एतेसर्वेपिविप्राणांश्रोत्रेतिष्ठंतिदक्षिणे ॥३॥ प्रभासादीनितीर्थानिगंगाद्याः सरितस्तथा विप्रस्यदक्षिणेकर्णेसान्निध्यंमनुरब्रवीत् ॥४॥ देशभंगप्रवासेवाव्याधिषुव्यसनेष्वपि रक्षेदेवस्वदेहादि पश्चाद्धर्म्मंसमाचरेत् ॥ ५ ॥ येनकेनचधर्म्मेणमृदुनादारुणेनवा उद्धरे द्दीनमात्मानं समर्थोधर्म्ममाचरेत् ॥ ६ ॥ आपत्कालेतुनिस्तीर्णेऽशौचाचारंनचिन्तयेत् शुद्धिंसमुद्धरेत्पश्चात्स्वस्थोधर्म्मंसमाचरेदिति ॥ ७ ॥

और वेद और सोम सूर्यवायु एहब्राह्मणोके सज्जे कर्णविषेहैं ॥३॥ औरप्रभासादि तीर्थ गंगादि सरित कयानादियां एहभीसब ब्राह्मणके सजे कर्ण विषेस्थितहै ॥ ऐसेमनुकहताहै॥४॥ देशभंगविषे और प्रवास और रोग विषे और व्यसन विषे प्रथमअपने देहकी रक्षाकरे पीछेते धर्म कोंकरे ॥५ ॥ जिस किसे उपाय करके वाधर्म्म करके वाअधीनताकर्के वावलकरके आपणीरक्षाकरे और समर्थ होवें तांधर्म करे॥ ६॥ और विपदा कोप्राप्त होयां होयां अशुद्ध कर्मका न चिंतनकरे और समर्थ होकर शुद्धि का और धर्म का आचरण करे ७

पूर्वोक्त अर्थ स्पष्ट कर्के कहतेहैं ॥ संततेति जलके पानकरणे वास्ते पात्रको उच्चाकर्के मुख विषें जो धारा प्राप्त होतीहै सो शुद्ध कहीहै तिस पात्र विषें स्थित जो जल और मुख यह दोनो उच्छिष्ट नहिहोते। और दंतेति। दंदांविषें आसक्त जो अन्नआदि तिसके बाहर त्यागणेतें दक्षिण कर्णके स्पर्श करणे कर्के शुद्धि कहीहै। अग्निरिति अग्निआदिक देवताकि ब्राह्मणके सज्जकर्ण विषें सान्निध्यता भावनाकरणी और स्वरूपते सान्निध्यताका अभावहै इति। इसप्रकार श्रीमत्

ततधाराजलपानार्थपात्रमुत्थाय मुखेयाधारापात्यनेसाधाराशुद्धापात्रस्थंजलंमुखंचनोच्छिष्टंकरोतीत्यर्थः॥ दन्तोच्छिष्टदन्तसक्तमन्नादिमल्कषणे नयहिरुत्क्षेपेणोच्छिष्टेसतीत्यर्थः॥ अग्निरिति अग्न्यादिदेवतानांविप्रस्यदक्षिणकर्णसान्निध्यंभावनीयमितिभावः स्वरूपतस्तत्सान्निध्याभावादिति ॥ इतिश्रीमन्महाराजाधिराजजम्बूकाश्मीरादिदेशाधीशप्रभुवर रणवीरसिंहाज्ञप्तसारस्वतपण्डितवरदेवीदत्तसुतकविगंगारामसंगृहीते धर्म्मशास्त्रमहानिबन्धप्रायश्चित्तभागेशुद्धिसंक्षेपवर्णनेनामाष्टदशकं प्रकरणम् ॥ १८ ॥

जो महाराजयांके अधिराज और जम्बूकाश्मीरतें आदलेके जो अनेक देश तिनके स्वामि प्रभुवर रणवीरसिंह तिनकी आज्ञा कर्के कविगंगा रामने संग्रहकीयाजो धर्म्म शास्त्रमहा निबंध तिसके प्रायश्चित भाग विषें शुद्धिकाहि संक्षेप कर्के वर्णन जिस विषें ऐसा अठारवां १८ प्रकरण समाप्तहुआ ॥

सवैया ॥ देशविदेशनरेशनमें शुभभेषनमें
एहलायकभाषा ॥ पारवतीसुरवाकवतीसभ
भागवती सुरवृक्षकीशाखा वालगुपालसम्हा
लपढे जवके झटवोधमैंदेखतमासा ॥ वामदेव
अरवांकावरामण काशिवरामनअक्षरराषा ॥
॥ १ ॥
॥ दोहा ॥ रामनाममधुमिस्सरीविनामोल
मिलजाय वेसुयादनहिहोतहैपलपलछिन
छिनखाय ॥ १ ॥

अब उन्नीये = १९ = रहस्य प्रायश्चित्त प्रकरणके व्याख्यानकों कर्दाहां रहस्य प्रायश्चित्तके विचारके वास्ते॥आद विषय तिसके प्रायश्चित्तकी अल्पता होणी तिस विषय विचार प्रश्णोत्तर कर्के कहीदाहै १ (प्रश्णः) कोतेहोये पापके प्रकट करणे कर्के और पश्चात्ताप कर्के और तप कर्के और वेदके पड़ने कर्के पापके करणे वाला पापतें रहित होताहै तयसे हि विपदा विषे दान कर्के पापतें रहित होताहै॥१॥कुछ और भी है कि । पुरुष आप पापकों कर्के जयसे जय से विस्तारतें पापकों प्रकट कर्ताहै क्या मेरेथीं एह पापहोया अयसे कहताहै तयसे तयसे हि पापतें रहत होताहै जयसे सर्प अपने पुरातन चर्मतें रहित होताहै॥२॥इत्यादिक मनु वचनांतें एह सिद्ध होया क्या पापके प्रकट करणेतें पापकी अल्पता होणी इस कहणेतें प्रकाशमे प्रायश्चित्त थोड़ा होणा चाहिए और रहस्यमे अधिक होणा चाहिए ॥ किस कर्के मुनियोने विपरीत कीताहै कि रहस्य में थोड़ा और प्रकाशमे वहुत सोई देखीदाहै कि प्रकाशमे जितना प्रायश्चित्तहै तिसतें वीमा हिस्सा रहस्यमे करणा इत्यादि (तथेति तांतें ऋषियोंनें इस विषे क्या अंगीकार कीताहै जेकर अयसे कहो तां इस विषे (उत्तर) ख्यापनेति इस कर्के कहीदाहै तिस रहस्य विषे प्रकट करणेते विना होर जो पश्चात्तापादिकहैं तिन्हांकों विद्यमान होणेतें रहस्य विषे प्रायश्चित्तकी अल्पता युक्तहै इस विषे प्रत्यक्षजानीदाहै क्या जो पुरुष गुप्तहि पापके दूरकरणे वास्ते प्रायश्चित्तकी इच्छा करताहै सो निश्चयहि प्रथम पश्चात्ताप कर्ताहै क्या मेरेथीं महान् दोष होया क्या करां अयसे ॥ इस विषे कुछ होरभी कहतेहां प्रकाश प्रायश्चित्तकों अन्य पुरुषां कर्के करावाणेनें तिस विषे तयसा पश्चात्ताप और तप नहि होता क्यों सो पुरुष प्रायश्चित्त विषे लोकांदी निंदाके भयतें प्रवृत्त होताहै और संबधी मुझकों त्यागदेणगे इस भयतें कर्ताहै नहि चित्त कर्के कर्ता ॥

ॐश्रीगणेशायनमः ॥ रहस्यमेवयद्ज्ञानंकरणादिरहस्यकम् रहस्योऽनुग्रहोयस्यतस्मैसरहसेनमः १ अथप्रकाशवलेनैवरहस्यान्वेषणेप्रवृत्तेः प्रकाशप्रायश्चित्तानंतरं रहस्यप्रायश्चित्तविवेकार्थंतावत्तदल्पत्वविषयविवेकः पूर्वपक्षसिद्धांताभ्यामुच्यते१ननु ख्यापनेनानुतापेनवेदार्थाध्ययनेनच पापकृन्मुच्यते पापात्तथादानेनचापदि १यथायथानरोऽधर्मंस्वयंकृत्वानुभाषते तथातथात्वचेवाहिस्तेनाधर्मेणमुच्यते २ इत्यादि मनुवचनेभ्यः पापख्यापनेनापिपापह्रासस्योक्तत्वात्प्रकाशप्रायश्चित्तेच तदावश्यकत्वात्प्रकाशेप्रायश्चित्ताल्पतायुक्ता नतु रहस्येदृश्यतेहि प्रकाश उक्तं यत्किंचिद्विंशभागोरहस्यके इत्यादि तथाच किमभिप्रेतमत्रस्मर्तृभिरितिचेदुच्यते ख्यापनेतरेषामनुतापादीनांतत्रविद्यमानत्वाद्युक्तं रहस्येऽल्पत्वम् यस्तुरहस्यंप्रायश्चित्तमिच्छति सत्ववश्यं पूर्वमनुतप्तोभवति प्रकाशस्यप्रायोऽन्यकृतत्वान्नतादृशोऽनुतापस्तपोवालोकापवादभीत्या सजातिपरित्यागभीत्याचतत्रप्रवृत्तेः

किंचेति कुछ श्रौरभी कहतेहां श्रयसे श्रसीं भी मनतेहां क्या श्राप पापके प्रकट करणे कर्के पापकी हानि हुंदीहै परंतु प्रकट करणे विषेभी तिस प्रकाशका प्रथम श्रनुतापहि कारणहै तां- पश्चातापहि होया क्यों पश्चात्तापतें विना प्रकाशकी प्रवृत्तिकोंभी नहोणेतें ॥ कुछक इस वि षें होरभी कहतेहां रहस्येति गुप्त तप श्रादिक करणे विषे चित्तकी स्थिरताकों भी निस्संशयहोणेतें (स्थिरमन होकर प्रायश्चित्तकों करे शीघ्रहि सिद्धिकों प्राप्त होताहै ॥ इत्यादि वचनां कर्के प्रायश्चित्त की श्रल्पता युक्तहै ॥ इस विषें वाक्यहै उत्तमेति मनकर्के जपका करणा उत्तमहै श्रौर जो जिव्हा कर्के उच्चारण कीतियां श्रापणे कर्णाविषे जो शब्दका प्राप्त होणा श्र यसा निकृष्ट कहाहै इत्यादिवचनांतें रहस्यहि श्रतिशय कर्के पापका नाशक जानणा तातें तिस पापके प्रकाश विषे उत्तम जो मनकी स्थिरता श्रादिक तिसके श्रभाव होणेतें तांपूर्वोक्त

किंचस्वयंख्यापनेनपापहानिरस्तीतिमन्यतेपरंतुतत्राप्यनुतापएवतत्कारण तथा पापनाशकोज्ञायते तमृते ख्यापनाप्रवृत्तेः रहस्यीयतपश्चादौतुचित्तस्थै र्यस्यासंदिग्धत्वात्तस्यच।समाहितमनोवृत्तिःकुर्यात्तत्सिद्धिमाप्नुयादित्यादिना उत्तमंमानसंजाप्यमुपांशुत्वधमंस्मृतमित्यादिनाचातिशयेनपापनाशकत्वा वगमात्तस्यप्रकाशेतदभावादुचितं रहस्यप्रायश्चित्तेमुनिलोकप्रोक्तमल्पत्व म् तर्हिसर्वेषांरहस्यएवप्रवृत्तिःस्यादितिनोभावनीयम्।प्रकाशस्यगोपयितु मशक्यत्वात्स्वयंख्यापयितुकामस्यतूचितमेवरहस्यम्संतापस्यपापनाश कत्वेऽर्थतामुख्यत्वमाह मनुः यथायथामनस्तस्यदुष्कृतंकर्मगर्हति तथात थाशरीरंतत्तेनाधर्मेणमुच्यते १ कृत्वापापंहिसंतप्यतस्मात्पापात्प्रमुच्यते नैवंकुर्यांपुनरिति निवृत्यापूयतेतुसः २

रहस्य प्रायश्चित्त विषे मुनि लोकां कर्के कही जो श्रल्पता सोइ युक्तहै॥जेकर श्रयसे कहतेहो- तांसव पुरुषां की रहस्य विषेहि प्रवृत्ति होवे एह नहि भावना करणी क्यों रहस्यकी न्यांई प्रका श होये काछपाण। श्रशक्यहै श्रौर जो श्राप प्रकाश करणे की इच्छावालाहै तिसकों गुप्त क रणाहि युक्तहिहै॥पश्चात्तापकों पापके दूर करणे विषें वास्तवतें मुख्यता कहीहै मनुजीने यथेति- जिऊं जिऊं पुरुषका मन पाप कर्मकी निंदा कर्दाहै तिऊं तिऊं तिसका शरीर पापतें रहित होताहै॥१॥पाप करणेंते पीछे पश्चात्ताप कर्के पापतें रहित होताहै फेरमैं श्रयसे न करांगा इस- निवृत्ति कर्के सो पवित्र होताहै ॥ २ ॥

इत्यादि करके किहाहै और व्याख्यान इस विषे कुलूक भट्टनें कीताहै पापमिति इसमनुजीके वाक्य का अर्थपूर्व कथन कीताहै जद अयसे पश्चात्तापहै कि फेर ऐसे नकरांगा ऐसाहै स्वरूप जिसका ऐसाजो निषेध स्वरूप संकल्प सो है प्रयोजन जिसका ऐसापश्चात्ताप जिस्कोहोवे सो निरंतर पापतें शुद्धहै तिसते क्या सिद्ध होया सो कहते हां आपजो पापका प्रत्यक्ष करणाहै तिस कोंभी अनुतापकाहि कार्यहोणेंते तांते संतापकोहि पापके दूर करणविषे मुख्यताहै और ख्याप नकी गौणता प्रतीत हे तेंहि कार्यतें कारणका जानणा इसन्याय करके ख्यापन कार्यकाभी पा ठविषे प्रथम अंगीकार कीताहै॥पश्चात्ताप शुद्धिका कारणहै सो याज्ञवल्क्य विषेभी कहाहै पश्चात्ताप और उपवास व्रत सब शुद्धिके कारणहैं एह किहाहै ॥ अब इस विषे बौधायन कह

इत्यादिनाव्याख्यातंचात्रकुलूकभट्टेन पापंकृत्वापश्चात्संतप्यतस्मात्पापा न्मुच्यतेइत्युक्तमपिनैवंकुर्यांपुनरित्येवमनूदितम् यदातुपश्चात्तापोनैवंपुनः करिष्यामीत्येवंरूपनिवृत्तिरूपसंकल्पफलकः स्यात्तदा सुतरांतस्मात्पा पात्पूतोभवतीति ततश्चस्वयंख्यापनस्याप्यनुतापकार्यत्वात्संतापस्यैवपा पहानौमुख्यताख्यापनस्यानुकल्पतैवप्रतिभाति कार्यात्कारणमनुमेयम् इ ति न्यायेन ख्यापनस्यप्रथमोपादानं॥मनस्तापस्य शुद्धिहेतुत्वम् याज्ञव ल्क्ये पश्चात्तापोनिराहारः सर्वेते शुद्धिहेतवइति ॥बौधायनः परित्यागस्त पोदानमनुतापोऽनुकीर्त्तनमित्यादि केचित्तुद्वेशक्तीपापस्यनरकानुकूलाव्यव हारनिरोधिकाचेति प्रतिपादितंप्राक् तत्ररहस्येव्यवहारनिरोधिकायाअभा वादल्पत्वं पापस्येत्यतोऽल्पंप्रायश्चित्तमपि प्रकाशे द्वयोरपिशक्त्योर्विद्य मानत्वादाधिक्यंपापस्येत्यत प्रायश्चित्तमप्यधिकंतत्र तर्हिख्यापनेनेत्या दिवैयर्थ्यस्यादितिचेच्छ्रूयताम्

तेहेण पापका त्याग और तप और दान और पश्चात्ताप और प्रकाश एह सब शुद्धिके हेतुहैण इत्यादिक भी किहाहै तिस विषे होरभी कहतेहैं किपापकीयां दो २ शक्तियां हैण एक नरक केदेणेवाली और दूसरी व्यवहारके दूरकरणेवाली एह कथन कीताहै पूर्व॥केयांका ऐसा अभिप्रायहै तत्रेति तिस रहस्य विषे व्यवहारके दूरकरणे वाली शक्तिके अभाव होणेंते पापके प्रायश्चित्तकी अल्पताहै पापकोभी अल्पताहै और प्रकाशविषे दुयां शक्तियांको विद्यमान होनेंते पापकीभी अधिकताहै और प्रायश्चित्तकीभी अधिकताहै॥कुछक होरभी कहतेहां तां प्रकाश करणे करके म नुजीने पापकी जो अल्पता कहीहै सो व्यर्थहोई जेकर ऐसे कहें तां श्रवणकर

जिसनें प्रकाश कीताहै सो अवश्यहि प्रायश्चित्तकों करेगा इस अभि प्राय कर्के पापकी अल्प ता कहीहै ॥ अयसे मन्नो और जो आप प्रकाश कर्त्ताहै सो अवश्य प्रायश्चित्त कों करताहै अयसे समाधानकरदेहैं । रहस्यविवेकतें पीछे रहस्य प्रायश्चित्त कों कहतेहां तिस विषे याज्ञव ल्क्यजीका वाक्यहै होरनां पुरुषां कर्के प्रकट होयाहै पाप जिसका सो पुरुष सभा कर्के उप देश कीते होये प्रायश्चित्तनूं करे॥यद्यपि आप सब शास्त्र विषे चतुर होवे तदभी सभा विषे प्राप्त होकर बुद्धि मानोंके साथ विचार कर तिनांकर्के कीते होये उपदेश व्रतकों करे॥अत्रेति इस विषे दोष प्रकाश करणे का प्रकार और सभाके उपदेशका प्रकार एह दूसरे २ सभा प्रकरण विषे देष लेना॥अब अविख्यापित दोषकों कहतेहां अन्य पुरुषां तांई नहि प्रकट कीता

अवश्यंभाविप्रायश्चित्तेनतन्नाशकत्वाभिप्रायंतदित्यनुमन्यतां स्वयंख्यापयित्वाऽवश्यंकरोत्येवप्रायश्चित्तमितिसमादधते ॥अथरहस्यप्रायश्चितं तत्रयाज्ञवल्क्यःविख्यातदोषःकुर्वीतपर्षदोनुमतंव्रतम् अनभिज्ञातदोषस्तुरहस्यंव्रतमाचरेत् १ ॥यद्दोषोयावत्कर्त्तृसंपाद्यस्ततोऽन्यैर्विख्यातोदोषोयस्यासौपर्षदुपदिष्टंव्रतंकुर्यात् यद्यपिस्वयंसकलशास्त्रार्थविचारचतुरस्तथापिपर्षत्समीपमुपगम्यतयासहविचार्य्यतदुपदिष्टंकुर्यात् ॥ अत्रदोषविख्यापनप्रकारःपर्षदुपदेशप्रकारश्चद्वितीयेपर्षत्प्रकरणेद्रष्टव्यः अथाविख्यापितदोषः अन्येभ्योनविख्यापितोनप्रकाशितःस्वदोषोयेनसोऽविख्यापितदोषः सस्वयमेवविद्वत्तयारहस्यंरहस्यप्रायश्चित्ताधिकारविहितं व्रतंस्वकीयपापोचितंबुद्ध्वाचरेत् अतोऽत्रपरिषदुपसत्तिर्नोद्भावनीया विख्यापितदोषपरत्वेनतस्याविहितत्वात् अविख्यापितत्वंचदोषोत्पादकसामग्रीवहिर्भूतापरिचितत्वम् ॥

अपना दोषजिसनें सो अविख्यापित दोष कहाहै ॥ सो अविख्यापित दोष पुरुष आपहि बुद्धि कर्के प्रकाश करणेंते विना रहस्य प्रायश्चित्तके अधिकार कर्के विधान कीता जो व्रत अपने पाप दूर करणे योग्य जाणकर्के करे इस कारणतें इस रहस्य विषेसभा विषे जाणे की भावना नहिं करणी क्योंकि परिषद विषे जाणेकों प्रकाशित दोष विषे होणेतें और तिस अविख्यापित दोष कों सभा विषें जाणेका नवि धान होणेतें ॥ इसी कारणतें परिषदुपसति नहि १ अबअविख्यापितत्वके लक्षणनूं कहतेहैं पापके उत्पन्न करणे वाली जो सामग्री क्या, इस तरां होया अयसे नजानदेजो वहिर्भूत लोक तिनां विषे न खबर होणी इति ॥

इसी कारणतें परस्त्रीके संयोगादि विषे दुहांको स्त्री पुरुष को आपस विषे पापका ज्ञान होणेतें और स्वर्ण कीचोरीआदि विषे एकस्वर्णके चोर कोंहिज्ञान होणेतें तिनातें इतर पुरुषांकोंन ज्ञान होणेतें क्षक्षण लगगिया॥अब कुछक होर कहतेहैं अत्रेति जेकर पापके करणे वाला आपधर्म शास्त्र विषे कुशल होवे तां आपाहि यथा योग्य जाण कर्के करे और जेकर धर्म शास्त्र विषे आप चतुर नहोवे तां किसेंनें ब्रह्महत्या दिक पाप कीताहै तां तिस विषे क्या रहस्यप्रायश्चित्तहै ऐसे अन्य पुरुष के बहानेंतें जाण कर करे ॥ इसते स्त्री शूद्रा दिकां कों भी इसी प्रकार कर्के रहस्य व्रतके जानणे की सिद्धिका अधिकारहे ॥ इस विषे शंकाहै नचेति रहस्य व्रतांके करवाणे विषे जप आदि कों प्रधानहोणेतें स्त्रीशूद्र कों जप कानहि अधि कार होणेतें तांरहस्य विषे नहि अधि कार ऐसे कहणे योग्य नहिहै क्योंकि यत इति जिस कारणतें नहिं

अतःपरस्त्रीसंभोगादौद्वयोःस्वर्णापहारादावेकस्यैवज्ञानसत्वात्तदितराज्ञानाल्लक्षणसमन्वयः अत्रयदिपापकर्त्तास्वयंधर्मशास्त्रकुशलस्ततोयथोचितंव्रतंज्ञात्वाकुर्यात् तत्राऽकुशलश्चेत्तदाकेनचिदंहोब्रह्महत्यादिकंकृतम् ॥ तत्रकिंरहस्यप्रायश्चित्तमित्यन्यव्याजेनवुध्वाकुर्य्यात् । अतश्चस्त्रीशूद्रयोरप्यमुनैवयथारहस्यव्रतज्ञानोपपत्तेरधिकारः॥ नचरहस्यव्रतानांजपादिप्रधानत्वादविद्ययोश्चस्त्रीशूद्रयोस्तदनधिकारएवेतिवाच्यं। यतोनैकांततोरहस्यव्रतानांजपादिप्रधानत्वंदानादेरप्युपदेशात् गौत्तमोक्तप्राणायामादिसंभवाच्च चतुर्विंशतिमतेतु आहिताग्नेर्विनीतस्यवृद्धस्याविदुषोपिवाप्रायश्चित्तंरहस्योक्तंपूर्वोक्तमितरस्यत्विति १ अत्राप्याहारविशेषानुक्तौपयःप्रभृतयः कालविशेषानुक्तौसंवत्सरादयः देशविशेषानुक्तौशिलोच्चयादयोगौत्तमाद्यभिहिताःप्रकाशप्रायश्चित्तेन्वेषणीयाः

रहस्य व्रतांको के वल जप आदि की प्रधानता किंतु दानादि काभि विधान होणेतें और च पुनः गौत्तम कर्के कहे होये प्राणायामादि का विधान होणेते स्त्री शूद्रकों भी अधि कार सिद्ध होया॥इस विषे चतुर्विंशति मत विषे विशेष कहाहै कि विनीतस्य क्याशिक्षित साग्निक ब्राह्मण कों और नम्र और वृद्ध और बुद्धि मान इनको रहस्य प्रायश्चित्त का अधि कारहे इन्हांते जो इतरहैं तिन्हां को पूर्वोक्त क्या प्रकाश प्रायश्चित्त किहाहै १इस विषे आहार विशेष नहि कहा तिस वास्तें दुग्धादि जानणे और काल विशेषकी अनुक्ति विषे यथोचित वर्ष आदि जानणे और देश विशेषकी अनुक्ति विषे शिलोच्चयादि गौतम जी कर्के कहे होये प्रकाश प्रायश्चित्त विषे देखलैणें ॥ सो (सर्वाः समुद्रगाः पुण्याःसर्वेपुण्याः शिलोच्चयाः ॥) इत्यादि कर्के पंचम प्रकरण विषे कहेहैं ॥

कुछकहोरभीकहीदाहै जोमरणांतकप्रायश्चित्तकहाहै सोतिसरहस्य विषेभीमरणांत हि जानणा मरणांतविषे अल्पहींणोंका अभावहोनेतें क्यामरण कार्सकोचनहिहैसका उारप्रकाशाविषे योव्रत आदिकोहहैं सोब्राह्मणादि जातिके ऽनुसारतें रहस्य व्रताविषे वी वां २० हिस्सा करवाणे जयसे विश्वामित्रनें कहाहे प्रकाश इति प्रकाश प्रायश्चित्त विषे जो व्रत आदि कहाहै सो रहस्य विषे जाति ब्राह्मणादि और आदिकहणेकर्के सामर्थ्यता और गुण सतो गुणादि और एकवारकर्के और जाणकर्के कीतियांहोयां इनांकाग्रहणहैं वीवां २० हिस्सा और त्रीहवां ३० हिस्सा और सठवांहिस्सा करवाणांजयसे प्रकाशविषें त्रीहअयुत २०००० जपहोवितांरहस्यविषेएक अयुत१०००० करवाणा इत्यादि।१।अथवेति वा आपणीइच्छातें महापापके रहस्यविषेएकवर्ष

किंचयत्रमरणांतिकं प्रायश्चित्तमुक्तंतत्ररहस्येपिमरणमेवकर्त्तव्यंमरणेह्रासासंभवात् अन्यत्रप्रकाशेयद्व्रतादिकमुक्तंजात्यपेक्षयातस्यविंशभागादिकंकार्यंयथाहविश्वामित्रः प्रकाशउक्तंयत्किंचिद्विंशभागोरहस्यके त्रिंशद्भागः षष्टिभागः कल्प्योजात्याद्यपेक्षया१आदिशब्दात् जातिशक्तिगुणापेक्षसकृद्बुद्धिकृतंतथा इत्यादेरुपसंग्रहः॥अथवामहापातकेरहस्यकृतंकामतः अब्दिकंकरणीयंतदशक्तौपंचदशधेनवोदातव्याःअन्यत्रयाज्ञवल्क्योक्तंप्राणायामशतंकरणीयं यथा प्राणायमशतंकार्यंसर्वपापापनुत्तये उपपातकयुक्तानामनादिष्टेषुचैवहीति अत्रमिताक्षरा गोवधादिषट्पंचाशदुपपातकजातानामनादिष्टरहस्यव्रतानांचजातिभ्रंशकरादीनामपनुत्तये प्राणायामशतं कार्यं तथासर्वेषांमहापातकादीनांप्रकीर्णकांतानामप्यपनुत्तयेप्राणायामाः कार्याः तत्रचमहापातकेषुचतुःशतमतिपातकेषुत्रिशतम् ॥

का व्रत करवाणे योग्यहै जेकर वर्षके व्रतकी न सामर्थहोवे तांपंदरां १५ गोवां दानकरे औरमहापापतें अन्यपाप विषे याज्ञवाल्क्य जीनेंकहाहै सौ १०० प्राणायाम करणा जयसे वाक्यहै प्राणेति सबपापके दूरकरणे वास्ते सउ १०० प्राणायामकरणा और उपपातक जो इच्छातेंविनापापहै तिसविषें भीसउ १०० प्राणायाम कहाहै।१।इसविषे मिताक्षराहै गोहत्यातें आद लेकराच्छिपुंजाह ५६ जोउपपातक और नाहिकहा रहस्यव्रत जिनांका औरस्वजातितें दूरकरणेवाले योपाप हैण तिह्नांके दूरकरणेवास्ते प्राणायाम सउकरणे योग्यकहाहै तयसे संपूर्ण जोमहापापप्रकोर्णपर्यंततिन्हांके भी दूरकरणेवास्ते प्राणायामहि करणे योग्यहैण तांमहापापांविषे चारसउ ४०० अतिपातकविषे त्रयसउ ३०० प्राणायामकहने

श्रौर अनुपातकांविषेदो २०० सउऐसे संख्याजानणी श्रौर विशेषकहतेहैं प्रकाशप्रायश्चितों विषे महापातक प्रायश्चितके चौथेअंशकों उपपातकांविषे विधानहोणेते ऐसेप्रकीर्णोविषे अल्पताजानणी अर्थात् उपपातकांविषे १०० प्रकीर्णोविषे ५० ॥ २५ इसीकारणतें यमजीनें कहाहै दश वार ओंकार उच्चारणहै जिसविषें ऐसे चार सउप्राणायामके करणे करकें ब्रह्महत्यातेंरहितहोता है अन्यपापांका क्याकहणा नहिंदूरहोते अर्थात् सुगमहि दूरहोणगे इति १ बोधायनजीने भीइस विषे विशेषकहाहै अपि इति कोमलवाणीविषे वाक् क्या विष्णुकानाम उच्चारण करणा और नेत्रा करकें विष्णु मूर्त्तिका दर्शन औरकन्नां करकें यशाका श्रवणकरणा औरनासा करकें विष्णु शेषका सिंहना और मनकर्के ध्यानकरणा एहनांके अतिक्रमविषेक्या नाकरणे विषे त्रय ३ प्रा

अनुपातकेषुद्विशतमितिसंख्यावृत्तिः कल्पनीया प्रकाशप्रायश्चित्तेषुमहापातकप्रायश्चित्ततुरीयांशस्योपपातकेषुविधानात् प्रकीर्णकेषुचह्रासःकल्प्यःअतएवोक्तं यमेन दशप्रणवसंयुक्तैःप्राणायामैश्चतुःशतैः मुच्यतेब्रह्महत्यायाः किंपुनः शेषपातकैरिति१ बौधायनेनाप्यत्रविशेषउक्तःअपिवाक्चक्षुःश्रोत्रत्वग्घ्राणमनोव्यतिक्रमेषु त्रिभिः प्राणायामैः शुद्ध्यति शूद्रस्त्रीगमनान्नभोजनेषुपृथक्पृथक्सप्ताहंसप्तसप्तप्राणायामान्धारयेत्।अभक्ष्याभोज्यामेध्यप्राशनेषुतथावापण्यविक्रयेषु मधुमांसघृततैललाक्षालवण्रसान्नवर्जेषुयच्चाप्यन्यदेवंयुक्तंद्वादशाहंद्वादशद्वादशप्राणायामान्धारयेदित्यादि ॥ अत्रलाघवापेक्षयाप्राणायामशतमेवैकाहद्व्यहत्र्यहादिक्रमेण मासंषण्मासं संवत्सरंवाऽभ्यसनीयमिति ॥

णा यामां करकें शुद्धहोताहै श्रौर शूद्रस्त्रीके साथ गमन क्या मिलकर खाणा श्रौर शूद्रके अन्नकाभक्षणकरणा इनांविषें भिन्नभिन्नसत्तसत्त ७ प्राणायामकरणे सत्तादिनतकतां शुद्धहुंदाहै अवकुछ होरभी कहतेहां अभक्ष्य श्रौर अभोज्य श्रौर अशुद्ध जो अन्नादि तिनांके खानेविषें तथसे वा नाहे वेचनेके योग्य जोद्रव्यतिनांके वेचने विषे परंतु मधीर श्रौर मांस श्रौरघृत श्रौर तेलश्रौर लाष श्रौरलवण श्रौर रस श्रौर अन्न इनांतें वर्जित जोवस्तु हैंण तिनांविषें श्रौर जोहोरभी अयसे दोषहैं युक्तातिनांविषे वारां १२ वारां १२ प्राणायामांकोंकरे वारांदिन तक परंतु इसविषे थोडे की अपेक्षाकरकें जानणा श्रौर जैसें प्राणायाम सउ १०० कहाहै श्रौर एकदिन दोदिन त्रय दिन आदिक्रमकरकें एकमास छे मास ६वाएकवर्ष प्राणायामका अभ्यासकरणे योग्यहैइति

इस विषे व्रतकरणेकी सामर्था वालेने भी जप होमादि करणे योग्यहैग्ग (इनां पूर्वोक्तां करके ब्राह्मणादि शुद्धहोतेहैं)इत्यादि मनुकेकहनेतें श्रयसें शूलपाणिका वचनहै॥अब याज्ञवल्क्यजी कहतेहैं संपूर्ण महांपापांके दूरकरणेवाले मंत्रांनू शुक्रियं इत्यादिमंत्रसवपापांके दूरकरणेवालेकंहे हैं१इसका अर्थ कहतेहां शुक्रियहैनाम जिसका ऐसे अरण्यक विशेषहै विश्वानिदेव सवितः इत्यादि वाजसनेयकविषेंपडीदीहै और अरण्यकामऋचा(ऋचंवाचंप्रपद्येमनोयजुःप्रपद्ये) इत्यादिभी तिसीवाजसनेयकविषे पडीदीहै तिनांदुयांका जप संपूर्ण महांपापके नाशकरणेवाला है इसजगा जप संख्या कही नहि तथापि १००० हजार तक जानणी तेसेगायत्रीका जपमहांपापके दूरकरणे विषे एकलक्ष जप कहाहै और पातक अनुपातक विषे दश हजार और

अत्रव्रतकरणशक्तेनापिजपहोमादयःकार्याः एतैर्द्विजातयःशोध्याइत्यादि मनूक्तेरितिशूलपाणिः ॥ याज्ञवल्क्यः ॥ शुक्रियारण्यकजपोगायत्र्याश्चविशेषतः सर्वपापहराह्येतेरुद्रैकादशिनीतथा १ ॥ अस्यार्थःसकलमहापातकादिसाधारणान् पवित्रमंत्रानाह शुक्रियंनामअरण्यकाविशेषःविश्वानिदेवसवितरित्यादिवाजसनेयकेपठ्यतेअरण्यकंचऋचंवाचंप्रपद्येमनोयजुः प्रपद्येइत्यादितत्रचपठ्यतेतयोर्जपःसकलमहापातकादिहरः तथागायत्र्याश्च महापातकेषु लक्षमिति पातकानुपातकयोर्दशसहस्रं उपपातकेषुसहस्रं प्रकीर्णकेषुशतमित्येवंविशेषतोजपःसर्वपापहरः तथाचगायत्रीमधिकृत्य श्लोकःशंखेनोक्तः॥ शतंजप्तातुसावित्रीस्वल्पपातकनाशिनी सहस्रजप्तातु तथापातकेभ्यःप्रमोचनी १ दशसाहस्रजाप्येनसर्वकिल्विषनाशिनी लक्षं जप्तातुसादेवीमहापातकनाशिनी २ सुवर्णस्तेयकृद्विप्रोब्रह्महागुरुतल्पगः सुरापश्चविशुध्यंतिलक्षंजप्त्वानसंशयइति ॥ चतुर्विंशतिमतेनोक्तम्

उपपातक विषे एकहजार और प्रकीर्ण विषे एकसउ १०० अयसेविशेषतें जप सब पापकेदूर करणेवालाहै १ तयसे गायत्रीकों अंगीकारकर्के शंखजीने श्लोककहाहै एकसउ१००वारजपी होई गायत्री थोडेपापके दूरकरणेवालीकहीहै॥एह एकहजारजपीहोई पातकांतें शुद्धकर्तीहै ॥१ और दशहजार१००००जप सभ पापकों दूरकर्तीहै इसजगासभपापउोहजानणा कि जेडाइस जगा नहि किहा और एकलक्षजपीहोई महापापके दूरकरणेवालीहै २ और सुवर्णाके चुराणे वालाब्राह्मण और ब्रह्महत्याके करणेवाला और गुरांकीशय्याविषें जो शयनकर्त्ताहै और मदिराकाजो पानकर्ताहै सोगायत्रीकेलक्ष १००००० जपकर्के शुद्धहोतेहैं इसाविषेंसंशयनहीं अबं चतुर्विंशतिमतकर्के कहतेहां ॥ १ ॥

और एक क्रोड १०००००००गायत्रीके जप करणे करके ब्रह्महत्याकों दूरकर्ताहै।और अशीलक्ष ८०००००जप करके मदिराके पानतें शुद्धिकों प्राप्तहोताहै १।और सत्तरलक्ष७०००००० गायत्रीकाजप स्वर्णस्तेयीकों पवित्र कर्ताहै।और सठ लक्ष जपके करणे करके गुरुकी शय्याविषे जाणेवाला शुद्ध होताहै इति २।एह बहुत प्रायश्चित्त होणेतें प्रकाश्य विषे जानणा॥तथसे रुद्रैकादशिनी याग ११ रुद्रानुवाकांका जोसमूहहै सोरुद्रैकादशिनी कहीहै सो जपीहोई विशेष करकेसब पापांके दूर करणे वाली कहीहै॥और इसमे संमति कहतेहैं॥एकेति॥रुद्रांनुवाकां कों वारांवार पडने करके धर्मवेत्ता पुरुष महांपापातें रहित होताहै इसविषें संशयनहि व्यवस्था कहतेहां महापातकां विषे याग अवृत्तिके दखाणेतें अतिपातकां विषे चौथे चौथे हिस्सेकी अल्पता जानणी।

गायत्र्यास्तुजपेत्कोटिंब्रह्महत्यांव्यपोहति लक्षाशीतिंजपेद्यस्तुसुरापानाद्विमुच्यते ॥ १ ॥ पुनातिहेमहर्त्तारंगायत्र्यालक्षसप्ततिः गायत्र्यालक्षषष्ट्यातुमुच्यतेगुरुतल्पग इति २तद्गुरुत्वात्प्रकाशाविषयम् । तथारुद्रैकादशिनीएकादशानारुद्रानुवाकानांसमाहारो रुद्रैकादशिनी साचविशेषतोजप्ता सर्वपापहरा एकादशगुणान्वापि रुद्रानावर्त्यधर्मवित् महद्भ्यःसतुपापेभ्यो मुच्यतेनात्रसंशयइतिमहापातकेष्वेकादशगुणावृत्तिदर्शनात् । अतिपातकादिषु चतुर्थचतुर्थांशह्रासोयोजनीयःचशब्दोऽघमर्षणादिमन्त्रयार्थः यथाहवसिष्ठः। सर्ववेदपवित्राणिवक्ष्याम्यहमतःपरं येषांजपैश्चहोमैश्चपूयतेनात्रसंशयः१॥ अघमर्षणंदेवकृतं शुद्धवत्यस्तरत्समाःकूष्मांड्यःपावमान्यश्चदुर्गासावित्र्यथैवच २॥ अभिषंगाःपदस्तोमाःसामानिव्याहृतिस्तथा भारुंडानिचसामानिगायत्रंरैवतंतथा ॥ ३ ॥

और इस विषे जो चशब्दहै सो अघमर्षणादिकें ग्रहण वास्ते जानणा॥जयसे वसिष्ठजी कहतेहैंण संपूर्ण ॥वेदां विषे पवित्र जोमंत्रहैण तिनांको कहतेहां जिनांके जप और होम करणेकरके पुरुष शुद्धहोतेहैंण ॥१॥सबपापांके हरणे वालियां मंत्रांकी गिणती करतेहैं॥अघेति अघमर्षणहै (ऋतंचसत्यं) इत्यादि इसतिहां (देवकृत) मंत्रहै और (शुद्धवत्यः) इनकानिरूपण अगे होवेगा और (तरत्समाः) इसप्रतीक वालियांऋचः और कूष्मांड संज्ञा वालियां और पावमानी नामते जो प्रसिद्धहैं ॥ और दुर्गासावित्री मंत्र ॥ २ ॥ अभिषंग नामपद स्तोम जो सामवेद और व्याहृतियां और भारुंडनाम वाला सामवेद वैसेहि गायत्र और रैवत नामकरके प्रसिद्ध जो सामवेद ॥ ३ ॥

और पुरुषव्रतजो अरण्यगायनमेहै।और भासभीउसीरथातमेहै और देवव्रतभीसामवेदहिहै और जलकाचिन्ह जिन्हांको असे मंत्रआपोहिष्ठाइत्यादि और ऊहगायनविषेबार्हस्पत्य तेसेहि वाक्सूक्त और मधुमत् जो अथर्ववेदमेहै॥४और शतरुद्र और अथर्वशिरउपनिषद् और त्रिसुपर्ण और महाव्रत साम और गोसूक्तसाम और अश्वसूक्तसाम तैसेहि इन्द्रसाम और शुद्धसाम॥५ और आज्यदोहसाम और रथंतर अग्निव्रत नामकर्के प्रसिद्धजो वामदेव्यनामसाम और बृहत् साम एह गायनकीतेहोए पापि पुरुषांको पवित्र कर्त्तेहैं । और इनके पाठकरणेवाला पुरुष जन्मांतरके ज्ञानवालाहुंदाहै । ६ । तिसविषें रहस्य प्रायश्चित्तनूं मनुजीकहतेहैं दिनदिनविषेंवेदका

पुरुषव्रतंचभासंचतथादेवव्रतानिच अब्लिंगावार्हस्पत्यंवावाक्सूक्तंमधुमत्तथा ४॥ शतरुद्राथर्वशिरस्त्रिसुपर्णमहाव्रतं गोसूक्तंचाश्वसूक्तंचइंद्रशुद्धेतु सामनी॥ ५ त्रीण्याज्यदोहानिरथंतरंचअग्नेर्व्रतंवामदेव्यंबृहच्च एतानिगीतानिपुनंतिजंतून् जातिस्मरत्वंलभतेयदीच्छेदिति ६ ॥ तत्र रहस्यप्रायश्चित्तमाह ॥ मनुः ॥ वेदाभ्यासोऽन्वहंशक्त्यामहायज्ञक्रियाक्षमा नाशयंत्याशुपापानिमहापातकजान्यपि ॥ १ ॥ यथाशक्तिप्रत्यहंवेदाध्ययनं पंचमहायज्ञानुष्ठानमपराधसहिष्णुत्वमित्येतानिमहापातकजनितान्यपिपापानिशीघ्रंनाशयंतिकिमुतान्यानि ॥ यथैधस्तेजसावह्निः प्राप्तंनिर्दहतिक्षणात् तथाज्ञानाग्निनापापं सर्वंदहतिवेदवित् ॥ २ ॥ यथाग्निःकाष्ठान्यासन्नानिक्षणेनैवतेजसानिःशेषंकरोति तथाज्ञानाग्निनापापंसर्ववेदार्थज्ञो ब्राह्मणोनाशयति॥(इत्येततूपरमार्थज्ञानस्यैतत्) पापक्षयोत्कर्पज्ञापनार्थमेतत्

अभ्यास करणा जयमे समर्थहि तैसे और महायज्ञांका करणा और क्षमा कया अपराधकासहारणा एहतात्कालहि महापातकजो पापहैन तिनाकों नाशकरणेवालेहैं॥१ अन्यपापांकाक्याकहणा नहि दूर करसकते अर्थात् सबको दूरकर्त्तेहैं। जैसे काष्टसमीप प्राप्तहोयेहोयेनूं अग्निक्षणतेंदाहकर्त्ताहै तैसेवेदार्थके जानणेवाला ब्राह्मणज्ञानरूपी अग्निकर्के पापकोनाशकर्त्ताहै।२ परमार्थज्ञानकोंपापके नाशकरणेकी अतिशक्तिके दिखानेवास्ते एहकिहाहै इसमें एह अभिप्रायहै कि जैसीकैसी अग्नि जेसे कैसे काष्ठादिको लगीहोई दग्धकरदेतीहै तैसेहिजैसाकैसावेदके अर्थकाज्ञान जैसेकैसे पापको दूर कर्त्ताहै ॥

अब याज्ञवल्क्य जी विशेष कर्के कहतेहैं॥वेदाभ्यासरतं इसका एह अर्थहे॥पहिले वेदका पड-ना १ फेर विचारणा २ फेर वारंवार देखणा ३ फेर तप करणा ४ फेर शिष्यांतांइ तिसका दान करणा ५ एह पंच प्रकारका वेदाभ्यास कहाहै ॥ तिसविषे इसी क्रम कर्के युक्त होणा और-नहि सहारणे योग्य जो शीत गर्मी तिसकों सहारणा परमेश्वरकी परिचर्य्याके अर्थ और पं-चांयज्ञ कर्मो विषे और पंच देवतां विचों किसे देवताका पूजन करणा और वल वैश्व देव-नित्य श्राद्ध करणा पाठ करणा और हवन करणा और अतिथिकी क्या जिसके नामादिका-ज्ञान नहि तिसकी पूजा करणी मनवाणीदेह कर्के रतहोणा अर्थात् एहनां विषे युक्त होणा अ यसे पूर्व गुणा कर्के युक्तनूं महा पातक पाप स्पर्शभी नहि कर्ते और अपि कहणेतें प्रकीर्णक पापांका क्या कहणा क्या सब दूर होतेहैं १वसिष्ट जीने भी कहाहै प्रकीर्णक पापांके नाश करणे के अभि प्राय कर्के एह कहाहै ॥ क्या तिसको भी दूर कर्तेहैं॥जैसे कहतेहां जद कुछ अधिक-

याज्ञवल्क्यः वेदाभ्यासरतंक्षांतंपंचयज्ञक्रियापरं नस्पृशंतीहपापानिमहा पातकजान्यपि१अर्थः॥वेदस्वीकरणंपूर्वंविचारोऽभ्यसनंतपः तद्दानंचैवशि ष्येभ्योवेदाभ्यासोहिपंचधेत्युक्तक्रमेणवेदाभ्यासनिरतंक्षांततितिक्षायुक्तं पं चयज्ञक्रियासु पाठोहोमश्चातिथीनांसपर्येत्यायुक्तासुनिरतं॥महापातकजा न्यपिनस्पृशंति किंपुनः प्रकीर्णजान्युपपातकानीत्यपिरर्थः ॥ वसिष्ठेनच प्रकीर्णकपापनाशाभिप्रायेणेदमुक्तंयथा यदाऽकार्यशतंसाग्रंकृतंवेदश्चधार्य ते सर्वंतत्तस्यवेदाग्निर्दहत्यग्निरिवेंधनमिति १ तथा नवेदबलमाश्रित्यपा पकर्मरतिर्भवेत् अज्ञानाच्चप्रमादाच्चदह्यतेकर्मनेतरदिति १ किंच वायुभक्षो दिवातिष्ठन् रात्रिंनीत्वाप्सुसूर्यदृक् जप्त्वासहस्रंगायत्र्याः शुद्ध्येद्ब्रह्मवधादृ १तेसूर्यदृक्सूर्योदयानंतरंगायत्रींजप्त्वाब्रह्मवधेतरमहापापाभ्यस्तपिपात कानेकपापसमुच्चयेभ्योमुच्यते ॥

सउ १०० अशुभ कर्म कीता और वेदका भी धारणाकीता पर वेद का जो धारणाहै सो वेद अग्नि रूप तिस अशुभ कर्म को तिस संपूर्ण अशुभतानूं दूर कर्ताहै इस विषे अनुरूपक दृष्टांत है अग्निकाष्ठनूं जैसे दाह कर्ताहै ईहांवेदके स्थानअग्नि और पापके स्थान इंधनहै ॥१॥और कहतेहैं तथेति तैसे आज्ञाहै वेदके वलकों प्राप्त होकर पाप कर्म विषे प्रीति न करे जेकर अज्ञानतें वा प्रमादतें होवेतां वेद कर्के दाह होताहै जेकर इच्छा कर्के और विषयक वल कर्के होवे तां नहि दूर होता॥१॥कुछक होरभी कहीदाहै दिन विषे वायुके आहार कों करे स्थित होया-होया और रात्रिनूं जल विषे स्थित होकर व्यतीत करे और सूर्योदयतें पीछे गायत्रीकों जपकर ब्रह्महत्यातें इतर जो महापाप और वार वार कीते जो उपपातक और अनेक पापांके समूह-तिनांते रहित होताहै ॥ १ ॥

अब वृद्ध वसिष्ट जीका वचनहै यवांकी मुष्टि वा बुक्कनूं और गर्म कीतायो घृत तिस नूं चपुन, अभि मंत्रण करे मंत्रः ॥यवो सीति हेयव इसका अध्याहार करणा हेयव तुंयवहै क्या पुण्यके देण वाला और अन्नां का राजाहैं और वरुण तुझका देवताहै ऐसातूं मषीर कर्के युक्त होया२ सब पापां के दूर करणे वालाहैं इसी कारणतें ऋषियां कर्के तुं पवित्र कहाहैं इति और दूसरे मंत्र कों कहतेहां घृत मिति इस कर्के भीयवां कों अभि मंत्रण करें। अब संपूर्ण पापांके दूर करणे वाले मंत्रां नूं कहतेहैं सहित व्याहृति यांके ओंकारके गायत्री शिरके साथ सोलां १६ प्राणायाम दिन दिन विषे कीते होये एक मास कर्के गर्भ हत्याके पापकों भी दूर कर्त्तेहैं इनमंत्रकके इक २ प्रति तीनवारपढे पहले पूरक फेर कुंभक फेर रेचक विधिसें अपि कहणे कर्के ब्रह्महत्या पाप कों भी दूर कर्त्तेहैं ॥३ ॥अब इसीकों विस्तार कर्के कहतेहां सव्याहृति व्याहृतियां और ओंकार और शिर कर्के)आपा ज्यो तीर सो मृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम)एह सो

वृद्धवशिष्टः ॥ यवानांप्रसृतिमंजलिंवाश्रप्यमाणंघृतंचाभिमंत्रयेत् यवोसि धान्यराजस्त्ववारुणोमधुसंयुतः निर्णोदःसर्वपापानांपवित्रमृषिभिःस्मृत इत्यनेन घृतंयवामधुयवाःपवित्रमित्यादिनाचसर्वपापनाशमाह । सव्याहृतिप्रणवकाःप्राणायामास्तुषोडश अपिभ्रूणहनंमासात्पुनंत्यहरहःकृताः ३ सव्याहृतिसप्रणवाः सावित्रीशिरोयुक्ताः पूरककुंभकरेचकादिविधिनाप्रत्यहंषोडशप्राणायामाःकृतामासाद् ब्रह्मघ्नमपिनिष्पापंकुर्वंति अपिशब्दादतिदेशिकब्रह्महत्याप्रायश्चित्ताधिकृतमपि एतच्चप्रायश्चित्तंद्विजातीनामेवन स्त्रीशूद्रादेर्मंत्रानधिकारात् ३कौत्संजप्त्वापइत्येतद्वासिष्ठंचप्रतीत्यृचं माहित्रंशुद्धवत्यश्चसुरापोपिविशुद्ध्यति४ ॥कौत्सेनऋषिणा।अपनःशोशुचदघमिति एतत्सूक्तंवसिष्टेनऋषिणादृष्टंचप्रतिस्तोमेतिहयमनुशिष्यइत्येवंऋचं

लो अक्षर गायत्रीका शिर किहाहै इनां कर्के युक्त जो गायत्री तिसके पूरक कुंभक रेचक विधि कर्के सोलां प्राणायाम दिन दिन विषे मासपर्यंत कीते होये ब्रह्म हत्यारेकों भी पापतें शुद्ध कर्त्ते हेण अपि शब्दतें ब्रह्म हत्याके तुल्य जो पाप तिनांकों भी शुद्ध कर्त्तेहैं एह प्रायश्चित्त ब्राह्मण क्षत्रि वैश्य विषे जानणा क्यों स्त्री शूद्रांकों मंत्रका न अधि कार होणेंतें ३ और कौत्सं क्या कौत्स ऋषि कर्के देखया जो सूक्त सो कौत्स सूक्तहैजो वासिष्ट की प्रती ऋचाहै और माहित्रं शुद्ध वत्पश्च इस कर्के मदिरा पीने वाला भी शुद्धहोताहै४और इनका अर्थ लिखतेहैं कौत्सेनेति कौत्सेन ऋषिणा ॥ (अपनशोशुचदघं इति)। और वासिष्ट ऋषिनेंदेखी जो सूक्त सो कहो वासिष्ट सूक्तहै और प्रति स्तोमेति हयमनुशिष्य इति अयसी ऋचा (प्रतीत्यृचा) कहीहि ॥

और माहित्रंमाहित्रीणा मेवोस्त्विति एहसूक्त और शुद्धवत्य एतोन्विंद्रंस्तवाम शुद्धंइति।एहजायऋचः और प्रसंग विषे मासादि कहणेमें एकमासपर्यंत दिनदिनविषे सोलांवार जपकर्णे कर्केमदिराके पीणेवाला भीशुद्धहोताहै॥अपिशब्दतें मदिरापानपापके तुल्यजोपाप होरहैंण तिनांकेप्रायश्चित्तविषे भीकहाहै४एहश्लोक केइक साधारण प्रायश्चित्त विषे भी लिखेहैंण सोइपुनः प्रसंगतें इसरहस्य विषेभीलिखेहैंण॥पुनरुक्तिनहिसमझणी॥अवयाज्ञवल्क्यजी कावाक्यहै॥ त्रिरात्रेति इस काअर्थकहतेहां सुरापश्चत्वारिशद्घृताहुतीइसपदका अनुवर्त्तनकरणा अर्थात् इसके अर्थकोपहलेरक्षकर इसवचनकाअर्थ करणा मदराके पीणेवाला त्रयदिनउपवास व्रतको धारकर कूष्मांडी भि क्या यद्देवादेव हेडनं इत्यादिक जोऋचाहैंण कूष्मांडककें दिखायांहोईआं॥ और अनुष्टु

माहित्रमहित्राणामिवोस्त्वित्यतत्सूक्तं शुद्धवत्य एतोन्विंद्रंस्तवामशुद्धमित्येतास्तिस्रऋचः प्रकृतंमासमहरहः षोडशकृत्वोपिजपित्वासुरापोपिविशुद्ध्यति अपिशब्दात् आतिदेशिकसुरापानप्रायश्चित्ताधिकृतोपि॥४॥इमेश्लोकाः केचित्साधारणप्रकरणेपिलिखिताः पुनः प्रसंगतोऽत्राप्युक्ताः॥याज्ञवल्क्यः।त्रिरात्रोपोपितोहुत्वाकूष्मांडीभिर्घृतंशुचिः॥अस्यार्थःसुरापश्चत्वारिंशद्घृताहुतीरित्यनुवर्त्तते सुरापस्त्रिरात्रमुपोषितःकूष्मांडीभिःयद्देवादेवहेडनमित्याद्याभिः कूष्मांडदृष्टाभिरनुष्टुभमंत्रलिंगदेवताभिर्ऋग्भिश्चत्वारिंशद्घृताहुतीर्हुत्वाशुचिर्भवेत्॥कूष्मांडहोमाशक्तस्यपूर्वोक्तमानवंद्रष्टव्यम्॥इदमकामतः पैष्ट्याः सकृत्पाने।गौडीमाध्व्योस्तुपानावृत्तौवेदितव्यं कामतस्तु। मंत्रैःशाकलहोमाद्यैरित्यादिमानवंज्ञेयम्।यत्तुमहापातकसंयुक्तोऽनुगच्छेद्गाःसमाहितः अभ्यस्याब्दंपावमानीर्भैक्षाहारोविशुद्ध्यतीति॥१ ॥

पछंद और मंत्रलिंग देवता जिनांका तिनांऋचांककें चालीघृतकीयां आहुतीयांकर्णे कर्के मदिराके पीणे वाला शुद्धहोताहै॥इसविषे कुछहोरभी प्रकार कहतेहां॥कूष्मांड हवनविषे जोसामर्थ्यतें रहितहै तिसविषे पूर्वकहाजो मनुकावाक्यसो देखणे योग्यहै॥एहउक्तातें बिना पैष्टीमदिराके एकवार पानकर्णे विषे जानणा। औरगौडीमाध्वी मदिराके पीणेकी वारंवार आवृत्तिविषे जानणे योग्यहै॥और इच्छा कर्के पाण कर्णेविषे मंत्रैः शाकलहोमाद्यैः इत्यादि मनुकर्के कहेहोये जानणे॥और स्मृतिमेंजो कहाहै यत्त्विति तुपुनः जोपुरुष महापापकर्के संयुक्तहै सोइंद्रियांको रोककर गौवांके पछिजावे॥ औरपावमानी ऋचांका एकवर्ष पर्यंतअभ्यासकरे क्यापडे और भिक्षाको मांगकरआहार करे तांशुद्ध होताहै।

एहवारंवारजोमहापापविषेयुक्तहै तिसविषेंजानणा ॐ औरवा हछोतरांजिसनेइछाकर्के महापापकी ताहै तिसविषेंजानणा ॐ अवसुवर्णस्तेयीके प्रायश्चित्तनूंकहतेहैं । सकृदिति अस्येति इसकाअर्थः (अस्यवामस्यपलितस्यएततूसूक्तम्)और शिवसंकल्पंक्यायज्जाग्रतोदूरं इति एहजोवाजसनेयकविषे कहाहै इनांकोएकमासपर्यंतदिनदिनविषें एकवारजपकर्णेकर्के सुवर्णकेचुराणेवालाशीघ्रहि पापतेंर हितहोताहै ५ इसमें(क्षिप्रमेव)इसका अर्थऐसाहै किअवश्यकर्केनिर्म्मलहुंदाहै। अवगुरुतल्पगप्रा यश्चित्तनूंकहतेहां हविष्येति इसकर्के ६ हविष्यांगमजिरं स्वर्विदांइत्यादि उंन्नीं १९ ऋचा और नतमंहोनदुरितं इसीयीं आदलेकर अठ ८ ऋचा और वा शब्दसेइतिमेमनः शिवसंकल्पंइति

तदभ्यासविषयम् समुचितमहापापविषयंवा सकृज्जप्त्वास्यवामीयंशिवसं कल्पमेवच अपहृत्यसुवर्णंतुक्षणाद्भवतिनिर्मलः ५ ब्राह्मणसुवर्णमपहृत्यअ स्यवामस्यपलितस्यएततूसूक्तंप्रकृतत्वात् मासमेकंप्रत्यहमेकवारंजपित्वा शिवसंकल्पंचयज्जाग्रतोदूरमित्येतद्वाजसनेयकेयत् पठितंतज्जपित्वासुवर्ण मपहृत्यक्षिप्रमेवानिष्पापोभवति ॥ ५ ॥ हविष्यंतीयमभ्यस्यनतमंहइती तिच जपित्वापौरुषंसूक्तंमुच्यतेगुरुतल्पगः ॥ ६ । हविष्यांगमजिरंस्वर्वि दामेकोनविंशतिऋचः नतमंहोनदुरितमित्यष्टौइतिवाइतिमेमनः शिवसं कल्पं इतिचसूक्तंसहस्रशीर्षापुरुषइतिएतच्चषोडशर्चसूक्तं मासमेकंप्रत्यह मभ्यस्येतिश्रवणात् प्रकृतत्वात्षोडशाभ्यासात् जपित्वागुरुदारगःतस्मा त्पापान्मुच्यते ६ याज्ञवल्क्यः॥ ब्राह्मणस्वर्णहारीतुरुद्रजापीजलेस्थितः॥ अस्यार्थः ब्राह्मणस्वर्णहारीपुनस्त्रिरात्रोपोषितः जलमध्यस्थोनमस्तेरुद्र मन्यवइतिशतरुद्रीयजपयुक्तः शुद्ध्यतीति ॥ शातातपेनात्रविशेषउक्तः ॥

चपुनःएहसूक्त और सहस्रशीर्षापुरुष इति एहसोलां ऋचांकासूक्त इनांकों एकमासपर्यंतप्रसंगते दिनदिनविषेंसोलां १६ वारपढनेकर्के गुरांकीशय्याविषें जाणेवाला पापतें शुद्धहोताहै ६ अव याज्ञवल्क्यजीकावाक्यहै ॥ ब्राह्मण स्वर्णस्तेयी प्रायश्चित्तविषें ब्राह्मणेति ॥ इसकर्केब्राह्मणकेस्वर्ण को जो चुराताहै सो त्रयदिन उपवास व्रतकोंकरे और जलकेमध्यविषें स्थितहोवे और नमस्ते रुद्रमन्यव इति एह शत रुद्रीविषें जो जप तिसकर्के युक्तहोयाहोयापापते शुद्धहोताहै ॥ अवशा तातपजीनेंइसविषें विशेषकहाहै ॥

मदिराको पान कर्के और गुरां की स्त्री विषे विषय भोगणे कर्के और सुवर्ण के चुराणे कर्के और ब्रह्म हत्याके कर्णे कर्के यो पापहैंण तिनांके दूर करणे वास्ते शरीरके उपर भस्मकोंमलें और भस्मकी शय्या विषे शयनकरे और रुद्राध्यायीका पाठ करे तां सवपापांते रहित होताहैं ॥ याज्ञवल्क्यजीनें तुपुनः गुरु तल्पग विषे विशेष कहाहै सो कहतेहां गुरांकी शय्या विषे जाणे वाला पुरुष अनुष्टुप् और त्रिष्टुप्हैं छंद जिसका और पुरुष क्या ईश्वरहैं देवता जिसका और नारायण कर्के जो कहाहै अयसे सोलां ऋचांकी सूक्त सहस्र शीर्षाते आदलेकरहैं तिस कों जपदा होया तिस पापतें रहित होताहै और इस कर्मके अंत विषे एभिः इस कहणेते गुरांकी शय्या विषे जाणे वाला और सुवर्ण के चुराणे वाला और मदिराके पीने वाला तिनांतिन्नाने गोदान करणे योग्यहै एह अर्थ सिद्ध होया दुग्धके देणे वाली गोका दान करे

मद्यंपीत्वागुरुदारांश्चगत्वास्तेयंकृत्वाब्रह्महत्यांचकृत्वा भस्माच्छन्नोभस्म शय्यांशयानोरुद्राध्यायीमुच्यतेसर्वपापैरिति याज्ञवल्क्येनतुगुरुतल्पविषये विशेषउक्तःतद्यथा सहस्रशीर्षाजापीतुमुच्यतेगुरुतल्पगःगौर्देयाकर्मणोस्यांतेपृथगेभिःपयस्विनी १ अस्यार्थः गुरुतल्पगस्तुसहस्रशीर्षेतिषोडशसूक्तं नारायणदृष्टंपुरुषदैवत्यमानुष्टुभंत्रिष्टुवंतजपंस्तस्मात्पापान्मुच्यते १ अत एवयमेनोक्तं पौरुषसूक्तमावर्त्यमुच्यतेसर्वकिल्विषादिति आवृत्तौचसंख्यापेक्षया श्लोकांतरप्रोक्ताचत्वारिंशत्संख्यानुमीयते अत्रापि त्रिरात्रोपोषित इति संवध्यते अतएववृहद्विष्णुः त्रिरात्रोपोषितःपुरुषसूक्तजपहोमाभ्यांगुरुतल्पगःशुद्ध्येदिति एभिश्चसुरापसुवर्णस्तेयिगुरुतल्पगैस्त्रिभिःपृथक्पृथगस्यत्रिरात्रव्रतस्यांतेवहुक्षीरागौर्देया इदमकामविषयम् यत्तुहविष्यंतीयमभ्यस्येत्यादिनामनुनोक्तं तदप्यकामविषयम्

१ इसी कारणतें इसी विषे यमजीनें भी कहाहै पौरुष मिति सहस्रशीर्षाके जप करण कर्के संपूर्ण पापांते शुद्ध होताहै ईहां कितनें वार पुरुष सूक्त की आवृत्ति कहणी तिस वास्ते होरी श्लोक विषे कही जो चाली वार ४० जप की आवृत्ति सो संख्या ग्रहण करणी ॥ इस विषे भी त्रय दिनका उपवास व्रत संबंध कल्पना करणी इसी विषे वृहद्विष्णु जीका वाक्य है गुरांकी शय्या विषे जाणे वाला त्रयदिन उपवास व्रतकों करे और सहस्र शीर्षाके जप होम कर्के शुद्ध होताहै ॥ और जो मदिराका पान कर्ताहै और सुवर्ण को चुराताहै और गुरांकी शय्या विषे जाताहै तिनांने भिन्न२ त्रय दिनके उपवास व्रतके अंत विषे वहुत दुग्धके देणे वाली गौदान करणे योग्यहै एह पिचला किहाहोया अर्थ कामनातें विना के विषय विषे जानणा ॥ और जो तुपुना मनुजीने कहाहै कि हविष्यंतीय जो उन्नी ऋचाहैं तिनका अभ्यास करे एभी अकामना विषेहै ॥

और जो इच्छा कर्के पापकर्म करे तिसविषे मनु जीने कहेजो शाकल होमीय मंत्र सोदेखणें योग्य हैंण॥अब और कहतेहैं॥एनसा मिति॥स्थूलक्या महापाप और सूक्ष्मउपपातकातिनांके दूर करणे की इच्छा वाला पुरुष।अवते इति।इस ऋचांतु और यत्किंचेदमिति।इसऋचांनूं और इतिवा इंतिमे मनः इससूक्तनूं एकवर्ष पर्यंत एकवार दिनदिनविषेजपे तांशुद्धहोताहै॥७॥और कहतेहां प्रतिगृह्येति॥इसकाअर्थ कहतेहां स्वरूपतें तुलाआदि औरमहापापिका धन आदि जोनहि ग्रहण करणें योग्य तिसकों ग्रहण कर्के और चपुनः स्वभावकर्के मसरआदि और कालकर्के बासी और प्रतिग्रह कर्के दुष्टजोसुनयारे आदिके प्रतिग्रह और स्पर्श कर्के दुष्टजो अन्न तिसके भक्षण करणे

कामतस्तुमंत्रैः शाकलहोमीयैरितिमनूक्तंद्रष्टव्यं एनसांस्थूलसूक्ष्माणांचिकीर्षन्नपनोदनंअवेत्यृचंजपेदब्दंयत्किंचेदमितीतिवा ७ स्थूलानांपापानांमहापातकानांसूक्ष्माणां चउपपातकादीनांनिर्हरणंकर्त्तुमिच्छन्।अवतेहेलोवरुणनमोभिरित्येतामृचं यत्किंचेदंवरुणदैव्येजनेइत्येतांचऋचंइतिवाइतिमेमनइत्येतत्सूक्तं संवत्सरमेकवारं प्रत्यहंजपेत् ७ प्रतिगृह्याप्रतिग्राह्यंभुक्त्वाचान्नंविगर्हितंजपंस्तरत्समंदीयंपूयतेमानवस्त्र्यहात्॥८॥स्वरूपतोमहापातकिधनम्यादिनावाप्रतिग्राह्यंप्रतिगृह्य चान्नंस्वभावकालप्रतिग्रहसंसर्गदुष्टंभुक्त्वा तरत्समंदिधावतीत्येनाऋचश्चतस्रोजापित्वात्र्यहं तस्मात्पापान्मनुष्यः पूतोभवतिस्नानमर्यमृणामिति ऋक्त्र्यृचंवा ८ सप्तविधाभक्ष्यभक्षणस्योपलक्षणमिदं॥तथाचयाज्ञवल्क्यः। ॐकाराभिष्टुतःसोमसलिलंपावनंपिवेत् कृत्वातुरेतोविण्मूत्रप्राशनंतुद्विजोत्तमः १ उपपातकसामान्यप्रायश्चित्तंप्राणायामशतमुक्तमेतदपवादोयम् रेतोविण्मूत्रप्राशनंकृत्वासोमलतारसमोंकारेणाभिमंत्रितंशुद्धिसाधनंपिवेत्।एतत्कामनाभावे कामतस्तुसुमंतूक्तम्

करके जोपापहे तिसपापतें शुद्धहोताहै॥त्र्यदिन पर्यंत(तरत्समं)इसतें लेकर चारऋचांके जपनेकर्के वाएहऋचापड़नी स्नान मर्यमृणा मिति वाक्य ऋचापडणी।या पूर्वोक्त एहसत्त प्रकारके अभक्षभक्षणका जनावणाहे ८ तैसेयाज्ञवल्क्यजीकावाक्यहै॥ॐकारेति॥ॐकार मंत्रकर्के अभिमंत्रितजोसोमजलहे पवित्र तिसतुं पीवे विष्टामूत्राकों भक्षण करनाजो पुरुषहे तिसपापके दूरकरणे वास्तेऔर उपपातकका जोसामान्य प्रायश्चित्त तिसविषे कहाजो सोप्राणायाम तिसका अपवादहैअर्थात् तिसकों जगाएहसोमजलपानहे सोभी(ॐकारायनमः)इसमंत्रकर्के मंत्रित होयेको पीवे एहवाक्य कामनाके अभावविषेजानणा इच्छातें विष्टामूत्र के भक्षण विषे सुमंतुजीने कहाहै ॥

रेतइति वीर्य और मल और मूत्र इनांके भक्षण करणेतें और थोम और गंडा और गाजर - और कुंभिक इनथीं लेकर और जो अभक्ष्यहैंण तिनांका भक्षण करणेतें और हंस और ग्रा.म कुक्कुट और कुत्ता और गिदड इनांका मांस भक्षण करणेतें जो पाप है ॥ तिनके दूर करणे वास्ते कंठ पर्यंत जल विषें स्थित होकर शुद्ध जो ब्रह्मव्याहृतियां हैंण तिनां कर्के प्राणा यामकरे ब्रह्म गायत्रीके आदि विषे ॐभूःइत्यादि सप्त मंत्र तिन्हांका नाम ब्रह्म व्याहृतिहै ॥ और हृदय विषे जितने कर्के जल प्राप्त हो सके तितना पीवे तिस पापतें शुद्ध होताहै ॥ अब सवपा पके दूर करणे वास्ते और प्रायश्चित्तनूं कहतेहां (सोमारौद्रमिति) इसतें लेकर चारऋचा और

रेतोविण्मूत्रप्राशनंकृत्वालशुनपलांडुगृंजनकुंभिकादीनामन्येषांचाभक्ष्यादीनांभक्षणंकृत्वा हंसग्रामकुक्कुट श्वसृगालादिमांसभक्षणंकृत्वाततःकंठमात्रमुदकमवतीर्य्यशुद्धवतीभिः प्राणायामंकृत्वाब्रह्मव्याहृतिभिरुरोगमुदकंपीत्वा तदेतस्मात्पूतोभवतीति।सोमारौद्रंतुवहूवेना मासमभ्यस्यशुद्ध्यति स्रवंत्या माचरन्स्नानमर्यमूणामितिचद्वयम् ९ सोमारुद्राधारयेश्यामस्वयमितिच तस्रः अर्यमावरुणंमित्रंचेति ऋग्द्वयंनद्यांचस्नानंकृत्वामासमेकंप्रत्येकमभ्यस्यवहुपापोविशुद्ध्यति वहुष्वपिपापेषुतंत्रेणैकंप्रायश्चित्तंकार्यमितिज्ञापकमिदं ९ अब्दार्द्धमिंद्रमित्येतदेनस्वीसप्तकंजपेत् अप्रशस्तंतुकृत्वाप्सुमासमासीतभैक्षभुक् १० एनस्वीत्यविशेषात्सर्वेष्वेवपापेष्विंद्रंमित्रंवरुणमग्निंत्रय इति एताःसप्तऋचोःपण्मासान् जपेत् ॥ अप्रशस्तंमूत्रपुरीषोत्सर्गादिकंजलेकृत्वामासंभैक्षभोजीभवेत् १० मंत्रैः शाकलहोमीयैरब्दंहुत्वाघृतंद्विजः सगुर्वप्यपहंत्येनोजप्त्वावानमइत्यृचं ॥ ११ ॥

(अर्यमावरुणंमित्रंचेति) और एह दो ऋचा इनांकों जपे भिन्न भिन्न कर्के एकमास पर्यंत नदीविषे स्नान कर्के तां वहुतपापांतेंशुद्धहोताहे ९ अव कुछऔर भीकहतेहांअब्देति इसीकाअर्थस्पष्टकर्केहै एक तंत्र कर्के भी सवपाप दूर होतेहैं॥अर्थात् सभना पापांका एकभी प्रायश्चित्त होताहै ९ अब्दार्द्ध मिति एनस्वीति इस कहणेंतें सवपापांके करणेवाला सामान्य कर्के (इंद्रं मित्रं वरुण मग्निं त्रय) इति इनांचंडनूउंरअगे त्रय ऋचांनूं छेमासपर्यंतजपे और एकमासभिक्षामांगकरभक्षणकरेजल विषे मल मूत्र का जो त्यागणा तिस पापकेदूर करणेवास्ते एहप्रायश्चित्त कहाहै १०

जोगुरुएनःअपिः क्यामंहापापभीहोवे परंतुतिसकोदूर करणेकीइच्छावालाजो पुरुषहै सोदेवकृत तस्येम इसतेलेकर जो शाकलहोकेमंत्रां कर्के एकवर्षपर्यंत घृतहवणकर्के अथवा नमइंद्रश्चइस ऋचाकाजप कर्के वर्षपर्यंतकरणेते तिसपापते शुद्धहोताहै ॥ ११ ॥ महापातकेति ब्रह्महत्यादि महापापकर्के युक्त जो पुरुषहै सोपापके दूर करणेवास्ते इंद्रियांकों रोककर भिक्षामंगकरखावें और गोयांके पीछेटुरे और पावमानीर्विद्यादिऋचांकों दिनदिनविषे जपे एकवर्षपर्यंत ऐसेकरे तां शुद्धहोताहै १२ अरण्ये इति त्रयपराकव्रत कर्के शुद्धहोयाहोया पुरुष मंत्रब्राह्मणरूपवेदसंहिताकों वनविषे त्रयवारपढे परंतु निरंतर बाह्यशुद्धि मृत्तिका जलकर्के करे और अंतष्करणकी शुद्धि

देवकृतस्येत्यादिभिः शाकलहोमैः संवत्सरंघृतहोमंकृत्वानमइंद्रश्चइत्येतां वाऋचंसंवत्सरं जपित्वा महापातकमपिपापंद्विजातिरपहंति ॥ ११ ॥ महापातकसंयुक्तोऽनुगच्छेद्गाः समाहितः अभ्यस्याब्दंपावमानीर्भैक्षाहारो विशुद्ध्यति । १२ । ब्रह्महत्यादिंमहापातकयुक्तोभिक्षालब्धाहारोवर्षमेकं संयतेंद्रियोगवामनुगमनंकुर्वन्नूयःपावमानीर्विद्यादिऋचोऽन्वहमभ्यासेनज पित्वातस्मात्पापाद्विशुद्धोभवति १२ अरण्येवात्रिरभ्यस्यप्रयतोवेदसंहि तां मुच्यतेपातकैःसर्वैःपराकैःशोधितस्त्रिभिः १३ त्रिभिः पराकैः पूतोमंत्र ब्राह्मणात्मिकांवेदसंहितां अरण्येबारत्रयंअभ्यस्यवाप्रयतोवाह्याभ्यंतरशौ चयुक्तः सर्वैर्महापातकैर्मुच्यते १३ त्र्यहंतूपवसेद्युक्तस्त्रिरन्होऽभ्युपपन्नपः मुच्यतेपातकैःसर्वैस्त्रिर्जपित्वाघमर्षणम्१४त्रिरात्रमुपवसन्संयतःप्रत्यहंप्रा तर्मध्याह्नसायंकालेपुस्नानंकुर्वन् त्रिषवणस्नानकालएव जलेनिमज्ज्यऋतं चसत्यंचेति सूक्तमघमर्षणंत्रिरावृत्तंजपित्वासर्वैःपापैर्मुच्यते तत्रगुरुलघु पापापेक्षयापुरुषशक्त्याद्यपेक्षयाचावर्तनीयम्१४ यथाश्वमेधःक्रतुराट्सर्व पापापनोदनः

विष्णुकेमंत्र कर्के करे तां संपूर्णमहापापांतें शुद्धहोताहै ॥ १३ ॥ और कहतेहैं त्र्यहमिति त्रय दिनउपवास व्रतकरे और इंद्रियांकोंरोके और दिनविषे प्रातःकाल औरमध्याह्नकाल और सा यंकाल विषेस्नानकरे और त्रयकालके स्नान विषे अघमर्षण जो ऋतंचसत्यं सूक्तहै तिसकों जलविषे चुलोवी मारिकरित्रयवारि जपे तांसंपूर्ण पापांते रहितहोताहै तिसविषेभी पापकी न्यू नयता अधिकताकों देखकर और पुरुषकी सामर्थकों देखकर आवृति करणीजयसे होसके१४ यथेति जयसे अश्वमेध यज्ञ संपूर्णयज्ञांविषेश्रेष्ठ सबपापकेदूरकरणेका कारणहै ॥

तपसे अघमर्षण सूक्त संपूर्ण पापके दूरकरणेका कारणहै। एहअघमर्षणसूक्तकी स्तुतिहै १५ ॥ हत्वेति । भूलोकतें आदलेकर त्रयलोकके मारणेका जो पापहै और महापापीयांके अन्न भक्षण करणेतें जोपापहै सोसभ ऋगवेदके धारण करणे वालेपुरुषको कोईभी नाहिप्राप्तहोता रहस्यपापकेदूरकरणेवास्ते ऋग्वेदसंहिताकहीहै । कहाहै किरहस्यपापके कीतियांहोयांमंत्र ब्राह्मणरूपऋकू संहिताका अभ्यासकरे। इसविषे वाक्यकहतेहां ॥ ऋगिति अथवा ऋग्वेदकीसंहिताकोंत्रयवारि पडने कर्के वामनरोककर स्थितहोयाहोया अथवा यजुर्वेदसंहितावासामवेदसंहिता जोरहस्यपापदूरकरणेवालियांहैं तिनांकेपाठकर्के संपूर्ण पापांतेरहित होताहै १६ इहांऋकूसंहिता मंत्र

तथाघमर्षणंसूक्तंसर्वपापापनोदनम् १५ यथाऽश्वमेधयागःसर्वयागश्रेष्ठः सर्वपापक्षयहेतुस्तथाऽघमर्षणसूक्तमपिसर्वपापक्षयहेतुरिति अघमर्षणसूक्तोत्कर्षः १५ हत्वालोकानपीमांस्त्रीनश्नन्नपियतस्ततः ऋग्वेदंधारयन्विप्रोनैनःप्राप्नोतिकिंचन १६ भूरादिलोकत्रयमपिहत्वामहापातक्यादीनामप्यन्नमश्नन् ऋग्वेदंधारयन्विप्रादिःनाकिंचित्पापंप्राप्नोतिऋग्वेदं रहस्यप्रायश्चित्तार्थमुक्तम् रहस्यपापेकृतेऋक्संहितांमंत्र ब्राह्मणात्मिकामभ्यसेत्तदाह १६ ऋक्संहितांत्रिरभ्यस्ययजुषांवासमाहितःसाम्नांवासरहस्यानांसर्वपापैःप्रमुच्यते १७ ऋकूसंहितांमंत्रब्राह्मणात्मिकांनतुमंत्रात्मिकांअनंतरवेदेत्रिवृतीतिप्रत्यवमर्षात् यजुषांवामंत्रब्राह्मणानांसंहितांसाम्नांवाब्राह्मणोपनिषत्संहितांवारत्रयमभ्यस्यसर्वपापैःप्रमुक्तो भवति १७ यथामहाहृदंप्राप्य क्षिप्तंलोष्ठंविनश्यति तथादुश्चरितंसर्वंवेदेत्रिवृतिमज्जति १८ ऋचऋङमंत्राः यजूंषियजुर्मंत्राःसामानिबृहद्रथंतरादीनिनानाप्रकाराणि अन्यान्येषांत्रयाणांपृथक् पृथक्मंत्रब्राह्मणानि एषत्रिवृद्वेदोज्ञातव्योयएनंवेदसवेदविद्भवति १८

ब्राह्मणात्मिकाजानणी मंत्रात्मिकानहिजानणी और यजुर्वेद कीभी मंत्रब्राह्मणाकीसंहिता और सामवेदकीभीब्राह्मणोप निषत्संहिता इनांविचों एकके पाठकरणे त्रयवारतां सबपापतें शुद्धहोताहै १७ यथेति जैसे महाजलकोंप्राप्तहोकर मृत्तिकाका पिंडनष्टहोताहै तैसेत्रिवृतवेदविषे जाकर सबपाप नष्टहोताहै १८ इसअर्थकोंस्पष्टकरकहतेहै ऋचइति ऋचःक्याऋग्वदेकमंत्र और यजुमंत्र और सामकर्केबृहद्रथंतरआदिजानणे होरभी इनांकेभिन्नभिन्न मंत्रबाह्मणहैं तिनांकेयथार्थ पाठकर्केसबपापते दूरहुंदाहैं ।अबवेदविदशब्दकाअर्थकहतेहैं एषति एह त्रिवृद्वेदनाम कर्के जो कहताहै इसकों जो जानताहै सोवे दवेताहै ॥

फेर भी इसी अर्थ को कहतेहैं आद्यमिति संपूर्ण वेदांका आद जो ब्रह्म वेदका सारहै अकार उकार मकार इनांतीनां अक्षरां कर्के जो स्थितहै जिस विषे त्रय वेद स्थितहैंण सो एह ॐकारहै नाम जिसका सो गुप्त जानणे योग्यहै वेद मंत्रों विषे श्रेष्ट होणेतें और सत गतिके देणे वाला होणेते और धारणा कर्के और जप कर्के मुक्तिका कारण होणेतें जो पुरुष तिसनूं स्वरूपतें और अर्थ कर्के जानताहै सो वेदवित् कहीदाहै ॥ १९ ॥ साम विधान नाम वाले ब्राह्मण विषे किहाहै अथेति इसते अनंतर काम्य कर्म्मके अनादेश विषे अर्थात् नैमित्तिक कर्म्म जो प्रायश्चित्तादि तिसके विषय विषे तिन्न रात्र उपवास करणा अर्थात् रहस्य प्रायश्चित्त जो पूर्वोक्त पाप विषे किहाहै तिस विषे तिन्न रातां उपवास करे तिसका आरंभ पुष्य विषे करे

आद्यंयत्र्यक्षरंब्रह्मत्रयीयस्मिन्प्रतिष्ठिता सगुह्योऽन्यस्त्रिवृद्वेदोयस्तंवेदसवेदवित्१९सर्ववेदानामाद्यंयद्ब्रह्मवेदसारंअकारोकारमकारात्मकत्वेनत्र्यक्षरं यत्रत्रयोवेदाःस्थिताःसोऽन्यस्त्रिवृद्वेदः प्रणवाख्योगुह्योगोपनीयो वेदमंत्रश्रेष्ठत्वात् परमार्थाभिधायकत्वात् परमार्थकत्वेनधारणजपाभ्यांमोक्षहेतुत्वाच्चयस्तंस्वरूपतोऽर्थतश्चजानातिसवेदवित् १९ सामविधानाख्येब्राह्मणे अथातःकाम्यानामनादेशेत्रिरात्रमुपवासः पुष्येणारंभआयुष्याण्येव प्रथममवोध्यग्निर्महित्रीणामिति द्वेतावत्तद्वइंद्रंनरोग्रामेगेयमायुरिति चास्यनिधनंकुर्यात्यमूपुद्वेत्रातारमिंद्रंहविरित्येतस्यस्थानेस्वास्तिनइतिसोमःपुनात्याङ्ससुप्रथमंविश्वतोदावन्निितिपूर्वङ्रहस्यंउदुत्तमंवरुणपाशामित्येषोरिष्टवर्गएतेषांएकमनेकंवा सर्वाणिवाप्रयुंजानःशतंवर्षाणिजीवति जरयैव विस्रंसतेभ्राजाभ्राजेशुक्रचन्द्रराजनरोहिणकेशुक्रियाध्येहा उस्वरतादीनिचत्वारिसेतुपामचैपपावित्रवर्गएतेषामेकमनेकंवाप्रयुंजानःपूतोभवति ॥ १ ॥

एह आयुके देणवालेहैं दोऋचा (इन्द्रं) इसते आदलेकरहै और ॥ (अस्यनिधनं)॥ इसते आदि लेकर जो मंत्र भागहै इसमे भी दोऋचाहैं और ॥ (त्रातारं) ॥ इत्यादि के स्थान विषे ॥ (स्वस्तिनः) ॥ इत्यादि ऋचाका प्रयोग ॥ (और(सोमः) ॥ इसके अगे जो मंत्र भागहै अरिष्ट वर्ग पर्य्यंत इन्हां विचोंइकका अथवा वहुत का अभ्यास करे अथवा जितने कहेहैं तिन्हां सभना का अभ्यास करे तां १०० सउ वर्ष तक जीवताहै और वृद्धावस्था ते रहित होताहै और ॥ (भ्राजाभ्राजे) ॥ इत्यादि ४ चार ऋचाहैं और ॥ (सेतुषा) ॥ इत्यादि जोहैं इन्हां विचों इकका अथवा वहुतेआंका प्रयोग करदा होया पवित्र हुंदाहै अर्थात् पापांते छुट जांदाहै ॥ १ ॥

अथात इति अथवा तिसका अर्थस्पष्ट करके कहतेहैं ॥ प्रायश्चित प्रयोगके विधानतें पीछे अत इति ॥ इसका अर्थ जिस कारणतें कामनाके देणे वाले कर्मोकी इच्छाहै इसी कारणतें काम्य जो सुंदर आयु आदिकफल तिनांके प्रयोग कहीदेहैं इसका अध्याहार करणा अवसामान्य कुछक कहीदाहै ॥ अनादेशेति ॥ कृच्छ्र व्रतनूंकरें इसते आदलेकर विशेष करके उपदेश तिनांतें रहित जो कर्म सो सामान्य कहाहै ॥ तां आद विषे त्रयदिनका उपवास व्रतकरणा योग्यहै पुष्येणेति ॥ जिस कामनाके तिथिवार आदि विषे करणे का समानहि कहा तिस कामनाका आरंभ पुष्य नक्षत्र विषे करणा ॥ इति अव कहणे जो कामनाके देणे वाले कर्म तिनांकों आयुके अधीन होनेंतें तां आयुके साधन जो अध्ययन तिनांकों पहले कहतेहां ऐसे प्रतिज्ञाहै ॥ आ

अथातः अथप्रायश्चित्तप्रयोगविधानानंतरं।अतःयतःकाम्यानांप्रयोगापेक्षा अतः काम्यानांकमनीयानामायुरादिफलानांप्रयोगाउच्यंते इतिशेषः। अथ सामान्यंकिंचित्परिभाष्यतेअनादेश अनादेशेकृच्छ्रंचरित्वेत्यादिविशेषोपदेशरहितेप्रदेशे आदौत्रिरात्रमुपवासःकार्यः पुष्येणयत्काम्यमस्मिन्कालेकर्त्तव्यमितिनोक्तं तस्यसर्वस्यपुष्येणपुष्ययुक्तेचंद्रमसिआरंभः कर्त्तव्यइति अथवक्ष्यमाणकाम्यानामायुष्याधीनत्वादायुष्याण्यध्ययनानिप्रथमंविधास्यामइति प्रतिजानीते।आयुष्यायतः सर्वकामानामायुष्यापेक्षास्तीतियतश्चायुष्यंसर्वैरप्याशास्यंअतस्तान्यायुष्याण्यायुः साधनान्यध्ययनानि प्रथममुच्यंतइति शेषः आयुः साधनप्रयोगमाह अबोध्यग्नि अथशुद्धिक्रियायाः प्रयोगमाह भ्राजाभ्राजोभ्राजादीनिसामानिस्पष्टान्येवउक्तप्रतीकसमुदायात्मकः पवित्रवर्गः सर्वपापशोधकसामसमूहइत्यर्थः एतेषांसाम्नांमध्यएकमेववाअनेकंद्वेत्रीणीत्यादिवायथाशक्तिवासर्वाणिवाविहितानि सर्वाण्यपि वैतेषुपक्षेष्वेकं सर्वदाप्रयुंजानः पूतोभवतिदैनंदिनैः पापैः शुद्धोभवतीत्यर्थः ॥ १ ॥

युष्याइति जिसकारणतें संपूर्ण कामना की प्राप्ति आयुषाके अधीनहै ॥ और संपूर्णाकी आशा आयुके विषेहै इस कारणतें आयुके साधन जो अध्ययन हैंण सो पहले कहीदे हैंण इसका अध्याहार करणा अव आयुः प्राप्तिके साधनका प्रयोग कहतेहां अबोध्य ग्निरिति ॥ अथ शुद्धिके प्रयोगनूं कहतेहां भ्राजाइति एह सामवेद स्पष्टहैंण और किहाजो प्रतीक समुदाय रूप पवित्र वर्ग तिसका संपूर्ण पापके शुद्ध करणे वाला सामका समूह इत्यर्थः एह अर्थ करणा इनां सभनांके मध्य विषे एकवा बहुत वा दो त्रय आदि जपसें सामर्थ्यहै संपूर्ण जो विधान करणेके योग्यहैंण वा तिनां पक्षों विषे एकनूं सदा कर्दा होया दिन दिनके पापांतें शुद्ध होताहै ॥ १ ॥

अथ वसिष्ट जो कहतेहैं नहि प्रकट होये जो पाप और तैसे महा पाप और संपूर्ण जो उप पातकहैंण तिनांकी शुद्धिनूं संपूर्णता कर्के कहतेहां १ प्राणेति प्राणायाम और पवित्र कहणे कर्के सूक्त और व्याहृती और ओंकार एह जानणे और दान और होम और जप तिनांके करणे कर्के निश्चयहि पापांतें रहित होतेहैं ॥२॥ इसीके अर्थ वालीयां और दोस्मृतिआं कों कहतेहैं पवित्रेति पवित्रयांकों हथ विषे धारकर स्थित होवे और नित्य काल ब्रह्मका अभ्यासकरे॥१॥ और वार वार प्राणायामां कों करे युक्त होकर जो पुरुष करे सो उत्तम तपकों कर्ताहै जिस विषे रोम और नख वहुत वदतेहैंण ऐसेनूं जो तपताहै सों उत्तम तप स्वीहै२इसी विषे वौधा यन जीका वाक्यहै विधेति शास्त्र कर्के दखाई जो विधिहै तिस कर्के प्राणायामांकों

वसिष्ठःअविख्यापितदोपाणांपापानांमहतांतथा सर्वेषांचोपपापानांशुद्धिंव क्ष्याम्यशेषतः १ प्राणायामैःपवित्रैश्चदानैर्होमैर्जपैस्तथा विनियुक्तैःप्रमु च्यंतेपातकेभ्योनसंशयः २ पवित्राणिसूक्तानि ॥ प्राणायामःपवित्राणि व्याहृतीःप्रणवंतथापवित्रपाणिरासीनोह्यभ्यसेद्ब्रह्मनैत्यकं १आवर्त्तयेत्स दायुक्तःप्राणायामान्पुनःपुनः आलोमाग्रान्नखाग्रांश्चतपस्तप्यतउत्तमम् २ वौधायनः॥विधिनाशास्त्रदृष्टेनप्राणायामान्समाचरेत् यदुपस्थकृतंपापं पद्भ्यांवायत्कृतंभवेत् १ वाहुभ्यांमनसावाचाश्रोत्रत्वग्घ्राणचक्षुषा तत्सर्वं नाशयेदितिशेषः तथाश्रोत्रत्वग्घ्राणमनोव्यतिक्रमेषु त्रिभिः प्राणायामैः शुद्ध्यति शूद्रान्नस्त्रीगमनभोजनेपुकेवलेपुपृथक्पृथक्सप्ताहंसप्तसप्तप्राणा यामान्धारयेत् ॥

करे तां लिंग कर्के कीता जो पाप और पादां कर्के जो पाप कीताहै॥१॥और वाहु कहणे ते हथां कर्के जो पाप कीताहै और मन कर्के और वाणी कर्के और कर्ण और त्वचा और नासा और नेत्र कर्के जो पाप कीताहै सो संपूर्ण नष्ट होताहै एह उपरों लाना और प्राणायामा की संख्या पिचले वचनते १६ । १६ प्रति दिन विषे जानणी ॥ तैसे हि और कहतेहैं श्रोत्रेति एह स्मृति पिछे भी आई थी परंतु औरके वाक्यसे दूसरी वार आईहै ॥ श्रोत्रादि इन्द्रयके व्यतिक्रम विषे अर्थात इन कर्के जो करणाहै परमेश्वर संवंधि गुणा नुवादादि तिसके नंकरणे विषे त्रय प्राणायामकरे तां शुद्ध हुंदाहै और शूद्रान्नादिके भक्षण विषे एक एक पापके दूर करणके वास्ते ७। ७ सप्त सप्त प्राणायामांको करे ॥

तैसेंहि अभक्ष्यादिकेभक्षणमे और अपण्यजोनाहिवेचणे योग्यवस्तुतिसके वेचनेंविषे परंतुमध्वादि के विना इसपापके दूरकरणे वास्तेबारांदिनांतक इकइकदिनप्रति १२।१२ बारांबारां प्राणायामकरे और सो लांप्राणायामावाली विधि जिथे नाहिसंख्याकीती उसजगा समझणी॥सर्वेति॥एहपूर्वोक्त प्रायश्चित्तसभनापापांके दूरकरणेके वास्तेंहै॥इसविषे न्यायक्या युक्ति दिखातेंहैं ॥अत्रेति जोकार्य्य जिसतें वणदाहै सोंतिसके धर्म्मवालाहुंदाहै ॥ तांते रहस्यप्रायश्चित्तप्रकाश प्रायश्चित्तसेहि ऋषियों ने कल्पनाकीताहै॥तोतिसके धर्म्मब्रह्मचर्य्य रक्षणा १ और सत्य कहणा २ और भूमि विषेशा यनकरणा ३ हविष्य भोजन ४ इत्यादि जो त्रिकाल स्नानादि हैं सोसभ इसरहस्यमे भीजानणे चाहिये और कहतेहैं ॥ याज्ञवल्क्यजी॥यत्रेति॥जिसजिसजगा अपणे आपको द्विजक्या ब्राह्मण।

तथाभक्ष्याभोज्यापेयानाद्यप्राशनेषु तथापण्यविक्रयेषुमधुमांसघृततैलला क्षालवणरसान्नवर्जनीयेषु यच्चान्यदप्येवंस्यात् द्वादशाहं द्वादशद्वादशप्राणा यामान्धारयेत् प्रत्यहंमासं यावत्षोडशषोडशप्राणायामधारणंमनुक्तं पूर्वश्लो केद्रष्टव्यम् सर्वपातकापनोदनमेतत् अत्रचतत्कार्यापत्यातत्तद्धर्मलाभइति न्यायात्प्रकाशधर्माः ब्रह्मचर्यसत्यवचनाधःशयनहविष्याशनादयः प्रा प्नुवंति याज्ञवल्क्यः॥यत्रयत्रचसंकीर्णमात्मानंमन्यतेद्विजः तत्रतत्रतिलैर्हो मोगायत्र्यावाचनंद्विजः ॥१॥अस्यार्थः॥यत्रयत्रब्रह्मवधादौतज्जनितदोषजाते नात्मानंसंकीर्णमभिभूतंद्विजोमन्यते कार्यः तत्र तत्रमहापातकेषुगायत्र्या गायत्र्यालक्षहोमेतुमुच्यतेसर्वपातकैरितिलक्षहोमःकायःयमस्मरणात् ।अति पातकादिषुपादन्हासः कल्पनीयः तथातिलैर्वाचनंकार्यमतथारहस्याधि कारेवसिष्ठः । वैशाख्यांपौर्णमास्यांचब्राह्मणान्पंच सप्तच॥क्षौद्रयुक्तैस्तिलैः कृष्णैर्वाचयेदथवेतरैः ॥ १ ॥

दि संकीर्ण मने अर्थात् ब्रह्महत्यादि पाप वालेको जाणे तिसतिस जगा गायत्री कर्के होम करणा चाहियें १ गायत्रीके लक्षहोमकर्के सभपापते मुक्तहुंदाहै एहयमजीकावचनहै तिमते और अतिपातकादि विषे १ पादकाह्रास क्याघाटा कल्पनाकरणी योग्यहैं अर्थात् एहहवन ७५ पजतर हजार करणा योग्यहै ॥ तयते रहस्य प्रायश्चित्तके अधि कार विषे वसिष्ठजी कहतेंहं वै शाख्यामिति वैशा ख ०ा पूर्ण मासी विखे पंदरां १५ब्राह्मणा करके मक्षौर कर्के युक्तजो कृष्ण ति ल तिहूनां कर्के वाचनकरे अथवा इतरां कर्के क्या० स्वेत तिलांकर्के वाचन करावे१इसमे एह अभिप्रायहै कि तिलांको ब्राह्मणांको देकरस्वस्ति वाचन पुण्याह वाचनादि करावे एह अर्थहै ॥

अयसे कहे मेरेपरधर्मराज प्रसन्नहोवे एहमनविषे धारताहै (तांदानकरे यद्वाकहणेतें दानकील भीहोई तेजोजन्मतेंलेकर पापहैसो कर्मकर्णेके सब्भयहि नष्टहोताहै॥२॥अनियतेति वसिष्ठजीनें हिंदानके देणेका समानहि नियतकीतासो किसेकाल विषे देवे सोकहिदाहै॥कृष्णेति॥कृष्णहरि णके मृगानविषं तिलांनूं स्वर्ण और मखीर घृतरक्षकर ब्राह्मणताईं जोदेताहै सोसंपूर्ण पापतें रहतहोताहै॥१ ॥तथमे वसिष्ट जीनें भीकहाहै मनकोंरोककर ब्राह्मणताईं तिलधेनूंनूं जोदेताहै सोपुरुष निश्चयहि ब्रह्महत्यादिकपापोंनेंराहितहुंदाहै इसमें संशयनहि ॥१ ॥ इसनें आदलेकर दानकाजानणा रहस्य प्रायश्चित्त के प्रकरणविषे कहा होया विद्यातें रहितजोब्राह्मणआदि और स्त्रीशूद्रतिनांकोंभीकिरणेयोग्यहै॥जोतुपुनः धर्मराज जीनें कहाहै ॥तिलेति॥ जोपुरुष प्रातकालवि

प्रीयतांधर्मराजेतियद्वामनसिवर्त्तते यावज्जीवकृतंपापंतत्क्षणादेवनश्यती ति।२।अनियतकालमपिदानंतेनैवोक्तं॥कृष्णाजिनेतिलान्कृत्वाहिरण्यंमधुस र्पिषी ददातियस्तुविप्रायसर्वंतरतिदुष्कृतमिति१तथाव्यासेनाप्युक्तम् तिल धेनुंचयोदद्यात्संयतात्माद्विजन्मने ब्रह्महत्यादिभिःपापैर्मुच्यतेनात्रसंशयइ ति१एवमादिदानज्ञानंरहस्यकांडोक्तमविदुषांद्विजातीनांस्त्रीशूद्रयोश्चवेदि तव्यम्॥यत्तुयमेनोक्तम् तिलान्ददातियःप्रातस्तिलान्स्पृशतिखादति तिल स्नायीतिलान् जुह्वन् सर्वंतरतिदुष्कृतम्॥ १॥तथा द्वेचाष्टम्यौतुमासस्य चतुर्दश्यांतथैवचअमावास्यापूर्णमासीसप्तमीद्वादशीद्वयम् ॥ १ ॥ संवत्स रमभुंजानःसततंविजितेंद्रियः मुच्यतेपातकैःसर्वैःस्वर्गलोकंचगच्छतीति ॥ २ ॥यच्चात्रिणोक्तम्॥क्षीराब्धौशेषपर्यंकेआषाढ्यांसंविशेद्धरिःनिद्रांत्यज तिकार्त्तिक्यांतयोःसंपूजयेद्धरिम् ॥ १ ॥

षेतिलांनूं देताहै औरस्पर्श कर्ताहै और खाताहै और तिलांकर्के स्नान कर्ताहै औरहवन कर्ता है सोसंपूर्ण पापतें रहित होताहै१अवविशेष कहतेहां॥तथेति॥जोपुरुष दो॥२॥अष्टमीयां एकम हीने विषे और दोचतुर्दशीआं और अमावस्या और पूर्णमासी दोसप्तमी और दोद्वाद शी ॥१॥ निराहार रहताहै इनांतिथिआंविषें जो एकवर्ष पर्यंत और निरंतरइंद्रिय जिसनेरो केहैं विषयांतें सोसंपूर्ण पापांते रहत होयाहोया स्वर्गलोककोंप्राप्त हुंदाहै ॥ २ ॥ जोअत्रि जीनें विशेष कहाहै आषाढकी एकादशी दिन क्षीरसमुद्र विषे शेषनाग रूप शय्या विषे ज वहरि शयनकर्तेहैं और कार्तिककीएकादशी दिन निद्रा कों त्यागतेहैं तांतिन्हांदिनांविषे विष्णु कीपूजनाकरे ॥ १ ॥

तिसेतेपूजा करणे वालेके शीघ्रहि ब्रह्महत्यादिकपाप नष्ट हुंदेहैं एह संपूर्ण कथन कीता हो यायमजीका और अत्रिजीका वचन विद्यातेरहितजो पुरुषहै तिनविषे और इच्छातें वाइच्छातें विनाएकवार वहुतवारजो पापकीताहै तिस विषेजानणा । त्रिरात्रेति इसका अर्थइसप्रकारहै संपूर्ण रहस्य प्रायश्चित्तके साधारणधर्मनूं कहकर प्रकाश प्रायश्चित्तकी न्याई ब्रह्महत्यादि पापां केदूर करणे वाले रहस्य प्रायश्चित्तां नूं कहताहां त्रयदिन उपवास व्रतकों धारकर महर्षिकरके दखायाजो अघमर्षण सूक्तऋतमिति इसते आदलेकरहे और अनुष्टुपहै छंदजिसका और भा वभृतहै देवता जिसका इसनूं जलविषे चलोविलाकर त्रयदिन विषे त्रयत्रय वार जपे पीछे दु

ब्रह्महत्यादिकंपापंक्षिप्रमेवव्यपोहतीत्यादि तत्सर्वंविद्याविरहिणांकामाकाम सकृदभ्यासविषयतयाव्यवस्थापनीयम् त्रिरात्रोपोषितोजप्त्वाब्रह्महात्वघम र्षणम् अंतर्जलेविशुद्ध्येतदत्वागांचपयास्विनीम् १ अस्यार्थः एवंसकलरहस्य साधारणंधर्ममभिधायप्रकाशप्रायश्चित्तवद्ब्रह्महत्यादिक्रमेणैवरहस्यप्रा यश्चित्तान्याह त्रिरात्रमुपोषितोजलेऽघमर्षणेनमहर्षिणादृष्टंसूक्तंअघमर्ष णंऋतंचसत्यंचेत्यृचामानुष्टुभंभावभृतदेवताकंजप्त्वात्रिरात्रांतेपयास्विनींगां दत्वाब्रह्महाविशुद्ध्यति । जपश्चांतर्जलेनिमग्नेनात्रिरावर्तनीयः यथाहसुमंतुः देवद्विजगुरुहंताप्सुनिमग्नोघमर्षणसूक्तंत्रिरावर्तयेत् मातरंभगिनींगत्वामा तृष्वसारंपितृष्वसारंस्नुषांसखींचान्यद्वागम्यागमनंकृत्वाघमर्षणमेवांतर्ज लेत्रिरावर्त्यतदेतस्मात्पूतोभवतीतिकामकारविषयमेतत् सव्याहृतीन्यादि गोदानाशक्तस्यवेदितव्यम् ॥

ग्धके देणे वाली गोसंकल्पकरे तां ब्रह्महत्या पापतें शुद्धहोताहै १ जैसेकहतेहै सुमंतुजी देवेति देवताकी प्रतिमाकों जोतोडताहै और ब्राह्मण और गुरुकों जो मारताहै और माता और भैण औरमासी और बूया और स्नुषाक्या पुत्रकीस्त्री और मित्रकीस्त्री होरजोनहिगमनकरणेके योग्य चांडाली आदिस्त्री तिन्हांके साथजो गमनकर्ताहै क्याविषय भोगताहै सोपुरुष जलविषे चलोंवी लाकर अघमर्षण जो ॥ ऋतंचसत्यं ॥ इसका त्रय वार पठन करणे करकेपूर्व कहे होये पापतें शुद्ध होताहै ॥ कामनाके विषय एह जानणा और सहितव्याहृतियांके इत्यादिक गो दानमें असामर्थ्य कों जानणा

जो तुपुनःगौतमजीनें छतीदिनरात्रकेव्रतकोंकहकरकिहाहै ॥ तिसीमेंब्रह्महत्या श्रौर मदिरा पान श्रौर सुवर्ण स्तेय श्रौरगुरांकीशय्यामेंजाणाइनांपापांमेंप्राणायामां कर्के श्रोर स्नानकर्के अघम र्षणकोंजपे एहकिहाहै एहकामनाते विनावारवार विषयमेंजानणा ॥ जो तुपुनःवौधायनजीनेक हीदाहोया ग्रामतें पूर्वदिशामे वा उत्तर दिशामें जाकर श्रौर स्नान कर्के शुद्धवस्त्रधारकर जल के समीपमें स्थंडिलकों लिवकर श्रौर एक सिञ्जहोये वस्त्रकोंधारे श्रौर एकवार २ हथांकों शुद्धकरे फेर किसे वस्तुकों नस्पर्श करे श्रौर सूर्यके सन्मुख होया होया अघमर्षण वेदका अध्ययनकरे सौउ १०० वारप्रातःकाल श्रौर तैसेहि मध्यान्हमें श्रौर अपरान्हमें पढे श्रौर सायंकाल वहुत वार पढे नक्षत्रांके उदय होयाहीं यां प्रसृतियावककों भक्षणकरे ॥ इछा तें श्रौर इछातें विना कीते जो उपपातक तिन्हांतें सत दिनके ७ पूर्वोक्त अनुष्ठान कर्के शुद्ध

यत्तुगौत्तमेनषट्त्रिंशदहोरात्रव्रतमुक्तोक्तम् तत्रैवब्रह्महत्यासुरापानसुवर्ण स्तेयगुरुतल्पेषुप्राणायामैःस्नातोऽघमर्षणंजपेदिति तदकामतोऽसकृद्विष यम् यत्तुवौधायनेनोक्तम् ग्रामात्प्राचींवोदीचींदिशमुपनिष्क्रम्यस्नातः शु चिवासा उदकान्तेस्थंडिलमुपलिप्यसकृत्क्लिन्नवासाःसकृत्पूतेनपाणिनाऽ ऽदित्याभिमुखोऽघमर्षणंस्वाध्यायमधीयीत प्रातःशतंमध्याह्नेशतमपराह्णे शतमपरिमितंचोदितेपुनक्षत्रेषुप्रसृतियावकंप्राश्नीयात् ॥ ज्ञानतोऽज्ञानतः कृतेभ्यश्चोपपातकेभ्यःसप्तरात्रात्प्रमुच्यते द्वादशरात्रान्महापातकेभ्योब्र ह्महत्यासुरापानसुवर्णस्तेयानि वर्जयित्वा एकविंशतिरात्रेणतान्यपितर तीतितत्कामकारविषयम् । अकामतः श्रोत्रियाचार्यसवनस्थवधविषयंवा लोमभ्यःस्वाहेत्यथवादिवसंमारुताशनः जलेस्थित्वाग्निंजुहुयाच्चत्वारिं शद्घृताहुतीः अस्यार्थः प्रायश्चित्तांतरम् ॥ अथवाहोरात्रमुपोषितोरात्रावु दवासं कृत्वाप्रातर्जलादुत्तीर्य लोमभ्यःस्वाहेत्याद्यैरष्टभिर्मंत्रैरेकैकेनपंचपं चाहुतयइत्येवं चत्वारिंशद्घृताहुतीर्जुहुयात् ॥

होताहै श्रौर वारां १२ दिनके अनुष्टानकर्के ब्रह्महत्या श्रौर मदिरापान श्रौर सुवर्ण स्तेय इन्हां तेंविना होरणा महापापांतें शुद्धहोताहै । श्रौर इकीदिन २१ अनुष्टानपूर्वोक्त अघमर्षणादिकेक रणे कर्केतिन्हां ब्रह्महत्यादि महा पापांतें भी शुद्धहोताहै एहमहापापकाप्रायश्चित्तकामनाविषे जानणा अकामेति श्रौर इच्छातेंविनापापविषे वेदपाठी श्रौर आचार्य श्रौर वानप्रस्थीकें मा रणे विषेवा जानणा ॥ अवहोर प्रायाश्चत कहतेहां लोमेति दिनरात्र उपवासव्रतकरे श्रौर रात्रि विषे जलमें स्थितहोवे श्रौर प्रातःकालविषे जलते वाहर स्थित होकर लोमभ्यः स्वाहा इत्या दि अठां ८ मंत्रांकर्के हवनकरे एक एक मंत्र कर्के पंच ५ पंच ५ आहुतीयांकरे इस प्रकार चाली ४० आहुतीयां करें घृत कीयां ॥

अब पूर्व कहे होयेके समान विषय जानणा और जल विषे स्थित होणा ऐसे तपकों बहुत्व है। यातें महा पापांके नाशकरणे वाला है। और भी विशेष अपरार्क विषे कहा है ॥ तिस विषे बौधायन जो कहते हैं। इसतें अनंतर पवित्र ते पवित्र जो अघ मर्षण तिसके करणे का व्याख्यान करते हां ॥ ग्रामतें पूर्व दिशा वा उत्तर दिशा विषे प्राप्तहोकर स्नान करे और पवित्र होया होया एकवार सिज्जे होये वस्त्र को धारे और एक हथांको धोवे अर्थात् होरी कि से वस्तु कों न स्पर्श करे एकवार हि शुद्धहोके बैठे और जलके समीप विषे स्थंडिलकों लेपण देकर सूर्यके सन्मुख अघमर्षण जो वेद मंत्र तिसको जपे सौ१००वार प्रातःकाल औरसौ१००वार मध्याह्नविषे और सौ १००वारतीसरे पहर और सायं काल अपरि मित क्या गिनती तें विना जपे एकप्रसृतिज

इदंचपूर्वोक्तसमानविषयम् उदवासस्यतपोबाहुल्यात् ॥ अन्योपिविशेषोऽपरार्के तत्र बौधायनः अथातः पवित्रातिपवित्रस्याघमर्षणस्यकल्पंव्याख्यास्यामः ग्रामात्प्राचींवोदीचींदिशमुपनिष्क्रम्यस्नात्वाशुचिः शुचिवासाउदकांतेस्थंडिलमुपलिप्यसकृत्क्लिन्नेनवाससासकृत्पूतेनपाणिनादित्याभिमुखोघमर्षणंस्वाध्यायमधीयीत प्रातः शतंमध्याह्नेशतमपराह्णेशतमपरिमितंचोदितेपुनक्षत्रेषुप्रसृतियावकंप्राश्नीयात् अज्ञानकृतेभ्योज्ञानकृतेभ्यश्चोपपातकेभ्यःसप्तरात्रात्प्रमुच्यते द्वादशरात्राद्भ्रूणहननं गुरुतल्पं सुवर्णस्तेयं सुरापानमितिवर्जयित्वा एकविंशतिरात्रात्तान्यपि तरतिसर्वंजयतिसर्वक्रतुफलमाप्नोतिसर्वेषुवेदेषुचीर्णव्रतोभवतिसर्वतीर्थेषु स्नातोभवति सर्वदेवेषुज्ञातोभवति आचक्षुषःपंक्तिंपुनाति ॥

वां का भक्षण करे ॥ अज्ञानेति इसका अर्थ कथन कीता है ॥ पीछे और द्वादशेतिइसका अर्थ पूर्व कहनेतें कुछ विलक्षण है सोकहते हां ग्रामेति इसकर्के कहा जो अनुष्ठान तिसकेवारा १२ दिनपर्यंत करणेतें गर्भका हनन करणा और गुरांकी शय्या विषेजाणा और सुवर्णका चुराणा और मदिराका पान इन्हां ते विना अन्य महां पापांतें शुद्ध होता है और इकी दिनके अनुष्ठान कर्के गर्भ हत्यादि पापतें भीरहितहोता है।और सबपापकोंदूर कर्ता है संपूर्ण यज्ञफलकोप्राप्त हुंदा है तिसने संपूर्ण वेदां विषे व्रत कीता है और संपूर्ण तीर्थांविषे स्नान कीता है और संपूर्ण देशांविषे प्रकट हुंदा है और नेत्रांके देखणे कर्के पंक्तिकों पवित्र कर्ता है

और संपूर्ण कर्मांके आरंभ तिसके सिद्धहोंदेहैन ॥ अब अंगिरसजी कहतेहैं धर्मके जानणेंवाला यारां वार ११ रुद्रान इति इन्हांमंत्रांके पडने करके महापापां करकेभी मुक्त होयाहोंया शुद्धहुंदाहै इसविषें संशयनहि ॥ १ ॥ मदिराके पीनेवाला और सुवर्णस्तेयी और गर्भघाती और गुराकीशय्याविषें जाणेवालाभी संपूर्ण पापांते रहतहोंदाहै तांनिरंतर रुद्रान् इन्हां मंत्रानूं जपे अर्थात् ११ जारां पाठ रुद्रके जारां दिनकर्त्तारहे ॥ २ ॥ अव यमजीकहतेहैं ॥ उपवासव्रतकों एक पक्ष पर्यंत करदा होया मंडलंपावमानंच इसनूंजपे तां ब्रह्महत्याके पापकों दूरकर्त्ताहै जयसेवशिष्टजीनें भी वाक्यकहाहै ॥ १ ॥ इंद्रमित्यादिके जपकरणेंतें मदिरापानके महापापते

कर्मारंभाअस्यासिद्ध्यंतिइति तथा उपपातकेभ्योयानिमहांतिमहापातकेभ्यश्चयानिन्यूनानितानिसर्वाण्यपिद्वादशरात्रादपोहति एकविंशतिरत्रान्महापातकानि। अंगिरा: एकादशगुणान्वापिरुद्रानावर्त्त्यधर्मवित् महापापैरपस्पृष्टोमुच्यतेनात्रसंशय: १ सुरापोयदिवाचौरोभ्रूणहागुरुतल्पग: मुच्यतेसर्वपापैस्तुरुद्रांस्तुसततंजपेत् २ यम:। मंडलंपावमानंचजपन्पक्षमुपोपित: नाशयेद्ब्रह्महत्यांचवसिष्ठवचनंयथा १ इंद्रमिंद्रमिदंसूक्तंसुमित्रंमधुछंदसं सुरापानात्प्रमुच्येतपावमानजपेनवा २ अग्निमीडेपुरोहितमित्याद्यं इंद्रविश्वाअवीवृधन्नित्येतद्वर्गसहितंसप्तचैमधुछंदसं। शौन:शेफोनसदस्यं कौत्स्यंस्तेयविनाशनम् जपेद्वाप्यस्यवामीयंपावमानमथापिवा १ कुंतापं वालखिल्यांश्चत्रिवित्सुपर्णपाकपर्णान् होत्रृन्रुद्रांस्तथाजप्त्वामुच्यतेसर्वपातकै: २ दशलक्षप्रमाणावागायत्रीशोधनंपरं अपिवालक्षहोमेनमुच्यते सर्वपातकै: ३ घृतंतिलान्वासमिधोहुत्वादेवकृदादिभि: अप्सुवानियतोजप्त्वातदह्नैवविशुद्ध्यति ४

हित हुंदाहै अथवा पावमानके जपकरके अग्निमीडे पुरोहितं इत्यादि और इंद्रविश्वाइत्यादि सत ७ ऋचामधुछंदासि कहतेहै और शौन: इत्यादिवा अस्यवामीयं वा पावमानं और कुंतापं इत्यादिके जपकरणेंकरके संपूर्ण पापांतें शुद्धहुंदाहे ॥ २ ॥ गायत्रीति दशलक्ष १०००००० गायत्रीके जपकरके परमश्रेष्टशुद्धिकहीहै और लक्षहवनकरके संपूर्ण पापांतेशुद्धहोताहै ३ और भी कहतेहां देवकृदादि मंत्रांकरके घृत और तिल और समिधांकरके हवन करे वा जलविषे स्थित होकर जप करे तां तिसदिनाविषेंही शुद्धहुंदाहै ॥ ४ ॥

और. जलविषें स्थितहोकेयत्करोति इसतेआदलेर वारुणी क्या वरुणदेवताकी ऋचाकोजपेतां संपूर्णपापांतें शुद्धहोताहै ॥ अब इसीमेंमनुजीका वाक्यहै॥अब्दार्धमिति॥ इसका अर्थपूर्व इसी प्रकरणविषेंकहाहै १ अववशिष्टजीका वाक्यहै॥संपूर्ण पापांकें समुदायकों दशहजार१०००० गायत्रीका जपशुद्धकर्ताहै १ अव गायत्री पदकी अनुवृत्ति विषें शंखजीविशेषकहतेहैं॥सुवर्णका चौर और ब्रह्महत्यारः और गुरांकी शय्याविषें जानेवाला और मदिराके पीनेवाला लक्ष १००००० जपकर्के शुद्धहोंदाहै और गयत्री केवल जपकके हिनहि किंतु हवन कर्के संपूर्ण पापकों नाशकर्दीहै ॥ १ ॥ और संपूर्ण कामनाकेदेणेवालीहै और वरकेदेनेवाली और भक्तांकीप्यारी है देवीऐसी गायत्रीकर्के जो पुरुष मनकों रोककर घृतसंयुक्त तिलांकर्के हवन कर्त्ताहै ॥ २ ॥

यत्करोतिवारुणीमंतर्जलजपन्सर्वपापैःप्रमुच्यते।मनुः।अब्दार्धमिंद्रमित्येतदेनस्वीसप्तकंजपेत् अप्रशस्तंतुकृत्वाप्सुमासमासीतभैक्ष्यभुक् वसिष्ठः।सर्वेषामेवपापानांसंकरेसमुपस्थिते अभ्यासोदशसाहस्रोगायत्र्याःशोधनंपरम् १ गायत्र्यनुवृत्तौशंखः। सुवर्णस्तेयकृद्विप्रोब्रह्महागुरुतल्पगः सुरापश्चविशुद्ध्यंतिलक्षजापान्नसंशयः हुतादेवीविशेषेणसर्वकल्मषनाशिनी॥ १ ॥ सर्वकामप्रदादेवीवरदाभक्तवत्सला घृतयुक्तैस्तिलैर्वह्निंहुत्वातुसुसमाहितः ॥ २ ॥ पापात्मालक्षहोमेनपातकेभ्यःप्रमुच्यते अभीष्टंलोकमाप्नोतितथापपाविवर्जितः ३मनुः॥ सहस्रकृत्वस्त्वभ्यस्यवहिरेतत्त्रिकंद्विजः महतोप्येनसोमासात्त्वचेवाहिर्विमुच्यते ॥ १ वहिर्ग्रामात्त्रिकंसव्याहृतिसावित्र्यात्मकम्॥ हारीतस्तुप्रणवोव्याहृतयः सवित्रीचेतित्रिकमित्याह॥ सावित्रंपवित्रंयेनसर्वपापेभ्योमुच्यते ॥

सोपापात्माभी होवेताभी लक्षहवनकर्के पापांतें रहितहुंदाहै और श्रेष्ठलोककों प्राप्तहुंदाहै ॥ ३ अब इसीविषें मनुजी कहतेहैं॥नगरतें वाहरउत्तम स्थान विषें सहितव्याहृतीके तिन्हांकों जो हजार १००० वार जपदाहै सो महा पापांतें रहतहुंदाहै जयसे सर्प कुंचको त्यागताहै ॥ १ ॥ त्रिकशब्दका अर्थ कहतेहैं त्रिकमिति ॥ सहित व्याहृतियांके जो गायत्रीहै इसकाना मत्रिकहै इसमें व्याहृतियांके भेददोहैं महाव्याहृति ३ और व्याहृति ४ इसीका अर्थ अब हारीतजी कहतेहैं॥ओंकार और व्याहृति और सावित्री और कोई कहतेहैं किं सावित्र १ पवित्र २ एहित्रिकहै सावित्रमें दोभेदहै इन्हांके जपकर्के संपूर्ण पापांतेंरहतहोताहै ॥

और एक सो १०० जप कर्के मानसी पापतें रहत होताहै और दशहजार जप कर्के संपूर्ण पापांतें रहत हुंदाहै ॥ तथसेहंसः शुचिषदिति एह शुद्ध पवित्र जिसकर्के संपूर्ण पापांतें रहित होताहै इसको जलमें जप करे और घृत तिल समिधांका हवन करे और तथसे आकृष्णेन इस मंत्र कर्के सूर्यजीके उपस्थानते शुद्ध हुंदाहै अब यमजी कहते हैं ॥ आकृष्णेन इसका ओंकार युक्का अथवा १०००० ओंकारका जप करे तां तिसीदिनमें शुद्ध हुंदाहै और सहस्रशीर्षांके जप कर्के तिसीदिनमें शुद्धहोंदाहै तथेति इसतें उपरंत चांडालकी कुलमें और नटकी कुलमें और शूद्रकी कुलमें और दंभी और मिथ्या जो दोषा रोपन कर्ताहै और पतित

शतंजप्त्वामानसात्पूतोभवति दशसहस्राणिजप्त्वासर्वः पूतात्माभवतीत्याहुः तथाहंसः शुचिषदिति विमलंपवित्रंयेनसर्वपापेभ्यः प्रमुच्यते यदाप्सुजपेत् घृतंतिलान्सामिधोवाजुहुयात् तथाआकृष्णेनेत्यादित्यमुपतिष्ठन्सर्वपूतात्माभवति ॥ यमः ॥ ओंकारायुतमभ्यस्यतदह्नैवविशुद्ध्यति पौरुषंसूक्तमावर्त्यतदह्नैवविशुद्ध्यति तथा अथचांडालकुलेनटकुले पौष्टिककुलेदांभिकाभिशस्तपतितकुले अन्यस्मिन्वाभोज्यपापकर्मिकुले प्रतिगृह्यक्षुधितोभुक्त्वाग्रामात्प्राचीमुदीचींवादिशमभिनिष्क्रम्य पृथिव्यां शुचौदेशेऽप्सुपरिप्लवमानस्तरत्समंदीजपेत्॥ ओंकारपूर्विकाव्याहृतीर्वा जपेत् तस्मात्पापात्पूतोभवति मातरंभगिनींगत्वामातृस्वसारंस्नुपांसखीं अन्यद्वाऽगम्यागमनंकृत्वाऽघमर्षणमंतर्जलेत्रिरावर्त्य तदेतस्मात्पापात्पूतोभवति गोहत्यांस्त्रीहत्यांराजन्यवैश्यहत्यान्यासापहारं ॥

इन्हांकी कुलमें और अन्यजोहै जिन्हांके गृहमेंभोजननहिपाणे योग्य और पापांके कर्ण वाले तिन्हांकी कुलमें दानको ग्रहण कर्के क्षुधित होया होया जो भक्षण करदाहै सोपुरुष नगरतें पूर्व दिशा वा उत्तरदिशामें प्राप्तहोकर शुद्धदेशमें जलमें स्थित होया होया ॥ तरत्समंदीरिति इसका जप करे।ओंकारेति ओंकारके साथ व्याहृतियांके जपतें तिसपापतें शुद्धहुंदाहै ॥मातरमिति माता और मासी और नूंह और होरजो अगम्यास्त्री तिनांके साथ गमन कर्णेका पाप दूरहुंदाहै जलमें त्रयवार अघमर्षण मंत्रके जपतें ॥गोहत्यामिति गोहत्या और स्त्रीहत्या और क्षत्रीवैश्यकी हत्या और न्यासका न देणा अर्थात् किसेकी अमानत रक्षकर द्रव्यको न देणा ॥

और कन्यामें दूषण करणा इह्नां पापांके दूर करणे वास्ते ग्रामतें वाहरपूर्व दिशा वा उत्तर दिशामें प्राप्त होकर काष्ठ कर्के अग्निको जगा कर व्याहृतियां कर्के गो घृतके साथ हजार ॥ १०*० ॥ आहुति करे और अठ हजार ॥ ८००० ॥ गायत्रीके जपकों कर्के सूर्यके सन्मुख होकर हिरण्य वर्णाभिरिति इन्हां चार ४ ऋचां कर्के आपणे आपकों मार्जन करे और त्रयवार ३ वामदेव्य मंत्रकों पडे तां इस पापतें शुद्ध होताहै चांडालीमिति चंडाली और पुक्क सजाति और मित्रकी स्त्री इह्नांके साथ गमन करेतां वामदेव्येनेति इस मंत्र कर्के अर्थात् वामदेवजीके मंत्र कर्के त्रय प्राणायाम करे तां तिस पापतें रहत हुंदाहै । रेतइति वीर्य और मूत्र और मल इह्नांके भक्षणका पाप और थोंम और गंडा और गाजरां और कुंभीकादिजो अभक्ष्य साग इह्

कन्यादूपणंकृत्वाग्रामात्प्राचींवोदीचींवादिशमभिनिष्क्रम्य प्रस्तुतेंधनेनाग्निंप्रज्वाल्यगव्येनघृतेनव्याहृतिभिराहुतिसहस्रंजुहुयात् गायत्र्यष्टसहस्रमावर्त्यादित्यंप्रेक्षमाणश्चतसृभिर्हिरण्यवर्णाभिरात्मानंप्रोक्ष्यवामदेव्यंत्रिरावर्त्य तदेतस्मात्पापात्पूतोभवति ॥ चांडालींपुक्कसींमित्रकलत्रंवागत्वोपस्पृश्यवामदेव्येनवात्रीन्प्राणायामान्कृत्वातदेतस्मात्पापात्पूतोभवति रेतोमूत्रपुरीपप्राशनंकृत्वा लशुनपलांडुगृंजनकुंभीकादीनामभक्ष्याणांभक्षणं कृत्वा हंसग्रामकुक्कुटसूकरसृगालमांसभक्षणंकृत्वा ततःकंठमात्रमुदकमवतीर्यशुद्धवतीभिः प्राणायामत्रयंकृत्वा व्याहृतिभिरुरोगमुदकंपीत्वातदेतस्मात्पापात्पूतोभवति॥ ग्रामपदंअमेध्यभक्षणपरम् ॥ अत्रिः ॥ रजनीपादंध्यानमेवसमाचरेत् तत्पूर्वंतदपरंब्रह्मसवितुः अभक्ष्यभक्षणादपेयपानादकार्यकरणादेशपतेमुच्यते

नांके भक्षण कर्णेका दोष और हंस और ग्राम कुकुट और सूकर और गिदड इनांके मांस भक्षणका पाप इह्नां संपूर्ण पापांके दूर कर्णे वास्ते कंठ मात्र जलमें स्थित होकर शुद्धवतीभिरिति इह्नां मंत्रां कर्के त्रय प्राणायाम करे और व्याहृतियां कर्के हृदयमें प्राप्त होने वाला आचमन करेतां तिसपापतेंशुद्धहुंदाहै ॥ इहां ग्रामपद अपवित्र भक्षणमें जानणा अर्थात् विष्टाभक्षण कर्णे वाला कुकुट उसमें एह अर्थ करणा ॥ अब अत्रिजी कहतेहैं रजनीपाद मिति इस ध्यानकों पडे और (तत्पूर्वं तदपरं ब्रह्म सवितुरिति) इसकों पडे इसका एह अर्थहै कि १ एक पहर पहला रात्रिका गायत्री मंत्रके अर्थके ध्यानमें लगाणा और तिसतें पहले सारादिन और तिसके पिच्छे रात्रिके तिन पहर ब्रह्म गायत्रीका जप करणा तां अशुद्ध भक्षण और अपेयका जोपीना और नहि करणे योग्ययों परसेवनादि तिसका करणा इन्हां संपूर्ण पापांतें शुद्ध हुंदाहै

वामदेव्यमिति वामदेव्य इसके त्रयवार पढनेकर्के ब्रह्महत्यापापते शुद्धहुंदाहै अयंतेति इसकेजप कर्णेकर्के कन्याके साथगमनके पापतें शुद्धहुंदाहै और सोमामिति इसके जप कर्णेकर्के विषके देणे वाला और गृहमें अग्नि लाने वाला शुद्ध हुंदाहै और उदुत्यामिति इसकर्के महीनेतकप्रति दिन सत्तवार सूर्यके उपस्थानतेंइसजन्ममें और पूर्वजन्ममें कीते जो पापतिन्हांतें शुद्ध हुंदाहै। अबयमजी कहतेहैं ऋषभ साम विशेष तिस कर्के त्रय ३वार प्राणायाम करणा और गायत्रीके एक सो आठ १०८ वार पढने कर्के नहि पीणेयोग्य जो मदिरादि तिसके पीणेका पाप और अभक्ष्य वस्तुके भक्षण करणेका पाप दूर हुंदाहै ॥ अब चर्दुविंशति मततें कहतेहां तिलांके साथ महा व्याहृतियां कर्के एक हजार संख्या वाला १००० होम उपपातककों दूर कर्ताहै ॥१

वामदेव्यंत्रिरावर्त्यमुच्येतब्रह्महत्यया अयंतरुद्रसोमेतिजपित्वाकन्यादूषी च शुध्यति सोमंराजानंवरुणमिति जपित्वा गरदोऽग्निदश्चविमुच्यते उदुत्यंजातवेदसमितिसप्तकृत्वआदित्योपस्थानादिहकृतैः पूर्वकृतैश्चपापैर्मुच्यते यमः अपेयंपीत्वाऽभक्ष्यंभक्षयित्वास्नात्वोपस्पृश्यऋषभेणत्रीन्प्राणायामान्कृत्वा गायत्र्यष्टशतमावर्त्यतदेतस्मात्पापात्पूतोभवति ऋषभःसामविशेषः ॥ चतुर्विंशतिमतात् महाव्याहृतिभिर्होमस्तिलैःकार्योद्विजन्मना उपपातकशुद्ध्यर्थंसहस्रपरिसंख्यया १ नतथावेदजापेनपापानिदहतिद्विजः यथासावित्रजापेनसर्वपापात्प्रमुच्यते २॥ ऐहिकामुष्मिकंपापंसर्वंनिरवशेषतः पंचरात्रेणगायत्रींजपमानोव्यपोहति ३ गायत्रीजपविधौप्रत्यक्षरलक्षविधानरूपयायुक्त्यानुष्ठानमेवंविधमपिज्ञातव्यम् तद्यथा अत्यल्पे पापेचतुर्विंशतिमंत्रजपः २४ अल्पेतु २४०वा ४८० किंचिदधिके२४०० महति२४०००अतिपातके २४००००० केषांचिन्मतेऽतिपातकान्महापातकमधिकंतत्रेदंविपरीतम् ॥

नतथेति ब्राह्मण पापांको तयसे वेदके जप कर्के नहि दूर कर्दा जयसे गायत्रीके जप कर्के संपूर्ण पापांकों नाश कर्दाहै ॥ २ ॥ इस जन्म का कीता होया और आगे होण वाला पाप सो संपूर्ण पांचादिन पर्यंतगायत्रीके जपकर्के दूर हुंदाहै ३ गायत्रीति गायत्रीके अनुष्ठानमें एक एक अक्षर की संख्या कर्के चवी अक्षर होणेतें चवी २४००००० लक्षजप विधि रूप युक्ति कर्के कहाहै सो कहतेहां अति अल्प पापमें चवी २४ और अल्पमे चार सो अस्सी ४८० और कुछक अधिकमें दो हजार चारसौ २४०० और वडेमे चवी हजार २४००० और अति पातकमें चवी लक्ष २४००००० जप कहाहै और कैयांके मतमें अति पातकतें महापातक अधिकहै ईहां विपरीत जानणा ॥

एतद्देति एह पूर्वोक्त जपकी संख्या पापके वारंवार अभ्यासमें दूणी जानणी और अत्यंत अभ्यासमें त्रय गुणा अधिक जानणी और ब्राह्मण द्वारा चार गुणा अधिक किहीहै और परम अवधि चवी २४०००००गुणाकहीहै॥सामर्थ्य और पापकीन्यूनता अधिकताको देखकर जानणी अब वसिष्टजीकहतेहैं सर्ववेदपवित्राणिइति अर्थः।पापके दूर करणेवाले और पुण्यके देणे वाले अघमर्षणतें आदलेकर सूक्ताहैं तिह्नानूं कहतेहां जिनांके जप और होम करके पुरुष शुद्धि कों प्राप्तहुंदेहै ॥ १ ॥ अघमर्षण और देवकृततें आदलेकर और महां दोषांके नाश करणे वाली दुर्गा इति॥इस पर्यंतहै॥अब प्रकटजो विशेष करके प्रायश्चित्त पापांके दूर कर्णे वाले तिह्नानूं

एतदेवाभ्यासादिसंभावनयाद्विगुणमत्यंताभ्यासे त्रिगुणमन्यद्वारातुचतुर्गुणम् चतुर्विंशतिलक्षगुणंतुपरमावधि शक्त्याद्यपेक्षया पापापेक्षया वा योज्यम् वासिष्ठः। सर्ववेदपवित्राणिवक्ष्याम्यहमतःपरम् येषांजपैश्चहोमैश्चपूयंतेना त्रसंशयः॥१॥अघमर्षणंदेवकृतंशुद्धवत्यस्तरत्समाः कूष्मांड्यः पावमान्यो पिविराजंमृत्युलांगलम् २ रुद्राण्याहृतयोदुर्गामहादोषविनाशिनीप्रायश्चि त्तानिवक्ष्यामोविख्यातानिविशेषतः ३ समाहितानांयुक्तानांप्रमादेषुकथंभ वेत् ४ सर्ववेदपवित्राणिदोषविनाशाभ्युदयकारणान्यघमर्षणादीनि कथि तानीदानींप्रायश्चित्तत्वेन पापशोधकत्वेनप्रसिद्धानि वक्ष्यामोऽत्रबहुवचनं प्रतिपादकमुन्यंतराभिप्रायं पूर्वमेकवचनंस्वकीयसम्मतत्वाभिप्रायंसमाहि तानां प्रमादरहितानामपि युक्तानांकथंचित्प्रमादेषुसत्सु यत्प्रायश्चित्तंभवे त्तच्छोधकंभवेदित्यर्थः॥ ऋतंचसत्यंचेत्यघमर्षणंत्रिरंतर्जलेजपन्सर्वस्मा त्पापात्प्रमुच्यते।हंसः शुचिषदित्येतामृचंत्रिरंतर्जलेपठन्सर्वस्मात्पापात्प्र मुच्यते ॥

कहतेहां एहजो (वक्ष्यामः) इसमें बहुवचनहै सो कथन करणे वाले जो होर मुनि तिस अभिप्राय करके कहाहै पूर्व(वक्ष्यामि)जो एकवचनहै सो आपनी संमतिके अभिप्राय वास्तेहै ३ और समाहितानामिति ॥क्या प्रमाद रहतजोहैं और कदीक प्रमादांके होयां होयां पापमें युक्त होए तां।तिह्नां पापांके दूर करणे वास्ते पूर्वोक्त प्रायश्चित्त कहेहैं इत्यर्थः॥ ऋतमिति॥ऋतंच इस सूक्तकों त्रय वार जलमें चलोवी लाकर पडे तां संपूर्ण पापांतें शुद्धहुंदाहै औरभी इसी विषयमें कहतेहां हंस इति इसऋचाकों जलमें चलोवी लाकर पडे तां संपूर्ण पापतें शुद्धहुंदाहै ॥४॥

विष्णु जी कहतेहैं । अथातइति ॥ इसतें उपरंत संपूर्ण वेदों विषे जो पवित्रहैं जिन्हां के जप और हवन करके ब्राह्मण क्षत्री वैश्य पापांतें शुद्ध हुंदेहैं ॥ अघ मर्षणतें आद लेकर उनत्री २९ एह मंत्र पुरुष कों पवित्र कर्त्तेहैं ॥ और जेकर इच्छा करे तां पूर्व जन्मकी स्मृति कों प्राप्त हुंदाहै १अब हारीत जी विशेष कहतेहैं ॥ इन्हां त्रय ३ लोकांकी हत्याके पापनूं दूर कर्त्ताहै त्रय वार अघ मर्षण मंत्र करके आचमन लेणेतें जयसें अश्वमेध यज्ञ शुद्ध कर्त्ताहै तयसे तिस पापके दूर करणे वास्ते त्रि एह शब्द कहाहै ॥ अर्थात् त्रयवार अघ मर्षण सूक्त करके मंत्रया होया जल तिसका पीणा अश्वमेध यज्ञके स्नानके फलको देताहै और १ (रुद्रैका

विष्णुः अथातःसर्ववेदपवित्राणिभवंति येषांजपैश्चहोमैश्चद्विजातयःपापेभ्यो मुच्यंते अघमर्षणंदेवकृतंतरत्समंदीधावतिकूष्मांड्यःपावमान्यःदुर्गासावित्रीअभिषंगाः पादस्तोमाव्याहृतयोभारुंडानिचेंद्रसामपुरुषव्रतंवासामविद्वावार्हस्पत्यंवाक्सूक्तमश्वसूक्तंमध्वृचः सामनीचंद्रशुद्धेशतरुद्रियमथर्वशिरः त्रिसुपर्णमहाव्रतंनारायणीयंपुरुषसूक्तं ॥त्रीण्याज्यदोहानिरथंतरंच अग्निव्रतंवामदेव्यंवृहच्च एतानिगीतानिपुनंतिजंतुं जातिस्मरत्वंलभतेयइच्छेत्१हारीतः हत्वालोकानपीमांस्त्रींस्त्रिःपिबेदघमर्षणंयथाश्वमेधावभृथस्तथातस्मैत्रिरब्रवीत् ॥ १ ॥ रुद्रैकादशिनींजप्त्वातदह्नैवविशुद्ध्यति घृतंतिलान्समिधोवाजुहुयाद्देवकृतस्यवै ॥ २ ॥ अप्सुवानियतोजप्त्वातदह्नैवविशुद्ध्यति विराजंविमलंशुद्धंत्रिमधुज्येष्ठसामच ॥ ३ ॥ अप्रतिरथंस्तोमीयमनोभासूक्तमेवच त्रिसुपर्णंसुवर्णंचप्रत्यंगंभृत्युलांगलं ॥ ४ ॥अथर्वशिरोथभौमंवावामदेव्यमथापिवा आदित्यसूक्तंवाक्सूक्तंश्रीसूक्तंसर्वसंमितं ५ ॥ वाक्सूक्तंविविधंचैवसर्वपापप्रणाशनम् । अथशरीरंपवित्रम् । यदह्नाराव्यावापश्चापापमकार्षप्रजापतिर्मातस्मादेनसोविश्वान्मुंचत्वंहसः॥

दशिनी) के जप करणेंतें क्या ११ जारां रुद्रियें के पाठ करणेंतें तिसी दिनमें पापतें रहत हुंदाहै ॥ और घृत और तिल और समिधा इन्हांका हवन करे ॥ (देवकृतस्यवै) इस मंत्र करके वा जलमें स्थित हो कर पढ़े तांतिसी दिन शुद्ध हुंदाहै १ और विशेष कहतेहां विराजमिति इत्यादि मंत्र संपूर्ण पापांकों नाश करेंदेहैं ।३ ।४।५अब शरीरको शुद्धि करण वाले मंत्रकों कहते है ॥ यदेति जो पाप दिन और रात्रिमें पादां करके में कर्दा होया तिस संपूर्ण पापतेंमैनूं प्रजापति शुद्ध करें और दिन रात्रिका सब मंत्रामें संबंध करणा ॥

जो पाप लिंग कर्के कदा होया तिस पापतें मैनूं विष्णु शुद्धकरे। और दिनरात्रिमे गुदा कर्के कीते हो यें संपूर्ण पापतें मित्र देवता शुद्धकरे। और हथां कर्के कीते होये पापतें इंद्र शुद्ध करे और वाणी कर्के कीते होये पापतें अग्नि देवता शुद्धकरे॥ और जिह्वा कर्के कीते होये संपूर्ण पापतें जल शुद्ध करण॥ जो पापमैं दिनमें और रात्रिमें श्वासां कर्के कत्तीहां तिस संपूर्ण पापतें पृथिवी शुद्धकरे॥ और जो नेत्रां कर्के पाप होयाहै तिन्हां संपूर्ण पापांनूं सूर्य जी दूर करण॥ और जो कर्णा कर्के पाप होयाहै तिस संपूर्णनूं मेघ दूर करे॥ और जो पाप त्वचा कर्के कीताहै तिसनूं वायु दूर करे और जो मन कर्के पाप कीताहै तिस संपूर्ण पापनूं चंद्रमा

यदह्नावोपस्थेनपापमकार्षंविष्णुर्मातस्मादेनसोविश्वान्मुंचत्वंहसः॥यदह्ना रात्र्यावापायुनापापमकार्षंमित्रोमातस्मादेनसोविश्वान्मुंचत्वंहसः॥ यदह्ना रात्र्यावापाणिभ्यांपापमकार्षमिंद्रोमातस्मादेनसोविश्वान्मुंचत्वंहसः॥ यदह्नारात्र्यावावाचापापमकार्षमग्निर्मातस्मादेनसोविश्वान्मुंचत्वंहसः यदह्ना रात्र्यावाजिह्वयापापमकार्षमापोमातस्मादेनसोविश्वान्मुंचत्वंहसः॥यदह्ना रात्र्यावाप्राणेनपापमकार्षंपृथिवीमातस्मादेनसोविश्वान्मुंचत्वंहसः॥यदह्ना रात्र्यावाचक्षुषापापमकार्षंसूर्योमातस्मादेनसोविश्वान्मुंचत्वंहसः॥यदह्नारात्र्यावाश्रोत्राभ्यांपापमकार्षंपर्जन्योमातस्मादेनसोविश्वान्मुंचत्वंहसः॥यदह्नारात्र्यावात्वचापापमकार्षंवायुर्मातस्मादेनसोविश्वान्मुंचत्वंहसः ॥यदह्ना रात्र्यावामनसापापमकार्षंचंद्रोमातस्मादेनसोविश्वान्मुंचत्वंहसः। यदह्ना रात्र्यावाबुद्ध्यापापमकार्षंब्रह्मामातस्मादेनसोविश्वान्मुंचत्वंहसः। यदह्नारात्र्यावाहंकारेणपापमकार्षंरुद्रोमातस्मादेनसोविश्वान्मुंचत्वंहसः यन्मेकेशेषु दौर्भाग्यंसीमंतेयच्चमूर्धनि ललाटकर्णयोरक्ष्णोरग्निस्तन्मेऽपहंतु१ यउदगान्महतोऽर्णवाद्विभ्राजमानः सलिलस्यमध्यात् समानृषभोरोहिताक्षः सूर्योविपश्चिन् मनसापुनातु अवधूतोवालंविताप्सुजपेत्पूतोभवति शुचिमघमादायोदितमात्रायनमस्तेस्त्वशीतरश्मेतमोनुदंजहिमेदौर्भाग्यंसौभाग्यायोदयस्वमेइति

दूर करे॥ और जो बुद्धि कर्के पाप कीताहै तिस संपूर्ण पापतें ब्रह्मा जी शुद्ध करे॥ और जो अहंकार कर्के पापहै तिस संपूर्ण नूं रुद्र दूर करे॥ अब विशेष कहतेहां यन्मे इति जो पाप मेरे केशां विषें और शीर्षमें और मस्तकमें और ललाटमें और कर्णांमें और नेत्रांमें दौर्भाग्य पापहै तिसनूं अग्नि दूर करे१यइति एह सूर्य जीका मंत्रहै॥ (भवति)॥ इस पर्यंत। और कहतेहैं शुचिमिति पवित्र अर्घकों ले कर्के सूर्यके उदय होणेके वेले॥ (नम) इस मंत्रको पढे

उदित्यामिति(उदित्यं)और(चित्रंदेवानां)इनांमंत्रां कर्के दोहथकर्के सूर्य तांई अर्घ्यदेवे ॥ और हंसः शुचिषदिति ॥ इसकर्के सूर्यके उपस्थानकोंकरे सोएह व्रतसंपूर्ण कामनाके देने वालाहै॥और जेकर होर दिनर्का कृत्य ना कीताहोवे तांगोंआंके तांईग्रासदेवे॥और भद्राभ्योइति । इसमंत्रको पडे जेकर गांकों दंडेकर्के नताडे और दुर्वचन नकहे वानत्यागे परिवादइति क्या दोषका प्रकट करणा तिसकोनकरे और आक्रोशक्यारे इत्यादिक नीच संबोधनकर्के न बुलावे वा न झिडकेएहवाक्य ब्राह्मणमेंभी जानणा क्या ब्राह्मणकों भीएसे शब्दनकहे और तात्कालप्राप्तहो याजोब्राह्मण तिसतांई भिक्षकीता होया अन्नदेवे और नमो इसमंत्र का उच्चारण करे तांसंपूर्ण

उदुत्यंचित्रंदेवानामित्येताभ्यांहस्ताभ्यामवनीयार्घ्यांजलिंहंसः शुचिषदित्यादित्यमुपतिष्ठेत तद्व्रतंसार्वकामिकं अकृताह्निकोगवेयवसंदद्यात् भद्राभ्योनमो बहुलाभ्योनमोधेनुभ्योनमः सर्वलोकदेवमातृभ्योनमः यदिगांनाविंदेन्नपरिवदेन्नाक्रोशेत्तव्रतंसर्वकामिकम् उपहतमशनंसहसागतायब्राह्मणायदद्यात् नमोब्रह्मभ्योब्रह्मविद्भ्योब्राह्मणेभ्योनमइति।यदिब्राह्मणं नाविंदेन्नपरिवदेन्नाक्रोशेत्तद्व्रतंसर्वकामिकमिति॥विन्दनंदंडादिचालनंमात्सर्येणवर्त्तनंवात्यागोवापरिवादोदोषाविष्करणं आक्रोशः रेइत्यादिनीचसंबोधनादिनाह्वानंधर्षणंवागोब्राह्मणयोरेतद्द्वयापारपराबृत्तिः सर्वफलदंव्रतंभवतीत्यर्थः॥अत्रिः नवेदबलमाश्रित्यपापकर्मरतिर्भवेत् अज्ञानाच्चप्रमादाच्चदह्यतेकर्मनेतरत् १ हरिः।सुवर्णदानंगोदानंपृथिवीदानमेवच एतत्प्रयच्छमानोवैसर्वपापैःप्रमुच्यते१ पुराणाच्च। अतिपापमहापापोपपापादीन्यशेषतःमोहाद्विधाय वितरेत्स्वर्णंतदनुसारतः ॥१॥

फलके देण वाला व्रतकिहाहे ॥अर्थात् गोब्राह्मणकी सेवातें सभफल प्राप्तहुंदाहै॥अबअत्रिजी कहतेहैं॥वेदके बलकों आश्रय होकर पाप कर्ममें प्रीति नकरे और अज्ञानतें चपुनाः प्रमादतें पापकर्मकरे तांदाहहोताहे अर्थात् अज्ञानादितें कीता होयाजोपाप प्रायाश्चित्तसें दूरहोताहै इतरपाप नहिं दूरहोता १ अब हरिजी कहतेहैं जोपुरुष सुवर्ण और गो और पृथिवी दाना कों कर्ताहे सोसंपूर्ण पापतें रहतहोताहे १ अबपुराणतें इसीकों कहताहै अतिपाप और महापाप और उपपाप आदिजोपापहै इनांनू मोहतें जो कर्ताहै सोपापकी न्यून अधिकताको देखकर तिसके अनुसार सुवर्ण दानकरे १ ॥

वेदके जानणे वाले ब्राह्मणनूं पुष्प और वस्त्रांककेंआदविषे पूजे।२॥और अर्जितमिति इसमंत्रकर्के सुवर्ण कादान देवे कैसासुवर्णहै किसर्वदेवत्य क्या सभनां देवताकों प्रसन्न करदाहैऔर हुताशनक्या अग्निका स्वरूपहै और जोआज्यक्याघृतहै सोशरण्यहै क्या आयुकीवृद्धिकरदा है और पितर इसके देवताहैं और देवताकातेजहै ॥३॥तिलानिति महर्षि कश्यपजीके देहतेतिलपैदे होएहैं इसकर्के पवित्रहैं ॥४ ॥ और हेसुव्रते महर्षे इति इसडेडश्लोकके मंत्रकर्के विधितें ब्राह्मणनूं पूजकर तिलांकादानकरे तांतिन्हांतिलांके दान कर्के पापके समूहका जोपिंजरःहै सोनष्टहुंदाहै जैसें मृत्तिकाका कच्चापात्रजलमें नष्टहोताहै॥५॥ और तयसे विधि कर्के ब्राह्मणतांईमधीर और घृतकादानकरे तांसंपूर्ण पितरां नूं और आपनूं पापतें तारदाहै हेराजन् ६ ॥

ब्राह्मणंप्रार्थयित्वादौश्रोत्रियंवेदपारगम् संपूज्यपुष्पवस्त्राद्यैर्मंत्रेणानेनदापयेत् ॥२ ॥ अर्जितंसर्वदेवत्यंसुवर्णंचहुताशनः शरण्यंपितृदेवत्यमाज्यंतेजोदिवौकसां ॥ ३। तिलांश्चदद्याद्विधिवन्मंत्रेणानेनसुव्रते महर्षेर्गात्रत स्सृष्टाः कश्यपस्यातिलाः स्मृताः ॥४॥ तस्मात्तेषांप्रदानेनपापसंघातपंजरंविलयंयातुमेसर्वमामपात्रमिवांभसि ॥ ५ तथादद्याद्विधानेनद्विजायमधुसर्पिषी तारयत्यखिलान्पूर्वानात्मानंचनराधिप ॥६ गोभिश्चतसृभिर्युक्तंतथाभूमिसमन्वितम् प्रतिग्रहसमर्थायविदुषेत्वाहिताग्नये ७ दत्त्वाजिनंतुकार्त्तिक्यांवैशाख्यांवा विशेषतः विषुवत्ययनेचैवग्रहणेचंद्रसूर्ययोः ८ कृच्छ्रात्तुतमसोघोरान्मुच्यतेसर्वतोभयात् अतीतान्सप्तपुरुषांस्तथाचान्याननागतान् ॥ ९ उद्धृत्यसनरोयातिब्रह्मलोकंसनातनम् ॥ वसिष्ठबृहस्पती यत्किंचित्कुरुतेपापंपुरुषोलोभमोहितः सर्वंतद्भूमिदानेनक्षिप्रमेवप्रणाशयेत् १ आदित्यपुराणे यस्तुगोचर्ममात्रांवैप्रयच्छतिवसुंधराम् विमुक्तःसर्वपापेभ्यो विष्णुलोकंसगच्छति ॥ १ ॥

अब विशेष कहतेहां गोभिरिति ॥ चारगौवां ४ और पृथिवी कर्के युक्त मृगचर्मके दाननूं विशेषकर्के कार्त्तिककी और वैशाषकी पूर्णमासीमें बुद्धिमान् अग्निहोत्रके करणेवाले पात्रब्राह्मणतांई देवे वाविषुवत् क्या मेषतुलकीसंक्रांति और चपुनः चंद्रसूर्यके ग्रहण विषे देवे ८ तां संपूर्ण कष्टके देणेवाले घोर अंधकारके भयतें पिछलीयां सतांकुलांनूं तयसें अगलीयांनूं उद्धार क्या तारकर्के सनातन ब्रह्मलोकको प्राप्तहुंदाहै ९ अबवसिष्ट और बृहस्पतिजी विशेषकहतेहैं लोभमेंलगाहोया पुरुष जोकुछपापकर्दाहै सोसंपूर्ण पापनूंपृथिवी दान कर्के दूरकर्दाहै॥१॥सोसूर्य पुराण विषेंभी कहाहै जोपुरुष गौके मृगानके प्रमाणमात्र पृथिवी दान कर्दाहै सोसंपूर्ण पापते शुद्धहोयाहोया वैकुंठमे प्राप्तहुंदाहै १ ॥

अब वृद्धवसिष्ठजी कहदेहैं जिस स्थानमें सो १००गो और एक वलद स्थितहोवे, तिसस्थाननूं धर्म वेत्ता पुरुष गो चर्म मात्रकेंहदेहैं ॥ इसीमें वृहस्पति जी कहतेहैं दश १० हत्थका १ वंश हुंदाहै । और पंदरा वंशांदागोचर्म्महुंदाहै ॥ और मत्स्यपुराणमैभी लिखियाहै ॥ दंडेनेति सत्त हत्थांदा १ दंडहै और ३० त्रियांदंडांदानिवर्त्तन कहीदाहै और एहित्रिभागहीनहोवेतां गो चर्म्म काप्रमाणहै अर्थात् २० वीस दंडका गोचर्म्म हुंदाहै एह त्रयपक्षयथा कथंचित् आपसमे मिल देहैन ॥ अब वासिष्ठजी और प्रकार कहतेहैं अथेति आपणेकर्के कीतेहोए कर्म्मो कर्के आपणे आपको वडा मन्ने तो आपणे वास्ते एकहत्थ कर्के जितने यव आउण तितनेआंको

वृद्धवसिष्ठः॥गवांशतंवृषश्चैकोयत्रतिष्ठत्यंत्रितः एतद्गोचर्ममात्रंतुप्राहुर्धर्मविदोजनाः ॥ वृहस्पतिः ॥ दशहस्तेनवंशेनदशवंशाः समंततः पंचचाभ्यधिकास्तस्मादेतद्गोचर्मलक्षणम्॥मात्स्ये॥दंडेनसप्तहस्तेनत्रिंशद्दंडानिवर्त्तनम् त्रिभागहीनंगोचर्ममात्रमाहप्रजापतिः॥वासिष्ठः॥अथकर्मभिरात्मकृतैर्गुरुमात्मानंमन्येत आत्मार्थेप्रसृतियावकं श्रपयेत्॥नततोग्नौजुहुयात् नचात्रबलिकर्म अशृतंश्रप्यमाणंऋतंवाभिमंत्रयेत् यवोसिधान्यराजोसिवारुणोमधुसंयुतः निर्णोदःसर्वपापानांपवित्रमृषिभिष्टुतम् ॥ १॥ घृतंयवामधुयवाआपोवाअमृतंयवाःसर्वंपुनीतमेपापंयन्मेकिंचनदुष्कृतम् ॥ २ ॥ वाचाकृतंकर्मकृतंदुःस्वप्नंदुर्विचिंतितम् अलक्ष्मींनाशतयवाः सर्वंपुनीतमेयवाः ३ श्वसूकरावलीढंवा उच्छिष्टोपहतंचयत् मातुर्गुरोरशुश्रूषासर्वंपुनीतमेयवाः४

पकावे परंतु तिसविच्चों अग्निमे हवन नहिकरे और इसविषे बलिवैश्वदेव कर्म्मभी नाकरे और जिसवेले पकाणलगे तिसवेले (ऋतंचसत्यं) इसमंत्र कर्के मंत्रण करलेवे और (यवोसि) इसते आदिलेकर मंत्रपढे इसका अर्थपिछें होचुकाहै ॥ १ ॥ २ ॥ वाणीकर्के वा जोकर्म कीताहै और दुष्टस्वप्न और दुष्टमनकर्के जोचिंतनकीताहै और अलक्ष्मी इनांनूं हेयवाहो नाशकरो और संपूर्णको पवित्रकरो ॥ ३ ॥ श्वेति कुत्ता और सूकर कर्के जो उच्छिष्टहै और जो उच्छिष्ट कर्के उपहतक्या युक्तहै और माता और गुरुकी नहि सेवाकीती तिसकों पवित्रकरो ॥ ४ ॥

और बहुतयांका अन्न और वेश्या का अन्न और शूद्रका अन्न खाणा और शूद्रको यज्ञ कर वाणा और चौरका अन्न और मृत्यु दिनतें नों श्राद्ध तिस का अन्न खाणा इनां कर्मांके कर णेसे जो पापहै तिसनूं हेयवां हो पवित्रकरो ॥ ५॥ और वालकोंमें जो अधर्म करण का पाप और राजद्वारमेंजोझूठकहणाआदिपापहै और सुवर्णचोरीकापाप और अव्रात्यकथा जिसकानोह यज्ञोपवीतादि संस्कार और नहि जो यज्ञ करणेके योग्य तिसको यज्ञ करवाणे का पाप और ब्राह्मणोंमें दोष देणका जो पापहै तिनां संपूर्ण पापांनूं हेयवाहो दूरकरो ॥ ६ ॥ इति श्रप्य माण होया होया रक्षाकरे ॥ अर्थात् यव पकाणदे समय आपणी रक्षाकरे ब्रह्मेति इस मंत्र क र्के पकाए होएको हौलीहौली खावे परंतु यत्नतें पात्रमे पाकर तिसका मंत्र एह है

गणान्नंगणिकान्नंचशूद्रान्नंशूद्रयाजनं चौरस्यान्नंनवश्राद्धंसर्वेपुनीतमेयवाः ५
वालवृत्तमधर्म्यंयद्राजद्वारकृतंचयत् सुवर्णस्तेयमव्रात्यमयाज्यस्यचयाज
नम् ६ ब्राह्मणानांपरिवादंसर्वेपुनीतमेयवाः इतिश्रप्यमाणोरक्षांकुर्यात्
ब्रह्मादिवानांपदवीकवीनामितिशृतंचलघ्वश्नीयात् प्रयतःपात्रेनिषिच्यये
देवामनोजातामनोयुजःसुदक्षादक्षपितरस्तेनः पांतुतेनोवंतुतेभ्योनमःस्वा
हाइत्यात्मनिजुहुयात् ॥ अथनाभिमालभेत ॥ शांताःपीताभवतयूयमापो
ऽस्माकमन्तरुदरेसुदेवाः तायुष्मभ्यमयक्ष्माअनमीवाअनागसस्स्वदंत
देवीरमृताऋतावृध इति त्रिरात्रमेधार्थीपड्रात्रंपापकृतं सप्तरात्रंपीत्वाब्र
ह्महत्यासुरापानसुवर्णस्तेयगुरुतल्पगान्पुनातिएकादशरात्रंपीत्वा पूर्वपुरु
पकृतमपिपापंनिर्णुदति ॥

देवा इति जो देवता मनतें उत्पन्न होयेहैं और मनके जोडने वाले और सहित दक्षके और दक्षपितर सो असांको रक्षा करण और सा असांको शुद्ध करण तिनां तुसांताई नमस्कार होवे स्वाहा इस मंत्र कर्के आपणे आपमें हवनकरे अर्थात् तिनां पकाए होएयवांका खावे ॥ अथेति इसतें अनंतर नाभिको आलंभनकरे और इस मंत्रको पडे शांता इति इस मंत्र को त्रय दिन पर्यंत पडकर पीवे यज्ञके फलकी और बुद्धिकी इच्छा वाला और पापकर्के की ते होये दोषनूं छे दिन पर्यंत पीने कर्के दूर कर्त्ताहै और सत दिन पर्यंत पीने कर्के ब्रह्महत्या और मदिरा पान और सुवर्ण स्तेय और गुरांकी शय्यामें जाणा एह सब पाप दूर हुंदेहैं और यारां दिन पर्यंत पीणे कर्के पूर्व पिता आदि पापको दूर कर्त्ताहै ॥

और वारांदिन पर्यंत पीणेतें ताडना दंड देणा उद्घाटन क्या प्रकट करदेणा और प्री तिकरणी और वशकरणा इनांकर्मांको कर्ताहै और गौवांते शेष रहे जो यवतिनां यवांकोजो इक्कीस २१ दिनपर्यंत पीणेकर्के विद्यांकों देखताहै और विद्याके स्वामियांकों और गणांकों देखताहै और गणांके पतीयांकेंादेखताहै ऐसेंभगवानुवसिष्टजीकहतेहोये ॥ इसीमें वृद्धवसिष्टक कें कहाहोया विशेषहै यवेति इसमें पूर्वोक्त हि अर्थहै अग्नीति इसपक्कयवकर्कें अग्निकार्य्य जोअ ग्निहोत्रादि तिसकोनकरे और भूतवलि जो वैश्वदेवादि तिसकोभी न करे और जो किहाहै कि जिसका भोजन करणा होवे तिसका अग्रभाग देलेणा इसका सोभागभी न देणा, और भि

द्वादशरात्रंपीत्वा ताडनोद्घाटनारंजनवशीकरणानिकरोतिगोभिराहार मुक्तानांयवानामिकविंशतिरात्रंपीत्वाविद्याः पश्यति विद्याधिपतीन्पश्य तिगणान्पश्यतिगणपतीन्पश्यति इत्याह भगवान्वसिष्ठःअत्रैवदृद्धवसिष्ठो क्तोविशेषः यवानांप्रसृतिमंजलिं अप्यमाणश्रृतंवाभिमंत्रयेत यवोसिधान्य राजोसिवारुणोमधुसंयुतःनिर्णोदःसर्वपापानांपवित्रमृषिभिःस्मृतंइत्यनेन तथा घृतंयवामधुयवाः पवित्रममृतंयवाः सर्वंपुनंतुमेपापंवाङ्मनः कायसं भवमित्यनेनवा॥ अग्निकार्यंनकुरुतेतेनभूतवलिंतथा नाग्रंनभिक्षांनातिथ्यं नचोच्छिष्टंपरित्यजेत् १ येदेवामनोजातामनोयुजःसुदक्षादक्षक्रतवस्तेनो वंतुतेनः पांतुतेभ्यः स्वाहेति आत्मनिजुहुयात् त्रिरात्रंमेधावृद्धयेपापकृत् षड्रात्रंसप्तरात्रंब्रह्महत्यादिषुद्वादशरात्रंवंधनोत्पन्नइति अश्नीयाद्यावकंप क्कंगोमूत्रणशकृद्रसे सक्षीरदधिसार्पिष्कंमुच्यते किल्विपात् क्षणात् १

क्षाभी इसते नहि देणी और आए अभ्यागतका आतिथ्यभी इसते नहि करणा और शेषरिहा उच्छिष्ट क्या जूठा भी नहि इसका त्यागणा किंतुसंपूर्ण भक्षण हिकरणा॥१॥ और येदेवाइ समंत्रकर्कें आत्मामें हवण करे एह पूर्वोक्त हि अर्थहै एहमंत्रापिछे भीआयाहै परंतु मतभेदसे दूसरी वार लिखयाहै ॥ और कुछ विशेष कहतेहैं अश्नीतिपर्कें होये यावकको खावे परंतु गो मूत्र विषे अथवा गोमयके रस विषे और दधि १ घृत २ दुग्ध ३ गोसें लेकर साथमि लाके खावे तांपापतें मुक्तहुंदाहै शीघ्रहि इसमे पापका नाम नहि किहा तथापि जिसपापकों मनमें धारकर करे सोपाप दूरहुंदाहै १

और लौगाक्षिजीविशेष कहतेहैं जो पुरुष आपणेआपको अपवित्रजाणेतांपूर्वोक्तकूष्मांड मंत्राके के हवन करे तदभ्रूण हत्याते उरले पापते सभते मुक्त होताहै इसीका अर्थ स्पष्टकर किहाहै ॥ यदेति ॥ और व्रत कहतेहैं अयावीति अयोनि विषे क्या बालक गवादि विषे (रेतः)वीर्य्यको सिंचन कर्के स्वप्नते विना अर्थात् स्वप्नमे वीर्य्य पात होवेतां दोष नहि इसके पापके दूर करणे की इच्छावाला पूर्ण मासीमै अथवा अमावास्याकेदिन अथवा शुक्लपक्षकी रोहिणी नक्षत्र विषे स्नान करे शुचिक्या पवित्र होवे और पवित्र वस्त्रको धार कर अथवा काले हरणकाचर्म धार कर जो ब्रह्म चारिके कल्पमे लिखया धर्म्महै तिस विधि कर्के व्रत धारे ॥ धारणेका कालदिखातेहैं॥संवत्सर १ महीना १ बारां दिन १२ दश दिन १० छेदिन६ इस व्रतके धारणे की मर्य्यादाहे इसमे मांस नहि खाणा१ और स्त्रीपास नहि जाणा २ उपरले छत नहि वैठणा

लौगाक्षिः॥कूष्मांडैर्जुहुयाद्योऽपूतइवमन्येत यदर्वाचीनमेनोभ्रूणहत्यायास्तस्मान्मुच्यते ॥ यदाऽहमपूतइवेत्यात्मानंमन्येत तदाकूष्मांडैर्मंत्रैर्जुहुयादित्यर्थः ।अयोनौवारेतः सिक्त्वान्यत्रस्वप्नादेरेणवापवित्रकामः पौर्णमास्याममावास्यायांवाशुद्धपक्षस्यरोहिण्यांवास्नातः शुचिःशुचिवासाःकृष्णाजिनवासावाब्रह्मचारिकल्पेनव्रतमुपैति संवत्सरंमासंद्वादशरात्रं दशरात्रंषड्रात्रंवानमांसमश्नीयात् नस्त्रियमुपेयात् नोपर्य्यासीत् जुगुप्सेतान्पयोभक्षइतिप्रधानकल्पोयावकंचोपयुंजानः कृच्छ्रंद्वादशरात्रंपक्षंवातद्विधेषुपयोब्राह्मणस्यव्रतम् । यवागूराजन्यस्यआमिक्षावैश्यस्यपूर्वाह्णेऽग्निमुपसमाधायचरुश्रपयित्वा॥ यद्देवादेवहेडनंयददीव्यन्नृणमकं आयुस्तेविश्वतोदधादित्येतैःसूक्तैःप्रत्यृचमाज्यंजुहुयात् यद्देवादेवहेडनमितिचतसृभिः भद्रंकर्णेभिरितिचतसृभिःपुनंतुमापितरइतिनवभिः पुनर्मांसोस्त्वाद्रियामितितिसृभिः अग्नयेवायवेसूर्यायब्रह्मणे प्रजापतयेकूष्मांडर्षिभ्यइतिव्रतहोमः॥

नासउणा ३ किसेकी निंदा नहि करणी ४ जलवा किंचित् दुग्ध भक्षण करणा ५ परंतु जेकर प्रधान कल्पकी विधि करणेकी इच्छा होवेतो पूर्वोक्त यावक व्रतको करे १२ ॥ बारांदिन का व्रत करे अथवा भैक्ष्य व्रत करे ऐसे स्थानोमे ब्राह्मणको पयो व्रत १ राजाको यवागू २ वैश्यको आमिक्षा ३ पूर्वान्ह समयमे अग्निको जगाकर चरुको पकाकर ॥ यद्देवा १ यद दीव्य- २ आयुस्ते- ३ इनां तिन्ना सूक्तां कर्के इक इक ऋचाको पड कर उस चरु कर्के अथवा घृत कर्के हवन करे ॥ आहुतिकी संख्या कहतेहैं यद्देवाइत्यादि चार ४ भद्रंकर्णेभिःइत्यादि चार ४ पुनंतुमा पितर इत्यादि ९ नव पुनर्मांसैः इत्यादि ३ और अग्नयेस्वाहा ॥ वायवेस्वाहा सूर्य्यायस्वाहा ब्रह्मणेस्वाहा प्रजापतयेस्वाहा कूष्मांडर्षिभ्यःस्वाहा इतना तिस व्रतका होमहै ॥

और(अग्नेत्वंपारयस्वाहा)एह पीछेते हवन करे इसका नाम स्विष्ट कृतुहै और वैश्वानरजीके सूक्त कर्के पूर्व मुख वाला होया २ उपस्थान करे पीछे (परांचि) इस संज्ञावाले सूक्तांको जपे और वैश्वानर सूक्तकोभी जपे॥अब वसिष्ठजीकहतेहैं॥स्नान कर्के गायत्रीको सौ१०० वार जपे और सोवार जलमे जपे और सौ१०० वार गायत्रीके साथ जलको अभि मंत्रण कर्के पी वेनां संपूर्ण पापांतें शुद्धहुंदाहै ॥इसमेंभी पापकी अधिकता और न्यूनताको देखकर प्रायश्चित्त की अधिकता और न्यूनता करणी अनादिष्ट प्रायश्चित्तमें आपहि विचारणा ॥ अब प्रायश्चित्तें दुशेखरमें विशेष कहाहै॥पापको प्रकट करणा और पश्चाताप करणा और वेदका पडना एह पापांके नाश करणे वाले कहेहैं॥प्रकट करणा सभामें और पुण्य क्षेत्र जो देवस्थान तीर्थादिमें पापको कह कर्के आपणी निंदा करणी और पापको स्मरण कर्के शोक करणा उसका नाम

अग्नेत्वंपारयेतिस्विष्टकृतंवैश्वानरीयेनसूक्तेन प्राङ्मुखः प्रांजलिरुपतिष्ठेतजपेत्सूक्तानिपरांचिवैश्वानरीयंचजपेत् ॥ वसिष्ठः ॥स्नात्वाशतेनगायत्र्याः शतमंतर्जलेजपेत् अपः शतेनवैपीत्वामुच्यतेसर्वपातकै रिति॥अत्रापिगुरुलघुपापापेक्षयागुरुलघु प्रायश्चित्तकल्पोऽनादिष्टस्थलेचस्वयमूहनीयः ।प्रायश्चित्तेंदुशेखरे ॥ ख्यापनानुतापनाध्ययनान्यपिपापनाशकानि ॥ तत्र ख्यापनं सभासु पुण्यस्थानेषुचस्वपापकथनपूर्वकमात्मनिंदनं अनुतापनंपापस्मरणपूर्वकंशोकः ॥ अध्ययनंवेदान्तादेः उपदिष्टप्रायश्चित्तेष्वेतदंगम् रहस्येख्यापनेतरदेव न स्वतंत्रम् अन्यथातद्विधिरफलः स्यात् ॥ विष्णुपुराणे।कृतेपापेनुतापोवैयस्यपुंसःप्रजायते प्रायश्चित्तंतुतस्यैकंहरिसंस्मरणंपरम् ॥ १ ॥ प्रातर्निशितथासंध्यामध्याह्नादिषुसंस्मरन् नारायणमवाप्नोतिसद्यःपापक्षयेनरइति ॥ २ ॥ अत्रकेचिदनेन सर्वविधसर्वपापप्रणाशोभवत्येव इहव्यवहारायतासिद्धयेतदुपदेशइतिप्राहुः ॥

अनुताप कहाहै और वेदांत शास्त्रका पडना उसका नाम अध्ययनहै एह त्रय प्रकार उपदेशकीते होये प्रायश्चित्तांमें अंगहै और रहस्यमें प्रकाशतें विना होर संपूर्ण करणा नस्वतंत्र एहत्रयहि हेतु समजणा नहि जेकर ऐसेनकरे तां रहस्यकी विधि निष्फल हुंदीहै॥विष्णुपुराणमेंभीकहाहै॥पाप कर्णेतें पीछे पश्चाताप होणा जिस पुरुषको तिसको एकनारायणका स्मरण रूपहि प्रायश्चित्त कहाहै ॥ १ ॥ प्रातरिति॥प्रातः समय और तयसे संध्या समयमे और मध्याह्न समयमें नारायणस्मरणको करताहै सो तात्काल पापके क्षय होयां होयां नारायको प्राप्तहोताहै ॥ २ ॥ इसमें केइक ऋषिकहतेहैं॥यद्यपि॥इसी कर्के संपूर्ण विधका पाप नाश हुंदाहै तथापि एह व्यवहारकीसिद्धि वास्ते उपदेश जानणा ऐसे कहतेहैं इति ॥

और विशेष कहतेहां गंगामें स्नान संपूर्ण तहांके पापकों नाश कर्त्ताहै॥श्रीगंगाजलकी महिमा कहतेहैं॥चांद्रेति॥और देहके शुद्ध करणेवाला चांद्रायण हजार व्रत करणा और गंगाका जलपीणा एह दोवेंसम होंण परंतु सम नहि गंगाजलका पीणा तिसतें उत्तमहै ॥ १ ॥ जयसे गरुडके दर्शनतेंहि सर्पविषतें रहित होजांदेहैं तयसे गंगाके दर्शनकरणेतेंहि संपूर्ण पापांतें रहित हुंदाहैं २ ॥ इत्यादिक महाभारत आदिके वाक्यांतें गंगाकास्नान परम शुद्धिके देणेवालाहै ॥ एहअर्थवाद नहि अर्थात् केवल स्तुतिहिनहि किंतु यथार्थहै॥एह कहतेहैं स्नानमिति॥गंगामें स्नानमात्र कर्के न दरहोणे वाला ब्रह्महत्या का पाप कैसे दूरहुंदाहै ऐसे जो पुरुष मन कर्के चिंतनकर्ताहै और वाणी कर्के केहताहै और इनको स्तुति वाद केवल मनदाहै ॥ १ ॥ तिस पुरुषकों

गंगास्नानंचसर्वविधसर्वपापप्रणाशनम् चांद्रायणसहस्रंतुयश्चरेत्कायशोधनम् पिवेद्यश्चापिगंगांभः समौस्यातांनवासमौ १ भवंतिनिर्विषाःसर्पायथाताक्ष्र्यस्यदर्शनात् गंगायादर्शनात्तद्वत्सर्वपापैःप्रमुच्यते । २ । इत्यादिमहाभारतादिवचनेभ्यःगंगास्नानंपरमशोधनम् । नचैतान्यर्थवादाः स्नानमात्रेणगंगायांपापंब्रह्मवधोद्भवं दुराधर्षंकथंयातिचिंतयेद्योवदेदपि ॥ १ ॥ तस्याहंप्रवदेपापंब्रह्मकोटिवधोद्भवम् स्तुतिवादमिमंमत्वाकुंभीपाकेपुजायते २ आकल्पंनरकंभुक्त्वाततोजायेतगर्दभइति भविष्यकौर्म्यादिवचनात् ॥ पापानांतथाहंत्रीत्वंस्वर्गमोक्षैकहेतुता स्वभावएवगंगायाः शैत्यंशीतरुचेर्यथा १ ॥ नगंगासदृशंतीर्थंनदेवःकेशवात्परः ब्राह्मणेभ्यःपरंनास्तीत्येवमाहपितामहः ॥ २ ॥ सर्वंकृतयुगेतीर्थंत्रेतायांपुष्करंस्मृतं द्वापरेतुकुरुतीर्थंकलौगंगैवकेवलम् ॥ ३ ॥ गंगाकलियुगेस्मृतेतिपाठांतरम्

कोड १०००००००ब्रह्महत्याका पाप हुंदाहै और सो कुंभीपाक नरकमें कल्पपर्यंतनरककों भोगके पीछे गर्दभयोनिकों प्राप्तहोंदाहै॥एह भविष्यत् और कूर्म पुराणके वचनातें कहाहै और कहतेहैं तथेति गंगाका स्वभावहिहै पापांकानाश करणा और स्वर्ग और मोक्षकों देणा जैसे चंद्रमाका स्वभावहिशीतलहै कोई कहण कर्के नहि ॥ १ ॥ और कहतेहैं गंगाकेतुल्यकोई तीर्थनहि और विष्णुतें श्रेष्ठ कोईदेवतानहि और ब्राह्मणातें श्रेष्ठ होर मनुष्य कोई भी नहि ऐसें ब्रह्माजीकहतेहैं ॥ २ ॥ सत युग विषे संपूर्ण नदी क्षेत्र तीर्थ रूपहैं और त्रेतायुगविषें पुष्करतीर्थ कहाहै और द्वापर युगविषें कुरुक्षेत्र तीर्थ कहाहै और कलियुग विषे एक गंगाहि तीर्थहे ॥ ऐसेभी पाठातरहै कलियुगविषे गंगाहि तीर्थ कथन कीताहै ॥ ३ ॥

येनेति जिसने अकार्य क्या न कर्णे योग्यजो कार्य तिनांको कीताहै और पीछे गंगाकासेवन कीनाहै सो गंगा जल का सेवना तिसके संपूर्ण पापकों नष्ट कर्ताहै जैसे अग्नि काष्ठकों दाह कर्ताहै इत्यादि वचन जानणे ॥४॥ कलि युग विषे पापांके दूर करणे वास्ते ऐसा माहात्म्य गंगाजीका हि कहाहै नहिपुष्करादिकांका और त्रेता दि युग विषे पापकों अल्प होणे तें पुष्करादिकांकों भी तिस पाप के दूर करणे की सामर्थहै॥और सतयुग विषे पापकों अतिअल्प होणेतें तिसके नाश वास्ते सब तीर्थ एह तात्पर्यहै ॥ कुछ होर भी मनु जीनें क

येनाकार्यशतंकृत्वाकृतंगंगांबुसेवनंतत्सर्वंतस्यगंगांभोदहत्यग्निरिवेंधन ४ मित्यादिवचनान्यनुसंधेयानि कालियुगे इत्थंपापनाशसामर्थ्यंगंगायाएव नतुपुष्करादीन। त्रेतादौतुपापस्याल्पत्वात्तन्नाशसामर्थ्यं तेषामपीति सर्वंकृतयुगइत्यस्यतात्पर्य्यम् किंचख्यापनेनापिनाशकत्वमुक्तंमनुना । ख्यापनेनानुतापेनतपसाध्ययनेनच पापकृन्मुच्यतेपापात्तथादानेनचापदि॥१॥यथायथानरोऽधर्मंस्वयंकृत्वानुभाषते तथातथात्वचेवाहिस्तेनाधर्मेणमुच्यते ॥ २ ॥ यथायथामनस्तस्यदुष्कृतंकर्मगर्हति तथातथाशरीरंतत्तेनाऽधर्मेणमुच्यते ॥ ३ ॥ कृत्वापापंहिसंतप्यतस्मात्पापात्प्रमुच्यते नैवंकुर्यांपुनरितिनिवृत्त्यापूयतेतुसः ॥ ४ ॥ एवंसंचित्यमनसाप्रेत्यकर्मफलोदयम् मनोवाङ्मूर्त्तिभिर्नित्यंशुभंकर्मसमाचरेत् ॥५॥ अज्ञानाद्यदिवाज्ञानात्कृत्वाकर्मविगर्हितम् तस्माद्विमुक्तिमन्विच्छन्द्वितीयंनसमाचरेत् ६॥इतिश्रीमन्महाराजाधिराजजम्बूकाश्मीराद्यनेकदेशाधीशप्रभुवररणवीरसिंहाज्ञप्तसारस्वत पंडितदेवीदत्तसुतपंडितगंगारामसंगृहीतपंचविषयात्मकप्रतिरूपकेधर्मशास्त्रमहानिबंधे प्रायश्चित्तभागेरहस्यप्रायश्चित्तप्रकरणमेकोनविंशतिकम् ॥ १९ ॥

हाहै ॥ पाप प्रकट कर्णे कर्के भी पाप नाश होंदाहै सो कहतेहां॥ख्यापनेति ॥पापके प्रकट कर्णे कर्के और पश्चात्ताप कर्के और तप कर्के और वेदके पडने कर्के और और तैसे आपदा विषे दान करणे कर्के पाप नाश हुंदाहै१यथेति इत्यादि पूर्व इसी प्रकरण विषे अर्थ कथन कीताहै ॥६॥ एह श्रीमहाराज रणबीर सिंह जीका वनाया जो धर्म्म शास्त्र का वडा ग्रंथ तिस विषे पंडित गंगाराम जीने तिनकी आज्ञाते वनाया जेडा प्रायश्चित्त भागहै तिस विषे उन्नीसवां प्रकरण १९ रहस्य प्रकरण पूराहोया॥ ●

अब पतित प्रायश्चित करके पतित जो हैं सो भली प्रकार ग्रहण कीयेहैं तिनके प्रसंगते कृतक पुत्रके ग्रहण करणे वास्ते और तिसके संस्कार वास्ते तिनकी जातीओंका निर्णय करीदाहै। कि कृतक पुत्र दो प्रकारका होताहै एकतो माता पिताके ज्ञान पूर्वकहै और दूसरा माता पिताके अज्ञान पूर्वकहै अर्थात् जिसके माताका ज्ञान न होवे सो और इन विषे आद्यजोहैसो सुसंग्रहहै अर्थात् जिसके ग्रहण विषे कोई यत्न नहि और संशयसे रहितहै ॥ और दूसरा कृत्रिम और अपविद्ध इत्यादि इसके पर्यायहैं आपसविषे और सो जिनसे लभिया होये और जिसने उसकी पालना करीहोये सोतिसकी जात्यादि करके व्यवहार योग्य होताहै ॥ सोई किहाहै महा भारतके शांति पर्व विषे अठताली ४८ अध्यायमें । क्वचिदिति ॥ किसी स्थान

अथ पतितोचित प्रायश्चित्तेन पतिताः संगृहीतास्तत्प्रसंगात्कृतकपुत्रसंग्रहाय तत्संस्काराद्यर्थं तज्जात्यादिनिर्णीयते ॥ कृतकपुत्रोहिद्विविधो मातापितृज्ञानपूर्वकस्तदज्ञानपूर्वकश्च अत्राद्यः सुग्रहोऽसंदिग्धश्च द्वितीयःकृत्रिमापविद्धादिपर्यायः सतुयेनलब्धः पालितोवा तस्यैवजात्यादिना व्यवहार्थः ॥ तदुक्तंमहाभारतेदानधर्म्मोत्तरे शांतिपर्वण्यष्टचत्वारिंशदध्याये क्वचिन्नकृतकः पुत्रः संग्रहादेवलभ्यते नतत्ररेतः क्षेत्रंवायत्रलक्ष्येतभारत १ शुक्रक्षेत्रयोरन्यतरदपि यत्रामुत्रत्वे प्रमाणं नलक्ष्यंभवति सकृतकः पुत्रः कीदृशः कथंवास्यसंस्कारः कर्त्तव्य इति युधिष्ठिरप्रश्ने भीष्मवाक्यम् माता पितृभ्यांयमुत्सृष्टः कृतकंतंप्रकल्पयेत् नचास्यमातापितरौज्ञायेतांसहिकृत्रिमः १ अस्वामिकस्यस्वामित्वंयस्मिन्संप्रतिलक्षयेत् योवर्णः पोषयेत्तं हितद्वर्णस्तस्यजायते २

विषे कृतक जो पुत्रहै सो भलीप्रकार ग्रहण करणेते हि लभताहै अरतिस विषे हे युधिष्ठिर वीर्य अर क्षेत्र यह नाहि लक्षित होता क्याकि जिस विषे पिता और माता इनमें कोई भी लक्षित नहोवे सो कृतक पुत्र होताहै १सो कैसाहै और तिसका संस्कार किस प्रकारकरणा योग्यहै इस युधिष्ठिरके प्रश्न विषे भीष्मपितामहजीका वाक्यहै ॥ मातेति कि जोमाता पिता करके त्याग दिया होवे उस वालकको कृतक पुत्र कल्पना करणे योग्यहै और तिस वालकके माता पिताका कुछज्ञान नहिहै कि किसका यह पुत्रहै सो कृत्रिम पुत्र कहाहै ॥ १ ॥ और जिसका कोई स्वामी नहिहै और जिस विषे जिसका स्वामी भाव लक्षित होवे उसीका यह पुत्र होताहै॥अथवा जिस वर्णका पुरुष जिस वालक की पालना करे तिस वालककाभी सोई वर्णहो नाहि अर्थात् जो ब्राह्मणादि वर्ण उसकी पालना करे सोई वर्ण कृतकका भी जानना ॥ २ ॥

और जोपुरुष कृतक पुत्रका स्वामी होवे सो अपने वर्ण के अनुसार तिसके संस्कारादि करे और तैसेहिजो माता पिता करके त्यागदिया हो सो संस्कार करण वाले पिताके वर्ण को प्राप्तहोताहै ॥ ३ ॥ अथवा जिसकाजो सगोत्रीहै और संबंधीहै ॥ सो तिसका संस्कार करे यह बात माता पिताके ज्ञानकी जगाहै । जिस जगा तिनका ज्ञान नहि उसजगा ॥ हेयुधिष्ठिर ॥ तिस कृतक को पालना करण वाला पुरुष अपनी रीती करके संस्कारादिकरे ॥ किस वास्ते किवोह बालक अन्यगोत्र का भी होवे तदभी संस्कारकी शक्ति करके पोषकके हि गोत्रादि युक्तहोताहै ॥ और तिसको तिसी वर्णके अनुसार योग्य जो कन्याहै सोभी देने योग्यहै अर्थात् तिसका विवाह भी पोषक की जातिके अनुसार हिकरणा चाहिए ४ और

योवर्णस्तंकृतकंपोपयेत्तस्यसएववर्णोभवतीत्यर्थः ॥ आत्मवत्तस्यकुर्वीतसंस्कारंस्वामिकस्तथा ॥ त्यक्तोमातापितृभ्यांयः सवर्णंप्रतिपद्यते ॥ ३॥ तद्गोत्रबंधुजंतस्यकुर्य्यात्संस्कारमच्युत अथदेयातुकन्यास्मैतद्वर्णस्ययुधिष्ठिर ४॥ पोपकआत्मवत्तस्यसंस्कारंकुर्य्यात्॥संस्कारशक्त्याऽ न्यगोत्रादिकोपि पोपकस्यैवगोत्रादिमान्भवतितद्वर्णीयैवकन्यातद्योग्यादेया॥मिताक्षरायामपि अपविद्धोनाम मातापितृभ्यामुत्सृष्टोगृह्यतेसगृहीतुः पुत्रः सर्वत्रसवर्ण इत्येव॥किंचपुत्रप्रस्तावेमनुः॥मातापितृभ्यामुत्सृष्टंतयोरन्यतरेणवा यंपुत्रं प्रतिगृह्णीयादपविद्धस्तुसस्मृत इत्यादिना उत्सृष्टोगृह्यतेयेनसोपविद्धो भवेत्सुत इत्यादिनाच येनगृहीतस्तस्यैवपुत्रस्तज्जातीयस्तेनैवस्वधर्म्मानुसारेण संस्कार्य्य इतिबोधितवान्

मिताक्षरा विषे लिखाहै किअपविद्ध उसका नामहै जोबालक माता पिता करके त्यागयाहोया ग्रहण करीदाहै ॥ और सो ग्रहण करणे वालेकाहि पुत्रहोताहै ॥ और सभस्थान विषे ।तिसी पिता काहि सवर्णी कहाहै ॥ और भी पुत्रके प्रसंग विषे मनुजीने कहाहै मातेति किमाता पिताने जो त्यागदीयाहै अथवा किसी संबंधी करके भीत्यक्तहै उसको जो पुत्र भाव करके ग्रहण करणाहै उसका नाम अपविद्ध कथन कीयाहै इत्यादि वाक्यों करके जिसने वोह ग्रहण कीया है सो तिसीका पुत्रहै और तिसीकी जाती काहै और तिसने हि अपनेधर्म्म के अनुसार तिसका संस्कार करणा योग्यहै ॥एभी पिछले अर्थके तुल्यहै सम्मतिके अर्थ किहाहै ॥

श्रीर इस विषे ऐसा प्रतीत होताहै कि जेकर उत्तम जाति का बालक नीचने ग्रहण कर ली या होवे और नीच जाती का बालक श्रेष्ठने ग्रहण करलीया होवे तद और काल करके भी तिसकी जातीका ओह होजाताहै किस वास्ते कि कर्ण जोहै कुंतीका पुत्र तिसकी न्याईं माता पिताके ज्ञान के होयां पिताकी जातीका ज्ञान मात्र हि किहा जाताहै कि अमुक का एह पुत्रहै और अमुक इसकी जातीहै ॥ और पालन वाले की पुत्रता दूर नहिं होई ॥ जेकर पिता का ज्ञान न होवे तद पालन पोषण संस्कार की सामर्थ्यतें पालन कर्ताकी जाती समान होहै । इस कारणतें नीचादि शंका करके तिसका परित्याग नहि करणा चाहिए ॥ किंतु मनु इत्यादि ऋषियों के वाक्यों करके पालना करण वाले को बहुत फल प्राप्त होता

अत्रेदंप्रतिभाति श्रेष्ठजातीयोनीचेनगृहीतोनीचजातीयोवाश्रेष्ठेनगृहीतश्चेत्त दातज्जातीयभवनं कालांतरेपि कर्णवत्तन्मातृपितृज्ञाने पितृसमानजाति ज्ञानमात्रमेव नतु पालकजातिपरावृत्तिःपित्राद्यज्ञाने पालनपोषणसंस्का रसामर्थ्यात्पालयितृजातिसमानमतो न नीचादिशंकया तत्परित्यागःकिं तुमन्वादिप्रणीतत्वेनतत्पालनस्यमहाफलजनकत्वात्पालितव्यएवसः ॥ गूढोत्पन्नेप्येवमेवनिर्णीतं शुद्धिविवेके ॥ पोषकबहुत्वेतु संस्कारकारयितुरेवजात्यादिस्थापनीयम् ॥ ननुअज्ञातोपिसबालश्चंडालादिजएवतदातत्पाल नादावुत्कृष्टसंबंधाद्दोषः कथंनस्यादितिचेदुक्तोपिविषयोविशदीक्रियते चंडा लघटितेष्टकादि वह्नितापादिरूपसंस्कारेण संशुद्धमेव यथासद्भिः स्वीक्रि यते

है । इस वास्ते सो पालना करणे योग्यहै ॥और गूढ जो उत्पन्नहै उस विषे भी ऐसा ही जा नणा । एह शुद्धि विवेक विषे लिखाहै ॥ विशेष कहतेहैं पोषकेति ॥ जिस स्थानमें पा लना करण वाले बहुत होवें उस स्थानमें संस्कार कराण वाले की जात्यादि स्थापन करणे योग्यहै ॥ (प्रश्न) ॥ नहि भी जाणयाहै सो बालक परंतु चांडालका ही पुत्र होवे तद तिस के पालनादि विषे संबंध बहुतहै क्यों दोष नहिं होवेगा जेकर ऐसा कहो तो किहाभीहै पि छे विषय तथापि सो प्रगट करीदाहै ॥ (उत्तर) ॥ जिसतरां चांडालके बनाए होए इट्टां आ दि वस्तु अग्नि आदि संस्कार करके शुद्धहि जाणकर भले लोकों नें ग्रहण करीदाहै ॥

तिस तर्हां तिस चांडालतें उत्पन्न होया बालक गिल्ले मृत्तिका दे पिंड के तुल्यहै और ब्राह्म णादिने अपणे संस्कार करके जद शुद्ध कीता तद पीछे कालांतर विषें उसके पिताका ज्ञान होवे भी तथापि पांडु पुत्र कर्ण की न्याईं पालन वाले के पुत्र त्व करके हि उसको जान णा और ऐसानाहि जानणा कि जाणकर्केअथवा नजाणकरके जिसतर्हांअग्निकादाहहैतिसी तरहां एभी जाणया न जाणया दोषजनकहै॥क्योंकि दृष्टांतविषमहदृष्टांतमेंशाके और दार्ष्टांति कमें संस्कारहै किंतु जिस तर्हां मजीठ का रंग एक वार वस्त्रमें लगजाये तो फेर नहि उतर दा तैसे जिसके संस्कारसे संस्कृत होजावे तो वो संस्कार दृढ हिहै और साग इटां इत्यादि चीज ग्रहण करीदाहै चंडालके घरकी लोकोंने इसतें तिसके ग्रहण काभी दोष नहिहै किंतु

तथात्रापितदुत्पन्नोवालआर्द्रमृत्पिंडसदृशएव ब्राह्मणादिनास्वकीयसंस्कारेण शोधितः पश्चात्कालांतरेपितृज्ञानेपिकर्णवत्पालयितृपुत्रत्वेनैवव्यवहार्य्यः नतुज्ञाताज्ञातवह्निदाहवच्छंकनीयोदृष्टांतवैषम्यात् किंतुमांजिष्ठरक्तपटव त्पालयितृसंस्कारसंस्कृतएवज्ञेयः गृह्यतएवचांडालादिगृह्यंशाकेष्टकादि साद्भिः॥किंचसमुत्पत्तिरेवपुरुषादेर्जातित्वेप्रमाणमितिचेत्तदायवनीयसंस्का रेण संस्कृतोब्राह्मणोपिब्राह्मणएवकथंतेननव्यवह्रियते प्रसिद्धमितिलोके रसायनयोगात्ताम्रादिस्वर्णंस्वर्णमेवपुनः ताम्रंकेनापिनोच्यते।नन्वेतादृशः संस्कारमहिमाचेत्तदाज्ञातोपिचांडालपुत्रः पुत्रार्थिनाग्राह्यः

पालना का पुण्य अधिकहै॥ कुछ और भी विचार करतेहैं ॥ कि जेकर जिसका जिसतें जन्म है सोई तिसीकी जातिहै एही प्रमाण मानो तद मुसलमानोंके संस्कार वाला ब्राह्मण भी ब्राह्मण हि जानणा चाहिये किस कर्के तिसके साथ लोक व्यवहार नहिकर्दे इसते यह पक्ष शिथि लता कोहि दिखाताहै और एभी जगत्में प्रसिद्धहै कि रसायन करके सुन्ना होया जेडा त्रामाहै सो सुन्नाहि जगत्में प्रसिद्धहै उसको त्रामा कोई नहि कहता॥इसी तर्हां एभी जाणो ॥ (प्रश्न) जेकर तुह्मारे संस्कारकी महीमा ऐसीहै तो जाणया होया चंडाल का पुत्र भी संस्कार कर्के शु द्ध होजावे और पुत्रार्थी उसको ग्रहण करे ऐसा कहो तो कहीदाहै ॥

(उत्तर) शिष्ट पुरुषों का आचार इसतरहीं काहै कि वचनते प्रवृत्ति और वचन ते हि लोकों कीनिवृत्ति होतीहै सो जो कोई ऐसा वचन नहि मिलदा कि जाणे होये काभी चंडालादिका संस्कार होवे जिसकरके आपके कहे होये पदार्थ का प्रवेश होवे॥इसते यहि बात सिद्ध होई कि जोसंशय की जगाहै तिसीका संस्कार होसकाहै और का नहि ऐसामन्नणा चाहिये ॥ अब कृतक पुत्रके प्रसंगते उपरंत प्रसंगते माताके ज्ञान दे होयां २ भी जारकी शंकाकरके कि. सका एह पुत्रहै ऐसे पिताका निर्णय कथन करते हैं॥कितेक श्लोक देखीदाहै॥उभयेति कि दोने केविषें स्त्रीके संचार के होयां २ माता करके गर्भका निर्णय होताहै॥और एकके विषें स्त्री संचार के होयां२ एक करके हि गर्भका निर्णय होताहै एह श्रुति सनातनीहै॥१॥इस्से श्लोकका

इतिचेदेवंशिष्टाचारः॥वचनात्प्रवृत्तिर्वचनान्निवृत्तिःनहिज्ञातिपिकिमप्याप्तवच नमुपलभामहेयेनभवदुक्तप्रवेशःस्यात् ततश्चसंदिग्धएवोक्तवचनोपलंभेन तद्वचनसनाथस्यैवसंस्कारस्योक्तव्यवस्थासंपादकत्वमितिमन्यताम्॥अथप्र संगान्मातृज्ञानेपि जारजशंकया कस्यायंपुत्र इतिपितृनिर्णयःप्रोच्यते॥ कुत्रचित् श्लोकउपलभ्यते ॥ उभयत्रापिसंचारेमात्रागर्भस्यनिर्णयः एकत्रै केनाविज्ञेयःश्रुतिरेषासनातनी॥१॥उभयत्र पत्यौ जारेच स्त्रीसंचारेमात्रैव गर्भनिर्णयोविधेयः एतस्यायंपुत्र इतिमातृवचनात्तन्निर्णयोविधेयइत्यर्थः एकत्रजारे पत्यौवास्त्रीसंचारे तस्मिन्निश्चिते एतस्यांमयिगते महान् कालो व्यतीतोनजाने कुतोयंगर्भ इतिवचनात्सत्यप्रतीतौ पितृवचनेनजारवचने नचतन्निर्णयइत्यर्थः ॥

खोल करके अर्थकहतेहैं कि(उभयत्र)क्या पति और जार इन दोनोंविषें स्त्रीकी प्रवृत्तीके होया २ माता करके हीं गर्भका निर्णय होताहै क्योंकि माता जद कथन करदे इसका एहग र्भहे इसवचनते गर्भकानिर्णय विधान करणा(एकत्र)क्योंकिजारके विषे अथवा पतिके विषें स्त्रीकीप्रवृत्ति के होयां २ और तिसविषें निश्चयदे कीतिया होयां और पिता कहे कि इस स्त्री के पास मेरे गियां होयां वहुत काल वीतगयाहैमैं नहिंजाणदाइसको किसकागर्भहै इस वच नते सत्य प्रतीतीतें पिता के वचन करके अथवा जारके वचन करके गर्भका निर्णयकरणा अ र्थात् पिता कहे कि मेनहिंजाणदा तद जारका पुत्र जाणे और जारकहे कि मेरे गयां वहुत दिन होएमैंनहि इसके गर्भको जाणदा तद पिता का पुत्र जाणे ॥

इसमें निर्णयके वास्ते विद्वानों पुरुषों कायहविचारहै॥क्याकिपहले समानआकृति और माताका स्वभाव और पिताका स्वभाव और दो अथवा तीन स्त्रीयांहैं इसमें एह विचारणा चाहिये ॥इसी का अर्थ खोलके करतेहैं ॥ कि तिसकी माता का पति और जार इनके मध्यमें किसके साथ तिस वालक की आकृति मिलतीहै ॥ १ ॥ और तिसकी माता पतिव्रता अथवा व्यभिचारिणीहै यह तिसकीयां सखियां से जाणना चाहिये ॥ २ ॥ और तिस वालक का पिता पर

अत्रायंविनिगमनार्थंविद्वज्जनाविमर्शः ॥ समानाकृतिर्मातृशीलंपितृशीलं स्त्रीद्वैतंचविचारणीयमत्र तन्मातृपतिजारयोः केन समानाकृतिः ॥ १ तदीया माता शीलवती व्यभिचारिणीवेति तत्सहचारिण्यादिभ्योबोध्यम् २ ॥ तत्पिताशीलवान् व्यभिचारीवाक्रोधादिनावृथादूषणदानशालीवेत्यादि तत्सहचारिभ्योज्ञेयम् ॥३॥ किंचतद्गृहेस्त्रीद्वयं स्त्रीत्रयंवावर्त्ततेनवावर्त्ततेचेत्तदाकुत्राधिकाप्रीतिरित्यादिना निर्णेतव्यमित्यपिशब्दार्थः॥इतिश्रीमन्महाराजाधिराजजम्बूकाश्मीराद्यनेकदेशाधीशप्रभुवर रणवीरसिंहाज्ञप्तसारस्वतपंडितदेवीदत्तसुत पंडितगंगाराम संगृहीतेपंचविषयात्मकप्रतिरूपके धर्मशास्त्रमहानिबंधे प्रायश्चित्तभागे अपविद्धसुताख्यानकनामविंशतिकंप्रकरणम् ॥ २० ॥ ❀ ❀ ❀

स्त्रीतें रहित है कि परस्त्रीगामी है अथवा क्रोधादि करके वृथा दूषण लगाताहै वानहि यह सभ तिसके जारोंसे जान्नणा चाहिये ॥ ३ ॥ और तिसके गृहमे दो वा तीन स्त्रीयांहैं अथवा नहि जेकर होण तद किसमे अधिक प्रीतिहै अथवा किसमें न्यून प्रीतिहै ॥इत्यादिसब निर्णय करणा चाहिए एह अपि शब्द का अर्थहै ॥ इतिश्री इत्यादि अपविद्ध प्रकरण वीसवां २० समाप्त होता भया ॥ २० ॥ ● + ● ●

॥ दोहा ॥

रामनामहिरदेजपो छोडविहारीका जगीषगयोवैकुंठको रामचंद्रकेकाज १ रामनामचिंतामणी लियो गांठमेवांध दारददुःखधघेलदेहाथदयाकरकांध २

उँश्रीगणेशायनमः श्रीमच्छ्रीरणवीरसिंह महाराजजीकाजोवचन रूपअमृत तिसकों कर्णोंके द्वारा पान करके आनंदके समूह करके युक्त भये जो गंगारामादि पंडित लोक तिनोंनें बहुत पुराणोंका समूह देख करके परिशिष्ट प्रकरण किआहै॥पुराणोंका मत लिखने करके और स्मृतियों सें किसी किसी स्थानमें विलक्षण होणेतें परिशिष्ट इस प्रकरणका नाम कीया॥१॥प्रथम विष्णु धर्मोत्तरमें भार्गवजीपुष्करकों कहते भये। प्रायश्चित्तकों नहि कर्त्ते जो पापी तिनकों राजा दंड करे तिस कारणतें हे पुष्करमेरेकों प्रायश्चित्तविधान कथनकरो १ पुष्करकहिताहै हेभार्गव पंडित लोकजोहैं विनाकामनाकर किया जो पाप तिसका प्रायश्चित्त कहितेहैं॥ और कामनाकर किया यो पाप तिसकावी प्रायश्चित्तकहितेहैं एह मेरेकों श्रुति प्रमाणहोंणेसे अनुमतहै२प्रायश्चित्तैरिति मनुष्योंने कियाजोपापहै सो प्रायश्चित्तोंकर्केदूरहो जाताहै इसवातमें संशयनाहिंहै। उौर योमनुष्य

उँश्रीगणेशायनमः रणवीरसुभूपतिवाक्यसुधाचमनादनुसंभृतमोदभरैः अवलोक्यपुराणचयंबहुधाक्रियतेपरिशिष्टमिदंविबुधैः॥१॥परिशिष्टत्वंचास्यकेवलपौराणिकत्वं संक्षिप्तत्वंवा। विष्णुधर्म्मोत्तरेत्रिसप्ततितमेऽध्याये प्रायश्चित्तविधिःभार्गवउवाच कुर्याद्दण्डप्रणयनंप्रायश्चित्तमकुर्वताम् नृणांराजाततोब्रूहिप्रायश्चित्तविधिंमम १ पुष्करउवाच अकामतःकृतेपापे प्रायश्चित्तंविदुर्बुधाः॥२॥ कामचारकृतेप्येतन्मतंमेश्रुतिदर्शनात्। प्रायश्चित्तैः शमंयातिपापंकृतमसंशयं॥३॥ राजदण्डात्क्षयंयातिप्रायश्चित्तमकुर्वताम् प्रायश्चित्तविहीनायेराजभिश्चाप्यवासिताः।४।राजभिश्चाप्यवाधिताइति पाठांतरम् तत्रअवाधिताअदंडिताइत्यर्थः नरकंप्रतिपद्यंतेतिर्यग्योनिंतथैवच मानुष्यमपिचासाद्यभवंतीहतथांकिताः ५ अंकितास्तप्तमुद्रादिचिह्निताः॥ सशूद्रवद्वहिःकार्यःसर्वस्माद्द्विजकर्मणइत्यादिनातदाचारस्यानिपिद्धत्वादितिकेचित्अंकिताःश्यावदंतत्वादिनालक्षिता इत्यन्ये॥ ५॥

प्रायश्चित्तोंकों नहिकर्त्ते। तिनका पाप राजाकेदंडदेणेतें दूरहोताहै॥३॥और योमनुष्य प्रायश्चित्तो कर्के रहितहैं अर्थात् पापकोंकर्के प्रायश्चित्तको नहि करते सोराजाकर्के वाहर निकासदीये जातेहैं ४ तवभी मरकर्के नरककों प्राप्तहोतेहैं और जिसवखत नरककों भोगरहितेहैं तवतिर्यक् योनि योहै पशु ० अर पक्षी इनकों प्राप्तहोते हैं और मनुष्य योनिकोंभी प्राप्त होय कर्के अंकितकथाश्यामदंतादि कर्के लक्षित होतेहैं अथवा अंकितकथातप्तमुद्रादियोंहैं तिनों कर्के चिन्हितहोतेहैं५इसमेंकितनेऋषि इसप्रकारकहितेहैं जोमनुष्य तप्तमुद्रादेहमेंधारताहै सो संपूर्ण जो द्विजकर्महै तिसतें शूद्रकी न्यांइ वहिः कार्यहै॥अर्थात् दूरकरदेणे योग्यहै इत्यादि कर्के तिनके तप्तमुद्रा धारणवालयोंकेआचारकों निषिद्ध होणेतें एह कितनें कहितेहैं॥ ५॥

इसतें पापके दूर कर्णे के निमित्त प्रायश्चित्तकरणे योग्यहै ॥ एहहि प्रायश्चित्त विधान कूर्म पुराणके उत्तरीयें २१ अध्यायमें किहाहै ॥ अब इसतें उपरंत प्रायश्चित्तकी सुंदरयो विधि सोमैं कहताहां संपूर्ण ब्राह्मणोंके हितके वास्ते उर दोषयोहैं पाप तिनके दूर करणे वास्ते ॥ १ ॥ अकृत्वेति विहित यो कर्म हैं क्या यो यो कर्म जिसकों करणा किहा है तिस २ कों नाहीं करणे कर्के उर निंदित योकर्महैं तिनके करणे करके मनुष्य दोषकों प्राप्त होताहै तिस दोषके शुद्ध करणे वाला प्रायश्चित्तहै २ प्रायश्चित्तमिति पापकों करके प्रायश्चित्त किये विना ब्राह्मण किसीस्थानमें भी नाहीं स्थितहोवे और ब्राह्मणयोहैं शांत चित्त और पंडित एहयोकहैं सोकरे ३ साग्निक उर अच्छा प्रकार वेदार्थके जानणे वाला और शांत चित्त और

प्रायश्चित्तमतःकार्य्यंकल्मषस्यापनुत्तये ॥ कूर्मपुराणेऊनत्रिंशत्तमेध्याये अतः परंप्रवक्ष्यामि प्रायश्चित्तविधिंशुभं हितायसर्वविप्राणांदोषाणामपनुत्तये ॥ १ ॥ अकृत्वाविहितंकर्मकृत्वानिंदितमेवच दोषमाप्नोतिपुरुषः प्रायश्चित्तंविशोधनम् ॥ २ ॥ प्रायश्चित्तमकृत्वातुनतिष्ठेद्ब्राह्मणःक्वचित् यद्ब्रूयुर्ब्राह्मणाः शांताविद्वांसस्तत्समाचरेत् ॥ ३ ॥ वेदार्थवित्तमः शांतो धर्मकामाग्निमान्द्विजः सएवस्यात्परोधर्मोयमेकोपिव्यवस्यति । ४ । अनाहिताग्नयोविप्रास्त्रयोवेदार्थपारगाःयद्ब्रूयुर्धर्म्मकामास्तेतद्ज्ञेयंधर्मशोधनम् ५ अनेकधर्मशास्त्रज्ञाऊहापोहविशारदाः वेदाध्ययनसंपन्नाःसप्तैते परिकीर्त्तिताः ६ मीमांसान्यायतत्त्वज्ञावेदांतकुशलाद्विजाःएकविंशतिसंख्याताःप्रायश्चित्तंवदंतिवैइति ७

धर्ममें इच्छा जिसकी ऐसा एकभी ब्राह्मण योनिश्चयकर कहे सो यी परम धर्महै ४ अनाहिताग्नि योहैं निरग्निक तीनब्राह्मण और वेदके अर्थों कों जाणने वाले और धर्मकामाः एह यो प्रायश्चित्तकहैं सोसुंदर धर्म जानणे योग्यहै ५ अनेकेति अनेकक्या वहुत धर्मशास्त्रके ग्रंथोंकों जानणे वाले योहैं और ऊहापोह योहैं शास्त्रकाविचार इसमें चतुर यों ब्राह्मण उर वेदों का यो पडना उसकर्के योपूर्णहैं सो प्रायश्चित्तके कहणे वाले सात ७ कहेहैं ६ मीमांसेति मीमांसा और न्याय तत्त्वके जानणे वाले और वेदांतमें चतुर यो ब्राह्मणहैं सो ऐसे इकी २१ ब्राह्मण प्रायश्चित्तके कहने वाले कहेहैं ॥ ७ ॥

नारदीयपुराणके तीसमे ३० अध्यायमें सनत्कुमारजी नारदकों कहितेहैं हेनारद अवतेरेकों प्रायश्चित्तका विधान कहितेहैं सोतूं श्रवणकर प्रायश्चित्तकरणेकर विशुद्धमन जिसका ऐसा योमनुष्य सोसंपूर्ण कर्मफलकोंप्राप्तहोताहै १ और हेनारद प्रायश्चित्तों कर्के रहितयोहैं तिनोंने योकर्म किया सोसंपूर्ण निष्फल किहाहै सोकर्मराक्षसों कर्के परिसेवितहोताहै २ कामेति इसतेंकाम अरु क्रोधकर्के हीनयोहैं और धर्मशास्त्रमें चतुरयोहैं और संपूर्णधर्मफलकी इच्छावालेयोमनुष्यतिनोंनें धर्मकों ब्राह्मणपूछने योग्यहैं किक्या करणे कर्के पाप दूरहोताहै और केसेंधर्महोताहै ३ प्रायश्चित्तानीति नारायणतें पराङ्मुखयोहैं मनुष्य तिसनेकिये योप्रायश्चित्तहैंसोतिसकों पवित्र नहिंकर्ते केसें जिसप्रकार नदिआं सरावके पात्रकों नाहिपवित्रकरसकतियां ४ और प्राय

नारदीयपुराणेत्रिंशत्तमेध्याये॥ सनकउवाच प्रायश्चित्तविधिंवक्ष्येशृणुनारदसांप्रतम् प्रायश्चित्तविशुद्धात्मासर्वकर्मफलंलभेत् १ प्रायश्चित्तविहीनैस्तुयत्कर्म्मक्रियतेमुने तत्सर्वंनिष्फलंप्रोक्तंराक्षसैःपरिसेवितम् २ कामक्रोधविहीनैश्चधर्मशास्त्रविशारदैःप्रष्टव्याब्राह्मणाधर्मंसर्वधर्मफलेप्सुभिः ३ प्रायश्चित्तानिचीर्णानिनारायणपराङ्मुखं ननिष्पुनन्तिविप्रेंद्रसुराभांडमिवापगाः४प्रायश्चित्तमपिधर्मशास्त्रावलोकनपूर्वकथितव्यमन्यथादोषस्तत्रैव अश्रौतस्मार्त्तविहितंप्रायश्चित्तंवदंतियेतान्धर्म्मविघ्नकर्त्तॄंश्चराजादंडेनपीडयेत् १ नचैतान्पीडयेद्राजाकथंचित्काममोहितः तत्पापंशतधाभूत्वातमेवपरिसर्प्पति २ प्रायश्चित्तेततश्चीर्णेकुर्याद्ब्राह्मणभोजनम् विंशतिर्गावृषंचैकं दद्यात्तेषांचदक्षिणाम् ३ प्रायश्चित्तमत्र पापिनेदातव्यं यत्तदेवकार्यं विप्रभोजनमधिकंदक्षिणाचप्रत्येकंदातव्या ॥

श्चित्तबी धर्मशास्त्र देखकर्के कहनेयोग्यहै और योमनुष्य धर्मशास्त्रके जानणे विना प्रायश्चित्त कहितेहैं तिनकों प्रायश्चित्त तिसीस्थानमें किहाहै ॥ अश्रौतेति वेद और स्मृतियां इनों कर्के नाहि किहा योधर्म उसकों योकहितेहैं सोयोधर्महंताहै तिनकोंराजादंडदेवे १ योकदाचित् उनकों राजा दंडनदेवे कामकर्के मोहितहुआ २ तबउनका पापशत १००प्रकारकयासी १०० प्रकारहोयकर्के राजाकोंप्राप्तहोताहै २ और प्रायश्चित्तकर्केपीछे ब्राह्मणोंकों भोजनदेवे और वीस२० गौआं और एकवृषभ दक्षिणादेवे ३ इसमें प्रायश्चित्त पापीके तांई यो कहाहै सोई करणेयोग्यहै परंतुब्राह्मण भोजन और दक्षिणा एह अधिक एक एक ब्राह्मणके तांई देणे योग्यहै ॥

इसप्रकरणमें प्राथमिकपापगणनाकी अपेक्षाकर्के क्रमकी विलक्षणताहै सोई कहितेहैं उपपातक १ महापातक २ जाति भ्रंशकरादि प्रकीर्णकांत ५ और रहस्य एह क्रमकर्के लिखेहैन तिनमें भी संपूर्ण कार्योंमें भोजनको प्रथमोपस्थितहोणेतें अर्थात् भोजनके अधीनाहिं संपूर्ण कार्यहैं तिसके व्यवस्थापनकेवास्ते पाहिले अभोज्यान्नयोहैं जिनकाअन्न नाहि भोजनकरणे योग्य सोदिखाईदेहैंन ॥ इसमे इसप्रकारआकांक्षाकापूरणहै बहुतवाराकिये योउपपातकसोमहापातकों के बराबरहैं इसते महापातकोंतें पाहिले उपपातककहेहैं फेरतिसतें उपरंत महापापियोंको जाति बाह्यता स्मरणकर्के महापापियोंका वर्णनहै पुनःतिसतें उपरंत लघूनांस्मरणं पश्चादिति न्यायेन छोटे योपापहैं तिनका स्मरण पीछे होताहै इसन्यायकर्के प्रकीर्णकपापकहेहैं फेर रहस्य योपाप

अत्रप्रकरणेप्राथमिकपापगणनापेक्षयाक्रमवैलक्षण्यम् तथाच उपपातक महापातक जातिभ्रंशकरादिप्रकीर्णकरहस्यानिक्रमतोलिखितानि तत्रापि सर्वकार्येषुभोजनस्यप्रथमोपस्थितत्वात्तद्व्यवस्थापनायप्रथममभो ज्यान्नाः प्रदर्श्यन्ते अत्रेत्थमाकांक्षापूरणं अभ्यस्तान्युपपातकानिमहापातकतुल्या निजायन्तेऽतस्तेभ्यःप्राक्तदुपक्षेपः ततश्चमहापापिनांजातिबाह्यतास्मरणे न तदनन्तरंतदुपक्षेपस्तदनंतरं लघूनांस्मरणंपश्चादितिन्यायेनप्रकीर्णकं ततोरहस्यस्यसर्वशेषित्वेननिबंधइति विद्वद्विज्ञप्तिप्रपंचः ॥ अभोज्यान्नावि ष्णुधर्म्मोत्तरे मत्तक्रुद्धातुराणांचनभुंजीतकदाचन तथैवाहूवयकस्यान्नपदा स्पृष्टंचकामतः १ आहूवयकस्याहूवानवृत्त्याजीवतः। महापातकिनास्पृष्टम वलीढंपतत्रिणा ऋजीपपक्वयच्चान्नंस्पृष्टंयच्चाप्युदक्यया २ गणान्नंगणि कान्नंचविदुषाचजुगुप्सितं स्तेनस्यचैवक्षीणस्यवार्धुषेर्गायनस्यच ३ अभिशस्तस्यशंढस्यपुंश्चल्यादांभिकस्यच चिकित्सकस्यमृगयोःक्रूरस्यो च्छिष्टभोजिनः ४

हैं तिनको संपूर्णोंके पीछे किहाहै एहइसप्रकरणमें विद्वानोंकी विज्ञप्तिका प्रपंचहै विष्णुधर्म्ममें किहाहै मत्तेति ॥ मत्तयेहैं उन्मत्त और क्रोधी और आव्हानके करणेवाले तिनका और पैरकर्के स्पर्श किया इच्छाकर्के यो अन्नहै तिसकोंनाहिं भोजनकरे १ महेति महापातकीकर्के स्पर्शाकिया योअन्न और पक्षीकर्के जूठाकियायो अन्न और केवल तवे कर्के भुज्जा जो अन्न रजस्वला कर्के स्पर्श कियायो अन्न २ और सभकासांझा अन्न और वेश्याका अन्न और विद्वान् कर्के निंदित जोअन्न और चोरकायोअन्न और क्षीण क्या अतिदरिद्री अन्यायकर्के जीविका करण वाला व्याजलैणे वाला और गायनकर्के जीविका कर्णे वाला ३ और शापित और नपुंसक और व्यभिचारिणी और दांभिक और वैद्य और मृगोंके मारणवाला लुब्धक और क्रूर और जूठा खाणे वाला ४ ॥

और अनर्चित वृथामांस और जिसस्त्रीका स्वामि अर पुत्र नहिहै तिसका अन्न और शत्रुकाअन्न दासका अन्न और उग्रका अन्न और खोटे नेत्रोंवालेका अन्न ५ और चुगल और झूठबोलणेवाला और अस्त्र शस्त्रोंके बेचनेवाला और धोबा और नृशंस और जिसके घरमें उपपतिहै तिसका अन्न ६ नटका अन्न याचकका अन्न कृतघ्नका अन्न परि वित्तीका अन्न और दुष्टका अन्न और वंदीका अन्न और धूर्तका अन्न ७ कुंडोति पिताके जीवते जारते जन्मया जो पुत्र तिसका नाम कुंडहै और पिताके मरे पीछे जन्मयायोहै तिसका नाम गोलकहै॥ तिनका अन्न औरस्त्री जितजोहै स्त्रीके वश वर्त्ती तिसका अन्न और कर्मारयोहै जाति विशेष अथवा लोहकार तिसका अन्न और निषादका अन्न और नटुएका ललारीका अन्न ८ और स्वर्ण कारका अन्न और वैद्यका अन्न और धोबेका अन्न झूठा संन्यास धारा जिसनें तिसका अन्न और

अनर्चितंवृथामांसमवीरायाश्चयोषितः द्विषदन्नंचदासान्नमुग्रान्नंचाप्यचाक्षुषम् ५ पिशुनानृतिनोश्चान्नमस्त्रविक्रयकस्यच रजकस्यनृशंसस्ययस्यचोपपतिर्गृहे ६ शैलूषान्नंयाचकान्नंकृतघ्नस्यान्नमेवच परिवित्तेश्चदुष्टस्यवंदिनःकितवस्यच ७ कुंडगोलकयोश्चैवस्त्रीजितस्यतथैवच कर्मारस्यनिषादस्यरंगावतरणस्यच ८ सुवर्णकर्तृवैद्यस्यचैलनिर्णेजकस्यच मिथ्याप्रव्रजितस्यान्नंतैलिकस्यतथैवच ९ तथैववृषलस्यान्नंब्राह्मणेनानिमंत्रितम् एषामन्यतमस्यान्नंसमश्नित्वात्र्यहंक्षिपेत् १० मत्याभुक्ताचरेत्कृच्छ्रंरेतोविण्मूत्रमेवच महापातकयुक्तस्यसूतिकस्यतथैवच ११ भुक्तान्नंचर्म्मकारस्यमत्याकृच्छ्रंचरेद्द्विजः चांडालश्वपचान्नंचभुक्ताचांद्रायणंचरेत् १२ अंतश्चतुर्थीप्रेतान्नं गवाघ्रातंतथैवच शूद्रोच्छिष्टंगुरूच्छिष्टंसूतिकान्नंतथैवच १३

तेलीका अन्न ९ और शूद्रका अन्न और ब्राह्मण कर्के नहिं निमंत्रिण कियायो अन्न एहयो संपूर्ण कहेहैं इनके वीचमें एककाभी अन्न भोजन कर्के तीन दिन निरा हार व्रत करे १० और जाणकर्के बुद्धि पूर्वक वीर्य्य विष्टा मूत्र इनकों भोजन कर प्राजापत्य व्रत करे और जाण कर्के महापातक कर्के युक्तयोहै और सूतकीयोहै ११ और चर्म्म कार जोहै इनके अन्नकों द्विज भोजनकरे तव कृच्छ्र व्रतकों करे चांडाल और श्वपच क्या कुत्तेको भोजन करणे वाला इनके अन्नकों भोजन कर्के चांद्रायण व्रतकों करे १२ अंतश्चतुर्थी योप्रेतान्नहै अर्थात् मृतके चार दिनके अंदर जो अन्न और गवा घ्रातक्या गोकर्के सिंगआयो अन्न और शूद्रका उच्छिष्टयो अन्न और गुरोंका उच्छिष्ट यो अन्न और तिसी प्रकार सूतिका स्त्रीका यो अन्न ॥ १३ ॥

इनकों भोजनकर्के तिसपापके दूरकर्णेके निमित्त तप्तकृच्छ्रव्रत कोंकरे और ब्राह्मणके सूतकमें द्विजभोजनकरे तद सांतपनव्रतकोंकरे १४ और जब क्षत्रियोंके सूतकमें भोजनकरे तब कृच्छ्रव्रत योप्राजापत्य तिसकोंकरे और वैश्योंके सूतकमें ब्राह्मण भोजनकरे तब तप्त कृच्छ्रव्रतकरे ॥ १५ और शूद्रके सूतकमें ब्राह्मणभोजनकरे तव चांद्रायण व्रतको करे योंजिसके सूतकमें भोजनकर्त्ता है जितना पर्यंत उसको सूतकहै इतना काल भोजन करणेवाला अपवित्रहोताहै । हेराम इत नाचिर उसकों सूतक कहाहै ॥ १६ ॥ तस्येति ॥ योंजिसकें सूतकमें भोजनकरे जब उसका सूतक दूरहोजावे अर्थात् वितीत जावे तव ओहो भोजन करणे वाला प्रायश्चित्तकोंकरे आप णेतें श्रेष्ठके सूतकमें भोजन करे तब एक दिन भोजन नहिंकरे अर्थात् प्रायश्चित्तके निमित्त एक

यानितु गुरुवद्गुरुपुत्रःस्यादन्यत्रोच्छिष्टभोजनात् उच्छिष्टमगुरोरभोज्यमि त्यादीनितानिपित्रादिमुख्यगुरुविषयाणिज्ञेयानि ॥ तप्तकृच्छ्रंतुकुर्वीतत स्यपापस्यशांतये भुक्त्वातुब्राह्मणाशौचेचरेत्सांतपनंद्विजः ॥१४ ॥ भुक्त्वा तुक्षत्रियाशौचेतथाकृच्छ्रंविधीयते वैश्याशौचेतथाभुक्त्वातप्तकृच्छ्रंसमाचरेत् । १५ । शूद्राशौचेद्विजोभुक्त्वातथाचांद्रायणंचरेत् अशौचेयस्ययोभुंक्तेसो प्यशुद्धस्तथाभवेत् १६ तावद्यावदशौचंतुतस्यरामप्रकीर्त्तितम् ॥ १६ त स्याशौचव्यपगमेप्रायश्चित्तंसमाचरेत् भुक्तोत्तमस्यचाशौचेक्षपेतदिवसं तथाइति १७ तथाचकूर्मपुराणे ॥ भुक्त्वाचैवनवश्राद्धेसूतकेमृतकेपिवा च। द्रायणेनशुद्ध्येतब्राह्मणः सुसमाहितः १ अभोज्यानांतुसर्वेषांभुक्त्वाचान्न मुपस्कृतंअंतेवसायिनांचैवतप्तकृच्छ्रेणशुद्ध्यति २ चांडालानांद्विजोभुक्त्वास म्यक्चांद्रायणंचरेत् बुद्धिपूर्वंतुकृच्छ्राद्धंपुनः संस्कारएवच ३ असुरामद्यपा नेनकुर्य्याच्चान्द्रायणंव्रतम् ॥ अभोज्यान्नंहिभुक्त्वाचप्राजापत्येनशुद्ध्यति ४

दिनव्रतकरे १७ तैसेंहिंकूर्म्म पुराणमें कहाहै भुक्त्वेति । नव श्राद्धमें भोजनकर्के और सूतकमें और मृतकमें भोजन करणेकर ब्राह्मण सावधान चित्त हुया चांद्रायण व्रत कर्के शुद्ध होताहै १ अभोज्येति संपूर्ण यो अभोज्यहैं जिनका अन्न भोजन कर्णानाहिं किहा तिनका अन्न भोजन कर्के और अंतेवसायियोहैं चांडालादि तिनका अन्न भोजन कर्के तप्त कृच्छ्र यो व्रत तिसकर्के शुद्ध होताहै ॥ २ ॥ चांडालानामिति और द्विज चांडालोंका अन्न भोजन कर्के अच्छी प्रकार चांद्रयण व्रतकोंकरे और जो बुद्धि पूर्व क्या जान कर्के भोजन करे तव आधा कृच्छ्रकरे और फेर संस्कार करे तव शुद्धहोताहै ॥ ३ ॥ और सुराभिन्नयो मद्यपान तिसके करणेकर चांद्रायण व्रतकोंकरे नहिभोजन करणेयोग्ययो अन्नतिसको भोजनकर्के प्राजापत्यव्रत कर्के शुद्धहोताहै ४

और शूद्रके जूठकों ब्राह्मण भोजन कर्के चांद्रायण व्रतकों करे और कुत्तेका जूठा ब्राह्मण भोजन कर्के तीन रात्र व्रत करणे कर शुद्ध होताहै ॥ ५ ॥ महापातकीति महापातकीयेहैं ब्रह्महत्यादिके करणे वाले तिनके संसर्गमें मूढ बुद्धि जान कर्के भोजन करणे कर स्नान कर्के तप्त कृच्छ्र व्रतकों करे तब शुद्ध होताहै ॥ ६ ॥स्पृष्ट्वेति महापातकी येहि तिसकों स्पर्शकर्के और चांडालकों स्पर्श कर्के और रजस्वलास्त्रीकों स्पर्श कर्के प्रमादतें भोजन करणे कर तीनरात्र कर्के शुद्ध होताहै अर्थात् तीन रात्र व्रत करे ॥ ७ ॥ और जो बुद्धि पूर्व कया जाण कर्के इनके साथ स्पर्श कर्के भोजन करे सो कृच्छ्र व्रत जोहै प्राजापत्य तिस कर्के शुद्ध होताहै एह भगवान् ब्रह्माजीका वचनहै शुष्केति शुष्क और वासी और गवादिघ्रातयो अन्नहै तिसकों भोजन कर्के निराहार व्रतकों करे अथवा प्राजा पत्य व्रतका चतुर्थांश करे ॥ ८ ॥ और वर्षके अंत

शूद्रोच्छिष्टंद्विजोभुक्त्वाकुर्याच्चांद्रायणव्रतं शुनोच्छिष्टंद्विजोभुक्त्वात्रिरात्रेण विशुध्यति ॥ ५ ॥ महापातकिसंसर्गेभुक्त्वास्नात्वाद्विजोयदि बुद्धिपूर्वं तुमूढात्मातप्तकृच्छ्रंसमाचरेत् ॥ ६ ॥ स्पृष्ट्वामहापातकिनंचांडालंवा रजस्वलां प्रमादाद्भोजनंकृत्वात्रिरात्रेणविशुद्ध्यति ॥ ७ ॥ बुद्धिपूर्वंतु कृच्छ्रेणभगवानाहपद्मजः ॥ शुष्कपर्युषितादीनिगवादिप्रतिदूषितं भुक्त्वोपवासंकुर्वीतकृच्छ्रपादमथापिवा ८ संवत्सरांतेकृच्छ्रंतुचरन्विप्रःपुनःपुनः अज्ञातभुक्तशुद्ध्यर्थंज्ञातस्यतुविशेषत इति ९ विष्णुधर्मोत्तरे।अपांक्त्यानां तुयःपंक्त्यांभुंक्तेकश्चिद्द्विजोत्तमः अहोरात्रोषितोभूत्वापंचगव्येनशुद्ध्यति चंद्रार्कग्रहणेभुक्त्वाद्विजश्चांद्रायणंचरेत् इति१ वाराहपुराणेचतुर्विंशत्यधिकशताध्याये विष्णुपूजाविहीनानांराज्ञामन्नभक्षणे प्रायश्चित्तकथनम्॥वाराहउवाच शुद्धाभागवताभूत्वाममकर्मपरायणाः येतुभुंजंतिराजान्नंलोभेनच भयेनच॥ १ ॥

में ब्राह्मण वारंवार अज्ञान कर्के यो भोजन किया अथवा विशेष कर्के जान कर्के यो भोजन किया तिसोकी शुद्धिके निमित्त कृच्छ्रयो प्राजा पत्य व्रत तिसको करे ॥ ९ विष्णुधर्म्मोत्तरमें किहाहै जिनकी पंक्तिमें भोजन करणा नहियोग्य उनकी पंक्तिमें जो द्विजोत्तम भोजन कर्ताहै सो दिन रात्र निराहार व्रतकर्के और पंचगव्य पान कर्के शुद्ध होताहै और चंद्रमा अर सूर्यके ग्रहणमे भोजन कर्के द्विज चांद्रायण व्रतको करे १अब वाराह पुराणके एक शत चौविये १२४ अध्यायमें विष्णु पूजा कर्के रहित योराजाहैं तिनके अन्न भोजन करणेमे प्रायश्चित्त वाराह भगवान् पृथ्वीकों कहतेहैं हेपृथ्वि शुद्ध भागवतहोय कर्के और मेरे पूजादिमें तत्पर योहैं और लोभ कर्के और भय कर्के १

राजान्नकों योभोजन कर्त्तेहैं आपदाकों प्राप्त होय कर्के वी योराजाकें अन्नकों भोजन कर्त्तेहैं सो मनुष्य दश १०००० हजार वर्ष नरकोंमें पचतेहैं २ जवएहभगवान्जीका वचन सुना तव सुनकर्के पृथिवी कांपिती भयी अर्थात् वडेभय कर्के युक्त होतीभई दीनानीति तव नारायणका वचन सुनकर सात ७ दिन चपुनः दशदिन १० पृथ्वीको वडाभय होता भया ३ ॥ तिसतें उपरंत दीन मना होय कर्के पृथ्वी धारयाहै व्रत जिसनें सो संपूर्ण लोकों कों हितके करणे वाला योमधुर वचन सो कहिती भयी ४ ॥ पृथ्वी कहितीहै हेभगवन् तुमयथार्थ कर्के मेरा वचन सुनों योतुमनें किहाहै राजाका अन्न नहि भोजन करणा तव राज योंकों क्या दोषहै सो तुममेरे को कथन करणे योग्यहै ५ । तव भूमिका वचन सुनकर्के संपूर्ण

आपद्गताहिभुंजीरन्राजान्नंतुवसुंधरे दशवर्षसहस्राणिपच्यंतेनरकेनराः२
भगवद्वचनंश्रुत्वाकंपिताचवसुंधर दिनानिसप्तदशचभयंतीव्रंप्रजायते ३ त
तोदीनमनाभूत्वासामहासंशितव्रता उवाचमधुरंवाक्यंसर्वलोकसुखावहम्४
धरण्युवाच शृणुतत्त्वेनमेदेवयत्त्वयाह्यदिवर्त्तते कोनुदोषोहिराज्ञांतु तन्मेत्वं
वक्तुमर्हसि ५ ततोभूमिवचः श्रुत्वासर्वधर्मविदांवरः प्राहनारायणोवाक्यं
धर्मकामांवसुंधराम् ६ वाराहउवाच शृणुसुंदरितत्त्वेनगुह्यमेतदनिंदिते रा
जान्नंतुनभोक्तव्यंशुभैर्भागवतैःसदा ७ यद्यप्येणसमांशेनराजालोकेप्रवर्त्त
ते राजसंतामसंवापिकुर्वन्कर्मसुदारुणम् ८ अपिवागर्हितंतेनराजान्नंतुव
सुंधरे धर्म्मसंधारणार्थायनतुमेरोचतेभुवि ९ ततोन्यत्संप्रवक्ष्यामितच्छृणो
षिवसुंधरे यथाराज्ञांतुभोज्यंवैशुद्धैर्भागवतैःशुभैः १०

धर्म्मोंके जाणनें वालयोंमें श्रेष्ट यो नारायण भगवान् सो धर्म्म कामा यो पृथ्वी तिसकों कहतेहैं ६ । वाराहःहेसुंदरि हेअनिंदिते गुह्ययो धर्म्म सोतूं यथार्थ कर्के मेरेतें श्रवण कर हेभूमि सुंदर जो भगवान् जीके भक्तहैन तिनोंनें राजाका अन्ननहि भोजन करणे योग्यहै७ । जद्यपिराजा समांश कर्के वर्त्तताहै क्यासंपूर्णमें तुल्यवर्त्तताहै तवभी राजस और तामस योदारुण कर्म्म तिनकों कर्त्ताहुआ वर्त्तताहै ८ । इसकर्के हेवसुंधरे राजाका अन्ननिंदितहै धर्म्मके अछी प्रकारधारणके वास्ते मेरेकों पृथ्वीमें राजान्नका भक्षणनहिरुचताहै अर्थात् अछा नहिं लगताहै ९ । तिसतें और में तेरे कों कहिता हां हेपृथ्वि सोतूं श्रवण कर जैसें शुद्ध भगवान्के भक्तों को जिनों राजयों का अन्न भोजन करणे योग्यहै ॥ १० ॥

हेदेवि विधि दृष्टयो कर्म्म तिस कर्के मेरेकों स्थापन कर्के धन और धान्य इनों कर्के समृद्ध यें हैं तिनकों दान कर्के भगवान के योभक्तहैं तिनोंनैंवी ॥११॥भागवत योहैं भक्त तिनों कर्के सिद्ध यो अन्न मेरेनैंवेद्य का शेष हेवरारोहे हेपृथ्वि उस अन्न कों यों भोजन कर्ताहै सो पाप कर्के नहिं लिप्त होता॥१२॥ प्रापणनाम नैवेद्यकाहै एवमिति॥ इसप्रकार विष्णु का वचन सुण कर्के धारयाहै व्रत जिसनें सो पृथ्वी वाराहरूपी यो भगवान् तिनकों फेर कहती भई॥१३॥ पृथ्वी कहतीहै॥हेभगवन् हेजनार्दन शुद्ध योभक्तहैं और पवित्र सो राजाका अन्न भोजन कर्के किस कर्म्म कर्के शुद्ध होताहे सो तुम मेरेकों कहो॥१४॥वाराह जीकहतेहै॥हेदेवि हेभीरू यो तूं मेरेकों कहितीहैं सो यथार्थ कर्के सुण जिस कर्के राजा का अन्न भोजन करणें वाले पुरुष तरतेहैं अर्थात् पापतें शुद्ध होतेहै॥१५॥एक चांद्रायण व्रत कर्के और वडा पुष्कल तप्त कृच्छ्र

स्थापयित्वातुमांदेविविधिदृष्टेनकर्मणा धनधान्यसमृद्धानिदत्वाभागवतेरपि ११सिद्धंभागवतैश्चान्नंममप्रापणशेषणंभुंजानस्तुवरारोहेनसपापेनालिप्यते१२प्रापणशेषणंनैवेद्यांशः।एवंविष्णुवचःश्रुत्वाधरणीसंशितव्रता वाराहरूपिणंदेवंप्रत्युवाचवरानना१३धरण्युवाच राजान्नंतुततोभुक्त्वाशुद्धोभागवतः शुचिःकर्मणाकेनशुद्ध्येततन्मेब्रूहिजनार्दन।१४।वाराहउवाच।शृणुतत्वेनमेदेवियन्मांत्वंभीरुभाषसे तरंतिमनुजायेनराजान्नमुपभुंजत।मू१५एकंचाद्रयणंकृत्वातप्तकृच्छ्रंचपुष्कलं कुर्यात्सांतपनंचैकंशीघ्रंमुंचतिकिल्बिषात१६ भुक्त्वावैराजसान्नानिइमंकर्म्मसमारभेत् नतस्यैवापराधोऽस्तिवसुधेवचोमम ॥ १७॥ एवमेवनभोक्तव्यंराजान्नंतुकदाचन ममार्त्तप्रियकामाययदीच्छेत्परमांगतिमिति ॥ १८ ॥ विष्णुधर्मोत्तरे लशुनंगृंजनंचैवपलांडुमद्यमेवच लशुनादिसमंचैवगंधनमनुजोत्तम ॥ १ ॥

व्रत कर्के और एक सांतपन व्रत करे तब शीघ्रराजाके अन्न भोजन करणेका यो पाप तिसतें दूर होताहै॥१६ अर हे वसुधे राजा के अन्नोंकों भोजन कर्के एह जो कर्म्म किहा चांद्रयण तप्त कृच्छ्र सांतपन इनकों करे तब उसकों अपराध क्या पाप नहिंहै एह मेरावचनहै १७इसी प्रकार राजा का अन्न किसीनें मेरे भक्तनें कदाचित् नहि भोजन करणे योग्य यो मेरे मेंप्रेमके करणे वाला और परम गति कों योचाहिताहै॥तिसने राजा का अन्न नहिं भोजन करणा॥१८॥विष्णु धर्म्मोत्तरमें किहा लशुन मिति॥लशुन क्या थोम और गृंजन क्या गोगलू गाजरां पलांडु क्या गंडा और मद्य एह योहैंलशुनके वाग वरहैं सुगंध कर्के हेमनुष्योंमे श्रेष्ट इन लशुनादियोंकों भोजन कर्के चांद्रायण व्रत कों करे॥ १ ॥

और तिसी प्रकार कच्चामांस खाणे वाले योमृगादिहैं तिनका मांस खाय करके वी चांद्रायणव्रतक रे॥लोहीति लाल वर्णके यो वृक्षोंके गूंदहैं और व्रश्चन प्रभव योवृक्ष अर्थात् पीडंदी करेहुये संगतेर इत्यादि॥२॥और लसूडे वहुवारकफल और गव्यपी यूष नवीन प्रसूता यौगौ दश पत्र के मध्य उसके दूधका पीना और विषयो दुर्गंधिरस और श्लेष्मांतक और मृत्तिका और विना नैवेद्यादि कृसर क्या खिचडी और संयाव क्या यवोंके आटेका घृत खंड मिश्रित भक्ष्य वि शेष और पायस और पूडे और सुचियां इनकों ब्राह्मणादिके भोजन करवाये विना भोजन करे तवभी चांद्रयण व्रतकों करे ॥३॥कूर्म पुराणमें किहाहै वार्त्ताकमिति॥वार्त्ताकक्या कंटकारी शाक और भूस्तृण क्या शाक विशेष रोहिकर्णीति और सुहांजना और कूष्मांड क्या पेठा और करक लड्वानाम पक्षि विशेष और शंख क्या अस्थि और कुंभिकादि शाक विशेष

भुक्त्वाचांद्रायणंकुर्यान्मासंक्रव्यभुजस्तथा लोहितान्वृक्षनिर्यासान्व्रश्चनप्र भवांस्तथा॥२॥शेलुंगव्यंचपीयूषंविपंश्लेष्मांतकंमृदम् वृथाकृसरसंयावपा यसापूपशष्कुलीइतिपीयूपोभिनवंपयइत्यमरः॥विपंदुर्गन्धिरसः वृथेतिश्र निवेदितं संयावोयवपिष्टविकारोभक्ष्यविशेषः स्पष्टमन्यत्॥कूर्मपुराणे॥वार्ता कंभूस्तृणंशिग्रुंकूष्मांडंकरकंतथाप्राजापत्यंचरेज्जग्ध्वाशंखंकुंभिकमेवच।१। पलांडुंलशुनंचैवभुक्त्वाचांद्रायणंचरेत् नालिकांतंडुलीयंच प्राजापत्येनशुद्ध्य ति॥२॥ वृथाकृसरसंयावंपायसापूपशष्कुलीः भुक्त्वाचैवंविधंत्वन्नंत्रिरात्रेणवि शुद्ध्यति॥३॥वार्त्ताकंकंटकारीशाकं॥भूस्तृणंकरकं लड्वानामापक्षिविशेषः शंखोऽस्थि कुंभिकादिशाकविशेषः स्पष्टमन्यत्॥चक्रवाकादिमांसभक्षणप्रा यश्चित्तंविष्णुध ०

इनको भोजन करके प्राजापत्य व्रत करके शुद्ध होताहै॥१॥गंडे और लसुन इनकों भोजन क रके चांद्रायण व्रतकों करे नालिकायो शाक विशेषहै और तंडुलीययो शाक विशेष इनकों भक्षण करके प्राजापत्य व्रत करके शुद्ध होताहै॥२॥और ब्राह्मणादिके पूजनतें विना योमनुष्य कृस र और संयाव और पायस और अपूप और शष्कुली इस प्रकारके अन्नकों भोजन कर्त्ताहै सो त्रिरात्र व्रत करके शुद्ध होताहै कृसरादिका अर्थ पहलें कथन कर दियाहै॥३॥अव चक्र वाका दि योपक्षीहैं तिनके मांस भक्षणका प्रायश्चित्त विष्णु धर्म्मोत्तरमें कहितेहैं ॥

चक्रवाकमिति चक्रवाक योहै चकोर पक्षी प्लव नाम योपक्षीविशेष जलचर पक्षि मात्र और हंस टिटिभनाम पक्षी टिटीउरी और मद्गुनाम पक्षि विशेष और काक और उल्लूक और तोता और भासनाम पक्षी और दात्यूह यो विर्वाहा और शारिका क्या मैना ॥ १ ॥ और बकक्या बगुला और बाज और बगुलेकी स्त्री इनकों भोजन करके षट् रात्र व्रतकों करे और कसाईके मांसकों यो भोजन करे तब बी तिसीप्रकार षट्रात्र व्रतकरे ॥ २ ॥अज क्यावकरा और भेड और सूकर और फोग और महिष और रुरु नामक मृग विशेष और न्यंकु नामक मृग विशेष और हरिण और गवययोहै इनकों भक्षण करके और जो मृगहै तिनकों भक्षण करके तीन दिन निराहार व्रतकों करे ॥ ३ ॥ क्रव्यादयोहैं कच्चा मांसखाने वाले मृगादि और ग्राम्य

चक्रवाकंप्लवंहंसंटिट्टिभंमद्गुमेवच काकोलूकंशुकंभासंदात्यूहंकारिकांतथा १ बकश्येनबलाकांश्चभुक्त्वाषड्रात्रमाचरेत् उपवासस्तथाकार्यः सूनामासाशनेभवेत् २ अजाविकान्वराहांश्चपृषतान्माहिषांस्तथा रुरुंन्यंकुंतथैणांश्चगवयांश्चैवभक्षयेत् ३ भुक्त्वामांसमतोन्यस्यत्र्यहंतिष्ठे द्बुभुक्षितः क्रव्यादशूकरोष्ट्राणांगोमायोः कपिकाकयोः ४ गोनराश्वखराणांचनोक्ताःपंचनखाश्चये मांसंचकौंजरंभुक्त्वातप्तकृच्छ्रेणशुद्ध्यति ५ ग्रामकुक्कुट छत्राकौभुक्त्वाचांद्रायणंचरेत् केशकीटविपन्नेपि पिबेद्ब्राह्मींसुवर्चलामिति ६ शूकरोऽत्रग्राम्यः॥कूर्मपुराणेनरादिमांसभक्षणप्रा०नरमांसाशनंकृत्वाचांद्रायणमथाचरेत् काकंचैवतथाश्वानंजग्ध्वाहस्तिनमेवच १ वराहंकुक्कुटंचाथ तप्तकृच्छ्रेणशुद्ध्यति

शूकरयोहैं और ऊठ और गिद्दड और वानर और काक ५ और गौः और मनुष्य और घोडा और खोता और नहिकहेयो पंचनखभक्ष और हाथीकामांसइनकों भोजनकरके तप्तकृच्छ्र यो व्रत तिस करके शुद्धहोताहै ॥ ५ ॥ ग्रामकुकुट और छत्राकक्या छतडीयां इनकों भोजन करके चांद्रायण व्रतकों करे और केशयोहैं शिरकेबाल और कीटयोहैं कीडे इनों करके युक्त बी जो अन्न तिस अन्नके भोजनमें ब्राह्मीसुवर्चलायोबूटी तिसकों पानकरे ६ कूर्मपुराणमें नरादिमांस भक्षणका प्रायश्चित्त कहतेहैं नरेति मनुष्यके मांसको भक्षण करके चांद्रायण व्रतकों करे काक और कुत्ता और हाथी ॥ १ ॥ और विड्‌ वराह और ग्राम्य कुकुट इनकों भक्षण करके तप्तकृच्छ्र यो व्रत तिस करके शुद्धहोताहै ॥

क्रव्यादयोहैं कच्चामांस खाणे वाले तिनके मांसको खायकर्के विष्टा और मूत्र॥२॥और गौ क्या गौके सदृशपशु गवयादि और गीदड और कबूतर इनके मांसको खाय कर्के वीपूर्वकिहायो तप्त कृच्छ्र व्रत तिसीको करे। और बारां दिन निराहार व्रत कर्के कूष्मांड योमंत्र हैं तिनो कर्के घृतको हवन करे॥३॥नकुल और उल्लूक और मार्जार इनको भोजन कर्के सांतपन व्रतको करे श्वापदयो मृग विशेषहै कुत्तेकीन्याई पैर जिसके और ऊंठ और खोता इनको खाये कर्के तप्त कृच्छ्र व्रत कर्के शुद्ध होताहै॥४॥और व्रतकीन्याई पूर्व कथन करीयो विधि तिस कर्के संस्कारको करे बकोयोहै बलाका और हंस और कारंडव पक्षिविशेष बगलेकाभेद॥५॥ और चकोर और प्लव कर्के जलके पक्षी इनको भोजन कर्के बारां दिन भोजनको नहिं करे कबूतर और टिट्टिभ नाम पक्षि विशेष और तोता और सारसपक्षी और उल्लू और जालपा

क्रव्यादानांचमांसानिपुरीषंमूत्रमेवच २ गोगोमायुकपोतानांतदेवव्रतमाचरेत् अत्रगोपदंगोसदृशपशुपरं प्रायश्चित्तस्याल्पत्वात् उपोष्यद्वादशाहंतु कूष्मांडैर्जुहुयाद्घृतं ३ नकुलोलूकमार्जारंजग्ध्वासांतपनंचरेत् श्वापदोष्ट्रखरंजग्ध्वातप्तकृच्छ्रेणशुद्ध्यति ४ व्रतवच्चैवसंस्कारंपूर्वेणविधिनैवतु वकांचैवबलाकांचहंसंकारंडवंतथा ५ चक्रवाकंप्लवंजग्ध्वाद्वादशाहमभोजनं कपोतंटिट्टिभंचैवशुकंसारसमेववा ६ उलूकंजालपादंचजग्ध्वाप्येतद्व्रतंचरेत् ६ शिशुमारंतथावीरंमत्स्यमांसंतथैवच जग्ध्वाचैवकठाहाकमेतदेवव्रतंचरेत् ७ वीरंतंत्रोक्तकुलाचारलब्धं कठाहाकोदात्यूहः पक्षी॥मृतपंचनखादिदूषितकूपादिजलपानेप्राय. मृतपंचनखात्कूपादमेध्येनसकृद्युतात् अपः पीत्वात्र्यहंतिष्ठेत्सोपवासोद्विजोत्तमः १ द्विदिनंक्षत्रियस्तिष्ठेदकाहंवैश्य एवचनक्ताशीचतथाशूद्रः पंचगव्येनशुद्ध्यति २ ॥

द जालकीन्याई पैर जिसके इनको खाय कर्केवी पूर्वकिहायो व्रत तिस व्रतको करे६वा शिशुमारजो जल चरजीव और बीर क्या तंत्रोक्त कुलाचारकर्के लब्ध यो अन्नादि और तिसीप्रकार मत्स्य मांस और कठाहाक क्या दात्यूह पक्षी इनको खाय कर्के वी पूर्वोक्त व्रतको करे ॥ ७ अबमृत पंचनखादि कर्के दूषित यो कूपादि तिसके जलपीनेमें प्रायश्चित्त कहितेहैं मृतहोयाहै पंच नखादि जिसकूपमे और अमेध्य यो विष्टादि तिनो कर्के युक्त यो कूपादि तिसते एकवार जलपीनेकर तीनदिन निराहार व्रतकरे ब्राह्मण तब शुद्धहोताहै ॥ १ ॥ क्षत्री दोदिन व्रतकरे और वैश्य एक व्रतकरे और शूद्र उसकूपका जलपीयके नक्त भोजन करे और पंचगव्य पान करे तब शुद्धहोताहै॥ ॥ २ ॥

और शुक्त योहैं अम्ल कांजिकादि और कषाययोहैं तिनकों पानकर्के और अमेध्य योहैं अपवित्र वस्तु तिनकोंपान कर्के द्विज इतना पर्यंत पाप युक्त होताहै जितना पर्यंत ओाहि अन्नादिहैठ नाहिभया अर्थात् पचयानाहिं॥३॥एहशुक्त अर कषायवहुत दिनोंके लणे अवविष्णुधर्मोत्तरमेकहितेहैं सरावके भांडेमैं प्राप्तयोजल उसको योब्राह्मण मोहकर्के पानकरे तवशंखपुष्पी बूटीकर्के काडयागो दूधउसकों तीनदिन पानकरे॥१और सरावके भांडेमैं पडा योजल तिसकों पीयकरके तैसेंहि सातरात्र पर्यंतपानकरे और शूद्रके जूठे योजलहैं तिनकों पानकर्के पांचरात्र शंखपुष्पी कर्के काडयायो दूध तिसकों पानकरे२फेर विष्णु धर्मोत्तरमे हिकिहाहै गौआं औरम

शुक्तान्यपिकषायांश्चपीत्वामेध्यान्यपिद्विजः तावद्भवत्यप्रयतोयावत्त्वन्नंव्रजत्यधइति३वहुदिनीयानि विष्णुधर्मोत्तरे मद्यभांडगतामोहात्पीत्वाचापो द्विजोत्तमः शंखपुष्पीशृतंक्षीरं पिवेत्तुदिवसत्रयम्१ सुराभांडगताः पीत्वासप्तरात्रंतथापिवेत् शूद्रोच्छिष्टास्तथापीत्वापंचरात्रंतथापिवे दिति २पुनस्तत्रैव गवांचमहिषीणांचवर्जयित्वातथाप्यजां सर्वक्षीराणिवर्ज्यानितेषां चैवाप्यानिर्दिशम्१ स्यंदन्यमध्यभक्षायाविवत्सायाश्चवर्जयेत् दधिवर्ज्जंच शुक्तानिसर्वाणिपरिवर्जयेत् २ शुभैः पुष्पफलैर्यानिभक्ष्यैरभिपुतानितुइति॥शुभंपुष्पफलादिकृतानिअभिपुतानि कांजिकानि शुक्तान्यपिनपरिवर्ज्जनीयानीति तुशब्दार्थः॥ भक्ष्यैरभिपुतानिनो इतिपाठान्तरम् ॥ शुक्तत्वंच वहुदिनातिक्रमणेनाम्लत्वाद्याश्रयत्वम् उपपातकप्राश्चित्तंविष्णुधर्मोत्तरे।उपपातकसंयुक्तोगोघ्नोमासंयवान्पिवेत् कृतवापनोवापिवसेच्चर्मणातेनसंवृतः१

हिषीयां और वकरियां इनके दूधकों छोडकरके संपूर्ण दूध वर्जेहैं और तिनकाभी दूध दश दिन पर्यंत वार्जितहै २ और स्पंदिनी क्या गर्भकी इच्छावाली योगौः और अमेध्य भक्षा योगौ और विवत्सा योगौ तिनके दूधकोत्यागे और दधितें विना संपूर्ण योशुक्त अम्ल वस्तु तिनकों नाहिभोजन करे २ शुभयोपुष्प और फल तिनों कर्के यो कांजिकहै सोभक्ष्यहैं तिनकोंनहिंत्यागे इनातें जोकोई होरहोवे सोत्यागने योग्यहै उपपातक प्रायश्चित्त विष्णुधर्मोत्तर में किहाहै गौकीहत्या योहै सोउपपातकहै गौकीहत्याके करणे वाला एकमहीना यवजोहैं तिनकों काडकर्के पानकरे और मुंडन करायकर्के गौके चर्मकों,ऊपरधार कर्के वासकरे १

और चतुर्थकाल योहै तिसमें क्षार और लवण योहै तिनोंतें विनाथोडे प्रमाणका भोजन करें और जिनेंद्रीहोयकर्के दोमहीने गोमूत्रकर्के स्नानकरें॥२॥और दिनमें गौआं जववनकोंजावें तव उनके पीछे जावे खडाहोयकर ऊपर कीयो धूडहै आकाशकी तिसकोंपान करे॥इसप्रकार गौआंकोसिवाकर्के और नमस्कार कर्के रात्रिमें वीरासन योहै खडहोये कर्के गौओंकीरक्षाकरणी तिसकों करे॥३॥और जव गौआं खडिआंहोजामें तव आप भीखडा होवे और जव गौआं चलें तव उनके पीछे चले और जववैठें गौआं तवआपभी नियमकर्के दूर होयामत्सर जिसका सोवैठे॥४॥ और रोगिनी योगौ और अभिक्काक्या चोर व्याघ्रादि भयोंकर्के भीताहै अथवा गौघातीयोहै तिनों कर्के ग्रहण करी योगौः अथवा गिडपडी योगौः अथवा चिकड में गिडी योगौ तिसकों संपूर्णप्राणों कर्के रक्षाकरे अर्थात् इनोंउपद्रवोंसें गौ

चतुर्थकालमश्नीयादक्षारलवणंमितं गोमूत्रेणाचरेत्स्नानंद्वौमासौनियतेंद्रियः॥२॥दिवानुगच्छेत्तागाश्चातिष्ठन्नूर्द्ध्वरजःपिवेत् शुश्रूषित्वानमस्कृत्वारात्रौवीरासनंचरेत्॥३॥तिष्ठंतीष्वनुतिष्ठेत्तुव्रजंतीष्वप्यनुव्रजेत् आसीनासुतथासीननियतोवीतमत्सरः॥४॥आतुरामभिक्तांचचोरव्याघ्रादिभिर्भयैः पतितांपंकमग्नांवासर्वप्राणैर्विमोक्षयेत् ५अभिपिक्तांचोरादिजैर्भयैर्भीतांगोघातीभिर्गृहीतांवा॥उष्णेवर्षातिशीतेवामारुतेयातिवाभृशम् नकुर्वीतात्मनस्त्राणंगोरकृत्वात् शक्तितः६आत्मनोयदिवान्येषांगृहेक्षेत्रेथवाखले खादमानांनशंसेत पिवंतंचैववत्सकम्॥७॥वृषभैकादशागास्तुदद्याद्विचरितव्रतः अविद्यमानेसर्वस्वंवेदविद्भ्योनिवेदयेत्॥८॥वंधनेरोधनेवापियोजनेचगवांरुजा भवेद्वामरणंयत्रनिमित्तेनत्रलिप्यते॥९॥ पादमेकंचरेद्रोधेद्वौपादौवंधनेचरेत्

कोंछुडावे॥५॥और धूपमें और वर्षामें और शीतमें और वहुतपवनके चलते हुये शक्तिकर्के गौकी रक्षाकिये विना आपणी रक्षाकोंनाहिकरे॥६॥और आपणेवा औरोंके घर अथवाक्षेत्रअथवाखलाडे खातीयोगौ तिसकों नहिहटावे और दूधपान कर्तायोवच्छा तिसकों नाहटावे॥७॥ और इसप्रकार धारेहै व्रतजिसने सोतिस गोहत्याके पापके दूरकरणेके निमित्त दशगौआं और एकवृषभ दानकरे अथवाएहनाहिं होयसके तव वेदोंकों जानणेवालायोहैं तिनांके तांई सर्वधनस्व दानकरदेवे॥ ८ ॥वांधवांमें और रोकणेमें और योजनमें। जिस निमित्तमेंरोगकर्के गौआंका मरण होवे तहां वंधनादिके करणे वाला पाप कर्केयुक्त होताहै।९।सोकहितेहैं गौआं को रोकणेमें एक पाद पूर्वोक्त व्रतकों करे और योवंधन मेंगौः मृत होजावे तव दोपाद पूर्वोक्त व्रत को करे ॥ अर्थात्

आधा पूर्वोक्त व्रत करे) और हलादिमें योजनमें योमृतहोजावे तव पादोन व्रतकों करे और इनों निमित्तोंथें विना गौके निपातनमें संपूर्ण व्रतकों करे क्या योपूर्व किहा सो संपूर्णकरे १० वनोंमें और कठिन स्थानोंमें और विषम भोजनमें जोगो मृतहोजावे तद पूर्वोक्त व्रतका एक पाद प्रायश्चित्त करणा ११ घंटा योगोके गलमें पाणा तिस दोष कर्के मृतहोजावे तव आधा प्रायश्चित्तकरे और दमनमें और वाहनमें और रोधमें और गड्डेमेंयोडनेमें और नासिकामें रस्सी पाणेमें पूर्वकिहायो व्रत सो पादोनकरे १२ और वंधनमें और रोकणेमें वहुतिओं गोओंके मरणमें और मिथ्या औषधके करणमें पूर्वोक्त यो गोहत्याके निमित्त व्रत सो द्विगुण करे अर्थात् दूणा प्रायश्चित्त करे १३ शृंग भंगमें और अस्थि भंगमें और पुच्छके छेदनेमें जितना पर्यंत गौ

योजनेपादहीनंस्याच्चरेत्सर्वंनिपातने १० कांतारेष्वथदुर्गेषुविषमेखादनेपिच यदितत्रविपत्तिःस्यादेकपादोविधीयते ११ घंटाभरणदोषेतुतथैवार्धंविनिर्दिशेत् दमनेवाहनेरोधेशकटस्यचयोक्रणे१२नस्तःशकलपाशेपुमृते॰ पादोनमाचरेत्१२नस्तःशकलपाशोनासारजुपातः।व्यापन्नानांवहूनांतुवंधनेरोधनेपिवाभिषङ्मिथ्याचरंश्चेहद्विगुणंगोव्रतंचरेत् १३ शृंगभंगेस्थिभंगेवालांगूलच्छेदनेपिवा यावर्कतुपिवेत्तावद्यावत्स्वस्थातुगौर्भवेत्१४एकाचेद्बहुभिर्दैवाद्यत्रव्यापादिताभवेत् पादंपादंतुहत्यायाश्चरेयुस्तेपृथक्पृथक्१५यंत्रणेगोचिकित्सायांमूढगर्भविमोक्षणे यदितत्रविपत्तिःस्यात्तत्रदोषोनाविद्यते १६ औषधंस्नेहमाहारंदद्याद्गोब्राह्मणादिषु दीयमानेविपत्तिःस्याद्दातुर्दोषोनविद्यते १७ एतदेवव्रतंकुर्युरुपपातकिनस्तथेति

न राजी होवे इतना पर्यंत यावक यो है यवोंका काढा तिसकों पानकरे १४ जव दैवयोगतें जिस स्थानमें एक गो वहुत मनुष्यों कर्के मारी होवे तव उस हत्याका सो मनुष्य भिन्न भिन्न पूर्वोक्त पादपाद प्रायश्चित्त करे १५ गोके राजी करणे के निमित्त यो औषधकरणी उसके निमित्त यों गौका वांधना और मूढ गर्भ योहि योगर्भमें मृतहोगया यो वच्छा वावच्छी उसकावाहरनकासना उसमें योगो मरजावे तव उसका दोष नाहिं १६ औषध वास्नेह वा भोजन योब्राह्मणादियोंमें देवे अर उस औषधादिके दित्ते हि गौमरजावे तव औषधादिके देणे वाले को दोष नाहिंहै १७ एहहि व्रत होर उपपातकके करणे वाले भी मनुष्यकरें ॥

क्षत्रियादिके वधमें भी प्रायश्चित्त तहांहि किहाहै ब्रह्म हत्याका चतुर्थांश क्षत्रिके मारणमें किहाहै और आपणे धर्ममें स्थित यो वैश्य तिसके मारणेमें ब्रह्महत्याका अष्टमांश पाप किहा और शूद्रके मारणेमें ब्रह्महत्या का षोडशांश१६ क्या सोलआंहिस्सा प्रायश्चित्त होताहै१ उोर कामनातें विना यो ब्राह्मण क्षत्रीकोंमारे तव एक १ वृषभ और हजार १००० गोआपणी शुद्धिके निमित्त दान करे ॥ २ ॥ अथवा नियम कर्के उोर शिरमें जटाधार कर्के तीन ३ वर्ष ब्रह्महत्याके ब्रतकों करे उोर ग्रामतें दूर वृक्षके हेठ स्थान वना कर्के वासकरे ॥ ३ ॥ और ब्राह्मण एह हि व्रत वर्ष पर्यंत १ वैश्यकें मारणमेंकरे प्रमाप्येति ॥ आपणे वृत्तमें स्थित योवैश्य तिसकों मार कर्के ब्राह्मण शत १०० गौका दान करे४उोर एहि संपूर्ण व्रत छेमहीनें शूद्रके मारणे वा लाकेर और श्वेत वर्ण कियां दशगौआं उोर एक वृषभ ब्राह्मण के तांई दान कर देवे शूद्र

क्षत्रियादिवधेप्रायश्चित्तंतत्रैवम् तुरीयंब्रह्महत्यायाःक्षत्रियस्यवधेस्मृतम् वैश्येऽष्टमांशोवृत्तस्थेशूद्रेज्ञेयस्तुषोडश १ अकामतस्तुराजन्यंविनिपात्य द्विजोत्तमः वृषभैकसहस्रागादद्यात्शुद्ध्यर्थमात्मनः २ त्र्यब्दंचरेद्वानियतो जटीब्रह्महणोव्रतम् वसन्दूरतरेग्रामाद्वृक्षमूलानिकेतनः ३ एतदेवाचरेदब्दंप्रायश्चित्तंद्विजोत्तमःप्रमाप्यवैश्यंवृत्तस्थंदद्याद्वैकशतंगवाम्४एतदेवव्रतंकृत्स्नंषण्मासान्शूद्रहाचरेत् वृषभैकादशावापिदद्याद्विप्रायगाःसिताइति ५ कूर्मपुराणेपि॥हत्वातुक्षात्रियंविप्रःकुर्याद्ब्रह्महणोव्रतम् अकामतोपिषण्मासान्दद्यात्पंचशतंगवाम्१कामतस्तु त्र्यब्दंचरेतनियतोवनवासीसमाहितः प्राजापत्यंसांतपनंतप्तकृच्छ्रंतुवात्रयम्२प्रमाप्यकामतोवैश्यंकुर्यात्संवत्सरद्वयम् गोसहस्रस्यपादंचदद्याद्वाब्राह्मणोव्रते ३ कृच्छ्रातिकृच्छ्रौवाकुर्यात्चांद्रायणमथापिवा संवत्सरंव्रतंकुर्याच्छूद्रंहत्वाप्रमादतः ॥ ४ ॥

की हत्याके दूर करणेके निमित्त ॥ ५ ॥ कूर्म पुराणमें भी कहितेहैं सो तहां विशेषहै क्षत्रीकों कामनाकर ब्राह्मण मार कर्के ब्रह्म हत्याके ब्रतकोंकरे उोर कामनातें विनावी मारकर्के छेमहीने व्रत कों करे उोर पांचशत५००गोदानकरे १ और योकामनातेंमारे सोनियम कर्के तीन वर्ष पर्यंत वनवा सीहोय कर्के और सावधान चित्त होय कर्के प्राजापत्य उोर सांतपन अथवा तप्त कृच्छ्र ब्रतकरे अथवातिन्नांकोहिकरे २ और यो ब्राह्मण कामना कर्के वैश्यकोंमारे सोदो वर्ष पर्यंत प्रायश्चित्त कों करे उोर ढाईसौ २५० उस प्रायश्चित्तके निमित्त ब्राह्मण गौआं दानकरे३ उोर कृच्छ्र ब्रत अथवा अति कृच्छ्र ब्रत अथवा चांद्रायणकरे उोर योब्राह्मण प्रमाद कर्के शूद्र कोंमारे तव वर्ष पर्यंत ब्रतकरे ॥ ४ ॥

और सहस्रार्द्ध गौका पाद क्या सपाद शत १२५ गौओं कों दानकरे उसपापके दूर करणे वास्ते। अब पहले मे कुछविशेषकहतेहैं किंचेति और ब्राह्मण क्षत्रिकों वैश्य कों और शूद्रको मारे तब यथा क्रम कर्के आठवर्ष और छेवर्ष और तीनवर्ष ब्रह्म हत्याके व्रतकों करे अर्थात् क्षत्रिकों मार कर्के ब्राह्मण आठ वर्ष और वैश्य कों मार कर्के छेवर्ष और शूद्रकों मार कर्के तीन वर्ष व्रतकों करे। और योगर्भवती ब्राह्मणीकोंमारे तब उसके निमित्त आठ वर्ष व्रतकों करे ६ राजन्यामिति और क्षत्रीकी स्त्री योगर्भवती उसकों यो मारे सो छे ६ वर्ष पूर्वोक्त व्रतकों करे। और वैश्यायोहैवैश्यकी स्त्री उसकों गर्भवतीकों यो मारे सोमारणे वाला तीन वर्ष पर्यंत पूर्वोक्त व्रतकों करे ॥ और ऐसी शूद्रा कों मार कर्के ब्राह्मण १ वर्षव्रतकर्केशुद्धहोताहै ॥ ७ और यो प्रमादकर्के वेश्या कोंमारेतब ब्राह्मणके तांई कुछ थोडादान करदेवे। और अंत्यज येहैं चांडालादि तिनको मार

गोसहस्रार्द्धपादंचदद्यात्तत्पापशांतये किंच अष्टौवर्षाणिषट्त्रीणिकुर्याद्ब्रह्महणोव्रतम् ५ हत्वातुक्षत्रियंवैश्यंशूद्रंचैवयथाक्रमम् गर्भिणींब्राह्मणींविस्येत्स्वष्टवर्षंव्रतंचरेत् ६ विस्येतुर्हिंस्यात् ॥ राजन्यांवर्षषट्कंतुवैश्यांसंवत्सरत्रयम् वत्सरेणविशुध्येतशूद्रांहत्वाद्विजोत्तमः ७ वेश्यांहत्वाप्रमादेनकिंचिद्दद्याद्द्विजातये अंत्यजानांवधेचैवकुर्याच्चांद्रायणव्रतम् पराकेणाथवाशुद्धिरित्याहभगवानज इति ८ विष्णुधर्म्मोत्तरे चतुर्णामपिवर्णानांनारींहत्वानरः स्थितः वर्णानामानुपूर्व्येणत्रयाणामविशेषतः १ अस्यश्लोकस्यव्यवस्थाप्रायश्चित्तेन्दुशेखरे कामतोगुणवत्तरब्राह्मणीवधे विप्रस्यषाड्वार्षिकंब्रह्महत्याव्रतम् ॥ क्षत्रियवैश्यशूद्रजातिस्त्रीवधेतदर्धंतदर्धंतदर्धानि ॥ अमत्याचेत्सर्वत्र तत्तदर्धम् ॥ अभाष्यैवप्रमाप्यस्त्रींशूद्रहत्याव्रतंचरेदिति ॥ नारदीयेपि ब्राह्मणीनांवधेत्वर्द्धपादःस्यात्कन्यकावधे हत्वात्वनुपनीतांचतथापादव्रतंचरेत् ॥ १ ॥ अनुपनीतामविवाहिताम्

कर्के चांद्रायण व्रतकों करे। अथवा पराकव्रत करे एहभगवान ब्रह्माजीका वचनहै ॥ ८ ॥ विष्णुधर्म्मोत्तरमें किहाहै कामनाते गुणवत्तर ब्राह्मणीके मारणमें ब्राह्मणकों छेवर्षका ब्रह्महत्याव्रत किहा ॥ और क्षत्री ओर वेश्य और शूद्र इनकीस्त्रीयों के मारणमें तदर्ध तदर्ध तदर्ध प्रायश्चित्तहै अर्थात् ब्राह्मणी ते आधा प्रायश्चित्त क्षत्रियाके मारणमें और तिसतें आधा वैश्याकें मारणमेंहे। और तिसतें आधा शूद्राके मारणमेंहै ॥ १ ॥ और विना बुलाये स्त्रीकों मारे तब शूद्रके मारणका योव्रत सोकरे। नारदीयपुराणमें भीकिहाहै। ब्राह्मणीके मारणमें आधा प्रायश्चित्तहै ॥ और कन्यका मारणमेंपादक्या चतुर्थांश व्रतकिहा। और तिसीप्रकार अविवाहिता यो स्त्रीतिसकों मार कर्के पाद व्रतकरे ॥ १ ॥ परंतु इस जगा अर्द्धपादादिव्यवस्था ब्रह्महत्याके व्रतकी जाननी

और क्षत्रियाकों मार कर्के छेवर्ष व्रत करे ब्राह्मण और वैश्याकों मार कर्के तीनवर्ष व्रत क रे ॥ और शूद्राकों मार कर्के वर्ष पर्यंत व्रत करे ॥ २ ॥ और दीक्षित ब्राह्मणकी स्त्रीकों मार कर्के आठ वर्ष व्रत करे इतना काल ब्रह्महत्याके व्रतकों कर्के निश्चयकर्के शुद्ध होताहै ॥ ३ और हेमुनिसत्तम मुनियोंमे श्रेष्ठ बृद्धा और रोगिणी और बाला एह योस्त्रियांहैं इनकों मुनियों नें आधा प्रायश्चित्त किहाहै सर्वत्र ॥ ४ ॥ अब विष्णु धर्म्मोत्तरमें मार्जारादि वधमें प्रायश्चित्त क हितेहैं मार्जार और नकुल और विबीहा और डिडुं और कुत्ता और गोधा और उलू और काक इनकों मार कर्के शूद्रके मारणकायो व्रत तिसकों करे १ अथवा तीन रात्र दुग्ध पान करे अथवा रामनाम जपता होया योजन मात्र क्या चार कोश मार्ग जावे अथवा नदींमें जा यकर्के स्नानाचमन करे अथवा वरुणहै देवता जिनका तिनों मंत्रोंका जपकरे ॥ २ ॥ इसमें

हत्वातुक्षत्रियांविप्रः षडब्दंकृच्छ्रमाचरेत् संवत्सरत्रयंवैश्यांशूद्रांहत्वातुव त्सरम् ॥ २ ॥ दीक्षितस्यस्त्रियं हत्वाब्राह्मणींचाष्टवत्सरान् ब्रह्महत्याव्रतं कृत्वा शुद्धोभवतिनिश्चितम् । ३ प्रायश्चित्तविधानंतुसर्वत्रमुनिसत्तम वृद्धा तुरस्त्रीबालानामर्धमुक्तंमनीपिभिरिति ॥ ४ ॥ विष्णुधर्म्मोत्तरेमार्जारादिव धेप्रा०मार्जारनकुलान्हत्वाचाषंमंडूकमेववा श्वगोधोलूककाकांश्चशूद्रहत्या व्रतंचरेत् ॥ १ ॥ पयः पिबेत्त्रिरात्रंवायोजनंवाध्वनोव्रजेत् उपस्पृशेत्स्रवं त्यांवासूक्तंवाब्देवतंजपेत् २ अत्रशूद्रहत्याव्रताचरणमात्रंविवक्षितंनतुत न्मानंतेनैकादिनंशूद्रहत्याव्रतंचरेदिति तात्पर्यार्थः अभ्रींकार्ष्णायसींदद्या त्सर्पेहत्वाद्विजोत्तमःपलालभारकंपंडसैसकंचैकमाषकम् ३ घृतकुंभवराहे तुतिलद्रोणंतुतित्तिरे शुकेद्विहायनंवत्संक्रौंचहत्वाद्विहायनम् ४ हत्वाहंसं बलाकांवाबकंबर्हिणमेववा वानरंश्येनभासौवास्पृशयेद्ब्राह्मणायगाम् ५ स्पृशेद्दद्यादित्यर्थः ॥ वासोदद्याद्धयंहत्वापंचनीलान्वृपान्गजम्

शूद्रहत्या व्रत आचरण मात्र विवक्षितहै तुपुनः शूद्रहत्याके व्रतका प्रमाण नहिं किहा तिस कर्के एक दिन शूद्रहत्याके व्रतकों करे एह तात्पर्यहै ॥ ब्राह्मण जब सर्पकों मारे तब लोहेकी क ही दान करे और जब नपुंसककों मारे तब पराली या घास तिसका भार दान करे वा एक १ मासा सिक्का दान करे ॥ ३ ॥ और शूकरके मारणमें घृतका कुम्भ दान करे तित्तिर पक्षीकों मार कर्के द्रोण मात्र तिल दान करे और तोतेकों मार कर्के दो वर्षके वच्छेका दान करे और क्रौंच पक्षीकों मार कर्केवी दो वर्षके वच्छेकों दान करे ४ हंस और बलाका और बगुला और मोर और वानर और बाज और भासपक्षी इनकों मार कर्के ब्राह्मणके तांई गोदान कर देवे ५ घोडेकों मारकर्के वस्त्रदान करे और हाथीकों मारकर्के नील वर्णके पांचवृषभ दान करे

वकरा और भेडू और बलीवर्द्द और खोता एह यो एक वर्षके हैं और कच्चामांस खाणे वाले मृग योहैं तिनकों मारकर्के दूधवालीगौकों दानकरे ॥६ कच्चामांस खाणेवाला योमृग तिसकों मार॰ कर्के वच्छीकों दानकरे और ऊठकों मारकर्के रत्तीमात्र सुवर्ण दान करे और जीवक जो पक्षी विशेष और आपणा यो वकरा और भेड इनकों मारकरके बी एक एकके निमित्त रत्ती रत्ती सुवर्ण दान करे ॥ ७ ॥ कामना कर्के बहुत बार मंडूकादि के मारणका प्रायश्चित्त कूर्म्म पुराणमें लिखाहै मंडूक और नकुल और काक और सर्प्प और मूषक और कुत्ता इनकों मारकर्के द्विज ब्रह्महत्याका षोडशांश क्या १६ सोलमांहिसा व्रतकरे ॥ १ ॥ और कुत्तेकोंमार कर्के मौन धारकर्के तीनरात्र दूधकोंपानकरे मार्ज्जार और नकुल इनकों मारकर्के योजन मात्र मार्गचले॥२॥ और घोडेके मारणेमें द्विज द्वादश रात्र क्या बारांरातीं व्रत करे और सर्प्पकों मार

अजंमेषमनड्वाहंखरंहत्वैकहायनम् क्रव्यादांस्तुमृगान्हत्वाधेनुंदद्यात्पयस्विनीम् ६ क्रव्यादंवत्सरींचैवमुष्ट्रंहत्वातुकृष्णलं जीवकात्मकवस्तावीःपृथग्दद्याद्विशुद्धयइति ७ कामतोऽभ्यासे कूर्मपुराणे मंडूकंनकुलंकाकंदंदशूकंचमूषकं श्वानंहत्वाद्विजःकुर्यात्पोडशांशव्रतंतथा १ पयःपिबेत्त्रिरात्रंतु श्वानंहत्वातुयंत्रितः मार्ज्जारंवाथनकुलंयोजनंवाध्वनोव्रजेत् २ कृच्छ्रंद्वादशरात्रंतुकुर्यादश्ववधेद्विजः अर्श्रीकार्ष्णायसींदद्यात्सर्प्पंहत्वाद्विजोत्तमः ३ अग्रेविष्णुधर्म्मोक्तवत्पाठः। अकामतोभ्यासेनारदीये मंडूकंनकुलंकाकंवराहंमूषकंतथा मार्ज्जाराजाविकंश्वानंहत्वाकुक्कुटकंतथा कृच्छ्रार्धमाचरेद्विप्रोऽतिकृच्छ्रंचाश्वहाचरेत् १ तप्तकृच्छ्रंकारेवधेपराकंगोवधेस्मृतम् कामतोगोवधेनैवशुद्धिर्दृष्टामनीषिभिः २ यानशय्यासनंष्वेवंपुष्पमूलफलेषुच भक्ष्यभोज्यापहारेषुपंचगव्यंविशोधनम् ३

कर्के ब्राह्मण लोहेकी कहीका दान कर देवे ॥ ३ ॥ आगे विष्णुधर्म्मके बराबर हिपाठहै ॥ काम नातें विना बहुत बार मंडूकादिके मारणमें नारदीयमें विशेषहै मंडूक और नकुल और काक और वराह और मूषक और मार्ज्जार और वकरा और भेडू और कुत्ता और कुक्कुट इनकोंमार कर्के ब्राह्मण आधा प्राजापत्य व्रत करे और घोडेकों मारणे वाला अतिकृच्छ्रव्रत करे ॥१ ॥ और हाथीके मारणेमें तप्तकृच्छ्र व्रत किहाहै और गौके मारणेमें पराकनामकव्रत किहा और कामनाकर्के गौके मारणमें बुद्धिमानयोहैं तिनोंनें शुद्धि नहिं देखी अर्थात् कामनातें गौवध करणेका मरणांत प्रायश्चित्तहै ॥ २ ॥ वाहन और शय्या और आसन इनके चुराणेमें और पुष्पमूल फल इनके चुराणेमें और भक्ष्य और भोज्य इनके चुराणेमें पंचगव्य पान करणे कर शुद्धिहोतीहै ॥ ३ ॥

शुष्ककाष्ठ और तृण और वृक्ष और गुड और चर्म्म और वस्त्र और मांस इनके चुराणेमें तीनरात्र भोजननाहिं करे अर्थात् तीनरात्र भोजनको त्यागे ॥ ४ ॥ टिट्टिभमिति टिट्टिभ चकोर हंस कारंडव उल्लूक सारस कबूतर जालपादक ५ ॥ तोता विवीहा बलाक और शिशुमार यो जलचर जीवहे और कच्छप इनके मध्यमें एककोंवी मार कर्के बारां दिन भोजन नहिंकरे ६ वीर्य्य और विष्ठा और मूत्र इनके भोजनमें प्राजापत्य व्रत करे और शूद्रका जूठा भोजन करणे मे तीन चांद्रायण व्रत कहेहैं ॥ ७ ॥ अस्थियों वाले क्या हड्डियों वाले योजीवहैं तिनका हजार १००० मारणमें और विना हड्डियों योजीवहैं तिनका गड्डा भरा हुया मारणमें इक दिन शूद्रके मारणका योव्रत तिसको करे ॥ ८ ॥ और अस्थियों वाले जीवोंके मारणमें किंचित् योहै

शुष्ककाष्ठतृणानांचद्रुमाणांचगुडस्यच चर्मवस्त्रामिषाणांचत्रिरात्रंस्यादभोजनम् ॥ ४ ॥ टिट्टिभंचक्रवाकंचहंसंकारंडवंतथा उलूकंसारसंचैवकपोतंजालपादकम् ५ शुकंचापंवलाकंचशिशुमारंचकच्छपं एतेष्वन्यतमंहत्वाद्वादशाहमभोजनम् ६ प्राजापत्यव्रतंकुर्याद्रेतोविण्मूत्रभोजने चांद्रायणत्रयंप्रोक्तं शूद्रोच्छिष्टस्यभोजने ७ पुनस्तत्रैव अस्थिमतांतुसत्वानांसहस्रस्यप्रमापणे पूर्णेचानस्यनस्थ्नांतुशूद्रहत्याव्रतंचरेत् ८ अनासिशकटेपूर्णेहतेसतीत्यर्थः ॥ किंचिदेवतुविप्रायदद्यादस्थिमतांवधे अष्टमुष्टिमितंधान्यंकिंचित् अनस्थ्नांचैवहिंसायांप्राणायामेनशुद्ध्यति ९ अन्नाद्यजानांसत्वानांरसजानांचसर्वशः फलपुष्पोद्भवानांचघृतप्राशोविशोधनम् १० कृष्टजानामोषधीनांजातानांचस्वयंवने वृथारंभेनुगच्छेद्गांदिनमेकंपयोव्रतः एतैर्व्रतैरपोह्यंस्यादेनोहिंसासमुद्भवम् ११ वृथारंभोवृथाछिदः

सो ब्राह्मणके तांईदेवे किंचित्का प्रमाणकहितेहैं आठ मुष्टि ८ प्रमाण योधान्यहै उसका नाम किंचित्है और विना अस्थियो योजीवहैं तिनके मारणमे प्राणायामकर्के शुद्ध होताहै एह एकके मारणेका प्रायश्चित्तहै ९ और अन्नादितें और रसतें और फलपुष्पतें उत्पन्नभये जोजीवतिनों संपूर्णोंके मारणमें घृतको प्राशनकर्के क्या घृत खाय कर्के शुद्ध होताहै १० ॥ हलवाह कर्के उत्पन्नभयी यो औषधी और स्वय क्या अपने आप वनमें उत्पन्नभयी यो औषधी तिनके प्रयोजनतें विना कट्टणेमें एक दिन गौके पीछे भ्रमे और दूध पान करे एह यो व्रत कहेहैं इनों कर्के हिंसातें उत्पन्नभया योपाप सो दूर करणे योग्यहै ॥ ११ ॥

कूर्मपुराणमें भीकिहाहै फलेति फलोंकों देणे वाले योवृक्षहैं उनके छेदनमें सौ १०० वारवेद मंत्रका जपकरे और गुल्मयोहैं गुच्छे और वल्लिआंयोहैं आच्छादनकरणे वालिआं वेलां और लतायोहैं वेष्टनकरणा स्वभाव जिनका और वीरुध योहैं शाखा पत्रोंके समूह वालिआंवेलां १ और अज्ञातयोजीवहैं नाहिं जाणेयोजीव गंडूपदीकीटप्रभृति योहैं और पत्रोंतें उत्पन्न भये योजीव और फल और पुष्प इनोंतें उत्पन्न भयेयोजीव तिनों संपूर्णोंके मारणमें घृतकायो प्राशन है घृतखाणा सोशोधनहै २ और कामनातें विना हाथीके मारणमें तप्तकृच्छ्र व्रत शोधन है और कामनाकर्के हाथीके मारणमें प्रायश्चित्तनाहिंहै अर्थात् मरणांत प्रायश्चित्तहै ३ और अज्ञानकर्के गौकों मारकर चांद्रायण अथवापराकव्रतकरे॥ विष्णुधर्मोत्तरमें भी इनका इसी

कूर्मपुराणे फलदानांतुवृक्षाणांछेदनेजाप्यमृकूशतम् गुल्मवल्लीलतानांचपुष्पितानांचवीरुधाम् १ गुल्माअप्रकांडावृक्षावल्लयआच्छादनस्वभावालतावेष्टनस्वभावावीरुधः शाखापत्रप्रचयवत्यः अज्ञातानांचसत्त्वानांपत्रजानांचसर्वशःफलपुष्पोद्भवानांचघृतप्राशोविशोधनम् २ अज्ञातानांगंडूपदीकीटप्रभृतीनाम् हस्तिनश्चवधेदृष्टंतप्तकृच्छ्रंविशोधनम्मतिपूर्ववधेचैवप्रायश्चित्तंनविद्यते ३ ॥ चांद्रायणंपराकंचगांहत्वातुप्रमादत इति विष्णुधर्मोत्तरेप्येवम् कूर्मपुराणेमनुष्यादिहरणेप्राय. मनुष्याणांतुहरणंकृत्वास्त्रीणांवधस्यतु वापीकूपजलानांचशुद्धयेच्चांद्रायणेनतु १ स्त्रीणांवधस्यवधंकृत्वाजलपदंजलाशयोपलक्षकंतद्वधंतद्भग्नंकृत्वेत्यर्थः॥ द्रव्याणामल्पसाराणांस्तेयंकृत्वान्यवेश्मतः चरेत्सांतपनंकृच्छ्रंनियमादात्मशुद्धये ॥ २ ॥ धान्यान्नधनचौर्यंचकृत्वाकामाद्द्विजोत्तमः स्वजातीयगृहादेवकृच्छ्रार्द्धेनविशुध्यति ॥ ३ ॥ भक्ष्यभोज्यापहरणयानशय्यासनस्यच पुष्पमूलफलानांचपंचगव्यंविशोधनम् ॥ ४ ॥

प्रकार प्रायश्चित्तहै ॥ अबकूर्मपुराणमें मनुष्यादियोंके हरणका प्रायश्चित्त कहितेहैं मनुष्ययोहैं तिनकों चुरायकर्के और स्त्रियोंको मार कर्के और वाउलिआं और खूहे और जलाशय तडागादि इनकों तोडकर्के मनुष्य चांद्रायण व्रतकर्के शुद्धहोताहै १ और दूसरेके घरतें थोडेमूल्यवाले द्रव्ययोहैं पात्रादि तिनकोंचुरायकर्के नियमतें आपणी शुद्धिकेतांई सांतपनकृच्छ्रकोंकरे २ और ब्राह्मण कामनातें धान्य अन्नधनइनकी चोरी ब्राह्मणकेघरतेंकर्के आधाप्राजापत्य व्रतकरणेतें शुद्धहोताहै ३ और भक्ष्य भोज्यवाहन शय्याआसन पुष्प मूल फल इनके मध्यमें एकके चुराणेमें भी पंचगव्य विशोधनहै अर्थात् इनकेमध्यमें एककोंभी चुरायकर्के पंचगव्यपानकरे ४

तृण और काष्ठवृक्ष शुष्कान्नगुड वस्त्र चर्म मांस एह योहैं इनके मध्यमें एककेभी चुराणेमें तीनरात्रि निराहार व्रतकरे ॥ ५॥ओरमणिओ मोती मुंगा ताम्र रजत लोहाकांस्य पाषाण इन केमध्यमें एककोंभी चुरायकर्के वारांदिन अन्नके कणोंको वाहरतें चुणकर भोजन करे॥६॥कर्पास और कीडयोंकी योनियेहैं पट्ट और द्विशफ योहैं गवादि और एकशफ योहैं अश्वादि और पक्षी और गंधकया सुगंधवस्तु और औषध इनके मध्यमें एककेभी चुराणेमै और रस्सी के चुराणेम तीनरात्र दूधको पीवे ७॥ विष्णुधर्म्मोत्तरमें भीइसीप्रकारहै ॥और तहांहिं अस्पृश्यके स्पर्शमें प्रायश्चित्तहै बंधनकर्के मृतहोगया योप्रेत उसको कदाचित् ब्राह्मणस्पर्श करे तब उस

तृणकाष्ठद्रुमाणांतुशुष्कान्नस्यगुडस्यच चैलचर्मामिषाणांचत्रिरात्रंस्याद भोजनम् ॥ ५॥ मणिमुक्ताप्रवालानांताम्रस्यरजतस्यच अयःकांस्योपला नांचद्वादशाहंकणाशनम् ६ कर्पासकीटयोनीनांद्विशफैकशफस्यच पक्षिगं धौषधीनांचरज्ज्वाश्चैवत्र्यहंपय इति॥७॥ अत्रसर्वत्रपष्ठ्यन्तानांचौर्य्यंकृत्वे त्यनेनान्वयः।विष्णुधर्म्मोत्तरेप्येवम् तत्रैवास्पृश्यस्पर्शेनेप्रा० उद्बंधमृतकं प्रेतंयः स्पृशेद्ब्राह्मणः क्वचित् तस्यशुद्धिंविजानीयात्तप्तकृच्छ्रेणनित्यशः ॥ १॥ आत्मानंघातयेद्यस्तुरज्ज्वादिभिरुपक्रमैः तस्यप्रेतक्रियांकृत्वातप्तकृच्छ्रे णशुद्ध्यति ॥ २ ॥ इंद्रियेप्रविष्टंस्यादमेध्यंयस्यकस्यचित् अहोरात्रोषि तः स्नात्वापंचगव्येनशुद्ध्यति ३ इंद्रियेपुनेत्रादिषु । एतद्विजातयःशोध्या व्रतैराविष्कृतैनसः अनाविष्कृतपापाश्चमंत्रैर्होमैश्चशोधयेत् ॥४॥आविष्कृ तैनसःप्रकाशितपापाद्विजातयःशूद्रवर्जिताएभिर्व्रतैःपूर्वोक्तैःशोध्याइत्यर्थः

ब्राह्मणकी शुद्धि नित्यप्रति तप्त कृच्छ्र व्रतकर्के जानें ॥१॥ और योमनुष्य रस्सी यों आदिलेक र योसाधन हैं उनोंकर्के आपणे को मारेउसकी प्रेतक्रिया को कर्के क्रियाके करणे वाला तप्त कृच्छ्रव्रत कर्के शुद्ध होताहै ॥२॥और जिसकिसे मनुष्यके इंद्रिय योहैं नेत्रादि उनमें प्रवेश कि याहो अमेध्य विष्टादि अर्थात् जिसके नेत्रों मे विष्टापड जावे सोमनुष्य दिनरात्र निराहार व्र तकर और स्नानकर्के पंचगव्य पान करे तब शुद्धहोताहै ॥३॥एहयो द्विजातिहैं ब्रा ० क्ष० वै० शूद्रोंकर्के रहित और प्रकट करेहैं पापाजिनोंने सोपूर्वोक्त व्रतों कर्के शोधने योग्यहैं अर्थात् शुद्ध करणेयोग्यहैं॥औरनहिं प्रकट किये पापाजिनोंने तिनकों मंत्रों कर्केऔर हवनों कर्केशुद्ध करे ४

विष्णु धर्म्मो त्तरमें किहा कदाचित् रजस्वला स्त्री जूठे मनुष्यके साथ स्पर्श करे तब जितना पर्यन्त शुद्धिकों नहिं प्राप्त होती इतना पर्यंत भोजनकों नहिंकरे ॥ १ ॥ चांडाल और श्वपच येहि कुत्तेको खाणे वाला और पूय क्या पाक और सूतिका स्त्री और शव और शवकों स्पर्श करणे वाला और कुत्ता इनकों स्पर्श कर्के स्त्री येहि सो सद्यः स्नानकर्के शुद्ध होतीहि॥नारी एह योपदहै इसका पूर्व श्लोकमे अन्वय जानणा ॥ २ ॥ और ब्राह्मण सस्नेह अस्थियेहि गिल्ली हड्डी तिसकों स्पर्श कर्के स्नान कर्के शुद्ध होताहै और निःस्नेह अस्थि यांहिं सुक्की हड्डी उस कों स्पर्श कर्के आचमन करे अर गौके देहमें स्पर्श करे अथवा सूर्यकों देखे तब शुद्धहोताहै ३ ॥ गलीका यो चिक्कड और जल इस कर्के नाभिके हेठ स्पर्श भयायो पुरुष सो मृत्तिका

विष्णुधर्म्मोत्तरे उच्छिष्टेनतुसंस्पृष्टाकदाचित्स्त्रीरजस्वला यावन्नशुद्धिमाप्नो तिनाश्नीयात्तावदेवतु ॥ १ चांडालश्वपचौस्पृष्ट्वातथापूयंचसूतिकां शवं तत्स्पृष्टिनंश्वानंसद्यःस्नानेनशुद्ध्यति २ नारीस्पृष्ट्वास्थिसस्नेहंस्नात्वावि प्रोविशुद्ध्यति आचम्यैवतुनिःस्नेहंगामालभ्यार्कमीक्ष्यवा ॥ ३ ॥ अत्रनारी तिपूर्वान्वयि । रथ्याकर्दमतोयेननाभिस्पृष्टोभवेदधःमृत्तोयैःशोधयेदंगंततः शुद्धिमवाप्नुयात् ४ नापुरुषःअधःरथ्याकर्दमतोयेनअभिस्पृष्टोभवेदितिसंबं धःवांतिविविक्तःस्नात्वातुघृतंप्राश्यविशुद्ध्यति क्षुरकर्मततःकृत्वास्नानेनैवविशु द्धयतीति ५ ॥ अन्यच्च ब्रह्मचारिशुनादष्टस्त्र्यहंसायंपयःपिबेत् गृहस्थो वात्रिरात्रंतुएकाहंत्वाग्निहोत्रवान् ॥ ६ ॥ नाभेरूर्ध्वंतुदष्टस्यतदेवद्विगुणंभवे त् वाह्वोश्चत्रिगुणंज्ञेयंमूर्धनिस्याच्चतुर्गुणम् ॥ ७ ॥

और जलों कर्के अंगकों धोय कर्के शुद्धिकों प्राप्त होताहै ॥ ४ ॥ और यो मनुष्य वांत क्या उलटी करे भोजन कराहुआ मुखके द्वारात्यागे सो स्नान कर्के और घृतकों प्राशन कर्के शु द्ध होताहै और क्षुर कर्म्म योहि मुंडन तिसकों कर्के स्नान कर्के शुद्ध होताहै ॥ ५ ॥ विष्णु धर्म्मो त्तरमेंहि और किहाहै ब्रह्मचारी कों जब कुत्ता काटे तब तीन दिन सायं कालमें दूध पीवे और गृहस्थीकों कुत्ताकाटे तब त्रिरात्र व्रतकों करे अर्थात् त्रिरात्र दूधपीवे और अग्निहोत्रीकों कुत्ता काटे तब एकदिन व्रतकोंकरे ॥ ६ ॥ और नाभितं ऊपर यो कदाचित् कुत्ता काटे तब दूणा व्रतकरे और यो वाहुयोंमे कुत्ता काटे तब तीनगुणा व्रत करे और यो शिरमें कुत्ता काटे तब चारगुणा व्रत करे ॥ ७ ॥

अन्यदिति अब और कहितेहैं ब्रह्मचारीयो द्विज सो कामनातें विना स्वप्नमें वीर्य्यकों त्यागे अर्थात् स्खलित वीर्य्य होजावे तब स्नानकरे और सूर्य्यकों पूजे और पुनर्मां एह यो मंत्रहै इसका तीन वार जपकरे ॥ ८ ॥ और अग्निहोत्रमें अपवित्रहोया अग्नि जिसका अर्थात् केशकीटादियोंहैं तिनोंकर्के दूषितभयाअग्नि जिसका सोब्राह्मणआपनी इच्छाकर्केहि १ महीना चान्द्रायण व्रतकरे किसीके उपदेशतें विना और वीरासन क्या खडोते रहणा सो उसकों किहा ॥ ९ ॥ अवकीर्णि व्रत विष्णु धर्म्मोत्तरमें किहा अवकीर्णी यो ब्रह्मचारी यो आप स्त्री संगकों करे तब ओहो ब्रह्मचारी आपनी शुद्धिके निमित्तचान्द्रायण व्रतकरे ॥ और कहतेहैं॥अवकीर्णी यो

अन्यत्र स्वप्नेसिक्त्वाब्रह्मचारीद्विजःशुक्रमकामतःस्नात्वार्कमर्चयित्वात्रिःपुनर्मामित्यृचंजपेत् ॥ ८॥ अग्निहोत्रेऽपवित्राग्निर्ब्राह्मणःकामकारतः चान्द्रायणंचरेन्मासंवीरमध्यासनंहितम्॥९॥कामकारतःस्वेच्छयैवचान्द्रायणंकुर्य्यान्नतुकस्यचिदुपदेशेनेत्यर्थः॥ अपवित्रःकेशकीटादिदूषितोऽग्निर्यस्य॥अपवित्राणिअस्पृश्यस्पर्शनादीनिप्रकीर्णकसंज्ञानीतिकिंचित् तद्वानग्निर्यस्येति॥ अवकीर्णिव्रतमुक्तं विष्णुधर्म्मोत्तरे अवकीर्णीविशुद्ध्यर्थंचान्द्रायणमथापिवा अवकीर्णीतुकाणेनगर्द्दभेनचतुष्पथे ॥ १ ॥ पाकयज्ञविधानेनयजेतनिर्ऋतिंनिशि हुत्वाग्नौविधिवद्धोमान्निर्ऋतस्तुसमित्यृचम् ॥२ ॥ वातेन्द्रगुरुवह्नीनांजुहुयात्सर्पिषाहुतीःकामतोरेतसस्सेकेव्रतस्थस्यद्विजन्मनःआक्रमंचव्रतस्याहुर्धर्म्मज्ञाःसत्यवादिनः ।३।व्रतस्याक्रमंव्रतांतरानुष्ठानंतत्प्रकारमाहएतास्मिन्नित्यादिना एतस्मिन्नेवासिद्धान्तेर्वासित्वागर्द्दभाजिनम् सप्तागारंचरन्भैक्षंस्वकर्मपरिवेदयन् ॥ ४

ब्रह्मचारी सो काणे खोते कर्के चुरस्तेमें पाकयज्ञ विधान कर्के रात्रिमें निर्ऋतिकों पूजे ॥ १ ॥ और अग्निमें विधिवत् होमकों करे निर्ऋतेरस्तुमे इस ऋचा कर्के ॥ २ ॥ पवन और इंद्र और गुरु और अग्नि इनकों घृतकर्के आहुति देवे और ब्रह्म चर्य्य व्रतमें स्थित यो ब्राह्मण तिसकों कामनातें रेतस्सेकमें धर्म्मके जानणे वाले और सत्यबोलने वाले व्रतका आक्रम कहतेहैं ॥३ ॥ आक्रमक्या और व्रत करणा । तिसका प्रकार एतस्मिन्नित्यादि कर्के कहितेहैं ॥ अवकीर्णीका जब सिद्धांत होवे तब खोते का चर्म ऊपर लेकर्के सात घरों की भिक्षा करे और आपणा कर्म संपूर्णकों सुनावे ॥ ४ ॥

तिनोंतें प्राप्तभया योभिक्षाका अन्न तिस कर्के एकवार भोजन करे और प्रातः मध्यान्ह सायं काल स्नान करे इसप्रकार करणे कर्के सो अवकीर्णी वर्ष कर्के शुद्धहोताहै ५ ॥ अयाज्य याजनका प्रायश्चित्त कूर्म पुराणमे किहा व्रात्यानामिति यज्ञोपवीत संस्कार हीनयोहैं जिससमयमैं यज्ञोपवीत संस्कार करणाकिहा उस समय नाहिं भया संस्कार जिनकासोयोहैं व्रात्य तिनकों यज्ञकरायकर्के. और हीनवर्ण योहैंतिनका अंत्यकर्म्म योहै अंत्येष्टि तिसकों कर्के और उत्कट यो अभिचार अर्थात् किसेके मारणेका यत्न तिसकोंकर्के तीन कृच्छ्रों कर्के शुद्धहोताहै॥ १ ॥ औरयो ब्राह्मणादि कर्के मृतहोयेहैं उनकियां योदाहादि कािक्रयाहैं उनकों कर्के गोमूत्र और यावक इसकों भोजन करे और प्राजापत्य कर्के शुद्ध होताहै ॥ २ ॥ और यो मनुष्य तैलाभ्यंग कर्के कदाचित् मू

तेभ्योलब्धेनभैक्ष्येणवर्तयन्नेककालिकम् उपस्पृशंस्त्रिषवणमब्देनसविशुद्ध्यति५सोऽवकीर्णीत्यर्थः। अयाज्ययाजने प्रायश्चित्तमुक्तं कूर्मपुराणे व्रात्यानांयाजनंकृत्वापरेषामंत्यकर्मच अभिचारमहीनंचत्रिभिःकृच्छ्रैर्विशुद्ध्यति १ ब्राह्मणादिहतानांतुकृत्वादाहादिकाःक्रियाःगोमूत्रयावकाहारःप्राजापत्येन शुद्ध्यति ॥ २ ॥ तैलाभ्यक्तोथवाकुर्य्याद्यदिमूत्रपुरीषके अहोरात्रेणशुद्ध्येतश्मश्रुकर्मचमैथुनम् ॥ ३ ॥एकाहेनविवाहाग्निंपरिहार्यद्विजोत्तमः त्रिरात्रेणविशुद्ध्येतत्रिरात्रात्षडहंपुनः ॥ ४ ॥ दशाहंद्वादशाहंवापरिहार्य्यप्रमादतः कृच्छ्रचान्द्रायणंकुर्य्यात्तत्पापस्यापनुत्तये॥ ५ ॥ पतितादृद्रव्यमादायतदुत्सर्गेणशुद्ध्यति चरेत्सांतपनंकृच्छ्रमित्याहभगवान्प्रभुः ॥ ६ ॥ अनाशकान्निवृत्तस्तुप्रव्रज्यावसितस्तथा चरेत्त्रीण्यतिकृच्छ्राणित्रीणिचान्द्रायणानितु ॥ ७ ॥

त्र और विष्ठा त्यागे और श्मश्रु कर्म और स्त्रीसंगकों करे तब अहोरात्र क्या दिनरात्र व्रत कर्के शुद्ध होताहै ॥ ३ ॥ और यो ब्राह्मण एक दिन विवाहके अग्निकों त्यागे तब तीनरात्रिकर्के शुद्धहोताहै और तीनरात्रि विवाहकी अग्निकों त्यागे सोषडह क्या छे दिन कर्के शुद्ध होताहै ४ ॥और जो ब्राह्मण प्रमाद कर्के दश दिन वा बारां दिन विवाहाग्निकों त्यागे सो तिस पापके दूर करणे वास्ते कृच्छ्र चांद्रायण व्रत करे अर्थात् चांद्रायणव्रतकरे ५ ॥ और यो पतितते धन लेताहै सो तिस धनकों त्याग कर्के सांतपन कृच्छ्र करे एह भगवान प्रभु कहतेहैं ॥ ६ ॥ और जिस मनुष्यनें निरशन व्रत धाराहै और जिसने सन्न्यास धाराहै और फेर तिनकों त्याग दिआ सो मनुष्य तीन अति कृच्छ्र व्रत करे और तीन चान्द्रायण व्रत करे ॥ ७ ॥

और फेर जातकर्म्मादिसंस्कारों कर्के संस्कृतयोहैं द्विजसो शुद्धहोतेहैं फेर हेधर्म्मवर्धनाःतिन काधन अछी प्रकार ग्रहणकरे ओहो शुद्धहिहैं ८ अगम्यामनका प्रायश्चित्त विष्णु धर्मोत्तरमे कि हा अगम्या यो स्त्रियांहैं जिनमेसंग नाहिंकरणा योकदाचित् उनों स्त्रियोंमें संगहोजावे तबएह आगे कथनकरणेयोव्रतहैं तिनोंव्रतोंकर्के तिसपापकों दूरकरे तिनको कहतेहैं गुर्विति। आप णे गोत्रतें उत्पन्नहोईआं योस्त्रियां तिनेंामें वीर्य्यपात कर्के गुरुतल्प योव्रतहैसोकरे सो गुरुतल्प व्रत महापातक प्रकरणमैंहै ॥१॥और मित्रकी स्त्री पुत्रकी स्त्री अविवाहिता स्त्री अन्त्यजा योस्त्रि यांहैं चर्म्मकारी थी आदिलेकर और पिताकी भगिनीकीकन्या और आपनी भगिनी, और मा ताकी भगिनीकी कन्या ॥ २ ॥ एहयो तीनहैंइनमें भार्याके निमित्त वुद्धिमान् संगको नहिंकरे यो कदाचित् संगकरे तव चांद्रायण व्रतकरे ३ और माताके भाई योहैं तिनकी संततिमें भी गम न कर्के चांद्रायण व्रतको करे॥इसीको कहितेहैं सोयोमातुलहैं॥ज्ञातित्व कर्के तुल्यहैं तिनमेंविवा

पुनश्चजातकर्म्मादिसंस्कारैःसंस्कृताद्विजाः शुध्येयुस्तद्धनंसम्यक्चरेयु र्द्धर्मवर्धनाः ८ अगम्यागमने प्रायश्चित्तमुक्तं विष्णुधर्म्मोत्तरे॥अगम्यागम नीयंतुव्रतैरेभिरपानुदेत् गुरुतल्पव्रतंकुर्याद्रेतःसिक्त्वास्वयोनिषु॥१॥सख्युः पुत्रस्यचस्त्रीषुकुमारीष्वंत्यजासुच पैतृष्वस्त्रेयींभगिनींस्वस्त्रीयांमातुरेवच२ एतास्तिस्रस्तुभार्यार्थेनोपगच्छेत्तुबुद्धिमान् ॥ ३ ॥ मातुश्चभ्रातरस्तेषांग त्वाचान्द्रायणंचरेत्॥येमातृभ्रातरोमातुलास्तेषांसंततिंगत्वेत्यर्थः ॥ एतदेव विशदीकरोति ज्ञातेयेनानुमेयास्तेपततिह्युपयन्नधः॥४॥ तेमातुलाज्ञातेये न ज्ञातित्वेनैवानुमेयाज्ञातिसदृशाज्ञेयाइत्यर्थः तत्रोपयन् विवाहंकुर्वन्पु रुषोऽधःपततिनरकंप्राप्नोतीत्यर्थः । अमानुषीषुपुरुषउदक्यायामयोनिषु रेतःसिक्त्वाजलेचैवकृच्छ्रंसांतपनंचरेत् ॥ ५ ॥ मैथुनंतुसमासेव्यपुंसियोषि तिवाद्विजः गोयानेप्सुदिवाचैवसवासाः स्नानमाचरेत् ॥ ६ ॥ चंडालांत्य स्त्रियोगत्वाभुक्त्वाचप्रतिगृह्यच पतत्यज्ञानतोविप्रोज्ञानात्साम्यंतुगच्छति७

ह कर्के पुरुष नरकको प्राप्तहोताहै ॥ ४ और पशुयोनि योहैं रजस्वलायोहैं और अयोनियो हैं मुष्टिप्रहार करणा इनोंमें वीर्य्यत्याग कर्के और जलमें वीर्य्य त्याग कर्के सांतपन कृच्छ्रको पुरुष करे ॥ ५ ॥ और द्विज योहे सोपुरुषमें अथवा स्त्रीमें दिनमें मैथुनको कर्के और गोया नमें इच्छावाला समेतवस्त्रों कर्के स्नानकरे तवशुद्धहोताहै ॥ ६ चंडालऔर अंत्य क्या रजका दि इनकी स्त्रियोंमें संग कर्के और भोजन कर्के और इनोंतें दानलेकर ब्राह्मण अज्ञान कर्के वर्त्तेतवपतितहोताहै और योजानकर्के इनके साथवर्त्ते सोइनकी तुल्यता कों प्राप्तहोताहै ॥ ७

और व्यभिचारिणी स्त्रीकों उसका स्वामी एकघरमैं रोकदेवे और योपुरुषकों पर स्त्रीसंगमे ब्रतकिहाहै सोव्रततिसस्त्रीकोंकरावे ८ ॥ सो जेकर फेर सजातियके साथ भोगकरणेसें दोषकों प्राप्तहोवे तो कृच्छ्रचांद्रायण व्रतके करणेसें तिसकीशुद्धि होतीहै इसमें यत् एहपदकृच्छ्र चान्द्रायणादिनामपरहै कृच्छ्रचान्द्रायणका योप्रमाण तिसपरनहिंहै स्त्रीणामर्द्धं प्रदातव्यं इत्यादि करके प्रमाणमैं तिसकों थोडा विधानकरणेतें ९ ॥ यदिति द्विज यो है ब्राह्मण क्षत्री वैश्य एकरात्र शूद्रीके सेवनतें जिस पापकों कर्त्ताहै तिस पापकों भिक्षाका अन्न भोजन कर्त्ता हुआ और नित्यप्रति जपकों कर्त्ता हुआ तीनवर्षों करके दूर कर्त्ताहै एह पापोंके करणेवाले योचारवर्णहैं तिनकी निष्कृति क्यापापदूरकरणेकाउपाय कहाहै १०॥ कूर्मपुराणमेंभी किहाहै योब्राह्मण अपणीइच्छापूर्वक कन्यामैं संगकरे अथवाभगिनीमैंसंगकरे अथवा

विप्रदुष्टांस्त्रियंभर्त्तानिरुंध्यादेकवेश्मनि यत्पुंसःपरदारेपुतच्चैनांकारयेद्व्रतम् ८॥ साचेत्पुनः प्रदुष्येतसदृशेनोपयंत्रिता कृच्छ्रंचांद्रायणंचैवतदस्याःपावनं स्मृतम् ९ अत्रयदितिकृच्छ्रचान्द्रायणादिनामपरं नतन्मानपरम्॥स्त्रीणामर्द्धंप्रदातव्यमित्यादिनामानेतदल्पत्वविधानात्॥यत्करोत्येकरात्रेणवृषलीसेवनाद्द्विजः तद्भैक्षभुग्जपन्नित्यंत्रिभिर्वर्षैर्व्यपोहति एषापापकृतामुक्ताचतुर्णामपिनिष्कृतिः १० कूर्मपुराणेपि गत्वादुहितरंविप्रः स्वसारंवास्नुषामपि प्रविश्यज्वलनंदीप्तंमतिपूर्वमितिस्थितिः १ मातुःस्वसांमातुलानींतथैवचपितृस्वसां भागिनेयींसमारुह्यकुर्य्यात्कृच्छ्रातिकृच्छ्रकौ॥ २ ॥ चान्द्रायणंवाकुर्वीततस्यपापस्यशान्तये ध्यायन्देवंजगद्योनिमनादिनिधनंपरम् ३ भ्रातृभार्यांसमारुह्यकुर्यात्तत्पापशान्तये चान्द्रायणानिचत्वारिपंचवासुसमाहितः ४पैतृस्वस्रेयींगत्वातुस्वस्रेयींमातुरेवच मातुलस्यसुतांवापिगत्वाचान्द्रायणंचरेत् ॥ ५ ॥

स्नुषामें संगकरे सोवलना यो अग्निनिपमैं प्रवेश करे अर्थात् वलते अग्निमैं दग्ध होजावे तव पाप दूर होताहै १ माताकीभगिनी और मामेकीस्त्री और पिताकी भगिनी और भगिनीकी कन्या इनमें संगकरके कृच्छ्रातिकृच्छ्र योव्रतहैं तिनकों करे २ अथवा तिसपापकी शांतिके वास्तेचांद्रायण व्रतकों करे जगत्के कारणयोपरमेश्वरअनादिनिधनक्यानहिंहै जन्म और मरण जिनका तिनकों ध्यानकर्त्ताहुआ प्रायश्चित्तकोंकरे ॥ ३ ॥ और भाईकी स्त्रीमें संगकरके तिसपापकी शांतिके निमित्त चारचान्द्रायण अथवापांच चांद्रायणव्रत करे ४ पिताकी भगिनीकी कन्या और माताकी भगिनीकीकन्या और मामेकीकन्या इनमें॥संगकरके चांद्रायणव्रत॥करे ॥ ५ ॥

मित्रकीस्त्री के साथ संग करके और सालीके साथ संगकर्के दिन रात्र निराहार व्रत कर्के तप्त कृच्छ्र व्रत को करे ॥ ६ ॥ और ब्राह्मण रजस्वला स्त्रीमें संग करे तब तीन रात्र कर्के शुद्ध होताहै और चांडालीके संगमें तीनतप्त कृच्छ्र व्रत प्रायश्चित्त कहितेहैं ॥ ७ ॥ महेति एहयोहै चांडाली गमनके करणे वाला इसको महासांतपन व्रत कर्के शुद्धि होतीहै अन्यथा पूर्वोक्त व्रतसें विना इसकी निष्कृति नहिंहै ७ माताके गोत्रकी योस्त्रीहै तिसके साथसंग कर्के और समान प्रवरा योस्त्रीहै आपने बराबर प्रवर जिसका तिसके साथ संग कर्के रोकआहै चित्त जिसने और सावधान होय कर्के सोमनुष्य चान्द्रायण कर्के शुद्ध होताहै ॥ ८ ॥ ब्राह्मण इति ब्राह्मणयोहै सो ब्राह्मणीमें संग कर्के एक कृच्छ्र क्या एक प्राजापत्य व्रतको करे और यो कन्या के साथ संग करे सो चान्द्रायण व्रतको करे इसमें एह अभिप्रायहै कि एह प्रायश्चित्त कन्या दूषणकाहै सो दूषण अंगुल्यादि कर्के योनिका विदारण करण रूपहै और संगका प्रा

सखिभार्यांसमारुह्यगत्वाश्यालींतथैवच अहोरात्रोषितोभूत्वातप्तकृच्छ्रंसमाचरेत् ६ उदक्यागमनेविप्रस्त्रिरात्रेणविशुद्ध्यति चांडालीगमनेचैवतप्तकृच्छ्रत्रयंविदुः७महासांतपनेनास्यनान्यथानिष्कृतिः स्मृता मातृगोत्रांसमासाद्यसमानप्रवरांतथा चान्द्रायणेनशुद्ध्येतप्रयतात्मासमाहितः८ ब्राह्मणोब्राह्मणींगत्वाकृच्छ्रमेकंसमाचरेत् कन्यकांदूषयित्वातुचरेच्चान्द्रायणंव्रतम् ९ अमानुषीषुपुरुषउदक्यायामयोनिषु रेतःसिक्त्वाजलेचैवकृच्छ्रंसांतपनंचरेत् १०वंधकीगमनेविप्रस्त्रिरात्रेणविशुद्ध्यति गविमैथुनमासेव्यचरेच्चान्द्रायणंव्रतम् ११ अजाविमैथुनंकृत्वाप्राजापत्यंचरेद्द्विजः पतितांचस्त्रियंगत्वात्रिभिःकृच्छ्रैर्विशुद्ध्यति १२ पुष्कसीगमनेचैवकृच्छ्रंचान्द्रायणंचरेत् १३ नटींशैलूषिकांचैवरजकींवेणुजीविनीम् गत्वाचान्द्रायणंकुर्य्यात्तथाचर्मोपजीविनीम् १४

यश्चित्त पीछे आगयाहै ॥ ९ ॥ अमेति अमानुषिआ योहैं पशुयोनि कियां स्त्रीयां और रजस्वला योस्त्रीयांहै और अयोनियांहै मुष्टि प्रहारादि तिनोंमें वीर्य्य त्याग कर्के और जलमैं वीर्य्य त्याग कर्के मनुष्य सांतपन कृच्छ्र व्रतको करे ॥ १० ॥ वंधकीति हेविप्रा एह संबोधनहे व्यभिचारिणी स्त्रीमें संग कर्के तीन रात्रि कर्के शुद्ध होताहै और गोमें संगको कर्के मनुष्य चान्द्रायण व्रतको करे ॥ ११ ॥ बकरी और भेड इनमें संग कर्के द्विज योहैं ब्रा० क्ष० वै० सोप्राजापत्य व्रतको करे और पतिता योस्त्रीहै तिसमें संग कर्के तीन योकृच्छ्रहै अर्थात् तीन प्राजापत्य व्रतो कर्के शुद्ध होताहै १२ और पुष्कसी यो स्त्रीहै तिसमैं संग कर्के चान्द्रायण व्रतको करे १३ और नटोंकी योस्त्रीहै और शैलूषोंकी यो स्त्रीहै और रजकी और वेणुजीविनी और चर्म्मकारी इनमें संग कर्के चान्द्रायण व्रतको करे ॥ १४ ॥

और यो कदाचित् कामकर्के मोहित भया ब्रह्मचारी स्त्रीसंगकरे तब आर्द्रभया गिल्लायो हरण कावछ्डा तिसकों देहमें धारकर्के सातघरोंतें भिक्षामांगकर्के भोजनकरे ॥ १५॥ और तीनकाल स्नानकरे और आपणे पापकों आपणीवाणी कर्के कहे तब इस प्रकार वर्त्तनेकर एकवर्ष कर्के सो ब्रह्मचारी तिसपापतें रहित होताहै॥१६॥अथवा छेमहीने ब्रह्महत्याकेव्रतकों करे सो अवकीर्णी रोकआहि मनजिसनें सोब्राह्मणोंके अनुसार वर्त्तता उसपापतें रहित होताहै॥ १७ ॥ सप्तेति सोयो ब्रह्मचारी सातरात्रि भिक्षामांग कर्के अग्निकेपूजनकोंकरे निश्चितार्थ कों कहतेहां कि ब्रह्मचारी वीर्य्यकेत्यागमें इसप्रायश्चित्तकोंकरे॥१८॥और ॐकारहै पूर्व जिनकेऐसिऐयोमहाव्याहृआंहैं महांव्याहृतिमंत्रतिनोंकर्के हवनकरे और वर्ष पर्यन्त क्षुधाकर्के दीन होगयाहै देह जिसका सोमनुष्यपवित्रहोयकर्के रात्रिसमयमें भिक्षाके अन्नकोंकर्त्ताहुआ और क्रोध कर्के रहितहू

ब्रह्मचारीस्त्रियंगच्छेत्कथंचित्काममोहितः सप्तागारंचरेद्भैक्ष्यंसंवसित्वार्द्रमाजिनम् १५ उपस्पृशेत्त्रिषवणंस्वपापंपरिकीर्त्तयन् संवत्सरेणचैकेनतस्मात्पापात्प्रमुच्यते १६ ब्रह्महत्याव्रतंवापिषण्मासानाचरंयती मुच्यतेह्यवकीर्णीतुब्राह्मणानुमतेस्थितः १७ सप्तरात्रंसकृत्वातुभैक्ष्यचर्याग्निपूजनम् रेतसश्चसमुत्सर्गेप्रायश्चित्तं समापयेत् १८ॐकारपूर्विकाभिस्तुमहाव्याहृतिभिर्हुनेत् संवत्सरंतुक्षुत्क्षामोनक्तंभिक्षाशनःशुचिः १९ सावित्रींचजपेच्चैवनित्यंक्रोधविवर्जितः नदीतीरेषुतीर्थेषुतस्मात्पापाद्विमुच्यते २०

अत्रावशिष्टानि आत्मविक्रयसुतत्यागपरिवित्तृत्ववार्द्धुष्यव्रतलोपनादीन्युपपातकानि पूर्वोक्तोपपातकसामान्यप्रायश्चित्तेनापनेयानि इत्युपपातकप्रायश्चित्तानि॥ विष्णुधर्म्मोत्तरे पंचमहापातककथनम् ब्रह्महत्यासुरापानंस्तेयंगुर्वंगनागम.महांतिपातकान्याहुः संयोगश्चैवतैःसह १ ॥अनृतंचसमुत्कर्षेराजगामिचपैशुनम् गुरोश्चालीकनिर्बंधःसमानिब्रह्महत्यया २ ब्रह्मज्ञवेदनिन्दाचकूटसाक्ष्यंसुहृद्वधः गर्हितानाद्ययोर्जग्धिस्सुरापानसमानिषट् ३ निक्षेपस्यापहरणंनराश्वरजतस्यच भूमिवज्रमणीनांचरुक्मस्तेयसमंस्मृतम् ४ रेतःसेकःस्वयोनीषुकुमारीष्वंत्यजासुच सख्युःपुत्रस्यचस्त्रीषुगुरुतल्पसमंविदुः ५ विवृतामिदंमहापातकादिप्रकरणे ॥

आ नित्यंप्रति गायत्री मंत्रके जपकोंकरे१९॥नदिओंके कनारयोंमें और तीर्थोंमें जपकेकरणेतें तिसपापतेंरहितहोताहै२० इसउपपातक प्रायश्चित्तोंके प्रसंगमें अवशिष्टयो आत्मविक्रय सुतत्याग परिवित्तृत्व वार्द्धुष्य व्रतलोपादियोउपपातकहैं सोपूर्वकिहायो उपपातकसामान्यप्रायश्चित्ततिसकर्के आनणेयोग्यहैं इति॥एहउपपातकोंके प्रायश्चित्तकहेहैं ॥ अवविष्णुधर्म्मोत्तरमें महापातककहितेहैं ब्रह्महत्येति ब्रह्महत्या १ सुरापान२ स्तेयक्या सोलां १६ मासेसजादेस्वर्णकीचोरी३ औरगुरोकीस्त्रीमेंगमन ४ इनकोंमहापातककहितेहैं और एहयोहैं महापातकोंके करणेवाले तिनके साथ संयोगकेकरणेवालायोहै सोवीमनुष्यमहामहापातकी होताहै५अनृतमिति एहयोचारश्लोकहैं इन

अबब्रह्महत्या का प्रायश्चित्त कहितेहैं ब्रह्महत्या करणेवाला मनुष्य बारांवर्ष वनमैंकुटिआ बना यककें वासकरे और ब्रह्महत्याकी शुद्धिके निमित्त शवका योशिरहैतिसकी ध्वज वनायककें भिक्षाका योअन्नहै तिसककें वर्तेतवशुद्धहोताहै ॥१॥ अथवाशस्त्र धारीयोहैंतिनका निसानांहो वेविद्वानोंके कहेतेंवाआपणी इच्छाककें अथवाबलता योअग्निहै प्रज्वालित तिसमैं तीनवारनी मांशिर ककें आपनें आपकों अग्निमैं दग्धकरे॥२॥यजेतेति ॥ अथवा ब्रह्महत्याके दूरकरणेकेनि मित्त अश्वमेध यज्ञककें पूजे अथवा स्वार्जित अथवा गोसव अथवा अभिजित् अथवा विश्व जित् वा त्रिवृत् वाअग्निष्टुत् एह योयज्ञहैं इनके मध्यमैं एकयज्ञकों करे॥ ३ ॥अथवा ऋकुय जुःसाम एह योवेदहैं इनके मध्यमैं एकवेदकापाठकरे अथवाशत १०० योजन तीर्थनिमित्त यात्राकरे ब्रह्महत्याके दूरकरणेनिमित्त प्रमाणका भोजन कर्त्ताहुआ और जीतिआंहैं इंद्रियां जिसनैं इसप्रकार करे॥४॥अथवा वेदोंकेजाणनेवाला योब्राह्मण तिसकेतांई आपनासर्वस्व

तत्रैवब्रह्महप्रायश्चित्तम् ब्रह्महाद्वादशाब्दानिकुटिंकृत्वावनेवसेत् भिक्षेतार्थंवि शुद्ध्यर्थंकृत्वाशवशिरोध्वजम् १ लक्ष्यंशस्त्रभृतांवास्याद्विदुषामिच्छयात्मनः प्रास्येदात्मानमग्नौवासमिद्धेत्रिरवाक्शिराः २ यजेतवाश्वमेधेनस्वर्जिता गोसवेनवा अभिजिद्विश्वजिद्भ्यांवात्रिवृताग्निष्टुतापिवा ३ जपन्वान्यत मंवेदंयोजनानांशतंव्रजेत् ब्रह्महत्यापनुत्त्यर्थंमितभुङ्नियतेंद्रियः४ सर्वस्वं वावेदविदेब्राह्मणायोपपादयेत् धनंवाजीवनायालंगृहंवासपरिच्छदम् ५ व्र तैरेतैरपोहंतेमहापातकिनोद्विज कूर्मपुराणेमहापातककथनम्। ब्रह्महामद्य पःस्तेनोगुरुतल्पगएवच महापातकिनस्त्वेतेयश्चैतैः सहसंवसेत् १ संव त्सरंतुपतितैः संसर्गंकुरुतेतुयः ॥ यानशय्यासनैर्नित्यंजानन्वैपतितोभवेत् २ याजनंयोनिसंबंधंतथैवाध्यापनंद्विजः संवत्सरेणपततिसहाध्यापनमेव च ३ प्रायश्चित्तमपि तत्रैव

दानकरदेवे अथवाबहुतधनजीविका करणे निमित्त दानकरदेवे अथवा संपूर्ण योघरकीसामग्री उसककें सहित घरकों दानकरदेवे ॥५॥हेब्राह्मण एहजोव्रतकहेहैं इनों ककें महापातकीयोहैंसो पापोंकों दूरकरदेहे॥अबकूर्मपुराणमैं योमहापातकोंका कथन सोकहितेहैं॥ब्राह्मणके मारणवा ला और सराबके पीणेवाला और चोरीके करणे वाला और गुरोंकी स्त्रीमैं संगकरणे वाला एहयो चार महापातकीहैं इनके साथ संग करणेवाला क्या वर्त्तने वाला एहपंच महापातकी कहेहैं॥१॥योमनुष्य एहयोपतितहैं इनके साथ वर्षपर्यन्तानित्यंप्रति संसर्ग कर्त्ताहै॥वाहन शय्या आसन इनोंककें जाणतावीहै सोपतितहोताहे॥२ याजन क्या यज्ञकराणा और योनि संबंधक्या विवाहादि काप्रसंगकरणा और पडाना और इकट्ठेपडणा एहयो पातिकियोंके साथ नित्यंप्रति करे तबएक वर्ष ककें पतितहोताहै॥३॥इनकाप्रायश्चित्त भीकूर्म्मपुराणमैं हिं लिखाहै सोकहितेहैं

ब्रह्महेंति ब्रह्म हत्याके करणेवाला कुटिश्रा वनायकर्के वारां १२वर्षपर्यन्त वनमैं वासकरे। श्रौर शव योहै मृतक उसके शिरकी ध्वजा वनायकर्के श्रापणी शुद्धिके निमित्त भिक्षा के श्रन्नको भोजनकरे १॥ ब्राह्मणोंके घरयोहै श्रौर देवतयोंके मंदरयोहि इनोंसंपूर्णोंकों त्यागकर्के श्रौरघरों मैंभिक्षामांगे भिक्षाकासमय दिखातेहैं जिसवखत धूश्रांरसोई श्रोंमैं दूरहोजावे श्रौर रसोई श्रों मैंश्रग्निनहिंरहे श्रौर संपूर्ण जन भोजनकरलैंमैं उसवखत भिक्षामांगे २॥ श्रौर एककाल भिक्षा मांगे श्रापणा योदोषहै पाप सो संपूर्ण मनुष्योंकोंसुनावे ॥ श्रथवा योभिक्षानहिं मांगे सोवनके योमूल वा पत्र वाफल-तिनों कर्के वर्त्ते श्रर्थात् तिनकोंभोजन करे श्रौर धर्म्ममैं स्थितहोवे ३ ॥ श्रौर कपाल हाथमैं धारकर्के श्रौर खट्वांगयोशस्त्र विशेष तिसकों धारकर्के श्रौरब्रह्मचर्य्य

ब्रह्महाद्वादशाब्दानिकुटींकृत्वावनेवसेत् भैक्ष्येणात्मविशुद्ध्यर्थंकृत्वाशव शिरोध्वजम् १ ब्राह्मणावसथान्सर्वान् देवागारान्विवर्जयेत् विधूमेश नकैर्नित्यंव्यंगारेभुक्तवज्जने २ एककालंचरेद्भैक्ष्यंदोषंविख्यापयन्नृणाम् वन्यमूलफलैर्वापिवर्त्तयेद्धर्ममाश्रितः३ कपालपाणिः खट्वांगीब्रह्मचर्यपरा यणः पूर्णेतुद्वादशेवर्षेब्रह्महत्यांव्यपोहति ४ श्रकामतः कृतेपापेप्रायश्चित्त मिदंशुभम् कामतोमरणाच्छुद्धिर्ज्ञेयानान्येनकेनचित् ५ कुर्यादनशनंवाथ भृगोःपतनमेववा ज्वलंतंवाविशेदग्निंजलंवाप्रविशेत्स्वयम् ६ ब्राह्मणार्थेग वार्थेवासम्यक्प्राणान्परित्यजेत् ब्रह्महत्यापनोदार्थमंतरावामृतस्यत् ७ ब्राह्मणाद्यर्थेप्राणान्परित्यजेत् तदर्थंनिवेदयेत् निवेदने सति मृतस्यांतरा मरणंविनापिशुद्धिरित्यर्थः

व्रतके धारणमैं तत्पर योहै सोवारां वर्षोंके पूर्णहोश्रां ब्रह्म हत्याकों दूरकर्त्ताहै ४ ॥ विनाकामना नें किया योपाप तिसपापके दूरकरणे केनिमित्त यह सुंदर प्रायश्चित्तहै श्रर्थात् श्रेष्ट प्रायश्चित्तहै श्रौर कामनाते कियायोपाप तिसकी मरणतेंहिं शुद्धिहै श्रौर किसी उपाय कर्के शुद्धि नहिंहै ॥ ५ ॥ श्रथवाश्रनशन व्रतयोहै भोजनकुछनहिं करणा तिसकोंकरे श्रथवा गर्त्तमैं पडकर्के प्राणों कों त्यागे ॥ श्रथवावलती श्रग्निमैं प्रवेशकर्के प्राणोंकों त्यागे ॥ श्रथवा ब्राह्मणोंके निमित्त वा गौश्रोंके निमित्त श्रच्छीप्रकारप्राणोंकों त्यागे ६ ॥ श्रथवा ब्राह्मण वागोश्रांइनके निमित्तश्राप णों श्रापके निवेदन करे श्रांहोश्रां योप्राण वचजांयें तवमरणतें विनाभिशुद्ध होजाताहै ॥ ७॥

दीर्घेति अथवा दीर्घरोगीयो ब्राह्मण तिसका रोग दूर करे अथवा दुर्भि क्षयोहै उसमैं अन्न दानकरे इनों कर्केभी ब्रह्महत्याकों दूर कर्त्ताहै ॥ ८ ॥ अथवा अश्वमेध यज्ञकों कर्के और यज्ञांत स्नान कर्के द्विज योहै ब्रा- क्ष- वै- सो शुद्ध होताहै। अथवा वेदोंके जाणनें वाला यो ब्राह्मण तिसके तांई सर्वस्व दान कर देणे कर शुद्ध होताहै ॥ ९ ॥ अथवा सरस्वती और अरुणा नदीका यो संगमहै लोकमैं प्रसिद्ध तिसमैं तीन काल स्नान कर्के और तीनरात्रि निराहार व्रत कर्के ब्रह्महत्याके करणे वाला मनुष्य शुद्ध होताहै ॥ १० ॥ अथवा रामेश्वर जोयोहै पुण्य कया तीर्थ रूप तिनमैं जाय कर्के और समुद्रमैं स्नान कर्के और ब्रह्मचर्य्यादि यो धर्म्महैं तिनों कर्के युक्त योहै सो मनुष्य रामेश्वर महादेवजीका दर्शन कर्के ब्रह्महत्याके पापतें रहित होता

दीर्घामयाविनंविप्रंकृत्वानामयमेवतु दत्वाचान्नंसुदुर्भिक्षेब्रह्महत्यांव्यपोहति ८ अश्वमेधावभृथकेस्नात्वावाशुद्ध्यतेद्विजः सर्वस्ववावेदविदेब्राह्मणायप्रदायतु ९ सरस्वत्यास्त्वरुणयासंगमेलोकविश्रुते शुद्ध्येत्त्रिषवणस्नानात्त्रिरात्रोपोषितोनरः १० गत्वारामेश्वरंपुण्यंस्नात्वाचैवमहोदधौ ब्रह्मचर्यादिभिर्युक्तोदृष्ट्वारुद्रंविमुच्यते ११ कपालमोचनंनामतीर्थंदेवस्यशूलिनःस्नात्वाभ्यर्च्यपितॄन्भक्त्याब्रह्महत्यांव्यपोहति १२ यत्रदेवादिदेवेन भैरवेणामितौजसा कपालंस्थापितंपूर्वंब्रह्मणःपरमेष्ठिनः १३ समभ्यर्च्य महादेवंतत्रभैरवरूपिणम् तर्पयित्वापितॄन्स्नात्वामुच्यतेब्रह्महत्यया १४ नारदीयपुराणेमहापातककथनम् ब्रह्महाचसुरापश्चस्तेयीचगुरुतल्पगः महापातकिनस्त्वेतेतत्संसर्गीचपंचमः १ ॥

हैं ॥ ११ ॥ और कपाल मोचन नाम यो महादेवजीका तीर्थहै जिस स्थानमैं महादेवजीनैं कपालमोचन किया उस तीर्थमैं स्नान कर्के और पितरोंके तांई भक्ति कर्के पूज कर्के ब्रह्महत्या कों दूर कर्त्ताहै ॥ १२ ॥ और जिस जगामैं देवाधि देवयोहैं भैरवजी अमित तेज जिनका उनोंनें ब्रह्माजीका कपाल स्थापन किया ॥ १३ ॥ उस जगामैं भैरवरूपयो महादेव उनकों पूज कर्के और स्नान कर्के और पितरोंकों तर्पण कर्के ब्रह्महत्या कर्के रहित होताहै ॥ १४ ॥ अब नारदीय पुराणमैं महापातक कहितेहैं ॥ ब्राह्मणके मारणे वाला अर सरावके पीणे वाला अर पूर्वोक्त स्वर्णकी चोरीके करणे वाला और गुरोंकी स्त्रीमैं संग करणे वाला एह इतनें महापातकीहैं और इनका यो संसर्ग करणे वाला सो पांचमां ५ महापातकीहैं ॥ १ ॥

योमनुष्य एहयो महापातकीहैं चार इनके साथ एकशय्यामैं शयन करणा और एक आसनमैं इकठे वैठणा और इकठे वैठकर्के भोजन करणा इस प्रकार वर्त्ते तिसमनुष्यको संपूर्ण कर्म्मोंमैं पतित जाणे २ ॥ नारदीयपुराणमैंहिं ब्राह्मणके मारणका प्रायश्चित्त किहाहै योमनुष्य अज्ञानतैं ब्राह्मणको मारे सोदेहमैं चीरवस्त्र धारे और शिरमैं जटाधारे और आपमारआ यो ब्राह्मण तिसका कपालवीहाथमैंधारे ३ ॥ हेमुनिओंमैं श्रेष्टयो उसकाकपाल नहिं मिले तव और कपाल ध्वजाकेदंडमैं धारकर्के और वनमैं विचरे ४ ॥ और तहांवनमैं वनकेयो फलहैं तिनको एकवार प्रमाण कर्के भोजनकरे और अच्छीप्रकार संध्याकोंकरे तीनकाल स्नानकरे ५ ॥ और पडना

यस्तुसंवत्सरंह्येतैः शयनासनभोजनैः संवसेत्सहतंविंद्यात्पतितंसर्वकर्म्मसु २ तत्रब्रह्महप्रायश्चित्तम् ॥ अज्ञानाद्ब्राह्मणंहत्वाचीरवासाजटीभवेत् स्वेनैवहतविप्रस्यकपालमपिधारयेत् ३ तदभावेमुनिश्रेष्ठकपालंचान्यमेव वाधर्त्तव्यंध्वजदंडेतुधृत्वावनचरोभवेत् ४ वन्याहारोवसेत्तत्रवारमेकंमिताशनः सम्यक्संध्यामुपासीतत्रिकालंस्नानमाचरेत् ५ अध्यपनाध्यायनादीन्वर्जयेत्संस्मरेद्धरिं ब्रह्मचारीभवेन्नित्यंगंधमाल्यादिवर्जयेत् ६ तीर्थान्यनुवसेच्चैवपुण्याश्चैवाश्रमांस्तथा यदिवन्यैर्नजीवेतग्रामेभिक्षांसमाचरेत् ७ द्वादशाष्टव्रतंकुर्यादेवंहरिपरायणःब्रह्महाशुद्धिमाप्नोतिकर्माहश्चैवजायते ८ इदमज्ञानतोविप्रमात्रवधेद्रष्टव्यम् इदंचराजवधोपलक्षणम् । तथाहि श्रीवाल्मीकिरामायणेकिष्किंधाकांडेसप्तदशाध्यायेबालिवचनम् ॥ राजहाब्रह्महागोघ्नश्चौरःप्राणिवधेरतः ॥ नास्तिकःपरिवेत्ताचसर्वेनिरयगामिनइति

अस्यैव कल्पान्तरं व्रतेति

और पडाणेयें आदिलेकर और योधर्म्महैं तिनको त्यागे और भगवान्का स्मरण करे और गंध पुष्पोंके हार इत्यादिकयोद्रव्यहैं तिनोंकर्के रहितहोवे और ब्रह्मचर्य्यकोधारे ६ ॥ तीर्थयेहैं और पवित्रयो आश्रमहैं तिनमैं वासकरे जव वनमैं वनके फलों कर्के नहिं निर्वाह होवे तव ग्राममैं भिक्षाको मांग कर्के देह निर्वाहको करे ७ द्वादशाष्टेति वारांयो प्राजापत्यव्रत तिनोंकर्के गुणित योआठहैं अर्थात् छ्यानुयें १६ प्राजापत्यव्रत तिनकोंकरे और नारायण परायण होवे इसप्रकार ब्राह्मणके मारणवालाशुद्धिको प्राप्तहोताहै और कर्म्मोंके योग्यहोताहै ८ ॥ एह अज्ञानतैं ब्राह्मण मात्रके मारणमैं प्रायश्चित्तहै एह राजाकेमारणेमेभी जानणा इसीका कल्पांतर कहितेहैं व्रतेति

व्रतेति इसप्रकार व्रतकों कर्त्ताजव व्रतके मध्यमें मृगोंकर्केअथवारोगोंकर्के मृतहोजावे अथवा गौके निमित्तवा ब्राह्मणके निमित्त प्राणोंकोंत्यागे ९ ॥ वाश्रेष्टयोब्राह्मणहैं तिनकेतांयींदशसहस्र१००००अष्टगोदानकरदेवें एहयो प्रकार कहेहैं इनमें एक उपायकोंभी कर्के ब्राह्मणके मारणेवाला शुद्धिकों प्राप्तहोंताहै ॥ १० ॥ दीक्षितक्या यज्ञका आरंभ किया जिसनें तिसक्षत्रीकों मारकर्के ब्रह्महत्या के व्रतकों करे॥अथवा अग्निमें प्रवेशकर्के दग्धहोवे वा वडायो ऊचा स्थान पर्वतादि तिसतें गिड कर्के प्राणोंकों त्यागे ॥ ११ ॥ और दीक्षित यो ब्राह्मण तिसकों मारकर्के द्विगुण क्या दूणा व्रतकरे और आचार्य्यादियोंहैं तिनके मारणमें चतुर्गुणा व्रतकरें ॥ १२ ॥ और केवल ब्राह्मण मात्रकों मारकर्के एक वर्षपर्यंतव्रतकोंकरे हेद्विज एहब्राह्मणकों प्रायश्चित्तकी विधिकहीहै ॥ १३

व्रतमध्येमृगैर्वापिरोगैर्वापिनिषूदितः गोनिमित्तंद्विजार्थेवाप्राणान्वापि परित्यजेत्॥ ९ ॥यद्वादद्याद्द्विजेंद्राणांगवामयुतमुत्तमं एतेष्वन्यतमंकृत्वा ब्रह्महाशुद्धिमाप्नुयात् ॥ १० ॥ दीक्षितंक्षत्रियंहत्वाचरेद्ब्रह्महणोव्रतं अग्नि प्रवेशनंवापिमहत्प्रपतनंतथा ॥ ११ ॥ दीक्षितंब्राह्मणंहत्वाद्विगुणंव्रतमाचरेत् आचार्यादिवधेचैवव्रतमुक्तंचतुर्गुणम् १२ हत्वातुविप्रमात्रंचचरेत्सं वत्सरंव्रतं एषविप्रस्यगदितः प्रायश्चित्तविधिर्द्विज ॥ १३ ॥ द्विगुणंक्षत्रियस्योक्तंत्रिगुणंतुविशस्स्मृतम् । ब्राह्मणंहंतियःशूद्रस्तमशल्यंविदुर्बुधाः१४ अशल्यंप्रायश्चित्तैरपिशुद्धिहीनम् । राज्ञैवाशिक्षाकर्त्तव्याइतिशास्त्रेपुनिश्चयः ब्राह्मणीनांवधेत्वर्धं पादः स्यात्कन्यकावधे ॥ १५ ॥ पाद इतिअज्ञातकन्यावधविषयं ज्ञात्वावधेउपपातकप्रकरणेस्त्रीवधप्रसंगेवोध्यम् ॥

योंब्राह्मणकों ब्राह्मणके मारणका प्रायश्चित्तकिहाहै उसते दूणा क्षत्रीकों ब्राह्मणके मारणका प्रायश्चित्तहै और वैश्यकों तीनगुणाहै और यो शूद्रब्राह्मणकों मारताहै तिसकों बुद्धिमान् अशल्यकहतेहैं अशल्यक्या प्रायश्चित्तों कर्केवी शुद्धिकर्के रहित होताहै ॥ १४ ॥ और राजानें हिं शिक्षा करणे योग्यहे एह शास्त्रोंमें निश्चयहे ब्राह्मणीनामिति॥ब्रह्मणीं क्रियां यो स्त्रीयांहैं तिनके मारणेमें आधा प्रायश्चित्त किहाहै और कन्याके मारणमें पादक्या चतुर्थांश व्रत करे पाद एह योहै सो अज्ञात कन्या वधमें प्रायश्चित्तहै॥जाणकर्के कन्याके मारणमें उपपात प्रकणमें स्त्रीवध प्रसंगमें देखलेणा ॥ १५ ॥

और अनुपनीतयेहैं यज्ञोपवीत संस्कार रहित तिनकों मार कर्के पादमात्र व्रत करे॥और क्षत्री कों मार कर्के ब्राह्मण छेवर्ष व्रतकों करे ॥ १६ और वैश्यकोंमारकर्के ब्राह्मण तीनवर्ष व्रतकरे और शूद्रकों मारकर्के ब्राह्मण एकवर्ष व्रतकरे॥और दीक्षित ब्राह्मणकीस्त्रीकों मार कर्के आठ वर्ष व्रतकरे ॥ १७ इसप्रकार ब्रह्महत्याके व्रतकोंकरणेकर निश्चय कर्के शुद्धहोताहै॥हेमुनिसत्तम १८ ॥ एह योप्रायश्चित्त विधान है सोसंपूर्ण स्थानोंमें वृद्ध आतुर स्त्रियांबालक इनकोंबुद्धि मानोंनें आधाप्रायश्चित्त किहाहै॥स्मृत्यंतरमें कहितेहैं॥योमनुष्य मारणके निमित्त उद्यत होयाहै सोविनामारे वोपादोन व्रतकोंकरे ॥ और इसीप्रकारनाहिं मारणकों उद्यत यो मनुष्य ओहोजब

हत्वात्वनुपनीतांश्चतथापादव्रतंचरेत् हत्वातुक्षत्रियंविप्रःषडब्दंकृच्छ्रमाचरेत् १६ संवत्सरत्रयंवैश्यंशूद्रंहत्वातुवत्सरं दीक्षितस्यस्त्रियंहत्वाब्राह्मणीं चाष्टवत्सरान् १७ ब्रह्महत्याव्रतंकृत्वा शुद्धोभवतिनिश्चितं प्रायश्चित्तविधानंतुसर्वत्रमुनिसत्तम १८ वृद्धातुरस्त्रीबालानामर्द्धमुक्तंमनीषिभिः। स्मृत्यंतरेतु चरेद्व्रतमहत्वातुघातार्थंचेत्समुद्यतइत्यत्र मारणंविनापिव्रतमुक्तंतत्पादोनंबोध्यं तत्सदृशत्वात् तथाचघातार्थंसमुद्यत इचेत्तदा अहत्वापिपादोनंअघातार्थंसमुद्यतस्तदाहत्वापिपादोनंचरेदितितात्पर्य्यार्थः॥ सुरापानप्रायश्चित्तंविष्णुधर्म्मोत्तरे । सुरांपीत्वाद्विजोमोहादग्निवर्णांसुरांपिबेत् तयासकायेनिर्दग्धेमुच्यतेकिल्बिषात्ततः १ गोमूत्रमग्निवर्णंवापिबेदुदकमेववा पयोघृतंवामरणाद्गोशकृद्रसमेववा २ कणान्वाभक्षयेदब्दंपिण्याकंवासकृन्निशि सुरापानापनुत्यर्थंजलवासाजटीध्वजी ३

किसीकों मारदेवे तवभी पादोन व्रतकोंकरे॥सुरापानका प्रायश्चित्त विष्णुधर्मोत्तरमें किहा॥अज्ञाननें द्विज सरावकोंपीकर्के अग्निकी न्याईभया वर्णजिसका ऐसा लाल तपायायो सरावतिसकों पीवे॥तिसकर्के देहके दग्धहोआं तिसपापतें रहितहोताहै १ । वाअग्नि वर्णयो गोमूत्रतपायाहुआ वाजल योहै अग्निवर्ण वादुग्ध वाघृत गोहेकारस अग्नि कर्के लालकियाहुआ इनकों पानकरे २ । वावर्ष पर्यन्त कणयोहैं अन्नके तिनकों चुणकर्के भोजन करे वाएकवार रात्रिमें खलयोहै तिलांकाफोग तिसकों भोजनकरे सरावपीणे का योपाप तिसके दूर करणे वास्तेजलमें वासकरे और जटांशिरमें धारे और ध्वजाहाथमें धारे ३ ॥

सुरेति अन्नोंका जो मल सो सुराहै मल नाम पापका है तिसकारणतें ब्राह्मण क्षत्री वैश्य सुरा कों नाहिं पानकरे ४ ॥ सुरातीन प्रकारकीहै सो प्रकार कहितेहैं एक गौडी सुराहै सो गुडकी होतीहै और एक पैष्टी सुराहै सो आटेकी होतीहै और एकमाध्वी सुरा सो मखीरकी होतीहै जैसी एकहै सुरा तैसिआं हिं संपूर्णहैं एह द्विजोत्तमोंनें नाहिं पान करणे योग्य ५॥ मद्यमांस सुराएह योहैं यक्ष और राक्षस और पिशाचोंकों का भक्ष्यहैं एह ब्राह्मणनें नाहिं भोजन करणे योग्य यो ब्राह्मण देवताके नैवेद्यकों खाणे वाला सो मद्य मांस सरावकों कदाचित् नाहिं भक्षणकरे ॥ ६ दश प्रकारके मद्यकहेहैं सो कहितेहैं एकमाधूक नाम मद्यहै सो मखीरका होताहै १ और एक ऐक्षव नामकहै सो गन्नयोंके रसका होताहै २ और एक सैरक नामहै सो मद्यविशेषहै ३ और एक तालनामक है सो ताड वृक्षके फलके रसका होताहै ४ और एक खार्जूर नामक है सो खजूर वृक्षका होताहै ५ और एक पानसमद्य होताहै सोकटहडका होताहै ६ मृद्वीका

सुरावैमलमन्नानांपाप्माचमलमुच्यते तस्माद्ब्राह्मणराजन्यौवैश्यश्चनसुरां पिबेत् ४ गौडीपैष्टीचमाध्वीचाविज्ञेयात्रिविधासुरा यथैवैकातथासर्वानपातव्याद्विजोत्तमैः ५ यक्षरक्षःपिशाचान्नंमद्यंमांसंसुरासवम् तद्ब्राह्मणेननात्तव्यंदेवानामश्नताहविः ६ देवानांहविरश्नताब्राह्मणेनेतिसंबंधः ॥ माधूकमैक्षवंसैरंतालंखार्जूरपानसम् मृद्वीकारसमाद्धवीकेमैरेयंनारिकेरजम् ७ असेव्यानिदशैतानिमद्यानिब्राह्मणस्यतु यस्यकायगतंब्रह्ममद्येनाप्लाव्यतेसकृत् ८ तस्यव्यपैतिब्राह्मण्यंशूद्रत्वंचसगच्छति ९ कूर्म्मपुराणेप्येवमेव ॥ नारदीयपुराणे गौडीपैष्टीचमाध्वीचविज्ञेयात्रिविधासुरा चातुर्वर्ण्यैरपेया स्यात्तथास्त्रीभिश्चनारद १

द्राक्षाका नामहै एक तिसका मद्य होताहै ७ और एक महुयेका मद्य होताहै ८ और एक मैरेय नामक मद्यहै सो धाईके पुष्प० गुड० धाना० अम्ल इनकों मिलकर्के होताहै ९ और एक नालिकेलज मद्यहै सो नालिकेरका होताहै १०॥ ७ ॥ अब इनमें माधवका वचनहै(सीधुरिक्षुरसैःपक्वैरपक्वै रासवो भवेत् मैरेयं धातकी पुष्प गुडधानाम्ल संहित मिति) १ ब्राह्मणकों एह दशाहिमद्य नाहिं सेवनेयोग्य ८ ॥ और जिसके देहमें प्राप्तयो ब्रह्महै सो एक वारभीमद्यकर्के प्लावन कया भिग्गा होवे तिसका ब्राह्मण भावदूर होजाताहै और सो शूद्रभावकों प्राप्त होताहै ९ ॥ कूर्म्म पुराणमें भी इसी प्रकारहै। नारदीय पुराण में कहितेहैं गौडी और पैष्टी और माध्वी एह तीन प्रकारकी सुरा जानणे योग्यहै हे नारद सो तीन प्रकार की सुरा चार वर्ण योहैं ब्राह्मणादि और स्त्रीयां तिनकों अपेयाहै अर्थात् नाहि पान करणे योग्य ॥ १ ॥

योकदाचित् एहतीन प्रकारकी सुराकोंपानकरे तवदूध, घृत. गोमूत्र एहयोतीनहैं इनकेमध्यमेंएककोंअग्निकर्के तपायकर अग्निवर्ण क्या लाल कर्के पानकरे श्रौर स्नानकर्के गीले वस्त्र धारकर्के नारायणकास्मरण करे २ ॥ पकेति अग्निकर्के लोहिकी न्याई लाल वर्णकीया यो जल तिसकों पान करे ॥ सो यो हैं दूध. घृत-गोमूत्र. जल. अग्नि कर्के लाल वर्ण किये हुये तिनके मध्यमें एककों सुवर्ण पात्र कर्के वालोह पात्रकर्के पानकरे ॥ इहांलोह नाम सुवर्णकाहै इसनें कितना दुग्धादिपानकरणा इसआकांक्षामें जितनें कर्के तृप्तिहोतीहैं उतनापीवे ॥ अथवा जितनाएकदिनमें सराव पीया इतनांपीवे इसमें योथोडापीवे तव क्लेश थोडा होताहै और जव वहुत पीवें तव पीणेकों अशक्तहोताहै इसकर्के जितना इकदिन सराव पीआहै उतनांहिं पीवे ॥ ३ वा ताम्र केपात्र कर्के तपाये दुग्धादिकों पानकर्के मृत्युकों प्राप्तहोजावे ॥ इसप्रकार सरावकेपी

क्षीरं घृतं वा गोमूत्रमेतेष्वन्यतमं मुनेः स्नात्वार्द्रवासा नियतो नारायणमनुस्मरन् २ पक्कायःसन्निभं कृत्वा पिवेच्चैवोदकं ततः तत्तलौहेन पात्रेण आयसेनाथवा पिवेत् ३ लोहमत्रस्वर्णम् अत्र कियत्पातव्यमित्याकांक्षायां तृप्तिक्षममितं तदीयपीतैकाहिकमितं वादेयं न्यूनस्याल्पक्लेशदायित्वादधिकस्य पायायितमशक्यत्वादितिध्येयम् । ताम्रेणवाथपात्रेण तत्पीत्वा मरणं व्रजेत् सुरापी शुद्धिमाप्नोति नान्यथा शुद्धिरिष्यते ४ अज्ञानाज्जडया वुद्ध्या सुरां पीत्वा द्विजश्चरेत् व्रह्महत्याव्रतं सम्यक् चिह्नपरिवर्जितः ५ यदि रोगनिवृत्त्यर्थमौषधार्थं सुरां पिवेत् तस्योपनयनं भूयस्तथा चांद्रायणद्वयम् ६ सुरासंस्पृष्टपात्रं तत्सुराभांडोदकं तथा सुरापानसमं प्राहुस्तथा तद्रसभक्षणम् ७ तालं च पानसं चैव द्राक्षं खार्जूरसंभवम् माधूकं शैलमारिष्टं मैरेयं नालिकेरजम् ८ गौडी माध्वी सुरा मद्यमेवमेकादश स्मृताः एतेष्वन्यतमं विप्रो न पिवेद्वै कदाचन ९

नेवाला शुद्धिकोंप्राप्तहोताहै इसतें विना शुद्धिकों नहिं प्राप्त होताहै ४ ॥ और जव अज्ञानतें और जडवुद्धि कर्के द्विजव्राह्मण क्ष, वै सरावकों पीमें तव अछी प्रकार व्रह्महत्या काव्रतकरे परंतु व्रह्महत्याके योचिह्नहैं तिनों कर्के रहितहोवे ५ ॥ और योरोग दूरकरणनिमित्त औषधिके निमित्त सरावपीवे तव उसका फेर यज्ञोपवीत संस्कार करणा और दोह दो चान्द्रायण व्रत करे ६ ॥ और सराव कर्के संस्पृष्ट योपात्र और सराव केभांडकाजल और तिसके रसकायोभक्षण तिसको सुरापान केवरावर कहितेहैं ७ ॥ और ताल पानस द्राक्ष खार्जूरमाधूक शैलआरिष्ट, मैरेय. नारिकेलज ८ ॥ और गौडी, माध्वी सुराएहएकादश ११ मद्यकहेहैं इनका अग्रेपूर्वपृष्टमें लिखआयेहां इनकें मध्यमेंव्राह्मण एककोंभीनहि पानकरे ९ ॥

योद्विज अज्ञानकर्के इनकेमध्यमें एकमद्यकों भीपीवे तिसका पुनः यज्ञोपवीतसंस्कारकरे और ओह पीणेवाला तप्तकृच्छ्रव्रतकोंकरे। और मद्यएहयोहै सोविशेष्यनिर्देशहै और शैलमारिष्ट एह एकहिनामहै मद्यविशेषका १०॥ अवविष्णुधर्मोत्तरमें सुवर्णकीचोरीकाप्रायश्चितकहितेहैं अतइति अवइसतें उपरंत सुवर्णकी चोरीका निर्णयक्याप्रायश्चित्तकहितेहैं सुवर्णकेचुराणे वाला ब्राह्मण राजाकेपासजायकर्के १ ॥ आपणे कर्म्मकोंराजाके तांई सुनाउताहुआ इसप्रकार कहे हेराजन् तुममेरेकों शिक्षाकरो तवराजा मुसललैकर्के आपतिससुवर्णकेचुराणेवाले ब्राह्मणकों मुशलका प्रहारकरे २ ॥ उसप्रहारकर्के मरणेकर्के चोरयोब्राह्मण सो शुद्धहोजाताहै अथवातपकर्के शुद्धहों ताहै तपकर्केसुवर्णकी चोरीकापापदूरकरणेंकी इच्छावालाब्राह्मण ३ ॥ चीरवस्त्र धारकर्के वनमें

एतेष्वन्यतमंयस्तुपिवेदज्ञानतोद्विजः तस्योपनयनंभूयस्तप्तकृच्छ्रंचरेत्तथा १० मद्यमितिविशेष्यनिर्देशः शैलमारिष्टमित्येकंनाममद्यविशेषस्य ❀ विंष्णुधर्मोत्तरेसुवर्णस्तेयप्रायश्चित्तम् । अतऊर्ध्वंप्रवक्ष्यामिसुवर्णस्तेयनिर्णयम् सुवर्णस्तेयकृद्विप्रोराजानमभिशस्यतु १ स्वकर्मख्यापयन्ब्रूयान्मांभवाननुशास्त्विति गृहीत्वामुशलंराजासकृद्धन्यात्तुतंस्वयम् २ वधेनशुध्यतेस्तेनो ब्राह्मणस्तपसैववा तपसापनुनुत्सुस्तुसुवर्णस्तेयजंमलम् ३ चीरवासाद्विजोरण्येचरेद्ब्रह्महणोव्रतम् ४ कूर्मपुराणेपि। सुवर्णस्तेयकृद्विप्रोराजानमभिगम्यतु स्वकर्मख्यापयन्ब्रूयान्मांभवाननुशास्त्विति १ गृहीत्वामुशलंराजासकृद्धन्यात्ततःस्वयं वधेनशुध्यतिस्तेनोब्राह्मणस्तपसैववा २ स्कंधेनादाय मुशलंलगुडंखादिरंतथा शक्तिंचोभयतस्तीक्ष्णामायसंदंडमेवच ३ राजाच तेनवक्तव्योमुक्तकेशेनधावता आचक्षाणेनतत्पापमेवकर्मास्मिशाधिमाम् ४

जायकर ब्रह्महत्याकेव्रतकोंकरे ४ ॥ कूर्म्मपुराणमेंभीकहितेहैं सुवर्णचुराणेवालाब्राह्मणराजके पास जायकरआपणेकर्म्मकोंप्रसिद्धकरे औरइसप्रकारकहेहेराजन् मेरेकोंतुमदंडकरो १ । तवउसब्राह्मणके कथनतें राजाआपमुसल लेकर तिसकोंएकवारमोरे चोरयोब्राह्मणहै योमरजाये उसप्रहार कर शुद्ध होजाताहै अथवा तपकर्के शुद्धहोताहै २ । ब्राह्मण आपणे मूंढे कर्के मुशलकों उठायल्यावे अथवा लाठी अथवा खदिरकामुशल अथवा दोनों तरफतीक्ष्णहैं जिसकेऐसी वरछीलैकर अथवा लोहेकादंडलेकर ३ । दौडता और खुलेहुयेशिरकेवालाजिसके ऐसायोब्राह्मणतिसनें राजाकोंकथनकरणा और उसआपणेपापकाकथनकरणाहेराजन्इसप्रकारकर्म्मकरणेवालामैंहांमेरेकों शिक्षाकरो ४ ॥

शासनाद्वेति शासनात् क्या दंड करणे तें अथवा छोंडदेणेंतें चोर पापेंत रहित होताहै॥ और योराजा शिक्षा नांकरे तांतिसके नहिं करणेंतें राजापापकों प्राप्तहोताहै॥५॥और तप करके सुवर्णकीचोरीकें पापकों दूर करणेकी इच्छा वालायो द्विजहै सो वनमें जाय कर्के और चीर वस्त्रयोंहि तिनकों धार कर्के ब्रह्महत्याके व्रतकों करे ॥६॥ अथवा अश्वमेधयज्ञ कर्के यज्ञकीसमाप्ती में स्नान कर्के द्विज उसपातकतें पवित्र होताहै॥अथवा आपणे तोलके बराबर सुवर्ण ब्राह्मणोंके तांई देवे उसके देणे कर शुद्ध होंताहै॥७॥अथवा वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचर्यकों धार कर्के प्राजापत्य व्रतकों करे॥ब्राह्मणके सुवर्णकों चुराणे वाला तिससुवर्णकी चोरीकापाप दूर कर्णेके निमित्त इसप्रकार करे॥८॥अब नारदीय पुराणमें कहितेंहै प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष वलतें अथवा चोरी कर्के

शासनाद्वाविमोक्षाद्वास्तेनः पापात्प्रमुच्यते अशिक्षितातुयोराजातेनप्राप्नोतिकिल्बिषम् ५ तपसापनुनुत्सुस्तुसुवर्णस्तेयजंमलम् चीरवासाद्विजोरण्येचरेद्ब्रह्महणोव्रतम् ६ स्नात्वाश्वमेधावभृथेपूतः स्यादथवाद्विजः॥प्रदद्याद्वाथविप्रेभ्यस्स्वात्मतुल्यंहिरण्यकम् ७ चरेद्वावत्सरंकृच्छ्रंब्रह्मचर्यपरायणः ब्राह्मणस्वर्णहारीतुतत्पापस्यापनुत्तये ८ नारदीयपुराणे समक्षंवापरोक्षंवावलाच्चौर्येणवातथा परस्वानामुपादानंस्तेयमित्युच्यतेवुधैः १ सुवर्णस्यप्रमाणंतुमन्वाद्यैः परिभाषितम् वक्ष्येशृणुष्वविप्रेन्द्रप्रायश्चित्तोक्तिसाधनम् २ गवाक्षागतमार्तण्डरश्मिमध्येप्रदृश्यते त्रसरेणुप्रमाणंतुरजइत्युच्यतेबुधैः ३ त्रसरेणूवष्टकंलिक्षातत्त्रयंराजसर्षपः गौरसर्षपस्तत्त्रयंतत्षट्कंयवउच्यते ४

पराये धनोंकायो ग्रहण करणा उसकों पंडित लोक चोरी कहितेहैं॥१॥अब सुवर्ण प्रमाण मन्वादियों कर्के कथन कराहुया प्रायश्चित्तोक्तिका साधन हे विप्रेंद्र मैंतेरेकों कहिताहां उसकोंतूं श्रवण कर ॥२॥ झरोखा योहै तिसमें प्राप्त भई यो सूर्य्य की किरण तिसके मध्य यो रज उड़ता है सो रज वुद्धिमानोंनें त्रसरेणु प्रमाणाके हाहे अर्थात् इस धूडके किणकें कों त्रसरेणु कहितेहैं॥ ३ ॥त्रसरेणवष्टक मिति आठ यो त्रसरेणुहैं उसका नाम लिक्षाहै और तीनयो लिक्षाहैं उनका नाम राजसर्षपहै जिसकों औहर कहितेहैं तीनयोराजसर्षपहै उसका नाम गौरसर्षपहै जिसकों सेती सरिआं कहितेहैं और छे योगौरसर्षपहै उसकों यवकहितेहैं ४ ॥

और तीनयोयवहै सोरतीहोतीहै और पंच ५ योरतिओंहैसोएकमास।होताहैऔर सोला योमा सेहैंउसकानामसुवर्णहै॥हेनारद इहसंबोधनहै ५ ॥ और अज्ञानतेब्राह्मणकाधनचुरायकर्के पूर्वकी न्यांई कपालऔर ध्वजतिनोकेधारणकर्के रहितवारांबर्षपर्यंतब्रह्महत्याकाव्रतकरे ६ ॥ गुरुयोहैं और यज्ञोंकेकरणेवालेयोहैं और धर्मात्मायोहैं और वेदोकोजानणेवालेयोद्विजहैं तिनकासुवर्ण चुरायकर्केइसप्रकारकरेजोआगेकहणाहैं ७ ॥ प्रथम संपूर्ण देहमैं घृतको लावे फेर उसमैं सुके गोहेका चूर्ण लगावे और फेर घृतकों लेपनकरे और करीष क्या गोटेओंकी अग्निमेंदेहकों दग्ध करे तब इस चोरीके पापतें रहित होताहै ८ ॥ और यो कदाचित् ब्राह्मणके धनकोंक्षत्री

यवत्रयंकृष्णलास्यान्मापस्तत्पंचकंस्मृतः मापषोडशमानंस्यात्सुवर्णमिति नारद ५ हत्वाब्रह्मस्वमज्ञानादद्वादशाब्दंतुपूर्ववत् कपालध्वजहीनंतुब्रह्म हत्याव्रतंचरेत् ६ गुरूणांयज्ञकर्तृणांधर्मिष्ठानांतथैवच श्रोत्रियाणांद्वि जानांतुहत्वाहेमैवमाचरेत् ७ घृताक्तदेहसम्पूर्णेचूर्णयेल्लिपयेद्घृतम् करी षाच्छादितोदग्धःस्तेयपापाद्विमुच्यते ८ ब्रह्मस्वंक्षत्रियोहत्वापश्चाताप मवाप्यच पुनर्द्ददातितत्रैवतद्विधानंशृणुष्वमे ९ तत्रसांतपनंकृत्वाद्वादशाहोप वासतः शुद्धिमाप्नोतिदेवर्षेह्यन्यथापतितोभवेत् १० रत्नयानमनुष्यस्त्रीधे नुभूम्यादिकेपुच सुवर्णसदृशेष्वेपुप्रायश्चित्तार्द्धमुच्यते ११ त्रसरेणुसमं हेमहत्वाकुर्यात्समाहितः प्राणायामद्वयंसम्यक्तेनशुद्ध्यतिमानवः १२

चुरावे और पीछेतें पश्चातापकों प्राप्तहोयकर्के फेर ब्राह्मणके तांई धन देदेवे तव उसकाविधान तूं मेरेत्तें सुण ९ ॥ तिसमें सांतपन व्रतकोंकर्के बारां दिन निराहार व्रत करे हेनारद सोब्राह्मणके धनकों चुराणे वाला क्षत्री शुद्ध होताहै ॥ अन्यथा यो इस प्रकार नाहिं करे सोपतित होताहै॥१०॥रत्न और वाहन- और मनुष्य- और स्त्री- और धेनु- और भूम्यादि एह योहै सु वर्णके बराबरहैं इनके चुराणे वाला आधे प्रायश्चित्तके योग्य होताहै॥अर्थात् सुवर्णकी चोरीका यो प्रायश्चित्ततिसतें आधा प्रायश्चित्तकरे ११ ॥ त्रसरेण्विति त्रसरेणुके समान सुवर्णकों चुराय क र्के साव धान चित्त होय कर अछी प्रकार मनुष्य दो प्राणा याम करे तव शुद्ध होताहै १२ ॥

और लिक्षा प्रमाण सुवर्ण चुरायकर्के तीन प्राणायाम करे और राज सर्षपयोहै राई तिसकेबरा बर सुवर्ण चुरायकर्के चारप्राणायामकरे १३ ॥ गौरसर्षप योहै सेतीसरीश्रों उसकेबराबर सुवर्ण चुरायकर्के बुद्धिमान् स्नानकर्के गायत्रीमंत्रका आठहजार ८००० जपकरे १४॥ और जब मात्र सुवर्णको चोरीकरणमे मनुष्य प्रातः कालतें लेकर सायंकाल पर्यंत गायत्रीमंत्रकाजपकरे तब उस यवमात्रसुवर्णकी चोरीतें शुद्धहोताहै १५ ॥ और योमनुष्य रत्तीमात्र सुवर्णको चुरावे सोसां तपनव्रतकोंकरे ॥ अबमासाप्रमाणसुवर्णके चुराणेका प्रायश्चित्तकहिंदाहै १६ ॥ योमनुष्य १ मासा सुवर्ण चुराये सोगोमूत्रकर्के पकाये योयवहैं वर्ष मात्र उनको भोजन करे तबशुद्धहोताहै और हेनारद संपूर्ण योसुवर्णहै सोलामासे उसकी चोरी कर्के सावधान चित्तहोयकर बारांवर्ष १२ प

प्राणायामत्रयंकुर्याद्धृत्वालिक्षाप्रमाणकम् प्राणायामाश्चत्वारोराजसर्षप मात्रके १३ गौरसर्षपमाणंतुहृत्वाहेमविचक्षणः स्नात्वाचविधिवज्जप्या द्गायत्र्यष्टसहस्रकम् १४ यवमात्रसुवर्णस्यस्तेयाच्छुद्धोभवेद्द्विजः आसायं प्रातरारभ्यजप्त्वावेदमातरम् १५ हेमकृष्णलमात्रंतुहृत्वासांतपनंचरेत् माषप्रमाणहेम्नस्तुप्रायश्चित्तंनिगद्यते १६ गोमूत्रपक्वयवभुग्वर्षेणैकेनशुद्ध्य ति संपूर्णस्यसुवर्णस्यस्तेयंकृत्वामुनीश्वर १७ ब्रह्महत्याव्रतंकुर्याद्द्वादशा ब्दंसमाहितः सुवर्णमानान्यस्त्वेतुरजतस्तेयकर्मणि १८ कुर्य्यात्सांतपनंसम्य गन्यथापतितोभवेत् दशनिष्कांतपर्यंतमूर्ध्वंनिष्कचतुष्टयात् हृत्वाचरजतंवि द्वान्कुर्य्याच्चान्द्रायणंमुने १९ दशादिशतनिष्कान्तंयःस्तेयीरजतस्यतु चान्द्रा यणद्वयंतस्यप्रोक्तंपापविशोधनम् २० शतादूर्ध्वंसहस्रांतंप्रोक्तंचान्द्रायण त्रयम् सहस्रादधिकस्तेयेब्रह्महत्याव्रतंचरेत् २१

र्यंत ब्रह्महत्याके व्रतकोंकरे १७ ॥ और कहितेहैं सोलांमासेचांदीकी चोरीकरणमें मनुष्यअच्छीप्र कार सांतपन व्रतकों करे तब शुद्ध होताहै योमनुष्यइसप्रकार नहिं करे सोपतितहोताहै ॥ १८ हमेति चार योनिष्कहैं अर्थात् बीसठमासे ६४ तिनातें उपरांत और दश १० निष्कपर्यंत रजतकों चुराणेमें हेनारद बुद्धिमान् चांद्रायणव्रतकोंकरे तबशुद्धहोताहै १९ ॥ दशनिष्कतेंलेकरशत १०० निष्कपर्यंत रजतके चुराणेवालायोमनुष्यहै तिसके पापकाशोधनदोचांद्रायण व्रतकहेहैं २०॥और शत १०० निष्कतें उपरांतहजार १००० निष्कपर्यंत रजतके चुराणेमें तीनचांद्रायणव्रतकहेहैं और जबयोमनुष्यहजार निष्कतें अधिकरजतकों चुराये सो ब्रह्महत्याके व्रतकोंकरे क्योंकि उहरवर्णके तुल्यहै २१ ॥

कांस्य और पित्तल इनों धातुओंयोंलेकर और लोहे पर्यंत हजार निष्क १००० प्रमाणयो धातुओंकों चुरावे सो पराक व्रतकों करे ॥ २२ ॥ और रत्नोंकी चोरी करणेमें रजतकी न्याई प्रायश्चित्त किहाहे ॥ २३ ॥ अब गुरु तल्पग प्रायश्चित्त विष्णु धर्म्मोत्तरमें कहितेहैं गुरोंकी स्त्रीमें संग करणेवाला मनुष्य आपणे मुखकर्के कहेमेंने गुरुतल्पग पाप कियाहै इस प्रकार कहिकर पीछे अग्नि कर्के बलती यो लोहेकी स्त्रीके आकारकी मूर्ति तिसकों कंठ साथ मिलाय कर तप्त लोहमय योरथानतिसमें शयनकरे उसमें जबमरजावे तवशुद्धहोताहे ॥ १ ॥ अथवा उसगुरुतल्पगपापमें आपपापके करणेवाला लिंग और वृषण इनकों कटकर्के और अंजलियोंहि तिसमेंस्थापनकरे अर्थात् दोनोंहाथोंमें लेकर और निर्ऋति योदिशाहै दक्षिण और पश्चिमकेमध्यमें तहां जाय कर और निष्कपट होय कर सीधाहि चलताहै गिडने पर्यंत स्थित होवे

कांस्यपित्तलमुख्येषुअयस्कान्ततथैवच सहस्रनिष्कमानेतुपराकंपरिकीर्तितम् २२ प्रायश्चित्तंतुरत्नानांस्तेयेराजतवत्स्मृतम् २३ गुरुतल्पगप्रायश्चित्तंविष्णुधर्म्मोत्तरे । गुरुतल्पगोभिभाष्यैतत्तप्तेस्वप्यादयोमये सूर्मींज्वलन्तींमाश्लिष्यमृत्युनासाविशुद्ध्यति १ स्वयंवाशिश्नवृषणावुत्कृत्याधायचांजलौनैर्ऋतींदिशमातिष्ठेदानिपातादजिह्मगः २ खट्वांगीचीरवासावाश्मश्रुलोविजनेवने प्राजापत्यंचरेत्कृच्छ्रमब्दमेकंसमाहितः ३ चान्द्रायणंवा त्रीन्मासानभ्यसेन्नियतेंद्रियः हविष्येणयवागूंवागुरुतल्पापनुत्तये ४ कूर्मपुराणेपि । गुरुभार्यांसमारुह्यब्राह्मणःकाममोहितः ॥ अवगूहेत्स्त्रियंतप्तांदीप्तांकार्ष्णायसींकृताम् १

जब गिडजावे तब शुद्ध होताहै ॥ २ ॥ खट्वांगीति अथवा खट्वांगयो शस्त्रविशेषहै इसकों धारे और चीर वस्त्र धारे और दाढीकेया मुखमें रोमोंको धारे निर्जन वनमें सावधान होय कर एक वर्ष पर्यंत प्राजापत्य व्रतकों करे तब शुद्ध होताहै ॥ ३ ॥ अथवा तीन महीने इंद्रियोंकों रोक कर्के चान्द्रायण व्रतको करे अथवा हविष्य भोजन करे वायवागूयोहै यवोंका कांटा तिसकों भोजनकरे गुरोंकी स्त्रीमें संग करणे का यो पाप तिस पापके दूर करणेके निमित्त ॥ ४ ॥ कूर्म पुराणमें भी कहितेहैं ब्राह्मण काम कर्के मोहित हुआ जब गुरोंकी स्त्रीमें संगकरे तब अग्निकर्के लाल वर्ण तपाई यो लोहेकी स्त्री की मूर्ति तिसकों कंठ साथ लगावे तब उसपापतें शुद्धहोताहै ॥ १ ॥

अथवा आपहि आपना लिंग और वृषण तिनको काट करके अंजलीमें लेकर और निष्कप ट हुआ सीधा चलता होया आनिपातात् क्या गिरनेपर्यंत दक्षिण दिशामे स्थित होवे तब शुद्ध होताहै ॥ २ ॥ अथवा गुरु के निमित्त प्राणोंको त्यागे तब शुद्धहोताहै अथवा ब्राह्मणके मारणे कायो व्रत किहा तिसकोकरे तब शुद्धहोताहै अथवा कंडेओं वाली यो वृक्षकी शाखाहै तिसको वर्ष पर्यंत कंठके साथ लगायकर नियम करके पृथ्वीमें शयनकरे तब उसपापतें रहितहोताहै। ३ अथवा सावधान चित्त हुआ और चीर वस्त्रधार करके वर्ष पर्यंत कृच्छ्र क्या प्राजापत्य व्रतकोंकरे । ४ । अथवा अश्वमेध यज्ञमें यज्ञांत स्नानकरके मनुष्य शुद्धहोताहै अथवा ब्रह्मचारीहोयकर सदाव्र तीहोयकर अष्टम काल योहै उसमें भोजन करे ॥ ५ ॥ स्थान, और आसन योहै तिनों करके वि

स्वयंवाशिश्नवृषणावुत्कृत्याधायचांजलौ आतिष्ठेद्दक्षिणामाशामानिपाता दजिह्मगः ।२। गुर्वर्थंवाहतः शुद्ध्येच्चरेद्वाब्रह्महव्रतम् शाखांवाकंटकोपेतांप रिष्वज्याथवत्सरम् ॥ ३ ॥ अधःशयीतनियतोमुच्यतेगुरुतल्पगः कृच्छ्रंवा ब्दंचरेद्विप्रश्चीरवासाः समाहितः।४।अश्वमेधावभृथकेस्नानाद्वा शुद्ध्यतेनरः कालेऽष्टमेवाभुंजानोब्रह्मचारीसदाव्रती । ५ । स्थानासनाभ्यांविहरन्त्रिरह्नो भ्युपयन्नपः। अधः शायीत्रिभिर्वर्षैस्तद्व्यपोहतिपातकम् । ८ । चांद्रायणानि वाकुर्यात्पंचचत्वारिवापुनः ६ । नारदीयपुराणेपि । गुरुतल्पगतानांचप्राय श्चित्तमुदीर्यते अज्ञानान्मातरंगत्वातत्सपत्नीमथापिवा ॥ १ ॥ स्वयमेव स्वमुष्कतुछिंद्यात्पापमुदीरयन् सवर्णोत्तमवर्णास्त्रीगमनेत्वविचारतः ब्रह्महत्याव्रतं कुर्याद्द्वादशाब्दंसमाहितः ॥ २ ॥

हार कर्ता और दिनमें तीन वखत स्नान कर्ता हुआ और पृथ्वीमें शयन करे इस प्रकार वर्तताहुआ तीन वर्षों कर पापकों दूर कर्ताहै ॥ ६ ॥ अथवा पांच ५ चान्द्रायण अथवा पुन चार ४ चांद्रायण व्रत करे तब शुद्धहोताहै । ६ । नारदीय पुराणमें किहाहै गुरुतल्पेति । गुरोंकी स्त्रीमें संग करणे वाले योहैं तिनका प्रायश्चित्त कहितेहैं जिस मनुष्यने अज्ञानतें माताके साथ संग किया होवे और माताकी यो सपत्नी तिसके साथ संग किया होवे । १ । सो मनुष्य आप हि आपणे पापकों प्रकट कर्ताहुआ आपणेयो वृषणहैं उनको कट देवे और पूर्वोक्त विधिकरे ॥ और आपणे वर्णकीयां स्त्रीहैं और उत्तमवर्णकीयां स्त्रीहैं अज्ञानतें इनके साथ संग करणमें सावधान चित्त होय कर बारां १२ वर्ष पर्यंत ब्रह्महत्याके व्रतकों करे ॥ २ ॥

श्रोर योमनुष्य अज्ञानतें वहुतवार सवर्णा स्त्रीमें श्रोर उत्तम वर्णकी स्त्रीमेंसंगकरे तव ओहो मनुष्य गांट ओंकी अग्नि कर दग्धहुया शुद्धिकों प्राप्तहोताहै॥ इंद्विजोत्तम एह संवोधनहै॥ ३॥ श्रोर योमनुष्य माताके साथ संग कर्के वीर्य्यके त्यागतें पहिलेंहि हट जावे तव ओहो ब्रह्महत्यांकाव्र तकरे अर्थात् ब्रह्महत्यामें योव्रत किहा सो प्रायश्चित्तकरे श्रोर यो वीर्य्य कों त्यागे तव अग्निकेसा थ आपणी आपकों दग्धकरे तव शुद्ध होताहे ॥४॥ श्रोर योमनुष्य सवर्णा स्त्री श्रोर उत्तम व र्णा स्त्री इनके साथ संग कर्के वीर्य्यके त्यागतें प्रथमाहि हट जावे तव ओहो मनुष्य नारायण पा यणहुआ उसपापके हटाणेके निमित्त नव वर्ष पर्यंत ९ ब्रह्महत्याके व्रतकों करे ५ ॥ श्रोर वैश्या योहै वैश्यजातिकी पिताकी स्त्री तिसमें संग कर छेवर्ष व्रतकोंकरे श्रोर शूद्रा योहै गुरोंकीस्त्री उ

अमत्याभ्यासतोगच्छेत्सवर्णांचोत्तमांतथाकरीपवह्निनादग्धःशुद्धियातिद्वि जोत्तम ३ रेतस्सेकात्पूर्वमेवनिवृत्तोयदिमातरि ब्रह्महत्याव्रतंकुर्याद्रेत स्सेकेग्निदाहनम् ४ सवर्णोत्तमवर्णाभ्यांनिवृत्तोवीर्य्यसेचनात् ब्रह्महत्या व्रतंकुर्य्यान्नवाब्दान्विष्णुतत्परः ५ वैश्यायांपितृपत्न्यांतुषडब्दंव्रतमाचरेत् गत्वाशूद्रांगुरोर्भार्य्यांत्रिवर्षव्रतमाचरेत् ६ मातृस्वसारंचपितृस्वसार माचार्यभार्यांश्वशुरस्यपत्नीम् पितृव्यभार्यांमथमातुलानींपुत्रींचगच्छेद्यदि काममुग्धः ७ दिनद्वयेब्रह्महत्याव्रतंकुर्याद्यथाविधि एकस्मिन्नेवदिवसे वहुवारंत्रिवार्षिकम् ८ एकवारंगतेह्यब्दंव्रतंकृत्वाविशुद्ध्यति दिनत्रयगमे वह्निदग्धः शुद्ध्येतनान्यथा ९ ॥

थके साथ संग कर्के तीनवर्ष व्रत करे॥ ६॥ श्रोर माता की भगिनी श्रोर पिताकी भगिनी श्रो र आचार्यकी स्त्री श्रोर श्वशुरकी स्त्री श्रोर पिताके भाई कीस्त्री श्रोर मामेकी स्त्री श्रोर क न्या आपणी इनमें जव काम कर्के मोहकों प्राप्तहुआ गमनकरे॥ ७॥ दिनेति एहयो स्त्रियांकहि योहैं इनमें दोदिनयो मनुष्य संग करे सो यथा विधि ब्रह्महत्या के व्रतकों करे श्रोर इनों स्त्रियो मेंहि योमनुष्य एक दिनमें वहुतवार संग करे तव तीन वर्ष ब्रह्महत्या का व्रत करे॥ ८ ॥ श्रोर यो एक वार संग करे सो वर्ष पर्यंत व्रत कर्के शुद्ध होताहे श्रोर योमनुष्य मातृ भगिनी थीआ दि लेकर योस्त्रियांहैं इनमें तीन दिन संग करे तव अग्निमें दग्धहोजावे तव शुद्धहोताहे दग्धहो ये विना उसकी शुद्धि नहिंहे ॥ ९ ॥

चांडाली और पुष्कसी और स्नुषा और भगिनी और मित्रकीस्त्री और शिष्यकीस्त्री इनमेंयोम नुष्यकामकर मोहितहुआसंगकरे १० ॥तवहेनारदछेवर्षपर्यन्त ब्रह्महत्याकाव्रतकरे औरयोमनुष्यका मनातें विनाइनमें संगकरे सो वर्ष पर्यन्तप्राजापत्यव्रतकोंकरे ११ ॥ अवब्रह्महादियोपतितहैं तिन केसाथसंसर्ग करणेकाप्रायश्चित्त कूर्म पुराणमें कहितेहैं अवपतितोंकर्के संयुक्तयोमनुष्यहैं अर्थात् पतितोंकेसंसर्गी तिनकी निष्कृतिक्याति नकाप्रायश्चित्त कहिताहां योद्विजजिसपतितकर्केसंसर्गकों कर्ताहै सोतिससंसर्गके पापदूरकरणेके निमित्ततिसी पापकरणे वालेका योव्रतहै तिसकोंकरे । १ अथवा आलस्यकोंत्यागकर्के वर्षपर्यन्ततप्तकृच्छ्रव्रतकोंकरे औरषाण्मासिकक्याछेमहीनेके संगमें आधाप्रायश्चित्तकरे । २ इनोंव्रतोंकर्के महापापोंके करणेवालेपापकोंदूरकर्तेहैं अथवा पृथिवीमें

चांडालींपुष्कसींचैवस्नुषांचभगिनींतथा मित्रस्त्रियंशिष्यपत्नींयस्तुवैकाम तांव्रजेत् १० ब्रह्महत्याव्रतंकुर्यात्सषडब्दंमुनीश्वर अकामतोव्रजेद्यस्तुसो ब्दंकृच्छ्रंसमाचरेत् ११ ब्रह्महादिपतितसंसर्गप्रायश्चित्तंकूर्मपुराणे । पतितैः संप्रयुक्तानामथवक्ष्यामिनिष्कृतिं पतितेनतुसंसर्गयोयेनकुरुतेद्विजःसतत्पा पापनोदार्थंतस्यैवव्रतमाचरेत् १ तप्तकृच्छ्रंचरेद्वाथसंवत्सरमतंद्रितः षाण्मा सिकेतुसंसर्गेप्रायश्चित्तार्द्धमर्हति २ एभिर्व्रतैरपोहन्तिमहापातकिनोमलं पु ण्यतीर्थाभिगमनात्पृथिव्यांवाथनिष्कृतिः ३ ब्रह्महत्यासुरापानंस्तेयंगुर्वंग नागमः कृत्वाचैताश्चापिसंसर्गंब्राह्मणःकामकारतः ४ कुर्यादनशनंविप्रःपु ण्यतीर्थेसमाहितः ज्वलन्तंवाविशेदग्निंध्यात्वादेवंकपर्दिनम् ५ नह्यन्यानि ष्कृतिर्दृष्टामुनिभिर्ब्रह्मवादिभिः तस्मात्पुण्यतीर्थेषुसदहेद्वास्वदेहकम् ६

योपवित्रतीर्थहैं तिनसभमें जाणेकर्के तिनकापापदूरहोताहै । ३ ब्रह्महत्येति ब्रह्महत्याक्या ब्राह्मण कामारणा और सुरापान क्यासरावकापीणा और स्तेयक्या चोरीकरणी और गुर्वंगनागमक्या गुरोंकोस्त्रीमें संगकरणाएहयो चारमहापातकहैं इनोंकर्के योब्राह्मणइच्छाकर्के संगकरे ४॥तवसो ब्राह्मणसावधानचित्त होयकर पवित्र तीर्थमें निरशनव्रतक्या भोजनकों त्याग कर्के प्राणों कों त्या गे अथवा कपर्दि क्या जटोंका समूहजिनकेशिरके ऊपरऐसे योमहादेव हैं उनकों ध्यान कर्के वलतायो अग्नि उसमें प्रवेशकरे तव शुद्धहोताहै ५ इससें विना ब्रह्मवादि यो मुनिहैं तिनोनें नि ष्कृति नाहिंदेखीहै अथवा तिसकारणतें पवित्रतीर्थोंमे जायकर सोमनुष्य आपणेदेहकोंदग्ध करे ६

नारदीयपुराणमें कहितेहैं महापातकियों का यो संसार्गहै तिसका प्रायश्चित्त कहितेहैं प्रायश्चित्त करणेकर शुद्धहुआहै अंतः करण ।जिसका सो संपूर्ण कर्म्मोंके फलकों प्राप्त होताहै ॥ १ ॥ ब्राह्मणहादि यो चारहैं इनके मध्यमें जिस मनुष्य का जिस पाप करणे वालेकर संग होवे तिस तिस पाप करणे वाले का यो व्रत तिस व्रतकों कर्के सो मनुष्य शुद्धिकों प्राप्त होताहै इसमें संशयनहिं २ और यो मनुष्य अज्ञानतें पांचरातीं ५ इनके साथ संग कर्ताहै सो मनुष्य अच्छी प्रकार प्राजापत्य व्रतकोंकरे यो प्राजापत्यव्रत कों नाहिं करे तब पतित होताहै ॥ ३ ॥ और एह यो महापातकिहैं इनके साथ बारां १२ दिनोंके संसर्गमें महा सांतपन व्रत किहा और अर्द्ध मासक्या पंदरां १५ दिन संसर्ग कर्के बारां १२ दिन निराहार व्रतकरे तब शुद्ध होताहै ॥ ४ ॥

नारदीयपुराणेपि महापातकिसंसर्गिप्रायश्चित्तंनिगद्यते प्रायश्चित्तविशुद्धात्मासर्वकर्मफलंलभेत् ॥ १ यस्ययेनभवेत्संगोब्रह्महादिचतुर्ष्वपि तद्व्रतंसनिर्वर्त्यशुद्धिमाप्नोत्यसंशयम् ॥ २ ॥ अज्ञानात्पंचरात्रंतुसंगमेभिः करोतियः कायकृच्छ्रंचरेत्सम्यगन्यथापतितोभवेत् ॥ ३ ॥ द्वादशाहंतुसंसर्गे महासांतपनंस्मृतम् संगंकृत्वार्द्धमासंतुद्वादशाहमुपावसेत् ॥ ४ ॥ पराकोमाससंसर्गेचान्द्रमासत्रयेस्मृतम् कृत्वासंगंतुषण्मासांश्चरेच्चान्द्रायणद्वयम् ॥ ५ ॥ किंचिन्न्यूनाब्दसंगेतुषण्मासव्रतमाचरेत् एतच्चत्रिगुणंप्रोक्तंज्ञानात्संगेयथाक्रमम् ॥ ६ ॥ जातिभ्रंशादिपातकानिविष्णुधर्म्मोत्तरे तद्यथा ॥ ब्राह्मणस्यरुजःकृत्वाघ्रातिरघ्रेयमद्ययोः जैह्म्यंमैथुनंपुंसिजातिभ्रंशकरंस्मृतम् ॥ १ ॥

पराक इति और एह यो पूर्वोक्त ब्रह्महादि महापातकीहैं महीना मात्र इनके साथ संसर्गकरे क्या बर्त्ते तब पराक व्रत करणे कर शुद्ध होताहै और तीन महीने के संसर्गमें चान्द्रायण व्रत किहा और छेमहीने संसर्ग कर्के दोचान्द्रायण व्रतकरे ॥ ५ ॥ और कुछ न्यून वर्ष के संगमें छे महीने व्रत करे तब शुद्ध होताहै और जब जाण कर्के इनके साथ संग करे तब यथाक्रम कर्के त्रिगुण क्या तीन गुणा प्रायश्चित्तकरे ॥ ६ ॥ जाति भ्रंशादिपातक विष्णु धर्म्मोत्तरमें कहेहैं ॥ ब्राह्मणकों रोग योहैं तिनांनूं दंडादिके साथ करणा और अघ्रेय योहै नहिंघ्राण करणे योग्य मद्य योहैं सराव इनको सुगंध लयणी और कुटिलता करणी और पुरुषमें मैथुन करणा एह जातिभ्रंशकर पातक किहा ॥ १ ॥

खोता घोडा उष्ट्रमृगहस्ति बकरा भेड मत्स्य सर्प नकुल इनकायोमारणासो संकरी करणपात कहोताहै २ ॥ और निंदित योहैंतिनोंतें धनलेणा और व्यापारकरणा और शूद्रकी चाकरीकरणी और झूठबोलनाएहअपात्रीकरणपातकहैं ३ ॥ कृमि और कीट और पक्षीइनकों मारकर्के और सराब कर्के स्पृष्ट योवस्तुतिसका भोजनकरणा फल समिधांपुष्प इनका चुराणापरंतुदेवताकेअर्थ चुराणेका दोषनहि और धैर्यको त्यागणाएहमलिनीकरण पातकहैं एहयोजाति भ्रंशादिपातकइनकाप्रायश्चित्तसप्तमादिप्रकरणमेंजानणे योग्यहै ४॥अथप्रकीर्णकपातककहितेहैं तत्रेति तहां संध्यादिके नाहिकरणे में प्रायश्चित्त कूर्मपुराणमें किहा अनुपासितसंध्यायोहै नहिकरी

खराश्वोष्ट्रमृगेभानामजाव्योश्चैवमारणम् संकरीकरणंज्ञेयंमीनाहिनकुलस्यच ॥२॥ निंदितेभ्योधनादानंवाणिज्यंशूद्रसेवनम्अपात्रीकरणंज्ञेयमसत्यस्यचभाषणम् ॥ ३ ॥ कृमिकीटवयोहत्वामद्यानुगतभोजनम् फलैधः कुसुमस्तेयमधैर्यंचमलावहामिति ४ एषांप्रायश्चित्तंसप्तमादिप्रकरणेज्ञेयम् अथप्रकीर्णकानि तत्रसंध्याद्यकरणेप्रायश्चित्तंकूर्मपुराणे अनुपासितसन्ध्यस्तुतदहर्जपतोवसेत् अनश्नन्संयतमनारात्रौचेद्रात्रिमेवहि ॥ १ ॥ अकृत्वासमिदाधानंशुचिःस्नात्वासमाहितःगायत्र्यष्टसहस्रस्यजपंकुर्य्याद्विशुद्धये ॥ २ ॥ उपासीतनचेत्संध्यांगृहस्थोपिप्रमादतः स्नात्वाविशुद्ध्यतेसद्यः परिश्रान्तस्तुसंयमात् ॥ ३ ॥ वेदोदितानिनित्यानिकर्म्माणिचविलोप्यतु स्नातकोव्रतलोपंतुकृत्वाचोपवसेद्दिनम् ॥ ४ ॥

सन्ध्याजिसनें सोमनुष्यजिसदिनमें सन्ध्यानहिकरे तिसदिनमें जपकरदाहोया भोजन नाहिकरे और मनकोरोके और यो रात्रिमेंसंध्यानाहिकरे तबरात्रिमेंभी इसीप्रकारस्थित होवे॥१ और योमनुष्यसमिदाधानकोंनाहैं कर्ता पवित्रहोयाहोयास्नानकर्के सावधानचित्तहोयकर्के सोआठहजार ८००० गायत्रीमंत्रकाजपकरेतबशुद्धहोताहै २ ॥ औरयोगृहस्थीप्रमादतें संध्यानाहिंकरे सोस्नानकर्के शुद्धहोता है और योमनुष्य परिश्रांतक्यायकाहुयासन्ध्याकोंनाहिंकरे सोसंयमयोहै प्राणोंका रोकणा तिसतें शुद्धहोताहै ३ ॥ और वेदोदितयोकर्म्महैं वेदमें कथन किये यो कर्म्म और नित्यकर्म्म योहैं स्नान संध्यादिइनकोंदूरकर्के औरस्नातकयोहै सोव्रतलोपकोंकर्के तब एकदिननिराहारव्रतकरे ४ ॥

और यो साग्निक अग्निमें हवन नाहिं करे तब वर्ष पर्यन्त प्राजापत्य व्रत करे हे द्विजोत्तम एह संबोधन पदहे॥अथवा चान्द्रायण व्रत करे और धान्य दान और गोदान करके शुद्ध होताहै ॥ ५ ॥ षष्ठान्नेति छेमें कालमें अन्न भोजन करे अर्थात् तीसरे दिनम भोजन करे और मौन धारे अथवा संहितायो वेद संहिता तिसका पाठ करे॥अथवा नित्यं प्रति शाकल हवन करे एह प्रायश्चित्त अयाज्ययोहैं तिनका विशोधनहै अर्थात् जिनसे नहि यज्ञ कराणा पतितादिते तिन से जो यज्ञ करावणा तिनका विशोधनहै एह पिछे उपपातक प्रकरण विषेभी किहाहै ॥ ६ ॥ नील वस्त्रके धारणका प्रायश्चित्त कूर्म्म पुराणमें कहितेहैं नील वस्त्रको धार करके ब्राह्मण अव स्त्रहि होताहै अर्थात् नग्न होताहै । उस पापके दूर करणके निमित्त स्नान करके दिन रात्र नि

संवत्सरंचरेत्कृच्छ्रमग्न्यहोमेद्विजोत्तम चान्द्रायणंचरेद्धान्यगोप्रदानेनशुध्यति ५ षष्ठान्नकालतामौनंसंहिताजपएवच होमश्चशाकलोनित्यमयाज्यानांविशोधनम् अयाज्यानामयाज्ययाजकानामुत्तरपदलोपात् अन्यथाऽसंभवात् ६ नीलवस्त्रपरिधानेप्रायश्चित्तंकूर्म्मपुराणे नीलवस्त्रंवसित्वातुब्राह्मणोवस्त्रएवहि अहोरात्रोषितःस्नात्वापंचगव्येनशुध्यति १ वाराहपुराणेऽपि भूषितोनीलवस्त्रेणयोहिमामुपपद्यते वर्षाणांचशतंपंचक्रिमिर्भूत्वासातिष्ठति १ तस्यवक्ष्यामिसुश्रोणिअपराधविशोधनम् प्रायश्चित्तंविशालाक्षियेनमुच्येतकिल्विषात् २ व्रतंचान्द्रायणंकृत्वाविधिदृष्टेन कर्म्मणा मुच्यतेकिल्विषाद्भूमेएवमेतन्नसंशयः ॥ ३ ॥

राहार व्रत करे और पंचगव्य पीवे तब शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ वाराह पुराणमेंभी कहितेहैं॥भगवान् वाराहजी पृथिवीको कहतेहैं हेपृथ्विवयो मनुष्य नील वस्त्र धार करके मेरेको स्पर्श कर्ताहै सो मनुष्य पांचसौ ५०० वर्ष कृमिहोय करके स्थित होताहै अर्थात् कृमि योनिको प्राप्त होताहै ॥ १ ॥ हेसुश्रोणि तिस अपराधके शुद्ध करणे वाला प्रायश्चित्तमें कहिताहां हेविशालाक्षि जिस प्रायश्चित्तके करणे कर पापतें रहित होताहै ॥ २ ॥ हेभूमे विधिदृष्टयो कर्म्म अर्थात् शास्त्र करके दिखायेयो विधि तिस विधि करके चान्द्रायण व्रत करके पापतें रहित होताहै इस में संशय नाहिंहै ॥ ३ ॥

उष्ट्रादियानके चडनेमैं प्रायश्चित्त कूर्म्मपुराणमैं कहितेहैं। आपणी इच्छातें ऊठके रथमैं चड कर्के और खोतेके रथमैं चड कर्के तीनरात्रतें शुद्ध होताहि। अथवा यो मनुष्य नग्न जलमैं प्रवेश करै सोवी तीन रात्री कर्के शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ चांडालकों वेद धर्म्म शास्त्र और पुराणोंके भाष णमैं प्रायश्चित्त तहांहिं किहाहै। वेद और धर्म्म शास्त्र और पुराण इनके चांडालके कथनमैं चां द्रायण व्रत कर्के शुद्धि होतीहै। कथन करणे वाले मनुष्यकों और सुनणे वालेकोभी। अथवा प्राजापत्य व्रतकरे तव शुद्ध होताहै इहांचांडालकों जो चांद्रायणादिके जगा प्रायश्चित्तहै सो ११ प्रकरणके अंतमे देखना २ ॥ उच्छिष्ट जो द्विजातिहै यो प्रमादतें चांडालादिकर्के स्पर्श करे तव उसका प्रायश्चित्त कहितेहैं कूर्म्म पु॰यो द्विजाति उच्छिष्टहै और जलके साथ चुलिक

उष्ट्रादियानारोहणे प्रायश्चित्तंकूर्म्म पु० उष्ट्र यानंसमारुह्य खरयानंच कामतः त्रिरात्रेण विशुद्ध्येत्तु नग्नोवाप्रविशेज्जलम् १ चांडालस्यवेदधर्मपुराणभाषणेप्रायश्चित्तम् तत्रैववेदधर्मपुराणानांचांडालस्यचभाषणे चांद्रायणेनशुद्धिःस्यात्प्राजापत्येनवापुनः२ उच्छिष्टस्यद्विजातेःप्रमादाच्चांडालादिस्पर्शेप्रा०कौर्म्मे०उच्छिष्टोयद्यनाचांतश्चंडालादीयदास्पृशेत् प्रमादाद्विजपेत्स्नात्वागायत्र्यष्टसहस्रकम् १ द्रुपदानांशतंवापिब्रह्मचारीसमाहितःत्रिरात्रोपोषितः सम्यक्पंचगव्येनशुद्ध्यति २ द्विजस्यकामतश्चण्डालादिंस्पर्शेप्रा०कौर्मे ॥ चांडालपतितादींस्तुकामाद्यः संस्पृशेद्द्विजः उच्छिष्टस्तत्रकुर्वीतप्राजापत्यंविशुद्धये । १ ।

और आचमन किये विना प्रमादतैं चांडालादिके साथ स्पर्श करे तव स्नान कर्के आठ ८ ००० ॥ हजार गायत्री मंत्रका जपकरे तव शुद्ध होताहै। इस जगा आठसे अधिक हजार जप करे एह अर्थभीहै सो स्पर्शके न्यूनतादिसे जानणा ॥ १ ॥ और अथवा सावधान चित्तहुआ ब्रह्म चर्य्यकों धार कर्के द्रुपदा एह यो मंत्रहै इसका सो १०० मंत्र जप करे और तीन रात्रि निराहार व्रत करे और पंचगव्यपान करे तव शुद्ध होताहै ॥ २ ॥ द्विजकों इच्छा कर्के चांडालादिके साथ स्पर्शमैं प्रा० कू०। यो ब्राह्मण क्ष० वै० आपणी इच्छातें चांडाल और पतितादियोहैं तिनकों उच्छिष्ट क्या जूठा होकर स्पर्श करे तव शुद्धिके निमित्त प्राजापत्य व्रतकों करे ॥ १ ॥

चांडालेति चांडाल और सूतकी इनका यो शवहै उसकों स्पर्शकरणे वाला और तिसीप्रकार पतितकों स्पर्श करणेवाला यांमनुष्य तिसस्पर्श करणे वालेका योस्पर्शीहै तिसकों स्पर्शकर्के ज्ञानपूर्वक हे द्विजोत्तमाःएहसंबोधन पदहै आपणी शुद्धिके निमित आचमनोंकोंकरे एह ब्रह्माजीकाकथनहै २ ॥ चांडालांत्येति चांडाल और अंत्ययोहैं रजकादि इनकेशवकों स्पर्शकर्के शुद्धिके निमित्त प्राजापत्य व्रतकोंकरे और जिसमनुष्यनें उनकेशवसाथ स्पर्शकिया उसकोंस्पर्शकर्तेकों देखकर फेर उसके साथ स्पर्शकरे तव दिनरात्रि कर्के शुद्धहोताहै अर्थात् एकदिनरात्रि उपवासकरे ३ अवभोजनकर्तायो ब्राह्मण उसकों गुदस्रावमें प्रायश्चित्तकहितेहैं भोजनक

चाण्डालसूतकिशवंतत्स्पृष्टंपतितंतथा तत्स्पृष्टस्पर्शिनंस्पृष्ट्वाबुद्धिपूर्वंद्विजोत्तमाः२आचामेत्तद्विशुद्ध्यर्थंप्राहदेवःपितामहः२तदित्यनेनचांडालादिशवंस्पर्शवंतंतथापतितंस्पर्शवंतंस्पृष्ट्वाआचमेदिति तृतीयपरंपरास्पर्शप्रायश्चित्तंनतुसाक्षात् साक्षात्स्पर्शेत्वग्रे॥चाण्डालान्त्यशवंस्पृष्ट्वाकृच्छ्रंकुर्याद्विशुद्धये स्पृष्टंदृष्ट्वातु संस्पृश्येदहोरात्रेणशुद्ध्यति ॥ ३ ॥ भुंजानस्यविप्रस्यगुदस्रावेप्रा.कौर्मे भुंजानस्यतुविप्रस्यकदाचित्स्रवतेगुदं कृत्वाशौचंततःस्नायादुपोष्यजुहुयाद्घृतम्॥१॥द्विजस्यसुरास्पर्शेप्रा-तत्रैवासुरांस्पृष्ट्वा द्विजः कुर्यात्प्राणायामत्रयंशुचिः ॥१॥ शुनादष्टस्यब्राह्मणस्यप्रा.कौर्म्मे॥ ब्राह्मणस्तुशुनादष्टस्त्र्यहंसायंपयःपिबेत् नाभेरूर्ध्वंतुदष्टस्यतदेवद्विगुणंभवेत् ॥१॥ स्यादेतत्त्रिगुणंबाह्वोर्मूर्धनिस्याच्चतुर्गुणं स्नात्वाजपेद्वागायत्रींश्वभिर्दष्टोद्विजोत्तमः ॥२॥

र्ता योब्राह्मण जवकदाचित् उसकोंगुदस्रावहोजावे तवशौचकर्के पीछेस्नानकरे और निराहार व्रतकर्के अग्निमें घृतका हवण करे तव शुद्ध होताहै १ द्विजकोंसुराके स्पर्शमें प्रा, सरावकों स्पर्श कर्के द्विज तीन प्राणायाम करे तवशुद्धहोताहै १ कुत्तेकर्के काटआ यो ब्राह्मण तिसका प्रा-॥ कुत्तेनें काटआजो ब्राह्मण सोतीन दिन सायंकाल में दुग्धपीवे और नाभितें ऊपर यो कदाचित् काटआहोवे तव दूणा प्रायश्चित्त करे अर्थात् छेदिनसायंकालमें दूध पीवे १ और योवाहुओंमें काटआहोवे तवतीनगुणा प्रायश्चित्त करे और योमस्तक में काटआहोवे कुत्तेकर्के तांचतुर्गुणा प्रायश्चित्तकरे और कहतेहैं स्नात्वेति कुत्तेनें काटआ योब्राह्मण सोस्नान कर्के गायत्रीके मंत्रके जपकोंकरे २ ॥

पर्वणीति पर्वमें साग्निकको अग्न्याधानके नहिं करणेमें अर्थात् अग्निमें नाहिं हवन करणेमें और ऋतु स्नान समय भार्याके साथ नहिं संग करणेमें प्रायश्चित्त कहितेहैं। साग्निक योहै सोपर्वमें अग्न्याधानके करे हुये अग्निमें हवननहिं करे और ऋतु समय योमनुष्य भार्यामें संगनहिं करे सोवो आधाप्राजापत्य व्रतकरे। १। मृतहोआ योशूद्र उसके साथ दग्ध करणे निमित्त जावेयो ब्राह्मण तिसको प्रायश्चित्त कहितेहैं मृतहोगया यो शूद्र तिसके साथ आपणी इच्छा कर्के चलाजावे योब्राह्मण सो आठ हजार ८००० गायत्री मंत्रका जपकरे तव दोष काभागी नाहिं होताहै इसमेंभी १००८ असाभीसमझणा। १। झूठी सुगंध करणेका प्रायश्चित्त कहितेहैं झूठी सुगंध

पर्वणिआहिताग्निरुपस्थानाकरणेतथाऋतौभार्याऽगमनेप्रा. कौर्मे। आहिताग्नि रुपस्थानंनकुर्याद्यस्तुपर्वणिऋतौनगच्छेद्भार्यांवासोपिकृच्छ्रार्द्धमाचरेत् १ द्विजस्यप्रेतीभूतशूद्रानुगमनेप्रा. कौर्मे। अनुगम्येच्छया शूद्रंप्रेतीभूतंद्विजोत्तमः गायत्र्यष्टसहस्रस्यजपंकुर्यान्नदोषभाक् ॥१॥ मृषाशपथकरणेप्रा. कौर्मे। कृत्वातुशपथंविप्रोविप्रस्यवधसंमतं मृषैवयावकान्नेनकुर्याच्चान्द्रायणंव्रतं ॥१॥ पंक्त्यांविषमदानेश्वपाकछायायांचप्रा- कौर्मे- पंक्त्यांविषमदानंतुकृत्वा कृच्छ्रेणशुद्ध्यति छायांश्वपाकस्यारुह्यस्नात्वासंप्राशयेद्घृतम् १ ॥ म्लेच्छान्नदर्शनेमानुषास्थिस्पर्शेचप्रा- तत्रैव ईक्षेतादित्यमशुचिर्दृष्ट्वाम्लेच्छान्नमेवच मानुषंचास्थिसंस्पृश्यस्नानंकृत्वाविशुद्ध्यति ॥ १ ॥

कर्ता योब्राह्मण सोब्रह्महत्या केपाप केवरावरहै तव उसपापके दूरकरणे वास्ते यावकान्न योहै यवोंका कोटा तिसकर्के चान्द्रायण व्रतकरे १ पंक्तिमें विषम देणेका और चांडाल कीछाया में बैठणेका। प्रायश्चित्त कहितेहैं पंक्तिमें विषम देणेकर प्राजापत्य व्रतकर्के शुद्धहोताहै॥ और चांडाल की छाया योहै तिसमें आरूढहोयकर स्नानकर्के घृतको प्राशनकरे॥१॥ म्लेच्छकेअन्नके देखणेमें और मनुष्यकी अस्थिके स्पर्श में प्रायश्चित्त कहितेहैं म्लेच्छके अन्नको देख कर्के उदय होताहै योसूर्य तिसकेदर्शन कोकरे और मनुष्यकी अस्थिको स्पर्श कर्के स्नान कर्के शुद्धहोताहै ॥ १ ॥

ब्राह्मण कोंहुंकारादिककरणमें प्रायश्चित्त कहितेहैं॥हुंकारमिति॥वृद्धयो ब्राह्मण तिसकों हुंकार करणाऔर त्वंकार कथन करणा इसपापके दूरकरणेनिमित्त स्नानकर्के संपूर्ण दिनका यो शेष उसमेंभोजन नहिंकरे अर्थात् सायंकाल तकभोजन नाकरे और ब्राह्मणकों प्रणामकर्के प्रसन्न कराये ॥ १ ॥ और ब्राह्मणकों तृणकर्केबी प्रहार कर्के और वस्त्रके साथकंठमें वन्धकर्के बी और विवादमें ब्राह्मणकों जीतकर्के बीप्रणामकर्के प्रसन्नकरे ॥ २ ॥ और ब्राह्मणकों दंडादिकर्के अवगूरण करे तब कृच्छ्रव्रतयोहि प्राजापत्य व्रततिसकोंकरे॥और ब्राह्मणके निपातन क्यागिडादेनेमें अतिकृच्छ्र व्रतकरे और ब्राह्मणकों रुधिर निकाशकर्के कृच्छ्रातिकृच्छ्रयो व्रतहैं तिनकोंकरे ॥ ३ ॥ गुरों की

ब्राह्मणस्यहुंकारादिकरणेप्रा० तत्रैव॥हुंकारंब्राह्मणस्योक्त्वात्वंकारंचगरीयसः स्नात्वानश्नन्नहःशेषंप्रणिपत्यप्रसादयेत् ॥ १ ॥ताडयित्वातृणेनापि कंठंवध्वापिवाससा विवादेचापिनिर्जित्य प्रणिपत्यप्रसादयेत् २ अवगूर्य चरेत्कृच्छ्रमतिकृच्छ्रंनिपातने कृच्छ्रातिकृच्छ्रौकुर्वीतविप्रस्योत्पाद्यशोणितम् ॥३॥गुरोराक्रोशादौप्रा०तत्रैव गुरोराक्रोशमनृतं कृत्वाकुर्याद्विशोधनं एकरात्रंत्रिरात्रंवातत्पापस्यापनुत्तये ॥ १ ॥ देवर्षीणामभिमुखष्ठीवनेप्रा०देवर्षीणामभिमुखंष्ठीवनाक्रोशनेकृते ॥उल्मुकेनदहेज्जिह्वांदातव्यंचहिरण्यकम्॥१॥देवोद्यानेमूत्रपुरीषोत्सर्गेप्रा० देवोद्यानेतुयःकुर्यान्मूत्रोच्चारंसकृद्द्विजः छिंद्याच्छिश्नंतुशुद्ध्यर्थंचरेच्चांद्रायणंतुवा ॥ १ ॥

निंदादिमें प्रायश्चित्त कहितेहैं गुरोंकायो आक्रोशन क्यानिंदा तिसकों कर्के और झूठबोलकर उसपापके दूरकरणे निमित्त एकरात्र वात्रिरात्र व्रतकों करे ॥ १ ॥ देवता और ऋषि इनके सन्मुख थूकणेकाप्रा० देवता और ऋषि इनके सन्मुख थूकणेमें और इनकी निंदाके करणेमें उल्मुकयोहै बलती लकडी तिसकर्के जिह्वां कों दग्धकरे और सुवर्ण दानकरे ॥ १ ॥ देवताके बागमें मूत्र और विष्टा इनके करणेका प्रायश्चित्त यो द्विजब्रा० क्ष० वै० देवताके बागमें मूत्र और विष्टाकों एकवार करे सों शुद्धिकेनिमित्त लिंगकों कटदेवे अथवा चांद्रायण व्रतकोंकरे।१।

देवतेति यो ब्राह्मण अज्ञानतें देवताके स्थानमें मूत्रकों करे सो लिंगकों कट कर्के शुद्ध होताहै अथवा चांद्रायणव्रतकों करे ॥ २ ॥ देवता० ऋषि० वेद० इनकी निंदा करणेमें प्रा०॥ देवता और ऋषि और वेद इनकी निंदा कर्के ब्राह्मण अछी प्रकार प्राजापत्य व्रतकों करे ॥ १ ॥ और सो योहैं देवता ऋषिवेदोंके निंदक तिनकेसाथ संभाषण कर्के स्नानकर्के देवतायोहैं तिनकों पूजे और एह यो निंदक कहेहैं इनका दर्शन कर्के सूर्यकों देखे और इनके साथ स्पर्श कर्के स्नान

देवतायतनेमूत्रंकृत्वामोहाद्द्विजोत्तमः । शिश्नस्योत्कर्त्तनंकृत्वाचांद्रायणम थाचरेत् २ ॥ देवर्षिवेदनिंदायांप्रा०तत्रैव ॥ देवतानामृषीणांचवेदानांचैवकु त्सनं कृत्वासम्यक्प्रकुर्वीतप्राजापत्यंद्विजोत्तमः १ ॥ तैस्तुसंभाषणंकृत्वा स्नात्वादेवान्समर्चयेत् दृष्ट्वावीक्षितभास्वंतंस्नात्वाविश्वेश्वरंस्मरेत्॥ २ ॥ स्पृष्ट्वाविश्वेश्वरंस्मरेदितिवापाठः। विश्वेशाननिंदनेप्रा०तत्रैव यःसर्वभूता धिपतिंविश्वेशानंविनिंदति नतस्यनिष्कृतिः शक्याकर्त्तुंवर्षशतैरपि ॥ १ ॥ चांद्रायणंचरेत्पूर्वंकृच्छ्रंचैवातिकृच्छ्रकं प्रपद्येच्छरणंदेवंतस्मात्पापात्प्रमुच्यते२ किंचायोध्याकांडे ७५ पंचसप्ततितमेध्याये श्रीरामवनवासेस्वर्कायसंमतौ पापानुरूपाःश्रीभरतकृताःपंचचत्वारिंशच्छपथाः॥कृतशास्त्रानुगाबुद्धिर्माभू त्तस्यकदाचन सत्यसंधःसतांश्रेष्ठोयस्यार्य्योनुमतेगतइत्यादयो।यथा।परमा र्थशास्त्रानुगतबुद्ध्यभावः१ पापीयःप्रेष्यम्२सूर्य्याभिमुखमेहनम्३ सुप्तगोः पादेनहननम्४भृत्यादेःकर्म्मकारयित्वा वेतनाऽदानम् ५राज्ञ.प्रजासुद्रोहः ६ तथाषड्भागादधिकादानंप्रजायाअरक्षणंच७ यज्ञेश्रोत्रियादिभ्यःप्रतिज्ञा यदक्षिणायाअप्रदानम्८ अधर्म्मेणराज्ञांयुद्धम्९सदुपदेशाविस्मरणम्१०पाय सकृसरछागानांवृथाभोजनम्११ गुर्वाज्ञाऽपालनम्१२गुरौप्रतिवादः१३

कर्के विश्वेश्वर जीको पूजे॥ २ ॥ विश्वेशानकी निंदामें प्रायश्चित्तहै॥ योमनुष्य सर्वभूतोंके अधि पतियो विश्वेशान क्या जगत्के स्वामीहैं तिनकी निंदाकर्त्ताहै तिसकी निष्कृति क्या शुद्धिसैकडे वर्षों कर्केंवी करणे कोनहिंशक्य क्या नाहिं होसकती॥ १ ॥ उसपापके दूरकरणे निमित्त प्रथम चांद्रायणव्रतकरे फेरकृच्छ्र और अतिकृच्छ्रयोव्रतहैं तिनकोंकरे औरदेवकी शरणकों प्राप्तहोवे तब तिसपापतें रहितहोताहै ॥ २ ॥ इसमें कुछ और कहतेहैं कि अयोध्याकांडजो वाल्मीकिरामा यणकाहै तिसमें ७५ अध्यामे भरतजीने पापगिणेहै सोह करणे वास्ते सो दिखाईदेहैं कृतेति

मित्रद्रोहः १४ विश्वासान्मित्रेणकथितेतत्प्रकाशनम् १५ भृत्येनस्वाम्युक्ताऽपालनम् १६ कृतघ्नता १७ लज्जाऽभावः १८ वहुभिर्विद्वेषः १९ पुत्रादिसत्त्वेकेवलेनमिष्टभक्षणम् २० स्वानुरूपस्त्रीलाभाऽभावे पुत्रोत्पत्त्यभावे चभरणम् २१ स्वकीयानांमृतानामंत्येष्टाद्यभावः २२ राजस्त्रीवालवृद्धवधः २३ वहुकालभृतभृत्यस्यकारणंविनात्यागः २४ लाक्षामधुमांसविषाविक्रयः २५ संग्रामात्क्षत्रियाणांपलायनम् २६ स्वेच्छयाकपालादिधारणम् २७ मद्यप्रसक्तिः २८ द्यूतादिप्रसक्तिः २९ कामक्रोधादिवृद्धिः ३० अपात्रेदानम् ३१ उभयत्रसंध्ययोः शयनम् ३२ देवतामातृपितृशुश्रूषाऽभावः ३३ धनिनोर्थिनेकिमपिदानाभावः ३४ पैशुन्यम् ३५ ऋतुस्नातभार्यात्यागः ३६ पुत्रवतीस्त्रीत्यागः ३७ ब्राह्मणायदातुमुद्यतस्यनिषेधः ३८ वालवत्सागोदोहनम् ३९ धर्म्मस्त्रीपरित्यागपूर्वंपरस्त्रीसेवा ४० शुद्धजलस्य विष्टादिनादूषणम् ४१ तथाविषदानम् ४२ तृषार्त्तायपानीयदानाभावः ४३ शिवविष्ण्वादिभक्तानांस्वस्वमतस्थापनपूर्वकंपरमतानिन्दनम् ४४ तादृशविवादश्रवणप्रीतिः ४५ अत्रपूर्वोक्तान्यपिपापानिप्रसंगतोलिखितानि एतत्प्रायश्चित्तंयथोचितं प्रकीर्णकादौवोध्यम् ॥ अतःपरंवाराहपुराणोक्तप्रायश्चित्तानि दंतकाष्ठाभक्षणेकृतेविष्णुपूजनेप्रायश्चित्तम् ॥ वाराहउवाच ॥ दंतकाष्ठमखादित्वायोहिमामुपसर्पतिपूर्वकालकृतं कर्मतेनचैकेननश्यति ॥ १ ॥ नारायणवचःश्रुत्वापृथिवीधर्म्मसंस्थिता विष्णुभक्तसुखार्थायहृषीकेशमुवाचह ॥ २ ॥

इसमें पूर्वकहेभी जो पाप सो प्रसंगसे लिखेहैं इनका प्रायश्चित्त जैसे उचितहे तैसे प्रकीर्णकादिकोंमे जानणा ॥ अव इसतेंपरं वाराह पुराणोक्त प्रायश्चित्तहैं । दातनके किये विना विष्णुके पूजनकरणेमें प्रायश्चित्तहे सोभूमिकोंवाराहजी कहितेहें । हेभूमेदंतधावनके कियेविनायो मनुष्य मेरेकों प्राप्तहोताहे उसनें जितनां पूर्व कियायो शुभकर्म्म सोसंपूर्ण एकदातनके नहिं करणेकर नाशहोजाताहै ॥ १ ॥ एह योनारायणका वचन इसकों सुणकर्के धर्म्ममे स्थितयो पृथ्वीसो विष्णु भक्तोंके सुखके निमित्त नारायण जोकों कहितीहै ॥ २ ॥

धरणिः हेभगवन् वडे क्लेश कर्के संपूर्ण कालमें किया यो। कर्म्म सो कैसें एक अपराध कर्के न ष्ट होताहै ॥ ३ ॥ वाराहः वाराहजी कहितेहैं हेसुंदरि हेनिष्पापे कहिता योमैंहां उसकों तूं त त्वकर्के सुण जिस एक अपराध कर्के संपूर्ण पूर्व कृत कर्म्म नाश होताहै ॥ ४ ॥ हेभद्रे मनु ष्य पापीहै कफ पित्त कर्के युक्तहै और पाक रुधिर कर्के संपूर्णहै उसी कर्के इसका मुखदु र्गंधवालाहै ॥५ ॥ सो मुख दंतकाष्टके नभक्षणेतें यो भागवती शुद्धिहै तिसकों नहिं सहारता इ सीतें आचार कर्के रहित होताहै ॥ ६ ॥ धरणिः पृथ्वी कहितीहै हेभगवन् दंतकाष्टके खाये वि ना यो मनुष्य तुमारे कर्म्मकों करताहै अर्थात् तुमारेकों प्राप्त होताहै उसका प्रायश्चित्त मेरेकों

धरणिः सर्वकालकृतंकर्म्मक्लेशेनमहतामह कथमेकापराधेनसर्वमेवप्र णश्यति ॥३॥वाराहः॥शृणुसुंदरितत्त्वेनकथ्यमानंमयानघे॥येनचैकापराधे नसर्वमेवप्रणश्यति ॥ ४ ॥मनुष्यः। किल्विषीभद्रेकफपित्तसमन्वितः पूय शोणितसंपूर्णंदुर्गंधिमुखमस्यतत् ५ नसहेद्दुचितंदेविदंतकाष्ठस्यभक्षणम् शुद्धिर्भागवतीदेवआचारेणविवर्जितम् ६ यःपुरुषउचितंदंतकाष्ठस्यभक्षणंन सहेत् नकुर्य्यात्एनमाचारविवर्जितंभागवतीशुद्धिर्नसहेत् नांगीकुर्य्या दतोऽवश्यंदंतकाष्ठभक्षणंकार्य्यमितिभावः ॥ ६ ॥ धरणिः॥दंतकाष्टमखा दित्वायःकर्माणिकरोतिते प्रायश्चित्तंचमेब्रूहियेनधर्मोननश्यति ॥ ७ ॥ वाराहः॥ एवमेतन्महाभागेयन्मांत्वंपरिपृच्छसि कथयिष्यामितेदेवियथा शुद्ध्यन्तिमानवाः ८ आकाशशयनंकृत्वादिनानिद्वेचपंचच अभक्ष्यदंतका ष्ठस्यएवंशुद्ध्यन्तिमानवाः ॥ ९ ॥ आकाशशयनंवटादिशाखावलंबनेनजा यते एतत्तेकथितभद्रेदंतकाष्टस्यभक्षणं यएतेनविधानेनप्रायश्चित्तंसमाच रेत् नतस्यैवापराधोस्तिएवमेवनसंशयः ॥ १० ॥

कहो जिस कर्के धर्म्म नहिं नाश होता ॥ ७ ॥ वाराह इति वाराहजी कहितेहै हेभूमे यो तूं मेरेकों पूछतीहैं एह तेरा प्रश्न इसी प्रकारहै हेभद्रे जैसे मनुष्य शुद्धिकों प्राप्त होतेहैं सोमैं तेरे कों कहिताहां ॥ ८ ॥ सो मनुष्य उस पापके दूर करणे वास्ते सात ७ दिन आकाश शयन करे आकाश शयन क्या वोडथीं आदिलेकर यो वृक्षहै तिनकी शाखायेहैं तिनके साथ लट कणा इस प्रकार करणे कर दंतकाष्टका योनहि भक्षण करणा इस पापतें मनुष्य शुद्ध होताहै ॥ ९ ॥ हेपृथ्वि एह तेरेकों दंतकाष्टका भक्षण किहाहै यो मनुष्य इस विधान कर्के प्रायश्चित्त कों करे तिसकों अपराध नहिहै इसमें संशय नहिहै ॥ १० ॥

मित्रद्रोहः १४ विश्वासान्मित्रेणकथितेतत्प्रकाशनम् १५ भृत्येनस्वाम्युक्ताऽपालनम् १६ कृतघ्नता १७ लज्जाऽभावः १८ वहुभिर्विद्वेषः१९पुत्रादिसत्त्वेकेवलेनमिष्टभक्षणम् २० स्वानुरूपस्त्रीलाभाऽभावे पुत्रोत्पत्त्यभावे चमरणम्२१स्वकीयानांमृतानामंत्येष्ट्याद्यभावः २२राजस्त्रीवालवृद्धवधः २३ वहुकालभृतभृत्यस्यकारणंविनात्यागः २४ लाक्षामधुमांसविषविक्रयः २५ संग्रामात्क्षत्रियाणांपलायनम् २६ स्वेच्छयाकपालादिधारणम् २७ मद्यप्रसक्तिः २८ द्यूतादिप्रसक्तिः २९ कामक्रोधादिवृद्धिः ३० अपात्रेदानम् ३१ उभयत्रसंध्ययोः शयनम् ३२देवतामातृपितृशुश्रूषाऽभावः ३३ धनिनोर्थिनेकिमपिदानाभावः ३४ पैशुन्यम् ३५ ऋतुस्नातभार्यात्यागः ३६ पुत्रवतीस्त्रीत्यागः३७ब्राह्मणायदातुमुद्यतस्यनिषेधः ३८ बालवत्सागोदोहनम् ३९धर्म्मस्त्रीपरित्यागपूर्वपरस्त्रीसेवा४०शुद्धजलस्य विष्टादिनादूषणम् ४१ तथाविषदानम् ४२ तृषार्त्तायपानीयदानाभावः ४३शिवविष्ण्वादिभक्तानांस्वस्वमतस्थापनपूर्वकंपरमतानिन्दनम्४४तादृशविवादश्रवणप्रीतिः ४५ अत्रपूर्वोक्तान्यपिपापानिप्रसंगतोलिखितानि एतत्प्रायश्चित्तंयथोचितं प्रकीर्णकादौबोध्यम् ॥ अतःपरंवाराहपुराणोक्तप्रायश्चित्तानि दंतकाष्ठाभक्षणेकृतेविष्णुपूजनेप्रायश्चित्तम् ॥ वाराहउवाच ॥ दंतकाष्ठमखादित्वायोहिमामुपसर्पतिपूर्वकालकृतं कर्मतेनचैकेननश्यति ॥ १ ॥ नारायणवचःश्रुत्वापृथिवीधर्म्मसंस्थिता विष्णुभक्तसुखार्थायहृषीकेशमुवाचह ॥ २ ॥

इसमें पूर्वकहेभी जो पाप सो प्रसंगसे लिखेहैं इनका प्रायश्चित्त जैसे उचितहै तैसे प्रकीर्णकादिकोंमे जानणा ॥ अब इसतेंपरे वाराह पुराणोक्त प्रायश्चित्तहैं । दांतनके किये विना विष्णुके पूजनकरणेमें प्रायश्चित्तहै सोभूमिकोंवाराहजी कहितेहैं । हेभूमेदंतधावनके कियेविनायो मनुष्य मेरेकों प्राप्तहोताहै उसनें जितनां पूर्व कियायो शुभकर्म्म सोसपूर्ण एकदांतनके नहिं करणेकर नाशहोजाताहै ॥ १ ॥ एह योनारायणका वचन इसकों सुणकर्के धर्म्ममे स्थितयो पृथ्वीसो विष्णु भक्तोंके सुखके निमित्त नारायण जीकों कहितीहै ॥ २ ॥

धरणिः हेभगवन् वडे क्लेश कर्के संपूर्ण कालमें किया यो। कर्म सो कैसें एक अपराध कर्के नष्ट होताहै ॥ ३ ॥ वाराहः वाराहजो कहितेहैं हेसुंदरि हेनिष्पापे कहिता योमैहां उसकों तूं तत्वकर्के सुण जिस एक अपराध कर्के संपूर्ण पूर्व कृत कर्म नाश होताहै ॥ ४ ॥ हेभद्रे मनुष्य पापीहै कफ पित्त कर्के युक्तहै और पाक रुधिर कर्के संपूर्णहै उसी कर्के इसका मुखदुर्गंधवालाहै ॥५ ॥ सो मुख दंतकाष्टके नभक्षणेतें यो भागवती शुद्धिहै तिसकों नहिं सहारता इसीतें आचार कर्के रहित होताहै ॥ ६ ॥ धरणिः पृथ्वी कहितीहै हेभगवन् दंतकाष्टके खाये विना यो मनुष्य तुमारे कर्मकों कर्ताहै अर्थात् तुमारेकों प्राप्त होताहै उसका प्रायश्चित्त मेरेको

धरणिः सर्वकालकृतंकर्म्मक्लेशेनमहतासह कथमेकापराधेनसर्वमेवप्रणश्यति ॥३ ॥वाराहः॥शृणुसुंदरितत्त्वेनकथ्यमानंमयानघे॥येनचैकापराधेनसर्वमेवप्रणश्यति ॥ ४ ॥मनुष्यः। किल्बिषीभद्रेकफपित्तसमन्वितः पूयशोणितसंपूर्णंदुर्गंधिमुखमस्यतत् ५ नसहेद्दुचितंदेविदंतकाष्ठस्यभक्षणम् शुद्धिर्भागवतीचैवआचारेणविवर्जितम्६ यःपुरुषउचितंदंतकाष्ठस्यभक्षणंनसहेत् नकुर्य्यात्एनमाचारविवर्जितंभागवतीशुद्धिर्नसहेत् नांगीकुर्य्यादतोऽवश्यंदंतकाष्ठभक्षणंकार्य्यमितिभावः ॥ ६ ॥ धरणिः॥दंतकाष्ठमखादित्वायःकर्माणिकरोतिते प्रायश्चित्तंचमेब्रूहियेनधर्मोननश्यति ॥ ७ ॥ वाराहः॥ एवमेतन्महाभागेयन्मांत्वंपरिपृच्छसि कथयिष्यामितेदेवियथाशुद्ध्यन्तिमानवाः ८ आकाशशयनंकृत्वादिनानिद्वचपंचच अभक्षादंतकाष्ठस्यएवंशुद्ध्यन्तिमानवाः ॥ ९ ॥ आकाशशयनंवटादिशाखावलंबनेनजायते एतत्तेकथितभद्रेदंतकाष्ठस्यभक्षणं यएतेनविधानेनप्रायश्चित्तंसमाचरेत् नतस्यैवापराधोस्तिएवमेवनसंशयः ॥ १० ॥

कहो जिस कर्के धर्म नहिं नाश होता ॥ ७ ॥ वाराह इति वाराहजी कहितेहैं हेभूमे यो तूं मेरेकों पूछतीहैं एह तेरा प्रश्ण इसी प्रकारहै हेभद्रे जैसें मनुष्य शुद्धिकों प्राप्त होतेहैं सोमैं तेरेकों कहिताहां ॥ ८ ॥ सो मनुष्य उस पापके दूर करणे वास्ते सात ७ दिन आकाश शयन करे आकाश शयन क्या वोडर्थी आदिलेकर यो वृक्षहै तिनकी शाखायोंहैं तिनके साथ लटकणा इस प्रकार करणे कर दंतकाष्टका योनहि भक्षण करणा इस पापतें मनुष्य शुद्ध होताहै ॥ ९ ॥ हेपृथिव एह तेरेकों दंतकाष्टका भक्षण किहाहै यो मनुष्य इस विधान कर्के प्रायश्चित्तकों करे तिसकों अपराध नहिहै इसमैं संशय नहिंहै ॥ १० ॥

स्त्रीके साथ संगकर्के स्नान कियेविनाविष्णुकेस्पर्शमें प्रायश्चित्तहै (वाराहः)वाराहजीकाहितेहैं हेभू
मे स्त्रीसंगकर्के योमनुष्यस्नान किये विना मेरेको स्पर्श करे सोदुर्बुद्धिः चोदां १४ हजार वर्षनर
कमें पडकर्के वीर्य्यकोंपीताहै ॥ १ ॥ तिसतें नारायणतें सुण कर्के सोयोपृथ्वीहै धारआहे व्रत
जिसने तिससमय दीनमनहोयकर भगवान्जीकोकहितीहै ॥ २ ॥ हेभगवन् एह भयकेकरणेवा
ला कष्टरूपधर्म्म तुमक्याकहितेहो हे भगवन् पुरुषयोहैसो किसप्रकार वीर्य्यके पीणेमें रत हो
ताहै एहतुमारावचन सुनकर्के मेरेको परमदुःखहै सोतुममेरेको कहिणे योग्यहो ३ (वाराहः)वारा
हजीकहितेहैं हे हेवि यथार्थ कर्के मेरेतेंएहयोगुह्यहै गुप्तधर्म्म कैसा संपूर्णोंतें श्रेष्ठ इसको तूं श्र

मैथुनंकृत्वाऽस्नातेनविष्णुस्पर्शनेप्राय० वाराहः कृत्वातुमैथुनंभद्रेअस्ना
तोयोममस्पृशेत् रेतः पिवतिदुर्बुद्धिः सहस्रंनवपंचच ॥ १ ततोनारायणा
च्छ्रुत्वासामहीसंशितव्रता तत्रदैन्यमनाभूत्वाउवाचमधुसूदनम् २ किमिदं
भाषसेदेवधर्मभीषणसंकटं कथंदेवपुमान्योवैरेतः पानपरोभवेत् एतन्मेपर
मंदुःखंतद्भवान्वक्तुमर्हसि ३ वाराहः। शृणुतत्त्वेनमेदेवि इदंगुह्यमनुत्तमं चि
ह्नमेतद्वरारोहेव्याधिदोषविनिश्चयम् ४ पुरुषस्त्रीषुकर्म्माणियेचकुर्वन्तिनि
र्घृणाः दोषस्तस्यापराधस्यफलंप्राप्नोतिमानवः ५ दोषोभुजस्येत्यर्थः॥ए
वमेतद्वरारोहियत्त्वयापरिपृच्छितं अपराधस्यदोषेणविशुद्धिर्नजायते ६
प्रायश्चित्तंप्रवक्ष्यामिरोगदोषेणदूषितं ॥ रोगदोषेणदूषितंप्रतिप्रायश्चित्तं
प्रवक्ष्यामीतिसंबन्धः ॥ गृहस्थःपुरुषोभद्रेममकर्मपरायणः ७ ॥

वणकर हे वरारोहे एहयोचिन्हहै व्याधिकके दोषका निश्चयकरणा ४ ॥ योनिर्दयमनुष्यहैं पुरुष
और स्त्रियोंमे और मेरेकर्म्मोंकोकर्त्ताहै तिसनिर्दयहोकर भुजाकर्के कर्म्मकरणेके अपराधका फल
मनुष्यभुजाको प्राप्तहोताहै अर्थात् उसकी भुजाको रोगहोताहै ५॥हेपृथिवएह वात इसीप्रकारहै
योतैने मेरेकोपूछिआहे इस अपराधके-दोषकर्के विशुद्धिनहिंहोती॥ ६ ॥रोगदोषकर्के दूषितयो
पुरुषहै तिसकोंमैंप्रायश्चित्तकहिताहां हे भद्रे गृहस्थ पुरुषयोहै मेरेकर्म्ममें परायण मेरीपूजादिमे
तत्पर ॥ ७

सो मनुष्य तीन दिन यवोंका कोटा भोजन करे और तीन दिन तिलोंकी खल भोजन करे और एक दिन वायु भक्ष्य क्या निराहार व्रत करे तब पापतें रहित होताहै ॥ ८ ॥ और हेभूमे शास्त्र कर्के दिखाया यो कर्म्म तिस कर्म्म कर्के पराक व्रत कों करे तद कर्म्म का अपराध जान कर्के कर्त्ता यो पुरुष सो पाप कर्के नहिं लिप्त होताहै ॥ ९ ॥ हेभूमे एह मैंने तेरे ताईं किहाहै यो मनुष्य स्त्रीके साथ संग कर्के स्नान किये बिना मेरे कों स्पर्श कर्त्ताहै उसकों एह पूर्वोक्त प्रायश्चित्त किहाहै कैसा एह प्रायश्चित्त इसके करणे कर मेरे लोकमैं सुख कर्के प्राप्त होताहै ॥ १० ॥ शवके देखणेमैं प्रायश्चित्त कहितेहैं वराहजी।दृष्ट्वेति। हेभद्रे पतित यो नरहै यो पंचत्व

यावकेनदिनत्रीणिपिण्याकेनपुनस्त्र्यहं वायुभक्षोदिनंत्वेकंततोमुंचातिकिल्विषात् ॥ ८ ॥ पराकंकुरुतेभूमविधिदृष्टेनकर्मणा ज्ञात्वाकर्मापराधंतुनसपापेनलिप्यते ॥ ९ ॥ एतत्तेकथितंभद्रेमैथुनंयोभिगच्छति प्रायश्चित्तं महाभागेममलोकसुखावहम्॥ १० ॥शवदर्शनेप्रायश्चित्तम्। दृष्ट्वातुपतितंभद्रेनरंपंचत्वमागतं ममशास्त्रंबहिःकृत्वाश्मशानंयःप्रपद्यते ॥ १ ॥ पितरस्तस्यसुश्रोणिआत्मनाच पितामहाःश्मशानेजंबुकाभूत्वाभक्षयंतःशवंतथा ॥ २ ॥ ततोहरेर्वचःश्रुत्वाधर्म्मकामावसुंधरा उवाचमधुरंवाक्यंसर्वलोकहितायवै ॥ ३ ॥ धरणिः। शवदर्शनजंपापंनाशमेतिकथंहरे किमिदंभाषसेदेवधर्मनाशकमेवच ॥ ४ ॥

कों प्राप्त हो गयाहै उसको देख कर्के और मेरे शास्त्र कों त्याग कर्के यो मनुष्य श्मशान कों जाताहै अर्थात् शूद्रादि योहैं तिनके मृतकके साथ श्मशान कों जाताहै ॥ १ ॥ उस मनुष्य के पितर और सो मनुष्य और उसके पिता मह श्मशानमैं गिदड की योनिकों प्राप्त हो कर शव योहै मृत क तिसकों भोजन कर्तेहैं ॥ २ ॥ तिसतैं नारायण का वचन सुणकर धर्म्म कामा यो भूमिहै सो संपूर्ण लोकों के हित के वास्ते श्रीनारायण जीकों मधुर वचन कहितीभई ॥ ३ धरणिः।पृथ्वीकहितीहै शवयो मृतक तिसके दर्शनतैं उत्पन्नभयायोपाप सोकिसप्रकारनाश होताहै हेभगवन् एहयोतुमारावचन सोधर्म्म के नाश करणे वाला है एह तुमक्याकहितेहो॥४।

हेनाथ तुमारी शरण कौं प्राप्त योहैं याउनको वीभयहै शवदर्शनका तवमेरेकौं प्रायश्चित्त कहो जिसप्रायश्चित्तके करणे कर्के पापतें रहित होताहै ॥ ५ ॥ वाराहः वाराहजी कहितेहैं हेसुंदरि योमेरेकौं पूछतीहैं सो तूंयथार्थ कर्के सुणनेरेको एहयो शव दर्शनका पाप इसकें दूर करणे वाला यो प्रायश्चित्तमोमें कहितांहों ॥ ६ ॥ सात दिन ७ पर्यंत एकवार भोजन करे और फेर तीन रात्री निराहार व्रतकरे तिसतें उपरंत पंचगव्य पान कर्के शीघ्र पापत्तें रहित होताहै ॥ ७ शवके देखणेके अपराधमें एहतेरेकौंमैंने विधि किहाहै भगवान् जीके भक्तने सर्वथा मृत त्याग णे योग्यहै ॥ ८॥ योमनुष्य इस विधान कर्के प्रायश्चित्तको करें सो संपूर्ण पापोतें रहित होताहै उसकों अपराधनहिं होताहै ॥९॥ वाराहः स्पृष्टवंति हेभूमे योमनुष्यमृतककों स्पर्श कर्के पवित्र

तवनाथप्रपन्नानांकिंचापिविद्यतेप्रभो प्रायश्चित्तंचमेब्रूहियेनमुच्यतिकिल्विपात् ५ वाराहः॥शृणुसुंदरितत्वेनयन्मांत्वंपरिपृच्छासि कथयिष्यामितेहदिं शोभनंपापनाशनम् ६ एकाहारोदिनान्सप्तात्रिरात्रंचाप्युपोषितःपंचगव्यंततःपीत्वाशीघ्रंमुच्यतिकिल्विषात् ७ शवदृष्टेऽपराधस्यएषतेकथितोविधिः सर्वथावर्जनीयंवाशवंभागवतेनतु ८ यएतेनविधानेनप्रायश्चित्तंसमाचरेत विमुक्तःसर्वपापेभ्योह्यपराधोनाविद्यते ९ मृतकस्पर्शनेप्रायश्चित्तम् वाराहः॥स्पृष्ट्वातुमृतकंदेवियोगक्षेत्रेषुतिष्ठति शतंवर्षसहस्राणिगर्भेपुपरिवर्त्तते १ दशवर्षसहस्राणिचांडालश्चैवजायते अन्धःवर्षसहस्राणिमंडूकश्चशतं समाः२ मक्षिकात्रीणिवर्षाणिटिट्टिभैकादशंसमाः दशोवैसप्तचावृदानिकृकलासोभवेत्समा ३

स्थानोंमें वैठताहै अर्थात् नारायणको स्पर्शकर्त्ताहै सोमनुष्य लक्षवर्ष १०००० पर्यंत गर्भवासोंमें वर्त्तताहै अर्थात् लक्षवर्ष पर्यंत वारं वार जन्म मरणको प्राप्तहोताहै ॥१॥इसीकाविवेक दिखाईदाहै दशेति पहिले जन्मोको किहाहै फेर दश हजारवर्ष १०००० चांडाल होताहै औरसातहजार वर्ष ७०००अंध क्या नेत्रोंतिहोन होताहै और फेर सौवर्ष १००मंडूक यो डिडुं तिसकी योनि कों प्राप्त होताहै ॥२॥ और फेर तीन वर्ष ३ मक्षिकाकी योनिमें प्राप्त होताहै और फेर एका दशवर्ष ११ टिट्टिभ योपक्षि विशेष तिसकी योनिकों प्राप्त होताहै और फेर सात वर्ष मछर होताहै फेर एक वर्ष किरला होताहै ॥ ३ ॥

और सो वर्ष १०० हस्ती होताहै और फेर बत्तरी वर्ष ३२ खोता होताहै और फेर नौवर्ष ९ बिल्ला होताहै और फेर पंदरां वर्ष १५ वानर होताहै ४ ॥ इस प्रकार संप्राप्त दोष करके मेरेकर्ममें परायण क्या तत्पर यो मनुष्यहै हे देवि सो वडे दुःखको प्राप्त होताहै इसमें संशय नहिंहै ५ ॥ तिसतें नारायणका वचन सुण करके दुःख करके संपूर्ण संसारके मोक्षके निमित्त पृथिवी भगवानको कहितीहै ६ ॥ हे भगवन् एहतुमक्याकहितेहो मनुष्यों को दुःसह वचन और भयंकर और मेरेकर्म का प्रभेदक ७ । आचारतें भ्रष्टयोहैं और तुमारायो कर्म्म पूजनादि ओहिहे आश्रय जिनका जिसके करणकर्के दुःखोंको तरतेहैं सो प्रायश्चित्त मेरे को कहो ८ । जब

हस्तीवर्षशतंचैवखरोद्वात्रिंशकोभवेत् मार्जारोनववर्षाणिवानरोदशपंचच ४ एवंसंप्राप्तदोषेणममकर्मपरायणः प्राप्नोतिसुमहद्दुःखंदेविएवंनसंशयः ५ ॥ ततोहरेर्वचः श्रुत्वादुःखेनपरिपृच्छति सर्वसंसारमोक्षायप्रत्युवाचवसुंधरा ६ किमिदंभाषसेदेवमानुषाणांदुरासदम् वाक्यंतुभीषणंचैवममकर्मप्रभेदकम् ७॥ आचाराच्चपरिभ्रष्टाः तवकर्मपरायणाः तरंतियेनदुर्गाणि प्रायश्चित्तंचमेवद ॥ ८ ॥ श्रुत्वापृथ्व्यास्ततोवाक्यंलोकनाथोजनार्दनः धर्मसंरक्षणार्थायप्रत्युवाचवसुंधराम् ९ स्पृष्ट्वातुमृतकंभूमेममकर्मपरायणः एकाहारस्ततस्तिष्ठेद्दिनानि दशपंचच १ ततएवंविधिंकृत्वापंचगव्यंतु प्राशयेत् शुद्धभावंविशुद्धात्माकर्मणाचनलिप्यते॥२॥ एतत्तेकथितंदेविस्पृष्ट्वामृतकमेवच दोषाच्चैवविशुद्धोयंयत्त्वयापूर्वपृच्छितम् ॥ ३ ॥ यएतेन विधानेनप्रायश्चित्तंसमाचरेत् अपराधविनिर्मुक्तोममलोकंसगच्छति॥४॥

ऐसा पृथ्वीका वचन सुणा तब संपूर्ण लोकोंके स्वामी जनार्दन भगवान धर्म्मकी रक्षाके वास्ते पृथ्वीको कहितेहैं ९ । हेभूमे मेरेकर्म्ममें परायणयोहै सोमृतकको स्पर्श करके पंदरां दिन १५ एकवार भोजन करे ॥ १ ॥ फेर पंचगव्यपीवे तब शुद्धभावको प्राप्तभयायोहै सोउस कर्म्म करके नहि लिप्तहोताहै २ ॥ हे देवि मृतकको स्पर्शकरके एह तेरेको मैंने प्रायश्चित्त किहाहै इस प्रकार दोषतें शुद्ध होताहै॥योते नें मेरेको पहिलें पूछ्याहै ॥ ३ ॥ यो मनुष्य इस विधान करके प्रायश्चित्त करे सो मनुष्य अपराध करके रहित हुआ मेरेलोकको प्राप्त होताहै ॥ ४ ॥

रजस्वला स्त्रीके स्पर्शमें प्रायश्चित्त कहितेहैं वाराह इति वाराहजी कहितेहैं हेभूमे योमनुष्य रजस्वला स्त्रीकों स्पर्श करके निर्भय होआ राग मोह करके युक्त और काम करके वश करा हुआ मेरेकों स्पर्श कर्ताहै १ सोमनुष्य एकहजार वर्ष निर्दयहोया रजयोहै स्त्रीकी योनिका रुधिर तिसको पीताहै और हेदेवि अधहोताहै निर्धनहोताहै और अज्ञान करके मूर्खहोताहै ॥२॥ औरआपणे आपकों नहिं जानता जैसे कोई नरकमें पडा हुआ होवे ऐसे होताहै इस अपराधकों करके नरकमें वास होताहै इसमें संशयनाहिं ॥३॥ धरणिः पृथ्वी कहितीहैं हेदेव तुमारी शरणकों प्राप्त योमनुष्यहैं और अपराध करके युक्त योहैं और तुमारे कर्म्ममें तत्परहै तिसका संसार

रजस्वलास्पर्शेप्रा.वाराहः। नारींरजस्वलांस्पृष्ट्वाममस्पृशतिनिर्भयःरागमोहेनसंयुक्तःकामेनचवशीकृतः ॥१॥ वर्षाणांतुसहस्रैकंरजःपिवातिनिर्घृणः अंधश्चजायतेदेविदरिद्रोज्ञानमूर्खवान् ॥२॥ ज्ञानेशास्त्रीयज्ञानेसत्यपिनास्तिकयरूपंमूर्खत्वंविद्यते यत्र स भाव प्रधानोनिर्देशइत्यनेनमूर्खशब्दोमूर्खत्ववाचकोऽत्र॥ नचाविन्दतिचात्मानंपतितोनरकेयथा अपराधमिमंकृत्वात त्रैवंनास्तिसंशयः॥३॥ धरणिःतवदेवप्रपन्नानांमोक्षंसंसारसागरात् अपराधसमायुक्तस्तवकर्म्मपरायणः ॥४॥ कर्म्मणायेनशुद्ध्येततन्मेब्रूहिजनार्दन ५॥ वाराहः॥ स्पृष्ट्वारजस्वलांनारींनरोमद्भक्तितत्परः तपःकृत्वात्रिरात्रंतुआकाशशयनेवसेत् ॥ ६ ॥ शुद्धोभागवतोभूत्वाममकर्मपरायणः एवंकृत्वामहाभागेप्रायश्चित्तंममाप्रियम् ॥ ७ ॥ मुच्यतेकिल्विषाद्देवि आचारेणवाहिष्कृतः एतत्तेकथितंभद्रेयत्स्पृष्ट्वातुजरस्वलाम् ॥ ८ ॥

रूपी समुद्रते किस प्रकार मोक्ष होवे ॥४॥ सोमनुष्य जिस कर्म्म करके शुद्ध होताहै हेजनार्द्दन सोतुम मेरेकोंकहो॥५॥ वाराहः।वाराहजीकहितेहैं हेभूमे मेरी भक्तिमें तत्परयो मनुष्य सो रजस्वलास्त्रीकों स्पर्श करके तीनरात्र तपकरे और आकाश शयन योहै वृक्षकी शाखोंमें शयनसो करे ॥६॥ सोभगवान्का भक्त शुद्ध होय करके मेरे कर्म्ममें परायण होताहै हेमहाभागे इस प्रकार मेरेकों प्यारा यो प्रायश्चित्त तिसकों करे ॥७॥ हेदेवि आचार करके वहिष्कृत योहै वाहर करा हुआ सोपापतें रहित होताहै हेभद्रे रजस्वला स्त्रीकों स्पर्श करके योमेरे कों स्पर्श कर्ताहै उसका प्रायश्चित्त मैंनें तेरेकों किहाहै ॥ ८ ॥

विष्णुकोंस्पर्श कर्त्तायो अधोवायु त्याग कर्ता मनुष्य तिसका प्रायश्चित्त कहितेहैं वाराहजी कहितेहैं हेभूमेमेरेकों स्पर्श कर्के योमनुष्य अधोवायु त्यागताहै कैसावायु विष्टाके तुल्यदुर्गंधि और वायुकर्के पीडित भया मन जिसका ॥ १ ॥ सोमनुष्य तीनवर्ष मक्षिकाहोताहै और फेर तीन वर्ष चूहाहोता और पंचवर्ष कुत्ताहोताहै और नववर्षकूर्म्म क्या कछू होताहै ॥ २ ॥ योमनुष्य शास्त्रकों जानता और मेरेकर्म्ममें तत्परहै हेदेवि उसका योतापनहैं दुःखसोमेरेकों मोहनकर्त्ताहै ३ । इसवचनकों सुनकरहृषीकेशयो भगवान् तिसका परनकर्के पृथ्वीकहतीहै ४ ॥ धरणिःपृथ्वी कहितीहै हेभगवन् तुमारेकर्म्ममे पूजनादिमें तत्परयोमनुष्य सोपूर्वोक्तदोषतें अतुलपापकों प्राप्तहो

विष्णुस्पृशतोऽधोवायुप्रमोचने प्रायश्चित्तम् वाराहः।स्पृश्यमानेनमंभूमेवा तकर्म्मप्रमुंचति पुरीषसदृशंवायुंवायुपीडितमानसः १ मक्षिकापंचवर्षाणि त्रीणिवर्षाणिमूषकः श्वाचैवपंचवर्षाणिकूर्मोवैजायतेनव२एषवैतापनंदेविमो हनंममशंसति योवैशास्त्रंविजानातिममकर्म्मपरायणः ३ श्रुत्वावाक्यंहृषीके शंप्रत्युवाचवसुंधरा ४ धरणिः।अतुलंलभतेपापंतवकर्म्मपरायणःतस्यदेव सुखार्थायविशुद्धिंवक्तुमर्हसि ५ वाराहः।शृणुकार्त्स्न्येनमेदेविकथ्यमानंमया नघे अपराधमिमंकृत्वासंतरेद्येनकर्म्मणा६ यावकेनदिनत्रीणिनक्तेनचपुन स्त्रयःकर्म्मचैवंततःकृत्वासचमेनापराध्यति ७ सर्वसंगंपरित्यज्यममलोका यगच्छति एतत्तेकथितंभद्रेमहत्कर्मापराधिनःदोषंचैवगुणंचैवयत्त्वयाप रिपृच्छ्यते ॥ ८ ॥

ताहै हेदेव तिसके सुखके निमित्त विशुद्धियोहै सोतुमकथनकरणेयोग्यहो ५ ॥(वाराहः)वाराहजी कहितेहैं हेदेवि कहिना योमैंहां उसकों तूं संपूर्णता कर्के श्रवण कर इस अपराधकों कर्के जिस कर्म्म कर्के तरताहै ॥ ६ ॥ तीन दिन यवोंका कोटा भोजन करै और तीन दिवस नक्त करै क्या रात्रिमें एकवार भोजन करै इस प्रकार प्रायश्चित्त करणे कर मेरे अपराधकों नाहि प्राप्त होताहै ॥ ७ ॥ संपूर्ण संगोंकों त्याग कर्के वैकुंठकों प्राप्त होताहै हे भद्रे हे भूमे महत्कर्म्मापराधि योहै क्या नारायणकों स्पर्श कर्के अधोवायु त्यागता यो पुरुषहै उस अपराधिके दोष तथा गुण सो संपूर्ण यो तैंने मेरेकों पूछाहै सो मैनें कथन कर दिआहै ॥ ८ ॥

विष्णु कर्मको कर्त्ता योहै मनुष्य उसके विष्टात्यागनमैं प्रायश्चित्त कहितेहैं वाराह जीहै भूमेमेरे कर्के कथ्य मान योहै अर्थात् योमैं कहिताहां उसकों तूं तत्वकर्के सुण योमनुष्य मेरे कर्मकोंकर्त्ताहुआ विष्टाकों त्यागताहै ॥ १ ॥ सोदिव्य हजार वर्ष १००० रौरव नरकमैं वसताहै तहां उसरौरवनरकमैं वडेदुःख कर्के युक्त हुआ विष्टाकों खाताहै ॥ २ ॥ इसअपराधमैं मैंतेरेकों प्रायश्चित्त कहिताहां जिस प्रायश्चित्तके करणे कर्के पापतें रहित होताहै मेरेकर्मते भ्रष्ट भया योमनुष्य सो व्याकुलयोमन उसकर्के ॥ ३ ॥ एक जलमयीशय्या करे तथा एकरात्र जलमैंवास करे और एकरात्र आकाश शयनकरे तथावृक्षकी शाखा ऊपर शयन करे ऐसें विधान कर्केसो मनुष्य अपराधतें रहित होताहै ॥ ४ ॥ हेभद्रे योमनुष्य मेरेकर्मकों कर्त्ता हुआ विष्टाकरदेवे

विष्णुकर्म्मकुर्वतःपुरीषमोचनेप्रा० वाराहः शृणुतत्त्वेनमेभूमेकथ्यमानंमया नघे पुरीषंमुंचतेयस्तुममकर्मसमाचरन् ॥ १ ॥ दिव्यंवर्षसहस्रंतुरौरवेनरकेवसेत् पुरीषंभक्षयेत्तत्रमहादुःखसमन्वितः ॥ २ ॥ प्रायश्चित्तंवदाम्यत्रयेनमुच्येतकिल्बिषात् ममकर्म्मपरिभ्रष्टेविवृहलेनांतरात्मना ३ एकांजलमयींशय्यामेकामाकाशशायनीं एवंकृत्वाविधानंतुसोपराधात्प्रमुच्यते ४ एतत्तेकथितंभद्रेपुरीषंयःसमुत्सृजेत् मद्भक्तेषुविशालाक्षिअपराधविनिश्चयः ५ विष्णुपूजयतोमौनत्यागेप्रायश्चित्तम् वाराहः। मुक्तातुममंत्राणिममकर्म्मपरायणःप्रायश्चित्तविधिंदेवियस्तुवाक्यंप्रभाषते मूर्खोभवतिसुश्रोणिजात्याविंसप्तपंचच १ ॥ तस्यवक्ष्यामिसुश्रोणिममकर्म्मपरायणः प्रायश्चित्तविधिंदेवियेनमुच्येतकिल्बिषात् ॥ २ ॥ आकाशशयनंकृत्वादिनानिदशपंचच मुच्यतेकिल्बिषात्तत्रदेविचैवनसंशयः ॥ ३ ॥

उसपापका प्रायश्चित्त किहा हे विशालाक्षि मेरेभक्तोंमैं अपराधका एहविशेष कर्के निश्चय है ॥ ५ ॥ विष्णु कों पूजता यो मौनका त्यागकर्ताहै तिसकों प्रायश्चित्त वाराह जी कहितेहैं हेभूमे मेरेपूजनकों कर्त्ता योमनुष्य सो मेरे मंत्रोंकों त्याग कर्के यो और वाक्य वोलताहै अर्थात् पूजनमैं वार्ता कर्ताहै सो मनुष्य सात जन्म अथवा पांच जन्म मूर्खहोताहै ॥ १ ॥ हेसुश्रोणि यो मेरे कर्म्ममैं तत्परहै तिसकों उसपापका प्रायश्चित्तमैं कहिताहां जिसके करणे कर्के पापतें रहितहोताहै ।२। सोमनुष्य उस अपराधके दूरकरणेवास्ते पंद्रां १५ दिनआकाशशयन करे हेदेवि इसप्रायश्चित्त करणेकर्के पापतेंरहितहोताहै इसमैं संशयनहिंहै ३

नीलवस्त्र कोंधारणकर्के विष्णुके स्पर्शमें प्रायश्चित्त वाराहजीकहितेहैं हेपृथ्वी नीलवस्त्र धार कर्के योमेरे कों स्पर्शकर्त्ताहै सो मनुष्य पांचसौ वर्ष ५०० कीडाहोय कर्के स्थितहोताहै ॥ १ ॥ हेसुश्रोणि तिस अपराधका विशोधन यो प्रायश्चित्तहै अर्थात् तिस पापकें दूरकरणे वाला सोमैं कहिताहूं हेविशालाक्षि जिसप्रायश्चित्त केकरणे कर्के मनुष्य पापतेंरहित होताहै ॥ २ ॥ हेभूमे विधिदृष्टयो कर्म्महै अर्थात् शास्त्र कर्के दिखायायोमार्ग उसमार्ग कर्के चांद्रायण ब्रतकों करणे कर्के पापातेंरहित होताहै इसमें संशय नहिंहै ॥ ३ ॥ बिधान विना नारायणके स्पर्शमें प्रायश्चित्तकहितेहैं वाराह भगवान्जी हेभूमें अभिधानेन कोर्थः कोई यो अशुद्ध वस्तुहै उसकों स्पर्श

नीलवस्त्रंधृत्वाविष्णुस्पर्शेप्रा०वाराहः॥ भूपितोनीलवस्त्रेणयोहिमामुपपद्य तेवर्षाणांचशतंपंचक्रिमिर्भूत्वासतिष्ठति १ ॥ तस्यवक्ष्यामिसुश्रोणिअपराधविशोधनं प्रायश्चित्तंविशालाक्षियेनमुच्येतकिल्विपात् ॥ २ ॥ व्रतंचांद्रायणंकृत्वाविधिदृष्टेनकर्म्मणा मुच्यतेकिल्विषाद्भूमेएवमेतन्नसंशयः ३ अविधानेनविष्णुस्पर्शने प्रायश्चित्तम् वाराहः अविधानेनसंस्पृश्ययोहिमामुपसर्प्पति समूर्खः पापकर्माचममविप्रियकारकः १ ॥ अविधानेनकिमप्यशुद्धंसंस्पृश्य ममाभियउपसर्प्पतीतिसंबंधः॥तेनदत्तंवरारोहे गंधमाल्यसुगंधिनः प्रापनंचनगृह्णामिसृष्टंचापिकदाचन २ ॥ ततोनारायणवचः श्रुत्वासासंशितव्रता उवाचमधुरंवाक्यंधर्म्मकामावसुंधरा ॥ ३ ॥ धरणिः यन्मांत्वंभाषसेनाथ आचारस्यव्यतिक्रमं उपस्पृष्टःसमाचाररहस्यंवक्तुमर्हसि ॥ ४ ॥ केनकर्म्मविधानेनभूत्वाभागवताभुवि उपस्पृश्योपसर्प्पंति तवकर्म्मपरायणाः ॥ ५ ॥

कर्के यो मनुष्य मेरेकों स्पर्श कर्त्ताहै सो मूर्ख पाप कर्म्म के करणे वाला मेरेकोंदुःखदेणवाला है ॥ १ ॥ हेवरारोहे तिसमनुष्यनें दियेया गंध और पुष्प और सुगंधद्रव्य और नैवेद्य तिनकोंमैं कदाचित् बीनहिं ग्रहण कर्त्ताहां ॥ २ ॥ तिसनें वाराहजीका वचन सुणकर्के सो पृथ्वी धारयाहै व्रत जिसनें और धर्म्म कामा मधुर यो वचनहै सो कहितीहै ॥ ३ ॥ धरणिः । पृथ्वी कहितीहै हेस्वामिन् योमेरेकों तुम आचारका व्यतिक्रम कहितेहो सो स्पर्शकरणेवालेके समाचार यो रहस्य सोतुमकहिने योग्यहो ॥ ४ ॥ किस कर्म्मके करणें कर्के पृथ्वीमें भगवान केभक्त होणेकर आचमनोंकों कर्के तुमारे कर्म्मोंमे परायणयोहैं सो तुमारे समीप प्राप्तहोतेहैं ॥ ५ ॥

एतन्निति हेदेव एहमेरेको संशयहै ओरमेरे मनमें परम कौतुकहै तुमारे भक्तोंके सुखके वास्ते निष्कलयो प्रायश्चित्तहै सोतुमकथन करणे योग्यहो ॥ ६ ॥ वाराहजी कहितेहै हे देवि तिस कर्के योतूंमेरकोंकहितीहै सोतूं श्रवण करमेरायोएह गुह्य कथनहै उसकोंतूं यथार्थ कर्के श्रवण कर ॥ ७ ॥ योमनुष्यसर्व कर्म्मोंको त्यागकर्के मेरेको प्राप्तहोताहै हेसुश्रोणितिसमनुष्यको आचमन कर्के योक्रियाहै उसकोंतूं सुण ॥ ८ ॥ सोमनुष्यपूर्वमुख होय कर्के जलोंकर्के पैरोंको धोवे ओर जिसप्रकार शास्त्रमें लिखाहैतेसेंहिं आचमनकर्के तीनमृत्तिकायोहैं तिनको ग्रहणकरे अर्थात् तिन्नवार मृत्तिका हाथोंकोंलगावें ॥९॥ तिसतें उपरंत जलकर्के हाथोंकोंधोवे फेर सात

एतन्मेसंशयंदेवपरंकौतुहलंहिमे तवभक्तसुखार्थायनिष्कलंवक्तुमर्हसि ६ वाराहः। शृणुष्वतेनमेदेवियन्मांत्वंभीरुभाषसे कथितंममतत्वेनगुह्यमेतत्परंमहत् ७ विमुच्यसर्व्वकर्म्माणियोहिमामुपसर्प्पति तस्यवैशृणुसुश्रोणि उपस्पृश्यचयत्क्रिया ८ भूत्वापूर्वमुखस्तत्रपादौप्रक्ष्याल्यचांबुभिः उपस्पृश्ययथान्यायंतिस्रोवैगृह्यमृत्तिकाः ९ ततः प्रक्षालितंहस्तंजलेनतदनंतरं सप्तकोशंततोगृह्यमुखंप्रक्षालयेत्तथा १० कोशशब्दोऽत्रजलप्रसृतिपरः सत्तुशपथानुक्तातरूपः॥पादमेकैकशस्तद्वत्पंचपंचन्यसेत्ततः करे,संमृज्यतां तत्रयदीच्छेतममाप्रियम् ११ त्रीणिकोशान्पिवेत्तत्रसर्वकार्यविशोधनं कराभ्यांमुखमार्ज्येतसर्वमिंद्रियनिग्रहम् १२ प्राणायामंततः कृत्वाममचिंतापरायणः कर्म्मणाविधिदृष्टेनभवेत्संसारमोक्षणम् १३ त्रीणिवारान्स्पृशेत्तत्रशिरोब्रह्मणिसंस्थितः त्रीणिवारान्पुनस्तत्रउभौतौकर्णनासिके १४

चुलिआं जलले कर्के मुखकोंधोवे॥१०॥ ओर फेर एक एकपादकोंपांच पांच चुलिआं क्रमतें जल किआं स्थापन करे अर्थात् पैरोंको धोवे ओर हाथ योहै उनको धोवेयेंमेरे प्रियको इच्छाकरे॥ ११ ॥ फेर तीनचुलिआं जल कियां पीवे उस जलके पीणे कर्के संपूर्ण देहकी शुद्धिहोती है ओर हथों कर्के मुखको धोवे ओर संपूर्ण इंद्रियोंको रोके॥१२॥ ओर तिसतें उपरंतमेरे ध्यानमे तत्पर होयकर प्राणायामको करे ऐसें विधि दृष्टयोकर्म्महै तिसकर्म्म कर्के संसारकामोक्षहोताहै ॥ १३ ॥ ओर तीनवार शिरको स्पर्श करे ओर ब्रह्मध्यानमें स्थितहोवे ओर फेर तीन वार दोनो कर्ण ओर नासिका इनकोंस्पर्श करे ॥ १४ ॥

स्पृशेतेति तव निष्पाप हुआ मनुष्य योयोदेवता जिस जिस स्थानमैं प्रतिष्ठित हैं उसउस देवता कों स्पर्शकरे और तीन वार श्रेष्ठयो जलहै उसका अर्घदेवे १५ इसप्रकार मेरे अभिगमनमैंमेरी प्रतिमामैं कर्त्तव्यहे अथवा हेपृथिवि तेरायोदेहहे नारायणकायो स्थान बणा हुआ तिसकोंस्पर्श कर्के यो मनुष्य मेरी प्रसन्नताकों इच्छाकरे॥१६॥इस प्रकार कर्त्तायोहै और मेरे कर्ममे विशेष कर्के स्थितहे तिसमनुष्यकों हेदेवि अपराध नहिंहे इसमे संशय नहिं ॥१७॥तिस कारणतें नारायणकावचन पृथ्वी सुण कर्के मीठायो वचनहे संपूर्ण भक्तोंकों प्यारासो वचन वाराहभगवान् जी को कहितीभई ॥ १८ ॥ पृथिवकहितीहै हे भगवन् विधानतें विना तुमारेकों स्पर्श कर्के यो

स्पृशेतनिष्कलस्तत्रयोयोयत्रप्रतिष्ठितः क्षिपच्चत्रीणिवाराणिसलिलंप्रवरं त्रयम् १५ एवमुक्तस्यकर्त्तव्यंममाभिगमनेपुच उपस्पृश्यतनुंवातियदीच्छेतप्रियंमम १६ एवंचकुर्वतस्तस्यममकर्म्मव्यवस्थितः अपराधंनविंदेतदेविएवंनसंशयः १७ ततोनारायणवचःश्रुत्वादेवीवसुंधरा उवाचमधुरं वाक्यंसर्वभागवतप्रियम्१८धरणिः॥उपस्पृश्यविधानेनयस्तुकर्म्माणिचाप्रयात् तापनंशोधनंचैवतद्भवान्वक्तुमर्हसि १९ वाराहः॥शृणुतत्त्वेनमेभूमे इदंगुह्यमनिंदिते यांगतिंचप्रपद्यंतेममशास्त्रवहिष्कृताः २० व्यभिचारंचमेकृत्वायोऽनुमामुपसर्पति दशवर्षसहस्राणिदशवर्षशतानिच २१ भूत्वा क्रिमिर्यथान्यायंतिष्ठतेनात्रसंशयः प्रायश्चित्तंप्रवक्ष्यामितस्यमूर्खस्यमाधवि २२ यच्चकृत्वामहाभागेकृतकृत्यःपुनर्भवेत् २३

मनुष्यकर्म्मोंकों कर्त्ताहे उसकों तापनयोहै और शोधनयोहै प्रायश्चित्त सो तुम कथन करणे योग्यहैं ॥ १९ वाराह जी कहितेहैं हेभूमे हे अनिंदिते एहयो गुह्यहे सो तूं मरेतेंयथार्थ कर्के सुणमेरे शास्त्र कर्के वहिष्कृतयोहैं मनुष्य अर्थात् शास्त्रथेंवारहवर्त्तने वाले जिस गतिकों प्राप्तहोतेहैं सोतूंसुण ॥ २० ॥ योमनुष्य मेरा व्यभिचार कर्के अर्थात् मेरा अपराध कर्के मेरे कों स्पर्श कर्त्ताहे सो मनुष्य जाराहजार वर्ष ११००० विष्टाका कीडा होताहै २१इसमें संशय नहिंहे हेपृथ्वी सो यो मूर्ख मनुष्य उसका प्रायश्चित्त मैंकहिताहां ॥२२॥ हेमहाभागे जिस प्रायश्चित्तकों कर्के मनुष्य फेर कृतकृत्य होताहै ॥ २३ ॥

महेति महासांतपन यो व्रत तिसको कर्के फेर तप्तकृच्छ्र्यो व्रत तिसको ब्राह्मण क्षत्री वैश्ययेमेरे मतमें स्थितहैं सो प्रायश्चित्त करे॥२४॥हे यशस्विनि भूमे इस विधान कर्के योमनुष्य प्रायश्चित्त कों कर्तेहैं सो मनुष्य पापते रहितहोय कर्के परम गतिकों प्राप्तहोतेहैं॥२५॥ ❀ अब क्रोधयुक्त यो मनुष्य तिसको विष्णुके पूजनमें और विष्णुकेस्पर्शमें प्रायश्चित्त कहितेहैं वाराहजी॥ वाराह भगवान् कहितेहैं हे यशस्विनि हे भूमे योमनुष्य क्रोध कर्के युक्त होय कर मेरेकर्म्ममें परायणहै अर्थात् मेरे कर्म्मोंको कर्ताहै और चित्तको चला चल कर्के अर्थात् मनके रोके विना मेरे अंगोंको स्पर्श कर्ताहै॥१॥सो हे देवि मैं तिसके साथ रागको नहिं इच्छा कर्ता और क्रोधयुक्तयोहै उसको वीमैं नहिं इच्छा कर्ताहों मैंयोहों सर्वदाकालरोकेहैं इंद्रियजिसने और शुभ भगवान्जी

महासांतपनंकृत्वातप्तकृच्छ्रंतुनिष्कलं ब्राह्मणाः क्षत्रियावैश्याममयेचमते स्थिताः२४अनेनविधिनाकृत्वाप्रायश्चित्तंयशस्विनि किल्विषाद्विप्रमुक्ता स्तेगच्छंतिचपरांगतिम्२५त्यविधानेनोपस्पृश्यापराधप्रायश्चित्तम्॥ ❀ क्रोधयुक्तस्यविष्णुपूजनेस्पर्शेचप्रा०वाराहः॥यस्तुक्रोधसमाविष्टोममकर्म्मपरायणःस्पृशेतममगात्राणिकृत्वाचित्तंचलाचलम् १नचाहंरागमिच्छामिक्रुद्धमेव यशस्विनि इच्छामिचसदादांतंशुभंभागवतंशुचिम् २ पंचेन्द्रियसमायुक्तं लाभालाभविवर्जितं अहंकारविनिर्मुक्तंकर्मण्यभिरतंमम ३ अन्यच्चतेप्रवक्ष्यामितच्छृणुत्वंवरानने सयथालभतेक्रुद्धःशुभोभागवतःशुचिः४ चिल्ली जातोवर्षशतंश्येनोवर्षशतंपुनः मंडूकःशतवर्षाणियातुधानः पुनर्दश ५

काभक्त॥२॥और पवित्र और पांचयों इंद्रियहैं इनों कर्के युक्तहैअर्थात् सभइंद्रियकोंमेरे विषेहियो लगाताहै और लाभालाभ कर्के रहित और अहंकार कर्के रहित और मेरे कर्म्ममें प्रीति युक्त ऐसायो मनुष्य उसकोमैं इच्छा कर्ताहों॥३॥और हेवरानने हेभूमे और मैंतेरेकों कहिताहों सो तूंसुणसो भगवान्का भक्त और पवित्र भीहैपरंतुक्रोधीयोहै सोजेसें फलकों प्राप्त होतासोतूंसुण॥४॥सो मनुष्य सौवर्ष १०० चीलकी योनिकों प्राप्तहोताहै और फेर सौ वर्ष १०० बाजपक्षी होताहै और फेर सौ वर्ष १०० मंडूकक्या डिडुहोताहै और फेर हजार वर्ष १००० राक्षस योनिमें प्राप्तहोताहै ॥ ५ ॥

मूषक इति और सो मनुष्य सठ वर्ष ६० मूषक होताहै औरफेर वीर्य्यके भोजन करणे वालाजी व विशेष होताहै॥हेसुश्रोणि फेर पांच ५ सात ७ नव ९ वर्ष अर्थात् १७५ वर्ष नेत्रों कर्केरहित कैया अन्ध होताहै॥६॥और फेर सोमनुष्य बत्तरी वर्ष३२इछड होताहै और फेरदश वर्ष१० चक्रवाक पक्षी होताहै और पुनः सवाड योहे जलके बीचजाला तिसकोंखाणे वाला जीव होता है और पुनः आकाशमें गमन करणे वाला होताहै ॥७॥ हेभूमे इस प्रकार क्रोधके मार्गमें वर्त्ततायो मनुष्य सो इतनिआं पूर्वोक्त योनिआं भोग कर्के आपणे कर्मके अपराधकर्के संसार रूपी समुद्रमें फेर ब्राह्मणयोनिमें प्राप्तहोताहै ८ ॥ पृथ्वी कहितीहै हेदेव अहो इत्याश्चर्य्ये योतुमनेंपरम गूढ धर्म्म प्रथममेरेकों किहा तिसकोंसुन कर्के मेराचित्त व्याकुल होगयाहै सोकिसी स्थानमें भी

मूषकःषष्टिवर्षाणिरेतोभक्षस्तुजायते अन्धोजायेतसुश्रोणिपंचसप्तनवंतथा ॥ ६॥गृध्रोद्वात्रिंशवर्षाणिचक्रवाकोदशैवच शैवालभक्षिताचैवह्याकाशगमनस्तथा ॥७॥ ब्राह्मणोजायतेभूमेक्रोधस्यचपथेस्थितः आत्मकर्म्मापराधेनप्राप्तः संसारसागरे ॥८॥ धरणिः॥ अहोवैपरमंगुह्यंयत्त्वयापूर्वभाषितम् जातंमेविह्वलंचित्तंनास्थिरंजायतेक्वचित् ९ यत्त्वयाभाषितंह्येदंभक्तानांच दुरासदं श्रुत्वासुदुस्तरंसारंभीतास्मिपरिदेविता ।१०॥ नाहमाज्ञापयामि त्वांदेवदेवजगत्पत ममचैवप्रियार्थायसर्वलोकसुखावहम् ॥ ११ ॥ येनमुच्यंतिसंक्रुद्धालुब्धाः कर्म्मपरायणाः अल्पसत्त्वागतभयारागलोभसमन्विताः ॥ १२ ॥ तरंतियेनदुःखानिप्रायश्चित्तंचमेवद ततःकमलपत्राक्षोवाराहमुखसंस्थितः नशक्तुमारभद्वक्तुमाममनारायणोब्रवीत् १३

स्थिरनाहिंहोताहै॥९॥योतुमनें निश्चयकर्के पूरधर्म्ममेरेकों किहाभक्तोंको दुरासद और अतिशयकर्के दुस्तर और सारउसकोसुणकर में डरीहां और परिदेविता क्या विलापकरतीहां और कांपतीहां ॥१०॥हेदेवदेव हेजगत्के स्वामिन्मैंतुमारेकों नहिकहतीतुममेरे प्रियके निमित्त और संपूर्ण लोकोंको सुखकेदेणे वाला योधर्म्म सोकहो॥११॥जिस कर्के क्रोधी और लोभीयो मनुष्य कर्म्मोंमे तत्परहैं और थोडाहै धैर्य्यजिनका और दूर होगया भय जिनका राग लोभ कर्के युक्तहे॥१२॥जिस कर्के दुःखोंको तरतेहैं ऐसा प्रायश्चित्त मेरेकों कहो तिस समय कमल पत्रकी न्याई नेत्र जिनके सो वाराह मुखमें स्थित योभगवन् सोआप कथन करणेको समर्थ नाहिं होतेभये कहिते भये मेरेकों नारायण जी कहिते भये ॥ १३ ॥

ततइति यदवराहजीने उत्तर नहिकीता तद तिसजगावैठेथेमुनितिनकावचनहे तिसतें उपरंत पृथ्वीकावचन सुण कर्के ब्रह्माजीका पुत्र सनत्कुमारमुनि योगके जाणने वाला पृथ्वीकों कहितो भया ॥१४॥हेभूमेतंधन्यहैं और वडेभाग्यों वालीहैं तैंनेंपूछेयो हरिहैं वाराहरूपीभगवान् संपूर्णयों मायाहैतिनके करंडक क्या पिटारेहैं ॥ १५ ॥ हेदेवि तैंने क्या कथन कियाहैं और श्रीवाराह भगवान्योंहैं संपूर्ण योगोंके अंग और योगके जाणनेवाले नारायणदेव और संपूर्ण धर्म्मोंके जाननेवालेओंमैं श्रेष्ठतरेकर्के पूछेहुयेक्याकहितेभये सोकहो ॥ १६ ॥ ऐसे सनत्कुमार जीकावचनसुणकर्कें सोपृथ्वीसनत्कुमारकों परत कर्केकहितीहै हेब्रह्मन् योतैंनें पूछयाहै सो यथार्थ

ततोभूम्यावचः श्रुत्वाब्रह्मणश्चसुतोमुनिः सनत्कुमारोयोगज्ञःप्रत्युवाचवसुंधराम् १४ धन्याचैवसभाग्याचयत्त्वयापृष्टवान्हरिः वाराहरूपीभगवान्सर्वमायाकरंडकः १५ किंत्वयाभाषितंदेविसर्वयोगांगयोगवित् देवोनारायणस्तत्रसर्वधर्म्मविदांवरः १६ हेदेवितस्मैत्वयाकिंभाषितंससर्वयोगांगयोगविद्देवः किमवददितिसंवन्धः॥कुमारवचनंश्रुत्वासामर्हाप्रत्यभाषतशृणुतत्त्वेनमेब्रह्मन्यत्त्वयापरिपृच्छ्यते १७ कार्यंक्रियांचयोगंचअध्यात्मंपार्थिवस्थितिं एतन्मेपृच्छतोब्रह्मन्देवोनारायणःप्रभुः १८ पृच्छतः पृच्छंत्याइत्यर्थः ततोमांभाषतेब्रह्मन्विष्णुर्मायाकरंडकः क्रुद्धाद्भगवतोब्रह्मन्येनशुध्यतिकिल्विषात् १९ कृत्वातेनव्रतंचैवममकर्म्मपरायणः षष्ठेकालेतुभुंजीतगृहभिक्षामनिंदिते २० अष्टौभिक्षायथान्यायंशुद्धाभगावतागृहे यएतेनविधानेनब्रह्मकर्म्माणिकारयेत् २१ ॥

कर्के मेरेतें सुण ॥ १७ कार्य क्रिया योग अध्यात्म पार्थिवस्थिति एह पांचप्रश्नइनकों पूछती योमैं हां मेरेकोंहसनत्कुमारनारायणभगवान् १८ ॥ प्रभु देवविष्णु और संपूर्ण मायाके पिटार तिसतें उपरंत मेरेकों कहितेहैं हेब्रह्मन् क्रोधकों प्राप्तभये योभगवान् तिनोंथें जिसकर्के पापतें शुद्ध होताहै ॥ १९ ॥ तिसीप्रकार कर्के मेराभक्त व्रतकों कर्के छेमां योभोजनकाकालहै अर्थात् तीसरे दिनरात्रिमे हे अनिंदितें भिक्षाकेअन्नकों घरमैं भोजनकरे॥ २०॥ अष्टाविति यथान्यायकर्के आठभिक्षा योंहै अर्थात् अठांघ रांकी भिक्षा शुद्धभगवान् जीकेनिमित्त घरमैं ले आवे यो मनुष्य इस विधानकर्के ब्रह्म कर्म्मोंकों कर्ताहै तिसके करणेसें पापतें रहित होताहै ऐसें जनार्दन भगवान् कहिते भये ॥ २१ ॥

हे सनत्कुमार योपरमसिद्धि कों तूं इच्छा कर्त्ताहैं और विष्णुलोककों चाहिताहैं तवहिजोमैं मुख्य तूं शीघ्र विष्णु भगवान् जीकाआराधनकर इसमैं संशयनहिहै ॥ २२ ॥ तिसतें उपरंत भूमिका वचन सुणकर्के ब्रह्माका पुत्र सनत्कुमार मुनि विशालहैं नेत्रजिसके और धर्म्ममैं कामना जिसकी ऐसीयो पृथ्वी तिसकों परतकर्के कहिताभया ॥ २३ ॥ हेदेवि योतैंनेंकिहाहै अहो इस्या अर्य्यैसोगूढरहस्यहै और तिसभगवान् जीकेमुखतें निकसेयेधर्म्महै सोधर्म्म तूंमेरेताईं कहिणेंको योग्यहैं ॥ २४ ॥ पृथ्वी कहितीहैं हें सनत्कुमार तिसतेंउपरंत पुंडरीकाक्ष शंखचक्रगदा एहधारेहैं जिसने सोवाराहरूपी भगवान् और लोकनाथ और जगत्के पति ॥ २५ ॥ और

मुच्यतेकिल्विपात्त्रएवमाहजनार्दनः यदीच्छसिपरांसिद्धिंविष्णुलोकंद्वि जोत्तम शीघ्रमाराधायेद्विष्णुंद्विजमुख्योनसंशयः २२ ततोभूम्यावचःश्रुत्वाब्रह्मणश्चसुतोमुनिः प्रत्युवाचविशालाक्षींधर्म्मकामांवसुंधराम् २३ ॥ अहोगुह्यंरहस्यंचयत्त्वयादेविभाषितं तस्ययेमुखनिष्क्रांताधर्म्मास्तान्वक्तुमर्हसि २४ धरणिः ततः सपुंडरीकाक्षःशंखचक्रगदाधरः वाराहरूपी भगवान्लोकनाथोजनार्दनः ॥ २५ ॥ उवाचमधुरंवाक्यंमेघदुंदुभिनिस्वनः भक्तकर्म्मसुखार्थायगुणवित्तसमन्वितम् २६ अनेनैवविधानेनस्वाचारेणसमन्वितः देविकारयतेकर्म्ममलोकायगच्छति२७ ॥ क्रुद्धेननचकर्त्तव्यंलोभेनत्वरयानच मत्पूजनंविशालाक्षियदीच्छेत्परमांगतिम् ॥ २८ ॥ येमांदेवियजिष्यंतिक्रोधंत्यक्त्वाजितेंद्रियाः संसारंतनगच्छंतिअपराधविवर्जिताः ॥ १९ ॥ इतिक्रुद्धापराधप्रयश्चित्तम् ॥

मेघकी न्याईं शब्द जिसका सो मधुर वचन कहिता भया भक्तोंका यो कर्म्म तिसके सुखके निमित्त गुण और धन कर्के युक्त ॥ २६ ॥ इसी विधान कर्के और आपणे आचार कर्के युक्त हे देवि यो मनुष्य कर्म्म कों कराताहै सो मेरे लोककों जाताहै ॥ २७ ॥ हे देवि क्रोध कर्के और लोभ कर्के और शीघ्रता कर्के हे विशालाक्षि मेरा पूजन नहि करणे योग्य यो मनुष्य परम गतिकों इच्छा करे ॥ २८ ॥ हे देवि यो मनुष्य क्रोधकों त्याग कर्के और इंद्रियों कों जीत कर्के मेरेकों पूजतेहैं सो मनुष्य अपराधों कर्के रहित हुये संसारकों नहि प्राप्त होते अर्थात् सोमनुष्य जन्म मरणतें रहित होते हैं ॥ २९ ॥

अकर्म्मण्य योपुष्पहैं योभगवान्‌केपूजनकेयोग्यनांहिं तिनों करके विष्णुपूजनमें प्रायश्चित्तवाराहजी कहितेहैं हेभूमे अकर्म्मण्ययो पुष्पहैं योनहिंनारायणकेपूजनयोग्य उनों पुष्पोंकर्के योमनुष्यपृथ्वी में मेरेको पूजताहै तिसको योपापहै सोमैंतेरेको कहिताहां हेपृथ्वि सोतूं श्रवणकर ॥ १ ॥ सो योहैं मुर्खभक्तमेरे विप्रियके करणेवाले तिनोंका दिआ योहै सोमैं नहिं ग्रहण कर्ता और ओहो भक्तमेरे प्यारे नहिंहैं ॥ २ ॥ जेडे पुष्पनहि पूजा योग्य सो विष्णुधर्म्मोत्तरमें लिखेहैं सो मूलमें अर्थ स्पष्टहै ओहोयोपुष्पहैं उनके साथ पूजन करणेते घोर नरकमें पडतेहैं और अज्ञानके दोषकर्के दुःखोंको भोगतेहैं ॥ ३ ॥ सोमनुष्य उसदोषकर्के दश वर्ष वानर होताहै और तेरां वर्ष १३ मार्जार होताहै और पांच वर्ष ५ मूषक होताहै और बारां वर्ष १२ बल

अकर्म्मण्यपुष्पणविष्णुपूजनेप्रा०वाराहः॥ अकर्म्मण्येनपुष्पेणयोमामर्च यतेभुवि पातनंतस्यवक्ष्यामितच्छृणुत्वंवसुंधरे॥ १ ॥ नाहंतत्प्रतिगृह्णा मिनचतेवैममप्रियाः सर्वेभागवतैर्दत्तंममविप्रियकारिणः॥ २ ॥ अकर्मण्य पुष्पाणिविष्णुधर्मोत्तरे॥उग्रगंधीन्यगंधीनिकुसुमानिनदापयेत् अन्यायत नजातानिकंटकीनितथैवच॥ १ ॥ रक्ताण्यकालजातानिचैत्यवृक्षोद्भवानि च कृष्णंचकटजंचार्कंनैवदेयंजनार्दनइति २ पतंतिनरकेघोरेरौरवेतदनंतरं अज्ञानस्यचदोषेणदुःखान्यनुभवंतिच॥ ३॥ वानरोदशवर्षाणिमार्जारश्च त्रयोदश मूषकःपंचवर्षाणिवलीवर्दश्चद्वादश॥ ४॥ छागश्चैवाष्टवर्षाणि मासंवैग्रामकुक्कुटः त्रीणिवर्षाणिमहिषोभवत्येवनसंशयः॥ ५॥ एतत्तेक थितंभद्रेपुष्पंयन्मेनरोचते अकर्म्मण्यंविशालाक्षिपुष्पंयेचददंतिवै॥ ६ ॥ धरण्युवाच॥भगवन्यदितुष्टोसिविशुद्धेनांतरात्मना येनशुद्ध्यंतितेभक्तास्तव कर्म्मपरायणाः ७॥ वाराहः॥ शृणुतत्त्वेनमेदेवियन्मात्वंपरिपृच्छसि प्राय श्चित्तंमहाभागेयेनशुद्ध्यंतमानवाः॥ ८ ॥

द होताहै ॥ ४ ॥ और आठवर्षवकराहोताहै ओर महीना मात्र ग्राम कुक्कुट होताहै ओर तीनव र्ष महिष होताहै इसमें संशयनहिहै ॥ ५ ॥ हे भद्रे एहमैनें तेरेको किहाहै यो पुष्प मेरेको नहिं अछेलगते और योनहिं पूजन योग्य ओहोपुष्प योमनुष्य मेरेको देतेहैं उनको एह पूर्वोक्त फलहोताहै ॥ ६ ॥ पृथ्वी कहितीहै हे भगवन् योतुममेरे ऊपर अंतः करण कर्के प्रसन्न हो तव जिस कर्के तुमारे भक्त तुमारे को पूजने वाले शुद्ध होतेहैं सो तुमकहो ॥ ७ ॥ वाराहजीकहितेहैं हेदेवि योतूंमेरेको पूछतीहैं सो यथार्थकर्केसुण हेमहाभागे प्रायश्चित्तमें तेरेको कहिताहां जिसकर्के मनुष्य शुद्धहोतेहैं ॥ ८ ॥

हेपृथ्वि तिसतें उपरंत महीनाभर एकवार भोजनकरे और महीना भर वीरासन स्थित होवे औ र महीनमें सातमें सातमें दिनमें चतुर्थ काल एक वार भोजन करे अथवा सप्त सप्त क्या उणुंज।दिन वीरासनकरे ९॥ और एक महीना चौथेपहर भोजनकरे और महीना भर घृत और पायस भोजन करे और तीन दिन यावकान्न भोजन करे यवोंका कोटा और तीन दिन पव न भोजन करे अर्थात् निराहार स्थित होवे १०॥ हेदेविये। मनुष्य इस प्रकार करके कर्म्मोंको कर्त्ताहै सोसंपूर्ण पापोंकर रहित हुयामेरे लोककों प्राप्त होताहै ११ ॥ लाल वस्त्र धार करके ना रायणके पूजनमें प्रायश्चित्त वाराह जी कहितेहैं हेपृथ्वि लाल वस्त्र धार करके योमनुष्य मेरेको स्पर्श कर्त्ताहै अर्थात् मेरेको पूजताहै हे सुश्रोणि तिसकों वोयो प्रायश्चित्त किहाहे संपूर्ण संसार

एकाहारंततः कृत्वामासमेकंवसुंधरे वीरासनविधिंचैवकारयेत्सप्तसप्तच९ चतुर्थंभक्ष्यमेकंचमासंनघृतपायसम् यावकान्नंदिनत्रीणिवायुभक्षोदिनत्र यम् ॥१०॥ यएतेनविधानेनदेविकर्म्माणिकारयेत् सर्वपापप्रमुक्तश्चमम लोकंसगच्छति ११ ॥ रक्तवस्त्रंधृत्वाविष्णुपूजनेप्रा० वाराहः॥रक्तवस्त्रेण संयुक्तोयोहिमामुपसर्पति ॥ तस्यापिशृणुसुश्रोणिकर्म्मसंसारमोक्षणम् १ रजस्वलासुनारीपुरजोयत्तत्प्रवर्त्तते तेनासौरजसास्पृष्टोकर्म्मदोषेणजानतः ॥ २ ॥ वर्षाणिदशपंचैवतस्यतेतत्रनिश्चयः॥ तस्यतेकोर्थःतत्रोपक्षिप्यते तसुउपक्षेपेइत्यस्यधातोःप्रयोगः। रजोभूत्वामहाभागेरक्तवस्त्रपरायणः ३ प्रायश्चित्तंप्रवक्ष्यामितस्यकायविशोधनं।येनशुद्ध्यंतिवैभूमेपुरुषाः शास्त्र निश्चिताः ॥ ४ ॥ एकाहारंततःकृत्वादिनानिदशसप्तच वायुभक्षोदिनत्री णिदिनमेकंजलाशनः ॥ ५ ॥

का मोक्ष करणे वाला सोतूं श्रवण कर ॥ १ ॥ हेमहाभागे लाल वस्त्रके धारण वाला योमनु ष्यहे सोरजस्वला योस्त्रियांहैं उनमें योरजउत्पन्न होताहै उस रज करके सो मनुष्य जान करके कर्म्मोंके दोष करके स्पृष्ट होताहै और पंद्रां वर्ष उस रजमें उसका उपक्षेपकरीदाहै अर्थात् निश्चय करके रजमें उसका वास होताहै ॥ २ ॥ हेमहाभागे लाल वस्त्रोंके धारणे वाला रजहो य करके स्थित होताहै ॥ ३ ॥ उसके देहका विशोधन प्रायश्चित्तमें कहिताहां हेभूमि जिस प्राय श्चित्तके करणे कर पुरुष शास्त्र विषे निश्चय वाले शुद्ध होतेहैं ॥ ४ ॥ और तिसतें उपरंत दश दिन वा सात दिन एक वार भोजन करे और तीन दिन पवन भोजन करे और एक दिन ज लकों भोजन करे ॥ ५ ॥

एवमिति हेभूमे इसप्रकार मैंनेंकिहाहै मेरे अपराधकेकरणेवालामनुष्य प्रायश्चित्तकों करलेवे त
व मेरेकों प्यारालगताहै॥६॥ हेभूमे एह मेनें तेरेकों किहाहै लालवस्त्र धारककें यो मनुष्यमेंरेकों
स्पर्श कर्त्ताहे उसका प्रायश्चित्तहेमहाभागे संपूर्ण संसारका मोक्षकरणेवाला ॥७॥ ❀अवदीपवि
नाअन्धकारमें नारायणकेस्पर्शमें प्रायश्चित्तकहितेहैं वाराहजी ॥ हेसुंदरि योमनुष्य दीपर्तविना
अज्ञानकर्के मोहकों प्राप्तहुआ अन्धकारमें शीघ्रमेंरेको स्पर्शकर्त्ताहै॥१॥ उसका पतनयोहै क्लेश
सोमैं कहिताहां हेपृथ्वितूंसुण तिसपाप कर्के क्लेशकों प्राप्तहोयकर मनुष्योंमें अधमयोहैं सोदुः
खीहोताहै हेमहाभागे ॥ २ ॥ एकजन्म सोमनुष्य तमोमय अन्धहोताहै और फेरसर्वाशी और

एवंसमुच्यतेभूमेममविप्रियकारकः प्रायश्चित्ततः कृत्वाममासौरोचतेसदा
६ एतत्तेकथितंभूमेरक्तवस्त्रविभूषिते प्रायश्चित्तंमहाभागेसर्वसंसारमोक्ष
णम्॥ ७॥ ❀ अन्धकारपुदीपंविनाविष्णुस्पर्शनेप्रा० वाराहः॥यस्तुमामन्ध
कारेपुविनादीपेनसुंदरि स्पृशतेमांविनाशाशुंत्वरमाणोविमोहितः १ ॥
पतनंतस्यवक्ष्यामितच्छृणुत्वंवसुंधरे तेनक्लेशसमासाद्यक्लिश्यतेचनराधमः
२ अन्धोभूत्वामहाभागेएकंजन्मतमोमयः सर्वाशीसर्वभक्ष्यश्चमानवश्चै
वजायते ३ अनन्यमानसोभूत्वाभूमेह्येतत्प्रसाधयेत् प्रायश्चित्तंप्रवक्ष्या
मिअन्धकारेतुयःस्पृशेत् ४ संसारंयेनतरातिममलोकायगच्छतिअक्ष्णोरा
च्छादनंकृत्वादिनानिदशपंचच ५ एकाहारंततःकृत्वादिनविंशत्समाहितः
यस्यकस्यापिमासस्यएकामिवचद्वादशीम् एकाहारस्ततोभूत्वातिष्ठेद्वा
पिजलासनः ॥ ६॥

सर्वभक्ष्यक्या सभकुछखाय लेणेवाला मनुष्य होताहै॥ ३ ॥हेभूमे एकचित्त होयकर्के इसप्राय
श्चित्तकोंकरे यो मनुष्य अन्ध कारोंमें मेरेकों स्पर्शकर्त्ताहै उसको प्रायश्चितमें कहिताहां ॥ ४
जिसप्रायश्चित्तके करणेकर संसारकों तरताहै और मेरेलोककों प्राप्त होताहै और सो मनुष्य ने
त्रोंको बांधकर्के पंद्रां दिन स्थितहोवे और सावधान चित्त होयकर ॥ ५ ॥ इक्कीदिन एकवार
भोजनकरे और जिस किस महीनेकी एकयो द्वादशीहै उसदिनमें एकवार भोजन कर्के
जलासन हुआ अर्थात् केवल जलमें स्थितहोवे ॥ ६ ॥

तत इति तिसतें उपरंत गौके मूत्र करके पकाये योयवहैं तिनकों भोजन करे एहयो प्रायश्चित्तहै इस करके तिसपापतें रहित होताहै ७ ॐ अवकृष्ण वस्त्र धार करके विष्णु कर्म्ममें तत्पर योहै तिसका प्रायश्चित वाराह जी कहितेहैं हेभूमे यो मनुष्यकृष्ण वस्त्र धार करके मेरे कर्म्मम तत्परहै और हेदेवि मेरे कर्म्म कों कर्त्ताहै तिसका यो पतनहै तिसको तूंसुण ॥ १ ॥ सो मनुष्य पांच वर्षकाष्ठके भक्षण करणे वाला घुण होताहै और तिसतें उपरंत दशवर्ष मत्स्य होताहैं और तीन वर्ष लावक नामापक्षी होताहै॥ २ ॥ पांच वर्ष नकुल होताहै और दश वर्ष कच्छप होताहै और तीन वर्ष मच्छर होताहै और तीन वर्ष वा पंच वर्ष दंशक्या डंग वाली मक्षी होता है ॥ ३ ॥ मेरे कर्म्ममें तत्पर योमनुष्य सो इस प्रकार संसारको प्राप्त होताहै और सो मनुष्य नव

ततोयवान्नंभुंजीतगोमूत्रेणप्रपाचितं प्रायश्चित्तेनचैतेनमुच्यतेपातकात्ततः ७
कृष्णवस्त्रंधृत्वाविष्णुकर्म्मपरायणस्य प्रा०वाराह:ॐयःपुनःकृष्णवस्त्रेणमम
कर्म्मपरायणः देविकर्म्माणिकुर्वीततस्यैवपतनंशृणु १ घुणोवैपंचवर्षाणि
काष्ठभक्षश्चजायते मत्स्योवैदशवर्षाणिलावकस्तुसमास्त्रयः २ पंचवर्षा
णिनकुलोदशवर्षाणिकच्छपः मशकस्त्रीणिवर्षाणिदंशस्त्रीणिचपंचच ३ एवं
गच्छतिसंसारंममकर्म्मपरायणः पारावतश्चजायेतनववर्षाणिपंचच ४ ति

ष्ठतेममपार्श्वेपुयत्रैवाहंप्रतिष्ठितःप्रायश्चित्तंप्रवक्ष्यामितस्यसंसारमोक्षणे
५ येनासौलभतेसिद्धिंकृष्णवस्त्रापराधतः सप्ताहंयावकंभुक्त्वात्रिरात्रंसक्तु
पिंडिकाः ६ पिंडत्रयंत्रिरात्रंतुएवंमुच्येतकिल्बिषात् यएतेनविधानेनदे
विकर्म्माणिकारयेत् ७ शुचिर्भागवतोभूत्वाममर्मार्गानुसारकः नसगच्छ
तिसंसारंममलोकायगच्छति ८

वर्ष वा पंच वर्ष कबूतर होताहै ४ जहां मेरा स्थापनहै उसजगा मेरेसमीप वास कर्त्ताहै जेकर प्रायश्चि करे इसवास्तेमैं तिसको संसारके मोक्षणमें प्रायश्चित्त कहिताहां ५ जिस प्रायश्चित्तके करणे कर कृष्ण वस्त्रके अपराधतें दूर हुआ सिद्धिको प्राप्त होताहै और सात दिन यवोंका कोटा खाय करके और तीन रात्रि सत्तूंकी पिंडिका क्या सत्तूयोंके गोले भोजन करे ॥ ६ ॥ और त्रिरात्र तीन पिंड भोजन करे इस प्रकार करणे कर पापतें रहित होताहै हेदेवि यो मनुष्य इस विधान करके कर्म्मों कों कर्त्ताहै ॥ ७ ॥ पवित्र और भगवान् जीका भक्त होय करके और मेरे मार्गके अनुसार वर्तताहै सो मनुष्य संसारकों नहिं प्राप्त होता मेरे लोककों प्राप्त होताहै ॥ ८ ॥

* नाहिं धोत्र्या यो वस्त्र उसकों धारकर्के विष्णुकर्म्ममैं तत्परयो मनुष्य तिसकों प्रायश्चित्तकहितेहैं वाराहजी॥हे भूमे यो मनुष्य धोये विना वस्त्रधारकर्के पवित्र और भक्तहोय कर्के और मेरेमार्गके अनुसार वर्त्तने वाला कर्म्मोंकों कर्त्ताहे ॥१ ॥ तिसका दोष और अपराध हे पृथ्विमैं तेरेकों कहिताहां।जिसतें विनाधोये वस्त्रके धारणतें संसार कों पतित होतेहैं ॥२॥हेदेविसोमनुष्य एकजन्म उन्मत्त गजहोताहै इसमैं संशयनहिं और एक जन्म ऊटहोताहे और एकजन्म फेर खोताहोता है ॥ ३ ॥ और फेर एकजन्मगिदडहोताहै और फेर एकजन्म घोडा होताहे और फेर एकजन्मसारंग होताहे और फेर एकजन्म हरिण होताहै ॥ ४ ॥ इसप्रकार सात जन्म भोग कर्केफेर पोछेतें मनुष्य होताहै केसामेराभक्त और गुणोंको जानणे वाला और मेरी भक्तिमैं तत्पर औ

* अधौतवस्त्रंधृत्वाविष्णुकर्म्मपरायणस्य प्रा०। वाराहः।वाससानचधौतेन योमेकर्म्माणिकारयेत् शुचिर्भागवतोभूत्वाममर्गानुसारकः १ तस्यदोषंप्रवक्ष्यामिअपराधंवसुंधरे पतंतियेनसंसारंवाससोच्छिष्टकारिणः ॥ २ ॥ देविभूत्वागजोन्मत्तोजन्मचैकंनसंशयः उष्ट्रोवैकभवेजन्मचैकंचरासभस्तथा ३ गोमायुरेकजन्मावैजन्मचैकंहयस्तथा सारंगस्त्वेकजन्मावैमृगोभवतिवैततः ४ सप्तजन्मांतरंपश्चात्ततोभवतिमानुषः मद्भक्तश्चगुणज्ञश्चममकर्म्मपरायणः निरापराधोदक्षश्चअहंकारविवर्जितः५ धरणिः॥श्रुतमेतत्प्रयत्नेनयत्त्वयासमुदाहृतं संसारंवाससोच्छिष्टंयेनगच्छंतिमानवाः ६ प्रायश्चित्तंचमेब्रूहिसर्वकर्म्मसुखावहं किल्बिषाद्येनमुच्यंतेतवकर्म्मपरायणाः ७वाराहः ॥ शृणुतत्त्वेनमेदेविकथ्यमानंमयानघे प्रायश्चित्तंप्रवक्ष्यामिममभक्तिपरायणः ८ यावकेनादिनत्रीणिपिण्याकेनदिनत्रयं कणभक्ष्योदिनत्रीणिपायसेनदिनत्रयम् ॥ ९ ॥

र निरपराध और चतुर और अहंकार कर रहित होताहै ॥ ५ ॥ पृथ्वी कहितीहै हेभगवन् योतुमनैं किहा सोमैनें सुणाहै जिसतें अधौतवस्त्र धारणतें मनुष्य संसार कों प्राप्त होतेहैं ॥ ६ ॥ इसका प्रायश्चित्त मेरेकों कहो केसाप्रायश्चित्त संपूर्ण कर्म्मोंके सुखके प्राप्त करणेवाला तुमारे भक्त जिस प्रायश्चित्त के करणेतें पापतें मुक्त होतेहैं ॥ ७ ॥ वाराहजी कहितेहैं हेदेवि मेरे करकें किहायोहे उसकोंतूं यथार्थ कर्के सुण प्रायश्चित्त मैं तेरेकों कहिताहां ॥ ८ ॥ मेराभक्त योहै तीन दिन यवोंका कोटा भोजन करे और तीन दिन खल भोजन करेऔर तीन दिन कण भोजन करे और तीन दिन पायस भोजन करे॥ ९ ॥

हेमहाभागे उच्छिष्ट वस्त्र धारणे वाला ऐसें प्रायश्चित्तके करणे कर अपराधकों नाहिं प्राप्त होताहै और संसारकों नाहिं प्राप्त होताहै ॥१०॥ * विष्णुके तांई कुत्तेका जूठा देणेमें प्रायश्चित्त वाराह जी कहतेहैं योमनुष्य मेरेकर्ममें तत्परहै और मेरे कों कुत्तेका जूठा देताहै उस मनुष्यका पाप मैं कहिताहां तिस पापकों सुण कर संसारकों अर्थात् लोकोंको वडा भय होताहै॥१॥ उस पाप कर्के सात जन्म कुत्ताहोताहे और सात जन्म गिद्ध होताहै और सात जन्म उल्लूहोताहै तिसतें पीछें मनुष्य होताहै ॥ २ ॥ फेर कैसाहोताहै शुद्ध मन जिसका वेदकेजाणने वाला और मेरा भक्तहोताहै नारायणके भक्तोंके श्रेष्ठ घरमें उत्पन्न होताहै और अपराधों कर्के रहित होताहै ॥३॥हे वसुधे प्रायश्चित्तयोंहै वडे तेजवाला सोतूं मेरेतें श्रवण कर जिस

एवंकृत्वामहाभागेवाससोच्छिष्टकारिणः अपराधंनविंदेतसंसारंचनगच्छति१० * विष्णवेश्वानोच्छिष्टदानेप्रा०वाराहः।श्वानोच्छिष्टंतुयोदद्यान्ममकर्मपरायणः पापंतस्यप्रवक्ष्यामिसंसारस्यमहद्भयम् ॥ १ ॥ श्वानोवैसप्तजन्मानिगोमायुःसप्तवैतथा उलूकः सप्तवर्षाणिपश्चाज्जायेतमानुषः ॥ २ ॥ विशुद्धात्माश्रुतिज्ञश्चमद्भक्तश्चैवजायते गृहेभागवतांत्कृष्टेअपराधविवर्जितः॥३॥ शृणुतत्त्वेनवसुधेप्रायश्चित्तंमहौजसं तरंतिमानुषायेनत्यक्त्वासंसारसागरम् ४ मूलभक्षोदिनत्रीणिफलाहारोदिनत्रयम् शाकभक्षोदिनत्रीणि पयोभक्षोदिनत्रयम् ॥ ५ ॥ दध्याहारोदिनत्रीणिपायसेनत्रयंपुनः वाय्वाहारोदिनत्रीणिस्नानंकृत्वादृढव्रतः ॥ ६ ॥ एवंदिनान्येकविंशंकृत्वावैशुभलक्षणं अपराधंनविंद्येतममलोकायगच्छति॥७॥ * वाराहमांसंभुक्त्वाविष्णुस्पर्शेप्रा० वाराहः भुक्त्वावाराहमांसंतुयोहिमामुपसर्पति पतनंतस्यवक्ष्यामियथाभवतिसुंदरि ॥ १ ॥

प्रायश्चित्तके करणे कर्के संसार समुद्र कों छोड कर्के मनुष्य तरतेहैं ॥ ४ ॥ तीनदिन मूलयोंहै तिनकों भोजन करे और तीन दिन फलोंको भोजन करे और तीनदिन शाककों भोजन करे और तीन दिन दूधकों भक्षण करे ॥ ५ ॥ और तीन दिन दधि भोजन करे और तीन दिन पायस भोजनकरे और तीन दिन वायुभक्ष होवे स्नान कर्के दृढव्रत होताहै अर्थात् पूरे व्रत वाला होताहै॥६॥इस प्रकार इकी दिन शुभ लक्षण जिसका उस प्रायश्चित्तकेकरणे कर अपराधकों नाहिं प्राप्त होताहै ७ * शूकरका मांस खाय कर्के विष्णुके स्पर्शमें प्रायश्चित्त वाराहजी कहितेहैं हेसुंदरि वाराह मांसकों खाय कर्के यो मनुष्य मेरेकों स्पर्श कर्ताहै जैसें उसका पतन होताहै सोमैं तेरेकों कहिताहां ॥ १ ॥

हेपृथ्वि सो मनुष्य वाराह होय कर्के दशवर्ष पर्यंत वनमें विचारताहै॥श्रौर सातवर्ष व्याध होताहै (सप्त सप्त) इसका अर्थ एहहे कि जितने सूकरों कामांसखायाहे तितने वार सात जन्मका फल समझणा॥२॥श्रौर सात वर्ष अंत्ययोहैं चर्म्मकारादि तिनके घरमें उत्पन्न होताहै पुनःचौदां वर्ष चूहाहोताहै ॥ ३ ॥ उंार उन्नी वर्ष राक्षसहोताहै श्रोर श्राठ वर्ष शल्यक कया सेहका भेद होताहै वनमें वहुवार जन्म कों प्राप्तहोताहै ॥ ४ ॥ उंार त्रिंशति वर्ष मांस खाणे वाला व्याघ्रहोताहै इस प्रकार वाराह के मांस कों खाणे वाला संसारता कों प्राप्तहोय कर्के फेर निर्मल शुद्ध कुलमें भगवान् का भक्तहोताहै ॥ ५ ॥ एसासंपूर्ण लक्षण नारायण जी

वाराहोदशवर्षाणिभूत्वातुचरतेवने व्याधोभूत्वामहाभागेसमाःसप्तचसप्त च २ सप्तसप्तेतिवीप्सा वराहमांसभक्षकाणांप्रत्येकसंवंधार्था भूमेभूत्वा समाःसप्ततिष्ठेत्त्यस्यपुष्कले अंत्यस्यपुष्कलेहंतकारविशेषेतिष्ठते नीचानांहंतकारंभोक्ष्यं इत्यभिप्रायेण सप्तवर्षाणिस्थितोभवतीत्यर्थः स्वाभिप्रायाविष्करणेश्रात्॥अथोवैमूषकोभूत्वावर्षाणांचचतुर्दश ३ एकोनविंशवर्षाणियातुधानश्चजायते शल्यकंचाष्टवर्षाणिजायतेसवनेवहु ४ व्याघ्रस्त्रिंशतिवर्षाणिजायतेपिशिताशनः एवंसंसारतांगत्वावाराहामिषभक्षकः ५ जायतेविपुलेसिद्धेकुलेभागवतस्तथा हर्षकिंशवचःश्रुत्वा सर्वसंपूर्णलक्षणं शिरसाप्रांजलिंकृत्वावाक्यंचदमुवाचह६एतन्मेपरमंगुह्यंतवभक्तसुखावहं वराहमांसभक्षास्तुयेनमुच्यंतिकिल्विषात् ७ वाराहः।तरंतिमानवायेन तिर्यक्संसारसागरात् गोमयेनादिनंपंचकणाहारेणसप्तवै ८पानीयंतुततो भुक्तातिष्ठेत्सप्तादिनंततः अक्षारलवणंसप्तसक्तुभिश्चतथात्रयः ॥ ९ ॥

का वचनसुणकर शिर कर्के हाथवांध कर्के एहवचनपृथ्वी कहितीहै ॥ ६ ॥ एहमेरे कों परम गुह्य योहैं तुमारिभक्तोंकों सुखके देणेवाला प्रायश्चित्त सोकहो जिसकर्के वाराह मांस खाय कर्के पापसे रहित होतेहैं ॥ ७ ॥वाराहः वाराहजी कहितेहैं जिस प्रयश्चित्तके करणे कर्के तिर्यक्योनिके देणे वाला योसंसार सागरहे तिसतें मनुष्य तरतेंहै॥पांचदिन गोमय भोजन करे श्रौरसातदिन कण योहैं श्रन्नके किणके तिनकों भोजनकरे ॥ ८ ॥ पानीयमिति तिसतें उपरंत यानीयकों भोजनकर्के सातदिन स्थितहोवे श्रौर सातदिन क्षार श्रौर लवणकों नहिं भक्षण करे इनोंतेंरहित भोजन करे श्रौर तीनदिनसत्तू भोजनकरे ॥ ९ ॥

और सात दिन तिल भोजनकरे उपरंत सात दिन पाषाण भक्षणकरे अर्थात् पाषाण चट कर्के हि दिन व्यतीतकरे तिसतेंभी कुछ आधार होताहै उपरंत सात दिन दूध भोजन कर्के आप णी शुद्धिकों करे ॥ १० ॥ क्षांत- दांत क्या इन्द्रियां और मन इनकों रोक कर्के अहंकार कर्के रहित होवे इस प्रकार एकोन पंचाशत् क्या उनुंजादिन ४९ निश्चय धार कर्के व्रतकों करे ॥ ११ ॥ सो मनुष्य संपूर्ण पापोंतें रहित हुआ और सम अवस्थामें स्थित और दूरहुआ ज्वर जिसका ऐसा होताहै और मेरे कर्म्मोंकों कर्के मेरेलोक ताई जाताहै ॥ १२ ॥ जाल पादयो पक्षि विशेषहै तिसकों भक्षण कर्के विष्णु स्पर्शमें प्रायश्चित्त कहितेहैं वाराहजी हे भूमे जालपादकों खाय कर्के योमनुष्य मेरेकों स्पर्श कर्त्ताहै सो मनुष्य पंदरां वर्ष जाल पाद होताहै

तिलभक्षोदिनंसप्तसप्तपाषाणभक्षकः पयोभुक्त्वादिनंसप्तकारयेच्छुद्धिमात्मनः १० क्षांतंदांतंतथाकृत्वाअहंकारविवार्जितः दिनान्येकोनपंचाशद्व्रते त्कृतविनिश्चयः ११ प्रमुक्तः सर्वपापेभ्यःसमस्थेविगतज्वरः कृत्वातुमम कर्म्माणिममलोकायगच्छति १२ * जालपादंभक्षयित्वाविष्णुस्पर्शेप्रा० वाराहः ॥ जालपादंभक्षयित्वायस्तुमामुपसर्प्पति जालपादस्ततोभूत्वाव र्षाणिदशपंचच १ कुम्भीरोदशवर्षाणिवर्षाणिपंचशूकरः तावद्भ्रमतिसं सारेममचैवापराधतः २ कृत्वातुदुष्करंकर्म्मजायतेविपुलेकुले शुद्धोभाग वतःश्रेष्ठस्त्वपराधविवर्जितः ३ सर्वधर्म्मान्परित्यज्यममलोकायगच्छति प्रायश्चित्तंप्रवक्ष्यामिजालपादस्यभक्षणे तरंतिमनुजायेनजन्मसंसारसा गरात् ४ यावकान्नंदिनत्रीणिवायुभक्षोदिनत्रयम् फलभक्षोदिनत्राणि तिलभक्षोदिनत्रयम् ॥ ५ ॥

॥ १ ॥ और दशवर्ष कुंभीर नाम पक्षी होताहै और पांच वर्ष शूकर होताहै इतना पर्यंत मेरे अपराध कर्के संसारमें भ्रमताहै ॥ २ ॥ दुष्कर कर्म्मकों कर्के । तिसतें उपरंत अपराध कर्के रहित हुआ शुद्ध भगवान्‌का भक्त श्रेष्ठ निर्मल कुलमें जन्मताहै ॥ ३ ॥ और संपूर्ण धर्म्मोंकों त्याग कर्के मेरेलोक तांई जाताहै । अब जाल पादके भक्षणमें प्रायश्चित्त कहितेहैं जिस प्राय श्चित्तके करणे कर जन्मसंसार सागरतें मनुष्य तरतेहैं ॥ ४ ॥ यावकान्नमिति तीन दिन यवों का कोटा भक्षण करे उपरंत तीन दिन पवनकों भोजन करे और तीन दिन फलोंकों खा वे उपरंत तीन दिन तिलोंकों भक्षण करे ॥ ५ ॥

फेर तीन दिन अम्ल और लवण कर्के रहित भोजन करे इसप्रकार पंदरां दिन प्रायश्चित्तकों करे ॥६ ॥ योमनुष्य नम्र और पवित्रहोय कर्के जालपादयो पाक्षि विशेष उसकों भक्षण कर्के इसप्रकार प्रायश्चित्तकर्ताहै सो सुंदरगतिकों प्राप्तहोताहै ॥ ७ ॥ अबदीपकों स्पर्श कर्के विष्णु कर्म्मकों योकर्ताहै तिसका प्रायश्चित्त वाराहजी कहितेहैं हेदेवि योमनुष्यदीपकों स्पर्श कर्केमेरे कर्म्मकों कर्ताहै सोमनुष्य तिस अपराधते पापकों प्राप्त होताहै ॥ १ ॥ हेमहाभागे तिसअपराधकाफल मेरे कर्के कथन करा हुआ तूं श्रवण कर सोमनुष्य सठ वर्ष ६० कुष्ठी गात्रयोहै कुष्ठीदेह तिसकर्के युक्त होताहै २॥ फेर तहांहि इसप्रकार चंडाल केगृहमे उत्पन्न होताहै इस

अक्षारलवणंकृत्वापुनस्तत्रादिनत्रयं पंचदशदिनान्येवंप्रायश्चित्तंसमाचरेत ६ जालपादापराधस्य एवंकुर्वतिशोधनं विनीतात्माशुचिर्भूत्वायदीच्छेतुसुंदरांगतिम् ७ इतिजालपादभक्षणापराधप्रा० दीपंस्पृष्ट्वाविष्णुकर्म्मकुर्वतः प्रा०वाराहः। दीपंस्पृष्ट्वातुयोदेविममकर्म्माणिकारयेत् तस्यापराधाद्वैभूमेपापंप्राप्नोतिमानवः ॥ १ ॥ तच्छृणुष्वमहाभागेकथ्यमानंमयानघे जायतेषष्ठिवर्षाणिकुष्ठीगात्रपरिप्लुतः ॥ २ ॥ चंडालस्यगृहेतत्रएवमेवनसंशयः एवंचरित्वातत्कर्म्मममक्षेत्रेमृतोयादि ॥ ३ ॥ मद्भक्तश्चैवजायतशुद्धोभागवतगृहे प्रायश्चित्तंप्रवक्ष्यामिदीपस्यस्पर्शनाद्भुवे ॥ ४ ॥ तरंतिमनुजयेनकष्टचांडालयोनिषु यस्यकस्यापिमासस्यशुक्लपक्षेचतुर्दशी ॥ ५ चतुर्थभक्तमाहारीह्याकाशशयनेस्वपेत् दीपंदत्वापराधं हैतरंतिमनुजाभुवि ॥ ६ शुचिर्भूत्वायथान्यायंममकर्म्मपथेस्थितः एतत्तेकथितंदेविस्पर्शनाद्दीपकस्यतु संसारशोधनंचैवयत्कृत्वालभतेशुभम् ॥ ७ ॥

में संशय नहिंहै इसप्रकार तिसकर्म्म कों कर्के जबमेरे क्षेत्रमे मरताहै ॥ ३ ॥ तब शुद्धमेरे भक्तके घरमे मेराभक्तहोताहै । अब दीपके स्पर्शते पृथ्वींमे योप्रायश्चित्तहेसांमै कहिताहां ॥४॥ जिसप्रायश्चित्त कर्के मनुष्य कष्टरूपयो चंडाल योनिआंहैं उनसेतरतेहैं जिस किसे महीनेकी शुक्ल पक्षकीयो चतुर्दशीहै ५॥ उसदिनमे चतुर्थकाल भोजन करे और आकाशशयनयोहै वृक्षोंकिआं शाखा तिनमे शयन करे और उसअपराधते दानकर्के पृथ्वीमे मनुष्यतरतेहैं ६॥ और पवित्रहोयकर्के यथान्यायमेरे कर्म्ममार्गमें स्थितहोतेहैं हेदेवि एह तेरेकोंदीपके स्पर्शका प्रायश्चित्त किहा एह योप्रायश्चित्तहै सो संसारका शोधनहै जिस प्रायश्चित्तकों कर्के शुभको प्राप्त होताहै ॥ ७ ॥

श्मशानमिति श्मशान कों जाय करके स्नान किये विना नारायण के स्पर्शमें प्रायश्चित्त कहितेहैं वाराहजी हे भूमे श्मशान कों जाय करके यो मनुष्य विना स्नानहि मेरेकों स्पर्श कर्ताहै ओहो यो मेरे दोषका अपराध उसका यो फलहै उसकों तूं यथार्थ करके सुण ॥ १ ॥ हे भूमे चौदा वर्ष गिदड होताहै ओर सात वर्ष इछड होताहै पक्षियोंका राजा ॥ २ ॥ ओहो दोनों इछड ओर गिदड मनुष्यके मांसकों भोजन कर्तेहैं उपरंत चौदांवर्ष १४ पिशाचहोताहै ॥ ३ ॥ तिसते उपरंत त्रिंशद्वर्ष ३०उच्छिष्ट यो मृतकहै अर्थात् वहुत दिनोंकामुडदा तिसकों भक्षण कर्ताहै इह नारायणते वचन सुण कर पृथ्वी वचन कोंकहितीभई ॥ ४ ॥ हे लोकनाथ हेजनार्दन एह

श्मशानंगत्वास्नानंविनाविष्णुस्पर्शेप्रायश्चित्तम् वाराहः।श्मशानंयोनरोगत्वाअस्नात्वैवतुमांस्पृशेत् ममदोषापराधस्यशृणुत्त्वेनयत्फलम् १ जंवुकोजायतेभूमेवर्षाणांनवपंचच गृध्रस्तुसप्तवर्षाणिजायतेखचरेश्वरः २ खचरेश्वरोगृध्रेश्वरइत्यर्थःखचरेश्वरपदेनगरुडोपस्थानात् खचरपदंगृध्रपरमत्र चरंतौमानुषंमांसमुभौतौगृध्रजंवुकौपिशाचोजायतेतत्रवर्षाणिनवपंचच ३ ततस्तुकुणपोच्छिष्टंत्रिंशद्वर्षाणिखादति इतिनारायणात्श्रुत्वाधरणीवाक्यमब्रवीत् ४ एतन्मेपरमंगुह्यंलोकनाथजनार्दन परंकौतूहलंदेवनिखिलंवक्तुमर्हसि ५ श्मशानंपुंडरीकाक्षईश्वरेणप्रशंसितं किंचित्त्वंविगुणंदेवनिखिलंवक्तुमर्हसि ६ सतत्ररमतेनित्यंभगवांस्तुमहाद्युतिः कपालंगृह्यदेवोत्रदीप्तिमंतंमहौजसं ७ तंप्रशंसंतिरुद्रेणभवताकिंनुनिन्दितम् श्मशानंपद्मपत्राक्षरुद्रस्यचनिशिप्रियम् ८ रुद्रेणेतिद्वितीयार्थेतृतीयातंरुद्रंबुधाः प्रशंसतीत्यर्थः ॥

मेरेकों परमगुह्यहै हेदेव एहमेरेको परमकोतुकहै संपूर्ण तुमकहिने योग्यहो ॥ ५ ॥ हे पुंडरीकाक्ष श्मशानयोहै सो महादेवकर्के सरायाहोयाहै अर हेदेवतुम माडाकहितेहो एह संपूर्ण तुम कथन करणे योग्यहो । ६ । सो भगवान् महा देवजीवडा प्रकाश जिनका सो कपाल हाथमें लेकर श्मशान में नित्य प्रतिरमतेहैं ॥ ७ ॥ तिस महादेव जीकों संपूर्ण पंडित स्तुति कर्तेहैं हे कमलनेत्र तुमनें किस प्रकार निंदित किया रुद्र यो महादेव जीहैं उनको रात्रिमें भी श्मशान प्रिय है ॥ ८ ॥

वाराह इति वाराह जीकहितेहैं हेभूमे एहयो श्रेष्ठ आख्यानक है सोतूं मेरेतें यथार्थ करके सुण हे अनघे निष्पापे सोयो मनुष्यहैं धारयाहै व्रत जिनोंनैं सोइस आख्यानकों अब तलकबी नहिं जाणते ॥ ९ ॥ दुष्कर योकर्म्महै तिसकों करके संपूर्ण भूतोंके स्वामीयो महादेवहैं सोत्रिपुर योहैं तीनपुर तिनोंमें वालक और . वृद्ध. और सुंदर रूप वालिआं योस्त्रियांहैं तिनकोंमारकर्के ॥ १० ॥ तिस पाप करके संवद्ध होये विचरणेकों नहिं समर्थ होतेभये तब सो महादेव विवर्ण वदन क्यामाडा मुख करके उसी स्थानमें स्थित होतेभये ॥ ११॥ हेभूमे तिस स्थानमें शिवजी संपूर्ण गणों करके युक्त स्थित होतेभये तव हेवसुंधरे नष्टहोगई माया जिसकी ऐसा योमहादेव तिसकोंमें ध्यान कर्त्ताहां ॥ १२ ॥ हेदेवि तव मेरेकर्के ध्यान किया ईश्वर क्या महादेव

वाराहः ० शृणुतस्त्वेनमेदेविइदमाख्यानमुत्तमं अद्यापितेनजानंतिअनघेशंसितव्रताः ॥ ९ ॥ कृत्वासुदुष्करंकर्म्म सर्वभूतपतिर्हरः हत्वाचवालवृद्धानित्रिपुरेरूपिणीः स्त्रियः १० तेनपापेनसंवद्धोनशक्नोतिविचेष्टितुं।विवर्णवदनोभूत्वातिष्ठतेसमहेश्वरः ॥ ११ ॥ तत्रस्थानेशिवोभूमेगणैस्सर्वैः समावृतः नष्टमायंततोदेविचिंतयामिवसुंधरे ॥१२॥ ततोध्यातोमयादेविईश्वरः पुनरेष्यते यावत्पश्यामितंदेवं देविदिव्येनचक्षुषा ॥१३॥ नष्टमायावलं रुद्रंसर्वभूतमहेश्वरं ततोहंतत्रगत्वातुयष्टुकामस्त्र्यंवकम् ॥१४॥ नष्टसंज्ञोगतज्ञानोनष्टयोगवलोवलःततईशोमयाचोक्तोवाक्यमेतत्सुखावहम् ।१५ किमिदंतिष्ठसेरुद्रकश्मलेनसमावृतः त्वंकर्त्ताचविकर्त्ताचविकाराकारएवच ॥१६ । त्वंवैसांख्यंचयोगंचत्वंयोनिस्त्वंपरायणः त्वमुग्रदेवदेवादिस्त्वंसोमस्त्वंचवायवः॥ १७ ॥

फेरआवता भया हेदेवि तब जितना पर्यंत दिव्य दृष्टि करकेमें महादेवकों देखताहां ॥ १३ ॥ नष्टहोयगया माया वल जिसका ऐसायो रुद्रहै संपूर्ण भूतोंका ईश्वर तिसतें उपरंत तहां जायकर्के त्र्यंवक योमहादेव उसके पूजनकी इच्छा जिसकी ॥ १४॥ नष्ट होई संज्ञा जिसकी और दूरहोय गया ज्ञान. और नष्ट होगया योगवल जिसका ऐसा निर्वल योईश्वर तिसकों मैंनें एह सुखके प्राप्त करणे वाला वाक्य किहा ॥ १५ ॥ हेरुद्र मोहकर्के समावृत होय कर क्योंस्थित होयेहों तुम इस संसारके कर्त्ताहो और विकर्त्ता क्या प्रलयके करणे वालेहो और निराकार हो और साकारहो ॥ १६॥ और तुमसांख्य- और सभकीयोनि और पालनादिमे परायणहो और उग्रदेवदेवादितुम होऔर सोम तुमहो और पवन भीतुमहो ॥ १७ ॥

किंनेति हे महादेव तुमगणों कर्के परिवारे होएक्यों नहिं ज्ञानको प्राप्तहोतेहो हे देव देवे शइहक्याहै योतुमपृथुलोचन क्या विशाल नेत्र विवर्ण होगये हो १८॥ हेनिष्पाप जिसतें मेरे कर पूछेतुमयथार्थ कर्के मेरे कों कहो और विष्णुयोहैं महात्मा उनकी माया और योग उस कास्मरण करो १९॥ तुमारेप्रियके निमित्त जिसकर्के मैं इहां आया हां हेभूमे तिसतें मेरावचन सुणकर्के महा देव जीकों संज्ञा प्राप्तहोजाती भई अर्थात् सुध आय जाती भई २०॥ तब सो महादेव पापकर्के तपेहैं नेत्रजिसके सो मधुर वचन कहिताभया हेदेवितूं यथार्थ कर्के सुण कौन पुरुष इसप्रकारकरेगा २१॥ देवयोहैं नारायण एकसंपूर्ण लोकोंको वरके देणे वाले और शुभ उनको महादेव कहितेहैं २१॥ हे विष्णो हे लक्ष्मी के स्वामिन् तुमारी कृपा कर्के देव

किंनवुध्यासिचात्मानंगणैःपरिवृतोभव किमिदंदेवदेवेशविवर्णः पृथुलोचनः १८ तन्ममाचक्ष्वतत्त्वेन यत्पृष्टोसिमयानघ स्मरयोगंचमायांचपश्य विष्णोर्महात्मनः १९ तवचैवप्रियार्थाययेनाहमिहआगतः ततोममवचः श्रुत्वालब्धसंज्ञोमहेश्वरः २० उवाचमधुरंवाक्यं पापसंतप्तलोचनः शृणु तत्त्वेनमेदेविकोन्योप्येवंकरिष्यति २१ देवेनारायणंचैकंसर्वलोकवरं शुभम् २१ हेविष्णोत्वत्प्रसादेनदेवत्वंचैवमाधव लब्धंयोगंचसांख्यंचजातोस्मिविगतज्वरः २२ त्वत्प्रसादेनजातोस्मिपूर्णेन्दुरिवनिर्मलः अहंत्वां तुविजानामिसर्वदेवजगत्पते २३ अत्रकश्चिन्नजानातितंमेचैवमनंतरम् ब्रह्माणंतुविजानाति तत्रमामेववान्तरम् २४ कश्चिदल्पज्ञः तेमेतवममअनंतरमभेदंविद्यमानमपिनजानाति ब्रह्माणंतुब्रह्माणमपिमामेवमामिवअंतरं भिन्नंत्वद्व्यतिरिक्तंजानातितन्नसमीचीनमितिभावः।साधुविष्णोमहाभागसर्वेमायाकरंडकः एवंह्यघकरोवाक्यमुक्त्वाभूतमहेश्वरः मुहूर्त्तंध्यानमादायपुनर्वाक्यमुवाचतम् २५ अघंकरः पापापादको महेश्वर इतिसंवंधः ॥

त्व और योग और सांख्य एह मेरेकों प्राप्त होये और मेरादुःख दूरहोगयाहैं २२॥ और तुमारी कृपा कर्के पूर्णमासीके चन्द्रमाकीन्याई मैं निर्मलहोयगयाहां और मैं तुमारे कों जाणताहां हे सर्व देव हेजगत्के स्वामिन् २३॥ इसमैं कोईयों थोडी बुद्धि वाला मनुष्य तेरा मेरा यो अभेद विद्यमानवीहै इसकों नहिं जानता और ब्रह्मा कोंवी अंतर भिन्न क्या तुमारे तेंभिन्न जाणताहै सो अच्छानहिंहै २४॥ हेविष्णो हेमहाभाग तुमसंपूर्ण मायाके करंडकक्या पिटारहो इसप्रकार अघंकर क्या पापके करणे वाला योमहा देव सो विष्णुकों कथन कर्के और मुहूर्त्त मांत्र ध्यानकों प्राप्तहोय कर्के फेर तिस विष्णुकों कहिताहै ॥ २५ ॥

तवेति हे विष्णो तुमारी कृपा करके मैंनें यो त्रिपुर हत कियाहै अर्थात् मारयाहै तिस त्रिपुर में दानव योहैं सो मारेहैं और गर्भवतिआं योस्त्रियांहैं सो मारिआंहैं ॥ २६ ॥ और दश दिशांमें विद्यमान यो बाल० और वृद्ध सो तहांमारेहैं तिस पापके दोष करके चेष्टा करणे कोंमैं समर्थ नहिंहां ॥ २७ ॥ इसी करके मेरा योग० और माया नष्ट होय गये और मैंबी इसी भाव करके प्रणष्टहोय गयाहां हे विष्णो हे माधव अबमैंनें सावधान चित्त होय करके क्या करणे योग्यहै ॥ २८ ॥ हेविष्णो सोयो शोधनहै प्रायश्चित्त पापकों नाश करणे वाला सो यथार्थ करके तुम मेरेकों कहो जिस प्रायश्चित्त के करणे मात्र करके शीघ्रपापतें रहित होवें ॥ २९ ॥ विष्णुजी कहितेहैं हेभूमे इस प्रकार चिंतात्मा योमहादेव तिसकों मैंनें किहा हे शंकर कपा

तवविष्णोप्रसादेनमयातत्रिपुरंहतं निहतादानवास्तत्रगर्भिण्यश्चनिपातिताः । २६ ॥वालवृद्धाहतास्तत्रविस्फुरंतोदिशोदश तस्यपापस्यदोषेणन शक्नोमिविचेष्टितुम् २७ ॥नष्टंयोगंचमायांचप्रणष्टश्चास्यभावतः विष्णोमयाकिंकर्त्तव्यंमनोवस्थेनमाधव ॥२८ ॥ मनोऽवस्थेन समाहितमनसेत्यर्थः विष्णोतत्त्वेनमेब्रूहिशोधनंपापनाशनं येनवैकृतमात्रेणशीघ्रंमुच्येताकिल्विषात् ॥ २९ ॥ एवंचिंतात्मकस्तत्रमयारुद्रश्चभाषितःकपालमालांगृहीत्वा समलेगच्छशंकर ३० ममैववचनंश्रुत्वाभगवान्परमेश्वरः कीदृशःसमलो विष्णोयत्रगच्छामहेवयम् ३१ ततस्तस्यवचःश्रुत्वाशंकरस्ययशस्विनि तत्पापशोधनार्थायमयावाक्यंप्रभाषितम् ३२ श्मशानंसमलोरुद्रपूतिको व्रणगंधिकः स्वयंतिष्ठंतिवैतत्रमनुजाविगतस्पृहाः ॥ ३३ ॥ तत्रगृह्य कपालानिरमतत्रैवशंकर तत्रवर्षसहस्राणिदिव्यान्येवदृढव्रतः ॥ ३४ ॥

ल माला कों लेकरके तुम श्मशानमें जावो ॥ ३० ॥ मेरा एह वचन सुण करके भगवान् परमेश्वर महादेव मेरे कों पूछताभया हेविष्णो कैसा ओहो श्मशानहै जहां हमजावें ॥ ३१ ॥ तब हेपृथ्वि तिस शंकर का वचन सुण करके तिस शंकर कों पाप के दूर करणे निमित्त मैंनें वचन किहा ॥ ३२ ॥ हे रुद्र समलनाम श्मशानकाहै कैसाहै पूतिककया दुर्गंधिहै और व्रण योहैं घा तिनकी गंधिवाला है मनुष्य योहैं दूर होगई इच्छा जिनकी सो तिस श्मशानमैं स्थित होतेहैं अर्थात् उस जगा जाणेकी कोई इच्छा नहि करदा ॥ ३३ ॥ हे शंकर कपालों कों लैकरके तिस श्मशानमें दृढ व्रत धारकरके दिव्य हजार वर्ष १००० तुमक्रीडा करो अर्थात् श्मशानमैं वासकरो ॥ ३४ ॥

ततइति भोरुद्र पापके दूर करणेकी इच्छा वाले यौतुमहो तिसनें मांसोकों भक्षण करो और हिंसमान यो भोज्यहैं और यौ भोजन तुमारेकों प्यारेहैं तिनकों तुम भोजन करो इसमेंएह अभिप्रायहे कि शिवजीका पापश्मशानमें स्थितहै उस जगाजाणे वालेको ल गेगा एह आगे जाके प्रकटहोवेगा ॥ ३५ ॥ इस प्रकार तिस श्मशानमें निश्चय कर्के गणोंके सहित वास कर फेरतूं हजार वर्ष १००० के पूर्ण होये जेकर तहां स्थित होयकर्के अपणेंको समल जाणो तद ॥ ३६ ॥ हेशिव फेर गौतम यो महा ऋषिहैं उनके पवित्र आ श्रममें जावो विधि कर्के गौतमजीके आश्रमको सेव कर्के अपणे आपको तुम जाणोगे ॥ ३७ ॥ गौतम ऋषिकी कृपातें तुमारा पाप दूर होजावेगा और निरंतर पाप कर्के संप

ततोभक्षयमांसानिपापक्षयचिकीर्षया हिंसमानानिभोज्यानियेचभोज्यास्त वप्रियाः ॥ ३५ ॥ एवंसर्वगणेःसार्द्धवसतत्रसुनिश्चितः पूर्णवर्षसहस्त्रेतु स्थित्वात्वंसमलः पुनः॥ ३६ ॥गच्छशिवाश्रमंपुण्यंगौतमस्यमहामुनेःत त्रज्ञास्यसिचात्मानमाश्रमेविधिनाश्रितं ॥ ३७ ॥ प्रासादाद्गौतमातस्यभ विताचनाकिल्विषः सततंपापसंपन्नंकपालंशिरसिस्थितम् ॥ ३८ ॥ ऋषिः पावयितुंशक्तस्त्वत्प्रसादान्नसंशयः एवंतस्यवरंदत्वातत्रैव,तरधीयत ३९ रुद्रोपिभ्रमतेतत्रश्मशानेपापसंवृते एवंनरोचतेभूमेश्मशानंमकदाचन४० यत्ररुद्रकृतंपापंतिष्ठतेचयशस्विनि एतत्तकथितंभद्रश्मशानंमजुगुप्सितम् ४१ विनापिकृतसंस्कारोममकर्म्मपरायणः प्रायश्चित्तंप्रवक्ष्यामियेनशुध्य तिकिल्विषात् ४२ कृत्वाचतुर्थभक्ष्यंतुदिनानिदशपंचच आकाशशयनं कुर्यादेकवस्त्रःकुशास्तरे ४३

न्न योकपाल तुमारे शिरमें स्थितहै उसको पवित्र करणेको गौतम समर्थहैं ॥ ३८ ॥ तिसकी कृपातें पवित्र होजावेगा इसमें संशय नहिंहै इस प्रकार तिस रुद्रको वरदे कर्के तिसी जगांहि छप जाते भये ॥ ३९ ॥ सो रुद्र तहां पाप कर्के संवृत योश्मशानहै तिसमें भ्रमताभया तिस क र्के हेभूमे श्मशानमेरेकों कदाचित् नहिं रुचताहै ॥ ४० ॥ हेयशस्विनि जिस श्मशानमें शिव जीका किया पाप स्थित होताहै हेदेवि एहतेरे ताईमैंने किहा उस कर्के मेरेको श्मशान निंदि तहै ॥ ४१ योमनुष्य श्मशानमें जाय कर्के स्नान किये विना मेरे कर्म्मको करताहै उसका प्राय श्चित्त कहिताहां जिसके करणे कर पापतें शुद्ध होताहे ॥ ४२ ॥ सो मनुष्य पंदरां दिन चतुर्थ का ल भोजन करे और एकवस्त्र धारण करे और आकाश शयन करे और कुशाके आसनमें स्थित होवे ॥ ४३ ॥

ओर प्रातःकालमें पंचगव्यपान करे इसप्रकार प्रायश्चित्तकेकरणेकर संपूर्ण पापोंतेंरहित हुआ मेरे लोकको प्राप्तहोताहै ॥ ४४ ॥ एहिप्रायश्चित जेडी अग्नि चांडालने अपनेवास्ते जगाईदीहै जेडा ब्राह्मणादि उसकोंसेके तिसवास्ते भीजानणा ॥ पिण्याक योहै खलतिसकों खायकर्के नारायण कस्पर्शमें प्रायश्चित कहितेंहै वाराहजी हेसुश्रोणि पिण्याकको खायकर्के योमनुष्य मेरेकों स्पर्शकर्ताहै उसकों वडाअपराध क्याप्रायश्चितकी योग्यताहै ॥ १ ॥ सोमनुष्य दशवर्ष उलूक होताहै उपरंत तीनवर्ष कछोपड होताहै इनोंतें उपरंत मनुष्यहोताहै मेरे कर्ममें तत्पर होताहै ॥ २ ॥ हेसुश्रोणि तिसमनुष्यकों वडे प्रकाशवाला प्रायश्चितमें कहिताहा जिसप्रायश्चितके करणेकर्के पापतें रहित होताहै ओर संसारके अंतकों क्यामोक्ष

प्रभातेपंचगव्यंतुपातव्यंकर्मकारणात् प्रमुक्तःसर्वपापेभ्योममलोकायगच्छति ४४ ॥ इतिश्मशानप्रवेशापराधप्रायश्चित्तम् प्रायश्चित्तामदंचांडालेनस्वकीयतापाद्यपनोदायप्रज्वलितोयोऽग्निस्तत्तापेपिज्ञेयम् ॥ पिण्याकंभक्षयित्वाविष्णुस्पर्शे प्रायश्चित्तम् वाराहः ॥ पिण्याकंभक्षयित्वातुयोवैमामुपसर्प्पति तंतुवैशृणुसुश्रोणिह्यपराधंमहौजसम् ॥ १ ॥ उलूकोदशवर्षाणिकच्छपस्तुसमास्त्रयः जायतेमानवस्तत्रममकर्मपरायणः ॥ २ ॥ तस्यवक्ष्यामिसुश्रोणिप्रायश्चित्तंमहौजसम् किल्विषाद्येनमुच्येतसंसारांतंचगच्छति ॥ ३ ॥ यावकेनदिनैकंतुगोमूत्रेणचकारयेत् रात्रौवीरासनंकुर्यादाकाशशयनेवसेत् ४ ॥ नसगच्छतिसंसारंममलोकायगच्छति ॥ ५ वाराहमांसेनप्रापणकरणेप्रा० वाराहः।वाराहमांसेननतुयो ममकुर्वीतप्रापणंमूर्खः सपापकर्माचममकर्मपरायणः १ ॥ यांस्तुदोषान्प्रपद्येतसंसारंचवसुंधरे यावद्रोमवराहस्यममगात्रेपुसंस्थितम् २ तावद्वर्षसहस्राणिनरकेपच्यतेभुवि अन्यच्चतेप्रवक्ष्यामि तच्छृणुष्ववसुंधरे ३ ।

कों प्राप्तहोताहैं ॥ ३ इकादिनयावक कर्के क्यायवोंके कोटे कर्के ओर गोमूत्र कर्के व्यतीतकेर ओर रात्रिमे वीरासनकरे योपिच्छेकिहाहै आकाशशयन तिसको करे ४ ॥ तदसंसारकों नही प्राप्तहोता ओर मोक्षकोंभी प्राप्तहोताहै ॥५ वाराह मांसकर्के विष्णुको नैवेद्य लगाणेमें प्रायश्चित कहितेहैं वाराहजी हे भूमे यो मनुष्य मूर्ख ओर पापोंके करणे वाला ओर मेरे कर्मों मे परायण वाराह मांस कर्के मेरेकों नैवेद्यलगावताहै ॥ १ ॥ उस कर्के जिनों दोषोंको ओर संसारकों प्राप्त होताहै सो तूं सुण जितने रोम वाराहके अंगोंमे स्थित हैण ॥ २ इतने हजार वर्ष पृथ्वीमें नरकमे पचताहै हे वसुंधरे ओर मैं तेरेकों कहिताहां सो तूं श्रवण कर ॥ ३ ॥

यांगति मिति और मेरे कर्म्ममें परायण मनुष्य जिसगतिकों प्राप्त होताहै सो तूं सुण ॥ हे देवि एक जन्म सो मनुष्य अन्धा होताहै ॥ ४ इस प्रकार वाराह मांसके नैवेद्य लगावणेतें संसारको प्राप्तहोताहै ॥ उपरंत निर्मल यो भक्तों का कुल उसमें पवित्रहुआ आह मनुष्य जन्मताहै ॥ ५ और कैसा होता कि नम्र और कियेहैं संस्कार जिसके- और मेरे कर्म्मों में तत्पर होताहै द्रव्य वान्० गुणवान्० रूपवान्० शिल्पवान्० शुचिः क्या पवित्र होताहै ॥ ६ ॥ तिस मनुष्यकों- देहका विशोधन प्रायश्चित्तमें कहिताहां जिस प्रायश्चित्तके करण करके मेरे कर्म्ममें परायण हो ताहै और सो मनुष्यपापतें रहित होताहै ॥ ७ ॥ सात दिनफलोंका भोजन करे और सात दिन मूलोंको भोजन करे और सात दिन खडाहोवे और सात दिन पायस भोजन करे ॥ ८

यांगतिंसंप्रपद्येतममकर्मपरायणः अन्धोभूत्वाततोदेविजन्मचैवंप्रतिष्ठितम्
४ एवंगत्वातुसंसारंवाराहमांसप्रापणात् जायतेविपुलेशुद्धेकुलेभागवते
शुचिः ५ विनीतःकृतसंस्कारोममकर्म्मपरायणः द्रव्यवान्गुणवांश्चैवरू
पवान्शिल्पवान्शुचिः ॥ ६ ॥ प्रायश्चित्तंप्रवक्ष्यामितस्यकायविशोधनंकि
ल्विषाद्येनमुच्येतममकर्म्मपरायणः ॥ ७॥ फलाहारोदिनान्सप्तसप्तमूला
शनस्तथा दिनानिसप्ततिष्ठतसप्तवैपायसेनच ॥ ८ ॥ तक्रेणसप्तदिवसा
न्सप्तयावकभोजनः। प्रायश्चित्तान्महाभागेममलोकायगच्छति ९ ॥ मद्यं
पीत्वाविष्णुस्पर्शेप्रा० वाराहः । मद्यंपीत्वावरारोहेयस्तुमामुपसर्प्पति
तत्रदोषंप्रवक्ष्यामिशृणुसुंदरितत्वतः १ दशवर्षसहस्राणिदरिद्रोजा
यतेपुनः पावनश्चभवेत्तत्रमद्भक्तश्चनसंशयः २ यस्तुभागवतोभूत्वा
कामरागेणमोहितः दीक्षितःपिवतेमद्यंप्रायश्चित्तंनविद्यते ३

॥ और सात दिन तक्रकों भोजन करे और सात दिन यवों का कोटा भोजन करे हेमहाभागे इस प्रकार प्रायश्चित्त करणेतें मेरेलोकको प्राप्तहोताहै ॥ ९ ॥ मद्य पानकर्के विष्णुस्पर्शमें प्राय श्चित्त-वाराहजी कहितेहैं हेभूमे मद्य पानकर्के योमनुष्यमेंको प्राप्तहोताहै तिसमें योदोष तिसदो षकों मैं निश्चयतें कहिताहां हे सुंदरि तूं सुण ॥ १ ॥ फेर सो मनुष्य दशहजार वर्ष दरिद्र क्यानिर्धन होताहै फेरतहां पवित्रहोताहै और मेराभक्तहोताहै इसमें संशयनहिंहै ॥ २ ॥ यस्त्विति यो मनुष्य भागवत होय काम-और राग कर्के मोहित होयकर और दीक्षित हुआ मद्यकों पी ताहै तिसकों प्रायश्चित्त नाहिं देखीदा अर्थात् सो मनुष्य पतित होजाताहै ॥ ३ ॥

हेवसुंधरे और मैं तेरेकों कहिताहौं सोतूं सुण अग्निवर्णा यो सुराहै अग्निकी न्याई लाल वर्ण जिसका ऐसी सुराकों पी कर्के तिस पापतें रहित होताहै ॥ ४ ॥ यो मनुष्य इस विधान कर्के प्रायश्चित्तकों कर्ताहे सो पापकर्के नाहिं लिप्त होता और संसारकों नहिं प्राप्त होता अर्था त् मोक्षकों प्राप्त होताहै ॥ ५ ॥ ❀ अब कौसुंभशाकके भक्षणका अपराध बाराहजी कहितेहैं हेभूमे योमनुष्यमेरी पूजाके करणे वाला कुसुंभेके शाककों खाताहै सो घोरनरकमें पचताहै औ र पंदरां वर्ष १५ सूकर होताहै ॥ १ ॥ तिसतें उपरंत तीन वर्ष कुत्तेकी योनिमें प्राप्त होताहै तिसतें उपरंत एक वर्ष गिद्दड होताहै तिसतें उपरंत मेरेकर्ममें तत्पर हुआ शुद्ध होताहै ॥ २

अन्यच्चतेप्रवक्ष्यामितच्छृणुष्ववसुंधरे अग्निवर्णांसुरांपीत्वायेनमुच्यतिकि ल्विषात् ॥४॥यएतेनविधानेन प्रायश्चित्तं समाचरेत् नसलिप्यतिपापेन संसारंचनगच्छति ॥ ५ ॥ ❀ कौसुंभशाकभक्षणाऽपराध प्रायश्चित्तम्।वारा हः।कौसुंभंचैवयःशाकं भक्षयेन्ममपूजकः नरकेपच्यतेघोरेदशपंचचसूक रः ॥ १ ततोगच्छेत्श्वयोनौचत्रीणिवर्षाणिजंबुकः।।वर्षमेकंततःशुद्ध्येन्मत्क र्मनिरतः शुचिः ॥ २ ॥ ममलोकमवाप्नोति शुद्धोभूत्वावसुंधरे ततोभूमिर्व चः श्रुत्वा प्रत्युवाचपुनर्हरिम् ॥ ३ ॥ कुसुंभशाकनैवेद्यप्रापणेनचाकिल्वि षात् कथंमुच्येतदेवेशप्रायश्चित्तंवदप्रभो ॥ ४ ॥ वाराहः॥ योमेकुसुंभशा केनप्रापणंकुरुतेनरः दशवर्षसहस्राणिनरकेपरिपच्यते ॥ ५॥ प्रायश्चि त्तंप्रवक्ष्यामितन्मेवदतःशृणु भक्षणेतुकृतेकुर्याच्चांद्रायणमतंद्रितः ॥ ६ ॥

हेवसुंधरे सो मनुष्य शुद्ध होय कर्के मेरेलोकका प्राप्त होताहै एह भगवान् जीका वचन सुण कर पृथ्वी कहितीहै ॥ ३ ॥ हे भगवन् कुसुंभशाकके नैवेद्य लगाणे कर्के हेदेवेश कैसें पापतें रहित होताहै उसका प्रायश्चित्त मेरेकों कहो ॥ ४ ॥ वाराहजी कहितेहैं हेभू मे योमनुष्य कुसुंभेके शाकका मेरेकों नैवेद्य लगाताहै सो दशहजार वर्ष १०००० नरकमें पचताहै ॥ ५ ॥ प्रायश्चित्तमिति हेपृथिवि उसके प्रायश्चित्तकों कहिता योमैंहां सोतूं श्रवण क रजब मनुष्य कुसुंभेके शाककों भक्षणकरे तद तब आलस्यको त्यागकर्के चांद्रायण व्रत करे ६ ।

और जवकुसुंभकाशाक नारायण को नैवेद्य लगावे तबवारां दिन पयोव्रतकरे अर्थात् बारांदिन दूधपीवे ॥ ७ ॥ योमनुष्य इसविधान कर्के प्रायश्चित्त करे सोपाप कर्के नहिं लिप्त होताहै औरमेरेलोककों प्राप्तहोताहै ॥ ८ ॥ * अब दूसरे मनुष्यके वस्त्रधारणे कर्के पूजनका प्रायश्चित्त वाराहजी कहितेहैं ॥ हेमाधवि पराया योवस्त्रहै नवीनभीहो उसको धार कर्के मूर्खयो पुरुष मेरे कर्ममें तत्पर होताहै ॥ १ ॥ और मेरे कर्म्मों को कर्ताहै अज्ञानमें स्थितहुआ मेरेको स्पर्श कर्ताहै हेसुश्रोणि सोमनुष्यइक्कीवर्ष २१ मृगहोताहै॥२॥औरहेवसुंधरे एकजन्म सोमनुष्य हीनपादहोताहै अर्थात् पैरोंकर्के रहित होताहे तिसतें उपरंत मूर्खहोताहै और क्रोधि होताहै फेर

प्रापणेतुकृतेकुर्याद्द्वादशाहंपयोव्रतम् ७ यएतेनविधानेनप्रायश्चित्तंसमाचरेत् नसलिप्येतपापेनममलोकंचगच्छति ।' ८ * परकीयवस्त्रधारणापराधप्रायश्चित्तम् वाराहः। पारक्येनचवस्त्रेणनवभूतेनमाधवि प्रायश्चित्तीपुमान्मूर्खो ममकर्म्मपरायणः १ करोतिममकर्माणिस्पृशतेमांतमःस्थितः मृगोजायितसुश्रोणिवर्षाणित्रीणिसप्तच २ हीनपादेनजायेतचैकंजन्मवसुंधरे मूर्खश्चक्रोधनश्चैवममभक्तश्चजायते ॥ ३ ॥ तस्यवक्ष्यामिसुश्रोणि प्रायश्चित्तंमहौजसं येनगच्छतिसंसारोममभक्तोव्यवस्थितः॥ ४ ॥अष्टभक्तंततः कृत्वाममकर्म्मपरायणः प्रभातायांचशर्वर्य्यामुदितेचदिवाकरे पंचगव्यंततःपीत्वाशीघ्रंमुच्येतकिल्बिपात् ॥ ५ ॥ यएतेनविधानेनप्रायश्चित्तंसमाचरेत् सर्वपापविनिर्मुक्तोममलोकायगच्छति ६ * विष्णवे अदत्वानवान्नभक्षणे.प्रा० वाराहः ॥

मेराभक्तहोताहै ।३। हेसुश्रोणि तिसमनुष्यको वडे प्रकाशवाला प्रायश्चित्तमें कहिताहां जिसप्रायश्चित्तके करणे कर्के मेराभक्त होताहै और संसारदूरहोताहै।४।ओर व्यवस्थित होयकर्के मेरेकर्ममें तत्पर हुआअष्टम कालमें भोजनकरे अर्थात् चतुर्थदिनमें सायंकालभोजनकरे औरजदरात्रिव्यतीतहोजावे औरसूर्य्यके उदय होआं पंचगव्यको पीवे इसप्रकारकरणेकर्केशीघ्रपापतें रहितहोताहै ॥५॥ यइति योमनुष्यइसविधानकर्के प्रायश्चित्तकोंकरे सोसंपूर्णपापोंकर्के रहित हुआ मेरे लोककोंप्राप्तहोताहै ॥ ६ ॥ विष्णुकेतांई दीये विना यो मनुष्यनवीनअन्नकोंखाताहै तिसका प्रायश्चित्त वाराहजी कहितेहैं ॥

हेभूमे योमनुष्य मेरेकर्म्ममेंमें तत्पर और मेरेकों नवीन अन्नदीये विना आप नवीन अन्नकों भोजन कर्त्ताहैं तिसके पितर पंदरां वर्ष नहिं भोजनकर्त्ते १॥ योमनुष्य नवीन अन्न दीवे विना कदाचित् आप भक्षण करे तिसका धर्मनहिं रहिता इसमें संशय नहिंहै ॥२ हेपृथिव और मैं तेरे कोंकहिताहां प्रायश्चित्त जिसके करणे कर तिस पापतें रहित होताहै और मेरेभक्तोंकों सुखके देणे वाला प्रायश्चित्तहै ३॥ सो मनुष्य त्रिरात्र निराहार व्रतकों करे और एक रात्र आकाश शयन करके चतुर्थ दिनमें शुद्ध होताहै ४॥इसप्रकार तिस प्रायश्चित्तमें विधानकरके और सूर्य्यके उ

अदत्त्वायोनवान्नानिममकर्म्मपरायणः पितरस्तस्यनाश्नंतिवर्षाणिदशपंचच १अदत्त्वायस्तुभुंजीतनवान्नानिकदाचन नतस्यधर्म्मोविद्येतएवमेतन्न संशयः २ अन्यच्चतेप्रवक्ष्यामियेनतस्मात्प्रमुच्यते प्रायश्चित्तंमहाभागे ममभक्तसुखावहम् ३ उपवासंत्रिरात्रंतुततएकेनवापनः आकाशशयनंकृत्वाचतुर्थेऽहानिशुद्ध्यति ४ एवंतत्रविधिंकृत्वाउदितेचादिवाकरे पंचगव्यंततः पीत्वाशीघ्रंमुच्यतेकिल्बिषात् ५ यएतेनविधानेनप्रायश्चित्तंसमाचरेत् सर्वसंगंपरित्यज्यममलोकायगच्छति ॥ ६ ॥ गंधमाल्यमदत्त्वाधूपदानापराधप्रायश्चित्तम् वाराहः॥अदत्त्वागन्धमाल्यानियोमेधूपंप्रयच्छति कुणपोजायतेभूमेयातुधानोनसंशयः ॥ १ ॥ कुणपोदुर्गन्धिरितिमादिनीकोशः वर्षाणिचैकविंशानिअयस्कारनिवासकः तिष्ठतेत्रमहाभागेएवमेतन्नसंशयः ॥ २ ॥

दय होआ पंचगव्यकों पीवे तिस पापतें रहित होताहै ॥ ५ योमनुष्य इस विधानकरके प्रायश्चित्तको करे सो संपूर्ण संगकों त्याग करके मेरे लोककों जाताहै ६॥ गंधेति नारायणादिकों गंध और पुष्प देणे विना योमनुष्य प्रथम धूपदेताहै तिस अपराधका प्रायश्चित्त वाराह जी कहितेहैं हेभूमे गंध और पुष्प दिये विना योमनुष्य मेरेकों धूपदेताहै सोमनुष्य दुर्गंधि होताहैं और राक्षस होताहै इसमें संशय नहिंहै ॥ १ और इकी वर्ष लोहकारके घरमें निवासकरणे वाला होताहै हेमहाभागे इस प्रकार स्थित होताहै इसमें संशय नहिंहै २ ॥

हे वसुंधरे और मैं तेरेकों कहिताहां सोतूंसुण प्रायश्चित्तमैं तेरेकों कहिताहां जिसके करणे कर्के पापतें रहित होताहै ॥ ३ ॥ जिस किस महीनेकी शुक्ल पक्षकी योद्वादशीहै उसकों निराहारव्रत कर्के अष्टभक्त त्याग कर्के इसमें एह अर्थहै किएक दिनके दोभोजन होतेहैं इसहसाव८॥१०॥११ पापके अनुसार भोजन त्यागे ॥ ४ ॥ रात्रिके व्यतीत होआं प्रातः कालमैं सूर्य्य भगवान् जीके उदय होआं पंच गव्यकों पीयकर्के तिस पापतें रहितहोताहै॥५॥योमनुष्यइस विधानकर्के प्रायश्चित्तकोंकरे तिसके योपितरहैं जिनें जिनें दुःखोंमैंहैं तिनोंतिनों दुखोंकों संपूर्ण तरजातेहैं॥६॥

● अब उपानद्धारणके अपराधका प्रायश्चित्तकहितेहैं वाराहजी योमनुष्यपैरोंमैं जोडालगायकर्के

अन्यच्चतेप्रवक्ष्यामितच्छृणुष्ववसुंधरे प्रायश्चित्तंप्रवक्ष्यामि येनमुच्येतकिल्विषात्॥३॥यस्यकस्यचिन्मासस्यशुक्लपक्षेतुद्वादशाम् उपोष्यचाष्टभक्तंतु दशैकादशमेवच॥४॥ प्रभातायांतुशर्वर्यामुदितेचदिवाकरे पंचगव्यंततःपीत्वाशीघ्रंमुच्यतिकिल्विषात् ॥५॥यएतेनविधानेनप्रायश्चित्तंसमाचरेत् तानितानितरंत्येव सर्वएवपितामहाः॥६॥उपानद्धारणापराधप्रा० ॥ वाराहः वहन्नुपानहौपद्भ्यांयस्तुमामुपचक्रमे चर्म्मकारस्तुजायेतवर्षाणांतुत्रयोदश ॥१॥तत्रजन्मपरिभ्रष्टःशूकरोजायतेपुनः शूकराच्चपरिभ्रष्टः श्वानस्तत्रैवजायते॥२॥ततःश्वानात्परिभ्रष्टोमानुषश्चैवजायते मद्भक्तश्चविनीतश्चअपराधविवर्जितः ३ ॥ मुक्तस्तुसर्वसंसारान्ममलोकायगच्छति ४ यएतेनविधानेनवसुधेकर्म्मकारयेत् नसलिप्यतिपापेनएवमेतन्नसंशयः ५॥ विष्णुप्रबोधेअभेरीताडनापराधप्रायश्चित्तमाह वाराहः ॥

मेरेकों स्पर्श कर्त्ताहै सोमनुष्य तेरांवर्ष १३ चर्म्मकार होताहै ॥ १ ॥ तिसजन्मतें मरण कर्के फेरशूकर होताहै और शूकर जन्मतें मरकर्के फेर उसी जगामैं कुत्ता होताहै ॥ २ ॥ ततइति तिस कुत्तेके जन्मतेंमर कर्के फेर मनुष्य जन्म होताहै और मेरा भक्त होताहै और नम्रहोताहै और अपराधों कर्के रहितहोताहै ॥ ३ ॥ और संपूर्ण संसारतें मुक्त होय कर मेरे लोककों प्राप्त होताहै ॥ ४ ॥ हेवसुधे योमनुष्य इस विधान कर्के कर्म्म कर्त्ताहै सोमनुष्य पाप कर्के नाहिं लिप्तहोताहै इसमें संशय नहिंहै ॥ ५ ॥ विष्णुके प्रबोधमैं नगारे का यो नहिं वजाणा तिस अपराधक प्रायश्चित्त वाराहजी कहितेहैं ॥

हेभूमे नगारावजाये विना योमनुष्य मेरेकों जगावताहै सो मनुष्य एकजन्म वोला होंताहैइसमें संशय नहिंहै॥ १ ॥ हेसुश्रोणि हेप्रिये तिसमनुष्यकों प्रायश्चित्त मैं कहिताहां जिसके करणेंतें नगारेके नहिं वजावणे के अपराधतें रहित होताहै ॥ २ ॥ जिस किस महीनेकी शुक्ल पक्षकी द्वादशीको आकाश शयन योहै वटादि वृक्षांकी शाखामैं शयन करणा तिसको कर्के शीघ्रपापतें रहित होताहै ॥ ३ ॥ हेवसुधे योमनुष्य इस विधान कर्के कर्मकों कर्त्ताहै सो अपराधकों नहिं प्राप्त होता मर कर्के मेरेलोक कों प्राप्तहोताहै॥४॥ ॐ अब वहुत अन्न भक्षण कर्के पूजनमैं जाणेके अपराधका प्रायश्चित्त वाराहजी कहितेहैं हेभूमे योमनुष्य वहुत अन्नकों खा

भेरीशव्दमकृत्वातुयस्तुमांप्रतिवोधयेत् वधिरोजायतेभूमेएकजन्मन्यसंशयः ॥ १॥ तस्यवक्ष्यामिसुश्रोणिप्रायश्चित्तममप्रिये किल्विषाद्येनमुच्येत भेरीताडनमोहितः ॥ २॥ यस्यकस्यचिन्मासस्यशुक्लपक्षेतुद्वादशी आकाशशयनंकृत्वाशीघ्रंमुच्यतिकिल्विषात् ॥३॥ यएतेनविधानेन वसुधेकर्मकारयेत् अपराधंनगच्छेतममलोकायगच्छति॥४॥इतिभेरीताडनं विनाविष्णुप्रवोधनेप्रा० ॐ अथवहूवन्नभक्षणापराधप्रायश्चित्तम्।वाराहः॥अन्नंवहुतरंभुक्त्वा स्वजीर्णेनपरिप्लुतः॥ उद्गारेणसमायुक्तअस्नात उपसर्प्पति॥ १॥एकजन्मनिश्वाचैववानरश्चैवजायते शृगालएकजन्मैवछागश्चैवैकजन्मनि ॥ २ ॥ एकजन्मभवेदंधोमूषकोजायतेपुनः तरित्वानरकादेषजायतेविपुलेकुले ॥ ३ ॥ शुद्धोभागवतश्रेष्ठः अपराधविवर्जितः प्रायश्चित्तंप्रवक्ष्यामिममभक्तसुखावहम् ४

यकर्के और अजीर्ण कर्के व्याप्त और उद्गारयोहैं डकार मारणें तिनों कर्के युक्त और विना स्नान कियेहि मेरेकों स्पर्श कर्त्ताहै ॥ १ ॥ एक जन्मनीति एक जन्ममें सो मनुष्य कुत्ता होताहै और एक जन्म वानर होताहै इसी प्रकार फेर एक जन्ममें गिदड होताहै और एक जन्म वकरा होताहै ॥ २ ॥ और एक जन्म अंध होताहै और एक जन्म मूषक होताहै इस प्रकार नरकतें तर कर्के फेर सो मनुष्य शुद्ध कुलमैं जन्मताहै ॥ ३ ॥ शुद्ध और भगवान् के भक्तोंमें श्रेष्ट होताहै और अपराधों कर्के रहित होताहै॥अव प्रायश्चित्तमैं कहिताहां मेरे भक्तोंको सुखके देणे वाला ॥ ४ ॥

जिस प्रायश्चित्तके करणे कर्के मेरे कर्म्मों में परायण योमनुष्यहै सो पापतें रहितहोताहै तीनदिन यवोंका कोटा भक्षणकरे और तिसतें उपरंत तीनदिन मूलयोहैं तिनकोभक्षणकरे ५ तिसतें उपरंततीन दिनफलोंको भक्षणकरे और तिसते उपरंत तीनदिन अक्षारलवणकया क्षार और लवणतेंविना भोजनकरे और तीनदिनपायसभोजनकरे और तीनदिनसत्तू भोजनकरे ६॥ और तीनदिन वायुभक्ष होवे अर्थात् पवनको भोजनकरे और तीनदिनआकाशशयनकरे इसप्रकार चौवीदिन २४ व्रतकरे ॥ ७ ॥ और फेर रात्रिके व्यतीत होयां दंतधावनको कर्के और बोधितः सनुबोधित हुआ पंचगव्यको पानकरे इस प्रकार देहको शुद्धकरे ॥ ८ योमनुष्य इसविधानकर्के प्रायश्चित्तको करे सोमनुष्य पाप कर्के नहिंलिप्तहोता और मेरे लोककोंक्या वैकुंठको प्राप्तहोताहै

किल्विषाद्येनमुच्येतममकर्म्मपरायणः॥यावकेनदिनत्रीणि मूलकेनदिनत्रयम् ॥ ५ ॥ फलाहारोदिनत्रीणिअक्षारलवणंत्रयः पायसेनदिनत्रीणिसाक्तवेनदिनत्रयम् ६ वायुभक्षोदिनत्रीणि आकाशशयनस्त्रयः ७ प्रभातायांतुशर्वर्यां दंतधावनबोधितः पंचगव्यंपिबेच्चैवशरीरमपिशोधनम् ८ यएतेनविधानेनप्रायश्चित्तंसमाचरेत् नसलिप्येतपापेनममलोकायगच्छति९ इतिवाराहपुराणेवह्नन्नभक्षणापराधप्रायश्चित्तम् ॥ गुरोराक्रोशमनृतंकृत्वाप्रायश्चित्तंकौर्म्मे गुरोराक्रोशमनृतं कृत्वाकुर्याद्विशोधनम् एकरात्रंत्रिरात्रंवातत्पापस्यापनुत्तये १ देवर्षीणामभिमुखष्ठीवनाक्रोशनेप्रा० देवर्षीणामभिमुखंष्ठीवनाक्रोशनेकृते उल्मुकेनदहेज्जिव्हां दातव्यंचहिरण्यकम् १ देवोद्यानेदेवतायतनेचसकृद्विण्मूत्रत्यागेप्रा ० कू०

॥९॥ और अव प्रकीर्णक पापोंका प्रायश्चित्त कहितेहैं कूर्म्म पुराणमें गुरोरिति ॥ गुरोंकी निंदा कर्के और गुरोंके आगेझूठबोल कर्के प्रायश्चित्तको करे एकरात्र वातीनरात्र तिसपापके दूरकरणेकेनिमित्त व्रतकोंकरे ॥ १ ॥ अव देवता और ऋषि इनके सन्मुख थूकणेका- और इनकी निंदा करणेका प्रायश्चित्त कहितेहैं ॥ देवता और ऋषियो हैं इनकेसन्मुख थूकणा और इनकी निंदाकरणेमें उल्मुक योहै वलताअंगार उसकर्के जिह्वाको दग्धकरे और सुवर्ण दानकरे तव शुद्धहोताहै ॥ १ ॥ अवदेवताके वागमें और देवताके घरमें एकवार विष्टा और मूत्रके करणेका प्रायश्चित्तकहितेहैं कूर्म्मपुराणसे

योद्विजवा• क्षत्रिवैश्य देवताके बागमें विष्टा और मूत्रकोंकरे सोशुद्धिके निमित्त लिंगको कटदेवे अथवा चांद्रायण व्रतकोंकरे ॥ १ ॥ और योब्राह्मण अज्ञानतें देवताके घरमें मूत्रकों करे सोलिंगकों कटदेवे अथवा चांद्रयण व्रतकोंकरे ॥ २ ॥ अवदेवता ऋषिवेद इनकी निंदामेप्रा• देवताऋषि• वेद• इनकीनिंदाकों कर्के ब्राह्मण अछी प्रकार प्राजापत्य व्रतकों करे ॥ १ ॥ और योइनकी निंदाकरणेवालेहै तिनकेसाथ बातां कर्के देवतायोहै तिनकोंपूजे और तिनके साथ स्पर्शकर्के सूर्य्यकों देखे और स्नानकर्के विश्वेश्वर जीका स्मरणकरे ॥ २ ॥ अव संपूर्ण भूतोके अधिपति योहैं ईश्वर तिनकी निंदामें प्रायश्चित कहितेहै॥ योमनुष्य संपूर्णभूतों

देवोद्यानेतुयः कुर्य्यान्मूत्रोच्चारंसकृद्द्विजः छिंद्याच्छिश्नंतुशुद्ध्यर्थंचरेच्चांद्रायणंतुवा ॥ १ देवतायतनेमूत्रंकृत्वामोहाद्द्विजोत्तमः शिश्नस्योत्कर्त्तनंकृत्वा चांद्रायणमथाचरेत् ॥ २ ॥ देवर्षिवेदानिंदायांप्रा०कौर्मे देवतानामृषीणांच वेदानांचैवकुत्सनम् कृत्वासम्यक्प्रकुर्वीतप्राजापत्यंद्विजोत्तमः १ तैस्तुसंभाषणंकृत्वास्नात्वादेवान्समर्चयेत् स्पृष्ट्वावीक्षतभास्वंतंस्नात्वाविश्वेश्वरं स्मरेत् २ सर्वभूताधिपतिनिंदायांप्रा०कौर्म्मे॥य सर्वभूताधिपतिंविश्वेशानं विनिंदति नतस्यनिष्कृतिःशक्याकर्त्तुंवर्षशतैरपि ॥ १ ॥ चाद्रांयणंचरेत्पूर्वं कृच्छ्रंचैवातिकृच्छ्रकम् प्रपन्नंशरणंदेवंतस्मात्पापात्प्रमुच्यते २ इतिप्रकीर्णकपापप्राय ❀ अथसमस्तपातकघ्नप्रायश्चित्तम् कौर्म्मे सर्वस्वदानंविधिवत्सर्वपापविशोधनम् चांद्रायणंतुविधिनाकृच्छ्रंचैवातिकृच्छ्रकम् १

केईश्वर विश्वेशान इनकींनिदा कर्ताहै उसमनुष्यकी सैकडेवर्षों कर्केवी निष्कृति करणेको नहिं शक्या कथानहि समर्थहोती ॥ १ ॥ सोमनुष्य उसपापके दूरकरणेके निमित्त प्रथम चांद्रायण व्रतकरे फेरकृच्छ्र और अति कृच्छ्र व्रतोकोकरे और संपूर्ण भूतोंके ईश्वर यो देवहैं तिनकी शरणकोंप्राप्तहूआ तिस पापते रहित होताहै ॥ २ ॥ एहकूर्म्म पुराणमे प्रकीर्णक पापो का प्रायश्चित्त किहाहै ॥ ❀ अव संपूर्ण पापो के दूर करणे वाला प्रायश्चित्त कूर्म्म पुराण मैंकहितेहैं विधि कर्के संयुक्त यो सर्व स्व दान करणा सो संपूर्ण पापो का विशोधनहै और विधिकर्के चांद्रायण व्रत और कृच्छ्र और अति कृच्छ्र एह यो व्रतहैं ॥ १

और पवित्र तीर्थमें यो अभिगमन है सो संपूर्ण पापोंका नाशनहै और देवताका यो पुज नहै सो मनुष्योंके संपूर्ण पापोंके नाश करणें वालाहै ॥ २ ॥ और अमावास्या तिथिको प्राप्त होय कर्के यो मनुष्य शिवजीका आराधन करे और ब्राह्मणोंको पुज कर्के सो मनुष्य संपूर्ण पापों कर्के रहित होताहै ॥ ३ ॥ और कृष्ण पक्षकी अष्टमीके दिनमें और कृष्णपक्षकी चतुर्दशीको महादेव जीको ब्राह्मण मुखमें पुज कर्के अर्थात् ब्राह्मणोको भोजन देकर्के संपूर्ण पापों कर्के रहित होताहै ॥ ४ ॥ और त्रयोदशीकी रात्रिमें सोपहार त्रिलोचन यो महादेवजीहैं तिनका दर्शनकर्के संपूर्ण पापोंकर्के रहितहोताहै एह रात्रिके प्रथम पहरके पूजनका फलहै।५। और यो मनुष्यकृष्णपक्षकी चतुर्दशीके दिनम सावधान चित्त होय कर्के पूर्वान्हमें नदीमें स्ना

पुण्यक्षेत्राभिगमनं सर्वपापविनाशनं देवताभ्यर्चनंन्दृणामशेषाघविनाशनम्२ अमावास्यांतिथिंप्राप्ययःसमाराधयेच्छिवम् ब्राह्मणान्पूजयित्वातु सर्वपापैःप्रमुच्यते ३ कृष्णाष्टम्यांमहादेवं तथाकृष्णचतुर्दशीं संपूज्यब्राह्मणमुखेसर्वपापैः प्रमुच्यते ४ त्रयोदश्यांतथारात्रौ सोपहारंत्रिलोचनम् दृष्ट्वेशंप्रथमेयामेमुच्यतेसर्वपातकैः५उपोषितश्चतुर्दश्यांकृष्णपक्षेसमाहितः यमायधर्म्मराजायमृत्यवेचांतकायच ६ वैवस्वतायकालायसर्वभूतक्षयायच उदुंवरायदध्नायनीलायपरमेष्ठिने ७ वृकोदरायचित्रायचित्रगुप्तायवैनमः प्रत्येकंतिलसंमिश्रान्दद्यात्सप्तोदकांजलीन् ८ स्नात्वानद्यांतुपूर्वाह्णेमुच्यतेसर्वपातकैः९ ब्रह्मचर्य्यमधःशय्यामुपवासंद्विजार्चनं व्रतेष्वेतेषु कुर्वीतशांतःसंयतमानसः १०अमावास्यांचब्रह्माणंसमुद्दिश्यपितामहम् ब्राह्मणांस्त्रीन्समभ्यर्च्यमुच्यतेसर्वपातकैः ११

न कर्के और निराहार व्रत धार कर्के यमाय. धर्म्मराजाय- मृत्यवे- अंतकाय-६ वैवस्वताय-कालाय- सर्वभूतक्षयाय- उदुंवराय. दध्नाय. नीलाय. परमेष्ठिने७वृकोदराय.चित्राय. चित्रगुप्तायवैनमः १४ एह यो चतुर्दश नामहै इनके मध्यमें एक एकको तिलो कर्के मिश्रित सात जलकियां अंजलिआं देवे तव संपूर्ण पापोंते रहित होताहै ॥ ९ ॥ ब्रह्मेति ब्रह्मचर्य्य धारणा. और पृथ्वीमें शयन करणा और निराहार व्रत करणा और ब्राह्मणोका पूजन करणा- एहयो व्रतहैं इनके विषे योमनुष्य शांत चित्त जिसका और रोकआहै मन जिसने ॥ १० ॥ सो मनुष्य अमावास्याको और वेदको और ब्रह्माको निमित्त कर्के तीन ब्राह्मणोको पूज कर्के संपूर्ण पापों कर्के रहित होताहै ॥ ११ ॥

और यो मनुष्य शुक्ल पक्षकी षष्ठीके दिनमें निराहार व्रतकों धारकर्के और सावधान चित्त हुआ यो मनुष्य सप्तमीके दिनमें भानु देव योहैं सूर्य भगवान इनकों पूजे सो मनुष्य संपूर्ण पापों कर्के रहित होताहै ॥ १२ ॥ और यो मनुष्य भरणिनक्षत्रमें तुपुन: चतुर्थी तिथिमें और शनि वारमें यम यो धर्म्मराज तिसकों पूजे सो मनुष्य सात जन्मोंके किये यो पापहैं तिनोंतें रहित होताहै ॥ १३ ॥ और यो मनुष्य एकादशी के दिनमें निराहार व्रत धारे और शुक्ला पक्षकी द्वादशीमें जनार्दन भगवान जीकों पूजताहैं सो महा पापों कर्के रहित होताहै ॥ १४ तप योहै और जप• तीर्थ सेवा• देव और ब्राह्मणोंका पूजन ग्रहणा दियो कालहैं इनमें यो मनुष्य कर्त्ताहै सो महापातकों को दूर कर्त्ताहै ॥ १५ ॥ और यो मनुष्य महा पातको कर्के युक्त योहै और पवित्र तीर्थमें जाय कर्के नियम कर्के प्राणोंको त्यागे संपूर्ण पातकों कर्के रहि

षष्ठयामुपोषितोदेवंशुक्लपक्षेसमाहितः सप्तम्यामर्चयेद्भानुंमुच्यतेसर्वपातकैः ॥ १२ ॥ भरण्यांतुचतुर्थ्यांयःशनैश्चरदिनेयमं पूजयेत्सप्तजन्मोत्थैर्मुच्यते पातकैर्नरः ॥ १३ ॥ एकादश्यांनिराहारःसमभ्यर्च्यजनार्दनम् द्वादश्यांशुक्लपक्षस्यमहापापैःप्रमुच्यते ॥ १४ ॥ तपोजपस्तीर्थसेवादेवब्राह्मणपूजनम् ग्रहणादिषुकालेषुमहापातकशोधनम् ॥ १५ ॥ यःसर्वपापयुक्तोपि पुण्यतीर्थेषुमानवःनियमेनत्यजेत्प्राणान्समुच्येत्सर्वपातकैः ॥ १६ ॥ ब्रह्मघ्नंवाकृतघ्नंवामहापातककारकंभर्त्तारमुद्धरेन्नारीभर्त्तुःशुश्रूषणोत्सुका नतस्याविद्यतेपापमिहलोकेपरत्रच ॥ १७ ॥ पतिव्रताधर्म्मरतारुद्राण्येवन संशयः नास्याःपराभवंकर्त्तुंशक्नोतीहजनःक्वचित् ॥ १८ इतिसाधारणप्रायश्चित्तम् ❁ अथरहस्यप्रायश्चित्तंविष्णुधर्म्मोत्तरेपुष्करवचनम् अतऊर्ध्वं रहस्यानांप्रायश्चित्तंनिबोधमे पौरुषेणतुसूक्तेनजप्यहोमैर्द्विजोत्तमाः ॥ १ ॥

त होताहै ॥ १६ ॥ और जिस स्त्रीका स्वामी ब्रह्म हत्या करणे वाला और कृतघ्न० और महा पातको के करणे वाला और ऐसेभी स्वामी की सेवामे तत्पर यो स्त्री सो भर्त्ताको नरकादि योंसे उद्धार कर्त्ताहै और तिस स्त्रीको इस लोक पर लोकके विषे पाप नहिंहै॥ १७ ॥ सो पति व्रता ऐसे धर्म्ममे प्रीति जिसकी सो साक्षात्पार्वतीहै इसमे संशय नहिंहै इसस्त्रीका तिरस्कार करणे को कोई वी मनुष्य समर्थ नहिं होताहै॥१८॥ ❁ अब रहस्य पापो का प्रायश्चित्त विष्णु धर्म्मो त्तरसे कहितेहैं तिनोंमे पुष्कर जीका कथनहै पुष्कर कहिताहै हेराम अबतूं रहस्य पापों का प्रायश्चित्त मेरेते श्रवण कर पुरुष सूक्त योहै सहस्रशीर्षा• और गायत्री आदि मंत्रका जप और होम इनके करणे कर्के ॥ १ ॥

ब्राह्मण यो हैं जीतिआंहै इंद्रिआं जिनोंनें सो एकमहीने कर्के संपूर्ण पापों तें रहित होतेहैं और व्याहृतियों कर्के सहित यो ओंकारहै इनों कर्के यो सोलां १६ प्राणायाम दिन दिन में महीना मात्र करे हुये गर्भ घाति यो मनुष्य तिसकों वी पवित्र कर्तेहैं२ और कौत्स इत्यादि यो मंत्र इसका जप कर्के और वासिष्ठं प्रति इत्यादि मंत्रकों और महेशं- और शुद्धवत्या, इत्यादि यो मंत्र हैं इनकों तीन दिन जपकर्के सराव के पीणेवाला मनुष्यवी शुद्ध हो जाताहै ॥ ३ ॥ और वामीयं इत्यादि यो मंत्रहै, और शिवसंकल्प एहयो मंत्र है इन कों एक वार जप कर्के सुवर्ण कों चुराय कर्के वी तिसीक्षण तें निर्मल क्या शुद्ध होजाताहै ॥ ४ ॥ हविष्यंतीय इत्या

मासेनैकेनमुच्यन्तेपातकैः संयतेन्द्रियाःसव्याहृतिकप्रणवाःप्राणायामास्तु षोडश अपिभ्रूणहनंमासात्पुनंत्यहरहःकृताः २ ॥ कौत्संजप्त्वातुइत्येतद्वासिष्ठंप्रतिचत्र्यहम् महेशंशुद्धवत्यश्चसुरापोपिविशुद्ध्यति ॥ ३ ॥ सकृज्जप्त्वास्यवामीयंशिवसंकल्पमेवच अपहृत्य सुवर्णंतुक्षणाद्भवतिनिर्मलः४ ॥ हविष्यंतीयमभ्यस्यनतमंहइतीतिच जप्त्वाचपौरुषंसूक्तंमुच्यतेगुरुतल्पगः ॥ ५ ॥ एनसांस्थूलसूक्ष्माणांचिकीर्षन्नपनोदनम् अवेत्यृचंजपेदब्दंयत्किंचेदमितीति ॥ ६ ॥ प्रतिगृह्याप्रतिगृह्यंभुक्त्वाचान्नंविगर्हितं जपंस्तरत्समंदीयंप्रयतोमानवस्त्र्यहम् ॥ ७ ॥ सौमारौद्रंतुवह्नीनांनासत्यस्यचशुध्यति स्त्रवंत्यामाचरेत्स्नानं पर्यस्यपितिचाप्यृचम् ॥ ८ ॥

दि यो मंत्रहै और नतमंह इति इत्यादि यो मंत्र और सहस्र शीर्षा इनकाजपकर्के गुरुतल्पग यो मनुष्यहै गुरांकी शय्या में प्राप्तहोणे वाला सो शुद्ध होताहै ॥ ५ ॥ और छोटे वडे यो पापहैं उनके दूर करणेकों यो इच्छा कर्ताहै सो अवेत्यृचं इत्यादि मंत्रकों 'और यत्किंच दमती त्यादि मंत्रकों एक वर्ष जप करें ॥ ६ ॥ और नाहिं दान लेणे योग्य यो दान उस दान कों ले कर्के और निंदित यो अन्न तिसकों खाय कर्के साव धान चित्तहोय कर्के तरत्समंदीय इत्यादि मंत्रकों तीन दिन जप कर्के शुद्ध होताहै ॥ ७ ॥ सौमेति सौमा. रौद्र - वन्हि ' नासत्य, पर्यस्य मित्यादि, ऋचांका जप करे और नदीमें स्नान करे ॥ ८ ॥

और पापमे अब्दारसानामित्येतत् एहयो सतकहै इसका जप करे और महीना मात्र भिक्षा केअन्नकों भोजनकरे रहस्यकिआ योपाप इसकर्के तिसपापकों दूरकर्त्ताहै मनुष्य ॥ ९ ॥ और शाकल होमीय योमंत्रहैं इनोमंत्रों कर्के वर्षमात्र द्विज घृतकों हवनकर्के और वामन इष्यते इत्यादिमंत्रकों जप कर्के आपणा बडावी योपापहै तिसको दूरकर्त्ताहै ॥ १० ॥ और द्रुपदानामक कें योदेवी यजुर्वेदमें प्रतिष्ठितहै उसकों जलके मध्यमें तीनवार पड कर्के संपूर्ण पापों कर्के रहित होताहै ॥ ११ ॥ और योमनुष्य महापातकों कर्के युक्तहै सोसावधान चित्त होयेकर्के गौओ के पीछेजावे और पावमानीय योमंत्रहैं इनको अछीप्रकार पड कर्के और भिक्षाके अन्नको भोज

अब्दारसानमित्येतदेनसिससंकजपेत् अप्रकाशंतुकृत्वैनोमासमासीतभैक्ष्यभुक्९ मंत्रैःशाकलहोमीयैरब्दंहुत्वाघृतंद्विजः स्वगुर्वप्यपहंत्येनोजप्त्वा वामनइष्यते १० द्रुपदानामसादेवी यजुर्वेदेप्रतिष्ठिता अंतर्जलेत्रिरावर्त्य मुच्यतेसर्वकिल्विषैः ११ महापातकसंयुक्तोनुगच्छेद्गाः समाहितः स्वभ्यस्यपावमानीयंभैक्ष्याहारोविशुध्यति१२ अरण्येवात्रिरभ्यस्यप्रयतोवेदसंहिताम् मुच्यतेपातकैः सर्वैःपराकैः शोधितस्त्रिभिः ॥१३॥ त्र्यहंतूपवसेद्युक्तस्त्रिरह्नोभ्युपयन्नपः मुच्यतेपातकैःसर्वैर्जप्त्वात्रिरघमर्षणम् १४ यथाश्वमेधःक्रतुराट्सर्वपापापनोदनः तथाघमर्षणंसूक्तं सर्वपापापनोदनम् १५ हत्वालोकानपीमांस्त्रीनश्नन्नपियतस्ततः ऋग्वेदंधारयन्विप्रोनैनः प्राप्नोति किंचन ॥ १६ ॥

न कर्के शुद्धहोताहै ॥ १२ ॥ अथवा वेदसंहिता को वनमे जाय कर्के तीनवारपाठकरे तव संपूर्णपापों कर्के रहित होताहै और तीनयो पराक व्रतहैं तिनके करणे कर्के शुद्ध होताहै ॥ १३ और तीन दिन निराहार व्रतकरे और तीन दिन जलको पीवे और तीन वार अघ मर्षण मंत्र कों जपकर्के संपूर्णपापों कर्के रहित होताहै ॥ १४ ॥ और जैसें अश्वमेध यो यज्ञसंपूर्ण यज्ञों का राजा संपूर्ण पापोंको दूरकरणे वाला तिसी प्रकार अघमर्षण सूक्तयोहै सोसंपूर्ण पापों केदूरकरणे वालाहै ॥ १५ ॥ और एहयो तीनलोकहैन इनकोंमार कर्के वी और जिसकिस स्थानमें भोजन कर्केवी ऋग्वेदकों धारतायो ब्राह्मणहै सोकिंचनमात्र पापकोंवी नहिंप्राप्तहोताहै १६

ऋगीति ऋग्वेद कीयो संहिताहे तिसकों अभ्यास करके अर्थात् तिसका पाठ करके अथवा सावधान चित्त होय करके यजुर्वेद कीयो संहिताहै तिसका पाठ करके अथवा रहस्यों करके सहित योसाम वेदके मंत्र तिनका पाठ करके संपूर्ण पापोंतें रहित होताहै ॥ १७ ॥ जेसें वडा योह्रदहै जलस्थान तडागादि तिसको प्राप्त होय करके शीघ्रहि लोट योहे मृत्तिकाकी ढीम सो नष्टहोजातीहै तिसीं प्रकार संपूर्ण पाप त्रिवृत् योवेदहै ऋग्यजुः साम इनके पाठ करणेसें दूरहोजाताहै ॥ १८ ऋग्वेद' और यजुर्वेद एह जो आद्यहैं अर्थात् शुक्ल यजुः और अनेक प्रकारके यो सामहैं एह योतीनो वेदहैं इनका नाम त्रिवृद्वेदहे योमनुष्य निश्चय करके जाणताहै सोवेदके जाणने वाला

ऋक्संहितांसमभ्यस्यदयजुर्वावासमाहितः साम्नांवासरहस्यानांसर्वपापैःप्रमुच्यते १७ यथामहाह्रदंप्राप्यक्षिप्रंलोष्टोविनश्यति तथादुश्चरितंसर्वंवेदेत्रिवृतिमज्जति १८ ऋचोयजूंषिचान्यानिसामानिविविधानिच एषज्ञेयस्त्रिवृद्वेदोयोवेदसवेदवित् १९ आद्यंयत्त्र्यक्षरंब्रह्मत्रयीयस्मिन्प्रतिष्ठिता सगुह्योन्यस्त्रिवृद्वेदोयोवेदैनंसवेदवित् २० वेदाभ्यासोन्वहंशक्त्यामहायज्ञक्रियाक्षमा नाशयंत्याशुपापानिमहापातकजान्यपि २१ यथैधांसिसमिद्धोग्निर्भस्मसात्कुरुतेक्षणात् तथाज्ञानाग्निनापापंक्षिप्रंदहतिवेदवित् २२

है ॥ १९ ॥ आद्य योहे त्र्यक्षर ब्रह्म अकार उकार मकार रूप जिसमें वेदत्रयी प्रतिष्ठितहै सोगुह्य अन्य करा और त्रिवृद्वेदहै योमनुष्य इसकों जानताहै सोवेदवित्है ॥ २० ॥ और दिन दिनमें शक्ति करके वेदाभ्यास करणा और महायज्ञ यो हैं अश्वमेधादि उनकी क्रियानें सामर्थ्य होणी एहयोहैं शीघ्र महापातकोंतें उत्पन्न भये भी यो पापहैं तिनकों नाश करतेहैं ॥ २१ ॥ और जिसप्रकार समिद्ध योअग्निहै बलता अग्नि सोक्षणनें समिधोंकोंभस्मसात् करदेताहे तिसीप्रकार वेदके जानने वाला ज्ञानाग्नि करके पापकों शीघ्र दग्ध करताहै ॥ २२ ॥

और येमनुष्य वासुदेवजीयोहैं जगतोंके स्वामी और संपूर्ण जगत्‌में प्रधान भक्ति करके तिन कों प्राप्त भये योहैं सो मनुष्य लोकमै शीघ्र पापोंको दूर करके चंद्रमा. और सूर्य इनके बराबर प्रभाव वाले होतेहैं॥ २३ ॥एहजो राजयोंके राजा श्रीरणवीरसिंहजी तिनकी आज्ञाके अनुसार सारस्वत जिनकी संज्ञाओर पंडितदेवीदत्त जीके पुत्र पंडित गंगारामजीने संग्रहहोए धर्म्मशास्त्र

येवासुदेवंजगतामधीशंभक्त्यागताःसर्वजगत्प्रधानम् ॥ तेपातकान्याशुवि धूयलोकेभवंतिचन्द्रार्कसमप्रभावाः २३ इतिश्रीमन्महाराजाधिराजज म्बूकाश्मीरतिब्बताद्यनेकदेशाधिपतिप्रभुवर रणवीरसिंहाज्ञप्त श्रीदेविको पकंठवासिपण्डितोपनाम सारस्वतदेवीदत्तसुतपण्डितगंगाराम संगृहीते धर्म्मशास्त्रमहानिबन्धे प्रायश्चित्तभागे परिशिष्टप्रकरणंसंपूर्णम् २१

केमहानिबंधविषे जो प्रायश्चित्तभागहै तिसमै इक्कीसमा प्रकरण परिशिष्ट नामवाला संपूर्णहो आ और एह ग्रंथभीपूराहोया इसमे जो मंत्रों कियांप्रतीकांहैं सोकिननीयांक पूर्ण मंत्रों वालीयांहैं सो मंत्र ग्रंथमे देखलैयनीयां और पीछेभी रहस्य प्रकरणआयाहै परंतु इसमें संक्षेपहै और कुछ विशेषभीहै इस करके लिखयाहै ॥

यतोसौवालघ्नोवृजिनवहुलासंहातिरवि तथाभीभोभूम्याश्रितसकलसत्संघ कलुपः॥मृतःकंसःकेशीवकनकुलचाणूरादितिजाः ससैव्यःश्रीकृष्णो दुरितद नुहत्यैप्रतिपदम् १वसन्वृन्दारण्येऽ गमयदपिगोपालनिवहं रसनूरासक्रीडारसनयवतीगोपयुवतीः वहन्गोत्रेनन्दादिकममलवेदान्तहृदयं भवन्भूयाद्भूत्यैभ्रमनिहितवाक्यैकशरणः२ जम्बूपुरीविस्तृतराजधानीराजाधिराजो रणवीरसिंहः धर्म्मस्यवृद्ध्यैवृजिनस्यशुद्ध्यैचाज्ञापितोहंकविगोगरामः ३ एतद्विषीयावहवोपिसन्तिप्राचीननव्यादिकृतानिवन्धाः तथापिकाश्चित्सुगमोह्युपायःपूर्वापरामर्शवतांप्रतीयात् ४ यद्वस्तुयादृग्गुणकंततोऽन्यद्भुयेगृहीतंशुभतामुपैति कुल्यागतंवार्षिकवारिवृन्दंगंगाप्रवाहेमिलितंशुभं तत् ५ स्वभावतः सज्जनदुर्ज्जनौतौगुणैकदोषैकदृशौहिकामम् एकत्रतीर्थेसुकृतैकहेतौ हंसाश्चकाकाः स्वमतेष्टभाजः ६ अनूद्यविद्वान्यादिकोपिवाक्यंवदेत्तदा नव्यमिवावभाति अर्थप्रयोगेपिकविप्रयोगेह्यचिंतनीयोवचनप्रभावः७अनेकदेशात्समुपागतायेगणेशमुख्याः शुकदेववर्य्याः विद्वक्षिणामूर्तिरनन्तमोये।विद्वांस्तथास्याद्व्रजवासिशर्म्मा ८गोविन्दाचारिणोविज्ञ वुधानैयायिकावराः श्रीगोकुलचन्द्राख्यावैयाकरणमानिताः ९ विश्वेश्वरवुधश्चान्येधर्म्मशास्त्रकृतश्रमाः सर्वैरेभिस्समादृष्टोग्रन्थोयंनिर्मितःशुभः १० श्रीमज्जम्बूमहीपालरणवीराख्यवर्म्मभिः समाज्ञप्तावुधाःसर्वेधर्म्मकार्य्येसमुद्यताः११ यावत्पृथ्वीजनावासायावद्द्यौश्चन्द्रसूर्य्यधा जगत्सरसितावाद्विग्रन्थहंसोभिरम्यताम् १२ जम्बूनिवासीदिनमध्यशाखी देवादिदत्तास्यसुतेतिभापीकुलंभरद्वाजमुनेरुपासीश्रीदेविकायेनभृतवकाशी१३तेनात्रसन्धायकृतोहि दर्शीस्ततःपुनर्गोगविद्याविमर्शः पापाभितप्तस्यसुधादिवपो धर्म्मस्यवृत्तेविमुखस्यधर्पः १४ श्रीविक्रमादित्यनृपेशराज्याद्वाढिव्यंकरात्रीशमितेगतेव्दे १९३२तपस्यमासेवुधवारयुक्तेहोलाष्टकेपूर्तिमगान्निवन्धः १५समाप्तश्चायंगंगारामेणस्वयंसंगृहीतः स्वयमेवमुद्रापितोधर्म्मशास्त्रीयप्रायश्चित्तभागोलेखकपाठकयोः शुभजनकोभूयात् ●

समुन्नीतस्तावद्गिरितटभुवागांगविदुपाततो
धःसंस्थानैर्वरकविजनैर्दृष्टसुजवः गनःका
श्यांपश्चात्तदनुविधयासिंधुतटतःप्रवाहोगंगा
यानृपवरसमाज्ञप्तइदयः१ ग्रंथपक्षेदृढः सु
ष्टुजवःपापनाशकशक्तिरूपःप्रभावोयस्यसः
एहग्रंथमतवेविद्याविलासजम्बूमै सिवाम
लकेअधिकारसेसमाप्तहुआ

॥ शोधितोयंनिधिपातेना ॥

पृ०	पं०	अशुद्ध०	शुद्ध०
		शङ्का	शुङ्का
५	३	रहेतु	रेहेतु
६	२	क्रिय	क्रिया
१६	१२	निमित्त	निमित्त
१७	४	वसत्	वसेत्
२१	५	मादाय	माधाय
२२	११	थोवोध	थाविाध
३२	२	त्रिस	त्रिःसू
३४	१३	पंचश	पंचाश
		अरू	अरु
३३	६	वलोयां	वेलायां
	१०	शुध्याति	शुध्यति
३७	७	त्रिश	त्रिंश
३८	७	तुल्यें	तुल्यं
३९	३	शोचा	शोचा
४४	५	वादो	वोदा
५७	११	शद्र	शूद्र
	३	दिंनो	दिनां
५८	७	मासर्द्ध	मासार्द्ध
	११	ज्ञाव	ज्ञाप
७९	७	मद्धिः	मद्धिः
८२	११	वेत्र्	वेत्
८६	८	वंहृ	वंह
८८		शुद्धः	शुद्धं
९४	१३	त्पव	त्पव

पृ०	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
९५	४	विफ	विप्रु
९५	७	विफ	विप्रु
९८	३	णद्धिः	र्णाद्धिः
९८	५	चार्था	चार्थे
१००	२	रित्प	रित्या
	१०	मीक्ष्या	मीक्ष्य
१०४	५	वर्णाः	वर्णाः
१०९	९	मुत्वा	मुण्त्वा
	९	वाध्वा	घृत्वा
११०	१०	दयो	दयोः
१११	७	मार्ण्थे	मार्ण्यै
११३	१	वे	वेद्
११३	७	पछे	पक्के
	१०	स्मृ	स्मृ
११४	१	स्पृष्टो	स्पृष्टो
११५	६	वि	विशु
	७	हेश्मा	द्वेश्म
	७	मर्ज	मार्ज
११७	१	।त	संत
	१	त्थाय	त्थाप्य
११८	२	त्कप	त्कर्ष

पृ०	पं०	अशुद्ध	शुद्ध	पृ०	पं०	अ०	शु०
				१५७	१	शु	शू
				१५९	२	कू	कू
	१	अंक१८		११८			
१२१	११	त	तः	१५९	१२	बा	या
१२३	७	ना	नो	१६०	[illegible]	हांय	हायें
१२४	६	अ	आ	१६२	३	ना	नां
१२५	७	य	या	१६३		इतिरहस्यप्रकरणम्	
१२७	५	श	दश	१६३	८	ष्टि	ष्ठि
१३१	११	र्भो	र्भे	१६८	इतिविंशतिकप्रकरणम्		
१३५	१०	चोः	चः	१७२	१	भे	मे
१३७	११	ष्ठं	ष्टं	१७६	८	द्रा	न्द्रा
१३७	११	ड	डू	१७६	१०	द्दि	द्दि
१४१	१	ब	व	१७७	६	पा	या
१४१	९	यः	र्यैः	१७७	७	पा	पां
१४१	१०	म	म	१७८	२	र	रा
१४२	८	श्यां	श्यौ	१७९	१	त्वा	त्वा
१४७	८	पप	पाप	१७९	५	त्वे	त्वे
१४७	[illegible]	[illegible]	कं	१७९	७	द्र	न्द्रा
१४८	[illegible]	[illegible]	ष्	६७९	८	मं	दं
१४९	[illegible]	[illegible]	ल्पू	१८०	३	इ	रि
१५०	[illegible]	[illegible]	त	१८१	१	हु	ह्रु
१५०	१२	[illegible]	षां	१८२	४	कीं	कें
१५२	११	[illegible]	मृ	१८२	७	ब	व
१५४	[illegible]	[illegible]	रू	१८२	१०	हे	वे
१५५	[illegible]	[illegible]	[illegible]				

पृ०	पं०	अ	शु	पृ०	पं	अशु	शु
१८३	१	प्र	प्र				
१८३	२	मो	र्मो				
१८३	५	तेषां	तासां	२१८	८	यन	येन
१८३	६	र्दि	दं	२२२	४	त्याद्य	त्पाद्य
१८३	१०	प्रा		२२५	८	दित्या	दित्वा
१८४	२	द्ध	र्ध्व	२२६	५	वकु	वकृ
१८४	४	भि	भिपि	२२८	२	तत्वे	तत्त्वे
१८४	६	या	वा	२२८	५	रेत	रेत
१८५	४	जु	जु	२२८	८	मंड	मंडू
[illegible]	८	भ	भ	२३०	११	जर	रज
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२३३	१	वर्स्न	वस्त्र
[illegible]	१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	८	पने	पर्णे
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२३४	१	तुह	तृह
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]		१	उभौतो	उभते
[illegible]	[illegible]	[illegible]	मि	२३४	२	तत्वे	तत्त्वे
२०२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२३४	८	कार्य	काय
२०२	२	[illegible]	[illegible]	२३६	३	त्य	इत्य
२०३	५	पंव	[illegible]	[illegible]	६	च्छय	पृच्छय
२०४	६	र्हि	हि	२३८	१०	भग	भाग
२०५	१०	वा	वा	[illegible]	[illegible]	राधा	राध
२०६	३	भं	म	२५२	४	प्रासा	प्रसा
२०६	५	व	र्व	२५३	६	ग्रेत्रा	ग्रेत्रां
२०७	५	[illegible]	रां	२५४	५	उल्लू	उलू
२१०	२	द	द	२५४	१०	ननु	नु
२११	४	सा	सां	२५६	७	शु	श्रु

पृ०	पं०	अ०	शु०
२५७	३	याश्वि	याश्च
२५७	८	गव्यं	गव्यं
२५८	३	तस्म	तस्मा
२५९	२	दशा	दर्शा
२६०	७	स्वर्जा	ह्यर्जा
२६०	१०	श्रेष्टः	श्रेष्ट
२६२	६	य०	यः
२६२	२	चाद्रां	चांद्रा
२६३	८	नद्या	नद्यां
२६६	१	संकं	सर्कं
२६७	२	मुञ्य	मुच्य

इतिपरिशिष्टप्रकरणस्यशुद्धिपत्रंसमाप्तम् २१